बृहत् हिंदी कोश

खंड - 1

(अ से न तक)

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

उच्चतर शिक्षा विभाग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

भारत सरकार

बृहत् हिंदी कोश

© : केंद्रीय हिंदी निदेशालय

प्रथम संस्करण : 2018

प्रकाशक : केंद्रीय हिंदी निदेशालय
उच्चतर शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(भारत सरकार)
पश्चिमी खंड-VII रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली-110066

मुद्रक :

मूल्य :

विषय-सूची

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	प्राक्कथन	v
2.	संपादन एवं समन्वय	viii
3.	बृहत हिंदी कोश से संबद्ध केंद्रीय हिंदी निदेशालय के वर्तमान अधिकारी	ix
	तथा	
	बृहत हिंदी कोश से संबद्ध केंद्रीय हिंदी निदेशालय के पूर्व अधिकारी	ix
4.	बृहत हिंदी कोश के निर्माण एवं संकलन से संबद्ध विशेषज्ञ	x
5.	संक्षिप्तियाँ	xiv
6.	बृहत हिंदी कोश	1-2823
	खंड 1 (अ से न तक)	1-1349
	खंड 2 (प से ह तक)	1350-2823
7.	परिशिष्ट-सूची	2825
	1. हिंदी वर्णमाला-मानक वर्तनी	2827
	2. अव्यय एवं निपात	2833
	3. लोकोक्ति एवं मुहावरे	2838
	4. भारतीय दर्शन एवं संस्कृति बोधक अंक	2854
	5. संख्यावाचक शब्द	2858
	6. अनेकार्थक शब्द	2863
	7. विपरीतार्थक शब्द	2865
	8. शब्द-युग्म (मिलते-जुलते शब्द)	2871
	9. संकेत-चिह्न (विराम चिह्न, गणितीय चिह्न)	2874
	10. नाप-माप और तौल की सारणियाँ	2876
	11. पशु-पक्षियों की बोलियाँ	2882
	12. पेशे और व्यवसाय	2883
	13. भारत संघ के राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेश	2888
	14. संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित भारतीय भाषाएँ	2890

प्राक्कथन

कोश किसी भी भाषा और उसके साहित्य की संपन्नता, समृद्धि और शक्ति के परिचायक होते हैं। भाषा की समृद्ध कोश परंपरा उसकी शक्ति की प्रतीक होती है। इस दृष्टि से किसी भी भाषा और उसके साहित्य की विरासत को अक्षुण्ण बनाये रखने में कोशों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। आज तेजी से बदलते विश्व में हिंदी मात्र विभिन्न साहित्यिक विधाओं की भाषिक अभिव्यक्ति का ही माध्यम नहीं रह गई है, अपितु आज वह ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी, जन-संचार, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, मनोरंजन, विज्ञापन, सूचना-प्रौद्योगिकी तथा कुछ सीमाओं तक विधि तथा आयुर्विज्ञान संबंधी संकल्पनाओं की सटीक, सशक्त तथा सार्थक अभिव्यक्ति का भी माध्यम बनती जा रही है, लेकिन विश्व की अन्य समृद्ध भाषाओं की तुलना में हिंदी में अभी तक विश्वस्तरीय कोश-परंपरा संतोष जनक नहीं है। समय-समय पर विभिन्न संस्थाओं तथा व्यक्तिगत स्तर पर कुछ महत्वपूर्ण कोशों का प्रकाशन हुआ है, वे कोश अपने प्रकाशन के समय तो काफी महत्वपूर्ण थे लेकिन पिछले लगभग पाँच दशकों में हिंदी में विभिन्न विद्या-शाखाओं और अनुशासनों की शब्दावली में जिस गुणात्मक रूप से वृद्धि हुई है उसकी पूर्ति की दृष्टि से ये कोश भी अब पुराने से पड़ने लगे हैं।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने आज की हिंदी की इसी महत्वपूर्ण आवश्यकता की पूर्ति के लिए 'बृहत् हिंदी कोश' परियोजना पर कार्य प्रारंभ किया। इस कोश में हिंदी की पारंपरिक प्राणवान शब्दावली को तो समाविष्ट किया ही गया है इसके साथ ही साथ पाँच-छह दशकों में विभिन्न विद्या-शाखाओं से संबंधित उन नवनिर्मित हिंदी शब्दों को भी शामिल किया गया है जो अब विभिन्न विश्वविद्यालयों की पाठ्य-पुस्तकों, शोधपत्रों, समाचार पत्रों के विशिष्ट लेखों आदि में प्रचुरता के साथ प्रयुक्त हो रहे हैं और जो विशेषीकृत विद्या-शाखाओं के अंगरेज़ी तकनीकी शब्दों के पर्याय के रूप में रूढ़ हो गए हैं।

भाषा सतत विकसित प्रक्रिया है, इसलिए किसी भी कोश को अंतिम रूप से संपूर्णत: पूर्ण नहीं कहा जा सकता, किंतु उसे अद्यतन एवं अधुनातन बनाने की दिशा में जो भी संभव प्रयास किये जा सकते हैं वे सभी उपाय इस कोश के लिए किये गए हैं। कोश में प्रविष्टि-चयन का आधार वर्तमान शिक्षण-सामग्री, पाठ्य पुस्तकें, अद्यतन ज्ञान-साहित्य का विकास, वैज्ञानिक उपलब्धियाँ, मीडिया की पहुँच, राजनीतिक विमर्श, ऐतिहासिक तथा आर्थिक विश्लेषण, मशीनी क्रांति, उद्योग और प्रौद्योगिकी से

संबंधित साहित्य को बनाया गया है। इस प्रकार इस कोश में प्राचीन और अर्वाचीन शब्द-भंडार के समन्वय का प्रयास किया गया है।

कोश को पूर्ण रूप से उपयोगी बनाने के लिए मूल प्रविष्टि का चयन करते हुए उसका संधि-विच्छेद तथा समास-विग्रह भी आवश्यकतानुसार यथा-स्थान दिया गया है ताकि प्रविष्टियों की संकल्पनाओं को आसानी से समझा जा सके। सभी प्रविष्टियों के आगे उनकी व्याकरणिक कोटियाँ स्पष्ट करते हुए उनकी संक्षिप्तियाँ आदि भी प्रारंभ में दे दी गई हैं। संज्ञा पुल्लिंग शब्दों के लिए केवल पुं. तथा संज्ञा स्त्रीलिंग के लिए केवल स्त्री. का प्रयोग किया गया है। कोश में प्रयुक्त सभी संक्षिप्तियों की सूची भी कोश के प्रारंभ में दे दी गई है। प्रयोक्ताओं की सुविधा की दृष्टि से प्रविष्टि के मूल उद्गम-स्रोत का उल्लेख व्याकरणिक कोटि के तुरंत बाद कोष्ठक में कर दिया गया है। निदेशालय की परंपरा के अनुसार मूल संस्कृत शब्दों को तत्सम, उनसे व्युत्पन्न शब्दों को तदभव के रूप में दर्शाया गया है। अन्य भाषाओं से हिंदी में आए शब्दों के स्रोत का उल्लेख भी यथा स्थान किया गया है। अर्थ-निरूपण की दृष्टि से यदि शब्दों को परिभाषित करना आवश्यक समझा गया है तो वह भी यथास्थान किया गया है। परिभाषाओं को यथासंभव सरल, मौलिक एवं स्वत:पूर्ण बनाने का भरपूर प्रयास किया है। अनतिविस्तार- "नामूलं लिख्यते किंचित् नानपेक्षितमुच्यते" को सर्वथा ध्यान में रखा गया है। विशिष्ट अनुशासनों से संबंधित प्रविष्टियों की परिभाषाएँ मानक कोशों को दृष्टि में रखते हुए दी गई है। प्रविष्टि की संकल्पना को अधिकाधिक संप्रेषणीय बनाने के लिए कहीं-कहीं हिंदी के तकनीकी शब्दों के पर्याय के रूप में अंगरेज़ी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। हिंदी कोशों की अकारादि क्रम परंपरा का अनुसरण करते हुए इस कोश की प्रविष्टियों का क्रम सुनिश्चित किया गया है। जहाँ तक वर्तनी के प्रयोग का प्रश्न है, परंपरानुसार कोश में निदेशालय के मानक वर्तनी संबंधी नियमों को ही आधार बनाया गया है। दो खंडों में प्रकाशित इस कोश को अधिकाधिक उपयोगी बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है। निदेशालय का प्रयास रहा है कि प्रस्तुत कोश में बहुप्रचलित, सर्वोपयोगी एवं पारंपरिक महत्व के अधिकाधिक शब्द समाहित किए जा सकें।

हमें विश्वास है कि इस कोश के प्रकाशन से आधुनिक हिंदी-जगत की एक बड़ी रिक्ति दूर होगी। यह कोश हिंदी जगत की अपेक्षाओं के साथ-साथ हिंदीतर भाषा-भाषियों एवं विदेशियों के लिए भी उपयोगी एवं कारगर रहेगा। विद्यार्थियों, शोधार्थियों, पत्रकारों, हिंदी-सेवियों, तथा अध्येताओं के लिए भी यह कोश सभी प्रकार से उपयोगी बने यही हमारा प्रयास रहा है। पूर्णत: पूर्ण प्राय: कुछ भी नहीं होता। कोश युग-युगांतर

तक चलते हैं और जीवित भी रहते हैं, किंतु उनका नवीनीकरण, संशोधन तथा परिवर्तन-परिवर्धन नए संस्करणों में होता रहता है। हमारा भी प्रयास रहेगा कि आगामी संस्करण में इसे और नए रूप में प्रस्तुत किया जा सके। इतने बड़े कार्य में त्रुटि रह जाना स्वाभाविक है पाठक गण यदि इस ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करेंगे तो हम उनके आभारी रहेंगे तथा नवीन संस्करण में उन्हें अवश्य दूर करने का प्रयास करेंगे।

इस कोश के निर्माण से प्रकाशन तक जिन विद्वानों ने अपना सहयोग दिया मैं निदेशालय की ओर से उन सभी के प्रति हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। मैं निदेशालय की पूर्व निदेशकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिनके कार्यकाल में इस कोश के निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ तथा निरंतर प्रगति हुई। प्रस्तुत कोश के निर्माण एवं प्रकाशन से संबंधित निदेशालय के अधिकारियों ने जिस निष्ठा, परिश्रम एवं समर्पण के साथ यह कार्य किया है, इस हेतु वे निश्चय ही धन्यवाद के पात्र हैं।

(प्रोफेसर अवनीश कुमार)
निदेशक

बृहत् हिंदी कोश

प्रधान संपादक

प्रोफेसर अवनीश कुमार
निदेशक

संपादक

1. श्री राधेश्याम मीना
   उपनिदेशक (भाषा)
2. डॉ राकेश कुमार
   सहायक निदेशक

सह-संपादक

1. डॉ. किरण झा
   सहायक अनुसंधान अधिकारी
2. डॉ. शालिनी राजवशी
   सहायक अनुसंधान अधिकारी
3. डॉ. जगदीप यादव
   सहायक अनुसंधान अधिकारी
4. श्री रत्नेश कुमार मिश्र
   सहायक अनुसंधान अधिकारी

मुद्रण एवं प्रकाशन

श्री हुकमचंद मीना, सहायक निदेशक

बृहत हिंदी कोश से संबद्ध केंद्रीय हिंदी निदेशालय के वर्तमान अधिकारी

डॉ. वेदप्रकाश, सहायक निदेशक

डॉ. शैलेश बिडालिया, सहायक निदेशक

श्रीमती अर्चना डिमरी, सहायक निदेशक

बृहत हिंदी कोश से संबद्ध केंद्रीय हिंदी निदेशालय के पूर्व अधिकारी

डॉ. पुष्पलता तनेजा, पूर्व निदेशक

प्रो. के. बिजय कुमार, पूर्व निदेशक

प्रो. केशरी लाल वर्मा, पूर्व निदेशक

डॉ. रवि प्रकाश टेकचंदानी, पूर्व निदेशक

डॉ. दिनेश चंद्र दीक्षित, पूर्व उपनिदेशक

श्री. के.के. सिंह, पूर्व उपनिदेशक

डॉ. बलिराम प्रसाद, पूर्व उपनिदेशक

डॉ. कैलाश नीहारिका, पूर्व अनुसंधान अधिकारी

बृहत हिंदी कोश के निर्माण एवं संकलन से संबद्ध विशेषज्ञ

डॉ. नरेंद्र व्यास, पूर्व प्रधान संपादक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली

प्रो. पूरन चंद टंडन, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. धर्मपाल आर्य, पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रो. कैलाश चंद्र भाटिया, अलीगढ़ विश्वविद्यालय अलीगढ़

प्रो. के.के. गोस्वामी, केंद्रीय हिंदी संस्थान, नई दिल्ली

प्रो. ललित मोहन बहुगुणा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, नई दिल्ली

प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

प्रो. ठाकुरदास, केंद्रीय हिंदी संस्थान, नई दिल्ली

डॉ. विजयकुमार वेदालंकार, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदू कॉलिज, सोनीपत

प्रो. नरेश मिश्र, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

डॉ. गोबिंद प्रसाद, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. जयनारायण कौशिक, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला, हरियाणा

डॉ. रामजी मिश्र, एसोसिएट प्रोफेसर, जाकिर हुसैन कालिज, दिल्ली

डॉ. रमेश मेहता, एसोसिएट प्रोफेसर, जाकिर हुसैन कॉलेज, दिल्ली

डॉ. गणेश शुक्ल, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

डॉ. डी.डी. नौटियाल, पूर्व सचिव, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली

डॉ. उमाप्रसाद थपलियाल, पूर्व निदेशक, इतिहास विभाग, रक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली

डॉ. विकास शुक्ल, पूर्व उपसंपादक, नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली

डॉ. ओ.पी. वर्मा, पूर्व निदेशक (राजभाषा) दूर संचार विभाग, नई दिल्ली

डॉ. डी.आर. गुलाटी, एसोसिएट प्रोफेसर, सत्यवती कॉलेज, नई दिल्ली

श्री आर.पी. तिवारी, पूर्व अनुसंधान अधिकारी, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली

श्री अरविंद आशधीर, पूर्व अनुसंधान अधिकारी, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली

डॉ. आर.एन. मिश्र, वाणिज्य एवं व्यवसाय प्रशासन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

डॉ. पी.एन. चौधरी, रक्षा एवं विकास अनुसंधान संगठन, रक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली

डॉ. सुनंदा पाठक, रीडर, संगीत विभाग, माता सुंदरी कॉलेज, नई दिल्ली

श्री प्रेमदास, पूर्व सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली

श्री गणेश अरोरा, परियोजना प्रबंधक, सीडैक, नोएडा

प्रो. चतुर्भुज सहाय, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

श्री मीमांसक, सहायक निदेशक, राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली

डॉ. सुरेश पंत, शिक्षा विभाग, दिल्ली सरकार, दिल्ली

प्रो. वी.रा. जगन्नाथन, केंद्रीय हिंदी संस्थान, नई दिल्ली

डॉ. कामता कमलेश, एसोसिएट प्रोफेसर, अमरोहा

श्री सत्यपाल अरोड़ा, पूर्व उपनिदेशक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली

डॉ. कमला कौशिक, एसोसिएट प्रोफेसर, सत्यवती कालेज, नई दिल्ली

श्री. बीरेंद्र लाल वधवा, नई दिल्ली

श्री. एन.एस. चौहान, वैज्ञानिक अधिकारी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली

श्री हरीशचंद्र गुलियानी, नई दिल्ली

डॉ. शशि भूषण अरोड़ा, नई दिल्ली

प्रो. जगमल सिंह, पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सिलचर विश्वविद्यालय, सिलचर

प्रो. शशिभूषण सीतांशु पांडेय, गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय, अमृतसर

प्रो. हेमंत जोशी, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली

श्री श्रीश मिश्र, खेल समाचार संपादक, जनसत्ता, नई दिल्ली

डॉ. रामजीलाल जांगिड़, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली

डॉ. विभा गुप्ता, नई दिल्ली

डॉ. अनिरुद्ध राय, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली

प्रो. बदरीनाथ कपूर, सुप्रसिद्ध कोशकार, वाराणसी

श्री दयानंद पंत, उपनिदेशक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली

श्री बी.डी. पंड्या, पूर्व सचिव, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली

श्री बी.एन. शर्मा, पूर्व उपनिदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली

डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ, पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, डी.एस. कॉलेज, अलीगढ़

श्री आनंद अनंतराम वेताल, पूर्व प्राचार्य, शिक्षा विभाग, दिल्ली सरकार, दिल्ली

डॉ. नोदनाथ मिश्र, पूर्व उपशिक्षा सलाहकार, मानव संसाधन एंव विकास मंत्रालय, नई दिल्ली

डॉ. भास्करानंद पांडेय, पूर्व प्राचार्य, शिक्षा विभाग, दिल्ली सरकार, दिल्ली

डॉ. जयंती प्रसाद मिश्र, पूर्व प्राचार्य, शिक्षा विभाग, दिल्ली सरकार, दिल्ली

डॉ. नीलांबर पांडेय, पूर्व निदेशक, (राजभाषा), रक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली

डॉ. भारत भूषण शर्मा, पूर्व प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, नौशहरा, जम्मू एवं कश्मीर

प्रो. मोहनलाल सर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, नई दिल्ली

डॉ. हरीश कुमार सेठी, असिस्टेंट प्रोफेसर, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त वि.वि., दिल्ली

डॉ. शिव कुमार शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय, दिल्ली

डॉ. विनीता कुमारी, एसोसिएट प्रोफेसर, स्वामी श्रद्धानंद कॉलिज, दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. ममता सिंगला, एसोसिएट प्रोफेसर, भगिनी निवेदिता कॉलिज दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. कुलभूषण शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. सुनील तिवारी, असिस्टेंट प्रोफेसर, शहीद भगतसिंह कालेज, दिल्ली

डॉ. आलोक रंजन पांडेय, असिस्टेंट प्रोफेसर, रामानुजन कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. सुधांशु कुमार शुक्ला, एसोसिएट प्रोफेसर, हंसराज महाविद्यालय, दिल्ली

डॉ. प्रदीप कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, स्वामी श्रद्धानंद कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. रामकरण डबास, पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली

डॉ. विद्या गुप्ता, एसोसिएट प्रोफेसर, हरियाणा सरकार, गुड़गाँव

डॉ. बी.के. सिन्हा, पूर्व वैज्ञानिक अधिकारी, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली

डॉ. दिनेश चंद्र दीक्षित, पूर्व उपनिदेशक केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली

डॉ. राजरानी शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. जगदेव कुमार शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

संक्षिप्तियाँ

1.	अं.	अंग्रेजी
2.	अ.क्रि.	अकर्मक क्रिया
3.	अनु.	अनुरणन
4.	अर.	अरबी
5.	अप.	अपभ्रंश
6.	अप.वि.	अपराध विज्ञान
7.	अभि.	अभिव्यक्ति
8.	अर्थ.	अर्थशास्त्र
9.	अर्ध.मा.	अर्ध मागधी
10.	अव.	अवहट्ठ
11.	अ.	अव्यय
12.	अस.	असमिया
13.	आधु. अर्थ	आधुनिक अर्थ
14.	आनु.	आनुवंशिकी
15.	आयु.	आयुर्विज्ञान
16.	इंजी.	इंजीनियरी
17.	इति.	इतिहास
18.	उदा.	उदाहरण
19.	ओडि.	ओडिया
20.	कंप्यू.	कंप्यूटर
21.	कन्न.	कन्नड़
22.	कश्मी.	कश्मीरी
23.	क्रि.	क्रिया
24.	कुमा.	कुमाउनी
25.	कृदं.	कृदंत
26.	कृषि.	कृषिविज्ञान
27.	कोंक.	कोंकणी
28.	कोशिका.	कोशिका विज्ञान
29.	खगो.	खगोलिकी
30.	ख. बो.	खड़ी बोली
31.	खेल.	खेलकूद
32.	गणि.	गणित
33.	गुज.	गुजराती
34.	गृह.	गृहविज्ञान
35.	छत्ती. बो.	छत्तीसगढ़ी बोली
36.	जंतु.	जंतुविज्ञान
37.	जर्म.	जर्मन
38.	जीव.	जीवविज्ञान
39.	ज्यो.	ज्योतिष
40.	टि.	टिप्पणी
41.	ढोला.	ढोला मारु रा दूहा
42.	तक. अर्थ	तकनीकी अर्थ
43.	तमि.	तमिल
44.	तर्क.	तर्कशास्त्र
45.	तुर्की.	तुर्की भाषा
46.	तु.	तुलना
47.	तेलु.	तेलुगु
48.	दर्श.	दर्शनशास्त्र
49.	दूर.संचा.	दूरसंचार

50.	दे.	देखिए	75.	प्रशा.	प्रशासन
51.	देश.	देशज	76.	प्रा.	प्राकृत
52.	धर्म.	धर्मशास्त्र	77.	प्राणि.	प्राणि विज्ञान
53.	धा.	धातु	78.	फा.	फारसी
54.	ना.धा.	नाम धातु	79.	फिल्म.	फिल्मांकन
55.	नृ.वि.	नृविज्ञान	80.	फोटो.	फोटोग्राफी
56.	नेपा.	नेपाली	81.	फ्रें.	फ्रेंच
57.	पंजा.	पंजाबी	82.	बहु.	बहुवचन
58.	प.हि.	पश्चिमी हिंदी	83.	बल्गा.	बल्गारियाई
59.	पत्र.	पत्रकारिता	84.	बंग.	बंगला
60.	परि.	परिवहन	85.	बाग.	बागवानी
61.	पर्या.	पर्याय	86.	बुंदे.	बुंदेलखंडी
62.	पश्तो.	पश्तो भाषा	87.	बो.	बोली
63.	पा.	पालि	88.	ब्रज.	ब्रजभाषा
64.	पारि.	पारिस्थितिकी	89.	भाषा.	भाषाविज्ञान
65.	पुं.	पुल्लिंग	90.	भू.	भूगोल
66.	पुरा.	पुरातत्व	91.	भू.वि.	भूविज्ञान
67.	पुर्त.	पुर्तगाली	92.	भोज.	भोजपुरी
68.	पुस्त.	पुस्तकालय विज्ञान	93.	मनो.	मनोविज्ञान
69.	पू.हि.	पूर्वी हिंदी	94.	मरा.	मराठी
70.	पृ.	पृष्ठ	95.	मग.	मगही
71.	प्रच.अर्थ	प्रचलित अर्थ	96.	मल.	मलयालम
72.	प्रत्य.	प्रत्यय	97.	मार.	मारवाड़ी
73.	प्रबं.	प्रबंधन	98.	मुद्र.	मुद्रण
74.	प्रयो.	प्रयोग	99.	मू.अर्थ	मूल अर्थ

100.	यां.इंजी.	यांत्रिक इंजीनियरी
101.	यूना.	यूनानी
102.	योग.	योग
103.	रा.	राजस्थानी
104.	राज.	राजनीति
105.	ल.क.	ललित कला
106.	ला.अर्थ.	लाक्षणिक अर्थ
107.	लैटि.	लैटिन
108.	लो. प्रशा.	लोक प्रशासन
109.	वन.	वनस्पति विज्ञान
110.	वस्त्र इंजी.	वस्त्र इंजीनियरी
111.	वाणि.	वाणिज्य
112.	वानि.	वानिकी
113.	वास्तु.	वास्तुशास्त्र
114.	वि. इंजी.	विद्युत इंजीनियरी
115.	वि.	विशेष
116.	विक. अर्थ	विकसित अर्थ
117.	विभ.	विभक्ति
118.	विलो.	विलोम
119.	विशे.	विशेषण
120.	विभ.	विभक्ति
121.	विस्म.	विस्मयादिबोधक
122.	वैदि.	वैदिक
123.	व्या.	व्याकरण
124.	व्यु.अर्थ	व्युत्पत्तिपरक अर्थ
125.	शा.अर्थ	शाब्दिक अर्थ
126.	शिक्षा.	शिक्षाशास्त्र
127.	शौर.	शौरसेनी
128.	सं.	संस्कृत
129.	संक.	संकर
130.	संगी.	संगीत
131.	संयो.	संयोजक
132.	स.क्रि.	सकर्मक क्रिया
133.	समा.	समाज विज्ञान
134.	सर्व.	सर्वनाम
135.	सा.अर्थ	सामान्य अर्थ
136.	साहि.	साहित्य
137.	सिंधी.	सिंधी
138.	सिंह.	सिंहली
139.	सू.कृ.	सूत्रकृमि. विज्ञान
140.	सै.वि.	सैन्य विज्ञान
141.	स्त्री.	स्त्रीलिंग
142.	स्था.	स्थापत्य
143.	स्था.प्रयो.	स्थानिक प्रयोग
144.	स्पे.	स्पेनी
145.	ह.कला	हस्त कला
146.	हरि.	हरियाणवी बोली
147.	हिं.	हिंदी
148.	क्षे.	क्षेत्रीय

अ

देवनागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर और प्रथम स्वर। संस्कृत व्याकरण और भाषा विज्ञान की दृष्टि से यह ह्रस्व दीर्घ और प्लुत तीन प्रकार का होता है।

अ *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. ब्रह् मा 3 इंद्र 4. वायु 5. अग्नि 6. कुबेर 7. अमृत 8. कीर्ति 9. विश्व।

अंक *पुं.* (तत्.) संख्या लिखने के लिए अभिनिर्धारित प्रतीक या चिह्न जैसे 1, 2, 3 आदि 2. (पत्रकारिता) किसी समाचार-पत्र या पत्रिका के नियमित या नियमित अवधि में होने वाले प्रकाशन; पत्रिकादि का विशेषांक जैसे हंस का निराला अंक 3. (साहित्य) नाटक का एक अंश जिसकी समाप्ति पर यवनिका गिरा दी जाती है 4. चिह्न 5. काजल की बिंदी 6. गोद 7. (गणित) संख्या बोधक प्रतीक 1, 2, 3 आदि मुहा. अंक लगना- गले मिलना, छाती से लगना; अंक में भरना- गले/छाती से लगाना।

अंकक *पुं.* (तत्.) अंकों की गणना करने और उनका हिसाब रखने वाला 2. किराया, शुल्क निर्धारण करने वाला व्यक्ति, अंककार वि. अंकन करने वाला, कर, शुल्क, मूल्य निर्धारण करने वाला scorer

अंककरण *पुं.* (तत्.) 1. अंक या छाप लगाने का कार्य 2. अंकन।

अंककार *पुं.* (तत्.) 1. वह व्यक्ति जो खेल में उत्पन्न विवादास्पद स्थिति में निर्णय देता है 2. दे. अंकक। umpire

अंकगणित *पुं.* (तत्.) गणित की शाखा जिसमें जोड़, घटाव, गुणा, भाग की सहायता से वास्तविक संख्याओं का परिकलन किया जाता है।

अंकगत *पुं.* (तत्.) 1. अंक (संख्या) से संबंधित *वि.* 2. अंक (गोद) में लिया हुआ।

अंकधारण *पुं.* (तत्.) शंख, चक्र, त्रिशूल आदि चिह्न, तप्त मुद्रा से दगवाना।

अंकधारी *वि.* (तत्.) जिसने शरीर पर चिह्न दगवाया हो, छापा लगा हुआ।

अंकन *पुं.* (तत्.) 1. निशान लगाना, चिह्नित करना 2. अंक देना/चढ़ाना/डालना, लगाना 3. चिह्न या छाप लगाना 4. कूची या बुरूश से चित्रण करना, चित्र बनाना, चित्रण, वर्णन करना।

अंकनी *स्त्री.* (तत्.) संस्कृत लिखने छापा लगाने का उपकरण या साधन।

अंकनीय *वि.* (तत्.) 1. अंकन या चिह्न लगाने के योग्य 2. जिस पर अंक दिए जाने आवश्यक हों।

अंकपत्र *पुं.* (तत्.) परीक्षा में विषयवार प्राप्त अंकों का विवरण करने वाला पत्र। mark sheet

अंक-परिवर्तन *पुं.* (तत्.) 1. रंगमंच पर एक अंक की समाप्ति पर दूसरे अंक की शुरुआत 2. परीक्षा-संबंधी किसी प्रश्न पर पहले दिए गए अंकों में बाद में किया गया परिवर्तन।

अंकपलई *स्त्री.* (तत्.) वह विद्या जिसमें अंकों को अक्षरों के स्थान पर रखते हैं और उनके समूह से वाक्य की तरह अर्थ निकालते हैं।

अंकपाली *स्त्री.* (तत्.) धाय, दाई।

अंकपाश *पुं.* (तत्.) गले (से) लगाकर बाँहों में भर कर किया गया आलिंगन, गलबाँही।

अंकमविरष्टि *क्रि.* (तत्.) अंक लिखना, अंकन करना, गोद में आना।

अंकमाल *पुं.* (तत्.) 1. आलिंगन, परिरंभण, गले लगाना 2. भेंट

अंकमाला *स्त्री.* (तत्.) हार, आलिंगन।

अंकमुख *पुं.* (तत्.) 1. नाटक का आरंभिक वह भाग जिसमें बीजरूप में कथानक प्रस्तुत किया जाता है 2. किसी अंक के अंत में अंतिम पात्र द्वारा संक्षिप्त सूचना देकर अग्रिम अंक के प्रारंभ की योजना प्रस्तुत करना 3. अंकमुख में

अगला अंक पूर्व अंक से बिना संबंध के प्रारंभ होता है 4. अर्थोपक्षेपक के पाँच प्रकारों में से एक 5. अंकास्य।

अंक्य *वि.* (तत्.) 1. चिह्न करने योग्य, निशान लगाने लायक *पुं.* 2. दागने के योग्य *पुं.* 1. अपराधी 2. मृदंग, तबला, पखवाज आदि बाजे जो गोद में रखकर बजाए जाएं।

अंकरा *वि.* (तद्.) एक प्रकार की घास जो खेतों में अपने आप उग आती है तथा फसल की वृद्घि में बाधक होती है, अच्छी फसल के लिए उसे निकालना अनिवार्य होता है, खरपतवार, खेत से इस प्रकार की घास को निकालने के कार्य को 'निराई' कहा जाता है।

अंकवाई *स्त्री.* (तद्.) 1. अंकवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक 2. मूल्य-निर्धारण।

अंकवाना *स.क्रि.* (तद्.) कुतवाना, मूल्य निर्धारित कराना 2. अंदाज कराना 3. परखवाना 4. किसी से अंकन, चित्रण, लेखन करवाना।

अंकवार *स्त्री.* (तत्.) 1. वक्ष या हृदय 2. गोद 3. आलिंगन

अंकविद्या *स्त्री.* (तत्.) अंक-ज्योतिष, जिसमें शुभाशुभ या अदृष्ट पर विचार-निर्णय अंकों के आधार पर होता है। Numerology

अंकशायिनी *वि./स्त्री* [अंक + शायिनी] (तत्.) 1. गोद में सोने वाली या बगल में सोने वाली स्त्री 2. प्रिया, पत्नी।

अंकशायी *वि./पुं.* [अंक + शायी] (तत्.) 1. गोद में सोने वाला कोई बालक 2. किसी के साथ में या बगल में सोने वाला 3. पति।

अंकशास्त्र *पुं.* (तत्.) 1. वह एक संख्याशास्त्र जिसमें किसी विषय से संबंधित आंकड़े एकत्र करके तथा उन्हें सारणीबद्ध कर उनका विशेष रूप से अध्ययन किया जाता है। 2. सांख्यिकी statistics

अंकशास्त्री *पुं.* [अंक+शास्त्री] (तत्.) 1. 'सांख्यिकी' का ज्ञाता या विद्वान 2. सांख्यिकी विद्या में कुशल, प्रवीण।

अंकसूची *स्त्री.* [अंक+सूची] (तत्.) किसी परीक्षार्थी को विविध विषयों से संबंधित प्रश्नपत्रों में प्राप्त अंकों तथा उनके योग सहित परीक्षा परिणाम के रूप में (श्रेणी आदि के साथ) तत्संबंधी संस्थान से दी जाने वाली सूची। marksheet

अंकांतर *पुं.* [अंक + अंतर] नाट्य. (तत्.) नाटक में कथानक की दृष्टि से अंक का परिवर्तन।

अंकायिनी *वि स्त्री.* (तत्.) बगल या साथ में सोने वाली, प्रेमिका या पत्नी।

अंकायी *पुं.* (तत्.) बगल या साथ में सोने वाला।

अंकारना *क्रि* (तद्).) आलिंगन करना, गले लगाना।

अंकावतार *पुं.* [अंक + अवतार] (तत्.) नाट्य. 1. नाटक में अंक के अंत का वह भाग जिसमें अगले अंक के अभिनेय विषय की सूचना दी जाती है तथा पूर्व अंक के पास उसी कथावस्तु को बिना अवरोध किए अगले अंक में भी दिखाया जाता हैं। जैसे अभिज्ञान शाकुंतलम नाटक में पंचम अंक के पश्चात् षष्ठ अंक को अंकावतार कहा गया है 2. अर्थोपक्षेपक के पाँच प्रकारों में से एक।

अंकास्त्र *पुं.* (तत्.) संख्या के आधार पर भविष्यवाणी करने का विज्ञान, अंक-विज्ञान। numerology

अंकास्त्री *पुं.* (तत्.) अंक शास्त्र का ज्ञाता या विद्वान।

अंकास्य *पुं.* [अंक + आस्य] (तत्.) नाट्य. 1. कथावस्तु का सूचक तत्व 2. अर्थोपक्षेपक के पाँच प्रकारों में से तीसरा भेद जैसे- 1. विष्कंभक 2. चूलिका 3. अंकास्य 4. अंकावतार 5. प्रवेशक

अंकित वि. (तत्.) 1. निशान लगा हुआ 2. वर्णित, चित्रित प्रयो. देश की मुद्रा पर राज्य का चिह्न अंकित होना चाहिए।

अंकित मूल्य *पुं.* (तत्.) किसी भी बेची जाने वाली वस्तु पर क्रेता की सुविधा के लिए मुद्रित कीमत face value

अंकिल *वि.* [अंक + इल प्रत्यय] (तत्.) 1. अंकित किया हुआ 2. चिह्नित *पुं.* दागा हुआ साँड़।

अंकीय अभिकलित्र *पुं.* (तत्.) अभिकलित्र (कंप्यूटर) का एक प्रकार जो सूचना का कूटलेखन द्विआधारी अंकों के रूप में करता है। digital computer

अंकुड़ा *पुं.* (तत्.) लोहे का घुमावदार काँटा।

अंकु मुद्रा *स्त्री.* (तत्.) एक मुद्रा जिसमें हाथ की उंगलियाँ अंकुर के आकार की होती हैं।

अंकुर *पुं.* (तत्.) अनाज के गीले या भीगे दानों में से निकलने वाला नया छोटा पत्ता, कोंपल, अँखुआ।

अंकुरण *पुं.* (तत्.) 1. अंकुरित होने की स्थिति या भाव 2. नई उद्भावना।

अंकुराग्रह *पुं.* (तत्.) महावत, हाथीवान, निशादी, फीलवान।

अंकुरित *वि.* (तत्.) 1. (वह बीज) जिससे अंकुर निकला हो 2. उत्पन्न, निकला हुआ।

अंकुरित यौवना *वि.स्त्री.* [अंकुरित यौवन + आ प्रत्यय] (तत्.) 1. वह बाला या लड़की जिसके शरीर में यौवन के लक्षण प्रकट हो रहे हों, किशोरी।

अंकुश *पुं.* (तत्.) 1. हाथी को वश में करने के लिए महावत द्वारा उपयोग में लाया जाने वाला नुकीला उपकरण 2. किसी भी प्रकार का नियंत्रण, रोक, प्रतिबंध लगाना।

अंकुश-ग्रह *पुं.* (तत्.) हाथी को नियंत्रण में रखने वाला महावत, पीलवान, फ़ीलवान।

अंकुश मुद्रा *स्त्री.* (तत्.) [अंकुश+मुद्रा] 1. वह यौगिक मुद्रा जिसमें हाथ की उँगलियों की आकृति अंकुश की तरह बनाई जाती है 2. उँगलियों की अंकुशाकार मुद्रा।

अंकुश लोमी *पुं.* (तत्.) वनस्पति 1. पौधों के वे अंग जो कँटीले रोएँदार होते हैं 2. कँटीले रोमयुक्त पादप-अंग।

अंकुशधारी *पुं.* (तत्.) जो हाथ में अंकुश धारण किये हुए हाथी पर विराजमान हो। महावत, पीलवान, फ़ीलवान, चाबुकधारी 2. नियंत्रण करने वाला।

अंकुशित *वि.* (तत्.) 1. अंकुश द्वारा आगे बढ़ाया हुआ, अंकुश द्वारा गतिशील 2. अंकुश के प्रयोग से युक्त।

अंकुशी *वि.* (तत्.) 1. जो अंकुश से युक्त हो, अंकुशवाला 2. अंकुश के प्रयोग से किसी को काबू में रखने वाला 3. नियंत्रक।

अंकुसी *स्त्री.* (तद्.) 1. टेढ़ी झुकी कील जिसमें कोई चीज अटकाई या फंसाई जा सके हुक, कंटिया 2. टेढ़ी छड़ जिसको किवाड़ के छेद मे डालकर सिटकिनी खोलते हैं 3. फल तोड़ने के लिए डंडे के सिरे पर बंधी छोटी लकड़ी 4. भट्टी से राख निकालने का एक औजार 5. नारियल की गिरी निकालने का एक छोटा औजार।

अंकेक्षक *पुं.* (तत्.) अर्थ. [अंक + ईक्षक] 1. वह व्यक्ति या अधिकारी जो हिसाब-किताब या आय-व्यय से संबंधित बही-खाता, लेखा-जोखा आदि की जाँच करता है, लेखा परीक्षक, लेखा निरीक्षक auditor

अंकेक्षण *पुं.* [अंक + ईक्षण] (तत्.) अर्थ. 1. आय-व्यय या हिसाब-किताब की जाँच पड़ताल, लेखा परीक्षा।

अंकोर *पु.* (तत्.) 1. अंक, गोद 2. छाती 3. भेंट, नजर 4. घूस, रिश्वत 5. खुराक या कलेवा जो खेत में काम करने वालों के पास भेजा जाता है, छाक, कोर, दुपहरिया।

अंकोरी *स्त्री,* (तद्.) 1. गोद, अंक 2. आलिंगन 3. भेंट।

अंकोल *पुं.* (तत्.) पहाड़ी क्षेत्र में होने वाला एक बड़ा वृक्ष जिसके पत्ते बड़े, फूल सफेद तथा फल पहले नीले बाद में लाल होते हैं, इस वृक्ष की छाल, फल, फूल आदि सभी औषधोपयोगी होते हैं।

अंक्य *वि.* (तत्.) 1. जिसका अंकन संभव हो 2. जो चिह्नित लिए जाने योग्य हो 3. दागने योग्य *पुं.* गोद में रखकर बजाए जाने योग्य कोई वाद्ययंत्र जैसे- सितार, वीणा, ढोलक आदि।

अंखड़ी *स्त्री.* (तद्.) आंख, नेत्र।

अंखिया *स्त्री.* (तद्.) 1. हथौड़ी से ठोक ठोक कर नक्की करने की कलम या ठप्पा 2. आँख।

अंखुआ पुं. (तत्. अंकुर) 1. बीज से फूटकर निकला हुआ कोमल नोकदार अंश जिसमें से पहली पत्तियाँ निकलती हैं 2. बीज से पहले-पहल निकली हुई मुलायम बंधी पत्ती, डाभ, कल्ला, कोपल 3. उभार, उठान।

अंखुआना *अ.क्रि.* (तद्.). 1. अंकुर फूटना, उगना या जमना 2. उभड़ना, उठना।

अंग क्रिया *स्त्री.* (देश.) संस्कृत अंग कर्म का स्त्रीलिंग।

अंग *पुं.* (तत्.) 1. शरीर का कोई भी अवयव 2. भाग, हिस्सा 3. तन, शरीर मुहा. अंग टूटना- श्रम के कारण शरीर के अंगों में पीड़ा होना, अंग तोड़ना- कसरत करना; अंग फड़कना- शरीर के किसी अंग में रह-रहकर थोड़ी देर तक कंपन या स्फुरण होना; अंग लगाना- गले लगाना।

अंगक *पुं.* (तत्.) चिकि. कोशिकाद्रव्य psytoplasm जिसमें केंद्रक के अतिरिक्त विशेष प्रकार की वे जैवी संरचनाएँ, जिनकी कोशिका के अंतर्गत होने वाली क्रियाओं में सहभागिता होती है 2. जीव. कोई विशिष्ट प्रकार्य करने वाला कोशिका का सुस्पष्ट अंग जैसे- केंद्रक, लवक आदि।

अंगकर्म *पुं.* [अंग-कर्म] (तत्.) शरीर को स्वस्थ बनाए रखने के लिए बाह्य रूप से उबटन, तेल आदि का मलना।

अंगघात *पुं.* (तत्.) शा.अर्थ अंग पर आघात विशेष, पक्षाघात या लकवे की स्थिति, शरीर में संवेदन और क्रियाशीलता का अभाव।

अंगचारी *पुं.* (तत्.) साथ में रहने वाला, सखा, सहयोगी, सहचारी, मित्र।

अंगचालन *पुं.* (तत्.) अंगों को चलाना, अंगों को हिलाना-डुलाना।

अंगच्छेद *पुं.* (तत्.) अंगों को काटने की क्रिया, भाव, शरीर के किसी अंग को काटकर निकाल देने की क्रिया। amputation

अंगच्छेदन *पुं.* (तत्.) शरीर के अंगों को काटने की क्रिया।

अंगज *पुं.* (तत्.) 1. अंग से उत्पन्न, जैसे- पसीना, रोग, बाल, रक्त, खून 2. पुत्र 3. काम-क्रोधादि मानसिक विकार 4. कामदेव 5. नायिका के सात्विक अलंकारों का एक भेद हाव, भाव, हेला, का समूह।

अंगज अलंकार *पुं.* (तत्.) काव्य नायिका के सात्विक अलंकारों के तीन भेदों में से एक, हाव, भाव, हेला का समूह।

अंगजा *वि.* (तत्.) जो शरीर से उत्पन्न हुई हो, पुत्री, बेटी।

अंगजात *पुं.* (तत्.) अंगज, अंगजा का पर्यायवाची या समानार्थी।

अंगड़-खंगड़ *देश.* 1. टूटा-फूटा 2. निरर्थक सामान 3. बिखरा या व्यर्थ सामान 4. बचा-खुचा सामान।

अंगतंत्र *पुं.* (तत्.) प्राणि.वि. शरीर में परस्पर सहयोग से किसी विशेष सामूहिक कार्य को करने के लिए अनेक अंगों का मिला कर बना हुआ तंत्र जैसे- पाचन-तंत्र।

अंगत्राण *पुं.* (तत्.) 1. अंग की रक्षा करने वाली वस्तु 2. कवच।

अंगद *पुं.* (तत्.) 1. भुजा का एक आभूषण, बाजूबंद 2. राम की सेना का एक सेनापति-बाली पुत्र अंगद।

अंगदान *पुं.* (तत्.) अपने शरीर के किसी अंग को अन्यत्र प्रत्यारोपण हेतु अथवा शोधकार्य के लिए देना जैसे- चक्षुदान, वृक्कदान, यकृतदान आदि।

अंगदीय *वि.* (तत्.) 1. अंगद संबंधी 2. अंगद का।

अंगन *स्त्री.* (तत्.) 1. आंगन, टहलने का स्थान 2. यान, सवारी।

अंगन्यास *पुं.* (तत्.) पूजा आदि में मंत्रों का उच्चारण करते हुए विभिन्न अंगों को पवित्र करने की भावना से स्पर्श करना।

अंगपरक *वि.* (तत्.) अंगों से संबंधित, अंग का।

अंगपाक *पुं.* (तत्.) अंगों का पकना या सड़ना।

अंग-प्रत्यंग *पुं.* (तत्.) शरीर का प्रत्येक अंग, शरीर के सभी छोटे-बड़े अंग।

अंगभंग *पुं.* (तत्.) किसी अंग का खंडित होना या टूट जाना।

अंगभंगिमा *स्त्री.* (तत्.) (स्त्री की) मनमोहक शारीरिक चेष्टाएँ अथवा अदाएँ, अंगों को झुकाकर, लहराकर, तिरछा मोड़ कर की गई अदाएँ।

अंगभंगी *स्त्री.* (तत्.) वि. विकलांग, अंगभंगिमा।

अंगभाव *पुं.* (तत्.) 1. नृत्य या संगीत में शरीर के नेत्र आदि विभिन्न अंगों से मनोभावों को प्रकट करने की क्रिया 2. अंग-भंगिमा।

अंग-भू *वि.* (तत्.) 1. शरीर या अंग से उत्पन्न 2. पुत्र 3. कामदेव।

अंगभूत *वि.* (तत्.) 1. जो शरीर अथवा अंग से उत्पन्न हुआ हो 2. अंगस्वरूप बना हुआ 3. जो किसी के भीतर उसके अंग के रूप में हो, अंतर्गत 4. पुत्र या पुत्री 5. कामदेव।

अंगमर्दक *वि.* (तत्.) 1. शरीर दबाने वाला 2. शरीर की मालिश करने वाला।

अंगमर्दन *पुं.* (तत्.) 1. अंग मलने या दबाने का कार्य 2. मालिश।

अंगमारी *स्त्री.* (तत्.) शा.अर्थ 1. अंग के मारे जाने की स्थिति 2. एक पादप रोग जिसमें पादप-ऊतकों में तेजी से विवर्णता होती जाती है और वे मुरझाकर झड़ जाते हैं।

अंगमेजयत्व *पुं.* (तत्.) योग. अंगों का काँपना (एजयत) या विचलित होना (ध्यान में मन न लगने से उत्पन्न स्थिति)।

अंगरंग *पुं.* (तत्.) अंग की छटा, शोभा।

अंगरक्षक *पुं.* (तत्.) किसी विशिष्ट या महत्वपूर्ण व्यक्ति की रक्षा के लिए साथ रहने वाला पुलिसकर्मी या सेना का जवान।

अंगरक्षणी *स्त्री.* (तत्.) शरीर की रक्षा के लिए निर्मित लोहे की पोशाक, कवच।

अंगरक्षा *स्त्री.* (तत्.) शरीर की रक्षा।

अंगरक्षी *पुं.* (तत्.) 1. अंगरक्षक 2. कवच, अंगरखा।

अंगरखा *पुं.* (तत्.) पुरुषों का घुटनों या उससे भी नीचे तक का लंबा तथा ढीला-ढाला पहनावा, इसमें प्राय: बटन के बदले बाँधने के बंद लगे होते हैं।

अंगराज *पुं.* (तत्.) 1. अंगदेश का राजा 2. दशरथ मित्र लोमपाद 3. अंगदेश का राजा कर्ण 4. अंगों में शोभित होना।

अंगरूह *पुं.* (तत्.) 1. बाल, केश, रोम 2. ऊन।

अंगरेज *पुं.* (देश.) अंग्रेज, मूलत: इग्लैंड का निवासी।

अंगरेजी *स्त्री.* (देश.) अंग्रेजी भाषा एवं लिपि, अंग्रेजों से संबंधित।

अंगलतिका *स्त्री.* (तत्.) शरीर रूपी लता।

अंगलेप *पुं.* (तत्.) शरीर पर लगाने का सुगंधित पदार्थ, लेपना।

अंगवना *स.क्रि.* (तत्.) 1. गले लगाना, आलिंगन करना 2. ग्रहण या स्वीकृत करना 3. सहन करना।

अंगवस्त्र *पुं.* (तत्.) 1. पहनावे का वस्त्र, पोशाक 2. पंडित-वर्ग द्वारा दाहिने कंधे पर रखा जाने वाला तह किया हुआ दुपट्टा-नुमा वस्त्र 3. किसी व्यक्ति को सम्मानार्थ ओढ़ाया जाने वाला शाल, दुपट्टा आदि।

अंग विकृति *स्त्री.* (तत्.) 1. शरीर के किसी अंग में होने वाला विकार, दोष, रोग 2. मिर्गी, अपस्मार रोग।

अंगविक्षेप *पुं.* (तत्.) 1. अंगों का हिलाना-डुलाना 2. गायन-नृत्य आदि में हाथ-पैर आदि हिलाना 3. हाव-भाव दिखाना, अंग मटकाना 4. नृत्य 5. कलाबाजी।

अंग विज्ञान *पुं.* (तत्.) जीव विज्ञान की वह शाखा जिसमें प्राणियों और वनस्पतियों के अंगों का अध्ययन किया जाता है।

अंगविद् *पुं.* (तत्.) सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता। palmist

अंगविद्या *स्त्री.* (तत्.) शरीर के विभिन्न अंगों की बनावट तथा उनके आकार-प्रकार, चिह्नों आदि को देखकर जीवन की घटनाओं को बताने की विद्या।

अंगविन्यास *पुं.* (तत्.) नृत्य वि. 1. शरीर के अंगों की विभिन्न मुद्राओं से प्रेम, क्रोध आदि की अभिव्यक्ति 2. हाव-भाव का प्रदर्शन।

अंगवैकृत *पुं.* (तत्.) 1. अंगों की चेष्टा से मन का भाव बताना 2. सिर हिलाकर स्वीकृति देने की क्रिया 3. आँख मारना 4. शरीर, अंग का विकृत रूप।

अंग वैगुण्य *पुं.* (तत्.) किसी कार्य के सभी अंगों की पूर्णता न होना, अंगहीनता।

अंगशुद्धि *स्त्री.* (तत्.) 1. शरीर के अंगों की सफाई 2. मंत्रोच्चार द्वारा शरीर शुद्धि।

अंगशैथिल्य *पुं.* (तत्.) शरीर की शिथिलता, ढीलापन, शारीरिक कमजोरी।

अंगशोष *पुं.* (तत्.) एक रोग जिसमें बच्चे के शरीर के अंग सूखने लगते है, सूखा नामक रोग rickets

अंगसंग *पुं.* (तत्.) 1. मैथुन 2. संभोग 3. शरीर साथ रहने की क्रिया।

अंग संचालन *पुं.* (तत्.) अंग को संचालन करने अथवा हिलाने-डुलाने की क्रिया।

अंगसंधि *स्त्री.* (तत्.) 1. दो अंगों का परस्पर जोड़ 2. संध्यंग।

अंग संस्कार *पुं.* (तत्.) शारीरिक शृंगार, अगों का शृंगार।

अंग संस्थान *पुं.* (तत्.) 1. अंगों का समूह शरीर 2. रूप- आकृति 3. अंगों की संरचना, ढांचा 4. प्राणियों और वनस्पतियों के अंगों की आकृति का विज्ञान, आकृति विज्ञान।

अंग संहति *स्त्री.* (तत्.) 1. सुंदर अंग संस्थान, सुंदर अंग विन्यास 2. अंग-प्रत्यंग की श्रेष्ठता 3. अंग-प्रत्यंग की रचना या सौष्ठव 4. शारीरिक दृढ़ता 5. शरीर की सुंदर सजावट।

अंगसख्य *पुं.* (तत्.) सघन मित्रता, गहरी या गाढ़ी मित्रता।

अंग सिहरी *स्त्री.* (तद्.) [सं.-अंग+देश.सिहरना], अंगों में सिहरन, कंपकंपी।

अंगसेवक *पुं.* (तत्.) 1. शारीरिक सेवा करनेवाला, सेवक, दास, नौकर 2. अंगरक्षक।

अंग सौष्ठव *पुं.* (तत्.) 1. अंगों की सुडौलता, कमनीयता 2. शारीरिक सुंदरता।

अंगहानि *स्त्री.* (तत्.) 1. शरीर के किसी अंग की हानि 2. किसी अंग की विकृति, दोष, कमजोरी 3. शरीर के किसी अंग का अपना काम ठीक से न करना। 4. किसी कार्य हेतु किसी अंग विशेष का न होना।

अंगहार *पुं.* (तत्.) 1. अंगों से हाव-भाव का प्रदर्शन 2. अंग मटकाना, चाल-ढाल 3. नृत्य।

अंगहीन *वि.* (तत्.) 1. किसी अंग से हीन, विकलांग 2. पूजा-अध्ययन आदि के किसी अंग से रहित 3. पूजनादि से रहित, साधन रहित 4. कामदेव, अनंग।

अंगांगिभाव *पुं.* (तत्.) 1. शरीर और उसके किसी अंग के संबंध का भाव 2. किसी वस्तु के अंश का संपूर्ण वस्तु के साथ संबंध का भाव।

अंगाधिप *पुं.* (तत्.) 1. अंग देश (वर्तमान बिहार के भागलपुर और उसके समीप का क्षेत्र) का राजा अंगराज 2. कर्ण (अंगनरेश) 3. जन्म लग्न का स्वामी ग्रह, लग्नेश (ज्योति)।

अंगाधीश *पुं.* (तत्.) अंगाधिप।

अंगार/अंगारा *पुं.* (तद्.) (बहु. अंगारे) जलता हुआ कोयला या लकड़ी का टुकड़ा मुहा. अंगारे उगलना- क्रोध में जली-कटी बातें कहना, बहुत जोश में भरकर भाषण देना; अंगारे बरसना- अत्यंत गर्मी होना, दैवीय आपत्ति आना; अंगारों पर पैर रखना- जान-बूझकर जोखिम का काम करना; अंगारों पर लोटना- क्रोध या ईर्ष्या से जलना; अंगार होना- क्रोध में मुख का लाल हो जाना, आग-बबूला होना।

अंगारक *पुं.* (तत्.) 1. अंगारा 2. मंगल ग्रह 3. चिनगारी 4. औष. भृंगराज 5. रसा. कार्बन तत्व।

अंगारक चतुर्थी *स्त्री.* (तत्.) किसी भी मास के मंगलवार को पड़ने वाली चतुर्थी तिथि, अक्षय चतुर्थी।

अंगारधानिका *स्त्री.* अंगार रखने का बर्तन, अंगीठी, अग्निपात्र।

अंगारधानी *स्त्री.* (तत्.) अंगीठी, अग्निपात्र।

अंगारपुष्प *पुं.* (तत्.) हिंगेट, इंगुदी का वृक्ष जिसके फूल अंगारों की तरह लाल होते है।

अंगारमणि *पुं.* (तत्.) एक रत्न मूंगा, विद्रुम।

अंगारा *पुं.* (तत्.) लाल अंगारे जैसा, क्रोध से लाल अंगारा आँखें।

अंगारिका *स्त्री.* (तत्.) 1. अंगीठी 2. किंशुक, पलाश की कली।

अंगारित *वि.* (तत्.) 1. जलाया हुआ 2. भूना हुआ 3. अधजला 4. किंशुक, पलाश की कली।

अंगारिशी *स्त्री.* (तत्.) 1. अंगीठी 2. अस्त हुए सूर्य की लाली से रंगी हुई दिशा।

अंगारी *स्त्री.* (तत्.) 1. छोटा अंगारा, चिनगारी 2. अंगारों या कंडों पर तैयार की जाने वाली बाटी 3. सूर्य आदि द्वारा तपाया हुआ, तप्त 4. बोरसी।

अंगिका *स्त्री.* (तत्.) 1. चोली, कंचुकी 2. अंग देश (आधुनिक बिहार के भागलपुर के आसपास के क्षेत्र) की बोलचाल की भाषा।

अंगिक्रिया *स्त्री.* *(अंग-क्रिया)* (तत्.) शरीर में उबटन आदि मलना।

अंगिया *स्त्री.* (तत्.) चोली, कंचुकी, अंगिका।

अंगिरा *पुं.* (तत्.) 1. देवगुरु बृहस्पति 2. साठ संवत्सरों में से छठे नंबर का संवत्सर।

अंगी *वि.* (तत्.) 1. अंगों वाला 2. मुख्य, प्रधान 3. शरीरधारी, देहयुक्त।

अंगीकरण *पुं.* (तत्.) स्वीकार करने अर्थात् अपना लेने की क्रिया या भाव।

अंगीकार *पुं.* (तत्.) अपना अंग बना लेने, स्वीकार/मंजूर करने, ग्रहण करने की क्रिया या भाव।

अंगीकृत *वि.* (तत्.) अंगीकार या स्वीकार किया हुआ।

अंगीकृति *स्त्री.* (तत्.) अंगीकरण, अपनाना, स्वीकार।

अंगीठा *पुं.* (तत्.) दे. आग रखने का बर्तन, बड़ी अंगीठी, बड़ी बोरसी।

अंगीठी *स्त्री.* (तद्.) आग रखने का बर्तन, बोरसी।

अंगीभाव *पुं.* (तत्.) काव्य. किसी काव्य, नाटक का प्रधान भाव।

अंगीय *वि.* (तत्.) 1. अंग संबंधी 2. अंग देश संबंधी।

अंगीरस *पुं.* (तत्.) काव्य. काव्य या नाटक का प्रधान रस।

अंगुरत *पुं.* (*फा.)* उंगली।

अंगुश्ताना *पुं.* (फा.) 1. सिलाई करते समय उंगली की रक्षा के लिए उंगली में पहनी जाने वाली लोहे या पीतल की टोपी, छल्ला 2. तीर चलाते समय हाथ के अंगूठे की रक्षा के लिए अंगूठे में पहनी जाने वाली एक विशेष प्रकार की अंगूठी।

अंगुल *स्त्री.* (तत्.) 1. उँगली, अंगुली 2. उंगली की मोटाई जो नाप की इकाई मानी जाती थी।

अंगुलांक *पुं.* (तत्.) उंगली का निशान।

अंगुलास्थि *स्त्री.* (तत्.) हाथ या पैर की उंगली की हड्डी।

अंगुलि *स्त्री.* (तत्.) 1. दे. 'अंगुल' 2. हाथी की सूँड का अग्रभाग।

अंगुलि-चिह्न *पुं.* (तत्.) किसी वस्तु पर पाए जाने वाले उँगलियों के निशान (जो अपराधी की पहचान में सहायक होते हैं)।

अंगुलि-छाप *स्त्री.* (तत्.) उंगली या उंगलियों के निशान या छाप finger print

अंगुलिछाप विशेषज्ञ *पुं.* (तत्.) किसी फौजदारी मामले में उँगलियों के निशान की पहचान करने वाला प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति Finger print expert

अंगुलित्र *पुं.* (तत्.) 1. वाण चलाते समय पहनने का चमड़े का दस्ताना 2. दस्ताना संगी. अंगुलित्रण/मिजराब से बजाया जाने वाला वाद्य (सितार आदि)।

अंगुलित्रण *पुं.* (तत्.) अंगुलित्र, दस्ताना।

अंगुलित्राण *पुं.* (तत्.) दे. अंगुलित्र।

अंगुलि-निर्देश *पुं.* (तत्.) 1. किसी व्यक्ति, वस्तु की ओर उंगली उठाकर संकेत करना 2. बदनामी, कलंक, लांछन।

अंगुलि-पंचक *पुं.* (तत्.) हाथ या पैर की पांचों उंगलियों का समूह, पांच उंगलियाँ।

अंगुलि-पर्व *पुं.* (तत्.) उंगली का पोर, उंगली की गाँठों के बीच का भाग।

अंगुलि-प्रतिमुद्रण *स्त्री.* (तत्.) विधि. अंगुलियों की छाप।

अंगुलिमुद्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. नाम खुदी हुई अंगूठी 2. मुद्रा (मुहर) का काम देने वाली अंगूठी 3. उंगली की छाप।

अंगुलि-मुद्रिका *स्त्री.* (तत्.) अंगुलिमुद्रा का समानार्थी।

अंगुलि-संकेत-विद्या *पुं.* (तत्.) उंगलियों के संकेतों से बातचीत करने की कला जिसका प्रयोग गूंगे-बहरे लोग करते हैं।

अंगुलि-संदेश *पुं.* (तत्.) उंगलियों के इशारे से विचारों या भावों की अभिव्यक्ति, उंगली की मुद्रा या चुटकी से दिया गया कोई संकेत।

अंगुल्याकार *वि.* (तत्.) उंगली के आकार का।

अंगुल्यादेश *पुं.* (तत्.) उंगली के संकेत से दी गई आज्ञा, इशारा, संकेत।

अंगुल्यास्थी *स्त्री.* (तत्.) 1. हाथ या पैर की उंगली की हड्डी 2. अंगुलास्थि।

अंगुष्ठ *पुं.* (तत्.) दे. अँगूठा।

अंगुष्ठ अभिसूचक *पुं.* (तत्.) डायरी अथवा शब्दकोश में संबंधित सामग्री, सूचना या शब्द को खोजने में सहायक चिह्नक। thumbindex

अंगूठा *पुं.* (तत्.) दोनों हाथों और पैरों में छोर पर स्थित, आकार में सबसे मोटी उँगली जिसमें (अन्य उँगलियों की तुलना में) केवल दो पोर होते हैं मुहा. किसी का अंगूठा चूसना- दीनता प्रदर्शित करना; अंगूठा दिखाना- कुछ देने से साफ इनकार करना।

अंगूठा-चिह्न *पुं.* (तत्.) अँगूठे के अग्रभाग की रेखाओं पर स्याही लगाकर ली गई उसकी छाप जो उस व्यक्ति की पहचान के काम आती है,

निरक्षर व्यक्ति से हस्ताक्षर के स्थान पर अँगूठे का चिह्न लगवाया जाता है पर्या. अँगूठा निशान।

अंगूठा-छाप *वि.* (तत्.) 1. अपनी पहचान-हेतु अँगूठे का निशान लगाने वाला निरक्षर व्यक्ति 2. बिना पढ़ालिखा व्यक्ति।

अंगूठी *स्त्री.* (तत्.) 1. उंगली में पहनने का धातु का आभूषण, मुंदरी मुहा. अंगूठी का नगीना- अत्यंत गुणी व्यक्ति 2. *स्त्री.* (तद्.) चारों ओर घेरा डालने की प्रक्रिया।

अंगूर *पुं.* (फा.) एक प्रसिद्ध सरस फल जो गुच्छों में लगता है और पकने पर खाने एवं शराब बनाने के काम भी आता है, इसे सुखाकर इसकी दाख (द्राक्षा) बनती है मुहा. अंगूर खट्टे होना- प्राप्त न हो सकने वाली वस्तु को तुच्छ बतलाना।

अंगूरिया *वि.* (फा.) अंगूरी, अंगूर वाली।

अंगूरी *वि.* (फा.) 1. अंगूर से बनी हुई शराब 2. अंगूरों के रंग (हल्का हरे रंग) का।

अंगेश *पुं.* (तत्.) 1. अंगदेश का राजा 2. अंगदेश का राजा और महारथी।

अंगोच्छेदन *पुं.* (तत्.) शरीर के किसी अंग को शल्यक्रिया से काटकर निकाल देना, अंग विच्छेदन।

अंगोछा *पुं.* (तद्.) देह पोंछने का कपड़ा, गमछा।

अंग्रेज *पुं.* (देश.) 1. इंग्लैंड का निवासी 2. (सामान्य बोलचाल में) गोरी चमड़ीवाला कोई भी विदेशी व्यक्ति।

अंग्रेजी *वि.* (देश.) 1. अंग्रेजों की भाषा 2. इंग्लैंड या उसके वासियों से संबद्ध; अंग्रेजों का जैसे- अंग्रेजी हुकूमत।

अंघड़ा *पुं.* (तत्.) कांसे का छल्ला जिसे गरीब ग्रामीण पैर के अंगूठे में पहनते हैं।

अंघस *पुं.* (तत्.) 1. पाप 2. अपराध।

अंचना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. आचमन करना, पीना 2. नष्ट कर देना (लाक्ष.) 3. भोजन के बाद हाथ-मुंह धोना।

अंचल *पुं.* (तत्.) 1. साड़ी या ओढ़नी का वह भाग जो सीधी साड़ी पहनने पर वक्ष को ढके रहता है और उल्टी साड़ी पहनने पर पीछे लटकता रहता है 2. किसी प्रदेश का कोई विशिष्ट क्षेत्र, जैसे पूर्वांचल, दक्षिणांचल zone

अंचित *वि.* (तत्.) 1. पूजित, आराधित 2. गूँथा हुआ 3. व्यवस्थित 4. सिला हुआ 5. कुटिल 6. घुंघराले बालों वाला 7. सुंदर।

अंछ *स्त्री.* (देश.) आँख।

अंछया *पुं.* (देश.)1. लोभ, लालच 2. कामना, वासना।

अंछर *पुं.* (देश.)1. अक्षर 2. टोना-टोटका या उसका मंत्र।

अंज *पुं.* (देश.) कमल।

अंजन *पुं.* (तत्.) 1. काजल, सुरमा 2. स्याही।

अंजनकेश *पुं.* (तत्.) दीपक, दीया।

अंजन केशी *स्त्री.* (तत्.) 1. नख नामक सुगंधित द्रव्य 2. काले बालों वाली स्त्री।

अंजनशलाका *स्त्री.* (तत्.) अंजन या सुरमा लगाने की सलाई।

अंजनहारी *स्त्री.* (तत्.) 1. आंख की पलक के किनारे की फुंसी, बिलनी, गुहाजनी, अंजना 2. एक प्रकार का उड़ने वाला कीड़ा, कुम्हारी, भृंगी।

अंजना *स्त्री.* (तत्.) 1. केशरी नामक एक वानर की स्त्री का नाम जिसके गर्भ से हनुमान उत्पन्न हुए थे 2. बिलनी, गुहांजनी 3. दो रंग की छिपकली 4. एक प्रकार का मोटाधान।

अंजनी *स्त्री.* (तत्.) 1. चंदन लगाए हुए स्त्री 2. कुटकी 3. हनुमान की माता।

अंजर-पंजर *पुं.* (अनु+तत्.) 1. हड्डियों का ढाँचा, ठठरी 2. किसी वस्तु के ढांचे के विभिन्न हिस्से तथा उनका जोड़ मुहा. अंजर-पंजर ढीला होना-

शरीर का शिथिल पड़ना, शरीर के जोड़-जोड़ का हिल जाना।

अंजरि *स्त्री.* (तद्.) दे. अंजलि।

अंजलि *स्त्री.* (तत्.) दोनों हाथों को मिलाकर बनाया गया दोने जैसा आकार जिसमें कोई वस्तु भरकर ली या दी जाती है।

अंजलिबद्ध *वि.* (तत्.) हाथ जोड़े हुए।

अंजली *स्त्री.* (तत्.) दे. अंजलि।

अंजवाना *स.क्रि.* (तद्.) अंजन लगवाना, सुरमा लगवाना।

अंजाना *स.क्रि.* (देश.) अंजवाना, अंजन लगवाना।

अंजाम *पुं.* (फा.) परिणाम, नतीजा, फल।

अंजित *वि.* (तत्.) जिसमें अंजन लगा हो, अंजनसार, आंजा हुआ।

अंजीर *पुं.* (फा. इंजीर) एक वृक्ष और उसका मीठा दानेदार फल, जिसकी गिनती मेवों में होती है।

अंजुमन *पुं.* (फा.) 1. गोष्ठी, सभा 2. संस्था।

अंजुल *स्त्री.* (तत्.) दे. अंजलि।

अंट-शंट *वि.* (देश) 1. बेसिर-पैर का 2. निरर्थक, अनर्गल 3. मनमर्जी का 4. उचित-अनुचित का ध्यान रखे बिना 5. क्रमहीन, उद्‌देश्यहीन, अव्यवस्थित 6. उटपटांग, अनाप-शनाप।

अंटा *पुं.* (तत्.) 1. बड़ी गोली, गोला 2. सूत अथवा रेशम का लच्छा 3. बड़ी कौड़ी 4. एक खेल जिसे हाथीदाँत की गोलियों से खेला जाता है billiard

अंटाचित *वि.* (तद्.) पीठ के बल, सीधा, पीठ जमीन पर किए हुए।

अंटार्कटिक *पुं.* (अं.) 1. भूमंडल के (गोलक के) धुर दक्षिण में स्थित महाद्‌वीप 2. *वि.* (अं.) भूवि. सदा बर्फ से ढके रहने वाले दक्षिणी ध्रुव प्रदेश अंटार्कटिक से संबंधित।

अंटार्कटिक वृत्त *पुं.* (तत्.) भूवि. दक्षिणी गोलार्ध में विषवत् वृत्त के समांतर 60°-33° पर खिंची काल्पनिक अक्षांश रेखा जो अंटार्कटिक क्षेत्र की सूचक है।

अंटियाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. उंगलियों के बीच में छिपाना, हथेली में छिपाना 2. चारों उंगलियों में लपेटकर डोरे की पिंडी बनाना 3. घास, खर का पतली लकड़ियों का गट्ठा बांधना 4. टेंट में रखना 5. गायब करना, हजम करना।

अंटी *स्त्री.* (तद्.) कमर में बँधी धोती के किनारे की लपेट जिसमें पुराने जमाने में सुरक्षा के लिए सिक्के रखे/लपेटे जाते थे मुहा. अंटी मारना- धोखा देकर किसी का माल उड़ा लेना, जुआ खेलते समय दूसरों को चकमा देने के लिए कौड़ी को उँगलियों के बीच छिपा लेना।

अंडकटाह *पुं.* (तत्.) ब्रह्मांड, विश्व।

अंडकोश/अंडकोष *पुं.* (तत्.) 1. अंडकोश, वृषण, फोता 2. ब्रह्मांड, विश्व 3. सीमा, हद 4. फल या बीज का आवरण।

अंडज *वि.* (तत्.) अंडे से उत्पन्न तु. उद्‌भिज, स्वेदज दे. अंडा।

अंडद्‌वार *पुं.* (तत्.) जीव. अंडे की झिल्ली का सूक्ष्मछिद्र जिससे होकर शुक्राणु अंडे में प्रवेश करता है।

अंडप *पुं.* (तत्.) दे. स्त्रीकेसर, गर्भकेशर carpel

अंडपीत *पुं.* (तत्.) अंडे के भीतर का पीला पदार्थ, अंडे की जर्दी yolk

अंड-बंड *पुं.* (अनु.) 1. बेसिर-पैर की बात, असंबद्ध, अनर्गल बात, प्रलाप 2. गाली-गलौज 3. ऊटपटांग, अनुचित, अनुपयुक्त 4. अंट-शंट।

अंडमानी *वि.* (तद्). 1. अंडमान द्‌वीप से संबंधित, अंडमान का 2. अंडमान में बोली जाने वाली भाषाओं का सामूहिक नाम 3. अंडमान का निवासी।

अंडवर्धन *पुं.* (तत्.) 1. अंडवृद्धि 2. जीव वि. मछली, मुर्गी आदि के अंडे हैचरी (अंड-उत्पत्तिशाला) में पैदा करने का कार्य।

अंडवाहिनी *स्त्री.* (तत्.) जीव. अंडाणु को अंडाशय से गर्भाशय तक ले जाने वाली नलिका।

अंडवृद्धि *स्त्री.* (तत्.) 1. अंडकोश का बढ़ जाना 2. अंडकोश बढ़ने का रोग।

अंडा *पुं.* (तद्.) वह गोल पिंड जिसमें से पक्षी, साँप, मछली आदि के बच्चे निकलते हैं, मुहा. अंडे सेना- पक्षियों का अपने अंडों पर बैठ कर उन्हें गर्मी पहुँचाना, जिससे वे फूटें और बच्चा बाहर निकल आए, घर में बिना मतलब बैठे रहना; अंडे देना- व्यक्ति का घर में बिना मतलब बैठे रहना।

अंडाकार *वि.* (तत्.) अंडे के आकार, शक्ल का।

अंडाकृति *वि.* (तत्.) अंडे की शक्ल का।

अंडाणु *पुं.* (तत्.) जीव. मादा जनन कोशिका ।

अंडाभ *वि.*(तत्.) अंडे के सामान आभा/कांतिवाला।

अंडाशय *पुं.* (तत्.) जीव. वह अंग जो अंडाणुओं का उत्पादन करता है।

अंडी *स्त्री.* (तत्.) 1. एरंड, अरंडी का वृक्ष अथवा फल या बीज 2. एक प्रकार का मोटा रेशम 3. उक्त रेशम की बनी हुई चादर आदि।

अंडुआ *पुं.* (देश.) 1. बिना बधिया किया हुआ पशु 2. बड़े अंडकोश वाला जिनके भार से वह चल न सके 3. सुस्त व्यक्ति।

अंडे-बच्चे *पुं.* (देश.) 1. अंडा 2. छोटे बच्चे।

अंडोत्सर्ग *पुं.* (तत्.) जीव. परिपक्व अंडाणुओं के अंडाशय से बाहर निकलने की प्रक्रिया।

अंत: *अव्य.* (अव्य.) 1. अंदर का, भीतरी, अंदरूनी 2. बीच का।

अंत:कथा *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी वृहत् कथा के अंतर्गत उल्लिखित कोई लघु कथा 2. बीच-बीच में प्रसंगवश आई एक या एकाधिक कथाएँ।

अंत:करण *पुं.* (तत्.) भीतरी इंद्रिय जिसके चार विभाग- मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार- माने जाते हैं।

अंत:कलह *पुं.* (तत्.) आपसी लड़ाई, गृह कलह, गृह-युद्ध, पारस्परिक वैमनस्य।

अंत:कला *स्त्री.* (तत्.) आयु. हृदय और लसीका वाहिकाओं का अस्तर, अंत:स्तर।

अंत:कालीन *वि.* (तत्.) दो कालों या घटनाओं के बीच का समय, अस्थायी समय।

अंत:कुटिल *वि.* (तत्.)मन का कुटिल/कपटी/छली।

अंत:केंद्र *पुं.* (तत्.) गणि.ज्या. त्रिभुज के अंत:वृत्त का केंद्र।

अंत:केंद्रिक *वि.* (तत्.) जिसका केंद्र भीतर की ओर हो भाषा. संज्ञा पदबंध का आंतरिक विस्तार जो सीधे क्रिया से संबंधित नहीं होता।

अंत:कोण *पुं.* (तत्.) गणि., ज्यामि. 1. भीतरी कोण, कोना 2. त्रिभुज या बहुभुज के अंदर का कोई कोण।

अंत:क्रय *पुं.* (तत्.) नीलामी में बहुत कम बोली लगने पर वस्तु के स्वामी द्वारा उसकी स्वयं खरीद।

अंत:क्रिया *स्त्री.* (तत्.) 1. अंदर ही अंदर होने वाली क्रिया 2. एक ही वर्ग के सदस्यों के मध्य चली या चल रही विचारों घटनाओं आदि की श्रृंखला, अन्योन्य क्रिया।

अंत:क्षेत्र *पुं.* (तत्.) भीतरी भाग।

अंत:क्षेप *पुं.* (तत्.) बीच में पड़ना (सकारात्मक भाव सूचक) किसी काम की निरंतरता को किसी परिवर्तन या स्पष्टीकरण हेतु बीच में रोकने की सकारात्मक क्रिया तु. हस्तक्षेप, (जो प्राय: सकारात्मक नहीं होता)।

अंत:क्षेपण *पुं.* (तत्.) भीतर की ओर फेंकना injection

अंत:खंड *पुं.* (तत्.) 1. अंदर का खंड/भाग/भीतरी खंड 2. दो सीमाओं के बीच का खंड, भाग।

अंत:ज्योति *स्त्री.* (तत्.) हृदय में रहने वाला प्रकाश, मन:प्रकाश, अंतरज्योति, अंतर-ज्ञान।

अंत:पट *पुं.* (तत्.) 1. पर्दा 2. विवाह मंडप मे वर और कन्या के बीच लगाया जाने वाला कपड़े का पर्दा 3. उक्त पर्दा लगाने की वैवाहिक रीति 4. दर्शन. अंतर-दृष्टि, अंतरपट।

अंत:पटी *स्त्री.* (तत्.) 1. वह चित्रपट जिस पर पर्वत, नदी आदि का दृश्य अंकित हो 2. रंगमंच का परदा।

अंत:पत्र *पुं.* (तत्.) पुस्तक के पन्नों के बीच में, संशोधन, परिवर्तन आदि के लिए लगाया गया कोश पन्ना। inter leaf

अंत:पत्रण *पुं.* (तत्.) पुस्तक आदि के पन्नों के बीच लगाने की क्रिया या भाव।

अंत:पत्रित *वि.* (तत्.) जिसके पन्नों के बीच में कोरे पन्ने लगाए गये हों (अंत: पत्रित पुस्तक)।

अंत:परजीवी *पुं.* (तत्.) चिकि.शा. परजीवी जो पोषक के अंदर रहता है।

अंत:परायण *वि.* (तत्.) 1. अंत: करण के निर्णय को मानने वाला 2. सत, असत् के विवेक वाला 3. ईमानदार।

अंत:परिधान *पुं.* (तत्.) सबसे अंदर पहनने का वस्त्र जैसे- कच्छा, बनियान आदि। under garment

अंत:पर्वतीय *वि.* (तत्.) भूविज्ञान जो किसी पर्वत के भीतर स्थित, क्रियाशील हो।

अंत:पवित्र *वि* (तत्.) पवित्र मन वाला।

अंत:पातित *वि.* (तत्.) 1. बीच में बढ़ाया गया 2. जो बीच में आ गया हो।

अंत:पाशित *वि.* (तत्.) परस्पर गुंथे हुए, एक दूसरे से योजित।

अंत:पुर *पुं* (तत्.)महल का भीतरी भाग, विशेषत: जिसमें रानियाँ रहती थीं, जनानख़ाना, हरम। harem

अंत:पूयता *स्त्री.* (तत्.) आयु. किसी अंग के अंदर मवाद की उपस्थिति।

अंत:पेशी *वि.* (तत्.) मांस-पेशी से संबंधित, मांस पेशी में किया जाने वाला या होने वाला।

अंत:प्रकृति *स्त्री.* (तत्.) 1. मूल स्वभाव 2. हृदय,मन 3. प्राचीन राजनीतिशास्त्र में राजा का मंत्रिमंडल।

अंत:प्रकोष्ठिका *स्त्री.* (तत्.) आयु. अग्रबाहु की दो अस्थियों में से अंदर की अस्थि। ulna, cubital

अंत:प्रज्ञ *वि.* (तत्.) अंत:प्रज्ञा से युक्त व्यक्ति, आत्मज्ञानी।

अंत:प्रज्ञा *स्त्री.* (तत्.) आत्म ज्ञान, अंतर्मुखी होने पर जीवात्मा को उपलब्ध ज्ञान।

अंत:प्रज्ञात्मक *वि.* (तत्.) अन्त: प्रज्ञा संबंधी, अंत: प्रज्ञा का, आंतरिक प्रतिभा, बुद्धिमता संबंधी, विवेकशीलता संबंधी।

अंत:प्रज्ञावाद *पुं.* (तत्.) दर्शन यह मत कि समस्त तत्वज्ञान या अच्छाई बुराई का ज्ञान अन्त: प्रज्ञा से ही संभव है।

अंत:प्रतिरोध *पुं.* (तत्.) मनो. अचेतन को चेतन में आने से यथासंभव रोकने वाली शक्ति का सामूहिक नाम।

अंत:प्रवाह *पुं.* (तत्.) 1. भीतर ही भीतर प्रवाहित होने वाली धारा 2. इजी. विद्युत-धारा का प्रवाह होना 3. मन में एक के बाद एक विचार धाराओं का आना।

अंत:प्रवेश *पुं.* (तत्.) 1. प्रवेश 2. भीतरी भाग में प्रवेश, अंदर प्रवेश 3. नाटक के मंच पर पात्रों का प्रवेश।

अंत:प्रादेशिक *वि.* (तत्.)1. प्रदेश के भीतर होने वाला 2. प्रदेश के भीतरी भाग से संबंधित 3. प्रदेश की भीतरी बातों से संबंधित।

अंत:प्रेरणा *पुं.* (तत्.) कोई कार्य करने के लिए मन में स्वयं उत्पन्न प्रबल प्रवृत्ति या आवेग।

अंत:फोन *पुं.* (तत्.) [अंत: (तत्.)+फोन अंग्रे.] किसी संस्थान अथवा भवन आदि के विभिन्न कमरों में परस्पर संपर्क के लिए दूरभाष की व्यवस्था। intercom

अंत:राष्ट्रीय *वि.* (तत्.) 1. राष्ट्र या देश की भीतरी स्थितियों से संबद्ध 2. अंतरराष्ट्रीय।

अंत:शक्ति *स्त्री.* (तत्.) आंतरिक बल, मानसिक शक्ति।

अंत:शरीर *पुं.* (तत्.) सूक्ष्म शरीर, लिंग शरीर।

अंत:शल्य *पुं.* (तत्.) 1. शरीर के अंदर धंसा हुआ शल्य 2. मन में चुभने, खटकने वाली बात, घटना आदि।

अंत:शाल *वि.* (तत्.) 1. घर पर रहने वाला 2. घर का 3. घर में भीतर के भाग का 4. घर या कमरे के भीतर होने वाला।

अंत:शिरा *वि.* (तत्.) 1. शिरा में, नस में 2. शिरा में किया जाने वाला।

अंत:शुद्धि *स्त्री.* (तत्.) अंतकरण की शुद्धि, मानसिक शुद्धि, चित्त शुद्धि, निर्मलहृदयता।

अंत:शून्य *वि.* (तत्.) 1. भीतर से शून्य, निस्सार, सारहीन 2. निरुत्साहित।

अंत:शैल-समूही *वि.* (तत्.) भूवि. किसी शैल के भीतर स्थित।

अंत:श्वसन *पुं.* (तत्.) भीतर साँस खींचना। inhalation

अंत:संचार *पुं.* (तत्.) दो स्थानों, संस्थाओं, देशों आदि में परस्पर संपर्क, वार्तालाप करने अथवा समाचार, संदेश देने की क्रिया, भाव।

अंत:संबंध *पुं.* (तत्.) दो या दो से अधिक व्यक्तियों या पक्षों में आंतरिक या अन्यान्य संबंध।

अंत:सत्व *वि* (तत्.) जिसके अंदर शक्ति हो, आंतरिक ताकत, अंत: स्फूर्ति।

अंत:सर *पुं.* (तत्.) हृदयरूपी सरोवर।

अंत:सलिला *स्त्री.* (तत्.) ऐसी नदी जो (पृथ्वी के) अंदर-ही-अंदर बहती हो जैसे- सरस्वती नदी (जिसका प्रयाग में गंगा-यमुना से संगम होना माना गया हैं।

अंत:सांस्कृतिक *वि.* (तत्.) 1. दो या अधिक संस्कृतियों के पारस्परिक संबंधों का 2. दो या अधिक संस्कृतियों का (तुलनात्मक अध्ययन)।

अंत:साक्षी *स्त्री.* (तत्.) अंत:करण की साक्षी, दिल की गवाही।

अंत:साक्ष्य *पुं.* (तत्.) 1. आंतरिक प्रमाण, किसी ग्रंथ में निहित प्रमाण 2. किसी मामले में उसी से प्राप्त साक्ष्य।

अंत:सागरी *वि.* (तत्.) समुद्र के अंदर चलने वाला जैसे- पोत, नौका आदि।

अंत:सागरीय *वि.* (तत्.) समुद्र के अंदर के भागों से संबंधित, समुद्र के अंदर का, जैसे अंत:सागरीय भूविज्ञान।

अंत:सार *पुं.* (तत्.) 1. भीतरी तत्व 2. अंतरात्मा, अंतकरण *वि.* भारी, दृढ़, बलवान।

अंत:सुख *वि.* (तत्.) आंतरिक सुख, मानसिक सुख।

अंत:सौंदर्य *पुं.* (तत्.) 1. भीतर का सौंदर्य 2. मन की शुद्धता और पवित्रता 3. बीच में जोड़ना, शामिल करना।

अंत:स्थ *वि.* (तत्.) 1. भीतर या बीच में स्थित, बीच का *पुं.* वे वर्ण जिसकी गिनती स्वरों और व्यंजनों के बीच में होती हो, नागरी वर्णमाला में य, र, ल और व वर्ण तु. अंतस्य।

अंत:स्थापित *वि.* (तत्.) जिसका अंत:स्थापन किया गया हो या हुआ हो।

अंत:स्थित *वि.* (तत्.) 1. अंत:करण में स्थित, मन में होने वाला 2. अंदर का, आंतरिक, अंतस्थ:, भीतरी 3. बीच में स्थित।

अंत:स्फटिक *पुं.* (तत्.) हृदय रूपी स्फटिक, स्वच्छ या निर्मल मन।

अंत:स्यंद *पुं.* (तत्.) भूविज्ञान अन्त: स्यंदन द्वारा निक्षेपित पदार्थ।

अंत:स्यंदन *पुं.* (तत्.) भूविज्ञान 1. शैल कणों या छिद्रों के बीच किसी द्रव या गैस का पारगमन 2. अंदर ही अंदर टपकना, चूना।

अंत:स्राव *पुं.* (तत्.) जीव. आंतरिक रिसाव, स्रवण, अंत:स्राविकी।

अंत:स्रावविद् *पुं.* जीव. अंत:स्रावी ग्रंथियों और उनके स्रावों के विज्ञान का विद्वान, अंत: स्रावविज्ञानी।

अंत:स्राविकी *स्त्री.* (तत्.) जीवविज्ञान की वह शाखा जिसमें अंत:स्रावी ग्रंथियों का अध्ययन होता है।

अंत:स्रावी *वि.* (तत्.) प्राणियों की वाहिनीहीन ग्रंथियाँ जो स्रावों को सीधे रुधिर में डालती हैं, अंत:स्राव करने वाली।

अंत:स्वर *पुं.* (तत्.) अंत:करण का स्वर, मन की आवाज।

अंत *पुं.* (तत्.) 1.अस्तित्व न रह जाना, अस्तित्व का अभाव 2.मृत्यु 3.विनाश 4.परिणाम 5. बाद वाला भाग, अंतिम भाग मुहा. अंत कर देना-समाप्त कर देना, मार डालना।

अंतक *वि.* (तत्.) 1. अंत कर देनेवाला, समाप्त कर देनेवाला, नाशक 2. सन्निपात ज्वर का एक भेद *पुं.* 1. यमराज 2. काल 3. मृत्यु 4. शिव।

अंतकथा *स्त्री.* (तत्.) दे. अंत:कथा।

अंतकर *वि.* (तत्.) 1. अंत करने वाला, नाशक, मारक, संहारक 2. यमराज।

अंतकरण *पुं.* (तत्.) समाप्त करना, समाप्त किया जाना।

अंतकर्ता *पुं.* (तत्.) नाशकर्ता, मारक, संहारक।

अंतकर्म *पुं.* (तत्.) अंत्येष्टि, अंतिम संस्कार।

अंतकलोक *पुं.* (तत्.) यमलोक।

अंतकारक *वि.* (तत्.) अंतकर, अंत करने वाला, संहारकर्ता।

अंतकारी *वि.* (तत्.) 1. समाप्त करने वाला 2. नाश, वध करने वाला, नाशक, मारक, संहारक।

अंतकाल *पुं.* (तत्.) 1. अंतिम समय, मृत्यु का समय, मृत्यु की घड़ी, मृत्युकाल, मरणवेला 2. समाप्ति का समय 3. नाश का समय।

अंतकोशकीय *वि.* (तत्.) कोशिकाओं के बीच में स्थित (संयोजी ऊतक या द्रव)।

अंत-कोशिक *वि.* (तत्.) चिकि. 1. कोशिकाओं में पाया जाने वाला 2. कोशिकाओं के अंदर पाया जाने वाला। intracellular

अंतक्रिया *स्त्री.* (तत्.) शव का अंतिम संस्कार, अंत्येष्टि।

अंतग *वि.* (तत्.) 1. अंत, सीमा, छोर तक जाने वाला, अंत तक पहुँचा हुआ 2. किसी विषय से भली भाँति परिचित, पारंगत, पारगामी।

अंतगति *स्त्री.* (तत्.) 1. मृत्यु, मरण, मौत 2. नष्ट होने वाला, नाशवान।

अंतगामी *वि.* (तत्.) नष्ट होने वाला, नाशवान, अंतगति।

अंत चित्त *पुं.* (तत्.) अंत:करण, हृदय, मन।

अंतच्छद *पुं.* (तत्.) ढांकने की वस्तु, आच्छादन, आवरण।

अंतछद *वि.* (तत्.) 1. आंतरिक आवरण, भीतर का आवरण 2. छत के अंदर का भाग।

अंतत: *क्रि.वि.* (तत्.) 1. अंत में 2. आख़िरकार।

अंततोगत्वा *क्रि.वि.* (तत्.) अंतत:, आंखिरकार।

अंतरंग *वि.* (तत्.) 1. भीतरी 2. अतिप्रिय अथवा घनिष्ठ *पुं.* भीतरी अंग।

अंतरंगता *स्त्री.* (तत्.) किसी व्यक्ति वस्तु या परिवेश के प्रति अत्यधिक भावात्मक लगाव या संबंध। घनिष्ठता, अति सामीप्य।

अंतरंग रोगी *पुं.* (तत्.) आयु. वह रोगी जिसकी चिकित्सा उसे अस्पताल के वार्ड में भरती करने के बाद प्रांरभ की जाए विलो. बाह्य या बहिरंग रोगी।

अंतर *अव्य.* (तत्.) बीचों बीच, मध्य में, अंदर।

अंतर *पुं.* (तत्.) 1. भीतरी भाग से संबद्ध, अंदर का, भीतरी 2. दो इकाइयों या पक्षों के बीच होने वाला 3. दूरी 4. भेद, फर्क, भिन्नता।

अंतरंग रोगी *पुं.* (तत्.) आयु. वह रोगी जिसकी चिकित्सा उसे अस्पताल के वार्ड में भरती करने के बाद प्रारंभ की जाए विलो. बाह्य या बहिरंग रोगी।

अंतरक *पुं.* (तत्.) विधि. 1. वह व्यक्ति जो अपने संपत्ति-संबंधी हक या हित अन्य किसी को विधिवत् सौंप दे 2. (दूरीसूचक) अंतर करने वाला। transferor

अंतरकोशीय *वि.* (तत्.) दो या अधिक कोशों के बीच का अथवा उनसे संबंध रखने वाला।

अंतरक्रिया *स्त्री.* (तत्.) 1. एकाधिक लोगों, वस्तुओं या घटनाओं के बीच होने वाली और उन्हें प्रभावित करने वाली क्रिया, अन्यान्य क्रिया 2. एक दूसरे के बीच जारी विचार-विमर्श।

अंतरगति *स्त्री.* (तत्.) 1. चित्त की वृत्ति 2. भावना, मनोदशा।

अंतरगमन *पुं.* (तत्.) 1. किसी जनसमूह का अंदर की ओर प्रवेश 2. जलराशि का अंदर आना।

अंतरगुहा *पुं.* (तत्.) हृदय, मन, अंत करण।

अंतरग्नि स्त्री. (तत्.) 1. अंदर की आग, हृदय की अग्नि 2. जठराग्नि, उदर में स्थित अग्नि जो आहार को पचाने का कार्य करती है 3. चिंता, संताप *वि.* अग्नि में स्थित, अग्निस्थ।

अंतरचक्र *पुं.* (तत्.) योग. शरीर के अंदर सुषुम्ना नाड़ी के मध्य में स्थित अति सूक्ष्म पद्‌माकार छह चक्र (षड्चक्र-मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्धि एवं आज्ञा)।

अंतरजातीय *वि.* (तत्.) दो या अधिक जातियों के बीच होने वाला जैसे- अंतरजातीय विवाह।

अंतरण *पुं.* (तत्.) एक स्थान या स्रोत से दूसरे स्थान या स्रोत तक पहुँचना, जैसे- हस्तांतरण, (एक के हाथ से दूसरे के हाथ में पहुँचना) स्थानांतरण (एक स्थान से दूसरे पर परिवर्तन), खातांतरण (एक खाते से दूसरे खाते में धन भेजना या पहुँचना), भाषांतरण (किसी कथ्य का एक भाषा से दूसरी भाषा में परिवर्तन या प्रस्तुति) 2. स्वामित्व का परिवर्तन। transfer

अंतरण आय *स्त्री.* (तत्.) अंतरण से प्राप्त आर्थिक लाभ अर्थ. उत्पादन सामग्री का उपयोग किसी अन्य कार्य में करने से प्राप्त होने वाली आय transfer earning

अंतरणीय *वि.* (तत्.) अंतरण के योग्य (ऐसी वस्तु) जिसका हक या कब्जा किसी अन्य को दिया जा सके। transferable

अंतरणीय हित *पुं.* (तत्.) किसी वस्तु आदि में ऐसा निहित लाभ, जिसे किसी अन्य को सौंपा जा सके।

अंतरतम *वि.* (तत्.) 1. अत्यंत निकट, निकटतम, घनिष्ठतम 2. आंतरिक 3. सदृशतम, सर्वाधिक समान *पुं.* 1. किसी वस्तु का सबसे भीतर का भाग 2. मन की गहनता, गहराई 3. हृदय, मन 4. हृदय का काल्पनिक आंतरिक भाग 5. विशुद्ध अंत:करण।

अंतरत: *अव्य.* (तत्.) 1. आंतरिक रूप में, 2. के अंदर *क्रि.वि.* 1. मध्य से, बीच से 2. अंदर से, भीतर से।

अंतरदर्शी *वि.* (तत्.) अन्य व्यक्ति के मन के भाव जानने में सक्षम 2. आत्मनिरीक्षण करने वाला, अपने गुण-दोष देखने वाला।

अंतरदिशा *स्त्री.* (तत्.) सामान्य रूप से ज्ञात चार दिशाओं में से साथ वाली दो दिशाओं के बीच का कोण, विदिशा।

अंतरदेशीय *वि.* (तत्.) दो या दो से अधिक देशों के बीच या उनसे संबंध रखने वाला पर्या. अंतरराष्ट्रीय। International

अंतरदेशीय व्यापार *पुं.* (तत्.) वाणि. दो या दो से अधिक देशों के बीच होने वाला व्यापार।

अंतरधिदेश *पुं.* (तत्.) अंत:करण से प्राप्त होने वाला निर्देश, अंदर की आवाज।

अंतरधौति *स्त्री.* (तत्.) हठयोग की क्रिया, जिससे शरीर के आंतरिक अवयवों (उदर, आंत एवं मलमार्ग) की शुद्धि की जाती है।

अंतरपणन *पुं.* (तत्.) वाणि. दो वायदा बाजारों में किसी विदेशी मुद्रा की कीमतों के अंतर से लाभ उठाने की विधि।

अंतरपतित वि. (तत्.) जो किसी कार्य के बीच में पड़ जाए या हो जाए।

अंतरपुरुष *पुं.* (तत्.) 1. शरीर के अंदर स्थित आत्मा 2. हृदय में विराजमान परमात्मा 3. (मनुष्य के कर्मों का साक्षी) अंत:करण।

अंतरप्रादेशिक *वि.* (तत्.) 1. दो अथवा अधिक प्रदेशों के बीच होने वाला 2. दो अथवा अधिक प्रदेशों के एक दूसरे के साथ व्यवहार से संबंधित।

अंतरभाषा *स्त्री.* (तत्.) भाषा. किसी खास समय में अध्येता द्वारा सीखी जा रही लक्ष्य भाषा का स्वरूप, जैसे- जैसे-जैसे भाषा का अर्जन होता जाता है, अंतरभाषा भी बदलती जाती है।

अंतरराज्य *वि.* (तत्.) दो या दो से अधिक राज्यों के बीच।

अंतरराज्य परिषद् *स्त्री.* (तत्.) कई राज्यों के हितों की रक्षा और उनके पारस्परिक विवादों पर विचार निर्णय के लिए विधिवत् निर्मित परिषद्।

अंतरराष्ट्रीय *वि.* (तत्.) 1. दो या दो से अधिक राष्ट्रों से संबंधित, विभिन्न राष्ट्रों के बीच होने वाला 2. जो अधिकतर राष्ट्रों द्वारा मान्य हो।

अंतरराष्ट्रीय अभिसमय *पुं.* (तत्.) विधि. दो या दो से अधिक राष्ट्रों के बीच संपन्न (प्राय: अल्पकालिक) और अनौपचारिक करार अथवा समझौता।

अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र *पुं.* (तत्.) अर्थशास्त्र की वह शाखा जिसमें अंतरराष्ट्रीय व्यापार संबंधी विषयों का सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक अध्ययन किया जाता है।

अंतरराष्ट्रीयकरण *पुं.* (तत्.) 1. दो या अधिक राष्ट्रों द्वारा पारस्परिक संबंध स्थापित कर किसी विषय को अंतरराष्ट्रीय बना देना 2. अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के नियंत्रण में कर देना जैसे- कश्मीर समस्या का। internationalisation

अंतरराष्ट्रीयता *स्त्री.* (तत्.) अनेक राष्ट्रों के बीच पारस्परिक सहयोग और मैत्री बनाए रखने की भावना या स्थिति, राष्ट्रीयता से ऊपर उठकर, सार्वदेशिकता।

अंतरराष्ट्रीयतावाद *पुं.* (तत्.) राज. अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए, अनेक राष्ट्रो के बीच सहयोग और मैत्री बनाए रखने का सिद्धांत।

अंतरराष्ट्रीय निवेश *पुं.* (तत्.) अर्थ. किसी एक राष्ट्र द्वारा अन्य राष्ट्रों, व्यवसायों एवं उद्योगों में पूँजी लगाना। International Investment

अंतरराष्ट्रीय न्यायालय *पुं.* (तत्.) संयुक्त राष्ट्रसंघ का एक महत्वपूर्ण निकाय जिसका मुख्य कार्य राष्ट्र संघ के संगठनों को विधिक परामर्श देना और सदस्य राष्ट्रों के बीच के कानूनी विवादों को सुलझाना है, इसका मुख्य कार्यालय नीदरलैंड में है।

अंतरराष्ट्रीय मंच *पुं.* (तत्.) विभिन्न देशों के सामूहिक विचार-विमर्श का स्थान या सुविधा केंद्र।

अंतरराष्ट्रीय विधि *स्त्री.* (तत्.) वह विधि जिसको आधार बनाकर राष्ट्रों के आपसी संबंधों और विवादों का निर्धारण और निपटान किया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार *पुं.* (तत्.) अर्थ. एक राष्ट्र के व्यापारियों का अन्य राष्ट्र के साथ वस्तुओं एवं सेवाओं का पारस्परिक लेनदेन। international trade

अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन *पुं.* (तत्.) संयुक्त राष्ट्रसंघ का वह अंग जो विश्व की श्रम संबंधी

समस्याओं पर विचार निर्णय करता है और श्रमिक हितों का ध्यान रखता है।

अंतरराष्ट्रीय स्वन वर्णमाला *स्त्री.* (तत्.) भाषा. स्वनविज्ञान के अध्ययन में किसी भी भाषा के उच्चरित रूप के वैज्ञानिक लिप्यंकन के लिए तैयार की गई विशिष्ट वर्णमाला, जिसमें सभी भाषाओं के स्वनों के उच्चारण के लिए लिपि-चिह्न निर्धारित किए गए हैं।

अंतरवर्ती *पुं.* (तत्.) 1. आंतरिक भाग में विद्‌यमान, भीतर निवास करने वाला, भीतर रहने वाला 2. अंदर व्याप्त, अंतर्व्यापी 3. एक अवस्था से दूसरी अवस्था में परिवर्तन (संक्रांति)। eminent transitional

अंतर विश्वविद्‌यालयी *वि.* (तत्.) दो या अधिक विश्वविद्‌यालयों के बीच में होने वाला जैसे- अंतरविश्वविद्‌यालय प्रतियोगिता।

अंतरशायी *वि.* (तत्.) 1. भीतर वाला, अंदर स्थित, अंदर सोने वाला 2. चित्त में विद्‌यमान।

अंतरसंचारी *पुं.* (तत्.) 1. अंदर गमन करने वाला 2. आंतरिक भाग में भ्रमण करने वाला 3. अंदर ही अंदर परिवर्तनशील 4. अंदर प्रवेश करने वाला, अंदर आने वाला *पुं.* साहि./काव्य स्थायीभाव को रस-दशा तक पहुँचाने के लिए तत्पर तथा स्थायी भाव के अंतर्गत आने जाने वाले भाव, संचार भाव, व्यभिचारी भाव।

अंतरस्थ *वि.* (तत्.) 1. भीतर स्थित, अंदर निवास करने वाला 2. मध्य में, बीच में रहने वाला 3. हृदय में स्थित, हृदय में वास करने वाला।

अंतरहित (अंत+रहित) *वि.* (तत्.) 1. जिसका अंत या छोर न मिल सके, अंतविहीन 2. जो कभी भी नष्ट न हो सके, अनंत।

अंतरा *पुं.* (तत्.) 1. किसी गीत के पहले (टेक) को छोड़ कर अन्य पद 2. बीच का अंतर, अंतराल 3. अंतर अव्य. 1. के बीच में, निकट 2. (के) बिना।

अंतराकषेरुका चक्र *पुं.* (तत्.) आयु. तांपास्थि (fibro cartilage) की गद्‌दीनुमा संरचना जो कषेरुकाओं के बीच में स्थित होती है।। Invertibral disc

अंतराकाश *पुं.* (तत्.) दो वस्तुओं के बीच का खाली स्थान, भूवि. दो पदार्थों के बीच कोई अवकाश या रिक्त स्थान।

अंतरागार *पुं.* (तत्.) किसी राजमहल या भवन का आंतरिक/भीतरी भाग।

अंतराज *वि.* 1. अंदर के रहस्य को जानने वाला, दूसरों के हृदय की बात जानने वाला, दूसरे के मन को पढ़ लेने वाला 2. गूढ़तम बातों को जानने वाला, रहस्यविद्।

अंतरातारकीय *वि.* (तत्.) तारों या नक्षत्रों के बीच का (स्थान) interstellar

अंतरात्मा *पुं.* (तत्.) 1. अंतःकरण, मन 2. प्राण, जीवात्मा।

अंतरादान *पुं.* (तत्.) पारस्परिक आदान-प्रदान, आपसी लेन-देन।

अंतराधातुक *पुं.* (तत्.) मिश्र धातु से बना, जिसमें दो या अधिक धातुएँ किसी निश्चित अनुपात में हों। intermetallic

अंतराधारित वि. (तत्.) स्वयं पर आश्रित, आधार उसी के अंदर विद्‌यमान हो, कहीं बाहर नहीं।

अंतरानुभागीय *वि.* (तत्.) किसी कार्यालय के अनुभागों (उपविभागों) के बीच का जैसे- अंतरानुभागीय परामर्श, अंतरानुभागीय संचालन रजिस्टर आदि। intersectional

अंतरापत्या *स्त्री.* (तत्.) गर्भवती। गर्भ में अपत्य (संतान) को धारण करने वाली।

अंतरापर्वतीय *वि.* (तत्.) पहाड़ों के बीच में विद्‌यमान।

अंतरापर्शुक *वि.* (तत्र.) आयु. पसलियों के मध्य स्थित जैसे- अंतरापर्शुक धमनी।

अंतराभिमुख *वि.* (तत्.) जो स्वयं की ओर अर्थात् स्वयं की मानसिक स्थिति के प्रति स्वयं ही अभिमुख हो तथा बाह्य-जगत से पराङ्मुख हो। introvert

अंतराभिवचन *पुं.* (तत्.) विधि. कर्जदार द्‌वारा अपनाई गई युक्ति जिसके आधार पर अनेक

दावेदार आपस में वादरत होकर निर्णय करते है- वास्तविक ऋणदाता कौन है। interpleading

अंतराभिवाची वाद *पुं.* (तत्.) विधि. अंतराभिवचन हेतु कार्रवाई करने वाले व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत वाद। suit interpleader

अंतराय *पुं.* (तत्.) 1. विघ्न, अड़चन 2. ओट 3. मन की एकाग्रता में बाधक बात *वि.* बाधक प्रयो. महादेवी का आदेश है कि उनके किसी कार्य में तुम लोग अंतराय न बनो -बाणभट्टकी आत्मकथा।

अंतरायित सरिता *स्त्री.* (तत्.) भूवि. वह नदी जो बर्ष भर कुछ स्थानों में बहती हुई दिखाई देती है, कुछ में नहीं।

अंतराल *पुं.* (तत्.) 1. दो रेखाओं या पदार्थों के बीच की दूरी 2. दो घटनाओं या अवधियों के बीच का समय।

अंतरालन *पुं.* (तत्.) 1. अंतराल करना, बीच का स्थान छोड़ना 2. शब्दों तथा पंक्तियों आदि में परस्पर अंतर रखना 3. मुद्रण आदि में शब्दों एवं पक्तियों आदि में अपेक्षित अंतर रखना। spacing

अंतरावकाश *पुं.* (तत्.) 1. मध्यवर्ती (बीच का) स्थान 2. दो स्थानों के बीच की दूरी 3. दो घटनाओं की बीच का काल। interregnum

अंतरावधि *स्त्री./पुं.* (तत्.) दो प्रमुख घटनाओं के बीच का समय।

अंतरा-सस्यन *पुं.* (तत्.) किसी (खड़ी) फसल के पौधों की पंक्तियों के बीच दूसरी फसल उगाना। inter cropping

अंतरा हिमनदीय वि. भू.वि. दो हिमनदीय युगों के मध्यवर्ती युग से संबंधित, (दो हिमनदीय युगों के बीच का समय, अपेक्षाकृत कुछ गर्म होता है)।

अंतरिक्ष *पुं.* (तत्.) 1. धरती और आकाश के मध्य का शून्य स्थान, आकाश 2. पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से परे का क्षेत्र।

अंतरिक्ष किरणें *स्त्री.* (तत्.) उच्च ऊर्जा वाले कणों का समूह जो बाहय अंतरिक्ष से पृथ्वी की ओर आता है और पृथ्वी के वायुमंडल में विद्यमान कणों से टकरा कर द्वितीयक कणों को पैदा करता है। cosmic rays

अंतरिक्षचर *वि.* (तत्.) आकाश में विचरण करने वाला, आसमान में उड़ने वाला *पुं.* पक्षी, चिड़िया, खग, विहंगम।

अंतरिक्षचारी दे. अंतरिक्षचर।

अंतरिक्षजल *पुं.* (तत्.) हिम, ओस।

अंतरिक्ष धूलि *स्त्री.* (तत्र.) अंतरिक्ष में स्थित आकाशीय पिंडों के टूटकर बिखरने के कारण धूल जैसे सूक्ष्म कणों के बादल जो तारों के प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने से रोकते हैं।

अंतरिक्ष भौतिकी *स्त्री.*(तत्.)भौति. अंतरिक्षविज्ञान की वह शाखा जो मूलत: अंतरिक्ष में स्थित समस्त द्रव्यों एवं उससे घटनाओं एवं कार्यों का अध्ययन प्रस्तुत करती हैं। इस अध्ययन में सम्मिलित अन्य विषय है सौर ऊर्जा, सौर पवन, आकाशीय पिंडों के चुंबकीय क्षेत्र एवं आयन मंडल, ध्रुवीय ज्योतियों, अंतरिक्ष किरणें और उनसे होने वाले विकिरण इत्यादि।

अंतरिक्षयात्री *पुं.* (तत्.) अंतरिक्ष यान में बैठकर अंतरिक्ष की यात्रा करने वाला। astronaut

अंतरिक्षयान *पुं.* (तत्.) वह यान जो पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के बाहर के क्षेत्रों की अर्थात् अन्य पिंडों या ग्रहों की यात्रा करता है। spaceship

अंतरिक्षयानिकी *स्त्री.* (तत्.) 1. अंतरिक्ष में रॉकेट, उपग्रह तथा प्रक्षेपास्त्र आदि के प्रेषण, स्थापन तथा उनके संचालन की विशिष्ट कला 2. भौतिकी की वह शाखा जिसमें अंतरिक्ष यान एवं अंतरिक्ष में स्थित खगोलीय पिंडों से संबंधित शोधकार्यों के अध्ययन हेतु रॉकेट, उपग्रह आदि के प्रेषण, संचालन संबंधी यांत्रिक एवं तकनीकी क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

अंतरिक्ष-संचरण *पुं.* (तत्.) अंतरिक्ष में यात्रा करने वालों का अपने यान से बाहर आकर अंतरिक्ष में स्वतंत्र विचरण करना। spacewalk

अंतरिक्ष स्टेशन *पुं.* (तत्.+अं.) अंतरिक्ष में स्थापित ऐसे उपग्रह जहाँ से आंतरिक संबंधी अध्ययन हेतु अनुसंधान कार्यक्रम चलाए जाते हैं। space station

अंतरित *वि.* (तत्.) 1. जिसका अंतरण हुआ हो, स्थानांतरित, हस्तांतरित आदि 2. भीतर किया हुआ, भीतर रखा हुआ 3. गोपित या गुप्त 4. बाधित 5. लुप्त।

अंतरित आस्ति *स्त्री.* (तत्.) वह भूमि-भवन आदि जिसका स्वामित्व किसी अन्य को दे दिया गया हो। transferred assets

अंतरिती *पुं.* (तत्.) 1. वह व्यक्ति या संस्था जिसे संपत्ति आदि अंतरित की जाए 2. वह व्यक्ति जिसका स्थानांतरण किया जाता है।

अंतरिम *वि.* (तत्.) 1. बीच के समय के लिए होने वाला, अंत:कालीन 2. कामचलाऊ 3. अस्थायी। interim

अंतरिया *पुं.* (तत्.) एक रात-दिन के अंतर पर आनेवाला ज्वर।

अंतरीप *पुं.* (तत्.) समुद्र या बड़े जलाशय की तरफ बाहर निकला हुआ पृथ्वी का वह सँकरा भाग जो तीन तरफ से जल से घिरा हो, जैसे- कुमारी अंतरीप।

अंतरीय *पुं.* (तत्.) मुख्य वस्त्र के नीचे पहना जानेवाला वस्त्र, अंदर पहनने का वस्त्र, अंत:वस्त्र जैसे- बनियान, चोली आदि तु. अधोवस्त्र।

अंतरैक्य *पुं.* (तत्.) आंतरिक एकता, भावनात्मक एकता, हृदयों की एकता।

अंतरौटा *पुं.* (तद्.) साड़ी के नीचे पहनने का कपड़ा, साड़ी का अस्तर।

अंतर्गत *वि.* (तत्.) 1. किसी क्षेत्र, सूची, अधिकार आदि में शामिल 2. भीतर आया हुआ, समाया हुआ, अंतर्भूत।

अंतर्गति *स्त्री* (तत्.) 1. अंदर की गति 2. मानसिक वृत्ति, हृदय की भावना।

अंतर्गमन *पुं.* (तत्.) 1. आंतरिक आकाश, हृदयाकाश 2. हृदय में स्थित परमात्मा।

अंतर्गिरि *पुं.* (तत्.) 1. पर्वत का आंतरिक (भीतरी) भाग 2. हिमालय पर्वत शृंखला का सर्वाधिक उन्नत भाग जैसे- गौरीशंकर, एवरेस्ट, केदारनाथ, बदरीनाथ, त्रिशूल, धवलगिरि आदि।

अंतर्गुट *पुं.* (तत्.) किसी बड़े दल या संगठन के भीतर समान रुचि वाले लोगों का समूह।

अंतर्गूढ़ *पुं.* (तत्.) 1. घर का आंतरिक (भीतरी) भाग 2. तहखाना।

अंतर्गेह *पुं.* (तद्.) (देश.) अंतर्गृह।

अंतर्ग्रथन *पुं.* (तत्.) 1. एक दूसरे से पूरी तरह मिल जाना, बँध जाना, गुँथ जाना 2. एक दूसरे में फंस जाना या उलझ जाना जैसे-केशों का अंतर्ग्रथन, बाँधना अथवा गूँथना। interlock

अंतर्ग्रस्त *वि.* (तत्.) (व्यक्ति) जो किसी झंझट में फँस गया या फँसाया गया हो।

अंतर्ग्रह *पुं.* (तत्.) खगो. पृथ्वी के भ्रमणमार्ग के अंदर की ओर सूर्य के समीपस्थ बुध तथा शुक्र ग्रह। inferior planet

अंतर्ग्रहण *पुं.* (तत्.) शा.अर्थ. बीच में ही ग्रहण कर लेना या छीन लेना खेल. फुटबाल-हॉकी में साथी खिलाड़ी को गेंद पहुँचाने से पहले ही विपक्षी द्वारा उसे अपने काबू में कर लेना 2. प्राणि. शरीर द्वारा भोजन ग्रहण करने की प्रक्रिया।

अंतर्घट *पुं.* (तत्.) 1. हृदय रूपी घड़ा 2. मन, हृदय टि. प्राय: काव्य में इस शब्द का प्रयोग होता है।

अंतर्जंघिका *स्त्री.* (तत्.) आयु. पैर की दो अस्थियों में से बड़ी वाली अस्थि। tibia

अंतर्जगत *पुं.* (तत्.) 1. आंतरिक जगत् मन का काल्पनिक संसार 2. हृदय, मन विलो. बहिर्जगत्।

अंतर्जनन *पुं.* (तत्.) मादा शरीर के भीतर होने वाला भ्रूणीय परिवर्धन। endotoky

अंतर्जात *वि.* (तत्.) 1. आंतरिक रूप से उत्पन्न 2. जन्मजात या सहजात।

अंतर्जातीय *वि.* (तत्.) 1. किसी जाति के भीतर ही स्थित या प्रचलित 2. अंतरजातीय दो भिन्न जातियों के बीच या उनसे संबंधित जैसे अंतरजातीय विवाह।

अंतर्जानु *वि.* (तत्.) हाथों को घुटनों के बीच छिपाए हुए।

अंतर्ज्ञान *पुं.* (तत्.) स्वयं स्फुरित ज्ञान टि. प्राय: ऋषि-मुनि, चिंतक वर्ग को यह अनुभूति होती रही है, ऐसी मान्यता है।

अंतर्ज्ञानवाद *पुं.* (तत्.) एक दार्शनिक मत जिसके अनुसार-परम सत्य, ईश्वरीय अंतर्ज्ञान से ही संभव है पुस्तकीय ज्ञान से नहीं।

अंतर्ज्योति *स्त्री.* (तत्.) आंतरिक (भीतर का) प्रकाश, आत्म प्रकाश, आध्यात्मिक आलोक।

अंतर्ज्वाला *स्त्री.* (तत्.) 1. आंतरिक अग्नि, भीतर की आग 2. हृदयाग्नि 3. चिंता 4. संताप।

अंतर्दंत्य *वि.* (तत्.) भाषा.वि./व्याक. ऊपर तथा नीचे के दाँतों के बीच जीभ रखकर रगड़ खाती हुई उच्चरित ध्वनि जैसे- शुद्ध अंगरेजी उच्चारण में 'थ' की ध्वनि, जो नागरी 'ध' से भिन्न है और 'स' के निकट है।

अंतर्दशा *स्त्री.* (तत्.) आंतरिक स्थिति, मानसिक स्थिति, मनोवृत्ति, मूड 2. ज्यो. फलित ज्योतिष के अनुसार किसी ग्रह की महादशा काल में उसी ग्रह या अन्य ग्रहों का लघु दशाकाल।

अंतर्दशाह [अंत:+दश+अह] *पुं.* (तत्.) भारतीय मान्यतानुसार मृत व्यक्ति की सद्‌गति के निमित्त मृत्यु के उपरांत दस दिनों तक अशौच अवस्था में किए जाने वाले नैमित्तिक कर्म।

अंतर्दहन *पुं.* (तत्.) ईंधन का दहन इंजन के भीतर ही भीतर होना। internal combustion

अंतर्दाह *पुं.* (तत्.) हृदय की जलन, मानसिक कष्ट।

अंतर्दृग *पुं.* (तत्र.) अंदर स्थित नेत्र कमल, अंतर्दृष्टि।

अंतर्दृष्टि *स्त्री.* (तत्.) 1. गुप्त या अदृष्ट तथ्यों, रहस्यों की जानकारी करा देनेवाली 2. भावी परिघटना को पहले से जान लेने वाली दृष्टि, भविष्य दृष्टि 3. बाह्य प्रपंच की अपेक्षा आतंरिक विषयोन्मुखता।

अंतर्देशीय *वि.* (तत्.) 1. एक ही देश के भीतरी हिस्सों से संबंध रखने वाला, जैसे- अंतर्देशीय पत्र inland letter 2. किसी देश के अंतर्गत स्थित या प्रचलित।

अंतर्द्वंद्व *पुं.* (तत्.) 1. दो या अधिक विरोधी विचारों का मन ही मन होने वाला पारस्परिक संघर्ष, मानसिक तनाव, मानसिक संघर्ष, आंतरिक युद्ध।

अंतर्द्वार *पुं.* (तत्.) 1. घर के अंदर स्थित गुप्त द्वार, चोर दरवाजा 2. हृदय का द्वार।

अंतर्धान *वि.* (तत्.) जो आँखों से ओझल हो जाए, अदृश्य, गायब, दृश्य वस्तु की ऐसी जगह या स्थिति जहाँ वह दिखाई न दे।

अंतर्धारा *स्त्री.* (तत्.) 1. ऐसी जल धारा जो भूमि के नीचे बहती हो 2. किसी जाति या समाज में अंदर ही अंदर पनप रही विचारधारा।

अंतर्ध्यान *पुं.* (तत्.) अंतर्धान शब्द के लिए भूलवश प्रयुक्त शब्द।

अंतर्ध्वंस *पुं.* (तत्.) 1. आंतरिक क्षति, मानसिक संघर्ष (तनाव) के परिणाम-स्वरूप होने वाली क्षति 2. जानबूझकर या की जाने वाली क्षति।

अंतर्नभ *पुं.* (तत्.) आंतरिक आकाश, हृदयाकाश, हृदय।

अंतर्नयन *पुं.* (तत्.) 1. आंतरिक, अंदर की आँखें, मन की आँखें, ज्ञान-चक्षु, दिव्यचक्षु 2. अंतर्दृष्टि।

अंतर्नर *पुं.* (तत्) मनो. 1. नारी के अचेतन मन में उपस्थित उसकी पुरुष-पक्ष की परिकल्पना 2. स्त्री के स्वप्न में प्रकट होने वाले पुरुष का प्रतीक-स्वरूप जिससे वह ज्ञान होता है कि उसे कैसा पुरुष अभीष्ट है।

अंतर्नाद *पुं.* (तत्.) अंत:करण की आवाज।

अंतर्नारी *स्त्री.* (तत्.) मनो. 1. पुरुष के अचेतन मन में विद्यमान उसकी नारी पक्ष की परिकल्पना 2. पुरुष के अंतर्मन में स्थित उसका नारी पक्ष अर्थात् कोमलता संवेदन-शीलता आदि गुण जो प्राय: कवियों में अधिक देखने को मिलते हैं 3. पुरुष के स्वप्नों की नारी का प्रतीक स्वरूप।

अंतर्निक्षिप्त *पुं.* (तत्.) व्या. बीच में रखा गया, जोड़ा गया, वाक्य के बीच में जोड़ा गया कोई प्रासंगिक पद, वाक्यांश अथवा शब्द समूह जो व्याकरण की दृष्टि से अनावश्यक होते हुए भी अवांतर रूप से प्रयुक्त हुआ हो।

अंतर्निनाद *पुं.* (तत्.) ध्यानस्थ योगियों को सुषुम्ना नाड़ी के जाग्रत होने पर सुनाई पड़ने वाली हृदयाकाश एव ब्रंह्मांड में व्याप्त विशेष ध्वनि, अनाहत नाद।

अंतर्निरीक्षण *पुं.* (तत्.) अपने अंदर झाँक कर अपने दोष देखने का प्रयत्न, आत्मनिरीक्षण, अंतर्दशन, आत्मविश्लेषण। introspection

अंतर्निलय *पुं.* (तत्.) 1. अंत: करण, हृदयागार, मानसपटल।

अंतर्निविष्ट *वि.* (तत्.) 1. दो अथवा अधिक वस्तुओं, स्थितियों, कालों आदि के बीच में जोड़ा गया, लाया गया या आया हुआ जैसे- फरवरी मास में प्रत्येक चौथे बर्ष में एक दिन अंतर्निविष्ट किया जाता है 2. अंतर्निष्ठ, अंदर स्थित, अंदर व्याप्त, अंतर्निहित, समाविष्ट।

अंतर्निविष्टि *स्त्री.* (तत्.) दो या अधिक वस्तुओं के बीच में जुड़ना, आना या पड़ना, प्रक्षेप, अंतनिविष्ट होने का भाव।

अंतर्निवेशन *पुं.* (तत्.) (देश.) अंतर्निविष्टि।

अंतर्निष्ठ *वि.* (तत्.) अंदर समाया हुआ, अंदर व्याप्त, अंतर्निहित।

अंतर्निहित *वि.* (तत्.) 1. किसी के अंदर स्थित 2. सम्मिलित, समाविष्ट, शामिल।

अंतर्निहित वर्ण *पुं.* (तत्.) कला. दो रंगों का मिश्रण करने पर जो रंग ज्यादा उभर कर नहीं आता, दबा रह जाता है वह रंग, हल्का रंग।

अंतर्निहित स्वर *पुं.* (तत्.) शब्द के किसी अक्षर का वह स्वर जो उच्चरित नहीं होता, लेकिन लिखित रूप में उसकी उपस्थिति मान्य होती है जैसे- 'काल', 'मान' आदि शब्दों का अंतिम स्वर अ (जो उच्चरित नहीं होता)।

अंतर्नोद *पुं.* (तत्.) मनो. 1. जीव को सक्रियता की ओर अग्रसर करने वाली आंतरिक प्रवृत्ति, आंतरिक उत्साह 2. शारीरिक शक्तियों की गतिशील अवस्था।

अंतर्पट *पुं.* (तत्.) (सं.अंत:पट) 1. पर्दा 2. महाराष्ट्रादि कुछ प्रदेशों में विवाह-मंडप में वर एवं कन्या के बीच लगाया जाने वाला श्वेत वर्ण के वस्त्र से निर्मित पर्दा 2. उक्त प्रकार का पर्दा लगाने की वैवाहिक रीति का नाम।

अंतर्बोध *पुं.* (तत्.) आत्मज्ञान।

अंतर्भाव *पुं.* (तत्.) 1. मन में उद्भूत भाव जो अभी व्यक्त न हुआ हो। 2. एक का दूसरे या अन्य में समा जाना।

अंतर्भावना *स्त्री.* (तत्.) 1. हृदय की भावना, अंदर की भावना 2. मानसिक चिंतन 3. मनो. चित्त की एक विशेष प्रवृत्ति, किसी वस्तु विशेष को देखकर अथवा उसके विषय में सुनकर उसके साथ अंत: संवेदित होना।

अंतर्भावित *वि.* (तत्.) 1. अंदर अनुभव किया हुआ, अंतर्भूत, अंदर समाविष्ट 2. गुप्त रखा गया छिपाया हुआ, अंदर अनुभव किया हुआ परंतु अभिव्यक्त न किया गया।

अंतर्भुक्त *वि.* (तत्.) जो अपना पृथक अस्तित्व समाप्त कर किसी वस्तु में पूरी तरह से एकाकार हो गया हो। तु. अंतर्भूत।

अंतर्भूत *वि* (तत्.) जो अपना स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त किए बिना किसी वस्तु में समा गया हो, समाविष्ट, अंतर्गत।

अंतर्भूमि *स्त्री.* (तत्.) 1. आंतरिक स्थिति, मानसिक स्थिति 2. सामान्य रागात्मक स्थिति।

अंतर्भेद *पुं.* (तत्.) 1. पारस्परिक अलगाव, आपसी झगड़ा अथवा कलह, वैमनस्य।

अंतर्भौम *वि.* (तत्.) भूमि के भीतर का, भूगर्भीय, भूगर्भ से संबद्ध, भूगर्भ में विद्यमान जैसे- अंतर्भौम् जलविज्ञान।

अंतर्मथन *पुं.* (तत्.) गहन आंतरिक चिंतन, मन में उठने वाले विचारों का मंथन, गंभीर मानसिक चिंतन।

अंतर्मना *वि.* (तत्.) 1. बाह्य परिवेश से बेखबर होकर अपने विचारों में लीन, गहन चिंतन में निमग्न, विचारमग्न 2. मन ही मन प्रसन्न अथवा उद्विग्न।

अंतर्महाद्वीपीय *वि.* (तत्.) विभिन्न महाद्वीपों तक व्याप्त।

अंतर्मुख *वि.* (तत्.) (व्यक्ति) जिसकी प्रवृत्ति अंदर की ओर हो, अपने विचारों में खोया रहने वाला।

अंतर्मुखी *वि.* (तत्.) दे. अंतर्मुख। introvert

अंतर्मुखी व्यक्तित्व *पुं.* (तत्.) व्यक्तित्व की वह विशेषता या गुण जिसके अनुसार कोई व्यक्ति बाहरी परिवेश से विमुख रह कर स्वकेंद्रित होता है।

अंतर्य *वि.* (तत्.) अंदर का, आंतरिक।

अंतर्यामिनी *वि.* (तत्.) 1. अंदर की बात जानने वाली, सामने वाले के मन की सभी बातों का ज्ञान रखने वाली 2. हृदय में निवास करने वाली, हृदय में स्थित।

अंतर्यामी *वि.* (तत्.) दूसरों के हृदय के भावों को जाननेवाला. भीतर की बात जाननेवाला, ईश्वर।

अंतर्युति *स्त्री.* (तत्.) खगो. किसी खगोलीय पिंड की वह स्थिति जब वह पृथ्वी तथा सूर्य के मध्य एक ही खगोलीय अक्षांश में होता है।

अंतर्योग *पुं.* (तत्.) आंतरिक ध्यान, मंत्रों के उच्चारण से रहित मानस-पूजा।

अंतर्रति *स्त्री.* (तत्.) मैथुन, संभोग।

अंतर्राष्ट्रीय *वि.* (तत्.) दे. अंतरराष्ट्रीय।

अंतर्रुद्ध *वि.* (तत्.) 1. वह जिसे बीच में रोक दिया गया हो 2. जिसमें मध्य में बाधा उपस्थित हो गई हो, जिसमें अवरोध उत्पन्न हो गया हो, व्यवधान से युक्त पर्या. अंतर्रोधित, अंतरावरोधित।

अंतर्रोधक विमान *पुं.* (तत्.) आक्रमणकारी विमानों को मार भगाने के लिए प्रत्याक्रमणकारी विमान।

अंतर्रोधन *पुं.* (तत्.) लक्ष्य पर पहुँचने से पहले ही संदेश या विमान आदि को किसी अन्य द्वारा बीच में ही रोक लिया जाना।

अंतर्रोधी *वि.* (तत्.) 1. बीच में रोकने वाला, बाधक, अवरोधक, व्यवधान उपस्थित करने वाला 2. राज. अंत:स्थ दो देशों के बीच में रहने वाला।

अंतर्लयन *पुं.* (तत्.) 1. आत्मसातकरण, आत्मसात करना, बीच में पूर्ण रूप से विलीन कर लेना, पूरी तरह मिला लेना 2. अर्थ. किसी बड़ी कंपनी में किसी छोटी कंपनी का पूर्ण रूप से विलयन। merger

अंतर्लापिका *स्त्री.* (तत्.) एक ऐसी अद्भुत एवं रोचक पहेली जिसका उत्तर उसी के शब्दों में उपलब्ध हो जैसे- 'ना मारा ना खून किया बीसों का सिर काट दिया', इस पहेली में इसका उत्तर 'नाखून' इसी में उपलब्ध है।

अंतर्लीन *वि.* (तत्.) 1. अपने में लीन या मग्न 2. छिपा हुआ।

अंतर्वर्ण *वि.* (तत्.) सोपानक्रम में सबसे निचली सीढ़ी पर स्थित वर्ण, शूद्र।

अंतर्वर्तित *वि.* (तत्.) 1. अंदर की ओर मुड़ा हुआ 2. अंतर्मुखी, अंतर्मुख व्यक्ति 2. ध्यान में मग्न, ध्यानस्थ, ध्यान में एकाग्र।

अंतर्वर्ती *वि.* (तत्.) 1. जो किसी के अंदर स्थित हो 2. मध्यवर्ती।

अंतर्वर्ती आवेदन *पुं.* (तत्.) किसी वाद के विचाराधीन होते ही किसी अन्य तथ्य का उल्लेख करने, कोई निषेधाज्ञा जारी कराने अथवा तात्कालिक आवश्यकता पर बल देने के लिए प्रस्तुत प्रार्थनापत्र। interlocutory

अंतर्वर्ती सस्यन *पुं.* (तत्.) दो मुख्य फसलों के बीच अल्पावधि में प्राप्य अन्य फसल को उगाने की प्रक्रिया।

अंतर्वल्कल *पुं.* (तत्.) वृक्ष की छाल की अंदर वाली परत।

अंतर्वस्तु *स्त्री.* (तत्.) विषय वस्तु, वर्ण्य विषय, अंतर्विषय, प्रतिपाद्य विषय।

अंतर्वस्त्र *पुं.* (तत्.) अन्य वस्त्रों के नीचे धारण किया जाने वाला वस्त्र जैसे- बनियान, जाँघिया आदि।

अंतर्वाणिज्य *पुं.* (तत्.) किसी देश या राष्ट्र के भीतर होने वाला वाणिज्य या व्यापार।

अंतर्वास *पुं.* (तत्.) राज-भवन (महल) आदि में महिलाओं के रहने का स्थान, अंत:पुर।

अंतर्वाह शरीर *पुं.* (तत्.) योग. कारण या लिंग शरीर जिसमें अव्यक्त प्रकृति, सूक्ष्म प्राण और चित्त के साथ आत्मा रहती है, इसका स्थान हृदय है, इस शरीर से योगीजन परकाया प्रवेश करते हैं।

अंतर्विकार *पुं.* (तत्.) 1. आंतरिक विकृति जो बाहर से देखी न जा सके, विकृति, चरित्र का दोष 2. शरीर के अंदर स्वाभाविक रूप से विद्यमान कुछ विशेष धर्म जैसे- बुभुक्षा, पिपासा, निद्रा आदि।

अंतर्विनियमन *पुं.* (तत्.) किन्ही दो या दो से अधिक वस्तुओं के क्रम अथवा स्थान का परस्पर बदलना अथवा उनकी अदला-बदली करना interchange

अंतर्विभागीय *वि.* (तत्.) प्रशा. विभिन्न विभागों के बीच में होने वाला, विभिन्न विभागों से संबद्ध। interdepartmental

अंतर्विरोध *पुं.* (तत्.) भीतरी विरोध, आपसी वैमनस्य, असंगति, परस्पर-विरोधी बातें।

अंतर्विवाह *पुं.* (तत्.) अपने ही समूह में विवाह, सजातीय या सगोत्र विवाह। endogamy

अंतर्विवेक *पुं.* (तत्.) सच-झूठ, करणीय-अकरणीय, अच्छा-बुरा, या शुभ-अशुभ आदि में भेद करवाने वाली एक सहज एवं स्वाभाविक बौद्धिक क्षमता।

अंतर्विश्वविद्यालयी *वि.* (तत्.) एक ही विश्वविद्यालय के भीतरी विभागों से संबंधित जैसे- अंतर्विश्वविद्यालयी प्रतियोगिताएँ।

अंतर्विषयक *वि.* (तत्.) विभिन्न विषयों में पारस्परिक संबंध वाला, अलग-अलग विषयों के परस्पर समता और विषमता से संबंधित।

अंतर्विष्ट पृष्ठ *पुं.* (तत्.) पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर चिपका हुआ शुद्धि पत्र या कोई अन्य सूचना देने के लिए बीच में डाला गया पृष्ठ।

अंतर्वृत्त *पुं.* (तत्.) वह वृत्त जो त्रिभुज की सभी भुजाओं को स्पर्श करता है और पूर्णत: त्रिभुज के भीतर स्थित होता है। inscribed circle

अंतर्वृत्ति *स्त्री.* (तत्.) आंतरिक वृत्तियाँ, मनोवृत्ति।

अंतर्वेग *पुं.* (तत्.) 1. आंतरिक उत्तेजना 2. आंतरिक गति 3. अंदर से स्फुरित प्रबल प्रवृत्ति 4. (जल आदि का) आंतरिक प्रवाह 5. आंतरिक शक्ति, बल 6. शरीर के अंदर सहज भाव से स्थित मल-मूत्र आदि के निकलने की प्रवृत्ति।

अंतर्वेद *पुं.* (तत्.) 1. दो नदियों के मध्य का विस्तृत स्थलीय भाग, दोआबा 2. प्राचीन ब्रह्मावर्त क्षेत्र जो गंगा-यमुना के बीच में हरिद्वार से प्रयाग तक फैला था।

अंतर्वेदना *स्त्री* (तत्.) आंतरिक व्यथा, मन की पीड़ा, मनोव्यथा।

अंतर्वेदी *पुं.* (तत्.) 1. ऐसी भूमि जिसमें यज्ञवेदियाँ विद्यमान हों 2. दो नदियों के बीच का स्थान, दोआबा 3. अंतर्वेद क्षेत्र का निवासी 4. गंगा तथा यमुना के मध्यवर्ती स्थान का प्राचीन नाम।

अंतर्वेशन *पुं.* (तत्.) 1. भीतर प्रविष्ट कराने या मिला देने की स्थिति या प्रक्रिया 2. किसी मूलवस्तु या ग्रंथ में अन्य वस्तु या लिखित सामग्री का अनावश्यक रूप में समावेश, प्रक्षेप 3. गणि. वह प्रक्रम जिसके अनुसार किसी फलन के दो ज्ञात मानों के बीच स्थित किसी मान को सन्निकट रूप से ज्ञात किया जाता है। interpolation

अंतर्वेष्टिनी नाड़ी *स्त्री.* (तत्.) योग. मूलाधार में स्थित सूक्ष्म नाड़ी जिसमें कुंडलिनी शक्ति निवास करती है।

अंतर्व्यथा *स्त्री.* (तत्.) आंतरिक पीड़ा, मानसिक कष्ट, बेचैनी, हृदय की व्याकुलता, विकलता।

अंतर्व्याधि *स्त्री.* (तत्.) 1. आंतरिक रोग, शारीरिक अस्वस्थता अथवा प्रिय वियोग आदि से उत्पन्न मानसिक कष्ट 2. ऐसी बीमारी जिसका निदान न हो रहा हो।

अंतर्व्योम *पुं.* (तत्.) आंतरिक आकाश, हृदयाकाश, हृदय।

अंतर्व्रण *पुं.* (तत्.) 1. आंतरिक घाव, ऐसा फोड़ा जिसका मुख अंदर की ओर हो। 2. शरीर की भीतरी चोट।

अंतर्हास *पुं.* (तत्.) निःशब्द हँसी, ऐसी हँसी जो खुलकर प्रकट न हुई हो, मुस्कराहट, स्मित।

अंतर्हित *पुं.* (तत्.) 1. जो अंतर्धान हो गया हो, अदृश्य, तिरोहित 2. समाया हुआ 3. निहित 4. गहरा, छिपा हुआ।

अंतर्हित मृदा *स्त्री.* (तत्.) जलोढ़, लोमी आदि निक्षेपों से ढकी हुई मिट्टी।

अंतर्हिमानी *वि.* (तत्.) दो हिमानी युगों के बीच के काल से संबधित।

अंतलोप *पुं.* (तत्.) व्या. शब्द के अंतिम वर्ण का लोप, अंत्यलोप।

अंतवर्ग *पुं.* (तत्.) किसी वर्ग के अंतर्गत कोई छोटा वर्ग।

अंतवर्ती सस्य *पुं.* (तत्.) अतिरिक्त उत्पाद प्राप्त करने के लिए दो मुख्य फसलों के बीच लगाई जाने वाली अल्पावधि में पकने वाली फसल।

अंतवेला *स्त्री.* (तत्.) मृत्यु की घड़ी।

अंतश्चर्म *पु.* (तत्.) प्राणि. दे. अंतस्त्वचा।

अंतश्चेतना *स्त्री.* (तत्.) चेतना का वह अंश जो व्यक्ति के भीतर अवस्थित होता है, आंतरिक चेतना।

अंतशेष *पुं.* (तत्.) वाणि. अंतिम शेष, रोकड़बाकी। closing balance

अंतसमय *पुं.* (तत्.) अंतिम समय, मृत्यु का समय, मरण का समय, अंतकाल।

अंतस्तत्व *पुं.* (तत्.) 1. आंतरिक तत्व, मन में बात, जो प्रकट न की गई हो।

अंतस्तप्त *वि.* (तत्.) 1. मानसिक रूप से संतप्त, अंदर से दु:खी 2. अंतर्दाह से पीड़ित रोगी।

अंतस्तल *पुं.* (तत्.) हृदय, दिल, मन।

अंतस्ताप *पुं.* (तत्.) 1. आंतरिक संताप, मानसिक कष्ट/दु:ख, हृदय की व्यथा 2. आंतरिक ज्वर।

अंतस्त्वक *क्रि.वि.* (तत्.) त्वचा के नीचे के भाग में जैसे- अंतस्त्वक पीड़ा हो रही है।

अंतस्त्वचा *स्त्री.* (तत्.) आयु. बाहरी चमड़ी से नीचे की परत, भीतरी चमड़ी। endoderm, endodermis

अंतस्थ *वि.* (तत्.) अंत में स्थित, आखिरी, अंतिम (इसे भ्रमवश अंत:स्थ मानकर तदनुसार अर्थनिरूपण कर दिया जाता है)।

अंतस्-अव्यय *पुं.* (तत्.) हिंदी में इसका प्रयोग प्राय: उपसर्ग के समान होता है, अंत:, अंदर, भीतर, मध्य में, हृदय, मन।

अंतस्सलिला *स्त्री.* (तत्.) 1. वह नदी जिसकी धारा भूमि के अंदर ही अंदर बहती हो, बाहर

दिखाई न पड़ती हो 2. सरस्वती नदी 3. फल्गु नदी।

अंतहीन *वि.* (तत्.) अंतरहित, जिसका अंत ज्ञात न हो सके, अनंत, 2. सीमा विहीन, जिसकी सीमा का पता न हो, असीम।

अंतहीनता *स्त्री.* (तत्.) अंतहीन होने की स्थिति।

अंतहृदय *पुं.* (तत्.) हृदय का आंतरिक भाग, भावाकाश।

अंतांश *पुं.* (तत्.) 1. अंत का हिस्सा, भाग, अंतिम भाग, आखिरी हिस्सा 2. अंतिम सिरे वाला भाग, पूँछ वाला भाग।

अंताग्र *पुं.* (तत्.) किसी खान की सुरंग का अंतिम छोर, जहाँ से खनिज पदार्थ निकाले जा रहे हों।

अंतिक *वि.* (तत्.) 1. अंतिम बिंदु वाला 2. निकट का, नजदीकी *स्त्री.* 1. पड़ोस 2. पड़ोसी 3. सामीप्य, समीपता, नजदीकी।

अंतिक अंक *पुं.* (तत्.) नौ की संख्या का अंक।

अंतिम *वि.* (तत्.) 1. जो अंत में हो, सबसे बाद का, आखिरी 2. जिसका रूप (सदा के लिए) निश्चित कर दिया गया हो तथा जिसमें अब परिवर्तन स्वीकार्य न हो।

अंतिम आदेश *पुं.* (तत्.) किसी विवाद आदि में सभी पक्षों पर विचार करके दिया गया वह आदेश जिस पर किसी तरह का पुनर्विचार केवल न्यायालय में अपील द्वारा ही संभव है।

अंतिम उत्तरजीवी *पुं.* (तत्.) अनेक हितधारियों में से अंततः जीवित बचा अकेला व्यक्ति।

अंतिमता *स्त्री.* (तत्.) 1. अंतिम होने की स्थिति, आखिरी होने का भाव 2. अंत की अवस्था, अंतिम, चरम अवस्था, पूर्णता 3. निर्णायक अवस्था, निर्णायकता 4. निश्चयात्मकता।

अंतिम निर्णय *पुं.* (तत्.) 1. सक्षम अधिकारी द्वारा सभी पक्षों पर विचार करके दिया हुआ निर्णय 2. संदेह-रहित निर्णय।

अंतिम निर्धारण *पुं.* (तत्.) सभी पक्षों पर विचार करके अंतिम रूप से करदेय राशि का आकलन और तदनुसार निश्चयन।

अंतिम परिष्करण *पुं.* कला., वास्तु. 1. पूर्णता देने से पूर्व किया गया आखिरी सुधार 2. कार्य पूरा होने से पूर्व की जाने वाली अंतिम कार्यवाही।

अंतिम प्रपत्र *पुं.* (तत्.) प्रशा./राज. अंतरराष्ट्रीय, अंतर्राज्यीय अथवा अन्य विशिष्ट सम्मेलनों के अंत में तैयार किया गया विचार-विमर्श का औपचारिक सारांश। final act

अंतिम बिंदु *पुं.* (तत्.) रसा. अनमाप की वह अवस्था जिसमें अभिक्रिया पूर्ण हो जाती है। end point

अंतिम यात्रा *स्त्री.* (तत्.) मृतक शरीर का घर से श्मशान ले जाना, शवयात्रा।

अंतिम लेखे *पुं.* (तत्.+तद्.) अर्थ. किसी संस्था अथवा प्रतिष्ठान की विगत पिछली लेखा-अवधि में हुए लाभ, हानि, वर्तमान, देनदारी, लेनदारी, चल-अचल संपत्ति आदि का आकलन करने के लिए तैयार किए गए विवरण। final accounts

अंतिम स्टेशन *पुं.* (तत्.) परि. 1 जहाँ पहुँच कर बस या रेल अपनी यात्रा समाप्त कर देती है 2. वह स्टेशन जिससे आगे बस या रेल नहीं जाती। terminal

अंतिमांगुलि *स्त्री.* (तत्.) सबसे अंत में स्थित अंगुलि, छोटी उंगली, कनिष्ठिका।

अंतिमेत्थम *पुं.* (तत्.) अंतिम चेतावनी, दो पक्षों के मध्य घोषणा पूर्वक दी गई चेतावनी जिसके अनुरूप निर्धारित अवधि में कार्य न करने पर भयंकर परिणाम का सामना करना पड़ सकता है। ultimatum

अंते *क्रि.वि.* (तत्.) 1. अंत में 2. परिणाम स्वरूप, फलस्वरूप, (तद्.) अन्यत्र, अन्य स्थान पर, दूसरी जगह।

अंतेवासी *पुं.* (तत्.) 1. वह विद्यार्थी जो प्राचीन काल में अध्ययन करते समय गुरु के आश्रम में वास करता था, आश्रमवासी 2. छात्रावास-वासी।

अंतोपयोगी *वि.* (तत्.) अंततोगत्वा लाभकारी, अंत में लाभदायक, परिणाम में लाभप्रद।

अंत्य *वि.* (तत्.) किसी क्रम के अंतिम छोर पर स्थित, अंतिम, आखिरी।

अंत्य उत्पाद *पुं.* (तत्.) अंतिम उत्पाद, किसी प्रक्रम या प्रक्रिया के अंत में प्राप्त होने वाला लक्ष्यीकृत उत्पाद। end product

अंत्य कर्म *पुं.* (तत्.) अंत्येष्टि।

अंत्यक्रम कोश *पुं.* (तत्.) ऐसा शब्दकोश जिसमें प्रविष्टियाँ अंतिम वर्ण से प्रारंभ होती हैं।

अंत्यक्रिया *स्त्री.* (तत्.) दे. अंत्य कर्म।

अंत्यज *पुं.* (तत्.) सबसे अंत के वर्ण में उत्पन्न, भारत की प्राचीन सामाजिक व्यवस्था में वह व्यक्ति जिसे अछूत (अस्पृश्य) समझा जाता था, शूद्र।

अंत्यजन्मा *वि.* (तत्.) 1. शूद्र 2. चांडाल।

अंत्य जाति *वि.* (तत्.) दे. अंत्यजन्मा।

अंत्य-जातीय *वि.* (तत्.) दे. अंत्यजन्मा।

अंत्य पत्र *पुं.* (तत्.) (जिल्द) कागज का ताव (पन्ना) जिसे दुहरा मोड़कर एक हिस्से को बाहरी जिल्द के भीतरी गत्ते पर चिपका दिया जाता है और दूसरे को पुस्तक के सिले पृष्ठों पर, ये जिल्द के भीतर दोनों तरफ होते हैं।

अंत्य युग *पुं.* (तत्.) अंतिम युग, कलियुग।

अंत्यलोप *पुं.* (तत्.) शब्द के अंतिम वर्ण, अक्षर या एक अंश का लुप्त होना। जैसे शिला से 'सिल', जिसमें अंतिम वर्ण (आ) लुप्त है।

अंत्य श्रुति *स्त्री.* (तत्.) भाषा. जब कुछ शब्दों के उच्चारण में शब्द के बीच किसी अन्य ध्वनि का आगम होता है तो उस ध्वनि को अंत्य श्रुति अथवा परश्रुति कहा जाता है। जैसे- 'लड़की' शब्द के बहुवचन में 'य' का आगम होने से 'लड़कियाँ' शब्द बन जाता हैं। यहाँ 'य' अंत्यश्रुति के रूप में है पर्या. परश्रुति।

अंत्याक्षर *पुं.* (तत्.) 1. किसी शब्द या पद का अंतिम अक्षर 2. वर्णमाला का अंतिम वर्ण, जैसे नागरी का अंत्याक्षर 'ह' है।

अंत्याक्षरी *स्त्री.* (तत्.) वह कविता प्रतियोगिता जिसमें किसी प्रतियोगी को अन्य प्रतियोगी द्वारा सुनाई गई काव्य-पंक्ति के अंतिम अक्षर से आरंभ होने वाली किसी अन्य काव्य पंक्ति को सुनाना पड़ता है।

अंत्यावस्था *स्त्री.* (तत्.) शा.अर्थ अंतिम अवस्था, जीव समसूत्रण की अंतिम अवस्था जिसमें नए केंद्रकों का निर्माण होता है। Teliphase

अंत्याश्रम *पुं.* (तत्.) भारतीय संस्कृति के अनुसार वर्णाश्रम व्यवस्था में उल्लिखित अंतिम आश्रम, संन्यास आश्रम।

अंत्याश्रमी *वि.* (तत्.) अंतिम आश्रम को अपनाने वाला, संन्यासी।

अंत्येष्टि *स्त्री.* (तत्.) अंतिम यज्ञ (संस्कार), मृतक का अंतिम (दाह) संस्कार तथा उससे संबंधित अन्य धार्मिक क्रियाएँ, क्रियाकर्म।

अंत्योदय *पुं.* (तत्.) राज. समाज के पिछड़े हुए, दलित वर्गों के उत्थान के लिए निर्मित नियम, सिद्धांत, नीतियाँ एवं योजनाएँ।

अंत्र *पुं.* (तत्.) आयु. आंत्र, आँत, अँतड़ी। intestine

अंत्रकूजन *पुं.* (तत्.) आयु. आँतों में होने वाला शब्द, आँतों का बोलना, पेट की गुड़गुड़ाहट, अंत्रकूज।

अंत्रवृद्धि *स्त्री.* (तत्.) आयु. आँत उतरने की व्याधि/बीमारी। hernia

अंत्रस्रज *स्त्री.* (तत्.) आँतों से बनी माला। पुराणों में ऐसा वर्णन उपलब्ध है कि नृसिंहावतार के समय भगवान ने हिरण्याकश्यपु का पेट चीरकर उसकी आँतों की माला धारण की थी।

अंदर *क्रि.वि.* (तद्.) 1. आंतरिक भाग में, भीतर, भीतर की ओर 2. अंतर्गत जैसे- आप का काम एक सप्ताह के अंदर अवश्य हो जाएगा, इस योजना के अंतर्गत (अंदर) अनेक महत्वपूर्ण-कार्यक्रम आते हैं *पु.* 1. वह जो भीतरी भाग में स्थित हो 2. स्थान, मकान आदि का भीतरी हिस्सा।

अंदरूनी *वि.* (फा.) 1. अंदर का, आंतरिक, भीतरी 2. आपसी, घरेलू या वैयक्तिक।

अंदाज *पु.* (फा.) 1. अनुमान, अटकल 2. ढंग, शैली, तौर-तरीका।

अंदाजन क्रि.वि. (फा.) 1. अनुमान से, अटकल से 2. लगभग, करीब-करीब।

अंदाजा *पु.* (फा.) दे. अंदाज।

अंदु/अंदू *स्त्री.* (तत्.) 1. हाथी के पाँव में बाँधने की रस्सी अथवा जंजीर 2. स्त्रियों के पैरों का एक आभूषण, पाजेब, पैंजनी, नूपुर।

अंदेशा पुं. (फा.) 1. आशंका, खटका 2. भय।

अंध *वि.* (तत्.) 1. दृष्ट हीन 2. अंधकारयुक्त 3. ज्ञानशून्य, 'अंधा' का संक्षिप्त रूप जो समस्त पदों में प्रयुक्त होता है जैसे- अंध विद्यालय, अंधकूप, अंधविश्वास आदि।

अंधक *पु.* (तत्.) 1. नेत्रविहीन व्यक्ति, दृष्टिहीन मनुष्य, अंधा आदमी 2. कश्यप तथा अदिति का पुत्र एक दैत्य टि. मत्स्य पुराण के अनुसार अंधक जब स्वर्ग के 'परिजात' वृक्ष को चुराने का प्रयत्न कर रहा था तभी शिव ने उसका वध कर दिया वि. दृष्टिहीन, अंधा।

अंधकक्ष *पु.* (तत्.) 1. अंधेरी कोठरी 2. वह छोटा अँधेरा कमरा जिसमें फोटो की रील आदि धोते है। dark room

अंधकार *पु.* (तत्.) वातावरण की प्रकाश-हीनता की वह अवस्था जिसमें कुछ दिखाई न देता हो मुहा. आँखों के आगे अंधकार छा जाना- पूर्ण रूप से हतप्रभ हो जाना, कुछ भी न सूझना, कुछ भी समझ में न आना।

अंधकारमय *वि.* (तत्.) अंधेरे से युक्त, अंधकार-पूर्ण।

अंधकार युग *पु.* (तत्.) 1. किसी राष्ट्र विशेष के इतिहास में ऐसा कालखंड जिसमें अपेक्षित बौद्धिक-विकास न होपाया हो, बौद्धिक विकास की पिछड़ी हुई अवस्था का समय 2. किसी देश विषेश का ऐसा कालखंड जिसमें साहित्य, कला, ज्ञानसाधना, राजनीतिक सुव्यवस्था तथा आर्थिक समृद्धि आदि के विषय में जानकारी उपलब्ध न हो।

अंधकारि *पु.* (तत्.) अंधकासुर का शत्रु, अंधक का संहार करने वाला, शिव, महादेव दे. अंधक।

अंधकूप *पु.* (तत्.) ऐसा गहरा कुआँ जिसमें अँधेरा हो और कुछ दिखाई न पड़ता हो ला.अर्थ. ऐसी हताशा पूर्ण स्थिति जिसमें पड़कर विवश व्यक्ति को उबरने की संभावना न दिखाई दे।

अंधखोपड़ी *वि.* (तत्.+देश.) जिसके मस्तिष्क में अज्ञानांधकार समाया हो, मूर्ख, बेवकूफ।

अंधगति *स्त्री.* (तत्.) 1. अंधे मनुष्य के समान दुखावस्था, ज्ञानालोक विहीनता 2. किंकर्तव्य विमूढ़ता की स्थिति।

अंधघाती *वि.* (तत्.) 1. अंधकार का नाश करने वाला 2. अंधकार का नाश करने वाला 3. दीपक 4. अग्नि 5. महादेव, शिव 6. सूर्य।

अंधजाल *पु.* (तत्.) 1. दूर तक फैला अंधकार, 2. घोर अँधेरा, घना अँधेरा।

अंधड़ *पु.* (तत्.) धूलभरी तेज आँधी (जिसमें कुछ भी दिखाई न पड़े)।

अंधतमस *पु.* (तत्.) गहन अंधकार, घोर अँधेरा ला.अर्थ. अज्ञान रूपी अंधकार।

अंधता *स्त्री.* (तत्.) दिखाई न देने का भाव; अंधापन, दृष्टि-हीनता ।

अंधतामस *पु.* (तत्.) दे. अंधतमस।

अंधतामिस्र *पु.* (तत्.) 1. दे. अंधतामस 2. पुराणों में वर्णित एक नरक जिसे घोर अंधकार

से युक्त माना जाता है 3. इच्छा के विपर्यय के पाँच प्रकार में से एक, जीने की इच्छा के साथ मरण का भय 4. योग. पाँच क्लेशों में से एक मृत्यु-भय।

अंधनाल *स्त्री.* (तत्.) प्राणि. आहारनाल से निकलने वाली एक नली के समान संरचना जिसका सिरा बंद होता है अंधांत्र, (सीकम) टि. स्तनधारियों में यह छोटी आँत एवं बड़ी आँत के बीच से निकलती है, यह 'अंधनाल' मांसाहारी प्राणियों की अपेक्षा शाकाहारी प्राणियों में बहुत लंबी होती है, कुछ मांसाहारी प्राणियों में तो यह होती ही नहीं।

अंधपरंपरा *स्त्री.* (तत्.) वह परंपरा जिसका अनुसरण बिना सोचे विचारे किया जाए, विवेक का प्रयोग किए बिना 'बाबा वाक्य प्रमाणम्' का अनुसरण, प्राचीन प्रथाओं का अंधानुकरण।

अंधभक्त *पुं.* (तत्.) पूर्ण श्रद्धावान भक्त जो श्रद्धास्पद के विरुद्ध किसी भी तर्क को सुनने तक को तैयार न हो।

अंधमति *वि.* (तत्.) बिना सोचे समझे कार्य करने वाला, विवेक-विहीन।

अंधविश्वास *पुं.* (तत्.) 1. ज्ञान तथा तर्क की कसौटी पर कसे बिना किसी वस्तु, परिघटना, स्थिति, विचार आदि पर हुआ विश्वास 2. आँखें बंद कर किसी बात को ज्यों-का-त्यों मान लेना।

अंधविश्वासी *वि.* (तत्.) दर्श. अंधविश्वास करने वाला, बिना सोचे समझे विश्वास करने वाला, बिना परीक्षा किए श्रद्धा रखने वाला, विवेकशून्य धारण करने वाला।

अंधव्यवस्था *स्त्री.* (तत्.) विवेक का प्रयोग किए बिना की गई व्यवस्था, दुर्व्यवस्था, कुप्रबंध।

अंधश्रद्धा *स्त्री.* (तत्.) बिना सोच-विचार के की जाने वाली श्रद्धा, परीक्षा किए बिना की जाने वाली श्रद्धा।

अंधा *वि.पुं.* (तद्.) 1. जिसकी नेत्रज्योति बुझ गई हो, नेत्रहीन, दृष्टिहीन ला.अर्थ. सूरदास, प्रज्ञाचक्षु 2. मूर्ख, नासमझ मुहा. अंधा बनना- न देखने का बहाना करना; अंधा बनाना- मूर्ख बना कर किसी को ठगना; अंधों का राजा- विवेकहीन नेता; अंधे के आगे रोए, अपना दीदा खोए- अविवेकी व्यक्ति की चिरौरी करने से उलटे अपना अहित होता है; अंधों में काना राजा-गुणहीन व्यक्तियों की तुलना में कम अल्पगुणी होना।

अंधांत्र *पुं.* (तत्.) आयु. बड़ी आंत के प्रांरभ में स्थित एक थैली दे. अंधनाल।

अंधाकुप्प *पुं.* (तद्.) अँधेरा, गहन अंधकार।

अंधागुप्प *पुं.* (तद्.) दे. अंधा कुप्प।

अंधाधुंध *क्रि.वि.* (तत्.) बगैर देखे, बिना सोचे-विचारे तथा तेजी से, बेतहाशा जैसे- पुलिस ने भीड़ पर अंधाधुंध गोलियाँ चलाई।

अंधाधुंधी *स्त्री.* (तत्.+देश.) 1. गहन अंधकार, घना अँधेरा 2. घोर अव्यवस्था जिसमें क्रम, योग्यता आदि पर ध्यान न दिया गया हो 3. अंधेरगर्दी 4. घोर अन्याय की स्थिति 5. आधिक्य, बहुत अधिकता।

अंधानुकरण *पुं.* (तत्.) बिना देखे भाले, बिना सोचे-समझे होने या किया जाने वाला अनुकरण, एक अंधे की तरह ही अन्य अंधों का वैसा कार्य-व्यवहार।

अंधानुयायिता *स्त्री.* (तत्.) 1. बिना सोच-विचार किए अनुकरण की प्रवृत्ति, अंधानुकरण।

अंधानुयायी *वि.* (तत्.) अंधानुसरण करने वाला, बिना सोचे-समझे किसी की बात पर चलने वाला, अंधानुकरण करने वाला।

अंधानुरक्त *वि./पुं.* (तत्.) बिना ठीक से विचार किए अनुराग करने वाला 2. अंधभक्त, अंध श्रद्धालु।

अंधानुरक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. बिना विचारे होने वाली आसक्ति 2. अंधश्रद्धा 3. विवेकशून्य भक्ति।

अंधानुसरण *पुं.* (तत्.) बिना सोच-विचार के किसी के पीछे चलना।

अंधापन *वि.* (तत्.) दृष्टिहीनता पर्या. अंधता।

अंधा बगुला *पुं.* (तत्.+तद्.) प्राणि. मटमैले भूरे वर्ण का बगुले जैसा पक्षी जो प्राय: दलदल में रहता है, उड़ते समय उसके श्वेत चमकीले पंख बगुले के पंखों के समान दिखते है।

अंधा शीशा *पुं.* (तत्.) वह दर्पण जिसमें कुछ भी (जैसे चेहरा) दिखाई न देता हो।

अंधाहुली *पुं.* (देश.) वन. नीले पुष्पों वाला एक झाड़ीदार औषधीय पौधा, शंखाहुली, शंखपुष्पी, चोरपुष्पी।

अंधिका *स्त्री.* (तत्.) 1. रात्रि, रात 2. 'आँखमिचौली' नाम का खेल।

अंधी *वि.* (तद्.) दृष्टि हीन (स्त्री.) ला.अर्थ. 1. अपना हित अहित सोचने में असमर्थ (स्त्री.) 2. विचारहीन (स्त्री.) 3. अज्ञानी, मूर्ख (स्त्री) *स्त्री.*1. दृष्टिविहीन स्त्री 2. विवेकशून्य स्त्री।

अंधी गली *स्त्री.* (तद्.) ऐसी गली जो दूसरी ओर से बंद हो, बंद गली।

अंधी घाटी *स्त्री.* (तद्.+देश.) भूगो. ऐसी घाटी जिसमे किसी नदी का सारा जल पृथ्वी के किसी गर्त में प्रवेश कर जाता है।

अंधी छाप *स्त्री.* (तद्.+देश.) मुद्रा. अस्पष्ट छाप (छपाई, प्रिंटिंग) 2. अस्पष्ट मुद्रांकन-चिन्ह 3. छिपा हुआ, अप्रत्यक्ष, अस्पष्ट अथवा अज्ञात प्रभाव।। blind impression

अंधी सरकार *स्त्री.* (तद्.फा) 1. प्रशा. राज. हित-अहित का विचार किए बिना कार्य करने वाली शासन-व्यवस्था 2. राज्य अथवा राष्ट्र की गतिविधियों एवं संसाधनों के उपयोग का नीति-पूर्वक नियमन करने में असमर्थ सरकार।

अंधेर *पुं.* (तद्.) 1. अन्याय, जुल्म, मनमाना आचरण 2. अव्यवस्था, कुशासन मुहा. अंधेर मचाना- घोर अन्याय करना; देर है पर अँधेर नहीं- काम के होने में देर हो जाए, किंतु वह काम होगा अवश्य।

अंधेरखाना *पुं.* (तद्.+देश.) 1. प्रबं.प्रशा. नीति एवं न्याय के पूर्ण अभाव की स्थिति 2. मनमानी व्यवस्था 3. घोर अव्यवस्था।

अंधेरगर्दी *स्त्री.* (तद्.+फा) घोर अव्यवस्था या अन्याय।

अंधेरनगरी *स्त्री.* (तत्.) ऐसी नगरी जिसमें सुशासन नाम की कोई चीज न हो, अराजकतापूर्ण नगरी।

अंधेरा *पुं.* (तत्.) 1. प्रकाश का न होना, प्रकाश का अभाव 2. अन्याय, अत्याचार, अव्यवस्था, कुप्रबंध, गड़बड़।

अंध्रि *पुं.* (तत्.) पैर, चरण, पाँव।

अंपायर *पुं.* (अं.) 1. खेल के मैदान में उपस्थित दो में से कोई भी वह अधिकारी जो क्रिकेट के खेल में खिलाड़ियों से खेल संबंधी नियमों का पालन करवाता है तथा विवादास्पद बातों पर निर्णय देता है, निर्णायक 2. वादकारियों द्वारा विवाद की स्थिति में विवाचन के लिए परस्पर-संबद्ध व्यक्ति। umpire

अंब *पुं.* (तत्.) 1. पिता, जनक 2. पानी, जल 3. नेत्र, आँख पुं. (तद्.) आम का पेड़ अथवा फल स्त्री. (तद्.) (तत्.) 1. माता, जननी 2. दुर्गा, पार्वती।

अंबक *पुं.* (तत्.) 1. नेत्र, आँख, जैसे त्र्यंबक तीन नेत्रों वाले (शिव) 2. पिता।

अंबर *पुं.* (तत्.) 1. आकाश, आसमान 2. बादल, मेघ 3. वस्त्र, कपड़ा।

अंबरचर *वि.पुं.* (तत्.) आकाश में विचरण करने वाला, नभचर, सूर्य, चंद्रमा, तारे, पक्षी आदि वायुयान।

अंबरचारी *पुं.* (तत्.) 1. आकाश में विचरण करने वाला प्राणी 2. पक्षी 3. पवन, वायु 4. वायुयान, रॉकेट आदि 5. पतंग 6. आकाशीय पिंड।

अंबर-डंबर *पुं.* (तत्.) सूरज के डूबने के समय आकाश की लाली।

अंबरपुष्प *पुं.* (तत्.) खरपुष्प, आकाश कुसुम टि. आकाश में पुष्प नहीं खिल सकता अत: किसी भी असंभव कार्य के लिए कह दिया जाता है कि वह 'आकाश पुष्प' है।

अंबरबेल *स्त्री.* (तत्.+देश) कुछ पीलापन लिए हल्के हरे रंग की पत्र-पुष्प विहीन कोमल तनों वाली एक ऐसी लता जिसकी जड़ें, भूमि पर नहीं बल्कि आकाश में क्षुप, वृक्ष आदि के ऊपर होती हैं, उसका छोटा-सा भी भाग वृक्ष आदि पर डाल देने से यह उसी से शक्ति ग्रहण करती हुई बड़ी तेजी से बढ़ती चली जाती है तथा उस वृक्ष को अपने विस्तृत जाल से आच्छादित-सा कर देती है और अंत में वह वृक्ष क्रमश: सूख जाता है।

अंबरमणि *स्त्री.* (तत्.) आकाश में देदीप्यमान प्रकाश-पुंज, सूर्य।

अंबरवाणी *स्त्री.* (तत्.) 1. आकाशवाणी, अदृश्य वक्ता द्वारा बोली गई आकाश में गूँजने वाली वाणी 2. मेघों का गर्जन।

अंबरांत *पुं.* (तत्.) 1. वस्त्र का छोर (अंतिम भाग) 2. ऐसा स्थान जहाँ आकाश का अंत होता प्रतीत हो, क्षितिज।

अंबरीष *पुं.* (तत्.) 1. अयोध्या के एक सूर्यवंशी राजा भगीरथ के पौत्र तथा मांधाता के पुत्र 2. सूर्य 3. शिव, महादेव 4. विष्णु।

अंबष्ठ *पुं.* (तत्.) 1. महावत 2. लाहौर के पास स्थित एक प्राचीन राज्य तथा उसके निवासी 3. कायस्थ जाति का एक भेद।

अंबा *स्त्री.* (तत्.) 1. माता, जननी 2. पार्वती 3. दुर्गा 4. काशी के राजा इंद्रद्युम्न की तीन कन्याओं में सबसे बड़ी कन्या (जिसका भीष्म ने अपने भाई विचित्रवीर्य से विवाह करवाने के लिए अपहरण किया)।

अंबाझोर *वि.* (देश.) वृक्षों को झकझोर देने वाली (बहुत तेज वायु) जिससे पेड़ों के आम आदि फल झड़ जाएँ।

अंबार *पुं.* (फा.) ढेर, समूह, राशि।

अंबारी *स्त्री.* (अर.) 1. हाथी की पीठ पर रखा जाने वाला आसन (हौदा) जिस पर छाया के लिए छत्री जैसी होती है 2. मकान की छत पर बना छज्जा जो गुंबद के समान बना होता है।

अंबालिका *स्त्री.* (तत्.) काशी के राजा इंद्रद्युम्न की (तीन पुत्रियों में) सबसे छोटी पुत्री जिसका अपहरण भीष्म ने अपने भाई विचित्रवीर्य के लिए किया था, पांडु इसी के पुत्र थे।

अंबिका *स्त्री.* (तत्.) 1. देवी पार्वती का एक रूप, दुर्गा देवी 2. माता 3. काशी के राजा इंद्रद्युम्न की मंझली पुत्री।

अंबिकेय *पुं.* (तत्.) 1. पार्वती के पुत्र गणेश तथा कार्तिकेय 2. धृतराष्ट्र टि. धृतराष्ट्र की माता का नाम अंबिका था।

अंबिया *स्त्री.* (तद्.) आम का छोटा तथा कच्चा फल, टिकोरा, केरी।

अंबु *पुं.* (तत्.) जल, पानी।

अंबुखंडन *पुं.* (तत्.) 1. चातक 2. पपीहा *वि.* ऐसा कहा जाता है कि चातक स्वाति नक्षत्र में होने वाली वर्षा के जल के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार का जल ग्रहण नहीं करता है।

अंबुज *पुं.* (तत्.) 1. जल में उत्पन्न होने वाला 2. कमल 3. चंद्रमा 4. कपूर 5. शंख 6. ब्रह्मा 7. सारस 8. बेंत 9. वज्र।

अंबुजाक्ष *वि.* (तत्.) जिसकी आँखें कमल के समान सुंदर हों, कमलनयन *पुं.* विष्णु।

अंबुजात *पुं.* (तत्.) दे. अंबुज।

अंबुजासन *वि.* (तत्.) कमल जिसका आसन है, कमल के आसन पर विराजमान *पुं.* ब्रह्मा।

अंबुद *पुं.* (तत्.) 1. जल प्रदान करने वाला, मेघ, वारिद, बादल, जलद 2. नागरमोथा।

अंबुधर *वि.* (तत्.) जल धारण करने वाला *पुं.* जलधर, मेघ, बादल।

अंबुधि *वि.* (तत्.) जल का आधार, जिसमें जल हो, *पुं.* 1. जलधि, उदधि, समुद्र, सागर 2. जल का पात्र, कलश, घट, घड़ा आदि 3. पद्य आदि में चार की संख्या का बोधक शब्द।

अंबुधीय *पुं.* (तत्.) 1. समुद्र के जल से संबंधित 2. समुद्र से उत्पन्न जैसे- अबुंधीय अवसाद।

अंबुनाथ *पुं.* (तत्.) 1. जल का देवता, वरुण देवता 2. वर्षा का देवता इंद्र।

अंबुनिधि *पुं.* (तत्.) वारिधि, जलधि, समुद्र, सागर।

अंबुपति *पुं.* (तत्.) 1. समुद्र 2. जल का स्वामी वरुण।

अंबुपात *पुं.* (तत्.) 1. जल गिरने का भाव, निर्झर, झरना, फव्वारा 2. जल-प्रवाह, धारा।

अंबुराज *पुं.* (तत्.) दे. अंबुनाथ।

अंबुराशि *पुं.* (तत्.) 1. जलराशि 2. समुद्र, सागर।

अंबुरुह *पुं.* (तत्.) कमल, अंबुज।

अंबुवाह *पुं.* (तत्.) 1. जल वहन करने वाला, बादल, मेघ 2. झील।

अंबुवाही *पुं.* (तत्.) 1. पानी वाला 2. बादल, मेघ *वि.* पानी ढोने वाला।

अंबुशायी *पुं.* (तत्.) जल में शयन करने वाला, विष्णु, नारायण।

अंभ *पुं.* (तत्.) 1. जल, पानी 2. आकाश 3. पितृलोक 4. ज्यो. कुंडली में चौथा स्थान 5. चार की संख्या 6. तेज 7. देव 8. असुर, समुद्र।

अंभण *पुं.* (तत्.) घर का आँगन।

अंभसार *पुं.* (तत्.) मोती।

अंभोज *पुं.* (तत्.) 1. कमल, लाल रंग का कमल 2. चंद्रमा।

अंभोजन्मा *पुं.* (तत्.) ब्रह्मा, अंभोजयोनि।

अंभोद *पुं.* (तत्.) 1. मेघ, बादल 2. मोथा।

अंभोधर *पुं.* (तत्.) दे. अंभोद।

अंभोधि *पुं.* (तत्.) समुद्र, सागर।

अंश *पुं.* (तत्.) 1. किसी पूर्ण वस्तु या इकाई का हिस्सा, भाग या खंड 2. वह राशि जो लाभ के निमित्त किसी कंपनी में लगाई गई हो या किसी को मिलती है, शेयर 3. वृत्त की परिधि का 360वाँ भाग जिसे इकाई मानकर कोण या चाप की नाप बताई जाती है 4. जीव (जिसे ईश्वर का अंश माना जाता है)।

अंश अधिपत्र *पुं.* (तत्.) किसी कंपनी के निर्धारित शेयरो की पुष्टि करने वाला लिखित प्रलेख, शेयर अधिपत्र।

अंशक *पुं.* (तत्.) 1. भाग, हिस्सा, टुकड़ा 2. हिस्सेदार, साझीदार, पट्टीदार 3.अंश धारण करने वाला, अंशधारी 3. बाँटने वाला, विभाजक।

अंशकालिक *वि.* (तत्.) 1. कार्यदिवस के आंशिक समय के लिए जिसकी नियुक्ति हुई हो 2. वह कार्य जो कार्यदिवस के आंशिक समय में किया जाए। part time

अंशचिह्न *पुं.* (तत्.) दे. अंशांकन।

अंशत: *क्रि .वि.* (तत्.) आंशिक रूप में।

अंशदाता *वि.* (तत्.) अंशदान करनेवाला (व्यक्ति)।

अंशदान *पुं.* (तत्.) 1. किसी बड़े काम के निष्पादन या संपादन में मिलने वाला व्यक्तिगत या व्यष्टिगत सहयोग 2. सहयोग के रूप में प्रदान की गई राशि।

अंशदानी *वि.* (तत्.) अंशदान करने वाला (व्यक्ति)। subscriber

अंशदायी *पुं.* (तत्.) 1. अपने भाग का कुछ भाग अन्य को देने वाला व्यक्ति 2. किसी सहायता कोश आदि में सहयोग के रूप में एक निश्चित भाग देने वाला व्यक्ति।

अंशदायी भविष्य निधि *स्त्री.* (तत्.) कर्मचारी और उसके परिवार की आर्थिक सुरक्षा हेतु कार्यालय द्वारा संचित ऐसी निधि जिसमें

कर्मचारी और नियोक्ता दोनों नियमित रूप से अपना अंशदान करते रहते हैं और जो सेवानिवृत्त होने पर कर्मचारी को एकमुश्त तुरंत मिल जाती है। contributory provident fund

अंशधर *पुं.* (तत्.) 1. अपना अंश (भाग) धारण करने वाला 2. वाणि. कंपनी आदि के कुछ अंशों को खरीदकर रखने वाला। share holder

अंशधारी *पुं.* (तत्.) अंश का स्वामी, शेयरधारी। share holder

अंशधारी कंपनी *स्त्री.* (तत्.) वह कंपनी जिसने अन्य कंपनी के अंश खरीद लिए हैं, शेयरधारी कंपनी।

अंशन *पुं.* (तत्.) 1. टुकड़े करने की क्रिया या प्रक्रिया, विभाजन, हिस्सों में बाँटना 2. अंशों के अनुसार चिह्नित करना जैसे- तापमापी का अंशन करना।

अंश प्रमाण-पत्र *पुं.* (तत्.) किसी कंपनी आदि के निर्धारित राशि वाले शेयरों की खरीद की पुष्टि में दिया जाने वाला प्रमाण पत्र। share certificate

अंशबंध्य *पुं.* (तत्.) 1. संतानोत्पत्ति में आंशिक रूप से असमर्थ, आंशिक बंध्य, जो पूर्ण रूप से बंध्या न हो 2. आंशिक रूप से अनुत्पादक भूमिखंड आदि।

अंशभाग *पुं.* (तत्.) कंपनी आदि में भाग, हिस्सा, पत्ती। share

अंशभागी *वि.* (तत्.) अंश भाग या हिस्से के अनुसार लाभांश प्राप्त करने वाला, पत्तीदार, साझेदार। share-holder

अंशमापक *वि.* (तत्.) अंश-मापन करने वाला, अंश/भाग नापने वाला (उपकरण अथवा व्यक्ति)।

अंशमापन *पुं.* (तत्.) अंशों, हिस्सों को मापने का कार्य अथवा भाग।

अंशयिता *वि.* (तत्.) विभाजन करने वाला, विभाजक, बँटवारा करने वाला *पुं.* अंशी, अंश का अधिकारी, हिस्सेदार।

अंशल *वि.* (तत्.) 1. अंशयिता करने वाला 2. दृढ़ शरीर वाला, सशक्त, बलवान, पराक्रमशील, प्रतापी।

अंशशोधन *पुं.* (तत्.) भौ. किसी मापक उपकरण को मानक एवं सटीक प्रयोगक्षम बनाने हेतु उसकी अंशांकन त्रुटियों की जाँच, उसमें सुधार और उनका निराकरण। calibration

अंश स्वर *पुं.* (तत्.) संगी. किसी आवृत्ति विशेष वाले सम्मिश्र स्वर का घटक कोई, शुद्ध स्वर partial tone

अंशहर *वि.* (तत्.) संपत्ति, लाभ आदि का हिस्सा पाने वाला।

अंशांक *पुं.* (तत्.) अंशांकन के लिए लगाया गया निशान।

अंशांकन *पुं.* (तत्.) किसी नलिका या पट्टी पर मापने के लिए, नियत दूरियों का अंकन, अंश चिह्न। calibration

अंशांकित *वि.* (तत्.) (वह मापनी) जिसपर मापने हेतु निशान लगे हों।

अंशांश *पुं.* (तत्.) अंश का अंश, उपांश, भाग का भाग, उपभाग।

अंशांशी *पुं.* (तत्.) 1. अंश तथा अंशी *वि.* दर्श. जीव तथा ब्रह्मा (संबंध)।

अंशापन *पुं.* (तत्.) किसी अंशी को उसका भाग प्रदान करना, आबंटन, वितरण, बँटवारा।

अंशावतरण *पुं.* (तत्.) 1. परमात्मा अथवा देवता विशेष का अंश रूप में प्रकट होना, अंशावतार लेना, अंशावतार के रूप में पृथ्वी पर आना जैसे- विष्णु का परशुराम के रूप में अंशावतार 2. कलाओं (अंशों) के अवतार के रूप में त्रेता युग में प्रकट होना या जन्म ग्रहण करना 3. किसी प्रामाणिक ग्रंथ से किसी अंश को उद्धृत करना।

अंशित *वि.* (तत्.) 1. जिसका अंशन हो चुका हो 2. जिसे अंश मिल चुका हो *स्त्री.* साझेदारी, हिस्सेदारी, भागीदारी।

अंशी *वि.* (तत्.) 1. लाभांश प्राप्त करने का अधिकारी, अंशधर 2. अनेक अंशों वाला, अवयवी 3. ईश्वर अथवा किसी देवता की विशेष शक्ति से युक्त अवतारी 4. सामर्थ्यवान, समर्थ *पुं.* 1.

हिस्सेदार/(साझेदार व्यक्ति 2. वाणि. किसी कंपनी व्यवसाय, अथवा संपत्ति इत्यादि का हिस्सेदार।

अंशीय लाभ *पुं.* (तत्.) अंशधारी को प्राप्त लाभ।

अंशु *पुं.* (तत्.) 1. किरण 2. प्रभा, चमक 3. नोक।

अंशुक *पुं.* (तत्.) 1. वस्त्र, कपड़ा 2. अत्यंत महीन सफेद रंग का वस्त्र 3. बारीक रेशमी वस्त्र 4. चोगे के समान सिला हुआ एक वस्त्र जो सबके ऊपर धारण किया जाता है 5. उत्तरीय, दुपट्टा, अंगवस्त्र 6. महिलाओं द्वारा प्रयुक्त ओढ़नी, चादर 7. अग्नि या ज्योति की मंद लौ 8. प्रकाश, हल्की रोशनी।

अंशुजाल *पुं.* (तत्.) किरणों का समूह, प्रकाश-पुंज।

अंशुधर *पुं.* (तत्र.) रश्मियों (किरणों) को धारण करने वाला सूर्य।

अंशुपति *पुं.* (तत्.) दे. अंशुधर।

अंशुमती *स्त्री.* (तत्.) 1. (अंशुमान अर्थात् सूर्य की पुत्री) यमुना नदी 2. पूर्णिमा।

अंशुमान *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य, भास्कर 2. चंद्रमा, चाँद 3. अयोध्या के एक सूर्यवंशी राजा।

अंशुमाला *स्त्री.* (तत्.) 1. रशिमयों का समूह, किरण-जाल 2. सूर्य अथवा चंद्रमा के चारों ओर फैला हुआ प्रकाश पुंज, सूर्यमंडल, चंद्रमंडल।

अंशुमाली *पुं.* (तत्.) सूर्य, रवि।

अंशुल *वि.* (तत्.) कांतियुक्त, चमकीला।

अंशों का अंतरण *पुं.* (तत्.) किसी कंपनी के शेयरों को किसी अन्य (कंपनी) को अंतरित करने की प्रक्रिया। transfer of shares

अंशों का त्यजन *पुं.* (तत्.) शेयरों के विषय में अपने अधिकारों का त्याग।

अंशोच्छेदन *पुं.* (तत्.) आयु. शरीर के किसी अंग में संक्रमण/संदूषण (infection) होने की स्थिति में पूरे शरीर में उसके फैलने के भय से उस अंग को काटकर शरीर से पृथक करना। amputation

अंस *पुं.* (तत्.) 1. खंड 2. कंधा 3. कंधे की हड्डी।

अंसकूट *पुं.* (तत्.) 1. बैल अथवा ऊँट की पीठ पर दिखने वाला कंधों का कूबड़ 2. कूबड़।

अंसबली *वि.* (तत्.) 1. शक्तिशाली कंधों से युक्त 2. बलवान, सशक्त।

अंसभार *पुं.* (तत्.) 1. कंधे पर रखा हुआ भार 2. बैल आदि के कंधों पर रखा गया जुआ।

अंसल *वि.* (तत्.) 1. शक्तिसंपन्न, बलवान, पराक्रमी 2. कंधे से संबद्ध, कंधे का।

अंसलपाटी *वि.* (तत्.+तद्.) घर की किसी बात पर नाराज, अप्रसन्न अथवा दुखी होकर भोजन छोड़ कर खाट की पट्टी पकड़ कर पड़े रहना। लोक में 'असलपाटी लेकर पड़े रहना' कहा जाता है पर्या. खटपाटी।

अंससुता *स्त्री.* (तत्.) (सूर्य-पुत्री) यमुना नदी।

अंसिक *वि.* (तत्.) 1. अंश से पैदा हुआ, उत्पन्न 2. अंश मात्र, अल्प, थोड़ा।

अंसु *पुं.* (तत्.) 1. किरण, रश्मि, अंशु 2. कंधा 3. आँसू, अश्रु वि. सूक्ष्म।

अंसुकन *पुं.* (तत्.) आँसू की बूँदे, आँसू, अश्रुकण।

अंस्य *वि.* (तत्.) अंस संबंधी, कंधे से संबंधित, कंधे का।

अंह *पुं.* (तत्.) 1. अपराध, पाप, दुष्कर्म 2. दुःख, कष्ट, व्याकुलता 3. चिंता 4. विघ्न, बाधा।

अंह्रि *पुं.* (तत्.) 1. पद, पैर 2. वृक्ष आदि की जड़ 3. पद्य आदि में चार की संख्या।

अऋणी *वि.* (तत्र.) ऋण से मुक्त व्यक्ति। कर्ज से मुक्त व्यक्ति ला.अर्थ उत्तरदायित्व से मुक्त व्यक्ति।

अँकटा *पुं.* (तत्.) 1. कंकड़, पत्थर आदि का बहुत छोटा या महीन टुकड़ा 2. खरपतवार।

अँकड़ा *पुं.* (तत्.) 1. लोहे का मुड़ा हुआ टेढ़ा कांटा या छड़ 2. कुलावा, पायजा 3. लोहे का एक गोल पच्चड़ जो किवाड़ की चूल में ठोका रहता

है 4. गाय, बैल के पेट का दर्द या मरोड़ 5. पेड़ से फल तोड़ने का बांस या डंडा।

अँकना *अ.क्रि.* (तत्.) लिखा या आँका या कूता जाना।

अँकवाई *स्त्री.* (तत्.) (देश. *आंकना)* 1. अँकवाने (मूल्यांकन कराने) की क्रिया या भाव 2. अँकवाने की मेहनत, पारिश्रमिक।

अँकवाना *स.क्रि.* (तत्.) आंकना क्रिया का प्रेरणात्मक रूप) 1. किसी अन्य से आँकने का कार्य करवाना 2. मूल्यांकन करवाना 3. किसी से अंकन या चित्रण करवाना 4. किसी से जाँच करवाना 5. किसी वस्तु का मूल्य निर्धारित करवाना।

अँकवार *स्त्री.* (तद्.) 1. अंकपालिका, अंकवारिया 2. हृदय 3. गोद 4. आलिंगन।

अँकवारना *स.क्रि.* (तद्.-*अँकवार)* 1. किसी को प्रसन्नतापूर्वक आलिंगन करना 2. मिलकर गले लगाना 3. सहर्ष गोद में भरना।

अँकांतर *स. क्रि.* (तत्.) अंक बदलना, मूल से अंक उतार कर दूसरी प्रतिलिपि में भरना।

अँकाई *स्त्री.* (तत्.) 1. आंकने की क्रिया या भाव 2. अनुमान। अटकल 3. आंकने का पारिश्रमिक या मजदूरी 4. फसल में से जमींदार और काश्तकार के हिस्सों का निर्धारण।

अँकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी वस्तु आदि की किसी से जाँच करवाना 2. चिह्नित करवाना 3. अंदाजा लगवाना 4. मूल्य लगवाना।

अँकावतार *पुं.* (तत्.) रूपक का वह दृश्य जिसमें प्रथम अंक की वस्तु का विच्छेद किए बिना दूसरे अंक की वस्तु चले।

अँकास्य *पुं.* (तत्.) रूपक का दृश्य जिसमें एक अंक की समाप्ति पर अगले अंक के आरंभ की सूचना पात्रों द्वारा दी जाए।

अँकित *वि.* (तत्.) 1. निदान किया हुआ, चिह्नित, जिस पर छाप या मुहर लगी हो 2. लिखित 3. वर्णित 4. चित्रित

अँकुड़ा *पुं.* (तद्.) 1. लोहे का बना एक विशेष ढंग का काँटा जो किसी चीज को फँसाने या टाँगने आदि के लिए काम आता है, कुलाबा 2. किवाड़ की चूल में ठोकने के लिए लोहे का पच्चड़ 3. बुनकरों का एक औजार 4. पशुओं का एक रोग।

अँकुड़ी *स्त्री.* (तद्.) 1. लोहार का एक औजार 2. हल का फाल लगने वाला भाग 3. तांगा/इक्के के पहिये के जोड़ों पर लगने वाली कील।

अँकुरना *अ.क्रि* (तद्.) [तत्.-अंकुरण] 1. किसी बीज या पौधे में अंकुर फूटना या उगना, अँखुआ फूटना, अंकुरित होना।

अँकुराना *स.क्रि* (तद्.) (अँकुरना की प्रेरणार्थक क्रिया) अंकुरित कराना, अंकुर उत्पन्न कराना *स.क्रि.* अंकुर फूट पड़ना/निकलना।

अँकुरित यौवना *स्त्री.* (तत्.) वह कन्या जिसके यौवनावस्था के चिह्न निकल रहे हों, उभरते यौवन वाली बालिका।

अँकुरी *स्त्री.* (तत्.) 1. वह अन्न जो पानी में भिगोने के कारण अंकुरित हुआ हो, अंकुरित अन्न जैसे- भिगोए हुए अन्न चने, मूँग आदि।

अँकुसी *स्त्री.* (देश.) 1. बाहर से अगड़ी या सिटकनी खोलने की लोहे की टेढ़ी छड़ 2. लोहे की झुकी हुई कील, हुक 3. भट्टी की राख निकालने का एक औजार 4. नारियल की गिरी निकालने का एक छोटा औजार 5. लग्गी के सिर पर बँधी छोटी लकड़ी जो फल तोड़ने में प्रयुक्त की जाती है।

अँकोर *पुं.* (देश.) 1. अँकवार 2. गोद 3. नज़र 4. भेंट 5. घूस प्रयो. टका लाख दस दीह्न अँकोरा 6. कलेवा 7. तृप्ति 8. गजक 9. नशा

अँकोरना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी को गले लगाकर मिलना, आलिंगन करना। 2. घूस या रिश्वत देना 3. भेंट देना 4. भूँजना।

अँखड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. आँख, नयन 2. चितवन

अँखिया *स्त्री.* (देश.) (तद्.आँख) 1. नेत्र, आँख प्रयो. अँखिया हरि दरसन को प्यासी 2. नक्काशी करने की लोहे की बनी कलम।

अँखुआ *पुं. (देश.)* 1. किसी बीज या पौधे से फूटकर निकला हुआ अंकुर 2. कल्ला जैसे- बसंत में पौधों से नए कल्ले निकल रहे हैं।

अँखुआना *अ.क्रि.* (देश.) 1. पौधों से अँखुआ या अंकुर का फूटना या निकलना जैसे- पतझड़ के बाद पौधों का अँखुआना 2. अंकुरित होना।

अँगड़ाई *स्त्री.* (तत्.) 1. शिथिलता दूर करने के लिए शरीर के अंगों को तानने/फैलाने की क्रिया।

अँगुली *स्त्री.* (तत्.) दे. 'उँगली।

अँगूठा-निशान *पुं.* (तत्.) दे. अँगूठा-चिह्न।

अँटना *अ.क्रि.* (देश.) दे. अटना।

अँतड़ी *स्त्री.* (तद्.) दे. आँत।

अँदरसा *पुं.* (तद्.) स्थान भेद से सुलभता के आधार पर चावल के आटे में खसखस, तिल, दही तथा केला आदि मिला कर तल कर बनाया जाने वाला एक विषेश मीठा पकवान।

अँधरा *वि.* (तत्.) 1. अंधा, दृष्टिहीन 2. विवेकशून्य, अपना भला-बुरा सोचने में असमर्थ 3. विचार किए बिना कार्य करने वाला 4. अज्ञानी, मूर्ख *पुं.* 1. नेत्रहीन/दृष्टिविहीन प्राणी 2. अज्ञानी व्यक्ति, मूर्ख प्राणी।

अँधियारा *पुं.* (तत्.) दे. 'अँधेरा'।

अँधेरी *पुं.* (तद्.) 1. अंधकार, अँधेरा 2. अंधकार से युक्त रात 3. धूलभरी आँधी 4. एक विशेष वस्त्र जिसे चंचल/नटखट घोड़ों, बैलों आदि अथवा शिकारी पशुओं की आँखों पर बाँधा जाता है, अँधियारी।

अँबराई *स्त्री.* (तत्.) दे. अमराई।

अकंटक *वि.* (तत्.) 1. बिना काँटे का, कंटकविहीन 2. बाधारहित, निर्बाध।

अकंठ *वि.* (तत्.) 1. बिना कंठ का, कंठरहित 2. स्वरहीन 3. कर्कश।

अकंत *वि.* (तत्.) 1. जिसका पति उसके साथ में न रहता हो 2. अनाथ।

अकंथ *वि.* (तत्.+तद्.) 1. कंथा/गुदड़ी (फटे-पुराने वस्त्रों को मिलाकर कलात्मक रूप से सिलकर बनाया जाने वाला एक वस्त्र) से रहित 2. वस्त्र-विहीन, गरीब।

अकंप *वि.* (तत्.)जिसमें कंपन न हो, निश्चल, स्थिर।

अकंपन *वि.* (तत्.) 1. कंपन-रहित, जो काँपता न हो, स्थिर 2. दृढ़, कठोर *पुं.* 1. कंपन का अभाव, स्थिरता 2. दृढ़ व्यक्ति 3. कठोर वस्तु।

अकंपित *वि.* (तत्.) जो कंपन-रहित हो, जो काँपा न हो, जो स्थिर हो।

अकंप्य *वि.* (तत्.) जिसे कंपाया न जा सके, जिसे कंपित न किया जा सके, स्थिर, अटल, सुदृढ़, मजबूत।

अकच *वि.* (तत्.) जिसके सिर पर बाल न हों, गंजा *पुं.* राहु नामक छायाग्रह।

अकचक *स्त्री.* (तद्./देश.) 1. विस्मय, आश्चर्य-चकित होने का भाव 2. दुविधा 3. सकपकाहट।

अकचकाना *अ.क्रि.* (तद्./देश.) 1. अचंभित होना, आश्चर्यान्वित होना 2. सकपकाना 3. दुविधाग्रस्त होना।

अकटुक *वि.* (तत्.) कटुता रहित, जो कटु/कड़वा न हो।

अकठोर *वि.* (तत्.) 1. कठोरता से रहित, कोमल 2. निष्ठुरता से रहित, स्नेहार्द्र, दयालु 3. सरल प्रकृति वाला।

अकड़ *स्त्री.* (देश.) 1. अकड़ने का भाव, ढिठाई 2. ऐंठ, घमंड।

अकड़आ *पुं.* (तद्.) आक, अक्खा, अर्क (वृक्ष), मदार।

अकड़ना *अ.क्रि .* (देश.) 1. सूखकर कठोर या टेढ़ा हो जाना, ऐंठना 2. ऐंठ दिखलाना, शेखी बघारना।

अकड़बाज *वि.* (देश.) अकड़ दिखाने वाला, शेखी बघारने वाला, अकड़ी।

अकड़बाजी *स्त्री.* (देश.+फा.) अकड़ या ऐंठ दिखलाने का भाव।

अकड़ाव *पुं.* (देश.) अकड़े हुए होने की अवस्था या भाव, ऐंठन।

अकड़ू *वि.* (देश.) दे. अकड़बाज।

अकत *वि.* (तद्.) दे. अक्षत।

अकती *स्त्री.* (तद्.) दे. अक्षय तृतीया।

अकत्थन *वि.* (तद्.) घमंड से दूर, अभिमान-रहित, दर्पहीन।

अकथ *वि.* (तत्.) 1. अकथ्य, अकथनीय, जिसे कहा न जा सके 2. जिसे वाणी से कहना संभव न हो 3. असत्य, झूठा।

अकथनीय *वि* (तत्.) 1. न कहने योग्य, अकथ्य 2. जिसे कहा न जा सके, अवर्णनीय।

अकथित *वि.* (तत्.) जो कहा न गया हो।

अकथ्य *वि.* (तत्.) दे. अकथनीय।

अकधक *पुं.* अनु. 1. अनिष्ट का भय, आशंका 2. असमंजस, अनिर्णय की स्थिति 3. सोच-विचार।

अकना *अ.क्रि.* (तद्.) ऊब जाना।

अकनाना *अ.क्रि.* (तद्.)सुनना, विशेषत:, ध्यान लगाकर सुनना।

अकनिष्ठ *पुं.* (तत्.) जो कनिष्ठ न हो।

अकपट *वि.* (तत्.) छल-कपट से रहित, निश्छल, निष्कपट।

अकबक *पुं.* (देश.) व्यर्थ या इधर-उधर की बात।

अकबकाना *अ.क्रि.* (देश.) व्यर्थ या इधर-उधर की बातें करना।

अकबर *वि.* (अर.) 1. सबसे बड़ा (व्यक्ति), महान 2. एक प्रसिद्‌ध मुगल सम्राट् जो 1555 ई. से 1605 ई. तक भारत का शासक था।

अकबरी *स्त्री.* लकड़ी पर की जाने वाली एक विशेष नक्काशी जो पंजाब और उत्तर प्रदेश (सहारनपुर) में विशेष रूप से की जाती है *वि.* सम्राट अकबर या उसके शासन काल से संबंधित, जैसे- अकबरी लोटा, अकबर के जमाने का लोटा।

अकर *वि.* (तत्.) 1. न करने योग्य, अनुचित या अवांछनीय 2. कर से रहित, बिना हाथ का 3. जिस पर कर न लगता हो *पु.* (तद्.) आकर, खान।

अकरकरा पुं. (तद्.) क्षुप जाति का एक पौधा जिसकी जड़ दवा आदि के काम आती है।

अकरण वि. (तत्.) 1.इंद्रियों से रहित 2. जो करने योग्य न हो 2. अनुचित, अवांछनीय या दुष्कर *पुं.* करण अर्थात् अंग-रहित परमात्मा।

अकरणीय *वि.* (तत्.) जो करने योग्य न हो, अनुचित, बुरा, अवांछनीय विलो. करणीय।

अकरा *वि.* (देश./तद्) 1. सामान्य मूल्य से अधिक मूल्य में मिलने वाला, महँगा 2. महँगा होने के कारण जिसे खरीदा न जा सके, अक्रेय 3. खरा, अच्छा।

अकराम *पुं.* (अर.) (करम का बहुवचन) 1. अति-कृपा, दया, बहुत मेहरबानी 2. सेवक आदि को दिया जाने वाला इनाम, बख्शीश 3. आभार 4. सम्मान, आदर।

अकराल *वि.* (तत्.) 1. जो कराल या भयंकर न हो 2. शांत या सौम्य।

अकरी *स्त्री.* (तत्.) 1. बीज बोने के लिए हल के पीछे लगाया गया जाने वाला बाँस का चोंगा 2. एक विशेष प्रकार का पौधा जो खेतों में अपने आप उग जाता है।

अकरुण *वि.* (तत्.) 1. करुणा से रहित, करुणाशून्य 2. कठोर, निष्ठुर या निर्दयी विलो. करुण।

अकर्कश *वि.* (तत्.) जो कर्कश न हो, कर्कशता से रहित, मृदु, अकठोर।

अकर्ण *वि.* (तत्.) 1. जिसके कान न हों 2. जिसे सुनाई न दे, बहरा *पुं.* साँप, सर्प।

अकर्णक *वि.* (तत्.) दे. अकर्ण।

अकर्तव्य *पुं.* (तत्.) न करने योग्य कार्य, अनुचित कार्य विलो. कर्तव्य।

अकर्ता *वि.* (तत्.) जो कर्ता न हो, कुछ न करने वाला।

अकर्तृक वि. (तत्.) 1. जिसका कोई कर्ता न हो 2. जिसका कोई रचयिता न हो।

अकर्तृत्व *पुं.* (तत्.) 1. कर्ता न होने की स्थिति 2. किए गए कार्य के लिए अपने को कर्ता न मानना, निष्करुण।

अकर्तृवाच्य *पुं.* (तत्.) अकर्तरि प्रयोग दे. कर्मवाच्य।

अकर्म *पुं.* (तत्.) 1. न करने योग्य कार्य, दुष्कर्म, बुरा कार्य; ऐसा कार्य, जो बंधन का कारण हो 2. कर्म का अभाव, कर्म न करने की स्थिति 3. ऐसा कर्म जिसका फल अपने लिए न होकर लोकहित के लिए हो।

अकर्मक *वि.* (तत्.) (क्रिया) जिसके लिए कर्म का उल्लेख अपेक्षित नहीं होता जैसे- 'वह हँसा' कर्म का उल्लेख नहीं है।

अकर्मकता *स्त्री.* (तत्.) अकर्मक होने की अवस्था या भाव, अकर्मण्यता।

अकर्मण्य *वि.* (तत्.) काम न करने वाला, काम से जी चुराने वाला, आलसी, निकम्मा विलो. कर्मण्य।

अकर्मण्यता *वि.* (तत्.) अकर्मक होने की अवस्था या भाव।

अकर्मा *वि.* (तत्.) दे. अकर्मी।

अकर्मी *वि.* (तत्.) बुरा कर्म करने वाला, अपराधी या पापी।

अकर्षण *पुं.* (तत्.) 1. कर्षण का अभाव, खींचने की क्रिया (खिंचाई) का अभाव 2. घसीट कर लाने की क्रिया/घसीटने का अभाव 3. खरोंच कर रेखा खींचने आदि का अभाव 4. कृषि- कृषि-कर्म (जुताई) का अभाव 5. आयु. रोगी के बढ़े हुए त्रिदोषों (वात, पित्त, कफ) को घटाने का अभाव।

अकल *वि.* (तत्.) 1. जिसमें कलाएं अर्थात् भाग या हिस्से न हों, संपूर्ण (ईश्वर) 2.पूरा,समूचा, समग्र 3. व्याकुल, बेचैन *स्त्री.* 1. बुद्धि, सूझबूझ 2. चतुरता, होशियारी 3. विवेक।

अकलंक *वि.* (तत्.) 1. कलंक से रहित, निष्कलंक 2. निर्दोष, बेदाग, पवित्र।

अकलंकित *वि.* (तत्.) 1. जिस पर कलंक न लगा हो 2. निर्दोष, निष्कलंक, बेदाग विलो. कलंकित।

अकलखुरा *वि.* (हि.अकेला+फा.खोर) 1. अकेला खाने वाला 2. स्वार्थी, मतलबी 3. ईर्ष्यालु *वि.* (फा.) अक्ल+खुरा अकल को खा जाने वाला, मूर्ख।

अकलदाढ़ *पुं.* (अर.+देश.) युवावस्था में निकलने वाली दाढ़ (wisdom tooth), इस दाढ़ के निकलते समय प्राय: काफी कष्ट होता है।

अकलप *वि.* (तत्.) जिसकी कल्पना न की जा सके, कल्पनातीत, अकल्पनीय।

अकलुष *वि.* (तत्.) 1. जिसमें किसी प्रकार का कोई कलुष/दोष/पाप न हो, निर्दोष, निष्पाप 2. पवित्र, पावन, शुद्ध 3. निर्मल, स्वच्छ, साफ।

अकलुषित *वि.* (तत्.) 1. जो कलुषित न हो 2. पवित्र 3. शुद्ध।

अकल्क *वि.* (तत्.) 1. शुद्ध,पावन, पुनीत, पवित्र, पाक 2. निष्पाप, पापरहित, पापमुक्त।

अकल्प *वि.* (तत्.) 1. अनियंत्रणाधीन 2. अतुलनीय 3. अक्षम।

अकल्पनीय *वि.* (तत्.) जिसकी कल्पना संभव न हो, कल्पना से परे विलो. कल्पनीय।

अकल्पित *वि.* (तत्.) 1. जिसकी कल्पना न की गई हो, अकाल्पनिक 2. अकृत्रिम, प्राकृतिक, सहज।

अकल्प्य *वि.* (तत्.) जिसकी कल्पना न की जा सके, अकल्पनीय, कल्पनातीत, कल्पना से परे।

अकल्मष *पुं.* (तत्.) दोष का अभाव, पापविहीनता *वि.* 1. पाप रहित, निष्पाप 2. शुद्ध, पवित्र।

अकल्याण *पु* (तद्.) अहित, अमंगल *वि.* (तत्) अशुभ, अमंगलकारी।

अकल्लीयत *स्त्री.* (तत्.) अल्पसंख्यक वर्ग।

अकवच *वि.* (तत्.) बिना कवच का, कवच-रहित।

अकवन *पुं.* (देश.) आक, मदार, एक क्षुप/वृक्ष जिसके पत्ते कुछ मोटे तथा बड़े-बड़े होते हैं, इस पर श्वेत अथवा कुछ-कुछ जामुनी वर्ण के पुष्प गुच्छों में लगते हैं, आक का पत्ता तोड़ने पर वृक्ष से गाढ़ा-सा दूध निकलता है। यह विषैला होता है, इसके पुष्प शिवजी को चढ़ाए जाते हैं, इसके अनेक औषधीय उपयोग हैं।

अकविता *स्त्री.* (तत्.) 1. जो कविता न हो, जिसमें काव्यत्व न हो 2. आधुनिक युग की छंदमुक्त कविता की एकधारा-विशेष जिसमे छंदोबद्धता, रसालंकार, अभिजातता आदि की अपेक्षा कथ्य की अकृत्रिम अभिव्यक्ति कोस्थान दिया जाता है।

अकशेरुकी *वि.* (तत्.) प्राणि. वे जंतु जिनमें रीढ़ की हड्डियाँ नहीं होती जैसे- प्रोटोजुआ, कृमि, कीट, शंख आदि तु. कशेरूकी।

अकसना *अ.क्रि.* (देश.) 1. अकस रखना, मनोमालिन्य रखना 2. विरोध अथवा शत्रुता करना, वैर रखना 3. ईर्ष्या-भाव रखना 4. स्पर्धा/होड़ करना, बराबरी करना, आँट करना।

अकसर *वि.* (अर.) दे. अक्सर।

अकसीर *स्त्री.* (अर.) वह रस या भस्म जो नजले की अचूक दवा है, इक्सीर *वि.* बहुत गुणकारी, रोगनाशक।

अकस्मात् *क्रि.वि.* (तत्.) 1. अचानक, अनायास, सहसा, आकस्मिक रूप से, एकदम 2. अकारण।

अकस्मात्र *क्रि.वि.* (तत्.) 1. अचानक, अनायास, सहसा 2. संयोग वश, दैवयोग से अपने आप।

अकह् *क्रि.वि.* (तद्.) 1. अकथनीय, अवर्णनीय, अनिर्वचनीय 2. बुरी, अनुचित, मुंह पर न लाने योग्य।

अकहानी *स्त्री.* (तद्.) 1. जो कहानी न हो 2. कहानी लिखने की आधुनिक युग की एक धारा-विशेष जिसमें कथा-विधा के अनिवार्य तत्वों की अपेक्षा कथ्य के सीधे चित्रण को अपनाया जाता है *वि.* न कहने योग्य।

अकांड *वि.* (तत्.) 1. डाल या शाखा के बिना 2. अकस्मात्, सहसा 3. अकारण।

अकांडछेदन *पुं.* (तत्.) काव्य. एक प्रकार का रस-दोष, किसी वर्णन में अचानक रस का विच्छेद कर उसके विरोधी रस को ले आना, अनवसर रस-भंग कर काव्य के प्रवाह में विघ्न उपस्थित करना, रस में गतिरोध करना।

अकांडजात *वि.* (तत्.) अकस्मात उत्पन्न हुआ, अकारण उत्पन्न हुआ।

अकांडप्रथन *पुं.* (तत्.) काव्य. रस दोष का एक प्रकार, प्रस्तुत रस की उपेक्षा कर अथवा प्रस्तुत रस को छोड़कर, अप्रस्तुत रस का विस्तार करना, असामयिक/अनवसर रस-वर्णन।

अकांत *वि.* (तत्.) 1. जो मनोरम न हो, जो शोभनीय न हो 2. जो प्रिय न हो, अप्रिय।

अकाज *वि.* (तद्.) 1. कार्य का न होना 2. कार्य में हानि 3. हर्ज, विघ्न, बिगाड़ 4. अकार्य, बुरा काम, अपकर्म *क्रि.वि.* (अ+काज) बिना काम के, व्यर्थ, निष्प्रयोजन।

अकाट्य *वि.* (तत्.) जिसकी काट न हो, न काटने योग्य, दृढ़, मजबूत, अकाट जैसे- अकाट्य तर्क।

अकातर *वि.* (तत्.) 1.जो भयभीत या भीरु न हो, डरपोक न हो 2. जो दुखित या शोकाकुल न हो।

अकादमिक *वि.* (अं.) 1. शैक्षिक, शैक्षणिक, शिक्षा संबंधी 2. विद्वत्तापूर्ण, शास्त्रीय, विद्योचित, पांडित्यपूर्ण 3. अव्यावहारिक 4. केवल सैद्धांतिक 5. अकादमी संबंधी, विद्यापीठीय। academic

अकादमी *स्त्री.* (अं.) उच्चकोटि की अकादमिक, शैक्षिक या साहित्यिक संस्था जैसे- साहित्य अकादमी, हिंदी अकादमी।

अकाब *पुं.* (अर.) गरुड़ जाति का बड़े आकार का और तीव्र दृष्टि वाला गिद्ध।

अकाम *वि.* (तद्.) काम-रहित, बिना कार्य का, व्यर्थ, निष्प्रयोजन वि. (तत्.) कामना-रहित, कामनाहीन, निस्पृह।

अकामता *स्त्री.* (तत्.) 1. कामना का अभाव, इच्छाविहीनता, निःस्पृहता।

अकामा *वि.* (तत्.) 1. ऐसी स्त्री जिसमें कामवासना उत्पन्न न हुई हो 2. जिसमें काम-वासना समाप्त हो गई हो।

अकामात्मा *पुं.* (तत्.) कर्म-फल की कामना से रहित व्यक्ति, निष्काम व्यक्ति, कर्मयोगी।

अकामिक *वि.* (तद्.) 1. जिसके लिए कामना न की गई हो, जिसके लिए इच्छा न हो, अनाकांक्षित 2. जो बिना प्रयत्न के प्राप्त हो गया हो।

अकामी *वि.* (तत्.) 1. कामनारहित, इच्छा विहीन, निस्पृह, निष्काम, वासनारहित 2. जिसमें कामवासना उत्पन्न न हुई हो 3. जिसमें काम-वासना शेष न बची हो।

अकाम्य *वि.* (तत्.) जिसकी कामना न की गई हो, जो कामना (इच्छा) के योग्य न हो।

अकाय *वि.* (तत्.) बिना शरीरवाला, शरीर-रहित, अशरीरी, देहहीन (परमात्मा)।

अकार *पुं.* (तत्.) 1. 'अ' वर्ण 2. 'अ' की ध्वनि।

अकारण *वि.* (तत्.) 1. बिना कारण, कारण-रहित 2. व्यर्थ, बेमतलब 3. निष्प्रयोजन।

अकारथ *वि.* (तद्.) निष्फल, लाभरहित *क्रि.वि.* व्यर्थ, बेकार।

अकारांत *वि.* (तत्.) वह वर्ण जिसके अंत में 'अ' ध्वनि हो जैसे- रामकृष्णपुरम् में 'राम' और 'कृष्ण' में क्रमश 'म' और 'ण' अकारांत है, जबकि पुरम् में 'म्' व्यंजनांत विलो. व्यंजनांत।

अकारादिक्रम *वि.* (तत्.) हिंदी शब्दकोश या शब्द सूची के संयोजन में अपनाया गया वर्णमाला का सुनिश्चित अनुक्रम।

अकार्पण्य *पुं.* (तत्.) 1. अदैन्य, दीनता का अभाव, अदीनता 2. कृपणता (कंजूसी) का अभाव।

अकार्बनिक *वि.* (तत्.+अं.) रसा. कार्बन के जटिल यौगिकों को छोड़ कर अन्य सभी तत्वों के यौगिकों से संबंधित।

अकार्बनिक रसायन विज्ञान *पुं.* (संकर) रसायन विज्ञान की वह शाखा जिसके अंतर्गत कार्बन के जटिल यौगिकों को छोड़कर अन्य सभी तत्वों के यौगिकों का अध्ययन किया जाता है तु. कार्बनिक रसायन। inorganic chemistry

अकार्यकारी *वि.* (तत्.) 1. न करने योग्य कार्य को करने वाला, अनुचित कार्य में संलग्न 2. कर्तव्य का निर्वाह न करने वाला, करने योग्य/अपेक्षित कार्य न करने वाला।

अकार्य दिन/दिवस *वि.* (तत्.) 1. न्यायालयों का अवकाश दिवस या वह दिन जब सामान्य विधिक कार्य न हो 2. अदिन, वह/वे दिन जिसमें कार्यालय से अनधिकृत अनुपस्थिति के कारण ऐसा माना जा सकता है कि कर्मचारी उन दिनों सरकारी नौकरी में नहीं थे।

अकाल *वि.* (तत्.) असमय या असामयिक जैसे- अकाल मृत्यु *पुं.* 1. वर्षा के अभाव में अन्न-जल के अभाव की स्थिति 2. अत्यधिक कमी, न्यूनता।

अकालकुसुम *पुं.* (तत्.) 1. किसी वृक्षादि में नियत समय से पूर्व अथवा पश्चात् खिलने वाला

पुष्प, अकाल पुष्प टि. एक धारणा प्रचलित है कि असमय विकसित पुष्प से अनिष्ट की आशंका होती है, अत: इसे अशुभ माना जाता है 2. वस्तु अथवा कार्य जो उपयुक्त काल से पहले या बाद में हो, बेसमय की चीज।

अकालग्रस्त *वि.* (तत्.) 1. दुर्भिक्ष पीड़ित, अकाल की चपेट में आया हुआ, जहाँ अकाल पड़ा हो, अकाल से पीड़ित टि. अतिवृष्टि अथवा अनावृष्टि तथा अन्य किन्हीं कारणों से फसल नष्ट होने की स्थिति को 'अकाल' अथवा 'दुर्भिक्ष' कहा जाता है।

अकालज *वि.* (तत्.) 1. नियत समय से पूर्व अथवा पश्चात उत्पन्न 2. कुसमय अथवा असमय में उत्पन्न (समस्या) आदि।

अकालजलद *पुं.* (तत्.) वर्षा-ऋतु से पूर्व अथवा पश्चात आने वाले मेघ, अकाल मेघ।

अकालजात *वि.* (तत्.) दे. अकालज।

अकालपक्व *वि.* (तत्.) 1. असमय पकने वाला (फल) आदि, बिना मौसम के पकने वाला 2. नियत/समय से पूर्व पक जाने वाला (फल) अथवा निश्चित समय से पहले तैयार हो जाने वाली फसल।

अकालपीड़ित *वि.* (तत्.) 1. अकाल (दुर्भिक्ष) का सताया हुआ 2. अकाल के कारण बहुत अधिक नुकसान उठाने वाला।

अकालपुरुष *पुं.* (तत्.) 1. कालातीत पुरुष, ऐसा पुरुष (परमात्मा) जिसे किसी काल-विशेष की सीमा में नहीं बाँधा जा सकता, महाकाल, परमेश्वर 2. सिख धर्म के अनुसार ईश्वर का एक विशेष नाम जो उनके द्वारा की जाने वाली 'अरदास' में आता है/सम्मिलित है।

अकालपुष्प *पुं.* (तत्.) दे. अकालकुसुम।

अकालपूर्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. समय बीत जाने पर किसी अपेक्षा या कमी को पूरा करने की क्रिया या भाव 2. किसी रजिस्टर आदि में आवश्यकतानुसार कुछ लिखने या कोष्ठकादि को भरने की क्रिया नियत या उपयुक्त समय में न होने पर उसे ठीक करने की प्रक्रिया 3. उपयुक्त समय व्यतीत हो जाने पर किसी की आवश्यकता पूरी करने के लिए उसे चीजें देना/ आपूर्ति करना।

अकालप्रसव *पुं.* (तत्.) सामान्य अवधि (9-10 मास) से पहले उत्पन्न हुआ शिशु, अकालप्रसव से जन्म लेने वाला शिशु।

अकालमृत्यु *स्त्री.* (तत्.) असमय मृत्यु, समय से पहले मृत्यु, असामयिक मौत।

अकालमेघ *पुं.* (तत्.) दे. अकालजलद।

अकालवृद्ध *वि.* (तत्.) अल्पायु में ही बूढ़ा जैसा हो जाने वाला, उपयुक्त समय से पूर्व ही वार्द्धक्य प्राप्त कर लेने वाला।

अकालवृष्टि *स्त्री.* (तत्.) नियत अथवा उपयुक्त (ठीक) समय से पहले या बाद में होने वाली वर्षा, बेमौसम बरसात।

अकालवेला *स्त्री.* (तत्.) 1. कार्यसिद्धि आदि की दृष्टि से अनुपयुक्त समय, अशुभ काल, कुसमय 2. अनवसर, गलत मौका 3. दुर्भिक्ष का समय।

अकालिक *वि.* (तत्.) 1. असमय में होने वाला, अपेक्षित समय के अनुसार न होने वाला, असमय, बेमौका, असामयिक 2. अवसर के प्रतिकूल, अनवसर।

अकाली *पुं.* (तत्.) 1. केशधारी सिक्खों का एक विशिष्ट संप्रदाय जो सैनिक संगठन के रूप में स्थापित किया गया था 2. उक्त संप्रदाय के सदस्य ये सिक्ख अपने सिर पर चक्र के साथ काले/ गहरे नीले रंग की पगड़ी बाँधे रहते हैं। नीली धारीदार वेशभूषा तथा शास्त्र आदि धारण करते हैं, उन्हें निहंग (अनियंत्रित) भी कहा जाता है।

अकिंचन *वि.* (तत्.) 1. जिसके पास कुछ भी न हो, निर्धन, दीन, दरिद्र, कंगाल 2. आवश्यकता से अधिक धन इकट्ठा न करने वाला।

अकिंचनता *स्त्री.* (तत्.) दरिद्रता, गरीबी, निर्धनता।

अकिंचनत्व *पुं.* (तत्.) 1. धन का अत्यधिक अभाव, अति निर्धनता, परम दरिद्रता, गरीबी 2. क्षुद्रता, तुच्छता 3. दीनता।

अकिंचित् *वि.* (तत्.) कुछ भी नहीं, जरा भी नहीं, लेशमात्र भी नहीं।

अकिंचित्कर *वि.* (तत्.) 1. जो कुछ भी करने में असमर्थ हो, जो कुछ भी न करता हो, जो कुछ भी करना न चाहता हो 2. जो किसी काम का न हो, तुच्छ, क्षुद्र, अमहत्वाकांक्षी 3. जिसका कोई परिणाम अथवा प्रभाव न हो, निरर्थक, निरुपयोगी, व्यर्थ।

अकीक *पुं.* (अर.) एक प्रकार का श्वेताभ पीला या श्वेताभ लाल पत्थर, रत्न अथवा उपरत्न टि. छोटे बच्चों को नज़र लगने से बचाने के लिए गले में ताबीज के रूप में पहनाते हैं, हृदयरोग में भी इसे पहनते हैं।

अकीदत *स्त्री* (अर.) दृढ विश्वास।

अकीदा *पुं.* (अर.) 1. धार्मिक विश्वास 2. धर्म, मजहब।

अकीर्ति *स्त्री.* (तत्.) अपयश, अयश, बदनामी, कुख्याति विलो. कीर्ति।

अकीर्तिकर वि. (तत्.) अकीर्ति या कुख्याति करने वाला, अपयश देने वाला, बदनामी देने वाला।

अकीलित *वि.* (तत्.) स्वच्छंद, सामाजिक मर्यादा आदि बंधनों से मुक्त, उत्तरदायित्वों से मुक्त।

अकुंठ *वि.* (तत्.) दे. अकुंठित।

अकुंठित *वि.* (तत्.) 1. जो कुंठित न हो, तेज 2. तीव्र, तीक्ष्ण, उग्र, 3. उत्तम, श्रेष्ठ 4. कार्यक्षम, शक्तिशाली।

अकुटिल *वि.* (तत्.) 1. जो कुटिल या टेढ़ा न हो, सीधा, सरल 2. साफ दिल का, निष्कपट, निश्छल, भोला-भाला, सीधा-सादा, सहज विलो. कुटिल।

अकुटिलता *स्त्री (तत्.)* कुटिलता का अभाव, सरलता, सादापन, निष्कपटता ।

अकुत्सा *स्त्री.* (तत्.) कुत्सा (अर्थात् निंदा, घृणा, अपवचन, गालीगलौज) का अभाव।

अकुत्सित *वि.* (तत्.) जो कुत्सा अर्थात् निंदा, घृणा आदि का पात्र न हो।

अकुमार *वि.* (तत्.) जो कुमार या बालक न हो, वयस्क, प्रौढ़ विलो. कुमार।

अकुल *वि.* (तत्.) 1. खराब कुल का, नीच कुल का, अकुलीन 2. जिसके कुल में कोई न हो, कुलरहित, परिवारहीन, नीच कुल, बुरा खानदान।

अकुलाना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. घबड़ाना, व्याकुल होना, व्यग्र या बेचैन होना 2. ऊबना 3. जल्दी मचाना, उतावला होना 4. आवेग में आना, लीन होना, मग्न होना।

अकुलाह *स्त्री.* (तद्.) व्याकुल होने का भाव, व्याकुलता।

अकुलिनी *स्त्री.* (तत्.) जो श्रेष्ठ कुल की न हो, कुलटा, व्यभिचारिणी।

अकुलीन *वि.* (तत्.) जो उत्तम कुल का न हो, जो कुलीन न हो, नीच कुल का, क्षुद्र वंश में उत्पन्न विलो. कुलीन।

अकुलीनता *स्त्री.* (तत्.) नीच-छोटे या तुच्छ कुल/वंश में उत्पत्ति, कुलीनता का अभाव।

अकुलीनत्व *पुं.* (तत्.) दे. अकुलीनता।

अकुशल *वि.* (तत्.) जिसके पास सौंपा गया कार्य करने का कौशल न हो 2. जो प्रशिक्षित न हो, अदक्ष, कौशल-रहित 2. अमंगलकारी 3. अचतुर, अशुभ, अहितकर विलो. कुशल।

अकुशलता *स्त्री.* (तत्.) 1. कुशलता का अभाव, अकुशल होने की स्थिति, अवस्था/भाव 2. प्रशिक्षित न होने के कारण दक्षता का अभाव। 3. अक्षमता, असमर्थता inefficiency 4. अनाड़ीपन, फूहड़पन।

अकुशल श्रम *पुं.* (तत्.) अर्थ.समाज. 1. परिश्रम-पूर्वक किया जाने वाला ऐसा कार्य जिसके लिए प्रशिक्षण आवश्यक नहीं जैसे- भार ढोने वाले मजदूर आदि का काम 2. उक्त (भार ढोना आदि) काम करने वाला मजदूर या मजदूर वर्ग। unskilled labour

अकुशल श्रमिक *पुं.* (तत्.) अर्थ.समाज. 1. वह श्रमिक/मजदूर जिसने अपने काम का प्रशक्षिण न लिया हो, अप्रशिक्षित मजदूर 2. विशेष हुनर (दक्षता) न रखने वाला साधारण मजदूर। unskilled labour

अकूट *वि.* (तत्.) 1. अकृत्रिम, जो बनावटी न हो, असली, सच्चा 2. छल-कपट से रहित 3. खरा, जो नकली या जाली न हो 4. वास्तविक, प्रामाणिक, 5. जो अच्छे कुल का/नस्ल का हो। 6. दिव्य, अलौकिक 7. सरल, सीधा-सादा।

अकूत *वि.* (तद्.) 1. जिसका आकलन न किया जा सके, जिसे आँका न जा सके, जिसका अनुमान न किया जा सके 2. असीमित, असीम, अपरिमित, अपार, अत्यधिक, प्रचुर।

अकूपार *पुं.* (तत्.) 1. सागर, समुद्र 2. सूर्य 3. पाषाण, पत्थर, चट्टान 4. कच्छप, कछुआ (वह कच्छप जिस पर पृथ्वी टिकी हुई कही जाती है) 5. पर्वत, पहाड़ *वि.* अपार, अपरिमित, असीम।

अकूर्च *पुं.* (तत्.) महात्मा बुद्ध *वि.* 1. दाढ़ीरहित 2. छलरहित, निश्छल 3. गंजा, खल्वाट।

अकूल *वि.* (तत्.) 1. जिसका किनारा न हो 2. जिसके ओर-छोर का पता न चले।

अकूहल *वि.* (देश.) असंख्य, अगणित, अगण्य, बहुत अधिक।

अकृच्छ्र *पुं.* (तत्.) 1. अक्लिष्टता, कठिनाई/क्लेश/कष्ट का अभाव, सुगमता, सरलता, आसानी *वि.* सरल, सुगम, आसान, क्लेशरहित, बिना कष्ट का।

अकृत *वि.* (तत्.) 1. बिना किया हुआ, जो किया न गया हो 2. अन्यथा किया हुआ, बिगाड़ा हुआ 3. जिसने कोई काम न किया हो 4. प्राकृतिक, अपरिसज्जित *पु.* (तत्.) अधूरा कार्य, अपूर्ण कार्य।

अकृत और शून्य *वि.* (तत्.) विधि. 1. अमान्य, प्रभाव रहित, व्यर्थ, निष्प्रभावी, अवैध, कानूनी दृष्टि से आमान्य, रद्द, निरस्त। null and void

अकृतकार्य *वि.* (तत्.) 1. जो अपना कार्य पूर्ण न कर पाया हो, जो कृतकार्य न हो 2. जो कार्य में सफल न हो पाया हो, विफल, असफल।

अकृतकाल *वि.* (तत्.) जिसकी अवधि (समय-सीमा) निर्धारित न हो, निरवधि, गैरमियादी टि. प्राय: किसी कार्य को समाप्त करने के लिए, प्रवास से लौटने के लिए अथवा ऋण आदि की वापसी के लिए एक समय-सीमा तय होती है, यदि ऐसी कालावधि नियत नहीं की गई है तो उसे 'अकृतकाल' कहा जाता है।

अकृतज्ञ *वि.* (तत्.) 1. जो कृतज्ञ न हो, कृतघ्न, किए गए उपकार को न माननेवाला विलो. कृतज्ञ।

अकृतज्ञता *स्त्री.* (तत्.) उपकार न मानने का भाव, कृतज्ञता का अभाव विलो. कृतज्ञता।

अकृतता *स्त्री.* (तत्.) 1. विधि. रद्द होने की स्थिति, अमान्यता 2. अपूर्णता 3. अकर्मण्यता 4. असमर्थता 5. ठीक न किए जाने की दशा 6. न किए जाने की स्थिति।

अकृता *स्त्री.* (तत्.) वह बेटी जिसे पिता कानूनी तौर पर बेटी न माने।

अकृतात्मा *वि.* (तत्.) 1. अपरिपक्व बुद्धिवाला, अज्ञ 2. असंयत।

अकृताभ्यागम *पुं.* (तत्.) बिना कर्म किए कर्मफल की प्राप्ति।

अकृतार्थ *वि.* (तत्.) 1. जिसके कार्य का प्रयोजन पूरा न हुआ हो, जिसका कार्य पूरा न हुआ हो 2. जिसका कुछ फल न मिला हो, फल से हीन असफल, अपूर्णकार।

अकृतार्थता *स्त्री.* (तत्.) असफलता, विफलता विलो. कृतार्थता।

अकृती *वि.* (तत्.) 1. अकृतार्थ, असंतुष्ट। 2. जो कृती न हो, अकृतकृत्य, अधन्य 3. अभागा 4.महान् कार्य करने में असमर्थ 5. अयोग्य, निकम्मा 6. अकुशल, अनाड़ी 7. असफल।

अकृतीकरण *पुं.* (तत्.) 1. कृत को अकृत करना, किए हुए को रद्द करना, निरस्त करना, निरसन 2. अप्रमाणित करना 3. अशून्य कर देना, अभिशून्य करना, मिटाना, निष्प्रभाव करना, उन्मीलन करना। nullification

अकृत्य *वि.* (तत्.) अकार्य, जो किए जाने योग्य न हो, अकरणीय *पुं.* 1. दुष्कर्म, कुकृत्य, बुरा कार्य 2. अपराध।

अकृत्यकारी *वि.* (तत्.) 1. न करने योग्य कर्म करने वाला, दुष्कर्मी, कुकर्मी 2. अपराधी।

अकृत्रिम *वि.* (तत्.) 1. जो कृत्रिम, नकली न हो, असली, यथार्थ, जो बनावटी न हो, वास्तविक 2. प्राकृतिक, नैसर्गिक, स्वाभाविक, सहज विलो. कृत्रिम।

अकृत्रिमता *स्त्री.* (तत्.) 1. अकृत्रिम होने की स्थिति/भाव, प्राकृतिकता 2. बनावटीपन का अभाव, स्वाभाविकता, सहजता 3. वास्तविकता, असलियत।

अकृपण *वि.* (तत्.) 1. जो कृपण न हो, जो कंजूस न हो 2. शाहखर्च, खर्चीले स्वभाव का विलो. कृपण।

अकृपणता *स्त्री.* (तत्.) कृपणता का अभाव, उदारता उदारता विलो. कृपणता।

अकृपा *स्त्री.* (तत्.) कृपा का अभाव, कोप, नाराज़गी।

अकृपालु *पुं.* (तत्.) जो कृपा का भाव न रखता हो, कृपा रहित, निर्दय, निर्दयी विलो. कृपालु।

अकृश *वि.* (तत्.) जो कृश या दुबला-पतला न हो, मोटा-तगड़ा, भरापूरा, स्थूल विलो. कृश।

अकृषिक *वि.* (तत्र.) कृषि से संबंध न रखने वाला, कृषीतर। non-agricultural

अकृषित *वि.* (तत्+तद्.) अकृष्ट, जिसे जोता बोया नहीं गया हो, अनजुता *पुं.* वह भूमिखण्ड (खेत) जिसे जोता-बोया न गया हो, परती जमीन। uncultivated

अकृष्ट *वि.* (तत्.) 1. जो खींचा न गया हो 2. अकर्षित 3. जो (भूमि) जोती न गई हो, परती भूमि।

अकृष्टपच्य *वि.* (तत्.) बिना जोते बोए खेत में स्वयमेव उगने और पकने वाला (अन्न)

अकृष्टपूर्वा *वि.* (तत्.) जो पहले कभी जोती न गई हो (ऐसी भूमि)।

अकृष्ण *वि.* (तत्.) 1. जो कृष्ण या काला न हो 2. श्वेत, सफेद 3. शुद्ध, निर्मल विलो. कृष्ण *पुं.* निष्कलंक (चाँद)।

अकेतन *वि.* (तत्.) बिना घरबार के, *पुं.* 1. संन्यास 2. यायावर, खानाबदोश।

अकेतु *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई चिह्न न हो, आकारशून्य परिचय-रहित, जिसकी पहचान संभव न हो 2. ध्वज रहित।

अकेला *वि.* (तद्.) 1. जिसके साथ कोई न हो, जिसका कोई साथी न हो, एकाकी 2. अद्वितीय, निराला मुहा. अकेला चना भाड़ नही फोड़ता- अकेला व्यक्ति किसी बड़े काम को करने में समर्थ नहीं होता।

अकेला दम *वि.* (अर.+फा.) पूरी तरह से अकेला, एक ही (व्यक्ति) जिसके साथ कोई न हो, संग-साथ के बिना (व्यक्ति)।

अकेला दुकेला *वि.* (तद्.) जो अकेला हो अथवा जिसके साथ कोई एक और व्यक्ति या प्राणी हो, इक्का दुक्का।

अकेलापन *पुं.* (तद्.+देश) अकेला होने का भाव/अकेले होने की स्थिति, एकान्तता।

अकेली जान *वि.* (तद्.+फा) बिना किसी साथी के (जिंदगी), संगी-साथी के बिना अकेली (जिंदगी)।

अकेले *क्रि.वि.* (तद्.) 1. किसी साथी के बिना, एकाकी, तनहा 2. मात्र, सिर्फ, केवल।

अकेले अकेले *वि* (तद्.) बिना किसी साथी के, बिना किसी को साथ लिए।

अकेश *वि.* (तत्.) केशविहीन, केशरहित, बिना बालों का, कम बालों वाला।

अकैतव *पुं.* (तत्.) निश्छलता/निष्कपटता का भाव *वि.* कपट रहित, छल-हीन, निष्कपट, निश्छल।

अकोटीकृत *वि.* (तत्.) अश्रेणीबद्ध, श्रेणी विहीन।

अकोट्य *वि.* *(तत्.)* जिसकी श्रेणियाँ न बनाई जा सकें। जिसकी कोटि न बनाई जा सके।

अकोप *वि.* (तत्.) 1. कोपरहित होने का भाव, 2. प्रसन्नता, खुशी विलो. कोप।

अकोरक *पुं.* *(तत्.)* वन. किसी कारणवश किसी अंग का विकास रूक जाने पर उसका कोरक/कली के रूप में ही रह जाना।

अकोरना *स.क्रि.* *(तद्.)* 1. आलिंगन करना 2. (देशज) घी में भूनना (आलू, सूजी आदि को घी में अकोरना)।

अकोला *पुं.* (देश.) अंकोल नामक एक ऊँचा वृक्ष जो प्राय: जंगली पर्वतीय भूमि में होता है। इसकी जड़, फल, फूल, फल छाल और तेल औषधोपयोगी हैं।

अकोविद *वि.* (तत्.) जो कोविद या जानकार अर्थात् विज्ञ, विद्वान न हो, मूर्ख, अज्ञानी, अनाड़ी विलो. कोविद।

अकोशिक *वि.* (तत्.) जन्तु. (वह जीव) जिसका निर्माण कोशिकाओं से न हुआ हो, कोशिकाविहीन।

अकौआ *पुं.* (देश.) 1. आक, मदार, एक औषधीय क्षुप 2. राले के अंदर की घंटी।

अकौटिल्य *वि.* (तत्.) कुटिलता-हीनता, निष्कपटता, सीधापन, सहजता।

अकौशल *पुं.* (तत्.) कुशलता या दक्षता का अभाव, अदक्षता।

अक्का *स्त्री.* (तत्.) 1. माता/माँ/जननी *पुं.* (तुर्की.> आका) स्वामी, प्रभु, मालिक।

अक्कास *वि.* (अर.) अक्स अर्थात् चित्र बनाने वाला चित्रकार, छायाकार, फोटोग्राफर।

अक्कासी *स्त्री.* (अर.) चित्रकारी, चित्रकला।

अक्खड़ *वि.* (तद्.) 1. अड़नेवाला 2. उग्र, झगड़ालू 3. निर्भय, निडर 4. किसी का कहना न मानने वाला।

अक्खड़पन *वि.* (तद्.) 1. अक्खड़ होने का भाव 2. अशिष्टता 3. लड़ाकूपन 4. उच्छृंखलता, उजड्डता, उद्धतपन।

अक्त *वि.* (तत्.) युक्त/जुड़ा हुआ बाहर तक फैला हुआ उदा. विषाक्त, रक्ताक्त।

अक्ता *स्त्री.* (तत्.) रात्रि।

अक्तूबर *पुं.* (अं.) ग्रेगोरियन कैलेंडर में सितंबर के बाद आने वाला महीना, ईसवी सन् का दसवाँ महीना, इस महीने में भारतीय कैलेंडर के आश्विन-कार्तिक महीने आते हैं।

अक्रम *वि.* (तत्.) क्रमरहित, बिना क्रम का, उल्टा-सीधा *पुं.* (तत्.) अव्यवस्था, गड़बड़ी, क्रमहीनता।

अक्रम अतिशयोक्ति *स्त्री.* (तत्.) अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें कारण और कार्य के पूर्वापर संबंध के बिना दोनों के एक साथ होने का वर्णन किया जाता है, उदा. संधानेहु प्रभु विषिख कराला। उठी उदधि उर अंतर ज्वाला - मानस, सुदरकांड।

अक्रम संन्यास *वि.* (तत्.) आश्रम व्यवस्था से इतर लिया गया संन्यास/किसी आश्रम यथा वानप्रस्थ आदि में रहे बिना लिया गया संन्यास।

अक्रमिक *वि.* (तत्.) अव्यवस्थित, क्रम रहित, बेसिलसिला *पुं.* अव्यवस्था, क्रम का अभाव।

अक्रांत *वि.* (तत्.) 1. जिससे आगे कोई न जा पाया हो, अविजित 2. बैंगन का पौधा।

अक्रांता *स्त्री.* (तत्.) 1. कंटकारी 2. भटकटैया 3. बृहती नामक पौधा।

अक्रिय *वि.* (तत्.) 1. निष्क्रिय, जो कुछ न करे, निकम्मा 2. कर्मशून्य (ब्रह्म)।

अक्रिया *स्त्री.* (तत्.) 1. क्रिया हीनता, निष्क्रियता 2. कर्तव्य न करना 3. अनुचित कर्म, दुष्कर्म।

अक्रियावाद *पुं.* (तत्.) दर्शन यह मत कि न कोई कर्म है, न अकर्म, न कोई क्रिया है, न कोई प्रयत्न और न ही कुछ पाप है, न ही कोई पुण्य।

अक्रिस्टलीय *वि. (देश.)* 1. रसा. अकेलासीय, जो केलासीय न हो उदा. काँच अक्रिस्टलीय ठोस है 2. भू.वि. *पुं.* रूपविहीन, (वे शैल खनिज पदार्थ) जिनमें कोई निश्चित क्रिस्टलीय संरचना नहीं होती। non-crystal

अक्रिस्टलीयता *स्त्री.* (देश.) (किसी ठोस पदार्थ की) अक्रिस्टलीय अवस्था।

अक्रूर *वि.* (तत्.) 1. जो क्रूर न हो 2. दयालु, कोमल सुशील, सहृदय *पुं.* द्वापर युग में इस नाम के कृष्ण के चाचा जो उनके भक्त थे।

अक्रोध *पुं.* (तत्.) क्रोध का न होना अथवा अभाव, क्रोध शून्यता, सहिष्णुता।

अक्रौर्य *पुं.* (तत्.) क्रूरता का अभाव, अक्रूरता।

अक्ल *स्त्री.* (अर.) 1. बुद्धि, समझ, ज्ञान। 2. चातुर्य, होशियारी मुहा. अक्ल आना- समझ में आना, समझदार बनना, सही रास्ते पर आना; अक्ल उड़ना- समझ में कुछ न आना, घबड़ा जाना; अक्ल उल्टी होना- नामसझ होना, मूर्ख बनना; अक्ल अँधी होना- अक्ल उलटी होना; अक्ल का अंधा- बिलकुल मूर्ख, अक्ल का दीवाला होना; अक्ल का दुश्मन- अत्यंत मूर्ख, पूरा-मूर्ख (व्यंग्य); अक्ल का मारा- बहुत मूर्ख; अक्ल की मार पड़ना- बुद्धि का लोप होना; अक्ल के घोड़े दौड़ाना- ख्याली पुलाव पकाना; अक्ल के तोते उड़ना- घबरा जाना, होश-हवास खो बैठना; अक्ल के पीछे लट्ठ लेकर फिरना-विवेकरहित कार्य करना; अक्ल को रोना-अफसोस करना; अक्ल गुम होना -होश-हवास गुम होना; अक्ल जाती रहना- समझ में न आना; अक्ल ठिकाने आना- होश-हवास दुरूस्त होना; अक्ल ठिकाने न रहना- होश-हवास दुरूस्त न होना; अक्ल ठीक करना- ढंग से किसी का गर्व तोड़ना; अक्ल दौड़ना- सोच-विचार करना; अक्ल पर झाड़ू फिरना- मूर्खता पूर्ण व्यवहार करना, बात को बिल्कुल न समझ पाना; अक्ल पर पत्थर पड़ना- बिलकुल मूर्खता पूर्ण कार्य करना; अक्ल पर पर्दा पड़ना- किसी कारणवश अक्ल का काम ही न करना; अक्ल भिड़ाना-समझने का प्रयत्न करना; अक्ल मारी जाना-समझदारी जाती रहना, रफू चक्कर होना, समझदारी का काम न करना; अक्ल लड़ाना-सोच विचार करना; अक्ल से दूर रहना- समझदारी का काम कभी न करना; अक्ल से बाहर होना- समझ में न आना।

अक्लमंद *वि.* (अर.+फा.)बुद्धिमान, चतुर, समझदार, होशियार।

अक्लमंदी *स्त्री.* (अर.+फा.) बुद्धिमानी, समझदारी, चतुराई, होशियारी।

अक्लांत *वि.* (तत्.) 1. जो थका न हो, क्लांति रहित 2. जो मुरझाया न हो।

अक्लिन्न *वि.* (तत्.) जो आर्द्र या गीला न हो।

अक्लिष्ट *वि.* (तत्.) जो क्लिष्ट, दुरूह या कठिन न हो, सुगम, सहज, आसान, सरल, सीधा।

अक्ली *वि.* (अर.) 1. बुद्धि से संबंधित, 2.बुद्धिमान उदा. अक्ली छात्र।

अक्लेद्य *वि.* (तत्.) जिसे आर्द्र अथवा गीला न किया जा सके।

अक्लेश *पुं.* (तत्.) क्लेश हीनता *वि.* क्लेश से रहित।

अक्ष *पुं.* (तत्.) 1. दो गोल वस्तुओं या पहियों के बीचों-बीच लगा दंड या छड़, जिस पर वे दोनों वस्तुएं/पहिए घूमती/घूमते हैं, धुरी 2. जुए या चौसर के खेल का पासा।

अक्षकुशल *वि.* (तत्.) द्यूत खेलने में दक्ष, जुआ खेलने में प्रवीण।

अक्षकूट *पुं.* (तत्.) आँख की पुतली।

अक्षक्रीड़ा *स्त्री.* (तत्.) 1. पासों से खेला जाने वाला खेल, जुआ।

अक्षणिक *वि.* (तत्.) जो क्षणिक न हो, स्थायी।

अक्षत *वि.* (तत्.) 1. क्षत या घाव से रहित 2. बिना टूटा हुआ, अखंडित, समूचा *पुं* बिना टूटा हुआ चावल (या कोई भी धान्य) जो देवताओं की पूजा में चढ़ाया जाता है।

अक्षत मृदा *स्त्री.* (तत्.) कृषि आदि मानवीय क्रियाकलापों से अछूती, प्राकृतिक अवस्था में पड़ी मिट्टी।

अक्षतयोनि *वि.* (तत्.) जिसका कौमार्य भंग न हुआ हो, जिस विवाहिता का पति से संसर्ग न हुआ हो।

अक्षत्र *वि.* (तत्.) क्षत्रियविहीन, क्षत्रियों से रहित।

अक्षपटल *पुं.* (तत्.) 1. प्राचीन भारतीय न्यायालय या प्राचीन भारत में मुकदमों से संबंधित कागज पत्र रखने का स्थान 2. न्यायाधीश।

अक्ष-पण *पुं.* (तत्.) पासों से खेलने का जुआ, पासों का खेल।

अक्षपाद *पुं.* (तत्.) गौतम ऋषि (न्यायदर्शन के प्रणेता), तार्किक, नैयायिक।

अक्षबंध *पुं.* (तत्.) वशीकरण द्वारा लोगों की दृष्टि बाँधने की प्रक्रिया।

अक्षम *वि.* (तत्.) 1. जो क्षम या समर्थ न हो, जिसके पास क्षमता न हो, असमर्थ, अशक्त, लाचार।

अक्षमता *स्त्री.* (तत्.) सामर्थ्यहीनता, असमर्थता, क्षमता का अभाव।

अक्षमा *वि.* (तत्.) 1. क्षमारहित, जो किसी के अपराध को क्षमा न करे 2. क्रोध, रोष।

अक्षमाला *स्त्री.* (तत्.) 1. रुद्राक्ष की माला 2. 'अ' से 'क्ष' तक अक्षरों की वर्णमाला।

अक्षमाली *वि.* (तत्.) रुद्राक्ष की माला धारण करने वाला, शिव का पर्याय।

अक्षम्य *वि.* (तत्.) क्षमा के अयोग्य, जैसे अक्षम्य अपराध।

अक्षय *वि.* (तत्.) 1. जिसका क्षय न हो 2. अनश्वर, अविनाशी, सदा रहने वाला, कभी समाप्त न होने वाला।

अक्षय चतुर्थी *स्त्री.* (तत्.) अंगारक चतुर्थी, किसी भी माह में किसी भी पक्ष के मंगलवार को होने वाली चतुर्थी।

अक्षयता *स्त्री.* (तत्.) अक्षय (अनश्वर) होने का भाव, नाश या क्षय का अभाव।

अक्षय तृतीया *स्त्री.* (तत्.) वैशाख शुक्ल तृतीया, आखातीज।

अक्षयधाम *पुं.* (तत्.) स्वर्ग, बैकुंठ।

अक्षय नवमी *स्त्री.* (तत्.) कार्तिक शुक्ल नवमी (तिथि)

अक्षय निधि *स्त्री.* (तत्.) शा.अर्थ समाप्त न होने वाला धन, किसी संस्था या व्यक्ति को उपलब्ध कराया गया आय का स्थायी साधन।

अक्षय पद *पुं.* (तत्.) ऐसा दिव्य स्थान जिसका कभी नाश न होता हो, मोक्ष।

अक्षय पात्र *पुं.* *(तत्.)* कभी भी रिक्त न होने वाला तथा वांछित वस्तुएँ देने वाला पात्र।

अक्षयलोक *पुं.* (तत्.) स्वर्ग, बैकुंठ।

अक्षय विकास *पुं.* (तत्.) ऐसा आर्थिक और वैज्ञानिक विकास जिसको निरंतर गतिमान रखा जा सके।

अक्षयवट *पुं.* (तत्.) प्रयाग में स्थित अविनाशी वट का वृक्ष, मान्यता है कि प्रलय में भी इसका नाश नहीं होता, गया के वट वृक्ष को भी अक्षय वट कहा जाता है।

अक्षया *स्त्री.* (तत्.) ऐसी तिथि जिसमें किए गए पुण्यकर्मों का नाश नहीं होता। यथा- सोमवती अमावस्या, वैशाख शुक्ल तृतीया, बुधवार की चतुर्थी, रविवारी सप्तमी।

अक्षयी *वि.* (तत्.) जिसका क्षय अर्थात् नाश न हो, अनश्वर, सदा बना रहनेवाला।

अक्षय्य-उदक *पुं.* (तत्.) श्राद्ध के अंत में दिया जाने वाला घृत-मधु युक्त जल।

अक्षर *वि.* (तत्.) जिसका नाश न हो *पुं.* 1. अकारादि वर्ण, मनुष्य के मुख से निकली हुई

ध्वनि को लिखित रूप में सूचित करने वाले संकेत या चिह्न, वर्ण 2. आधुनिक भाषाविज्ञान के अनुसार शब्दोच्चारण में एकाधिक स्वनों (ध्वनियों) की वह इकाई जो श्वास के एक झटके में उच्चरित होती है 3. परमात्मा 4. ब्रह्म; चैतन्य पुरुष।

अक्षर-अक्षर *पुं.* (तत्.) 1. प्रत्येक अक्षर, प्रत्येक शब्द 2. ला.अर्थ सब कुछ, उदा. अधिकारी ने अपनी बातचीत का अक्षर-अक्षर मिसिल पर लिख दिया।

अक्षरक्रम *पुं.* (तत्.) अक्षरों का अनुक्रम, वर्णानुक्रम।

अक्षरगणित *पु.* (तत्.) बीजगणित।

अक्षर चट्टा *वि.* (तद्.) अक्षरों को चाट जाने वाला, बिना विचार किए रहने वाला, पठित मूर्ख।

अक्षरच्युतक *पुं.* (तत्.) संस्कृत में पहेली की एक ऐसी शैली जिसमें जानबूझ कर कोई अक्षर छोड़ दिया जाता है और बुद्धि से उसमें अक्षर जोडक़र अर्थ निष्पन्न किया जाता है।

अक्षरजननी *स्त्री.* (तत्.) लेखनी, कलम।

अक्षरजीवी *वि.* (तत्.) पेशेवर लेखक।

अक्षरज्ञान *वि.* (तत्.) अक्षर-बोध, लिखने-पढ़ने का आंरभिक अभ्यास जैसे- अक्षरज्ञान के अभाव में वह पत्र नहीं पढ़ पाएगा।

अक्षरतूलिका *स्त्री.* (तत्.) लेखनी, कलम।

अक्षरधाम *पुं.* (तत्.) 1. मोक्ष, निर्वाण 2. ब्रह्मलोक 3. गांधीनगर (गुजरात), दिल्ली और अन्य स्थानों पर स्थित स्वामिनारायण संप्रदाय के प्रसिद्ध मंदिर।

अक्षरन्यास *पुं.* (तत्.) 1. अक्षरों की बनावट, लिखावट 2. एक तांत्रिक क्रिया जिसमें मंत्र के एक-एक अक्षर को पढ़ते हुए हृदय, उँगली, कंठ आदि का स्पर्श किया जाता है।

अक्षरमाला *स्त्री.* (तत्.) वर्णमाला।

अक्षर योजक *पुं.* (तत्.) मुद्रा. वह व्यक्ति जो लिखित सामग्री को मुद्रणाक्षरों में हाथ से अथवा मशीन से संयोजित करता है। compositor

अक्षरयोजन *पुं.* (तत्.) किसी लिखित सामग्री को छपाई से पूर्व मुद्राक्षरों में संयोजित करना। composing

अक्षर-विन्यास *वि.* (तत्.) 1. अक्षरों की बनावट, लिखावट 2. लिपि 3. वर्णविन्यास, वर्णक्रम 4. वर्तनी।

अक्षरशः *क्रि.वि.* (तत्.) 1. अक्षर-अक्षर करके, एक-एक अक्षर, पूरी तरह से, संपूर्णत: जैसे- वादी का कथन अक्षरश: सत्य है।

अक्षरशत्रु *वि.* (तत्.) अक्षर-न पढ पाने वाला, अनपढ़, निरक्षर, मूर्ख।

अक्षर-संस्थान *पुं.* (तत्.) वर्णमाला, (संस्कृत परंपरा के अनुसार) भाषा के अक्षरों का क्रमिक समूह।

अक्षर समाम्नाय *पुं.* (तत्.) वर्णमाला।

अक्षरहीन *वि.* (तत्.) 1. अशिक्षित, निरक्षर।

अक्षरा *स्त्री.* (तत्.) भाषा।

अक्षरांकन *पुं.* (तत्.) अक्षरों का अंकन कला. किसी भाषा के अक्षरों को कलात्मक रूप से लेखन। lettering

अक्षरात्मक *वि.* (तत्.) 1. अक्षर संबंधी। 2. अक्षरों से बना हुआ उदा. देवनागरी अक्षरात्मक लिपि है।

अक्षरारंभ *पुं.* (तत्.) एक संस्कार जिसमें बच्चे को पहली बार पढ़ना-लिखना सिखाया जाता है, अक्षर लिखना शुरू करना।

अक्षरार्थ *पुं.* (तत्.) 1. वर्णों का अभिप्राय 2. शब्दों का अर्थ, शाब्दिक अर्थ, संकुचित अर्थ।

अक्षरावली *स्त्री.* (तत्.) अक्षरों की पंक्ति, अक्षरों का समूह।

अक्षरित *वि.* (तत्.) लिखित, लिपिबद्ध।

अक्ष-रिपु *पुं.* (तत्.) (रावण के पुत्र अक्षय कुमार का वध करने वाला) हनुमान।

अक्षरी *स्त्री.* (तत्.) 1. वर्तनी, अक्षर विन्यास। spelling 2. किसी शब्द का वह ध्वनि-समूह जो एक झटके में बोला जाए। syllable

अक्षरीकरण *पुं.* (तत्.) वाक्य, वाक्यांश अथवा शब्दों का अक्षरों में विभाजन। syllabling

अक्षरेखा *स्त्री.* (तत्.) धुरी की रेखा, वह सीधी रेखा जो किसी गोलक के भीतर केंद्र से होती हुई दोनों पृष्ठों पर लंब रूप से गिरे, दक्षिण ध्रुव और उत्तर ध्रुव को जोड़ने वाली काल्पनिक सरल रेखा।

अक्षरौटी *स्त्री.* (तद्.) 1. वर्णमाला 2. लिखावट, लिखने का ढंग।

अक्षवाट *पुं.* (तत्.) द्यूतशाला, जुआघर, जुआखेलने का स्थान। cassino

अक्षविद्या *स्त्री.* (तत्.) 1. द्यूत विद्या, द्यूत-कला कला 2. पासे के खेल में दक्ष बनाने वाली विद्या उदा. महाभारत में शकुनि अक्षविद्या में पारंगत था।

अक्षवृत्त *पुं.* (तत्.) पृथ्वी के मानचित्र पर भूमध्य रेखा के समांतर उत्तर या दक्षिण में समान कोणीय दूरी वाले बिंदुओं को मिलाने वाली खींची गई गोलाकार (काल्पनिक) रेखा/रेखाएँ।

अक्षसूत्र *पुं.* (तत्.) रुद्राक्ष की माला।

अक्षांत *पुं.* (तत्.) वनस्पति वृक्ष या पौधे का कोई अंग जिससे दूसरे अंग निकलते हैं, उसका अंत अथवा सिरा।

अक्षांत फल *पुं.* (तत्.) शाखा के अंतिम छोर पर उत्पन्न फल।

अक्षांतर *पुं.* (तत्.) भूगो. भूमध्य रेखा से उत्तर या दक्षिण का अंतर जिसे अंशों, मिनटों व सेकिंडों में व्यक्त किया जाता है, अक्षांश।

अक्षांश *पुं.* (तत्.) भूगोलक पर भूमध्य रेखा के उत्तर और दक्षिण में 180-180 (कुल 360 अंशों में) काल्पनिक रूप से समान दूरी पर खिंची मानी जाने वाली रेखाएँ जो पृथ्वी के केंद्र से कोणीय दूरी को व्यक्त करती है टि. भूमध्यरेखा।

अक्षांश वृत्त *पुं.* (तत्.) पृथ्वी के मानचित्र पर भूमध्य रेखा के समांतर उत्तर या दक्षिण में समान कोणीय दूरी वाले बिंदुओं को मिलाने वाली कल्पित रेखाएँ दे. अक्षांश।

अक्षांशीय पैमाना *पुं.* (तत्.) भूमध्य रेखा से किसी अक्षांशीय रेखा पर की वह दूरी जो दो देशांतर रेखाओं के बीच नापी जाए।

अक्षार *वि.* (तत्.) रसा. 1. क्षार रहित, जिसमें क्षार न हो 2. जो क्षार से भिन्न हो।

अक्षि *स्त्री.* (तत्.) 1. आँख, नेत्र 2. दो की संख्या

अक्षिकंप *पुं.* (तत्.) आँख झपकना।

अक्षिकोटर *पुं.* (तत्.) दे. नेत्र गुहा। eye socket

अक्षिक्षेप *पुं.* (तत्.) 1. नज़र फेंकना 2. तिरस्कार, निंदा 3. अपमान।

अक्षिगोलक *पुं.* (तत्.) नेत्रकोटर में स्थित नेत्रगोलक eye ball

अक्षितारक *पुं.* (तत्.) आँख की पुतली pupil

अक्षिति *स्त्री.* (तत्.) क्षय न होने की स्थिति, अनश्वरता।

अक्षि-पक्ष्म *पुं.* (तत्.) बरौनी, पलकों के किनारे के ऊपर के बाल eye lash

अक्षि-पटल *पुं.* (तत्.) आँख के कोए पर स्थित झिल्ली, आँख का पर्दा।

अक्षि-बिंब *पुं.* (तत्.) वह स्थान जहाँ पर दृष्टि-तंत्रिका नेत्र गोलक में प्रवेश करती है।

अक्षि-लोम *पुं.* (तत्.) बरौनी, अक्षि-पक्ष्म।

अक्षि-विक्षेप *पुं.* (तत्.) तिरछी चितवन, कटाक्ष।

अक्षि-साक्षी *पुं.* (तत्.) प्रत्यक्षदर्शी, चश्मदीद गवाह, प्रत्यक्ष देखने वाला गवाह। eye witness

अक्षीण *वि.* (तत्.) 1. क्षीण न होने वाला, जो कम न हो, जो न घटे 2. अविनाशी, नाशरहित, अनश्वर।

अक्षीय *वि.* (तत्.) आँख संबंधी, आँख का।

अक्षुण्ण *वि.* (तत्.) 1. अखंडित, बिना टूटा हुआ, समूचा 2. लगातार, व्यवधानरहित ।

अक्षुण्णता *स्त्री.* (तत्.) 1. अक्षुण्ण रहने का भाव/स्थिति। 2. अखंडता। 3. कम न होना।

अक्षुद्र *वि.* (तत्.) 1. जो क्षुद्र न हो, जो छोटा न हो 2. जो नीच न हो, जो तुच्छ न हो।

अक्षेम *पुं.* (तत्.) अमंगल, अशुभ, अकल्याण।

अक्षोट *पुं.* (तत्.) 1. अखरोट का फल और वृक्ष 2. पर्वतीय पीलू नामक वृक्ष।

अक्षोड़ *पुं.* (तत्.) दे. अक्षोट।

अक्षौहिणी *स्त्री.* (तत्.) अक्ष (रथों) के समूहों (ऊह) से युक्त सेना। चतुरंगिणी सेना जिसमें 109350 पैदल सिपाही, 65610 घोड़े, 21870 रथ और 21870 हाथी होते थे।

अक्स *पुं.* (अर.) 1. प्रतिबिंब, छाया, परछाई, साया 2. तस्वीर, चित्र मुहा. अक्स उतारना- हूबहू नक्शा बनाना, फोटो खींचना; अक्स खींचना-किसी की तस्वीर खींचना; अक्स पड़ना- किसी पर साया आना, किसी चित्र, मानचित्र आदि पर बारीक कागज रखकर खाका उतारना।

अक्सर *क्रि.वि.* (अर.) बहुधा, प्रायः, अधिकतर, बहुत बार, अमूमन।

अक्सीर *स्त्री.* दे. अकसीर।

अखंड *वि.* (तत्.) 1. जिसके खंड न हों, अटूट, अविच्छिन्न, संपूर्ण, समूचा। 2. जिसका क्रम या सिलसिला न टूटे, जो बीच में न रुके, लगातार, बेरोक-टोक।

अखंडता *स्त्री.* (तत्.) 1. अखंड होने का भाव। 2. पूर्णता, समग्रता, खंडित न होने की स्थिति।

अखंडत्व *पुं.* (तत्.) अखंडता।

अखंडन *पुं.* (तत्.) खंडन न करने का भाव, विरोध का अभाव, अविरोधिता।

अखंडनीय *वि.* (तत्.) 1. जिसके खंड न हो सके, जिसके टुकड़े न किए जा सकें 2. जिसे काटा न जा सके, अकाट्य, अविभेद्य, अविभाज्य 3. जिसका खंडन न किया जा सके।

अखंडपाठ *पुं.* (तत्.) वह पाठ जो बिना क्रम टूटे लगातार चले।

अखंड भारत *वि.* (तत्.) 1. ऐसा भारत जिसके प्रदेश, राज्य या प्रांत उसके अविभाजित अंग हों अर्थात् उनकी पृथक् सत्ता न हो 2. दे. बृहत्तर भारत।

अखंड सौभाग्य *पुं.* (तत्.) जीवनपर्यंत सधवा रहने की स्थिति।

अखंड-सौभाग्यवती *वि.* (तत्.) जीवनपर्यंत सुहागिन रहनेवाली।

अखंडित *वि.* (तत्.) 1. जिसके टुकड़े न हुए हों, विभाजनरहित, अविच्छिन्न 2. संपूर्ण, पूरा, समूचा, परिपूर्ण 3. बाधारहित, निर्विघ्न।

अखबार *पुं* (अर.) (खबर का बहु) समाचारपत्र।

अखबार-नवीस *पुं.* (अर.+फा.) अखबार का लेखक, पत्रकार, समाचारपत्र का संपादक।

अखबारी *वि.* (अर.) अखबार से संबंधित, समाचारपत्र का, अखबार में प्रयुक्त (जैसे-भाषा)।

अखरना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. बुरा लगना, खलना 2. दुखदायी होना, कष्टकर होना।

अखरावट *पुं.* (तत्.) 1. वर्णमाला, लिखने का ढंग, लिखावट 2. वह कविता जिसमें चरण या पद वर्णमाला के अक्षरों के क्रम से आरंभ हो 3. जायसी की एक सुप्रसिद्ध कृति।

अखरोट *पुं* (तत्.) अफगानिस्तान और हिमालयी क्षेत्र में उत्पन्न एक वृक्ष और उसका फल। इसके फल का छिलका पकने पर बहुत कड़ा हो जाता है और उसके भीतर से गिरी निकलती है जिसे सूखे मेवे में गिना जाता है। इसका तेल भी बहुत गुणकारी होता है।

अखरौटी *स्त्री.* (तद्.) 1. अखरावट 2. वर्णमाला, बारहखंडी 3. लिखावट संगी. वीणा या सितार वाद्य पर निकाले गए रागों के अलग-अलग और स्पष्ट बोल।

अखर्व *वि.* (तत्.) जो छोटा अथवा ठिगना न हो; लंबा, बड़ा।

अखलाक *पुं.* (अर.) (खल्क का बहु.) 1. सदाचार, शिष्टाचार, उत्तम आचरण 2. आदत, ढंग 3. शील, शिष्टता 4. नीति।

अखाड़ची *पुं.* (तद्.) 1. (अखाड़े/व्यायामशाला का) कसरती पहलवान 2. अखाड़ेबाज व्यक्ति 3. ला.अर्थ शास्त्रार्थ/वाद-विवाद में आदि में निपुण व्यक्ति।

अखाड़ा *पुं.* (तद्.) 1. कुश्ती लड़ने या कसरत करने का स्थान, व्यायामशाला 2. साधुओं के रहने का स्थान, मठ या, संप्रदाय-विशेष के (नागा) साधुओं की मंडली।

अखाड़िया *वि./पुं.* (तद्.)1. कुश्ती लड़ने वाला (पहलवान) 2. अपने चहेतों को जमाकर अपनी बात जमानेवाला (व्यक्ति) 3. दलगत राजनीति करने में निपुण (राजनेता)।

अखाड़ेबाज *वि.* (तद्.) 1. कुश्तियाँ लड़ने/ पहलवानी करने का शौकीन 2. अपनी मित्र मंडली के साथ रहने की प्रवृत्ति वाला 3. दलीय संघर्ष में रुचि रखने वाला 4. तर्क वितर्क, बहस या प्रतिद्वन्द्विता करने वाला।

अखाड़ेबाजी *स्त्री.* (तद्.) 1. कुश्तियाँ लड़ने का शौक 2. मित्रों के साथ मौज मस्ती करना। 3. गुटबाजी।

अखात *वि.* (तत्.) जो खोदा न गया हो *पुं.* 1. प्राकृतिक जलाशय, झील 2. तीन ओर से घिरा हुआ समुद्र का भाग, खाड़ी 3. किसी मंदिर के सामने की पुष्करिणी।

अखाद्य *वि.* (तत्.) न खाने योग्य, अखाद्य, अभक्ष्य।

अखिन्न *वि.* (तत्.) अक्लांत, खेदरहित, क्लेशरहित, प्रसन्न।

अखिल *वि.* (तत्.) 1. संपूर्ण, समग्र, पूरा, निखिल, सार्व जैसे- अखिल भारतीय सम्मेलन 2. अखंड, समूचा।

अखिल भारतीय सेवाएँ *स्त्री.* (तत्.) संघ लोक सेवा आयोग अथवा कर्मचारी चयन आयोग द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं के माध्यम से भरा जाने वाला देशभर की प्रशासनिक, पुलिस, राजस्व आदि से संबंधित सेवाओं का संवर्ग।

अखिलात्मा *स्त्री.* (तत्.) 1. समस्त जगत् में व्याप्त आत्मा, विश्वात्मा, विश्वव्यापी चैतन्य 2. परमात्मा

अखिलेश *पुं.* (तत्.) संपूर्ण सृष्टि का स्वामी, ईश्वर, परमात्मा।

अखिलेश्वर *पुं.* (तत्.) संपूर्ण सृष्टि का स्वामी, ईश्वर, परमात्मा।

अखीर *पुं.* (अर.) 1. अंत, समाप्ति 2. किनारा 3. मृत्यु का समय।

अखुटना *अ.क्रि.* (देश.) खत्म न होना, निरंतरता होना, सातत्य बने रहना।

अखूट *वि.* (तत्.) जो खुटे नहीं, अर्थात् समाप्त न हो, अक्षय।

अखेद *पुं.* (तत्.) दु:ख का अभाव, प्रसन्नता।

अखोट *वि.* (तद्.) बहुत ज्यादा, अधिकतम।

अखोटा *पुं.* (देश.) एक प्रकार का आभूषण जो स्त्रियाँ कान में पहनती है।

अखोह *पुं.* (तद्.) ऊंची-नीची भूमि, असमतल भूमि।

अख्खाह *अव्य.* (फा) किसी की प्रशंसा में प्रसन्नता या आश्चर्य व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द, वाह खूब।

अख़्तयार *पुं.* (अर.) दे. इख्तियार।

अख्यात *वि.* (तत्.) जो ख्यात या कहा न गया हो। अनुक्त। अप्रसिद्ध।

अख्याति *स्त्री.* (तत्.) 1. अप्रसिद्धि, प्रसिद्धि का अभाव 2. अपकीर्ति, बदनामी।

अख्लाक *पुं.* (अर.) सद्व्यवहार, सज्जनों का या सभ्यों का आचरण।

अग *वि.* *(तत्.)* जो चलने वाला न हो, स्थिर *पुं.* 1. पहाड़ 2. वृक्ष 3. दिनकर।

अगंध *वि.* (तत्.) गंधरहित, गंधहीन।

अगज *वि.* (तत्.) पर्वत से उत्पन्न होने वाला, पहाड़ पर होने वाला *पु.* एक प्रकार की ओषधि शिलाजीत।

अगजग *पुं.* (तद्.) 1. चराचर, जड़-चेतन 2. सारा संसार।

अगजा *स्त्री.* (तत्.) पर्वत से जन्म लेने वाली-पार्वती, पर्वत की कन्या।

अगड़ *पुं.* (तद्.) शृंखला या बेड़ी, हाथी के पैर में बाँधे जाने वाली बंधन स्वरूप जंजीर।

अगड़बगड़ *पुं.* (देश.) बेसिर-पैर का, अंडबंड *पुं.* बेसिर-पैर की बात, अंडबंड काम, व्यर्थ का काम, अनुपयोगी वस्तुओं का जमावड़ा प्रयो. घर में (व्यर्थ का) अगड़-बगड़ क्यों जमा कर रखा है।

अगड़म-बगड़म *पुं.* (देश.) 1. दे. अगड़बगड़ 2. अनाप-शनाप।

अगड़ा *वि.* (तद्.) जो आगे स्थित हो, उन्नत स्थिति वाले, जो दूसरों की अपेक्षा ज्यादा विकसित हो।

अगड़ा वर्ग *वि.* (तद्.+तत्.) (हिंदू) जातियों के उन्नत वर्ग विलो. पिछड़ा वर्ग।

अगड़ी *वि.* (तद्.) अग्र पंक्ति में स्थित, आगेवाली, उन्नत, 'पिछड़ी जातियों' के सृजन पर नवनिर्मित शब्द जैसे- 'अगड़ी' जातियां।

अगण *पुं.* (तत्.) 1. अशुभ गण, बुरा गण 2. पिंगल (छंद शास्त्र) के चार गण-जगण, तगण, रगण, सगण, जो छंद के आदि में अशुभ माने जाते हैं।

अगणनीय *वि.* (तत्.) 1. न गिना जा सकने वाला, ऐसे संज्ञापद के लिए प्रयुक्त शब्द जिसकी गणना नहीं की जा सकती जैसे- 'आदमी को दो वक्त की रोटी चाहिए' में 'रोटी' शब्द uncountable 2. अनगिनत, असंख्य विलो. गणनीय।

अगणनीय संज्ञा *स्त्री.* (तत्.) वह संज्ञा शब्द जिसके द्वारा इंगित वस्तुओं की गणना नहीं की जा सकती, जैसे- सोना, तेल आदि विलो. गणनीय संज्ञा।

अगणित *वि.* (तत्.) जिस की गणना नहीं की जा सकती हो, अगणनीय, जिसकी संख्या निर्धारित न हो सके।

अगण्य *वि.* (तत्.) 1. न गिना जाने योग्य, असंख्य, बेशुमार 2. सामान्य, तुच्छ।

अगति *स्त्री.* (तत्.) 1. दुर्गति, बुरी गति, दुर्दशा, दुरवस्था 2. गति का अभाव, अस्थिरता 3. निधन होने के बाद शव का दाह संस्कार उचित ढंग से न होना, मृत्यु के बाद बुरी दशा।

अगतिक *वि.* (तत्.) 1. जिसकी कहीं गति या पैठ न हो। 2. अशरण, अनाथ, निराश्रय, जिसे कहीं ठिकाना न मिले 3. जिस पर चलना मुश्किल हो 4. कुपथ, कुमार्ग।

अगतिमय *वि.* (तत्.) गतिहीन, जड़।

अगत्या *क्रि.वि.* (तत्.) आगे से, भविष्य में, आगे चलकर, अंत में, विवशता में।

अगद *वि.* (तत्.) जो रोग रहित या स्वस्थ हो। विघ्नरहित *पुं.* 1. स्वस्थ भाव या स्वास्थ्य 2. दवाई, औषधि।

अगद-तंत्र *पुं.* (तत्.) चिकि. आयुर्वेद का एक अंग जिसमें विषपीड़ित व्यक्ति की चिकित्सा करने का विधान हो।

अगनी *स्त्री.* (तद्.) 1. अग्नि 2. घोडे के माथे पर भौंरी या घूमे हुए बाल।

अगम *वि.* (तत्.) 1. अगम्य, जहाँ कोई जा न सके, न जाने योग्य, दुर्गम, 2. कठिन, विकट, गहन 3. न मिलने योग्य, दुर्लभ 4. अपार, अत्यंत, बहुत 4. अचल, स्थावर *पुं.* 1. पर्वत 2. वृक्ष।

अगमग *वि.* (देश.) मग्न, आनंद में मग्न।

अगमगना *अ.क्रि.* (देश.) आगे बढ़ना।

अगमन *पुं.* (तत्.) गति का अभाव, अगति, न चलना, नही जाना *क्रि.वि.* (तत्.) आगे, पहले, प्रथम।

अगम-निगम *पुं.* (तत्.) आगम निगम शास्त्र, तंत्र और वेद।

अगमनीय *वि.* (तत्.) गमन न करने योग्य, न जाने योग्य *स्त्री.* अगमनीया, अगम्या, जिस स्त्री के साथ संभोग करने का निषेध हो।

अगम्य *वि.* (तत्.) 1. न जाने योग्य 2. जहाँ कोई जा न सके, पहुंच के बाहर 3. गहन, कठिन।

अगम्या *वि.* (तत्.) गमन न करने योग्य *स्त्री.* (तत्.) संभोग के अयोग्य स्त्री।

अगर *पुं.* (तत्.अगरु) एक पेड़ जिसकी लकड़ी सुगंधित होती है *अव्य.* (फा.) यदि, योजक शब्द जो शर्त का सूचक होता हो, उदा. 'अगर बारिश बंद हो जाए तो चल निकलेंगे, प्राय: 'अगर' के साथ 'तो' का भी प्रयोग होता है मुहा. अगर-मगर करना- किसी दायित्व से बचने के लिए तर्क-वितर्क या नानुकुर करना।

अगरई *वि.* (देश.) सुगंधित लकड़ी, अगर के रंगवाला, चंदनवर्णी।

अगरचे *क्रि.वि.* (फा.) यदि। यद्‌यपि।

अगर-बगर *क्रि.वि.* (देश.) दाहिनी और बाईं दोनों ओर। इतस्ततः, आस-पास।

अगरबत्ती *स्त्री.* (तत्.) सुगंध हेतु जलाई जाने वाली वाली बत्ती, अगरू के बुरादे से निर्मित विशेष सींक या बत्ती।

अगरी *स्त्री.* (तद्.) 1. जहर को समाप्त करने वाली वस्तु 2. अनुचित या धृष्टता भरी बात 3. कुशल महिला *वि.* संग्रह/भंडार

अगरु *पुं.* (तत्.) अगरु की लकड़ी या पेड़।

अगर्भध्यान *पुं.* (तत्.)योग. मंत्रोच्चार के बिना किया गया ध्यान।

अगर्व *वि.* (तत्.) निरभिमान, अहंशून्य।

अगर्हित *वि.* (तत्.)जो गर्हा या निंदा के योग्य न हो।

अगल-बगल *क्रि.वि.* (फा.) 1. दोनों पार्श्व में, दोनों ओर 2. इधर-उधर, आस-पास।

अगला *वि.* (तत्.) 1. आगे का, सामने का 2. आगामी, आनेवाला, भावी प्रयो. अगला वर्ष मंगलमय हो 3. दूसरा, इसके वाद वाला, एक के बाद का प्रयो. अगले बच्चे को बुलाओ।

अगली सुनवाई *स्त्री.* (तत्.) किसी मामले के स्थगन के बाद होने वाली दूसरी सुनवाई।

अगवा *वि.* (तद्.) आगे, अगाड़ी *पुं.* (तद्.) अपहृत उदा. हर दिन अखबार में बच्चों का अगवा करने का कोई-न-कोई मामला दिखाई पड़ जाता है।

अगवाई, अगुवाई *स्त्री.* (तद्.) 1. दे. अगवानी 2. पथप्रदर्शन।

अगवाड़ा *पुं.* (तद्.) घर के आगे का भाग, द्‌वार के सामने की भूमि विलो. पिछवाड़ा।

अगवानी *स्त्री.* (तद्.) 1. आगे बढ़ कर स्वागत करना प्रयो. जब बारात आई तो कन्या पक्ष के लोगों ने सभी मेहमानों की अगवानी की।

अगवार *पुं.* (तद्.) खलिहान में निकाले गए अन्न का वह भाग जो ब्राह्मण और हलवाहे को देने के लिए पहले ही अलग निकाल कर रख दिया जाता है, अग्रहार।

अगस्त *पुं.* (अं.) 1. ग्रेगोरीयन कैलेंडर का आठवां महीना जिसका नामकरण संत ऑगस्टस के नाम पर किया गया था, इसके आसपास भाद्रपद मास पड़ता है 2. *पुं.* (तद्.) अगस्त्य ऋषि 3. अगस्त्य नक्षत्र।

अगस्त्य *पुं.* (तत्.) 1. वेदों-पुराणों में उल्लिखित प्रसिद्‌ध कुंभज ऋषि 2. एक तारा।

अगस्त्य-दर्शन *पुं.* (तत्.) सूर्य की कन्या-राशि में स्थिति होने पर रात्रि में अगस्त्य तारे के देखने के लिए दर्शन-पूजन की धार्मिक क्रिया।

अगहन *पु.* (तद्.) अग्रहायण, मार्गशीर्ष का महीना।

अगाड़ी *क्रि.वि.* (तद्.) 1. आगे आने वाले समय में, भविष्य में 2. सम्मुख, समक्ष, आगे, सामने 3. अग्रिम, पहले विलो. पिछाड़ी प्रयो. साहब के अगाड़ी और घोड़े के पिछाड़ी होना ठीक नहीं।

अगाडू *क्रि.वि.* (तद्.) आगे, पहले दे. अगाड़ी।

अगात्मजा *स्त्री.* (तत्.) अग अर्थात् पर्वत की पुत्री, शैलसुता, पार्वती।

अगाध *वि.* (तत्.) शा.अर्थ. जो गाध अथवा उथला न हो 1. अत्यंत गहरा जैसे अगाध समुद्र 2. अथाह 3. अतल 4. अपार 5. दुर्बोध।

अगाह *वि.* (तद्.) दे. अगाध।

अगिन *स्त्री.* (तद्.) 1. दे. अग्नि 2. अगणित, अनगिनत, असंख्य, बेशुमार 3. झाड़ियों में विचरण करने वाली लाल रंग की एक चिड़िया lark

अगिनत *वि.* (तत्.) दे. अनगिनत।

अगिया *स्त्री.* (तद्.) एक प्रकार की घास, खर *पुं* (तद्.) 1. एक प्रकार का पीला रोएँदार कीड़ा 2. घोड़े या बैलों का एक रोग।

अगियाना *अ.क्रि.* (तद्.) जल उठना, जलना, गरमाना, बहुत अधिक क्रोध में आना।

अगिया बैताल *पुं.* (हि.+तत्.) विध्वंस के कार्यों में आगे रहने वाला व्यक्ति टि. राजा विक्रमादित्य के दो बैतालों में से एक बैताल का नाम 'अगिया बैताल था, जिसके मुँह से आग निकलती थी और जो अद्‌भुत रूप से विध्वंस के कार्यों में अग्रसर रहता था।

अगियार *वि.* (तद्.) जिसकी आग देर तक जल सके, *पुं* (तद्.) वह वस्तु जो वातावरण को सुगंधित करने के लिए आग में डाली जाती है, धूप, हवन-सामग्री आदि।

अगियारी *स्त्री.* (तद्.) वह वस्तु जो वातावरण को सुंगधित करने के लिए आग में डाली जाती है।

अगुआ *पुं.* (तद्.) 1. आगे चलने वाला व्यक्ति, अग्रणी, अगुवा 2. मुखिया, प्रधान, नायक, सरदार, नेता 3. मार्ग-दर्शक, पथ-प्रदर्शक विलो. पिछुआ।

अगुआई *स्त्री.* (तद्.) 1. अग्रणी होने की स्थिति, अग्रसरता 2. नेतृत्व, प्रधानता, सरदारी 3. मार्ग-दर्शन।

अगुआना *स.क्रि.* (तद्.) आगे करना, अगुआ बनाना *अ.क्रि.* (तद्.) आगे होना, बढ़ना।

अगुण *वि.* (तत्.) 1. गुणरहित, निर्गुण, सत्वगुणविहीन 2. मूर्ख, अनाड़ी *पुं.* अवगुण, दोष, दूषण।

अगुणज्ञ *वि. (तत्.)* जो गुण को जानने वाला न हो, अगुणी।

अगुणता *स्त्री.* (तत्.) गुणहीनता, गुणों का अभाव।

अगुणवादी *वि.* (तत्.) दूसरों के दोष या अवगुण खोजने वाला।

अगुणित *वि.* (तत्.) 1. जो गुणित न हो, जिसमें एकाधिक संख्याएँ न हो 2. जीव. (वह जीव या कोशिका) जिसमें गुणसूत्रों का एक ही समुच्चय (सेट) हो तु. द्‌विगुणित, बहुगुणित।

अगुणी *वि.* (तत्.) 1. निर्गुणी, गुणरहित, गुणहीन 2. अनाड़ी, मूर्ख।

अगुन *वि./पुं* (तद्.) दे. अगुण।

अगुनी *वि.* (तद्.) दे. अगुणी।

अगुरु *वि.* (तत्.) 1. जो भारी न हो, हलका 2. जिसका कोई गुरु न हो, गुरुविहीन, निगुरा 3. जिसने गुरु से उपदेश न प्राप्त किया हो 4. जो गुरु न हो, गुरु से भिन्न *पुं.* 1. शीशम का पेड़।

अगुवा *पुं.* (तद्.) दे. अगुआ।

अगुवाई *स्त्री.* (तद्.) दे. अगुआई।

अगुवा करना *स.क्रि.* (तद्.) अगवा करना, अनैतिक ढंग से धन प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति का (विशेष रूप से धनवान व्यक्ति या उसके बालक का) असामाजिक तत्वों द्‌वारा अपहरण करना ताकि (उसे छोड़ने की एवज में) उसके अभिभावकों से धन उगाहा जा सके।

अगूढ *वि.* (तत्.) 1. जो समझने में कठिन न हो, जिसका अर्थ छिपा न हो, स्पष्ट, आसान 2. जो छिपा न हो, प्रकट।

अगूढभाव *वि.* (तत्.) स्पष्ट अर्थवाला (वाक्य/वाक्यांश)।

अगूढव्यंग्य *पुं.* (तत्.) काव्य. गुणीभूतव्यंग्य का वह भेद जहाँ व्यंग्यार्थ-वाच्यार्थ की तरह स्पष्ट रहता है और सरलता से बोधगम्य होता है।

अगूढव्यंग्या लक्षणा *स्त्री.* (तत्.) काव्य. काव्यशास्त्र में प्रयोजनवती लक्षणा का एक प्रकार जिसमें व्यंग्य गूढ़ नहीं होता अपितु स्पष्ट रहता है और सरलता से बोधगम्य होता है।

अगेय *वि.* (तत्.) जो गाया नहीं जा सके। जो गाए जाने योग्य न हो।

अगेर. *क्रि.वि.* (तद्.) समक्ष, आगे।

अगोई *वि.* (तद्.) 1. अगोपित जो छिपाया न गया हो 2. प्रकट, स्पष्ट।

अगोचर *वि.* (तत्.) 1. जिसका अनुभव इंद्रियों द्वारा संभव न हो, जिसका बोध न हो सके 2. अप्रकट, अस्पष्ट, अव्यक्त *पुं.* (तत्.) ब्रह्मा, जो इंद्रियगम्य नहीं है जिसे देखा नहीं जा सकता विलो. गोचर।

अगोचरता *स्त्री.* (तत्.) अदृश्य होने का भाव, अप्रकट होने की स्थिति।

अगोट *पुं.* (तद्.)रोक, ओट, आड़ *स्त्री.* (तद्.) आश्रय, सहारा, आधार *वि.* (तद्.) एकाकी, अकेला।

अगोटना *स.क्रि.* (तद्.) 1. रोकना, रोक रखना, बंद करना 2. अंगीकार करना, स्वीकार करना 3. चयन करना, चुनना। *अ.क्रि.* (तद्.) रुकना, ठहरना, अड़ना, फँसना, उलझना।

अगोती *वि.* (तद्.) जो अपने गोत्र से संबंधित न हो।

अगोपनीय *वि.* (तत्.) प्रशा. जिसकी जानकारी दूसरे को होने में या जिसके सार्वजनिक होने में कोई दोष या आपत्ति न हो विलो. गोपनीय।

अगोरना *स.क्रि.* (तद्.) 1. राह देखना, बाट जोहना, इंतजार करना, प्रतीक्षा करना 2. रोकना।

अगोरा *पुं.* (तत्.) अगोरने की क्रिया, निगरानी, चौकसी।

अगोराई *स्त्री.* (तद्.) रखवाली करने की क्रिया।

अगोरिया *पुं.* (तद्.) खेत की रखवाली करने वाला, रखवाला।

अगौरी *पुं.* (तद्.) ईख के ऊपर का वह भाग जो पतला और अपेक्षाकृत कम मीठा या रसहीन होता है।

अगौली *स्त्री.* (तद्.) ईख की एक जाति जो छोटी और कड़ी होती है।

अग्नायी *स्त्री.* (तद्.) 1. अग्नि की स्त्री, स्वाहा 2. त्रेतायुग।

अग्नि *स्त्री.* (तत्.) 1. आग 2. पंचमहाभूतों में से तेजस तत्व 3. उष्णता, गरमी 4. प्रकाश 5. जठराग्नि 6. पित्त 7. चित्रक 8. वैद्यक के मतानुसार अग्नि के तीन भेद (क) भौमाग्नि (काष्ठादि से उत्पन्न) (ख) दिव्याग्नि (बिजली, उल्का आदि) (ग) जठराग्नि (जो उदर में भोजन को पचाती है) 9. कर्मकांड के अनुसार अग्नि के तीन भेद (क) गार्हपत्य (ख) आह्वनीय (ग) दक्षिणाग्नि 10. शरीरस्थ दस अग्नियां: भ्राजक, रंजक, क्लेदक, द्रावक, स्नेहक, धारक, बंधक, मापक, व्यापक और श्लेष्मक।

अग्निकण *पुं.* (तत्.) चिनगारी, स्फुलिंग।

अग्निकर्म *पुं.* (तत्.) 1. हवन, अग्निहोत्र 2. अग्नि-संस्कार, शवदाह 3. गर्म लोहे से दागने का कार्य।

अग्निकांड *पुं.* (तत्.) भयंकर आग लगना, आगजनी।

अग्निकाष्ठ *पुं.* (तत्.) 'अरणी' वृक्ष की लकड़ी जिसके दो टुकड़ों को परस्पर रगडक़र यज्ञ या हवन के लिए अग्नि उत्पन्न की जाती है टि. अरणिकाष्ठ को परस्पर रगड़ने की क्रिया अरणिमंथन कहलाती है।)

अग्निकीट *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का कीट जिसे 'जुगनू' कहते हैं 2. अग्नि में रहने वाला एक कल्पित कीट।

अग्निकुंड *पुं.* (तत्.) वैदिक नियमानुसार यज्ञ/हवन के लिए जमीन में खोदा गया कुंड या गड्ढ़ा।

अग्निकुमार *पुं.* (तत्.) 1. शिव के पुत्र कार्तिकेय, षडानन 2. एक अग्निवर्धक रस।

अग्निकुल *पुं.* (तत्.) क्षत्रियों का एक कुल या वंशविशेष, इस कुल की उत्पत्ति यज्ञकुंड से हुई मानी जाती है।

अग्निकेतु *पुं.* (तत्.) 1. धूम या धुआँ, अग्नि का परिचायक चिह्न अर्थात् धुआँ, टि. 'केतु' ध्वजा के अर्थ में भी प्रयुक्त होता हैं, अग्नि की ध्वजा उसका धूम है- अत: उसे 'अग्निकेतु' कहा जाता है।

अग्निकोण *पुं.* (तत्.) मान्य दस दिशाओं में से पूर्व और दक्षिण का कोना, आग्नेय कोण।

अग्निक्रिया *स्त्री.* (तत्.) शव-दाह, मुर्दा जलाना, दे. अग्निकर्म।

अग्निक्रीड़ा *स्त्री.* (तत्.) आतिशबाजी।

अग्निगर्भ *वि.* (तत्.) जिसके गर्भ में अग्नि हो *पुं.* 1. ज्वालामुखी (पर्वत) 2. सूर्यकांत मणि।

अग्निगर्भा *स्त्री.* (तत्.) 1. महाज्योतिष्मती 2. पृथ्वी 3. शमीवृक्ष।

अग्निचक्र *पुं.* (तत्.) आग का चक्र या गोलपिंड योग. नाभितल में स्थित मूलाधार चक्र जिसे योगी ध्यान द्वारा जागृत करते हैं।

अग्निचय *पुं.* (तत्.) (यज्ञ हेतु) मंत्र द्वारा अग्नि की स्थापना (अग्निस्थापन) या अग्न्याधान।

अग्निचयन *पुं.* (तत्.) दे. अग्निचय।

अग्निचिति *पुं.* (तत्.) दे. अग्निचय।

अग्निज *वि.* (तत्.) अग्नि से उत्पन्न, *पुं* (तत्.) 1. कार्तिकेय 2. विष्णु 3. सोना।

अग्निजन्मा *पुं.* (तत्.) *वि.* 1. अग्नि से उत्पन्न व्यक्ति या वस्तु, शिव-पार्वती का बेटा कार्तिकेय 2. सोना (स्वर्ण)

अग्निजात *पुं.* (तत्.) दे. अग्निजन्मा।

अग्निजिह्वा *स्त्री.* (तत्.) 1. आग की लपट 2. मुंडकोपनिषद् के अनुसार अग्निदेव की सात जीभें है काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, उग्रा और प्रदीप्ता 3. लांगली वृक्ष।

अग्निजीवी *पुं.* (तत्.) आग से संबंधित काम से जीविका अर्जित करने वाला व्यक्ति।

अग्निज्वाला *स्त्री.* (तत्.) आग की लौ या लपट।

अग्नितेजा *वि.* (तत्.) आग के समान तेज या शक्ति वाला।

अग्नित्रय *पुं.* (तत्.) तीन प्रकार की अग्नि जैसे- गार्हपत्य अग्नि, आह्वनीय अग्नि, दक्षिणाग्नि टि. वैदिक कर्मकांड में इन तीन अग्नियों का वर्णन आता है। प्रथम 'गार्हपत्य' अग्नि है जिसमें गृहस्वामी का कर्तव्य होता है कि वह अपने दायित्व की पूर्ति हेतु 'गार्हपत्याग्नि' सदा बनाए रखे। 'आहवनीय अग्नि' वह है जो यज्ञ मंडप में पूर्व दिशा में स्थापित की जाती है। दक्षिणाग्नि वह है जो यज्ञमंडप में दक्षिण दिशा में स्थापित की जाती है।'

अग्निदग्ध *वि.* (तत्.) 1. आग से जला हुआ। 2. शव जो चिता में जलाया गया हो।

अग्निदाता *पुं.* (तत्.) 1. मृत व्यक्ति के शव में अग्नि देने वाला, अंत्येष्टिकर्ता।

अग्निदान *पुं.* (तत्.) चिता में अग्नि लगाने का कार्य।

अग्निदाह *पुं.* (तत्.) 1. आग में जलाने का कार्य, आग में भस्म करने का कार्य 2. शवदाह, मुर्दा जलाने की क्रिया।

अग्निदिव्य *पुं.* (तत्.) अग्नि-शपथ या अग्नि परीक्षा।

अग्निदीपक *वि.* (तत्.) जठराग्नि को उत्तेजित करने वाला, पाचनशक्तिवर्धक।

अग्निदीपन *पुं.* (तत्.) जठराग्नि का उत्तेजन, पाचनशक्ति में बढ़ोतरी, अच्छी भूख।

अग्निदेव *पुं.* (तत्.) अग्नि देवता, अग्नि।

अग्निपंथी *वि.* (तत्.) अग्नि की ओर दग्ध होने के लिए जाने वाला, *पुं.* शलभ या पतंगा।

अग्निपक्व *वि.* (तत्.) आग में पका हुआ या पकाया हुआ।

अग्निपरीक्षा *स्त्री.* (तत्.) 1. आग द्वारा परीक्षा या जाँच, किसी व्यक्ति को जलती हुई आग में बिठा कर या उस पर चला कर या उसकी हथेली पर आग रखकर उस के दोषी या निर्दोष होने की जाँच 2. कठिन या दुस्साध्य परीक्षा 3. आग में तपा कर सोने, चांदी आदि धातुओं की शुद्धता की परख 4. नाड़ी-परीक्षा।

अग्निपर्वत *पुं.* (तत्.) ज्वालामुखी पर्वत।

अग्निपुराण *पुं.* (तत्.) अठारह पुराणों में से एक जिसे अग्नि देवता ने वशिष्ठ जी को सुनाया था।

अग्निपूजक *पुं.* (तत्.) अग्नि की पूजा करने वाला (पारसी धर्म के अनुयायी अग्नि की पूजा करते हैं, अत: उन्हें भी अग्निपूजक कहा जाता है।)

अग्निप्रतिष्ठा *स्त्री.* (तत्.) धार्मिक अनुष्ठानों में अग्निवेदी या अग्निकुंड में अग्नि की स्थापना।

अग्निप्रवेश *पुं.* (तत्.) 1. अग्नि में प्रवेश करना 2. पति की चिता में प्रवेश करके सती होने की क्रिया।

अग्निप्रस्तर *पुं.* (तत्.) आग उत्पन्न करने का पत्थर (पत्थर को आपस में रगड़कर आग पैदा की जाती है।)

अग्निबाण *पुं.* (तत्.) बाण जिसे चलाने से उसमें से आग निकलती थी, जिससे शत्रु उसमें भस्म हो जाता था, अग्न्यस्त्र, आधुनिक अर्थ में प्रक्षेपास्त्र।

अग्निबीमा *पुं.* (तत्. + फारसी) वाणि. आग लगने या बिजली गिरने से नष्ट हुई संपत्ति के लिए क्षतिपूर्ति का बीमा।

अग्निभ *वि.* (तत्.) अग्नि की आभा के समान चमकने वाला 2. सोना 3. कृतिका नामक नक्षत्र

अग्निभीति *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक विकार या रोग जिसमें रोगी आग देखकर अकारण भयभीत हो जाता है।

अग्निभू. *वि.* (तत्.) 1. अग्नि से उत्पन्न होने वाला 2. कार्तिकेय।

अग्निमंथ *पुं.* (तत्.) 1. अग्नि उत्पन्न करने की क्रिया 2. 'अरणी' नामक वृक्ष की लकड़ी जिसके टुकड़ों को रगडक़र आग पैदा की जाती है।

अग्निमंथन *पुं.* (तत्.) दे. अग्निमंथ।

अग्निमणि *पुं.* (तत्.) अग्नि जैसी चमक वाली मणि, सूर्यकांत मणि।

अग्निमांद्य *पुं.* (तत्.) भूख का अभाव, पाचन शक्ति कम हो जाना, एक प्रकार का अपच का रोग जिसे 'अजीर्ण रोग' कहते हैं।

अग्निमान् *पुं.* (तत्.) विधिपूर्वक अग्नि को रखनेवाला द्विज, अग्निहोत्री, *वि.* (तत्.) अच्छी पाचन शक्तिवाला।

अग्निमुख *पुं.* (तत्.) 1. ब्राहमण 2. देवता 3. प्रेत 4. अग्निहोत्री 5. अग्निवर्धक चूर्ण।

अग्निरजा *पुं.* (तत्.) 1. बीर बहूटी 2. सोना।

अग्निरेता *पुं.* (तत्.) 1.आग का तेज या बल 2. सोना।

अग्निवधू *स्त्री.* (तत्.) अग्नि की पत्नी टि. अग्नि को वैदिक देवता के रूप में मान्यता मिली हुई है, उनकी पत्नी 'स्वाहा' के नाम से जानी जाती है, अत: यज्ञ में आहुति देकर 'स्वाहा' कहकर उन्हें प्रसन्न किया जाता है।

अग्निवर्ण *वि.* (तत्.) 1. अग्नि के समान रंग वाला 2. प्रसिद्ध 'रघुवंश' महाकाव्य में अग्निवर्ण नाम का एक राजा हुआ जिसके कुकृत्य के कारण वंश का अंत हो गया।

अग्निवर्धक *वि.* (तत्.) 1. अग्नि (जठराग्नि) या पेट की भूख बढ़ाने वाला तत्व या पदार्थ 2. भूख बढ़ाने वाली औषधि।

अग्निवर्धन *वि.* (तत्.) पाचन शक्ति या भूख की वृद्धि।

अग्निवर्षा *स्त्री.* (तत्.) 1. युद्ध में अग्निबाणों से आग की वर्षा 2. भयंकर धूप (या गर्मी) जो आग बरसाने-सी लगे।

अग्निवाह *पुं.* (तत्.) अग्नि का वाहन, धुआँ।

अग्निवाहन *पुं.* (तत्.) अग्निदेव की सवारी (या वाहन)।

अग्निशमन *पुं.* (तत्.) किसी भवन में लगी आग को बुझाना टि. प्राय: नगरों में प्रशासन की ओर से आग बुझाने के लिए 'अग्निशमन' उपकरण और अग्निशमन केंद्रों की व्यवस्था होती है।

अग्निशामक *वि.* (तत्.) लगी आग को बुझानेवाला यंत्र (उपकरण) या व्यक्ति।

अग्निशाला *स्त्री.* (तत्.) घर में यज्ञ के लिए निर्धारित स्थान जहाँ यज्ञाग्नि स्थापित की गई हो।

अग्निशिखा *स्त्री.* (तत्.) 1. अग्नि की ज्वाला, आग की लपट 2. प्रकाश के लिए जलाई गई आग "अग्निशिखा बुझ गई जागने पर जैसे सुख सपने" (कामायनी) 3. कलियारी का पौधा जिसकी जड़ में विष होता है।

अग्निशुद्धि *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी द्रव्य के पात्र में में आग डालकर उसे शुद् ध करना 2. आग में प्रवेश करके चरित्र की शुद् धता की परख, तथा इसी प्रकार आग में तपाकर सोने की शुद्धता की परख भी अग्निशुद्धि या अग्नि परीक्षा के अंतर्गत माने जाते हैं।

अग्निशेखर *पुं.* (तत्.) 1. अग्नि का मुकुट या आभूषण 2. सोना 3. केसर।

अग्निष्टोम *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का वैदिक यज्ञ जो वसंत ऋतु में पाँच दिन किया जाता है।

अग्निसंस्कार *पुं.* (तत्.) मृतशरीर (शव) का दाह-संस्कार, अन्त्येष्टि संस्कार 2. शुद्धता के लिए किसी वस्तु स्वर्ण आदि का अग्नि में तपाना।

अग्निसह *वि.* (तत्.) आग के ताप को सहने में सक्षम, अग्निरोधी। fireproof

अग्निसह ईंट *स्त्री.* (तत्.+तद्.) उच्च ताप को सहन करने में सक्षम ईंट।

अग्निसाक्षिक *वि.* (तत्.) आग को साक्षी करके किया गया काम, जिसकी साक्षी आग हो।

अग्निसात् *वि.* (तत्.) आग में जला हुआ या जलाया गया।

अग्निसार *पुं.* (तत्.) दे. रसांजन, आँखों की एक औषधि।

अग्निसुत *पुं.* (तत्.) शिव-पार्वती का पुत्र स्कंद या कार्तिकेय (शिव पार्वती को अग्निसम तेजोरूप माना गया है, अत: वे अग्निसुत है)।

अग्निसेवन *पुं.* (तत्.) आग का सेवन करना या आग तापना।

अग्निहोत्र *पुं.* (तत्.) नियमपूर्वक वैदिक मंत्रों से नित्य सुबह-शाम किया जाने वाला हवन।

अग्नीध्र *पुं.* (तत्.) 1. यज्ञ में अग्नि की रक्षा करने वाला ऋत्विक 2. होम, हवन, 3. स्वायंभुव मनु का एक पुत्र।

अग्नीय *वि.* (तत्.) अग्नि संबंधी, अग्नि का।

अग्न्यस्त्र [अग्नि-अस्त्र] *पुं.* (तत्.) चलाने, छोड़ने पर अग्नि पैदा करने वाला अस्त्र (बाण); महाभारत युद्ध के संदर्भ में आधुनिक 'मिसाइल' का पर्याय, आग्नेय अस्त्र।

अग्न्यागार *पुं.* (तत्.) यज्ञाग्नि रखने का स्थान।

अग्न्याधान [अग्नि-आधान] *पुं.* (तत्.) 1. अग्नि रखना या स्थापित करना 2. आग जलाना या सुलगाना, मंत्र द्वारा यज्ञ की अग्नि को स्थापित करना।

अग्न्याशय [अग्नि-आशय] *पुं.* (तत्.) जठराग्नि का स्थान जहाँ भोजन पचता है, कशेरुकी प्राणियों की वृहद् कूपिका ग्रंथि जिससे पाचक प्रकिण्व और इन्सुलिन हॉर्मोन स्रवित होते हैं, पक्वाशय pancreas

अग्न्युत्पात *पुं.* (तत्.) 1. ऐसी आग का लगना या लगाना जिससे बहुत उत्पात या हानि हो; अग्निकांड 2. आकाश से उल्कापात।

अग्यारी *स्त्री.* (तद्.) दे. अगियारी, अगियार।

अग्र *वि.* (तत्.) 1. प्रथम 2. श्रेष्ठ, उत्तम 3. प्रधान, मुख्य 4. सिरा, नोक।

अग्रकर *पुं.* (तत्.) 1. हाथ का अगला हिस्सा। 2. दाहिना हाथ या हाथ की ऊंगली 3. सूर्य की पहली किरण।

अग्रकारी *वि.* (तत्.) आगे का, पहल करने वाला व्यक्ति या वस्तु।

अग्रकुंचन *पुं.* (तत्.) चिकि. आगे की ओर मुड़ना या मुड़ने का भाव।

अग्रग *वि.* (तत्.) पहले या आगे जाने वाला। (व्यक्ति या प्राणी आदि)।

अग्रगण्य *वि.* (तत्.) 1. गिनती में जिसे पहले रखा जाए, जिसकी गिनती पहले हो यानी प्रथम पंक्ति का (व्यक्ति) 2. प्रधान, मुखिया 3. श्रेष्ठ, बड़ा।

अग्रगामी *वि.* (तत्.) 1. आगे चलने वाला, अगुआ 2. अग्रोन्मुखी *पुं.* (तत्.) 1. वह जो आगे चले 2. प्रधान व्यक्ति 3. अगुआ।

अग्रगामी धारा *स्त्री.* (तत्.) भौ. जिसकी धारा दूसरी दूसरी धारा से अधिक तीव्र होने के कारण बह कर आगे बढ़ गई हो, विलो. पश्चगामी धारा।

अग्रगामी परियोजना *स्त्री.* (तत्.) किसी महत्वाकांक्षी योजना को व्यापक स्तर पर चलाने से पहले उसकी सार्थकता को जाँचने के लिए छोटे पैमाने पर सीमित क्षेत्र में किया गया प्रयोग, प्रायोगिक परियोजना। pilot project

अग्रघर्षण *पुं.* (तत्.) राज. युद्ध की प्राथमिक कार्यवाही, युद्ध को आरंभ करने के लिए आगे आकर आक्रमण करना।

अग्रघर्षी *वि.* (तत्.) हठकर आक्रमणात्मक।

अग्रज *पुं.* (तत्.) बड़ा भाई, ज्येष्ठ भ्राता *वि.* पहले पैदा हुआ।

अग्रजन्मा *वि.* (तत्.) पहले पैदा हुआ *पुं.* (तत्.) 1. बड़ा भाई 2. ब्राह्मण।

अग्रजात *वि.* (तत्.) जिसका जन्म पहले हुआ हो या पहले जन्म लेने वाला।

अग्रणी *वि.* (तत्.) अगुआ, श्रेष्ठ, प्रधान, मुखिया।

अग्रत: *क्रि.वि.* (तत्.) पहले या पहले हो, समक्ष (सामने)।

अग्रता *स्त्री.* (तत्.) अनेक कार्यों में से किसी कार्य विशेष को सर्वप्रथम किए जाने की स्थिति 2. किसी विचाराधीन मुद्दे या समस्या को सबसे पहले निपटाने का विचार 3. किसी वस्तु का अभाव होने पर उसे पहले दिए जाने की सुविधा तु. पश्चता।

अग्रता-क्रम *पुं.* (तत्.) 1. विशिष्ट पदधारियों की वरीयता के आधार पर बनाई गई क्रमवार, सूची जिसका अनुपालन नयाचार (प्रोटोकोल) में अनिवार्य होता है 2. प्राथमिकता के आधार पर किए या निपटाए जाने वाले कार्यों की सूची। hierarchy

अग्रत्व *पुं.* (तत्.) पहले होने का भाव, पहल।

अग्रदाय *पुं.* (तत्.) छोटे-छोटे भुगतानों के लिए खजांची को दी जाने वाली अग्रिम धनराशि।

अग्रदीप *पुं.* (तत्.) किसी वाहन की सामने वाली तेज रोशनी। head light

अग्रदूत *पुं.* (तत्.) 1. वह दूत जो किसी के आने की सूचना उसके आने के पूर्व ही पहुँचा दे 2. ला.अर्थ. आरंभकर्ता प्रयो. राजा राममोहनराय भारत में पुनरुत्थान काल के अग्रदूत थे।

अग्रनति *स्त्री.* (तत्.) आगे की ओर झुकना।

अग्र निर्णय *पुं.* (तत्.) वह मामला (केस) जिसके निर्णय को भावी वादों में बारंबार दृष्टांत स्वरूप प्रस्तुत किया जाता है। precedent

अग्रनीत *वि.* (तत्.) आगे ले जाया गया वाणि. *पुं.* अग्रिम पृष्ठ पर ले जाया जाने वाला अंकन (लेखन)। carried forward

अग्रपिंडक *पुं.* (तत्.) शुक्राणु का वह भाग जो केंद्रक के अगले सिरे को ढकता है। acrogen

अग्रपूजन *पुं.* (तत्.) पहले की जाने वाली पूजा।

अग्रपूजा *स्त्री.* (तत्.) किसी अनुष्ठान में किसी का सर्वप्रथम पूजन या सत्कार।

अग्रप्रेषण *पुं.* (तत्.) आगे की तरफ भेजना, अपने से वरिष्ठ अधिकारी के पास विचारार्थ पत्रावली या अभिलेख भेजना।

अग्रप्रेषित *वि.* (तत्.) जिसे आगे (किसी वरिष्ठ अधिकारी के पास) भेजा गया हो।

अग्रबीज *पुं.* (तत्.) 1. डाल काटकर फिर से लगाया जा सकने वाला वृक्ष 2. पौधे की डाल से वृक्ष की कलम लगाना।

अग्रभाग *पुं.* (तत्.) 1. आगे का भाग, अगला हिस्सा 2. सिरा, नोक, छोर।

अग्रमहिषी *स्त्री.* (तत्.) राजा की प्रमुख रानी पटरानी।

अग्रयान *पुं.* (तत्.) आगे चलना या बढ़ना, आगे बढकर प्रहार करना।

अग्रयायी *पुं.* (तत्.) 1. आगे जाने वाला 2. नेतृत्व कर अग्रसर होने वाला प्रधान व्यक्ति।

अग्रलेख *पुं.* (तत्.) किसी पत्र या पत्रिका में लिखा जाने वाला संपादकीय लेख, प्राक्कथन।

अग्रवर्ती *वि.* (तत्.) अगुवा बनने वाला, आगे रहने वाला।

अग्रवाल *पुं.* (देश.) वैश्यों की एक उपजाति विशेष, अग्रोहा या आगरे में बसे वैश्य दे. अगरवाला।

अग्र विनिश्चय *पु.* (तत्.) वह सुविचारित निर्णय जिसे भावी मामलों में दृष्टांत के रूप में बार-बार उद्धृत किया जा सके। leading decision

अग्रश: *क्रि.वि.* (तत्.) प्रारंभ से ही, पहले से ही।

अग्रशाला *स्त्री.* (तत्.) आवास का अगला भाग।

अग्रश्रुति *स्त्री.* (तत्.) पहले से सुनी बात या कथा।

अग्रसर *वि.* (तत्.) आगे गया या आगे बढ़ा हुआ, अग्रगामी, अगुआ, प्रवृत्त।

अग्रसर होना *अ.क्रि.* (तत्.) आगे बढ़ना, प्रवृत्त होना।

अग्रसार *पुं.* (तत्.) पत्र विवरण, प्रधान समाचार का आरंभिक परिचयात्मक अंश जिससे उसके सार का बोध हो।

अग्रसारण *पुं.* (तत्.) आगे बढ़ाना या आगे बढ़ाने का काम, अग्रप्रेषण। forward

अग्रसारित *वि.* (तत्.) आगे उच्च अधिकारी के पास भेजा गया विवरण, सूचना पत्र आदि, अग्रेषित।

अग्रसोची *वि.* (तत्.) आगे या भविष्य का विचार करने वाला, दूर की बात सोचने वाला, दूरदर्शी।

अग्रस्वर *पुं.* (तत्.) वे स्वर जो जिह्वा के अग्र भाग से तालु के आगे के स्थान पर उच्चरित होते हैं उदा. ई, ए, ऐ तु. पश्चस्वर।

अग्रह *पुं.* (तत्.) नहीं लेना/ग्रहण न करना।

अग्रहण *पुं.* (तत्.) शा.अर्थ. ग्रहण न करना 2. विधि. किसी अपील या साक्ष्य को विचार-योग्य न मानना।

अग्रहणीय *वि.* (तत्.) ग्रहण न करने योग्य, स्वीकार करने के अयोग्य।

अग्रहायण *पुं.* (तत्.) अगहन मास, मार्गशीर्ष *वि.* वैदिक काल में वसंत संपात इसी महीने में होने के कारण यह वर्षारंभ का महीना माना जाता था, आजकल वसंतसंपात चैत्र मास में होता है।

अग्रहार *पुं.* (तत्.) पुराने समय में राजाओं द्वारा ब्राह्मणों की जीविका के लिए दान में दी गई भूमि या कृषि उपज का कुछ अंश।

अग्रहारिक *वि.* (तत्.) भूमि संबंधी अग्रहारों का राजकीय अधिकारी।

अग्रांतरण *पुं.* (तत्.) आगे भेजना, अग्रप्रेषण।

अग्रांश *पुं.* (तत्.) अग्रभाग।

अग्रानीत [अग्र+आनीत] *पुं.* (तत्.) वाणि. खाते के पिछले पृष्ठ से नए पृष्ठ पर उतारी गई रकम brought forward

अग्राम्य *वि.* (तत्.) 1. जो गाँव का न हो, नगर का, नागर 2. शिष्ट, सुसंस्कृत, मानक।

अग्रालोकन *पुं.* *(तत्.)* आगे के दृश्य की पहले से मिली झलक।

अग्राशन *पुं.* (तत्.) भोजन का पहला अंश जो देवताओं के लिए रख दिया गया हो।

अग्रासन *पुं.* (तत्.) प्रमुख सम्मानित व्यक्ति के लिए मंच या अन्य महत्त्वपूर्ण स्थान पर रखा निर्धारित स्थान।

अग्राह्य *पुं.* (तत्.) 1. जिसे ग्रहण न किया जा सके, जिसे ग्रहण करना उचित न हो, जैसे, अग्राह्य साक्ष्य, अग्रहणीय 2. न लेने लायक 3. त्याज्य, छोड़ने लायक 4. न मानने योग्य विलो. ग्राह्य।

अग्रिम *वि.* (तत्.) 1. अगला, आगे, जैसे: अग्रिम पंक्ति 2. प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम 3. प्रशा. पेशगी advance

अग्रिम अदायगी *स्त्री.* (तत्.+फा) अदायगी के लिए निश्चित तारीख से पहले किया गया भुगतान।

अग्रिम क्रय *पुं.* (तत्.) क्रेय वस्तु को उत्पादन से पहले ही खरीद लेना।

अग्रिम जमा *स्त्री.* (तत्.) वस्तु के क्रेता या किसी संविदा के प्रस्तावक द्वारा विक्रेता अथवा स्वीकर्ता को वचनबद्ध करने के लिए पहले जमा कराई गई राशि।

अग्रिम धन *पुं.* (तत्.) वाणि. किसी समझौते या संविदा में जमा की जाने वाली अग्रिम राशि, जो शर्तों के उल्लंघन होने पर जब्त की जाती है।

अग्रिम प्रति *स्त्री.* (तत्.) शा.अर्थ पहले भेजी गई (आवेदन) कॉपी, निर्धारित तिथि तक उचित माध्यम से आवेदन-पत्र के न पहुँचने की संभावना की दृष्टि से प्रेषक द्वारा सीधे प्रेषिती को भेजी गई प्रति, ताकि मूलपत्र के विलंब से पहुँचने पर भी प्राथमिक कार्रवाई शुरू हो सके advance copy

अग्रिम वेतन *पुं.* (तत्.) देय होने की तारीख से पूर्व दिया गया वेतन (जिसका बाद में समायोजन कर दिया जाता है)।

अग्रिम वेतनवृद्धि *स्त्री.* (तत्.) आवश्यकता से अधिक योग्य या अनुभवी उम्मीदवार की नियुक्ति के समय उसे (निर्धारित वेतमान की अपेक्षा) बढ़ा कर दिया गया अतिरिक्त आरंभिक वेतन। advance increment

अग्रिम संदाय *पुं.* (तत्.) दे. अग्रिम वेतन।

अग्रिम संविदा *स्त्री.* (तत्.) ऐसा विधिसम्मत करार जिसका कार्यान्वयन बाद में होना हो।

अग्रिम संस्करण *पुं.* (तत्.) किसी पुस्तक या रचना का अस्थायी संस्करण जो समीक्षा या विचार के लिए प्रकाशित होता है।

अग्रेणित *वि.* (तत्.) आगे भेजा गया।

अग्रेनीत *वि.* (तत्.) खाते का पृष्ठ भर जाने पर उसके पृष्ठ के जोड़ का अगले पृष्ठ पर अंतरण carried forward

अग्रे-मूल्य *पुं.* (तत्.) निर्धारित कीमत।

अग्रेषण *पुं.* (तत्.) किसी के आवेदन पत्र या अन्य विषय पत्र को अगले सक्षम कार्यालय को भिजवाना! forwarding

अग्रेषण-अभिकर्ता *पुं.* (तत्.) जो व्यक्ति वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजने की व्यवस्था करता है! forwarding agent

अग्रेषण पत्र *पुं.* (तत्.) किसी प्रलेख, चेक, ड्राफ्ट आदि को भेजते समय उसके विषय में आवश्यक विवरण सहित साथ लगा पत्र।

अग्रेसर *पुं.* (तत्.) आगे चलनेवाला, अग्रगामी, अगुआ।

अग्रोन्मुखी *वि.* (तत्.) ऊपर की तरफ उठा हुआ।

अघ *पुं.* (तत्.) 1. पाप, पातक 2. व्यसन।

अघ-ओघ *पुं.* (तत्.) पापों का समूह, पाप राशि।

अघट *वि.* (तत्.) जो कभी न घटे या कम न हो, यथास्थिति।

अघटन *वि.* (तत्.) पापों का नाश करने वाला। पापहारक।

अघटित *वि.* (तत्.) जो घटित न हुआ हो, जो (अब तक) न हुआ हो उदा. कुछ अघटित घटने की आशंका ने उनके भीतर को झकझोर डाला है- बाणभट्ट की आत्मकथा ।

अघन *पुं. (तत्.)* जो घन न हो, ठोसहीन।

अघनाशन *वि. (तत्.)* दुष्कर्म या पाप का नाश करने वाला पाप नाशक।

अघभोजी *वि.* (तत्.) दुष्कर्म का फल भोगने वाला।

अघमर्षण *पुं.* (तत्.) 1. वैदिक मंत्र जिसका उच्चारण संध्यावंदन के समय किया जाता है 2. सध्यावंदन के समय वैदिक मंत्र से पवित्र जल को अपने अंगों पर और चारों ओर छिडक़ना 3. पापों का क्षय (पापक्षय)।

अघरि *वि.* (तत्.) पापहारी, पाप का नाश करने वाला।

अघवाना *स.क्रि.* (तत्.) 1. भोजन से तृप्त करना, भरपेट खिलाना, छकाना 2. पूर्ण संतुष्ट करना।

अघहर *वि.* (तत्.) पापक्षयकारक, पाप का नाश करने वाला।

अघहरण *पुं.* (तत्.) दु:खनाशक, पाप का नाश।

अघाट *पुं. (तत्.)* 1. जो घाट ठीक (उपयुक्त) न हो, कुत्सित घाट 2. अगहाट, जिस भूमि को बेचने का अधिकार स्वामी को न हो।

अघात *वि.* (तत्.) घात-रहित, क्षति-रहित *पुं.* (तद्.) आघात, चोट, मार, प्रहार।

अघाती *वि.* (तत्.) घात या क्षति न करने वाला।

अघाना *अ.क्रि.* (तद्.) पूरी तरह तृप्त होना; किसी वस्तु के सेवन से जी भरना उदा.- पनीर खाते-खाते अब मैं अघा गया हूँ।

अघाव *पुं.* (तत्.) 1. पूर्ण तृप्त होने का भाव 2. भोजन से मन तृप्त होने की स्थिति।

अघी *वि. (तत्.)* पाप करने वाला, पापी।

अघोर *वि.* (तत्.) जो भीषण या भयंकर न हो, सौम्य। *पुं.* (तत्.) 1. एक पंथ या संप्रदाय विशेष दे. 'अघोर पंथी' 2. अघोर पंथ का साधक या अघोरी 2. शिव का एक नाम या एक रूप।

अघोरनाथ *पुं.* (तत्.) भूतनाथ, शिव।

अघोरपंथ *पुं.* (तत्.) अघोरियों का एक विशेष पंथ या संप्रदाय जो मांस, मदिरा आदि का सेवन करता है।

अघोरपंथी *वि./पुं.* (तत्.) अघोर पंथ का अनुयायी, अघोरी, औघड़।

अघोरा *स्त्री.* (तत्.) भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी तिथि।

अघोरी *वि.पुं.* (तत्.) 1. अघोरपंथी 2. वर्ज्य या घिनौनी वस्तुओं का उपभोग करनेवाला व्यक्ति, घिनौना।

अघोष *वि.* (तत्.) घोष/शब्द रहित, ध्वनिरहित *पुं. (तत्.)*उच्चारण के अनुसार वे स्वनिम (ध्वनियाँ) जिनका उच्चारण करते समय स्वरतंत्रियों में कंपन न हो जैसे- हिंदी व्यंजनवर्गों के पहले-दूसरे व्यंजन विलो. घोष, सघोष।

अघोषित *वि.* (तत्.) जिसकी घोषणा नहीं की गई हो, अकथित।

अघोषी भवन *पुं.* (तत्.) घोष स्वनों का उच्चारण के स्तर पर और कालांतर में लेखन के स्तर पर भी घोषत्वहीन हो जाना जैसे- विपद् के स्थान पर विपत्।

अघोषीकरण *पुं.* (तत्.) दे. अघोषीभवन।

अघौघ *पुं.* (तत्.) दुष्कर्मों का समुदाय, पापों का समूह।

अघ्न्य *वि.* (तत्.) अवध्य जो मारने/वध करने के योग्य न हो जिनका वध निषिद्ध हो जैसे- ब्राहमण, बैल, शिशु, नारी।

अघ्न्या *वि.* (तत्.) 1. जो चंचल न हो, चंचलता रहित, स्थिर ठहरा हुआ 2. धीर, गंभीर *स्त्री.* गाय।

अघ्रेय *वि.* (तत्.) जिसे सूँघा न जा सके, जो सूँघने योग्य न हो।

अचंचल *वि.* (तत्.) जिसमें चंचलता न हो, धीर व्यक्ति।

अचंड *वि.* (तत्.) 1. जो चंड न हो, उग्रतारहित 2. शांत, सुशील, सौम्य।

अचंद्र *वि.* (तत्.) जिसमें चंद्रमा का प्रकाश न हो, चंद्रमा रहित अमावस्या तिथि।

अचंभा *पुं.* (तद्.) आश्चर्य, विस्मय, अचरज।

अचंभित *वि.* (तत्.) चकित, विस्मित, आश्चर्यचकित।

अचकचाना *अ.क्रि.* (तत्.) भौचक्का होना, चौंक उठना उदा. उसको अपने घर अचानक आया देखकर शीला अचकचा गई।

अचकचाहट *स्त्री.* (तद्.) घबराहट, भौचक्कापन, विस्मय।

अचकन *स्त्री.* (तद्.) एक प्रकार का लंबा, ऊपर से तंग पर नीचे से कुछ-कुछ घेरदार-सा बंद गले का कोट, शेरवानी।

अचकित *वि.* (तत्.) जो चकित नहीं है, अविस्मित।

अचक्का *वि.* (देश.) 1. (ऐसी दशा) जिसमें चित्त कहीं और रमा हो, असावधानी की स्थिति 2. अचानक।

अचक्र *वि.* (तत्.) 1. बिना चक्र का, बिना पहिए का 2. अचल, स्थिर।

अचक्रीय *वि.* (तत्.) जो चक्रीय न हो *पुं.* चक्रीय से भिन्न यौगिक रसा. जिस यौगिक के अणुओं में कोई वलय न हो।

अचक्षु *वि.* (तत्.) बिना आँख का, नेत्ररहित, अंधा।

अचक्षुर्विषय *वि.* (तत्.) 1. जिसे आँखों से देखना संभव न हो 2. आँखों से अदृश्य *पुं.* नेत्रों के अतिरिक्त अन्य किसी इंद्रिय से जिस विषय का ज्ञान हो।

अचतुर *वि.* (तत्.) जो चतुर न हो, अनाड़ी, अकुशल।

अचपल *वि.* (तत्.) जो चंचलता युक्त न हो, गंभीर, शांत।

अचपलता *स्त्री.* (तत्.) चंचलता का अभाव। धैर्ययुक्तता, गंभीरता।

अचर *वि.* (तत्.) 1. न चलनेवाला, अचल, स्थावर स्थिर 2. गतिहीन 3. अपरिवर्ती 4. एकसमान भौ. किसी गुणधर्म, मात्रा, परिमाण या संबंध की व्यंजक वह संख्या जो अपरिवर्तित रहती है। constant

अचरज *पुं.* (तद्.) आश्चर्य, अचंभा, विस्मय।

अचरम *वि.* (तत्.) जो चरम या आखिरी स्थिति वाला न हो।

अचल *वि.* (तत्.) 1. जो न चले, जो न हिले, स्थिर, ठहरा हुआ, निश्चल, गतिहीन 2. न डिगनेवाला, अटल, दृढ़, अडिग 3. सदा रहने वाला, चिरस्थायी 4. जो नष्ट न हो, मजबूत, अटूट *पुं.* (तत्.) पर्वत, पहाड़।

अचलज *वि.* (तत्.) पहाड़ से उत्पन्न।

अचलजा *स्त्री.* (तत्.) अचल या पहाड़ की पुत्री, पार्वती या गंगा।

अचलजात *वि.* (तत्.) दे. अचलज।

अचलतनया *स्त्री.* (तत्.) पर्वत की तनया या पुत्री, पार्वती।

अचलता *स्त्री.* (तत्.) अचल होने की स्थिति, स्थिरता।

अचल धुरी *स्त्री.* (तत्.) वह धुरी जो अपने घूमते हुए पहिए के साथ नहीं घूमती।

अचलपति *पुं.* (तत्.) पर्वतों का पति या पर्वतों में श्रेष्ठ, हिमालय, नगपति, नगाधिराज।

अचल परिसंपत्ति *स्त्री.* (तत्.) लंबे समय तक स्थायी रूप् में उत्पादन-प्रक्रिया में काम आने वाली पूँजी, जैसे इमारतें, फर्नीचर आदि fixed assets

अचलराज *पुं.* (तत्.) नगेश दे. अचलपति।

अचल लागत *स्त्री.* (तत्.+हि.) वे लागतें जो अल्पकाल में उत्पादन के घटने-बढ़ने के साथ घटती या बढ़ती नहीं हैं।

अचल संपत्ति *स्त्री.* (तत्.) वह संपत्ति जो चल न हो, स्थावर संपत्ति, जैसे- खेत, मकान आदि। immovable property

अचल स्वर *पुं.* (तत्.) संगीत के सात स्वरों स रे ग म प ध नि में दो स्वर 'स' और 'प' जो अपने मूल रूप से विचलित नहीं होते।

अचला *स्त्री.* (तत्.) (अपनी कक्षा से बाहर न जाने वाली) पृथ्वी, धरती, धरा।

अचवना *स.क्रि.* (तद्.) 1. आचमन करना, पान करना, पीना 2. छोड़ देना *अ.क्रि.* भोजन के बाद कुल्ला आदि करना।

अचाका *क्रि.वि.* (तद्.) अचानक, अकस्मात्, सहसा।

अचानक *क्रि.वि.* (तद्.) बिना पूर्व सूचना के, सहसा, एकदम, अकस्मात्, औचक।

अचार *पुं.* (फा.) मिर्च, राई, मसाला आदि मिला कर आम, नींबू आदि फलों अथवा सब्जियों से बनाया गया विशेष चटपटा खाद्य पदार्थ, जो तेल या सिरका डालने के कारण कई दिनों तक सुरक्षित रहता है। *पुं.* (तत्.) आचार, आचरण।

अचारज *पुं.* (तद्.) आचार्य, दाह-संस्कार के समय क्रिया-कर्म कराने वाला महाब्राह्मण।

अचारी *वि.* (तद्.)1. अचार बनाने के काम आनेवाला जैसे- अचारी नींबू 2. आचार से संबंधित, आचार-विचार का ध्यान रखने वाला *पुं.* (तद्.) यज्ञ कर्मोपदेशक, वेदज्ञ *स्त्री.* (तद्.) फल को छील कर नमक-मिर्च आदि से बनाया जाने वाला खट्टा या खट्टा-मीठा खाद्य पदार्थ।

अचाह *स्त्री.* (तद्.) 1. चाह या इच्छा का अभाव, अनिच्छा 2. अरुचि 3. अप्रीति *वि.* (तद्.) बिना चाह का, जिसकी कुछ अभिलाषा न हो, निष्काम।

अचाहा *वि.* (तद्.) 1. न चाहा हुआ, अवांछित, अनिच्छित, अनभीष्ट 2. जिसमें रुचि न हो 3. जो प्रेमपात्र न हो 4. प्रीति-रहित।

अचिंत *वि.* (तत्.) 1. चिंतारहित, बेफिक्र, निश्चिंत 2. अचिंतनीय।

अचिंतनशील *वि.* (तत्.) चिंतन रहित, बिना सोचे-समझे काम करनेवाला, विलो. चिंतनशील।

अचिंतनीय *वि.* (तत्.) जिसका चिंतन न हो सके, जो ध्यान में आ न सके; जो चिंतन या ध्यान करने योग्य नहीं हो, विलो. चिंतनीय।

अचिंता *स्त्री.* (तत्.) चिंता का अभाव, लापरवाही।

अचिंतित *वि.* (तत्.) 1. जिसका चिंतन न किया गया हो, अविचारित, जिस पर विचार न किया गया हो 2. आकस्मिक, अप्रत्याशित।

अचिंत्य *वि.* (तत्.) 1. जिसका चिंतन न हो सके, जो ध्यान में न आ सके 2. जिसकी चिंता नहीं की जानी चाहिए, चिंता के अयोग्य 3. बिना सोचा-विचारा, आकस्मिक।

अचित *वि.* (तत्.) 1. अविचारित 2. एकत्र न किया गया 3. अचेतन, जड़।

अचितवन *वि.* (तद्.) चितवन-रहित।

अचिति *स्त्री.* (तत्.) असंग्रह, अचयन 1. संग्रह या चयन के न होने की स्थिति 2. चिति अर्थात् ज्ञान का न रहना, अज्ञान।

अचित्त *वि.* (तद्.) 1. विचार या ध्यान में न आने योग्य 2. अविचारित, जिस पर विचार न किया गया हो 3. जो समझ के परे हो 4. निर्बुद्धि, अज्ञान।

अचिर *क्रि.वि.* (तत्.) 1. शीघ्र, जल्दी 2. थोड़े समय पूर्व, कुछ समय पहले।

अचिरांशु [अचिर-अंशु] *पुं.* (तत्.) क्षणमात्र में किरण या प्रकाश दे देने वाली विद्युत, बिजली।

अचिराभा [अचिर+आभा] *स्त्री.* (तत्.) बिजली, विद्युत।

अचिह्नित *वि.* (तत्.) 1. जिस पर कोई चिह्न न लगा हो 2. (भाषा.) किसी शब्द का लिंग, वचन आदि कोटियों के लिए चिह्नित न होना विलो. चिह्नित।

अचीता *वि.* (तद्.) 1. अचिंतित, बिना सोचा-विचारा, जिसका अंदाज न हो 2. बेफिक्र, निश्चिंत 3. असंभावित, आकस्मिक।

अचीर *वि.* (तत्.) चीरविहीन, वस्त्ररहित।

अचूक *वि.* (तत्.) 1. जो न चूके, जिसका निशाना खाली न जाए, जो लक्ष्य पर सही बैठे, अमोघ, जैसे- अचूक दवा 2. जिसमें भूल न हो, भ्रमरहित, निश्चित।

अचूक प्रहार *पुं.* (तत्.) वह प्रहार जो अपने लक्ष्य पर लगने से न चूके, यानी अवश्य ही लगे, अमोघ।

अचेत *वि.* (तत्.) 1. चेतनारहित, बेसुध, बेहोश *पुं.* 1. जड़ प्रकृति, जड़त्व 2. माया, अज्ञान।

अचेतन *वि.* (तत्.) 1. अचेत, जिसमें चेतना का अभाव हो, जड़ 2. निर्जीव, जीवन रहित 3. मूर्च्छित, संज्ञाशून्य।

अचेता *वि.* (तत्.) 1. अचेत, चेतनारहित 2. जीवनरहित, निर्जीव, निष्प्राण।

अचेष्ट *वि.* (तत्.) 1. चेष्टा-रहित, बिना प्रयास का, गति-रहित 2. मूर्छित, बेहोश।

अचेष्टित *वि.* (तत्.) 1. जिस कार्य के लिए प्रयत्न न किया गया हो, चेष्टा न की गई हो 2. जो गति-रहित हो।

अचैतन्य *वि.* (तत्.) 1. चैतन्य या चेतना रहित, निश्चेतन, चेतना का अभाव 2. होश-हवास के बिना, *पुं.* 1. चेतना-विहीनता, बेहोशी 2. अज्ञान 3. जड़ पदार्थ।

अच् *पुं.* (तत्.) व्याकरण. 'अ' से 'औ' तक के स्वरों के लिए प्रयुक्त संस्कृत का पारिभाषिक शब्द।

अच्छत *पुं.* (देश.) अक्षत, बिना टूटा हुआ चावल (जो मंगल कार्यों में प्रयुक्त होता है) *वि.* बिना टूटा, टूट-फूट के बिना, अखंडित, लगातार।

अच्छर *पुं.* (तद्.) अक्षर, वर्ण, हरफ।

अच्छरा *स्त्री.* दे. अप्सरा।

अच्छा *वि.* (तद्.) 1. उत्तम, बढ़िया 2. भला 3. स्वस्थ, चंगा, नीरोग मुहा. अच्छा करना- उत्तम कार्य करना, स्वस्थ या नीरोग कर देना; अच्छा कहना- प्रशंसा करना; अच्छा रहना- सकुशल रहना; अच्छा लगना- रुचिकर होना *क्रि.वि.* अच्छी तरह, खूब, बहुत प्रयो. तुमने यह काम अच्छा किया *अव्य.* 1. स्वीकृति-सूचक शब्द.....अच्छा, मैं अवश्य आऊंगा 2. आश्चर्यसूचक....अच्छा! ऐसा करेंगे?

अच्छाई *स्त्री.* (तद्.) 1. अच्छापन, सद्गुण, उत्तमता, श्रेष्ठता 2. भलाई उदा. आप तो जिसके विरूद्ध हो जाते हैं, उसमें फिर किसी अच्छाई को देख ही नहीं पाते।

अच्छा-खासा *वि.* (तद्.) 1. बहुत अच्छा, विल्कुल ठीक 2. स्वस्थ, तंदुरुस्त।

अच्छापन *पुं.* (तद्.) अच्छे होने का भाव, अच्छाई, उत्तमता।

अच्छा शील *पुं.* (तत्.) व्यक्ति का वह आचरण जिसमें कोई विधिविहित दोष न हो और जिसे प्रशंसनीय माना जा सके, सदाचरण।

अच्छा हक़ *पुं.* (तद्.+अर.) किसी वस्तु के स्वामित्व पर आधारित, रखने या बेचने का ऐसा वैध अधिकार जिसे कोई चुनौती न दे सके।

अच्छिन्न *वि.* (तत्.) 1. जो कटा न हो, अखंडित 2. पूरा, अविभक्त 3. लगातार चलनेवाला।

अच्छी ख्याति *स्त्री.* (तद्.+तत्) किसी व्यक्ति, व्यापारिक संस्था आदि के बारे में जन-साधारण में बनी हुई उत्तम धारणा।

अच्छी साख *स्त्री.* (तद्.+तत्) वाणि. किसी व्यक्ति, व्यापारिक संस्था आदि की विश्वसनीयता जिसके आधार पर उसे धन या पण्य उधार दे दिए जाते हैं।

अच्छेद्य *वि.* (तत्.) 1. जिसे काटा न जा सके 2. जिसका छेदन न किया जा सके

अच्युत *वि.* (तत्.) 1. जो गिरा न हो, जो अपने स्वरूप, स्थान, सामर्थ्य आदि से च्युत न हो 2. दृढ़, अटल, स्थिर 3. नित्य, अमर, अविनाशी 4. जो न चूके, जो त्रुटि न करे *पुं.* 1. विष्णु और उनके अवतारों के नाम 2. वासुदेव, कृष्ण।

अच्युतानंद *वि.* (तत्.) जिसका आनंद अस्थिर या अस्थायी न हो, अपितु नित्य हो *पुं.* आनंदमूल परमात्मा, ईश्वर।

अछवानी *स्त्री.* (तद्.) अजवाइन, सोंठ और मेवे को पीस कर घृत में पका कर बनाया हुआ पेय जो प्रसूता को पिलाया जाता है।

अछिद्र *वि.* (तत्.) 1. छिद्र रहित 2. दोष-रहित, बेऐब, निर्दोष 3. दुर्बलता-रहित।

अछूत *वि.* (तद्.) बिना छुआ हुआ, जिसे छुआ न गया हो, जिसे छूआ न जाता हो, अस्पृश्य *पुं.* सामाजिक व्यवस्था में सेवा कार्यों के संपादन में लगे समुदाय का सदस्य (अब यह शब्द प्रतिबंधित हो चला है)।

अछूतपन *पुं.* (तद्.) अछूत या अस्पृश्य होने का भाव।

अछूता *वि.* (तद्.) 1. अनछुआ, बिना छुआ हुआ; जो छुआ तक न गया हो 2. जिसे प्रयोग या काम या व्यवहार में न लाया गया हो 3. नया, ताजा, कोरा 4. जिसका वर्णन न किया गया हो, अवर्णित, अकथित।

अछूतोद्धार *पुं.* (तद्.) अस्पृश्य जातियों के सुधार का कार्य।

अछेद *वि.* (तद्.) दे. 1. अछेद्य 2. छिद्ररहित 3. दोषरहित।

अछेद्य *वि.* (तत्.) दे. अच्छेद्य जिसे छेदा न जा सके, अभेद्य।

अछोभ *वि.* (तद्.) 1. अक्षोभ, क्षोभरहित, चंचलता रहित 2. स्थिर, गंभीर, शांत 3. मोहरहित, मायारहित, 4. जिसे बुरा कर्म करते हुए क्षोभ या ग्लानि न हो।

अछोर *वि.* (तद्.)1. जिसके छोर का पता न हो, जिसका छोर (किनारा) न दिखाई पड़े 2. अपार, अनंत।

अछोह *वि.* (तद्.) 1. क्षोभ-रहित 2. स्थिर, शांत 3. मोहशून्य, करुणा रहित, निर्दय *पुं.* अक्षोभ 1. क्षोभ का अभाव 2. शांति, स्थिरता 3. मोह का अभाव, दयाहीनता, निर्दयता।

अज *वि.* (तत्.) जिसका जन्म न होता/हुआ हो, जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त, अजन्मा, स्वयंभू *पुं.* (तत्) 1. ब्रह्मा 2. विष्णु 3. शिव 4. ईश्वर 5. कामदेव 6. चंद्रमा 7. एक सूर्यवंशी राजा, जो दशरथ के पिता थे 8. बकरा 9. एक ऋषि 10. अग्नि 11. मेषराशि 12. सूर्य का रथ 13. आत्मा *क्रि.वि.* (तद्.) अब, अभी तक।

अजंत *वि.* (तत्.) जिसके अंत में अच् (अ से लेकर औ तक कोई स्वर) हो, वह शब्द जिसका अंतिम वर्ण स्वर हो।

अजंता *पुं.* (देश.) (मूल मराठी शब्द 'अजिंठा' की रोमन वर्तनी का हिंदी रूपांतरण) औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में सह्याद्रि पर्वत की गोद में बहनेवाली बागुर नदी की घाटी में स्थित एक स्थान जो अपने कलात्मक गुफा-मंदिरों के लिए विख्यात है।

अजंतुक *वि.* (तत्.) जंतुविहीन, प्राणिरहित, जंतुओं से असंबंधित, जो किसी जंतु का न हो।

अजगर *पुं.* (तत्.) अज अर्थात् बकरी को निगल जाने वाला, पाइथॉन वंश के पाइथॉडी कुल का एक विशालकाय सांप, अजगर। python

अजगरी *स्त्री.* (तद्.) अजगर-वृत्ति, अजगर की तरह तरह निरुद्यम पड़े रहने की प्रवृत्ति, "अजगर करै न चाकरी पंछी करै न काम" के अनुसार बिना कोई काम-काज किए जीवन-निर्वाह की वृत्ति या स्थिति।

अजघन्य *वि.* (तत्.) जो जघन्य अर्थात् निकृष्ट, नीच या गया-बीता न हो।

अजदहा *पुं.* (फा.) बड़ा और मोटा साँप, अजगर।

अजदेवता *पुं.* (तत्.) विष्णु पुराण के आधार पर अज अर्थात् बकरियों के अधिष्ठाता देवता 1. अग्नि 2. पूर्व भाद्रपद नक्षत्र का एक नाम।

अजन *वि.* (तत्.) निर्जन *पुं.* (तत्.) 1. अजन्मा, अनादि, स्वयंभू 2. अक्रिय व्यक्ति, तुच्छ जन।

अजनक *वि.* (तत्.) उत्पादन न करनेवाला, अनुत्पादक।

अजननीय *वि.* (तत्.) जनन किए जाने के अयोग्य, जो उत्पादनीय न हो।

अजनबी *वि.* (अ.) अपरिचित, अनजान।

अजनबीपन *पुं.* (अ.) अजनबी होने की स्थिति या भाव, अपरिचितता।

अजन्म *वि.* (तत्.) जिसका जन्म न हुआ हो, जन्मरहित, अनादि दे. अजन्मा *पु.* (तत्.) जन्म का अभाव, जन्म का न होना।

अजन्मा *वि.* (तत्.) 1. जिसका जन्म न हुआ हो, जन्म-रहित 2. जो जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो 3. अनादि, नित्य 4. परमात्मा 5. आत्मा।

अजन्य *वि.* (तत्.) जो जनन अर्थात् पैदा करने के योग्य न हो 2. जो समाज के प्रतिकूल हो 3. अकरणीय।

अजपा *वि.* (तत्.) जिसका उच्चारण न किया गया हो योग. वह जप जो श्वास प्रश्वास के साथ 'सोहम्' या 'ओउम्' के रूप में स्वत: होता है, जैसे- अजपा जाप।

अजब *वि.* (अर.) विचित्र, अनोखा, अनूठा, विलक्षण, आश्चर्यजनक *पुं.* (तद्.) अचंभा, अचरज।

अजमत *पुं.* (अर.) 1. प्रभुत्व, प्रताप, शान, महत्व 2. चमत्कार 3. बड़प्पन, प्रतिष्ठा।

अजमाइश *पुं.* (फा.) दे. आजमाइश।

अजमानती (अर.) (ऐसा जुर्म) जिसकी जमानत लेना संभव न हो। non-bailable

अजमानती अपराध *पुं.* [अर+.तत्.] ऐसा अपराध जिसमें जमानत निषिद्ध हो।

अजमाना *पुं.* (तत्.) दे. आजमाना।

अजमुख *वि.पुं.* (तत्.) 1. बकरे का मुख, बकरे के मुख वाला, बकरमुँह 2. दक्ष प्रजापति का एक नाम, दक्ष के द्वारा यज्ञ में शिव का अपमान किए जाने पर सती के देहत्याग के बाद वीरभद्र ने दक्ष के यज्ञ का ध्वंस किया और उसका सिर काट डाला, बाद में शिव की आज्ञानुसार उसे पुन: जीवित करने के लिए उसके गले पर बकरे का सिर लगाया गया।

अजमुखी *वि.* (तत्.) बकरी के मुख वाली *स्त्री.* एक राक्षसी जिसे अशोक वाटिका में सीता की देख-रेख हेतु रखा गया था।

अजय *वि.* (तत्.) 1. अजेय, जिसे जीता या पराजित न किया जा सके *स्त्री.* (तत्.) *पु.* पराजय *पुं.* (तत्.) विष्णु।

अजया *स्त्री.* (तत्.) 1. अपराजेया 2. भांग 3. दुर्गा की एक सखी का नाम 4. माया।

अजर *वि.* (तत्.) 1. जरा रहित, जो बूढ़ा न हो 2. नाशरहित 3. क्षयरहित *पुं. (तत्.)* 1. देवता 2. परब्रह्म।

अजरद्रुम *पुं.* (तत्.) वह पेड़ जो बूढ़ा न हो, या नष्ट न हो अर्थात् कल्पवृक्ष, अक्षयबट।

अजरा *वि.* (तत्.) 1. जिसे जरा सा बुढ़ापा न आए *स्त्री.* 2. घृतकुमारी, घीकुँआर 3. छिपकली 4. प्रकृति।

अजराइल *वि.* (तद्.) 1. जो जीर्ण न हो, जो पुराना न पड़े 2. चिरस्थायी 3. निर्भय, निडर, नि:शंक 4. बलवान, शक्तिशाली।

अजरामर *वि.* (तत) जो अजर और अमर हो।

अजल *स्त्री.* (अर.) 1. मृत्यु, मौत 2. समय *वि.* जलरहित, निर्जल।

अजवाइन *स्त्री.* (तद्.) दे. अजवायन।

अजवायन *स्त्री.* (तद्.) 1. एक औषधीय ग्रुप का पौधा जिसके दाने मसाले में काम आते हैं, यवनिका, यवानी।

अजवाह *पुं.* (तत्.) कच्छ, काठियावाड़ का प्राचीन नाम।

अजस *पुं.* (तद्.) दे. अयश, अपकीर्ति।

अजसी *वि.* (तद्.)अयशी, जिसके भाग्य में यश प्राप्त करना न लिखा हो, यशहीन, जिसकी अपकीर्ति हो, बदनाम।

अजस्र *क्रि.वि.* (तत्.) निरंतर, हमेशा, लगातार, सतत, जैसे- अजस्र धारा *वि.* अविच्छिन्न, अनवरत, जैसे- अजस्र वाणी।

अजस्रता *स्त्री.* (तत्.) अजस्र होने का भाव या क्रिया, नैरंतर्य।

अजहद *वि.* (फा.) बेहद, अत्यधिक, असीम, अपार।

अजहूँ *क्रि.वि.* (तद्.) आज भी, अब तक (भी), अब भी।

अजा *वि.* (तत्.) 1. जिसका जन्म न हुआ हो, जो उत्पन्न न की गई हो, जन्मरहित *स्त्री.* 1. (सांख्य मतानुसार) प्रकृति या माया (जिसे किसी ने नहीं बनाया) 2. बकरी 3. शक्ति, दुर्गा।

अजात *वि.* (तत्.) जो पैदा न हुआ हो, अनुत्पन्न, जन्मरहित, अजन्मा।

अजात आदाता *पुं* (तत्.) भविष्य में उत्पन्न होने वाला वह व्यक्ति जिसके नाम किसी दानदाता ने किसी वस्तु के अधिकार का अंतरण किया हो unborn donee

अजातशत्रु *वि.* (तत्.) जिसका कोई शत्रु उत्पन्न न हुआ हो, बिना बैरी का, शत्रुविहीन, जिसके सभी मित्र हों *पुं. (तत्.)* मगध के राजा बिंबिसार का पुत्र जो गौतम बुद्ध का समकालीन था।

अजात शिशु *पुं.* (तत्.) वह बच्चा जिसका अभी जन्म नहीं हुआ हो।

अजातारि [अजात+अरि] *वि.* (तत्.) दे. अजातशत्रु, विश्वामित्र।

अजाति *वि.* (तत्.) जाति से निकाला हुआ, जाति से बाहर *स्त्री.* (तत्.) 1. उत्पत्ति का अभाव, अनुत्पत्ति 2. नीच जाति, कुजाति।

अजाती *तद्.* दे. अजाति।

अजान *वि.* (तत्.) 1. जो न जानता हो, अनजान, अनभिज्ञ, अबोध, अबूझ, अज्ञानी 2. नासमझ *स्त्री.* (अर.) नमाज़ का बुलावा, नमाज़ की सूचना के शब्द जो जोर से बोले जाते हैं।

अजामिल *पुं.* (तत्.) इस नाम का अनेक दुर्गुणों से युक्त एक ब्राह्मण जिसे मरते समय केवल अपने पुत्र का नाम (नारायण) पुकारने के कारण मोक्ष मिल गया।

अजायबखाना *पुं* (अर.) कला तथा पुरातत्व संबंधी दर्शनीय अद्भुतवस्तुओंका संग्रहालय। museum

अजायबघर *पुं.* (अर.) दे. अजायबखाना।

अजित *वि.* (तत्.) 1. जो जीता न गया हो, अपराजित, अनियंत्रित 2. विष्णु 3. शिव 4. बुद्ध 5. जहर मोहरा 6. एक विषैला चूहा।

अजिता *स्त्री.* (तत्.) 1. जो अपराजेय हो 2. भाद्रपद कृष्ण एकादशी का नाम।

अजितेंद्रिय *वि.* (तत्.) जिसने इंद्रियों को जीता न हो, जो इंद्रियों के वश में हो, इंद्रिय-लोलुप, विषयासक्त।

अजिन *पुं.* (तत्.) 1. (काले हिरन आदि का) रोएंदार चर्म, चमड़ा, खाल, मृगचर्म 2. चमड़े का बना एक विशेष थैला।

अजिनयोनि *पुं.* (तत्.) मृग, हिरन जिनसे अजिन प्राप्त होता है।

अजिनवासी *वि.* (तत्.) मृगचर्म का वास (वस्त्र) धारण करने वाला, (योगी आदि)।

अजिर *वि.* (तत्.) 1. फुर्तीला, शीघ्रगामी, तेज 2. चंचल *पुं. (तत्.)* 1. आंगन, सहन 2. वायु, हवा 3. शरीर 4. इंद्रियों का विषय 5. मेंढक 6. छछूँदर प्रयो. 'अंतःकरण अजिर में, अखिल व्योम का ले कर मोती। आंसू का बादल बन जाता, फिर तुषार की वर्षा होती'।

अजिरा *वि.* (तत्.) 1. दुर्गा 2. अजिरवती' नामक नदी।

अजिह्व *वि.* (तत्.) (वह प्राणी) जिसकी जीभ नहीं होती। elinguate

अजी *अव्य.* (तद्.) एक संबोधन-सूचक शब्द प्रयो. अजी! जरा सुनो तो।

अज़ीज़ *वि.* (अर.) 1. स्वजन, प्यारा, प्रिय, आत्मीय 2. निकट संबंधी।

अजीज़ *वि.* (अर.) नामर्द, नपुंसक, क्लीब।

अज़ीज़दारी *स्त्री.* (अर.) 1. मित्रता, दोस्ती 2. संबंध, रिश्तेदारी।

अजीत *वि.* (तत्.) दे. अजित।

अजीब *वि.* (अर.) अनोखा, विलक्षण, विचित्र, अनूठा, आश्चर्यजनक।

अजीबो-गरीब *वि.* (अर.) बहुत ही विचित्र, अनूठा, आश्चर्यजनक।

अजीर्ण *वि.* (तत्.) 1. अपच, बदहज़मी 2. अतिरेक, जो जीर्ण अर्थात् पुराना न हो।

अजीवन *पुं.* (तत्.) जीवन का अभाव, मृत्यु।

अजीवातजनन *पुं.* (तत्.) जीवेतर पदार्थों से जीवों की उत्पत्ति, अजीवजनन विलो. जीवात जनन।

अजीवित *वि.* (तत्.) जो जीवित न हो, जीवनहीन, मृत।

अजूबा *पुं.* (अर.) अनूठी वस्तु, अद्भुत चीज, करामात।

अजेतव्य *वि.* (तत्.) दे. अजेय

अजेय *वि.* (तत्.) न जीता जाने योग्य, जिसे कोई जीत न सके, अपराजेय।

अजैव *वि.* (तत्.) 1. जो जीव से संबंधित न हो, पादप और प्राणी से भिन्न पदार्थों से संबंधित 2. खनिज 3. अकार्बनिक। inorganic

अजोग *वि.* (तद्.) 1. अयोग्य, जो योग्य न हो 2. अनुचित।

अजोगी *वि.* (तद्.) अयोगी, जोग (योग) को न जानने वाला, योग से रहित।

अजोनि *वि.* (तद्.) अयोनि, जो योनि से उत्पन्न न हो, स्वयंभू।

अज्ञ *वि.* (तत्.) ज्ञानरहित, अज्ञानी, मूर्ख, अनजान, नासमझ, नादान।

अज्ञता *स्त्री.* (तत्.) अज्ञान, मूर्खता, नादानी, अनाड़ीपन, जड़ता।

अज्ञात *वि.* (तत्.)1. जो जाना हुआ न हो, अविदित, अप्रकट, अपरिचित, अप्रत्याशित, आकस्मिक।

अज्ञातकुल *वि.* (तत्.) 1. जिसके वंश-कुल आदि का पता न हो 2. अनिश्चित गुण रूप आदि के कारण जिसे किसी वर्ग में न रखा जा सके।

अज्ञातनाम, अज्ञातनामा *वि.* (तत्.) 1. जिसके नाम की जानकारी न हो 2. जिसे कोई न जानता हो, अविख्यात।

अज्ञातपूर्व *वि.* (तत्.) जिसकी पहले से जानकारी न हो।

अज्ञातयौवना *स्त्री* (तत्.) वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन के आगमन का ज्ञान न हो।

अज्ञातवास *पुं.* (तत्.) छिपकर रहना, ऐसे स्थान में निवास करना जिसकी जानकारी दूसरों को न हो प्रयो. बारह वर्ष के वनवास के बाद पांडवों ने एक वर्ष अज्ञातवास में बिताया।

अज्ञातश्मश्रु *वि.* (तत्.) 1. जिसकी दाढ़ी-मूंछ (अभी) न निकली हो 2. अल्पायु, अल्पवय।

अज्ञाता *स्त्री* (तत्.) अज्ञातयौवना मुग्धा नायिका।

अज्ञाति *पुं.* (तत्.) वह व्यक्ति जो संबंधी न हो, जो गोत्रीय या सपिंड न हो, पितृवंश से भिन्न वंश में उत्पन्न।

अज्ञान *पुं.* (तत्.) 1. ज्ञान या बोध (जानकारी) का अभाव 2. मिथ्या ज्ञान 3. मूर्खता, जड़ता।

अज्ञानकृत *वि.* (तत्.) 1. अज्ञान में किया हुआ, अनजाने में किया हुआ, अज्ञान या मूर्खतावश किया हुआ।

अज्ञानत: *क्रि.वि.* (तत्.) 1. अज्ञानवश 2. अनजाने में 3. नासमझी के कारण, मूर्खतावश।

अज्ञानता *स्त्री* (तत्.) 1. अज्ञानपन, ज्ञान का अभाव, ज्ञानहीनता 2. मूर्खता, जड़ता 3. नासमझी, नादानी।

अज्ञानपन *पुं.* (तद्.)मूर्खता, जड़ता, नादानी, नासमझी।

अज्ञानी *वि.* (तत्.) 1. ज्ञानशून्य, जानकारी रहित 2. जड़, मूर्ख 3. अनाड़ी, नादान, नासमझ।

अज्ञेय *वि.* (तत्.) 1. न जाने जा सकने योग्य, जो समझ में न आ सके, बुद्धि की पहुँच से बाहर का 2. अबोधगम्य।

अज्ञेयता *स्त्री* (तत्.) न जान सकने की स्थिति।

अज्ञेयवाद *पुं.* (तत्.) परमतत्व की ज्ञानातीत स्थिति, अज्ञेयता का प्रतिपादक यह दार्शनिक मत कि दृश्य जगत् से परे क्या है इसे नहीं जाना जा सकता। agnosticism

अज्ञेयवादी *वि./पुं.* (तत्.) अज्ञेयवाद को मानने वाला, अज्ञेयवाद का अनुयायी। agnostic

अट *स्त्री* (देश.) शर्त, प्रतिबंध, रुकावट।

अटक/अटी *स्त्री* (तत्.) सा.अर्थ रुकावट 1. संगी. तानपूरे के डांड के ऊपरी भाग पर लगी हाथी दांत की पट्टी, जिस पर चारों तारों को अलग-अलग खूंटियों से बांधा जाता है 2. रोक, रुकावट, अड़चन, विघ्न, उलझन।

अटकन *स्त्री.* (देश.) दे. अटक।

अटकन-भटकन *पुं* (देश.) 1. भूल भुलैय्या 2. छोटे बच्चों का खेल-विशेष जिसमें बच्चे अपने दोनों हाथों की उंगलियों को जमीन पर रख कर बैठ जाते हैं, एक लडक़ा एक-एक करके सब की उगलियों पर यह कहता हुआ हाथ रखता जाता है- "अटकन-भटकन, दही चटक्कन, अगला झूले बगुला झुले, सावन मास करेले फूले, फूल-फूल की वलियां, बाबा गए गंगा, लाए सात पियालियां, एक पियाली फूट गई, नेवले की टांग भी टूट गई, खंडा मारू या छुरी।" जिस लडक़े के हाथ पर हाथ रखते हुए अंतिम शब्द आता है वह क्रमश: खेल से बाहर हो जाता है, अंत में जो एक बच जाता है उसे चोर समझ कर खेल शुरू होता है, दे. उक्का-बुक्का।

अटकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. रुकना, अड़ना 2. फंसना, उलझना 3. ठहरना।

अटकल *स्त्री* (देश.) अनुमान, अंदाज, कल्पना।

अटकलना *स.क्रि.* (देश.) अटकल लगाना, अनुमान लगाना।

अटकलपच्चू *पुं.* (देश.) बेतुका अनुमान, कपोल-कल्पना, प्रयो. तुम्हारी अटकलपच्चू से इस समस्या का समाधान नहीं निकलेगा।

अटकलबाज *वि.* [देश.+फा.] बेतुके अनुमान लगाने वाला, मात्र अंदाज लगाकर ही निर्णय कर लेने वाला।

अटका *पुं.* (तत्.) 1. जगन्नाथ जी को चढ़ाया हुआ भात जिसे सुखाकर प्रसाद की भांति दूर देशों में भी भेजा जाता है 2. जगनन्नाथ जी के भोग के निमित्त दिया गया धन 3. रोक रुकावट, विघ्न, बाधा, उलझन।

अटकाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. रोकना, ठहराना, अड़ाना, लगाना 2. फंसाना, उलझाना 3. पूरा करने में विलंब करना।

अटकाव *पुं.* (तद्.) रोक, रुकावट, प्रतिबंध, अड़चन, बाधा, विघ्न।

अटना *अ.क्रि.* (देश.) 1. आड़ करना, ओट करना 2. पूरा पड़ना, काफी होना, भ्रमण या यात्रा (अटन) करना 3. (किसी बड़ी वस्तु में) ठीक से बैठ जाना, समा जाना।

अटनि/अटनी *स्त्री* (तत्.) धनुष के सिरे का वह भाग या खाँचा जहां प्रत्यंचा या डोरी बाँधी जाती है।

अटपटना *अ.क्रि.* (देश.) 1. अटकना 2. अंडबंड होना 3. लड़खड़ाना 4. घबड़ाना 5. संकोच करना, हिचकना।

अटपटा *वि.* (तद्.) 1. ऊटपटांग, अंडबंड, उलटा-सीधा 2. टेढ़ा, कठिन, मुश्किल, विकट 3. गूढ़, जटिल, अनोखा।

अटपटी *वि.* (देश.) बेढंगी, उल्टी-सीधी, जल्दी समझ में न आ सकने वाली।

अटरिया *स्त्री* (तद्.) दे. अटारी।

अटर्नी *पुं.* (अं.) 1. विधिक मामलों में किसी व्यक्ति के स्थान पर काम करने के लिए प्राधिकृत व्यक्ति 2. सक्षम विधिविद् पर्या. न्यायवादी। attorney

अटर्नी जनरल *पुं.* (अं.) केंद्रीय शासन को विधिक मामलों में परामर्श हेतु अधिकृत सक्षम विधिवेत्ता, पर्या. महान्यायवादी। attorney general

अटर्नी प्रतिधारण *पुं.* (अं.+तत्.) विधिक मामलों में अपनी ओर से न्यायालय में उपस्थित और समुचित कार्रवाई करने के लिए किसी अधिवक्ता को नियोजित करना।

अटल *वि.* (तत्.) 1. जो न टले, न डिगनेवाला, स्थिर, निश्चल 2. जो न मिटे, जो सदा बना रहे, नित्य, चिरस्थायी 3. जिसका होना निश्चित हो, अवश्यंभावी 4. ध्रुव, पक्का।

अटलस *पुं.* (अं.) ऐटलस, मानचित्रावली, पृथ्वी के भिन्न-भिन्न भागों के मानचित्रों का एक पुस्तक रूप में या एक जिल्द में संग्रह।

अटहर *पुं* (तद्.) 1. अटाला, ढेर 2. फेंटा, लपेटा, पगड़ी 3. कठिनाई, अड़चन, अटकाव, दिक्कत।

अटाँव *वि.* (देश.) बुरा दाँव, अनसवर, असमँजस, कठिनाई, कठिन स्थिति।

अटाटूट *वि.* (तद्.) 1. अनगिनत, बेशुमार 2. नितांत, बिलकुल।

अटारी *स्त्री* (तद्.) 1. अट्टालिका, ऊंचा भवन 2. छत पर दीवारें डालकर बनाई गई कोठरी, कोठा 3. ऊंचे भवन की छत।

अटूट *वि.* (तद्.) न टूटने योग्य, अखंडनीय, दृढ़, पुष्ट, मजबूत।

अटेरन *स्त्री* (तद्.) सूत की आँटी बनाने का लकड़ी का उपकरण।

अटेरना *स.क्रि.* (तद्.) 1. अटेरन से सूत की आँटी बनाना 2. मात्रा से अधिक मद्य-पान करना।

अटैची *स्त्री* (अं.) 1. चमड़े, प्लास्टिक आदि का बक्सा, छोटा सूटकेस 2. दे. अताशे।

अटोक *वि.* (तद्.) बिना रोक-टोक का, प्रतिबंधहीन।

अट्ट *पुं.* (तत्.) 1. बुर्ज, पहरा देने का ऊँचा स्थान या मीनार 2. महल, प्रासाद या दुर्ग में सेना के रहने का स्थान *पुं.* (तद्.) 1. पका हुआ चावल, भात, भोज्य पदार्थ 2. रेशमी वस्त्र *वि.* (तद्.) 1. ऊंचा 2. शुष्क, सूखा, सुखाया हुआ।

अट्टहास *पुं.* (तत्.) ऊंचे स्वर में हंसी, ठहाका।

अट्टा *वि.* (तद्.) 1. मचान 2. अटारी।

अट्टाल *पुं.* (तद्.) 1. ऊपरी मंजिल का कोठा 2. किले का बुर्ज 3. प्रासाद, महल।

अट्टालक *पुं.* (तत्.) किले का बुर्ज।

अट्टालिका *स्त्री.* (तत्.) उत्तुंग भवन, बहुमंजिली कोठी।

अट्टी *स्त्री.* (तद्.) अटेरन पर लपेटी गई सूत या ऊन की लच्छी।

अट्ठानबे *वि.* (तद्.) दे. अठानबे।

अट्ठानवेवाँ *वि.* (तद्.) दे. अठानवेवाँ।

अट्ठारह *वि.* (तद्.) अठारह।

अट्ठारहवाँ *वि.* (तद्.) दे. अठारहवाँ।

अट्ठावन *वि.* दे. अठावन।

अट्ठावनवाँ *वि.* (तद्.) दे. अठावनवां।

अट्ठासिवाँ *वि.* (तद्.) दे. अठासिवाँ, उठासीवाँ।

अट्ठासी *वि.* (तद्.) दे. अठासी।

अट्ठे *वि.* (तद्.) (किसी भी संख्या का) आठ गुना, जैसे- दो अट्ठे सोलह।

अट्टक *पुं.* (तत्.) 1. छत के ऊपरवाला कमरा, कोठा 2. बंगला 3. प्रासाद, महल।

अट्टा *पुं* (तद्.) आठ का समूह, ताश का वह पत्ता जिस पर आठ बूटियाँ बनी होती हैं।

अट्ठाईस *वि.* (तद्.) (वह संख्या) जिसका योग बीस और आठ (28) हो।

अट्ठाईसवाँ *वि.* (तद्.) क्रमवाचक (संख्या) जिसका स्थान सत्ताईसवें के बाद हो।

अठखेल *वि.* (तद्.) अठखेली करने वाला, शोख, चुलबुला।

अठखेलपन *पुं.* (तद्.) मस्ती, चंचलता, चपलता, चुलबुलापन।

अठखेली *स्त्री.* (तद्.) 1. मस्ती, विनोद; क्रीड़ा, चुलबुलापन 2. मतवाली चाल, मस्तानी चाल

मुहा. अठखेली सूझना- स्थिति की गंभीरता के विपरीत चुलबुलापन प्रकट करना।

अठत्तर *वि.* (तद्.) दे. अठहत्तर।

अठन्नी *स्त्री.* (तद्.) 1. भारत में पूर्व-प्रचलित एक रुपए के आधे मूल्य का (आठ आने मूल्य) का सिक्का, (अब) पचास पैसे का सिक्का।

अठपेजी *वि.* (दे.आठ+अं.पेज) 1. पूरे आकार के कागज़ (ताव) पर प्रकाशित पुस्तकांश जिसकी तीन तह करने पर 8 या 16 पृष्ठ होते है 2. आठ पृष्ठ वाली।

अठमासा *वि.* (तद्.) 1. जो आठ महीने में संपन्न हो 2. जो गर्भ के आठवें मास में ही पैदा हो जाए *पुं.* 1. वह खेत जिसमें आठ महीने तक (ईख की) फसल खड़ी रहती हैं 2. गर्भ के आठवें मास में होने वाला सीमांत संस्कार।

अठलाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ऐंठ दिखाना, इतराना, इठलाना, गर्व जताना, ठसक दिखाना 2. चोंचले करना, नखरे करना 3. मदोन्मत्त होना, मस्ती दिखाना 4. छेड़ने के लिए जानबूझ कर अनजान बनना दे. इठलाना।

अठवारा *पुं.* (तद्.) 1. आठ दिन का पूरा समय 2. पक्ष का आधा भाग 3. सप्ताह।

अठहत्तर *वि.* (तद्.) सत्तर और आठ के योग से निर्मित संख्या, (78)।

अठहत्तरवाँ *वि.* (तद्.) क्रमवाचक संख्या जिसका स्थान सतहत्तरवें के बाद है।

अठान *वि.* (देश.) 1. न ठानने योग्य, अकरणीय (कार्य) 2. अयोग्य या अनुचित (कर्म) 3. शरारत *पुं.* वैर, विरोध।

अठानवे *वि.* (तद्.) वह संख्या जिसका योग नब्बे और आठ (98) हो।

अठाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. सताना, पीड़ित करना, दुराग्रह करना 2. ठानना, छेड़ना, तंग करना।

अठारह *वि.* (तद्.) दस और आठ के योग से बनी संख्या, (18)।

अठारहपेजी *वि.* (तद्.+देश.) 1. पुस्तक का वह माप जिसमें प्रत्येक पन्ना पूरे ताव का अठारहवां भाग हो 2. अठारह पृष्ठ वाला।

अठारहवाँ *वि.* (तद्.) क्रमसूचक संख्या जिसका स्थान सत्रहवीं संख्या के बाद है।

अठावन *वि.* (तद्.) वह संख्या जिसका योग पचास और आठ हो।

अठावनवाँ *वि.* (तद्.) वह क्रमवाचक संख्या जिसका स्थान सत्तावन के बाद हो।

अठासी *वि.* (तद्.) अस्सी और आठ के योग की सूचक संख्या (88) है।

अठासीवाँ/उठासिवाँ *वि.* (तद्.) क्रमसूचक संख्या जिसका स्थान सत्तासीवीं संख्या के बाद है।

अठोठ *पुं* (देश.) आडंबर, पाखंड।

अठोत्तर सौ *वि.* (तद्.) जो सौ से आठ अधिक हो, एक सौ आठ।

अठोत्तरी *स्त्री* (तद्.) अष्ठोत्तरी, सौ से आठ अधिक (अर्थात् 108) दानों की माला।

अठौरा *पुं.* (तद्.) एक पत्ते में बंधे पान के आठ बीड़े।

अड़ *स्त्री.* (देश.) हठ, टेक, जिद, अड़ने की स्थिति।

अड़ंग *पुं.* (देश.) दे. अड़ंगा।

अड़ंगा *पुं.* (देश.) अड़चन, रुकावट, हस्तक्षेप।

अड़काना *स.क्रि.* (देश.) दे. अड़ाना।

अड़गोड़ा *पुं.* (देश.) लकड़ी का एक टुकड़ा जिसके एक सिरे पर छेद करके उसे नटखट चौपायों के गले में बाँधते है, जो दौड़ने पर उनके अगले पैरों पर लगता है, जिसके कारण वे तेज नहीं भाग पाते।

अड़चन *स्त्री.* (देश.) रुकावट, बाधा, अवरोध।

अड़डंडा *पुं.* (देश.) लकड़ी या बाँस का डंडा जिसके दोनों छोरों पर लट्टू बने रहते हैं। यह डंडा मस्तूल पर चिड़ियों के अड्डे की तरह बँधा रहता है, इसी पर पाल चढ़ाई जाती है।

अड़तालिस *वि.* (तद्.) दे. अड़तालीस।

अड़तालीस *वि.* (तद्.) चालीस और आठ के योग से बनी संख्या, (48)।

अड़तालीसवाँ *वि.* (तद्.) वह क्रमवाचक संख्या, जिसका स्थान सैंतालीसवीं संख्या के बाद है।

अड़तीस *वि.* (तद्.) तीस और आठ के योग से बनी संख्या, (38)।

अड़तीसवाँ *वि.* (तद्.) वह क्रमसूचक संख्या जिसका स्थान सैंतीसवीं संख्या के बाद है।

अड़ना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. रुकना, अटकना, ठहरना 2. हठ करना 3. ठानना।

अड़बंग *वि.* (तद्.) 1. टेढ़ा-मेढ़ा, ऊँचा-नीचा, अटपटा 2. विकट, कठिन 3. विलक्षण, अद्भुत।

अड़ल *वि.* (तद्.) भूवि. लैगून को लगभग घेरे हुए प्रवाल भित्ति या कम दूरियों पर स्थित प्रवाल द्वीप। atoll

अड़व *वि.* (तत्.) ओड़व या ओडव, एक राग जिसमें पाँच स्वर (षड्ज, गांधार, मध्यम, धैवत और निषाद) ही लगते हैं उदा. राग मालकोष, दुर्गा, भूपाली, आदि।

अड़सठ *वि.* (तद्.) साठ और आठ के योग से बनी संख्या, (68)।

अड़सठवाँ *वि.* (तद्.) वह क्रमसूचक संख्या जिसका स्थान सड़सठवीं संख्या के बाद है।

अड़हुल *वि.* [तद्.ओण+फुल्ल] गुड़हल, जपाकुसुम, जवापुष्प, हिबिस्कस वंश के मैलवैसी कुल का एक पुष्पी पादप जिसकी पत्तियाँ दंतुरित और फूल सुगंधित, बडे, लाल और दर्शनीय होते हैं। hibiscus

अड़ा-अड़ी *स्त्री.* (देश.) एक दूसरे से आगे बढने की प्रतिस्पर्धा, होड़।

अड़ान *पुं.* (तद्.) 1. रुकने की जगह 2. वह स्थान जहाँ पर पथिक विश्राम करते है, पडाव।

अड़ाना *स.क्रि.* (देश.) 1. उलझाना, फंसाना, टिकाना, ठहराना 2. टेकना, डाट लगाना 3. कोई वस्तु बीच में डालकर गति रोकना 4. भरना या ठूंसना *पुं.* (तद्.) आसावरी थाठ का राग जो दरबारी कान्हड़ा की भांति गाया जाता है, लेकिन अड़ाना के गायन में तार सप्तक का उपयोग प्रधान होता है।

अड़ायती *वि.* (देश.) जो आड़ करे, ओट करने वाला, अँडैत।

अड़ाल *पुं.* (तत्.) 1. नृत्य का एक भेद, चिड़ियों के पंखों की तरह हाथ फडफ़ड़ा कर एक ही स्थान पर चक्कर काटना 2. मयूर नृत्य।

अडिग *वि.* (तद्.) जो हिले-डुले नहीं, निश्चल, स्थिर प्रयो. वे अपने निर्णय पर अडिग रहे।

अड़ियल *वि.* (तद्.) 1. अड़-अडक़र चलने वाला, चलते-चलते रूक जाने वाला, रुकने वाला 2. सुस्त, काम में देर करने वाला, मठ्ठर, जिद्दी, हठी उदा. वह अड़ियल टट्टू की तरह वहीं रुक गया।

अड़िया *स्त्री.* (देश.) अड्डे के आकार की एक लकड़ी जिसे टेककर साधु लोग बैठते हैं, साधुओं की कुबड़ी या तकिया।

अड़ी *स्त्री* (देश.) 1. अड़ान, हठ, जिद 2. आग्रह, रोक *वि.* (तद्.) अड़ने वाला, हठी, जिद्दी।

अडोल *वि.* (तद्.) 1. अटल, जो हिले नहीं, निश्चल 2. स्तब्ध।

अड़ोस-पड़ोस *वि.* (तद्.) आसपास रहने वालों की बस्ती, मुहल्ला/मोहल्ला।

अड्डा *पुं.* (तद्.) 1. टिकने की जगह, ठहरने का स्थान 2. मिलने या इकट्ठा होने की जगह 3. वह मूल स्थान जहाँ बस-रिक्शा आदि सवारी लेने वाले वाहन खड़े रहते हैं, जहां से वे चलते हैं या जहां वे रुकते हैं 4. वह स्थान जहां सवारी या कामगार आदि भाड़े पर मिलें 5. असामाजिक तत्वों के मिलने या बैठने की जगह 6. लकड़ियों की वह युक्ति जिस पर जुलाहे सूत चढ़ाकर कपड़ा बुनते हैं।

अढ़तिया *वि.* (देश.) दे. आढ़तिया।

अढ़ाई *वि.* (तद्.) ढाई, दो और आधा।

अढ़िया *स्त्री* (देश.) 1. काठ, पत्थर आदि का बना हुआ छोटा बरतन 2. लोहे का पात्र जिसमें

मजदूर वर्ग गारा या चूना उठाकर राजगीर के निकट रखते हैं।

अढ़ैया *वि.* (तद्.) 1. माप और तौल की माप जो ढाई सेर की होती थी, पंसेरी का आधा, 2. ढाई का पहाड़ा।

अणि *स्त्री.* (तत्.) 1. अनी, कोर, नोक 2. धार 3. वह कील जिसे धुरे के दोनों छोरों पर चक्के की नाभि में इसलिए ठोकते हैं ताकि चक्का धुरे के छोरों पर से बाहर न निकल जाए, धुरे की कील 4. सीमा, हद मेड़ 5. किनारा 6. अत्यंत छोटा।

अणिमा *स्त्री.* (तत्.) अति-सूक्ष्मता, योग की आठ सिद्धियों में पहली सिद्धि जिसके बल से मनुष्य लघुतम आकार धारण कर सकता है।

अणु *पुं.* (तत्.) 1. किसी वस्तु या पदार्थ का सबसे छोटा विभाग, सूक्ष्म कण, जर्रा 2. किसी तत्व का सबसे छोटा कण जिसकी स्वतंत्र सत्ता हो 3. छंद में मात्रा का चतुर्थांश 4. भौ. रासायनिक आबंधन से जुड़े एकाधिक (दो या हजारों) परमाणुओं से बनी इकाई molecule *वि.* 1. अति सूक्ष्म, क्षुद्र 2. अत्यंत छोटा 3. जो दिखाई न दे या कठिनाई से दिखाई दे।

अणुक *वि.* (तत्.)अणुवत् सूक्ष्म *पुं.* सरसों जैसा धान्य।

अणुजीवविज्ञान *पुं.* (तत्.)जीवविज्ञान की वह शाखा, जिसमें जीव की आण्विक प्रकृति तथा उसकी जैव-रासायनिक अभिक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। molecular biology

अणुत्व *वि.* (तत्.)अति सूक्ष्मता, अणु जैसी सूक्ष्मता।

अणुबम *पुं.* (तत्.+अं.) परमाणु बम या नाभिकीय बम का प्रचलित नाम दे. परमाणुबम। atom bomb

अणुभा *स्त्री.* (तत्.) (सूक्ष्म प्रकाश वाली) बिजली, विद्युत।

अणुमात्र *वि.* (तत्.) अणु के समान छोटे, अत्यल्प।

अणुवाद *पुं* (तत्.) 1. दर्शन का वह सिद्धांत जिसमें जीव या आत्मा को अणु माना गया हो 2. वह शास्त्र जिसमें पदार्थों के अणु नित्य माने गए हों।

अणुवादी *पुं.* (तत्.) 1. नैयायिक, वैशेषिक शास्त्र को माननेवाला 2. वल्लभाचार्य का अनुयायी वैष्णव।

अणुवीक्षण *पुं.* (तत्.) शा.अर्थ अणु रूप में देखना अतिसूक्ष्म रूप में देखना, बाल की खाल निकालना, छिद्रान्वेषण।

अणुवीक्षण यंत्र *पुं.* (तत्.) सूक्ष्मदर्शी, खुर्दबीन।

अणुव्रत *पुं.* (तत्.) जैन शास्त्रानुसार गृहस्थ धर्म का एक अंग जिसके 5 भेद हैं- 1. प्राणातिपात विरमण 2. मृषावाद विरमण 3. अदत्तदान विरमण 4. मैथुन विरमण 5. परिग्रह विरमण।

अण्वंत *पुं.* (तत्.) सूक्ष्म प्रश्न, बाल की खाल निकालने वाला प्रश्न।

अतंत्र *वि.* (तत्.) 1. जिस पर किसी का शासन न हो 2. स्वतंत्र *पुं.* अनियंत्रित कार्य।

अतंद्र *वि.* (तत्.) 1. तंद्रारहित 2. जागरूक, सतर्क।

अत: *अव्य.* (तत्.) 1. इसलिए, इस कारण से, इस हेतु से, इस वजह से 2. इससे आगे।

अतएव *अ.* (तत्.) इसी लिए, इसी वजह से।

अतट *वि.* (तत्.) 1. तटहीन 2. खड़ी ढाल वाला। *पुं.* खड़ी ढाल वाला पहाड़ या चट्टान 2. पहाड़ की चोटी 3. ज़मीन का निचला भाग।

अतत्पर *वि.* (तत्.) जो तत्पर, तैयार या उद्यत न हो।

अतत्व *पुं.* (तत्.) जो तत्व नहीं हो, जो तत्व से भिन्न हो। *वि.* (तत्.) सारहीन, तत्वरहित।

अतथ्य *वि.* (तत्.) तथ्यरहित, अवास्तविक *पुं.* वास्तविकता रहित तथ्य या बात।

अतद्गुण *पुं.* (तत्.) एक अलंकार, जिसमें किसी वस्तु का दूसरी निकटस्थ वस्तु के विशिष्ट गुणों को ग्रहण न करना दिखलाया जाता है।

अतद्व्यावृत्ति *स्त्री.* (तत्.) दर्श. विजातीय (असत्) वस्तुओं के प्रतिषेध के द्वारा सद्वस्तु को जानने की प्रक्रिया।

अतद्व्यावृत्ति समाधि *स्त्री.* (तत्.) योग. आलंबन रहित समाधि।

अतप *वि.* (तत्.) तपरहित, तापरहित, जो तप्त न हो, ठंडा, शांत, दिखावा न करने वाला, आडंबररहित, बेकार, निठल्ला।

अतप्त *वि.* (तत्.) 1. जो तप्त अर्थात् गरम न हो, ठंडा 2. जो पका न हो।

अतप्ततनु *वि.* (तत्.) 1. घोर तपस्या न करने वाला 2. जिसके शरीर पर तप्त मुद्रा के चिह्न न बने हो 3. जिसने शंख, चक्र, गदा और पद्म आदि के चिह्न अपने शरीर पर न धारण किए हों 4. बिना छाप का।

अतमह्न *वि.* (तद्.) आत्मघाती, अपने शरीर के मूल्य पर भी अन्य को हताहत न करने वाला।

अतर *पुं.* (अर.) इत्र, वह सुगंधित तरल पदार्थ जो पुष्पों से आसवन की विधि से तैयार होता है, भभके द्वारा खींचा गया फूलों का निष्कर्ष या सार, पुष्पसार।

अतरदान *पुं.* (अर.+तद्.) धातु (या शीशे) का वह पात्र जिसमें इत्र रखा जाता है, इत्रदान।

अतर्क *वि.* (तत्.) तर्करहित, तर्कहीन, असंगत पु. तर्क का अभाव।

अतर्कित *वि.* (तत्.) 1. बिना तर्क-वितर्क किए, जिस पर पहले से विचार न किया गया हो 2 आकस्मिक, जिसका पूर्वानुमान न हो।

अतर्क्य *वि.* (तत्.) जिस पर तर्क-वितर्क न किया जा सके, जिसके विषय में किसी प्रकार की विवेचना संभव न हो।

अतल *वि.* (तत्.) 1. तलविहीन 2. अथाह *पुं.* सात पाताल लोकों में से पहला।

अतलता *स्त्री.* (तत्.) तलहीनता, असीम गहराई।

अतलस्पर्शी *वि.* (तत्.) अतल को छूनेवाला, अत्यंत गहरा, अथाह दे. अतल।

अता *स्त्री.* (अर.) 1. कृपा, अनुग्रह 2. दान, बख्शीश, अता करना, देना, प्रदान करना, बख्शना।

अताई *वि.* (अर.) जिसने कोई कला या गुण नियमपूर्वक गुरु से न सीखा हो, अपितु यों ही सुन-सुनकर या देखभाल कर सीख लिया हो, शौकिया, अव्यावसायिक।

अतानामा *पुं.* (अर.) दानपत्र, बख्शीशनामा।

अतापी *वि.* (तत्.) 1. ताप-रहित 2. दुःखरहित 3. शांत।

अताशे *पु.* (अं.) दूतावास में कोई विशेषज्ञता प्राप्त उत्तरदायित्व निभाने वाला अधिकारी, सहचारी।

अतिंद्रिय-श्रवण *वि* (तत्.) कानों के द्वारा न होकर या उनके बिना या ध्यान या मनन के द्वारा दूर तक सुन लेने की शक्ति।

अति *वि./अव्य* (तत्.) बहुत, अधिक, ज्यादा उदा. अति-परिश्रम *स्त्री.* (तत्.) 1. अधिकता, ज्यादती, सीमा का उल्लंघन, अतिक्रमण प्रयो. उसने आज अपने दुर्व्यवहार की अति कर दी।

अतिअग्रता माँग *स्त्री.* (तत्.) ऐसी माँग जिसकी पूर्ति सबसे पहले करना अपेक्षित हो।

अतिकथा *स्त्री.* (तत्.) अतिरंजित कहानी।

अतिकर्षण *पुं.* (तत्.) अत्यधिक श्रम।

अतिकाय *वि.* (तत्.) स्थूलकाय, मोटा, दीर्घकाय, बहुत लंबा-चौड़ा, बहुत हृष्ट-पुष्ट।

अतिकाल *पुं.* (तत्.) 1. विलंब, देर 2. कुसमय 3. महाकाल, काल का भी काल 4. शिव 5. काल का अतिक्रमण करने वाला।

अतिकाल मजदूरी *स्त्री.* (तत्.) दे. उपरिसमय मजदूरी। overtime work

अतिकालदेय *वि.* (तत्.) जिसकी अदायगी काफी समय पहले हो जानी चाहिए थी।

अतिकृत *वि.* (तत्.) जिसे करने में अति या मर्यादा का अतिक्रमण हुआ हो।

अतिकृति *स्त्री.* (तत्.) 1. मर्यादा का अतिक्रम(ण) 2. 25 वर्णो वाला एक वर्णवृत्त।

अतिकोप *वि.* (तत्.) बहुत अधिक क्रोध।

अतिक्रम *पुं.* (तत्.) 1. नियम या मर्यादा का उल्लंघन 2. विपरीत व्यवहार।

अतिक्रमण *पुं.* (तत्.) 1. उल्लंघन, पार करना, हद के बाहर जाना 2. प्रबल आक्रमण।

अतिक्रमी *वि.* (तत्.) किसी दूसरे की सीमा का अतिक्रमण अर्थात् उसका अवैध उल्लंघन करने वाला (व्यक्ति)।

अतिक्रांत *वि.* (तत्.) 1. जिसकी सीमा का उल्लंघन किया गया हो 2. बीता हुआ, अतीत, विगत।

अतिक्रामक *वि./पुं.* (तत्.) क्रम या नियम का उल्लंघन करने वाला।

अतिक्रियता *स्त्री.* (तत्.) अत्यधिक सक्रिय होने की स्थिति।

अतिक्रिया *स्त्री.* (तत्.) सामान्य से अधिक अनावश्यक क्रिया।

अतिक्रुद्ध *वि.* (तत्.) अत्यंत रुष्ट, अत्यंत क्रुद्ध, बहुत अधिक नाराज।

अतिक्रूर *वि.* (तत्.) अत्यंत निष्ठुर या निर्दय।

अतिक्षिप्त *वि.* (तत्.) सीमा के पार या बहुत दूर फेंका हुआ।

अतिगंध *वि.* (तत्.) तीक्ष्ण गंधवाला।

अतिगति *स्त्री.* (तत्.) 1. उत्तम गति 2. मुक्ति।

अतिगहन *वि.* (तत्.) 1. बहुत गहरा 2. प्रवेश करने में दुष्कर 3. जो सरलता से समझा न जा सके।

अतिगह्वर *वि.* (तत्.) दे. अतिगहन *पुं.* अत्यंत गहरा गड्ढा।

अतिगुण *पुं.* (तत्.) सद्गुणी, बहुत अच्छे गुणवाला।

अतिगुरु *वि.* (तत्.) बहुत अधिक भारी *पुं.* (तत्.) अत्यंत आदरणीय व्यक्ति, पिता-माता आदि।

अतिग्राह्य *वि.* (तत्.) नियंत्रण में रखने योग्य *पुं.* (तत्.) ज्योतिष्टोम यज्ञ में लगातार तीन बार किया जाने वाला तर्पण।

अतिघ्न *वि.* (तत्.) अधिक विनाश करने वाला।

अतिघ्नी *स्त्री.* (तत्.) ऐसी सुखद निद्रा या विस्मृति जिसमें अतीत की अप्रिय बातें याद नहीं रहती।

अतिचर *वि.* (तत्.) अधिक परिवर्तनशील।

अतिचरण *पुं.* (तत्.) जितना करना हो उससे अधिक करना।

अतिचार *पुं.* (तत्.) 1. किसी संपत्ति को अवैध पद्धति से हानि पहुंचाने की क्रिया 2. कानून अथवा सीमा का उल्लंघन।

अतिचारी *वि.* (तत्.) अतिचार या अवैध उल्लंघन का अपराधी।

अतिचालक *पुं.* (तत्.) भौ. अतिचालकता गुण-धर्म से संपन्न वस्तु super conductor

अतिचालकता *स्त्री.* (तत्.) कुछ वस्तुओं का वह गुणधर्म जिसमें परमशून्य से कुछ अंश (डिग्री) ऊपर वैद्युत प्रतिरोध लगभग समाप्त हो जाता है। super conductivity

अतिजागर *वि.* (तत्.+तद्.) सदा जागने वाला, जागरूक।

अतिजात *वि.* (तत्.) श्रेष्ठता में पिता या बंधुबांधवों से अधिक गुणी (व्यक्ति)।

अतिजीवन *पुं.* (तत्.) लंबी आयु, सामान्य से अधिक आयु का जीवन, दीर्घ जीवन।

अतिजीवी *वि.* (तत्.) 1. दीर्घ-जीवी, लंबी आयुवाला, साधारण वय से अधिक समय तक जीवित रहने वाला प्राणी (व्यक्ति या पादप), जैसे- कछुआ, वटवृक्ष आदि 2. उत्तरजीवी।

अतितत्काल *वि.* (तत्.) (सरकारी कामकाज में) शीघ्रता से कार्रवाई के क्रम में तत्काल से भी अधिक प्राथमिकता वाली फाइल या कार्रवाई।

अतितनाव *पुं.* (तद्.) एकधमनीजन्य रोग जिसमें रक्तदाब में अत्यधिक वृद्धि के कारण अत्यधिक तनाव हो जाता है hypertension

अतितीक्ष्ण *वि.* (तत्.) 1. अत्यंत तेज धारवाला 2. बहुत कड़ुवा 3. बहुत उग्र।

अतितीव्र *पुं.* (तत्.) अत्यंत तेज *पुं.* संगी. तीव्र से भी ऊंचा स्वर।

अतितुरंत *वि.* (तत्.) शीघ्रता से कार्रवाई के क्रम में 'तुरंत' से ऊपर की अगली स्थिति पर्या. परम आवश्यक। most urgent

अतितृष्ण *वि.* (तत्.) 1. बहुत अधिक प्यासा 2. अत्यंत लोभी।

अतिथि *पुं.* (तत्.) 1. मेहमान, घर आया हुआ आगंतुक (जिसके आने का दिन निश्चित न हो) अभ्यागत 2. वह संन्यासी जो एक रात अर्थात् एक दिन (या तिथि) से अधिक कहीं न ठहरे ।

अतिथि-क्रिया *स्त्री.* (तत्.) आतिथ्य, अतिथि की आवभगत।

अतिथिगृह *पुं.* (तत्.) शा.अर्थ अतिथियों के ठहरने के लिए बना भवन प्रशा. संस्थाओं के कर्मचारियों के लिए मुख्यालय से इतर स्थानों पर बने आवास (जहाँ उन्हें न्यूनतम किराया चुका कर समुचित सुविधाएं उपलब्ध होती हैं guest house

अतिथिदेव *पुं.* (तत्.) अतिथि, जिसे देवता स्वरूप मानकर उसका यथोचित आदर-सत्कार किया जाए (अतिथिदेवो भव)।

अतिथिधर्म *पुं.* (तत्.) घर आए मेहमान (अतिथि) की यथोचित आवभगत करने का गृहस्थ का कर्तव्य।

अतिथिपूजन *पुं.* (तत्.) दे. अतिथि-पूजा।

अतिथिपूजा *स्त्री.* (तत्.) घर आए मेहमान (अतिथि) का यथोचित आदर-सत्कार, मेहमानदारी, अतिथिसत्कार।

अतिथिभवन *पुं.* (तत्.) दे. अतिथिगृह।

अतिथियज्ञ *पुं.* (तत्.) अतिथि का यथोचित आदर-सत्कार जो पंच महायज्ञों में से एक है।

अतिथिशाला *स्त्री.* (तत्.) दे. अतिथि-गृह।

अतिथि संपादक *पुं.* (तत्.) किसी ग्रंथ या पत्रिका के विशेषांक के संपादन-हेतु नियुक्त अवैतनिक कार्यालयेतर विशेषज्ञ।

अतिथिसत्कार *पुं.* (तत्.) घर आए मेहमान (अतिथि) के प्रति यथोचित आदरभाव सहित उस की खातिरदारी।

अतिथिसेवा *स्त्री.* (तत्.) दे. अतिथिसत्कार।

अतिदर्प *पुं.* (तत्.)अत्याधिक अभिमान *वि.* (तद्.) अत्यधिक अभिमानी।

अतिदर्शी *वि.* (तत्.) अत्यधिक दूरंदेशी, अत्यंत दूरदर्शी।

अतिदाता *पुं.* (तत्.) अत्यधिक दान देने वाला व्यक्ति।

अतिदान *पुं.* (तत्.) अत्यधिक दान।

अतिदाह *पुं.* (तत्.) बहुत अधिक ताप या जलन।

अतिदिष्ट *पुं.* (तत्.) 1. प्रभावित, आकृष्ट 2. दर्श. मीमांसा के अनुसार एक का धर्म दूसरे में आरोपित।

अतिदीप्त *पुं.* (तत्.) अतिशय प्रकाशमान।

अतिदीप्य *वि.* (तत्.) अतिशय प्रकाशित होने वाला।

अतिदु:सह *वि.* (तत्.) जिसे सह पाना बहुत कठिन हो, अत्यधिक असहय।

अतिदुर्धर्ष *वि.* (तत्.) 1. जिसका दमन करना अत्यंत कठिन हो, अतिप्रबल, प्रचंड, बहुत उग्र 2. अत्यधिक उद्दंड, जो बहुत अहंकारी हो।

अतिदेय *वि.* दे. अतिकालदेय।

अतिदेश *पुं.* (तत्.) 1. एक का धर्म दूसरे पर आरोपित करना 2. निर्दिष्ट विषय के अतिरिक्त अन्य विषय पर भी लागू होने वाला नियम 3. सादृश्य, उपमा 4. निष्कर्ष 5. आत्मसात् करना।

अतिदेशक *वि.* आदेशकारी।

अतिदोष *पुं.* (तत्.) बहुत बड़ा दोष, अपराध।

अतिधन्वा *पुं.* (तद्.) अद्‌वितीय धनुर्धर।

अतिधेनु *वि.* (तत्.) जो अपने यहाँ पालित अधिसंख्य गायों के कारण प्रसिद्ध हो।

अतिनाटक *पुं.* (तत्.) नाटक का वह रूप जिसमें सामान्य कारण-कार्य सिद्धांत का अनुसरण करने की अपेक्षा संवेगात्मकता, भावात्मकता या अतिभावुकता पर अधिक बल दिया जाता है।

अतिनामता *स्त्री.* (तत्.) भाषा. किसी वर्गसूचक शब्द का वह गुणधर्म जिसके द्वारा उसके वर्ग के अन्य सदस्यों की पहचान होती है जैसे- बिल्ली एक जानवर हैं इस वाक्य में 'जानवर अतिनाम है और बिल्ली, कुत्ता, घोड़ा आदि सभी उस वर्ग के सदस्य होने के नाते 'अवनाम' होंगे। hypernim तु. अवनाम। hyponim

अतिनिद्र *वि.* (तत्.) 1. जो बहुत सोता हो 2. जो निद्रा का अतिक्रमण कर चुका हो।

अतिनूतन युग *पुं.* (तत्.) भूवि. भू-वैज्ञानिक इतिहास का वह युग जो एक करोड़ बीस लाख वर्ष पूर्व प्रारंभ हुआ, इस युग में मानव समान बंदरों का विकास हुआ pliocene epoch

अतिपतन *पुं.* (तत्.) 1.शा.अर्थ. पतन की चरमावस्था 2. भूल 3. गलती से छूट जाना 4. अतिक्रमण, सीमा से बाहर जाना।

अतिपतित *वि.* (तत्.) 1. नैतिक पतन की पराकाष्ठा पर पहुंचा हुआ (व्यक्ति) 2. सीमा से बाहर गया हुआ।

अतिपत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. असफलता, कार्य का पूर्ण न होना 2. सीमोल्लंघन करना।

अतिपथ *पुं.* (तत्.) उत्तम मार्ग, सन्मार्ग।

अतिपर *वि.* (तत्.) शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला।

अतिपरवलय *पुं.* (तत्.) 1. वह शांकव जिसकी उत्केंद्रता एक से अधिक हो 2. ऐसे बिंदु का पथ जिसकी दो नियत बिदुओं से दूरियों का अंतर अचर हो hyperbola

अतिपरिचय *पुं.* (तत्.) अत्यधिक मेल-जोल।

अतिपरोक्ष *वि.* (तत्.) 1. दृष्टि से बहुत दूर, अदृश्य 2. अविज्ञेय, अविवेचनीय।

अतिपात *पुं.* (तत्.) 1. समय का बीत जाना, समय का नष्ट होना 2. भूल-चूक 3. उल्लंघन 4. दुर्व्यवहार।

अतिपातक *पुं.* (तत्.) धर्मशास्त्र में उल्लिखित कोई महापातक, विशेषत: मातृगमन, पुत्रीगमन पुत्रवधूगमन, आदि का दोषी।

अतिपाती *वि.* (तत्.) 1. अतिपात करने वाला दे. अतिपात 2. गति से आगे बढ़ जाने वाला।

अतिप्रवण भूमि *स्त्री.* (तत्.) मुख्यत: खड़े या साधारण ढाल वाले क्षेत्र जहाँ भूमि के उपयोग से संबंधित भूस्खलन आदि समस्याएं उत्पन्न होती हैं steep land

अतिप्रश्न *पुं.* (तत्.) 1. अमर्यादित प्रश्न 2. अनावश्यक प्रश्न 3. उपयुक्त उत्तर प्राप्त होने पर भी किया गया प्रश्न।

अतिप्रसंग पुं. (तत्.) 1. अत्यधिक आसक्ति 2. बहुत ही घनिष्ठ संबंध 3. प्रगाढ़ प्रेम।

अतिप्रौढ़ा *स्त्री.* (तत्.) विवाह की सामान्य आयु पार पार कर जाने वाली कन्या।

अतिबरवै *पुं.* (देश.) बरवै छंद का एक भेद जिसके पहले और तीसरे चरणों में बारह तथा दूसरे और चौथे चरणों में नौ मात्राएं होती हैं।

अतिबल *वि.* (तत्.) 1. प्रचंड बल वाला 2. दृढ़, प्रबल।

अतिभक्ति *स्त्री.* (तत्.) अत्यंत भक्ति *वि.* अपने आप को कष्ट में डाल कर भक्ति करने वाला, आत्म-कष्ट से प्रभु की अनुकंपा का आकाँक्षी।

अतिभव *पुं.* (तत्.) 1. विजय 2. अधिक हो जाना या बढ़ जाना।

अतिभार *पुं.* (तत्.) 1. अत्यधिक बोझ 2. वाक्य की अस्पष्टता।

अतिभारारोपण *पुं.* (तत्.) (जैन शास्त्र के अनुसार) पशुओं पर अधिक बोझ लादने का अत्याचार।

अतिभारित *वि.* (तत्.) जिस पर उसकी भारवहन क्षमता से अधिक भार लाद दिया गया हो।

अतिभू *वि.* (तत्.) सब को पार कर जाने वाला, सबसे अधिक हो जाने वाला।

अतिभोग *पुं.* (तत्.) उपयुक्त या नियत समय के बाद भी किसी वस्तु या विषय का उपभोग।

अतिभोजन *पुं.* (तत्.) अधिक खाना, पेटूपन।

अतिमति *वि.* (तत्.) अत्यधिक घमंडी, अहंकारी *स्त्री. (तत्.)* अहंकार, अत्यधिक घमंड, हठ।

अतिमर्त्य *वि.* (तत्.) 1. इस लोक से परे का, अलौकिक 2. मानवीय शक्ति से परे का।

अतिमा *स्त्री.* (तत्.) भौतिक, मानसिक तथा सांस्कृतिक परिवेश का अतिक्रमण करने वाली अवस्था।

अतिमात्रा *स्त्री.* (तत्.) आवश्यकता से अधिक (जैसे, औषधि की) मात्रा।

अतिमान *वि.* (तत्.) अपरिमेय, अतिविस्तृत *पुं. (तत्.)* दे. अतिमति।

अतिमानव *पुं.* (तत्.) अलौकिक शक्तियों या गुणों से संपन्न मनुष्य।

अतिमानवी *वि.* (तत्.) मानव से संबंध न रखनेवाला, अलौकिक, अतिमानव से संबंधित।

अतिमानुष *वि.* (तत्.) मनुष्य की शक्ति से बाहर का, अमानुषी, दैवी।

अतिमाय *वि.* (तत्.) मोहमाया से मुक्त, पूर्णत: विरक्त।

अतिमित *वि.* (तत्.) 1. अपरिमित, अतुल, बेहिसाब, बहुत अधिक 2. जो तिमित अर्थात् गीला न हो 3. अस्थिर, अशांत।

अतिमुक्त *वि.* (तत्.) 1. जिसे पूर्ण मुक्ति मिल गई हो, निर्वाण-प्राप्त, वीतराग, विषयवासना रहित, बंजर *पुं.* 1. खेती किए बगैर छोड़ी गई भूमि 2. अतिमुक्तक माधवी लता, तिंदुक वृक्ष, तालवृक्ष।

अतिमूत्र *पुं.* (तत्.) आयु. छह प्रकार के प्रमेहों में से एक, बहुमूत्र रोग, बहुमूत्रता polyuria

अतिमृत्यु *वि.* (तत्.) 1. मृत्यु पर विजय पाने वाला 2. महामारी *पुं.* मोक्ष।

अतिमैथुन *पुं.* (तत्.) अत्यधिक संभोग।

अतियोग *पुं.* (तत्.) 1. अधिकता, अतिशयता 2. किसी मिश्रित औषधि में किसी द्रव्य का नियत मात्रा से अधिक मिश्रण।

अतिरंजन *पुं.* (तत्.) 1. बढ़ाचढ़ा कर कहने की क्रिया 2. अभिरंजकों या रंजकों का अधिक उपयोग। overstating, exaggeration

अतिरंजना *स्त्री.* (तत्.) अतिरंजित उक्ति, अतिशयोक्ति।

अतिरंजित *वि.* (तत्.) अतिरंजना से युक्त, बढ़ाचढ़ाकर कहा हुआ।

अतिरक्त *वि.* (तत्.) 1. बहुत अधिक लाल 2. बहुत अधिक अनुरागी।

अतिरक्तचाप *पुं.* (तत्.) आयु. रक्त के दबाव का सामान्य से अधिक होना, जिसे हृदय रोग का लक्षण माना जाता है।

अतिरथ *पुं.* (तत्.) दे. अतिरथी।

अतिरथी *पुं.* (तत्.) रथ पर चढक़र लड़नेवाला अप्रतिम योद्धा।

अतिरात्र *पुं.* (तत्.) 1. मध्य रात्रि 2. ज्योतिष्टोम यज्ञ का एक वैकल्पिक भाग 3. इस यज्ञ से संबद्ध एक मंत्र 4. चाक्षुष मनु का एक पुत्र *वि.* रात्रि व्यतीत होने तक।

अतिरिक्त *वि.* (तत्.) 1. आवश्यकता से अधिक 2. नियत परिमाण से अधिक 3. साथ ही, साथ-साथ, अलावा।

अतिरिक्त प्रति *स्त्री* (तत्.) किसी भी प्रलेख की मूल को छोडक़र अन्य प्रति/प्रतियां spare copy

अतिरिक्त रन *पुं.* (तत्.) क्रिके. बल्लेबाज द्वारा बल्ले से प्रहार कर बनाए गए रनों के अलावा 'नो बॉल' 'वाइडबॉल आदि से टीम के खाते में जुडे रन। extras

अतिरूक्ष *वि.* (तत्.) 1. अत्यंत रूखा 2. बहुत खुरदरा 3. कठोर 4. प्रेमहीन।

अतिरूप *वि.* (तत्.) परम रूपवान, अत्यंत सुंदर *पुं. (तत्.)* अद्वितीय सौंदर्य।

अतिरेक *पुं.* (तत्.) 1. आवश्यकता से अधिक होने का भाव, गुण या स्थिति 2. अधिकता, अतिशयता।

अतिरोग *पुं.* (तत्.) क्षयरोग, राजयक्ष्मा।

अतिरोमश *वि.* (तत्.) दे. अतिलोमश *पुं.* 1. अधिक बालों बाले जीव 2. वन्यजीव।

अतिलंघन *पुं.* (तत्.) 1. सीमा या मर्यादा को लांघना 2. दीर्घ उपवास 3. विधि. किसी कानून को भंग करना या किसी अधिकार का अतिक्रमण करना। infringement

अतिलाभ *पुं.* (तत्.) आवश्यकता या व्यावसायिक मानक की अपेक्षा अधिक लाभ।

अतिलोमश *वि.* (तत्.) बहुत अधिक बालों बाला।

अतिलौकिक *वि.* (तत्.) जो प्रकृति के नियमों या परिघटनाओं से परे हो।

अतिवक्ता *वि.* (तत्.) बहुत अधिक बोलनेवाला, बकवादी।

अतिवय *वि.* (तत्.)अतिशय वृद्ध, अधिक अवस्था का।

अतिवर्तन *पुं.* (तत्.) 1. किसी वस्तु का आवश्यकता से अधिक मात्रा में उपयोग 2. क्षमा करने योग्य अपराध।

अतिवर्ती *वि.* (तत्.)1. अतिक्रमण करने वाला 2. बहुत अधिक आगे बढ़ जाने वाला 3. पार करने वाला।

अतिवर्तुल *वि.* (तत्.) बहुत गोल *पुं.* एक अन्न, कलाय या केरवा नामक साग।

अतिवर्धन *पुं.* (तत्.) अति वृद्धि, अतिविकसन, रोगजनक जीवाणुओं के कुप्रभाव से प्राणियों पौधों के आकार में असामान्य वृद्धि hyplasia

अतिवाद *पुं.* (तत्.) 1. औचित्य या मर्यादा के अतिक्रमण का समर्थक सिद्धांत 2. किसी वस्तु को या तो सर्वोत्तम समझने या फिर निकृष्टतम मानने का सिद्धांत 3. उग्रवाद 4. कठोर वचन 5. बढ़ा-चढ़ाकर कहना 6. खरी या सच्ची बात।

अतिवादी *वि.* (तत्.) 1. अतिवाद का अनुसरण करने वाला या अतिवाद को मानने वाला 2. दूसरे पक्ष का खंडन कर अपने मत को स्थापित करने वाला 3. डींग मारनेवाला 4. बहुत बोलने वाला।

अतिवास *पुं.* (तत्.) श्राद्ध कर्म से एक दिन पहले किया जानेवाला उपवास।

अतिवाह *पुं.* (तत्.) 1. आत्मा का अन्य शरीर में प्रवेश 2. नदी आदि के जल का तटों के ऊपर प्रवाह 3. आवश्यक मात्रा से अधिक पानी को निकालनेवाली नाली।

अतिवाहक *पुं.* (तत्.) आत्मा को अन्य शरीर में प्रविष्ट कराने में सहायक देवता।

अतिवाहन *पुं.* (तत्.) 1. बिताना 2. भेजना 3. बहुत अधिक परिश्रम करना।

अतिवाहित *वि.* (तत्.)बिताया हुआ *पुं.* पाताल निवासी।

अतिविकट *वि.* (तत्.) 1. अति जटिल, बहुत पेचीदा 2. बहुत डरावना, बहुत भयंकर।

अतिविटामिनता *स्त्री* (देश.) आवश्यकता से अधिक अधिक विटामिनों के उपयोग से उत्पन्न रोग hyper vitaminosis

अतिविपिन *वि.* (तत्.) बहुत से जंगलों वाला *पु.* घना जंगल।

अतिविष *वि.* (तत्.) 1. अत्यधिक विषैला, बहुत अधिक जहरीला 2. प्रतिकारी विष।

अतिविषा *स्त्री.* (तत्.) अत्यधिक विषैली औषधि, अतीसा नाम का जहरीला औषधीय पादप aconite

अतिविस्तार *पुं.* (तत्.) बहुत अधिक विस्तार, अतिव्याप्ति *वि.* अत्यधिक विस्तार वाला।

अतिवृत्ति *स्त्री.* (तत्.)1. आगे बढ़ जाना 2. अतिक्रमण अतिक्रमण 3. तेजी से रक्त निकलना 4. अतिरंजना।

अतिवृद्ध *वि.* (तत्.) बहुत अधिक बूढ़ा, अधिक वय का।

अतिवृद्धा *वि.* (तत्.) बहुत बूढ़ी, अधिक वय वाली।

अतिवृद्धि *स्त्री.* (तत्.) शरीर के किसी अंग की कोशिकाओं का आकार बढ़ जाने के कारण उस अंग या ऊतक का विवर्धन hypertrophy

अतिवृष्टि *स्त्री.* (तत्.) बहुत अधिक वर्षा जिससे खेती को हानि हो।

अतिवेगित *वि.* (तत्.) तीव्रगति से चलनेवाला।

अतिवेध *पुं.* (तत्.) 1. अत्यधिक मेल जोल 2. दशमी-एकादशी तिथियों का संयोग।

अतिवेल *वि.* (तत्.) 1. अत्यंत, असीम, बेहद 2. मर्यादा का उल्लंघन करनेवाला 3. उद्वेलित 4. तट से बाहर प्रवाह करने वाला, अधिप्रवाही 5. बेमौसमी।

अतिवेला *स्त्री.* (तत्.) विलंब, देरी।

अतिव्याप्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. न्याय किसी लक्षण या या कथन के अंतर्गत लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य विषय के आ जाने का दोष 2. अधिक विस्तार।

अतिशय *वि* (तत्.) 1. बहुत ज्यादा, मात्रा या परिमाण में अधिक 2. प्राचीन शास्त्रानुसार अतिरंजना का सूचक अलंकार *पुं.* अधिकता, श्रेष्ठता, अतिरंजना।

अतिशय कोटि *स्त्री.* (तत्.) भाषा विशेषण-शब्दों का वह रूप जो उत्तम कोटि को सूचित करे जैसे- सुंदर, सुंदरतर की तुलना में, सुंदरतम, सबसे सुंदर।

अतिशयता *स्त्री.* (तत्.) अधिकता, बहुतायत, मात्रा, परिमाण या माप में अत्यधिक होने की अवस्था या भाव।

अतिशयन *पुं.* (तत्.) 1. अधिकता, प्रचुरता 2. अधिक शयन करना।

अतिशयनी *स्त्री.* (तत्.) चित्रलेखा नामक चार चरणों वाला एक छंद।

अतिशयालु *वि.* (तत्.) बढ़ जाने की या बढ़ चढ़ कर रखने की प्रवृत्ति रखने वाला, अतिशयता की प्रवृत्ति वाला।

अतिशयी *वि.* (तत्.) 1. प्रधान, श्रेष्ठ 2. बहुत अधिक।

अतिशयोक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. बढ़ा-चढ़ाकर कही हुई बात 2. एक अर्थालंकार जिस में किसी पात्र, वस्तु या भाव का अतिरंजित रूप से वर्णन किया जाता है।

अतिशयोपमा *स्त्री.* (तत्.) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय को उपमान या अन्यों की तुलना में श्रेष्ठ बतलाया जाता है।

अतिशर्करारक्तता *स्त्री.* (तत्.) आयु. रक्त में शर्करा की मात्रा के सामान्य से अधिक होने की स्थिति, जो मधुमेह का लक्षण है। hyperglycomia

अतिशस्त्र *वि.* (तत्.) शस्त्र से भी तेज।

अतिशायन *पुं.* (तत्.) 1. प्रधानता, श्रेष्ठता, अधिकता 2. आगे बढ़ जाना।

अतिशायिनी *स्त्री.* (तत्.) आगे बढ़ जाने वाली, श्रेष्ठ, अत्यधिक

अतिशायी *वि.* (तत्.) 1. प्रधान, श्रेष्ठ, अत्यधिक 2. आगे बढ़ जानेवाला।

अतिशीत *पुं.* (तत्.) अत्यंत ठंड, बहुत ठंडा।

अतिशीतन *पुं.* (तत्.) उचित रीति से बहुत अधिक ठंडा होने का भाव या क्रिया।

अतिशीतलन *वि.* (तत्.) 1. बहुत अधिक ठंडा या शीतल कर देना 2. भौ. किसी द्रव को ठोस में बदले बिना उसके हिमांक या क्रिस्टलन-ताप तक ठंडा करना। super cooling

अतिशीलन *पुं.* (तत्.) (अधिक) अभ्यास, बारंबार मनन या विचार।

अतिशेष *पुं.* (तत्.) बचा हुआ अंश, शेषांश।

अतिशोधन *पुं.* (तत्.) भाषा. अनावश्यक रूप् से सही भाषा के स्थान पर गलत लिखना और बोलना, जैसे- जिल्द को ज़िल्द, मजबूर को मज़बूर या छात्र को क्षात्र लिखना/बोलना।

अतिश्रम *पु.* (तत्.) बहुत अधिक परिश्रम या मेहनत, अत्यधिक थकावट या क्लांत, मेहनत से पसीना बहुत आना।

अतिश्रुत *वि.* (तत्.) 1. अति प्रसिद्ध, विख्यात 2. अधिक सुना हुआ।

अतिश्रेष्ठ *वि.* (तत्.) सबसे अच्छा, सर्वोत्तम।

अतिसंधान *पुं.* (तत्.) धोखा, विश्वासघात, छल-कपट, अतिक्रमण, उचित लक्ष्य से आगे निशाना लगाना।

अतिसंधि *स्त्री.* (तत्.) सामर्थ्य से अधिक सहायता देने की प्रतिज्ञा।

अतिसंध्या *स्त्री (तत्.)* धुंधलका, सूर्योदय के एकदम एकदम पहले और सूर्यास्त के एकदम बाद का समय।

अतिसंवेदन *पुं.* (तत्.) 1. अत्यधिक संवेदनशील या सुग्राही होने की स्थिति 2. दर्द, ताप, शीत, स्पर्श आदि की तीव्रअनुभूति hyperastheisa

अतिसक्ति *स्त्री.* (तत्.) अत्यधिक अनुरक्ति, विशेष आसक्ति।

अतिसक्रिय *वि.* (तत्.) असामान्य रूप से या आवश्यकता से कहीं अधिक सक्रिय।

अतिसर *वि.* (तत्.) 1. अतिक्रमण करने वाला 2. सबसे आगे बढ़ जाने वाला *पुं. (तत्.)* प्रयास, चेष्टा, प्रयत्न।

अतिसरलीकरण *पुं.* (तत्.) 1. किसी सिद्धांत या प्रक्रिया को अधिक सुगम या सुकर बनाना 2. किसी सिद्धांत को इतना सरल बनाना कि उसका मूल स्वरूप ही विरूपित सा हो जाए।

अतिसर्ग *पुं.* (तत्.) 1. पुरस्कार रूप में देना, आज्ञा 2. इच्छानुसार कार्य करने की अनुमति देना 3. अलग करना *वि. (तत्.)* स्थायी, नित्य; मुक्त।

अतिसर्जन *पुं.* (तत्.) 1. दान देना, दानशीलता, त्याग 2. धोखा, वंचना 3. पार्थक्य, बिलगाव 4. वध 5. आवश्यकता से अधिक रचना या निर्माण करना।

अतिसर्पण *पुं.* (तत्.) 1. तेजी से चलना 2. गर्भाशय में बच्चे का हिलना डुलना।

अतिसांवत्सर *वि* (तत्.) एक वर्ष से अधिक टिकने या चलने वाला।

अतिसामान्य *वि.* (तत्.) वह बात जो इतने सामान्य रूप में कही जाए कि सब पर पूरी न घटे, बहुत साधारण, मामूली, बहुत कम महत्वपूर्ण, बहुत सरल।

अतिसार *पुं.* (तत्.) 1. आंतों का एक संक्रामक रोग जिसमें उनमें सूजन, घाव हो जाते हैं और श्लेष्मल दस्त आते हैं dysentry 2. दस्त, प्रवाहिका। diarrhoea

अतिसारकी *वि.* (तत्.) अतिसार से पीड़ित, अतिसार का रोगी।

अतिसारी *वि.* (तत्.) दे. अतिसारकी।

अतिसी *स्त्री.* (तद्.) अलसी, तीक्षी।

अतिसुधार *वि.* (देश.) बहुत अधिक सँवारा हुआ, सुधरने या सुधारने की बहुत अच्छी प्रक्रिया अथवा अवांछित रूप से अधिक।

अतिसूक्ष्मदर्शी *पुं.* (तत्.) भौ. अत्यंत सूक्ष्म तत्वों या कणों तक को देखने की क्षमता रखने वाला सूक्ष्मदर्शी ultra microscope

अतिसौरभ *वि.* (तत्.) अत्यधिक सुगंध वाला *पुं.* 1. बहुत अधिक सुगंध 2. आम।

अतिस्थूल *वि.* (तत्.) 1. बहुत मोटा, बड़ी काया वाला 2. मोटी बुद्धि वाला, मूर्ख।

अतिस्पर्श *पुं.* (तत्.) 1. व्याकरण में अर्द्ध स्वर और स्वर की एक संज्ञा, उच्चारण में जीभ और तालु का अल्प स्पर्श 2. *वि.* कंजूस, कमीना

अतिस्फीति *स्त्री.* (तत्.) अत्यधिक मुद्रास्फीति। विलो. अवस्फीति।

अतिस्वप्न *पुं.* (तत्.) 1. बहुत अधिक स्वप्न 2. अत्यधिक निद्रा।

अतिहत *वि.* (तत्.) 1. पूर्णतया नष्ट किया हुआ 2. अचल, स्थिर।

अतिहसित *पुं.* (तत्.) हास के छह भेदों में से एक, जिसमें हँसने वाला ताली बजाए, अस्पष्ट वचन बोले, उसका शरीर काँपे और आँख में आँसू आ जाए।

अतींद्रिय *वि.* (तत्.) 1. इंद्रियातीत, जिसका ज्ञान इंद्रियों से न हो, जो इद्रियों की पहुंच से बाहर हो, पारलौकिक 2. अगोचर।

अतींद्रिय वाद *वि.* (तत्.) इंद्रियों के अलावा परमात्मा की सत्ता या अस्तित्व को मानने वाला संप्रदाय, परंपरा या शाखा, अतींद्रिय अनुभवों और अतींद्रिय ज्ञान की वास्तविकता का प्रतिपादक मत या सिद्धांत।

अतींद्रियवादी *वि.* (तत्.) अतींद्रियवाद पर विश्वास रखने वाला अथवा उसका समर्थक।

अतीत *वि.* (तत्.)1. गत, व्यतीत, बीता हुआ, गुजरा हुआ 2. भूतकाल *क्रि.वि.* (तत्.) परे, बाहर।

अतीतना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. बीतना, गुजरना 2. त्यागना *स.क्रि.* (तद्.) बिताना, व्यतीत करना, विगत करना, छोड़ना, त्यागना।

अतीतागत *वि.* (तत्.) बीते हुए समय से या भूत काल से वर्तमान तक का, भूतकाल और वर्तमान काल।

अतीताब्धि *वि.* (तत्.) 1. सूखा हुआ समुद्र, ताल या झील 2. संग्रह या भंडार आदि 3. अतीत रूपी सागर।

अतीतावलोकन *पुं.* (तत्.) पहले बीत चुकी घटनाओं को देखने का भाव या इनका स्मरण, भूतकालीन किसी घटना की झलक, पूर्व दृश्य flash back

अतीति *स्त्री.* (तत्.) आधिक्य, प्राचुर्य।

अतीदिव्य दृष्टि *वि.* (तत्) नेत्र के द्वारा न होकर ध्यान या मनन के द्वारा देखने की शक्ति, अप्रत्यक्ष दृष्टि, अगोचर, सांख्य शास्त्र की दृष्टि में जीव या पुरुष, (परमात्मा) की दृष्टि, वेदांत में मन की दृष्टि।

अतीव *वि.* (तत्.)अधिक ही, ज्यादा, बहुत, अतिशय, अत्यंत।

अतीस *स्त्री.* (तत्.) एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम आती है, अतिविशा, विशा।

अतुंग *वि.* (तत्.) 1. जो ऊंचा या लंबा न हो 2. ठिगना।

अतुकांत *वि.* (देश.) तुक रहित कविता जिसके चरणों में तुक या अंत्यानुप्रास न हो।

अतुराई *स्त्री.* (तद्.) आतुरता, व्यग्रता, शीघ्रता, जल्दीपन।

अतुराना *अ.क्रि.* (तद्.) आतुर होना, घबड़ाना, हड़बड़ाना, जल्दी करना।

अतुल *वि.* (तत्.) 1. जिसकी तौल संभव न हो 2. जिसकी तुलना न हो सके 3. बेजोड़, अद्वितीय 4. अमित 5. असीम, अपार।

अतुलनीय *वि.* (तत्.) 1. जिसकी तुलना न हो सके 2. अनुपम, बेजोड़, अद्वितीय 3. अपरिमित, अपार, बहुत अधिक 4. अनुपम बेजोड़, अद्वितीय।

अतुलित *वि.* (तत्.) 1. बिना तौला हुआ, बे अंदाज 2. अपरिमित, अपार 3. बहुत अधिक।

अतुल्य *वि.* (तत्.) 1. अतुलनीय, असमान 2. असदृश 3. अनुपम, बेजोड़, अद्वितीय, निराला।

अतुल्ययोगिता *स्त्री.* (तत्.) वह अलंकार जिसमें कई वस्तुओं का धर्म समान होने पर भी (तुल्ययोगिता की संभावना दिखाई पड़ने पर भी) किसी एक अभीष्ट वस्तु का विपरीत धर्म (गुण) बतलाकर उसकी विलक्षणता दिखाई जाए।

अतुष *वि.* (तत्.) तुष अर्थात् भूसी रहित, बिना भूसी का।

अतुषार *वि.* (तत्.) जो ठंडा न हो *पु.* तुषार या तुहिन के न होने की स्थिति।

अतुष्टि *स्त्री.* (तत्.) अतृप्ति, असंतोष, असंतुष्टि।

अतुष्टिकर *वि.* (तत्.) असंतोषजनक।

अतुहिन *वि.* (तत्.) 1. बिना ओसवाला 2. बिना (प्राकृतिक) हिम वाला 3. बिना कोहरे वाला।

अतुहिनकर *वि.* (तत्.) जिससे हिम, बरफ या पाला न पड़े, ठंड या शीतलता कम करने वाला।

अतृणाद *पुं.* (तत्.) तृण या घास न खा पाने वाला तुरंत का जन्मा बछड़ा।

अतृप्त *वि* (तत्.) 1. जो तृप्त न हो, जो संतुष्ट न हो, असंतुष्ट, जिसका मन भरा न हो 2. जिसकी भूख न मिटी हो।

अतृप्ति *स्त्री.* (तत्.) असंतोष, तृप्त न होने अथवा मन न भरने की अवस्था।

अतृष्ण *वि.* (तत्.) 1. तृष्णाराहित, निस्पृह, कामनाहीन।

अतेज *वि.* (तद्.) 1. तेजरहित, निस्तेज 2. अंधकारयुक्त 3. मंद, धुंधला, प्रकाशहीन *पुं.* धुंधलापन, प्रकाशहीनता अंधकार, मंदता 4. ओज का अभाव, सुस्ती।

अतैथिक *वि.* (तत्.) बिना तिथि या समय का, (पुरा) ऐसे पुरावशेष जिनकी तिथि शिला लेखों आदि से निर्धारित नहीं की जा सकती।

अतोल *वि.* (तद्.) 1. बिना तौला हुआ, जो तौल के बिना हो 2. जो कूता न गया हो।

अतौल *वि.* (तद्.) दे. अतोल।

अत्ता *स्त्री.* (तत्.) 1. माता 2. सास 3. बड़ी बहन 4 मौसी *पुं.* (तत्.) 1. चराचर का ग्रहण करने वाला 2. ईश्वर।

अत्तार *पुं.* (अ.)1. इत्र बनाने वाला गंधी, 2. यूनानी औषधि बेचने वाला 3. साहसी, शूर वीर, दिलेर 3. बलिष्ठ घोड़ा।

अत्यंत *वि.* (तत्.) 1. बहुत अधिक, बेहद, अतिशय 2. हद से ज्यादा 3. स्थायी, चिरस्थायी।

अत्यंतता *स्त्री.* (तत्.) 1. आधिक्य, अतिशयता 2. उग्रता, प्रचंडता।

अत्यंत नूतन युग *पुं.* (तत्.) भूवि. भूवैज्ञानिक इतिहास के अंतिम दस लाख वर्ष, हिमयुग के नाम से विख्यात pleistocene epoch

अत्यंतवासी *पुं.* (तत्.) अंतेवासी, हमेशा आचार्य के साथ रहने वाला विद्यार्थी।

अत्यंत संयोग *वि.* (तत्.) अतिसामीप्य, अविच्छेद्य, बहुत समीपता, घनिष्ट समीपता, अबाध निरंतरता, अवियोज्य सह-अस्तित्व।

अत्यंतातिशयोक्ति *स्त्री.* (तत्.) अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें कारण से पहले कार्य हो जाने की बात कही जाती है।

अत्यंताभाव *पुं.* (तत्.) किसी वस्तु का बिलकुल न होना, सत्ता की नितांत शून्यता, प्रत्येक स्थिति में अनस्तित्व।

अत्यंतिक *वि* (तत्.) 1. बहुत दूर तक जाने वाला 2. अत्यंत निकट स्थित, आसन्न।

अत्यंकुश *वि.* (तत्.) अंकुश को न मानने वाला, नियंत्रण न मानने वाला, उच्छृंखल।

अत्यग्नि *वि.* (तत्.) अग्नि से बढक़र ताप वाला *स्त्री.* पाचन क्रिया का तेजी से होना।

अत्यधिक *वि.* (तत्.) 1. बहुत ज्यादा 2. सीमा से अधिक।

अत्यम्ल *पुं.* (तत्.) इमली *वि.* बहुत खट्टा/खट्टी।

अत्यय *पु.* (तत्.) अवसान, लोपन, अंत:, उपसंहार, समाप्ति अनुपस्थिति, अदर्शन, मृत्यु, नाश, खतरा, संकट, चोट, दुख, अपराध, दोष, अतिक्रमण, आक्रमण, अभिमान।

अत्ययी *वि.* (तत्.) 1. अत्यय करने वाला, बढ़ा हुआ, आगे निकला हुआ 2. जो बीत गया हो, मृत, नष्ट, हद से बाहर जाने वाला, दंड देने वाला, सजा देने वाला, कष्टदायक, दोषपूर्ण।

अत्यवरुद्ध *वि.* (तत्.) जिसका बहुत अवरोध हुआ हो, बहुत अवरुद्ध, बहुत अधिक रुका हुआ या रोका गया, अतिप्रच्छन्न, बुरी तरह घिरा हुआ, कठोरता से बंद, आधिक्य, ज्यादती, मर्यादा।

अत्यष्टि *स्त्री.* (तत्.) 1. (अष्टि अर्थात् 16 वर्णों के के चरण वाले छंद से बड़ा) 17 वर्ण वाले चार चरणों वाला छंद 2. शिखरिणी, मंदाक्रांता आदि छंद।

अत्याग *पुं.* (तत्.) त्याग न करने की स्थिति, ग्रहण, स्वीकार।

अत्यागी *वि.* (तत्.) विषयों का त्याग न कर उनमें लिप्त रहने वाला, विषयासक्त।

अत्याचार *पुं.* (तत्.) 1. आचार का अतिक्रमण, अन्याय 2. ज्यादती 3. दुराचार, पाप।

अत्याचारी *वि.* (तत्.) 1. अत्याचार करने वाला, दुराचारी, अन्यायी 2. निष्ठुर 3. पाखंडी, ढोंगी, ढकोसलेबाज।

अत्याज्य *वि.* (तत्.) न छोड़ने योग्य, जिसे त्यागा न जा सके।

अत्यानंद *पुं.* (तत्.) आनंद का परम उत्कृष्ट आध्यात्मिक रूप, परमानंद।

अत्याय *पुं.* (तत्.) 1. सीमा का उल्लंघन 2. मर्यादा अतिक्रमण 3. अधिक आय या लाभ।

अत्यारूढ़ *वि.* (तत्.) 1. बहुत ऊँचे पद पर बैठा हुआ 2. अत्यधिक प्रसिद्ध।

अत्यारूढि *स्त्री.* (तत्.) 1. बहुत ऊँचा पद 2. अभ्युदय।

अत्यालोचना *स्त्री.* (तत्.) किसी बात या कार्य के गुण, दोष आदि के संबंध में अत्यधिक विचार या टीका-टिप्पणी।

अत्याश्रम *पुं.* (तत्.) संन्यासाश्रम *वि.* संन्यासी, परमहंस, ब्रह्मचर्यादि आश्रम-धर्मो का पालन करने वाला।

अत्याहत *वि.* (तत्.) दुर्घटना आदि में बहुत अधिक घायल या चोट खाया हुआ या जख्मी।

अत्याहत विभाग *पुं.* (तत्.) अस्पताल, युद्ध क्षेत्र आदि का वह विभाग जहाँ अत्याहत व्यक्तियों की देखभाल आदि की जाए।

अत्याहारी *वि.* (तत्.) बहुत अधिक खाने वाला, भोजन भट्ट।

अत्युक्त *वि.* (तत्.) बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहा गया, अत्युक्तिपूर्ण।

अत्युक्ति *स्त्री.* (तत्.) बहुत बढ़ा-चढ़ा कर किया वर्णन या कथन, अतिशयोक्ति।

अत्युग्र *वि.* (तत्.) 1. अति प्रचंड 2. बहुत भयानक *पुं.* हींग।

अत्युच्च *वि.* (तत्.) बहुत अधिक ऊँचा या श्रेष्ठ, अत्युत्तम।

अत्युत्तम *वि.* (तत्.) अधिक उत्कृष्ट, बहुत अच्छा, अति श्रेष्ठ।

अत्युत्पादन *पु.* (तत्.) बहुत अधिक उपज या उत्पादन, सामान आदि का बहुत अधिक उत्पादन होना या करना।

अत्र *अव्य.* (तत्.) यहाँ, इसमें।

अत्रस *वि.* (तत्.) निडर, डर रहित, भय-रहित *पु.* भय का अभाव।

अत्रस्त *वि.* (तत्.) निर्भीक, भयरहित; निडर।

अत्रि *पुं.* (तत्.) सप्तऋषियों में से एक जो ब्रह्मा के पुत्र माने गए हैं।

अत्रिगुण *वि.* (तत्.) त्रिगुणातीत, सत्व, रज, तम तीनों गुणों से भिन्न।

अत्रिज *पुं.* (तत्.) अत्रि के पुत्र-चंद्रमा (सोम), दत्तात्रेय तथा दुर्वासा।

अत्रिजात *पुं.* (तत्.) अत्रि के पुत्र- चंद्रमा, दत्तात्रेय तथा दुर्वासा।

अत्री *स्त्री.* (तत्.) कर्दम मुनि की कन्या अनसूया जो जो अत्रि ऋषि को ब्याही गई थी *पुं.* अत्तृ राक्षस, बहुभक्षी।

अत्रैगुण्य *पुं.* (तत्.) त्रिगुण का अभाव, सत, रज, तम आदि तीनों गुणों का अभाव, त्रिगुणातीत, त्रिगुण से परे होने की अवस्था, ऐसे ही, अथच, इसी प्रकार।

अत्र्य *वि.* (तत्.) निर्लज्ज/लज्जाहीन, बेशर्म, दु:शील, प्रगल्भ, उजड्ड, उद्धत, अशिष्ट, धृष्ट, शील रहित।

अत्रस्थ *वि.* (तत्.) यहाँ पर स्थित; यहीं रहने वाला, इसी स्थान का निवासी।

अथ *अव्य.* (तत्.) 1. आरंभ 2. मंगलसूचक शब्द, जिससे किसी ग्रंथ या रचना का आंरभ किया जाता था 3. अब 4. तब 5. अनंतर 6. अगर मुहा. अथ से इति तक- आदिसे अंत तक, संपूर्ण।

अथक *वि.* (तत्.) जो कभी न थके, अश्रांत।

अथ च *अव्यय.* (तत्.) और, और भी।

अथरा *पुं.* (तत्.) मिट्टी का एक विशेष बरतन या नांद जिसमें रंगरेज कपड़ा रंगते हैं, सुनार मानिक की रेत रखते हैं और जुलाहे सूत भिगोते हैं और ताने में लेई लगाते हैं।

अथरी *स्त्री.* (तत्.) 1. छोटा अथरा, मिट्टी का वह उपकरण जिसे कुम्हार हांडी या घड़े में रख उसे थापी से पीटते हैं 2. मिट्टी का वह बरतन जिसमें दही जमाते हैं।

अथर्व *पुं.* (तत्.) दे. अथर्ववेद।

अथर्वण *पुं.* (तत्.) 1. अथर्ववेद 2. शिव।

अथर्वणि *पुं.* (तत्.) अथर्ववेद में बताए कर्मों को जानने वाला ब्राह्मण 2. पुरोहित।

अथर्वनी *पुं.* (तद्.) दे. अथर्वणि।

अथर्ववेद *पुं.* (तद्.) चारों वेदो में अंतिम।

अथर्वा *पुं.* (तत्.) 1. एक मुनि जो ब्रह्मा के शिष्य पुत्र थे और अग्नि को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाए थे 2. अग्नि और सोम का यजन करने वाला ब्राह्मण।

अथर्वाण *पुं.* (तत्.) 1. अथर्ववेद या उस वेद में कहे हुए कर्मों को जानने वाला 2. यज्ञ कराने वाला पुरोहित।

अथवा *अव्य.* (तत्.) या, वा, किंवा आदि का अर्थसूचक एक वियोजक अव्यय जिसका प्रयोग दो या कई शब्दों, पदों या उप वाक्यों में विकल्प का संबध दर्शाने के लिए किया जाता है।

अथशेष *पुं.* (तत्.) वाणि. किसी लेखा की आंरभिक रकम की प्रविष्टि opening balance

अथसिद्धि *स्त्री.* (तत्.) अभीष्ट के सिद्ध होने या उद्देश्य के पूरा होने की स्थिति, कार्य-सिद्धि।

अथाई *स्त्री.* (तत्.) बैठने की जगह, घर का वह बाहरी चौपाल जहाँ लोग इष्ट मित्रों से मिलते हैं या उनके साथ बातचीत करते हैं, बैठक, चौबारा।

अथाना *स.क्रि.* (तद्.) डूबना, अस्त होना *स.क्रि.* (देश.) 1. थहाना, थाह लेना, गहराई नापना, ढूँढना 3. छानना।

अथापि *अव्य.* (तत्.) अपरंच, किंच, पुन: और भी, इस पर या संख्या अधिकार, सत्ता, शासन-सत्ता प्राधिकार।

अथारिटी *स्त्री.* (अं.) शक्ति या प्रभुत्व; अधिकार या प्रभाव वाला व्यक्ति या संस्था या प्राधिकरण आदि authority

अथाह *वि.* (तद्.) जिसकी थाह न हो, जिसकी गहराई न नापी जा सके, बहुत गहरा, अगाध।

अथोर *वि.* (तद्.) 1. जो थोड़ा न हो, कम नहीं, अधिक, ज्यादा, बहुत 2. पूरा।

अदंड *वि.* (तत्.) 1. जो दंड के योग्य न हो, जिसे दंड देने की व्यवस्था न हो, सजा से बरी 2. कररहित 3. निर्भय 4. स्वेच्छाचारी।

अदंडनीय *वि.* (तत्.) जो दंड के योग्य न हो, जिसके लिए दंड का विधान न हो, अदंड्य।

अदंड्य वि. (तत्.) ऐसा व्यक्ति जो दंडित होने के यानि सजा के योग्य न हो, जिसे दंड देना उचित नहीं हो।

अदंत *वि.* (तत्.) जिसका दांत न हो, जिसका दांत न निकला हो, दुधमुँहा, जिसका दांत न टूटा हो (पशु) *पुं.* (तत्.) 1. जोंक 2. एक आदित्य।

अदंत्य *वि.* (तत्.) 1. जो दाँत संबंधी न हो, जो दांतों के अनुकूल न हो 2. दांतों के लिए अहितकर जिसका उच्चारण दंत्य न हो।

अदंभ *वि.* (तत्.) 1. दंभरहित, पाखंडरहित 2. बिना आडंबर का। *पुं.* 1. दंभ का अभाव 2. सरलता।

अद्भुतरस पुं. (तत्.) काव्य में नौ रसों में से एक जो आश्चर्य से उत्पन्न होता है, जिसमें विस्मय की परिपुष्टता दिखलाई जाती है।

अदक्ष *वि.* (तत्.) अकुशल, जो निपुण न हो।

अदक्षता *स्त्री.* (तत्.) अपेक्षित समय में अपेक्षित ढंग से अभीष्ट कार्य पूरा न कर पाने की व्यक्ति की अयोग्यता तु. दक्षता।

अदक्षिण *वि.* (तत्.) 1. बायाँ, जो दाहिना न हो 2. प्रतिकूल, विरुद्ध 3. दक्षिणारहित 4. अकुशल, अनाड़ी।

अदक्षिणीय *वि.* (तत्.) दक्षिण दिशा को छोड़ कर किसी अन्य दिशा के लिए उपयुक्त 2. दक्षिणा रूपी उपहार को ग्रहण करने के अयोग्य या अनाधिकारी व्यक्ति।

अदग *वि.* (तत्.) 1. बेदाग, निष्कलंक, शुद्‌ध जिसे पाप छू न सका हो, अछूता 2. निरपराध, निर्दोष 3. अस्पष्ट, साफ 4. बचा हुआ।

अदग्ध *वि.* (तत्.) 1. न जला हुआ 2. जिसका दाह-संस्कार न किया गया हो।

अदत्त *पुं.* (तत्.) वह वस्तु जिसके दिए जाने पर भी लेने वाले को उसे रखने का अधिकार न हो *वि.* (तत्.) 1. जिसने दिया न हो, न देने वाला 2. कृपण 3. जो दिया न गया हो।

अदत्तपूर्वा स्त्री. (तत्.) 1. ऐसी स्त्री जिसको कन्या दान के द्‌वारा न दिया गया हो या जिसका विवाह न हुआ हो 2. वस्तु जिसे पहले न दिया गया हो।

अदत्ता *वि.स्त्री.* (तत्.) न दी हुई स्त्री, अविवाहिता कन्या, जिस कन्या का वाग्दान न हुआ हो।

अदद *पुं.* (अर.) 1. संख्या, तादाद 2. मात्रा।

अदद्यल *पुं.* (अर.) न्याय, इंसाफ।

अदन *पुं.* (तत्.) भोजन, खाना, भक्षण *पुं.* (अर.) 1. ईसाइयों, मुसलमानों आदि के अनुसार स्वर्ग का वह उपवन जो अत्यंत रमणीय माना गया है 2. अरब के दक्षिण में एक बंदरगाह।

अदना *वि.* (अर.) तुच्छ या सामान्य *स.क्रि.* (तद्.) दृढ़ता पूर्वक या निश्चयपूर्वक कोई बात कहना।

अदना-बदना *स्त्री.* (देश.) शर्त लगाकर या निश्चयात्मक रूप से कहना, दृढ़तापूर्वक कहना।

अदनीय *वि.* (तत्.) खाने योग्य, भक्षणीय, भोज्य।

अदब *पुं.* (अर.) 1. शिष्टाचार 2. बड़ों का आदर, सम्मान 3. साहित्य, वाङ्मय।

अदब-कायदा *पुं.* (अर.) 1. आदर सम्मान 2. शिष्ट व्यवहार।

अदबी *वि.* (अर.) 1. बड़ों के प्रति आदर और शिष्टाचार बरतने वाला 2. साहित्य से संबंधित, साहित्यिक आदेश आदि।

अदभ्र *वि.* (तत्.) 1. (जो दभ्र अर्थात् स्वल्प या कृश न हो) बहुत अधिक, प्रचुर 2. अपार।

अदम *पुं.* (अर.) 1. परलोक, जन्नत 2. अभाव न होने की स्थिति।

अदम पैरवी *स्त्री.* (फा.) किसी मुकदमे आदि में जरूरी कार्रवाई या पेशी का न होना।

अदम मौजूदगी *स्त्री.* (फा.) मौजूदगी का अभाव, गैरहाजिरी, अनुपस्थिति।

अदमनीय *वि.* (तत्.) जिसका दमन न किया जा सके, अदम्य।

अदम्य *वि.* (तत्.) 1. जिसका दमन न हो सके, न दबने योग्य 2. प्रचंड, प्रबल, अजेय।

अदय *वि.* (तत्.) दयारहित, करुणाशून्य, निर्दय, निष्ठुर, कठोर-हृदय।

अदरक *पुं.* (तद्.) एक पौधा जिसकी जड़ें (कंद) तीक्ष्ण और चरपरी और जो मसाले, चटनी, अचार आदि में प्रयुक्त होती हैं।

अदरकी *स्त्री.* (तद्.) सोंठ-गुड़ मिलाकर बनाई गई चटपटी टिकिया, सोंठीरा।

अदर्श *पुं.* (तत्.) 1. आईना, 2. वह दिन जिसकी संध्या को चंद्रमा दिखाई न दे।

अदर्शन *पुं.* (तत्.) 1. दिखाई न देना, अविद्‌यमानता, असाक्षात् 2. लोप 3. उपेक्षा *वि.* (तत्.) अदृश्य, लुप्त।

अदर्शनीय *वि.* (तत्.) दर्शन के अयोग्य, जो देखने लायक न हो, कुरूप।

अदल *पुं.* (अर.) तर्कयुक्त, तर्कसंगत *वि.* (तत्.) 1. बिना पंखुड़ी या पत्ते का, पत्रविहीन 2. सेनारहित 3. तटस्थ, जो किसी दल में न हो।

अदलखाना *पुं.* [अर.+फा.] दे. न्यायालय, कचहरी।

अदल-बदल *पुं.* (अर.) परिवर्तन, हेरफेर।

अदला-बदली *स्त्री.* (तद्.) एक वस्तु को लेने के बदले में दूसरी वस्तु देना। वस्तु-विनिमय प्रयो. जिन दिनों मुद्रा का प्रचलन नहीं था वस्तुओं को अदलाबदली से प्राप्त किया जाता था। barter

अदली *वि.* (तत्.) बिना पत्ते का।

अदलीय *वि.* (तत्.) किसी दल से संबंध न रखनेवाला, जो किसी दल का सदस्य न हो।

अदवान *स्त्री.* (तद्.) चारपाई के पैताने की वह रस्सी, जिसे बिनावट को कसने के लिए खींचते हैं।

अदह *वि.* (तत्.) जिसे जलाकर आग विकृत या नष्ट न कर सके, अदाह्य, जो जलाने वाला न हो।

अदहन *पुं.* (तद्.) खौलता हुआ पानी, आग पर उबलता हुआ पानी (जिसमें दाल, चावल आदि को पकाया जाता है) *पुं.* दहन न होना या करना।

अदांत (अदान्त) *वि.* (तत्.) 1. अदमित, अनियंत्रित 2. गैर-पालतू।

अदा *स्त्री.* (फा.) 1. हाव-भाव 2. अंदाज, अंग भंगी 3. पद्धति, प्रणाली *स.क्रि.* 1. अदा करना चुकता करना, बेबाक करना 2. पूरा करना 3. देना *वि.* (अर.) दिया हुआ, पूरा चुकता (किया हुआ)।

अदाकर्ता *पुं.* (तत्.) वाणि. बैंक अथवा वह व्यक्ति जिसे किसी चेक, ड्राफ्ट या विनिमय पत्र आदि का भुगतान करने का आदेश दिया गया हो।

अदाकार *पुं.* (अर.) अभिनेता, अभिनेत्री, नायक, नायिका, नाटक के कलाकार।

अदाकारा *स्त्री.* (अर.) अभिनेत्री, नायिका।

अदाग *वि.* (अर.) जिसमें दाग या धब्बा न हो, निष्कलंक, विशुद्ध *क्रि.वि.* बिना दग्ध किए हुए, बिना दागे हुए।

अदाता *वि.* (तत्.) 1. न देने वाला व्यक्ति, कृपण, कंजूस 2. वाग्दान न करने वाला या कन्या का विवाह न करने वाला 3. वह व्यक्ति जिसे किसी का कुछ भी न देना हो।

अदान *पुं.* (तत्.) 1. अनुचित या बुरा दान 2. कंजूस, कृपण 3. न देना *वि.* (अर.) जो बुद्धिमान न हो, नादान, नामसमझ।

अदानी *वि.* (तत्.) जो दान न दे, कंजूस, सूम, कृपण।

अदाय *वि.* (तत्.) दाय या हिस्सा पाने का अनधिकारी।

अदायगी *स्त्री.* (फा.) 1. संदाय, चुकता करने की क्रिया, भुगतान 2. (संगीत या संवाद की) प्रस्तुति, पद्धति, प्रणाली 3. तर्ज।

अदायाद *वि.* (तत्.) जो सगोत्र या कुल से संबंधित न होने के कारण उत्तराधिकार में कुछ पाने का हकदार न हो विलो. उत्तराधिकारी।

अदायिक *वि.* (तत्.) 1. दाय या उत्तराधिकार से संबंध न रखने वाला 2. जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो 3. लावारिस।

अदार *वि.* (तत्.) दारा-रहित, विधुर, रंडुआ।

अदालत *स्त्री.* (अर.) न्यायालय।

अदालती *वि.* (अर.) 1. अदालत विषयक, न्यायालय से संबंधित, जो अदालत करे 2. मुकदमा लड़नेवाला।

अदाली वि. (तत्.) आलसी, सुस्त, अकर्मण्य, निकम्मा, घटिया, रद्दी, भद्दा।

अदावत *स्त्री.* (अर.) 1. शत्रुता, दुश्मनी, बैर 2. विरोध 3. द्वेष।

अदावती *वि* (अर.) जो अदावत रखे, जो बैर रखे।

अदावाकृत *वि.* (तत्.) जिसके विषय में दावा न किया गया हो, अदावी।

अदास *वि.* (तत्.) सेवा से मुक्त व्यक्ति, जो दास न हो, स्वतंत्र।

अदाह *वि.* (तत्.) दाह रहित, जिसमें जलन न हो। *पुं.* न जलने की स्थिति।

अदाहक *वि.* (तत्.) न जलानेवाला, जिसमें जलाने का गुण न हो।

अदाह्‌ भांड *वि.* (तत्‌.) मिट्टी का बरतन जो आग में नहीं पकाया गया हो, कच्चा बरतन।

अदाह्य *वि.* (तत्‌.) 1. जो जल न सके, जो (चिता पर) जलाने योग्य न हो 2. अग्निसह।

अदिति *स्त्री.* (तत्‌.) 1. दक्ष-प्रजापति की कन्या और और कश्यप ऋषि की पत्नी, आदित्यों (देवताओं) की माता 2. पुनर्वसु नक्षत्र।

अदिन *पुं.* (तत्‌.)1. बुरा दिन, कुदिन, कुसमय, संकट या दुख का समय 2. अभाग्य 3. विधि. अकार्य दिन 4. प्रशा. वह दिन जब अनुमति के बिना अनुपस्थित रहने पर कर्मचारी को उस दिन के लिए सेवा में नहीं माना जाता, अकार्य दिवस।

अदिव्य *वि.* (तत्‌.) 1. जो दिव्य या दैवी न हो, साधारण, सामान्य, लौकिक, स्थूल 2. जिसका ज्ञान इंद्रियों द्‌वारा हो *पुं.* वह नायक जो देवेतर अर्थात्‌ मानव हो।

अदिव्या *स्त्री.* (तत्‌.) वह नायिका जो लौकिक हो, अर्थात्‌ दिव्या न हो।

अदिश *पुं.* (तत्‌.) दिशारहित, भौ. जिसमें परिमाण (मैग्नीट्‌यूड) तो हो, किंतु दिशा न हो, जैसे द्रव्यमान, क्षेत्रफल आदि विलो. सदिश।

अदिष्टि वि. (तत्‌.) जिसे देखा न जा सके, अदृष्ट पुं. ब्रह्म, परमात्मा।

अदीक्षित *वि.* (तत्‌.)जिसने दीक्षा न ली हो, जो दीक्षित न हो।

अदीठ, अदीठा *वि.* (तद्‌.) दे. अदृष्ट।

अदीन *वि.* (तत्‌.) 1. दीनतारहित, उद्‌धत, उग्र, अविनीत 2. प्रचंड 3. निडर 4. तेज स्वभाव वाला।

अदीनवृत्ति *वि.* (तत्‌.) जिसकी वृत्ति में दीनता का अभाव हो, उग्र या प्रचंड वृत्ति वाला, निडर, उदारवृत्ति या उदार तबीयत वाला, न दबने वाला, तेजस्वी।

अदीपित *वि.* (तत्‌.) अप्रकाशित।

अदीप्त *वि.* (तत्‌.) अंधकार पूर्ण, अंधकार का समय, जो चमकीला न हो, मलिन, आभाहीन।

अदीप्ति *तत्‌.* (स्त्री.) अंधकारमय।

अदीप्तिकेंद्र *पुं.* (तत्‌.) किसी वस्तु की घनी छाया जो प्रकाश की किरणों के पूरी तरह रुक जाने से छनती है, मलिनता का क्षर केंद्र उदा. चंद्रमा और सूर्य के बीच में पृथ्वी के आ जाने के कारण चंद्र ग्रहण में ऐसा ही होता है।

अदीब *वि.* (अर.) अदब सिखानेवाला, सुशील *पुं.* साहित्यकार, कलाकार

अदीयमान *वि.* (तत्‌.) जो न दिया जा सके, न दिया जाता हुआ।

अदीर्घ *वि.* (तत्‌.) 1. जो लंबा न हो, छोटा 2. ह्रस्व

अदीर्घसूत्री *वि.* (तत्‌.) काम को समय पर करने वाला व्यक्ति, तेज, स्फूर्ति वाला, फुर्तीला।

अदुंद *वि.* (तद्‌.)1. अद्‌वंद्‌व, द्‌वंद्‌वरहित, बाधारहित, 2. अद्‌वितीय।

अदुःख *वि.* (तत्‌.)दुःख से रहित *पु.* दुःख का अभाव।

अदूर *क्रि.वि* (तत्‌.) निकट, पास *वि.* पास का *पुं.* सामीप्य।

अदूरदर्शी *वि.* (तत्‌.) दूर की न सोचने वाला।

अदूषण *वि.* (तत्‌.) दूषण रहित, ऐब से मुक्त, भलाई, निर्दोष, शुद्‌ध।

अदूषित *वि.* (तत्‌.) जिसमें दोष न हो, दोषमुक्त, भला, अच्छा, जिस पर दोष न लगा हो, शुद्‌ध, जो दूषित न किया गया हो।

अदृढ़ *वि.* (तत्‌.) जो दृढ़ न हो, शिथिल।

अदृप्त *वि.* (तत्‌.) दर्परहित, निरभिमान।

अदृश्य *वि.* (तत्‌.) 1. जो दिखाई न दे, जो देखा न जा सके, अगोचर 2. लुप्त, गायब 3. परमेश्वर का एक विशेषण।

अदृश्यमान *वि.* (तत्‌.) जो दिखाई न दे, जिसे देखा न जा सके, अगोचर।

अदृष्ट *वि.* (तत्.) 1. न देखा हुआ 2. अदृश्य, छिपा हुआ 3. अज्ञात 4. अस्वीकृत 5. गोपित, अवैध *पुं.* 1. भाग्य, प्रारब्ध 2. कर्मजन्य संस्कार 3. पूर्व जन्मों से संचित पाप-पुण्य जो इस जन्म के दु:ख-सुख के कारण माने जाते हैं।

अदृष्टगति *वि.* (तत्.) 1. ऐसी संभावना जिसकी पहले कल्पना न हो और जिसकी गति-विधि समझ में न आए 2. चालबाज, कूटनीति परायण।

अदृष्टपूर्व वि. (तत्.) जैसा या जो पहले कभी देखा न गया हो, अनोखा, अद्भुत, विलक्षण, नया।

अदृष्टफल *वि.* (तत्.) जिसका परिणाम पहले सोचा न था, अच्छे बुरे कर्मों का भावी फल या परिणाम जिसके परिणाम अज्ञात या अदृष्ट हों।

अदृष्टवाद *पुं.* (तत्.) यह मत या विचारधारा कि कर्म का फल परलोक में मिलता है, परलोक आदि परोक्ष बातों का निरूपक सिद्धांत।

अदृष्टाकाश *वि.* (तत्.) 1. अलक्षित आकाश, आकाश का वह भाग जो दिखाई न दे 2. भाग्यरूपी आकाश।

अदृष्टाक्षर *पुं.* (तत्.) ऐसी स्याही से लिखे अक्षर जो जो सामान्य स्थिति में अदृश्य रहें और विशेष उपाय से पढे जा सकें।

अदृष्टार्थ *वि.* (तत्.) जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा न हो सके, जिसका विषय इंद्रिय गोचर न हो, आध्यात्मिक या गूढ़ अर्थ रखने वाला न्याय शब्द प्रमाण का एक प्रकार जिसमें प्रमाणरूप वचन का अर्थ पारलौकिक विषय से जुड़ा होता है उदा. "दुराचारी मनुष्य नरकगामी होता है" यह धर्मशास्त्रीय वाक्य अदृष्टार्थ है।

अदृष्टि *स्त्री.* (तत्.) 1. देख न पाना, अंधापन 2. बुरी दृष्टि, कुदृष्टि *वि.* अंधा।

अदेशस्थ *वि.* (तत्.) उचित या उपयुक्त स्थान वाला न होना, बुरे देश या बुरे स्थान में स्थित कुठोर का।

अदेखी *वि.* (देश.) 1. जो दूसरे का सुख तथा उत्कर्ष न देख सके 2. अदृष्ट 3. डाही 4. न देखी हुई *स्त्री.* अनदेखी।

अदेय *वि.* (तत्.) 1. जो देय नहीं हो, जिसका भुगतान नहीं करना हो।

अदेव *पुं.* (तत्.) 1. देव के समान नहीं, देवविहीन, देवरहित, जो देवता को न माने, जो देवता न हो 2. 'राक्षस', दैत्य, असुर।

अदेवक *वि.* (तत्.) जो देवता के निमित्त न हो।

अदेवमातृक *वि.* (तत्.) जहाँ पर्याप्त वर्षा न होती हो, वर्षा के अभाव में तालाब आदि के जल से सिंचित।

अदेश *पुं.* (तत्.) अनुपयुक्त स्थान या देश, बुरा देश।

अदेशकाल *पुं.* (तत्.) कुदेश और कुसमय, अनुपयुक्त स्थान पर ठहरा हुआ, उपयुक्त स्थान से रहित बुरा स्थान, कुठोर, कुत्सित देश, वर्जित स्थान।

अदेस *पुं.* (तद्.) 1. आदेश, आज्ञा 2. प्रणाम।

अदेह *वि.* (तत्.) बिना शरीर का *पुं.* कामदेव।

अदैन्य *वि.* (तत्.) दैन्य रहित, जिसमें दीनता न हो *पुं.* दीनता का अभाव, अदीनता।

अदैव, अदैवी *वि.* (तत्.) 1.देवताओं या उनके कार्य से असंबद्ध 2. जो भाग्य या देवताओं द्वारा पूर्वनिर्धारित न हो।

अदोष *वि.* (तत्.) निर्दोष, दूषणहीन, निष्कलंक। *पुं.* दोष का अभाव।

अदोह *पुं.* (तत्.) वह समय जिसमें गाय आदि का दुहना संभव नहीं, न दुहना, दोहन के व्यवहार का अभाव।

अद्यापि *क्रि.वि.* (तत्.) 1. आज भी, अब भी, इस समय भी 2. अब तक, आज तक।

अद्‌भुत *वि.* (तत्.) अनोखा, अजीब, अनूठा, आश्चर्यजनक, विलक्षण, विचित्र, अपूर्व, अलौकिक *पुं.* आश्चर्य, विस्मयकारक घटना।

अद्‌भुतकर्मा *वि.* (तत्.) आश्चर्यजनक काम करने वाला, विलक्षण कामों को कर देने वाला, विचित्र कामों का कर्ता, अनोखे कार्य करने वाला, जो काम पहले न हुए हों उन्हें कर देने वाला।

अद्‌भुततत्व *पुं.* (तत्.) विचित्रता, अनोखापन।

अद्‌मतामील *स्त्री.* (फा.) किसी मुकदमे आदि में क्रियान्वयन का न होना।

अद्धा *पु.* (तद्.) 1. किसी वस्तु का आधा भाग 2. शराब की पूरी बोतल का आधा 2. ईंट का आधा टुकड़ा 4. प्रत्येक घंटे के मध्य में बजने वाला घंटा 5. चार मात्राओं का ताल 6. एक पैसे का सोलहवाँ भाग 7. बढ़िया किस्म की मलमल आदि।

अद्य *क्रि.वि.* (तत्.) 1. आज 2. अब, अभी *पुं.* (तत्.) आज का दिन, वर्तमान का समय।

अद्यतन *वि.* (तत्.) 1. आज तक का, आज के दिन दिन तक 2. वर्तमान 3. नवीनतम *पुं.* 1. बीती हुई आधी रात से लेकर आनेवाली आधी रात तक का समय 2. बीती हुई रात के शेष प्रहर तक का समय।

अद्यपूर्व *अव्य.* (तत्.) इस समय से पहले, आज से पहले, अब से पहले, इससे पूर्व।

अद्यप्रभृति *क्रि.वि.* (तत्.) आज से लेकर, इस दिन दिन से लेकर।

अद्यावत *क्रि.वि.* (तत्.) 1. आज तक, अभी तक 2. 2. अधुनातन।

अद्यावधि *क्रि.वि.* (तत्.) आज (की अवधि) तक, अब तक, इस समय पर्यंत।

अद्यैव *क्रि.वि.* (तत्.) आज ही, इसी समय, अभी।

अद्‌रना *वि.* (अर.) 1. बहुत ही छोटा या साधारण, अधम, तुच्छ, मामूली, क्षुद्र, सामान्य 2. दृढ़ता या निश्चय पूर्वक कोई बात करना।

अद्रव्य *पुं.* (तत्.) 1. सत्ताहीन पदार्थ 2. अवस्तु, असत् 3. शून्य 4. तुच्छ वस्तु, नाचीज *वि.* द्रव्य-रहित या धनरहित दरिद्र।

अद्रि *पुं.* (तत्.) 1. पहाड़, पर्वत 2. पत्थर 3. बिजली 4. वृक्ष 5. सूर्य 6. बादल, बादलों का समूह 7. काव्य में सात की संख्या का सूचक शब्द।

अद्रिकन्या *स्त्री* (तत्.) पार्वती।

अद्रिकुक्षि *स्त्री* (तत्.) (पर्वत की कोख अर्थात्) गुफा, गुफा, कंदरा।

अद्रिज *वि.* (तत्.) पर्वत से उत्पन्न *पुं.* 1. शिलाजीत, शिलाजित 2. गेरू (मिट्टी)।

अद्रिजा *स्त्री.* (तत्.) 1. पार्वती 2. गंगा नदी 3. सिंहली पीपल।

अद्रितनया *स्त्री.* (तत्.) 1. पार्वती 2. गंगा।

अद्रिद्रोणी *स्त्री.* (तत्.) 1. पर्वतों के बीच स्थित दोने के आकार की गहरी जगह 2. नदी का उद्‌गम।

अद्रिपति *पुं.* (तत्.) पर्वतराज हिमालय।

अद्रिभृंग *पुं.* (तत्.) पर्वत या पहाड़ की चोटी।

अद्रिसार *वि.* (तत्.) पर्वत जैसा दृढ़ *पु.* लोहा, शिलाजीत।

अद्रिसुता *स्त्री.* (तत्.) 1. पर्वत की पुत्री, हिमालय की पुत्री पार्वती, पर्वत में या पर्वत से उत्पन्न 2. गंगा आदि।

अद्रीश *पुं.* (तत्.) पर्वतीश, पर्वतराज हिमालय।

अद्रोह *पुं.* (तत्.) 1. द्रोह या द्‌वेष का अभाव 2. विनम्रता।

अद्रोही *वि.* (तत्.) 1. किसी से द्रोह या द्‌वेष न करने वाला 2. विनम्र विलो. द्रोही।

अद्‌लखाना *पुं.* (अर.) न्यायालय, कचहरी।

अद्‌ली *वि.* (अर.) न्यायशील।

अद्व *वि.* (तत्.) 1. जो सरल न हो 2. ठोस 3. कठिन।

अद्वंद्व *वि.* (तत्.) एकमात्रता, अभिन्नता, जिसमें जिसमें द्‌वंद्‌व न हो, द्‌वंद्‌व रहित।

अद्वंद्वमूलक *वि.* (तत्.) जिसका मूल 'द्‌वंद्‌व' नहीं नहीं हैं, 'द्‌वंद्‌व' के अभाव वाला, अभिन्न मूल वाला, द्‌वंद्‌वहीनता पर आधारित या उससे उत्पन्न।

अद्वय *वि.* (तत्.) 1. दो नहीं, एक भाव, अपने प्रकार का 2. अकेला, जिसका कोई विकल्प न हो, बेजोड़, अनुपम, अद्‌वितीय।

अद्वितीय *वि.* (तत्.) 1. जिसके समान दूसरा न हो, हो, जिससे टक्कर लेने वाला कोई और न हो, बेजोड़, अनुपम, विलक्षण, अद्‌भुत, विचित्र 2. प्रधान, मुख्य *पुं.* (तत्.) आत्मा, ब्रह्म।

अद्वेष *वि.* (तत्.) 1. द्वेषरहित 2. जो बैर न रखे असूया-रहित 3. शांत *पुं.* द्वेष का अभाव।

अद्वैत *वि.* (तत्.) 1. जो द्वैत न हो, अभिन्न, एकमेव 2. बेजोड़, एकाकी *पुं.* (तत्.) अभेद, द्वैत या भेद का अभाव, जीव और ब्रह्म में भेद न होने या न मानने के कारण केवल ब्रह्म की सत्ता की विद्यमानता।

अद्वैतवाद *पुं.* (तत्.) यह सिद्धांत कि जीव और ब्रह्म में अद्वैत अर्थात् अभेद होता है, इसके अनुसार ब्रह्म को जगत का उपादान-कारण मानकर संपूर्ण प्रत्यक्षादि द्वारा सिद्ध विश्व को भी ब्रह्म में आरोपित किया जाता है।

अद्वैतवादी *वि.* (तत्.) 1. अद्वैत मत को मानने वाला, ब्रह्म और जीव को एक मानने वाला 2. शांकर वेदांत का अनुयायी *पुं.* अद्वैतवाद के सिद्धांत को मानने वाला व्यक्ति।

अद्वैत वेदांत *पुं.* (तत्.) दर्श. शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अद्वैत दर्शन जिसमें एकमात्र ब्रह्म की सत्ता सत्य मानी गई है।

अद्वैती *वि.* (तत्.) 1. अद्वैतवासी, अद्वैत, 2. ब्रह्म और विश्व, ब्रह्म और जीव, आत्मा और जड़ पदार्थों की एकता करने वाला।

अध: *अव्यय.* (तत्.) नीचे, तले, नीचे की ओर, नीचे का, अध: का कभी कभी अधो रूप प्रयुक्त होता है जैसे- अधोगति, अधोभाग।

अध:ऊर्ध्व *क्रि.वि.* (तत्.) 1. नीचे और ऊपर/ऊपर-नीचे 2. नीचे से ऊपर तक 3. इससे आगे/ऊपर।

अध:कर *पुं* (तत्.)) हाथ का निचला भाग।

अध:करण *पुं* (तत्.)) 1. पराजय, हार, पराभव 2. नीचे गिरना, अध:पात 3. नीचे करना, पतन करना।

अध:कर्तित विसर्प *पुं.* (तत्.) भूवि. घाटी की भित्तियों द्वारा परिबद्ध विसर्प जो किसी नदी के नीचे की ओर कटने से बनता है।

अध:कर्म *पु.* (तत्.) निम्न कोटि का कर्म।

अध:काय *पु.* (तत्.) शरीर का अधरांग या निचला हिस्सा।

अध:पतन *पु.* (तत्.) 1. नीचे की ओर गिरना, अधोगति 2. अवनति।

अध:पतित *वि.* (तत्.) 1. जिसका अध:पतन हुआ हो/जो नीचे की ओर गिरा हो 2. जिसकी अवनति हुई हो 3. जिसकी दुर्गति हुई हो, दुर्दशा प्राप्त।

अध:पात *पु.* (तत्.) दे. अध:पतन।

अध:शयन *पुं.* (तत्.) 1. नीचे सोना 2. भूमि पर सोना।

अध:स्वस्तिक *पुं.* (तत्.) खगोल. 1. आकाश मंडल का वह स्थान जो दर्शक के ठीक नीचे हो। अधोबिंदु 2. शीर्ष बिंदु के ठीक विपरीत दिशा का या नीचे का बिंदु जो क्षितिज का दक्षिणी ध्रुव कहलाता है।

अध *वि.* (तद्.) अर्ध या 'आधा' विशेषणसूचक शब्द का समस्त पद में प्रयुक्त रूप।

अध *क्रि.वि.* (तत्.) (समासयुक्त पद के आरंभ में) अर्ध, आधा जैसे- अधकहा, अधखिला।

अधकचरा *वि.* देश. 1. अपरिपक्व, अपूर्ण 2. अधूरा 3. अकुशल, अदक्ष *वि.* (तद्.) दरदरा, अधपिसा, अधकुटा।

अधकच्छ *पुं.* (तद्.) नदी के किनारे की वह ऊँची ढलुई भूमि जो नदी की सतह में मिल जाती है।

अधकछार *पुं.* (तद्.) पहाड़ के अंचल की वह भूमि जो प्राय: बहुत उपजाऊ और हरी भरी होती है।

अधकट *वि.* (तद्.+देश.) 1. आधा कटा हुआ 2. निर्धारित दूरी का आधा भाग।

अधकपारी, अधकपाली *स्त्री.* (तद्.) आधे सिर में होने वाला दर्द जो सूर्योदय से दोपहर तक बढ़ता है, दोपहर बाद कम होता है और सूर्यास्त के समय समाप्त हो जाता है, आधासीसी। migraine

अधकहा *वि.* (तद्.) आधा कहा हुआ, स्पष्ट रूप में या आधा उच्चारण किया गया।

अधखिला *वि.* (तद्.+देश.) आधा खिला हुआ, अर्धविकसित।

अधखुला *वि.* (तद्.+देश.) आधा खुला हुआ।

अधगति *स्त्री.* (तद्.) दे. अधोगति।

अधघट *वि.* (तद्.+तत्.) 1. जो पूरा घटित न हुआ हो। आधा घटित। अधूरा। 2. अटापटा, जिसका ठीक अर्थ न निकले।

अधचना *पुं.* (तद्.) गेहूँ और चने की समान अनुपात में मिलावट।

अधचबा *वि.* (तद्.) आधा चबाया हुआ।

अधचर *वि.* (तत्.) 1. रेंगकर चलने वाला 2. नीचे नीचे चलने वाला।

अधचरा *वि.* (तद्.) आधा चरा, खाया हुआ।

अधजल *वि.* (तद्.+तत्.) पानी से केवल आधा भरा हुआ पात्र लोको. अधजल-गगरी छलकत जाए।

अधजला *वि.* (तद्.) आधा जला हुआ, जो पूर्ण रूप से भस्म न हुआ हो।

अधन *वि.* (तत्.) धनहीन, निर्धन, गरीब।

अधनियाँ *वि.* (तद्.) दे. अधन्ना।

अधन्ना *पुं.* (तद्.) आधा आना, पुराने दो पैसे का पीतल या तांबे का सिक्का, अधन्नी, अधनियाँ; 'आना' का आधा भाग।

अधन्नी *स्त्री.* (तद्.) दे. अधन्ना।

अधन्य *वि.* (तत्.) जो धन्य (अर्थात् धन संपत्ति युक्त) न हो, भाग्यहीन, अभागा, गर्हित, विद्य, बुरा।

अधपका *वि.* (तद्.) आधा पका हुआ, अपरिपक्व, जो पूरी तरह पका न हो।

अधपन्ना *पुं.* (तद्.) दे. प्रतिपर्ण।

अधबसा *वि.* (तद्.) जो पूरी तरह बसा हुआ न हो, आधा-बसा हुआ।

अधबुध *वि.* (तद्.) जिसका बोध केवल आधा हो, आधा-पढा-लिखा।

अधम *वि.* (तत्.) 1. नीच, बुरा, निकृष्ट 2. पापी, अति दुष्ट *पुं.* कर्तव्याकर्तव्य, विचार-रहित कामी व्यक्ति।

अधमई *स्त्री.* (देश.) अधमता, नीचता या अतिदुष्टता।

अधमता *स्त्री.* (तत्.) अधमपना, नीचता, दुष्टता।

अधमत्व *पुं.*(तत्.) अधमता, अधमता का भाव।

अधमरा *वि.* (तद्.)आधा मरा हुआ, अर्धमृत, मृतप्राय।

अधमर्ण *पुं.* (तत्.) (ऋण लेकर निम्न स्थिति में गया व्यक्ति) ऋणी, कर्जदार, उधार लेने वाला विलो. उत्तमर्ण।

अधमा *स्त्री.* (तत्.) 1. निर्लज्ज या लपंट नायिका 2. नीच प्रकृति की नारी 3. कर्कशा स्त्री।

अधमांग *पुं.* (तत्.) शरीर के नीचे का भाग, जंघा, पैर। विलो. उत्तमांग।

अधमाई *स्त्री.* (तद्.) नीचता, दुष्टता।

अधमाधम *वि.* (तत्.) बुरे से बुरा, नीचतम।

अधमार्ध *पुं.* (तत्.) नाभि से नीचे का शरीर का भाग।

अधमुआ *वि.* (तद्.) दे. अधमरा।

अधमोद्धारक *वि.* (तत्.)पापियों का उद्धार करने वाला।

अधरंगा *पुं.* (हि.+तत्.) एक प्रकार का फूल।

अधर *पुं.* (तत्.) 1. निचला ओठ (अधरोष्ठ) 2. बिना आधार का स्थान, शून्य स्थान 3. धरती और आकाश के बीच का स्थान अंतरिक्ष 4. पाताल *वि.* 1. नीचा, निचला 2. नीचे का 3. जो पकड़ में न आए 4. नीच, बुरा, तुच्छ 5. आधार रहित 6. आधारित।

अधरक *पुं.* (तत्.) प्राणि. अधिकांश कशेरूकी प्राणियों के शरीर की अधर शाखा में मध्य में स्थित अस्थि-श्रृंखला। अधरकाय *पुं.* (तत्.) शरीर का निचला भाग।

अधरज *पुं.* (तत्.) 1. होठों की लालिमा, होठों की सुर्खी 2. पान का रंग जो होठों पर उभर आता है।

अधरत: *क्रि.वि.* 1. अधर से 2. नीचे से।

अधरपान *पुं.* (तत्.) ओठों का रसपान, ओठों का चुंबन, ओठ चूमना।

अधरबुद्धि *वि.* (तत्.) क्षुद्र या कम बुद्धि वाला।

अधरम *पुं.* (तद्.) दे. अधर्म।

अधरमधु *पुं.* (तत्.) अधर रस/होंठों का रस (प्रिय/प्रिया का)

अधररस *पुं.* (तत्.) (प्रिय/प्रिया के) होंठों का रस।

अधर सुधा *स्त्री.* (तत्.) (प्रिय-प्रिया के होंठो का) रस रूपी अमृत, अधर रस।

अधरांग *पुं.* (तत्.) अधरकाय, शरीर के नीचे का भाग।

अधरांगघात *वि.* (तत्.) निचले अंग का पक्षाघात या लकवा तु. अंगघात।

अधरात *स्त्री.* (तद्.) अर्धरात्रि, आधी रात का समय।

अधराधर *पुं.* (तत्.) निचला ओठ, अधरोष्ठ।

अधरामृत *पुं.* (तत्.) अधर-रस, ओठों का रस, जो प्रेमी को अमृत-सा मीठा लगता है।

अधरासव *पुं.* (तत्.) ओठों का मादक रस, अधर-रस।

अधरी *वि.* (तद्.) 1. न ऊपर न नीचे 2. अधर का 3. ऊटपटांग।

अधरीण *वि.* (तत्.) निम्नस्तरीय, नीच, तिरस्कृत, निंदित।

अधरोत्तर *वि.* (तत्.) 1. ऊँचा-नीचा, ऊबड़-खाबड़ 2. अच्छा-बुरा 3. न्यूनाधिक।

अधरोष्ठ *पुं.* (तत्.) निचला ओठ।

अधर्म *पुं.* (तत्.) 1. धर्मविरुद्ध कार्य 2. पाप 3. असद्व्यवहार 4. अकर्तव्य 5. अन्याय 6. दुराचार, दुष्कर्म।

अधर्मचारी *पुं.* (तत्.) अधर्मी, दुष्ट,पापी।

अधर्मज *वि.* (तत्.) विधिसम्मत विवाह किए बिना उत्पन्न (संतान)।

अधर्मज (संतान) *स्त्री.* (तत्.) (अवैध) उपपत्नी से उत्पन्न संतान।

अधर्मजता *स्त्री.* (तत्.) विधिसम्मत विवाह के बिना बिना संतान होने की स्थिति।

अधर्मात्मा *वि.* (तत्.) 1. अधर्मी 2. पापी, पापात्मा 3. दुराचारी, कुकर्मी।

अधर्मास्तिकाय *पुं.* (तत्.) जैन. द्रव्य के छह भेदों में से एक भेद जो अरूपी, असीम और नित्य माना गया है।

अधर्मी *पुं.* (तत्.) अधर्म करने वाला, पापी, दुराचारी।

अधर्म्य *वि.* (तत्.) 1. धर्म-विरुद्ध, जो धर्म की दृष्टि से उपयुक्त न हो, अधर्मी 2. अन्यायपूर्ण 3. अवैध, अधर्मज (जैसे संतान)।

अधर्षणी *वि.* (तत्.) जिसे कोई दबा, डरा या धमका न सके, जिसे कोई पराजित न कर सके, प्रचंड, प्रबल।

अधर्षणीय *वि.* (तत्.) दे. अधर्षणी।

अधलेटा *वि.* (देश.) आधा लेटा हुआ।

अधवर *वि.* (तद्.) 1. आधा रास्ता 2. आधी दूर, अधबर।

अधवा *स्त्री.* (तत्.) धव अर्थात् पति रहित, विधवा।

अधविकच *वि.* (तद्.+तत्.) आधा खिला हुआ, अर्ध-प्रफुल्लित।

अधसेरा *पुं.* (तद्.+हि.) एक बाट-विशेष जो एक सेर का आधा होता है, दो पाव के बाट का मान।

अधस्तन *वि.* (तत्.) (सबसे) निचले स्थान पर स्थित, सबसे निचला, अधीनस्थ।

अधस्तल *पुं.* (तत्.) 1. पहली मंजिल से निचली मंजिल 2. निचला तला 3. नीचे का कमरा, नीचे की कोठरी।

अधस्तल ऊष्मा *स्त्री.* (तत्.) कृषि. खाद या बिजली बिजली द्वारा पौधे की जड़ के नीचे की मिट्टी में कृत्रिम रूप से दी जाने वाली गरमाई।

अधस्त्वक *वि.* (तत्.) त्वचा के नीचे का। subcutaneous

अधातु *स्त्री.* (तत्.) वह पदार्थ जो धातु न हो।

अधात्विक *वि.* (तत्.) 1. अधातु, जो धातु न हो 2. धातु से भिन्न पदार्थ से बना हुआ non-metalic 3. जिसमें धातु के गुण न हों।

अधात्वीय *वि.* (तत्.) जो धातु से न बना हो, धातु से भिन्न पदार्थ से बना, अधात्विक।

अधारी *स्त्री.* (तद्.) आधार, टेक, सहारा।

अधार्मिक *वि.* (तत्.) 1. जो धार्मिक न हो, अधर्मी, धर्मशून्य 2. पापी, दुराचारी 3. धर्मेतर, जो धर्म से संबद्ध न हो।

अधावट *वि.* (तद्.) अधोट, वह दूध जो औट-औट कर आधा रह गया हो।

अधि *उप.* (तत्.) एक उपसर्ग जो प्राय: निम्नलिखित अर्थों में प्रयुक्त होता है 1. ऊपर, ऊँचा, (जैसे- अधिराज) 2. मुख्य, प्रधान (जैसे अधिदेवता) 3. ज्यादा (जैसे अधिमास)।

अधिक *वि.* (तत्.) 1. बहुत, ज्यादा 2. अतिरिक्त, शेष, बचा हुआ। पुं. एक अलंकार जिसमें आश्रयी या आधेय का वर्णन आश्रय या आधार की तुलना में अधिक बढ़ा चढ़ा कर किया जाता है जैसे- तीनों लोकों को अपने भीतर समाए विष्णु शेषनाग पर आराम से सो गए।

अधिककोण *पुं.* (तत्.) वह कोण जो समकोण (90) से बड़ा हो।

अधिककोण त्रिभुज *पुं.* (तत्.) गणित/ज्यामि. वह त्रिभुज जिसमें एक कोण अधिक कोण हो।

अधिकत: *क्रि.वि.* (तत्.) अधिकतर, विशेषकर।

अधिकतम *वि.* (तत्.) परिमाण, माप, संख्या, आदि में सबसे अधिक, अधिक की अतिशय कोटि।

अधिकतया *क्रि.वि.* (तत्.) अधिक रूप से।

अधिकतर *वि.* (तत्.) तुलनात्मक दृष्टि से अधिक से आगे (की कोटि) *क्रि.वि.* ज्यादातर, बहुत करके, प्राय:।

अधिकता *स्त्री.* (तत्.) बहुतायत, वृद्धि, ज्यादा, होने होने की स्थिति, आधिक्य, अतिशयता।

अधिक तिथि *स्त्री.* (तत्.) खगोल. वह तिथि जो किसी दिन सूर्योदय के समय हो और अगले दिन सूर्योदय के कुछ समय बाद समाप्त हो।

अधिकत्व *पुं.* (तत्.) किसी भाव की अभिव्यक्ति के लिए आवश्यकता से अधिक शब्द या शब्दों का उपयोग जैसे 'आज बिराज, बादल मेघ (एक काव्यदोष) ।

अधिक-मास *पुं.* (तत्.) अधिमास, मलमास, लौंद का महीना, हर तीसरे वर्ष पड़ने वाला चांद्र मास, पुरुषोत्तम मास, बारह महीनों के अतिरिक्त (तेरहवाँ महीना हो जाता है)।

अधिकर *स्त्री.* (तत्.) अतिरिक्त लगाया गया कर, जैसे बहुत अधिक आय पर कर 1. सामान्य कर 2. अतिकर।

अधिकरण *पुं.* (तत्.) 1. अधिकरण कारक 2. लिंग, वचन, पुरूष, कारक में अन्विति 3. किसी विशिष्ट विवाद-विषय पर विचार-विमर्श के लिए स्थापित अधिष्ठान, न्यायालय 4. संबंध, संदर्भ के 5. आधार (क्रिया का) 6. अवस्थिति 7. अध्याय।

अधिकरण कारक *वि.* (तत्.) कर्ता, क्रिया या कर्म के स्थानसूचक या समयसूचक आधार को व्यक्त करने वाला संज्ञा पदबंध रूप, सप्तमी विभक्ति का रूप जैसे घर में, मेज पर।

अधिकरण सिद्धांत *पुं.* (तत्.) न्याय दर्शन का वह सिद्धांत जिसके सिद्ध होने से कोई अन्य सिद्धांत या अर्थ भी स्वयं सिद्ध हो जाए।

अधिकरणिक *पुं.* (तत्.) न्यायकर्ता, निर्णय करने वाला, न्यायाधीश।

अधिकरणी *वि.* (तत्.) 1. अध्यक्ष 2. निरीक्षण करनेवाला 3. स्वामी।

अधिकर्म *पुं.* (तत्.) 1. देखरेख, निरीक्षण 2. श्रेष्ठ कर्म।

अधिकर्मा *पुं* (तत्.) 1. निरीक्षक 2. अध्यक्ष।

अधिकर्मिक *पुं.* (तत्.) व्यापारियों से चुंगी या कर उगाहने वाला अधिकारी।

अधिकर्मी *पुं.* (तत्.) मजदूरों आदि के कार्यों का निरीक्षण करने वाला अधिकारी, फोरमैन।

अधिकल्पित *वि.* (तत्.) काल्पनिक/कल्पनात्मक।

अधिकल्पित मूल *पु.* (तत्.) किसी संख्या के वे मूल (वर्गमूल, घन मूल आदि) जो अधिकल्पित हों।

अधिकल्पित संख्या *स्त्री.* (तत्.) ऐसी संख्या जिसमें वर्गमूल्य या उसके किसी गुणज का प्रयोग न हो।

अधिकांक [अधिक+अंक] *पुं.* (तत्.) (खेल मुक्केबाजी, कुश्ती आदि) प्रतिपक्षी से अधिक अंकों की प्राप्ति, जिसके आधार पर खिलाड़ी को विजेता घोषित किया जाता है।

अधिकांग *पुं.* (तत्.)अतिरिक्त अंग, नियत से अधिक अवयव जैसे पैर में छठी अंगुली *वि.* जिसके कोई अधिक अंग हो।

अधिकांश *वि.* (तत्.) अधिक भाग, ज्यादा अंश, बड़ा-हिस्सा, अधिसंख्यक।

अधिकांशत:/अधिकांशतया *क्रि.वि.* (तत्.) 1. बहुधा, अक्सर, प्राय: 2. अधिक मात्रा में।

अधिकाई *वि.* (तद्.) 1. ज्यादती, अधिकता, बहुतायत, विपुलता 2. विशेषता।

अधिकाक्षर *वि.* (तत्.) वह पद्य रचना जिसमें निर्धारित अक्षरों से अधिक अक्षर हो।

अधिकाधिक *वि.* (तत्.) ज्यादा से ज्यादा, अधिक से अधिक।

अधिकाना *अ.क्रि.* (तद्.) अधिक होना, बढ़ना, बढ़ते जाना।

अधिकाम *वि.* (तत्.+तद्.) 1. उग्र कामना वाला 2. अति प्रचंड 3. कामासक्त 4. काम भावना को उद्दीप्त करने वाला।

अधिकायु *वि.* (तत्.) जिसकी आयु कार्यविशेष या सेवाविशेष के लिए निर्धारित आयु से अधिक हो। overage

अधिकार *पुं.* (तत्.) 1. हक, अख्तियार 2. प्रभुत्व, आधिपत्य 3. कब्जा 4. प्रधानता 5. अधिकारिता, अधिकार क्षेत्र, क्षेत्राधिकार।

अधिकार क्षेत्र *पुं.* (तत्.) 1. अधिकार का क्षेत्र 2. प्रभाव क्षेत्र 3. प्रशासन के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र 4. कार्य क्षेत्र 5. न्यायाधीश/न्यायालय का अधिकार क्षेत्र jurisdiction 6. किसी के विधिक अधिकार या उसके प्रयोग का क्षेत्र 7. जानकारी क्षेत्र/स्वामित्व क्षेत्र।

अधिकार-पत्र *पुं.* (तत्.) शा.अर्थ. किसी अधिकार को प्रमाणित करने वाला वैध पत्र 2. विधि. प्रभुसत्ता संपन्न संस्था द्वारा प्रवर्तित या मान्य अधिकारों की सूची, जैसे- संयुक्त राष्ट्र (संघ) द्वारा प्रवर्तित मानव अधिकारों का अधिकार पत्र।

अधिकारपात्र *वि.* (तत्.) अधिकार की पात्रता रखने वाला।

अधिकार पृच्छा *स्त्री.* (तत्.) शा.अर्थ अधिकारों के बारे में पूछा जाना विधि. किसी पीड़ित व्यक्ति की प्रार्थना पर न्यायालय द्वारा तथाकथित पीड़क अधिकारी से यह पूछा जाना कि उसने जो पीड़ाकारी कार्य किया है वह किस अधिकार से किया हैं। quo-warranto

अधिकार-पृच्छा रिट *स्त्री.* (संकर.) विधि. न्यायालय की वह रिट जिसके द्वारा यह पूछा जाए कि अमुक कार्य करने वाले व्यक्ति ने वह कार्य किस अधिकार से किया है। writ of quo warranto

अधिकार-सहित *पुं.* (तत्.) शा.अर्थ. साधिकार वाणि. शेयरों की ऐसी बिक्री जिसमें क्रेता को खरीददार कंपनी द्वारा जारी किए जाने वाले नए अधिकार शेयरों के आबंटन का हक (अधिकार) भी मिलता है।

अधिकार विधि *स्त्री.* (तत्.) मीमांसा वह नियम जिससे किसी फल की प्राप्ति के लिए किसी अनुष्ठान को करने का ज्ञान हो।

अधिकार शेयर *पुं.* (तत्.) दे. अग्रक्रयाधिकार।

अधिकार संरक्षण *पुं.* (तत्.) विधि. नागरिकों को प्राप्त अधिकारों की रक्षा के लिए संविधान के अंतर्गत की गई व्यवस्था।

अधिकार रहित *वि.* (तत्.) शा.अर्थ. बिना अधिकार के वाणि. (शेयरों की ऐसी ब्रिक्री) जिसमें यह शर्त हो कि कंपनी द्वारा जारी किए जाने वाले शेयरों को विक्रेता ही खरीदेगा, क्रेता को उन्हें आबंटित कराने का अधिकार नहीं होगा तु. अधिकार सहित।

अधिकार सिद्धि *स्त्री.* (तत्.) विधि. 1. प्रमाण प्रस्तुत करके अपने अधिकार को पुष्ट करना।

अधिकार सीमा *स्त्री.* (तत्.) अधिकार क्षेत्र, उपर्युक्त अधिकार क्षेत्र की तरह अन्य अर्थों में प्रयुक्त।

अधिकारस्थ *वि.* (तत्.) पदारूढ़, पदासीन, अधिकार प्राप्त।

अधिकारातीत *वि.* (तत्.) अपने अधिकार, स्वामित्व, प्रभुत्व, स्वत्व, हक, सामर्थ्य, योग्यता, जानकारी से बाहर का।

अधिकाराधीन *वि.* (तत्.) जो अधिकार में हो 2. जो अधिकार-सीमा में हो।

अधिकारिणी *स्त्री.(तत्.)* 1. जिसके पास अधिकार हो 2. पात्रता-प्राप्त महिला 3. शासिका *वि.* अधिकार रखने वाली, हकदार।

अधिकारिता *स्त्री.* (तत्.) 1. न्यायालय अधिकरण, अधिकारी, प्राधिकारी आदि का किसी विचारणीय विषय पर विचार और निर्णय करने की विधि प्रदत्त अधिकार क्षेत्र 2. वह कार्यक्षेत्र जिसकी शक्ति या सीमा के भीतर निर्णय को विचार और निर्णय की शक्ति प्राप्त रहती है, क्षेत्राधिकार।

अधिकारी *पुं.* (तत्.)1. प्राय: अराजपत्रित कर्मचारियों का पर्यवेक्षण करने वाला उच्च पदाधिकारी, अफसर 2. प्रभु, स्वामी, मालिक, स्वत्वधारी 3. किसी भी श्रेणी का कोई भी पदाधिकारी या कर्मचारी *वि.* 1. स्वत्व रखने वाला 2. पात्रता-प्राप्त सुयोग्य, सक्षम।

अधिकारीतंत्र *पुं.* (तत्.) 1. किसी देश की सरकार के सभी विभाग, उच्चपदधारी तथा अन्य प्रशासनिक एवं महत्वपूर्ण अधिकारी 2. सरकारी विभागों, प्रशासकों एवं अधिकारियों के हाथों में शक्ति के संकेंद्रण से उत्पन्न शासनतंत्र, नौकरशाही।

अधिकारी-वर्ग *पुं.* (तत्.) अफसरों का समूह।

अधिकार्थ *पुं.* (तत्.)वह वाक्य या शब्द जिससे किसी पद का एक से अधिक अर्थ व्यक्त हो या उस के अर्थ में विशेषता आ जाए।

अधिकार्थता *स्त्री.* (तत्.) एक से अधिक अर्थ व्यक्त करने की क्षमता।

अधिकार्बन इस्पात *पुं.* (तत्.) वह इस्पात जिसमें कार्बन की मात्रा अधिक होती है।

अधिकालंकार (अधिक+अलंकार) *पु.* (तत्.) काव्य. एक अर्थालंकार, आधेय या आधार के उत्कर्ष का वर्णन करने से होने वाला अलंकार।

अधिकीलन *पुं.* (तत्.) वाणि. किसी प्रतिभूति वस्तु, मुद्रा आदि की कीमत को अधिकृत रूप से स्थिर कर देना।

अधिकृत *वि.* (तत्.) 1. आधिकारिक रूप में दिया गया या जारी किया गया 2. जिसे अधिकार दिया गया हो 3. जिस पर अधिकार किया गया हो 4. प्रामाणिक *पुं.* *(तत्.)* अधिकारी, अध्यक्ष।

अधिकृत पूंजी *स्त्री.* (तत्.) किसी निगम के चार्टर के अधीन जारी करने के लिए प्राधिकृत ईक्विटी शेयर का कुल अभिदत्त मूल्य।

अधिकृत संस्करण *पुं.* (तत्.)किसी पुस्तक या रचना के लेखक या उसके अधिकार प्राप्त प्रतिनिधि की सहमति से प्रकाशित किया गया संस्करण।

अधिकृति *स्त्री.* (तत्.) अधिकार, स्वत्व।

अधिकेंद्र *पुं.* (तत्.) भूवि. पृथ्वी तल का वह बिंदु क्षेत्र जो किसी भूकंप के उद्गम केंद्र के ठीक ऊपर होता है। epicenter

अधिकोष *पुं.* (तत्.) वह संगठन जिसमें दूसरों को रुपया-पैसा जमा करने और लोगों को ऋण देने आदि का कारोबार होता है, बैंक।

अधिकोष प्रभार *पु.* (तत्.) बैंकि. बैंक द्वारा अपनी सेवाओं के लिए ग्राहकों से लिया जाने वाला व्यय/शुल्क/बैंक-प्रभार।

अधिकोषण *पुं.* (तत्.) बैंक का कारोबार, बैकिंग, दूसरों का रुपया जमा करने तथा लोगों को ऋण देने का कारोबार, महाजनी, बैंक-व्यापार।

अधिकोषिक *वि.* (तत्.) वाणि. 1. महाजन, रुपये पैसे का लेन-देन करने वाला बैंक, ट्रेजरी से संबंधित।

अधिक्रम *पुं.* (तत्.) क्रमश: एक के बाद एक बढ़ने या अगले (उच्च) क्रम में जाने की स्थिति, सोपानिकी, पदानुक्रम।

अधिक्रमण *पुं* (तत्.) 1. दे. अधिक्रम 2. किसी व्यक्ति या संस्था के अधिकार अपने हाथ में लेना या किसी अन्य को देना 3. किसी अन्य की संपत्ति या अधिकार को अवैध ढंग से हथियाना, अतिचार 4. आरोहण 5. चढ़ाव 6. चढ़ाई, हमला।

अधिक्रमीय *वि.* (तत्.)अधिक्रम से संबधित, अधिक्रम वाली।

अधिक्रांत *वि.* (तत्.) 1. किसी को हटा कर अधिकार में ले लिया गया 2. अवैध ढंग से हथियाया गया।

अधिक्षमता *स्त्री.* (तत्.) सामान्य से अधिक क्षमता, अतिरिक्त क्षमता।

अधिक्षिप्त *वि.* (तत्.) 1. फेंका हुआ 2. निंदित, तिरस्कृत, अपमानित 3. बुरा ठहराया हुआ।

अधिक्षेत्र *पुं.* (तत्.) वह भूमि या भू-क्षेत्र जिस पर किसी की सर्वोच्च सत्ता हो।

अधिक्षेप *पुं.* (तत्.) शक्ति या सत्ता को चुनौती।

अधिक्षेपण *पुं.* (तत्.) विधि. 1. किसी सत्ता, शक्ति, सत्य, वाद आदि को चुनौती देने की क्रिया 2. महाभियोग।

अधिक्षेपणीय *वि.* (तत्.) जिसकी अधिक्षेपण सत्ता, शक्ति या सत्यता को चुनौती दी जा सके।

अधिक्षेपित *वि.* (तत्.)जिस शक्ति, सत्ता को चुनौती दी गई हो।

अधिगंतव्य *वि.* (तत्.) 1. प्राप्त करने योग्य 2. अधिगम करने अर्थात् सीखने-समझने योग्य।

अधिगणन *पुं.* (तत्.) अधिक गिनना, किसी चीज का अधिक दाम लगाना।

अधिगत *वि.* (तत्.) 1. प्राप्त, पाया हुआ 2. जाना हुआ, अवगत, समझा-बूझा, पढ़ा हुआ।

अधिगम *पुं.* (तत्.) 1. अर्जन, प्राप्ति 2. पहुँच 3. ज्ञान, सीख 4. ऐश्वर्य 5. विशेष योग्यता।

अधिगमज *वि.* (तत्.) 1. अधिगम से उत्पन्न, ज्ञान से उत्पन्न 2. जैन. उपदेशों को पढ़कर या सुनकर जीव में उत्पन्न गुण-दोष।

अधिगमन *पुं.* (तत्.) 1. किसी वाक्य की पद-योजना के आधार पर की जाने वाली व्याख्या 2. अध्ययन 3. आविष्कार 4. प्राप्ति।

अधिगम्य *वि.* (तत्.) 1. अधिगमन के योग्य, सीखने योग्य, अधिगमनीय 2. जिस तक पहुँच हो सके 3. जो समझ में आ सके।

अधिगुण *पुं.* (तत्.) उत्कृष्ट गुण *वि.* विशिष्ट गुण से परिपूर्ण, सुयोग्य।

अधिगुप्त *वि.* (तत्.) 1. रक्षित, रखा हुआ, छिपाया हुआ 2. दबा हुआ।

अधिग्रहण *पुं.* (तत्.) 1. वस्तु का बलपूर्वक ग्रहण 2. अधिकार भाव से ग्रहण।

अधिग्राहक *पुं.* (तत्.) अधिग्रहण करने वाला, प्राप्त करने वाला।

अधिचर्म *वि.* (तत्.) प्राणी या पौधे की कोशिकाओं को घेरे रहने वाली बाहरी परत, त्वचा के दोनों स्तरों में से बाहरी स्तर epidermis

अधिचिह्न *पुं.* (तत्.) विशिष्ट, विशेषक, किसी पद या ओहदे का प्रतीक बिल्ला या निशान insignia

अधिजिह्व/अधिजिह्वा *वि.* (तत्.) 1. एक से अधिक जीभ वाला पुं. 1. सांप 2. अग्नि।

अधिजिह्वा/अधिजिह्विका *स्त्री.* (तत्.) 1. काकलक, गले का कौआ 2. जीभ या कंठछद में सूजन।

अधिज्य *वि.* (तत्.) (अधि+ज्या) जिसकी प्रत्यंचा चढ़ी हुई हो।

अधित्यका *स्त्री.* (तत्.) पहाड़ की ऊपर की समतल भूमि, ऊँचा पथरीला मैदान विलो. उपत्यका।

अधित्यजन *पुं.* (तत्.) स्पष्ट शब्दों में अपने अधिकार को छोड़ना।

अधित्याग *वि.* (तत्.) नियमानुसार उगाही जाने वाली राशि (जैसे ब्याज, ऋण आदि) को आपदाग्रस्त लोगों से न उगाहना यानी उस काल में उसे माफ कर देना।

अधिदंत *पुं.* (तत्.) दाँत के ऊपर निकलने वाला अतिरिक्त दाँत।

अधिदत्त *वि.* (तत्.) नियत सीमा से अधिक दिया हुआ, अधिक भुगतान किया गया।

अधिदान *पुं.* (तत्.) किसी को सेना में भर्ती होने के लिए प्रेरणार्थ दी जाने वाली धनराशि वाणि. उद्योग विशेष को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार द्वारा उसके निर्यातकों को दी जाने वाली आर्थिक सहायता।

अधिदिन *पुं.* (तत्.) अतिरिक्त दिन।

अधिदीधित *वि.* (तत्.) जिसमें अत्यधिक प्रभा हो, अधिक कांतिवाला।

अधिदृत *वि.* (तत्.) 1. जो किसी के अधिकार, शासन में हो 2. वशीभूत 3. जिसे किसी उच्च अधिकारी आदि की आज्ञा का पालन करना पड़ता हो, मातहत 4. जो किसी नियम, शर्त आदि से बँधा हो, विवश 5. किसी पर निर्भर, आश्रित, अवलंबित 6. किसी के अंतर्गत (विचाराधीन) 7. दास, सेवक।

अधिदेय *पुं.* (तत्.) 1. वेतन के अलावा यात्राव्यय, भोजन-व्यय, मकान के किराए आदि के रूप में कर्मचारी को दी जाने वाली अतिरिक्त रकम, भत्ता।

अधिदेव *पुं.* (तत्.) इष्टदेव, कुलदेव *वि.* देव-सबंधी।

अधिदेवता *पुं.* (तत्.) दे. अधिदेव।

अधिदेश *पुं.* (तत्.) 1. साधिकार दिया गया आदेश 2. अनिवार्यत: पालनीय आदेश 3. राज. निर्वाचक गण द्वारा किसी विषय-विशेष पर कार्रवाई करने के लिए अपने प्रतिनिधियों को दिया गया आदेश mandate

अधिदेशात्मक *वि.* (तत्.) अधिदेश विषयक दे. अधिदेश।

अधिदैविक *वि.* (तत्.) 1. इष्टदेव-संबंधी 2. आध्यात्मिक।

अधिदैविक दु:ख *पुं.* (तत्.) [आधि+दैविक दु:ख] जिस दु:ख का कोई भौतिक अथवा सांसारिक कारण न दिखाई दे, दैव अथवा प्रारब्ध से प्राप्त दु:ख, विघ्नकारी शक्तियों के प्रभाव से उत्पन्न कष्ट।

अधिध्रणिक *वि.* (तत्.) (स्त्री.) वरिष्ठता पर आधारित वर्गों वाला, श्रेणीबद्ध।

अधिध्रणिक समाज *पुं.* (तत्.) नगरीकृत व्यवस्था, संपन्नता, जातीय और प्रजातीय श्रेष्ठता आदि की दृष्टि से ऊंची-नीची श्रेणियों वाला समाज।

अधिनव *वि.* (तत्.) बहुत नया।

अधिनव-तारा *पुं.* (तत्.) खगौल.,भौति. दुर्लभ प्रकार का विस्फोटनशील तारा जो सूर्य से दस करोड़ गुना तक अधिक चमकदार होता है1 super nova

अधिनहन *पुं.* (तत्.) 1. बड़ी चीज के साथ छोटी चीज को मिला लेने का कार्य, जोड़ लेना 2. अपने राज्य में मिला लेना। annexation

अधिनाथ *पुं.* (तत्.) 1. सब का मालिक, सब का स्वामी, परमेश्वर 2. प्रधान अधिकारी, सरदार।

अधिनाम *पुं* (तत्.) अपने परिवार, वंश-परंपरा, व्यवसाय मूल नगर आदि का परिचायक नाम जिसे कहीं नाम के प्रथम अंश (व्यक्तिगत नाम) से पहले, कहीं प्रथम अंश के बाद जोड़ा जाता है, जैसे- बजाज लखनवी, रामकृष्ण बजाज, रामचंद्र शुक्ल आदि। surname

अधिनायक *पुं.* (तत्.) तानाशाह, किसी प्रदेश, देश का सर्वाधिकार संपन्न शासक dictator 2. मुखिया, नेता 3. अफसर 4. मालिक, स्वामी।

अधिनायकता *स्त्री.* (तत्.) अधिनायकत्व, सर्वाधिकार संपन्न शासक, अधिकारी की शक्ति से संबंधित।

अधिनायकत्व *पुं.* (तत्.) 1. अधिनायक होने का गुण, भाव 2. अधिनायक का शासन dictatorship

अधिनायिकी *स्त्री.* (तत्.) अधिनायक संबंधी स्त्री अधिनायक का पद या कार्य।

अधिनियम *पुं* (तत्.) संसद् या सर्वोच्च सत्ता द्वारा पारित अथवा स्वीकृत कानून। act

अधिनियमन *पुं* (तत्.) अधिनियम बनाने का कार्य या प्रक्रिया।

अधिनियमित *वि.* (तत्.) जिसे कानून का रूप दे दिया गया हो, जिसे अधिनियम का रूप दे दिया गया हो। enacted

अधिनियमिति *स्त्री.* (तत्.) 1. संसद् अथवा विधानमंडल द्वारा अधिनियमित (विधिवत बनाया गया कानून) 2. कानून का कोई उपबंध। enactment

अधिनिर्णय *पुं.* (तत्.) किसी न्यायाधिकरण अंपायर या माध्यस्थम् (आर्बिट्रेशन) द्वारा दिया गया निर्णय। adjudication

अधिनिर्णयन *पुं.* (तत्.) राज. विवादग्रस्त पक्षों को शांतिपूर्ण तरीके से न्याय दिलाने के लिए विवाद का निर्णय किसी न्यायालय, न्यायाधिकरण, आयोग आदि से कराने की प्रक्रिया, न्याय-निर्णयन।

अधिनिर्णायक *पुं.* (तत्.) 1. किसी विवाद आदि के संबंध में सर्वमान्य निर्णय करने के लिए प्राधिकृत निर्णायक 2. अधिनिर्णय करने या देने वाला (अंपायर) 3. न्यायनिर्णायक। adjudicator

अधिनिर्णीत *वि.* (तत्.) जिसका अधिनिर्णय हो चुका हो, जिसका अदालती फैसला हो चुका हो।

अधिनिर्धारण *पुं.* (तत्.) अधिक कर, दर, प्रशुल्क या कीमत निर्धारित करना। over assessment

अधिनिष्कासन *पुं* (तत्.) विधिविहित कार्रवाई द्वारा किसी को भूमि, मकान आदि से बाहर निकाल देना, बेदखली।

अधिनीतिशास्त्र *पुं.* (तत्.) मानवीय नीतिशास्त्र से भिन्न वह नीति शास्त्र जिस में 'शुभ' 'अशुभ' आदि शब्दों के अर्थ और प्रयोग का विवेचन और नैतिक सांप्रत्ययों और निर्णयों का विश्लेषण किया जाता है। metaethics

अधिन्यस्त *वि.* (तत्.) जो किसी को सौंप दिया गया हो, विन्यस्त।

अधिन्यास *पुं.* (तत्.) 1. किसी भूमि, अधिकार आदि को लिख कर वैध रूप से हस्तांतरित करना 2. किसी के लिए कोई हिस्सा, कार्य आदि निर्धारित करना।

अधिप *पुं.* (तत्.) 1. सरदार, मुखिया, मालिक, नायक 2. राजा, शासक 3. अफसर, प्रधान।

अधिपति *पुं* (तत्.) दे. अधिप।

अधिपत्नी *स्त्री.* (तत्.) 1. स्वामिनी 2. शासिका।

अधिपत्र *पुं.* (तत्.) 1. विधि. किसी व्यक्ति को किसी कार्य के लिए अधिकृत करने वाला पत्र 2. न्यायालय द्वारा किसी व्यक्ति की गिरफ्तारी के लिए जारी आदेश 3. वाणि. ब्याज लाभांश आदि की अदायगी के लिए जारी किया गया लिखित प्राधिकार। warrant

अधिपत्रित अफसर *पुं.* (तत्.) सैवि. (राष्ट्रपति) द्वारा नियुक्त सेना के कमीशन-प्राप्त अफसर।

अधिपांशुल *वि.* (तत्.) धूल से भरा हुआ, धूलधूसरित।

अधिपादप *पुं.* (तत्.) वन. किसी दूसरे पेड़-पौधे या जमीन से ऊपरी स्थान जैसे- खंभे, छत, दीवार आदि पर उगने वाला पौधा परंतु यह परजीवी नहीं होता।

अधिपुरुष *पुं.* (तत्.) 1. परम पुरुष, परमात्मा, ईश्वर 2. किसी संस्था, कार्यक्रम आदि का प्रमुख अधिकारी या स्वामी boss 3. अधिकार प्राप्त व्यक्ति।

अधिपूर्ति *स्त्री.* (तत्.) किसी भी सामग्री का बाजार में खपत से अधिक मात्रा में उपलब्ध होना, अतिरिक्त पूर्ति।

अधिप्रज *वि.* (तत्.) प्राणी. बहुत अधिक संतान उत्पन्न करने वाला बहुप्रजक, अतिरिक्त प्रभार।

अधिप्रत्यय *पुं.* (तत्.) भाषा. प्रत्यय के रूप में व्यहृत वह खंडेतर स्वनगुण (सुर या बलाघात)जो शब्द के उच्चारण के साथ अर्थभेदक भी हो। suffix

अधिप्रभार *पुं.* (तत्.) निर्धारित प्रभार से अधिक प्रभार। surcharge

अधिप्रमाणन *पुं.* (तत्.) किसी प्रलेख, प्रपत्र को आधिकारिक रूप से सत्य प्रमाणित करना, प्रमाणीकरण। authentication

अधिप्रमाणित *वि.* (तत्.) सक्षम अधिकारी द्वारा प्रमाणित और सत्य घोषित उदा. प्रलेख, पत्र और प्रपत्र।

अधिप्रमाणीकृत प्रति *स्त्री.* (तत्.) किसी अभिलेख या प्रलेख की वह अनुलिपि जो सक्षम अधिकारी द्वारा प्रमाणिक एवं सत्य घोषित की गई हो।

अधिप्रहार *पुं* (तत्.) खेल. वह प्रहार जो विवर में गेंद डालने के लिए प्रतिपक्षी द्वारा प्रयुक्त प्रहारों की संख्या से एक अधिक हो।

अधिप्राप्ति *स्त्री.* (तत्.) उपलब्ध कराने की क्रिया, भाव, उपलब्धता।

अधिप्लवक *पुं.* (तत्.) भूवि. वे जीव जो पानी पर तैरती किसी वस्तु से लगे रहने के कारण पानी के ऊपर चलते रहते हैं।

अधिप्लावी द्रव *पुं.* (तत्.) रसा. अवक्षेप बैठ जाने के बाद उसके ऊपर बचा हुआ स्वच्छ द्रव जो छानने या निथारने से अलग हो सकता है।

अधिभार *पुं.* (तत्.) 1. वह भार जो यंत्र के अनुमत भार से अधिक हो जैसे- लिफ्ट में अधिभार होने पर नहीं चलती 2. अधिप्रभार। overload

अधिभारित *वि.* (तत्.) 1. जिस पर आवश्यकता से अधिक भार रखा गया हो 2. अतिरिक्त प्रभार पड़े या लागू किया गया हो।

अधिभावी *वि.* (तत्.) अपेक्षाकृत अधिक महत्व का।

अधिभाषा *स्त्री.* (तत्.) वह भाषा जिसके प्रतीक किसी अन्य भाषा के प्रतीकों के गुणधर्म का वर्णन करते हैं। वह भाषा जिसका प्रयोग किसी अन्य भाषा का विवेचन करने के लिए किया जाता है जैसे-व्याकरण की भाषा metalanguage

अधिभू *पुं.* (तत्.) स्वामी, प्रधान व्यक्ति।

अधिभूत *वि.* (तत्.) प्राणी-संबंधी *पुं.* (तत्.) 1. ब्रह्म 2. सृष्टि के समस्त पदार्थ 3. जड़-जगत्।

अधिभोक्ता *पुं.* (तत्.) कब्जादार, दखलदार, वह व्यक्ति जिसके अधिकार में हो, भोग करने वाला।

अधिभोग *पुं.* (तत्.) किसी स्थान, भूमि आदि के किसी व्यक्ति के वास्तविक अधिकार में होने की स्थिति। occupancy

अधिभोगी *वि.पुं.* (तत्.)वह व्यक्ति जिसके वास्तविक कब्जे में कोई भूमि, निवासस्थान आदि हो। occupant

अधिभौम *वि.* (तत्.) भौम जलस्तर (ground water level) से ऊपर स्थित, जैसे- अधिभौम (बैडोस) जल।

अधिमंथ *पुं.* (तत्.) आँखों का एक रोग, नेत्रश्लेष्मा शोथ अथवा नेत्रगोलक शोथ ।

अधिमंथन *पुं.* (तत्.) अग्नि उत्पन्न करने के लिए अरणि (अरणी) की लकड़ियों को परस्पर रगड़ना। *वि.* (तत्.) रगड़ से अग्नि उत्पन्न करने योग्य लकड़ी।

अधिमंदाकिनी *स्त्री* खगो. सभी ज्ञात गैलेक्सियों का समूह।

अधिमत *पुं.* (तत्.) किसी मामले में जूरी या निर्णायक द्वारा दिया गया निर्णायक मत, जनता या निर्वाचकों द्वारा दिया गया मत, पंचनिर्णय, फैसला। verdict

अधिमलाशयी *वि.* (तत्.) [अधि+मलाशयिन.] प्राणि. मलाशय के समीप स्थित या उससे जुड़ा हुआ।

अधिमहाद्वीपीय समुद्र *पुं.* (तत्.) भूवि. महाद्वीपीय सागर प्रदेशों का उथला समुद्र।

अधिमांस *पुं.* (तत्.) आँख के सफेद भाग में या मसूड़ों के पिछले भाग में होने वाला अर्वुदयुक्त (फोज़) रोग-विशेष।

अधिमात्र *वि.* (तत्.) परिमाण से अधिक, बहुत ज़्यादा।

अधिमान *पुं.*(तत्.) किसी वस्तु, व्यक्ति, देश आदि को अन्यों की अपेक्षा अधिक मान, महत्व देना, वरीयता अधिमान्यता, तरजीह।

अधिमान अंश/शेयर *वि.* (तत्.) किसी कंपनी का वह शेयर जो प्रत्याभूत और ब्याजदेय हो।

अधिमानी *वि.*(तत्.) जिसे अधिमान दिया गया हो, वरीयता प्राप्त।

अधिमान्य *वि.* (तत्.) औरों से अधिक अच्छा माना गया, वरीय, अधिक पसंद का अधिक स्वीकार्य, अधिक।

अधिमान्य विवाह *पुं.* (तत्.) विवाह साथी चुनने के संबंध में कुछ व्यक्तियों को अन्य की तुलना में वरीयता दिए जाने की सामाजिक पद्धति वाला विवाह जैसे- कुछ जातियों में ममेरी बहन को विवाह के लिए चुनने की अधिमानता दी जाती है।

अधिमान्यता *स्त्री.* (तत्.) अधिमान्य होने का भाव, वरीयता, पसंदगी।

अधिमास *पुं.* (तत्.) दे. अधिक मास।

अधिमित्र *पुं.* (तत्.) ज्योतिष में परस्पर मित्र ग्रहों का योग।

अधिमिलन *पुं.* (तत्.) किसी छोटे राज्य या राज्यों का बड़े राज्य में सदा के लिए मिल जाना ।

अधिमीमांसा (तत्.) (स्त्री.) दर्श. मीमांसा की मीमांसा के रूप में दर्शनशास्त्र का एक रूप जिसमें यह माना जाता है कि वह शास्त्रों का शास्त्र है, समान्य शास्त्र नहीं।

अधिमुक्तिक *पुं* (तत्.) महाकाल (बौद्ध)।

अधिमुद्रण *पुं.* (तत्.) मुद्रित पर मुद्रण, छपे पर पुन: छपाई। over print ।

अधिमूल्य *पुं.* (तत्.) वाणि. प्रतिभूति बंधपत्र आदि के बाजार मूल्य का अंकित मूल्य से अधिक होना।

अधिमूल्यन *पुं.* (तत्.) मुद्रा, सरकारी ऋण-पत्रों आदि के सापेक्ष मूल्य में वृद्धि होना या करना।

अधियज्ञ *वि.* (तत्.) यज्ञ-संबंधी, यज्ञ से संबंध रखने वाला *पुं.* (तत्.) प्रधान यज्ञ।

अधिया *स्त्री.* (तद्.) आधा अंश, खेती बाड़ी की एक पद्धति जिसके अनुसार फसल से प्राप्त अनाज का आधा भाग मालिक को और आधा खेत में काम करने वाले को मिलता है *पुं.* (तद्.) 1. आधे का हिस्सेदार, गाँव में आधी पट्टी का मालिक 2. आधा हिस्सा, अधियार।

अधियाचन *पुं.* (तत्.) किसी विशेष कार्य के लिए किसी से कोई चीज अधिकारपूर्वक माँगना या किसी काम को करने की (लिखित) माँग, किसी सभा के सदस्यों द्वारा सभा, अधिवेशन करने की लिखित माँग।

अधियाना *स.क्रि.* (तद्.) आधा-आधा बाँट देना।

अधियार *पुं.* (तद्.) 1. आधा हिस्सा या आधे का हिस्सेदार 2. वह जमींदार या काश्तकार जिसका आधा संबंध एक गाँव से और आधा दूसरे से हो।

अधियारिन *स्त्री.* (तद्.) 1. सौत, सपत्नी 2. बराबर या आधे भाग की अधिकारिणी स्त्री।

अधियारी *स्त्री वि.* (तद्.) दे. अधियारिन।

अधियोग *पुं.* (तत्.) ग्रहों का एक योग जो यात्रा के लिए शुभ माना जाता है।

अधिरथ *वि.* (तत्.) 1. रथारूढ़ *पुं.* रथ हाँकने वाला (सारथि) 2. अंगदेश के राजा कर्ण का सारथि था।

अधिराज *पुं.* (तत्.) महाराज, राजाधिराज, चक्रवर्ती सम्राट, शहंशाह।

अधिराजत्व *पुं.* (तत्.) किसी राज्य की अन्य राज्य पर आधिकारिक सत्ता।

अधिराज्य *पुं.* (तत्.) 1. साम्राज्य 2. किसी (आश्रित) राज्य या देश पर राजनीतिक नियंत्रण रखने वाला राज्य या देश।

अधिराट् *पुं.* (तत्.) दे. अधिराज।

अधिरूढ़ *वि.* (तत्.) आरूढ़, चढ़ा हुआ, बढ़ा हुआ, उत्कर्ष-प्राप्त।

अधिरोप *पुं.* (तत्.) 1. किराया 2. दंड आदि के रूप में आधिरोपित की जाने वाली रकम, प्रभार 3. आरोप।

अधिरोपण *पुं.* (तत्.) शा.अर्थ ऊपर उठाने या चढ़ाने का कार्य 1. किसी वस्तु के ऊपर दूसरी वस्तु को आरोपित करना 2. मुद्रित पर पुन: मुद्रित करना 3. किसी वस्त्रादि पर उसी या अन्य वस्त्रादि की कलाकारी करना।

अधिरोपित *वि.* (तत्.) 1. जिसका अधिरोपण किया गया हो, कर, शुल्क, जुर्माना आदि जो लगाया गया हो 2. कर्तव्य, जिम्मेदारी जो सौंपी, थोपी गई हो 3. थोपी गई वस्तु, कार्य।

अधिरोह *पुं.* (तत्.) आरोहण, चढ़ना, चढ़ाव।

अधिरोहण *पुं.* (तत्.) 1. चढ़ना, सवार होना 2. ऊपर उठना 3. धनुष पर डोरी चढ़ाना।

अधिरोह्णी *स्त्री.* (तत्.) 1. सीढ़ी, जीना 2. ऊपर चढने वाली।

अधिरोही *वि.* (तद्.) अधिरोहण करने वाला, (ऊपर) चढ़ने वाला।

अधिदर्शक *पुं.* (तत्.) 1. वह व्यक्ति जिसका काम किसी कार्य का प्रभार ग्रहण करना और यह देखना हो कि उसे ठीक ढंग से किया जाए। 2. काम की निगरानी करने वाला।

अधिलब्धि *स्त्री.* (तत्.) दे. अनुलब्धियाँ।

अधिलाभ *पुं.* (तत्.) वाणि. सामान्य लाभ से अधिक लाभ जिस पर अधिलाभ कर लगता है। superprofit

अधिलाभांश [अधि+लाभ+अंश] *पुं.* (तत्.) किसी संस्था में लाभ का वह भाग जो कर्मचारियों को उनके सामान्य वेतन, पारिश्रमिक के अतिरिक्त दिया जाता है। 2. किसी कंपनी के अंशधारियों shareholder को दिया जाने वाला अतिरिक्त लाभ। 3. बीमा कंपनी द्वारा पालिसी-धारकों को दिया जाने वाला लाभांश। bonus

अधिलेख *पुं.* (तत्.) किसी लिखित या मुद्रित पंक्ति में पंक्ति से ऊपर उठाकर लिखा गया अक्षर या अंक, जैसे- क^{2}ख में। superscript

अधिलेखन *पुं.* (तत्.) लिखे हुए के ऊपर लिखना overwriting

अधिलोक *पुं.* (तत्.) संसार, सृष्टि, ब्रह्मांड, *वि.* (तत्.) ब्रह्मांड-संबंधी।

अधिवक्ता *पुं.* (तत्.) 1. वकील, एडवोकेट, न्यायालय में किसी के पक्ष का समर्थन करने वाला 2. पक्ष-समर्थक, हिमायती।

अधिवचन *पुं.* (तत्.) 1. बढ़ा-चढ़ा कर कही गई बात, अत्युक्ति 2. पक्ष-समर्थन, हिमायत।

अधिवर्ध *पुं.*(तत्.) (चिकि.) लंबी अस्थि का सिरा जो अलग से विकसित होता है परंतु अस्थिकांड (डाइफिसस) उपास्थि (कार्टिलेज) द्वारा जुड़ा होता है और उससे मिल जाता है।

अधिवर्ष *पुं.* (तत्.) 1. अधिक दिनों या अधिक मास वाला वर्ष, वह वर्ष जिसमें मलमास पड़ता है 2. वह वर्ष जिसमें फरवरी 29 दिनों की होती है leap year 4. वह सौर वर्ष जिसमें फाल्गुन मास 31 दिनों का होता है 4. नियत वर्षावधि के पूरे हो जाने के बाद का वर्ष।

अधिवर्षिता *स्त्री.* (तत्.) 1. नियत वर्षों की अवधि का पूरा हो जाना 2. प्रशा. सेवानिवृत्ति की निर्धारित आयु (या निर्धारित वर्षों) के पूरे हो जाने की स्थिति। superannuation

अधिवसित *वि.* (तत्.) आबाद या बसा हुआ वह स्थान जहां लोग रहते हैं।

अधिवहन *पुं.* (तत्.) राज. किसी राज्य द्वारा किसी पड़ोसी राज्य के क्षेत्र को बलपूर्वक अपने क्षेत्र में मिला लेना।

अधिवास *पुं.* (तत्.) 1. निवास स्थान, स्थान 2. आधिकारिक स्थायी निवास domicile 3. अतिसुगंध, खुशबू 4. विवाह से पूर्व तेल-हल्दी चढ़ाने की रस्म 5. उबटन 6. अधिक ठहरना, अन्यत्र या दूसरे के घर जा कर रहना 5. यज्ञारंभ के पूर्व देवता का आह्वान।

अधिवासन *पुं.* (तत्.) सुगंधित करने की क्रिया, देवता या देवी की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा के पूर्व उसे सुगंधित, जल-चंदनादि से लिप्त कर रात भर किसी स्थान पर वस्त्र में ढक कर जल में डुबा कर रखने की प्रक्रिया।

अधिवासित *वि.* (तत्.) सुगंधित, सुवासयुक्त।

अधिवासी *पुं* (तत्.) 1. निवासी, रहने वाला 2. आधिकारिक रूप से किसी नगर आदि का स्थायी निवासी 3. दूसरे देश में जाकर बसा हुआ व्यक्ति।

अधिविकर्श *पुं.*(तत्.) 1. खातेदार द्‌वारा बैंक की अनुमति से जमा रकम से अधिक राशि निकालना 2. उक्त प्रकार से आहरित राशि। overdraft

अधिविक्रीत *वि.*(तत्.) जो नियत सीमा से अधिक बेचा गया हो।

अधिविज्ञान *पुं.*(तत्.) ज्ञात विज्ञान की अपेक्षा अधिक ऊँचे स्तर का विज्ञान superscience दर्श. विज्ञानों का विवेचन करने वाला शास्त्र। metascience

अधिवीत *वि.* (तत्.) 1. लपेटा हुआ 2. ढका हुआ, आच्छादित।

अधिवृक्क *क्रि.वि.* (तत्.) वृक्क के निकट चिकि. अन्त: स्रावी ग्रन्थि।

अधिवृक्क ग्रंथि *स्त्री.* (तत्.) वृक्क से जुड़ी हुई एक अंत:स्रावी ग्रंथि।

अधिवृषण *पुं.* (तत्.) प्राणि. वृषण के ऊपर की कुंडलाकार नलिका जो उससे आने वाली नलिकाओं को ग्रहण करती है और शुक्राणुवाहिका तक जाती है, यह वीर्य का ग्रहण और स्थानांतरण करने वाली नलिका है।

अधिवेशन *पुं.* (तत्.) 1. बैठक, सम्मेलन, संघ, सभा, जलसा 2. किसी कार्य-विशेष के लिए आयोजित बैठक या सम्मेलन।

अधिदैव *वि.* (तत्.) अधिष्ठातृ देवता, अधिदेव।

अधिशत्रु *पुं.* (तत्.) ज्योति. ग्रह विशेष की दृष्टि से नैसर्गिक और तात्कालिक दोनों प्रकार के शत्रु ग्रह।

अधिशय *पुं.* (तत्.) 1. जोड़, योग 2. जोड़ी गई, मिलाई गई या दी गई वस्तु।

अधिशयन *पुं.* (तत्.) किसी शय्या आदि पर लेटना, सोना।

अधिशयित *वि.* (तत्.) 1. लेटा हुआ, सोया हुआ 2. पु. लेटने या सोने के उपयोग में आई वस्तु।

अधिशासी *वि.* (तद्.) निर्धारित नियमों और आदेशों का पालन करवाने वाला अधिकारी, कार्यपालक executive

अधिशासी अभियंता *पुं.* (तत्.) किसी इंजीनियरी तंत्र में वरिष्ठ इंजीनियर का पदनाम जो सहायक इंजीनियर से ऊपर होता है।

अधिशीतित *वि.* (तत्.) जो आवश्यकता से अधिक ठंडा हो गया हो।

अधिशुल्क *पुं.* (तत्.) 1. अंकित या वास्तविक मूल्य से अधिक ली जाने वाली रकम या शुल्क 2. अधिमूल्य 3. अधिभार। surcharge

अधिशेष *वि.पुं.* (तत्.) बेशी, आवश्यकता की पूर्ति हो जाने के पश्चात बची शेष मात्रा (या राशि) surplus

अधिशोष *पुं.* (तत्.) *पुं.* अधिशोषक।

अधिशोषक *पुं.* (तत्.) रसा. ठोस या द्रव रूप में कोई पदार्थ जो किसी अन्य पदार्थ को सोख लेता है absorbent

अधिशोषण *पुं.* (तत्.) वह प्रक्रिया जिसके द्‌वारा किसी पदार्थ के अणु किसी ठोस पदार्थ की सतह पर चिपक जाते हैं।

अधिशोष्य *पुं.* (तत्.) रसा. गैस या द्रव रूप में कोई पदार्थ जो अन्य पदार्थ द्‌वारा सोख लिया गया हो।

अधिष्ठात्री स्त्री. (तत्.) किसी संस्था या काम की देखभाल करने वाली। प्रबंधिका, व्यवस्थापिका 2. नियमन करने वाली, नियामिका 3. अध्यक्षा 4. विश्वविद्‌यालय में संकाय की अध्यक्षा 5. (ज्ञान आदि की) संरक्षक एवं प्रदायक देवी।

अधिष्ठाता *पुं.* (तत्.) 1. अध्यक्ष, मुखिया, प्रधान; 2. विश्वविद्यालय का संकाय अध्यक्ष dean 3. ईश्वर।

अधिष्ठान *पुं.* (तत्.) 1. वासस्थान, रहने का स्थान 2. आश्रय 3. बस्ती, नगर 4. नियम 5. आशीर्वाद 6. (सांख्य) भोक्ता और भोग (आत्मा-देह या इन्द्रिय-विषय) का संयोग 7. (वेदांत) भ्रांति या अध्यास का आधार 8. संस्था, संगठन। establishment

अधिष्ठापक *पुं.* (तत्.) (स्त्री.) 1. अधिष्ठाता, संस्थापक 2. भक्ति, ज्ञान प्रदायक।

अधिष्ठापन *पुं.* (तत्.) स्थापित किया जाना।

अधिष्ठित *वि.* (तत्.) ठहरा हुआ, स्थित 2. स्थापित 3. बसा हुआ 4. नियुक्त 5. अधिकार में किया हुआ।

अधिश्रयण *पुं.* (तत्.) 1. आग पर रख कर गर्म करना, उबालना 2. चूल्हा।

अधिश्रयणी *स्त्री.* (तत्.) अँगीठी, चूल्हा, अग्निकुंड।

अधिश्रवण *स.क्रि.* (तत्.) दूसरों की बात छिपकर सुनना या बिना प्रयत्न के सुन लेना, कान में पड़ जाना।

अधिश्रेणी स्त्री. (तत्.) धन-संपत्ति, पद-प्रतिष्ठा या शक्ति के आधार पर व्यक्तियों की ऊँची-नीची श्रेणियों में समाज की व्यवस्था या समाज का संगठन।

अधिसंख्य *वि.* (तत्.) 1. निर्धारित संख्या से अधिक, बहुत अधिक 2. ज्यादातर।

अधिसंख्य पद *पुं.* (तत्.) किसी कार्यालय के कर्मचारियों की निर्धारित संख्या से अतिरिक्त पद। supernumerary post

अधिसदस्य *पुं.* (तत्.) विश्वविद्यालय की प्रबंध परिषद या विद्वतपरिषद का सदस्य। senator

अधिसदस्यता *स्त्री.* (तत्.) विश्वविद्यालय की प्रबंध परिषद या विद्वत् परिषद की सदस्यता। fellowship

अधिसमाज शास्त्र *पुं.* (तत्.) समाज शास्त्र में सिद्धांतों के अध्ययन का वह विभाग जिसमें सामाजिक अन्वेषणों के तार्किक ज्ञान और विधियों से संबंधित विषयों का विवेचन होता है।

अधिसमुच्चय *पुं.* (तत्.) भाषा. किसी वर्ग या समूह के शब्दों का द्योतक शब्द जैसे- पशु, पक्षी, फर्नीचर आदि, अधिकोटि।

अधिसूचना *स्त्री.* (तत्.) ऐसी लिखित या प्रकाशित सामग्री जो किसी व्यक्ति, व्यक्ति समूह या समाज को किसी बात से अवगत कराने अथवा सावधान करने के लिए हो 2. सरकार द्वारा अधिकृत रूप से प्रकाशित अथवा राजपत्र (गजट) में छपा विवरण या सूचना। notification

अधिस्थगन *पुं.* (तत्.) विधि. न्यायालय द्वारा किसी कर्जदार को दी गई वह कालावधि, जिसके दौरान कर्जदाता कर्जदार से कर्ज के भुगतान की मांग नहीं करेगा पर्या. ऋणस्थगन।

अधिस्थिति स्त्री. (तत्.) सुने जाने का अधिकार, उपस्थित होने या हस्तक्षेप करने का अधिकार।

अधिस्नातक *वि.* (तत्.) स्नातकोत्तर (एम.ए. आदि) परीक्षा उत्तीर्ण।

अधिस्फोटी गैस *पुं.* (तत्.) रसा. जल के वैद्युत अपघटन से उत्पन्न हाइड्रोजन तथा ऑक्सीजन गैसों का मिश्रण जो जलने पर विस्फोट के साथ जल बनाता है।

अधिस्वर *पुं.* (तत्.) 1. अव्यक्त अर्थ, अभिप्राय, गूढ़ार्थ। 2. संगी. मुख स्वर की अपेक्षा तीव्र स्वर अधितान। overtone

अधिस्वरक *वि.* (तत्.) भौ. किसी मिश्रित स्वर में मूल स्वर से उच्च आवृत्ति वाला स्वर। overtone

अधिहरण *पुं.* (तत्.) किसी की व्यक्तिगत संपत्ति पर शासन द्वारा शास्ति (अर्थात् दंड) स्वरूप कब्जा करना। confiscation

अधीक्षक *पुं.* (तत्.) अधीनस्थ कर्मचारियों के कार्यों का निरीक्षण करने वाला अधिकारी। superintendent

अधीक्षण *पुं.* (तत्.) मातहत कर्मचारियों के काम-काज की देख-रेख करने का कार्य।

अधीत *वि.* (तत्.) पढ़ा हुआ, अध्ययन किया हुआ।

अधीति *स्त्री.* (तत्.) 1. अध्ययन, अनुशीलन 2. स्मृति।

अधीती *वि.* (तत्.) जिसने अच्छी प्रकार से अध्ययन किया हो, बहुत पढ़ा हुआ (व्यक्ति)।

अधीन अधिकारी *पुं.* (तत्.) अधिकार, शासन में काम करने वाला अधिकारी, मातहत अफसर।

अधीन उपवाक्य *पुं.* (तत्.) दे. आश्रित उपवाक्य

अधीनता *स्त्री.* (तत्.) किसी के अधीन होने की अवस्था, स्थिति, भाव, परवशता, विवशता।

अधीन-न्यायालय *पुं.* (स्त्री.) (तत्.) उच्च न्यायालय आदि किसी बड़ी अदालत के अधीन कार्य करने वाला न्यायालय, छोटी-अदालत lower, trial, subordinate court

अधीनस्थ *वि.* (तत्.) अधीन स्थित, मातहत, नियंत्रणाधीन।

अधीनस्थ कार्यालय *पुं.* (तत्.) प्रशा. किसी विभाग या मंत्रालय की प्रशासनिक और वित्तीय शक्तियों के अधीन काम करने वाला वह कार्यालय जो स्वयं को सौंपी गई योजनाओं का कार्यान्वयन करता है तु. संलग्न कार्यालय subordinate office

अधीनस्थ न्यायालय *पु.* (तत्.) दे. अधीन न्यायालय।

अधीनीकरण *पुं.* (तत्.) 1. अपने अधीन करना, नियंत्रण, वश में करना 2. पराजित करना।

अधीर *वि.* (तत्.) 1. व्याकुल, उद्विग्न, उतावला 2. धैर्यरहित चंचल 3. भीरू।

अधीरता *स्त्री.* (तत्.) 1. अधीर होने की अवस्था, स्थिति, गुण 2. मन की अस्थिरता, चंचलता, उतावलापन, बेसब्री 4. घबराहट 5. कायरता 6. भीरुता चिकि. तंत्रिका तंत्र की उत्तेजना जिसमें मानसिक और शारीरिक बेचैनी के लक्षण होते हैं। घबराहट nervousness, impatience

अधीरा स्त्री. (तत्.) अधीर, अधैर्यशालिनी, जिसमें धैर्य न हो काव्य. अपने पति का परस्त्री-प्रेम या उसके सूचक चिह्न देखकर क्रोधित होने वाली और कटु वचन कहकर आक्रोश प्रकट करने वाली नायिका।

अधीश *पुं.* (तत्.) 1. स्वामी, मालिक, जैसे- मठाधीश 2. राजा जैसे- कोसलाधीश, द्वारकाधीश।

अधीश्वर *पुं.* (तत्.) स्वामी, मालिक, राजा।

अधुना *क्रि.वि.* (तत्.) इस समय, वर्तमान समय, आजकल, अब इन दिनों।

अधुनातन *वि.* (तत्.) वर्तमान समय का, अब का, हाल का, नवीनतम, अद्यतन, सांप्रतिक।

अधूम्रक *वि.* (तत्.) बिना धुएँ का, धूम्ररहित 2. जलती हुई अग्नि जिसमें धुआं न निकल रहा हो।

अधूरा *पुं.* (तत्.) आधा, अपूर्ण, जो पूरा न हो।

अधूरापन *पुं.* (तत्.) 1. अपूर्णता 2. अपरिपूर्णता 3. असमाप्ति 4. अस्पष्टता।

अधृत *वि.* (तत्.) 1. धारण न किया हुआ 2. अनियंत्रित।

अधृति *स्त्री.* (तत्.) 1. अधीरता, धैर्यहीनता, उद्वेग, घबड़ाहट, आतुरता 2. असंयम।

अधृष्ट *वि.* (तत्.) (स्त्री.) जो धृष्ट, अशिष्ट, अविनीत न हो, सौम्य, शालीन, विनम्र।

अधेड़ *वि.* (तद्.) आधी उम्र का, उतरती उम्र का, ढलती जवानी का, जवानी और बुढ़ापे के बीच की अवस्था का।

अधेनु *स्त्री.* (तत्.) दूध न देने वाली गाय, ठाँठ गाय।

अधेला *पुं.हि.* आधा, पुराना एक सिक्का जो एक पैसा के मूल्य का आधा होता था, आधा पैसा।

अधेली *स्त्री.* (देश.) एक रूपये के आधे मूल्य का सिक्का, अठन्नी जो पहले आठ आने के बराबर और अब पचास पैसे के बराबर है।

अधैर्य *पुं.* (तत्.)धैर्य का अभाव, घबड़ाहट, व्याकुलता, उद्विग्नता, चंचलता, उतावलापन, असंयम *वि.* (तत्.) धैर्यरहित, व्याकुल, उद्विग्न, चंचल, उतावला, आतुर।

अधैर्यवान *वि.* (तत्.) धैर्यरहित, अधीर, व्यग्र, घबड़ानेवाला, आतुर, उतावला।

अधो *अव्य.* (तद्.) 1. अध: (अधस्) का एक समास गत रूप जैसे- 'अधोगति' 2. नीचे, तले।

अधोक्षज *पुं.* (तत्.) [अध:+अक्षज.] भगवान विष्णु 2. वासुदेव कृष्ण।

अधोगति *स्त्री.* (तत्.) 1. पतन, गिरावट 2. उतार, अवनति 3. दुर्गति, दुर्दशा 4. नरक जाना।

अधोगमन *पुं.* (तत्.) दे. अधोगति।

अधोगामी *वि.* (तत्.) 1. नीचे जानेवाला, अवनति की ओर जानेवाला 2. बुरी दशा को पहुँचनेवाला 3. नरक जानेवाला।

अधोजलीय *वि.* (तत्.) जल के भीतर या नीचे स्थित, निर्मित या होने वाला।

अधोजिह्व *वि.* (तत्.) जीभ के नीचे का।

अधोजिह्विका *स्त्री.* (तत्.) गले का कौआ।

अधोटी *स्त्री.* (तद्.) जानवरों की खाल की कीमत का का वह आधा भाग जो जानवर की लाश ढोने वाले से लिया जाता है।

अधोदेश *पुं.* (तत्.) शरीर का निचला भाग।

अधोद्भूत *पुं.* (तत्.) [अध:+उद्भूत] धँसे हुए बेलबूटे का चित्र बनाने की कला low relief

अधोद्वार *पुं.* (तत्.) गुदा।

अधोनिलय *पुं.* (तत्.) नरक।

अधोनीत *वि.* (तत्.) जो नीचे ले जाया गया हो *पुं.* वाणि. लेखा-अवधि की समाप्ति पर पृष्ठ के आर- पार रेखा खींचने के बाद नई लेखा-अवधि की प्रविष्टियां लिखने से पहले अंकित किया गया पिछली अवधि का लेखा-शेष carried down

अधोबिंदु *पुं.* (तत्.) खगो. आकाश मंडल का वह बिंदु जो दर्शक के ठीक नीचे हो। अध: स्वास्तिका nadir

अधोभाग *पुं.* (तत्.) (शरीर का) निचला भाग।

अधोभुवन *पुं.* (तत्.) पाताल आदि से नीचे स्थित लोक।

अधोभूमि *स्त्री.* (तत्.) 1. नीचे की जमीन, नीची जमीन 2. पर्वत के नीचे की जमीन 3. भूमि के नीचे स्थित (कोई संरचना)। underground

अधोभूमिक *वि.* (तत्.) शा.अर्थ भूमि के अंदर होने वाला या स्थित) वन. ऐसा अंकुरण जिसमें बीजपत्र भूमि के अंदर ही रह जाते हैं जैसे चने के बीज में तु. उपरिभूमिक।

अधोमंडल *पुं.* (तत्.) भूमि से साढ़े सात मील तक का ऊँचा वायुमंडल। hypozone

अधोमस्तक *वि.* (तत्.) वह व्यक्ति जो अपना मस्तक (सिर) झुकाए हुए हो।

अधोमार्ग *पुं.* (तत्.) 1. नीचे का मार्ग, सुरंग का मार्ग 2. गुदा।

अधोमुख *वि.* (तत्.) 1. नीचे मुख किए हुए 2. औंधा, उलटा *क्रि.वि.* मुँह लटकाए हुए।

अधोमूल *वि.* (तत्.) जिसका मूल या आधार नीचे हो।

अधोमूल्यन *पुं.* (तत्.) वास्तविकता से कम मूल्य आंकना, कम-मूल्यांकन undervaluation

अधोमृदा *स्त्री.* (तत्.) उपरिमृदा के ठीक नीचे की मिट्टी subsoil तु. उपरिमृदा।

अधोरेखा *स्त्री.* (तत्.) पाठक का ध्यान दिलाने के लिए शब्द या वाक्य के नीचे खींची गई रेखा।

अधोरेखांकन *पुं.* (तत्.) नीचे रेखा, लकीर खींचना, किसी शब्द, शब्द-समूह, वाक्य के नीचे रेखा खींचना, रेखा खींचने का उद्देश्य रेखांकित शब्द, वाक्य को महत्वपूर्ण बताना या उस ओर पाठक का ध्यान आकर्षित करना है 3. (लाक्षणिक) किसी बात पर बल, जोर देना।

अधोरेखांकित *वि.* (तत्.) जिसका अधोरेखांकन किया गया हो underlined

अधोरेखित *वि.* (तत्.) शब्द, पद, वाक्य जिसके नीचे रेखा खींची गई हो।

अधोलिखित *वि.* (तत्.) नीचे लिखा हुआ, निम्नलिखित।

अधोलोक *पुं.* (तत्.) नीचे का लोक, पाताल।

अधोवस्त्र *पुं.* (तत्.) शरीर के निचले भाग में पहना जाने वाला वस्त्र।

अधोवायु *स्त्री.* (तत्.) अपान वायु, गुदा की वायु, पाद, नीचे की हवा।

अधोवृद्धि वर्तन *पुं.* (तत्.) कृषि. किसी अंग की ऊपरी सतह की अपेक्षा निचली सतह की अधिक वृद्धि होना, जिसके कारण वह अंग ऊपर की ओर मुंड़ जाता है। hyponasty

अधोहनु *पुं.* (तत्.) आयु. निचले जबड़े की हड्डी mandible

अधोशुक *पुं.* (तत्.) 1. शरीर के नीचे के भाग में पहनने का वस्त्र (धोती, पाजामा आदि) 2. कोट आदि में लगा अस्तर।

अधोहस्ताक्षरी *वि.पुं.* (तत्.) शा.अर्थ. नीचे हस्ताक्षर करने वाला प्रशा. किसी प्रपत्र या प्रलेख की इबारत के नीचे हस्ताक्षर करने वाला। undersigned

अधौरी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी वृक्ष, बकली, धौरा।

अध्मान *पुं.* (तत्.) 1. ध्मान अर्थात् फूँक मारने का अभाव, फूँक न मारना 2. फुलाव, फैलाव या वृद्धि न होना 3. गर्वहीनता।

अध्यक्ष *पुं.* (तत्.) 1. सभापति 2. प्रधान, सरदार, मुखिया 3. मुख्य अधिकारी, अधिष्ठाता 4. स्वामी, मालिक।

अध्यक्षता *स्त्री.* (तत्.) अध्यक्ष होने की अवस्था, भाव 2. अध्यक्ष का पद, कार्य।

अध्यक्षर *क्रि.वि.* (तत्.) अक्षरशः *पुं.* (तत्.) ओउम् मंत्र या शब्द।

अध्यक्षीय *वि.* (तत्.) अध्यक्ष से संबंधित, अध्यक्ष का।

अध्यग्नि *पुं.* (तत्.) विवाह के समय अग्नि को साक्षी कर के कन्या को दिया जाने वाला दहेज। *अव्य.* विवाह की अग्नि के पास।

अध्यधिभाषा *स्त्री.* (तत्.) वह भाषा जिसके माध्यम से अधिभाषा के विषय में चर्चा की जाती है।

अध्यधीन *वि.* (तत्.) पूर्णतः अन्य के अधीन हो।

अध्ययन *पुं.* (तत्.) पठन-पाठन, पढ़ाई, अनुशीलन।

अध्ययनशील *वि.* (तत्.) अधिक अध्ययन करने के स्वभाव वाला, अधिक पढ़ने वाला।

अध्ययनार्थ *क्रि.वि.* (तत्.)) अध्ययन के लिए, अध्ययन के प्रयोजन के लिए।

अध्ययनावकाश *पुं.* (तत्.) अध्ययन के लिए छात्रों (और शिक्षकों) को दिया जाने वाला अवकाश।

अध्ययनीय *वि.* (तत्.) अध्ययन के योग्य, पठनीय।

अध्ययनेतर *वि.* (तत्.) [अध्ययन+इतर] अध्ययन से भिन्न, अध्ययन से बाहर के विषय, कार्य।

अध्यर्ध *वि.* (तत्.) जिसके पास आधा अधिक हो, एक से आधा अधिक, डेढ़ *पुं.* (तत्.) वायु जो सबको धारण करने वाली और वर्धित करने वाली है और सारे संसार में व्याप्त है।

अध्यवरोधन *पुं.* (तत्.) खेल. प्रतिपक्षी खिलाड़ी द्वारा प्रहार की गई गेंद को अपने पाले में पहुँचने से पहले ही जाल के ठीक ऊपर (हाथ को अपने पाले में ही रहने देकर) प्रतिपक्षी के पाले मे ही रोक देना। over blocking

अध्यवसान *पुं.* (तत्.) 1. प्रयत्न, निश्चय 2. दृढ़ता 3. प्रकृत-अप्रकृत की ऐसी अभिन्नता जिसमें एक दूसरे में पूर्णतया समाहित हो।

अध्यवसाय *पुं.* (तत्.) 1. लगातार उद्यम, दृढ़तापूर्वक किसी काम में लगा रहना, परिश्रम 2. लगन 3. दृढ़ निश्चय।

अध्यवसायी *वि.* (तत्.) 1. लगातार उद्यम करनेवाला, परिश्रमी, उद्योगी, उद्यमी 2. प्रयत्नशील 3. उत्साही।

अध्यवसित *वि.* (तत्.) जिसके लिए प्रयास संकल्प या उद्दयम किया गया हो, सुनिश्चित।

अध्यस्त *वि.* (तत्.) 1. जिसका आरोपण हुआ हो, आरोपित 2. किसी वस्तु में जिसका अध्यास (मिथ्या भ्रम) हो जैसे रात में रस्सी को साँप समझ लेना, यहां रस्सी 'अधिष्ठान' है और साँप 'अध्यस्त' है।

अध्यांतरण *पुं.* (तत्.) किसी वस्तु के स्थूल रूप से सूक्ष्म रूप और आध्यात्मिक रूप की ओर प्रवृत्त होने की क्रिया।

अध्यात्म *पुं.* (तत्.) 1. ब्रह्मविचार, ज्ञान, तत्व, आत्मज्ञान 2. परमात्मा 3. आत्मा 4. प्रत्येक शरीर में वर्तमान ब्रह्म की सत्ता या अंश *वि.* आत्मा संबंधी।

अध्यात्म शास्त्र *पुं.* (तत्.) अध्यात्मविद्या संबंधी ग्रंथ।

अध्यात्मज्ञान *पुं.* (तत्.) आत्मा और परमात्मा से संबंधित विवेक ज्ञान।

अध्यात्मदर्शी *वि.* (तत्.) आत्मा और परमात्मा का ज्ञान रखने वाला।

अध्यात्मपरक *वि.* (तत्.) अध्यात्म संबंधी, अध्यात्म विषयक।

अध्यात्मपरता *स्त्री.* (तत्.) 1. आत्मा-परमात्मा, दिव्य शक्तियों आदि की सत्ता एवं स्वरूप का प्रतिपादक सिद्धांत 2. आत्मा सर्वत्र व्याप्त है ऐसा मानने का सिद्धांत।

अध्यात्मयोग *पुं.* (तत्.) मन को अन्य विषयों की ओर से हटा कर परमात्मा की ओर केंद्रित करना।

अध्यात्मवाद *पुं.* (तत्.) 1. आत्मा, परमात्मा, दिव्य शक्तियों आदि की सत्ता एवं स्वरूप का प्रतिपादक सिद्धांत 2. आत्मा सर्वत्र व्याप्त है ऐसा मानने का सिद्धांत।

अध्यात्मवादी *पुं.* (तत्.) 1. अध्यात्मवाद का ज्ञाता 2. अध्यात्मवाद में विश्वास रखने वाला।

अध्यात्मविद् *पुं.* (तत्.) वह आत्मज्ञानी जिसे अपने स्वरूप या आत्मा-अनात्मा का साक्षात् हो गया है।

अध्यात्मविद्या *स्त्री.* (तत्.) जीव और परमात्मा का स्वरूप बताने वाली विद्या, अध्यात्मज्ञान की विद्या।

अध्यात्मा *पुं.* (तत्.) परमात्मा, ईश्वर।

अध्यात्मिक *वि.* (तत्.) अध्यात्मा-संबंधी ।

अध्यादेश *पुं.* (तत्.) संसद अथवा विधानमंडल के विश्रांति काल में, आवश्यक होने पर राष्ट्रपति या राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित (जारी) आदेश जो अधिक से अधिक छह मास तक प्रवृत्त रह सकता है। ordinance

अध्यादेश प्रख्यापन *पुं.* (तत्.) संसद अथवा विधानमंडल के विश्रांतिकाल में राज्याध्यक्ष द्वारा विधि (कानून) के रूप में लागू किए जाने वाले अध्यादेश की घोषणा। proclaimation of ordinance

अध्याना *पुं.* (तत्.) आग का एक गड्ढा-सा जिसके पास बैठकर किसान जाड़ों में आग सेकते हैं।

अध्यापक *पुं.* (तत्.) शिक्षक, गुरु, पढ़ानेवाला, मास्टर, उस्ताद।

अध्यापक शिक्षा *वि.* (तत्.) अध्यापक की सेवावधि मे ही उसे दिया जाने वाला नियतकालिक शैक्षिक प्राशिक्षण।

अध्यापकी *स्त्री.* (तत्.)अध्यापन या पढ़ाने का काम।

अध्यापन *पुं.* (तत्.) शिक्षण, पढ़ाने का कार्य।

अध्यापिका *स्त्री* (तत्.) पढ़ाने वाली, शिक्षिका।

अध्याप्त *वि.* (तत्.) अधिकार-सहित प्राप्त किया हुआ।

अध्याप्ति *स्त्री.* (तत्.) किसी वस्तु पर अधिकार करने या उसे प्राप्त करने की प्रक्रिया।

अध्याय *पुं* (तत्.) 1. ग्रंथ का विभाग, पाठ, सर्ग, खंड 2. परिच्छेद।

अध्यायी *वि.* (तद्.) अध्ययन में लगा हुआ *पुं.* विद्यार्थी।

अध्यारूढ़ *वि.* (तत्.) 1. आरूढ़, चढ़ा हुआ, सवार 2. आक्रांत, अत्यधिक 3. श्रेष्ठतर, किसी की तुलना में उससे श्रेष्ठ, ऊँचा।

अध्यारोप *पुं.* (तत्.) 1. एक वस्तु के गुण-धर्म को दूसरी में आरोपित करना 2. मिथ्या ज्ञान।

अध्यारोपण *पुं.* (तत्.) 1. किसी वस्तु या संरचना पर ऊपर से स्थापित संलग्न, संयुक्त या संग्रहित की गई वस्तु या संरचना 2. बीज बोना।

अध्यारोपित *पुं.* (तत्.) अध्यारोपण किया हुआ, (भ्रमवश) आरोपित।

अध्यारोही [अधि+आरोही] *वि.* (तत्.) विधि. लागू नियमों पर भी लागू होने वाला; सब पर प्रभावी, अधिभावी। over riding

अध्यावरण *पुं.* (तत्.) ऊतक की पर्त जो शरीर के किसी भाग या अंग को आवृत्त करती है।

अध्यावाहनिक *पुं.* (तत्.) कन्या को पिता के घर से पति के घर जाते समय मिला धन, स्त्री-धन।

अध्यास *पुं.* (तत्.) गलत दिशा की ओर चलना। (वेदांत) स्मृति रूप तथा कभी अनुभूत वस्तु की अन्यत्र प्रतीति या मिथ्याभास, भ्रांत ज्ञान, अध्यारोप, जैसे- अंधेरे में रस्सी को सर्प समझ लेना।

अध्यास(न) *पुं* (तत्.) 1. किसी स्थान पर कब्जा करना 2. भ्रांत ज्ञान, मिथ्या ज्ञान 3. आवास (स्थल)।

अध्यासवाद *पुं.* (तत्.) वेदांत. आदि शंकराचार्य द्वारा विश्व के विषय में प्रतिपादित अध्यास का सिद्धांत, मिथ्या प्रतीति का सिद्धांत जिसके अनुसार सच्चिदानंद ब्रह्मरूप "आत्मा" देहादि से अपना तादात्म्य मानकर स्वयं को सुख-दुख का कर्ता एवं भोक्ता मानती है।

अध्याहार *पुं.* (तत्.) 1. वाक्य को पूरा करने के लिए उसमें और कुछ शब्द ऊपर से जोड़ना 2. अस्पष्ट वाक्य को अन्यथा स्पष्ट करने की प्रक्रिया 3. तर्क-वितर्क 4. ऊहापोह।

अध्याहृत *वि.* (तत्.) अध्याहार किया हुआ।

अध्यूढ *वि.* (तत्.) 1. उच्च, उन्नत, समृद्ध 2. अत्यधिक *पुं.* (तत्.) 1. शिव 2. किसी स्त्री का वह पुत्र जो विवाह के पूर्व उत्पन्न हो।

अध्यूढा *स्त्री.* (तत्.) वह स्त्री जिसके रहते पति दूसरा विवाह कर ले, ज्येष्ठा पत्नी।

अध्येतव्य *वि.* (तत्.) जिसे पढ़ना चाहिए, अध्ययन के योग्य विषय, पुस्तक, पठनीय, अध्येय।

अध्येता *पुं.* (तत्.) 1. उच्च कक्षा का छात्र 2. विषय-विशेष का विद्वान 3. विद्यार्थी। scholar

अध्येता दोष *पुं.* (तत्.) उच्चारण या व्याकरण संबंधी वे गलतियाँ जो छात्र सीखते समय करते हैं।

अध्येतावृत्ति *स्त्री.* (तत्.) उच्चशिक्षा या उच्चस्तरीय शोध हेतु दिया गया अनुदान, जैसे- जवाहरलाल नेहरू अध्येतावृत्ति fellowship तु. छात्रवृत्ति।

अध्येय *वि.* (तत्.) अध्ययन करने योग्य।

अध्येषणा *स्त्री.* (तत्.) याचना, प्रार्थना, निवेदन।

अध्रुव *पुं.* (तत्.) (जो ध्रुव अर्थात् निश्चित या स्थिर न हो) 1. चल, चंचल, चलायमान, डावांडोल, अस्थिर, अनित्य 2. अनिश्चित।

अध्व *पुं.* (तत्.) रास्ता, पथ, मार्ग दे. अध्वा।

अध्वग *पुं.* (तत्.) अध्व पर चलने वाला, बटोही, यात्री, पथिक, राही।

अध्वगा *स्त्री.* (तत्.) नदी, गंगानदी।

अध्वगामी *वि.* (तत्.) यात्रा करने वाला, यात्री।

अध्वनीन *पुं.* (तत्.) यात्री, मुसाफिर। *वि.* (तत्.) 1. यात्रा में तेज चलनेवाला 2. यात्रा करने योग्य।

अध्वन्य *पुं.* (तत्.) दे. अध्वनीन।

अध्वपति *पुं* (तत्.) 1. सूर्य 2. मार्गदर्शक।

अध्वर *पुं.* (तत्.) 1. यज्ञ, सोमयज्ञ 2. आकाश 3. वायु *वि.* (तत्.) 1. सरल 2. सावधान 3. अबाध।

अध्वर्यु *पुं.* (तत्.) ऋत्विक, यजुर्वेदी ऋत्विक।

अध्वा *पुं.* (तत्.) 1. रास्ता, पथ, राह 2. यात्रा 3. दूरी, काल।

अध्वांत *पुं.*(तत्.) 1. बहुत थोड़ा अंधेरा, ईशत या किंचित अंधकार 2. उषाकाल 3. गोधूलि वेला, सायंकाल 4. मार्ग का अंत, रास्ते की सीमा 5. मार्ग का अंत।

अध्वाति *पुं.* (तत्.)1. पथिक, यात्री 2. चतुर व्यक्ति।

अन *पुं.* (तत्.) 1. श्वास-प्रश्वास 2. *अव्य.* बिना, बगैर आदि अर्थ का बोधक हिंदी का एक निषेधात्मक उपसर्ग जो व्यंजन से प्रारंभ होने वाले शब्दों से पहले लगता है जैसे- अनपढ़, अनहोनी।

अनंग *वि.* (तत्.) देहरहित, बिना अंग का, आकृतिहीन। *पुं.* (तत्.) 1. वह जिसके अंग न हो 2. कामदेव 3. मन 4. आकाश 5. निराकार।

अनंगक *पुं.* (तत्.) मन, चित्त, (जो शरीर के अंग के रूप में नहीं होते)।

अनंगक्रीड़ा *स्त्री.* (तत्.) 1. कामक्रीड़ा 2. मुक्तक का का एक भेद जिसके प्रथम चरण में दीर्घ वर्ण और द्वितीय चरण में 32 लघुवर्ण होते हैं।

अनंगद *वि.* (तत्.) कामोत्पादक।

अनंगवती *वि.स्त्री.* (तत्.) कामिनी।

अनंगवर्णन *पुं.* (तत्.) साहि. रसदोष का एक भेद। रस के अनपकारक दृश्य आदि का वर्णन होने का दोष।

अनंगशत्रु *पुं.*(तत्.) कामदेव के शत्रु, शिव, महादेव।

अनंग शेखर *पुं.* (तत्.) साहि. दंडक नामक वर्णिक छंदों का एक प्रकार जिसके प्रत्येक चरण में लघु-गुरु वर्णों का मनमाना प्रयोग हो सकता है। इस छंद को "द्विनाराचिका" और "महानाराच" भी कहा जाता है।

अनंगारि *पुं.* (तत्.) दे. अनंगशत्रु।

अनंगी *वि.* (तद्.) 1. बिना देह का, अशरीर, अंगरहित, अंगविहीन 2. अपाहिज। *पुं.* (तद्.) 1. निराकार परमेश्वर 2. कामदेव।

अनंगीकरण *पुं.* (तत्.) 1. स्वीकार न करना, दायित्व को न मानना 2. अनंग बनाना, अंगरहित करना।

अनंगीकार *पुं.* (तत्.) 1. किसी प्रभाव या सत्ता को न मानना, अस्वीकरण, किसी आज्ञा, सत्ता या बात को मानने से इंकार 2. अंगीकरण या स्वांगीकरण न करने की स्थिति।

अनंगीकृत *वि.* (तत्.) जिसे स्वीकार न किया गया हो, अस्वीकार।

अनंगुलि *वि.* (तत्.) अंगुलिहीन, बिना अंगुलियों का, अंगुलियों से हीन या रहित।

अनंजन *वि.* (तत्.) 1. अंजन रहित, अंजनशून्य 2. निर्दोष *पुं.* (तत्) 1. विवेक रहित 2. परमेश्वर (अप्रकट शरीरी कामदेव) 3. अनभ्र, आकाश।

अनंत *वि.* (तत्.) 1. जिसका अंत न हो, जिसका पार न हो, असीम, अपार 2. बहुत अधिक, असंख्य, अनेक 3. अविनाशी 4. नित्य *पुं.* 1. विष्णु 2. शेषनाग 3. लक्ष्मण 4. बलराम 5. आकाश 6. अभ्रक 7. विष्णु का शंख 8. शिव, रुद्र 9. मोक्ष 10. वासुकि 11. बादल 12. श्रवण नक्षत्र 13. ब्रह्म।

अनंत समाकल *वि.* (तत्.) वाणि. वह समाकल, जिसका समाकलन अंतराल परिबद्ध न हो।

अनंतकाय *पुं.* (तत्.) जैनियों के अनुसार उन वनस्पतियों का समुदाय विशेष जिनके खाने का निषेध है। *वि.* (तत्.) बहुत बड़े शरीर वाला।

अनंतग *वि.* (तत्.) अनंत काल तक चलने वाला।

अनंतगुण *वि.* (तत्.) बहुत अधिक गुणों से युक्त।

अनंतचरित्र *पुं.* (तत्.) एक बोधिसत्व।

अनंतजित् *पुं.* (तत्.) 1. वासुदेव कृष्ण 2. चौदहवें जैन अरिहंत।

अनंतता *स्त्री.* (तत्.) 1. असीमत्व 2. सातत्य 3. अत्यधिकता।

अनंतदेव *पुं.* (तत्.) 1. शेषनाग 2. शेषशायी विष्णु।

अनंतर *क्रि.वि.* (तत्.) 1. बाद, उपरांत 2. निरंतर, लगातार 3. पीछे *वि.* (तत्.) अंतरहित, निकटस्थ *पुं.* (तत्.) समीपता, निकटता।

अनंतरणीय *वि.* (तत्.) जिसे अन्य को अंतरित या हस्तांतरित न किया जा सके।

अनंतरित *वि.* (तत्.) 1. जिसमें बाधा, रुकावट न आई हो 2. जिनके बीच में कोई अंतर, भेद या बाधा न हो। 3. जो निरंतर रहे, अखंड, अटूट।

अनंतरीय *वि.* (तत्.) (जन्म, उन्नति आदि में) जो क्रम में किसी के तत्काल बाद हो, एकदम अगला, क्रम में अगला।

अनंतरूप *वि.* (तत्.) 1. अनगिनत रूपों वाला 2. विष्णु का एक विशेषण।

अनंतर्हित *वि.* (तत्.) 1. लगा, सटा हुआ, मिला हुआ 2. क्रमबद्ध 3. अखंड 4. जो छिपा हुआ या गूढ़ न हो 5. जो अदृश्य, गायब न हुआ हो।

अनंतवान *वि.* (तत्.) जिसका अंत होने वाला न हो, अंतरहित, असीम या नित्य।

अनंतविजय *पुं.* (तत्.) युधिष्ठर के शंख का नाम *वि.* असंख्य बार विजय दिलाने वाला।

अनंतशक्ति *वि.* (तत्.) 1. असीम शक्ति वाला 2. सर्वशक्तिमान 3. परमात्मा।

अनंतशायी *पुं.* (तत्.) शेषनाग पर शयन करने वाला (भगवान विष्णु), अनंतशयनम्।

अनंतशीर्ष *पुं.* (तत्.) सहस्रशीर्ष विष्णु, परमेश्वर, शेषनाग।

अनंतशीर्षा *स्त्री.* (तत्.) वासुकि नाग की पत्नी।

अनंतश्री *वि.* (तत्.) अनंत ऐश्वर्य से युक्त, असीम श्री, सौन्दर्य वाला, परमात्मा।

अनंतस्थ *वि.* (तत्.) अनंत पर स्थित, गणित में 'अनन्त बिन्दु' की कल्पना इसकी स्थिति को असंभव मानते हुए भी की गई है जैसे समांतर रेखाएँ अनंतस्थ बिंदु पर मिलती हैं।

अनंतस्पर्शी *वि.* (तत्.) किसी वक्र रेखा को अनंत पर स्पर्श करने वाली सरल रेखा, वह सरल रेखा जो निरंतर किसी वक्र रेखा की ओर प्रवृत्त होती जाती है परंतु उसे कभी स्पर्श नहीं करती।

अनंता *स्त्री.* (तत्.) 1. पृथ्वी 2. पार्वती (देवी) 3. रेशमी धागों का बना एक आभूषण जो अनंत चतुर्दशी को दाहिनी भुजा में स्त्रियों द्वारा बांधा जाता है।

अनंताधिवासी *वि.* (तत्.) अनंत में निवास करने वाला, सर्वव्यापी, परमात्मा।

अनंताभिधेय *वि.* (तत्.) अगणित नामों वाला, ईश्वर, परमात्मा।

अनंतिम *वि.* (तत्.) जिसे (अभी) अंतिम रूप नहीं दिया गया हो। अंतिम निर्णय से पहले का, जिसे अभी प्रयोग के तौर पर देखा जा रहा हो तु. अंतरिम।

अनंत्य *वि.* (तत्.) [अन्+अन्त्य] 1. अनंतता, असीमता, जो कभी समाप्त न हो 2. नित्यता।

अनंद *वि.* (तत्.) [अ+नन्द] आनंदरहित, हर्षरहित, प्रसन्नतारहित (पुं.) आनंद, हर्ष का अभाव 2. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, रगण, जगण, रगण, लघु और गुरु (ज र ज र ल ग) के योग ये 14 वर्ण होते हैं।

अनंबर *वि.* (तत्.) अंबर अर्थात् वस्त्र से रहित, निर्वस्त्र, नंग *पुं.* एक प्रकार का जैन साधु दिगंबर।

अनंभ *वि.* (तत्.) [अन+अंभस] 1. जल रहित 2. बिना विघ्न-बाधा का, विघ्नरहित।

अनंश *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई अंश, भाग न हो 2. पैतृक संपत्ति में भाग न पाने वाला।

अन-अपीलीय *वि.* (संकर) वह निर्णय जिस के विषय में उच्चतर न्यायालय अथवा उच्चतर प्राधिकरण आदि के समक्ष पुनर्विचार के लिए आवेदन नहीं हो सकता।

अनकंप *वि.* (तद्.) 1. कंपनरहित 2. दृढ़, पक्का 3. स्थिर।

अनक *पुं.* *(तद्.)* 1. बड़ा ढ़ोल, नगाड़ा 2. गरजने वाला, बादल।

अनकहनी *वि.* (तद्.) 1. न कहने योग्य, अकथनीय 2. अनुचित।

अनकहा *वि.* (तद्.) बिना कहा हुआ, अनुक्त, अकथित।

अनकाढ़ा *वि.* (तद्.) जो निकाला न गया हो, बिना निकाला हुआ।

अनक्ष *वि.* (तत्.) 1. बिना आँख का, अंधा 2. जहाँ बहेड़ा या रुद्राक्ष का वृक्ष न हो 3. जिसका अक्ष न हो, अक्षर हित।

अनक्षर *वि.* (तत्.) 1. निरक्षर 2. बिना शब्द-प्रयोग किए, बिना शब्द-उच्चारण किए *वि.* 1. गूँगा 2. मूर्ख। *पुं.* (तत्.) दुर्वचन, गाली।

अनक्षि *वि.* (तत्.) 1. खराब आँख 2. बिना आँख वाला।

अनख *पुं.* (तत्.) 1. झुँझलाहट, नाराजगी 2. क्रोध 3. अनिच्छा 4. असंतोष *वि.* 2. बिना नाखून का, नखहीन।

अनखना *क्रि.वि.* (तद्.) 1. क्रोध करना, क्रोधित होना 2. रुष्ट होना।

अनखा *पुं.* (तद्.) काजल की बिंदी, डिठौना।

अनखाना *स.क्रि.* (तद्.) अप्रसन्न करना, नाराज करना, खिझाना *अ.क्रि.* अप्रसन्न होना, किसी पर क्रोध करना।

अनखारी *वि.* (तद्.) अनख करने वाली, अप्रसन्न होने वाली, खीझने वाली।

अनखाहट *स्त्री.* (तद्.) 1. अनखने या क्रोध दिखलाने की क्रि या 2. खीझ।

अनखी *वि.* (तद्.) क्रोधी, जो जल्दी क्रोधित हो, गुस्सावर।

अनखुला *वि.* (तत्.) 1. जो खुला न हो, बंद 2. जिसका कारण प्रकट न हो, गुप्त।

अनखेला अग्रण *पुं.* (तत्.) बिना खेले ही अगले चक्र में स्वत: प्रवेश की स्थिति bye pass

अनखौहां *वि.* (तद्.) 1. क्रोध से भरा हुआ, कुपित 2. रुष्ट 3. चिड़चिड़ा।

अनगढ़ *वि.* (तद्.) 1. बिना गढ़ा हुआ 2. अपरिष्कृत, असंस्कृत 3. बेतुका, बेसिर-पैर का 4. बेडौल, बेढंगा 5. स्वयंभू।

अनगना *सं.क्रि.* (तद्.) 1. ढका हुआ 2. छाजन में टूटे हुए खपड़ों के स्थान पर नए लगाना *वि.* (तद्.) 1. जो गिना न गया हो, न गिना हुआ 2. अगणित, बहुत।

अनगाना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. विलंब करना, देर करना 2. टालमटोल करना *स.क्रि.* (तद्.) सँवारना, सुलझाना (केश आदि)।

अनगाया *वि.* (तद्.) 1. जिसे गाया न गया हो। अनगाया गीत 2. जिसने (गीत आदि) गाया न हो।

अनगार *वि.* (तत्.) गृहहीन, बिना अगार या घर का। *पुं.* (तत्.) घूमने फिरनेवाला संन्यासी।

अनगिन *वि.* (तद्.) दे. अनगिनत।

अनगिनत *वि.* (तत्.) जिसकी गिनती न हो, अगणित, असंख्य, बहुत।

अनगिना, अनगिने *वि.* (तद्.) 1. जो गिना न गया हो 2. असंख्य।

अनगुथा *वि.* (तद्). जो गूंथा या पिरोया न गया हो।

अनग्नि *वि.* (तत्.) अग्निहोत्र न करने वाला। पुं. अग्नि से भिन्न पदार्थ, अग्नि का अभाव।

अनग्निदग्ध *वि.* (तत्.) जिसका शव अंत्येष्टि कर्म द्वारा जलाया न गया हो, जिसे गाड़ा गया हो या यों ही छोड़ा गया हो।

अनघ *वि.* (तत्.) 1. अघ अर्थात् पाप से रहित, निष्पाप, पातकरहित 2. निर्दोष, बेगुनाह 3. पवित्र, शुद्ध *पुं.* (तत्.) 1. वह जो पाप न हो 2. पुण्य।

अनघड़ी *स्त्री.* (तत्.) 1. कुघड़ी, असमय, बेवक्त, बेमौका 2. कुसमय।

अनघोर *पुं.* (तत्.) अत्याचार, ज्यादती, अंधेर।

अनघोरी *क्रि.वि.* (तद्.) 1. अचानक 2. चुपके से।

अनचाखा *वि.* (तद्.) 1. जो चखा न गया हो, जिसका स्वाद न लिया गया हो, अनास्वादित। 2. लाक्ष. जो अपने अनुभव में न आया हो।

अनचाहत *वि.* (देश.) 1. न चाहने की स्थिति 2. प्रेमविहीनता *पुं.* (तद्.) न चाहनेवाला या प्रेम न करनेवाला व्यक्ति।

अनचाहा *वि.* (देश.) 1. जिसकी चाह या इच्छा न की गई हो, अनिच्छित 2. अप्रिय।

अनचिंता *वि.* (तद्.) जो विचारा, सोचा न गया हो, चिंतारहित।

अनचीता *वि.* (तद्.) 1. जिसके विषय में पहले विचार न किया गया हो 2. अनचाहा।

अनचीन्हा *वि.* (तद्.) अपरिचित, अजनबी, अनजाना, अचिह्नित, अनचीता।

अनचेता *वि.* (तद्.) न सोचा हुआ, अचिंतित।

अनछिला *वि.* (तद्.) बिना छिला हुआ, छिलके सहित।

अनछुआ *वि.* (तद्.) जिसे छुआ न गया हो, जिसे र्स्पश न किया गया हो, अस्पष्ट।

अनजन्मा *वि.* (तद्.) जिसका जन्म न हुआ हो, जिसने कभी जन्म न लिया हो, अजन्मा, परमात्मा।

अनजला *वि.* (तद्.) जो जला न हो, अनजली लकड़ी, अनजला सामान।

अनजान *वि.* (तद्.) 1. जिसे जानकारी न हो 2. अनभिज्ञ 3. नासमझ, नादान, सीधा, भोला-भाला 4. अज्ञात, बिना जाना हुआ, जिसके बारे में जानकारी न हो 5. अपरिचित।

अनजाने *क्रि.वि.* (तद्.) बिना जाने हुए, बिना समझे हुए, अज्ञान से।

अनजाया *वि.* (तद्.) अजन्मा, अजात।

अनजोखा *वि.* (तद्.) बिना जोखा हुआ, बिना तौला हुआ, जिसकी जांच-परख न की गई हो।

अनत *वि.* (तत्.) 1. सीधा, न झुका हुआ 2. अनम्र *क्रि.वि.* (तद्.) अन्यत्र, और कहीं, दूसरी जगह, भिन्न स्थान में।

अनति *वि.* (तत्.) 1. बहुत नहीं, थोड़ा। *स्त्री.* (तत्.) 1. नम्रता का अभाव, विनीत भाव का न होना 2. झुकाव का न होना 3. अहंकार।

अनतिक्रमणीय *वि.* (तत्.) जिसका उल्लंघन या अतिलंघन स्वीकार्य या संभव न हो। inviolable

अनतिदूर *क्रि.वि.* (तत्.) (स्त्री.) बहुत दूर नहीं, कुछ ही दूरी पर।

अनतिविलंबिता *स्त्री.* (तत्.) बहुत विलम्ब या देरी न होना।

अनतिविस्तार *वि.* (तत्.) थोड़ा कम विस्तार, संक्षेप।

अनदेखा *वि.* (तद्.) अदेखा, अदृष्ट, बिना देखा हुआ।

अनदेखी *स्त्री.* (तत्.) उपेक्षा, ध्यान न देने का भाव। भाव।

अनद्य *पुं.* (तत्.) सफेद सरसों *वि.* जो खाने योग्य न हो, अखाद्य।

अनद्यतन *वि.* (तत्.) आज से पहले या बाद का, आज से संबंध न रखनेवाला, जो आज तक का न हो अर्थात् पुराना हो, जो अधुनातन या नवीनतम नहीं है।

अनद्यतन भूत *पुं.* (तत्.) जो अद्यतन न हो, अर्थात् पुराना भाषा. भूतकाल का वह (क्रिया) रूप जो आज की बीती घटनाओं को न बता कर आज से पहले की बीती घटनाओं को बताता हो, संस्कृत में लङ् लकार।

अनधिक *वि.* (तत्.) 1. जो अधिक न हो, निर्दिष्ट मात्रा या सीमा से अधिक नहीं 2. पूर्ण 3. असीम 4. जिससे बढ़कर न हो 5. जिसे बढ़ाया न जा सके 6. अल्प वाणि. दर्शित या अंकित राशि से किसी दशा में अधिक नहीं।

अनधिकार *पुं.* (तत्.) 1. अधिकार का अभाव, अधिकार-सीमा में न होना 2. प्रभुत्व का अभाव। *वि.* (तत्.) अधिकार-रहित, बिना अधिकार का।

अनधिकार चर्चा *स्त्री.* (तत्.) 1. बिना किसी अधिकार या योग्यता के किसी विषय पर बोलना 2. जिस विषय में ज्ञान न हो, उसमें टाँग अड़ाना।

अनधिकार चेष्टा *स्त्री.* (तत्.) बिना किसी अधिकार के कोई कार्य करना या करने का प्रयत्न करना।

अनधिकार प्रवेश *पुं.* (तत्.) जहां जाने का अधिकार न हो वहां जाना।

अनधिकारिक *वि.* (तत्.) 1. अनधिकारपूर्ण 2. गैर सरकारी 3. अप्राधिकृत रूप से।

अनधिकारिता *स्त्री.* (तत्.) 1. अधिकार-शून्यता, अधिकार का अभाव 2. अधिकारिता का अभाव, क्षेत्राधिकार अथवा अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत न होने की स्थिति।

अनधिकारी *वि.* (तत्.) 1. जो अधिकारी न हो, जिसे अधिकार न दिया गया हो 2. जो किसी विषय विशेष का पारंगत विद्वान न हो।

अनधिकृत *वि.* (तत्.) 1. अधिकार-सीमा से बाहर 2. जिस के लिए अधिकार न दिया गया हो।

अनधिकृत कॉलोनी/बस्ती *स्त्री* [तत्.+अंग.] नगर-नगर-नियोजन के नियमों के विरुद्ध बसे या बसाए गए छोटे-बड़े आवासीय समूह।

अनधिकृत प्रवेश *पुं.* (तत्.) बिना किसी अधिकार के किसी अन्य के आवास, भूमि आदि में अवैध प्रवेश।

अनधिकृत हड़ताल *पुं.* (तत्.) श्रमिकों द्वारा बिना किसी सूचना के अथवा अपने संघ की औपचारिक स्वीकृति के बिना की जाने वाली हड़ताल।

अनधिगत *वि.* (तत्.) 1. बिना समझा हुआ, बिना जाना हुआ 2. अप्राप्त।

अनधिगम्य *वि.* (तत्.) 1. जो पहुँच से बाहर हो, अप्राप्य, दुष्प्राप्य 2. अज्ञेय, दुर्बोध।

अनधित्यजन *वि.* (तत्.) जिसे हटाया या दूर न किया जा सके।

अनधित्यजन करार *पुं.* (तत्.) ऐसा अनुबंध जिसे हटाया या दूर न किया जा सके। ऐसी सहमति जिससे मुकरना संभव न हो।

अनधिपत्रित अफसर *पुं.* [तत्.+अं.] सैवि. अराजपत्रित अफसर, कनिष्ठ अफसर, ओहदेदार, (एन.सी.ओ) नॉन कमीशंड अफसर तु. अधिपत्रित अफसर।

अनधिभारित डाक *पुं.* (तत्.) (संचार.) ऐसी डाक जिस पर अधिभार न लिया गया हो या न लिया जाए।

अनधिवासित *वि.* (तत्.) विधि. जिस पर किसी का निवास न हो, जैसे अनधिवासित भूमि में फल वाले वृक्ष लगाने चाहिए।

अनधिष्ठित *वि.* (तत्.) 1. जो (अधिकारी के) पद पर नियुक्त न हुआ हो 2. जो उपस्थित न हो।

अनधिसंभाव्य *वि.* (तत्.) 1. जिसके होने की न तो आशा हो और न ही संभावना, अप्रायिक 2. सांख्यिकी जो प्रायिकता बंटन के यदृच्छा निर्धारित अनुक्रम के अनुसार न हो।

अनधिसूचित *वि.* (तत्.) जो अधिसूचित न किया गया हो। जिसकी अधिसूचना न की गई हो।

अनधिसूचित कर्ज *पुं.* (तत्.) अर्थ. ऐसा ऋण जिसकी अधिसूचना न दी गई हो या जिसका सार्वजनिक रूप से कहीं उल्लेख न किया गया हो।

अनधिहरित *वि.* (तत्.) प्रशा. 1. जिसे जब्त न किया गया हो 2. जिसे समाप्त न किया गया हो, बनाये रखा गया हो।

अनधीन *वि.* (तत्.) जो किसी के अधीन न हो, स्वतंत्र।

अनधीनता *स्त्री.* (तत्.) 1. अधीनता स्वीकार न करने की स्थिति 2. बड़े अधिकारी के अधीन होते हुए भी उसकी आज्ञा का पालन न करना या अवज्ञा करना। insubordination

अनधीर *वि.* (तत्.) जो अधीर न हो, धैर्ययुक्त।

अनधुला *वि.* (तद्.) बिना धुला, अनधुला वस्त्र।

अनध्यक्ष *वि.* (तत्.) 1. जो दीख न पड़े, अप्रत्यक्ष, नजर से बाहर 2. अध्यक्षरहित, बिना मालिक का।

अनध्ययन *पुं.* (तत्.) 1. अध्ययन न होना, अध्ययन का अभाव 2. अध्ययनकाल विराम।

अनध्यवसाय *पुं.* (तत्.) 1. अध्यवसाय या प्रयत्न या परिश्रम का अभाव 2. अतत्परता।

अनध्याय *पुं.* (तत्.) वह दिन जिसमें पढ़ने-पढ़ाने का काम न हो, जिस दिन शास्त्र पर चर्चा न हो, छुट्टी का दिन।

अनन *पुं.* (तत्.) 1. सांस लेना, श्वास-ग्रहण करने की क्रिया 2. जीना।

अननुकूल [अन्+अनुकूल] *वि.* (तत्.) 1. जो अनुकूल न हो, प्रतिकूल, विपरीत, विषम, उल्टा।

अननुग्रह *वि.* (तत्.) किसी व्यक्ति, वस्तु आदि को नापसंद करने या अनुग्रहयोग्य न मानने का भाव disfavour

अननुज्ञप्त *वि.* (तत्.) 1. जिसकी या जिसे (आधिकारिक) अनुमति न मिली हो 2. जिसे अनुज्ञप्ति licence प्राप्त न हुई हो।

अननुज्ञात *वि.* (तत्.) जिसकी अनुमति अथवा अनुज्ञा नहीं दी गई हो, जिसे स्वीकृत नहीं किया गया हो; नामंजूर disallowed

अननुज्ञापित *वि.* (तत्.) जिसकी अनुज्ञप्ति न की गई हो, जिसकी स्वीकृति न दी गई हो।

अननुज्ञेय [अन्+अनुज्ञेय] *वि.* (तत्.) जो ग्राह्य, मान्य अथवा अनुज्ञेय न हो।

अननुदिष्ट *वि.* (तत्.) किसी कार्य के लिए जिसे अनुदेश, निर्देश न दिया गया हो, अनुदिष्ट का विलोम।

अननुनासिक *वि.* (तत्.) जो अनुनासिक न हो, निरनुनासिक, सानुनासिक का विलोम।

अननुपात *पुं.* (तत्.) गणि. अनुपातहीनता

अननुपालन *पुं.* (तत्.) आज्ञा आदि का पालन न होना।

अननुप्रमाणित *वि.* (तत्.) जो अनु-प्रमाणित अथवा साक्ष्यांकित न हो। unattested

अननुभावक *वि.* (तत्.) जो समझने में असमर्थ हो।

अननुभावकता *स्त्री.* (तत्.) 1. ज्ञान का अभाव 2. अबोध, अज्ञान, अज्ञानता।

अननुभाषण *पुं.* (तत्.) वादी के भाषण का प्रतिवादी द्वारा उत्तर न दिए जाने की स्थिति।

अननुभूत *वि.* (तत्.) जिसका अनुभव न हुआ हो।

अननुमत *वि.* (तत्.) जिसकी अनुमति या स्वीकृति न हो।

अननुमोदन *वि.* (तत्.) अनुमोदित न होने की स्थिति या भाव, अनुमोदित न करना, उचित न मानना disapproval

अननुमोदित *वि.* (तत्.) कार्य का प्रस्ताव आदि जिसका अनुमोदन, समर्थन न किया गया हो 2. अस्वीकृत, नामंजूर विलो. अनुमोदित।

अननुरूप *वि.* (तत्.) 1. जो (किसी के) अनुरूप न हो 2. जो किसी की मर्यादा के विपरीत हो।

अननुषंगी *वि.* (तद्.) जो अनुषंगी या सहायक न हो, जो संबंधित न हो।

अननुष्ठान *पुं.* (तत्.) अनुष्ठान का अभाव, किसी क्रिया का संपन्न न होना।

अननुसूचित *वि.* (तत्.) जिसे अनुसूची में सम्मिलित नहीं किया गया है विलो. अनुसूचित।

अनन्न *पुं.* (तत्.) 1. अन्न से भिन्न पदार्थ जो खाने योग्य न हो 2. ऐसा (चावल या) खाद्य पदार्थ जो निम्न कोटि का हो।

अनन्नास *पुं.* (तत्.) एक फल जिसके ऊपरी भाग में अंकुरों जैसी एक मोटी और लंबी गाँठ-सी बन जाती है, इसका स्वाद खटमिट्ठा होता है।

अनन्य *वि.* (तत्.) 1. अन्य से संबंध न रखने वाला, एकनिष्ठ, एक में लीन 2. अद्वितीय 3. अभिन्न 4. अविभक्त।

अनन्यगति *वि.* (तत्.) जिसका दूसरा सहारा या गति न हो।

अनन्यगुरु *वि.* (तत्.) 1. जिससे बड़ा कोई न हो 2. एक ही गुरु वाला।

अनन्यचित्त *वि.* (तत्.) जिसका चित्त किसी अन्य जगह न हो, एकाग्रचित्त।

अनन्यचेत *वि.* (तत्.) 1. किसी विषय में लीन, तल्लीन 2. एक ही ओर मन या ध्यान लगाने वाला, एकाग्रचित्त।

अनन्यज *वि.* (तत्.) कामदेव जो किसी अन्य में या अन्य द्वारा उत्पन्न नहीं होता है बल्कि स्वयं अपने मन में ही उत्पन्न होता है, 'मनसिज'।

अनन्यजन्मा *पुं.* (तत्.) अनन्यज, कामदेव।

अनन्यतः *अव्य.* (तत्.) किसी अन्य के लिए हीं न, केवल प्रस्तुत वस्तु या व्यक्ति आदि के लिए ही।

अनन्यता *स्त्री* (तत्.) एक ही में लीन रहना, एक से से ही संबंध रखना, किसी अन्य से संबंध या उसके प्रति निष्ठा न रखना; एकनिष्ठता, अन्यत्र-वर्जन।

अनन्यत्व *पुं.* (तत्.) दे. अनन्यता।

अनन्यदृष्टि *वि.* (तत्.) 1. एकाग्र दृष्टि, एकटक देखते रहना; किसी एक को ही देखना *वि.* (तत्.) एकटक देखनेवाला।

अनन्यदेव *वि.* (तत्.) जिसका कोई अन्य देवता न हो। जो किसी अन्य देवता को नहीं मानता हो, *पुं.* (तत्.) परमात्मा, ईश्व र।

अनन्यपरता *स्त्री.* (तत्.) पूर्ण निष्ठ होने की स्थिति, भाव, एकानिष्ठता, अनन्यपरायणता।

अनन्यपरायण *वि.* (तत्.) जो एक ही व्यक्ति के अतिरिक्त किसी अन्य (स्त्री आदि) में आसक्त या लीन न हो।

अनन्यपरायणता स्त्री. (तत्.) एकनिष्ठता, पूर्ण निष्ठता, एक में ही आस्था।

अनन्यपूर्व *वि.* (तत्.) वह पुरुष जिसकी कोई अन्य पत्नी न हो।

अनन्यपूर्वा *वि.स्त्री.* (तत्.) 1. वह स्त्री जिसका पहले कोई पति न रहा हो 2. कुमारी, कुँवारी, अविवाहिता।

अनन्यभक्ति *स्त्री.* (तत्.) वह भक्ति जिस में भक्त केवल अपने इष्टदेव/आराध्यदेव पर अवलंबित रहता है, एकनिष्ठ भक्ति।

अनन्यभाव *वि.* (तत्.) 1. किसी अन्य के प्रति आस्था या भाव न रखने वाला *पुं.* (तत्.) 1. एकनिष्ठ भक्तिभाव 2. परमात्मा के प्रति पूर्ण भक्तिभाव।

अनन्यमनस्क *वि.* (तत्.) जो अन्यमनस्क या अन्यनिष्ठ न हो, जिसका मन और कहीं न हो, एकाग्र।

अनन्यमना *वि.* (तत्.) जिसका मन अन्यत्र न लगा हो, एकनिष्ठ एकाग्रचित्त।

अनन्यमित्र *वि.* (तत्.) जिसका एक ही मित्र हो।

अनन्यविषय *वि.* (तत्.) एकमात्र उसी विषय या संदर्भ से संबंधित।

अनन्यवृत्ति *वि.* (तत्.) 1. एकाग्रचित्त 2. जिसकी कोई अन्यवृत्ति, जीविका न हो।

अनन्यशासन *वि.* (तत्.) जिस पर दूसरे का अनुशासन नहीं चलता, दूसरे की आज्ञा नहीं चलती, स्वतंत्र।

अनन्यसंक्रामकता स्त्री. (तत्.) हस्तांतरण न हो सकने की अवस्था, भाव अहस्तांतरणीय विलो. अन्यसंक्रामकता।

अनन्यसंक्राम्य *वि.* (तत्.) जिसका हस्तांतरण न हो सके, जो दूसरे को न दिया जा सके या किसी से छीना न जा सके, अहस्तांतरणीय।

अनन्यसदृश *वि.* (तत्.) जिसके समान अन्य कोई न हो, अनुपम, बेजोड़।

अनन्य समाचार *पुं.* (तत्.) वह समाचार जिसके किसी अन्य समाचारपत्र में छपने की संभावना न हो; वह समाचार जो किसी और संवाददाता को प्राप्त न हुआ हो।

अनन्याधिकार *पुं.* (तत्.) एकाधिकार, किसी अन्य का अधिकार नहीं।

अनन्यार्थ *वि.* (तत्.) 1. जो किसी अन्य अर्थ या विषय से संबंधित न हो 2. मुख्य या आधिकारिक।

अनन्याश्रित *वि.* (तत्.) 1. जो दूसरे पर आश्रित न हो 2. स्वाधीन, स्वतंत्र 3. *पुं.* वह संपत्ति जिस पर ऋण न लिया गया हो।

अनन्वय *पुं.* (तत्.) 1. अन्वय या संबंध का अभाव 2. काव्य का वह अलंकार जिसमें उपमेय को ही उपमान के रूप में प्रस्तुत किया जाए, जैसे रामरावण युद्ध तो बस रामरावण युद्ध के ही समान था।

अनन्वित *वि.* (तत्.) 1. असंबद्ध, पृथक 2. वंचित, रहित।

अनपकरण/अनपकर्म *पुं.* (तत्.) 1. अपकार न करना, हानि न पहुँचाना 2. ऋण न चुकाना।

अनपकार *वि.* (तत्.) अहित, अपकार या अनिष्ट का अभाव।

अनपकारक *वि.* (तत्.) निर्दोष, जो हानिकारक या अनिष्टकारी न हो।

अनपकारी *वि.* (तद्.) अहित या अपकार न करनेवाला।

अनपकृत *वि.* (तत्.) जिसका अहित न हुआ हो *पुं.* (तत्.) दोष का अभाव।

अनपक्रम *पुं.* (तत्.) अपक्रम का अभाव, दूर न जाना।

अनपक्रिया *स्त्री.* (तत्.) अनपक्रम।

अनपघात *पुं.* (तत्.) अपघात का अभाव, हिंसा का न होना।

अनपच *पुं.* (तद्.) अपच, अजीर्ण, बदहजमी।

अनपचारी *वि.* (तत्.) 1. जो अपराधी, दोषी न हो, निरपराध, निर्दोष 2. अपने कर्तव्यपालन में चूक न करने वाला।

अनपच्युत *वि.* (तत्.) 1. विचलित न होने वाला, डावाँडोल न होने वाला 2. विश्वासपात्र, विश्वसनीय।

अनपढ़ *वि.* (तद्.) 1. अपढ़, निरक्षर 2. मूर्ख।

अनपत्य *वि.* (तत्.) 1. अपत्य अर्थात् संतान से रहित, नि:संतान, संतानहीन 2. जो बच्चों के अनुकूल न हो।

अनपत्यता *स्त्री.* (तत्.) नि:संतान होने की स्थिति।

अनपत्यदोष *पुं.* (तत्.) बाँझपन।

अनपभ्रंश *पुं.* (तत्.) 1. वह शब्द जो अपभ्रंश न हो। 2. वह शब्द जो अपने शुद्ध रूप में हो, विकृत रूप में न हो।

अनपराध *वि.* (तत्.) अपराधरहित, निर्दोष, बेकसूर *पुं.* निर्दोषता।

अनपराधी *वि.* (तत्.) निरपराध, निर्दोष, दोषरहित।

अनपहार्य *वि.* (तत्.) जो छीना न जा सके, अहरणीय।

अनपहुँची *वि.* (तद्.) 1. जिस तक पहुँचा न गया हो। 2. जो लक्ष्य तक पहुंची न हो।

अनपाय *वि.* (तत्.) (अपाय अर्थात् हानि या बाधा रहित) क्षयरहित, अविनाशी *पुं.* 1. अनश्वरता 2. नित्यता 3. शिव।

अनपायनी *वि.* (तत्.) 1. सदा रहने वाली, शाश्वत 2. अविचल, अचल।

अनपायी *वि.* (तत्.) स्थिर, निश्चल, अचल, दृढ़; अनश्वर।

अनपेक्ष *वि.* (तत्.) 1. चाह या अपेक्षा न रखनेवाला, निरपेक्ष 2. तटस्थ, किसी की चिंता न करनेवाला।

अनपेक्षत: *अव्य.* (तत्.) (पर) ध्यान दिए बिना, (का) विचार किए बिना, (को) दृष्टि में लाए बिना।

अनपेक्षा *स्त्री.* (तत्.) 1. अपेक्षा का अभाव 2. बेपरवाही।

अनपेक्षित *वि.* (तत्.) जो अपेक्षित या आवश्यक न हो, जिसकी परवाह न हो, जिसकी आवश्यकता या चाह न हो।

अनपेत *वि.* (तत्.) 1. जो दूर न चला गया हो 2. जो व्यतीत न हुआ हो। जो बीता न हो। (अनपेत समय) 3. जो गलत मार्ग पर न गया हो, जो विपथगामी न हो 4. जो अलग न हो, अपृथक 5. जो वर्जित न हो।

अनबंधा *वि.* (तद्.) जो बंधा हुआ न हो।

अनबन *पुं.* (तद्.) 1. बिगाड़ 2. विरोध 3. फूट 4. खटपट।

अनबलंबन *पु.* (तत्.) 1. किसी का सहारा या आश्रय न लेने की स्थिति 2. आधार-रहित।

अनबात *स्त्री.* (तद्.) बुरी बात *क्रि.वि.* बहुत छोटी बात पर, बिना बात ही।

अनबिंधा *वि.* (तद्.) अनबेधा, अविद्ध, जिसे बिंधा न गया हो।

अनबूझ *वि.* (तद्.) अबोध, अनजान, नासमझ, मूर्ख।

अनबूझा *वि.* (तद्.) बिना समझा हुआ, बेसमझाबूझा, अबूझा।

अनबूड़ा *वि.* (तद्.) 1. जो डूबा हुआ न हो 2. जो गहरे न पैठा हो।

अनबेधा *वि.* (तद्.) जिसे बेधा, छेदा न गया हो, अविद्ध।

अनबोल *वि.* (देश.) 1. न बोलनेवाला, अनबोला 2. मौन, गूँगा, बेज़ुबान 3. जो अपने सुख-दुख को न कह सके 4. अनुक्त, अकथित।

अनबोला *वि.* (देश.) 1. बोलचाल या बातचीत का अभाव 2. न बोलनेवाला, बेज़ुबान दे. अनबोल।

अनबोले *क्रि.वि.* (देश.) बिना बोले हुए।

अनब्याहा *वि.* (तद्.) अविवाहित, बिना ब्याहा, कुँवारा।

अनभंग *वि.* (तद्.) 1. अखंडित, अभंग 2. परिपूर्ण, पूरा।

अनभय *क्रि.वि.* (तद्.) बिना भय के, निर्भय, निडर होकर।

अनभल *वि.* (तद्.) 1. जो भला न हो, बुरा 2. जो भलाई के लिए न हो, अहित, हानि, बुराई।

अनभला *वि.* (तद्.) 1. जो भला न हो 2. जो भलाई के लिए न हो, अहितकर, अहित, हानि, बुराई।

अनभाया *वि.* (तद्.) 1. न भाने वाला, अप्रिय, अनचाहा 2. आपसी वैर, विरोध, द्वेष।

अनभावता *वि.* (तद्.) न भाने वाला, अप्रिय, जो प्रिय न लगे।

अनभावरी *वि.* (तद्.) जो अच्छा न लगे, नापसंद, अप्रिय।

अनभिज्ञ *वि.* (तत्.) (जो अभिज्ञ, जानकार, विज्ञ या निपुण न हो) 1. अपरिचित, नावाकिफ 2. अनजान, अनाड़ी।

अनभिज्ञता *स्त्री.* (तत्.) 1. परिचय का अभाव, अपरिचय 2. अनजानापन, अनाड़ीपन।

अनभिदायी *वि.* (तत्.) जिसमें व्यक्ति को अपनी ओर से अभिदान या अंशदान न करना हो। non-contributory

अनभिदायी भविष्य निधि *स्त्री.* (तत्.) ऐसी भविष्य निधि जिसमें कर्मचारी को अपनी ओर से कुछ भी अंशदान न करना पड़े। गैर-अंशदायी या अनंशदायी भविष्य निधि। non contributory provident fund

अनभिधान *वि.* (तत्.) व्याक. जो व्याकरण सम्मत हो परंतु अप्रचलित होने से जिसका अर्थ व्यक्त न हो सके साहि. रचना में उक्त शब्द के प्रयोग से होने वाला दोष।

अनभिप्रेत *वि.* (तत्.) 1. जो अभिप्रेत न हो, अवांछित, अनभीष्ट 2. बिना उद्देश्य, इरादे से किया हुआ, जैसे अनभिप्रेत संकेत।

अनभिप्रेत कथन *पुं.* मनो. जो बात अपने मन में हो, उसे न कहकर कुछ और कह जाने या लिख जाने का मानसिक दोष।

अनभिभूत *वि.* (तत्.) 1. जो अभिभूत न हुआ हो 2. अप्रभावित 3. अपराजित।

अनभिमत *वि.* (तत्.) 1. जो अभिमत न हो। 2. किसी मत, विचार से असहमत, असम्मत 3. जो वास्तविक तात्पर्य के विरूद्ध हो 4. नापसंद (व्यक्ति) 5. जो वांछित न हो, अवांछित, अनभीष्ट।

अनभिमान्य *वि.* (तत्.) 1. जो अच्छा न लगता हो, नापसंद 2. अवांछित, अनचाहा।

अनभिमान्य व्यक्ति *पुं.* (तत्.) नापसंद व्यक्ति, अवांछित व्यक्ति, अनचाहा व्यक्ति।

अनभिरूप *वि.* (तत्.) जो किसी वस्तु विशेश के सदृश्य/समनुरूप न हो, असदृश्य, असमनुरूप। 2. जो सुंदर न हो, कुरूप, असुंदर 3. जो बुद्धिमान न हो, मूर्ख।

अनभिलषित *वि.* (तद्.) जो अभिलषित, वांछित न हो, अवांछित।

अनभिलाष *वि.* (तत्.) जिसे कोई अभिलाषा, कामना न हो, कामनाहीन, कामना, अभिलाषा का अभाव।

अनभिवाद्य *वि.* (तत्.) जो अभिवादन, प्रणाम किए किए जाने के योग्य न हो, अप्रणम्य, सम्मान के लायक न हो।

अनभिव्यक्त *वि.* (तत्.) 1. जो व्यक्त, प्रकट न हो, गुप्त। 2. जो अभिव्यक्त या कथित न हो, अकथित 3. अस्पष्ट विलो. अभिव्यक्त।

अनभिहित *वि.* (तत्.) 1. अकथित, न कहा हुआ 2. तात्पर्यार्थ 3. जिसे नामित न किया गया हो।

अनभिहित वाक्यदोष *पुं.* (तत्.) काव्य. वाक्यदोष का एक भेद। वाक्य में अवश्य कही जाने योग्य बात का उल्लेख न होने का दोष, अकथित कथनीय दोष।

अनभीगा *वि.* (तद्.) जो भीगा न हो, अनभीगा वस्त्र।

अनभीष्ट *वि.* (तत्.) 1. जो अभीष्ट या वांछित न हो 2. इच्छाविरुद्ध।

अनभेदी *वि.* (तद्.) भेद न जाननेवाला, अविश्वास।

अनभ्यस्त *वि.* (तत्.) 1. जिसने अभ्यास न किया हो 2. अकुशल 3. जिसका अभ्यास न किया गया हो।

अनभ्यास *पु.* (तत्.) अभ्यास का अभाव, अनुशीलन न करना; आदत का न होना।

अनभ्यासी *वि.* (तत्.) 1. जो अभ्यास न करे, अभ्यासशून्य, सतत प्रयत्न न करनेवाला 2. साधनाहीन।

अनभ्र *वि.* (तत्.) अभ्र अर्थात् मेघ से रहित, बिना बादल का।

अनभ्रवज्रपात *पुं.* (तत्.) 1. बिना बादलों के बिजली गिरना 2. लाक्ष. अप्रत्याशित, अनुमानित, आकस्मिक हानि या विपत्ति।

अनभ्रवृष्टि *स्त्री.* (तत्.) बादलों के बिना होने वाली वर्षा, असंभव कार्य, अनुमानित या अकस्मात् होने वाला लाभ या प्राप्ति।

अनम *वि.* (तद्.) 1. अनम्र 2. उद्धत 3. अकड़बाज 4. चंचल।

अनमद *वि.* (तद्.)मदरहित, अहंकारहीन, घमंड रहित।

अनमन *वि.* (तद्.) दे. अनमना।

अनमना *वि.* (तद्.) उदास, खिन्न, उचटे हुए चित्त वाला, अन्यमनस्क।

अनमनापन *पुं.* (तद्.) खिन्नता, उदासी, चित्त उचाट होना।

अनमनी *वि.* (तद्.) अन्यमनस्क स्त्री।

अनमनीय *वि.* (तत्.) 1. जो नम्य या. लोच वाला न हो, बेलोच 2. कठोर 3. दृढ़।

अनमाँगा *वि.* (तद्.) जो माँगा हुआ न हो, मांगे बगैर, अयाचित।

अनमाप *वि.* (तद्.) जिसे मापा न जा सके, अपरिमेय।

अनमापा *वि.* (तद्.) जो मापा न गया हो।

अनमिट *वि.* (तद्.) अमर, अमिट, जिसे भुलाया, मिटाया न जा सके।

अनमित्र *वि.* (तत्.) 1. जो अमित्र या शत्रु न हो 2. जिसका कोई शत्रु न हो 3. जो मित्र न हो।

अनमी *वि.* (तत्.) 1. न झुकने वाला 2. स्वाभिमानी 3. हठी, जिद्दी।

अनमेल *वि.* (तद्.) जिनमें परस्पर मेल न हो, बेमेल, सामंजस्यहीन, असमन्वित।

अनमोल *वि.* (तद्.) 1. अमूल्य, मूल्यरहित 2. बहुमूल्य; उत्तम।

अनम्य *वि.* (तत्.) 1. जिसे झुकाया न जा सके 2. जिसे मोड़ा न जा सके 3. जिसमें लचक न हो 4. जो प्रणाम, सम्मान के लायक न हो 5. अपूज्य।

अनम्र *वि.* (तत्.) 1. जो नम्र न हो, अविनीत 2. उद्दंड 3. घमंडी।

अनय *पुं* (तत्.) 1. अनीति 2. अन्याय 3. दुर्भाग्य, अमंगल, मुसीबत, विपद 4. दुष्कर्म।

अनयन *वि.* (तत्.) नेत्रहीन, अंध।

अनयस्की *वि.* (तत्.) भूवि. मूल्यवान खनिजों या अयस्कों से रहित, अयस्कहीन।

अनरस *पुं.* (तद्.) 1. नीरसता, रसहीनता, शुष्कता 2. कोप, क्रोध 3. अनबन, बुराई, विरोध, मनोमालिन्य 4. दुःख, खेद *वि.* (तद्.) रसहीन, नीरस।

अनरसना *क्रि. वि.* (तद्.) 1. अनरस होना, उदास होना 2. नाराज होना 3. खिन्न होना।

अनरसा *वि.* (देश.) 1. रसहीन 2. अन्यमनस्क, अनमना 3. रोगी, बीमार।

अनराता *वि.* (देश.) 1. जो रंगा हुआ न हो 2. जो लाल रंग का न हो 3. जो अनुरक्त न हो, जिस में प्रेम, अनुराग उत्पन्न न हुआ हो।

अनरितु *स्त्री.* (देश.) नियमित ऋतु की अपेक्षा अन्य अन्य ऋतु (का आभास)।

अनरीता *वि.* (देश.) जो रीता न हो, अरिक्त, भरा हुआ।

अनरीति *स्त्री.* (देश.) 1. अरीति, रीतिविरुद्धता 2. कुरीति, कुप्रथा 3. अनुचित व्यवहार।

अनरुच *वि.* (देश.) जो अच्छा न लगता हो, अरुचिकर, अप्रिय, नापसंद।

अनरुचि *स्त्री.* (देश.) रुचि न हो, अनिच्छा, अरुचि 2. पेट का मंदाग्नि रोग जिसमें भूख नहीं लगती।

अनरेख *वि.* (तद्.) 1. बिना रेखा का 2. बिना पहचान वाला 3. रूप रहित।

अनर्गल *वि.* (तत्.) (अर्गला अर्थात् अवरोध-रहित) 1. विचारशून्य, व्यर्थ, अर्थरहित 2. बेधड़क, बेरोकटोक, जिस पर प्रतिबंध न हो 3. अनाप-शनाप।

अनर्गल प्रलाप *पुं.* (तत्.) 1. बेसिर-पैर की बातें करना। बेतुकी बातें कहना।

अनर्घ *वि.* (तत्.) 1. जिसका मूल्य न हो, अमूल्य 2. बहुमूल्य, कीमती 3. जो उचित या नियत भाव से कम या अधिक हो (महार्घता-महंगा)।

अनर्जक *वि.* (तत्.) 1. प्रशा. (व्यक्ति) जो कमाता न हो 2. वह धन जिससे कोई कमाई न हो 3. (वह अवधि) जिसमें ब्याज, लाभांश आदि की कोई कमाई न हो।

अनर्जक आश्रित *वि.* (तत्.) प्रशा. परिवार का वह सदस्य जो स्वयं कुछ नहीं कमाता बल्कि परिवार के अन्य सदस्यों पर निर्भर रहता है।

अनर्जित *वि.* (तत्.) अर्जित न किया हुआ, न कमाया हुआ; अप्राप्त।

अनर्जित छुट्टी *स्त्री.* (तत्.) प्रशा. छुट्टी जो अर्जित न होने के कारण देय न हो किंतु भविष्य में समायोजन की दृष्टि से दे दी जाती है तु. अर्जित अवकाश।

अनर्थ *पुं.* (तत्.) निरर्थकता, कार्य-हानि, अनिष्ट, उपद्रव।

अनर्थक *पुं.* (तत्.) 1. जो अर्थकर या लाभदायक न हो 2. अर्थहीन, निरर्थक 3. बेकार काम करनेवाला।

अनर्थकर *वि.* (तत्.) 1. अनर्थ, उपद्रव या बहुत अनुचित कर्म करने वाला। 2. बहुत हानिकारक 3. किसी शब्द, वाक्य, बात आदि का अनुचित या विपरीत अर्थ करने वाला 3. अति अनुचित काम करने वाला 5. जिससे धन की प्राप्ति न हो, उद्देश्य पूरा न हो।

अनर्थकारक *वि.* (तत्.) 1. अनर्थ करने वाला, हानिकारक। 2. विपरीत अर्थ करने वाला। 3. जिससे धन की प्राप्ति न हो।

अनर्थकारी *वि.* (तत्.) 1. अनिष्टकारी, हानिकारक 2. उपद्रवी 3. उल्टा अर्थ निकालनेवाला।

अनर्थदर्शी *वि.* (तत्.) 1. अनर्थ अथवा अनिष्ट चाहने वाला, बुराई चाहने वाला 2. हित पर ध्यान न रखनेवाला।

अनर्थबुद्धि *वि.* (तत्.) 1. जिसकी बुद्धि में अनिष्ट कर बातें आती रहती हैं 2. जिसकी बुद्धि व्यर्थ या बेकार हो गई हो।

अनर्थ्य *वि.* (तत्.) दे. अनर्थकारी।

अनर्ध्य *वि.* (तत्.) 1. जो अर्ध्य, सम्मान पाने के योग्य न हो, अपूज्य। 2. जिसका मूल्य लगाना संभव न हो, बहुमूल्य, अमूल्य।

अनर्वासा *पुं.* (तत्.) कटी हुई फसल का एक बड़ा मुट्ठा या पूला, औसा।

अनर्ह *वि.* (तत्.) 1. अयोग्य, अपात्र, अनधिकारी 2. जिस के पास आवश्यक अर्हता न हो। unqualified

अनर्हता *स्त्री.* (तत्.) अर्हता-रहित, अपात्र या अयोग्य अयोग्य होने की स्थिति। disqualification

अनर्हीकरण *पुं.* (तत्.) किसी पद या कार्य आदि के लिए अनर्ह या अयोग्य ठहरा देना। disqualification

अनलंकृत *वि.* (तत्.) 1. अलंकारविहीन 2. सजावट-रहित, सज्जा रहित।

अनल *पुं.* (तत्.) 1. आग, अग्नि, पावक 2. जठरानल 3. परमेश्वर 3. जीव।

अनलगी *वि.* (तद्.) 1. न लगा हुआ, असंलग्न 2. अविद्यमान।

अनलपक्षी *पुं.* (तत्.) एक कल्पित पक्षी जो सदा आकाश में ही उड़ा करता है और पृथ्वी पर कभी नहीं रहता। अनल पक्षी आकाश से अपना अंडा गिराता है और पृथ्वी पर पहुँचने से पहले ही अंडा फूट कर हवा में ही बच्चा बनकर उड़ने लगता है।

अनलप्रिया *स्त्री.* (तत्.) अग्निदेवता की पत्नी, स्वाहा।

अनलमुख *वि.* (तत्.) 1. जिसके मुख से अग्नि निकलती हो। 2. जो अग्नि के माध्यम से पदार्थों को ग्रहण करे पुं. 1. देवता 2. ब्राहमण।

अनलशिखा *स्त्री.* (तत्.) अग्नि की शिखा, आग की की लपट।

अनलस *वि.* (तद्.) 1. आलस्यरहित, बिना आलस्य का 2. फुर्तीला 3. चैतन्य।

अनलसित *पुं.* (तत्.) आलस्यहीन।

अनलहक *पुं.* (अर.) मैं सत्य हूँ, मैं खुदा हूँ (सूफी संतों का 'अहं ब्रहमास्मि' जैसा अर्थ देने वला वाक्य)।

अनला *स्त्री.* (तत्.) दक्ष प्रजापति की एक कन्या।

अनलानिल *पुं.* (तत्.) [अनल+अनिल] अग्नि और वायु।

अनलि *पुं.* (तत्.) बक वृक्ष। sesbana Gramdiflora

अनलेख *वि.* (तद्.) 1. अदृश्य, अगोचर 2. अलख।

अनल्प *वि.* (तत्.) जो अल्प न हो, बहुत, अधिक, ज्यादा।

अनवकाश *पुं.* (तत्.) 1. अवकाश का अभाव 2. फुरसत न होना *वि. (तत्.)* अवकाशहीन, बिना फुरसत का।

अनवगत *वि.* (तत्.) 1. जो अवगत न हो, जाना हुआ न हो, अज्ञात 2. जानकारी-रहित व्यक्ति।

अनवगम्य *वि.* (तत्.) 1. जो समझ में न आ सके (भाषा) 2. जहाँ पहुँचना कठिन हो, दुर्गम।

अनवगाह *वि.* (तत्.) 1. अथाह, गंभीर, बहुत गहरा 2. जिसकी गहनता अथाह हो।

अनवगाह्य *वि.* (तत्.) दे. जिसका अवगाहन अर्थात् गंभीर मनन न किया जा सके, दुर्बोध दे. अनवगाह।

अनवगीत *वि.* (तत्.) जो अवगीत अर्थात् बेसुरा गाया हुआ या धिक्कारा हुआ या निंदित न हो, अनिंद्य, अनिंदित।

अनवग्रह *पुं.* (तत्.) [अन+अवग्रह] 1. जिसे लिए कोई बाधा, रुकावट न हो 2. प्रतिबंध रहित, स्वच्छन्द 3. जो पकड़ में न आए, जिसे रोका न जा सके अप्रतिरोधनीय 4. जो किसी को न रोके 5. अनिवार्य 6. अतिप्रबल विलो. अवग्रह।

अनवच्छिन्न *वि.* (तत्.) 1. जो अवच्छिन्न न हो 2. जो काटा न गया हो 3. जो अलग न किया

गया हो 4. जिसका क्रम निरंतर बना रहे, निरंतर, लगातार 5. अखंडित, अटूट 6. असीम, अमर्यादित 7. बहुत ज्यादा, अत्यधिक।

अनवट *पुं.* (देश.) 1. पैर के अंगूठे में पहनने का एक प्रकार का छल्ला 2. कोल्हू के बैल की अँधौटी।

अनवद्य *वि.* (तत्.) जो अवद्य अर्थात् निंदनीय या या दोषपूर्ण न हो, अनिंद्य, निर्दोष।

अनवधान *पुं.* (तत्.) अवधान-रहित, असावधान। inattentive

अनवधानता *स्त्री.* (तत्.) असावधानी, लापरवाही, ध्यान न दिया जाना, प्रमाद, गफलत inadvertence

अनवधानता वश *क्रि .वि.* (तत्.) (किसी काम को करने में) पर्याप्त ध्यान दिए बिना, असावधानी से।

अनवधि *क्रि.वि.* (तत्.) जिसकी कोई (निश्चित) अवधि न हो, निरंतर, सदैव, हमेशा जो अवधि-विशेष तक सीमित न हो, निरवधि।

अनवर *वि.* (तत्.) जो अवर, कनिष्ठ या निकृष्ट न हो, श्रेष्ठ, बड़ा *वि.* (अर.) चमकीला, शोभायमान।

अनवरत *क्रि.वि.* (तत्.) 1. अवहति अर्थात् विराम के बिना निरंतर, सतत, अजस्र, लगातार 2. सदैव, हमेशा।

अनवरुद्ध *वि.*(तत्.) जो अवरुद्ध न हो, बिना रोक टोक का मुक्त विलो. अवरुद्ध।

अनवरोध *वि.* (तत्.) किसी अवरोध् रोक या बाधा के बिना, अबाध, निरंतर *पुं. (तत्.)* अवरोध का अभाव।

अनवलंब *वि.* (तत्.) बिना अवलंब का, बेसहारा, निराश्रय, बे-आसरा, बिना किसी टेक का *पुं.* स्वतंत्रता।

अनवलंबित *वि.* (तत्.) आश्रयहीन, बेसहारा; निराधार।

अनवशोषित *वि.* (तत्.) 1. जो अवशोषित न हुआ हो 2. जो सोखा न गया हो 3. जो किसी में विलीन न हो गया हो 4. जो खपा न हो या खपाया न गया हो।

अनवसर *पुं.* (तत्.) 1. अनवकाश, फुरसत का समय न होना 2. कुसमय, गलत समय।

अनवसान *वि.* (तत्.) 1. अंतरहित 2. असमाप्त अमृत।

अनवसित *वि.* (तत्.) 1. जिसका अवसान न हुआ हो, असमाप्त 2. जो अस्त न हुआ हो, जो अब भी प्रवृत्त हो 3. जो पूरा न हुआ हो।

अनवसिता *स्त्री.* (तत्.) 1. न रुकने वाली, निरंतर चलती रहने वाली छंद एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, यगण, भगण और दो गुरु (न य म ग ग) के योग से 11 वर्ण होते हैं।

अनवस्कर *वि.* (तत्.) जिसके अवस्कर अर्थात् मल न हो, मलरहित, स्वच्छ।

अनवस्थ *वि.* (तत्.) 1. जो स्थिर न हो, अस्थिर 2. अदृढ़ 3. चंचल।

अनवस्था *स्त्री.* (तत्.) 1. अव्यवस्था, अनियमितता 2. कार्य-कारण (अंडे से मुर्गी या मुर्गी से अंडा) की ऐसी अतिव्याप्ति जिसका अंतिम समाधान असंभव हो 3. व्याकुलता, आतुरता, अधीरता।

अनवस्था दोष *पुं.* (तत्.) एक तर्क दोष, कार्य करण की ऐसी परम्परा जिसमें हर कारण का पूर्व कारण पूछते-पूछते कहीं अंत न होने की अवस्था आ जाती है।

अनवस्थान *वि.* (तत्.) 1. अस्थिरता, अनिश्चितता 2. आचरण भ्रष्टता 3. एक ही स्थान पर स्थिर न रहने वाली वायु।

अनवस्थित *वि.* (तत्.) 1. अस्थिर 2. परिवर्तनशील 3. अव्यवस्थित 4. अशांत 5. अधीर, उद्विग्न 6. असंयत 7. अनियंत्रित 8. निराधार, निरालम्ब।

अनवस्थित चित *वि.* (तत्.) 1. अस्थिर चित्त वाला। 2. चंचल बुद्धिवाला 3. जिसका मन एक जगह या कार्य पर न लगे।

अनवहित *वि.* (तत्.) अवधान-रहित, असावधान।

अनवाद *पुं.* (तत्.) 1. व्यर्थ की बातचीत 2. कठोर, कटु बात, दुर्वचन।

अनवाप्त *वि.* (तत्.) अप्राप्त, अनुपलब्ध (तत्.) *स्त्री.* अनवाप्ति अप्राप्ति, अनुपलब्धि।

अनवासना *स.क्रि.* (तत्.) नए बर्तन, वस्त्र को पहली बार प्रयोग में लाना।

अनवासा *पुं.* (तत्.) नया बर्तन, वस्त्र जो प्रयोग में न लाया गया हो, कोरा, अनवासा वस्त्र।

अनवास्थिति *स्त्री.* (तत्.) 1. अनवस्थित होने की अवस्था, गुण, भाव 2. अस्थिरता। 3. परिवर्तनशील 4. अल्पावस्था 5. अधीरता, उद्विग्नता 6. संयम, नियंत्रण न होना 7. आधारहीनता।

अनवीकरणीय *वि.* (तत्.) 1. जिसका नवीकरण शक्य (या अभीष्ट) न हो; जिसे पुन: उपयोग में लाने योग्य न बनाना हो 2. जिसे फिर नए सिरे से आरंभ न करना हो।

अनवीकरणीय संसाधन *पुं.* (तत्.) नवीकरण के अयोग्य संसाधन विलो. नवीकरणीय संसाधन।

अनवीकृत *वि.* (तत्.) जिसमें नयापन न लाया गया हो, जिसका नवीकरण न किया गया हो।

अनवीकृत दोष *पुं.* (तत्.) साहि. एक प्रकार का अर्थ दोष। अनेक अर्थों, विषयों, दृश्यों, बातों आदि का एक ही प्रकार से वर्णन होना और कहीं कोई नयापन या विलक्षणता न होने का दोष।

अनवेक्षण *पुं.* (तत्.) 1. अवेक्षण या निरीक्षण का अभाव 2. लापरवाही, असावधानी, उदासीनता।

अनशन *पुं.* (तत्.) 1. अशन अर्थात् भोजन का अभाव, अन्न-त्याग 2. सामाजिक या राजनीतिक दबाव डालने के लिए अन्न-जल का त्याग 3. उपवास, निराहार व्रत।

अनश्वर *वि.* (तत्.) 1. जो ईश्वर न हो, स्थिर, नष्ट न होने वाला 2. अमिट, अटल।

अनसखरा/अनसखड़ा *वि.* (तद्.) भोजन जो सखरा न हो, दूध या घी में पका व्यंजन, पक्की रसोई, चोखा भोजन, मिलावटहीन।

अनसखरी *वि.* (तद्.) अनसखरी रसोई (दाल, भात, रोटी से भिन्न पूड़ी, हलवा आदि) दूध या घी से बनी भोजन सामग्री।

अनसमझ *वि.* (तद्.) नासमझ।

अनसमझा *वि.* (तद्.) 1. जिसने न समझा हो, नासमझ, बिना समझा हुआ 2. अज्ञात।

अनसिखा *वि.* (तद्.) 1. जिसने कुछ सीखा न हो, आशिक्षित, अनपढ़ 2. जिसे सीखा न गया हो।

अनसुँघा *वि.* (तद्.) जिसे अभी सूँघा न गया हो, अनाघ्रात।

अनसुना *वि.* (तद्.) नहीं सुना हुआ, जानबूझ कर न सुना हुआ तु. अनसुनी।

अनसुनी *वि.स्त्री* (तद्.) 1. न सुनी हुई बात 2. अभूतपूर्व मुहा. (सुनी) अनसुनी करना- बात सुनकर भी उपेक्षा करना।

अनसुलझा *वि.* (तद्.) 1. जो न सुलझ पाया हो, जो अभी उलझा हो 2. (कठिन समस्या) जिसका समाधान न हुआ हो 3. प्रश्न आदि जिसे हल न किया जा सका हो 4. कम अक्ल का, अपरिपक्व।

अनसूय *वि.* (तत्.) असूया या द्वेषरहित, पराए में दोष-दर्शन न करने वाला, अछिद्रान्वेषी।

अनसूया *स्त्री.* (तत्.) 1. पराए से द्वेष करने या उसमें दोष न निकालने की प्रवृत्ति, नुक्ताचीनी न करना 2. अत्रि मुनि की पत्नी 3. शकुंतला की एक सखी।

अनसोची *वि.* (तद्.) बिना सोची हुई, अविचारित।

अनसोया *वि.* (तद्.) जिसने निद्रा न ली हो, जो सोया न हो, जागृत।

अनस्तमन *पुं.* (तत्.) सूर्य का अस्त न होना लाक्ष. पतन न होना।

अनस्तमित *वि.* (तत्.) 1. जो अस्त न हुआ हो 2. जिसका पतन न हुआ हो (अनस्तमित भाग्य से वह बच गया)

अनस्तित्व *वि.* (तत्.) 1. अस्तित्व के न होने की स्थिति, अविद्यमानता 2. सत्ता का अभाव।

अनस्थि/अनस्थिक *वि.* (तत्.) जिसमें अस्थि/ हड्डी न हो, बिना हड्डी का।

अनह *पुं.* (तद्.) 1. दिन का अभाव, अदिन 2. बुरा दिन।

अनहंकार/अनहंकृति *वि.* (तत्.) अहंकार से रहित, निरहंकार, अहंकार का अभाव, अहंकार हीनता।

अनहद *पुं.* (तत्.) 1. असीम ब्रह्म 2. हठयोग में एक चक्र विशेष *वि.* (फा.) सीमाहीन, बेहद, जिसकी सीमा न हो, असीम।

अनहद नाद *पुं.* (तद्.) 1. योग की एक स्थिति में सुना जानेवाला आंतरिक मौन नाद 2. ओंकार ध्वनि।

अनहित *पुं.* (तद्.) 1. अहित, अपकार, हानि 2. बुराई, अमंगल।

अनहितू *वि.* (तद्.) 1. अशुभ चाहने वाला, अशुभचिंतक, अहितैषी।

अनहुआ *वि.* (तद्.) जो हुआ न हो। अघटित या अनुत्पन्न (क्रि.) किए कराए को अनहुआ (समाप्त) करना। undone

अनहोता *वि.* (तद्.) जो प्राय: नहीं होता, नामुमकिन।

अनहोनी *वि.* (तद्.) 1. न होने वाली 2. असंभव 3. अलौकिक। *स्त्री.* असंभव बात, अलौकिक घटना।

अनाकनी *स्त्री* (देश.) उपेक्षा दे. आनाकानी।

अनाकर्ण *वि.* (तत्.) जो कभी सुना न गया हो। अश्रुत।

अनाकर्षण *पुं* (तत्.) आकर्षण का अभाव, अरुचि।

अनाकार *वि.* (तत्.) निराकार, आकाररहित, रूप रहित।

अनाकुल *वि.* (तत्.) 1. जो आकुल/व्यग्र न हो 2. न घबराया हुआ। 3. शांत/धैर्ययुक्त। 3. स्थिर 4. आत्मसंयत।

अनाकृत *वि.* (तत्.) 1. जिसे रोका न गया हो, जिसके विषय में सावधानी न बरती गई हो 2. जिसे आकार न दिया गया हो, अकृतक।

अनाकृष्ट *वि.* (तत्.) *1.* जो आकर्षित/आकृष्ट न हो 2. (धनुष) जिसे खींचा न गया हो 3. जिसको ध्यान न दिलाया गया हो।

अनाक्रमण *वि.* (तत्.) आक्रमण का अभाव, आक्रमण न करने की स्थिति।

अनाक्रमण संधि *स्त्री.* (तत्.) दो देशों के बीच हुआ यह समझौता कि वे एक-दूसरे पर आक्रमण नहीं करेंगे और एक-दूसरे की सीमाओं का आदर करेंगे non-aggression treaty

अनाक्रांत *वि.* (तत्.) 1. जिस पर आक्रमण न हुआ हो 2. आरक्षित 3. अपीड़ित।

अनाक्रांतता *स्त्री.* (तत्.) आक्रमण न होने की स्थिति।

अनाक्षरिक *वि.* (तत्.) भाषा. (वह स्वनिम) जो सामान्यत: आक्षरिक होने पर भी अक्षर (अक्षर-शीर्ष) का निर्माण नहीं करता non syllabic तु. आक्षरिक।

अनाक्सीरक्तता *स्त्री.* (तत्.) रक्त में आक्सीजन की कमी, अपर्याप्तता।

अनाख्येय *वि.* (तत्.) जो आख्येय न हो, जो कहने या बताने लायक न हो, अवर्णनीय, जिसका वर्णन न किया जा सके।

अनागत *वि.* (तत्.) 1. न आया हुआ, अविद्यमान, अप्राप्य, अनुपस्थित 2. अकस्मात्, अचानक, सहसा, एकाएक 3. अपरिचित, अज्ञात।

अनागतविधाता *पुं.* (तत्.) 1. आने वाले अनिष्ट को समझकर उसका उपाय करने वाला व्यक्ति 2. दूरदर्शी व्यक्ति। (अनागत: य: कुरुते स: शोभते)

अनागता *वि.* (तत्.) (स्त्री.) 1. नहीं आई हुई, अनुपस्थित, अप्रस्तुत 2. भावी, अनादि।

अनागतागत *वि.* (तत्.) वह आया हुआ व्यक्ति जो पहले कभी न आया हो, अपूर्व आगत, अपूर्व घटित।

अनागम *पुं.* (तत्.) आगमन न होना, न आना; प्राप्त न होना।

अनागम्य *वि.* (तत्.) 1. अगम्य, दुर्गम 2. अप्राप्य।

अनागर *पुं.* (तत्.) 1. वह व्यक्ति जो नागर न हो, जो व्यक्ति बाहर का हो 2. जो नागरिक न हो 3. अशिष्ट व्यक्ति, असंस्कृत 4. अनिपुण, अचतुर। 5. जो नागर (ब्राह् मणों की एक उपजाति) न हो। नागर ब्राह्मण से भिन्न।

अनागामी *वि.* (तत्.) 1. न आने वाला, न लौटने वाला। 2. जिसका भविष्य उज्जवल न हो।

अनागार *वि.* (तत्.) जिसका घर-द्वार न हो, साधु-संन्यासी।

अनाघात *पुं.* (तत्.) 1. आघात न होना, आघात का अभाव 2. संगी. लयकारी का एक प्रकार, एक ताल 3. भाषा. जिस पर बलाघात न हो।

अनाघ्रात *वि.* (तत्.) जिसे सूँघा न गया हो, अनसुँघा।

अनाचरण *पुं.* (तत्.) 1. किसी कार्य का प्रवर्तन न करना, करने योग्य कार्य न करना 2. अनाचार।

अनाचार *पुं.* (तत्.) 1. बुरा आचरण 2. कुरीति, कुव्यवहार 3. नीतिविरुद्ध आचरण, अपराध।

अनाचारिता *स्त्री.* (तत्.) 1. दुराचारिता, निंदित आचरण 2. दुष्टता, कुचाल।

अनाचारी *वि.* (तत्.) आचारहीन, भ्रष्ट, पतित, कुचाली।

अनाच्छादन *पुं.* (तत्.) शा.अर्थ. उघड़ना, उघाड़ना, नंगा होना भूवि. अपरदन का संपूर्ण प्रक्रम जिससे भूपृष्ठ की असमताएँ व अनियमितताएँ कट-छँट कर समतलता की ओर अग्रसर होती हैं denundation

अनाज *पुं.* (तद्.) अन्न, गल्ला, धान्य।

अनाजी *वि.* (तत्.) जो अनाज से बनाया गया हो या जिस में अनाज का अंश हो, अनाज से संबंधित।

अनाज्ञप्त *वि.* (तत्.) 1. जिसे आज्ञा, स्वीकृति न दी गई हो (व्यक्ति) 2. जिसके लिए अनुमति न दी गई हो (कार्य) 3. अनादेशति, अननुमित। 4. जिसकी सूचना न दी गई हो।

अनाज्ञाकारिता *स्त्री.* (तत्.) 1. आज्ञाकारी न होने का भाव, आज्ञापालन न करना 2. आदेश का उल्लंघन।

अनाज्ञाकारी *वि.* (तत्.) जो आज्ञा न माने, जो आदेश पर न चले।

अनाड़ी *वि.* (तत्.) 1. नामसझ, नादान 2. अनजान 3. जो निपुण न हो, अकुशल।

अनातप *पुं.* (तत्.) 1. छाया 2. शीतलता, ठंडापन, धूप का अभाव वि. धूपरहित, जो गरम न हो, शीतल।

अनातुर *वि.* (तत्.) 1. जो आतुर न हो 2. उदासीन 3. धीर, अविचलित 4. स्वस्थ।

अनात्म *वि.* (तत्.) ('अनात्मन' का समासगत पूर्वपद) आत्मारहित, जड़ *पुं.* (तत्.) 1. आत्मा का विरोधी 2. पदार्थ, पंचभूत।

अनात्मक *वि.* (तत्.) 1. जिसका संबंध आत्मा से न हो 2. जिसका संबंध अपने से न हो 3. क्षणिक/नाशवान 4. जो यथार्थ न हो, अयथार्थ 5. सांसारिक, भौतिक।

अनात्मज्ञ *वि.* (तत्.) 1. जिसे आत्मा का ज्ञान न हो। आत्मज्ञान शून्य 2. अज्ञानी 3. आत्मा और परमात्मा के स्वरूप को न जानने वाला।

अनात्मदर्शी *वि.* (तत्.) जो आत्मदर्शी न हो, आध्यात्मिक दृष्टि से रहित, आत्मा-परमात्मा आदि के ज्ञान की प्राप्ति की उपेक्षा करने वाला।

अनात्मधर्म *पुं.* (तत्.) शारीरिक धर्म और कार्य, आत्मा को इतर भिन्न-भिन्न-धर्म कार्य, जो आत्मा से संबंधित नहीं है।

अनात्मवाद *पुं.* (तत्.) आत्मा को न मानने का सिद्धांत, जड़वाद।

अनात्मवादी *वि.* (तत्.) 1. अनात्मवाद का अनुयायी, समर्थक, आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार न करने वाला व्यक्ति/दर्शन/धर्म 2. भौतिकवाद, जड़वाद (बौद्ध), आत्मा शाश्वत तत्व नहीं बल्कि नित्य परिवर्तनशील है 3. नास्तिक दर्शन।

अनात्मवान् *वि.* (तत्.) असंयमी।

अनात्मा *वि.* (तत्.) 1. आत्मरहित 2. जो आत्मसंयमी न हो, जिसने स्वयं को वश में न किया हो *पुं.* आत्मा से भिन्न पदार्थ, जड़ पदार्थ, शरीर या शरीर संबंधी।

अनात्म्य *वि.* (तत्.) 1. शरीर रहित 2. जिसमें अपने परिवार के प्रति आत्मीयता, स्नेह न हो, प्रेम रहित व्यक्ति।

अनात्यंतिक *वि.* (तत्.) 1. जो सतत, अनंत या नित्यस्थायी न हो 2. जो सर्वोच्च या पूर्ण न हो 3. जो प्रचुर या अधिक न हो।

अनाथ *वि.* (तत्.) 1. नाथहीन, बिना मालिक का, यतीम, माता-पिता रहित (बच्चा) 2. असहाय, बेसहारा।

अनाथसभा *स्त्री.* (तत्.) 1. अनाथालय 2. निर्धन गृह।

अनाथालय *पुं.* (तत्.) वह स्थान जहाँ अनाथों का पालन-पोषण होता हैं, अनाथाश्रम।

अनाथाश्रम *पुं.* (तत्.) दे. अनाथालय।

अनाद *पुं.* (तत्.) ध्वनि में नाद-अंश का अभाव *वि.* (तत्.) नाद-रहित, घोष-रहित।

अनादर *पुं.* (तत्.) निरादर, अपमान, तिरस्कार, बेइज्जती, अवज्ञा।

अनादरण *पुं.* (तत्.) असम्मानपूर्ण व्यवहार करना।

अनादरणीय *वि.* (तत्.) 1. आदर के अयोग्य, अमाननीय 2. तिरस्कार-योग्य, बुरा।

अनादरित *वि.* (तद्.) दे. अनादृत।

अनादि *वि.* (तत्.) 1. जिसका आदि (आरंभ) न हो 2. जो सदा से हो।

अनादिमध्यांत *वि.* (तत्.) [अनादि+मध्य+अंत] 1. जिसका आदि, मध्य और अंत न हो, सनातन, शाश्वत, नित्य 2. ईश्वर।

अनादिष्ट *वि.* (तत्.) 1. वह काम/बात आदि जिसके लिये आदेश न दिया गया हो 2. (व्यक्ति) जिसे किसी काम आदि के लिए आदेश न दिया गया हो। आज्ञा न दी गई हो।

अनादिसिद्ध *वि.* (तत्.) अनादि काल से विद्यमान, शाश्वत, नित्य, अनादि काल से चलता आ रहा।

अनादृत *वि.* (तत्.) जिसका अनादर हुआ हो, अपमानित।

अनादृत विनिमय पत्र *पुं.* (तत्.) वह चेक, हुंडी आदि जिसकी राशि का भुगतान करने से भुगतान करने वाले पक्ष ने इनकार कर दिया हो।

अनादेय *वि.* (तत्.) जो आदेय अर्थात् ग्रहण करने योग्य न हो, न लेने योग्य।

अनादेश *पुं.* (तत्.) आदेश का अभाव, जिसके लिए आज्ञा न हो, जिसकी स्वीकृति न दी गई हो।

अनाद्य *वि.* (तत्.) 1. अखाद्य, जो आद्य अर्थात् खाने योग्य न हो 2. अनादि।

अनाद्यंत *वि.* (तत्.) जिसका आदि-अंत न हो *पुं.* (तत्.) शिव।

अनाद्यनंत *वि.* (तत्.) क्रमशः अनादि और अनंत, दे. अनाद्यंत।

अनाधार *वि.* (तत्.) निराधार, निरवलंब, अवलंब-रहित, आधार-रहित, बेसहारा।

अनाधि *वि.* (तत्.) आधि-रहित अर्थात् चिंतारहित या मानसिक कष्ट रहित।

अनानुग्रहिक कार्य *पुं.* (तत्.) वह कार्य जो प्रतिफल या लाभ को ध्यान में रख कर किया गया जाए न कि अनुग्रह या कल्याण की भावना से दे. आनुग्राहिक कार्य।

अनापत्ति *स्त्री.* (तत्.) जिसमें या जिसके करने में कोई आपत्ति न हो, जिसको करने, प्राप्त करने में कोई आपत्ति न हो।

अनापत्ति प्रमाणपत्र *पु.* (तत्.) प्रशा. निर्धारित नियमों और मानकों के अनुकूल होने के कारण सक्षम अधिकारी द्‌वारा दिया जाने वाला इस आशय का प्रमाणपत्र कि उन्हें उक्त विषय में कोई आपत्ति नहीं है। no-objection certificate

अनापद *स्त्री.* (तत्.) आपदा, संकट अथवा दुर्दिन का का न होना।

अनाप-शनाप *पुं.* (देश.) *वि.* अतिशय, अंडबंड, बेतुकीबात, बकवास।

अनापा *वि.* (तत्.) जिसे नापा न गया हो, अपरिचित, जिसे नापा न जा सके।

अनाप्त *वि.* (तत्.) 1. जो आप्त अर्थात् आत्मीय, यथार्थज्ञाता, प्रामाणिक, विश्वसनीय या कुशल न हो 2. जो प्राप्त न हुआ हो *पुं.* (तत्.) अजनबी।

अनाबंटित *वि.* (तत्.) जिसका आबंटन किसी के नाम नहीं हुआ हो। unalloted

अनाबिद्‌ध *वि.* (तत्.) 1. न बिंधा हुआ 2. अनाहत, जिसे चोट न पहुँची हो।

अनाम *वि.* (तत्.) 1. बिना नाम का; जो प्रसिद्‌ध न हो 2. अज्ञातनामा। anonymous

अनामक *वि.* (तत्.) अनाम, वह लेख, पुस्तक जिस पर कहीं भी लेखक का नाम न दिया गया हो anonymous

अनामय *वि.* (तत्.) आमय अर्थात् रोग से रहित, स्वस्थ, नीरोग।

अनामा *वि.* (तत्.) 1. बिना नाम वाला 2. अप्रसिद्‌ध 3. ऐसी कृति जिसके रचयिता का नाम ज्ञात न हो। 4. बदनाम।

अनामिक *वि.* (तत्.) बिना नाम का, अज्ञात।

अनामिक साक्षात्कार *पुं.* (तत्.) वह साक्षात्कार जिसमें भेंट (साक्षात्कार) देने वाले का नाम प्रकाशित नहीं किया जाता। ऐसे साक्षात्कार में अधिकारी के नाम के बजाय "एक उच्च अधिकारी" इत्यादि लिख दिया जाता है।

अनामिका *स्त्री.* (तत्.) कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उँगली, सबसे छोटी की बगल की उँगली *वि. स्त्री.* 1. बिना नाम की, जिसका कोई नाम न न हो 2. अप्रसिद्‌ध 3. जिसका नाम लेने योग्य न हो।

अनामिल *वि.* (तत्.) 1. अनाविल, स्वच्छ, निर्मल 2. जो खट्‌टा न हो।

अनामिष *वि.* (तत्.) जिसमे आमिष (मांस) न हो, निरामिष, मांसरहित, शाकाहारी।

अनामी *वि.* (तत्.) अनाम-संबंधी, बिना नाम वाला, अनाम, नाम रहित।

अनायक *वि.* (तत्.) 1. नायकहीन 2. नायक के गुणों से रहित।

अनायत्त *वि.* (तत्.) जो किसी के अधीन न हो, स्वाधीन, स्वतंत्र, अनधित, अनावलंबित।

अनायास *क्रि.वि.* (तत्.) एकाएक, अचानक, सहसा।

अनायुध *वि.* (तत्.) जिसके पास कोई अस्त्र-शस्त्र न हों, शस्त्र रहित।

अनायुष्य *पुं.* (तत्.) दीर्घ जीवन का अभाव, अल्पायु, कम आयु टि. जो आयुवर्धक न हो, जो दीर्घ जीवन के लिये हानिकारक हो।

अनारंभ *पुं.* (तत्.) जो आरंभ, शुरू न किया गया हो, आरंभ रहित, आरंभ से पूर्व।

अनार *पुं.* (फा.) 1. लाल रंग के सरस दानों से भरा एक फल और उसका वृक्ष 2. अनार के आकार की आतिशबाजी 3. दो छप्परों को बाँधने वाली रस्सी।

अनारदाना *पुं.* (फा.) अनार के सुखाए हुए दाने, रामदाना।

अनारबाज़ी *स्त्री.* (फा.) किसी खुशी के मौके पर अनार (नामक फुलझड़ी-युक्त पटाखे) जलाना।

अनारी *वि.* (तद्.) अनार के रंग का, लाल *पुं.* (तत्.) 1. लाल रंग की आँखवाला कबूतर 2. एक प्रकार का समोसा 2. दे. अनाड़ी।

अनारूढ़ *वि.* (तत्.) [अन्+हि.आरूढ़] जो आरूढ़ न हो, जो सवार न हो, जो आसीन न हो।

अनारोग्य *पुं.* (तत्.) अस्वस्थता, बीमारी, जो आरोग्य न हो।

अनारोग्यक *वि.* (तत्.) अस्वस्थ, बीमार करने वाला, अस्वस्थकर, रोगजनक।

अनार्जव *पुं.* (तत्.) 1. जिसमें आर्जव, ऋजुता या सीधापन न हो, टेढ़ापन 2. कुटिलता, कपट।

अनार्तव *पुं.* (तत्.) आर्तव या ऋतु धर्म या मासिक धर्म या रजोधर्म का न होना या अवरोध *वि.* (तत्.) नियत ऋतु से पहले होने वाला, समय से पूर्व, बे-मौसम।

अनार्तव जल *पुं.* (तत्.) बिना ऋतु के बादलों द्वारा बरसाया गया पानी, बेमौसम की बरसात।

अनार्थिक *वि.* (तत्.) जो आर्थिक या धन संबंधी न हो, अलाभकर।

अनार्य *वि.* (तत्.) आर्येतर, आर्य जाति से भिन्न, अश्रेष्ठ।

अनार्यकर्मी *वि.* (तत्.) नीच कर्म करने वाला।

अनार्यज *वि.* (तत्.) अनार्य से उत्पन्न, जो आर्य से उत्पन्न न हो।

अनार्यता *स्त्री.* (तत्.) 1. अनार्य होने की अवस्था, भाव 2. नीचता, अधमता। 3. म्लेच्छपन।

अनार्यत्व *पुं.* (तत्.) अनार्यता, जो आर्य (विशेष व्यक्ति) के अनुरूप न हो, स्वभाव या आचरण में अशिष्टता, श्रेष्ठ या सम्माननीय व्यक्ति से भिन्न आचरण, व्यवहार।

अनार्ष/अनार्षेय *वि.* (तत्.) 1. जो ऋषियों से संबंधित न हो 2. जो ऋषि सम्मत न हो 3. ऋषियों ने जिसका प्रयोग न किया हो 4. जो ऋषियों द्वारा बताये गये नियमों आदि के विरुद्ध हो 5. अवैदिक व्या. पाणिनि से पहले के किसी प्राचीन ग्रंथ में संस्कृत की पाणिनीय व्याकरण से असंगत परंतु त्रुटिपूर्ण न माना जाने वाला पद प्रयोग विलो. आर्ष/आर्षय।

अनालंब *वि.* (तत्.) अवलंबहीन *पुं.* (तत्.) आश्रित न होने की स्थिति।

अनालंबन *वि.* (तत्.) निरवलंब, निराश्रय। *पुं.* (तत्.) आश्रित न होने की स्थिति।

अनालंबी *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई आश्रय, सहारा न हो, निराश्रय, आश्रयहीन, असहाय, बेसहारा। 2. जो किसी पर निर्भर, आश्रित न हो।

अनालस्य *पुं.* (तत्.) आलस्य न होना, आलस्य का अभाव, अकर्मण्यता का न होना, शारीरिक या मानसिक शिथिलता का न होना, सुस्ती न होना।

अनालाप *वि.* (तत्.) 1. मौन, चुप, शांत 2. मितभाषी, कम बोलने वाला *पुं.* (तत्.) मितभाषण, बातचीत का न होना।

अनालोकित *वि.* (तत्.) जो आलोकित न हो, जहां प्रकाश न किया गया हो।

अनालोचित *वि.* (तत्.) 1. जो देखा न गया हो। 2. जिसकी आलोचना, समीक्षा न की गई हो। 3. जिसका विवेचन न किया गया हो।

अनालोड़ित *वि.* (तत्.) 1. जिसका मंथन न हुआ हो, जिसे मथा, बिलोया न गया हो, अमंथित 2. जिसकी विचारपूर्वक छान-बीन न की गई हो, जिस पर विचार-मंथन न हुआ हो 3. जिसे क्षोभ न हो।

अनावंटित *वि.* (तत्.) जो आबंटित न किया गया हो, जिसका बंटवारा न किया गया हो।

अनावरण *पुं.* (तत्.) 1. आवरण हटाने की क्रिया या भाव, पर्दा हटाना 2. किसी महापुरुष आदि की मूर्ति या चित्र पर पड़ा आवरण हटाकर उसे सार्वजनिक करने का कार्य 3. उपर्युक्त के संबंध में होने वाला समारोह 4. धूप/हवा में खुला पड़ा रहना।

अनावर्तक *वि.* (तत्.) [अन+आवर्तक] 1. जो बार-बार न हो, जिसकी पुनरावृत्ति न हो 2. जो एक ही बार दिया, किया जाए। non-recurring

अनावर्तन *पुं.* (तत्.) 1. न लौटना, वापस न आना। 2. पुनर्जन्म न होना 3. बार-बार न होना 4. पुनरावृत्ति न होना।

अनावर्ती *वि.* (तत्.) *स्त्री.* जो बार-बार न हो, जिसकी आवृत्ति न हो, जो किसी समयावधि में एक ही बार हो जैसे- अनावर्ती व्यय।

अनावर्ती अनुदान *पुं.* (तत्.) ऐसा अनुदान या ऐसी आर्थिक सहायता जो बार-बार न दी जाने वाली हो। non-recurring grant

अनावर्षण *पुं.* (तत्.) 1. वर्षा का अभाव, बारिश न होना। 2. सूखा पड़ना विलो. अतिवर्षण/ अतिवृष्टि)

अनावश्यक *वि.* (तत्.) जिसकी आवश्यकता न हो, निष्प्रयोजन। अनभीष्ट, अवांछनीय।

अनावश्यकता *स्त्री.* (तत्.) आवश्यकता का न होना, जरूरत न होने की स्थिति।

अनावासिक *वि.* (तत.) [आवास+इक=आवसिक (अन+आवासिक)] जिस किसी संस्था/प्रतिष्ठान/ शैक्षणिक विभाग आदि में निवास करने की व्यवस्था न हो, आवासरहित, गैर-रिहायशी उदा. 1. यह तकनीक शिक्षा संस्थान अनावासिक है 2. अनावासिक विभाग।

अनावासी *वि.* (तत्.) [आवास+इन प्रत्यय= आवासी अन+आवासी] 1. जो किसी स्थान पर स्थायी रूप से निवास करने वाला न हो। 2. जो अपने देश से जाकर किसी अन्य देश में अस्थायी रूप से विधिक व्यवस्था के तहत बस गया हो।

अनाविल(अनाबिल) *वि.* (तत्.) जो आबिल अर्थात् पंकिल या मटोला न हो 1. अपंकिल, स्वच्छ, निष्कलुष 2. स्वास्थ्यकर 3. स्पष्ट।

अनावृत *वि.* (तत्.) 1. जो ढका न हो, आवरण-रहित 2. उद्भासित।

अनावृतन *पुं.* (तत्.) [अन+आवृतन) 1. किसी वस्तु के ऊपर के आवरण को हटाना 2. किसी आवृत वस्तु के आवरण को पूरी तरह हटाना 3. भूमि या ज़मीन के ऊपरी सतह की मिट्टी का वर्षा, नदी, हवा आदि के प्राकृतिक प्रभाव से, इस प्रकार हट जाना जिससे उसका पथरीला अंश ऊपर निकला हुआ दिखाई दे। 4. किसी रहस्य या तथ्य को पूरी तरह खोल देना/स्पष्ट कर देना।

अनावृत-बीजी *वि.* (तत्.) (वन) पुष्पी पादपों के दो विशाल वर्गों में से एक जिसके बीज ढँके हुए नहीं होते। जैसे- चीड़ के बीज विलो. आवृतबीजी।

अनावृत वाचनालय *वि.* (तत्.) खुले अध्ययन-कक्ष वाला पुस्तकालय।

अनावृत्त *वि.* (तत्.) 1. न लौटा हुआ, पीछे न हटा हुआ 2. जिसकी आवृत्ति न की गई हो 3. जिसे दोहराया न गया हो।

अनावृत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. दुबारा न होने या किए जाने की स्थिति, संसार में दुबारा न आना 2. मोक्ष।

अनावृष्टि *स्त्री.* (तत्.) वर्षा का अभाव, सूखा।

अनावेदित *वि.* (तत्.) [अन+आवेदित] 1. जिस पर आवेदन न किया गया हो। 2. जो आवेदित न किया जा सका हो जैसे- अनावेदित-प्रपत्र विलो. आवेदित।

अनाश *वि.* (तत्.) 1. जिसका नाश न हो 2. जिसे नष्ट न किया गया हो 3. जीवित 4. आश-रहित, निराश।

अनाशक *वि.* (तत्.) 1. अनश्वर 2. हानि न करने वाला, नष्ट न करने वाला *पुं.* (तत्.) 1. अशन न करने वाला, उपवासी 2. अभीष्ट भोग का अभाव।

अनाशस्त *वि.* (तत्.) जो आशंसित या प्रशंसित न हो, अप्रशंसित।

अनाशी *वि.* (तत.) [न=अ+नाशी] 1. जिसका नाश न हो सकता हो, अनश्वर 2. जो नाश रहित हो, अमर, अविनाशी जैसे- ईश्वर अंश जीव भी अनाशी है। ईश्वर अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहज सुखरासी-तुलसीदास-रामचरितमानस।

अनाशु *वि.* (तत्.) 1. जो आशु या तीव्र न हो, मंद, जो तेज न हो 2. अनश्वर 3. जो व्यापक न हो।

अनाश्य *वि.* (तत.) [(न)=अ+नाश्य] 1. जिसका किसी तरह से नाश संभव न हो। 2. जो नाश करने योग्य न हो, अविनाश्य विलो. नाश्य।

अनाश्रमी *वि.* (तत.) 1. जो अब किसी आश्रम में न रहता हो, या जिसने आश्रम छोड़ दिया हो। 2. जो ब्रहमचर्यादि चतुर आश्रम व्यवस्था को न मानता हो 3. बिना आश्रमवाला/आश्रमरहित। विलो. आश्रमी।

अनाश्रय *वि.* (तत्.) निराश्रय, बेसहारा, अनाथ; दीन। *पुं.* (तत्.) आश्रय-रहित होने की स्थिति।

अनाश्रित *वि.* (तत्.) आश्रयरहित, बेसहारा।

अनास *वि.* (तत.) [अ+नासा] 1. जो नाक से रहित हो, बिना नाक का उदा. लक्ष्मण ने शूर्पनखा को अनास कर दिया था 2. लाक्ष. जिसने लोकनिंद्य कर्मो या आचरण से स्वयं व कुल को अपमानित किया हो, नकटा।

अनासक्त *स्त्री.* (तत्.) जो आसक्त न हो, जो अनुरक्त या लिप्त न हो।

अनासक्ति *स्त्री.* [अन्+आसक्ति] 1. किसी वस्तु विशेष पर किसी प्रकार का लगाव या अनुरक्ति न होना। 2. दर्श. सांसारिक भोगों के प्रति निर्लिप्तता 3. उदासीनता।

अनासिक *वि.* (तत्.) [अ+नासिका] 1. जो बिना नाक का हो 2. जिसकी नाक काट ली गई हो या 3. किसी कारण से नष्ट हो गई हो 3. नकटा।

अनासीन *वि.* (तत.) [अन्+आसीन] 1. जो अपने स्थान पर बैठा हुआ न हो। 2. किसी व्यक्ति या अधिकारी का अपने आसन पर आसीन न होना। जैसे- अनासीन न्यायाधीश। 3. जो अपने पद में आसीन न हो या जिसे उसके पद या सत्ता से मुक्त कर दिया गया हो विलो. आसीन जैसे- पदासीन।

अनास्थ *वि.* (तत.) [अन्+आस्था] जो किसी व्यक्ति, वस्तु, धर्म विशेष या आस्था/विश्वास न रखता हो, आस्थारहित।

अनास्था *स्त्री.* (तत्.) 1. आस्था, श्रद्धा या विश्वास का अभाव 2. अनादर, अवज्ञा 3. उदासीनता।

अनास्थावाद *पुं.* (तत.) एक दार्शनिक मत जिसके अनुसार किसी व्यक्ति, वाद, शास्त्र, धर्म आदि पर आस्था न रखने की बात हो।

अनास्रव *वि.* (तद्.) [अन.+आस्रव] 1. जिसका बहाव न हो या जिसका बहाव रोका गया हो 2. दर्श. जिसके मनन, चिंतन व धारण से संसार में जन्म और मृत्यु का प्रवाह रुकता हो जैसे- अस्रव-ज्ञानयोग/सांययोग आदि।

अनास्वाद *वि.* (तत्.) स्वादरहित, विरस *पुं.* (तत्.) स्वाद का अभाव, विरसता, नीरसता।

अनास्वादित *वि.* (तत्.) जिसका स्वाद न लिया गया हो, जिसे चखा न गया हो।

अनाहत *वि.* (तत्.) 1. जो आहत नहीं हुआ हो, जिस पर आघात न हुआ हो 2. अक्षुब्ध 3. अगणित, जिसका गुणन न किया गया हो *पुं.* 1. नया कपड़ा जो अभी पहना न गया हो। 2. अनहद नाद 3. हृदय-स्थित द्वादशदल कमल *पुं.* (तत्.) दे. अनहित चक्र।

अनाहत चक्र *पुं.* (तत्.) हठयोग के छह चक्रों में से एक, जिसका स्थान हृदय माना जाता है।

अनाहत ध्वनि *स्त्री* (तत्.) दे. आनहद नाद।

अनाहत नाद *पुं* (तत्.) दे. अनाहद नाद।

अनाहद वाणी *स्त्री.* (तत्.) देववाणी, आकाशवाणी।

अनाहद शब्द *पुं.* (तत्.) 1. दे. अनाहद नाद।

अनाहार *पुं.* (तत्.) भोजन का अभाव या भोजन-त्याग, अनशन *वि.* (तत्.) निराहार, जिसने कुछ न खाया हो।

अनाहारी *वि.* (तत्.) 1. आहार न लेनेवाला निराहारी 2. उपवास या अनशन करने वाला।

अनाहार्य *वि.* (तत्.) 1. जो लेने या ग्रहण करने योग्य न हो 2. जो खाने योग्य न हो।

अनाहिताग्नि *वि.* (तत.) [अन.+आहिताग्नि] 1. वह अग्नि जो घर में किसी गृहस्थ के द्वारा वैदिक जीवन पद्धति के अनुसार विधिवत स्थापित न की गई हो 2. घर में विधिवत अग्निहोत्र (यज्ञ) न करने वाला।

अनाहुति *स्त्री.* (तत्.) 1. हवन का अभाव 2. जो हवन कहलाने के योग्य नहीं हो 3. अनुचित बलि या अर्घ्य।

अनाहूत *वि.* (तत्.) बिना बुलाया हुआ, अनिमंत्रित।

अनिंगित *वि.* (तत.) [अन.+इंगित] 1. जो (विषय, वस्तु, तथ्य आदि) इंगित (स्पष्ट) न किया गया हो। 2. जो बिना किसी संकेत के बताया या कहा गया हो उदा. अनिंगित कथन।

अनिंदनीय *वि.* (तत्.) जो निंदा के योग्य न हो; निष्कलंक।

अनिंदित *वि.* (तत्.) जिसकी निंदा नही की गई हो, अकलंकित।

अनिंद्य *वि.* (तत्.) जो निंदा के योग्य न हो, निर्दोष, निर्दोष, उत्तम, प्रशंसनीय।

अनिकेत *वि.* (तत्.) 1. स्थान-रहित, बिना घर का 2. संन्यासी, परिव्राजक 3. खानाबदोश, घूम-फिर कर अनियत स्थानों पर रहनेवाला।

अनिगमित *वि.* (तत्.) [अ+निगमित] 1. जिस (संस्था/कंपनी आदि) को विधि के अनुसार पूर्णरूप से निगम के रूप में स्थापित न किया गया हो जैसे- अनिगमित संस्था/विभाग 2. वह व्यक्ति या वर्ग जो विधि द्वारा स्थापित निगम (स्थायी संघ/संकाय) में सम्मिलित उसका भाग न हो। unincorporate

अनिगीर्ण *वि.* (तत्.) [अ+निगीर्ण] 1. जिसे निगला गया न हो, अनिगीर्ण 2. जिसे खाया न गया हो 3. जो कहा गया न हो।

अनिग्रह *पुं.* (तत्.) 1. अनवरोध, बंधन का अभाव 2. दंड का न होना *वि.* (तत्.) 1. बंधनरहित 2. असीम, बेहद 3. अजेय 4. जिसे नियंत्रणाधीन रहने का दंड न दिया गया हो, अदंडित 5. जो दंड के योग्य न हो, अदंड्य।

अनिच्छ *वि.* (तत्.) [अन्+इच्छा] 1. जो किसी तरह की इच्छा ही न रखता हो, अभिलाषा रहित, निष्काम 2. *क्रि.वि.* अनिच्छ भोजन करना (बिना इच्छा के)

अनिच्छा *स्त्री.* (तत्.) इच्छा का अभाव, चाह न होना, अरुचि।

अनिच्छानुकरण *पुं.* (तत्.) [अनिच्छ+अनुकरण] बिना किसी इच्छा के किये जाने वाला अनुकरण मनो. मानव की एक मानसिक विकृति जब वह रुग्णावस्था में न चाहते हुए भी दूसरे लोगों की प्रवृत्तियों को देखकर उनका अनुकरण करने की चेष्टा करता है।

अनिच्छित *वि.* (तत्.) जिसकी इच्छा न हो, अनचाहा, अनभीष्ट, अनभीप्सित।

अनिच्छु *वि.* (तत्.) [अन्+इच्छु] किसी प्रकार की इच्छा न करने वाला, अनिच्छुक दे. अनिच्छ।

अनिच्छुक *वि.* (तत्.) इच्छा न रखनेवाला, अनभिलाषी, जिसे चाह न हो।

अनित्य *वि.* (तत्.) 1. जो हमेशा न हो, अस्थायी 2. नश्वर, नाशवान 3. जो एक-सा न रहे, सदा बदलता रहे 4. अनिश्चित, संदेहास्पद 5. (व्याकरण) जो अनिवार्य न होकर वैकल्पिक हो।

अनित्यकर्म *पुं.* (तत्.) 1. घर में एक निश्चित समय में किया जाने वाला वह कार्य जो नित्य कर्म से भिन्न हो जैसे- हवन-यज्ञ-दानादि कार्य। 2. वह कर्म जो नियमित रूप से न होकर कभी कभी किया जाए।

अनित्यक्रिया *स्त्री.* (तत्.) वह क्रिया-कर्म जो नित्य नित्य न किया जाए, अनित्यकर्म।

अनित्यता *स्त्री.* (तत्.) अनित्य अवस्था, अस्थिरता, क्षणभंगुरता, नश्वरता।

अनित्यभाव *पुं.* (तत्.) 1. वह भाव जो सदा स्थिर न रहे, अस्थायी 2. सदा न रहने वाला भाव, अनित्यता 3. मानव मन में उत्पन्न होने वाले, प्रेम, दया, श्रद्धा, क्रोधादि भावों की अनित्यता, अस्थिरता।

अनिदान *वि.* (तत्.) [अ+निदान] 1. जिस बात या समस्या आदि का कोई निदान (उपाय) संभव न हो 2. *पुं.* 1. निदान का अभाव 2. कारण ज्ञात न होना।

अनिदेशात्मक *वि.* (तत्.) [अ+निदेशात्मक] 1. जिसके बारे में कोई निदेश न दिया गया हो 2. जिसमें किसी प्रकार के निर्देशन का अभाव हो जैसे- अनिदेशात्मक कार्यशाला।

अनिद्र *वि.* (तत्.) निद्रारहित, बिना नींद का, जिसे नींद न आए; जागरूक *पुं.* अनिद्रा।

अनिद्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. नीद न आने की स्थिति या रोग 2. जागृत स्थिति, तत्परता।

अनिद्रित *वि.* (तत्.) जो सोया हुआ न हो, जागा हुआ।

अनिधिक *वि.* (तत्.) [अ+निधिक] 1. जो (संस्था/कंपनी आदि) निधि पर आधारित न हो। 2. जो किसी वस्तु या विषय का बहुत बड़ा आधार न हो। अर्थ. जो (योजना) किसी निधि (कोष) से संबंधित होकर संचालित न हो। अथवा जिसका संबंध किसी स्थापित निधि या कोष से न हो।

अनिधिक-ऋण *पुं.* (तत.) अर्थ. एक प्रकार का वह ऋण जो कोई विशिष्ट निधि स्थापित किये बिना सार्वजनिक रूप से दिया जाता है टि. सार्वजनिक ऋण प्रतिदेय और अप्रतिदेय दो प्रकार का होता है, अप्रतिदेय ऋण में सरकार ऋण न देकर केवल ऋणदाता को अवधि पर देय ब्याज देती है, प्रतिदेय ऋण निधिक या अनिधिक होता है, अनिधिक ऋण का भुगतान अवधि पूरी होने पर या उसका समय आने पर आय से कर दिया जाता है, जबकि निधिक ऋण में सरकार एक निधि कोष में आय का इतना भाग जमा करती जाती है कि ऋण भुगतान की तिथि आने पर पूर्ण भुगतान की राशि जोडक़र ऋणदाता को दी जाती है।

अनिपुण *वि.* (तत्.) [अ+निपुण] जो (किसी विषय में) निपुणता न रखता हो। अकुशल-अप्रवीण। विलो. निपुण।

अनिबद्ध *वि.* (तत्.) जो बँधा न हो, अबद्ध, असंबद्ध, बेसिलसिला।

अनिबद्ध रचना *स्त्री.* (तत्.) गायन-वादन (अर्थात् संगीत) की ऐसी रचना जो तालबद्ध नहीं होती।

अनिबाध *वि.* (तत्.) बाधारहित, स्वच्छंद, जिसे कोई बाधा न हो, *पुं.* *(तत्.)* स्वच्छंदता, मुक्तता।

अनिभृत *वि.* (तत्.) 1. जो निभृत अर्थात् गुपचुप न हो, जो छिपा न हो, प्रकाशित, सर्वज्ञात 2. ढीठ, धृष्ट।

अनिमंत्रित *वि.* (तत्.) जिसे निमंत्रित न किया गया हो, बिना बुलाया हुआ।

अनिमित *वि.* (तत्.) [अ+निमित्त] 1. जो बिना किसी निमित्त के हो, निमित्त रहित, निर्हेतुक कारण रहित, उद्देश्य रहित *पुं.* अपशकुन 2. बहाना *क्रि.वि.* बिना किसी उद्देश्य के, वह अनिमित्त ही वहाँ आया था।

अनिमिष *वि.* (तत्.) [अ+निमिष] 1. बिना पलक झपाये (देखने वाला) अपलक 2. सजग, जागरूक *क्रि.वि.* एकटक=वह अनिमिष देख रहा *पुं.* 1. सुर, देव 2. मछली।

अनिमिषदृष्टि *वि.* (तत्.) [अनिमिष+दृष्टि] 1. बिना पलक झपकाये नेत्रों से देखने वाला 2. एकटकी नजर वाला।

अनिमिषनयन *वि.* (तत्.)दे. अनिमिष दृष्टि।

अनिमेष *वि.* (तत्.) 1. अर्थात् पलक झपकाए बिना, निर्निमेष, टकटकी लगाए हुए, स्थिर-दृष्टि *क्रि.वि.* (तत्.) बिना पलक गिराए, एकटक *पुं.* (तत्.) 1. देवता 2. मछली 3. विष्णु 4. महाकाल।

अनियंत्रण *पुं.* (तत्.) 1. किसी प्रकार के नियंत्रण (नियम/बंधन) का अभाव 2. *वि.* जो बिना नियंत्रण के हो 3. किसी प्रकार के प्रतिबंध/नियम को न मानने वाला, स्वेच्छाचारी 4. उच्छृंखल जैसे-अनियंत्रण कार्य।

अनियंत्रित *वि.* (तत्.) 1. नियंत्रण-रहित, बे रोकटोक, मनमाना, स्वच्छंद, निरंकुश।

अनियंत्रित शासन *पुं.* (तत्.) 1. वह शासन या सरकार जो किसी प्रकार के विधि-नियमों आदि के नियंत्रण में व्यवस्थित न हो 2. बिना किसी नियंत्रण का शासन, निरंकुश सत्ता।

अनियत *वि.* (तत्.) 1. जो नियत न हो, अनिश्चित, अनिर्धारित 2. अस्थिर, जिसका ठिकाना न हो 3. अनियमित 4. अकारण।

अनियतकालिक *वि.* (तत्.) [अनियत+कालिक] 1. नियत काल में न होने वाला 2. जिस किसी कार्य के संपादन में काल (समय-अवधि) नियत न हो, अनियतकालिक प्रदर्शनी।

अनियततापी *वि.* (तत्.) (वे जंतु) जिनके शरीर का ताप नियत न होकर परिवेश के अनुसार घटता-बढ़ता रहता है उदा. मछली, सरीसृप् cold blooded

अनियतात्मा *वि.* (तत्.) 1. जिसका मन अपने नियंत्रण में न हो, चंचल मन, अवश्यात्मा 2. अस्थिर बुद्धि वाला 3. स्वच्छन्द।

अनियम *पुं.* (तत्.) 1. नियम का अभाव, नियम का न होना, अनियमितता, अव्यवस्था 2. अनिश्चितता 3. अस्पष्टता 4. अनुचित आचरण *वि.* नियमरहित, व्यवस्थारहित, अव्यवस्थित।

अनियम-परिवृतदोष *पुं.* (तत्.) साहि. एक प्रकार का वह अर्थदोष जिसमें 1. किसी वर्णनीय अर्थ का पूरी तरह अनियमित रूप से वर्णन किया जाए 2. नियमों की प्रतिकूलता से परिव्याप्त अर्थ दोष।

अनियमित *वि.* (तत्.) 1. नियमरहित, अविधिक, बेकायदा 2. अनिश्चित, अनियत 3. अव्यवस्थित।

अनियमित क्रिया *स्त्री.* (तत्.) वह क्रिया जो भाषा की तत्संबंधी अन्य प्रक्रियाओं की निर्धारित अभिरचना की अपवादी हो जैसे- हिंदी 'जा' क्रिया का 'गया' रूप।

अनियमितता *स्त्री.* (तत्.) नियमरहित या नियमविरुद्ध होने की स्थिति।

अनियमित रूप *पुं.* (तत्.) [व्या.] शब्द का वह रूप जो व्याकरण प्रक्रिया के अन्तर्गत पद निर्माण के नियमों के अनुसार न बना हो।

अनियमित संज्ञा *स्त्री.* (तत्.) वह संज्ञा शब्द जिसके व्याकरणिक रूप अपवाद के रूप में माने जाते हैं, उदा. हिंदी में 'चिड़िया' चिड़ियाँ तु. बालिका, बालिकाएं।

अनियार *वि.* (तद्.) [हि.अनी=नोक] 1. जो तीखी नोक वाला हो, नोकदार, पैना, नुकीला।

अनियारा *वि.* (तद्.) अनीदार, नुकीला, कँटीला, धारदार, तीक्ष्ण, तीखा।

अनियुक्त *वि.* (तत्.) जिसे नियुक्त न किया गया हो, अनधिकारी।

अनियोग *पुं.* (तत्.) 1. नियोजन न करना, काम पर न लगाना 2. योजन न बनाना।

अनियोजित *वि.* (तत्.) 1. जो योजना के अनुसार या योजनाबद्ध न हो जैसे- अनियोजित अर्थव्यवस्था 2. काम पर न लगाया गया।

अनियोजित अर्थव्यवस्था *स्त्री.* (तत्.) वह अर्थव्यवस्था जो किसी राष्ट्र या राज्य में बिना किसी योजना के कार्यान्वित की गई हो।

अनियोज्य *वि.* (तत.) [अ+नियोज्य] जो किसी प्रकार की सेवा या रोज़गार आदि में लगाने के लिए उपयुक्त न हो उदा. आज रोजगार कार्यालयों में दर्ज अनियोज्य व्यक्तियों की संख्या पर्याप्त है।

अनियोज्यता *वि.* (तत्.) [अनियोज्य+ता प्रत्यय] किसी सेवावृत्ति, रोजगार या श्रमकार्य आदि में नियोजन के योग्य न होने का गुण/भाव या अवस्था जैसे- आज तकनीकी युग में अनियोज्यता बढ़ गई है।

अनिरसित *वि.* (तत्.) कानून या नियम की वह स्थिति जिसमें उन्हें नई विधि बना कर अप्रभावी न कर दिया गया हो।

अनिराकरण *पुं.* (तत्.) निराकरण न करना दे. निराकरण।

अनिराकृत *वि.* (तत्.) जिसका निराकरण न किया गया हो, जो दूर न किया गया हो।

अनिरुक्त *वि.* (तत्.) 1. जो स्पष्ट से न कहा गया हो 2. जिसका निर्वचन स्पष्ट रूप से न किया गया हो।

अनिरुद्ध *वि.* (तत्.) जो रोका हुआ न हो, अबाध, बेरोक। *पुं.* श्रीकृष्ण का पौत्र और प्रद्युम्न का पुत्र।

अनिर्णय *पुं.* (तत्.) निर्णय का न होना, अनिश्चय।

अनिर्णीत *वि.* (तत्.) जिसके विषय में निर्णय न हो सका हो खेल. बराबरी पर छूटा हुआ tie, draw

अनिर्दश *वि.* (तत्.) बच्चे के जनन या मरण के बाद जिसके अशौच के दस दिन न बीते हों।

अनिर्दशा *वि.स्त्री.* (तत्.) जिस (गाय-भैंस को) बच्चा दिए दस दिन न बीते हों।

अनिर्दिष्ट *वि.* (तत्.) जो बताया न गया हो, अनिरूपित, अनिर्धारित, अनिश्चित।

अनिर्दिष्ट भूतकाल *पुं.* (तत्.) ऐसा भूतकालिक प्रयोग जो सामान्यत: उस क्रिया के भूतकालिक पक्ष को अनिश्चित या गौण बना देता है उदा. मैं आया तो तुम से जरूर मिलूँगा।

अनिर्देश *पुं.* (तत्.) 1. निर्देश न दिए जाने की स्थिति, न बताए जाने की स्थिति 2. अनुल्लेख।

अनिर्देश्य *वि.* (तत्.) [अ+निर्देश्य] 1. जो निर्देश देने के योग्य न हो 2. जिसके बारे में किसी प्रकार से निर्देश या मार्गदर्शन या विवेचन न किया जा सके।

अनिर्धारित *वि.* (तत्.) अनिरूपित, अनिश्चित, अनिर्दिष्ट, जिसका निर्धारण नहीं हुआ हो।

अनिर्धार्य *वि.* (तत्.) [अ+निर्धार्य] 1. जिसे निर्धारण के योग्य न समझा जाए 2. जिसका निर्धारण किसी तरह से भी संभव न हो जैसे- अनिर्धार्य खगोलीय सृष्टि।

अनिर्बंध *वि.* (तत्.) [अ+निर्बंध] 1. जो पूरी तरह बंधनरहित हो 2. जिसे बंधन में बाँधा न जा सका हो 3. मुक्त, स्वतंत्र।

अनिर्भर *वि.* (तत्.) [अ+निर्भर] 1. जो (अपनी आवश्यकता पूर्ति हेतु) किसी पर किसी तरह भी निर्भर न हो 2. निर्भरता रहित, समर्थ। विलो. निर्भर।

अनिर्वच *वि.* (तत्.) [अ+निर्वच] 1. जिसका वाणी से वर्णन न किया जा सके 2. अनिर्वचनीय जैसे- अनिर्वच आनंदानुभूति के क्षण सहज कहाँ।

अनिर्वचन *पुं.* (तत्.) 1. व्याख्या या निरुक्ति न करना 2. मौन, खामोशी, जोर से न बोलना।

अनिर्वचनीय *वि.* (तत्.) जिसका वर्णन न हो सके, अकथनीय, अवर्णनीय, जिसका निरूपण न हो सके।

अनिर्वाच्य *वि.* (तत्.) दे. अनिर्वचनीय।

अनिर्वाण *वि.* (तत्.) 1. न बुझा हुआ 2. न नहाया हुआ, अस्नात 3. अप्रक्षालित।

अनिर्वात *वि.* (तत्.) [अ+निर्वात] जो (स्थान/ कक्ष आदि) वायु से पूर्णत:रहित न हो।

अनिर्वाप्य *वि.* (तत.) जो बुझाया न जा सके, जैसे- अनिर्वाप्य दीपमालिका 2. लाक्ष. जिसकी क्रोधाग्नि या वैर जनित आक्रोश को ठंडा न किया जा सके, अनिर्वाप्य वैरता।

अनिर्वाह *पुं.* (तत्.) 1. निर्वाह न होने या न किए जाने की स्थिति 2. अपूर्णता, असंगति 3. आय की कमी, साधन की कमी, गुजारा न हो पाना 4. विषय, शैली या विन्यास का विधिवत् सम्यक् संपादन न कर पाना।

अनिर्वाह्य *वि.* (तत्.) जो निर्वाह के योग्य न हो, जिसकी व्यवस्था कठिनाई से हो, असुसंपाद्य।

अनिर्वेद *पुं.* (तत्.) [अ+निर्वेद] 1. दु:ख, खेद, खिन्नता का अभाव 2. वैराग्य का अभाव 3. उत्साह।

अनिल *पुं.* (तत्.) हवा, वायु, समीर।

अनिल कुमार *पुं.* (तत्.) 1. पवनपुत्र हनुमान 2. भीम 3. जैन धर्मदर्शन के अनुसार देवताओं का एक वर्ग।

अनिलप्रकृति *वि.* आयु. [अनिल-प्रकृति] 1. जिसमें वात तत्व की प्रधानता हो 2. वात प्रकृति प्रधान (कोई व्यक्ति) 3. पुं. शनि ग्रह।

अनिलय *वि.* (तत्.) आवास-रहित, आश्रय-स्थल से रहित।

अनिलवाह *वि.* (तत्.) 1. वायु की तरह तेज बहने वाला 2. हवा का वेग/वायु-प्रकोप 3. वायुमंडल।

अनिलात्मज *वि.* (तत.) [अनिल+आत्मज] 1. पवनपुत्र 2. हनुमान 3 भीम।

अनिलामय *वि.* (तत्.) [अनिल+आमय] 1. हवा के कारण होने वाल कोई शारीरिक रोग या कष्ट 2. वातजन्य रोग, वातरोग 3. गैस बनने से पेट का फूलना या अफारा।

अनिलाशी *वि.* (तत.) [अनिल+अशिन=आशी] 1. वह जो केवल वायु का पान करते हुए जीवनयापन करता है जैसे- अनिलाशी महात्मा 2. पुं. नाग/ सर्प।

अनिवर्तन *वि.* (तत्.) वापस न आना, दृढ़ एवं स्थिर रहना।

अनिवर्ती *वि.* (तत्.) 1. वापस न आनेवाला 2. तत्पर 3. पीठ न दिखाने वाला।

अनिवारित *वि.* (तत्.) [अ+निवारत] 1. जिसका निवारण न किया जा सका हो जैसे- अनिवारित युद्ध 2. अनियंत्रित 3. स्वच्छंद।

अनिवार्य *वि.* (तत्.) 1. जो होकर ही रहे inevitable 2. जिसे टाला न जा सके अर्थात् जिसका निवारण संभव न हो unavoidable 3. जिसे करने के लिए कोई विवश हो compulsory 4. जिसे करना कर्तव्य माना जाता हो। imperative

अनिवार्य अर्हता *स्त्री.* (तत्.) प्रशा. शैक्षिक योग्यता आदि की वह अर्हता जिसके न होने पर किसी व्यक्ति को संबंधित पद पर चयन या नियुक्ति के योग्य नहीं माना जाता है।

अनिवार्य निक्षेप *पुं.* (तत्.) राशि जिसे जमा कराने की नियमतः विवशता हो। compulsory-deposit

अनिवार्य योग्यता *स्त्री.* (तत्.) दे. अनिवार्य अर्हता।

अनिवार्य सेवा *स्त्री.* (तत्.) बिजली, पानी, परिवहन आदि की लोकोपयोगी सेवाएं (जो हड़ताल के दौरान बंद नहीं की जा सकती हैं)।

अनिवार्य सेवानिवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) कर्मचारी को किसी कारण-वश नौकरी से सेवामुक्त करना जो उसके सिद्धदोष घोषित होने या नौकरी का बाध्यताओं के कारण हो सकता है। compulsory retirement

अनिवार्य सैनिक भर्ती *स्त्री.* (तत्.) युद्ध के समय सभी स्वस्थ, समर्थ युवकों की सशस्त्र सेना में भर्ती। conscription

अनिवासी *वि.* (तत्.) जो विद्यमान स्थान, प्रदेश, देश आदि में निवास न करता हो। non-resident

अनिवासी भारतीय *पुं.* (तत्.) जन्मजात नागरिकता प्राप्त वह भारतीय व्यक्ति जो इस समय विदेशी नागरिकता ग्रहण कर वहाँ स्थायी रूप से निवास कर रहा हो (N R I) तु. प्रवासी भारतीय।

अनिवासी विद्यार्थी *पुं.* (तत्.) अवासीय विद्यालय विद्यालय का वह विद्यार्थी जो, उस विद्यालय के के छात्रावास में न रहकर कहीं बाहर रहते हुए वहाँ का नियमित छात्र हो।

अनिवास्य *वि.* (तत्.) [अ+निवास्य] जो (किसी स्थान विशेष पर) निवास करने के योग्य न हो या (किसी स्थान पर) जो निवास देने या बसाने लायक न हो।

अनिश *क्रि .वि.* (तत्.) निशा अर्थात् रात का भी ध्यान न रखते हुए, निरंतर, अनवरत, लगातार।

अनिश्चय *पुं.* (तत्.) संदेह, निश्चय का अभाव, संशय, अनिर्णय।

अनिश्चय वाचक सर्वनाम *पुं.* (तत्.) सर्वनाम का वह प्रकार जिससे अनिश्चित, अज्ञात व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध होता है जैसे- कोई, कुछ, किसी, कभी आदि।

अनिश्चयात्मक/अनिश्चायक *वि.* (तत्.) जो किसी निश्चय तक न पहुँचाए।

अनिश्चित *वि.* (तत्.) जिसका निश्चय न हुआ हो, अनियत, अनिर्दिष्ट, अनिर्धारित, जिसके विषय में कुछ स्थिर न हो।

अनिश्चित कालावधि *स्त्री.* (तत्.) जिसकी समय सीमा यानी अवधि निश्चित न हो।

अनिश्चितकालीन *वि.* (तत्.) जिसकी अवधि पहले से निश्चित न हो, जिसकी अवधि परिस्थिति के अनुसार बढ़ती-घटती जाए।

अनिश्चितता *स्त्री.* (तत्.) अनिश्चय की स्थिति, वह स्थिति जिसमें निश्चित होने की अवस्था या भाव न हो।

अनिषिद्ध *वि.* (तत्.) जिसका निषेध न हो, जो वर्जित न हो, जिसकी मनाही न हो।

अनिषेक *क्रि.वि.* (तत्.) [अ+निषेक] 1. बिना निषेक (निषेचन) किये जैसे- अनिषेक गर्भ का धारण विलो. निषेक।

अनिषेक-जनन *पुं.* (तत्.) वन. किसी पौधे के विकास की प्रक्रिया का वह रूप जो किसी युग्मक से निषेचन के बिना संभव होता है।

अनिषेकफलन *पुं.* (तत्.) कृषि. बिना निषेचन के ही भ्रूणरहित बीजों वाले फल का बनना दे. निषेचन।

अनिषेचता *वि.* (तत्.) [अ+निषेच्यता] वन. एक ही पौधे में पुष्प में स्वपरागण होने पर भी निषेचन एवं बीज उत्पन्न न होने की स्थिति विलो. निषेच्यता।

अनिष्ट *वि.* (तत्.) 1. जो इष्ट न हो, इच्छा के प्रतिकूल, अवांछित 2. बुरा *पुं.* (तत्.) अमंगल, अहित, हानि।

अनिष्टकर *वि.* (तत्.) अनिष्ट करनेवाला, अहितकारी, हानिकारक, अशुभकारक।

अनिष्ट-ग्रह *पुं.* (तत्.) [ज्योतिष] [अन.+इष्ट] 1. जन्म कुंडली में स्थित वे ग्रह जो स्थान, भाव-दृष्टि आदि के संबंध से जातक के लिए अशुभकारक होते हैं 2. पापग्रह विलो. इष्टग्रह।

अनिष्टपरिहार नियम *पुं.* (तत्.) विधि या अधिनियम के निर्वचन का वह सिद्धांत जिसके अनुसार प्रस्तुत अधिनियम की व्याख्या ऐसी की जानी चाहिए कि जिस अनिष्ट के निवारण के लिए वह अधिनियम बना है, उसका निवारण हो सके। mischief rule

अनिष्ट प्रसंग *पुं.* (तत्.) 1. किसी अशोभनीय बात या घटना का संदर्भ 2. किसी अप्रिय बात की चर्चा 3. किसी दुःखद या बुरी घटना या अनुचित विषय की वार्ता।

अनिष्ट फल *पुं.* (तत्.) अवांछित परिणाम, विषम फल।

अनिष्ट शंका *स्त्री.* (तत्.) [अनिष्ट-शंका] 1. किसी प्रकार का बुरा होने का भय 2. कोई अशुभ या अमंगल होने का डर।

अनिष्टकारी *वि.* (तत्.) दे. अनिष्टकर।

अनिष्टसूचक *वि.* (तत्.) अनिष्ट की सूचना देने वाला, अनिष्ट का द्योतक।

अनिष्टहेतु *पुं.* (तत्.) अनिष्ट होने के सूचक अपशकुन, बुरा लक्षण।

अनिष्टाप्ति *स्त्री.* (तत्.) [अनिष्ट+आप्ति] 1. किसी को अनिष्ट की प्राप्ति होने की स्थिति 2. बुरा होने की स्थिति 3. दुर्भाग्य की प्राप्ति।

अनिष्ठा *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी के प्रति निष्ठा का अभाव 2. श्रद्धा व विश्वास का न होना, विश्वासघात 3. ईमानदारी न होना।

अनिष्ठुर *वि.* (तत्.) 1. जो कठोर न हो, जो निर्दय न हो 2. दयावान, कोमलमना।

अनिष्पत्ति *स्त्री.* (तत्.) [अ+निष्पत्ति] 1. किसी कार्य के निष्पादन न होने की स्थिति 2. (किसी कार्य का) पूरा न होना, निष्पन्न न होना।

अनिष्पन्न *वि.* (तत्.) [अ+निष्पन्न] 1. जो (कार्य) निष्पन्न न हुआ हो 2. असिद्ध जैसे- अनिष्पन्न कार्यक्रम।

अनिस्तीर्ण *वि.* (तत्.) 1. जिसे छुटकारा प्राप्त न हुआ हो जैसे- किसी अभियोग या ऋण आदि से 2. जो पार न किया गया हो।

अनी *स्त्री.* (तद्.) 1. कोर, नोक, किनारा 2. नाव या जहाज का आगे का सिरा 3. मस्तक, माँग 4. जूते की नोक 5. समूह, दल, झुंड, सेना 6. मर्यादा 7. खेद, ग्लानि।

अनीक *पुं.* (तत्.) 1. सेना, युद्ध, समूह, पंक्ति 2. युद्ध।

अनीकिनी *स्त्री.* (तत्.) सेना का एक प्रकार जिसका बल अक्षौहिणी सेना के दसवें भाग के बराबर होता है, सैन्य दल, सैन्य पंक्ति।

अनीच *वि.* (तत्.) 1. जो नीच न हो 2. उत्तम, आदरणीय।

अनीड़ *वि.* (तत्.) 1. बिना घोंसले का 2. आश्रयहीन, जिसका अपना आवास न हो।

अनीत *वि.* (तत्.) [अ+नीत] 1. जो किसी के द्वारा ले जाया न गया हो जैसे- अनीत पुष्प, अनीत शिशु, अनीता (स्त्री) अनीता कन्या/माला 2. अनीत (स्त्री.) 1. नीति विपरीतता, नीति विरुद्ध 2. अनुचित आचरण 3. अन्याय 4. अनैतिकता दे. अनीति

अनीति *स्त्री.* (तत्.) 1. अन्याय, अत्याचार, अंधेर, नीति के विपरीत 2. दुष्टता।

अनीतिज्ञ *वि.* (तत्.) 1. जिसे सदाचार या नीति का ज्ञान न हो 2. दुराचार-प्रवण।

अनीतिमान् *वि.* (तत्.) [अनीति+मत प्रत्यय] अनीति का व्यवहार करने वाला, अनीति करने में कुशल, नीतिविरुद्ध अचरण करने वाला।

अनीदार *वि.* (तद्.) [हि.अनी+फा.दार] जो अनी से युक्त हो, अनीवाला, नुकीला।

अनीप्सित *वि.* (तत्.) अनिच्छित, अनभीष्ट।

अनील *वि.* (तत्.) [अ+नील] जो नीला न हो, नीले रंग से भिन्न अन्य जैसे- रक्त, हरित, आदि।

अनीश *वि.* (तत्.) 1. ईशरहित, बिना मालिक का 2. शक्तिहीन, असमर्थ 3. जिसके ऊपर कोई न हो, सर्वश्रेष्ठ *पुं.* (तत्.) 1. ईश्वर से भिन्न वस्तु, जीव, माया *स्त्री.* (तत्.) असहायावस्था, असमर्थता, दीनावस्था।

अनीश्वर *वि.* (तत्.) 1. दे. अनीश *वि.* (तत्.) ईश्वर को न माननेवाला।

अनीश्वरवाद *पुं.* (तत्.) ईश्वर के अस्तित्व पर अविश्वास, नास्तिकता।

अनीश्वरवादी *वि.* (तत्.) 1. ईश्वर को न माननेवाला, नास्तिक 2. मीमांसक।

अनीह *वि.* (तत्.) ईहा या इच्छा से रहित, निस्पृह, मोहमाया से रहित *पुं.* (तत्.) अयोध्या के एक नरेश का नाम।

अनीहा *स्त्री.* (तत्.) 1. उदासीनता 2. अवहेलना।

अनु *उप.* (तत्.) एक उपसर्ग जो शब्द से पहले अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है, जैसे- अनुसरण (बाद में, पीछे-पीछे), अनुरूप (सदृशता), अनुशीलन (बार-बार), अनुमति, अनुकूलता, अनुसचिव आदि *पुं.* (तत्.) राजा ययाति का एक पुत्र *पुं.* (तद्.) दे. अणु।

अनुकंपन *पुं.* (तत्.) दे. अनुकंपा *वि. (तत्.)* दया करनेवाला, कोमल हृदय, सहृदय।

अनुकंपा *स्त्री.* (तत्.) 1. दया, कृपा, करुणा 3. अनुग्रह। compassion

अनुकंपा भत्ता *पुं.* (तत्.) मृत्यु या विकलांगता होने पर आश्रित या पीड़ित को दिया जाने वाला भत्ता। compassionate allowance

अनुकंपित *वि.* (तत्.) जिस पर कृपा की गई हो, अनुगृहीत।

अनुकंप्य *वि.* (तत्.) दया के योग्य, सहानुभूति का पात्र।

अनुक *पुं.* (तत्.) (लगातार कामना करने वाला) कामुक, विषयी, कामी (व्यक्ति) *वि.* (तत्.) 1. लालची 2. इच्छुक 3. कामवासनाग्रस्त 4. अधीन, आश्रित।

अनुकथन *पुं.* (तत्.) उत्तर के रूप में या बाद में कही गई बात, क्रमबद्ध वचन, वार्तालाप।

अनुकथनीय *वि.* (तत्.) बाद में वर्णन करने योग्य; पीछे कहने योग्य, बातचीत करने योग्य।

अनुकर *पुं.* (तत्.) सहायक, अनुकर्मी।

अनुकरण *पुं.* (तत्.) किसी की देखा-देखी किया गया काम, नकल।

अनुकरण शब्द *पुं.* (तत्.) विभिन्न स्थितियों में उत्पन्न ध्वनियों के आधार पर बने शब्द, जैसे- खटखटाना, खनखनाना दे. अनुरणन।

अनुकरणात्मक शब्द *पुं.* (तत्.) दे. अनुरणन।

अनुकरणीय *वि.* (तत्.) 1. अनुकरण करने योग्य, नकल करने लायक 2. प्रशंसनीय।

अनुकर्ता *पुं.* (तत्.) 1. अनुकरण करनेवाला, नकल करने वाला 2. आज्ञाकारी 3. आदर्श पर चलनेवाला।

अनुकर्म *पुं.* (तत्.) अनुकरण, नकल।

अनुकर्ष *पु.* (तत्.) 1. गाड़ी या रथ का तला 2. खिंचाव, आकर्षण 3. देवता का आह्वान।

अनुकर्षण *पुं.* (तत्.) आकर्षण, खिंचाव, आह्वान।

अनुकल्प *पुं.* (तत्.) आवश्यकतानुसार निर्दिष्ट कार्य के अभाव में अन्य विकल्प का व्यवहार।

अनुकल्पतः *अव्य.* (तत्.) अनुकल्प के रूप में।

अनुकल्पी *वि.* (तत्.) दे. आनुकल्पिक।

अनुकांक्षा *स्त्री.* (तत्.) इच्छा, अभिलाषा, आकांक्षा।

अनुकांक्षी *वि.* (तत्.) इच्छा रखनेवाला, चाहनेवाला, आकांक्षी।

अनुकाम *वि.* (तत्.) 1. प्रिय 2. इच्छानुकूल, इच्छुक 3. विलासी।

अनुकामी *वि.* (तत्.) इच्छानुसार कार्य करनेवाला, स्वेच्छाचारी।

अनुकारक *वि.* (तत्.) [अनु+कारक] किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के गुण, भाव आदि का पूरी तरह अनुकरण करने वाला, नकल करने वाला।

अनुकारी *वि.* (तत्.) [अनुकार+इन्(ई) प्रत्यय] 1. अनुकरण करने की प्रवृत्ति वाला 2. आज्ञा मानने वाला आज्ञाकारी।

अनुकार्य *वि.* (तत्.) अनुकरण-योग्य, जिसकी नकल की जा सके, नकल के योग्य *पुं. (तत्.)* 1. अभिनेता द्वारा अनुकृत व्यक्ति 2. वह जिसकी नकल संभव हो।

अनुकूल *वि.* (तत्.) 1. अनुरूप, अभिमत या अभीष्ट के अनुसार, लक्ष्यपूर्ति में सहायक, हितकर 2. वह नायक जो एक ही विवाहिता पत्नी में अनुरक्त हो *क्रि.वि.* (तद्.) ओर, तरफ।

अनुकूलक *पुं.* (तत्.) यां. इंजी. 1. वह युक्ति जो अलग-अलग साइजों या डिजाइनों वाले उपकरणों को परस्पर समायोजित करती है 2. वह उपसाधन जो मशीनों या उपकरणों को किसी नए उपयोग में प्रवर्तित कर देती है adaptor

अनुकूलता *स्त्री.* (तत्.) अनुरूपता, पक्ष-पोषकता, सहायक या हितकर होने की स्थिति।

अनुकूलन *पुं.* (तत्.) 1. किसी उपकरण आदि को अपनी आवश्यकता के अनुरूप आशोधित करना 2. परिवेश के अनुकूल होने, करने या बनने का भाव 3. प्राणि. जीव में हुआ कोई संरचनात्मक या कार्यात्मक परिवर्तन जो उसे परिवेश में अपने को बनाए रखने में सहायक होता है 4. किसी पूर्व नियम, विधेयक आदि में आवश्यकतानुसार परिवर्तन करके उसे वांछित रूप प्रदान करना। adaptation

अनुकूलनशीलता *स्त्री.* (तत्.) प्राणी और पादप की वह सहज क्षमता जो उसे परिवर्तित पर्यावरण के अनुसार ढलने में सहायक होती है।

अनुकूलित *वि.* (तत्.) जिसका अनुकूलन हुआ हो, अनुकूल बनाया गया।

अनुकृत *वि.* (तत्.) [अनु+कृत] 1. जिसका किसी के द्वारा अनुकरण किया गया हो, नकल किया हुआ, जैसे- अनुकृत लेख/ अनुकृत अभिनय 2. जो किसी का अनुकरण करके बनाया गया हो, जैसे- अनुकृत चित्र, अनुकृत मंडप।

अनुकृति *स्त्री.* (तत्.) 1. अनुकरण, समान आचरण, देख कर किया गया कार्य 2. किसी पादप या प्राणी द्वारा अन्य पादप या प्राणी की रूपाकृति को ग्रहण करना, अनुकरण 3. नाटक आदि में अन्य पात्र का स्वांग भरना, विडंबन, अनुकार।

अनुकृष्ट *वि.* (तत्.) 1. आकृष्ट, खिंचा हुआ 2. आरोपित।

अनुक्त *वि.* (तत्.) [अन्+उक्त] जो कहा न गया हो, अकथित जैसे- अनुक्त परिभाषा, अनुक्त संदेश।

अनुक्ति *स्त्री.* (तत्.) [अन्+उक्ति] 1. न कहने योग्य उक्ति, अनुचित उक्ति 2. जिसका कथन न किया गया हो, कथन रहित।

अनुक्रंदन *पुं.* (तत्.) (बाद में) चिल्लाहट, रूदन।

अनुक्रम *वि.* (तत्.) 1. लगातार एक के बाद एक के आने या होने की क्रिया या सिलसिला 2. गणि. किसी नियम विशेष के अनुसार क्रम में रखी गई राशियों का समुच्चय। sequence

अनुक्रमण *पुं.* (तत्.) 1. क्रमबद्ध रूप में आगे बढ़ना 2. पीछे-पीछे चलना, अनुगमन 3. पारि. किसी पादप समुदाय के गुणधर्मों में विकास के अनुसार उसका स्थान उन्नत पादप-समुदाय द्वारा द्वारा ले लिया जाना (जब तक उपयुक्त जाति विकसित नहीं हो। जाती sucecession

अनुक्रमणिका *स्त्री.* (तत्.) 1. अकारादिक्रम से तैयार की गई शब्द-सूची, विषय-सूची आदि जिसमें तद्विषयक संक्षिप्त जानकारी भी दी सकती है यह प्रायः पुस्तक के अंत में होती है index 2. अनुक्रम का विवरण।

अनुक्रमणी *स्त्री.* (तत्.) दे. अनुक्रमणिका।

अनुक्रमिक *वि.* (तत्.) [अनुक्रम+इक] एक के बाद एक क्रम से आने वाला या होने वाला, क्रमशः क्रम के अनुसार, सिलसिलेवार, अनुक्रमी जैसे- अग्रक्रमिक सांस्कृतिक कार्यक्रम।

अनुक्रमी *वि.* (तत्.) [अनुक्रम+इन=ई प्रत्यय] 'एक के बाद एक' इस क्रम से होने वाला दे. अनुक्रमिक।

अनुक्रिया *स्त्री.* (तत्.) [अनु+क्रिया] किसी क्रिया (कार्य) के पश्चात् परिणामस्वरूप होने वाली क्रिया, प्रतिक्रिया मनो. 1. किसी उद्दीपन के कारण शरीर में होने वाला ग्रंथि स्राव, पेशी संकोच आदि कोई जैविक क्रिया 2. उद्दीपन के कारण जीव के किसी अंग में होने वाला अनुकूल परिवर्तन जैसे- तेज आवाज सुनकर कानों को हाथ आदि से बंद करना एक अनुक्रिया है 3. मानव की मानसिक प्रक्रिया के फलस्वरूप होने वाली कोई अन्य मानसिक प्रतिक्रिया।

अनुक्रियाशील *वि.* (तत्.) [अनुक्रिया+शील] 1. जिसका अनुक्रिया करना स्वभाव हो 2. प्रतिक्रिया करने वाला।

अनुक्षण *वि.* (तत्.) प्रतिक्षण; लगातार, निरंतर।

अनुगंता *वि.* (तत्.) 1. किसी का अनुगमन करने वाला, पीछे चलने वाला 2. किसी महान् व्यक्ति (गुरु/महापुरुष आदि) के आचरण का अनुकरण करने वाला 3. किसी के आज्ञानुसार कार्य करने वाला 4. किसी विशेष सिद्धांत या आदर्श का अनुयायी।

अनुग *वि.* (तत्.) अनुगामी, पीछे चलनेवाला, अनुयायी। *पुं.* (तत्.) सेवक, नौकर, सहायक।

अनुगत *वि.* (तत्.) पीछे-पीछे चलनेवाला, अनुगामी, अनुयायी *पुं.* (तत्.) सेवक, नौकर, पीछे-पीछे चलने वाला।

अनुगतार्थ *वि.* (तत्.) [अनुगत+अर्थ] अनुकूल अर्थ वाला, समान अर्थ वाला।

अनुगति *स्त्री.* (तत्.) 1. अनुगमन, अनुसरण, पीछे-पीछे चलना 2. अनुकरण, नकल।

अनुगतिक *वि.* (तत्.) अनुसरण करनेवाला, नकल करने वाला।

अनुगमन *पुं.* (तत्.) 1. पीछे चलना, अनुसरण 2. समान आचरण (करना) 3. स्वीकार, मानना 4. समीप जाना 5. नकल 6. अर्थ का ठीक ज्ञान।

अनुगम्य *पुं.* (तत्.) 1. वह व्यक्ति जिसका अनुसरण या अनुकरण किया जाए 2. वह विषय जिसे समझा जाना चाहिए।

अनुगामिता *स्त्री.* (तत्.) [अनुगामिन्+ता प्रत्यय] 1. किसी का अनुगामी होने की क्रिया या भाव 2. अनुसरणशीलता 3. अनुगमन।

अनुगामी *वि.* (तत्.) 1. अनुसरण करनेवाला, पीछे चलनेवाला, समान आचरण करनेवाला 2. आज्ञाकारी, आदेश माननेवाला।

अनुगायक *वि.* (तत्.) [अन+गायक] 1. गायन में संगति करने वाला 2. अनुगायन करने वाला।

अनुगायन *पुं.* (तत्.) किसी के साथ-साथ गाना, गाने में साथ देना, किसी विशेष ढंग के गायन में साथ देना।

अनुगीत *पुं.* (तत्.) [अनु+गीत] 1. किसी संगीत वाद्य (हारमोनियम आदि) की ध्वनि के पश्चात् उसी लय में गाया गया गीत 2. किसी गीत का अनुकरण कर उसी लय, स्वर में लिखा गया गीत।

अनुगीता *स्त्री.* (तत्.) महाभारत के अश्व मेध पर्व के 16 से 92 तक के अध्यायों का नाम।

अनुगुंजन *पुं.* (तत्.) [अनु+गुंजन] 1. एक ध्वनि के पश्चात् गूँजने वाली आवाज, गूँज प्रतिध्वनि, जैसे- संगीत वाद्यों व गायकों के गीत का अनुगुंजन।

अनुगुण *पुं.* (तत्.) साहि. एक काव्यालंकार जिसमें किसी वस्तु के गुण का दूसरी वस्तु के संसर्ग से

प्रभावित होना दिखाया जाए *वि.* (तत्.) 1. समान गुणों वाला, समान प्रकृति वाला 2. अनुकूल, मनपसंद 3. आज्ञाकारी।

अनुगूँज *स्त्री.* (तत्.) [अनु+हि.गूँज] 1. किसी प्रकार की ध्वनि के पश्चात् होने वाली आवाज, प्रतिध्वनि 2. लाक्ष. किसी व्यक्ति, वस्तु आदि की विशेष योग्यता या गुण की लोगों में की जाने वाली जोर-शोर से चर्चा।

अनुग्रह *पुं.* (तत्.) दूसरे का दुःख दूर करने की इच्छा, कृपा, दया, अनुकंपा।

अनुग्रह अनुदान *पुं.* (तत्.) असाधारण परिस्थितियों में (जैसे- विपदाग्रस्त लोगों को) अनुकंपा के रूप में दी जाने वाली आर्थिक सहायता।

अनुग्रह काल *पुं.* (तत्.) दे. अनुग्रह अवधि।

अनुग्रह-अवधि *स्त्री.* (तत्.) वाणि. किसी को अनुग्रह के रूप में दिया गया वह समय जो किसी हुंडी आदि की एक निश्चित अवधि बीत जाने के बाद उसके भुगतान के लिए स्वीकार किया जाता है, रियायती दिन/समय grace period

अनुग्रहधन *पुं.* (तत्.) 1. किसी कर्मचारी को उसकी सेवा के अनुरूप उसके कल्याणार्थ दिया जाने वाला धन, अनुग्रह राशि 2. विषम परिस्थिति में किसी कर्मचारी या उसके परिवार को सहायतार्थ दी जाने वाली धनराशि, अनुकंपा राशि।

अनुग्रह राशि *स्त्री.* (तत्.) दे. अनुग्रह अनुदान।

अनुग्रहार्थ *अव्य.* (तत्.) अनुग्रह के रूप में।

अनुग्रहीत *वि.* (तत्.) जिस पर अनुग्रह किया गया हो, उपकृत।

अनुग्राहक *वि.* (तत्.) [अनु+ग्राहक] अनुग्रह करने वाला (कोई व्यक्ति या अधिकारी), अनुकंपा करने वाला, कृपालु।

अनुग्राही *वि.* (तत्.) 1. अनुग्रह करने वाला, कृपालु, उपकारी 2. सहायक।

अनुग्राह्य *वि.* (तत्.) अनुग्रह का पात्र।

अनुघटना *स्त्री.* (तत्.) मनो. जीवन में या प्रकृति में एक घटना के पश्चात् होने वाली एक दूसरी घटना जिसका पहले वाली घटना से सीधे कोई कार्य-कारण संबंध संभावित नहीं होता 2. एक घटना के पश्चात् घटित दूसरी घटना।

अनुचर *पुं.* (तत्.) 1. पीछे चलनेवाला, नौकर, सेवक 2. सहचर, साथी 3. सहायक।

अनुचरण *पुं.* (तत्.) 1. पीछे पीछे चलने का भाव या क्रिया। 2. सेवाकर्म जैसे- संतों का अनुचरण।

अनुचरवर्ग *पुं.* (तत्.) सेवक वर्ग, परिचारक वर्ग।

अनुचरी *स्त्री.* (तत्.) सेविका, दासी, परिचारिका, सहायिका।

अनुचारक *पुं.* (तत्.) सेवक, परिचारक, अनुगामी, सहायक।

अनुचारिका *स्त्री.* (तत्.) दे. अनुचरी।

अनुचारी *वि.* (तत्.) दे. अनुचरी।

अनुचिंतन *पुं.* (तत्.) मनन, सोच-विचार, गौर, किसी विषय या बात पर फिर से चिंतन करना, लगातार चिंतन।

अनुचिंता *स्त्री.* (तत्.) [अन्,+चिंता] 1. किसी गत बात का चिंतन 2. निरंतर चिंतन 3. सोच-विचार की प्रक्रिया 4. किसी का सतत स्मरण।

अनुचिंतित *वि.* (तत्.) [अन्,+चिंतित] जिस घटना या स्थिति का अनुचिंतन किया गया हो, अर्थात् बाद में ठीक से उस पर सोचा विचारा गया हो।

अनुचित *वि.* (तत्.) अनुपयुक्त, बुरा, खराब, प्रतिकूल, नामुनासिब।

अनुचितार्थ *पुं.* (तत्.) [अनुचित+अर्थ] अनुचित अर्थ, जिस बात का अर्थ उचित न हो साहि. वाक्य में प्रयुक्त किसी शब्द का अनुचित अर्थ होने का दोष, एक प्रकार का शब्द दोष।

अनुचित्रण *पुं.* (तत्.) [अनु+चित्रण] चित्र को नकल करके बनाना, (मुद्रण) चित्र को दूसरी जगह उतारने की प्रक्रिया, जैसे- अनुचित्रण

कागज जिसका प्रयोग किसी पत्थर आदि पर चित्र आदि उतारने के लिए होता है।

अनुच्च *वि.* (तत्.) [अन्+उच्च] 1. जो उच्च (ऊँचा) न हो, निम्न 2. जो उच्च (कुलीन) न हो, नीच विलो. उच्च।

अनुच्चरित *वि.* (तत्.) जिसका उच्चारण न हुआ हो, वह स्वर या व्यंजन जिसका उच्चारण बोलने में न होता हो जैसे- सोऽहम में अ' अनुच्चरित है।

अनुच्छिष्ट *वि.* (तत्.) [अन्+उच्छिष्ट] 1. जो उच्छिष्ट (जूठा) न हो, जैसे- अनुच्छिष्ट भोजन 2. जिस आहार का पहले किसी के द्वारा उपयोग उपयोग न किया गया हो विलो. उच्छिष्ट।

अनुच्छेद *पुं.* (तत्.) 1. किसी अधिनियम, संविधि आदि का पैरा 2. किसी लेख आदि का पैराग्राफ।

अनुच्छेदन *पुं.* (तत्.) 1. किसी विषय पर छोटा लेख लिखकर अनुच्छेद बनाना 2. किसी विधान, नियमावली का एक संक्षिप्त रूप बनाना। paragraphing

अनुज *पुं.* (तत्.) छोटा भाई, बाद में उत्पन्न होने वाला।

अनुजन्मा *वि.* (तत्.) [अनुजन्मन्] जिसके जन्म के पश्चात किसी का जन्म हुआ हो, अनुज, छोटा भाई।

अनुजा *स्त्री.* (तत्.) छोटी बहन।

अनुजात *वि.* (तत्.) [अनु+जात] जो बाद में पैदा हुआ, अनुज दे. अनुज, अनुजा (स्त्री)

अनुजीवी *वि.* (तत्.) दूसरे के सहारे पर जीनेवाला, आश्रित *पुं. (तत्.)* 1. सेवक, नौकर, दास 2. किसी व्यवसाय के मुख्य व्यवसायकर्मियों को छोडक़र उसके कार्य से जीविका कमाने वाले अन्य कर्मी 3. किसी (संपन्न) परिवार का काम कभी-कभार करके उस पर आश्रित व्यक्ति।

अनुज्ज्वल *वि.* (तत्.) [अन्+उज्ज्वल] 1. जो उज्ज्वल न हो जैसे- ग्रीष्मकाल का अनुज्ज्वल नभ 2. जो स्वच्छ, शुभ, प्रकाशमान न हो विलो. उज्ज्वल।

अनुज्ञप्त *वि.* (तत्.) 1. जिसके लिए किसी कार्य योजना की अनुज्ञा (स्वीकृति) मिल गई हो, स्वीकृत कार्य 2. जो (व्यक्ति) किसी संबंध में अनुज्ञा (स्वीकृति) प्राप्त कर चुका हो अनुज्ञाप्राप्त/ स्वीकृति प्राप्त।

अनुज्ञप्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. आधिकारिक अनुमति 2. 2. वह पत्र जिसमें अनुज्ञा लिखी हो।

अनुज्ञप्ति-धारी *पुं.* (तत्.) व्यक्ति जिसके पास किसी कार्य-व्यापार आदि को करने के लिए अनुज्ञप्ति licence हो।

अनुज्ञा *स्त्री.* (तत्.) औपचारिक आज्ञा, आदेश। permission

अनुज्ञात *वि.* (तत्.) जिसे आदेश या आज्ञा प्राप्त हो, अनुमति-प्राप्त।

अनुज्ञात्मक *वि.* (तत्.) [अनुज्ञा+आत्मक] 1. जो (कार्य) अनुज्ञा देने से संबंध रखता हो या जिसमें अनुज्ञा प्राप्त करना अपेक्षित हो, अनुमति देने से संबंधित 2. प्रशासकीय व्यवस्था में अनुमति देने वाला कोई प्रलेख, कानून, नियम आदि अनुज्ञात्मक प्रलेख। permissive document

अनुज्ञात्मक समाज *पुं.* (तत्.) वह समाज जो स्त्री-पुरुषों के लिए परस्पर स्वच्छंद प्रेम व मिलन आदि की अनुमति देता हो, बंधनमुक्त समाज/वर्जनाहीन समाज। permissive society

अनुज्ञापक *वि.* (तत्.) [अनु+ज्ञापक] 1. अनुज्ञा प्रदान करने वाला 2. सामाजिक रूप से स्वच्छंद, शारीरिक प्रेम आदि का प्रतिबंध या निषेध न करने वाला जैसे- अनुज्ञापक नवयुगल।

अनुज्ञापत्र *पुं.* (तत्.) किसी विशेष कार्य या व्यवसाय हेतु लिखित आधिकारिक अनुमति permit

अनुज्ञापन *पुं.* (तत्.) [अनु+ज्ञापन] 1. अनुज्ञा देने का कार्य, अनुज्ञा देना जैसे- पदोन्नति का अनुज्ञापन।

अनुज्ञेय *वि.* (तत्.) जिसकी अनुज्ञा अथवा अनुमति दी जा सके।

अनुण *वि. (तत्.)* जो सूक्ष्म न हो, मोटा अनाज।

अनुतप्त *वि.* (तत्.) [अनु+तप्त] 1. जो किसी प्रकार के अनुताप या पश्चाताप से युक्त हो, पश्चाताप युक्त 2. किसी नासमझी से बहुत व्यथित 3. मानसिक खिन्नता से युक्त जैसे- अनुतप्त वह दीन सा अनुगमन तब कर रहा।

अनुतान *पुं.* (तत्.) भाषा. स्वर का उतार-चढ़ाव जो वाक्य के उच्चारण का एक खंडेतर विशिष्ट अभिलक्षण है तुं. बलाघात।

अनुताननीय समतुल्य *वि.* (तत्.) भाषा. जो किसी 'स्रोत भाषा' से किये गए 'लक्ष्य भाषा' के अनुवाद में पूरी तरह ठीक ढंग से प्रयुक्त हो जाने वाला हो।

अनुतान परिरेखा *स्त्री.* (तत्.) भाषा. वाक्य के ऊपर उस वाक्य के अनुतान के उतार-चढ़ाव को आरेखीय रूप से दिखाने के लिए उस वाक्य के ऊपर डाली जाने वाली रेखा।

अनुताप *पुं.* (तत्.) 1. तपन, जलन 2. दुःख, खेद, पीड़ा 3. पश्चाताप, अफसोस।

अनुतापन *वि.* (तत्.) दुःख देनेवाला, पश्चाताप करानेवाला *पुं.* (तत्.) 1. दुःख देना 2. पश्चाताप करना, पछतावा करना।

अनुतुष्ट *वि.* (तत्.) [अनु+तुष्ट] 1. जो किसी व्यवहार, कार्यसिद्‌धि आदि के परिमाण स्वरूप संतुष्ट हो गया हो। संतुष्ट 2. संतोषयुक्त जैसे- अनुतुष्ट छात्रवर्ग।

अनुतोष *पुं.* (तत्.) प्रार्थी द्वारा बताई गई विपत्तियों और असुविधाओं का न्यायालय द्वारा निवारण, इस तरह के निवारण के लिए प्रदत्त सुविधा/राहत। relief

अनुतोषण *पुं.* (तत्.) [अनु+तोषण] 1. किसी व्यवस्था या अनुकूल कार्य-सिद्‌धि से संतुष्ट होना। 2. किसी को अन्न-धन आदि देकर अनुकूल बनाना।

अनुत्तम *वि.* (तत्.) [अन्+उत्तम] 1. उत्तम होने का अभाव, जो उत्तम न हो 2. जिससे अधिक उत्तम अन्य कोई न हो 3. सर्वोत्तम, सबसे अच्छा जैसे- कृष्ण की अनुत्तम छवि प्यारी।

अनुत्तर *वि.* (तत्.) 1. निरुत्तर, उत्तर रहित 2. जो उत्तर दिशा में न हो 3. लाजवाब।

अनुत्तरदायित्व *पुं.* (तत्.) [अन्+उत्तरदायित्व] उत्तरदायित्व न होने का भाव, उत्तरदायित्वहीनता, जिम्मेदारी से रहित विलो. उत्तरदायित्व।

अनुत्तरदायी *वि.* (तत्.) 1. उत्तरदायित्व न सँभालनेवाला, कर्तव्य न पूरा करनेवाला 2. उत्तर न देने वाला।

अनुत्तरित *वि.* (तत्.) उत्तररहित, उत्तरविहीन।

अनुत्तान *वि.* (तत्.) जो उत्तान न हो, छाती के बल लेटा हुआ, जो पीठ के बल न हो।

अनुत्तिष्ठता *स्त्री.* (तत्.) [अन्+उत्तिष्ठता] मनो. शरीर की वह अवस्था जिसमें लेटे हुए या बैठे हुए की स्थिति से उठने की सामर्थ्य का अभाव हो।

अनुत्तीर्ण *वि.* (तत्.) जो उत्तीर्ण न हो, फेल, असफल।

अनुत्थान *पुं.* (तत्.) 1. उत्थान का न होना, उत्थान का अभाव, उन्नति का न होना 2. चेष्टा का अभाव।

अनुत्पत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. उत्पत्ति न होना 2. विफलता, असफलता।

अनुत्पन्न *वि.* (तत्.) 1. जो उत्पन्न न हुआ हो, जो जन्मा न हो 2. जो उत्पन्न न किया गया हो।

अनुत्पाद *पुं.* (तत्.) 1. उत्पत्ति का न होना 2. अस्तित्व में न आना।

अनुत्पादक *वि.* (तत्.) उत्पादन में असमर्थ, जिससे कुछ उत्पन्न न हो।

अनुत्पादक श्रम *पुं.* (तत्.) [अन्+उत्पादक श्रम] अर्थ. वह श्रम जिससे किसी वस्तु का उत्पादन या उपयोगिता न बढ़े।

अनुत्पादकता *स्त्री.* (तत्.) [अन्+उत्पादकता] किसी वस्तु की उत्पादकता का अभाव।

अनुत्पादन *पु.* (तत्.) दे. अनुत्पाद।

अनुत्पादित *वि.* (तत्.) जिसकी उत्पत्ति न हुई हो, जिसका उत्पादन न किया गया हो।

अनुत्पादी *वि.* (तत्.) [अनुत्पाद+इन+ई प्रत्यय] जो किसी वस्तु का उत्पादन-कर्ता न हो, उत्पादन न करने वाला।

अनुत्प्रवासी *वि.* (तत्.) [अन् + उत् + प्रवासी = अनुत्प्रवास+इन्=ई] जो उत्प्रवास (देश से बाहर रहना) करने वाला न हो, जो स्वदेश छोड़कर विदेश में जाकर नहीं बसा हो। non-emigrant

अनुत्साह *वि.* (तत्.) उत्साहरहित, उत्साहहीन, निरुत्साह।

अनुत्साही *वि.* (तत्.)[अनु+उत्साह+इन्=ई] जो उत्साही न हो, उत्साह हीन, जिसके जीवन में उमंग, हौसला और जोश का अभाव हो जैसे- अनुत्साही व्यक्ति।

अनुत्सुक *वि.* (तत्.) 1. जो उत्सुक न हो, उत्कंठा न दिखाने वाला 2. अजिज्ञासु ।

अनुत्सेक *पुं.* (तत्.) जो उत्सेक (गर्व/अभिमान) रहित है, अक्रोध-घमंड रहित।

अनुदक *वि.* (तत्.) [अन्+उदक] 1. वह स्थान या पात्र जिसमें जल न हो 2. अल्प जल वाला 3. वह व्यक्ति या कुटुंब जिसके समाप्त होने पर उसे कोई जलदान या तर्पण आदि करने वाला न हो।

अनुदत्त *वि.* (तत्.) [अनु+दत्त] 1. (वह धन आदि) जो अनुदान के रूप में प्रदान किया गया हो 2. किसी संस्था आदि के विकास हेतु शासन द्वारा स्वीकृत या प्रदत्त की गई धनराशि जैसे- अनुदत्त धनराशि।

अनुदद्देश्य *वि.* (तत्.) दे. निरूद्देश्य।

अनुद्यम *पुं.* (तत्.) उद्योग या उद्यम का अभाव *वि.* अभाव *वि.* (तत्.) उद्योग या उद्यम न करनेवाला, अकर्मण्य, अतत्पर, सुस्त।

अनुदर्शन *पुं.* (तत्.) 1. पर्यवेक्षण, निरीक्षण 3. आदर।

अनुदात्त *वि.* (तत्.) 1. जो उदात्त (उच्च) स्वर में उच्चारित न हो, निम्न स्वर में उच्चारित 2. अनुदार या अकुलीन।

अनुदान *पुं.* (तत्.) किसी कार्य के लिए नियमों के आधार पर दी जाने वाली नियमित सरकारी वित्तीय सहायता, सरकारी विभागों के व्यय-हेतु स्वीकृत धन-राशि। grant

अनुदार *वि.* (तत्.) 1. कंजूस 2. संकुचित हृदय वाला, उदारताहीन 3. *पुं.* जिसकी दारा या पत्नी अनुकूल हो अर्थात् पति का अनुगमन करने वाली हो।

अनुदित *वि.* (तत्.) [अन्+उदित] जिसका उदय न हुआ हो जैसे- अनुदित चंद्र/ अनुदित ग्रह।

अनुदिन *क्रि.वि.* (तत्.) प्रतिदिन, नित्यप्रति।

अनुदिवस *क्रि.वि.* (तत्.) [अनु+दिवस] दे. अनुदिन, हर दिन, रोज।

अनुदिश *क्रि.वि.* (तत्.) [अनु+दिशा] हर दिशा में, प्रत्येक दिशा में।

अनुदिष्ट *वि.* (तत्.) 1. जिसे अनुदेश किया गया हो। 2. जिसे किसी संबंध में या किसी कार्य के लिए हिदायत या संकेत निर्देश दिया गया हो।

अनुदृष्टि *स्त्री.* (तत्.) कृपा-दृष्टि, उदार दृष्टि, अनुकूल दृष्टि, *वि. (तत्.)* कृपा-दृष्टि रखनेवाला, अनुकूल दृष्टि रखनेवाला।

अनुदेश *पुं.* (तत्.) 1. किसी काम को करने या न करने या उसकी कार्यविधि आदि के विषय में दिए गए निर्देश, आदेश, निदेश या हिदायतें instructions

अनुदेशक *पुं.* (तत्.) 1. अनुदेश या हिदायत देने वाला 2. किसी व्यावहारिक कार्य का प्रशिक्षक। instructor

अनुदेशन *पुं.* (तत्.) 1. किसी कार्य के संपादनार्थ अनुदेश करने की क्रिया या भाव। 2. किसी

व्यक्ति या कार्य से संबंधित निर्देशन, दे. अनुदेश।

अनुदैर्घ्य *वि.* (तत्.) [अनु+दैर्ध्य] 1. जो आकार में दीर्घता या लंबाई से युक्त हो, 2. जो लंबाई के आकार में स्थित हो, जैसे- पुस्तकालय की अनुदैर्घ्य गैलरी।

अनुदैर्घ्य घाटी *स्त्री.* (तत्.) (भू.विज्ञान) 1. वह घाटी जो नदी के दोनों ओर के पर्वतों के मध्य में उनके समांतर रूप से स्थित हो, 2. पर्वत माला के अनुरूप दिशा में स्थित घाटी।

अनुद्देश्य *वि.* (तत्.) दे. निरुददे्श्य।

अनुद्घाटित *वि.* (तत्.) [अन्+उद्घटित] 1. जिसका जिसका अभी उद्घाटन नहीं हुआ हो, 2. ऐसा कोई सामाजिक निर्माण/कार्य (भवन/सेतु आदि) जिसका सार्वजनिक रूप से शासन द्वारा विधवत् उद्घाटन न हुआ हो जिससे उसका उपयोग जनता द्वारा आरंभ न किया जा सका हो।

अनुद्धत *वि.* (तत्.) [अन्+उद्धत] जो उद्धत न हो अर्थात् जो उद्दंडता रहित हो, विनम्र, शिष्ट, विलो. उद्धत।

अनुद्धार *पुं.* (तत्.) [अन्+उद्धार] उद्धार का अभाव, उद्धार न होना विलो. उद्धार।

अनुद्भूत *वि.* (तद्.) [अन्+उद्भूत] 1. जो उद्भुत न हो, अनुत्पन्न 2. जो (तथ्य आदि) अभी तक व्यक्त न हुआ हो, अव्यक्त जैसे- अनुद्भूत स्नेह विलो. उद्भूत।

अनुद्यत *वि.* (तत्.) जो (कार्य-हेतु) उद्यत या तत्पर तत्पर न हो, अनुद्यमी।

अनुद्यमी *वि.* (तत्.) उद्यमरहित, अपरिश्रमी, आलसी, आलसी, सुस्त।

अनुद्योगी *वि.* (तत्.) अकर्मण्य, निष्क्रिय, आलसी।

अनुद्रव्य *पुं.* (तत्.) [अनु+द्रव्य] वह द्रव्य या पदार्थ जो औषधीय गोलियाँ बनाने के लिए ही किसी औषधि में सम्मिलित किया जाता है।

अनुद्रुत *पुं.* (तत्.) [अनु+द्रुत] (संगीत) माला का चतुर्थ भाग, एक ताल, विशेषतः संगीत शास्त्र में 'द्रुत' आधी मात्रा को कहा जाता है तथा द्रुत के आधे भाग को अनुद्रुत कहते हैं।

अनुद्वाचित *वि.* (तत्.) [अन्+उद्वाचित] पुरातत्व से से संबंधित वह अभिलेख या उसका अंश जो अभी तक किसी तरह पढ़ा नहीं जा सका हो।

अनुद्वाह *पुं.* (तत्.) [अन्+उद्वाह] उद्वाह (विवाह) न न करने की स्थिति, विवाह का अभाव, क्वाँरा/ कुआँरा।

अनुद्विग्न *वि.* (तत्.) उद्वेग-रहित, जो उद्विग्न न न हो, अविकल, चिंतामुक्त, आशंकारहित, निश्चिंत।

अनुद्वेग *पुं.* (तत्.) आशंका या व्याकुलता का अभाव, भय का अभाव, *वि.* (तत्.) उद्वेगरहित, अनुद्विग्न।

अनुधावन *पुं.* (तत्.) 1. किसी के पीछे धावना (दौड़ना)। 2. किसी को दौड़ते हुए पीछा करने की स्थिति।

अनुध्यात *वि.* (तत्.) (वह अभीष्ट कार्य) जिसे सभी पक्षों पर सम्यक् विचार करके लिया गया हो।

अनुध्यान *पुं.* (तत्.) किसी विषय पर चिंतन, ध्यान, शुभचिंतन, धर्म-चिंतन।

अनुध्वनि *स्त्री.* (तत्.) [अनु+ध्वनि] किसी ध्वनि के बाद प्रतीत होने वाली ध्वनि, प्रतिध्वनि, अनुगूँज।

अनुनत *वि.* (तत्.) [अनु+नत] 1. जो विनम्र या विनत हो 2. अनुशिष्ट, अनुशासित।

अनुनय *पुं.* (तत्.) विनय, विनती, प्रार्थना।

अनुनाद *पुं.* (तत्.) भौ.संगी. ध्वनितंत्र की आवृत्ति में समान या सन्निकट आवृत्ति का बल लगने पर दोलन और कंपन के आयाम में होने वाली अत्यधिक वृद्धि, गूँज, प्रतिध्वनि।

अनुनादक *वि.* (तत्.) 1. किसी ध्वनि के बाद या साथ नारद (ध्वनि) करने वाला। 2. प्रतिध्वनि कर्ता 3. वह एक यंत्र जो गूँज उत्पन्न करता हो।

अनुनादन *अ.क्रि.* प्रतिनाद/अनुगूँज उत्पन्न करना। जैसेः मुरली द्वारा अनुनादन होना *पुं.* अनुनाद होने की क्रिया या भाव, अनुगूँज या प्रतिध्वनि, जैसे- मृदंग का अनुनादन।

अनुनाद-विवर *पुं.* (तत्.) मुखविवर जिसके आकार के कारण स्वनों में अनुनाद पैदा होता है।

अनुनादित *वि.* (तत्.) प्रतिध्वनित, जिसका अनुनाद हुआ हो या गूँज हुई हो।

अनुनादी *वि.* (तत्.) प्रतिध्वनि करनेवाला, आवाज करनेवाला, गूंज पैदा करने वाला।

अनुनादीकक्ष *पुं.* (तत्.) [अनुनादी-कक्ष] भाषा.वि. शरीर में स्थित वे अंग या स्थान जो निकलने वाली ध्वनियों को अपने अनुनाद द्वारा और अधिक ऊँचा कर देते हैं जैसे- मुख विवर या नासिका रंध्र।

अनुनादी-विवर *पुं.* (तत्.) भाषा.वि. दे. अनुनादी कक्ष।

अनुनायिका *स्त्री.* (तत्.) नायिका की सहचरी, धात्री, दासी आदि।

अनुनासिक *वि.* (तत्.) वे स्वर जिनके उच्चारण में मुखविवर से निकलने वाले वायु-प्रवाह के साथ-साथ नासिका-विवर से भी वायु निःसृत होती है।

अनुनासिकता *स्त्री.* (तत्.) [अनुनासिक+ता प्रत्यय] 1. किसी ध्वनि में अनुनासिक होने का भाव या गुण, 2. जिस ध्वनि के उच्चारण में नासिका की सहायता ली जाए, जैसे- न और म वर्ण के उच्चारण में अनुनासिकता होती है, व्याक. स्वरों के उच्चरण में होने वाली अनुनासिकता का वह रूप जब स्वर के उच्चारण में कंठ आदि के अतिरिक्त नाक से बोलने का गुण आ जाता है जैसे- अँ, आँ, इँ, ई आदि। (ँ) चंद्र बिंदु वह अनुनासिकता का चिह्न = अँजना, आँजता।

अनुनासिकता-चिह्न *पुं.* (तत्.) स्वर के ऊपर लगाया गया अनुनासिकता बोधक चिह्न, चंद्रबिदु, जैसे- दाँत में।

अनुनासिकीकरण *पुं.* (तत्.) [अनुनासिक+करण] किसी शब्द में वह ध्वनि जो पहले अनुनासिक न हो किंतु बाद में परिवर्तित होकर वह अनुनासिक हो जाए, विशेषतः हिंदी भाषा में अनेक तद्भव शब्दों का अनुनासिकीकरण हो गया है जैसे- अक्षि=आँख, मुख=मुँह आदि।

अनुनीत *वि.* (तत्.) 1. अनुशासित, मर्यादित, गृहीत 2. विनयपूर्वक किया हुआ।

अनुन्नत *वि.* (तत्.) [अन्+उन्नत] 1. जो उन्नत (ऊँचा) न हो, 2. जो जीवन में उन्नति करने या पाने में सफल न हुआ हो, अनुन्नत कर्मचारी विलो. उन्नत।

अनुन्मत्त *वि.* (तत्.) जो उन्मत्त (मद रहित) न हो, अर्थात् जो धन, बल, वैभव आदि के कारण मतवाला न हुआ हो विलो. उन्मत्त।

अनुन्मत्ता *स्त्री.* (तत्.) [अनुत्मत्त+ता] किसी में उन्मत्वता न होने का भाव या गुण, उन्मत्त रहित होने की स्थिति जैसे- अनुन्मत्ता से वैभव सुशोभित।

अनुन्माद *पुं.* (तत्.) पागलपन का अभाव, उन्माद-हीनता *वि.* (तत्.) जो पागल न हो, जिसे उन्माद न हो।

अनुन्मील्य *वि.* (तत्.) [अन्+उन्मील्य] जो उन्मीलन के योग्य न हो, अविकास्य, न खिलने योग्य (पुष्प आदि), न खुलने योग्य नेत्र आदि।

अनुन्मील्य परागण *पुं.* (तत्.) अविकसित-पुष्प कलिका के अंदर होने वाला परागण।

अनुन्मुक्त *वि.* (तत्.) [अन्+अन्मुक्त] 1. जो मुक्त न किया गया हो, 2. जिसे किसी सेवा या पद से हटाया, बरखास्त न किया गया हो, 3. जिसे किसी अपराध से न्यायालय में बरी न किया गया हो या कारागार से मुक्त न किया गया हो।

अनुपंथिता *स्त्री.* (तत्.) [अनुपंथ+इत प्रत्यय] 1. शास्त्र-परंपरा के अनुसार आचरण का भाव/शास्त्रनिष्ठता 2. प्राचीन परम्परा के अनुपालन के प्रति रूढ़िनिष्ठता जैसे- अनुपंथिता की राह दुर्गम।

अनुपंथी *वि.* (तत्.) 1. जो किसी पंथ के अनुसार सम्मत हो, 2. जो (विचार) परंपरागत स्वीकृत हों, शासनुकूल 3. रुढ़िपंथीजैसे- अनुपंथी सिद्धांत।

अनुपकार *पुं.* (तत्.) उपकार का अभाव, अपकार, हानि विलो. उपकार।

अनुपकारी *वि.* (तत्.) उपकार न करनेवाला, अकृतज्ञ विलो. उपकारी।

अनुपक्षी *पुं.* (तत्.) विवार आदि की स्थिति में किसी का पक्ष लेने वाला, पक्ष में काम करने वाला, पक्षधर जैसे- पांडवों के अनुपक्षी कृष्ण, विलो. प्रतिपक्षी।

अनुपतन *पुं.* (तत्.) 1. किसी के पीछे गिर जाना, 2. किसी का स्वास्थ्य, विकास आदि की दृष्टि से क्रमिक पतन या एक के बाद एक पतन अर्थात् अत्यधिक गिरावट जैसे- अंग्रेजों के राज्य में मुगल सल्तनत का अनुपतन होता गया।

अनुपद *क्रि.वि.* (तत्.) कदम-दर-कदम, पीछे-पीछे, अनुसरण करते हुए *वि.* (तत्.) पीछे, *पुं.* 1. पदानुसरण 2. गीत में बार-बार दोहराया जानेवाला पद, टेक।

अनुपद सस्यन *पुं.* (तत्.) कृषि. पुष्पन के बाद और खड़ी फसल की कटाई से पहले परवर्ती फसल की बोआई या रोपाई।

अनुपदिक *वि.* (तत्.) [अनुपद+इक] 1. प्रति पद के अनुसार, पदों के क्रम से श्री रामचरितमानस की अनुपदिक व्याख्या, 2. किसी व्यक्ति का या सिद्धांत का अनुगमन करने वाला अनुयायी।

अनुपदिष्ट *वि.* (तत्.) [अन्+उपदिष्ट] जिसे कोई उपदेश न दिया गया हो विलो. उपदिष्ट।

अनुपदी *वि.* (तत्.) [अनुपद+इन्=ई] 1. पद का अनुगमन करने वाला, 2. प्रत्येक पद का अनुसरण करने वाला, 3. पीछे चलने वाला परानुगामी।

अनुपनीत *वि.* (तत्.) [अन्+उपनीत] 1. जिसे किसी के समीप में न लाया गया हो या जिसे किसी के पास न ले जाया गया हो, 2. जिसका उपनयन संस्कार (यज्ञोपवीत/जनेऊ) न हुआ हो।

अनुपपत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. उपपत्ति अर्थात् प्रमाण या देखने का अभाव 2. असंगत; असदि्ध 3. अप्राप्ति।

अनुपपन्न *वि.* (तत्.) अप्रतिपादित, जो साबित न हुआ हो, जो सही रूप में समर्थित न हो।

अनुपभुक्त छुट्टी *स्त्री.* (तत्.) वह छुट्टी जो उपलब्ध होते हुए भी नहीं ली गई (ताकि सेवानिवृत्ति के साथ उसका लाभ उठाया जा सके)।

अनुपम *वि.* (तत्.) जिसकी उपमा न दी जा सके, अतुलनीय, अनूठा, बेमिसाल, बेजोड़।

अनुपमता *स्त्री.* (तत्.) [अनुपम+ता] 1. किसी का उपमा रहित होना, उपमा रहित 2. किसी के गुण/भाव आदि के उपमा की अन्य किसी में अभाव की स्थिति, सर्वश्रेष्ठता, अनूठापन।

अनुपमेय *वि.* (तत्.) [अन्+उपमेय] 1. गुण आदि की दृष्टि से जिसकी उपमा के योग्य अन्य कोई व्यक्ति या वस्तु न हो, 2. जिसकी उपमा देने के लिए उचित उपमान का अभाव हो 3. जिसकी उपमा=तुलना किसी अन्य से संभव न हो, अनुपमेय प्रयो. तुम्हारा यश प्रसृत दिगंचल अनुपमेय कला।

अनुपयुक्त *वि.* (तत्.) जो उपयुक्त न हो, अयोग्य, अनुचित, बेमेल।

अनुपयुक्तता *स्त्री.* (तत्.) अयोग्यता, अनुचित होना, ठीक न होने की स्थिति, उपयोग में न लाए जा सकने की स्थिति।

अनुपयोग *पुं.* (तत्.) काम में न लाना, उपयोग न करना।

अनुपयोगिता *स्त्री.* (तत्.) उपयोगी न होना, निरर्थक होना।

अनुपयोगी *वि.* (तत्.) जिसका उपयोग न हो सके, बेकार का।

अनुपर्ण *पुं.* (तत्.) (वनस्पति) वह एक छोटी पत्ती जो किसी पत्ते के डंठल से निकलती है।

अनुपल *क्रि.वि.* [अनु+पल] 1. प्रत्येक पल, प्रतिक्षण 2. निरंतर 'अनुपल हो स्मरण तुम्हारा'

अनुपलक्षित *वि.* (तत्.) [अन्+उपलक्षित] 1. जिसका अनुमान न किया जा सका हो 2. जो किसी संकेत के द्वारा ज्ञेय न हो, 3. जो किसी विशेष लक्षण या पहचान से युक्त न हो 4. जो उपलक्षित न हो प्रयो. अनुपलक्षित रोग।

अनुपलब्ध *वि.* (तत्.) 1. जो उपलब्ध् न हो, अप्राप्त, न मिला हुआ 2. अज्ञात।

अनुपलब्धि *स्त्री.* (तत्.) उपलब्ध न होने की स्थिति अप्राप्ति, न मिलना विलो. उपलब्धि।

अनुपस्थित *वि.* (तत्.) जो उपस्थित न हो, जो सामने न हो, अविद्यमान, गैरहाजिर।

अनुपस्थितता *स्त्री.* (तत्.) सा.अर्थ. नियमित रूप से उपस्थित न रहने की स्थिति या प्रवृत्ति।

अनुपस्थिति *स्त्री.* (तत्.) 1. उपस्थित या विद्यमान न होने का भाव, अविद्यमानता, गैरहाजिरी 2. अनुपलब्धता।

अनुपहत *वि.* (तत्.) [अन्+उपहत] 1. जो उपहत (घायल) न हुआ हो, अनाहत, चोट रहित, 2. जिसका प्रयोग न किया गया हो, कोरा जैसे- अनुपहत परिधान, 3. जिसे हराया न गया हो, अनुपहत रिपु।

अनुपहतमति *स्त्री.* (तत्.) (अविकृत विधि) जैन. ऐसी बुद्धि जिसमें किसी प्रकार का विभ्रम, संशय, अनिश्चयात्मकता, अस्थिरता, निराशा व वैपरीत्य भाव की स्थिति न हो।

अनुपात *पुं.* (तत्.) संख्या, मान, माप-उपयोगिता की दृष्टि से दो वस्तुओं में परस्पर सापेक्ष संबंध, तुलनात्मक स्थिति।

अनुपातक *वि.* (तत्.) [अन्+पातक] 1. एक पाप के पश्चात् दूसरा पाप कर्म, घोर पाप 2. गुनाह 3. धर्मशास्त्र के अनुसार पाप के प्रकारों में से एक।

अनुपाततः *क्रि.वि.* (तत्.) [अनुपात+तः] 1. अनुपात से, अनुपात के अनुसार 2. एक वस्तु का दूसरी वस्तु से रहने वाला संबंध, जैसे इस खीर में अनुपाततः दूध अधिक है।

अनुपातिक दे. आनुपातिक (शुद्ध शब्द)।

अनुपाती *वि.* (तत्.) आनुपातिक, अनुपात में।

अनुपाती प्रतिनिधित्व *पुं.* (तत्.) राज. [अनुपाती +प्रतिनिधित्व] वह राज्य या शासन जिसमें राजनैतिक दृष्टि से विभिन्न दलों व जाति या संप्रदायों आदि की जनसंख्या के अनुपात के अनुसार प्रतिनिधित्व दिया गया हो।

अनुपान *पुं.* (तत्.) वह वस्तु जिसके साथ औषध का सेवन किया जाए, जिसे औषध के साथ ही खाया या पिया जाना चाहिए।

अनुपाय *पुं.* (तत्.) जिसका कोई उपाय न हो, निरुपाय, उपाय या समाधान का अभाव।

अनुपालक *वि.* (तत्.) 1. आज्ञा माननेवाला 2. रक्षा करनेवाला, पालन करने वाला।

अनुपालन *पुं.* (तत्.) 1. कार्यान्वयन 2. आज्ञा, अनुदेश आदि पर कार्रवाई करना 3. रक्षण, पालन।

अनुपूरक *वि.* (तत्.) 1. कमी या अभाव की पूर्ति के लिए बाद में जोड़ा जानेवाला (अंश) 2. किसी के साथ मिलकर उसकी पूर्ति करने वाला 3. गणित अर्धवृत्त की व्यास रेखा पर स्थित वह कोण जिसको मिलाकर अर्धवृत्त (पूरा) बन जाता है या 180 डिग्री का कोण बनता है। supplement

अनुपूरक अनुदान *पुं.* (तत्.) नियमित अनुदान के बाद बजट की कमी पड़ने पर दिया गया अतिरिक्त अनुदान। supplementary grant

अनुपूरक नियम *पुं.* (तत्.) प्रशा. सरकारी कार्यालयों की व्यवस्था को नियंत्रित करने वाले मूल नियमों की पूर्ति करने वाले नियम supplementary rules

अनुपूरक प्रश्न *पुं.* (तत्.) दे. पूरक प्रश्न।

अनुपूरक बजट *पुं.* (तत्.) नियमित बजट के पारित किए जाने के बाद उसी वित्त वर्ष के दौरान सरकार द्वारा विधायिका से और अधिक खर्च की स्वीकृति के लिए प्रस्तुत बजट।

अनुपूरक माँग *स्त्री.* (तत्.) वार्षिक बजट में स्वीकृत माँग के अपर्याप्त होने पर आवश्यक अतिरिक्त राशि के लिए माँग। supplementary demand

अनुपूरक वाक्य *पुं.* (तत्.) भाषा. वाक्य से पृथक रखा जाने वाला वाक्यांश या अंश जो वाक्य को पूर्णता प्रदान करने के लिए हो, जैसे- वह चित्रकूट जायेगा, पाँच दिन तक के लिए। यहाँ 'पाँच दिन तक के लिए' यह अंश ही अनुपूरक वाक्य है।

अनुपूरण *पुं.* (तत्.) अभाव या कमी को पूरा करने के लिए उसमें कुछ अंश जोड़ना या मिलाना।

अनुपूरित *वि.* (तत्.) [अनु+पूरित] 1. जिसका अनुपूरण किया गया हो, 2. जिसकी किसी अपेक्षा या कमी को बाद में पूरा किया गया हो, जैसे- अनुपूरित शुल्क।

अनुपूर्व *वि.* (तत्.) पूर्व के अनुसार, पिछले क्रम में, क्रम से सतत होनेवाला, लगातार होने वाला।

अनुपूर्वतः *क्रि.वि.* (तत्.) 1. क्रमिक रूप से 2. पहले से लेकर 3. नियमित रूप से या क्रम से।

अनुपेत *वि.* (तत्.) [अन्+उपेत] 1. जो उपेत/ प्राप्त न हो 2. जो उपनयन संस्कार हेतु गुरु के आश्रम में न पहुँचा हो 3. जिसका यज्ञोपवीत/ उपनयन नहीं हुआ हो।

अनुप्रमाणक साक्षी *पुं.* (तत्.) किसी कथन, प्रतिलिपि आदि के सही और वास्तविक होने की पुष्टि करने वाला गवाह दे. अनुप्रमाणन।

अनुप्रमाणन *पुं.* (तत्.) किसी राजपत्रित अथवा सक्षम अधिकारी द्वारा इस बात की पुष्टि कि कोई प्रतिलिपि मूल दस्तावेज की यथावत् नकल है attestation

अनुप्रमाणन अधिकारी *पुं.* (तत्.) वह सक्षम अधिकारी जो प्रस्तुत प्रतिलिपि का मूल दस्तावेज से मिलान करके पुष्टि हेतु अपने हस्ताक्षर करे और अपनी पदवी की मोहर लगाए।

अनुप्रमाणित *वि.* (तत्.) जिसका अनुप्रमाणन हुआ हो, जिसकी तसदीक की गई हो दे. अनुप्रमाणन।

अनुप्रमाणित प्रति *स्त्री.* (तत्.) किसी प्रलेख की (किसी राजपत्रित या सक्षम अधिकारी द्वारा) प्रमाणित नकल।

अनुप्रयुक्त *वि.* (तत्.) 1. जिसका अनुप्रयोग हुआ हो, जिसे व्यवहार में लाया गया हो 2. ज्ञान-विज्ञान के सैद्धांतिक पक्ष से इतर उसका प्रयोगात्मक स्वरूप, जैसे- अनुप्रयुक्त भौतिकी।

अनुप्रयुक्त कला *स्त्री.* (तत्.) [अनुप्रयुक्त कला] वह कला जिसका प्रयोग विशेष रूप से व्यावसायिक दृष्टि से व्यापारिक वस्तुओं को अधिक आकर्षक बनाने के लिए होता है, औद्योगिक कला applied art

अनुप्रयुक्त गणित *पुं.* (तत्.) गणित की वह शाखा जिसके अंतर्गत भौतिक, जैविक तथा सामाजिक विषयों का गणितीय अध्ययन होता है। applied mathematics

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान *पुं.* (तत्.) भाषाविज्ञान की वह शाखा जिसमें उसके सिद्धांतों का प्रयोग प्रयोजन-विशेष (जैसे- अनुवाद, कोशरचना आदि) के लिए होता है। applied linguistics

अनुप्रयुक्त भूगोल *पुं.* (तत्.) 1. वैज्ञानिक दृष्टि से ग्रामीण एवं शहरी भूमि का समुचित उपयोग 2. नगर व्यवस्था आदि के क्षेत्र में पर्यावरण-प्रदूषण आदि विश्व की सम सामयिक समस्याओं के संदर्भ में किया जाने वाला भौगोलिक पक्षों का अध्ययन।

अनुप्रयुक्त-मनोविज्ञान *पुं.* (तत्.) वह मनोविज्ञान जिसके विविध सिद्धांतों का अनुप्रयोग मानव की व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करने के लिए किया जाता है।

अनुप्रयुक्त विज्ञान *पुं.* (तत्.) औषधिनिर्माण, चिकित्सा, भवन-संरचना, यंत्र निर्माण आदि

व्यावहारिक क्षेत्रों में किया जाने वाला विज्ञान के अन्वेषणों का तकनीकी उपयोग या प्रयोग।

अनुप्रयोग *पुं.* (तत्.) किसी सिद्धांत को व्यवहार में लाना। application

अनुप्रयोग-परिधि *स्त्री.* (तत्.) भाषा. भाषा के व्यावहारिक क्षेत्र में किसी शब्द के प्रयोग होने की परिधि या सीमा जैसे- मजदूरी और वेतन की अनुप्रयोग परिधि में अंतर है।

अनुप्रयोजन *पुं.* (तत्.) किसी विषय, वस्तु सिद्धांत आदि के अनुप्रयोग करने की क्रिया या भाव, अनुप्रयोग।

अनुप्रयोज्य *वि.* (तत्.) जिसका समुचित प्रयोग किया जा सके, जिसका प्रयोग करना अपेक्षित हो applicable

अनुप्रवाह *पुं.* (तत्.) [अनु+प्रवाह] किसी नदी के बहने की दिशा।

अनुप्रवेश *पुं.* (तत्.) 1. द्वार से होकर किसी गृह में प्रवेश करना 2. अपने कुशल गुण/ व्यवहार से किसी के मन में अपना स्थान बनाना 3. किसी के हृदय में अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व का प्रवेश होना

अनुप्रश्न *पुं.* (तत्.) किसी व्याख्या या भाषण की समाप्ति पर उसके विषय से संबंधित पूछा जानेवाला प्रश्न।

अनुप्रसादन *पुं.* (तत्.) [अनु+प्रसादन] रुष्ट हुए व्यक्ति को प्रसन्न करना, किसी को मनाने का व्यवहार।

अनुप्रस्थ *वि.* (तत्.) जो चौड़ाई के बल हो, आड़ा, तिर्यक्।

अनुप्रस्थ काट *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी वस्तु को अनुप्रस्थ के रूप में काटना 1. किसी वस्तु को सीधे (नब्बे अंश के कोण में)/तिरछे/बेड़ा) (ऊपर-मध्य से काटने की प्रक्रिया) तिरछी काट, बेड़ी काट।

अनुप्रस्थ तरंग *पुं.* (तत्.) भौ. वह तरंग जिसमें माध्यम के प्रत्येक कण के विस्थापन की दिशा तरंग-संचरण की दिशा में समकोणिक होती है।

अनुप्रस्थ परिच्छेद *पुं.* (तत्.) गणि. वह काट जो अक्ष पर लंबवत् होती है।

अनुप्रस्थ रेखा *स्त्री.* (तत्.) [गणित] वह रेखा जो अन्य रेखाओं को तिरछी या आड़ी काटती है, तिर्यक् रेखा।

अनुप्राणन *पुं.* (तत्.) 1. प्राण संचार करना, निर्जीव विषय को ललित कलाओं द्वारा सजीव रूप में प्रस्तुत करना animation 2. उत्साह से भरना।

अनुप्राणित *वि.* (तत्.) 1. जिसमें प्राणों को स्फूर्त किया गया हो 2. जिसके निराश जीवन को उत्साह, प्रेरणा द्वारा संचारित किया गया हो 3. प्राण युक्त, जीवंत, जीवनशक्ति से युक्त जैसे- समाज को अनुप्राणित करने वाला साहित्य।

अनुप्राप्त *वि.* (तत्.) 1. जो बाद में प्राप्त हुआ हो 2. इकठ्ठा किया हुआ।

अनुप्राप्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. लाभ 2. पहुँच।

अनुप्राप्य *वि.* (तत्.) जो प्राप्त होने को हो या किया जा सके, इकट्ठा करने योग्य।

अनुप्राशन *पुं.* (तत्.) उपवास के बाद का भोजन।

अनुप्रास *पुं.* (तत्.) वह अलंकार जिसमें एक वर्ण की बार बार आवृत्ति होती है, वर्णसाम्य, वर्णमैत्री उदा. "तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए" में 'ता' का अनुप्रास।

अनुप्रेक्षा *पुं.* (तत्.) [अनु+प्रेक्षा] जैन. 1. किसी सैद्धांतिक या दार्शनिक बात का मन में बार-बार चिंतन या विचार 2. मन में किसी ज्ञात अर्थ का सतत अभ्यास 3. दार्शनिक चिंतन का एक रूप।

अनुबंध *पुं.* (तत्.) 1. किसी विषय पर, दो पक्षों के बीच होने वाला समझौता 2. करार, इकरारनामा, शर्तनामा 3. बंधन, लगाव 4. परिशिष्ट।

अनुबंध चतुष्टय *पुं.* (तत्.) भा.दर्श. 1. वेदांतसार में ग्रंथ के प्रारंभ में उल्लिखित चार अनुबंध, जैसे- ग्रंथ का प्रयोजन, विषय, अधिकारी और

संबंध 2. वेदांत दर्शन के अध्ययन के लिए स्वीकृत चार अनुबंध।

अनुबंधक *वि.* (तत्.) 1. अनुबंध करनेवाला 2. बंधनकारी 3. बंधक रखा हुआ 4. करार में परिनिर्धारित।

अनुबंधकदार *पुं.* (तत्.) वह व्यक्ति जिसे बंधकदार, बंधक रखी गई संपत्ति को बंधक रूप में सौंपता है।

अनुबंधकारी *वि.* (तत्.) वाणि. किसी कार्य के संपादन के लिए सहमति पूर्वक व कानून सम्मत किसी के साथ अनुबंध करने वाला, अनुबंधक।

अनुबंधन *पुं.* (तत्.) 1. अनुबंध होने या करने का भाव या क्रिया 2. किसी के साथ लगाव 3. अनुक्रम।

अनुबंध पत्र *पुं.* (तत्.) अनुबंध वाला वह पत्र जिसमें किसी कार्य के निष्पादन के संबंध में स्वीकृत शर्तों का उल्लेख करते हुए उस पर सभी पक्षों के हस्ताक्षर किये गए हों।

अनुबंधी *वि.* (तत्.) 1. अनुबंध करने वाला 2. किसी के साथ संबंध रखने वाला 3. जो किसी प्रकार के अनुबंध से संबंधित हो 4. जो किसी परिणाम को देने वाला हो।

अनुबद्ध *वि.* (तत्.) संबद्ध, बंधा हुआ, जुड़ा हुआ, लगाव रखनेवाला।

अनुबद्ध समय *पुं.* (तत्.) करार में निर्दिष्ट समय।

अनुबोध *पुं.* (तत्.) [अनु+बोध] 1. किसी तथ्य/वस्तु आदि का बाद में होने वाला ज्ञान, समझ 2. किसी विषय के निरूपण के बाद होने वाला बोध, स्मरण।

अनुबोधक *पुं.* (तत्.) [अनु+बोधक] अनुबोध करने वाला, संप्रेरक 2. *पुं.* नाट्य रंगमच में अभिनेता की मदद के लिए पीछे से अनुबोधन करने वाला कोई पात्र या व्यक्ति।

अनुबोधन *पुं.* (तत्.) 1. बाद में होनेवाला बोध या स्मरण 2. किसी बात की याद दिलाना 3. नाटकादि में पात्र को उसकी संवाद-पक्तियां धीमी आवाज में बताना prompting

अनुबोधना *स.क्रि.* (तत्. अनुवोधक) संप्रेरित करना, समझाना, बोध कराना [नाट्य] रंगमंच में अभिनय करने वाले पात्रों के सहायतार्थ पीछे से मंद स्वर में उनके संवाद को संकेतात्मक शब्दों में बोलते रहना।

अनुभव *पुं.* (तत्.) 1. स्वयं देखने, स्वयं करने, किसी कठिनाई का स्वयं सामना करने, किसी स्थिति से स्वयं गुजरने से प्राप्त बोध-ज्ञान 2. ज्ञानेंद्रियों से महसूस किया गया या मन से जाना गया तजुर्बा, प्रतीति, अनुभूति।

अनुभवकर्ता *पुं.* (तत्.) अनुभव (प्राप्त) करने वाला।

अनुभवगम्य *वि.* (तत्.) अनुभव से जानने योग्य, जो शब्द और अर्थ के अतीत है, वह केवल अनुभवगम्य है -चारु चंद्रलेख, ह.प्र. द्विवेदी।

अनुभवन *पुं.* (तत्.) 1. अनुभव होने या करने की क्रिया या भाव 2. जीवन के अनुगमन, प्रकृति का अनुभवन।

अनुभवना *स.क्रि.* (तत्.) अनुभव करना, 'गुण-दोष की अनुभवना करी' संग उसके रह निरंतर'।

अनुभव निरपेक्ष *वि.* (तत्.) 1. जो अनुभव से संबंधित न हो 2. बिना अनुभव के, (पा.दर्शन) एक सिद्धांत जिसका प्रामाणिक रूप वह है जो किसी प्रकार की संवेदना के प्रत्यक्ष से सर्वथा भिन्न या स्वतंत्र हो विलो. अनुभव- सापेक्ष।

अनुभववाद *पुं.* (तत्.) [अनुभव वाद] एक प्रकार का वह दार्शनिक वाद जो केवल ज्ञानप्राप्ति का आधार अनुभव को ही मानता है, तर्कयुक्त सिद्धांतों या स्वयं प्रकाशित ज्ञान आदि को नहीं।

अनुभव सापेक्ष *वि.* (तत्.) 1. वह ज्ञान या तथ्य जो अनुभवाश्रित हो अर्थात् जिसमें अनुभव अपेक्षित हो दे. अनुभवाश्रित विलो. अनुभव निरपेक्ष।

अनुभव सिद्ध *वि.* (तत्.) [अनुभव-सिद्ध] 1. जो अनुभव द्वारा प्रमाणित हो 2. जिसे अनुभव द्वारा

प्राप्त किया गया हो, जैसे- अनुभव सिद्ध-प्रयोग, अनुभव सिद्ध-औषधि।

अनुभव-सुख *पुं.* (तत्.) 1. स्वयं के अनुभव से प्राप्त सुख, अनुभवजन्य सुख 2. आत्मानुभूति जन्य आनंद।

अनुभवहीन *वि.* (तत्.) [अनुभव-हीन] जिसने अनुभव प्राप्त न किया हो, जिसे किसी प्रकार का अनुभव ही न हुआ हो विलो. अनुभवी।

अनुभवाश्रित *वि.* (तत्.) [अनुभव+आश्रित] 1. जो किसी प्रकार के किए गए अनुभव पर आश्रित हो, अनुभव सापेक्ष 2. पा.दर्श. वह तथ्यात्मक बोध या ज्ञान जो व्यक्ति के आंतरिक अनुभव से ही संबद्ध हो, बाहर से न हो जैसे- अनुभवाश्रित सत्य।

अनुभविता *वि.* (तत्.) अनुभव करने वाला जैसे- साध्य का अनुभविता साधक।

अनुभवी *वि.* (तत्.) अनुभवप्राप्त, जानकार, जिसे अनुभव प्राप्त है, तजुर्बेकार।

अनुभाग *पुं.* (तत्.) किसी कार्यालय या विभाग के अंतर्गत कोई छोटा विभाग, उपविभाग। section

अनुभाव *पुं.* (तत्.) 1. प्रताप, प्रभाव 2. महिमा, बड़ाई 3. स्थायी मनोभाव को व्यंजित करने वाली भावभंगिमा, जैसे- रोमांच, भ्रूभंग, आदि चेष्टाएं काव्य में रस निष्पत्ति के चार तत्वों में से एक।

अनुभावक *वि.* (तत्.) प्रतीति या अनुभव कराने वाला।

अनुभावन *पुं.* (तत्.) अपने मन के भावों को आंगिक चेष्टाओं या किसी प्रकार के संकेतों से व्यक्त करना।

अनुभावित *वि.* (तत्.) 1. अत्यधिक शक्तिसंपन्न, प्रतापी 2. अनुभवी, अनुभवसंपन्न।

अनुभावी *वि.* (तत्.) 1. जिसे अनुभव या संवेदना हो, 2. बाद में आनेवाला, बाद में होनेवाला।

अनुभाव्य *वि.* (तत्.) जिसका अनुभव किया जा सकता हो, अनुभव के योग्य।

अनुभाषक *पुं.* (तत्.) कंप्यू. वह विशेष क्रमादेश, जो उच्चस्तरीय स्रोत भाषा में लिखे क्रमादेशों को लक्ष्यभाषा में रूपांतरित कर देता है compiler

अनुभाषण *पुं.* (तत्.) 1. किसी स्थापना का खंडन करने के लिए पुन:कथन, पुनराख्यान 2. कथोपकथन।

अनुभूत *वि.* (तत्.) जिसका अनुभव हुआ हो, जिसका व्यावहारिक ज्ञान हुआ हो।

अनुभूति *स्त्री.* (तत्.) संवेदनायुक्त प्रत्यक्षण, भावना, संवेगात्मक या भावात्मक अनुभव, प्रत्यक्ष ज्ञान।

अनुभूति-दशा *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी तथ्य या ज्ञान के अनुभूति की अवस्था 2. साहि. कवि द्वारा किसी भाव के मार्मिक रूपों व उसके वर्णनात्मक रूपों को अनुभूति का विषय बनाए जाने की अवस्था, स्थिति, जैसे- काव्य रस की अनुभूति दशा में स्थित कवि।

अनुभूति-योग *पुं.* (तत्.) 1. अनुभूति से संबंधित योग 2. काव्य. किसी कवि/रचनाकार की वह अनुभूति जो सबकी अनुभूति बन जाती है।

अनुभूति योगी *पुं.* (तत्.) साहि. अनुभूति योग का साधक वह कवि या रचनाकार जिसकी अनुभूति या अनुभूति जन्य रचनाएँ सब को तदनुरूप ही अनुभूति कराने वाली होती हैं।

अनुभूत्याभास *पुं.* (तत्.) [अनुभूति+आभास] काव्य. जिस काव्य या कविता से जीवन की वास्तविक अनुभूति न होकर केवल उसका आभास मात्र होता है अथवा सहृदय के मन-मस्तिष्क में सामान्य संवेदना जन्य अनुभूति होती है।

अनुभेद *पुं.* (तत्.) [अनु-भेद] किसी वस्तु, व्यक्ति आदि का छोटा भेद, उपभेद, किसी भेद का भी उपभेद जैसे- संज्ञा के भेद और अनुभेद 2. मीरा कृष्णभक्ति में रसमग्न होकर भेद-अनुभेद से परे थी।

अनुमंता *वि.* (तत्.) अनुमति देनेवाला, स्वीकृति देनेवाला।

अनुमत *वि.* (तत्.) 1. जिसके विषय में अनुमति दी गई हो, अनुमति-प्राप्त स्वीकृत 2. सम्मत, एकमत।

अनुमति *स्त्री.* (तत्.) 1. स्वीकृति, आज्ञा, अनुज्ञा, इजाजत 2. सम्मति, अनुमोदन, समर्थन।

अनुमति-पत्र *पुं.* (तत्.) किसी कार्य को करने के लिए औपचारिक स्वीकृति-पत्र।

अनुमरण *पुं.* (तत्.) [अनु+मरण] 1. किसी व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् शोकग्रस्त अन्य किसी का मरण। 2. पति की मृत्यु के पश्चात् विधवा हुई पत्नी का सती हो जाना।

अनुमस्तिष्क *पुं.* (तत्.) आयु. शिर के पीछे प्रमस्तिष्क के नीचे स्थित, मस्तिष्क का वह भाग जो पेशियों के संचालन, संतुलन और समन्वय को नियंत्रित करता है। cerebellum

अनुमाता *वि.* (तत्.) किसी चीज या तथ्य आदि का अनुमान करने वाला।

अनुमान *पुं.* (तत्.) 1. किसी स्थिति के होने, न होने या कम-अधिक होने के बारे में पहले से लगाई गई अटकल, कयास, अंदाजा 2. परिस्थितियों, तथ्यों, कथनों के संबंध में तर्कसम्मत अंदाजा 3. प्रशा. भावी आय-व्यय का तथ्य-आधारित प्राक्कलन estimate 4. अनुमिति के आधार पर किसी निर्णय पर पहुंचना। inference

अनुमानतः *क्रि.वि.* (तत्.)अनुमान से; अटकल से।

अनुमानना *स.क्रि.* (तत्.) [अनुमान] 1. किसी चीज का अनुमान करना, अंदाजा लगाना 2. समझना उदा. उस व्यक्ति के व्यवहार से ही उसके स्वभाव का अनुमान हो गया।

अनुमानवाद *पुं.* (तत्.) [अनुमान-वाद] अनुमान करने का या अनुमान से किसी तत्व को ज्ञात करने का सिद्धांत साहि. काव्य शासन में इस निष्पत्ति के संदर्भ में आचार्य शंकुक द्वारा माना गया एक सिद्धांत या मत दे. अनुमितिवार।

अनुमानाश्रित *वि.* (तत्.) [अनुमान+आश्रित] 1. जो तथ्य या विचार अनुमान पर आश्रित हों, अंदाजिया जैसे- अनुमानाश्रित सिद्धांत।

अनुमानित *वि.* (तत्.) 1. जिसके बारे में पहले अनुमान लगाया गया हो, मोटे हिसाब से सोचा हुआ 2. प्राक्कलित।

अनुमानोक्ति *स्त्री.* (तत्.) [अनुमान+उक्ति] 1. जो उक्ति (कथन) केवल अनुमान पर आधारित हो 2. तर्क-वितर्क युक्त कथन।

अनुमाप *पुं.* (तत्.) मापने का साधन, पैमाना, मापनी रसा. विलयन में घुले पदार्थ की सांद्रता।

अनुमापक *वि.* (तत्.) 1. जिसके माध्यम से माप ली जा सके 2. अनुमान करने में सहायक।

अनुमापन *पुं.* (तत्.) वह रासायनिक प्रक्रिया जिसके द्वारा किसी घोल में तरल अभिकर्मक डालकर यह पता किया जाता है कि तत्व-विशेष की मात्रा कितनी है।

अनुमापना *स.क्रि.* (तत्.) 1. किसी वस्तु या तथ्य का अनुमान करना। 2. किसी बात को विचार करके समझना जैसे- किसी छात्र की आवश्यकता को अनुमापना।

अनुमित *वि.* (तत्.) अनुमान किया हुआ, अंदाजा लगाया हुआ।

अनुमिति *स्त्री.* (तत्.) 1. अभिगृहीत आधारिकाओं के आधार पर विशुद्ध तर्कसंगत निष्कर्ष प्राप्त करने की प्रक्रिया inference 2. अनुमान।

अनुमिति-अनुमितिवाद *पुं.* (तत्.) [अनुमिति+वाद] अनुमिति तर्क से किसी बात, वस्तु को समझ लेना, काव्य शास्त्र में 'भरतमुनि' के रस सिद्धांत की व्याख्या के प्रसंग में 'रस निष्पादित' से तात्पर्य "रस की अनुमिति है" यह मत आचार्य शंकुक का है, क्योंकि नाटक में अभिनेय पात्र दुष्यंत का स्थायी भाव अभिनेता में कृत्रिम होने पर भी सदृश्य जन उसे अनुमान बल से वास्तविक मानते हुए रसानुभूति करता है।

अनुमुद्रण *पुं.* (तत्.) [अनु+मुद्रण] 1. प्रकाशित किसी विशिष्ट ग्रंथ या पत्रिका आदि के किसी अंश को अलग से छापने का कार्य 2. अनुमुद्रण से प्राप्त किये गए लेख आदि महत्वपूर्ण अंश autography off print

अनुमुद्रित *वि.* (तत्.) [अनु+मुद्रित] 1. अनुमुद्रण से प्राप्त किये गए लेख/निबंध/पत्र आदि दुबारा जिन लेखों आदि की छपाई की गई है, जैसे- 'संस्कृत मंजरी' पत्रिका में प्रकाशित निबंध की अनुमुद्रित प्रतियों की प्राप्ति।

अनुमेय *वि.* (तत्.) जिसे अनुमान से जाना जा सके, अनुमान के योग्य।

अनुमोदक *वि.* (तत्.) अनुमोदन करनेवाला, समर्थन करने वाला, समर्थक।

अनुमोदन *पुं.* (तत्.) 1. समर्थन, ठीक समझकर स्वीकार करना 2. प्रसन्नता की अभिव्यक्ति, खुश होना।

अनुमोदनाधीन *वि.* (तत्.) [अनुमोदन+अधीन] 1. किसी बात की स्वीकृति से पहले जिस पर विचार करना अभी और अपेक्षित हो 2. राज. किसी राजनयिक वार्ता के प्रसंग में दो या दो से अधिक पदों में से किसी पक्ष के प्रस्ताव से सहमति हो जाने पर भी अपनी सरकार से अनुमोदन मिल जाने के बाद ही वह स्वीकृति योग्य होता है।

अनुमोदनार्थ *क्रि.वि.* (तत्.) [अनुमोदन+अर्थ] 1. किसी संबंध में किसी से अनुमोदन प्राप्त करने के लिए 2. सहमति या स्वीकृति हेतु जैसे- किसी प्रस्तावित विषय के अनुमोदनार्थ समिति की बैठक होना 2. छात्रों की छात्रवृत्ति राशि बढ़ाने के प्रस्ताव को अनुमोदनार्थ राज्यपाल के पास भेजना।

अनुमोदित *वि.* (तत्.) 1. समर्थित, स्वीकृत, ठीक समझ कर स्वीकार किया हुआ 2. प्रसन्न किया हुआ।

अनुमोद्य *वि.* (तत्.) [अनुमोद्+च प्रत्यय] 1. जो (प्रस्ताव/विषय आदि) अनुमोदन के योग्य हो 2. जिसे अनुमोदन के योग्य माना गया हो 3. जिसका मान्य अधिकारी या सरकार द्वारा अनुमोदन किया जा रहा हो जैसे- अनुमोद्य विकास राशि।

अनुयाचन *पुं.* (तत्.) 1. किसी को समझा-बुझाकर किसी काम के लिए अनुरोध करना 2. किसी को अपने पक्ष में करने के लिए विनम्रता से कहना।

अनुयायिता *स्त्री.* (तत्.) [अनुयायि+ता] 1. अनुयायी होने का भाव या दशा 2. किसी का अनुयायी होना या अनुयायी होने का गुण होना।

अनुयायित्व *पुं.* (तत्.) दे. अनुयायिता।

अनुयायी *वि.* (तत्.) 1.अनुगामी, पीछे चलनेवाला, अनुकरण करनेवाला, किसी के विचार मानने वाला 2. अनुचर, सेवक।

अनुयोक्ता *वि.* (तत्.) पूछताछ करनेवाला, जिज्ञासा व्यक्त करनेवाला *पुं.* 1. परीक्षक, 2. अध्यापक।

अनुयोग *पुं.* (तत्.) 1. प्रश्न, जिज्ञासा, पूछताछ 2. प्रयत्न 3. विधि. किसी अधिकार की रक्षा या अधिकार की क्षति की पूर्ति के लिए न्यायालय की शरण जाना।

अनुयोज्य *वि.* (तत्.) (वह दावा) जिसके लिए न्यायालय की सहायता ली जा सके।

अनुरंजक *वि.* (तत्.) मन बहलानेवाला, प्रसन्न करनेवाला।

अनुरंजन *पुं.* (तत्.) 1. अनुराग, प्रीति, आसक्ति 2. दिल-बहलाव 3. रँगना।

अनुरंजित *वि.* (तत्.) आनंदित, अनुरागयुक्त।

अनुरक्त *वि.* (तत्.) 1. अनुरागयुक्त, प्रेममय, आसक्त, प्रेमी 2. प्रसन्न, संतुष्ट 3. लाल रंग का।

अनुरक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. आसक्ति 2. अनुराग, प्रेम, प्रीति 3. भक्ति।

अनुरक्षण *पुं.* (तत्.) किसी भवन, यंत्रोपकरण आदि के संस्थापन या क्रय के बाद उस का रख-रखाव या देखरेख। maintenance

अनुरणन *पुं.* (तत्.) किसी ध्वनि या नाद की ध्वनि-तरंगों का परावर्तित होकर कुछ देर तक

सुनाई देना, ध्वनि की आवृत्ति, प्रतिध्वनि, गूँज।

अनुरणनात्मक शब्द *पुं.* (तत्.) किसी वस्तु आदि की अपनी सहज ध्वनि के आधार पर उसके लिए प्रयुक्त (स्वीकृत) शब्द, जैसे- टमटम।

अनुरत *वि.* (तत्.) 1. लीन 2. आसक्त 3. अनुरागी, प्रेमी।

अनुरति *स्त्री.* (तत्.) 1. लीनता 2. अनुराग, प्रीति।

अनुरथ्या *स्त्री.* (तत्.) [अनु+रथ्या] 1. किसी स्थान/ग्राम/नगर तक पैदल पहुँचने का पतला रास्ता 2. किसी सड़क के दोनों ओर पगडंडी किनारे बना हुआ पैदल चलने का रास्ता।

अनुराग *पुं.* (तत्.) 1. प्रीति, प्रेम, आसक्ति, प्यार, मुहब्बत 2. भक्तिभाव 3. लालिमा।

अनुरागी *वि.* (तत्.) अनुराग रखनेवाला, प्रेमी।

अनुराणित *वि.* (तत्.) [अनु+रणित] 1. जो प्रतिध्वनित हुआ हो 2. जिसकी आवाज गुंजित हुई हो 3. शब्द होना, गुंजित होना जैसे- अनुरणित नूपुर के स्वर।

अनुराधना *अ.क्रि.* (तत्.) किसी की आराधना या विनय करना, प्रार्थना करना।

अनुराधा *स्त्री.* (तत्.) 27 नक्षत्रों में से 17 वाँ, विशाखा और ज्येष्ठा के बीच का नक्षत्र।

अनुरुद्ध *वि.* (तत्.) रोका हुआ, बाधित, जिसका प्रतिवाद किया गया है।

अनुरूप *वि.* (तत्.) आकृति, स्वरूप, स्वभाव, क्रिया, गुणधर्म या परिस्थति के अनुसार मेल खाने वाला, समान, सदृश, सरीखा, अनुकूल, उपयुक्त प्रयो. देश-काल के अनुरूप ही धर्म-बोध ढलता है -मानस का हंस-अ.ला. नागर।

अनुरूप अभिकलित्र *पुं.* (तत्.) एक कंप्यूटर जो समस्यागत संख्यात्मक चरों, विद्युत आवेश, शैफ्ट के घूर्णन आदि भौतिक तुल्यरूपों के द्वारा द्वारा गणितीय समस्या का समाधान करता है। analogous computer

अनुरूपक *पुं.* (तत्.) 1. वह वस्तु जो किसी के अनुरूप बनी हो जो किसी का अनुकरण करके बनाया गया हो 2. किसी के सदृश या समान वस्तु 3. मूर्ति, प्रतिमा विलो. प्रतिरूप।

अनुरूपण *पुं.* (तत्.) [अनुरूप+मन] किसी को किसी के अनुरूप बनाने की क्रिया, अवस्था या भाव, अनुरूप बनाना, जैसे- यह चित्रकार, शिल्पकार अनुरूपण में कुशल है।

अनुरूपता *वि.* (तत्.) [अनुरूप+तः] 1. किसी की अनुरूपता से 2. अनुरूप होने से 3. अनुरूप के अनुसार, उसके समान/सदृश।

अनुरूपना *क्रि.वि.* (सं. अनुरूपक) 1. किसी के अनुरूप कोई चीज बनाना, तदनुरूप बनाना। तत्सदृश बनाना। 2. *अ.क्रि.* किसी का किसी के अनुरूप बनना या होना, तत्सदृश होना।

अनुरेखक *पुं.* (तत्.) रसा. बिना परिस्थितियों को बदले, तंत्र में क्रिया पथ का अनुसरण करने वाला पदार्थ, विशेषकर रेडियोएक्टिव समस्थानिक।

अनुरेखन *पुं.* (तत्.) 1. किसी रेखाचित्र की हूबहू नकल करना या अनुकृति करना 2. किसी आकृति आदि के ऊपर पारदर्शी कागज रखकर पेंसिल से उसे तदनुरूप बनाना या उसकी रूपरेखा को उतारना 3. हूबहू प्रतिलिपि उतारना।

अनुरोध *पुं.* (तत्.) आग्रह, किसी बात को विनय के साथ कहना, निवेदन।

अनुरोधक *वि.* (तत्.) अनुरोध करने वाला।

अनुरोध *पुं.वि.* (तत्.) किसी काम को करवाने के लिए आग्रह पूर्वक लिखा गया पत्र।

अनुरोधी *वि.* (तत्.) दे. अनुरोधक।

अनुर्योगी *वि.* (तत्.) [अन्+उद्योगी] 1. उद्योग (परिश्रम) न करने वाला 2. अकर्मठ, आलसी 3. उदासीन विलो. उद्योगी।

अनुर्वर *वि.* (तत्.) जो उर्वर या उपजाऊ न हो, बंजर, बंध्य।

अनुलग्न *वि.* (तत्.) संलग्न, पीछे लगा हुआ, चिपका हुआ, नत्थी किया हुआ।

अनुलग्नक *पुं.* (तत्.) किसी पत्र या प्रलेख के साथ नत्थी अन्य आवश्यक कागज-पत्र enclosure

अनुलग्नता *स्त्री.* (तत्.) साथ जुड़ने का भाव।

अनुलब्धियाँ *स्त्री.* (तत्.) प्रबंधन अधिकारियों को वेतन के अतिरिक्त दिए जाने वाले अमौद्रिक लाभ, जैसे- गाड़ी के लिए पेट्रोल, क्लब की सदस्यता, निःशुल्क आवास आदि। अधिलब्धि, अनुलाभ perks

अनुलाप *पुं.* (तत्.) (आगे की) बातचीत, वार्तालाप, संवाद।

अनुलाभ *पुं.* (तत्.) किसी नौकरी आदि के वेतन भत्तों (पारिलब्धियों) के साथ मिलने वाले अन्य हितलाभ, जैसे- छुट्टी यात्रा रियायत (एल.टी.सी.), मुक्त कार सुविधा आदि। perquisites

अनुलिखित *वि.* (तत्.) [अनु+लिखित] 1. जो किसी लेख या लेखन कार्य को देखकर ज्यों का त्यों उतारा गया हो, 2. किसी लिखे हुए के बाद जो कुछ उसमें लिखा गया हो या लिखकर जिस कमी को पूरा किया गया हो, 3. नीचे लिखा हुआ।

अनुलिपि *स्त्री.* (तत्.) प्रतिलिपि, नकल।

अनुलिपित्र *पुं.* (तत्.) अनुलिपि अर्थात् प्रतिलिपियाँ तैयार करने वाला यंत्र duplicator

अनुलेख *पुं.* (तत्.) अनुलिपि, प्रतिलिपि।

अनुलेप *पुं.* (तत्.) दे. अनुलेपन।

अनुलेपक *विं.* (तत्.) शरीर पर लेप या उबटन लगाने वाला।

अनुलेपन *पुं.* (तत्.) 1. लेपन, उबटन, शरीर पर लेप या उबटन लगाने की क्रिया 2. किसी वस्तु पर किसी तरल पदार्थ की तह चढ़ाना।

अनुलोम *पुं.* (तत्.) 1. ऊपर से नीचे की ओर का क्रम, उतार-क्रम 2. उत्तम से अधम की ओर आता श्रेणीक्रम 3. संगीत में सुरों का उतार, अवरोह *वि.* 1. ऊपर से नीचे की ओर वाला, जो विलोम न हो।

अनुलोमज *वि.* (तत्.) 1. अनुलोम विवाह से उत्पन्न संतान 2. जो किसी उच्च वर्ण के पुरुष का नीच वर्ण की स्त्री के साथ विवाह से उत्पन्न उत्पन्न हुई संतान हो विलो. प्रतिलोमज।

अनुलोम जन्मा *वि.* (तत्.) जो अनुलोम विवाह से उत्पन्न हुआ हो। अनुलोमज, वर्णसंकर।

अनुलोमतः *क्रि.वि.* (तत्.) अनुलोम विधि से, वे अनुलोमतः विवाह करने जा रहे है।

अनुलोमन *पुं.* (तत्.) आयु. वह औषध जो पेट में पड़ी मल की विषम गाँठों को गला कर निकाल दे।

अनुलोम-विलोम प्राणायाम *पुं.* (तत्.) योग. बाएं नथुने से श्वास भीतर खींच कर थोड़ी देर रोकते हुए दाहिने नथुने से निकालना और फिर उलटे क्रम में दाहिने से खींच कर बाएँ से बाहर फेंकना।

अनुलोम विवाह *पुं.* (तत्.) विवाह का वह प्रकार जिसमें उच्च वर्ग का पुरुष निम्न वर्ग की स्त्री से विवाह करता है morganatic marriage तु. प्रतिलोम विवाह।

अनुल्लंघन *पुं.* (तत्.) [अन्+उल्लंघन] 1. उल्लसंघन रहित 2. किसी आज्ञा/नियम आदेश 'प्रथा रीति आदि का उल्लंघन न करना, उल्लंघन का अभाव, 3. अतिक्रमण न करना, 4. किसी मर्यादा से बाहर न जाना/न तोड़ना।

अनुल्लघंनीय *वि.* (तत्.) जिसका अतिक्रमण या उल्लंघन नहीं किया जा सकता हो inviolable

अनुल्लंघ्य *वि.* (तत्.) [अन+उल्लंघ्य] 1. जिसका उल्लंघन न किया जा सके 2. जो उल्लंघ्य न हो जैसे- अनुल्लंघ्य आदेश, राजाज्ञा, अनुल्लंघनी, जैसे- अनुल्लंघ्य माता की आज्ञा।

अनुवंश *पुं.* (तत्.) 1. वंशवृक्ष, वंशावली 2. नई पीढ़ी *वि.* (तत्.) पीढ़ी-दर-पीढ़ी।

अनुवंश्य *वि.* (तत्.) [अनु+वंश्य] 1. जो वंश परपंरा से संबंधित हो 2. जो वंशानुगत हो, जनमेजय पांडवों के अनुवंश्य।

अनुवक्ता *पुं.* (तत्.) उत्तर देनेवाला, बाद में बोलनेवाला, दोहरानेवाला।

अनुवचन *पुं.* (तत्.) 1. किसी की बात को दोहराना, आवृत्ति 2. पठन 3. अध्यापन, शिक्षण 4. व्याख्यान, भाषण 5. प्रकरण, अध्याय, पाठ 6. ऋषि विशेष के द्वारा निर्दिष्ट नियमानुसार मंत्र-पाठ।

अनुवत्सर *पुं.* (तत्.) [अनु+वत्सर] 1. वर्ष के पश्चात्, वर्ष, साल 2. वर्षक्रम 3. ज्यों. वैदिक युग के पाँच वर्षों में से चौथा वर्ष 4. क्रि.वि. प्रतिवर्ष।

अनुवर्तक *वि.* (तत्.) [अनु+वर्तक] 1. अनुवर्तन (अनुगमन) करने वाला, अनुगामी, अनुयायी 2. अनुरूप करने वाला, 3. किसी घटना आदि के बाद फलस्वरूप जो होने वाला हो, अनुवर्ती।

अनुवर्तन *पुं.* (तत्.) सा.अर्थ. अनुसरण, अनुगमन, अनुकरण प्रशा. किसी कार्रवाई को अधिक प्रभावी और त्वरित बनाने के लिए किया गया मौखिक या लिखित प्रयास follow up 2. किसी काम में लगे रहना, अनुपालन।

अनुवर्तिता *स्त्री.* (तत्.) [अनुवर्ति+ता] 1. अनुवर्ती होने का भाव या गुण। 2. अनुसरणशीलता।

अनुवर्तिनी *वि.* (तत्.) [अनु+वर्तिनी] 1. अनुगमन करने वाली 2. किसी के बाद होने वाला 3. किसी घटना आदि के पश्चात् या फलस्वरूप होने वाली कोई बात। जैसे- स्वतंत्रता प्राप्ति की अनुवर्तिनी घटना *स्त्री.* 4. स्त्री, पत्नी।

अनुवर्ती *वि.* (तत्.) 1. बाद में होने या आने वाला या किया जाने वाला 2. अनुसरण करनेवाला, अनुयायी, अनुगामी 3. किसी कारण के परिणामस्वरूप होने वाला।

अनुवर्ती कार्य *पुं.* (तत्.) [अनुवर्ती+कार्य] किसी क्रिया/व्यवहार के बाद होने वाला कार्य, आगे का कार्य।

अनुवर्ती सरिता *स्त्री.* (तत्.) भूवि. किसी कछार आदि में उठी नई सतह पर उत्पन्न होने वाली वह सरिता जो अपना मार्ग उसी ढाल के अनुसार बनाती हुई आगे बढ़ती है।

अनुवश *वि.* (तत्.) [अनु+वश] 1. जो किसी के वश में हो गया हो, अन्यवशवर्ती, परवश 2. अनुयायी, अनुगत 3. आज्ञा मानने वाला/ आज्ञानुसार कार्य करने वाला 4. दूसरे की इच्छा पर निर्भर।

अनुवशता *स्त्री.* (तत्.) 1. दूसरे किसी के वश में रहने का भाव या अवस्था 2. परवशीभूत होने की स्थिति, परवशता।

अनुवाक् *पुं.* (तत्.) 1. ग्रंथखंड, ग्रंथविभाग, अध्याय का एक भाग, वेद के अध्याय का एक भाग 2. दोहराना।

अनुवाचन *पुं.* (तत्.) 1. यज्ञ में विधि के अनुसार मंत्र-पाठ 2. अध्यापक के वाचन को विद्यार्थियों द्वारा दुहराकर पढ़ना 3. अध्ययन करना, स्वयं पढ़ना।

अनुवाद *पुं.* (तत्.) 1. भाषांतरण, एक भाषा में छपी/लिखी सामग्री को दूसरी भाषा में बदलकर लिखना 2. दोहराई गई बात।

अनुवाद-अयुक्त *पुं.* (तत्.) 1. वाक्य संगति के लिए युक्त न होना 2. साहि. एक प्रकार का वह अर्थ दोष जो वाक्य में उद्देश्य कथन 'विधेय' के प्रतिकूल होने से माना जाता है यह एक प्रकार का काव्यदोष कहलाता है।

अनुवादक *पुं.* (तत्.) 1. भाषांतर करनेवाला, अनुवाद करनेवाला, तर्जुमा करनेवाला 3. बात को दोहराने वाला।

अनुवाद-जीवी *वि.* (तत्.) [अनुवाद-जीवी] जो अपनी जीवन-वृत्ति किन्हीं ग्रंथों/लेखों आदि के अनुवाद के माध्यम से चलाता हो, मौलिक लेखन से नहीं उदा. अनुवाद जीवियों के माध्यम से ही हम किसी ग्रंथ को अपेक्षित भाषा में अनुवाद होने के कारण पढ़-समझ सकते हैं।

अनुवादनीय *वि.* (तत्.) [अनु+वादनीय] जो अनुवाद करने योग्य हो, जिसका अनुवाद किया जा सके जैसे- अनुवादनीय साहित्य।

अनुवाद-युग्मक-शब्द *पुं.* भाषा. समानार्थक दो शब्दों से बना समासयुक्त शब्द जैसे- चावल-भात, शादी-व्याह, मान-सम्मान आदि।

अनुवादित *वि.* (तत्.) अनुवाद किया हुआ, अनूदित।

अनुवादी *पुं.* (तत्.) 1. एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने वाला, अनुवादक 2. किसी कथन को दुबारा बोलने वाला 3. अनुवाद करने में कुशल।

अनुवादी स्वर *पुं.* संगी. 1. संगीत विद्या में वादी, वादी, संवादी और विवादी इन तीन स्वरों से भिन्न अन्य स्वर, जैसे- 'रे', 'ग', 'धि' न, ये चार 'सा' के अनुवादी स्वर होते हैं 2. वादी स्वर का अनुकरण करने वाला तीसरा स्वर।

अनुवाद्य *वि.* (तत्.) अनूद्य, वह सामग्री जिसका जिसका अनुवाद किया जाना हो, वह भाषा जिसमें अनुवाद होना हो।

अनुवास *पुं.* (तत्.) 1. किसी सुगंधित वस्तु इत्र आदि से अन्य वस्तु, वस्त्रादि को सुगंधित करना। सुवासित करना 2. पिचकारी से गुदामार्ग द्वारा पहुँचाया जाने वाला कोई तेल या औषधि, वस्ति क्रिया, एनिमा देने का ढंग।

अनुवासन *पुं.* (तत्.) अनुवास करने का भाव या क्रिया दे. अनुवास।

अनुवासित *वि.* (तत्.) 1. जिसका ठीक तरह से अनुवासन किया गया हो 2. सुगंधित वस्तुओं से सुवासित, सुगंधित अनुवासित परिधान। 3. जिसकी वस्तिक्रिया की जा चुकी है या जिसे एनिमा दिया जा चुका हो।

अनुवासी *वि.* (तत्.) पड़ोस में रहनेवाला, साथ रहनेवाला, प्रतिवेशी।

अनुविद्ध *वि.* (तत्.) [अनु+विद्ध] 1. जिसका वेधन किया गया हो, बिंधा हुआ, छिद्रयुक्त, जैसे- अनुविद्ध रत्न 2. सम्मिश्रित, अनविद्ध औषधि 3. ओत प्रोतः, सूत्र से अनुविद्ध पुष्पमाला।

अनुविधान *पुं.* (तत्.) 1. आज्ञा के अनुसार कार्य, आज्ञाकारिता 2. नियमानुसार कार्य करना।

अनुवीक्षक *पुं.* (तत्.) किसी प्रकिया या कार्य-स्थिति के होते रहने का अवलोकन-प्रेक्षण करने वाला पर्यवेक्षक शिक्षा. कक्षा का वह छात्र जिसे शिक्षक की अनुपस्थिति में छात्रों की निगरानी हेतु नामित किया जाता हो monitor

अनुवीक्षण *पुं.* (तत्.) 1. यह देखते रहना कि कोई मशीन, संयत्र, प्रक्रिया या प्रणाली सुचारू रूप से चल रही है या नहीं 2. किसी योजना, परियोजना की प्रगित की लगातार निगरानीmonitoring

अनुवीचि *स्त्री.* (तत्.) [अनु+वीचि] किसी जलाशय, नदी आदि में एक लहर के बाद उठने वाली दूसरी लहर, लहरों का क्रम जैसे- अनुवीचि बीच इंद्रप्रभा सदृश वह।

अनुवृत्त *पुं.* (तत्.) (घटना का) वृत्तांत, वर्णन, विवरण।

अनुवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. अनुरूप रहने या अनुगामी होने की स्थिति 2. किसी पद के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए उसके पूर्व पद में निर्दिष्ट सिद्धांत, नियम या सूत्र की व्याप्ति।

अनुवृद्धि *स्त्री.* (तत्.) सही अनुपात में होनेवाली वृद्धि, प्राकृतिक कारणों से होने वाली वृद्धि या क्रमशः होती रहने वाली वृद्धि accretion

अनुवृद्धि विभाग *पुं.* (तत्.) [अनुवृद्धि+विभाग] पुस्तकालय में प्राप्त पांडुलिपियों, पुस्तकों व प्रलेखों आदि की कालक्रमानुसार व्यवस्था का उत्तरदायित्व संभालने वाला विभाग।

अनुवृद्धि संख्या *स्त्री.* (तत्.) [अनुवृद्धि+संख्या] पुस्तकालय में प्राप्त पांडुलिपियों, ग्रंथों आदि की क्रम संख्या, जैसे- किसी पुस्तक प्राप्ति पर उसमें लिखी जाने वाली अनुवृद्धि संख्या।

अनुवेश *पुं.* (तत्.) बाद में प्रवेश करना, अनुसरण।

अनुवेशन *पुं.* (तत्.) 1. किसी के पश्चात् होने वाला प्रवेश 2. बाद में प्रवेश करने का भाव 3. बड़े भाई के अविवाहित रहते हुए अनुज का विवाह।

अनुव्रजन *पुं.* (तत्.) 1. किसी के पीछे-पीछे गमन करना, पीछे चलना 2. घर आए अतिथि को विदा करते समय शिष्टाचारवश कुछ दूर तक उनके पीछे चलकर जाना।

अनुशंसा *स्त्री.* (तत्.) किसी व्यक्ति या अनुरोध के संबंध में यह कहना कि वह अच्छा, उपयुक्त, ग्राह्य अथवा मान्य है, सिफारिश।

अनुशंसित *वि.* (तत्.) जिसकी अनुशंसा की गई हो, संस्तुत।

अनुशय *पुं.* (तत्.) [अनु+शय] 1. किसी व्यवहार या कार्य के बाद होने वाला पश्चाताप, क्षोभ, दुःख। 2. भारी वैर 3. घृणा 4. महाक्रोध 5. घनिष्ठ अनुराग 6. किसी वस्तु के क्रय करने के बाद होने वाला क्षोभ 7. दुष्कर्मों का परिणाम 8. दान संबंधी विवादों का निर्णय।

अनुशयाना *स्त्री.* (तत्.) [अनु+शयाना] साहि. 1. परकीया नायिका का एक रूप/भेद 2. वह नायिका जो पूर्व निर्धारित अपने प्रिय के मिलन स्थान के नष्ट होने पर दुखी हो।

अनुशस्त्र *पुं.* (तत्.) शल्यक्रिया के उपयुक्त शस्त्रों के अभाव में प्रयुक्त किये जाने वाले अन्य अपेक्षित उपकरण या साधन।, जैसे- बॉस, पत्ती आदि।

अनुशासक *पुं.* (तत्.) 1. (अनुशासन अर्थात्) आज्ञा देनेवाला, आदेश देनेवाला 2. शिक्षक 3. हुकूमत करनेवाला, शासन करनेवाला।

अनुशासन *पुं.* (तत्.) 1. आदेश, आज्ञा 2. शिक्षा 3. नियम का पालन करना, नियम-व्यस्था में रहना, नियम के अनुकूल नियंत्रित रहना 4. किसी विषय का निरूपण।

अनुशासन पर्व *पुं.* (तत्.) महाभारत के अठारह खंडों (पर्वों) में से तेरहवां पर्व जिसमे उपदेश दिया गया है।

अनुशासनमूलक व्याकरण *पुं.* (तत्.) भाषा के सही-गलत प्रयोगों का निर्देश करने वाला व्याकरण। prescriptive grammar

अनुशासनिक *वि.* (तत्.) [अनु+शासनिक] 1. जो अनुशासन से संबंधित हो 2. अनुशासन से संबंधित जैसे- अनुशासनिक कार्यवाही।

अनुशासनिक कार्यवाही *स्त्री.* (तत्.) अनुशासन-विहीन आचरण करने वाले व्यक्ति के विरूद्ध की जाने वाली विहित अर्धन्यायिक कार्यवाही। disciplinary proceeding

अनुशासनिक कार्रवाई *स्त्री.* (तत्.) अनुशासन भंग का दोषी पाए जाने पर संबंधित कर्मचारी के विरूद्ध विहित प्रक्रिया के अंतर्गत की जाने वाली दंडात्मक कार्रवाई। disciplinary action

अनुशासनीय *वि.* (तत्.) 1. आज्ञा देने योग्य, आदेश देने योग्य 2. शासन करने योग्य, दंड-योग्य।

अनुशासित *वि.* (तत्.) 1. जिसका या जिस पर अनुशासन किया गया हो 2. आदिष्ट 3. जिसे नियंत्रण में लाया गया हो प्रयो. तुलसीदास अंदर से तपे तो अवश्य, किंतु क्षणमात्र में अपने को अनुशासित कर लिया। (मानस का हंस)।

अनुशासी *पुं.* (तत्.) अनुशासन करने वाला।

अनुशास्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. परामर्श 2. उपदेश।

अनुशिथिलन *पुं.* (तत्.) किसी कारणवश शिथिल हो जाना आयु. हृदयके अलिंद का फैलकर शिथिल हो जाना, जिससे हृदय में रूधिर भर जाता है।

अनुशीलन *पुं.* (तत्.) 1. चिंतन, मनन 2. आलोचन 3. आवृत्ति।

अनुशीलनीय *वि.* (तत्.) 1. चिंतन करने योग्य, मनन करने योग्य 2. विचार या आलोचना करने योग्य 3. अभ्यास करने योग्य।

अनुशेष *पुं.* (तत्.) किसी पुस्तक या प्रलेख के अंत में अतिरिक्त जानकारी हेतु जोड़ी गई सामग्री। पर्या. परिशिष्ट। addendum, appendix

अनुशोक *पुं.* (तत्.) दे. अनुशोचन।

अनुशोच *पुं.* (तत्.) 1. किसी प्रकार का पश्चात्ताप, शोक, दु.ख, पछतावा 2. अनुशोक।

अनुशोचन *पुं.* (तत्.) किसी नियमविरुद्ध या अनुचित कार्य को करने के बाद होने वाला पछतावा, पश्चात्ताप।

अनुश्रवण *पुं.* (तत्.) 1. गुरुपरंपरा से उच्चारित मंत्रादि को सुना जाना 2. सरकारी टेलीफोन (दूरभाष यंत्र) के दुरुपयोग को जानने के लिए सुनना।

अनुश्रुत *वि.* (तत्.) शा.अर्थ. सुना हुआ, सुनीसुनाई बात। विधि. सुना हुआ अपुष्ट प्रमाण, जिसे साक्ष्य नहीं माना जा सकता है।

अनुश्रुत साक्ष्य *पुं.* (तत्.) सुनी सुनाई बात की साक्ष्य के रूप में प्रस्तुति, जिसे विधि की दृष्टि में साक्ष्य नहीं माना जाता।

अनुश्रुति *स्त्री.* (तत्.) परंपरा से प्राप्त कथा, उक्ति उक्ति या बात, किंवदंती, सुनी सुनाई।

अनुश्रोता *पुं.* (तत्.) [अनु+श्रोता] 1. किसी कथन को सुनने वाला। अनुश्रवण करने वाला 2. सरकारी टेलीफोन के दुरुपयोग की जानकारी देने वाला अधिकारी।

अनुषंग *पुं.* (तत्.) 1. संबंध, लगाव 2. करुणा, दया।

अनुषंगी *वि.* (तत्.) 1. संबंधी 2. सहायक, गौण, सहलग्न, संबद्ध दे. आनुषंगिक।

अनुषंगी संगीत *पुं.* (तत्.) किसी विशेष विषय से संबंधित भाव परक संगीत।

अनुष्टुप्, अनुष्टुभ *पुं.* (तत्.) (स्तुतिपरक) श्लोक, संस्कृत में आठ-आठ वर्णों के चार चरण पदों वाला बत्तीस वर्णों का छंद।

अनुष्ठाता *पुं.* (तत्.) अनुष्ठानकर्ता, कार्य करने या कार्य प्रारंभ करने वाला।

अनुष्ठान *पुं.* (तत्.) 1. नियमपूर्वक किया जाने वाला कोई कार्य, शास्त्र के अनुसार कार्य 2. कार्य आरंभ करना।

अनुष्ठापन *पुं.* (तत्.) काम में प्रवृत्त करना, कार्य करना।

अनुष्ठित *वि.* (तत्.) सविधि पूरा किया हुआ, संपन्न, पूर्ण।

अनुष्ठेय *वि.* (तत्.) (विधि-पूर्वक) करने योग्य।

अनुष्ण *वि.* (तत्.) 1. जो गर्म न हो, (कम) ठंडा, कदुष्ण 2. विरागी।

अनुसंतति *वि.* (तत्.) [अनु+संतति] जो संतान के मनोनुकूल हो, संतान के अनुसार।

अनुसंतति-संबोधन *पुं.* (तत्.) [समाज] एक सामाजिक परंपरा के अनुसार जिसमें वयस्क आयु से बड़े गृहस्थ लोगों/व्यक्तियों को उनके नाम से न बुलाकर उनकी संतान के नाम से पुकारा जाता है, जैसे- उमा की माँ/अम्मा/दादी पिता, राघव की माँ पिता/दादा, आदि।

अनुसंधान *पुं.* (तत्.) किसी वस्तु, विषय, सामग्री आदि पर व्यवस्थित तरीके से की गई खोज, प्राचीन तथ्यों या नई जानकारियों के अन्वेषण और अध्ययन से किसी नई बात का पता लगाना, खोज, आविष्कार, अन्वेषण, शोध।

अनुसंधानना *क्रि.स.* (तत्.) 1. किसी चीज का अनुसंधान करना, खोलना, ढूँढना, सोचना 2. किसी समस्या के संबंध में पता लगाना, छानबीन करना 3. किसी वैज्ञानिक या साहित्यिक विषय पर अनुसंधान या शोधकार्य करना, गवेषणा करना।

अनुसंधान पुस्तकालय *पुं.* (तत्.) पुस्तकालय जिसमें शोध, गवेषणा से संबंधित सामग्री सहज उपलब्ध हो।

अनुसंधान सहायक *पुं.* (तत्.) अकादमिक कार्यों से जुड़े संगठनों में अनुसंधान अधिकारी की सहायता करने वाला सहायक पर्या. शोध-सहायक।

अनुसंधानी *पुं.* (तत्.) [अनुसंधान+इन=ई] किसी विषय पर तथ्यपरक अनुसंधान करने वाला कोई व्यक्ति।

अनुसंधायक *पुं.* (तत्.) [अनु+सम+धायक] दे. अनुसंधानी।

अनुसंधि *स्त्री.* (तत्.) [अनु+संधि] 1. गुप्त परामर्श या संधि 2. कुचक्र, षड्यंत्र।

अनुसंधित्सु *वि.* (तत्.) [अनु+संधित्सु] 1. किसी विषय पर अनुसंधान या शोध करने की अधिक इच्छा करने वाला (कोई व्यक्ति) 2. अनुसंधान करने में पूरी तरह तत्पर जैसे- विश्वविद्यालयों में अनेक अनुसंधित्सु अपने इष्ट विषय पर अनुसंधानरत हैं।

अनुसक्ति *स्त्री.* (तत्.) वन. पुष्प के एक चक्कर के अवयव का दूसरे चक्कर के अवयव से जुड़ा होना, जैसे पुंकेसर का पंखुड़ी से जुड़ाव तु. संसक्ति।

अनुसचिव *पुं.* (तत्.) दे. अवर सचिव।

अनुसमर्थन *पुं.* (तत्.) विधि. दूसरे के वचन या करार आदि की स्वयं अपनी ओर से पुष्टि 2. प्रशा. अपने प्रतिनिधि या अभिकर्ता के कृत्य का अनुमोदन 3. राज. दो या अधिक सरकारों अथवा अंतरराष्ट्रीय संगठनों के स्तर पर हुए समझौतों की सरकार द्वारा पुष्टि।

अनुसमर्थन पत्र *पुं.* (तत्.) किसी अन्य द्वारा दिए दिए गए वचन, करार आदि की पुष्टि में दिया गया पत्र। instrument of ratification

अनुसरण *पुं.* (तत्.) 1. पीछे चलना, साथ-साथ चलना 2. अनुकरण, नकल 3. अनुकूल आचरण।

अनुसर्ग *पुं.* (तत्.) परसर्ग, प्रत्यय। post position

अनुसर्ता *पुं.* (तत्.) 1. किसी के पीछे पीछे या साथ-साथ चलने वाला, अनुसरण करने वाला कोई व्यक्ति 2. नियमों का अनुपालक 3. आज्ञापालक।

अनुसार *वि.* (तत्.) अनुकूल; सदृश, समान।

अनुसारक *वि.* (तत्.) 1. अनुयायी, पीछे चलनेवाला 2. अनुरूप, तुल्य।

अनुसारण *पुं.* (तत्.) पीछे चलना, पीछा करना, अनुगमन करना।

अनुसारत *क्रि.वि.* (तत्.) [अनुसार+तः] तदनुसार, उसी तरह, उसी के अनुरूप, जैसे-उनके कार्य को देखकर अनुसारतः तुम भी करो।

अनुसारता *स्त्री.* (तत्.) [अनुसार+ता प्रत्यय] 1. किसी के अनुसार होने का भाव या अवस्था, अनुसादृश्य, अनुरूपता 2. किसी का अनुकरण करने की स्थिति, नकल, जैसे- प्रत्येक विषय पर पाश्चात्य अनुसारता उचित नहीं होती।

अनुसारिता *स्त्री.* (तत्.) [अनुसारि+ता प्रत्यय] किसी के अनुसारी होने की प्रवृत्ति या भाव, अनुसरणशीलता।

अनुसारी *वि.* (तत्.) अनुसरण करने वाला, अनुकरण करने वाला।

अनुसाल *स्त्री.* (तत्.) [(तत्.)अनु+हि.सालना] 1. किसी प्रकार की मानसिक वेदना, पीड़ा। 2. किसी घटना जन्य मन को सालने वाली व्यथा, कष्ट।

अनुसीमक *पुं.* शिक्षा. प्रश्नपत्र आदि की कठिनता दूर करके उसका अनुसीमन करने वाला, पुनरीक्षक। moderater

अनुसीमन *पुं.* (तत्.) प्रश्नपत्र आदि की कठिनता को सीमित कर उसे सरल, और सुबोध समन्वित रूप देने का कार्य। moderation

अनुसूचक *वि.* (तत्.) सूचना देनेवाला, संकेत करनेवाला।

अनुसूचन *पुं.* (तत्.) 1. सूचना देना, सूचना देने का कार्य 2. अनुसूची बनाना।

अनुसूचित *वि.* (तत्.) परिगणित, जिनका नाम सूचीबद्ध हो।

अनुसूचित क्षेत्र *पुं.* (तत्.) (भारतीय संविधान की पाँचवी सूची, भाग 'ग' के अनुसार) राज्य के वे विशिष्ट भूखंड जिन्हें राष्ट्रपति या राज्यपाल ने विशिष्ट उद्देश्य से निर्मित सूची में रखा हो, इन पर सामान्य परिस्थिति में राज्य की सामान्य विधियाँ लागू नहीं होती।

अनुसूचित जनजाति *स्त्री.* (तत्.) भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 के अंतर्गत परिगणित कुछ आदिम जातियाँ।

अनुसूचित जाति *स्त्री.* (तत्.) भारतीय संविधान के अनुच्छेद 330 के अंतर्गत परिगणित कुछ जातियाँ।

अनुसूचित बैंक *पुं.* (तत्.) भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 की द्वितीय अनुसूची में सम्मिलित बैंक। scheduled bank

अनुसूची *स्त्री.* (तत्.) शा.अर्थ. वाद वाली सूची 1. विधि. विधानमंडल द्वारा पारित किसी अधिनियम अधिनियम या किसी विधिक लिखत का परिशिष्ट 2. प्रशा. किसी प्रलेख की व्याख्या के तौर पर अथवा उसके परिशिष्ट के रूप में जोड़ा गया वर्गीकृत या सारणीबद्ध अंश 3. विवरणों की तालिका बद्ध या क्रमबद्ध सूची। schedule

अनुसृत *वि.* (तत्.) [अनु+सृत] जिसके गुण, शील आदि का अनुसरण किया गया हो।

अनुसृति *स्त्री.* (तत्.) 1. अनुसरण, पीछे चलना 2. नकल।

अनुसृष्टि *स्त्री.* (तत्.) उत्तरवर्ती रचना, क्रमिक रचना।

अनुसेचन *पुं.* (तत्.) [अनु+सेचन] 1. किसी पर एक क्रम से या बार-बार किया जाने वाला जल का छिड़काव 2. किसी लता, पादप आदि को बार-बार पानी से सींचना जैसे- अनुसेचन से दूर्वा का विकास होता है।

अनुसेवा *स्त्री.* (तत्.) [अनु+सेवा] 1. किसी कार्य, प्रयोजन, आदि के लिए होने वाली सेवा या साधन के रूप में उपयोगिता 2. किसी के मातहत होकर कार्य करने की स्थिति, अधीनता 3. किसी की सेवा किये जाने के बाद की जानी वाली सेवा, उपचार।

अनुसेवी *वि.* (तत्.) अधीनस्थ हैसियत से सेवा करने वाला।

अनुस्तरण *पुं.* (तत्.) एक के बाद एक, या एक के ऊपर एक क्रमबद्ध स्तर में करना, बिखराना या फैलाना।

अनुस्मरण *पुं.* (तत्.) बार-बार स्मरण, बीती बातों की स्मृति।

अनुस्मारक *पुं.* (तत्.) स्मृति या याद दिलाने के लिए लिखा पत्र, स्मरण पत्र। reminder

अनुस्मृति *स्त्री.* (तत्.) 1. अनुस्मरण 2. मोहक स्मृति 3. एकांत चिंतन 4. समग्र में से मात्र एक का ध्यान करना।

अनुस्यूत *वि.* (तत्.) 1. ग्रंथित 2. पिरोया हुआ, 3. सिला हुआ 4. श्रेणीबद्ध, संबद्ध।

अनुस्वार *पुं.* (तत्.) स्वर के बाद प्रयुक्त एक अयोगवाह चिह्न, यह ङ्, ञ्, ण्, न्, म् आदि नासिक्य व्यंजनों के अर्ध रूप के स्थान पर प्रयुक्त होता है, इसके लिए (.) चिह्न प्रयुक्त होता है, यथा- पङ्क पंक, कज्ज कंज, पन्त= पंत।

अनुहरण *पुं.* (तत्.) [अनु+हरण] 1. अनुकरण 2. सादृश, समानता।

अनुहरना *स.क्रि.* (तत्.) 1. किसी का अनुसरण करना, नकल करना 2. एक जैसा या समान प्रतीत होना 3. अनुकूल होना।

अनुहार *वि.* (तत्.) [अनु+हार] 1. समान, सदृश 2. अनुकूल, अनुरूप जैसे समय के अनुहार कार्य *स्त्री.* 3. ठीक चीज की हूबहू आकृति, प्रतिकृति 4. अनुकरण, नकल जैसे सबकी अनुहार करना उचित नही है 5. भेद/प्रकार (काव्य में नायिना के भेद)

अनुहारक *वि.* (तत्.) 1. जो अनुहरण करने में कुशल हो, अनुहरण कर्ता 2. जो किसी बात की अनुकरण कर सकता हो।

अनुहारना *स.क्रि.* (तत्.) 1. किसी के तुल्य या सदृश करना 2. किसी से किसी की उपमा करना, जैसे- लक्ष्मीबाई की दुर्गा से अनुहारना।

अनुहारी *वि. पुं.* [अनुहाति+ई] 1. किसी का अनुकरण करने वाला 2. किसी के अनुरूप बना हुआ 3. किसी की नकल करके रचित स्त्री

अनुहारिणी 1. अनुकरण करने वाली कोई आकृति 2. उपयुक्त प्रतिकृति

अनुहार्य *वि.* (तत्.) [अनु+हार्य] 1. जो अनुकरण करने योग्य हो, अनुकरणीय 2. जिसका अनुकरण किया जा सके जैसे- अनुहार्य भरत जीवनचरित।

अनूठा *वि.* (तद्.) 1. अनोखा, विलक्षण, विचित्र, अद्भुत 2. असाधारण, अनुपम 3. सुंदर।

अनूठापन *पुं.* (तद्.) अनूठा होने का भाव, विलक्षणता, विचित्रता, विशेषता।

अनूढ *वि.* (तत्.) (वह पदार्थ) जो जल-प्रवाह या वायु द्वारा प्रवाहित न होकर अपने ही स्थान पर पर अपक्षपण या विघटन से निक्षेपित हो गया हो। alluvial

अनूढक *पु.* (तत्.) अनूढ मृदा या धूल के निक्षेपों का संचय। alluvium

अनूढा *स्त्री.* (तत्.) स्त्री जिसका विवाह न हुआ हो, हो, अविवाहिता।

अनूदन *पुं.* (तत्.) 1. किसी विषय का दूसरी भाषा में अनुवाद करना, उल्था करना 2. भाषांतरण 3. बाद में कहा गया कार्य, कथन।

अनूदित *वि.* (तत्.) 1. अनुवादित, भाषांतरित 2. कहा हुआ, वर्णन किया हुआ।

अनूद्य *वि.* (तत्.) अनुवाद के योग्य, अनुवाद्य।

अनून *वि.* (तत्.) [अन्+उन] 1. जो कम हल्का या घटिया किस्म का न हो 2. अधिक 3. जिसे पूर्ण अधिकार हो, समग्र।

अनूप *वि.* (तद्.) जिसकी उपमा न हो, अद्वितीय, बेजोड़ उदा. अरथ अनूप सुभाव सुभासा, सोइ पराग मकरंद सुबासा (मानस 1/37) *पुं.* (तत्.) अ *पुं.* (तत्.) 1. दलदल, धसान, झाबर, वह स्थान जहाँ सदा जलाधिक्य हो 2. जलबहुल स्थल में रहने वाला हाथी या भैंस।

अनूपग्राम *पुं.* (तत्.) 1. नदी या जलाशय के तट पर बसा हुआ ग्राम 2. जलप्राय या अधिक जल वाला वास स्थान।

अनूप नराच *पुं.* (तत्.) [छंद] पंचचामर वर्णिक छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में सोलह वर्ण होते हैं तथा क्रम से जगण, रगण, जगण रगण, जगण होते है तथा अंतिम वर्ण शुरू होता है।

अनूरु *वि.* (तत्.) [अन्.+ऊरु] 1. जो बिना जाँघों का हो, जंघा रहित 'जरासंध अनूरु हो गया था' 2. जिसकी जंधाएँ नष्ट या विकृत कर दी गई हो *पुं.* सूर्य का सारथी अरुण। उषा काल, भोर का समय

अनूरुसारथि *वि.* (तत्.) 1. जिसका सारथि उरु (ऊंचा) रहित हो *पुं.* सूर्य।

अनूर्जा *स्त्री.* (तत्.) ऊर्जा-रहितता।

अनूर्जित *वि.* (तत्.) [अन्+ऊर्जित] 1. जो ऊर्जा रहित हो, अशक्त, अक्षम 2. गर्व रहित, जैसे- अनूर्जित शत्रु।

अनूर्णन *पुं.* (तत्.) ऊर्णित न होने की क्रिया, मृत्तिका या मृदापुंज का सूक्ष्म कणों में परिक्षेपण।

अनूर्ध्व *वि.* (तत्.) [अन्+ऊर्ध्व] 1. जो ऊपर की ओर न हो, नीचे 2. जो ऊँचा न हो। नीचा, जैसे- अनूर्ध्व पर्वत।

अनूर्मि *वि.* (तत्.) [अन्+ऊर्मि] 1. जिस जलाशय में ऊर्मियाँ न दिखती हों 2. लहरों से रहित, तरंग हीन 3. शांत स्थिर (जलवाला)।

अनूह *वि.* (तत्.) [अन्+ऊह] 1. जो बिना उह के सिद्ध हो, तर्क-वितर्क रहित 2. निश्चेष्ट 3. विचारहीन जैसे- अनूह सत्य।

अनृजु *वि.* (तत्.) [अन्+ऋजु] जो ऋजु अर्थात् सीधा, सरल या उचित न्यायसंगत या नैतिक न हो unfair

अनृण *वि.* (तत्.) [अन्+ऋण] 1. जो किसी का ऋणी न हो 2. जिसके पास देने के लिए कोई ऋण शेष न रह गया हो 3. कर्जदार न होना उदा. वह जीवन भर अनृण रहा।

अनृणी *वि.* (तत्.) [अन्+ऋणी] दे. अनृण।

अनृत *वि.* (तत्.) [अन्+ऋत] जो ऋत या सत्य न हो, असत्य, मिथ्या, झूठ।

अनृतवादी *वि.* (तत्.) [अनृत+वादी] सत्य न बोलने वाला, मिथ्याभाषी, झूठ बोलने वाला।

अनृतु *स्त्री.* (तत्.) [अन्+ऋतु] 1. ऋतु के विपरीत 2. अनुकूल ऋतु का अभाव, अकाल, असमय 3. वह कन्या जिसका अभी तक रजोधर्म प्रारंभ न हुआ हो *वि.* जो ऋतु (मौसम) के अनुसार न हो, जो बिना ऋतु के हो अथवा जो उपयुक्त ऋतु के अभाव में हों।

अनेक *वि.* (तत्.) एक से अधिक, बहुत, असंख्य, अनगिनत।

अनेक चित्त *वि.* (तत्.) 1. जिसका चित्त स्थिर न हो 2. जिसमें एकाग्रचित्तता न हो, चंचल मन।

अनेकता *स्त्री.* (तत्.) दे. अनेकत्व।

अनेकत्र *क्रि.वि.* (तत्.) अनेक/कई जगह जैसे- वर्षा से आज नगर में अनेकत्र जल भर गया।

अनेकत्व *पुं.* (तत्.) 1. अनेकता, एक से अधिक होने का भाव 2. अनैक्य, एक न होने का भाव।

अनेकधा *क्रि.वि.* (तत्.) विविध प्रकार से जैसे- शास्त्रों में अनेकधा सृष्टि विवेचन है।

अनेकमुख *वि.* (तत्.) 1. जिसके अनेक मुख हों (ब्रह्मा, शिव, रावण आदि) 2. अनेक प्रकार की बात करने वाला, बहुमुख 3. बहुत बोलने वाला, बहुजल्पी 4. विविध प्रकार के सिद्धांत वाला।

अनेकरूप *वि.* (तत्.) 1. बहुत रूपों वाला 2. बहुरूपी, परिवर्तनशील *पुं. (तत्.)* परमेश्वर।

अनेकविध *वि.* (तत्.) [अनेक-विध] 1. बहुत प्रकार का, बहुविध 2. कई तरह के जैसे- अनेकविध कार्यक्रम, अनेकविध चर्चा।

अनेकशः *क्रि.वि.* (तत्.) 1. बहुत बार, कई प्रकार से जैसे- 1. उसने अनेकशः तीर्थाटन किया 2. ब्रह्म की सत्ता का अनेकशः विवेचन किया गया।

अनेकांगी *पुं.* (तत्.) [अनेक+अंगी] 1. अनेक अंगो वाला जैसे- जीव अनेकांगी है 2. विविध भागों, खंडों वाला, वेद के अनेकांगी माना गया है। व्याकरण उसका मुख है।

अनेकांत *वि.* (तत्.) 1. जहाँ एकांत न हो 2. जिसका अंत या परिणाम एक न हो, अनिश्चित अस्थिर।

अनेकांतवाद *पु.* (तत्.) जैन दर्शन में स्यादवाद।

अनेकांतवादी *वि.* (तत्.) दर्शन [अनेकांत+वादी] 1. अनेकांतवाद के सिद्धांत का समर्थक या अनुयायी 2. जैनदर्शन के सिद्धांत 'स्याद्वाद' (सृष्टि-ऐसा है, वैसा है) को मानने वाला टि. एक पदार्थ में परस्पर विरुद्ध अनेक धर्मों की स्थिति का निश्चय करने की क्रिया अनेकांतवाद है।

अनेकाकार *वि.* (तत्.) अनेक आकारवाला, अनेक आकृतियों वाला, बहुरूप।

अनेकाकी *वि.* (तत्.) [अन्+एकाकी] 1. जो अकेला न हो 2. जिसके साथ किसी क्रिया में/ व्यवहार में एक से अधिक लोग हों जैसे- अनेकाकी गमन करने वाला।

अनेकाग्र *वि.* (तत्.) [अन्+एकाग्र] 1. जो किसी कार्य में एकाग्र न हो 2. जिसकी एकाग्रता एक कार्य पर न होकर अनेक कार्यों पर हो 3. विविध मानसिक वृत्ति वाला।

अनेकात्मक *वि.* (तत्.) [अनेक+आत्मक] 1. जो किसी प्रकार से एकात्मक (किसी के साथ मिलकर एकरूप) न हुआ हो 2. विविध रूप वाला, अनेक रूप

अनेकात्मकता *स्त्री.* (तत्.) [अनेक+आत्मकता] अनेक रूपों का भाव या अवस्था, अनेकरूपता, बहुरूपता।

अनेकानेक *वि.* (तत्.) [अनेक+अनेक] 1. बहुत अधिक, जैसे- अनेकानेक लोग उपस्थित थे 2. विविध प्रकार के जैसे- अनेकानेक कार्यक्रम।

अनेकार्थ *वि.* (तत्.) जिसके कई अर्थ हों, बहुत अर्थोंवाला, नानार्थ, अनेकार्थी।

अनेकार्थक *वि.* (तत्.) भाषा. [अनेक+अर्थक] जो अनेक अर्थ वाला हो, जिसके अनेक अर्थ हों जैसे- हरि= विष्णु, श्रीकृण, अग्नि, बंदर, घोड़ा आदि विलो. एकार्थक।

अनेकार्थता *स्त्री.* (तत्.) 1. शब्द या वाक्य का वह गुण जिससे उसके दो या अधिक अर्थ प्रकट होते है 2. बहुअर्थी शब्द के सही अर्थ के विषय में संदेह की स्थिति संदिग्धार्थता।

अनेकार्थी *वि.* (तत्.) भाषा. अनेक अर्थ व्यक्त करने वाला शब्द जैसे- कर=हाथ, किरण, हाथी की सूंड, टैक्स, आदि।

अनेकाश्रय *वि.* (तत्.) [अनेक+आश्रय] 1. जिसे अनेक लोगों का आश्रय प्राप्त हो जैसे- अनाथ बालक 2. जो बहुत लोगों का आश्रय हो, जैसे- वृद्धाश्रम, अनाथाश्रम आदि विलो. एकाश्रम।

अनेकेश्वरवाद *पुं.* (तत्.) (दर्शन) [अनेक+ईश्वरवाद] वह सिद्धांत या मत जिसमें एक ईश्वर की जगह अनेक ईश्वर को सत्ता का नियामक माना गया है जैसे- भारत में अनेक देवी-देवताओं को ईश्वर के रूप में माना जाता है विलो. एकेश्वरवाद।

अनेग *वि.* (तत्.) 1. जिसमें अर्थात् विवाहादि शुभ अवसरों पर संबंधीजनों व अपेक्षित सेवकों को नेग का लेन-देन न हो 2. बिना नेग का 3. अनेक।

अनेह *पुं.* (तद्.) स्नेहाभाव, विरक्ति, अप्रेम, अप्रीति दे. अस्नेह।

अनेही *वि.* (तत्.) [अ+नेही] 1. जो किसी से नेह (स्नेह/प्रेम) न करता हो 2. स्नेह/लगाव न रखने वाला 3. विरागी, अनासक्त विलो. नेही।

अनैक्य *पुं.* (तत्.) एकता का अभाव, अनेकता ना एकता का न हो, मतभेद, फूट।

अनैच्छिक *वि.* (तत्.) 1. अनचाहा, न चाहा हुआ, अवांछित, इच्छा के विपरीत (होने वाला) 2. स्वत:उत्पन्न 3. जिसमें इच्छानुसार चुनने का विकल्प न हो, अनिवार्य।

अनैतिक *वि.* (तत्.) जो नीति, धर्म या नैतिकता के विपरीत हो, अनाचार-पूर्ण।

अनैतिकता *स्त्री.* (तत्.) 1. नीति या नैतिकता के विरूद्ध होने की स्थिति 2. अनैतिक कार्य या बात, अनाचारिता।

अनैतिहासिक *वि.* (तत्.) जो इतिहास-संगत न हो, जिसका प्रमाण इतिहास में न मिलता हो।

अनैतिह्य *वि.* (तत्.) [अन.+ऐतिहय] 1. ऐतिहासिक या परंपरागत प्रचलित प्रमाण का अभाव 2. ऐतिहासिकता का न होना जैसे- अनेतिह्य प्रमाण विलो. ऐतिह्य।

अनैश्वर्य *पुं.* (तत्.) ऐश्वर्य का अभाव, अप्रभुत्व, समृद्धि या धन-संपदा का न होना।

अनैसर्गिक *वि.* (तत्.) [अ+नैसर्गिक] 1. जो नैसर्गिक (प्राकृतिक) न हो। अप्राकृतिक जैसे- अनैसर्गिक जल प्रपात 2. जो स्वभावानुकूल न हो, अस्वाभाविक, अनैसर्गिक आचरण विलो. नैसर्गिक।

अनोक्सिता *स्त्री.* (तत्.+अं.) ऑक्सीजन-रहित पर्यावरण की स्थिति। anoxia

अनोक्सीकरण *पुं.* (तत्.+अं.) अपचयन। anoxidation

अनोक्सीजीविता *स्त्री.* (तत्.+अं.) जीव की वह अवस्था जिसमें पर्यावरण में ऑक्सीजन की कमी होने के कारण उसकी उपापचयी क्रिया घट जाती है। anoxybiosis

अनोखा *वि.* (तद्.) 1. अनूठा, निराला, विचित्र, विलक्षण, अद्भुत 2. 'नूतन' 3. अनपेक्षित।

अनोष्ठता *स्त्री.* (तत्.) [अन्+ओष्ठता] ओष्ठविहीनता, ओंठों का न होना, बिना ओठों वाली स्थिति।

अनौचित्य *पुं.* (तत्.) औचित्य के न होने या अनुचित होने की स्थिति, अनुपयुक्तता।

अनौपचारिक *वि.* (तत्.) जो केवल औपचारिक या दिखावे भर के लिए न हो, जो उपचार-मात्र न हो, जिसमें बनावटीपन न हो, व्यावहारिक, गैर-रस्मी।

अनौपचारिक शिक्षा *स्त्री.* (तत्.) विद्यालय शिक्षा पद्धति से भिन्न अन्य माध्यमों द्वारा दी जाने वाली शिक्षा।

अनौरस *वि.* (तत्.) [अन्+औरस] 1. जो औरस (निजी संतान) न हो 2. जो कुलपरंपरा के अनुसार विवाहित अपनी पत्नी से उत्पन्न न हुआ हो 3. अवैध संतान या दत्तक पुत्र/पुत्री।

अन् *अव्य.* (तत्.) 1. व्याकरण के अनुसार निषेधार्थक नञ् अव्यय का रूप 2. इसे अभाव या निषेधसूचक शब्द बनाने के लिए स्वर से प्रारंभ होने वाले शब्द के पूर्व में लगाया जाता है जैसे- अनायास, अनंतर, अनुचित, हिंदी में इसी अर्थ में 'अंन' का भी प्रयोग होता है जैसे- 'अनकही'।

अन् *उप.* (तत्.) एक निषेध-सूचक उपसर्ग (उदा. अन्+अधिक=अनधिक)।

अन्न *पुं.* (तत्.) 1. खाद्य पदार्थ 2. अनाज 3. पकाया हुआ, भोज्य पदार्थ।

अन्नकूट *पुं.* (तत्.) कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को मनाया जानेवाला पर्व जिसमें श्रीकृष्ण को अर्पित विविध प्रकार के भोजनों का ढेर लगाया जाता है, अन्न का पहाड़ या ढेर।

अन्न देवता *पुं.* (तत्.) [अन्न+देवता] 1. अन्न रूपी देवता क्योकि लोग अन्न खाकर ही दृष्टि, पुष्टि व शक्ति प्राप्त करते हैं 2. अन्न का देवता जिसकी कृपा से हमें विविध प्रकार के जीवनोपयोगी अन्न (अनाम) की प्राप्ति होती है।

अन्नकोष्ठ *पुं.* (तत्.) [अन्न+कोष्ठ] 1. अन्न सुरक्षित रखने का कोठा 2. अनाज रखने के लिए बनाया गया भंडार 3. धान्यागार, कोठिला।

अन्नक्षेत्र *पुं.* (तत्.) 1. वह विशेष स्थान जहाँ परोपकार की भावना से नित्य ही निर्धनों, असहायों साधु-संतों व अपाहिजों आदि को भोजन या अन्न का वितरया किया जाता है 2. असहायों/जरूरतमंदों के लिए बनाया गया अन्न वितरण का केंद्र का स्थान।

अन्नजल *पुं.* (तत्.) 1. भोजन और पानी, दाना-पानी; खान-पान 2. जीविका प्रयो. गांव के कहां भैया, मेरा अन्नजल तो परदेश में ही लिखा है मुहा. अन्नजल उठना- रहने का संयोग या सहारा न रहना; अन्नजल त्याग करना या छोड़ना- व्रत या उपवास करना।

अन्नजीवी *वि.* (तत्.) 1. जिनका जीवन अन्न पर आधारित है 2. जो अन्न का सेवन करके ही जीवित रहते हैं, अन्नसेवी, अन्नभोजी।

अन्नद *वि.* (तत्.) [अन्न+द] 1. अन्न प्रदान करने वाला 2. जीविका वृत्ति के रूप में अन्न देने वाला, *स्त्री.* 1. अन्नदा जैसे अंतरा धरा 2. देवी अन्नपूर्णा पार्वती का ही एक रूप।

अन्नदाता *पुं.* (तत्.) शा.अ. भोजन देने वाला, पालन कर्ता, पालन-पोषण करने वाला, प्रतिपालक।

अन्नदोष *पुं.* (तत्.) 1. जिस अन्न में कोई विकार आ जाने के कारण उसका सेवन दोषयुक्त हो गया हो 2. किसी प्रकार के दूषित अन्न के खाने से होने वाला कोई दोष या रोग 3. किसी कुपात्र से अन्न का दान लेने व शास्त्र या परंपरा परंपरा विहित निषिद्ध अन्न के सेवन का दोष या पाप, जैसे- 1. उठहु विप्र निज निज गृह जाहू, है बड़ि हानि अन्न जनि खाहू" - रामचरितमानस. बालकांड)

अन्नद्वेष *पुं.* (तत्.) 1. रुग्ण अवस्था में या जन्म जन्म से कोई विकार के कारण अन्न या भोजन के प्रति होने वाली अरुचि या अनिच्छा 2. अन्न सेवन से होने वाली कोई विकृति या कष्ट।

अन्नपुट *पुं.* (तत्.) प्राणि. गल थैली, कीटों और पक्षियों की आहारनाल का आमाशय के पहले स्थित फूला हुआ भाग। crop, craw

अन्नपूर्णा *स्त्री.* (तत्.) भगवान शिव की पत्नी अन्न की देवी मानी गई हैं, अन्नदात्री।

अन्नप्राश/अन्नप्राशन *पुं.* (तत्.) [अन्न+प्राश] 1. अन्न का सेवन, भोजन 2. एक वैदिक संस्कार जिसमें शिशु को जन्म से पाँचवें या छठें मास में प्रथम बार अन्न खिलाया जाता है।

अन्नप्राशन *पुं.* (तत्.) अन्न का प्राशन अर्थात् खिलाना या चखाना, वह संस्कार जिसमें शिशु को पहली बार अन्न चखाया जाता है।

अन्नमय *वि.* (तत्.) [अन्न+मय] 1. जो भोज्य पदार्थ अन्न से बना हो या अन्नयुक्त हो जैसे- मोदक अन्नमय मिष्ठान है, किंतु पेड़ा या पेठा नहीं 2. बहुत अधिक अन्न से युक्त।

अन्नमय कोष *पुं.* (तत्.) जीवात्मा को आवृत करने वाले पांच कोशों में से पहला कोश जिसका पोषण अन्न से होता है, स्थूल शरीर।

अन्न-वस्त्र *पुं.* (तत्.) जीवन जीने के लिए आवश्यक साधन अनाज और कपड़ा, रोटी और कपड़ा।

अन्नविकार *पुं.* (तत्.) 1. अन्न का विकृत या परिवर्तित या उससे निर्मित रूप 2. किसी अन्न के खाने से शरीर में होने वाला कोई विकार या दोष 3. अन्न सेवक से शरीर में बनने वाले रक्त, रस, मांस, अस्थि आदि।

अन्न-व्यवहार *पुं.* (तत्.) [अन्न+व्यवहार] 1. लोगों का परस्पर अन्न या अन्न से संबंधित बनी कोई वस्तु देने-लेने का व्यवहार या रीति-रिवाज 2. खान-पान से संबंधित प्रचलित कोई परंपरा, नियम या प्रथा या रीति।

अन्नशाला *स्त्री.* (तत्.) [अन्न+शाला] 1. पर्याप्त प्ररूप से अन्न रखने का स्थान, गृह 2. अन्न के भंडारण का स्थान, अन्न भंडार-गृह।

अन्नशेष *पुं.* (तत्.) 1. थाली या पत्तल में परोसे गए भोजन को खाने बाद उसमें कुछ बचा हुआ अन्न का अंश, जूठन 2. अनाज को पीसने या छानने के बाद बचा हुआ अन्न का कुछ अनुपयोगी अंश, भूसी, चोकर आदि।

अन्नसत्र *पुं.* (तत्.) वह संस्थान या आश्रम जहाँ साधुओं, फकीरों, असहायों, गरीबों व अपाहिजों आदि को नित्य ही मुफ्त भोजन प्रदान किया जाता है।

अन्नागार *पु.* (तत्.) अन्न भंडार, खाद्यान्न भंडार। भंडार।

अन्नोदक *पुं.* (तत्.) [अन्न+उदक] अन्न और उदक (जल), अन्नोदक ही जीवन का आधार है।

अन्य *वि.* (तत्.) दूसरा, अन्य से, भिन्न, इतर।

अन्यतः *क्रि.वि.* (तत्.) 1. अन्य से, किसी और से 2. किसी और स्थान से, कहीं ओर से।

अन्यतम *वि.* (तत्.) जिसके समान दूसरा कोई न हो, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

अन्यतर *वि.* (तत्.) [अन्य+तर] 1. दो में से एक 2. दूसरा 3. जो किसी अन्य तरह का हो, भिन्न प्रकार का, जैसे- इनसे अन्यतर व्यक्ति वांछित है।

अन्यता *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी के अन्य होने की अवस्था या भाव। 2. भिन्नता, अन्यत्व 3. परायापन विलो. अनन्यता।

अन्यत्र *वि.* (तत्.) किसी भिन्न स्थान पर, और जगह, दूसरी जगह, भिन्न स्थान पर।

अन्यत्रवासी *वि.* (तत्.) जो रहता कहीं हो और व्यवसाय किसी अन्य स्थान पर करता हो, जैसे- 'अन्यत्रवासी पूंजीपति'।

अन्यत्र सेवा *स्त्री.* (तत्.) प्रशा. विभागीय स्वीकृति से सरकारी कर्मचारी की किसी गैर-सरकारी प्रतिष्ठान में की जाने वाली सेवा foreign service तु. प्रतिनियुक्ति।

अन्यत्रस्थिति *स्त्री.* (तत्.) अपराध आदि के होने के स्थान से भिन्न किसी अन्य स्थान पर होना, अन्यत्र उपस्थिति।

अन्यथा *वि.* (तत्.) 1. विपरीत, उलटा, विरुद्ध 2. झूठा, असत्य, वास्तविकता से विपरीत 3. भिन्न अर्थ में उदा. आप इस बात को अन्यथा

न लें *अव्य.* (तत्.) नहीं तो। उदा. समय से काम कर लें, अन्यथा पछताना होगा।

अन्यथाकारिता *स्त्री.* (तत्.) सामान्य कार्य की अपेक्षा विपरीत, विषम, कार्य करने की प्रवृत्ति।

अन्यथानुपपत्ति *स्त्री.* (तत्.) [अन्यथा+अनुपपत्ति (अन्:उपपत्ति)] 1. किसी वस्तु के अभाव में किसी अन्य हेतु द्वारा किसी वस्तु की स्थिति का निश्चय न हो पाना 2. किसी वस्तु की अभावात्मक स्थिति में अन्य वस्तु की संभावना की स्थिति न होना 3. मेल न मिलना, असंगति।

अन्यथाभाव *पुं.* (तत्.) [अन्यथा+भाव] 1. किसी अन्य तरह से होने का भाव 2. भिन्न रूप में होने की स्थिति, अत्यरूप 3. परिवर्तन, अदल-बदल

अन्यथावादी *वि.* (तत्.) [अन्यथा+वादी] 1. मिथ्यावारी 2. असत्य/झूठ बोलने वाला 3. जिसका सत्य से इतर बोलने का स्वभाव या प्रवृत्ति हो।

अन्यथा सिद्धि *स्त्री.* (तत्.) दर्श. 1. किसी बात को गलत ढंग से प्रमाणित करने की क्रिया 2. तर्क. न्याय दर्शन. में एक प्रकार का दोष जिसमें यथार्थ कारण न दिखाकर अपितु कोई अन्य कारण दिखलाकर किसी विषय की सिद्धि की जाय।

अन्यदा *क्रि.वि.* (तत्.) 1. किसी अन्य समय पर 2. दूसरी अवसर पर 3. अन्य किसी दशा में 4. कभी एक बार।

अन्यदीय *वि.* (तत्.) 1. किसी अन्य का, दूसरे का 2. जो पराया हो, जैसे- अन्यदीय परिधान।

अन्यदेशी *वि.* (तत्.) 1. ऐसा विदेशी नागरिक जिसने विद्यमान देश की नागरिकता नहीं ली हो हो 2. विदेशी।

अन्य पक्ष *पुं.* (तत्.) किसी घटना या दुर्घटना के घटने पर वह पक्ष (या व्यक्ति) जो उस घटना से प्रत्यक्षतः प्रभावित हो जाए।

अन्य पिछड़े वर्ग *पुं.* (तत्.) वे जातियाँ या वर्ग जिन्हें आर्थिक या सामाजिक स्थिति आदि की दृष्टि से सामान्य स्तर से कम स्तर का माना जाए किंतु अनुसूचित जातियों से ऊँचे स्तर का। OBC-other backward classes

अन्य पुरुष *पुं.* (तत्.) 1. दूसरा आदमी 2. (पुरुषवाची सर्वनाम) उत्तम पुरूष (वक्ता) तथा मध्यम पुरूष (श्रोता) को छोड़कर अन्य अर्थात् प्रथम पुरूष (कथन का विषय) वह पुरुष जिसके विषय में चर्चा की जा रही हो, यथा- यह, वह, ये 3. गैर, पराया।

अन्यपुष्ट *वि.* (तत्.) 1. जो अन्य के द्वारा पालित-पोषित हो 2. (स्त्री.) कोयल।

अन्यपुष्टा *वि.स्त्री.* (तत्.) [अन्य+पुष्टा] जिसका दूसरों के द्वारा पालन-पोषण हुआ हो, कोकिल।

अन्यमनस्क *वि.* (तत्.) जिसका मन कहीं अन्य लगा हो, अनमना, उदास, जो मन में किसी अन्य बात, घटना, प्रिय व्यक्ति का स्मरण आदि का चिंतन करने में मग्न होने के कारण अनवधानता की स्थिति में हो, बेमना, अनमना, उदास।

अन्यमनस्कता *स्त्री.* (तत्.) अनमनापन, प्रस्तुत व्यक्ति या विषय में मन न लगने का भाव, उदासीनता।

अन्यमना *वि.* (तत्.) उदास, अनमना, खिन्न दे. अन्यमनस्क।

अन्यमातृज *पुं.* (तत्.) दूसरी या सौतेली माता से उत्पन्न, सौतेला भाई।

अन्यसंक्राम्यता *स्त्री.* (तत्.) भूमि, भवन या संपत्ति या किसी अधिकार के किसी अन्य को हस्तांतरित हो सकने की स्थिति।

अन्यसंभोगदुःखिता *स्त्री.* (तत्.) साहि. नायिका का एक भेद जो अपने प्रिय द्वारा किसी अन्य स्त्री के शरीर पर किये गए रति चिह्नों को देखकर आक्रोपूर्ण दुःख व्यक्त करने वाली होती है।

अन्यान्य *वि.* (तत्.) अन्य, अनेक अन्य स्थिति।

अन्यापेक्षी *वि.* (तत्.) [अन्य+अपेक्षी] जो किसी कार्य में दूसरे के आश्रय/सहारा लेने की अपेक्षा करता हो पर्या. परापेक्षी, परावलंबी।

अन्याय *पुं.* (तत्.) 1. न्याय का अभाव, अनीति, नाइंसाफी, न्याय न होना 2. अत्याचार, अनाचार।

अन्यायी *वि.* (तत्.) अन्याय करने वाला, अनुचित कार्य करने वाला; दुराचारी।

अन्यार्थ *वि.* (तत्.) [अन्य+अर्थ] 1. जिससे अन्य अर्थ की प्रतीति हो 2. जिसका अन्य अर्थ भी हो *पुं.* प्रसिद्ध अर्थ से भिन्न अर्थ।

अन्याश्रित *वि.* (तत्.) दूसरे पर आश्रित, पराश्रित।

अन्यून *वि.* (तत्.) जो न्यून न हो, जो कम न हो; पर्याप्त, बहुत।

अन्यूनांग *वि.* (तत्.) [अन्यून+अंग] जो न्यून अंग वाला न हो, जिसके संपूर्ण अंग हो, पूर्णांग।

अन्योक्ति *स्त्री.* (तत्.) ऐसा कथन जो साधर्म्य के के आधार पर प्रस्तुत की अपेक्षा किसी अप्रस्तुत (अन्य) पर लागू होता है।

अन्योन्य *वि.* (तत्.) परस्पर, आपस में, एक-दूसरे पर *पुं.* *(तत्.)* वह अलंकार जिसमें दो वस्तुओं की किसी क्रिया के गुण का एक-दूसरे के कारण उत्पन्न होना बताया जाता है।

अन्योन्य प्रभाविता *स्त्री.* (तत्.) 1. परस्पर एक दूसरे को अपने सदाचरण आदि गुणों से प्रभावित करने की स्थिति 2. परस्पर एक-दूसरे को प्रभावित करने वाला गुण।

अन्योन्यता *स्त्री.* (तत्.) [अन्योन्य+ता प्रत्यय] 1. परस्पर होने का भाव 2. आपसी संबंध का व्यवहार 3. एक-दूसरे के प्रति कुछ करने का भाव।

अन्योन्य संदर्भ *पुं.* (तत्.) कोश. विषयगत/अर्थात् एक सदृश सूचना देने वाली प्रविष्टियों का पारस्परिक संदर्भ अर्थात् एक प्रविष्टि में दिये गए विषय को दूसरी प्रविष्टि में उसे देखने का संकेत होना।

अन्योन्याभाव *पुं.* (तत्.) दर्श. न्यायदर्शन में अभाव के तीन भेदों में से एक जिसके अनुसार किसी एक पदार्थ का अन्य पदार्थ न होकर उससे बिल्कुल भिन्न होना, जैसे- 'घट' और पट, इन दोनों में अन्योन्याभाव है।

अन्योन्याश्रय *पुं.* (तत्.) एक-दूसरे का सहारा, एक-दूसरे का अपेक्षी, सापेक्ष।

अन्योन्याश्रित *वि.* (तत्.) एक-दूसरे पर आश्रित।

अन्वक्ष *वि.* (तत्.) [अनु+अक्ष] 1. आँखों के सामने 2. प्रत्यक्ष, दृश्य 3. अनुभगम्य *क्रि.वि.* सामने, पीछे।

अन्वय *पुं.* (तत्.) 1. दो वस्तुओं की अनुरूपता; तारतम्य 2. किसी पद्य के शब्दों को व्याकरण की वाक्य-संरचना के अनुसार यथाक्रम लगाना 3. कार्य-कारण का पारस्परिक संबंध 4. एक बात को सिद्ध करने के लिए उससे जुड़ी दूसरी बात सिद्ध कर उन्हें जोड़ना।

अन्वयदोष *पुं.* (तत्.) [अन्वय+दोष] साहि. एक प्रकार का वाक्य दोष, पदों का अन्वय ठीक से न होना। वाक्य या कविता में पदों का इस प्रकार का विन्यास हो कि जिससे उनका परस्पर अन्वय करते समय स्पष्टता का अभाव हों, जैसे- मंगल भवन अमंगलहारी। द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी"। यहाँ पर 'द्रवहु' क्रिया का अन्वय 'दशरथ' के साथ हो या अजिर बिहारी के साथ हो या 'दशरथ अजिर बिहारी' इसे एकपद मानकर हो यह पूर्णतया स्पष्ट नहीं है।

अन्वयव्यतिरेक *पुं.* (तत्.) 1. अनुरूपता तथा भिन्नता या विपरीतता 2. नियम तथा अपवाद।

अन्वयव्याप्ति *स्त्री.* (तत्.) स्वीकार्य तर्क के लागू (व्याप्त) होने की स्थिति, जैसे- धुआं होगा तो आग तो होगी।

अन्वयागत *वि.* (तत्.) [अन्वय+आगत] जो रीति-रिवाज आदि वंश परंपरा से चला आया हो और अभी भी मान्य हो, कुलपरंपरागत, वंश परंपरा प्राप्त, आनुवंशिक उदा. अन्वयागत नियम, रीति-रिवाज।

अन्वयार्थ *पुं.* (तत्.) अन्वित अर्थ, पद्य के शब्दों को गद्य के शब्दक्रम में रखने पर लगाया गया अर्थ।

अन्वर्थ *वि.* (तत्.) [अनु-अर्थ] 1. अर्थ के अनुरूप, अर्थ के अनुसार 2. सार्थक जैसे- अन्वर्थ ही इस पद्य का भाव है।

अन्वादेश *पुं.* (तत्.) 1. किसी पूर्ववर्ती नियम का पालन करने का विधान 2. किसी शब्द या किन्हीं शब्दों की पद या वाक्य के आरंभ में आवृत्ति 3. व्या. पूर्व-प्रयुक्त शब्द या शब्दों के स्थान पर वाक्य में संकेतक शब्द का प्रयोग, जैसे- राम भी 'इसे' जानता था।

अन्वादेशक *वि.* (तत्.) अन्वदेश सूचित करने वाला।

अन्वालेप *पुं.* (तत्.) गणि. वह वक्र जो किसी वक्र कुल के प्रत्येक वक्र को स्पर्श करता हो और साथ ही इसका कोई न कोई सदस्य प्रत्येक बिंदु को स्पर्श करता हो।

अन्वित *वि.* (तत्.) 1. जिसका अन्वय हुआ हो या हो रहा हो, सहित, युक्त, शामिल, मिला हुआ, जुड़ा हुआ 2. समझा हुआ, विचारा हुआ 3. उचित, उपयुक्त 4. संबद्ध, संगत।

अन्विताभिधानवाद *पुं.* (तत्.) [अन्वित+ अभिधानवाद] (दर्शन) मीमांसा आचार्य प्रभाकर आदि के मतानुसार भाषा की सार्थक और पूर्ण इकाई 'वाक्य' ही है, पद नहीं टि. इस दर्शनिक सिद्धांत से कुमारिलभट्ट के सिद्धांत अभिहितान्वयवाद जिसके अनुसार पद ही भाषा की इकाई है' का खंडन होता है।

अन्वितार्थ *पुं.* (तत्.) अन्वय के आधार पर किया गया अर्थ, निहित अर्थ, गूढार्थ, छिपा हुआ अर्थ।

अन्वितार्थवाद *पुं.* (तत्.)[अन्वित+अर्थवाद] दे. अन्विताभिधानवाद।

अन्विति *स्त्री.* (तत्.) 1. अनुरूप होने की स्थिति 2. विभिन्न अंगों की परस्पर-संबद्धता, परस्पर-सामंजस्य, ऐक्य, एकात्मकता, एकता 3. नाटक, उपन्यास आदि की कथावस्तु में देश, काल आदि का सामंजस्य 4. अन्वय, सुसंगतता, सुसंगति 5. भाषा. लिंग, वचन, पुरुष के आधार पर दो व्याकरणिक घटकों की अनुरूपता, जैसे- दूध पिया, चाय पी। agreement

अन्वीक्षक *पुं.* (तत्.) निगरानी करने वाला, सतर्क रहकर देखरेख करने वाला। invigilator

अन्वीक्षण *पुं.* (तत्.) 1. निगारानी करना, ध्यान से देखना, विचार-तर्क करना 2. अंवेक्षण, ढूँढ, तलाश, खोज invigilation

अन्वीक्षा *स्त्री.* (तत्.) 1. मृत्यु के कारणों की न्यायिक जांच 2. खोज-पड़ताल।

अन्वीक्ष्य *वि.* (तत्.) [अनु+ईक्ष्य] 1. जो अन्वीक्षण के योग्य हो 2. जो ध्यान पूर्वक या बारीकी से देखने की अपेक्षा रखता हो 3. जिसका अन्वीक्षण होना संभावित हो।

अन्वेषक *पुं.* (तत्.) 1. अन्वेषण करने वाला, खोजने वाला, ढूँढने वाला, नई-नई जगहों की खोज करने वाला explorer 2. छानबीन करने वाला व्यक्ति। investigator

अन्वेषण *पुं.* (तत्.) 1. खोज, तलाश, गवेषणा 2. छानबीन। investigation

अन्वेषित *वि.* (तत्.) खोजा हुआ, ढूँढा हुआ।

अन्वेषी *वि.* (तत्.) अन्वेषक, खोजनेवाला, तलाश, करने वाला, ढूंढने वाला।

अन्वेष्य *वि.* (तत्.) खोज के योग्य, अन्वेषण योग्य।

अपंकिल *वि.* (तत्.) पंकरहित, बिना कीचड़ का, शुद्ध, निर्मल।

अपंग *वि.* (तद्.) 1. अपांग, अंगहीन, विकलांग 2. लंगड़ा, लूला 3. बेबस, असमर्थ।

अपंगता *स्त्री.* (तत्.) अपांगता, स्थायी प्रकृति की शारीरिक असमर्थता, अशक्तता या अक्षमता, विकलांगता। disability

अपंचीकृत *वि.* (तत्.) [अ+पंचीकृत] वेदांत वेदांत दर्शन के अनुसार सृष्टि प्रक्रिया में पंचमहाभूतों (पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि, वायु) का पंचीकरण होता है, पंचीकरण=पंचमहाभूतों के विभाजन या सम्मिश्रण की प्रक्रिया जो (महाभूत) सृष्टि प्रक्रिया से पूर्व पंचीकृत न होकर सूक्ष्म अवस्था में रहते हैं।

अपंजीकृत *वि.* (तत्.) जो सूची, बही, पंजी अथवा रजिस्टर में अंकित न हो।

अपंडित *वि.पुं.* (तत्.) ज्ञानहीन, मूर्ख, निरक्षर।

अपंथ *पुं.* (तत्.) दे. अपथ वि. जो किसी पंथ या संप्रदाय-विशेष का न हो।

अपंथ *वि.* (तत्.) [अ+पंथ] 1. जो चलने लायक पंथ न हो 2. बुरा पंथ 3. कुमार्ग 4. बिना पंथ का।

अप *उप.* (तत्.) एक उपसर्ग जो शब्द के पूर्व लगाकर विषम, विपरीत, निषेधात्मक या बुरा अर्थ प्रकट करता है, यथा अपमान, अपव्यय, अपशब्द।

अप *स्त्री.* (तत्.) अम्बु, जल, सलिल, नीर आदि जो शुद्‌ध या प्राकृतिक हो।

अपकरण *पुं.* (तत्.) 1. अनिष्ट कार्य, दुराचार 2. बुरा बर्ताव, अपकार 3. किसी सही काम को अनुचित रूप से करना।

अपकरुण *वि.* (तत्.) निष्ठुर, निर्दय, कठोर।

अपकर्तन *पुं.* (तत्.) विधि. किसी धनराशि में की गई कटौती, जुर्माने के रूप में कटौती, वचत।

अपकर्ता *वि.* (तत्.) [अप+कर्ता] किसी का अपकार करने वाला, बुरा करने वाला।

अपकर्म *पुं.* (तत्.) बुरा काम, खोटा कार्य, अधम कर्म; पाप।

अपकर्मा *वि.* (तत्.) [अप+कर्मा] 1. अपकर्म= बुरा कर्म करने वाला। दुष्कर्मी, दुराचारी 2. दूसरे की बुराई या निंदा करने वाला।

अपकर्ष *पुं.* (तत्.) नीचे की ओर या उल्टी दिशा में खींचना या लाना, उतार, पतन, ह्रास, अवनति, क्षय, हीनता विलो. उत्कर्ष।

अपकर्षक *वि.* (तत्.) 1. अपकर्ष करने वाला 2. निरादर करने वाला।

अपकर्षण *पुं.* (तत्.) 1. अपमान, अनादर, तिरस्कार 2. ह्रास या अवनति होना।

अपकर्षित *वि.* (तत्.) 1. जिसका अपकर्षण किया गया हो 2. जिसे बेढंगे रूप से खींचकर किसी को आगे या पीछे ले जाया गया हो।

अपकलंक *पुं.* (तत्.) घोर कलंक, घोर बदनामी।

अपकाजी *वि.* (तत्.) अपने ही काम पर अधिक ध्यान रखने की प्रवृत्ति वाला, मतलबी।

अपकामुक *वि.* (तत्.) [अप+कामुक] 1. जो अत्यधिक कामुकता वाला हो 2. अमर्यादित रूप से कामुक 3. लंपट।

अपकामुकता *स्त्री.* (तत्.) [अपकामुक+ता] 1. जिसमें जिसमें अमर्यादित रूप से या अत्यधिक कामप्रवृत्ति का भाव हो 2. मासिक विकार से युक्त कामुकता 3. दुश्चरित्रता।

अपकार *पुं.* (तत्.) हानि, अहित, उपकार का विपरीत भाव।

अपकारक *वि.* (तत्.) अपकार करने वाला, क्षति पहुँचाने वाला, हानिकारक, विरोधी।

अपकारिता *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी के अपकारी (अहितकर्ता) होने का भाव अपकारीपन 2. उपकार में प्रवृत्त होने की स्थिति अहितकर्तता।

अपकारी *वि.* (तत्.) अपकार करने वाला, अनिष्टकारी, अहितकारी।

अपकीर्ति *स्त्री.* (तत्.) अपयश, बदनामी, निंदा।

अपकृत *वि.* (तत्.) 1. जिसका अपकार किया गया हो, जिसकी हानि या कोई बुराई की गई हो 2. अपमानित, बदनाम विलो. उपकृत।

अपकृति *स्त्री.* (तत्.) अपकार, हानि, क्षति, बुराई।

अपकृत्य *पुं.* (तत्.) विधि. संविदा से भिन्न वह अहित का कार्य जो अपराध की श्रेणी में तो नहीं आता, लेकिन न्यायालय वैसा करने वाले को क्षतिपूर्ति करने का आदेश दे सकता है।

अपकृष्ट *वि.* (तत्.) 1. जिसका किसी के द्वारा अपकर्षण हुआ हो 2. जिसे बुरी तरह या इच्छा के विपरीत खींचकर ले जाया गया हो 3. निकृष्ट।

अपकेंद्रण *पुं.* (तत्.) (केंद्रित होने की बजाए) विकेंद्रित होने की प्रक्रिया, केंद्रापसारी होना।

अपकेंद्र बल *पुं.* (तत्.) भौति. 1. भौतिकशात्र के अनुसार वह बल जो किसी चीज को केंद्र से विपरीत दिशा की ओर प्रवृत्त करता है 2. केंद्रापसारी बल विलो. केंद्राभिसारी बल, अभिकेंद्र बल।

अपकेंद्रित्र *पुं.* (तत्.) तीव्र गति से घूमने वाला यंत्र जो विविध घनत्व वाले पदार्थों को प्रक्षेपित (अलग-अलग फेंक) कर देती है।

अपकेंद्री बल *पुं.* (तत्.) दे. अपकेंद्री बल।

अपक्रम *पुं.* (तत्.) 1. व्यतिक्रम, क्रम-भंग, उलट-पलट, पीछे हटना 2. समय का बीतना, व्यतीत होना *वि.* (तत्.) अव्यवस्थित, क्रमविहीन।

अपक्रमण *पुं.* (तत्.) [अप+क्रमण] अपक्रम करने की क्रिया 1. पलायन 2. (सेना का) पीछे हट जाना 3. निकल भागना 4. बचकर निकलने की क्रिया।

अपक्रमी *वि.* (तत्.) 1. अपक्रम करने वाला 2. पलायन करने वाला 3. निकल कर भागने वाला।

अपक्रिया *स्त्री.* (तत्.) 1. दूषित क्रिया, बुरी क्रिया 2. अनुचित व्यवहार।

अपक्व *वि.* (तत्.) 1. जो पूरी तरह पका न हो, कच्चा, असिद्ध 2. जिसके विचारों में दृढ़ता और स्थिरता न हो।

अपक्वता *स्त्री.* (तत्.) [अपक्व+ता] 1. (किसी वस्तु आदि) के पकने होने की स्थिति, भाव या गुण 2. कच्चेपन की स्थिति 3. अविकसित होने की स्थिति, विकासहीनता जैसे- शारीरिक अपक्वता या मानसिक अपक्वता।

अपक्ष *पुं.* (तत्.) 1. जो (राज्य के) पक्ष में न हो, विपक्ष 2. जो न समर्थन में हो न विरोध मे, तटस्थ, निष्पक्ष *वि. (तत्.)* पंखहीन, पंखविहीन 2. निष्पक्ष।

अपक्षपण *पुं.* (तत्.) दे. अपक्षय।

अपक्षपात *वि.* (तत्.) [अ+पक्षपात] 1. जो पक्षपात से रहित हो 2. जो कार्य किसी प्रश्न, दल या व्यक्ति से संबंधित न हो 3. निष्पक्षतायुक्त।

अपक्षपाती *वि.* (तत्.) [अ+पक्षपाती] 1. जो पक्षपात (किसी भी तरफ़दारी) करने वाला न हो 2. निष्पक्ष, तटस्थ 3. बिना किसी का पक्ष लिए न्याय करने वाला।

अपक्षय *पुं.* (तत्.) 1. ह्रास, नाश 2. मौसम या वातावरण या प्राकृतिक कारणों से दुष्प्रभावित होने से किसी वस्तु में आई विकृति weathering 3. शारीरिक, मानसिक या नैतिक अवस्था का अपह्रास degeneration 4. मृदा का निम्नीकरण।

अपक्षरण *पुं.* (तत्.) हिम-नदियों के हिम के पिघलने अथवा वाष्प न होने या खंडित होने आदि से उसके आकार, परिमाण या मात्रा का कम हो जाना।

अपक्षेपण *पुं.* (तत्.) 1. फेंकना 2. गिरना, च्युत करना, बिखराना 3. पलटना।

अपखंड *पुं.* (तत्.) [अप+खंड] 1. किसी ठोस वस्तु का टूटा हुआ टुकड़ा या भाग, जैसे- शिला का अपखंड 2. किसी विनष्ट हुई वस्तु का अंश या टुकड़ा, जैसे- दीवार का अपखंड 3. अधूरा या अपूर्ण भाग।

अपग *वि.* (तत्.) 1. बुरे मार्ग पर जाने वाला। 2. निषिद्ध या अशिष्टाचरण करने वाला कुमार्गी 3. जिसके पैर न हों या जो बिना पैर का हो। पगरहित।

अपगत *वि.* (तत्.) 1. बीता हुआ 2. गया हुआ 3. समाप्त।

अपगत व्याधि *वि.* (तत्.) [अपगत-व्याधि] 1. जिसका शारीरिक रोग पूरी तरह जड़ से नष्ट हो गया हो। 2. जिसका रोग दूर हो गया हो रोगरहित, सेवा मुक्त।

अपगति *स्त्री.* (तत्.) [अप+गति] 1. दुर्गति, दुर्दशा 2. अधोगति 3. दुर्भाग्य।

अपगम *पुं.* (तत्.) 1. वियोग, अलग होना, दूर जाना, भागना 2. मृत्यु।

अपगमन *पुं.* (तत्.) विषय से (दूर) हट जाना, अपगम करना।

अपगा *स्त्री.* (तत्.) [अपग+आ स्त्रीप्रत्यय] 1. निरंतर प्रवाह युक्त नदी 2. उबड़-खाबड़ क्षेत्रों में में बहने वाली नदी।

अपगीत *पुं.* (तत्.) [अप+गीत] 1. असामयिक गीत, अशुभगीत 2. किसी से संबंधित अभद्र कथन 3. अपयश, बुराई।

अपगुण *पुं.* (तत्.) [अप+गुण] 1. दोष, अवगुण 2. दुगुर्ण 3. बुरी आदतें।

अपघटन *पुं.* (तत्.) विभक्त होकर नष्ट हो जाना रसा. ऐसा परिवर्तन जिसमें अणु ऐसे दो या दो से अधिक अणुओं में परिणित हो जाता है जिनके संघटन से वह बना है। decomposition

अपघटना *स्त्री.* (तत्.) दुर्भाग्यपूर्ण घटना, आपात। casualty

अपघर्षक *पुं.* (तत्.) घिसाई, रगड़ाई, चिकना करने आदि के लिए प्रयुक्त पदार्थ, जैसे- रेगमाल, झांवा आदि।

अपघर्षण *पुं.* (तत्.) रगड़ के फलस्वरूप घिसाई। वायु, जल आदि के बहाव में गतिमान बालू या शैल-मलबे से घर्षण द्वारा भृपृष्ठ का छिल कर, घिस कर या पिस कर कट जाना।

अपघर्षी *वि.* (तत्.) 1. बहुत अधिक घर्षण करने वाला 2. रगड़ने वाली कोई वस्तु 3. अपघर्षक।

अपघात *पुं.* (तत्.) 1. हत्या, हिंसा 2. आत्महत्या 3. वंचना, धोखा, विश्वासघात।

अपघातक *वि.* (तत्.) 1. नष्ट करने वाला, घातक 2. विश्वासघाती, वंचक, धोखा देने वाला।

अपघाती *वि.* (तत्.) दे. अपघातक।

अपच *पुं.* (तद्.) भोजन आदि के न पचने की स्थिति, भोजन न पचने का रोग, अजीर्ण, बदहजमी।

अपचय *पुं.* (तत्.) जीव. जीव-शरीर के भीतर होने वाली विनाशक प्रक्रिया तथा उससे संबंधित रासायनिक क्रियाएँ। दे. चयापचय तथा उपापचय तु. चय।

अपचयन *पुं.* (तत्.) रसा. किसी रासायनिक अभिक्रिया में किसी पदार्थ द्वारा इलेक्ट्रानों अथवा हाइड्रोजन का लाभ और ऑक्सीजन की हानि। पर्या. अनॉक्सीकरण तु. ऑक्सीकरण।

अपचयी *स्त्री.* (तत्.) प्राणि. प्राणियों की कोशिकाओं के भीतर होने वाली एक रासायनिक प्रक्रिया जिसमें कठोर पदार्थ टूट कर हल्के हो जाते हैं और एक विशेष प्रकार की ऊर्जा निकलती है।

अपचयी *वि.* (तत्.) 1. जिसमें अपचय (ह्रास, सड़न आदि में होने का दोष हो 2. जो अपचय से संबंधित हो।

अपचयोपचय *पुं.* (तत्.) अपचय तथा उपचय, उपापचय, चयापचय रासायनिक क्रिया जिसमें एक अभिकर्मक का अपचयन (अनॉक्सीकरण) और दूसरे का उपचयन (ऑक्सीकरण) होता है।

अपचरण *पुं.* (तत्.) 1. अनुपयुक्त आचरण, अपचार करना, कर्तव्य या दायित्व पूरा न करना, गलत काम करना, किशारों का अपराध, कर्तव्य की अवहेलना 2. अपने अधिकार-क्षेत्र से निकलकर दूसरे के अधिकार-क्षेत्र में बिना अनुमति अतिक्रमण सीमा का उल्लंघन, अतिचार।

अपचरित *पुं.* (तत्.) [अप+चरित] 1. दूषित आचरण 2. दुष्कर्म, अपराध 3. अत्याचार 4.

प्रस्थान *वि.* जिसके साथ बुरा आचरण किया गया हो जैसे- अपचारित सेवक।

अपचायक *पुं.* (तत्.) (रसायन) [अप+चायक] वह रासायनिक पदार्थ जो दूसरे पदार्थों से अभिक्रिया करने पर उसकी संघटना को न्यून कर देता है या उसका अपचयन कर देता है।

अपचार *पुं.* (तत्.) 1. गलत काम, छोटा-मोटा अपराध 2. अनुचित बर्ताव, बुरा आचरण, कुव्यवहार, अनिष्ट व्यवहार 3. बुराई, निंदा।

अपचारक *वि.* (तत्.) [अप+चारक] 1. अपचार या दुराचार करने वाला 2. दुष्कर्मी, नीच 3. अविश्वासी।

अपचारिता *स्त्री.* (तत्.) 1. किशोरों द्वारा किए गए छोटे-मोटे गैरकानूनी कृत्य 2. कर्तव्यों का अपालन। delinquency

अपचारी *वि.* (तत्.) 1. अपचार करने वाला 2. दुराचारी, दुष्ट।

अपचारी बालक *पुं.* (तत्.) छोटे-मोटे आपराधिक कृत्य करने वाले किशोर। delinquent child

अपचित *वि.* (तत्.) [अपच+इत] 1. जो पचा न हो जैसे- अपचित भोजन 2. जो अत्यंत क्षीण हो, दुबला-पतता। 3. जिसका व्यय किया जा चुका हो।

अपचेता *वि.* (तत्.) 1. दूसरों के बारे मे सदा बुरा सोचने वाला। 2. दूसरों के प्रति मन में सदा दुर्भाव रखने वाला।

अपच्छाय *वि.* (तत्.) [अप+छाया] 1. जो छाया रहित हो। 2. जिसमें छाया न हो 3. जिसकी छाया अच्छी न हो 4. चमक रहित, धुँधला।

अपच्छेद *पुं.* (तत्.) अनुचित अंशों को काट कर निकाल दिया जाना, जैसे- किसी सिनेमा-फिल्म के अश्लील अंशों को हटा देना।

अपच्छेदन *पुं.* (तत्.) 1. किसी वस्तु को काटने की क्रिया या भाव 2. हानि 3. किसी कार्य के बीच होने वाली बाधा या विध्न।

अपच्युत *वि.* (तत्.) 1. गिरा हुआ 2. बहा हुआ, द्रवित 3. विनष्ट।

अपजंभ *पुं.* (तत्.) चिकि. दोनों जबड़ों के बंद होने की वह स्थिति जब ऊपर-नीचे के दाँत एक सीध में आकर जुड़े या चिपके से प्रतीत हों।

अपजस *पुं.* (तत्.) दे. अपयश।

अपजात *पुं.* (तद्.) माता-पिता की अपेक्षा हीन गुण वाला पुत्र।

अपटी *स्त्री.* (तत्.) [अ+पटी] 1. कनात 2. कपड़े का एक विशेष प्रकार का पर्दा 3. (संस्कृत नाटक में, यवनिका) 4. पर्दा।

अपटु *वि.* (तत्.) जो पटु न हो, कार्य करने में अकुशल, अदक्ष।

अपटुडेट *वि.* (अं.) व्यवहार, विचार या प्रासंगिकता में अद्यतन, अधुनातन। uptodate

अपटुता *स्त्री.* (तत्.) पटुता का न होना, अनाड़ीपन, अनैपुण्य।

अपठ *वि.* (तत्.) 1. अपढ, अनपढ़, मूर्ख, जो पढ़ा न हो।

अपठनीय *वि.* (तत्.) 1. जो अस्पष्ट होने या अन्य कारणवश पढा जाने योग्य न हो 2. जिसे पढ़ना वर्जित हो।

अपठित *वि.* (तत्.) 1. न पढ़ा हुआ 2. जो पाठ्यपुस्तक में नही हो, निर्धारित।

अपठ्यमान *वि.* (तत्.) [अ+पठ्यमान] 1. जो पढ़ा जाने योग्य न हो, या जो पढ़ा न जा रहा हो 2. अपाठ्य जैसे- यह हस्तलेख अपठ्यमान है।

अपडर *पुं.* (तत्.) [(तत्.अप+हि.डर] 1. विषम परिस्थितिजन्य डर या भय 2. भय 3. बहुत बडा डर।

अपढ़ *वि.* (तद्.) 1. बेपढ़ा, अनपढ़ 2. मूर्ख।

अपण्य *वि.* (तत्.) 1. न बेचने योग्य वस्तु 2. जिसे बेचने का धर्मशास्त्र में निषेध हो।

अपत *वि.* (तद्.) 1. पत्रहीन, बिना पत्ते का उदा. 'अब अलि रही गुलाब की अपत कटीली डार' (बिहारी) 2. लज्जारहित, निर्लज्ज 3. अधम, नीच, पातकी, पापी *स्त्री.* 1. अप्रतिष्ठा, असम्मान, दुर्दशा, बेइज्जती 2. आपदा, विपत्ति, आपत्ति, मुसीबत।

अपतट *वि.* (तत्.) [अप+तट] समुद्र की ओर, तट से दूर offshore

अपति *वि.* (तत्.) [अ+पति] 1. जिसका पति न हो। विधवा अथवा जिसका अभी तक पति न हो-कुमारी 2. जिसका कोई स्वामी न हो, अनाथ। 3. जो पति या स्वामी न हो।

अपतिका *वि.* स्त्री (तत्.) [अ+पतिका] 1. जिसका पति न हो, पतिहीन 2. कुमारी/विधवा।

अपतृण *पुं.* (तत्.) शा.अर्थ. अनुपयोगी घास। अनावश्यक और अनचाहे रूप में उगने वाले अकृषित पौधे या घासादि जो फसल के लिए हानिकर माने जाते है पर्या. खरपतवार। weed

अपत्नीक *वि.* (तत्.) जिसकी पत्नी न हो, पत्नीविहीन, स्त्रीरहित।

अपत्य *पुं.* (तत्.) 1. नरक में पतन से बचाने वाला पुत्र या पुत्री, 2. संतान।

अपत्र *वि.* (तत्.) 1. पत्र-रहित, पत्रविहीन 2. पत्तों से रहित।

अपत्रप *वि.* (तत्.) [अप+त्रप] 1. जिसमें लज्जा या शर्म न हो, निर्लज्ज, बेशर्म, बेहया।

अपत्रपा *स्त्री.* (तत्.) 1. लज्जा, लाज, शर्म 2. व्यग्रता।

अपत्रस्त *वि.* (तत्.) [अप+त्रस्त] 1. भयभीत, बहुत डरा हुआ 2. भय से थमा हुआ, भय से रुका हुआ।

अपथ *पुं.* (तत्.) 1. कुपथ, कुमार्ग 2. वह मार्ग जो चलने योग्य न हो वि. मार्गहीन, पथविहीन।

अपथगामी *वि.* (तत्.) 1. कुमार्गी, कुपथ पर जाने वाला, विपथगामी, पथभ्रष्ट 2. चरित्रहीन।

अपथ्य *पुं.* (तत्.) स्वास्थ्य के लिए हानिकारक भोजन, रोग बढ़ाने वाला (आहार-विहार)।

अपद *पुं.* (तत्.) बिना पैर के चलने वाला जंतु, रेंगने वाला जंतु। *वि.* 1. बिना पैर का, लंगड़ा 2. बिना पदवी या ओहदे का।

अपदयुक्त *वि.* (तत्.) [अपदःयुक्त] साहि. एक प्रकार का वह अर्थ दोष जब किसी ऐसे पद या वाक्य का अनपेक्षित या अनुचित रूप से प्रयोग हो जिससे किसी कथन या तथ्य का समर्थन न होकर उसका खंडन प्रतीत हो।

अपदस्थ *वि.* (तत्.) पदच्युत, पद या स्थान से हटाया या हटा हुआ।

अपदार्थ *वि.* (तत्.) तुच्छ, निम्न, सारहीन वस्तु *पुं. (तत्.)* 1. वह वस्तु जिसकी सत्ता न हो 2. वह शब्द जिसका कोई वाक्यगत अर्थ नहीं होता।

अपदेखा *वि.* (देश.) [अपना+देखना] 1. जो हर बात में या कार्य में अपना ही हित देखता हो, मतलबी, स्वार्थी। 2. जो अपने सिवा अन्य की बात न मानता हो। घमंडी, अभिमानी।

अपदेवता *पुं.* (तत्.) दैत्य, राक्षस, असुर।

अपदेश *पुं.* (तत्.) 1. मिथ्या दावा 2. ब्याज, छल, बहाना। pretension

अपद्रव्य *पुं.* (तत्.) 1. निम्न कोटि की वस्तु, कुवस्तु, निकृष्ट वस्तु 2. बुरा धन।

अपद्वार *पुं.* (तत्.) बगली दरवाजा, चोर दरवाजा।

अपधर्म *पुं.* (तत्.) शास्त्रोक्त धर्म को छोड़कर अपनाया गया कोई अन्य धार्मिक मत।

अपधर्मिता *स्त्री.* (तत्.) 1. अपधर्म के पालन की स्थिति, धर्मविकृति 2. धर्मविरूद्ध आचरण।

अपधर्मी *वि.* (तत्.) [अप+धर्मी] 1. धर्म विरुद्ध आचरण करने वाला 2. स्वेच्छाचारी, पाखंडी, आडंबरी 3. नास्तिक

अपधातु *स्त्री.* (तत्.) रसा. कम कीमत वाली धातु जो हवा में गरम करने पर ऑक्सीकृत हो जाती है, जैसे- तांबा, जस्ता आदि base metal

अपध्यान *पुं.* (तत्.) [अप+ध्यान] 1. दूसरों को मन ही मन कोसने की व्यग्रता 2. अनुचित चिंतन 3. बुरे विचार जैन. रागद्वेषादि अवाँछित भावों से संबंधित अनपेक्षित विषयों का, चिंतन या विचार।

अपध्वंस *पुं.* (तत्.) विध्वंस, विनाश।

अपध्वस्त *वि.* (तत्.) 1. जो अच्छी तरह कूटा पीसा गया हो 2. बुरी तरह नष्ट 3. त्याग हुआ 4. व्यक्त 5. शापित, कोसा हुआ 6. अपमानित *पुं.* 1. दुष्ट, विवेकरहित।

अपन *सर्व.* (तद्.) 1. दे. अपना 2. मैं।

अपनई *सर्व.* (तत्.) अपनी, खुद की *वि.* निजी।

अपनति *स्त्री.* (तत्.) शा.अर्थ नीचे की ओर झुकाव भूवि. शैलों की ऊपर की ओर मुडी संरचना जिसमें दोनों पार्श्वों के स्तर बाहर की ओर नत होकर चाप-सा बनाते है विलो. अभिनति anticline

अपनत्व *वि.* (तत्.) [हि.अपना+(तत्.)त्व] 1. किसी में अपनापन होने का भाव 2. आत्मीयता।

अपनपा *वि.* (तत्.) 1. अपना जैसा समझने का भाव 2. अपनापन, आत्मीयता 3. घनिष्ठता मुहा. अपनपा खोना- अपनी सुध बुध खोना, सहसा क्रोधावेश में आना, अपना अहंकार छोड़ना।

अपनय *पुं.* (तत्.) [अप+नय] 1. किसी वस्तु को हटाना, दूर ले जाना 2. खंड करना 3. अपकार 4. बुरी नीति 5. बुरा चाल चलन

अपनयन *पुं.* (तत्.) 1. हटाना, दूर करना 2. स्थानांतरित करना 3. पक्षांतर करना।

अपना *सर्व.* (तद्.) 1. अपने आप से संबंधित, स्वयं का, निजी, खुद का 2. आत्मीय, स्वजन मुहा. अपना करना- अपना बनाना, अपने पक्ष में करना; अपना कहा करना- अपनी बात पर अटल रहना, अपनी जिद पूरी करना; अपना काम कर जाना- सफलतापूर्वक अपनी चाल चल देना; अपना काम निकालना- अपना उद्देश्य सिद्धकर लेना; अपना किया पाना- अपने किए कर्मों का फल भोगना, अपने कर्म का फल पाना; अपना घर देखना- अपना सामर्थ्य या अपनी औकात देखना; अपना घर समझना- संकोच न करना; अपना पराया जानना- शत्रु-मित्र की पहचान होना; अपना पाँव आग में डालना- स्वयं खतरा मोल लेना; अपना पूत प्यारा लगना- अपनी वस्तु में गुण ही गुण देखना; अपना बना लेना- अपने पक्ष में कर लेना; अपना रास्ता नापना- अपने रास्ते पर जाना; अपना रास्ता लेना- अपने काम में लगना, अपना काम करना; अपना सा मुँह लेकर रह जाना- किसी कार्य के सफल न हो जाने पर लज्जित होना; अपना सोना खोटा होना- अपनों में ही दोष देखना या होना; अपनी खिचड़ी अलग पकाना- सबसे अलग रह कर कार्य करने की प्रवृत्ति; अपनी आग में आप जलना- किसी के प्रति ईर्ष्या-द्वेष में स्वयं परेशान होना, खुद पैदा की गई मुसीबत को खुद भोगना; अपनी गाना- अपनी बात कहते जाना, किसी की न सुनना; अपनी नीद सोना- अपनी इच्छानुसार कार्य करना; अपनी जान हरदम सूली पर होना- हर समय संकट की स्थिति में होना; अपनी बात ऊपर रखना- अपनी ही चलाना, दूसरे की न सुनना; अपनी बात का पक्का- वचन का पक्का; अपनी बात का धनी- अपनी बात का पक्का; अपनी बात पर आना- अपने स्वभाव के अनुसार काम करने लगना; अपनी बात से टलना- प्रतिज्ञा न निभाना, कथनी के अनुसार कार्य करना; अपनी काम से काम रखना- स्वयं को अपने काम तक सीमित रखना, किसी अन्य के काम में दखल न देना; अपने तक रखना- किसी से न कहना, भेद छिपाना; अपने धंधे से लगना- अपने काम में लगना; अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना- अपनी हानि स्वयं करना; अपने मन की करना- दूसरे की बात न मानकर अपनी

इच्छानुसार काम करना; अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना- अपनी बड़ाई अपने आप करना; अपने सिर पड़ना- अपने ऊपर जिम्मेदारी आना; अपने हिसाब से- अपने विचार के अनुसार।

अपनाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. अपना बना लेना, अपनी ओर करना 2. स्वीकार करना, ग्रहण करना 2. अपने अधिकार, रक्षा या शरण में ले लेना।

अपनापन *पुं.* (तद्.) 1. आत्मीयता, अपना भाव, अपनत्व, आत्मीयता; आपसदारी 2. लगाव।

अपनापा *पुं.* (तद्.) दे. अपनापन।

अपनाम *पुं.* (तत्.) बदनामी, निंदा, अपयश।

अपनिदेश *पुं.* (तत्.) गलत निर्देश विधि. न्यायाधीश द्वारा जूरी को दी गई गलत आधिकारिक हिदायत mis-direction

अपनिरुपण *पुं.* (तत्.) [अप+निरूपण] 1. किसी बात या तथ्य का गलत निरुपण 2. किसी तथ्य को तोड़-मरोड़कर किया गया वर्णन।

अपनिर्माण *वि.* (तत्.) [अप+निर्माण] 1. अनुचित निर्माण 2. किसी भवन आदि का गलत ढंग से किया गया निर्माण भाषा. किसी सादृश्य या अज्ञानतावश किसी शब्द का अशुद्ध रूप बनाना जैसे- उपर्युक्त के स्थान पर उपरोक्त, अन्तः करण-अन्तसाक्ष्य, आदि।

अपनीत *वि.* (तत्.) [अप+नीत] 1. किसी वस्तु को एक स्थान से दूर ले जाया गया। 2. किसी वस्तु को हटाया गया। 3. दूरस्थ स्थान पर पहुँचाया गया 4. अपहृत।

अपनोद *वि.* (तत्.) [अप+नोद] 1. किसी वस्तु को दूर करना 2. हटाने का भाव।

अपनोदन *पुं.* (तत्.) 1. किसी वस्तु को अलग करना, अलगाना 2. हटाना, अलहरा करना 3. नष्ट करना 4. प्रायश्चित करना।

अपपत्रण *पुं.* (तत्.) वृक्ष की टहनी से पत्तियों का या कलिका से शल्कों का गिरना।

अपपर्ण *पुं.* (तत्.) [अप+पर्ण] 1. खराब पत्ते या गिरे हुए सूखे व पीले पत्ते वन. 1. पादपों आदि में निकली प्रारंभिक पत्तियाँ अर्थात अविकसित पत्ते।

अपपाठ *पुं.* (तत्.) [अप+पाठ] 1. गलत ढंग से पाठ करना 2. गद्य-पद्य आदि को अशुद्ध पढ़ना पढ़ना 3. पाठ पढ़ने में भूल जाना।

अपप्ररूप *वि.* (तत्.) क्यारी में पौधे की किसी मानक किस्म से भिन्न स्वरूप वाला अवांछित पौधा।

अपप्ररूपण *पुं.* (तत्.) पौधे की मानक किस्म की क्यारी से या खेत में उसे अवांछित प्रकार के पौधों को हटाने की प्रक्रिया।

अपबेध *पुं.* (तत्.) [अप+वेध] 1. किसी रत्न हीरा/मोती आदि में गलत ढंग से किया गया वेधन 2. गलत जगह या गलत तरीके से छेद करना।

अपभाषण *पुं.* (तत्.) [अप+भाषण] 1. मुख से गलत वाणी बोलना 2. निंदा, गाली 3. अनुचित कथन 4. अमर्यादित/अश्लील शब्दों का प्रयोग।

अपभाषा *स्त्री.* (तत्.) समाज के अपेक्षाकृत पिछड़े और अशिक्षित वर्ग के लोगों की भाषा जिसमें अशिष्ट, ग्राम्य, अव्याकरणिक प्रयोग आदि दिखाई देते हैं slang

अपभ्रंश *पुं.* (तत्.) 1. मानक रूप की अपेक्षा विकृत रूप, बिगाड़, विकृति *स्त्री.* प्राकृत के बाद बाद प्रचलित एक भाषा जो आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में से अनेक की पूर्वभाषा थी।

अपभ्रंशित *वि.* (तत्.) [अपभ्रंश+इत] 1. बुरी तरह गिरा हुआ, पतित 2. विकृत, नष्ट-भ्रष्ट 3. भाषा. अपभ्रंश शब्दों से युक्त कोई रचना।

अपभ्रष्ट *वि.* (तत्.) विकृत, बिगड़ा हुआ।

अपमंगल *पुं.* (तत्.) अनिष्ट, अशुभ, अकल्याण।

अपमर्दन *पुं.* (तत्.) रौंदना या कुचलना।

अपमान *पुं.* (तत्.) 1. अनादर, अवहेलना, निरादर विडंबना 2. तिरस्कार, दुत्कार।

अपमानकारक *वि.* (तत्.) [अपमान+कारक] 1. किसी का वाणी आदि से अपमान करने वाला (कोई व्यक्ति) 2. मानहारी 3. तिरस्कर्ता।

अपमानकारी *वि.* (तत्.) [अपमान+कारी] दे. अपमानकारक

अपमानजनक *वि.* (तत्.) 1.ऐसा व्यवहार या आचरण जिससे किसी का अपमान होता हो। अपमानजन्य 2. तिरस्कार जनक।

अपमान लेख *पुं.* (तत्.) पत्र. किसी व्यक्ति या संस्था की छवि खराब करने के लिए द्वेषपूर्ण मिथ्या और अभद्र भाषा में लिखित लेख। slander

अपमान-वचन *पुं.* (तत्.) व्यक्ति के विषय में ऐसा मौखिक कथन जिससे उसकी प्रतिष्ठा धूमिल हो। slander

अपमानित *वि.* (तत्.) जिसका अपमान किया गया हो, निंदित, अवमानित; बेइज्जत विलो. सम्मानित।

अपमानी *वि.* (तत्.) अपमान करने वाला, निरादर करने वाला।

अपमान्य *वि.* (तत्.) अपमान के योग्य।

अपमार्ग *पुं.* (तत्.) कुमार्ग, कुपथ, विपथ।

अपमार्गी *वि.* (तत्.) कुमार्गी, कुपंथी।

अपमार्गी उपासना *स्त्री.* (तत्.) 1. वह उपासना या साधना पद्धति जिसमें भूत, प्रेत पिशाच आदि को वंश में करने या उन्हें खुश करने का विधान होता है 2. वाममार्गी साधना।

अपमार्जक *पुं.* (तत्.) 1. कपड़े-बर्तनों आदि की साफ-सफाई करने वाली वस्तु जो सांश्लेषिक और कार्बनिक होती है और तरल या जल-विलेय होती है। इसमें वसा या तेल का इस्तेमाल नही होता 2. साबुन आदि कोई भी सफाई का साधन। detergent

अपमार्जन *पुं.* (तत्.) 1. मैल या गंदगी को निकालना, शुद्धि, सफाई 2. संशोधन, परिसंस्करण।

अपमार्जित *वि.* (तत्.) [अप+मार्जित] 1. जिस किसी लेख आदि का अपमार्जन किया गया हो। 2. संशोधित 3. शुद्ध करण/शुद्ध दे. अपमार्जन।

अपमिश्रक *वि.* (तत्.) [अप+मिश्रक] किसी अपमिश्रण में मिलाया जाने वाला कोई अशुद्ध या घटिया पदार्थ, मिलावटी पदार्थ या वस्तु।

अपमिश्रण *पुं.* (तत्.) अनुचित लाभ उठाने के लिए खाद्य या पेय पदार्थ में घटिया या हानिकर वस्तु का मिश्रण। adulteration

अपमिश्रित *वि.* (तत्.) [अप+ मिश्रित] 1. जिसमें किसी प्रकार का अपमिश्रण किया गया हो 2. जो वस्तु या द्रव्य किसी प्रकार की मिलावट से युक्त हो। adulterated

अपमुख *वि.* (तत्.) 1. जिसका मुख विकृत या टेढ़ा हो 2. जिसका मुंह वक्ता की ओर न हो।

अपमूकता *स्त्री.* (तत्.) [चिकित्सा.] एक प्रकार के गूँगेपन का वह रोग जिसमें तालु, जीभ या होठ से संबंधित किसी प्रकार का संरचनात्मक दोष होता है, जिसके कारण मुख से स्पष्ट रूप से बोले न जाने की स्थिति होती है (आंगिक मूकता)।

अपमृत्यु *स्त्री.* (तत्.) अकाल मृत्यु, किसी दुर्घटना आदि के कारण होने वाली असामयिक अस्वाभाविक मृत्यु।

अपयश *पुं.* (तत्.) 1. अपकीर्ति, बदनामी, बुराई 2. कलंक, लांछन।

अपयशकर *वि.* (तत्.) [अपयश+कर] 1. अपयश करने वाला 2. किसी असामाजिक या निंद्य आचरण से बदनामी करने वाला 3. अपकीर्तिकर।

अपयशी *वि.* (तत्.) कलंकित, निंदित।

अपयान *पुं.* (तत्.) [अप+यान] 1. किसी स्थान से अनपेक्षित रूप से भाग जाना 2. पीछे लौट जाना 3. पलायन खगो. खगोल विज्ञान में 'उपक्रम' को 'अपयान' कहते हैं।

अपयुर्षि *वि.* (तत्.) 1. जो भोजन बासी न हो 2. जो ताजा हो 3. जो (पुष्प) तोड़ा हुआ बासी

अर्थात् एक दिन पहले का न हो 4. सरस 5. उपयोगी।

अपयोग *पुं.* (तत्.) 1. कुयोग, बुरा योग 2. कुसमय 3. औषधीय पदार्थों का अनुचित मात्रा का योग।

अपयोजन *पुं.* (तत्.) गलत दिशा में जोड़ना या लगाना।

अपरंच *अव्य.* (अव्य.) 1. अन्य भी, और भी 2. दूसरा भी 3. और आगे भी 4. इसके बाद।

अपरंपार *वि.* (तत्.) [अपरम्+पार] 1. जिसकी कोई सीमा न हो, असीम 2. बहुत अधिक, जिसका पार न पाया जा सके।

अपर अनुच्छेद *पुं.* (तत्.) [अपर+अनुच्छेद] राज. वे अनुच्छेद जो किसी अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक व्यावसायिक आदि समझौते के रूप में पूर्व समझौते से अतिरिक्त या परिशिष्ट रूप में जोड़े गए हो।

अपर काल *पुं.* (तत्.) [अपर+काल] 1. एक निश्चित अबधि या समय के बाद का काल 2. उत्तर काल जैसे- हिंदी साहित्य में भक्तिकाल का अपरकाल रीतिकाल है।

अपर न्यायाधीश *पुं.* (तत्.) न्यायालयों में आवश्यक होने पर निर्धारित अवधि के लिए नियुक्त अतिरिक्त न्यायाधीश। judge aditional

अपर *वि.* (तत्.) 1. जो पर या दूसरा न हो; पहला, पूर्व का 2. दूसरा, अन्य प्रशा. 3. अतिरिक्त 4. दूर का, दूरवर्ती, बाद का अगला।

अपरक्त *वि.* (तत्.) 1. रंगहीन, जो पूरा लाल न हो 2. रक्तहीन 3. असंतुष्ट 4. विरक्त।

अपरक्राम्य *वि.* (तत्.) शा.अर्थ. जिसे दूसरे के नाम समनुदेशित न किया जा सके वाणि. (वह हुंडी या चैक) जिसे किसी अन्य के नाम पृष्ठांकित न किया जा सके।

अपरक्राम्यता *स्त्री.* (तत्.) किसी लिखत का ऐसा गुण जो उसे दूसरे व्यक्ति या पक्ष को समनुदेशित करने में बाधित करता है उदा. रेखित चैकपर (केवल आदाता को देय, इसलिए लिखा होता है)।

अपरक्षणीय *वि.* (तत्.) [अप+रक्षणीय] जो किसी प्रकार के क्षरण में रक्षा करने में उपादेय हो।

अपरजतन *पुं.* (तत्.) [अप+रजतन] रसा. एक प्रकार का रासायनिक प्रक्रम जिसमें सोने से चाँदी को अलग करने की प्रक्रिया होती है।

अपरजीवी *वि.* (तत्.) जो परजीवी parasite न हो।

अपरत *वि.* (तत्.) (हि.अप+(तत्.)रत) [अप+रत] 1. जो अपने आप में ही तल्लीन हो या रहता हो 2. जो अपने आप में लगा रहता हो, आत्मार्थी, स्वार्थरत।

अपरता *स्त्री.* (तत्.) 1. अपर या दूसरा होने का भाव या स्थिति 2. पर या पराया न होने की स्थिति, निकटता।

अपरती *वि.* (देश.) [हि.आप+(तत्.)-रति] जो अपने आप से मतलब रखता हो, स्वार्थी।

अपरत्र *क्रि.वि.* (तत्.) अन्यत्र, अन्य स्थान पर

अपरत्व *पुं.* (तत्.) दे. अपरता।

अपरद *पुं.* (तत्.) भूवि. अपरदन, अपघटन, अपक्षण या अपक्षयण के कारण शैल से टूटकर गिरे छोटे-बड़े शैलखंड या मलबा तथा उद्भव स्थल से दूर प्रवाहित, कृवि. मृत पौधों तथा जीवों का मलवा। detritus

अपरदक *वि.* (तत्.) [अप+रदक] भूवि. भूपृष्ठीय पदार्थों की घिसाई, कटाव और अपनयन आदि रूपअपरदन करने वाला (कोई प्राकृतिक कारक)।

अपरदन *पुं.* (तत्.) (भू.वि.) प्रवाही जल, वायु, बर्फ द्वारा भू-पृष्ठ का क्षरण। erosion

अपरदन-कारिता *स्त्री.* (तत्.) मृदा का क्षरण करने वाले कारकों (वर्षा आदि) की क्षमता।

अपरदनकारी *वि.* (तत्.) [अपरदन+कारी] अपरदन करने वाला कोई प्राकृतिक तत्व जैसे- वायु व जलधाराएँ आदि अपरदनकारी हैं।

अपरदन चक्र *पुं.* (तत्.) भूवि. अपरदन की युवा, प्रौढ़ा, जीर्णावस्था इन तीन प्रमुख अवस्थाओं का वह क्रम जिसमें से होकर गया भूखंड समतल हो जाता है।

अपरदित *वि.* (तत्.) [अप+रदित] जो अपरदन क्रिया से युक्त हो या जिसका अपरदन हुआ हो।

अपरदी शैल *वि.* (तत्.) भूवि. वह शैल जो अन्य शैलों के अपरदित शैलों के मलबे से बनता है।

अपरपक्ष *पुं.* (तत्.) 1. दूसरा पक्ष 2. भारतीय महीने का कृष्णपक्ष 3. उल्टी ओर विधि. 4. न्यायालय में प्रतिवाद पक्ष।

अपरबहुगुणित *वि.* (तत्.) [अपर+बहुगुणित] कृषि. वह जीव जिसके शरीर की कोशिकाओं में गुणसूत्रों के दो से अधिक समूह पाये जाते हों तथा वे भिन्न-भिन्न जातियों से संबंधित हों।

अपरब्रह्म *पुं.* (तत्.) [अपर+ब्रह्म] ब्रह्म का वह रूप जो परब्रह्म से भिन्न साकार एवं सगुण होता है।

अपरभा *पुं.* (तत्.) साहि. एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 6 वर्ण होते हैं तथा जगण व सगण क्रमशः होते हैं।

अपरभाव *वि.* (तत्.) [अपर-भाव] 1. किसी से या अन्य से भिन्न होने का भाव 2. दूसरा भाव 3. भेद, अंतर

अपररूप *पुं.* (तत्.) [अपर+रूप] 1. पहले से भिन्न रूप 2. रसा. गंधक, या कार्बन आदि किसी तत्व का दो या दो से अधिक रूपों में इस प्रकार पाया जाना जो रासायनिक व भौतिक गुणधर्मों की दृष्टि से परस्पर भिन्नता लिए हों।

अपररूपता *स्त्री.* (तत्.) एक ही तत्व का ऐसे दो या अधिक रूपों में पाया जाना जिन रूपों के भौतिक और रासायनिक गुणधर्म एक दूसरे से पर्याप्त भिन्न हों, जैसे- कार्बन के दो अपर रूप हीरा और ग्रेफाइट graphite allotrophy

अपरलोक *पुं.* (तत्.) 1. इस लोक से भिन्न लोक, दूसरा लोक 2. स्वर्ग

अपरवक्त्र *पुं.* (तत्.) [अपर+वक्त्र] 1. दूसरा वक्त्र 2. छंद एक प्राचीन अर्धसमवर्णिक छंद जिसके विषम चरणों में ग्यारह वर्ण होते हैं तथा सम चरणों में क्रमशः नगण, दो जगण व रगण के योग से कुल बारह वर्ण होते हैं।

अपरवर्णता *स्त्री.* (तत्.) भौति. प्रदीप्ति अथवा प्रकाश का पुनःप्रकीर्णन जिसमें उत्सर्जित प्रकाश का तरंग दैर्घ्य (और इस कारण उसका रंग) अवशोषित प्रकाश के तरंगदैर्घ्य से भिन्न होता है, इसे रामन प्रभाव भी कहते हैं allochromy

अपरस *पुं.* (तत्.) हथेली और तलवे का एक चर्म रोग जिसमें चमड़ी सूख जाती है और खुजली होती है *पुं.* (तद्.) 1. विरसता 2. आत्मरस, आत्मानंद।

अपरस्थानिक *वि.* (तत्.) शा.अर्थ. अन्य स्थान वाले। भूवि. वे शैल जिनके घटक अन्यत्र से आए या लाए गए हों। allotropic

अपरांग *वि.* (तत्.) [अपर+अंग] जो किसी अन्य का अंग हो।

अपरांग व्यंग्य *वि.* (तत्.) [अपरांग-व्यंग्य] काव्य. गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य के भेदों में से एक भेद जिसमें एक व्यंग्यार्थ किसी दूसरे व्यंग्यार्थ का अंग बन जाता है।

अपरांत *पुं.* (तत्.) [अपर+अंत] 1. पश्चिमी सीमा का अंतिम भाग 2. पश्चिमी सीमांत का कोई देश 3. महाराष्ट्र के उत्तर कोंकण क्षेत्र का एक प्राचीन नाम।

अपरांतक *पुं.* (तत्.) [अपरांत+क] 1. पश्चिमी सीमांत प्रदेश का भाग 2. पश्चिमी सीमांत प्रदेश का निवासी 3. पश्चिमी सीमांत प्रदेश

अपरा *स्त्री.* (तत्.) 1. अध्यात्म विद्या के अतिरिक्त अन्य लौकिक विद्या 2. स्तनी मादाओं के भ्रूणीय तथा गर्भाशयी ऊतकों से बनी संरचना जिसके माध्यम से माता तथा भ्रूण के बीच रुधिर-पोषण तथा ऑक्सीजन आदि का आदान-प्रदान होता है 3. पश्चिम दिशा।

अपरा विद्या *स्त्री.* (तत्.) 1. लोकोत्तर ज्ञान, वेदवेदांगों की शिक्षा 2. लौकिक-विषयोंका ज्ञान कराने वाली विद्या।

अपराग *वि.* (तत्.) [अप+राग] 1. जो बिना रंग का हो, रंगरहित 2. *पुं.* शत्रुभाव/शत्रुता 3. असंतोष।

अपराजित *वि.* (तत्.) 1. जिसे पराजित न किया गया हो, अविजित *पुं.* 1. विष्णु, शिव। 2. एक विषैला कीट।

अपराजिता *स्त्री.* (तत्.) 1. जो पराजित नही हुई हो, दुर्गा, अविजिता 2. एक कोमल लता 3. अयोध्या का एक नाम 4. चौदह अक्षर का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण, एक रगण, एक सगण तथा एक-एक लघु-गुरु होते हैं (न न र स ल ग) ।

अपराजेय *वि.* (तत्.) जिसे जीता न जा सके।

अपराजेयता *स्त्री.* (तत्.) [अपराजेय+ता प्रत्यय] 1. अपराजेय होने का भाव या गुण 2. अन्य के द्वारा जीता न जा सकने की शक्ति की विद्यमानता, अजेयता।

अपराध *पुं.* (तत्.) 1. दोष, जुर्म 2. भूल, चूक 3. विधि. विधि द्वारा वर्जित (दंडनीय) कार्य।

अपराध-निवारण *पुं.* (तत्.) ऐसी कार्रवाई जिससे भावी अपराधों को रोका जा सके।

अपराध स्वीकरण *पुं.* (तत्.) 1. किसी के समक्ष या खुले रूप में अपने किए अपराध को स्वीकार करना 2. वह कथन जिसमें अपना अपराध स्वीकार किया गया हो। अपराधिकी *स्त्री. स्त्री.* 3. समाजशास्त्र की एक शाखा जिसमें विविध प्रकार के अपराधों, अपराधों के कारणों, उनके निवारण के उपायों, अपराधानुसार दंडविधान, सामाजिक मान्यताओं का संरक्षण तथा अपराधिक व्यक्तियों की मनोवृत्ति का अध्ययन किया जाता है 2. अपराधविज्ञान।

अपराधभंजक *वि.* (तत्.) [अपराध+भंजक] अपराधों का नाश करने वाला, अपराध नाशक (किसी क्षेत्र से) अपराधों को समाप्त करने वाला।

अपराधभंजन *पुं.* (तत्.) [अपराध+भंजन] 1. अपराधों की समाप्ति, अपराधों का नाश 2. *वि.* अपराधों का नाश करने वाला, अपराधों का समाप्ति कर्ता।

अपराधमूलक *वि.* (तत्.) 1. जो अपराध से संबंधित हो 2. अपराध से युक्त 3. अपराध वाला।

अपराध-विज्ञान *पुं.* (तत्.) अपराध और अपराधियों से संबंधित वैज्ञानिक अध्ययन। समाज विज्ञान की शाखा विशेष, जिसमें अपराध-संबंधी कारणों, सिद्धांतों, कानूनों और अपराधियों के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है criminology

अपराध-विज्ञानी *पुं.* (तत्.) अपराधविज्ञान का विशेषज्ञ।

अपराध व्यसन *पुं.* (तत्.) [अपराध-व्यसन] 1. अपराध करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति या आदत 2. शौकिया आपराधिक कर्म।

अपराधव्यसनी *वि.* (तत्.) अपराध कर्म में प्रवृत्त रहने वाला।

अपराध शमन *पुं.* (तत्.) विधि. (किसी विशेष आधार पर) अपराधी का अभियोजन न करना compounding

अपराधशील *वि.* (तत्.) आपराधिक स्वभाव वाला।

अपराधिता *स्त्री.* (तत्.) 1. अपराधी होने की प्रवृत्तिशीलता 2. अपराध करने का अभाव वि. निरपराधिता।

अपराधी *वि.* (तत्.) अपराध करने वाला विधि. 1. विधि के विरुद्ध दंडनीय अपराध करने वाला व्यक्ति 2. नैतिक दृष्टि से अनुचित कार्य करने वाला offender

अपराधी मन *पुं.* (तत्.) [अपराधी-मन] व्यक्ति के मन की आपराधिक भावना जिससे संप्रेरित होकर वह पुन:पुन: अपराध करता है।

अपरा पोषिका *स्त्री.* (तत्.) उच्चतर कशेरुकियों के के भ्रूण से बाहर की एक संरचना जो उसके पोषण और श्वसन में सहायक होती है। allantois

अपरामृष्ट *वि.* (तत्.) [अ+परामृष्ट] 1. जिसे किसी दूसरे के द्वारा स्पर्श न किया गया हो। अस्पृष्ट 2. जिस पर परामर्श न किया गया हो 3. जिसका अभी तक उपयोग न हो सका हो।

अपरार्क *पुं.* (तत्.) [अपर+अर्क] 1. दूसरा सूर्य 2. वि. जो तेजस्विता में दूसरे सूर्य जैसा हो।

अपरार्ध *पुं.* (तत्.) [अपर+अर्ध] किसी बात, वस्तु आदि का बादवाला आधा भाग, उत्तरार्ध विलो. पूर्वार्ध।

अपराह्न *पुं.* (तत्.) दिन का (दोपहर के बाद का) समय, तीसरा पहर।

अपरिगत *वि.* (तत्.) 1. अज्ञात, अपरिचित, न पहचाना हुआ 2. अप्राप्त।

अपरिगृहीत *वि.* (तत्.) 1. अस्वीकृत 2. त्यक्त, छोड़ा हुआ।

अपरिगृहीता *स्त्री.* (तत्.) [अ+परिगृहीता] अपरिणीता कन्या, अविवाहिता स्त्री (वि.) जो अभी तक किसी के द्वारा परिगृहीत (विवाहित) न हुई हो।

अपरिग्रह *पुं.* (तत्.) 1. परिग्रह न करने अर्थात् भोग विलास, धन, नौकर-चाकर आदि की सेवाओं को ग्रहण न करने की स्थिति 2. जीने के लिए जितना आवश्यक हो उससे अधिक धन, अन्न आदि न लेना।

अपरिग्राह्य *वि.* (तत्.) जो ग्रहण करने या स्वीकार करने योग्य न हो।

अपरिचय *पुं.* (तत्.) परिचय का अभाव, जान-पहचान न होने की स्थिति।

अपरिचयी *वि.* (तत्.) [अ+परिचयी] 1. जिसका किसी से परिचय न हो 2. जो किसी से अधिक परिचय बढ़ाने वाला न हो 3. जो अपना परिचय दिये या लिये बिना ही रहता है। मेलजोल न करने वाला विलो. परिचयी

अपरिचित *वि.* (तत्.) जो जाना-पहचाना न हो, अनजान, जो जाना-बूझा न हो विलो. परिचित।

अपरिच्छद *वि.* (तत्.) 1. आच्छादन-रहित, आवरणशून्य 2. जो ढका न हो, नंगा, खुला हुआ 3. दरिद्र।

अपरिच्छन्न *वि.* (तत्.) 1. जो ढका न हो, खुला, नंगा, आवरणरहित 2. व्यापक।

अपरिच्छिन्न *वि.* (तत्.) [अ+परि+छिन्न] 1. जो परिच्छिन्न न हो 2. निरंतर, असीम 3. मिला हुआ 4. जिसका भेदन न हुआ हो विलो. परिच्छिन्न।

अपरिच्छेद *पुं.* (तत्.) 1. विभाजन या अलगाव का अभाव 2. विवेक या निर्णय का अभाव 3. नैरंतर्य।

अपरिणत *वि.* (तत्.) 1. अपरिपक्व, कच्चा 2. जिसमें अभीष्ट परिणाम प्राप्त न हुआ हो, ज्यों का त्यों। विलो. परिणत।

अपरिणय *पुं.* (तत्.) 1. विवाह न होने की स्थिति, कौमार्य, ब्रह्मचर्य विलो. परिणय।

अपरिणाम *पुं.* (तत्.) परिणाम, परिपाक या परिवर्तन का अभाव; अपरिवर्तनशीलता।

अपरिणामी *वि.* (तत्.) 1. परिणाम-रहित; जिसका कोई परिणाम न हो 2. जिसकी दशा में परिवर्तन न हुआ हो, विकाररहित 3. निष्फल।

अपरिणीत *वि.* (तत्.) परिणाम-रहित, अविवाहित, कुँवारा।

अपरिणीता *वि.* (तत्.) परिणय-रहित, कन्या, अविवाहिता कन्या।

अपरिदली *वि.* (तत्.) वन. (पुष्प) जिसमें परिदल पुंज, दल पुंज या बाह्यदल पुंज नहीं होता, जैसे- एरंड का फूल।

अपरिनिष्ठित *वि.* (तत्.) 1. जो परिनिष्ठित नहीं हो 2. जो पूर्णरूप से निपुणता प्राप्त न हो 3. जो पूर्ण शुद्ध एवं सुसंस्कृत न हो, जैसे- अपरिनिष्ठित शब्दावली या भाषा विलो. परिनिष्ठित परिनिष्ठित

अपरिपक्व *वि.* (तत्.) सा.अर्थ. जो पूरी तरह पका हुआ न हो। 1. वन. वह फल जो पूरी तरह पका

न हो, पूरी तरह विकसित न हो 2. वाणि. जिसके भुगतान की निर्धारित अवधि अभी पूरी नहीं हुई हो 3. मनो. जो बौद्धिक योग्यता की दृष्टि से अभी सक्षम न हो।

अपरिपक्वता *स्त्री.* (तत्.) परिपक्व न होने की अवस्था।

अपरिभाषित *वि.* (तत्.) [अ+परिभाषित] 1. जो लक्षण, स्वरूप गुण आदि की दृष्टि से परिभाषित न हो या जिसकी परिभाषा न की गई हो, जैसे- अभी तक अपरिभाषित शब्दों पर शब्दकोश की दृष्टि से विचार करना अपेक्षित है।

अपरिभाष्य *वि.* (तत्.) [अ+परिभाष्य] 1. जिसकी परिभाषा सही रूप में न जा सकती हो, परिभाषा के अयोग्य। ब्रह्म अपरिभाष्य है।

अपरिमाण *वि.* (तत्.) [अ+परिमाण] 1. जिसका कोई परिमाण न हो, बिना नाप तौल का 2. जिसके आकार-प्रकार की कोई सीमा न हो, असीमित *पुं.* परिमाण साहित्य।

अपरिमित *वि.* (तत्.) अत्यधिक, असीम, बेहद; असंख्य, अगणित।

अपरिमेय *वि.* (तत्.) 1. जो नापा या कूता न जा सके 2. जिसका क्षय न हो।

अपरिमेय संख्या *स्त्री.* (तत्.) [अपरिमेय-संख्या] गणि. वह संख्या जिसे न तो किसी पूर्णांक के रूप में और न ही पूर्णांक के भागफल के रूप में व्यक्त करना संभव न हो जैसे- irrational number

अपरिलिखित *वि.* (तत्.) बट्टेखाते डाल दी गई राशि written off

अपरिवर्जनीय *वि.* (तत्.) अपरिहार्य, जिसे छोड़ा या त्यागा नहीं जा सके।

अपरिवर्तनीय *वि.* (तत्.) 1. जो परिवर्तन के योग्य न हो, जिसे बदला न जा सके 2. नित्य, सदा एक रूप में रहने वाला विलो. परिवर्तनीय।

अपरिवर्तित *वि.* (तत्.) 1. जिसमें कोई परिवर्तन न हुआ हो 2. ज्यों का त्यों विलो. परिवर्तित।

अपरिवर्ती *वि.* (तत्.) जो स्थिर, नियत या चर न हो।

अपरिवर्ती गति *स्त्री.* (तत्.) गणि. वह गति जिसमें दोनों रैखिक वेग तथा कोणीय योग अचर रहते हों।

अपरिवर्त्य *वि.* (तत्.) [अ+परिवर्त्य] 1. जो परिवर्तनीय न हो 2. न बदलने योग्य, अटल 3. जिसे न बदला जा सकता हो, जैसे- अपरिवर्त्य नियम।

अपरिवर्त्यता *स्त्री.* (तत्.) [अपरिवर्त्य+ता प्रत्यय] 1. जिसमें परिवर्तित नहीं होने का गुण या स्थिति हो 2. परिवर्तनशीलता का अभाव 3. अपरिवर्तनशीलता।

अपरिवृत *वि.* (तत्.) जो चारों ओर से घिरा या ढका न हो, खुला हुआ, अव्याप्त।

अपरिवृत्त *वि.* (तत्.) 1. अपरिवर्तित, जिसे घुमाया न गया हो 2. असमाप्त।

अपरिष्कार *पुं.* (तत्.) [अ+परिष्कार] 1. जिसका परिष्कार न हुआ हो, बिना परिष्कार का 2. संस्कार का अभाव 3. सज्जा का अभाव विलो. परिष्कार।

अपरिष्कृत *वि.* (तत्.) जिसका परिष्कार या परिशोधन न हुआ हो, जिस की सफाई न हुई हो, असज्जित, भोंडा, भद्दा, असभ्य, संस्कार हीन।

अपरिस्राविता *स्त्री.* (तत्.) [अ+परिस्राविता] जल की वह स्थिति जब उसे बहा कर बाहर न निकाल कर अंदर ही रखा जाय जैन. वे नियम या आचरण जब किसी साधक के दोषों को सुनकर फिर किसी के पूछने पर भी उन्हें व्यक्त न करना।

अपरिहरणीय *वि.* (तत्.) [अ+परिहरणीय] 1. जो परिहरण करने के योग्य न हो 2. जिसका त्याग, खण्डन, निवारण करना संभव न हो 3. जिसका अपहरण न किया जा सकता हो।

अपरिहार *पुं.* (तत्.) न छोड़ने की स्थिति, निवारण का अभाव, अनिवारण।

अपरिहार्य *वि.* (तत्.) जिसका परिहार न हो सके, जिसे छोड़ा न जा सकता हो, अनिवार्य।

अपरिहार्यता *स्त्री.* (तत्.) [अ+परिहार्यता] 1. (किसी वस्तु आदि) परिहार या त्याग न करने की स्थिति 2. जिसका छोड़ा जाना उचित न हो 3. जिसका होना रोका नहीं जा सकता हो 4. अनिवार्यता 5. अवश्यंभाविता।

अपरीक्षणीय *वि.* (तत्.) जो जाँच या परीक्षा के योग्य न हो।

अपरीक्षित *वि.* (तत्.) जिसकी परीक्षा न हुई हो, जिसकी जाँच-परख न हुई हो, अप्रमाणित विलो. परीक्षित।

अपरूप *वि.* (तत्.) 1. कुरूप, भद्दा, बेडौल, सामान्य रूप से भिन्न रूप वाला।

अपरूपण *पुं.* (तत्.) अपरूप करना या होना।

अपरूपता *स्त्री.* (तत्.) भद्दापन, कुरूपता, सामान्य रूप से भिन्न होने की स्थिति।

अपरोक्ष *वि.* (तत्.) जो परोक्ष या अप्रत्यक्ष न हो, प्रत्यक्ष, जो सामने हो। विलो. परोक्ष।

अपरोक्षतः *क्रि.वि.* (तत्.) प्रत्यक्षतः, प्रत्यक्ष रूप से, जैसे- उन्होंने अपरोक्षतः किसी को कुछ नहीं कहा।

अपरोक्षानुभूति *स्त्री.* (तत्.) [अ+परोक्ष+अनुभूति] 1. प्रत्यक्षज्ञान 2. साधक को होने वाला प्रत्यक्ष ब्रह्म का ज्ञान या प्रत्यक्ष ब्रह्म ज्ञान से संबंधित अनुभव 3. वेदांत का एक प्रकरण।

अपरोध *पुं.* (तत्.) निषेध, वर्जन।

अपरोप *पुं.* (तत्.) 1. उन्मूलन, निष्कासन 2. राज्य से हटना या हटाना, विध्वंस।

अपर्ण *वि.* (तत्.) पर्णविहीन, पत्र-विहीन, जिसमें पत्ते न हो।

अपर्णहरिती *स्त्री.* (तत्.) [अ+पर्णहरिती] वन. वृक्षों, लताओं आदि की वे पत्तियाँ जिनमें पर्णहरित होने का तत्व विद्यमान न हो non chlorophyll

अपर्णा *स्त्री.* (तत्.) (शिव की प्राप्ति के लिए तप करते समय पत्ते तक खाना छोड़ देने वाली) पार्वती।

अपर्णी *वि.* (तत्.) [अ+पर्णी] वन. वे पौधे या औषधियाँ आदि जिनमें पत्तियाँ होती ही न हों, जैसे- cactus

अपर्यंत *वि.* (तत्.) अनंत, असीम, अपरिमित।

अपर्याप्त *वि.* (तत्.) जो पर्याप्त, पूरा या यथेष्ट न हो, अपूर्ण, नाकाफी विलो. पर्याप्त।

अपर्याप्तता *स्त्री.* (तत्.) [अपर्याप्त+ता प्रत्यय] 1. किसी चीज के पर्याप्त न होने का भाव या स्थिति 2. अपूर्णता, कमी, त्रुटि 3. अयोग्यता, अक्षमता।

अपर्याप्ति *स्त्री.* (तत्.) [अ+पर्याप्ति] दे. अपर्याप्तता।

अपर्याय *वि.* (तत्.) 1. क्रमविहीन, अव्यवस्थित 2. पर्याय-रहित।

अपर्व *पुं.* (तद्.) क्रमहीनता 1. जिस दिन पर्व न हो; पूर्णिमा, अमावस्या, एकादशी आदि से भिन्न दिन 2. संधि-रहित 3. पौरी-रहिता।

अपल *क्रि.वि.* (तत्.) [अ+हि-पलक] 1. बिना पलक झपकाए 2. जिसकी पलकें न गिरें या स्थिर रहें 3. एकटक, एकटकी दृष्टि से।

अपलक *क्रि.वि.* (तत्.) देखते समय पलक न झपकाते हुए, एकटक, निर्निमेष, अनिमेष।

अपलक्षण *पुं.* (तत्.) कुलक्षण, दोष, अशुभ लक्षण।

अपलाप *पुं.* (तद्.) 1. मिथ्यावाद, निरर्थक बात, बकवास, व्यर्थ की बातें करना 2. (सत्य) छिपाना।

अपलापी *वि.* (तत्.) [अप+लापी] 1. अपलाप करने वाला 2. व्यर्थ की बकबक करने वाला 3. किसी सत्य बात को छिपाकर इधर-उधर की बातों में उलझाने वाला 4. किसी सत्य बात की अनदेखी करने वाला 5. टालमटोल करने वाला।

अपलाभ *पुं.* (तत्.) अनुचित रूप से अर्जित लाभ, अत्यधिक लाभ, अनुचित मुनाफा।

अपलाभन *पुं.* (तत्.) [अप+लाभन] 1. गलत ढंग से लाभ प्राप्त करना 2. अनुचित कमाई 3. मुनाफाखोरी।

अपलाभवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) [अप+लाभवृत्ति] 1. व्यक्ति की एक मानसिक वृत्ति जिससे वह अनुचित लाभ उठाने की चेष्टा करता है 2. अनुचित ढंग से लाभ प्राप्ति की प्रवृत्ति 3. मुनाफाखोरी।

अपलोक *पुं.*(तत्.) [अप+लोक] 1. लाँछन, बदनामी 2. अपयश 3. बुरा लोक (कर्म जन्य प्राप्त होने वाले रौख, नरक आदि लोक) 4. अपवाद जैसे- राम राज्य में सीता को व्यर्थ अपलोक लगा था।

अपवंचन *पुं.* (तत्.) टाल देना, धोखा देना, बहाना बनाकर व्यक्ति या संस्था आदि को देय राशि आदि उसे न देना evasion

अपवचन *पुं.* (तत्.) अपशब्द, गाली, निंदा slander विलो. सुवचन।

अपवर्ग *पुं.* (तत्.) 1. क्रिया का संपूर्ण या समाप्त होना 2. मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण 3. अपवाद 4. त्याग, दान।

अपवर्जन *पुं.* (तत्.) 1. विचार क्षेत्र से बाहर रखना 2. प्रवेश से वंचित करना 3. समाविष्ट न करना 4. संरक्षण से बाहर रखना 5. त्याग, छोड़ना exclusion 6. दान 7. मुक्ति, ऋण मोचन 8. वादा पूरा करना।

अपवर्जित *वि.* (तत्.) छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, मुक्त।

अपवर्तक *वि.* (तत्.) [अप+वर्तक] 1. अपवर्तन= विभाजन करने वाला गणि. किसी संख्या का वह विभाजक जिससे भाग दिये जाने पर केवल शून्य ही बचता है, जैसे- 11 दोने 77 संख्या के अपवर्तक है।

अपवर्तन *पुं.* (तत्.) 1. परिवर्तन, उलटफेर 2. दूसरी दिशा में (ले) जाना abduction 3. भौति. प्रकाश-किरण का एक माध्यम से दूसरे माध्यम में प्रवेश करते समय टेढ़ा हो जाना refraction

अपवर्तनांक *पुं.* (तत्.) प्रकाश-किरण के अपवर्तन का मान जो आपतित तथा परावर्तित किरण के मध्य का अनुपात होता है refractive index

अपवर्तित *वि.* (तत्.) [अप+वर्तित] 1. जिसका अपवर्तन किया गया हो 2. सामान्य विभाजक से निःशेष विभक्त किया हुआ 3. पृथक किया हुआ 4. घटा हुआ 5. हटाया हुआ।

अपवर्त्य *वि.* (तत्.) 1. जिसका अपवर्तन संभव हो 2. गणि. ऐसी संख्या जिसे किसी दूसरी संख्या से पूरा-पूरा भाग दिया जा सकें multiple

अपवहन *पुं.* (तत्.) शा.अर्थ. दूर ले जाया जाना कृषि. वायु द्वारा भूमि की सतह की मिट्टी से सूक्ष्म कणों के हटने की क्रिया।

अपवाद *पुं.* (तत्.) 1. निंदा, अपयश 2. विवाद 3. प्रतिवाद, खंडन 4. किसी नियम को बाधित करने वाला विशेष नियम या तथ्य।

अपवादक *वि.* (तत्.) 1. निंदा करनेवाला, निंदक 2. विरोधी 3. बाधक।

अपवादानुदान *पुं.* (तत्.) वित्तीय वर्ष की चालू व्यवस्था का भाग न होने पर भी अपवाद स्वरूप स्वीकृत विशेष अनुदान।

अपवादिक *वि.* (तत्.) [अपवाद+इक] 1. जो अपवाद से संबंधित हो 2. अपयश या निंदा से युक्त 3. सामान्य नियम से जो बाधित हो।

अपवादित *वि.* (तत्.) निंदित, जिसकी निंदा की गई हो।

अपवादी *वि.* (तत्.) 1. निंदा करने वाला, बुराई करनेवाला 2. बाधक 3. अपवाद-स्वरूप।

अपवारण *पुं.* (तत्.) 1. व्यवधान, रोक, रुकावट 2. आच्छादन, ओट 3. अंतर्धान।

अपवारित *वि.* (तत्.) [अप+वारित] 1. छिपा हुआ, गूढ 2. हटाया हुआ 3. अंतर्हित 4. ढका हुआ *पुं.* साहि. 'नाट्योक्ति (नियतश्राव्य) के दो भेदों में से एक, रंगमच में अभिनय करते हुए एक

पात्र का मुँह दूसरी ओर करके अन्य पात्र से गोपनीय बात करना।

अपवाह *पुं.* (तत्.) 1. बहा ले जाना; दूर ले जाना, जल का निकास drainage 2. किसी स्थल से हटाकर अन्यत्र ले जाया जाना, विस्थापन। drift

अपवाहक *वि.* (तत्.) [अप+वाहक] 1. किसी वस्तु आदि को ढोने या ले जाने वाला 2. गलत स्थान पर पहुँचाने वाला *पुं* 3. किसी वस्तु को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने का साधन या यंत्र।

अपवाहन *पुं.* (तत्.) अपवहन करना।

अपवाह तंत्र *पुं.* (तत्.) नदियों अथवा जल के निकास की वह व्यवस्था जो किसी स्थान के संपूर्ण जल को बहा कर ले जाती है drainage system

अपवाह पाइप *पुं.* (तत्.) अवांछित या गंदे जल की निकासी के लिए लगाया गया पाइप drain pipe

अपवाहिका *स्त्री.* (तत्.) जन या गंदगी बहा ले जाने वाली नाली।

अपवाहित *वि.* (तत्.) [अप+वाहित] 1. जिसका अपवहन किया गया हो 2. अनजाने किसी अनुचित स्थान पर पहुँचा या पहुँचाया गया। 3. स्थानांतरित।

अपविकास *पुं.* (तत्.) शारीरिक वृद्धि में कमी या असंतुलन।

अपवित्र *पुं.* (तत्.) 1. जो पवित्र न हो, अशुद्ध, नापाक 2. मैला, मलिन।

अपवित्रता *स्त्री.* (तत्.) 1. अशुद्धि 2. मलिनता; विलो. पवित्रता।

अपविद्या *स्त्री.* (तत्.) कुविद्या, अविद्या।

अपविद्ध *वि.* (तत्.) वह शिशु जिसे उसके माता-पिता ने जन्मते ही त्याग दिया हो *पुं.* अज्ञात माता-पिता द्वारा त्यक्त शिशु। foundling

अपविन्यस्त श्रेणी *स्त्री.* (तत्.) वह श्रेणी series जो किसी श्रेणी से पदों के क्रम को बदल देने पर प्राप्त होती है deranged series

अपविन्यास *पु.* (तत्.) 1. अव्यवस्थित क्रम में रखना या होना 2. मानसिक संभ्रम की स्थिति 3. सदसद्विवेक का लोप। disorientation

अपवृक्कता *स्त्री.* (तत्.) [अप+वृक्क+ता प्रत्यय] 1. वृक्क (गुर्दे) से संबंधित कोई बीमारी 2. गुर्दे में कोई विकार/गुर्दे की खराबी।

अपवृद्धि *स्त्री.* (तत्.) 1. जीव. किसी वनस्पति या प्राणी के किसी अंग के स्थान विशेष में हुई असामान्य वृद्धि excresence 2. आवश्यकता से अधिक एवं हानिकर वृद्धि।

अपवृद्धि *स्त्री.* (तत्.) [अप+वृद्धि] चिकि. 1. शरीर में में होने वाली विकारजन्य वृद्धि जैसे- मस्से का होना, किसी गाँठ का बनना आदि।

अपवेशन *पुं.* (तत्.) 1. बैठना 2. किसी कार्य में संलग्न होना 3. जम जाना।

अपव्यय *स्त्री.* (तत्.) फिजूलखर्ची, निरर्थक खर्च, अधिक व्यय।

अपव्ययी *वि.* (तत्.) 1. अधिक या गलत ढंग से खर्च करनेवाला, फिजूलखर्च।

अपव्यवहार *पुं.* (तत्.) [अप+व्यवहार] 1. किसी के साथ गलत ढंग का व्यवहार 2. निकृष्ट आचरण/बुरा बर्ताव 3. अमर्यादित व्यवहार।

अपशकुन *पुं.* (तत्.) अशुभ शकुन, असगुन, अशुभ लक्षण विलो. शकुन।

अपशब्द *पुं.* (तत्.) 1. गाली, अशिष्ट शब्द 2. अशुद्ध शब्द।

अपशल्कन *पुं.* (तत्.) [अप+शल्कन] प्राणि. 1. शरीर में किसी कमी या विकृति के कारण मृत ऊतक, त्वचा या अस्थि की परतों का पृथक्करण/ अलग होना 2. अपपत्रण।

अपशिष्ट *वि.* (तत्.) [अप+शिष्ट] 1. वह अवशिष्ट पदार्थ जो किसी वस्तु के उपयोग के पश्चात् प्रायः त्याज्य होता है 2. बचा हुआ अनुपयोगी पदार्थ।

अपशु *वि.* (तत्.) [अ+पशु] 1. जो पशु न हो, पशु से भिन्न 2. जो पशुरहित हो अर्थात्, जिसके पास पशुओं का अभाव हो 3. समझदार।

अपशोक *वि.* (तत्.) [अप+शोक] 1. जो शोक रहित हो *पुं.* अशोक वृक्ष।

अपश्री *वि.* (तत्.) शोभारहित, श्रीहीन।

अपश्रुति *स्त्री.* (तत्.) 1. दे. अवश्रुति 2. अपकीर्ति।

अपश्वास *पुं.* (तत्.) अपानवायु अथवा, गुदा मार्ग से निकलने वाली वायु।

अपसमायोजन *पुं.* (तत्.) [अप+समायोजन] 1. किसी वस्तु, व्यक्ति से संबंधित गुणों/विचारों आदि का किसी अन्य के साथ ठीक से तालमेल न होना 2. गलत ढंग से मिलन या मिलान।

अपसरण *पुं.* (तत्.) 1. भाग जाना, निकल जाना 2. निकल भागने का रास्ता 3. नियत बिंदु से दूसरी ओर चले जाना divergence

अपसर्जन *पुं.* (तत्.) 1. विसर्जन 2. त्याग, छोड़ना 3. दान।

अपसर्पण *पुं.* (तत्.) 1. पीछे हटना 2. जासूसी करना।

अपसवना *अ.क्रि.* (तत्. अपस्रवण) 1. कहीं से सब की उपस्थिति में चुपके से निकल जाना 2. चुपचाप बाहर हो जाना, खिसक जाना 3. किसी स्थान से भाग जाना।

अपसव्य *वि.* (तत्.) 1. सव्य अर्थात् बाएँ के विपरीत, दाहिना, दक्षिण 2. जिसका यज्ञोपवीत दाहिने कंधे पर हो।

अपसव्य परिक्रमा *स्त्री.* (तत्.) [अपसव्य-परिक्रमा] 1. किसी देवी या देवता आदि को मध्य से रखकर उसके दाहिनी तरफ से चारों ओर गोलाकार परिक्रमा करना 2. दाहिनी ओर से चक्कर लगाना 3. दक्षिणवर्त परिक्रमा विलो. सव्यपरिक्रमा

अपसाधारण *वि.* (तत्.) साधारण से भिन्न।

अपसामान्य *वि.* (तत्.) सामान्य मानक स्थिति से भिन्न, असाधारण abnormal

अपसामान्यता *स्त्री.* (तत्.) अपसामान्य होने की स्थिति abnormality

अपसामान्य पौद *स्त्री.* (तत्.) पौद जिसमें अनुकूल पर्यावरण में भी स्वस्थ पौद के रूप में परिवर्धित होने की क्षमता नहीं होती दे. पौद।

अपसामान्य मनोविज्ञान *पुं.* (तत्.) मनोविज्ञान की वह शाखा जिसमें व्यक्ति के व्यवहार की विलक्षणता, विकारों, मानसिक, न्यूनताओं आदि का अध्ययन किया जाता है। abnormal psychology

अपसार *पुं.* (तत्.) 1. बाहर जाना या निकलना 2. बाहर जाने का मार्ग 3. बाहर निकली वस्तु।

अपसारण *पुं.* (तत्.) 1. बलपूर्वक निकाल कर बाहर करना 2. नियम भंग करने के कारण हटा देना 3. दूर कर देना।

अपसारित *वि.* (तत्.) 1. निष्कासित, निकाला गया 2. दूर किया गया।

अपसारी *वि.* (तत्.) 1. अपसारण करने वाला 2. परस्पर एक दूसरे से भिन्न या बिरुद्ध दिशा में गमन करने वाले या रहने वाले 3. पृथक्-पृथक्, भिन्न-भिन्न 4. परस्पर विरोधी।

अपसारी श्रेढ़ी/श्रेणी *स्त्री.* (तत्.) गणि. वह अनन्त श्रेणी जिसका योगफल कभी एक निश्चित संख्या में नहीं होगा, अर्थात्-अनंत होता है divergent series विलो. अभिसारी श्रेढ़ी/श्रेणी।

अपसिद्धांत *पुं.* (तत्.) ऐसा विचार जो सिद्धांत के विपरीत हो, विरोधी सिद्धांत, भ्रमजनित सिद्धांत।

अपसृत *वि.* (तत्.) [अप+सृत] 1. अपने किसी दायित्व या अधिकार को छोड़कर भागा हुआ 2. जिसे किसी स्थान या पद से हटा दिया गया हो 3. किसी चीज को बेहतरीन फैलाया हुआ 4. जो फेंका हुआ हो 5. युद्ध क्षेत्र से भागा हुआ।

अपसृति *स्त्री.* (तत्.) [अप+सृति] 1. किसी स्थान से पीछे हट जाने की स्थिति 2. दूर भागने की

स्थिति 3. निकल भागने का मार्ग/रास्ता/अपसरण 4. वैचारिक भिन्नता या भेद।

अपसौर *वि.पुं.* (तत्.) दे. रवि-उच्च।

अपस्कर *पुं.* (तत्.) 1. ढाँचा 2. पहिए को छोड़कर गाड़ी का शेष हिस्सा 3. विष्ठा, मल 4. योनि 5. गुदा।

अपस्तुति *स्त्री.* (तत्.) 1. निंदा 2. अनुचित, प्रशंसा विलो. स्तुति।

अपस्थानिक *वि.* (तत्.) गलत जगह से संबंधित।

अपस्थानिक कलिका *स्त्री.* (तत्.) कृषि. पौधे के अपसामान्य स्थान (जैसे जड़, पत्ती अथवा पौरी) से निकली कलिका।

अपस्थानिक जड़ *स्त्री.* (तत्.) कृषि अपने सामान्य स्थान को छोडक़र पौधे के अन्य स्थान से निकली हुई जड़।

अपस्नात *वि.* (तत्.) [अप+स्नात] 1. अशौच स्नान 2. दाह संस्कार के बाद स्नान किया हुआ 3. पहले से नहाये हुए जल में स्नान किया हुआ 4. अप स्नान किया हुआ, अपवित्र स्थान।

अपस्नान *पुं.* (तत्.) किसी संबंधी की मृत्यु के बाद किया जाने वाला स्नान, कृतक स्नान।

अपस्फोट-रोधी यौगिक *पुं.* (तत्.) रसा. पदार्थ जो आंतरिक दहन इंजन में प्रयुक्त पेट्रोल में मिलाए जाने पर विस्फोटन को मंद कर देता है और ऊर्जा-क्षय को कम करता है।

अपस्मार *पुं.* (तत्.) 1. मिर्गी, एक प्रकार का तंत्रिकीय रोग, जिसमें रोगी को दौरे पड़ते हैं और वह मूर्छित हो कर गिर पड़ता है 2. स्मरणशक्ति की हानि। epilepsy

अपस्मारी *वि.* (तद्.) 1. अपस्मार का रोगी, मिर्गी का रोगी 2. विस्मरणशील।

अपस्मृति *वि.* (तत्.) भुलक्कड़, भूल जानेवाला, स्मृतिभ्रष्ट, विभ्रमित *स्त्री. (तत्.)* खराब स्मरण शक्ति।

अपस्वर *पुं.* (तत्.) संगी. गलत स्वर, या ध्वनि।

अपस्वार्थ *पुं.* (तत्.) [अप+स्वार्थ] 1. तुच्छ स्वार्थ, केवल अपना स्वार्थ 2. अपना मतलब।

अपह *वि.* (तत्.) [अप+ह] [समासांत पद में प्रयुक्त होने वाला शब्द] किसी बात या चीज का निवारण या नाश करने वाला जैसे- मानापह (मान+अपह) वित्तापह (वित्त+अपह) वि. *स्त्री.* अंधकार+ऊपह=अंधकारापहा। अंधकार को नष्ट करने वाली संशयापहा (संशय+अपहा) संशय का निवारण करने वाली कोई उक्ति।

अपहचाना *वि.* (तद्.) अपरिचित, जिस व्यक्ति या वस्तु का गुण-दोष जाना-पहचाना न हो। अनजान।

अपहन *वि.* (तत्.) (समस्त पद के अंत में प्रयुक्त) दूर करने वाला, हटानेवाला 2. पीछे कर देने वाला, नष्ट करने वाला उदा. दुःखापहन।

अपहनन *पुं.* (तत्.) 1. दूर करना, हटाना, पीछे हटाना 2. मारना।

अपहरण *पुं.* (तत्.) किसी व्यक्ति को बलात् उठा ले जाने की क्रिया। kidnapping

अपहरणीय *वि.* (तत्.) अपहरण योग्य।

अपहर्ता *पुं.* (तत्.) 1. अपहरण करनेवाला 2. छीननेवाला।

अपहसित *वि.* (तत्.) 1. जिसका उपहास किया गया हो, जिसका मजाक उड़ाया गया हो पुं व्यर्थ की हँसी, अशिष्टतापूर्ण हास्य। 2. असमय हास्य। 3. (नाट्य) हास्य का एक प्रकार जिसमें हँसते-हँसते आँख में आँसू आ जाते हैं या अन्य अंग जैसे हाथ गरदन आदि हिलने लगते हैं।

अपहानि *स्त्री.* (तत्.) प्रतिष्ठा, हित आदि को पहुँची हानि, हित का अभाव, अहित। harm

अपहानिकर *वि.* (तत्.) जिससे किसी को शारीरिक या मानसिक पीड़ा हो।

अपहार *पुं.* (तत्.) 1. चोरी, लूट, पराया माल उठा ले जाना 2. अपहरण।

अपहारक *वि.* (तत्.) छीनने वाला, बलात् ले जानेवाला *पुं.* 1. डाकू, लुटेरा 2. अपहर्ता।

अपहारित *वि.* (तत्.) 1. अपहरण किया हुआ, छीना हुआ, लूटा हुआ।

अपहारी *वि.* (तत्.) बलपूर्वक हरण करने वाला, छीनने-झपटने वाला *पुं* अपहरण हरने वाला व्यक्ति डाकू, चोर।

अपहार्य *वि.* (तत्.) 1. अपहरण के योग्य 2. छीनने योग्य 3. चोरी के योग्य।

अपहास *पुं.* (तत्.) अनुचित हँसी, अनवसर हँसी। मजाक, उपहास।

अपहित *पुं.* (तत्.) प्रतिष्ठा, हित आदि को पहुँची हानि, हित का अभाव, अहित।

अपहृत *वि.* (तत्.) 1. लूटा हुआ, चुराया हुआ 2. छीना हुआ।

अपहृतज्ञान *वि.* (तत्.) 1. जिसका ज्ञान छिन गया हो, चुराए हुए ज्ञान वाला 2. खोई सुध-बुध वाला।

अपहृत व्यक्ति *पुं.* (तत्.) व्यक्ति जिसका अपहरण कर लिया गया हो।

अपहृतश्री *वि.* (तत्.) जिसकी शोभा छीन ली गई हो, श्रीहीन, निस्तेज *पुं.* पराजित व्यक्ति।

अपहेला *स्त्री.* (तत्.) अवमानना, अपमान, भर्त्सना, तिरस्कार।

अपह्नुत *वि.* (तत्.) छिपा हुआ।

अपह्नुति *स्त्री.* (तत्.) 1. दुराव, छिपाव, बहाना 2. 2. एक अलंकार जिसमें उपमेय का निषेध करके उपमान की स्थापना की जाती है जैसे- लक्ष्मीबाई नारी नहीं, साक्षात् दुर्गा थी।

अपह्रासन *पुं.* (तत्.) ह्रास होना कमी आना, क्षय होना।

अपांक्त *वि.* (तत्.) 1. पंक्ति में साथ बैठने या भोजन करने के अयोग्य (ब्राह्मण) 2.जातिबहिष्कृत।

अपांक्तेय *वि.* (तद्.) दे. अपांक्त।

अपांग *वि.* (तत्.) दे. अपंग, अंगहीन, अंगरहित, अपाहिज। *पुं.* (तत्.) 1. आँख की कोर 2. अनंग, कामदेव 3. संप्रदाय-सूचक तिलक।

अपांगता *स्त्री.* (तत्.) दे. अपंगता

अपांग दृष्टि *स्त्री.* (तत्.) तिरछी चितवन।

अपांनाथ *पु.* (तत्.) 1. जलनिधि, समुद्र, सागर 2. वरुण।

अपाक *पुं.* (तत्.) 1. पकने या पचने का अभाव, अजीर्ण, अपच 2. कच्चापन *वि.* (तत्.) अधपका, कच्चा।

अपाकरण *पुं.* (तत्.) 1. दूर हटाना, निराकरण करना 2. अस्वीकार करना। 3. ऋण चुकाना या कर्ज अदा करना। 4. किए जाते हुए किसी व्यवस्था को हटा देना।

अपाक्ष *वि.* (तत्.) 1. प्रत्यक्ष, आँखों के सामने उपस्थित 2. भद्दी आँखों वाला 3. नेत्रहीन वन. जो अक्ष से हटा हुआ हो।

अपाच्य *वि.* (तत्.) 1. जो पच न सके 2. जो पकाया न जा सके विलो. पाच्य।

अपाटव *पुं.* (तत्.) पटुता का अभाव, अकुशलता, चातुर्यहीनता। (*वि.*) 1. अपटु, अनाड़ी 2. भद्दा।

अपाठ्य *वि.* (तत्.) जो पढ़ा न जा सके, जो पढ़ने योग्य न हो; पाठ्येतर।

अपाणिनीय *वि.* (तत्.) वैयाकरण पाणिनि द्वारा प्रतिपादित नियमों के विपरीत वि. पाणिनि के बनाए सिद्धांतों के विरूद्ध किए गए व्याकरणिक प्रयोग अपाणिनीय प्रयोग कहे जाते हैं।

अपाती *वि.* (तत्.) शा.अर्थ नहीं गिरने वाला कृषि.वन. वृद्धिकाल के बाद और प्रयोजन पूर्ण हो जाने पर भी लगा रहने वाला (अंग), जैसे- बैंगन के फल बन जाने पर भी उस पर लगे रह गए बाह्य दल।

अपाती वन *पुं.* अपर्णपाती वन, वन जिसके पत्ते झड़ते नहीं सदा हरे रहते हैं, सदाबहार वन।

अपात्र *वि.* (तत्.) (किन्हीं नियमादि के अनुसार) किसी पद या दान वस्तु आदि को प्राप्त करने के लिए अयोग्य व्यक्ति, कुपात्र, शैक्षिक दृष्टि से पूर्णतः अर्हता प्राप्त होने पर भी अनुभवहीनता के कारण वह इस पदोन्नति के लिए अपात्र है विलो. पात्र।

अपात्रीकरण *पुं.* (तत्.) अयोग्य ठहराना, निंदित करना, श्रद्धा के दान आदि लेने के लिए अयोग्य घोषित करना।

अपाद *वि.* (तत्.) पादहीन, बिना पैरवाला, पंगु।

अपादान *पुं.* (तत्.) 1. अलगाव, विभाग 2. व्याकरण में पांचवाँ कारक या पांचवीं विभक्ति जिसका संकेतक 'से' (अलगाव- बोधक) है उदा. 'पेड़ से पत्ता गिरा; इस वाक्य में 'से' अपादान कारक का सूचक है।

अपान *पुं.* (तत्.) 1. पाँच प्रकार की प्राण वायु में से एक जो अधोमुखी होता है 2. अंदर खींची जानेवाली साँस 3. गुदा से निकलने वाली वायु, अधोवायु 4. गुदा *वि. (तत्.)* 1. सर्व दुःख विनाशक, ईश्वर का विशेषणवाची शब्द 2. *वि.* जो पान अर्थात् पीने के योग्य न हो।

अपानद्वार *पुं.* (तत्.) अपानवायु (नीचे की ओर रहने वाली प्राण वायु) के निकलने का द्वार या मार्ग, गुदामार्ग।

अपानन *पुं.* (तत्.) 1. श्वसन प्रक्रिया, साँस लेने की क्रिया 2. मल-मूत्र त्याग।

अपानृत *वि.* (तत्.) 1. जो अनृत अर्थात् असत्य न हो, अमिथ्या, सत्य।

अपाप *पुं.* (तत्.) जो पाप न हो, पुण्य, सुकर्म। *वि.* (तद्.) निष्पाप, पापरहित विलो. पाप।

अपामार्ग *पुं.* (तत्.) आयु. प्रयोग में लाई जाने वाली वनस्पति, चिड़चिड़ी नामक औषधीय पौधा।

अपाय *पुं.* (तत्.) 1. अलगाव 2. हट जाना 3. नाश अनिष्ट, हानि। *वि.* 1. पंगु 2. निरुपाय।

अपायकर *वि.* (तत्.) 1. जिससे क्षति हो 2. अनिष्टकर, हानिकर, अस्वास्थ्य कर।

अपायी *वि.* (तत्.) 1. हानिप्रद 2. नष्ट होने वाला 3. अलग रहने वाला 4. अदृश्य।

अपार *वि.* (तत्.) जिसे पार न किया जा सके, असीम, अपरिमित, अत्यंत, अनंत *पुं.* 1. नदी का दूसरा किनारा 2. सागर, समुद्र।

अपारग *वि.* (तत्.) 1. जो पार नहीं जा सके। 2. जिसे देखा न जा सके 3. अयोग्य।

अपारगम्य *वि.* (तत्.) 1. पार न किए जाने योग्य, आखिर तक नहीं पहुँचने योग्य। 2. जिसे स्थिति या विषय की पूरी जानकारी न हो।

अपारदर्शक *वि.* (तत्.) जो पारदर्शी न हो, जिसके पार जा सके, अपारदर्शी विलो. पारदर्शक।

अपारदर्शिता *स्त्री.* (तत्.) 1. पारदर्शी न होने की स्थिति 2. वह स्थिति जिसमें प्रकाश दूसरी तरफ न जा सके विलो. पारदर्शिता।

अपारमुखी *वि.* (तत्.) 1. अनेक मुखों वाला 2. अनंत धाराओं वाला।

अपारार्णव [अपार+अर्णव] *पुं.* (तत्.) अपार समुद्र, असीम सागर।

अपार्थक *वि.* (तत्.) 1. निरर्थक, अर्थहीन, अनर्थक, व्यर्थ 2. प्रभावशून्य *पुं.* निरर्थक, असंगत, असत्य तथा निष्प्रयोजन होने के दोष से युक्त (उक्ति) (एक काव्य दोष)।

अपार्थिव *वि.* (तत्.) जो पृथ्वी से संबंधित न हो, अभौतिक, अलौकिक विलो. पार्थिव।

अपालन *पुं.* (तत्.) 1. नियम, व्यवस्था आदि का पालन न किया जाना 2. आज्ञा के अनुरूप कार्य न करना।

अपावन *वि.* (तत्.) अपवित्र, अशुद्ध।

अपावरण *पुं.* (तत्.) 1. खोलना 2. ढकना 3. छिपाना।

अपावर्तन *पुं.* (तत्.) [अप+आवर्तन] पीछे लौटना, पीछे की ओर चले जाना।

अपावशोषण *पुं.* (तत्.) आयु. द्रवों को अवशोषित करने में अंतड़ियों की असमर्थता।

अपावृत *वि.* (तत्.) 1. जो ढका न हो, आवरणहीन, जो बंद न हो 2. स्वतंत्र।

अपावृत्त *वि.* (तत्.) 1. पछाड़ा हुआ 2. भगाया हुआ, हटाया हुआ 3. तिरस्कृत।

अपाहृत करना *स.क्रि.* (तत्.) विधि. नियम, विधि आदि का समाप्त किया जाना। set aside

अपाहिज/अपाहज *वि.* [तत्.+अपादहस्त] 1. लंगड़ा-लूला 2. विकृत अंग वाला, अंगों में विकार वाला 3. लाक्ष. जो काम न करे, निकम्मा।

अपितु *योजक* (तत्.) बल्कि, वरन्, परंतु, साथ ही।

अपिधान *पुं.* (तत्.) 1. आच्छदान, ढक्कन 2. छिपाने का भाव *वि.* पिधान शब्द का अर्थ भी यही है टि. 'पिधान' 'अपिधान' का विलोम नहीं है।

अपिहित *वि.* (तत्.) जो ढका हुआ न हो, खुला, स्पष्ट विलो. पिहित। वि. यद्यपि 'पिधान' और अपिधान समानार्थी हैं, फिर भी 'पिहित' छिपा हुआ तथा 'अपिहित' खुला हुआ इसी अर्थ में रूढ़ हो गए हैं।

अपीत *वि.* (तत्.) 1. जो पीले रंग का न हो, हल्का पीला। 2. जिसे पिया न गया हो।

अपीन *वि.* (तत्.) जो पुष्ट शरीर वाला न हो, दुर्बल, क्षीण, कृशकाय।

अपील *स्त्री.* (अं.) 1. निवेदन, विचारार्थ प्रार्थना 2. 2. किसी न्यायालय या अधिकारी के निर्णय पर उससे बड़े न्यायालय में उच्च अधिकारी के समक्ष विचारार्थ प्रार्थना करना 3. आकर्षण। appeal

अपीलकर्ता *पुं.* (अं.अपील+तत्.कर्ता) उच्चतर न्यायालय या उच्च प्राधिकारी के समक्ष निवेदन करने वाला दे. अपीलार्थी।

अपीलनीय *वि.* (देश.) विधि. वह निर्णय जिसके विरूद्ध उच्चतर न्यायालय में अपील की जा सके।

अपील न्यायालय *पुं.* (अं.अपील+तत्.न्यायालय) वह न्यायालय जिसे अधीनस्थ न्यायालय के निर्णयके विरूद्ध अपील सुनने का अधिकार हो।

अपील प्राधिकारी *पुं.* (तत्.) प्राधिकारी जिसके पास अपील की जा सके।

अपीलार्थी *पुं.* (अं.+तत्.) पक्षकार जो किसी न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध उच्चतर न्यायालय में पुनर्विचार की प्रार्थना करे।

अपीली *वि.* (अं.अपील+हि.ई.प्रत्य.) 1. अपील संबंधी 2. अपील सुनने के लिए सक्षम।

अपीली अधिकारिता *स्त्री.* (अं.+तत्.) विधि. अधीनस्थ न्यायालय के निर्णय के विरूद्ध अपील सुनने की किसी न्यायालय की अधिकार-क्षमता, अधिकार-क्षेत्र या क्षेत्राधिकार।

अपीलीय क्षेत्राधिकार *पुं.* (अं.+तत्.)निर्धारित क्षेत्रों से प्राप्त अपील सुनने का अधिकार।

अपीली श्रम अधिकरण *पुं.* (अं.+तत्.) श्रम अधिकरण के निर्णय के विरुद्ध अपील सुनने वाला उच्चतर अधिकरण। appelative labour tribunal

अपीली सिविल अधिकारिता *स्त्री.* (अं.+अं.तत्.) सिविल मामलों में अपील सुनने की न्यायालय की अधिकार-क्षमता, क्षेत्राधिकार या अधिकार क्षेत्र।

अपुच्छ *वि.* (तत्.) 1. बिना पूँछ का, पुच्छहीन। 2. सीमाहीन।

अपुण्य *पुं.* (तत्.) पुण्य का अभाव, पाप। *वि. (तत्.)* जो पावन न हो, कलुषित विलो. पुण्य।

अपुत्र *वि.* (तत्.) जिसके पुत्र न हो, पुत्रहीन।

अपुत्रिक *वि.* (तत्.) 1. जिसके पुत्र न हो 2. निस्संतान।

अपुनरावर्तन *पुं.* (तत्.) दे. अपुनरावृत्ति।

अपुनरावर्ती *वि.* (तत्.) 1. जिसकी पुनः आवृत्ति न हो 2. फिर नहीं आने वाला या न लौटने वाला।

अपुनरावृत्ति *स्त्री.* (तत्.) पुनरावृत्ति न होने या दोहराए न जाने की स्थिति।

अपुनर्भव *वि.* (तत्.) 1. जो दुबारा न हो, फिर नहीं होने वाला। 2. पुनः जन्म न लेने वाला।

अपुरुष *पुं.* (तत्.) नपुंसक, हिजड़ा *वि.* अमानुषिक, अमानवोचित, कायर विलो. पुरुष।

अपुष्कल *वि.* (तत्.) 1. जो पुष्कल अर्थात् अत्यधिक, पर्याप्त या बहुत काफी न हो, अप्रभूत, थोड़ा, अपर्याप्त।

अपुष्ट *वि.* (तत्.) 1. जिसका (ढंग से) पोषण न हुआ हो 2. दुर्बल, दुबला, कमजोर 3. मंद, क्षीण 4. जिसकी पुष्टि न हो।

अपुष्ट समाचार *पुं.* (तत्.) वह समाचार जिसका कोई प्रामाणिक स्रोत विदित न हो।

अपुष्ट स्रोत *पुं.* (तत्.) वह स्रोत जिसे सम्यक् परिभाषित नहीं किया जा सकता हो।

अपुष्टि *स्त्री.* (तत्.) 1. पुष्ट न होने की स्थिति पोषण-हीनता 2. दुर्बलता 3. आयु. असंतोषजनक पोषण के कारण शरीर के किसी अंग या ऊतक के आकार या उसकी कार्यक्षमता आदि में कमी 4. पुष्टि अथवा सप्रमाण समर्थन का अभाव।

अपुष्प *वि.* (तत्.) पुष्पहीन, न फूलनेवाला *पुं.* गूलर का पेड़।

अपुष्पी पादप *पुं.* (तत्.) वे पादप जिनमें पुष्प नहीं होते विलो. पुष्पी पादप।

अपूज्य *वि.* (तत्.) जो पूजा या सम्मान के योग्य न हो विलो. पूज्य।

अपूठा *वि.* (तत्.) 1. जो पुष्ट या विकसित न हो, अपुष्ट, अधूरा 2. जिसके पास पूरा ज्ञान न हो।

अपूत *वि.* (तद्.) अपुत्र, पुत्रहीन, निपूता।

अपूरा *वि.* (तत्.सं.आपूर्ण) 1. भरा-पूरा, विस्तृत 2. अधूरा।

अपूर्ण *वि.* (तत्.) 1. जो पूर्ण न हो, अधूरा 2. कम, अल्प विलो. पूर्ण।

अपूर्ण पक्ष *पुं.* (तत्.) व्याक. वह क्रिया रूप जिसमें कार्य-व्यापार वक्ता के कथन या लिखित अभिव्यक्ति तक पूर्ण हुआ नहीं माना गया है (अर्थात् शुरू किया गया कार्य अभी तक चल रहा है)। उदा. वह दिल्ली आया है और अभी तक यहीं है imperfect aspect विलो. पूर्ण पक्ष दे. पक्ष।

अपूर्ण पुष्प *पुं.* (तत्.) पुष्प जिसमें नर पुंकेसर तथा स्त्रीकेसर दोनो अंग न हों विलो. पूर्ण पुष्प।

अपूर्ण प्रतियोगिता *स्त्री.* (तत्.) अधूरी प्रतिद्वंद्विता प्रतिद्वंद्विता या होड़, अधूरा विरोध।

अपूर्णता *स्त्री.* (तत्.) 1. अधूरापन 2. न्यूनता, कमी विलो. पूर्णता।

अपूर्णत्व *वि.* (तत्.) अधूरेपन का भाव, अधूरापन, कमी।

अपूर्णभूत *पुं.* (तत्.) क्रिया के भूत काल के रूप का एक भेद जिसमें क्रिया की समाप्ति की प्रतीति नही होती।

अपूर्ण हक *पुं.* (तत्.) विधि. किसी वस्तु पर अधिकार सिद्ध करने वाले पर्याप्त अभिलेखों के न होने के कारण असिद्ध हक imperfect title

अपूर्णांश *पु.* (तत्.) गणि. साधारण लघुगणक के मान का दशमलव के बाद का भाग विलो. पूर्णांश।

अपूर्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. पूर्ति, प्रदाय या संभरण का न होना 2. पूरा न होने की स्थिति 3. निर्धारित शर्तों का पूरा (पालन) न किया जाना।

अपूर्व *वि.* (तत्.) 1. जो पहले न रहा हो 2. अनुपम 3. अद्भुत, अनोखा, विलक्षण *पुं.* 1. परमात्मा, परब्रह्म 2. अदृष्ट फल।

अपूर्वता *स्त्री.* (तत्.) 1. पहले न होने की स्थिति 2. विलक्षणता, अनोखापन।

अपूर्वत्व *पुं.* (तत्.) 1. पहले नही होने का भाव 2. अजनबीपन 3. अद्‌भुत होने का भाव।

अपूर्वदृष्ट *वि.* (तत्.) 1. जो पहले नहीं देखा गया हो, अद्भुत। 2. अजनबी।

अपृक्त *वि.* (तत्.) जो मिश्रित हो, जो पूरा न हो, अपूर्ण असंबद्ध।

अपृथक *वि.* (तत्.) जो अलग न हो, भिन्न हो, पृथक् न हो।

अपेक्षक *वि.* (तत्.) अपेक्षा रखने वाला, ध्यान देने वाला, आदर-सम्मान करने वाला।

अपेक्षण *पुं.* (तत्.) दे. अपेक्षा।

अपेक्षणीय *वि.* (तत्.) अपेक्षा करने योग्य, वांछनीय, आवश्यक।

अपेक्षया *क्रि.वि.* (तत्.) किसी की तुलना में, अपेक्षाकृत।

अपेक्षा *स्त्री.* (तत्.) 1. आकांक्षा, इच्छा, चाह 2. आवश्यकता, जरूरत 2. आशा; भरोसा 3. प्रतीक्षा, इंतजार।

अपेक्षाकृत *क्रि.वि.* (तत्.) तुलना में, मुकाबले में।

अपेक्षातंतु *पुं.* (तत्.) आवश्यकता का सूत्र, आकांक्षाओं का तांता।

अपेक्षात्मक *वि.* (तत्.) अपेक्षा से युक्त, अपेक्षित, तुलनात्मक।

अपेक्षाबुद्धि *स्त्री.* (तत्.) भेदबुद्धि।

अपेक्षित *वि.* (तत्.) जिसकी इच्छा, आकांक्षा या आवश्यकता हो प्रयो. दस में से पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

अपेक्षी *वि.* (तत्.) 1. प्रतीक्षा करने वाला 2. आकांक्षी। वह अपने पत्र के उत्तर का अपेक्षी है।

अपेक्ष्य *वि.* (तत्.) जिसकी अपेक्षा की जाय या जिसकी आवश्यकता हो, वांछनीय।

अपेत *वि.* (तत्.) 1. जो छिपा हो, तिरोहित। 2. रहित 3. वंचित।

अपेय *वि.* (तत्.) जो पीने योग्य नहीं है।

अपेरण *पुं.* (तत्.) खगो. वह लघुविस्थापन जो खगोलीय पिंडों और तारों की आभासी स्थिति में प्रकाश की गति और प्रेक्षक के स्थिति-परिवर्तन के संयुक्त प्रभाव के कारण होता है abrasion तु. विपथन।

अपेल *वि.* (तद्.) 1. जिसे निरस्त या काटा न जाय, अकाट्य। 2. अटल।

अपैतृक *वि.* (तत्.) जो पैतृक न हो, जो पूर्वजों से संबद्ध न हो विलो. पैतृक।

अपोढ *वि.* (तत्.) 1. हटाया गया, जिसे निरस्त कर दिया गया हो, बाधित, निकाला गया 2. भू.वि. नदियों द्वारा बहाकर लाई गई मिट्टी, बजरी आदि का ढेर।

अपोढ़ *वि.* (देश.सं.अप्रौढ़) 1. जो प्रौढ़ न हो 2. अपरिपक्व।

अपोत्साहक *वि.* (तत्.) गलत काम के लिए उत्साहित करने वाला, अपराध के लिए प्रोत्साहित करने वाला।

अपोषण *पुं.* (तत्.) 1. पोषण का अभाव, लालन-पालन का अभाव 2. असहायता 3. कुपोषण।

अपोह *पुं.* (तत्.) 1. (शंका का) निराकरण 2. हटाना 3. बहस तक-वितर्क 4. जैन वह ज्ञान जो संशय के मूल अर्थात् विकल्प का निराकरण कर दे।

अपोहन *पुं.* (तत्.) आयु. उपचार की एक तकनीक जिसमें गुर्दे के काम न करने की स्थिति में रुधिर से वर्ज्य पदार्थों को हटा दिया जाता है dialysis

अपोहनीय *वि.* (तत्.) हटाने लायक, दूर करने योग्य।

अपोह्य *वि.* (तत्.) दे. अपोहनीय।

अपौरषेय *वि.* (तत्.) 1. अमानव-कृत, अमानवीय, अतिमानवीय 2. कायरतापूर्ण।

अपौरुष *वि.* (तत्.) 1. पुरुषत्वहीन, कायर 2. ईश्वरीय, दैवी *पुं.* *(तत्.)* 1. पौरुष का अभाव 2. दैवी शक्ति विलो. पौरुष।

अपौरुषेय *वि.* (तत्.) 1. जिसमें पौरुष का अभाव हो, डरपोक कायर 2. अलौकिक पुरुष की शक्ति से बाहर का जैसे- वेद अपौरुषेय हैं।

अप्रकंप *वि.* (तत्.) कंपनहीन, स्थिर। विलो. प्रकंप।

अप्रकट *वि.* (तत्.) 1. जो सामने न हो, जो प्रकट रूप में न हो, छिपा हुआ 2. अनभिव्यक्त भाषा. व्यक्त रूप मे न होने पर भी परिवेश से ज्ञात, जैसे 'अनेक घर' में घर का बहुवचनत्व 3. प्रच्छन्न, गूढ, छिपा हुआ 4. अप्रत्यक्ष।

अप्रकटित *वि.* (तत्.) दे. अप्रकट।

अप्रकटित आय *स्त्री.* (तत्.) वह आमदनी या आमदनी का वह हिस्सा जिसका उल्लेख आयकर विवरणी में न किया गया हो। undisclosed income

अप्रकरण *पुं.* (तत्.) 1. जो प्रकरण या मुख्य विषय से संबंधित न हो 2. अप्रासंगिक, असंबद्ध 3. आकस्मिक विषय विलो. प्रकरण।

अप्रकांड *वि.* (तत्.) 1. जो उत्तम या सर्वश्रेष्ठ नहीं हो 2. (प्रकांड अर्थात्) वृक्ष के तने या शाखा से भिन्न या इनसे रहित।

अप्रकाश *पुं.* (तत्.) प्रकाश का अभाव, अंधकार विलो. प्रकाश।

अप्रकाशनीय *वि.* (तत्.) 1. प्रकाश या प्रकट करने योग्य नहीं हों 2. पत्र. किसी कारण प्रकाशित करने के लिए अयोग्य।

अप्रकाशित *वि.* (तत्.) 1. जो सर्वसाधारण के सामने न रखा गया हो 2. जो प्रकाशित न हो, प्रकाश-रहित 3. छिपा हुआ, गुप्त विलो. प्रकाशित।

अप्रकाश्य *वि.* (तत्.) दे. अप्रकाशनीय।

अप्रकृत *वि.* (तत्.) 1. जो मूल या मुख्य न हो 2. प्रस्तुत विषय से असंबद्ध 3. अप्राकृतिक, कृत्रिम, बनावटी।

अप्रकृति *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रकृति या स्वाभाविक रूप का अभाव 2. विकृति।

अप्रकृतिस्थ *वि.* (तत्.) 1. जो अपने मूल स्थिति में न हो 2. स्वाभाविक अवस्था से रहित, रोगी, अस्वस्थ्य 3. बेचैन, परेशान।

अप्रकृष्ट *वि.* (तत्.) जो प्रकृष्ट (उत्कृष्ट या प्रधान) न हो 1. क्षुद्र 2. हीन 3. बुरा 4. निम्न *पुं.* (तत्.) कौवा।

अप्रखर *वि.* (तत्.) 1. जो तेज न हो 2. मृदु, कोमल 3. आलसी विलो. प्रखर।

अप्रगंड *वि.* (तत्.) आयु. जिसका शरीर भुजाहीन हो।

अप्रगंडशीर्षता *स्त्री.* (तत्.) प्राणी. शरीर में सिर और भुजाओं का न होना।

अप्रगल्भ *वि.* (तत्.) 1. अपरिपक्व, अप्रौढ़ 2. विनम्र 3. ढीला विलो. प्रगल्भ।

अप्रचलन *पुं.* (तत्.) सा.अर्थ. प्रचलित न होने की स्थिति या भाव वाणि. नई तकनीक के आविष्कार के फलस्वरूप पुराने उपकरणों का अनुपयोगी हो जाना, जैसे- इलेक्ट्रॉनिक कॉपियर के बाजार में आ जाने से डुप्लिकेटिंग मशीन अप्रचलित हो गई हैं।

अप्रचलित *वि.* (तत्.) 1. जो प्रचलन में न हो, अप्रयुक्त 2. लुप्त विलो. प्रचलित।

अप्रचारित *वि.* (तत्.) जिसका प्रचार-प्रसार न किया गया हो विलो. प्रचारित।

अप्रचोदित *वि.* (तत्.) 1. अप्रेरित, अनाज्ञप्त, अनिर्दिष्ट 2. अवांछित।

अप्रच्छन्न *वि.* (तत्.) 1. जो प्रच्छन्न अर्थात् ढका या छिपा न हो, खुला हुआ, विवृत 2. स्पष्ट विलो. प्रच्छन्न।

अप्रज (अप्रजक) *वि.* (तत्.) संतान रहित (व्यक्ति), मानव-रहित (बस्ती) ।

अप्रज्ञ *वि.* (तत्.) प्रज्ञाशून्य, मंदबुद्धि, बुद्धिहीन, मतिमंद *पुं.* मूर्ख।

अप्रतिकर *वि.* (तत्.) विपरीत (कार्य) न करने वाला, विश्वासपात्र, विश्वस्त।

अप्रतिकार *पुं.* (तत्.) उपाय या बदले का अभाव *वि. (तत्.)* जिसका उपाय या जिसकी तदबीर न हो सके, असाध्य, लाइलाज।

अप्रतिकारी *वि.* (तत्.) 1. बिना प्रतिघात का, जिसको कोई प्रतिघात न हो अर्थात् जो किसी आघात, धक्के, रुकावट या बाधा से बाधित न हो 2. बदला न लेने वाला विलो. प्रतिघात।

अप्रतिज्ञात *वि.* (तत्.) 1. जिसके विषय में किसी प्रकार की प्रतिज्ञा या आश्वासन न दिया हो। 2. जिसे स्वीकार नहीं किया गया हो।

अप्रतिदेय *वि.* (तत्.) 1. जिसे बदले में कुछ दिया न जा सके 2. जिसे लौटाया न जा सके, न लौटाने योग्य।

अप्रतिद्वंद्व *वि.* (तत्.) 1. जो बराबरी का न हो 2. 2. जिसमें शत्रुता का अभाव हो।

अप्रतिपक्ष *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई प्रतिपक्ष, विरोधी या प्रतिस्पर्धी न हो, विरोधहीन 2. बेजोड़।

अप्रतिपत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रतिपत्ति का अभाव: 2. ज्ञान या बुद्धि का अभाव 3. दृढ संकल्प का अभाव 4. प्राप्ति या उपलब्धि का अभाव।

अप्रतिपन्न *वि.* (तत्.) 1. जिसे पूरा या शुरू न किया गया हो 2. स्थापित 3. प्रमाणित 4. अज्ञात या अनिश्चित कोई बात या विषय।

अप्रतिबंध *पुं.* (तत्.) 1. प्रतिबंध या रुकावट न होने की स्थिति 2. स्वच्छंदता विलो. प्रतिबंध।

अप्रतिबद्ध *वि.* (तत्.) 1. जिस पर प्रतिबंध न हो, प्रतिबंध रहित, बाधा रहित 2. मनमाना।

अप्रतिबल *वि.* (तत्.) दे. अप्रतिद्वंद्व।

अप्रतिभ *वि.* (तत्.) 1. प्रतिभा-रहित, प्रतिभाशून्य 2. हतप्रभ 3. सुशील, विनम्र 4. स्फूर्ति रहित।

अप्रतिभट *पुं.* (तत्.) जो वीर योद्धा विरोधी पक्ष का न हो, जो शत्रुसेना का योद्धा नही हो।

अप्रतिभा *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रतिभा हीनता, प्रतिभा का अभाव 2. दब्बूपन विलो. प्रतिभा।

अप्रतिभूत *वि.* (तत्.) (ऐसा ऋण) जो कर्जदार की कोई संपत्ति गिरवी रखे बिना उसे दिया गया हो, प्रतिभूति-रहित।

अप्रतिम *वि.* (तत्.) जिसकी (दूसरी) प्रतिमा, प्रतिबिंब या अनुकृति न हो, जिसके समान दूसरा न हो, अद्वितीय, बेजोड़। ।

अप्रतिमान *वि.* (तत्.) जिसका अन्य दृष्टांत न हो, अप्रतिम, अद्वितीय, बेजोड़ विलो. प्रतिमान।

अप्रतिमानता *स्त्री.* (तत्.) अतुलनीय होने की स्थिति/भाव अद्वितीयता।

अप्रतिरथ *वि.* (तत्.) जो वीरता में अनोखा या अनुपम हो पुं. अनुपम वीर।

अप्रतिरूप *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई प्रतिरूप न हो 2. अद्वितीय, अनुपम।

अप्रतिरोध *वि.* (तत्.) प्रतिरोधरहित, बेरोक-टोक। विलो. सप्रतिरोध पु. प्रतिरोध का अभाव।

अप्रतिवर्तिता *स्त्री.* (तत्.) मनो. प्रतिवर्ती क्रियाओं का दमन या लोप दे. प्रतिवर्तिता।

अप्रतिवार्य *वि.* (तत्.) 1. जिसका प्रतिवारण या निवारण न हो सके 2. अवश्यंभावी।

अप्रतिवीर्य *वि.* (तत्.) अतुलित शक्ति वाला, जिसके समान वीरता किसी अन्य में न हो।

अप्रतिष्ठ *वि.* (तत्.) 1. बदनामी करने वाला 2. प्रतिष्ठा या इज्जत गँवाने वाला 3. अपमानित 4. प्रतिष्ठित नहीं की गई (मूर्ति) पुं. भारतीय पुराणों के अनुसार एक नरक का नाम।

अप्रतिष्ठा *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रतिष्ठा का अभाव, अनादर, अपमान 2. अपयश, दृढ़ता या स्थिरता का अभाव। विलो. प्रतिष्ठा।

अप्रतिष्ठित *वि.* (तत्.) 1. प्रतिष्ठाविहीन, तिरस्कृत, असम्मानित 2. जो स्थिर न हो प्रयो. तुम्हारी तरह गली-गली डोलना उन्हें एक अप्रतिष्ठित कार्य लगता है (मानस का हंस....) विलो. प्रतिष्ठित।

अप्रतिहत *वि.* (तत्.) 1. जिसे कोई रोक-टोक न हो 2. अबाधित; अटूट, निरंतर 3. अपराजित विलो. प्रतिहत।

अप्रतिहार्य *वि.* (तत्.) 1. जिसका प्रतिहार या निवारण न किया जा सके 2. जिसे रोकना संभव न हो।

अप्रतीक *वि.* (तत्.) 1. अंगहीन, शरीररहित 2. ब्रह्म।

अप्रतीकार *पुं.* (तत्.) दे. अप्रतिकार।

अप्रतीत *वि.* (तत्.) 1. अगम्य 2. अस्पष्ट 3. अनभिव्यक्त 4. निर्विरोध।

अप्रतीतत्व *पुं.* (तत्.) काव्य. एक काव्यगत दोष, जिसके कारण अर्थ प्रतीति में बाधा आती हो।

अप्रतीति *स्त्री.* (तत्.) 1. अर्थ या रूप आदि का समझ में न आना 2. अविश्वास, शंका।

अप्रतीयमान *वि.* (तत्.) 1. अनिश्चित 2. अनभिव्यक्त 3. अज्ञेय विलो. प्रतीयमान।

अप्रतुल *वि.* (तत्.) 1. जिसकी तुलना न की जा सके, 2. जिसे तोलना कठिन हो, अद्वितीय, अनुपम पुं. भार का अभाव।

अप्रत्यक्ष *वि.* (तत्.) 1. परोक्ष, जो प्रत्यक्ष न हो 2. छिपा, गुप्त, अगोचर विलो. प्रत्यक्ष।

अप्रत्यक्ष कर *पुं.* (तत्.) वाणि. किसी अन्य संबंधित व्यक्ति पर आंशिक या पूर्ण रूप से लगाया जाने वाला कर जैसे- बिक्री कर 'एक अप्रत्यक्ष कर क्योंकि इसका भार अंततः उपभोक्ता पर पड़ता है।

अप्रत्यक्ष निर्वाचन *पुं.* (तत्.) मतदाताओं द्वारा सीधे न चुने जाकर निर्वाचक मंडल द्वारा चुना जाना indirect election तु. प्रत्यक्ष निर्वाचन।

अप्रत्यय *पुं.* (तत्.) प्रत्यय अर्थात् ज्ञान या विश्वास का अभाव *वि. (तत्.)* 1. विश्वासहीन 2. ज्ञानहीन, बोधरहित 3. प्रत्यय या विभक्ति रहित।

अप्रत्याशित *वि.* (तत्.) 1. जिसकी आशा न हो, असंभावित अकल्पित 2. अकस्मात् विलो. प्रत्याशित।

अप्रत्याशित समाचार *पुं.* (तत्.) पूर्व सूचना या आशा के बिना प्राप्त/प्रकाशित समाचार, (प्रायः दुर्घटनाओं के समाचार ऐसे ही होते हैं।

अप्रत्यायन *पुं.* (तत्.) 1. प्रामाणिकता का न होना 2. मान्यता समाप्त करना।

अप्रदत्ता *स्त्री.* (तत्.) 1. वह कन्या जिसका विवाह (या वाग्दान) अभी न हुआ हो 2. न चुकाई गई (राशि), प्रदान न की गई (राशि)।

अप्रधान *वि.* (तत्.) जो प्रधान या मुख्य न हो, गौण, छोटा, अनुषंगी *पुं. (तत्.)* गौण कार्य विलो. प्रधान।

अप्रभ *वि.* (तत्.) 1. प्रभावहीन, तेजहीन, कांतिहीन, निष्प्रभ 2. हतप्रभ 3. तुच्छ।

अप्रभावित *वि.* (तत्.) 1. जिस पर (किसी बात या व्यक्ति का) प्रभाव न पड़े 2. प्रभावहीन।

अप्रभावी *वि.* (तत्.) जो प्रभाव शून्य हो गया हो, अप्रभावशील, निष्प्रभाव।

अप्रभु *वि.* (तत्.) जो प्रभु या स्वामी न हो, जो शासक न हो, जो समर्थ न हो।

अप्रभूति *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रभूत न होने की स्थिति स्वल्पता 2. अप्रचुरता, अल्पता

अप्रमत्त *वि.* (तत्.) 1. जो नशे में नहीं है 2. अप्रमादी, सतर्क।

अप्रमा *स्त्री.* (तत्.) वास्तविक ज्ञान का अभाव, मिथ्या ज्ञान, भ्रमात्मक ज्ञान।

अप्रमाण *पुं.* (तत्.) प्रमाण का अभाव वि. जो प्रमाणित न हो।

अप्रमाण पुस्तक *पुं.* (तत्.) अप्रमाणित पुस्तक वह पुस्तक जिसके लेखक या विषयवस्तु की प्रामाणिकता संदिग्ध हो।

अप्रमाणित *वि.* (तत्.) जो प्रमाणित या प्रमाणों से पुष्ट न हो, अपुष्ट।

अप्रमाद *पुं.* (तत्.) सावधानी, सतर्कता, वि. सावधान, जागरूक, सचेत।

अप्रमादी *वि.* (तत्.) 1. अपने कार्यों में सावधान रहने वाला 2. सतत जागरूक।

अप्रमेय *वि.* (तत्.) 1. जो परिमित न हो 2. जिसके बारे में जाना न जा सके।

अप्रयत्न *वि.* (तत्.) 1. प्रयत्नहीन, प्रयासरहित 2. उदासीन *पुं. (तत्.)* 1. प्रयत्न का अभाव, उदासीनता 2. काहिलपना विलो. प्रयत्न।

अप्रयुक्त क्षमता *स्त्री.* (तत्.) वाणि. संयंत्र की वास्तविक क्षमता का वह भाग, जिसका उपयोग (उत्पादन में गिरावट के कारण) नहीं हो पा रहा है idle capacity

अप्रयुक्त *वि.* (तत्.) जिसका प्रयोग न हुआ हो, जो काम में न लाया गया हो प्रयो. ये महँगी मशीनें कई महीनों से अप्रयुक्त पड़ी हैं विलो. प्रयुक्त।

अप्रयुक्तत्व *पुं.* (तत्.) प्रयोग में नहीं लाए जाने का भाव या स्थिति काव्य. एक काव्य दोष जिसमें अप्रचलित शब्दों के प्रयोग के कारण अर्थ अस्पष्ट रहता है।

अप्रयोग *पुं.* (तत्.) 1. प्रयोग का अभाव 2. गलत प्रयोग।

अप्ररूपिता *स्त्री.* (तत्.) निर्धारित या मूल प्रारूप (टाइप) के अनुसार न होने की स्थिति या भाव।

अप्रवर्तक *वि.* (तत्.) जो प्रवर्तक नही है, जो प्रेरित या उत्तेजित न करे।

अप्रवर्तनीय *वि.* (तत्.) जिसका प्रवर्तन न किया जा सके, जिसे लागू न किया जा सके।

अप्रवर्ती *वि.* (तत्.) जिसमें सकिर्यता न हो, निष्क्रिय, निरुत्साही।

अप्रवीण *वि.* (तत्.) जो प्रवीण न हो, अकुशल।

अप्रवृत्त *वि.* (तत्.) 1. निष्क्रिय, जो कार्यरत न हो 2. किसी अप्रवर्तित आदेश, अधिनियम आदि का वह भाग जिसे अमल में नहीं लाया गया हो विलो. प्रवृत्त।

अप्रवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रवृत्ति या रुचि का अभाव 2. कार्यरत न होने की स्थिति विलो. प्रवृत्ति।

अप्रवेश्य *वि.* (तत्.) 1. जहाँ प्रवेश न किया जा सके, प्रवेशवर्जित 2. जिसका वेधन न किया जा सके।

अप्रवेश्य शैल *पुं.* (तत्.) भूवि. जिन शैलों के आर-पार कोई द्रव पदार्थ नहीं जा सकता।

अप्रवैती *पुं.* (तत्.) अप्रवैतवादी व्यक्ति, एकेश्वरवादी।

अप्रवैध *वि. पुं.* 1. जो विभाजित न हो, अविभक्त, द्वैधहीन 2. प्रभाव वाला।

अप्रशंसनीय *वि.* (तत्.) जो प्रशंसा के योग्य न हो, जिसकी प्रशंसा न की जा सके विलो. प्रशंसनीय।

अप्रशस्त *वि.* (तत्.) जो प्रशंसित या शुभ न हो।

अप्रशिक्षित *वि.* (तत्.) जिसे प्रशिक्षित न किया गया हो।

अप्रसंग *वि.* (तत्.) प्रसंगहीन, संबंधरहित *पुं.* गलत प्रसंग।

अप्रसन्न *वि.* (तत्.) 1. जो प्रसन्न न हो, असंतुष्ट 2. नाराज, नाखुश 3. दुःखी विलो. प्रसन्न।

अप्रसन्नता *स्त्री.* (तत्.) 1. नाराजगी, असंतोष 2. उदासी, प्रसन्नता।

अप्रसाद *पुं.* (तत्.) कर्मचारी के व्यवहार आचरण आदि को लेकर अन्य अधिकारी द्वारा व्यक्त अप्रसन्नता जो कर्मचारी को औपचारिक रूप से संप्रेषित की जाती है। displeasure

अप्रसाधित *वि.* (तत्.) 1. जिसका प्रसाधन न हुआ हो, असंस्कारित 2. जिसकी साज-सज्जा न की गई हो, अस्त-व्यस्त, अव्यवस्थित।

अप्रसाधित अयस्क *पुं.* (तत्.) भूवि. खान से निकाला गया कोयला आदि खनिज जो अपने

प्राकृतिक रूप में हो और प्रसाधित रूप में न हो।

अप्रसाध्य *वि.* (तत्.) जो प्रसाधित करने योग्य न हो।

अप्रसिद्ध *वि.* (तत्.) जो प्रसिद्ध न हो, जिसको लोग न जानते हों, अविख्यात विलो. प्रसिद्ध।

अप्रसिद्धि *स्त्री.* (तत्.) ख्याति या प्रसिद्धि का अभाव। विलो. प्रसिद्धि।

अप्रसूत *वि.* (तत्.) 1. संतानहीन, संतानविहीन; जिसने कभी किसी को जन्म न दिया हो 2. अनुत्पन्न, अनुत्पादित 3. अव्युत्पन्न विलो. प्रसूत।

अप्रसूता *स्त्री.* (तत्.) वह स्त्री जिसके बच्चा न हुआ हो, बंध्या नारी विलो. प्रसूता।

अप्रस्तुत *वि.* (तत्.) जो मौजूद न हो, जो प्रस्तुत न हो, अविद्यमान 2. अप्रासंगिक 3. उपमान 4. 4. जो उद्यत न हो 5. अन्यमनस्क विलो. प्रस्तुत।

अप्रस्तुत-प्रशंसा *स्त्री.* (तत्.) अर्थालंकार जिसमें अप्रस्तुत (उपमान) के वैचित्र्यपूर्ण कथन के द्वारा प्रस्तुत (उपमेय) का बोध कराया जाता है। indirect description

अप्राकरणिक *वि.* (तत्.) जो प्रस्तुत विषय या प्रकरण से संबंधित न हो, असंबद्ध।

अप्राकृत *वि.* (तत्.) 1. जो मौलिक न हो 2. जो ग्राम्य न हो 3. असाधारण विलो. प्राकृत।

अप्राकृतिक *वि.* (तत्.) 1. प्रकृति के विपरीत, जो प्राकृतिक न हो 2. स्वभाव के विपरीत, अस्वाभाविक 3. कृत्रिम बनावटी 4. अलौकिक विलो. प्राकृतिक

अप्राकृतिक मृत्यु *स्त्री* (तत्.) दे. अपमृत्यु।

अप्राचीन *वि.* (तत्.) जो प्राचीन न हो, नया, आधुनिक।

अप्राज्ञ *वि.* (तत्.) प्रज्ञा से रहित, ज्ञानहीन।

अप्राण *वि.* (तत्.) बिना प्राण का, निष्प्राण, निर्जीव, मृत, *पुं.* ईश्वर।

अप्राधिकृत *वि.* (तत्.) जो आधिकारिक रूप से कहा, लिखा अथवा व्यक्त न किया गया हो। unauthorised

अप्राप्त *वि.* (तत्.) 1. जो प्राप्त न हो, जो मिला न हो 2. जो प्रस्तुत न हो विलो. प्राप्त।

अप्राप्त यौवन *वि.* (तत्.) जिसकी युवावस्था न आई हो, किशोर।

अप्राप्तवय *वि.* (तत्.) अल्प वयस्क, कानून के अनुसार जो वयस्क की उम्र का न हो चुका हो। minor

अप्राप्तवयता *स्त्री.* (तत्.) विधि. अप्राप्तवय होने की स्थिति या अवस्था।

अप्राप्तावसर *वि.* (तत्.) 1. जिसे अवसर प्राप्त न न हो सका हो 2. बिना समय का, असमय का।

अप्राप्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. प्राप्त न होने की अवस्था, अनुपलब्धता 2. लाभ न होने का भाव, विलो. प्राप्ति।

अप्राप्य *वि.* (तत्.) जो कठिनाई से ही प्राप्त किया जा सके दुष्प्राप्य, जिसे प्राप्त न किया जा सके, अलभ्य।

अप्रामाणिक *वि.* (तत्.) 1. जो प्रमाण से सिद्ध न हो 2. जो आधिकारिक न हो 3. जो मानक न हो विलो. प्रामाणिक।

अप्रामाण्य *पुं.* (तत्.) प्रमाण का न होना, अविश्वसनीयता।

अप्रायिक *वि.* (तत्.) जो सामान्यतः नहीं होता हो या केवल विशेष परिस्थितियों में ही होता है, अप्रत्यशित, असंभावित।

अप्रायोगिक *वि.* (तत्.) प्रयोग में न लाने योग्य।

अप्रायोजित *वि.* (तत्.) जिसकी प्रस्तुति या आयोजन के लिए किसी ने आर्थिक सहायता न दी हो। unsponsored

अप्राशन *पुं.* (तत्.) 1. भोजन न करना, निराहार रहना, भोजन न कराना 2. अनशन, उपवास, व्रत।

अप्राशनोन्माद *पुं.* (तत्.) मनोवि. भोजन नहीं करने की इच्छा से उत्पन्न उन्माद या अवसाद।

अप्रासंगिक *वि.* (तत्.) 1. जो प्रासंगिक न हो, प्रसंग के बाह्य, जो संदर्भगत न हो 2. विषय-विशेष से असंबद्ध विलो. प्रासंगिक।

अप्रियंवद *वि.* (तत्.) अप्रिय बात बोलने वाला, कठोरभाषी।

अप्रिय *वि.* (तत्.) जो प्रिय न हो जिसके प्रति अनुराग न हो, अरुचिकर विलो. प्रिय।

अप्रियकर *वि.* (तत्.) जो रुचिकर न हो विलो. प्रियकर।

अप्रियकारक *वि.* (तत्.) अप्रिय या अहित करने वाला, अरुचि कर।

अप्रियकारी *वि.* (तत्.) दे. अप्रियकारक।

अप्रियता *स्त्री.* (तत्.) 1. अप्रिय होने की स्थिति या भाव 2. मनोमालिन्य।

अप्रियवादिता *स्त्री.* (तत्.) अप्रिय बोलने की आदत, कठोर बात बोलने की प्रवृत्ति।

अप्रियवादी *वि.* (तत्.) अप्रिय बोलने वाला, कटुभाषी।

अप्रीति *स्त्री.* (तत्.) 1. स्नेह या प्रेम का अभाव 2. वैर 3. दुर्भाव विलो. प्रीति।

अप्रीतिकर *वि.* (तत्.) 1. अप्रिय, जो पसंद न हो 2. अमंगलकारी, अशुभ, मनहूस 3. कठोर प्रयो. झगड़ालू लोगों की बातें सबको अप्रीतिकर लगती है।

अप्रेन्टिस *पुं.* (अं.) वह व्यक्ति जो किसी कार्य में कुशलता पाने के लिए प्रशिक्षण के दौरान बिना वेतन या अल्प वेतन पर कार्य करता है, प्रशिक्षु apprentice

अप्रैल *पुं.* (अं.) अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार वर्ष का चौथा माह जो प्राय: भारतीय पंचांग के चैत माह के आसपास पड़ता है और तीस दिन का होता है।

अप्रैल फूल *पुं.* (अं.) । अप्रैल माह का प्रथम दिन जिसे हँसी-ठिठोली और मजाक के रूप में जाना जाता है april fool

अप्रौढ़ *वि.* (तत्.) 1. अवयस्क, नाबालिग 2. जो प्रौढ़ न हो, अपरिपक्व 3. अपांडित्य-पूर्ण 4. अनुभवहीन 5. युवक।

अप्रौढ़ा *स्त्री.* (तद्.) 1. अवयस्क, नाबालिग, कमसिन 2. अनुभवहीन, जो परिपक्व न हो 3. युवती 4. प्रौढ़ा नायिका से भिन्न अप्रगल्भा नायिका।

अप्सरा *स्त्री.* (तद्.) (जलक्रीड़ा प्रेमी) देवांगना।

अफगन (अफगान) *वि.* (फा.) दे. अफगानी।

अफगानिस्तान *पुं.* (फा.) भारत के पश्चिमोत्तर में स्थित एक देश जिसकी राजधानी काबुल है।

अफगानी *वि.* (फा.) अफगानिस्तान का निवासी, पठान, काबुली।

अफ़ज़ल (अफ़्ज़ल) *वि.* (अर.) बहुत अच्छा, अति उत्तम, श्रेष्ठ।

अफतार *पु.* (अर.) दे. इफतार।

अफरन *स्त्री.* (देश.) अत्यधिक खाने के बाद पेट फूल जाना।

अफरना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. अत्यधिक भोजन करने से पेट का फूलना 2. वायु के कारण पेट फूलना 3. अघाना, ऊबना।

अफरा-तफरी *स्त्री.* (अर.) 1. हड़बड़ी 2. बदहवासी 3. अव्यवस्था, गड़बड़।

अफरीदी *पुं.* (अर.) पेशावर के उत्तर में पहाड़ी प्रदेश में रहनेवाली पठानों की एक जाति।

अफल *वि.* (तत्.) फलहीन, निष्फल, परिणाम-रहित, व्यर्थ *पुं.* *(तत्.)* झाऊ का वृक्ष।

अफला *स्त्री.* (तत्.) 1. घृतकुमारी या घीकुंवार नामक वनस्पति 2. बाँझ 3. भुई अंवला ।

अफलाकांक्षी *वि.* (तत्.) अफल या फलहीनता की चाह करने वाला, व्यर्थ की आकांक्षा करने वाला।

अफलातून *पुं.* (तत्.) (यूनानी प्लेटो से अरबी में अफलातून) प्राचीन यूनान का प्रमुख दार्शनिक विद्वान, जिसका नाम प्लेटो था।

अफलातूनी *वि.* (अर.) अफलातून से संबंधित।

अफलित *वि.* (तत्.) फलरहित, परिणामहीन।

अफली *वि.* (तत्.) 1. जिसमें फल न हो 2. जो फल देने में असमर्थ हो 3. निरर्थक।

अफवाह *स्त्री.* (अर.) उड़ती खबर, निराधार समाचार, अप्रमाणित वृत्त।

अफवाहन *पुं.* (अर.) उड़ती खबर के तौर पर।

अफसर *पुं.* (अं.) अधिकारी, किसी कार्यालय का प्रशासक, प्रमुख प्रशासक।

अफसराना *वि.* (अं.अफसर) अधिकारी की तरह का, अधिकार से युक्त, अधिकारिता पूर्ण।

अफसरी *स्त्री.* (अं.देश.) प्रमुखता, प्रधानता, अधिकारिता।

अफसाना *पुं.* (फा.) 1. उपाख्यान, कथा, कहानी, आख्यायिका 2. किसी घटना का वर्णन।

अफसोस *पुं.* (फा.) 1. पश्चाताप 2. दुख, खेद।

अफसोसनाक *वि.* (फा.) शोकप्रद, दयनीय, अमंगल कारक, दुखद।

अफीम *स्त्री.* (अर.) पोस्त की डौंडियों से निकलने वाले दूध को सुखाने से प्राप्त मादक पदार्थ (गोंद), जिसका प्रयोग औषधि और नशे के लिए होता है।

अफीमची *पुं.* (अर.) नशे के लिए अफ़ीम खानेवाला, जिसे अफ़ीम खाने की लत हो।

अफीमी *वि.* (अर.) अफीम से युक्त या संबंधित पुं. अफीम के प्रयोग और खाने का अभ्यस्त।

अफुल्ल *वि.* (तत्.) 1. जो फूला या विकसित नही है, अविकसित 2. जो (वृक्ष) फूलों से युक्त नहीं है।

अफेन *वि.* (तत्.) फेनरहित, बिना झाग का *पुं.* अफीम, अहिफेन।

अबंध *वि.* (तत्.) 1. जो बंधन-मुक्त हो, बंधनहीन, स्वच्छंद 2. हस्तक्षेप-हीन ।

अबंधु *वि.*(तत्.) जिसका कोई बंधु नहीं, मित्रहीन, एकाकी।

अबंध् नीति *वि.* (तत्.) दे. अहस्तक्षेप नीति।

अबंध्य *वि.* (तत्.) 1. नहीं बाँधने योग्य, बंधनरहित 2. नियंत्रणरहित।

अब *क्रि.वि.* (तद्.) इस समय, इस क्षण, इस अवसर पर, फिलहाल, अब का, वर्तमान काल का, हाल का, अब जाकर लंबी प्रतीक्षा के बाद, इस समय, इतनी देर बाद, अब-तब, कभी न कभी अब से, आगे से, आइंदा मुहा. अब-तब करना- आज-कल करना, टालमटोल करना; अब-तब लगना या अब तब होना- जाने की घड़ी समीप होना।

अबड़-धवड़ *वि.* (अनु.) बिना मेल का, अस्त-व्यस्त पुं. हड़बड़ी।

अबद्ध *वि.* (तत्.) 1. जो बंधा न हो, बंधनरहित, स्वच्छंद, मुक्त 2. संगी. स्वर की तान को बीच में ही छोड़ देने की विधा *वि.*(तत्.)2. बुद्धिहीन, नासमझ, मूर्ख।

अबद्धमूल *वि.* (तत्.) जिसका मूल दृढ न हो, कमजोर जड़ वाला।

अबरक *पुं.* (तद्.) अभ्रक, सफेद चमकीले वरक के रूप में उपलब्ध धातु दे. अबरख।

अबरख *पुं.* (तद्.) (अर.) एक प्रकार का चमकीला भंगुर खनिज जो चट्टान की पट्टियों के रूप में प्राप्त होती है, इसका प्रयोग विद्युतरोधी ऊष्माचालक के रूप में इस्तिरी में होता है इसके भस्म से औषधि बनाई जाती है।

अबरखी *वि.* (हि.अबरक) अभ्रक धातु से संबंधी, अभ्रक से युक्त अभ्रक जैसा।

अबरा *पुं.* (फा.) दुहरे वस्त्र में ऊपर का पल्ला *वि.* नीचे वाली परत को 'अस्तर' कहते हैं प्रायः बहुत बारीक वस्त्र में अस्तर लगाया जाता है।

अबरी *वि.* (फा.) अभ्रीय। 1. जिसमें बादल जैसी धारियाँ हों 2. उक्त प्रकार के धब्बों वाला या रंग वाला 3. पच्चीकारी के काम आने वाला रंगीन पत्थर जो जैसलमेर में हो *स्त्री.* (अर.) जिल्द के ऊपर लगाया जाने वाला रंगीन कागज।

अबरू *स्त्री.* (फा.) भौंह, भ्रू।

अबल *वि.* (तत्.) बलहीन, निर्बल, कमजोर।

अबलक *वि.* (अर.) 1. श्वेत-कृष्ण या सफेद और लाल रंग का, चितकबरा, दो या अनेक रंगों वाला 2. विचित्र।

अबलख *वि.* (अर.) दे. अबलक।

अबला *स्त्री.* (तत्.) नारी (जो पुरुष की तरह सबल सबल शरीर वाली नहीं होती)।

अबलाबल *पुं.* (तत्.) अबलों के बल शिव, महादेव।

अबल्य *पुं.* (तत्.) बलरहित होने की स्थिति, दुर्बलता, कमजोरी।

अबस *वि.* (तद्) 1. परवश 2. निष्फल, बेकार, निरर्थ *पुं* (अं.) अ ब स (ए बी सी का समनार्थक) प्रारंभिक ज्ञान, प्रारंभ; सामान्य ज्ञान टि. अंग्रेजी की वर्णमाला के प्रारंभिक अक्षरों के आधार पर यह उक्ति बनी है।

अबाँह *वि.* (तद्.) बिना बाँह का, निराश्रय, अनाथ।

अबा *पुं.* (अर.) लंबा चोगा।

अबाती *वि.* (देश.) जिसमें बत्ती न हो।

अबादान *वि.* (अर.) आबाद, भरपूर, समृद्ध।

अबादानी *स्त्री.* (अर.) 1. अन्न-जल। 2. जहाँ आबादी हो ऐसी जगह, अधिकता।

अबाध *वि.* (तत्.) बाधारहित, निर्विघ्न, बेरोक-टोक।

अबाधगति *स्त्री.* (तत्.) बाधा रहित गति, बेधडक़ चाल, वि. जिसकी गति अबाध है।

अबाधा *स्त्री.* (तद्.) बाधा का अभाव *वि.* दे. अबाध बिलो. बाधा।

अबाधित *वि.* (तत्.) 1. जो रोका न गया हो, बाधाहीन 2. स्वच्छंद, स्वतंत्र विलो. बाधित।

अबाध्य *वि.* (तत्.) जो बंधनयुक्त या बाध्य या विवश न हो विलो. बाध्य।

अबाबील *स्त्री.* (अर.) एक काली छोटी चिडिया जो उजाड़ स्थान में रहती है, भांडकी।

अबाल *वि.* (तत्.) 1. जो बालक न हो, युवा, जवान *पुं.* (देश.) चर्खे की पंखुड़ियों में बाँधकर तानी जाने वाली रस्सी।

अबाह्य *वि.* (तत्.) जो बाहरी नही है, आंतरिक, भीतरी।

अबिंदुकता *स्त्री.* (तत्.) भौ. किसी दर्पण या लेंस में एक बिंदु से निकली किरणों का एक ही बिंदु पर फोकस (केंद्रित) न हो पाना।

अबीज *वि.* (तत्.) 1. बीजविहीन 2. नपुसंक।

अबीजा *स्त्री.* (तद्.) बेदाना अंगूर।

अबीर *पुं.* (अर.) लाल रंग का सुगंधित पाउडर जिसे होली में इष्ट-मित्रों पर डाला जाता है, गुलाल।

अबीह *वि.* (देश.) भयरहित, निर्भय, निडर।

अबुद्धि *स्त्री.* (तत्.) ज्ञान का अभाव, अज्ञान, बुद्धि का अभाव, नासमझी *वि. (तत्.)* मूर्ख, नादान, बुद्धिहीन।

अबुध *वि.* (तत्.) अबोध, नामसझ, अज्ञानी।

अबूझ *वि.* (तद्.) जिसे बूझा न गया हो, जिसका बोध न हो पाया हो, अबोध उदा. जीवन एक अबूझ पहेली है।

अबे *विस्म.* (तद्.) अरे, हे! (तिरस्कारसूचक शब्द) उदा. अबे, सुन! कहाँ जा रहा है?

अबेध *वि.* (तद्.) जो बेधा न हो, जो छेदा न हो, अनबिधा; जिसे बेधा न जा सके, अवेध्य।

अबेर *स्त्री.* (तद्.) विलंब, देर, अबेला, कुसमय, देर-अबेर, समय-कुसमय।

अबैंकीय *वि.* (तत्.+अं.) बैंक या बैंकों (के कार्य) से भिन्न non-banking

अबोध *पुं.* (तत्.) अज्ञान, मूर्खता, नासमझी *वि.* 1. नादान, अज्ञानी 2. अनजान।

अबोधगम्य *वि.* (तत्.) 1. जिसको समझा न जा सके 2. समझ से परे 3. जटिल।

अबोध्य *वि.* (तत्.) जो समझ में न आ सके, समझ में न आने योग्य, अबूझ।

अबोल *वि.* (देश.) अबोला उदा. दुख के कारण वह अबोल ही रहा और उसने कोई बात नहीं की *पुं.* (तद्.) कुबोल, बुरी बोली प्रयो. शुभ अवसर पर अबोल न बोलो।

अबोला *वि.* (देश.) बातचीत बंद होना या न होना।

अबोली *वि.* (तद्.) 1. जो बोली नहीं गई हो 2. न बोली जाने वाली।

अब्ज *पुं.* (तत्.) (अप-अर्थात्) जल से उत्पन्न, कमल पर्या. नीरज, वारिज, तोयज, जलज 2. शंख, चंद्रमा, कपूर 3. सौ करोड़ या अरब की संख्या।

अब्जद *पुं.* (अर.) 1. अरबी-फारसी वर्णमाला, अलिफ, बे आदि 2. अरबी अक्षरों का वह क्रम जिसमें हर अक्षर से अंक या संख्या सूचित होती है।

अब्जिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. कमलवन 2. किसी जलाशय में कमलों का समूह।

अब्तर *पुं.* (अर.) दुर्दशा से युक्त, निकृष्ट, अव्यवस्थित।

अब्तरी *स्त्री.* (अर.) दुर्दशा, संकट, अव्यवस्थितता।

अब्द *पुं.* (तत्.) 1. वर्ष, साल 2. बादल, मेघ।

अब्दकोश *पुं.* (तत्.) वर्ष-विशेष की घटनाओं, इतिवृत्त, महत्वपूर्ण व्यक्तियों, स्थलों, उपलब्धियों की सूचना देने वाला वार्षिक प्रकाशन दे. वार्षिकी।

अब्दुर्ग *पुं.* (तत्.) पानी की खाई से घिरा हुआ किला।

अब्धि *पुं.* (तत्.) जलधि, समुद्र पर्या. नीरधि, तोयधि, पयोधि ।

अब्धिज *वि.* (तत्.) [अब्धि=समुद्र+ज] 1. समुद्र से उत्पन्न 2. चंद्रमा 3. शंख।

अब्धिजा *स्त्री.* (तत्.) लक्ष्मी, वारूणी।

अब्धिफेन *पुं.* (तत्.) समुद्री झाग, समुद्र का फेन।

अब्धिशयन *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. समुद्रशयन, सागर में विश्राम।

अब्ध्यग्नि *स्त्री.* (तत्.) समुद्र की अग्नि, बड़वाग्नि, बड़वानल, वाडवानल।

अब्बा *पुं.* (फा.) पिता, बाप।

अब्बाजान *पुं.* (अर.) पिता के लिए आदरसूचक शब्द, पिताजी।

अब्बास *पुं.* (अर.) 1. हजरत मुहम्मद के चाचा 2. गुलाबांस नामक पौधा जिसकी जड़ और फूल दवा के काम आते हैं *वि.* रूखे स्वभाव वाला।

अब्बासी *स्त्री.* (अर.) मिस्र देश की एक प्रकार की काली-नीली कपास *वि.* अब्बास के फूल के रंग वाला, लाल 2. हजरत अब्बास का वंशज।

अब्याजी *वि.* (देश.) जिस पर ब्याज नहीं मिलता।

अब्र *पुं.* (तद्.) बादल, मेघ, अभ्र।

अब्रक *पुं.* (तद्.) दे. अबरख।

अब्रह्मचर्य *पुं.* (तत्.) 1. ब्रह्मचर्य के विपरीत 2. ब्रह्मचर्य का अभाव।

अब्रह्मण्य *पुं.* (तत्.) बाह्मणोचित कर्म के विपरीत कर्म जो ब्राह्मणोचित न हो, निंदित, जघन्य।

अब्राह्मण *पुं.* (तत्.) जो ब्राह्मण न हो, ब्राह्मण से भिन्न जाति का व्यक्ति।

अब्राह्मण्य *पुं.* (तत्.) 1. ब्राह्मण के कर्तव्य का अभाव। 2. ब्राह्मणकर्तव्य का उल्लंघन।

अभंग *वि.* (तत्.) जो भंग न हुआ हो, अखंड, अटूट, पूर्ण *पुं.* (तत्.) 1. संगीत की एक ताल जिसमें एक लघु एक गुरु और दो प्लुत मात्राएँ

होती है 2. मराठी भाषा के विशेष पद या भजन।

अभंगपद *पुं.* (तत्.) श्लेष अलंकार का एक भेद जिसमें वाक्यगत शब्द को तोड़े बिना अर्थात् पद-भंग किए बिना अर्थ-भेद हो जाता है।

अभंगपदश्लेष *पुं.* (तत्.) साहि. श्लेष अलंकार का एक भेद जिसमें शब्द को बिना तोड़े दूसरा अर्थ स्पष्ट हो जाय जैसे- कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय तु. संभगपद श्लेष।

अभंगी *वि.* (तत्.) जो अखंडित है, जिसको कोई तोड़ नहीं सकता, जिसे तोड़ना उचित न हो।

अभंगुर *वि.* (तत्.) जो नाशशील या नश्वर नहीं है, स्थायी, स्थिर।

अभंजन *वि.* (तत्.) जो भंजन रहित हो या तोड़ने योग्य न हो वि. द्रव पदार्थों की विशेषता है कि वे भंजन योग्य नहीं होते है दे. अभंगी।

अभंड *पुं.* (तत्.) 1. बिना माँड का भात। 2. बिना सजावट का, सादा 3. अरंडी का वृक्ष।

अभक्त *वि.* (तत्.) 1. जो भक्त न हो, भक्तिशून्य, श्रद्धाविहीन 2. जो विभाजित या विभक्त न हुआ हो, समूचा, पूर्ण *पुं.* खाद्येतर पदार्थ, अखाद्य विलो. भक्त।

अभक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. भक्ति या श्रद्धा का अभाव 2. अनादर; उपेक्षा।

अभक्तिमान् *वि.* (तत्.) भक्ति न करने वाला अपमान करने वाला।

अभक्ष *पुं.* (तत्.) भोजन न करना, उपवास वि. भोजन न करने वाला।

अभक्ष्य *वि.* (तत्.) अखाद्य, अभोज्य, जो खाने योग्य न हो विलो. भक्ष्य।

अभग्न *वि.* (तत्.) अखंड, समूचा, जो खंडित या भग्न न हुआ हो विलो. भग्न।

अभद्र *वि.* (तत्.) 1. जो भद्र, सभ्य या शिष्ट न हो, अशिष्ट, भद्दा 2. जो सभ्य लोगों के उपयुक्त न हो 3. जो कल्याणकारी या मंगलमय न हो, अशुभ *पुं.* 1. बुराई 2. शोक 3. पाप विलो. भद्र।

अभद्रता *स्त्री.* (तत्.) 1. अशिष्टता, असाधुता, भद् भद्दापन 2. अशोभनता, अशुभ 3. बुराई।

अभयंकर *वि.* (तत्.) 1. जो भयावह न हो 2. अभय देने वाला सुरक्षादाता।

अभय *वि.* (तत्.) 1. निर्भय, निडर 2. सुरक्षित *पुं.* 1. निर्भयता, साहस 2. (सर्वशक्तिमान) परमात्मा 3. यात्रा का मुहूर्त 4. सुगंधित घास, खस विलो. भय।

अभयकर *वि.* (तत्.) निडरता प्रदान करने वाला, निडर बनाने वाला।

अभयचारी *पुं.* (तत्.) जंगली पशु, जिनकी हिंसा करना वर्जित है।

अभयद *वि.* (तत्.) दे. अभयदायक।

अभयदाता *वि.* (तद्.) अभय देनेवाला, शरण देनेवाला।

अभयदान *पुं.* (तत्.) रक्षा करने या शरण देने की क्रिया।

अभयदायक *वि.* (तत्.) अभय देने वाला, शरण देने वाला।

अभयपत्र *पुं.* (तत्.) 1. सुरक्षा देने के आश्वासन का पत्र 2. यात्रा-सुरक्षण पत्र 3. आधिकारिक पत्र जिसके द्वारा व्यक्ति संकट की स्थिति से बच सकता है।

अभयपद *पुं.* (तत्.) मोक्ष, मुक्ति।

अभयप्रद *वि.* (तत्.) दे. अभयदायक।

अभयमुद्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. निर्भय होने का आश्वासन देने के लिए प्रयुक्त दाहिनी हथेली की मुद्रा।

अभययाचना *स्त्री.* (तत्.) भय से रक्षा के लिए प्रार्थना, अभय की याचना।

अभयवचन *पुं.* (तत्.) 1. भय से रक्षा की प्रतिज्ञा 2. रक्षा का संकल्प।

अभयवन *पुं.* (तत्.) वन्य प्राणियों के लिए भय-रहित वन, ऐसा वन जिसमें पशुओं (विशेषकर आखेट पशुओं) का शिकार करना निषिद्‌ध होता है अभयारण्य। sanctuary

अभया *स्त्री.* (तत्.) 1. पाँच रेखावाली हरीतकी, या या हरड़ 2. देवी दुर्गा का एक नाम।

अभयारण्य *पु.* (तत्.) दे. अभय वन।

अभयाश्वासन *पुं.* (तत्.) निडर होने का आश्वासन।

अभर्तृका *वि.* (तत्.) 1. जिस स्त्री का पति न हो, विधवा 2. अविवाहित कन्या।

अभल *वि.* (तत्.) 1. जो भला नहीं है, बुरा 2. अभद्र।

अभव *पुं.* (तत्.) 1. नहीं होने का भाव, अस्तित्वहीनता 2. नाश 3. प्रलय।

अभव्य *वि.* (तत्.) 1. जो भव्य या शानदार न हो, सरल, सादा 2. न होने योग्य, अनहोना 3. अमांगलिक, अशुभ 4. अभागा विलो. भव्य।

अभाग *वि.* (तत्.) 1. बिना भाग का, बिना हिस्से का 2. अविभक्त 3. भाग्यहीन, बदकिस्मत।

अभागापन *पुं.* (तद्.) भाग्यहीन होने की स्थिति या भाव।

अभागी *वि.* (तद्.) 1. भाग्यहीन, बदकिस्मत 2. जिसे सपत्ति में भाग न मिले, जो संपत्ति में भाग लेने का अधिकारी न हो।

अभाग्य *वि.* (तत्.) भाग्यहीन, अभागा। *पुं.* 1. बदकिस्मती, दुर्भाग्य 2. बुरा दिन विलो. 1. भाग्यवान 2. सौभाग्य।

अभाज्य *वि.* (तत्.) 1. जिसको बाँटा न जा सके 2. गणि. वह (संख्या) जो अपने सिवाय किसी अन्य संख्या से भाज्य न हो।

अभाजन *पुं.* (तत्.) जो सुपात्र न हो।

अभाज्य गुणनखंड *पुं.* (तत्.) वह अभाज्य राशि जिससे किसी दी हुई राशि को पूरा-पूरा भाग न दिया जा सके। prime factor

अभाज्य संख्या *स्त्री.* (तत्.) वह संख्या जो स्वयं और 1 को छोड़कर अन्य किसी संख्या से विभाजित न होती हो prime number

अभार *पुं.* (तत्.) 1. भार का अभाव 2. अत्यधिक बोझ।

अभाव *पुं.* (तत्.) 1. किसी व्यक्ति या वस्तु के न होने की स्थिति *वि.* (तत्.) 1. भावहीन, भावरहित।

अभावक *वि.* (तत्.) 1. जो भावहीन हो, विचारहीन 2. अच्छा न लगने वाला 3. अभाव का सूचक।

अभावग्रस्त *वि.* (तत्.) जिसके पास जीवन साधनों की नितांत कमी हो, अतिनिर्धन, सर्वहारा, बेहद गरीब।

अभावग्रस्तता *स्त्री.* (तत्.) अभावग्रस्त होने की स्थिति।

अभावन *पुं.* (तत्.) रोचक न होना। अप्रिय लगना वि. जो रोचक न हो, कुरूप।

अभावना *वि.* (तत्.) अच्छा नहीं लगने वाला, अरुचिकर। पुं. भावना का अभाव।

अभावनीय *वि.* (तत्.) 1. जिस पर भावनाओं का प्रभाव न हो 2. अकल्पनीय; अनित्य।

अभावात्मक *वि.* (तत्.) 1. जिसमें अभाव हो, अभाव से युक्त 2. अभाव का सूचक 3. निषेधात्मक।

अभावित *वि.* (तत्.) जिसकी भावना या कल्पना न की गई हो, बिना सोचा-समझा, अकल्पित, अप्रत्याशित।

अभावी *वि.* (तद्.) न होनेवाला, जिसकी स्थिति की कल्पना न की जा सके।

अभाषित *वि.* (तत्.) 1. अकथित, न कहा गया 2. अनभिव्यक्त *पुं.* 1. न कही गई बात 2. विवक्षित, किंतु अनभिव्यक्त बात।

अभाष्य *वि.* (तत्.) न बोलने योग्य बात विलो. भाष्य।

अभि *उप.* (तत्.) एक उपसर्ग जो क्रियावाची या संज्ञावाची शब्द के पहले लग कर समीपता, 'ओर', प्रधानता, अधिकता, बारंबारता आदि का द्योतक होता है, यथा अभ्यागत, अभ्युदय अभिगमन, अभिवादन, आदि।

अभिकंपन *पुं.* (तत्.) तीव्रकंपन, बुरी तरह काँपना।

अभिकथन *पुं.* (तत्.) वादी या प्रतिवादी द्वारा अपनी बात साबित करने के लिए किया गया कथन, निश्चयपूर्वक कही गई कोई ऐसी बात जिसे बाद में प्रमाणित किया जाना हो। alligation

अभिकरण *पुं.* (तत्.) प्रशा. किसी व्यक्ति या संस्था के स्थान पर उसकी ओर से कार्यों और दायित्वों अथवा कार्य-विशेष का निर्वहन करने वाला प्रतिष्ठान agency

अभिकर्ता *पुं.* (तत्.) कमीशन पर माल बेचने वाला व्यक्ति 2. संपत्ति और विधि संबंधी तथा कार्य करने के लिए अधिकारप्राप्त व्यक्ति। agent

अभिकर्तृत्व *पुं.* (तत्.) अभिकर्ता या प्रतिनिधि होने की स्थिति या भाव।

अभिकर्मक *पुं.* (तत्.) रसा. रासायनिक अभिक्रिया को अनुप्रेरित करने वाला रसायन, जैसे-नाइट्रिक अम्ल के उत्पादन में पोटैशियम नाइट्रेट। regent

अभिकलन *पुं.* (तत्.) 1. विचार करना 2. धारण करना 3. बनाना 4. गणना करना 5. आकलन।

अभिकलनात्मक भाषाविज्ञान *पुं.* (तत्.) भाषा के अध्ययन की वह विधा जिसमें विश्लेषण हेतु कंप्यूटर का प्रयोग किया जाता है। computational linguistics

अभिकलित्र *पुं.* (तत्.) जटिल किस्म का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जिसमें सूचना को ग्रहण करने, सूचना में निर्धारित प्रक्रमों को लागू करने और इन प्रक्रमों के परिणामों को प्रस्तुत करने की योग्यता होती है। प्रायः इसमें निवेश एवं निर्गम उपकरण, संचयक, अंकीय क्रिया एवं तार्किक एकक तथा एक नियंत्रण एकक होता है computer तु. संगणक।

अभिकलित्र विज्ञान *पुं.* (तत्.) अभिकलित्र एवं अभिकलन का विज्ञान। computer science

अभिकल्प *पुं.* (तत्.) रूपांकन, रूपरेखा, डिजाइन।

अभिकल्पक *वि.* (तत्.) 1. अभिनव कल्पना करने वाला 2. (कला) डिजाइन बनाने वाला designer

अभिकल्पन *पुं.* (तत्.) 1. कल्पना करना 2. रचना करना 3. डिजाइन बनाना।

अभिकल्पना *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी भावी कार्य या या तैयार की जाने वाली वस्तु की पहले से सोची हुई रूपरेखा 2. ऐसी बात या कल्पना जो तर्क के आधार पर की जाए 3. कपड़े आदि पर बेल-बूटी आदि बनाने की विशेष पद्धति, डिजाइन।

अभिकांक्षा *स्त्री.* (तत्.) इच्छा, अभिलाषा, चाह।

अभिकांक्षी *वि.* (तत्.) इच्छुक, अभिलाषी।

अभिकाकल *पुं.* (तत्.) कंठमणि, स्वर नालिका। कंठ में स्थित पर्दानुमा मांसपेशी जो खाते या पीते समय श्वासनलिका का मुँह ढंक देती है

अभिकेंद्र बल *पुं.* (तत्.) दे. अभिकेंद्री बल।

अभिकेंद्री *वि.* (तत्.) केंद्र की ओर अभिमुख। centripetal

अभिकेंद्री त्वरण *पुं.* (तत्.) किसी वक्रित पथ में अपरिवर्ती चाल से गतिमान किसी पिंड का त्वरण, जो उस पथ की वक्रता की ओर दिष्ट होता हो।

अभिकेंद्री बल *पुं.* (तत्.) भौ. बल जो किसी चक्कर खाती हुई वस्तु में परिधि से केंद्र की ओर लगता है centripetal force तु. अपकेंद्री बल।

अभिक्रम *पुं.* (तत्.) 1. आरंभ 2. सुविचारित आक्रमण, धावा 3. आरोहण 4. पहल। initiative

अभिक्रमण *पुं.* (तत्.) चढ़ाई, धावा, आक्रमण।

अभिक्रिया *स्त्री.* (तत्.) रसा. दो या अधिक रासायनिक तत्वों का संपर्क होने पर घटित

रासायनिक परिवर्तन, जैसे- पोटैशियम नाइट्रेट और गंधकाम्ल के मिलने से नाइट्रेट अम्ल का बनना।

अभिक्रियाशील *वि.* (तत्.) 1. जिसका स्वभाव कर्तव्य कर्म करने का हो, कर्तव्य करने वाला 2. (रसा.) अभिक्रिया करने वाला reactive

अभिक्षमता *स्त्री.* (तत्.) किसी कार्य या विषय को पूरी तरह समझ लेने, पूरी लगन से उसे निभा लेने की स्वाभाविक क्षमता। aptitude

अभिक्षित *वि.* (तत्.) राज्य, न्यायालय आदि के आदेश से संरक्षित।

अभिखंडन *पुं.* (तत्.) किसी कानून या आदेश को रद्द घोषित करना, विधिक कार्रवाई को समाप्त करना, जैसे- सेशन सुपुर्द करने के आदेश का अभिखंडन। quashing

अभिखंडनेता *पुं.* (तत्.) यमराज।

अभिखंडित *वि.* (तत्.) रद्द और घोषित (विधि, नियम या आदेश आदि)। quashed, struck down

अभिख्यात *वि.* (तत्.) प्रसिद्ध, विख्यात, कीर्तिवान।

अभिख्यान *पुं.* (तत्.) 1. प्रसिद्धि, यश, कीर्ति 2. नाम।

अभिगम *पुं.* (तत्.) पास आना या जाना, पहुँचना गणि. 1. गतिमान द्रव में वह स्थान जहाँ गतिमान द्रव प्रवाह-क्षेत्र से अलग हो जाता है sink 2. कंप्यू. सूचना प्राप्त करने के प्रयोजन से स्थान का निर्धारण। access

अभिगमन *पुं.* (तत्.) 1. निकट जाना, पहुँचना 2. उपासना पद्धति जिसमें भक्त देवस्थान की सफाई और सजावट करता है 3. संभोग, सहवास।

अभिगामी *वि.* (तत्.) 1. पास जानेवाला 2. किसी स्थान से प्रस्तुत स्थान पर आने वाला migratory 3. संभोग करनेवाला।

अभिगुप्ति *स्त्री.* (तत्.) संभाल या छिपाकर रखने की क्रिया या भाव।

अभिगृहीत *वि.* (तत्.) ऐसी प्रस्थापना जिसे स्वतः सिद्ध मान लिया जाता है और तदनुसार जिसके आधार पर अन्य तर्कनाएं की जाती हैं। postulate

अभिगोदता *वि.* (तत्.) रक्षा करने वाला। हितैषी।

अभिगोपक *वि.* (तत्.) 1. रक्षा करने वाला, बचाने वाला 2. वाणि. हानि का दायित्व वहन करने वाला, बीमाकर्ता 3. वाणि. शेयरों की खरीद बिक्री में क्षतिपूर्ति का आश्वासन देने वाला। under writer

अभिग्रस्त *वि.* (तत्.) घिरा हुआ, आक्रांत। शत्रुओं से व्याप्त।

अभिग्रह *पुं.* (तत्.) 1. आदान 2. ग्रहण, लेना, स्वीकार करना 3. झगड़ा, कलह 4. चढ़ाई 5. डाका 6. पूर्वधारणा, पूर्वग्रह या पूर्व मान्यता।

अभिग्रहण *पुं.* (तत्.) 1. किसी की उपस्थिति में उसकी वस्तु या संपत्ति लूट लेना 2. अधिकार या कानूनी कार्रवाई से किसी की संपत्ति पर कब्जा करना 3. चुनकर लेना 4. किसी अन्य के विचार, नियम आदि अपना लेना 5. दूसरे के बच्चे को गोद लेना, रेडियो आदि के स्वर, चित्र आदि को ग्रहण करना। reception

अभिग्राहित्र *पुं.* (तत्.) एक उपकरण या यंत्र, जिसके द्वारा भेजे गए संदेशों को ध्वनि या चित्र चित्र संकेत में बदलकर बोधगम्य बनाया जाता है।

अभिग्राही *पुं.* (तत्.) वह उपकरण जो रेडियों संकेतों या ध्वनि को ग्रहण करता है। receiver

अभिघट्य *वि.* (तत्.) ढलाई के लायक मिट्टी या अन्य धात्विक पदार्थ जिसे किसी विशिष्ट प्रकार के आकार में गढ़ा जा सके।

अभिघात *पुं.* (तत्.) 1. चोट पहुँचाने या मारने की क्रिया या भाव, प्रहार 2. आघात 3. दो वस्तुओं के बीच होने वाली टक्कर या रगड़ 4. चोट खाने, जख्मी होने, जलने या रसायन आदि बाहरी कारकों से हुई शारीरिक क्षति। trauma

अभिघातक *वि.* (तत्.) चोट पहुँचाने वाला, अभिघात करनेवाला।

अभिघातज *वि.* (तत्.) अभिघात के कारण उत्पन्न (क्षति आदि)।

अभिघाती *वि.* (तत्.) 1. प्रहार करने वाला, चोट पहुँचाने वाला 2. शत्रु।

अभिचर *पुं.* (तत्.) अनुचर, सेवक, नौकर, दास।

अभिचार *पुं.* (तत्.) 1. तंत्र-मंत्र द्वारा मारण, उच्चाटन आदि अनुचित कर्म, काला जादू 2. बुरे कार्यों के लिए मंत्र का दुरुपयोग।

अभिचारक *पुं.* (तत्.) तंत्र-मंत्र द्वारा मारण, उच्चाटन आदि करनेवाला।

अभिचारण *पुं.* (तत्.) तंत्र-मंत्र द्वारा मारण, उच्चाटन आदि करना।

अभिचारी *वि.* (तत्.) दे. अभिचारक।

अभिजन *पुं.* (तत्.) विशिष्ट वर्ग, अभिजात वर्ग।

अभिजात *वि.* (तत्.) 1. उच्च कुल में उत्पन्न, कुलीन 2. श्रेण्य, क्लासिकल (जैसे साहित्य) 3. समाज के उच्चतम वर्ग का (सदस्य)।

अभिजातकृति *स्त्री.* (तत्.) किसी कवि इत्यादि की श्रेष्ठ कलात्मक, एवं कालातीत उदात्त रचना।

अभिजात-तंत्र *पुं.* (तत्.) अभिजात-वर्ग या उच्च कुलीन वर्ग या आर्थिक दृष्टि से संपन्न वर्ग द्वारा नियंत्रित राजव्यवस्था। aristocracy

अभिजातवर्ग *पुं.* (तत्.) अच्छे कुल में उत्पन्न व्यक्तियों का वर्ग, अच्छे कुलीन व्यक्तियों का समुदाय।

अभिजाति *स्त्री.* (तत्.) ऊँचे कुल में जन्म लेने का भाव, कुलीनता।

अभिजित *वि.* (तत्.) विजयी, विजेता *पुं.* (तत्.) 1. एक नक्षत्र जिसमें तीन तारे मिलकर सिंघाड़े का रूप धारण करते हैं 2. विष्णु।

अभिज्ञ *वि.* (तत्.) 1. जानकार, ज्ञाता 2. निपुण।

अभिज्ञता *स्त्री.* (तत्.) 1. जानकारी, जागरूकता 2. निपुणता।

अभिज्ञा *स्त्री.* (तत्.) 1. जानने-पहचानने की क्रिया या भाव 2. स्मरण करने का भाव 3. जागरूकता।

अभिज्ञात *पुं.* (तत्.) जाना-पहचाना, समझा-बूझा।

अभिज्ञान *पुं.* (तत्.) 1. पहचान, निशानी 2. स्मृति, याद।

अभिज्ञान-पत्र/पत्रक *पुं.* (तत्.) ऐसा पत्र या पत्रक जिससे धारक व्यक्ति की सही पहचान संभव हो पर्या. पहचान-पत्र, परिचय-पत्र, आई कार्ड। identity card

अभिज्ञानाघात *पुं.* (तत्.) आयु. सभी अंग स्वस्थ होने के बाद भी पहचानने की शक्ति का अभाव, असंबोधिता *वि.* यह अनेक प्रकार का हो सकता है जैसे- चाक्षुष अभि. श्रवण अभि. इत्यादि।

अभिज्ञानाभरण *पुं.* (तत्.) पहचान कराने के लिए प्रयुक्त आभूषण, जैसे- सीता के लिए भेजी गई अभिज्ञानभरण अंगूठी।

अभिज्ञापक *वि.* (तत्.) जानकारी देनेवाला, सूचना देनेवाला, पहचान कराने वाला।

अभिज्ञापन *पुं.* (तत्.) जनता को महत्वपूर्ण जानकारी देने की क्रिया।

अभिज्ञेय *वि.* (तत्.) 1. पहचान करने योग्य 2. याद करने योग्य 3. पहचान कराने वाला।

अभितप्त *वि.* (तत्.) 1. प्रज्वलित, जला हुआ, गर्म 2. दुखी।

अभिताप *पुं.* (तत्.) 1. मानसिक या शारीरिक ताप 2. वेदना।

अभितापन *पुं.* (तत्.) [अभि+तापन] 1. अतिशय ताप, दुख, पीड़ा 2. इंजी. धातु को विशिष्ट कारणों से अत्यधिक तपाकर ठंडा करना।

अभितुष्टि *स्त्री.* (तत्.) किसी पक्ष के संतुष्ट होने की स्थिति।

अभित्यजन *पुं.* (तत्.) बिना अनुमति लिए नौकरी छोड़ देना।

अभित्याग *पुं.* (तत्.) (स्थान, अन्न-जल, प्रतिज्ञा आदि को) छोड़ देना, त्याग देना।

अभित्यागी *वि.* (तत्.) त्याग करने वाला दे. अभित्याग।

अभित्रास *पुं.* (तत्.) विधि. किसी व्यक्ति को डरा-धमका कर कोई काम करने या न करने के लिए विवश करना intimidation

अभिदत्त *वि.* (तत्.) 1. किसी योजना या उद्देश्य के भागीदार के रूप में प्रदत्त (राशि) 2. किसी बड़ी राशि में (अपने) अंश के रूप में दी गई रकम या वस्तु, अंश दान के रूप में प्रदत्त।

अभिदर्शन *पुं.* (तत्.) 1. देखने, दिखाई देने, या प्रकट होने की क्रिया या भाव।

अभिदाता *पुं.* (तत्.) अभिदान करने वाला।

अभिदान *पुं.* (तत्.) 1. किसी कार्य के संपादन के लिए किसी व्यक्ति द्वारा अपनी ओर से (धन आदि) देने की क्रिया 2. दी गई धनराशि आदि subscription

अभिदाय *पुं.* (तत्.) दे. 1. अभिदान 2. अंशदान।

अभिदायकर्ता *पुं.* (तत्.) दे. 1. अभिदाता 2. अंशदानकर्ता।

अभिदायी भविष्य निधि *स्त्री* (तत्.) दे. अंशदायी भविष्य निधि।

अभिदृश्य *पुं.* (तत्.) जो दिखाई दे, प्रकट रूप, तमाशा, नजारा।

अभिदृश्यक *वि.* (तत्.) 1. दिखाई देने वाला 2. लक्ष्य दृश्य से संबंधित।

अभिदृश्यक लेन्स *पुं.* (तत्.) भौ. सूक्ष्मदर्शी या दूरदर्शी यंत्र का वह लेन्स या लेन्स- समूह जिससे वस्तु देखी जाती है

अभिद्रोह *पुं.* (तत्.) 1. उत्पीड़न 2. निंदा, क्रूरता।

अभिधर्म *पुं.* (तत्.) 1. सर्वोच्च धर्म 2. बौद्धमत के अनुसार सत्य का निरूपण करने वाला धर्म।

अभिधर्षण *पुं.* (तत्.) 1. भूत-प्रेत के कारण हुआ आवेश 2. उत्पीड़न 3. अत्याचार।

अभिधा *स्त्री.* (तत्.) वह शब्द-शक्ति जिसमें पूर्व ज्ञान के आधार पर अर्थ-बोध हो जाता है, जैसे- 'गाय' शब्द सुनते ही जिसने 'गाय' देखी है, उसे तुरंत अर्थ- बोध हो जाता है। शब्द के संकेतित अर्थ या वाच्यार्थ को व्यक्त करने वाली शक्ति 2. शब्द का वाच्यार्थ 3. नाम, संज्ञा।

अभिधात्मक *वि.* (तत्.) वाच्यार्थ को प्रकट करने वाला, सामान्य अर्थ से युक्त।

अभिधान *पुं.* (तत्.) 1. नाम 2. पद, ओहदा 3. उपाधि 4. शब्द, शब्दकोश।

अभिधान कोश *पुं.* (तत्.) वह कोश जिसमें नामों या संज्ञा शब्दों का संकलन हो, शब्द कोश।

अभिधानमाला *स्त्री.* (तत्.) दे. अभिधान कोश।

अभिधामूला ध्वनि *स्त्री.* (तत्.) साहि.शा. ध्वनि का एक भेद जिस में व्यंग्यार्थ वाच्यार्थ पर आश्रित होता है।

अभिधायक *वि.* (तत्.) 1. अभिधेय अर्थ का वाचक 2. नाम प्रकट करने वाला 3. परिचायक।

अभिधारी *पुं.* (तत्.) भूमि आदि को पट्टे अथवा किराए पर लेने वाला पट्टाधारी व्यक्ति tenant

अभिधावक *वि.* (तत्.) 1. धावा बोलनेवाला, आक्रमण करनेवाला, हमला करनेवाला 2. (दौड़ते हुए व्यक्ति का) पीछा करने वाला।

अभिधावन *पुं.* (तत्.) 1. हमला, आक्रमण, धावा 2. पीछा करने की क्रिया।

अभिधावाद *पुं.* (तत्.) यह सिद्धांत कि शब्द का अर्थ उसके वाच्यार्थ या संकेतार्थ से ही निष्पादित होता है न कि व्यंजना आदि द्वारा।

अभिधृति *स्त्री.* (तत्.) पट्टे अथवा किराए पर लेने से प्राप्त अधिकार, ऐसे अधिकार से युक्त होने की स्थिति। tenancy

अभिधेय *वि.* (तत्.) 1. अभिधा शक्ति द्वारा बोध्य 2. वाच्य, कथनीय 3. प्रतिपाद्य 4. नाम देने योग्य5 अर्थ *पुं.* (तत्.) 1. नाम 2. अभिधार्थ 3. भावार्थ 4. विषय।

अभिधेयार्थ *पुं.* (तत्.) कथित शब्द का अर्थ, वाच्यार्थ, कोशीय अर्थ।

अभिध्वंस *पुं.* (तत्.) सा.अर्थ. तोडफ़ोड़ प्रशा. राष्ट्र, राष्ट्र, शासन, अर्थव्यवस्था, आदि को गंभीर क्षति क्षति पहुँचाने के लिए की गई तोड़-फोड।

अभिनंदन *पुं.* (तत्.) 1. प्रशंसा, सराहना 2. आदर 3. सम्मान 4. स्वागत।

अभिनंदन ग्रंथ *पुं.* (तत्.) किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालने वाली (प्राय: अनेक लेखकों द्वारा लिखित) लिखित) संपादित कृति। felicitation volume

अभिनंदन पत्र *पुं.* (तत्.) किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के अभिनंदन के अवसर पर सार्वजनिक रूप से पढ़ा जाने वाला पत्र।

अभिनंदन समारोह *पुं.* (तत्.) किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के व्यक्तित्व और कृतित्व की प्रशंसा हेतु आयोजित सार्वजनिक समारोह।

अभिनंदनीय *वि.* (तत्.) अभिनंदन या सराहना करने योग्य।

अभिनंदित *वि.* (तत्.) प्रशंसित व्यक्ति, जिसका अभिनंदन किया गया हो।

अभिनंद्य *वि.* (तत्.) अभिनंदनीय, अभिनंदन के योग्य।

अभिनत *वि.* (तत्.) 1. जो किसी दिशा में झुका हुआ हो 2. पूर्वाग्रह से युक्त होकर पक्षपात करने वाला।

अभिनति *स्त्री.* (तत्.) झुकाव 1. गणि. क्रमबद्ध रूप से किसी सांख्यिकीय परिणाम की समता को विरूपित करने वाला प्रभाव 2. भूवि. शैलों की संरचना जिसमें दोनों पार्श्वों के स्तर भीतर की ओर झुकते हों 3. मनो. किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति अपेक्षाकृत अतिरिक्त झुकाव। bias

अभिनय *पुं.* (तत्.) 1. किसी अभिनेता आदि द्वारा द्वारा कथा के मूल पात्र की भूमिका निभाना 2. किसी व्यक्ति के कथन या उसकी चेष्टाओं की नकल प्रस्तुत करना, स्वाँग। अभिनय के कई रूप हैं-आंगिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक।

अभिनय-कला *स्त्री.* (तत्.) अभिनय की कला, नाट्यकला।

अभिनय गीत *पुं.* (तत्.) अभिनय या नाटक से युक्त गीत की प्रस्तुति शारीरिक चेष्टा, नृत्यादि सहित गीत action song

अभिनय-मंच *पुं.* (तत्.) नाटक का मंच। अभिनय प्रस्तुत करने के लिए निर्धारित स्थान। stage

अभिनयशाला *स्त्री.* (तत्.) अभिनय या नाटक के लिए बनाया गया नाट्यगृह, नाट्यशाला, प्रेक्षागार। theatre

अभिनव *वि.* (तत्.) 1. नया, जीवन, नूतन 2. आधुनिक।

अभिनव युग *पुं.* (तत्.) भूवि. नूतनजीवी महाकल्प के चतुर्थ कल्प का सबसे बाद वाला युग जो दस हजार वर्ष पूर्व आरंभ माना गया है और आज तक चल रहा है, इस युग में मानव अपने विकास की चरम सीमा तक जा पहुँचा है।

अभिनवीकरण *पुं.* (तत्.) कर्मचारियों के काम, समय तथा सामग्री आदि की वैज्ञानिक व्यवस्था करके कार्य की मात्रा, गुणता, दशाओं आदि में सुधार करना rationalisation इसे 'युक्तीकरण', 'सुव्यवस्थीकरण', 'सुविन्यास' आदि भी कहा जाता है।

अभिनाम *पुं.* (तत्.) किसी संस्था, व्यक्ति आदि के नाम से पहले जोड़ा जाने वाला गौरव या वैशिष्ट्य का प्रतीक शब्द, जैसे- देवर्षि, लोकनायक, महात्मा, नेताजी आदि title 2. विधिक मूल्य, आदर आदि की वृद्धि का सूचक शब्द जैसे- 'महामहिम'।

अभिनियम *पुं.* (तत्.) सत्य और प्रामाणिक माना जाने वाला आधारभूत सिद्धांत या नियम पर्या. उपसूत्र. canon तु. धर्मनियम, सिद्धांत।

अभिनिर्णय *पुं.* (तत्.) दे. अधिमत।

अभिनिर्णयाधीन *पुं.* (तत्.) दे. अधिमताधीन।

अभिनिर्णायक *पुं.* (तत्.) दे. जूरी। jury

अभिनिर्देश *पुं.* (तत्.) 1. किसी विवादास्पद विषय पर आधिकारिक आदेश या निर्णय प्राप्त करने के लिए उसे उपयुक्त अधिकारी के पास भेजने की क्रिया या भाव 2. किसी विषय को अभीष्ट या इष्टतम कार्रवाई के लिए सक्षम व्यक्ति या संस्था को भेजना। referal

अभिनिविष्ट *वि.* (तत्.) 1. पूरी तरह जुड़ा हुआ, तल्लीन 2. जिसे अधिकार-संपन्न किया गया हो।

अभिनिवेश *पुं.* (तत्.) 1. पूर्ण निश्चय और लगन से काम में लगने का भाव 2. संकल्प 3. लगन, मनोयोग 4. अध्यवसाय।

अभिनिवेशित *वि.* (तत्.) 1. प्रविष्ट किया हुआ 2. डुबाया हुआ 3. तल्लीन।

अभिनिषेध *पुं.* (तत्.) प्रतिबंध, प्रतिबंध लगाने वाली आज्ञा, मनाही, रोकटोक। proscription

अभिनिष्क्रमण *पुं.* (तत्.) 1. बाहर जाना, बहिर्गमन 2. बौद्ध धर्म के अनुसार संन्यास-ग्रहण हेतु गृह-त्याग।

अभिनिष्पत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. पूर्णता, परिपूर्णता 2. समाप्ति, अंत 3. सिद्धि।

अभिनिष्पन्न *वि.* (तत्.) 1. पूर्ण 2. समाप्त, संपन्न।

अभिनीत *वि.* (तत्.) 1. अभिनय किया हुआ, खेला हुआ (नाटक) 2. निकट लाया हुआ 3. पूर्णता को पहुँचा हुआ 4. अलंकृत 5. उचित।

अभिनेता *पुं.* (तत्.) 1. अभिनय करनेवाला 2. नाटक या सिनेमा का पात्र 3. स्वाँग दिखानेवाला।

अभिनेत्री *स्त्री.* (तत्.) 1. नाटक या सिनेमा में अभिनय करनेवाली acctress 2. नटी।

अभिनेय *वि.* (तत्.) अभिनय करने योग्य, खेलने योग्य (नाटक)।

अभिन्न *वि.* (तत्.) 1. जो भिन्न या अलग न हो, अपृथक, संबद्ध 2. घनिष्ठ, अंतरंग विलो. भिन्न।

अभिन्नता *स्त्री.* (तत्.) भेद या भिन्नता का अभाव, अपार्थक्य, घनिष्ठता।

अभिन्यास *पुं.* (तत्.) 1. किसी निर्माणाधीन भवन या योजना का खाका 2. सन्निपात ज्वर का एक रूप जिसमें नींद नहीं आती, देह काँपती है और कमजोरी हो जाती है।

अभिन्न हृदय *वि.* (तत्.) जिनका हृदय भेद रहित या एक हो, एकहृदय, अत्यंत घनिष्ठ।

अभिपतन *पुं.* (तत्.) 1. पूर्ण पतन, पूरी तरह गिरने का भाव 2. समीप आना 3. आक्रमण।

अभिपवन *पुं.* (तत्.) वायु के अनुसार दिशा वाला, वायु के सम्मुख।

अभिपवन-पार्श्व *पुं.* (तत्.) पर्वत, भवन आदि का वह भाग (पार्श्व) जिधर वायु सीधी लगती है। (अर्थात् जिस दिशा से वायु आ रही है, उस दिशा वाला भाग)।

अभिपुष्ट *वि.* (तत्.) 1. जिसकी पुष्टि हो चुकी हो, पूर्णतः समर्पित 2. अच्छी तरह से पुष्ट किया हुआ।

अभिपुष्टि *स्त्री.* (तत्.) किसी कथन, वक्तव्य आदि की सत्यता की संपुष्टि।

अभिप्रणय *पुं.* (तत्.) 1. प्रेम 2. कृपा।

अभिप्रयोग *पुं.* (तत्.) परखना, जाँच-परख करना, परीक्षण करना (संभावना के आधार पर), किसी वस्तु या परिघटना के गुणधर्म की जानकारी के लिए जाँच परख या परीक्षण trial

अभिप्राणन *पुं.* (तत्.) साँस बाहर निकालने की क्रिया, प्रश्वास।

अभिप्राप्ति *स्त्री.* (तत्.) प्रयत्न करके प्राप्त करने की क्रिया या भाव। obtaining

अभिप्राप्य *वि.* (तत्.) जिसे प्रयत्न करके प्राप्त किया जा सके।

अभिप्राय *पुं.* (तत्.) 1. आशय, मतलब, अर्थ, तात्पर्य 2. प्रयोजन 3. किसी कलाकृति आदि का प्रमुख, केंद्रीय या मूल विषय। motive

अभिप्रेत *वि.* (तत्.) इष्ट, अभीष्ट, अभिलषित, चाहा हुआ।

अभिप्रेरक *वि.* (तत्.) प्रेरणा देने वाला, प्रेरक।

अभिप्रेरण *पुं.* (तत्.) प्रेरित करना। इंगित करना, प्रेरणा देना, प्रोत्साहन।

अभिप्लव *पुं.* (तत्.) 1. खुराफात, उछलकूद, उपद्रव 2. आकस्मिक दुर्घटना या विपत्ति 3. बाढ़।

अभिबंधन *पुं.* (तत्.) वाणि. किसी सौदे को करने में वचनबद्ध पर्या. प्रतिबद्धता।

अभिभव *पुं.* (तत्.) 1. पराजय 2. अनादर, तिरस्कार 3. अधिक, प्रबलता।

अभिभावक *पुं.* (तत्.) 1. संरक्षक 2. दमन या पराजित करने वाला, वशीभूत करने वाला।

अभिभावकता *स्त्री.* (तत्.) वह विधिमान्य स्थिति जिसमें कोई व्यक्ति किसी अवयस्क या असमर्थ व्यक्ति का संरक्षक (अभिभावक) नियुक्त होता है guardianship

अभिभावन *वि.* (तत्.) वशीभूतकारी, रुचिकर; अच्छा लगने वाला।

अभिभावित *वि.* (तत्.) 1. अपमानित, तिरस्कृत 2. वशीकृत 3. आक्रांत।

अभिभावी *वि.* (तत्.) 1. अपमान करने वाला, आक्रमण करने वाला 2. दबाकर रखने वाला।

अभिभाषण *पुं.* (तत्.) किसी विशेष अवसर पर पढ़ा जाने वाला (अतिविशिष्ट व्यक्ति का) औपचारिक भाषण, जैसे- संसद् (या विधान सभा) के संयुक्त अधिवेशन के आरंभ में राष्ट्रपति या राज्यपाल का अभिभाषण तु. भाषण।

अभिभू *वि.* (तत्.) आगे बढ़ा हुआ, वरिष्ठ।

अभिभूत *वि.* (तत्.) 1. अत्यधिक प्रभावित 2. वशीभूत 3. आक्रांत, पीड़ित।

अभिभूति *स्त्री.* (तत्.) 1. गहन प्रभाव 2. पराजय, हार 3. वशीभूत होने की स्थिति 4. अपमान 5. आधिक्य।

अभिमंडन *पुं.* (तत्.) 1. सजावट, शृंगार 2. अपने मत की पुष्टि।

अभिमंत्र *पुं.* (तत्.) पवित्र करने वाला यंत्र।

अभिमंत्रण *पुं.* (तत्.) 1. मंत्र द्वारा पवित्र करने की क्रिया 2. मंत्र द्वारा आवाहन करना 3. जादू आदि करना 4. निमंत्रण।

अभिमंत्रित *वि.* (तत्.) 1. मंत्र से पूत, मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ 2. आहूत।

अभिमत *पुं.* (तत्.) 1. मनो. वांछित, 2. अभीष्ट 2. सम्मति, राय, विचार 3. मनचाही बात, जैसे- उसका अभिमत था कि हम इस मामले में हस्तक्षेप न करें।

अभिमति *स्त्री.* (तत्.) 1. राय, विचार 2. अभिमान, गर्व, अहंकार।

अभिमर्दन *पुं.* (तत्.) पीसने या कुचलने की क्रिया।

अभिमर्श *पुं.* (तत्.) दे. अभिमर्षण।

अभिमर्ष *पुं.* (तत्.) 1. स्पर्श, छूना 2. आक्रमण 3. संघर्षण 4. पराजय।

अभिमर्षण *पुं.* (तत्.) 1. स्पर्श, रगड़ 2. आक्रमण 3. संभोग।

अभिमान *वि.* (तत्.) 1. अहंकार, गर्व, दर्प 2. स्वाभिमान।

अभिमानी *वि.* (तत्.) जिसे अभिमान हो, घमंडी।

अभिमुक्ति *स्त्री.* (तत्.) विधि. किसी को उसके कर्तव्य अथवा दायित्व से मुक्त किए जाने की स्थिति।

अभिमुख *वि.* (तत्.) 1. किसी की तरफ मुँह किए हुए 2. सामने 3. प्रवृत्त, उद्यत ।

अभियंता *पुं.* (तत्.) मशीनी कल-पुरजों की रचना और उनका संचालन करने वाला विशेषज्ञ, इंजीनियर।

अभियंत्रण *पुं.* (तत्.) अभियंता या इंजीनियर का कार्य, यंत्र की रचना, सुधार और संचालन की विद्या, इंजीनियरी।

अभियांत्रिकी *स्त्री.* (तत्.) यंत्रों-उपकरणों आदि के निर्माण और प्रयोग का विज्ञान।

अभियाचन *पुं.* (तत्.) माँगने या निवेदन करने की क्रिया या भाव।

अभियाचना *स्त्री.* (तत्.) विनयपूर्वक या नम्रतापूर्वक की गई प्रार्थना या अनुरोध।

अभियाचित *वि.* (तत्.) माँगा हुआ, (वस्तु) जिसकी याचना की गई हो, प्रार्थित।

अभियान *पुं.* (तत्.) 1. किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए की जानेवाली लक्ष्योन्मुख विशेष कार्रवाई, मुहिम 2. (खेलकूद) किसी दुर्गम स्थल की सैर के लिए जाना।

अभियानिक *वि.* (तत्.) 1. अभियान से संबंधित 2. अभियान जैसा।

अभियानी *पुं.* (तद्.) 1. लक्ष्य प्राप्ति या विजय पाने की इच्छा से अभियान करनेवाला 2. खोज यात्री।

अभियुक्त *वि.* (तत्.) जिस पर अभियोग लगाया गया हो, *पुं.* वह व्यक्ति जिस पर अभियोग लगाया गया हो।

अभियोक्ता *वि.* (तत्.) अभियोग लगाने वाला, फरियादी, वादी, अभियोगी, *पुं.* 1. शत्रु, दुश्मन 2. आक्रामक।

अभियोक्त्री *स्त्री.* (तत्.) महिला अभियोक्ता।

अभियोग *पुं.* (तत्.) दोषारोप, अपराध का आरोप, नालिश।

अभियोग पत्र *पुं.* (तत्.) किसी के किए गए अपराधों के लिए न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जाने वाला पत्र।

अभियोगाधीन *वि.* (तत्.) ऐसा विषय जिस पर न्यायालय में निर्णय के लिए मुकदमा चल रहा हो।

अभियोगी *वि.* (तद्.) अभियोग लगाने वाला, शिकायती, फरियादी, मुकदमा दायर करने वाला।

अभियोजक *पुं.* (तत्.) विधि. वह वकील जो न्यायालय में अभियुक्त के विरूद्ध सरकारी पक्ष प्रस्तुत करता है। prosecutor

अभियोजन *पुं.* (तत्.) 1 कथित अपराधी के विरुद्ध की गई वह सारी न्यायिक कार्रवाई जो उसे अपराधी सिद्ध करने के लिए आवश्यक है 2. अभियोजक का कार्य।

अभियोजन पक्ष *पुं.* (तत्.) न्यायालय में मुकदमा दायर करने वाला व्यक्ति या अनेक व्यक्ति। विलो. बचाव पक्ष।

अभियोज्य *वि.* (तत्.) जिस पर अभियोग या दोष लगाया जाए। *पुं.* ऐसा आरोप जिसमें अभियोग चल सके।

अभिरंजन *पुं.* (तत्.) ठीक प्रकार से रंगना। अनुराग करना।

अभिरंजित *वि.* (तत्.) 1. रसायन के मिश्रण से रंगा हुआ, निशान या धब्बों से भरा 2. अनुराग से भरा।

अभिरंज्य *वि.* (तत्.) जो रंगने योग्य हो जो अनुरक्त करने लायक हो।

अभिरक्त *वि.*(तत्.) लगा हुआ, संबद्ध, अनुरक्त।

अभिरक्षक *पुं.* (तत्.) 1. किसी व्यक्ति या वस्तु को सुरक्षा की दृष्टि से अपने अधिकार में रखनेवाला, संरक्षण में रखने वाला custodian 2. पहरेदार।

अभिरक्षण *पुं.* (तत्.) किसी संपत्ति आदि की पूरी कस्टडी 2. किसी व्यक्ति को भागने आदि से रोकने के लिए संरक्षण में रखना।

अभिरक्षा *स्त्री.* (तत्.) दे. अभिरक्षण।

अभिरचना *स्त्री.* (तत्.) किसी संरचना की बनावट आदि का ढाँचा। pattern

अभिरचना अन्विति *स्त्री.* (तत्.) दे. अभिरचना समता।

अभिरचना अभ्यास *पुं.* (तत्.) भाषा. भाषा विशेष किसी (दी गई) अभिरचना के नमूने के आधार पर उसी भाषा के अन्य वाक्य रूपों का निर्माण pattern practice

अभिरचना रिक्ति *स्त्री.* (तत्.) भाषा. स्वनविज्ञान या रूपविज्ञान के संदर्भ में अभिरचना समता में किसी भाषिक इकाई की अनुपस्थिति pattern gap तु. अभिरचना क्षमता।

अभिरचना समता *स्त्री.* (तत्.) भाषा. किसी भाषा भाषा के स्वनिमों, रूपिमों या रूपों की व्यवस्था में अंतर्निहित समानता तु. अभिरचना रिक्ति।

अभिरज्य *वि.* (तत्.) अभिरंजन के योग्य, जिसका अभिरंजन किया जाए।

अभिरत *वि.* (तत्.) अनुरक्त, लगा हुआ, लीन।

अभिराम *वि.* (तत्.) मनोहर, सुंदर, रम्य, प्रिय, आनंददायक *पुं.* आनंद, सुख।

अभिरामता *स्त्री.* (तत्.) सुंदरता, सौंदर्य, मनोहरता, रमणीयता।

अभिरामी *वि.* (तद्.) 1. रमण करने वाला 2. व्याप्त होने वाला।

अभिरुचि *स्त्री.* (तत्.) 1. विशेष रुचि, चाह, पसंद 2. शौक, झुकाव।

अभिरूप *वि.* (तत्.) 1. मनोहर, रमणीय, सुंदर 2. अनुरूप, प्रिय *पुं.* 1. शिव 2. विष्णु 3. कामदेव 4. चंद्रमा।

अभिरेखण *पुं.* (तत्.) दीवार या भित्ति पर उकेरे गए चित्र या आकृतियाँ।

अभिरोग *पुं.* (तत्.) पशुओं का एक रोग जिसमें उनकी जीभ में कीड़े पड़ जाते हैं।

अभिलंब *पुं.* (तत्.) गणि. (वह रेखा) जो किसी वक्र अथवा पृष्ठ के किसी दिए हुए बिंदु पर खींची हुई स्पर्श-रेखा या स्पर्श समतल पर लंब हो और उसी बिंदु से होकर जाती हो। tangent

अभिलक्षण *पुं.* (तत्.) किसी व्यक्ति या वस्तु की व्यष्टिगत विशेषता या अभिज्ञान के सूचक लक्षण जो उसके (अन्य वस्तुओं से) भेदक लक्षण को स्पष्ट करता है।

अभिलक्षित *वि.* (तत्.) 1. अंकित, चिह्नित 2. संकेतित, चुना हुआ 3. लक्ष्य के रूप में अपनाया गया।

अभिलक्ष्य *वि.* (तत्.) लक्ष्य बनाने योग्य, ध्यान देने योग्य।

अभिलत्व *पुं.* (तत्.) भेदहीनता, अभेद।

अभिलषित *वि.* (तत्.) इष्ट, वांछित, चाहा हुआ।

अभिलाभ *पुं.* (तत्.) 1. व्यय की अपेक्षा आय की अधिकता 2. लाभ के अलावा अन्य प्रासंगिक कारणों से हुआ फायदा जैसे- फैक्टरी की भूमि की कीमत का बढ़ जाना आदि gain

अभिलाभपूर्ण नियोजन *पुं.* (तत्.) ऐसी नौकरी, व्यवसाय या काम-धंधा जिसमें अत्यधिक लाभ की गुंजाइश हो।

अभिलाष *पु.* (तत्.) दे. अभिलाषा।

अभिलाषा *स्त्री.* (तत्.) इच्छा, मनोरथ, कामना, चाह।

अभिलाषी *वि.* (तत्.) चाहने वाला, इच्छा करने वाला, इच्छुक।

अभिलिखित *वि.* (तत्.)1. लिखा हुआ, लिपिबद्ध 2. दे. अभिलेखित।

अभिलेख *पुं.* (तत्.) 1. किसी घटना, वृत्तांत, कार्य आदि का कागज, शिला, ताम्रपत्र आदि पर लिखित विवरण 2. उक्त कागज, शिला, ताम्रपत्र आदि।

अभिलेख कक्ष *पुं.* (तत्.) कार्यालय का वह कक्ष जिसमें अभिलेखों या रिकॉर्ड के लिए फाइलों आदि को व्यवस्थित रूप से रखा जाता है। record room

अभिलेखन *पुं.* (तत्.) 1. लिखना, पत्थर या शिला पर खोदना, उत्कीर्णन 2. अभिलेख का रूप देना 3. भौ. ध्वनि, लिपि आदि किसी रूप में सूचना का संग्रहण। recording

अभिलेख न्यायालय *पुं.* (तत्.) वह न्यायालय जिसके निर्णयों और कार्यवाहियों का स्थायी अभिलेख रखा जाता है और जिसके पास न्यायालय की अवमानना करने वालों को दंडित करने की शक्ति होती है। court of record

अभिलेखपाल *पुं.* (तत्.) अभिलेखों की देखभाल और सुरक्षा करने वाला विशेषज्ञ कर्मचारी।

अभिलेखागार *पुं.* (तत्.) महत्वपूर्ण राजकीय या राष्ट्रीय दस्तावेजों, मिसिलों और पत्राचार आदि को सुरक्षित रखने का आगार या भवन। archives

अभिलेखालय *पुं.* (तत्.) अभिलेखों का संग्रह स्थान, संग्रहालय।

अभिलेखित *पुं.* (तत्.) अभिलेख के रूप में तैयार किया गया, लिखित पत्र आदि *वि.* लिखित, लिपिबद्ध।

अभिलोपन *स.क्रि.* (तत्.) मिटा देना, उड़ा देना, नष्ट कर देना।

अभिवंचित *वि.* (तत्.) जिसके साथ छल किया गया हो, जिसे धोखा दिया गया हो।

अभिवंदन *पुं.* (तत्.) 1. प्रणाम, नमस्कार, अभिवादन 2. स्तुति, प्रशंसा।

अभिवंदना *स्त्री.* (तत्.) दे. अभिवंदन।

अभिवंदनीय *वि.* (तत्.) 1. नमस्कार करने योग्य, अभिवादन करने योग्य प्रणम्य 2. स्तुति करने योग्य।

अभिवंदित *वि.* (तत्.) 1. जिसे प्रणाम किया गया हो 2. प्रशंसित, स्तुत।

अभिवंद्य *वि.* (तत्.) अभिवादन करने योग्य, प्रणम्य, वंदनीय।

अभिवक्ता *पुं.* (तत्.) 1. न्यायालय में किसी वाद-विषय और उस पर बहस करने के लिए अधिकृत विधि-व्यवसायी। pleader

अभिवचन *पुं.* (तत्.) 1. न्यायालय में वाद-विषय के औचित्य, प्रतिहेतु या कारण के विषय में अभिवक्ता का कथन। plea

अभिवदन *पुं.* (तत्.) 1. कथन, वचन, भाषण 2. नमन, नमस्कार।

अभिवर्धन *पुं.* (तत्.) वृद्धि, समृद्धि, विकास।

अभिवर्धन सस्यन *पुं.* (तत्.) ऐसी फसल उगाना जिससे मुख्य फसल की पैदावार बढ़े जैसे- पहली कटाई में चारे की अधिक पैदावार के लिए उसके साथ सेंहजी या सरसों बोना।

अभिवर्धित *वि.* (तत्.) बढ़ा हुआ, समृद्ध, विकसित।

अभिवांछित *वि.* (तत्.) मन चाहा, इच्छित, अभीष्ट।

अभिवाँछा *स्त्री.* (तत्.) कामना, इच्छा, अभिलाषा।

अभिवाक् *स्त्री.* (तत्.) किसी बात के समर्थन में दी गई युक्ति या तर्क। plea

अभिवादक *वि.* (तत्.) अभिवादन या नमस्कार करनेवाला; विनम्र, विनीत।

अभिवादन *पुं.* (तत्.) 1. प्रशंसा, स्तुति 2. नमस्कार, प्रणाम।

अभिवादित *वि.* (तत्.) जिसका अभिवादन किया गया हो।

अभिवाद्य *वि.* (तत्.) अभिवादन करने लायक।

अभिवाही *वि.* (तत्.) मेरुदंड से निकलने वाली तंत्रिकाएँ जो मस्तिष्क तक रक्त का संचार करती है, अन्तः रक्त संचारी तंत्रिका।

अभिविन्यास *पुं.* (तत्.) नए वातावरण, कार्यदिशा, पाठ्यक्रम आदि के साथ समायोजन बिठाना। orientation

अभिविश्रुत *पुं.* (तत्.) बहुत प्रसिद्ध, बहुचर्चित।

अभिवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) सा.अर्थ. रवैया, रुख, मन का झुकाव या रुझान, मनोवृत्ति मनो. सामाजिक परिवेश में संपर्क में आने पर व्यक्ति के मन में किसी वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल प्रतिक्रिया प्रकट करने वाली सुनिश्चित और स्थायी प्रवृत्ति। attitude

अभिवृद्धि *स्त्री.* (तत्.) 1. मात्रा, आकार या परिमाण में वृद्धि 2. उन्नति, विकास, तीव्र वृद्धि, अत्यधिक

प्राप्ति 3. बाढ आदि द्वारा बहाकर लाई गई मिट् मिट्टी से नदी तट या मुहाने के आकार या आमाप में वृद्धि ।

अभिवेचक *पुं.* (तत्.) अभिवेचन करने के लिए प्राधिकृत व्यक्ति या संस्था आदि।

अभिवेचन *पुं.* (तत्.) अश्लीलता, जनद्वेषकारी, सरकार-विरोधी या नैतिकता विरोधी आदि आपात्तिजनक कृतियों, फिल्मों, व्याख्यानों आदि की कांट'छांट करने या निषिद्ध करने अथवा हटा लेने का वह कार्य जो कानून द्वारा दिया गया होता है।

अभिवेदन *पुं.* (तत्.) दे. अभ्यावेदन।

अभिव्यंजक *वि.* (तत्.) 1. प्रकट या व्यंजित करनेवाला 2. सूचक 3. बोधक।

अभिव्यंजन *पुं.* (तत्.) 1. विचारों या भावों का शब्दों या संकेतों द्वारा प्रकटीकरण, अभिव्यक्ति 2. प्रकाशन।

अभिव्यंजना *स्त्री.* (तत्.) शब्दों या किसी अन्य माध्यम से किसी विषय के वर्णन या निरूपण की क्रिया या प्रक्रिया।

अभिव्यंजनावाद *पु.* (तत्.) कला. कला को अधिक अभिव्यंजनात्मक और संवेग पूर्ण बनाने के लिए विरूपित आकृतियों, विषयनिष्ठ प्रतीको तथा गहरे रंगों के प्रयोग का सिद्धांत नाट्य. नाट्यलेखन तथा मंच-प्रस्तुतीकरण की वह शैली जिसमें नाटक की विषय वस्तु की संवेगात्मकता तथा पात्रों की अपनी स्वाभाविक (मनोवैज्ञानिक) प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति पर बल दिया जाता है।

अभिव्यंजित *वि.* (तत्.) जिसकी अभिव्यक्ति हुई हो, जिसे शब्दों, संकेतों, चेष्टाओं द्वारा प्रकट किया गया हो।

अभिव्यक्त *वि.* (तत्.) जो प्रकट किया गया हो, जिसकी अभिव्यक्ति की गई हो।

अभिव्यक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. अभिव्यक्त या प्रकट होने की क्रिया या भाव 2. कारण का कार्य के रूप में परिणत होने की दशा।

अभिव्यक्तिकरण *पुं.* (तत्.) अभिव्यक्त करने (या होने) की प्रक्रिया, सामने आ जाना, प्रकट करना।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता *स्त्री.* (तत्.) सरकार की ओर से, विघ्न बाधा या हस्तक्षेप के बिना, लोगों को अपनी बात खुले आम कहने-सुनने बताने का (मौलिक) अधिकार दे. वैचारिक स्वतंत्रता।

अभिव्यक्तिवाद *पुं.* (तत्.) 1. सृष्टि में ब्रह्मा की की अभिव्यक्ति मानने का सिद्धांत 2. इस सिद्धांत के अंतर्गत रस की निष्पत्ति के विषय में आचार्य अभिनवगुप्त का यह मत कि श्रोता या सह्दय में स्वयं उसकी अपनी ही सहज अनुभूतियों के आधार पर उसपर नायक-नायिका के मनोभावों संचारी भाव आदि द्वारा इस की अभिव्यक्ति होती है।

अभिव्यक्तिवादी *वि.* (तद्.) अभिव्यक्तिवाद का अनुयायी या समर्थक।

अभिव्यापक *वि.* (तत्.) पूर्ण रूप से फैला हुआ या सर्वप्रचलित।

अभिव्याप्त *वि.* (तत्.) जो सब तरफ फैला हो। फैला हुआ, विस्तृत।

अभिव्याप्ति *स्त्री.* (तत्.) सर्वव्यापकता, समावेश।

अभिशंका *स्त्री.* (तत्.) 1. आशंका, संदेह 2. चिंता, चिंता, व्यग्रता।

अभिशंसन *पुं.* (तत्.) 1. दोषारोपण 2. व्यभिचार का दोष लगाना 3. अपराधी घोषित करना।

अभिशंसा *स्त्री.* (तत्.) दे. अभिशंसन।

अभिशंसित *वि.* (तत्.) न्यायालय में जिस पर लगाया गया दोष सिद्ध हो गया हो।

अभिशापित *वि.* (तत्.) लांछित, आरोपित, अभिशप्त।

अभिशप्त *पु.* (तत्.) शापित, जिसे शाप दिया गया हो।

अभिशाप *पुं.* (तत्.) शाप, बददुआ।

अभिशापन *पुं.* (तत्.) बुराई करना, कोसना, अहित-चिंतन।

अभिशून्यन *पुं.* (तत्.) 1. शून्य करना 2. रद्द या व्यर्थ करना, बातिल करना।

अभिशून्यीकृत *वि.* (तत्.) 1. जो शून्य कर दिया गया हो 2. जो रद्द किया गया हो, बातिल किया हुआ।

अभिश्रुति *स्त्री.* (तत्.) (स्वन परिवर्तन का एक प्रकार) अंत्य प्रत्यय के अग्रस्वर होने के कारण मूल शब्द के स्वर का अग्रस्वर में परिवर्तन, उदा. जर्मनी में gesi का gisi में परिवर्तन उससे आधुनिक अंग्रेजी में geese हो गया।

अभिषंग *पुं.* (तत्.) 1. (अनपेक्षित) आसक्ति 2. किसी बात या कार्य में साथ होना 3. शपथ, सौगंध 4. आलिंगन, गले लगाना।

अभिषदीय रूपलेखन *पुं.* (तत्.) वह विशेष लेख जो किसी अभिषद् की ओर से प्रकाश के लिए भेजा गया हो या प्रकाशित हो। syndicated feature

अभिषद् *स्त्री.* (तत्.) किसी वर्ग-विशेष के सभी प्रतिनिधियों का निकाय, जो उनके हितों की रक्षा करता है syndicate

अभिषिक्त *वि.* (तत्.) 1. जिसका अभिषेक हुआ हो 2. मंगल या बाधा-शांति के लिए जिस पर कुश से मंत्रपूत जल छिडक़ा गया हो।

अभिषेक *पुं.* (तत्.) मंत्रपूत जल छिड़क कर किया जाने वाला राजतिलक।

अभिषेक्ता *पुं.* (तत्.) अभिषेक करनेवाला, अभिषेककर्ता।

अभिषेचन *पुं.* (तत्.) 1. जल का छिडक़ाव, सिंचन 2. राज्याभिषेक के लिए पवित्र जल का सिंचन।

अभिषेचनीय *वि.* (तत्.) अभिषेक के योग्य, राज्यारोहण योग्य।

अभिषेच्य *वि.* (तत्.) दे. अभिषेचनीय।

अभिष्यंद *पुं.* (तत्.) 1. स्राव 2. एक प्रकार का अक्षिरोग, आँख का रिसना, या लाल हो जाना।

अभिसंग *पुं.* (तत्.) 1. (जैन) आसक्ति, दु:संग 2. घनिष्ठ संबंध, प्रेम, अनुराग।

अभिसंताप *पुं.* (तत्.) 1. पीड़ा 2. संघर्ष; युद्ध।

अभिसंदोह *पुं.* (तत्.) अदला-बदली, विनिमय 2. पुरूष लिंग।

अभिसंध *पुं.* (तत्.) धोखा देनेवाला, ठग, वंचक।

अभिसंधान *पुं.* (तत्.) 1. वंचना, धोखा 2. लक्ष्य।

अभिसंधि *स्त्री.* (तत्.) किसी को हानि पहुंचाने के लिए मिलकर रचा गया कुचक्र, षड्यंत्र।

अभिसंधिता *स्त्री.* (तत्.) अपने प्रियतम का तिरस्कार कर पश्चाताप करने वाली नायिका/स्त्री नाट्य शा. नायिका का एक भेद, कलहांतरिता नायिका।

अभिसंस्कार *स्त्री.* (तत्.) 1. सूझ, विचार 2. विकास, परिष्कार।

अभिसमय *पुं.* (तत्.) 1. किसी विषय पर संबंधित पक्षों (राज्यों, देशों) का समझौता या औपचारिक करार convention 2. कोई अलिखित प्रथा, परिपाटी या परंपरा।

अभिसर्ग *पुं.* (तत्.) 1. निर्माण, रचना 2. सृष्टि।

अभिसाक्षी *पुं.* (तत्.) विधि. शपथपूर्वक साक्षी के रूप में प्रस्तुत होने वाला व्यक्ति deponant

अभिसार *पुं.* (तत्.) प्रियतम से मिलने के लिए निश्चित स्थान पर जाना 2. प्रेमी-प्रेमिका मिलन स्थल, संकेत स्थल।

अभिसारक *वि.* (तत्.) 1. अभिसार करनेवाला 2. हमराही।

अभिसारिका *स्त्री.* (तत्.) प्रियतम से मिलने के लिए संकेत स्थल पर गुप्त रूप से जाने वाली नायिका।

अभिसारी *वि.* (तत्.) 1. प्रियतम से मिलने पर संकेत स्थल पर जानेवाला 2. साधक 3. किसी एक बिंदु या स्थान की ओर जाने वाली या वहां पर मिलने वाली।

अभिसारी श्रेणी *स्त्री.* (तत्.) गणि. ऐसी श्रेणी जिसमें पदों की संख्या अनंत होने पर भी उन पदों का योगफल अनंत न हो convergent series

अभिसिंचित *वि.* (तत्.) जो सम्यक रूप से सींचा गया हो।

अभिसिक्त *वि.* (तत्.) गीला, तर, भीगा, सिंचित।

अभिस्ताव *पुं.* (तत्.) किसी के पक्ष में अनुकूल कहना, संस्तुति, सिफारिश।

अभिस्वीकृति *स्त्री.* (तत्.) 1. विधि. किसी कथन, दावे अथवा देनदारी को सही मानने की क्रिया acknowledgement 2. प्रशा. पावती, किसी वस्तु, विशेषत: पत्र के मिलने की लिखित सूचना।

अभिहत *वि.* (तत्.) 1. पीटा गया 2. आहत 3. पराभूत, आक्रांत 4. गुणित।

अभिहति *स्त्री.* (तत्.) 1. चोट, प्रहार 2. गुणन।

अभिहरण *पुं.* (तत्.) छीन ले जाना, लूटना, चौर्यवृत्ति।

अभिहर्ता *पुं.* (तत्.) डाकू, आक्रमणकारी, ले भागनेवाला।

अभिहस्तांतरण *पुं.* (तत्.) विधि. किसी संपत्ति का लिखत द्वारा (प्रलेख तैयार कर) अन्य को औपचारिक रूप से अंतरित किया जाना।

अभिहार *पुं.* (तत्.) चुराने, लूटने या उठाने की क्रिया या भाव।

अभिहारी *वि.* (तत्.) हरण करनेवाला, चुरानेवाला; डकैत।

अभिहित *वि.* (तत्.) 1. कथित, कहा हुआ, अभिधा द्वारा व्यक्त 2. अभिव्यक्त, शब्दों द्वारा व्यक्त, उल्लिखित 3. संबंधित 4. नाम 5. शब्द 6. केवल वचनों पर आश्रित।

अभिहित-संधि *स्त्री.* (तत्.) (कौटिल्य के अनुसार) वह संधि जो लिखी न गई हो; दे. अभिहित।

अभिहितान्वयवाद *पुं.* (तत्.) दर्श. अभिधा शक्ति से पदों के अर्थों का ज्ञान हो जाने पर तात्पर्य शक्ति से पद के अर्थों के परस्पर संबंध का बोध होने का मत तु. अन्विताभिधानवाद।

अभिहितान्वयवादी *वि.* (तत्.) अभिहितान्वयवाद के मत या सिद्धांत को मानने वाला या समर्थन करने वाला।

अभी *क्रि.वि.* (तद्.) इसी समय, इसी क्षण, तुरंत, तत्काल; इस समय।

अभीक *वि.* (तत्.) 1. निर्भय, निडर 2. विकराल 3. इच्छुक 4. कामुक *पुं.* 1. प्रेमी 2. पति 3. स्वामी, मालिक।

अभीक्षक *वि.* (तत्.) किसी कार्यालय-भवन, किसी काम या चीज की अच्छी तरह देखभाल करने वाला, रखवाल caretaker

अभीत *वि.* (तत्.) निडर, निर्भय।

अभीति *स्त्री.* (तत्.) निर्भीकता, डर या भय का अभाव।

अभीप्सक *वि.* (तत्.) चाहने वाला, ईर्ष्या करने वाला।

अभीप्सा *पुं.* (तत्.) चाह, इच्छा, अभिलाषा।

अभीप्सित *वि.* (तत्.) चाहा हुआ, वांछित, इच्छित *पुं.* *(तत्.)* इच्छा, कामना, चाह।

अभीप्सु *वि.* (तत्.) दे. अभीप्सक।

अभीर *पुं.* (तत्.) अहीर, गोप, ग्वाल।

अभीरी *स्त्री.* (तद्.) ग्वालों या अहीरों की बोली।

अभीरु *वि.* (तत्.) 1. निर्भय, निडर, भयहीन 2. साहसी *पुं.* 1. शिव 2. भैरव विलो. भीरु।

अभीष्ट *वि.* (तत्.) 1. वांछित, चाहा हुआ 2. उद्दिष्ट *पुं.* *(तत्.)* 1. मनोरथ, मनचाही बात।

अभीष्ट-सिद्धि *स्त्री.* (तत्.) मनोरथ का पूर्ण हो जाना।

अभुक्त *वि.* (तत्.) 1. बिना खाया या भोग किया हुआ 2. अप्रयुक्त।

अभुक्तपूर्व *वि.* (तत्.) जो किसी के द्वारा पहले नहीं खाया गया या उपभोग किया गया हो।

अभुक्तमूल *पुं.* (तत्.) ज्यो. ज्येष्ठा नक्षत्र की अंतिम तथा मूल नक्षत्र की प्रारंभिक दो-दो घटी (घड़ियाँ) जिनका जातक के जन्म समय में विशेष महत्व माना गया है।

अभू *वि.* (तत्.) जो जन्मा न हो। जो पैदा न हो। पुं. विष्णु।

अभूज *वि.* (तत्.) बाहुरहित, लूला।

अभूत *वि.* (तत्.) 1. जो हुआ न हो, अपूर्व 2. अनुपम 3. वर्तमान 4. अजन्मा।

अभूतपूर्व *वि.* (तत्.) 1. जो पहले न हुआ हो, अपूर्व 2. अनोखा।

अभूतार्थ *पुं.* (तत्.) पहले नहीं हुई। अनहोनी (बात)। जैसे- खरगोश का सींग।

अभूमि *स्त्री.* (तत्.) 1. भूमि से इतर अन्य वस्तु 2. अनुप्रयुक्त स्थल *वि.* भूमिहीन।

अभूषित *वि.* (तत्.) 1. आभूषण-रहित 2. अनलंकृत, बिना साज-सज्जा का।

अभेद *पुं.* (तत्.) 1. भेद का अभाव, भेदभाव न होने की स्थिति या भाव, एकता 2. एकरूपता *वि.* (तत्.) 1. भेदरहित 2. अनुरूप, समान।

अभेदनीय *वि.* (तत्.) दे. अभेद्य

अभेदरूपक *पुं.* (तत्.) साहि. रूपक अलंकार का एक भेद जिसतें उपमान और उपमेय दोनों में अभेद माना गया है।

अभेदवाद *पु.* (तत्.) धर्म. सभी धर्मों को एक सा मानने का सिद्धांत दर्श. यह मान्यता कि हर सत्ता की अपनी-अपनी विशिष्टता के बावजूद सभी सत्ताएं मूलत- एक (सी) ही हैं।

अभेदवादी *वि.* (तत्.) भेद न मानने वाला, अद्वैतवादी, माया और ईश्वर को एक मानने वाला।

अभेदाभाव *पुं.* (तत्.) भिन्नता का अभाव, भिन्नता का न होना, अभिन्नता या एकता की स्थिति।

अभेदाभेद *पुं.* (तत्.) भेद या अभेद (भेदहीनता) का न होना, एकाकारिता।

अभेद्य *वि.* (तत्.) 1. जिसका भेदन या छेदन संभव न हो 2. जिसको खंडित न किया जा सके 3. जिसमें प्रवेश न किया जा सके विलो. भेद्य।

अभेरा *पुं.* (देश.) 1. टकराहट, भिड़ना, मुठभेड़ 2. धक्का।

अभोक्ता *पुं.* (तत्.) 1. भोग न करनेवाला 2. विरक्त विलो. भोक्ता।

अभोग *पुं.* (तत्.) 1. भोग न किए जाने की स्थिति 2. दे. अभोग्य।

अभोगी *वि* (तत्.) 1. भोग न करने वाला 2. अभोक्ता, विरक्त।

अभोग्य *वि.* (तत्.) जो भोग के योग्य न हो; जिसे भोगना अनुचित हो प्र. संन्यासी के लिए मांस-मदिरा सदैव अभोग्य रहे है विलो. भोग्य।

अभोज *वि.* (तत्.) जो खाने योग्य न हो, अभोज्य; अभक्ष्य।

अभोजन *पुं.* (तत्.) 1. भोजन न करने की स्थिति; उपवास का भाव 2. भोजन का अभाव।

अभोज्य *वि.* (तत्.) न खाने योग्य, अभक्ष्य।

अभौतिक *वि.* (तत्.) जो पंचभूत से न बना हो, जो भौतिक न हो, अपार्थिव, अगोचर विलो. भौतिक।

अभौम *वि.* (तत्.) जो पृथ्वी से उत्पन्न न हुआ हो, अपार्थिव।

अभ्यंग *पुं.* (तत्.) शरीर में तेल की मालिश, तेल-लेपन, लेपन; उबटन।

अभ्यंजन *पुं.* (तत्.) 1. तेलादि की मालिश 2. आँखों में अंजन या सुरमा लगाना 3. अंगरागादि।

अभ्यंतर *पुं.* (तत्.) 1. मध्य, बीच 2. हृदय *क्रि.वि.* (तत्.) भीतर, अंदर।

अभ्यंतर खेल *पुं.* (तत्.) बंद प्रांगण में खेले जाने वाले खेल जैसे- बैडमिंटन।

अभ्यंश *पुं.* (तत्.) भाग, हिस्सा, खंड।

अभ्यक्त *वि.* (तत्.) 1. जिसकी तेल-इत्र से मालिश हुई हो। 2. लिपा-पुता 3. सजा-सँवरा।

अभ्यर्पण मूल्य *पुं.* (तत्.) वाणि. समय पूर्व या परिपक्वता से पहले बीमा पॉलिसी बंद करने के निवेदन पर देय राशि। surrender value

अभ्यर्पण संधि *स्त्री.* (तत्.) किसी प्रभुता संपन्न राज्य द्वारा किसी अन्य प्रभुता-संपन्न राज्य को को अपने क्षेत्र का कुछ भाग उसे देने और उस दूसरे राज्य द्वारा ग्रहण किए जाने का करार।

अभ्यर्चन *पुं.* (तत्.) 1. अर्चना, उपासना, आराधना 2. सम्मान।

अभ्यर्चना *स्त्री.* (तत्.) 1. पूजन, अर्चन, आराधना 2. सम्मान, आदर।

अभ्यर्थन *पुं.* (तत्.) दे. अभ्यर्थना।

अभ्यर्थना *स्त्री.* (तत्.) 1. विनय, प्रार्थना 2. आगे बढ़कर सम्मान करना, अगवानी।

अभ्यर्थनीय *वि.* (तत्.) 1. प्रार्थना करने योग्य, जिससे प्रार्थना की जा सकती हो 2. स्वागत करने योग्य; सम्मान करने योग्य।

अभ्यर्थित *वि.* (तत्.) 1. जिससे प्रार्थना की गई हो, जिससे विनती की गई हो 2. जिसकी कामना की गई हो 3. जिसका आगे बढ़कर स्वागत किया गया हो।

अभ्यर्थिता *स्त्री.* (तत्.) अभ्यर्थी होने का भाव।

अभ्यर्थी *वि.* (तत्.) 1. किसी कार्य, पद अथवा सम्मान के लिए आवेदन करने वाला या उसके लिए अपने आपको प्रस्तुत करने वाला अथवा दूसरे के द्वारा प्रस्तावित व्यक्ति 2. किसी पद का उम्मीदवार candidate तु. आवेदक, प्रार्थी।

अभ्यर्दन *पुं.* (तत्.) कष्ट पहुँचाने का भाव, उत्पीड़न।

अभ्यर्दित *वि.* (तत्.) 1. जो पीडित किया गया हो, जिसे दुख दिया गया हो। 2. सताया हुआ।

अभ्यर्पक *वि.* (तत्.) वाणि. अभ्यर्पण करने वाला, समयपूर्व बीमापॉलिसी समाप्त करने वाला 2. देने वाला।

अभ्यर्पण *पुं.* (तत्.) अपना अधिकार या स्वामित्व किसी अन्य को सौंपने की क्रिया या भाव, (आत्म) समर्पण। surrender

अभ्यर्पित *वि.* (तत्.) जिसे (पॉलिसी आदि को/ अभ्यर्पित) किया गया हो, जिसे सौंप दिया गया हो।

अभ्यर्पिती *वि.* (तत्.) जिसे अभ्यर्पण किया जाए।

अभ्यसन *पुं.* (तत्.) अभ्यास करना, याद करना, पुनरावृत्ति।

अभ्यसनीय *वि.* (तत्.) याद करने लायक। अभ्यास करने योग्य।

अभ्यस्त *वि.* (तत्.) 1. जो भली भांति अभ्यास कर चुका हो 2. दक्ष, निपुण, कुशल 3. आदी।

अभ्यस्त अपराधी *पुं.* (तत्.) आदतन अपराधी habitual offender

अभ्याख्यान *पुं.* (तत्.) मिथ्याभियोग, झूठा दावा, झूठी शिकायत।

अभ्यागत *वि.* (तत्.) 1. (घर) आया हुआ अतिथि 2. सामने या समीप आया हुआ 3. किसी विश्वविद्यालय आदि में निर्धारित (सीमित) समय के (प्राय: एक शिक्षा-सत्र) लिए आमंत्रित (प्रोफेसर) आदि visitor *पुं.* अतिथि, मेहमान।

अभ्यागम *पुं.* (तत्.) उपस्थित होना, सामने आना; मुकाबला, मुठभेड़।

अभ्यागमन *पुं.* (तत्.) 1. आना, आगमन, पहुँचना 2. भेट, मुलाकात।

अभ्याघात *पुं.* (तत्.) 1. हमला, आक्रमण 2. रूकावट, बाधा।

अभ्यापत्ति *स्त्री.* (तत्.) किसी कार्य, कथन अथवा अथवा विचार से असहमत होने के फलस्वरूप उसके विरोध में की गई शिकायत, आपत्ति अथवा अनिच्छा। protest

अभ्यारोप *पुं.* (तत्.) किसी पर चरित्र, कार्य आदि के संदर्भ में लगाया गया लांछन तु. आरोप, अभियोग।

अभ्यारोपण *पुं.* (तत्.) किसी व्यक्ति द्वारा कोई अपराध किए जाने के बारे में लिखित आरोप।

अभ्यावश्यकता *स्त्री* (तत्.) विशेष तात्कालिक आवश्यकता। exigency

अभ्यावेदक *पुं.* (तत्.) अभ्यावेदन करने वाला।

अभ्यावेदन *पुं.* (तत्.) किसी निर्णय के विरूद्ध अपील करने या उसका विरोध करने के लिए प्रस्तुत तथ्यात्मक और तर्क सम्मत लिखित वक्तव्य representation तु. आवेदन।

अभ्यास *पुं.* (तत्.) 1. कोई कार्य बार-बार करते रहने की क्रिया या भाव 2. किसी कार्य या

विषय में निपुणता प्राप्त करने के लिए, उस कार्य की अंतिम प्रस्तुति से पूर्व बार-बार करना 3. आदत। rehearsal

अभ्यासपुस्तक *पुं.* (तत्.) बार-बार अभ्यास या अध्ययन करने हेतु पुस्तक। work book

अभ्यास पुस्तिका *स्त्री.* (तत्.) दे. अभ्यास पुस्तक।

अभ्यास मैच *पुं.* (तत्.) खेल दो टीमों के बीच आधिकारिक प्रतियोगिता से कुछ दिन पहले किसी भी अन्य टीम के साथ खेला गया मैच जो आधिकारिक मैचों की शृंखला को प्रभावित नहीं करता। practice match

अभ्यासवशात् *क्रि.वि.* (तत्.) 1. बार-बार अभ्यास करने के कारण। 2. स्वभाव के वशीभूत होकर।

अभ्यासी *वि.* (तत्.) अभ्यास करने वाला, साधक।

अभ्युक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी सिद्धांत, नियम, प्रस्थापना या सम्मति के विषय में औपचारिक कथन 2. मुकदमे में एक पक्ष द्वारा दूसरे पक्ष पर लगाया गया दोष या अभियोग 3. टिप्पणी, किसी विषय पर अपनी राय का संक्षिप्त मौखिक या लिखित उल्लेख। remark

अभ्युत्थान *पुं.* (तत्.) 1. उठना, उठाना 2. आरंभ करना 3. उदय 4. किसी बड़े व्यक्ति के आने पर सम्मानार्थ खड़े होना।

अभ्युत्थायी *वि.* (तत्.) 1. उठकर स्वागत करने वाला, उठने वाला 2. उन्नति करने वाला। 3. जिसका अभ्युदय हुआ हो।

अभ्युत्थित *वि.* (तत्.) 1. उठा हुआ, आदरार्थ उठकर खड़ा हुआ 2. बढ़ा हुआ, उन्नत।

अभ्युत्थेय *वि.* (तत्.) 1. उठाने योग्य, जिसे उठाया जा सके 2. अभ्युत्थान का पात्र।

अभ्युदय *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य आदि ग्रहों का उदय 2. उत्पत्ति 3. मनोरथ-लाभ 4. विवाह आदि का सुअवसर 5. उन्नति।

अभ्युदित *वि.* (तत्.) 1. उगा हुआ, निकला हुआ, उदित, उत्पन्न 2. समृद्ध, उन्नत।

अभ्युपगत *वि.* (तत्.) 1. निकट आया हुआ, पास पहुंचा हुआ 2. स्वीकार किया हुआ, अंगीकृत।

अभ्युपगम *पुं.* (तत्.) 1. सामने आना 2. तर्क. किसी विषय की आधारभूत पूर्वमान्यता के रूप में प्रस्तुत प्राक्कल्पना। postulation

अभ्र *पुं.* (तत्.) 1. मेघ, बादल 2. आकाश 3. अभ्रक, अबरक 4. स्वर्ण, सोना 5. कपूर।

अभ्रक *पुं.* (तत्.) सिलिकेट खनिजों का समूह जिसकी संरचना परतदार होती है। mica

अभ्रगंगा *स्त्री.* (तत्.) आकाश-गंगा।

अभ्रनाग *पुं.* (तत्.) देवराज इंद्र का हाथी, ऐरावत।

अभ्रपुष्प *पुं.* (तत्.) 1. आकाश कुसुम, असंभव वस्तु। 2. एक प्रकार का बेंत।

अभ्रभेदी *वि.* (तत्.) बहुत ऊँचा, आकाश तक पहुँचने वाला, आकाश को छूनेवाला, गगनचुंबी।

अभ्रम *वि.* (तत्.) जो भ्रमरहित हो, जिसे भ्रम न हो।

अभ्रांत *वि.* (तत्.) भ्रमरहित, भ्रांति रहित, स्थिर मति।

अभ्रांति *स्त्री.* (तत्.) भ्रांति का न होना सुनिश्चितता, सुस्पष्टता; स्थिरचित्तता, स्थिरता विलो. भ्रांति।

अभ्रीय *वि.* (तत्.) 1. बादल से संबद्ध 2. बादलों जैसा। 3. बादल से उत्पन्न।

अमंगल *वि.* (तत्.) अशुभ, मंगलरहित, जो कल्याणकारी न हो *पुं.* 1. अकल्याण, अहित 2. एरंड वृक्ष विलो. मंगल।

अमंगल्य *वि.* (तत्.) जिससे हानि हो, अकल्याणकारी।

अमंत्र, अमंत्रक *वि.* (तत्.) 1. जो वेद मंत्रों का अधिकारी ज्ञाता न हो 2. वह कर्म जिसमें मंत्रों की आवश्यकता न हो *पुं.* मंत्र का अभाव।

अमंद *वि.* (तत्.) 1. जो धीमा न हो, तेज, उग्र 2. श्रेष्ठ, उत्तम 3. उद्यमशील विलो. मंद।

अम *पुं.* (तद्.) समस्त पद में पूर्व पद के रूप में प्रयुक्त 'आम' का लघु रूप जैसे-अमचूर, अमरस, अमावट 2. बीमारी, रोग।

अमचूर *पुं.* (तद्.) सुखाए हुए कच्चे आम की फांके और उन्हें पीसकर बनाया हुआ चूर्ण जिसे सब्जी आदि को खट्टा करने के लिए डाला जाता है।

अमज्जक *वि.* (तत्.) मज्जारहित, जिसमें मज्जा या गूदा न हो।

अमड़ा *पुं.* (तद्) बेर की आकृति का फल जो स्वाद में खट्टा होता है और अचार, चटनी आदि बनाने के काम आता है।

अमत *पुं.* (तत्.) 1. मरण 2. व्याधि *वि.* 1. अस्वीकार्य 2. असहमत।

अमतदाता *वि.* (तत्.) 1. जो मतदान का अधिकारी नही है 2. जो अपना मतदान नही करता है।

अमतदेय *वि.* (तत्.) (ऐसा विषय) जो मत देने योग्य नहीं है अर्थात् जिसका समाधान मतदान से संभव नहीं है।

अमताधीन *वि.* (तत्.) दे. अमतदेय।

अमति *स्त्री.* (तत्.) 1. अज्ञान, ज्ञान का अभाव 2. असहमति *वि.* विवेकशून्य।

अमतिपूर्ण *वि.* (तत्.) 1. जो बुद्धिमता से युक्त न हो 2. स्वीकृति के बिना किया गया या करवाया गया।

अमत्त *वि.* (तत्.) 1. जो मत्त न हो। नशाहीन। 2. सचेत। 3. विनम्र।

अमत्सर *वि.* (तत्.) जिसमें मत्सर अर्थात् ईष्या का अभाव हो, जो ईर्ष्यालु न हो, उदार।

अमद *वि.* (तत्.) 1. मदरहित, घमंडरहित 2. शांत, गंभीर विलो. मद।

अमधुर *वि.* (तत्.) 1. जो मधुर न हो, माधुर्य-रहित, कटु 2. अरुचिकर *पुं.* (तत्.) संगीतशास्त्र के अनुसार मधुरता हीन, स्वर का अभाव विलोम. मधुर।

अमन *पुं.* (अ.) 1. शांति, सुख-चैन 2. आनंद, प्रसन्नता 3. आराम।

अमनचैन *पुं.* (तत्.) 1. सुख सुविधा 2. शांति व्यवस्था, निश्चिंतता।

अमन पसंद *वि.* (अर.) जिसे शांति अभीष्ट हो। शांति प्रिय।

अमनपसंदगी *स्त्री.* (अरबी) 1. सुखप्रियता 2. शांत स्वभाव।

अमनस्क *वि.* (तत्.) 1. अनमना, उदासीन 2. चंचल मन, जिसका चित्त कहीं और हो।

अमनस्कता *स्त्री.* (तत्.) 1. अनमनापन 2. अमनस्कत्व।

अमनस्कत्व *पुं.* (तत्.) योग. योगसाधना की स्थिति विशेष जहाँ मन और बुद्धि समस्त वासनाओं से रहित हो जाते है। indifference

अमना *वि.* (तत्.) 1. अन्यत्र मन या ध्यान देने वाला। अन्यमनस्क, अनमना, अनिश्चिंत। 2. लापरवाह, उदासीन।

अमनुष्य *वि.* (तत्.) 1. जो मनुष्य न हो, मानवेतर, देव, गंधर्व, राक्षस आदि योनि से संबद्ध 2. जो मानव शक्ति से परे हो।

अमनुष्यता *स्त्री.* (तत्.) मनुष्यता का अभाव, अमानवीयता।

अमनोज्ञ *वि.* (तत्.) 1. चित्त को प्रिय न लगनेवाला, अप्रिय 2. जो सुंदर न हो, असुंदर 3. अरुचिकर।

अमनोरथ *वि.* (तत्.) 1. मनोरथशून्य, इच्छारहित, मन की कामना से रहित 2. अनभीष्ट, अनिच्छित।

अमनोहर *वि.* (तत्.) जो सुंदर, आकर्षक, हृदयहारी या मनोरम न हों।

अमम *वि.* (तत्.) 1. जिसमें ममता या अहंभाव नहीं है, अहंकार रहित, स्वार्थहीन 2. निर्मम, कठोर।

अममता *स्त्री.* (तत्.) ममत्व का अभाव, कामना हीनता, निःस्वार्थता।

अममत्व *पुं.* (तत्.) दे. अममता।

अमर *वि.* (तत्.) 1. चिरजीवी, जो मरे नहीं, शाश्वत, अविनाशी 2. देवता।

अमरकोष *पु.* (तत्.) अमर सिंह द्वारा रचित संस्कृत भाषा का सुविख्यात शब्दकोश।

अमरख *पुं.* (तद्.) दे. अमर्ष।

अमरण *पुं.* (तत्.) अमरता, मृत्यु का अभाव।

अमरतटिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. देवों की नदी, गंगा, सुरसरिता 2. आकाश गंगा।

अमरतरु *पुं.* (तत्.) अमरों अर्थात् देवताओं का वृक्ष, दिव्यवृक्ष, देवदारु, कल्पवृक्ष।

अमरता *स्त्री.* (तत्.) दे. अमरत्व।

अमर रत्न *पुं.* (तत्.) स्फटिक, बिल्लौर।

अमरत्व *पुं.* (तत्.) देवी-देवताओं के संदर्भ में अमर होने या अविनाशी होने का भाव।

अमरदारु *पुं.* (तत्.) दे. अमरतरु।

अमरधाम *पुं.* (तत्.) देवलोक।

अमरनाथ *पुं.* (तत्.) 1. शिव का एक नाम 2. हिंदुओं का एक तीर्थ-स्थान जो कश्मीर में स्थित है।

अमरपति *पुं.* (तत्.) अमरों अर्थात् देवों के स्वामी इंद्र।

अमरपद *पुं.* (तत्.) देवताओं का पद, मोक्ष या मुक्ति।

अमरपुर *पुं.* (तत्.) देवताओं की पुरी, देवनगर, इंद्रपुरी, इंद्रलोक, अमरावती।

अमरपुरी *स्त्री.* (तत्.) दे. अमरपुर।

अमरपुष्प *पुं.* (तत्.) 1. देवताओं का पुष्प। 2. कल्पवृक्ष। 3. केतकी का पौधा।

अमरबेल *स्त्री.* (तत्.) आकाशबेल, एक पीले रंग की पतली परजीवी लता जिसमें जड़ एवं पत्तियाँ नहीं होती और जो अपने पोषक वृक्ष को सुखा डालती है।

अमरलोक *पुं.* (तत्.) स्वर्ग, देवलोक, इंद्रपुरी। पर्या. अमरपुर, अमरावती, गोलोक, देवलोक, देवसदन।

अमरवल्लरी *स्त्री.* (तत्.) दे. अमरबेल।

अमरवल्ली *स्त्री.* (तत्.) 1. देवताओं की लता 2. आकाशबेल

अमरवारुणी *स्त्री.* (तत्.) 1. देवों की दिव्य मदिरा। मदिरा। 2. योग हठयोग की विशिष्ट क्रिया से प्राप्त दिव्य रस।

अमरस *पुं.* (तद्.) 1. आम का रस 2. आम के रस का जमाया और सुखाया रूप, अमावट।

अमरांगना *स्त्री.* (तत्.) 1. देवपत्नी 2. अप्सरा।

अमराई *स्त्री.* (तत्.) आम का बाग, वह स्थान जहाँ आम के बहुत से वृक्ष हो।

अमराचार्य *पुं.* (तत्.) देवताओं के आचार्य, गुरु बृहस्पति।

अमराद्रि *पुं.* (तत्.) सुमेरु पर्वत, देवपर्वत।

अमराधिप *पुं.* (तत्.) देवाताओं के स्वामी इंद्र।

अमरापगा *स्त्री.* (तत्.) स्वर्ग की नदी, आकाश गंगा।

अमरारि *पुं.* (तत्.) देवताओं के शत्रु, दानव, असुर पर्या. असुर, दनुज, देवारि, दैत्य, निशाचर, राक्षस, सुररिपु।

अमरालय *पुं.* (तत्.) देव-स्थान, स्वर्ग, इंद्रलोक।

अमराव *पुं.* (तत्.) आम का बगीचा, आम्रोद्यान।

अमरावती *स्त्री.* (तत्.) इन्द्र की नगरी, इन्द्रपुरी।

अमरी *स्त्री.* (तत्.) देवपत्नी, देवता की स्त्री, देव-कन्या।

अमरीकन *पुं.* (अं.) दे. अमेरिकन।

अमरीका *पुं.* (अं.) दे. अमेरिका।

अमरीकी *पुं.* (अं.) दे. अमेरिकी।

अमरूद *पुं.* (फा.) 1. दानेदार गूदेवाला कोष्ठ युक्त गोल फल जिसके ऊपरी सिरे पर बाह्य दल दल पुंज होता है 2. इस फल का वृक्ष।

अमरेश *पुं.* (तत्.) देवताओं का राजा, इंद्र।

अमरेश्वर *पुं.* (तत्.) अमरेश, इंद्र।

अमरोली *स्त्री.* (तत्.) (योग) वज्रोली का एक भेद, जिसमें खेचरी मुद्रा लगा कर तालु से स्रवित सोम (अमृत) का पान किया जाता है दे. वज्रोली।

अमरौती *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का फल जिसे खाकर अमरत्व प्राप्त होने की कल्पना की जाती है 2. अमर्त्यता, अमरता।

अमर्त्य *वि.* (तत्.) 1. जो मर्त्य न हो, अमर, अनश्वर, मृत्युरहित 2. दिव्य *पुं.* देवादि।

अमर्त्यलोक *पु.* (तत्.) अमर्त्यों अर्थात् देवों का लोक, देवलोक।

अमर्दित *वि.* (तत्.) 1. जिसका मर्दन न हुआ हो, जो मला न गया हो 2. अपराजित।

अमर्याद *वि.* (तत्.) मर्यादाहीन, मर्यादा के विपरीत, अप्रतिष्ठित, असंगत।

अमर्यादा *स्त्री.* (तत्.) 1. अप्रतिष्ठा, बेइज्जती 2. अनुचित या असंगत, आचरण।

अमर्यादित *वि.* (तत्.) 1. जिसमें मर्यादा या सीमा न हो, असीम 2. अप्रतिष्ठित। 3. जिसमें मर्यादा का ध्यान न रखा गया हो।

अमर्ष *पुं.* (तत्.) 1. मर्ष अर्थात् सहिष्णुता का अभाव, असहिष्णुता 2. क्रोध, गुस्सा 3. एक संचारी भाव 4. तिरस्कार आदि से उत्पन्न क्षोभ।

अमर्षण *पुं.* (तत्.) 1. असहिष्णुता 1. क्रोध, गुस्सा करने की क्रिया या स्थिति।

अमर्षी *वि.* (तत्.) मन में अमर्ष भाव रखनेवाला, क्रोधी, असहिष्णु दे. अमर्षण।

अमल *वि.* (तत्.) 1. मल-रहित, निर्मल, स्वच्छ 2. निर्दोष, शुद् ध, निष्पाप 3. उज्ज्वल, चमकीला *पुं. (तत्.)* 1. निर्मलता 2. पारब्रह्म 3. अबरक 4. 4. आचरण, व्यवहार, क्रिया, काम, कार्यान्वयन *पुं.* (देश.) 1. लत, आदत 2. नशा मुहा. अमल पानी करना- नशा करना, भांग पीना।

अमलता *स्त्री.* (तत्.) 1. मलहीनता, स्वच्छता, सफाई 2. निष्कलंकता।

अमलतास *पुं.* (तद्.) एक विशेष पेड़ जिसकी पत्तियाँ, पीले फूल और लंबी फलियाँ दवा के रूप में प्रयुक्त होती हैं।

अमलदार *पुं.* (अर.) 1. अधिकारी 2. प्रशासक, हुकूमत करनेवाला।

अमलदारी *स्त्री.* (अर.) 1. अधिकार 2. प्रशासन, हुकूमत 3. शासन काल।

अमलनामा *पुं.* (अर.+फा.) कर्मपुस्तक, वह रजिस्टर जिसमें कर्मचारियों के सभी वृत्त या (अच्छी-बुरी) गतिविधियाँ अंकित की जाती हैं।

अमलपट्टा *पुं.* (तत्.) (अर.+तद्) 1. काम करने के लिए किसी कर्मचारी को दिया गया अधिकार पत्र। 2. (राजस्व) भूमि संबंधी अधिकार पत्र।

अमलबेंत *पुं.* (तद्.) आयु. 1. एक प्रकार की लता जिसमें सफेद रंग के फूल और छोटे छोटे गोल फल लगते हैं 2. औषधिरूप में प्रयुक्त होने वाला उपर्युक्त फल।

अमला *पुं.* (तद्.) आँवला *स्त्री.* (तत्.) लक्ष्मी *पुं.* (अर.) 1. कर्मचारी-गण, सेवक-गण 2. कार्याधिकारी।

अमलिन *वि.* (तत्.) 1. जो मल युक्त न हो। स्वच्छ। 2. निर्दोष, पवित्र।

अमली *वि.* (तत्.) 1. अमल में आनेवाला, व्यावहारिक 2. अमल करनेवाला 3. नशेबाज *स्त्री.* (तद्.) इमली।

अमलूक *पुं.* (तद्.) उत्तर-पश्चिम भारत का काले रंग के छोटे फल वाला पेड़ तथा फल।

अमलोनी *स्त्री.* (तद्.) छोटी छोटी परंतु मोटी पत्तियों वाली नोनी नाम की नमकीन स्वाद वाली घास जिसे साग के रूप में खाते हैं।

अमसूल *पुं.* (तद्.) महाराष्ट्र और कर्नाटक में प्राप्त होने वाला एक औषधोपयोगी वृक्ष।

अमहल *वि.* (तत्+अर.) जिसका कोई निर्धारित आवास न हो, सर्वत्र वास करने वाला।

अमांस *वि.* (तत्.) मांसहीन व्यक्ति, क्षीणकाय, दुर्बल *पुं.* मांसेतर वस्तु, मांस के अतिरिक्त अन्य वस्तु।

अमाँ (अर.) उर्दू भाषा में बहुधा प्रयुक्त संबोधनात्मक शब्द 'ओ मियाँ' का संक्षेप ('अरे' अर्थ में)।

अमाँठी *पुं.* (तद्) ऐसा चूर्ण जो आम की गुठलियों के गूदे को पीसकर बनाया गया हो।

अमा *स्त्री.* (तत्.) 1. अमावस्या 2. चंद्रमा की सोलहवीं कला।

अमातृक *वि.* (तत्.) जिसकी माँ न हो, मातृ विहीन।

अमात्य *पुं.* (तत्.) मंत्री, वजीर, दीवान।

अमात्रिक *वि.* (तत्.) (वह छंद) जिसके शब्दों के स्वर की मात्रा न हो।

अमान *वि.* (तत्.) 1. जिसका मान या अंदाज न हो सके, अपरिमित 2. मान-रहित *पुं.* (अर.) रक्षा, बचाव, शरण, पनाह।

अमानक *वि.* (तत्.) जो मानक या स्तरीय न हो।

अमानत *स्त्री.* (अर.) नियत समय के लिए किसी के पास सुरक्षा के लिए रखी गई वस्तु, धरोहर, थाती।

अमानत खाना *पुं.* (अर.) अमानत की वस्तुएँ रखने की विशेष जगह या कक्ष।

अमानतदार *पुं.* (अर.) धरोहर रखनेवाला, जिसके पास धरोहर रखी हो।

अमानतनामा *पुं.* (अर.) धरोहर रखने की प्राप्ति रसीद।

अमानती *वि.* (अर.) अमानत या धरोहर से संबंधित।

अमानती सामान घर *पुं.* (अर.तद्.) (परिवहन) वह कमरा जहाँ यात्री या अतिथि अपना सामान कुछ समय के लिए सुरक्षार्थ छोड़ सकते हैं, रेल-बस प्रशासन इस सेवा हेतु मामूली सा शुल्क लेते हैं। cloak-room

अमानवीय *वि.* (तत्.) 1. मानवेतर, मानव स्वभाव के विपरीत 2. पाशविक।

अमाना *अ.क्रि.* (तद्) 1. सामंजस्य हो जाना, 2. अँटना, समाविष्ट होना।

अमानित *वि.* (तत्.) 1. असम्मानित 2. अमान्यीकृत।

अमानिता *स्त्री.* (तत्.) विनम्रता, गर्वहीनता।

अमानित्व *पुं.* (तत्.) दे. अमानिता।

अमा निशा *स्त्री.* (तत्.) 1. अमावस्या की रात 2. 2. अँधेरी रात।

अमानी *स्त्री.* (तद्.) काम के समय के हिसाब से दी गई मजदूरी।

अमानुष *वि.* (तत्.) 1. मनुष्य से भिन्न 2. मानवेतर, अलौकिक 3. क्रूर या कठोर हृदयवाला *पुं.* (तत्.) 1. मनुष्य से भिन्न प्राणी 2. देव, राक्षस।

अमानुषिक *वि.* (तत्.) 1. अमानुषी, अमानवोचित 2. पैशाचिक 3. अलौकिक।

अमानुषी *वि.* (तत्.) 1. पैशाचिक, मानव-स्वभाव के विपरीत 2. अलौकिक।

अमानुषीय *वि.* (तत्.) 1. जो मनुष्य से संबंधित न हो 2. अलौकिक, मानवी शक्ति से परे।

अमानुष्य *वि.* (तत्.) दे. अमानुषीय।

अमान्य *वि.* (तत्.) 1. जो माना न गया हो, जो मान्य न हो, अस्वीकार्य।

अमान्य गेंद *स्त्री.* (तत्.) क्रिकेट अंपायर के निर्णयानुसार यदि गेंद को फेंकते समय अथवा गेंद हाथ से छूटते समय गेंदबाज का एक पाँव क्रीज रेखा के पीछे न रहे तो ऐसी गेंद अमान्य होती है और बल्लेबाजी करने वाली टीम के खाते में एक रन जुड़ जाता है और गेंदबाज़ को एक अतिरिक्त गेंद फेकने को दी जाती है। no ball

अमान्यता *स्त्री.* (तत्.) मान्यता न मिलने की स्थिति, अस्वीकृति।

अमान्यीकरण *पुं.* (तत्.) किसी दावे या प्रार्थना को अमान्य या खारिज करने की क्रिया।

अमाप *वि.* (तत्.) जिसके परिमाण या माप का अंदाज न किया जा सके, अपरिमित।

अमापनीय *वि.* (तत्.) 1. जिसे मापा न जा सके 2. जिसे मापने की आवश्यकता न हो।

अमापित *वि.* (तत्.) जो मापा हुआ न हो।

अमाप्य *वि.* (तत्.) 1. जो मापने योग्य नहीं है। 2. अमापनीय।

अमामा *पुं.* (अर.) बड़ी पगड़ी या साफे का प्रकार जिसे प्रायः मुस्लिम अमीर बाँधते है।

अमाया *वि.* (तत्.) 1. माया रहित 2. निर्लिप्त 3 निःस्वार्थ 4. निश्छल *स्त्री.* (तत्.) 1. निष्कपटता, निश्छलता 2. ईमानदारी 3. भ्रम का अभाव।

अमायिक *वि.* (तत्.) 1. दोषरहित, निष्कपट 2. मायारहित।

अमायी *वि.* (तद्.) दे. अमायिक।

अमार्ग *पुं.* (तत्.) 1. मार्गहीनता 2. कुमार्ग, कुपथ *वि.* पथ-विहीन, मार्गभ्रष्ट।

अमार्जित *वि.* (तत्.) 1. जिसे धोकर शुद्ध न किया गया हो, अस्वच्छीकृत 2. जिसका संस्कार न हुआ हो असंस्कृत अनगढ़।

अमार्ज्य *वि.* (तत्.) 1. जिसे स्वच्छ न किया जा सके 2. जिसका संस्कार या शोधन संभव न हो।

अमावर *स्त्री.* (तद्) पके आम के रस को सुखा कर बनाया गया मोटी परत का खाद्य पदार्थ, अमरस, आमपापड़।

अमावस *स्त्री.* (तद्.) दे. अमावस्या।

अमावस्य *वि.* (तत्.) 1. अमावस्या की रात में उत्पन्न 2. अमावस्या से संबंधित।

अमावस्या *स्त्री.* (तत्.) चांद्रमास कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि, घना अंधकार।

अमिट *वि.* (तत्.) 1. जो कभी न मिटे, जो नष्ट न हो, स्थायी 2. जो अटल हो, सदा रहनेवाला।

अमित *वि.* (तत्.) जो मित अर्थात् नपा-तुला मात्र न हो 1. अत्यधिक, बहुत अधिक, बेहिसाब 2. अपरिमित, असीम।

अमित *अव्य.* (तत्.) नजदीक से, चारों तरफ से।

अमितता *स्त्री.* (तत्.) 1. असीमता, सीमा का अभाव 2. अत्यधिकता।

अमितव्ययी *वि.* (तत्.) जो खर्चीला न हो, फिजूलखर्च।

अमिताई *स्त्री.* (तत्.) 1. अधिकता 2. [अ+मिताई] मित्रता का अभाव, शत्रुता।

अमिताचार *पुं.* (तत्.) असंतुलित व्यवहार, असंयम।

अमिताचारी *वि.* (तत्.) असंयत आचरण करने वाला।

अमिताभ *वि.* (तत्.) अत्यंत आभावान, अति तेजस्वी, अति कांति-युक्त *पुं.* गौतम बुद्ध का एक नाम।

अमिताशन *पुं.* (तत्.) 1. नपा-तुला भोजन, संतुलित आहार 2. बहुत खाने वाला व्यक्ति 3. अग्नि।

अमितौजा *वि.* (तत्.) जिसका ओज कम न हो, अत्यधिक तेज वाला।

अमित्र *वि.* (तत्.) 1. जो मित्र न हो 2. बिना मित्र का, जिसका कोई मित्र न हो 3. शत्रु।

अमित्रघाती *वि.* (तत्.) शत्रु का नाश करने वाला। शत्रुहन्ता।

अमित्रभूमि *स्त्री.* (तत्.) शत्रुभूमि, शत्रु का राज्य।

अमित्री *वि.* (तत्.) शत्रुतापूर्ण, विरोधी, अमित्रीय।

अमिथ्या *वि.* (तत्.) 1. जो मिथ्या न हो, जो असत्य न हो 2. जो व्यर्थ न हो विलो. मिथ्या।

अमिय *पुं.* (तद्.) अमृत।

अमियमूरि *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की जड़ी। संजीवनी बूटी।

अमियरस *पुं.* (तत्.) 1. अमृतरस 2. योग. हठयोग की विशिष्ट प्रक्रिया से प्राप्त दिव्य रस।

अमिया *स्त्री.* (तद्.) छोटा कच्चा आम।

अमिल *वि.* (तद्.) 1. न मिलने योग्य, अप्राप्य 2. बेमेल, असंबद्ध।

अमिलता *स्त्री.* (तद्.) 1. मेल का अभाव, असंगत 2. अम्लता, खटास।

अमिलताई *स्त्री.* (तद्.) दे. अमिलता।

अमिलित *वि.* (तद्) जो मिला हुआ न हो, अलग।

अमिश्र *वि.* (तत्.) 1. जो मिश्रित न हो, मिलावटरहित 2. शुद्ध

अमिश्रण *पुं.* (तद्.) मिलावट का अभाव, शुद्धता।

अमिश्रणीय *वि.* (तत्.) (पदार्थ विशेषकर द्रव) जो एक दूसरे से घुल-मिल न सकें, जैसे तेल और पानी विलो. मिश्रणीय।

अमिश्रित *वि.* (तत्.) 1. न मिला हुआ, जो मिलाया न गया हो 2. शुद्ध, जिसमें मिलावट न की गई हो।

अमिष *पुं.* (तत्.) 1. मिष अर्थात् छल का अभाव, बहाना-रहित स्थिति 2. अम अर्थात् सुखभोग, सांसारिक सुख; मांस।

अमिषभोजी *वि.* (तत्.) [आमिष+भोजी] माँसाहारी, माँस खाने वाला।

अमी *पुं.* (तद्.) दे. अमिय, अमृत *वि.* रोगी।

अमीकार *पुं.* (तद्.) अमृतमय किरण वाला, चन्द्रमा।

अमीत *पुं.* (तद्.) जो मित्र न हो, शत्रु, दुश्मन।

अमीन *पुं.* (अर.) सरकारी कर्मचारी जो जमीन की नाप-जोख, बँटवारा, तहकीकात आदि करता है।

अमीबता *स्त्री.* (अं.) आयु. ऐन्टेमीबा हिस्सेलिटिका नामक अमीबा से जठरांत्र के हो जाने का रोग। amoebiasis

अमीबा *पुं.* (अं.) एक एककोशीय अति सूक्ष्म अनावृत जीवद्रव्य, जिसके आकार में परिवर्तन होता रहता है।

अमीबाणु *पुं.* (अं.+तत्.) अनिश्चित और परिवर्तनशील आकृति की कोशिका 2. रोग के अणु, रोगाणु।

अमीबानाशी *वि.* (अं.+तत्.) अमीबा को नाश करने वाला।

अमीबाभ *वि.* (अं.+तत्.) 1. आयु. एककोशीय 2. अमीबा जैसा।

अमीबीय *वि.* (अं.+तद्.) 1. जो अमीबा से संबंधित हो 2. दे. अमीबाभ।

अमीमांसा *स्त्री.* (तत्.) 1. तत्व विवेचन का अभाव 2. दोषपूर्ण विवेचना।

अमीर *पुं.* (अर.) 1. धनाढ्य, दौलतमंद, संपन्न 2. सरदार 3. अरब देशों के राजा की उपाधि 4. अत्यंत सहृदय (व्यक्ति)।

अमीर-उमरा *पुं.* (फा.) इति. राजदरबार से जुड़े हुए कुलीन वर्ग के व्यक्ति।

अमीरज़ादा *पुं.* (अर.) अमीर का पुत्र; राजकुमार।

अमीरजादी *स्त्री.* (अर.) अमीर का पुत्री।

अमीराना *वि.* (अर.) अमीर के ढंग का, जिससे अमीरी प्रकट हो प्रयो. वह हमेशा अमीराना अंदाज में रहता है।

अमीरी *स्त्री.* (अ.) अमीर या धनी होने का भाव, धनाढ्यता, दौलतमंदी *वि.* अमीर के योग्य, जैसे- अमीरी ठाठबाट।

अमुक *वि.* (तत्.) जिस व्यक्ति, कार्य या बात का नाम न लेना हो उसके लिए प्रयुक्त संकेत शब्द, फलाँ, ऐसा प्रयो. हम यह तय कर लें कि अमुक कार्य अमुक व्यक्ति ही करेगा।

अमुक्त *वि.* (तत्.) जो मुक्त या बंधन-रहित न हो, अस्वतंत्र, जिसे छुटकारा न मिला हो, जो फँसा हुआ हो।

अमुक्तहस्त *वि.* (तत्.) 1. जो अधिक खर्चीला न हो 2. अल्पव्ययी, मितव्ययी 3. कृपण।

अमुक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. मुक्ति न मिलने की स्थिति या भाव, बंधनग्रस्तता; अस्वतंत्र 2. मोक्ष की अप्राप्ति।

अमुख *वि.* (तत्.) मुखविहीन, जिसका मुख न हो।

अमुख्य *वि.* (तत्.) जो मुख्य न हो, अप्रधान, गौण।

अमुग्ध *वि.* (तत्.) 1. जो मुग्ध न हो 2. जो मूढ न हो, जो मोहित न हो 3. विरक्त, अनासक्त।

अमुत्र *पुं.* (तत्.) परलोक में उस लोक में या अन्य लोक मे।

अमुद्रित *वि.* (तत्.) जो मुद्रित न हुई हो जो छपी न हो।

अमूक *वि.* (तत्.) 1. जो चुप न हो, जो मूक न हो 2. जो गूँगा न हो, बोलनेवाला।

अमूढ *वि.* (तद्.) 1. जो मूर्ख न हो 2. चतुर, पंडित।

अमूमन *अव्य.* (अर.) 1. प्राय:, सामान्यत: 2. आम तौर पर प्रयो. वह मेरे घर अमूमन शाम को आया करता है।

अमूर्त *वि.* (तत्.) 1. मूर्ति या आकार रहित, निराकार 2. अभौतिक 3. काल्पनिक, कल्पना-प्रसूत *पुं.* 1. परमेश्वर 2. आत्मा 3. वायु।

अमूर्त अभिव्यंजकतावाद *पुं.* (तत्.) चित्रांकन की एक विशिष्ट शैली जिसमें अर्मूत रूप, आकृति और अभिव्यंजनावादी तत्वों का मिश्रण होता है। abstract expressionism

अमूर्त कला *स्त्री.* (तत्.) रूपों, रंगों, रेखाओं से बनी ऐसी दृश्य रचना जिस का प्रकृत कला-वस्तु से वास्तविक रूप सादृश्य नहीं होता। abstract art

अमूर्तपद *पुं.* (तत्.) अर्मूत का ज्ञान कराने वाला पद या शब्द।

अमूर्त प्रत्यय *पुं.* (तत्.) भावात्मक प्रत्यय abstrasct idea

अमूर्त बिंबविधान *पु.* (तत्.) अमूर्त प्रतीकों द्वारा कथा वस्तु का सर्वांगीण सटीक चित्रण।

अमूर्त बीजगणित *पुं.* (तत्.) बीजगणित की एक शाखा जिसमें समूह, वलय, क्षेत्र आदि अमूर्त बीजीय संकल्पनाओं का अध्ययन होता है abstract algebra

अमूर्त भाषा *स्त्री.* (तत्.) मस्तिष्क में रहने वाली भाषा का अमूर्त रूप।

अमूर्ति *वि.* (तत्.) मूर्तिरहित, निराकार *स्त्री.* (तत्.) आकाररहित, निराकारता।

अमूर्तिमान *वि.* (तत्.) 1. निराकार, जो मूर्तिमान न हो 2. अप्रत्यक्ष, अगोचर।

अमूल *वि.* (तत्.) 1. बिना मूल का, जड़हीन, निराधार *पुं. (तत्.)* सांख्य के अनुसार प्रकृति-विशेष विलो. मूल।

अमूलक *वि.* (तत्.) 1. जिसकी जड़ न हो 2. निर्मूल 3. असत्य, मिथ्या।

अमूला *स्त्री.* (तत्.) एक पौधा, अग्निशिखा।

अमूल्य *वि.* (तत्.) 1. जिसका मूल्य आँका न जा सके, अनमोल 3. बहुमूल्य, बेशकीमती।

अमृणाल *पुं.* (तत्.) एक सुंगधित घास खस की जड़।

अमृत *पुं.* (तत्.) 1. वह पेय पदार्थ जिसे पीकर प्राणी अमर (या मृत प्राणी जीवित) हो जाता है, पीयूष, सुधा 2. स्वादिष्ट पदार्थ 3. हितकर *वि.* अमर, जो मृत न हो, अविनाशी।

अमृतकुंडली *स्त्री.* (तत्.) 1. एक प्रकार के छंद का नाम 2.एक प्राचीन वाद्य का नाम, अमृतगति।

अमृतजयंती *स्त्री.* (तत्.) पचहत्तर वर्ष की वय पूर्ण होने पर किसी व्यक्ति संस्था आदि का जन्मदिन समारोह या अभिनंदन।

अमृतता *स्त्री.* (तत्.) अमरत्व।

अमृतत्व *पुं.* (तत्.) 1. अमर होने की स्थिति या भाव 2. अमृतवत् होने की स्थिति 3. मुक्ति, मोक्ष।

अमृतदान *पुं.* (तत्.) दे. अमृतबान।

अमृतधारा *स्त्री.* (तत्.) 1. एक वर्णवृत्त जिसके चार चरणों में क्रमश: 20, 12, 16 और 8 अक्षर होते है 2. एक गुणकारी औषध।

अमृतधुनि *स्त्री.* (तद्) अमृतध्वनि नामक छंद।

अमृतध्वनि *स्त्री.* (तत्.) 1. अमृत के समान मीठी मीठी लगने वाली ध्वनि 2. अमर ध्वनि, उत्साह देने वाला शब्द।

अमृतफल *पुं.* (तत्.) 1. अमरता प्रदान करने वाला 2. अमृत के समान मधुर फल।

अमृतफला *स्त्री.* (तत्.) 1. आँवला 2. अंगूर, दाख 3. मुनक्का।

अमृतबंधु *पुं.* (तत्.) देवगण, चद्रमा।

अमृतबान *पुं.* (तद्.) अचार, मुरब्बा आदि रखने का ढक्कनदार चीनी मिट्टी या शीशे का बर्तन, मर्तबान, अमृतदान।

अमृतमंत्र *पुं.* (तत्.) 1. मृत्यु से बचाने वाला मृत्युंजय मंत्र 2. नए जीवन को प्रदान करने वाला शब्द।

अमृतमंथन *पुं.* (तत्.) अमृत प्राप्त करने के लिए किया गया मंथन, पौराणिक समुद्र मंथन।

अमृतमहोत्सव *पुं.* (तत्.) किसी प्रतिष्ठित संस्था के सफलतापूर्वक पचहत्तर वर्ष पूरे कर लेने पर आयोजित उत्सव, platinum jublee टि. कुछ लोग इसे अस्सी वर्ष पूरे होने पर मनाते हैं, पचहत्तर वर्ष पूरे होने पर हीरक जयंती मनाने की प्रथा है।

अमृतमूल *पुं.* (तत्.) अमृत जड़, संजीवनी प्रदान करने वाली जड़ी।

अमृतरंगिणी *स्त्री.* (तत्.) चंद्रमा का प्रकाश, ज्योत्स्ना।

अमृतलता *स्त्री.* (तत्.) गुडुच या गिलोय की लता टि. आयुर्वेद में औषधि रूप में प्रयुक्त होती है 2. इसके सभी अंग।

अमृतलोक *पुं.* (तत्.) देवों का लोक, स्वर्ग।

अमृतवर्षा *पुं.* (तत्.) 1. अमृत की वर्षा करने वाला। 2. चंद्रमा।

अमृतांशु *पुं.* (तत्.) जिसकी किरणें अमृतमयी हो, सुधांशु, चंद्रमा।

अमृता *स्त्री.* (तत्.) 1. गुर्च, गुडुच 2. आँवला 3. तुलसी 4. मद्य।

अमृताक्षर *वि.* (तत्.) जो अमर हो और जिसका क्षरण न हो, अजरामर।

अमृताश *वि.* (तत्.) 1. अमृत का अशन (भोजन) करने वाले देवता 2. विष्णु।

अमृताशन *पुं.* (तत्.) दे. अमृताश।

अमृतेश *पुं.* (तत्.) भगवान शिव, अमृतों अर्थात् देवों के भी अधिदेव शिव, देवता।

अमृतेशय *पुं.* (तत्.) जल अर्थात् समुद्र में शेषशायी विष्णु।

अमृतेश्वर *पुं.* (तत्.) दे. अमृतेश।

अमृत्यु *स्त्री.* (तत्.) 1. मृत्यु का अभाव 2. अमरता *वि.* (तत्.) 1. अमर 2. अमर बनाने वाला।

अमृष्ट *वि.* (तत्.) 1. जिसका घर्षण नहीं हुआ है, बिना रगड़ का 2. गंदा, मैलयुक्त।

अमेठना *स.क्रि.* (देश.) दे. उमेठना।

अमेठी *स्त्री.* (तत्.) 1. अकड़ 2. अभिमान, गर्व 3. 3. उत्तर प्रदेश की एक तहसील और नगर, मलिक मोहम्मद जायसी का जन्मस्थान जायस भी इसी तहसील में पड़ता है।

अमेदस्क *वि.* (तत्.) बिना चरबी वाला, मेदा रहित, दुबला-पतला।

अमेधा *वि.* (तद्.) जिसमें बुद्धि (मेधा) न हो, मूर्ख, बुद्धिहीन।

अमेध्य *पुं.* (तत्.) 1. अपवित्र वस्तु 2. मल-मूत्र। *वि.* 1. अपवित्र 2. जिस वस्तु का यज्ञ में प्रयोग न किया जा सके।

अमेय *वि.* (तत्.) 1. जिसे मापा न जा सके, अपरिमित, असीम, बेहद, सीमारहित 2. जो जाना या समझा न जा सके, अज्ञेय।

अमेयात्मा *वि.* (तत्.) सीमारहित आत्मा को धारण करने वाला, विष्णु।

अमेरिकन *वि.* (अं.) 1. अमेरिका का 2. अमेरिका से संबंधित 3. अमेरिका का निवासी 4. अमेरिका में प्रचलित अंग्रेजी भाषा।

अमेरिका *पुं.* (अं.) 1. पश्चिमी गोलार्ध में स्थित एक महाद्वीप और एक देश-विशेष 2. संयुक्त राज्य अमेरिका।

अमेरिकी *वि.* (तद्.) दे. अमेरिकन।

अमेल *वि.* (तत्.) जिसका मेल न हो, असंबद्ध

अमेह *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का मूत्ररोग, वह रोग जिसमें पेशाब आसानी से नहीं उतरता।

अमोक्ष *पुं.* (तत्.) 1. मोक्ष न मिलना 2. बंधन *वि.* जिसका मोक्ष न हुआ हो, बँधा हुआ, अनुक्त।

अमोघ *वि.* (तत्.) 1. जो निष्फल न हो, अचूक 2. लक्ष्यभेदी (पुं.) 1. अव्यर्थ, व्यर्थ न होने का भाव 2. शिव 3. विष्णु।

अमोघदंड *वि.* (तत्.) जो दंड देने में सबल हो, शिव।

अमोघदृष्टि *वि.* (तत्.) अमोघ (अव्यर्थ) दृष्टि वाला।

अमोघवाक् *स्त्री.* (तत्.) सफल वाणी। जो वाणी व्यर्थ न हो। वि. जिसकी वाणी व्यर्थ न जाए।

अमोघशर *वि.* (तत्.) अचूक निशाने वाला बाण।

अमोघा *स्त्री.* (तत्.) 1. कश्यप ऋषि की एक पत्नी जिससे पक्षियों की उत्पत्ति बताई गई है 2. हरीतकी, हरड़, विडंग (जो रोगचिकित्सा में निष्फल नहीं होती)।

अमोचन *वि.* (तत्.) 1. जिसका छुटकारा न हो सके, न छूटनेवाला 2. अदायगी के बाद भी वापस न पाना *पुं.* छुटकारा न होने का भाव।

अमोचनीय *वि.* (तत्.) 1. न छूटने योग्य 2. अदायगी के बाद भी वापस न पाया जाने वाला non-redeemable

अमोद *पुं.* (तत्.) 1. आनंद-रहित रहने की स्थिति।

अमोनिया *स्त्री.* (अ.) रसा. रंगहीन, तीखी गंध युक्त वायु से हल्की और जल में विलेय गैस NH3 जो हाइड्रोजन और नाइट्रोजन का यौगिक है।

अमोल *वि.* (तत्.) जिसका मूल्य न आँका जा सके, अनमोल।

अमोलक *वि.* (तद्.) दे. अमूल्य।

अमोला *पुं.* (देश.) आम का बिलकुल नया पौधा, आम का उगता अंकुर।

अमोही *वि.* (तत्.) 1. जिसे किसी से मोह-ममता न हो, निर्मोही 2. विरक्त।

अमौद्रीकृत *वि.* (तत्.) 1. जो मुद्रांकित न हो। 2. जहाँ सिक्के न चलते हों (ऐसा क्षेत्र)।

अमौन *पुं.* (तत्.) 1. मौन का अभाव 2. आत्मज्ञान 3. मुनि न होने की अवस्था या भाव *वि.* जो चुप न रहा हो।

अमौलिक *वि.* (तत्.) 1. जो मौलिक या स्वतंत्र रचना न हो 2. अयथार्थ, मिथ्या 3. निर्मूल, बिना जड़ का बिना आधार का विलो. मौलिक।

अम्माँ *स्त्री.* (देश.) माता, माँ।

अम्र *पुं.* (तत्.) आम्र, आम।

अम्ल *पुं.* (तत्.) 1. खट्टे स्वाद वाला एक यौगिक जो क्षारों को निष्प्रभावित कर देता है और लिटमस कागज को लाल कर देता है 2. भोजन के छह रसों में से एक रस, खटाई 3. सिरका *वि.* खट्टा।

अम्लक *पुं.* (तत्.) बड़हल का पेड और उसका फल।

अम्लघ्न *वि.* (तत्.) 1. खट्टेपन को हटाने वाला, अम्लनाशक (पदार्थ) 2. क्षार।

अम्लता *स्त्री.* (तत्.) शरीर में अम्ल की मात्रा अधिक होने से उत्पन्न उदर रोग जिसके मुख्य लक्षण पेट में जलन और खट्टी डकारें आना है।

अम्लपंचक *पु.* (तत्.) आयु. पाँच खट्टे फलों का समुदाय, जिसमें मुख्यत, जंबीरी नींबू, अमलबेंत खट्टा अनार, इमली, नारंगी आते हैं।

अम्लवर्षा *स्त्री.* (तत्.) रसा. औद्योगिक क्षेत्रों में धुएँ इत्यादि के रूप में वातावरण में स्थित कुछ यौगिकों का वर्षा जल में मिलकर बरसना।

अम्लवृक्ष *पुं.* (तत्.) 1. आँवले का पेड़ 2. इमली का पेड़ 3. खट्टे फल का वृक्ष।

अम्लशूल *पुं.* (तत्.) आयु. अम्ल पित्त के रोग के कारण उदर में होने वाला दर्द या पीड़ा।

अम्लसार *पुं.* (तत्.) 1. आमलासार 2. नीबू 3. अमलबेंत 4. काँजी।

अम्लहरिद्रा *स्त्री.* (तत्.) आँबाहल्दी।

अम्लान *वि.* (तत्.) 1. जो उदास न हो 2. जो मुरझाया न हो, प्रसन्न, खिला हुआ 2. स्वच्छ, जो मलिन न हो *पुं.* 1. बाणपुष्प नामक पौधा 2. दुपहरिया, गुलदुपहरिया।

अम्लानि *स्त्री.* (तत्.) न मुरझाने की स्थिति या भाव, सजीवता।

अम्लिका *स्त्री.* (तत्.) 1. इमली का वृक्ष या फल 2. खट्टी डकार।

अम्लिमा *स्त्री.* (तत्.) अम्लता, खट्टापन।

अम्लीकरण *पुं.* (तत्.) खट्टा बनाने की क्रिया।

अम्लीय *वि.* (तत्.) अम्लयुक्त, अम्ल-विषयक, अम्ल से संबंधित acidic

अम्लीय मृदा *स्त्री.* (तत्.) मृदा जिसकी ऊपरी परत या किसी संस्तर-विशेष का मान 6.6 से कम हो। acidic soil

अम्लीय रंजक *पुं.* (तत्.) रसा. रंजकों का एक बड़ा वर्ग जिनमें सोडियम या पोटेशियम लवणों के रूप में सल्फोनिक, कार्बोक्सिल आदि अम्लीय समूह होते हैं। इनका उपयोग रेशम और चमड़े को रँगने में होता है तु. क्षारकीय रंजक।

अम्लीय लवण *पुं.* (तत्.) रसा. किसी द्विक्षारकी या त्रिक्षारकी अम्ल के आंशिक उदासीनीकरण से प्राप्त यौगिक उदा. सोडियम हाइड्रोजन सल्फेट acid salt टि. ये लवण होते हैं लेकिन एक प्रतिस्थापनीय हाइड्रोजन के कारण अम्ल जैसी अभिक्रियाएँ दर्शाते है।

अम्लीय वर्षा *स्त्री.* (तत्.) रसा. वर्षा जिसका pH मान 5 से कम हो, मुख्यतः इसका कारण वायुमंडल में सल्फर डाइडऑक्साइड और नाइट्रोजन के ऑक्साइडों का युक्त होना है।

अय:शूल *पुं.* (तत्.) 1. तीक्ष्ण शस्त्र। 2. लोहे का भाला।

अयजनीय *वि.* (तत्.) 1. जो यज्ञ करने लायक न हो। 2. जो सम्मान का पात्र न हो।

अयज्ञ *वि.* (तत्.) 1. यज्ञ न करनेवाला 2. जो यज्ञ के योग्य न हो *पुं.* यज्ञ का अभाव।

अयज्ञक *वि.* (तत्.) 1. जो यज्ञ के लिए अनुपयुक्त हो, जो यज्ञ के योग्य न हो 2. यज्ञ न करनेवाला।

अयतेंद्रिय *वि.* (तत्.) 1. जिसका इंद्रियों पर संयम न हो, असंयमी 2. इंद्रिय-निग्रह न करनेवाला, इंद्रियलोलुप विलो. यतेंद्रिय।

अयत्न *पुं.* (तत्.) यत्न का अभाव, उद्यमशून्यता *वि.* यत्न या परिश्रम न करनेवाला, उद्योगहीन, यत्नशून्य विलो. यत्न।

अयत्नकृत *वि.* (तत्.) 1. जो बिना प्रयास के आसानी से हो जाए 2. अनायास किया गया। 3. बिना प्रयत्न के प्राप्त (फल)।

अयत्नज *वि.* (तत्.) 1. बिना परिश्रम के उत्पन्न होने वाला। 2. स्वाभाविक, प्राकृतिक।

अयथा *वि.* (तत्.) 1. जो सही स्थिति के अनुसार न हो 2. झूठ, असत्य 3. अयोग्य *पुं.* (तत्.) विधि-विपरीत कार्य, अनुचित कार्य।

अयथातथ *वि.* (तत्.) 1. जैसा अपेक्षित (वांछित) हो वैसा नही। 2. प्रतिकूल, विपरीत, विरुद्ध 3. मिथ्या।

अयथापूर्व *वि.* (तत्.) जो पहले जैसा न हो। पहले से बदला रूप।

अयथार्थ *वि.* (तत्.) 1. जो यथार्थ न हो, अवास्तविक 2. असत्य, झूठ 3. गलत 4. अनुचित, अनुपयुक्त विलो. यथार्थ।

अयथार्थानुभव *पुं.* (तत्.) मिथ्या अनुभव।

अयथावत *वि.* (तत्.) सही स्थिति से भिन्न, अनुचित ढंग का, गलत ढंग का विलो. यथावत्।

अयथास्थित *वि.* (तत्.) 1. जो यथास्थान न हो। 2. अव्यवस्थित।

अयथेष्ट *वि.* (तत्.) अभीष्ट मात्रा से कम, अपर्याप्त, जो काफी न हो, कम, थोड़ा विलो. यथेष्ट।

अयथोचित *वि.* (तत्.) 1. जिसका स्वरूप, मात्रा या विधि उचित न हो 2. अयोग्य।

अयन *पुं.* (तत्.) शा.अर्थ 1. गति, चाल 2. घर; स्थान 3. काल, समय 4. अंश 5. गाय-भैंस के थन का वह भाग जिसमें दूध होता है। खगो. सूर्य की विषुवत रेखा से उत्तर की ओर या दक्षिण की ओर गति। पृथ्वी के विषुवतीय वृत्त के क्रांतिवृत्त के ध्रुवों के चारों ओर पृथ्वी की धीमी परिक्रमा। यह परिक्रमा 23 1/2° की त्रिज्या वाले वृत्त में होती है और लगभग 25,800 वर्षों में पूरी होती है। विषुवत रेखा से चल कर उत्तरी गोलार्ध में 23 1/2° (कर्करेखा) तक और उलटे क्रम में विषुवत रेखा को पार करते हुए दक्षिणी गोलार्ध में 23 1/2° (मकर रेखा) तक पहुँचने की सूर्य की नियमित गति। दोनों ओर स्थित 23 1/2° रेखाएं सूर्य की गति के उत्तरी और दक्षिणी दो छोर हैं। precession

अयनकाल *पुं.* (तत्.) खगो. सूर्य किरणों के गमन (दक्षिणायन या उत्तरायण होने) की अवधि।

अयनचलन *पुं.* (तत्.) खगो. विषुव बिंदु का पीछे खिसकना टि. प्राय: 72 वर्ष बाद यह एक अंश पीछे खिसक जाता है। इसी आधार पर ज्योतिष में अयनांश की गणना की जाती है।

अयन-संक्रांति *स्त्री.* (तत्.) मकर और कर्क राशि की संक्रांति टि. इन संक्रातियों से ही उत्तरायण या दक्षिणायन का प्रारंभ होता है।

अयनांत *पुं.* (तत्.) सा.अर्थ एक अयन की समाप्ति और दूसरे के प्रारंभ का संधि- काल भूगो. वह क्षण जब सूर्य की वार्षिक गति की दिशा पलटती हुई प्रतीत होती है। ऐसा क्षण वर्ष में दो वार आता है दे. अयन।

अयनांश *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य के अयान्त अर्थात् गतिविशेष का भाग 2. विषुवत रेखा के दोनों ओर सूर्य की गति का अंश।

अयश *पुं.* (तत्.) यश का अभाव, अपयश, निंदा, बदनामी विलो. यश।

अयशस्कर *पुं.* (तत्.) जो कीर्तिकर न हो, बदनामी करने वाला विलो. यशस्कर।

अयशस्य *वि.* (तत्.) 1. जिससे बदनामी हो 2. बदनाम करनेवाला (कृत्य)।

अयशस्वी *वि.* (तत्.) जिसे यश न मिला हो, बदनाम।

अयशी *वि.* (तत्.) यशहीन, बदनाम।

अयस् *पुं.* (तत्.) 1. लोहा, धातु 2. शस्त्रास्त्र।

अयस्-उत्कीर्णन *पुं.* (तत्.) लोहे पर उकेर कर कलाकृति बनाना।

अयस्क *पुं.* (तत्.) धातुओं को खान से निकालते समय उनका मूल रूप, अशोधित कच्ची धातु।

अयस्कांत *पुं.* (तत्.) चुंबक।

अयस्कार *पुं.* (तत्.) लोहे का परिष्कार करने वाला, लोहार।

अयस्मय *वि.* (तत्.) 1. लोहे से युक्त 2. धातु से बना हुआ पर्या. अयोमय।

अयाचक *वि.* 1. याचना न करने वाला, न माँगने वाला 2. संतुष्ट।

अयाचित *वि.* (तत्.) बिना माँगा हुआ, अप्रार्थित।

अयाची *वि.* (तत्.) दे. अयाचक।

अयाच्य *वि.* (तत्.) 1. जिस वस्तु को माँगने की आवश्यकता न हो 2. जो माँगने योग्य न हो, तुच्छ 3. भरापूरा, संतुष्ट।

अयात *वि.* (तत्.) जो न गया हो।

अयातयाम *वि.* (तत्.) एक पहर (लगभग 3 घंटे) बीतने तक की घटना, ताजा (जिसे बने एक पहर से कम समय हुआ है।)

अयान *पुं.* (तत्.) 1. स्वभाव 2. अगमन, स्थिरता *वि.* यत्न-रहित, जो सवारी पर न हो, पैदल।

अयाल *पुं.* (फा.) शेर, घोड़े आदि की गर्दन के लंबे बाल।

अयि *अव्य.* (तत्.) संबोधन में प्रयुक्त होने वाला शब्द। हे, अरी, आदि टि. प्राय: स्त्रियों के लिए प्रयुक्त।

अयुक्त *वि.* (तत्.) 1. न जोड़ा हुआ, अलग, असंबद्ध 2. अयोग्य 3. अनुचित, तर्कहीन, असंगत, अनुपयुक्त 4. अनमना, अन्यमनस्क 5. अविवाहित।

अयुक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. युक्ति का अभाव, युक्ति या तर्क प्रस्तुत न करना 2. असंबद्धता, काम में न जुड़ना, तर्कहीनता 3. गड़बड़ी विलो. युक्ति।

अयुग *वि.* (तत्.) 1. जो मिला हुआ नहीं है, पृथक है, अलग या अकेला। 2. विषम संख्या बोधक शब्द। वह (संख्या) जो दो से विभाज्य न हो।

अयुगल *वि.* (तत्.) अलग, अकेला, जिसका जोड़ा न हो।

अयुग्म *वि.* (तत्.) 1. जो जोड़े में न हो 2. अकेला, एकाकी 3. विषम।

अयुत *पुं.* (तत्.) दस हजार की संख्या *वि.* (तत्.) 1. अलग, अयुक्त, असंबद्ध जो युक्त न हो 2. परस्पर-आश्रित।

अयुतसिद्ध *वि.* (तत्.) न्या.द. एक दूसरे पर निर्भर रहने के कारण जिसको अलग न किया जा सके जैसे- कपड़ा और कुरता।

अयुध्य *वि.* (तत्.) 1. जिसके साथ युद्ध उचित न हो 2. युद्ध करने में असमर्थ।

अये *अव्य.* (तत्.) संबोधन दु:ख या विस्मयादि में प्रयुक्त होने वाला शब्द।

अयोग *पुं.* (तत्.) 1. पार्थक्य योग का अभाव 2. कुसमय 3. संकट 4. ऐसा समय जिसमें फलित ज्योतिष के अनुसार दुष्ट ग्रहों के अनुसार नक्षत्रों का योग (मेल) हो *वि.* (तद्.) अयोग्य, अनुचित।

अयोगवाह *पुं.* (तत्.) व्याक. 'अ' का योग किए जाने पर ही उच्चरित स्वर, जैसे- अनुस्वार विसर्ग, उपध्मानीय तथा जिह्वामूलीय।

अयोगी *वि.* (तत्.) 1. जो योगी न हो 2. जिसने योग के सभी अष्टांगो का अनुष्ठान न किया हो 3. योगांगों के अनुष्ठान में असमर्थ हो *वि.* (तद्.) अयोग्य।

अयोग्य *वि.* (तत्.) 1. जो योग्य न हो, नालायक, अनुपयुक्त 2. अकुशल, अपात्र।

अयोग्यता *स्त्री.* (तत्.) योग्य न होने का भाव, योग्यता का अभाव, अर्हता-अप्राप्त, अनर्ह; अधिकार हीनता, अनर्हता, अपात्रता।

अयोघन *पुं.* (तत्.) लोहे का हथौड़ा।

अयोच्छिष्ट *पुं.* (तत्.) लोहे का अपशिष्ट तत्व, जंग, मोरचा।

अयोद्ध *पुं.* (तत्.) 1. युद्ध में भाग न लेने वाला सैनिक *वि.* अयोद्धी non-combatant 2. संघर्ष से बचने वाला।

अयोद्धी *वि.* (तत्.) दे. अयोद्धा।

अयोध्य *वि.* (तत्.) 1. जिससे युद्ध न किया जा सकता हो, जो युद्ध करने योग्य न हो 2. अजेय

अयोध्या *स्त्री.* (तत्.) सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी, राम की नगरी, अवध, साकेत।

अयोनि *वि.* (तत्.) 1. अजन्मा, जिसका जन्म न हुआ हो, नित्य 2. जो कोख या गर्भ से उत्पन्न न हुआ हो, अयोनिज *पुं.* 1. योनिहीन 2. शिव 3. ब्रह्मा।

अयोनिज *वि.* (तत्.) जिसका जन्म योनि या कोख या गर्भ से न हुआ हो *पुं.* ब्रह्मा, विष्णु।

अयोमय *वि.* (तत्.) लोहनिर्मित, लोहे का बना हुआ दे. अयस्मय।

अयोमुख *वि.* (तत्.) ऐसा शस्त्र या औजार जिसके अग्रभाग पर नुकीला लोहा लगाया गया हो।

अयोहृदय *वि.* (तत्.) 1. लोहे के समान कठोर हृदयवाला 2. निष्ठुर।

अयौक्तिक *वि.* (तत्.) युक्तिहीन, असंगत, युक्तिविरुद्ध।

अयौगिक *वि.* (तत्.) 1. जो यौगिक न हो 2. जो योग से न बना हो 3. जिसकी व्याकरणानुसार व्युत्पत्ति न हो।

अरंग *पुं.* (तत्.) 1. खुशबू, सुगंध 2. दुर्दशा।

अरंगी *वि.* (तत्.) रागरहित, रागविहीन।

अरंड *पु.* (तत्.) एरंड, अरंडी पादप।

अरंभना *स.क्रि.* (तद्.) 1. बोलना 2. चिल्लाना 3. प्रारंभ करना, शुरू करना *अ.क्रि.* (तद्.) प्रारंभ होना, शुरू होना।

अर *पुं.* (तत्.) 1. पहिए की नाभि और नेमि को जोड़नेवाली तिरछी लकड़ी, अरा 2. कोण, कोना *वि.* शीघ्र, त्वरित, जल्दी *स्त्री.* (तद्.) अड़, हठ, जिद।

अरक *पुं.* (अर.) किसी पदार्थ का आसवन-विधि से निकाला गया रस, आसव, अर्क।

अरकटी *पुं.* (देश.) नाव की पतवार चलानेवाला, माँझी।

अरकला *स्त्री.* (तद्.) बंद दरवाजे को खुलने से रोकने के लिए प्रयुक्त रोक, अरगल, अर्गला।

अरकसी *स्त्री.* (देश.) आलस्य, सुस्ती *वि.* आलसी।

आलसी।

अरकाटी *पुं.* (देश.) विदेशों में कुली, मजदूर आदि भेजने वाला ठेकेदार।

अरकोल *पुं.* (देश.) हिमालय क्षेत्र में उगने वाला लाखर नामक वृक्ष जिसकी गोंद ककरासिंगी या काकड़ासिंगी कहलाती है।

अरक्तक *वि.* (तत्.) जिसके शरीर में रक्त की कमी हो, कमजोर।

अरक्तता *स्त्री.* (तत्.) रक्ताल्पता, रक्त में लाल कोशिकाओं की कमी हो जाना anaemia

अरक्षित *वि.* (तत्.) 1. जिसकी रक्षा न की गई हो, रक्षाहीन 2. जिसका कोई रक्षक न हो।

अरगजा *पुं.* (देश.) लेप, केसर, चंदन, कपूर आदि का मिश्रित सुगंधित द्रव्य या लेप।

अरगजी *वि.* (तत्.) 1. अरगजा जैसे रंग वाला 2. अरगजा जैसी सुगंधि वाला।

अरगनी *स्त्री.* (देश.) कपड़े लटकाने के लिए बाँधी गयी आड़ी रस्सी या बाँस, अलगनी।

अरगल *पुं.* (तत्.) किवाड़ को अंदर से बंद करने के लिए लोहे की सांकल आदि।

अरगवान *पुं.* (फा.) गहरे लाल रंग का फूल और उसका वृक्ष।

अरगवानी *पुं.* (फा.) रक्तिम वर्ण, लाल रंग। *वि.* गहरे लाल रंग का, लाल।

अरगाना *अ.क्रि.* (देश.) दे. अलगाना।

अरघ *पुं.* (देश.) अर्घ्य, जल-अर्पण, देवता के समक्ष पुष्प-पत्र के साथ जल-अर्पण।

अरघट्ट *पुं.* (तत्.) सिंचाई या अन्य प्रयोजन के लिए कुएँ से पानी निकालने हेतु यंत्र पर्या. रहट।

अरघा *पुं.* (तद्.) 1. पत्थर का बना आधार-पात्र जिसमें शिवलिंग की स्थापना की जाती है 2. दे. अर्घा।

अरचित *वि.* (तद्.) सम्मानित, अर्चित *पुं.* भगवान् विष्णु।

अरज *स्त्री.* (अर.) निवेदन, प्रार्थना, विनय, अर्ज।

अरजम *पुं.* (अर.) कुंबी नामक एक वृक्ष।

अरजल *पुं.* (अर.) 1. वह घोड़ा जिसका अगला, दाहिना और पीछे के दोनों पैर सफेद या एक रंग के हो 2. वर्णसंकर।

अरजस्क *वि.* (तत्.) 1.जिसमे धूल या गंदगी न हो, स्वच्छ 2. वासना हीन।

अरजस्वला *वि.* (तत्.) जिसे मासिक धर्म न हुआ हो, जो रजस्वला न हो।

अरजा *पुं.* (तत्.) 1. घीकुँआर, घृतकुमारी 2. भार्गव ऋषि की पत्नी 3. अरजस्वला कन्या।

अरज़ी *स्त्री.* (अर.) दे. अर्जी।

अरज्जु *वि.* (तत्.) बिना रस्सीवाला *पुं.* (तत्.) कारागृह, जेल।

अरटु *पुं.* (तत्.) अरल नामक वृक्ष।

अरणि, अरणी *स्त्री* (तत्.) 1. एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी को रगडक़र आग निकालकर यज्ञ किया जाता था 2. सूर्य, चकमक पत्थर, अग्नि।

अरण्य *पुं.* (तत्.) जंगल, वन, कानन, बंजर भूमि, रेगिस्तान।

अरण्यक *पुं.* (तत्.) 1. जंगल 2. जंगलवासी समाज 3. दे. अरण्या।

अरण्यगान *पुं.* (तत्.) 1. सामवेद का गान जो जंगल में होता था 2. निष्फल प्रार्थना 3. लाक्ष.अर्थ. वह सुंदर कार्य जिसे देखने-सुनने या समझने वाला कोई न हो।

अरण्यचंद्रिका *स्त्री.* (तत्.) वन की ज्योत्स्ना, जिसे देखने या प्रशंसा करने वाला न हो, किसी स्त्री का ऐसा शृंगार जिसकी प्रशंसा करने वाला कोई न हो।

अरण्यरोदन *पुं.* (तत्.) निष्फल रोना, ऐसी पुकार जिसे सुनने वाला कोई न हो।

अरण्य विलाप *पुं.* (तत्.) 1. जंगल या एकांत में रोना, जिसे सुनने-देखने वाला कोई नही 2. निष्फल कथन या निवेदन। पर्या. अरण्यरोदन।

अरण्या *स्त्री* (तत्.) एक वन-औषधि।

अरण्यानी, अरण्यानि *स्त्री.* (तत्.) 1. विशाल जंगल, बीहड़ 2. वन-देवी।

अरण्यीय *वि.* (तत्.) जंगल में होने वाला, जंगल से संबंधित, बनैला, जंगली।

अरत *वि.* (तत्.) 1. जो किसी काम में न लगा हो 2. विरक्त, जो अनुरक्त न हो, जो आसक्त न हो।

अरति *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी से अनुराग न होने की स्थिति 2. विराग, मन का न लगना 3. व्यथा, पीड़ा।

अरत्नि *पुं.* (तत्.) 1. बाँह 2. कोहनी 3. कोहनी से कनिष्ठा उंगली तक की लंबाई।

अरथ *पुं.* (तद्.) दे. अर्थ।

अरथी *वि.* (तद्.) 1. युद्‌ध में रथ का उपयोग न करने वाला योद्‌धा 2. दे. अर्थी 3. शव के अंतिम संस्कार के लिए प्रयुक्त होने वाला लकड़ी या बाँस का ढाँचा, टिकटी।

अरद *वि.* (तत्.) बिना दाँतवाला, जिसके दाँत न हों।

अरदन *वि.* (तत्.) जिसके दाँत न हों, दंतहीन।

अरदना *स.क्रि.* (तद.) अर्दन, मसलना, कुचलना, मार डालना।

अरदली *पुं.* (अं.) अधिकारी के साथ नियुक्त चपरासी; अधिकारी के सेवक या भृत्य के रूप में कार्य करने वाला। orderly

अरदावा *पुं.* (तत्.) 1. अर्दित या दला हुआ अन्न 2. भरता।

अरदास *स्त्री.* (फा.) 1. सविनय भेंट 2. नजराना 3. (भेंट-सहित) प्रार्थना, विनती।

अरधंग *पुं.* (तद्.) 1. आधा अंग 2. अर्धांग रोग, वह रोग जिसमें आधा अंग निष्क्रिय हो जाता है, पक्षाघात, लकवा।

अरधंगी *स्त्री.* (तद्.) अर्धांगिनी, स्त्री, पत्नी।

अरना *पुं.* (तद्.) भैंसे जैसा एक बलवान वन्य पशु, जंगली भैंसा।

अरब *पुं.* (तत्.) 1. अर्बुद, सौ करोड़ की संख्या 2. अरब देश 3. अरब देश का निवासी 4. घोड़ा 5. इंद्र

अरबराना *अ.क्रि.* (देश.) 1. विचलित होना, घबराना 2. लड़खड़ाना।

अरबिस्तान *पुं.* (अर.) अरब देश।

अरबी *स्त्री.* (फा.) 1. अरब देश की भाषा; इस भाषा की लिपि 2. अरब देश से संबधित।

अरबीला *वि.* (देश.) 1. आन-बान वाला 2. अड़ जानेवाला 3. युद्‌ध में डटा रहनेवाला।

अरमण *वि.* (तत्.) अरुचिकर, असुंदर।

अरमाँ *पुं.* (फा.) दे. अरमान।

अरमान *पुं.* (फा.) इच्छा, लालसा, चाह मुहा. अरमान निकालना- इच्छा पूरी करना; अरमान भरा- इच्छाओं आकांक्षाओं से परिपूर्ण; अरमान रह जाना- इच्छा पूरी न होना।

अरर *अव्य* (देश.) आश्चर्यसूचक शब्द-ध्वनि प्रयो. अरर! यह क्या हो गया? *पुं.* (तत्.) 1. कपाट, किवाड़, ढक्कन 2. युद्ध 3. उल्लू पक्षी।

अरराना *स.क्रि.* (देश.) 'अरर' ध्वनि का अनुरणात्मक रूप, टूटने या गिरने का सूचक अनुरणात्मक शब्द।

अररी, अररि *स्त्री.* (तत्.) 1. द्वार, दरवाजा, किवाड़ 2. दरवाजे को रोकने वाला लकड़ी का लंबा कुंदा 3. म्यान 4. आवरण *पुं.* चर्मकार की रांपी।

अरलू *पुं.* (तत्.) आयु. एक औषधीय पौधा, सोनापाठा टि. एक ऊँचा वृक्ष जिसकी फलियाँ प्रायः 2 फुट लंबी होती हैं तथा उसका अगला भाग कुछ मुड़ा हुआ और नोकदार होता है, इसके फूल लाल होते हैं तथा पत्तों में दुर्गंध होती है।

अरवन *पुं.* (तत्.) सबसे पहले कच्ची काटी जानेवाली फसल, फसल की प्रथम कटाई जो देवताओं या ब्राह्मणों को अर्पित की जाती है।

अरवा *पुं.* (देश.) वह चावल जो धान को बिना भूने, बिना जलाए या बिना उबाले निकाला जाता हो।

अरविंद *पुं.* (तत्.) 1. अरों या चक्रांगों की तरह सुंदर पत्रों वाला पुष्प (लाल या नीला) कमल 2. सारस 3. ताँबा पर्या. अंबुज, इंदीवर, उत्पल, तामरस, पुंडरीक, पुरइन, शतदल, सहस्रदल।

अरविंदनाभ *पुं.* (तत्.) दे. अरविंदनाभि।

अरविंदनाभि *पुं.* (तत्.) कमल-नाभि विष्णु जिनकी नाभि से उत्पन्न कमल में ब्रह्मा विराजमान हैं।

अरविंदलोचन *पुं.* (तत्.) कमल के समान नेत्र वाले, कमल नयन (विष्णु का एक नाम)।

अरविंदिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. कमलिनी 2. कमललता 3. कमलसमूह।

अरविन *पुं.* (देश.) रस्सी का फंदा जिसमें घड़ा फँसा कर कुएँ से पानी निकाला जाता है।

अरवी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार का कंद जिसकी तरकारी बनाई जाती है, घुइयाँ, अरबी, अरुई।

अरस *पुं.* (तद्) आलस्य, सुस्ती *पुं.* (अर.) 1. अर्श, छत 2. महल *वि.* 1. रसहीन 2. बिना स्वाद का, फीका।

अरसना *अ.क्रि.* (तद्.) कमजोर होना, शिथिल होना, ढीला होना, मंद पड़ जाना।

अरसना-परसना *स.क्रि.* (तद्.) छूना, स्पर्श करना, भेंट करना।

अरस-परस *पुं.* (तद्.) 1. छुपाछुपी का खेल, आँखमिचौनी, छुआछुई 2. देखने की क्रिया या भाव।

अरसा *पुं.* (अर.) 1. समय, काल, अवधि 2. लंबा समय प्रयो. मैं (एक) अरसे से उसका इंतजार कर रहा हूँ।

अरसाश *पुं.* (तत्.) रस-हीन, अशन अर्थात् रूखा-सूखा भोजन, स्वादरहित भोजन।

अरसिक *वि.* (तत्.) 1. जो रसिक न हो, अरसज्ञ, असहृदय, अमर्मज्ञ 2. नीरस, रूखे स्वभाव वाला।

अरह *पुं.* (तत्.) रहस् अर्थात् एकांतता या गोपनीयता का अभाव, रहस्य का अभाव, गुप्त तथ्य का अभाव।

अरहट *पुं.* (तद्.) बाल्टीनुमा जल-पात्रों की शृंखला से कुएँ से पानी निकालने वाला यंत्र, रहट, अरघट्ट।

अरहन *पुं.* (देश.) साग-सब्जी पकाते समय उसमें मिलाया जानेवाला आटा या बेसन।

अरहर *स्त्री.* (तत्.) 1. कैजेनस इंडिकस नामक उष्णदेशीय फलीदार पौधा जिसके पीले-भूरे दानों की दाल बनाई जाती है 2. इसके दाने 3. दानों से बनी दाल, अरहर की दाल।

अरा *पुं.* (तत्.) पहिए में लगी तनियाँ जो पहिए की परिधि को नेमि से जोड़ती है।

अराग वि. (तत्.) 1. रागरहित, रागविहीन 2. आसक्ति-रहित, वासनाविहीन *पुं.* राग, प्रेम या आसक्ति का अभाव।

अरागी *वि.* (तत्.) रागरहित, वासनाविहीन, उदासीन।

अराज *वि.* (तत्.) बिना राजा का *पुं.* 1. अराजकता, शासन की अव्यवस्था 2. राजा या शासक का अभाव।

अराजक *वि.* (तत्.) 1. वह स्थान या देश जहाँ राजा न हो 2. अराजकता पूर्ण।

अराजकता *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी शासन की ऐसी अव्यवस्था जहाँ सारे काम अस्त-व्यस्त हों, जहाँ शासन-व्यवस्था पर नियंत्रण न हो 2. देश या समाज की वह अवस्था जिसमें विधि और व्यवस्था का अभाव हो, शासन का अभाव, अव्यवस्था anarchy

अराजकतावाद *पु.* (तत्.) पूर्ण सामाजिक तथा राजनीतिक स्वातंत्र्य के लिए सरकार या सरकारी प्रतिबंधों की अनिवार्यता का विरोधी सिद्धांत। anarchism

अराजकवादी *वि.* (तत्.) अराजकतावाद का समर्थक।

अराजन्य *वि.* (तत्.) अराजसी, गैर-शाही 1. क्षत्रियविहीन (राज्य) 2. जो क्षत्रिय न हो।

अराजपत्रित *वि.* (तत्.) वह सरकारी कार्मिक या कर्मचारी जो राजपत्रित न हो अर्थात् जिसकी नियुक्ति, पदोन्नति आदि से संबंधित विवरण राजपत्र में प्रकाशित न होता हो, अधिकारी से निचले स्तर का कर्मचारी तु. राजपत्रित अधिकारी

अराजी *स्त्री.* (अर.) 1. धरती, जमीन 2. खेती की की जमीन, कृषिभूमि।

अराति *पुं.* (तत्.) 1. शत्रु, दुश्मन, प्रपीड़क 2. कुंडली का छठा स्थान 3. दुःख, कष्ट 4. काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर नाम के छह शत्रु।

अराधना *स्त्री.* (तद्.) दे. आराधना।

अराबा *पुं.* (अर.) 1. रथ 2. गाड़ी 3. तोप ले जाने वाली गाड़ी।

अराम *पुं.* (फा.) दे. आराम।

अरारी *स्त्री.* (देश) आयु. एक औषधीय वृक्ष जिसके फूल और फल आसमानी रंग के, तथा पत्ते दुर्गंधयुक्त होते हैं पर्या. करंजिया।

अरारूट *पुं.* (अं.) एक विशेष पौधा मैरान्टा अरुन्डिनेसिया जिसके कंद को पीस कर आटा बनाया जाता है, अरारोट। arrowroot

अरारोट *पुं.* (अं.) दे. अरारूट ।

अराल *वि.* (तत्.) पहिए के अरों की तरह वंक्रिल, टेढ़ा-तिरछा, कुटिल, वक्र हस्त, मतवाला, मुड़ा हुआ, उदा. 'आलोक वसन लपटा अराल (प्रसाद-कामा. 'इड़ा') *पुं.* केश, मतवाला हाथी।

अराला *स्त्री.* (तत्.) पथभ्रष्ट नारी, सतीत्वहीन नारी, वेश्या, पुंश्चली।

अराष्ट्र *वि.* (तत्.) 1. राजसत्ता का नाश 2. राष्ट्रत्व का अभाव 3. राजसत्ता का अभाव, राष्ट्रहीन व्यक्ति।

अराष्ट्रिक *वि.* (तत्.) जो राष्ट्र का न हो, जो राष्ट्र-संबंधी न हो।

अरिंदम *वि.* (तत्.) अरि का दमन करने वाला, शत्रुनाशक, वैरी का नाश करनेवाला।

अरि *पुं.* (तत्.) 1. शत्रु, वैरी, दुश्मन 2. चक्र 3. षड्रिपु, काम, क्रोध आदि छह शत्रु।

अरिकर्षक *पुं.* (तत्.) शत्रु को वश में रखने वाला। शत्रु को हराने वाला, शत्रु को सताने वाला।

अरिकुल *पुं.* (तत्) शत्रुओं का दल या समूह।

अरिक्थभाग *वि.* (तत्.) जिसे पिता द्वारा छोड़ी गई संपत्ति का माग न मिले, पैतृक संपत्ति का अधिकारी न हो।

अरिता *स्त्री.* (तत्) शत्रुता, रिपुता, वैर।

अरित्र *पुं.* (तत्.) 1. पतवार, डाँड़, नाव खेने का बल्ला, नाव, पोत 2. लंगर *वि. (तत्.)* शत्रु से रक्षा करनेवाला, आगे बढ़ाने वाला।

अरिदमन *वि.* (तत्.) शत्रु का नाश करनेवाला *पुं.* 1. शत्रुघ्न, शत्रुमर्दन 2. शत्रु को नष्ट करने की क्रिया या भाव।

अरिमर्दन *पुं.* (तत्.) शत्रु का नाश, शत्रुनाशन *वि.* शत्रुनाशक

अरिया *स्त्री.* (देश.) नदी-सरोवर के किनारे रहनेवाली मछली खाने वाली एक छोटी चिड़िया।

अरिल्ल *पुं.* (तद्.) सोलह मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दो गुरु वर्ण होते हैं।

अरिषड्वर्ग *पुं.* (तत्.) 1. पाँच ज्ञानेंद्रियाँ और एक मन; कुल छह शत्रुओं का समुदाय 2. काम, क्रोध, मद, मत्सर, लोभ और मोह ये छह शत्रु, षड्रिपु।

अरिष्ट *पुं.* (तत्.) 1. अविनाशी, अक्षत 2. अनिष्ट, दुर्भाग्य, शत्रु, अमंगल, विपत्ति 3. अशुभ शकुन 4. नीम 5. लहसुन 6. रीठा 7. कौवा 8. गिद्ध 9. मादक सुरा 10. अनिष्ट ग्रहयोग, मृत्यु कारक योग 11. भूकंपी उत्पात 12. लंका के पास का एक पर्वत 13. एक असुर वृषभासुर जिसे श्री कृष्ण ने मारा था 14. एक प्रकार का व्यूह *वि.* (तत्.) अशुभ।

अरिष्टक *पुं.* (तत्.) रीठा, रीठे का वृक्ष।

अरिष्टगृह *पुं.* (तत्.) जिस घर में किसी महिला की प्रसूति हो, प्रसूतिगृह, सौरी।

अरिष्टसूदन *वि.* (तत्.) अशुभ या दुर्भाग्य का निवारण करने वाला *पुं.* विष्णु।

अरिष्टा *स्त्री.* (तत्.) कश्यप ऋषि की पत्नी और दक्ष प्रजापति की पुत्री जिससे गंधर्व उत्पन्न हुए माने जाते हैं।

अरिष्टिका *स्त्री.* (तत्.) 1. रीठा 2. कुटकी।

अरिहन *वि.* (तत्.) शत्रुओं को मारने वाला, अरिनाशक *पुं.* शत्रुघ्न 2. जिनदेव।

अरिहा *वि.* (तत्.) शत्रुहंता, शत्रुघ्न *पुं.* शत्रुघ्न।

अरी *अव्य.* (तद्.) स्त्रियों के लिए संबोधनसूचक शब्द प्रयो. अरी शीला! थोड़ी देर के लिए मेरे पास आना *पुं.* अरे।

अरीठा *पुं.* (तद्.) रीठा।

अरीत *स्त्री.* (तद्.) दे. अरीति।

अरीति *स्त्री.* (तत्.) रीति के विरुद्ध होनेवाला आचरण, कुरीति, अनुचित कार्य।

अरीतिक *वि.* (तत्.) अपारंपरिक, अविधिक, अनौपचारिक।

अरीना थियेटर *पुं.* (अं.) गोल आकृति का प्रेक्षागार (इस आकृति के प्रेक्षागार में कहीं कहीं कुश्ती लड़ने के लिए अखाड़ा भी होता है) टि. 'अरीना' शब्द का अर्थ 'गोलाकार प्रेक्षागृह के मध्य की खुली जमीन' होता है।

अरुंधती *स्त्री.* (तत्.) 1. वशिष्ठ मुनि की पत्नी 2. दक्ष की एक कन्या 3. एक आरोही लता 4. सप्तर्षि मंडल में स्थित एक तारा।

अरु *पुं.* (तद्.) 1. सूर्य 2. आक या मदार का वृक्ष 3. नेत्र 4. लाल खैर 5. घाव, जख्म *संयो.* और, तथा।

अरुआ, अरुवा *पुं.* (देश.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जो बंगाल, मध्य भारत और दक्षिण भारत के जंगलों में पाया जाता है और इसकी लकड़ी से ढोल, तलवार की म्यान आदि बनाए जाते हैं। इसके कंद की सब्जी बनती है।

अरुक *वि.* (तत्.) दे. अरुज, रोगहीन, नीरोग।

अरुक्ष *वि.* (तत्.) जो रूखा न हो 1. स्निग्ध 2. समतल, सपाट 3. चिकना, कोमल।

अरुग्ण *वि.* (तत्.) नीरोग, रोगरहित, जो बीमार न हो, स्वस्थ।

अरुचि *स्त्री.* (तत्.) 1. रुचि का अभाव, अनिच्छा 2. विरक्ति, घृणा 3. अग्नि मांद्य रोग, जिसमें भोजन की इच्छा नहीं होती।

अरुचिकर *वि.* (तत्.) 1. अरुचिकर, जो अच्छा न लगे 2. कुढ़न पैदा करनेवाला 3. घृणास्पद।

अरुज *वि.* (तत्.) 1. रुजा अर्थात् रोग से रहित, नीरोग, 2. स्वस्थ, तंदुरुस्त

अरुझना *अ.क्रि.* (देश.) 1. उलझना, फँसना, अटकना 2. लड़ना-झगड़ना।

अरुझाना *स. क्रि.* (देश.) उलझाना, फँसाना।

अरुण *पुं.* (तत्.) 1. उगता हुआ रक्तवर्ण सूर्य 2. सांध्य लालिमा 3. सूर्य का सारथी 4. लाल रंग, 5. सूर्य 6. सिंदूर का रंग 7. माघ माह का सूर्य 8. कुंकुम 9. गुड़ 10. एक प्रकार का कष्ट, रोग

11. पुन्नाग वृक्ष 12. कैलाश की चोटी 13. एक आदित्य।

अरुणकर *पुं.* (तत्.) सूर्य, दिनकर पर्या. अंशुमान, आदित्य, चित्ररथ, प्रभाकर, भानु, भास्कर।

अरुणा *स्त्री.* (तत्.) 1. सूर्योदय के समय पूर्व दिशा में दिखाई देने वाली लालिमा, अरुणिमा 2. मजीठ 3. घुँघची 4. एक प्राचीन नदी।

अरुणाई *स्त्री.* (तद्.) लालिमा, ललाई, अरुणिमा।

अरुणाग्रज *पुं.* (तत्.) (अरुण के अग्रज) गरुड़। इन्हें 'अरुणानुज' भी कहते हैं।

अरुणाचल *पुं.* (तत्.) 1. भारत के बिल्कुल पूर्वोत्तर में स्थित प्रदेश 2. वह पर्वत जहाँ सूर्य सर्वप्रथम निकलता है।

अरुणात्मज *पुं.* (तत्.) 1. जटायु 2. यम 3. मनु, शनि 4. सुग्रीव 5. कर्ण और दोनों अश्विनी कुमार 6. सूर्य का पुत्र।

अरुणात्मजा *स्त्री.* (तत्.) 1. सूर्य की पुत्री, सूर्यतनया अर्थात् यमुना तथा ताप्ती नदी।

अरुणानुज *पुं.* (तत्.) अरुण के अनुज, गरुड़।

अरुणाभ *वि.* (तत्.) लालिमायुक्त, रक्ताभ।

अरुणार्चि *पुं.* (तत्) लाल किरणों वाला, सूर्य।

अरुणाली *वि.* (तद्.) लाल आभा वाली।

अरुणित *वि.* (तत्) जो लाल रंग में रंगा गया या रंगा हुआ हो।

अरुणिमा *स्त्री.* (तत्.) लाली, लालिमा, रक्तिमा।

अरुणी *स्त्री.* (तत्.) 1. लाल रंग की गाय 2. उषा।

अरुणीकृत *वि.* (तत्.) दे. अरुणित।

अरुणेक्षण *वि.* (तत्.) लाल आँखों वाला, रक्त नेत्रों वाला।

अरुणोदक *पुं.* (तत्.) लाल सागर, अरब और मिस्र देश के बीच का सागर।

अरुणोदधि *पुं.* (तत्.) दे. अरुणोदक ।

अरुणोदय *पुं.* (तत्.) 1. प्रात-कालीन सूर्योदय 2. प्रात:काल, उषाकाल, भोर, सूर्योदय-काल, तड़का।

अरुणोपल *पुं.* (तत्.) पद्मराग मणि, लाल नामक रत्न।

अरुवा *पुं.* (तत्.) दे. अरुआ।

अरुष *वि.* (तत्.) 1. जो दोषयुक्त न हो, अक्रोधी, जो रूठा न हो 2. चमकदार 3. लालिमायुक्त अक्षत, हानि-रहित।

अरुषी *स्त्री.* (तत्) 1. उषा की वेला 2. अग्नि ज्वाला 3. भृगु ऋषि की पत्नी *वि.* चमकदार, चमकीली।

अरुष्क *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का औषधीय पौधा, अड़ूसा, रूसा 2. भल्लातक वृक्ष या उसकी गिरी।

अरुष्ट *वि.* (तत्) जो रुष्ट न हो, प्रसन्न।

अरूक्ष *वि.* (तत्.) 1. जो रूखा न हो, कोमल, मुलायम, सुकुमार, नाजुक 2. सपाट, चिकना।

अरूढ़ *वि.* (तत्.) जो रूढ़ न हो अपरंपरागत, जो प्रचलित न हो, अप्रचलित।

अरूप *वि.* (तत्.) 1. रूपरहित, आकृतिहीन, निराकार, जैसे- परमात्मा 2. कुरूप 3. असमरूप, असमान *पुं.* (तत्.) 1. रूप का अभाव 2. ब्रह्म 3. बुरा रूप।

अरूपक *वि.* (तत्.) 1. जिसका रूप न हो, निराकार, जैसे- परमात्मा 2. (काव्य.) रूपक अलंकार से भिन्न *पुं.* 3. (बौद्ध) निर्बीज समाधि।

अरूपहार्य *वि.* (तत्.) 1. जिसे सौंदर्य से आकर्षित न किया जा सके 2. जो रूप-सौंदर्य के वशीभूत न हो।

अरे *अव्य.* (तत्.) तिरस्कार और आश्चर्य व्यक्त करने वाला संबोधन शब्द प्रयो. "अरे! उधर न जाना, उधर साँप बैठा है, "अरे। आप आ गए।

अरेखित *वि.* (तत्) जो रेखांकित न हो, वह (लेख आदि) जिसके नीचे रेखा नहीं लगाई गई हो।

अरेखित चेक *वि.* (तत्) वह चेक जिसे रेखांकित नहीं किया गया होय uncrossed cheque

अरेणु *वि.* (तत्.) जिसे धूलि न लगी हो, जिसका धूलि से स्पर्श न हो, धूलि रहित।

अरोक *वि.* (तत्.) 1. जिसे रोका नहीं जा सकता 2. निर्बाध 3. प्रतिबंध रहित 4. जो रुक न पाए।

अरोग *वि.* (तद्.) रोगरहित, नीरोग, स्वस्थ *पुं.* आरोग्य, स्वस्थता।

अरोगी *वि.* (तद्.) जो रोगी न हो, स्वस्थ, रोगहीन।

अरोचक *पुं.* (तत्.) एक रोग जिसमें अन्न आदि में स्वाद नहीं आता, अग्निमांद्य *वि.* 1. जो रुचिकर न हो, जिसमें रुचि न हो 2. जो चमकदार न हो, 3. भूख मंद करनेवाला।

अरोचकी *वि.* (तत्.) मंदाग्नि रोग से पीड़ित।

अरोड़ा *पुं.* (तत्.) पंजाब की एक हिंदू उपजाति।

अरोध्य *वि.* (तत्) 1. जो रोकने योग्य नहीं है, अबाधित, निर्बाध। 2. जिसे रोकना उचित न हो।

अरोमिल *वि.* (तत्.) 1. रोम-रहित 2. बाल-रहित।

अरोर *वि.* (तत्.) शोर-रहित, शब्दरहित, शांत।

अरोष *वि* (तत्.) रोषरहित, क्रोधहीन पु. क्रोध का अभाव, अक्रोध, शांति।

अरौद्र *वि.* (तत्.) 1. जो भयानक न हो 2. विष्णु का एक विशेषण।

अर्क *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य 2. इंद्र 3. आक, मदार 4. अग्नि 5. भोजन 6. बिजली की चमक, कौंध, प्रकाश की किरण, चमक *पुं.* (अर.) किसी चीज का निचोड़ कर निकाला गया रस, किसी वस्तु का भभके से खींचा गया रस *वि.* (तत्.) पूजनीय, अर्चनीय।

अर्ककांता *स्त्री.* (तत्.) सूर्य की पत्नी, छाया एवं संज्ञा दोनों में से एक, सूर्य की दो पत्नियाँ मानी मानी गई है- छाया और संज्ञा।

अर्कचंदन *पुं.* (तत्.) रक्तचंदन, लाल चंदन, 'चंदन' का एक प्रकार जिसकी लकड़ी लाल रंग की होती है।

अर्कज *पुं.* (तत्.) सूर्य पुत्र, कर्ण *वि.* सूर्य से उत्पन्न या पोषित, यम, सुग्रीव।

अर्कपत्र *पुं.* (तत्) 1. अर्क वृक्ष 2. आक, मदार के पत्ते, अर्कपर्ण।

अर्कपुत्र *पुं.* (तत्) सूर्य का पुत्र शनि, यम, सुग्रीव, कर्ण।

अर्कपुत्री *स्त्री.* (तत्) सूर्य की पुत्री- यमुना, ताप्ती नदी।

अर्कबंधु *पुं.* (तत्) 1. सूर्य के बंधु, गौतम 2. कमल।

अर्क-विवाह *पुं.* (तत्.) मदार वृक्ष के साथ किया गया तीसरा विवाह। टि. जिसकी पत्नी जीवित नहीं रहती है और बार-बार विवाह करता है तो तीसरा विवाह पहले मदारवृक्ष से करने का विधान किया गया है ताकि भावी पत्नी उसकी चौथी पत्नी हो और पुनः पत्नी वियोग का दुख न हो।

अर्कव्रत *पुं.* (तत्) सूर्य संबंधी व्रत, जो सूर्य के जन्म-दिन माघ शुक्ल सप्तमी से प्रांरभ करके एक वर्ष तक प्रत्येक षष्ठी, सप्तमी तिथि को किया जाता है।

अर्कीय *पुं.* (तत्.) 1. अर्क से संबंधित 2. पूज्य।

अर्केंदुसगम *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य और चंद्रमा के मिलन का दिन 2. अमावस्या की तिथि।

अर्कोपल *पुं.* (तत्.) सूर्यकांतमणि, लाल,पद्म राग (मणि)

अर्ग *पुं.* (तत्.) भौ. सेंटीमीटर-ग्राम-सेकंड पद्धति में ऊर्जा या कार्य का मात्रक टि. इसके स्थान पर आजकल 'जूल' प्रयुक्त होता है)

अर्गट *पुं.* (तत्.) राई, बाजरे आदि का कवक रोग, जिसमें बीज कठोर काले दानों का रूप ले लेते हैं।

अर्गल *पुं.* (तत्.) 1. लकड़ी का वह डंडा जिसे किवाड़ को खुलने से रोकने के लिए लगाया जाता है, आगल 2. रोक, अवरोध।

अर्गला *स्त्री.* (तत्.) 1. अर्गल 2. अवरोध, रुकावट 3. हाथी के पैर में बांधी जाने वाली जंजीर।

अर्गलिका *स्त्री.* (तत्.) छोटे आकार की अर्गला, अगड़ी, अगरी, ब्यैड़ा, सिटकनी, किल्ली।

अर्गलित *वि.* (तत्.) 1. सिटकनी या अर्गला से बंद किया हुआ 2. अवरुद्ध 3. सिटकनी लगाकर रोका हुआ।

अर्घ *पुं.* (तत्.) 1. कीमत, मूल्य 2. दूध, दही, दूब, तंडुल आदि मिले जल से देवता या पूज्य व्यक्ति का अभिषेक, जलदान 3. अतिथि को हाथ धोने के लिए दिया गया जल 4. पूजन हेतु प्रयुक्त दूध आदि से मिश्रित जल 5. किसी वस्तु का महत्व।

अर्घट *पुं.* (तत्.) भस्म, राख।

अर्घपात्र *पुं.* (तत्) अर्घ्य देने का जलपात्र। अर्घा।

अर्घा *स्त्री.* (तत्.) 1. 20 मोतियों का वह लच्छा जिसकी तौल 4 माशे हो 2. *पुं.* तांबे या किसी धातु का शंख के आकार का पात्र जिससे अर्घ संपन्न किया जाता है, अर्घपात्र।

अर्घापचय *पुं.* (तत्.) मूल्य गिरना, अवमूल्यन, मूल्य ह्रास।

अर्घार्ह *वि.* (तत्.) अर्घ देनेयोग्य, पूजनीय, आदरणीय।

अर्घेश्वर *पुं.* (तत्.) अर्घीश, शिव, महादेव।

अर्घ्य *वि.* (तत्.) 1. बहुमूल्य 2. पूजनीय, भेंट देने योग्य *पुं.* किसी देवता या सम्मानित व्यक्ति को सम्मानपूर्वक भेंट करने योग्य वस्तु।

अर्घ्यदान *पुं.* (तत्) देवी, देवता को इष्ट प्राप्ति के निमित्त जल का अर्घ देना।

अर्चक *वि.* (तत्.) अर्चना या पूजा करनेवाला, पूजक, पुजारी।

अर्चन *पुं.* (तत्.) 1. पूजा, अर्चना 2. आदर, सम्मान।

अर्चना *स्त्री.* (तत्.) वंदना, पूजा, पूजन।

अर्चनीय *वि.* (तत्.) पूजा करने योग्य, पूजनीय।

अर्चा *स्त्री.* (तत्.) 1. अर्चना, पूजा 2. वह प्रतिमा जिसकी पूजा की जाती है।

अर्चि *स्त्री.* (तत्.) 1. अग्निशिखा, लपट, लौ 2. प्रकाश, प्रकाश, चमक 3. किरण, रश्मि।

अर्चित *वि.* (तत्.) 1. जिसकी अर्चना की गई हो, पूजित 2. सम्मानित *पुं.* विष्णु।

अर्चिती *वि.* (तत्.) पूजा-अर्चना करने वाला।

अर्चिमान् *वि.* (तत्) 1. तेजस्वी *पुं.* सूर्य 2. अग्नि 4. विष्णु।

अर्चिष्मान *वि.* (तत्.) प्रकाशमान, चमकवाला 2. लपटवाला *पुं.* 1. अग्नि 2. सूर्य 3. विष्णु।

अर्च्य *वि.* (तत्.) अर्चना करने योग्य, अर्चनीय।

अर्ज *पुं.* (अ.) 1. चौड़ाई (कपड़े की), पनहा, पना 2. विनती, प्रार्थना।

अर्जक *वि.* (तत्.) कमाने वाला, उपार्जन करनेवाला, (धन)प्राप्त करनेवाला *पुं.* वनतुलसी।

अर्जन *पुं.* (तत्.) 1. कमाई, उपार्जन 2. कमाने या संग्रह करने की क्रिया या भाव 3. संग्रह *स्त्री.* *स्त्री.* (तत्.) 1. अनिरुद्ध की पत्नी 2. सफेद गाय।

अर्जनशील *वि.* (तत्) जो अर्जन करने में लगा हो।

अर्जनशील समाज *पुं.* (तत्) वह समाज जिसमें प्रत्येक परिवार अर्जन करने में लगा हो और जहाँ अर्जन ही प्रगति का चिह्न माना जाता है।

अर्जनीय *वि.* (तत्.) 1. संग्रह के योग्य 2. ग्रहण करने योग्य, प्राप्त करने योग्य।

अर्जित *वि.* (तत्.) 1. संग्रह किया हुआ, संगृहीत 2. प्राप्त किया हुआ, कमाया हुआ।

अर्जित अवकाश *पुं.* (तत्.) दे. अर्जित छुट्टी।

अर्जित छुटटी *पुं.* (तत्.+तद्.) (प्रशा.) सवेतन छुट्टी जो कर्मचारी के अवकाश खाते में अर्धवार्षिक आधार पर एक निश्चित संख्या तक जमा होती रहती है।

अर्जी *स्त्री.* (अर.) आवेदन-पत्र, प्रार्थना-पत्र।

अर्जीनवीस *पुं.* (अर.) अर्जी लिखने वाला।

अर्जुन *वि.* (तत्.)1. श्वेतवर्ण, चमकीला, स्वच्छ, उज्ज्वल *पुं.* 2. पाँच पांडवों में से मँझले का नाम, जो महाभारत युद्ध के नायक थे, ये गोरे (श्वेतवर्ण) थे 2. एक वृक्ष-विशेष जर्मिनेलिया अर्जुना जो दक्षिण से अवध-प्रांत तक मिलता है और जिसकी छाल दवा के काम आती है 3. हैहय नरेश, कार्तवीर्य 4. इकलौता बेटा 5. मोर 6. चाँदी 7. सोना 8. दूब 9. आँख का एक रोग।

अर्जुनोपम *स्त्री* (तत्.) सागौन या टीक का वृक्ष।

अर्णव *पुं.* (तत्.) 1. समुद्र 2. सूर्य 3. इंद्र 4. अंतरिक्ष 5. एक वृत्त 6. रत्न, मणि *वि.* गतिमान, फेनिल, तरंगित।

अर्णवज *पुं.* (तत्) 1. समुद्र से उत्पन्न। समुद्र का फेन।

अर्णवनेमि *स्त्री.* (तत्.) (समुद्र से घिरी) पृथ्वी, धरती।

अर्णवपति *पुं.* (तत्.) महासागर, महासमुद्र पर्या. अबुधि, अंबुनिधि, क्षीरनिधि, जलनिधि, पयोधि, पयोनिधि, पारावार, महोदधि।

अर्णवपोत *पुं.* (तत्) 1. समुद्री जहाज 2. जल-यान।

अर्णवोद्भव *पुं.* (तत्.) 1. (समुद्र से उत्पन्न) चंद्रमा 2. अमृत 3. अग्निजार नामक पौधा।

अर्णवोद्भवा *स्त्री.* (तत्.) लक्ष्मी।

अर्णस *पु.* (तत्.) जल तरंग, धारा, तरंगों से भरा हुआ

अर्णा *स्त्री.* (तत्.) नदी।

अर्णो *पुं.* (तत्.) अर्णस का समासगत रूप, धारा, बाल रोग।

अर्णोद *पुं.* (तत्.) 1. (जल देने वाला) बादल 2. मोथा नामक वनस्पति।

अर्णोनिधि *पुं.* (तत्.) जलनिधि, सागर, समुद्र।

अर्णोरुह *पुं.* (तत्.) जलरुह, जलज, कमल।

अर्तन *पुं.* निंदा, बुराई, फटकार, भर्त्सना *वि.* 1. निदंक, दोषारोपण कर्त्ता 2. दुःखित, खिन्न।

अर्ति *स्त्री.* (तत्) 1. कष्ट, पीड़ा, धनुष की नोंक।

अर्थ *पुं.* (तत्.) 1. अभिप्राय, आशय, मतलब 2. शब्दार्थ, प्रयोजन 3. धन, संपत्ति 4. परिणाम, फल 5. वस्तुस्थिति 6. जीवन के चार पुरुषार्थों- घर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में से एक अर्थ ।

अर्थ-अपनिरूपण *पुं.* (तत्) यथायोग्य अर्थ न निकालकर अनुचित अर्थ निकालना, तोड़ मरोडक़र अर्थ निकालना।

अर्थक *वि.* (तत्) 1. धन कमाने वाला 2. धन संबंधी 3. अर्थयुक्त।

अर्थकर *वि.* (तत्.) धनार्जक, धन कमाने वाला, जिससे धन प्राप्त हो।

अर्थकर्म *पुं.* (तत्.) 1. मुख्य कार्य 2. परिणामदायक कार्य 3. धनार्जक कार्य।

अर्थकाम, अर्थकारी *वि.* (तत्.) धन की कामना करने वाला, धनाभिलाषी, धन को लक्ष्य मानने वाला।

अर्थ-कृच्छ्र *पु.* (तत्.) 1. धन-संबंधी कठिनाई या संकट 2. आय से अधिक व्यय करने पर होने वाली धन की कमी 3. जिसका अर्थ समझना कठिन हो।

अर्थगत *वि.* (तत्.) 1. वाक्य या पद या शब्द के अर्थ पर आश्रित 2. धन-संबंधी।

अर्थगर्भित *वि.* (तत्.) (गहन) अर्थ-युक्त।

अर्थगांभीर्य *पुं.* (तत्.) दे. अर्थगौरव।

अर्थगृह *पुं.* (तत्.) कोष, खजाना, कोषागार।

अर्थगौरव *पुं.* (तत्.) अर्थ की गंभीरता, अर्थ की विशदता।

अर्थग्रहण *पुं.* (तत्.) अर्थ को समझना, अर्थबोध।

अर्थघटक *पुं.* (तत्) भाषा, शब्द का पूरा अर्थ बताने वाले तत्व, वाच्यार्थ, ध्वनित अर्थ, अर्थ विस्तार आदि।

अर्थघ्न *वि.* (तत्) धन का दुरुपयोग करने वाला, अपव्ययी।

अर्थ-चिंतन *पुं.* (तत्.) धनोपार्जन के लिए उपाय सोचना।

अर्थच्छाया *स्त्री.* (तत्.) शब्द के मूल अर्थ के साथ ही अभियुक्त सूक्ष्म अर्थ या भिन्न अर्थ।

अर्थज्ञ *वि.* (तत्.) 1. अर्थ समझनेवाला 2. तत्वज्ञ।

अर्थतंत्र *पु.* (तत्.) 1. अर्थशास्त्र 2. धन का शासन।

अर्थतः *अव्य.* (तत्.) अर्थ की दृष्टि से, वास्तव में, सचमुच, वस्तुतः।

अर्थतत्व *पु.* (तत्.) 1. अर्थिम, अर्थगुण 2. वास्तविक बात 3. किसी वस्तु का यथार्थ कारण 4. अर्थ-विज्ञान 5. शब्दरूप, धातु रूप।

अर्थद *वि.* (तत्.) 1. धनदायक, लाभदायक 2. अर्थ बताने वाला पुं. 1. कुबेर 2. धन देने वाला व्यक्ति।

अर्थदंड *पुं.* (तत्.) 1. जुर्माना, धन जमा करने की सजा 2. क्षतिपूर्ति हेतु लिया जाने वाला धन।

अर्थदर्शी *वि.* (तत्.) 1. धन संबंधी मुकदमों पर विचार करने वाला 2. व्या. ऐसा (शब्द) जिसका अर्थ स्वयं स्पष्ट हो तु. संबंधदर्शी।

अर्थदूषण *पुं.* (तत्.) 1. धन का अपव्यय 2. अनुचित रीति से धन ले लेना 3. काव्य अर्थदोष निकालना।

अर्थदोष *पुं.* (तत्.) 1. काव्य में अर्थ संबंधी दोष तु. शब्ददोष 2. धन संबंधी दोष या अवगुण।

अर्थपरिवर्तन *पु.* (तत्.) भाषा शब्द के मूल अर्थ से भिन्न नए अर्थ की अभिव्यक्ति 1. शब्द के अर्थ में बदलाव 2. समय के साथ किसी भाषा के शब्द के अर्थ में होने वाला बदलाव या परिवर्तन।

अर्थपिशाच *वि.* (तत्.) 1. अत्यंत धनलोलुप, जिसे धनसंचय का बहुत लोभ हो 2. धन प्राप्ति के लिए अत्यंत लोभी व क्रूर हो जाने वाला व्यक्ति।

अर्थप्रकृति *स्त्री.* (तत्.) नाट्य नाटक के लक्ष्यीभूत आशय को, क्रमशः प्रकट करने वाली नाट्य-स्थितियों बीज, बिंदु, पताका, प्रकरी और कार्य का सामूहिक नाम।

अर्थबुद्धि *वि.* (तत्) जिसका मन बराबर धन में लगा रहता है, स्वार्थबुद्धि (व्यक्ति) मतलबी, स्वार्थी।

अर्थभेद *पु.* (तत्.) शब्द के अर्थ या अर्थों की भिन्नता, भिन्न-भिन्न अर्थों को पहचानने की शक्ति।

अर्थभेदक *वि.* (तत्.) जिससे भिन्न अर्थ को समझने में सहायता हो।

अर्थभेदकता *स्त्री.* (तत्.) अर्थ में अंतर करने का गुण टि. अर्थभेदन से ही स्वनिमों तथा अर्थिमों की पहचान होती है दे. अर्थभेदक।

अर्थमंत्री *पुं.* (तत्.) वित्त मंत्री, वह मंत्री जिस पर राज्य के आर्थिक या वित्तीय कार्यों का दायित्व हो।

अर्थयुक्त *वि.* (तत्.) अर्थसहित, अर्थपूर्ण, सार्थक।

अर्थयुक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. लाभ की प्राप्ति 2. धन प्राप्त करने की युक्ति।

अर्थराशि *पुं.* (तत्.) धन-राशि, प्रचुर धन।

अर्थलाभ *पुं.* (तत्.) धन या द्रव्य की प्राप्ति।

अर्थलुब्ध *वि.* (तत्) 1. धन के लोभ में पड़ा हुआ, लोभी 2. कंजूस।

अर्थलोभ *पुं.* (तत्.) धन का लालच, धन का लोभ।

अर्थवत्ता *स्त्री.* (तत्.) 1. शब्दों की अर्थयुक्त होने की स्थिति 2. धन संपन्नता, धनवान होने का भाव या स्थिति।

अर्थवाद *पु.* (तत्.) 1. किसी कार्य को करने के गुण या लाभ, जो न करने से हानि और उसे पहले करने वालों का बखान 2. निहित उद्देश्य से निंदा या प्रशंसा।

अर्थवान *वि.* (तत्.) 1. प्रयोजन परक, सार्थक, अभिप्राय युक्त 2. धनवान, धनी।

अर्थविकार *पुं.* (तत्.) अर्थ-परिवर्तन।

अर्थविज्ञान *पुं.* (तत्.) भाषा. भाषाविज्ञान की वह शाखा जिसके अंतर्गत भाषा की आर्थी संरचना एवं वाक्य संरचना का विश्लेषण किया जाता है। टि. आधुनिक भाषावैज्ञानिक एकमत नहीं है कि अर्थविज्ञान को भाषाविज्ञान की परिधि में रखा जाए।

अर्थविज्ञानी *पुं.* (तत्.) अर्थ. विज्ञानविद् *वि.* अर्थ वैज्ञानिक।

अर्थविद् *वि.* (तत्.) 1. अर्थ का ज्ञाता 2. तात्पर्य समझने वाला 3. तत्वज्ञ।

अर्थविरोध *पुं.* (तत्) काव्य. काव्य का वह दोष जिसके अनुसार वर्णन इस प्रकार का हो जिससे अपेक्षित अर्थ का विरोधी अर्थ प्राप्त हो रहा हो।

अर्थ विस्तार *पुं.* (तत्) भाषा वि. एक प्रक्रिया जिसके अनुसार शब्द कालांतर में अपने अर्थ का फैलाव कर लेता है। जैसे- अत्यंत प्राचीन काल में 'तैल' शब्द का अर्थ 'तिल का रस' होता था पर अब सरसों, मूंगफली इत्यादि का रस भी 'तैल' होता है।

अर्थवैज्ञानिक *पुं.* (तत्.) 1. अर्थ-विज्ञान विशेषज्ञ, अर्थविज्ञान संबंधी 2. भाषा शब्द-शक्ति तथा अर्थ परिवर्तन विषयक विशेषज्ञ।

अर्थव्यवस्था *पुं.* (तत्.) सार्वजनिक राजस्व की व्यवस्था, वित्त व्यवस्था, आय-व्यय की व्यवस्था।

अर्थशास्त्र *पुं.* (तत्.) 1. वह शास्त्र जिसमें धन की की प्राप्ति, उपभोज्य वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन उपभोग, वितरण आदि का अध्ययन किया जाता है, (अर्थविज्ञान) 2. राजनीति (कौटिल्य के अनुसार)।

अर्थशास्त्री *पुं.* (तत्.) अर्थशास्त्र का ज्ञाता या विशेषज्ञ, अर्थशास्त्रविज्ञानी।

अर्थशास्त्रीय *वि.* (तत्.) अर्थशास्त्र की दृष्टि से, अर्थशास्त्र के अनुसार, आर्थिक।

अर्थशौच *पुं.* (तत्.) लेन-देन या पैसा कमाने में शुचिता या ईमानदारी, उचित अर्थ-व्यवहार।

अर्थश्लेष *पुं.* (तत्) एक अर्थालंकार जो एक से अधिक अर्थ देने वाले शब्दों के द्वारा वाक्य के दो या अधिक अर्थ को प्रकट करता है।

अर्थसंकोच *पुं.* (तत्.) अर्थ परिवर्तन के कारण किसी शब्द के अर्थ-क्षेत्र का सीमित हो जाना। उदा. 'मृग' का मूल अर्थ 'जानवर' था, जो अब 'हिरण' तक सीमित है। विलो. अर्थविस्तार।

अर्थहीन *वि.* (तत्.) 1. निरर्थक, जिसका कोई अर्थ न हो, बेतुका, बेमानी 2. धनहीन, निर्धन।

अर्थांतर *पुं.* (तत्.) 1. भिन्नार्थ, अन्यार्थ 2. भिन्न उद्देश्य 3. दूसरा ही मतलब होने का भाव/दशा।

अर्थांतरन्यास *पुं.* (तत्.) एक अलंकार जहाँ सामान्य से विशेष का या विशेष से सामान्य का समर्थन किया जाता है उदा. गुणयुक्त वस्तु की संगति से गुणहीन भी सम्मानित होता हैं उदा. माला का धागा भी फूलों के साथ सिर पर धारण कर लिया जाता है।

अर्थागम *पुं.* (तत्.) 1. धन का आगमन, अर्थ की प्राप्ति या लाभ। 2. काव्य. व्यंग्य या काकु से नए अर्थ का प्राप्त होना।

अर्थागमोपाय *पुं.* (तत्.) धन प्राप्ति का उपाय, आय का स्रोत।

अर्थात् *अव्य.* (तत्.) यानी, तात्पर्य या अर्थ यह है कि, दूसरे शब्दों में।

अर्थादेश *पुं.* (तत्.) 1. भाषा. अर्थपरिवर्तन के कारण समय के साथ ही किसी शब्द के आर्थी क्षेत्र का पूर्णतः बदला जाना तु. अर्थ-विस्तार, अर्थसंकोच।

अर्थाधिकारी *पुं.* (तत्.) कोषाधिकारी, खजांची, कोषपाल।

अर्थानुरणन *पुं.* (तत्.) 1. काव्य. ध्वनि के माध्यम से शब्द चित्र प्रस्तुत करना 2. भाषा. अनुरणनात्मक शब्दों से उत्पन्न चित्रात्मक अनुभूति जैसे- छनछनाना, भन्नाहट।

अर्थानुवाद *पुं.* (तत्.) (केवल) अर्थ के अनुसार किया गया अनुवाद जिसमें भावार्थ या व्यंग्यार्थ निहित हो।

अर्थानुसंधान *पुं.* (तत्.) काव्य में शब्दार्थ को खोजने या समझने का प्रयत्न।

अर्थान्वयन *पुं.* (तत्.) किसी पाठ, कथन कार्य आदि से व्यक्त भाव को समझना या अर्थ लगाना

अर्थान्वित *वि.* (तत्.) 1. अर्थयुक्त, अर्थपूर्ण 2. धनवान, धनी।

अर्थान्वेषक *वि.* (तत्.) काव्य या शब्द के अर्थ को खोजने वाला।

अर्थान्वेषण *पुं.* (तत्.) काव्य अर्थ खोजना।

अर्थान्वेषी *वि.* (तत्.) दे. अर्थान्वेषक।

अर्थापकर्ष *पुं.* (तत्.) अर्थ का ह्रास, भाषा के ऐतिहासिक विकास के संदर्भ में अर्थ-परिवर्तन की वह दिशा जिसमें किसी शब्द के मूल अर्थ में गुणात्मक दृष्टि से मूल्य का ह्रास हो जाता है उदा. 'पुंगव' श्रेष्ठ व्यक्ति से 'पोंगा' (मूर्ख) विलो. अर्थोत्कर्ष।

अर्थापत्ति *स्त्री.* (तत्.) दर्श. (न्यायदर्शन के आठ प्रमाणों में से एक), एक बात कहने से दूसरी बात का ज्ञान हो जाना जैसे- 'बादल छाए हैं, वर्षा होगी से यह सिद्ध हुआ कि बिना बादलों के वर्षा नहीं होती।

अर्थापदेश *पुं.* (तत्.) दे. अर्थादेश।

अर्थापन *पुं.* (तत्.) 1. शब्दों के अर्थ बताने या उनकी व्याख्या करने की क्रिया या भाव, अर्थ-निर्णय, अर्थ-व्याख्या।

अर्थाभाव *पुं.* (तत्) धन का अभाव, अर्थ की कमी।

अर्थार्थी *वि. (तत्.)* 1. धन-प्राप्ति का इच्छुक 2. लक्ष्य-प्राप्ति का इच्छुक।

अर्थालंकार *पुं.* (तत्.) वह अलंकार जिसमें अर्थ का चमत्कार हो न कि अनुप्रास आदि शब्दालंकारों का।

अर्थावधारण *पुं.* (तत्.) अर्थ का निर्धारण करना।

अर्थिक *वि.* (तत्.) 1. धन का इच्छुक 2. मन में कोई इच्छा रखने वाला *पुं.* भिक्षुक।

अर्थिम *पुं.* (तत्.) अर्थ. शब्द के मूल अर्थ तत्व को व्यक्त करने वाली इकाई जैसे- बहुवचनत्व, प्रेरणार्थकता आदि की वाहक इकाई।

अर्थी *वि.* (तत्.) 1. इच्छा रखनेवाला, चाहनेवाला 2. प्रार्थी 3. धनी 4. अरथी, शव को अंतिम संस्कार हेतु श्मशान ले जाने की सीढ़ी, टिकठी *पुं.* 1. याचक, माँगनेवाला 2. भिक्षुक 3. वादी।

अर्थोत्कर्ष *पुं.* (तत्.) अर्थ परिवर्तन की वह दशा जिसमें शब्द के मूल अर्थ में गुणात्मक मूल्य-वृद्धि हो जाती है, उदा. कुटीर का अर्थ है घासफूस की झोंपड़ी। अब महलनुमा भवनों के नाम भी 'कुटीर' शब्द सहित कहे जाते हैं।

अर्थोत्पत्ति *पुं.* (तत्) 1. धन की उत्पत्ति 2. धन का उपार्जन।

अर्थोपक्षेपक *पुं.* (तत्.) नाटक की कथावस्तु की क्रमिक प्रगति के सूचक विष्कंभक आदि।

अर्थोपाय *पुं.* (तत्.) 1. किसी कार्य को संपन्न करने के लिए संसाधनों और उपायों की व्यवस्था 2. भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा केंद्र एवं राज्य सरकारों को दी गई अग्रिम धनराशि जो

उन्हें निर्धारित अवधि में लौटानी पड़ती है। ways and means

अर्थ्य *वि.* (तत्.) 1. माँगने योग्य, जिसकी चाह हो 2. उचित, उपयुक्त 3. बुद्धिमान 4. धनी *पुं.* शिलाजीत।

अर्दन *पुं.* (तत्.) 1. पीड़न 2. दलन 3. हिंसा 4. याचना *वि.* पीड़क, हिंसक, बेचैन।

अर्दली *पुं.* (तत्.) दे. अरदली ।

अर्दित *वि.* (तत्.) 1. पीड़ित 2. दलित 3. याचित *पुं.* एक वात-रोग जिसमें पेशियाँ अकड़ जाती हैं।

अर्द्ध, अर्ध *वि.* (तत्.) 1. अधूरा, आधा 2. किसी वस्तु के दो समान भागों में से एक *पुं.* आधा भाग।

अर्द्धगिनी *स्त्री.* (तत्.) दे. अर्धांगिनी।

अर्द्धचंद्र *पुं.* (तत्.) दे. अर्धचंद्र।

अर्द्धचंद्रिका *स्त्री.* (तत्.) दे. अर्धचंद्रिका।

अर्द्धांग *पुं.* (तत्.) 1. आधा अंग 2. अर्धांगघात, पक्षाघात या लकवा।

अर्ध *वि.* (तत्.) जो किसी वस्तु के माप/मान/परिमाण की दृष्टि से किए गए दो समान भागों में से एक हो, आधा ।

अर्ध आयु *पु.* (तत्.) भौ. किसी रेडियोऐक्टिव पदार्थ की निर्धारित मात्रा के आधे परमाणुओं के विपरीत हो जाने की अवधि *स्त्री.* (तत्.) आयु. किसी औषधि के शरीर में प्रविष्ट होने के बाद की वह अवधि जिसमें उसका आरंभिक प्रभाव आधा रह जाता है half life, half life period (सामान्य) वह लघु अवधि जिसमें कोई पदार्थ निष्क्रिय हो जाने से पहले सक्रिय रहता है।

अर्धक *वि.* (तत्) 1. आधा 2. दो भागों में बाँटने वाला, विभाजक।

अर्धकुशल *पुं.* (तत्.) (कर्मचारी या मजदूर) जो कौशल-आधारित कार्य करने में पूर्णतः सक्षम न हो, जिसमें अपेक्षित कौशल यथेष्ट मात्रा में न हो।

अर्धगुणसूत्र *पुं.* (तत्.) गुणसूत्रों के आधे हिस्से जो कोशिका विभाजन के दौरान व्यक्त होते हैं।

अर्धगोल *पुं.* (तत्) 1. गोलार्द्ध 2. कुछ गोलाई ली हुई आकृति *वि.* जो पूरी तरह गोल न हो उदा. तरबूज अर्धगोल होता है।

अर्धचंद्र *पुं.* (तत्.) 1. आधा चाँद, अष्टमी का चाँद 2. अनुनासिकता का चिह्न 'चंद्रबिंदु' 3. मोर पंख पर बनी आँख 4. चंद्रबिंदु गरदनिया, गलहस्त देना, 'गरदन के पीछे से पकड़कर बाहर निकालना'।

अर्धचंद्रिका *पुं.* (तत्.) कनफौड़ा नामक लता।

अर्धचालक *वि.* (तत्.) वह पदार्थ जिसकी समान ताप पर प्रतिरोधकता विद्युतरोधी पदार्थ और धातु की प्रतिरोधकता के बीच की होती है, उदा. जर्मेनियम, सिलिनियम, सिलिकान आदि। semi conductor

अर्धचालक युक्ति *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की इलेक्ट्रॉनिक युक्ति जिसके मूल अभिलक्षण किसी अर्ध-चालक के भीतरी वाहकों के प्रवाह पर निर्भर करते हैं।

अर्धचेतन *वि* (तत्.) जो पूरी तरह चेतन अर्थात् होश में न हो, जो आधी चैतन्यावस्था में हों।

अर्धतत्सम शब्द *पुं.* (तत्.) 1. किंचित स्वनपरिवर्तन के साथ 2. संस्कृत से सीधे हिंदी में गृहीत शब्द, उदा. रतन<रत्न।

अर्धतान *स्त्री.* (तत्.) संगीत के स्वरग्राम में दो स्वरों के बीच का सबसे छोटा अंतराल जैसे-शुद्ध 'ग' और शुद्ध 'म' के बीच।

अर्धदृष्टिता *स्त्री.* (तत्.) 1. दृष्टिक्षेत्र के आधे भाग का दिखाई न पड़ना।

अर्धनत *वि.* (तत्.) शा.अर्थ. आधा झुका हुआ प्रशा. राजकीय शोक व्यक्त करने के लिए ध्वज-स्तंभ की आधी लंबाई तक उतारा गया राष्ट्रध्वज। half mast

अर्धनयन *पुं.* (तत्.) देवताओं के मस्तक पर तीसरी आँख।

अर्धनराच *पुं.* (तत्) एक प्रकार का तीर या बाण।

अर्धनाराच *पुं.* (तत्) दे. अर्धनराच

अर्धनारीश, अर्धनारीश्वर *पुं.* (तत्.) शिव और पार्वती का संयुक्त या संपृक्त रूप।

अर्धनिर्मित उत्पाद *पु.* (तत्.) ऐसे उत्पाद जिनके निर्माण की समस्त प्रक्रियाएँ पूरी तरह संपन्न नहीं हुई हैं।

अर्धन्यायिक *वि.* (तत्.) ऐसे न्यायिक कार्य जिन्हें न्यायिक अधिकारियों की बजाए प्रशासनिक प्राधिकारियों द्वारा किया जाए।

अर्धपश्च रक्षक *पुं.* (तत्.) फुटबॉल, हॉकी आदि खेलों में अग्रखिलाड़ियों के पीछे और पश्चरक्षक के आगे स्थित सहायक रक्षणकर्ता खिलाड़ी half back दे. रक्षक तु. पश्चरक्षक।

अर्धपारदर्शक *वि.* (तत्.) 1. कुछ-कुछ आर-पार दिखाई देने वाला 2. जिससे आर-पार का दृश्य धुँधला या अस्पष्ट दिखाई दे।

अर्धभागिक *वि.* (तत्.) 1. आधे अंश वाला, आधे का हिस्सेदार (हकदार) 2. आधा काम करने वाला हिस्सेदार।

अर्धभुजंगी *स्त्री.* (तत्.) एक छंद का नाम। (वर्णवृत्त) इसके प्रत्येक चरण में दो यगण (इस प्रकार छह वर्ण) होते हैं टि. भुजंगप्रयात छंद के प्रत्येक चरण में चार यगण होते हैं, इसीलिए इस छंद को अर्धभुजंगी कहा जाता है।

अर्धमंडप *पुं.* (तत्) किसी मंदिर के महामंडप और प्रवेशमंडप के बीच का मंडप।

अर्धमागधी *स्त्री.* (तत्.) प्राकृत और मागधी का मिश्रित रूप जिससे पूर्वी हिंदी का उद्‌भव माना गया है, अवधी और छत्तीसगढ़ी बोलियाँ।

अर्धमात्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. आधीमात्रा 2. व्यंजन वर्ण।

अर्धमासिक *वि.* (तत्.) 1. महीने में दो बार होने वाला 2. पंद्रह दिन में प्रकाशित होने वाली पत्र-पत्रिका।

अर्धमासिकी *स्त्री.* (तत्.) महीने में दो बार प्रकाशित होने वाली पत्रिका।

अर्धरक्त संतान *पुं.* (तत्.) वे संतान जिनकी माता एक हो और पिता भिन्न हों या, माता भिन्न हो पर्या. सौतेली (संतान) half blood

अर्धरात्रि *स्त्री.* (तत्) 1. आधी रात 2. रात्रि का मध्यकाल।

अर्धविकच *वि.* (तत्.) आधा खिला, अधखिला।

अर्धविराम *पुं.* (तत्) अर्थ के सम्यक अवबोधन के लिए वाक्यांश या वाक्य के उच्चारण के मध्य में रुकने का संकेत देने वाला विराम चिह्न।

अर्धविवृत *पुं.* (तत्.) शा.अर्थ. आधा खुला हुआ। भाषा. जिह्वा की ऊँचाई के आधार पर वर्गीकृत वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा और मुख विवर के ऊपरी भाग की दूरी विवृत स्वर के उच्चारण में प्रकट दूरी की अपेक्षा कुछ कम होती है उदा. अ, ऐ, औ, ईषत् विवृत half open

अर्धविसर्ग *पुं.* (तत्) आधे विसर्ग के उच्चारण का संकेत, संस्कृत व्याकरण में जिह्वामूलीय उपध्मानीय का चिह्न जो दो अर्थ-वृत्तों को उल्टा जोड़कर लिखा जाता था।

अर्धवीक्षण *पुं.* (तत्.) तिरछी चितवन।

अर्धवृत्त *पुं.* (तत्.) वृत्त का आधा भाग, वृत्तार्ध।

अर्धवृद्ध *वि.* (तत्) 1. प्रौढ़ 2. अधेड़ उम्र का व्यक्ति।

अर्ध वेतन छुट्टी *स्त्री.* (तत्.) छुट्टी का वह प्रकार प्रकार जिसमें कर्मचारी को केवल आधा वेतन मिलता है।

अर्धव्यास *पुं.* (तत्.) वृत्त के केंद्र से परिधि की दूरी।

अर्धशतक *पुं.* (तत्.) खेलकूद में एक सौ का आधा अर्थात् पचास रन या पचास गोल या पचास की संख्या।

अर्धशती *स्त्री.* (तत्.) सौ की आधी अवधि, पचास वर्ष की अवधि।

अर्धशासकीय पत्र *पुं.* (तत्.) प्रशा. किसी अधिकारी का ध्यान व्यक्तिगत रूप से आकृष्ट कर शीघ्र कार्रवाई हेतु समस्तरीय अधिकारी को लिखित पत्र टि. इसका स्वरूप व्यक्तिगत पत्र जैसा होता है और भाषा भी औपचारिक जैसी नहीं होती पर्या. अर्ध-सरकारी पत्र तु. सरकारी पत्र।

अर्धसंवृत *वि.* (तत्.) 1. शा.अर्थ. आधा बंद 2. भाषा. जिह्वा की ऊँचाई के आधार पर वह स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा और मुख-बिवर के

ऊपरी भाग की दूरी संवृत स्वर की तुलना में अधिक होती है उदा. 'ए', 'ओ पर्या. ईषत संवृत half close दे. संवृत तु. 'अर्धविवृत'

अर्धसम *वि.* (तत्.) 1. आधे के समान (बराबर) 2. लगभग पचास प्रतिशत समानता वाला।

अर्ध-सरकारी पत्र *पुं.* (तत्.) दे. अर्धशासकीय पत्र।

अर्धसाप्ताहिक (पत्रिका/पत्र) *पुं.* (तत्.) एक सप्ताह में दो बार प्रकाशित होने वाला समाचार-पत्र या पत्रिका। by-weekly

अर्धसूत्रण *पुं.* (तत्.) कोशिका-विभाजन का एक प्रकार जिसमें एक कोशिका से उत्पन्न दो कोशिकाओं में गुणसूत्र आधे रह जाते हैं। युग्मक (अंड कोशिका, शुक्राणु) इसी प्रक्रिया से बनते हैं तु. समसूत्रण।

अर्धसैनिक बल *पुं.* (तत्.) प्रशा. देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सेना से इतर सशस्त्र बल, उदा. सीमा सुरक्षा बल, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल। para military force

अर्धस्वर *पुं.* (तत्.) व्यंजन स्वनों का एक भेद, जिनके उच्चारण में मुख-विवर स्वर की तरह खुलता है लेकिन स्वर की अपेक्षा कम खुलता है। यह उच्चारण में व्यंजन की तरह होते हुए भी आक्षरिक नहीं है, उदा. य, व semi vowel

अर्धस्वायत्त *वि.* (तत्.) जो पूरी तरह स्वाधीन न हो।

अर्धह्रस्व *वि.* (तत्.) व्या. लघुस्वरवर्ण के आधे उच्चारण वाला (वर्ण)।

अर्धांग *पुं.* (तत्.) 1. आधा अंग, आधी देह 2. पक्षाघात रोग, लकवा 3. शिव।

अर्धांगिनी *स्त्री.* (तत्.) पत्नी, सहधर्मिणी।

अर्धांगी *पुं.* (तत्.) 1. शिव 2. पक्षाघात का रोगी, वह जिसे लकवा मार गया हो *वि.* अर्धांग रोगग्रस्त।

अर्धांश *पु.* (तत्.) आधा अंश, आधा भाग।

अर्धांशी *वि.* (तत्.) आधे भाग का अधिकारी, आधे भाग का हकदार।

अर्धायु *स्त्री.* (तत्.) दे. अर्ध आयु।

अर्धाली *स्त्री.* (तद्.) आधी चौपाई, वह चौपाई जिसमें चार चरणों की अपेक्षा दो ही चरण हों, चतुष्पदी की अपेक्षा द्विपदी।

अर्धासन *पुं.* (तत्) आसन का आधा अंश, आधा स्थान, समान स्थान।

अर्धीकरण *पुं.* (तत्.) आधा करने की क्रिया, समविभाजन।

अर्धेंदु *पुं.* (तत्.) आधा चाँद, अर्ध चंद्र।

अर्धोदय *पुं.* (तत्) 1. ज्यो. एक विशेष पर्व जिसमें स्नान करने से सूर्यग्रहण स्नान का फल मिलता है 2. श्रवण नक्षत्र से युक्त माघ मास की अमावस्या, रविवार एवं व्यतीपात योग के साथ।

अर्पण *पुं.* (तत्.) अपनी वस्तु किसी को समर्पित करने या देने की क्रिया या भाव, भेंट, नजर।

अर्पण संधि *पुं.* (तत्.) दे. अभ्यर्पण संधि।

अर्पित *वि.* (तत्.) अर्पण किया हुआ, भेंट किया हुआ, समर्पित, प्रदत्त।

अर्बुद *पुं.* (तत्.) आयु. 1. हड्डी के अधिक बढ़ जाने के कारण दिखाई पड़ने वाला उभार 2. शरीर में गाँठ बन जाने का रोग, गुल्म 3. सूजन, शोथ, गुमड़ा, रसौली, फोड़ा tumour 4. गणि. दस करोड़ की संख्या, अरब, अर्व।

अर्बुदविज्ञान *पुं.* (तत्.) कोशिकाविज्ञान की वह शाखा जिसमें अपसामान्य कोशिकाओं या उत्तकों की वृद्धि अर्थात् अर्बुदों (गाँठो) का अध्ययन किया जाता है पर्या. अर्बुदिकी।

अर्बुदि *पुं.* (तत्.) 1. सर्वव्यापी ईश्वर 2. अर्बुद नामक एक (नाग) राक्षस।

अर्बुदिकी *स्त्री.* (तत्.) दे. अर्बुदविज्ञान।

अर्बुदी *वि.* (तत्.) अर्बुद-रोगग्रस्त।

अर्बुदीकरण *पुं.* (तत्.) अर्बुद के बनने की क्रमिक प्रक्रिया, अर्बुदीयन दे. अर्बुद।

अर्भ *पुं.* (तत्.) 1. बालक, शिशु 2. शिष्य, छात्र 3. शिशिर ऋतु *वि.* 1. मैला 2. धुँधला 3. छोटा, तुच्छ।

अर्भक *वि.* (तत्.) 1. कम, थोड़ा 2. मूर्ख 3. दुबला-पतला *पुं.* बालक, शिशु।

अर्य *वि.* (तत्.) 1. श्रेष्ठ, उत्तम 2. पूजनीय 3. सच्चा 4. दयालु *पुं.* 1. स्वामी, मालिक 2. ईश्वर 3. वैश्य।

अर्यमा *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य 2. बारह आदित्यों में से एक 3. उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र 4. अंतरंग मित्र 5. पितरों का एक गण या वर्ग।

अर्या *स्त्री.* (तत्.) 1. गृहिणी 2. वैश्य जाति की स्त्री 3. रखैल।

अर्र-बर्र *पुं.* (तद्.) व्यर्थ की बकवास।

अर्रा *पुं.* (तत्.) 1. एक जंगली वृक्ष जिसकी मजबूत लकड़ी भवन-निर्माण के काम आती है 2. अरहर।

अर्वट *पुं.* (तत्.) भस्म, राख।

अर्वती *स्त्री.* (तत्.) 1. घोड़ी 2. दूती।

अर्वा *पुं.* (तत्.) 1. घोड़ा 2. इंद्र।

अर्वाक् *अव्य.* (तत्.) 1. निकट, समीप 2. नीचे 3. इस ओर, इधर 4. पीछे।

अर्वाक्कालिक *वि.* (तत्) आधुनिक समय का, अभी-अभी का।

अर्वाचीन *वि.* (तत्.) 1. नवीन, नया, जो वर्तमान समय की विशेषताओं से युक्त हो, आधुनिक, अद्यतन 2. जो पुराना न हो।

अर्श *पुं.* (अर.) 1. आकाश 2. इस्लाम के अनुसार सर्वोच्च स्वर्ग, आठवीं बिहिश्त 3. बवासीर, गुदा का एक रोग मुहा. अर्श पर होना- अपने को बहुत बड़ा समझना; किसी को अर्श पर चढ़ाना- अत्यधिक प्रशंसा करना, श्रेष्ठ ठहराना; अर्श से फर्श तक- आकाश से धरती तक; दिमाग या मिज़ाज अर्श पर होना- बहुत अधिक अभिमान होना।

अर्शहर *पुं.* (अर.) बवासीर नामक रोग में लाभ पहुँचाने वाली दवा या पथ्य।

अर्शी *वि.* (अर.) अर्श का रोगी, बवासीर का रोगी।

अर्शोघ्न *वि.* (तत्) अर्श रोग को शांत करने वाली (औषधि) बवासीर रोग का समापक।

अर्सा *पुं.* (तत्) दे. अरसा ।

अर्ह *वि.* (तत्.) 1. पूज्य 2. योग्य *पुं.* 1. ईश्वर 2. इंद्र 3. विष्णु 4. मूल्य 5. औचित्य।

अर्हक *वि.* (तत्.) किसी पद पर चयन आदि के लिए उपयुक्त (योग्यता आदि)।

अर्हक अंक *पुं.* (तत्.) किसी प्रवेश-परीक्षा या चयन के संदर्भ में ली गई परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए न्यूनतम निर्धारित अंक।

अर्हक परीक्षा *स्त्री.* (तत्.) किसी पाठ्यक्रम में प्रवेश या किसी पद पर चयन या पदोन्नति के लिए आयोजित परीक्षा जिसमें न्यूनतम निर्धारित अंक प्राप्त करने पर ही प्रार्थी पर आगे विचार किया जाता है।

अर्हण *पु.* (तत्.) पूजा, आदर, मान।

अर्हणा *स्त्री.* (तत्.) दे. अर्हण ।

अर्हणीय *वि.* (तत्.) पूजनीय, सम्माननीय।

अर्हता *स्त्री.* (तत्.) 1. योग्यता, उपयुक्तता, किसी पद के लिए अपेक्षित (शैक्षिक, आयु संबंधी या अनुभव आदि संबंधी) योग्यता 2. मूल्यवत्ता।

अर्हता अंक *पुं.* (तत्.) दे. अर्हक अंक।

अर्हता परीक्षा *पुं.* (तत्.) परीक्षा जिसे उत्तीर्ण करने के बाद ही उम्मीदवार पदविशेष के लिए पात्र बनता है पर्या. अर्हक परीक्षा।

अर्हंत् *पुं.* (तत्.) 1. जैनियों के पूज्य महापुरुष 2. जिन 3. बौद्ध-भिक्षु।

अर्हा स्त्री *पुं.* (तत्.) 1. पूजा, आदर 2. मूल्य।

अर्ह्य *वि.* (तत्.) अर्हा अर्थात् पूजा के योग्य, पूज्य, मान्य, पूजनीय, माननीय, आदरणीय।

अलंकरण *पुं.* (तत्.) 1. सजावट 2. शृंगार 3. आभूषण 4. किसी अति विशिष्ट, गुण, प्रतिभा या कार्य के लिए पदक से सम्मनित किया जाना।

अलंकरिष्णु *वि.* (तत्.) 1. आभूषणों को चाहने वाला 2. आभूषणों से सुशोभित करने में निपुण।

अलंकर्ता *वि.* (तत्.) सजावट करने वाला, शोभित करने वाला, अलंकृत करनेवाला।

अलंकार *पुं.* (तत्.) 1. शोभावर्धक 2. आभूषण, गहना, जेवर 3. काव्य की शोभा बढ़ाने वाली युक्ति-प्रयुक्ति।

अलंकारक *वि.* (तत्.) अलंकृत करने वाला।

अलंकार विधान *पुं.* (तत्.) काव्य के अलंकारों का साभिप्राय प्रयोग।

अलंकारशास्त्र *पुं.* (तत्.) वह शास्त्र जिसमें अलंकारों की परिभाषा, विवेचन आदि किया जाता है।

अलंकार संप्रदाय *पुं.* (तत्.) साहित्य शास्त्रियों का वह संप्रदाय जो अंलकार/अंलकरण को ही साहित्य की आत्मा मानता है।

अलंकार सिद्धांत *पुं.* (तत्.) अलंकार को ही काव्य की आत्मा मानने का काव्यशास्त्रीय मत।

अलंकार्य *वि.* (तत्.) 1. सुशोभित करने योग्य 2. काव्य. वह अर्थ जिसे प्रकट करने के लिए अंलकारों का प्रयोग किया जाता है।

अलंकृत *वि.* (तत्.) 1. विभूषित, सजाया हुआ, शोभित, सजा हुआ 2. अलंकार-युक्त।

अलंकृति *स्त्री.* (तत्.) 1. अलंकृत होने की अवस्था 2. सजावट।

अलंग *अव्य.* (तत्) किसी तरफ या ओर, दिशा।

अलंघनीय *वि.* (तत्.) 1. जिसे लाँघा न जा सके, जो लंघनीय न हो, जिसे पार न किया जा सके, पहुँच के बाहर 2. जिसे टाला न जा सके, अनुल्लंघनीय।

अलंघ्य *वि.* (तत्.) 1. जो लांघने योग्य न हो 2. जो टालने योग्य न हो।

अलंपट *वि.* (तत्.) जो लंपट न हो, जो विषयी न हो, सच्चरित्र *पुं.* स्त्री-कक्ष, अंतःपुर।

अलंबुषा *स्त्री.* (तत्.) 1. छुई मुई का पौधा 2. प्रवेश निषेध के लिए बनाई गई रेखा 3. विद्याधरी नामक अप्सरा।

अलंबुषा (नाड़ी) *स्त्री.* (तत्.) योग. मुख से गुदा को मिलाने वाली नाड़ी दे. नाड़ी।

अलई *स्त्री.* (तत्.) एक काँटेदार लता, ऐल।

अलक *पुं.* (तत्.) 1. मस्तक पर लटकने वाले बाल, लट, जुल्फ 2. महावर।

अलकत *वि.* (तत्.) 1. निरस्त 2. अस्वीकृत।

अलकतरा *पुं.* (अर.) दे. तारकोल (कोलतार)।

अलकनंदा *स्त्री.* (तत्.) हिमालय में सतोपंथ-बदरीनाथ से निकलने वाली एक नदी जो देवप्रयाग में भागीरथी से मिल जाती है।

अलकरचना *स्त्री.* (तत्.) केश की शृंगार रचना, केशलटों को सुंदर बनाना।

अलकलड़ैता *वि.* (तद्.+देश.) [अलक बालक+ लड़ैल] लाड़ला (बालक), प्रिय, दुलारा *स्त्री.* अलकलड़ैती।

अलकसंहति *स्त्री.* (तत्.) 1. बालों का समूह, लटें, लटें, अलकावलि 2. बाल सँवारने की पद्धति, केशभूषण।

अलक सलोना *वि.* (तत्.) दे. अलकलड़ैता।

अलका *स्त्री.* (तत्.) 1. (कैलाश पर्वत के निकट स्थित) कुबेर की राजधानी अलकापुरी 2. आठ से दस वर्ष तक की कन्या।

अलकाधिप *पुं.* (तत्.) अलका के अधिपति दे. अलकापति

अलकाब *पुं.* (अर.) लकब (आधि) का बहु. 1. उपाधियाँ, पदवियाँ, प्रशस्तियाँ 2. पत्र, अभिनंदन आदि के प्रारंभ में गुणगान युक्त शब्दावली।

अलकापति *पुं.* (तत्.) अलकापुरी के राजा कुबेर, यक्षेश्वर।

अलकाली *स्त्री.* (तत्.) अलकावली, केशसमूह।

अलकावलि *स्त्री.* (तत्.) बालों की लटें, केशपाश, घुँघराले बाल, अलकाली।

अलकिस्सा *अव्य.* (तत्.) (अर. अलकिस्सः) मतलब यह है कि, सारांशतः, संक्षेपतः, मूलभाव यह है कि।

अलकेश *पुं.* (तत्.) दे. अलकापति ।

अलकोहल *पुं.* (अं.) एक वर्णहीन, ज्वलनशील, वाष्पनशील तरल जो किण्वित और आसुत द्रवों का मादक कर्मक होता है।

अलक्त *पुं.* (तत्) दे. अलक्तक ।

अलक्तक *पुं.* (तत्.) 1. अलता, लाख से बना लाल रंग जिसे स्त्रियाँ पैरों में लगाती हैं, महावर 2. लाख, चपड़ा, साफ की हुई लाख।

अलक्षण *वि.* (तत्.) 1. चिह्नहीन 2. लक्षणरहित, लक्षणहीन *पु.* 1. कुलक्षण, बुरा लक्षण, अशुभ लक्षण, अशुभ चिह्न 2. लक्षणहीनता।

अलक्षित *वि.* (तत्.) 1. जो देखा न गया हो, गुप्त 2. जिसकी ओर ध्यान न गया हो 3. जो प्रकट न हुआ हो, अप्रकट 4. अवर्णित।

अलक्ष्म *वि.* (तत्.) 1. लक्ष्य (चिह्न) से रहित, 2. अकलंक, शुद्ध, निर्दोष जैसे- अलक्ष्म चरित्र।

अलक्ष्मी *वि.* (तत्.) 1. निर्धनता, दरिद्रता 2. भाग्यहीनता, दुर्भाग्य 3. लक्ष्मी की बड़ी बहिन जो अधर्म की पत्नी कही गई है।

अलक्ष्य *वि.* (तत्) 1. न देखने योग्य 2. जिसे देखा न जा सके, गुप्त 3. जिसे जानना कठिन हो 4. जो इंद्रिय गोचर न हो 5. जिसकी अनुभूति न हो सके।

अलख *वि.* (तद्.) 1. अदृश्य, अगोचर 2. अलक्ष्य *पुं.* ईश्वर, ब्रह्म।

अलखधारी/अलखनामी *पुं.* (तद्.) गोरखपंथियों का एक संप्रदाय और उसका अनुयायी।

अलख निरंजन *पुं.* (तत्.) अलक्ष्य तथा अव्यक्त, नामरूप-हीन ईश्वर, अलख पुरुष।

अलख पुरुष *पुं.* (तद्.) निराकार परमेश्वर।

अलखिया *पुं.* (तद्.) (अलक्ष्य) 1. 'अलख-अलख' का घोष करने वाले गोरख संप्रदाय का साधु 2. उक्त संप्रदाय। पर्या. अलखधारी, अलखनामी।

अलगंट *वि.* (देश.) अन्यों से भिन्न दिखने या रहने वाला। बेजोड़, निराला, क्रि.वि. दूसरों से अलग रहते या दिखते हुए, अकेले ही।

अलग *वि.* (तत्.) 1. जो किसी से लगा, सटा या जुड़ा न हो, पृथक्, अलग्न, भिन्न, वियुक्त, वियोजित हटा हुआ, हटाया गया 2. व्यष्टि रूप में विद्यमान।

अलगनी *स्त्री.* (तद्.) कपड़े लटकाने के लिए बाँधी गई रस्सी या लंबा डंडा ।

अलगरज *अव्य.* (अर.) दे. अल किस्सा ।

अलगरजी *स्त्री.* (अर.) 1. लापरवाही 2. स्वार्थपरायणता *वि.* 1. लापरवाह 2. स्वार्थी।

अलगाऊ *वि.* (तद्.) अलग करनेवाला, जो अलग करने का पक्षधर हो।

अलगाना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. अलग करना, अलग होना 2. छाँटना, दूर करना।

अलगाव *पुं.* (तद्.) अलग करने या रहने का भाव, पृथक्करण।

अलगोजा *पुं.* (अर.) बाँसुरी की तरह का एक बाजा।

अलगौझा/अलग्योझा *पुं.* (अर.) 1. अलहदगी 2. संयुक्त परिवार से अलग होने का भाव 3. बँटवारा।

अलग्यौझा *पुं.* (देश.) दे. अलगौझा।

अलज्ज *वि.* (तत्.) लज्जाहीन, निर्लज्ज, बेहया।

अलतई *वि.* (देश.) 1. अलता का 2. अलता जैसा, आलता के रंग वाला, महावरी दे. अलता। *पुं.* महावरी रंग, गहरा लाल रंग।

अलता *पुं.* (तद्.) दे. अलक्तक ।

अलघु *वि.* (तत्.) 1. जो छोटा न हो, बड़ा, लंबा, 2. जो हल्का न हो भारी, गुरु 3. गंभीर (विषय, समस्या, प्रश्न आदि) 4. महत्वपूर्ण 5. विशाल।

अलपाका *पुं.* (अं.) लामा पशु की तरह दीखने वाला दक्षिण अमेरिका का एक (पालतू) पशु जिसके भेड़ जैसे बाल होते है, अलपाका ऊन, इसके ऊन से बना कपड़ा।

अलफ *पुं.* (अर.) 1. घोड़े द्वारा आगे के पैरों को उठाकर पीछे के पैरों पर खड़ा होने की मुद्रा 2. हरी घास, हरा चारा 3. अलिफ, अरबी-फारसी का पहला अक्षर।

अलफा *पुं.* (अर.) मुसलमान फकीरों द्वारा पहना जाने वाला, एक प्रकार का ढीला-ढाला, बिना बाँह का लंबा कुरता।

अलफाज़ *पुं.* (अर.) शब्द-समूह, लफज (अर्थात् शब्द)।

अलबत्ता *अव्य.* (अर.) निःसंदेह, बेशक, हाँ, लेकिन।

अलबम *वि.* (अं.) ऐलबम, तसवीर या फोटो रखने की विशेष फाइल, चित्रसंग्रह।

अलबल/अलबिलल *वि.* (देश.) निरर्थक, ऊलजलूल, जिसका कोई मतलब न हो, जिसका कोई लाभ न हो *क्रि.वि.* जल्दी-जल्दी (समझ में न आने वाला)।

अलबेला *वि.* (देश.) 1. बाँका 2. अनोखा 3. मनमौजी, अनूठा 4. अल्हड़।

अलबेलापन *पुं.* (देश.) 1. बाँकापन, छैलापन 2. अनूठापन 3. अल्हड़पन।

अलब्ध *वि.* (तत्.) जो मिला न हो, जो प्राप्त न हुआ हो, अप्राप्त।

अलब्धभूमिकत्व *पुं.* (तत्.) किसी प्रतिबंधक कारण से समाधि भूमि को न पाना अर्थात् समाधि में न पहुँचना।

अलभ्य *वि.* (तत्.) 1. न मिलने वाला, अप्राप्य 2. जो कठिनाई से मिले, दुर्लभ 3. अमूल्य, अनमोल।

अलम *पुं.* (अर.) 1. दुख, रंज, वेदना 2. झंडा, निशान 3. भाला *वि.* दुःखमय।

अलमदार *वि.* (अर.) 1. सेना के आगे-आगे झंडा लेकर चलने वाला, ध्वजवाहक, अलमबरदार 2. खेल प्रतियोगिता आदि में अपनी टीम का झंडा लेकर आगे चलने वाला।

अलमबरदार *वि.* (अर.) दे. अलमदार ।

अलमस्त *वि.* (फा.) 1. नशे में चूर, बहुत मस्त 2. मतवाला, मनमौजी 2. बेफिक्र, निश्चिंत।

अलमस्ती *स्त्री.* (फा.) 1. नशे में धुत्त होने की स्थिति 2. मन की मौज।

अलमारी *स्त्री.* (पुर्त.) सामान या कपड़े रखने का कई खानों वाला ढाँचा।

अलमोनियम *पुं.* (अं.) दे. एल्युमिनियम।

अलम् *अव्य.* (तत्.) 1. यथेष्ट, पर्याप्त, काफी 2. पूर्ण 3. बस 4. भूषण।

अलम्यूनियम *पुं.* (अं.) दे. एलयुमिनियम।

अलय *वि.* (तत्.) 1. लय-हीन 2. बिना घरवाला, गृहहीन 2. चलता-फिरता 3. अनश्वर *पुं.* 1. नाश न होने का भाव, अनश्वरता 2. जन्म, उत्पत्ति।

अलर्क *पुं.* (तत्.) 1. पागल कुत्ता 2. पागल कुत्ते के काटने से उत्पन्न 'रेबीज' रोग 3. सफेद मदार वृक्ष।

अलल बछेड़ा *पुं.* (देश.) 1. अल्हड़ युवा 2. घोड़े का छोटा बछड़ा।

अलल हिसाब *क्रि.वि.* (अर.) बिना हिसाब किए अंदाज से *वि.* ऐसा (लेनदेन) जिसका हिसाब बाद में होना हो।

अललटप, अललटप्पू *वि.* (देश.) अटकलपच्चू, अनुमानाश्रित उदा. तुम्हारी ये बातें तो अललटप्पू लगती है।

अलल-पंख *पुं.* (देश.) काले और सफेद मिश्रित रंग वाला एक पक्षी, ऐसी किंबदंती है कि यह पक्षी आकाश में ही उड़ता रहता है, उड़ते हुए ही

यह अंडा देता है, यह अंडा आकाश में ही फूटता है तथा बच्चा ज़मीन पर आने से पूर्व ही उड़ने लगता है पर्या. अलल-पक्ष।

अललाना *अ.क्रि.* (तद्.) जोर से चिल्लाना, लगातार चिल्लाना, गला फाड़ कर चिल्लाना या बोलना।

अलल्ले-तल्ले *वि./क्रि.वि.* (अर.) दे. अललहिसाब।

अलवण जल *पु.* (तत्.) बहती हुई नदी, सरिता सोते आदि का जल जिसमें नमक नहीं होता।

अलवान *पुं.* (अर.) उत्तम कोटि की ऊनी चादर।

अलविदा *अव्य.* (अर.) विदाई के समय कहा जाने वाला शब्द, अच्छा अब विदा *स्त्री.* रमजान के महीने का अंतिम शुक्रवार।

अलस *पुं.* (तत्.) दे. आलस्य *पुं.* पैर की उंगलियों का रोग *वि.* 1. आलसी, आलस्य से युक्त, सुस्त 2. मंद 3. अलसाया हुआ 4. जिसमें लस (चमक) न हो, द्युतिहीन।

अलसता *स्त्री.* (तत्.) 1. आलस्य, शिथिलता 2. कामचोरी 3. थकावट से युक्त होने का भाव।

अलसना *अ.क्रि.* (तद्.) आलस्य से युक्त होना।

अलसाना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. आलस्य में पड़ना 2. शिथिल होना 3. कुछ करने का जी न करना।

अलसित *वि.* (तत्.) 1. अलसाया हुआ, आलस्य युक्त 2. अशोभित।

अलसी *स्त्री.* (तद्.) 1. एक तिलहन का पौधा और और उसका बीज 2. अलसी, सन।

अलसौंहा *वि.* (देश.) आलस्य से युक्त, थका हुआ।

अलस्सुबह *क्रि.वि.* (अर.) तड़के, भोर के समय।

अलह *वि.* (तद्.) अलभ्य, दुर्लभ। (अर.) 'अल्लाह' का लघु रूप, परमात्मा।

अलहदगी *स्त्री.* (अर.) 1. अलग होने का भाव 2. पृथक्कता, बिलगाव 3. अलगौझा।

अलहदा *वि.* (अर.) अलग, जुदा, पृथक्।

अलहिया *स्त्री.* (तत्.) एक रागिनी जिसमें सभी कोमल स्वर होते हैं और जिसका प्रयोग करुण रस को प्रकट करने में होता है, अल्हैया 'आल्हा'।

अलहैरी *पुं.* (अर.) अरब के ऊँटों की एक प्रजाति, यह ऊँट बहुत तेज चलता है, इसके एक ही कूबड़ होता है तथा शरीर पर अधिक बाल होते हैं।

अलात *पुं.* (तत्.) 1. अंगार 2. जलती हुई लकड़ी, अधजली लकड़ी 3. लुआठी (अर.) लोहा काटने की निहाई।

अलान *पुं.* (तद्.) 1. हाथी बाँधने का खूँटा या सीकड़ 2. बेड़ी, बंधन 3. बेल चढ़ाने के लिए गाड़ी गई लकड़ी।

अलानाहक *अव्य.* (फा.) बिना मतलब, बेकार, नाहक।

अलानिया *क्रि.वि.* (अर.) ऐलानिया, स्पष्ट रूप से, खुल्लम-खुल्ला, डंके की चोट पर।

अलाप *पुं.* (तत्.) दे. आलाप ।

अलापना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. शास्त्रीय रीति से गाना, आलाप करना 2. सुर खींचना 3. अपनी ही बात किए जाना 4. व्यर्थ में बोलना प्रयो. वह अपना ही राग अलाप रहा है, किसी की नहीं सुनेगा।

अलाप्य *वि.* (तत्.) जिसे लुप्त या समाप्त न किया जा सके, जिसे छिपाया न जा सके।

अलाबु/अलाबू *स्त्री.* (तत्.) 1. लौकी का फल, घीया, कद्दू 2. लौकी का तुंबा 3. तुंबे का पात्र टि. लौकी का फल पकने और सूखने के बाद उसका छिलका अत्यंत कठोर हो जाता है, जिसमें से उसके सूखे बीज आदि निकालकर उसका पात्र की तरह प्रयोग किया जा सकता है, इसी कवच को तुंबा या तूंबा कहा जाता है।

अलाभ *पुं.* (तत्.) लाभ का अभाव, फायदा न होने का भाव 2. न लाभ, न हानि 3. हानि।

अलाभकर *वि.* (तत्.) जिससे कोई (आर्थिक) लाभ न हो।

अलाभकर सौदा *पुं.* वाणि. वह सौदा जो लाभ के उद्देश्य से या किसी प्रतिफल की प्राप्ति के लिए न किया गया हो, या जिससे कोई लाभ न मिले।

अलाभकरी *वि.* (तत्.) दे. अलाभकर।

अलामत *स्त्री.* (अर.) 1. चिह्न, लक्षण, निशान 2. पहचान 3. गुणा-भाग आदि के चिह्न।

अलामतचक्र *पुं.* (तत्.) 1. जलती हुई लकड़ी या मशाल को चक्राकार तेजी से घुमाने पर बनने वाला आग का गोला 2. डंडे के एक ओर या दोनों ओर आग लगाकर घुमाने का खेल 2. एक प्रकार का नृत्य।

अलाय-बलाय *स्त्री.* (फा+अर) 1. व्यर्थ की बला 2. परोक्ष संकट।

अलार्म *पुं.* (अं.) 1. खतरे की सूचना 2. खतरे की घंटी; सावधान करने वाली घंटी।

अलार्म घड़ी *स्त्री.* (अं+तद्) नियमित समय पर (घंटी बजा कर) सावधान करने वाली घड़ी, समय बतलाने वाली ऐसी घड़ी या यंत्र जो निर्धारित समय पर ध्वनि उत्पन्न कर सचेत करता है

अलाल *वि.* (अर.) सुस्त, अकर्मण्य, काहिल।

अलालत *स्त्री.* (अर.) रोग, बीमारी।

अलाव *पुं.* (तद्.) जाड़े के दिनों में तापने के लिए जलाई हुई आग।

अलावा *क्रि.वि.* (अर.) अतिरिक्त, सिवाय।

अलिंग *वि.* (तत्.) 1. बिना चिह्न का, जिसका कोई लक्षण न हो 2. लिंगरहित *पुं.* 1. निराकार ईश्वर, परमात्मा 2. चिह्न का अभाव।

अलिंग गुणसूत्र *पुं.* (तत्.) जीव. लिंग गुणसूत्रों को छोड़कर जीव के अन्य सामान्य गुणसूत्र (उदा. मानव के 44 सामान्य गुणसूत्र), अलिंग सूत्र तु. लिंग गुणसूत्र।

अलिंजर *पुं.* (तद्.) 1. पानी रखने के लिए मिट्टी का बरतन, घड़ा, झज्जर।

अलिंद *पुं.* (तत्.) 1. मकान से लगा चबूतरा या छज्जा, द्वार-कोष्ठ 2. भौंरा 3. हृदय का वह प्रकोष्ठ जो शरीर से रक्त प्राप्त करके उसे धमनियों में संचारित करता है।

अलि *पुं.* (तत्.) 1. भौंरा, भ्रमर 2. बिच्छू 3. कोयल 4. वृश्चिक राशि 5. सखी (संबोधन 'अलि' का)।

अलिक *पुं.* (तत्.) 1. मस्तक, ललाट, माथा।

अलिकुल *पुं.* (तत्.) भ्रमरों का झुंड या समूह।

अलिखित *वि.* (तत्.) 1. जो लिखा न गया हो 2. मौखिक।

अलिजिह्व स्वन *पुं.* (तत्.) अलिजिह्वा (कौआ) और जिह्वा पश्च के सहयोग से या अलिजिह्वा के के प्रकंपन से उत्पन्न स्वन जैसे- क़ ग़।

अलिजिह्वा *स्त्री.* (तत्.) 1. गले की घँटी 2. गले के भीतर का कौवा, मुख विवर की छत में गले के पास का एक अवयव।

अलिजिह्विका *स्त्री.* (तत्.) दे. अलिजिह्वा ।

अलिजिह्वीय *वि.* (तत्.) 1. अलिजिह्वा से संबंधित 2. अलिजिह्वा का।

अलिपिकवर्गीय *वि.* (तत्.) तकनीकी या अकादमिक कार्य, प्रशासनिक कार्यकारी या कार्यालय के करने वाले कामों के बिना एक कर्मचारी/अधिकारी। non-ministerial

अलिप्त *वि.* (तत्.) 1. जो लिप्त न हो 2. निर्लिप्त।

अलिफ *पुं.* (अर.) उर्दू-अरबी-फारसी वर्णमाला का पहला अक्षर (अलफ)।

अलिय संतान विधि *स्त्री.* (तत्.) विधि. दक्षिण भारत की एक दाय-अधिकार विधि जिसमें पुत्री की संतान दाय प्राप्त करती है; मातृसत्तात्मक दाय प्रणाली (दक्षिण की अन्य दाय विधि 'मरुमक्कतायम् से कुछ भिन्न)।

अलिरव *पुं.* (तत्.) भौंरों की मधुर ध्वनि, भौंरों के द्वारा किया जाने वाला नाद।

अलिरुत *पुं.* (तत्.) दे. अलिरव।

अलिवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. भौरों का घूम-घूम कर विभिन्न फूलों से रस चूसने का स्वभाव या प्रवृत्ति 2. साधु-संतों, ब्रह्मचारियों आदि का स्थान-स्थान से भिक्षा एकत्र करने का व्रत, तप या वृत्ति, मधुकरी वृत्ति।

अली *स्त्री.* (तद्.) सखी, सहचरी, सहेली *पुं.* भ्रमर, भौरा (अर.) मुसलमानों के चौथे खलीफा, मुहम्मद साहब के दामाद और इमाम हुसैन के पिता।

अलीक *वि.* (तत्.) 1. लीक से हटकर, बिना सिर-पैर का 2. मिथ्या 3. झूठा *स्त्री.* अप्रतिष्ठा, अमर्यादा *पुं.* मस्तक, ललाट।

अलीकी *वि.* (तत्.) 1. अप्रिय, नापसंद 2. असत्य।

अलीन *वि.* (तत्.) 1. जो तल्लीन या दत्तचित्त न हो 2. अनुपयुक्त, अग्राह्य *पुं.* 1. दरवाजे की चौखट का बड़ा स्तंभ, जिसमें पल्ला जड़ा होता है 2. दीवार से सटा (बरामदे आदि का) खंभा।

अलील *वि.* (अर.) 1. रोगी, अस्वस्थ, कमजोर, शक्तिहीन 2. दूषित, रोग फैलाने वाला, रोग उत्पन्न करने वाला।

अलीह *वि.* (तद्.) दे. अलीक ।

अलुक्-समास *पुं.* (तत्.) व्या. तत्पुरुष समास का एक प्रकार जिसमें पूर्णपद की विभक्ति का लोप नहीं होता जैसे- 'युधिष्ठिर' में 'युधि' शब्द की सप्तमी विभक्ति का लोप नहीं हुआ है।

अलूना *वि.* (तद्.)(तत्.) अलवण) 1. बिना नमक का, फीका 2. लाक्ष. सौंदर्यहीन, असुंदर, अनाकर्षक।

अलेख *वि.* (तत्. 1. जो गिना न जा सके, बेहिसाब, अनगिनत 2. दुर्बोध 3. अज्ञेय 4. अलक्ष्य, निराकार *पुं.* परमेश्वर।

अलेखा *वि.* (तद्.) जिसका लेखा (संभव) न हो, बेहिसाब, अनगिनत।

अलेखी *वि.* (तद्.) 1. अभूतपूर्व 2. जो कभी देखने में न आया हो 3. अलिखित 4. अलक्षित।

अलेप *वि.* (तत्.) लेप-रहित, निर्लिप्त पु. 1. लेप का अभाव 2. परब्रह्म।

अलेपक *वि.* (तत्.) 1. निर्लिप्तता 2. जो किसी में लिप्त न हो 3. बेदाग 4. लिप्त न करने वाला *पुं.* परब्रह्म, परमात्मा।

अलैंगिक *वि.* (तत्.) 1. जो लिंग से संबंधित न हो 2. जो नर-मादा के सहवास या जननिक संसर्ग से संबंधित न हो 3. जो यौन क्रिया से उत्पन्न न हो asexual

अलैंगिक जनन *पुं.* (तत्.) जनन का वह प्रकार जिसमें वनस्पति के अंग की विशिष्ट कोशिका जो बिना किसी दूसरी कोशिका से युग्मन ही नए जीव में परिवर्धित हो जाती है तुं. लैंगिक जनन, वर्धी जनन, दाग रहित।

अलोक *वि.* (तत्.) 1. जो दिखाई न दे, अदृश्य *पुं.* 1. लोगों का अभाव 2. अदृश्यता, निर्जन, एकांत परलोक विलो. लोक।

अलोकना *स.क्रि.* (तद्.) 1. देखना, ताकना 2. अवलोकन करना।

अलोकनीय *वि.* (तत्.) अदृश्य, जो दिखाई न पड़े।

अलोकित *वि.* (तत्.) बिना देखा हुआ, अनदेखा।

अलोक्य *वि.* (तत्.) 1. जिसे करने से स्वर्ग लोक की प्राप्ति न हो सके 2. अलौकिक, असाधारण 3. लोक द्वारा अमान्य बुरा (स्वभाव आदि)।

अलोचन *वि.* (तत्.) 1. नेत्रहीन, जिसकी आँख न हो 2. बिना खिड़की का (मकान)।

अलोना *वि.* (तत्.) 1. लवण रहित, बिना नमक का, जिसमें नमक न पड़ा हो 2. फीका, स्वादहीन 3. लावण्य रहित।

अलोप *पु.* (तत्.) हिंदी तथा अन्य आर्य भाषाओं में स्वन-परिवर्तन की वह प्रक्रिया, जिसमें शब्दांत और अक्षरांत में 'अ' स्वर का उच्चारण नहीं किया जाता उदा. 'राम' 'अजगर' का उच्चारण 'राम्', 'अजगर्' आदि में 'अ' का लोप होने की स्थिति।

अलोल *वि.* (तत्.) जो चंचल न हो, शांत, स्थिर, गंभीर, एकाग्र विलो. लोल।

अलोह *वि.* (तत्.) जिसमें लोहा न हो *पुं.* लोहेतर धातु।

अलोहित *वि.* (तत्.) 1. जो लोहित अर्थात् लाल (रंग का) न हो 2. जिसमें लोहित अर्थात् रक्त न हो या कम रक्त हो,वह व्यक्ति जिसमें अरक्तता या अल्परक्तता के लक्षण हो। anemic

अलौकिक *वि.* (तत्.) 1. जो (इस) लोक में (संभव) न हो 2. लोकोत्तर, पारलौकिक 3. असाधारण, असामान्य 4. अप्राकृतिक 5. अद्‌भुत।

अलौकिकतावाद *पु.* (तत्.) यह मत या सिद्धांत कि प्रकृति से परे भी कोई सत्ता है और प्रकृति तथा मानव का नियंत्रण कोई अदृश्य शक्ति करती है। supernaturalism

अलौह धातु *स्त्री.* (तत्.) रसा. लोहे को छोड़कर अन्य धातु अथवा लौह मूलक मिश्र धातुओं को छोड़ कर अन्य मिश्रधातु। इन धातुओं/मिश्रधातुओं में लोहा अशुद्‌धि के रूप में उपस्थित हो सकता है। non-ferrous metal

अल्कत *वि.* (अर.) अल्क किया हुआ अर्थात् खत्म किया हुआ, समाप्त, इति विलो. शुरू।

अल्टिमेटम *पुं.* (अं.) किसी कार्य को करने या न करने की ऐसी अंतिम चेतावनी (या अंतिम प्रस्ताव) जिसके पूरा न किए जाने पर समझौते का उपाय शेष नहीं रह जाता।

अल्ट्रा-वायलेट *वि.* (अं.) दे. पराबैंगनी।

अल्ट्रा-वायलेट किरण *स्त्री.* (अं.) दे. पराबैंगनी किरणें।

अल्ट्रा साउंड *पुं.* (अं.) दे. परास्वनिक।

अल्ट्रा-सोनिक *वि.* (अं.) दे. पराश्रव्य।

अल्पक *वि.* (तत्.) छोटा (रूप आदि), लघु, थोड़ा जैसे- खाट का अल्पक खटिया है, अंग्रेजी में सिगार का अल्पक सिगरेट है, बंदुकी, बुकलेट आदि अल्पक के उदाहरण हैं।

अल्पकालिक, अल्पकालीन *वि.* (तत्.) 1. छोटी अवधि के लिए, सीमित या लघु अवधि के लिए 2. अल्पस्थायी 3. क्षणभंगुर।

अल्पकालिक दर *पुं.* (तत्.) एक वर्ष से कम की अवधि के लिए बीमे की वह दर जो उसके वार्षिक प्रीमियम के यथानुपात आधार से अधिक होती है। short rate

अल्पकालिक पुनर्वास *पुं.* (तत्.) स्थायी रूप से पुनर्वास किए जाने तक के लिए की गई पुनर्वास व्यवस्था।

अल्पकालिक बिल *पुं.* (तत्.) तीस दिन या उस से भी कम अवधि में भुगतान के लिए पूरी हो जाने वाली हुंडी, अल्पकालिक हुंडी। short bill

अल्पक्रियता *स्त्री.* (तत्.) किसी अंतःस्रावी ग्रंथि की कम या अपर्याप्त ढंग से काम करने की स्थिति। hypofunction

अल्पक्रेताधिकार *पुं.* (तत्.) बाजार की ऐसी स्थिति में कुछ सीमित क्रेताओं में से हर क्रेता की वह क्षमता जिससे वह बाजार को प्रभावित तो कर सकता है, लेकिन इस प्रभाव से होने वाली प्रतिस्पर्धा तथा क्रेताओं की प्रतिक्रिया की उपेक्षा नहीं कर सकता।

अल्पजीवी *वि.* (तत्.) जिसका जीवन कम अवधि वाला हो, अल्पायु, नश्वर विलो. दीर्घजीवी।

अल्पज्ञ *वि.* (तत्.) बहुत कम जाननेवाला, कम समझदार, जिसे कम अनुभव हो विलो. बहुज्ञ।

अल्पज्ञता *स्त्री.* (तत्.) 1. थोड़ी जानकारी 2. ज्ञान की कमी, नासमझी।

अल्पतंत्र *पुं.* (तत्.) किसी विशिष्ट वर्ग द्वारा निरंकुश शासन, जिसे लोकतंत्र की संज्ञा नहीं दी जा सकती। oligarchy

अल्पतनु *वि.* (तत्.) 1. छोटे शरीर वाला, नाटा, ठिगना, वामन 2. कमजोर शरीर वाला, दुर्बल, दुबला-पतला।

अल्पतम *वि.* (तत्.) सबसे कम, सबसे छोटा।

अल्पतम युग्म *पुं.* (तत्.) दे. न्यूनतम युग्म।

अल्पतर *वि.* (तत्.) अपेक्षाकृत अधिक अल्प।

अल्पता *स्त्री.* (तत्.) कमी, न्यूनता, लघुता, अल्पत्व।

अल्पत्व *पुं.* (तत्.) संगी. राग में प्रयुक्त स्वरों में से एक राग के स्वरूप की रक्षा के लिए किसी एक स्वर का अल्प प्रयोग विलो. बहुत्व।

अल्पदर्शन *पुं.* (तत्.) 1. दूरगामी परिणाम न सोचने का भाव 2. संकुचित या निम्नस्तरीय विचार।

अल्पदृश्यता *स्त्री.* (तत्.) कोहरे, धुंध आदि के कारण अधिक दूर तक न देख पाने की स्थिति।

अल्पदृष्टि *स्त्री.* (तत्.) संकुचित विचार, सीमित विचार *वि.* संकुचित विचार वाला, अदूरदर्शी।

अल्पधी *वि.* (तत्.) कम या थोड़ी बुद्‌धि वाला, अल्पबुद्धि, मूर्ख।

अल्पना *स्त्री.* (तत्.) शुभ (या पर्व के) अवसर पर द्वार पर या आँगन में रंगों से चित्र बनाने या चौक पूरने की कला, रँगोली।

अल्पनूतन युग *पुं.* (तत्.) भूवि. नूतनजीवी महाकल्प के तृतीय कल्प का युग जो तीन करोड़ अस्सी लाख वर्ष पूर्व से लेकर दो करोड़ पचास लाख वर्ष पूर्व तक माना जाता है, इस युग में पक्षियों का विकास हुआ।

अल्पपत्र *पुं.* (तत्.) छोटे पत्तों वाली एक प्रकार की तुलसी *वि.* कम पत्तों वाला (वृक्ष)।

अल्पपद्‌म *पुं.* (तत्.) लाल कमल (जो पूर्णतः विकसित नहीं होता)।

अल्पप्राण *पुं.* (तत्.) जिसमें प्राण की मात्रा कम हो भाषा. व्यंजन जिसके उच्चारण में अपेक्षाकृत कम वायु (प्राण) निस्सृत होती है उदा. हिंदी के पाँचों वर्गीय व्यंजनों में से पहला, तीसरा और पाँचवा व्यंजन (क्, च्, त्, ट्, प्, ग्, ज्, ड्, द्, ब्, तथा ङ्,ञ्, त्र, ण्, न्, म्) तु. महाप्राण 2. दुर्बल व्यक्ति।

अल्पप्राणीकरण *पुं.* (तत्.) भाषा. महाप्राण व्यंजन का उच्चारण के स्तर पर अल्पप्राण हो जाना उदा. दूध का दूद् उच्चारण पर्या. महाप्राणत्व-लोप।

अल्पभाषी *वि.* (तत्.) कम बोलने वाला, मितभाषी, नपी-तुली बात करने वाला।

अल्पमत *पुं.* 1. दो समूहों में से कम सदस्यों वाला समूह 2. तुलनात्मक दृष्टि से कम मत।

अल्पमूल्य *वि.* (तत्.) कम कीमत वाला, सस्ता *पुं.* कम कीमत।

अल्पमेध *वि.* (तत्.) कम बुद्‌धि वाला, नासमझ, अज्ञानी।

अल्परक्तता *स्त्री.* (तत्.) शरीर में रक्त की संपूर्ण मात्रा में कमी हो जाना।

अल्प रोजगार *पुं.* (तत्.) 1. वह स्थिति जिसमें व्यक्ति अपनी योग्यता/अर्हता के अनुसार काम में न लगा हो बल्कि कम योग्यता/अर्हता वाले तथा कम वेतन वाले काम में लगा हो 2. पूर्णकालिक की अपेक्षा अल्पकालिक नियोजन।

अल्पवयस्क *वि.* (तत्.) कम उम्र का, थोड़ी उम्र का, नाबालिग, अवयस्क।

अल्पविकसित अर्थव्यवस्था *स्त्री.* (तत्.) देश की की ऐसी आर्थिक स्थिति जिसमें प्रति व्यक्ति आय बहुत कम हो, संपत्ति का समान वितरण न हो, जिसमें निर्धनता-रेखा से नीचे रहने वाली जनसंख्या का प्रतिशत बहुत अधिक हो, जिसमें खेती ही अर्थव्यवस्था का मुख्य अंग हो और जिसकी जनसंख्या की वृद्‌धि उसके लिए उपलब्ध संसाधनों की तुलना से अधिक हो। इसे अविकसित अर्थव्यवस्था भी कहते हैं।

अल्पविकसित देश *पुं.* (तत्.) वह देश जिसमें जनसाधारण की भौतिक सुख-सुविधाओं का स्तर बहुत कम हो, इसे विकासशील देश भी कहते हैं दे. विकासशील देश।

अल्पविराम *पुं.* (तत्.) वाक्य के पदों में या वाक्यांशों के बीच संक्षिप्त ठहराव या विराम का सूचक-चिह्न, कॉमा (,)।

अल्पव्यय *पुं.* (तत्.) सीमित खर्च, कम खर्च।

अल्पशः *क्रि.वि.* (तत्.) 1. थोड़ा-थोड़ा करके 2. धीरे-धीरे।

अल्पसंख्यक *वि.* (तत्.) कम संख्यावाला, जो गिनती में थोड़े हों *पुं.* वह संप्रदाय या दल जिसके सदस्यों की संख्या अन्य संप्रदायों या दलों की तुलना में कम हो, विलो. बहुसंख्यक, ऐसे संप्रदाय या दल का सदस्य।

अल्पांतर *पुं.* (तत्.) 1. अल्प दूरी 2. अल्प भिन्नता।

अल्पांतरिक *वि.* (तत्.) अल्प अंतर वाला दे. अल्पांतर।

अल्पांतरी *वि.* (तत्.) दे. अल्पांतरिक।

अल्पांतरीय *वि.* (तत्.) दे. अल्पांतरिक।

अल्पांतरी रेखा *स्त्री.* (तत्.) गणि. दो बिंदुओं को मिलाने वाली सबसे छोटी रेखा।

अल्पांश *पुं.* (तत्.) 1. थोड़ा भाग, थोड़ा अंश, कम अंश, कुछ भाग 2. किसी समाज या दल का आधे से भी कम भाग।

अल्पाका *पुं.* (अं.) (स्पै. एल्पेका) दक्षिण अमेरिका में पाया जाने वाला एक पालतू ऊँट जिसके लंबे बालों से ऊन प्राप्त होती है 2. उक्त ऊन या उससे बुने/बने कपड़े।

अल्पाक्षरिक *वि.* (तत्.) बहुत थोड़े अक्षरों वाला, संक्षिप्त।

अल्पायु *स्त्री.* (तत्.) कम आयु, कम उम्र *वि.* जिसकी आयु कम हो।

अल्पारंभ *पुं.* (तत्.) छोटे स्तर पर धीरे-धीरे कार्य शुरू करने का भाव।

अल्पार्थक, अल्पार्थी *वि.* (तत्.) लघुतावाची, अल्पतावाची, जैसे- 'ढोल' का अल्पार्थी 'ढोलक'।

अल्पावधि *स्त्री.* (तत्.) अल्प अवधि। थोड़ा समय *वि.* कम समय वाला जैसे- अल्पावधि उपक्रम, अल्पावधि ऋणा।

अल्पाहार *पुं.* (तत्.) कम मात्रा में (लिया गया) आहार। प्रातःकाल या तीसरे पहर खाया जाने वाला खाद्य पदार्थ, जो भरपेट नहीं लिया जाता पर्या. जलपान। refershment

अल्पाहार कक्ष *पुं.* (तत्.) सार्वजनिक स्थलों पर निर्मित वे कक्ष जहाँ अल्पाहार उपलब्ध होता है refershment room दे. अल्पाहार।

अल्पाहारिता *स्त्री.* (तत्.) कम भोजन करने की प्रवृत्ति।

अल्पाहारी *वि.* (तत्.) थोड़ा खानेवाला, कम खानेवाला, संयत भोजन करने वाला।

अल्पित *वि.* (तत्.) 1. अल्पीकृत, घटाया या कम किया हुआ 2. अपेक्षित।

अल्पिष्ठ *वि.* (तत्.) 1. जितना कम हो सकता हो उतना ही, न्यूनतम 2. बहुत कम 3. गणि. मात्रात्मक दृष्टि से न्यूनतम।

अल्पीकरण *पुं.* (तत्.) तु. निम्निष्ठ, कम करना, शक्ति या अधिकार या प्रतिष्ठा या मान का घट जाना या उसमें कमी हो जाना, शक्ति या अधिकार आदि को कम करने की क्रिया या भाव, अपकर्ष।

अल्पीकृत *वि.* (तत्.) कम किया हुआ, न्यूनीकृत, ह्रासित।

अल्पीभवन *पुं.* (तत्.) दे. अल्पीकरण।

अल्पेतर *वि.* (तत्.) [अल्प+इतर] 1. अनेक, बहुत 2. अनल्प, अधिक।

अल्फा *पुं.* (यूनानी) ग्रीक वर्णमाला का प्रथम अक्षर।

अल्फा किरणें *स्त्री.* (अं.+तत्) दे. ऐल्फा किरणें।

अल्बम *पुं.* (अं.) दे. ऐल्बम।

अल्ल *पुं.* (अर.) वंश या कुल का नाम, उपगोत्र का नाम।

अल्लम-गल्लम *पुं.* (देश.) अनु. 1. अंडबंड, अनाप-शनाप 2. प्रलाप।

अल्ला *स्त्री. (तत्.)* 1. माता 2. पराशक्ति *पुं.* (अर.) 1. अल्लाह, ईश्वर, परमात्मा।

अल्लाना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. चिल्लाना, जोर से चीखना 2. उच्च स्वर में बोलना।

अल्लामा *स्त्री.* (अर.) लड़ाकी स्त्री *वि.* बहुत इल्म इल्म वाला, विद्वान, ज्ञानी।

अल्लाह (हो)/अल्लाह अकबर *वि.* (अर.) अल्लाह (या ईश्वर) महान है (इस्लाम का मुख्य नारा)।

अल्लाह *पुं.* (अर.) ईश्वर, खुदा।

अल्लाहताला *पुं.* (अर.) अल्लाह, जो सर्वश्रेष्ठ है, परमेश्वर।

अल्सर *पुं.* (अं.) चिकि. त्वचा या किसी श्लेष्मिक झिल्ली में होने वाला व्रण जो जल्दी भरता नहीं है, कभी-कभी इसमें मवाद भी बन जाता है। आमाशय में होने वाले अल्सर को 'गैस्ट्रिक अल्सर' कहा जाता है।

अल्हड़ *वि.* (देश.) 1. मनमौजी, बेपरवाह 2. लोकज्ञान-शून्य 3. अनुभवहीन 4. कम उम्र वाला *पुं.* बिना दाँत वाला बछड़ा जो हल में न जोता गया हो।

अल्हड़ता *स्त्री.* **अल्हड़पन** *पुं.* (देश.) 1. अल्हड़ स्वभाव 2. भोलापन 3. लड़कपन 4. बेपरवाही 5. अनुभवहीनता।

अल्हैया *स्त्री.* (देश.) एक वाद्य यंत्र दे. अलहिया।

अवंतिका *स्त्री.* (तत्.) उज्जैन दे. अवंती ।

अवंती *स्त्री.* (तत्.) मध्यप्रदेश का मालवा भाग जो जो उज्जैन कहलाता है, उज्जयिनी।

अवंश *वि.* (तत्.) जिसके वंश में अन्य कोई व्यक्ति जीवित न हो, निर्वंश, संतानहीन।

अव *उप.* (तत्.) उपसर्ग विशेष जो अल्पता, अवमान, ह्रास निम्नता, व्याप्ति, निर्मलता, अवंलब आदि का बोध कराता है जैसे-अवमानना, अवशिष्ट।

अवकर्ष *पुं.* (तत्.) निम्नीकरण, अवनति विलो. प्रकर्ष।

अवकर्षण *पुं.* (तत्.) 1. जोर से किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना 2. खींच कर ले जाना 3. निम्नीकरण।

अवकल *पुं.* (तत्.) गणि. किसी चर व उसकी कोई अत्यंत सूक्ष्म वृद्धि जो स्वयं एक चर है $y = f(x)$ के $du = f(x)\,dx$ से निरूपित गुणनफल को y का अवकल कहते है। differential

अवकल गणित *पुं.* (तत्.) गणित की वह शाखा जिसमें किसी फलन के स्वतंत्र चरों के मानों में परिवर्तन आने के कारण फलन में आए हुए विचलनों का अध्ययन अवकल विधि से किया जाता है differential calculas

अवकलज *पुं.* (तत्.) गणि. स्वतंत्र चर के सापेक्ष किसी फलन के तात्कालिक परिवर्तन की दर derivative

अवकलज ज्यामिति *स्त्री.* (तत्.) (गणि.) स्वतंत्र चरों में, आश्रित चरों में और स्वतंत्र चरों के सापेक्ष आश्रित चरों के किसी भी कोटि के अवकलनों में परस्पर संबंध दिखाने वाला समीकरण। differential equation

अवकलन *पुं.* (तत्.) 1. गणि. किसी स्वंतत्र चर की न्यूनतम वृद्धि के सापेक्ष आश्रित फलन की न्यूनतम वृद्धि की दर का सीमांत मान का निर्धारण करने का प्रक्रम differenciation 2. ज्ञात करना 3. ग्रहण करना, संगृहीत करना।

अवकल समीकरण *पुं.* (तत्.) गणि. स्वतंत्र चरों में, आश्रित चरों में और स्वतंत्र चरों के सापेक्ष आश्रित चरों के किसी भी कोटि के अवकलजों में परस्पर संबंध दिखाने वाला समीकरण। differential equation

अवकलित *वि.* (तत्.) 1. प्राप्त, ज्ञात 2. संगृहीत।

अवकाश *पुं.* (तत्.) 1. सार्वजनिक छुट्टी 2. मौका, अवसर 3. समय, फुर्सत तु. छुट्टी।

अवकाश गृह *पुं.* (तत्.) किसी संस्था के कर्मचारियों के लिए अवकाश के दिनों में ठहरने

के उद्देश्य से बनाए गए या किराए आदि पर लिए गए आवासनुमा भवन। holiday home

अवकाश लेखा *स्त्री.* (तत्.) दे. छुट्टी लेखा।

अवकाश-ग्रहण *पुं.* (तत्.) 1. अवकाश लेना, सेवानिवृत्ति, सक्रिय सेवा से retirement 2. विश्राम-ग्रहण।

अवकाश-पठन *पुं.* (तत्) व्यवसाय करते हुए व्यवसाय से संबंधित या मनोरंजन के लिए अध्ययन leisure reading

अवकाशप्राप्त *वि.* (तत्.) जो सक्रिय सेवा से अवकाश ग्रहण कर चुका हो, सेवानिवृत्त। retired

अवकाश रिक्ति *स्त्री.* (तत्.) किसी कर्मचारी के लंबे अवकाश या लंबी छुट्टी पर जाने के परिणाम स्वरूप रिक्त पद। leave vacancy

अवकाशिका *स्त्री.* (तत्.) आयु. किसी नलिका के भीतर का स्थान, जैसे आंत्र अवकाशिका। lumen

अवकिरण *पुं.* (तत्.) बिखरने या बिखेरने की क्रिया, भाव या स्थिति, फैलाना, विकीर्णन।

अवकीर्ण *वि.* (तत्.) 1. फैला हुआ, बिखरा हुआ, छितराया हुआ 2. ध्वस्त।

अवकीर्णन *पु.* बिखेरना, चारों ओर फैलाना।

अवकुंचन *पुं.* (तत्.) 1. सिकोड़ने या समेटने की क्रिया या भाव, सिकुड़न 2. पेशी, कंडरा या क्षत ऊतक के संकुचित हो जाने के कारण उसमें उत्पन्न विरूपता।

अवकुंठन *पुं.* (तत्.) 1. घेरना 2. ढंकना, पाटना 3. आकृष्ट करना, खींचना।

अवकुत्सित *पुं.* (तत्.) 1. निंदा 2. दोष *वि.* 1. जिसकी निंदा की गई हो, निंदित 2. दोषरोपित।

अवकृष्ट *वि.* (तत्.) 1. खींच कर (नीचे) हटाया गया 2. निकाला हुआ 3. घटिया *पुं.* सफाई का कार्य करने वाला कर्मचारी/नौकर।

अवकेश *वि.* (तत्.) 1. जिसके बाल नीचे लटके हुए हों 2. जिसके बाल झड़ गए हों या झड़ रहे हों।

अवकेशी *वि.* (तत्.) 1. फल न देने वाला 2. छोटे या कम बालों वाला *पुं.* फल न देने वाला पेड़।

अवकोटि *स्त्री.* (तत्.) भाषा. (अर्थविज्ञान के संदर्भ संदर्भ में) वे शब्द जो किसी बड़े वर्ग या अधिकोटि या अधिसमुच्चय के अंग हैं उदा. 'प्राणी' अधि कोटि है, जबकि प्रथम स्तर पर थलचर, 'नभचर' अवकोटि के शब्द माने जाएँगे। पर जब जलचर अधिकोटि का शब्द होगा तो 'मछली', 'कछुआ' अवकोटि के शब्द होंगे।

अवक्तव्य *वि.* (तत्.) न कहने योग्य, जिसकी व्याख्या न हो सके, जिसके बारे में बताया न जा सके *पुं.* अश्लील या गुप्त बात।

अवक्त्र *वि.* (तत्.) बिना मुँह का।

अवक्रंदन *पुं.* (तत्.) जोर-जोर से रोने की क्रिया।

अवक्रम *पुं.* (तत्.) नीचे की ओर की स्थिति, अधोगमन, गिराव।

अवक्रमण *पुं.* (तत्.) 1. नीचे आने या उतरने की क्रिया या भाव 2. क्रम से या पंक्ति से नीचे किया जाना या क्रम का नीचे किया जाना (वनस्पति) किसी पौधे के लक्षणों का अगली संतति में भी विद्यमान रहना devaluation 3. प्रमुख प्ररोह के नीचे निकलने वाला प्ररोह। under shoot

अवक्रमित *वि.* (तत्.) 1. जिसका अवक्रमण हुआ हो 2. दे. पंक्तिच्युत ।

अवक्रय *पुं.* (तत्.) भाड़ा, कर, मूल्य दे. अक्रय पद्धति।

अवक्रय पद्धति *पुं.* (तत्.) वस्तु का स्वामी बनने की वह पद्धति जिसके अनुसार वह वस्तु पहले तयशुदा किस्तों पर किराए पर ली जाती है तथा निर्धारित अवधि तक पूरी किस्तें चुका देने पर किराएदार ही उसका स्वामी बन जाता है hire। perchase system

अवक्रोश *पुं.* (तत्.) 1. कटुवाणी, कटूक्ति 2. गाली, निंदा 2. बेमेल आवाज।

अवक्लिन्न *वि.* (तत्.) गीला, भीगा हुआ, तर-बतर।

अवक्लेद *पुं.* (तत्.) स्राव, रिसाव, बहाव।

अवक्षय *पुं.* (तत्.) 1. नाश, धीरे-धीरे नष्ट होना 2. किसी मशीन की घिसाई, प्रयोग आदि के द्वारा हुए ह्रास से उसके विक्रय-मूल्य में कमी depriciation 3. हानि।

अवक्षालन *पुं.* (तत्.) वर्षा के अधिक होने के दौरान जल के नीचे की ओर जाने या बगल में जाने की गति के कारण मिट्टी के भीतर ही विलीन या निलंबित पदार्थ का ले जाया जाना। alluviation

अवक्षिप्त *वि.* (तत्.) 1. गिरा हुआ 2. जिसकी निंदा की गई हो 3. जिस पर लांछन लगाया गया हो 4. रसा. जिसका अवक्षेपण हुआ हो।

अवक्षेप *पुं.* (तत्.) 1. आरोप, लांछन 2. आपत्ति 3. अवरोध रसा. विलयन (घोल) से ठोस रूप में पृथक् हुआ पदार्थ precipitate दे. अवक्षेपण।

अवक्षेपक *पुं.* (तत्.) कोई अभिकर्मक जिसके कारण अवक्षेपण होता है precipitant दे. अवक्षेपण।

अवक्षेपण *पु.* (तत्.) शा.अर्थ. 1. दूर फेंक दिए जाने की क्रिया या भाव 2. रसा. 1. द्रव के भीतर दो या दो से अधिक विलेय पदार्थों की अभिक्रिया के कारण अविलेप ठोस कणों का द्रव से पृथक् हो जाना 2. वृष्टि या हिमपात होना। precipitation

अवक्षेपणी *स्त्री.* (तत्.) 1. लगाम, बाग, रास।

अवखंडन *पुं.* (तत्.) 1. नष्ट करना 2. तोड़-फोड़ करना, खंड-खंड करना।

अवखात *पुं.* (तत्.) गहरा गड्ढा, खाई तु. 'खात'।

अवगंड *पुं.* (तत्.) चेहरे पर होने वाली फुंसी, मुँहासा।

अवगणन *पुं.* (तत्.) 1. गिनती करने या गिनती करते समय किसी को छोड़ने का भाव। 2. तिरस्कार, अवहेलना, (किसी को) कम समझना या हीन मानना।

अवगणित *वि.* (तत्.) 1. तिरस्कृत, उपेक्षित 2. जिसकी गिनती हुई हो।

अवगत *वि.* (तत्.) विदित, ज्ञात, जाना हुआ, समझा हुआ

अवगति *स्त्री.* (तत्.) 1. कुगति 2. ज्ञान, बोध, समझ 3. निश्चयात्मक ज्ञान।

अवगनना *स.क्रि.* (तद्.) 1. निंदा या तिरस्कार करना 2. तुच्छ समझना 3. कम मूल्य लगाना।

अवगम (अवगमन) *पुं.* (तत्.) 1. नीचे जाना, उतारना, पास जाना 2. बोध, समझना, धारणा, ज्ञान।

अवगाढ़ *वि.* (तत्.) 1. डूबा हुआ, गहरा पैठा हुआ, छिपा हुआ 2. गाढ़ा, जमा हुआ।

अवगारना *स.क्रि.* (देश.) 1. समझाना-बुझाना 2. बुरा-भला कहना।

अवगाह *वि.* (तत्.) 1. अथाह, बहुत गहरा *पुं.* (तद्.) गहरा स्थान, कठिनाई 3. जल में उतर कर किया जाने वाला स्नान 4. गहन ज्ञान।

अवगाहन *पुं.* (तत्.) 1. पानी में घुस कर किया जाने वाला स्नान, निमज्जन 2. गंभीरतापूर्वक किया गया अध्ययन-मनन।

अवगाहना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. घुस कर स्नान करना *स.क्रि.* 1. छानना, गहराई नापना, छान-बीन करना 2. ध्यानपूर्वक सोचना समझना 3. थाह लेना।

अवगाहित *वि.* (तत्.) 1. नहाया हुआ 2. अच्छी तरह मनन किया हुआ।

अवगाही *वि.* (तत्.) 1. चिंतन-मनन करने वाला, छानबीन करने वाला 2. (नदी-सरोवर में) स्नान करनेवाला।

अवगाह्य *वि.* (तत्.) 1. स्नान करने योग्य 2. अध्ययन करने योग्य।

अवगीत *वि.* (तत्.) 1. निंदित, जिसकी निंदा की गई हो 2. दुष्ट *पुं.* 1. निंदा 2. अभद्रगीत 3. बेसुरा राग।

अवगुंठन *पुं.* (तत्.) 1. स्त्री द्वारा घूँघट आदि से मुँह छिपाने की क्रिया 2. छिपाना *पुं.* 1. कपड़े का वह भाग जो मुँह छिपाने के लिए प्रयुक्त होता है, बुर्का 2. परदा 3. आवरण 4. यज्ञादि धार्मिक अनुष्ठान में उंगलियों को मिला कर बनाई जाने वाली एक विशेष मुद्रा 5. झाड़ू।

अवगुंठनवती *स्त्री.* (तत्.) 1. घूँघट से ढँके हुए मुख वाली (महिला) 2. कपड़े से ढँके हुए शरीर वाली, बुर्का से आवृत शरीर व मुख वाली।

अवगुंठिका *स्त्री.* (तत्.) घूँघट, परदा।

अवगुंठित *वि.* (तत्.) 1. ढका हुआ, छिपा हुआ, छिपाया गया 2. चूर-चूर किया हुआ।

अवगुंठिता *स्त्री.* (तत्.) आवरण युक्त स्त्री, घूंघट या बुर्के वाली।

अवगुंफन *पुं.* (तत्.) 1. गूँथना 2. पिरोने की क्रिया, बुना हुआ।

अवगुंफित *वि.* (तत्.) 1. गूँथा हुआ, बुना हुआ 2. पिरोया हुआ।

अवगुण *पुं.* (तत्.) 1. दोष, ऐब 2. बुराई, खोट।

अवगूहन *पुं.* (तत्) 1. छिपाने की क्रिया या भाव, गोपन 2. आलिंगन 3. ढँकना, आच्छादन।

अवग्रह *पुं.* (तत्.) शा.अर्थ. 1. ठीक से ग्रहण न करना 2. रुकावट, बाधा, अड़चन 2. संधिविग्रह करना 3. संधिविच्छेद का चिह्न जैसे- मंदोऽपि 4. नित्य संधि के न होने की स्थिति।

अवग्रहण *पुं.* (तत्.) 1. अनादर, अपमान या हीन कर समझना 2. बाधा, रुकावट।

अवघट *वि.* (तत्.) 1. विकट, दुर्गम 2. कठिन।

अवघट्ट *पुं.* (तत्.) 1. गुफा 2. माँद, बिल 3. पीसने की चक्की।

अवघर्षण *पुं.* (तत्.) रगड़ने या पीसने की क्रिया।

अवघात *पुं.* (तत्.) 1. प्रहार 2. आघात 3. हत्या 4. धान आदि कूटने की क्रिया।

अवघूर्ण *पुं.* (तत्.) 1. वातावर्त, बवंडर 2. चक्कर, भ्रमि। virtigo

अवघूर्णन *पुं.* (तत्.) 1. चक्कर काटना, सिर चकराना 2. लुढ़कना 3. बवंडर उठना।

अवघोषक *पुं.* (तत्.) झूठी खबर उड़ानेवाला, अफवाह फैलाने वाला।

अवघोषण *स्त्री.* (तत्) शासन की ओर से की जाने जाने वाली घोषणा, मुनादी, ढिंढोरा।

अवचन *पुं.* (तत्.) 1. वचन का अभाव 2. मौन, चुप्पी 3. कुवचन, निंदा।

अवचनीय *वि.* (तत्.) 1. जो कहने योग्य न हो 2. अश्लील, फूहड़ 3. जिसका वर्णन न किया जा सके।

अवचूड *पुं.* (तत्.) ध्वजा के ऊपरी सिरे पर बँधा हुआ कपड़ा।

अवचूर्ण *पुं.* (तत्.) रसा. किसी दानेदार पदार्थ का पिसा हुआ चूर्ण रूप, जैसे- आटा, पर्या. चूरा।

अवचूर्णन *पु.* 1. चूरा बनाना 2. चूरा बुरकना।

अवचूर्णित *वि.* (तत्.) चूरा-चूरा किया हुआ, भली-भाँति पीसा हुआ।

अवचूषण *पुं.* (तत्) 1. किसी द्रव या गैसीय पदार्थ को चूसने या सोखने की क्रिया या भाव 2. भौति. विकिरण ऊर्जा को पूर्ण रूप से आत्मसात् कर लेने की क्रिया 3. ला.अर्थ. किसी की क्षमताओं का अधिकाधिक उपयोग करते हुए 'नहीं' के बराबर प्रतिफल देने का भाव टि. चूषण एकतरफा क्रिया है। चूषक प्रतिफल में कुछ नहीं देता पर्या. अवशोषण। absorption

अवचेतन *वि.* (तत्.) स्वप्नवत चेतनता, चेतना की सीमारेखा के बाहर विद्यमान अंतश्चेतना। subconscious

अवचेतना *स्त्री.* (तत्.) दे. अवचेतन ।

अवच्छद *पुं.* (तत्.) निचला ढक्कन या आवरण।

अवच्छिन्न *वि.* (तत्.) 1. किसी पदार्थ से अलग किया हुआ 2. अपनी विशिष्टता के कारण अन्य से भिन्न।

अवच्छेद *पुं.* (तत्.) 1. अलगाव, भेद 2. हद, सीमा 3. परिच्छेद 4. विभाग।

अवच्छेदक *वि.* (तत्.) 1. छेदक 2. भेदक *पुं. (तत्.)* 1. सीमा 2. विशेषण।

अवच्छेदन *पुं.* (तत्.) 1. काटकर अलग करने या खंड करने की क्रिया या भाव, विभाजन. भेद करना 2. सीमा निर्धारण, परिसीमन 3. अलगाव।

अवच्छेदवाद *पुं.* (तत्.) दर्श. नव्य वेदांत का यह सिद्धांत कि जीव स्वरूपतः ब्रह्म ही है किंतु उसमें उपाधि का भेद है, अर्थात् ब्रह्म माया-विशिष्ट चेतन गुण वाला और जीव अविद्या विशिष्ट चेतन गुण वाला है।

अवच्छेद्य *वि.* (तत्.) 1. अलगाव के योग्य, विभाजन के योग्य 2. भिन्नता-निर्धारण के योग्य।

अवजय *स्त्री.* (तत्.) विजय।

अवजात *वि.* (तत्.) निम्न कुल में उत्पन्न, अकुलीन।

अवजित *वि.* (तत्.) 1. हराया हुआ, विजित 2. तिरस्कृत।

अवज्ञा *स्त्री.* (तत्.) 1. अवहेलना, उपेक्षा 2. आज्ञा का उल्लंघन 3. अनादर।

अवज्ञात *वि.* (तत्.) 1. जिसकी अवज्ञा की गई हो 2. तिरस्कृत।

अवज्ञान *पुं.* (तत्.) 1. तुच्छ समझने का भाव 2. अवज्ञा 3. तिरस्कार 4. पराजय, हार।

अवज्ञापूर्ण भाषा *स्त्री.* (तत्.) प्रशा. अपने से बड़े पद वाले या प्रतिष्ठित व्यक्ति से बात करने में अशिष्ट या अपमानजक भाषा का प्रयोग करना।

अवज्ञेय *वि.* (तत्.) अवज्ञा या अपमान के योग्य, तिरस्कार के योग्य।

अवट *पुं.* (तत्.) 1. गड्ढा, रंध्र 2. कुआँ 3. हाथी पकड़ने के लिए बनाया गया घास-फूस से ढका गड्ढा।

अवटना *स.क्रि.* (तत्.) 1. मथना 2. किसी द्रव को आग पर रख कर उसे चलाते हुए गाढ़ा करना *अ.क्रि.* घूमना-फिरना।

अवटु *पुं.* (तत्) जो ब्रह्मचारी या कम आयु वाला न हो।

अवटु ग्रंथि *स्त्री.* (तत्.) प्राणि. श्वास नली के दोनों ओर स्थित द्विपालिक अंतःस्रावी ग्रंथि जिसका स्राव शरीर की वृद्धि और उपापचय को नियंत्रित करता है। thyroid

अवडीन *पुं.* (तत्.) पक्षियों की उड़ान, पक्षियों का नीचे की ओर उड़ना।

अवडेर *पुं.* (देश.) बखेड़ा, झमेला, झंझट।

अवडेरना *स.क्रि.* (देश.) 1. बखेड़ा खड़ा करना, परेशान करना 1. रहने न देना, बसने न देना।

अवडेरा *वि.* (तत्.) 1. घुमावदार, चक्करदार 2. भद्दा, खराब।

अवढर *वि.* (देश.) बहुत जल्दी ढल जाने वाला या द्रवित हो जाने वाला, जल्दी पसीजने वाला, उदार, कृपालु।

अवतंस (अवतंसक) *पुं.* (तत्.) 1. बाली 2. कर्णफूल 3. आभूषण, अलंकार।

अवतंसित *वि.* (तत्.) जो हार या मुकुट पहने हो, आभूषित, अलंकृत।

अवतक्षण *पुं.* (तत्.) टुकड़ों में काटी गई वस्तु। *स.क्रि.* टुकड़ों में काटना।

अवतत *वि.* (तत्.) विस्तृत, जिसका विस्तार नीचे की ओर हो।

अवतप्त *वि.* (तत्.) कम गर्म।

अवतमस *पुं.* (तत्.) हल्का अंधकार, धुँधलका।

अवतरण *पुं.* (तत्.) 1. उतरना, नीचे आना या जाना, जमीन पर उतरना (विमान का) 2.

तरना, पार होना 3. उद्धरण, किसी पुस्तक या लेख का ज्यों-त्यों लिया गया अंश quotation 4. देवादि का पार्थिव रूप में प्रकट होना 5. घाट की सीढ़ी 6. उपोद्घात, भूमिका।

अवतरण-चिह्न *पुं.* (तत्) वह विराम चिह्न जिसका प्रयोग उद्धरण के लिए होता है, प्रारंभिक और अंतिम शब्दों के ऊपर बाहर की ओर एक या दो अल्पविराम चिह्न (कॉमा) के रूप में इसे लिखा जाता है जैसे- गीता का कथन है कि, "कर्म करते रहो।" पर्या. उद्धरण-चिह्न। inverted commas

अवतरण भूमि *स्त्री.* (तत्) 1. विमानों के उड़ने एवं उतरने के लिए बनाया गया स्थान जो समस्त सुविधाओं एवं सुरक्षा से युक्त होता है। 2. देवताओं एवं महापुरुषों की अवतरणस्थली।

अवतरणिका *स्त्री.* (तत्.) 1. ग्रंथ की प्रस्तावना, उपोद्घात 2. ग्रंथ के प्रारंभ में की जाने वाली सरस्वती वंदना अथवा मंगलाचरण 3. परिपाटी।

अवतरणी *स्त्री.* (तत्.) दे. अवतरणिका ।

अवतरना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. ऊपर की ओर से नीचे आना, उतरना 2. जन्म लेना 3. अवतार लेना, शरीर धारण करना 4. प्रकट होना, सामने आना।

अवतरित *वि.* (तत्.) 1. जिसने अवतार लिया हो 2. उतरा हुआ 3. पार पहुँचा हुआ।

अवतर्पण *पुं.* (तत्.) शांति के लिए किया गया उपाय।

अवतल *वि.* (तत्) जिसका तल बीच में से दबा हो, (एक गड्ढे की तरह) नतोदर। concave

अवताड़न *पुं.* (तत्.) 1. प्रताड़ित करने का भाव 2. पीटना, चोट पहुँचाना, कुचलना, रौंदना।

अवतान *पुं.* (तत्.) 1. फैलाव 2. धनुष के तने होने की स्थिति 3. आवरण 4. चंदोवा।

अवताप *पुं.* (तत्.) 1. ऊपर से प्राप्त गर्मी 2. कष्ट।

अवतापी *वि.* (तत्.) (ऊपर से) कष्ट या ताप पहुँचाने वाला, जैसे- सूर्य का ताप।

अवतापीय न्यूट्रॉन *पुं.* (तत्+अं) भौ. अत्यंत निम्न ऊर्जायुक्त इलेक्ट्रॉन।

अवतार *पुं.* (तत्.) 1. ईश्वर या देवता द्वारा शरीर शरीर धारण कर धरती पर आगमन 2. इस प्रकार अवतरित विशिष्ट व्यक्ति।

अवतारण *पुं* (तत्.) 1. उतारना, नीचे लाना 2. भूमिका 3. इंद्रियगोचर करना।

अवतारना *स.क्रि.* (तत्.) 1. उत्पन्न करना 2. रचना 3. उतारना।

अवतारवाद *पुं.* (तत्.) धर्म. यह सिद्धांत कि परमात्मा मानव रूप धारण करके पृथ्वी पर अवतरित होता है।

अवतारी *वि.* (तत्.) 1. अवतार लेने वाला 2. अलौकिक गुणों से युक्त।

अवतीर्ण *वि.* (तत्.) 1. अवतार के रूप में उत्पन्न 2. उतरा हुआ 3. उद्धृत।

अवदंश *पुं.* (तत्.) 1. मद्यपान आदि के समय भूख बढ़ाने के लिए खाई जानेवाली चटपटी वस्तु।

अवदरण *पुं.* (तत्.) 1. तोड़ना-फोड़ना 2. पीसना, अच्छी तरह दलना।

अवदशा *स्त्री.* (तत्.) 1. हीन दशा, बुरी दशा, दुर्दशा।

अवदाघ *पुं.* (तत्.) 1. जलन, ताप 2. गरमी 3. गरमी की ऋतु।

अवदात *वि.* (तत्.) 1. निर्मल 2. सुंदर, उज्ज्वल 3. गुणी 4. पीला।

अवदान *पुं.* (तत्.) 'योगदान' के अर्थ में आजकल बहुधा प्रयुक्त शब्द, जिसका प्राचीन अर्थ कीर्तिकर या शौर्यसंपन्न कार्य था। contribution

अवदान्य *वि.* (तत्.) जो वदान्य अर्थात् वाक्पटु या उदार न हो 1. अवाक्पटु 2. कंजूस, कृपण।

अवदारक *वि.* (तत्.) 1. फाड़ने वाला 2. टुकड़े-टुकड़ों में विभाजन करने वाला *पुं.* मिट्टी खोदने की लोहे की कुदाल।

अवदारण *पुं.* (तत्.) 1. विदारण करना 2. विभाजन करना 3. तोड़ना, फोड़ना 4. खोदना 5. कुदाल।

अवदारित *वि.* (तत्.) 1. जिसका अवदारण किया गया हो, जिसे चीर या फाड़ दिया गया हो, विदीर्ण, अवदीर्ण 2. तोड़ा फोड़ा गया, टुकड़े टुकड़े किया हुआ, खंडित 3. अलग किया हुआ, विभक्त 4. नष्ट 5. दलित।

अवदाह *पुं.* (तत्.) 1. जलना 2. ताप 3. शारीरिक या मानसिक जलन।

अवदीर्ण *वि.* (तत्.) 1. विभक्त, टूटा हुआ 2. उदास, घबराया हुआ।

अवदोह *पुं.* (तत्.) 1. दुहा हुआ दूध 2. दूध दुहने की क्रिया या भाव, दुग्धदोहन।

अवद्य *वि.* (तत्.) 1. जो कहने योग्य न हो, अकथनीय, अनुचित 2. अधम, निंद्य, निकृष्ट, पापी पापी 3. त्याज्य *पुं.* 1. दोष 2. पाप 3. निंदा 4. लज्जा।

अवध *पुं.* (तत्.) 1. अयोध्या, कौशल 2. वध न किए जाने की क्रिया या भाव *वि.* 1. अवध्य, जो वध के योग्य न हो।

अवधाता *पुं.* (तत्.) शा.अ. अवधान करने वाला, मालिक की अनुपस्थिति में उसकी संपत्ति आदि की निगरानी करने वाला, रखवाला।

अवधान *पुं.* (तत्.) सावधानी, मनोयोग, चौकस रहने का भाव 1. मनो. (i) इष्टतम उद्दीपन के लिए व्यक्ति की इंद्रियों का समेकन (ii) चेतन मन की वह अवस्था जिसमें कोई एक वस्तु अन्य वस्तुओं से अपेक्षाकृत स्पष्ट होती है (iii) मन की एकाग्रता 2. सुरक्षा के प्रति सतर्कता coution

अवधान राशि *स्त्री.* (तत्.) सरकारी विभाग या संस्था की किसी संपत्ति के अस्थायी उपयोग के लिए जमानत के तौर पर ली जाने वाली धनराशि। caution money

अवधानी *वि.* (तत्.) 1. ध्यान देने वाला 2. मनोयोग-युक्त, एकाग्र-चित्त।

अवधारक *वि.* (तत्.) अवधारण करनेवाला, किसी एक विषय पर अपना ध्यान केंद्रित करनेवाला।

अवधारण *पुं.* (तत्.) 1. सुविचारित निर्धारण, विनिश्चय 2. किसी विषय पर अधिक बल देना।

अवधारणा *स्त्री.* (तत्.) 1. कुछ दृष्टांतों के आधार पर मन में बनी संकल्पना या धारणा 2. किसी वस्तु या व्यक्ति के विषय में उत्पन्न धारणा।

अवधारणीय *वि.* (तत्.) 1. विचार करने योग्य, विचाराधीन 2. निश्चय के योग्य।

अवधारना *स.क्रि.* (तद्.) 1. धारण करना, ग्रहण करना 2. निश्चय करना।

अवधारित *वि.* (तत्.) विनिश्चित, सुविचारित, निर्धारित।

अवधार्य *वि.* (तत्.) 1. निश्चय करने योग्य 2. अवधारण करने योग्य।

अवधार्य प्रश्न *पुं.* (तत्.) वे विचारबिंदु या प्रश्न जो विचारणीय ठहराए गए हों।

अवधावन *पुं.* (तत्.) 1. पीछा करना 2. (फिर से) साफ करना या धोना।

अवधावित *वि.* (तत्.) 1. जिसका पीछा किया गया हो 2. मार्जित।

अवधि *स्त्री.* (तत्.) 1. समय-सीमा, मियाद, निर्धारित समय, मियाद।

अवधिज्ञान *पुं.* (तत्.) इंद्रियों के संपर्क से प्राप्त दूर की वस्तुओं का ज्ञान।

अवधि दर्शन *पुं.* (तत्.) दे. अवधिज्ञान ।

अवधि-बाधित *वि.* (तत्.) (वे वाद आदि) जो नियत समय-सीमा के भीतर प्रस्तुत न किए जाने के कारण कानूनी तौर पर अविचारणीय हो गए हों पर्या. अवधिवारित, कालातीत, समय-वर्जित, काल-वर्जित। time barred

अवधी *वि.* (तत्.) अवध का, अवध से संबंधित *स्त्री.* (तत्.) अवधी भाषा, अवध की बोली।

अवधीरण *पुं.* (तत्.) अवमान, तिरस्कार करना।

अवधीरित *वि.* (तत्.) अपमानित, निरादृत, तिरस्कृत।

अवधूक *वि.* (तत्.) वधू-विहीन, बिना पत्नी का, अपत्नीक।

अवधूत *वि.* (तत्.) 1. हिलाया गया, अस्वीकृत 2. आसक्तिहीन, विरत *पुं.* (तत्.) 1. संन्यासी 2. योगी, वह साधु जो पूर्णतया विरक्त हो।

अवधूत-मत *पुं.* (तत्) संन्यासियों का एक विशिष्ट संप्रदाय, नाथपंथ, गोरखनाथ द्वारा स्थापित संप्रदाय, दत्तात्रेय संप्रदाय।

अवधूतवेश *वि.* (तत्.) 1. (साधु की तरह) नग्न, वस्त्रविहीन, निर्वस्त्र, बिना वस्त्र का 2. औघड़ों की की तरह वस्त्र पहने हुए।

अवधूतिका *स्त्री.* (तत्.) ऐसी साधिका जिसने अवधूत मत स्वीकार किया हुआ हो, अवधूती।

अवधूती *स्त्री.* (तत्.) 1. दे. अवधूतिका *वि.* अवधूत संप्रदाय से संबंधित 2. अवधूत मत का।

अवधूपित *वि.* (तत्.) (धूप आदि पदार्थों से) सुगांधित सुवासित, सुगंध वाला।

अवधृत *वि.* (तत्.) निश्चयीकृत, अवधारित, गृहीत।

अवधेय *वि.* (तत्.) 1. ध्यान देने योग्य, विचारणीय, जानने योग्य 2. रखने योग्य *पुं.* (तत्.) 1. नाम 2 ध्यान।

अवधेश *पुं.* (तत्.) अवध के नरेश, अवध के राजा दशरथ।

अवध्य *वि.* (तत्.) वध के अयोग्य, न मारने योग्य। उदा. हिंदू समाज में गाय अवध्य है।

अवध्वंस *पुं.* (तत्.) 1. परित्याग, छोड़ना 2. निंदा 3. नाश 4. गिर कर दूर जा पड़ना 5. राख, चूरा।

अवध्वस्त *वि.* (तत्.) 1. नष्ट, विनष्ट 2. निंदित 3. बिखेरा हुआ, छिड़का हुआ।

अवन *पुं.* (तत्.) 1. रक्षण, बचाव 2. प्रसन्नता 3. इच्छा 4. संतोष *स्त्री.* (तद्.) 1. अवनि, जमीन *पुं.* (अं.) भोजन के व्यंजनों आदि को भूनने, गर्म करने, गर्म करके सुखाने आदि के लिए प्रयुक्त उपकरण तंदूर, अंगीठी आदि 2. रास्ता।

अवनत *वि.* (तत्.) 1. झुका हुआ 2. नीचा, हीन 3. अस्त होता हुआ 4. विनीत।

अवनति *स्त्री.* (तत्.) 1. अधोगति 2. कमी, न्यूनता 3. हानि, पतन 4. अस्त होना, डूबना।

अवनद्ध *वि.* (तत्.) 1. मढ़ा हुआ, बँधा हुआ, कसा 2. निर्मित, बना हुआ 3. निश्चित किया हुआ 4. बैठाया हुआ *पुं.* 1. मृदंग 2. ढोल।

अवनद्ध वाद्य *पुं.* (तत्) वे ताल वाद्य जो चमड़े से से मढ़े हुए होते हैं जैसे- तबला, ढोलक, मृदंग आदि पर्या. आनद्ध वाद्य, वितत वाद्य।

अवनमन *पुं.* (तत्.) 1. झुकने की प्रक्रिया, झुकाव 2. उतार, नीचे की ओर होने की स्थिति।

अवनमन कोण *पुं.* (तत्.) खगो. क्षैतिज तल के नीचे स्थित किसी वस्तु को देखने के लिए प्रेक्षक को अपनी आँखें इस तल से जितनी झुकानी पड़ती हैं, उसकी मात्रा।

अवनयन *पुं.* (तत्.) नीचे की तरफ ले जाना, नीचे गिरना।

अवनाम *पुं.* (तत्.) 1. भाषा. वह शब्द जो किसी बड़े वर्ग का सदस्य हो उदा. 'बिल्ली एक जानवर है' वाक्य में 'बिल्ली' अवनाम है 2. अवनमन।

अवनायक *वि.* (तत्.) नीचे ले जानेवाला; अवनति करने वाला।

अवनि *स्त्री.* (तत्.) (प्राणियों की रक्षक या धारक) पृथ्वी, जमीन पर्या. धरित्री, धारयित्री, वसुंधरा, वसुधा।

अवनिचार *वि.* (तत्.) 1. पृथ्वी पर विचरण करने वाला 2. पृथ्वी पर घूमते रहने वाला, घुमक्कड़, भ्रमणशील।

अवनिज *पुं.* (तत्.) 1. दे. अवनिसुत वि. पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाला, पेड़-पौधे, लता, घास आदि, उद्भिज।

अवनितल *पुं.* (तत्.) भूतल, धरातल, पृथ्वी की सतह।

अवनिर्धारण *पु.* (तत्.) कम आंकना।

अवनिसुत *पुं.* (तत्.) भौम, मंगल ग्रह। इसे भूमि का पुत्र माना गया है।

अवनिसुता *स्त्री.* (तत्.) जानकी, सीता, भूमिसुता, भूमिज्ञा।

अवनींद्र *पुं.* (तत्.) भूपति, राजा।

अवनी *स्त्री.* (तत्.) दे. अवनि ।

अवनीतल *पुं.* (तत्.) दे. अवनितल ।

अवनीश *पुं.* (तत्.) पृथ्वीपति, राजा।

अवनीश्वर *पुं.* (तत्.) दे. अवनीश ।

अवनीसुता *स्त्री.* (तत्.) दे. अवनिसुता ।

अवनेजन *पुं.* (तत्.) 1. धोना 2. हाथ-पाँव धोने का पानी 3. पिंडदान के समय बिछौने पर पानी छिडकना दे. नेजन।

अवपंक *पुं.* (तत्.) वाहित मल से अलग किया हुआ ठोस भाग जो फसलों के लिए खाद के रूप में काम आता है sludge

अवपाक *पुं.* (तत्.) वह व्यक्ति जो अच्छा भोजन न बना पाता हो *वि.* बुरी तरह पकाया हुआ।

अवपाटिका *स्त्री.* (तत्.) लिंगेंद्रिय का एक रोग जिसमें लिंग को ढकने वाली चमड़ी फट जाती है।

अवपात *पुं.* (तत्.) 1. पतन, अधः पतन, गिराव, नीचे गिरने की क्रिया 2. कुंड, हाथियों को गिराकर फंसाने के लिए एक प्रकार का गड्ढा जिसे घास-फूस से ढक दिया जाता है 3. विस्फोट होने पर उससे इधर-उधर बिखर कर गिरने वाली सामग्री fallout

अवपातन *पुं.* (तत्.) सा.अर्थ. गिराना, नीचे उतारना सैवि. अल्पदृश्यता की स्थिति या अभ्यास के समय भूस्थित उपकरणों अथवा रेडार कार्मिक की सहायता से पायलट द्वारा विमान का भूमि पर सुरक्षित अवतरण दे. यंत्राश्रित उड़ान।

अवपीडन *पुं.* (तत्.) दबाने की क्रिया; निचोड़ना।

अव-प्रभार *पु.* (तत्.) वाणि. सामान्य कीमत या धनराशि की अपेक्षा कम कीमत या रकम लेना।

अवप्रमाण *पु.* (तत्.) दे. अवप्रभार ।

अवप्राक्कलन *पुं.* (तत्.) वाणि. वास्तविक, वांछित या अभीष्ट मात्रा से कम किया गया प्राक्कलन under estimation

अवप्रेरण *पुं.* (तत्.) किसी को अपराध के लिए प्रेरित करना।

अवबाहुक *पुं.* (तत्.) हाथ का एक रोग जिसमें हाथ की गति रुक जाती है, भुजस्तंभ।

अवबुद्ध *वि.* (तत्.) 1. जाना हुआ, ज्ञात 2. जाननेवाला।

अवबोध *पुं.* (तत्.) 1. ज्ञान, बोध जागना 2. जगना 3. 4. शिक्षण, सिखाना।

अवबोधक *पुं.* (तत्.) 1. प्रहरी 2. ज्ञानदाता, शिक्षक 3. संकेतक 4. भार *वि.* 1. चेतानेवाला 2. जाननेवाला।

अवबोधन *पुं.* (तत्.) 1. चेतावनी, ज्ञापन 2. ज्ञान 3. इंद्रियज्ञान।

अवभास *पुं.* (तत्.) 1. प्रत्यक्षण, ज्ञान 2. प्रकाश 3. चमक 4. झलक, आभास 5. मिथ्या ज्ञान।

अवभासक *पुं.* (तत्.) 1. (सर्वत्र आभासयुक्त) परब्रह्म, ईश्वर *वि.* बोध कराने वाला, प्रतीति कराने वाला।

अवभासित *वि.* (तत्.) 1. लक्षित, प्रतीत 2. प्रकाशित।

अवभूमि सिंचाई *स्त्री.* (तत्.) कृषि खुली खाइयों में तब तक पानी देते रहना जब तक भूमि का जल-स्तर इतना ऊँचा न हो जाए कि वह मृदा के जड़-क्षेत्र को गीला कर दे sub-irrigation

अवभृथ *पुं.* (तत्) 1. मुख्य यज्ञ की समाप्ति पर शुद्धि के लिए किया जाने वाला स्नान 2. शुद्धि के लिए प्रयुक्त जल 3. मुख्य यज्ञ की समाप्ति के पश्चात् हुई त्रुटियों की शांति के लिए किया जाने वाला अतिरिक्त यज्ञ।

अवभृथ-स्नान *पुं.* (तत्) यज्ञसमाप्ति पर होने वाला शुद्धि स्नान।

अवमंता *वि.* (तत्) अवमान या अपमान करने वाला। तिरस्कार करने वाला।

अवमंथ *पुं.* (तत्.) एक ऐसा रोग जिसके कारण लिंग में बड़ी-बड़ी फुंसियाँ हो जाती हैं *वि.* सूजन पैदा करने वाला।

अवमंदन *पुं.* (तत्.) मंद या धीमा पड़ जाना, कमी हो जाना भौ. किसी भी दोलायमान तंत्र में दोलन के आयाम में कमी हो जाना। dampening

अवम *वि.* (तत्) 1. सबसे छोटा 2. सबसे नीचे वाला 3. अधम श्रेणी का 4. अंतिम *पुं.* ज्यो. सूर्य दिन और चांद्र दिन के मानों के बीच का अंतर टि. चांद्र दिन सौर दिन से बड़ा होता है। परंतु चांद्र मास सौर मास से छोटा होता है

अवमत *वि.* (तत्.) 1. अवज्ञात 2. तिरस्कृत 3. निंदित।

अवमति *स्त्री.* (तत्.) 1. अवज्ञा 2. उपेक्षा 3. अपमान, अवमानना 3. निंदा।

अवमर्द *पुं.* (तत्) नाश दे. अवमर्दन ।

अवमर्दन *पुं.* (तत्.) 1. पीड़ा देना, दु:ख देना 2. मालिश 3. रगड़ना 4. कुचलना 5. दमन।

अवमर्दित *वि.* (तत्.) 1. पीड़ित 2. दलित 3. मालिश किया हुआ।

अवमर्श *पुं.* (तत्.) 1. संपर्क 2. स्पर्श।

अवमर्ष *पुं.* (तत्.) 1. आलोचना 2. नाटक की पाँच मुख्य संधियों (मुख, प्रतिमुख, गर्भ, अवमर्ष और निर्वहण) में से चौथी संधि 3. आक्रमण।

अवमर्षण *पुं.* (तत्.) 1. असहिष्णुता 2. मिटाना 3. हटाना।

अवमल *पुं.* (तत्) प्रवाहित मल में से नीचे तल में जम जाने वाला अंश।

अवमान *पुं.* (तत्.) तिरस्कार, अवहेलना, अपमान, हेय समझना। contempt

अवमानक *वि.* (तत्.) मानक कोटि से कम स्तर का, घटिया।

अवमानन *पुं.* (तत्) 1. अपमान करने की क्रिया, तिरस्करण। 2. अपमान 3. अवज्ञा।

अवमानना *स्त्री.* (तत्.) दे. अवमान

अवमानित *वि.* (तत्.) 1. तिरस्कृत 2. अपमानित।

अवमानी *वि.* (तत्.) दे. अवमंता।

अवमानीय *पुं.* (तत्.) 1. मनुष्य से निम्न स्तर का प्राणी 2. मानव सृष्टि से पूर्व के मानव सदृश प्राणी टि. ऐसे प्राणियों से संबंधित।

अवमुक्त *वि.* (तत्.) कार्यभार या दायित्व से मुक्त। relieved

अवमुक्ति *स्त्री.* (तत्.) किसी पद आदि से मुक्त (छुट्टी) हो जाने की क्रिया या भाव, भारमुक्ति।

अवमूल्य *पुं.* (तत्.) वाणि. 1. अंकित मूल्य से कम मूल्य। 2. पूर्व की अपेक्षा कम मूल्य।

अवमूल्यन *पुं.* (तत्.) 1. अर्थ. किसी देश की मुद्रा के मूल्य का दूसरे देश की मुद्रा की तुलना में घटा दिया जाना, मुद्रा के विनिमय मूल्य या सापेक्ष मूल्य का कम हो जाना 2. (किसी वस्तु आदि के) मूल्य, मान, महत्व या सार्थकता का ह्रास हो जाना।

अवमोचन *पुं.* (तत्.) 1. मुक्त करने की क्रिया या स्थिति, 2. बंधन ढीला करने का भाव 3. छोड़ देना, रिहाई।

अवमोटन *पुं.* (तत्.) आयु. 1. मांसपेशियों में रुक रुककर होने वाली पीड़ायुक्त ऐंठन। 2. पैर की पिंडलियों में पुन: पुन: होने वाली ऐंठन clonus टि. इस क्रिया में मांसपेशियों सिकुडकर जम गई सी प्रतीत होती हैं तथा उन्हें पूर्वस्थिति में लाने का प्रयास करने में असह्य पीड़ा होती है।

अवयव *पुं.* (तत्.) 1. किसी वस्तु, तथ्य, अपराध आदि की संरचना के घटक, अंग या तत्व component 2. विधि. किसी अपकृत्य को अपराध मानने के लिए उसके आवश्यक संघटक

3. गणि. किसी ज्यामितीय आकृति का मूलभूत अंग जैसे- त्रिभुज या आयत की कोई भुजा या किसी वास्तविक संख्या- समुच्चय की कोई संख्या। element

अवयवशः *क्रि.वि.* (तत्.) एक एक अंग के अनुसार, एक एक भाग के अनुसार, एक एक खंड या टुकड़े के अनुसार, प्रत्येक इकाई के अनुसार क्रमशः।

अवयवार्थ *पुं.* (तत्.) शब्द की प्रकृति और प्रत्यय से निकलने वाला अर्थ।

अवयवी *वि.* (तत्.) वह संपूर्ण सत्ता जिसका एक या एकाधिक अवयव, अंग या संघटक हो, अंगी।

अवयस्क *वि.* (तत्.) जो वयस्क न हो, नाबालिग अप्रौढ़, अप्राप्तवय, सामान्यतः 18 वर्ष से कम उम्र का व्यक्ति। minor

अवर *वि.* (तत्.) 1. उम्र से छोटा 2. पद में निचले क्रम का जैसे- 'अवर सचिव' under secretary 3. निम्न (जैसे 'निम्न सदन'), जो वरीय या श्रेष्ठ न हो, निम्नस्तरीय, निचली कोटि का जैसे- अवर दंड न्यायालय।

अवर सचिव *पु.* (तत्.) सचिवालय में सचिव की अधिकारिता के अंतर्गत कनिष्ठ पदाधिकारी। under secretary

अवरक्त *पु.* (तत्.) ऐसा विद्युत्चुंबकीय विकिरण जिसका तरंग सौंदर्य लाल रंग के प्रकाश की अपेक्षा अधिक हो, किंतु सूक्ष्म-तरंगों की अपेक्षा कम हो टि. इस प्रकार के विकिरण से संबंधित। infrared

अवरक्त विकिरण *पु.* (तत्.) भौ. वह अदृष्ट विकिरण जो दृश्य स्पेक्ट्रम के बाहर और उसके लाल किनारे से सटा होता है और जिसमें ऊर्जा मुख्यतः ऊष्मा के रूप में होती है infrared radiation तु. पराबैंगनी विकिरण ।

अवरज *पुं.* (तत्.) नीच कुल में उत्पन्न मनुष्य पर्या. अंत्यज।

अवरत *वि.* (तत्.) 1. विरत, जो लगा न हो 2. स्थिर 3. अलग *पुं.* (तद्.) दे. आवर्त ।

अवरतः *क्रि.वि.* (तत्) 1. पीछे की ओर 2. पीछे की ओर से 3. निम्न (कोटि) से, नीचे से (ऊपर की ओर)।

अवरति *स्त्री.* (तत्.) 1. विरति, विराम 2. छुटकारा, निवृत्ति।

अवरा *स्त्री.* (तत्.) 1. दुर्गा 2. दिशा 3. हाथी का पिछला हिस्सा।

अवरार्ध *पुं.* (तत्.) निचला आधा, पिछला आधा। टि. उत्तरार्ध।

अवरावर *वि.* (तत्.) अवरों में भी अवर, निम्नों में भी निम्न, घटिया।

अवरुद्ध *वि.* (तत्.) 1. रोका या रुँधा हुआ 2. छिपा 3. अवरोधित, रुका 4. आच्छादित प्रयो. भावातिरेक से उसका गला अवरुद्ध हो गया था।

अवरूढ़ *वि.* (तत्.) 1. ऊपर से नीचे आया हुआ 2. उतरा हुआ 3. उखड़ा हुआ।

अवरूप *वि.* (तत्.) 1. कुरूप 2. विरूप, भद्दी आकृति वाला, विकृत स्वरूप वाला *पुं.* विकृत रूप।

अवरेखन *स.क्रि.* (तत्.) 1. उरेहना 2. रेखांकन करना 3. चित्रित करना।

अवरेखी *स्त्री.* (तत्.) अवरेखित, लिखित, अंकित, अंकित, चित्रित, आकारित।

अवरेब *वि.* (फा.) टेढ़ा, वक्र, टेढ़ा कटा हुआ (कपड़ा), कुटिल (व्यवहार), लाक्ष. चालाकी से युक्त *पुं.* टेढ़ापन, वक्रता, कुटिलता, चालाकी।

अवरेबदार वि. (फा.) औरेब से युक्त दे. अवरेब।

अवरोक्त *वि.* (तत्.) 1. बाद में कहा गया, निम्नोक्त 2. जिसका उल्लेख बाद में हुआ हो।

अवरोचक *पुं.* (तत्.) एक रोग जिसमें भोजन के प्रति अरुचि हो जाती है।

अवरोध *पुं.* (तत्.) 1. रुकावट, बाधा, रोक 2. घेर लेना 3. दबाव 4. बंद करना।

अवरोधक *वि.* (तत्.) 1. रोकने वाला, रोधक 2. घेरने वाला *पुं.* 1. पहरेदार 2. रोक 3. घेरा 4. बाड़।

अवरोधन *पुं.* (तत्.) अवरोध करने की क्रिया या भाव, रोकना, दबाना अवरुद्ध करना, सेंसर करना खेल. 1. पास, किक या प्रहार को रोकना अथवा उसकी दिशा में परिवर्तन करना 2. विरोधी खिलाड़ी की बढ़त में बाधा डालना।

अवरोधवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. बाधा डालने की प्रवृत्ति या स्वभाव 2. बाधा प्रस्तुत करने की शैली 3. सोच-समझकर बाधा उत्पन्न करने की योजना।

अवरोधिक *वि.* 1. रोकने वाला 2. घेरने वाला *पुं.* (तत्.) अंतःपुर का प्रहरी।

अवरोधित *वि.* (तत्.) 1. रोका हुआ, बाधित 2. घेरा हुआ।

अवरोधी *वि.* (तत्.) अवरोध करने वाला, रोकने वाला।

अवरोपण *पुं.* (तत्.) 1. उन्मूलन, उखाड़ना 2. नीचे उतारना 3. हटाना।

अवरोपणीय *वि.* (तत्.) 1. उखाड़ने लायक, अस्थिर करने लायक 2. मुक्त करने योग्य। विलो. आरोपणीय।

अवरोपित *वि.* (तत्.) 1. उखाड़ा गया, उखड़ा 2. मुक्त, आरोप मुक्त।

अवरोह *पुं.* (तत्.) 1. उतार-गिराव 2. अधःपतन, अवनति 3. संगीत के स्वरों का उतार 4. पौधे या बेल के मूल से प्रशाखाओं का नीचे की ओर निकलना।

अवरोहक *वि.* (तत्.) गिरने वाला, अवनति करने वाला *पुं.* अश्वगंध।

अवरोहण *पुं.* (तत्.) 1. नीचे की ओर जाना, पतन, गिरना, गिराव 2. रोपण (पौधे का)।

अवरोहना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. नीचे आना, उतरना 2. चढ़ना *स.क्रि.* 1. खींचना, चित्रित करना 2. रोकना, बाड़ बना कर घेरना, रूँधना, छेंकना।

अवरोहशाखी *वि.* (तत्.) जिसकी शाखाएँ नीचे की ओर आ रही हो *पुं.* बरगद का वृक्ष।

अवरोहिणी *स्त्री.* (तत्.) ज्यो. नक्षत्रों के विषम स्थितियों पर पहुँचने के कारण अनिष्ट दशा।

अवरोहित *वि.* (तत्.) 1. गिरने वाला, अवनत 2. हीन।

अवरोही *वि.* (तत्.) ऊपर से नीचे की ओर उतरने वाला।

अवरोहीकर *पुं.* (तत्.) अर्थ. एक विशिष्ट अर्थव्यवस्था के अनुसार बढ़ते हुए कराधान पर लगने वाला अवरोही कर, जैसे- 10 लाख रु. की वार्षिक आय पर यदि 10 प्रतिशत कर लगता है तो इस व्यवस्था में 20 लाख रु. की आय पर इससे कम (7 प्रतिशत या 6 प्रतिशत) कर लिया जाएगा टि. वस्तुतः इससे सरकार को घाटा नहीं प्रत्युत कराधान बढ़ने के कारण लाभ ही होता है तथा करदाता को प्रोत्साहन मिलने के कारण वह आय बढ़ाने का प्रयत्न करता है। regressive tax

अवरोही क्रम *पुं.* (तत्.) किसी सूचीगत स्थिति की उच्चतम से निम्नतम के क्रम में उपस्थिति, जैसे- 4, 3, 2, 1 descending order तु. आरोही क्रम।

अवरोही पात *पुं.* (तत्.) खगो. वह पात जहाँ से ग्रह की गति नीचे की ओर अर्थात् दक्षिण की ओर होती है टि. पृथ्वी की परिक्रमा करते समय चंद्रमा का मार्ग 5 का कोण बनाता है अर्थात् भूमध्य रेखा के और चन्द्र मार्ग के बीच 5 का कोण बनता है, ऐसी स्थिति में दोनों काल्पनिक वलय एक-दूसरे को दो बिंदुओं पर काटते हैं, एक बिंदु से चंद्रमा ऊपर (उत्तर) की ओर जाता हैं तथा दूसरे बिंदु से पुनः दक्षिण की ओर आने लगता है, पहला बिंदु (पात या नोड) 'आरोही पात' कहा जाता है तथा दूसरा बिंदु 'अवरोही पात' कहलाता है, इन्हें ही भारतीय ज्योतिष में क्रमशः राहु और केतु नाम दिए गए हैं। descending node

अवरोही श्रेढ़ी *स्त्री.* (तत्.) गणि. वह श्रेणी जिसमें क्रमागत संख्याओं का मान क्रमशः कम होता

जाए जैसे- descending series विलो. आरोही श्रेढी।

अवरोही श्रेणी *स्त्री.* (तत्.) दे. अवरोही श्रेढी ।

अवरोही स्वर *पुं.* (तत्.) संगी. गायन क्रिया का तृतीय प्रकार जिसमें स्वरों का क्रमशः उतार होता है, जैसे- नि ध प म ग रे सा तु. आरोही स्वर।

अवर्ग *वि.* (तत्.) जिसका कोई वर्ग, समूह या श्रेणी न हो।

अवर्गित *वि.* (तत्.) 1. जो किसी वर्ग में न हो 2. जिसका वर्गीकरण न हो पाया हो।

अवर्ण *वि.* (तत्.) 1. बिना रंग का, रंगहीन 2. बदरंग 3. वर्ण-धर्म रहित 4. घटिया *पुं.* 1. अकार, अक्षर 'अ' 2. अपशब्द।

अवर्णक *पुं.* (तत्.) भौ. विभिन्न रेचक वर्णों में विच्छेदित किए बिना प्रकाश का अपवर्तन कर सकने में समर्थ जीव. प्राणी या पादप के प्राकृतिक रंग के कारक पदार्थ का न होना जैसे- अवर्णक प्रिज्म। achromatic

अवर्ण्य *वि.* (तत्.) 1. जो वर्ण्य न हो, जिसका वर्णन न किया जा रहा हो या न किया जाने वाला हो, जो वर्णनीय न हो 2. जो उपमेय न हो।

अवर्तन *पुं.* (तत्.) 1. जीविका का अभाव, जीविका का न होना 2. न रहना, न होना *पुं.* दे. आवर्तन ।

अवर्तमान *वि.* (तत्.) 1. जो वर्तमान न हो 2. अनुपस्थित, अप्रस्तुत, अविद्यमान 3. भूत या भविष्यत्।

अवर्तुलित *वि.* (तत्.) जो गोलाकार न हो भाषा. स्वरों के उच्चारण की वह विशेषता जिसमें पश्च स्वरों को बिना होंठ गोल किए बोला जाता है जैसे- फ्रांसीसी भाषा में u का उच्चारण अवर्तुलित है, अर्थात् ऊ का उच्चारण ई की तरह फैले हुए होठों से किया जाता है। un-rounded

अवर्धमान *वि.* (तत्.) जो बढ़ न पा रहा हो, जिसका विकास रुक गया हो।

अवर्षण *पुं.* (तत्.) 1. वर्षा का अभाव, अनावृष्टि, सूखा।

अवलंघन *पुं.* (तत्.) दे. उल्लंघन ।

अवलंब *पुं.* (तत्.) 1. आश्रय, आधार, सहारा 2. परिशिष्ट।

अवलंबन *पुं.* (तत्.) 1. आश्रय, सहारा, आधार 2. छड़ी।

अवलंबित *वि.* (तत्.) आश्रित, (किसी) सहारे पर स्थित, टिका हुआ, निर्भर।

अवलंबी *वि./पुं.* (तद्.) 1. सहारा लेने वाला 2. आश्रय लेने वाला 3. पालने वाला, आश्रयी 4. शरणागत।

अवलक्ष *वि.* (तत्.) शुभ्र, श्वेत, उजला (पक्ष) पर्या. पर्या. वलक्ष।

अवलग्न *वि.* (तत्.) 1. (नीचे या साथ) लगा हुआ, मिला हुआ 2. संबंध रखने वाला *पुं.* शरीर का मध्य भाग, कमर।

अवलि *स्त्री.* (तत्.) दे. अवली।

अवलिप्त *वि.* (तत्.) 1. लीन, लगा हुआ 2. लेपा या पोता हुआ, 3. आसक्त 4. घमंडी, अभिमानी।

अवलिप्तता *स्त्री.* (तत्.) 1. अवलित होने का भाव भाव या स्थिति, लीनता, मग्नता 2. अहंकार 3. मोह।

अवलिप्ति *स्त्री.* (तत्.) दे. अवलिप्तता।

अवली *स्त्री.* (तत्.) 1. पंक्ति, पाँत, लाइन, श्रेणी 2. नवान्न के लिए खेत से काट कर लाया गया कुछ अंश।

अवलीक *वि.* (तद्.) 1. अपराधशून्य, पापशून्य, निष्पाप 2. शुद्ध, पवित्र 3. दोषरहित।

अवलुंचन *पुं.* (तत्.) 1. (जड़ से) उखाड़ना, नोचना 2. काटना 3. छेदना।

अवलुंचित *वि.* (तत्.) 1. (जड़ से) उखाड़ा हुआ 2. कटा हुआ 3. नोचा हुआ 4. छेदा हुआ।

अवलुंठन *पुं.* (तत्.) 1. लोटना, लुढ़कना 2. किसी का धन लूट लेना।

अवलुंठित *वि.* (तत्.) जो लुढ़क गया हो, लुटा हुआ।

अवलेखन *पुं.* (तत्.) खोदना, खुरचना या उकेरना, तोड़ना।

अवलेखना *स.क्रि.* (तद्.) 1. खुरचना, खोदना, उकेरना 2. खुरच कर, उकेर कर या खोदकर बनाई गई आकृति।

अवलेखनी *स्त्री.* (तत्.) 1. लेखनी 2. उकेरने का उपकरण, तक्षणी 3. बाल झाड़ने की कंघी।

अवलेखा *स्त्री.* (तत्) 1. रगड़ने का भाव या कार्य कार्य 2. घर्षण के चिह्न 3. चित्रांकन, रेखांकन 3. (व्यक्ति को) सजाना, मेकअप करना।

अवलेप *पुं.* (तत्.) 1. लेप, उबटन, पुताई 2. मरहम 3. मिथ्या/बेकार का अभिमान।

अवलेपन *पुं.* (तत्.) 1. लपेटना, पोतना 2. लेप, उबटन 3. अहंकार, घंमड।

अवलेह *पुं.* (तत्.) 1. चाटने की क्रिया 2. चाटने के लिए बनाई गई औषधि आदि 3. चटनी प्रयो. शारीरिक स्वास्थ्य के लिए शीतकाल में लोग च्यवनप्राश के अवलेह का उपयोग करते है।

अवलेहन *पुं.* (तत्.) 1. जीभ से चाटना 2. चटनी।

अवलोक *पुं.* (तत्.) 1. दृष्टि, दर्शन 2. आलोक।

अवलोकन *पुं.* (तत्.) 1. देखना, विलोकन 2. देख-भाल 3. दृष्टिपात 4. परीक्षण, निरीक्षण, देखभाल।

अवलोकना *स.क्रि.* (तद्.) 1. देखना 2. जाँच करना, अनुसंधान करना

अवलोकनीय *वि.* (तत्.) देखने योग्य, दर्शनीय, ध्यान देने योग्य।

अवलोकित *वि.* (तत्.) 1. देखा हुआ, दृष्ट 2. जाँचा हुआ *पुं.* 1. बुद्‌ध का एक नाम 2. चितवन।

अवलोक्य *वि.* (तत्.) देखने योग्य, अवलोकनीय।

अवलोचना *स.क्रि.* (तत्.) आँखों से दूर करना, निवारण करना।

अवलोप *पुं.* (तत्.) 1. काटना 2. काटकर दूर करना, काटकर अलग करना 3. नष्ट करना।

अवलोभन *पुं.* (तत्.) विषयवासना।

अवलोम *वि.* (तत्.) 1. अपनी तरफदारी करने वाला, अपना पक्ष लेनेवाला 2. उपयुक्त 3. अनुकूल (व्यक्ति)।

अववदन *पुं.* (तत्.) 1. निंदा करना, घटिया बात कहना 2. अपमान (करना)।

अववदित *वि.* (तत्.) सिखाया हुआ, समझाया हुआ *पु.* अपवचन।

अववाद *पुं.* (तत्.) 1. बुराई, निंदा 2. अनादर, अवज्ञा 3. सहारा, भरोसा।

अववैतनिक *वि.* (तत्.) कम वेतन पाने वाला। underpaid

अवश *वि.* (तत्.) 1. बेबस, विवश, परवश, लाचार 2. मुक्त, स्वतंत्र।

अवशता *स्त्री.* (तत्.) विवशता, बेबसी, लाचारी।

अवशयन *पुं.* (तत्.) कृषि. नाइट्रोजन की अधिकता, भारी वर्षा, तेज हवा आदि के कारण कटाई से पहले खेत में खड़ी फसल का धरती पर पसर जाना crop-lodging

अवशिष्ट *वि.* (तत्.) 1. शेष, बाकी, बचा हुआ, बचा-खुचा 2. उत्तरजीवी *पुं.* बचा अंश।

अवशिष्ट पर्वत *पुं.* (तत्) भूगर्भ 1. वर्षा या भूकंप या अन्य कारणों से हुए अपरदनों के पश्चात् बचे पहाड़ों का भाग।

अवशिष्ट मूल्य *पुं.* (तत्.) वाणि. 1. पट्टे की अवधि की समाप्ति पर मशीन या अन्य उपस्कर का बचा-खुचा मूल्य 2. किसी परिसंपत्ति के उपयोगिता काल की समाप्ति पर उसे बेचकर मिल सकने वाली रकम residual value, scrap value

अवशिष्ट राशि *स्त्री.* (तत्.) अग्रेनीत राशि।

अवशिष्ट शक्ति (अधिकार) *पु.* (तत्.) विधि. संविधान में सूचीबद्ध अधिकारों के अतिरिक्त उन विषयों में कानून बनाने का अधिकार जिसका उल्लेख संविधान में नहीं हुआ हो। residuary power

अवशीर्ण *वि.* (तत्.) टूटा-फूटा, छिन्न-भिन्न, नष्ट।

अवशीर्ष *वि.* (तत्.) 1. जिसका सिर झुका हो, नत-मस्तक 2. औंधा।

अवशेष *पुं.* (तत्.) 1. वस्तु का शेष भाग 2. अंत, समाप्ति *वि.* बचा हुआ, समाप्त, अवशिष्ट।

अवशेषांग *पु.* (तत्.) प्राणि. शरीर के ह्रासमान अंग का अवशिष्ट दृष्ट रूप जैसे- मनुष्य का उंडुकपुच्छ appendix

अवशेषी *वि.* (तत्.) प्राणि. अवशेषांग के रूप में विद्यमान।

अवशोषक *वि.* (तत्.) सोख लेने वाला दे. 'अवशोषण' पुं. सोख लेने वाली वस्तु। absorbent

अवशोषकता *स्त्री.* (तत्.) किसी पदार्थ की किसी विशिष्ट तरंगदैर्घ्य के प्रकाश को सोख लेने की क्षमता। absorbence

अवशोषण *पुं.* (तत्.) भौति./रसा. अवचूषण, किसी वस्तु द्वारा किसी अन्य वस्तु (या ऊर्जा) को इस इस प्रकार सोख लेना कि अवशोषित वस्तु (या ऊर्जा) अवशोषक वस्तु में समाविष्ट हो जाए वाणि. खर्च की किसी मद या वस्तु की कीमत में संभावित वृद्धि को पहले से विद्यमान किसी मद में खपा लेना। absorption

अवश्यंभाविता *स्त्री.* (तत्.) अवश्य होने का भाव या स्थिति।

अवश्यंभावी *वि.* (तत्.) जो अवश्य होने वाला हो, अटल।

अवश्य *क्रि.वि.* (तत्.) 1. आवश्यक मानकर 2. अनिवार्य रूप से *वि.* जो वश में न हो सके, जो वश में न हो।

अवश्यकरणीय *वि.* (तत्.) अनिवार्य रूप से किया जाने वाला (कार्य), आदेशात्मक, अत्यंत आवश्यक, अनुल्लंघनीय।

अवश्यमेव *क्रि.वि.* (तत्.) अवश्य ही, निस्संदेह।

अवश्या *स्त्री.* (तत्.) वश में न रहने वाली स्त्री, स्वैरिणी।

अवश्याय *पुं.* (तत्.) 1. ओस, पाला, कुहरा, हिम 2. अभिमान।

अवश्रव्य *वि.* (तत्.) सुनने की मानवीय शक्ति के निम्नतम स्तर (16 आवर्तन प्रति सेकेंड) तु. पराश्रव्य। infra-sonic

अवश्रव्य तरंगें *स्त्री.* (तत्.) वे ध्वनि तरंगें जिनकी आवृत्ति मानव की श्रव्यता की निचली सीमा से कम हो। infra-sonic

अवष्टंभ *पुं.* (तत्.) 1. सहारा, आश्रय, खंभा 2. रुक जाना, खड़ा होना 3. रोक, बाधा 4. पक्षाघात 5. स्तब्धता 6. उद्दंडता।

अवष्टंभन *पुं.* (तत्.) 1. सहारा लेना या सहारा देना 2. रुकना, स्थिर होना 3. अभिवेचन करना, सेंसर करना।

अवष्टब्ध *वि.* (तत्.) 1. आश्रित, जिसे सहारा मिला हो 2. रोका हुआ, बाधित 3. जो जड़ बना दिया गया हो 4. पराभूत।

अवसंडीन *पुं.* (तत्.) नीचे की दिशा में (पक्षियों की) सामूहिक उड़ान।

अवसंबंध *पुं.* (तत्.) मनो. किसी मुख्य समुच्चय के उप-समुच्चय होने की स्थिति पुस्त. मुख्य क्रम का आंशिक क्रम। sublimation

अव-संरचना *स्त्री.* (तत्.) किसी समाज या उद्यम के कार्यनिर्वाह या संचालन के लिए आधारभूत भौतिक और संगठनात्मक संरचना जैसे- भवन, सड़कें, बिजली आदि।

अवस *पुं.* (तत्.) रक्षाकर्ता 1. राजा 2. सूर्य 3. अर्क, मदार 3. नाश्ता *वि.* (तद्.) 1. अवश्य 2. विवश, लाचार।

अवसक्त *पुं.* (तत्.) लगा हुआ, संलग्न *पुं.* लगाव, संलग्नता, संबद्धता।

अवसक्ष *पुं.* (तत्) 1. आवास 2. बस्ती 3. छात्रावास, 4. मठ, विहार, आश्रम।

अवसन्न *वि.* (तत्.) 1. सुन्न, स्तब्ध 2. सुस्त, बेदम, आलसी 3. विषाद्ग्रस्त 4. निष्कासित 5. विनाशोन्मुख।

अवसन्नता *स्त्री.* (तत्.) 1. विषादता, दुःख 2. आलस्य, कार्य करने की अनिच्छा 3. विपत्ति, विनाश।

अवसर *पुं.* (तत्.) 1. मौका, 2. सुयोग 3. लाभप्रद स्थिति 4. समय, काल 5. अवकाश 6. स्थान मुहा. अवसर आना- अनुकूल समय होना; अवसर चूकना- उपयुक्त समय खो देना; अवसर निकल जाना- उपयुक्त समय का बीत जाना; अवसर मारा जाना- उपयुक्त समय गंवा देना।

अवसर-प्राप्त *वि.* (तत्.) 1. अवकाश प्राप्त 2. कार्यमुक्त, सेवामुक्त 3. कार्यकृत।

अवसरवाद *पुं.* (तत्.) (सिद्धांतों या परिणामों पर पूरा ध्यान न देकर) विद्यमान अवसर का पूरा लाभ उठाने की कला, नीति या क्रिया।

अवसरवादिता *स्त्री.* (तत्.) दे. अवसरवाद ।

अवसरवादी *वि.* (तत्.) अवसरवाद का पालन करने वाला, समय के अनुसार अपने सिद्धांत को बदलने वाला, अवसर का लाभ उठाने वाला, अपने लाभ के लिए उपयुक्त समय की ताक में रहने वाला।

अवसरानुकूल *वि.* (तत्.) अवसर के अनुसार स्थान, काल, पात्र को देखते हुए उनके अनुसार पत्र. सामयिक घटनाक्रम के अनुसार।

अवसर्ग *पुं.* (तत्.) 1. काम करने के लिए स्वतंत्र छोड़ देना 2. शिथिल करना।

अवसर्जन *पुं.* (तत्.) किसी विधि (कानून) की बाध्यता या शपथगत कर्तव्य से मुक्ति।

अवसर्प *पुं.* (तत्.) 1. खुफिया, जासूस 2. अचानक गिरावट की स्थिति।

अवसर्पण *पुं.* (तत्.) 1. अधोगमन, अध:पतन 2. विवर्तन 3. कीमत या आर्थिक क्रियाकलाप में लगातार गिरावट रहना1

अवसर्पिणी *स्त्री.* (तत्.) जैन. काल का एक भेद जिसमें रूप, बल, आयु क्रमशः अवसर्पित (घटते) होते जाते हैं। अर्थात् न्यून होते जाते हैं तु. उत्सर्पिणी।

अवसर्पी *वि.* (तत्.) नीचे की दिशा में जाने वाला, उतरने की स्थिति में गति करने वाला।

अवसाद *पुं.* (तत्.) 1. विषाद 2. आशा या उत्साह का अभाव 3. थकावट 4. कमजोरी, दीनता 5. नाश 6. भय 7. तलछट, गाद।

अवसादक *वि.* (तत्.) 1. अवसाद उत्पन्न करने वाला 2. असफल कर देने वाला 3. शामक 4. क्षीण करने वाला।

अवसादन *पुं.* (तत्.) 1. क्षय, नाश ध्वंस 2. हतोत्साहित होने की अवस्था, शिथिलन 3. कार्य न कर पाने की स्थिति 4. तलछट का इकट्ठा होना।

अवसादी *वि.* (तत्.) 1. अवसादयुक्त 2. शिथिल, हतोत्साहित 2. तलछट जमा होते रहने के कारण निर्मित जैसे- चट्टानें।

अवसादी मृत्तिका *स्त्री.* (तत्.) भू.वि. प्रवाह में लाई गई और नीचे जमी हुई नदियों द्वारा बहाकर लाई गई मिट्टी sedimentary clay

अवसादी शैल *पुं.* (तत्.) भूवि. अवसादों के संचयन द्वारा निर्मित शैल जो विभिन्न मापों के के शैलखंडों, जीवोत्पादों तथा रासायनिक क्रिया-जन्य पदार्थों का मिश्रण होते हैं sedimentary rock

अवसान *पुं.* (तत्.) 1. समाप्ति, अंत 2. सायंकाल 3. मृत्यु प्रयो. लंबी बीमारी के बाद उनके संघर्षमय जीवन का अवसान हो गया।

अवसामान्य *वि.* (तत्.) सामान्य से निचली कोटि का। sub-normal

अवसारण *पुं.* (तत्.) 1. हटाना 2. खिसकाना।

अवसिक्त *वि.* (तत्.) 1. जिस पर पानी छिड़का गया हो, सिंचित, सींचा हुआ 2. भीगा हुआ, आर्द्र, गीला।

अवसित *वि.* (तत्.) जिसका अवसान या समापन हो गया हो।

अवसीयती *वि.* (तत्.) विधि. 1. बिना वसीयत का, जिसके विषय में वसीयत न की गई हो 2. (वह मृतक) जिसने मरने से पूर्व कोई इच्छापत्र (विल) न लिखा हो, इच्छापत्र-रहित पर्या. निर्वसीयती।

अवसूलीय *पुं.* (तत्.) वाणि. ब्याज, ऋण, कर, शुल्क आदि की वह राशि जिसे वसूल कर सकना संभव न हो, अशोध्य, लावसूल।

अवसृष्ट *वि.* (तत्.) 1. त्यागा हुआ, त्यक्त 2. दिया गया, दत्त।

अवसेक *पुं.* (तत्.) सिंचन, छिड़काव, पौधों पर पानी डालने की प्रक्रिया।

अवसेचन *पुं.* (तत्.) 1. सिंचन, पानी छिड़कना या डालना, सींचना 2. पसीजना 3. स्वेदन, वह प्रक्रिया जिसमें रोगी के शरीर से पसीना निकाला जाता है।

अवसेर *स्त्री.* (तद्.) 1. अटकाव, उलझन 2. देर, विलंब।

अवसेरना *स.क्रि.* (तत्.) 1. तंग करना, परेशान करना 2. उलझना 3. दुख देना, कष्ट देना 4. रुकना 5. विश्राम करना *अ.क्रि.* देर लगाना।

अवस्कंद *पुं.* (तत्.) 1. सेना के ठहरने का स्थान, शिविर, छावनी 2. जनवासा 3. आक्रमण।

अवस्कंदक *पुं.* (तत्.) आक्रमण करने वाला व्यक्ति, रास्ते चलते लोगों को मारने-पीटने वाला।

अवस्कंदन *पु.* (तत्.) दे. अवस्कंद ।

अवस्कंदित *वि.* (तत्.) 1. आक्रांत 2. नीचे गिरा हुआ 3. अशुद्‌ध, गलत 4. स्नात।

अवस्कर *पुं.* (तत्.) 1. कूड़ा-कर्कट, मलमूत्र, मल, विष्ठा 2. बटोरना।

अवस्तर *पु.* (तत्.) निचला स्तर जीव. वह आधार-सतह या पदार्थ जिस पर कोई जीव जीवित रहता है, वृद्‌धि करता है और अशन करता है। substrat

अवस्तरण *पुं.* (तत्.) बिछावन।

अवस्तार *पुं.* (तत्.) परदा, कनात, खेमे के चारों ओर लगाया गया कपड़ा।

अवस्तु *स्त्री.* (तत्.) 1. अपदार्थ, नगण्य या तुच्छ वस्तु *वि.* तुच्छ, हीन, नगण्य।

अवस्त्र *वि.* (तत्.) वस्त्रहीन, निर्वस्त्र, नग्न।

अवस्थांतर *पुं.* (तत्.) 1. अवस्था या दशा का परिवर्तन 2. परिवर्तन के बाद अगली दशा या स्थिति।

अवस्था *स्त्री.* (तत्.) 1. दशा, हालत, स्थिति 2. वय, उम्र 3. चरण (नाट्‌य) 'आरंभ' से लेकर 'फलागम 'तक नाटक के पाँच चरण।

अवस्था चतुष्ट्‌य *पु.* (तत्.) मानव जीवन की चार दशाएँ- बाल्य, कौमार्य, यौवन, वार्ध्क्य।

अवस्थात्रय *पुं.* (तत्.) दर्श. जीव की जागरण, स्वप्न और सुषुप्ति की तीन अवस्थाएँ।

अवस्थाद्वय *पुं.* (तत्.) जीवन की दो अवस्थाएँ- सुख और दुःख।

अवस्थान *पुं.* (तत्.) 1. स्थिति 2. सत्ता 3. स्थान, जगह 4. निवासस्थान 5. रुकने या ठहरने की अवधि, थोड़े से समय के लिए कहीं ठहरना। sojourn

अवस्थापन *पुं.* (तत्.) 1. रखना 2. (स्थान-विशेष में) स्थापित करना 3. निवास-स्थान।

अवस्थित *वि.* (तत्.) 1. स्थित 2. विद्यमान, मौजूद 3. तैयार, तत्पर 4. टिका हुआ, निर्भर।

अवस्थिति *स्त्री.* (तत्.) 1. स्थित होने की अवस्था, अवस्थान 2. सत्ता 3. वर्तमानता, विद्यमानता।

अवस्फीति *स्त्री.* (तत्.) 1. अर्थ. मुद्रा की उपलब्ध मात्रा में अत्यधिक कमी होने के कारण प्रचलित कीमत स्तर के घट जाने की स्थिति। deflation

2. किसी स्फीत (अधिक विस्फारित) वस्तु के संकुचित हो जाने की स्थिति।

अवस्यंदन *पुं.* (तत्.) चूना, रिसना, टपकना।

अवह *वि.* (तत्.) जिसे वहन न किया जा सके, जिसे ढोया न जा सके *पुं.* 1. वह स्थल जिसमें नदी-नाले नहीं बहते हों 2. वह वायु जो आकाश के तृतीय स्कंध में हो, बिना नदी वाला।

अवहट्ठ *स्त्री.* (तत्.) हिंदी का प्रारंभिक रूप, प्राचीन अपभ्रंश (अपभ्रष्ट)।

अवहरण *पुं.* (तत्.) 1. चुरा लेना 2. जबरदस्ती ले लेना 3. अन्यत्र ले जाना 4. युद्ध क्षेत्र से कुछ दूर पीछे शिविर लगाना।

अवहस्त *पुं.* (तत्.) हाथ या हथेली का पृष्ठ, उल्टा हाथ।

अवहार *पुं.* (तत्.) राज. 1. अंतरिम युद्ध विराम, आवधिक शांति truce, armistice तु. संधि 2. सुपुर्दगी, वापस लेना।

अवहार्य *वि.* (तत्.) 1. हटाने के योग्य, वापस लिए जाने के योग्य 2. दंड-योग्य।

अवहास *पुं.* (तत्.) 1. मुस्कुराहट, मुस्कान 2. उपहास, हँसी-मजाक।

अवहास्य *पुं.* (तत्.) बेतुका हास्य, बेढंगा हास्य, विद्रूप हास्य।

अवहित *वि.* (तत्.) 1. अवधानपूर्वक, सावधान 2. एकाग्रचित्त।

अवहित्था *पुं.* (तत्.) 1. पाखंड 2. मन के भावों का गोपन।

अवहृत *वि.* (तत्.) 1. नीचे, आगे या पीछे हटाया गया हुआ 2. चुराया हुआ, हरण किया हुआ।

अवहेलना *स्त्री.* (तत्.) 1. तिरस्कार 2. ध्यान न देना, लापरवाही, उपेक्षा *स.क्रि.* (तद्.) 1. उपेक्षा करना 2. अवज्ञा करना 3. तिरस्कार करना।

अवहेला *स्त्री.* (तत्.) दे. अवहेलना ।

अवहेलित *वि.* (तत्.) जिसकी अवहेलना हुई हो, जिसकी उपेक्षा की गई हो, उपेक्षित, अपमानित, तिरस्कृत।

अवांछनीय तत्व *पुं.* (तत्.) अवसर-विशेष अथवा स्थान-विशेष में अवांछित व्यक्ति, गड़बड़ी फैलाने वाला व्यक्ति, दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति।

अवांछित *वि.* (तत्.) अनिच्छित, जिसकी इच्छा न की गई हो, अनचाहा।

अवांतर *वि.* (तत्.) 1. अंतर्गत, मध्यवर्ती 2. दूसरा, गौण *पुं.* मध्य, भीतर, बीच।

अवांतर दिशा *स्त्री.* (तत्.) दो दिशाओं के बीच की की दिशा या कोण, विदिशा।

अवांतर देश *पुं.* (तत्.) दो देशों के बीच का देश।

अवांतर भूमि *स्त्री.* (तत्.) वह भूमि जिसका स्वामी कोई न हो, अस्वामिक भूमि।

अवांतर भेद *पुं.* (तत्.) भेद के अंदर उपभेद।

अवांतर वाक्य *पुं.* (तत्.) दर्श. 1. मध्यवर्ती या गौण वाक्य 2. वेदांत में अद्वैतपरक महावाक्य की दीक्षा से पूर्व कहे जाने वाले परमात्मा और जीव के स्वरूप का बोधक वाक्य।

अवांतर स्तर *पुं.* (तत्.) भूवि. मोटे निक्षेपों के बीच की पतली सी परत।

अवाँ *पुं.* (देश.) दे. आवाँ/आवा ।

अवाँगार्द *वि.* (फ्रे.) नया, अप्रचलित, प्रयोगात्मक *पुं.* नवकल्पना। Avant-garde

अवाँसी *स्त्री.* (तद्.) फसल काटने के प्रारंभ में पहली बार काटकर लाया गया बोझ या गठ्ठर, जिसका प्रयोग 'नवान्न समारोह' के लिए किया जाता है।

अवाई *स्त्री.* (तद्.) आगमन, आना।

अवाक व्यंजन *पुं.* (तत्.) भाषा. गौण तंत्री के अनुनाद के बिना उच्चरित वाक्ध्वनि।

अवाक् *वि.* (तत्.) 1. (अवाच्) गूंगा, जिसके मुँह से बोल न निकले, मौन, चुपचाप 2. चकित, विस्मित, स्तंभित, स्तब्ध 3. नीचे की ओर, दक्षिण की ओर।

अवाक्य *पुं.* (तत्.) वक्ता की खंडित विचारण प्रक्रिया के कारण उच्चरित या लिखित या खंडित वाक्य जिसमें उपपत्ति की आकांक्षा रहती है non-sentence

अवाङ् *वि.* (तत्.) नीचे की ओर झुका हुआ, अवनत।

अवाङ्मुख *वि.* (तत्.) 1. जिसका चेहरा नीचे की ओर झुका हुआ हो 2. लज्जित 3. नम्र।

अवाची *स्त्री.* (तत्.) 1. दक्षिण दिशा 2. निम्नस्थ लोक।

अवाचीन *वि.* (तत्.) 1. अधोमुख, नीचे गया हुआ 2. मुँह लटकाए हुए 3. लज्जित 4. दक्षिण का, दक्षिणी।

अवाच्य *वि.* (तत्.) जो कहने योग्य न हो, अकथनीय, अकथ्य।

अवाणिज्यिक *वि.* (तत्.) 1. अव्यावसायिक, अव्यापारिक 2. अलाभकारी 3. वाणिज्येतर।

अवात *वि.* (तत्.) 1. वह (स्थान) जहाँ वायु न (बह रही) हो। 2. जहाँ वायु भी न हो, निर्वात।

अवान *वि.* (तत्.) सूखा हुआ, शुष्क।

अवापित *वि.* (तत्.) 1. जिसका वपन न हुआ हो, जो बोया न गया हो 2. रोपित 3. जो काटा हुआ न हो।

अवाम *पुं.* (अर.)आम लोग ('आम' का बहुवचन), जनसाधारण।

अवायवीय श्वसन *पुं.* (तत्.) प्राणि. कुछ जीवाणुओं में श्वसन का वह प्रकार जिसमें ऊर्जा की प्राप्ति के लिए ऑक्सीजन का उपयोग नहीं होता दे. अनॉक्सी श्वसन, अवायु श्वसन विलो. वायवीय श्वसन।

अवायु-जीवन *पुं.* (तत्.) वायु के बिना जीवन कृषि. वायु के अभाव में भी वनस्पति तथा प्राणियों की जीवन-क्रियाओं का चालू रहना तु. वायुजीवन।

अवार *पुं.* (तत्.) नदी के इस पार का तट, पास का किनारा, 'पार' का विपरीतार्थक।

अवारजा *पुं.* (फा.) 1. दैनिक आय-व्यय लिखने की बही 2. संक्षिप्त लेखा 3. संक्षिप्त वृत्तांत।

अवारण *पुं.* (तत्.) निवारण का अभाव, जिसका निषेध न हो टि. अनिषिद्ध।

अवारणीय *वि.* (तत्.) 1. जिसका निवारण न हो सके 2. जिसे रोका न जा सके, अनिवार्य बेरोक 3. जिसमें अवरोध न हो।

अवारपार *क्रि.वि.* (तत्.) आरपार।

अवारित *वि.* (तत्) 1. बाधा-रहित, निर्बाध, अबाध, 2. जो रोका न गया हो, जिसका निषेध न हो 3. जो बंद न हो, खुला।

अवारीण *वि.* (तत्.) (नदी) पार गया हुआ।

अवार्ड *पुं.* (अं.) 1. पुरस्कार, इनाम 2. उपाधि, डिग्री 3. अनुदान, सहायता 4. पंचायत का निर्णय, अधिनिर्णय। award

अवार्य *वि.* (तत्.) दे. अवारणीय ।

अवासा *वि.* (तत्.) नग्न, वस्त्ररहित पुं. दिगंबर जैन।

अवास्तव *पुं.* (तत्.) 1. जो असली न हो, जो वास्तविक या यथार्थ न हो, जो सत्य न हो 2. निराधार 3. मिथ्या।

अवास्तविक *पुं.* (तत्.) 1. जो वास्तव में न हो 2. निराधार 3. आभासी 4. मिथ्या।

अवास्तविक बिंब *पुं.* (तत्.) भौ. प्रकाश के परावर्तन से बनने वाला प्रतिबिंब, जिसमें परावर्तित किरणों का आभास मात्र होता है, आभासी बिंब तु. वास्तविक बिंब।

अवाहन *वि.* (तत्.) 1. जिसके पास वाहन न हो 2. जो सवारी पर न बैठा हो।

अवि *पुं.* (तत्.) 1. भेड़ा, मेंढा, मेष 2. बकरा, अज 3. पर्वत 4. सूर्य *स्त्री.* भेड़, भेड़ी।

अविकच *वि.* (तत्.) अस्फुट, अविकसित, बंद।

अविकत्थ *वि.* (तत्.) जो शेखी न मारता हो।

अविकत्थन *पुं.* (तत्.) शेखी *वि.* दे. अविकत्थ।

अविकल *वि.* (तत्.) 1. ज्यों का त्यों, जो विकल अर्थात् अंगहीन या खंडित न हो, पूरा, पूर्ण, यथावत विलो. विकल।

अविकल्प *पुं.* (तत्.) 1. संदेह का अभाव 2. विकल्प का अभाव 3. निश्यचयात्मक स्थिति *वि.* विकल्प रहित, निश्चित।

अविकल्पी *वि.* (तत्.) जिसका कोई विकल्प न हो, विकल्परहित।

अविकल्पी परजीवी *पुं.* (तत्.) प्राणि. केवल जीवित कोशिका-द्रव्य से पोषण प्राप्त कर सकने वाला जीव, जिसके जीवित रहने का कोई अन्य साधन नहीं होता *तु.* विकल्पी परजीवी।

अविकसित *वि.* (तत्) 1. जो विकसित न हुआ हो 2. न खिला हुआ (फूल या कली), अधखिला।

अविकसित देश *पुं.* (तत्.) दे. विकासशील देश, अल्पविकसित देश ।

अविकार *वि.* (तत्.) जिसमें विकार न हो, विकार-रहित, निर्दोष, दोषरहित *पुं.* विकार के न होने की स्थिति या भाव विलो. सविकार, विकार।

अविकारी *वि.* (तत्.) 1. जिसमें विकार न हो, विकारहीन, निर्विकार 2. जो किसी का विकार न हो विलो. विकारी।

अविकार्य *वि.* (तत्) 1. जिसमें विकार उत्पन्न न हो सकता हो 2. अपरिवर्तनीय, नित्य, शाश्वत।

अविकृत *वि.* (तत्.) जो बिगड़ा या बदला न हो, जो ज्यों का त्यों हो विलो. विकृत।

अविकृति *स्त्री.* (तत्.) विकार का अभाव, मूल प्रकृति विलो. विकृति।

अविक्रम *वि.* (तत्.) शक्तिहीन, दुर्बल, कमजोर *पुं.* भीरुता, कमजोरी, दुर्बलता विलो. विक्रम।

अविक्रय *पुं.* (तत्.) बिक्री का न होना विलो. विक्रय।

अविक्रांत *वि.* (तत्.) 1. जिससे अधिक बढ़ा हुआ (कोई) न हो 2. अतुलनीय, अनुपम 3. दुर्बल, कमजोर, शक्तिहीन विलो. विक्रांत।

अविक्रेय *वि.* (तत्.) जो विक्रय या विपणन के योग्य न हो, जो बिक्री के लिए न हो विलो. विक्रय।

अविक्षत *वि.* (तत्.) 1. जिसकी क्षति न हुई हो, किसी प्रकार की हानि न हुई हो 2. पूरा, पूर्ण, समग्र विलो. विक्षत।

अविक्षिप्त *वि.* (तत्.) 1. जो विक्षिप्त न हो, जो पागल या घबराया न हो 2. एकाग्रचित्त 3. जो फेंका हुआ न हो विलो. विक्षिप्त।

अविगत *वि.* (तत्.) 1. जो विगत न हो, जो गया या बीता न हो 2. जो जाना न जाए, अज्ञात 3. अनिर्वचनीय।

अविगति *स्त्री.* (तत्.) 1. अविगत होने का भाव, अज्ञानता 2. जिसकी गतिविधि अज्ञात हो।

अविग्रह *वि.* (तत्.) 1. बिना शरीर वाला, अशरीरी, अमूर्त 2. स्पष्ट रूप से ज्ञान न होने वाला 3. विग्रह-हीन, निर्विवाद पुं. 1. परब्रह्म परमात्मा 2. आत्मा व्या. वह समास जिसका विग्रह न हो सकता हो, नित्य समास।

अविघात *वि.* (तत्.) व्याघात या बाधा-रहित *वि.* निर्विघ्न *पुं.* विघ्न का न होना।

अविघ्न *वि.* (तत्) जिस (कार्य आदि) में कोई विघ्न न हो, बिना विघ्न के, निर्विघ्न।

अविचल *वि.* (तत्.) जो विचलित न हो, स्थिर, अटल।

अविचलित *वि.* (तत्.) दे. अविचल ।

अविचार *पुं.* (तत्.) 1. विचारहीनता, विचार का अभाव 2. अज्ञान, नासमझी, अविवेक 3. विचार *वि.* बिना विचारा हुआ, विवेक-रहित।

अविचारित *वि.* (तत्.) बिना विचारा हुआ, जिसके विषय में विचारा न गया हो विलो. विचारित।

अविचारित तिथिनिर्धारण *पुं.* (तत्.) बिना सर्वमान्य आधार के किसी वस्तु, स्थान, रचना, रचनाकार, घटना आदि का समय निश्चित करना।

अविचारी *वि.* (तत्.) विचारहीन, अविवेकी, कुविचारी, उचित-अनुचित का विचार न रखने वाला, नासमझ विलो. सुविचारी।

अविचार्य *वि.* (तत्.) जिस पर विचार करने की आवश्यकता न हो, जो विचार के योग्य नहीं हो।

अविच्छिन्न *वि.* (तत्.) 1. अविच्छेदित 2. अविभक्त 3. जो टूटा हुआ न हो, अटूट 4. लगातार विलो. विच्छिन्न।

अविच्छेद *पुं.* (तत्.) विच्छेद न होने की स्थिति, निरंतरता *वि.* जिसका विच्छेद न हो, अविच्छिन्न विलो. विच्छेद।

अविच्युत *वि.* (तत्.) 1. जो अपने स्थान से भ्रष्ट न हो 2. शाश्वत, नित्य।

अविजित *वि.* (तत्.) जो जीता न जा सका हो, जिसे कोई हरा न सका हो, जिसपर जीत हासिल न हुई हो 1. खेल. (क्रिकेट में एकदिवसीय मैच की समाप्ति या टेस्ट मैच की पारी समाप्त होने पर खेल रहा बल्लेबाज) जो विपक्षी दल द्वारा आउट न किया जा सका हो, not out वह दल जो अन्य दलो को पराजित करता हुआ शीर्ष स्थान प्राप्त कर ले।

अविजेय *वि.* (तत्.) जिसे विजित न किया जा सके, जिसे जीतना असंभव हो।

अविज्ञ *वि.* (तत्.) 1. अशिक्षित, विद्वत्ताहीन 2. अनजान, अनभिज्ञ, अनाड़ी विलो. विज्ञ, सुविज्ञ।

अविज्ञता *स्त्री.* (तत्.) अज्ञान, अनजानापन, अनभिज्ञता विलो. विज्ञता, सुविज्ञता।

अविज्ञात *वि.* (तत्.) 1. जिसे अच्छी तरह से न जाना गया हो 2. जो जाना-समझा न हो, अनजाना, अज्ञात 3. संदिग्ध, अस्पष्ट 4. गुप्त 5. परमेश्वर, विष्णु विलो. विज्ञात, सुविज्ञात।

अविज्ञाता *वि.* (तत्.) 1. जो अच्छी तरह जानकारी न रखता हो, जो विज्ञ न हो 2. जिससे बढ़कर ज्ञान कोई न रखता हो, परमात्मा।

अविज्ञेय *वि.* (तत्.) 1. जिसे जाना न जा सके, समझ में न आने वाला परमात्मा 2. अप्रकट 3. गुह्य 4. परमात्मा, परमेश्वर।

अविडीन *पुं.* (तत्) पक्षियों की सामान्य उड़ान।

अवितथ *वि.* (तत्.) 1. जो वितथ अर्थात् झूठ या मिथ्या न हो, सच्चा 2. सकल, संपूर्ण।

अवित्त *वि.* (तत्.) 1. वित्त-विहीन, धनहीन 2. उपलब्ध।

अवित्ति *स्त्री.* (तत्) अवित्त होने का भाव या स्थिति, गरीबी।

अविद *वि.* (तत्.) 1. अनजान 2. मूर्ख।

अविदग्ध *वि.* (तत्.) 1. अधजला 2. अधकचरा 3. जो जला न हो 4. जो विदग्ध या बुद्धिमान न हो, अपंडित, अशिक्षित 5. मूर्ख, गंवार।

अविदित *वि.* (तत्.) 1. जो विदित न हो, अज्ञात, अप्रकट 2. गुप्त *पुं.* परमेश्वर विलो. विदित।

अविदूर *वि.* (तत्.) जो दूर न हो, निकटस्थ *पुं.* निकटता, समीपता।

अविद्ध *वि.* (तत्.) जो बेधा न गया हो, जिसमें छिद्र न किया गया हो।

अविद्य *वि.* *(तत्.)* 1. अशिक्षित, विद्याविहीन, अनपढ़, *पुं.* 1. मूर्ख 2. भ्रम, माया।

अविद्यमान *वि.* (तत्.) जो विद्यमान न हो, जो सामने न हो, अप्रकट, अनुपस्थित, जो न हो विलो. विद्यमान।

अविद्या *स्त्री.* (तत्.) 1. विद्या या (सम्यक्) ज्ञान ज्ञान का अभाव 2. अज्ञान (योग के वर्णित पाँच क्लेशों में से एक), अविवेक, मिथ्या ज्ञान 3. मोह, माया 4. सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति।

अविद्याकृत *वि.* (तत्.) अविद्या से उत्पन्न, अविद्याजन्य।

अविद्याच्छन्न *वि.* (तत्.) जो अविद्या से आच्छन्न या घिरा हुआ हो।

अविद्याजन्य *वि.* (तत्.) दे. अविद्याकृत ।

अविद्यानाश *पुं.* (तत्.) दर्श. 1. अज्ञान या अविवेक का विनाश, विवेक का प्रादुर्भाव 2. शरीर-बंधन से छुटकारा।

अविद्यामय *वि.* (तत्.) अविद्या से भरा हुआ।

अविद्वत्ता *स्त्री.* (तत्.) विद्वत्ता का अभाव, मूर्खता, अज्ञान।

अविद्वान *वि.* (तत्.) 1. जो विद्वान न हो 2. मूर्ख, अपंडित 3. शास्त्र-ज्ञान से रहित विलो. विद्वान।

अविधवा *वि.* (तत्.) जो विधवा न हो, सधवा, सुहागिन।

अविधा *स्त्री.* (तत्.) विधा का न होना, प्रकार हीनता।

अविधान *पुं.* (तत्.) 1. विधि-विधान के विरुद्ध 2. कार्य विधान का अभाव 3. असंपादन अथवा कार्यान्वयन न करने की स्थिति *वि.* अवैध, विधि-विपरीत, अवैधानिक।

अविधि *वि.* (तत्.) विधि-विरुद्ध, अवैध, नियम के विपरीत, कार्य-विधि के प्रतिकूल *पुं.* विधान के विरुद्धकार्य, अविधान 2. अनियमितता।

अविधिक *वि.* (तत्.) जो विधि या कानून सम्मत न हो, विधि के द्वारा निषिद्ध, असांविधिक विलो. विधिक।

अविधितः *क्रि.वि.* (तत्.) 1. विधि-विधान के विरुद्ध किया गया 2. विधि की दृष्टि से अमान्य 3. गैर-कानूनी ढंग से।

अविधिमान्य *वि.* (तत्.) जो विधि की दृष्टि से मान्य न हो, जिसकी रक्षा विधि न कर सके invalid

अविधेय *वि.* (तत्.) 1. जो विधेय या करणीय न हो, अकार्य 2. दुष्कर।

अविनय *पुं.* (तत्.) 1. विनय या नम्रता का अभाव 2. उद्दंडता, अशिष्टता 3. अभिमान, घमंड *वि.* उद्दंड, अशिष्ट, घमंडी।

अविनश्वर *पुं.* (तत्.) अनाशवान *वि.* परमेश्वर।

अविनाभाव *पुं.* (तत्.) 'विना' के भाव का न होना जैसे- धुँआ आग के बिना नहीं हो सकता। अतः दर्शन की भाषा में धुँए और आग के बीच अविनाभाव संबंध है, कार्य-कारण संबंध, अटूट।

अविनाश *पुं.* (तत्.) विनाश का अभाव, अमरता, अक्षय।

अविनाशी *वि.* (तत्.) 1. जिसका विनाश न हो, अनश्वर, अक्षय 2. अजर-अमर, नित्य, शाश्वत।

अविनीत *वि.* (तत्.) 1. जो विनम्र न हो 2. धृष्ट, ढीठ, अशिष्ट, गुस्ताख, दुर्विनीत 3. उजड्ड, उद् धत 4. घमंडी विलो. विनीत।

अविनीता *स्त्री.* (तत्.) 1. कुलटा, व्यभिचारिणी, दुराचारिणी, चरित्रहीन स्त्री 2. धृष्ट या उद्धत स्त्री विलो विनीता।

अवि-पट *पुं.* (तत्.) अवि (भेड़) से प्राप्त पट (वस्त्र), भेड़ की खाल, ऊनी कपड़ा।

अविपद् *स्त्री.* (तत्.) विपत्ति का अभाव, संपत्ति, सुख, समृद्धि।

अविपन्न *वि.* (तत्.) 1. जो विपन्न या विपद्-ग्रस्त न हो 2. अदूषित, स्वस्थ, नीरोग।

अविपर्यय *पुं.* (तत्.) विकार का न होना, क्रम के विरुद्ध न होना।

अविपाक *पुं.* (तत्.) अजीर्ण रोग *वि.* अजीर्ण से ग्रस्त।

अविपाल *पुं.* (तत्.) भेड़ पालने वाला, भेड़-बकरियाँ चराने वाला, गड़रिया।

अविबुध *वि.* (तत्.) जो ज्ञानी न हो, मूर्ख।

अविभक्त *वि.* (तत्.) 1. जो विभाजित या अलग न किया गया हो 2. मिला हुआ 3. अविभाजित, अभिन्न विलो. विभक्त।

अविभक्त कुटुंब *पुं.* (तत्.) वह परिवार जिसमें दो या दो से अधिक पीढ़ियों के सदस्य एक साथ जीवन-निर्वाह करते हुए साथ-साथ रह रहे हों और जिसके सदस्यों के बीच परिवार की

संपत्ति का विभाजन न हुआ हो, संयुक्त परिवार।

अविभक्त संपत्ति *स्त्री.* (तत्.) परिवार की वह चल-अचल संपत्ति, जिसका परिवार के सदस्यों में अभी तक बंटवारा नहीं हुआ हो।

अविभाग *वि.* (तत्.) 1. जिसके टुकड़े न हुए हों 2. जो संपूर्ण हो या एक हो, निर्विभाग।

अविभाज्य *पुं.* (तत्.) 1. वह संख्या जिसके खंड न किए जा सकें 2. वह राशि जिसका किसी भाजक से भाग न किया जा सके *वि.* जिसे विभक्त न किया जा सके, जिसे बाँटा न जा सके विलो. विभाज्य।

अविभाज्य संपदा *स्त्री.* (तत्.) वह भूमि या संपत्ति आदि जिसका विभाजन विधितः संभव न हो।

अविभेदित *वि.* (तत्.) जिसमें भेद न किया गया हो, भेदभाव रहित।

अविमुक्त *वि.* (तत्.) 1. जो मुक्त न हो, बद्ध, अमुक्त, अस्वतंत्र 2. काशी नगरी, वाराणसी।

अविमुक्ति *स्त्री.* (तत्.) अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति के कारण मन का उपास्य में इस प्रकार रम जाना कि अन्य देवादि के प्रति श्रद्धा संभव नहीं होती, अनन्य भक्ति।

अवियुक्त *वि.* (तत्.) जो वियोजित या पृथक न हो।

अवियोग *पु.* (तत्.) वियोग न होने की स्थिति, संयोग।

अवियोज्य *वि.* (तत्.) जिन्हें वियोजित या अलग करना उचित या सुकर न हो।

अविरत *क्रि.वि.* (तत्.) विरति या विराम के बिना, निरंतर, अनवरत, व्यवधान-रहित, सतत, हमेशा *वि. (तत्.)* विरामशून्य, निरंतर।

अविरति *स्त्री.* (तत्.) विरति अर्थात् अलग न हो पाने या विमुख न हो पाने की स्थिति, विषय भोग से विमुख न हो पाना, विषयों से लगाव बना रहना, आसक्ति।

अविरल *वि.* (तत्.) 1. जो विरल अर्थात् कम या सविराम न हो, निरंतर, अविराम 2. सघन, घना उदा. पानी ऐसे बरसता है कि जैसे भक्त के मन में अविरल राम-रस-धारा बहती है -मानस का हंस।

अविराम *वि.* (तत्.) बिना विराम, बिना रुके हुए *क्रि.वि.* लगातार, निरंतर *पुं.* विरामाभाव, निरंतरता, नैरंतर्य विलो. विराम।

अविरुद्ध *वि.* (तत्.) जो विरुद्ध न हो, जो प्रतिकूल न हो, अनुकूल, सुसंगत विलो. विरुद्ध।

अविरूपित *वि.* (तत्.) जिसका मूल रूप बिगड़ा न हो या बिगाड़ा न गया हो प्रशा. (स्टांप, टिकट आदि) जिन पर मोहर लगा कर या आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींच कर उन्हें दुबारा प्रयोग के अयोग्य न कर दिया गया हो।

अविरेचन *पुं.* (तत्.) 1. विरेचन क्रिया में बाधा उत्पन्न करनेवाली वस्तु 2. कब्ज करनेवाली वस्तु विलो. विरेचन।

अविरोध *पुं.* (तत्.) 1. विरोध का अभाव, निर्विरोधिता 2. साधर्म्य, समानता, मेल, संगति।

अविरोध निर्वाचन *पुं.* (तत्.) दे. निर्विरोध निर्वाचन।

अविरोधी *वि.* (तत्.) जो विरोधी न हो, विरोध-रहित, सुसंगत, अनुकूल।

अविलंब *क्रि.वि.* (तत्.) बिना विलंब किए, तुरंत, तत्काल *पुं.* (तत्.) शीघ्रता, विलंब का अभाव।

अविलेय *वि.* (तत्.) जो किसी विलायक में घुल न सके उदा. खड़िया, पानी में अविलेय है insoluble

अविलोड़ित *वि.* (तत्.) अमथित, बिना मथा हुआ विलो. विलोड़ित।

अविवक्षा *स्त्री.* (तत्.) विवश अर्थात् कहने या बोलने की इच्छा का न होना।

अविवक्षित *वि.* (तत्.) 1. अकथनीय, अकथित 2. अनभिप्रेत।

अविवाद *पुं.* (तत्.) विवाद न होना, सहमति *क्रि.वि.* बिना किसी विवाद के विलो. सविवाद।

अविवाहित *वि.* (तत्.) जिसका विवाह न हुआ हो, बे-ब्याहा, कुंआरा।

अविवाहित सहवास *पुं.* (तत्.) बिना विवाह के साथ रहना। live-in-relation

अविवाहिता *स्त्री.* (तत्.) 1. अविवाहित स्त्री 2. कुंवारी।

अविवाही *पुं.* (तत्) नृवि. विवाह की विधि या प्रथा को न मानने वाला (व्यक्ति या समाज)।

अविविक्त *वि.* (तत्.) 1. जिसका सम्यक् विचार न किया गया हो 2. जो ठीक से विचार न करता हो, अविवेकी 3. व्याख्या के बाद भी अस्पष्ट।

अविवेक *पुं.* (तत्.) 1. विवेक न होना, उचित-अनुचित का ज्ञान न होना, अज्ञान, अविचार, नादानी 2. उतावली विलो. विवेक।

अविवेकी *वि.* (तत्.) जिसे विवेक न हो, विवेक-रहित, तर्क-बुद्धि रहित विलो. विवेकी।

अविशंक *वि.* (तत्.) शंका रहित, संदेह-रहित, भय रहित।

अविशंका *स्त्री.* (तत्.) 1. शंका या आशंका का न होना 2. भय का अभाव, निर्भयता 3. विश्वास, आश्वस्तता, भरोसा।

अविशंकित *वि.* (तत्.) अविशंका से युक्त, संदेहरहित, भयमुक्त, आश्वस्त।

अविशिष्ट *वि.* (तत्.) जो विशेषीकृत, प्ररूपी या विशिष्ट युक्त न हो।

अविशुद्ध *वि.* (तत्.) जो शुद्ध न हो, मिलावटी, अपवित्र।

अविशेष *वि.* (तत्.) सामान्य, किसी विशेष बात अर्थात् किसी अंतर या विशिष्टता के बिना, भेद-रहित *पुं.* विशिष्टता या अंतर का अभाव, समानता।

अविशेषज्ञ *वि.* (तत्.) 1. जो किसी विशेष विषय का ज्ञाता न हो 2. जो वस्तु की विशेषता को पहचान न सके, दो वस्तुओं के अंतर को न समझ सके 3. जिसमें किसी प्रकार की विशेष योग्यता न हो।

अविशेषित *वि.* (तत्.) बिना किसी सीमा, प्रतिबंध या शर्त के unqualified

अविशेषित प्रतिग्रहण *पु.* (तत्.) विधि. बिना कोई प्रतिबंध या शर्त लगाए दी गई स्वीकृति।

अविश्रांत *वि.* (तत्) 1. जो बिना थके काम करता रहे 2. काम करते समय न रुकने वाला, अविरत कार्य करने वाला।

अविश्राम *वि.* (तत्.) दे. अविश्रांत।

अविश्ववाद *पुं.* (तत्.) दर्श./नृ.वि. यह सिद्धांत कि "संसार अलग से कुछ नहीं है केवल चित्त की भावना है, जगत् मन में ही स्थित होता है, अन्यत्र नहीं", अप्रपंचवाद acausism

अविश्वसनीय *वि.* (तत्.) जो विश्वास के योग्य न हो, जिस पर विश्वास न किया जा सके विलो. विश्वसनीय।

अविश्वस्त *वि.* (तत्.) 1. अविश्वसनीय, संदिग्ध 2. अपुष्ट विलो. विश्वस्त।

अविश्वास *पुं.* (तत्.) 1. विश्वास का अभाव, बे-एतबारी 2. शंका, संदेह।

अविश्वासपात्र *वि.* (तत्.) दे. अविश्वस्त ।

अविश्वास प्रस्ताव *पुं.* (तत्.) विधायिका के सदस्य द्वारा सदन में किसी मंत्री या मंत्रिमंडल के विरुद्ध प्रस्तुत इस आशय का प्रस्ताव कि सदन को उसमें विश्वास नहीं रह गया है टि. अविश्वास प्रस्ताव पारित हो जाने पर मंत्रिमंडल को त्यागपत्र देना पड़ता है non confidence motion

अविश्वासी *वि.* (तत्.) 1. जो विश्वास के योग्य न हो, जिस पर विश्वास न किया जा सके 2. जो किसी सिद्धांत आदि पर विश्वास न करता हो।

अविष *वि.* (तत्.) विषहीन, जो विषैला न हो *पु.* विषेतर वस्तु non-toxic

अविषय *वि.* (तत्.) 1. जो चर्चा आदि का विषय न हो; प्रतिपादन के अयोग्य 2. विषय-शून्य *पुं. (तत्.)* इंद्रियों के विषय की उपेक्षा विलो. विषय।

अविसंवादित *वि.* (तत्.) जिसका विसंवाद या खंडन न किया गया हो, सर्वस्वीकृत।

अविस्तार *वि.* (तत्.) विस्तार का अभाव, संक्षिप्तता *क्रि.वि.* बिना किसी विस्तार के।

अविस्तीर्ण *वि.* (तत्.) 1. जो विस्तीर्ण न हो, जिसे अधिक न फैलाकर छोटा कर दिया गया हो, कम फैलाव वाला 2. संक्षिप्त विलो. विस्तीर्ण।

अविस्तृत *वि.* (तत्.) 1. कम फैला हुआ 2. संक्षिप्त 3. अविरल 4. घना विलो. विस्तृत।

अविहित *वि.* (तत्.) 1. जो नियमादि के अनुसार विहित न हो, जिसका विधान शास्त्र सम्मत न हो, शास्त्र-विरुद्ध हो 2. निषिद्ध, अनुचित 3. अकरणीय 4. अयोग्य विलो. विहित।

अवीचि *वि.* (तत्) 1. शांत, जिसमें लहरें न हों, तरंगशून्य, अचंचल 2. एक नरक का नाम।

अवीर *वि.* (तत्.) 1. जो वीर न हो, पौरुषहीन, कायर 2. जिसके कोई पुत्र न हो।

अवीरा *स्त्री.* (तत्.) 1. जिस स्त्री का पति एवं पुत्र पुत्र न हो 2.मनमाना आचरणकरने वाली (स्त्री)। (स्त्री)।

अवीर्य *वि.* (तत्.) अशक्त, अप्रभावी, निर्वीर्य।

अवृत *वि.* (तत्.) 1. जिसे चुना या बुलाया न गया हो 2. अरक्षित, रक्षाविहीन 3. जो किसी के वश में न हो, अवशीभूत।

अवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. जीविका का अभाव 2. स्थिति या विद्यमानता का अभाव 3. प्रवृत्ति न होना *वि.* अस्तित्वहीन, जीविकाहीन।

अवृथा *अव्य.* (तत्.) 1. जो व्यर्थ या निष्फल न हो, रामबाण 2. सफल *क्रि.वि.* सफलता के साथ, सफलतापूर्वक।

अवृद्धिक *वि.* (तत्.) 1. जो स्थिर रहे, जिसमें बढ़ोतरी न हो, 2. वह (धन) जिस पर ब्याज न लगे।

अवृष्टि *स्त्री.* (तत्.) वर्षा का अभाव, सूखा।

अवेक्षक *वि.* (तत्.) ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने वाला।

अवेक्षण *पुं.* (तत्.) 1. अवलोकन, ध्यानपूर्वक देखना 2. संज्ञान 3. देखभाल, निरीक्षण।

अवेक्षणीय *वि.* (तत्.) 1. देखने योग्य 2. ध्यान देने योग्य 3. दर्शनीय, सुंदर।

अवेक्षा *स्त्री.* (तत्.) ध्यान, संज्ञान, नोटिस cognizance

अवेक्षित *वि.* (तत्.) 1. निरीक्षित 2. जो ध्यान में आ गया हो, जिसका संज्ञान ले लिया गया हो।

अवेतन *वि.* (तत्.) बिना वेतन का, वेतन-रहित।

अवेतन छुट्टी *स्त्री.* (तत्.) छुट्टी का वह प्रकार जिसमें कर्मचारी वेतन पाने का हकदार नहीं होता।

अवेद्य *वि.* (तत्.) 1. जिसे जाना न जा सके, अज्ञेय 2. अलभ्य।

अवेल *वि.* (तत्.) अवेला। समय सीमा रहित, कुवेला, असामयिक।

अवेला *स्त्री.* (तत्.) 1. बुरा समय, कुसमय, प्रतिकूल समय 2. विषम स्थिति *वि.* असमय 3. विलंब।

अवेश *वि.* (तत्.) वेश-रहित, अवस्त्र।

अवेस्ता *स्त्री.* (फा.) 1. ईरान के पूर्वी जनसमूह की एक पुरानी भाषा जो संस्कृत के अति निकट है 2. पारसियों का श्रेष्ठ धर्मग्रंथ 'जन्द' इसी भाषा में है।

अवैज्ञानिक *वि.* (तत्.) 1. विज्ञान द्वारा अप्रमाणित या असिद्ध 2. जो तर्कसंगत न हो।

अवैतनिक *वि.* (तत्.) 1. वेतन पाने की हकदारी के बिना जैसे- अवैतनिक अवकाश 2. वेतन के बिना काम करने वाला 3. सम्मानार्थक काम करने वाला honorary

अवैदिक *वि.* (तत्.) जौ वैदिक न हो, जिसकी वैदिक मान्यता न हो, वेद-विरुद्ध विलो. वैदिक।

अवैद्य *वि.* (तत्.) 1. जो वैद्य अर्थात् चिकित्सक न न हो, 2. जो जानकार न हो, अज्ञानी।

अवैध *वि.* (तत्.) विधि द्वारा निषिद्ध, विधि-विरुद्ध, कानून के खिलाफ, नियम-विपरीत विलो. वैध।

अवैधता *स्त्री.* (तत्.) विधि-विरुद्ध होने या विधि के अनुरूप न होने की स्थिति।

अवैध दुर्व्यापार *पु.* (तत्.) वाणि. वस्तुओं का ऐसा लेन-देन और व्यापार जो विधि की दृष्टि से अनुचित और अमान्य हो illegal trafficking

अवैध परितोषणा *पु.* (तत्.) अनुचित लाभ उठाने या अपना काम बनाने के लिए किसी को कुछ (धनराशि) देकर प्रसन्न या राजी करना illegal gratification

अवैध संतान *स्त्री.* (तत्.) जो विधि सम्मत पति-पत्नी की संतान न हो, जारज संतान।

अवैधाचरण *पुं.* (तत्.) 1. संविधान या नियम के प्रतिकूल आचरण, जिसे संविधान स्वीकृत न करे, ऐसा आचरण या व्यवहार।

अवैधाचार *पुं.* (तत्.) अवैधाचरण, गलत आचरण।

अवैधानिक *वि.* (तत्.) 1. जो विधि-विधान के विपरीत हो 2. जो विधिनिर्माण से संबद्ध न हो विलो. वैधानिक unconstitutional

अवैमत्य *पु.* (तत्.) विमति या असम्मति का न होना, एकमत।

अवैयक्तिक *वि.* (तत्.) 1. व्यक्तिविशेष से असंबद्ध जैसे-अवैयक्तिक खाता (अर्थात् संस्था का खाता) अवैयक्तिक मूल्य (अर्थात् समूहगत मूल्य) आदि 2. निर्वैयक्तिक।

अव्यंग *वि.* (तत्.) 1. जो टेढ़ा-मेढ़ा न हो, आदि से अंत तक सीधा 2. जिसमें कोई कमी न हो, पूर्ण रूप से शुद्ध 3. पूर्ण *पुं.* सूर्योपासकों का पूजा का एक साधन (विशेषकर पारसी मतानुयायियों में)।

अव्यंग्य *वि.* (तत्.) काव्य. जो व्यंग्य न हो, वाच्य या लक्ष्य (अर्थ)।

अव्यंजन *वि.* (तत्.) 1. जो व्यंजन पक्व न हो, कच्चा 2. भाषा. जो व्यंजन न हो, स्वर 3. अच्छे लक्षणों से रहित 4. सींग रहित पशु।

अव्यक्त *वि.* (तत्.) 1. जो व्यक्त या अभिव्यक्त न हो 2. अप्रकट, अस्पष्ट 3. अप्रत्यक्ष, अगोचर 4. गुप्त 5. अज्ञात 6. अनिर्वचनीय 7. बीजगणित में वह राशि जिसका मान ज्ञात न हो 8. अंतर्निहित *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. कामदेव 3. शिव 4. प्रकृति 5. ब्रह्म, ईश्वर विलो. व्यक्त।

अव्यक्त ध्वनि *स्त्री.* (तत्.) ऐसी ध्वनि जिसे सामान्य रूप से व्यक्त न किया जा सके, जैसे-पशु-पक्षियों की ध्वनि या मशीनों आदि से उत्पन्न आवाज।

अव्यक्त राग *पुं.* (तत्.) 1. व्यक्त न किया हुआ प्रेम, मन-ही-मन किया जाने वाला मौन प्रेम 2. हल्का गुलाबी रंग।

अव्यक्त राशि *स्त्री.* (तत्.) बीज. अक्षरों के रूप में व्यक्त राशि जिसका संख्यात्मक मान अज्ञात रहता है।

अव्यक्तता काल *पुं.* (तत्) सामान्यतः 5 से 12 वर्ष की आयु का कालखंड, मनो. बालक के चित्त में काम-विकास की चौथी अवस्था जब पिछली तीन अवस्थाओं में विकसित काम (लिबिडो) समाज-व्यवस्था के अनुशासन से दमित होकर अव्यक्तता का स्वरूप धारण कर लेता है latency period

अव्यक्त लिंग *वि.* (तत्) 1. वह (वस्तु, प्राणी आदि) लक्षण, जिनसे उसके विषय में जानकारी मिल सके 2. जिसके चिह्न या लक्षण प्रकट न हो 3. संन्यासी।

अव्यक्त विषय *पुं.* (तत्.) मनो. सामाजिक अनुशासन के कारण दमित कामवासनाएँ या इच्छाएँ जो प्रकट नहीं होतीं परंतु स्वप्न का विषय बन जाती है।

अव्यक्तानुकरण *पुं.* (तत्.) अव्यक्त (ध्वनियों) का अनुकरण, अनुरणनात्मक शब्दों का निर्माण

इसी कारण होता है, जैसे- हिनहिनाना, छटपटाहट आदि।

अव्यग्र *वि.* (तत्.) जो व्यग्र अथवा व्याकुल या घबराया हुआ नहीं हो, शांत, धीर।

अव्यथ *वि.* (तत्.) व्यथा से रहित, बिना कष्ट वाला।

अव्यथित *वि.* (तत्.) 1. जो व्यथित न हुआ हो 2. जिसको कष्ट या पीड़ा न हो।

अव्यपदेश्य *वि.* (तत्.) 1. जिसका व्यपदेशन अर्थात् वर्णन न किया जा सके 2. जिसको शब्दों में व्यक्त न किया जा सके 3. जिसमें कोई परिवर्तन न हो सके 4. जिसका विकल्प प्रस्तुत न किया जा सके जैसे- ब्रह्म।

अव्यपेत *वि.* (तत्.) 1. जो व्यपेत अर्थात् अलग किया हुआ न हो, असमास, अपृथक्, अविरुद्ध, अगत।

अव्यभिचार *पुं.* (तत्.) व्यभिचार या भ्रष्टाचार का अभाव, शुद्धाचरण, तत्वनिष्ठता, कृतज्ञता।

अव्यभिचारी *वि.* (तत्.) 1. जो सर्वथा मूल गुणधर्म के अनुसार रहे 2. सतत धर्मशील 3. सदाचारी।

अव्यय *वि.* (तत्.) 1. विकाररहित 2. अक्षय 3. नित्य, सतत रहने वाला *पुं.* 1. व्याकरण में वे शब्द जिनका रूप सभी लिंगों, सभी वचनों सभी विभक्तियों में एक सा रहे जैसे- 'अकस्मात्' 2. शिव 3. विष्णु 4. ब्रह्म 5. समृद्धि।

अव्ययन *पु.* (तत्.) व्ययन अर्थात् अंतिम रूप से निपटान का अभाव, अंतिम निपटान न होने की स्थिति non-disposal

अव्ययीभाव *पुं.* (तत्.) 1. व्यय का अभाव, व्यय-हीनता, नाशहीनता 2. व्या. समास का एक भेद।

अव्ययीभाव समास *पुं.* (तत्.) समास का एक प्रकार जिसमें अव्यय शब्द संज्ञा से जुड़ते हैं और समस्त पद क्रियाविशेषण होता है, इसमें प्रायः पूर्वपद प्रधान होता है जो या तो अव्यय होता है अथवा क्रिया-विशेषण, उदा. यथाशक्ति।

अव्यर्थ *वि.* (तत्.) 1. जो व्यर्थ न हो 2. अचूक 3. सफल, सार्थक 4. अमोघ विलो. व्यर्थ।

अव्यलीक *वि.* (तत्.) 1. जो व्यलीक या झूठा न हो, सच्चा, सत्य 2. प्रिय, अनुकूल।

अव्यवधान *पुं.* (तत्.) 1. बाधारहित, विघ्नहीनता 2. समय और दूरी के व्यवधान का न होना।

अव्यवसाय *पुं.* (तत्.) 1. व्यवसाय का न होना, व्यवसाय-रहित, उद्यम का अभाव 2. निरूद्यम *वि. (तत्.)* 1. व्यवसायशून्य, उद्यम शून्य 2. आलसी, निकम्मा विलो. व्यवसायी।

अव्यवसायी *वि.* (तत्.) 1. कामधंधा न करने वाला 2. प्रयत्न न करने वाला 3. संकल्पपूर्वक कार्य न करने वाला 4. आलसी, निरुद्योगी 5. जो व्यवसायी न हो 6. जो व्यावसायिक या धन लाभ के उद्देश्य से न किया गया हो, अव्यावसायिक, शौकिया।

अव्यवस्था *स्त्री.* (तत्.) 1. शांति और सुव्यवस्था का अभाव, उचित व्यवस्था का न होना, बदइंतजामी 2. नियम के विरूद्ध काम होना 3. क्रम या पूर्वपरता का अभाव विलो. व्यवस्था।

अव्यवस्थित *वि.* (तत्.) 1. जो सुव्यवस्थित न हो 2. जिसकी व्यवस्था न हुई हो 3. मर्यादाहीन 4. अस्थिर विलो. व्यवस्थित।

अव्यवहार्य *वि.* (तत्.) 1. जो व्यवहार के योग्य न हो, जिसे व्यवहार में न लाया जा सके, जिस पर अमल न किया जा सके, अव्यावहारिक 2. पंक्तिच्युत विलो. व्यवहार्य।

अव्यवहित *वि.* (तत्.) 1. व्यधान रहित, एकदम साथ लगा हुआ, ठीक पहले का या ठीक बाद का 2. समक्ष, आसन्न, स्पष्ट।

अव्यवहृत *वि.* (तत्.) 1. जिसका प्रयोग न हुआ हो 2. वर्तमान में अप्रयुक्त, अप्रचलित, पुरातन, काल बाह्य 3. वर्तमान परिवेष में अनुपयोगी

होने के कारण व्यवहार के अयोग्य, 4. अप्रयुक्त।

अव्यष्टिगत *वि.* (तत्.) जो एक इकाई या एक व्यक्ति (व्यष्टि) विशेष से संबंधित न हो, सामूहिक, समष्टिगत।

अव्यसन *वि.* (तत्.) 1. व्यसन मुक्त, व्यसन रहित 2. दुर्गुण से रहित *पुं. (तत्.)* व्यसन का न होना, व्यसनमुक्ति विलो. व्यसन।

अव्याकरणिक *वि.* (तत्.) जो व्याकरण सम्मत न हो, जो व्याकरण के नियमों के अनुसार न हो।

अव्याकरणिकता *स्त्री.* (तत्.) व्याकरण-सम्मत न न होने की स्थिति या भाव।

अव्याकृत *वि.* (तत्.) 1. जो व्याकृत अर्थात् विशिष्ट या वियुक्त न हो 2. अविकृत 3. अपृथक्कृत, अप्रकट, गुप्त 4. जो कारण रूप में न हो *पुं.* वेदांतशास्त्रानुसार अप्रकट बीज रूप विलो. व्याकृत।

अव्याख्यात *वि.* (तत्.) 1. जिसे स्पष्ट न किया गया हो 2. व्याख्याहीन विलो. व्याख्यात।

अव्याख्येय *वि.* (तत्.) 1. जिसकी व्याख्या न की जा सके, जिसे व्याख्या की जरूरत न हो 2. सरल विलो. व्याख्येय।

अव्याघात *वि.* (तत्.) 1. व्याघातशून्य, जिसे रोका न जा सके, बेरोक, अबाध, अवरोध-रहित 2. लगातार विलो. व्याघात।

अव्याज *वि.* (तत्.) 1. निष्कपट 2. छल-छद्म से रहित 3. स्वाभाविक 4. अकृत्रिम अर्थ. ब्याज रहित *पुं. (तत्.)* छल-छद्म का अभाव।

अव्यापक *वि.* (तत्.) 1. सीमित, संकुचित 2. जिसका व्यवहार छोटे क्षेत्र या छोटी कालावधि में ही होता हो 3. जो सर्वत्र न हो।

अव्यापन्न *वि.* (तत्.) 1. जो दुर्भाग्यग्रस्त, विफल या मृत न हो 2. अविक्षिप्त 3. जीवित।

अव्यापार *वि.* (तत्.) 1. व्यापार-शून्य 2. बेकाम *पुं.* (तत्.) 1. परिश्रम का अभाव 2. उद्यम या कार्य का अभाव 3. निठल्लापन 4. बिना लाभ का काम विलो. व्यापार।

अव्यापी *पुं.* (तद्.) 1. जो सर्वत्र व्याप्त न हो 2. जो सब जगह न हो 3. जो अन्यत्र न हो।

अव्याप्त *वि.* (तत्.) 1. जो हर जगह व्याप्त या प्रभावी न हो 2. परिच्छिन्न विलो. व्याप्त।

अव्याप्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. व्याप्ति का अभाव, लागू न होने की स्थिति 2. न्याय. लक्ष्य पर लक्षण का न घट पाना 3. परिभाषा में दिए गए सभी लक्षणों का परिभाषित शब्द या उदाहरण में न दिखाई पड़ना।

अव्याप्य *वि.* (तत्.) 1. जो व्याप्त न हो सके 2. जो समग्र पर लागू न हो।

अव्यावृत *वि.* (तत्.) जिसका क्रम न टूटा हो 2. जिसमें कोई परिवर्तन न हुआ हो, ज्यों का त्यों 3. निरंतर, सतत, लगातार, अटूट।

अव्याहत *वि.* (तत्.) 1. अबाधित, बेरोक 2. अप्रतिरुद्ध, व्याघातरहित 3. अखंडित, अटूट *पुं.* (तत्.) 1. सत्य 2. अखंडनीय वक्तव्य।

अव्युत्पन्न *वि.* (तत्.) 1. जिसकी व्युत्पत्ति व्याकरण से सिद्ध न हो सके, व्युत्पत्तिरहित 2. अनभिज्ञ, अनुभव-शून्य 4. अकुशल 5. अनाड़ी।

अव्रण *वि.* (तत्.) 1. जो क्षत न हो, अक्षत 2. बिना घाव का 3. जो घाव से खराब न हुआ हो।

अव्रत *वि.* (तत्.) 1. व्रतहीन 2. जिसका व्रत नष्ट हो गया हो 3. नियम रहित 4. शास्त्र विहित नियमों, कृत्यों का पालन न करने वाला *पुं.* 1. जैन शास्त्रानुसार व्रत के कृत्यों की संपन्नता 2. व्रत-त्याग, व्रत का अभाव।

अव्वल *वि.* (अर.) 1. प्रथम, पहला 2. उत्तम, श्रेष्ठ *पुं.* 1. प्रारंभ 2. आदि मुहा. अव्वल आना या रहना- प्रतियोगिता में सर्वप्रथम आना।

अशंक *वि.* (तत्.) शंका रहित, निश्शंक, निर्भय।

अशंकता *स्त्री.* (तत्.) 1.शंकाहीनता 2. निर्भयता।

अशंकित *वि.* (तत्.) शंकाहीन, निश्शंक, निर्भय।

अशंकनीय *वि.* (तत्.) जिसके विषय में पूर्ण विश्वास हो, विश्वास योग्य, शंका या संदेह के अयोग्य, शंकातीत।

अशंसकत्व *पुं.* (तत्.) प्रशंसा या निंदा से लगाव न रहना, किसी से प्रशंसा की इच्छा न रखने का भाव।

अशकुंभी *स्त्री.* (तत्.) जल में होने वाला एक पौधा, जलकुंभी या आकाशमूली water cress

अशकुन *पुं.* (तत्.) 1. बुरे लक्षण 2. अपशकुन, अमंगल के लक्षण।

अशक्त *वि.* (तत्.) 1. शक्तिहीन, कमजोर, असमर्थ, निर्बल, अक्षम, क्षमता-रहित 2. अपंग उदा. शरीर उठना चाहता है, किंतु अशक्त है- मानस का हंस।

अशक्तता *स्त्री.* (तत्.) 1. बीमारी, बढ़ती उम्र अथवा अस्वस्थता के कारण उत्पन्न शारीरिक असमर्थता 2. किसी अधिकार का प्रयोग करने से वंचित कर दिए जाने की अवस्था disability

अशक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. शक्तिहीनता, निर्बलता, कमजोरी 2. असामर्थ्य, अक्षमता।

अशक्य *वि.* (तत्.) 1. असाध्य, न होने योग्य 2. अव्यावहारिक 3. जिसे काबू में न किया जा सके, असंभव।

अशत्रु *वि.* (तत्.) शत्रुरहित, बिना शत्रुता वाला (व्यक्ति) *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. शत्रुता का अभाव।

अशदा *पुं.* (अर.) 1. मुहर्रम का दसवाँ दिन 2. महीने का दसवाँ दिन।

अशन *पुं.* (तत्.) 1. भोजन, आहार 2. भक्षण, खाना 3. पार जाना 4. व्याप्ति, प्रसार 5. चित्रक चित्रक वृक्ष।

अशनपर्णी *स्त्री.* (तत्.) पटसन।

अशनि *पुं.* (तत्.) 1. बज्र, 2. अस्त्र 3. भाला 4. इंद्र, *स्त्री.* अग्नि।

अशनिपात *पुं.* (तत्.) 1. भयानक विपत्ति 2. वज्रपात, बिजली गिरना।

अशनीय *वि.* (तत्.) खाने के योग्य, खाद्य।

अशब्द *पुं.* (तत्.) 1. जो शब्दों से व्यक्त न हो, जिसमें ध्वनि न हो, मौन 2. अवैदिक।

अशमित *वि.* (तत्.) 1. जिसे शांत न किया गया हो, अशांत 2. बिना बुझा।

अशरण *वि.* (तत्.) जिसकी कोई शरण न हो, आश्रय-हीन, बेसहारा, बेचारा, असहाय।

अशरण-शरण *वि.* (तत्.) जिसे कोई शरण न दे उसे भी शरण देने वाला, परमात्मा, भगवान।

अशरफी *स्त्री.* (फा.) 1. प्राचीन काल का सोने का एक सिक्का जो सोलह आने से लेकर पचीस आने तक का होता था 2. मुहर 3. एक प्रकार का फूल 4. एक प्रकार की आतिशबाजी।

अशराफ *वि.* (अर.) ('शरीफ' का बहुवचन) भद्रजन, सज्जन, शरीफ लोग।

अशरीर *वि.* (तत्.) 1. शरीर-रहित 2. आकारहीन *पुं. (तत्.)* 1. परमात्मा 2. ब्रह्म 3. कामदेव 4. विरक्त, संन्यासी।

अशरीरक *वि.* (तत्.) बिना शरीर का, शरीर-रहित, अशरीरी, निराकार।

अशरीरी *वि.* (तत्.) 1. बिना शरीर का शरीररहित, देहविहीन, अदेहधारी 2. ऐसा निकाय जिसकी केवल विधिक सत्ता हो जैसे कंपनी, निगम, आदि incorporeal

अशर्त *वि.* (तत्.) शर्त-रहित, प्रतिबंध-रहित।

अशर्त संविदा *स्त्री.* (तत्.) दो पक्षों के बीच ऐसा वैध करार जिसमें कोई शर्त न हो और जो प्रत्येक परिस्थिति में मान्य हो।

अशर्फी *पुं.* (तत्.) दे. अशरफी।

अशस्त्र *वि.* (तत्.) 1. शस्त्र रहित, शस्त्रविहीन 2. जो शस्त्र न हो।

अशांत *वि.* (तत्.) 1. जो शांत न हो 2. अस्थिर, चंचल।

अशांति *स्त्री.* (तत्.) 1. चंचलता, अस्थिरता 2. खलबली 3. असंतोष 4. क्षोभ ।

अशाम्य *वि.* (तत्.) जिसका शमन असंभव हो, जिसे शांत न किया जा सके।

अशालीन *वि.* (तत्.) 1. शालीनता रहित, अशिष्ट 2. धृष्ट, ढीठ।

अशासकीय *पुं.* (तत्.) गैर-सरकारी, जो शासन या सरकार की ओर से न हो।

अशासकीय पत्र *पुं.* (तत्.) सरकारी पत्राचार का एक भेद जिसकी रूपरचना 'पत्र' की तरह पूर्णतः औपचारिक नहीं होती un-official letter

अशासकीय विधेयक *पुं.* (तत्.) संसद या विधानमंडल के ऐसे सदस्य द्वारा प्रस्तुत विधेयक जो मंत्री पद पर न हो।

अशासन *पुं.* (तत्.) 1. शासन का अभाव 2. अराजकता, अव्यवस्थित शासन।

अशास्त्रीय *वि.* (तत्.) 1. जो शास्त्रानुसार न हो 2. जो श्रेण्य (क्लासिकल) न हो विलो. शास्त्रीय।

अशिक्षा *स्त्री.* (तत्.) 1. शिक्षा का अभाव 2. ज्ञानाभाव 3. कुशिक्षा।

अशिक्षित *वि.* (तत्.) 1. जो शिक्षित न हो 2. अनपढ़, गँवार।

अशित *वि.* (तत्.) 1. खाया हुआ 2. बिना नोक अर्थात् बिना तीक्ष्णत्व वाला, बिना धार का, बिना नोक का, भोंथरा जैसे- लाठी एक अशित शस्त्र है।

अशिरस्क *वि.* (तत्.) बिना सिर का (धड़), केतु, कबंध।

अशिव *पुं.* (तत्.) अमंगल, अशुभ, अकल्याण *वि.* 1. अशुभ 2. दुष्ट 3. भाग्यहीन 4. अमित्र।

अशिष्ट *वि.* (तत्.) जो शिष्ट न हो, अशालीन, बेहूदा, उद्दंड।

अशिष्ट भाषा *स्त्री.* (तत्.) शिष्टजनों की भाषा से से भिन्न भाषा जो प्रायः असंस्कृत, ग्राम्य, अव्याकरणिक या चलताऊ किस्म की होती है, ग्राम्य भाषा, उपभाषा, अवभाषा।

अशीत *वि.* (तत्.) जो ठंडा न हो, गरम, उष्ण।

अशीति *स्त्री.* (तत्.) अस्सी।

अशीतिक *वि.* (तत्.) अस्सी साल वाला, अस्सी का मापक या मात्रक।

अशीर्षक *वि.*(तत्.)दे. अशिरस्क 2. शीर्षक-रहित।

अशीर्षी *वि.* (तत्.) बिना सिर वाला, कबंध। प्राणि. सिर या उस जैसी संरचना से विहीन।

अशील *वि.* (तत्.) शीलरहित, अभद्र, अशिष्ट *पुं.* उद्दंडता।

अशुचि *वि.* (तत्.) 1. अपवित्र 2. मैला, गंदा 3. काला *स्त्री.* (तत्.) 1. अपवित्रता, मलिनता, अशौच 2. काला रंग।

अशुद्ध *वि.* (तत्.) 1.जो सही, साफ या मिलावट-रहित या पवित्र न हो, अपवित्र, गलत 2. असंस्कृत।

अशुद्धता *स्त्री.* (तत्.) 1. अपवित्रता, गंदगी 2. गलती, त्रुटि।

अशुद्धि *स्त्री.* (तत्.) 1. शुद्धता का अभाव, गंदगी गंदगी 2. गलती।

अशुभ *पुं.* (तत्.) अमंगल, अकल्याण *वि.* (तत्.) जो शुभ न हो, अमंगलकारी।

अशुश्रूषा *स्त्री.* (तत्.) 1. अनसुनी करना 2. जिसकी सेवा में रहना चाहिए, उसकी आज्ञा में न रहना 3. सेवाटहल न करने की स्थिति 4. असम्मान।

अशुष्क *वि.* (तत्.) जो सूखा न हो, गीला, सरस।

अशुष्की तेल *पुं.* (तत्.) तेल जिसे हवा में खुला रखने पर भी न सूखने के कारण उसका गाढ़ापन नहीं बढ़ता।

अशून्य *वि.* (तत्.) 1. शून्यरहित, शून्येतर 2. जो सूना न हो 3. पूर्ण, पूरा 4. अरिक्त, भरा।

अशून्यावस्था *स्त्री.* (तत्.) शून्यता या जड़ता का अभाव, बुद्धि का स्थिर हो जाना, वह अवस्था जब बुद्धि स्वयं पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लेती है और मन को भटकने नहीं देती।

अशृंगिक *वि.* (तत्.) बिना सींग वाला (प्राणी) जैसे- कुत्ता, बिल्ली, खरगोश आदि।

अशेष *वि.* (तत्.) 1. जिसमें कुछ शेष ना हो, पूरा, समग्र, समूचा 2. समाप्त, संपन्न।

अशोक *वि.* (तत्.) शोकरहित, शोकमुक्त, दुःखशून्य *पुं. (तत्.)* 1. एक वृक्ष का नाम 2. एक मौर्यवंशी सम्राट्।

अशोक वाटिका *स्त्री.* (तत्.) अशोक वृक्षों से युक्त (लंका स्थित) वाटिका (विशेषतः जिसमें रावण ने सीता को रखा था)।

अशोकारि *पुं.* (तत्.)[अशोक+अरि] कदंब का वृक्ष।

अशोकाष्टमी *स्त्री.* (तत्.) चैत्र शुक्ल पक्ष की अष्टमी।

अशोच *पुं.* (तत्.) 1. शोक का अभाव, चिंतामुक्ति 2. शांति 3. विनम्रता।

अशोच्य *वि.* (तत्.) शोक न करने योग्य, अचिंत्य।

अशोधित *वि.* (तत्.) 1. शोधन किए बिना, साफ किए बिना, मल हटाए बिना 2. गलतियाँ ठीक किए बिना।

अशोध्य *वि.* (तत्.) 1. जिसका शोधन न हो सके, जिसे शुद्ध न किया जा सके 2. जिस (ऋण) को चुकाया न जा सके, वसूल न हो सकने वाला ऋण 3. (हानि) जिसे पूरा करना अत्यधिक कठिन हो, अपूरणीय।

अशोध्य ऋण *पुं.* (तत्.) वह ऋण, जिसके वापस मिलने की संभावना न हो।

अशोभन *वि.* (तत्.) भद्दा, असुंदर, अभद्र, सुंदर न लगने वाला।

अशोभनीय *वि.* (तत्.) जो सुंदर न लगे, जो शोभनीय न हो विलो. शोभनीय।

अशौच *पुं.* (तत्.) 1. अशुचिता, अपवित्रता, अशुद्धता, मैलापन, गंदगी 2. जन्म और मरण का सूतक, स्त्री की रजस्वला अवस्था की स्थिति जिससे उसे अस्पृश्य माना जाता है, हिंदू शास्त्रानुसार अशौच की विशेष अवस्था।

अश्क *पुं.* (फा.) आँसू, अश्रु।

अश्म *पुं.* (तत्.) 1. पत्थर, चकमक पत्थर 2. बज्र।

अश्म-उल्का *पुं.* (तत्.) भूवि. एक प्रकार का उल्का पिंड जो सामान्यतः सिलिकेट्स का बना होता है इसमें पत्थर या लौहकणों की बहुलता होती है।

अश्म-कुट्ट *वि.* (तत्.) पत्थरों से कुचला हुआ या पत्थर की शिला या खरल पर कूटा हुआ (पदार्थ) *पुं.* केवल उपर्युक्त प्रकार का अन्न खाने के नियम वाला संन्यासी।

अश्मगर्भ *पुं.* (तत्.) मरकत, पन्ना।

अश्मज *पुं.* (तत्.) 1. लोहा 2. गेरू 3. नलों आदि के जोड़ कर लगाया जाने वाला लसीला पदार्थ।

अश्मजतु *पुं.* (तत्.) शिलाजीत।

अश्मजाति *स्त्री.* (तत्.) पन्ना।

अश्मन *पुं.* (तत्.) जैव पदार्थों का प्रस्तर में रूपांतरित होने का प्रक्रम, अश्मीभवन, जीवाश्मीभवन।

अश्म-मुद्रण *पुं.* (तत्.) एक विशिष्ट कला जिसमें विशेष प्रकार के चूना-पत्थर पर चिपकने वाली स्याही लगाकर छपाई की जाती थी, शिला-मुद्रण lithography

अश्मर *वि.* (तत्.) पथरीला, पत्थर संबंधी।

अश्मरी *स्त्री.* (तत्.) दे. पथरी, पथरी नामक मूत्र रोग।

अश्मरीरोधक *वि.* (तत्.) 1. 'पथरी' नामक रोग को दूर करने वाला (औषधद्रव्य) 2. 'बरना' या वरुण नामक वृक्ष।

अश्मविज्ञान *पुं.* (तत्.) पत्थरों और शैलों का अध्ययन करने वाला शास्त्र, आश्मिकी lithology

अश्मसार *पुं.* (तत्.) लोहा।

अश्मा *पुं.* (तत्.) 1. पहाड़ 2. पत्थर 3. नमक (पहाड़ी) 4. बादल 5. सोनामाखी 6. लोहा।

अश्मीघ्न *वि.* (तत्) पथरी नाशक।

अश्मीभवन *पुं.* (तत्.) कालांतर में जीव-पदार्थों का पत्थर के रूप में परिवर्तित हो जाना।

अश्यान *वि.* (तत्.) ऐसा पदार्थ जिसमें श्यानता (चिपचिपाहट) न हो अर्थात् जिसका प्रवाह स्वतः बाधित न हो जैसे- पानी, ऐसे पदार्थ जो बर्तन की दीवारों से चिपकते नहीं है विलो. श्यान inviscid

अश्र *पुं.* (तत्.) अश्रुग्रंथियों से निकलने वाले सलवण जलबिंदु या जलस्राव जो सुखः-दुःख की अतिशयता में आँख से बाहर निकल पड़ते हैं।

अश्रद्ध *वि.* (तत्.) श्रद्धा न रखने वाला, विश्वास न रखने वाला।

अश्रद्धा *स्त्री.* (तत्.) 1. श्रद्धा का अभाव 2. अविश्वास।

अश्रद्धेय *वि.* (तत्.) 1. जो श्रद्धा के योग्य न हो 2. घृणा के योग्य।

अश्रवण *वि.* (तत्.) 1. जो सुनता न हो, बहरा, कर्णविहीन 2. साँप।

अश्रव्य *वि.* (तत्.) जो श्रवण के योग्य न हो, जिसे सुना न जा सके।

अश्रांत *वि.* (तत्.) श्रांति अथवा थकावट रहित।

अश्राव्य *वि.* (तत्.) 1. न सुनने योग्य 2. न सुनाने योग्य।

अश्रीक *वि.* (तत्.) 1. 'श्रीहीन, भाग्यहीन 2. कांति या आभा रहित।

अश्रील *वि.* (तत्.) दे. अश्लील।

अश्रु *पुं.* (तत्.) नेत्रों से प्रवाहित होने वाला जल जो खारा होता है, हर्ष, दुःख आदि के कारण या (धूल, धुआँ आदि) बाह्य पदार्थ आँख में पड़ जाने के कारण आँसू आते हैं।

अश्रुगैस *स्त्री.* (संकर.) एक प्रकार की गैस जिससे आँसू बहने लगते हैं इसका प्रयोग अनियंत्रित भीड़ को तितर-बितर करने में होता है।

अश्रु ग्रंथि *स्त्री.* (तत्.) नेत्रकक्ष के ऊपरी बाहरी कोने पर स्थित अश्रु-स्रावी ग्रंथि जिससे आंसू निकलते हैं।

अश्रुत *वि.* (तत्.) 1. जो सुना न गया हो 2. अज्ञात 3. अशिक्षित 4. मूर्ख।

अश्रुतपूर्व *वि.* (तत्.) जो पहले कभी न सुना गया हो।

अश्रुतवृत्त *पुं.* (तत्.) ऐसी घटना जो पहले न सुनी हो वि. ऐसा महान व्यक्तित्व जिसके बारे में कभी न सुना हो।

अश्रुतिधर *वि.* (तत्.) 1. वेदों का अध्ययन न करने वाला 2. ध्यानपूर्वक न सुनने वाला 3. याद न रखने वाला।

अश्रुपात *पुं.* (तत्.) आँसू गिरना, रोने की क्रिया।

अश्रुस्नात *वि.* (तत्.) आँसुओं से नहाया हुआ, बहुत अधिक रोने वाला, आँसुओं से तरबतर, अश्रुसिक्त।

अश्रेणीकृत *वि.* (तत्.) जिसे श्रेणीवार विभाजित न किया गया हो।

अश्रेणीबद्ध *वि.* (तत्.) 1.असोपानिक, जो सोपान क्रम से व्यवस्थित नहीं है 2. अश्रेणीकृत।

अश्रेण्य *वि.* (तत.) जो प्राचीन गौरवपूर्ण श्रेण्य या लौकिक साहित्य से संबद्ध न हो non-classical

अश्रेय *वि.* (तत्.) 1. बुरा, खराब 2. अशुभ, अमंगलकारी, अकल्याणकारी 3. व्यर्थ, निकम्मा, अनुत्कृष्ट, अनुत्तम *पुं.* (तत्.) 1. बुराई, खराबी 2. अकल्याण 3. दुख विलो. श्रेय।

अश्रौत *वि.* (तत्.) जो श्रुति या वेद सम्मत न हो।

अश्लाघ्य *वि.* (तत्.) 1. जो श्लाघा या प्रशंसा के योग्य न हो, अप्रशंसनीय, जो सराहनीय न हो 2. निंद्य 3. निम्न।

अश्लिष्ट *वि.* (तत्.) 1. श्लेष रहित, वियोजित जो जो सहयोजित या संयुक्त न हो 2. जिसका दूसरा अर्थ न हो 2. असंबद्ध 3. असंगत।

अश्लील *वि.* (तत्.) 1. भद्दा 2. अशिष्ट 3. ग्राम्य 4. शिष्टाचार के विरूद्ध, कामुकता का व्यर्थ प्रदर्शन करने वाली बात।

अश्लीलता *स्त्री.* (तत्.) 1. निर्लज्जता, फूहड़पन कामुकता 2. भद्दापन, ग्राम्यता 3. गंदापन 4. एक काव्यदोष जिसमें फूहड़ कामुकतावाची शब्दों का प्रयोग होता है।

अश्लेष *वि.* (तत्.) 1. श्लेषरहित 2. एकनिष्ठ *पु.* वियोग, अनैक्य विलो. श्लेष।

अश्लेषा *पुं.* (तत्.) 27 नक्षत्रों में पुष्य और मघा के बीच का (नवाँ) नक्षत्र।

अश्व *पुं.* (तत्.) घोड़ा।

अश्वक *पुं.* (तत्.) 1. छोटा घोड़ा 2. खराब जाति का घोड़ा।

अश्वकिनी *स्त्री.* (तत्.) अश्विनी नक्षत्र।

अश्वगंधा *स्त्री.* (तत्.) असगंध नामक औषधीय वनस्पति, असगंध।

अश्वगति *स्त्री.* (तत्.) घोड़े की चाल, काव्य. ऐसा चित्रकाव्य जिसमें पद्य के विशिष्ट पद्धति से लिखने पर घोड़े की-सी आकृति बन जाती है छंद. 1. 'नील' नामक समवर्णिक छंद 2. 'तीव्र' नामक समवर्णिक छंद।

अश्वतर *पुं.* (तत्.) खच्चर।

अश्वत्थ *पुं.* (तत्.) 1. पीपल 2. पीपल का गोदा 3. पीपल में फल आने का काल 4. अश्विनी नक्षत्र 5. सूर्य का एक नाम 6. नव लेखन में प्रयुक्त एक व्यंग्यात्मक प्रतीक जो दुनिया को ऊल-जलूल बताने के लिए प्रयुक्त होता है।

अश्वत्था *स्त्री.* (तत्.) आश्विन मास की पूर्णिमा।

अश्वत्थामा *पुं.* (तत्.) 1. द्रोणाचार्य का पुत्र, महाभारत के कौरव पक्ष का महारथी 2. मालवा के राजा इंद्रवर्मा के एक हाथी का नाम जो महाभारत के युद्ध में मारा गया।

अश्वपति *पुं.* (तत्.) 1. घुड़सवार 2 घोड़े का मालिक 3. अश्वसेना का नायक।

अश्वपाल *पुं.* (तत्) घोड़े की देखभाल करने वाला, साईस, अश्वपालक, अश्वबंध।

अश्वमुख *वि.* (तत्) 1. घोड़े के समान मुख वाला 2. किन्नर।

अश्वमेध *पुं.* (तत्.) एक विशेष वैदिक यज्ञ जिसमें घोड़े के सिर पर विजय घोषणा पत्र बांध कर उसे चारों ओर घुमाने के लिए छोड़ दिया जाता था, और यदि कोई उसे पकड़ लेता था तो उसे पराजित कर घोड़ा छुड़ा लिया जाता था, घोड़े के सुरक्षित वापस आने पर ही यज्ञ पूर्ण माना जाता था, यह चक्रवर्ती सम्राट होने का लक्षण माना जाता था 2. संगीत की एक तान जिसमें षडज (सा) स्वर नहीं लगता।

अश्वमेधिक *वि.* (तत्.) अश्वमेध से संबंध रखने वाला *पुं.* अश्वमेध के योग्य घोड़ा 2. महाभारत का चौदहवाँ पर्व।

अश्ववा *पुं.* (तत्) दे. अश्ववार।

अश्ववार *पुं.* (तत्) 1. अश्वारोही, घुड़सवार 2. साईस।

अश्ववाहिनी *स्त्री.* (तत्.) घुड़सवार होना।

अश्वविद् *वि.* (तत्) 1. घोड़े के लक्षणों, रोगों आदि की जानकारी रखने वाला 2. घोड़ों को प्रशिक्षण देने वाला।

अश्वशक्ति *स्त्री.* (तत्.) ऊर्जा का प्रति फुट पाउंड-पाउंड-सेकंड विधि पर आधारित मात्रक जो

लगभग 550 फुट पाउंड प्रति सेकंड के बराबर होता है horse power

अश्वशाला *स्त्री.* (तत्.) घुड़साल, अस्तबल, जहाँ घोड़े बाँधे जाते हैं।

अश्वशास्त्र *पु.* (तत्.) पशु चिकित्सा विज्ञान, शालिहोत्र।

अश्वानीक *पुं.* (तत्.) अश्ववाहिनी, अश्वसेना, घुड़सवार सेना, रिसाला।

अश्वायुर्वेद *पुं.* (तत्.) अश्व चिकित्सा विज्ञान, पशु चिकित्सा विज्ञान ।

अश्वारूढ़ *वि.* (तत्.) जो घोड़े पर सवार हो।

अश्वारोह *पुं.* (तत्.) 1. घुड़सवार 2. घुड़सवारी।

अश्वारोहण *पुं.* (तत्.) घुड़सवारी।

अश्वारोही *पुं.* (तत्.) घुड़सवार, वह जो घोड़े पर सवार हो।

अश्विनी *स्त्री.* (तत्.) 1. 27 नक्षत्रों में से प्रथम नक्षत्र 2. घोड़ी 3. जटामांसी नामक औषधीय पौधा 4. सूर्य की पत्नी और अश्विन कुमारों की माता दे. अश्विनी कुमार।

अश्विनी कुमार *पुं.* (तत्.) सूर्य की पत्नी प्रभा द्वारा घोड़ी का रूप ग्रहण कर लेने पर उससे उत्पन्न दो पुत्र जो देवताओं के चिकित्सक माने जाते हैं, स्वर्वैद्य, अश्विनी सुत, अश्विनीपुत्र।

अश्विनी मुद्रा *स्त्री.* (तत्.) गुदा की संवरणी मांसपेशियों को सिकोड़ने और ढीला छोड़ने की क्रिया जैसा मलत्याग के समय अश्व करता है, एक योगमुद्रा जिसमें गुदा की संवरणी मांसपेशियों को संकुचित किया जाता है।

अश्वीय *वि.* (तत्.) 1. अश्व से संबंधित 2. घोड़े के लिए हितकर *पुं.* (तत्.) घोड़ों का समूह।

अश्वेत *वि.* (तत्.) 1. जो सफेद न हो, जिसका रंग श्वेत न हो 2. काले रंग वाले लोग, नीग्रो।

अष्ट *वि.* (तत्.) आठ, सात से एक अधिक और नौ से एक कम *पुं.* आठ की संख्या।

अष्टक *पुं.* (तत्.) 1. आठ वस्तुओं का संग्रह, आठ वाला समूह जैसे अष्टाध्यायी 2. वह स्तोत्र या काव्य जिसमें आठ श्लोक या पद्य हों 3. आठ ऋषियों का एक गण 3. आठ अवगुणों का समूह, पिशुनता, द्रोह, ईर्ष्या, असूया, अर्थदूषण, वाग्दंड, साहस और पारुष्य (मनुस्मृति)।

अष्टकमल *पुं.* (तत्.) हठयोग में मूलाधार से मस्तक तक स्थित आठ चक्र।

अष्टका *स्त्री.* (तत्.) 1. आश्विन मास में श्राद्ध पक्ष की अष्टमी तिथि 2. अष्टका में किया जाने वाला 3. अगहन, पूस, माघ और फाल्गुन की कृष्णाष्टमी।

अष्टकुल *पुं.* (तत्) पुराणोक्त नागजाति के आठ कुल या उनका समूह वि. पुराणों में शेष, वासुकि, कंबल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख और कुलिक इन आठ नागकुलों के नाम आते हैं।

अष्ट कुलपर्वत *पुं.* (तत्.) नील, निषध, विंध्य, माल्यवान, मलय, गंधमादन, हेमकूट, हिमालय ये आठ पर्वत शृंखलाएँ।

अष्टकृष्ण *पुं.* (तत्.) वल्लभ संप्रदाय में माने गए कृष्ण के आठ रूप-श्रीनाथ, नवनीत प्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुल चंद्रमा और मदन मोहन।

अष्टकोण *वि.* (तत्.) आठ कोने वाली आकृति।

अष्टगंध *पुं.* (तत्) विभिन्न देवताओं की प्रकृति एवं रुचि के अनुसार उन्हें समर्पित करने के लिए आठ प्रकार के सुगंधित द्रव्यों का मिश्रण जिनमें चंदन, अगरु, कपूर, केसर, जटामासी, तुलसी, बिल्व, दूर्वा होते हैं। कुछ विद्वानों के मत मत में इसमें मेंहदी का भी समावेश होता है।

अष्टगुण *पुं.* (तत्.) ब्राह्मण के लिए अनिवार्य आठ गुण- दया, क्षमा, अनसूया, शुचिता, अनायास, मंगल, अकार्पण्य, अस्पृहा।

अष्टग्रह योग. *पुं.* (तत्.) ज्यो. सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि का राहू या केतु के साथ एक ही राशि में आ जाना ।

अष्टग्रही *वि.* (तत्) ज्यो. वह योग या विशिष्ट समय जब ज्योतिषोक्त आठ ग्रह एक ही राशि में स्थित होते हैं।

अष्टछाप *पुं.* (तत्.+तद्.) वल्लभ संप्रदाय के कृष्ण भक्त आठ कवियों का विशेष समूह- सूरदास, कुंभनदास, परमानंद दास, कृष्णदास, छीत स्वामी, गोविंद स्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास।

अष्टदिशा *स्त्री.* (तत्.) आठ दिशाएँ पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैॠत्य, पश्चिम, वायवी, उत्तर, ईशान।

अष्टद्रव्य *पुं.* (तत्.) यज्ञ की सामग्री के आठ द्रव्य-पीपल, गूलर, पाकड़, बरगद, तिल, सरसों, पायस और घी।

अष्टधातु *स्त्री.* (तत्.) आठ धातुएँ सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा और पारा।

अष्टनायिका *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा की आठ शक्तियाँ उग्रचंडा, प्रचंडा, चंडोग्रा, चंडनायिका, अतिचंडा, चामुंडा, चंडा, चंडवती काव्य. काव्यशास्त्र में वर्णित आठ प्रकार की नायिकाएँ- स्वाधीनपतिका, विरहोत्कंठिता, विप्रलब्धा, वासकसज्जा, खंडिता, कलहांतरिता, अभिसारिका और प्रोषितपति का तंत्र. मंगलादि आठ देवियाँ-मंगला, विजया, भद्रा, जयंती, अपराजिता, नंदिनी, नारसिंही और कौमारी।

अष्टपद *पुं.* (तत्.) 1. आठ पैरों वाला जीव, शलभ *वि. (तत्.)* आठ पैरोंवाला।

अष्टपदी *स्त्री.* (तत्.) 1. एक छंद 2. एक प्रकार का गीत 3. एक प्रकार की चमेली 4. बेले का फूल और पौधा।

अष्टपाद *पुं.* (तत्.) आठ पैरो वाला जीव।

अष्टपुत्र *पुं.* (तत्.) आठ दलों का कमल।

अष्टप्रकृति *स्त्री.* (तत्.) राज. 1. प्राचीन भारतीय राजतंत्र के अनुसार राज्य के आठ अंग- राजा, राज्य (राष्ट्र), अमात्य, दुर्ग, सेना, कोष, सामंत और प्रजा 2 राज्य के आठ अधिकारी सुमंत्र, पंडित, मंत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य, न्यायाधीश और प्रतिनिधि।

अष्टप्रधान *पुं.* (तत्.) आठ प्रकार के मुख्य राज पुरुष प्रधान, अमात्य, सचिव, मंत्री, धर्माध्यक्ष, न्यायाशास्त्री, वैद्य और सेनापति।

अष्टफलक *पुं.* (तत्.) गणि. वह त्रिआयामी ठोस फलक जिसमें आठ समतल फलक हों।

अष्टभुजा *स्त्री.* (तत्.) आठ भुजाओं वाली, दुर्गा।

अष्टभुजी *स्त्री.* (तत्.) दे. अष्टभुजा।

अष्टम *पुं.* (तत्.) गणना क्रम में सातवें के बाद का स्थान, आठवाँ।

अष्टमी *स्त्री.* (तत्.) चांद्र मास के कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष की आठवीं तिथि।

अष्टमूर्ति *पुं.* (तत्.) भगवान शिव जिनके आठ रूप हैं पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, सूर्य, चंद्र तथा ऋत्विज।

अष्टयाम *पुं.* (तत्) 1. दिन-रात के आठ पहर टि. 1. एक पहर या प्रहर प्रायः 3 घंटे का माना जाता है, दोपहर, तीसरा पहर, चौथा पहर आदि प्रयोग भाषा में होते हैं 2. ऐसी काव्य-रचना जिसमें नायक-नायिकाओं के आठों प्रहरों के अलग-अलग क्रियाकलापों का चित्रण होता है।

अष्टयोग *पुं.* (तत्.) महर्षि पतंजलि द्वारा निर्दिष्ट योग जिसके यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये आठ अंग हैं।

अष्टवर्ग *पुं.* (तत्.) 1. आयुर्वेद की आठ औषधियों का समूह-जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीर काकोली, ऋद्धि तथा वृद्धि 2. राजनीति के अनुसार राज्य के आठ अंग या वर्ग ऋषि, वस्ती, दुर्ग, सेतु, हस्तिबंधन, खान, कर-ग्रहण और सैन्य संस्थापन।

अष्टविध *वि.* (तत्.) आठ प्रकार का।

अष्टसिद्धि *स्त्री.* (तत्.) शास्त्रोक्त आठ प्रकार की की सिद्धियाँ अणिमा (अपने शरीर का आकार छोटा कर सकना), महिमा (आकार बढ़ा सकना) गरिमा (शरीर भारी कर लेना) लघिमा (शरीर हल्का कर लेना) प्राप्ति (अभीष्ट वस्तु प्राप्त करना), प्राकाम्य (इच्छानुसार शरीर परिवर्तन या अन्य कुछ भी कर सकना), ईशित्व (किसी से

कुछ भी करवा लेना, प्रभुत्व) और वशित्व (प्रकृति को वश में कर लेना।)

अष्टांग *वि.* (तत्.) 1. योग क्रिया के आठ क्षेत्र यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि 2. सूर्य को दिया जाने वाला विशेष अर्घ्य जिसमें जल, क्षीर, कुशाग्र, घी, मधु, दही, रक्त चंदन और करवीर होते हैं 3. शरीर के आठ अंग जिनसे साष्टांग प्रणाम किया जाता है, अर्थात् घुटना, हाथ, पाँव, छाती, सिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि *वि.* 1. गौतम बुद्ध द्वारा निर्दिष्ट मार्ग जिसमें दुःखों से निवृत्ति पाने के आठ द्वार अर्थात् सम्यक्दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि 2. आठ अवयव वाला, जिसके आठ अंग या भाग हो 3. आठ पहर।

अष्टांग आयुर्वेद *पुं.* (तत्.) अष्टायुर्वेद, आयुर्वेद के के आठ अंग या विभाग शल्य चिकित्सा, शलाक्य, कायचिकित्सा, भूत विद्या, कौमारभृत्य, अंगदतंत्र, रसायनतंत्र और बाजीकरण।

अष्टांग योग *पुं.* (तत्.) महर्षि पतंजलि द्वारा निर्दिष्ट योग साधना जिसके आठ अंग हैं: यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

अष्टांशक *पुं.* (तत्.) आठ-आठ के अंश वाला दे. अठपेजी।

अष्टाक्षर *पुं.* (तत्.) आठ अक्षरों का मंत्र, विष्णु का मंत्र 'ॐ नमो नारायणाय', वल्लभ संप्रदाय के अनुसार 'श्री कृष्णः शरणं मम' मंत्र *वि.* (तत्.) आठ अक्षरों का, आठ अक्षर वाला।

अष्टादश *वि.* (तत्.) अठारह।

अष्टाध्यायी *स्त्री.* (तत्.) आठ अध्यायों वाला पाणिनीय व्याकरण का प्रमुख ग्रंथ जिसमें आठ अध्याय हैं।

अष्टावक्र *पुं.* (तत्.) कहोड ऋषि के पुत्र तथा एक प्रसिद्ध ऋषि जिनका शरीर आठ स्थानों से टेढ़ा मेढा था वि. जिसके आठ अंग टेढ़े हो, कुरूप।

अष्टाह्निक *वि.* (तत्.) आठ दिनों का या आठ दिनों से संबंधित जैसे- अष्टाह्निक यज्ञ-आठ दिनों तक चलने वाला यज्ञ।

अष्टि *स्त्री.* (तत्.) 1. बीज 2. बीज या वृक्ष की छाल 3. खेल का पाँसा।

अष्ठि *स्त्री.* (तत्.) 1. पत्थर का टुकड़ा 2. पत्थर के टुकड़े जैसा कठोर पदार्थ जैसे- गुठली के बीच का कठोर भाग इत्यादि।

अष्ठिल *वि.* (तत्.) 1. अष्ठि जैसा 2. अष्ठि से युक्त।

अष्ठिलिका *स्त्री.* (तत्.) 1. अष्ठि का छोटा टुकड़ा टुकड़ा 2. छोटे आकार वाली अष्ठि।

अष्ठीला *स्त्री.* (तत्.) आयु. 1. मूत्राशय का एक रोग जिसमें अफरा होने से पेशाब नहीं होता और गाँठ पड़ जाती है 2. एक रोग जिसमें नाभि के नीचे शोथ हो जाता है चिकि. 1. गुर्दे की एक बीमारी 2. पत्थर की गोली 3. अनाज का बीज।

असंकुल *वि.* (तत्.) जहाँ भीड़भाड़ न हो, खुला (स्थान), चौड़ा (मार्ग) विलो. संकुल

असंक्रांत *वि.* (तत्.) 1. जिसका संक्रमण न हुआ हो 2. जो स्थानांतरित न हुआ हो, जिसका स्थान बदला न हो 3. पत्थर की गोली चिकि. गुर्दे की एक बीमारी।

असंक्रांत मास *पुं.* (तत्.) चांद्र पंचांग में प्रायः प्रत्येक तीसरे वर्ष आने वाला सूर्य संक्रांति से रहित तेरहवाँ महीना जिससे चांद्र और सौर पंचांगों की दिनसंख्या का अंतर समायोजित हो जाता है, अधिक मास, मलमास, पुरुषोत्तम मास।

असंक्रामक *वि.* (तत्.) (वह रोग आदि) जो संक्रामक न हो, जो अन्यों को संक्रमित न करे, न फैलने वाला विलो. संक्रामक।

असंक्राम्य *वि.* (तत्.) 1. जिसे कोई संक्रमण न हो, संक्रमण से मुक्त 2. जो संक्रमण से न फैले विलो. संक्राम्य।

असंक्राम्य पादप *पुं.* (तत्.) दे. प्रतिरक्षी पादप।

असंख्य *वि.* (तत्.) गणि. जिनकी गिनती न हो सके, अनगिनत, बेशुमार, बहुत अधिक, शून्य में

किसी संख्या से भाग देने पर प्राप्त भागफल, अनगित, संख्यातीत।

असंख्यात *वि.* (तत्.) 1. बिना गिना हुआ 2. न गिनने योग्य, अगणित, अनगिनत 3. संख्यातीत, इतना अधिक कि गणना असंभव हो जाए।

असंख्येय *वि.* (तत्) दे. असंख्यात ।

असंग *वि.* (तत्.) 1. किसी से संबंध न रखने वाला, सबसे पृथक, बिना साथ का, अकेला, एकाकी 2. आसक्ति से रहित, माया-रहित *पुं.* एकाकीपन, निःसंगता।

असंगजनन *पुं.* (तत्.) प्राणि. जनन का एक प्रकार जिसमें अर्द्धसूत्री विभाजन एवं युग्मकों का संलयन नहीं होता है *वि.* पौधों में इस प्रकार का जनन प्रायः दिखलाई पड़ता है, जड़ से ही नए पौधे का जन्म।

असंगत *पुं.* (तत्.) 1. अनुचित, जो संगत या अनुकूल न हो, किसी से मेल न खाने वाला, मूल से संगति न रखने वाला, अनुप्रयुक्त 2. अलग, असंबद्ध, प्रतिकूल 3. असमान 4. उजड्ड विलो. संगत।

असंगति *स्त्री.* (तत्.) 1. असंगतता, असंबद्धता, अनुपयुक्तता, अनौचित्य 2. क्रमहीनता 3. अर्थालंकार का एक भेद जिसमें कार्य-कारण, देश-काल संबंधी असंगति का वर्णन होता है विलो. संगति।

असंगम *पुं.* (तत्.) 1. संग का अभाव 2. अनासक्ति 3. बेमेलपन 4. पार्थक्य *वि.* (तत्.) 1. अलग 2. बेमेल।

असंगी *वि.* (तद्.) 1. असंबद्ध 2. बिना लगाव का 3. विरक्त।

असंचय *पुं.* (तत्.) 1. संचय का अभाव 2. संचय या जमा करने में अरुचि *वि.* आवश्यक वस्तुओं से रहित विलो. संचय।

असंचयी *वि.* (तत्.) 1. संचय की प्रवृत्ति जिसमें न हो, असंचयिक 2. जो सब कुछ खर्च कर देता हो पर भविष्य के लिए कुछ न बचाता हो।

असंचर *वि.* (तत्.) 1. (ऐसा रास्ता) जिसमें संचरण कठिन हो 2. जिस (रास्ते) पर कोई आता-जाता न हो।

असंचारी रोग *पुं.* (तत्.) वे रोग जो संसर्ग या संक्रमण से नहीं होते।

असंज्ञ *वि.* (तत्.) 1. बिना नाम वाला, अनाम 2. संज्ञा-रहित, चेतनाविहीन 3. मूर्छित।

असंज्ञेय *वि.* (तत्.) जिसका संज्ञान न लिया जा सके, जिसे समझना कठिन हो विधि. 1. न्यायालय या पुलिस विश्राम के अधिकार क्षेत्र से बाहर का (अपराध) 2. अनाम।

असंत *वि.* (तत्.) बुरा, दुर्जन, खल, दुष्ट, असाधु विलो. संत *पुं.* दुष्ट व्यक्ति।

असंतत *वि.* (तत्.) जो लगातार न हो, विच्छिन्न, विशृंखल।

असंतत घटक *पुं.* (तत्.) भाषा. क्रिया या संज्ञा पदबंध आदि घटक जिसमें सन्निधि नहीं होती और जिनके अपने घटकों के बीच अन्य घटक आ जाते हैं, जैसे 'तुमने' के बीच 'ही' का आ जाना 'तुम्ही ने'।

असंतति *वि.* (तत्.) जिसके संतति या बच्चे न हों, निस्संतान *स्त्री.* (तत्.) सतत या निरंतर न होने की स्थिति, अनैरंतर्य।

असंतव्य *वि. (तत्.)* जिसे क्षमा न किया जा सके। अक्षम्य।

असंतुलन *पुं.* (तत्.) संतुलन के न होने की स्थिति। दो परस्पर-संबद्ध और पारस्परिक प्रभाव डालने वाले तत्वों के बीच संतुलन या साम्यावस्था का न हो पाना।

असंतुष्ट *वि.* (तत्.) 1. जिसे संतोष न मिले, जो संतुष्ट न हो, अतृप्त 2. जिसकी इच्छा पूरी न हुई हो विलो. संतुष्ट 3. क्रुद्ध, रुष्ट।

असंतुष्टि *स्त्री.* (तत्.) 1. संतोष का अभाव 2. अतृप्त 3. अप्रसन्नता 4. रोष विलो. संतुष्टि।

असंतोष *पुं.* (तत्.) 1. संतोष का अभाव 2. अतृप्त, अप्रसन्नता विलो. संतोष।

असंतोषी *वि.* (तत्.) संतुष्ट न रहने की प्रवृत्ति वाला, जिसे संतोष न हो, जो तृप्त न हो 2. अधिक चाहने वाला विलो. संतोषी।

असंदाय *पुं.* (तत्.) किसी देय राशि का भुगतान न किया जाना non-payment

असंदिग्ध *वि.* (तत्.) 1. जिसके विषय में संदेह न हो, आशंका से रहित 2. विश्वास योग्य विलो. संदिग्ध।

असंधि *वि.* (तत्.) 1. जिसमें आपस में संधि न हो, संधि रहित; जोड़-रहित 2. स्वतंत्र *स्त्री.* संधि का अभाव, मेल का अभाव, संबंध का अभाव 3. व्या. शब्द का संधिरहित होना विलो. संधि।

असंपत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. संपत्ति का अभाव 2. दुर्भाग्य *वि.* (तत्.) संपत्ति रहित, अभागा।

असंपर्क *पुं.* (तत्.) संपर्क का अभाव, संबंध न होना, मेलजोल न होना विलो. संपर्क।

असंपुष्ट *वि.* (तत्.) जिसकी संपुष्टि या सच्चाई पर्याप्त साक्ष्य से प्रमाणित न हुई हो।

असंपूर्ण *वि.* (तत्.) 1. अधूरा, अपूर्ण, अपरिपूर्ण, जो पूरा न हो 2. थोड़ा-थोड़ा, कुछ-कुछ विलो. संपूर्ण।

असंपृक्त *वि.* (तत्.) 1. जो किसी के संपर्क में न हो, संपर्क रहित, संबध-रहित, असंयुक्त 2. तटस्थ विलो. संपृक्त।

असंप्रज्ञात समाधि *स्त्री.* (तत्.) योग. दो प्रकार की समाधियों में से एक जिसमें ध्याता, ध्येय और ध्यान की त्रिपुटी नहीं रहती, अर्थात् आलंबन-रहित समाधि पर्या. निर्बीज समाधि, निर्विकल्प समाधि।

असंबंध *पुं.* (तत्.) संबंधविहीनता, संबंध का न होना, लगाव न रह जाना विलो. संबंध।

असंबद्ध *वि.* (तत्.) 1. जो संबंधित न हो या जुड़ा न हो 2. पृथक, अलग, अनमेल 3. बिना सिर-पैर का, अनुचित विलो. संबद्ध।

असंबाध *वि.* (तत्.) 1. बिना बाधा के, निर्बाध् 2. जो बंधन में न हो; जिसे बांधा न जा सके 3. भीड़-भाड़ से अलग, खुला स्थान।

असंभव *वि.* (तत्.) जो संभव न हो, जो न हो सके, अनहोना, नामुमकिन *पुं.* काव्य. एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें न होने वाली बात होती हुई दिखाई जाए विलो. संभव।

असंभवता *स्त्री.* (तत्.) असंभव होने की स्थिति या भाव।

असंभार *पुं.* (तत्.) देख-रेख न हो पाना *वि.* 1. बिना देखरेख वाला, बिना सँभाला हुआ 2. न सँभालने योग्य, बहुत बड़ा या कठिन।

असंभाव *वि.* (तत्.) 1. जो संभालने योग्य न हो 2. जिसकी व्यवस्था संभव न हो 3. अपार 4. बहुत बड़ा *पुं.* (तत्.) आवश्यक-सामग्री का प्रबंध न हो पाना 3. अभावितव्यता।

असंभावना *स्त्री.* (तत्.) 1. संभावना का अभाव, अनहोनापन 2. अशक्यता दर्श. ज्ञान के तीन प्रतिस्कंधों में से एक विलो. संभावना।

असंभावनीय *वि.* (तत्.) दे. असंभाव्य।

असंभावित *वि.* (तत्.) जिसकी संभावना न रही हो, जिसके विषय में अनुमान ही न किया गया हो, असंभव विलो. संभावित।

असंभावी *वि.* (तत्.) दे. असंभावित।

असंभाव्य *वि.* (तत्.) जिसकी संभावना बिल्कुल न हो, जिसका अनुमान भी न किया जा सके, अनहोना। विलो. संभाव्य।

असंभूति *स्त्री.* (तत्.) 1. अस्तित्व का न होना, अस्तित्वहीनता 2. योग्यता का अभाव 3. पुनर्जन्म न होना, मोक्ष 4. मूल प्रकृति।

असंभ्रम *पुं.* (तत्.) 1. अधीरता या हड़बड़ी का अभाव, धीरता 2. शांति *वि.* उतावली या व्याकुलता से रहित, शांत।

असंयत *वि.* (तत्.) 1. संयम रहित, अनियंत्रित 2. बंधनहीन, बे-लगाम विलो. संयत।

असंयति *स्त्री.* (तत्.) 1. शरीर की क्रियाओं जैसे- मूत्रत्याग या मलत्याग आदि पर नियत्रंण न रख पाना 2. असंयत होने का दुर्गुण incontinence

असंयम *पुं.* (तत्.) 1. संयम का अभाव, मन, इंद्रिय आदि को वश में न रखने की स्थिति, अपने को काबू में न रखे जाने की स्थिति 2. विलासिता विलो. संयम।

असंयमी *वि.* (तत्.) जो संयमी न हो, चंचल मन वाला। विलो. संयमी।

असंयुक्त *वि.* (तत्.) जो संयुक्त अर्थात् आपस में जुड़ा या मिला न हो, विभाजित, बिखरा हुआ, अलग विलो. संयुक्त।

असंयोग *पुं.* (तत्.) 1. संयोग का न होना 2. सम्मिलन का अभाव; अवसर का अभाव, संपर्क निषिद्ध होने की स्थिति विलो. संयोग।

असंलक्ष्य *वि.* (तत्.) 1. जिसे लक्षित न किया जा सके, ध्यान में न आने योग्य 2. दुर्बोध विलो. संलक्ष्य।

असंलक्ष्यक्रम ध्वनि *स्त्री.* (तत्.) काव्य. अभिधामूला ध्वनि का एक विशेष भेद जिसमें वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ की प्रतीति का क्रम संलक्षित नहीं होता, व्यंजना केवल आनंद उत्पन्न करती है और सहृदय सामाजिक (श्रोता या पाठक) उस अनुभूति में इतना खो जाता है कि क्रम की ओर उसका ध्यान ही नहीं जाता।

असंलक्ष्याक्रम *वि.* (तत्.) जिसका क्रम ध्यान में न आ सके। इस संदर्भ में काव्यशास्त्र में 'शतपत्रवेधन' का उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है जैसे- कमल के सौ पत्तों को बाण चलाकर बेध दिया जाए तो सारे एक साथ बेधे जान पड़ते हैं, यद्यपि सारे पत्ते एक क्रम से ही बिंधते है पर यह क्रम ध्यान में आना कठिन होता है।

असंवृत्त *वि.* (तत्.) जो ढँका हुआ न हो, जो छिपा न हो, खुला हुआ, प्रकट।

असंवेदना *स्त्री.* (तत्.) 1. चित्त की वह अवस्था जिसमें सुख-दुख, मान-अपमान आदि का बोध नहीं होता आयु. शरीर के किसी अंग का सुन्न हो जाना।

असंवेदिता *स्त्री.* (तत्.) संवेदनहीन होने की स्थिति।

असंशय *वि.* (तत्.) संशयरहित, बेशक, *क्रि.वि.* निस्संदेह *पुं.* संशय का अभाव, संदेह या शक का न होना।

असंशोधित *वि.* (तत्.) 1. बिना कमाया हुआ (चमड़ा) 2. संस्कृत न की गई खाद्य वस्तु unprocessed

असंशृत *वि.* (तत्.) 1. जिसका पालन-पोषण न हुआ हो 2. जिसका पालन-पोषण प्रकृति ने ही किया हो, प्रकृतिजन्य, प्राकृतिक।

असंश्लिष्ट *वि.* (तत्.) जो मिला हुआ या जुड़ा न हो, पृथक, अलग विलो. संश्लिष्ट।

असंसक्त *वि.* (तत्.) 1. जो संसक्त न हो 2. आसक्ति रहित, अनासक्त विलो. संसक्त।

असंसक्ति *वि.* (तत्.) 1. संबद्धता का अभाव 2. लगाव का न होना, जुड़े/सटे/मिले न होने का भाव या स्थिति, विरक्ति 3. निर्लिप्तता, राग का अभाव विलो. संसक्ति।

असंसदीय *वि.* (तत्.) 1. जो संसद की गरिमा, मर्यादा, कार्यविधि, परंपरा आदि के प्रतिकूल हो 2. जो संसद में कहने या करने योग्य न हो 3. अशिष्ट 4. जो संसद का विषय न हो।

असंसदीय भाषा. *स्त्री.* (तत्.) ऐसी भाषा जिसका संसद या विधानमंडल में प्रयोग करना अशोभनीय, परंपरा के विरुद्ध अथवा पीठासीन अधिकारी के निर्णयानुसार वर्जित होता है।

असंसारी *वि.* (तत्.) 1. संसार की सभी बातों से अलग, विरक्त, जो इस संसार में नहीं होता, निरासक्त 2. अभौतिक, अलौकिक, दिव्य।

असंसृति *स्त्री.* (तत्.) 1. संसृति अर्थात् प्रवाह का अभाव 2. पुनर्जन्म का न होना, मोक्ष।

असंसृष्ट *वि.* (तत्.) 1. जो दूसरों से संबद्ध या मिला न हो 2. साथ न रहने वाला विलो. संसृष्ट।

असंस्कृत *वि.* (तत्.) 1. संस्कारहीन 2. जिसका संस्कार न हुआ हो, अपरिमार्जित, अपरिशोधित, बिना सुधारा हुआ, ग्राम्य, अनगढ़ विलो. सुसंस्कृत

असंस्तुत *वि.* (तत्.) 1. जिस की संस्तुति (सिफारिश) न की गई हो 2. अकथित, अप्रशंसित 3. जो प्रसिद्ध न हो 4. बिना लगाव का विलो. संस्तुत।

असंस्थित *वि.* (तत्.) 1. अनवस्थित, व्यवस्थारहित क्रमहीन 2. चल 3. असंगृहीत।

असंस्थिति *स्त्री.* (तत्.) 1. कार्य के व्यवस्थित न होने का भाव, अव्यवस्थितता 2. नियमों का पालन न होना, अनियमितता 3. क्रमहीनता 4. किसी प्रकार की कमी।

असंस्पर्शी *वि.* (तत्.) जिसका शारीरिक संपर्क नहीं होता, संस्पर्श-रहित।

असंस्पर्शी खेल *पुं.* (तत्.) खेल. खेल जिसमें खिलाड़ियों को शारीरिक संस्पर्श की आवश्यकता नहीं पड़ती जैसे- गोल्फ, तैराकी, जिमनास्टिक्स आदि।

असंहत *वि.* (तत्.) 1. जो संहत या घना या अंतर्ग्रंथित न हो 2. बिखरा हुआ।

असकृत *क्रि.वि.* (तद्.) पुनः पुनः, बार-बार, अनेक बार, अक्सर, प्रायः।

असक्त *वि.* (तत्.) 1. जो आसक्त न हो 2. जो लिप्त, चिपका या सटा न हो 3. तटस्थ, उदासीन, सांसारिक विषयों से विरक्त, कर्मफल निरपेक्ष।

असगंध *पुं.* (तद्.) 1. अश्वगंधा नामक औषधीय पौधा 2. उक्त पौधे का मूल या जड़ *वि.* अश्वगंधा का पौधा प्रायः मीटर ऊँचा होता है, चौड़े पत्ते तथा कुछ पीलापन लिए हुए फूल तथा छोटे-छोटे कुछ लालिमा लिए हुए फलों वाला यह क्षुप अनेक रोगों में उपयोगी होता है, इसके सभी अंग औषधि का कार्य करते हैं।

असगर *वि.* (अर.) बहुत छोटा, सूक्ष्म टि. सगीर का लघु रूप।

असगुन *पुं.* (तद्.) दे. अशकुन विलो. सगुन।

असगोत्र *वि.* (तत्.) जो सगोत्री न हो, भिन्न-गोत्रीय, भिन्न कुल का विलो. सगोत्र।

असच्छास्त्र *पुं.* (तत्.) (असत् शास्त्र) उन्मार्ग की ओर ले जाने वाला शास्त्र, धर्मविरोधी शास्त्र विलो. सच्छास्त्र

असजात्य *वि.* (तत्.) जो सजात्य अर्थात् रक्त-संबंधी न हो। विलो. सजात्य।

असज्जन *वि.* (तत्.) दुष्ट, खल, नीच, बुरा *पुं.* *(तत्.)* बुरा आदमी, दुर्जन विलो. सज्जन।

असढ़िया *पुं.* (तद्.) 1. आषाढ़ मास से संबंधित, आषाढ़ मास में होने वाला, पकने वाला, बोया जाने वाला (अनाज आदि) 2. एक विशेष साँप, जिसकी पीठ पर कई प्रकार की चित्तियाँ होती है।

असती *वि.* (तत्.) (स्त्री.) 1. जो सती न हो 2. दुराचारिणी, कुलटा, व्यभिचारिणी, जो पति के प्रति एकनिष्ठ न हो *स्त्री.* वेश्या।

असत् *वि.* (तत्.) 1. अस्तित्वहीन, अविद्यमान, मिथ्या, अनुचित 2. बुरा, खराब *पुं.* 1. अनस्तित्व 2. सत्ताहीन होने का भाव 3. मिथ्यात्व विलो. सत्।

असत्कार *पुं.* (तत्.) 1. आवभगत न होना 2. अपमान, निरादर 3. अहित। विलो. सत्कार।

असत्कार्यवाद *पु.* (तत्.) असत् से भी सत् की उपत्त्ति हो सकती है इस प्रकार का 'न्यायदर्शन' का सिद्धांत, सांख्य के 'सत्कार्यवाद सिद्धांत का विरोधी सिद्धांत दे. आरंभवाद।

असत्कृत *वि.* (तत्.) 1. जिसका (उचित) सत्कार न किया गया हो 2. जिसका तिरस्कार या अपमान किया गया हो, जिसके साथ अनुचित व्यवहार किया गया हो।

असत्कृत्य *पुं.* (तत्.) अनुचित कर्म, दुष्कृत्य *वि.* बुरा काम करने वाला विलो. सत्कृत्य।

असत्क्रिया *स्त्री.* (तत्.) बुरी क्रिया, बुरा परिणाम देने वाली क्रिया, दुर्व्यवहार, कुकर्म।

असत्ता *स्त्री.* (तत्.) 1. अस्तित्व का न होना, अस्तित्वहीनता, सत्ता ही न होना 2. बुराई, दुष्टता विलो. सत्ता।

असत्य *वि.* (तत्.) जो सच्चा न हो, झूठा, तथ्य के विपरीत *पुं.* 1. झूठ 2. कल्पना।

असत्यता *स्त्री.* (तत्.) असत्य होने की स्थिति या या भाव, झूठ विलो. सत्यता।

असत्यवादी *वि.* (तत्.) झूठ बोलने वाला, मिथ्यावादी।

असत्यशील *वि.* (तत्.) वह जो अक्सर झूठ ही बोलता है, जिसका स्वभाव झूठ बोलने का हो।

असत्यसंथ *वि.* (तत्.) 1. असत्य के आधार पर आचरण करने वाला, कपटी 2. कृतघ्न, धोखा देने वाला।

असत्व *वि.* (तत्.) 1. सत्वहीन 2. कमजोर 3. जिसमें अच्छाई न हो *पुं.* 1. असत्ता 2. असत्यता 3. बुराई विलो. सत्व।

असत् संसर्ग *पुं.* (तत्.) बुरे लोगों का संपर्क, कुसंगति।

असदागम *पुं.* (तत्.) ऐसे शास्त्र जो वेदों को प्रमाण न मानते हों, वैदनिंदक शास्त्र।

असदृश *वि.* (तत्.) 1. असमान, बेमेल 2. अनुचित, अयोग्य।

असद्भाव *पुं.* (तत्.) 1. सद्भाव अथवा अच्छे मनोभाव का अभाव, दुर्भाव, बुरी भावना, दुराशय 2. असत् का भाव, असत्ता विलो. सद्भाव।

असद्भावना *स्त्री.* (तत्.) बुरी भावना, दुर्भावना।

असद्वाद *पुं.* (तत्.) दर्श. संसार के समस्त पदार्थों को 'असत' या मिथ्या मानने का सिद्धांत, इसके अनुसार कोई पदार्थ सत नहीं होता।

असद्वादी *वि.* (तत्.) असद्वाद के सिद्धांत को मानने वाला।

असद्विद्या *स्त्री.* (तत्.) असत्य का मार्ग दिखलाने वाली विद्या जैन. पतन का मार्ग दिखलाने वाली वाली विद्या।

असद्वृत्ति *स्त्री.* (तत्.) नीच कर्म या पेशा, अस्पष्टवृत्ति।

असन *पुं.* (तद्.) भोजन, अशन। *पुं.* 1. असमा, एक प्रकार का वृक्ष 2. फेंकना 3. क्षेपण 4. छोड़ना 5. चलाना (बाणादि)।

असना *पुं.* (तत्.) साल जैसा एक वृक्ष जिसका तना अंदर से भूरे-काले रंग का होता है, इसका प्रयोग भवन निर्माण में होता है।

असन्नद्ध *वि.* (तद्.) 1. जो युद्ध के लिए सशस्त्र सशस्त्र तैयार न हो विलो. सन्नद्ध।

असन्निकर्ष *पुं.* (तत्.) निकटता का अभाव, दूरी।

असन्निधान *पुं.* (तत्.) 1. साथ-साथ होने की स्थिति का न होना, अनिकटता 2. अनुपस्थिति 3. मित्रता का अभाव विलो. सन्निधान।

असन्निधि *स्त्री.* (तत्.) 1. दे. असन्निकर्ष 2. मैत्री या घनिष्ठता का न होना 3. निरंतरता का अभाव।

असन्निहित *वि.* (तत्.) 1. जो निकट न हो, दूरवर्ती 2. अनुचित या गलत ढंग से रखा हुआ विलो. सन्निहित।

असपत्न *पुं.* (तत्.) 1. जिसका कोई शत्रु न हो। अज्ञात शत्रु 2. जिसकी कोई सौत न हो।

असपिंड *वि.* (तत्.) जो संपिड न हो टि. किसी व्यक्ति के पूर्वजों की तीन पीढ़ियाँ और आने वाली तीन पीढ़ियाँ इस प्रकार सात पीढ़ियों के लोग सपिंड कहलाते हैं, शास्त्रानुसार मृत व्यक्ति व्यक्ति का पिंडदान करने का अधिकार जिन्हें होता है वे भी सपिंड कहलाते हैं।

असफल *वि.* (तत्.) 1. जो सफल न हो, नाकामयाब, निष्फल 2. व्यर्थ विलो. सफल।

असफलता *स्त्री.* (तत्.) विफलता, सफलता का अभाव, नाकामयाबी विलो. सफलता।

असबाब *पुं.* (अर.) 'सबब' अर्थात् हेतु या साधन का बहुवचन। 1. आवश्यक चीज या वस्तु 2. यात्री के साथ का सामान 3. प्रयोजनीय पदार्थ।

असभ्य *वि.* (तत्.) 1. जो सभ्य न हो, अशिष्ट, असंस्कृत, गँवार 2. जो सभा के योग्य न हो 3. जंगली विलो. सभ्यता।

असम *वि.* (तत्.) 1. जो बराबर न हो 2. असमान, बेजोड़ 3. ऊँचा-नीचा विलो. सम *पुं.* 1. अर्थालंकार का एक भेद जिसमें उपमान का मिलना असंभव दिखाया जाए 2. भारत के उत्तर-पूर्व में स्थित एक राज्य 3. बुद्ध।

असमंजन *पुं.* (तत्.) तालमेल का अभाव, दूसरों के साथ समायोजन न कर पाना, असामंजस्य।

असमंजस *पुं.* (तत्.) 1. दुविधा, कठिनाई 2. अड़चन 3. अनौचित्य, अंतर 4. महाराज सगर का ज्येष्ठ पुत्र, अंशुमान का पिता *वि. (तत्.)* 1. अस्पष्ट 2. अनुचित 3. मूर्खतापूर्ण 4. असंगत विलो. समंजस।

असमकालिक *वि.* (तत्.) जो एक ही समय में न हो, भिन्नकालिक, अतुल्यकालिक alochronic

असमग्र *वि.* (तत्.) अधूरा, अंशमात्र, जो समग्र अर्थात् पूरा न हो विलो. समग्र।

असमत *स्त्री.* (अर.) 1. अस्मत, इस्मत, सतीत्व 2. पातिव्रत 3. पवित्रता।

असमता *स्त्री.* (तत्.) असमानता, विषमता, भिन्नता, असाम्य। विलो. समता।

असमत्व *पुं.* (तत्.) दे. असमता ।

असमन्वय *पुं.* (तत्.) दे. असमंजन ।

असमपर्णी *वि.* (तत्.) वह वृक्ष जिसके पत्ते विभिन्न आकारों के होते हैं।

असममित *वि.* (तत्.) 1. जो असम माप का हो 2. (वस्तु) जिसके विभिन्न अवयवों का परस्पर ठीक अनुपात न हो अथवा जिसके अवयवों में संतुलन न हो 3. (वस्तु) जिसके अंगों में से एक या अनेक उचित स्थान पर हो 4. जो सुडैल न हो।

असममिति *स्त्री.* (तत्.) सममिति का न होना। किसी अंगी के विभिन्न अंगों में रूप, आकार, माप तथा अनुपात की दृष्टि से पूर्ण समानता के न होने की स्थिति, बेडौल होने का भाव।

असमय *पुं.* (तत्.) 1. बुरा समय, अनुचित काल 2. कुअवसर *क्रि.वि.* बेवक्त, बेमौके *वि.* अनुपयुक्त या अनुचित अवसर पर होने वाला जैसे- असमय मृत्यु।

असमर्थ *वि.* (तत्.) 1. अशक्त, दुर्बल, सामर्थ्यहीन, अक्षम 2. जिसमें अपेक्षित शक्ति या योग्यता न हो 3. काव्य. अभीष्ट अर्थ व्यक्त न कर सकने वाला विलो. समर्थ।

असमर्थता *स्त्री.* (तत्.) 1. असमर्थ होने का भाव, शक्तिहीनता 2. अयोग्यता 3. अशक्तता, अपंगता विलो. समर्थता।

असमवाय कारण *पुं.* (तत्.) दर्श. जो समवाय कारण न होकर सहयोगी कारण हो, जैसे 'घट' के निर्माण में मिट्टी समवाय कारण और कुम्हार का चक्र, दंडादि असमवाय कारण हैं पर्या. उपादन कारण विलो. समवाय कारण।

असमवायी *वि.* (तत्.) जो समवाय अर्थात् (सदा) संबंध रखने वाला न हो 2. आकस्मिक 3. पृथक्करणीय विलो. समवायी।

असमवृत्त *पुं.* (तत्.) वे वार्णिक छंद जिनके चारों चरण एक जैसे न हों।

असमस्त *वि.* (तत्.) 1. अधूरा, अपूर्ण, आंशिक 2. जो एकत्र न हो 3. असंबद्ध 4. व्या. समास रहित। विलो. समस्त।

असमाधानप्रद *वि.* (तत्.) 1. जिसे दूसरे की शंकाओं का समाधान न हो 2. जिसका कोई हल न हो।

असमाधानप्रद उत्तर *पुं.* (तत्.) किसी के द्वारा दिया गया ऐसा उत्तर या स्पष्टीकरण जो शंकाओं के समाधान के लिए पर्याप्त नहीं हो।

असमाधेय *वि.* (तत्.) (ऐसी समस्या या प्रश्न) जिसका समाधान या हल न हो या न निकाला जा सके।

असमान *वि.* (तत्.) जो समान या तुल्य न हो, असदृश, असमकक्ष *पुं.* (फ़ा.) दे. आसमान।

असमानता *स्त्री.* (तत्.) 1. आकार, रूप, योग्यता, योग्यता, उपयोगिता आदि में समानता न होना, विषमता 2. भिन्नता विलो. समानता।

असमाप्त *वि.* (तत्.) 1. अपूर्ण, अधूरा 2. अर्थ. कोई वस्तु, सेवा, सुविधा, प्रत्याभूति आदि जिसके प्रयोग की अंतिम तिथि बीती नहीं हो, या अभी शेष हो विलो. समाप्त।

असमाप्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. समाप्त न होने का भाव 2. अपूर्णता, अधूरापन।

असमाहार *पुं.* (तत्.) 1. अलगाव, पृथकता 2. अप्राप्त 3. असंग्रह, असमुच्चय विलो. समाहार।

असमाहित *वि.* (तत्.) अस्थिर चित्त, चित्त की एकाग्रता से रहित, जो अंतर्हित या लीन नही हो विलो. समाहित।

असमिया *स्त्री.* (तद्.) दे. असमी ।

असमी *वि.* (तत्.) असम प्रदेश का, असम प्रदेश से संबंधित।

असमीक्ष्यकारी *वि.* (तत्.) भविष्य का विचार किए बिना कोई कार्य करने वाला।

असमीचीन *वि.* (तत्.) अनुचित, देश काल के अननुरूप, असमयोचित, अयथार्थ, गैरवाजिब, जो न्यायसंगत न हो विलो. समीचीन।

असम्मत *वि.* (तत्.) जिस पर सम्मति या सहमति या एक राय न हो, अविचारित, अस्वीकृत। विलो. सम्मत *पुं.* (तत्.) शत्रु।

असम्मति *स्त्री.* (तत्.) विपरीत मति, सम्मति का का अभाव, असहमति, गैर-रजामंदी विलो. सम्मति।

असम्मान *पुं.* (तत्.) निरादर, अपमान। विलो. सम्मान।

असम्मोह *पुं.* (तत्.) 1. मोह या भ्रम का न होना, स्पष्टता 2. विचारपूर्वक कार्य करने की योग्यता, 3. शांति 4. शुद्ध ज्ञान।

असम्यक् *वि.* (तत्.) जो स्थान, काल और पात्र की दृष्टि से उचित न हो, अनुपयुक्त, खराब, कुत्सित, निदंनीय।

असम्यक् असर *पुं.* (तत्.+अर.) किसी अधिकारी, कर्मचारी आदि पर अपना काम करवाने के लिए अनुचित दबाब डलवाना या डालना undue influence

असम्यक् विलंब *पुं.* (तत्.) बिना पर्याप्त कारण के किया गया या हुआ विलंब (जो हानिकर हो सकता है undue delay

असर *पुं.* (अर.) 1. प्रभाव 2. दबाव 3. निशान, पदचिह्न 4. गुण।

असरल वाक्य *पुं.* (तत्.) दो या अधिक उपवाक्यों से बना वाक्य जिसके संयुक्त और संमिश्र दो भेद है, जटिल वाक्य।

असल *वि.* (अर.) 1. सच्चा, खरा, उच्च, श्रेष्ठ 2. वास्तविक *पुं.* (अर.) 1. शहद, मधु 2. बुनियाद 3. मूल धन *पुं.* (तत्.) 1. लोहा 2. अस्त्र।

असलियत *स्त्री.* (अर.) 1. वास्तविकता 2. तथ्य 3. जड़, मूल, बुनियाद 4. मूल तत्व, सार।

असली *वि.* (अर.) 1. सच्चा, खरा 2. मूल, प्रधान 3. शुद्ध, बिना मिलावट का विलो. नकली।

असली सिक्का *पुं.* (अर.) वह सिक्का जो नकली न हो, अर्थात् अधिकृत टकसाल में ढलन के बाद जारी किया गया हो विलो. नकली सिक्का।

असवर्ण *वि.* (तत्.) 1. भिन्न जाति का 2. ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य से भिन्न वर्ण का 3. व्या. वे वे (वर्ण) जो उसी वर्ग के न हो, भिन्न स्थान से उच्चरित होते हों।

असह *वि.* (तत्.) न सहने लायक, असह्य *पुं.* शत्रु।

असहकार *पुं.* (तत्.) सहयोग/सहकारिता का न होना।

असहनीय *वि.* (तत्.) दे. असह विलो. सहनीय।

असहभाज्य संख्याएँ *स्त्री.* (तत्.) गणि. ऐसी दो संख्याएँ जो एक दूसरे के सापेक्ष अभाज्य हों अर्थात् जिनका कोई उभयनिष्ठ गुणनखंड न हो co-prime

असहमति *स्त्री.* (तत्.) किसी कृत्य या सिफारिश के संबंध में मौखिक या लिखित गैर रजामंदी, असम्मति, अस्वीकृति या विसम्मति।

असहयोग *पुं.* (तत्.) साथ मिल कर काम न करने का भाव विलो. सहयोग।

असहयोग आंदोलन *पुं.* (तत्.) 1919-20 ई. में महात्मा गांधी के द्वारा प्रारंभ किया गया आंदोलन जिसमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भारत को स्वशासन domainion states देने की माँग की, इस आंदोलन का उद्देश्य प्रत्येक शासकीय क्षेत्र में ब्रिटिश सरकार को सहयोग न देना था।

असहाय *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई सहारा न हो, निराश्रय 2. अनाथ, लाचार।

असहायता-प्राप्त संस्था *स्त्री.* (तत्.) ऐसी सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक या अन्य धार्मिक संस्था जिसे सरकार या किसी ट्रस्ट द्वारा आर्थिक सहायता नहीं मिलती हो unaided institution

असहिष्णु *वि.* (तत्.) 1. जो सहन न कर सके, असहनशील 2. चिड़चिड़ा, तुनकमिजाज विलो. सहिष्णु।

असहिष्णुता *स्त्री.* (तत्.) 1. सहन करने की शक्ति का अभाव, असहनशीलता 2. चिड़चिड़ापन विलो. सहिष्णुता।

असह्य *वि.* (तत्.) सहन न करने योग्य, असहनीय। विलो. सह्य।

असांप्रत *वि.* (तत्.) 1. जो वर्तमान काल का न हो 2. जो अवसर की दृष्टि से उचित न हो, अनुचित, अयोग्य 3. असामयिक।

असांप्रदायिक *वि.* (तत्.) सांप्रदायिकता रहित, जो समुदाय विशेष द्वारा अनुमोदित न हो विलो. सांप्रदायिक।

असांविधिक *वि.* (तत्.) जो संविधि statute लिखित कानून से भिन्न या विपरीत हो या उसके अनुसार न हो, असंवैधानिक।

असांविधिक नियम *पुं.* (तत्.) सांविधिक नियमों से इतर अन्य सभी नियम non-statutory विलो. सांविधिक नियम।

असांसद *वि.* (तत्.) 1. जो संसद की मर्यादा के प्रतिकूल हो 2. जो सांसद न हो।

असांसदिक *वि.* (तत्.) दे. असंसदीय।

असा *पुं.* (अर.) 1. डंडा, सोंटा 2. सोने या चांदी से मढ़ा हुआ सोंटा जो राजा की सवारी निकलते समय सेवक के हाथ में होता है। बारात में भी कभी-कभी आगे ले कर चलते हैं।

असाक्षात् *वि.* (तत्.) 1. जो आँखों देखा न हो 2. जो दिखलाई न पड़े, अप्रत्यक्ष, अगोचर।

असाक्षिक *वि.* (तत्.) जिसका साक्षी कोई न हो, जिसकी गवाही देने वाला न हो।

असाक्षी *पुं.* (तत्.) 1. जो चश्मदीद गवाह न हो 2. साक्षी होने का अनधिकारी 3. शास्त्रानुसार गवाही के अयोग्य विलो. साक्षी।

असाक्ष्य *पुं.* (तत्.) 1. गवाही का अभाव, साक्ष्य का अभाव 2. साक्ष्य के रूप में अमान्य विलो. साक्ष्य।

असाढ़ *पुं.* (तद्.) ज्येष्ठ के बाद और सावन से पूर्व का मास, आषाढ़ मास, विक्रम संवत्सर का चतुर्थ मास।

असातत्य *पुं.* (तत्.) निरंतरता का अभाव, रुक-रुक कर कार्य होने का भाव विलो. सातत्य

असाध *वि.* (तद्.) 1. दे. असाध्य 2. दे. असाधु।

असाधता *स्त्री.* (तत्.) 1. असाधु होने का भाव 2. 2. दुष्टता 3. उचितता का अभाव 4. अशुद्धि।

असाधन *वि.* (तत्.) साधन-रहित, उपकरण-रहित। विलो. ससाधन। *पुं.* *(तत्.)* 1. सिद्धि या साधन का अभाव 2. अनुचित साधन।

असाधनीय *वि.* (तत्.) जिसे सामान्य परिस्थितियों में व्यवहार रूप देना या कार्यान्वित करना संभव न हो, अव्यावहारिक।

असाधारण *वि.* (तत्.) 1. जो सामान्य और प्राय: होने वाली घटना या विशिष्ट स्थिति आदि से

भिन्न हो, जो साधारण न हो, असामान्य, गैर-मामूली 2. जो केवल विशेष परिस्थितियों में ही हो, अपवादस्वरूप ही उपलब्ध होने वाला 3. विशेष, विलक्षण।

असाधारण गजट *पुं.* (तत्.+अं.) दे. असाधारण राजपत्र।

असाधारण छुट्टी *स्त्री.* (तत्.+तद्.) प्रशा. छुट्टियाँ शेष न रह जाने पर बिना छुट्टी अनुपस्थिति को विनियमित करने के लिए तथा बीमारी आदि किसी विशेष प्रयोजन के लिए कर्मचारी को दी गई विशेष छुट्टी extra ordinary leave

असाधारण राजपत्र *पुं.* (तत्.) नियमित तिथियों से भिन्न, किसी विशेष अवसर पर प्रकाशित राजपत्र का अंक। ऐसा प्राय: राष्ट्रीय शोक प्रकट करने के लिए भी किया जाता है पर्या. असाधारण गजट extraordinary gazette

असाधित *वि.* (तत्.) जिसकी साधना न की गई हो, जिसे साधा न गया हो, असंपादित, जिसे पूर्णतः निष्पादित न किया गया हो विलो. साधित।

असाधु *वि.* (तत्.) 1. दुष्ट, बुरा, खल, दुर्जन, असज्जन 2. अविनीत, अशिष्ट 3. भ्रष्ट 4. असंस्कृत *पुं.* *(तत्.)* 1. भ्रष्ट आदमी 2. पतित साधु। विलो. साधु।

असाधुत्व *पुं.* (तत्) दे. असाधुता ।

असाध्य *वि.* (तत्.) 1. जो साध्य न हो, जिसे साधा न जा सके 2. जो ठीक होने लायक न हो ला-इलाज 3. दुष्कर, कठिन विलो. साध्य प्रयो. सही समय पर पूरा इलाज न करने से रोग असाध्य हो जाता है।

असाध्वी *स्त्री.* (तत्.) 1. व्यभिचारिणी, कुलटा, दुराचारिणी 2. जो साध्वी न हो विलो. साध्वी।

असामयिक *वि.* (तत्.) 1. जो समय पर न हो, जो समय से पहले या पीछे हो, बिना समय का 2. बेमौका, अनावसरिक 3. बेमौसम प्रयो. इस बार असामयिक वर्षा से रबी की फसल का काफी नुकसान हुआ विलो. सामयिक।

असामर्थ्य *पुं.* (तत्.) 1. सामर्थ्यहीनता 2. शक्तिहीनता।

असामाजिक *वि.* (तत्.) 1. सामाजिक व्यवस्थाओं में रुचि न रखने वाला 2. समाजविरोधी।

असामान्य *वि.* (तत्.) जो सामान्य न हो, असाधारण, विशेष विलो. सामान्य।

असामी *पुं.* (अर.) 1. किसान, काश्तकार, प्रजा, रैयत 2. कर्जदार, देनदार, किसी दुकानदार या महाजन से लेन-देन रखने वाला 3. व्यक्ति, अधीनस्थ व्यक्ति

असाम्य *पुं.* (तत्.) 1. असमानता, असादृश्य 2. अंतर 3. अननुकूलता विलो. साम्य।

असाम्यिक *वि.* (तत्.) जो साम्या न्याय के सिद्धांतों के अनुरूप न हो,जो न्यायसंगत न हो।

असार *वि.* (तत्.) 1. सार-रहित, तत्वशून्य, निःसार, महत्वहीन 2. तुच्छ, निरर्थक 3. कमजोर, निर्बल, बेदम, निकम्मा *पुं.* (तत्.) एरंड का वृक्ष।

असार्थक *वि.* (तत्.) 1. सहत्व से हीन, अतात्विक 2. अनुपयोगी 3. निरर्थक।

असालत *स्त्री.* (अर.) 1. कुलीनता 2. सच्चाई 3. खरापन, असलियत।

असावधान *वि.* (तत्.) जो सावधान न हो, जो सजग न हो, जो चौकन्ना न हो, बेखबर, गाफिल, शिथिल विलो. सावधान।

असावधानता *स्त्री.* (तत्.) दे. असावधानी।

असावधानी *स्त्री.* (फा.) (तत्.) सावधान न होने का भाव, बेपरवाही, बेखबरी, गफलत, शिथिलता विलो. सावधानी।

असावरी *स्त्री.* (तद्.) संगीत में एक रागिनी जिसे भैरव राग की पत्नी माना गया है, आसावरी।

असास *पुं.* (अर.) आधार, जिस पर कोई वस्तु या बात टिकी न हो।

अिस *स्त्री.* (तत्.) 1. अवलंब तलवार, खड्ग, भुजाली 2. छुरी।

असिक *पुं.* (तत्.) मानव चेहरे पर होठ और ठुड्डी के बीच का गहरा भाग।

असिकला *स्त्री.* (तत्.) तलवार चलाने की कला या अभ्यास, तलवारबाजी, वि. धनुर्विद्या की तरह ही तलवार चलाने की भी विद्या होती है, वार के प्रकार, दिशा, पद संचालन (पैंतरे), रोध आदि उसमें सम्मिलित हैं।

असिक्नी *स्त्री.* (तत्.) 1. रनिवास (अंतःपुर) में काम करने वाली युवती, सेविका 2. चंद्रभाग या चिनाव नदी जो पंचनद (पंजाब) में बहती है 3. रात्रि।

असिचर्या *स्त्री.* (तत्.) खड्ग चलाने का अभ्यास, तलवार-बाजी दे. असिकला

असित *पुं.* (तत्.) 1. जो सफेद न हो, अश्वेत 2. काला; नीला 3. बुरा, कुटिल, दुष्ट *पुं.* (तत्.) 1. काला या नीला रंग 2. शनि 3. देवल ऋषि 4. कृष्ण पक्ष 5. धव वृक्ष।

असितकेशा *स्त्री.* (तत्.) काले बालों वाली स्त्री।

असितग्रीव *पुं.* (तत्.) 1. अग्नि 2. काली गर्दन या काले मध्य भाग वाला।

असितपक्ष *पु.* (तत्.) कृष्ण पक्ष, अँधियारा पक्ष, चांद्रमास के दो पक्षों में से वह पक्ष जो अमावस्या को समाप्त होता है, इस पक्ष में चंद्र की कलाएँ पूर्णिमा से आरंभ होकर क्रमशः घटती जाती हैं।

असितमृग *पु.* (तत्.) कृष्णमृग, काला हिरन, पवित्र कार्यों (जैसे- आसन, यज्ञ आदि) के लिए उपयुक्त पशु, इसीलिए आश्रमों में इन्हें पाला जाता था।

असितरत्न *पु.* (तत्.) नीलम नामक मणि।

असिता *स्त्री.* (तत्.) 1. यमुना नदी 2. (पंजाब की) चंद्रभागा नदी 3. काली रात्रि 4. नील का पौधा 5. दक्ष पत्नी 6. काले रंग की दासी।

असितांग *वि.* (तत्) काले शरीर वाला, जिसके अंग काले हों।

असितांबुज *पुं.* [असित+अंबुज] (तत्.) नील कमल।

असिताश्म *पुं.* (तत्.) 1. काले या नीले रंग का पत्थर 2. इसी रंग का हकीक पत्थर 3. नीलम नामक रत्न।

असितोत्पल *पुं.* (असित+उत्पल) (तत्.) 1. नील कमल 2. नीलम।

असिदंत *पुं.* (तत्.) मगर, मगरमच्छ, घड़ियाल।

असिद्ध *वि.* (तत्.) 1. जो सिद्ध न हो 2. आग पर न पका हुआ, कच्चा 3. अपूर्ण, अधूरा 4. व्यर्थ 5. अप्रमाणित 6. परिणाम-शून्य विलो. सिद्ध।

असिद्धि *स्त्री.* (तत्.) 1. सिद्ध या साबित न होने होने की स्थिति 2. कच्चापन 3. अपूर्णता 4. विफलता 5. अफल प्राप्ति, अप्राप्ति।

असिद्धदोष *वि.* (असिद्ध दोष) (तत्.) विधि. जिसका दोष न्यायालय में सिद्ध न हुआ हो और जिसे दंडित न किया गया हो non-convicted विलो. सिद्धदोष।

असिधारा *स्त्री.* [असि धारा] (तत्.) तलवार की धार।

असिधाराव्रत *पुं.* (असिधारा+व्रत) (तत्.) तलवार की धार पर चलने जैसा कठिन कार्य, ला.अर्थ. स्त्री के साथ रहते हुए भी उसके साथ संभोग से विरति (का संकल्प)

असिस्टेंट *वि.* (अं.) 1. सहायक 2. नायब 3. सहकारी, सहयोगी, मददगार।

असीम *वि.* (तत्.) 1. जिसकी कोई सीमा न हो, सीमारहित 2. अपरिमित, अनंत, बेहद 3. अपार, अगाध, बेहिसाब विलो. ससीम।

असीमाक्ष *पु.* (तत्.) वन. ऐसा पुष्पक्रम जिसमें मुख्य अक्ष बढ़ता ही जाता है और उसके पार्श्व- में शाखा, पुष्प आदि क्रम से निकलते रहते हैं विलो. ससीमाक्ष raceme

असीमित *वि.* (तत्.) 1. जो सीमित न हो, जिसकी सीमा निश्चित न की गई हो 2. अपरिमित 3. अप्रतिबंधित विलो. सीमित।

असीर *पुं.* (फा.) कैदी, बंदी।

असील *वि.* (अर. असल) 1. कुलीन वंशका, शुद्ध रक्त धारी सदस्य 2. शरीफ, नेक।

असीस *स्त्री.* (तद्.) किसी पूज्य या बड़े व्यक्ति द्वारा दिया गया आशीर्वाद, दुआ, आशीष।

असीसना *स.क्रि.* (तद्.) आशीर्वाद (आशीष) देना, दुआ देना।

असुंदर *वि.* (तत्.) जो सुंदर न हो, भद् दा, कुरूप विलो. सुंदर।

असु *पुं.* (तत्.) 1. प्राण 2. प्राणवायु जो साँस के साथ अंदर जाती है 3. जीवन 4. समय की एक प्राचीन इकाई।

असुख *पुं.* (तत्.) 1. सुख न होने का भाव 2. दुःख, कष्ट 3. शोक *वि.* 1. दुःख या शोक देने वाला, असुखकर 2. कष्टसाध्य, कठिनाई से होने वाला, असरल।

असुमोचक *वि.* (तत्.) 1. प्राण ले लेने वाला, प्राणहारी, प्राणघातक 2. अत्यंत कष्टप्रद।

असुर *पुं.* (तत्.) 1. दैत्य (जो सुर न हो) दैत्य, राक्षस 2. नीच प्रवृत्ति का व्यक्ति 3. सूर्य 4. बादल 5. राहु विलो. सुर

असुरक्षित *वि.* (तत्.) जो सुरक्षित न हो, जिसकी रक्षा न की गई हो, असंरक्षित, अरक्षित, अनारक्षित। विलो. सुरक्षित।

असुरक्षित-यौन-संबंध *पुं.* (तत्.) आयु. परिवार नियोजन या स्वास्थ्य-रक्षा-संबंधी अनुदेशों का अनुसरण न करते हुए यौन-संबंध स्थापित करने की क्रिया जिससे स्त्री को अनचाहा गर्भ ठहर सकता है या स्त्री या पुरुष या दोनों को यौन-रोगों का संक्रमण हो सकता है।

असुरगुरु *पुं.* (तत्.) दैत्यगुरु शुक्राचार्य, असुराचार्य।

असुरराज *पुं.* (तत्.) असुरों का राजा, प्रह्लाद के पौत्र राजा बलि की उपाधि।

असुरसूदन *पुं.* (तत्.) असुरों का नाश करने वाला विष्णु, इंद्र, अग्नि।

असुरसेन *पुं.* (तत्.) गय नामक एक राक्षस जिसके शरीर पर गया नगरी के बसने का उल्लेख है।

असुरा *स्त्री.* (तत्.) 1. रात्रि 2. आकाशमंडल की एक राशि 3. वेश्या।

असुराई *स्त्री.* (तत्.) 1. असुरों जैसा व्यवहार, असुरत्व, 2. निर्दयता 3. क्रूरता 4. दुष्टता।

असुराचार्य *पुं.* (तत्.) 1. दैत्य गुरु 2. शुक्राचार्य, शुक्र ग्रह।

असुराधिप [असुर अधिष] *पुं.* (तत्.) असुरराज, दैत्याधिपति, राजा बलि।

असुरापी *वि.* (तत्.) 1. शराब न पीने वाला 2. शराब न पिया हुआ।

असुरारि [असुर अरि] *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. इंद्र 3. देवता पर्या. असुर सूदन।

असुरी *स्त्री.* (तत्.) 1. आसुरी, राक्षसी, अमानवी 2. काली राई।

असुर्य *वि.* (तत्.) असुरों से संबंधित, असुरों का।

असुविधा *स्त्री.* (तद्.) 1. सुविधा न होना 2. अड़चन 3. कठिनाई, दिक्कत विलो. सुविधा।

असुहर *वि.* (तत्.) दे. असुमोचक ।

असूझ *वि.* (तद्.) 1. जो समझ में न आए, जिसके आर-पार न सूझे, दुर्बोध 2. अंधकारमय 2. अबोध।

असूत *वि.* (तत्.) (वह भूमि) जहाँ घास ही पैदा नहीं होती, ऊसर, बंजर *स्त्री.* बंध्या, बाँझ *वि.* (तद्.) 1. विपरीत, विरुद्ध 2. असंबद्ध, अखरात।

असूति *वि.* (तत्.) 1. भूमि के बंजर होने का भाव 2. बाँझपन 3. बाधा, अड़चन।

असूतिका *स्त्री.* (तत्.) जिसके संतान न पैदा हुई हो, वंध्या।

असूत्र *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई सुराग न मिले 2. सूत्ररहित।

असूयक *वि.* (तत्.) 1. असूया अर्थात् ईर्ष्या करने वाला 2. छिद्रान्वेषी, दूसरे के गुणों में दोष निकालने वाला 3. असंतुष्ट, अप्रसन्न।

असूया *स्त्री.* (तत्.) 1. दूसरे के गुणों में दोष निकालने का स्वभाव 2. दूसरे के गुण, सुख, समृद्धि आदि को सहन न करने की वृत्ति 3. जलन, ईर्ष्या 4. क्रोध, रोष 5. काव्य. रस सिद्धांत का एक संचारी भाव।

असूर्यपश्य *वि.* (तत्.) 1. ऐसे कड़े पर्दे में रहने वाली नारी, जिसे सूर्य भी न देख सके 2. पतिव्रता स्त्री 3. राजमहिषी।

असृक् *पुं.* (तत्.) 1 रक्त, खून 2. मंगल ग्रह 3. कुमकुम, केसर।

असृग् *पुं.* (तत्.) दे. असृक् ।

असृग्वहा *स्त्री.* (तत्) रक्तवाहिनी नाड़ी, धमनी।

असेंबली लाइन *स्त्री.* (अं.) अर्थ. उत्पाद के शृंखलाबद्ध विनिर्माण की विधि, जिसमें मशीनों और श्रमिकों को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाता है कि विनिर्माण के सभी चरण क्रमशः अपने-अपने स्थान पर ही होते रहते हैं, उत्पाद को अन्यत्र नहीं ले जाना पड़ता।

असेचन *वि.* (तत्.) जिससे मन सिक्त या तृप्त न हो, अत्यंत हृदयाकर्षी।

असेचनीय *वि.* (तत्.) 1. न सींचने योग्य 2. जिसे सींचना उचित न हो।

असेवन *पुं.* (तत्.) 1. सेवन या उपयोग न करना 2. अवज्ञा 3. ध्यान न देना *वि.* 1. सेवा न करने वाला 2. उपेक्षा करने वाला 3. छोड़ देने वाला।

असेवा *स्त्री.* (तत्.) दे. असेवन, सेवा न करने की की स्थिति या भाव।

असेवित *वि.* (तत्.) 1. जिसकी सेवा न की गई हो, उपेक्षित 2. अव्यवहृत, परित्यक्त 3. जिसकी ओर ध्यान न दिया गया हो, जिसका सेवन न किया गया हो, जिससे परहेज किया गया हो विलो. सेवित।

असेसर *पुं.* (अं.) 1. विधि. किसी न्यायाधीश या न्यायिक अधिकारी को तथ्यों के बारे में परामर्श देने वाला 2. राजस्व कर-निर्धारक विभाग में कार्य करने वाला।

असैनिक *वि.* (तत्.) 1. जो सैनिक न हो 2. जो सेना से संबंधित न हो, सिविल, नागरिक 3. जहाँ सेना न हो, जैसे- असैनिक क्षेत्र विलो. सैनिक।

असैनिकीकरण *स्त्री.* (तत्.) किसी क्षेत्र या देश को सैन्य बल से रहित करना, विसैन्यीकरण।

असोच *वि.* (तत्.) 1. चिंतारहित, निर्द्वंद्व 2. शोकरहित। पुं. निश्चिंतता, बेफिक्री।

असौम्य *वि.* (तत्.) 1. जो सौम्य न हो 2. अविनीत 3. असुंदर, कुरूप विलो. सौम्य।

असौष्ठव *पुं.* (तत्.) सुदंरता का अभाव 1. भद्दापन 2. कुरूपता 3. गुणहीनता 4. निकम्मापन *वि.* 1. सौंदर्यहीन, असुंदर 2. भद्दा, विरूप।

अस्कंदित *वि.* (तत्.) 1. न बहा हुआ 2. न गया हुआ 3. अविदीर्ण 4. अविस्मृत, अनुपेक्षित 5. अनाक्रांत 6. आयु. जिसका स्कंदन न हुआ हो (द्रव पदार्थ) जो जमा हुआ न हो uncoagulated

अस्कर *पुं.* (अर.) सेना, फौज, लश्कर।

अस्करी *वि.* (अर.) सैनिक, सिपाही।

अस्खलित *वि.* (तत्.) 1. जो च्युत न हो, अच्युत, जो स्खलित न हो 2. अडिग जो विचलित न हुआ हो, जो फिसला या डगमगाया न हो 3. विशुद्ध विलो. स्खलित।

अस्तंगत *वि.* (तत्.) 1. अस्त की ओर जाने वाला, अस्त होने वाला 2. समाप्ति की ओर जाने वाला।

अस्तंभी *पुं.* (तत्.) वन. ऐसा पौधा जिसमें तना न हो या दिखाई न दे।

अस्त *वि.* (तत्.) 1. डूबा हुआ, छिपा हुआ 2. तिरोहित, जो दिखाई न दे *पुं.* (तत्.) 1. (सूर्य, चंद्र का) डूबना 2. तिरोधान, लोप 3. समाप्ति,

मृत्यु ज्यों. कुंडली में लग्न से सातवाँ स्थान विलो. उदय।

अस्तकाल *पुं.* (तत्.) 1. अस्त होने का समय 2. पतन का समय 3. किसी बात, वस्तु या व्यक्ति के विचार से, वह समय जबकि उसके प्रताप, महत्व, वैभव आदि की समाप्ति या अंत होता है।

अस्तमित *वि.* (तत्.) दे. अस्तंगत ।

अस्तर *पुं.* (फा.) 1. नीचे का पल्ला 2. भितल्ला, जूते आदि के भीतर का तल्ला 3. सिले कपड़े या दोहरे कपड़े में नीचे का पल्ला 4. नीचे का रंग जिस पर दूसरा रंग चढ़ाया जाता है 5. जिल्द-बँधी पुस्तक में गत्ते के भीतर की ओर लगने वाला कागज।

अस्तव्यस्त *वि.* (तत्.) 1. उलटा-पुलटा 2. छिन्न-भिन्न 3. तितर-बितर।

अस्ताचल *पुं.* (तत्.) काव्य. एक कल्पित पर्वत जिसके विषय में मान्यता है कि अस्त होने से सूर्य इसके पीछे चला जाता है प्रयो. अस्ताचल ढले रवि, शशि-छवि विभावरी में देख रजनीगंधा जगी-निराला।

अस्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. भाव, सत्ता होना 2. विद्यमानता, स्थिति।

अस्तित्व *पुं.* (तत्.) होने का भाव, सत्ता का भाव, विद्यमानता, मौजूदगी, सत्ता होने का भाव।

अस्तु *अव्य.* (तत्.) 1. ऐसी ही हो 2. भला 3. जो भी रहा हो, खैर।

अस्तेय *पुं.* (तत्.) चोरी न करना, चोरी न करने का व्रत। विलो. स्तेय।

अस्त्र *पुं.* (तत्.) 1. फेंक कर मारने का हथियार (भाला, प्रक्षेपास्त्र आदि) 2. वह हथियार जिससे फेंके गए हथियार को रोका जाए, ढाल 3. वह हथियार जो मंत्र बोलकर छोड़ा जाए 4. कोई भी आयुध या हथियार तुल. शस्त्र।

अस्त्रकार *पुं.* (तत्.) अस्त्र बनाने वाला कारीगर।

अस्त्रधारी *पुं.* (तत्.) अस्त्र धारण करने वाला, सैनिक।

अस्त्र लाघव *पुं.* (तत्.) अस्त्र चलाने में निपुणता। निपुणता।

अस्त्रविद्या *स्त्री.* (तत्.) 1. अस्त्र चलाने की कला कला या विद्या 2. वह शास्त्र जिसमें अस्त्रों की विविधता एवं कला इत्यादि का विवेचन हो।

अस्त्र-शस्त्र *पुं.* (तत्.) फेंक कर चलाए जाने वाले हथियार तथा हाथ में पकड़कर चलाए जाने वाले हथियार, सभी प्रकार के हथियार।

अस्त्रागार *पुं.* (तत्.) अस्त्र रखने का स्थान, अस्त्रों अस्त्रों का भंडार, अस्त्रशाला, आयुधागार।

अस्त्रीक *वि.* (तत्.) 1. बिना स्त्री का 2. जिसकी पत्नी न हो, रंडुवा, विधुर।

अस्थायी *वि.* (तत्.) 1. जो सदा बना रहने वाला न हो 2. जो शीघ्र नष्ट हो जाए, जिसकी स्थिति कुछ समय के लिए हो 3. जिसमें परिवर्तन अपेक्षित न हो, जैसे- अस्थायी तैनाती। विलो. स्थायी temporary

अस्थि *स्त्री.* (तत्.) 1. हड्डी 2. प्राणि. रीढ़वाले जंतुओं के कंकाल का दृढ़ संयोजी ऊतक जिससे कंकाल बनता है, यह कोलैजन रेशों का जाल होता है जिसमें कैल्शियम फॉस्फेट आदि लवण होते हैं 3. फल की गुठली।

अस्थिपंजर *स्त्री.* (तत्.) 1. प्राणियों की देह को थामे रखने वाला हड्डियों का ढाँचा, कंकाल 2. किसी वस्तु का ढाँचा 3. बहुत दुर्बल व्यक्ति या प्राणी।

अस्थिपिंजर *पुं.* (तत्.) दे. अस्थि पंजर ।

अस्थि-प्रवाह *पुं.* (तत्.) किसी मृत व्यक्ति के दाह-संस्कार के बाद भस्मशेष को प्रवाह युक्त शुद्ध जल में प्रवाहित करना।

अस्थि-भंग *पुं.* (तत्.) आयु. किसी चोट के कारण अस्थि या उपास्थि का टूटना, हड्डी का टूटना fracture

अस्थिमज्जा *पुं.* (तत्.) आयु. हड्डी (अस्थि) के दृढ ऊतक या/तथा मज्जा का सूज जाना ostemylitis

अस्थिविज्ञान *पु.* (तत्.) आयुर्विज्ञान की शाखा जिसमें अस्थियों (हड्डियों) का अध्ययन होता है।

अस्थि-शेष *वि.* (तत्.) जिसके शरीर में केवल हड्डियाँ रह गई हो या बहुत दुबला।

अस्थि सुषिरता *स्त्री.* (तत्.) आयु. हड्डियों का एक रोग जिसमें अस्थि-निर्माण प्रि या में कमी आ जाने के कारण अस्थि ऊतक कम हो जाते है और उसके परिणाम स्वरूप संरचना कमजोर हो जाती है osteoporousis

अस्निग्ध *वि.* (तत्.) 1. जिसमें चिकनापन न हो, शुष्क, खुरदरा 2. जो सहृदय न हो, निर्दय, कठोर।

अस्पंद *वि.* (तत्.) स्पंदनहीन, जिसमें कंपन या स्पंद न हो, न हिलने-डुलने वाला विलो. स्पंदित।

अस्पताल *पुं.* (अं.) आयु. रोगियों तथा घायल व्यक्तियों के व्यवस्थित उपचार का स्थान जहाँ पर चिकित्सक, चिकित्सा उपकरण, रोगियों के विश्राम के लिए सभी सुविधाएँ होती है, चिकित्सालय।

अस्पष्ट *वि.* (तत्.) 1. जो साफ दिखाई न दे, या समझ में न आए, जो स्पष्ट या साफ न हो 2. धुँधला, संदिग्ध 3. उच्चारण में अस्फुट।

अस्पृश्यता *स्त्री.* (तत्.) अस्पृश्य होने का भाव। अछूतपन। समा. समाज में परंपरा से चली आई एक कुप्रथा जिसके कारण निम्न स्तर की मानी जाने वाली कुछ जातियाँ अछूत समझी जाती थीं, छुआछूत।

अस्पृष्ट *वि.* (तत्.) जिसका स्पर्श न किया गया हो, जिसे छुआ न गया हो।

अस्पृह *वि.* (तत्.) स्पृहा अर्थात् इच्छा, कामना, लालच, ईर्ष्या आदि से रहित, निःस्पृह, निर्लोभ, जिसमें लालच न हो, निष्काम।

अस्फुट *वि.* (तत्.) 1. जो स्पष्ट न हो, जो साफ न हो, जो उच्चस्वर में नहीं हो 2. संदिग्ध।

अस्मत *स्त्री.* (अर.) सतीत्व, पातिव्रत्य, शील, निष्पापता प्रयो. स्त्रियों पर निष्ठुरतापूर्वक भयंकर अत्याचार किए गए, न किसी की प्रतिष्ठा का ध्यान रखा गया, न किसी की अस्मत का ख्याल।

अस्मार्त *वि.* (तत्.) 1. जो स्मार्त अर्थात् स्मृतियों का अनुयायी न हो 2. स्मृतिविरोधी विलो. स्मार्त।

अस्मि *अ.क्रि.* (तत्.) मैं हूँ।

अस्मिता *स्त्री.* (तत्.) 1. 'मैं हूँ' का भाव 2. व्यक्ति के लक्षणों, गुण-धर्मों आदि की विशेषताएँ और विचित्रताएँ जो उसकी विशिष्ट पहचान बन जाती हैं, वैयक्तिक, पहचान identity 2. योग में दृक, दृष्ट और दर्शन शक्ति को एक मानना या पुरुष (आत्मा) और बुद्धि में अभेद मानने की भ्रांति, क्लेश 3. विद्यमानता 4. गर्व, अभिमान, मोह 5. हृदयग्रंथि।

अस्र *पुं.* (तत्.) 1. कोना 2. रुधिर 3. जल 4. आँसू 5. केसर 6. बाल पुं. (अर.) 1. दिन का चतुर्थ प्रहर जैसे- अस्र की नमाज़ 2. समय, वक्त, काल।

अस्वच्छंद *वि.* (तत्.) जो मन-मर्जी न कर सके, जो स्वतंत्र न हो, बँधा हुआ विलो. स्वच्छंद।

अस्वच्छ *वि.* (तत्.) जो साफ सुथरा न हो, गंदा मैला, धुँधला, काला विलो. स्वच्छ।

अस्वतंत्र *वि.* (तत्.) जो स्वतंत्र न हो, पराधीन, दास, गुलाम। विलो. स्वतंत्र।

अस्वप्न *पुं.* (तत्.) 1. न सोने वाला देवता 2. अनिद्रा, *वि.* (तत्.) जिसे नींद न आती हो।

अस्वर *वि.* (तत्.) अस्पष्ट, मंद, स्वरहीन या बेसुरा।

अस्वर्ग्य *वि.* (तत्.) जिससे स्वर्ग की प्राप्ति न हो, जो स्वर्ग-संबंधी न हो विलो. स्वर्ग्य।

अस्वस्थ *वि.* (तत्.) स्वस्थ न होने की स्थिति, बीमारी।

अस्वाधीन *वि.* (तत्.) पराधीन, परतंत्र, जो स्वतंत्र या स्वाधीन न हो विलो. स्वाधीन।

अस्वाभाविक *वि.* (तत्.) 1. जो स्वाभाविक या सहज न हो 2. कृत्रिम, बनावटी, दिखावटी 3. स्वभावविरुद्ध विलो. स्वाभाविक।

अस्वार्थ *वि.* (तत्.) 1. स्वार्थहीन, निःस्वार्थ 2. विरक्त 3. उदासीन, बेकार, निकम्मा *पुं.* (तत्.) स्वार्थरहितता।

अस्वास्थ्य *पुं.* (तत्.) दे. अस्वस्थता विलो. स्वास्थ्य।

अस्वीकार *वि.* (तत्.) जो स्वीकार न हो, अननुमोदित, नामंजूर *पुं.* (तत्.) अस्वीकृति, नामंजूरी विलो. स्वीकार।

अस्वीकारवादी *वि.* (तत्.) समाज द्वारा निर्धारित निर्धारित नियमों, परंपराओं अथवा पक्ष-विशेष के निर्णय या सिद्धांत को न मानने वाला।

अस्वीकृत *वि.* (तत्.) 1. जिसे स्वीकार न किया गया हो, जो स्वीकृत न हुआ हो, नामंजूर, नामंजूर किया हुआ 2. ग्रहण न किया हुआ 3. अमान्य। विलो. स्वीकृत।

अस्वीकृत छुट्टी *स्त्री.* [तत्.+देश] प्रशा. सक्षम अधिकारी द्वारा स्वीकार न की गई छुट्टी।

अस्वीकृति *स्त्री.* (तत्.) नामंजूरी, स्वीकार न करने की क्रिया, असहमति विलो. स्वीकृति।

अस्वेदल *पुं.* (तत्.) आयु. पसीना न आना विलो. स्वेदन *वि.* (तत्.) पसीना कम/न लाने वाला, स्वेदनरोधी।

अस्सी *वि.* (तद्.) दस का आठगुना, सत्तर से दस अधिक *पुं.* अस्सी की संख्या।

अहं (अहम्) *पुं.* (तत्.) मैं। मनो. मनुष्य की वह निजी (व्यक्तिगत) सत्ता जो उसे अन्य व्यक्तियों से स्वभिन्नत्व तथा विचार्यमान विषयों में तद्भिन्नत्व प्रदान करती है *पुं.* (तत्.) अहंकार, अभिमान ego

अहंकार *पुं.* (तत्.) 1. अहम्मन्यता 2. अभिमान, गर्व, घमंड 2. अपनी सत्ता का बोध योग. अंतःकरण की पाँच वृत्तियों में से एक।

अहंकारी *वि.* (तत्.) अहंकार करने वाला, घमंडी।

अहंता *स्त्री.* (तत्.) अहंकार, गर्व प्रयो. तुलसी की अहंता को चुभन हुई, 'मेरा राम-प्रेम क्या किसी से कम है?'

अहंवादी *वि.* (तत्.) 1. डींग मारने वाला, शेखी बघारने वाला 2. मैं ही सब कुछ हूँ, मेरे लिए ही या मेरे अनुसार ही सब कुछ होना चाहिए, ऐसा मानने वाला।

अह *पुं.* (तत्.) 1. दिन 2. विष्णु 3. सर्प 4. आकाश।

अहत *वि.* (तत्.) 1. जो हत या आहत न हो 2. जो हताश न हो 3. बिना धुला, नवीन, जैसे- अहत वस्त्र।

अहद *पुं.* (अर.) प्रतिज्ञा, वादा, इकरार। *वि.* (देश.) सीमा रहित, असीम।

अहदनामा *पुं.* (फ़ा.) प्रतिज्ञापत्र, इकरारनामा।

अहदी *पुं.* (अर.) 1. आलसी 2. (अकबर के काल के) वे सिपाही जिनसे कभी-कभी काम लिया जाता था, शेष दिन वे खाली बैठे रहते थे।

अहन् *पुं.* (तत्.) दिवस, रात-दिन मिलाकर एक दिन।

अहम *वि.* (अर.) महत्वपूर्ण, खास, विशेष, जोरदार, वजनी, सार्थक टि. अहं (अहम्) और अहम दो भिन्न मूल के शब्द है जिनमे अर्थभेद है दे. अहं।

अहमक *वि.* (अर.) मूर्ख, नासमझ, जड़मति।

अहमहमिका *स्त्री.* (तत्.) प्रतिद्वंद्वी -मैं बड़ा हूँ मैं मैं बड़ा हूँ' या 'मैं पहले' ऐसी स्पर्धा।

अहमिका *स्त्री.* (तत्.) होड़, प्रतियोगिता प्रयो. तुम्हारी अहमिका की क्षुद्रता के आवरण के भीतर से कभी-कभी जो प्रकाश की किरण पहुँचा देता हूँ, वह केवल इसलिए कि तुम जान लो कि तुम्हारा अहंभाव जो पृथकत्व बुद्धि उत्पन्न कर रहा है, वह गलत है -चांरु चंद्रलेख, ह.प्र.द्विवेदी।

अहमियत *स्त्री.* (अर.) खास होने का भाव, महत्त्व, महत्व, सार्थकता।

अहमेव *पुं.* (तत्.) 1. मैं ही 2. अहंकार, गर्व, घमंड।

अहम् *पुं.* (तत्.) दे. अहं।

अहम्मन्य *वि.* (तत्.) अपने को बहुत बड़ा, ऊँचा या योग्य मानने वाला, अपने को औरों से बढ़कर समझने वाला, अहंकारी।

अहरणीय *वि.* (तत्.) 1. न चुराने योग्य, जो हरण करने योग्य न हो, जो चुराया न जा सके, सुस्थिर। विलो. हरणीय।

अहराम *पुं.* (अर.) 1. पुरानी इमारत, पुराना भवन 2. मिस्र के पिरामिड *वि.* हरम का बहु.

अहरी *स्त्री.* (देश.) 1. वह स्थान जो पशुओं के पानी पीने के लिए चौड़ी नाली के रूप में बनाया जाता है 2. प्याऊ।

अहर्निश *वि./अव्य.* (तत्.) 1. रात-दिन 2. सदा, नित्य 3. निरंतर अविराम।

अहर्मुख *पुं.* (तत्.) भोर, उषाकाल, प्रातःकाल, सवेरा।

अहल *वि.* (तत्.) बिना जोता हुआ खेत, जिस खेत पर हल न चलाया गया हो।

अहलकार *पुं.* (फा.) दे. अह्लकार।

अहल्या *वि.* (तत्.) 1. हल चलाने के अयोग्य धरती 2. रामकथा के अंतर्गत गौतम ऋषि की पत्नी जिसका उद्धार राम ने किया था।

अहवाल *पुं.* (अर.) दे. अह्वाल

अहसान *पुं.* (अर.) 1. एहसान, उपकार करने वाले के प्रति होने वाला भाव 2. कृपा, अनुग्रह 3. उपकार, भलाई।

अहसान फरामोश *वि.* (अर.फा.) एहसान-फरामोश, उपकार न मानने वाला, कृतघ्न।

अहसानमंद *वि.* (अर.+फा.) एहसानमंद, कृतज्ञ, उपकार मानने वाला।

अहसास *पुं.* (अर.) 1. एहसास, अनुभव, अनुभूति 2. ध्यान, ख्याल 3. पाना 4. देखना।

अहस्त *वि.* (तत्.) बिना हाथ वाला, जिसके हाथ कटे हों, लूला।

अहस्तक्षेप *पुं.* (तत्.) राज. हस्तक्षेप न करने की स्थिति, भाव या नीति।

अहस्तक्षेप की नीति *स्त्री.* (तत्.) किसी भी विषय में असंबंधित व्यक्ति द्वारा टाँग न अड़ाने अड़ाने की नीति अर्थ. ऐसी नीति जो आर्थिक व्यवस्था, विशेषतः उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में स्वायत्तता की पक्षधर हो, अर्थात् सरकार का उसमें न्यूनतम हस्तक्षेप हो पर्या. अबंध नीति।

अहस्तांतरणीय *वि.* (तत्.) जिसे दूसरे के हाथों में न सौंपा जा सके, जो दूसरे को न दिया जा सके, जिसका स्वामित्व न बदला जा सके।

अहा *अव्य.* (तत्.) 1. आश्चर्य, खेद, शोक सूचित करने वाला (विस्मयबोधक) शब्द।

अहाता *पुं.* (अर.) परिसर, घोड़ा, बाड़ा, चारदीवारी, परकोटा।

अहाहा *अव्य.* (तत्.) प्रसन्नता और प्रशंसा अभिव्यक्त करने के लिए उद्गार-सूचक शब्द।

अहि *पुं.* (तत्.) 1. साँप 2. राहु 3. सूर्य।

अहिंसक *वि.* (तत्.) जो हिंसा न करे, जो किसी को दुःख न दे, जिससे किसी को पीड़ा न पहुँचे।

अहिंसा *स्त्री.* (तत्.) जैन दर्श. हिंसा-कार्य में प्रवृत्त न होने की स्थिति जिसके तीन अंग हैं- किसी प्राणी को न मारना, मन, वचन, कर्म से किसी का अहित चिंतन न करना, उसे पीड़ित न करना योग. पाँच प्रकार के यमों में प्रथम।

अहिंसावादी *वि.* (तत्.) 1. अहिंसा के सिद्धांत को मानने वाला 2. अहिंसा का पालन करने वाला।

अहिंस्र *वि.* (तत्.) जो हिंस्र या हिंसक न हो जो हिंसा न करे, अहिंसक।

अहिक *पुं.* (तत्.) 1. अंधा सर्प 2. ध्रुव तारा *प्रत्यय.* दिन या दिनों वाला (समास में संख्यावाची शब्दों के साथ प्रयुक्त जैसे- साप्ताहिक, दशाहिक)।

अहित *पुं.* (तत्.) 1. हित का अभाव 2. बुराई 3. अकल्याण 4. हानि 5. शत्रु, वैरी *वि.* विरोधी, हानिकारक।

अहितकर *वि.* (तत्.) अहित करने वाला, हानिकारक।

अहिपति *पुं.* (तत्.) 1. सर्पराज 2. शेषनाग 3. वासुकि नाग।

अहिफेन *पुं.* (तत्.) 1. सर्प के मुँह की लार 2. अफीम।

अहिम *वि.* (तत्.) 1. जो (अति) शीतल न हो, 2. कुछ उष्ण, कदोष्ण, कोसा।

अहिमात *पुं.* (तत्.) कुम्हार के चाक का वह गड्ढा जिसके आधार पर चाक कील पर चलाया जाता है।

अहियान *पुं.* (तत्.) शेषशायी विष्णु।

अहिर्तत *वि.* (तत्.) जिसकी पूजा की गई हो। सम्मानित (व्यक्ति)

अहिल्या *स्त्री.* (तद्.) दे. अहल्या ।

अहिवात *पुं.* (तद्.) 1. अभिवादनीयता, अभिनंदनीयता 2. सौभाग्य, सुहाग प्रयो. सफल होइ अहिवात तुम्हारा- तुलसी।

अहिवाती *स्त्री.* (तद्.) 1. अभिनंदनीय 2. सौभाग्यवती।

अहीक *पुं.* (तत्.) बौद्धदर्शनानुसार दस क्लेशों में से एक।

अहीन *वि.* (तत्.) 1. जो हीन न हो, जो तुलना में अन्य से हीन या तुच्छ न हो 2. श्रेष्ठ, महान 3. दोष-रहित 4. पूरा, संपूर्ण *पुं.* 1. कई दिनों तक चलने वाला यज्ञ विशेष 2. लंबा साँप 3. वासुकि।

अहीर *पुं.* (तद्.) 1. एक जाति-विशेष जो गाय-भैंस पालती है तथा दूध बेचती है 2. अभीर, आभीर ग्वाला।

अहीरी *पुं.* (तद्.) एक राग-विशेष जिसमें सभी स्वर कोमल होते हैं *स्त्री.* ग्वालिन, अहीरिन, अभीरी *वि.* अहीर से संबंधित, हीरो जैसा।

अहीश *पुं.* (तत्.) 1. साँपों का राजा 2. शेषनाग 3. (शेषावतार) लक्ष्मण और बलराम।

अहुत *पुं.* (तत्.) 1. जप, ब्रह्म यज्ञ, वेद-पाठ, धार्मिक चिंतन-मनन आदि वे कर्म जिनमें आहुति नहीं दी जाती 2. जिसे होम या आहुति न मिली हो *वि.* बिना होम किया हुआ।

अहृदय *वि.* (तत्.) 1. हृदयहीन 2. अरसिक विलो. सहृदय।

अहे *अव्य.* (तत्.) खेद, निंदा या अलगावबोधक, संबोधन-सूचक या आश्चर्यसूचक अव्यय।

अहेतु *वि.* (तत्.) 1. हेतु रहित, बिना कारण का, निमित्तरहित 2. व्यर्थ *पुं* काव्य. एक काव्यालंकार जिसमें कारण के न होने पर भी कार्य का होना दर्शाया जाए।

अहेर *पुं.* (तद्.) शिकार, आखेट।

अहेरी *वि.* (तत्.) शिकारी, आखेटक, व्याध।

अहो *अव्य.* (तत्.) करुणा, हर्ष, विस्मय, धिक्कार, दुःख आदि भाव व्यक्त करने वाला, उद्गार।

अहोई *स्त्री.* (तत्.) 1. अनहोनी 2. संतानप्राप्ति के के लिए दीपावली के सात दिन पूर्व अष्टमी के दिन स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला व्रत।

अह्निमान *पुं.* (तत्.) पारसी धर्मानुसार पाप या अंधकार का देवता, शैतान, 'अहरिमान'।

अह्ल *वि.* (अ.) 1. योग्य, पात्र 2. अधिकार।

अह्लकार *पुं.* (अर.) कर्मचारी, कारिंदा।

अह्लखाना *स्त्री.* (अर.) गृहस्वामिनी, पत्नी, भार्या।

अह्लवतन *पुं.* (अर.) हमवतन, देशवासी।

अह्लिया *स्त्री.* (अर.) पत्नी, भार्या, गृहस्वामिनी, घरवाली।

अह्लीयत *स्त्री.* (अर.) 1. योग्यता, पात्रता 2. निपुणता।

आ

आ *पुं.* भाषा देवनागरी वर्णमाला के स्वरों में दूसरा स्वर है जो अ का दीर्घ रूप है। 'आ' का उच्चारण कंठ से होता है। संस्कृत में 'आ' का प्रयोग उपसर्ग के रूप में भी होता है।

आंकड़ा संचय *पुं.* (तद्+तत्.) कंप्यूटर में संचित आंकड़ों और उन पर की जाने वाली संक्रियाओं का समुच्चय (जिनका आवश्यकता पड़ने पर सरलता से उपयोग किया जाता है), आँकड़ा बैंक।

आंकड़ा संसाधन *पुं.* (तद्+तत्.) 1. गणि. सांख्यिकीय साधनों से प्रश्नों को हल करने की प्रक्रिया 2. कंप्यू. आँकड़ों पर आधारित संक्रियाओं का व्यवस्थित निष्पादन data-processing

आंगार *पुं.* (तत्.) जलते कोयलों का ढेर या समूह, अंगारों का ढेर।

आंगारिक *वि.* (तत्) 1. अंगारों से संबंध रखने वाला। 2. अंगारों पर पकाया जाने वाला, तंदूर में पकने वाला। barbecue

आंगिक *वि.* (तत्.) अंग या शरीर-संबंधी, कायिक, शारीरिक।

आंगिक अभिनय *पुं.* (तत्.) शारीरिक अंगों-उपांगों से चित्त के भाव प्रकट करना। नृत्य में आँखों, भौंहों, हाथों आदि से प्रकट चेष्टाएँ, नाटकीय अभिनय में विभिन्न अंगों की सहायता से हाव-भाव प्रदर्शन।

आंगिरस *वि.* (तत्) अंगिरा ऋषि से संबंधित, आंगिरा का *पुं.* 1. अंगिरा ऋषि का पुत्र, बृहस्पति 2. अंगिरा ऋषि के वंश या गोत्र में उत्पन्न।

आंग्ल *वि.* (देश.) 1. अंग्रेजी या अंग्रेजी से संबंधित 2. अंग्रेजों से, इंग्लैंड देश से संबंधित।

आंग्ल भारतीय *पुं.* (तत्.) नागरिकों का वह वर्ग, जिनके माता-पिता में से एक अंग्रेज और एक भारतीय हो टि. अंग्रेज पिता और भारतीय माता की संतान और उनके वंशज anglo-indian community

आंचलिक *वि.* (तत्.) अंचल-संबंधी, क्षेत्र-विशेष के परिवेश से संबंधित।

आंचलिकता *स्त्री.* (तत्) क्षेत्र-विशेष के परिवेश की उपस्थिति से संबंध रखने का भाव।

आंजनेय *पुं.* (तत्.) अंजना का पुत्र, हनुमान।

आंतर *वि.* (तत्.) 1. भीतरी 2. छिपा हुआ, गुप्त *पुं. (तत्.)* 1. अंतःप्रकृति 2. हृदय 3. आंतरिक स्वभाव।

आंतर-आण्विक वि. (तत्.) रसा. एक ही अणु के विभिन्न भागों के बीच अभिक्रिया से बना उदा. किसी अणु में स्थित किसी परमाणु या परमाणु समूह की स्थिति में परिवर्तन से भिन्न समावयवी यौगिक का बनना पर्या. अंतः आणविक।

आंतरभाषिक *वि.* (तत्) 1. मूल भाषा में ही कथन की पुनर्व्याख्या 2. मूल भाषा में कथ्य का विधा परिवर्तन यथा- नाटक के संवादों का कहानी रूप, कहानी का चलचित्रीय रूप।

आंतरागारिक *वि.* (तत्) 1. निवास के भीतरी भाग से संबद्ध 2. अन्तःपुर संबंधी 3. भंडार से संबद्ध 4. भंडार प्रमुख 5. भंडारी 6. कोषाध्यक्ष।

आंतरायिक *वि.* (तत्.) एक निश्चित अंतराल के पश्चात् होने वाला।

आंतरिक *वि.* (तत्.) 1. अंदर का, भीतरी 2. हार्दिक।

आंतरिक अशांति *स्त्री.* (तत्.) दे. आभ्यंतरिक अशांति।

आंतरिकता *स्त्री.* (तत्.) (आंतरिक+ता) 1. भीतरीपन, 2. अंतरंगता 3. आत्मीयता, घनिष्ठता।

आंतरिक पत्तन *पुं.* (तत्.) भूगो. समुद्र तट से दूर, नदी या नहर से जुड़े स्थलखंड के भीतर स्थित पत्तन (बंदरगाह) विलो. बाह्य पत्तन।

आंतरिक व्यापार *पुं.* (तत्.) देश के भीतर का व्यापार, आयात-निर्यात की प्रक्रिया से मुक्त।

आंतरिक संरचना *स्त्री.* (तत्.) भौ., जीव. पाद. किसी पदार्थ, प्राणि या पादप या उसके अंग के अंदर स्थित एवं बाहर से न दिखने योग्य घटकों की अवस्थिति या कार्य पद्धति की संरचना। internal structure

आंतरिक्ष *पुं.* (तत्.) अंतरिक्ष-संबंधी, अंतरिक्ष में उत्पन्न, आकाशीय।

आंत्र *स्त्री.* (तत्.) आमाशय से मलाशय तक का पाचन-पथ टि. आरंभ की आंत्र लघु आंत्र कहलाती है और पीछे की बृहत् आंत्र (बृहदांत्र), आँत, अँतड़ी intestine

आंत्रभ्रंश *पुं.* (तत्) (आन्त्र+भ्रंश) आयु. आंत का असामान्य रूप से नीचे खिसकना।

आंत्र शोथ *पुं.* (तत्.) आँतों में आई सूजन जिसमें रोगग्रस्त भाग में दर्द, स्पर्श- असहृयता तथा ताप आदि लक्षण होते हैं।

आंत्रिक *वि.* (तत्) आँतों से संबद्ध, आंतों का, आंतों में होने वाला।

आंत्रिक ज्वर *पुं.* (तत्) आयु. आँतों के दोष से उत्पन्न ज्वर, यह ज्वर दो सप्ताह अथवा उस से से अधिक समय तक रह सकता है।

आंदोलक *वि.* (तद्) 1. झूलनेवाला 2. झुलाने वाला 3. आम आदमी के विचारों को प्रभावित करने वाला *पुं.* झूला।

आंदोलन *पुं.* (तत्.) समा., राज. 1. लक्ष्यप्राप्ति हेतु या किसी समस्या या माँग को लेकर व्यापक सामूहिक अभियान 2. हलचल, कंपन। 3. उथल-पुथल करने का प्रयत्न। प्रयो. अध्यापकों के दुर्व्यवहार के विरुद्ध छात्रों ने आंदोलन कर दिया।

आंदोलनकर्ता *पुं.* (तत्.) आंदोलन करने वाला राज. वह व्यक्ति जो सामाजिक, आर्थिक या धार्मिक व्यवस्था के विरोध में धरना, प्रदर्शन आदि करे पर्या. आंदोलनकारी

आंदोलनकारी *पुं.* (तत्.)[आंदोलन+कारी] आंदोलन करने वाला व्यक्ति, किसी बात के लिए सामूहिक आग्रह करने वाला व्यक्ति।

आंदोलन संख्या *स्त्री.* (तत्.) संगी. आवृत्ति के लिए प्रयुक्त शब्द दे. आवृत्ति।

आंदोलित *वि.* (तद्.) 1. झुलाया हुआ, हिलाया हुआ, कंपित 2. उत्तेजना से पूर्ण, क्षुब्ध, अशांत।

आंध्य *पुं.* (तत्.) अंधापन, अंधता 2. अंधकार, अंधेरा, कोहरे के कारण उत्पन्न प्रकाशहीनता।

आंध्र *पुं.* (तत्.) दक्षिण भारत का तेलुगु-भाषी प्रदेश *पुं.* (तत्.) आंध्र प्रदेश का निवासी।

आंबिकेय *पुं.* (तत्.) 1. अंबिका का पुत्र, धृतराष्ट्र 2. अंबिका (पार्वती) का पुत्र कार्तिकेय।

आंशति *वि.* (तत्र.) 1. जिसका अंश (भागों में विभाजन) किया गया है 2. अंश प्राप्त कर लेने वाला, जिसे अपना हिस्सा मिल गया हो।

आंशिक *वि.* (तत्.) 1. कुछ थोड़ा 2. अंश रूपी, अंश का 3. अपूर्ण, अधूरा।

आंशिक अपंगता *स्त्री.* (तत्.) ऐसी शारीरिक विकलांगता जो बहुत गंभीर न हो। partial disability

आंशिक अवकल समीकरण *पुं.* (तत्.) गणि. एक से अधिक स्वतंत्र चरों वाला वह अवकल समीकरण जिसमें चरों के सापेक्ष अवकलज आते हो partial differential दे. अवकल समीकरण।

आंशिक आख्या *स्त्री* (तत्.) शीर्षक जिसमें मुख्य शीर्षक की बजाए उसका कोई उपशीर्षक दिया गया हो।

आंशिक जिल्द *स्त्री.* (तत्.) पुस्तक की जिल्द जिसमें पीठ कपड़े की हो और बाकी जिल्द कागज से बनी हो। partial binding

आंशिक भिन्न *स्त्री.* (तत्.) गणि. किसी भिन्न के भिन्नात्मक खंड जिनका मूल योग दी हुई भिन्न के बराबर होता है उदा. $\frac{8}{15}=\frac{1}{3}+\frac{1}{5}$ यहाँ $\frac{1}{3}=\frac{1}{5}$ आंशिक भिन्न है। partial fraction

आंशिक समीकरण/समीभवन *पुं.* (तत्.) भाषा. समीकरण का वह रूप जिसमें स्वन पूर्ववर्ती या परवर्ती स्वन के अभिलक्षण के अनुसार समीकृत हो जाता है उदा. वाक् के आंशिक समीकरण के कारण वाक्+मय 'बाड्मय' हो जाता है। partial assimilation

आँ *पुं.* (देश.) विस्मयसूचक शब्द।

आँक *पुं.* (तद्.) 1. अंक, शून्य से नौ तक के अंक या उससे बनी संख्याएँ 2. लक्षण, चिह्न 3. अक्षर, वर्ण 4. लिखावट 5. गोद 6. आलिंगन 7. दृढ़ निश्चय, 8. अंश, भाग, हिस्सा 9. किसी वस्तु पर लिखा मूल्य का संकेत 10. कूट भाषा में लिखा संकेत।

आँक *स्त्री.* (देश.) 1. आँकने की क्रिया अथवा आँकने का भाव 2. किसी वस्तु का मूल्य आँकना।

आँकड़ा *पुं.* (तद्.) 1. संख्या, संख्यात्मक विवरण 2. अर्क, आक, मदार का पौधा 3. कंटिया जिससे कुँए में गिरी बाल्टी आदि निकाली जाती है 4. पशुओं की एक बीमारी।

आँकड़ा बैंक *पुं.* (तद्.अं.) कंप्यू. एकत्रित आँकड़ों का संग्रह, जिसका आवश्यकतानुसार उपयोग हो सके data bank

आँकड़ाविद् *वि.* (तद्+तत्.) (आँकड़ा+विद) किसी विषय के आँकड़ों को समझ कर नियम स्थापित करने वाला व्यक्ति, सांख्यिकीविद्।

आँकड़ा संचय *पुं.* (तद्+तत्.) कंप्यूटर में संचित आंकड़ों और उन पर की जाने वाली संक्रियाओं का समुच्चय (जिनका आवश्यकता पड़ने पर सरलता से उपयोग किया जाता है), आँकडा बैंक।

आँकड़ा-संग्रह *पुं.* (तद्+तत्.) अर्थ. 1. तथ्यों को एकत्र कर उनकी संख्यात्मक प्रस्तुति 2. आँकड़ों का समुच्चय, संगृहीत आँकड़े।

आँकड़े *पुं.* (तत्.) 1. गणि. विश्लेषण के लिए प्रयुक्त अथवा विश्लेषण के फलस्वरूप प्राप्त सूचना जो विशेष रूप से अंकों के रूप में होती है 2. कंप्यूटर. अक्षरों, संख्याओं, आकृतियों का समूह जो कंप्यूटर की सूचना के (आधारभूत) अंग होते हैं। कंप्यूटर से बाहर उनका कोई अर्थ नहीं होता। data

आँकना *स.क्रि.* (तद्.) अंदाज लगाना, मूल्य लगाना, अंकित करना, निशान लगाना, निश्चित करना।

आँक-बाँक *पुं.* (देश.) बिना सिर-पैर की बातें बेतुकी बातें, अंट-संट बातें।

आँकर *वि.* (तद्.) 1. गहरा 2. बहुत गहरी स्त्री 3. 3. खेत की गहरी जुताई 4. कठोर 5. महँगा।

आँकल *पुं.* (देश.) चिह्नित बैल, टप्पा लगा हुआ साँड।

आँकु *पुं.* (तद्.) 1. अक्षर, वर्ण 2. अंक 3. लेख 4. रेखा, लकीर 5. लिपि 6. भाग्य लिपि

आँकू *वि.* (देश.) संख्या, माप, मूल्य आदि का अनुमान लगाने वाला व्यक्ति, आँकने वाला।

आँख *स्त्री.* (तद्.) 1. नेत्र, देखने की इंद्रिय 2. दृष्टि 3. ध्यान 4. पौधों जैसे- ईख, आलू इत्यादि में आँख जैसा स्थान जहाँ से अंकुर फूटता है, अँखुआ 5. सुई का छिद्र 6. आँख जैसा जैसे- मोरपंख की आँख 7. ला.अर्थ. निगाह, दृष्टि पर्या. अक्ष, अक्षि, चक्षु, दृग, नयन, नैन, नेत्र, लोचन मुहा. आँख-आना- आँख में लाली, दर्द व सूजन होना; आँख उठाकर न देखना- ध्यान न देना, कुछ न समझना, बिल्कुल भी न देखना; आँख उमड़ना- आँखों में अचानक आँसू भर जाना; आँख उलट जाना- मर जाना, घमंड होना; आँख ऊँची न होना- लज्जा के कारण, सम्मानपूर्वक देखने का साहस न होना; आँख ऊपर न उठना- नजर नीची रखना, लज्जा या भय से नजर नीचे रहना; आँख कडुआना- अधिक जागने या अधिक गौर से देखने से आँख में पीड़ा होना; आँख का अंधा- विवेकहीन; आँख का अंधा, गाँठ का पूरा- मूर्ख धनवान; आँख का अंधा, नाम नयनसुख- नाम-गुण में विरोध; आँख का उलटा हो जाना- ऐश्वर्य के कारण दूसरों को हेय समझना; आँख का काँटा होना- खटकना, पीड़ा देना, कष्टकारी होना; आँख का काँटा बनना- नजर में खटकना,

खलना; आँख का काजल चुराना- बहुत चालाकी से चोरी करना; आँख का जाना- आँख का फूट जाना, आँख की रोशनी का जाना; आँख का तारा- अत्यंत प्रिय व्यक्ति; आँख का तेल निकालना- आँखों को बहुत कष्ट देना; आँख का पानी ढलना- निर्लज्ज हो जाना; आँख- कान खुला रहना- सचेत रहना, सावधान रहना, होशियार रहना; आँख का परदा उठना- ज्ञानचक्षु खुलना, भ्रम दूर होना; आँख का पानी ढल जाना- निर्लज्ज हो जाना; आँख का सच्चा- किसी व्यक्ति या वस्तु आदि पर कुदृष्टि न डालने वाला; आँख किरकिराना- आँख में चुभन होना, आँख में चुनचुनाहट होना; आँख की किरकिरी- अप्रिय, नापसंद (व्यक्ति); आँख पर परदा पड़ना- भ्रमवश किसी तथ्य या व्यक्ति आदि की सही पहचान न कर पाना; आँख का पानी मरना- लज्जा का लोप होना, शर्म-हया न रहना; आँख के आगे अँधेरा छाना- कुछ दिखाई न देना, कुछ समझ न आना, अकस्मात् मूर्च्छित होना, क्षणमात्र के लिए कुछ भी न दिखाई पड़ना; आँख के सामने आना- सामने आना, सम्मुख आना, उपस्थित होना; आँख खुलना- जागना, सचेत होना, गलती का ज्ञान होना; आँख खोलना- जागना, तथ्य का सही ज्ञान होना या कराना, होश में लाना; आँख गड़ना- एकटक देखते रहना, टकटकी लगाकर देखना, तीव्र लालसा से देखना; आँख चढ़ना- क्रोध से या नशे से आँख का लाल होना; आँख चुराना- नजर बचाना, सामने आने से बचने का प्रयास करना; आँख चूकना- समय पर देख न पाना, ध्यान हट जाना, असावधान होना; आँख जमना- एकटक देखते रहना, दृ टि का हट न पाना; आँख झपकना- झपकी आना, नींद आना; आँख झपकाना- आँख से संकेत करना; आँख टँगना- टकटकी बँधना, पुतली का स्तब्ध होना; आँख टेढ़ी करना- गुस्से से देखना; आँख डबडबाना- आँखों में आँसू भर आना; आँख डालना- दृष्टि डालना, ध्यान देना; आँख तरसना- देखने के लिए आकुल होना या रहना; आँख तरेरना- क्रोधपूर्ण दृ टि से देखना; आँख न उठना- सम्मान, लज्जा या अनिच्छा से दृष्टि नीची रखना; आँख न भाना- अच्छा न लगना; आँख निकालना- क्रोध से आँख दिखाना; आँख नीची करना- दृष्टि न मिलाना; आँख नीची होना- लज्जित होना, सिर नीचा होना; आँख नीली-पीली या लाल-पीली करना- क्रोधित होकर आँख दिखाना; आँख पथराना- आँख की पलक की गति रुक जाना, एकटक देखते रह जाना, दृष्टि शून्य हो जाना; आँख की पुतली- अति प्रिय व्यक्ति; आँख की पुतली फिरना- आँख का पथरा जाना; आँख पर रखना- बहुत प्यार या आदर करना; आँख फैलाना- नजर दौड़ाना, दूरदृष्टि अपनाना; आँख फड़कना- आँख की पलकों में कंपन होना, शकुन/अपशकुन के संकेत का आभास होना; आँख फाड़-फाड़कर देखना- आश्चर्य या उत्सुकता से देखना; आँख फूटना- आँख की दृष्टि का जाना, ज्ञानदृष्टि खो देना; आँख फेरना- निगाह फेरना, रूठ जाना, किसी की उपेक्षा करना; आँख फोड़ना- आँख पर जोर पड़ने वाला काम करना, आँख नष्ट करना; आँख बचाकर काम करना- चोरी से कोई काम करना; आँख बचाना- सामने न आना, नजर बचाना; आँख बिछाना- प्रेम से किसी के स्वागत के लिए तत्पर रहना; आँख भर आना- आँखों में आँसू आना; आँख भरकर देखना- अच्छी तरह से देखना; आँख भौं टेढ़ी करना- आँख दिखाना, क्रोध की दृष्टि से देखना; आँख मचकाना- बार-बार पलकें गिराना, आँख से संकेत करना; आँख मारना- आँख से इशारा करना; आँख मिलाना- बराबरी के भाव से देखना; आँख मूँदना- आँख बंद करना, पलक गिराना, किसी व्यक्ति, घटना आदि पर ध्यान न देना, मर जाना; आँख में आँख डालना- आँख से आँख मिलना, प्रेम दृष्टि से देखना, ढिठाई से देखना; आँख में खटकना- बिल्कुल अच्छा न लगना, फूटी आँखों न सुहाना; आँख में खून उतरना- क्रोध से आँखें लाल होना, हिंसा पर उतारू होना; आँख में गड़ना- आँखों में खटकना, मन लुभा लेना; आँख में चढ़ना- पसंद आना, आँखों को अच्छा लगना; आँख में चमक आना- प्रसन्न होना; आँख में

चुभना- (आँखों में) खटकना, बुरा लगना; आँख में तरावट आना- मन का प्रसन्न हो जाना; आँख में धूल डालना- धोखा देना, भ्रमित करना, ठगना; आँख में नाचना- दृष्टि के सामने बने रहना; आँखों आँखों में पालना- बहुत लाड़-प्यार से पालन करना; आँख में फिरना- दृष्टि में (याद में) लगातार बने रहना; आँख में बसना- किसी वस्तु, व्यक्ति या भाव का हृदय में समा जाना; आँखों में बैठना- आँखों में बस जाना, पंसद आना; आँखों में रखना- प्रेम से रखना, लाड़-प्यार से पालना; आँखों में रात काटना- सारी रात नींद न आना, कष्ट से रात बिताना; आँखों में शील होना- मन में विनम्रता होना, मर्यादा का भाव होना; आँखों में समाना- हृदय में बस जाना, ध्यान पर चढ़ना; आँख लगना- नीद आना, झपकी आना, प्रीति होना; आँख लगाना- एकटक देखना, प्रीति लगाना; आँख लड़ना- (प्रेम में) आँख मिलना, प्रेम होना; आँख लड़ाना- आँख मिलाना, नजर मिलाना, प्रेम करना; आँखों ललचाना- देखने की प्रबल इच्छा होना; आँख सेंकना- सुंदरता को निहारना; आँख से आँख मिलाना- नजर लड़ाना, आमने-सामने मिलना; आँख से ओझल होना- दिखाई न पड़ना; आँख होना- परख होना, पहचान होना।

आँखड़ाँ *पुं.* (देश.) उदासीनता, नजरअंदाज़ करने का कार्य।

आँखफोड़ *वि.* (देश.) आँख फोड़ने वाला।

आँखफोड़ टिड्डा *पुं.* (देश.) हरे रंग का एक कीट-पतंगा, जो बहुत तेजी से इधर-उधर उड़ता है, इस से आँखों में चोट लग सकती है।

आँखमिचौनी *स्त्री.* (तद्.) आँखें मूँद कर खोजने (छिपने-खोजने) का खेल।

आँखमिचौली *स्त्री.* (तद्.) दे. आँखमिचौनी।

आँखरंजनी *स्त्री.* (देश.) 1. नेत्रों में काजल लगाने का कार्य 2. शिशु के जन्म के कुछ दिन बाद, बुआ द्वारा उस की आँखों में काजल लगाने की प्रथा है, इस कार्य के लिए बुआ को उपहार दिया जाता है, यह प्रथा आँखरंजनी कहलाती है।

आँगन *पुं.* (तद्.) घर के मध्य भाग का खुला प्राय: चौकोर स्थान, घर के भीतर का सहन, चौक पर्या. अंगण, अँगना, अजिर, अहाता, चौक, प्रांगण, सहन।

आँगन-बाड़ी *स्त्री.* (तद्.) 1. अपने ही आँगन में लगी हुई वाटिका दे. शाक वाटिका 2. शिक्षा. घर के सहन में दी जाने वाली शिक्षा की पद्धति; बालबाड़ी दे. नर्सरी।

आँगी *स्त्री.* (देश.) वक्षस्थल का वस्त्र, चोली, आंगिया।

आँगुर *स्त्री.* (तद्.) 1. अंगुल, लंबाई आदि नापने की, प्राचीनकालीन इकाई। 2. उँगली।

आँगुल *पुं.* (तद्.) लंबाई का एक छोटा माप, जो आठ जौ के दानों की लंबाई के बराबर होता है, एक उंगली की चौड़ाई।

आँघी *स्त्री.* (देश.) मैदा आदि खाद्य पदार्थ छानने की छलनी। इस उपकरण की जाली काफी महीन होती है।

आँच *स्त्री.* (तद्.) 1. गरमी, ताप, आग की लपट से निकलने वाली गरमी 2. ला.अर्थ. क्षति, हानि मुहा. आँच आना- गरमी पहुँचना, क्षति पहुँचना।

आँचना *स.क्रि.* (तद्.) 1. गरम करना, भूलना, तापना, जलाना 2. प्रवृत्त होना 3. आचमन करना अर्थात् दाएँ हाथ के मध्य भाग पर थोड़ा जल लेकर, बिना होंठों को छुए, मुँह में डालना और पीना।

आँचर *पुं.* (तद्.) साड़ी का वह छोर जो सिर पर रहकर सामने की तरफ रखा जाता है। आँचल।

आँचल *पुं.* (तद्.) 1. धोती या साड़ी का छोर, जो पहनने पर सामने वक्ष को ढके रहता है, बिना सिला छोर, पल्ला 2. छोर पर्या. अंचल, अँचरा, छोर, पल्ला, पल्लू मुहा. आँचल पसारना- कुछ माँगने के लिए किसी के आगे हाथ पसारना; आँचल में दाग लगना- चरित्र-संबंधी लांछन लगना; आँचल में बाँधना- प्रेमबंधन में बाँधना, सदा के लिए याद रखना; आँचल सँभालना-

आँचल ठीक करना, शरीर के वस्त्र को व्यवस्थित करना।

आँचलिक *वि.* (तत्.) अंचल-संबंधी, क्षेत्र-विशेष के परिवेश से संबंधित।

आँचलिकता *स्त्री.* (तत्) क्षेत्र-विशेष के परिवेश की उपस्थिति से संबंध रखने का भाव।

आँजन *पुं.* (तद्.) आँखों में लगाया जाने वाला शृंगार प्रसाधन।

आँजना *स.क्रि.* (तद्.) आँखों को सुरमा अथवा काजल लगाकर सुंदर बनाना।

आँजनी *स्त्री.* (तद्.) आँखों में लगाने का अंजन।

आँजनेय *पुं.* (तत्.) अंजना का पुत्र, हनुमान।

आँजे *वि.* (तद्.) अंजन अथवा सुर्मा से सुशोभित।

आँट *पुं.* (देश.) 1. हाथ की तर्जनी और अँगूठे के बीच का स्थान 2. दाँव 3. लाग-डाट 4. गाँठ। *स्त्री.* सोना परखने की कसौटी पर, परखने वाली वस्तु की रेखा अथवा चिह्न।

आँटना *अ.क्रि.* (देश.) 1. अटकाना, लगाना 2. भरना, समाना। 3. पूरा पड़ना, पर्याप्त होना।

आँट-साँट *स्त्री.* (देश.) 1. सामान्य मेल-जोल, भागीदारी, साझा 2. षड़यंत्र।

आँटी 2 *स्त्री.* (देश.) 1. कमर में धोती की लपेट, जिसमें पैसे रहते हैं 2. लंबे पौधों या लंबी घास की पूली 3. पूला 4 बच्चों के गुल्ली-डंडे की गुल्ली 5. कुश्ती का एक पेंच 6. सूत का लच्छा 7. टेंट 8. धोती का वह भाग जिसमें पैसे आदि रखे जाते हैं, अंटी।

आँठी *स्त्री.* (देश.) 1. दही, मलाई आदि का लच्छा लच्छा या थक्का 2. गाँठ 3. गुठली।

आँड *पुं.* (तद्.) 1. मूत्रांग के पीछे लटकने वाला शारीरिक अवयव, अंडकोष 2. तलवार की मूठ के बीच का भाग, अँबिया *वि.* (तत्) अंडे से उत्पन्न, अंडज।

आँडी *स्त्री.* (देश.) 1. गाँठ 2. कंद जैसे प्याज की आँडी 2. पहिए की हाल, पहिए को कसावट में रखने के लिए उस पर चढ़ाई जाने वाली लोहे ही मोटी पत्ती।

आँड़ू *वि.* (तद्.) पशु जो नपुसंक न किया गया हो, अंडुआ।

आँत *स्त्री.* (तद्.) प्राणियों के आहार-नली का वह भाग जो नाभि से गुदा तक होता है; अंतड़ी। मुहा. आँत उतरना- अंत्र-वृद्धि होना, आँत का बढ़ना- हार्निया रोग होना; आँत कुलबुलाना- भूख से व्याकुल होना; आँते सूखना- भूख के मारे बुरा हाल होना, बहुत भूखा होना; आँतों में चूहों का दंड पेलना- बहुत अधिक भूख लगना।

आँतरा *वि.* (तद्.) 1. अंतर वाला 2. भेद वाला 2. दूरी वाला 3. एक दिन छोड़कर, एक दिन वाला, आन्तरा दिन- अगले दिन के बाद वाला दिन।

आँथव *पुं.* (देश.) अस्त होने का भाव, आथने की क्रिया।

आँदू *पुं.* (देश.) 1. हथकड़ी 2. पैरों में डाली जाने वाली बेड़ी 3. शृखला, साँकल, जंजीर-सामान्यतया लोहे की।

आँधना *अ.क्रि.* (देश.) वेगवान आक्रमण करना, हल्ला बोलना, टूट पड़ना।

आँधर *वि.* (तद्.) अंधा।

आँधी *स्त्री.* (तद्.) 1. बहुत वेग से चलने वाली हवा जो धूल झाड़ी-झंखाड़ को उड़ाती हुई चले और अंधेरा कर दे, तूफान पर्या. अंधड़, अँधेरी, चक्रवात, झंझा, झंझावात, तूफान, प्रभंजन, बवंडर, वात्या। 2. भारी हलचल मुहा. आँधी उठना- हलचल मच जाना; आँधी के आम- बिना परिश्रम से मिली चीज; आँधी में गिरे हुए आम- थोड़े दिन रहने वाली चीज।

आँब *पुं.* (तद्.) आम का वृक्ष और उसका फल।

आँय-बाँय *पुं.* (अनु.) व्यर्थ की बात, अनाप-शनाप, असंबद्ध प्रलाप पर्या. अंडबंड, अनाप-शनाप, आँय-बाँय-शाँय।

आँव *पुं.* (तद्.) आंतों के सफेद रंग के लंबे कीड़े इससे अपच, कमजोरी और बुखार भी होता है।

आँवठ *पुं.* (देश.) 1. किसी बरतन या कपड़े का किनारा 2. किसी वस्तु की कुछ ऊँची हुई बाड़।

आँवल *पुं.* (तद्.) गर्भ में स्थित बच्चे के चारों ओर लिपटी झिल्ली, जेरी।

आँवल बट्टा *पुं.* (तद्.+देश.) आँवले का सूखा फल।

आँवला *पुं.* (तद्.) इमली जैसे पत्तों वाला एक पेड़ या उसका गोल आकार वाला कसैला फल जिसका उपयोग औषधि, अचार, मुरब्बे आदि बनाने में किया जाता है, आमलक *वि.* त्रिफला के तीन फलों में एक आँवला भी है दे. त्रिफला।

आँवाँ *पुं.* (तद्.) दे. आवाँ।

आँसू *पुं.* (तद्.) अश्रु-ग्रंथियों से निकलने वाले सलवण जलबिंदु या जलस्राव जो सुख-दुःख की अतिशयता में आँख से बाहर निकल पड़ते हैं। मुहा.- आँसू गिराना- रोना; आँसू डबडबाना- आँखों में आंसुओं का भर आना; आँसू ढलना- आँसू गिरना, रोना; आँसू थमना- आँसू रुकना, रोना बंद होना; आँसू पी कर रह जाना- भीतर ही भीतर रोकर रह जाना, कष्टपूर्ण स्थिति में अपना दुःख छिपा लेना; आँसू पोंछना- सांत्वना देना, तसल्ली देना; आँसू भर आना- आँसुओं का प्रकट होना; आँसू का तार बँधना- लगातार आँसू बहाना; आँसुओं से मुँह धोना- बहुत आँसू बहाना, बहुत रोना।

आँसें *स्त्री.* (बहु.) (देश.) मूँछों का आरंभिक रूप, जब वह मात्र रेखा-सी होती हैं, मूछों की हल्की रोमावली।

आँहाँ *अव्य.* (देश.) हाँ, कही अथवा सुनी हुई बात की मंज़ूरी।

आ: *अव्य.* (देश.) आश्चर्यबोधक अभिव्यक्ति, विस्मयबोधक अभिव्यक्ति।

आ *अ.क्रि.* (तत्.) आने की क्रिया, आना का आज्ञार्थक रूप, वक्ता के समीप पहुँचना विलो. जा, एक उपसर्ग जिसका प्रयोग सीमा की अभिव्यक्ति के अर्थ में (तक, से, भर, सहित) यथा आमरण-मरण तक, आजीवन-जीवन भर (तक) आजानुबाहु-जानु तक लंबी बाहें, आबाल वृद्ध बच्चों से बूढ़ों तक।

आइंदा *वि.* (फा.) आगे आनेवाला, भावी, *पुं.* भविष्य काल, आनेवाला समय *क्रि.वि.* आगे, भविष्य में प्रयो. आइंदा ऐसी गलती न हो।

आइटम *पुं.* (अं.) 1. मद 2. वस्तु 3. विषय।

आइसक्रीम *स्त्री.* (अं.) शर्करायुक्त दूध की मलाई को बर्फ के रूप में ठंडा करके तैयार किया गया खाद्य या चोष्य पदार्थ।

आइसबर्ग *पुं.* (अं.) हिम खंड, समुद्र के भीतर बर्फ का एक भीषण खंड, जो तैरता रहता है।

आइस-बैग *पुं.* (अं.) बर्फ के टुकड़ों से भरी रबर या प्लास्टिक की थैली। खेल-कूद में चोट लगने पर इससे ठंडी सिकाई की जाती है।

आइस-बॉक्स *पुं.* (अं.) बर्फ रखने का बक्सा, जिसमें बर्फ नहीं पिघलती।

आई *स्त्री.* (तद्.) 1. मृत्यु, मौत 2. आयु 3. जीवन *अ.क्रि.* (तद्.) 'आना' क्रिया का भूतकालिक (स्त्री.) रूप *स्त्री.* पितामही, दादी *प्रत्य.* भाववाचक संज्ञा निर्माणार्थ प्रयुक्त, जैसे- कठिन+आई कठिनाई, मीठा+आई मिठाई।

आई.आर.सी. अपराध *पुं.* (अं.+तत्.) अपराध *वि.* इंटरनेट रिले चैट (यानी आई आर सी) सर्वर के चैट रूपों में लाइन पर उपलब्ध किसी व्यक्ति के चैट रूम का अवैध उपयोग करने का अपराध।

आईन *पुं* (फा.) कानून, विधि।

आईना *पुं.* (फा.) दर्पण, शीशा, आरसी।

आईनासाज *पुं.* (फा.) आईना बनाने वाला।

आईनासाजी *स्त्री.* (फा.) 1. आईना बनाने का पेशा 2. काँच पर कलई करने का काम।

आईनी *वि.* (फा.) वैधानिक, कानूनी।

आउ[1] *स्त्री.* (तद्.) देश, आयु, उम्र।

आउ[2] *अ.क्रि.* (आदेशात्मक वृत्ति.) आओ, आ जाओ।

आउज/आउस *पुं.* (तद्.) आघात से बजाया जाने वाला एक वाद्य यंत्र, ताशा।

आउट *वि.* (अं.) 1. क्रिकेट रन आउट होने, विकेट के गिरने, पग-बाधा आदि के कारण बल्लेबाज की खेल पारी की समाप्ति 2. टेनिस, बैडमिंटन आदि खेलों में गेंद/शटल आदि का सीमा रेखा से बाहर गिरना।

आउटडोर *वि.* (अं.) बाहरी, बहिरंग 1. चिकित्सालय में दाखिल न किए गए रोगी, आउटडोर रोगी होते हैं 2. भवन के भीतर न खेले जाने वाले खेल, आउटडोर गेम्ज़ (खेल) कहलाते हैं।

आउट स्विंगर *पुं.* (अं.) (क्रिकेट) ऐसी गेंद जो उछाल लेते ही स्टंप से बाहर की दिशा में मुड़ जाती है विलो. इनस्विंगर।

आउन्स *पुं.* (अं.) तौलने की अंग्रेजी माप जो लगभग सवा दो तोले के बराबर है।

आउ-बाउ *पुं.* (अनु.) निरर्थक शब्द, अंड-बंड।

आउस *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का धान जो वर्षा में ही पक जाता है।

आकंठ *वि.* (तत्.) 1. कंठ तक, गले तक 2. ला.अर्थ. पूरी तरह प्रयो. वह नव धनाढ्य आजकल विलासिता में आकंठ डूबा हुआ है।

आकंपन *पुं.* (तत्.) काँपना, कंपन, कँपकँपी।

आकंपित *वि.* (तत्.) कँपा हुआ, हिला हुआ, कँपकँपाया हुआ।

आक *पुं.* (तद्.) अर्क, मदार, एक विशेष जंगली पौधा जिसके पत्तों से निकलने वाला दूध आँखों के लिए हानिकर माना जाता है।

आक की बुढ़िया *स्त्री.* (देश.) 1. आक के गूलर (फल) में से, रूई जैसी, निकलने वाली वस्तु 2. कमजोर और दुबली वृद्‌ध।

आकटि *वि.* (तत्.) कमर तक, सामान्यतयः वर्षा के पानी की ऊँचाई अथवा गहराई अभिव्यक्त करने के लिए।

आक़बत *स्त्री.* (अर.) 1. मृत्यु के बाद की स्थिति अथवा समय 2. परलोक।

आकबाक *पुं.* (तद्.) अकबक, ऊटपटांग बात *वि.* (देश.) ऊटपटाँग, अंड-बंड, अव्यवस्थित।

आकर *पुं.* (तत्.) 1. खान, भंडार 2. ग्रंथ समूह, संदर्भग्रंथ।

आकरभाषा *स्त्री.* (तत्.) (आकर+भाषा) ऐसी सम्मानित प्राचीन भाषा जिसे कुछ आधुनिक भाषाओं की जननी माना जाता हो, इन भाषाओं पर तथा अन्य भाषाओं पर भी आकर भाषा का प्रभाव शब्द आदि स्तर पर बना रहता है।

आकरिक *पुं.* (तत्.) 1. खान खोदने वाला 2. जो व्यक्ति स्वयं खान खोदे और धातु निकाले 3. खान का स्वामी 4. खान अधिकारी।

आकरी *पुं.* (तद्.) 1. खान से उत्पन्न, खनिज। *स्त्री.* (तद्.) 2. खान खोदने का काम।

आकर्ण *वि.* (तत्.) कान तक फैला हुआ प्रयो. भट्‌टिनी के विशाल नयन आश्चर्य से आकर्ण विस्फारित हो गए (बाणभट्ट की आत्मकथा)।

आकर्णकृष्ट *वि.* (तत्.) (आ+कर्ण+कृष्ट) कान तक खींचा गया। आमतौर पर धनुष-संधान के विषय में प्रयुक्त।

आकर्णित *वि.* (तत्.) सुना हुआ।

आकर्ष *पुं.* (तत्.) 1. अपनी ओर खींचने की क्रिया या भाव। 2. चुंबक 3. पाँसा 4. पैसे लगाकर खेला जाने वाला जुआ 5. धनुष तानने का कार्य 6. वशीकरण।

आकर्षक *वि.* (तत्.) दूसरों को अपनी ओर खींचने वाला, आकर्षित करने वाला, सुंदर।

आकर्षण *पुं.* (तत्.) खिंचाव, किसी व्यक्ति या वस्तु की किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु की ओर खिंचने की स्थिति।

आकर्षण शक्ति *स्त्री.* (तत्.) भौतिक. पदार्थ का वह गुणधर्म जिससे वह अन्य पदार्थ को अपनी ओर खींचता है, आकर्षण बल।

आकर्षित *वि.* (तत्.) आकृष्ट, खींचा हुआ, खिंचा हुआ।

आकर्षी *वि.* (तत्.) 1. खिंचाव से संबंधित 2. आयु. (i) (व्यक्ति) जिसकी मांसपेशियों में ऐंठन (आकर्ष) होती रहती है (ii) (रोगी) जिसका आकर्षी पक्षाघात हो गया हो 2. *पुं.* कृषि आगंतुक कीटों को आकर्षित करने वाला पुष्प पदार्थ जैसे- पराग, मकरंद आदि।

आकल *पुं.* (तत्.) गणि. बंटन-फलन का वह सांख्यिकीय मान, जिसमें प्रतिदर्शों के आधार पर प्राचल दिया गया हो estimate

आकलक *पुं.* (तत्.) गणि. मूल समष्टि के किसी चर का सन्निकट मान ज्ञात करने वाला विचर।

आकलन *पुं.* (तत्.) 1. गिनती करने की क्रिया 2. अनुमान, अंदाज 3. जाँच 4. गणना। estimation

आकलनीय *वि.* (तत्.) 1. जाँच करने योग्य, परखने योग्य 2. अनुमान लगाने योग्य 3. गणना के योग्य।

आकलित *वि.* (तत्.) 1. जाँचा हुआ, परखा हुआ 2. अनुमानित, परीक्षित 3. परिगणित, गिना हुआ।

आकलित दंड *पुं.* (तत्.) विधि. बाद में दिए गए दंडों के कारण बढ़ा हुआ कुल दंड। cumulative punishment

आकली *स्त्री.* (तत्.) 1. व्याकुलता, बेचैनी 2. (देश.) गोरैया पक्षी, हल्के भूरे पंखों वाली छोटी चिड़िया।

आकल्प *क्रि.वि.* (तत्.) 1. कल्प-पर्यंत *पुं.* सज्जा, पहनावा, आभूषण।

आकस्मिक *वि.* (तत्.) अचानक, अकस्मात् अथवा एकाएक होने वाला, सहसा होने वाला, जिसके होने की पहले संभावना न रही हो।

आकस्मिक छुट्टी *स्त्री.* (तत्.+तद्.) प्रशा. किसी आकस्मिक घटना से निबटने के लिए उपलब्ध छुट्टी। casual leave

आकस्मिकता निधि *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रशा. आकस्मिक खर्च के लिए आरक्षित रखी गई एकमुश्त धनराशि contigency fund 2. विधि. संसद् द्वारा विधिसम्मत निश्चित धनराशि।

आकस्मिकता सस्यन *पुं.* (तत्.) कृषि. सूखा, बाढ़ जैसी स्थितियों में भी फसल उगाना। जिससे कुछ खाद्य और चारा तो मिल ही सके।

आकस्मिकतावाद *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का दर्शन जिसमें समस्त घटनाएँ बिना किसी कारण के घटित होने की बात मानी जाती है।

आकस्मिकी *स्त्री.* (तत्.) अचानक होने वाली बात, बात, आकस्मिक घटना।

आकांक्षक *वि.* (तत्.) इच्छा रखने वाला, अभिलाषा करने वाला, आकांक्षी।

आकांक्षा *स्त्री.* (तत्.) इच्छा, अभिलाषा, चाह, अपेक्षा, कामना भा. वि., न्याय दर्श. वाक्यार्थ के ठीक ज्ञान के लिए एक शब्द के दूसरे शब्द पर आश्रित होने की स्थिति जैसे- 'काम कर लिया है' यह वाक्य कर्ता की आकांक्षा रखता है, अतः यहाँ 'मैंने/उसने' की विद्यमानता अभीष्ट है।

आकांक्षिणी *वि.* (तत्.) इच्छा करने वाला अथवा इच्छा करने वाली, अपेक्षा रखने वाला अथवा अपेक्षा रखने वाली।

आकांक्षित *वि.* (तत्.) इच्छित, वांछित, अपेक्षित।

आकांक्षी *वि.* (तत्.) इच्छा रखनेवाला, चाहनेवाला, इच्छुक, अभिलाषी।

आका *पुं.* (फा.) मालिक, स्वामी।

आकाच *पुं.* (तद्.) 1. एक ऐसा रासायनिक पदार्थ जो वस्तुओं के संरक्षण में प्रयुक्त सोने चांदी के आभूषणों में मीनाकारी के रूप में प्रयुक्त होता है 2. दाँतों की ऊपरी परत भी आकाच है।

आकाचन *पुं.* (तत्.) आकाच चढ़ाने का कार्य, रसायनिक मुलम्मा चढ़ाने का कार्य।

आकार *पुं.* (तत्.) 1. स्वरूप, आकृति, रूप, सूरत 2. डील-डौल, बनावट, कद।

आकारग्रंथ *पुं.* (तत्.) 1. ऐसा उत्कृष्ट ग्रंथ जो भावी रचनाकारों को काफी समय तक सामग्री तथा प्रेरणा प्रदान करता रहे 2. ज्ञातव्य तथा गूढ़ बातें जानने का संदर्भ ग्रंथ।

आकारवान *पुं.* (तत्.) सुगठित, सुंदर, सौम्य शरीर वाला।

आकारहीन *पुं.* (तत्.) [आकार+हीन] जिस का कोई आकार न हो, निराकार।

आकारांत *वि.* (तत्.) वह शब्द जिस के अंत में 'आ' स्वर हो जैसे- चिंता।

आकारिकी *स्त्री.* (तत्.) 'आकार' के अध्ययन से संबंधित शास्त्र अथवा रूप रचना विज्ञान पर्या. आकृतिविज्ञान।

आकारित *वि.* (तत्.) आकार दिया हुआ, रूपायित।

आकारी *वि.* (तत्.) आकार युक्त, आकृति वाला।

आकाल *क्रि.वि.* (तत्.) उपयुक्त समय तक, पूरे समय तक।

आकालिक *वि.* (तत्.) समय से ठीक पूर्व या ठीक बाद में होने वाला।

आकाश *पुं.* (तत्.) आसमान, धरती के चारों ओर ऊँचा फैला हुआ नीला दिखाई देने वाला शून्य स्थान। पर्या. अंतरिक्ष, अंबर, आसमान, खगोल, गगन, गगनमंडल, नभ, नभमंडल, नभोमंडल, व्योम, शून्य मुहा. आकाश खुलना- आसमान साफ होना, बादल हट जाना; आकाश चूमना या छूना- बहुत ऊँचा होना, बहुत लंबा होना, बहुत लंबी-चौड़ी बातें करना; आकाश-पाताल का अंतर- अत्यधिक भिन्नता; आकाश-पाताल एक करना- प्रबल प्रयास करना, पूरी शक्ति से कार्य करना; आकाश बाँधना- असंभव बात करना; अनहोनी बात करना; आकाश से बातें करना- बढ़-चढ़ कर बात करना, बहुत ऊँचा होना।

आकाश कुसुम *पुं.* (तत्.) असंभव वस्तु।

आकाशगंगा *स्त्री.* (तत्.) अंत.वि. परस्पर गुरुत्वाकर्षण से जुड़े करोड़ों अरबों (असंख्य) तारों का मार्गाकार समूह जो रात्रि में उत्तरदक्षिण दिशा में फैला हुआ दिखलाई पड़ता है galaxy हमारा सौरमंडल 'मिल्की वे' (आकाश गंगा) का ही एक छोटा हिस्सा है, वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार ऐसे कई सौरमंडलों (तारामंडलों) का समूह ही आकाश गंगा है दे. ब्रह्मांड, ब्रह्मांड में ऐसी कई आकाश गंगाएँ हैं।

आकाशग *वि.* (तत्.) दे. आकाशचारी *पुं.* (तत्.) पक्षी।

आकाशगा *स्त्री.* (तत्.) आकाश में गमन करने वाली, आकाशगंगा।

आकाशचारी *वि.* (तत्.) आकाश में विचरण करने वाला, आकाशगामी *पुं.* (तत्.) सूर्यादि नक्षत्र, वायु, पक्षी, देवता, राक्षस।

आकाशजल *पुं.* (तत्.) 1. आकाश से बरसने वाला जल, मेघ का जल 2. ओस, तुषार।

आकाशदीप *पुं.* (तत्.) बाँस के ऊँचे सिरे पर बाँध कर जलाया गया दिया या लालटेन।

आकाश-धारणा *स्त्री.* (तत्.) योग. पंच स्थूल भूतों की धारणाओं में से एक जिसमें श्वास को आकाश में ही आते-जाते देखना होता है।

आकाश ध्रुव *पुं.* (तत्.) आकाश का ध्रुव तारा लोक व्यवहार में ध्रुव को नक्षत्र माना जाता है।

आकाशनिद्रा *स्त्री.* (तत्.) खुले आसमान के तले सोना।

आकाश पथिक *पुं.* (तत्.) सूर्य, चंद्र, नक्षत्र आदि।

आकाश पुष्प *पुं.* (तत्.) आकाशकुसुम, आकाश का फूल; असंभव बात, अप्राप्य वस्तु।

आकाश बेल *स्त्री.* (तद्.) अमरबेल जड़ और फल-फूल पत्तीरहित एक हरी या पीली लता जो वृक्ष पर परजीवी की तरह उगती-बढ़ती है।

आकाशभाषित *पुं.* (तत्.) नाट्य. आकाश की ओर देखकर बोला गया शब्द या वाक्य, नाटक आदि में किसी पात्र का आकाश की ओर देखकर कुछ कहना, कोई प्रश्न करना और फिर उसका उत्तर देना।

आकाश भेदी *वि.* (तत्.) [आकाश+भेद] 1. बहुत ऊँची ध्वनि, आकाश को चीरने वाली ध्वनि 2. बहुत ऊँचा भवन।

आकाशमंडल *पुं.* (तत्.) नभ मंडल, नभो-मंडल, खगोल।

आकाशमुखी *पुं.* (तत्.) 1. ऊपर मुख कर तप करने वाला 2. जिसका मुख ऊपर की ओर (खुला) हो।

आकाशमूल *स्त्री.* (तत्.) कुंभी, जलकुंभी।

आकाशयान *पुं.* (तत्.) 1. जो आकाश में गमन करे, जिसके सहारे आकाश में यात्रा की जा सके 2. वायुयान 3. गुब्बारा।

आकाशरक्षी *पुं.* (तत्.) वह प्रहरी जो किले की बाहरी दीवार के बुर्ज पर खड़ा होकर पहरा देता है।

आकाशवल्ली *स्त्री.* (तत्.) दे. आकाशबेल।

आकाशवाणी *स्त्री.* (तत्.) 1. दैवी वाक्, आकाश से सुनी गई वाणी। आकाशभाषित 2. भारत के (सरकारी) रेडियोतंत्र के लिए सुनिश्चित व्यक्तिवाचक नाम। All India Radio

आकाशवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. अनिश्चित जीविका भाग्य के सहारे आजीविका 2. केवल वर्षा के जल पर आश्रित रहकर कृषि करना।

आकाशवृत्तिक *वि.* (तद्.) अनिश्चित आय पर गुज़ारा करने वाला व्यक्ति, दैनिक अनुकंपा पर आश्रित व्यक्ति।

आकाशसलिल *पुं.* (तत्.) 1. आसमान से बरसने वाला पानी, वृष्टि 2. ओस।

आकाश-स्फटिक *पुं.* (तत्.) आकाश की आभावाला पदार्थ 1. ओला 2. सूर्यकांत मणि 3. चंद्रकांत मणि।

आकाशी *स्त्री.* (तत्.) चँदोवा जो धूप से बचने के लिए ताना जाता है।

आकाशी परिप्रेक्ष्य *पुं.* (तत्.) चित्रकला का एक ऐसा माध्यम जिसकी सहायता से चित्र में वस्तुओं की परस्पर दूरी का अनुभव होता है। वस्तुओं का छोटा-बड़ा आकार और रंगों का गहरा अथवा हल्कापन इस के साधन है। aerial perspective

आकाशी पर्यवेक्षण *पुं.* (तत्.) वायुयान अथवा उपग्रह द्वारा पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों का सर्वेक्षण, सर्वेक्षण, वायवी पर्यवेक्षण।

आकाशीय *वि.* (तत्.) आकाश का, आकाशवासी, आकाश-संबंधी।

आकाशीय पिंड *पुं.* (तत्.) दे. खगोलीय पिंड।

आकुंचन *पुं.* (तत्.) सिकुड़ना, सिमटना, संकुचन प्राणि. अंग को पीछे सिकोड़ने की क्रिया (जैसे कछुआ अपने मुँह-पैर आदि को अपने कवचशरीर में वापस खींच लेता है)। retraction

आकुंचनीय *वि.* (तत्.) सिकुड़ने या सिमटने योग्य, संकुचन-योग्य।

आकुंचित *वि.* (तत्.) 1. सिमटा हुआ, सिकुड़ा हुआ 2. टेढ़ा, कुटिल, वक्र 2. घुंघराले (बाल)।

आकुंठन *पुं.* (तत्.) 1. कुंठित या कुंद होने का भाव 2. स्तब्धता।

आकुंठित *वि.* (तत्.) 1. कुंद 2. लज्जित 3. स्तब्ध।

आकुल *वि.* (तत्.) 1. घबराया हुआ, व्यग्र, उद्विग्न, क्षुब्ध 2. व्यस्त।

आकुलता *स्त्री.* (तत्.) घबराहट, व्याकुलता, व्यग्रता।

आकुलत्व *पुं.* (तत्.) आकुल होने का भाव, बेचैन होने का भाव, व्याकुलता, कातरता।

आकुलित *वि.* (तत्.) व्याकुल दे. आकुल।

आकूत *पुं.* (तत्.) 1. अभिप्राय, आशय 2. कामना, इच्छा 3. अनुभूति 4. आश्चर्य।

आकृत *वि.* (तत्.) 1. आकार प्राप्त, बना हुआ, व्यवस्थित 2. क्रमबद्ध।

आकृति *स्त्री.* (तत्.) आकार, रूप, स्वरूप, रूपरेखा, बनावट, रचना, गठन गणि. रेखाओं की सहायता से रचना का स्वरूप।

आकृतिक विद्या *स्त्री.* (तद्.) मुख आदि की आकृति से व्यक्ति को जानने-पहचानने की विद्या, व्यक्ति की आकृति से भविष्य बताने की की विद्या।

आकृतिमूलक वर्गीकरण *पुं.* (तत्.) भाषा. विश्व की भाषाओं का उनकी रचना के आधार पर विभिन्न वर्गों में विभाजन पर्या. प्ररूपी वर्गीकरण typological classification तु. पारिवारिकी वर्गीकरण।

आकृति विज्ञान *पुं.* (तद्.) जीव. प्राणियों और वनस्पतियों की आकृति के अध्ययन का विज्ञान, जीवाश्मों की आकृति और संरचना का अध्ययन, आकारिका।

आकृष्ट *वि.* (तत्.) आकर्षित, किसी की ओर खिंचा हुआ, किसी की ओर दत्तचित्त ।

आकृष्टि *वि.* (तत्.) 1. खिंचाव 2. तंत्रोक्त आकर्षण-क्रिया 3. (धनुष की डोरी) खींचने का भाव।

आकोचनी *स्त्री.* (तत्.) किसी अंग को मोड़ने वाली वाली पेशी, संकोचन पेशी।

ऑक्टेन *पुं.* (अं.) रसा. पेट्रोलियम स्पिरिट (C_8H_{18}) में स्थित अल्केन श्रेणी का द्रवरूप हाइड्रोकार्बन नामक पदार्थ octane

आक्टेवो *पुं.* (अं.) कागज़ के पृष्ठ का आठवाँ भाग, उक्त आकार के पृष्ठों की पुस्तक, अठपेजी।

आक्रंद *पुं.* (तत्.) 1. रोदन, रोना, विलाप, रुदन, चिल्लाना 2. घोर लड़ाई, घमासान युद्ध 3. ऊँची आवाज़ 4. पुकार 5. चीख-पुकार 6. शोरगुल।

आक्रंदन *पुं.* (तत्.) रोना, चिल्लाना दे. आक्रंद।

आक्रंदित *वि.* (तत्.) 1. जोर-जोर से चिल्लाने वाला 2. जोर से बोलकर बुलाया गया व्यक्ति *पुं.* (तत्.) 1. जोर की चिल्लाहट, सहायतार्थ आवाज 2. रोना-पीटना, पश्चाताप में रोना-पीटना।

आक्रंदी *वि.* (तत्.) 1. जोर से पुकारने वाला/वाली चीखने-चिल्लाने वाला/वाली 2. रो-रो के विनती करने वाला/वाली 3. कोलाहल करने वाला/वाली।

आक्रांत *वि.* (तत्.) 1. जिस पर आक्रमण किया गया हो, जिस पर हमला हुआ हो 2. घिरा हुआ 3. पराजित 4. पीड़ित 5. दलित, दबाया हुआ।

आक्रांति *स्त्री.* (तत्.) 1. अधिकार में करना 2. आगे बढ़ना 3. उपद्रव, उथल-पुथल 4. पराभूत करना, दबाना 5. शक्ति, ताकत।

आक्रम *पुं.* (तत्.) 1. हल्ला बोलना, आक्रमण 2. पराक्रम 3. वीरता।

आक्रमण *पुं.* (तत्.) 1. हमला, चढ़ाई, धावा 2. ला.अर्थ. तीव्र आलोचना 3. (रोग का) हमला।

आक्रमणकारी *वि.* (तत्.) आक्रमण करने वाला, आक्रामक।

आक्रमणात्मक *वि.* (तत्.) आक्रमण की प्रवृत्ति रखने वाला, आक्रमणपूर्ण।

आक्रमित *वि.* (तत्.) जिस पर आक्रमण किया गया हो।

आक्रमिता *स्त्री.* (तत्.) हर संभव-असंभव उपाय से प्रेमी को वश में करने वाली नायिका।

आक्रामक *वि.* (तत्.)आक्रमण करने वाला, आक्रमणकारी।

आक्रामक क्षेत्ररक्षण *पुं.* (तत्.) दे. आक्रामक क्षेत्र सज्जा।

आक्रामक क्षेत्र सज्जा *स्त्री.* (तत्.) क्रिकेट क्षेत्र-रक्षण कर रही टीम के नायक द्वारा सभी खिलाडियों को उन-उन स्थानों पर तैनात करना, जहाँ से रन बनने की कम-से-कम संभावना हो attacking field

आक्रीड़ *पुं.* (तत्.) 1. खेल का मैदान, क्रीड़ा-स्थल 2. खेलकूद, क्रीड़ा 3. मनोरंजन।

आक्रीड़न, आक्रीडन *पुं.* (तत्.) 1. खेलना-कूदना, क्रीड़ा करना 2. दिल बहलाना।

आक्रीड़ भूमि *स्त्री.* (तद्.) खेलने का मैदान, ऐसे मैदान में विविध खेलों के लिए अचल उपकरण स्थापित अथवा निर्मित किए जाते हैं जैसे- हॉकी या फुटबाल आदि के गोल पोस्ट, क्रिकेट की पिच 2. स्टेडियम।

आक्रुष्ट *वि.* (तत्.) 1. जिस पर आक्रोश किया गया हो। 2. तिरस्कृत 3. जिस पर डाँट-डपट पड़ी हो 4. जिसको कोसा गया हो, जिसको शाप दिया गया हो, शापित।

आक्रोश *पुं.* (तत्.) 1. जोर से चिल्लाना, कोसना, क्रोध से हल्ला-गुल्ला करना, कटूक्ति, भर्त्सना 2. मन में स्थित क्रोध, प्रयो. बेरोजगारी के कारण नवयुवकों में आक्रोश व्याप्त है।

आक्रोशित वि. (तत्.) आक्रोश युक्त, आक्रुष्ट।

आक्रोष्टा *वि.* (तत्.) आक्रोश करने वाला, गुस्सा दिखाने वाला।

आक्लांत *वि.* (तत्.) 1. सना हुआ, तरबतर। 2. थका हुआ, हतोत्साह।

आक्षरिक *वि.* (तत्.) भाषा. 1. अक्षर syllable बनाने योग्य, अक्षराधारित 2. अक्षरों से संबंधित, अक्षरात्मक।

आक्षिक *वि.* (तत्.) अक्ष अर्थात् पासा फेंकने वाला, जुआरी *पुं.* (तत्.) जुए में दांव पर रखा धन।

आक्षिप्त *वि.* (तत्.) 1. फेंका हुआ, गिराया हुआ 2. जिस पर आक्षेप लगाया गया हो, लांछित।

आक्षेप *पुं.* (तत्.) लांछन, निंदा, दोषारोपण 1. किसी का चरित्रहनन या प्रतिष्ठा को आघात पहुँचाना 2. विरोध, प्रतिवाद या आपत्ति 3. प्रबल विरोध, आग्रहपूर्ण प्रतिवाद/ऐतराज 4. आयु. एक वात रोग जिसमें मांसपेशियों में अनायास संकोच होता है 5. कटूक्ति, ताना।

आक्षेपक *वि.* (तत्.) 1. आक्षेप करने वाला 2. निंदक 3. फेंकने वाला *पुं.* (तत्.) आक्षेप रोग।

आक्षेपण *पुं.* (तत्.) 1. गिराना, दूर हटाना, फेंकना 2. आक्षेप करना।

आक्षेपणीय *वि.* (तत्.) जिस पर आक्षेप किया जा सके, जिसका विरोध हो सके (आपत्तियोग्य) दे. आक्षेप।

आक्षेपी *वि.* (तत्.) दे. आक्षेपक।

आक्षेपी-चिकित्सा *स्त्री.* (तत्.) विशेष प्रकार की चिकित्सा प्रणाली, जिसके द्वारा मानसिक रोगियों रोगियों का उपचार किया जाता है, इसमें औषधियों से अथवा बिजली के झटकों से मांसपेशियों को सक्रिय किया जाता है।

ऑक्साइड *पुं.* (अं.) रसा. ऑक्सीजन के संयोग से बना यौगिक ऑक्साइड

ऑक्सी अम्ल *पुं.* (अं+तत्.) रसा. अम्ल जिसमें ऑक्सीजन हो अर्थात् जिसमें हाइड्रोजन परमाणु हाइड्रॉक्सिल में परिवर्तित हो चुका हो oxy-acid

आक्सीकरण *पुं.* (अं.) रसायनिक प्रक्रिया द्वारा आक्सीजन अथवा किसी विद्युतीय ऋणात्मक तत्व का संयोग अथवा हाइड्रोजन या किसी विद्युतीय घनात्मक तत्व का वियोग। oxidation

आक्सीकारक *पुं.* (अं.) वह पदार्थ जो दूसरे पदार्थों से अभिक्रिया करने पर किसी अन्य पदार्थ का आक्सीकरण करता है।

ऑक्सीजन *पुं.* (अं.) रसा. एक गंधहीन, स्वादहीन और रंगहीन गैसीय तत्व जो प्राणियों तथा पादपों के जीवन के लिए अनिवार्य है oxygen

आखंडल *पुं.* (तत्.) पर्वतों को खंडित करने वाला व्यक्ति

आखंडलीय *वि.* (तत्.) इंद्र देव संबंधी, इंद्र का रथ आखंडलीय रथ भी कहलाता है।

आखत *पुं.* (तद्.) 1. अक्षत, केसर में रंगा हुआ बिना टूटा हुआ मांगलिक चावल 2. विवाह आदि में नाई के लिए निकाला गया अन्न।

आखता *वि.* (देश.) बधिया किया हुआ पशु।

आखन *क्रि.वि.* (तद्.) हर क्षण, हर समय।

आखना *स.क्रि.* (तद्.) 1. कुछ बोलना, कहना, बताना 2. इच्छा करना, चाहना 3. देखना, नज़र में लाना।

आखनिक *वि.* (तत्.) 1. खोदने वाला व्यक्ति, 2. खोदने वाला जीव-जंतु जैसे- चूहा आदि 3. भूमि खोदने का उपकरण जैसे- कुदाल आदि।

आखर *पुं.* (तद्.) 1. अक्षर, वर्ण 2. फावड़ा, कुल्हाड़ी 3. अस्तबल 4. मांद, विवर 5. सार।

आखा *पुं.* (तद्.) झीने कपड़े से मढ़ी हुई छलनी, *वि.* पूरा, समूचा।

आखात *पुं.* (तत्.) 1. उत्खनन, खुदाई 2. कुदाल।

आखातीज *स्त्री.* (तद्.) अक्षय तृतीया, वैशाख शु. तृतीया।

आखानवमी *स्त्री.* (तद्.) कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की नवमी, अक्षय नवमी, इस दिन व्रत-उपासना भी की जाती है।

आखिर *वि.* (फा.) 1. अंत, समाप्ति 2. नतीजा, परिणाम 3. पिछला *क्रि.वि.* (तत्.) अंत में।

आखिरकार *क्रि.वि.* (फा.) अंत में, अंततः।

आखिरी *वि.* (फा.) अंतिम, पिछला।

आखीर *पुं.* (अर.) इति, अंत, संपन्न होने का भाव, समाप्ति, तमाम होने का भाव।

आखु *वि.* (तत्.) 1. खोदने वाला/वाली 2. कंजूस, कृपण *पुं.* 1. चूहा 2. छुछुंदर 3. सुअर, 4. चोर 5. कुदाल।

आखु-पाषाण *पुं.* (तत्.) 1. चुंबकीय पत्थर 2. सफेद रंग की विषैली उपधातु, नशा करने का पदार्थ, संखिया।

आखुवाहन *पुं.* (तत्.) जिसका वाहन चूहा है, गणेश।

आखेट *पुं.* (तत्.) शिकार, मृगया।

आखेटक *पुं.* (तत्.) *वि.* 1. शिकार करने वाला, शिकारी।

आखेटिक *वि.* (तत्.) 1. शिकारी 2. शिकारी कुत्ता।

आखेटी *वि.* (तत्.) शिकारी।

आखोर *वि.* (तत्.) 1. पशुओं के लाने का बचा हुआ चारा, चरनी 2. जानवरों के पानी पीने का हौद 3. कूड़ा-करकट, सड़ा-गला, रद्दी 4. निकम्मा। मुहा. आखोर की भर्ती- निकम्मों का समूह।

आख्या *स्त्री.* (तत्.) 1. नाम, उपाधि, (पुस्तक आदि का) शीर्षक 2. कीर्ति, यश 3. विवरण, व्याख्या प्रयो. इस मामले की आख्या तुरंत प्रस्तुत की जाए 4. आकृति, चेहरा 5. सौंदर्य, गरिमा।

आख्यात *वि.* (तत्.) 1. प्रसिद्ध, विख्यात 2. कहा हुआ *पुं.* (तत्.) 1. क्रिया 2. राजवंश के लोगों का वृत्तांत।

आख्यातन *वि.* (तत्.) आख्यात अर्थात क्रिया से बना विशेषण जैसे- 'सूखना' से 'सूखा'- 'सूखा वस्त्र'।

आख्याता *वि.* (तत्.) 1. कहने वाला, विवरणकार 2. उपदेशक।

आख्याति *स्त्री.* (तत्.) 1. महत्वपूर्ण कथन 2. सूचना 3. यश, इत्यादि।

आख्यातिक *पुं.* (तत्.) धातुओं और क्रियाओं का विवेचन करने वाला ग्रंथ।

आख्यान *पुं.* (तत्.) 1. वर्णन, वृत्तांत 2. कथा-कहानी, किस्सा 3. किसी वर्णन का एक प्रमुख अंश 4. कथानक।

आख्यानक *पुं.* (तत्.) 1. कथा, कहानी 2. छोटा आख्यान, उपाख्यान 3. पूर्ववृत्तांत।

आख्यापक *वि.* (तत्.) कहने वाला, बताने वाला, सूचना देने वाला *पुं.* (तत्.) 1. प्रवक्ता 2. उद्घोषक 3. दूत।

आख्यापन *पुं.* (तत्.) 1. घोषणा, ऐलान, किसी घटना की औपचारिक या सार्वजनिक सूचना 2. रेडियो या दूरदर्शन पर आगामी कार्यक्रम की सूचना announcement तुल. उद्घोषण।

आख्या-पृष्ठ *पुं.* (तत्.) पुस्तक के प्रारंभ का पृष्ठ, जिसमें पुस्तक का शीर्षक एवं कभी-कभी लेखक या संपादक का नाम एवं प्रकाशक का नाम भी दिया होता है। tittle page

आख्यायिका *स्त्री.* (तत्.) 1. कहानी, कथा, किस्सा, विवरण-प्रधान कथा रचना 2. शिक्षाप्रद कल्पित कथा 3. एक प्रकार का आख्यान जिसमें पात्र अपने मुँह से अपना चरित्र बखान करे।

आख्यासूची *स्त्री.* (तत्.) मात्र शीर्षकों के आधार पर बनाई गई सूची। title catalogue

आख्येय *वि.* (तत्.) वर्णन करने योग्य, कहने योग्य, बताने योग्य।

आगंतु *वि.* (तत्.) दे. आगंतुक।

आगंतुक *पुं.* (तत्.) आया हुआ 2. बिना बुलाए आने वाला *पुं.* (तत्.) 1. अतिथि, मेहमान 2. स्वामिहीन पशु 3. प्रक्षिप्त पाठ 4. अजनबी 5. अचानक होने वाला (रोग)।

आगंतुक-पंजी *स्त्री.* (तत्.) किसी कार्यालय, अतिथि गृह, होटल आदि के स्वागत पटल पर रखा

जाने वाला रजिस्टर, जिसमें हर आगंतुक व्यक्ति से नाम, पता, आने का प्रयोजन आदि लिखने को कहा जाता है visitors register as diary

आगंतुक रोग *पुं.* (तत्.) बाहरी कारणों से, अचानक आया हुआ रोग, जैसे- साँप का काटना (आयुर्वेद)

आगंतुकव्रण *पुं.* (तत्.) चोट लगने से होने वाला घाव। किसी भीतरी रोग के कारण होने वाला घाव आगंतुक व्रण नहीं हैं।

आगंतुक शब्द *पुं.* (तत्.) भाषा. मूल भाषा में अन्य भाषा से आगत या मूल भाषा में गृहीत शब्द। loan word

आग *स्त्री.* (तद्.) 1. अग्नि 2. जलन; ताप, गर्मी 3. कामाग्नि मुहा. आग पर घी डालना- किसी बात पर भड़के हुए को वैसी और बातें कहकर भड़काना; आग पर पानी डालना- झगड़ा या गुस्सा शांत करना; आग पानी का बैर होना- जन्मजात शत्रुता होना, स्वाभाविक शत्रुता होना; आग बरसाना- जली-कटी बातें सुनाना, शत्रु पर खूब गोलियाँ चलाना; आग में कूदना- (जानबूझकर) मुसीबत मोल लेना; आग में झोंकना- आफत में डाल देना; आग लगाना- किसी व्यक्ति में ईर्ष्या, क्रोध आदि उत्पन्न करना, किसी को भड़काना; पेट में आग लगना- भूख लगना; आग बबूला होना- खूब गुस्सा करना, बहुत क्रोध में आना; आग पर लोटना- दु:ख या क्रोध में बेचैन होना; आग में पानी डालना- झगड़ा शांत करना; आग लगना-ईर्ष्या से जल-भुन जाना; पानी में आग लगाना-असंभव काम करना; आग उगलना- जली-कटी सुनाना; आग दिखाना- आग लगाना, तोप में बत्ती देना; चिता में आग लगाना- दाह-कर्म करना, फूँकना।

आगजनी *स्त्री* (तद्.+फा.) 1. अग्निकांड 2. उपद्रवियों द्वारा आग लगाने का कार्य।

आगणन *पुं.* (तत्.) 1. गिनना, गणन, परिगणना 2. आकलन।

आगत *वि.* (तत्.) 1. आया हुआ 2. उपस्थित 3. अर्थ. निवेश (इनपुट) 4. किसी बाहरी स्रोत से लिया गया या आया हुआ जैसे 'आगत शब्द' 5. आवक *पुं.* (तत्.) 1. अतिथि, मेहमान 2. आया हुआ, आयात प्रयो. आगतों में अधिकांश स्त्रियाँ थीं।

आगतपतिका *स्त्री.* (तत्.) [आगत+पतिका] नायिकाओं के अनेक भेदों में से एक भेद। वह नायिका जिस का नायक विदेश से आया हो।

आगत शब्द *पुं.* (तत्.) [आगत+शब्द] मूल भाषा में दूसरी भाषाओं के ऐसे शब्द, जिनका प्रयोग व्यापक हो गया हो। loan word

आगत-स्वागत *पुं.* (तत्.) अतिथि-सत्कार, मेहमानदारी।

आगति *स्त्री.* (तत्.) 1. आगमन 2. प्राप्ति 3. अवसर।

आगपेटी *स्त्री.* (तद्.) दिया-सलाई की डिबिया

आग-बबूला *पुं.* (देश.) बहुत ज्यादा गुस्सा, गुस्से से लाल-पीला होने का भाव।

आगम *पुं.* (तत्.) 1. आगमन, आमद 2. प्राप्ति 3. वेद 4. शास्त्र 5. तंत्रशास्त्र 6. नीतिशास्त्र 7. सिद्धांत 8. नदी का उद्गम स्थान, मुहाना 9. धार्मिक आचार-व्यवहार में मान्य शब्द-प्रमाण 10. राज्य को प्राप्त होने वाला कर या राजस्व 11. व्याकरण अथवा भाषाविज्ञान में कोई ऐसा वर्ण जो शब्द के अपने विकास-क्रम में बाहर से आया हो; 11. बिक्री आदि से प्राप्त धन राशि *वि.* (तत्.) आने वाला, आगामी, भावी।

आगमज्ञानी *वि.* (तत्.) 1. आगम अर्थात् शास्त्रों का ज्ञाता 2. भविष्य वक्ता, आने वाली स्थितियों को जानने वाला।

आगमन *पुं.* (तत्.) 1. आमद, आना, पहुँचना 2. अर्थ-लाभ, आमदनी, आय-प्राप्ति 3. उत्पत्ति, उद्गम 4. संभोग के लिए स्त्री के पास आना तर्क. विशिष्ट दृष्टांतों या घटनाओं के आधार पर सामान्य या सर्वमान्य नियम की उद्भावना करना विलो. निगमन।

आगम-निर्गम *पुं.* (तत्.) 1. आना और जाना, आना-जाना 2. लेना और देना 3. आदान-प्रदान।

आगम-निर्गम प्रणाली *स्त्री.* (तत्.) पाठकों को, पुस्तकालय से पुस्तकें प्राप्त करने की तथा वापस करने की विधि।

आगम रहित *वि.* (तत्.) शास्त्र से परे, शास्त्रज्ञान शास्त्रज्ञान से रहित।

आगमवक्ता *वि.* (तत्.) भविष्यवक्ता, ज्योतिषी।

आगमवाणी *स्त्री.* (तत्.) 1. भविष्यवाणी 2. शास्त्रोक्त वचन, प्रामाणिक वचन, आप्त वचन।

आगमविद्या *स्त्री.* (तत्.) वेदविद्या, तंत्र विद्या।

आगमवृद्‌ध *वि.* (तत्.) 1. अनुभवी शास्त्रज्ञ, शास्त्रों का जानकार, वेदज्ञ 2. ज्ञानवृद्‌ध।

आगमवेदी *वि.* (तत्.) वेदज्ञ, वेदों को जानने वाला, शास्त्र निष्णात, शास्त्रज्ञ।

आगमसोची *वि.* (तद्.) आगे की बात सोचने वाला, दूरदर्शी।

आगमी *पुं.* (तत्.) आगमों अर्थात् शास्त्रों का ज्ञाता।

आगर *पुं.* (तद्.) 1. आकर, खान 2. समूह, ढेर 3. अर्गला, अगरी 4. घर, गृह 5. छाजन, छप्पर 6. कोष, निधि 7. नमक का कारखाना।

आगल[1] *वि.* (तद्.) आगे जाने वाला, अग्रगामी *क्रि.वि.* आगे, सामने।

आगल[2] *पुं.* (देश.) बाधा, रुकावट, अर्गला।

आगवानी *स्त्री.* (तद्.) दे. अगवानी।

आगवाह *पुं.* (तद्.) धूम, धुआँ।

आगस्ती *वि.* (तत्.) अगस्त्य संबंधी, अगस्त्य का 2. दक्षिणी 3. अगस्त्य वृक्ष से उत्पन्न *पुं.* 1. अगस्त्य ऋषि के वंशज 2. दक्षिण दिशा।

आगस्ती *स्त्री.* (तत्.) दक्षिण दिशा, अगस्त्य मुनि (के वास) की दिशा।

आगस्त्य *वि.* (तत्.) 1. अगस्त्य-संबंधी 2. दक्षिण दिशा 3. अगस्त्य के वंशज।

आगा *पुं.* (तद्.) 1. किसी चीज का आगे का भाग 2. मकान का सहन 3. शरीर का आगे का भाग 4. सेना का अग्रभाग 5. भविष्य प्रयो. अपना न सही, कम से कम परिवार का तो आगा सोचो 6. आँचल मुहा. आगा काटना- यात्रा में विघ्न डालना, अपशकुन होना; आगा रोकना- किसी की उन्नति में बाधा डालना; आगा संभालना- किसी बड़े कार्य की शुरूआत का प्रबंध करना, शत्रु का हमला रोकना *पुं.* (तुर्की.) 1. मालिक, सरदार 2. बड़ा भाई 3. काबुली।

आगाज *पुं.* (फा.) प्रारंभ, आदि, शुरूआत प्रयो. आगाज तो अच्छा है अंजाम खुदा जाने विलो. अंजाम।

आगाध *पुं.* (तत्.) 1. अगाध (का भाव) अथाह, अत्यंत गहरा, जिसका क्षेत्र या विस्तार बहुत हो 2. जो कठिनाई से प्राप्य हो।

आगा-पीछा *पुं.* (तत्.) 1. काम के पहले और बाद में होने वाली बातें या समस्याएँ, कार्य और परिणाम। 2. पशोपेश मुहा. आगा-पीछा देखना- कार्य और परिणाम को भली-भाँति समझ लेना।

आगामिक *वि.* (तत्.) 1. भविष्य से संबंध रखने वाला 2. आनेवाला/वाली।

आगामित *वि.* (तत्.) जिसका भली-भाँति अध्ययन किया गया हो, अधीत।

आगामी *वि.* (तत्.) आगे (भविष्य में) होने वाला या आने वाला, भावी।

आगार *पुं.* (तत्.) 1. घर 2. खजाना 3. भंडार 4. स्थान 5. संग्रह, संग्रहालय *पुं.* (देश.) 1. नमक बनाने का काम करने वाला, नोनिया 2. खान में काम करने वाला मज़दूर *वि.* (देश.) 1. युक्त, पूर्ण 2. श्रेष्ठ, उत्तम।

आगारी *स्त्री.* (तत्.) 1. आगार, खान 2. भंडार, राशि, समूह।

आगाह *वि.* (फा.) 1. जानकार, अभिज्ञ 2. परिचित, वाकिफ मुहा. आगाह करना- जानकारी देना, खबरदार करना।

आगाही *स्त्री.* (फा.) 1. जानकारी, सूचना 2. परिचय।

आगि *स्त्री.* (तद्.) दे. आग।

आगे *क्रि.वि.* (तद्.) 1. सामने प्रयो. मेरे आगे ही बम का धमाका हुआ 2. इसके बाद, बाद में, भविष्य में प्रयो. मुझे जो कहना था, कह दिया, आगे तुम जानो 3. अधिक, ज्यादा प्रयो. इससे आगे एक पैसा नहीं बढ़ाऊँगा मुहा. आगे आना- सामने आना, पहल करना, नेतृत्व करना; आगे करना- मुखिया बनाना, अगुआ बनाना; आगे निकलना- अधिक उन्नति करना; आगे-पीछे न होना- किसी के वंश में किसी भी संबंधी का जीवित न रहना; आगे रखना- चढ़ाना, अर्पण करना, प्रस्तुत करना; आगे होना- नेतृत्व करना।

आगे-आगे *क्रि.वि.* (तद्.) कुछ समय बाद भविष्य में प्रयो. 'आगे-आगे देखिए होता है क्या'।

आगोश *स्त्री.* (फा.) गोद।

आगौल *पुं.* (देश.) सेना का अगला भाग।

आग्निक *वि.* (तत्.) यज्ञ की अग्नि या अग्नि से संबंध रखने वाला।

आग्नेय *वि.* (तत्.) 1. अग्नि-संबंधी 2. जिसका देवता अग्नि हो जैसे- आग्नेय मंत्र, आग्नेय कोण 3. अग्निगर्भ, अग्नि से उत्पन्न 4. दक्षिण-पूर्वी; अग्नि कोण-संबंधी 5. अग्नि के समान लाल, क्रोध से लाल 6. भू-वि. अत्यधिक ताप से उत्पन्न, जैसे- आग्नेय शैल 7. आग निकालने या उगलने वाला जैसे- तोप, बंदूक आदि *पुं.* (तत्.) 1. सुवर्ण, सोना 2. खून, लहू 3. कृत्तिका नक्षत्र 4. आग भड़काने वाले पदार्थ, यथा-बारूद आदि 5. कार्तिकेय।

आग्नेय अस्त्र *पुं.* (तत्.) विस्फोट से चलने वाला अस्त्र, जैसे- बंदूक पिस्तौल, तोप आदि, बारूदी अस्त्र।

आग्नेय कीट *पुं.* (तत्.) 1. आग में कूदने वाला कीड़ा, पतिंगा 2. जुगनू, खद्योत।

आग्नेय कोण *पुं.* (तत्.) दक्षिण-पूर्व दिशा।

आग्नेयचट्टान *पुं.* (तद्.) तप्त पृथ्वी के धीरे-धीरे ठंडी होने पर बनने वाले चट्टान, भूगर्भ के पिछले पदार्थों के भीतर या बाहर, ठंडे होकर जम जाने से बने पहाड़ों की चट्टानें।

आग्नेय पुराण *पुं.* (तत्.) अग्निदेव द्वारा ऋषि वशिष्ठ को सुनाया गया पुराण, अग्नि पुराण।

आग्नेयस्नान *पुं.* (तत्.) सम्पूर्ण शरीर पर भस्म अथवा राख का लेपन।

आग्नेयास्त्र *पुं.* (आग्नेय+अस्त्र) (तत्.) ऐसा अस्त्र अस्त्र जिससे आग निकले, विस्फोट से चलने वाला अस्त्र।

आग्नेयी *स्त्री.* (तत्.) अग्नि की पत्नी, स्वाहा।

आग्रयण *पुं.* (तत्.) वर्षा, शरत् या वसंत में नए अन्न से किया जाने वाला श्रौत यज्ञ।

आग्रह *पुं.* (तत्.) 1. (हार्दिक) अनुरोध, इसरार, (दृढ़तापूर्ण) निवेदन 2. दृढ़ निश्चय 3. हठ।

आग्रह-प्राशन *पुं.* (तत्.) मनो. शिशु के भूखा होने का पता चलने पर ही उसे आहार देने की व्यवस्था।

आग्रहायणी *वि.* (तत्.) 1. अगहन (मार्गशीर्ष) की पूर्णिमा 2. मृगशिरा नक्षत्र।

आग्रहारिक *वि.* (तत्.) जिसे अग्रहार (ब्राह्मण) को निर्वाहार्थ दी गई भूमि या अन्न) प्राप्त हो।

आग्रही *पुं.* (तत्.) आग्रह करने वाला, अनुरोध या हठ करने वाला।

आघट्टक *पुं.* (तत्.) लाल रंग वाला चिचड़ी नामक औषधीय क्षुप, अपामार्ग, किलनी *वि.* (तत्.) रगड़ने वाला, घर्षण करने वाला।

आघना *स.क्रि.* (तद्.) 1. सूँघना। 2. तृप्त होना, अघाना, छकना।

आघर्ष *पुं.* (तत्.) रगड़, घर्षण।

आघर्षण *पुं.* (तत्.) रगड़, रगड़ना।

आघर्षणी *स्त्री.* (तत्.) रगड़ने वाला साधन, ब्रश, रबर, रेती आदि।

आघाट *पुं.* (तत्.) 1. (गाँव की) सीमा, हद 2. एक तरह का बाजा *क्रि.वि.* (तत्) (नदी के) घाट तक, गाँव की सीमा तक।

आघात *पुं.* (तत्.) 1. धक्का, टक्कर, ठोकर 2. प्रहार, चोट 3. बूचड़खाना 4. वध 5. किसी दुर्घटना के कारण मानसिक चोट या कष्ट 6. विपत्ति।

आघातक *पुं.* (तत्.) 1. आघात करने वाला 2. (राइफल या) बंदूक का घोड़ा, तोप का खटका

आघातन *पुं.* (तत्.) 1. अचानक लगा धक्का 2. प्रहार 3. प्रहार से लगने वाली चोट 4. वध, हत्या 5. मानसिक कष्ट 6. आघात करने की क्रिया अथवा भाव।

आघातवर्धन *पुं.वि.* (तत्.) चोट लगने पर आकार में बढ़ जाना या बढ़ जाने वाला।

आघातवर्धनीय *वि.* (तत्.) [आघात+वर्धनीय] धातु आदि पदार्थ का वह गुण, जिसके कारण, हथौड़े की चोट लगने से वह टूटता नहीं, अपितु फैल जाता है, सोने और चाँदी के वरक, इन धातुओं के इसी गुण के कारण निर्मित होते हैं।

आघातवर्धनीयता *पुं.* (तत्.) [आघात+वर्धनीयता] हथौड़े की चोट लगने पर धातु के फैलने का गुण।

आघातवर्ध्यता *स्त्री.* (तत्.) (आघात+वर्ध्यता) हथौड़े की चोट लगने पर धातु के फैलने का गुण, इस गुण के कारण धातु का चोट लगने पर चूरा नहीं होता।

आघात-वाद्य *पुं.* (तत्.) संगी. अंगुलियों, हाथ या चोब डंडियों से पीट कर बजाए जाने वाले वाद्य यंत्र जैसे- पियानों, जलतरंग, तबला, ढोल आदि। दे. वाद्य (यंत्र)।

आघार *पुं.* (तत्.) 1. यज्ञ में घी की आहुति 2. घी 3. छिड़काव।

आघी *स्त्री.* (तद्.) 1. महाजन से लिया गया ऐसा ऋण, जिसके ब्याज का भुगतान पैसे के बदले फसल से किया जाता है 2. ऐसी ही व्यवस्था से दिया जाने वाला अन्न।

आघु *पुं.* (तत्.) आदर, सम्मान, इज़्ज़त।

आघूर्ण *वि.* (तत्.) 1. भौ. (i) किसी बिंदु से अक्ष की दिशा में गति उत्पन्न करने की प्रवृत्ति (ii) इसका माप 2. गणि. एक विचर के किसी घात का मध्यमान 3. हिलता हुआ, घूमता हुआ moment

आघूर्णन *पुं.* (तत्.) अपने अक्ष पर चक्कर खाना।

आघोष *पुं.* (तत्.) 1. ऊँची आवाज से बुलाना, जोर से कुछ कहना 2. गर्वपूर्ण कथन 3. घोष, मुनादी, ऐलान 4. आह्वान।

आघोषण *पुं.* (तत्.) सरकारी आज्ञा अथवा आदेश का ऐलान, मुनादी, ढिंढोरा।

आघ्राण *पुं.* (तत्.) 1. सूँघना 2. अघाना, तृप्ति।

आघ्रात *वि.* (तत्.) 1. सूँघा हुआ 2. तृप्त 3. सुगंधित, सुवासित।

आघ्रेय *वि.* (तत्.) सूँघने योग्य, जो सूँघा जा सके।

आचंचल *वि.* (तत्.) अस्थिर, चंचल

आचंभ *पुं.* (तत्.) आश्चर्य, अचम्भा।

आचमन *पुं.* (तत्.) 1. जल पीना 2. पूजन के पहले शुद्धि के लिए हथेली में जल लेकर पीना सुड़काना 3. सुगंधबाला या नेत्रबाला नाम की एक औषधि।

आचमनक *पुं.* (तत्.) आचमन करने का जल।

आचमनी *स्त्री.* (तत्.) कलछी की शक्ल की छोटी गोल चमची जिससे आचमन करते और चरणामृत बाँटते हैं।

आचमनीय *वि.* (तत्.) 1. आचमन के योग्य 2. आचमन करने का जल।

आचमित *वि.* (तत्.) 1. आचमन किया हुआ 2. पिया हुआ।

आचरज *पुं.* (तद्.) आश्चर्य, ताज्जुब, अचरज।

आचरण *पुं.* (तत्.) 1. चाल-चलन 2. कार्य-व्यवहार 3. अनुष्ठान।

आचरण नियमावली *स्त्री.* (तत्.) प्रशा. सरकारी कर्मचारियों के लिए अपरिहार्य नियमों का व्यवस्थित संकलन, जिनका उल्लंघन करने पर उनके विरूद्ध अनुशासनिक कार्रवाई की जा सकती है। conduct rules

आचरणपंजी/आचरणपुस्तिका *पुं.* (तत्.) कर्मचारियों अथवा अधिकारियों के चरित्र, आचरण और व्यवहार संबंधी अच्छी बुरी बातें लिखने की एक गोपनीय पुस्तिका, सरकारी कार्यालयों के अतिरिक्त निजी दफ्तरों में भी इस प्रकार का लेखा-जोखा रखने की पुस्तिका होती हैं।

आचरणीय *वि.* (तत्.) 1. अनुष्ठान करने योग्य 2. आचरण करने योग्य, व्यवहार करने योग्य, व्यवहार्य।

आचरना *स.क्रि.* (तत्.) आचरण करना, व्यवहार करना।

आचरित *वि.* (तत्.) 1. आचरण या व्यवहार के रूप में किया गया; किया हुआ 2. अनुष्ठान किया हुआ 3. आचरण के मानदंडों के अनुसार निर्दिष्ट *पुं.* (तत्.) 1. ऋणी के घर पर धरना देकर धनवसूली की परिपाटी 2. आचरण।

आचर्य *वि.* (तत्.) करने योग्य, आचरणीय, वंदनीय।

आचांत *वि.* (तत्.) 1. आचमन किया हुआ जल 2. जिसने आचमन कर लिया हो 3. आचमन करने योग्य।

आचार *पुं.* (तत्.) 1. व्यवहार 2. रिवाज 3. चरित्र, चाल-चलन 4. आचरण-संबंधी नियम 5. आचार नीति। ethics

आचारज *पुं.* (तद्.) 1. दे. आचार्य 2. मृत व्यक्ति का क्रियाकर्म करने वाला ब्राह्मण।

आचारजी *स्त्री.* (तद्.) 1. मृत व्यक्ति का क्रिया-कर्म 2. पुरोहिताई 3. आचार्य होने का भाव।

आचारवत्ता *स्त्री.* (तत्.) आचारवान होने की स्थिति, सद्व्यवहार।

आचारवान *वि.* (तत्.) 1. शुद्ध आचार वाला, सदाचारी 2. शास्त्रोक्त कर्म करने वाला 3. कर्मनिष्ठ।

आचार-विचार *पुं.* (तत्.) 1. आचरण, कार्यव्यवहार 2. ध्यान व चिंतन।

आचार-संहिता *स्त्री.* (तत्.) आचरण और व्यवहार संबंधी सुव्यवस्थित नियमावली। code of ethics

आचारहीन *वि.* (तत्.) 1. आचरण से हीन 2. शास्त्रोक्त कर्म या आचरण न करने वाला 3. दुराचारी।

आचारी *वि.* (तत्.) आचारवान, चरित्रवान, शुद्ध आचरण वाला *पुं.* (तत्.) रामानुज संप्रदाय का वैष्णव।

आचार्य *पुं.* (तत्.) 1. गुरु, शिक्षक 2. उपनयन कराने और वेद (तथा आचार) की शिक्षा देने वाला गुरु 3. किसी विषय में पूर्णतः निष्णात विद्वान 4. विश्वविद्यालय अथवा महाविद्यालय का का प्रोफेसर 5. मतप्रवर्तक 6. पूज्य पुरुष 7. द्रोणाचार्य 8. शास्त्र का व्याख्याता, तत्वज्ञ।

आचार्या *स्त्री.* (तत्.) 1. महिला आचार्य या गुरु, आचार्य का काम करने वाली स्त्री 2. पूजनीया (विदुषी) स्त्री।

आचिंत्य *वि.* (तत्.) चिंतन करने योग्य, चिंतन का विषय *पुं.* (तत्.) ईश्वर

आचित *वि.* (तत्.) 1. संचित 2. व्याप्त 3. भरा हुआ, लदा हुआ *पुं.* (तत्.) 1. गाड़ी भर का बोझ 2. नापतौल का एक प्राचीन परिमाण जो लगभग 25 मन का होता था।

आचूषण *पुं.* (तत्.) चूसना, चूसकर बाहर निकाल देना, मुँह या उपकरण से चूस कर बाहर निकालना।

आच्छन्न *वि.* (तत्.) ढका हुआ, छिपा हुआ, घिरा हुआ, आवृत, व्याप्त।

आच्छाद *पुं.* (तत्.) 1. ढकने वाला या छिपाने वाला आवरण 2. कपड़ा, पहनने का वस्त्र।

आच्छादक *पुं.* (तत्.) ऐसी वस्तु जो किसी अन्य वस्तु को ढक ले, आच्छादित करने वाली वस्तु, छत्र के रूप में प्रयुक्त वस्तु, आवरण।

आच्छादन *पुं.* (तत्.) 1. ढकना, छिपाना 2. आवरण 3. छाजन 4. वस्त्र, पहनावा 5. ढक्कन, खोल।

आच्छादित *वि.* (तत्.) 1. ढका हुआ, आवृत, आवरण-युक्त 2. छिपा हुआ।

आच्छादी *वि.* (तत्.) ढकने वाला, आच्छादन करने वाला।

आच्छेद *पुं.* (तत्.) 1. काटना, थोड़ा सा काटना, काट-छाँट 2. बलपूर्वक पृथक करना।

आच्छेदन पुं. (तत्.) दे. आच्छेद।

आच्छोटन *पुं.* (तत्.) चुटकी बजाना, उँगली चटकाना।

आच्छोदन *पुं.* (तत्.) शिकार, मृगया या आखेट करना।

आछी *वि.* (देश.) अच्छी, भली, मन को भानेवाली।

आछे-काछे *क्रि.वि.* (देश.) ठीक तरीके से, व्यवस्थित ढंग से *वि.* अच्छे कपड़े पहनने वाला, सुंदर, सुडौल।

आज *क्रि.वि.* (तद्.) 1. वर्तमान दिन 2. इस वक्त, इस समय *पुं.* (तत्.) वर्तमानकाल प्रयो. आज के नेता, अपना स्वार्थ साधने में लगे है।

आजकल *क्रि.वि.* (देश.) इन दिनों मुहा. आजकल करना (आज देने की, कल देने की बात करके) टालमटोल करना प्रयो. जब भी मैं उधार दिए हुए पैसे वापस माँगता हूँ वह आजकल करता रहता है।

आजगर *वि.* (तत्.) अजगर संबंधी, अजगर के समान।

आजगव *पुं.* (तत्.) शिव का धनुष, पिनाक।

आजन्म *क्रि.वि* (तत्.) 1. जन्म भर तक 2. जीवन भर प्रयो. इस उपकार के लिए मैं आजन्म आपका ऋणी रहूँगा।

आज़म *वि.* (अर.) 1. महान 2.प्रधान।

आजमाइश *स्त्री.* (फा.) प्रयोग करके आजमाने की की क्रिया, परीक्षा, परख, जाँच।

आज़माइशी *वि.* (अर.) 1. जिसकी परीक्षा की जाए 2. जिसमें परीक्षा करने की योग्यता हो।

आजमाना *स.क्रि* (फा.) परीक्षा करना, इस्तेमाल करना, परखना, जाँच करना प्रयो. दवा पर भरोसा न हो तो दो खुराक आजमा कर देख लो।

आजमूदा *वि.* (फा.) परीक्षित, आजमाया हुआ।

आज से *क्रि.वि.* (तद्.) अब से, आज की तारीख से प्रयो. आज से मेरी बात ध्यान से समझ लो।

आजा *पुं.* (तद्.) (आर्य) पितामह, दादा

आजाद *वि.* (फा.) 1. स्वतंत्र, स्वाधीन 2. मुक्त, बरी 3. बेपरवाह 4. निडर, बेधड़क 5. स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर का उपनाम।

आज़ाद ख्याल *वि.* (फा.) [आज़ाद+ख्याल] स्वतंत्र विचारों वाला, मुक्त चिंतक, जिस के भावों पर अन्य लोगों का प्रभाव न्यूनतम होता है।

आज़ादगी *स्त्री.* (फा.) 1. स्वतंत्रता, स्वाधीनता 2. 2. मुक्ति 3. बेधड़कपन।

आज़ाद मिज़ाज *वि.* (फा.) मस्तमौला, स्वेच्छाचारी, मन में जो आए, वह सब करने, कहने वाला।

आज़ादाना *क्रि.वि.* (फा.) आजाद की तरह, स्वतंत्रतापूर्वक, आजादी से।

आजादी *स्त्री.* (फा.) 1. स्वतंत्रता, स्वाधीनता 2. मुक्ति 3. निरंकुशता।

आज़ादी पसंद *वि.* (फा.) उन्मुक्त, स्वतंत्रता पसंद करने वाला, स्वछंदता-प्रेमी।

आजान *पुं.* (तत्.) 1. जन्म, उत्पत्ति 2. जन्मस्थल 3. जन्म का कारण 4. वंश *क्रि.वि.* आदि से, सृष्टि काल से *वि.* अनजान, न जाननेवाला।

आजानदेव *पुं.* (तत्.) सूक्ष्म शरीर वाले जीव, जो विश्व-संचालन में देवता की भूमिका निभाते हैं। इनकी शक्ति तप और योग के आधार पर अन्य जीवों से श्रेष्ठ होती है।

आजानि *स्त्री.* (तत्.) 1. माता, जननी 2. जन्म 3. वंश, अच्छा वंश।

आजानु *वि.* (तत्.) घुटने तक, जाँघ तक (लंबा)।

आजानुबाहु *वि.* (तत्.) जिसकी भुजाएँ घुटने तक लंबी हों टि. आजानुबाहु के रूप में विख्यात- रामचंद्र, अर्जुन, कर्ण, विशेष रूप से धनुर्धारियों के लिए प्रयुक्त होता है।

आज़ार *पुं.* (फा.) 1. रोग, बीमारी, व्याधि 2. कष्ट, पीड़ा।

आजि *पुं.* (तत्.) 1. लड़ाई, युद्ध, संग्राम 2. युद्धस्थल 3. सीमा 4. रास्ता, पथ, मार्ग 5. अपशब्द, निंदा।

आजिज *पुं.* (अर.) 1. दीन, अशक्त, लाचार 2. विनीत, नम्र 3. हैरान 4. तंग आया हुआ, परेशान उदा. फुन्नन की इन हरकतों की वजह से तो हम लोग आजिज आ चुके हैं। मगर खानदान की इज़्ज़त तो ढोनी ही पड़ती है। (आधा गाँव) रा.मा.रजा।

आजिजी *स्त्री.* (अर.) 1. दीनता 2. विनय, नम्रता 3. हैरानी, परेशानी 4. लाचारी, अशक्तता।

आजी *स्त्री.* (तद्.) दादी, पितामही।

आजीवक *पुं.* (तत्.) जैन साधु।

आजीवन *क्रि.वि.* (तत्.) जीवन भर, जीवन-पर्यंत।

आजीवन कारावास *पुं.* (तत्.) विधि. (सामान्यतः) 14 वर्ष की अवधि के लिए न्यायालय द्वारा सुनाया गया दंड जिसे दोष-सिद्ध अपराधी जेल में रह कर पूरी करता है पर्या. उम्र कैद।

आजीवन पट्टा *पुं.* (तत्.) पट्टेदार के जीवन पर्यंत प्रभाव में रहने वाला पट्टा, स्थायी पट्टा।

आजीवन वार्षिकी *स्त्री.* (तत्.) ऐसी वार्षिकी दे. जिसका भुगतान वार्षिकीग्राही को जीवन भर किया जाना तय हो तु. चिर वार्षिकी।

आजीविका *स्त्री.* (तत्.) रोजी, रोजगार प्रयो. यह छोटी सी दुकान ही मेरी आजीविका है।

आजीव्य *वि.* (तत्.) 1. जीविका-योग्य, जीविका बनने योग्य 2. पेशा बनाने योग्य 3. उपजाऊ *पुं.* (तत्.) जीविका या रोजी का साधन।

आज्ञप्त *वि.* (तत्.) आदिष्ट, जिसके बारे में आज्ञा आज्ञा दी गई है।

आज्ञप्त मुद्रा *स्त्री.* (तद्.) अर्थ. ऐसी वस्तु जो विनिमय में वैध मुद्रा के रूप में प्रयुक्त होती हो और जिसको सरकारी स्वीकृति भी प्राप्त हो, प्रादिष्ट मुद्रा।

आज्ञप्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. आदेश, आज्ञा, किसी परिषद् या उच्चाधिकारी आदि का वह आदेश जिसका पालन करना आवश्यक हो 2. सूचना

आज्ञा *स्त्री.* (तत्.) 1. आदेश, हुक्म 2. स्वीकृति 3. अनुमति।

आज्ञाकारी *वि.* (तत्.) आज्ञा मानने वाला, हुक्म मानने वाला, आज्ञा का पालन करने वाला।

आज्ञाचक्र *पुं.* (तत्.) योग शास्त्र की मान्यता के अनुसार षट्चक्रों में से एक चक्र जिसका स्थान भौंहों के बीच माना गया है।

आज्ञातचर्या *स्त्री* (तत्.) छिप कर रहना, गुप्त वास, अज्ञात वास।

आज्ञाता *वि.* (तत्.) आज्ञा देने वाला।

आज्ञान *पुं.* (तत्.) बोध, अनुभव।

आज्ञापक *वि.* (तत्.) 1. आज्ञा देने वाला 2. अनिवार्य, वह कार्य जिसके पालन के लिए आज्ञा दी गई हो, अधिदेशात्मक mandatary *पुं.* (तत्.) स्वामी, मालिक, प्रभु स्त्री, आज्ञापिका।

आज्ञापत्र *पुं.* (तत्.) आज्ञा देने वाला पत्र, आदेश पत्र।

आज्ञापन *पुं.* (तत्.) 1. सूचना, हुक्म देना, आज्ञा देना, जताना।

आज्ञापालक *वि.* (तत्.) आज्ञा का पालन करने वाली, आज्ञाकारी।

आज्ञा-पालन *पुं.* (तत्.) आज्ञा के अनुसार काम करना, आदेश का पालन।

आज्ञापिका *स्त्री.* (तत्.) आज्ञा देने वाली, स्वामिनी, मालकिन।

आज्ञापित *वि.* (तत्.) 1. सूचित 2. आदिष्ट (व्यक्ति) जिसे आज्ञा दी गई हो 3. आदिष्ट कार्य।

आज्ञा-भंग *पुं.* (तत्.) आज्ञा अथवा आदेश का उल्लंघन करना, अधिकारी के अनुदेश का पालन न करना।

आज्ञायी *पुं.* [आ+ज्ञायी] (तत्.) 1. जानने-समझने वाला 2. अनुभव करने वाला।

आज्ञार्थक *वि.* (तत्.) व्या. क्रिया का वह रूप जिसमें किसी काम को करने की आज्ञा का बोध होता है। जैसे- 'कर' करो, कीजिए।

आज्ञार्थकवाक्य *पुं.* (तत्.) जिस वाक्य से आग्रह, आज्ञा, उपदेश अथवा विनती प्रदर्शित हो।

आज्ञार्थक वृत्ति *स्त्री.* (तद्.) क्रिया का वह रूप जिसमें किसी को कुछ करने के लिए कहा जाए, विधि-रूप।

आज्य *पुं.* (तत्.) 1. घी 2. घी की जगह काम में आने वाला पदार्थ (जैसे-तेल, दूध) 3. वह घी जिसे यज्ञ की आहुति में डाला जाए।

आटना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. (पूरा-पूरा) ढक देना 2. भर देना 3. दबाना।

आटविक *पुं.* (तत्.) 1. अटवी अर्थात् वन का निवासी, वनवासी 2. पथ प्रदर्शक 2. सेना का एक प्रभाग।

आटा *पुं.* (देश.) 1. पिसा हुआ अन्न 2. पिसा हुआ गेहूँ आदि अनाज मुहा. आटे-दाल का भाव मालूम होना- कठोर वास्तविकता का पता चलना; आटे के साथ घुन पिसना- दोषी के साथ निर्दोष का भी सजा भुगतना; आटे-दाल की चिंता होना- गृहस्थी की फिक्र होना; आटे में नमक- थोड़ा सा, जरा सा।

आटीकर *पुं.* (तत्.) साँड, वृषभ।

आटोग्राफ *पुं.* (अं.) 1. किसी दूसरे के लिए, अपने हाथ से लिखे हुए कुछ वाक्य या वाक्यांश 2. हस्ताक्षर, दस्तखत।

आटोप *पुं.* (तत्.) 1. फूलना, फुलाव 2. आडंबर 3. आधिक्य, प्रचुरता 4. घमंड, हेकड़ी 5. सूजन 6. पेट की नसों का तनाव 7. पेट में गुड़गुड़ाहट।

आठ *वि.* (तद्.) सात और एक (की संख्या), चार का दूना मुहा. आठ-अठारह होना-तितर-बितर होना; आठ-आठ आँसू रोना- बहुत अधिक विलाप करना; आठों पहर- हर समय, हर पल; आठ पहर चौंसठ घड़ी- हर समय।

आठक *वि.* (तद्.) 1. आठ के स्थान पर 2. किसी वस्तु के अनेक अंशों में से आठ की गणना पर स्थित अंश 3. लगभग आठ।

आठ-झूठ *पुं.* (देश.) शास्त्रों में वर्णित आठ प्रकार के झूठे वचन जिन्हें विशेष रूप में अनुमति प्राप्त है- हास विनोद में, खुशामद में, शिष्टाचार में, अपनी पत्नी से भेद छुपाने के लिए, विवाद में, धन की रक्षा में, गो और ब्राह्मण की रक्षा में।

आठ दिशाएँ *पुं.* (देश.) भू. भौगोलिक दिशा-निर्देश में वर्णित आठ दिशाएँ-पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, वायव्य (उत्तर-पश्चिम), ईशान (उत्तर-पूर्व), नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम), तथा आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)।

आठैं *स्त्री.* (तद्.) अष्टमी तिथि।

आठों पहर *अव्य.* (तद्.) हर समय, सदा, हमेशा।

आठों *स्त्री.* (तद्.) दे. आठैं।

आडंबर *पुं.* (तत्.) 1. ठाठ-बाट, दिखावा, तडक़-भडक़, ऊपरी टीम-टाम, ढोंग 2. घमंड, अभिमान 3. प्रचंडता, रोष, आवेश 4. कोलाहल, बादलों की गरज, हाथी की चिंघाड़।

आडंबरपूर्ण *वि.* (तत्.) दिखावटी, अस्वाभाविक, शिष्टाचार रहित, अनैतिक।

आडंबरहीन *वि.* (तत्.) जो दिखावटी न हो, स्वाभाविक, शिष्ट।

आडंबरी *वि.* (तत्.) 1. आडंबर करने वाला 2. घमंडी, अभिमानी 3. अत्यलंकृत, शब्दाडंबर-पूर्ण।

आडंबरोक्ति *स्त्री.* (तत्.) आडंबरात्मक शब्दों से भरा वाक्य, वाग्जाल से युक्त कथन, भारी-भरकम शब्दों से भरी भाषा।

आड़ *स्त्री.* (देश.) 1. ओट, परदा 2. रोक, अड़ान 3. टेक 4. शरण, आश्रय, पनाह 5. संगीत में ताल का एक भेद 6. टिकुली प्रयो. धूर्त स्वामी धर्म की आड़ में स्वार्थ-साधन कर रहा है मुहा. आड़ देना- ओट करना, सहारा देना।

आड़गीर *पुं.* (देश.) खेत के किनारे की घास।

आड़ना *स.क्रि.* (देश). 1. अड़ाना, रोकना, बाँधना 2. (गहने) इत्यादि गिरवी रखना।

आड़ा *पुं.* (देश) 1. धारीदार कपड़ा 2. जहाज का लट्‌ठा, शहतीर 3. बुनाई में सूत फैलाने की लकड़ी *वि.* देखने वाले के दाएँ से बाएँ या बाएँ से दाएँ (चौड़ाई में) गया हुआ मुहा. आड़े आना- रुकावट बनना; आड़ा-तिरछा होना- बिगड़ना, गुस्सा करना; आड़े हाथों लेना- किसी को कठोर वचनों से लज्जित करना।

आड़ावक्त *पुं.* (देश.) बुरा समय, विपत्ति काल।

ऑडिटर *पुं.* (अं.) 1. लेखा-परीक्षक, आय-व्यय की जाँच करने वाला 2. संपरीक्षक। auditor

आड़िली *वि.* (देश.) अड़ने वाली स्त्री, हठीली, ज़िद्दी।

आड़ी *स्त्री.* (देश.) तबला या मृदंग की एक ताल।

आड़ू *पुं.* (तत्.) एक वृक्ष या उसका लाल रंग लिए हुए हरे छिलके वाला फल जिसमें एक कठोर छिलके वाली गुठली और कुछ खटास लिए मीठा रेशायुक्त गूदेदार फल होता है।

आड़े *वि.* (देश.) 1. टेढ़ा, तिरछा 2. विपरीत। 3. कठिन 4. बाधक *क्रि.वि.* 1. पर्दे में 2. छिपकर।

आढक *पुं.* (तत्.) 1. लगभग चार सेर (प्रस्थ) की एक तौल 2. चार सेर की तौल के बराबर अनाज मापने वाला (काठ का) पात्र 3. अरहर।

आढकी *स्त्री.* (तत्.) 1. अरहर की दाल 2. गोपी चंदन, एक प्रकार की खुशबूदार मिट्टी।

आढ़ *पुं.* (तत्.) लगभग चार सेर (प्रस्थ) की एक तौल वाला आढक *स्त्री.* (देश.) 1. ओट 2. सहारा, ठिकाना 3. टीका (एक आभूषण) 4. आडि नामक मछली *वि.* (तत्.) कुशल, दक्ष।

आढ़त *स्त्री.* (देश.) 1. कमीशन लेकर माल बिकवाने का काम, 2. वह स्थान जहाँ कमीशन लेकर माल बेचा या बिकवाया जाता है।

आढ़तिया (आढ़ती) *पुं.* (देश.) आढ़त का कारोबार करनेवाला, आढ़तदार।

आढ्‌य *वि.* (तत्.) 1. पूर्ण, संपूर्ण, संपन्न 2. विशिष्ट 3. धनी, धनवान *पुं.* (तत्.) धन।

आढ्‌यंकर *वि.* (तत्.)निर्धन को धनी करने वाला।

आणक *पुं.* (तत्.) 1. आना, एक रुपये का सोलहवाँ भाग (1.4.1957 तक भारत में प्रचलित)।

आणव *वि.* (तत्.) अणुवत्, अति सूक्ष्म *पुं.* (तत्.) अणुता, अतिसूक्ष्मता।

आणविक *वि.* (तत्.) अणु से संबंधित, अणु-संबंधी।

आणविक सूत्र *पुं.* (तत्.) [आनविक+सूत्र] रसा. वह संकेत जो किसी पदार्थ के एक अणु को प्रकट करें। molecular formula

आतंक *पुं.* (तत्.) 1. भय, दहशत 2. रोब, दबदबा 3. रोग, बीमारी, ज्वर 4. कुशासन की अतिशयता या क्रूरता से उत्पन्न स्थिति।

आतंकवाद *पुं.* (तत्.) किसी व्यक्ति, समूह अथवा संगठन द्वारा विद्यमान (शासन) व्यवस्था-विरोधी विरोधी लक्ष्य की पूर्ति के लिए हिंसक और आतंक फैलाने वाले उपायों का दीर्घकाल तक करने की स्थिति या विचारधारा। terrorism

आतंकवादी *पुं.* (तत्.) 1. दहशत फैलाने वाला व्यक्ति 2. आतंकवाद में विश्वास रखने वाला 3. 3. आतंकपूर्ण कार्य करने वाला या आतंक फैलाने वाला। terrorist

आतंकित *वि.* (तत्.) त्रस्त, भयभीत।

आतंकी *पुं.* (तत्.) दे. आतंकवादी।

आतंच *पुं.* (तत्.) चिकि. रक्त अथवा लसिका आदि में, अघुलनशील वसा द्वारा, बनने वाला एक अर्ध ठोस पिंड, स्कंद, थक्का clot

आतंचन *पुं.* (तत्.) 1. जामन 2. दही 3. दूध जमाने के लिए जामन देना 4. रक्त का थक्का बनना या जमना coagulation

आत *पुं.* (तद्.) शरीफा, सीताफल।

आतत *वि.* (तत्.) 1. फैला हुआ 2. फैलाया हुआ 3. खिँचा हुआ 4. खींचा हुआ 5. तना हुआ। 6. ताना हुआ।

आतताई *पुं.* (तत्.) दे. आततायी।

आततायी *पुं.* (तत्.) 1. अत्याचारी 2. हत्यारा 3. दारुण अपराध करने वाला। 4. क्रूर व्यक्ति।

आतनन *पुं.* (तत्.) 1. फैलाने का भाव या क्रिया 2. खींचने का भाव अथवा क्रिया, तानने का भाव अथवा क्रिया।

आतनिक *वि.* (तत्.) 1. तनाव से युक्त 2. आकांक्षावान 3. उत्तेजित 4. व्याकुल।

आतप *पुं.* (तत्.) 1. धूप, गरमी, घाम 2. ज्वर, बुखार।

आतपता *स्त्री.* (तत्.) ताप, गर्मी, ऊष्मा।

आतप-पति *पुं.* (तत्.) सूर्य, प्रभाकर, रवि।

आतपत्र *पुं.* (तद्.) 1. राजा का छत्र 2. वर्षा अथवा धूप आदि से बचने वाला छाता या छतरी।

आतपन *पुं.* (तत्.) शिव।

आतप-स्नान *पुं.* (तत्.) स्वास्थ्यबर्धन के लिए प्रातःकालीन धूप से संपूर्ण शरीर में धूप दिखाना, सूर्य स्नान, धूप स्नान sunbath

आतपहर *वि.* (तत्.) ताप अथवा गर्मी को दूर करने वाला।

आतपात्यय *पुं.* (तत्.) [आतप+अत्यय] 1. धूप का अभाव 2. गर्मी का अभाव।

आतपी *पुं.* (तत्.) सूर्य। *वि.* (तत्.) धूप संबंधी।

आतपीय *वि.* (तत्.) सूर्य के ताप से संबंधित, धूपवाला।

आतपोदक *पुं.* (तत्.) मृग-तृष्णा, (धूप की गर्मी में दिखने वाला मिथ्या जल)।

आतम *वि.* (तद्.) आत्म, अपना, निज का।

आतमा *स्त्री.* (तत्.) दे. 'आत्मा।

आतर्पण *पुं.* (तत्.) तृप्ति, संतुष्टि।

आतश *स्त्री.* (फा.) आग, अग्नि, आतिश।

आतशक *स्त्री.* (फा.) फिरंग नामक जननेंद्रिय का रोग, उपदंश, गरमी की बीमारी।

आतशकी *वि.* (अर.) आतशक रोग से संबंधित, जननेंद्रिय में होने वाले रतिज रोग से संबंधित।

आतशखाना *पुं.* (फा.) 1. आग रखने का स्थान 2. आग लगाने वाली वस्तुओं को रखने का स्थान 3. अग्निपूजकों (पारसियों) का अग्नि-मंदिर।

आतशगाह *पुं.* (फा.) दे. आतशखाना।

आतशजदगी *स्त्री.* (फा.) आग लगाने का काम करना।

आतशजनी *स्त्री.* (फा.) आग लगाना।

आतशबाज *पुं.* (फा.) 1. आतिशबाजी बनाने वाला 2. आतिशबाजी करने या चलाने वाला।

आतशबाजी *स्त्री.* (फा.) 1. बारूद भरकर बनाए हुए पटाखे (फुलझड़ी, चर्खी, अनार आदि) 2. उक्त पटाखों को जलाना।

आतशी *वि.* (फा.) 1. आतिशबाजी बनाने वाला 2. आतिशबाजी करने या चलाने वाला 3. अग्नि-संबंधी 4. आग पैदा करने वाला।

आतशी शीशा *पुं.* (फा.) सूर्य किरणों को एकत्र कर आग पैदा करने वाला शीशा।

आतस *स्त्री.* (फा.) (आतश) आग, अग्नि।

आता-जाता *वि.* (देश.) आने-जाने वाला, इधर-उधर जाने वाला।

आतापि *पुं.* (तत्.) एक असुर जिसे अगस्त्य मुनि ने खा डाला था टि. आतापि-वातापि दो भाई थे, आतापि का एक नाम इल्वल भी था, अगस्त्य ने दोनों का नाश किया था।

आतापी *पुं.* (तत्.) चील पक्षी *वि.* (तद्.) धूर्त, चालाक।

आतिथेय *पुं.* (तत्.) 1. अतिथि का सत्कार करने वाला मेजबान 2. अतिथि के सत्कार के लिए प्रस्तुत भोजन या अन्य सेवा।

आतिथेयातिथि *पुं.* (तत्.) [आतिथेय+अतिथि] मेज़बान और मेहमान, आतिथेय और अतिथि।

आतिथेयी *स्त्री.* (तत्.) अतिथि सत्कार करने वाली महिला।

आतिथ्य *पुं.* (तत्.) अतिथि-सत्कार, आवभगत, मेहमानदारी *वि.* (तत्.) अतिथि के लिए उपयुक्त, अतिथिसेवा-परायण।

आतिथ्य सत्कार *पुं.* (तत्.) अतिथि का स्वागत और सेवा, मेहमाननवाज़ी, आवभगत।

आतिदेशिक *वि.* (तत्.) संस्कृत व्याकरण के ऐसे सूत्र जो अपने विषय के अतिरिक्त अन्य समान विषयों पर भी लागू होते हैं।

आतिरेक्य *पुं.* (तत्.) 1. सामान्य की अपेक्षा अत्यधिक मात्रा में होने की स्थिति, अतिशयता 2. फालतू होना।

आतिवाहिक *वि.* (तत्.) 1. आत्मा को एक लोक से दूसरे लोक में पहुँचाने वाला 2. आत्मा को शरीर से अलग कर के दूसरे शरीर में पहुँचाने वाला *पुं.* सूक्ष्म शरीर।

आतिश *स्त्री.* (फा.) दे. आतश।

आतिशपरस्त *वि.* (फा.) [आतिश+परस्त] अग्नि की पूजा करने वाला 1. ईरान देश के पुरातन कालीन निवासी, पारसी *पुं.* (फा.) पारसी व्यक्ति या समाज।

आतिशबाज़ *पुं.* (फ़ा.) [आतिश+बाज़] 1. पटाखे, फुलझड़ी, बम आदि बनाने वाला 2. पटाखे, फुलझड़ी, बम आदि छोड़ने वाला।

आतिशबाजी *स्त्री.* (फा.) दे. आतशबाजी।

आतिशयिक *वि.* (तत्.) जिसकी अतिशयता हो गई हो, जो अत्यधिक हो गया हो।

आतिशय्य *पुं.* (तत्.) अतिशयता, बहुतायत, अति आधिक्य।

आतिशी *वि.* (फा.) 1. अग्नि संबंधी 2. अग्नि जैसे रंग का।

आतिशी शीश *पुं.* (फा.) भौ. उत्तल शीशा, इस शीशे से सूर्य की किरणों को समेकित कर अग्नि उत्पन्न की जा सकती है।

आतीपाती *स्त्री.* (देश.) लुका-छिपी का खेल।

आतुर *वि.* (तत्.) 1. अस्वस्थ, रोगी, बीमार 2. व्याकुल, व्यग्र, उत्सुक 3. अधीर, उद्विग्न, बेचैन प्रयो. अपरिपक्व मस्तिष्क छोटी-छोटी समस्याओं के आने पर भी आतुर हो जाता है *क्रि.वि.* शीघ्र-जल्दी।

आतुरता/आतुरताई/आतुरी *स्त्री.* (तत्.) 1. घबराहट, बेचैनी, व्यग्रता, व्याकुलता 2. जल्दबाजी, शीघ्रता, उतावलापन।

आतुरशाला *स्त्री.* (तत्.) [आतुर+शाला] चिकित्सालय, अस्पताल। dispensary

आतुर-संन्यास *पुं.* (तत्.) चिर रोगी अथवा मरणासन्न व्यक्ति का शीघ्रता से संन्यास आश्रम में प्रवेश।

आतुराना *अ.क्रि.* (देश.) उतावला होना, आतुर होना *स.क्रि.* उतावला बनाना, आतुर बनाना।

आतुरालय *पुं.* (तत्.) आतुरशाला, चिकित्सालय, अस्पताल। dispensary

आतुरित *वि.* (तत्.) आतुर किया हुआ।

आतुरी *स्त्री.* (तत्.) दे. आतरुता।

आतृप्त *वि.* (तत्.) अच्छी तरह तृप्त।

आतोद्य *पुं.* (तत्.) संगीत में काम आने वाला एक एक प्रकार का वाद्य यंत्र, बाजा।

आत्त *पुं.* (तत्.) 1. लिया हुआ, प्राप्त, गृहीत 2. स्वीकृत 3. आकृष्ट 4. दूर किया हुआ, हटाया हुआ। 5. पराजित।

आत्तगर्व *वि.* (तत्.) जिस का गर्व तोड़ा गया हो, अपमानित, बेइज़्ज़त।

आत्मंभरि *वि.* (तत्.) 1. अपना ही पेट पालने वाला 2. खुदगर्ज।

आत्म *वि.* (तत्.) (आत्मन् शब्द का समासगत रूप) 1. अपना, जैसे- 'आत्मचरित' 2. आत्मा का, आत्मिक आध्यात्मिक जैसे 'आत्मज्ञान'।

आत्मक *वि.* (तत्.) समास प्रक्रिया में शब्द के अंत में प्रयुक्त, 'मय' अथवा 'युक्त' अर्थ संप्रेषित करने वाला, यथा 'स्वर' से स्वरात्मक आदि।

आत्मकथा *स्त्री.* (तत्.) आत्मचरित, स्वयं के द्वारा द्वारा लिखी अपनी जीवनी, अपना ही लिखा हुआ हुआ जीवन-वृत्तांत।

आत्मकल्याण *पुं.* (तत्.) [आत्म+कल्याण] 1. अपना भला, अपना हित 2. स्वार्थ, खुदगर्ज़ी।

आत्मकाम *वि.* (तत्.) [आत्म+काम] आत्मा या अपने स्वरूप को जानने की अभिलाषा 2. मात्र परमात्मा की भक्ति करने वाला 3. अभिमानी, अहंकारी 4. स्वार्थी, मतलबी।

आत्मकीय *वि.* (तत्.) जो पूर्णतः अपना हो, जिस पर अपना अधिकार हो।

आत्मकेंद्रित *वि.* (तत्.) [आत्म+केंद्रित] 1. अपने आप में मस्त रहने वाला 2. स्वयं को महत्वपूर्ण मानने वाला 3. अपने सारे कार्यों का केंद्र आत्मा को मानने वाला।

आत्मगत *वि.* (तत्.) 1. स्वयं, अपना, स्वकीय 2. मन के अंदर का, अपने भीतर का 3. मानसिक 4. नाट्य. वह संवाद जिसे श्रोता सुन सकते हों पर मंच के अन्य अभिनेता नहीं, स्वगत, मन में कही गई बात।

आत्मगाथात्मक *वि.* (तत्.) 1. आत्मकथा जैसा 2. अपनी प्रशंसा से युक्त।

आत्मगौरव *पुं.* (तत्.) 1. आत्मसम्मान, आत्माभिमान 2. आत्मप्रतिष्ठा 3. अपनी बड़ाई, आत्मप्रशंसा।

आत्मग्राही *वि.* (तत्.) [आत्म+ग्राही] स्वार्थी, लालची, लोभी।

आत्मग्लानि *स्त्री.* (तत्.) किसी दुष्कृत को करने या (समय पर) किसी सुकृत को न कर पाने पर हृदय में पश्चाताप या हीनता का अनुभव।

आत्मघात *पुं.* (तत्.) 1. आत्महत्या, खुदकुशी 2. अपनी अपूरणीय हानि 3. किसी विधि विरुद्ध उद्देश्य की पूर्ति के लिए योजनाबद्ध तरीके से अपने प्राण दे देना तु. आत्महत्या

आत्मघातक *वि.* (तत्.) 1. आत्महत्या करने वाला, आत्मघाती 2. अपने लिए अत्यधिक हानिकर 3. स्वयं की हानि कर लेने वाला।

आत्मघाती *वि.* (तत्.) 1. स्वयं अपने लिए ही घातक 2. अपने ही लिए घातक काम करने वाला दे. आत्मघातक 3. युद्ध (ऐसा आक्रमण) जिसमें आक्रमण करने वाला यह मानकर प्रवृत्त होता है कि उसे अपना बलिदान देना ही है उदा. श्रीनगर में आतंकवादियों ने एक विद्यालय में आत्मघाती आक्रमण किया, जिसमें उनके दो सदस्य मारे गए।

आत्मघोष *पुं.* (तत्.) 1. स्वयं अपने ही नाम को पुकारने वाला, बड़बोला 2. मुर्गा 3. कौआ *वि.* (तत्.) अपनी बड़ाई खुद करने वाला।

आत्मचरित *पुं.* (तत्.) [आत्म+चरित] आत्मकथा, अपने जीवन की कहानी।

आत्मचिंतक *वि.* (तत्.) [आत्म+चिंतक] आत्म चिंतन करने वाला।

आत्मचिंतन *पुं.* (तत्.) 1. स्वयं अपने बारे में गहन विचार चिंतन 2. आत्मतत्व का चिंतन।

आत्मचेतना *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+चेतना] अहं का प्रत्यक्ष अनुभव, ध्यानस्थ होकर स्वयं को अनुभव करने की चेतना, अपने आप की दूसरों से पृथकता की चेतना।

आत्मज *पुं.* (तत्.) 1. पुत्र ("आत्मा वै जायते सुतः', अर्थात् अपनी आत्मा ही पुत्र का रूप धारण करती है) *वि.* (तत्.) स्वयं द्वारा उत्पन्न।

आत्मजय *पुं.* (तत्.) अपने मन और इंद्रियों को वश में कर लेना, स्वयं पर विजय करना।

आत्मजा *स्त्री.* (तत्.) पुत्री, बेटी

आत्मजात *पुं.* (तत्.) [आत्म+जात] आत्मज, पुत्र, बेटा।

आत्मजिज्ञासा *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+जिज्ञासा] अपने विषय में या आत्मा के विषय में जानने की इच्छा।

आत्मजिज्ञासु *वि.* (तत्.) [आत्म+जिज्ञासु] 1. अपने विषय में जानने की इच्छा रखने वाला। 2. स्व के विषय में चिंतनशील।

आत्मज्ञ *पुं.* (तत्.) 1. जिसने स्वयं को जान लिया हो 2. आत्मज्ञानी, आत्मा और परमात्मा के ज्ञान से संपन्न।

आत्मज्ञान *पुं.* (तत्.) 1. आत्म साक्षात्कार 2. आत्मा और परमात्मा का ज्ञान, ब्रह्म का साक्षात्कार 3. अपने को जानना।

आत्मज्ञानी *पुं.* (तत्.) 1. जिसने आत्म साक्षात्कार कर लिया हो, जिसने स्वयं को जान लिया हो 2. आत्मा और परमात्मा के ज्ञान से संपन्न। आत्मज्ञ।

आत्मतंत्र *वि.* (तत्.) [आत्म+तंत्र] स्वाधीन, स्वतंत्र, आजाद, जो किसी के अधीन न हो।

आत्मतत्व (आत्मतत्तव) *पुं.* (तत्.) 1. आत्मा का रहस्य, आत्मा का स्वरूप 2. जीवात्मा तथा परमात्मा का स्वरूप या रहस्य।

आत्मतत्वज्ञ *वि.* (तत्.) जीवात्मा तथा परमात्मा के रहस्य को जाननेवाला।

आत्मतादात्म्य *पुं.* (तत्.) [आत्म+तादात्म्य] मनो. ऐसा मनोभाव, जिसके आधार पर व्यक्तित्व बदलने के बावजूद व्यक्ति विशेष अपने आप को यथावत समझता है, स्वयं को अविभक्त समझने वाला।

आत्मतुष्ट *वि.* (तत्.) [आत्म+तुष्ट] आत्मज्ञान प्राप्त करके परम संतोष प्राप्त करने वाला, आत्म संतोषी।

आत्मतुष्टता *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+तुष्टता] अपने आप को होने वाला संतोष, आत्मज्ञान द्वारा प्राप्त संतोष, आत्म संतोष।

आत्मत्याग *पुं.* (तत्.) [आत्म+त्याग] परोपकार का कार्य, स्वयं के हित का त्याग, स्वार्थ त्याग।

आत्मत्राण *पुं.* (तत्.) [आत्म+त्राण] अपनी रक्षा, आत्म रक्षा, अपनी हिफ़ाज़त।

आत्मदर्शन *पुं.* (तत्.) [आत्म+दर्शन] 1. आत्म साक्षात्कार, आत्मज्ञान 2. परमात्मा का साक्षात्कार, परमात्मा का ज्ञान।

आत्मदाह *पुं.* (तत्.) [आत्म+दाह] स्वयं को जलाना, अपने शरीर को आग लगाना (किसी विवाद के विरोध स्वरूप)।

आत्मद्रोह *पुं.* (तत्.) [आत्म+द्रोह] 1. स्वयं को हानि पहुँचाना 2. स्वयं अपने साथ की जाने वाली शत्रुता।

आत्मद्रोही *वि.* (तत्.) अपनी हानि करने वाला, स्वयं अपने को ही हानि पहुँचाने वाला, आत्मघाती।

आत्मनिंदा *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+निंदा] अपनी निंदा, अपने लिए अभद्र शब्द।

आत्मनियंत्रण *पुं.* (तत्.) [आत्म+नियंत्रण] स्वयं पर संयम, अपने पर काबू, अपने पर नियंत्रण।

आत्मनिरीक्षण *पुं.* (तत्.) [आत्म+निरीक्षण] स्वयं को परखना, अपने दोषों, गुणों आदि को समझने का प्रयत्न, अपने स्वभाव की समीक्षा।

आत्मनिर्णय *पुं.* (तत्.) [आत्म+निर्णय] 1. भविष्य के विषय में स्वयं निर्णय 2. अपनी नीति और अपने नियम स्वयं निर्धारित करना (अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है कि, प्रत्येक राष्ट्र आत्मनिर्णय के लिए स्वतंत्र) है।

आत्मनिर्देशन *पुं.* (तत्.) [आत्म+निर्देशन] अपने आप का मार्ग दर्शन, कार्य-कलाप के लिए स्वयं को निर्देश।

आत्मनिर्भर *वि.* (तत्.) [आत्म+निर्भर] भरण-पोषण के लिए स्वयं पर निर्भर रहने वाला, स्वावलम्बी, खुदकफील

आत्मनिर्भरता *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+निर्भरता] स्वयं स्वयं अपना भरण-पोषण, स्वावलंबिता, खुदक़फ़ीली।

आत्मनिवेदन *पुं.* (तत्.) [आत्म+निवेदन] 1. अपना सर्वस्व अपने इष्ट देव को समर्पित करना, आत्मसमर्पण 2. अपने संबंध में किया गया निवेदन।

आत्मनिवेदनासक्ति *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+निवेदन +आसक्ति] अपने अवगुणों और दोषों का वर्णन करते हुए, प्रभु के प्रति पूर्ण समर्पण की भक्ति।

आत्मनिषेधा *पुं.* (तत्.) [आत्म+निषेध] अध्यात्म में ऊँचे लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं का त्याग, अहंकार का निषेध, (पाश्चात्य दर्शन)।

आत्मनिष्ठ *वि.* (तत्.) 1. आत्मा में निष्ठा रखने वाला, आत्मविद्या का साधक 2. अपना ही हित-चिंतक।

आत्मनिष्ठा *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+निष्ठा] अपने ऊपर पूर्ण निष्ठा भाव, आत्मविश्वास स्वाभाविक ज्ञान अर्जन से उत्पन्न विश्वास।

आत्मनीन *वि.* (तत्.) 1. जो अपना हो, जिस पर अपना अधिकार हो 2. स्वयं से संबंध रखने वाला, अपना, निज का 3. आत्महितकारी।

आत्मनीय *पुं.* (तत्.) 1. पुत्र 2. साला।

आत्मनेपद *पुं.* (तत्.) संस्कृत के दो प्रकार के क्रियारूपों (परस्मैपद तथा आत्मनेपद) में से दूसरे प्रकार के अर्थात् आत्मवाची क्रियारूप।

आत्मन् *पुं.* (तत्.) 1. आत्मा 2. जीव 3. स्व, आत्म 4. सार 5. प्रकृति।

आत्मपद *पुं.* (तत्.) [आत्म+पद] सांसारिक मायाजाल से मुक्ति, मोक्ष।

आत्मपरीक्षण *पुं.* (तत्.) [आत्म+परीक्षण] अपने गुण-अवगुण पहचान पर परखना, आत्मनिरीक्षण, अपनी आलोचना।

आत्मपीड़न *पुं.* (तत्.) [आत्म+पीड़न] अपने आप को मानसिक अथवा शारीरिक कष्ट देकर सुखी रहने का भाव।

आत्मप्रकाश *पुं.* (तत्.) [आत्म+प्रकाश] 1. अंतर मन का प्रकाश अथवा ज्ञान, उत्कृष्ट कार्य के लिए आत्मा अथवा परमात्मा की प्रेरणा 2. भाव और विचारों की अभिव्यक्ति।

आत्मप्रदर्शन *पुं.* (तत्.) [आत्म+प्रदर्शन] 1. ज्ञान-बल, धन-बल आदि का प्रदर्शन अथवा दिखावा 2. स्वयं को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाना।

आत्मप्रशंसा *स्त्री.* (तत्.) अपने मुँह से अपनी बड़ाई, स्वयं का स्तुतिगान।

आत्मप्रेक्षण *पुं.* (तत्.) [आत्म+प्रेक्षण] अपनी अक्षमताओं का सूक्ष्म परीक्षण, अपने दोषों का सूक्ष्म अवलोकन।

आत्मप्रेरणा *स्त्री.* (तत्.) आंतरिक प्रेरणा।

आत्मबल *पुं.* (तत्.) [आत्म+बल] 1. विकट परिस्थितियो में भी संयत रहने की शक्ति, आत्मा की शक्ति 2. भीतर का बल।

आत्मबलिदान *पुं.* (तत्.) [आत्म+बलिदान] कार्य सिद्धि के लिए अपने आप की बलि चढ़ाना, आत्माहुति, आत्मोत्सर्ग।

आत्मबोध *पुं.* (तत्.) [आत्म+बोध] आत्मज्ञान, आत्मा की जानकारी, आत्मा की पहचान।

आत्मभाव *पुं.* (तत्.) [आत्म+भाव] 1. आत्मा का स्वरूप 2. आत्मा का भाव 3. अपनेपन का भाव। 4. हर प्राणी के प्रति आत्मिक दृष्टि।

आत्मभीति *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+भीति] मनो. अपने से लगने वाले भय की प्रतीति, अकेले में लगने वाले भय का आभास।

आत्मभू *पुं.* (तत्.) [आत्म+भू] 1. अपने शरीर से उत्पन्न, आत्मज 2. स्वयं उत्पन्न, स्वयंभू *पुं.* 1. पुत्र, बेटा 2. कामदेव 3. ब्रह्मा 4. विष्णु 5. शिव।

आत्मभ्राँति *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+भ्राँति] भ्रम या भय के कारण अनात्म को भी आत्म समझना।

आत्ममंथन *पुं.* (तत्.) [आत्म+मंथन] 1. अपने भावों का विवेचन और विश्लेषण 2. अपने विचारों का मंथन 3. मन ही मन का गंभीर चिंतन।

आत्ममुग्ध *वि.* (तत्.) [आत्म+मुग्ध] अपने ऊपर सम्मोहित व्यक्ति, स्वयं भ्रमित।

आत्ममोह *पुं.* (तत्.) [आत्म+मोह] 1. अपने ऊपर मोह, अपने रूप-रंग, आदि का मोह 2. आत्म भ्रम।

आत्मयोनि *पुं.* (तत्.) स्वयं ही जन्म लेने वाला, स्वयंभू, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कामदेव।

आत्मरक्षक *वि.* (तत्.) [आत्म+रक्षक] स्वयं अपनी रक्षा करने वाला।

आत्मरक्षण *पुं.* (तत्.) [आत्म+रक्षण] अपनी रक्षा, अपना बचाव, अपनी हिफाजत।

आत्मरक्षा *स्त्री.* (तत्.) अपना बचाव, अपनी रक्षा। रक्षा।

आत्मरत *वि.* (तत्.) 1. ब्रह्मज्ञान की साधना में रत, ब्रह्मज्ञानी 2. स्वयं से प्रेम करने वाला।

आत्मरति *स्त्री.* (तत्.) दर्श. आत्मा के आनंद में निमग्न होना, आत्मिक आनंद का निरंतर अनुभव मनो. अपने शारीरिक गुणों विशेषत: रूप पर अतिरंजित आत्ममुग्धता।

आत्मलीन *वि.* (तत्.) [आत्म+लीन] अपने ही कार्यों में डूबा रहने वाला व्यक्ति, दूसरों की तरफ ध्यान न देने वाला।

आत्मवंचक *पुं.* (तत्.) [आत्म+वंचक] अपने आप को धोखा देने वाला, हवाई बातों के चक्कर में रहने वाला।

आत्मवत्ता *स्त्री.* (तत्.) 1. आत्मनियंत्रण, आत्मसंयम 2. समझ, चेतना 3. धीरता 4. बुद्धि।

आत्मवाद *पुं.* (तत्.) आत्मा के अस्तित्व का प्रतिपादन करने वाली चिंतनधारा।

आत्मवादी *पुं.* (तत्.) [आत्म+वादी] आत्मा को सर्वत्र व्याप्त समझने वाला, आत्मवाद पर आस्था रखने वाला।

आत्मविक्रय *पुं.* (तत्.) [आत्म+विक्रय] 1. अपने आप को बेचने का भाव। 2. ऋण वापस न करने की अवस्था में, ऋण देने वाले का सेवक अथवा अनुयायी बनने का भाव।

आत्मविघटन *पुं.* (तत्.) [आत्म+विघटन] 1. आत्म निरीक्षण की प्रक्रिया में, व्यक्ति की अहंता के दो अंशों की पारस्परिक टक्कर। 2. अनिर्णय की स्थिति में उत्पन्न विक्षोभ।

आत्मविचार *पुं.* (तत्.) [आत्म+विचार] 1. आत्मतत्व का चिंतन 2. परमात्मा का चिन्तन।

आत्मविज्ञापन *पुं.* (तत्.) [आत्म+विज्ञापन] 1. अपने आप अपनी तारीफ, आत्म प्रशंसा, अपने मुँह मियाँ मिट्ठू।

आत्मविद् *पुं.* (तत्.) 1. आत्मज्ञानी 2. ब्रह्मज्ञानी।

आत्मविद्या *स्त्री.* (तत्.) ब्रह्म विद्या 2. अध्यात्म अध्यात्म विद्या।

आत्मविभेदन *पुं.* (तत्.) [आत्म+विभेदन] समाज. ऐसी प्रवृत्ति वाला व्यक्ति जो अपने आप को अपने समूह से थोड़ा उच्च समझता हो।

आत्मविभोर *वि.* (तत्.) हर्षातिरेक से अभिभूत, सुध-बुध भूला हुआ, अपने ही विचारों में खोया हुआ।

आत्मविरेचन *पुं.* (तत्.) [आत्म+विरेचन] मनो. एक प्रकार की मन: चिकित्सा, जिसमें व्यक्ति अपने विक्षोभ आदि, मुक्त कंठ से अभिव्यक्त करता है, और रोग मुक्त हो जाता है।

आत्मविश्लेषण *पुं.* (तत्.) [आत्म+विश्लेषण] अपने अपने स्वभाव को स्वयं समझने की क्रिया, अर्थात् अपना व्यवहार, अपनी भाषा, मनोविकार आदि समझने की क्रिया।

आत्मविश्वास *पुं.* (तत्.) 1. अपने आप पर विश्वास 2. अपनी शक्ति या योग्यता पर विश्वास, स्वयं की शक्ति, बुद्धि का भरोसा।

आत्मविश्वासी *पुं.* (तत्.) [आत्म+विश्वास] अपनी बुद्धि और अपने बल पर दृढ़ विश्वास वाला, आत्मविश्वास वाला।

आत्मविषाक्तता *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+विषाक्तता] चिकि. शरीर में, जैविक क्रियाओं द्वारा, अंदर ही ही अंदर, अंगों अथवा रक्त का विषाक्त हो जाना।

आत्मविस्मृत *स्त्री.* (तत्.) अपने आप को भूला हुआ, अपने अस्तित्व को भूला हुआ, स्वयं की शक्ति को न पहचान पाने वाला।

आत्मविस्मृति *स्त्री.* (तत्.) अपने आप को भूल जाने या अपनी सुध-बुध न रहने की स्थिति।

आत्मशक्ति *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+शक्ति] 1.भीतर की शक्ति 2. विकट परिस्थितियों में भी सबल रहने की शक्ति।

आत्मशासन *पुं.* (तत्.) 1. स्वराज्य 2. स्वनियंत्रण 3. स्वयं पर नियंत्रण।

आत्मश्लाघा *वि.* (तत्.) आत्म-प्रशंसा, अपनी तारीफ।

आत्मश्लाघी *वि.* (तत्.) स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला।

आत्मसंघर्ष *पुं.* (तत्.) मन के भीतर परस्पर-विरोधी विचारों का टकराव, किसी बात पर निर्णय करने से पूर्व मन ही मन तर्क-चिंतन।

आत्मसंभव *पुं.* (तत्.) [आत्म+संभव] स्वयं संभवित, स्वयंभू *पुं.* संतान, पुत्र।

आत्मसंमोहन *पुं.* (तत्.) [आत्म+संमोहन] मनो. स्वतः प्रेरित संमोहन।

आत्मसंयम *पुं.* (तत्.) [आत्म+संयम] अपने आप पर पूर्ण नियंत्रण, इंद्रियों और मन को वश में रखना, जितेंद्रियता।

आत्मसंयमी *वि.* (तत्.) [आत्म+संयमी] अपने उपर संयम रखने वाला, इंद्रियों और मन पर संयम रखने वाला, जितेंद्रिय।

आत्मसंवेदन *पुं.* (तत्.) [आत्म+संवेदन] 1. आत्मा का बोध, आत्म-अनुभव 2. उद्दीपन के प्रति अधिक संवदेनशीलता।

आत्मसंसूचन *पुं.* (तत्.) [आत्म+संसूचना] समाज. निश्चित कार्य हेतु भीतर से उत्पन्न सुझाव, निजी व्यक्तित्व से प्रेरित सुझाव, अंतःप्रेरित संसूचन।

आत्म-संस्कार *पुं.* (तत्.) अपना सुधार।

आत्मसमर्पण *पुं.* (तत्.) [आत्म+समर्पण] हथियार डाल देना, स्वयं को किसी के अधीन कर देना, अपनी सत्ता समाप्त कर देना।

आत्मसम्मान *पुं.* (तत्.) अपनी हैसियत या अपने व्यक्तित्व के प्रति आदर की भावना प्रयो. वह किसी की चिरौरी नहीं करेगा क्योंकि वह आत्मसम्मान के साथ समझौता नहीं करेगा।

आत्मसाक्षात्कार *पुं.* (तत्.) [आत्म+साक्षात्कार] 1. आत्मा का प्रत्यक्ष ज्ञान 2. ब्रह्म का प्रत्यक्ष ज्ञान 3. आत्मानुभूति।

आत्मसाक्षी *वि.* (तत्.) [आत्म+साक्षी] आत्मा का द्रष्टा, ब्रह्म ज्ञानी।

आत्मसात् *वि.* (तत्.) 1. जो अपने अधिकार में या अपने वश में कर लिया गया हो 2. स्वयं में मिला लिया गया।

आत्मसात्करण *पुं.* (तत्.) आत्मसात् करने की क्रिया 1. अपने जैसा बनाकर अपने में मिला लेना या समा लेना। assimilation

आत्मसाधन *पुं.* (तत्.) [आत्म+साधन] 1. आत्मा का साक्षात ज्ञान 2. ब्रह्म का प्रत्यक्ष ज्ञान।

आत्मसाधना *स्त्री.* (तत्.) योग. आत्मपरिष्कार, सिद्धि प्राप्त करने के लिए स्वयं को अभीष्ट उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के योग्य बनाना।

आत्मसिद्धी *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+सिद्धी] 1. आत्मा-परमात्मा का ज्ञान 2. आत्म साक्षात्कार, मोक्ष।

आत्मसेवी *वि.* (तत्.) [आत्म+सेवा] केवल अपनी चिंता करने वाला, स्वार्थी, खुदगर्ज़।

आत्मस्तुति *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+स्तुति] अपनी बड़ाई, अपनी प्रशंसा, अपना गुण-गान।

आत्मस्वीकृति *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+स्वीकृति] अपराध स्वीकार करने की क्रिया/अपराधी का सरकारी गवाह बनने की क्रिया।

आत्महंता *स्त्री.* (तत्.) 1. आत्मघाती 2. अपना भला न देखने वाला 3. धर्म-विरोधी 4. अपनी आत्मा की आवाज़ के विरुद्ध आचरण करने वाला।

आत्महत्या *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+हत्या] अपने आप को मार डालना, खुदकशी, आत्मघात।

आत्महनन *पुं.* (तत्.) [आत्म+हनन] अपने आप हनन का भाव, आत्महत्या।

आत्महारा *पुं.* (तत्.) [आत्म+हारा] स्वयं को भूला हुआ।

आत्महिंसा *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+हिंसा] 1. अपनी अंतरात्मा की हत्या 2. आत्म हत्या, खुदकशी।

आत्महित *पुं.* (तत्.) [आत्म+हित] अपना हित, अपनी भलाई, अपना कल्याण।

आत्मा *स्त्री.* (तत्.) 1. जीवात्मा 2. जीव, व्यष्टि जीव, जीवन तत्व, चेतन तत्व 3. अंतःकरण, मन, बुद्धि, चित्त 4. सार, विशेषता।

आत्माधिक *वि.* (तत्.) [आत्म+अधिक] अपने से अधिक।

आत्माधीन *वि.* (तत्.) [आत्म+अधीन] अपने वश में रहने वाला।

आत्मानंद *पुं.* (तत्.) आत्मलीन होने का सुख, आत्मिक ज्ञान का सुख।

आत्मानात्म *पुं.* (तत्.) [आत्म+अनात्म] आत्मा तथा अनात्मा, आत्मा और अन्य जड़-चेतन आदि पदार्थ।

आत्मानुगमन *पुं.* (तत्.) [आत्म+अनुगमन] अपने ही सोच-विचार से कार्य करने का भाव, स्वकीय अनुसरण, अपने विवेक से ही आगे बढ़ने का भाव।

आत्मानुभव *पुं.* (तत्.) 1. अपना अनुभव, अपना तजुर्बा 2. आत्मा की अनुभूति, आत्म तत्व का अनुभव।

आत्मानुभूति *स्त्री.* (तत्.) दे. आत्मानुभव।

आत्मानुरूप *वि.* (तत्.) [आत्म+अनुरूप] जो गुण आदि में अपने समान हो।

आत्मानुशासन *पुं.* (तत्.) [आत्म+अनुशासन] अपनी इच्छा शक्ति से ही अपनी मनोवृत्तियों को नियंत्रण में रखना।

आत्मानुशीलन *पुं.* (तत्.) स्वविषयक विचार-चिंतन, आत्मचिंतन, आत्मतत्व का चिंतन।

आत्माभिमान *पुं.* (तत्.) 1. स्वाभिमान, आत्म-सम्मान 2. आत्मगौरव।

आत्माभिमानी *वि.* (तत्.) जिसे अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान हो, स्वाभिमानी (व्यक्ति)।

आत्माभिमुख *वि.* (तत्.) [आत्म+अभिमुख] अंतर्मुखी (प्रवृत्ति वाला)।

आत्माभिव्यक्ति *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+अभिव्यक्ति] स्वकल्पना की लालित्य पूर्ण अभिव्यक्ति, अपने विचारों को प्रकट करने का कार्य, काव्य, मूर्तिकला, चित्रकला आदि में अपनी व्यक्तिगत भावनाओं का प्रकटीकरण।

आत्माभ्युदय *पुं.* (तत्.) [आत्म+अभ्युदय] अपनी उन्नति, अपना उत्कर्ष।

आत्माराम *पुं.* (तत्.) [आत्म+आराम] 1. अपने आप में प्रसन्न रहने वाला 2. आत्म-भाव में रमण करने वाला, आत्म संतुष्ट 3. आध्यात्मिकता का साधक *पुं.* (देश.) अपना व्यक्तित्व, अपना आप, खुद।

आत्मारोपण *पुं.* (तत्.) [आत्म+आरोपण] अपनी इच्छा से महत्वपूर्ण दायित्वों अथवा कार्य-कलापों की जिम्मेदारी संभालने का कार्य।

आत्मार्थ *क्रि.वि.* (तत्.) [आत्म+अर्थ] 1. अपने लिए 2. आत्मा/ब्रह्म के लिए।

आत्मार्थक *वि.* (तत्.) [आत्म+अर्थक] अपने निमित्त वाला। 2. आत्मा/बह्म निमित्तार्थ।

आत्मार्पण *पुं.* (तत्.) स्वयं अपने आप को अर्पित कर देना, आत्म समर्पण, आत्म-निवेदन।

आत्मालोचन *पुं.* [आत्म+आलोचन] (तत्.) अपने गुणदोषों का विवेचन।

आत्मावज्ञा *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+अवज्ञा] स्वयं अपनी उपेक्षा, आत्म तिरस्कार।

आत्मावलंबन *पुं.* (तत्.) [आत्म+अवलंबन] अपने पर अवलंबन का कार्य, अन्य किसी के सहयोग से रहित का कार्य, सब काम अपने ही बल पर।

आत्मावलंबी *वि.* (तत्.) स्वावलंबी, अपने ही भरोसे पर सब काम करने वाला, जो किसी दूसरे पर आश्रित न रहे।

आत्मावसाद *पुं.* (तत्.) [आत्म+अवसाद] अपना अवसाद, अपना दु:ख, अपनी व्यथा।

आत्माश्रय *वि.* (तत्.) [आत्म+आश्रय] केवल अपनी योग्यता, बुद्धि और शक्ति पर भरोसा करने वाला, आत्मनिर्भर।

आत्मिकता *स्त्री.* (तत्.) 1. परमात्मा से एकात्मभाव, आत्मा का परमात्मा में लीन होना 2. अपना समझने का भाव 3. अपनापन, निकटता, घनिष्ठता, आत्मीय होने की अवस्था।

आत्मीय *वि.* (तत्.) अपना, निज का, स्वकीय *पुं.* (तत्.) स्वजन, रिश्तेदार।

आत्मीयता *स्त्री.* (तत्.) अपनापन, अपना होने का का भाव।

आत्मोक्ति *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+उक्ति] स्वगत कथन, अपने आप से बोलना टि. नाटकों में आत्मोक्ति अथवा स्वगत कथन का विशेष महत्त्व होता है।

आत्मोत्कर्ष *पुं.* (तत्.) [आत्म+उत्कर्ष] 1. अपनी उन्नति 2. आत्मा की उन्नति, आध्यात्मिक उत्थान।

आत्मोत्सर्ग *पुं.* [आत्म+उत्सर्ग] (तत्.) स्वयं को बलिदान कर देना।

आत्मोदय *पुं.* (तत्.) [आत्म+उदय] 1. अपनी उन्नति, अपना विकास 2. आध्यात्मिक प्रगति, आत्मोत्कर्ष।

आत्मोद्धार *पुं.* (तत्.) [आत्म+उद्धार] अपना उद्धार, अपनी मुक्ति।

आत्मोद्भव *पुं.* (तत्.) [आत्म+उद्भव] 1. स्वयं उत्पन्न होने वाला, कामदेव 2. आत्मज, पुत्र।

आत्मोद्भवा *स्त्री.* (तत्.) आत्मजा, पुत्री।

आत्मोन्नति *पुं.* (तत्.) [आत्म+उन्नति] 1. अपनी उन्नति, अपना उत्कर्ष 2. आत्मा की उन्नति।

आत्मोपजीवी *वि.* (तत्.) 1. अपनी मेहनत से जीविका उपार्जित करने वाला व्यक्ति 2. स्वयं अपना ही व्यवसाय या काम करने वाला व्यक्ति 3. सार्वजनिक अभिनेता, पात्र।

आत्मोपम *वि.* [आत्म+उपम] (तत्.) अपने जैसा, पुत्र।

आत्मोपम्य *पुं.* (तत्.) [आत्म+औपम्य] सबको अपने जैसा मानने का भाव।

आत्मोपलब्धि *स्त्री.* (तत्.) [आत्म+उपलब्धि] सत्य की जानकारी, आत्म/ब्रह्म का ज्ञान, स्व का आध्यात्मिक विकास।

आत्यंतिक *वि.* (तत्.) 1. बहुत अधिक, प्रचुर, अत्यधिक 2. सतत, अनवरत, अनंत 3. सर्वोच्च, पूर्ण।

आत्यंतिक अधिकार *पुं.* (तत्.) विधि. सर्वथा पूर्ण अधिकार, सर्वविध अधिकार, अप्रतिहत अधिकार।

आत्यंतिकता *स्त्री.* (तत्.) 1. निरंतरता का भाव 2. पूर्णता का भाव। 3. अनन्यता का भाव।

आत्यंतिक प्रलय *पुं.* (तत्.) परमलीनता, कैवल्य, मुक्ति, मोक्ष, सद्योमुक्ति।

आत्यंतिक युद्ध *पुं.* (तत्.) पूर्ण विजय के लिए शत्रु को जड़-सहित नष्ट कर देनेवाला युद्ध टि. इसमें नागरिक और असैनिक ठिकाने भी युद्ध के निशाने पर होते हैं पर्या. पूर्ण युद्ध absolute war

आत्यंतिकी *स्त्री.* (तत्.) 1. निरंतरता 2. पूर्णता 3. अनन्य, आत्यंतिकता।

आत्ययिक *वि.* (तत्.) 1. विनाशक, विध्वंसक, सर्वनाशक 2. दुर्भाग्यपूर्ण 2. कष्टकारक 3. अशुभकारी 4. अत्यावश्यक 5. आपाती।

आत्रेय *वि.* (तत्.) अत्रि गोत्रवाला *पुं.* (तत्.) अत्रि का पुत्र।

आत्रेयिका *स्त्री.* (तत्.) रजस्वला स्त्री।

आत्रेयी *स्त्री.* (तत्.) 1. अत्रि ऋषि की पत्नी 2. अत्रि गोत्र वाली स्त्री 3. रजस्वला स्त्री।

आथना[1] *अ.क्रि.* (तद्.) अस्तित्व प्रदान करना, व्यवहार में लाना।

आथना[2] *अ.क्रि.* (तद्.) अस्त होना, प्रत्यक्ष न रहना।

आथर्वण *पुं.* (तत्.) 1. अथर्ववेद का ज्ञाता 2. यज्ञ का पुरोहित 3. अथर्ववेद।

आदंश *पुं.* (तत्.) 1. डंक मारने से हुआ घाव, दाँत काटे का घाव 3. डंक 4. दाँत।

आद *स्त्री.* (तत्.) अदरक, एक प्रकार का कंद जो सुखा कर सोंठ बन जाती है।

आदत *स्त्री.* (अर.) 1. स्वभाव, प्रकृति 2. अभ्यास 3. लत, व्यसन।

आदतन *क्रि.वि.* (अर.) 1. आदत के अनुसार 2. किसी काम को करने की आदत हो जाने के कारण प्रयो. कर्मा के आदतन अपराधी होने के कारण उसे पकड़ने पर पुलिस को प्रशंसा मिली 3. स्वभाव से।

आदम *पुं.* (अर.) 1. यहूदी, इस्लाम आदि धर्मों के अनुसार आदि मनुष्य।

आदमकद *वि.* (अर.) आदमी के कद के बराबर, ऊँचाई वाला।

आदमखोर *वि.* (अर.) मनुष्य को खाने वाला, मानव-भक्षी, नरमांसभक्षी। प्रयो. जंगल में खाने के लिए अन्य छोटे पशुओं की अनुपलब्धता के कारण शेर आदमखोर बन गया।

आदमज़ाद *पुं.* (अर+फा.) आदम की संतान अर्थात् मनुष्य।

आदमी *पुं.* (अर.) 1. मनुष्य, मानव जाति 2. नौकर, सेवक 3. पति मुहा. आदमी बनना-अच्छे आदमी की तरह व्यवहार करना प्रयो. गुरु जी का कहना मानने से आदमी बन जाओगे; आदमी बनाना- सभ्य बनाना, शिष्टता सिखाना प्रयो. जंगलीपन छोड़ो, मेरे पास रहे तो तुम्हें आदमी बना दूँगा।

आदमीयत *स्त्री.* (अर.) 1. इंसानियत, मनुष्यता 2. सभ्यता।

आदर *पुं.* (तत्.) सम्मान, सत्कार, इज्जत।

आदरणीय *वि.* (तत्.) आदर के योग्य, सम्मान के योग्य, सम्मानित।

आदरना *स.क्रि.* (तद्.) आदर करना, सम्मान करना, इज़्ज़त करना, एहतिराम करना।

आदरभाव *पुं.* (तत्.) 1. आदर की भावना 2. आदर-सत्कार।

आदरार्थक प्रत्यय *पुं.* (तत्.) व्या. आदर का सूचक प्रत्यय उदा. 'जाइए' में 'इए' आदरार्थक प्रत्यय है।

आदरार्थक रूप *पुं.* (तत्.) व्या. संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जो तार्किक दृष्टि से एक ही व्यक्ति का सूचक हो, किंतु, जिसे आदर व्यक्त करने के लिए बहुवचन में प्रयुक्त किया जाए और तदनुसार क्रिया भी बहुवचन में ही हो उदा. पिता जी आए, निदेशक चाहते हैं।

आदर्य *वि.* (तत्.) आदर योग्य, आदरणीय।

आदर्श *पुं.* (तत्.) 1. उत्कृष्टता, परिपूर्णता या सुंदरता आदि का मानदंड 2. अनुकरणीय या उदाहरणस्वरूप किया जाने वाला विचार या कार्य आदि 3. नमूना, प्रतिमान 4. दर्पण, शीशा, आईना।

आदर्श आचार संहिता *स्त्री.* (तत्.) दे. आचार संहिता।

आदर्शक *वि.* (तत्.) 1. दिखाने वाला 2. देखने वाला 3. आदर्श संबंधी *पुं.* आईना, दर्पण, शीशा, आरसी।

आदर्शकोश *पुं.* (तत्.) ऐसा कोश, जिसमें शब्दों की मानक वर्तनी, उनका मानक उच्चारण, शुद्ध प्रयोग, व्युत्पत्ति, आर्थी तत्व आदि की जानकारी दी गई हो।

आदर्श गैस *स्त्री.* (तत्.) भौ. जिसे गैस नियमों के अनुसार गैस माना जा सकता है टि. व्यवहार में कोई भी गैस आदर्श गैस नहीं होती। उच्च ताप और निम्न दाब पर हाइड्रोजन, हीलियम, नाइट्रोजन गैसें लगभग आदर्श गैसें कही जा सकती हैं।

आदर्श-मंदिर *पुं.* (तत्.) 1. शीशे का बना हुआ भवन, शीशमहल 2. ऐसा भवन जिसमें बहुत से शीशे लगे हों।

आदर्श वाक्य *पुं.* (तत्.) मात्र एक वाक्य पर आधारित आदर्श कथन, जिसमें सिद्धांत, नियम, उपदेश आदि निहित हों।

आदर्शवाद *पुं.* (तत्.) वह मत या सिद्धांत जिसके अनुसार प्रत्येक कार्य, वस्तु या लक्ष्य को आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित होना चाहिए विलो. यथार्थवाद।

आदर्शवादी *वि.* (तद्.) व्यावहारिकता या सुकरता की अपेक्षा आदर्शों पर ही दृढ़ता से चलने वाला या आदर्शों को ही जीवन का लक्ष्य मानने वाला व्यक्ति विलो. यथार्थवादी।

आदर्श विलयन *पुं.* (तत्.) रसा. ऐसा विलयन जिसके क्वथनांक या हिमांक का निर्धारण विलयन के अवयवों के अणुओं की संख्या पर निर्भर हो।

आदर्शात्मक *वि.* (तत्.) आदर्शपरक, आदर्शवाद से संबद्ध।

आदर्शित *वि.* (तत्.) प्रदर्शित, दिखलाया हुआ।

आदर्शीकरण *पुं.* (तत्.) 1. किसी कार्य, वस्तु अथवा पदार्थ को आदर्श रूप प्रदान करना 2. उत्तम रूप में प्रस्तुत करना, आदर्श रूप में प्रस्तुत करना।

आदहन *पुं.* (तत्.) 1. ईर्ष्या, जलन 2. निंदा, तिरस्कार 3. घृणा 4. श्मशान 5. लोहे की सलाख (या रसायन) से त्वचा को दागना।

आदात *स्त्री.* (अर.) 'आदत' का बहुचवन 1. अभ्यास, स्वभाव, आदतें 2. तौर-तरीके।

आदातशब्दावली *स्त्री.* (तद्.) कोश. ऐसे शब्द, जो स्रोत भाषा अथवा सगोत्रीय भाषाओं के न हों, अपितु अन्य भाषाओं से आ गए हों, आगत शब्द।

आदाता *वि.* (तत्.) 1. (किसी राशि या वस्तु को) लेने वाला, पाने वाला, प्राप्तिकर्ता 2. वह व्यक्ति या अधिकारी जिसे झगड़े में पड़ी किसी संपत्ति या दिवालिया घोषित संस्था की देख-रेख और प्रबंधन के लिए न्यायालय द्वारा नियुक्त किया जाता है। receiver

आदान *पुं.* (तत्.) 1. लेना, ग्रहण करना, प्राप्त करना 2. बाँधना 3. रोग में उत्पन्न लक्षण।

आदान अधिकारी *पुं.* (तत्.) दे. आहरण अधिकारी।

आदान-प्रदान *पुं.* (तत्.) 1. लेना-देना 2. अदला-बदली, विनिमय 3. विचार-विनिमय।

आदाब *पुं.* (अर.) 1. ('अदब' का बहुवचन) अदब, कायदा, शिष्टाचार 2. नमस्कार, सलाम, प्रणाम 3. तहज़ीव मुहा. आदाब अर्ज़ करना- प्रणाम करना।

आदाब बजाना *पुं.* (अर.) विनयपूर्वक अभिवादन करना।

आदाय *पुं.* (तत्.) लेने या पाने की क्रिया।

आदायी *पुं.* (तत्.) लेने वाला, पाने वाला विलो. प्रदायी

आदि *वि.* (तत्.) 1. पहला 2. आरंभिक, शुरुआती *पुं.* (तत्.) 1. बुनियाद, आरंभ, उद्गम 2. परमात्मा, परमेश्वर विलो. अंत *अव्य.* (तत्.) वगैरह।

आदि-अंत *पुं.* (तत्.) 1. आरंभ और समाप्ति 2. आरंभ से समाप्ति तक का सब कुछ, आद्योपांत।

आद्योपांत।

आदिक *अव्य.* (तत्.) आदि, इत्यादि, वगैरह।

आदिकरण *पुं.* (तत्.) [आदि+करण] मूल कारण, उपादान कारण, किसी उत्पति, स्थिति अथवा परिस्थिति का आधारभूत कारण।

आदिकर्ता *वि.* (तत्.) सर्वप्रथम (सृष्टि-निर्माण) कर्ता, स्रष्टा, ब्रह्मा।

आदिकवि *पुं.* (तत्.) 1. पहला कवि, वाल्मीकि ऋषि 2. शुक्राचार्य।

आदिकांड *पुं.* (तत्.) (आदि+कांड) रचना का पहला कांड, 'बालकांड' रामायण तथा रामचरित मानस दोनो का आदिकांड है।

आदिकाल *पुं.* (तत्.) प्रारंभिक काल या समय।

आदिकालीन *वि.* (तत्.) आदि काल से संबंध रखने वाला।

आदिकाव्य *पुं.* (तत्.) सर्व-प्रथम रचित काव्य, वाल्मीकीय रामायण।

आदितेय *पुं.* (तत्.) 1. अदिति का पुत्र 2. देवता 3. सूर्य 4. गणेश।

आदित्य *पुं.* (तत्.) 1. अदिति के पुत्र 2. देवता 3. सूर्य 4. इंद्र 5. वामन 6. मदार का पौधा।

आदित्यकेतु *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य के सारथी का नाम, अरुण 2. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम (जिसकी ध्वजा पर सूर्य अंकित था)।

आदित्यमंडल *पुं.* (तत्.) (आदित्य+मंडल) सूर्य के इर्द-गिर्द का प्रभामंडल, सूर्य के तेज का मंडल।

आदित्यवार *स्त्री.* (तत्.) [आदित्य+वार] रविवार, इतवार।

आदित्यव्रत *पुं.* (तत्.) [आदित्य+व्रत] आश्विन मास से प्रारंभ प्रत्येक रविवार का व्रत, जिसमें सूर्य देवता की पूजा की जाती है।

आदिदेव *पुं.* (तत्.) 1. (सर्वप्रथम देवता)ब्रह्मा 2. विष्णु, नारायण 3. शिव 4. गणेश।

आदिदैत्य *पुं.* (तत्.) हिरण्य-कशिपु।

आदिनाथ *पुं.* (तत्.) 1. प्रथम जैन तीर्थंकर 2. इस नाम वाला जैन तीर्थस्थल।

आदिनिहित *स्त्री.* (तत्.) (आदि+निहित) भाषा. शब्द के प्रारंभ में एक ऐसे स्वर का उच्चारण, जो वहाँ पर विद्यमान ही न हो, जैसे 'स्थान' शब्द के लिए 'अस्थान' अथवा 'इस्थान' का उच्चारण।

आदिनूतन युग *पुं.* (तत्.) नृवि.,पुरातत्व. नूतन जीवी महाकल्प के तृतीय कल्प का युग जो साढ़े पाँच करोड़ वर्ष से लेकर तीन करोड़ अस्सी लाख वर्ष पूर्व तक रहा। इस युग में आदि स्तनपोषी जीव विकसित हुए।

आदिपर्व *पुं.* (तत्.) महाभारत का पहला सर्ग।

आदिपर्वत *पुं.* (तत्.) सुमेरु पर्वत।

आदि पाषाण युग *पुं.* (तत्.) [आदि+पाषाण+युग] प्राचीनतम पाषाण काल, मानव विकास का प्राचीनतम काल।

आदिपाषाण युगीन *पुं.* (तत्.) (आदि+पाषाण+युगीन) प्राचीनतम पाषाण काल का, मानव विकास के प्राचीनतम काल का।

आदिपुराण *पुं.* (तत्.) ब्रह्मपुराण।

आदिपुरुष *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु, नारायण 2. किसी वंश का मूल पुरुष 3. हिरण्य कशिपु।

आदिप्रारूप *पुं.* (तत्.) 1. इंजी. वह मूल मॉडल जिसके आधार पर किसी यंत्र, उपकरण आदि का नियमित निर्माण किया जाता है 2. समा. किसी प्रारूप की मूलभूत विशेषताओं का मूल प्रतिनिधि।

आदिम *वि.* (तत्.) 1. पहले का, प्रथम, आदिकालीन 2. पुरातन 3. मौलिक।

आदिम जाति *स्त्री.* (तत्.) किसी भौगोलिक स्थान के मूल निवासियों का कबीला नृवि. दे. 'जनजाति'।

आदिमनिवासी *पुं.* (तत्.) [आदिम+निवासी] वे लोग जो किसी स्थान पर, सब से पहले निवास के लिए आते हैं, आदिवासी।

आदिममानव *पुं.* (तत्.) [आदिम+मानव] 1. स्थापित इतिहास से पूर्व का मानव, प्रागैतिहासिक मानव, अति प्राचीन मानव 2. सभ्यता के उदय से पूर्व का मनुष्य।

आदिमवृत्तियाँ *पुं.* (तत्.) [आदिम+वृत्तियाँ] 1. आहार, निद्रा, भय और मैथुन की मूलभूत प्रवृत्तियाँ 2. ऐसी वृत्तियाँ जो सभी मानव बिना सिखाए, स्वभाव से ही स्वयं सीख लेते हैं।

आदिरस *पुं.* (तत्.) [आदि+रस] काव्यात्मक आनंद के प्रेरक तत्व के रूप में प्रथम रस, अर्थात् शृंगार रस।

आदिराज *पुं.* (तत्.) 1. मनु 2. पृथु।

आदिरूप *पुं.* (तत्.) रोग का प्रथम स्वरूप या लक्षण।

आदिल *वि.* (अर.) सदा न्याय करने वाला, न्यायशील, न्यायी।

आदिलघु *पुं.* (तत्.) [आदि+लघु] छंद शास्त्र में वह वह गण, जिसका प्रथम वर्ण लघु तथा शेष दोनों वर्ण गुरु हैं, यगण।

आदिवराह *पुं.* (तत्.) प्रथम वराहरूप, विष्णु।

आदिवासी *पुं.* (तत्.) 1. किसी देश या प्रदेश के मूल निवासी। 2. जंगल आदि पिछड़े प्रदेशों के मूलतः निवासी प्रयो. अंडमान निकोबार के कई द्वीपों में अभी भी कई आदिवासी रहते हैं।

आदिशक्ति *स्त्री.* (तत्.) [आदि+शक्ति] 1. विश्व का सृजन, पालन और संहार करने वाली महाशक्ति 2. ब्रह्म शक्ति 3. पार्वती, दुर्गा, महाकाली।

आदिष्ट *वि.* (तत्.) 1. जिस के संबंध में आदेश दिया गया हो 2. जिसको आदेश दिया गया हो।

आदिष्ट चेक *पुं.* (तत्.+अं.) वाणिज्य ऐसा चेक, जिसकी राशि उस में निर्दिष्ट पक्ष को या उस के आदेशिती को देय हो। order cheque

आदी *वि.* (अर.) आदतवाला, अभ्यस्त प्रयो. नशा करने वाला, बाद में उसका आदी हो जाता है। *स्त्री.* (तद्.) अदरक।

आदीपन *पुं.* (अर.) [आदी+पन] किसी बात, वस्तु, कार्य आदि का आदी हो जाना, किसी विशेष प्रकार की आदत पड़ना, लत लगना *पुं.* (तत्.) 1. दीपक जलाना 2. आग जलाना 3. उत्तेजित करना, भड़काना 4. मकान को साफ-सुथरा करना।

आदीपित *वि.* (तत्.) 1. प्रज्वलित, जलता हुआ 2. प्रकाशित।

आदू *पुं.* (फा.) हिरण, मृग।

आदृत *वि.* (तत्.) 1. (आधिकारिक) आज्ञा, हुक्म 2. हिदायत, सलाह, निर्देश, स्वीकृति, अनुमति 3. नियम 4. व्या. एक अक्षर के स्थान पर दूसरे अक्षर का आना 5. ज्यो. ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति का फल, भविष्यकथन *वि.* (तत्.) जिसका आदर किया गया हो, सम्मानित।

आदेय *वि.* (तत्.) 1. प्राप्त करने योग्य, जिस वस्तु को प्राप्त करना हो 2. जिस पर शुल्क आदि लिया जा सके 3. जिस पर शुल्क, कर आदि लगाया जा सके।

आदेशक *वि.* (तत्.) आदेश करने वाला, आज्ञा करने वाला।

आदेशन *पुं.* (तत्.) आज्ञा देने की क्रिया, आदेश करना।

आदेशदेय चेक *पुं.* (तत्.+अं.) ऐसा चेक जिसकी धन राशि उसमें निर्दिष्ट पक्ष को या उसके आदेशिती को देय होती है, आदिष्ट चेक।

आदेशात्मक *वि.* (तत्.) आदेश के रूप में होने वाला, आज्ञा के रूप में होने वाला, आदेश पूर्ण, आज्ञात्मक।

आदेशानुसार *वि.* (तत्.) [आदेश+अनुसार] आदेश अथवा आज्ञा के अनुसार, हुक्म के मुताबिक।

आदेशिक *स्त्री.* (तत्.) किसी वाद या मामले के संबंध में न्यायालय द्वारा पेशी हेतु प्रेषित समन समन या आदेश।

आदेशिती *पुं.* (तत्.) आदिष्ट चेक आदि के लिए निर्दिष्ट पक्ष, वह जिसे भुगतान किए जाने का आदेश, बैंक को दिया गया हो।

आदेशी *पुं.* (तत्.) आदेश निकालने वाला व्यक्ति, आज्ञा प्रदायक।

आदेष्टा *वि.* (तत्.) आदेशक, आदेश देने वाला, आज्ञा देने वाला।

आदौ *क्रि.वि.* (तत्.) आदि में, शुरू में, पहले।

आद्यंत *क्रि.वि.* (तत्.) [आदि+अंत] आदि से अंत तक, शुरू से आखिर तक *पुं.* किसी विषय, बात आदि का प्रारम्भ और अंत।

आद्य *वि.* (तत्.) 1. पहला, प्रथम 2. आरंभिक।

आद्यक्षर *पुं.* (तत्.) (आदि+अक्षर) किसी व्यक्ति के के नाम में आए शब्दों के प्रारंभिक अक्षरों से निर्मित संक्षिप्त हस्ताक्षर। initials

आद्य अहम् *पुं.* (तत्.) मनो. मनुष्य के अवचेतन मन में, प्राचीनतम काल की स्मृतियाँ, जो स्वप्नों में अथवा मानसिक रोगों के लक्षणों या अचेतन आवेगों में प्रकट होती हैं।

आद्य इतिहास *पुं.* (तत्.) प्रागैतिहासिक काल तथा तथा ऐतिहासिक काल के बीच की कड़ी।

आद्यक्षरित *वि.* (आदि+अक्षरित) (तत्.) आद्यक्षरों से से हस्ताक्षरित।

आद्यप्ररूप *पुं.* (तत्.) (आद्य+प्ररूप) पाश्चात्य दर्शन के के आधार पर, दृश्य जगत की अस्तित्वशील वस्तुएँ, अतींद्रिय जगत के मूल प्रत्ययों का अनुकरण है, यही मूल प्रत्यय आद्यप्ररूप कहलाते हैं, मनोवैज्ञानिकों के मतानुसार आस्थाओं और संस्कारों का अचेतन आदिम रूप आद्यप्रारूप है।

आद्या *पुं.* (तत्.) 1. प्रथम (शक्ति), प्रधान (शक्ति) 2. दुर्गा।

आद्योपांत *क्रि.वि.* [आद् य+उपांत] (तत्.) शुरू से आखिर तक आदि से अंत तक प्रयो. मैंने यह पुस्तक आद्योपांत पढ़ ली है।

आध *वि.* (तद्.) दे. आधा।

आधमर्ण्य *पुं.* (तत्.) अधमर्ण अर्थात् कर्जदार होने की स्थिति, कर्जदारी, ऋणग्रस्तता।

आधवन *पुं.* (तत्.) हिलाना, कँपाना, क्षुब्ध करना।

आधा *वि.* (तद्.) किसी वस्तु के दो बराबर भागों में से एक भाग।

आधा-आधा *वि.* (तद्.) दो बराबर भागों में विभक्त, कार्य अथवा पदार्थ के दो, यथा संभव, समान भाग।

आधाता *पुं.* (तत्.) गिरवी रखने वाला, बंधक रखने वाला, बंधककर्ता।

आधा-तीहा *वि.* (देश.) 1. लगभग आधा या तिहाई 2. बहुत थोड़ा।

आधात्री *स्त्री.* (तत्.) 1. इंजी. वह ढाँचा जिसमें कोई वस्तु ढलती है 2. (i) वह वातावरण जिसमें कोई वस्तु विकसित होती है (ii) गर्भाशय 3. भू.वि. वह चट्टान या शिला जिसमें रत्न या जीवाश्म पाया जाता है।

आधान *पुं.* (तत्.) 1. रखना, स्थापित करना 2. भीतर डालना 3. (गर्भ) स्थापन 4. गिरवी, बंधक, अमानत, धरोहर, निक्षेप 5. समीपता 6. पात्र, डिब्बा आदि।

आधानवती *वि.* (तत्.) [आधान+वती] गर्भवती, गर्भिणी।

आधानिक *पुं.* (तत्.) गर्भाधान के लिए किया जाने वाला संस्कार।

आधा-परधा *पुं.* (देश.) 1. आधा भाग 2. थोड़ा-थोड़ा, मात्रा की अभिव्यक्ति।

आधायक *वि.* (तत्.) 1. आधाता, गिरवी रखने वाला 2. अंतःस्थापक जैसे- 'आधायक वाक्य' 3. धारण करने वाला, प्रस्तुत करने वाला जैसे- अलंकार काव्य का उत्कर्षाधायक तत्व है।

आधार *पुं.* (तत्.) 1. आश्रय, सहारा 2. नींव, बुनियाद, जिस पर दूसरी वस्तु टिकी हो 3. व्या. अधिकरण कारक 4. योग. मूलाधार चक्र 5. थाली, पात्र 6. सहायता, संरक्षण 7. गणि. एक से बड़ी वह वास्तविक संख्या जिसका प्रयोग स्थानात्मक पद् धति में वास्तविक संख्याओं को निरूपित करने में किया जाता है।

आधार-अवधि *स्त्री.* (तत्.) अर्थ. वह काल खंड जिसके आधार पर सूचकांक की गणना की जाती है।

आधार-आधेय-संबंध *पुं.* (तत्.) जीव. दो वस्तुओं का ऐसा संबंध, जिसमें एक वस्तु आधार और दूसरी उस पर आश्रित होती है, आश्रय/आश्रयी संबंध। ।

आधारक *पुं.* (तत्.) 1. किसी ढाँचे का आधार 2. नींव।

आधारकोण *पुं.* (तत्.) ज्या. त्रिभुज के आधार के दोनों सिरों पर बने कोण।

आधारण *पुं.* (तत्.) 1. धारण करने की क्रिया या भाव 2. किसी विषय, वस्तु या बात को अपने ऊपर ओढ़ना 3. सहारा देना।

आधार-तल *पुं.* (तत्.) निर्माण कार्य में जमीन से 2-3 फुट नीचे का, वह निर्माण जिस पर भवन की दीवारें टिकती हैं, नींव, बुनियाद।

आधार-निक्षेप *पुं.* (तत्.) पुरातत्व उत्खनन के समय, किसी भवन के बीच में से मिले दैनिक उपयोग की वस्तुओं के अवशेष।

आधारबीज *पुं.* (तत्.) प्रजनन प्रक्रिया से विकसित ऐसा बीज, जिसमें आनुवंशिक, विशिष्टता और शुद्धता बनी है। foundation seed

आधारभूत *पुं.* (तत्.) [आधार+भूत] जो आधार के रूप में स्थित हो, मूलभूत।

आधारभूत शब्दावली *स्त्री.* (तत्.) दे. मूलशब्द-भंडार।

आधार-रूप *पुं.* (तत्.) शब्द का वह रूप जिस से उस शब्द के अन्य रूप व्युत्पन्न हों, मूल रूप।

आधार रेखा *स्त्री.* (तत्.) दे. सीमांत रेखा।

आधार-वर्ष *पुं.* (तत्.) 1. वह साल (प्रायः वित्तीय वर्ष) जिसे आधार मान कर आगे की गणना की जाए 2. विभिन्न वर्षों से संबंधित आँकड़ों की परस्पर तुलना हेतु अपनाया गया वह वर्ष जिसका मान 100 स्वीकार कर लिया जाता है उदा. यदि 1996 आधार वर्ष है और उसका मान 100 है तो 2000 में 50 प्रतिशत मान स्तर की वृद्धि होने पर 2000 का सूचकांक 150 होगा। base year

आधार-वाक्य *पुं.* (तत्.) दे. मूल वाक्य।

आधार-शक्ति *स्त्री.* (तत्.) सृष्टि की रचना करने वाली मूल शक्ति, प्रकृति, माया, जिस पर अन्य शक्तियाँ आधारित हों।

आधार-शिला *स्त्री.* (तत्.) [आधार+शिला] भवन निर्माण में, प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा नींव के रूप रूप में रखा गया पत्थर, ऐसे पत्थर पर प्रायः पत्थर रखने वाले का नाम, पद आदि उत्कीर्ण किया जाता है। नींव का पत्थर, संग-ए-बुनियाद।

आधार-शिविर *पुं.* (तत्.) सै.वि. 1. किसी अभियान (जैसे सैनिक अभियान, पर्वतारोहण अभियान) का संचालन-शिविर, जहाँ से अभियानकर्ताओं को आवश्यक सामग्री की आपूर्ति की जाती है base camp 2. युद्ध क्षेत्र से कुछ दूरी पर बना रसद-सामग्री और अस्त्र-शस्त्र का आगार या भंडार।

आधार शैल *पुं.* (तत्.) भूवि. बजरी, बालुका, मिट्टी आदि के नीचे का ठोस शैल, जिसके ऊपर अन्य जलोढ द्रव्य स्थित हो सकते हैं bed rock

आधार सामग्री *स्त्री.* (तत्.) अध्ययन, विश्लेषण का आधार बनने वाले तथ्य और आँकड़े। data

आधार स्तंभ *पुं.* (तत्.) 1. छत आदि का बोझ सँभालने वाला स्तंभ अर्थात खंभा 2. किसी वस्तु अथवा कार्य का मुख्य आधार 3. किसी संस्था अथवा व्यवस्था का प्रमुख व्यक्ति।

आधाराधेयभाव *पुं.* (तत्.) [आधार+आधेय+भाव] आश्रित आश्रयदाता का भाव, आधार-आधेय संबंध का भाव।

आधारिक *वि.* (तत्.) जो आधार का काम दे, आधारसंबंधी, आधारस्वरूप, आधारभूत।

आधारित *वि.* (तत्.) दे. आधृत।

आधारी *वि.* (तत्.) 1. आधारिक 2. किसी अन्य के सहारे पर रहने वाला, आश्रित।

आधारी वेतन *पुं.* (तत्.) दे. मूलवेतन।

आधा साझा *पुं.* (तद्.+देश) बराबर का हिस्सा, बराबर की साझेदारी, बराबर का अंशदान।

आधासीसी *स्त्री.* (तद्.) अधकपाली, आधे सिर का दर्द, सूर्यावर्त रोग।

आधि *स्त्री.* (तत्.) 1. मानसिक व्यथा, मानसिक रोग 2. चिंता 3. विपत्ति 4. धरोहर, बंधक। विलो. व्याधि।

आधिक *वि.* (तद्.) 1. आधा 2. आधे के लगभग *क्रि.वि.* 1. लगभग आधा 2. किंचित्।

आधिकरणिक *पुं.* (तत्.) अधिकरण संबंधी, व्या. अधिकरण कारक से संबंधित *पुं.* न्यायाधीश।

आधिकर्ता *वि.* (तत्.) 1. साधिकार, अधिकार-पूर्वक 2. शासन या किसी अधिकारी द्वारा लिखित, व्यक्त या जारी किया गया 3. प्रामाणिक *पुं.* (तत्.) मूल (कथावस्तु)।

आधिकारिक *पुं.* (तत्.) 1. न्यायाधीश 2. सरकारी अधिकारी, अधिकरण का कर्मचारी या अधिकारी।

आधिकारिक कथावस्तु *स्त्री.* (तत्.) नाटक अथवा अन्य काव्यकृतियों में नायक अथवा मुख्य पात्र से संबंधित कथा, मूल कथा वस्तु।

आधिकारिक जानकारी *स्त्री.* (तत्.+तद्) किसी अधिकारी द्वारा संपुष्ट जानकारी, प्रामाणिक जानकारी।

आधिकोषिक *पुं.* (तत्.) 1. बैंककर्मी, महाजन 2. कोषकर्मी *वि.* (तत्.) बैंक या कोष-संबंधी।

आधिक्यक *पुं.* (तत्.) बहुतायत, अधिकता।

आधिक्य का बजट *पुं.* (तत्.+अं.) बचत का बजट, सरकार द्वारा (विशेषतः मुद्रा स्फीति के काल में) सरकारी आय को व्यय की तुलना में अधिक दिखाने वाला बजट surplus budget विलो. घाटे का बजट।

आधिग्राही *पुं.* (तत्.) अधिग्रह (जमानत या धरोहर) की वस्तु रखने वाला।

आधिदैविक *वि.* (तत्.) 1. देवताओं से संबद्ध 2. देवताकृत या भूतप्रेतकृत 3. दैव या भाग्य से प्रेरित 4. प्रकृतिजन्य।

आधिदैविक ताप *पुं.* (तत्.) दैवकृत अर्थात् देवी आदि से पीड़ित होना, मानवेतर शक्तियों द्वारा अथवा प्रकृति द्वारा उत्पन्न कष्ट आदि।

आधिपत्य *पुं.* (तत्.) स्थिति, वातावरण अथवा व्यवस्था का पूरी तरह से नियंत्रण में होने का भाव, स्वामित्व, अधिकृत।

आधिभौतिक *पुं.* (तत्.) (आधि+भौतिक) 1. पंच महाभूतों से संबद्ध अथवा उत्पन्न, मनुष्य, सिंह, सर्प आदि प्राणियों से उद्भूत अथवा अन्य भौतिक पदार्थों द्वारा कृत।

आधिभौतिक दुःख *पुं.* (तत्.)(आधि+भौतिक दुःख) विभिन्न प्राणियों, जातियों अथवा भौतिक पदार्थों से उत्पन्न दुःख।

आधिभौतिक शरीर *पुं.* (तत्.) पंच महाभूतों (पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) द्वारा निर्मित शरीर।

आधिमन्यु *पुं.* (तत्.) बुखार की गर्मी।

आधिमोचन *पुं.* (तत्.) गिरवी या बंधक छुड़ाना।

आधिराज्य *पुं.* (तत्.) 1. अधिराजत्व, सब पर प्रभुत्व 2. सर्वोपरि राजकीय आधिपत्य।

आधिवेतनिक *पुं.* (तत्.) दूसरा विवाह करने पर पहली स्त्री को दिया जाने वाला धन।

आधि-व्याधि *स्त्री.* (तत्.) मानसिक अथवा शारीरिक पीड़ा अथवा रोग।

आधी *वि.* (तद्.) जो पूर्ण न हो, एक इकाई का आधा भाग, अर्द्ध।

आधी ढोली *स्त्री.* (देश.) पान के पत्ते।

आधीन *वि.* (तत्.) 1. जो स्वतंत्र न हो, आश्रित, मातहत 2. वशीभूत, जिसको वश में किया गया हो 3. विवश, लाचार 4. अवलंबित 5. अधिकारी के नीचे काम करने वाला।

आधुनिक *वि.* (तत्.) अधुना या इस समय का, आजकल का, नए जमाने का, वर्तमान समय का अर्थात् जो प्राचीन या मध्यकालीन नहीं है।

आधुनिकतम *वि.* (तत्.) सर्वाधिक आधुनिक, नवीनतम, अद्यतन।

आधुनिकता *स्त्री.* (तत्.) आधुनिक या वर्तमान समय के होने की स्थिति, प्रवृत्ति या भाव, अर्थात् निरंतर गतिशील परंपरा-परिवर्तन के क्रम में वर्तमान समय का होने की स्थिति।

आधुनिकता बोध *पुं.* (तत्.) 1. यथार्थ के प्रति भावुकता रहित एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण और उसके अनुसार आचरण का भाव 2. आधुनिकता के तत्वों का सम्यक् ज्ञान।

आधुनिक बीजगणित *पुं.* (तत्.) बीजगणित की वह शाखा जिसमें समूह, क्षेत्र, वलय, सदिश समष्टि आदि आधुनिक बीजीयतंत्रों का अध्ययन किया जाता है।

आधुनिक शिक्षा *स्त्री.* (तत्.) आधुनिक तकनीकों और पद्धतियों पर आधारित शिक्षण-व्यवस्था।

आधुनिक संगीत *पुं.* (तत्.) 1. द्रुत सुर-ताल का संगीत, पाश्चात्य लोकप्रिय संगीत से प्रभावित संगीत, शास्त्रीय संगीत से इतर 2. मिश्रित सुर-ताल पर आधारित संगीत। fusion music

आधुनिका *स्त्री.* (तत्.) नए जमाने के आचार-विचार-व्यवहार का अनुसरण करने वाली महिला।

आधुनिकीकरण *पुं.* (तत्.) 1. आधुनिक स्थितियों के अनुकूल बनाना या बनना 2. परंपरागत रूपों के स्थान पर वर्तमान और नूतन रूपों को अपनाने की प्रक्रिया।

आधूत *वि.* (तत्.) 1. काँपता हुआ 2. क्षुब्ध 3. पागल जैसा 4. व्याकुल।

आधूम *वि.* (तत्.) धुएँ के रंगवाला।

आधूमित *वि.* (तत्.) धुएँ से ढका हुआ, धूमयुक्त, धूम्र।

आधृत *वि.* (तत्.) किसी आधार पर टिका हुआ, अवलंबित।

आधेय *पुं.* (तत्.) 1. किसी सहारे पर टिकी हुई वस्तु 2. स्थापित करने के योग्य 3. गिरवी रखने योग्य 4. किसी आधार पर रखने की क्रिया।

आध्मान *पुं.* (तत्.) 1. धौंकनी से धौंकने की क्रिया 2. विस्फारण 3. पेट का फूलना 4. जलंधर या जलोदर रोग 5. शेखी, डींग।

आध्यात्मिक *वि.* (तत्.) 1. अध्यात्म-संबंधी 2. आत्मा-परमात्मा संबंधी 3. राग-द्वेष से रहित (जीवन) 4. अध्यात्म की चर्चा से युक्त (प्रवचन, पुस्तक आदि)।

आध्यात्मिक ताप *पुं.* (तत्.) आधिजन्य अथवा मनोमूलक काम-क्रोध आदि से उत्पन्न दुःख।

आध्यान *पुं.* (तत्.) 1. चिंतन-मनन 2. चिंता 3. दुःखपूर्ण स्थिति।

आध्यायिक *वि.* (तत्.) वेदाध्ययन से संबंध रखने वाला।

आध्यासिक *पुं.* (तत्.) मिथ्या ज्ञान से उत्पन्न, भ्रम पूर्ण 2. कपोल-कल्पित 3. यथार्थता से रहित।

आध्यासिकी *वि.* (तत्.) ऐसी प्रतीति जिस का आधार मिथ्या ज्ञान हो।

आनंतर्य *पुं.* (तत्.) अनंतरता, निरंतरता, व्यवधान-रहितता।

आनंत्य *पुं.* (तत्.) 1. अनंतता 2. अमरत्व।

आनंद *पुं.* (तत्.) 1. प्रसन्नता, सुख, हर्ष, खुशी 2. प्रसन्नता की चरम अवस्था 3. शराब, मदिरा 4. बुद्ध के एक प्रधान शिष्य का नाम 5. ईश्वर, ईश्वर, ब्रह्मा, शिव, विष्णु 6. ज्यो. 48वाँ संवत्सर।

आनंदकंद *वि.* (तत्.) 1. आनंद की वर्षा करने वाले बादल के समान 2. श्रीकृष्ण का गुण, परमात्मा का गुण *पुं.* 1. श्री कृष्ण 2. परमात्मा 3. घनीभूत आनन्द।

आनंदक *वि.* (तत्.) आनंद प्रदान करने वाला।

आनंदकर *पुं.* (तत्.) 1. आनंद प्रदान करने वाला 2. चंद्रमा।

आनंदकानन *पुं.* (तत्.) काशी, वाराणसी।

आनंदघन *वि.* (तत्.) आनंद से भरा हुआ *पुं.* (तत्.) 1. श्री कृष्ण 2. घनानंद कवि।

आनंदज *वि.* (तत्.) हर्ष के कारण उत्पन्न (अश्रु, आदि)।

आनंदन *वि.* (तत्.) 1. आनंदप्रद 2. *पुं.* (तत्) आनंदित करना 3. अभिवादन करना।

आनंदपूर्ण *वि.* (तत्.) अत्यधिक प्रसन्न, आनंदमय, हर्षपूर्ण।

आनंद बधाई *स्त्री.* (तद्.) मांगलिक अवसरों पर प्रेषित की जाने वाली शुभकामनाएँ, अथवा बधाइयाँ।

आनंद-बधावा *पुं.* (तत्.+तद्.) मांगलिक अवसरों पर दी जाने वाली शुभ कामनाएँ, उक्त शुभ कामनाएँ, प्राय: लोक गीतों द्वारा प्रस्तुत की जाती हैं।

आनंद-भैरव *वि.* (तत्.) आयु. ज्वरादि की चिकित्सा में प्रयुक्त एक रस (औषधि विशेष)।

आनंदमंगल *पुं.* (तत्.) सुखचैन।

आनंदमग्न *वि.* (तत्.) प्रसन्नता में डूबा हुआ, आनंद से भरा हुआ।

आनंदमय *वि.* (तत्.) [आनंद+मय] आनंद से पूर्ण, आनंद से सरोबार।

आनंदमय कोश *पुं.* (तत्.) जीवात्मा को आवृत करने वाले पंचकोशों में से अंतिम जो मूलप्रकृति से निर्मित है और जिसमें प्रीति, प्रसन्नता, आनंद की दिव्य अनुभूति होती है।

आनंदमयी *वि.* (तद्.) [आनंद+मयी] आनंद से ओत-प्रोत, आनंदित, उत्साहित, प्रफुल्ल।

आनंदमत्ता *वि.* (तत्.) [आनंद+मत्ता] आनंद में मदमस्त, आनंद में मस्त, आनंद में उन्मत्त *स्त्री.* 1. आनंद में मस्त स्त्री 2. संभोग के आनंद में डूबी होने के कारण मुग्ध हुई प्रौढ़ा नायिका।

आनंदयिता *वि.* (तत्.) आनंदित करने वाला।

आनंदराशि *स्त्री.* (तत्.) [आनंद+राशि] ढेर सारा आनंद, अत्यधिक आनंद।

आनंदवर्धन *वि.* (तत्.) [आनंद+वर्धन] आनंद बढ़ाने वाला, आनंद में वृद्धि करने वाला।

आनंदवाद *पुं.* (तत्.) आनंद को जीवन का मुख्य लक्ष्य मानने का सिद्धांत।

आनंदवादी *वि.* (तद्.) आनंद की अधिकता, बहुत आनंद, आनंद का अतिरेक।

आनंदा *स्त्री.* (तत्.) भाँग, विजया।

आनंददायक *पुं.* (तत्.) [आनंद+दायक] आनंद प्रदान करने वाला, विषाद दूर करने वाला।

आनंदाश्रु *वि.* (तद्.) [आनंद+अश्रु] अत्यधिक आनंद के कारण आँखों से गिरने वाले आँसू, खुशी के आँसू।

आनंदाभिभूत *वि.* (तत्.) आनंद से परिपूर्ण, आनंद में डूबा हुआ प्रयो. सदस्यों द्वारा की जा रही सराहना को सुनकर अध्यक्ष महोदय आनंदाभिभूत हो गए।

आनंदित *वि.* (तत्.) हर्षित, मुदित, सुखी।

आनंदी *वि.* (तत्.) आनंदयुक्त, आनंदित रहने वाला (स्वभाव) *स्त्री.* (तत्.) एक वृक्ष-विशेष।

आन[1] *स्त्री.* (तत्.) 1. गौरव, गर्व, मर्यादा 2. अकड़, ऐंठ 3. शपथ, सौगंध 4. ठसक 5. अदब, लिहाज 6. विजयघोष 7. लज्जा, शर्म, हया 8. शंका 9. डर, भय 10 प्रतिज्ञा, प्रण 11. हठ प्रयो. सच्चा राजपूत अपनी आन पर मर मिटता है मुहा. आन रखना- अपनी बात रखना; आन तोड़ना- प्रतिज्ञा भंग करना, हठ छोड़ना; *वि.* (तत्.) दूसरा, अन्य, और लोको. घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध *क्रि.* आकर, उपस्थित होकर प्रयो. पेड़ से पत्ता आन गिरा।

आन[2] *स्त्री.* (देश.) 1. मर्यादा, प्रतिष्ठा, सम्मान 2. परंपरा, प्रतिज्ञा आदि के पालन की दृढ़ भावना 3. प्रतिज्ञा, प्रण, व्रत की भावना का स्मरण कराते हुए दी जाने वाली दुहाई।

आन[3] *पुं.* (देश) भोज्य पदार्थ, अन्न, भात।

आन[4] *अव्य.* (देश.) क्षण भर, पल भर यथा 'आन की आन में झगड़ा शुरू हुआ'।

आनक *पुं.* (तत्.) डंका, दुंदुभि, नगाड़ा, ढोल, भेरी, मृदंग।

आनकदुंदुभि *स्त्री.* (तत्.) [आनक+दुंदुभि] 1. बहुत बहुत बड़ा नगाड़ा 2. श्री कृष्ण के पिता वसुदेव।

ऑन ड्राइव *स्त्री.* (अं.) क्रिकेट के खेल में दाहिने हाथ वाले बल्लेवाज द्वारा गेंदबाज की दाहिनी ओर गेंद को मारना इसी प्रकार बाएँ हाथ वाले बल्लेबाज द्वारा विपरीत दिशा में मारना। on drive

आनत *पुं.* (तत्.) 1. झुका हुआ 2. नम्रता पूर्वक 3. नम्र, विनीत 4. समर्पित *वि.* (तत्.) 1. अत्यंत झुका 2. नम्र, विनीत 3. नमस्कार करने वाला।

आनतान *स्त्री.* (तद्.) दे. आनबान।

आन-तान *स्त्री.* (देश.) 1. आडंबर और सम्मान का मिश्रित भाव, ठसक 2. हठ 3. अभिमान पूर्ण व्यवहार 4. बेतुका व्यवहार।

आनति *स्त्री.* (तत्.) 1. झुकाव, नत होना 2. प्रणाम करना, प्रणति 3. सत्कार *स्त्री.* (तद्.) 1. झुकने की मुद्रा, झुकाव, आनत होने की अवस्था या भाव 2. प्रणति, प्रणाम।

आनद्ध *पुं.* (तत्.) 1. बँधा हुआ, कसा हुआ 2. मढ़ा हुआ (जैसे तबला) 3. कोष्ठबद्ध मृदंग तबला आदि बाजे जिन पर चमड़ा मढ़ा हो।

आनन *पुं.* (तत्.) 1. मुख, चेहरा 2. ग्रंथ का खंड, अध्याय।

आनन-फानन *क्रि.वि.* (अर.+फा.) बहुत जल्दी से, अतिशीघ्र, फौरन, झटपट प्रयो. अचानक भारी भीड़ होने से फूलों का बगीचा आनन-फानन में नष्ट हो गया।

आनना *सं.क्रि.* (तद्.) ले आना, प्रस्तुत करना, लाना।

आनबान *स्त्री.* (देश.) 1. शान 2. ठाट-बाट 3. सजधज 4. मर्यादा, प्रतिष्ठा।

आनमित *वि.* (तत्.) झुकाया हुआ, नवाया हुआ।

आनम्य *वि.* (तत्.) जिसे झुकाया जा सके, लचीला।

आनम्यता *स्त्री.* (तत्.) मोड़े जाने या झुकाए जाने जाने का गुणधर्म, मोड़े जाने या झुका दिए जाने पर वापस पूर्ववत् हो जाने का गुणधर्म।

आनयन *पुं.* (तत्.) 1. लाना, पास ले आना 2. उपनयन संस्कार।

आनरेरी *वि.* (अं.) 1. ऐसा कार्य जिस की एवज़ में कोई वेतन न मिलता हो, अवैतनिक, मानसेवी 2. सम्मानार्थक। honorary

आनर्त *पुं.* (तत्.) 1. सौराष्ट्र देश, द्वारका के आसपास का क्षेत्र 2. आनर्त देश का निवासी 3. युद्ध 4. नृत्य 5. नृत्यशाला।

आनर्तक *पुं.* (तत्.) 1. नाचने वाला 2. आनर्त देश का।

ऑन साइड *स्त्री.* (अं.) क्रिकेट बल्लेबाज़ के लिए खेल के मैदान का वह भाग जिस ओर उसकी पीठ रहती है विलो. ऑफ साइड

आना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. किसी दूसरे स्थान से चलकर बोलने वाले के पास पहुंचना 2. जाकर वापस लौटना 3. प्रारंभ होना, शुरू होना जैसे- वसंत के आते ही कोयल कूकने लगती है 4. प्रयो. खाद देने से फसल अच्छी आई है 5. उत्पन्न होना, क्रोध, हँसी, लज्जा, दया आदि का होना जैसे- उसकी मूर्खता पर मुझे क्रोध आ गया 6. स्खलित होना 7. बढ़ना प्रयो. धान कमर तक आ गए हैं 8. समझना, पता होना, ज्ञान होना प्रयो. मुझे यह सवाल आता हैं मुहा. आया-गया होना- खत्म हो जाना; आ धमकना- अचानक आना; आ बनना- अवसर हाथ लगना, घटित होना; आ लगना- किसी ठिकाने पर पहुँचना; टि. रंजक क्रियाओं के योग से अन्य कई प्रकार के प्रयोग हो सकते हैं जैसे- आजाना, आ चुकना, आ लेना, इत्यादि, पर मूल अर्थ वही है *पुं.* 1. पुराने रुपए का सोलहवाँ भाग, (पूर्व प्रचलित) चार पैसे का सिक्का 2. किसी वस्तु का सोलहवाँ अंश मुहा. सोलहों आने- पूर्ण रूप से; जैसे- आपकी बात सोलहों आने सच है।

आनाकानी *स्त्री.* (देश.) 1. टाल-मटोल, ध्यान न देना, अनसुनी करना 2. कानाफूसी 3. धीमी बातचीत।

आना-जाना *पुं.* (तत्.) 1. किसी स्थान पर अक्सर आते और जाते रहना, आवागमन 2. परिचय 3. मेल-जोल का संबंध।

आनाथ्य *पुं.* (तत्.) अनाथ होने की स्थिति, बेसहारा होने की स्थिति, असहाय अवस्था।

आनाह *पुं.* (तत्.) 1. मलावरोध से पेट फूलने का रोग 2. बंधन, बाँधना 3. लंबाई (कपड़े आदि की) 4. विस्तार।

आनि[1] *क्रि.वि* (तद्.) आकर के, आने के बाद (ब्रज बोली प्रयोग) *क्रि.वि.* लाकर, लाने के बाद (ब्रज बोली प्रयोग)

आनि[2] *स्त्री.* (तद्.) आन, मर्यादा, प्रतिष्ठा, सम्मान।

आनि[3] *वि.* (तद्.) 1. दूसरा, अन्य 2. विरल

आनिल *वि.* (तत्.) अनिल (वायु) से संबंधित *पुं.* 1. (वायुपुत्र) हनुमान 2. भीम 3. स्वाति नक्षत्र।

आनी-जानी *स्त्री.* (तद्.) 1. आई और गई, अल्पस्थायी, अस्थिर 2. क्षणभंगुर।

आनीत *पुं.* (तत्.) लाया हुआ, पास लाया हुआ।

आनीति *स्त्री.* (तत्.) आनयन, लाना, पास ले जाना, पास लाए जाने की क्रिया या स्थिति।

आनील *वि.* (तत्.) हलका नीला, लगभग नीला जैसा।

आनु *वि.* (देश.) 1. दूसरा, अन्य, आनि 2. विरल।

आनुकल्पिक *वि.* (तत्.) वैकल्पिक, एक निश्चित उत्तर के अतिरिक्त अन्य उत्तर।

आनुकूलित *वि.* (तत्.) उपस्थित परिस्थितियों के योग्य गुण वाला, उपयुक्त।

आनुकूल्य *पुं.* (तत्.) 1. अनुकूलता 2. कृपालुता।

आनुक्रमिक *वि.* (तत्.) 1. किसी निश्चित क्रम के अनुसार व्यवस्थित 2. विभिन्न श्रेणीक्रमों के अनुसार वर्गीकृत 3. घटती-बढ़ती मात्रा के अनुसार अंशांकित।

आनुगतिक *वि.* (तत्.) 1. किसी अन्य द्वारा किए किए गए कार्य के अनुसार ही कार्य करने वाला 2. पीछे चलनेवाला, अनुयायी।

आनुगत्य *पुं.* (तत्.) 1. किसी अन्य द्वारा किए गए कर्म के अनुसार कार्य करने की स्थिति 2. अनुकरण 3. परिचय 4. घनिष्ठता exgratia

आनुग्रहिक *वि.* (तत्.) 1. प्रशा. अनुग्रह के रूप में 2. रियायती।

आनुतिथ्य *वि.* (तत्.) तिथियों के अनुसार क्रम वाला।

आनुतोषिक *वि.* (तत्.) 1. किसी कार्य के संपन्न होने पर अनुग्रह के रूप में दी गई राशि 2. सेवा निवृत्त होने पर दिया जाने वाला उपादान।

आनुदानिक *वि.* (तत्.) सरकार अथवा अन्य किसी संस्था से वित्तीय सहायता प्राप्त, अनुदान प्राप्त, अनुदान का।

आनुनासिक *वि.* (तत्.) नाक की सहायता से बोला जाने वाला स्वर अथवा व्यंजन, अनुनासिक।

आनुनासिकता *स्त्री.* (तत्.) नाक की सहायता से बोले जाने वाली अवस्था।

आनुनासिक्य *पुं.* (तद्.) अनुनासिकता, नाक की सहायता से बोले जाने वाली अवस्था।

आनुपातिक *वि.* (तत्.) अनुपात के अनुसार।

आनुपातिक प्रतिनिधित्व *पुं.* (तत्.) प्रशा. 1. कोई समिति गठित करते समय उसमें विभिन्न वर्गों की सदस्य संख्या के निश्चित अनुपात के अनुसार प्रतिनिधियों का होना 2. विधान परिषद् के गठन की एक विधि, जिसमें प्रत्येक राजनीतिक दल को नियमानुसार निश्चित अनुपात में अपने प्रतिनिधि नामित करने का अधिकार होता है। proportional representation

आनुपातिक वितरण *पुं.* (तत्.) सही अनुपात में बँटवारा।

आनुपूर्व *पुं.* (तत्.) 1. एक के बाद एक का क्रम 2. वाणी का क्रम, वर्णक्रम।

आनुपूर्वी *स्त्री.* (तत्.) 1. एक के बाद एक का क्रम वाला 2. वर्णों का क्रम, आनुपूर्व।

आनुपूर्वेण *क्रि.वि.* (तत्.) 1. पूर्व के क्रमानुसार, एक के बाद दूसरा फिर तीसरा आदि 2. आरोह अथवा अवरोह क्रम।

आनुभाविक *वि.* (तत्.) अनुभव से प्राप्त होने वाला, लोक व्यवहार पर आधारित, अनुभव मूलक, अनुभव पर आश्रित।

आनुभाविक नियम *पुं.* (तत्.) वह नियम जो किसी सिद्धांत पर आधारित न होकर अनुभवों पर आधारित होता है।

आनुमानिक *वि.* (तत्.) 1. अनुमान के अनुसार, अनुमानतः, अनुमान-संबंधी 2. खयाली, अटकल पर आधारित।

आनुलोमिक *वि.* (तत्.) 1. नियमित, निश्चित क्रम के अनुकूल, क्रमबद्ध 2. उपयुक्त 3. उच्चवर्ग के पुरूष द्वारा अन्यवर्ग की स्त्री के विवाह से उत्पन्न या उससे संबद्ध।

आनुवंशिक *वि.* (तत्.) जीव. वंश के क्रम के अनुसार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जाने वाला (गुण आदि), बंशानुक्रम से genetic

आनुवंशिकता *स्त्री.* (तत्.) जीव. एक पीढ़ी के गुणधर्मों, गुणों, लक्षणों या विशेषकों की दूसरी पीढ़ी में जाने की स्थिति या भाव।

आनुवंशिक वर्गीकरण *पुं.* (तत्.) दे. पारिवारिक वर्गीकरण।

आनुवंशिक विज्ञान *पुं.* (तत्.) दे. आनुवंशिकी।

आनुवंशिक विशेषज्ञ *पुं.* (तत्.) जीव. प्राणियों तथा वनस्पतियों में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जाने वाले, शारीरिक अथवा मानसिक गुण-दोष। वंशानुगत।

आनुवंशिक समूह *पुं.* (तत्.) सामान्य वंशानुक्रम से संबंधित व्यक्तियों का समूह।

आनुवंशिकी *स्त्री.* (तत्.) जीव. विज्ञान की वह शाखा जिसके अंतर्गत जीवों की आनुवंशिकता तथा वंशानुगत परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है। genetic

आनुवर्णिक *वि.* (तत्.) वर्णों के क्रम के अनुसार संकलित।

आनुवेश्य *पुं.* (तत्.) अपने घर से एक घर छोड़कर रहने वाला पड़ोसी, पड़ोसी का पड़ोसी विलो. प्रातिवेश्य।

आनुषंगिक अधिकार *पुं.* (तत्.) किसी मुख्य या महत्त्वपूर्ण अधिकार के साथ ही प्राप्त होने वाला अन्य महत्त्वपूर्ण अधिकार।

आनुषंगिक उक्ति *स्त्री.* (तत्.) प्रसंग के अनुकूल उक्ति, कथ्य के समर्थन में उच्चारित वाक्य अथवा लोकोक्ति।

आनुषंगिक उत्पाद *पुं.* (तत्.)विनिर्माण क्रिया के मूल या मुख्य उत्पाद के साथ ही निर्मित किए जा सकने वाले अन्य उत्पाद।

आनुषंगिक उद्योग *पुं.* (तत्.)किसी प्रमुख उद्योग की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले सहायक उद्योग उदा. कार विनिर्माण उद्योग के लिए कार के विभिन्न पुर्जे बनाने वाले अन्य उद्योग जैसे- शीशें या रबड़ के सामान।

आनुश्रविक *वि.* (तत्.) 1. परंपरा से सुना हुआ, जिसमें लिखित पाठ की कोई भूमिका नहीं होती 2. वेद विहित अथवा वैदिक।

आनुसंधानिक *वि.* (तत्.) अनुसंधान से संबद्ध, खोज-बीन संबंधी।

आनू *स.क्रि.* (देश.) ले जाओ, (ब्रज, अवधी प्रयोग)

आनूप *वि.* (तत्.)1. दलदल वाला, धँसाव वाला, दलदली (भूभाग)। 2. नम 3. दलदली भूमि में उत्पन्न (जल) *पुं.* जल में रहना पंसद करने वाला प्राणी जैसे- भैंस आदि।

आनूपक *वि.* (तत्.)दलदल भूमि (प्रदेश) में रहने वाला।

आनृत *पुं.* (तत्.) हमेशा झूठ बोलने वाला।

आनृशंस *वि.* (तत्.) दयालु, कोमल हृदय वाला

आनृशंस्य *पुं.* (तत्.)1. दयालुता 2. कृपालुता 3. मृदुलता।

आनेता *वि.* (तत्.) लाने वाला।

आनैपुण, आनैपुण्य *वि.* (तत्.) 1. अदक्षता, अकौशल 2. भद्दापन।

आनैश्वर्य *पुं.* (तत्.) ऐश्वर्य या अधिकार का अभाव।

आन्न *पुं.* (तत्.) 1. अन्न या खाद्य संबंधी 2. अन्न से बना हुआ 3. जिसके पास अन्न या खाद्य-सामग्री (प्रस्तुत) हो।

आन्वयिक *पुं.* (तत्.) 1. कुलीन 2. सुव्यवस्थित।

आन्वीक्षिकी *स्त्री.* (तत्.) 1. आत्मविद्या 2. तर्कविद्या, न्याय 3. उचित, क्रमानुसार।

आप *सर्व.* (देश.) 1. तू, तुम (मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम) का आदरार्थक रूप 2. खुद, स्वयं प्रयो. मैं आप चली जाऊँगी, मेरे साथ कोई नहीं जाएगा। *पुं.* (तत्.) 1. ईश्वर, परमात्मा 2. आप्त व्यक्ति 3. जल, पानी 4. जलसमूह, जल-प्रवाह 5. एक वसु 6. प्राप्ति मुहा. आप-आप करना- खुशामद करना; आप-से-आप- स्वयं, खुद-ब-खुद, अपने आप; आप-ही-आप- स्वतः अपने मन से, मन ही मन।

आपई *सर्व.* (देश.) 1. आप ही, स्वयं ही 2. सम्मान पूर्वक आप ही।

आपक *वि.* (तत्.) प्राप्त करने वाला।

आपकाज *पुं.* (तद्.) अपना काम।

आपकाजी *वि.* (तद्.) केवल अपना स्वार्थ देखने वाला, खुदगर्ज।

आपक्व *वि.* (तत्.) जो अच्छी तरह न पका हो, कम पका हुआ।

आपगा *स्त्री.* (तत्.) (आप अर्थात् जल को बहाकर ले जाने वाली) नदी।

आपगेय *पुं.* (तत्.) (नदीपुत्र) भीष्म पितामह।

आपगोपम *वि.* (तत्.) नदी के समान।

आपगोपमा *वि./स्त्री.* (तत्.) आपगोपम, नदी के समान।

आपचारी *वि.* (तत्.) स्वेच्छाचार, अपनी मनोवृत्तियों केअनुसार कार्य करने वाला व्यक्ति, स्वेच्छाचारी।

आपण *पुं.* (तत्.) 1. हाट, बाजार 2. दूकान 3. तहबाजारी।

आपण-विपणि *पुं.* (तद्.) खरीदने और बेचने का कार्य, क्रय-विक्रय, खरीद-फरोख्त।

आपणा *वि.* (देश.) अपना, स्वयं का (आंचलिक प्रयोग)।

आपणिक *वि.* (तत्.) 1. बाजार संबंधी 2. बाजार से प्राप्त *पुं.* 1. बाजार 2. दुकानदार 3. दुकान का कर।

आपतन *पुं.* (तत्.) 1. पहुँचने का कार्य 2. ऊपर से गिरने का कार्य 3. घटित होने का कार्य 4. अचानक मुलाकात का कार्य।

आपतरमणीय *वि.* (तत्.) 1. तात्कालिक सुख-संतोष प्रदान करने वाला 2. देखने में सुंदर प्रतीत होने वाला।

आपत् *स्त्री.* (तत्.) 'आपद्' का समासगत रूप।

आपत्काल *पुं.* (तत्.) 1. विपत्ति, दुष्काल, कुसमय 2. अचानक दुर्घटना के घटने का समय प्रयो. धीरज, धरम, मित्र अरु नारी, आपत्काल परखिये चारी।

आपत्कालिक *वि.* (तत्.) सामान्य दैनिक व्यवस्था की अनुपस्थिति में, असामान्य दैनिक व्यवस्था की उपस्थिति, बुरा समय, ऐसे समय में नागरिकों के मूलाधिकार प्रायः स्थगित किए जाते हैं।

आपत्कृत *वि.* (तत्.) (आपत्+कृत) आपत् स्थिति में किया हुआ, आपात्कालीन समय में किए गए कार्य।

आपत्कृत ऋण *पुं.* (तत्.) आपत्कालीन समय में, स्थिति सुधारने के लिए लिया गया आंतरिक अथवा विदेशी ऋण।

आपत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. उज्र, एतराज, आक्षेप 2. विपत्ति 3. दु:ख, संकट 4. विघ्न 5. कष्ट का समय।

आपत्तिजनक हरकत *स्त्री.* (तत्.+अर.) कोई भी ऐसा काम जो अशिष्ट और सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन करने वाला हो। objectionable conduct

आपत्ति-याचिका *स्त्री.* (तत्.) असंतोष उत्पन्न करने वाले कार्य अथवा आदेश के विरुद्ध, निवेदन का प्रार्थना-पत्र, आपत्ति के विरुद्ध निवेदन की याचिका।

आपत्य *वि.* (तत्.) जिसका संबंध संतान से हो, संतान संबंधी, संतान का।

आपत्व *पुं.* (तत्.) ऊष्मा, ताप, गर्मी, आतपता।

आपदर्थ *पुं.* (तत्.) 1. (वह धन-संपत्ति) जिसको ग्रहण करने में भविष्य में अनिष्ट होने की संभावना हो 2. विपत्तिकाल के लिए।

आपदा *स्त्री.* (तत्.) 1. दु:ख, क्लेश 2. विघ्न 3. विपत्ति, विपदा 4. संकट का समय।

आपदा प्रबंधन *पुं.* (तत्.) विपदा प्रबंधन, बाढ, भूकंप, महामारी आदि से निपटने के लिए अपनाई जाने वाली अविलंब, योजनाबद्ध एवं प्रभावकारी व्यवस्था।

आपद् *स्त्री.* (तत्.) 1. आपत्ति, विपत्ति 2. कष्ट का काल 3. प्राकृतिक प्रकोप।

आपद्गत/आपद्ग्रस्त *वि.* (तत्.) आपदा में फँसा हुआ, विकट स्थिति से ग्रस्त, मक्कड़जाल में फँसा हुआ।

आपद्धर्म *पुं.* (तद्.) आपत्काल का धर्म, वह धर्म जिसका विधान केवल आपत्काल (आत्म रक्षा, आदि) के लिए हो जैसे- किसी की प्राणरक्षा हेतु झूठ बोलना।

आपधाप *स्त्री.* (देश.) दे. आपाधापी।

आपन *सर्व.* (तद्.) अपना, स्वयं।

आपनपौ *पुं.* (तद्.) अपनापन, अपना व्यक्तित्व, अपना स्वत्व।

आपना *वि.* (तद्.) दे. अपना।

आपना/आखना *स.क्रि.* (तत्./तद्) कहना, बताना, बोलना, बताना।

आपनिक *वि.* (तद्.) विशेष प्रकार के बहुमूल्य पत्थर, यथा-नीलम, पन्ना, पुखराज।

आपनिधि *पुं.* (तत्.) [आप+निधि] पानी का पारावार, सागर, समुद्र।

आपनोई *सर्व.* (देश.) जिसका संबंध अपने से हो, अपना ही, निजी।

आपन्न *वि.* (तत्.) 1.त्रस्त, आपदग्रस्त, दु:खी 2. प्राप्त।

आपपति *पुं.* (तत्.) [आप+पति] जल की अपार निधि, सागर, समुद्र।

आपबीती *वि. स्त्री.* (तत्.+तद्.)) घटना जो अपने ऊपर बीत चुकी हो, स्वयं द्वारा अनुभूत (घटना)। (घटना)।

आपराधिक *वि.* (तत्.) 1. जिसका संबंध अपराध से हो 2. जिसको अपराध माना जाए 3. जिसके स्वभाव में अपराध हो।

आपराधिक अतिचार *पुं.* (तत्.) विधि. किसी को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से विधि विरूद्ध किया गया वह कार्य जो अपराध की कोटि में आता है criminal trespass

आपराधिक अभित्रास *पुं.* (तत्.) विधि. किसी को गैरकानूनी ढंग से डराना-धमकाना (जो अपराध की श्रेणी में आ जाए)। criminal intimidation

आपराधिक अभियोजन *पुं.* (तत्.) विधि. किसी अभियुक्त के विरूद्ध अभियोजक पक्ष द्वारा दंड न्यायालय में की गई या की जा रही कार्यवाही criminal prosecution दे. अभियोजन।

आपराधिक आशय *पुं.* (तत्.) किसी अपराध को कार्यान्वित करने का योजनाबद्ध विचार। criminal intent

आपराधिक ज्ञान *पुं.* (तत्.) विधि. ऐसे तथ्यों की जानकारी का होना जिनके कारण किया हुआ

कृत्य अपराध की श्रेणी में आता हो। criminal knowledge

आपराधिक दायित्व *पुं.* (तत्.) विधि. ऐसा दायित्व जो अपराध की श्रेणी में आता हो criminal liability

आपराह्निक *वि.* (तत्.) अपराह्न में या तीसरे पहर होने वाला या किया जाने वाला।

आपरूप *सर्व.* (देश.) स्वयं अपने रूप से युक्त, मूर्तिमान, साक्षात् *पुं.* साक्षात् आप, महापुरुष, हज़रत, खुद की बदौलत।

आपरेटर *पुं.* (अं.) किसी मशीन आदि को चालू करने वाला व्यक्ति, यंत्र संचालन।

आपरेशन (ऑपरेशन) *पुं.* (अं.) आयु. शल्य-चिकित्सा।

आपरेशन थियेटर *पुं.* (अं.) अस्पताल का वह कक्ष, जहाँ रोगियों की चिकित्सा के लिए उनकी शल्य क्रिया की जाती है।

आपवर्ग्य *वि.* (तत्.) अपवर्ग या मोक्ष से संबंध रखने वाला।

आपवादिक परिस्थितियाँ *स्त्री.* (तत्.) 1. सामान्यतः न होकर केवल उपकार के रूप में कभी-कभी होने वाली परिस्थितियाँ 2. विरल स्थितियाँ।

आपस *अव्य.* (देश.) परस्पर संबंध का सूचक शब्द, इस शब्द का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता, परंतु विभक्ति या प्रत्यय जोड़कर सर्वनाम, विशेषण आदि का स्वरूप ले लेता है जैसे- आपस का, आपस में, आपसी आदि।

आपसदारी *स्त्री.* (देश.+फा.) आपसी संबंध, भाईचारा, परस्पर निकट संबंध।

आपसी *वि.* (देश.) आपस का।

आपस्तंब *पुं.* (तत्.) 1. कृष्ण यजुर्वेद की शाखा के प्रवर्तक ऋषि जिनके नाम से यह शाखा प्रसिद्ध है 2. आपस्तंब शाखा के कल्प सूत्रकार जिनके बनाए तीन सूत्र ग्रंथ है-कल्प, गृह और धर्म 3. आपस्तंब स्मृति के रचयिता।

आपस्वार्थी *पुं.* (तद्.) अपना ही स्वार्थ देखने वाला, खुदगर्ज।

आपा *पुं.* (देश.) 1. अपनी सत्ता, अपना अस्तित्व, स्वत्व 2. अहंभाव, खुदी, अहंकार 3. होश-हवास 4. अपनी असलियत मुहा. आपा खोना- अहंकार त्यागना, घमंड छोड़ना, अपने को बरबाद करना, स्वयं को मारना; आपे में न रहना- खुद पर काबू न रख पाना; आपा मिटना- अहंकार का नाश होना; आपे से बाहर-स्वयं पर नियंत्रण न रख पाना, क्रोधित होना; *स्त्री.* (फा.) बड़ी बहन।

आपाक *पुं.* (तत्.) भट्ठी, आवाँ।

आपात *पुं.* (तत्.) 1. अचानक आ धमकना 2. गिरना 3. टूट पड़ना 4. आकस्मिक संकट।

आपातकाल *पुं.* (तत्.) [आपात+काल] राज. अव्यवस्था, बाह्य आक्रमण आदि की स्थिति में, देश संकट की अवस्था में आ जाता है जैसे- ऐसे समय भारतवर्ष में राष्ट्रपति शासन लागू हो सकता है और नागरिकों के मूलाधिकार स्थगित किए जाते हैं।

आपात उपबंध *पुं.* (तत्.) प्रशा.विधि. कानून में की गई वह व्यवस्था अथवा अधिनियम आदि की वे विशिष्ट धाराएँ जिनमें ऐसी असामान्य स्थितियों के लिए व्यवस्था की गई हो जिनमें सामान्य नियमों और विधियों के अनुसार शासन-व्यवस्था कठिन हो जाए emergency

आपात बिक्री *स्त्री.* (तद्.) वाणि. 1. मंदी की आशंका में आपाधापी में, व्यापारियों द्वारा माल बेचा जाना 2. दीवालियापन की स्थिति में, माल अथवा संपत्ति-परिसंपत्ति कम दामों में बेचना।

आपात स्थिति *स्त्री.* (तत्.) दे. आपातकाल।

आपाततः *क्रि.वि.* (तत्.) 1. अकस्मात्, अचानक 2. तत्क्षण, तुरंत 3 अंततः, आखिरकार 4. पहली नज़र में, पहले-पहल।

आपातिक *वि.* (तत्.) 1. अचानक घटित होने वाला 2. आकाश में प्रकट होने वाला 3. ऊपर से गिरने वाला 4. नीचे उतरने वाला।

आपाती *वि.* (तत्.) 1. दे. आपातिक 2. आक्रमण करने वाला।

आपाती किरण *स्त्री.* (तत्.) भौ. प्रकाश की वह किरण जो दर्पण के पृष्ठ से अथवा दो विभिन्न पारदर्शी पदार्थों की परिसीमा से टकराती हो।

आपाद *पुं.* (तत्.) 1. प्राप्ति 2. पुरस्कार, इनाम 3. पारिश्रमिक *अव्य.* (तत्.) 1. पैर से लेकर, पैर तक।

आपादमस्तक *क्रि.वि* (तत्.) (आ+पाद+मस्तक) 1. नीचे से ऊपर तक 2. सिर से पैर तक 3. संपूर्ण रूप से।

आपाधापी *स्त्री.* (तत्.) केवल अपना-अपना स्वार्थ-सिद्ध करने की स्थिति।

आपान/आपानक *पुं.* (तद्.) 1. वह स्थान जहाँ मदिरा पान किया जाता है, शराब घर, मदिरालय, मयखाना 2. मद्यपान की गोष्ठी।

आपीड *पुं.* (तत्.) 1. सिर पर पहनने का वस्त्र, आभूषण इत्यादि जैसे- पगड़ी या मुकुट 2. एक प्रकार का विषम वृत्त जिसके प्रथम चरण में आठ, दूसरे में 12, तीसरे में 16, चौथे में 20 अक्षर होते हैं। इसके अंत में दो वर्ण गुरु होते हैं, अन्य लघु वि. कष्ट देनेवाला, पीड़क 2. दबानेवाला।

आपीडन (आपीड़न) *पुं.* (तत्.) 1. दबाना, मसलना, कुचलना, निचोड़ना 2. दुख देना।

आपीत *पुं.* (तत्.) स्वर्णमाक्षिक, सोनामाखी वि. हल्का पीला, सोनामाखी के रंग का, कुछ पीला दे. सोनामुखी

आपीन *वि.* (तत्.) 1. मोटा 2. मजबूत 3. बलवान *पुं.* (तत्.) कुँआ।

आपुन *वि.* (देश.) अपना, स्वयं का, खुद का *सर्व.* (देश.) स्वयं, खुद।

आपुनपौ *पुं.* (देश.) 1. अपना वजूद, अपनी पहचान, अपना अस्तित्व 2. अपनापन, निजीपन 3. अपना-पराया का भाव।

आपुस *क्रि.वि.* (देश.) आपस में, परस्पर।

आपूपिक *वि.* (तत्.) 1. अपूप अर्थात् पुआ बनानेवाला या बेचनेवाला हलवाई 2. पुआ खाने का शौकीन।

आपूप्य *पुं.* (तत्.) (पुआ बनाने का) आटा, बेसन, मैदा, सत्तू।

आपूर *वि.* (तत्.) 1. पूरी तरह से भरा हुआ, गले से भी ऊपर तक भरा हुआ।

आपूरण *पुं.* (तत्.) पूर्ण होना, पूरी तरह भर जाना, लबालब होना।

आपूरना *अ.क्रि.* (तद्.) पूरा भरना, पूरी तरह भर जाना।

आपूरित *वि.* (तत्.) पूरी तरह भरा हुआ।

आपूर्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी वस्तु का संभरण या उसे उपलब्ध कराने की प्रक्रिया supply 2. भरना, भरण 3. संतुष्टि।

आपृच्छा *स्त्री.* (तत्.) 1. जिज्ञासा 2. बातचीत 3. उत्सुकता 4. बिदाई लेना या करना।

आपेक्षिक *वि.* (तत्.) 1. किसी वस्तु का अन्य वस्तु के साथ अनुपात, अंत, सादृश्य, अंतःसंबंध या तुलना आदि बताने की दृ टि से उनके पारस्परिक संबंध का सूचक, सापेक्ष 2. अपेक्षा रखने वाला 3. अवलंबित रहनेवाला, निर्भर रहने वाला 4. तुलनात्मक।

आपेक्षिक घनत्व *पु.* (तत्.) भौ. पदार्थ के दिए हुए आयतन के भार का मानक पदार्थ के समान आयतन के भार से अनुपात specific gravity

आपेक्षिकता *स्त्री.* (तत्.) 1. अन्य वस्तु की तुलना में समानता और असमानता का भाव, सापेक्षिकता, वैज्ञानिक आइन्स्टाइन के द्रव्यमान और ऊर्जा के परस्पर संबंध के गणितीय सूत्र को सापेक्षिकता का सिद्धांत कहा जाता है 2. अपेक्षा रखने का भाव।

आपेक्षिकता सिद्धांत *स्त्री.* (तत्.) भौ. आइन्स्टाइन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत जिसमें प्रकाश की गति

गति को स्थिर मानकर द्रव्य, काल और आकाश को निरपेक्ष न मानते हुए एक-दूसरे पर आश्रित माना गया है। theory of relativity

आपेक्षित गति *स्त्री.* (तत्.) गतिशील वस्तु के सापेक्ष में मापी गई गति (गणित)।

आपोक्लिम *पुं.* (तत्.) ज्यो. जन्मकुंडली में लग्न अर्थात् प्रथम गृह से तीसरे, छठे, नवें और बारहवें गृहों का सामूहिक नाम।

आप्त *वि.* (तत्.) 1. प्राप्त, लब्ध 2. प्रामाणिक 3. कुशल, दक्ष 4. यथार्थ ज्ञानयुक्त *पुं.* (तत्.) 1. ऋषि 2. ज्ञानगुरु, वक्ता, प्रमाण पुरुष 3. योग. शब्द प्रमाण 4. आसक्ति, रागादि से मुक्त हुआ तत्वज्ञानी 5. विश्वस्त व्यक्ति।

आप्तकाम *पुं.* (तत्.) जिसकी सभी कामनाएँ पूर्ण हो चुकी हो, पूर्णकाम, जीवनमुक्त।

आप्तकारी *वि.* (तत्.) उचित या गुप्त रूप से कार्य करनेवाला *पुं.* (तत्.) 1. विश्वस्त अनुचर 2. गुप्तचर।

आप्त पुरुष *वि.* (तत्.) 1. व्यावहारिक ज्ञान रखने वाला व्यक्ति, समझदार आदमी 2. व्यावहारिक ज्ञान का उपदेशक।

आप्तवाक्य *पुं.* (तत्.) 1. किसी (ऐसे व्यक्ति का) वचन जिसे प्रमाण के रूप में माना जाए, प्रमाण-पुरुष का वचन, वेद या श्रुतिवाक्य, विषय-विशेषज्ञ का कथन, पूर्णतत्व का वचन 2. (न्याय) शब्द-प्रमाण पर्या. आप्तवचन।

आप्तागम *पुं.* (तत्.) 1. विश्वसनीय ज्ञान जो परंपरा से उपलब्ध है 2. वेद, शास्त्र, स्मृतियाँ आदि।

आप्ताधीन *पुं.* (तत्.) वरिष्ठ विश्वस्तजनों पर निर्भर, वरिष्ठ विश्वस्त व्यक्ति के अधीन रहने वाला *वि.* आप्तवचन के अनुसार।

आप्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. प्राप्ति, लाभ 2. पूर्णता 3. पहुँचना 4. संयोग 5. भविष्यकाल।

आप्तोक्ति *स्त्री.* (तत्.) दे. आप्तवाक्य।

आप्य *पुं.* (तत्.) 1. प्राप्ति-योग्य 2. पूर्वाषाढ़ नक्षत्र 3. जलोत्पन्न फेन।

आप्यायन *पुं.* (तत्.) 1. वृद्धि, वर्धन 2. पुष्ट करना, मोटा करना 3. तृप्ति, तर्पण 4. पुष्टिकारी औषधि 5. एक अवस्था से दूसरी अवस्था को प्राप्त होना या रूपांतरित होना, जैसे- दूध से दही जमना 6. संतुष्टि 7. काल सापेक्ष करना या होना, काल के अनुसार रूपांतरित करना या होना। advancing

आप्यायित *पुं.* (तत्.) 1. तृप्त, संतुष्ट 2. पुष्ट 3. आर्द्र, तर 4. बढ़ा हुआ, परिवर्धित, 5. अवस्थांतर-प्राप्त 6. नवीकृत। advanced

आप्रच्छन *पुं.* (तत्.) 1. विदा करना 2. स्वागत करना 3. मिलने के समय का कुशल-प्रश्न।

आप्रपद *पुं.* (तत्.) (पहना हुआ) लंबा, पैरों तक पहुँचने वाला वस्त्र।

आप्रलय *क्रि.वि.* (तत्.) प्रलय तक की अवधि, संसार की संपूर्णता अर्थात् प्रलय तक, प्रलयांत।

आप्रवचन *पुं.* (तत्.) ज्ञान संपन्न व्यक्ति द्वारा की गई बात, विश्वस्त कथा, प्रामाणिक कथन।

आप्रवर्ग *पुं.* (तत्.) अपने सगे-संबंधियों का समूह, आत्मीय जनों का वर्ग, स्वजन समूह।

आप्रवास *पुं.* (तत्.) किसी बाहर के देश से आकर बस जाने की स्थिति। immigration

आप्रवासन *पुं.* (तत्.) आप्रवास करना।

आप्रवासी *वि.* (तत्.) किसी बाहर के देश से आकर बस जाने वाला। immigrant

आप्लव *वि.* (तत्.) 1. स्नान, डुबकी, गोता 2. पानी से तर करना, सींचना, छिड़काव करना।

आप्लवी *पुं.* (तत्.) 1. स्नातक 2. ब्रह्मचर्य समाप्त कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाला व्यक्ति, आप्लवव्रती।

आप्लाव *पुं.* (तत्.) 1. पानी का बढ़ना, बाढ़ 2. नहाना, गोता, डुबकी।

आप्लावन *पुं.* (तत्.) 1. डुबाना 2. बाढ़ आना।

आप्लावित *वि.* (तत्.) 1. जलमग्न 2. सराबोर, सिक्त।

आप्लुत *वि.* (तत्.) चारों ओर से घिरा हुआ (विशेष रूप में जल से), आप्लावित।

आफत *स्त्री.* (अर.) 1. आपत्ति, विपत्ति, बला 2. 2. कष्ट, दुःख, मुसीबत 3. दुःख का समय मुहा. आफत उठाना- दुःख सहना; आफत का परकाला- हुड़दंग मचाने वाला; आफत मचाना- ऊधम मचाना, दंगा करना; आफत सिर पर लेना-झगड़ा मोल लेना; आफत का मारा- विपत्ति का सताया हुआ।

आफ़ताब *पुं.* (फा.) 1. सूर्य 2. धूप।

आफताब *पुं.* (फा.) हाथ-मुँह धुलाने का दस्ती और ढक्कन वाला एक प्रकार का टोंटीदार गडुआ, बधना।

आफताबी *स्त्री.* (फा.) 1. किसी दरवाजे या खिडकी के सामने छोटा सायबान या ओसारी (बरामदा) जो धूप से बचाव के लिए लगाई जाए 2. एक प्रकार की आतिशबाज़ी जिसके छूटने से दिन की तरह प्रकाश होता है 3. पान के आकार का या गोल जरदोजी का बना पंखा जिस पर सूर्य का चिह्न बना रहता है (*वि.*) 1. गोल 2. सूर्य से संबंधित 3. धूप से बनाया या सिझाया हुआ।

आफती *वि.* (फा.) 1. आफतें पैदा करने वाला, दूसरों के लिए कष्ट उत्पन करने वाला, उपद्रवी 2. आफतों से भरा हुआ, कष्टों से भरा हुआ 3. विपत्तियों से परिपूर्ण।

ऑफ ब्रेक *पुं.* (अं.) क्रिकेट गेंद जो पिच पर सिलाई के बल टप्पा खाने के बाद उछाल लेकर ऑफ साइड से विकेट की ओर मुड़ती हुई बल्लेबाज़ की तरफ आती है दे. ऑफ साइड।

ऑफ साइड *पुं.* (अं.) क्रिकेट दाएँ हाथ के बल्लेबाज या बाएं हाथ के बल्लेबाज क्षेत्रों के लिए मैदान का वह भाग जिधर बल्लेबाज के पैरों की अंगुलियाँ संकेत कर रही हो। (फुटबाल, हॉकी)। आक्रमणकारी खिलाड़ी का प्रतिपक्षी टीम के गोल की ओर बढ़ते हुए ऐसी स्थिति में पहुँच जाना जब उसके सामने गोल रक्षक के अतिरिक्त मात्र एक खिलाड़ी हो।

ऑफसेट मुद्रण *पुं.* (अं.+तत्) एक विकसित मुद्रण विधि, जिस में छापी जाने वाली सामग्री एक प्लेट पर उतारने के पश्चात् पटल पर की जाती है, और फिर उससे कागज़ पर छापा जाता है। offset printing

ऑफ स्पिन *पुं.* (अं.) क्रिकेट दाएं हाथ से खेलने वाले गेंदवाज द्वारा धीमे से फेंकी गई गेंद का इस तरह फिरकी की तरह घूमना जिससे गेंद पिच पर टप्पा खाकर ऑफ से लेग की तरफ जाए।

आफिस *पुं.* (अं.) दफ्तर, कार्यालय।

आफिसर *पुं.* (अं.) 1. अधिकारी, अफसर 2. राजकर्मचारी।

आफू *स्त्री.* (तत्.) दे. आफूक।

आफूक *पुं.* (तत्.) अफीम, अफेन, अहिफेन।

आबंटन *पुं.* (तद्.) 1. बाँटने का कार्य, बाँट 2. कोई ज़मीन-जायदाद किसी के नाम पर लिखने का कार्य (भूमि खंडों अथवा फ्लेटों का आबंटन) 3. कंपनी द्वारा शेयरों को लोगों में बाँटना, बँटवारा, आबंटन।

आबंटित *वि.* (तद्.) 1. जिसको बाँटा गया हो 2. व्यक्ति विशेष अथवा कार्य विशेष के लिए निर्धारित किया गया, आवंटिती।

आबंटिती *पुं.* (तद्.) जिन को दिया गया हो, आबंटन प्राप्त व्यक्ति।

आबंध *पुं.* (तत्.) 1. बंधन 2. सजावट, आभूषण 3. किए जाने वाले कार्यों का अभिलेख 4. रसा. संरचना-सूत्र में किसी अणु की संयोजकताओं की संख्या और संलग्न समूहों को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त प्रतीक bond दे. रासायनिक आबंध।

आबंधक *वि.* (तत्.) 1. बाँधने वाला, आपस में जोड़ने वाला 2. प्रेमी।

आबंध कोण *पुं.* (तत्.) रसा. भौ. आबंधित परमाणुओं के नाभिकों को मिलाने वाली सरल रेखाओं के बीच का कोण उदा. पानी में H-O आबंधों के बीच का कोण 150º होता है bond angle

आबंधन *पुं.* (तत्.) दें. आबंधन, बाँधने की क्रिया अथवा भाव।

आब *स्त्री.* (फा.) 1. चमक, आभा, छटा, द्युति 2. 2. तड़क, भड़क 3. प्रतिष्ठा, उत्कर्ष, महिमा 4. शोभा, छवि *पुं.* 1. पानी, जल 2. मदिरा 3. किसी वस्तु का अर्क 4. पसीना 5. आँसू 6. मवाद 7. फूल का रस।

आबकार *पुं.* (फा.) मद्य बनाने या बेचने वाला, कलाल।

आबकारी *स्त्री.* (फा.) 1. शराब की भट्टी, शराबखाना 2. मादक वस्तुओं पर लगाया गया कर दे. आबकारी शुल्क 3. मद्य या मादक वस्तुओं का व्यवसाय।

आबकारी शुल्क *पुं.* (फा.+तत्.) (राजस्व) 1. वह शुल्क या कर जो राज्य की ओर से मादक द्रव्यों (शराब, भंग आदि) के उत्पादन या विक्रय पर लगता है 2. उत्पादन शुल्क। excise duty

आबड़ *स्त्री.* (देश.) जिस से किसी वस्तु को ढाँपा जाए, आवरण, घेरा।

आबताब *स्त्री.* (फा.) 1. द्युति, कांति, शोभा 2. तड़क-भड़क।

आबदस्त *पुं.* (फा.) पानी का पात्र, जिससे शौच आदि के पश्चात, गुप्तांग स्वच्छ किए जाते हैं।

आबदाना *पुं.* (फा.) अन्नजल, दानापानी, अन्नपानी मुहा. आबदाना उठना- जीविका का न रहना।

आबदार *वि.* (फा.) 1. चमकीला, कांतिमान, द्युतिमान 2. धारदार *पुं.* 1. वह व्यक्ति जो तोप में सुबा और पानी का पुचारा देता है 2. पानी पिलाने वाला सेवक।

आबदारी *स्त्री.* (फा.) 1. जल युक्त होने की अवस्था अथवा भाव 2. आभायुक्त अर्थात चमकदार होने का भाव 3. प्रतिष्ठावान होने का भाव 4. तलवार के संबंध में धारदार होने का भाव।

आबद्ध *पुं.* (तत्.) 1. बँधा हुआ, बाँध लिया गया 2. कैद 3. बाधित 4. जकड़ा हुआ 5. निर्मित 6. (विधि.) किसी वचन, बंधन या दायित्व से बँधा हुआ bound *पुं.* 1. अलंकार 2. द्यूत, जुआ 3. कठोर बंधन।

आबद्धकर *वि.* (तत्.) जिसके कारण कोई व्यक्ति आबद्ध हो जाए, आबद्ध करने वाला। binding

आबद्ध बाजार *पुं.* (तत्.+फा) ऐसा बाजार या क्रय-विक्रय की स्थिति जिसके क्रेता के पास विकल्प का अभाव रहता है जैसे- बस्ती से बहुत दूर स्थित किसी शिक्षण-संस्था की अपनी लेखन-सामग्री की दूकान जो छात्रों के लिए आबद्ध बाजार है।

आबधिकी *वि.* (तद्.) निश्चित समय की, आवधिक, निश्चित अंतर के बाद प्रकाशित होने वाली (पत्रिका)।

आबनूस *पुं.* (फा.) 1. तेंदू नामक एक जंगली पेड़, जिसकी लकड़ी पुरानी हो जाने पर काली पड़ जाती है 2. आबनूस की लकड़ी जिससे छड़ी, रूल, कलमदान आदि अनेक कलात्मक वस्तुएँ बनती हैं।

आबनूसी *वि.* (फा.) 1. आबनूस-सा काला, गहरा काला, श्याम 2. आबनूस का बना हुआ।

आबपाशी *स्त्री.* (फा.) खेत, उपवन आदि में सिंचाई का कार्य, फसल अथवा पौधों में पानी देना।

आबरू *स्त्री.* (फा.) इज्जत, मान, प्रतिष्ठा।

आबरूदार *वि.* (फा.) 1. जिसको अपनी आबरू, इज़्ज़त का ख़याल हो, प्रतिष्ठित, इज़्ज़तदार 2. सतीत्व का पालन करने वाली नारी।

आबला *पुं.* (फा.) 1. शरीर के किसी अंग पर फूटा हुआ फफोला 2. छाता।

आबल्य *पुं.* (तत्.) हीनता, निर्बलता, कमज़ोरी।

आबहवा *स्त्री.* (फा.) आब (अर्थात् जल) एवं हवा, जलवायु, मौसम।

आबाद *वि.* (फा.) 1. बसा हुआ 2. प्रसन्न 2. उपजाऊ प्रयो. इन मिरासनों को इसलिए आबाद किया था कि जनानी मजलिसों की रौनक बढ जाएगी। (आधा गाँव- रा.मा.रज़ा)।

आबादान *वि.* (फा.) 1. बसा हुआ, भरा-पूरा 2. उन्नत, समृद्ध।

आबादी *स्त्री.* (फा.) 1. जनसंख्या, मर्दुमशुमारी 2. बस्ती 3. वह भूमि जिस पर खेती होती हो।

आबाध *पुं.* (तत्.) 1. पीड़ा, कष्ट 2. क्षति 3. छेड़छाड़।

आबाधा *स्त्री.* (तत्.) 1. चिंतित करने वाली बात 2. कष्ट 3. हानि।

आबालवृद्ध *क्रि.वि.* (तत्.) [आ+बाल+वृद्ध] बाल से लेकर वृद्ध तक, बच्चों से लेकर बूढ़ों तक।

आबिल *पुं.* (तत्.) 1. पंकिल, गंदा 2. तोड़ने वाला, भंग करने वाला, साफ़ करने वाला।

आबी *वि.* (फा.) 1. पानी का, पानी संबंधी 2. पानी में रहनेवाला 3. जल-तट निवासी 4. फीका, हल्का 5. पानी के रंग का 6. हल्का नीला *पुं.* 1. नमक जो सूर्य की गर्मी से पानी के उड़ने पर बनता है, लवण, साँभर नमक 2. एक प्रकार का अंगूर। 3. सिंचाई वाली भूमि।

आबेहयात *पुं.* (फा.) हयात अर्थात् जीवन देने वाला आब अर्थात् जल, अमृत ।

आबोदाना *पुं.* (फा.) [आब+ओ+दाना] जीवन यापन के लिए प्राप्त अन्न और जल, खाना-पीना।

आब्द *पुं.* (तत्.) 1. बादल से उत्पन्न या संबद्ध 2. वर्षा से संबद्ध।

आब्दिक *पुं.* (तत्.) वार्षिक, सालाना।

आब्दिकी *स्त्री.* (तत्.) दे. वार्षिकी

आभ *स्त्री.* (तत्.) चमक, कांति, आभा।

आभड़ना *स.क्रि.* (देश.) 1. स्पर्श करना, छूना 2. व्याप्त होना 3. टक्कर लेना, भिड़ना 4. गले मिलना।

आभरण *पुं.* (तत्.) 1. गहना, भूषण, आभूषण, जेवर 2. पोषण, परवरिश।

आभरित *वि.* (तत्.) 1. सजाया हुआ, आभूषित, अलंकृत 2. पोषित।

आभा *स्त्री.* (तत्.) 1. चमक, दमक, कांति, दीप्ति, द्युति, प्रभा 2. झलक 3. प्रतिबिंब, आभास, छाया 4. प्रतीति।

आभाणक *पुं.* (तत्.) कहावत, लोकोक्ति।

आभात *वि.* (तत्.) चमकता हुआ, कांतिपूर्ण *पुं.* दृश्य।

आभारी *पुं.* (तत्.) 1. एहसान, कृतज्ञता 2. बोझ 3. प्रबंध की जिम्मेदारी 4. एक वर्णवृत्त जो आठ तगण का होता है।

आभारी *वि.* (तत्.) आभार मानने वाला, एहसानमंद, कृतज्ञ, उपकृत।

आभाष *पुं.* (तत्.) 1. संबोधित करने की क्रिया 2. परिचय, भूमिका 3. भाषण, कथन।

आभास *पुं.* (तत्.) 1. प्रतीति 2. सादृश्य 3. प्रतिबिंब, छाया, झलक 4. पता, संकेत प्रयो. सहानुभूति के द्वारा ही ऐसी मर्मवेदना का किंचित् आभास पाया जा सकता है (बाणभट्ट की आत्मकथा)।

आभासन *पुं.* (तत्.) स्पष्ट करना, आभासित करना या होना; आलोकित करना या होना, प्रकाशित करना या होना।

आभासना *अ.क्रि.* (तद्.) प्रतिभासित होना, आभास में आना, संकल्पना में प्रकट होना।

आभासवाद *पुं.* (तत्.) संपूर्ण जगत् चेतना का आभास, यानी उसकी परछाईं मात्र है यह सिद्धांत।

आभास शब्द *पुं.* (तत्.) ऐसा शब्द जो मुद्रण अथवा अन्य किसी भूलचूक के कारण चल पड़ा हो। मिथ्या शब्द ('श्राप' एक मिथ्या शब्द है। वास्तविक शब्द है 'शाप'।

आभासित *वि.* (तत्.) जिस का मात्र आभास होता हो। वास्तव में वह कुछ और होता है। (रस्सी देख कर साँप का आभास)।

आभासी *पुं.* (तत्.) जो वास्तविक प्रतीत हो परंतु यथार्थतः सत्य अथवा वास्तविक न हो।

आभासी समय *पुं.* (तत्.+तद्.) धूप घड़ी द्वारा देखा जाने वाला समय, समय की सूचना देने वाली धूप घड़ी।

आभासीन *वि.* (तत्.) 1. जो मात्र आभास रूप में ही दिखाई देता हो, बहुत हल्का 2. चमकीला।

आभासी प्रतिबिंब *पुं.* (तत्.) भौ. परावर्तन के पश्चात् अभिसरण करती हुई प्रतीत होने वाली किरणों से बना प्रतिबिंब जैसे- समतल दर्पण में बना प्रतिबिंब (वर्टिकल इमेज) विशेषतः इसे आभासी कहते हैं क्योंकि दर्पण में दायाँ भाग बायाँ और बाँया भाग दायाँ दिखता है विलो. वास्तविक प्रतिबिंब।

आभास्वर *वि.* (तत्.) पूर्णरूप से अर्थात् आभासित होने वाला स्वर, द्युतिमान, चमकीला, तेजोमय *पुं.* एक देववर्ग।

आभिचारिक *वि.* (तत्.) दूसरे के अहित में, मंत्र-पाठ या तांत्रिक कर्म करने वाला व्यक्ति *पुं.* अभिचार के निमित्त पढ़े जाने वाले मंत्र।

आभिजात्य *पुं.* (तत्.) अभिजात (कुलीन) होने का भाव या दशा। 1. कुलीन, संभ्रांत अथवा सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित वंश से संबद्धता 2. कुलीनों के (लक्षण, गुण, संस्कार)।

आभिजात्यवाद *पुं.* (तत्.) दर्शन. [आभिजात्य+वाद] 1. साहित्य सृजन की वह प्रवृत्ति, जिस में उच्च समाज का ही ध्यान रखा जाता है 2. उच्च शिक्षा में उपयोगी पाठ्य पुस्तकों के लेखन की प्रवृत्ति 3. यूनानी और रोमी महान कृत्तियों के अनुकरण पर लिखने की प्रवृत्ति शास्त्रवाद classism

आभिजित *वि.* (तत्.) अभिजित नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला या उससे संबंद्ध।

आभिधानिक *वि.* (तत्.) 1. शब्दकोश में लिखित, जो किसी शब्द कोश में हो 2. जिस का संबंध शब्दकोश से हो 3. कोशकार।

आभिप्रायिक *वि.* (तत्.) 1. ऐच्छिक 2. प्रयोजनगत।

आभिमुख *पुं.* (तत्.) [आभि+मुख] आमने-सामने होने की अवस्था, अभिमुख होने की अवस्था, आमना-सामना।

आभिरामिक *वि.* (तत्.) 1. सुंदर 2. प्रिय।

आभिहारिक *वि.* (तत्.) 1. छल या बलपूर्वक लिया हुआ 2. उपहार में दिया हुआ *पुं.* भेंट, उपहार।

आभीर *पुं.* (तत्.) 1. अहीर, ग्वाला, गोप 2. एक जनपद का नाम 3. एक राग जिसे भैरवराग का पुत्र कहा जाता है 4. एक छंद जिसमें 11 मात्राएँ और एक जगण होता है।

आभीरक *वि.* (तत्.) आभीर या अहीर-संबंधी *पुं.* अहीर जाति।

आभीरपल्ली *स्त्री.* (तत्.) अहीरों की बस्ती।

आभीरी *स्त्री.* (तत्.) 1. अहीरिन 2. अहीरों की बोली 3. एक संकर रागिनी जो देशकार, कल्याण, श्याम और गुर्जरी को मिलाकर बनाई गई है, अबीरी 4. भाषा. भारत में दूसरी या तीसरी शताब्दी में प्रचलित एक प्राचीन भाषा जो पंजाब में बोली जाती थी और जो छठी शताब्दी में अपभ्रंश के नाम से प्रसिद्ध हुई।

आभुक्ति *स्त्री.* (तत्.) [आ+भुक्ति] 1. आभोग करने की क्रिया 2. भोगने की क्रिया 2. किसी सुख अथवा सुविधा का वह लाभ जो पहले से प्राप्त हो।

आभूत *वि.* (तत्.) 1. उत्पन्न 2. अस्तित्ववाला।

आभूषण *पुं.* (तत्.) 1. गहना, जेवर, आभरण, अलंकार 2. सजावट, शृगार।

आभूषित *पुं.* (तत्.) भूषणयुक्त, अलंकृत, शोभित।

आभृत (तत्.) 1. अच्छी तरह से भरा हुआ 2. बँधा हुआ, जकड़ा हुआ 3. उत्पादित।

आभेरी *स्त्री.* (तत्.) एक रागिनी।

आभोग *पुं.* (तत्.) 1. सीमा 2. भोग-विलास, तृप्ति, सुखानुभव 3. किसी वस्तु को लक्षित करनेवाली बातों की विद्यमानता 4. किसी पद्य के के बीच में कवि के नाम का उल्लेख 5. भोगने की स्थिति।

आभोगी *वि.* (तत्.) 1. भोगनेवाला 2. भोजन करने वाला।

आभोग्य *पुं.* (तत्.) भोगने योग्य, भोज्य पदार्थ।

आभोजी *वि.* (तद्.) भोगने वाला, आहार करने वाला, खाद्य वस्तु का उपभोग करने वाला।

आभोज्य *वि.* (तत्.) 1. भोजन के योग्य, खाने के लिए उपयुक्त 2. *पुं.* खाद्य पदार्थ, अन्न, भोजन।

आभ्यंतर *पुं.* (तत्.) भीतरी, अंदर का, अंदरूनी।

आभ्यंतर खेल *पुं.* (तत्.) दे. अंदरूनी खेल।

आभ्यंतर प्रयत्न *पुं.* (तत्.) किसी व्यंजन के उच्चारण हेतु भीतर साँस खींचने का कार्य। सिंधी भाषा में आभ्यंतर प्रयत्न के कुछ व्यंजन उपलब्ध हैं।

आभ्यंतर रोगी *पुं.* (तत्.) अस्पताल में भर्ती रोगी indoor patient विलो. बहिरंग रोगी।

आभ्यंतरिक *वि.* (तत्.) अंतरंग, भीतरी।

आभ्यासिक अपराधी *पुं.* (तत्.) वह व्यक्ति जो (बार-बार) अपराध करने का अभ्यस्त हो चुका हो। habitual offender

आभ्युदयिक *वि.* (तत्.) अभ्युदय कराने वाला, मंगलकारी, कल्याणकारी *पुं.* (तत्.) 1. पुत्र जन्म, विवाह आदि के अवसर पर किया जाने वाला एक श्राद्ध जिसे नांदी मुख भी कहते है 2. दही, बेर और चावल को मिलाकर बनाया हुआ एक पिंड जिसे पहले इस श्राद्ध में माता, दादी और परदादी को (तीन पिंड) देकर बाप, दादा और परदादा आदि को पिंड दिया जाता है।

आमंत्रण *पुं.* (तत्.) 1. निमंत्रण, न्योता, बुलावा 2. संबोधन, बुलाना, पुकारना।

आमंत्रित *वि.* (तत्.) [आ+मंत्रित] बुलाया हुआ, नियंत्रित, जिस को न्योता दिया गया हो जो आमंत्रण देकर बुलाया गया हो।

आमंद्र *पुं.* (तद्.) गंभीर स्वर, भारी-भरकम आवाज़ *वि.* गंभीर स्वर वाला, भारी-भरकम आवाज़ वाला।

आम *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का मीठा रसीला फल तथा उस का वृक्ष, पक जाने पर इसका गूदा पीला और सुगंधित हो जाता है, गुठली मोटे छिलके वाली होती है, आम्र, रसाल मुहा. आम के आम गुठली के दाम- दोहरा लाभ उठाना; आम खाने से काम या पेड़ गिनने से- अपना काम निकालना न कि किसी विषय पर निरर्थक प्रश्न करना 2. डंठल से अलग हुआ अन्न 3. खाए हुए अन्न का अनपचा हुआ मल जो सफेद और लसीला होता है 4. वह रोग जिसमें आँव गिरती है 5. अजीर्ण, अपच *वि.* (तत्.) 1. कच्चा, अधपका 2. न पचा हुआ *वि.* (अर.) 1. साधारण, सामान्य, मामूली, सार्वजनिक प्रयो. यह आम रास्ता नही है 2. प्रसिद्ध, विख्यात 3. व्यापक, फैला हुआ प्रयो. आजकल प्रेम विवाह आम हो गए है।

आम आदमी *पुं.* (फा.) सामान्य या मामूली आदमी जिसे रोटी, कपड़ा, मकान आदि बुनियादी आवश्यकताओं के लिए भी जी-तोड़ मेहनत करनी पड़ती है पर्या. सामान्य जन, जनसाधारण। common man

आमक *पुं.* (अं.) वह श्मशान जहाँ मृत व्यक्तियों के शरीर कौओ, गिद्धों आदि के खाने के लिए यो ही फेंक दिए जाते हों टि. सामान्यतः पारसी मतावलंबियों में यह प्रथा है।

आमगंधि *वि.* (तत्.) कच्चे मांस या जलते हुए शव की गंध वाला।

आमगंधिक *वि.* (तत्.) दे. आमगंधि।

आमगंधी *वि.* (तत्.) दे. आमगंधि।

आम चुनाव *पुं.* (अर.+देश) संसद के लिए जनप्रतिनिधियों का चुना जाना, जिसमें पूरे देश के मतदाता भाग लेते हैं। general election

आमड़ा *पुं.* (तद्.) आम जैसे स्वाद वाला एक फल जो खट्टा और आकार में बड़े बेर के बराबर होता है, इससे अचार बनता है।

आमद *स्त्री.* (फा.) 1. आगमन, आना प्रयो. इस बार फसल की आमद बहुत अच्छी है।

आमदनी *स्त्री.* (देश.) ऐसी भूमि, जिस में शीत ऋतु में धान बोया जाता है।

आमदनी *स्त्री.* (फा.) 1. आय, प्राप्ति, आने वाला धन 2. आयात, अन्य देश से आने वाला माल विलो. रफतनी।

आमदोखर्च *पुं.* (फा.) आय और व्यय, आमदनी और खर्चा, प्राप्त धन और खर्चे।

आमदोरफत *स्त्री.* (फा.) आना-जाना, अनमनापन। अनमनापन।

आमना-सामना *पुं.* (देश.) 1. भेंट 2. मुकाबला *पुं.* हल्दी घाटी में मुगल सेना और मेवाड़ी सेना का आमना-सामना हुआ था।

आम निर्वाचन *पुं.* (अर.+तत्.) दे. आम चुनाव।

आमने-सामने *पुं.* (देश.) 1. एक-दूसरे के समक्ष 2. एक-दूसरे के मुकाबले।

आमपाक *पुं.* (तत्.) 1. शोथ या जलोदर नामक रोग का आरंभिक रूप 2. फोड़े आदि को पकाने का एक उपाय।

आमभृष्ट *वि.* (तत्.) थोड़ा भुना हुआ, थोड़ा पकाया गया।

आम मुख्तारनामा *पुं.* (अर.+फा) 1. अपने अधिकार किसी अन्य को इस प्रकार सौंपना कि वह अदालती कार्रवाई कर सके 2. अधिकार सौंपने का लिखित पत्र। general power of attorney

आमय *पुं.* (तत्.) 1. रोग, बीमारी 2. क्षति 3. अजीर्ण 4. कूट नामक औषधि।

आमरण *पुं.* (तत्.) मृत्युपर्यंत, जीवन के अंत तक।

आमरणांत *वि.* (तत्.) मृत्युपर्यंत रहने वाला, मृत्यु के बाद ही जिसका अंत हो।

आमरषि *क्रि.वि.* (तत्.) क्रोध करके, क्रोध के आवेश में, क्रुद्ध होकर, गुस्से में

आमरस *पुं.* (तत्.) दे. अमरस।

आमर्द *वि.* (तत्.) रगड़ा हुआ, दबाया हुआ।

आमर्दकी *स्त्री.* (तत्.) 1. आंवला, आमलकी, आमला 2. फाल्गुन शुक्ल एकादशी।

आमर्दन *पुं.* (तत्.) जोर से मलना, खूब पीसना या रगड़ना।

आमर्ष *पुं.* (तत्.) 1. क्रोध, कोप, गुस्सा 2. सहन-शीलता का अभाव 3. रस में एक संचारी भाव। दे. अमर्ष।

आमलक *पुं.* (तत्.) आंवला, आमला, धात्रीफल।

आमलकी *स्त्री.* (तत्.) 1. छोटा आँवला, आँवली 2. फाल्गुन सुदी एकादशी की संक्षिप्ति।

आमलकी एकादशी *स्त्री.* (तत्.) फाल्गुन शुक्ल एकादशी, आमलक वृक्ष में विष्णु और लक्ष्मी का वास माना जाता है। इसी वृक्ष के नीचे पूजा के उपरांत, आमलकी एकादशी का व्रत तोड़ा जाता है।

आमला *पुं.* (तत्.) दे. आँवला।

आमलेट *पुं.* (अं.) अंडे का बना चीला या चिल्ला।

आमवात *पुं.* (तत्.) आयुर्वेद के अनुसार, 'आम' दोष से उत्पन्न रोग, इस रोग के कारण शरीर सूज कर पीला पड़ जाता है। शरीर की संधियों में दर्द और जकड़न का आभास होता है।

आमशूल *पुं.* (तत्.) आंव के कारण पेट में (मरोड़ का) दर्द, वायु गोले का दर्द।

आमश्राद्ध *पुं.* (तत्.) ऐसा श्राद्ध जिसमें पिंडदान करवाने के लिए ब्राह्मणों को कच्चा (बिना पका) अन्न दान दिया जाता है।

आमाझोर *क्रि.वि.* (देश.) बहुत वेग से, काफी तेज *वि.* आमझोर हवा, ऐसी हवा जिस के वेग से वृक्षों से आम टूट-टूट कर गिर जाएँ।

आमातिसार *पुं.* (तत्.) आयु. ऐसा रोग जिसमें मल के साथ रक्त भी गिरता है, आँव, पेचिश, खूनी दस्त।

आमात्य *पुं.* (तत्.) अमात्य का या उस से संबंधित दे. अमात्य।

आमादगी *स्त्री.* (फा.) 1. मौजूदगी 2. मुस्तैदी, तैयारी, तत्परता।

आमादा *वि.* (फा.) उद्यत, तत्पर, उतारू, तैयार।

आमान्न *पुं.* (तत्.) 1. पेट में पहुँचा हुआ अन्न 2. अधपका अन्न, कच्चा अन्न।

आमापन *पुं.* (तत्.) रसा. प्रतिदर्श में उपस्थित किसी पदार्थ की मात्रा का निर्धारण।

आमाल *पुं.*(अर.) कर्म, करनी, करतूत टि. 'अमल' का बहुवचन

आमालनामा *पुं.* (अर.) कार्य-पंजिका, वह रजिस्टर जिसमें नौकरों के चाल-चलन और कार्य करने की योग्यता आदि का विवरण रहता है।

आमावास्य *वि.* (तत्.) अमावस्या से संबंधित।

आमाशय *पुं.* (तत्.) प्राणि., आयु. कशेरुकी प्राणियों के आहारतंत्र का वह भाग जो ग्रास नली के अंत से लेकर ग्रहणी के आरंभ तक होता है।

आमाशय शोथ *पुं.* (तत्.) दे. जठर शोथ।

आमाहल्दी *स्त्री* (तद्.) आयु. एक पौधा या पौधे की जड़ जो हल्दी के रंग की होती है, इसका लेप चोट के लिए लाभकारी होता है।

आमिक्षा *स्त्री.* (तत्.) फटे हुए दूध का ठोस भाग, छेना।

आमिन *स्त्री.* (देश.) आम फल की एक प्रजाति, जो छोटी और बहुत मीठी होती है।

आमिर *पुं.* (अर.) अधिकारी, हाकिम। *वि.* हुक्म देने वाला।

आमिल *वि.* (अर.) 1. काम करने वाला, अनुष्ठान करने वाला 2. कर्तव्यपरायण 3. अमल करने वाला (कर्मचारी) *पुं.* 1. मुस्लिम ओझा 2. अधिकारी, हाकिम 3. साधक, सिद्ध प्रयो. वह आमिल से ताबीज लेकर अपने भविष्य के प्रति आश्वस्त हो चुकी थी।

आमिश्र *वि.* (तत्.) पूरी तरह मिलाया हुआ, आपस में मिलाया हुआ।

आमिष *पुं.* (तत्.) 1. मांस, गोश्त 2. भोग्य वस्तु 3. लोभ 4. प्रिय या मनोहर वस्तु 5. जंबीरी वस्तु।

आमिषप्रिय *वि.* (तत्.) मांसाहारी, मांस का भोजन पसंद करने वाला, गोश्त खाने का शौकीन।

आमिषाशी *पुं.* (तत्.) मांसाहारी।

आमीं *अव्य.* (अर.) दे. आमीन।

आमी *स्त्री.* (तद्.) 1. अँबिया, छोटा आम 2. एक पहाड़ी पेड़ जिसकी पतली टहनियों से टोकरियाँ आदि बनाई जाती है 3. जौ और गेहूँ की भुनी हुई बाली।

आमीन *अव्य.* (अर.) तथास्तु, ईश्वर ऐसा ही करे।

आमीलन *पुं.* (तत्.) आँखे बंद करने या सोने की क्रिया।

आमुक्त *पुं.* (तत्.) 1. मुक्त किया हुआ 2. फेंका हुआ।

आमुक्ति *स्त्री.* (तत्.) मोक्ष *क्रि.वि.* मुक्ति मिलने तक।

आमुख *पुं.* (तत्.) 1. भूमिका, प्रस्तावना 2. नाटक का आरंभिक अंग।

आमुख कथा *स्त्री.* (तत्.) दे. आवरण कथा।

आमुष्मिक *वि.* (तत्.) परलोक संबंधी, दूसरे लोक का, पारलौकिक *पुं.* दूसरे लोक का निवासी, पारलौकिक व्यक्ति।

आमुष्मिकी *स्त्री.* (तत्.) दूसरे लोक की निवासिनी, परलोक की स्त्री।

आमूल *क्रि.वि.* (तत्.) 1. आरंभ से अब तक, आद्यंत 2. जड़ से।

आमूलपरिवर्तनवाद *पुं.* (तत्.) [आमूल+परिवर्तन+वाद] संपूर्ण परिवर्तनवाद, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि सभी व्यवस्थाओं में, आग्रह पूर्ण, परिवर्तनवाद।

आमेज़ *प्रत्य.* (फा.) मिला हुआ, युक्त टि. समासांत में प्रयुक्त जैसे- रंग आमेज़, रंग मिला हुआ, रंग मिलाने वाला।

आमेजना *क्रि.* (फा.) मिलाना, मिश्रण बनाना।

आमेज़िश *स्त्री.* (फा.) मिलावट, मिश्रण।

आमेलन *पुं.* (तत्.) प्रशा. पूरी तरह से (अपने में) मिला लेना, किसी विभाग या प्रतिष्ठान द्वारा अतिरिक्त कर्मचारियों को किसी अन्य विभाग में या किसी दूसरे विभाग या प्रतिष्ठान को अपने में समा लेना पर्या. आत्मसात्करण विलयन assimilation, merger तु. सम्यग्मेलन।

आमेलित *वि.* (तत्.) प्रशा. किसी अन्य में सम्मिलित, अन्य में समाविष्ट। assimilated, merged, absorved

आमोचन *पुं.* (तत्.) मुक्त करना, बंधनहीन करना, छुड़ाना।

आमोद *पुं.* (तत्.) 1. आनंद, हर्ष, प्रसन्नता 2. सुगंध 3. शतावर नामक औषधि।

आमोदकारी *वि.* (तत्.) 1. आनंद देने वाला, प्रसन्न करने वाला 2. सुगंध देने वाला, सुगंधित।

आमोदन *पुं.* (तत्.) सुंगधित करना, आनंद से युक्त करना दे. आमोद।

आमोद-प्रमोद *पुं.* (तत्.) 1. भोगविलास 2. हँसी-खुशी 3. सुख-चैन।

आमोद यात्रा *स्त्री.* (तत्.) मनोविनोद या मन की खुशी के लिए की गई यात्रा।

आमोदित *वि.* (तत्.) 1. प्रसन्न, खुश, हर्षित-हृदय 2. सुगंधित।

आमोदी *वि.* (तत्.) प्रसन्न रहने वाला, खुश रहने वाला; प्रसन्न करने वाला।

आमोष *पुं.* (तत्.) 1. तस्करी, चोरी 2. अपहरण।

आमोषी *पुं.* (तत्.) चोर, तस्कर।

आम् *पुं.* (तत्.) अंगीकार, स्वीकृति आदि का सूचक-ध्वनिशब्द, संस्कृत नाटकों में बोलचाल में प्रयुक्त।

आम्नात *वि.* (तत्.) 1. सुविचारित, कथित 2. स्मृत 3. ग्रंथोक्त, शास्त्रोक्त *पुं.* (तत्.) अध्ययन।

आम्नाय *पुं.* (तत्.) 1. अभ्यास 2. वेद आदि का पाठ 3. परंपरा-प्राप्त उपदेश 4. वेद, श्रुति।

आम्र *पुं.* (तत्.) आम का वृक्ष, आम (फल) दे. आम

आम्रकूट *पुं.* (तत्.) विंध्य पर्वतमाला का दक्षिण पूर्वी भाग, जहाँ से सोन और नर्मदा नदियाँ निकलती हैं, अमरकंटक पर्वत।

आम्रवन *पुं.* (तत्.) (आम्र+वन) 1. आम के वृक्षों का वन, अथवा उपवलन 2. अमराई।

आम्रात *पुं.* (तत्.) आमड़े का पेड़ और फल।

आम्रातक *पुं.* (तत्.) 1. आमड़े का पेड़ और फल 2. खट्टापन, इमली *वि.* (तत्.) अम्लीय, अम्ल के गुण वाला।

आम्रेडन *पुं.* (तत्.) पुनरावृत्ति, दोहराना। revision

आम्रेडित *वि.* (तत्.) पुनरावृत्त, दोहराया हुआ, जिसका रिविजन किया हो।

आम्ल *वि.* (तत्.) 1. अम्ल संबंधी, तेजाब संबंधी *पुं.* 2. खट्टापन 3. इमली का पेड़।

आम्ला *पुं.* (तत्.) 1. इमली 2. खट्टापन।

आम्लिक *वि.* (तत्.) तेज़ाबी, आम्ल, खट्टा।

आम्लिका *स्त्री.* (तत्.) 1. इमली 2. मुँह का खट्टा स्वाद या खट्टी डकार।

आयंता-पायंता *पुं.* (फा.) चारपाई अथवा पलंग आदि का सिर की ओर का भाग तथा पैरों की ओर का भाग।

आयँती-पायँती *स्त्री.* (देश.) सिरहाना-पायताना।

आय *स्त्री.* (तत्.) 1. आमदनी, धनागम 2. लाभ-प्राप्ति *पुं.* जन्मकुंडली का 11 वाँ स्थान 2. आगमन 3. अंतःपुर रक्षक।

आय-कर *पुं.* (तत्.) सरकार द्वारा आमदनी पर लगाया गया प्रभार, शुल्क या कर।

आयडोफार्म *पुं.* (अं.) रसा. एक प्रकार का कीटनाशक रसायन, खेती में प्रयुक्त, औषधि के रूप में प्रयुक्त।

आयत *वि.* (तत्.) विस्तृत, लंबा-चौड़ा, विशाल *पुं.* गणि. वह समांतर चतुर्भुज जिसका प्रत्येक कोण समकोण हो *स्त्री.* (अर.) कुरान (कुर्आन) का वाक्य 2. चिह्न, निशान।

आयतन *पुं.* (तत्.) 1. भौ. किसी पदार्थ द्वारा लंबाई-चौड़ाई, मोटाई आदि द्वारा घेरा हुआ स्थान स्थान जिसे घन इकाइयों में मापा जाता है 2. मकान, घर 3. मंदिर, देवस्थान 4. विश्राम स्थान 5. मकान बनाने का स्थान 6. किसी पात्र की समाई अर्थात् वस्तुओं की उसके भीतर समा जाने की क्षमता 7. ज्ञान के संचार के स्थल जो बौद्धमत के अनुसार इस प्रकार है 1. चक्ष्वायतन 2. गंधायतन 3. घ्राणायतन 4. जिह्वायतन 5. कामायतन 6. मानसायतन 7. रूपायतन 8. शब्दायतन 9. गंधायतन 10. रसायतन 11. श्रोतव्यायतन 12. धर्मायतन।

आयतनमिति *स्त्री.* (तत्.) (आयतन+मिति) आयतन मापने का विज्ञान।

आयतनीय *वि.* (तत्.) आयतन संबंधी, आयतन विषयक।

आयतलोचन *वि.* (तत्.) 1. बड़े-बड़े नेत्रों वाला।

आयताकार *वि.* (तत्.) जिसका आकार आयत जैसा हो।

आयताक्ष *वि.* (तत्.) आयतलोचन, बड़े-बड़े नेत्रों वाला।

आयति *स्त्री.* (तत्.) 1. विस्तार 2. भावी प्राप्ति 3. भविष्यत्काल।

आयत्त *वि.* (तत्.) 1. अधीन, अवलंबित 2. वंशगत।

आयत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. अधीनता, दूसरे पर अवलंबित होना 2. परवशता 3. सीमा, लंबाई 4. सामर्थ्य 5. महत्ता 6. विस्तार 7. भविष्य।

आयद *वि.* (अर.) 1. आरोपित लगने वाला 2. लौटने वाला टि. शुद्ध प्रयोग 'आइद' है।

आयन *पुं.* (अं.) रसा. विद्युत आवेश से युक्त परमाणु जिसमें इलेक्ट्रॉनों की न्यूनाधिकता के कारण ऋण (-) या धन (+) आवेश होता है।

आयनन *पुं.* (तत्.) आयन बनाने की प्रक्रिया, उदासीन परमाणु के या परमाणु-समूह से इलेक्ट्रान हटाने अथवा इलेक्ट्रान जोड़ने की प्रक्रिया।

आयनन ऊर्जा *स्त्री.* (तत्.) किसी परमाणु में से एक इलेक्ट्रान को अलग करने में प्रयुक्त ऊर्जा।

आयन मंडल *पुं.* (अं.+तत्.) भौ. पृथ्वी के चारों ओर का आयनित वायु का आवरण जिसमें मुक्त इलैक्ट्रॉनों की उपस्थिति के कारण तरंगों का संचरण होता रहता है।

आय निर्धारण *पुं.* (तत्.) (आय+निर्धारण) आय का पुख्ता हिसाब-किताब, आय का निश्चित आंकलन, आमदनी का निश्चित आकलन आमदनी की पक्की तकमील।

आयमन *पुं.* (तत्.) 1. लंबाई 2. विस्तार 3. नियमन 4. तानने या खींचने की प्रक्रिया।

आय-व्ययक *पुं.* (तत्.) राज. किसी निश्चित काल में होने वाली संभावित आय और व्यय का विवरण, बजट।

आय-व्यय फलक *पुं.* (तत्.) वाणि. आय और व्यय का चिट्ठा, तुलनपत्र।

आयस *पुं.* (तत्.) 1. लोहा 2. लोहे का कवच 3. अगर नाम की लकड़ी 4. रत्न 5. मणि

वि. 1. लौहनिर्मित 2. लोहे के रंग का।

आयसी *पुं.* (तत्.) लोहे का कवच या बख्तर।

आयसीय *वि.* (तत्.) लोहे का बना हुआ।

आयसु *स्त्री.* (तद्.) आज्ञा, हुक्म, आदेश।

आया *अ.क्रि.* (तद्.) आना क्रिया का भूतकालिक रूप *स्त्री.* (फा.) धाय, धायी (देखभाल करने वाली स्त्री)।

आया-गया *पुं.* (देश.) 1. ध्यान आकर्षित न करने वाला आम आदमी 2. महत्वहीन घटना, आयोजन, व्यवस्था आदि।

आयाचित *वि.* (तत्.) प्रार्थित *पुं.* प्रार्थना।

आयात *पुं.* (तत्.) विदेश से अपने देश में आया हुआ या आने वाला माल *वि.* (तत्.) आगत, आया हुआ।

आयातक *पुं.* (तत्.) दे. आयातकर्ता।

आयात-कर *पुं.* (तत्.) आयात किए जाने वाले सामान पर, सरकार द्वारा लगाया जाने वाला शुल्क।

आयातकर्ता *पुं.* (तत्.) आयातक, व्यापार के लिए विदेश से अपने देश में माल या वस्तु मँगवाने वाला (व्यक्ति, देश आदि)। importer

आयात-व्यापार *पुं.* (तत्.) विदेशी वस्तुओं अथवा सेवाओं का व्यावसायिक रूप में आयात।

आयात शुल्क *पुं.* (तत्.) विदेशों से मँगाए गए माल पर देश के नियमों के अनुरूप देय कर राशि। import duty

आयाति *स्त्री.* (तत्.) 1. आगमन 2. पास आने की स्थिति या क्रिया।

आयातित *वि.* (तत्.) (जिसका) आयात किया गया (हो)।

आयान *पुं.* (तत्.) 1. आना 2. प्रकृति, स्वभाव, आदत।

आयाम *पुं.* (तत्.) 1. विस्तार, लंबाई, किसी वस्तु या धारणा की व्यापकता के विविध पक्ष 2. नियमन करने की क्रिया 3. भौ. 1. किसी दोलन का उसकी साम्यावस्था से महत्तम विस्थापन 2. किसी कण या पिंड के सरल आवर्त दोलन में वह राशि जो दोलन-केंद्र के दाईं या बाईं ओर उस बिंदु तक की दूरी होती है जहाँ तक कण का पिंड जाता है और वापस आ जाता है। amplitude

आयामन *पुं.* (तत्.) 1. आयाम अथवा आकार में विस्तृत करना 2. नियम बद्ध करना, नियमन 3. नियंत्रित करना, नियंत्रण।

आयामित *वि.* (तत्.) खींचा हुआ, फैलाया हुआ।

आयामी *वि.* (तत्.) 1. लंबा 2. नियमित करने वाला।

आया राम गया राम *वि.* (देश.) [आयाराम+गयाराम] अवसरवादी व्यक्ति। राजनैतिक तंत्र में, मौके के मुताबिक, घाटे का दल छोड़ कर फायदे के दल में शामिल हो जाने वाला/वाली, मौका परस्त।

आयास *पुं.* (तत्.) 1. यत्न, बहुत कोशिश 2. श्रम, कड़ी मेहनत 3. थकावट 4. मानसिक पीड़ा।

आयासक *वि.* (तत्.) 1. परिश्रम करनेवाला 2. थकाने वाला 3. कष्टकारक।

आयासी *वि.* (तद्.) 1. आयास करने वाला, श्रम करने वाला, परिश्रमी 2. प्रयत्न करने वाला 3. श्रम अथवा प्रयत्न के उपरांत थका हुआ व्यक्ति।

आयुःशेष *पुं.* (तत्.) आयु का शेष भाग *वि.* (तत्.) जन्म से मृत्यु तक की अवधि।

आयु *स्त्री.* (तत्.) 1. वय (वयस्), उम्र 2. जितनी आयु अभी शेष है, जीवनकाल 3. जिंदगी मुहा. आयु खुटाना-उम्र कम होना।

आयुक्त *वि.* (तत्.) 1. संयुक्त 2. नियुक्त 3. अधिकार-प्राप्त 4. प्राप्त। *पुं.* (तत्.) (पदनाम) 1. किसी विशेष कार्य के लिए नियुक्त आयोग का प्रमुख या अध्यक्ष 2. कमिश्नरी का प्रधान अधिकारी, कमिश्नर।

आयुत *वि.* (तत्.) 1. मिश्रित 2. द्रवित, पिघला हुआ, *पुं.* (तत्.) आधा पिघला हुआ नवनीत या मक्खन।

आयुध *पुं.* (तत्.) अस्त्र-शस्त्र, हथियार।

आयुधजीवी *वि.* (तत्.) अस्त्र या हथियार से जीविका करनेवाला। *पुं.* 1. सैनिक, सिपाही 2. आयुधकर्मी।

आयुधनिर्माणी *स्त्री.* (तत्.) वह फैक्टरी जहाँ सैन्य कार्रवाई के लिए आवश्यक अस्त्र-शस्त्र आदि का निर्माण या संयोजन किया जाता है और आवश्यकतानुसार सेना को उनकी पूर्ति की जाती है ordinance factory तु. आयुधशाला।

आयुधपाल *पुं.* (तत्.) शस्त्रागार का अधिकारी।

आयुधभृत *पुं.* (तत्.) अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित व्यक्ति, हथियारों से लैस सिपाही, सक्षम योद्धा।

आयुधशाला *स्त्री.* (तत्.) वह भंडार गृह जहाँ अस्त्र-शस्त्र आदि सैन्य सामग्री रखी जाती है और आवश्यकता होने पर सेना को उपलब्ध कराई जाती है ordinance depot तु. आयुधनिर्माणी।

आयुधागार *पुं.* (तत्.) [आयुध+आगार] अस्त्र-शस्त्र रखने का स्थान, आयुध का आगार।

आयुधिक *वि.* (तत्.) अस्त्र-शस्त्र से संबंधित।

आयुधी *वि.* (तत्.) दे. आयुधीय।

आयुधीय *पुं.* (तत्.) 1. फौजी, सिपाही 2. सैनिक या रंगरूट देनेवाला गाँव *वि.* हथियार बाँधनेवाला।

आयुर्दाय *पुं.* (तत्.) 1. आयु 2. जीवन-काल 3. ज्यौ. ग्रहों के आधार पर आयु का निर्णय।

आयुर्द्रव्य *पुं.* (तत्.) 1. आयु के लिए हितकारी द्रव्य, आयु बढ़ाने वाला पदार्थ 2. एक आयुर्वैदिक औषधि।

आयुर्बल *पुं.* (तत्.) उम्र, आयुष्य।

आयुर्योग *पुं.* (तत्.) ज्यो. वह ग्रहयोग जिसके अनुसार ज्योतिषी किसी व्यक्ति की आयु या उसका भविष्य बतलाते है।

आयुर्विज्ञान *पुं.* (तत्.) 1. रोग की चिकित्सा या उपचार से संबंधित विज्ञान पर्या. चिकित्सा-विज्ञान इसके अंतर्गत ऐलोपैथी, आयुर्वेद, यूनानी, होम्योपैथी आदि सभी चिकित्सा पद्धतियाँ शामिल है medicine 2. आयु या जीवन से संबंधित विज्ञान। medical science(s)

आयुर्वेद *पुं.* (तत्.) आयु बढ़ाने का शास्त्र, हानिकारक पदार्थों के वर्णन का शास्त्र, रोगों के निदान अथवा चिकित्सा का शास्त्र, यह शास्त्र अथर्ववेद का उपवेद है, मनुष्यों के अतिरिक्त आयुर्वेद में पशु जगत और वनस्पति जगत विषयक चिंतन भी उपलब्ध है।

आयुर्वेदी *पुं.* (तद्.) 1. आयुर्वेद का ज्ञाता 2. आयुर्वेद की पद्धति के अनुसार चिकित्सा करने वाला।

आयुर्वैदिक *वि.* (तत्.) आयुर्वेद संबंधी, आयुर्वेद के ज्ञान अनुसार।

आयुवर्ग *पुं.* (तत्.) आयु के अनुसार विभक्त वर्ग जैसे 12 वर्ष की आयु तक के बच्चे, 12 से 18 वर्ष तक के बालक-बालिकाएँ, आदि।

आयुशेष *पुं.* (तत्.) आयु का शेष भाग, आयुःशेष, जीवन का शेष भाग।

आयुष *पुं.* (तत्.) जीवनकाल, आयु *पुं.* ज्योतिष का एक योग।

आयुष्कर *वि.* (तत्.) आयु बढ़ाने वाला, आयुवर्धक।

आयुष्टोम *पुं.* (तत्.) दीर्घ आयु की प्राप्ति के लिए लिए यज्ञ-विशेष।

आयुष्मती *वि.* (तत्.) 1. दीर्घायु स्त्री 2. सौभाग्यवती।

आयुष्मन *पुं.* (तत्.) आयुष्मान का संबोधन-रूप।

आयुष्मान *पुं.* (तत्.) 1. दीर्घ आयु वाला, दीर्घजीवी, चिरंजीवी 2. नाटकों के सूत रथी को 'आयुष्मान' कह कर संबोधन करते हैं 2. ज्यो. फलित ज्योतिष के विषकुंभ आदि 27 भेदों में से एक *वि.* 1 लंबी उम्रवाला 2. जीवित।

आयुष्य *वि.* (तत्.) आयु बढ़ाने वाला, जीवन-रक्षक। *पुं.* जीवनी शक्ति।

आयुस *पुं.* (तत्.) 1. जीवनकाल 2. जीवनी शक्ति 3. आयु (संबंधी)।

आयुस्तरण *पुं.* (तत्.) नृवि. आयु के आधार पर व्यक्तियों का वर्गीकरण यथा शिशु, बाल, किशोर, वयस्क, युवा आदि।

आयोग *पुं.* (तत्.) 1. प्रशा. किसी विशिष्ट कार्य को संपन्न करने के लिए स्थापित संगठन commission 2. नियुक्ति 3. काव्य. विप्रलंभ के दो पक्षों में से प्रथम, जिसमें अविवाहित अवस्था में प्रेम हो जाने पर मिलन न होने से विरह होता है, पूर्वराग की अवस्था 4. हल या बैलगाड़ी का जुआ कृषि. 5. पुष्पादि भेंट करने की क्रिया

6. किनारा 7. कार्य-विशेष को पूर्ण करना 8. ताल्लुक, संयोग।

आयोगव *पुं.* (तत्.) वैश्य माता और शूद्र पिता से उत्पन्न वर्ण-संकर संतान।

आयोजक *वि.* (तत्.) आयोजन करने वाला दे. आयोजन।

आयोजन *पुं.* (तत्.) 1. किसी कार्य में लगना, नियुक्ति 2. एकत्र करना, संयोजन 3. प्रबंध, व्यवस्था, इंतजाम 4. सम्मेलन, अधिवेशन।

आयोजन *वि.* (तत्.) 1. प्रबंधन 2. किसी कार्य को करने के किए आवश्यक व्यवस्था करना 3. प्रयत्न, उद्योग 4. जोड़ना, काम में लगाना।

आयोजना *स्त्री.* (तत्.) 1. (प्रबंधन) किसी कार्य को संपन्न करने की चरणबद्ध व्यवस्थित विधि 2. अभीष्ट उद्देश्य के लिए अपेक्षित साधनों के सीमित होने पर उनका सुविचारित उपयोग अथवा आबंटन तु. योजना (योजना 'स्कीम' है और आयोजना 'प्लान', परंतु 'प्लान'- के लिए कभी-कभी 'योजना' का प्रयोग भी होता है)।

आयोजित *वि.* (तत्.) 1. जिसका आयेजन कर दिया गया हो 2. व्यवस्थित।

आयोडीन *पुं.* (अं.) रसा. आवर्त-सारणी के सातवें वर्ग का अधात्विक रासायनिक तत्व जिसका प्रतीक I, परमाणु क्रमांक 53 है। हैलोजन समूह का यह सदस्य क्रिस्टलीय पदार्थ है। पोषक तत्व के रूप में थाइराइड ग्रंथि के सम्यक् कार्य करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

आयोधन *पुं.* (तत्.) 1. युद्ध, लड़ाई 2. रणभूमि।

आरंजित *पुं.* (तत्.) 1. सम्यक रूप से रंजित, अच्छी तरह रँगा हुआ 2. ला.अर्थ. बढ़ा-चढ़ा कर।

आरंजित *वि.* (तत्.) अच्छी प्रकार रंगा हुआ सुरंगित, शोभायमान रंगों वाला।

आरंभ *पुं.* (तत्.) 1. किसी कार्य की प्रथमावस्था का संपादन, प्रारंभ, शुरूआत 2. उत्पत्ति 3. अनुष्ठान।

आरंभक *वि.* (तत्.) आरंभ करने वाला, श्रीगणेश करने वाला।

आरंभण *पुं.* (तत्.) 1. आरंभ करना, शुरू करना 2. स्थापना।

आरंभत *क्रि.वि.* (तत्.) 1. आरंभ से, शुरू से 2. नए सिरे से 3. मूल से।

आरंभतः *क्रि.वि.* (तत्.) आरंभ से, मूल से, मूलतः।

आरंभना *अ.क्रि.* (तद्.) कोई कार्य अथवा विषय प्रारंभ होना *स.क्रि.* कोई कार्य अथवा विषय प्रारंभ करना, शुरू करना।

आरंभवाद *पुं.* (तत्.) न्यायशा. विश्व की सृष्टि परमाणुओं के योग से परमात्मा की इच्छानुसार हुई है इस प्रकार का सिद्धांत।

आरंभशूर *वि.* (तत्.) किसी काम में तत्परता दिखा कर ढीला पड़ने वाला व्यक्ति, हवा बाज़।

आरंभशूरता *स्त्री.* (तत्.) आरंभशूर व्यक्ति, आरंभशूर होने की अवस्था।

आरंभिक *वि.* (तत्.) 1. आरंभ का, पहले का, आरंभ से संबंध रखनेवाला, शुरू का, प्रारंभिक priliminary 2. स्थूल।

आरंभी *वि.* (तत्.) आरंभ करने वाला, शुरूआत करने वाला।

आर *पुं.* (तत्.) 1. नदी आदि का इस ओर का किनारा जैसे- आर-पार 2. सिरा, किनारा 3. खान से निकला लोहा, अशोधित लोहा 4. पीतल 5. कोण, कोना जैसे- सहस्रार चक्र 6. चमड़ा सीने का सूजा *स्त्री.* (तत्.) 1. बिच्छू, मधुमक्खी, बर्र आदि का डंक 2. लोहे की पतली कील जो बैल हाँकने हठ, अड़, जिद के पैने में लगी रहती है (देश.) पुं. हठ, अड़, जिद (अर.) *स्त्री.* 1. घृणा 2. वैर 3. लज्जा *क्रि.वि.* (देश.) अन्यत्र, किसी और स्थान पर।

आरकाटी *स्त्री.* (तत्.) लोहे की पतली कील, जो बैल हाँकते समय, उसके पैने में लगी रहती है।

आरकेस्ट्रा *पुं.* (अं.) 1. विभिन्न वाद्य यंत्रों का सामूहिक संगीत 2. सामूहिक संगीत हेतु संगठित वाद्ययंत्र, वादकों की टोली, वाद्य समूह, वाद्यवृंद, संगीतवृंद।

आरक्त *वि.* (तत्.) ललाई लिए हुए, हल्का लाल, सुर्ख। *पुं.* (तत्.) लाल चंदन।

आरक्तिम *वि.* (तत्.) हल्की लाली वाला, हल्का लाल।

आरक्ष *पुं.* (तत्.) 1. रक्षा 2. सैन्य, फौज 3. हाथी के कुंभ का संधिस्थल *वि.* सुरक्षित, सँभालकर रखा हुआ।

आरक्षक *पुं.* (तत्.) 1. पहरेदार, रक्षक 2. सिपाही, पुलिस।

आरक्षक बल *पुं.* (तत्.) आरक्षकों का दल या समूह, पुलिस बल।

आरक्षण *पुं.* (तत्.) प्रशा. किसी वस्तु, स्थान या अधिकार आदि को (समय से पहले) अपने लिए या व्यक्ति-विशेष या समूहविशेष के लिए निर्धारित अथवा सुनिश्चित कर लेना या करवा लेना। reservation

आरक्षा *स्त्री.* (तत्.) भली-भाँति की सुरक्षा, अच्छी तरह की जाने वाली रक्षा।

आरक्षिक *पुं.* (तत्.) दे. आरक्षक।

आरक्षित *वि.* (तत्.) प्रशा. समुदाय-विशेष, वर्ग-विशेष, व्यक्ति-विशेष या कार्य-विशेष के लिए अलग बचा कर रखा गया, जिसका आरक्षण हुआ है दे. आरक्षण।

आरक्षित कीमत *स्त्री.* (तत्.) वाणि. किसी संपत्ति की बिक्री या नीलामी से पूर्व निर्धारित किया गया मूल्य जिससे कम का प्रस्ताव आने या बोली लगाने की स्थिति में संपत्ति बेची नहीं जाती reserve price

आरक्षित निधि *स्त्री.* (तत्.) वाणि./अर्थ. 1. बैंक में जमा वह धनराशि, जिसका कहीं निवेश नहीं किया जाता 2. किसी प्रतिष्ठान द्वारा लाभ-राशि राशि में से प्रयोजन विशेष हेतु सुरक्षित धनराशि पर्या. आरक्षिति। reserve fund

आरक्षित संग्रह *पुं.* (तत्.) विशिष्ट विद्वानों के लिए सुरक्षित, बहुमूल्य पुस्तकों का संग्रह पुस्त. पुस्तकों का ऐसा संकलन, जिसमें से कोई पुस्तक सामान्य पाठकों को पढ़ने के लिए नहीं दी जाती बल्कि केवल विशेष पाठकों को ही पढ़ने हेतु उपलब्ध कराई जाती है। reserve collection

आरक्षित स्टॉक *पुं.* (तत्.+अं.) किसी वस्तु की निर्धारित न्यूनतम संख्या या मात्रा जिसे हर समय भंडार में रखना अनिवार्य माना जाता है ताकि आपात स्थिति में उसका उपयोग हो सके। reserve stock

आरक्षिति *स्त्री.* (तत्.) दे. आरक्षित निधि।

आरक्षी *वि.* (तत्.) रक्षा करने वाला *पुं.* रक्षक।

आरचित *वि.* (तत्.) पूर्णरूप से रचित, अथवा बनाया हुआ, सज्जित।

आरजसुवन *पुं.* (तद्.) आर्यपुत्र।

आरज़ी *वि.* (अर.) अस्थाई, कुछ ही समय के लिए, क्षणिक।

आरज़ू *स्त्री.* (फा.) 1. इच्छा, अभिलाषा, कामना 2. विनती, प्रार्थना प्रयो. बहुत सालों बाद बधुआ की घर बनाने की आरज़ू पूरी हुई।

आरज़ूमंद *वि.* (फा.) अभिलाषी, इच्छुक।

आरट *वि.* (तत्.) बार-बार रट लगाने वाला *पुं.* 1. विदूषक 2. अभिनेता 3. नाटक का पात्र।

आरट्ठ *पुं.* (तद्.) पश्चिमी पंजाब का एक प्राचीन जनपद।

आरणि *पुं.* (तत्.) 1. बवंडर 2. जलावर्त, भँवर 3. लोहे का हथौड़ा टि. यह 'अरणि' से भिन्न है, 'अरणि' काष्ठ विशेष है।

आरणेय *पुं.* (तत्.) शुकदेव मुनि *वि.* अरणि से उत्पन्न या उससे संबद्ध।

आरण्य *वि.* (तत्.) जंगली, जंगल का, वन का, जंगल में उत्पन्न *पुं.* 1. जंगल, अरण्य 2.

जंगली पशु 3. गोमय 4. मेष, वृष, सिंह राशियाँ 5. बिना बोए उत्पन्न होने वाला अन्न।

आरण्यक *वि.* (तत्.) जंगल का, वन में उत्पन्न, वन्य *पुं.* 1. ब्राह्मणग्रंथों से संबंधित धार्मिक तथा दार्शनिक ग्रंथ जिनकी रचना तथा पठन-पाठन का कार्य जंगल के आश्रमों में होता था 2. वेदों का वह भाग जिसमें वानप्रस्थों के कृत्यों का विवरण है 3. वनवासी।

आरण्यक संवाद *पुं.* (तत्.) आरण्यक ग्रंथों में व्यक्त ज्ञान, अरण्य में उपलब्ध तत्व ज्ञान।

आरण्यकांड *पुं.* (तत्.) रामायण का तृतीय कांड। अरण्यकांड।

आरण्यकुक्कुट *पुं.* (तत्.) जंगली मुर्गा, बनमुर्गी।

आरण्यगान *पुं* (तत्.) सामवेद का गान।

आरण्य-पशु *पुं.* (तत्.) जंगली पशु, वन्य पशु।

आरत *वि.* (तद्.) दे. आर्त।

आरतपाल *वि.* (तद्.) आर्तों का रक्षक, बेकसों का सहारा, पतित पावन।

आरतवंत *वि.* (तद्.) आर्त, दीन, दुःखी, बेबस, व्यथित, पतित।

आरता *पुं.* (तद्.) वैवाहिक आयोजन में वर की आरती, बड़े मंदिरों में आरती उतारने के बड़े थाल, जिनमें, जलाने के लिए 21 अथवा 51 बत्तियाँ सजाई जाती हैं।

आरति *स्त्री.* (तत्.) 1. विरक्ति 2. दुःख 3. दीनता या व्याकुलता।

आरति भंजन *वि.* (तद्.) व्यथा, दीनता/दुःख आदि दूर करने वाला, विपदा निवारक, दुःख भंजक।

आरती *स्त्री.* (तत्.) 1. देवता की मूर्ति या अभिनंदनीय व्यक्ति के सम्मुख बाएँ ऊपर, दाहिने और नीचे इस प्रकार चारों ओर दीपक घुमाना 2. पूजा के समय देवता के समक्ष पढ़ा जानेवाला स्तोत्र 3. वह पात्र जिसमें घी की बत्ती रखकर आरती की जाती है मुहा. आरती उतारना- अभिनंदन करना, पूजा करना; आरती लेना- देवता की आरती हो चुकने पर उपस्थित लोगों का उस दीपक के ऊपर हाथ फेर कर माथे पर लगाना।

आरपार *पुं.* (तत्.) नदी के दोनों छोर प्रयो. यहाँ से देखने पर नदी का आरपार दिखाई नही देता, इस तरफ से उस तरफ तक, यहाँ से वहाँ तक।

आरब्ध *वि.* (तत्.) आरंभ किया हुआ *पुं.* आरंभ।

आरब्धि *स्त्री.* (तत्.) शुरुआत, आरंभ।

आरभट *पुं.* (तत्.) 1. साहस, बहादुरी 2. विश्वास 3. साहसी पुरुष।

आरभटी *पुं.* (तत्.) 1. क्रोधादि उग्र भावों की चेष्टा 2. एक प्रकार की नृत्य-शैली 3. नाटक (साहित्य) एक वृत्ति का नाम जो रौद्र, भयानक और वीर रसों के वर्णन में प्रयुक्त होती है।

आरभटी वृत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. आचार्य भरत द्वारा द्वारा वर्णित चार नाट्य वृत्तियों (कैशिकी, सात्वती, आरभटी, भारती) में से एक वृत्ति, इस वृत्ति में माया, छल, कपट, इंद्रजाल, क्रोध अभिमान आदि का संयोजन होता है 2. रंगमंच पर वीभत्स और अलौकिक घटनाएँ दिखाने की वृत्ति।

आरमण *पुं.* (तत्.) 1. आनंद लेना 2. विराम 3. विश्राम करने का स्थान।

आरव *पुं.* (तत्.) 1. चिल्लाहट, आवाज, कर्कश ध्वनि 2. कुत्तों, भेड़ियों आदि का भौंकना।

आरसा *पुं.* (देश.) 1. कार्य करने में सुस्ती, काहिली, आलस्य 2. *स्त्री.* आरसी, दर्पण, आईना।

आरसी *पुं.* (तद्.) 1. शीशा, आईना, दर्पण 2. आईना जड़ा छल्ला जिसे स्त्रियाँ दाहिने हाथ के अँगूठे में पहनती हैं।

आरस्य *पुं.* (तत्.) रसहीनता, नीरसता, शुष्कता।

आरा *पुं.* (फा.) लकड़ी चीरने का लोहे का दाँतीदार औज़ार *पुं.* (तत्) पहिए की गरारी और पुट्टी के बीच की पटरी 2. चमड़ा सीने का सूज़ा।

आराइश *स्त्री.* (फा.) सजावट, कागज़ के फूल-पत्ते, सजावट के लिए बनाए गए कृत्रिम फूल-पत्ते।

आराइशी *वि.* (फा.) सजावट के काम में आने वाला, साज-सज्जा के काम में आने वाला।

आराकश *पुं.* (फा.) आरा खींचने (चलाने) वाला।

आराकशी *स्त्री.* (फा.) बड़े-बडे आरों से लकड़ी को चीरने का कार्य।

आराज़ी *स्त्री.* (अर.) 1. भूमि, जमीन 2. कृषि, खेती 3. उपजाऊ भूमि, खेत।

आराति *पुं.* (तत्.) शत्रु, वैरी।

आरात्रिक *पुं.* (तत्.) आरती, नीराजन 2. रत्नदीप रखने का पात्र, आरती की सामग्री रखने का पात्र।

आराधक *पुं.* (तत्.) उपासक, पूजा करनेवाला।

आराधन *पुं.* (तत्.) 1. उपासना करना, पूजा 2. तुष्ट करना, प्रसन्न करना 3. सम्मान करना 4. सेवा करना 5. तुष्टीकरण ।

आराधना *स्त्री.* (तत्.) 1. पूजा, उपासना 2. सेवा *स.क्रि.* (तत्.) उपासना करना।

आराधनीय *वि.* (तत्.) 1. आराधना योग्य, पूज्य 2. प्रसन्न करने योग्य 3. सेवा के योग्य, सेव्य।

आराधित *वि.* (तत्.) पूजित, सेवित।

आराध्य *वि.* (तत्.) 1. आराधना करने योग्य 2. इष्ट।

आराम *पुं.* (फा.) 1. विश्राम 2. सुख, प्रसन्नता (तत्.) बगीचा, उद्यान, उपवन 3. एक वृत्त *वि.* (फा.) नीरोग, स्वस्थ, चंगा।

आरामकुर्सी *स्त्री.* (फा.) लंबी कुरसी जिस पर पैर लंबे करके लेटा जा सकता है, सुखासंदी।

आरामख्वाह *वि.* (फा.) आराम की इच्छा वाला, परिश्रम से दूर रहने वाला।

आरामगाह *स्त्री.* (फा.) आराम करने का सुविधाजनक स्थान, सुस्ताने का कक्ष।

आरामगृह *स्त्री.* (फा+तत्.) आराम करने की जगह; सोने का कमरा, शयनागार, ठहरने की जगह।

आरामतलब *वि.* (फा.) 1. सुख चाहने वाला 2. आलसी।

आरामदेह *वि.* (फा.) सुखदायी, सुख देने वाला, आराम देने वाला *पुं.* (फ़ा.) आराम पहुँचाने वाली वस्तु या कार्य।

आरामपसंद *वि.* (फा.) दे. आरामतलब।

आरिज़ी *वि.* (अर.) 1. अस्थायी, क्षणिक, थोड़ी देर का 2. आकस्मिक।

आरी *स्त्री.* (फा.) छोटा आरा *स्त्री.* (तत्.) 1. कील 2. सुतारी 3. किनारा, कोर *वि.* (अर.) 1. नंगा 2. रिक्त 3. शून्य 4. थका, ऊबा हुआ।

आरुण *वि.* (तत्.) अरुण से संबंधित।

आरुणि *वि.* (तत्.) 1. अरुण का पुत्र या वंशज 2. सूर्य के पुत्र यम 3. दक्ष प्रजापति की पुत्री विनता के पुत्र, अरुण के वंशज 4. महर्षि उद्दालक का बचपन का नाम।

आरुण्य *पुं.* (तत्.) 1. अरुणता, लाली, सुर्खी 2. उज्ज्वला।

आरुरुक्षु *वि.* (तत्.) 1. योग. योगारूढ़ होने की इच्छा रखने वाला (साधक) 2. चढ़ने का इच्छुक।

आरू *पुं.* (तत्.) 1. पिंगल वर्ण 2. पीला रंग *वि.* पिंगल वर्ण का, भूरापन लिए हुए लाल 3. शूकर, सुअर 4. केकड़ा 5. एक वृक्ष 6. घड़ा।

आरूक *वि.* (तत्.) 1. एक जड़ी बूटी जो हिमालय में पाई जाती है 2. आलूबुखारा 3. हानिकारक, नुकसान पहुँचाने वाला *पुं.* दवा के काम आनेवाला एक पौधा जो हिमालय पर उत्पन्न होता है।

आरूढ़ *वि.* (तत्.) 1. चढ़ा हुआ, सवार 2. दृढ़, स्थिर।

आरूढ़यौवना *स्त्री.* (तत्.) यौवन की शोभा से परिपूर्ण नारी, नायिका भेद में इस प्रकार की नायिका।

आरूढ़ि *स्त्री.* (तत्.) 1. चढ़ाव, चढ़ाई 2. तत्परता 3. आरूढ़ होने का भाव।

आरूप *पुं.* (तत्.) प्रबंध. ऐसी रूप-रचना, स्वरूप या 'आकार-विन्यास जो प्रतिमान के रूप में मान्य हो, संरूप format सुनिश्चित एवं निर्धारित रूप।

आरेख *पुं.* (तत्.) रेखाचित्र, खाका, चित्र, योजना-चित्र, नक्शा।

आरेखन *पुं.* (तत्.) 1. वस्तुओं, दृश्यों आदि को रेखाओं से प्रकट करने की कला 2. रेखाचित्र, ढाँचा, चित्र।

आरेखन कला *स्त्री.* (तत्.) 1. आरेख बनाने की कला, नक्शानवीसी, रेखा-चित्र बनाने की कला।

आरेखन कलाकार *पुं.* (तत्.) नक्शानवीस, रेखा-चित्र बनाने वाला, आरेख निर्माता।

आरेचन *पुं.* (तत्.) 1. संकोचन 2. खाली करना 3. बाहर निकालना।

आरेचित *वि.* (तत्.) 1. संकुचित 2. रिक्त 3. घटाया हुआ 4. बाहर निकाला गया।

आरेसु *स्त्री.* (तत्.) ईर्ष्या, डाह।

आरोग्य *पुं.* (तत्.) रोगहीनता, नीरोगता, स्वस्थता, स्वास्थ्य।

आरोग्यद्वितिया व्रत *पुं.* (तत्.) स्वास्थ्य की अभिवृद्धि हेतु, शुक्ल पक्ष की द्वितिया को रखा जाने वाला व्रत, पौष शुक्ल पक्ष द्वितिया का इस इस संबंध में विशेष महत्व, उदय होते हुए चंद्रमा के पूजन का विधान।

आरोग्य प्रमाणपत्र *पुं.* (तत्.) प्रशा. 1. प्राधिकृत चिकित्सक द्वारा जारी किया गया और कर्मचारी को निरोग और स्वस्थ बताने वाला प्रमाण पत्र 2. किसी पद पर नियुक्ति हेतु उम्मीदवार के स्वस्थ होने का प्रमाण पत्र। medical certificate of fitness

आरोग्य लाभ *पुं.* (तत्.) स्वास्थ्य और शक्ति पुनः प्राप्त करना, स्वास्थ्य लाभ।

आरोग्यव्रत *पुं.* (तत्.) आरोग्य प्राप्ति हेतु, आश्विन कृष्ण प्रतिपदा से शरद पूर्णिमा तक रखा जाने वाला व्रत।

आरोग्यशाला *स्त्री.* (तत्.) वह चिकित्सालय जहाँ लोग स्वास्थ्य-लाभ, भौतिक चिकित्सा या जीर्ण रोग के उपचार के लिए जाते हैं।

आरोग्य स्नान *पुं.* (तत्.) आरोग्यता प्राप्ति के पश्चात् किया जाने वाला स्नान।

आरोध *पुं.* (तत्.) रुकावट, अवरोध, घेरा, बाधा।

आरोधन *पुं.* (तत्.) रोकने का भाव, रुकावट का कार्य।

आरोधना *स.क्रि.* (तद्.) रुकावट पैदा करना, रोकना, घेरा डालना, घेराव करना।

आरोप *पुं.* (तत्.) 1. इलजाम 2. दोष 3. झूठी कल्पना काव्य. एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ के गुण धर्म की कल्पना।

आरोपक *वि.* (तत्.) दोष या अपराध का आरोप लगानेवाला।

आरोपण *वि.* (तत्.) 1. (दोष) लगाना 2. स्थापित करना 2. रोपना 4. बैठाना 3. पौधों को एक स्थान से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना।

आरोपना *स.क्रि.* (तत्.) लगाना, स्थापित करना।

आरोपपत्र *पुं.* (तत्.) विधि. वह प्रलेख जिसमें किसी व्यक्ति पर लगाए गए आरोपों का विवरण होता है। chargesheet

आरोपवाद *पुं.* (तत्.) काव्य. भट्टलोल्लट द्वारा विवेचित रस निष्पत्ति का सिद्धांत, जिसमें, नट के कुशल अभिनय से, दर्शक उस नट को ही नाटक का वास्तविक पात्र मानते हैं।

आरोपित *वि.* (तत्.) विधि. 1. आरोप किया हुआ, आरोप लगाया गया 2. जिस पर आरोप लगाया गया हो charged 3. कृषि. एक जगह से उखाड़ कर दूसरी जगह रोपा गया, लगाया हुआ transplanted 4. स्थापित किया हुआ 5. मढ़ा हुआ।

आरोपी *वि.* (तत्.) जिस पर आरोप लगा हो, मुजरिम।

आरोप्य *वि.* (तत्.) 1. लगाने योग्य, स्थापित करने योग्य 2. रोपने योग्य।

आरोह *पुं.* (तत्.) 1. ऊपर की ओर गमन, चढ़ाई 2. आक्रमण 3. घोड़े पर या हाथी पर चढ़ना 4. (वेदांत) जीवात्मा का क्रमशः उत्तमोत्तम योनि प्राप्त करना 5. विकास 6. आविर्भाव 7. संगीत का चढ़ाव, स्वरों का ऊँचा होने का क्रम। विलो. अवरोह।

आरोहण *पुं.* (तत्.) 1. पर्वत पर चढ़ने की क्रिया, सवार होने की क्रिया 2. उन्नत होने की क्रिया 3. घोड़े आदि पशुओं पर चढ़ने की क्रिया (अश्वारोहण)।

आरोहावरोह *पुं.* (तत्.) 1. चढ़ने और उतरने की क्रिया, उतार-चढ़ाव 2. जीवन का उतार-चढ़ाव 3. संगीत में स्वर का उतार-चढ़ाव।

आरोहित *वि.* (तत्.) 1. जिसने आरोहन किया हो 2. नीचे से ऊपर चढ़ा हुआ।

आरोही *वि.* (तत्.) 1. चढ़नेवाला, आरोही 2. ऊपर जानेवाला 3. उन्नतिशील *पुं.* 1. संगीतशास्त्र के अनुसार वह स्वर जो षड्ज (स) से लेकर निषाद तक उत्तरोत्तर चढ़ता जाए सा से लेकर रे ग म प ध नी 2. सवार जैसे- अश्वारोही 3. चढ़नेवाला जैसे- पर्वतारोही।

आरोहीक्रम *पुं.* (तत्.) गणि. किसी सूची की निम्नतम से उच्चतम के क्रम में व्यवस्था तु. अवरोही क्रम। ascending order

आरोही पात *पुं.* (तत्.) खगो. आरोह क्रम खगोलीय पिंड का वह पात, जिसकी गति उत्तर की ओर होती है

आरोही पादप *पुं.* (तत्.) वन. वे पादप जो किसी सहारे के चारों ओर लिपट कर अथवा चिपके रह कर ऊपर की ओर बढते हैं उदा. लताएँ, बेलें।

आरोहीवर्ण *पुं.* (तत्.) संगी. आरोह क्रम में स्वर का उत्थान, स्वर का ऊपर जाना।

आरोही स्वर *पुं.* (तत्.) 1. संगी. ऊपर की ओर षडज से निषाद की ओर जाने वाला स्वर 2. भाषा अनुतान में उठने वाला सुर जैसे- प्रश्नवाचक वाक्य में अंत में सुर उठता है। पर्या. उदात्त। intonation

आरौ *पुं.* (तत्.) 1. शब्द 2. आहर।

आर्क *वि.* (तत्.) सूर्य से संबंधित, सूर्य का।

आर्कटिक *वि.* (अं.) उत्तरी ध्रुव प्रदेश से संबंधित। आर्कटिक वृत्त से घिरा हिम जल क्षेत्र arctic region

आर्क लैंप *पुं.* (अं.) भौ. एक प्रकार का विद्युत दीप, जिसमें दो इलेक्ट्रानों के बीच तीव्रप्रकाश निकलता है।

आर्कि *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य-पुत्र जैसे शनि, यम और कर्ण 2. वैवस्वत मुनि।

ऑर्गान *पुं.* (अं.) रसा. रंगहीन गंधहीन, अधात्विक, अक्रिय गैस तत्त्व जिसकी खोज जॉन रैले और विलियम रैमजे ने की थी इसका प्रतीक परमाणु क्रमांक 18 और आपेक्षिक परमाणु द्रव्यमान 39.948 है।

आर्घा *स्त्री.* (तत्.) 1. पीले रंग की एक मधुमक्खी मधुमक्खी जिसका सिर बड़ा होता है 2. सारंग मक्खी।

आर्घ्य *वि.* (तत्.) आर्घा नाम की मक्खी का या इससे संबंधित *पुं.* (तत्.) आर्घ्या का मधु।

आर्चिक *वि.* (तत्.) ऋग्वेद संबंधी ऋचा से संबंधित *पुं.* सामवेद में उद्‌धृत ऋग्वेद के मंत्र।

आर्जव *पुं.* (तत्.) 1. ऋजुता, सीधापन 2. व्यवहार की सरलता 3. स्पष्टवादिता।

आर्जुनि *पुं.* (तत्.) अर्जुन का पुत्र, अभिमन्यु।

आर्ट *पुं.* (अं.) 1. कला 2. कला-कौशल, शिल्प, कारीगरी, हुनर 3. हस्तकारी 4. चित्रकला 5. कृत्रिम।

आर्ट गैलरी *स्त्री.* (अं.) [आर्ट+गैलरी] ऐसा कक्ष, जिस में चित्र-कला प्रदर्शित हो, चित्रवीर्य, चित्र दीर्घा, कला दीर्घा, चित्र-कला दीर्घा।

आर्ट पेपर *पुं.* (अं.) [आर्ट+पेपर] विशेष प्रकार से निर्मित कागज, जिस पर चित्र कला निखरती है।

आर्टिस्ट *पुं.*(अं.) किसी कला (विशेषकर चित्रकारी, संगीत, नृत्य आदि) में निपुण, कलाकार।

आर्डर (ऑर्डर) *पुं.* (अं.) 1. आदेश, आज्ञा, हुक्म 2. किसी वस्तु को पहुँचाने के लिए दिया गया आदेश।

आर्डर चेक *पुं.* (अं.) ऐसा चेक, जिसकी धन राशि उस पर लिखे हुए व्यक्ति अथवा संस्था को ही मिल सकती है, अन्य को नहीं, आदिष्ट चेक।

आर्डिनैन्स (ऑर्डिनैन्स) *पुं.* (अं.) प्रशा. अध्यादेश, वह आदेश या कानून जिसे सरकार विशेष स्थितियों में संसद में पारित किए बिना अल्पकाल के लिए जारी करती है।

आर्त *वि.* (तत्.) 1. पीड़ित, चोट खाया हुआ 2. दुखी 3. अस्वस्थ 4. नश्वर।

आर्तता *स्त्री.* (तत्.) 1. पीड़ा, दर्द होने की स्थिति 2. दुःख, क्लेश 3. बीमारी 4. नश्वरता।

आर्तध्यान *पुं.* (तत्.) जैनियों के मतानुसार वह ध्यान जिससे दुःख हो।

आर्तध्वनि *स्त्री.* (तत्.) दुःखभरी आवाज, दर्द भरी आवाज।

आर्तनाद *पुं.* (तत्.) वह शब्द जिससे सुननेवाले को यह बोध हो कि उसका उच्चारण करनेवाला दुःख में है, दुःख सूचक शब्द प्रयो. युद्ध भूमि में चारों ओर घायलों का आर्तनाद सुनाई देता है।

आर्तबंधु *पुं.* (तत्.) व्यथित, व्याकुल व्यक्तियों की सहायता करने वाला, दीनबंधु।

आर्तभक्त *पुं.* (तत्.) आर्तभक्ति करने वाला, दीन-दुःखियों की तरह भगवान की प्रार्थना करने वाला।

आर्तव *वि.* (तत्.) 1. ऋतु-संबंधी 2. ऋतुधर्म या मासिक स्राव संबंधी। *पुं.* (तत्.) स्त्रियों को मासिक धर्म के समय होने वाला रजःस्राव।

आर्तव रोग *पुं.* (तत्.) स्त्रियों के मासिक धर्म से संबंधित रोग।

आर्तवाणी *स्त्री.* (तत्.) दुःखसूचक शब्द, आर्तस्वर। आर्तस्वर।

आर्तवी *वि.* (देश.) 1. ऋतु से संबंधित, ऋतु में उत्पन्न 2. मासिक धर्म संबंधी (स्त्रियों में) ऋतु स्राव संबंधी।

आर्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. पीड़ा, दर्द, दुःख 2. व्याधि, रोग 3. विनाश 4. बुराई 5. धनुष की कोर।

आर्त्विज *वि.* (तत्.) ऋत्विक संबंधी।

आर्थ *वि.* (तत्.) 1. धन से संबंधित 2. शब्दों के अर्थ से संबंधित, वाक्यों के अर्थ से संबंधित।

आर्थिक *वि.* (तत्.) 1. धन-संबंधी, रुपए-पैसे से संबंध रखने वाला 2. धनिक, धनी 3. किसी शब्द के अर्थ से निःसृत, शब्दार्थ से निकलने वाला या उससे संबंधित 4. तथ्यपूर्ण।

आर्थिक असमानता *स्त्री.* (तत्.) अर्थ. समाज के विभिन्न वर्गों के बीच स्पष्ट दिखाई देने वाली आय-संबंधी विषमता 2. वह दशा जिसमें सभी नागरिकों को आर्थिक उन्नति के लिए समान अवसर उपलब्ध हों।

आर्थिक भूविज्ञान *पुं.* (तत्.) भूविज्ञान की वह शाखा, जो पृथ्वी के भीतरी संपदा, यथा-खनिज, शैल, जल आदि का अध्ययन करती है। इस संपदा का समुचित उपयोग भी आर्थिक भू-विज्ञान के क्षेत्र में ही आता है।

आर्थिक व्यवस्था *स्त्री.* (तत्.) अर्थ. वस्तुओं और और सेवाओं के उत्पादन, उपयोग तथा वितरण में संसाधनों के उपयोग की व्यवस्थित पद्धति। economic system

आर्थिक शास्तियाँ *स्त्री.* (तत्.) अर्थ. अन्य देश की अर्थव्यवस्था खराब करने की दृष्टि से किए गए कार्य।

आर्थिक संवृद्धि *स्त्री.* (तत्.) अर्थ. एक निश्चित अवधि में किसी देश की अर्थ व्यवस्था की वास्तविक आय में सार्वत्रिक वृद्धि की दर, जिसे सकल राष्ट्रीय

उत्पाद या शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद या प्रतिव्यक्ति के के हिसाब से व्यक्त किया जाता है। economic growth

आर्थिक सहायता *स्त्री.* (तत्.) सार्वजनिक कार्य के के लिए दी गई धन रूपी सहायता, लोकहित के लिए आर्थिक सहयोग, नियोजित कार्य के लिए दी गई मदद।

आर्थित *वि.* याचित, इच्छित।

आर्थी *वि.* (तत्.) काव्य. शब्दों के अर्थ से संबंधित जैसे- आर्थी व्यंजना।

आर्थी अपह्नुति *स्त्री.* (तत्.) काव्य. अपह्नुति अलंकार का एक प्रकार जिसमें यथार्थता का, काव्यात्मक विधि से, निषेध किया जाता है।

आर्थी जालक्रम *पुं.* (तत्.) कंप्यू. भाषा-विश्लेषण के लिए शब्दों के अर्थ को उससे संबद्ध सभी शब्दों के साथ जुड़ाव के रूप में दिखाना जैसे- चिड़िया के साथ 1. पक्षी है 2. उड़ती है 3. घोंसला बनाती है आदि।

आर्थी व्यंजना *स्त्री.* (तत्.) साहि. वह व्यंजना जिसमें शब्दों से नहीं बल्कि उनसे निकलने वाले अर्थ या भाव से अथवा व्यंग्य, काकु आदि से कोई आशय होता है दे. अपह्नुति।

आर्द्ध/र्ध *वि.* (तत्.) आधा, आधे का।

आर्द्धधिक (तत्.) आधे से संबंधित।

आर्द्र *वि.* (तत्.) 1. नम, गीला, तर, सीलन युक्त 2. सना, लथपथ 3. रसयुक्त 4. द्रवित, पिघला हुआ जैसे- स्नेहार्द्र 5. सहानुभूति पूर्ण (आर्द्र दृ टि)।

आर्द्रक *पुं.* (तत्.) अदरक *वि.* आर्द्रा नक्षत्र-संबंधी या आर्द्रा में उत्पन्न।

आर्द्रता *स्त्री.* (तत्.) 1. गीलापन, नमी, सीलन 2. ठंडक, शीतलता।

आर्द्रताग्राही *वि.* (तत्.) वातावरण से नमी ग्रहण करने वाली वस्तु, नमी से प्रभावित होने वाली वस्तु।

आर्द्रतादर्शी *पुं.* (तत्.) [आर्द्रता+दर्शी] वायु में नमी सूचित करने का यंत्र। hygroscope

आर्द्रतामापी *पुं.* (तद्.) वायु में वाष्प अथवा नमी मापने का यंत्र। hygrometer

आर्द्रतामिति *स्त्री.* (तत्.) [आर्द्रता+मिति] भौ. हवा की नमी को मापना। hygrometry

आर्द्रनयन *वि.* (तत्.) (आर्द्र+नयन) भीगे नयनों वाला, रोता हुआ।

आर्द्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. सत्ताईस नक्षत्रों में छठा नक्षत्र 2. वह समय जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में होता है प्राय: आषाढ़ मास में इस नक्षत्र में सूर्य संचरण करता है। इस समय में बोया हुआ धान अच्छी फसल देता है 3. अदरक 4. अतीस।

आर्मेचर *पुं.* (अं.) भौ.इलै. ताँबे के तार के कुंडल जो विद्युत डायनमो या बिजली की मोटर में लपेटे जाते हैं, ये चुंबकीय क्षेत्र में चक्कर काटते हुए ऊर्जा उत्पन्न करते हैं।

आर्य *पुं.* (तत्.) 1. श्रेष्ठ, उत्तम 2. पूज्य, बड़ा, योग्य 3. मान्य, श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न 4. आर्य जाति से संबंध रखने वाला 1. श्रेष्ठ-पुरुष 2. मनुष्यों की वह जाति जिसने सबसे पहले सभ्यता प्राप्त की 3. गुरु, पति, श्वसुर, स्वामी (मालिक) सुहृद् आदि के लिए सम्मानवाचक संबोधन शब्द।

आर्यक *पुं.* (तत्.) 1. आदरणीय जन, पूज्य व्यक्ति 2. पितामह 3. एक श्राद्ध जो पितरों के सम्मानार्थ किया जाता है।

आर्यका *स्त्री.* (तत्.) 1. श्रेष्ठ एवं आदरणीय महिला 2. एक नक्षत्र का नाम।

आर्यघोटक *पुं.* (तत्.) [आर्य+घोटक] 1. राजकीय शोभा-यात्रा का सवार रहित सुसज्जित घोड़ा, कोतल 2. जुलूस का घोड़ा।

आर्यता *स्त्री.* (तत्.) 1. श्रेष्ठता, आर्य होने का गुण, शिष्टता 2. विद्वत्ता।

आर्यत्व *पुं.* (तत्.) आर्यता।

आर्यदेश *पुं.* (तत्.) वह देश जिसमें आर्यों का निवास हो।

आर्यधर्म *पुं.* (तत्.) 1. कुलीन, श्रेष्ठ, सम्माननीय जनों द्वारा अनुपालित धर्म 2. सदाचार।

आर्यपुत्र *पुं.* (तत्.) दे. आर्य, 1. पति (के लिए आदरसूचक शब्द) 2. आदरणीय व्यक्ति का पुत्र 3. राजकुमार।

आर्यभट्ट *पुं.* (तत्.) ज्योतिषशास्त्र और खगोलशास्त्र के एक प्राचीन विद्वान, जिन्होंने भारत में बीजगणित का प्रयोग किया था।

आर्यभाव *पुं.* (तत्.) सदाचार, शिष्टाचार, सम्मानजनक भाव या आचरण।

आर्यभाषाएँ *वि.* (तत्.) भाषा. योरोपीय तथा भारत-ईरानी समूह की भाषाएँ।

आर्यमिश्र *वि.पुं.* (तत्.) 1. पूज्य, माननीय 2. विद्वान।

आर्यवृत्त *वि.* (तत्.) आर्य अर्थात् श्रेष्ठ व्यक्ति की भाँति व्यवहार करने वाला, सदाचारी धार्मिक *पुं.* आर्यों जैसा आचरण या चरित्र।

आर्यसत्य *पुं.* (तत्.) महान सत्य, बौद्ध धर्म के चार सिद्धांत जो उसके आधारभूत स्तंभ माने जाते हैं जैसे- 1. जीवन दुःखमय है 2. जीवनेच्छा दुःख का कारण है 3. इच्छा की निवृत्ति दुःख की निवृत्ति है 4. अष्टमार्ग निर्वाण की ओर ले जाता है।

आर्यसमाज *पुं.* (तत्.) सनातन हिंदू धर्म में व्याप्त मूर्तिपूजा (तथाकथित) अंधविश्वास एवं कुरीतियों में सुधार के लिए स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित धार्मिक-सामाजिक संस्था।

आर्यसमाजी *वि.* (तत्.) आर्यसमाज का अनुयायी या उसके सिद्धांतों को मानने वाला।

आर्यसिद्धांत *पुं.* (तत्.) आर्य भट्ट की कृति का नाम।

आर्या *स्त्री.* (तत्.) 1. पार्वती 2. सास 3. दादी, पितामही 4. बड़ी महिलाओं के लिए सम्मानसूचक संबोधन 5.एक मात्रिक छंद जिसके पहले और तीसरे चरण में बारह-बारह, दूसरे में 18 और चौथे में 15 मात्राएँ होती हैं।

आर्यागीत *स्त्री.* (तत्.) आर्या छंद का एक भेद जिसके प्रथम तथा तृतीय चरण में 12 तथा द्वितीय-चतुर्थ चरण में 20 मात्राएँ होती हैं।

आर्यावर्त *पुं.* (तत्.) मध्य और उत्तर भारत जो विध्यांचल से हिमालय और पश्चिमी समुद्र से पूर्वी समुद्र तक फैला हुआ है।

आर्यावर्तीय *वि.* (तत्.) आर्यावर्त का निवासी, भारत का प्राचीन नाम-आर्यावर्त है।

आर्यिका *स्त्री.* (तत्.) 1. आदरणीय महिला 2. सास 3. कुलीन, सदाचारिणी 4. एक नक्षत्र का नाम।

आर्येतर *पुं.* (तत्.) जो आर्य न हो, अनार्य।

आर्येतर भाषाएँ *स्त्री.* (तत्.) भाषा. (भारत के संदर्भ में) वे भाषाएँ जो आर्य भाषा उपपरिवार की नहीं हैं उदा. तमिल, मिजो, खासी आदि non-aryan

आर्योचित *वि.* (तत्.) [आर्य+उचित] आर्य के लिए उचित, आर्य के योग्य, शोभाकारक।

आर्योपनिवेश *पुं.* (तत्.) ऐसा स्थान, जहाँ आर्य रहते हैं, श्रेष्ठ व्यक्तियों का प्रदेश, सभ्य और शिष्ट निवासियों का क्षेत्र।

आर्ष *पुं.* (तत्.) 1. ऋषि संबंधी 2. ऋषिप्रणीत 3. वैदिक 4. ऋषियों द्वारा मान्य उदा. आर्षग्रंथ, आर्ष प्रयोग, आर्षविवाह।

आर्षग्रंथ *पुं.* (तत्.) ऋषियों, मुनियों आदि द्वारा रचित प्रामाणिक ग्रंथ।

आर्षप्रयोग *पुं.* (तत्.) शब्दों का वह व्यवहार जो पाणिनि व्याकरण के नियम के तो विरुद्ध हो किंतु जिनका प्रयोग पूर्व-प्रतिष्ठित रचयिताओं ने किया हो, ऐसे प्रयोगों को व्याकरण-विरुद्ध न कह कर आर्ष कह दिया जाता है पर्या. अपाणिनीय प्रयोग।

आर्षभ *वि.* (तत्.) 1. ऋषभ गोत्र में उत्पन्न, ऋषभ का वंशज 2. साँड से उत्पन्न।

आर्षभि *पुं.* (तत्.) ऋषभ का वंशज, भारत के प्रथम चक्रवर्ती सम्राट भरत का एक नाम।

आर्षभी *पुं.* (तत्.) केवाँच या कपिकच्छु नामक लता, इसके चूर्ण के स्पर्श से त्वचा में खुजली होने लगती है।

आर्षविवाह *पुं.* (तत्.) मनु के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें कन्या का पिता वर से शुल्क के रूप में दो बैल लेकर उसे कन्या देता है।

आर्षेय *पुं.* (तत्.) 1. ऋषियों से संबंधित 2. श्रेष्ठ, आदरणीय 2. ऋषिकर्म (पठन-पाठन आदि-संबंधी)।

आर्सीन *स्त्री.* (अं.) रसा. रंग हीन और अतिविषैली गैस।

आर्हत *वि.* (तत्.) 1.जैन सिद्धांतों से संबंधित 2. जैन मत का अनुयायी *पुं.* जैन व्यक्ति।

आलंकारिक *वि.* (तत्.) 1. अलंकार युक्त 2. अलंकार-संबंधी 3. अलंकार शास्त्र (साहित्य शास्त्र का) वेत्ता।

आलंकारिक अर्थ *पुं.* (तत्.) शब्द अथवा वाक्य का अभिधागत अर्थ से भिन्न अर्थ, प्रचलित अर्थ से भिन्न लाक्षणिक अर्थ, व्यंग्यार्थ।

आलंकारिक स्वर *पुं.* (तत्.) संगीत में वह स्वर जो मुख्य स्वर को रंजित करे और गायन अथवा वादन अधिक आकर्षक बने।

आलंकारिता *स्त्री.* (तत्.) अभिव्यक्ति का आकर्षक होने का गुण, काव्य में अलंकार का गुण।

आलंटन *पुं.* (तत्.) 1. लूटना, बलात् छीन लेना 2. अपहरण करना।

आलंब *पुं.* (तत्.) आश्रय, सहारा, अवलंब, टेक।

आलंबन *पुं.* (तत्.) 1. सहारा, आश्रय, अवलंबन 2. साहि. रस निष्पत्ति में सहायक एक विभाव जिस पर रस आलंबित होता है जैसे- शृंगार रस में नायक और नायिका आलंबन विभाव कहे जाते हैं।

आलंबनता *स्त्री.* (तत्.) 1. आलंबन का गुण, स्वभाव या धर्म 2. आश्रयित्व।

आलंबन विभाव *पुं.* (तत्.) विभाव का एक भेद जिस पर भाव या रस अवलंबित होता है। दे. विभाव/आलंबन।

आलंबित *पुं.* (तत्.) आश्रित, सहारे पर टिका हुआ, अवलंबित।

आलंबी *वि.* (तत्.) किसी का सहारा या आलंब लेनेवाला।

आलंभ *पुं.* (तत्.) 1. छूना 2. मिलना 3. पकड़ना 4 उखाड़ना 5. मरण 6. वध 7. हिंसा।

आलंभन *पुं.* (तत्.) दे. आलंभ।

आल *पुं.* (तत्.) 1. हरताल 2. छल 3. विषैले जंतुओं के शरीर से होनेवाला विष का स्राव 4. गीलापन, तरी 5. झंझट 6. एक प्रकार का कंटीला पौधा 7. स्याह काँटा, किंगराई 8. मछली के अंडों का समूह 9. पीला संखिया 10. माहू 11. गांव का एक हिस्सा *स्त्री.* (देश.) 1. प्याज प्याज का हरा डंठल 2. कद्दू (अर.) 1. संतति 2. बेटी की संतान 3. वंशज *वि.* (तत्.) 1. बड़ा 2. विस्तृत 3. अधिक *स्त्री.* (तत्.) 1. एक पौधा जिस की छाल और जड़ से लाल रंग बनाया जाता है 2. उक्त पौधे से प्राप्त लाल रंग।

आलकस *पुं.* (तद्.) दे. आलस्य।

आलक्षण *पुं.* (तत्.) परीक्षण, देखना, समझना।

आलक्षित *वि.* (तत्.) भली-भाँति देखा और समझा हुआ, अनुभव किया हुआ।

आलक्ष्य *वि.* (तत्.) 1. दिखाई पड़ने लायक, प्रकट 2. जो कुछ-कुछ दिखाई पड़े।

आलगर्द *पुं.* (तत्.) जल में रहनेवाला एक साँप।

आलजाल *पुं.* (देश.) ऊटपटाँग, ऊल-जलूल।

आलता *पुं.* (देश.) 1. विशेष वृक्षों की छाल से बनाया गया लाल रंग 2. लाख का रंग 3. शृंगार के लिए, स्त्रियों द्वारा पैरों पर लगाया जाने वाला वाला लाल रंग।

आलथी-पालथी *स्त्री.* (देश.) दाहिनी एड़ी बाईं और बाईं एड़ी दाहिनी जाँघ के नीचे या ऊपर रखकर बैठने की मुद्रा।

आलन *पुं.* (देश.) 1. घास-भूसा आदि जिसे मिट्टी के गारे, पलस्तर आदि में या उपले पाथते समय गोबर में मिलाया जाता है 2. साग में मिलाया जानेवाला बेसन या आटा।

आलना *पुं.* (देश.) घोंसला।

आलपीन *स्त्री.* (पुर्त. >आलपिनेत) एक घुंडीदार पतली छोटी सूई, पिन।

आलबाल *पुं.* (देश.) 1. वृक्ष के चारों ओर निर्मित मिट्टी का घेरा 2. प्याले के आकार का, किसी शारीरिक अंग का भाग।

आलम *पुं.* (अर.) 1. दुनिया, संसार, जगत 2. भीड़ 3. (समग्र) अवस्था, हालत 4. एक प्रकार का नृत्य 5. वातावरण जैसे- खुशी का आलम।

आलमपनाह *पुं.* (अर.) जहाँपनाह, दुनिया का बादशाह।

आलमारी *स्त्री.* (पुर्त.) दे. अलमारी।

आलय *पुं.* (तत्.) 1. घर, गृह 2. वास, आवास, भवन जैसे- 'देवालय 3. (बौद्ध) लयपर्यंत रहने वाला विज्ञान, अव्य. लयपर्यंत, जब तक लय बनी रहे।

ऑल राउन्डर *पुं.* (अं.) बहुमुखी प्रतिभा का धनी (क्रिकेट) खिलाड़ी जो बल्लेबाज़ी, गेंदबाज़ी और क्षेत्ररक्षण तीनों में दक्ष हो।

आलस *वि.* (तद्.) आलसी, सुस्त, काहिल *पुं.* (तत्.) आलस्य, सुस्ती।

आलसवंत *वि.* (देश.) अलसाया हुआ, आलस्य युक्त, सुस्त, काहिल।

आलसहूँ *क्रि.वि.* (देश.) आलस्य से भी।

आलसी *वि.* (तद्.) 1. सुस्त, काहिल 2. अकर्मण्य 3. धीमा।

आलस्य *पुं.* (तत्.) कार्य करने में अनुत्साह, सुस्ती, ढिलाई, काम करने की अनिच्छा।

आला *पुं.* (देश.) ताक, ताखा। *वि.* (अ.>आलह) 1. अव्वल दर्जे का, सबसे बढ़िया, श्रेष्ठ 2. सितार के उतरे और मुलायम (कोमल) स्वर। *पुं.* (अर.) 1. औजार, हथियार 2. उपकरण 3. यंत्र। *पुं.* (तत्.) कुम्हार का आँवा, पजावा *वि.* (तत्.) 1. गीला, नम 2. हरा, ताजा मुहा. आला दर्जे का- उत्तम कोटि का।

आलात *पुं.* (तत्.) जलती हुई लकड़ी का या संबंधित *पुं.* (तत्.) औज़ार (देश.) जहाज़ का रस्सा।

आलातचक्र *पुं.* (तत्.) लकड़ी के एक सिरे को जलाकर दूसरे सिरे को हाथ में लेकर घुमाने से बनने वाला चक्र ।

आलान *पुं.* (तत्.) 1. हाथी बाँधने का खंभा 2. हाथी बाँधने का रस्सा 3. बंधन।

आलाप *पुं.* (तत्.) 1. कथन, बातचीत 2. संगीत के सात स्वर 3. स्वरों की साधना (तान) 4. संगी. गाने की तान जैसा एक अंग जो तान की भाँति द्रुत न होकर विलंबित होता है 5. पाठ।

आलापक *वि.* (तत्.) 1. संगीत-स्वरों का आलाप करने वाला, गाने वाला 2. बातचीत करने वाला।

आलापचार *पुं.* (तत्.) संगी. 1. संगीत के सुरों को आलापने की क्रिया, आलापन 2. तान लगाने की क्रिया।

आलापन *पुं.* (तत्.) 1. संगीत में आलाप की क्रिया 2. बातचीत।

आलापना *क्रि.* (तत्.) गाना, सुर खींचना।

आलाप-संलाप *पुं.* (तत्.) 1. बातचीत, वार्तालाप 2. तर्क-वितर्क।

आलापित *वि.* (तत्.) 1. कहा हुआ, कथित 2. आलाप के रूप में मुखरित।

आलापी *स्त्री.* (तत्.) 1. बोलने वाला 2. आलाप लगाने वाला 3. गानेवाला।

आलावण्य *पुं.* (तत्.) 1. लावण्यहीनता, कुरूपता, असुंदरता 2. स्वादहीनता 3. विरसता।

आलावर्त *पुं.* (तत्.) कपड़े का बना पंखा।

आलाविनी *स्त्री.* (तद्.) 1. आलाप करने वाली, सुर अलापने वाली।

आलिंग *पुं.* (तत्.) 1. ढोल का एक प्रकार 2. आलिंगन।

आलिंगन *पुं.* (तत्.) 1. गले लगाना, अंक में भर लेना 3. लिपटना, लिपटाना।

आलिंगित *वि.* (तत्.) जिसे गले लगाया गया हो, जिसे चिपटाया गया हो।

आलिंगी *वि.* (तत्.) आलिंगन करने वाला। *पुं.* छोटा ढोल।

आलिंग्य *वि.* (तत्.) 1. आलिंगन करने योग्य 2. आलिंगन के लिए तैयार 3. प्रेम का अतिरेक प्रकट करने के लिए शारीरिक उत्साह से तत्पर।

आलि *पुं.* (तत्.)1. वृश्चिक, बिच्छू 2. भ्रमर, भौंरा 3. 'आल' नामक वृक्ष से बनने वाला लाल रंग, शृंगारप्रसाधन *स्त्री.* (तत्.) सखी, सहेली, साथिन। साथिन।

आलिखित *वि.* (तत्.) 1. आलेख के रूप में लिखित 2. चित्रित 3. संदर्भ के रूप में लिखित।

आलिप्त *वि.* (तत्.) 1. लिपा हुआ, पुता हुआ 2. कुछ-कुछ लिप्त।

आलिम *वि.* (अर.) विद्वान, पंडित, ज्ञानी।

आली *स्त्री.* (तत्.) 1. सखी, सहेली 2. पंक्ति 3. रेखा 4. बाँध 5. पुल, सेतु 6. वंश *वि.* (देश.) आल के रंग का, पीताभ। उपसर्ग (अर.) 1. ऊँचा 2. बड़ा जैसे- आलीशान।

आलीजनाब *वि.* (अर.) मान्य महोदय, आदरणीय, महानुभाव, उच्चपदस्थ तथा सम्मानित व्यक्तियों के लिए संबोधन।

आलीजाह *वि.* (अर.) बहुत ऊँचे पद या रुतबे वाला (संबोधन शब्द)।

आलीढ़ *वि.* (तत्.) 1. चाटा हुआ 2. भक्षित *पुं.* बायां घुटना मोड़ कर दाहिने घुटने के बल बैठने की स्थिति।

आलीन *वि.* (तत्.) 1. आलिंगित 2. चिपटा हुआ 3. पिघला हुआ *पुं.* 1. संपर्क 2. सीसा 3. टिन।

आलीशान *वि.* (अर.) भव्य, शानदार, बड़ी शानवाला।

आलुंचन *पुं.* (तत्.) 1. चीरना, चीर कर टुकड़े-टुकड़े करना 2. नोचना।

आलु *पुं.* (तत्.) 1. उल्लू 2. आबनूस 3. बेड़ा 4. एक मूल 5. आलू की तरह का एक फल *प्रत्य.* (तत्.) युक्त जैसे- दयालु।

आलुल *वि.* (तत्.) काँपता या हिलता हुआ, अस्थिर।

आलुलायित *वि.* (तद्.) 1. हिलता-डुलता हुआ, लहराता हुआ 2. अस्थिर, क्षुब्ध, चंचल।

आलुलित *वि.* (तत्.) क्षुब्ध, अस्थिर, कंपित।

आलू *पुं.* (तद्.) एक कंदीय खाद्य वनस्पति जिसकी तनारूपी जड़ें सब्जी के रूप में सर्वत्र लोकप्रिय है, कंदशाक।

आलूचा *पुं.* (फा.) एक खट्टा-मीठा, छोटे गोल आकार का हरे रंग का आलूबुखारे जैसा फल और उसका पेड़ जो पश्चिमी हिमालय पर उत्तराखंड से कश्मीर तक होता है। plum

आलूचॉप *पुं.* (तद्.+अं.) उबाले हुए आलू को पीस कर गोल या चपटी टिक्की की तरह का कम घी में तला हुआ एक नमकीन खाद्य पदार्थ।

आलूदम *पुं.* (तद्.+फा.) उबले हुए साबूत आलूओं का एक स्वादिष्ट व्यंजन।

आलूदा *वि.* (फा.) सना हुआ, लथ-पथ, किसी तरल द्रव्य से तरातर।

आलूबालू *पुं.* (फा.) आलूचे की तरह का एक पेड़ जिससे गोंद निकलता है।

आलूबुखारा *पुं.* (फ़ा.) एक प्रकार का लाल रंग का मीठा, गोल रेशेनुमा गूदे वाला और कठोर गुठली वाला पहाड़ी फल या उसका वृक्ष।

आलेख *पुं.* (तत्.) 1. लिखावट, हस्तलिपि 2. लिखा हुआ, लिखित सामग्री 3. निबंध, लेख 4. श्रुतिलेख, श्रुतलेख 5. जो लक्ष्य में न आए, अलक्ष्य।

आलेखक *पुं.* (तत्.) 1. आलेखन करने वाला, लेखक 2. चित्रकार।

आलेख कर्म *पुं.* (तत्.) चित्र बनाने का कर्म, लेखन का कार्य।

आलेखन *पुं.* (तत्.) 1. चित्र, तस्वीर 2. लिखने का कार्य 3. चित्र बनाना 4. खुरचना।

आलेखनी *स्त्री.* (तत्.) लिखने का एक उपकरण, लेखनी, कलम, तूलिका।

आलेखनीय *वि.* (तत्.) 1. आलेख से संबंधित 2. आलेख के आधार पर बनाया गया अथवा रचा गया।

आलेखित्र *पुं.* (तत्.) नक्शे अथवा प्रारूपों आदि का आवश्यकता अनुसार आकार छपवाने का यंत्र।

आलेख्य *पुं.* (तत्.) 1. चित्र, तस्वीर 2. चित्रकारी।

आलेख प्रख्य *पुं.* (तत्.) काव्य. किसी रचना का ऐसा संस्कार और संशोधन, जिससे वह रचना पूरी तरह से भिन्न रचना दिखे, अर्थ हरण।

आलेख्य विद्या *स्त्री.* (तत्.) चित्र कला, कलमकारी।

आलेख्य-सर्पपंचमी *स्त्री.* (तत्.) नाग पंचमी, श्रावण शुक्ल पक्ष की पंचमी, सर्व पंचमी, गुलाल अथवा अन्य किसी रंगीन चूर्ण से साँप की आकृति बनाकर उसकी पूजा करना।

आलेप *पुं.* (तत्.) 1. लेप 2. तेल आदि का उबटन, उपलेप, पलस्तर।

आलेपन *पुं.* (तत्.) 1. तेल-उबटन मलना, पोतना, लीपना 2. लेप।

आलै *पुं.* (तद्.) दे. आलय

आलोक *पुं.* (तत्.) 1. प्रकाश 2. चाँदनी, उजाला, रोशनी 3. चमक 4. दीप्ति 5. दृष्टि।

आलोककर *वि.* (तत्.) प्रकाश देने वाला, रोशनी करने वाला।

आलोकन *पुं.* (तत्.) दर्शन, अवलोकन।

आलोकनीय *वि.* (तत्.) दर्शनीय, देखने योग्य।

आलोक पथ *पुं.* (तत्.) दिखाई देने वाला मार्ग, दृष्टि मार्ग।

आलोकित *वि.* (तत्.) चमकीला, जिस पर आलोक पड़े, उज्ज्वल।

आलोच *पुं.* (तत्.) खेतों में गिरा हुआ अन्न।

आलोचक *वि.* (तत्.) 1. जो किसी वस्तु के गुण-दोषों की विवेचना करे, जाँच करने वाला *पुं.* समीक्षक।

आलोचन *पुं.* (तत्.) 1. समीक्षा करना 2. विचार, विचारविमर्श, विवेचन करना 3. देखना, दर्शन करना।

आलोचना *स्त्री.* (तत्.) 1. गुण-दोष निरूपण या विवेचन 2. समीक्षा 3. परख 4. दोषनिरूपण।

आलोचित *वि.* (तत्.) 1. समीक्षित जिसके गुण-दोषों का निरूपण किया गया हो 2. जो परखा गया हो 3. विचार किया हुआ 4. विवेचित।

आलोच्य *वि.* (तत्.) जिस की आलोचना की जा सके, आलोचना योग्य, आलोचनीय।

आलोड़न *पुं.* (तत्.) 1. मंथन 2. सोच-विचार 3. मन में द्वंद्व उठना 4. क्षोभ 5. छानबीन मुहा. आलोड़न-विलोड़न होना- मन या मस्तिष्क का उद्वेलित होना, ऊहापोह होना।

आलोड़ना *स.क्रि.* (तद्.) 1. मंथन करना, मथना, बिलोना 2. हिलोरना 3. अच्छी तरह से सोचना-विचारना 4. ऊहा-पोह करना।

आलोड़ित *वि.* (तत्.) 1. मथा हुआ 2. ठीक प्रकार से मंथन किया हुआ 3. सुविचारित, सुचिंतित 4. ठीक प्रकार से सोचा-समझा हुआ।

आलोल *पुं.* (तत्.) वि. 1. हिलता, डोलता, लहराता हुआ 2. आंदोलित 3. चंचल 4. क्षुब्ध।

आलोलित *वि.पुं.* (तत्.) 1. उद्वेलित, प्रकंपित 2. क्षुब्ध 3. चंचल प्रयो. सुनामी लहरों के कारण समुद्र अत्यधिक आलोलित हो उठा।

आल्वार *पुं.* (तत्.) 1. दक्षिण भारत का वैष्णव संप्रदाय 2. दक्षिण के वैष्णव संत।

आल्हा *पुं.* (देश.) 1. वीरगाथा काल का 16 मात्राओं का एक छंद 2. लंबा वर्णन 3. वीरगाथा की एक गायन शैली विशेष जिसमें आल्हा-ऊदल की वीरता का वर्णन है 4. बुंदलेखंड (महोबा) में पृथ्वीराज चौहान का समकालीन एक प्रसिद्ध वीर योद्धा जिसने अपने भाई ऊदल के साथ अनेक युद्धों में पराक्रम दिखाया मुहा. आल्हा गाना- वीरता की गाथा सुनाना।

आवंटन *पुं.* (तत्.) प्रशा. सा.अर्थ बँटवारा 1. वस्तुओं, भवनों आदि का उचित पात्रता-प्राप्त व्यक्तियों के बीच बँटवारा allotment 2. धन का विविध कार्यों के लिए आनुपातिक नियतन (इसके लिए 'आवंटन' की अपेक्षा 'नियतन' का प्रयोग होता है allocation राजस्व भवन, भूमि, संपत्ति को निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार पात्रता प्राप्त व्यक्ति या संस्था को दे देना allotment

आवंटित *वि.* (तद्.) संपत्ति जो किसी के नाम लिख दी गई हो, जिस का आवंटन हो चुका हो।

आवंटिती *पुं.* (तत्.)आवंटन प्राप्त कर्ता, जिस को संपत्ति का हिस्सा मिला हो।

आवंतक *पुं.* (तत्.) दे. आवंतिक।

आवंतिक *वि.* (तत्.) अवंती (प्राचीन उज्जयिनी वर्तमान उज्जैन) से संबंधित *पुं.* अवंती का निवासी।

आवंती *वि.* (तत्.) अवंतिका अर्थात उज्जैन का *स्त्री.* 1. अवंतिका की स्त्री 2. अवंतिका की स्त्रियों का नृत्य 3. अवंती (उज्जैन) तथा उसके आसपास बोली जानेवाली प्राचीन भाषा।

आवंत्य *वि.* (तत्.) 1. आवंतिक, अवंती का 2. अवंती नगर से संबंध रखने वाला *पुं.* 1. अवंती का निवासी 2. पतित ब्राह्मण की संतान।

आवंदन *पुं.* (तत्.) 1. प्रणाम 2 नमस्कार 3. अभिवादन।

आव *पुं.* (देश.) 1. आगमन, आना 2. आयु, उम्र 3. आग, चमक, शोभा।

आवक *पुं.* (तद्.) 1. आना, आमद 2. प्राप्ति 3. माल की आमद प्रयो. इस वर्ष मंडी में गेहूँ की अच्छी आवक रही।

आवक्ष *पुं.* (तत्.) व्यक्ति का सिर से वक्ष तक का भाग, छाती तक।

आवक्ष मूर्ति *स्त्री.* (तत्.) सिर से लेकर वक्ष तक की मूर्ति, वक्ष से ऊपर वाले शरीर की मूर्ति bust

आवज *पुं.* (तत्.) 1. 'ताश' जैसा एक पुराना बाजा, जिसे आवाध, आवज्ज, अवज्ञ आदि नामों से भी पुकारा जाता था।

आवजात्य *पुं.* (तत्.) निम्नकुल में उत्पत्ति, अकुलीनता विलो. आभिजात्य।

आवटना *स.क्रि.* (तद्.) औटाना, खौलाना, अत्यधिक गर्म करना *पुं.* 1. उथल-पुथल, हलचल 2. ऊहापोह या संकल्प-विकल्प 3. मंथन 4. अस्थिरता *अ.क्रि.* उबलना, खौलना।

आवटी *स्त्री.* (देश.) उबाल, उबालने की क्रिया, उबलने का भाव।

आवती *स्त्री.* (देश.) प्राप्ति की रसीद, पावती।

आवधिक *वि.* (तत्.) किसी विशेष अवधि से संबंधित, निश्चित अवधि में सम्पन्न होने वाला/वाली।

आवधिक जमा *स्त्री.* (तत्.+तद्.) निश्चित अवधि के लिए बैंक में जमा किया धन, मियादी जमा इस खाते में बचत खाते से ब्याज़ की प्राप्ति होती है।

आवधिकता *स्त्री.* (तत्.) आवधिक होने का भाव आवर्तिता, मियाद का भाव।

आवधिक विवरणी *स्त्री.* (तत्.) प्रशा. निश्चित अंतरालों पर तैयार किया जाने वाला विवरण जो किसी विषय की प्रगति या वर्तमान स्थिति को दर्शाता है।

आवन *पुं.* (तद्.) आना, आगमन प्रयो. सावन की आवन सुहावन री सखि।

आवना *पुं.* (देश.) आगमन वाला, आगमन की क्रिया, आने वाला।

आवनि *स्त्री.* (देश.) आगमन।

आवनी *वि./स्त्री.* (देश.) आनेवाली, कुछ ही अवधि में प्रकट होने वाली यथा- आवनी पूर्णिमा।

आवनी-जावनी *वि.* (देश.) 1. अस्थिर, चंचल, आने वाली और तुरंत ही जाने वाली, टिकने वाली नहीं 2. मामूली, जिस का बहुत महत्व न हो।

आवनेय *पुं.* (तत्.) अवनि अर्थात् पृथ्वी का पुत्र, मंगल (ग्रह)।

आवपन *पुं.* (तत्.) 1. बोआई, बोना 2. पेड़ लगाना 3. बिखेरना 4. सारे सिर का मुंडन, हजामत 5. पात्र, भाँडा।

आवभगत *स्त्री.* (देश.) किसी के आने पर किया जाने वाला स्वागत-सत्कार, खातिरदारी, मेहमानदारी, आतिथ्य, मेहमाननवाजी।

आवभाव *पुं.* (देश.) 1. आदर-सत्कार, आवभगत 2. बेतुकी बात, बिना सिर-पैर की बात, बकवास, प्रवाद।

आवय *पुं.* (तत्.) 1. आगंतुक 2. आना, आगमन।

आवरक *पुं.* (तत्.) 1. परदा 2. ढक्कन *वि.* आवरण करने वाला, छिपाने वाला, ढकने वाला।

आवरण *पुं.* (तत्.) 1. परदा, चिक 2. ढकना, छिपाना 3. ढक्कन 4. ढाल 5. घर की चहार दीवारी 6. खोल।

आवरण आख्या *स्त्री.* (तत्.) दे. आवरण शीर्षक।

आवरण कथा *स्त्री.* (तत्.) पुस्त. साप्ताहिक, पाक्षिक पत्रिकाओं के मुखपृष्ठ पर छपे हुए चित्र से संबंधित विस्तृत जानकारी पर्या. आमुख कथा cover story

आवरण-पत्र *संज्ञा.* (तत्.) पुस्त. किसी ग्रंथ की रक्षा के लिए उसके ऊपर चढ़ाया हुआ चिकना, मजबूत कागज जिस पर लेख का नाम, प्रकाशक का विवरण आदि छपा रहता है। jacket

आवरण-परिचय *पुं.* (तत्.) पुस्तक के आवरण पर प्रकाशक अथवा लेखक द्वारा दिया गया, पुस्तक का, सारगर्भित परिचय, प्राय: पुस्तक के जैकेट पर लिखा जाने वाला।

आवरण पृष्ठ *पुं.* (तत्.) पत्र-पत्रिका का आवरण, जिस पर अंक के प्रमुख कथ्य को चित्रांकित किया जाता है।

आवरण शक्ति *स्त्री.* (तत्.) दर्श. 1. आत्मा अथवा चैतन्य को ढकने वाली शक्ति 2. अज्ञान।

आवरण शीर्षक *पुं.* (तत्.) पुस्त. पुस्तक का वह शीर्षक जो प्रकाशक द्वारा जिल्द पर लिखा जाता जाता है और जो मुख्य पृष्ठ पर दिए गए शीर्षक से भिन्न होता है पर्या. आवरण आख्या cover title

आवरा *पुं.* (तद्.) ओढ़ने का कपड़ा या चादर, आवरण, ओढ़न *वि.* (देश.) उदास, व्याकुल, बेचैन, विमुख, विपरीत।

आवरिका *स्त्री.* (तत्.) छोटी दुकान।

आवरित *वि.* (तत्.) दे. आवृत।

आवर्जक *वि.* (तत्.) 1. आकर्षक, सुंदर, मनमोहक, लुभावना 2. वश में करने वाला 3. पराजित करने वाला।

आवर्जन *पुं.* (तत्.) 1. आकृष्ट करना 2. अपने वश में करना 3. पराभूत करना 4. पराजय, हार।

आवर्जना *स्त्री.* (तत्.) दे. आवर्जन।

आवर्जित (तत्.) 1. परास्त, पराजित, पराभूत 2. किसी के वश में आया हुआ 3. आकृष्ट, किसी ओर खिंचा हुआ 4. त्यक्त, परित्यक्त।

आवर्त *पुं.* (तत्.) 1. भँवर 2. घुमाव, चक्कर, रोमावलि-चक्र 3. अवधि-विशेष में संपन्न व्यवसाय की मात्रा 4. घनी आबादी 5. लाजवर्त नामक रत्न 6. मेघ जिससे बहुत अधिक पानी बरसे 7. चार मेघाधिपों में से एक 8. ललाट पर पड़े बल 9. किसी चिंता का बार-बार जन्म लेना 10. (घोड़े की) भँवरी 11. आत्मा का संसार में बार-बार जन्म लेना 12. अयाल *वि.* 1. घूमा हुआ, मुड़ा हुआ 2. चक्करदार 3. पुनरावर्ती।

आवर्तक *वि.* (तत्.) 1. समय-समय पर जिसकी आवृत्ति हो 2. बार-बार होने या किया या दिया जाने वाला 3. घुंघराले बाल या लट 4. उमड़ते-घुमड़ते बादल। 5. योग. पाँच प्रकार के विघ्नों में से एक, जिसके कारण ज्ञान अव्यवस्थित हो जाता है।

आवर्तकाल *पुं.* (तत्.) 1. खगो. (i) किसी ग्रह अथवा उपग्रह द्वारा अपने मूल तारे या ग्रह के चारों ओर पूर्ण परिक्रमण करने के लिए अपेक्षित समय periodic time 2. भौ. सरल आवर्त गति में उतना समय जितना कि गतिमान कण या लोलक एक सिरे से दूसरे सिरे तक और दूसरे सिरे से फिर पहले सिरे तक पहुँचने में लगता है।

आवर्तकी *स्त्री.* (तत्.) विषाणिका नामक एक प्रकार की लता।

आवर्त गति *स्त्री.* (तत्.) भौ. गति जिसमें विस्थापन, वेग, त्वरण आदि परिवर्तित तो होते रहते हैं किंतु निश्चित अवधि के बाद इनके मान वे ही हो जाते हैं जो गति के प्रारंभ में थे। उदा. दोलन, कंपन। periodic motion

आवर्त दशमलव *पुं.* (तत्.) गणि. वह दशमलव जिसके अंतिम भाग की पुनरावृत्ति निरंतर अनंत तक होती है। आवर्ती भाग को उसके प्रथम तथा अंतिम अंक के ऊपर बिंदु लगा कर द्योतित किया जाता है। recurring decimal

आवर्तन *पुं.* (तत्.) 1. मंथन, आलोड़न 2. हिलाना, घुमाना 3. दोहराना 4. (धातु) गलाना, पिघलाना 5. रोगी के स्वस्थ हो जाने के उपरांत पुनः उसे वही रोग हो जाना 6. तीसरे पहर का समय।

आवर्त नियम *पुं.* (तत्.) रसा. मैन्डलीफ द्वारा प्रतिपादित नियम, जिसके अनुसार तत्वों के भौतिक और रासायनिक गुणधर्म उनके परमाणु भार के आवर्ती फलन होते हैं। periodic law

आवर्तनी *स्त्री.* (तत्.) 1. धातु गलाने की कुल्हिया, घड़िया 2. कलछा, चम्मच 3. दोहराने की क्रिया।

आवर्तनीय *वि.* (तत्.) 1. जिसका आवर्तन किया जा सके, घुमाने योग्य 2. मथने योग्य।

आवर्त सारणी *स्त्री.* (तद्.) रसा. तत्वों के निश्चित रसायनिक व्यवस्था की सारणी, एक वैज्ञानिक तालिका।

आवर्तित *वि.* (तत्.) 1. घुमाया हुआ, 2. मथा हुआ 3. बार-बार आया या किया हुआ।

आवर्तिता *स्त्री.* (तत्.) (निश्चित समय पर) बार-बार होने की स्थिति।

आवर्ती *वि.* (तत्.) 1. घूमनेवाला, चक्कर काटने वाला 2. (निश्चित समयावधि में) बार-बार होने वाला या किया जाने वाला प्रयो. मैंने बैंक में आवर्ती जमा खाता खोला है 3. पिघलनेवाला 4. घुलमिल जाने वाला ।

आवर्धक *वि.* (तत्.) आकार बढ़ा कर प्रदर्शित करने वाला, आकार विस्तृत दिखाने वाला।

आवर्धन *पुं.* (तत्.) 1. आकार विस्तृत करने का कार्य 2. शक्ति आदि बढ़ाने का कार्य।

आवलि *स्त्री.* (तत्.) 1. पंक्ति, श्रेणी, कतार 2. सिलसिला, शृंखला, परंपरा 3. आनुक्रमिकता।

आवलित *वि.* (तत्.) थोड़ा-सा मुड़ा हुआ।

आवली *स्त्री.* (तत्.) दे. आवलि।

आवश्यक *वि.* (तत्.) 1. जरूरी, लाजिमी, अवश्यंभावी 2. सापेक्ष 3. प्रयोजनीय 4. काम का, जिसके बिना काम न चले।

आवश्यकता *स्त्री.* (तत्.) 1. जरूरत, अपेक्षा, माँग, दरकार, गरज 2. आवश्यक होने का भाव।

आवश्यकीय *वि.* (तत्.) 1. तुरंत किया जाने वाला/वाली तुरन्त उपयोग में आने वाला/वाली, आवश्यक, जरूरी।

आवसति *स्त्री.* (तत्.) 1. विश्राम, रात्रि का समय, आधी रात 2. रात में रहने के लिए विश्राम-स्थान।

आवसथ *पुं.* (तत्.) रहने का स्थान, बस्ती, घर, साधुओं का निवास, कुटिया, आश्रम।

आवसरिक *वि.* (तत्.) 1. कभी-कभी प्रकट होने वाला, जो समय अथवा नियम का पाबंद न हो 2. विशेष अवसर का कार्य अथवा आयोजन।

आवसान *वि.* (तत्.) 1. ग्राम की सीमा पर रहने वाला जैसे- चांडाल 2. छोर, किनारा।

आवसानिक *वि.* (तत्.) समाप्ति, खातमे का, अन्त का, अवसान काल का।

आवसित *वि.* (तत्.) 1. पूरा किया हुआ, पूर्ण, समाप्त 2. पूर्ण विकसित 3. निर्धारित, निश्चित 4. खेत से एकत्र पका हुआ धान्य।

आवह *पुं.* (तत्.) 1. वायु के सात स्कंधों में से पहला 2. भूलोक और स्वर्गलोक की वायु 3. भूवायु 4. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक 5. उत्पादक, जनक, लाने वाला (समास के अंतिम पद के रूप में प्रयुक्त जैसे 'भयावह'।

आवहन *पुं.* (तत्.) खींच के लाना, ढो के लाना, उठा कर लाना।

आवाँगार्द *पुं.* (फ्रें.) साहित्य, कला आदि में नई विचारधारा का समर्थक वर्ग, सुधारकों, आविष्कारकों का सक्रिय दल।

आवा *पुं.* (तद्.) मिट्टी के बर्तन पकाने का भट्ठा, कुम्हार का भट्ठा।

आवागमन *पुं.* (तत्.) 1. आना-जाना, आमद-रफत 2. जन्म और मरण का चक्र या बंधन, बार-बार मरना और जन्म लेना प्रयो. ईश्वर की भक्ति ही मनुष्य को आवागमन के चक्र से मुक्त कर सकती है 3. यातायात।

आवाज *पुं.* (फा.) 1. ध्वनि, स्वर 2. शब्द, बोल, वाणी 3. हल्ला-गुल्ला, शोर प्रयो. उसकी आवाज सुनकर मेरी नींद टूट गई, रेडियो की आवाज धीमी कर दो, वरना गुड़िया जाग जाएगी मुहा. आवाज़ उठाना- आवाज़ लगाना, जोर से पुकारना, विरोध में बोलना; आवाज़ कसना- व्यंग्य की बात कहना, जोर से खींचकर शब्द निकालना; आवाज़ खुलना- बैठी हुई आवाज का साफ-साफ निकलना, जोर से बोलना; आवाज़ गिरना- स्वर का मंद पड़ना; आवाज़ फटना- आवाज़ अस्पष्ट (कर्कश) हो जाना; आवाज़ बैठना- गला बैठना; आवाज़ भर्राना- आवाज़ भारी होना; आवाज़ में आवाज़ मिलाना- हाँ में हाँ मिलाना; आवाज़ लगाना-आवाज़ देना, जोर से बोलना या पुकारना।

आवाज़कशी *स्त्री.* (फा.) 1. व्यक्ति के पीछे व्यंग्य-वचन कहना 2. अप्रिय नामों से संबोधित करना।

आवाज़ा *पुं.* (फा.) 1. व्यंग्य 2. प्रसिद्धि, शोहरत 3. जनश्रुति, अफवाह।

आवा-जानी *स्त्री.* (तद्.) आवागमन, जन्म और मृत्यु का चक्र।

आवा-जाही *स्त्री.* (तद्.) आनाजाना, आमदरफ्त प्रयो. हमारे इलाके में वाहनों की आवा-जाही काफी रहती है।

आवाप *पुं.* (तत्.) 1. बीज बोना 2. फेंकना, छितराना 3. बिखेरना 4. किसी मिश्रण में ऊपर से कुछ मिलाना 5. धान्यपात्र 6. शत्रुतापूर्ण उद्देश्य 7. पात्रों को व्यवस्थित ढंग से रखना 8. असमतल भूमि 9. आलवाल 10. थाल 11. कंगन, कंकण।

आवापक *पुं.* (तत्.) कंगन, (स्वर्ण) कंकण।

आवापन *पुं.* (तत्.) 1. करघा, बुनने का यंत्र 2. धागा लपेटने की गोल अटेरन 3. बाल बनाना।

आवापिक *वि.* (तत्.) 1. क्षौर, मुंडन, वपन, कर्म करने के लिए उत्तम 2. बोने के लिए उत्तम 3. पूरक 4. अतिरिक्त, सहायक।

आवार *पुं.* (तद्.) 1. रक्षा, हिफाजत 2. रक्षा का स्थान, सुरक्षित स्थान।

आवारगी *स्त्री.* (फा.) आवारापन, शोहदापन।

आवारा *वि.* (फा.) 1. आवारागर्द, बेघर, बेकार, लोफर 2. निकम्मा 3. बदमाश, कुमार्गी, लुच्चा।

आवारागर्द *वि.* (फा.) 1. व्यर्थ में इधर-उधर घूमने वाला, बेकार, बेघर (व्यक्ति) 2. निकम्मा 3. बदमाश।

आवारागर्दी *स्त्री.* (फा.) 1. व्यर्थ इधर-उधर घूमना घूमना 2. बदमाशी करना, कुमार्ग पर चलना

आवाल *पुं.* (देश.) एक प्रकार का गोल गड्ढा जिस में वृक्ष रोपा जाता है, थाल, आलवाल।

आवास *पुं.* (तत्.) 1. रहने का स्थान, निवास-स्थान 2. मकान 3. कार्यालय का भवन 4. स्थान।

आवास गृह *पुं.* (तत्.) [आवास+गृह], रहने का स्थान, घर।

आवासिक *वि.* (तत्.) 1. निवास से संबंधित, रिहायशी, नगर का ऐसा क्षेत्र जहाँ मात्र रहने की

व्यवस्था हो, व्यापार-वाणिज्य की नहीं *पुं.* अस्थाई रूप से किसी बस्ती में निवास करने वाला।

आवासिक विद्यालय *पुं.* (तत्.) ऐसा विद्यालय, जिस में छात्रों अथवा छात्राओं के रहने और खाने-पीने की भी व्यवस्था हो।

आवासिनी *स्त्री.* (तत्.) निवास करने वाली महिला। वि. (तत्.) निवास करने की, आवास करने की।

आवासी *वि.* (तत्.) 1. वास करने वाला, रहने वाला 2. कार्यस्थल (अस्पताल या छात्रावास आदि) में ही रहनेवाला resident प्रयो. मेरा भाई अस्पताल में आवासी चिकित्सक है।

आवासीय *वि.* (तत्.) निवास से संबंधित निवासिक, रिहायशी।

आवासी राजदूत *पुं.* (तत्.) राज. किसी देश की सरकार का दूसरे देश में प्रतिनिधि, जो स्थाई रूप से नियुक्त न किया गया हो।

आवासी विद्यार्थी *पुं.* (तत्.) ऐसा विद्यार्थी, जो विद्यालय की आवासीय सुविधा का उपयोग करता हो।

आवाह *पुं.* (तत्.) 1. विवाह, परिणय-संस्कार 2. आमंत्रण।

आवाहन *पुं.* (तत्.) 1. मंत्र के द्वारा किसी देवता को बुलाना 2. निमंत्रित करना, बुलाना 3. अग्नि में आहुति डालना।

आवाहना *स.क्रि.* (तत्.) बुलाना, आमंत्रित करना।

आवाहनी *स्त्री.* (तत्.) हाथ की एक मुद्रा-विशेष जो देवता के आवाहन के समय की जाती है।

आविक *पुं.* (तत्.) 1. भेड़ के रोएँ का वस्त्र 2. कंबल 3. ऊनी वस्त्र *वि.* (तत्.) 1. ऊन का, ऊनी 2. भेड़ से संबंधित।

आविग्न *वि.* (तत्.) व्याकुल, उद्विग्न।

आविद्ध *वि.* (तत्.) 1. छिपा हुआ, भेदा हुआ, बेधा हुआ 2. फेंका हुआ 3. कुटिल, वक्र 4. मूर्ख, जड़ 5. निराश, हताश 6. असत्य, झूठा *पुं.* (तत्.) तलवार के 32 वारों में से एक।

आविध *पुं.* (तत्.) लकड़ी में छेद करने का औजार, बरमा।

आविर्भाव *पुं.* (तत्.) 1. प्राकट्य, प्रकट होना 2. अवतरण 3. उत्पत्ति, उद्भव 3. अवतार।

आविर्भावक *वि.* (तत्.) 1. उत्पन्न करने वाला 2. उत्पादन करने वाला 3. आविष्कार करने वाला।

आविर्भूत *वि.* (तत्.) 1. प्रकाशित 2. उत्पन्न 3. प्रकटित।

आविल *वि.* (तत्.) 1. मैला, कलुषित, पंकिल 2. धुँधला, अस्पष्ट 3. मिला हुआ, मिश्रित।

आविलता *स्त्री.* (तत्.) 1. कालुष्य, मैलापन 2. अस्पष्टता, धुँधलापन।

आविष *पुं.* (तत्.) 1. जीव. उपचय और अपचय की क्रियाओं द्वारा शरीर में उत्पन्न विष, रोग के के कारण शरीर में उत्पन्न विष 2. सूक्ष्म जीवों द्वारा उत्पन्न यौगिक, जो वनस्पति जगत में विष का काम करता है।

आविष्करण *पुं.* (तत्.) 1. नई खोज करना, ईजाद करना, शोध करना 2. प्रकट करना, उद्भावन।

आविष्कर्ता *वि.* (तत्.) दे. आविष्कारक।

आविष्कार *पुं.* (तत्.) दे. आविष्करण।

आविष्कारक *वि.* (तत्.) आविष्कार करने वाला, नई खोज करने वाला, शोधकर्ता। *पुं.* आविष्कार या खोज करने वाला व्यक्ति, शोधकर्ता।

आविष्कृत *वि.* (तत्.) 1. खोजा हुआ 2. प्रकट किया हुआ। प्रयो. वैज्ञानिकों द्वारा आविष्कृत उपकरणों और यंत्रों से विज्ञान प्रगति की ओर अग्रसर हुआ है।

आविष्ट *वि.* (तत्.) 1. आवेश युक्त, आवेश में आया हुआ 2. निमग्न 3. वशीकृत 4. प्रेतादि से ग्रस्त 4. आक्रांत 5. प्रविष्ट।

आवीक्षण *पुं.* (तत्.) सै.वि. युद्ध में उपयोगी सूचनाएँ एकत्रित करने के लिए की गई टोह reconnaissance तुं. सर्वेक्षण, गश्त

आवृत *वि.* (तत्.) 1. छिपा हुआ, ढका हुआ, आच्छादित 2. लपेटा हुआ 3. फैला हुआ *पुं.* एक वर्णसंकर जाति।

आवृत बीजी *पुं.* (तत्.) वन. पुष्पी पादपों के दो वर्गों मे से वह समूह, जिसमें पौधों के बीज ढके हुए होते हैं जैसे- आम, नीबू आदि। angiosperm विलो. अनावृतबीजी।

आवृत्त *वि.* (तत्.) 1. लौटा हुआ 2. दुहराया हुआ 3. घूमा हुआ।

आवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. बार-बार होना 2. मुड़ना, लौटना 3. घूमना, चक्कर लगाना 4. (पाठ) दुहराना 5. अभ्यास 6. संस्करण 7. बारंबारता।

आवृत्ति दीपक *पुं.* (तत्.) काव्य. दीपक अलंकार का एक भेद, जिस में क्रियापद/पदों की आवृत्ति होती है।

आवृष्टि *स्त्री.* (तत्.) वर्षा, वृष्टि।

आवेग *पुं.* (तत्.) 1. प्रबल मनोवेग, उत्तेजना, विक्षोभ 2. मनो. अचानक जोश से कुछ कर बैठने की अंतःप्रेरणा; झोंका 3. उतावलापन 4. भौ. किसी अल्पकालिक अपरिवर्ती बल तथा उसके कार्यकाल का गुणनफल।

आवेगी क्रय *पुं.* (तत्.) प्रबंध. भावावेश में की गई खरीद, ग्राहक कई बार विज्ञापन से प्रभावित होकर या नएपन से आकृष्ट होकर बिना समझे किसी वस्तु को खरीद लेता है। impulsive buying

आवेदक *वि.* (तत्.) आवेदन या निवेदन करने वाला प्रार्थी *पुं.* 1. प्रार्थी 2. मुद्दई।

आवेदन *पुं.* (तत्.) 1. निवेदन, अर्ज 2. प्रार्थना करना 3. नालिश।

आवेदनपत्र *पुं.* (तत्.) 1. अर्जी, प्रार्थना-पत्र।

आवेदनीय *वि.* (तत्.) 1. निवेदन करने योग्य 2. प्रार्थना का विषय बनाने योग्य।

आवेदित *वि.* (तत्.) 1. निवेदन किया हुआ, प्रार्थित 2. सूचित किया हुआ।

आवेदी *वि.* (तद्.) आवेदन करने वाला, जिसने आवेदन अथवा प्रार्थना प्रस्तुत की हो।

आवेद्य *वि.* (तत्.) जो आवेदन के रूप में प्रस्तुत किया जाने वाला हो। आवेदीय।

आवेश *पुं.* (तत्.) 1. गुस्सा 2. जोश 3. आतुरता 4. हावी हो जाने की स्थिति 5. व्याप्ति 6. प्रवेश 7. मूर्छा।

आवेश की तीव्रता *स्त्री.* (तत्.) मनोभावों की अधिकता या तीव्र उभार, गरमागरमी।

आवेशन *पुं.* (तत्.) 1. चंद्र या सूर्य की परिधि 2. प्रवेश 3. क्रोध, प्रचंडता 4. मूलबाधा।

आवेशिक *पुं.* (तत्.) 1. अतिथि, अभ्यागत 2. आतिथ्य, अतिथि-सत्कार 3. दर्शक 4. मंत्र सिद्धि के बल पर कविता करने वाला कवि 5. कवियों की एक श्रेणी *वि.* 1. असामान्य 2. व्यक्तिगत, निजी 3. अंतर्निहित।

आवेष्टक *पुं.* (तत्.) 1. घेरा 2. जाल 3. चहारदीवारी 4. बाड़ा 5. अहाता।

आवेष्टन *पुं.* (तत्.) 1. ढकने, लपेटने, बाँधने का काम 2. वह वस्तु जिससे लपेटा जाता है 3. चहारदीवारी।

आवेष्टित *वि.* (तत्.) लपेटा हुआ, ढका हुआ, अवगुंठित।

आव्यूह *पुं.* (तत्.) गणि. राशियों का आयताकार विन्यास matrix

आशंकनीय *वि.* (तत्.) 1. आशंका योग्य, शंका योग्य, संदेहास्पद, जिसके विषय में शंका की जा सके।

आशंका *स्त्री.* (तत्.) 1. अनिष्ट की संभावना 2. डर, भय, खौफ 2. संदेह, अविश्वास, प्रयो. मुझे आशंका है कि वह मेरे साथ धोखा कर जाएगा।

आशंकित *वि.* (तत्.) 1. जिसकी आशंका हो 2. डरा हुआ, भयभीत, आशंका युक्त प्रयो. वह अपनी नौकरी को लेकर सदैव आशंकित रहता है।

आशंकी *वि.* (तत्.) आशंका करने वाला, शंका करने वाला, शकी मिज़ाज।

आशंसन *पुं.* (तत्.) 1. कथन, वक्तव्य 2. घोषणा, एलान 3. प्रशंसा, सराहना, तारीफ करने का कार्य।

आशंसा *स्त्री.* (तत्.) 1. इच्छा, अपेक्षा 2. आशा 3. संकेत 4. भाषण 5. कथन 6. कल्पना 7. प्रशंसा 8. अनुशंसा। recommendation

आशंसित *वि.* (तत्.) 1. जिसकी इच्छा की गई हो 2. परिकल्पित 3. कथित 4. सोचा हुआ 5. प्रशंसित।

आशंसी *वि.* (तत्.) 1. आशंसा, इच्छा या अपेक्षा करने वाला 2. कथनकर्ता।

आशंसु *वि.* (तत्.) आशंसा करने का इच्छुक दे. आशंसी।

आश *पुं.* (तत्.) 1. आहार, भोजन 2. आशा *पुं.* (फा.) पेय, लपसी।

आशक *वि.* (तत्.) खाने वाला, भोजन करने वाला।

आशक्त *वि.* (तत्.) सक्षम, शक्तिशाली।

आशक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. क्षमता, सामर्थ्य 2. योग्यता।

आशन *वि.* (तत्.) अन्न खिलाने वाला पुं. वज्र, अशनि।

आशना *वि.* (फा.) 1. परिचित, जान-पहचान वाला 2. जिससे मैत्री हो *पुं.* 1. प्रेमी, यार 2. प्रेमपात्र *स्त्री.* प्रेमिका, रखैल।

आशनाई *स्त्री.* (फा.) 1. जान-पहचान 2. दोस्ती 3. प्रेम, प्रीति 4. अवैध या अनुचित संबंध।

आशब्दित *वि.* (तत्) 1. शब्दों से हीन, निशब्द 2. ध्वनिहीन, शांत 3. अव्यक्तता, अव्याख्यात।

आशय *पुं.* (तत्.) 1. अर्थ, अभिप्राय, तात्पर्य 2. वासना 3. इच्छा 4. शयनस्थान, विश्रामस्थल 5. आश्रय 6. उदर 7. चित्त, हृदय 8. अभ्युदय 9. भाग्य 10. संपत्ति 11. कटहल 12. कृपण 13. जानवर फँसाने का गड्ढा 14. शरीर का अंग जो पात्र जैसा है, जैसे गर्भाशय, आमाशय 15. जलाशय 16. (देश) पाप-पुण्य या सुख-दुःख के कारण रूप कर्मजन्य संस्कार।

आशय पत्र *पुं.* (तत्.) प्रशा. किसी संस्था या प्रतिष्ठान द्वारा परियोजना विशेष का कार्य आरंभ कराने और उसे पक्ष-विशेष को सौंपने के संबंध में जारी किया गया औपचारिक पत्र।

आशयिता *वि.* (तत्.) 1. संरक्षण करने वाला 2. खिलाने वाला

आशर *पुं.* (तत्.) 1. राक्षस 2. अग्नि 3. वायु।

आशव *पुं.* (तत्.) 1. वेग, क्षिप्रता 2. आसव।

आशा *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी वस्तु के पाने की इच्छा और थोड़ा-बहुत भरोसा 2. उम्मीद, भरोसा, विश्वास 3. आसरा 4. दक्ष की एक कन्या 5. एक राग मुहा. आशा टूटना- आशा भंग होना; आशा तोड़ना- निराश करना; आशा देना- उम्मीद बँधाना; आशा पूजना- आशा पूरी करना; आशा बँधना- आशा उत्पन्न होना।

आशागज *पुं.* (तत्.) दिशाओं के हाथी, दिग्गज, पृथ्वी को आठ दिशाओं में आठ हाथी धारण किए हुए हैं।

आशाजनक *वि.* (तत्.) जिस से आशा उत्पन्न हो, आशा को पोषित करने वाला, उम्मीद पैदा करने वाला।

आशातीत *वि.* (तत्.) आशा से अधिक, जितनी अपेक्षा थी, उस से अधिक, उम्मीद से ज्यादा।

आशान्वित *वि.* (तत्.) आशा से परिपूर्ण, उम्मीदवार।

आशापाल *पुं.* (तत्.) दिशाओं की रक्षा करने वाला, दिक्पाल।

आशाबंध *पुं.* (तत्.) 1. विश्वास 2. सांत्वना।

आशाभंग *पुं.* (तत्.) आशा न रहने का भाव, आशा समाप्त होने का भाव, नाउम्मीदी।

आशामय *वि.* (तत्.) जो आशा जगाए, उम्मीद जगाने वाला।

आशामुखी *वि.* (तत्.) 1. अपनी आशा पूरी कराने के लिए अत्यन्त प्रयत्नशील 2. आशापूर्ति के लिए किसी सहायता की अपेक्षा करने वाला 3. आशान्वित।

आशार *पुं.* (तत्.) आश्रय, रक्षास्थान।

आशालुब्ध *वि.* (तत्.) आशा के मोह में फँसा हुआ, आशा से मोहित, उम्मीद के लिए दीवाना।

आशावसन *वि.* (तत्.) 1. जिस के लिए दिशाएँ ही वस्त्र हों, दिगम्बर, नग्न *पुं.* 1. दिगम्बर साधु 2. शिव।

आशावाद *पुं.* (तत्.) 1. प्रत्येक घटना और प्रत्येक वस्तु के संबंध में आशापूर्ण दृष्टि रखना 2. सदा अच्छी बातों और अच्छे परिणामों की आशा करने की प्रवृत्ति 3. सर्वशुभवाद optimism

आशावादिता *स्त्री.* (तत्.) आशावादी होने की स्थिति, भाव या प्रवृत्ति optimism

आशावादी *वि.* (तत्.) 1. वह व्यक्ति जो काम या स्थिति के अच्छे होने की आशा रखता है, आशावान 2. *स्त्री.* (तत्.) संगीत का एक लोकप्रिय राग, आसावरी, भक्ति और शृंगार के लिए उपयुक्त राग।

आशावान *वि.* (तत्.) दे. आशावादी।

आशासन *पुं.* (तत्.) 1. किसी वस्तु की इच्छा करना या उसके लिए प्रार्थना करना 2. आकांक्षा करना।

आशासनीय *वि.* (तत्.) आकांक्षणीय, अभिलषणीय *पुं.* 1. आशीर्वचन, आशीर्वाद 2. आकांक्षा, इच्छा।

आशाहीन *वि.* (तत्.) जो आशा रहित हो, निराशा, नाउम्मीद।

आशिंजन *पुं.* (देश.) 1. गहनों अथवा आभूषणों की झंकार 2. रुन-झुन की ध्वनि करने वाला आभूषण।

आशिंजित *वि.* (देश.) 1. झंकार करता हुआ 2. रुन-झुन करता हुआ।

आशिक *वि.* (अर.) इश्क या प्रेम करने वाला, प्रेमी, अनुरक्त, आसक्त *पुं.* प्रेम करने वाला व्यक्ति।

आशिकमिज़ाज *वि.* (अर.) [आशिक+मिज़ाज] मधुर प्रेम के व्यसन में लिप्त, हर तरह के व्यक्ति से इश्क करने वाला।

आशिकाना *वि.* (अर.) आशिकों या प्रेमियों के लिए अनुकूल अनुरागमय, प्रेमसूचक

आशिकी *स्त्री.* (अर.) प्रेम, अनुराग या इश्क में होने की स्थिति।

आशित *वि.* (तत्.) 1. खाया हुआ 2. भोजन से तृप्त 3. अधिक भोजन करने वाला, पेटू *पुं.* भोजन।

आशिनी *वि.* (तत्.) आहार करने वाली स्त्री, खाद्य खाद्य पदार्थ खाने वाली।

आशिमा *स्त्री.* (तत्.) तीव्रता, तेजी।

आशियाँ *पुं.* (फा.) 1. घोंसला, पक्षियों के रहने का स्थान 2. बसेरा 3. झोंपड़ा, घर।

आशियाना *पुं.* (अर.) दे. आशियाँ।

आशिष *स्त्री.* (तत्.) 1. आसीस, दुआ, ईश्वर से किसी के कल्याण-मंगल की प्रार्थना 2. आशीर्वाद 3. अनुग्रह 4. सर्प का विषदंत 5. एक जड़ी।

आशिषाक्षेप *पुं.* (तत्.) काव्य. वह काव्यालंकार जिसमें दूसरों का हित दिखलाते हुए हितकर बातों को करने की शिक्षा दी जाए।

आशी *स्त्री.* (तत्.) 1. साँप का विषैला दाँत 2. सर्पविष 3. बुद्धि नाम की जड़ी जो दवा के काम आती है 4. आशीर्वाद, असीस *वि.* 1. जिसके दाँत में विष हो, 2. भक्षक, भोजन करने वाला।

आशीर्वचन *पुं.* (तत्.) आशीर्वाद भरा कथन, आशीष, असीस, दुआ प्रयो. मेरी पुस्तक के

लिए आपने जो आशीर्वचन लिखा है, उससे मुझे बहुत प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है।

आशीर्वाद *पुं.* (तत्.) दे. आशीर्वचन।

आशीष *स्त्री.* (तत्.) दे. आशिष।

आशु *पुं.* (तत्.) शीघ्र अर्थात् सावन भादों में पकने वाला धान, आउस धान, साठी *वि.* तीव्र, तेज, त्वरित *क्रि.वि.* तेजी से, फौरन, तत्क्षण।

आशु-अनुवाद *पुं.* (तत्.) एक भाषा की सामग्री का मौखिक रूप से दूसरी भाषा में तत्काल रूपांतरण, मौखिक अनुवाद प्रयो. संसद में विभिन्न भाषा-भाषी संसद-सदस्यों के लिए आशु अनुवाद की व्यवस्था है।

आशुकवि *पुं.* (तत्.) वह कवि जो तत्क्षण कविता करता है प्रयो. प्रभाष जी अच्छे आशुकवि है जो किसी भी समय किसी भी विषय पर तत्काल कविता की रचना कर लेते हैं।

आशुकोपी *वि.* (तत्.) [आशु+कोपी] 1. तुरंत क्रोध करने वाला, फोरन गुस्सा करने वाला 2. जल्दी नाराज़ होने वाला, तुनक मिज़ाज।

आशुगामी *वि.* (तत्.) तेज चलनेवाला, तीव्रगामी पुं. सूर्य।

आशुतोष *वि.* (तत्.) शीघ्र संतुष्ट होनेवाला, जल्दी प्रसन्न होने वाला *पुं.* शिव, महादेव।

आशुपरिकलक *पुं.* (तद्.) गणित की ऐसी पुस्तक जिस में विभिन्न प्रकार की सारणियाँ अंकित होती हैं, रेडी रैक्नर, गणितीय सारणियों की पुस्तिका।

आशुपाती *वि.* (तत्.) शीघ्र झड़ जाने वाला (अंग) जैसे- पोस्त का बाह्यदल पुंज जो फूल के खिलते खिलते ही झड़ जाता है।

आशुरचना *स्त्री.* (तत्.) तुरंत लिखी गई काव्यात्मक रचना, उपस्थित वातावरण पर लिखी गई तात्कालिक कविता अथवा व्यंग्य।

आशुलिपि *स्त्री.* (तत्.) निर्धारित सरल लिपि चिह्नों पर आधारित शीघ्र लिपि, बोलने की गति से ही लिखना संभव बनाने वाली लिपि ।

आशुलिपिक *पुं.* (तत्.) बोलने की गति से ही लिखने वाला, आशुलिपि का जानकार।

आशुव्रीहि *पुं.* (तत्.) एक धान जो जल्दी पक जाता है, साठी, आऊस।

आशोधन *पुं.* (तत्.) लिखित अथवा मुखरित पाठ में संशोधन का कार्य, सुधार, इस्लाह।

आशोन्मुख *वि.* (तत्.) 1. अपनी आशा पूरी कराने के लिए बहुत प्रयास करने वाला 2. आशापूर्ति के लिए ओरों की सहायता की अपेक्षा करने वाला।

आशोषण *पुं.* (तत्.) पूरी तरह सुखाने या सोख लेने का काम।

आशौच *पुं.* (तत्.) शुद्धिपर्यंत, शौचपर्यंत।

आश्चर्य *पुं.* (तत्.) अचंभा, विस्मय, हैरानी, अचरज *वि.* अद्भुत, विस्मयपूर्ण।

आश्चर्यचकित *वि.* (तत्.) आश्चर्य से अभिभूत, अत्यंत चकित, बहुत हैरान, विस्मित।

आश्चर्यपूर्ण *वि.* (तत्.) विस्मयकारी, हैरान करने वाला।

आश्चर्यित *वि.* (तत्.) विस्मित, चकित, हैरान, आश्चर्य चकित।

आश्म *वि.* (तत्.) पत्थर का बना हुआ।

आश्मन *वि.* (तत्.) दे. आश्म *पुं.* (तत्) सूर्य का सारथी अरुण।

आश्मरिक *वि.* (तत्.) पथरी रोग से ग्रस्त, अश्मरी *पुं.* अश्मरी रोग।

आश्मिक *वि.* (तत्.) 1. पत्थर ढोने वाला 2. प्रस्तर-निर्मित।

आश्मिकी *स्त्री.* (तत्.) भूवि. विज्ञान की वह शाखा, जिसमें शैलों और पत्थरों का अध्ययन किया जाता है शैलों और पत्थरों का शास्त्र।

आश्यान *वि.* (तत्.) जो जमकर ठोस हो गया हो, कुछ-कुछ सूखा हुआ।

आश्रम *पुं.* (तत्.) 1. ऋषियों का निवास-स्थान, तपोवन 2. जीवन की चार अवस्थाएं बह्मचर्य गृहस्थ आदि 3. परोपकार या किसी पुण्य के कार्य के लिए स्थापित आवासी संस्था जैसे- अनाथाश्रम।

आश्रमधर्म *वि.* (तत्.) [आश्रम+धर्म] 1. आश्रम विशेष के नियम और सिद्धांत, आश्रम का अनुशासन 2. आश्रम व्यवस्था जैसे- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास।

आश्रमवास *पुं.* (तत्.) 1. वानप्रस्थ का जीवन 2. तपोवन में निवास, आश्रम में रहना।

आश्रमवासी *पुं.* (तत्.) आश्रम में निवास करने वाला, संन्यासी, तपस्वी।

आश्रमिक, आश्रमी *वि.* (तत्.) दे. आश्रमवासी।

आश्रय *पुं.* (तत्.) 1. आधार 2. शरण, ठिकाना 3. सहारा, अवलंब 4. घर 5. सानिध्य।

आश्रय शब्द *पुं* (तत्.) भा.वि. वाक्य के ऐसे शब्द जिन का प्रयोग पुन: ऐसे किया जाए, ताकि वाक्य के उस अंश पर अधिक बल पड़े जैसे- कल दस बजे आओगे, आओगे ना, पुनरुक्त शब्द, जिन का कार्य है अर्थ पर बल देना (इन शब्दों का प्रयोग आदेशात्मक वृत्ति में अधिक होता है।

आश्रय स्थल *पुं.* (तत्.) [आश्रय+स्थल] ऐसा निवास जिसमें भिन्न रूप से असमर्थ, अर्थात् विकलांग आदि, अनाश्रित महिलाएँ और वृद्ध जन रहते हैं, यहाँ उन की देखभाल भी की जाती है।

आश्रयण *पुं.* (तत्.) सहारा लेने का कार्य।

आश्रयणीय *वि.* (तत्.) आलंबन के योग्य, सहारा लेने या देने के योग्य।

आश्रयार्थ *क्रि.वि.* (तत्.) आश्रय के लिए, आश्रय हेतु, आश्रय प्राप्ति की इच्छा से।

आश्रयासिद्ध *वि.* (तत्.) (आश्रय+असिद्ध) न्याय. जो तर्क के आधार पर सिद्ध न हो, असिद्ध कथन अथवा वक्तव्य।

आश्रयासिद्धि *स्त्री.* (तत्.) [आश्रय+असिद्धि] कथन, तर्क अथवा वक्तव्य की असत्यता।

आश्रयी *वि.* (तत्.) सहारा लेने या पाने वाला, आश्रय लेने वाला (न्या. शा)।

आश्रव *पुं.* (तत्.) 1. प्रतिज्ञा, वचन 2. किसी के कहे पर चलना 3. अंगीकार करना 4. प्रवाह, धारा 5. पकते हुए चावल का फेन 6. योग. अविद्या, आस्मिता आदि क्लेश 7. (वौद्ध) बंधनकारक विषय।

आश्रि *स्त्री.* (तत्.) असिधारा, तलवार की धार।

आश्रित *वि.* (तत्.) 1. सहारे पर टिका हुआ, ठहरा हुआ 2. अवलंबित 3. अधीन। *पुं.* 1. वह जो भरण-पोषण के लिए किसी पर अवलंबित हो 2. स्त्री-बच्चे 3. नौकर-चाकर 4. न्याय. आकाश और नित्य परमाणु द्रव्यों को छोडक़र दूसरे अनित्य द्रव्यों का किसी-न-किसी अंश में दूसरे से साधर्म्य।

आश्रित उपवाक्य *पुं.* (तत्.) भाषा. वह उपवाक्य जो किसी मूल वाक्य पर आधरित हो उदा. 'मैं जानता हूँ कि वह निर्दोष है' में 'वह निर्दोष है' आश्रित उपवाक्य है तु. मुख्य उपवाक्य, समानाधिकरण उपवाक्य दे. उपवाक्य।

आश्रित चर *पुं.* (तत्.) गणि. वह चर जिसका मान एक अन्य चर के मान पर आश्रित है। जैसे- $x=y^2$ में x आश्रित चर है dependent variable

आश्रित देश *पुं.* (तत्.) राज. अन्य पर आश्रित स्थल, भूखंड, प्रदेश आदि।

आश्रुत *पुं.* (तत्.) 1. गृहीत या स्वीकृत बात 2. जोर से कही गई बात जो सुनाई पड़े वि. 1. श्रुत, सुना हुआ 2. अंगीकृत।

आश्रुति *स्त्री.* (तत्.) 1. श्रवण, सुनना 2. स्वीकृति स्वीकृति 3. वचनदान।

आश्लिष्ट *वि.* (तत्.) 1. जुड़ा हुआ, चिपका हुआ हृदय से लगा हुआ 2. आलिंगित 3. संबद्ध, मिला हुआ।

आश्लेष *पुं.* (तत्.) 1. आलिंगन 2. (गहरा) लगाव, लगाव, संबंध।

आश्लेषण *पुं.* (तत्.) 1. मेल, संयोग 2. अवलंबन। अवलंबन।

आश्लेषा *स्त्री.* (तत्.) आकाश मंडल के 27 नक्षत्रों में नौवें नक्षत्र का नाम।

आश्लेषित *वि.* (तत्.) दे. आश्लिष्ट।

आश्व *पुं.* (तत्.) 1. घोड़ों का झुंड 2. घोड़े की स्थिति 3. वह रथ जिसे घोड़े खींचते हैं *वि.* 1. अश्व-संबंधी 2. घोड़े से खींचा जाने वाला।

आश्वत्थ *पुं.* (तत्.) अश्वत्थ अर्थात् पीपल का वृक्ष *वि.* (तत्.) पीपल संबंधी; पीपल में फल आने के समय से संबद्ध।

आश्वत्था *स्त्री.* (तत्.) अश्विनी या अश्वत्थ नक्षत्र नक्षत्र की रात्रि, आश्विन मास की पूर्णिमा की रात, कोजागरी रात।

आश्वमेधिक *वि.* (तत्.) अश्वमेध यज्ञ या अश्वमेध संबंधी।

आश्वरथ *वि.* (तत्.) घोड़ों से खींचे जाने वाले रथ से संबंधित प्रयो. सूर्य भगवान आश्वरथी हैं।

आश्वलायन *पुं.* (तत्.) गृह्यसूत्रों और श्रौतसूत्रों के रचयिता ऋषि का नाम।

आश्वसनीय *वि.* (तत्.) प्रोत्साहन देने योग्य, दिलासा देने योग्य।

आश्वसित *वि.* (तत्.) 1. दिलासा पाया हुआ 2. प्रोत्साहन प्राप्त प्रयो. हम सभी आश्वसित हैं कि मैच हम अवश्य जीतेंगे।

आश्वस्त *पुं.* (तत्.) 1. आश्वासन-प्राप्त, जिसका डर दूर कर दिया गया हो 2. जिसे ढाढ़स बँधाया गया हो 3. उत्साहित प्रयो. डाक्टर ने कहा कि कोई बड़ी बीमारी नहीं है, तो मैं आश्वस्त हो गया।

आश्वस्ति *स्त्री.* (तत्.) वाणि. आश्वासन दिए जाने की स्थिति, निर्माता द्वारा अपने उत्पाद की की गुणवत्ता के बारे में खरीदार को दिया गया आश्वासन, जिसके अनुसार यदि एक निश्चित समय में उत्पाद भरोसे पर खरा नहीं उतरता तो निर्माता उसकी नि:शुल्क मरम्मत करेगा या उत्पाद को बदल देगा, 2. बीमा पालिसी की एक शर्त कि बीमादार की गलतबयानी होने पर दावा अस्वीकृत हो जाएगा warranty

आश्वास *पुं.* (तत्.) 1. सांत्वना, दिलासा, तसल्ली 2. अभयदान 3. किसी कथा का एक भाग 4. विराम 5. खुलकर साँस लेना।

आश्वासक *वि.* (तत्.) दिलासा देने वाला, भरोसा देने वाला *पुं.* कपड़ा, वस्त्र।

आश्वासन *पुं.* (तत्.) 1. सांत्वना, तसल्ली, दिलासा 2. भय-निवारण 3. प्रोत्साहन 4. आशा देना।

आश्वासी *वि.* (तत्.) 1. आश्वासन देने वाला 2. ढाढस बँधाने वाला 3. आत्मविश्वासी 4. प्रफुल्लचित्त।

आश्वासी अभिकर्ता *पुं.* (तत्.) प्रबंध. अभिकर्ता जो उधार बेचे गए माल की रकम को वसूलने की जिम्मेदारी लेता है यदि खरीदार रकम नहीं चुकाए तो नुकसान मालिक का न होकर अभिकर्ता का होता है।

आश्वास्य *वि.* (तत्.) दे. आश्वसनीय।

आश्विक *वि.* (तत्.) 1. अश्वारोही 2. घोड़ों द्वारा खींचा जाने वाला 3. घोड़ों से संबंध रखनेवाला पुं. घुड़सवार सैनिक।

आश्विन *पुं.* (तत्.) क्वार का महीना, वह महीना जिसकी पूर्णिमा को अश्विनी नक्षत्र पड़े, सूर्य की परिक्रमा करते समय पृथ्वी का अश्विनी नक्षत्र की दिशा की ओर से भ्रमण करने का काल।

आश्विनेय *पुं.* (तत्.) 1. अश्विनि कुमार 2. पाँचों पांडवों में नकुल और सहदेव वि. अश्विनी-संबंधी। संबंधी।

आषाढ़ *पुं.* (तत्.) 1. वह चांद्रमास जिसकी पूर्णिमा पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में हो, सूर्य की परिक्रमा करते समय पृथ्वी का आषाढ़ा नक्षत्रों की दिशा में भ्रमण का काल 2. ज्येष्ठ मास के पश्चात

पड़ने वाला आषाढ़ का महीना, असाढ़ 3. पलाश या ढाक का डंडा ।

आषाढ़ी *स्त्री.* (तत्.) 1. आषाढ़ नक्षत्र में उत्पन्न, आषाढ़ मास से संबंधित 2. आषाढ़ की एकादशी का पर्व, देवशयनी एकादशी।

आसंग *पुं.* (तत्.) 1. लगाव, आसक्ति, अनुरक्ति 2. संग, साथ 3. संलग्नता, लिप्तता 4. मुल्तानी मिट्टी जिससे लोग स्नान करते हैं। *क्रि.वि.* 1. सतत, निरंतर 2. अबाधित, अविच्छिन्न।

आसंगत्य *पुं.* (तत्.) असंगति का भाव, असंगतता, अननुरूपता, बैषम्य।

आसंगी *वि.* (तत्.) संपर्क रखने वाला, मेलजोल रखने वाला, आसक्त, संबद्ध।

आसंजक *पुं.* (तत्.) प्रशा. (ऐसा पदार्थ) जो चिपकाने का काम करे, चिपकाने वाला (गोंद आदि)।

आसंजक टिकट *स्त्री.* (तत्.+अं) प्रशा. टिकट जिसकी पीठ पर चिपकाने वाला पदार्थ लगा हो और जो पानी या नमी की सहायता से कागज पर सहज में ही चिपक जाए।

आसंजन *पुं.* (तत्.) बाँधना या जोड़ना 2. पहनना या धारण करना 3. अनुराग 4. भक्ति 5. उलझ जाना 6. किसी सतह से चिपक जाना 7. भौ. भिन्न किस्म के अणुओं का पारस्परिक आकर्षण-बल के कारण आपस में चिपक जाना। प्रयो. काँच की प्लेट पर पानी की बूंद का चिपकना आसंजन के कारण होता है।

आसंजित *पुं.* (तत्.) जिसका आसंजन हुआ हो, अभ्यागृहीत।

आसंदिका *स्त्री.* (तत्.) 1. मचिया, आसनी 2. छोटी कुरसी।

आसंदी *स्त्री.* (तत्.) 1. मचिया 2. मोढ़ा 3. खटोला 4. आरामकुरसी 5. वेदी।

आसंबाध *वि.* (तत्.) 1. अवरुद्ध 2. घेरे में पड़ा हुआ

आसंसार *वि.* (तत्.) 1. प्रगतिशील 2. विकारी संसार या अस्तित्व के रहने तक 3. परिवर्तनशील।

आसंसृति *वि.* (तत्.) दे. आसंसार।

आस *स्त्री.* (तद्.) 1. आशा, उम्मीद 2. सहारा 3. कामना मुहा. आस करना- आशा करना, आशा रखना; आस छोड़ना- आशा का त्याग करना; आस टूटना- निराश होना; आस देखना- इंतजार करना; आस तजना- आशा छोड़ना; आस पूरना- आशा पूरी करना; आस बाँधना- आशा उत्पन्न करना; आस लगाना- आशा बाँधना; आस होना- आशा या सहारा होना, गर्भ रहना; आस तकना- प्रतीक्षा करना *स्त्री.* (तत्.) 1. आसन 2. धनुष 3. कमान 4. उपवेशन 5. बैठना 6. सानिध्य, सामीप्य।

आस-औलाद *पुं.* (तत्.-अर) [आस+औलाद] बाल-बच्चे, संतान, संतति।

आसकती *वि.* (तद्.) उत्साह से काम न करने वाला, काम टालने वाला, आलसी।

आसक्त *वि.* (तत्.) 1. अनुरक्त 2. लीन, लिप्त 3. आशिक, मोहित, लुब्ध।

आसक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. मन का लगाव, अनुराग 2. लगन प्रयो. उसमें आकर्षण था, पर आसक्ति नहीं थी, ममता थी, पर मोह नहीं था -बाणभट्ट की आत्मकथा।

आसत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. भाषा. सामीप्य, निकटता, पूर्ण निकटता, सन्निधि, 2. पास-पास रहना 3. लाभ-प्राप्ति प्रयो. अर्थ-बोध के लिए शब्दों में आसत्ति होनी आवश्यक है जैसे- 'राम' बोलते समय 'रा' बोलकर दस मिनट बाद 'म' बोला जाए तो आसत्ति नहीं होगी।

आसदन *पुं.* (तत्.) 1. समीपता, निकटता 2. लाभ 3. संबंध, संपर्क।

आसन *पुं.* (तत्.) 1. वह वस्तु जिस पर बैठा जाए (चटाई, कुर्सी आदि) 2. बैठने की विधि 3. हठयोग में बैठने की विभिन्न आंगिक मुद्राएँ।

4. अष्टांग योग में वर्णित विभिन्न आसन, जैसे भद्रासन, वज्रासन आदि 5. रति क्रिया की मुद्रा 6. बैठक 7. हाथी का कंधा 8. शत्रु पर आक्रमण न कर अवसर की प्रतीक्षा में अपनी जगह पर डटे रहना 9. फेंकना मुहा. आसन करना- योग की विभिन्न मुद्राएं; आसन जमाना- स्थिर भाव से बैठना; आसन डिगना या आसन डोलना- स्थिर न रह पाना, चित्त का चलायमान होना; आसन देना- सत्कारार्थ बैठने के लिए कोई वस्तु रखना; आसन लगाना- जमकर बैठना।

आसनगत *वि.* (तत्.) 1. आसन पर स्थित, आसीन, विराजमान 2. आसन संबंधी, आसन का।

आसना *पुं.* (तत्.) 1. आसन, छोटा बिछावन 2. बैठना 3. जीव 4. वृक्ष *अ.क्रि.* होना।

आसनास्थि *स्त्री.* (तत्.) [आसन+अस्थि] व्यक्ति की श्रोणि मेखला की अस्थि, श्रोणि मेखला की नीचे वाली पश्च हड्डी।

आसनी *स्त्री.* (तत्.) छोटा आसन, बिछौना।

आसन्न *वि.* (तत्.) 1. निकट आया हुआ, समीपस्थ 2. लगा, सटा हुआ।

आसन्न अधिकारी *पुं.* (तत्.) प्रशा. पदक्रम में वह निकटतम उच्च अधिकारी जिसे अधीनस्थ कर्मचारी सीधे अपना काम प्रस्तुत करता हो और जिसके प्रत्यक्ष अनुशासन में रहता हो। immediate officer

आसन्नकाल *वि.* (तत्.) जिस की मृत्यु समीप आ गई हो पुं. मृत्यु समय

आसन्न कोण *पुं.* (तत्.) एक सरल रेखा पर खड़ी दूसरी सरल रेखा के दोनों ओर के कोण, इन दोनों कोणों का योग 180 होता है, संलग्न कोण।

आसन्न खतरा *पुं.* (तत्.) अतिशीघ्र आने वाली विपत्ति की आशंका पर्या. आसन्न संकट।

आसन्न प्रसवा *स्त्री.* (तत्.) 1. कुछ ही दिनों में प्रसवित होने वाली 2. गर्भधारी महिला की वह अवस्था, जब बच्चा शीघ्र ही जन्म लेने वाला हो।

आसन्नता *स्त्री.* (तत्.) 1. निकटता, सामीप्य, नजदीकी 2. संलग्नता।

आसन्नभूत *वि.* (तत्.) भूतकाल का वह भेद जिससे क्रिया की पूर्णता और भूत काल की निकटता ज्ञात होती है, बीता हुआ वह समय जिसे बीते हुए थोड़ा ही वक्त हुआ हो, जैसे वह अभी-अभी गया है।

आसन्नमृत्यु *स्त्री.* (तत्.) शीघ्र ही अंतिम साँस लेने वाला, मृत्यु के समीप, मौत के करीब।

आसपास *वि.* (देश.) 1. निकट 2. करीब 3. इधर-उधर 4. चारों ओर 5. अगल-बगल।

आसबंद *पुं.* (देश.) एक धागा जो पटवों के पैर से बँधा रहता है। इसी तागे में जेवर को अटकाकर गूँथते हैं।

आसन्न संकट *पुं.* (तत्.) दे. आसन्न खतरा

आसमाँ दे. आसमान।

आसमान *पुं.* (फा.) 1. आकाश, गगन 2. स्वर्ग 3. देवलोक मुहा. आसमान ताकना- घमंड करना; आसमान पर उड़ना या आसमान पर चढ़ना- घमंड से इतराना; आसमान पर चढ़ना- अति प्रशंसा के द्वारा दिमाग खराब करना; आसमान पर थूकना- किसी दूसरे को तिरस्कृत करने के कारण स्वयं अपमानित होना; आसमान में थिगली करना- विकट कार्य करना; आसमान फटना- भारी विपत्ति का अचानक आ पड़ना, दैवी प्रकोप का पड़ना; आसमान में छेद होना- लगातार अतिवृष्टि होना, वर्षा का न थमना; आसमान सिर पर उठाना- उपद्रव मचाना; आसमान सिर पर टूटना- भारी विपत्ति का अचानक आ पड़ना; आसमान से बातें करना- बहुत शोर करना, कोलाहल मचाना, सभी संभव प्रयास न करना; आसमान से गिरना- किसी चीज का अपने-आप उपस्थित हो जाना, ऊँची स्थिति से नीचे जाना।

आसमानी *वि.* (फा.) 1. आकाश-संबंधी 2. आकाशीय, आसमान का 3. हल्का नीला, आकाश के रंग का *स्त्री.* 1. ताड़ के पेड़ से निकला हुआ मद्य सार, ताड़ी 2. शराब 3. भाँग।

आसमुद्र *क्रि.वि.* (तत्.) समुद्र पर्यंत, समुद्र के तट तक।

आसरा *पुं.* (तत्.) सहायक 1. सहारा, आधार, अवलंब 2. आशा 3. शरण प्रयो. अब भगवान के आसरे है।

आसव *पुं.* (तत्.) 1. आसवन की प्रक्रिया द्वारा निर्मित तरल, मद्य आदि।

आसवन *पुं.* (तत्.) 1. ताड़ 2. खजूर, तरल या ठोस पदार्थ को (भभके की सहायता से) उबालकर उससे उत्पन्न वाष्प को द्रवित करके तरल स्वरूप (आसव) प्राप्त करने की प्रक्रिया distillation

आसवनी *स्त्री.* (तत्.) 1. वह स्थान जहाँ आसवन का कार्य होता हो, मद्य निर्माणशाला 2. संयंत्र जिनकी सहायता से आसवन किया जाता है, अभिस्रावणी।

आसवित *वि.* (तत्.) रसा. जिस का अर्क बनाया गया हो, जिस का आसव बनाया गया हो।

आसवी *वि.* (तत्.) 1. आसव संबंधी, सुरा संबंधी। पुं. तत् 2. सुरा पान करने वाला, शराब पीने वाला, शराबी।

आसाँ *वि.* (फा.) दे. आसान

आसा *पुं.* (अर.) सोने या चाँदी का डंडा जिसे चोबदार केवल सजावट के लिए राजा-महाराजाओं अथवा बरात और जुलूस के आगे लेकर चलते हैं *स्त्री.* (तद्.) दे. आशा।

आसाइश *स्त्री.* (फा.) सुविधा, सुख, सुबीता, चैन, सुगमता।

आसाढ़ *पुं.* (तद्.) दे. आषाढ़ ज्येष्ठ के बाद और सावन से पहले पड़ने वाला हिंदी विक्रमी संवत का महीना।

आसादन *पुं.* (तत्.) 1. प्राप्त करना, रखना 2. कपट करके पकड़ लेना 3. आक्रमण करना।

आसादित *वि.* (तत्.) 1. प्राप्त, उपलब्ध 2. पहुँचा हुआ 3. पूर्ण किया हुआ 4. बिखेरा हुआ 5. आक्रांत।

आसान *वि.* (फा.) सरल, सीधा, सहज।

आसानी *स्त्री.* (फा.) सरलता, सुगमता, सहजता।

आसामी *वि.* (देश.) 1. दे. असमी 2. दे. असामी।

आसार *पुं.* (अर.) 1. लक्षण 2. चिह्न, निशान प्रयो. आज तो मूसलाधार वर्षा के आसार है 3. नींव 4. खंडहर 4. दीवार की चौड़ाई (असर का बहुवचन) *स्त्री.* (तत्.) 1. धारा 2. संपात 3. मूसलाधार बौछार 4. लड़ाई में मित्रों से मिलनेवाली सहायता 5. मेघमाला 6. हमला।

आसावरी *स्त्री.* (देश.) 1. श्री राग की एक रागिनी 2. कबूतर 3. सूती कपड़ा।

आसिक *वि.* (तत्.) 1. खड्गधारी 2. खड्ग से युद्ध करने वाला।

आसित *वि.* (तत्.) 1. बैठा हुआ 2. सुखासीन 3. आराम से बैठा हुआ *पुं.* 1. असित मुनि का पुत्र 2. शांडिल्य गोत्र का एक प्रवर विशेष 3. आसन, बैठने की वस्तु।

आसिता *स्त्री.* (तत्.) पौधों का एक रोग जिसमें उनके पृष्ठ भाग पर बीजाणुधारी रोमिल या चूर्णी कवक जाल का आवरण बन जाता है।

आसिद्ध *पुं.* (तत्.) हिरासत या कैद में रखा हुआ प्रतिवादी, (व्यक्ति) जिस पर प्रतिबंध लगाया गया हो।

आसिया *स्त्री.* (फा.) चक्की।

आसीन *वि.* (तत्.) बैठा हुआ, विराजमान, आसन पर स्थित।

आसीन सदस्य *पुं.* (तत्.) किसी विधानमंडल, आयोग, समिति आदि का वह सदस्य, जिसका कार्यकाल अभी शेष हो।

आसीभौन *पुं.* (तद्.) शीशे का भवन, शीश महल।

आसीस *पुं.* (तद्.) दे. आशिष।

आसीसा *स्त्री.* (तद्.) तकिया, असीसा, सिरहाना।

आसुत *स्त्री.* (तत्.) आसवित, जिसका आसवन किया गया हो।

आसुति *स्त्री.* (तत्.) 1. आसवन करने की क्रिया, शराब चुआना 2. काढ़ा 3. प्रसव।

आसुमान *वि.* (तत्) आसु से युक्त, जीवित, प्राणयुक्त, सजीव।

आसुर *वि.* (तत्.) 1. असुर-संबंधी, असुर के रूप की भाँति 2. यज्ञादि न करनेवाला (व्यक्ति) 3. ईश्वरीय, दैवी 4. वह (विवाह) जिसमें वर कन्या के पिता को धन देकर कन्या को खरीदता है *पुं.* 1. काला नमक 2. राक्षस 3. रक्त।

आसुरि *पुं.* (तत्.) सांख्य योग के आचार्य कपिल मुनि का एक शिष्य।

आसुरी *स्त्री.* (तत्.) 1. राक्षसी 2. वैदिक छंदों का एक भेद 3. राई 4. काली सरसों 5. *वि.* (तत्.) असुर के समान दे. आसुर।

आसुरी चिकित्सा *स्त्री.* (तत्.) शल्य चिकित्सा, चीर-फाड़ करके रोग का उपचार करना, सर्जरी।

आसुरी माया *स्त्री.* (तत्.) असुरों या राक्षसों की माया।

आसुरी विवाह *पुं.* (तत्.) आठ प्रकार के विवाहों में ऐसा विवाह, जहाँ वर कन्या के माता-पिता को धन देकर कन्या को खरीदता है।

आसुर्य *पुं.* (तत्.) असुरपना, राक्षसीपन, असुरता।

आसूचना *स्त्री.* (तत्.) गोपनीय सूचना या गुप्त रूप से संगृहीत सूचना 1. प्रशा. किसी विषय से संबंधित जानकारी का संग्रह, विश्लेषण और निष्कर्ष संबंधित जानकारी का संग्रह, विश्लेषण और निष्कर्ष तक पहुँचना 2. राज. शत्रु देश की गतिविधियों की गोपनीय जानकारी एकत्र करना और उसे सरकार के संबंधित विभागों तक पहुँचाना intelligence 3. सैवि. शत्रु के रण विन्यास, संसाधनों, गतिविधियों की युद्‌धोपयोगी जानकारी। intelligence

आसूचना विभाग *पुं.* (तत्.) देशविरोधी, शक्तियों के बारे में गुप्त रूप से सूचनाएं एकत्र कर समय पूर्व संबंधित विभाग को सूचित करने वाला सरकारी विभाग। intelligence bureau

आसूत्रित *वि.* (तत्.) 1. मालाकार 2. माला बनाने वाला 3. माला पहननेवाला 4. गुँथा हुआ 5. बुना हुआ 6. ओतप्रोत।

आसूदगी *स्त्री.* (फा.) 1. 'आसूदा' (तृप्त) होने का भाव, तृप्ति 2. संतोष 3. संपन्नता।

आसूदा *वि.* (फा.) 1. संतुष्ट 2. तृप्त 3. संपन्न 4. भरापूरा।

आसेक *पुं.* (तत्.) 1. भिगोना 2. अच्छी तरह भिगोना 3. सेचन 4. छिड़काव।

आसेचन *पुं.* (तत्.) दे. आसेक *वि.* 1. सुंदर 2. लुभावना।

आसेचनी *स्त्री.* (तत्.) फुहारा, फव्वारा।

आसेतु *क्रि.वि.* (तत्.) सेतु तक।

आसेतु हिमाचल *वि.* (तत्.) सेतुबंध रामेश्वरम् से हिमालय तक फैला हुआ (भारत देश)।

आसेद्‌धा *पुं.* (तत्.) आसेध करने वाला व्यक्ति या अधिकारी दे. आसेध।

आसेध *पुं.* (तत्.) 1. गिरफ्तारी 2. हिरासत 3. कानूनी प्रतिबंध।

आसेधक *वि.* (तत्.) दे. आसेद्‌धा।

आसेवन *पुं.* (तत्.) 1. निरंतर सेवन करना 2. मेलजोल प्रयो. इस दवा के आसेवन से आप स्वस्थ हो जाएँगे।

आसेवित *वि.* (तत्.) 1. सतत सेवन किया हुआ 2. बहुत दिनों तक व्यवहृत।

आसेवी *वि.* (तत्.) निरंतर सेवन करने वाला 2. अभ्यासी।

आसेव्य *वि.* (तत्.) 1. निरंतर सेवा करने योग्य 2. देखने योग्य।

आसैनिक *स्त्री.* (तत्.) रसा. एक उपधातु तत्व।

आसोज *पुं.* (देश.) आश्विन मास, क्वार का महीना, भादों और कार्तिक के मध्य का महीना।

आसौ *क्रि.वि.* (तद्.) 1. इस वर्ष, इस साल 2. *पुं.* (तद्.) आसव, सुरा, शराब।

आस्कंद *पुं.* (तत्.) 1. नशा 2. शोषण 3. आक्रमण 4. आरोहण 5. युद्ध 6. घोड़े की सरपट चाल 7. अपशब्द।

आस्कंदित *वि.* (तत्.) 1. भारग्रस्त 2. कुचला गया *पुं.* घोड़े की सरपट चाल।

आस्कंदी *वि.* (तत्.) 1. आक्रमणकारी 2. अधिक खर्च करनेवाला 3. अपहर्ता, अपहरण करने वाला।

आस्तर *पुं.* (तत्.) 1. बिछौना 2. कालीन 3. कंबल 4. गद्दा, आवरण 6. हाथी की झूल

आस्तरण *पुं.* (तत्.) 1. ऐसा फर्श जो आराम करने के लिए अच्छा लगे, बिछौना, गलीचा, बिस्तर, कालीन आदि 2. यज्ञ वेदी पर फैलाया गया कुश, 'कुश' एक प्रकार की पवित्र घास है 3. हाथी की झूल।

आस्तरणिक *वि.* (तत्.) 1. बिस्तर पर सोनेवाला 2. बिछाया जानेवाला।

आस्ति *स्त्री.* (तत्.) प्रशा.विधि. किसी व्यक्ति के स्वामित्व वाली संपत्ति, विशेषतः अचल संपत्ति तु. परिसंपत्ति।

आस्तिक *वि.* (तत्.) वेद, ईश्वर और परलोक में विश्वास करनेवाला 2. धर्मनिष्ठ 3. ईश्वर के अस्तित्व को माननेवाला।

आस्तिकता *स्त्री.* (तत्.) वेद, ईश्वर और परलोक में विश्वास, नास्तिक होने का अभाव।

आस्तिकत्व *पुं.* (तत्.) दे. आस्तिकता।

आस्तिक्य *पुं.* (तत्.) 1. ईश्वर, वेद और परलोक में विश्वास 2. जैन शास्त्रानुसार जिन मुनि प्रणीत सब भावों (तत्वों) के अस्तित्व पर विश्वास।

आस्तियाँ *स्त्री.* (तद्.) परिसंपत्ति, संस्था अथवा व्यक्ति की सम्पूर्ण संपत्तियाँ।

आस्तीक *पु.* (तत्.) जरत्कारु ऋषि और वासुकि की कन्या से उत्पन्न ऋषि, जिन्होंने जनमेजय के सर्पसत्र में तक्षक नाग के प्राण बचाए थे।

आस्तीन *स्त्री.* (फा.) कुर्ते आदि का वह भाग जो बाँह को ढँकता है, बाँही मुहा. आस्तीन का साँप- वह मित्र जिसके मन में शत्रुता हो, दोस्त के रूप में दुश्मन; आस्तीन चढ़ाना- लड़ने के लिए तैयार होना; आस्तीन में साँप पालना- शत्रु को अपने पास रख कर उसका पोषण करना।

आस्त्र *वि.* (तत्.) अस्त्र संबंधी।

आस्थगन *पुं.* (तत्.) प्रशा.विधि. 4 किसी बात या काम को कुछ समय के लिए रोक रखने की क्रिया। diferment

आस्थगित *वि.* (तत्.) जिसका आस्थगन किया गया हो।

आस्था *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी मूल्य, श्रद्धा या धारणा के प्रति अविकल निष्ठा, विश्वास 2. प्रयत्न, चेष्टा, आलंबन 3. अपेक्षा 4. वादा, प्रतिज्ञा 5. आशा।

आस्थाता *वि.* (तत्.) 1. आरोहण करने वाला, चढ़ने वाला 2. खड़ा होने वाला।

आस्थान *पुं.* (तत्.) 1. बैठने की जगह 2. दरबार, सभा 3. मनोरंजन का स्थान 4. श्रद्धा, आस्था।

आस्थापन *पुं.* (तत्.) 1. स्थापित करना, खड़ा करना 2. बलवर्धक औषधि 3. स्नेह-युक्त वस्ति।

आस्थापूर्ण *वि.* (तत्.) श्रद्धा और विश्वास से परिपूर्ण, श्रद्धावंत, दृढ़ आस्थावाला, ईमान वाला।

आस्थायिका *स्त्री.* (तत्.) दरबार, सभा।

आस्थायुक्त *वि.* (तत्.) आस्था वाला, श्रद्धा युक्त।

आस्थावाद *पुं.* (तत्.) (आस्था+वाद) दार्शनिक मत, जिस के अनुसार ज्ञान का प्रत्येक रूप, किसी न किसी सीमा तक तर्क शास्त्र से मुक्त होकर मात्र आस्था, विश्वास और श्रद्धा पर आधारित होता है।

आस्थावान *वि.* (तत्.) तर्क त्याग कर विश्वास करने वाला, आस्थायुक्त।

आस्थाहीन *वि.* (तत्.) बिना आस्था के, श्रद्धा-विश्वास रहित, जिसका कोई ईमान न हो।

आस्थित *वि.* (तत्.) 1. रहा हुआ, बसा हुआ 2. यत्न करने वाला 3. घेरा हुआ 4. प्राप्त किया हुआ 5. पहुँचा हुआ।

आस्थिति *स्त्री.* (तत्.) समग्र स्थिति, अवस्था, दशा, हालत।

आस्नान *पुं.* (तत्.) 1. पवित्रता, स्वच्छता 2. नहाने का पानी।

आस्पद *पुं.* (तत्.) 1. योग क्रिया में कुंडली का आठवाँ स्थान 2. जगह, रहने का स्थान 3. विषय 4. वंशगत नाम।

आस्पर्धा *स्त्री.* (तत्.) प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता, होड़, लाग-डाट।

आस्फाल *पुं.* (तत्.) 1. धक्का 2. रगड़ 3. धीरे-धीरे हिलना 4. हाथी के कान की फड़फड़ाहट।

आस्फालन *पुं.* (तत्.) 1. झटका 2. धक्का देना।

आस्फोट *पुं.* (तत्.) 1. ठोकर या रगड़ से उत्पन्न ध्वनि 2. ताल ठोंकने की ध्वनि 3. शस्त्रास्त्र की की झंकार 4. मदार।

आस्फोटक *पुं.* (तत्.) अखरोट *वि.* (तत्.) ताल ठोकने वाला।

आस्फोटन *पुं.* (तत्.) 1. ताल ठोकना 2. फटकना 3. हिलाना 4. संकुचन 5. ताली बजाना 6. उद्घाटित करना।

आस्माँ *पुं* (फा.) आकाश, नभ, गगन, आसमान, वितान।

आस्मियम *पुं* (तत्.) रसा. एक लैटिन धात्विक तत्व, प्लैटिनम और इरिडियम की मिश्र धातु बनाने में प्रयुक्त।

आस्मिरीडियम *पुं* (अं.) लैटिन आस्मियम और इरिडियम के मिश्रण से निर्मित एक कठोर और श्वेत धातु।

आस्यंदन *पुं.* (तत्.) प्रस्रवण, बहाना।

आस्य *पुं.* (तत्.) चेहरा, मुँह, वि. चेहरे संबंधी।

आस्या *स्त्री.* (तत्.) 1. बैठना 2. विश्राम की अवस्था 3. वासस्थान।

आस्युत *वि.* (तत्.) सिला हुआ।

आस्र *पुं.* (तत्.) रक्त, खून।

आस्रप *वि.* (तत्.) 1. रक्त पीने वाला, खून चूसने वाला 2. राक्षस।

आस्रव *पुं.* (तत्.) 1. उबलते हुए चावल का फेन 2. पनाला 3. इंद्रियद्वार 4. क्लेश 5. जैन मतानुसार औदारिक और कामादि के द्वारा आत्मा की गति गति जो शुभ और अशुभ दोनों प्रकार की है।

आस्राव *पुं.* (तत्.) 1. बहाव 2. घाव 3. पीड़ा 4. थूक 5. एक रोग।

आस्रुत *वि.* (तत्.) 1. जल के सामान्य वाष्पन से प्राप्त 2. आसवन प्रक्रिया से प्राप्त।

आस्वाद *पुं.* (तत्.) रस, स्वाद वि. स्वादिष्ट।

आस्वादक *वि* (तत्.) 1. स्वाद परीक्षक, व्यंजन के स्वाद का मूल्यांकन करने वाला, चखने वाला।

आस्वादन *पुं.* (तत्.) स्वाद लेना, चखना, मजा लेना।

आस्वादनीय *वि.* (तत्.) स्वाद लेने योग्य, चखने योग्य, रस लेने योग्य।

आस्वादित *वि.* (तत्.) रस लिया हुआ, स्वाद लिया हुआ, चखा हुआ, मजा लिया हुआ।

आस्वाद्य *वि.* (तत्.) आस्वादन करने या स्वाद लेने योग्य, जायकेदार, खाने में स्वादिष्ट।

आह (आह्) अव्य. (तत्.) पीड़ा, शोक, दुःख, खेद और ग्लानिसूचक *स्त्री.* कराहना, दुःख या क्लेश-सूचक शब्द, ठंडी साँस मुहा. आह भरना-ठंडी साँस लेना।

आहट *स्त्री.* (तत्.) किसी के आने, चलने आदि की आवाज, पदचाप।

आहत *वि.* (तत्.) 1. घायल 2. जिस पर आघात या प्रहार किया गया हो 3. हत 4. रौंदा हुआ 5. निकाला हुआ 6. असंगत (वाक्य) 7. पुराना 8.

गणि. गुणित *वि.* (तत्.) 9. हरण किया गया, निकाल लिया गया।

आहति *स्त्री.* (तत्.) 1. चोट 2. मार डालना 3. गणि. गुणन।

आहन *पुं.* (फा.) लोहा।

आहनन *पुं.* (तत्.) 1. यष्टि, डंडा 2. मारना, पीटना।

आहननीय *वि.* (तत्.) 1. डंका बजा कर प्रसिद्ध करने वाला 2. मारने योग्य।

आहनी *वि.* (फा.) 1. लोहे का 2. लोहे जैसा कठोर।

आहर *पुं.* (तत्.) 1. लाना 2. ग्रहण करना, पकड़ना 3. साँस लेना 4. साँस से खींची गई हवा 5. समय, काल 6. दिन 7. युद्ध, लड़ाई।

आहरण *पुं.* (तत्.) 1. प्रशा. सरकार की ओर से खजाने या बैंक से धनराशि निकालने का कार्य, छीनना, हर लेना 2. स्थानांतरित करना 4. ग्रहण करना, लेना 5. यज्ञादि पूरा करना 6. विवाह के समय वधू को उपहार में दिया जाने वाला धन।

आहरण अधिकारी *पुं.* (तत्.) प्रशा. सरकार की ओर से बैंक खजाने आदि से धन निकलवाने एवं उसके (आवश्यकतानुसार) व्यय आदि के किए प्राधिकृत अधिकारी! drawing officer

आहरण पर्ची *स्त्री.* (तत्.) वाणि. बैंक से स्वयं अथवा वाहक के माध्यम से रुपया निकलवाने का प्रपत्र। टि. आहरण पर्ची के साथ खातेदार के लिए अपनी पासबुक प्रस्तुत करना जरूरी होता है, जबकि चेक साथ हो। withdrawal form

आहर्ता *वि.* (तत्.) 1. हरण करनेवाला, छीननेवाला 2. आहरण करने वाला 3. अनुष्ठान करनेवाला 4. प्रवृत्त करने वाला 5. प्राप्त करने वाला।

आहला *पुं.* (देश.) नदियों की बाढ़, जल का विप्लव।

आहव *पुं.* (तत्.) 1. युद्ध 2. ललकार, आह्वान 3. यज्ञ।

आहवन *पुं.* (तत्.) यज्ञ, हवि, होम करना।

आहवनी *स्त्री.* (तत्.) कर्मकांड में प्रयुक्त तीन प्रकार की अग्नियों में से तीसरी, यह गार्हपत्य अग्नि से निकालकर अभिमंत्रित करके यज्ञ के लिए मंडप में पूर्व की ओर स्थापित की जाती है वि. आहुति देने योग्य।

आहवनीय *वि.* (तत्.) यज्ञ करने योग्य, होम करने योग्य।

आहाँ *स्त्री.* (देश.) 1. आह्वान, बुलावा 2. *अव्य.* (देश.) इंकार, अस्वीकृति, हाँ नहीं 3. *अव्य.* (देश.) स्वीकृति सूचक शब्द, हाँ

आहा *अव्य.* (तत्.) आश्चर्य और हर्ष सूचक अव्यय।

आहार *पुं.* (तत्.) 1. भोजन, खाना 2. खाने की वस्तु 3. स्वीकार कर लेना।

आहारक पुं. (तत्.) 1. पास लाने वाला 2. जैन एक प्रकार की उपलब्धि जिसके द्वारा चतुर्दशपूर्वाधारी मुनिराज अपनी शंका के समाधान के लिए हस्त-मात्र शरीर धारण कर तीर्थंकरों के पास उपस्थित होते हैं।

आहारतंत्र *पुं.* (तत्.) दे. पाचन तंत्र।

आहार नाल *स्त्री.* (तत्.) आयु. मुख से मलद्वार तक विस्तरित नलिकाओं का क्रम जो भोजन के पाचन, अवशोषण तथा मलोत्सर्ग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है इसके प्रमुख अंग है- मुख, गुहा, ग्रसनी, ग्रासनली, आमाशय आंतें तथा मलाशय दे. पाचन तंत्र।

आहार विज्ञान *पुं.* (तत्.) आयु. वह शास्त्र जिसमें भोजन के पोषकतत्वों के गुणधर्म एवं उनकी उपयोगिता का अध्ययन किया जाता है।

आहार-विहार *पुं.* (तत्.) खाना-पीना, सोना आदि शारीरिक व्यवहार मनोरंजन प्रयो. प्रत्येक व्यक्ति को अपना आहार-विहार ठीक रखना चाहिए।

आहारिक *पुं.* (तत्.) 1. जैन आत्मा के पाँच शरीरों में से एक 2. आहार संबंधी।

आहारिणी *स्त्री.* (तत्.) खानेवाली, आहार करने वाली।

आहारी *पुं.* (तत्.) जैन मतानुसार आत्मा के पांच शरीरों में से एक *वि.* (तत्.) 1. भक्षक, खाने वाला 2. स्वीकार करने वाला।

आहार्य *वि.* (तत्.) 1. खाने योग्य 2. ग्रहण करने योग्य 3. कृत्रिम 4. पूजनीय *पुं.* (तत्.) नाट्य. 1. चार प्रकार के अनुभावों में चौथा 2. नायक और नायिका का परस्पर एक-दूसरे का वेश धारण करना 3. अभिनय के चार प्रकारों में से एक जिससे केवल वेश आदि से अभिनय संपन्न किया जाता है!

आहार्यानुभाव *पुं.* (तत्.)1. मनोभावों के अनुसार कृत्रिम वेशभूषा धारण करना 2. अनुभाव के चार प्रकारों में से एक, अन्य तीन हैं- 1. आंगिक अनुभाव 2. वाचिक अनुभाव 3. सात्विक अनुभाव।

आहाव *पुं.* (तत्.) 1. ललकार 2. अग्नि 3. युद्ध 4. कुएँ के पास बनी पानी की हौदी जिसमें पशु-पक्षी आकर पानी पीते हैं।

आहिंडन *पुं.* (तत्.) बेकार, इधर-उधर घूमना, आवारागर्दी।

आहि *अ.क्रि.* (देश.) 1. है, हिंदी की मुख्य सहायक क्रिया 2. *स्त्री* (देश.) आह, उदासी प्रकट करने का शब्द।

आहिक *पुं.* (तत्.) 1. केतु 2. पुच्छल तारा 3. पाणिनि।

आहित *पुं.* (तत्.) पंद्रह प्रकार के दासों में से एक जो अपने स्वामी से इकट्ठा धन लेकर उसकी सेवा में रह कर उसे चुकाता है *वि.* अमानत या बंधक रखा हुआ।

आहितक *पुं.* (तत्.) गिरवी रखा हुआ माल।

आहिताग्नि *स्त्री* (तत्.) 1. घर में अनुष्ठान हेतु अग्नि प्रदीप्त करने वाला, अग्निहोत्री 2. हवन, यज्ञ।

आहिस्तगी *स्त्री.* (फा.) मंदगति से गमन की प्रवृत्ति, धीरे-धीरे चलने की नज़ाकत, धीमापत्र।

आहिस्ता *क्रि.वि.* (फा.) धीरे से, धीरे-धीरे, मंथर गति से, सुस्ता-सुस्ता कर।

आहिस्ता-आहिस्ता *क्रि.वि.* (फा.) शनैः-शनैः, धीमे-धीमे, आराम-आराम से।

आहुत *पुं.* (तत्.) 1. अतिथि यज्ञ, अतिथि सत्कार 2. भूतयज्ञ *वि.* हवन

आहुति *स्त्री.* (तत्.) 1. होम, हवन 2. मंत्र पढ़कर देवता देवता के लिए द्रव्य को अग्नि में डालना प्रयो. अग्नि में आहुति केवल एक ही व्यक्ति दे रहा था, बाकी लोग जप में निमग्न थे- चारू चंद्रलेख, ह.प्र.द्विवेदी 3. 3. बलि, कुर्बानी 4. चुनौती, ललकार।

आहू *पुं.* (फा.) हिरन, मृग।

आहूत *वि.* (तत्.) निमंत्रित, बुलाया हुआ, आह्वान किया हुआ।

आहूति *स्त्री.* (तत्.) आह्वान, पुकार।

आहेय *वि.* (तत्.) अहि या सर्प संबंधी।

आह्न *वि.* (तत्.) 1. प्रतिदिन 2. दैनिक, रोज का 3. काल विशेष जैसे- पूर्वाह्न, अपराह्न।

आह्निक *वि.* (तत्.)1.दिन का,दैनिक 2. दिहाड़ी। पुं. (तत्.) 1. नित्य कर्म 2. दिन का काम 3. किसी पुस्तक को पढने के लिए एक दिन के लिए निर्धारित सामग्री 4. रोज की मजदूरी।

आह्लाद *पुं.* (तत्.) आनंद, हर्ष।

आह्लादक *वि.* (तत्.)आनंददायक,खुशी देनेवाला।

आह्लादन *पुं.* (तत्.) हर्ष या आनंद प्रदान करने वाला।

आह्लादित *वि.* (तत्.) आनंदित, प्रसन्न, खुश।

आह्लादी *वि.* (तत्.) विनोदपूर्ण, हर्षयुक्त, हर्षप्रद, आनंद देनेवाला।

आह्वान *पुं.* (तत्.) 1. बुलाना, पुकार 2. बुलावा 3. तलबनामा 4. यज्ञ में मंत्र द्वारा देवताओं को बुलाना।

आह्वायक *वि.* (तत्.) आह्वान करने वाला, *पुं.* (तत्.) संदेशवाहक।

आह्व्य *पुं.* (तत्.) 1. नाम, अभिधान 2. मुर्गों आदि पशु-पक्षियों की लड़ाई, जिस में शर्तें भी लगाई जाती हैं, मनोरंजन के लिए बाज़ी लगा कर होने वाली पशु-पक्षियों की लड़ाई।

इ

इ देवनागरी वर्णमाला में तीसरा अक्षर और स्वर जिसका उच्चारण तालू से होता है, इसका दीर्घ रूप 'ई' होता है, यह घोष ध्वनि है।

इंकार *पुं.* (अर.) अस्वीकृति।

इंग *पुं.* (तत्.) 1. संकेत, इशारा, इंगित 2. चिह्न, निशान 3. हाथी का दाँत।

इंगन *पुं.* (तत्.) 1. चलने का कार्य 2. हिलने अथवा हिलाने का कार्य 3. संकेत करने का कार्य 4. ज्ञान, जानकारी।

इंगरौटी *स्त्री.* (देश.) सिंदूर रखने की डिब्बिया।

इंगला *पुं.* (तत्.) हठयोग सुषुम्ना के बाएँ भाग में स्थित इड़ा नाम की एक काल्पनिक नाड़ी दे. इड़ा।

इंगला-पिंगला *स्त्री.* (तत्.) योग की मान्यता के अनुसार, साँस लेने और साँस छोड़ने की दो नाड़ियाँ, यदि दाएँ नथुने से साँस लेने और छोड़ने का कार्य हो रहा हो तो इड़ा नाड़ी जागृत होती है और यदि बाएँ नथुने से यह कार्य हो रहा हो तो पिंगला जागृत होती है यदि दोनों नथुनों से साँस लेने और छोड़ने का कार्य हो तो सुषुम्ना नाड़ी जागृत रहती है।

इंगित *पुं.* (तत्.) 1. अभिप्राय व्यक्त करने के लिए शरीर के किसी अंग से किया जाने वाला संकेत, इशारा 2. मन का भाव, अभिप्राय 3. मन का भाव दर्शाने वाली आंगिक चेष्टा प्रयो. हाथ की रेखाएं उसे रानी से भी कुछ बड़ी बनाने को इंगित करती हैं- चारु चंद्रलेखः ह.प्र. द्विवेदी। द्विवेदी।

इंगितज्ञ *वि.* (तत्.) 1. इशारा समझने वाला, इंगित समझने वाला 2. संकेतों का जानकार, इशारों से संप्रेषण करने वाला।

इंगुदी *स्त्री.* (तत्.) 1. हिंगोट का पेड़ 2. ज्योतिष्मती, मालकँगनी 2. इंगुल।

इंगुर *पुं.* (देश.) अभ्रक, पारा और गंधक घोट कर बनाया जाने वाला लाल रंग का चूर्ण जिसे महिलाएँ सिंदूर के रूप में प्रयुक्त करती हैं, सिंदूर।

इंग्लिश *स्त्री.* (अं.) अँगरेजी भाषा, इंग्लैंड की भाषा *वि.* 1. इंग्लैंड का या अंग्रेजी (भाषा) का 2. इंग्लैंड के निवासी।

इंग्लिस्तान *पुं.* (देश.) अंग्रेजों का देश, इंग्लैंड, ब्रिटेन।

इंग्लैंड *पुं.* (अं.) अंग्रेजों का देश, ब्रिटेन, इंग्लिस्तान।

इंच *वि.* (अं.) 1. रैखिक माप की एक इकाई जो फुट के बारहवें भाग के बराबर (2.54 सें.मी.) होती है 2. अल्पांश, बहुत थोड़ा।

इंचार्ज *पुं.* (अं.) जिस पर किसी कार्य या विभाग की देखभाल का भार हो, प्रभारी।

इंजन *पुं.* (अं.) 1. भौ. भाप, डीजल, पेट्रोल या बिजली से चलने वाला यंत्र जो ऊर्जा को चालक शक्ति में परिवर्तित करता है 2. रेल के डिब्बों को खींचने वाला यंत्र-युक्त वाहन।

इंजीनियर *पुं.* (अं.) भवन, नहर, पुल, सड़क, यंत्र आदि का निर्माण, देखरेख या मरम्मत कराने वाला अभियंता, यंत्रविद्या में निपुण, यंत्री।

इंजीनियरी/इंजीनियरिंग *स्त्री.* (अं.) इंजीनियर का कार्य; यंत्रादि के निर्माण, सुधार तथा संचालन का काम, कलपुर्जे आदि बनाने का काम, यांत्रिकी, अभियांत्रिकी।

इंजील *स्त्री.* (अर.) ईसाइयों का प्रमुख पवित्र ग्रंथ, बाईबिल।

इंजीली *वि.* (अर.) ईसाई मत से संबंधित, बाईबिल के उपदेशों से संबंधित।

इंजेक्शन *पुं.* (अं.) आयु. वह द्रव या औषधि जिसे सुई लगाकर शरीर में प्रविष्ट कराया जाए, सुई लगाने की प्रक्रिया, सुई के माध्यम से औषधि का अंतःक्षेपण।

इंटर *पुं.* (अं.) 1. मध्य, बीच 2. पूर्व की शिक्षा प्रणाली में ग्यारहवीं और बारहवीं की कक्षाएँ।

इंटरनेट *पुं.* (अं.) कंप्यू. कंप्यूटरों का विश्वव्यापी जालक्रम।

इंटरनेशनल *वि.* (अं.) राष्ट्रों के बीच का, अंतरराष्ट्रीय।

इंटरपोल *पुं.* (अं.) विधि. 1923 में स्थापित लगभग 150 देशों का पुलिस संगठन जो सदस्य देशों में हुए आपराधिक कार्यों को निपटाने में नीतिगत, कार्यगत एवं प्रशासनिक समन्वय करता है।

इंटरमीडिएट *पुं.* (अं.) 1. बीच का, मध्य का, दरमियानी 2. हाईस्कूल और डिग्री कक्षा के बीच का पाठ्यक्रम (कुछ राज्यों में)।

इंटरव्यू *पुं.* (अं.) 1. साक्षात्कार 2. पत्रकार का किसी से किसी विषय पर मत जानने या वक्तव्य लेने के लिए मिलना 3. भेंट, मिलना, मुलाकात 4. भेंटवार्ता।

इंटरेस्ट *पुं.* (अं.) रुचि, दिलचस्पी, काम में मन लगने की अवस्था।

इंडियन *वि.* (अं.) 1. भारतीय, हिंदुस्तानी, भारतवासी 2. भारत का, हिंदुस्तान का।

इंडिया *पुं.* (अं.) भारत, भारतवर्ष, हिंदुस्तान।

इँडुआ *पुं.* (देश.) सुतली अथवा कपड़े का मंडलाकार चक्र जो बोझा सँभालने के लिए सिर पर रखा जाता है, गेंडुरी, बिडई, तबला बजाते समय, तबलों को टिकाने के लिए, उनके नीचे रखी जाने वाली गद्दी।

इंडेंट *पुं.* (अं.) वाणि. माल मँगाने के लिए बनाई गई या भेजी जाने वाली सूची, माँग सूची।

इंडेक्स *पुं.* (अं.) 1. अकारादि क्रम वाली अनुक्रमणिका 2. पुस्तकों के अंत में लगने वाली, लेखकों, पुस्तकों अथवा संकल्पनाओं की, अकारादि क्रम वाली सूची 3. सौदा बाजार के उतार-चढ़ाव की मापक इकाई।

इंतकाम *पुं.* (अर.) बदला।

इंतकाल *पुं.* (अर.) 1. मृत्यु, मौत 2. एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना 3. किसी जायदाद या संपत्ति का एक के अधिकार से दूसरे के अधिकार में जाना।

इंतखाब *पुं.* (अर.) 1. छाँटना 2. चुनाव, चुनना, बीनना 3. खसरे-खतियौनी/खतौनी के किसी कागज की नकल।

इंतजाम *पुं.* (अर.) प्रबंध, बंदोबस्त, व्यवस्था।

इंतजार *पुं.* (अर.) प्रतीक्षा।

इंतहा *स्त्री.* (अर.) 1. चरम सीमा, पराकाष्ठा, हद 2. समाप्ति, अंत।

इंतहाई *वि.* (अर.) 1. हद दर्जे का, चरम 2. अत्यधिक।

इंतहापसंद *वि.* (अर.) हर काम को आखिरी अंजाम देने वाला, राजनीति या धर्म के बारे में उग्र विचार रखने वाला, खून-खराबे से परिवर्तन लाने में विश्वास रखने वाला।

इंतिहा *स्त्री.* (अ.) दे. 'इंतहा'।

इंदराज *पुं.* (फा.) अर. प्रविष्टि, बही या खाते में हिसाब का चढ़ाया जाना। entry

इंदशेखर *पुं.* (तत्.) जिसके मस्तक पर इंदु है, शिव, महादेव, चंद्रशेखर, चंद्रचूड़।

इंदिरा *स्त्री.* (तत्.) 1. लक्ष्मी, विष्णुपत्नी 2. कांति, कांति, शोभा।

इंदिरा बिंदु *पुं.* (तत्.) भारत गणराज्य के अंडमान-निकोबार का धुर, दक्षिणी छोर, इंदिरा पॉइन्ट।

इंदिरालय *पुं.* (तत्.) 1. लक्ष्मी का निवास स्थान, इंदिरा देवी का घर 2. नीलकमल, इंदीवर।

इंदीवर *पुं.* (तत्.) नीलकमल।

इंदीवरिणी *स्त्री.* (तत्.) नीलकमलों का समूह, इंदीवरों से पूरित ताल।

इंदीवरी *स्त्री.* (अर.) आयु. एक वनस्पति, शतमूली।

इंदु *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. कपूर 3. एक की संख्या 4. मृगशिरा नक्षत्र जिसका देवता चंद्र हैं।

इंदुक *पुं.* (तत्.) 1. अर्ध मंडल की आकृति, अर्ध चंद्र की आकृति, दो बृहत् अर्धवृत्तों द्वारा परिबद्ध ध अर्धचंद्राकार भाग 2. अश्मंतक नामक वृक्ष।

इंदुकमल *पुं.* (तत्.) श्वेत कमल, सितोत्पल।

इंदुकर *पुं.* (तत्.) चंद्रमा की किरण, चाँद की किरण, शशि किरण।

इंदुकला *स्त्री.* (तत्.) [इंदु+कला] चंद्रमा की कला, चंद्रमंडल का सोलहवाँ भाग 2. चंद्रमा की किरण 3. सोमलता 4. अमृत 5. गिलोय।

इंदुकलिका *स्त्री.* (तत्.) [इंदु+कलिका] केतकी, केवड़े का पौधा, चंद्रकला, इंदुकला।

इंदुकांत *पुं.* (तत्.) चंद्रकांत मणि, चंद्रमा की किरणें इस मणि को पिघला सकती हैं।

इंदुज *पुं.* (तत्.) इंदु से उत्पन्न, चंद्रमा का पुत्र, बुध ग्रह।

इंदुजनक *पुं.* (तत्.) [इंदु+जनक] 1. चंद्रमा के पिता, सागर 2. अत्रि ऋषि।

इंदुजा *स्त्री.* (तत्.) इंदु की पुत्री, नर्मदा नदी।

इंदुपुत्र *पुं.* (तत्.) चंद्रमा के पुत्र, बुध ग्रह, इंदुज।

इंदुभूषण *पुं.* (तत्.) चंद्रमा को अलंकार के रूप में धारण करने वाले, शिव, महादेव, चंद्रचूड़।

इंदुमंडल *पुं.* (तत्.) [इंदु+मंडल] चंद्रमा के ईद-गिर्द बनने वाला मंडल, चंद्रमा का घेरा।

इंदुमणि *पुं.* (तत्.) [इंदु+मणि] चंद्रकांत मणि, इंदु कांत।

इंदुमती *स्त्री.* (तत्.) 1. पूर्णिमा 3. महाराज अज की पत्नी (भगवान राम के पूर्वज)।

इंदुमौलि *पुं.* (तत्.) जिन के मस्तक पर चंद्रमा है, शिव, शंकर।

इंदुर *पुं.* (तत्.) चूहा, मूषक, मूसा।

इंदुरत्न *पुं.* (तत्.) मुक्ता, मोती, स्वाति नक्षत्र में समुद्र में स्थित सीप के भीतर निर्मित रत्न।

इंदुरेखा *स्त्री.* (तत्.) 1. चंद्रमा की कला 2. अमृता 3. गुडुची 4. सोमलता।

इंदुलेखा *स्त्री.* (तत्.) 1. चंद्रमा की कला 2. सोमलता 3. अमृता 4. गुडुची नामक औषधि।

इंदुव *पुं.* (तद्.) इंदीवर, नीलकमल।

इंदुवदना *स्त्री.* (तत्.) 1. चंद्रमा के समान सुंदर मुख वाली, चंद्रमुखी 2. 14 वर्णों का एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण, जगण, सगण, नगण और दो गुरु होते हैं।

इंदुवल्ली *स्त्री.* (तत्.) 1. सोमलता, सोमवती 2. गुडुची, गिलोय 3. बाकुची।

इंदूर *पुं.* (तत्.) चूहा, मूषक, मूसा, इंदुर।

इंद्र *पुं.* (तत्.) 1. देवराज, वर्षा का देवता 2. पूर्व दिशा के स्वामी देवता 3. ऐश्वर्यमान, विभूतिसंपन्न 4. श्रेष्ठ, बड़ा (व्यक्ति) 5. छप्पय छंद का एक भेद।

इंद्रकांता *स्त्री.* (तत्.) 1. रात्रि, रात 2. केतकी, केवड़ा 3. रोहिणी नक्षत्र।

इंद्रगिरि *पुं.* (तत्.) [इंद्र+गिरि] उड़ीसा में स्थित समुद्र तटीय पर्वत, महेंद्र पर्वत।

इंद्रगुरु *पुं.* (तत्.) बृहस्पति ग्रह।

इंद्रगोप *पुं.* (तत्.) वर्षा ऋतु में दिखने वाला, रेंगता हुआ लाल कीड़ा, बीरबहूटी।

इंद्रचाप *पुं.* (तत्.) दे. इंद्रधनुष।

इंद्रजब *पुं* (तद्.) कुटज का बीज, इंद्रयव, इंद्रजौ।

इंद्रजाल *पुं.* (तत्.) 1. मायाकर्म, दृष्टि भ्रम, जादूगरी, हाथ की सफाई का काम, बाजीगरी 2. एक प्रकार का रण चातुर्य 3. अर्जुन का एक शस्त्र।

इंद्रजालिक *वि.* (तत्.) इंद्रजाल करने वाला, जादूगार, बाज़ीगर।

इंद्रजाली *पुं.* (तत्.) इंद्रजाल करने वाला, जादूगर, बाजीगर।

इंद्रजित *पुं.* (तत्.) इंद्र को जीतने वाला, रावण का पुत्र मेघनाद।

इंद्रजौ *पुं.* (तद्.) कुटज का बीज, इंद्रयव, इंद्रजव।

इंद्रदमन *पुं.* (तत्.) [इंद्र+दमन] इंद्र का दमन करने वाला, इंद्रजित रावण का पुत्र, मेघनाथ।

इंद्रधनुष *पुं.* (तत्.) सात रंगों में बना हुआ धनुष की आकृति का अर्द्धवृत्त जो वर्षाकाल में आकाश में सूर्य की विरुद्ध दिशा में तब दिखाई देता है जब सूर्य की किरणें वर्षा के जल के दूसरी तरफ होती हैं, जलबिंदुओं पर पड़ा प्रकाश परावर्तित और पुनः परावर्तित होकर स्पेक्ट्रम के सात रंगों में बदल जाता है और एक चाप-सा दिखाई पड़ता है।

इंद्रधनुषी *वि.* (तत्.) 1. इंद्रधनुष से संबंधित 2. इंद्रधनुष के समान सात रंगों वाला 3. आकर्षक रंगों वाला।

इंद्रध्वज *पुं.* (तत्.) 1. इंद्र की पताका 2. भाद्रपक्ष शुक्ला द्वादशी को वर्षा और फसल की वृद्धि के के लिऐ होने वाला एक पूजन जिसमें राजा लोग इंद्र को ध्वजा चढ़ाते थे और उत्सव मनाते थे 3. प्राचीन भारत में प्रचलित एक उत्सव जिसमें वैदिक देव इंद्र की आराधना होती थी।

इंद्रनील *पुं.* (तत्.) नीलम, नीलमणि।

इंद्रपुरी *स्त्री.* (तत्.) 1. इंद्रलोक की राजधानी, अमरावती 2. सुन्दर और संपन्न नगरी।

इंद्रप्रस्थ *पुं.* (तत्.) महाभारत कालीन एक नगर जिसे पांडवों ने खांडव वन जलाकर बसाया था। यह आधुनिक दिल्ली के निकट माना जाता है।

इंद्रयब *पुं.* (तत्.) 1. कुटज अथवा कुरैया नामक वृक्ष 2. कुटज के बीज, इन बीजों का आकार जौ की तरह का होता है, इंद्रजव।

इंद्रलोक *पुं.* (तत्.) इंद्र का संसार, स्वर्ग।

इंद्रवंशा *पुं.* (तत्.) बारह वर्णो का एक समवार्णिक छंद। इसके प्रत्येक चरण में तगण, जगण और रगण होते हैं।

इंद्रवज्रा *पुं.* (तत्.) एक वर्णवृत्त का नाम जिसमें दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं।

इंद्रवधू *स्त्री.* (तत्.) 1. इंद्र की पत्नी, शची देवी 2. इंद्रगोपक, बीर बहूटी।

इंद्रवल्लरी *स्त्री.* (तत्.) एक सुशोभनीय पौधा, हारसिंगार, पारिजात वृक्ष।

इंद्रवल्ली *स्त्री.* (तत्.) इंद्रवल्लरी, हारसिंगार, पारिजात।

इंद्रवारुणी *स्त्री.* (तत्.) इंद्रायन नामक औषधि की लता, इंद्रायन।

इंद्रवृक्ष *पुं.* (तत्.) पहाड़ी क्षेत्रों में प्राप्त ऊँचे कद का सुगंधित वृक्ष, देवदारु वृक्ष।

इंद्रशक्ति *स्त्री.* (तत्.) इंद्र-पत्नी शची, इंद्राणी।

इंद्रशत्रु *पुं.* (तत्.) वृत्रासुर।

इंद्रसभा *स्त्री.* (तत्.) 1. इंद्र की सभा, यह सभा स्वर्ग में आयोजित होती है 2. संपन्न, वैभवशाली और रमणीय स्थान।

इंद्रसारथि *पुं.* (तत्.) मातलि, वायु।

इंद्रसुत *पुं.* (तत्.) 1. इंद्र का पुत्र, जयंत 2. बालि 3. अर्जुन।

इंद्रसूनु *पुं.* (तत्.) इंद्रसुत, जयंत।

इंद्राणी *स्त्री.* (तत्.) 1. इंद्र की पत्नी शची 2. बड़ी बड़ी इलायची 3. इंद्रायन वृक्ष 4. दुर्गा देवी।

इंद्रानुज *पुं.* (तत्.) इंद्र का छोटा भाई, वामन अवतार लेने वाले विष्णु भगवान।

इंद्रायुध *पुं.* (तत्.) [इंद्र+आयुध] 1. इंद्र का आयुध 2. वज्र 3. इंद्रधनुष।

इंद्रासन *पुं.* (तत्.) इंद्र का सिंहासन, इंद्रपद 2. राजसिंहासन।

इंद्रिय *स्त्री.* (तत्.) 1. जीवात्मा (प्राणी) के ज्ञान की प्राप्ति और कार्य करने का साधन 2. वह शक्ति जिससे बाहरी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है 3. शरीर के वे अवयव जिनके द्वारा विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है।

इंद्रियगत *वि.* (तत्.) 1. इंद्रियों द्वारा अनुभूत 2. इंद्रियों का।

इंद्रियगम्य *वि.* (तत्.) इंद्रियों की शक्ति द्वारा समझा जाने वाला, इंद्रियगोचर।

इंद्रियगोचर *वि.* (तत्.) इंद्रियों द्वारा ग्रहण करने योग्य या ज्ञेय, इंद्रियों का विषय होने योग्य पुं. इंद्रियों का विषय।

इंद्रियजित् *वि.* (तत्.) 1. जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो 2. जो विषयासक्त न हो।

इंद्रिय दमन *पुं.* (तत्.) [इंद्रिय+दमन] 1. कर्मेंद्रियों और ज्ञानेंद्रियों को इधर-उधर भटकने न देने का कार्य, इंद्रियों को सायास नियंत्रण में रखने का कार्य 2. इंद्रियनिग्रह, आचरणगत रूप से इंद्रियों पर नियंत्रण।

इंद्रियनिग्रह *पुं.* (तत्.) इंद्रियों की आसक्ति को दबाना, इंद्रियों के वेग को रोकना।

इंद्रियनिष्ठ *वि.* (तत्.) [इंद्रिय+निष्ठ] इंद्रियों के भोग-विलास में आसक्त, इंद्रियों की वासना में लिप्त, ज्ञान तथा कर्मेंद्रियों का रस भोगी।

इंद्रिय बोध *पुं.* (तत्.) [इंद्रिय+बोध] 1. इंद्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान 2. इंद्रियों का ज्ञान, ज्ञानेंद्रियों तथा कर्मेंद्रियों की पहचान।

इंद्रिय लोलुप *वि.* (तत्.) [इंद्रिय+लोलुप] इंद्रियों की विषय-वासना में बुरी तरह से लिप्त।

इंद्रियवृत्त *स्त्री.* (तत्.) इंद्रियों का स्वभाव।

इंद्रिय-संयम *पुं.* (तत्.) इंद्रियों को नियंत्रण में रखने का कार्य, इंद्रियों के विषय-विलास में न उलझने का कार्य।

इंद्रिय-सन्निकर्ष *पुं.* (तत्.) मानसिक अथवा बाह्य प्रक्रिया से, ज्ञानेंद्रियों का संपर्क।

इंद्रिय-सुख *पुं.* (तत्.) इंद्रियों द्वारा रूप, रंग, गंध स्वाद आदि विषय प्राप्त करने का सुख।

इंद्रियागोचर *वि.* (तत्.) [इंद्रिय+अगोचर] इंद्रियों द्वारा प्रतिभासित न होने वाला, इंद्रियाँ जिसका आभास न कर सकें।

इंद्रियातीत *पुं.* (तत्.) इंद्रियों से परे, इंद्रियों द्वारा द्वारा अज्ञेय, या अगोचर।

इंद्रियानुभव *पुं.* (तत्.) [इंद्रिय+अनुभव] ज्ञानेन्द्रिय अथवा कर्मेंद्रिय द्वारा प्राप्त अनुभव।

इंद्रियानुभविक *वि.* (तत्.) [इंद्रिय+अनुभविक] 1. इंद्रियों के अनुभव पर आधारित 2. इंद्रियों द्वारा अनुभूत।

इंद्रियानुभविक मनोविज्ञान *पुं.* (तत्.) इंद्रियों के अनुभवों अथवा तथ्यों पर आधारित मनोविज्ञान।

इंद्रियायतन *पुं.* (तत्.) [इंद्रिय+आयतन] 1. इद्रियों का निवास, शरीर, देह 2. आत्मा।

इंद्रियार्थ *अव्य.* (तत्.) [इंद्रिय+अर्थ] 1. इंद्रियों के लिए 2. इंद्रियों का विषय, यथा- रूप रंग, स्वाद, गंध तथा स्पर्श।

इंद्रियार्थवाद *पुं.* (तत्.) [इंद्रिय+अर्थ+वाद] 1. इंद्रियों की वासना के उपभोग का वाद 2. इंद्रियों द्वारा ज्ञान प्राप्त करने का मत 3. इद्रियों की तृप्ति को ही सर्वोच्च स्थान देने वाला मत।

इंद्रियार्थ-सन्निकर्ष *पुं.* (तत्.) इंद्रियों का उनके अपने गुण-धर्म से संबंध।

इंद्रियेतर *वि.* (तत्.) इंद्रिय से भिन्न, इंद्रियों के गुण-धर्म से भिन्न अनुभूति को इंद्रियेतर अनुभूति कह सकते हैं।

इंद्री *स्त्री.* (तद्.) दे. इंद्रिय।

इंधन *पुं.* (तत्.) जलाने की लकड़ी, कोयले, उपले आदि (दे. ईंधन)।

इंपीरियल *वि.* (अं.) राजकीय, सम्राट् या साम्राज्य संबंधी, शाही।

इंफ्लुएंज़ा *पुं.* (अं.) इनफ्लुएंजा, एक संक्रामक रोग, जिसके सामान्य लक्षण होते हैं- नाक का बहना, गले की खराश, अंग-प्रत्यंग का दर्द, तेज बुखार आदि, श्लेष्माज्वर।

इंशा अल्लाह *स्त्री.* (अर.) अल्लाह की इबारत या अल्लाह का लिखा, ईश्वर की इच्छा हुई तो, खुदा ने चाहा तो।

इंसान *पुं.* (अर.) दे. इनसान।

इंसानियत *स्त्री.* (अर.) 1. मानवता 2. दयाशील स्वभाव 3. भलमनसाहत 4. शिष्टता।

इंसानी *वि.* (अर.) 1. मानवी 2. सभ्यतापूर्ण 3. शिष्ट।

इंसाफ *पुं.* (अर.) न्याय।

इंसाफपसंद *वि.* (तद्.) [इंसाफ+पसंद] 1. न्यायप्रिय 2. सही निर्णय करने वाला।

इंसुलिन *पुं.* (अं.) आयु. अग्न्याशय की कोशिकाओं में बनने वाले हार्मोन जो शर्करा के चयापचय को नियंत्रित करते हैं मधुमेह के रोगियों को यह औषधि के रूप में सुई लगाकर बाहर से दिया जाता है।

इंस्टीट्यूट *स्त्री.* (अं.) संस्थान, संस्था।

इंस्पेक्टर *पुं.* (अं.) निरीक्षक, देखभाल करने वाला।

इ *अव्य.* (तद्.) 1. क्रोध, दया, आश्चर्य सूचक एक शब्द 2. यह 3. ही प्रयो. झूठई भोजन झूठ चबेना- तुलसी

इक *वि.* (तद्.) दे. एक।

इकट्ठा *वि.* (तद्.) एकत्र, जमा।

इकतरफा *वि.* (देश.) (इक+तरफा) 1. एक ही तरफ का 2. पक्षपातपूर्ण 3. एकतरफा 4. अन्य पक्ष की अवहेलना करने वाला।

इकतरा *पुं.* (तद्.) एक दिन छोड़ कर एक दिन, (ज्वर के लिए प्रयुक्त) ऐसा ज्वर, जो एक दिन छोड़ कर एक दिन आता है।

इकतान *वि.* (देश.) 1. एक-सा 2. एक रूप वाला 3. शांत, स्थिर।

इकतार *वि.* (देश.) एक-सा, एकरस, इकतान।

इकतारा *पुं.* (तद्.) 1. सितार की तरह का एक तार वाला बाजा 2. एक प्रकार का कपड़ा जो हाथ से बुना जाता है।

इकताल *पुं.* (तद्.) संगीत में बारह मात्राओं की एक ताल जिसमें दो-दो मात्राओं के छह विभाग होते हैं।

इकतालीस *पुं./वि.* (तद्.) चालीस और एक की संख्या, इकतालीस का अंक 41 ।

इकतीस *पुं./वि.* (तद्.) तीस और एक की संख्या, इकतीस का अंक।

इकन्नी *स्त्री.* (देश.) एक पुराना सिक्का, जिस को 'आना' कहते थे, वर्तमान छह पैसे, एक आना, रुपए का सोलहवाँ भाग।

इकबारगी *क्रि.वि.* (फा.) 1 एक बार में 2. एक ही समय में, एक साथ 3. इकठ्ठे 4. अचानक, सहसा।

इकबाल *पुं.* (अर.) 1. विधि. अपराध आदि को अपना किया हुआ मानने का कथन confession 2. मानना, स्वीकार करना, कबूल करना 3. प्रताप, भाग्य।

इकबालिया/इकबाली बयान *पुं.* (अर.) वह कथन, साक्ष्य या गवाही जिसमें अपराध स्वीकार किया गया हो।

इकबालिया/इकबाली साक्षी *पुं.* (अर.) विधि. वह व्यक्ति जो किसी अपराध में स्वयं का शामिल होना स्वीकार करे तथा अभियोजन पक्ष की ओर से साक्षी बने।

इकमुश्त *क्रि.वि.* (फा.) पैसा, जो एक ही बार में दिया जाए, जिस पैसे के किश्त न बाँधे जाएँ, एक साथ lumpsum

इकराम *पुं.* (अर.) 1. दान, पारितोषिक 2. इज्जत, आदर, प्रतिष्ठा 3. अनुग्रह, कृपा।

इकरार *पुं.* (अर.) 1. वादा, वचन, प्रतिज्ञा 2. किसी कार्य को करने की स्वीकृति 3. इकबाल।

इकरारनामा *पुं.* (अर) 1. स्वीकृति पत्र 2. समझौता, अनुबंध 3. अनुबंध-पत्र

इकला *वि.* (देश.) 1. अकेला, किसी साथी-सहयोगी के बिना 2. इकलौता।

इकलाई *स्त्री.* (देश.) 1. अकेलापन 2. सूत की बहुत महीन धोती जो अकेली बुनी जाती है, जोड़े में नहीं।

इकलौता *वि.* (देश.) 1. एकमात्र, अकेला 2. अपने मां-बाप की एक मात्र संतान जिसके और कोई भाई-बहन न हो।

इकसठ *पुं./वि.* (तद्.) वह संख्या जिससे साठ और एक का बोध हो।

इकहत्तर *पुं./वि.* (तद्.) वह संख्या जिससे सत्तर और एक का बोध हो

इकहरा *वि.* (देश.) एक परत वाला।

इकाई *स्त्री.* (देश.) 1. अंक शास्त्र में किसी भी संख्या के दाई ओर का पहला अंक 2. किसी समूह अथवा वर्ग का सब से छोटा अंश 3. ऊर्जा का न्यूनतम अंश 4. यौगिक पदार्थ के विभिन्न घटक।

इकार *पुं.* (तत्.) हिन्दी, संस्कृत आदि भाषाओं का 'इ' वर्ण अथवा इस 'इ' की मात्रा।

इकारांत *पुं.* (तत्.) वह शब्द जिसके अंत में इकार हो, वह शब्द जिसका अंत 'इ' से हो, जैसे-मुनि।

इकौंज *स्त्री.* (देश.) एक बच्चा उत्पन्न करने के पश्चात बाँझ होने वाली महिला, काक बंध्या।

इक्का *पुं.* (तद्.) 1. एक प्रकार की घोड़ा गाड़ी जिसमें एक ही घोड़ा जुता होता है। 2. ताश का वह पत्ता जिसमें किसी रंग की एक ही बूटी हो। यह पत्ता अन्य अंक वाले सभी पत्तों से श्रेष्ठ माना जाता है, उन्हें मात देता है 3. एक प्रकार की कान की बाली जिसमें एक मोती होता है 4. वह योद्धा जो लड़ाई में अकेला लड़े 5. वह पशु जो अपना झुंड छोड़कर अकेला हो जाए। *वि.* 1. एकाकी, अकेला 2. अनुपम, बेजोड़।

इक्का-दुक्का *वि.* (देश.) 1. अकेला-दुकेला 2. कोई-कोई।

इक्कावान *पुं.* (देश.) एक घोड़े वाली गाड़ी को चलाने वाला व्यक्ति, इक्का चलाने वाला व्यक्ति।

इक्कीस *पुं./वि.* (तद्.) बीस और एक की संख्या (21)।

इक्यानवे *वि.* (तद्.) नब्बे से एक अधिक, पुं. नब्बे से एक अधिक की संख्या।

इक्यावन *पुं./वि.* (तत्.) पचास और एक की संख्या (51) ।

इक्यासी *वि.* (तद्.) अस्सी से एक अधिक। पुं. (तद्.) अस्सी से अधिक की संख्या।

इक्विटी *स्त्री.* (अं.) व्यापारी संस्था के अंशदाताओं का स्वामित्व हित।

इक्षु *पुं.* (तत्.) 1. गन्ना, ईख, ऊख 2. कोकिला नाम का एक वृक्ष 3. इच्छुक।

इक्षुक *पुं.* (तत्.) दे. इक्षु।

इक्षुकांड *पुं.* (तत्.) ईख का डंठल, दो पोरों के बीच का भाग 2. काँस 3. मूँज।

इक्षुगंध *पुं.* (तत्.) 1. छोटा गोखरू नामक औषधि 2. काँस 3. मखाना।

इक्षुनेत्र *पुं.* (तत्.) ईख की गाँठों पर बना अँखुआ या आँख-सी आकृति।

इक्षुवल्लरी *स्त्री.* (तत्.) 1. पीले रंग की ईख 2. क्षीरबिदारी नामक कंद।

इक्षुशर्करा *स्त्री.* (तत्.) रसा. साधारण शर्करा जो विशेषकर गन्ने (15-20 प्रतिशत) तथा चुकंदर (12-15 प्रतिशत) में पाई जाती है और मुख्यतः इन्हीं दो पदार्थों से बनाई जाती है। यह रंगहीन, क्रिस्टलीय, मीठे स्वाद वाला ठोस पदार्थ है पर्या. सुक्रोस। cane suger

इक्ष्वाकु *पुं.* (तत्.) सूर्यवंश का एक प्रधान राजा, पुराणों में इसे वैवस्वत मनु का पुत्र कहा गया है, श्रीराम इसी वंश के थे *वि.* इक्ष्वाकु वंश का।

इखलाक *पुं.* (अर.) 1. व्यवहार, आचरण 2. परिपाटी।

इखलाकी *वि.* (अर.) 1. व्यवहार-संबंधी, व्यावहारिक 2. नीति-संबंधी, नैतिक प्रयो. वे कोई मौलवी भी नही थे कि उस वाकये से इखलाकी हिकायम (किस्सा) गढ़ लेते- आधा गाँव-रा.मा.रज़ा।

इख़्तियार *पुं.* (अर.) 1. अधिकार 2. अधिकार क्षेत्र 3. सामर्थ्य 4. काबू 5. स्वामित्व, स्वत्व प्रयो. इस मामले पर कार्रवाई करना मेरे इख़्तियार में नहीं आता।

इख्तिलाफ *पुं.* (तत्.) 1. विरोध, मतभेद 2. रंजिश 3. फूट 4. असहमति।

इग्वा *वि.* (अर.) 1. बहकाया हुआ 2. फुसला कर भगाया गया 3. अगवा किया हुआ, [अरबी मूल-उच्चारण के अनुसार 'इग्वा' शुद्ध है, वर्तमान में इस का उच्चारण 'अगवा' हो गया है]।

इच्छा *स्त्री.* (तत्.) कामना, लालसा, चाह, अभिलाषा, ख्वाहिश।

इच्छाचारी *वि.* (तत्.) अपनी इच्छा के अनुकूल आचरण या गति करने वाला।

इच्छाजीवन *पुं.* (तत्.) 1. जब तक मन चाहे तब तक जीवित रहने की शक्ति 2. स्वस्थ जीवन, जब तक चाहें तब तक।

इच्छादान *पुं.* (तत्.) [इच्छा+दान] जितनी इच्छा हो उतना दान, इच्छा अनुसार दान।

इच्छाधीन भागीदारी *स्त्री.* (तत्.+तद्.) वाणि. मिलकर व्यवसाय करने का करार जिसमें व्यवसाय के लाभ तो सभी पक्षकार अपने आनुपातिक अंश के अनुसार प्राप्त कर सकते हैं किंतु जिसमें भागीदारी की अवधि के बारे में कोई करार या संविदा नहीं होती। partnership of will

इच्छानिवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) [इच्छा+निवृत्ति] 1. वासना, कामना, लालसा आदि से मुक्ति की स्थिति 2. भोग-तृष्णा से मुक्ति की अवस्था।

इच्छापत्र *पुं.* (तत्.) वसीयत, वह पत्र जिस पर व्यक्ति प्रायः अपनी अंतिम इच्छा लिख देते हैं।

इच्छामय *वि.* (तत्.) 1. इच्छाओं से परिपूर्ण, इच्छाओं में लिप्त 2. इच्छा अनुसार (परिधान)।

इच्छामरण *वि.* (तत्.) [इच्छा+मरण] अपनी इच्छा से मृत्यु प्राप्त करने वाला, जब चाहे तब मृत्यु पाने वाला, इच्छा मृत्यु।

इच्छामृत्यु *स्त्री.* (तत्.) 1. अपनी इच्छानुसार वरण की गई अपनी ही मृत्यु, जैसे- भीष्म पितामह द्वारा 2. विधि. भीषण कष्ट झेल रहे, मरणासन्न, मस्तिष्क से मृत रोगी की सामान्य मृत्यु न हो पाने पर उसके परिजनों की इच्छा तथा डाक्टर की सलाह पर उसकी मृत्यु mercy killing 3. कुछ जैनियों में प्रचलित संथारा नाम की प्रथा।

इच्छावसु *वि.* (तत्.) [इच्छा+वसु] जितना चाहे उतना धन तत्काल प्राप्त करने वाला *पुं.* कुबेर देवता।

इच्छाशक्ति *स्त्री.* (तत्.) [इच्छा+शक्ति] ऐसी इच्छा जिस में दृढ़ संकल्प की शक्ति सम्मिलित हो, कार्य सम्पन्न करने की दृढ़ इच्छा।

इच्छासूचक *वि.* (तत्.) [इच्छा+सूचक] इच्छा, सद्भावना, आशीर्वाद आदि की सूचना देने वाला।

इच्छित *वि.* (तत्.) चाहा हुआ, अभिवांछित।

इच्छुक *वि.* (तत्.) चाहने वाला, अभिलाषी, आकांक्षी।

इजरा *स्त्री.* (अर.) 1. उर्वरता बढ़ाने के लिए परती परती छोड़ी हुई जमीन 2. जारी करना, काम में लाना, लागू करना।

इजलास *पुं.* (अर.) 1. बैठक 2. कचहरी, अदालत, न्यायालय, वह जगह जहाँ हाकिम बैठकर मुकदमों का फैसला करता है 3. सम्मेलन, जलसा।

इजहार *पुं.* (अर.) जाहिर करना, प्रकट करना, प्रकाशन।

इजाजत *स्त्री.* (अर.) 1. कुछ करने, न करने, अनुपस्थित रहने आदि के बारे में माँगी गई या दी गई छूट 2. आज्ञा, हुक्म 3. अनुमति, स्वीकृति।

इज़ाफा *पुं.* (अर.) 1. बढ़ती, वृद्धि, बढ़ोतरी 2. बचत 3. बचा हुआ धन प्रयो. लगान में इज़ाफ़ा करके सरकार किसानों के साथ नाइंसाफी कर रही है।

इजारदार *पुं.* (फा.) कार्य संपन्न कराने के लिए जिम्मेदार व्यक्ति, ठेकेदार, दल नायक, एकाधिकारी, इजारेदार।

इजारदारी *स्त्री.* (फा.) [इजार+दारी] कार्य संपन्न कराने के लिए ली गई जिम्मेदारी, ठेकेदारी, इजारेदारी, पट्टेदारी।

इजारबंद *पुं.* (अर.) पाजामा या सुथन को कमर से बाँधने का फीता, नाड़ा।

इजारा *पुं.* (अर.) 1. ठेका 2. अख़्तियार, स्वत्व।

इजारेदार *पुं.* (अर.) 1. ठेकेदार 2. एकाधिकारी।

इज्जत *स्त्री.* (अर.) मान-मर्यादा, प्रतिष्ठा, आदर, सम्मान।

इज़्ज़तदार *वि.* (अर+फा.) 1. सम्मान योग्य, प्रतिष्ठित, माननीय 2. कुलीन महिला।

इज्या *स्त्री.* (तत्.) 1. यज्ञ, देवपूजा।

इटैलिक *वि.* (अं.) छापा या टाइप का एक प्रकार जिसमें अक्षर तिरछे छपे होते हैं। italic

इटैलियन *वि.* (अं.) 1. इटली देश से संबंधित, इतालवी 2. चिकने कपड़े का एक प्रकार जो पहले इटली से आता था। italian

इठलाना *पुं.* (देश.) 1. इतराना, गर्वसूचक चेष्टा करना 2. ऐंठना 3. नखरा करना।

इठलाहट *स्त्री.* (देश.) इठलाने का भाव, ठसक, ऐंठ।

इड *पुं.* (अं.) 1. प्रत्यक्ष जगत से अप्रभावित मन का भाग 2. गहनतम तथा अचेतन समझा जाने वाला मन का भाग, अचेतन मन, इदम।

इडली *स्त्री.* (तत्.) मुख्यतः चावल और उड़द की दाल से बना गोल टिकियों जैसा एक दक्षिण भारतीय खाद्य पदार्थ जिसे भाप से पकाया जाता जाता है।

इड़ा *स्त्री.* (तत्.) 1. पृथ्वी 2. गाय 3. वाणी 4. वैवस्वत मनु की पुत्री जो बुध की पत्नी थी 5. कश्यप ऋषि की एक पत्नी जो दक्ष की पुत्री थी 6. हठयोग में वर्णित एक नाड़ी जो मेरुदंड से लेकर सहस्रार तक होती है तु. पिंगला, सुषम्ना।

इत *क्रि.वि.* (तद्.) 1. इधर 2. यहाँ।

इतः *क्रि.वि.* (तत्.) 1. इस समय से, अब से 2. इस स्थान से, यहाँ से 3. इस ओर, इधर 4. अंत।

इतना *वि.* (तद्.) इस मात्रा का, इस कदर।

इतबार *पुं.* (अर.) 1. विश्वास, भरोसा 2. प्रतीति। दे. एतबार।

इतमीनान *पुं.* (अर.) 1. भरोसा, विश्वास 2. तसल्ली 3. चैन।

इतर *वि.* (तत्.) 1. दूसरा, और, अन्य, ऊपर 2. घटिया, कम स्तर का।

इतर प्रविष्टि *स्त्री.* (तत्.) पुस्त. सूचीकरण की प्रक्रिया में मुख्य सूची के अतिरिक्त परिशिष्ट की सूची

इतर विकसन *पुं.* (तत्.) चिकि. शरीर के ऊतक में असामान्य विकास।

इतराना *पुं.* (तत्.) 1. सफलता पर ऐंठना, इठलाना 2. घमंड करना, मदांध होना।

इतराहट *स्त्री.* (देश.) 1. इतराने का भाव 2. दर्प, घमंड या गर्व का भाव।

इतरी *वि.* (देश.) इतराने वाली, चंचल स्वभाव वाली, चपला, चंचला, (मुख्य रूप से गाय के लिए प्रयुक्त)।

इतरेतर *वि* (तत्.) परस्पर, आपस में, अन्योन्य।

इतरेतर द्वंद्व *पुं.* (तत्.) व्या. द्वंद्व समास का एक एक भेद, जिसके समस्तपद में योग सूचक अव्यय 'और, एवम्, तथा' का लोप होता है।

इतरेतराभाव *पुं.* (तत्.) [इतरेतर+अभाव] न्याय वैशेषिक में अभाव का एक प्रकार, जिसमें पारस्परिक अभाव की स्थिति उत्पन्न होती है, जैसे स्वस्थ बना रहने के लिए दूध का अभाव और दूध की उपलब्धता में पाचन शक्ति का अभाव।

इतरेतराश्रय *पुं.* (तत्.) न्या.शा. एक प्रकार का तर्क -दोष, दो वस्तुओं के पारस्परिक अबलम्बन में दोनों के सिद्ध न होने की स्थिति, अन्योन्य संबंध का दोष।

इतरोक्ति [इतर+उक्ति] *स्त्री.* (तत्.) किसी न्यायाधीश का वह विधिक कथन जो महत्वपूर्ण तो हो, परंतु जिसका प्रस्तुत मामले से कोई संबंध न हो।

इतवार *पुं.* (तद्. > आदित्यवार) शनि और सोम के बीच का दिन, ऐतवार, रविवार।

इतस्ततः *अव्य.* (तत्.) इधर-उधर, यहाँ-वहाँ।

इताअत *स्त्री.* (अर.) अधीनता का भाव, अधीनस्थ व्यक्ति, मातहती 2. आज्ञापालन, आज्ञाकारिता, हुकम बरदारी।

इताअतमंद *वि.* (अर.) 1. आज्ञापालक, हुकम बरदार 2. अधीन, मातहत।

इतालवी *वि.* (तद्.) इटली देश संबंधी दे. इटैलियन।

इति *स्त्री.* (तत्.) समाप्ति, समाप्त मुहा. इति करना/इतिश्री करना- समाप्त करना; अथ से इति तक- संपूर्ण, आदि से अंत तक विलो. अथ।

इतिमात्र *क्रि.वि.* (तत्.) इतना ही।

इतिवत् *क्रि.वि.* (तत्.) 1. इस विधि से, इस प्रकार से, ऐसे।

इतिवृत्त *पु* (तत्.) इति. 1. ऐतिहासिक घटनाओं का तिथिक्रम के अनुसार वर्णन, इतिहास 2. पुरानी कथा 3. वर्णन, घटनाक्रम, क्रमिक प्रयो. मैं व्याकुल भाव से उस अंधतिमिरावृत इतिवृत्त को खोजने का प्रयास कर रहा था जिसे पाने का मार्ग नहीं था -चारू चंद्रलेख ह.प्र.द्विवेदी। chronicle

इतिवृत्तकार *पुं.* (तत्.) इति. ऐतिहासिक घटनाओं का तिथिक्रम के अनुसार संकलन, लेखन या वर्णन करने वाला इतिहासवेत्ता। chronicler

इतिवृत्तात्मक *वि.* (तत्.) [इतिवृत्त+आत्मक] 1. भावात्मकता के बिना व्याख्यात्मक अथवा वर्णानात्मक, आख्यात्मक 2. विस्तृत रूप से सूचनात्मक।

इतिशेष *पुं.* (तत्.) वाणि. लेखा-संवरण (समाप्ति) के समय किसी लेखे का शेष, अंत:शेष closing balance

इतिश्री *स्त्री.* (तत्.) समाप्ति, अंत प्रयो. किसी समस्या के समझ लेने मात्र से कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती।

इति सिद्ध *पुं.* (तत्.) गणि. किसी निर्मेय की रचना तथा प्रमेय की उत्पत्ति के अंत में लिखा जाने वाला वाक्य, जिसका अर्थ है "यही सिद्ध करना था।" Q.E.D

इतिह *पुं.* (तत्.) 1. उपदेशात्मक परंपरा के अनुसार वचन 2. परंपरा के अनुकूल वचन 3. परम्परागत विधि से सुना-सुनाया वचन।

इतिहास *पुं.* (तत्.) इति. 1. ज्ञान की वह शाखा जिसमें अतीत की घटनाओं और उनसे संबंधित पहलुओं का क्रमबद्ध और कालक्रमानुसार वर्णन किया जाता है 2. बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओं और उनसे संबंध रखने वाले व्यक्तियों का कालक्रम से वर्णन। history

इतिहासकार *पुं.* (तत्.) इति. 1. व्यक्ति, देश, जाति, प्रजाति या काल विशेष से संबद्ध घटनाओं का क्रमबद्ध और व्यवस्थित अध्ययन कर उनका विस्तृत समीक्षात्मक वर्णन करने वाला विशेषज्ञ व्यक्ति 2. इतिहास का लेखक। historian

इतिहासज्ञ *पुं.* (तत्.) वह जो इतिहास का अच्छा ज्ञाता है 2. इतिहासवेत्ता, इतिहास का जानकार दे. इतिहासकार प्रयो. पं. जवाहर लाल नेहरू एक अच्छे राजनीतिज्ञ तो थे ही, अच्छे इतिहासज्ञ भी थे।

इत्तफाक *पुं.* (अर.) 1. संयोग, अचानक, बिना इरादा 2. सहमति 3. मेल-मिलाप, संघटन, सहयोग, इत्तिफाक।

इत्तफाकन *क्रि.वि.* (अर.) संयोग वश, संयोग से, अचानक, अकस्मात।

इत्तफाकिया *वि.* (अर.) इत्तफाक से होने वाला, अचानक होने वाला, आकस्मिक, संयोगजन्य।

इत्तला *स्त्री.* (तत्.) दे. इत्तिला।

इत्तिफाक *पुं.* (अर.) 1. आपस में मिलकर एक होने या मिले हुए होने की अवस्था या भाव, एकता 2. मत, विचार आदि के क्षेत्र में एकता, मतैक्य 3. मैत्री, दोस्ती 4. संयोग, दैवयोग, अचानक उपस्थित होने वाला अवसर अथवा ऐसे अवसर पर घटित होने वाली घटना या बात 5. अचानक हुई घटना।

इत्तिलानामा *पुं.* (अर+फा.) किसी को भेजा जाने वाला वह पत्र जिसमें कोई इत्तिला या सूचना दी गई हो, सूचना पत्र।

इत्तिहाद *पुं.* (अर.) आपस की एकता या मेल-जोल प्रयो. इस गाँव में सभी मजहबों के लोगों में हमेशा से इत्तिहाद रहा है।

इत्थम् *क्रि.वि.* (तत्.) इस प्रकार से, ऐसे, यों, प्रस्तुत विधि के अनुसार।

इत्मीनान *पुं.* (अर.) 1. विश्वास, यकीन, भरोसा, आस्था 2. समाधान, संतुष्टि, हल 3. शांति।

इत्यादि *अव्य.* (तत्.) [इति+आदि] 1. इसी प्रकार, और भी 3. वगैरह।

इत्र *पुं.* (अर.) 1. वाष्पनक्रिया से संगृहीत पुष्प-गंध 2. सुगंध, खुशबू प्रयो. चंदन के इत्र की गंध बहुत मोहक होती है।

इत्रदान *पुं.* (अर.) इत्र रखने का पात्र दे. अतरदान।

इत्रफरोश *पुं.* (अर.) इत्र बेचने वाला, गंधी, अत्तार।

इत्रसाज *पुं.* (अर.) इत्र बनाने वाला।

इत्रीफल *पुं.* (तत्.) [इत्री+फल] एक आयुर्वेदिक औषधि, जो त्रिफला के चूर्ण और शहद के मेल से बनती है।

इत्वरी *स्त्री.* (तत्.) 1. अन्य पुरुषों से संबंध रखने वाली नारी, व्यभिचारिणी, कुलटा 2. अभिसारिका।

इथ *अव्य.* (तद्.) यहाँ।

इदावत्सर *पुं* (तत्.) बृहस्पति की 60 वर्षीय गति में पाँच-पाँच वर्ष के 12 युग माने गये हैं इन पांच वर्षों के वर्ग का तीसरा वर्ष इदावत्सर है। शेष के नाम हैं: 1. संवत्सर 2. परिवत्सर 3. अनुवत्सर और 4. उदावत्सर।

इधर *क्रि.वि.* (देश.) इस ओर, यहाँ।

इधर-उधर *अव्य.* (तद्.) 1. यहाँ-वहाँ 2. चारों ओर, आसपास प्रयो. इधर-उधर घूमते रहना उसका स्वभाव बन गया है मुहा. इधर-उधर करना- टाल-मटोल करना; इधर-उधर की बात- अफवाह; इधर की दुनिया उधर होना- अनहोनी बात होना, इधर-उधर की हाँकना- झूठ बोलना, गप्प मारना; इधर-का-उधर-होना- उलट-पलट होना; इधर या उधर होना- कोई एक पक्ष चुनना।

इन *सर्व.* (तद्.) अन्य पुरुष सर्वनाम का विकारी रूप, 'इस' का बहुवचन।

इनकम *स्त्री.* (अं.) आमदनी, आय, अर्जित धन, कमाई।

इनकम टैक्स *पुं.* (अं.) आय कर, अर्जित धन पर सरकार द्वारा लगाया जाने वाला कर अथवा टैक्स।

इनकलाब *पुं.* (अर.) 1. क्रांति, इनकिलाब प्रयो. रूस में जारशाही के विरूद्ध इनकलाब हुआ 2. जबरदस्त उलट-पलट, परिवर्तन 3. राज्य परिवर्तन।

इनकलाबी *वि.* (अर.) क्रांति या परिवर्तन लाने वाला, क्रांतिकारी प्रयो. भगतसिंह, राजगुरु, चन्द्रशेखर आजाद आदि ऐसे अनेक इनकलाबी थे, जिनका बलिदान देश के इतिहास में अंकित है।

इनकार *पुं.* (अर.) 1. अस्वीकृति, नामंजूरी 2. मुकरने का भाव।

इनफ्लुएंजा *पुं.* (अं.) एक संक्रामक शीत ज्वर, जिस में सिरदर्द, बदन दर्द, जुकाम और हरारत होती है flu

इनवार *पुं.* (अं.) रसा. शा. एक मिश्रधातु अथवा एलोय, जिसमें लोहा, निकिल तथा कार्बन मिला होता है, उसका व्यावसायिक नाम।

इनसान *पुं.* (अर.) 1. मानव, मनुष्य, आदमी, 2. ला.अर्थ. सभ्य, सज्जन प्रयो. यदि सभी लोग इनसान बन जाएँ तो धरती स्वर्ग हो जाए।

इनसाफ *पुं.* (अर.) न्याय।

इनस्विंगर *वि.* (अं.) क्रिकेट ऐसी गेंद या गेंदबाजी जो खेल पट्टी से उछाल लेने से पहले ही हवा में बल्लेबाज की तरफ झूल जाती है। तु. outswinger

इनाम *पुं.* (अर.) 1. पुरस्कार, बख्शीश, उपहार 2. वह जमीन जिसका लगान माफ हो।

इनाम-इकराम *पुं.* (अर.) पुरस्कार तथा सम्मान, उपहार तथा सम्मान

इनामदार *पुं.* (अर.) ऐसा व्यक्ति जिसको पुरस्कार में जमीन प्राप्त हुई हो और उस ज़मीन पर कोई लगान अथवा कर लागू न होता हो।

इनायत *स्त्री.* (अर.) 1. कृपा, दया 2. अनुग्रह, मेहरबानी प्रयो. यह आपकी इनायत ही थी कि आज मैं कुछ बन पाया हूँ।

इनारिन *पुं.* (देश.) ग्रीष्म ऋतु में रेतीली भूमि में उगने वाली एक बेल, जिसमें हल्के नीलेपन के फूल कटावदार पत्ते तथा गोल-गोल कड़वे फल होते हैं।

इनेगिने *वि.* (देश.) गिने-चुने, गिनती में कम, संख्या में सीमित।

इनेमल *पुं.* (अं.) 1. रसा. शा. दाँतों की रक्षा हेतु इनके ऊपर लगी हुई, हल्के सफेद रंग की, परत, दंतवल्क 2. आभूषणों पर लगने वाली काँच जैसी अपारदर्शी परत, आकाच, तामचीनी।

इनेमलीकरण *पुं.* (अं+तत्.) टिकाऊपन अथवा शोभा के लिए, धातु पदार्थ पर इनेमल का लेप, आकाचन मीनाकारी।

इन्वायस *पुं.* (अं.) वाणि. 1. बीजक, वह सूची जिसमें भेजे गए माल के दाम आदि का ब्यौरा रहता है 2. चालान का कागज प्रयो. उसे माल के साथ इन्वायस भी प्राप्त हो चुका है।

इन्श्योरैन्स *पुं.* (अं.) जान-माल आदि की सुरक्षा संबंधी व्यवस्था या करार जिसके लिए एकमुश्त या किस्तों में अधिदेय (प्रीमियम) लिया जाता है, बीमा।

इन्साइक्लोपीडिया *पुं.* (अं.) ऐसा कोश ग्रंथ जिसमें अनेक विषयों, उपविषयों पर अधिकतम जानकारी अकारादि क्रम से संगृहीत होती है।

इन्सुलिन *स्त्री.* (अं.) दे. इंसुलिन।

इफरात *स्त्री.* (अर.) 1. अधिकता, ज्यादती, बहुतायत 2. कसरत प्रयो. वहाँ धान इफरात में पैदा होता है।

इबरानी *पुं.* (अर.) यहूदी व्यक्ति, यहूदी जाति। *स्त्री.* (अर) यहूदियों की भाषा- हिब्रू *वि.* 1. यहूदियों से संबंधित 2. इजराइल में रहने वाला।

इबराहीम *पुं.* (अर.) दे. इब्राहिम।

इबादत *स्त्री.* (अर.) पूजा, आराधना, वंदना।

इबादतखाना *पुं.* (अर.) पूजा-गृह, प्रार्थना भवन, मंदिर।

इबारत *स्त्री.* (अर.) 1. लेख, मजमून 2. अक्षर-विन्यास, वाक्य-रचना 3. श्रुतलेख।

इबारती *वि.* (अर.) वर्णनात्मक, विवरण वाला, इबारत वाला, व्याख्यात्मक।

इब्तिदा *स्त्री.* (अर.) आरंभ, आदि, शुरूआत।

इब्राहिम *पुं.* (अ.) यहूदी जाति के आदि पुरुष जो इस्लाम धर्म के अनुसार पैगंबर माने जाते है।

इब्राहीमी *पुं.* (अर.) एक सिक्का जो इब्राहीम लोदी के समय जारी हुआ था।

इभ *अव्य.* (देश.) 1. इसी प्रकार, ऐसे 2. समान, उसी जैसा।

इमदाद *स्त्री.* (अर.) सहायता, मदद।

इमदादी *वि.* (अर.) 1. मदद पाने वाला प्रयो. सभी विद्यालय सरकार के इमदादी हैं 2. सहायता के रूप में प्राप्त होने वाला।

इमरजेंसी *स्त्री.* (अं.) राज.शा. 1. ऐसा संकट, जिसके तुरंत उपचार की आवश्यकता हो 2. आपातकाल, आपदा की स्थिति

इमला *पुं.* (अर.) श्रुतलेख।

इमली *स्त्री.* (तद्.) एक सदाबहार ऊँचा और घना पेड़ जिसकी पत्तियाँ बहुत छोटी-छोटी और वृत्तों में होती हैं। इसकी कठोर बीज वाली फलियाँ पहले खट्टी और बाद में कुछ मीठी हो जाती हैं। इसकी चटनी आदि बनाई जाती है।

इमाम *पुं.* (अर.) 1. नमाज़ पढ़ाने वाला या मुसलमानों के धार्मिक कृत्य करवाने वाला, मौलवी 2. नेता, अगुआ 3. हजरत अली के बेटों हसन-हुसैन की उपाधि।

इमामजिस्ता *पुं.* (फा.) दे. इमामदस्ता।

इमामदस्ता *पुं.* (फा.) लोहे या पीतल का खल-बट्टा, जिसमें मसाले आदि हाथ से कूटे जाते हैं।

इमामबाड़ा *पुं.* (अर.) वह अहाता जहाँ शिया मुसलमान ताजिया दफन करते हैं और मुहर्रम मनाते हैं।

इमारत *स्त्री.* (अर.) भवन; बड़ा मकान।

इमारती *वि.* (अर.) इमारत से संबंधित, मकान बनाने से संबंधित, मकान का प्रयो. आजकल मकान बनाना बहुत कठिन है क्योंकि इमारती लकड़ी और अन्य सामान बहुत महँगे हो गए हैं।

इमारती पत्थर *पुं.* (अर.+तद्.) 1. निर्माण कार्य में लगने वाला पत्थर 2. सजावट के लिए प्रयुक्त पत्थर।

इमारती लकड़ी *स्त्री.* (अर.+तद्.) 1. निर्माण कार्य में काम आने वाली लकड़ी 2. सजावटी कार्यों में प्रयुक्त लकड़ी।

इम्कान *पुं.* (अर.) 1. संभावना, हो सकने वाली अवस्था 2. बल, सामर्थ्य, हिम्मत 3. वश, काबू।

इम्तहान *पुं.* (अर.) परीक्षा, जाँच प्रयो. अल्लाह अपने नेक बंदों का इम्तहान लेता है- आधा-गाँव-रा.मा.रज़ा।

इम्तियाज़ *पुं* (अर.) 1. फर्क, भेद, अंतर 2. विवेक, तमीज, सलीका 3. मुख्यता, खासियत।

इम्तिहान *पुं.* (अर.) दे. इम्तहान।

इयत्ता *स्त्री.* (तत्.) 1. सीमा, हद 2. परिमाण, माप प्रयो. कितने विद्वानों का उन्होंने राजकोष से उद्धार किया है, कितने गुणियों को विपज्जाल से बचाया है, इसकी इयत्ता नहीं है- बाणभट्ट की आत्मकथा।

इरण *पुं.* (तत्.) 1. रेगिस्तान, मरुस्थल 2. लुनई भूमि, रिहाली जमीन, बंजर भूमि, ऊसर जमीन।

इरशाद *पुं.* (अर.) 1. फरमान, आदेश 2. उपदेश, हिदायत 3. गजल आदि का कोई पदबंध पुनः बोलने का निवेदन।

इरसी *पुं.* (देश.) पहिए की धुरी।

इरा *स्त्री.* (तत्.) 1. वाणी, सरस्वती 2. भूमि, पृथ्वी 3. कश्यप की पत्नी जिससे बृहस्पति उत्पन्न हुए 4. अन्न, आहार 6. मदिरा, शराब।

इराक *पुं.* (अर.) पश्चिमी एशिया का एक देश, एक खाड़ी देश, प्राचीन मेसोपोटामिया।

इराकी *वि.* (अर.) 1. इराक देश का 2. घोड़ों की एक जाति।

इरादतन *अव्य.* (अर.) 1. इरादा करके, संकल्प करके 2. सोच-विचार कर।

इरादा *पुं.* (अर.) 1. विचार 2. संकल्प।

इरावती *स्त्री.* (तत्.) 1. कश्यप ऋषि की पत्नी, भद्रमदा से उत्पन्न कन्या 2. म्याँमार देश की एक नदी 3. वटपत्री, पत्थरचटा, पत्थरचट नामक पौधा 4. पंजाब की रावी नदी।

इरीडियम *पुं.* (अं.) परमाणु शक्ति संख्या 77 वाला एक रसायनिक पदार्थ, कठोर, घनीभूत, चाँदनी के रंग की प्लैटिनम जाति की श्वेत धातु, घड़ियों, आभूषणों आदि में प्रयुक्त।

इरेश *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. गणेश 3. सम्राट 4. वरूण 5. बाह्मण।

इर्द-गिर्द *क्रि.वि.* (फा.) 1. चारों ओर 2. आसपास 3. इधर-उधर।

इर्शाद *पुं.* (अर.) 1. आज्ञा, हुक्म 2. पथ-प्रदर्शन 3. हिदायत।

इलजाम *पुं.* (अर.) इल्ज़ाम, दोष, अपराध, जुर्म, अभियोग।

इलहाम *पुं.* (अर.) देव वाणी 2. पैगंबरों का संदेश जो ईश्वर की ओर से कहा माना जाए।

इला *स्त्री.* (तत्.) 1. पृथ्वी 2. पार्वती 3. सरस्वती, वाणी 4. गौ, धेनु 5. वैवस्वत मनु की कन्या जो बुध को ब्याही थी और जिससे पुरुरवा उत्पन्न हुआ था, इड़ा या इरा।

इलाका *पुं.* (अर.) क्षेत्र, भूखंड 2. समान विशेषता वाला कोई भू-भाग जिस पर किसी एक व्यक्ति का अधिकार हो प्रयो. हमारे इलाके में सुरक्षा के अच्छे प्रबंध हैं।

इलाकेदार *पुं.* (अर.) बस्ती का स्वामी, इलाके का प्रमुख, मुहल्ले का मुखिया।

इलाज *पुं.* (अर.) 1. रोगी को रोग से मुक्ति दिलाने के लिए अपनाए गए उपाय 2. रोगी का रोग से मुक्त होना, सफल उपचार 3. गिरे हुए स्वास्थ्य को पूर्वरूप में लाना प्रयो. उसकी बीमारी का इलाज चल रहा है।

इलायची *स्त्री.* (तद्.) 1. छोटा तिकोने आकार का एक सुगंधित फल जिसके सूखे दाने या बीज दवा, मसाले आदि के काम में आते हैं 2. भूरे रंग का कुछ बड़े आकार का फल जो मुख्य रूप से मसालों में गिना जाता है, बड़ी इलायची।

इलायचीदाना *पुं.* (तद्+फा) 1. इलाचयी का दाना 2. चीनी से पगे इलायची या पोस्ते के दाने 3. एक प्रकार की मिठाई, चीनी के बने गोल-गोल से दाने प्रयो. पूजा में इलायाचीदाने का भोग लगाया जाता है।

इलावृत्त *पुं.* (तत्.) प्राचीन जम्बूद्वीप, वर्तमान जावा के नौ खंडों में से एक खंड।

इलास्टिक *वि.* (अं.) खींचने से लम्बा होने वाला, लचीला, लोचदार, खींच कर लम्बी होने वाली पत्ती अथवा डोरी।

इलाही *पुं.* (अर.) ईश्वर, परमात्मा, खुदा वि. (अर.) ईश्वर से संबंधित, ईश्वरीय।

इलेक्ट्रम *स्त्री.* (अं.) 1. स्वर्ण की एक मिश्र धातु जिसमें 20 प्रतिशत चाँदी होती है 2. जर्मन सिल्वर (इस में 52 प्रतिशत ताँबा, 26 प्रतिशत निकिल और 22 प्रतिशत जस्ता होता है।)

इलेक्ट्रा ग्रंथि *स्त्री* (अं.+तत्.) पुत्री के अवचेतन में में पिता के प्रति असीम प्रेम उत्पन्न कराने वाली संकल्मित ग्रंथि 2. फ्रॉयड के अनुसार वह ग्रंथि जो पुत्री के अवचेतन में पिता के लिए वासनात्मक प्रेम तथा माता के लिए शत्रुता का भाव उत्पन्न करती है।

इलेक्ट्रॉन *पुं.* (अं.) भौ. 1. स्थिर, ऋण आवेश वाला सूक्ष्म मूल कण जो परमाणु का अवयव होता है 2. परमाणु का अवयव जो उसके नाभिक के इद-गिर्द चक्कर लगाता रहता है। प्रयो. इलेक्ट्रॉन के प्रवाह से विद्युत धारा बहती है।

इलेक्ट्रान प्रकाशिकी *स्त्री.* (अं+तत्.) इलेक्ट्रानी किरण पुंजों की गतिविधियों के अध्ययन का शास्त्र, जो स्थिर विद्युत अथवा विद्युत चुम्बकीय प्रभाव में किया जाता है।

इलेक्ट्रान विवर्तन *पुं.* (अं.+तत्.) अणुओं अथवा परमाणुओं द्वारा इलेक्ट्रान रश्मि पुंज का विवर्तन।

इलेक्ट्रान सूक्ष्मदर्शी *पुं.* (अं+तत्.) भौ. एक लाख गुण आवर्धन वाला सूक्ष्मदर्शी इसमें प्रकाश के

स्थान पर इलेक्ट्रान रश्मि पुंज का उपयोग होता है।

इलेक्ट्रानस्नेही *पुं.* (अं+तत्.) [इलेक्ट्रान+स्नेही] भौ.इलेक्ट्रान को आकर्षित अथवा संग्रहण करने की प्रवृत्ति। electrophilic or nucleopic

इलेक्ट्रॉनिक *वि.* (अं.) अनेक छोटे-छोटे घटकों (विशेषतः माइक्रोचिपों) की सहायता से परिचालित (उपकरण)।

इलेक्ट्रॉनिकी *पुं.* (अं.) अनुप्रयुक्त भौतिकी की वह शाखा जिसमें उन विद्युत् परिपथों का अध्ययन होता है, जिसमें वाल्व, ट्रॉजिस्टर अथवा इलेक्ट्रानों की गति को नियंत्रित करने वाली अन्य युक्तियों का प्रयोग होता है, यह शाखा चालकों या अर्धचालकों से उत्पन्न इलैक्ट्रानों के उत्सर्जन एवं उनके विविध उपयोगों का भी अध्ययन करती है।

इलेक्ट्रॉनिक डाकसेवा *स्त्री.* (अं.+तत्.) 'ई-मेल' कंप्यूटर जाल क्रम में एक प्रयोक्ता से दूसरे प्रयोक्ता तक लिखित संदेश भेजने की व्यवस्था

इलेक्ट्रिक *पुं.* (अं.) बिजली-संबंधी, वैद्युत।

इलेक्ट्रिकल *वि.* (अं.) बिजली से संबंधित, बिजली का।

इलेक्ट्रिसिटी *स्त्री.* (अं.) बिजली, विद्युत।

इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफी *स्त्री.* (अं.) चिकि.शा. [इलेक्ट्रो+ [इलेक्ट्रो+ कार्डियो+ग्राफी] छाती पर इलेक्ट्रोड चिपकाने की सहायता से हृदय की विद्युतीय क्रियाओं को नापना और अंकित करना।

इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम *पुं.* (अं.) [इलेक्ट्रो+कार्डियो+ ग्राम] इलेक्ट्रोडों की सहायता से हृदय की विद्युतीय क्रियाओं की अंकित लेखी।

इलेक्ट्रोड *पुं.* (अं.) गैस, निर्वात, अपघट्य, विलयन आदि में स्थित वह चालक जिसके माध्यम से विद्युत् धारा उनमें प्रवेश करती है या उनमें से निकलकर बाह्य परिपथ में चली जाती है।

इल्ज़ाम *पुं.* (अर.) 1. आरोप, अभियोग 2. अपराध 3. दोष 4. कलंक प्रयो. 1. मंत्री पर यह इल्जाम लगाया गया है कि उन्होंने भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया है।

इल्तिजा *स्त्री.* (अर.) 1. निवेदन, विनती, प्रार्थना, दरख्वास्त 2. मिन्नत प्रयो. 1. आप इसकी इल्तिजा पर ध्यान देंगे 2. उसने दरगाह पर आकर इल्तिजा की है।

इल्म *पुं.* (अर.) 1. विधा, शास्त्र-ज्ञान 2. जानकारी जानकारी प्रयो. हमें इल्म नहीं था कि हम इतनी जल्दी बिछुड़ जाएँगे 3. शिल्प, दस्तकारी 4. कला, फन 5. शिक्षा, तालीम।

इल्मेनाइट *पुं.* (अं.) इनेमलीकरण, केरल राज्य में पाया जाने वाला एक खनिज इससे टाइनेनियम धातु की प्राप्ति भी संभव है।

इल्मेहिंदसा *पुं.* (अर.) [इल्म+ए+हिंदसा] हिन्दुस्तान से प्राप्त ज्ञान अर्थात गणित, अरबी भाषा में गणित को इल्मेहिंदिसः भी कहा जाता है, क्योंकि यह विद्या अरब ने भारत से सीखी थी।

इल्लत *स्त्री.* (अर.) 1. दुर्व्यसन, बुराई 2. रोग, बीमारी 3. बाधा, झंझट 4 कारण, हेतु, सबब।

इल्लती *वि.* (अर.) 1. दुर्व्यसन वाला 2. निरर्थक 3. झगड़े वाला 4. रोगी।

इल्ला *पुं.* (देश.) शरीर के किसी अंग पर उभरा हुआ कड़ा दाना, मांस की कील।

इल्ली *स्त्री.* (देश.) तितली आदि कीटों के अंडे से तुरंत बाद बना स्वरूप, डिंभ, सूंडी, लार्वा।

इल्हाम *पुं.* (अर.) 1. ईश्वरीय प्रेरणा 2. आत्मिक दृष्टि 3. पूर्वाभास 4. देववाणी प्रयो. मुझे इस घटना के बारे में इल्हाम हो गया था।

इव *पुं.* (तत्.) 1. समान, सदृश, तुल्य 2. इस प्रकार 3. उपमावाचक शब्द प्रयो. कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं-तुलसी।

इशरत *स्त्री.* (अर.) 1. भोग-विलास, ऐयाशी 2. काम-वासना जन्य आनंद 3. हर्ष, आनंद, खुशी।

इशारतन *क्रि.वि.* (अर.) संकेत से, इंगित द्वारा, इशारा करके।

इशारा *पुं.* (अर.) 1. संकेत, चेष्टा 2. संक्षिप्त कथन 3. सूक्ष्म आधार 4. गुप्त प्रेरणा 5. मतलब, तात्पर्य प्रयो. उसका मुनीम आँखों के इशारे को खूब समझता था।

इशारेबाज़ *वि.* (अर.) [इशारे+बाज़] संकेतों द्वारा सम्प्रेषण करने का व्यसनी, इशारेबाज़ी करने वाला।

इशारेबाज़ी *स्त्री.* (अर.) [इशारे+बाजी] शेष व्यक्तियों से छिप-छिपा कर, इशारों में ही शरारती बातें करना।

इश्क *पुं.* (अर.) 1. मुहब्बत, प्रेम, प्यार, लगन, व्यसन 3. आसक्ति, अनुराग।

इश्कबाज *वि.* (अर.+फा.) 1. इश्क करने वाला 2. रसिक, दिलफेंक।

इश्किया *वि.* (अर.) 1. मधुर प्रेम संबंध वाला, अनुरागी 2. विलासी, इश्क से संबंधित 3. शृंगारिक, रसिक।

इश्के मजाजी *पुं.* (अर.) 1. लौकिक प्रेम, सांसारिक प्रेम, मानव प्रेम 2. वासनायुक्त प्रेम, भौतिक प्रेम वि. इश्के हकीकी

इश्के हकीकी *पुं.* (अर.) 1. ईश्वर से प्रेम 2. सच्चा प्रेम 3. वासना रहित प्रेम 4. आत्मा की परमात्मा से मिलने की तड़प प्रयो. सूफी संत इश्क हकीकी में डूबे रहते थे *वि.* इश्क मजाजी

इश्तहार *पुं.* (अर.) दे. इश्तिहार।

इश्तहारी *वि.* (अर.) दे. इश्तिहारी।

इश्तिहार *पुं.* (अर.) 1. व्यक्ति, वस्तु या सेवाओं का प्रसारण माध्यमों के द्वारा सूचना या प्रचार 2. विज्ञापन, सूचना, ऐलान, नोटिस 3. विज्ञापन का पर्चा 4. प्रसिद्धि प्रयो. इस दीवार पर इश्तिहार लगाना मना है।

इश्तिहारी *वि.* (अर.) 1. इश्तहार द्वारा प्रसारित-विज्ञापित 2. जिसके लिए सूचना निकाली गई हो 3. वह अपराधी जो भगोड़ा हो और जिसे पकड़ने के लिए इश्तहार जारी हो।

इषिका *स्त्री.* (तत्.) 1. सरपत, मूँज, चटाई आदि की बीच की सींक 2. बाण, तीर, शर 3. तूलिका, कूँची 4. हाथी की आँख का गोला, गजातिगोलक।

इषु *पुं.* (तत्.) 1. बाण, तीर 2. रेखागणित में वृत्त के अंतर्गत जीवा के मध्य बिंदु से परिधि तक खींची हुई सीधी रेखा।

इष्ट *वि.* (तत्.) 1. अभिलषित, चाहा हुआ, वांछित प्रयो. परिश्रम से इष्ट फल की प्राप्ति होती है 2. अभिप्रेत 3. पूजित 4. अनुकूल 5. प्रिय।

इष्टका *स्त्री.* (तत्.) यज्ञ कुंड या वेदी बनाने की ईंट, ईंट।

इष्टकाल *पुं.* (तत्.) [इष्ट+काल] 1. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शुभ कार्य का शुभ समय 2. कोई घटना घटित होने का निश्चित समय, निर्दिष्ट समय।

इष्टतम *वि.* (तत्.) सबसे ज्यादा उपयुक्त, सबसे अधिक अनुकूल, सबसे अधिक इष्ट।

इष्टतर *वि.* (तत्.) सापेक्षता की दृष्टि से अधिक अनुकूल, अन्य से अधिक उपयुक्त, दूसरे से अधिक वांछित।

इष्टता *स्त्री.* (तत्.) 1. इष्ट होने की अवस्था, उपयुक्त होने का भाव, अनुकूलता का भाव 2. मित्रता, दोस्ती।

इष्टदेव *पुं.* (तत्.) आराध्यदेवता, पूज्य देवता, वह देवता जिसकी पूजा से कामना की सिद्धि मानी जाती है, कुलदेवता।

इष्टा *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रेमिका/प्रिया 2. अभिलषित 3. शमीवृक्ष।

इष्टापत्ति *स्त्री.* (तत्.) विधि. वाद-विवाद के समय होने वाली ऐसी आपत्ति जो उस व्यक्ति की दृष्टि से लाभदायक हो, जिसके संबंध में वह आपत्ति की गई हो।

इष्टापूर्ति *स्त्री.* (तत्.) [इष्ट+आपूर्ति] वांछित कार्य अथवा वस्तु की प्राप्ति, इष्ट की पूर्ति, इच्छित की प्राप्ति।

इष्टापूर्त्त *पुं.* (तत्.) इष्ट-वेद का पठन-पाठन, धार्मिक कार्य तथा पुण्य के कार्य जैसे देवमंदिर बनवाना, अग्निहोत्र करना, कुआँ या तालाब खुदवाना, अन्नदान करना इत्यादि।

इष्टार्थ *पुं.* (तत्.) [इष्ट+अर्थ] 1. वह कार्य अथवा वस्तु, जिसकी अभिलाषा हो 2. लोकप्रिय अथवा व्यापक अर्थ से भिन्न अर्थ, लक्षणा अथवा व्यंजना का अर्थ।

इष्टालाप *पुं.* (तत्.) [इष्ट+आलाप] 1. प्यार-मुहब्बत की बात-चीत, मेल-मिलाप का वार्तालाप 2. मौज-मस्ती की बात-चीत, सरस बातें।

इष्टि *स्त्री.* (अर.) 1. इच्छा/अभिलाषा 2. व्याकरण में भाष्यकार की वह सम्मति जिसके विषय में सूत्रकार ने कुछ न लिखा हो, व्याकरण का वह नियम जो सूत्र और वार्तिक में न हो 3. यज्ञ 4. हवि 5. प्राप्ति तथा सिद्धि के निमित्त किया जाने वाला. (अर.) स्वागत, अगवानी।

इष्टिका *स्त्री.* (तत्.) भट्टे में पकाई गई, मृदा के मिश्रण की प्रायः 9 इंच 4 इंच 3 इंच की घनात्मक समकोणी आकृति, दीवार और भवन निर्माण में प्रयुक्त, ईंट।

इस *सर्व.* (तद्.) अन्य पुरुष एक वचन सर्वनाम का विकारी रूप, अविकारी रूप है 'यह' समीप का अन्य पुरुष, दूर का 'वह'।

इसकंदर *पुं.* (यु.) सिकंदर नामक एक यूनानी बादशाह। alexander

इसकंदरिया *पुं.* (यु) मिस्र का प्रसिद्ध नगर और बंदरगाह, सिकंदरिया। alexandria

इसबगोल *पुं.* (फा.) यूनानी चिकित्सा के अंतर्गत एक औषधि जो एक पौधे की बालियों में स्थित लुआबदार दानों की भूसी होती है और पेट की अनेक बीमारियों के उपचार में काम आती है।

इसरार *पुं.* (अर.) किसी कार्य अथवा बात के लिए किया जाने वाला आग्रह, जिद, हठ।

इसराइल *पुं.* (अर.) दे. इस्राइल।

इसराइली *पुं./वि.* (अर.) दे. इस्राइल।

इसराज *पुं.* (अर.) दे. इस्राज़।

इसलाम, इस्लाम *पुं.* (अर.) 1. मुहम्मद साहब का चलाया हुआ धर्म, मुसलमानी धर्म 2. मुस्लिम जगत 3. ईश्वरेच्छा के सामने सिर झुका देना।

इसलिए *अव्य.* (देश.) इस वजह से, इस कारण से, अतः

इसी *पुं.* (देश.) अन्य पुरुष एक वचन की ओर आग्रहपूर्ण इंगित, निश्चयपूर्वकता के साथ इंगित।

इसे *सर्व.* (देश.) 1. इस को 2. इसके लिए 'इस' सर्वनाम का कारकीय रूप।

इस्तकबाल *पुं.* (अर.) स्वागत, अगवानी।

इस्तमदारी *वि.* (तत्.) 1. किसी दशा में न बदलने वाला, मुस्तहकम, स्थिर 2. पक्के पट्टे पर दी गई जमीन, जिस को खारिज नहीं किया जा सकता है।

इस्तरी *स्त्री.* (अर.) लोहे या पीतल का वह उपकरण जिसे जलते कोयलों या बिजली से गर्म कर उससे (धुले या सिले) कपड़ों की शिकन दूर कर तह बिठाई जाती है।

इस्तिगासा *पुं.* (अर.) 1. न्याय के निमित्त किया गया वाद, फरियाद 2. फौजदारी का दावा, नालिश।

इस्तिरी *स्त्री.* (अर.) दे. इस्तरी।

इस्तीफा *पुं.* (अ.) काम या नौकरी छोड़ने की अनुमति या सूचना देने के लिए दिया जाने वाला पत्र, त्यागपत्र।

इस्तेमाल *पुं.* (अर.) प्रयोग, उपयोग, व्यवहार।

इस्पात *पुं.* (पुर्त.>स्पेडा.) लोहे की मिश्र धातु जिसमें कार्बन के अतिरिक्त मैगनीज, फॉस्फोरस आदि का मिश्रण होता है, फौलाद (स्टील)। steel

इस्पात रज्जु *स्त्री.* (पुर्त.+तत्.) इस्पात के तारों से बनी रस्सी। cable

इस्राइली *पुं.* (अर.) याकूब के वंशज स्त्री. इस्राइल की भाषा *वि.* इस्राइल देश-संबंधी।

इस्राईल *पुं.* (अर.) 1. मध्य एशिया स्थित एक देश का नाम 2. हज़रत याकूब, पैगम्बर का नाम 3. यहूदी।

इस्राज़ *पुं.* (अर.) सारंगी की तरह का एक बाजा।

इस्रार *पुं.* (अर.) 1. हठ, जिद 2. आग्रह 3. भेद, रहस्य।

इस्लामी *वि.* (अर.) इस्लाम से संबंधित, इस्लाम के अनुसार होने वाला।

इस्लाह *स्त्री.* (अर.) संशोधन (विशेष रूप से नज़्म गज़ल आदि का उस्ताद द्वारा सुधार)।

इहतियात *स्त्री.* (अर.) दे. एहतियात।

इहलीला *स्त्री.* (तत्.) इस लोक का जीवन तथा उससे संबद्ध समस्त क्रियाकलाप, जीवनलीला।

इहलोक *पुं.* (तत्.) संसार, जगत, दुनिया *वि.* परलोक।

इहलौकिक *वि.* (तत्.) 1. इहलोक-संबंधी, इस लोक का, सांसारिक 2. इस लोक में सुख देने वाला *वि.* पारलौकिक।

इहामुत्र *अव्य.* (तत्.) 1. यहाँ और वहाँ 2. इस लोक में और परलोक में।

ई

ई देवनागरी वर्णमाला का चौथा स्वर जो 'इ' का दीर्घ रूप है और जिसका उच्चारण तालु से होता है, भाषाविज्ञान की दृष्टि से यह घोष तथा संवृत संवृत स्वर है।

ईंगुर *पुं.* (तद्.) लाल रंग का एक खनिज पदार्थ सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ माथे पर इसकी बिंदी लगाती हैं, सिंदूर।

ईंट *स्त्री.* (तद्.) साँचे में ढाल कर पकाया हुआ मिट् मिट्टी का वह आयताकार टुकड़ा जो भवन निर्माण में पत्थर के बदले काम आता है मुहा. डेढ़ या ढ़ाई ईंट की मस्जिद अलग बनाना- अपनी ही बात पर चलना, अपना निराला ढंग रखना (व्यंग्यात्मक); ईंट गढ़ना- इंटों को काट-छाँट कर जोड़ाई के काम में आने योग्य बनाना; ईंट-ईंट चुनना- ईंटों को जोड़ कर दीवार उठाना; (गुड़ दिखाकर) ईंट मारना- भलाई की आशा बँधा कर बुरा करना; ईंट से ईंट बजाना- खुलकर लड़ाई होना, मकान का ध्वस्त होना; ईंट का जवाब पत्थर से देना- दुष्टता का जवाब दुष्टता से देना।

ईंटा *पुं.* (देश.) दे. ईंट।

ईंदर *पुं.* (देश.) नई ब्याई गाय के दूध से बनाई जाने वाली एक मिठाई।

ईंधन *पुं.* (तद्.) 1. भौ. ऊष्मा या ऊर्जा उत्पन्न करने वाला कोई भी पदार्थ, ऊष्मा या ऊर्जा का स्रोत 2. सभी दहनशील पदार्थ, जलाने की लकड़ी, जलावन 3. किसी यंत्र रेल, विमान आदि को गतिशील करने के लिए उसमें ऊर्जा देने वाली सामग्री (तेल, कोयला, पेट्रोल आदि) 4. लाक्ष.अर्थ. ऐसी बात जो क्रुद्ध व्यक्ति को और भी उत्तेजित कर दे।

ईकार *पुं.* (तत्.) 'ई' स्वर दीर्घ 'ई' का सूचक।

ईकारांत *वि.* (तत्.) जिस शब्द के अंत में 'ई' हो; जैसे- 'लड़की'।

ईक्विटी *स्त्री.* (अं.) वाणि. कंपनी की शेयर पूँजी, आरक्षित निधि और प्रतिधारित लाभों का योग।

ईक्षण *पुं.* (तत्.) 1. दर्शन/देखने की क्रिया या भाव 2. आँख 3. विवेचन 4. विचार 5. जाँच-पड़ताल।

ईख *स्त्री.* (तद्.) गन्ना, ऊख, शर जाति की एक वनस्पति जिसके पोरदार तने में मीठा रस भरा होता है।

ईजाद *स्त्री.* (अर.) 1. आविष्कार 2. नव-निर्माण, कोई नई चीज़ बनाना 3. उद्भावन।

ईति *स्त्री.* (तत्.) 1. कृषिनाशक उपद्रव जैसे- ओले, सूखा, अतिवर्षा, टिड्डियाँ, चूहे आदि 2. काया, पीड़ा, विघ्न, बाधा, उपद्रव।

ईथर *पुं.* (अं.) 1. रसायनशास्त्र में एक कार्बनिक यौगिक जिसका वैज्ञानिक नाम ड्राई-एथिल-ईथर है। इसकी मीठी गंध होती है और इसका प्रयोग चिकित्सा में होता है 2. एक रासायनिक द्रव्य पदार्थ जो एल्कोहॅल और गंधक के तेजाब से बनता है।

ईद *स्त्री.* (अर.) मुसलमानों का एक त्योहार, रमजान के महीने के अंत में जिस दिन दूज का चाँद दिखाई दे उससे अगले दिन 'ईद' होती है। ईदुलफितर खुशी का दिन मुहा. ईद का चाँद- ऐसा व्यक्ति या पदार्थ जिसके दर्शन दुर्लभ हों।

ईदगाह *स्त्री.* (अर.) वह स्थान जहाँ मुसलमान ईद ईद के दिन इकट्ठे होकर नमाज पढ़ते हैं।

ईदी *स्त्री.* (अर.) ईद के दिन दिया जाने वाला तोहफा, बख्शीश या सौगात।

ईदुलजुहा [ईद+उल+अजहा] *स्त्री.* (अर.) मुसलमानों का एक त्योहार जिसमें पशुओं विशेषकर भेड़-बकरियों की कुर्बानी दी जाती है, बकरीद।

ईदुलफितर *स्त्री.* (अर.) [ईद+उल+फ़ितर] दे. ईद।

ईप्सा *स्त्री.* (तत्.) इच्छा, अभिलाषा।

ईप्सित *वि.* (तत्.) चाहा हुआ, अभिलषित, वांछित, अभीष्ट।

ईमान *पु* (अ.) 1. विश्वास, आस्था 2. ईश्वर पर विश्वास 3. सच्चाई 4. चित्त की सद्वृति, निष्ठा, निष्ठा, अच्छी नीयत मुहा. ईमान देना- सत्य छोड़ना; ईमान से कहना- सच कहना।

ईमानदार *वि.* (अर.+फा.) 1. विश्वसनीय, विश्वास-पात्र 2. धर्मनिष्ठ, निष्ठावान 3. सच्चा 4. छल कपट न करने वाला।

ईमानदारी *स्त्री.* (अर.+फा.) 1. ईमानदार होने का भाव 2. सत्यनिष्ठा 3. अच्छी नीयत।

ई-मेल *स्त्री.* (अं.) इलैक्ट्रॉनिक मेल, कंप्यूटर जाल क्रम में एक प्रयोक्ता से दूसरे प्रयोक्ता तक लिखित संदेश भेजने की व्यवस्था।

ईरान *पुं.* (फा.) मध्य एशिया स्थित एक देश।

ईरानी *वि.* (फा.) ईरान का, ईरान से संबंधित *पुं.* ईरान का निवासी *स्त्री.* ईरान देश की भाषा।

ईर्ष्या *स्त्री.* (तत्.) दूसरों का उत्कर्ष देखकर होने वाली जलन, डाह।

ईर्ष्यालु *पुं.* (तत्.) डाह करने वाला।

ईश *पुं.* (तत्.) 1. परमेश्वर 2. महादेव, शिव 3. स्वामी, मालिक, राजा 4. एक उपनिषद् का नाम।

ईशान *पुं.* (तत्.) 1. स्वामी, अधिपति, प्रभु 2. शिव, महादेव 3. पूर्व और उत्तर दिशा के बीच का कोण।

ईशिता *स्त्री.* (तत्.) दे. ईशित्व।

ईशित्व *पुं.* (तत्.) 1. आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक, जिसमें साधक सब पर शासन कर सकता है 2. ईश्वरत्व 3. प्राधान्य।

ईश्वर *पुं.* (तत्.) 1. परमेश्वर, भगवान, प्रभु 2. महादेव, शिव 3. मालिक, स्वामी वि. समर्थ, शक्तिमान, संपन्न।

ईश्वरनिष्ठ *पुं.* (तत्.) ईश्वर में विश्वास (निष्ठा) रखने वाला।

ईश्वर प्रणिधान *पुं.* (तत्.) योग. 1. अपने कर्मों और इच्छाओं को ईश्वर को अर्पण कर देना 2. ईश्वर-भक्ति।

ईश्वरवाद *पुं.* (तत्).) ईश्वर को जगत का कर्ता मानने वाला मत विलो. अनीश्वरवाद।

ईश्वरवादी *पुं.* (तत्.) ईश्वरवाद का अनुयायी, ईश्वर को सृष्टि का कर्ता मानने वाला *वि.* अनीश्वरवादी।

ईश्वराधीन *वि.* (तत्.) ईश्वर के अधीन, ईश्वर की इच्छानुसार होने वाला, प्रभु के अधीन प्रयो. आस्तिकों की मान्यता है कि हानि, लाभ, जीवन, मरण ये सब ईश्वराधीन है।

ईश्वरीय *वि.* (तत्.) 1. ईश्वर-संबधी 2. ईश्वर का 3. ईश्वर द्वारा किया गया प्रयो. ईश्वरीय लीला का कोई वारपार नहीं है।

ईश्वरोपासना *स्त्री.* (तत्.) ईश्वर सेवा, ईश्वर की पूजा-अर्चना।

ईषत् *वि.* (तत्.) कुछ-कुछ, थोड़ा, अल्प रूप में, आंशिक रूप में।

ईषत् विवृत *वि.* (तत्.) दे. विवृत।

ईषत् संवृत *वि.* (तत्.) दे. संवृत।

ईसबगोल *पुं.* (फा.) दे. इसबगोल।

ईसवी *स्त्री.* (अर.) ईसा से संबंध रखने वाला, मसीही।

ईसवी काल *पुं.* (अर.+तत्) ईसा मसीह की कल्पित जन्मतिथि से आरंभ हुआ वर्षों का क्रम जिसे ईसवी सन् संज्ञा से भी व्यक्त किया जाता है।

ईसवी सन् *पुं.* (अर.) ईसा के कल्पित जन्मकाल से चला हुआ वर्ष, यह पहली जनवरी से आरंभ होता है और 12 महीने बाद 31 दिसंबर को समाप्त होता है। इसमें प्राय: 365 दिन होते हैं।

ईसा *पुं.* (अर.) ईसाई धर्म के प्रवर्तक या पैगंबर, मसीह christ

ईसाई *पुं.* (अर.) ईसा को मानने वाला व्यक्ति, ईसाई धर्म पर चलने वाला व्यक्ति। christian

ईहा *स्त्री.* (तत्.) 1. इच्छा 2. प्रबल चेष्टा 3. उद्योग 4. लोभ।

ईहित *पुं.* (अर.) 1. अभिलषित, वांछित 2. चेष्टित *पुं.* (तत्.) 1. अभिलाषा 2. चेष्टा 3. उद्योग, प्रयत्न।

उ

उ देवनागरी वर्णमाला का पाँचवा स्वर, जो ह्रस्व है और जिसका दीर्घ रूप 'ऊ' है, भाषा विज्ञान की दृष्टि से यह ह्रस्व, ओष्ठ्य, घोष तथा संवृत स्वर है।

ऊंघाई *स्त्री.* (देश.) 1. ऊंघने की क्रिया या भाव, झपकी 2. पूर्ण निद्रा से पूर्व की स्थिति, अर्धनिद्रा 3. आलस आने का भाव, अलसाना।

उंडुकपुच्छ *पुं.* (तत्.) आयु. स्तनपोषियों की बड़ी आँत के अंतिम भाग में ऊतकों का बंद-नलिका-सा छोटा विस्तार। appendix

उंडुक पुच्छ शोथ *पुं.* (तत्.) आयु. उंडुक पुच्छ की सूजन जो पीड़ादायी और सांघातिक रोग है, इस अंग को शल्य-क्रिया से निकाल देना ही इसका उपचार है दे. 'उंडुक पुच्छ'।

उंडेलना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी तरल पदार्थ को एक बर्तन से दूसरे बर्तन में डालना 2. ला.अर्थ. उदारता से प्रदान करना, व्यक्त करना जैसे- उसने बच्चे पर अपना सारा प्रेम उंडेल दिया।

उंबर *पुं.* (तत्.) दरवाजे की चौखट की ऊपर वाली पट्टी।

उंबुर *पुं.* (तत्.) दे. 'उंबर'।

उंह *अव्य.* (तत्.) 1. असहमति, अस्वीकार, घृणा, वेदना आदि का सूचक शब्द 2. नहीं, नकारने का भाव, क्रिया।

उँ *अव्य.* (तत्.) 1. प्रश्न, अवज्ञा, क्रोध, स्वीकृति प्रश्न, निषेध, आवेश, संबोधन आदि अर्थों का द्योतक एक अव्यक्त शब्द। जैसे- उँ जाऊँ (प्रश्न) (प्रश्न) क्या जाओगे। उँ उँ (निषेध) उँ तुम क्या कहते हो (आवेग/क्रोध) उँ! तुम इधर आओ (संबोधन)।

उँगनी *पुं.* (देश.ओंगना) बैलगाड़ी के उँगने का वह कार्य जिसमें उसकी धुरी और पहिये में एक विशेष तेल लगा कर उन्हें आपस में जोड़ा जाता है।

उँगली *स्त्री.* (तद्.) प्रत्येक हाथ या पैर के अग्रिम भाग पर फलियों के आकार के निकले हुए अलग-अलग पाँच-पाँच अवयव जो मिलकर किसी वस्तु आदि को पकड़ने या दबाने के काम आते हैं, इनमें सबसे मोटा अवयव अँगूठा कहलाता है, अंगुलि, मुहा. पाँचों उँगलियाँ घी में होना-सब प्रकार से लाभ ही लाभ, उँगलियाँ चमकाना- बातचीत में उँगली हिलाना या मटकाना, सीधी उँगली से घी न निकलना-सिधाई से काम न हो पाना, उँगलियों पर दिन गिनना-उत्सुकता से किसी दिन की प्रतीक्षा करना, उँगलियों पर नचाना-अपने वश में रखना, तंग करना, उँगली उठना-बदनामी होना, उपहास का पात्र होना, (किसी की) निंदा का लक्ष्य होना, दोष लगना, टेढ़ी/बुरी नजर से देखना, उँगली करना-परेशान करना, उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना-किसी व्यक्ति से थोड़ा-सा पाकर सारे पर धृष्टतापूर्वक अधिकार जमाना, उँगली पर पहाड़ उठाना-असंभव कार्य कर दिखाना, उँगली लगाना- (किसी काम में) नाममात्र सहायता या सहारा देना, किसी काम में हाथ लगाना।

उँघाई *स्त्री.* (देश.) 1. उँघने की क्रिया, स्थिति या भाव। 2. निद्रा या आलस्य की पूर्वावस्था 3. झपकी दे. ऊँघ/औघाई।

उँचाना *स.क्रि.* (तद्.) ऊँचा करना; उठना।

उँचाना *स.क्रि.* (देश.) किसी चीज को ऊपर उठाना, ऊँचा करना।

उँछवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) फसल कटने के बाद खेत में गिरे हुए अन्न को बीनकर उस पर जीवन निर्वाह करना।

उँड़ेलना *क्रि.स.* (देश.) द्रव पदार्थ को एक बर्तन से दूसरे में डालना या अन्यत्र गिराना प्रयो. बच्चे ने शीशी की दवा जमीन पर उँड़ेल दी।

उँह *अव्य.* (देश.) 1. अस्वीकार, घृणा, उपेक्षा आदि का सूचक शब्द 2. वेदनासूचक शब्द।

ऊँहुँ/ऊँहुँक *अव्य.* (देश.) अस्वीकार, इन्कार आदि अर्थ का सूचक शब्द।

उऋण *वि.* (तत्.) 1. ऋणरहित, ऋणमुक्त प्रयो. आपने मेरे ऊपर जो उपकार किया, उससे मैं उऋण नहीं हो सकता।

उकठना *अ.क्रि.* (तद्.) शुष्क हो जाना, सूखकर लकड़ी की तरह हो जाना।

उकड़ूँ *पुं.* (देश.) घुटने मोड़कर पंजों के बल बैठने की स्थिति।

उकताना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. ऊबना 2. घबड़ाना 3. तंग आना प्रयो. मैं तुम्हारी करतूतों से उकता गया हूँ।

उकताहट *स्त्री.* (तद्.) 1. ऊब, मन न लगना 2. अधीरता 3. जल्दबाजी।

उकसाना *क्रि.स* (तद्.) 1. किसी गलत काम को करने के लिए उद्यत करना और प्रोत्साहन देना, देना, भड़काना 2. ऊपर को उठाना 3. हटा देना 4. दिए की बत्ती बढ़ाना या आगे खिसकाना।

उकसाहट *स्त्री.* (तद्.) 1. अपराध आदि करने के लिए कुप्रेरित करने की क्रिया या भाव 2. उकसाने का भाव 3. उत्तेजना।

उकार *पुं.* (तत्.) 1. 'उ' स्वर।

उकारांत *वि.* (तत्.) वह शब्द जिसके अंत में 'उ' हो जैसे- साधु।

उकेरना *सं क्रि.* (तद्.) लकड़ी, पत्थर, धातु आदि पर खुरचकर नक्काशी करना।

उक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1 कथन, वाक्य, वचन 2. कहावत। प्रयो. उक्ति की विचित्रता काव्य में चमत्कार उत्पन्न करती है।

उखड़ना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. किसी जमी हुई वस्तु का अलग हो जाना, जोड़ से हट जाना 2. टूटना (जैसे-दम या साँस का)। 3. सुर-ताल को छोड़कर बेताल या बेसुरा हो जाना 3. तितर-बितर हो जाना मुहा. उखड़ी-उखड़ी बातें करना- उदासीता पूर्वक बात करना; उखड़ा-उखड़ा सा रहना- अन्यमनस्क या उदास रहना, बेचैन रहना।

उखड़वाना *स.क्रि.* (तद्.) उखाड़ना का प्रेरक रूप, उखाड़ने में किसी को प्रवृत्त करना प्रयो. नगर निगम ने सडक के किनारे लगे सभी खंभे उखड़वा दिए।

उखली *स्त्री.* (तद्.) दे. ओखली।

उखाड़ *पुं.* (तद्.) 1. उखाड़ने का कार्य 2. कुश्ती का एक पेंच।

उखाड़ना *स.क्रि.* (तद्.) किसी वस्तु को हटाना, नष्ट करना, विस्थापित करना मुहा. उखाड़-पछाड़- अदल-बदल; गड़े मुर्दे उखाड़ना- पुरानी बातों को फिर से छेड़ना; पैर उखाड़ देना- स्थान से विचलित कर देना, भगाना।

उगना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. उपजना 2. सूर्य, चंद्रमा आदि का उदय होना 3. अंकुरित होना, जमना।

उगलना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. मुँह या पेट में गई चीज का मुँह से बाहर निकालना। गुप्त बात को प्रकट कर देना प्रयो. 1. उसने सब खाया-पिया उगल दिया 2. मार पड़ी तो चोर ने सब बात उगल दी मुहा. जहर उगलना- बात सुनाना; आग उगलना- क्रोध में बोलना, वैर या दोष फैलाना।

उगलवाना *स.क्रि.* (तत्.) 1. मुँह से निकलवाना 2. दोष स्वीकार कराना।

उगाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. सामने लाना 2. निकालना 3. बो कर अंकुरित करना।

उगालदान [हि. उगाल+फार.दान] *पुं.* (देश.) थूकने का बरतन, पीकदान।

उगाहना *स.क्रि.* (तद्.) 1. वसूल करना 2. चंदा इकट्ठा करना।

उगाही *स्त्री.* (तद्.) 1. कर्ज की किस्त या ब्याज की वसूली, सामान्यत: किसी भी प्राप्य धनराशि, वस्तु अथवा बकाया की वसूली 2. सरकार द्वारा या प्राधिकृत संस्था द्वारा उत्पादकों उत्पादकों से उनके उत्पादन के एक अंश की

अनिवार्य वसूली 3. रुपये-पैसे, लगान या अन्न की वसूली 4. इकट्ठा हुई चंदे की रकम।

उग्र *वि.* (तत्.) 1. तीव्र, तेज 2. क्रुद्ध, क्रोधी, जल्दी क्रोध करने वाला 3. अशांत प्रयो. परशुराम उग्र स्वभाव के थे।

उग्रकर्मा *वि.* (तत्.) क्रूर कर्म करने वाला, कठोर।

उग्रता *स्त्री.* (तत्.) 1. तेजी 2. क्रोध 3. गर्मी 4. बर्दाश्त न करने का स्वभाव।

उग्रपंथी *वि.* (तत्.) क्रांतिकारी विचार वाला, असहिष्णु।

उग्रवादी *वि.* (तत्.) दे. उग्रपंथी।

उग्रह *पुं.* (तद्.) 1. ग्रह या बंधन से छूटना, मोक्ष 2. सूर्य या चंद्रमा की ग्रहण से मुक्ति।

उघड़ना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. खुलना 2. आवरण हटना प्रयो. हवा से सिर पर का कपड़ा हट गया और सिर उघड़ गया।

उघाड़ना *स.क्रि.* (तत्.) 1. खोलना 2. आवरण हटाना 3. भंडा फोड़ना।

उचंत *वि.* (देश.) थोड़े समय के लिए दी गई धनराशि जिसका पक्का हिसाब बाद में किया जाता है, संदिग्ध1 suspence

उचंत खाता *पुं.* (देश.) वाणि. वह खाता जिसमें उन राशियों की प्रविष्टि की जाती है जिनके सही-सही स्वरूप के बारे में संदेह हो जैसे- कोई राशि देय हो गई हो पर उसके दावेदार का पता न चल रहा हो। suspence account

उचकना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. पंजे के बल एड़ी उठाकर खड़ा होना 2. पंजे के बल उछलना प्रयो. बच्चे को गोद में लेने के लिए कई बार तो उचके, फिर थम गए- मानस का हंस-अमृत लाल नागर।

उचक्का *पुं.* (देश.) चुपके से चीजें उठा ले जाने वाला, ठग।

उचटना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. उचड़ना, जमी वस्तु का उखड़ना प्रयो. दीवार की सफेदी उचट गई 2. ऊबना, बिचकना प्रयो. उसकी बातों से मेरा मन उचट गया है।

उचाट *पुं.* (तद्.) विरक्ति, उदासी *वि.* विरक्त।

उचारना *स.क्रि.* (तद्.) 1. बोलना 2. उच्चारण करना।

उचित *वि.* (तत्.) योग्य, ठीक।

उचित दर दुकान *स्त्री.* [तत्.+फा.] राशन प्रणाली के अंतर्गत काम करने वाली दुकान जहाँ पर उपभोक्ताओं को सरकार द्वारा निर्धारित भाव पर माल बेचा जाता है।

उचित माध्यम *पुं.* (तत्.) किसी मिसिल (फाइल), आवेदन पत्र आदि को अपने गंतव्य स्थल या सक्षम अधिकारी तक भेजने का नियमानुकूल निर्धारित मार्ग। proper channel

उच्च *वि.* (तत्.) ऊँचा, श्रेष्ठ मुहा. उच्च का चंद्रमा होना- चंद्र ग्रह का शुभ फल प्रदान करने वाला होना।

उच्चतम *वि.* (तत्.) सबसे ऊँचा, सर्वोच्च।

उच्चतम न्यायालय *पुं.* (तत्.) विधि. देश का सर्वोच्च न्यायालय। supreme court

उच्चतर *वि.* (तत्.) किसी से ऊँचा, वरीयतम।

उच्चता *स्त्री.* (तत्.) 1. ऊँचाई 2. उत्तमता।

उच्चताप-सह *वि.* (तत्.) रसा. ऐसे धातु जिनका गलनांक बहुत अधिक होता है और जो अत्यधिक ऊष्मावरोधी होते हैं, जो ऊँचे ताप पर भी न गले और रासायनिक अभिक्रिया का प्रतिरोध करें।

उच्च न्यायालय *पुं.* (तत्.) विधि. राज्य की न्यायपालिका का शीर्ष न्यायालय। high court

उच्च रक्त चाप *पुं.* (तत्.) दे. उच्च रक्त दाब।

उच्च रक्तदाब *पुं.* (तत्.) आयु. रक्तवाहिनी नलिकाओं में अति तनाव आदि के कारण रक्त के स्वाभाविक प्रवाह में रुकावट आ जाने के कारण धमनियों की दीवारों पर अधिक बल

लगाकर रक्त संचारित होने का रोग, उच्च रक्त चाप। high blood pressure

उच्चरण *पुं.* (तत्.) 1. मुँह से स्पष्ट और व्यक्त ध्वनि निकालना articulation 2. स्वनन में अक्षरों/वर्णों से बने शब्दों को बोलने का ढंग। pronunciation

उच्चरित *वि.* (तत्.) कथित उच्चारण किया हुआ, प्रयो. 'ह' व्यंजन कंठ से उच्चरित होता है।

उच्च शिक्षा *स्त्री.* (तत्.) स्कूली स्तर से ऊपर की शिक्षा जिसमें महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों और और व्यावसायिक संस्थाओं आदि द्वारा दी जाने जाने वाली शिक्षा सम्मिलित है।

उच्चाटन *पुं.* (तत्.) 1. उचाड़ना, लगी हुई या चिपकी चीज को अलग करना 2. चित्त का न लगना 3. तंत्र के छह अभिचारों में से एक 3. वह क्रिया जिसमें मन को किसी व्यक्ति या बात से हटाने का प्रयत्न किया जाता है।

उच्चाधिकार समिति *स्त्री.* (तत्.) प्रशा. किसी विशेष महत्वपूर्ण मामले पर विचार करने के लिए गठित समिति जिसके सदस्य उच्च पदासीन सरकारी या उच्चस्तरीय विशेषज्ञ अथवा दोनों होते हैं और जिसकी सिफारिशों को सरकार गंभीरता से लेती है। high power committee

उच्चायुक्त *पुं.* (तत्.) राष्ट्रमंडल के किसी देश द्वारा किसी अन्य सदस्य देश में नियुक्त राजदूत। high commissioner

उच्चारण स्थान *पुं.* (तत्.) जिस स्थान से वर्णों का उच्चारण होता है।

उच्चारणात्मक स्वनविज्ञान *पुं.* (तत्.) स्वनविज्ञान की वह शाखा जिसमें स्वनन, वागवयवों की रचना, उच्चारण प्रि या आदि का अध्ययन किया जाता है। articulatory phonetics

उच्छन्न *वि.* (तत्.) स्पष्ट रूप से प्रकट। exposed विलो. प्रच्छन्न।

उच्छलन *पुं.* (तत्.) उछलने या तरंगायित होने की क्रिया या भाव प्रयो. 'उच्छल जलधि-तरंग'।

उच्छलित *वि.* (तत्.) 1. उछलता हुआ 1. कंपित।

उच्छ्वसन [उत्+श्वसन] *पुं.* (तत्.) 1. साँस लेना 2. आह भरना।

उच्छ्वास *पुं.* (तत्.) 1. ऊपर को खींची हुई साँस, उसाँस 2. गहरी और ठंडी साँस जो मानसिक वेदना की प्रतीक मानी जाती है।

उच्छ्वासित *वि.* (तत्.) 1. उच्छ्वास के रूप में बाहर आया हुआ 2. विकसित, प्रफुल्लित।

उच्छ्वासी *वि.* (तत्.) 1. साँस लेने वाला 2. आह भरने वाला 3. मरता हुआ 4. विकसित, प्रफुल्लित होने वाला।

उच्छिन्न *वि.* (तत्.) 1. कटा हुआ, खंडित, बिखरा हुआ 2. निर्मूल प्रयो. उनके कुसुमाभरण मार्ग में थे जिस ओर पड़े उच्छिन्न, उन्हें बीनते हुए विलपते चले खोज करते वे खिन्न-साकेत।

उच्छिष्ट *पुं.* (तत्.) 1. जूठी वस्तु, जूठन प्रयो. बारात के जाने के बाद सारा उच्छिष्ट जानवरों के खाने के लिए बाहर फेंक दिया गया 3. अवशिष्ट वस्तु, अपशेष मधु, शहद 4. अशुद्ध।

उच्छिष्टभोजी *वि.* (तत्.) जूठन खानेवाला।

उच्छृंखल *वि.* (तत्.) 1. शृंखला अर्थात् बंधन न मानने वाला 2. स्वेच्छाचारी 3. निरंकुश।

उच्छृंखलता *स्त्री.* (तत्.) 1. स्वेच्छाचारिता 2. बंधन न मानना 3. निरंकुशता 4. उच्छृंखल आचरण।

उच्छेद *पुं.* (तत्.) 1. काटना 2. उन्मूलन 3. नाश 4. किसी मत का खंडन 5. उखाड़-पछाड़।

उच्छेदन *पुं.* (तत्.) दे. उच्छेद।

उच्छेदवाद *पुं.* (तत्.) आत्मा के अस्तित्व को न माननेवाला दार्शनिक सिद्धांत।

उच्छेदित *वि.* (तत्.) कटा हुआ, खंडित, विनष्ट।

उछल-कूद *स्त्री.* (तद्.) 1. उछलना-कूदना, कूद-फाँद 2. अधीरता सूचक चेष्टाएँ 3. हलचल।

उछलना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. वेग से ऊपर उठना और वापस आना 2. हर्ष से उझकना 3. अचानक अत्यधिक प्रसन्न हो जाना 4. अचानक प्रसिद्ध हो जाना।

उछाल *स्त्री.* (तद्.) 1. उछलने की क्रिया या भाव 2. ला.अर्थ. प्रचारित करना प्रयो. उसका नाम पार्टी वालों ने खूब उछाला पर वह मंत्री न बन सका।

उछाल-पट्ट *पुं.* (तत्.) खेल. एक ओर से जुड़ा और दूसरी ओर से मुक्त पटल जो गोताखोर को उछाल देकर डुबकी लगाने में सहायक होता है। diving board

उछाह *पुं.* (तद्.) 1. उत्साह, हर्ष, उमंग 2. उत्सव 3. उत्कंठा 4. हौसला।

उजड़ना *स.क्रि.* (तद्.) 1. जनशून्य होना, वीरान होना 2. बरबाद होना 3. उच्छिन्न होना।

उजड़वाना *स.क्रि.* (तद्.) उजड़ना का प्रेरक रूप, किसी को उजाड़ने में प्रवृत्त करना।

उजड़ा *वि.* (तद्.) नष्ट, बरबाद, ध्वस्त प्रयो. उजड़ा किला अपना इतिहास बता रहा है।

उजड्ड *वि.* (देश.) मूर्ख, असभ्य, उद्दंड प्रयो. कासिमाबाद हल्के के लोग भी बड़े उजड्ड हैं, कभी कोई कत्ल हो गया, कभी कहीं डकैती पड़ गई। यहाँ लाठी चल गई, वहाँ बंदूक निकल आई।

उजबक *पुं.* (फा.) 1. तातारियों की एक जाति या उस जाति का सदस्य 2. मूर्ख, बुद्धिहीन व्यक्ति।

उजरत *स्त्री.* (अर.) 1. मजदूरी, पारिश्रमिक 2. किराया।

उजला *वि.* (तद्.) श्वेत, स्वच्छ प्रयो. बगुले का पंख उजला होता है मुहा. उजला मुँह करना- गौरवान्वित करना; उजली समझ- उज्ज्वल बुद्धि, स्वच्छ विचार।

उजलापन *पुं.* (तद्.) सफेदी, स्वच्छता।

उजला पाख *पुं.* (तद्.) उज्ज्वल पक्ष, शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक के प्रंद्रह दिन।

उजागर *वि.* (तद्.) 1. स्पष्ट 2. प्रकाशित, प्रकट 3. प्रसिद्ध, कीर्तिशाली।

उजाड़ *पुं.* (तद्.) उजड़ा स्थान वि. 1. ध्वस्त, उजड़ा हुआ, उच्छिन्न 2. वीरान, निर्जन।

उजाड़ना *स.क्रि.* (तद्.) ध्वस्त करना, नष्ट करना, बर्बाद कर देना 2. उखाड़ना, खोद फेंकना 3. तोड़-फोड़ मचाना, ढाहना प्रयो. शाही सेना, जहाँ-जहाँ गई, खेत उजाड़ती गई।

उजाला *पुं.* (तद्.) प्रकाश मुहा. उजाला होना- दिन निकलना; उजाले का तारा- शुक्र ग्रह।

उजाली *स्त्री.* (तद्.) चाँदनी, चंद्रिका।

उजास *पुं.* (तद्.) चमक, प्रकाश, उजलापन प्रयो. कछु उजास भो प्रात समाना-राम रसायन।

उजियाला *पुं.* (देश.) दे. उजाला।

उज्जायी प्राणायाम *पुं.* (तत्.) हठयोग का एक प्राणायाम जिसमें कंठ सिकोड़ते हुए और ध्वनि करते हुए साँस को भीतर खींचते हैं और कुछ समय बाद स्वर सहित ही बाहर छोडते हैं इस क्रिया में फुफ्फुस पूर्णतया फैलाए जाते हैं और सीने को विजेता के समान ऊपर उठाया जाता है।

उज्जीवन *पुं.* (तत्.) 1. नया जीवन मिलना, पुन:प्राण संचार होना 2. चंगा हो जाना, मृतप्राय होकर पुन: स्वस्थ होना।

उज्जीवी *वि.* (तत्.) पुनर्जीवन प्राप्त करने वाला।

उज्ज्वल *वि.* (तत्.) 1. प्रकाशमान, शुभ्र 2. स्वच्छ, निर्मल, बेदाग 3. पवित्र 4. सफेद।

उज्र *पुं.* (अर.) 1. किसी बात पर आपत्ति, विरोध 2. बाधा प्रयो. तुम जो कुछ कहते हो ठीक है, ये लोग बेकार उज्र करते हैं।

उझकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. उचकना 2. चौंकना।

उटंग *वि.* (देश.) पहनने में उचित से कम लंबाई वाला छोटा कपड़ा।

उटज *पुं.* (तत्.) झोंपड़ी, कुटी, पर्णशाला प्रयो. निज सौध सदन में उटज पिता ने छाया, मेरी कुटिया में राजभवन मन भाया- साकेत।

उठँगना *अ.क्रि.* (देश.) बैठे-बैठे थकान मिटाने के लिए सहारा लेना, टेक लगाना।

उठँगाना *स.क्रि.* (देश.) किवाड़ों को बिना साँकल दिए बंद करना जिसमें वह केवल धकेलने मात्र से खुल जाए 2. किसी चीज को दूसरी चीज के सहारे टिकाना।

उठक-बैठक *पुं.* (देश.) बार-बार उठने-बैठने की क्रिया, एक प्रकार का व्यायाम।

उठना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. नीची स्थिति से ऊँची स्थिति में होना, ऊँचा होना 2. बिस्तर छोड़ना, नींद से जागना 3. उदय होना 4. उत्पन्न होना 5. दुकान या कारखाने का बंद होना, कम होना 6. बिक जाना मुहा. उठ खड़ा होना- चलने को तैयार होना; उठ जाना- मर जाना; उठते-बैठते- हर हाल में, हर समय।

उठवाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. उठना का प्रेरक रूप, उठने के लिए किसी को तत्पर करना 2. अपहरण करवाना 3. उत्तोलन करवाना।

उठाईगीर *वि.* (तद्.+फा) आँख बचाकर छोटी-मोटी चीजों को चुरा लेने वाला, उचक्का प्रयो. रेलवे स्टेशनों पर बहुत से उठाईगीर घूमते रहते हैं, जरा सँभलकर रहना।

उठान *स्त्री.* (तद्.) 1. उठने की क्रिया 2. ऊँचाई 3. बाढ़ 4. वृद्धिक्रम 4. आरंभ होने की क्रिया, शुरुआत प्रयो. और तो सब ठीक था, पर उस राग की उठान बेसुरी थी।

उठाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. नीची स्थिति से ऊँची स्थिति में करना, ऊँचा या खड़ा करना 2. लेटे या सोए हुए को जगा देना या जगाकर बैठाना 3. बैठे हुए को खड़ा करना 4. आरंभ करना 5. प्रथा समाप्त करना 6. व्यय करना 7. भाड़े पर देना 8. अपहरण करना।

उठा-पटक *स्त्री.* (तद्.) 1. उठाने और पटकने की स्थिति, संघर्ष 2. अनेक प्रकार के प्रयत्न।

उठौनी *स्त्री.* (तद्.) 1. उठाने की क्रिया 2. माल उठाने या खरीदने के लिए दिया गया अग्रिम धन 3. पूजा के लिए अलग रखा हुआ धन या पदार्थ 4. किसी के मरने के दो-तीन दिन बाद की जाने वाली एक रस्म।

उड़द *पुं.* (देश.) एक दलहन का पौधा तथा उसकी फली से निकले बीज जिनकी दाल बनती है।

उड़नखटोला *पुं.* (तद्.) विमान के लिए प्रयुक्त प्राचीन शब्द, आकाशयान।

उड़न छू *वि.* (देश.) 1. गायब, लापता 2. भाग जाना प्रयो. चोर सामान उठाकर उड़न छू हो गया।

उड़न तश्तरी *स्त्री.* [तद्.उड़न+फा.तश्तरी] तश्तरी की तरह का एक प्रकाशमय अंतरिक्ष यान जिसे कभी-कभी आकाश में देखे जाने के दावे किए जाते हैं। यह भी माना जाता है कि ये अन्य ग्रहों से पृथ्वी पर आने वाले यान है।

उड़न दस्ता *पुं.* [तद्.उड़न+फा.दस्ता] प्रशा. 1. दोषियों को रँगे हाथ पकड़ने के लिए गठित पुलिस दल जो सूचना मिलते ही घटना-स्थल पर पहुँच जाता है 2. आकस्मिक निरीक्षण के लिए गठित कार्य दल। flying squad

उड़ना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. आकाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना, पंख के सहारे हवा में चलना-फिरना 2. विमान आदि में बैठ कर आकाश मार्ग से यात्रा करना 3. हवा में फैलना, छितराना, बिखरना 4. फहराना, लहराना 5. नष्ट होना, कम होना जैसे- रंग उड़ना, सुगंध उड़ना 6. फीका पड़ना 7. बहुत तेजी से छलांग लगाना 8. उछल कर लाँघ जाना मुहा. उड़ जाना- झटपट आना; उड़ चलना- तेज दौड़ना; उड़ती खबर- वह खबर जिसकी सच्चाई का निश्चय न हो।

उड़ाऊ *वि.* (तद्.) 1. उड़ने वाला, उड़ाने वाला 2. हवाई जहाज पर उड़ान भरने वाला 3. हवाई जहाज का चालक 4. खाने वाला।

उड़ाका दल *पुं.* (तद्.) प्रशा. दुर्घटना स्थल पर शीघ्र पहुँचनेवाला पुलिस दस्ता, उड़न दस्ता।

उड़ान *स्त्री.* (तद्.) 1. उड़ने की क्रिया 2. उड़ने के सामर्थ्य की सीमा 3. वह दूरी जो एक उड़ान में पूरी की जा सके 4. किसी निर्धारित स्थान पर जाने वाली विमान सेवा। flight

उड़ाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. उड़ने की क्रिया कराना 2. किसी वस्तु को आकाश में चलाना 3. लहराना, फहराना 4. बिखेरना, फैलाना जैसे- खबर उड़ाना 5. गायब करना 6. तेजी से दौड़ाना 7. चकमा या भुलावा देना।

उड़िया *वि.* (तद्.) 1. उड़ीसा (ओडिशा) का रहने वाला 2. उड़ीसा से संबद् ध 2. ओड़िशा *स्त्री.* उड़ीसा की भाषा और उसकी लिपि।

उडु *पुं.* (तत्.) तारा, नक्षत्र।

उडुगण *पुं.* (तत्.) तारे, सितारे।

उडुपति *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. वरूण।

उड़ेलना *स.क्रि.* (देश.) द्रव पदार्थ को एक बर्तन दूसरे में डालना या अन्यत्र गिराना प्रयो. बच्चे ने शीशी की दवा जमीन पर उड़ेल दी।

उड्डयन *पुं.* (तत्.) 1. उड़ना 2. उड़ान *वि.* वायुयान-चालन संबंधी।

उड्डीयान बंध *पुं.* (तत्.) हठयोग की एक क्रिया जिसमें श्वास को बाहर फेंककर पेट की मांसपेशियों को बलपूर्वक अंदर खींचते हुए रीढ़ से सटाकर गड्ढा सा बना दिया जाता है माना जाता है कि इससे प्राण मूलाधार चक्र से ऊपर उठकर क्रमशः सहस्रार चक्र में जा पहुँचता है।

उढ़कन *पुं.* (देश.) सहारा, टेक।

उढ़ाना *स.क्रि.* (देश.) दे. ओढ़ाना।

उढ़ावनी *स्त्री.* (देश.) दे. 'ओढ़नी'।

उतंक *वि.* (तद्.) ऊँचा, उत्तुंग।

उतना *वि.* (तद्.) उक्त मात्रा में।

उतन्ना *पुं.* (देश.) कान के ऊपरी भाग में पहनने की बाली।

उतरन *स्त्री.* (तद्.) उतारे हुए कपड़े, पहनकर त्यागे हुए वस्त्र।

उतरना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. ऊपर से नीचे आना 2. ढलना, घटना 3. पृथक होना 4. फीका पड़ना प्रयो. उसके चेहरे का रंग उतर गया भय से, प्रयो. कई दिनों बाद आज बुखार उतर गया। मुहा. गले में उतरना या गले के नीचे उतरना- निगल जाना, मन में धँस जाना; चित्त से उतरना- विस्मृत होना, अप्रिय होना; चेहरा उतरना- मुख मलिन होना।

उतराई *स्त्री.* (तद्.) 1. ऊपर से नीचे आने की क्रिया 2. वह स्थलीय भाग जहाँ ढलान होती है 3. नीचे उतरने या पार उतारने की मजदूरी 4. ऊपर से नीचे आने की क्रिया या भाव।

उतराना *अ.क्रि.* (तद्.) पानी से ऊपर आना विलो. डूबना।

उताइल *अव्य.* (देश.) उतावली के साथ, जल्दी-जल्दी।

उतायल *अव्य.* (देश.) दे. उताइल।

उतार *पुं.* (तद्.) 1. उतरने की क्रिया 2. क्रमशः नीचे होना 3. ढाल 4. घटाव, कमी 5. समुद्री ज्वार का उतरना, भाटा 6. (नशा, विष, कुदृष्टि आदि का) परिहार 7. (भाव, मूल्य में) कमी।

उतारना *स.क्रि.* (तद्.) 1. ऊँचे स्थान से नीचे लाना 2. लेख की प्रतिलिपि करना प्रयो. इस निबंध को अपनी कापी में उतार लो 3. पार ले जाना 4. पहली वस्तु अलग करना 5. निछावर करना 6. ऋण, चंदा आदि चुकाना 7. विष, ज्वर दूर करना 8. तबला, ढोलक आदि बाजों के कसाव को ढीला करना 9. अर्क, इत्र बनाना।

उतारा *पुं.* (तद्.) सामान्य लोकाचार के अनुसार रोग या प्रेतबाधा की निवृत्ति के लिए पीड़ित व्यक्ति पर कोई चीज वार कर चौराहे आदि पर रख देना।

उतारू *वि.* (देश.) उद्यत, आमादा।

उतावली *स्त्री.* (तद्.) जल्दबाजी, अधीरता प्रयो. सोच-समझ कर ही काम शुरू करे, उतावली से काम बिगड़ भी सकता है।

उत्कंठा *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रबल इच्छा 2. किसी कार्य को झटपट कर लेने की इच्छा 3. रस के एक संचारी भाव का नाम 4. उत्सुकता।

उत्कंठित *वि.* (तत्.) उत्सुक, उत्साहित, उत्कंठा युक्त प्रयो. श्री कृष्ण के आगमन के समाचार से गोपियाँ उत्कंठित होकर कुंज भवन में श्रीकृष्ण के आने की प्रतीक्षा करने लगीं।

उत्कंठिता *स्त्री.* (तत्.) प्रिय मिलन को बेचैन नायिका, प्रिय से निर्धारित स्थान पर न मिलने पर झगड़ने वाली नायिका, एक नायिका भेद।

उत्कट *वि.* (तत्.) 1. तीव्र, प्रबल 2. श्रेष्ठ 3. उग्र।

उत्कर्ण *वि.* (तत्.) जो सुनने के लिए कान खड़े किए हुए हो, सुनने को उत्सुक।

उत्कर्ष *पुं.* (तत्.) 1. उन्नति, समृद् धि 2. उत्कृष्टता, श्रेष्ठता 3. ऊपर खींचना विलो. अपकर्ष।

उत्कर्षक *वि.* (तत्.) उत्कर्ष की ओर ले जाने वाला, आगे बढ़ाने वाला।

उत्कल *पुं.* (तत्.) ओड़िशा राज्य या क्षेत्र का प्राचीन नाम।

उत्कलिका *स्त्री.* (तत्.) 1. कली 2. तरंग 3. उत्कंठा 4. विकलता।

उत्कलित *वि.* (तत्.) 1. उन्नतिशील, विकसित 2. बंधनहीन 3. खिला हुआ।

उत्कीर्ण *वि.* (तत्.) 1. उकेरा हुआ, खुदा हुआ, लिखा हुआ प्रयो. शिला पर उत्कीर्ण अशोक का संदेश राष्ट्रीय संग्रहालय में प्रदर्शित है।

उत्कीर्ण मुखपृष्ठ *पुं.* (तत्.) पुस्त. पुस्तक का वह ऊपरी पृष्ठ जो किसी अलंकृत रूपाकृति (डिजाइन) में उकेरा जैसा लगे।

उत्कीर्ण लेख *पुं.* (तत्.) इति. अभिलेख जिसे धातु, पत्थर, ईंट आदि के धरातल पर उकेरा गया हो। inscription

उत्कृष्ट *वि.* (तत्.) 1. उत्तम, अच्छे से अच्छा, श्रेष्ठ।

उत्कृष्टता *स्त्री.* (तत्.) बड़ाई, बड़प्पन, उत्तमता, श्रेष्ठता।

उत्केंद्र *वि.* (तत्.) गणि. 1. भिन्न केंद्र वाला 2. केंद्र से हटा हुआ। eccentric

उत्केंद्रता *स्त्री.* (तत्.) गणि. शांकव की नाभि से किसी बिंदु की दूरी और निचला की दूरी से इस बिंदु का अनुपात। eccentricity

उत्कोच *पुं.* (तत्.) घूस, रिश्वत।

उत्क्रम *पुं.* (तत्.) 1. उलटा क्रम, क्रम उलट जाने का भाव 2. जिसका क्रम उलट गया हो।

उत्क्रांति *स्त्री.* (तत्.) 1. क्रमश; उत्तमता और पूर्णता की ओर बढ़ती हुई प्रवृत्ति 2. सीमा का उल्लंघन।

उत्क्षिप्त *वि.* (तत्.) 1. ऊपर उछाला हुआ, ऊपर फेंका हुआ 2. भाषा. वे व्यंजन जिनके उच्चारण में पहले जिह्वा की नोक को पीछे की ओर मोड़कर और फिर से कठोर तालु पर प्रहार किया जाता है हिंदी में 'ड़' और 'ढ़' व्यंजन 2. ऊपर उछाली जाने वाली वस्तु।

उत्क्षेप *पुं.* (तत्.) 1. ऊपर फेंकना, उछालना 2. ऊपर उछाली जाने वाली वस्तु 3. भेजना 4. परित्याग 5. कनपटी के ऊपर का सिर का भाग 6. वमन 7. उद्वेलन प्रयो. अपने मानसिक उत्क्षेप का कारण तो आप से निवेदन कर ही चुकी हूँ।

उत्क्षेपण *पुं.* (तत्.) 1. ऊपर की ओर फेंकना 2. चुराना, चोरी 3. मूसल 4. सूप।

उत्खनन *पुं.* (तत्.) 1. खोदने की क्रिया, खोदना, खनना, गड़ी वस्तु को खोदकर बाहर निकालना

2. पुरा. मानव संस्कृति के उद्‌भव और विकास के अध्ययन के लिए भूमि के नीचे या टीलों के अंदर दबे पुरावशेषों को खोदकर बाहर निकालना और उन्हें व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करना।

उत्तप्त *वि.* (तत्.) 1. खूब तपा हुआ, गर्म, जला हुआ 2. क्रोधित 3. दुखी, संतप्त।

उत्तम *वि.* (तत्.) श्रेष्ठ, सबसे अच्छा, पुं. राजा उत्तानपाद का पुत्र, ध्रुव का सौतेला भाई।

उत्तम पुरुष *पुं.* (तत्.) पुरुषवाचक सर्वनाम की वह व्याकरणिक कोटि जिसमें वक्ता या लेखक अपनी ओर संकेत करता है, जैसे- 'मैं, हम'।

उत्तमता *स्त्री.* (तत्.) श्रेष्ठता, खूबी, उत्कृष्टता।

उत्तमर्ण *वि.* (तत्.) उधार देने वाला, साहूकार, लेनदार विलो. अधमर्ण क्रेडिट। credit

उत्तमांग *पुं.* (तत्.) सिर, मस्तक। प्रयो. भगवान त्रिलोचन (शिव) के उत्तमांग से झरने वाली गंगा की धारा।

उत्तमा *वि.* (तत्.) 1. अच्छी, नेक स्त्री 2. नायिका का एक भेद 3. प्रथमा तथा मध्यमा के बाद का उच्चतर पाठ्यक्रम या परीक्षा।

उत्तमोत्तम *वि.* (तत्.) अच्छे से अच्छा, सर्वश्रेष्ठ।

उत्तर *पुं.* (तत्.) 1. दक्षिण के विपरीत दिशा 2. किसी प्रश्न का जवाब समाधान या हल 3. प्रतिकार विलो. पिछला, बाद का, अधिक अच्छा।

उत्तर अयनांत *पुं.* (तत्.) पृथ्वी के क्रांतिवृत्त का वह बिंदु जिस पर सूर्य प्रतिवर्ष 21/22 जून को पहुँच जाता है और जहाँ सूर्य की उत्तर क्रांति अधिकतम होती है, कर्क संक्रांति।

उत्तरजीविता *स्त्री.* (तत्.) किसी व्यक्ति (या जीव) की अन्य व्यक्ति/जीव की तुलना में अधिक समय तक जीवित रहने की स्थिति।

उत्तरजीवी *वि.* (तत्.) प्रशा. वाणि. 1. बाद में जीवित रह जाने वाला हिताधिकारी उदा. बैंक में संयुक्त खाता होने पर खातेदार की मृत्यु के बाद दूसरा खातेदार, किसी भीषण दुर्घटना में जीवित बचा रहने वाले व्यक्ति। surviving

उत्तरण *पुं.* (तत्.) 1. पार होना 2. उतरना 3. पानी से ऊपर निकलना।

उत्तरदायक *वि.* (तत्.) 1. जवाब देने वाला 2. जिम्मेदार, उत्तरदायी।

उत्तरदायित्व *पुं.* (तत्.) किसी काम को ठीक से संपन्न करने या उसे न कर पाने या उसके न हो पाने की जिम्मेदारी या जवाब देही।

उत्तरदायी *वि.* (तत्.) वह व्यक्ति जिसे कार्य के होने, न होने, ठीक से न होने के कारणों का विवरण देना पड़े, ऐसा करना जिसका उत्तरदायित्व हो, उत्तर देने वाला, जिम्मेदार, जवाब देह। responsible

उत्तर दिनांकित *वि.* (तत्.) प्रशा.वाणि. (ऐसा प्रपत्र) जिस पर बाद की तारीख पडी हो, post dated विलो. पूर्वदिनांकित।

उत्तरपक्ष *पुं.* (तत्.) शास्त्रार्थ में पूर्व पक्ष अर्थात् पहले किए हुए निरूपण का खंडन करने वाला या शंकाओं, जिज्ञासाओं का समाधान करने वाला पक्ष विलो. पूर्वपक्ष।

उत्तरपट *वि.* (तत्.) शरीर के ऊपरी हिस्से पर ओढ़ने की चादर, दुपट्टा, उत्तरीय।

उत्तरपद *पुं.* (तत्.) किसी समस्त पद में बाद का या अंतिम शब्द जैसे 'नागमणि' में 'मणि'।

उत्तरभावी *वि.* (तत्.) बाद में होने वाला।

उत्तरभाव्य *वि.* (तत्.) पश्चाद्वर्ती, बाद में होने वाला। subsequent

उत्तरभोग *पुं.* (तत्.) किसी एक व्यक्ति द्वारा भोग किए जा चुकने पर उसके बाद दूसरे व्यक्ति का (स्वामी बनकर) भोगने का अधिकार।

उत्तरभोगी *वि./पुं.* (तत्.) पूर्वभोगी का हित समाप्त हो जाने पर या उसके उत्तराधिकारी के रूप में भोगाधिकार पाने वाला।

उत्तरवर्तन *पुं.* (तत्.) समय की दृष्टि से बाद में होना। succession

उत्त्रवर्ती *वि.* (तत्.) किसी व्यक्ति, घटना या स्थिति के बाद का।

उत्तरवर्ती निर्धारण वर्ष *पुं.* (तत्.) जिस वर्ग की आय का निर्धारण किया जाए, उससे अगला वित्तीय वर्ष। successive assessment year

उत्तरवस्त्र *वि.* (तत्.) 1. ऊपर पहनने का वस्त्र, कंधे और वक्षस्थल को ढकने वाला वस्त्र 2. दुपट् दुपट्टा, उत्तरीय।

उत्तरवादी *पुं.* (तत्.) प्रतिवादी, मद्दालेह

उत्तर सेवा *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी उत्पाद की खरीद के बाद क्रेता/उपभोक्ता को विक्रेता या निर्माता कंपनी की ओर से एक निश्चित समय तक उत्पाद के रख-रखाव के निमित्त दी जाने वाली सेवा, ब्रिक्री-पश्चात् सेवा 2. उपचार के बाद रोगी/सेवार्थी को दी जाने वाली सेवाएँ। after case

उत्तरा *स्त्री.* (तत्.) 1. उत्तर दिशा 2. एक नक्षत्र उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, उत्तराफाल्गुनी 3. राजा विराट की कन्या, अभिमन्यु की पत्नी।

उत्तराखंड *पुं.* (तत्.) उत्तरांचल, भारत का एक राज्य जो उत्तर प्रदेश के उत्तर में स्थित है और जिसकी राजधानी देहरादून है।

उत्तराधिकार *पु.* (तत्.) 1. विधि. किसी व्यक्ति के मरने के बाद उसकी संपत्ति, पद या स्थान प्राप्त करने का अधिकार 2. राज. राजकीय पद, संपत्ति या राज्याधिकार आदि के स्वामित्व संबंधी हस्तांतरण की वैध व्यवस्था जिसके अनुसार एक व्यक्ति के बाद दूसरे व्यक्ति को अधिकार प्राप्त होता है, विरासत। inheritance, succession

उत्तराधिकारी *वि.* (तत्.) 1. विधि. वह व्यक्ति जो किसी के मरने के बाद उसकी संपत्ति का मालिक हो, वारिस 2. राज. पदस्थ व्यक्ति के हट जाने से उस पद या स्थान को पाने का अधिकारी। inheritance succession

उत्तरापेक्षी *वि.* (तत्.) अपने कथन का जवाब चाहने वाला

उत्तरायण *वि.* (तत्.) खगो. 1. मकर रेखा से उत्तर दिशा में कर्क रेखा की ओर सूर्य की गति 2. छह महीने का वह समय जब सूर्य कर्क रेखा से उत्तर की ओर बढ़ता जाता है।

उत्तरार्ध *पुं.* (तत्.) 1. बाद का आधा (भाग), अंत की ओर का अर्ध भाग 2. देह का कमर से ऊपर का भाग विलो. पूर्वार्द्ध जैसे- 1. बाणभट्ट ने कादंबरी का पूर्वार्ध लिखा, उत्तरार्ध उनके पुत्र ने पूरा किया।

उत्तरी *वि.* (तत्.) उत्तर दिशा से संबंधित, उत्तर का विलो. दक्षिणी।

उत्तरी ध्रुव *वि.* (तत्.) भूगो. 1. पृथ्वी की काल्पनिक धुरी का ऊपरी (शीर्ष) बिंदु स्थल, पृथ्वी का उत्तरी सिरा 2. उत्तरी आकाश का वह बिंदु जहाँ तारे परिक्रमा करते प्रतीत होते हैं।

उत्तरीय *पुं.* (तत्.) 1. दुपट्टा, ओढ़नी 2. एक प्रकार का सन जो मजबूत और मुलायम होता है *वि.* 1. ऊपर का 2. उत्तर दिशा का।

उत्तरोत्तर *क्रि.वि.* (तत्.) क्रमशः।

उत्तल *वि.* (तत्.) बीच में उठी हुई वक्र सतह, उठा हुआ तल विलो. अवतल। convex

उत्तलता *स्त्री* (तत्.) 1. खेल. स्कीइंग में स्की के तल का आगे से पीछे तक का उभार (जिससे उसके तल में लचीलापन आ जाता है और बर्फ पर फिसलते समय खिलाड़ी उस पर नियंत्रण रख पाता है) 2. उत्तल होने का भाव दे. उत्तल। convexity

उत्तान *वि.* (तत्.) 1. ताना हुआ, फैलाया हुआ 2. पीठ के बल चित्त लेटा हुआ 3. स्पष्ट (वक्ता)।

उत्तानपाद *वि.* (तत्.) 1. पीठ के बल लेटा हुआ व्यक्ति जिसकी टाँगें फैली हो 2. भक्त ध्रुव के पिता का नाम।

उत्ताप *वि.* (तत्.) 1. तीव्रगर्मी, तपन 2. कष्ट 3. दुःख 4. क्षोभ।

उत्तापमापी *वि.* (तत्.) यां.इंजी. भट्ठी अथवा पिघली धातु जैसे पदार्थों के ऊँचे ताप को मापने वाला यंत्र।

उत्तापित *वि.* (तत्.) 1. गर्म, संतापित 2. दुखी।

उत्ताल *वि.* (तत्.) 1. अशांत, उग्र 2. प्रबल 3. ऊँचा 4. कठिन।

उत्तीर्ण *वि.* (तत्.) 1. पार गया हुआ 2. मुक्त 3. परीक्षा में सफल विलो. अनुत्तीर्ण।

उत्तुंग *वि.* (तत्.) 1. बहुत ऊँचा 2. अत्युन्नत प्रयो. हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छाँह-कामायनी।

उत्तेजक *वि.* (तत्.) 1. उभाड़नेवाला, प्रेरक 2. वेगों को तीव्र करने वाला।

उत्तेजन *पुं.* (तत्.) 1. उभारना, भडक़ाना 2. बढ़ावा देना, तेज करना (धार आदि)

उत्तेजना *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रेरणा, बढ़ावा 2. भड़काना 3. वेगों को तीव्र करने की क्रिया 4. सनसनी, घबराहट, आक्रोश प्रयो. पुलिस के डंडों से कई लोग घायल हो गए तो कुछ लोगों ने उत्तेजना में आकर नारे लगाए।

उत्तेजनाजनक *वि.* (तत्.) 1. भड़कने वाला 2. क्रोध उत्पन्न करने वाला।

उत्तेजित *वि.* (तत्.) 1. क्षुब्ध 2. प्रेरित प्रोत्साहित।

उत्तोलक *वि.* (तत्.) यां.इंजी. किसी स्थिर अक्ष पर घूम सकने वाली लकड़ी, धातु या किसी अन्य पदार्थ से बने दंड वाली ऐसी सरल युक्ति जिसके द्वारा एक स्थान पर अपेक्षाकृत कम बल बल लगाकर दूसरे स्थान पर स्थित अधिक भार वाली वस्तु को उठाने या सरकाने का काम लिया जाता है। lever, crane

उत्तोलन *पुं.* (तत्.) 1. ऊपर को उठाना, ऊँचा करना 2. भारोत्तोलन में प्रतियोगी द्वारा भार उठाना 3. झंडा फहराना, झंडे को लहराना 4. वॉलीबॉल में एक नियमोल्लंघन जिसमें खिलाड़ी गेंद को क्षण भर उँगलियों में ठहरने देता है।

उत्त्यक्त *वि.* (तत्.) 1. छोड़ा हुआ, परित्यक्त 2. उछाला हुआ 3. अनासक्त।

उत्थान *पुं.* (तत्.) 1. उठने की क्रिया 2. उठान 3. उन्नति 4. जागना विलो. पतन प्रयो. जीवन की दोनों स्थितियाँ, उत्थान और पतन साथ-साथ चलती हैं।

उत्थापक *वि.* (तत्.) 1. उठाने या जगाने या उभारने वाला 2. प्रेरक 3. यां.इंजी. व्यक्तियों या सामान को ऊपर या नीचे की मंजिल पर पहुंचाने वाली यांत्रिक युक्ति जो प्रकोष्ठ या वेदिका के आकार की होती है और एक कूपक के भीतर ऊपर-नीचे आती-जाती है। lift, elevator

उत्थापन *वि.* (तत्.) 1. उठाना 2. जगाना 3. उभारना 4. प्रेरित करना 5. वाणि. अभीष्ट राशि या अनुक्रिया प्राप्त करना।

उत्थापित्र *वि.* (तत्.) यां.इंजी. लिफ्ट, एलिवेटर दे. उत्थापक।

उत्थित *वि.* (तत्.) 1. उठा हुआ 2. रक्षा किया हुआ 3. उत्पन्न, घटित होने वाला।

उत्पट *वि.* (तत्.) 1. पेड़ के तने से निकलने वाला लसदार रस, गोंद 2. दुपट्टा।

उत्पतन *वि.* (तत्.) 1. ऊपर उड़ना 2. ऊपर उठना 3. कूदना 4. चढ़ना 5. उछलना।

उत्पत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. उद्गम, उद्भव 2. सृष्टि, आरंभ, शुरूआत 3. उत्पादन विलो. विनाश।

उत्पथ *पुं.* (तत्.) कुमार्ग, बुरा या गलत रास्ता वि. भटका हुआ (व्यक्ति)।

उत्पन्न *वि.* (तत्.) 1. पैदा, जन्मा हुआ 2. उत्पादित।

उत्परिवर्तन *वि.* (तत्.) जीव. संजीन (जीनोम) के डी. एन. ए के घटक पदार्थों के अनुक्रम में परिवर्तन, जो वंशानुक्रम में व्यापक विविधता उत्पन्न कर देते हैं।

उत्परिवर्तनवाद *वि.* (तत्.) जीव. डॉ. व्रीज द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत जिसके अनुसार उत्परिवर्तनों के प्राकृतिक वरण से विकास होता है।

उत्पल *पुं.* (तत्.) 1. कमल 2. नील कमल।

उत्पलिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. कमल पुष्पों का समूह 2. कमल का पुष्पित पौधा।

उत्पाटक *वि.* (तत्.) उखाड़ने वाला।

उत्पाटन *पु.* (तत्.) जड़ से नष्ट करने की क्रिया, जड़ से उखाड़ना।

उत्पात *पुं.* (तत्.) 1. कष्ट पहुँचाने वाली आकस्मिक (प्राकृतिक) घटना 2. अशांति 3. दंगा 4 शरारत।

उत्पाती *वि.* (तत्.) 1. उत्पात मचाने वाला, शरारती 2. दंगा करनेवाला, फसादी, बखेड़िया।

उत्पाद *वि.* (तत्.) जन्म पुं. उत्पन्न की हुई वस्तु, तैयार माल। product

उत्पादक *वि.* (तत्.) उत्पन्न करने वाला, उत्पादन करने वाला।

उत्पादकता *स्त्री.* (तत्.) अर्थ. उत्पादन संबंधी कार्यक्षमता या मात्रा, अधिकाधिक वस्तुओं का उत्पादन करने के उद्देश्य से व्यावसायिक उत्पादन के साधनों (श्रम, पूँजी, तकनीक आदि) के कुशलतापूर्वक उपयोग से उत्पादन करने की स्थिति। productivity

उत्पादन *पुं.* (तत्.) 1. उत्पन्न करने की क्रिया , उपजाना 2. (माल) तैयार करना 3. तैयार किया गया माल/उत्पाद। production

उत्पादन शुल्क *पुं.* (तत्.) गणि. किसी वस्तु के निर्माण, बिक्री या उपभोग पर देश में लगने वाला कर या शुल्क, आबकारी शुल्क।

उत्पादित *वि.* (तत्.) उत्पन्न किया हुआ, उपजाया हुआ, पैदा किया हुआ, तैयार किया हुआ।

उत्पादिता *स्त्री.* (तत्.) दे. उत्पादकता।

उत्पीड़क *वि.* (तत्.) 1. पीड़ा पहुँचाने वाला, त्रासद, सताने वाला 2. दबाने वाला।

उत्पीड़न *वि.* (तत्.) 1. पीड़ा पहुँचाना 2. अत्याचार करना 3. दबाना।

उत्पीड़ित *वि.* (तत्.) दबाया या सताया हुआ, मजलूम।

उत्पुच्छ *वि.* (तत्.) वह (पशु) जिसकी पूँछ ऊपर उठी हो।

उत्पुलक *पुं.* (तत्.) 1. रोमांच 2. प्रसन्नता।

उत्प्रवास *पुं.* (तत्.) प्रशा. विदेश में स्थायी रूप से रहने के लिए जाना, प्रव्रजन।

उत्प्रवासी *वि.* (तत्.) प्रशा. स्थायी रूप से रहने के विचार से स्वदेश छोडक़र अन्य किसी देश में जाने वाला या जा बसा व्यक्ति immigrant विलो. आप्रवासी।

उत्प्रवाही *वि.* (तत्.) अंदर से बाहर या ऊपर की ओर निकलने वाला।

उत्प्रवाही द्रव्य *वि.* (तत्.) वाणि. अच्छी ब्याज दर और निवेश की सुरक्षा से आकर्षित होकर देश-विदेश से आनेवाले प्रचुर धन का प्रवाह। hot money

उत्प्रसव *पुं.* (तत्.) निर्धारित समय से पूर्व प्रसव हो जाना, गर्भपात।

उत्प्रेक्षा *स्त्री.* (तत्.) 1. उद्भावना, आरोप 2. एक अर्थालंकार जिसमें सादृश्य के कारण उपमेय में उपमान की प्रतीति होती है।

उत्प्रेरक *वि.* (तत्.) शा.अर्थ उत्प्रेरित करने वाला। रसा. (वह पदार्थ) जो अपनी उपस्थिति से किसी रसायनिक क्रिया की गति बढ़ा देते हैं,

किंतु इस प्रक्रिया में स्वयं उस पदार्थ में कोई परिवर्तन नहीं आता दे. उत्प्रेरण।

उत्प्रेरण *वि.* (तत्.) रसा. उत्प्रेरक द्वारा किसी रासायनिक या जैव रासायनिक अभिक्रिया को त्वरित करने की क्रिया।

उत्प्रेरणा *स्त्री.* (तत्.) कार्य जिसके फलस्वरूप कोई कोई कुछ करने को उद्यत हो जाए। inducement inducement

उत्प्लावकता *स्त्री.* (तत्.) भौ,रसा. 1. ठोस पदार्थ के तैरते रहने का गुण, तरणशीलता 2. द्रव पदार्थ का वह गुण जो किसी वस्तु को द्रव की सतह पर तैरते हुए रखता है 3. किसी पिंड को पूर्णतः या अंशतः किसी तरल में डुबोए जाने पर उसके भार में हुई आभासी कमी।

उत्फुल्ल *वि.* (तत्.) 1. विकसित, फूला हुआ 2. प्रफुल्ल-चित्त (व्यक्ति)।

उत्फुल्लता *स्त्री.* (तत्.) प्रसन्नता से फूलना, प्रसन्नचित्तता प्रयो. रानी का चेहरा खिला नहीं। सहज उत्फुल्लता लौटी नहीं -चारु चंद्रलेख; ह.प्र.द्विवेदी।

उत्फुल्लन *पुं.* (तत्.) 1. फूलना, खिलना, विकसित होना, अतिप्रसन्न होना। 2. रसा. वायु में खुला रखे होने पर क्रिस्टलों से क्रिस्टलन जल का ह्रास हो जाने के फलस्वरूप क्रिस्टलों का क्रिस्टलीय चूर्ण में परिवर्तित हो जाना।

उत्संग *पुं.* (तत्.) 1. गोद, अंक 2. संपर्क, योग 3. शिखर, चोटी 4. भवन की छत 5. बगल, पार्श्व 6. नितंब के ऊपर का भाग।

उत्संगित *वि.* (तत्.) 1. गोद में लिया हुआ 2. आलिंगित 3. संपर्क में लाया हुआ।

उत्संस्करण *वि.* (तत्.) भिन्न संस्कार या संस्कृति ग्रहण करना, अपने वर्ग से भिन्न किसी वर्ग (जाति, कबीला आदि) की संस्कृति को ग्रहण करना, पर-संस्कृति-ग्रहण।

उत्स *पु.* (तत्.) 1. स्रोत, सोता 2. झरना 3. जलयुक्त स्थान 4. मूल स्रोत।

उत्सन्न *वि.* (तत्.) 1. उच्छिन्न, उखाड़ा हुआ, नष्ट 2. पूरा किया हुआ 3. ऊपर उठा हुआ 4. क्षीण 5. अभिशप्त।

उत्सर्ग *पुं.* (तत्.) 1. किसी उद्देश्य से त्याग 2. बलिदान, बंधन से मोचन 3. मुक्त करना जैसे- वृषोत्सर्ग 4. दान 5. अपान-वायु या मल का त्याग 6. समापन (अध्ययन आदि का) 7. साधारण नियम (अर्थात् अपवाद का उल्टा)।

उत्सर्गी *वि.* (तत्.) उत्सर्ग करने वाला।

उत्सर्जन *वि.* (तत्.) 1. दे. उत्सर्ग। 2. *वि.* (तत्.) जीव. जीव कोशिका से वर्ज्य पदार्थों का बाहर निकाल दिया जाना जैसे- श्वसन से कार्बन-डाईआक्साइड और मूत्र से नाइट्रोजन का बाहर निकलना 3. भौ. किसी पृष्ठ से प्रकाश या विकिरण उत्पन्न होकर या इलेक्ट्रान का मुक्त होकर बाहर निकलना।

उत्सर्जन तंत्र *वि.* (तत्.) प्राणि. अंगों, अवयवों का समूह जो चयापचय के दौरान बने अवांछित तत्वों को बाहर निकालने में तालमेल करता है।

उत्सर्जित *वि.* (तत्.) छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, उत्सृष्ट।

उत्सर्प *पुं.* (तत्.) 1. ऊपर चढ़ना 2. उठना 3. फैलना।

उत्सर्पण *पुं.* (तत्.) दे. उत्सर्प।

उत्सर्पिणी *स्त्री.* (तत्.) (जैन) मत के अनुसार काल का एक विभाग जिसमें आयु, बल आदि बढ़ता रहता है।

उत्सर्पी *वि.* (तत्.) 1. ऊपर उठने या चढ़ने वाला 2. अत्युत्तम।

उत्सव *पुं.* (तत्.) 1. मंगल-कार्य 2. आनंदजनक कार्य 3. प्रसन्नता 4. समारोह, जलसा 5. त्योहार।

उत्साद *पुं.* (तत्.) विध्वंस, नाश, क्षय।

उत्सादक *वि.* (तत्.) विध्वंसकारी, नाशकारी।

उत्सादन *पुं.* (तत्.) 1. किसी विद्यमान प्रथा, परंपरा, संस्था आदि का समाप्त किया जाना 2. विध्वंस करना, नाश करना 3. बाधा डालना।

उत्सादित *वि.* (तत्.) 1. जिसका उत्सादन किया गया हो 2. साफ किया हुआ 3. उठाया हुआ।

उत्सारक *पुं.* (तत्.) द्वारपाल, पहरेदार।

उत्सारण *पु.* (तत्.) 1. हटाने की क्रिया, दूर करना 2. अतिथि का स्वागत 3. सवारी आदि से उतरने में अतिथि की सहायता।

उत्साह *पुं* (तत्.) 1. उमंग, हौसला, उछाह, जोश 2. साहस, हिम्मत 3. वीर रस का स्थायी भाव 4. उद्यम, चेष्टा।

उत्साहक *वि.* (तत्.) 1. उत्साहित करने वाला 2. कर्मठ, क्रियाशील।

उत्साहन *पुं.* (तत्.) 1. उद्यम 2. अध्यवसाय 3. उत्साह देने की क्रिया।

उत्साहवर्धन *वि.* (तत्.) 1. उत्साह की वृद्धि करना 2. शक्ति का अधिक हो जाना प्रयो. पुरस्कार उत्साहवर्धन का प्रबल साधन है।

उत्साही *वि.* (तत्.) 1. उत्साहयुक्त, उमंगवाला 2. उद्यमी 3. अध्यवसायी।

उत्सिक्त *वि.* (तत्.) 1. प्लावित 2. अभिषिक्त 3. चंचल चित्त 4. घमंडी, क्रोधी।

उत्सुक *वि.* (तत्.) 1. उत्कंठित, अत्यंत इच्छुक 2. चाही हुई बात में देर न सह सकने वाला 3. बहुत चाहने वाला।

उत्सुकता *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रबल इच्छा, किसी कार्य कार्य में देरी न सहकर उसमें तत्पर होना 2. अधीरता, व्याकुलता, बेचैनी 3. उत्कंठा 4. रस का एक संचारी भाव 5. जिज्ञासा।

उत्सृष्ट *वि.* (तत्.) 1. उत्सर्ग किया हुआ, परित्यक्त 2. उँड़ेला हुआ 3. प्रयोग में लाया हुआ।

उत्सृष्टि *स्त्री.* (तत्.) परित्याग।

उत्सेक *वि.* (तत्.) 1. छिड़कना 2. प्लावित करना 3. उफनाकर बहना 4. घमंड, दर्प।

उत्सेकी *वि.* (तत्.) 1. डुबाने वाला 2. ऊपर से बहने वाला 3. घमंडी।

उत्स्रुतक कूप *पुं.* (तत्.) भूवि. किसी बेसिन में जलभृत तक खोदा गया कुआँ जिसमें पानी स्थैतिक दाब के कारण ऊपर की ओर वेग से निकल आता है और निरंतर बहता रहता है। artesian well

उथराना *अ.क्रि.* (देश.) उन्नत होना, थोड़ा-सा उठना।

उथलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. उलटना 2. डगमगाना।

उथल-पुथल *स्त्री* (तद्.) 1. उलट-पलट 2. भारी उलट-फेर 3. विप्लव 4. हलचल।

उथला *वि.* (तद्.) कम गहरा, छिछला, ओछा।

उदंचित *वि.* (तत्.) 1. उछाला हुआ 2. ऊपर उठाया हुआ, ऊपर या उत्तर की ओर घूमा हुआ 3. प्रतिध्वनित।

उदंत *पुं.* (तत्.) 1. वार्ता, वृत्तांत, समाचार विवरण 2. साधु, सज्जन 3. वह जिसकी यज्ञ द्वारा जीविका चले 4. वह जो व्यापार द्वारा जीविका प्राप्त करता हो *वि.* बिना दाँत वाला।

उदंतक *पुं.* (तत्.) दे. उदंत।

उदक *वि.* (तत्.) जल, पानी।

उदक क्रिया *स्त्री.* (तत्.) पितरों के निमित्त तिल और जल देना, तिलांजलि, पितृ तर्पण।

उदग्र *वि.* (तत्.) 1. ऊँचा 2. विशाल, बड़ा 3. उद्दंड 4. प्रबल, तीव्र 5. ऊर्ध्वाधर, खड़ा।

उदजन *वि.* (तत्.) एक गंधहीन, वर्णहीन, अदृश्य गैस जिसके ऑक्सीजन के संपर्क से जल बन जाता है। hydrogen

उदधि *पुं.* (तत्.) 1. समुद्र 2. मेघ 3. झील, जलाशय 4. घड़ा।

उदपान *वि.* (तत्.) 1. कमंडल 2. कुआँ।

उदप्लव *पुं.* (तत्.) जल प्लावन, जलप्रलय।

उदबम *पुं.* (तत्.) हाइड्रोजन बम नामक संहारक बम।

उदभूमि *स्त्री.* (तत्.) सिंचाई वाली उपजाऊ जमीन, नदी के पास वाली भूमि।

उदय *पुं.* (तत्.) 1. ऊपर आना, निकलना, प्रकट होना 2. वृद्धि, उन्नति, बढ़ती।

उदय-गिरि *पुं.* (तत्.) पूर्व दिशा का एक कल्पित पर्वत जिसके पीछे से सूर्य का उगना माना जाता है, उदयाचल।

उदयास्त *पु.* (तत्.) 1. उदय और अस्त होने की क्रिया 2. उत्कर्ष-अपकर्ष, उत्थान और पतन 3. बनना-बिगड़ना।

उदरंभरि *वि.* (तत्.) 1. पेटु, केवल अपनी चिंता करने वाला उदा. उदरंभरि बन अनात्म बन गए- मुक्तिबोध 2. अपने पेट का भरण-पोषण करने वाला 3. स्वार्थी।

उदर *पुं.* (तत्.) 1. आयु./जंतु. प्राणियों में वक्ष और श्रोणि के बीच का वह भाग जिसके अंदर जठर, आँतें, वृक्क, मूत्राशय, गर्भाशय आदि होते है 2. पेट, जठर 3. मध्य भाग, पेटा, वस्तु का भीतरी भाग मुहा. उदर जिलाना-पेट पालना उदर भरना-पेट भरना।

उदरस्थ *वि.* (तत्.) 1. खाया हुआ, भक्षित 2. हजम किया हुआ, पेट के अंदर पहुँचाया हुआ।

उदराग्नि *स्त्री* (तत्.) जठराग्नि, पाचन-शक्ति।

उदरिक *वि.* (तत्.) 1. बड़े पेटवाला, तुंदिल मोटा, स्थूलकाय 2. बहुत खाने वाला, पेटू।

उदरिणी *स्त्री.* (तत्.) वह स्त्री जो गर्भवती हो, गर्भिणी, अंतर्वर्ती, अंतर्वर्तिनी, अंतर्वत्नी।

उदरित *वि.* (तत्.) दे. उदरिक।

उदरीय *वि.* (तत्.) पेट से संबंधित, उदर का, जैसे- उदरीय व्याधि।

उदरीय प्रतिवर्त *पुं.* (तत्.) अचानक किसी कारणवश उदर की मांसपेशियों में हलचल हो जाना, मांसपेशियों का सिकुड़ जाना, उनमें ऐंठन आ जाना। abdominal reflex

उदरु/उंदुर *पुं.* (तत्.) चूहा।

उदर्य *वि.* (तत्.) दे. उदरीय *पुं.* पेट में स्थित अंग आदि।

उदवास *पुं.* (तत्.) 1. (तप के लिए) एक निश्चित अवधि तक जल में निरंतर खड़े रहना 2. जल के बीच में स्थित कोई आवास या महल 3. जलस्थान के अत्यंत निकट कोई आवास-स्थान।

उदात्त *वि.* (तत्.) 1. ऊँचा, कुलीन 2. दयावान, कृपालु, उदार 2. श्रेष्ठ, विशद 3. ऊँचे स्वर से किया उच्चारण *पुं.* (तत्.) 1. वेद के स्वरों के उच्चारण का एक भेद जो तालु आदि के ऊपर वाले भाग की सहायता से होता है, उदात्त स्वर, आरोही स्वर 2. साहि. एक काव्यालंकार जिसमें संभाव्य विभूति का बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन किया जाता है।

उदात्तीकरण *पुं.* (तत्.) उदात्त स्वरूप प्रदान करने की क्रिया, अनुभूतियों को मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया से उच्च भूमि पर स्थापित करना। जैसे- घनानंद के काव्य में लौकिक प्रेम का अलौकिक प्रेम में उदात्तीकरण दृष्टिगत होता है।

उदान *पुं.* (तत्.) दर्श. 1. प्राण के पाँच भेदों में से एक जिसका स्थान कंठ और गति हृदय से कंठ तालु तक है 2. वह प्राण वायु जिससे छींकें, डकार आदि आते हैं तु. प्राण, अपान, समान, व्यान।

उदार *वि.* (तत्.) 1. दानशील, दानी 2. सहिष्णु 3. प्रगतिशील विचारों का समर्थक जो रूढ़ियों में सुधार चाहता है।

उदारचरित *वि.* (तत्.) जिसके चित्त या विचारों में संकीर्णता न हो, सभी के विचारों का स्वागत करने वाला।

उदारचेता *वि.* (तत्.) ऊँचे दिल वाला, उदारमना।

उदारता *स्त्री.* (तत्.) दानशीलता, उदार स्वभाव, सहिष्णुता।

उदारतावाद *पुं.* (तत्.) वह मत या सिद्धांत जिसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्र और सुविधायुक्त जीवन जीने का अधिकार होना चाहिए। liberalism

उदारधी *वि.* (तत्.) अत्यंत प्रतिभाशाली, तीक्ष्ण बुद्धिवाला, उदारचेता।

उदारमना *वि.* (तत्.) दे. उदारचित्त।

उदारवाद *पुं.* (तत्.) सत्रहवीं-अठारहवीं शताब्दियों में यूरोप में प्रचलित राज्य के शासक की

निरंकुशता तथा धार्मिक क्षेत्र में पोप की सर्वोच्च सत्ता के विरोध में प्रतिपादित सिद्धांत जिसके अनुसार राज्य का निर्माण व्यक्ति के अधिकारों और उसकी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए होता है, इसलिए सरकार और पोप को आर्थिक/धार्मिक क्षेत्रों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए तुल. नव-उदारवाद। liberalism

उदाराशय *वि.* (तत्.) उत्तम और खुले विचारों वाला।

उदारीकरण *वि.* (तत्.) अर्थ./वाणि. 1. बाजार के नियमों, बंधनों में उदारता 2. किसी उत्पाद, वस्तु आदि को राजनीतिक दखल से मुक्त करना। liberalization

उदारीकृत *वि.* (तत्.) जिसे उदार या सहजग्राह्य बना दिया गया हो, शिथिलीकृत।

उदास *वि.* (तत्.) 1. जिसका मन किसी बात से खिन्न होकर हट गया हो, विरक्त 2. द्वंद्व (सुख-दुख, हानि-लाभ आदि) से निरपेक्ष, तटस्थ 3. दुखी 4. फीका, हल्का, जैसे- उदास रंग।

उदासी *स्त्री* (तत्.) 1. उदास होने का भाव, संजीदगी, खिन्नता 2. दुःख।

उदासीन *वि.* (तत्.) 1. रुचि न लेने वाला 2. विरक्त, तटस्थ 3. झगड़े-बखेड़े से अलग, विपक्ष।

उदासीन कर्म *पुं.* (तत्.) दर्श. 'विहित' एवं 'निषिद्ध' कर्मों के बीच की श्रेणी के कर्म अर्थात वे कर्म जो विहित आवश्यक या निषिद्ध न हों, जैसे- चलना, फिरना, उठना, बैठना आदि।

उदासीनता *स्त्री.* (तत्.) 1. उदासीन होने का भाव, भाव, विरक्ति 2. तटस्थता 3. निरपेक्षता।

उदासीन स्वर *पुं.* (तत्.) भाषा. स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा मध्यवर्ती स्थिति में होती है, अर्थात् न तो उसका पश्च भाग ऊपर उठता है और न अग्रभाग तथा न ही वह मुख में तालु के निकट पहुँचती है और न एकदम नीचे विश्राम मुद्रा में होती है। neutral vowel

उदाहरण *पुं.* (तत्.) 1. किसी वस्तु, सिद्धांत को सिद्ध करने के लिए वैसी ही किसी बात, घटना आदि का उल्लेख, मिसाल, दृष्टांत 2. वर्णन करना, कहना 3. साहि. एक अर्थालंकार जिसमें कोई सामान्य कथन करने के बाद बानगी के तौर पर कोई बात कही जाती है 4. विधि. मिलते-जुलते वाद का निर्णय जो चल रहे वाद के निर्णय के लिए मार्गदर्शक हो सकता है।

उदाहरणस्वरूप *वि.* (तत्.) उदाहरण के रूप में प्रस्तुत *क्रि.वि.* उदाहरण के लिए।

उदाहरणार्थ *क्रि.वि.* (तत्.) दे. उदाहरणस्वरूप।

उदाहार्य *वि.* (तत्.) जिसे उदाहरण या आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया जा सके, उदाहरण-योग्य, उल्लेखनीय।

उदाहृत *वि.* (तत्.) उदाहरण के रूप में प्रस्तुत, उल्लिखित, वर्णित, कथन की पुष्टि के लिए प्रस्तुत (उदाहरण, दृष्टांत, कथन आदि)।

उदित *वि.* (तत्.) 1. प्रकाशित, प्रकट 2. उगा हुआ 3. उत्पन्न प्रयो. चंद्रलेखा के मन में विचित्र भाव उदित और अस्तमित हो रहे थे- चारुचंद्रलेख-ह.प्र.द्विवेदी।

उदित-यौवना *वि.* (तत्.) 1. नवयुवती 2. साहि. मुग्धा नायिका का एक भेद।

उदीची *स्त्री.* (तत्.) उत्तर दिशा।

उदीचीन *वि.* (तत्.) 'उदीची' (उत्तर दिशा) से संबंधित, उत्तरी 2. उत्तर दिशा की ओर गया हुआ, झुका हुआ, मुड़ा हुआ, उत्तर दिशा के विचारों से प्रभावित।

उदीच्य *वि.* (तत्.) 1. उत्तर दिशा का, उत्तर का निवासी 2. सरस्वती नदी के उत्तर-पश्चिम में पड़ने वाला देश।

उदीयमान *वि.* (तत्.) 1. जिसका उदय हो रहा हो 2. उगता हुआ 2. जिसमें आरंभ से ही अच्छी संभावनाएँ दिखाई दें, उभरता हुआ।

उदीरण *पुं.* (तत्.) 1. कथन, बोलना, कहना 2. उच्चारण, उत्पत्ति 3. प्रेरित करना।

उदीरणा *स्त्री.* (तत्.) जैन अपक्व कर्मों का पाचन, कर्मफल की व्यक्तता, *वि.* यह जैन दर्शन की एक विशिष्ट प्रक्रिया है।

उदीर्ण *वि.* (तत्.) 1. उत्पन्न किया हुआ 2. उत्थित 3. घमंडी 4. उत्तेजित 5. उदार।

उदुंबर *पुं.* (तत्.) 1. वट प्रजाति का एक विशालकाय घना वृक्ष जिसमें तने पर ही फल लगते हैं और फल अंजीर के फलों जैसे और दानेदार बीजों से युक्त होते हैं, गूलर का वृक्ष 2. 2. गूलर का फल।

उदोत *पुं.* (तद्.) 1. प्रकाश, शोभा 2. वृद्धि, उदय, उन्नति प्रयो. जन राजवंत, जगन जोगवंत। तिनको उदोत, केहि भाँति होत- रामचंद्रिका।

उद्गत *वि.* (तत्.) 1. ऊपर आया हुआ 2. उत्पन्न उत्पन्न 3. बाहर निकला हुआ।

उद्गता *पुं.* (तत्.) एक विषम वार्णिक छंद।

उद्गति *स्त्री* (तत्.) 1. आरोह, ऊपर जाना 2. उदय उदय 3. वमन।

उद्गम *पुं.* (तत्.) 1. आविर्भाव, जन्म 2. उत्पत्ति स्थान, निकास जैसे- नदी का उद्गम।

उद्गम-केंद्र *पुं.* (तत्.) प्रारंभ या उत्पत्ति का केंद्रीय केंद्रीय बिंदु जैसे- भूकंप का उद्गम केंद्र, स्रोत केंद्र।

उद्गमन *पुं.* (तत्.) उदय होना, प्रकट होना।

उद्गलन *पुं.* (तत्.) कृषि. जुगाली करने वाले पशुओं पशुओं की बिना पचे भोजन को आमाशय से वापस मुँह में लाने की क्रिया। regurgitation

उद्गाता *पुं.* (तत्.) यज्ञ में साम गान करने वाला ऋत्विक तु. होता, अध्वर्यु, ब्रह्मा।

उद्गाथा *स्त्री.* (तत्.) आर्या छंद का एक भेद।

उद्गार *पुं.* (तत्.) 1. अधीरता या आवेश के कारण कारण अचानक व्यक्त हुए (मन के) विचार या भाव, मन की बात 3. उबाल, उफान, वमन, थूक, कफ 4. डकार 5. भूवि. ज्वालामुखी के फटने से लावा, राख आदि का बाहर निकलना।

उद्गारी *वि.* (तत्.) 1. उद्गार करने वाला, उच्चारण उच्चारण करने वाला 2. उगलने वाला 3. डकार लेने वाला 4. बाहर निकालने वाला।

उद्गिरण *पुं.* (तत्.) 1. उद्गार की क्रिया 2. उगलना उगलना 3. डकार लेना 4. थूकना 5. उच्चारण 6. गले की घरघराहट।

उद्गीति *स्त्री.* (तत्.) आर्या छंद का एक भेद विशेष। विशेष।

उद्गीथ *पुं.* (तत्.) 1. ऊँकार, प्रणव 2. सामवेद के के गायन की एक विशिष्ट विधा 3. सामवेद का का उत्तरार्ध 4. सामवेद का गायन *वि.* 1. सामवेद के गायन में सात अवयव होते हैं प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव, निधन, हिंकार और प्रणय 2. यज्ञ में सस्वर उद्गीथ गायक को को 'उद्गाता' कहते हैं।

उद्गीर्ण *वि.* (तत्.) उगला हुआ, (बाहर) निकाला हुआ

उद्गेय *वि.* (तत्.) 1. गाए जाने योग्य 2. जिसका जिसका गायन किया जाना हो।

उद्ग्रहण *पु.* (तत्.) दे. उगाही।

उद्ग्रीव *वि.* (तत्.) जिसकी गर्दन ऊपर उठी हो, उत्कंठ।

उद्घाटक *वि.* (तत्.) उद्घाटन करने वाला, विमोचन विमोचन करने वाला, खोलने वाला।

उद्घाटन *पुं.* (तत्.) 1. किसी विशिष्ट व्यक्ति द्वारा द्वारा किसी भवन, संस्था, समारोह आदि का औपचारिक रूप से आरंभ किया जाना 2. खोलना, उघाड़ना 3. प्रकटन, प्रकाश 4. ऊपर उठाना 5. पर्दा हटाना।

उद्घाटित *वि.* (तत्.) 1. औपचारिक रूप से आरंभ आरंभ किया हुआ 2. खोला हुआ, उघाड़ा हुआ 3. प्रकाशित, प्रकटित 4. उठाया हुआ, उत्तोलित।

उद्घाती *वि.* (तत्.) 1. आघात करने वाला 2. चोट, चोट, धक्का देने वाला।

उद्घात्यक *पुं.* (तत्.) नाट्य. संस्कृत नाटकों में प्रस्तावना का एक प्रकार।

उद्घोष *पुं.* (तत्.) 1. ऊँची आवाज में कहना 2. घोषणा, मुनादी।

उद्घोषक *वि.* (तत्.) उद्घोषणा करने वाला *पुं.* आकाशवाणी, टेलीविजन आदि में इस कार्य के लिए निर्धारित पद। announcer

उद्घोषणा *स्त्री.* (तत्.) प्रशा. सार्वजनिक रूप से और सरकारी तौर पर सब की जानकारी के लिए खुले तौर पर की जाने वाली औपचारिक घोषणा। proclamation

उद्घोषित *वि.* (तत्.) जिसकी उद्घोषणा की गई हो। हो।

उद्दंड *वि.* (तत्.) 1. जिसे दंड मिलने का भय न हो 2. निडर, न दबने वाला, अक्खड़।

उद्दंत *वि.* (तत्.) जिसके दाँत आगे की ओर निकले हों *पुं.* आगे निकला हुआ दाँत।

उद्दापन *वि.* (तत्.) विधि. किसी को डरा-धमकाकर धन आदि देने के लिए विवश करने की क्रिया, जबरन वसूली। extortion

उद्दाम *वि.* (तत्.) 1. बंधनरहित, निरंकुश, उद्दंड 2. असीम, विशाल 3. प्रचंड, उग्र प्रयो. बाढ़ के कारण नदी उद्दाम वेग से बह रही थी।

उद्दिष्ट *वि.* (तत्.) 1. बताया हुआ, इंगित किया हुआ, निर्देशित 2. अभिप्रेत, सोचा हुआ, चाहा हुआ *पुं.* लक्ष्य।

उद्दिष्ट निधि *स्त्री.* (तत्.) प्रशा. उद्देश्य-विशेष के के लिए अलग रखा गया धन। earmarked fund

उद्दीपक *वि.* (तत्.) 1. उद्दीपन करने वाला, उत्तेजित करने वाला 2. प्रज्वलित करने वाला, भूख बढ़ाने वाला 3. मनो./जीव. परिवेश का कोई कारक जो कोशिका, ऊतक या जीव में अनुक्रिया प्रेरित करे। stimulating

उद्दीपन *वि.* (तत्.)1. उद्दीप्त करने वाली क्रिया या भाव 2. मनो./जीव. कोई क्रिया या पदार्थ जो अन्य क्रिया का हेतु बने 3. कोई स्थिति या क्रिया जिसके प्रति अनुक्रिया की जाए stimulus 4. उत्तेजित करना, भड़काना, जगाना 5. जलाना।

उद्दीपन विभाव *पुं.* (तत्.) काव्य. किसी मनोभाव को तीव्र करने वाला विभाव जिसमें आलंबन की चेष्टाएँ और देश-काल का समावेश होता है दे. विभाव तु. आलंबन।

उद्दीप्त *वि.* (तत्.) 1. जगाया, भड़काया हुआ 2. उत्तेजित 3. प्रज्वलित 4. प्रकाशित, चमकीला 5. उत्तेजित।

उद्दीप्ति *स्त्री.* (तत्.) उद्दीप्त होने का भाव दे. 'उद्दीप्त'।

उद्देश *पुं.* (तत्.) 1. निर्देश या संकेत 2. लक्ष्य 3. अभिप्राय 4. न्यायशास्त्र में 'प्रतिज्ञा' 5. ऊँचा ऊँचा स्थल।

उद्देशन *पुं.* (तत्.) दिखलाने, बतलाने, करने की क्रिया।

उद्देशिका *स्त्री.* (तत्.) 1. पुस्त. किसी पुस्तक की की प्रस्तावना, भूमिका या प्राक्कथन 2. विधि. संविधान या किसी विधि (कानून) के औचित्य और विशिष्ट लक्षणों को व्यक्त करने वाला प्रारंभिक कथन।

उद्देश्य *पुं.* (तत्.) 1. वह प्रयोजन या लक्ष्य जिसे ध्यान में रखकर कुछ कहा या किया जाए 2. व्या. व्याकरण में वाक्य का वह भाग जिसके विषय में शेष वाक्य में कथन हो तु. विधेय।

उद्देश्य-अनुबंध *पुं.* (तत्.) व्या. किसी वाक्य में प्रयुक्त वह अनुबंध या पद समूह जो उद्देश्य (कर्ता) पद का विस्तार हो।

उद्देश्यवाद *पुं.* (तत्.) पाश्चात्य दर्शन वह मत या सिद्धांत जिसकी प्रत्येक घटना सोद्देश्य ही होती है। वह उद्देश्य ज्ञात ही हो यह आवश्यक नही।

उद्देष्टा *वि.* (तत्.) 1. कोई लक्ष्य दृष्टि में रखकर काम करने वाला 2. बतलाने वाला, इंगित करने वाला।

उद्धत *वि.* (तत्.) 1. किसी का अदब-लिहाज न करने वाला; उजड्ड, अक्खड़ 2. उत्तेजित 3. प्रगल्भ 4. कठोर।

उद्धत अवज्ञा *स्त्री.* (तत्.) विधि. किसी आदेश, परामर्श आदि की अपमानजनक तरीके से उपेक्षा और अवमानना। defiance

उद्धत-दंडक *पुं.* (तत्.) एक मात्रिक दंडक छंद।

उद्धत राष्ट्रवादी *वि.* (तत्.) राज. वह राष्ट्रवादी व्यक्ति जो स्वभाव से उद्धत या उग्र हो और जो 'शठे शाठ्यम्' की नीति का समर्थक हो।

उद्धतायुध *वि.* (तत्.) 1. वह जिसने हथियार उठा रखा हो 2. युद्ध के लिए सज्ज (वीर)।

उद्धरण *वि.* (तत्.) 1. साहि. अवतरण, किसी व्यक्ति या लेख का दूसरे स्थान पर ज्यों का त्यों रखा जाना 2. पढ़ा हुआ दुहराना 3. कुछ अंश उतारना 4. निकालना 5. उद्धार करना, मुक्ति। quotation

उद्धरण चिह्न *वि.* (तत्.) साहि. किसी वक्ता या लेखक के कथन या किसी रचना के शीर्षक या नाम को ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत करने के लिए अंश के प्रारंभ और अंत में लगने वाले विशेष उपरिलेख चिह्न '.....' 'या"......"। quotation mark

उद्धरणिका *स्त्री.* (तत्.) 1. उद्धरणों का संग्रह या संकलन 2. छोटा उद्धरण।

उद्धव *पुं.* (तत्.) कृष्ण का चाचा तथा सखा।

उद्धर्ष *पुं.* (तत्.) अत्यंत हर्ष का भाव।

उद्धार *वि.* (तत्.) 1. छुटकारा, मुक्ति (जन्म-मरण के बंधन से) 2. ऊपर-उठाना 3. बेकार या व्यर्थ पड़ी वस्तु को सुधार कर फिर से काम में लाने योग्य बनाना 4. ऋण या देनदारी से छुटकारा।

उद्धारक *वि.* (तत्.) उद्धार करने वाला।

उद्धारण *पुं.* (तत्.) 1. उद्धार करने की क्रिया या भाव 2. उबारना, ऊपर उठाना 3. भू. रेतीले, बंजर या दलदली भूभाग को खेती या अन्य उद्योग के लायक बनाना reclamation 4. वाणि. जहाज या उसमें लदे माल को समुद्री आपदा से बचाना, किसी संपत्ति को आग, बाढ़, तूफान आदि से बचाना।

उद्धृत *वि.* (तत्.) 1. किसी रचना, लेख से ज्यों-का-त्यों लिया हुआ अवतरण 2. पृथक् किया हुआ।

उद्ध्वंस *पुं.* (तत्.) संपूर्ण नाश, समूल नाश।

उद्ध्वस्त *वि.* (तत्.) संपूर्णतः नष्ट, विध्वस्त।

उद्बाहु *वि.* (तत्.) जो बाँहें ऊपर उठाए हुए हो।

उद्बुद्ध *वि.* (तत्.) 1. जगा या जगाया हुआ, चैतन्य 2. खिला हुआ, विकसित 3. याद आया या दिलाया हुआ 4. जिसे ज्ञान प्राप्त हो प्रयो. अब रानी मुझे नवीन प्रेरणा से उद्बुद्ध करने का का काम करेंगी -चारुचंद्रलेख-ह.प्र. द्विवेदी।

उद्बोध *पुं.* (तत्.) 1. जगाना 2. कर्तव्य आदि का का स्मरण करना या होना।

उद्बोधक *वि.* (तत्.) 1. जगाने, उठाने या याद दिलाने वाला 2. ज्ञान देने वाला 3. उद्दीपक।

उद्भट *वि.* (तत्.) 1. श्रेष्ठ, असाधारण 2. जबर्दस्त, प्रबल, विकट, बहुत बड़ा प्रयो. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी संस्कृत के भी उद्भट विद्वान थे। थे।

उद्भव *पुं.* (तत्.) 1. जन्म, उत्पत्ति 2. उद्गम, मूल 3. किसी वंश या कुल से उत्पन्न होने का भाव 4. वृद्धि, बढ़ती।

उद्भवन *पुं.* (तत्.) 1. दे. उद्भव 2. मनो. चिकित्सा के दौरान मनोरोगी में विलंब से होने वाला विशिष्ट परिवर्तन प्राणि. सूक्ष्म जीवों तथा प्राणियों की विकासावधि में होने वाले नवीन परिवर्तन।

उद्भवन-अवधि *स्त्री.* (तत्.) कृषि. परपोषी कीट या पौधों आदि पर रोगाणु के प्रयोग करते समय वेधन और उद्भाव के लक्षणों के प्रकटीकरण के बीच का काल।

उद्भावक *वि.* (तत्.) 1. उद्भव करने वाला 2. कल्पना करने वाला।

उद्भावना *स्त्री.* (तत्.) 1. उद् भव 2. प्रकटीकरण, अभिन्यासी 3. मन की उपज, कल्पना, सोच।

उद्भावित *वि.* (तत्.) 1. जिसका उद् भव हुआ हो 2. जिसकी कल्पना की गई हो, कल्पित।

उद्भास *पुं.* (तत्.) 1. चमक, दीप्ति 2. प्रकाश 3. हृदय में किसी बात की प्रतीति प्रयो. अंधेरी रात में राजमार्ग पर दिया जलाकर उसे उद्भासित कर दिया था -चारु चंद्रलेख-ह.प्र.द्विवेदी।

उद्भासन *पुं.* (तत्.) 1. चमचमाना, दीपित होना 2. चमकाना, दीपित करना 3. अभिव्यक्ति।

उद्भासित *वि.* (तत्.) 1. चमकता हुआ 2. चमकाया गया 3. सुशोभित 4. अभिव्यक्त।

उद्भासी *वि.* (तत्.) 1. चमकने वाला 2. दीप्ति या या तेजन को प्रकट करने वाला।

उद्भिजशास्त्र *पुं.* (तत्.) वनस्पतिशास्त्र।

उद्भिज्ज *पुं.* (तत्.) 1. धरती को फोड़कर पैदा होने वाला पौधा या वनस्पति 2. उगने वाला दे. उद्भिद्।

उद्भिद् *पुं.* (तत्.) 1.धरती को फोड़ कर निकलने वाला, अँखुवा, पौधा, वनस्पति 2. वृक्ष, लता आदि जो भूमि फोड़कर निकले, उद्भिज्ज।

उद्भिन्न *वि.* (तत्.) 1. निकला हुआ 2. व्यक्त 3. उत्पन्न 4. विभक्त 5. विकसित 6. जिसके प्रति विश्वासघात किया गया हो।

उद्भूत *वि.* (तत्.) 1. उत्पन्न 2. उच्च 3. व्यक्त 4. गोचर।

उद्भूति *स्त्री.* (तत्.) 1. उत्पत्ति 2. उत्कर्ष।

उद्भृत *वि.* (तत्.) 1. उभारा हुआ 2. उकेरा हुआ उदा. उद्भृत मानचित्र, उद्भृत नक्काशी आदि।

उद्भृती *स्त्री.* (तत्.) 1. उभार, उठाव 2. कला. त्रिआयामी कलाकृतियाँ जो उभार या गहराई से युक्त हो।

उद्भेक *पुं.* (तत्.) 1. बढ़ती प्रचुरता, अधिकता 2. अर्थालंकार का एक भेद जहाँ कई सजातीय वस्तुओं या गुणों की तुलना में किसी सजातीय या विजातीय वस्तु या गुण की उत्कृष्टता या निकृष्टता दिखाई देती है।

उद्भेद *पुं.* (तत्.) 1. धरती को फोड़कर निकलना 2. बीज का अंकुरित होना 3. प्रकट होना 4. उत्स 5. ज्वालामुखी का फूटना 5. विस्फोट।

उद्भेदन *पुं.* (तत्.) 1. निशाना बनाकर भेदना (बेधना) 2. तोड़ना; फोड़ना 3. तोड़कर या फोड़कर बाहर निकलना, जैसे- बीज का अंकुरित होना 4. विस्फोट 5. दे. उद्गार।

उद्भ्रमण *पुं.* (तत्.) 1. चक्कर काटना, मँडराना 2. चक्कर लगाना 3. घूमना-फिरना।

उद्भ्रांत *वि.* (तत्.) 1. घूमा या चक्कर खाया हुआ 2. भूला-भटका हुआ 3. भ्रमित 4. हैरान, भौंचक्का 5. उद्विग्न प्रयो. होती आके उदय उर उर में घोर उद्विग्नताएँ। देखे जाते सकल ब्रज के लोग उद्भ्रांत-से थे- प्रिय प्रवास:षष्ठ सर्ग।

उद्यत *वि.* (तत्.) 1. तैयार, तत्पर, आमादा 2. उठाया हुआ 3. प्रस्तुत।

उद्यम *पुं.* (तत्.) 1. वह काम जिससे कोई अपनी अपनी जीविका चलाता हो, धंधा occupation 2. श्रम, मेहनत 3. उद्योग, प्रयास, प्रयत्न, पुरुषार्थ, पुरुषार्थ, परिश्रम, मेहनत 5. वाणि. उत्पादन का वह कारक जो जोखिम उठाने से संबद्ध है, फर्म, कंपनी। enterprise

उद्यमकर्ता *वि.* (तत्.) वाणि. लाभ कमाने की दृष्टि से व्यावसायिक कंपनी खोलने तथा चलाने वाला व्यक्ति, उद्यमी।

उद्यमी *वि.* (तत्.) 1. उद्यमकर्ता 2. परिश्रमी, मेहनती, प्रयत्नशील।

उद्यान *पुं.* (तत्.) 1. सैर या मनोविनोद के लिए बना तथा पेड़-पौधों से सजा, व्यवस्थित तथा चारों ओर से घिरा भूखंड 2. बगीचा, वाटिका, बाग, उपवन। park

उद्यान कृषि *स्त्री.* (तत्.) कृषि. 1. मुख्यतः व्यापार की दृष्टि से या लाभ कमाने के लिए बड़े बागों या बागानों में की जाने वाली खेती, जैसे- रबड़, चाय, मसाले, फल, फूल उगाना आदि, बागवानी। horticulture

उद्यानपाल *पुं.* (तत्.) माली।

उद्यानरक्षक *पुं.* (तत्.) 1. माली 2. बड़े बागों की की रक्षा के लिए नियुक्त व्यक्ति, उद्यानपाल।

उद्यानिकी *स्त्री.* (तत्.) 1. बागवानी, उद्यान लगाने लगाने व सजाने सँवारने की कला. gardening 2. कृषि. फलोद्यान का शास्त्र। horticulture

उद्यापन *पुं.* (तत्.) 1. व्रतादि की समाप्ति 2. किसी व्रतादि की समाप्ति पर किया जाने वाला पूजा-कर्म।

उद्योग *पुं.* (तत्.) 1. किसी वस्तु के उत्पादन के लिए स्थापित व्यवसाय या कारखाना industry 2. उद्यम, यत्न, श्रम 3. काम-धंधा।

उद्योग-धंधा *पुं.* (तत्.+तद्) 1. उत्पादन-व्यवसाय 2. उत्पादन से संबंधित कारखाने, व्यवसाय या काम। industry

उद्योगपति *पुं.* (तत्.) माल तैयार करने वाले कारखाने या उद्योगों के समूह का मालिक, उद्योग-धंधा चलाने वाला, उद्यमी।

उद्योगशाला *स्त्री.* (तत्.) 1. उत्पादक धंधा सिखाने सिखाने वाली संस्था 2. कारखाना।

उद्योगी *वि.* (तत्.) उद्योगशील, मेहनती, परिश्रमी परिश्रमी यत्नशील।

उद्योगीकरण *पु.* (तत्.) दे. औद्योगिकीकरण।

उद्योत *पुं.* (तत्.) 1. चमक, जगमगाहट 2. प्रकाश प्रकाश 3. तेज।

उद्योतकर *वि.* (तत्.) 1. चमकने वाला 2. प्रकाश प्रकाश देने वाला, प्रकाशित करने वाला 3. सूर्य, तारा।

उद्योतन *पुं.* (तत्.) प्रकाशित करना या होना।

उद्वर्त *पुं.* (तत्.) 1. अधिक राशि, शेष 2. अतिरिक्त वस्तु, फालतू 3. उबटन (मालिश) हेतु हेतु प्रयुक्त चूर्ण 4. उबटन।

उद्वर्तक *वि.* (तत्.) 1. उबटन लगाने वाला 2. उठाने वाला।

उद्वर्तन *पुं.* (तत्.) 1. लेपन, उबटन लगाना 2. सुगंधित लेप 4. मालिश।

उद्वर्धन *पुं.* (तत्.) 1. ऊपर उठना, उठाना 2. बढ़ना, बढ़ाना 3. फैलना, फैलाना 4. उन्नत होना, उन्नत करना।

उद्वह *पुं.* (तत्.) 1. पुत्र 2. विवाह 3. वायु का एक एक प्रकार टि. वायु के सात प्रकार हरिवंशपुराण में वर्णित हैं, आवह, प्रवह, विवह, परावह, संवह उद्वह और परिवह।

उद्वहन *वि.* (तत्.) 1. ऊपर की ओर उठना 2. उठाकर ले जाना 3. विवाह करना।

उद्वहन-यंत्र *पुं.* (तत्.) पानी, तेल आदि उठाकर बाहर निकालने वाला, पिचकारी जैसा यंत्र, पंप।

उद्वाचन *पुं.* (तत्.) 1. प्राचीन लिपियों में लिखे लेख को पढ़ना तथा उन्हें समझना, जैसे- सिंधु घाटी सभ्यता के लेखों का वाचन तु. कूटलिपि-वाचन 2. जोर से रोना या चिल्लाना।

उद्वासन *वि.* (तत्.) 1. स्थान-विशेष या देश से निकालना 2. बसे हुए लोगों को उजाड़ना, खदेड़ना 3. मार डालना 4. आसन बिछाना।

उद्वाह *पुं.* (तत्.) 1. उठाना 2. संभालना 3. विवाह।

उद्वाही *वि.* (तत्.) 1. ढोने वाला, वहन करने वाला वाला 2. विवाह करने वाला।

उद्विग्न *वि.* (तत्.) 1. उद्वेगयुक्त, परेशान, घबराया हुआ 2. चिंतित 3. आतंकित विलो. निरुद्विग्न।

उद्वेग *पुं.* (तत्.) 1. क्षोभ, व्याकुलता, घबराहट 2. 2. आवेश, जोश 3. किसी आपदा के कारण होने वाला भय 4. विस्मय।

उद्वेगी *वि.* (तत्.) 1. दुखी, कष्टग्रस्त 2. चिंताजनक।

उद्वेजन *वि.* (तत्.) 1. बेचैन करने वाला 2. उत्तेजना बढ़ाने वाला 3. दुःख बढ़ाने वाला।

उद्वेल *पुं.* (तत्.) 1. (तट से बाहर) उमड़कर बहने बहने वाला 2. उफान, उद्गार 3. मर्यादा का उल्लंघन करने वाला।

उद्वेलन *पुं.* (तत्.) 1. उफनना, छलक कर बाहर बहना 2. सीमा का उल्लंघन प्रयो. अंतःकरण में लाख-लाख वृत्तियों का जो उद्वेलन हो रहा है, मिथ्या नहीं हैं -चारु चंद्रलेख; ह.प्र.द्विवेदी।

उद्वेलित *वि.* (तत्.) 1. उफनता हुआ, किनारों से छलकता हुआ 2. उछला हुआ।

उद्वेष्ट *पुं.* (तत्.) आयु. पेशी का अनैच्छिक और कष्टपूर्ण संकुचन, पेशी का खिंचाव, ऐंठन cramp cramp

उद्वेष्टन *पुं.* (तत्.) 1. चारों ओर से लपेटकर ढँकना, सुरक्षा के लिए आवरण चढ़ाना 2. घेरना 3. बाड़, चहारदीवारी 4. (चिकित्सा) रोग का दौरा या आवेग।

उधड़ना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. सिलाई, या बुनाई का खुलना 2. टूटना, अलग होना जैसे- चमड़े का।

उधर *अव्य.* (तद्.) उस ओर, वहाँ, उस पक्ष में।

उधाड़ *पुं.* (देश.) कुश्ती का एक पेंच, उखाड़।

उधार *पुं.* (तद्.) वाणि. 1. चुका देने के वादे पर लिया हुआ धन आदि, कर्ज loan 2. किसी की साख/विश्वसनीयता के आधार पर उसे बिना नकद कीमत के सामग्री देना, जिसकी कीमत बाद में चुकाई जाती है credit 3. बाद में लौटा देने का वचन देकर लिया हुआ माल। borrow

उधार अनुवाद *पुं.* (तद्+तत्.) अनुवाद करते समय दूसरी भाषा की पदावली के अनुरूप पदावली का प्रयोग जैसे- भू-भौतिकी, ठोस ज्यामिति solid geometry निर्देशांक ज्यामिति co-ordinate geometry आदि।

उधार खाता *पुं.* (तद्.+अर.) 1. उधार खरीद-बिक्री या लेन-देन का हिसाब-किताब या उधार।

उधारग्रहीता *वि.* (तत्.) (वाणि.) उधार लेने वाला। loanee

उधारना *स.क्रि.* (तद्.) 1. उद्धार करना, उबारना 2. कष्ट से बाहर कर लेना, बचा लेना।

उधारपात्रता *स्त्री.* (तत्.) वाणि. ऋण लेने वाले व्यक्ति या पक्ष की ऋण चुका सकने की समर्थता। credit worthiness

उधारी *वि.* (तद्.) 1. उद् धार करने वाला *पुं.* 'उधार' का स्त्रीलिंग रूप 2. उधार मांगने वाला।

उधेड़ना *स.क्रि.* (तद्.) 1. खोलना, सिलाई के टाँके खोलना, तोड़ना (सीवन, टाँका) 2. उखाड़ना 3. अलग करना 4. बिखेरना मुहा. खाल उधेड़ना- बुरी तरह मारना; उधेड़कर रख देना- कच्चा चिट्ठा खोल देना, सब दोष, बुराई खोलकर बता देना।

उधेड़बुन *पुं.* (देश.) 1. उलझन, चिंता, सोच-विचार।

उन *सर्व.* (देश.) 'वे' शब्द का परिवर्तित रूप (कारक-प्रयोग में परसर्गों के साथ) जैसे- उनको, उनका टि. आदर के लिए भी 'उन' का प्रयोग होता है। 'उनकी (पं. रामचंद्र शुक्ल की) पुस्तक' *उप.* (तद्.) 'एक कम' इस अर्थ में संख्यावाची शब्दों के साथ लगने वाला उपसर्ग जैसे- उनतीस, उनसठ, उनासी आदि टि. यह उपसर्ग 'बीस, तीस, चालीस, पचास, साठ, सत्तर, अस्सी और कभी-कभी नब्बे' इन संख्याओं के साथ ही लगाया जाता है, संस्कृत में 'उन' का अर्थ कम होता है।

उनचन *स्त्री.* (देश.) रस्सी से बुनी चारपाई में पैरों की ओर बाँधी जाने वाली रस्सी जिससे चारपाई को कसा जा सकता है, अदवाइन, दावन।

उनचना [उ-नचना] *स.क्रि.* (देश.) उनचन का प्रयोग करना, चारपाई या खाट को कसना।

उनचालीस *वि.* (तद्.) दे. उनतालीस।

उनचास *वि.* (तद्.) चालीस और नौ, 49 की संख्या।

उनतालीस *वि.* (तद्.) एक कम चालीस, 39 की संख्या।

उनतीस *वि.* (तद्.) बीस और नौ, 29 की संख्या।

उनमत *वि.* (तत्.) दे. उन्मत्त।

उनमत्त *वि.* (तत्.) 1. अनमना, उदास, जिसका किसी काम में मन न लगे 2. पागल 3. नशे में धुत, मतवाला।

उनमना *वि.* (तद्.) दे. उन्मन *स्त्री.* उनमनी।

उनसठ *वि.* (तद्.) पचास और नौ, एक कम साठ, 59 की संख्या।

उनहत्तर *वि.* (तत्.) साठ और नौ, एक कम सत्तर, 69 की संख्या।

उनासी *वि.* (तद्.) दे. उन्नासी।

उनींद *स्त्री.* (तद्.) 1. नींद आने की स्थिति, निद्रा जैसी स्थिति 2. नींद के तुरंत बाद की स्थिति, नींद उचटने की स्थिति जब व्यक्ति पूर्णतया सचेत नहीं होता।

उनींदा *वि.* (तद्.) नींद से भरा हुआ, ऊँघता हुआ।

उन्नत *वि.* (तत्.) 1. उठा हुआ 2. ऊँचा, आगे बढ़ा हुआ 3. श्रेष्ठ 4. सामान्य से ऊँची श्रेणी का advanced 5. सभ्य विलो. अवनत।

उन्नतांश *पुं.* (तत्.) खगो. प्रेक्षक के क्षितिज से किसी खगोलीय पिंड की कोणीय दूरी जो उस पिंड से होकर जाने वाले ऊर्ध्वाधर वृत्त की दिशा में ऊपर की ओर मापी जाती है। altitude

उन्नतांश वृत्त *पुं.* (तत्.) खगो. क्षितिज के समानांतर किसी उन्नतांश के सभी बिंदुओं को मिलाने वाला छोटा वृत्त।

उन्नति *स्त्री.* (तत्.) 1. वर्तमान स्थिति, पद आदि आदि से ऊपर जाना promotion 2. ऊँचाई, तरक्की, बढ़ती 3. स्थिति में सुधार होना improvement विलो. अवनति।

उन्नतिशील *वि.* (तत्.) निरंतर उन्नति करते रहने वाला, दिन प्रतिदिन-वर्षानुवर्ष ऊँचे उठने वाला।

उन्नतोदर *वि.* (तत्.) दर्पण, वृत्तीय फलक आदि का उठा हुआ अंश convex जिसका उदर या मध्यवर्ती भाग उठा हुआ हो, उत्तल विलो. नतोदर concave

उन्नद्ध *वि.* (तत्.) 1. बँधा हुआ 2. फूला हुआ 3. बढ़ा हुआ 4. घमंडी।

उन्नमन *पु.* (तत्.) 1. ऊपर ले जाना, उठना 2. उन्नति करना 3. अभ्युदय।

उन्नमित *वि.* (तत्.) 1. उन्नत किया हुआ 2. बढ़ाया हुआ।

उन्नयन *पुं.* (तत्.) 1. उठाने का कार्य, उन्नति की ओर ले जाना 2. खींचना (पानी) *वि.* जिसकी आँखें ऊपर उठी हों।

उन्नाद *पुं.* (तत्.) 1. चिल्लाहट 2. शोर, हल्ला 3. गुंजन 4. कलरव (पक्षियों का)।

उन्नाब *पुं.* (अर.) 1. औषधीय उपयोग का हल्के बैंगनी रंग के छोटे-छोटे फलों वाला झरबेरी जैसा क्षुप 2. उक्त फल।

उन्नायक *वि.* (तत्.) 1. ऊपर उठाने वाला, उन्नति की दिशा में ले जाने वाला 2. लक्ष्य की ओर ले जाने वाला।

उन्नासी *वि.* (तद्.) सत्तर और नौ, अस्सी से एक कम, 79 की संख्या।

उन्निद्र *वि.* (तत्.) जिसे नींद न आती हो।

उन्नीस *वि.* (तद्.) 1. दस और नौ, बीस से एक कम, 19 की संख्या मुहा. उन्नीस-बीस होना-कम अधिक होना, दोनों में बहुत थोड़ा अंतर होना, लगभग बराबर होना।

उन्नेता *वि.* (तत्.) 1. आगे बढ़ाने वाला, उन्नति के मार्ग पर ले जाने वाला 2. यज्ञ संपन्न कराने वाला एक विशिष्ट ऋत्विज।

उन्मंडल *पुं.* (तत्.) खगो. खगोलीय ध्रुवों और विषुवों से होकर या खगोलीय ध्रुवों और अयनांतों से होकर जाने वाला होरा-वृत्त। colure

उन्मज्जक *वि.* (तत्.) नहाकर नदी या जल से बाहर आने वाला, *पुं.* एक प्रकार का तपस्वी।

उन्मज्जन *पुं.* (तत्.) नहाकर जल से बाहर आना विलो. निमज्जन।

उन्मत्त *वि.* (तत्.) 1. नशे में चूर, मतवाला 2. पागल 3. सनकी 4. आवेश में आया हुआ *पुं.* धतूरा।

उन्मत्त प्रलाप *पुं.* (तत्.) 1. पागलों की या पागलों जैसी बकवास 2. निरर्थक बड़बड़ 3. पागलों या नशे में धुत लोगों की बहकी-बहकी बातें।

उन्मत्तक *वि.* (तत्.) 1. पागल 2. नशे में चूर।

उन्मत्ता *स्त्री.* (तत्.) उन्मत्त होने का भाव मतवालापन, पागलपन।

उन्मथन *पुं.* (तत्.) 1. बिलोड़ना 2. हिलाना 3. छेड़ना 4. क्षुब्ध करना 5. मारण।

उन्मथित *वि.* (तत्.) 1. मथा हुआ या बिलोया हुआ 2. जिसे उत्तेजित या अशांत कर दिया गया हो 3. हत 4. आहत 5. पीड़ित 6. मर्दित।

उन्मद *वि.* (तत्.) 1. मतवाला 2. पागल *पुं.* नशा, पागलपन।

उन्मन *वि.* (तत्.) 1. उद्विग्न 2. अन्यमनस्क, अनमना 3. दुखी, उदास 4. उत्कंठित।

उन्मना *वि.* (तत्.) 1. अन्यमनस्क 2. उत्कंठायुक्त 3. उद्विग्न प्रयो. जब पुर-वनिता आ पूछती थी संदेसा, तब मुख उनका थीं देखती उन्मना हो।

उन्मनी *स्त्री.* (तत्.) हठयोग की पाँच मुद्राओं में से एक। समाधि की एक मुद्रा जिसमें भौंहों के मध्य में या नासिकाग्र पर ध्यान को एकाग्र किया जाता है।

उन्मर्दन *पुं.* (तत्.) 1. मलने की क्रिया, रगड़ना 2. शरीर में मलने का एक सुगंधित द्रव्य।

उन्माद *पुं.* (तत्.) 1. पागलपन, सनक 2. एक रोग जिसमें मन और बुद्‌धि का समन्वय समाप्त हो जाता है और इच्छा/वासना में वृद्‌धि हो जाती है, mania 3. अत्यधिक अनुराग 4. एक संचारी भाव।

उन्मादक *वि.* (तत्.) उन्मादग्रस्त करने वाला, उन्मत्त करने वाला *पुं.* धतूरा।

उन्मादन *पुं.* (तत्.) 1. उन्मत्त कर देने की प्रक्रिया 2. कामदेव के एक बाण का नाम।

उन्मादी *वि.* (तत्.) उन्मादग्रस्त, उन्मत्त, बेसुध, बावला।

उन्मान *पुं.* (तत्.) 1. तौल, माप, धारिता, आयतन, शुद्‌धता आदि मान 2. किसी वस्तु का द्रव्यात्मक मूल्य 3. प्राचीन भारत की तौल की एक इकाई, द्रोण।

उन्मार्ग *पुं.* (तत्.) 1. उल्टा मार्ग (विपरीत दिशा में ले जाने वाला) 2. कुमार्ग 3. विपरीत आचरण/व्यवहार 4. अधर्म।

उन्मार्गगामी *वि.* (तत्.) उन्मार्ग का अनुयायी। दे. उन्मार्ग।

उन्मेषी *वि.* (तत्.) 1. (नेत्र) खोलने वाला 2. (पुष्प) खिलाने वाला।

उन्मिषित *वि.* (तत्.) 1. कुछ खुला हुआ (नेत्र) 2. खिला हुआ (पुष्प) 3. थोड़ा प्रकाशित (आकाश, सूर्योदय काल) 4. प्रफुल्ल (हृदय)।

उन्मीलन *पुं.* (तत्.) 1. खुलना (आँख का) 2. खिलना 3. विकसित होना, व्यक्त होना।

उन्मीलपरागण *पुं.* (तत्.) कृषि. फूल के खिलते ही होने वाला परागण जैसे- टमाटर, बैगन, मिर्च आदि में।

उन्मीलित *वि.* (तत्.) 1. खुला हुआ 2 खिला हुआ *पुं.* एक काव्यालंकार जिसमें दो वस्तुओं में सादृश्य के कारण भेद करना संभव न होने पर भी किसी कारण उनमें भेद प्रकट किया जाता है।

उन्मुक्त *वि.* (तत्.) बंधनरहित, आजाद, छोड़ा गया, खुला।

उन्मुक्त पोताश्रय *पुं.* (तत्.) वाणि. वह बंदरगाह जहाँ वस्तुओं पर किसी तरह का कर, चुंगी आदि नहीं लगाई जाती, जो सब राष्ट्रों के व्यापार के लिए खुला हो। free port

उन्मुक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1 कर देने, किसी कर्त्तव्य के पालन या रोग के आक्रमण की संभावना आदि से मुक्ति immunity 2. विधि. किसी दायित्व या सामान्य नियम से दी गई छूट immunity 3. सजा/दंड से छूटना release 4. किसी देयता के समाप्त हो जाने की स्थिति। discharge

उन्मुख *वि.* (तत्.) 1. जिसका मुख या दृष्टि ऊपर की ओर हो 2. उद्यत 3. किसी ओर जाता जाता हुआ, प्रवृत्त 4. उत्सुक।

उन्मुखर *वि.* (तत्.) बहुत शोर मचाने वाला, बहुत बोलनेवाला।

उन्मूलक *वि.* (तत्.) 1. जड़ उखाड़ने वाला, समूल नाश करने वाला 2. (किसी कुप्रथा आदि को) समाप्त करने वाला।

उन्मूलन *पुं.* (तत्.) 1. जड़ से उखाड़ देना 2. जड़ से नष्ट करना, पूर्णतः समाप्त करना, उत्सादन विलो. रोपण। abolition

उन्मूलित *वि.* (तत्.) 1. उखाड़ा हुआ 2. मिटाया हुआ।

उन्मेष *पुं.* (तत्.) 1. खुलना (आँख का) 2. खिलना 3. स्फुरण, विकास 4. प्रकाश, दीप्ति।

उन्मोचन *पुं.* (तत्.) विधि./प्रशा. 1. किसी आरोप, दायित्व, भार, प्रभार आदि से मुक्ति 2. ऋण की अंतिम चुकौती जिसके बाद कुछ भी देना शेष न रहे 3. हुंडी, विनिमय पत्र आदि की ऐसी अदायगी जिसके बाद धारक के सारे दावे समाप्त हो जाते हैं discharge 4. खोलना, ढीला करना 5. कैद या बंधन से मुक्त कर देना।

उन्मोचित *वि.* (तत्.) 1. जिसे आरोप से मुक्त कर दिया गया हो 2. छुड़ाया गया हुआ 3. जिसका ऋण आदि चुका दिया गया हो।

उपंग *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का तालवाद्य, नसतरंग।

उप *उप..* (तत्.) शब्दों के पूर्व लग कर विभिन्न अर्थ देने वाला उपसर्ग या पूर्व प्रत्यय जो समीपता (जैसे-उपनयन, उप स्थिति) आरंभ (जैसे-उपक्रम), सामर्थ्य (जैसे-उपयोग), लघुता, गौणता, (जैसे-उपमंत्री, उपवेद) आदि अर्थ देता है।

उप उत्पाद *पुं.* (तत्.) अर्थ. किसी कारखाने में निर्मित होने वाले प्रमुख उत्पाद के साथ आनुषंगिक रूप से निर्मित उत्पाद। by-product

उपकक्ष *स्त्री.* (तत्.) 1. सहायता के लिए प्रयुक्त दूसरा कमरा 2. (राज.) संसद का वह कक्ष जहाँ संसद की मुख्य कार्यवाही के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण कार्य होते हैं, जैसे- विदेशी राजनयिकों का मिलना, मतविभाजन आदि। lobby

उपकथन *पं.* (तत्.) पूर्व कथन के समर्थन या प्रत्युत्तर में कही गई बात।

उपकथा *स्त्री.* (तत्.) प्रायः बड़ी कहानी के भीतर आने वाली छोटी कहानी, उपाख्यान, अंतःकथा, अवांतरकथा।

उपकनिष्ठिका *स्त्री.* (तत्.) छोटी उंगली के पास की उंगली, अनामिका।

उपकन्या *स्त्री.* (तत्.) 1. मानी हुई कन्या 2. पुत्री पुत्री की सहेली।

उपकर *पुं.* (तत्.) प्रशा. एक तरह का अप्रधान कर जो विविध वस्तुओं पर विभिन्न स्थितियों में लगाया जाता है। नगरपालिका आदि द्वारा लिया लिया जाने वाला स्थानीय कर। cess

उपकरण *पुं.* (तत्.) 1. इंजी. किसी विशेष काम के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला औजार tool, मशीनी साधन appliance, यंत्र 2. (खेल) जिमनास्टिक्स वाले करतबों में वांछित साजो सामान जैसे- समानांतर बार, तिरछे बार, हॉर्स, रिंग्स आदि।

उपकला *स्त्री.* (तत्.) प्राणी. बाह्य त्वचा तथा खोखले अंगों (नलिका, गुहिका आदि) का अस्तर बनाने वाले ऊतक जिसमें आसन्न कोशिकाओं के बीच का अवकाश सबसे कम होता है। epithelium

उपकलार्बुद *पुं.* (तत्.) आयु. उपकला का अर्बुद (कैंसर) cancer जो त्वचा या श्लेष्मल झिल्ली में में होता है। carcinoma

उपकल्पन *पुं.* (तत्.) 1. आयोजन 2. तैयार करना, बनाना।

उपकल्पना *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी किए जाने वाले कार्य की योजना 2. थोड़े समय के लिए किसी बात को मान लेना जैसे- गणितीय कार्य में किसी बात को पहले से ही मान लेना, जैसे निर्वाचन के परिणाम की उपकल्पना, पूर्वधारणा। hypothesis

उपकल्पित *वि.* (तत्.) 1. जो पहले से ही मान लिया गया हो, परिकल्पित 2. तैयार, प्रस्तुत।

उपकार *पुं.* (तत्.) 1. किसी कार्य में प्रमुख रूप से सहायक होना 2. भलाई का कार्य 3. कृपा, अनुग्रह, सहायता।

उपकारक *वि.* (तत्.) 1. भलाई करने वाला 2. सहायक 3. लाभदायक 4. अनुकूल।

उपकारागार *पुं.* (तत्.) प्रशा. छोटी जेल, मुख्य कारागार से नीचे के स्तर का कारागार।

उपकारिता *स्त्री.* (तत्.) उपकारी होने का भाव। दे. दे. उपकारी।

उपकारी *वि.* (तत्.) 1. उपकार करने वाला, उपकारक 2. लाभदायक।

उपकार्य *पुं.* (तत्.) 1. उपकार के योग्य 2. जिस पर उपकार हो रहा हो या हो चुका हो या किया जाना हो 3. सहायक कार्य, मुख्य कार्य से जुड़े अन्य छोटे-छोटे कार्य।

उपकिराएदार *पुं.* (तत्.+अर.+फ़ा) किसी किराएदार द्वारा किराये पर ली हुई जमीन, मकान आदि का कुछ हिस्सा (या पूरा भाग) किराए पर दे दिया गया हो। sub-tenant

उपकिराएदारी *स्त्री.* (तत्.) प्रशा. किराए पर लिए गए मकान या दुकान को या उसके किसी हिस्से को किराएदार द्वारा किसी अन्य पक्ष को को किराए पर देना। sub-letting

उपकुल *पुं.* (तत्.) जीव. किसी कुल के अंतर्गत उसका छोटा विभाग, कुल से सूक्ष्मतर वर्गीकरण की इकाई। sub-family

उपकुलपति *पुं.* (तत्.) किसी विश्वविद्यालय या समकक्ष शिक्षासंस्थान का सर्वोच्च शिक्षक-प्रशासक जो कुलपति के बाद अगले पद पर नियुक्त होता है vice-chancellor टि. अब मानक मानक शब्दावली में उपकुलपति को 'कुलपति' तथा कुलपति को 'कुलाधिपति' कहा गया है।

उपकूल *पु.* (तत्.) 1. किनारा, तट 2. किनारे के पास की भूमि।

उपकृत *वि.* (तत्.) जिस पर उपकार किया गया हो, कृतज्ञ, एहसानमंद।

उपकृति *वि.* (तत्.) उपकार करने वाला, उपकारक।

उपकृति *स्त्री.* (तत्.) दे. उपकार।

उपकेंद्रीय *वि.* (तत्.) 1. केंद्र के निकट का 2. केंद्र की ओर उन्मुख।

उपक्रम *पुं.* (तत्.) 1. कार्यारंभ की प्रथम अवस्था, अनुष्ठान, प्रयास, तैयारी 2. कोई उद्यम 3. प्रशा. लोकोपयोगी सेवा प्रदान करने के लिए सरकार या स्वशासी निकाय द्वारा स्थापित प्रतिष्ठान undertaking 4. विधि. कोई विधि या

अधिनियम बनाने के लिए जनता द्वारा स्वयं आक्रमण किया जाना। initiative and referendum

उपक्रमण *पुं.* (तत्.) 1. उपक्रम करना, आरंभ करना 2. तैयारी करना, योजना बनाना 3. पास आना।

उपक्रमणिका *स्त्री.* (तत्.) 1. विषयसूची 2. प्रस्तावना।

उपक्रमी *वि.* (तत्.) उपक्रम करने वाला।

उपक्षय *पुं.* (तत्.) क्रमिक ह्रास, क्रमशः होने वाली कमी या अवनति।

उपक्षेत्र *पुं.* (तत्.) बड़े क्षेत्र का एक भाग।

उपक्षेप *पुं.* (तत्.) 1. किसी के सामने कोई वस्तु फेंकना या रखना 2. आक्षेप 3. संकेत 4. नाटक के आरंभ में कथावस्तु का संक्षिप्त वर्णन।

उपखंड *पुं.* (तत्.) 1. प्रशा. प्रशासन को सुचारु रूप से चलाए जाने के लिए बनाई गई इकाई जो जिले का भाग होती है sub-division 2. विधि. किसी नियम या अधिनियम आदि के खंड clause का उपविभाग। sub-clause

उपखंड अधिकारी *पुं.* (तत्.) प्रशा. उपखंड का प्रशासन अधिकारी, उप-प्रभागीय अधिकारी। sub-divisional officer

उपखनिज *पुं.* (तत्.) किसी भूखंड या शैल में पाए जाने वाले मुख्य खनिज के अतिरिक्त अन्य गौण खनिज।

उपगत *वि.* (तत्.) 1. ज्ञात, प्राप्त, स्वीकार 2. विधि. दायित्व, हानि आदि की बावत दिया गया भुगतान (इकाई)।

उपगत होना *अ.क्रि.* (तत्.) दायित्व, हानि आदि भुगतना और सहना, पदावनत।

उपगम *पुं.* (तत्.) 1. पास जाना 2. जानना, प्राप्ति 3. वचन, वादा, अंगीकार करना।

उपगीति *स्त्री.* (तत्.) आर्या छंद का एक भेद।

उपगूहन *पुं.* (तत्.) 1. छिपाना, गोपन 2. आलिंगन 3. अनोखी घटना का घटित होना।

उपग्रह *पुं.* (तत्.) 1. भौ./खगो. ग्रह की परिक्रमा करने वाला प्राकृतिक लघु ग्रह या पिंड या मानव-निर्मित कृत्रिम ग्रह या पिंड, जैसे- चंद्रमा (प्राकृतिक) या मानव निर्मित अंतरिक्षयान satellite अंतरिक्ष में रॉकेट द्वारा भेजे गए 'स्पूतनिक', जब ये पृथ्वी के गिर्द चक्कर लगाते हैं, तो इन्हें भू-उपग्रह या कृत्रिम उपग्रह कहते हैं 2. गिरफ्तारी, कैद 3. पराजय 3. समर्पण-संधि।

उपघात *पुं.* (तत्.) 1. आघात, धक्का 2. नाश 3. आक्रमण 4. रोग 5. पाप।

उपघातक *वि.* (तद्.) घात करने वाला, आक्रमण करने वाला, कष्ट देने वाला (रोग आदि)।

उपघाती *वि.* (तत्.) दे. उपघातक।

उपचय *वि.* (तत्.) 1. इकट्ठा होना, संचय करना 2. चयन 3. उन्नति, समृद्धि 3. अर्थ. कर, किराया, ब्याज आदि प्रत्याशित मदों की देय अथवा प्राप्य राशि। accrual

उपचयी *वि.* (तत्.) 1. उपचय से संबंधित 2. उपचय का 3. उपचयवाला। anabolic

उपचर्या *स्त्री.* (तत्.) 1. उपचार, इलाज 2. सेवा।

उपचायी *वि.* (तत्.) उपचय करने वाला, वृद्धि करने वाला।

उपचार *पुं.* (तत्.) 1. रोगी को रोगमुक्त करने के लिए की जाने वाली नियमित प्रक्रिया, इलाज, चिकित्सा 2. रोगी की सेवा-सुश्रूषा 3. स्वागत सत्कार के लिए विहित नियमों का पालन 4. पूजा-अर्चना के अंग या विधान 5. उपाय 6. औषधि।

उपचारक *वि.* (तत्.) उपचार करने वाला, इलाज करने वाला, सेवा करने वाला।

उपचारच्छल *पुं.* (तत्.) न्याय. किसी कही हुई बात को तोड़ मरोड़कर अनुचित अर्थ स्थापित करके दोष निकालने का प्रयत्न।

उपचारना *स.क्रि.* (तद्.) 1. सुधारना 2. चिकित्सा करना, 3. सम्मान करना; पूजा 4. ललकारना।

उपचारवक्रता *स्त्री.* (तत्.) काव्य. काव्य में चमत्कार उत्पन्न करने के लिए वर्ण्य पदार्थ पर ऐसे भाव का आरोप जो उसका धर्म नहीं होता, जैसे- अँखियाँ हरिदरसन की प्यासी। यहाँ आँखों का धर्म प्यास नहीं परंतु उसका आरोप चमत्कारपूर्ण है।

उपचारिका *स्त्री.* (तत्.) 1. चिकित्सालयों में उपचार करने वाली महिला 2. सेवा, परिचर्या करने वाली।

उपचारी *वि.* (तत्.) दे. उपचारक।

उपचार्य *वि.* (तत्.) उपचार या सेवा के योग्य।

उपचित *वि.* (तत्.) 1. इकट्ठा किया हुआ 2. बढ़ा हुआ, संवर्धित 3. संगृहीत

उपचिति *स्त्री.* (तत्.) संग्रह, समृद्धि।

उपचुनाव *पु.* (तद्.) प्रशा. नियमित चुनाव और अगले चुनाव के बीच किसी चुने गए सदस्य के त्यागपत्र या देहांत से उत्पन्न रिक्ति को भरने के लिए उस चुनाव क्षेत्र में किया जाने वाला विशेष चुनाव, उपनिर्वाचन। by election

उपचेतन *वि.* (तत्.) मनो. अस्पष्ट एवं धूमिल चेतना, चेतन-अचेतन के मध्य की (अवस्था) sub-conscious

उपचेतना *स्त्री.* (तत्.) मनो. बाह्य चेतना से भिन्न अन्तःस्थित चेतना, अवचेतना जैसे- स्वप्नावस्था की चेतना।

उपच्छाया *स्त्री* (तत्.) 1. भौ. किसी वस्तु की छाया का अंशतः अदीप्त भाग जिसमें स्रोत के किसी सीमित भाग से प्रकाश पहुँचता है, अन्य से नहीं 2. भू./खगो. सूर्यग्रहण या चंद्रग्रहण के समय चंद्रमा या पृथ्वी की छाया का वह भाग जहाँ प्रकाश पूरी तरह लुप्त नहीं होता, जो आंशिक ग्रहण का सूचक है। penumbra

उपज *स्त्री.* (तद्.) 1. उत्पन्न होने की क्रिया या भाव 2. उत्पत्ति, उत्पन्न हुई सामग्री, पैदावार 3. कृषि खेत, खलिहान, बागवानी आदि से अंतिम उत्पाद के रूप में प्राप्त वस्तु की मात्रा। 3. संगी. राग की सुंदरता के लिए उसमें निबद्ध तानों के अतिरिक्त कुछ तानें अपनी ओर से मिलाना। improvisation

उपजनन *पुं.* (तत्.) 1. प्रजनन 2. उत्पादन 3. निर्माण 4. सृजन (सर्जन)।

उपजना *स.क्रि.* (तद्). 1. उत्पन्न होना, जन्म लेना 2. उगना 3. नई बातें सूझना।

उपजाऊ *वि.* (देश.) कृषि. भूमि जिसमें अधिक उपज हो, जरखेज, उर्वर, जिसमें अच्छी पैदावार हो। fertile

उपजाऊपन *पुं.* (तत्.) उपजाऊ या उर्वर होने का भाव, उर्वरा शक्ति।

उपजात *वि.* (तत्.) 1. पैदा हुआ, उत्पन्न 2. रसा. रासायनिक क्रिया में मुख्य उत्पाद के साथ उत्पन्न अन्य उत्पाद, सहायक उत्पाद, उपोत्पाद। by product

उपजाति *स्त्री.* (तत्.) 1. प्राणि. जाति से सूक्ष्मतर वर्गीकृत इकाई, जाति का कोई उपभेद sub-species, sub-caste 2. काव्य. में इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा तथा इंद्रवज्रा और वंशस्थ के मेल से बनने वाले वर्णवृत्त।

उपजाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. उत्पन्न करना, उगाना 2. पैदा करना, बनाना, निर्माण करना।

उपजिला *पुं.* (तत्.,फा.) जिले का एक भाग या उपखंड। sub-district

उपजिह्वा *स्त्री.* (तत्.) 1. भाषा. जीभ के मूल में छोटी जीभ, अलिजिह्वा, कौवा, घंटीक।

उपजीवक *पुं.* (तत्.) दे. उपजीवी।

उपजीवन *पुं.* (तत्.) 1. निर्वाह, वृत्ति, जीविका; इसके साधन, 2. दूसरों पर आश्रित जीवनयापन।

उपजीविका *स्त्री.* (तत्.) 1. जीविका के मुख्य साधन के अतिरिक्त आय का अन्य गौण साधन 2. जीवन निर्वाह के लिए कहीं से प्राप्त होने वाली सहायता, वृत्ति, अनुदान आदि।

उपजीविनी *स्त्री.* (तत्.) उपजीवी का स्त्रीलिंग रूप। रूप।

उपजीवी *वि.* (तत्.) दूसरे पर आश्रित रहने वाला, पराश्रित, परोपजीवी *पुं.* अन्य से आहार ग्रहण करने वाला पौधा या कीट।

उपजीव्य *वि.* (तत्.) 1. जीविका उपलब्ध कराने वाला 2. संरक्षण देने वाला 3. लेखन के लिए आधारभूत सामग्री प्रदान करने वाला, जैसे- रामायण एक उपजीव्य काव्य है क्योंकि रामकथा के आधार पर अनेक ग्रंथ लिखे गए हैं।

उपजीव्य ग्रंथ *पुं.* (तत्.) दे. उपजीव्य।

उपज्ञा *स्त्री.* (तत्.) 1. स्वयं के चिंतन से उत्पन्न वह ज्ञान जो एक विचार, मत, आविष्कार को जन्म दे जैसे- रामायण वाल्मीकि की ही उपज्ञा है। 2. ऐसा कार्य जो पहले न हुआ हो।

उपटना *अ.क्रि.* (देश.) 1. आघात या दबाव से दाग या निशान पड़ना 2. उभरना 3. उखड़ना।

उपटना *अ.क्रि.* (तद्.) उखड़ना (पौधे आदि का)।

उपठेका *पुं.* (तत.) प्रशा. किसी बड़े निर्माणकार्य में ठेकेदार द्वारा किसी कार्य विशेष के लिए अपने सहायक के रूप में किसी अन्य ठेकेदार को स्वतंत्र रूप से सौंपा गया कार्य, उपसंविदा। sub-contract

उपठेकेदार *वि.* (तत्.+फा.) प्रशा. मुख्य ठेकेदार से उसके काम का एक भाग ठेके पर लेने वाला व्यक्ति। sub-contractor

उपड़ना *अ.क्रि.* (देश.) उपटना, उखड़ना।

उपड़वाना *स.क्रि.* (देश.) उखड़वाना।

उपढौकन *पुं.* (तत्.) उपहार, भेंट, सौगात।

उपतट *पुं.* (तत्.) भू.वि. महासागर में तट के निकट का वह क्षेत्र जो स्थायी निमज्जन रेखा से लेकर 65 फैदम की गहराई तक फैला होता है। continental shelf

उपतप्त *वि.* (तत्.) 1. गरम किया हुआ, जला हुआ 2. दुखी, शोकार्त।

उपताप *पुं.* (तत्.) 1. ताप, आँच 2. क्लेश, पीड़ा 3. रोग 4. विधि. ऐसा कृत्य जो दूसरों के लिए कष्ट उत्पन्न करे। nuisance

उपतापन *पुं.* (तत्.) 1. उपताप देना, आँच देना 2. क्लेश, पीड़ा पहुँचाना दे. उपताप।

उपत्यका *स्त्री.* (तत्.) भू. पहाड़ के आसपास की नीची समतल भूमि; तराई, तलहट घाटी विलो. अधित्यका।

उपत्वचा *स्त्री.* (तत्.) वन.शा. पौधों की बाह्य त्वचा त्वचा के बाहर का पतला-सा आवरण जो जल को उसके भीतर प्रवेश नहीं करने देता। cuticle

उप-थलसेनाध्यक्ष *पुं.* (तत्.) सै.वि. थल सेना की समस्त गतिविधियों (संक्रिया-ऑपरेशन को छोड़कर) योजनाओं, स्टाफ के कर्तव्य, शस्त्रास्त्र और उपस्कर आदि कार्यों के लिए थल सेनाध्यक्ष के प्रति उत्तरदायी सर्वोच्च सैन्य अधिकारी, इसका ओहदा लेफ्टिनेंट जनरल का होता है। Deputy Chief of Army staff, DCOAS

उपदंश *पुं.* (तत्.) आयु. एक रतिज रोग, गर्मी की बीमारी, आतशक। syphilis

उपदंशी *वि.* (तत्.) उपदंश का रोगी. दे. उपदंश।

उपदर्शक *पुं.* (तत्.) 1. मार्गदर्शक 2. द्वारपाल 3. गवाह।

उपदर्शन *पुं.* (तत्.) 1. दिखाने, बताने, समझाने आदि का भाव या क्रिया 2. उदाहरणपूर्वक समझाना 3. व्याख्या।

उपदान *पुं.* (तत्.) 1. प्रशा. सेवोपरांत अवकाश ग्रहण करते समय कर्मचारी को एकमुश्त दी जाने वाली राशि, अनुग्रह राशि gratuity 2. प्रशा. किसी सामाजिक जनसेवी संस्थान या उद्योग को कीमत कम करने के लिए सरकार की ओर से दी जाने वाली आर्थिक सहायता subsidy 3. दान, भेंट, नजराना।

उपदिशा *स्त्री.* (तत्.) दो दिशाओं के बीच का कोण कोण (चार उपदिशाएँ है. आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य और ऐशान्य)।

उपदिष्ट *वि.* (तत्.) 1. वह व्यक्ति जिसे उपदेश, आदेश, सुझाव आदि दिया गया हो 2. वह कथन जिसके द्वारा उपदेश दिया गया हो।

उपदेव *पुं.* (तत्.) 1. छोटा देवता, सहायक देवता 2. देवयोनि के पश्चात् की अन्य मानवेतर योनियाँ जैसे यक्ष, गंधर्व आदि।

उपदेवता *पुं.* (तत्.) दे. उपदेव।

उपदेश *पु.* (तत्.) सलाह के रूप में दिया गया निर्देश 2. शिक्षा, सीख।

उपदेशक *वि.* (तत्.) उपदेश देने वाला, अच्छी सीख देने वाला 2. धर्म प्रचार करने वाला।

उपदेशक-वाक्य *पुं.* (तत्.) मीमां. किसी कार्य को विशेष रीति से करने का उपदेश तु. अतिदेशक वाक्य टि. मीमांसा दर्शन में दो प्रकार के वाक्यों की चर्चा है- विधायक वाक्य तथा सिद्धार्थक वाक्य, पुनः विधायक वाक्य दो प्रकार के होते हैं, उपदेशक वाक्य तथा अतिदेशक वाक्य।

उपदेशन *पुं.* (तत्.) उपदेश देने की क्रिया या भाव।

उपदेशवाद *पुं.* (तत्.) काव्य. यह सिद्धांत कि काव्य रचना का उद्देश्य उपदेश देना ही होता है।

उपदेशात्मक *वि.* (तत्.) 1. उपदेशों से भरा हुआ (ऐसा काव्य. वाक्य आदि) जिसमें उपदेश हों 2. उपदेश जैसा।

उपदेश्य *वि.* (तत्.) उपदेश का पात्र (शिष्य), जिसे उपदेश या दीक्षा दी जाती हो।

उपदेष्टा *वि.* (तत्.) उपदेश देने वाला दे.. उपदेशक।

उपद्रव *पुं.* (तत्.) 1. प्रशा. शांति व्यवस्था को भंग करने वाला प्रायः हिंसात्मक कार्य disorder 2. हलचल, विप्लव, व्यवस्था भंग 3. उत्पात, दंगा-फसाद 4. आयु. किसी रोग के बीच उपजने वाले दूसरे विकार।

उपद्रवी *वि.* (तत्.) उपद्रव करने वाला, उत्पाती, फसादी।

उपद्वार *पुं.* (तत्.) छोटा दरवाजा, बगल का द्वार।

उपद्वीप *पुं.* (तत्.) छोटा टापू।

उपधर्म *पुं.* (तत्.) 1. गौण धर्म 2. अ-प्रधान कर्तव्य कर्म।

उपधा *स्त्री.* (तत्.) 1. प्राचीन काल में राजा आदि द्वारा ली जाने वाली परीक्षा 2. व्या. किसी शब्द शब्द में अंतिम वर्ण से पहले का वर्ण जैसे- 'तत्' में उपधा 'अ' है और 'राम' में 'म्'।

उपधातु *स्त्री.* (तत्.) 1. तत्वों का वर्ग जिसके गुणधर्म धातुओं और अधातुओं के बीच के होते हैं, जैसे- जर्मेनियम, एंटीमोनी 2. अप्रधान या अर्धधातु यथा-सोनामाखी, रूपामाखी, तूतिया, काँसा, शिलाजीत metalloid तु. धातु, अधातु।

उपधारण *पुं.* (तत्.) 1. सम्यक् चिंतन 2. चित्त को किसी एक विषय में लगाना 2. अँकुश आदि में फँसा कर पेड़ के फल आदि नीचे खींचना।

उपधारणा *स्त्री.* (तत्.) विधि. प्रमाण न होते हुए भी पहले से मानकर चलना ताकि प्रमाण मिलने पर पुष्टि की जा सके, प्रकल्पना। presumption

उपधारा *स्त्री.* (तत्.) 1. विधि. किसी अधिनियम की धारा section का अंश जिसे पृथक से संख्यांकित किया जाए sub-section 2. नदी की सहायक धारा।

उपधावन *पुं.* (तत्.) 1. पीछे दौड़ने की क्रिया 2. अनुसरण 3. विचार करना।

उपधि *पुं.* (तत्.) 1. छल, कपट, माया, प्रपंच 2. भय, धमकी, लालच 3. जैन. आत्मेतर वस्तु जिन्हें अपना मान लिया जाता है जैसे- धन, पुत्र, शरीर, संसार आदि विलो. निरुपाधि।

उपध्मान *पुं.* (तत्.) 1. ओंठ 2. ओंठों से फूँकना या शब्द करना।

उपध्मानीय *वि.* (तत्.) 1. ओष्ठ से संबंधित 2. वैदिक संस्कृत में प् और फ् से पहले आने वाले विसर्ग की ध्वनि टि. लिपि में इसे दो अर्धचंद्रों को मिलाकर लिखने की प्रथा थी तु. जिह्वामूलीय।

उपनक्षत्र *पुं.* (तत्.) सहायक या गौण नक्षत्र, ऐसे नक्षत्रों का समूह टि. ज्योतिष में 27 नक्षत्र और 729 उपनक्षत्र बताए गए हैं।

उपनगर *पुं.* (तत्.) 1. प्रशा. किसी नगर की सीमा से लगा अपेक्षाकृत छोटा और बाद में विकसित रिहायशी इलाका जो नागरिक सुविधाओं की दृष्टि से उसी नगर की प्राथमिक इकाई के अंतर्गत हो। 2. नगर का बाहरी भाग; शहर से सटी हुई बस्ती। suburb, subcity

उपनत *वि.* (तत्.) 1. प्रशा. किसी की शरण में आया हुआ 2. उपस्थित 3. निकटवर्ती 4. विनम्र (समय, स्थान)।

उपनति *स्त्री.* (तत्.) 1. गणित. काफी लंबे समय तक किन्ही विशेष आँकड़ों के मान में उत्तरोतर पाए गए क्रमिक परिवर्तन का व्यापक स्वभाव trend 2. पास लाना, झुकना, नमन करना।

उपनदी *स्त्री.* (तत्.) किसी मुख्य नदी की सहायक सहायक गौण नदी।

उपनय *पुं.* (तत्.) 1. प्राप्ति 2. गुरु के पास ले जाना, उपनयन संस्कार 3. न्याय. परार्थानुमान का चौथा अवयव। (अन्य हैं- प्रतिज्ञा, हेतु, दृष्टांत, निगमन।

उपनयन *पुं.* (तत्.) 1. गुरु के पास ले जाना 2. यज्ञोपवीत संस्कार।

उपनागरिका *वि.* (तत्.) 1. वह स्त्री जिसकी गणना नगर की चतुर और वाक्पटु नारियों में हो 2. ऐसी नारियों जैसी नारी 3. काव्य. काव्यरचना की एक विशिष्ट वृत्ति जिसका प्रयोग प्रयोग शृंगार आदि रसों के वर्णन में किया जाता है, इसमें पंचम वर्णों से युक्त वर्णों की बहुलता होती है परंतु टवर्ग निषिद्ध होता है तु. परुषा, कोमला।

उपनाम *पुं.* (तत्.) 1. गौण नाम, माता-पिता द्वारा द्वारा दिया गया पुकारने का नाम, कवियों, लेखकों द्वारा स्वयं अपने लिए रखा गया दूसरा नाम, तखल्लुस 2. पदवी 3. कुलनाम जैसे- मिश्र, गुप्त आदि।

उपनायक *पुं.* (तत्.) 1. गौण या अप्रधान नायक 2. नाटक आदि में वह पात्र जो नायक का प्रधान सहायक हो (जैसे रामायण में लक्ष्मण) 3. उपपति।

उपनायिका *स्त्री.* (तत्.) नाटकों में प्रधान नायिका की सहायिका।

उपनिदेशक *पुं.* (तत्.) किसी सरकारी, गैरसरकारी विभाग, निदेशालय/संस्थान आदि में निर्देशक के सहायक के रूप में कार्य करने वाला अधिकारी।

उपनिदेशन *पुं.* (तत्.) उपनिदेशक का कार्य।

उपनिधाता *पुं.* (तत्.) 1. विधि. किसी वस्तु को प्रतिभूति के रूप में अन्य को सौंपने वाला व्यक्ति। bailor

उपनिधान *पुं.* (तत्.) विधि. किसी वस्तु को प्रतिभूति के रूप में अन्य को सौंपने का कार्य। bailment

उपनिधि *स्त्री.* (तत्.) 1. धरोहर, अमानत, उपनिधान 2. मुहरबंद अमानत।

उपनिपात *पुं.* (तत्.) 1. घटित होना 2. अचानक आ पड़ना 3. एकाएक आक्रमण करना।

उपनिबंधक *पुं.* (तत्.) 1. निबंधक registrar का सहायक अधिकारी 2. उक्त पद।

उपनिबद्ध *वि.* (तत्.) अंकित, लिखित। registered

उपनियम *पुं.* (तत्.) गौण नियम, किसी मुख्य नियम के अंतर्गत बना अन्य छोटा नियम जिसका संख्याकन नियम से भिन्न रीति से किया जाए जैसे नियम 5 का उपनियम (अ) sub-rule

उपनिर्वाचन *पुं.* (तत्.) दे. उपचुनाव।

उपनिवेश *पुं.* (तत्.) 1. अन्य देश से आए हुए लोगों की स्थायी बस्ती 2. वह विजित देश जिसमें विजेता राष्ट्र के लोग आकर बस गए हों हों colony प्रयो. बीसवीं शती तक कई देश ब्रिटेन के उपनिवेश थे।

उपनिवेशक *वि.* (तत्.) वह, जो उपनिवेश बसाए दे. उपनिवेश। colonial, colonist

उपनिवेशन *पुं.* (तत्.) उपनिवेश बसाने का कार्य। colonization

उपनिवेशवाद *पुं.* (तत्.) उपनिवेश बसाकर अपनी शक्ति का विस्तार करने की विचारधारा। colonization

उपनिवेशित *वि.* (तत्.) उपनिवेश के रूप में बसाया हुआ। colonized

उपनिवेशी *वि.* (तत्.) 1. अन्यदेश में बस जाने वाला, उपनिवेशवासी 2. उपनिवेश की या उससे संबंधित।

उपनिषद् *स्त्री.* (तत्.) 1. ब्रह्मविद्या की प्राप्ति के के निमित्त गुरु के पास बैठना 2. वेदों, ब्राह्मणों का ज्ञानखंड माने जाने वाले ब्रह्म-विद्या-प्रतिपादक तथा वेदों का गूढार्थ बताने वाला ग्रंथ-विशेष, मुख्य उपनिषद् -ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, मांडूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय।

उपनिष्क्रमण *पुं.* (तत्.) बाहर निकलना। हिंदू धर्म के सोलह संस्कारों में नामकरण और अन्नप्राशन के बीच का संस्कार, निष्क्रमण संस्कार टि. बालक को घर से बाहर का वातावरण दिखाने या सूर्यदर्शन कराने हेतु यह संस्कार होता है।

उपनिहित *वि.* (तत्.) अमानत के रूप में रखा गया। bailed

उपनिहिती *पुं.* (तत्.) विधि. वह व्यक्ति जिसके पास उपनिधाता ने अपनी वस्तु उपनिधान के तौर पर रखी हो। bailee

उपनीत *वि.* (तत्.) 1. पास लाया हुआ 2. जिसका उपनयन हो गया हो 2. जिसे वेदाध्ययन के लिए गुरु के आश्रम में ले जाया/ लाया गया हो।

उपनेता *पुं.* (तत्.) नेता का सहायक या नायब, पास ले जाने वाला।

उप-नौसेनाध्यक्ष *पुं.* (तत्.) सै.वि. नौसेना की समस्त गतिविधियों (संक्रिया को छोड़कर), योजनाओं, शिक्षण, वित्तीय कार्यों आदि के लिए नौ-सेनाध्यक्ष के प्रति उत्तरदायी सर्वोच्च अधिकारी जिसका ओहदा वाइस एडमिरल होता है। Depty chief of Navel staff, OCNS

उपन्यस्त *वि.* (तत्.) 1. (किसी के) पास रखा हुआ 2. अमानत रखा हुआ 3. कथित, उल्लिखित।

उपन्यास *पुं.* (तत्.) 1. साहि. गद्य में लिखी काफी लंबी कहानी जिसमें प्रायः अनेक पात्रों और उनके जीवन के अनेक पक्षों तथा घटनाओं का चित्रण हो, साहित्य की एक विशेष कथा-विधा novel 3. धरोहर, अमानत।

उपन्यासकार *पुं.* (तत्.) उपन्यास लिखने वाला।

उपन्यासीकरण *पुं.* (तत्.) कथा, नाटक आदि का उपन्यास के रूप में प्रस्तुतीकरण।

उप पंजीयक *पुं.* (तत्.) प्रशा. पंजीयन का काम करने वाला, पंजीयक से कनिष्ठ अधिकारी। sub-registrar

उपपट्टा *पुं.* (तद्.) (प्रशा.) पट्टाधारी द्वारा पट्टे पर पर ली गई संपत्ति को या उसके किसी अंश को पुनः किसी अन्य पक्ष को पट्टे पर दे दिए जाने की स्थिति sub-lease

उपपट्टाकरण *पुं.* (तत्.) पट्टेदार द्वारा पट्टे पर ली गई संपत्ति को किसी अन्य को पट्टे पर दिए जाने की क्रिया। sub leasing

उपपट्टेदार *पुं.* (तत्.) प्रशा./विधि. पट्टेदार से संपत्ति या उसके किसी अंश को पुनः पट्टे पर लेने वाला व्यक्ति। sub-lesse

उपपति *पुं.* (तत्.) समा. 1. विवाहित स्त्री का सर्वज्ञात प्रेमी जो उसका वैध पति नहीं होता 2. वह पुरुष जो किसी दूसरे की पत्नी से यौन संबंध बनाए रखे 3. पर-स्त्री से प्रेम करने वाला पुरुष, जार, यार paramour तुल. उपपत्नी।

उपपत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. गणि. गणितीय, विशेषकर ज्यामितीय प्रमेयों की सिद्‌धि 2. युक्ति, सिद्‌धि में युक्ति-प्रमाण देना proof 3. घटित होना, आविर्भाव 4. हेतु।

उपपत्नी *स्त्री.* (तत्.) समा. वह स्त्री जो किसी विवाहित पुरुष के साथ विवाह किए बिना ही रहे या सहवास करे, रखैल। concubine

उपपत्नीत्व *पुं.* (तत्.) समा. विवाहिता पत्नी न होते हुए भी पत्नी के समान रहने या भोगे जाने की स्थिति, रखैलपन। concubinage

उपपथ *पुं.* (तत्.) नगर में प्रवेश किए बिना एक स्थान से दूसरे स्थान को जोड़ने वाला मुख्य मार्ग। by pass

उपपद *पुं.* (तत्.) 1. किसी शब्द से पूर्व प्रयुक्त शब्द 2. समास का पहला पद 3. उपाधि, पदवी 4. उपसर्ग, निपात आदि 5. अंग्रेजी का आर्टिकल a, an, the

उपपधान *पुं.* (तत्.) 1. वह वस्तु जिसका सहारा लिया जाए, तकिया 2. वह मंत्र-विशेष जिसे यज्ञ की वेदी की ईंट रखते समय पढ़ा जाता है।

उपपन्न *वि.* (तत्.) 1. शरण में आया हुआ, पास आया हुआ 2. प्राप्त, मिला हुआ 3. जुड़ा हुआ, लगा हुआ।

उपपात *पुं.* (तत्.) 1. आपदा 2. विनाश 3. आकस्मिक होने वाली घटना।

उपपातक *पुं.* (तत्.) 1. छोटा पाप (गोवध, गुरुत्याग), मातृत्याग, पितृत्याग, दारविक्रय, आत्मविक्रय, परदारगमन, पाखंड आदि 49 शास्त्रोक्त लघु पाप।

उपपादक *वि.* (तत्.) सिद्‌ध करने वाला, प्रकट करने वाला, घटित कराने वाला। demonstrator

उपपादन *पुं.* (तत्.) 1. सम्यक् प्रतिपादन, युक्ति देकर सिद्‌ध करना 2. संपादन।

उपपादनीय *वि.* (तत्.) 1. जिसे सिद्‌ध करना हो 2. सिद्‌ध किए जाने लायक।

उपपादित *वि.* (तत्.) 1. प्रमाणित, सिद्‌ध किया हुआ 2. पूरा किया हुआ 3. प्रदत्त 4. संपादित।

उपपाद्य *वि.* (तत्.) दे. उपपादनीय।

उपपीड़न *पुं.* (तत्.) 1. दबाने का कार्य 2. कष्ट देना 3. पीड़ा।

उपपुराण *पुं.* (तत्.) व्यास द्वारा रचित अठारह पुराणों से भिन्न अन्य गौण पुराण इनकी संख्या भी अठारह बताई जाती है जैसे- नारदीय पुराण।

उपपैरा *पुं.* (तत्.+अं.) किसी अनुच्छेद (पैराग्राफ) का छोटा अंश, उप-अनुच्छेद।

उपप्रधान *पुं.* (तत्.) 1. प्रधान के तुरंत बाद का (पद एवं अधिकार की दृष्टि से) पद 2. उक्त पद पद पर आसीन व्यक्ति।

उपप्रमेय *पुं.* (तत्.) गणि. किसी प्रमेय की उपपत्ति से सीधे प्राप्त होने वाला अन्य प्रमेय जिसे सिद्‌ध करने के लिए अलग से कोई तर्क देने की आवश्यकता नहीं होती corollary दे. प्रमेय।

उपप्रविष्टि *स्त्री.* (तत्.) पुस्त.,कोश. मुख्य प्रविष्टि प्रविष्टि से संबंधित वह अन्य प्रविष्टि जिसे मुख्य प्रविष्टि के अंतर्गत या सहायक प्रविष्टि के के रूप में साथ-साथ रखा जाए।

उपप्रश्न *पुं.* (तत्.) मुख्य प्रश्न के अंतर्गत उत्पन्न होने वाला प्रश्न, गौण प्रश्न।

उपप्राण *पुं.* (तत्.) योग. शरीर में स्थित पाँच प्रकार की वायु (नाग, कूर्म, कृकर, देवदत्त और धनंजय) जिनके काम क्रमशः डकार लाना,

पलकें झपकाना, जँभाई लाना, छींक लाना और मृत्यु के पश्चात् शरीर को विघटित करना है।

उपप्लव *पुं.* (तत्.) 1. प्रशा. बागियों द्वारा सरकार सरकार के विरुद्ध लुक-छिपकर आयोजित या संगठित सशस्त्र विद्रोह जिसकी गति या फैलाव क्रांति की भाँति व्यापक नहीं होता 2. प्राकृतिक उत्पात (आँधी, बाढ़ आदि) 4. चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण 4. विध्न, बाधा। emergency

उपप्लवी *वि.* (तत्.) 1. दुखी, संतप्त, पीड़ित 2. सताया हुआ 3. दुखी करने वाला 4. विपत्ति लाने वाला 5. विप्लवी, उपद्रव करने वाला 6. बाढ़ लाने वाला।

उपबंध *पुं.* (तत्.) विधि. किसी विधि, अधिनियम आदि के खंड या उपखंड जिनमें किसी बात की संभावना आदि को ध्यान में रखते हुए पहले से दायित्व, कर्तव्य, नियम आदि की व्यवस्था कर दी जाए, प्रावधान। provision

उपबंधित *वि.* (तत्.) 1. उपबंध से युक्त 2. उपबंध में समाविष्ट 3. उपबंध द्वारा निर्दिष्ट।

उपबाहु *पुं.* (तत्.) बाहु से नीचे अर्थात् कोहनी से कलाई तक का भाग।

उपबृंहण *पुं.* (तत्.) विस्तार, वृद्धि जैसे- वेदों के उपबृंहण के लिए वेदांगों की रचना की गई।

उपबोधन *पुं.* (तत्.) 1. समझना 2. शंकाओं को दूर करना 3. परामर्श देना, सलाह देना। counselling

उपबोधन-मनोविज्ञान *पुं.* (तत्.) मनो. मनोविज्ञान की वह शाखा जिसके अंतर्गत उपबोधन द्वारा समस्याओं या जटिलताओं का अध्ययन एवं निरसन किया जाता है।

उपभवन *पुं.* (तत्.) बड़ी इमारत के साथ जुड़ी छोटी इमारत। annexe

उपभाग *पुं.* (तत्.) दे. उपखंड।

उपभाषा *स्त्री.* (तत्.) भाषा. मुख्य भाषा के अंतर्गत गौण भाषा या बोली, प्रयोग क्षेत्र की दृष्टि से बोली की तुलना में बड़े क्षेत्र की तथा भाषा की तुलना में छोटे क्षेत्र की भाषा, एक भाषा के अंतर्गत अनेक उपभाषाएँ और एक उपभाषा की कई बोलियाँ हो सकती है जैसे- हिंदी (भाषा), पश्चिमी हिंदी (उपभाषा), ब्रज (बोली)।

उपभुक्त *वि.* (तत्.) 1. भोगा हुआ 2. काम या पूरी तरह प्रयुक्त, काम में लाया हुआ 3. जूठा।

उपभुक्ति *स्त्री.* (तत्.) दे. उपभोग।

उपभू *पुं.* (तत्.) खगो. किसी खगोलीय पिंड की कक्षा का वह बिंदु जो पृथ्वी के निकटतम होता है, भूमिनीय। perigee

उपभूषण *पुं.* (तत्.) 1. गौण आभूषण 2. राजा के पहनने के आभूषणों के अतिरिक्त छत्र, कलश, घंटा, चँवर आदि।

उपभेद *पुं.* (तत्.) (किसी वस्तु आदि के) भेद के भी भेद।

उपभोक्ता *वि./पुं.* (तत्.) वाणि. 1. किसी उत्पाद का उपभोग करने वाला या उसे व्यवहार में लाने वाला, वह व्यक्ति, संस्था आदि जो दैनिक जीवन में काम आनेवाली वस्तुओं को बाजार से खरीदकर उनका उपभोग करता है 2. उपयोगकर्ता 3. बरतने वाला, काबिज। consumer

उपभोक्ता अधिशेष *पुं.* (तत्.) अर्थ. उपभोक्ता द्वारा द्वारा उसकी आवश्यकता के आधार पर देय मूल्य की तुलना में बाजार मूल्य कम होने की स्थिति में दोनों मूल्यों का अंतर। उपभोक्ता-बचत। consumer's surplus

उपभोक्ता अनुसंधान *पुं.* (तत्.) अर्थ. विपणन अनुसंधान के अंतर्गत उपभोक्ता या उत्पाद के खरीदारों की रुचियों, प्रवृत्तियों आदि के विषय में किया जाने वाला अनुसंधान जिससे उत्पाद एवं विपणन के लिए सामूहिक योजना बनाई जा सके। consumer research

उपभोक्ता आंदोलन *पुं.* (तत्.) अर्थ. उपभोक्ताओं के सामूहिक हितों के संरक्षण के लिए किया गया आंदोलन, उपभोक्ताओं को जागरूक करने के प्रयास। consumer movement

उपभोक्ता उधार *पुं.* (तत्.+तद्.) अर्थ. उपभोक्ताओं को वस्तु या सेवा खरीदने के लिए सरकार द्वारा

द्वारा या निर्माता/संस्थाओं द्वारा दिया जाने वाला वाला ऋण। consumer credit

उपभोक्ता प्रभार *पुं.* (तत्.) उपभोक्ताओं से बिजली, पानी आदि नागरिक सुविधाओं के लिए उनकी लागत के अनुसार लिया जाने वाला प्रभार। user charge

उपभोक्ता वस्तु *स्त्री.* (तत्.) अर्थ. उपभोक्ता की आवश्यकता पूर्ति की वस्तु। consumer goods

उपभोक्तावाद *पुं.* (तत्.) अर्थ. व्यक्ति की आंतरिक या आत्मिक उन्नति के स्थान पर सुख-सुविधा संबंधी उपभोग या वस्तुओं के संचय पर या आरामतलब जिंदगी जीने पर अधिक बल देने वाली प्रवृत्ति या विचार-धारा। consumerism

उपभोग *पुं.* (तत्.) 1. वाणि. प्राप्त या खरीदी हुई वस्तु का उपयोग या उपभोग करने की क्रिया या भाव consumption 2. वस्तु आदि का आनंद उठाने की क्रिया या भाव enjoyment 3. भोगना, स्वाद लेना, व्यवहार करना, बरतना।

उपभोग स्थगन *पुं.* (तत्.) अर्थ. भविष्य को देखते हुए बचत करने के लिए उपभोग में कमी करना या रोक देना।

उपभोगी *वि.* (तत्.) दे. उपभोक्ता।

उपभोग्य *वि.* (तत्.) भोग किए जाने योग्य (वस्तु)।

उपमंडल *पुं.* (तत्.) 1. मंडल का एक भाग 2. प्रशा. प्रशासन की दृष्टि से एक या अधिक तहसीलों को मिलाकर बनाई गई इकाई। परगना।

उपमंत्री *पुं.* (तत्.) संघ या राज्य की मंत्री परिषद् का सदस्य जो राज्यमंत्री से भी निचले स्तर का हो, सहायक मंत्री। deputy minister

उपमत *पुं.* (तत्.) विधि. मौन रहकर या आपत्ति न करते हुए सहमति व्यक्त करने के भाव।

उपमति *स्त्री.* (तत्.) विधि. अपने हित के विरुद्ध भी मौन रहकर यह व्यक्त करना कि मुझे आपत्ति नहीं है, मौन सहमति, मौन स्वीकृति, मौन सम्मति

उपमर्दन *पुं.* (तत्.) 1. रंगड़ने की किर्या या भाव 2. कुचलना 3. पीसना 4. जोर से हिलाना 5. उजाड़ना 6. नाश 7. उपेक्षा या तिरस्कार।

उपमर्षण *पुं.* (तत्.) विधि. अपराध आदि को धैर्यपूर्वक सहन करते हुए माफ करने का भाव। condonation

उपमा *स्त्री.* (तत्.) 1. समता 2. तुलना 3. साहि. अर्थालंकार का एक भेद जिसमें उपमेय और उपमान में भिन्नता होते हुए भी उपमान के किसी धर्म की उपमेय में सादृश्यता दिखाई देती है। simile

उपमाता *स्त्री.* (तत्.) 1. मातृतुल्य स्त्री 2. मौसी, चाची आदि 3. धाय 4. सौतेली माता, विमाता।

उपमान *पुं.* (तत्.) 1. वह वस्तु जिससे किसी (उपमेय) की तुलना की जाए 2. दर्शन. समानता के आधार पर मान्य प्रमाण।

उपमानोपमेयभाव *पुं.* (तत्.) काव्य. उपमान और उपमेय के बीच संबंध का भाव।

उपमार्ग *पुं.* (तत्.) 1. इंजी. भीड़-भाड़ वाले मुख्य मार्ग से बचकर निकलने के लिए बनाया गया आसान (परंतु लंबा) रास्ता by pass 2. आयु. रक्त के मुख्यमार्ग अर्थात् वाहिका के रोग ग्रस्त हो जाने पर किसी अन्य भाग की वाहिका का प्रतिस्थापन कर के बनाया हुआ मार्ग, जैसे- हृदय पेशी की धमनी की उपमार्ग शल्यक्रिया। by pass surgery

उपमालिनी *स्त्री.* (तत्.) (छंद) एक समवार्णिक छंद।

उपमहाद्वीप *पुं.* (तत्.) विस्तृत किंतु महाद्वीप से से छोटा भू-भाग, महाद्वीप का वह विशाल क्षेत्र जो भौगोलिक या राजनीतिक दृष्टि से एक सार हो।

उपमित *वि.* (तत्.) दे. उपमेय।

उपमिति *स्त्री.* (तत्.) 1. दे. उपमा 2. सादृश्य से प्राप्त ज्ञान।

उपमित्र *पुं.* (तत्.) 1. सामान्य मित्र 2. मित्र के समान व्यक्ति।

उपमेय *वि.* (तत्.) 1. उपमा देने योग्य, जिसकी दूसरे से समानता बताई जाए 2. वह वस्तु जिसकी तुलना किसी उपमान से की जाए।

उपमेयोपमा *स्त्री.* (तत्.) काव्य. वह अर्थालंकार जिसमें उपमान को उपमेय के समान और उपमेय को उपमान के समान वर्णित किया जाता है। जैसे कर के समान कमल और कमल के समान कर है।

उपयंता *पुं.* (तत्.) नियंत्रित करने वाला, पति।

उपयंत्र *पुं.* (तत्.) 1. छोटा यंत्र या औजार 2. चीर-फाड़ के काम आने वाले छोटे यंत्र।

उपयाचन *पुं.* (तत्.) माँगने का कार्य, प्रार्थना करना।

उपयाचना *स्त्री.* (तत्.) (ईश्वर से) कुछ माँगना, प्रार्थना, निवेदन, विनती; मन्नत, मनौती।

उपयाचित *वि.* (तत्.) प्रार्थित, निवेदित।

उपयुक्त *वि.* (तत्.) 1. उपयोग में लाया हुआ, प्रयुक्त 2. उचित, ठीक 3. योग्य विलो. अनुपयुक्त।

उपयुक्ततम की उत्तरजीविता *स्त्री.* (तत्.) जीव. डारविन के अनुसार जीवन संघर्ष में उपयुक्ततम ही जीवित रह पाता है, इन्हीं उपयुक्त जीवों के वरण से विकास संभव हुआ है survival of the fittest दे. जीवन संघर्ष।

उपयुक्तता *स्त्री.* (तत्.) समय, परिस्थिति, आवश्यकता आदि के अनुरूप होने की स्थिति, औचित्य।

उपयोक्तव्य *वि.* (तत्.) उपयोग के योग्य, इस्तेमाल करने योग्य, काम लेने योग्य।

उपयोग *पुं.* (तत्.) 1. व्यवहार, काम में लाना 2. लाभ 3. उपयुक्तता विलो. अनुपयोग।

उपयोगकर *पुं.* (तत्.) अर्थ. वस्तु के उपयोग पर लगने वाला कर। use tax

उपयोगिता *स्त्री.* (तत्.) एक सिद्धांत जो मानता है कि अधिक से अधिक लोगों का अधिक से अधिक हितसाधन करने वाले कार्य ही ठीक हैं, चाहे वे अनैतिक ही क्यों न हों। utility

उपयोगितावाद *पुं.* (तत्.) अर्थ., दर्शन) 1. यह मत कि किसी वस्तु या कार्य की महत्ता उसके अधिकाधिक उपयोगी होने से ही सिद्ध होती है 2. उपयोगिता के आधार पर मूल्यांकन। utilitarianism

उपयोगितावादी *पुं.* (तत्.) अर्थ. आकर्षक होने की अपेक्षा उपयोगी होने पर विश्वास करने वाला, उपयोगितावाद का अनुयायी।

उपयोगी *वि.* (तत्.) 1. काम में आने वाला 2. लाभदायक।

उपयोगी कला *स्त्री.* (तत्.) लौकिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाली कला जैसे बढ़ईगिरी।

उपयोगी साहित्य *पुं.* (तत्.) काव्य. ऐसा साहित्य जो भौतिक या पारलौकिक जीवन में उपयोगी हो, शास्त्र।

उपयोजन *पुं.* (तत्.) विधि. किसी वस्तु या विचार आदि को उपयोग/प्रयोग में लाना या लगाना। application

उपरंजक *वि.* (तत्.) 1. जो रंग चढ़ाए, रंगरेज़ 2. असर डालने वाला, असरकारी, प्रभावी।

उपरंजन *पुं.* (तत्.) 1. पास की वस्तु पर अपना (बुरा) प्रभाव डालना 2. रँगना।

उपरंजनीय *वि.* (तत्.) रँगने योग्य, जिसे रंगना हो।

उपरंजित *वि.* (तत्.) जिस पर रंग चढ़ गया हो।

उपरक्त *वि.* (तत्.) 1. विषयासक्त 2. विपद्ग्रस्त 3. पीड़ित 4. जिस पर बुरा प्रभाव पड़ा हो।

उपरक्षण *पुं.* (तत्.) पहरा, चौकी।

उपरत *वि.* (तत्.) जिसका मन दुनिया से या विषयभोग से हट गया हो, राग रहित, विरक्त।

उपरति *स्त्री.* (तत्.) 1. सामाजिक निषेध या प्रतिबंधों के कारण किसी ऐसी इच्छा पर बलात् प्रतिबंध लगाना जिसे आप सामान्य स्थितियों में पूरा करना पसंद करते हों, जैसे- विशेष अवसरों, दिनों में मांस-मदिरा का निषेध। आत्मसंयम, आत्मनिग्रह, आत्म-त्याग आदि उपरति के ही रूप है abstinence 2. विराग, उदासीनता प्राणि. सक्रियता की दो अवधियों के बीच की प्रसुप्ति की अवस्था।

उपरत्न *पुं.* (तत्.) कम मूल्य के रत्न (जैसे सीप, स्फटिक, मरकत मणि आदि।

उपरना *पुं.* (तद्.) ऊपर का आवरण या परत, दुपट्टा, उत्तरीय।

उपरफट *वि.* (तद्.) (ऐसी बात) जिसमें दिखावा अधिक हो, दिखावटी, बनावटी।

उपरमण *पुं.* (तत्.) 1. विषयों से विरक्त होना 2. यज्ञादि कर्मों का त्याग 3. विश्रांति।

उपरला *वि.* (देश.) ऊपर का, ऊपरी।

उपरस *पुं.* (तत्.) 1 पारे के सदृश गुण वाले पदार्थ, गंधक, अभ्रक, गेरू आदि 2. गौण भाव 3. उपधातु आदि।

उपरांत *अव्य.* (तत्.) अनंतर, बाद में।

उपराग *पुं.* (तत्.) 1. रँगने वाली वस्तु, रंग 2. लाली 3. विषयासक्ति।

उपराज *पुं.* (तत्.) प्राचीन काल में राजा के प्रतिनिधि के रूप में शासन करने वाला अधिकारी।

उपराज्यपाल *पुं.* (तत्.) प्रशा. किसी छोटे राज्य का सर्वोच्च पदाधिकारी या शासक, जो गवर्नर से छोटा होता है। lieutenant governor

उपराम *पुं.* (तत्.) 1. त्याग, उदासीनता 2. विश्राम 3. छुटकारा 4. मृत्यु।

उपराष्ट्रपति *पुं.* (तत्.) भारत की संसद् के दोनों सदनों (लोकसभा और राज्यसभा) के द्वारा निर्वाचित वह पदाधिकारी, जो राष्ट्रपति की अनुपस्थिति, बीमारी आदि के समय उसके कार्य का निर्वहन करता है। भारत में यह राज्यसभा का पदेन सभापति होता है। vice president

उपरि *अव्य.* (तत्.) ऊपर, ऊपर का, ऊपरी।

उपरि परिबंध *पुं.* (तत्.) गणि. किसी संख्या-समुच्चय की वह संख्या जो समुच्चय की अन्य संख्याओं से बड़ी हो या उसके बराबर हो। upper bound

उपरि पुल *पुं.* (तत्.) इंजी. चापाकार सेतु संरचना जिसके नीचे सड़क या रेलमार्ग होता है और ऊपर से वाहन आर-पार आ-जा सकते है fly over, over bridge

उपरि मृदा *स्त्री.* (तत्.) कृषि. भूमि की सतह की वह मिट्टी जो हल की जुताई तक (15-20 सेमी) गहरी हो, ऊपरी मिट्टी top soil तु. अधोमृदा।

उपरि लागत *स्त्री.* (तत्.) दे. अचल लागत।

उपरि वायुमंडल *पुं.* (तत्.) भौ. पृथ्वी के बाहर की ओर लगभग 30 कि.मी. तक फैले हुए गैसीय मंडल के बाहर का वायुमंडल।

उपरि समय भत्ता *पुं.* (तत्.+तद्) निर्धारित समय से अधिक समय तक काम करने पर देय अतिरिक्त भत्ता पर्या. समयोपरि भत्ता, अतिरिक्त समय भत्ता, अतिकाल भत्ता। over time allowance

उपरिका *स्त्री.* (तत्.) विधि. किसी विलेख में बाद में जोड़ी गई लिखत। rider

उपरिगामी सेतु *पुं.* (तत्.) सड़क या रेलमार्ग के ऊपर बना पुल जिस पर पैदल या वाहन से यातायात हो सकता है।

उपरिनिर्दिष्ट *वि.* (तत्.) जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है। पूर्वोक्त, उपर्युक्त टि. कई बार भूल से 'उपरोक्त' शब्द प्रयोग होता है, जो अशुद्ध है।

उपरिभूमिक *पुं.* (तत्.) अंकुरण जिसमें बीज-पत्र भूमि के ऊपर आ जाते हैं, जैसे सेम के बीज में epigean तु. अधोभूमिक।

उपरिभूस्तारी *वि.* (तत्.) भूधरातल पर फैलने वाला प्ररोह, जैसे दूब, पुदीना आदि। runner

उपरिमंडल *पुं.* (तत्.) ऊपर वाला मंडल भूवि. कायांतरण का ऊपरी क्षेत्र, जिसमें ताप, द्रवस्थैतिक दाब क्रमशः मध्यम और कम होते हैं और प्रतिबल stress बहुत अधिक दे. कायांतरण।

उपरिराशि *स्त्री.* (तत्.) अतिरिक्त राशि।

उपरिलिखित *वि.* (तत्.) ऊपर लिखा हुआ या छपा हुआ, पूर्ववर्णित।

उपरिलेख *पुं.* (तत्.) 1. किसी इबारत के ऊपर लिखना 2. प्रशा. लिफाफे पर पते आदि के अलावा ऊपर की तरफ विशेष रूप से कुछ लिखना। superscription

उपरिलेखन-चिह्न *पुं.* (तत्.) किसी कथन या रचना के शीर्षक या नाम को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने के लिए उस अंश से प्रारंभ और अंत में ऊपर लगाने वाले चिह्न, जैसे- तिलक का नारा था 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है'।

उपरिवर्णित *वि.* (तत्.) जिसका वर्णन पहले (ऊपर) किया जा चुका है।

उपरिव्यय *पुं.* (तत्.) प्रशा./अर्थ. किसी व्यावसायिक प्रतिष्ठान को चलाने के लिए अनिवार्य खर्चे जो उत्पादन बढ़ने-घटने से कम-ज्यादा नहीं होते। over heads

उपरिश्रेणिक *वि.* (तत्.) ऊँची श्रेणी का। उच्चस्तरीय।

उपरिसमय *पुं.* (तत्.) काम के लिए निर्धारित समय से अधिक समय तक काम करने की अवधि, अतिकाल, समयोपरि। over time

उपरिसेतु *पुं.* (तत्.) दे. उपरिपुल।

उपरुद्ध *वि.* (तत्.) 1. रोका हुआ, बाधित 2. घेरा हुआ 3. कैद किया हुआ 4. परेशान किया हुआ।

उपरूप *पुं.* (तत्.) भाषा. किसी रूपिम के वे सभी परिवेशगत वैकल्पिक रूप जो स्वनिक दृष्टि से भिन्न हो, जैसे- 'घोड़ा' शब्द (रूपिम) के दो उपरूप है 'घोड़ा' और 'घुड़' (जैसे घुड़सवार में)।

उपरूपक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का छोटा नाटक, गौण रूपक।

उपरोक्त *वि.* (तत्.) दे. उपर्युक्त।

उपरोध *पुं.* (तत्.) 1. रोक, बाधा 2. परेशान करना, अड़चन करना 3. ढकना।

उपरोधक *वि.* (तत्.) उपरोध करने वाला।

उपरोधन *पुं.* (तत्.) 1. रोकने या अड़चन उत्पन्न करने की क्रिया या भाव 2. बाधा, रुकावट, विघ्न, अड़चन।

उपरोधी *वि.* (तत्.) रुकावट उत्पन्न करने वाला।

उपरोहित *पुं.* (देश.) पुरोहित, पूजा पाठ, पंडिताई।

उपर्युक्त (उपरि+उक्त) *वि.* (तत्.) ऊपर या पहले कहा हुआ, उपरोक्त।

उपर्युपरि *क्रि.वि.* (तत्.) क्रमशः ऊपर और ऊपर।

उपल *पुं.* (तत्.) 1. ओला; पत्थर 2. रत्न 3. बादल।

उपलक्ष *पुं.* (तत्.) दे. उपलक्ष्य।

उपलक्षक *वि.* (तत्.) दर्श. 1. अनुमाता, अनुमान करने वाला, 2. बोध कराने वाला, बोधक 3. काव्य. उपादान लक्षणा से युक्त (शब्द) दे. उपादान लक्षणा।

उपलक्षण *पुं.* (तत्.) 1. संकेत 2. काव्य. शब्द की वह शक्ति जिससे निर्दिष्ट वस्तु के अतिरिक्त उस तरह की और वस्तुओं का भी बोध हो 3. देखना 4. बोधक चिह्न।

उपलक्षित *वि.* (तत्.) 1. लक्ष्य किया हुआ 2. अच्छी तरह देखा हुआ 3. अनुमान किया हुआ 4. इशारे से बतलाया गया।

उपलक्ष्य *वि.* (तत्.) 1. लक्ष्य करने योग्य 2. अनुमान करने योग्य 3. वह विशेष बात या अवसर जिसे लक्षित करके अर्थात् ध्यान में

रखकर कुछ किया/कहा जाए *पुं.* सहारा, अनुमान, संकेत, उद्देश्य, निमित।

उपलब्ध *वि.* (तत्.) 1. मिला हुआ, प्राप्त, हस्तगत 2. ज्ञात 3. सुलभ विलो. अनुपलब्ध।

उपलब्धि *स्त्री.* (तत्.) 1. प्राप्ति 2. अनुभव 3. ज्ञान 4. प्रत्यक्ष ज्ञान 5. ग्रहण की योग्यता 6. किसी वस्तु की वह मात्रा जो बाजार में खरीदने या माँग की पूर्ति के लिए किसी समय प्राप्त हो 7. किसी पद पर काम करने से वेतन आदि के रूप में मिलने वाला लाभ 8. प्राप्त की गई सफलता। विलो. अनुपलब्धि।

उपलब्धि परीक्षण *पुं.* (तत्.) मनो. विद्यालयीय विषयों में होने वाली छात्र की प्रगति या दक्षता को मापने के लिए बनाई गई मानक परीक्षा। achievement test

उपलभेदी *पुं.* (तत्.) एक औषधोपयोगी वनस्पति जो 'पथरी' रोग के पाषाणखंडों को नष्ट कर देता देता है। पत्थरचटा टि. इस पौधे की पत्तियाँ मोटी तथा पत्तियों के किनारे कंगूरेदार होते हैं। पत्तियाँ लगभग दीर्घवृत्ताकार तथा 5 से 8 सेमी. चौड़ी होती हैं।

उपलभ्य *वि.* (तत्.) प्राप्य, प्राप्त हो सकने योग्य। विलो. अनुपलभ्य।

उपला *पुं.* (तत्.) जलाने के लिए गोबर को पाथकर और सुखाकर बनाया हुआ कंडा, पाथी, गोबर के रूप में बनाया गया ईंधन, गोयठा।

उपलाकार [उपल+आकार] *वि.* (तत्.) पत्थर के आकार या गुणधर्म वाला, कठोर, शुष्क।

उपलिप्त *वि.* (तत्.) लेप किया हुआ प्रयो. सारा शरीर सौगंधिक अंगरखा से उपलिप्त था (बाणभट्ट की आत्मकथा)।

उपली *स्त्री.* (तद्.) गोबर के छोटे उपले, कंडे, कंडी।

उपलेप *पुं.* (तत्.) 1. किसी तरल रंगीन पदार्थ से की गई लिपाई 2. गाय के गोबर से की गई लिपाई 3. वह वस्तु जिससे लेप किया जाता है, लेप-सामग्री 4. पुताई 5. मालिश।

उपलेपन *पुं.* (तत्.) 1. लीपने का कार्य 2. लेप की सामग्री।

उपलेप्य *वि.* (तत्.) उपलेपन के योग्य, जिसका उपलेपन किया जाना हो, जिस पर उपलेपन किया जाना हो।

उपलोपन *वि.* (तत्.) 1. पत्थर जैसा 2. कठोर 3. शुष्क 4. जिस पर बाहरी वस्तु या वातावरण का प्रभाव न हो।

उपल्ला *पुं.* (देश.) रजाई आदि की ऊपरी परत, बाहरी आवरण।

उपवन *पुं.* (तत्.) 1. बगीचा, उद्यान, फुलवाड़ी 2. कृषि. वृक्षों का कुंज जिसके बीच-बीच में खुला स्थान हो, (पार्क) पर्या. निकुंज। grove

उपवयन *पुं.* (तत्.) ऊपर छितराना, बिखराना।

उपवर्ग *पुं.* (तत्.) (व्यक्तियों, वस्तुओं इत्यादि के) किसी वर्ग के अंतर्गत अन्य सहायक वर्ग।

उपवर्ण *पुं.* (तत्.) भाषा. में किसी वर्णिम (ग्राफीम) के वे सदस्य जो अलग-अलग परिवेशों में उसके सदस्य हैं जैसे- (1) और (अ)। allograph

उपवसन *पुं.* (तत्.) 1. पास रहना 2. उपवास करना 3. भीतर पहनने के वस्त्र।

उपवाक्य *पुं.* (तत्.) भाषा. मुख्य वाक्य के भीतर आया हुआ छोटा घटक जो मुख्य वाक्य के अर्थ संप्रेषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, वाक्यखंड। clause

उपवाद *पुं.* (तत्.) 1. निंदा 2. लांछन, अपवाद।

उपवादी *वि.* (तत्.) निंदक।

उपवायुपति *पुं.* (तत्.) प्रशा. वायुसेना का उच्चाधिकारी जो 'एअर वाइस मार्शल' से छोटा तथा 'ग्रुप कैप्टेन' से बड़ा अधिकारी होता है। air commander

उपवास *पुं.* (तत्.) 1. कुछ समय तक भोजन न करना 2. वह व्रत जिसमें अन्न आदि का त्याग

किया जाता है 3. भोजन का त्याग या अप्राप्ति।

उपवासी *वि.* (तत्.) 1. व्रत-उपवास करने वाला 2. निराहार रहने वाला।

उपविजेता *पुं.* (तत्.) खेलकूद की प्रतियोगिताओं में दूसरे स्थान पर आया खिलाड़ी।

उपविद्या *स्त्री.* (तत्.) 1. दर्श. सांसारिक विद्या 2. 2. गौण विद्या।

उपविधि *स्त्री.* (तत्.) सार्वजनिक संस्थाओं-निगम, नगरपालिका, विश्वविद्यालय आदि द्वारा अपने कार्यों को ठीक सँभालने के लिए बनाए गए नियम जो उस संस्था में विधि के समान ही लागू होते हैं। bye law

उपविभाग *पुं.* (तत्.) दे. उपवर्ग।

उपविभाजन *पुं.* (तत्.) एक बार विभाजन होने के पश्चात् किसी भाग का पुन: विभाजन।

उपविष *पुं.* (तत्.) हलका विष (धतूरा, मंदार आदि)।

उपविष्ट *पुं.* (तत्.) 1. बैठा हुआ 2. प्रविष्ट।

उपवीत *पुं.* (तत्.) 1. भारतीय समाज में कुछ जातियों द्वारा धारण किया जाने वाला पवित्र सूत्र, यज्ञोपवीत, जनेऊ 2. उपनयन संस्कार।

उपवीती *वि.* (तत्.) यज्ञोपवीतधारी।

उपवृंहण *पुं.* (तत्.) दे. उपबृंहण।

उपवृंहित *वि.* (तत्.) बढ़ाया हुआ, वर्धित, उपबृंहित।

उपवेद *पुं.* (तत्.) वेदों से निकली लौकिक विधाएँ आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद, संगीत, कला और स्थापत्यवेद, इतिहास (रामायण, महाभारत) और पुराणों को भी उपवेद कहा जाता है।

उपवेष्टन *पुं.* (तत्.) लपेटने की क्रिया, लपेटी जाने जाने वाली वस्तु।

उपव्यवसाय *पुं.* (तत्.) मुख्य धंधे के अतिरिक्त गौण रूप से किया जाने वाला व्यवसाय। avocation

उपशम *पुं.* (तत्.) 1. शांत होना, कष्ट का घटना; विश्रांति, अल्पनिवारण 2. वासनाओं का शमन, निवृत्ति, इंद्रिय निग्रह। 3. कष्ट, विपत्ति आदि के निवारण का उपाय प्रयो. कष्टों में अल्प उपशम भी क्लेश को घटाता है (प्रिय प्रवास; दशम सर्ग)

उपशमन *पुं.* (तत्.) 1. शांत करना या होना 2. तुष्ट करना 3. निवारण 4. दबाना।

उपशमित *वि.* (तत्.) 1. शांत किया हुआ (क्रोध आदि) 2. दबाया हुआ (शत्रु) 3. दूर किया हुआ (रोग)।

उपशय *वि.* (तत्.) शांति देने वाला, शमन करने वाला *पुं* आयु. औषधि, पथ्य आदि द्वारा रोग का निदान 2. चिकित्सा।

उपशाखा *स्त्री.* (तत्.) 1. छोटी शाखा 2. शाखा की की शाखा, छोटी डाली, टहनी।

उपशामक *वि.* (तत्.) 1. इच्छाओं, विकारों आदि को शांत करने वाला 2. निवारक।

उपशास्त्र *पुं.* (तत्.) 1. कम महत्ववाला या गौण शास्त्र 2. किसी कला या शिल्प की विद्या।

उपशास्त्रीय संगीत *पुं.* (तत्.) संगी. भारतीय संगीत की वे रचनाएँ/प्रस्तुतियाँ जिनमें संगीतशास्त्र के नियमों से थोड़ी छूट ली जाती है, जैसे कंठ संगीत में दादरा, ठुमरी, अभंग आदि और वाद्य संगीत में धुनें। semi-classical music

उपशिक्षक *पुं.* (तत्.) 1. सहायक शिक्षक, नायब मुदर्रिस 2. ट्यूटर, अनुशिक्षक।

उपशिष्य *पुं.* (तत्.) शिष्य का शिष्य।

उपशीर्ष *पुं.* (तत्.) प्रशा. अध्ययन, सुविधा की दृष्टि से किसी प्रलेख, प्रतिवेदन, लेखन-राशि आदि का मुख्य शीर्षकों में विभाजन करने के उपरांत उनका पुन: उपविभाजन। sub-head

उपशीर्षक *पुं.* (तत्.) किसी विषय के विभाजन में प्रयुक्त गौण शीर्षक या छोटा शीर्षक, मुख्य

शीर्षक के नीचे या बीच में दिया जाने वाला शीर्षक। sub-headings

उपश्लेष *पुं.* (तत्.) 1. निकट संपर्क 2. आलिंगन, लिपटना।

उपसंग *क्रि.वि.* (तत्+देश) समीप, पास।

उपसंज्ञात *पुं.* (तत्.) 1. वकील आदि के रूप में किसी अन्य (मुवक्किल) के स्थान पर उपस्थित होना 2. प्रतीत होना 3. प्रकट होना।

उपसंपदा *स्त्री.* (तत्.) 1. उपसंपत्ति 2. गुरु के समक्ष आत्मनिवेदनपूर्वक शिष्यत्व स्वीकारना 3. (बौद्ध) बौद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण करना।

उपसंपादक *पुं.* (तत्.) 1. किसी पत्र-पत्रिका के संपादक के सहायक का पद 2. उक्त पद पर स्थित अधिकारी। sub editor

उपसंविदा *पुं.* (तत्.) (वाणि.) 1. किसी बड़े कार्य के एक भाग के लिए दिया गया ठेका 2. बड़े ठेके के अंतर्गत दिया गया छोटा ठेका। sub contract

उपसंस्कार *पुं.* (तत्.) एक संस्कार के अंतर्गत होने वाले कोई गौण संस्कार जैसे- उपनयन संस्कार के समय मुंडन संस्कार।

उपसंस्कृति *स्त्री.* (तत्.) समाज के किसी विशेष वर्ग की संस्कृति जो होती तो पूरे समाज की है पर कुछ अंशों में अन्य से भिन्न होती है।

उपसंहार *पुं.* (तत्.) 1. लेख आदि के अंत में दिया जाने वाला वक्तव्य या सारांश 2. पुस्तक का प्राय: अंतिम अध्याय 3. समाप्ति 4. समेटना 5. सारांश।

उपसंहित *वि.* (तत्.) 1. संबद्ध या युक्त (किसी को) 2. परिवेष्टित, लपेटा हुआ।

उपसभापति *पुं.* (तत्.) किसी संस्था, सभा आदि में सभापति की अनुपस्थिति में उसके कार्यों के संपादन के लिए प्राधिकृत व्यक्ति। Vice President, Vice Chairman, Deputy Chairman

उप समिति *स्त्री.* (तत्.) मुख्य समिति के कार्यों में से कुछ कार्यों को देखने के लिए मुख्य समिति के अधीन गठित समिति, छोटी समिति sub committee

उपसर्ग *पुं.* (तत्.) 1. समीप छोड़ा गया, पास रखा गया 2. भाषा. वह शब्दांश या अव्यय जो किसी शब्द के पहले लगता है और अर्थ में विशेषता लाकर नए शब्द का निर्माण करता है जैसे- अनु (कूल) prefix तु. प्रत्यय 2. अपशकुन 3. दैवी उत्पात 4. योग. योगियों के योग में होने वाला विघ्न जो पांच प्रकार का होता है 5. आयु. रोगाणुओं का आक्रमण। infection

उपसर्जन *पुं.* (तत्.) 1. उड़ेलना 2. दैवी उत्पात 3. ग्रहण 4. त्याग।

उपसागर *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का छोटा सागर जो तट से चौड़े वक्राकार रूप में घिरा होता है, समुद्र की खाड़ी।

उपसाधन *पुं.* (तत्.) किसी मुख्य वस्तु के पूरक का काम देने वाली गौण वस्तु उदा. कंधे पर डाला गया अंगवस्त्रम या कैमरे अथवा मोबाइल को सुरक्षित रखने वाला डिब्बा या कवर। accessory

उपसीजना *अ.क्रि.* (तद्.) अधीन होना।

उपसृष्ट *वि.* (तत्.) 1. उपसर्गयुक्त वि. उपसर्ग का का शाब्दिक अर्थ 'नई सृष्टि' है, उपसर्ग लगाकर धातु का अर्थ बदल भी जाता है 2. पीड़ित 3. (किसी रोग, भूत-प्रेत, ग्रह आदि द्वारा) ग्रस्त 4. 4. आयु. संक्रामक या अन्य जीवाणुओं द्वारा ग्रस्त (शरीर), संक्रमित।

उपसेचन *पुं.* (तत्.) 1. सींचना 2. गीला या तर करना 3. गीला या तर पदार्थ 4. रसेदार भोज्य पदार्थ।

उपसेवन *पुं.* (तत्.) 1. सेवा 2. पूजन, सम्मान, आराधना 3. प्रयोग या उपयोग करने का भाव 4. लिप्त या रत होने का भाव।

उपसौर *पुं.* (तत्.) खगो. किसी ग्रह, उल्का इत्यादि के भ्रमणमार्ग का सूर्य से निकटतम बिंदु, रविनीच।

उपस्कर *पुं.* (तत्.) 1. घर का सामान 2. ऐसी कोई भी वस्तु जिससे काम करने में सहायता मिले, जरूरी साज-सामान, फर्नीचर 3. जीवन निर्वाह की आवश्यक सामग्री; रसद, सामान 4. वस्त्राभूषण आदि।

उपस्करण *पुं.* (तत्.) 1. सजाने-सँवारने की क्रिया या भाव, सजाना-सँवारना। furnishing

उपस्कार *पुं.* (तत्.) दे. उपस्कर।

उपस्कृत *वि.* (तत्.) उपस्कर से युक्त दे. उपस्कर।

उपस्तरण *पुं.* (तत्.) 1. बिछावन, चादर 2. फैलाना, बिछाना।

उपस्त्री *स्त्री.* (तत्.) उपपत्नी, रखैल।

उपस्थ *पुं.* (तत्.) 1. शरीर का मध्य भाग 2. पेड़ू 3. स्त्री या पुरुष की जननेंद्रिय 4. गोद 5. गुदा 6. नितंब।

उपस्थान *पुं.* (तत्.) 1. पास आना, सामने आना 2. उपस्थिति, मौजूदगी 3. उपासना स्थल 4. देवता के सामने खड़े हो कर की गई स्तुति या आराधना।

उपस्थानशाला *स्त्री.* (तत्.) बौद्ध धर्म में उपासना हेतु निर्मित सभा-भवन।

उपस्थापक *वि.* (तत्.) विषय की प्रस्तावना करने वाला, प्रस्तुतकर्ता।

उपस्थापन *पुं.* (तत्.) विधि. 1. सम्मुख प्रस्तुत करना 2. न्यायालय में वाद से संबंधित कागज-पत्र प्रस्तुत करना, पास या सामने रखना। presentation

उपस्थापनीय *वि.* (तत्.) 1. जिसे (जिस विषय या प्रकरण को) प्रस्तुत करना हो 2. प्रस्तुत करने योग्य।

उपस्थापित *वि.* (तत्.) प्रस्तुत किया हुआ (विषय सामग्री आदि)।

उपस्थित *वि.* (तत्.) 1. विद्यमान, मौजूद, हाजिर, समीप बैठा हुआ, ध्यान में आया हुआ, विलो. अनुपस्थित।

उपस्थिति *स्त्री.* (तत्.) 1. हाजिरी, विद्यमानता 2. 2. प्राप्ति 3. स्मरण शक्ति विलो. अनुपस्थिति।

उपस्थिति-पंजिका *स्त्री.* (तत्.) कार्य करने वालों की उपस्थिति का विवरण दर्शाने वाली पंजी। attendence-register

उपस्पर्श *पुं.* (तत्.) 1. स्पर्श 2. आचमन 3. कुल्ला।

उपस्मृति *स्त्री.* (तत्.) छोटी स्मृतियाँ, धर्मशास्त्र के के छोटे ग्रंथ टि. लौगाक्षिस्मृति, गोभिलस्मृति आदि 18 विधि ग्रंथों को उपस्मृति कहते हैं।

उपस्वत्व *पुं.* (तत्.) जमीन या पूँजी से होने वाली आय, लाभ लगान।

उपस्वन *पुं.* (तद्.) किसी स्वनिम के विविध परिवेशों में उच्चरित विभिन्न रूप। allophone

उपहत *वि.* (तत्.) 1. चोट खाया हुआ, घायल 2. नष्ट किया हुआ 3. विकृत, दूषित 4. बिगाड़ा हुआ

उपहतचित्त *वि.* (तत्.) 1. बेचैन 2. उद्विग्न 3. खोया हुआ 4. विक्षिप्त, पागल।

उपहति *स्त्री.* (तत्.) आयु. हथियार आदि से लगी चोट। hurt injury

उपहसित *पुं.* (तत्.) 1. व्यंग्य से भरा हास, उपहास 2. हास के छह भेदों में से एक टि. अन्य भेद- स्मित, हसित, विहसित, अपहसित, अतिहसित।

उपहार *पुं.* (तत्.) भेंट, सौगात, नजराना।

उपहारकर *पुं.* (तत्.) राज. प्राप्त उपहारों पर लगने लगने वाला कर।

उपहार चेक *पुं.* (तत्.) उपहार स्वरूप दिया जाने वाला विशेष चेक।

उपहार प्रति *स्त्री.* (तत्.) प्रकाशक अथवा लेखक द्वारा पाठक, आलोचक आदि को पुस्तक की निःशुल्क भेंट की गई प्रति complimentary copy पर्या. मानार्थ प्रति।

उपहारी *वि.* (तत्.) उपहार देने वाला।

उपहास *पुं.* (तत्.) हँसी, दिल्लगी 2. निंदा।

उपहासक *वि.* (तत्.) 1. (किसी का) मजाक उड़ाने वाला 2. मज़ाकिया स्वभाव वाला *पुं.* विदूषक।

उपहासजनक *वि.* (तत्.) जिससे हँसाई हो या खिल्ली उड़े।

उपहास पात्र *वि.* (तत्.) 1. जिसका मज़ाक उड़ाया गया हो 2. उपहास के योग्य 3. निकृष्ट कोटि का।

उपहासास्पद *वि.* (तत्.) उपहास के योग्य। उपहासपात्र।

उपहासी *वि.* (तत्.) उपहास करने वाला।

उपहास्य *वि.* (तत्.) दे. उपहासास्पद।

उपहित *वि.* (तत्.) 1. समीप रखा गया 2. समीपस्थ 3. दर्शन उपाधि से युक्त *क्रि.वि.* पूर्वक जैसे- बलोपहित=बलपूर्वक।

उपांग उद्योग *पुं.* (तत्.) वाणि. प्रमुख उद्देश्य के पूरक उद्योग, अनुषंगी उद्योग। subsidiary industry

उपांग *पुं.* (तत्.) 1. अंग का विभाग, अवयव 2. वह विषय जिससे किसी ज्ञान के अंगों की पूर्ति हो। जैसे- वेदांग के पूरक विषय के रूप में मीमांसा, न्याय आदि 2. प्राणि. शरीर के किसी अंग से जुड़ा सहायक अंग जैसे- appendix

उपांत *पुं.* (तत्.) 1. मुद्रण में या लिखने में पृष्ठ पर चारों ओर छोड़ी गई खाली जगह, हाशिया margin 2. अंतिम से एक पहला 3. छोर, किनारा।

उपांतरण *पुं.* (तत्.) मूल के स्वरूप को सुरक्षित रखते हुए किए गए सुधार या परिवर्तन। modification

उपांतस्थ *वि.* (तत्.) 1. उपांत पर स्थित दे. उपांत 2. हाशिए या फुटनोट में लिखा हुआ।

उपांतिक *वि.* (तत्.) 1. उपांत 2. पड़ोसी।

उपांतिक समायोजन *पुं.* (तत्.) वाणि. किसी देय राशि की ठीक-ठीक गणना के उपरांत किसी अन्य कारक के साथ मेल बिठाने के लिए उस राशि को कुछ कम या अधिक कर देने की क्रिया। marginal adjustment

उपांतिका *स्त्री.* (तत्.) दे. 'उपकक्ष'।

उपांत्य *वि.* (तत्.) 1. अंत का समीपवर्ती 2. अंतिम का समीपवर्ती, अंतिम से पहले का दे. उपधा 3. उपांत से संबंधित 4. उपांत का *पुं.* 1. छोर 2. नेत्र की कोर 3. पड़ोस।

उपांशु *पुं.* (तत्.) मंद स्वर दे. फुसफुसाहट

उपांशुजप *पुं.* (तत्.) अस्फुट स्वर में किया गया जप।

उपाकर्म *पुं.* (तत्.) 1. प्रारंभ 2. श्रावणी पूर्णिमा को संस्कारपूर्वक वेदाध्ययन का प्रारंभ टि. पहले आषाढ पूर्णिमा को गुरुपूजन होता था तथा श्रावण पूर्णिमा से अध्ययन-अध्यापन का सत्र प्रारंभ हो जाता था 3. श्रावणी पूर्णिमा को नवीन यज्ञोपवीत धारण करने का संस्कार श्रावणी कर्म 4. यज्ञोपवीत संस्कार।

उपाख्या *स्त्री.* (तत्.) किसी घटना, कथा आदि का शब्दबद्ध वर्णन या विवरण।

उपाख्यान *पुं.* (तत्.) 1. पौराणिक कथा 2. किसी कथा के अंतर्गत कोई और कथा, अंत:कथा (अंतर्कथा) प्रयो. महाभारत में अनेक राजाओं के उपाख्यान हैं तु. आख्यान।

उपागम *पुं.* (तत्.) 1. निकट आना, पहुँचना 2. किसी विषय को समझने का अपना दृष्टिकोण 3. शिक्षा. व्याख्या करने की निहित क्षमता। approach

उपाचार्य *पुं.* (तत्.) विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों आदि में आचार्य के नीचे का पद। assistant professor, vice principal

उपाड़ना *स.क्रि.* (तद्) (तत्.उत्पाटन) 1. उखाड़ने की क्रिया या भाव 2. समूल नष्ट करना 3. ऊपर करना।

उपात्यय *पुं.* (तद्.) 1. सीमा लाँघना 2. मर्यादा लाँघना 3. प्रचलित प्रथा के विपरीत कार्य करना 4. आज्ञा का उल्लंघन 5. उद्दतता या उद्दंडता।

उपादान *पुं.* (तत्.) 1. घटक, वह द्रव्य जिससे कोई वस्तु बने 2. ज्ञान 3. ग्रहण 4. लक्षणा शक्ति का एक प्रभेद 5. सांख्य दर्शन में चार तरह की आध्यात्मिक संसक्तियों में से एक।

उपादान कारण *पुं.* (तत्.) 1. वह कारण जो स्वयं कार्यरूप में परिणत हो जाए 2. (बौद्ध दर्शन) तृष्णा-जनित संसक्ति प्रयो. मिट्टी घड़े का उपादान है।

उपादान लक्षण *स्त्री.* (तत्.) काव्य. शब्दशक्ति के के संदर्भ में शुद्ध लक्षणा का एक भेद। शब्द के मुख्यार्थ के साथ-साथ गौण अर्थ की संलग्नता वाली लक्षणा जैसे- 'गायों से खेत की रक्षा करों।' इस वाक्य में गाय शब्द का अर्थ गाय के साथ-साथ अन्य पशु भी हैं, अतः यहाँ 'समस्त पशु-पक्षी' यह अर्थ उपादान लक्षणा से सिद्ध होता है।

उपादेय *वि.* (तत्.) 1. उपयोगी 2. ग्रहण करने योग्य 3. उत्तम, श्रेष्ठ।

उपाधि *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी पाठ्यक्रम की सफल समाप्ति पर संस्था या विश्वविद्यालय द्वारा परीक्षार्थी या प्रशिक्षु को दी जाने वाली अकादमिक डिग्री आदि 2. प्रतिष्ठासूचक या सम्मानार्थ पदवी या पद, खिताब 3. गुण-धर्म 4. विशेष लक्षण 5. छल, धोखा 6. उपद्रव।

उपाधिक *वि.* (तत्.) जो उपाधि करता हो, छली, कपटी।

उपाधिधारी *वि.* (तत्.) जिसे कोई उपाधि प्राप्त हुई हो।

उपाधी *वि.* (तत्.) 1. उपद्रवी, उत्पाती 2. छली, धोखेबाज।

उपाध्यक्ष *पुं.* (तत्.) प्रशा. अध्यक्ष की अनुपस्थिति में या उसकी सहायता के लिए उसके कार्यों का निर्वहन करने को लिए नियुक्त, मनोनीत या निर्वाचित अधिकारी दे. उपसभापति।

उपाध्याय *पुं.* (तत्.) 1. वेद-वेदांग पढ़ानेवाला 2. अध्यापक, शिक्षक 3. ब्राह्मणों का एक वर्ग।

उपाध्यायानी *स्त्री.* (तत्.) 1. उपाध्याय की पत्नी, गुरु पत्नी 2. महिला उपाध्याय।

उपान *पुं.* (देश.) 1. जमीन के सामान्य स्तर से कुछ ऊपर बने मकान का निचला भाग 2. मकान की कुर्सी 3. खंभे के नीचे चौकीनुमा भाग।

उपानह *पुं.* (तत्.) जूता, पादुका।

उपानुक्रमणिका [उप+अनुक्रमणिका] *स्त्री.* (तत्.) अनुक्रमणिका के अंतर्गत पुनः विषयानुसार या वर्गानुसार लघु अनुक्रमणिका जैसे- व्याकरण की पुस्तक की अनुक्रमणिका में 'शब्दभेद' के अंतर्गत 'संज्ञा', 'सर्वनाम' आदि की पृष्ठ संख्या। संख्या।

उपापचय *पुं.* (तत्.) समस्त रासायनिक अभिक्रियाओं का पूर्णयोग जिससे जैव प्रक्रियाओं के लिए ऊर्जा प्राप्त होती है और नए कोशिका पदार्थ संश्लेषित होते हैं। metabolism

उपाबंध *पुं.* (तत्.) 1. किसी बड़ी या महत्वपूर्ण चीज का छोटा भाग। जैसे बँगले से जुड़ा हुआ लॉन 2. विधि. अतिरिक्त रूप से साथ जोड़ा गया अंश। annexure

उपाय *पुं.* (तत्.) 1. वह व्यक्ति जिससे अभीष्ट तक पहुँचा जा सकता है, तदबीर, साधन, यत्न 2. राजनीति में शत्रु पर विजय प्राप्त करने की चार युक्तियाँ साम (मैत्री), दाम, दंड और भेद प्रयो. दुर्योधन पांडवों पर विजय प्राप्त करने हेतु निरंतर उपाय करता रहा।

उपाय चतुष्टय *पुं.* (तत्.) शत्रु पर विजय प्राप्त करने के चार साधन साम, दाम, दंड और भेद।

उपायन *पुं.* (तत्.) ध्यान और प्रयत्न पूर्वक किसी वस्तु को प्राप्त करने की क्रिया या भाव।

उपायशून्य *वि.* (तत्.) जिसके पास कोई उपाय न बचा हो, निरूपाय।

उपायसप्तक *पुं.* (तत्.) शत्रु विजय हेतु सात साधनों का समूह- साम, दाम, दंड, भेद, उपेक्षा, माया और इंद्रजाल।

उपायी *वि.* (तत्.) उपाय-युक्त, जिसके पास उपाय हो विलो. निरुपाय।

उपायुक्त *पुं.* (तत्.) प्रशा. आयुक्त के नीचे का अधिकारी। deputy commissioner

उपार्जक [उप+अर्जक) *वि.* (तत्.) उपार्जन करने वाला, धन कमाने वाला।

उपार्जन *पुं.* (तत्.) 1. परिश्रम या प्रयत्न करके धन कमाना, प्राप्त करना, पैदा करना 2. वैध उपायों से हस्तगत या प्राप्त करना प्रयो. जीविका-उपार्जन का कोई साधन उसके पास नहीं है।

उपार्जित *वि.* (तत्.) कमाया हुआ, प्राप्त किया हुआ, (धन, यश, पद आदि)।

उपालंभ *पुं.* (तत्.) 1. उलाहना, शिकायत प्रयो. भ्रमरगीत में कृष्ण के प्रति गोपिकाओं का उपालंभ व्यक्त हुआ है 2. निंदा, दुर्वाक्य 3. वर्जन।

उपावर्तन *पुं.* (तत्.) 1. पास आना 2. वापस आना 3. चक्कर देना 4. विरत होना।

उपावृत्त *वि.* (तत्.) 1. लौटा हुआ 2. चक्कर खाया हुआ 3. विरत।

उपाश्रय [उप+आश्रय] *वि.* (तत्.) छोटा सहारा, सामान्य सहारा।

उपास *पुं.* (तत्.) व्रत, उपवास।

उपासक *वि.* (तत्.) 1. पूजा करने वाला, भक्त, आराधक 2. अनुयायी। *पुं.* (तत्.) भिक्षु से भिन्न बुद्ध का अनुयायी।

उपासना *स्त्री.* (तत्.) 1. बैठकर ध्यानावस्था में पूजा करना, आराधना 2. पास बैठने की क्रिया 3. सेवा 4. भक्ति उपासना करना।

उपासनात्रय *पुं.* (तत्.) उपासना के तीन प्रकार ब्रह्मोपासना, मन्त्रोपासना और मूर्ति-उपासना।

उपासनात्रयी *स्त्री.* (तत्.) वैदिक मंत्रों से स्तुति, हवन एवं लौकिक मंत्रों से स्तवन (स्तोत्र पाठ) ये तीन उपासना की विधियाँ।

उपासनीय *वि.* (तत्.) 1. उपासना के योग्य 2. आराध्य 3. पूज्य।

उपासा *स्त्री.* (तत्.) 1. आराधना 2. ब्रह्मचिंतन 3. 3. सेवा वि. (तद्.) 1. जिसने उपवास रखा हो 2. जिसने कुछ न खाया हो, भूखा।

उपासित *वि.* (तत्.) 1. जिसकी उपासना की जा रही हो या की गई हो 2. आराध्य।

उपासी *वि.* (तत्.) व्रती, उपवासी, जिसने उपवास रखा हो।

उपास्त्र *पुं.* (तत्.) 1. छोटा अस्त्र 2. सहायक अस्त्र, मुख्य अस्त्र-शस्त्र के साथ ही आवश्यकता के लिए रखा गया अस्त्र।

उपास्थि *स्त्री.* (तत्.) लचीला संयोजी ऊतक जो कंकाल का अंग होता है। cartilage

उपास्य *पुं.* (तत्.) पूजा के योग्य, आराध्य, आराधना किए जाने योग्य।

उपाहार *पुं.* (तत्.) जलपान, नाश्ता, अल्पाहार।

उपाहारगृह *पुं.* (तत्.) 1. कार्यालय, कारखाने, रेलवे प्लेटफार्म आदि पर वह स्थान जहाँ जलपान, चाय, नाश्ता आदि की व्यवस्था हो। restaurant

उपेंद्र *पुं.* (तत्.) 1. इंद्र का छोटा भाई 2. कृष्ण 3. विष्णु।

उपेंद्रवज्रा *स्त्री.* (तत्.) छंद. एक समवर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण और दो गुरु वर्ण होते हैं।

उपेक्षक *वि.* (तत्.) 1. जो उपेक्षा करता हो, अनदेखी करने वाला 2. सावधानी से काम न करने वाला, लापरवाह 3. विरक्त।

उपेक्षण *पुं.* (तत्.) 1. अनादर 2. तिरस्कार, अवहेलना 3. किसी के प्रति लापरवाही करना।

उपेक्षणीय *वि.* (तत्.) 1. उपेक्षा करने योग्य, घृणा करने योग्य 2. त्यागने योग्य।

उपेक्षा *स्त्री.* (तत्.) 1. उदासीनता, अवहेलना 2. घृणा, तिरस्कार 3. लापरवाही 4. योग की एक वृत्ति, अनासक्ति टि. अन्य वृत्तियाँ-मुदिता, मैत्री, करुणा।

उपेक्षित *वि.* (तत्.) जिसकी उपेक्षा की गई हो, तिरस्कृत।

उपेक्ष्य *वि.* (तत्.) 1. जिसके प्रति लापरवाही हो रही हो 2. उपेक्षा के योग्य।

उपेत *वि.* (तत्.) 1. समीप आया हुआ 2. मिला हुआ, प्राप्त 3. युक्त, संपन्न।

उपेय *वि.* (तत्.) 1. जो उपाय करने से साध्य हो सकता है 2. प्राप्त करने योग्य, प्राप्तव्य।

उपोत्पाद [उप+उत्पाद] *पुं.* (तत्.) वाणि./रसा. किसी वस्तु के उत्पादन की प्रक्रिया में उत्सर्जित गौण उत्पाद, जिन्हें स्वतंत्र रूप से इस्तेमाल किया जा सकता है, जैसे- चीनी बनाते समय निकला शीरा। by product

उपोद *वि.* (तत्.) 1. संचित 2. निकट लाया हुआ 3. शुरू किया हुआ 4. युद्ध के लिए तैयार 5. विवाहित।

उपोद्घात *पुं.* (तत्.) 1. किसी पुस्तक के आरंभ का वक्तव्य, भूमिका 2. नव्य न्याय में छह संगतियों में से एक।

उपोषण *पुं.* (तत्.) 1. उपवास, निराहार रहने का भाव 2. व्रत करने का भाव।

उपोषित *वि.* (तत्.) जिसने उपवास किया हो दे. उपोषण।

उपोसथ *पुं.* (तद्.+उपवसथ) पालिभाषा का शब्द, बौद्ध. विशिष्ट तिथियों पर होने वाली बौद्धों की की सभा।

उप्त *वि.* (तत्.) बोया हुआ।

उप्ति *स्त्री.* (तत्.) बोने की किर्या या भाव।

उप्पर *क्रि.वि.* (तद्.) ऊपर।

उप्य *वि.* (तत्.) 1. बोने योग्य 2. जिसे बोना हो।

उफ *पुं.* (अ.) दुख, पीड़ा, पछतावा आदि उद्गार का का सूचक, आह मुहा. उफ तक न करना -मुँह से आह तक न निकलना, पीड़ा को पी जाना, पीड़ा को व्यक्त न करना।

उफनना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. उबलना, तापन के कारण फेन सहित उबाल आना 2. क्रोध में आना 3. ला.अ. नदी के जल का तटों से बाहर जाकर तीव्रगति से बहना।

उफान *पुं.* (तद्.) 1. किसी वस्तु का गर्मी पाकर फेन सहित ऊपर उठना 2. जोश खाना 3. उठना, उबाल।

उंबर/उंबुर *पुं.* (तत्.) द्वार के चौखट की ऊपर वाली लकड़ी।

उबकना *अ.क्रि.* (देश.) कै करना, उलटी करना, वमन करना।

उबका *पुं.* (तद्.) 1. मुक्त 2. बचा हुआ, अवशिष्ट 3. जिसका उद्धार हो गया हो।

उबकाई *स्त्री.* (देश.) उलटी, कै, मतली।

उबकावनी *वि.* (तत्.) कै जैसी, उलटी करने जैसी, मतली आने जैसी।

उबटन *पुं.* (तद्.) शरीर पर मलने के लिए सरसों, तिल और चिरौंजी आदि को पीस कर बनाया गया लेप।

उबटना *अ.क्रि.* (तद्.) उद्धार पाना, मुक्त होना 2. छूटना, बचना 3. शेष रहना।

उबरना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. उबटन लगाना, उबटन आदि की मालिश 2. ददोरा पड़ना, चोट से शरीर पर निशान लगना 3. पलटना।

उबरे *वि.* (तद्.) सबल विलो. दुबरे।

उबलना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. उफनना, खौलना, ऊपर की ओर जाना 2. जोश खाना, अति क्रोधित होना, आपे से बाहर होना 3. उमड़ना।

उबसन *पुं.* (तद्.) बरतन माँजने में काम आने वाला मूठा, जूना, जो घास-पात, नारियल के रेशे आदि से बना होता है।

उबसना *स.क्रि.* (तद्.) बर्तन माँजना *अ.क्रि.* (तद्) सड़ना, गलना।

उबसाना *अ.क्रि.* (तद्.) (तत्. उद्वासन) 1. किसी से (बर्तन) साफ करवाना 2. दुर्गंधयुक्त करना, सड़ाना।

उबहना *वि.* (तद्.) बिना जूते का, नंगे पाँव वाला।

उबाई *स्त्री.* (तद्.) (तत्.-उद्वेजन) 1. उबरे का भाव भाव 2. जृंभा, जँभाई, उबासी।

उबाक *स्त्री.* (तद्.) 1. वमन करने की इच्छा, मिचलाहट 2. मिचली।

उबाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. ऊबने का कारण होना 2. तंग करना, परेशान करना 3. बर्तन आदि को पोंछकर उनका गीलापन दूर करना *पुं.* (देश.) कपड़ा बुनने में राछ के बाहर रह जाने वाला सूत।

उबार *पुं.* (तद्.) 1. उद्धार, रक्षा 2. बचाव, छुटकारा 3. पर्दा।

उबारन *पुं.* (तद्.) उद्धार *वि.* उद्धार करने वाला।

उबारना *स.क्रि.* (तद्.) 1. उद्धार करना, छुड़ाना 2. बचाना।

उबारा *पुं.* (देश.) पशुओं के पानी पीने के लिए कुएँ के पास बनाया गया कुंड।

उबाल *पुं.* (तद्.) दे. 1. आँच पाकर फेन सहित ऊपर उठना, खौल कर ऊपर उठना, उफान 2. जोश उभर आना 3. क्रोध से भड़क उठना।

उबालना *स.क्रि.* (तद्.) पानी, दूध या किसी तरल पदार्थ को इतना गरम करना कि वह फेन सहित ऊपर उठ आए। तु. खौलाना, औटाना।

उबासी *स्त्री.* (तद्.) नींद, थकान या आलस्य के कारण मुँह खोल कर लंबी साँस लेने-छोड़ने की स्वाभाविक क्रिया, जँभाई।

उबीठा *वि.* (देश.) 1. ऊबा हुआ 2. थका हुआ 3. जँभाई लेता हुआ 4. उबाने वाला, थकाने वाला 5. अरुचिकर।

उबीधा *वि.* (तद्.) (तत्-उद्विद्ध) 1. बिंधा हुआ 2. 2. धँसा हुआ 3. फँसा हुआ 4. बेधने/चुभने वाला 5. फँसाने वाला।

उभड़ना *अ.क्रि.* (तद्.) दे. उभरना।

उभय *वि.* (तत्.) 1. दोनों 2. दो में से प्रत्येक प्रयो. द्वंद्व समास में उभय पद प्रमुख होते हैं।

हैं।

उभयचर *पुं.* (तत्.) 1. जल-थल दोनों में समान रूप से रह सकने वाला जैसे- कछुआ, मेंढक। amphibious

उभयछंद *पुं.* (तत्.) वह छंद जो मात्रिक और वर्णिक दोनों हो जैसे- अनुष्टुभ।

उभयतः *क्रि.वि.* (तत्.) दोनों ओर से, दोनों दिशाओं में, दोनों प्रकार से।

उभयतोमुख *वि.* (तत्.) 1. दोनों ओर मुँह वाला, दो मुहाँ 2. आगे-पीछे दोनों ओर मुँह वाली (मूर्ति), उभयमूर्ति 3. दो प्रकार की बातें बोलने वाला (दल, नेता आदि)।

उभयत्र *क्रि.वि.* (तत्.) 1. दोनों जगह 2. दोनों ओर।

उभयदिक् *क्रि.वि.* (तत्.) दोनो दिशाओं में, दोनों ओर।

उभयद्विगुणित *वि.* (तत्.) कृषि. जातियों के संकरण से प्राप्त (पौधा) जिसे जनक पौधे के गुणसूत्रों की दुगुनी मात्रा से उगाया जाता है। amphidiploid

उभयधर्मी *पुं.* (तत्.) दोनों के गुणधर्मों से युक्त। रसा. (ऐसे तत्व) जो धात्विक और अधात्विक दोनों प्रकार के गुण दर्शाते हैं जैसे- यशद और ऐलुमिनियम जो अम्ल और क्षार दोनों के साथ अभिक्रिया करते हैं। amphoteric

उभयनिष्ठ *वि.* (तत्.) जो दोनों में स्थित हो। common to both

उभयनिष्ठ स्पर्श-रेखा *स्त्री.* (तत्.) गणि. परस्पर स्पर्श करते हुए दो वृत्तों के बीच की स्पर्श रेखा,

जो दोनों वृत्तों की स्पर्श रेखा कही जा सकती है।

उभयनिष्ठता *स्त्री.* (तत्.) उभयनिष्ठ होने का भाव। भाव।

उभय पक्षपाती *पुं.* (तत्.) राज. दो विरोधी पक्षों का समान रूप से या थोड़ा सा पक्ष लेने वाला जैसे- भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य आदि।

उभयपक्षी *वि.* (तत्.) दोनों पक्षों से संबंधित, दोनों पक्षों के बीच। bilateral

उभयपक्षीय समझौता *पुं.* (तत्.) प्रशा.,वाणि. दो सरकारों या दो सरकारों, पक्षों या प्रतिष्ठानों के बीच किसी मुद्दे को लेकर बनी औपचारिक सहमति। bilateral agreement

उभय प्रतिरोधी *पुं.* (तत्.) 1. इंजी. दो वस्तुओं की परस्पर टक्कर का जोर कम करने वाला (लोचदार उपकरण) जैसे रेल के डिब्बे के दोनों ओर लगी प्रतिरोधी युक्ति buffer 2. राज. दो देशों के बीच स्थित (छोटा देश) जो दोनों के बीच सीधे संघर्ष की संभावना कम करता है buffer state 3. रसा. कोई पदार्थ या पदार्थों का मिश्रण जो अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में अम्ल अथवा क्षार मिलाने पर भी स्थिर हाइड्रोजन आयन सांद्रता बनाए रखता है। buffer

उभयभाविता *स्त्री.* (तत्.) मनो. किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति मिश्रित या परस्पर विरोधी भावना रखने या व्यक्त करने का भाव या गुण जैसे- किसी के प्रति प्रेम और घृणा दोनों होना।

उभयमुखी *वि.* (तत्.) दे. उभयतोमुख।

उभयरंध्री *वि.* (तत्.) (वन.) वह पत्ती जिसके दोनों पृष्ठों पर रंध्र हों।

उभयलिंग *वि.* (तत्.) 1. दे. उभयलिंगी 2. व्या. दोनों लिंगों में प्रयुक्त (शब्द), जैसे- मित्र- मेरा मित्र, मेरी मित्र।

उभयलिंगी *वि.* (तत्.) 1. भाषा. शब्द-प्रयोग में दोनों लिगों में व्यवहृत शब्द, जैसे- कलम, दही, झंझट आदि 2. भाषा. ऐसे शब्द जिन्हें दोनों लिंगों में समान रूप से प्रयुक्त करने का सायास विधान किया गया है जैसे- प्रशासनिक पद अध्यक्ष, प्रधान मंत्री, राष्ट्रपति आदि, यहां लिंग भेद, वाक्य क्रिया की अन्विति से स्पष्ट हो हो जाता है जैसे- राष्ट्रपति चले गए/चली गई, निदेशक चले गए आदि 3. जीव. जिसमें नर- मादा दोनों के अंश हों, जैसे- केंचुआ। bisexual, hermaphrodite

उभयवादी *वि.* (तत्.) 1. दोनों पक्षों की बात बोलने वाला 2. संगी. ऐसा वाद्य यंत्र जिसमें स्वर और ताल दोनों निकलते हों।

उभयविध *वि.* (तत्.) दोनों प्रकार का।

उभयवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) दे. उभयभाविता।

उभयसंभव *वि.* (तत्.) (ऐसी परिस्थिति) जहाँ दोनों बातें संभव हों।

उभयसृप विज्ञान *पुं.* (तत्.) प्राणि. प्राणिविज्ञान की वह शाखा जो उभयचरों और सरीसृपों के विषय में संपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करती हैं। herpetology

उभयहस्तता *स्त्री.* (तत्.) दाहिने और बाएँ दोनों हाथों से समान रूप से कार्य कर सकने की दक्षता। dextor

उभयाग्र *पुं.* (तत्.) 1. अर्धचन्द्र के दोनों सिरे 2. दाँतों की नोक 3. वास्तु. मेहराब के शीर्ष 4. गणि. दो वक्ररेखाओं (वलयाकार) का उभयनिष्ठ बिंदु 5. आयु. हृदय की शिराओं का वाल्व जैसा आकार जो किसी धमनी के मिल जाने से बन जाता है। cusp

उभयान्वयी *वि.* (तत्.) 1. दोनों ओर जुड़ सकने वाला 2. दोनों को जोड़ने वाला 3. व्या. जिसका अन्वय पद और वाक्य दोनों से हो सके 4. दो पदों या वाक्यों को जोड़ने वाला जैसे- 'रोको मत जाने दो। 'यहाँ 'मत' 'रोको' और 'जाने दो' दोनों के साथ अन्वित हो सकता है।

उभयार्थ *पुं.* (तत्.) दोनों अर्थ (वि.) 1. द्वि-अर्थी/ द्वयर्थी 3. अस्पष्ट।

उभयार्थक *वि.* (तत्.) 1. दो अर्थों वाला 2. ला.अ. भ्रमोत्पादक।

उभयालंकार *पुं.* (तत्.) दो अलंकारों का मिश्रित रूप। टि. इसके दो रूप होते हैं। संसृष्टि एवं संकर।

उभयावतल (उभय+अवतल) *पुं.* (तत्.) भौ. दोनों तरफ से अवतल biconcave दे. अवतल।

उभयोत्तल *पुं.* (तत्.) भौ. दोनों ओर से उत्तल biconvex दे. उत्तल।

उभयोष्ठ्य *पुं.* (तत्.) दोनों होठों से संबंधित। भाषा. (वह स्वन) जो दोनों ओठों के पास आने के बाद उनके खुलने पर उच्चरित हो जैसे पवर्ग वाले व्यंजन पर्या. द्वि- ओष्ठ्य। bilabial

उभरन *स्त्री* (तत्.) उमड़ने की क्रिया, (दबी हुई चीज के) प्रकट होने का भाव, उकसने का भाव। प्रयो. एक घुटी साँस की उभरन के साथ-साथ ही संत बेनी माधव का रुँधा हुआ कंठ-स्वर अकस्मात् फूटा -मानस का हंस.अ.ला. नागर।

उभरना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. उभड़ना, ऊपर उठना 2.प्रकट होना 3. (रहस्य) खुलना 4. बढ़ना 5. अंकुरण (विद्रोह) 6. धन-मान की वृद्धि होना 7. उकसना।

उभरौंहा *वि.* (देश.) 1. उभरता हुआ 2. उभरने वाला।

उभाड़ *पुं.* (देश.) उठान, ऊँचाई।

उभाड़ना *स.क्रि.* (तद्.) दे. उभारना।

उभार *पुं.* (तद्.) 1. ऊपर उठने का भाव 2. उभरा हुआ भाग 3. वृद्धि, ऊँचाई।

उभारदार *वि.* (तद्.,+फा.) 1. उठा हुआ, उभरा हुआ 2. सतह से ऊँचा।

उभारना *स.क्रि.* (तद्.) किसी वस्तु को धीरे-धीरे ऊपर उठाना 2. बढ़ाना 3. भड़काना 4. उकसाना।

उभारमूर्ति *स्त्री.* (तत्.) किसी समतल आधार पर बनाई हुई त्रि-आयामी कलाकृति, यह कलाकृति दो प्रकार की हो सकती है। उभरी हुई, धँसी हुई या अंदर खुदी हुई, उभरी मूर्ति को उच्च मूर्ति high relief तथा धँसी मूर्ति को अधोगत मूर्ति low relief कहते हैं।

उभिटना *अ.क्रि.* (तद्.) (तत्.-उद्वेष्टन) 1. संकोच करना 2. हिचकिचाना 3. ठिठकना 4. भटकाना।

उभेख *स्त्री.* (तद्.) (तत्.उन्मेष) लालसा, इच्छा, उमंग, एषण।

उभेठी/उभैठी *स्त्री.* (देश.) ऐंठन, मरोड़ना, उमेठन की क्रिया या भाव, ऐंठन करने वाली, अकड़ी हुई, रूठी हुई।

उमंग *स्त्री.* (तत्.) 1. सुखदायी मनोवेग 2. जोश, उल्लास 3. चित्त का उभाड़ प्रयो. द्रौपदी को वरण करके लौटते हुए अर्जुन उमंग से भरे थे।

उमंगना *अ.क्रि.* (तद्.) उमंग में होना, उल्लसित होना, जोश में आना प्रयो. उमगते जननी मुख देखते। किलकते हँसते जब लाडिले (प्रिय प्रवास अष्टम सर्ग)।

उमंगित *वि.* (तत्.) उमंग से युक्त, उत्साहपूर्ण।

उमंथ *पुं.* (तत्.) मथने या बिलोने की क्रिया या भाव।

उमगना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. उमंग या उत्साह से युक्त होना, 2. उमड़ना, घनीभूत होना 3. अधिकता के कारण सीमा से बाहर हो जाना।

उमगान *पुं.* (तद्. उमंग) 1. उमगने का भाव, उमंग 2. उमड़ने का भाव।

उमड़ *स्त्री.* (तद्.) 1. उमड़ने की क्रिया या भाव 2. 2. अधिकता, बाढ़।

उमड़न *स्त्री.* (तद्.) दे. उमड़।

उमड़ना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. पानी या किसी द्रव वस्तु का अधिकता के कारण ऊपर उठना, भर कर ऊपर आना, बह चलना 2. बादलों का उठकर फैलना और छा जाना 3. जोश में आना 4. क्षुब्ध होना प्रयो. सावन-भादों के महीने में

गंगा उमड़ने लगती है मुहा. उमड़ना-घुमड़ना-घूम-घूम कर फैलना।

उमड़ाना *अ.क्रि.* (तद्.) उमड़ना, उमड़ने को प्रवृत्त करना (क्रिया का प्रेरणार्थक रूप)।

उमड़ाव *पुं.* (तद्.) उमड़ने का भाव या क्रिया।

उमर *स्त्री* (अर.उम्र.) वर्षों के विचार से जीवन का व्यतीत भाग, अवस्था, वय, जीवनकाल, आयु।

उमर कैद *स्त्री.* (अर.) जिंदगी भर की कैद, आजीवन कारावास।

उमर कैदी *वि.* (अर.) जिसे उमर कैद की सजा हुई हो।

उमरा *पुं.* (अर.) (अमीर शब्द का बहु.) 1. प्रतिष्ठित लोग 2. सरदार 3. सामंत, दरबारी 4. रईस, धनिक।

उमराव *पुं.* (अर.उमरा) दे. उमरा। *वि.* मूलतः यह 'अमीर' शब्द का बहुवचन है।

उमस *स्त्री.* (तद्.) घुटन भरी गरमी जो आर्द्रता अधिक होने और हवा की गति में ठहराव होने पर महसूस होती है।

उमसना *अ.क्रि.* तद्.,तत्.-उष्मन) उमस अनुभव करना, गर्मी के कारण बेचैन होना।

उमहना *अ.क्रि.* (देश.) आवेग में आना, उमड़ना, उत्साहित होना ।

उमा *स्त्री.* (तत्.) 1. हिमालय की पुत्री, शिव की पत्नी, दुर्गा 2. हल्दी 3. अलसी।

उमाकना *स.क्रि.* (देश.) उखाड़ना, निर्मूल करना, खोद कर फेंक देना, जड़ से हिला देना।

उमाकांत *पुं.* (तत्.) पार्वती के पति, शिव।

उमाकी *पुं* (देश.) उखड़ने वाला, उच्छेदन करने वाला, नष्ट करने वाला।

उमा-चतुर्थी *स्त्री.* (तत्.) भारतीय काल गणनानुसार ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि टि. उमा (पार्वती) का जन्मदिन होने के कारण उमा जैसा ही सौभाग्य मिलने की आकांक्षा से महिलाएँ इस दिन व्रत करती हैं।

उमा-महेश्वर व्रत *पुं.* (तत्.) शिव पार्वती पूजा का एक व्रत जो भाद्रपद मास की पूर्णिमा से प्रारंभ होकर पंद्रह वर्ष तक किया जाता है।

उमाहना *स.क्रि.* (देश.) उमंग में प्रवृत्त करना, उमंग से भरकर ऊपर आना।

उमेख *पुं.* (तद्.) दे. उन्मेष 1. उत्साह, उमंग 2. लालसा, चाह।

उमेठन *स्त्री* (तद्.) ऐंठन, मरोड़।

उमेठना *स.क्रि.* (तद्.) घुमाना, ऐंठना, मरोड़ना।

उमेठी *स्त्री.* (तद्.) दे. उमेठन *वि.* 'उमेठना' क्रिया के भूतकालिक रूप वाला विशेषण, ऐसी वस्तु जिसे उमेठ दिया गया हो।

उमैठी *स्त्री.* (तद्.) दे. उमेठी।

उम्दा *वि.* (अर.) अच्छा, उत्तम, बढ़िया विलो. घटिया।

उम्मलाउट *पुं.* (जर्म.) 1. जर्मन भाषा में अ ओ उ अक्षरों की ध्वनि में 'इ' मिलाने जैसा थोड़ा सा परिवर्तन/अभिश्रुति 2. उक्त ध्वनि परिवर्तन के सूचक दो बिन्दु।

उम्मी *स्त्री.* (तत्. उम्बी) गेहूँ या जौ की आग में भुनी हुई अधपकी मंजरी या बाली।

उम्मीद *स्त्री.* (फा.) आशा, अपेक्षा, भरोसा 2. आसार 3. इच्छा मुहा. उम्मीद से होना-गर्भवती होना; उम्मीद पर आना- इच्छा या आशा पूरी होना; उम्मीद बाँधना- आशा रखना; उम्मीद पर पानी फिर जाना- निराश होना।

उम्मीदवार *वि.* (फा.) 1. आशा या अपेक्षा रखने वाला; प्रत्याशी 2. नौकरी या पद-विशेष के लिए प्रार्थी 3. चुनाव के लिए खड़ा होने वाला *पुं.* 1. काम सीखने वाला व्यक्ति 2. नौकरी की आशा से बिना वेतन काम करने वाला।

उम्मीदवारी *स्त्री.* (फा.) 1. नौकरी पाने या चुनाव में जीतने के लिए काम करने की स्थिति 2.

किसी नौकरी को पाने की आशा से बिना वेतन दफ्तर में काम करने की भावना 3. आसरा।

उम्र *स्त्री.* (अ.) दे. उमर।

उम्रकैद *स्त्री.* (तत्.) आजीवन कारागार, जीवन भर भर के लिए कारावास की सजा *स्त्री.* (अर.) न्यायालय द्वारा उम्र भर के लिए सुनाई गई कैद की सजा।

उम्रकैदी *वि./पुं.* (अर.) अपराधी जिसे आजीवन कारावास का दंड दिया गया हो।

उम्लाउट *पुं.* (जर्म.) भाषा वि. दे. उम्मलाउट

उरंगम *पुं.* (तत्.) (उर अर्थात् छाती के बल चलने वाला) साँप।

उरः/उरसे *पुं.* (तत.)1. उर, छाती, वक्ष, हृदय 2. मन, चित्त।

उरःस्थ *वि.* (तत्.) हृदय में स्थित, चित में बसा हुआ, मनोगत।

उर *पुं.* (तत्.) 1. वक्षस्थल, छाती 2. दिल, हृदय, उरः उर, उरस और उरो भी उरस के ही रूप है जैसे- उरस्त्राण, उरः क्षत, उरश्छद (उरः+छदस), उरोज।

उरई *स्त्री.* (तत्.) 1. उशीर, खस, एक प्रकार के घास की सुगंधित जड़ जिसके बने पंखे, पर्दे गर्मियों में उपयोगी होते हैं 2. खस की पट्टी।

उरग *पुं.* (तत्.) साँप।

उरगभूषण *पुं.* (तत्.) उरग अर्थात् सर्प को आभूषण की तरह धारण करने वाले भगवान् शिव, महादेव।

उरगराज *पुं.* (तत्.) 1. सर्पों का राजा, सर्पराज, नागराज 2. वासुकि नाग।

उरगस्थान *पुं.* (तत्.) 1. सर्पों का आवास-स्थान, बाँबी 2. पाताल-लोक।

उरगाद *वि.* (तत्.) [उरग+अद] जो सर्पों को खाता है, सर्पभक्षी। पुं. 1. मोर, मयूर 2. गरुड़।

उरगारि *पुं.* *(तत्.) [उरग+अरि.]* 1. सर्पों का दुश्मन, पन्नगारि 2. गरुड़ 3. मोर 4. नेवला।

उरगी *स्त्री.* (तत्.) सर्पिणी, नागिन।

उरज *पुं.* (तत्.) उरोज, स्तन, कुच।

उरज/उरजात *पुं.* *(तत्.)* स्तन, कुच, उरोज।

उरझान *स्त्री.* (तद्.) लगाव, उलझन, किसी व्यक्ति व्यक्ति या वस्तु के प्रति रुझान।

उरझारी *वि.* (तद्.) अव्यवस्थित, उलझी स्थिति वाला।

उरद *पुं.* (तत्.) दे. उड़द।

उरधारना *स.क्रि.* (तद्.) 1. मन में रखना या धारण करना 2. विस्तृत करना या फैलाना, उधेड़ना, बिखराना।

उरबसी *स्त्री.* (तद्.) 1. एक आभूषण जिसे हृदय पर धारण किया जाय टि. हृदय में रहने वाली स्त्री या नायिका 2. उर्वशी।

उरमंडन *पुं.* (तत्.) 1. हृदय या वक्ष का आभूषण 2. हृदयाभूषण जैसा प्रिय व्यक्ति 3. हृदय में बसा प्रेमी।

उररीकृत *वि.* (तत्.) स्वीकार किया गया।

उरश्छद *पुं.* (तत्.) हृदय का रक्षक कवच। हृदयत्राण।

उरस *पुं.* (तत्.) टि. संस्कृत का मूल शब्द उरः या उरस् ही है, हिंदी में 'उर' शब्द प्रयुक्त होता है, परंतु समासयुक्त पदों में यह 'उरस्', 'उर' या 'उरो' रूप ले लेता है, हृदय, मन *वि.* रस रहित, जो वस्तु नीरस हो।

उरसिज *पुं.* (तत्.) वक्षस्थल में उत्पन्न स्तन-द्वय, द्वय, कुच।

उरस्क *पुं.* (तत्.) हृदयस्थल, मन या चित्त।

उरस्त्राण *पुं.* (तत्.) छाती की रक्षा के लिए बाँधा जाने वाला कवच। हृदय कवच, उरश्छद।

उरस्थ *वि.* (तत्.) हृदय में स्थित, मन में विद्यमान।

उरहन पुं. (तद्.) उपालंभ, उलाहना शिकायत।

उरालय पुं. (तत्.) मन रूपी घर, घर माना गया जो हृदय।

उराव वि. (तद्.) चाह, उत्साह, साहस।

उराहना पुं. (तद्.) उलाहना, आरोप।

उरु वि. (तत्.) 1. विशाल, विस्तृत, विपुल 2. श्रेष्ठ।

उरुक्रम वि. (तत्.) लंबे कदम रखने वाला पुं. 1. विष्णु का अवतार, जिसमें लम्बे डग रखकर पृथ्वी तीन कदम में नाप ली गई 2. दिनकर 3. महादेव।

उरुज पुं. (तत्.) उत्कृष्टता, उन्नति, समृद्धि, उत्थान।

उरुवा पुं. (तद्.) उल्लू जैसी आकृति वाला एक पक्षी। (रुरूआ नाम पक्षी)।

उरेब वि. (फा.) तिर्यक्, टेढ़ा, तिरछा।

उरेहना स.क्रि. (तद्.) चित्र खींचना, तस्वीर बनाना 2. लिखना, रचना 3. सलाई से लकीर खींचना।

उरोज पुं. (तत्.) स्तन, कुच, छाती।

उरोरुह पुं. (तत्.) दे. उरोज।

उरोस्थि स्त्री. (तत्.) पसलियों को जोड़ने वाली वक्षस्थल की आगे की हड्डी।

उर्ण पुं. (तत्.) ऊन, ऊर्ण (भेड़ के बालों से बना गरम धागा)।

उर्णनाभ पुं. (तत्.) ऊर्णनाभ, मकड़ा।

उर्दू पुं. (तुर्की.) 1. लश्कर, छावनी 2. पड़ाव, शिविर स्त्री. (तुर्की) भाषा. हिंदी की वह शैली जिसमें अरबी, फारसी भाषा के शब्दों की अधिकता होती है और जो फारसी लिपि में लिखी जाती है।

उर्दू-ए-मुआल्ला स्त्री. (तुर्की) उच्च कोटि की उर्दू जिसमें अरबी-फारसी के शब्दों की अधिकता हो तु. टकसाली उर्दू।

उर्दू बाजार पुं. (तुर्की) लश्कर का बाजार, (छावनी का) सदर बाजार।

उर्फ पुं. (अर.) प्रचलित नाम, पुकारने का नाम, उपनाम।

उर्मिला स्त्री. (तत्.) सीता की छोटी बहन जो लक्ष्मण से ब्याही थी।

उर्वर वि. (तत्.) अच्छी उपज या पैदावार देने वाला, उपजाऊ, जरख़ेज।

उर्वरक वि.पुं. (तत्.) कृषि. खेत को उपजाऊ करने वाली, उपज बढ़ाने वाली (खाद) जो भौतिक या रासायनिक ढंग से तैयार की जाती है और पौधों को सघन मात्रा में पोषक तत्व प्रदान करती है। fertilizer

उर्वशी स्त्री. (तत्.) 1. विषमय-वासना, इच्छा 2. इंद्रलोक की एक अप्सरा जो शापवश कुछ दिनों तक भूलोक में पुरूरवा की पत्नी बन कर रही।

उर्वी स्त्री. (तत्.) पृथ्वी, धरती, मैदान वि. विस्तृत।

विस्तृत।

उर्वीज वि. (तत्.) पृथ्वी से उत्पन्न होने वाला। धरासुत, पृथ्वीपुत्र (मंगल)।

उर्वीतल पुं. (तत्.) पृथ्वी का तल, धरती की सतह।

उर्वीधर पुं. (तत्.) धरती को धारण करने वाला, धराधर, पर्वत।

उर्वीपति पुं. (तत्.) धरती का स्वामी, पृथ्वीपति।

उर्वीरुह वि. (तत्.) पृथ्वी से उगने वाला पुं. तरु, वृक्ष, पेड़-पौधा।

उर्वीश पुं. (तत्.) पृथ्वी का स्वामी, पृथ्वीपति।

उर्स पुं. (अर.) किसी पीर आदि की पुण्य तिथि का (वार्षिक) उत्सव।

उलंग वि. (देश.) 1. नंगा, निर्वस्त्र 2. आवारा, अकारण इधर-उधर भटकने वाला।

उलंघना *स.क्रि.* (तद्.) किसी को लांघना, किसी रीति या परंपरा को न मानना या उल्लंघन करना।

उलगणा *अ.क्रि.* (देश.) गीत गाना, कीर्ति का बखान करना, वंशक्रम का वाचन करना।

उलझन *पुं.* (तद्.) 1. अटकाव, फँसाव 2. गिरह, गुत्थी 3. बाधा 4. चिंता 5. सोच 6. जटिलता 7. झंझट।

उलझना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. फँसना, अटकना 2. गुंथ जाना 3. कार्य में लिप्त होना 4. कठिनाई में पड़ना 5. जटिलता बढ़ जाना 6. झगड़े-झंझट में फँस जाना।

उलझा/उलरा *वि.* (तद्.) भेड़ का मेमना या बच्चा।

उलझाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. अटकाना, फँसाना 2. लिप्त रखना 3. गुत्थियाँ डाल देना 5. टेढ़ा करना। (उलझना का प्रेर. रूप)

उलझाव *पुं.* (तद्.) 1. उलझने का भाव, अटकाव 2. झगड़ा 3. चक्कर, बखेड़ा 4. फेर।

उलझा-सुलझा *वि.* (तद्.) 1. जो कुछ अंश में उलझा हो और कुछ अंश में सुलझा भी हो 2. उलटा-सीधा या अच्छा-बुरा।

उलझेड़ा *पुं.* (तद्.) दुविधा, कठिनाई, उलझन, ग्रंथि या गाँठ।

उलझौहाँ *वि.* (तद्.) जिसकी उलझने-उलझाने की प्रवृत्ति हो, उलझाने वाला, झगड़ा करने वाला।

उलट देना *स.क्रि.* (तद्.) विपरीत कर देना। बदल देना, स्थिति को पलट देना।

उलटना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ऊपर का भाग नीचे होना, औंधा होना 2. पलटना 3. विपरीत दिशा या स्थिति में जाना 4. अस्त-व्यस्त होना 5. नष्ट होना *स.क्रि.* 1. औंधा करना 2. एक ओर से दूसरी ओर रुख करना 3. उड़ेलना 4. पलटना।

उलटना-पलटना *स.क्रि.* (देश.) इधर-उधर कर देना। बदल देना।

उलट-पलट *पुं.* (देश.) 1. परिवर्तन 2. हेर-फेर, गड़बड़ी 3. अस्त-व्यस्तता 4. अदल-बदल।

उलट-पुलट *पुं.* (देश.) दे. उलट-पलट।

उलटफेर *पुं.* (देश.) परिवर्तन, अदल-बदल, उलट-पलट।

उलटबाँसी *स्त्री.* (देश.) 1. सीधा न कह कर घुमा-घुमा-फिरा कर कही हुई (प्रतीकात्मक) बात 2. ऐसी कविता जिसमें सामान्य रूप से देखने पर उल्टी विपरीत कथन की बात होती हो, जैसे 'साधो, जल में मछली प्यासी' टि. कबीर की उलटवासियाँ प्रसिद्ध हैं।

उलटा *वि.* (देश.) 1. जो सीधा न हो, जो सही स्थिति में न हो, जिसके ऊपर का भाग नीचे और नीचे का भाग ऊपर हो, औंधा *क्रि.वि.* इसके विपरीत जैसे- उलटा चोर कोतवाल को डाँटे मुहा. उलटी खोपड़ी का- मूर्ख; उलटी गंगा बहाना-रीति के विरुद्ध करना; उलटे पाँव लौटना-तुरंत वापस आ जाना; उल्टी माला फेरना-चलन विरुद्ध काम करना; उलटी पट्टी पढ़ाना-बहकाना, गलत बात सिखाना; उलटी हवा बहाना- नियम विरुद्ध काम करना; उलटी-सीधी सुनाना- खरी-खोटी सुनाना; उलटी साँस चलना-दम उखड़ना, मरणासन्न होना।

उलटा-पलटा *वि.* (देश.) 1. कुछ का कुछ, क्रम विरुद्ध, बेतरतीब, बेसिरपैर का।

उलटाव *पुं.* (देश.) विपरीत होने का या करने का भाव, क्रिया, फेर-बदल।

उलटा-सीधा *वि.* (देश.) उचित-अनुचित, असंगत। जो व्यवस्थित न हो।

उलटा-सुलटा *पुं.* (देश.) अच्छा-बुरा।

उलटि-पलटि *क्रि.वि.* (देश.) पूर्ण रूप से, इधर-उधर से।

उलटी *स्त्री.* (देश.) 1. करवट बदलना 2. मलखंभ में कलाबाजी 3. बैठे-बैठे अंगों को मोड़ना 4. एक प्रकार का नृत्य। 5. वमन, कै। मुहा. मारना-कलाबाजी करते हुए (पानी में) कूदना।

उलटे *क्रि.वि.* (देश.) नियम के विरुद्ध, असंगत ढंग से।

उलथा *पुं.* (देश.) बदलाव, दूसरी ओर नृत्य. उछलकूद पूर्वक ताल पर सहयोग देना।

उलदना *सं.क्रि.* (तद्.) झड़ी लगना, अतिशय वृष्टि करना।

उलफत *स्त्री.* (अर.) आत्मीयता; प्रेम, मुहब्बत।

उलमा *पुं.* (अर.) आलिम लोग, विद्वज्जन।

उलमि *क्रि.वि.* (तद्.) सहारा लेकर, झुककर।

उलरना *अ.क्रि.* (देश.) 1. पीछे की ओर झुक जाना। अधिक भार हो जाने के कारण बैलगाड़ी के पिछले भाग का उलार होना या झुका होना 2. उछल-कूद करना 3. आक्रमण करना, टूट पड़ना।

उलहना *अ.क्रि.* (देश.) 1. फूटना 2. निकलना 3. खिलना, उल्लसित होना प्रयो. जननि थीं कर से जब पोंछती। उलहती तब वेलि विनोद की-प्रिय प्रवास)।

उलाँक *पुं.* (देश.) डाक-व्यवस्था।

उलाँकी *पुं.* (देश.) डाक ले जाने वाला, डाकिया, हरकारा।

उलाँघना *स.क्रि.* (तद्.) कूद-फाँद कर जाना, उल्लंघन करना, नियम और आदेश का उल्लंघन करना।

उलार *वि.* (तद्.) भार के कारण पीछे की ओर झुके भार वाला, भार की वजह से पीछे की ओर झुकी बैलगाड़ी।

उलालना *स.क्रि.* (तद्.) पालन करना, पोषण करना या लालन करना।

उलाहना *पुं.* (तद्.) उपालंभ, किसी व्यवहार की शिकायत, गिला *स.क्रि.* उलाहना देना, निंदा करना, गिला करना।

उलाहित *क्रि.वि.* (तद्.) त्वरित, शीघ्र।

उलीचना *स.क्रि.* (तद्.) हथेलियों से या बरतन से पानी निकाल कर बाहर फेंकना प्रयो. पानी बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम। दोऊ हाथ उलीचिए, यही सयानो काम।

उलूक *पुं.* (तत्.) उल्लू पक्षी, घुग्घू। दे. उल्लू।

उलूकदर्शन *पुं.* (तत्.) 1. उल्लू का दिखाई पड़ना। 2. कणाद मुनि द्वारा प्रणीत वैशेषिक दर्शन।

उलूकवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) उल्लू जैसा स्वभाव या प्रवृत्ति, मूर्खभाव।

उलूखल *पुं.* (तत्.) 1. ऊखल 2. खरल।

उलेड़ना *स.क्रि.* (देश.) तरल पदार्थ को एक पात्र से दूसरे पात्र में रखना या डालना।

उलेढ़ना *स.क्रि.* (देश.) कपड़े का किनारा मोड़कर या उलटकर सिलना।

उल्का *स्त्री.* (तत्.) खगो. सूर्य का चक्कर काटने वाले छोटे खगोलीय पिंड जो पृथ्वी की ओर आकर्षित होने पर इसके वायुमंडल की रगड़ से चमकने लगते हैं, टूटता तारा meteor 2. जलती लकड़ी, लूक, लुकाठा, मशाल, मशालची।

उल्काचक्र *पुं.* (तत्.) दैवी विपत्ति, बाधा।

उल्काधारी *वि.* (तत्.) उल्का धारण करने वाला या मशाल लेकर चलने वाला।

उल्कानवमी *स्त्री.* (तत्.) 1. आश्विन मास की शुक्ल पक्ष में होने वाली नवमी तिथि 2. 'उल्कानवमी' से प्रारंभ होकर एक वर्ष तक चलने वाला दुर्गा का प्रसिद्ध व्रत।

उल्कापथ *पुं.* (तत्.) आकाश से टूटकर पृथ्वी पर गिरने वाले उल्का का मार्ग।

उल्कापात *पुं.* (तत्.) तारा टूटना, लूक गिरना।

उल्कापिंड *पुं.* (तत्.) खगो. पृथ्वी पर गिरने वाला/ऐसा उल्का पिण्ड जो भस्म न होकर बालुकामय धूलिपिण्ड के रूप में ही हो। (पृथ्वी पर गिरे उल्का पिंड का भार 50000 किलोग्राम तक होता है)।

उल्कामुख *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का भूत जिसके मुँह से आग निकलती हो, अगिया बैताल। महादेव का एक गण।

उल्काश्म *पुं.* (तत्.) पत्थर की शिला जैसी उल्का, पृथ्वी पर गिरने वाली उल्का, आकाश से टूटकर गिरने वाला तारा।

उल्था *पुं.* (देश.) भाषांतर, अनुवाद, तर्जुमा।

उल्ब *स्त्री.* (तत्.) जीव. भ्रूण को कोष के रूप में घेरे रहने वाली झिल्ली, जिस (कोष) में भ्रूण के चारों ओर एक तरल भरा रहता है।

उल्मुक *पुं.* (तद्.) अंगार, आग की लपट, जलती हुई आग की लुकाठी।

उल्लंघन *पुं.* (तत्.) 1. लाँघना, विरुद्ध आचरण, नियम-भंग, अतिक्रमण।

उल्लंघनकारी *वि.* (तत्.) जो उल्लंघन करता हो, उल्लंघन करने वाला।

उल्लंघनीय *वि.* (तत्.) उल्लंघन किए जाने योग्य।

उल्लंघित *वि* (तत्.) लाँघा हुआ, तोड़ा हुआ, अतिक्रमण किया हुआ।

उल्ललित *वि.* (तत्.) जो क्षोभयुक्त हो, उठा हुआ। हुआ।

उल्लसन *पुं.* (तत्.) प्रसन्नता की स्थिति का भाव, हर्ष-रोमांच, पुलकितहोने का भाव, चमक।

उल्लसित *वि.* (तत्.) 1. प्रसन्न 2. चमकता हुआ, खिलता हुआ 3. उल्लासयुक्त।

उल्लाप *पुं.* (तद्.) वचन/शब्द या वाणी, ऊँची आवाज, आह्वान स्वर, चिल्लाहट।

उल्लापक *वि.* (तत्.) मीठी बातें करने वाला, चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाला, चाटुकार, खुशामदी।

उल्लापन *पुं.* (तत्.) मीठी बातें, खुशामदपूर्ण कथन।

उल्लाप्य *वि.* (तत्.) चाटुकारिता करने योग्य व्यक्ति, नाट्य *पुं.* एकांकी उपरूपक का एक प्रकार जिसमें धीरोदात्त नायक, चार नायिकाएँ तथा शृंगार, करुण या हास्य रस प्रधान होते हैं।

उल्लाल *पुं.* (तत्.) पिंगलशास्त्र का एक अर्धसम मात्रिक छंद जिसके प्रथम-तृतीय चरण में 15-15 तथा द्वितीय-चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं।

उल्लाला *पुं.* (तत्.) छंद. एक प्रकार का सममात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 13 मात्राएँ होती हैं।

उल्लास *पुं.* (तत्.) 1. हर्ष 2. प्रकाश 3. ग्रंथ का एक अध्याय 4. साहि. एक अलंकार, जिसमें एक के गुण या दोष के दूसरे में गुण या दोष दिखाया जाए।

उल्लासक *वि.* (तत्.) उल्लास या प्रसन्नता देने वाला, हर्षप्रद।

उल्लासित *वि.* (तत्.) उल्लास से युक्त, प्रसन्न, प्रकटीकृत, दीप्त।

उल्लासिनी *वि.* (तत्.) उल्लास वाली, या उल्लास से भरी हुई।

उल्लासी *वि.* (तत्.) उल्लास वाला, प्रसन्न।

उल्लिखित *वि.* (तत्.) 1. ऊपर लिखा हुआ 2. खोदा हुआ 3. जिसे पहले कहा या लिखा गया हो, पूर्वोक्त।

उल्लू *पुं.* (तद्.) बड़ी गोल आँखों और मुडी चोंच वाला एक पक्षी जिसे दिन में बहुत कम दिखाई देता है, उलूक, ला.अर्थ. मूर्ख, नासमझ मुहा. उल्लू का पट्ठा- निपट मूर्ख; उल्लू बनाना- बेवकूफ बनाना, ठगना; उल्लू बोलना- उजड़ जाना, वीरान होना *स्त्री.* (तद्.) 1. हर्ष में व्यक्त व्यक्त की जाने वाली ध्वनि।

उल्लूपन *पुं.* (तद्.) उल्लू होने का भाव या गुण, उल्लूकता, ला.अर्थ. मूर्खता।

उल्लेख *पुं.* (तत्.) 1. लेखन 2. वर्णन 3. संकेत।

उल्लेखक *पुं.* (तत्.) वि. जो उल्लेख करे, उल्लेखकर्ता, चित्रकार, अंकनकर्ता।

उल्लेखन *पुं.* (तत्.) अंकन करना या चित्रण करना, लेखन या वर्णन।

उल्लेखनीय *वि.* (तत्.) 1. लिखने योग्य 2. उल्लेख योग्य 3. बताने योग्य।

उल्लोल *पुं.* (तत्.) तीव्र लहर। चंचल या तेज तरंग।

उल्वोदक *पुं.* (तत्.) चिकि. स्त्री के गर्भाशय का एक विशेष प्रकार का जल, जिससे गर्भस्थ भ्रूण की रक्षा होती है।

उशना *पुं.* (तत्.) दैत्यगुरु शुक्राचार्य, शुक्रग्रह या नक्षत्र।

उशीर *पुं.* (तत्.) 1. खस, एक प्रकार की घास (गाँडर) की जड़ जिसकी सूखी जड़ों को बाँधकर बनाए गए परदे ठंडक और सुगंध देते हैं 2. खस का परदा प्रयो. आया अपने द्वार तप, तू दे दे ही किवाड सखि, क्या मैं बैठूँ विमुख हो उशीर की आड़।

उष:काल *पुं.* (तत्.) दे. उषाकाल।

उष:पान *पुं.* (तत्.) 1. हठयोग में बहुत तड़के नाक से पानी पीने या नाक से पीकर मुँह से निकालने की क्रिया 2. प्रात: खाली पेट पानी पीना।

उषण *पुं.* (तत्.) 1. उष्णताजनक काली मिर्च 2. अदरक 3. सोंठ 4. पिप्पलीमूल आदि।

उषर्बुध *पुं.* (तत्.) 1. आग, 2. चीता, वृक्ष 3. बालक, उषाकाल में जागने वाला।

उषा *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रभात, ब्रह्म वेला, पौ फटने का समय 2. अरुणोदय की लाली, प्रात:कालीन प्रकाश 3. बाणासुर की कन्या जो अनिरुद्ध से ब्याही गई थी।

उषाकाल *पुं.* (तत्.) भोर, तड़के, सूर्योदय से पाँच घड़ी (दो घंटे) पूर्व का समय, पौ फटने का समय।

उषित *वि.* (तत्.) 1. जिसने बास किया हो 2. बासी (पर्युषित भोजन)।

उषीर *पुं.* (तत्.) दे. उशीर।

उष्ट्र *पुं.* (तत्.) ऊँट।

उष्ट्रयान *पुं.* (तत्.) ऊँट के द्वारा ले जायी जाने वाली (खींची जाने वाली) गाड़ी।

उष्ट्रासन *पुं.* (तत्.) योग. ऊँट के आकार की भाँति भाँति किया जाने वाला आसन, जिसमें पेट के बल लेट कर पैरों को गुणक चिह्न की तरह बनाते हुए दोनों हाथों से पकड़ कर धनुरासन की भाँति ऊपर को तानते हैं।

उष्ट्रिका/उष्ट्री *स्त्री.* (तत्.) ऊँट का स्त्रीलिंग ऊँटनी।

ऊँटनी।

उष्ण *वि.* (तत्.) 1. तप्त 2. तासीर में गरम ला.अर्थ. क्रोधी।

उष्णक *पुं.* (तत्.) 1. ग्रीष्म, तापज्वर 2. दिनकर। *वि.* ताप उत्पन्न करने वाला, सूर्य।

उष्ण-कटिबंध *पुं.* (तत्.) भू. पृथ्वी का वह भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के बीच में पड़ता है। कर्क वृत्त और मकर ($23_{1/2}$ ° उ-. $23_{1/2}$ ° द. अक्षांश) के बीच का भाग जिसमें गर्मी बहुत पड़ती है। tropical zone तु. शीतकटिबंध।

उष्णकटिबंधीय *वि.* (तत्.) उष्णकटिबंधीय प्रदेशों से संबंधित निवासी। (कर्करेखा और मकर रेखा के मध्य का पृथ्वी तल का ऊपरी भाग सबसे अधिक गर्म होता है उसे उष्णकटिबंधीय भाग कहते हैं)।

उष्णकर *पुं.* (तत्.) गर्म किरणों वाला सूर्य, रवि।

उष्णकाल *पुं.* (तत्.) ग्रीष्मऋतु का समय।

उष्णता *स्त्री.* (तत्.) गर्मी, ताप।

उष्णत्व *पुं.* (तत्.) उष्णता का भाव या गर्मी, उष्णता।

उष्णप्रस्रवण *पुं.* (तत्.) गरम जल का स्रोत या झरना, तप्त स्रोत।

उष्णरश्मि *पुं.* (तत्.) गर्म किरणों वाला, सूर्य।

उष्णवीर्य *वि.* (तत्.) आयु. गरम प्रभाव वाली औषधि या वस्तु, केसर उष्णवीर्य तथा दही शीतवीर्य वस्तुएँ हैं।

उष्णांक *पुं.* (तत्.) भौ. ताप मापने की इकाई। calorie

उष्णालु *वि.* (तत्.) 1. उष्णता (गर्मी) सहन करने में असमर्थ 2. तेज गर्मी से व्याकुल, संतप्त।

उष्णिमा *स्त्री.* (तत्.) गर्मी, ताप।

उष्णीष *पुं.* (तत्.) 1. पगड़ी, साफा 2. मुकुट 3. महल का गुंबद।

उष्णीषकमल *पुं.* (तत्.) बौद्ध. मस्तिष्क में स्थित सहस्रार चक्र।

उष्णीषधारी *वि.* (तत्.) 1. जो पगड़ी या साफा धारण करता हो 2. मुकुट धारण करने वाला *पुं.* महादेव, शिव।

उष्णोत्स *पुं.* (तत्.) भू. ऐसा स्रोत जिसमें से गरम पानी और भाप तेजी से रुक-रुक कर निकलते रहते हैं।

उष्म *पुं.* (तत्.) भाषा. वह घर्षी व्यंजन जिसके उच्चारण में वायु घर्षण करते हुए निकलती है- श्, ष्, स्, ह्। sibilant

उष्मज *पुं.* (तत्.) शरीर के स्वेद या पसीना तथा गर्मी से उत्पन्न कीड़ा जैसे- बालों में जुआँ, खाट में खटमल, मशक आदि।

उष्मा *स्त्री.* (तत्.) उष्णता, धूप, कोप।

उष्मागतिकी *स्त्री.* (तत्.) इंजी. भौतिकी की वह शाखा जिसमें ताप तथा यांत्रिक ऊर्जा के पारस्परिक संबंध तथा उनके एक-दूसरे के रूप में रूपांतरित होने का अध्ययन किया जाता है। thermo dynamics

उष्मा रसायन *पुं.* (तत्.) भौ. भौतिक रसायन शास्त्र की शाखा जो रासायनिक अभिक्रियाओं की उष्मा का अध्ययन प्रस्तुत करे। thermochemistry

उस *सर्व.* (देश.) 1. विभक्ति प्रयोग से पूर्व लगने वाले 'वह' सर्वनाम का एक रूप जैसे- वह ने=उसने, वह को=उसको, उसे बुलाएँ 2. सार्वनामिक विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाला उस व्यक्ति ने, उस जगह पर, उस नाटक को देखकर मन प्रसन्न हुआ।

उसमान *वि.* (अर.) मुसलमानों के तीसरे खलीफा, उस्मान।

उसरतलोवा *पुं.* (देश.) 1. एक भूरे रंग वाला पक्षी जो ऊसर भूमि में बहुत बड़े झुंड के साथ रहता है 2. उसरबगेरी (ऊसर+बगेर)

उसरा/उसारा *पुं.* (देश.) ओसारा, मकान का दालान/बरामदा/ओसारा 2 ओसारे की छाजन, सायबान।

उससना *अ.क्रि.* (देश.) 1. सांस लेना 2. गहरी या ठंडी सांस लेना, उच्छ्वास लेना 3. खिसक जाना, जाना, टलना 4. ऊपर नीचे होना, स्थानांतरित होना।

उसाँस *वि.* (तद्.) लंबी साँस, ऊपर को खींची हुई साँस, उच्छ्वास।

उसार *पुं.* (तद्.) 1. फैलाव 2. घर का काम-धंधा; सेवा ।

उसारना *स.क्रि.* (तद्.) 1. उपर उठाना 2 बनाकर खड़ा करना जैसे- घर उसारना 3. उखाड़ना 4. भगाना।

उसारा *वि.* (देश.) ओसारा, दालान, बरामदा, आँगन।

उसास *स्त्री.* (तद्.) दे. उसाँस।

उसासना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. ऊपर को खींच कर लंबी सांस लेना, आह भरना, दुःखमय साँस लेना 2. उसाँसे भरना।

उसासी *स्त्री.* (देश.) क्षणभर सुस्ताने या दम लेने की मुहलत।

उसिआर *पुं.* (देश.) कूड़ा, कूड़ा-कचरा, रद्दी-माल।

उसीला *पुं.* (अर.) 1. साधन, जरिया, माध्यम 2. सहारा, सहायता 3. वसीला 4. सहायक *वि.* (देश.) 5. सुशील, विनम्र 5. कृतज्ञ।

उसीस/उसीसा *पुं.* (तद्.) 1. तकिया 2. सिरहाना (पैताना का विलोम)।

उसूल *पु.* (अर.) 1. सिद्धांत 2. नियम, कायदा।

उसूलन *क्रि.वि.* (अर.) 1. सिद्धांत रूप से 2. नियमानुसार 3. तथ्यतः 4. नैतिक रूप से।

उसूली *वि.* (अर.) 1. अपने सिद् धांत, नियम का पालक 2. आधारभूत, बुनियादी।

उस्तरा *पुं.* (फा.) तीखी धार वाला एक चाकूनुमा औजार जिससे चर्म या त्वचा में उगे बाल उतारे जाते हैं, बाल मूँड़ने का छुरा।

उस्ताद *पुं* (फा.) गुरु, शिक्षक *वि.* 1. चालाक, छली, धूर्त 2. निपुण, प्रवीण।

उस्तादी *स्त्री.* (फा.) 1. जिसमें उस्ताद होने का भाव या गुण हो 2. किसी प्रकार की शिक्षा देने की निपुणता, दक्षता 3. शिक्षक-कुशलता, गुरुत्व 4. चालाकी, धूर्तता।

उस्तुरा *पुं.* (फा.) दे. उस्तरा।

उहरि/उहारु *क्रि.वि.* (देश.) 1. किसी आवरण या पर्दे को एक तरफ करके या हटाकर 2. उघार कर।

उहारना *स.क्रि.* (देश.) 1. रथ/पालकी आदि पर पड़े परदे को हटाना 2. कपड़े के किसी आवरण को हटाना या उठाना 3. उहारना।

उहै *वि.* (देश.) उसी, वही जैसे- उहै ध्यान मन आवत -सूरदास।

ऊ

ऊंटकटेरा *पुं.* (तद्.) सफेद फूल और गोल छोटे फलों वाली कंटकारी की तरह की कंटीली झाड़ी जिसे ऊँट खाते हैं पर्या. ऊँटकटात।

ऊँगलि *स्त्री.* (तद्.) दे. 'उँगली'।

ऊँघ *स्त्री* (देश.) झपकी, अर्धनिद्रा, औंघाई, उनींदापन, तंद्रा।

ऊँघन *पुं.* (तद्.) ऊँघ, आलस्य, झपकी आना, ऊँघने की क्रिया, औंघाई, झपकी, उनींदापन।

ऊँघना *अ.क्रि.* (तद्.) नींद और आलस्य को अनुभव करना, उनींदा होना, झपकी लेना।

ऊँच *वि.* (तद्.) 1. ऊँचा या ऊपर उठा होने की स्थिति वाला 2. बड़ा, श्रेष्ठ, उत्तम।

ऊँच-नीच *पुं.* (तद्.) 1. बड़ा-छोटा, आला-अदना 2. कुलीन-अकुलीन 3. नफ़ा-नुकसान।

ऊँचा *वि.* (तद्.) उन्नत, बुलंद, महान, बड़े स्तर का मुहा. ऊँचा-नीचा- भला-बुरा, लाभ-हानि; ऊँचा-नीचा बताना- सुझाना, समझाना हानि-लाभ बताना; ऊँचा-नीचा सोचना या समझना- लाभ-हानि विचारना; ऊँची-नीची सुनाना- खरी-खोटी सुनाना; ऊँचा सुनना- केवल जोर की आवाज सुन पाना।

ऊँचाई *स्त्री.* (तद्.) 1. ऊपर की ओर का विस्तार, उठान, बुलंदी 2. गौरव, बड़ाई, श्रेष्ठता।

ऊँचाना *स.क्रि.* (देश.) 1. ऊँचा करना 2. उच्च बनाना, उन्नत करना।

ऊँचा-नीचा *वि.* (तद्.) 1. जो स्थान समतल न हो, कहीं ऊँचा और कहीं नीचा 2. भला-बुरा, फायदा नुकसान 3. मान-अपमान

ऊँचे *वि.* (तद्.) 1. ऊँचा का बहुवचन, अतिशय ऊँचा, ऊपर की ओर 2. उच्च, उन्नत, प्रतिष्ठित प्रतिष्ठित जैसे- ऊँचे लोग 3. जोर से जैसे- ऊँचे

मत बोलो 4. उत्कृष्ट, श्रेष्ठ जैसे- आपके ऊँचे विचार हैं)

ऊँछना *सं.क्रि.* (तद्.) 1. बीनना 2. बालों को कंघी से संवारना, झाड़ना।

ऊँट *पुं.* (तद्.) पीठ पर कूबड़ वाला एक ऊँचा चौपाया, जो सवारी या बोझ लादने के काम आता है और प्राय: रेगिस्तानी क्षेत्रों में पाया जाता है मुहा. ऊँट किस करवट बैठता है- मामला किस प्रकार निबटता है, क्या परिणाम निकलता है; ऊँट की कौन-सी कल सीधी- बेढंगे व्यक्ति का हर काम बेढंगा होना; ऊँट की चोरी और झुके-झुके- छिप न सकने वाली बात को छिपाने का यत्न, ऊँट के मुँह में जीरा- अधिक आवश्यकता के विपरीत स्वल्प सामग्री की व्यवस्था।

ऊँट कटारा *पुं.* (तद्.) ऊँट के खाने की कँटीली झाड़ी जो वह चबाकर खाता है।

ऊँट गाड़ी *स्त्री.* (देश.) ऊँट द्वारा खींची जाने वाली वाली गाड़ी।

ऊँट नाल *पुं.* (देश.) ऊँट की पीठ पर बैठकर चलायी जाने वाली तोप या अस्त्र।

ऊँटरा *पुं.* (तद्.) बैलगाड़ी को खड़ा करने के लिए उसके आगे के हिस्से के नीचे लगाई जाने वाली लकड़ी की टेक।

ऊँटवान *पुं.* (तद्.) 1. ऊँट चलाने वाला, ऊँट वाहक, उँट का स्वामी, मालिक।

ऊँधा *पुं* (देश.) 1. ढलुवाँ किनारा 2. चौपायों के पानी पीने का घाट।

ऊँहूँ *अव्य.* (देश.) अस्वीकृति सूचक शब्द, नहीं, ऐसा मत करो का सूचक, ये क्या कर दिया का सूचक।

ऊ *पुं.* (तत्.) 1. शिव, महादेव, चन्द्रमा 2. (अवधी, ब्रज, बुंदेली में) इस का अर्थ "वह" जैसे- ऊ गया, ऊ से कहो 3. देवनागरी वर्णमाला का छठा स्वर जो ओष्ठय स्वर है 4. बुलावा, अनुकंपा और रक्षा व्यंजक (सूचक) स्वर (अव्य.) 5. कष्ट, वेदना सूचक स्वर।

ऊ ऊ *स्त्री.* (अनु.) 1. रोने की अवस्था में मुँह से निकलने वाली एक विशेष प्रकार की ध्वनि 2. धीमी आवाज में रुक-रुक कर होने वाली रोने की विशेष ध्वनि जैसे- वह बहुत दुखी होकर 'ऊ ऊ' की आवाज करता हुआ रो रहा है।

ऊकार *पुं* (तत्.) 'ऊ' स्वर।

ऊकारांत *वि.* (तत्.) [ऊकार+अंत] ऊकार है अंत में जिसके (ऐसा कोई शब्द) जैसे- उपजाऊ, जनेऊ आदि, वह शब्द जिसके अंत में ऊकार हो। ऊ पर समाप्त होने वाला शब्द।

ऊकारादि *पुं.* (तत्.) [ऊकार+आदि] 1. ऊकार आदि (वर्ण) 2. *वि.* 'ऊकार' है आदि में जिसके ऐसा कोई शब्द. जैसे- ऊर्जा, ऊर्ध्व।

ऊख *पुं.* (तद्.) 1. खेतों में प्राय: मई-जून में बोये जाने वाले पौधे जो लंबे तथा लंबी हरी पत्तियों वाले काष्ठीय त्वचा से युक्त तथा मीठे रस वाले, जो 'चूसने के भी काम आते हैं तथा इनके रस को पकाकर गुड़ व चीनी भी बनाई जाती है 2. गन्ना, ईख, इक्षु *वि.* उष्ण, गर्म, तप्त।

ऊखट/ऊखड़ *वि.* (तद्.) पर्वत के नीचे की सूखी भूमि। भाभर।

ऊखल *पुं.* (तद्.) 1. लकड़ी या पत्थर का गहरा एक विशेष प्रकार का बरतन जिसमें धान आदि को मूसल से कूटा जाता है, ओखली 2. कांडी (स्त्री.) ऊखली।

ऊखल *पुं.* (तद्.) ओखली, ऊखली, जिसमें धान आदि अनाज कूटे जाते हैं।

ऊखाणा *पुं.* (तद्.) उपाख्यान, लोगों में परंपरा से चला आ रहा किसी विषय से संबंधित कोई प्रसिद्ध कथन 2. किंवदंती, लोकोक्ति, कहावत।

ऊखिल *वि.* (देश.) जो परिचित न हो, अपरिचित, अजनबी, 2. तिनका, 3. खटकने वाली वस्तु, कांटा।

ऊखिलताई *स्त्री.* (देश.) 1. अजनबीपन की स्थिति, अपरिचितता 2. अनमेल स्थिति।

ऊगट *पुं.* (तद्.) 1. शरीर की कांति बढाने के लिए शरीर में लगाये जाने का उबटन 2. शरीर को

स्वस्थ रखने के लिए की जाने वाली तेल आदि की मालिश।

ऊछलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. उछाल मारना, छलांग मारना, धूल आदि का उड़ना 2. अत्यंत प्रसन्न होना जैसे- खुशी से उछलना 3. छलकना, तरंगित होना।

ऊजड़ *वि.* (देश.) उजड़ा हुआ, वीरान, बिना बस्ती का।

ऊजर वि. (देश.) 1. उज्ज्वल, सफेद, उजला, साफ 2. ऊजड़, उजड़ा हुआ, निर्जन, उजाड़, नष्ट, बर्बाद हुआ।

ऊजरी *स्त्री.* (देश.) 1. ऊजले रंग की कोई चीज 2. सफेद 3. स्वच्छ, सफाई, चमकने की स्थिति जैसे- बरतनों की ऊजरी।

ऊजू *पुं.* (अर.) 1. चेहरे का साफ होना, चेहरे की सफाई और स्वच्छता 2. नमाज के लिए नियमपूर्वक हाथ-पांव और मुंह आदि धोना।

ऊटक-नाटक *पुं.* (तद्.+तत्.) 1. व्यर्थ का दिखावटी काम 2. इधर-उधर का फजूल का काम 3. महत्वहीन, अव्यवस्थित ढंग वाला कार्य।

ऊटना *अ.क्रि.* (देश.) 1. उत्साहयुक्त होना 2. उमंग में आना 3. तर्क-वितर्क करना 4. मन में कोई योजना बनाना।

ऊटपटाँग *वि.* (देश.) अटपटा, टेढ़ा-मेढ़ा, असंगत, बेतुका, बेढंगा, बेमेल, उलटा-पुलटा, ऊल-जलूल।

ऊढ़ *पुं.* (तत्.) 1. जो विवाहित हो 2. जिसने विवाह किया हो विलो. अनूढ

ऊढ़ा *स्त्री.* (तत्.) विवाहित स्त्री, जो (कन्या) विवाहित हो *वि.* जैसे- ऊढ़ा बाला विलो. अनूढ़ा।

ऊत *वि.* (देश.) 1. संतानहीन 2. निपुत्र/निपूत 3. धूर्त, उजड्ड, शरारती 4. स्वेच्छाचारी *पुं.* जो निःसंतान होने से मृत्यु के बाद पिंड आदि पाने के अभाव में प्रेतयोनि को प्राप्त हो जाता है, भूत-प्रेत।

ऊतक *वि.* (तत्.) जीव. पादप या प्राणी के संरचनक पदार्थ के रूप में अंतःकोशिकीय द्रव्य सहित विशिष्ट कोशिकाओं का समुच्चय tissue

ऊतक-रसायन *पुं* (तत्.) आयु. ऊतक विज्ञान की वह शाखा जो कोशिकाओं और ऊतकों में रासायनिक यौगिकों का अध्ययन करती है।

ऊतकलयन *पुं.* (तत्.) ऊतकों का विघटन, ऊतकों का नष्ट होना।

ऊतक-विज्ञान *वि.* (तत्.) जीव-विज्ञान की वह शाखा जिसमें ऊतकों का विस्तृत अध्ययन होता है। histology

ऊति *स्त्री.* (तत्.) 1. रक्षा का भाव, बचाव, सहायता, मदद 2. क्रीड़ा 3. इच्छा, वासना 4. कृपा, अनुग्रह 5. सिलाई 6. सिलाई की मजदूरी 7. बुनाई।

ऊतिकी *स्त्री.* (तत्.) आयु. ऊतक विज्ञान। जिसमें कोशिकाओं और ऊतकों की सूक्ष्म रचना तथा कार्य का अध्ययन किया जाता है। histology

ऊतिकोशांतरण *पुं.* (तत्.) आयु. ऊतक की रचना में होने वाला विशेष परिवर्तन जो सामान्य से भिन्न हो, इतर रूप में विकास। metaphasia

ऊद *पुं.* (अर.) 1. अगर का वृक्ष या उसकी लकड़ी, अगरू 2. एक जलजंतु, ऊदबिलाव।

ऊदबत्ती *स्त्री.* (अर. ऊद+देश.बत्ती) अगरबत्ती, ऊद से निर्मित अगरबत्ती।

ऊदबिलाव *पुं* (तद्.) नेवले की-सी आकृति का पर उससे बड़ा एक जंतु जो जल और थल दोनों में रहता है।

ऊदल *पुं.* (देश.) 1. आल्हा के सुविख्यात नायक वीर उदय सिंह 2. एक वृक्ष।

ऊदा *वि.* (अर.) ललाई लिए हुए काले या बैंगनी रंग का *पुं.* उपर्युक्त रंग का घोड़ा।

ऊधम *पुं.* (तद्.) 1. उपद्रव, उत्पात 2. हुल्लड़, शोरगुल, हंगामा 3. शरारत।

ऊधमी *वि.* (देश.) ऊधम करनेवाला, शरारती, फसादी।

ऊधव *पुं.* (तद्.) दे. उद्भव मुहा. ऊधो का लेना, न माधो का देना- किसी से कोई संबंध नही।

ऊन *पुं.* (तद्.) भेड़, बकरी आदि के रोएं (रोम) से प्राप्त रेशा जिससे गर्म कपड़े बनते हैं। वि. (देश.) 1. न्यून, थोड़ा, कम 2. तुच्छ, हीन।

ऊनड़ *क्रि.वि.* (देश.) उमडक़र।

ऊनक *वि.* (तत्.) 1. कम 2 थोड़ा 3. हीन 4. त्रुटिपूर्ण, दोषयुक्त।

ऊनता *स्त्री.* (तत्.) 1. न्यून होने की स्थिति, न्यूनता, कमी, घट जाना 2. हीनता, कमी 3. गुणहीनता, हल्कापन, घटियापन, संकीर्णता, अधमता।

ऊनना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. कम होना, थोड़ा होना, त्रुटिपूर्ण होना, घटना, कम पड़ना या कम होना *स.क्रि.* 2. कम करना, किसी चीज को घटाना, संकीर्ण करना।

ऊनविंश *वि.* (तत्.) [ऊन+विंश] 1. उन्नीस, उन्नीसवाँ *पुं.* 2. 'उन्नीस' की एक संख्या, या उसका वाचक एक शब्द।

ऊना *वि.* (तद्.) 1. जो थोड़ा हो, न्यून, कम, थोड़ा, छोटा, अल्प 2. तुच्छ, हीन 3. अपूर्ण 4. व्यर्थ *पुं.* दु:ख, रंज, गम, खेद।

ऊनाई *क्रि.वि* (तत्.) ऊनई, उमडक़र, उमड़-घुमड़ कर।

ऊनित *वि.* (तत्.) [ऊन+इत] 1. जिसे कम किया गया हो जैसे- ऊनित जमा राशि 2. कम किया हुआ, घटाया हुआ जैसे- ऊनित पारिश्रमिक।

ऊनी *वि.* (तद्.) ऊन का बना हुआ (वस्त्र आदि)।

ऊपजना अ.*क्रि.* (देश.) उपजना, पैदा होना।

ऊपर *वि.* (तद्.) 1. ऊँचे स्थान पर 2. आकाश की ओर 3. किसी आधार पर जैसे- सिर के ऊपर बाल 4. ऊँची श्रेणी जैसे- ऊपर के लोग हमारा कष्ट क्या जाने 5. विरुद्ध जैसे- उसके ऊपर लांछन लगा है 6. बाहर जैसे- ऊपर से तो साधु लगता है मुहा. ऊपर की आमदनी- वेतन आदि के अतिरिक्त कमाई, घूसखोरी से प्राप्त धन; ऊपर लेना- जिम्मे लेना; ऊपर वाला- भगवान।

ऊपर तले, ऊपर नीचे *क्रि.वि* (देश.) 1. ऊपर और नीचे, ऊपरी मंजिलें 2. आगे-पीछे जन्मे हुए जैसे- ये दोनों ऊपर-तले के बहन-भाई हैं।

ऊपरवाला *वि.* (देश.) 1. जो ऊपरीभाग पर स्थित हो जैसे- इस घर में ऊपर वाला कक्ष, अतिथि कक्ष है 2. ऊँचे स्थान पर रहने वाला जैसे- ऊपर वाले व्यक्ति से पूछिये 3. किसी से उच्च पद का अधिकारी जैसे- मेरे से ऊपर वाला अधिकारी भी तो है, *पुं.* परमात्मा जैसे- दुर्घटना में तो ऊपर वाले ने ही रक्षा की।

ऊपरी *वि.* (तद्.) 1. ऊपर का 2. बाहरी, दिखाऊ 3. औपचारिक 4. सतही 5. प्रेत बाधा से युक्त 6. फुटकर 7. अवैध जैसे- ऊपरी आमदनी।

ऊब *स्त्री.* (तद्.) कुछ काल तक निरंतर एक ही अवस्था में रहने से होने वाली चित्त की व्याकुलता, उद्वेग, घबड़ाहट, बोरियत।

ऊबट *पुं./वि.* (देश.) अटपटा रास्ता, कठिन मार्ग, ऊँचा-नीचा, असमतल, टेढ़ा-मेढ़ा मार्ग *वि.* ऊँचा नीचा, ऊबड़-खाबड़ मार्ग से भटका हुआ, पथ भ्रष्ट।

ऊबड़-खाबड़ *वि.* (देश.) ऊँचा-नीचा, अटपटा, असमतल।

ऊबना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. उकताना 2. अकुलाना, घबड़ाना।

ऊबर *पुं.* (तद्.) (हि.उबार) किसी संकट से उद्धार, रक्षा, बचाव, उबार जैसे- 1.सब विधि ऊबर करे जगदीश 2.पानी गए न ऊबरे मोती मानुष चून, उभार, किसी चीज का ऊपर उठना, उभरा हुआ।

ऊभ *वि.* (देश.) 1. ऊँचा, उठा हुआ, उभरा हुआ *स्त्री.* 2. ऊब, उद्वेग, खिन्नता, उमंग, बेचैनी 3. 3. व्याकुलता 4. उमस, गर्मी।

ऊभचूभ *स्त्री.* (देश.) 1. डूबना-उतराना 2. आशा-निराशा के बीच की स्थिति प्रयो. आनंद और आश्चर्य से ऊभ-चूभ तुलसी मानो ठगे-से देखते रह गए- मानस का हंस- अ.ला. नागर।

ऊरा *वि.* (देश.) अधूरा, जो पूर्ण न हो जैसे- पढ़ा तो पूरा पर समझ सका ऊरा।

ऊरु *पुं.* (तत्.) जंघा, रान, जांघ।

ऊरुजन्मा *वि.* (तत्.) [ऊरु+जन्मन] 1. जिसका जन्म जाँघ से हुआ हो, जाँघ से उत्पन्न। 2. ऊरुसम्भव *पुं.* वैश्य।

ऊरुजन्या/ऊरुज/ऊरुसंभव *वि.* (तत्.) 1. उरु, जांघ से उत्पन्न 2. वैश्य वर्ण (ऊरू तदस्य यद्वैश्य:) 3. गंगा नदी।

ऊर्ज *पुं.* (तत्.) 1. शक्ति, बल 2. स्फूर्ति 3. प्राण 4. जीवन 5. उत्साह काव्य. एक अर्थालंकार जिसमें असहाय होने पर भी स्वाभिमान और उत्साह बने रहने का वर्णन होता है।

ऊर्जस् *पुं.* (तत्.) 1. बल, शक्ति 2. उमंग, उत्साह।

ऊर्जस्वल *वि.* (तत्.) 1. बलवान, शक्तिशाली, तेजस्वी 2. श्रेष्ठ।

ऊर्जस्वान् *वि.* (तत्.) 1. जो ऊर्जा से युक्त हो 2. शक्तिशाली, बलवान 3. रसीला

ऊर्जस्विता *स्त्री.* (तत्.) 1. ऊर्जस्वी होने की अवस्था या भाव 2. शक्ति संपन्नता, बलवत्ता 3. तेजस्विता 4. उत्साहपूर्णता 5. श्रेष्ठता।

ऊर्जस्वी *वि.* (तत्.) 1. शक्तिमान, बलवान 2. तेजस्वी 3. प्रतापी 4. ऊर्जस्व *पुं.* काव्य. वह काव्यालंकार जहां रसाभास या भावाभास स्थायीभाव का अंग हो।

ऊर्जा *स्त्री.* (तत्.) 1. कार्य करने की क्षमता या शक्ति 2. भौ. भौतिक पदार्थों या रासायनिक तत्वों की कार्यक्षमता या शक्ति energy 3. दक्ष की पुत्री का नाम जिसका विवाह वशिष्ट के साथ हुआ था।

ऊर्जा संरक्षण *पुं.* (तत्.) भौ.रसा. किसी तंत्र में ऊर्जा की वह अवस्था जिसके रूप एवं उपलब्धता में परिवर्तन तो हो सकता है किंतु उसकी संपूर्ण ऊर्जा अचर बनी रहती है।

ऊर्जा स्तर *पुं.* (तत्.) रसा. प्रत्येक अणु, परमाणु या नाभिक में निश्चित रूप से विद्यमान एक महत्वपूर्ण ऊर्जा energy level टि. ऊर्जा के न्यूनतम स्तर को 'आद्य अवस्था' कहते हैं। ground state

ऊर्जित *वि.* (तत्.) 1. ऊर्जा से युक्त, शक्तिशाली, बलवान, तेजस्वी 2. भौ. ऊर्जा current से युक्त, जिसमें बिजली हो।

ऊर्ण *पुं.* (तत्.) 1. ऊन 2. ऊनी कपड़ा।

ऊर्णक *पुं.* (तत्.) रसा. ऊर्णन को प्रेरित करने वाला पदार्थ जिसका उपयोग जलशोधन आदि में होता है, जैसे- चूना, फिटकरी, फ्लोरिक ऑक्साइड आदि। flocculent

ऊर्णन *पुं.* (तत्.) निलंबित ठोस कणों का इस प्रकार संयोजित होना कि वे ऊन के समान छोटे-छोटे गुच्छे या पुंज बन जाएँ flocculation तु. स्कंदन।

ऊर्णनाभ *पुं.* (तत्.) [ऊर्ण+नाभि] जाला बुनने का एक प्रकार का कीड़ा, मकड़ा।

ऊर्णपर्णी *पुं.* (तत्.) वन. वे पादप जिन की पत्तियाँ देखने में ऊन जैसी प्रतीत होती हैं, *वि.* ऊन जैसे पत्ते वाले (पौधे)।

ऊर्णपुष्पी *पुं.* (तत्.) वन. वे पादप जिनमें ऊन जैसे पुष्प लगते हैं।

ऊर्णा *स्त्री.* (तत्.) 1. ऊन 2. भौहों के बीच की भौंरी।

ऊर्णायु *पुं* (तत्.) 1. मेष, मेढ़ा 2. मकड़ा, मकड़ी 3. ऊनी कंबल।

ऊर्णी *पुं.* (तत्.) रसा. ऊर्णन को प्रेरित करने वाला पदार्थ, निलंबित suspended ठोस कणों के बड़े बड़े गुच्छे, थक्के बनने की प्रक्रिया में सहायक द्रव, पदार्थ।

ऊर्ध *क्रि.वि.* (तत्.) ऊर्ध्व, ऊपर *वि.* उदग्र।

ऊर्ध्व *वि.* (तत्.) 1. ऊँचा, ऊपर की ओर स्थित 2. ऊपर (आकाश) की ओर की दिशा विलो. अधर।

ऊर्ध्वकेतु *वि.* (तत्.) 1. जिसका ध्वज या पताका सदा ऊपर फहराता रहे 2. जो ध्वज ऊँचाई पर फहरा रहा हो, चक्रवर्ती सम्राट।

ऊर्ध्वकेश *वि.* (तत्.) 1. जिसके सिर के केश (बाल) खड़े हों या बिखरे हुए हों। खड़े बालों वाला 2. ऊर्ध्वकच।

ऊर्ध्वगति *स्त्री.* (तत्.) 1. ऊपर की ओर गति 2. मुक्ति/मोक्ष (जन्म-मृत्यु के बंधन से छुटकारा) 3. वृद्धिशीलता *वि.* जिसकी गति ऊपर की ओर हो, ऊपर की ओर गति वाला।

ऊर्ध्वगामी *वि.* (तत्.) 1. ऊपर जानेवाला 2. मुक्त, निर्वाण प्राप्त।

ऊर्ध्वचरण *वि.* (तत्.) जिसके पैर ऊपर की ओर उठे हुए हों। सिर के बल पर खड़ा होने वाला, *पुं.* शरभ नामक कल्पित प्राणी जो सिंह से भी अधिक शक्तिशाली माना गया है।

ऊर्ध्वचेतना *स्त्री.* (तत्.) 1. स्नायुसंघटन की बहुत बहुत उत्तेजित अवस्था के परिणामस्वरूप तीव्र चेतना (तीव्र बुखार आदि में) 2. समाधिस्थ अवस्था में शरीर और इंद्रियों की सीमा से परे स्थित और अगोचर घटनाओं या वस्तुओं का ज्ञान।

ऊर्ध्वछंद *पुं.* (तत्.) मंदिर की आधारशिला से शिखर तक की ऊँचाई।

ऊर्ध्वजानु *वि.* (तत्.) ऊँचे घुटनों वाला।

ऊर्ध्व ताड़ासन *वि.* (तत्.) योग. सीधे खड़े होकर दोनों हाथों की अँगुलियों को एक-दूसरे के बीच (फँसा कर) और साथ ही पैरों को मिला कर श्वास अंदर भरते हुए हाथों और एड़ियों को ऊपर की ओर तानना और फिर श्वास छोड़ते हुए पूर्व स्थिति में आना।

ऊर्ध्वतिलकी *वि.* (तत्.) ऊपर की ओर तिलक लगाने वाला, खड़ा टीका लगाने वाला।

ऊर्ध्वदृष्टि *वि.* (तत्.) 1. ऊपर की ओर देखना 2. महत्वाकांक्षी, उच्चाकांक्षी, ऊँची सोच *स्त्री.* योग की एक क्रिया जिसमें दृष्टि ऊपर ले जाकर त्रिकुटी पर केंद्रित की जाती है।

ऊर्ध्वदेह *स्त्री.* (तत्.) मृत्यु के बाद प्राप्त होने वाला वाला शरीर।

ऊर्ध्वद्वार *पुं.* (तत्.) 1. ऊपर का द्वार 2. ब्रह्मरंध्र।

ऊर्ध्वनयन *वि.* (तत्.) 1. जिसकी दृष्टि ऊपर की ओर हो 2. महत्वाकांक्षी पुं. पुराणों में वर्णित एक काल्पनिक शरभ नामक शक्तिशाली प्राणी।

ऊर्ध्वपथ *पुं* (तत्.) 1. आकाश मार्ग, आकाश 2. ऊपरी मार्ग, उच्च पथ।

ऊर्ध्वपाद *वि.* (तत्.) दे. ऊर्ध्व चरण *पुं.* टिड्डी नामक उड़ने वाला कीट।

ऊर्ध्वपुंड्र *पुं.* (तत्.) वैष्णव संप्रदाय में प्रचलित चंदन, गोपीचंदन का तिलक जो माथे पर खड़ा लगाया जाता है, खड़ा तिलक।

ऊर्ध्वबाहु *विं* (तत्.) जिसकी भुजाएँ ऊपर की ओर उठी हों *पुं.* वे तपस्वी (साधु) जो अपनी एक भुजा सदैव ऊपर उठाए रहते है।

ऊर्ध्वबिंदु *पुं.* (तत्.) ऊपर का बिंदु, अनुस्वार का चिह्न (शीर्षबिंदु) खगो. देखने वाले के सिर के ऊपर आकाश में सबसे ऊँचा स्थान।

ऊर्ध्वमुख *वि.* (तत्.) जिसका मुख ऊपर की ओर हो। *वि.* अग्नि, आग।

ऊर्ध्वमुखी *वि.* (तत्.) 1. ऊपर की ओर मुख वाली 2. उन्नतिशील 3. आध्यात्मिक।

ऊर्ध्वरेतस/ऊर्ध्वरेता *वि.* (तत्.) योग. अपने वीर्य को कभी नष्ट न करने वाला, ब्रह्मचारी *पुं.* 1. महादेव, शिव 2. अखंड, भीष्म पितामह 3. हनुमान।

ऊर्ध्वलिंगी *वि.* (तत्.) महादेव, शिव।

ऊर्ध्वलोक *पुं.* (तत्.) ऊपरी लोक या स्वर्ग, आकाश।

ऊर्ध्ववर्ती *वि.* (तत्.) 1. ऊपरी लोक में रहने वाला 2. स्वर्गीय 3. ऊँचे पद पर आसीन, वरिष्ठ।

ऊर्ध्ववायु *स्त्री.* (तत्.) मुँह से निकलने वाली वायु, डकार।

ऊर्ध्वशायी *वि.* (तत्.) उत्तान (चित) होकर सोने वाला, उत्तानशायी *पुं.* शिव, महादेव।

ऊर्ध्वश्वास *पुं.* (तत्.) 1. ऊपर की ओर चलने या चढ़ने वाली श्वास 2. मृत्यु के समय ऊपर की ओर चलने वाली विशेष साँस।

ऊर्ध्वहनु *पुं.* (तत्.) आयु. ऊपर के जबड़े की हड्डी। maxilla

ऊर्ध्वांग *पुं* (तत्.) 1. किसी वस्तु का ऊपरी भाग, अंग 2. मस्तक, सिर।

ऊर्ध्वाकर्षण *पुं.* (तत्.) ऊपर की ओर होने वाला खिंचाव, ऊपर की ओर खींचना।

ऊर्ध्वाधर *वि.* (तत्.) सीधा खड़ा। vertical

ऊर्ध्वाम्नाय *पुं.* (तत्.) वैष्णव संप्रदाय में तंत्र का एक भेद।

ऊर्ध्वायन *पुं. (तत्.)* 1. ऊपर की ओर जाना। उड़ना 2. स्वर्ग जाने का मार्ग।

ऊर्ध्वारोह/ऊर्ध्वारोहण *पुं* (तत्.) 1. ऊपर की ओर जाना 2. मृत्यु के बाद स्वर्ग जाना, स्वर्गवास।

ऊर्मि *स्त्री.* (तत्.) 1. हलकी या छोटी लहर 2. प्रवाह 3. वेग 4. प्रकाश 5. पंक्ति

ऊर्मिका *स्त्री.* (तत्.) लहर, तरंग। वस्त्र पर पड़ी सिकुड़न 3. अँगूठी 4. भौंरे की गूँज।

ऊर्मिचिह्न *पुं.* (तत्.) नदी आदि के तट की रेत पर लहरों द्वारा बने समानांतर उभारदार निशान।

ऊर्मिमाला *स्त्री.* (तत्.) 1. लहरों की माला, शृंखला, समूह, तरंगावलि 2. एक छंद।

ऊर्मिमाली *वि.* (तत्.)1. लहरों से विभूषित 2. लहरों की माला, शृंखला वाला, तरंगायित *पुं.* समुद्र छोटी-छोटी लहरों से युक्त।

ऊर्मिल *वि.* (तत्.)1. छोटी लहर से युक्त, लहरों वाला।

ऊर्मिला *स्त्री.* (तत्.) लक्ष्मण की पत्नी का नाम।

ऊर्विका *स्त्री.* (तत्.) प्राणी. ऊरु-अस्थि, जांघ की हड्डी अथवा कशेरुकियों के पश्च- पाद के (मुख्य) स्कंध के समीपस्थ स्थित हड्डी, कीटों की टाँग में शिखरक और अंतर्जंघिका के बीच स्थित स्कंध में समीपस्थ सिरे से तीसरा खंड। femur

ऊल *स्त्री.* (देश.) 1. उल्लास की भावना, उमंग उल्लास 2. असंबद्ध

ऊलजलूल *वि.* (देश.) जिसका कोई सिर पैर न हो, 2. अनाड़ी।

ऊलना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. उछलना-कूदना, प्रसन्नता से भर जाना 2. मर्यादा तोड़ना।

ऊल-फूल *स्त्री.* (देश.) प्रसन्नता की भावना, उल्लास।

ऊलर *वि.* (तद्.) 1. झुका हुआ 2. हिलता-जुलता, डोलित।

ऊषा *स्त्री.* (तत्.) दे. उषा।

ऊष्म *पुं.* (तत्.) 1. गरमी 2. गरमी का दिन, ग्रीष्म ऋतु 3. भाप *वि.* गरम।

ऊष्म वर्ण *वि.* (तत्.) हिंदी वर्णमाला के श,ष,स,ह वर्ण।

ऊष्मांक *वि.* (तत्.) ऊष्मा अथवा ताप के मापन का निर्देशांक। calorie

ऊष्मा *स्त्री.* (तत्.) 1. ताप, तपन, गर्मी, ग्रीष्मकाल 2. भौ. किसी भौतिक पदार्थ की आंतरिक ऊर्जा जो उसके अणुओं या परमाणुओं की गतिज ऊर्जा के कारण उत्पन्न होती है टि. इसका एस.आइ. मात्रक 'जूल' है

ऊष्माघात *पुं.* (तत्.) भौति. गर्मी का आकस्मिक आघात, लू लगना।

ऊष्माचालक *पुं* भौ. ताप-संवाहक धातु पदार्थ जिनसे होकर ऊष्मा एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचती है।

ऊष्मानिल *पुं.* (तत्.) गर्म वायु, तपती हवा।

ऊष्मायन *पुं* (तत्.) अंडे सेने की क्रिया या भाव। incubation

ऊष्मायित्र *वि.* (तत्.) आयु. समय-पूर्व प्रसव जनित नवजात शिशु के समुचित विकास के निमित्त बनाया गया कोष्ठ, जहाँ पर गर्भाशय के समान ही तापमान आर्द्रता, ऑक्सीजन की पूर्ति आदि की स्थिति नियंत्रित होती है। incubator

ऊष्मावर्णकता *स्त्री.* (तत्.) रसा. कुछ कार्बनिक यौगिकों का ताप-परिवर्तन के साथ अपना रंग बदल देने का गुण।

ऊष्मीय *स्त्री.* (तत्.) 1. ग्रीष्म ऋतु 2. ताप, गर्मी 3. उग्रता वि. ऊष्मा संबंधी।

ऊसर *वि.* (तद्.) वह भूमि जिसमें रेह अधिक होने के कारण खेती न की जा सके, बंजर प्रयो. ऊसर बरसै तृण नहिं जामा (मान.) कृषि. लवण तथा अत्यधिक क्षार के कारण खेती के अयोग्य (भूमि)

ऊह *पुं.* (तत्.) अटकल, अनुमान, परीक्षण *अव्य.* कष्ट या पीड़ा सूचक अव्यय।

ऊहन *पुं.* (तत्.) 1. तर्क करना या तर्क देना, विचार प्रस्तुत करना 2. संस्कार या सुधार करना।

ऊहनीय *वि.* (तत्.) विचार करने योग्य, तर्क करने योग्य 2. विचारणीय।

ऊहा *स्त्री* (तत्.) 1. अनुमान, तर्क-वितर्क 2. बुद्धि 3. किंवदंती; जनप्रवाद।

ऊहापोह *पुं.* (तत्.) मन में होने वाला विचार-मंथन, सोच-विचार।

ऊह्य *वि.* (तत्.) तर्क-वितर्क के योग्य, जिस पर विचार किया जा सके।

ऋ

ऋ हिंदी वर्णमाला का सातवाँ स्वर-वर्ण, जो मूर्द्धा से उच्चरित होता है। संस्कृत में इसके ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत तीनों प्रकार के उच्चारण होते है पर हिंदी में इसका प्रस्तुत ह्रस्व रूप में ही प्रचलन है। आजकल हिंदी में इसका उच्चारण 'रि' के समान होता है। 'ऋ' की मात्रा व्यंजनों के नीचे जुड़कर लगती है जैसे- कृ, गृ, द्द आदि। स्त्री. 1. देवमाता अदिति 2. निंदा 3. उपहास।

ऋकार *पुं.* (तत्.) 'ऋ' स्वर और उसकी ध्वनि।

ऋक् *स्त्री.* (तत्.) 1. ऋचा 2. वेदमंत्र, वेद की ऋचा *पुं.* ऋग्वेद।

ऋक्थ *पुं.* (तत्.) 1. उत्तराधिकार में छोड़ी या प्राप्त संपत्ति, दायभाग; परिसंपदा 2. सोना 3. जायदाद। दे. रिक्थ।

ऋक्थग्राह *पुं* (तत्.) उत्तराधिकारी, वारिस, उत्तराधिकार प्राप्त करने वाला।

ऋक्थभाग *पुं.* (तत्.) पूर्वजों द्वारा छोड़ी गई धन संपत्ति का भागीदार, उत्तराधिकारी।

ऋक्थभागी/ऋक्थहर/ऋक्थहारी *पुं.* (तत्.) पूर्वजों की संपत्ति पाने वाला या उत्तराधिकारी। दे. ऋक्थग्राह।

ऋक्ष *पुं.* (तत्.) 1. भालू 2. तारा, नक्षत्र 3. खगो. वे सात तारे जिन्हें 'सप्तर्षि' कहा जाता है The great bear

ऋक्षकल्प *वि.* (तत्.) नक्षत्रों के समान, तारों के समान।

ऋक्षचक्र *पुं.* (तत्.) राशियों का समूह, राशि चक्र।

ऋक्षनाथ/ऋक्षपति/ऋक्षराज *पुं.* (तत्.) 1. ऋक्षों का स्वामी, नायक 2. (नक्षत्रों का राजा चन्द्रमा) 3. रीछों का सेनानायक-जांबवान।

ऋक्षनेमि *पुं.* (तत्.) विष्णु।

ऋक्षेश *पुं.* (तत्.) ऋक्षनाथ।

ऋक्संहिता *स्त्री.* (तत्.) ऋग्वेद की ऋचाओं का संग्रह।

ऋग्वेद *पु.* (तत्.) चार वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वेद) में से प्रथम वेद।

ऋग्वेदी *वि.* (तत्.) ऋग्वेद का जानने वाला, जिस व्यक्ति का संस्कार ऋग्वेद में वर्णित विधि से हुआ हैं, ऋग्वेद पढ़ने वाला।

ऋचा *स्त्री.* (तत्.) 1. ऋग्वेद का मंत्र 2. वेदमंत्र।

ऋजु *वि.* (तत्.) 1. सीधा, सरल, सुगम 2. सरल स्वभाववाला।

ऋजुकरण *पुं* (तत्.) 1. सरलीकरण, सरल करने की क्रिया या भाव 2. सीधा करने का भाव।

ऋजुकाय *वि.* (तत्.) सीधे शरीर वाला, अपंगता या विकृति रहित शरीर वाला, जिसके शरीर में ऋजुता या टेढ़ापन न हो। पुं. कश्यपमुनि।

ऋजु कोण *पु.* (तत्.) गणि. कोण जिसकी भुजाएँ एक ही सरल रेखा पर शीर्ष बिंदु से दो विपरीत दिशाओं में स्थित होती हैं, 180° का कोण जो दो समकोणों के बराबर अर्थात् ऋजुकोण बनाता है। straight angle

ऋजुग (ऋजु+ग) *वि.* (तत्.) 1. सीधा चलने, जाने वाला 2. निष्कपट एवं सरल व्यवहार वाला 3. *पुं.* बाण, तीर 4. सज्जन, ईमानदार।

ऋजुता *स्त्री.* (तत्.) सीधापन, सरलता, छल-कपट रहितता।

ऋजुत्व *वि.* (तत्.) 1. सरलता, सीधापन 2. छल-कपट रहित।

ऋजुरेखा *स्त्री.* (तत्.) सरल रेखा, सीधी रेखा, जिस रेखा में वक्रता न हो।

ऋजुरेखीय *वि.* (तत्.) सीधी या सरल रेखा वाला, जिसका निर्माण ऋजुरेखाओं से हुआ हो, ऋजु रेखा से संबधित।

ऋजुलेखन *पुं.* (तत्.) 1. सीधी लिखावट जिसमें दांये-बांये कोई झुकाव न हो 2. स्पष्ट लेखन।

ऋजुलेखा *स्त्री.* (तत्.) सीधी रेखा, ऋजु रेखा।

ऋण *पुं.* (तत्.) 1. वाणि. किसी दूसरे से कुछ समय के लिए लिया गया द्रव्य जिसे वापिस करना होता है, ब्याज पर लिया हुआ धन, उधार, कर्ज 2. गणि. शून्य से कम मान होने का प्रतीक। minus

ऋणकर्ता *वि.* (तत्.) ऋण करने या लेने वाला, कर्ज़दार, देनदार।

ऋणग्रस्त *वि.* (तत्.) कर्ज से लदा हुआ, कर्जदार।

ऋणत्रय *वि.* (तत्.) शास्त्रोक्त तीन प्रकार के ऋण (देवऋण, ऋषि ऋण, पितृ ऋण)।

ऋणदाता *वि.* (तत्.) ऋण प्रदान करने वाला, कर्ज देने वाला, लेनदार।

ऋणदायी *वि.* (तत्.) ऋण प्रदान करने वाला, ऋणदाता।

ऋणदास *पुं.* (तत्.) कर्ज न चुका पाने के कारण जो ऋणदाता का दास बना हो।

ऋणनिस्तारण *पुं.* (तत्.) ऋण का निपटान, ऋण चुकाना, कर्ज चुकाना, ऋण शुद्धि।

ऋणपक्ष *पुं* (तत्.) वाणि. बही-खातें आदि में दायीं ओर का वह हिस्सा जिसमें किसी को दी गई वस्तु आदि का विवरण और उसका मूल्य दिनांक के साथ लिखा जाता है। credit side

ऋणपत्र *वि.* (तत्.) गणि. लेन-देन के व्यवहार का वह पत्र जिस पर गवाहों के समक्ष ऋण लेने और देने की शर्तें लिखी रहती हैं, सरकारी या निजी क्षेत्र की कंपनी द्वारा पूँजी प्राप्त करने, बढ़ाने के उद्देश्य से प्राप्त ऋण के लिए जारी बंध-पत्र। bond/debenture

ऋणपूँजी *स्त्री.* (तत्.+तद्.) पूँजी का वह अंश जो ऋण लेकर लगाया जाता है और संबंधित संस्थान को अनिवार्य रूप से उसके सूद का भुगतान करना पड़ता है।

ऋण-प्रपत्र *वि.* (तत्.) लिखित दस्तावेज जो एक व्यक्ति या संस्था से दूसरे को पैसे के हस्तांतरण के आदेश देता है।

ऋणप्रबंधन *पुं.* (तत्.) सरकारी ऋण के सूद के भुगतान और परिपक्व हो रहे बंधपत्रों के पुनः वित्तीयन की व्यवस्था।

ऋणमुक्त *वि.* (तत्.) जिसने अपना ऋण चुका दिया हो, उऋण, देनदारी से मुक्त।

ऋणमुक्ति *स्त्री* (तत्.) ऋण चुकाना, ऋण शुद्धि, ऋण शोध, ऋण-शोधन।

ऋण मेला *पुं.* (तत्.) गणि./प्रशा. समाज के जरूरतमंद वर्गों विशेषतः किसानों और बेरोजगार युवकों को तत्काल ऋण स्वीकृत कराने के लिए आयोजित समारोह। loan mela

ऋणयक्ष *पुं.* (तत्.) हिसाब-किताब के खातें में दाहिनी ओर का वह पक्ष जिसमें दिए गए व्यक्ति का नाम, दिनांक और विवरण लिखा जाय। credit side

ऋणविद्युदणु (ऋण+विद्युत+अणु) *पुं* (तत्.) भौति. किसी परमाणु के मूलभूत कणों (इलेक्ट्रान+ प्रोटान+ न्यूट्रान) में से एक ऋणात्मक विद्युत कण। electron

ऋण-शुद्धि *स्त्री* (तत्.) कर्ज चुकाना, ऋण शोधन, ऋण मोचन, ऋण मुक्ति, ऋण की अदायगी।

ऋणशोध/ऋणशोधन *पुं* (तत्.) ऋणशुद्धि/ऋण मुक्ति, कर्ज चुकाना, ऋण का लौटाना।

ऋण सीमा *स्त्री* (तत्.) अर्थ. ऋण की कानूनी व्यवस्था, जिसमें सरकारों (केंद्र, राज्य या स्थानीय निकाय) द्वारा ऋण देने की अधिकतम सीमा निर्धारित की जाती है।

ऋण-स्थगन *वि.* (तत्.) अर्थ./प्रशा. कर्ज लेने वाले की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए देनदार का इस बात के लिए सहमत हो जाना कि यदि कर्जदार कुछ समय तक कर्ज की अदायगी नहीं कर पाता तो उसे आपत्ति नहीं होगी।

ऋणांतक *पुं.* (तत्.) ऋण से मुक्ति दिलाने वाला मंगल ग्रह, ऋण का अंत करने वाला।

ऋणात्मक *वि.* (तत्.) 1. गणि. (वह संख्या) जिसका मान शून्य से कम हो negative *वि.* धनात्मक 2. भौ. स्वेच्छा से मानी हुई वृद्धि की दिशा के विपरीत प्रवृत्त अथवा परिकल्पित जैसे- ऋणात्मक कण।

ऋणादान *पुं.* (तत्.) 1. ऋण लेना, उधार लेना, ऋण की वसूली 2. दिया हुआ ऋण वापस मिलना।

ऋणाधार *पुं* (तत्.) वाणि. ऋण लेते समय ऋणदाता को ऋण वापसी हेतु आश्वस्त करने के लिए अपनी निर्दिष्ट संपत्ति, वस्तु, हैसियत आदि का प्रमाण प्रस्तुत करना।

ऋणायन *वि.* (तत्.) ऋणात्मक आवेश वाला आयन जो विद्युत का प्रवाह होने पर ऐनोड की ओर जाता है तु. धनायन।

ऋणार्ण *पुं.* (तत्.) ऋण चुकाने के लिए लिया जाने वाला दूसरा ऋण।

ऋणावेश *पुं.* (तत्.) (ऋण+आवेश) (विद्युत) ऋणात्मक-विद्युत प्रवाह या आवेश, ऋणात्मक और धनात्मक।

ऋणिक *वि.* (तत्.) ऋणिया, ऋणी, ऋणकर्ता, कर्ज लेने वाला, देनदार।

ऋणिया *वि.* (तद्.) ऋण लेने वाला।

ऋणी *वि.* (तत्.) 1. जिसने ऋण लिया हो, कर्जदार 2. उपकार माननेवाला, अनुगृहीत।

ऋतंभर *वि.* (तत्.) सत्य को धारण करने वाला *पुं.* परमेश्वर।

ऋतंभरा *स्त्री.* (तत्.) 1. सत्य का धारण करने वाली 2. प्लक्ष द्वीप की एक नदी का नाम 3. हमेशा एकरूप रहने वाली सात्विक बुद्धि।

ऋत *पुं.* (तत्.) 1. शाश्वत सत्य, यथार्थ 2. उंछवृत्ति 3. ईमानदार 4. प्रतिष्ठा प्राप्त वि. 1. दीप्त 2. पूजित 3. सच्चा 4. योग्य, उचित।

ऋतधामा *वि.* (तत्.) जिसका निवास ऋत (सत्य) में हो, सत्यधाम में निवास करने वाले, पवित्र एवं सत्य स्वभाव वाला *पुं.* विष्णु, अग्नि।

ऋतवादी *वि.* (तत्.) सत्य बोलने वाला, सत्यवादी।

ऋतव्रत *वि.* (तत्.) जिसने सत्य बोलने का व्रत लिया हो, सत्यवादी पुं. सत्य बोलने का व्रत।

ऋतानृत *पुं.* (तत्.) सत्य और असत्य, सत्य और मिथ्या, अनृत सच और झूठ का संयोग।

ऋतु काल *पुं.* (तत्.) 1. मासिक धर्म के उपरांत का गर्भधारण के लिए उपयुक्त समय, ऋतुवेला, ऋतु समय 2. उपयुक्त काल।

ऋतु क्षरण *पुं* (तत्.) परिवर्तित मौसम, भौतिक, रासायनिक, यांत्रिक आदि अनेक प्राकृतिक क्रियाओं के कारण चट्टानों का छोटे-छोटे कणों में परिवर्तन या छीजन होने की क्रिया/भाव।

ऋतुगमन *पुं.* (तत्.) ऋतु काल में (पत्नी के साथ(संपन्न यौन क्रिया, ऋतु काल में (पत्नी के साथ) किया जाने वाला संभोग।

ऋतुचर्या *स्त्री.* (तत्.) आयु. ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार रखना।

ऋतुजन्य *पुं.* (तत्.) 1. ऋतु से उत्पन्न 2. मौसम बदलने से उत्पन्न होने वाला 3. ऋतु विशेष के कारण होने वाला 4. ऋतु विशेष पर निर्भर।

ऋतुजन्य यायावरी *स्त्री.* (तत्.) ऋतु परिवर्तन के अनुसार जीवन (निवास) के लिए अन्य अनुकूल स्थान पर जाना और वहाँ उचित/अनुकूल समय तक रहना।

ऋतुदान *स्त्री.* (तत्.) ऋतु स्नान के बाद संतान की इच्छा से पत्नी के साथ किया गया संभोग।

ऋतुनाथ *पुं.* (तत्.) वसंत ऋतु, श्रेष्ठ ऋतु, ऋतुराज, ऋतुपति।

ऋतुनिष्ठ *पुं.* (तत्.) अपने ही मौसम (ऋतु) में होने वाला, मौसमी ऋतु का अनुसरण करने वाला।

ऋतुपर्ण *पुं.* (तत्.) अयोध्या के एक राजा का नाम जो राजा अयुतायु के पुत्र थे और द्यूत क्रीड़ा में अत्यन्त प्रवीण थे।

ऋतु प्राप्त *वि.* (तत्.)1. रजोदर्शन प्राप्त महिला, गर्भवती होने योग्य स्त्री 2. फल देने योग्य वृक्ष 3. प्रजनन की इच्छुक पशु-मादा।

ऋतु प्राप्ति *स्त्री.* तत्.) स्त्री का रजोदर्शन, गर्भवती गर्भवती होने योग्य अवस्था की प्राप्ति।

ऋतु फल *पुं.* (तत्.) विशिष्ट ऋतु में होने वाले फल, मौसमी फल।

ऋतु भाग *पुं.* (तत्.) किसी पदार्थ का छठा भाग या हिस्सा। (ऋतुओं के छः विभागों के आधार पर)।

ऋतुमती *स्त्री.* (तत्.) 1. रजस्वला, वह स्त्री जिसे मासिक धर्म हुआ हो 2. वह स्त्री जिसके रजोदर्शन के उपरांत 16 दिन व्यतीत न हुए हो और जो गर्भधारण योग्य हो।

ऋतुराज *पु.* (तत्.) ऋतुओं का राजा-वसंत।

ऋतुराज-सखा *पुं.* (तत्.) ऋतुराज वसंत का मित्र-कामदेव।

ऋतुविज्ञान *पुं.* (तत्.) 1. विज्ञान की वह शाखा जिसमें वायुमंडल में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर मौसम, आँधी, वर्षा आदि का अनुमान लगाया जाता है, मौसम विज्ञान।

ऋतु विपर्यय *पुं.* (तत्.) एक ऋतु में उसके अनुकूल बातें जानकर अन्य ऋतु के लक्षण दिखाई देना, जैसे- गरमी में सरदी (गर्मी की ऋतु में वृष्टि)।

ऋतुवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) ऋतु चक्र, ऋतुओं का आना-जाना।

ऋतुवैषम्य *पुं.* (तत्.) 1. ऋतु के अनुकूल आहार-विहार न करना 2. ऋतु की विषमता, तापमान में एकाएक परिवर्तन, उग्रता आदि।

ऋतुषट्क *पुं.* (तत्.) छह (वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर) ऋतुओं का समूह।

ऋतुसंधि *स्त्री.* (तत्.) दो ऋतुओं का मिलन, संधि काल।

ऋतुसंहार *पुं.* (तत्.) कालिदास का षड्ऋतु वर्णन-विषयक प्रसिद्ध खंडकाव्य।

ऋतुसात्म्य *पुं.* (तत्.) मौसम के अनुसार आहार-विहार।

ऋतुसेव्य *पुं.* (तत्.) किसी विशेष ऋतु में व्यवहार लाने योग्य *वि.* (तत्.) ऋतु विशेष के अनुसार सेवन करने योग्य (पदार्थ)।

ऋतुस्नान *पुं.* (तत्.) स्त्री द्वारा रजोदर्शन के बाद प्रायः चौथे दिन किया जाने वाला स्नान।

ऋतुस्राव *पुं.* (तत्.) दे. रजोधर्म।

ऋतृ *स्त्री.* (तत्.) 1. प्राचीन काल में वैदिक कृत्य करने के लिए उपयुक्त और शुभ समय 2. गरमी, सरदी, वर्षा आदि के विचार से किसी भूभाग की समय-समय पर परिवर्तित होने वाली वातावरणिक स्थिति और तदानुसार होने वाला काल 3. रजोदर्शन के उपरांत।

ऋत्विज *पुं.* (तत्.) यज्ञ के पुरोहित के रूप में काम करनेवाला, मुख्य याज्ञिक, पुरोहित टि. यज्ञ करने वालों में मुख्यतः ऋत्विज चार होते हैं उद्गाता, अध्वर्यु, और ब्रह्मा।

ऋद्ध *वि.* (तत्.) 1. धनवान, संपन्न, वैभवशाली, फलता-फूलता 2. वर्धमान, बढ़ता हुआ *पुं.* विष्णु।

ऋद्धि *स्त्री.* (तत्.) 1. विकास, वृद्‌धि, संपन्नता, समृद्धि 2. सफलता, संपन्नता, बहुतायत 3. तप से प्राप्त दिव्य शक्ति 4. एक औषधि या लता जिसका कंद दवा के काम आता है।

ऋद्‌धिकाम *वि.* (तत्.) 1. धन संपत्ति, वैभव, प्रगति चाहने वाला। 2. ऋद्धि नामक दिव्य शक्ति चाहने वाला।

ऋद्‌धि-सिद्‌धि *स्त्री.* (तत्.) 1. समृद्‌धि और सफलता 2. सभी प्रकार का वैभव।

ऋश्य *पुं.* (तत्.) 1. एक विशेष प्रकार का हिरन 2. जिसका शरीर काला और पैर सफेद होते हैं।

ऋषभ *पुं.* (तत्.) 1. बैल, वृषभ 2. श्रेष्ठ जैसे- पुरूषर्षभ-(पुरुषश्रेष्ठ) 3. संगीत के सात स्वरों में से दूसरा।

ऋषभगजविलासिता *स्त्री.* (तत्.) एक समवर्णिक छंद का नाम, जिसके प्रत्येक चरण में क्रमश: भगण, रगण, तीन नगण और गुरु के योग से 16 वर्ण होते हैं और 7-9 पर यति होती है।

ऋषभदेव *पुं.* (तत्.) 1. भागवत पुराण के अनुसार राजा नाभि के पुत्र 2. जैन धर्म के आदि तीर्थंकर।

ऋषभध्वज *पुं.* (तत्.) जिनकी ध्वजा पर ऋषभ (बैल) का निशान है अर्थात् शिव।

ऋषिक *पुं.* (तत्.) अधम श्रेणी का ऋषि, 'ऋषिक' नामक जनपद और उसका निवासी।

ऋषिकल्प *वि.* (तत्.) ऋषि के समान पूज्य, विचारशील और सदाचारी।

ऋषिकुल *पुं.* (तत्.) 1. ऋषि का वंश 2. ऋषि-आश्रम, गुरुकुल

ऋषि-तर्पण *पुं.* (तत्.) ऋषियों की तृप्ति के लिए उनके नाम पर किया जाने वाला जलदान।

ऋषि पंचमी *स्त्री.* (तत्.) भाद्र पक्ष शुक्ल की पंचमी।

ऋषियज्ञ *पुं.* (तत्.) ऋषियों के ऋण से युक्त होने के लिए किया जाने वाला यज्ञ, वेदाध्ययन।

ऋषिहृदय *पुं.* (तत्.) ऋषियों जैसे हृदय वाला परमसज्जन और सदाचारी, आचार-विचार में अच्छा।

ऋषीश्वर *पुं.* (तत्.) ऋषियों के स्वामी, प्रमुख ऋषि।

ऋष्टि *स्त्री.* (तत्.) 1. तलवार, खडग 2. अस्त्र।

ऋष्य *पुं.* (तत्.) 1. काले रंग का एक प्रकार का हिरन 2. कुष्ठ रोग का एक प्रकार।

ऋष्यमूक *पुं.* (तत्.) पंपा सरोवर के निकट का एक पर्वत जहाँ बनवास काल में राम ने कुछ दिन सुग्रीव के साथ बिताए थे।

ए

ए *पुं.* (तत्.) 1. हिंदी वर्णमाला का आठवां स्वर वर्ण जिसका उच्चारण स्थान कंठतालव्य है 2. अव्य. स्मरण, ईर्ष्या, दया, आह्वान, तिरस्कार अथवा धिक्कार का सूचक शब्द 3. अव्य. (फा) बुलाने या संबोधनात्मक रूप में प्रयुक्त शब्द।

एंट्री *स्त्री.* (अं.) 1. प्रवेश, प्रविष्टि 2. प्रतियोगिता या भवन में प्रविष्टि 3. कोश आदि में शब्द की की प्रविष्टि 4. रजिस्टर में व्यक्ति, माल के आवाक/जावक की प्रविष्टि 5. सरकारी दस्तावेजों, सेवा पंजिकाओं में प्रविष्टि।

एंबुलेंस *पुं.* (अं.) रोगी वाहन, रोगियों या घायलों को ले जाने वाली गाड़ी, चलता-फिरता चिकित्सालय।

ऐं *पुं.* (तद्.) 1. महादेव, शिव 2. आमंत्रण, स्मरण आदि अर्थ में प्रयुक्त।

एँच-पेंच पुं. (देश.) 1. हेर-फेर, घुमाव-फिराव 2. वक्र गति, टेढ़ी चाल 3. अटकाव, उलझाव, उलझन 4. गूढ़ कथन 5. दांव-पेच।

एँड़ *पु.* (देश.) गर्व या अभिमान का भाव, ऐंठन।

एँड़ना *अ.क्रि.* (देश.) 1. अंगड़ाना, देह तोड़ना 2. अकड़ना।

एँडी *स्त्री.* (तद्.) 1. अंडी के पत्ते खाने वाला रेशम का कीड़ा 2. उक्त कीड़े का रेशम।

एक *वि.* (तत्.) 1. इकाइयों में सबसे छोटी और पहली संख्या 2. समूह में से अकेला-अकेली वस्तु या व्यक्ति 3. अकेला, अद्वितीय 4. कोई अनिश्चित मुहा. एक अनार सौ बीमार- किसी चीज के अनेक चाहनेवाले; एक आँख से देखना- समान भाव रखना; एक-एक कर के दो-होना- काम बढ़ना; एक और एक ग्यारह होना- आपस में मिलने से शक्ति को बढ़ना; एक के स्थान

पर चार सुनना- एक कड़वी बात के बदले चार कड़वी बातें सुनना; एक थैली के चट्टे-बट्टे- दो या अधिक व्यक्ति जो एक जैसे हैं; एक न चलना- किसी भी युक्ति का सफल न हो पाना; एक पंथ दो काज- एक उपाय से दो कार्य सिद्ध होना; एक मुँह से बोलना- एक स्वर से एक ही बात कहना; एक मुँह होकर कहना- एकमत होकर कहना; एक लाठी से सबको हाँकना- सब के साथ एक-सा व्यवहार करना, भले-बुरे का विचार न करना; एक से दो होना- ब्याह होना, पत्नी का घर आना।

एकक *पुं.* (तत्.) 1. इकाई 2. प्रशा. कार्यालय की सबसे छोटी इकाई, एकांश। unit

एककाल *वि.* (तत्.) 1. एक ही काल या समय में घटित होने वाला 2. एक ही बार घटित होने वाला।

एककालिक कोश *पुं.* (तत्.) ऐसा कोश जिसमें समकालीन किसी काल विशेष के शब्दों, वस्तुओं को ही शामिल किया गया हो।

एककालिकता *स्त्री.* (तत्.) एक ही समय में विद्यमान होना, घटित होना।

एककोशिका *वि.* (तत्.) प्राणि. जिसमें एक ही कोशिका हो अथवा एक ही कोशिका वाला, एककोशिकीय। unicellular, a cellular

एक कोशी *वि.* (तत्.) 1. एक ही कोश से बना प्राणी, जैसे- अमीवा (जीवाणु) 2. (जीव अथवा प्राणी) जिसमें केवल एक ही कोश हो।

एक खून *वि.* (तत्.+फा.) 1. जो एक ही माता-पिता/पूर्वजों की संतान हो 2. एक ही वंश/कुल के व्यक्ति।

एकगाछी *स्त्री.* (तत्.+तद्) एक ही पेड़ के तने को खोखला करके बनाई गई नाव।

एकघ्नी *वि.* (स्त्री.) (तत्.) एक को मारने वाली, अचूक शक्ति जो एक को ही मार सके।

एकचक्र *वि.* (तत्.) 1. एक पहिए वाला 2. चक्रवर्ती *पुं.* 1. सूर्य 2. सूर्य रथ जिसमें एक ही पहिया माना जाता है।

एकचर/एकचारी *वि.* (तत्.) 1. अकेला चलने या विचरने वाला 2. बिना सहायता के रहने वाला जो अपने वर्ग या किसी अन्य के न रहता हो, जैसे- साँप, गेंडा आदि।

एकचारिणी *स्त्री.* (तत्.) पतिव्रता, एक पति-धर्मा।

एकचित्त *वि.* (तत्.) 1. जिसका मन इधर-उधर न डोले। एकाग्र मन अथवा चित्त वाला 2. एक से मन या विचार के (व्यक्ति), समान मत वाले।

एकछत्र *वि.* (तत्.) किसी अन्य के आधिपत्य से रहित (राज्य), जिसमें किसी अन्य को अधिकार न हो, पूर्णप्रभुत्वयुक्त।

एकजटा *वि.* (तत्.) सिर पर एक जटा धारण करने वाली स्त्री, उग्रतारा देवी।

एकज़बान (तत्.+फा) 1. अपने वचन, बात का पक्का (व्यक्ति) 2. एक ही भाषा बोलने वाले व्यक्ति, एक भाषा-भाषी।

एकजाई *वि.* 1. (परिवार के) सदस्य जो एक साथ रहते हों 2. संपत्ति, जिस पर उसके सभी सदस्यों का समान अधिकार हो 3. अविभाजित संपत्ति।

एकजात *वि.* (तत्.) जिनके माता-पिता एक हों, सहोदर।

एकजाति *वि.* (तत्.) एक ही जाति या वंश के, सजातीय, समान प्रकार के।

एकजातीय *वि.* (तत्.) एक ही जाति वर्ग या किस्म के, एक ही प्रकार के, एक ही नस्ल के।

एकजान *वि.* (तत्.+फा.) परम आत्मीय जन, घनिष्ट मित्र, जो घुलमिलकर पूरी तरह एक हो गये हों।

एकजुट *वि.* (तद्.) एकाधिक लोगों का समूह।

एकटक *क्रि.वि.* (तत्.+देश) बिना पलक गिरे या गिराए, अनिमेष।

एकड़ *पुं.* (अर.) धरती का एक माप जो अंग्रेजी माप से 4840 वर्गगज अथवा 13/5 बीघे के बराबर होती है।

एकडाल *वि.* (तत्.+प्रा.) एक ही प्रकार के, एक ही टुकड़े से बने हुए। पुं. वह छुरा या कटार आदि जिसका फल और बेंट दोनों लोहे के एक ही में बने हों।

एकतंत्र *वि.* (तत्.) (राज्य) जिसका शासनाधिकार एक ही व्यक्ति के नियंत्रण में हो *पुं.* ऐसी शासन प्रणाली जिसमें किसी देश का शासन एक ही व्यक्ति (राजा) के हाथ में हो तथा किसी अन्य को हस्तक्षेप का अधिकार न हो।

एकतरफा डिगरी *वि.* (तत्.+फा.+अं.) विधि. 1. न्यायालय द्वारा प्रतिवादी की अनुपस्थिति में दिया जाने वाला फैसला, एक तरफा या एक पक्षीय डिग्री, आदेश, निर्णय।

एक तरफा फैसला *पुं* (तत्.+फा.+अर.) विधि. न्यायालय द्वारा पक्ष सुने बिना प्रतिवादी की अनुपस्थिति में दिया गया निर्णय, एक पक्षीय-निर्णय।

एकतल्ला *वि.* (तत्.+तद्.) एक मंजिलवाला (भवन)।

एकता *स्त्री.* (तत्.) ऐक्य, मेल, समानता, अभेद। विलो. अनेकता।

एकतान *वि.* (तत्.) 1. तन्मय, लीन 2. एक ही प्रकार की विचार दृष्टि वाले, मिलकर एक।

एकतान वादन *पुं.* (तत्.) अनेक वाद्यों का एक स्वर से बजाया जाना। orchestra

एकतानता *स्त्री.* (तत्.) तल्लीनता, एक ही विचार-विचार-दृष्टि होने की स्थिति।

एकतारा *वि.* (तत्.) दे. इकतारा।

एकताल *वि.* (तत्.) संगीत. 1. जिसमें ताल और स्वर का पूरा मेल हो 2. ख्याल गायकी के साथ बजाई जाने वाली बारह मात्राओं की एक विशेष ताल।

एकताला *पुं.* (तत्.) संगीत. बारह मात्राओं की एक ताल जिसमें केवल तीन आघात होते है।

एकतालीस *वि.* (तद्.) दे. इकतालीस।

एकतीर्थी *वि.* 1. एक ही संप्रदाय के 2. एक ही गुरु के शिष्य, गुरुभाई, सहपाठी।

एकतीस *वि.* (तद्.) दे. इकतीस।

एकतुल्य/एतत्सम *वि.* (तत्.) इसके समान, ऐसा ही, इस जैसा ही।

एकत्र *वि.* (तत्.) इकट्ठा किया हुआ, एकत्रित।

एकत्रित *वि.* (तत्.) 1. एक स्थान पर उपस्थित, एक जगह इकट्ठे 2. संग्रहीत, एकत्र।

एकत्व *पुं.* (तत्.) दे. एकता।

एकदंडी *पुं.* (तत्.) 1. संन्यासी, संन्यासियों के चार भेदों में से तीसरा जो एक दण्डधारण करते हैं।

एकदंत *पुं.* (तत्.) गणेश, गणपति, विनायक।

एकदफा *क्रि.वि.* एक (हि.)+दफा.(अरबी) एक बार, एक समय।

एकदरा *वि.* (तत्.+फा.) केवल एक दरवाजे वाला *पुं.* कमरा जिसमें केवल एक द्वार हो।

एकदलतंत्र *पुं.* (तत्.) राज. एक दलीय शासन प्रणाली।

एकदा *अव्य.* (तत्.) 1. एक समय, एक बार 2. भूतकाल में कभी।

एकदिल *वि.* (तत्.+फा.) 1. एक विचार या स्वभाव के 2. एकरूप, अभिन्न।

एकदिवसीय *वि.* (तत्.) एक दिन में पूर्ण हो जाने वाला।

एकदृष्टि *वि.* (तत्.) 1. एक आँख वाला, काना 2. 2. समदर्शी *पुं.* 1. शुक्राचार्य 2. तत्वज्ञानी 3. कौआ

एकदेशीक *वि.* (तत्.) 1. एक ही देश में रहने वाला 2. एक ही स्थान पर पैदा होने वाला।

एकदेशीय *वि.* (तत्.) 1. एक देश का 2. एक ही स्थान से संबंध रखने वाला 3. एक आयाम वाला।

एकधर्मा/एकधर्मी *वि.* (तद्.) समान धर्म, गुण, स्वभाव वाला।

एकधातुमान *पुं.* (तत्.) वाणि. एक ही धातु (सोना या चांदी) पर आधारित मौदिर्क पद्

एकनत *वि.* (तत्.) एक ओर को झुका हुआ।

एकनयन *वि.* (तद्.) 1. एक ही आँख वाला, एकाक्ष 2. काना शुक्राचार्य 3. शिव 4. कौआ 5. समदृष्टि से देखने वाला।

एकनिष्ठ *वि.* (तत्.) 1. जिसकी निष्ठा एक में हो, जो एक से सरोकार रखे 2. एकाग्रचित।

एकपक्षीय *वि.* (तत्.) एकतरफा।

एकपक्षीय कार्रवाई *स्त्री.* (तत्.+फा) प्रशा. किसी मुद्दे से संबंधित किसी एक पक्ष द्वारा अन्य संबंधित पक्षों से बातचीत किए बिना या उन्हें विश्वास में लिए बिना किया गया काम। unilateral action

एकपक्षीय निर्णय *पुं.* (तत्.) विधि. दूसरे पक्ष को सुने बिना दिया गया निर्णय। exparte decision

एकपटा *वि.* (तत्.+तद्.) बिना जोड़ लगाए एक ही पाट से बना वस्त्र।

एकपत्नीव्रत *पुं.* (तत्.) अपनी पत्नी को छोडक़र किसी अन्य स्त्री से प्रेम संबंध न रखने वाला।

एकपदी *स्त्री.* (तत्.) पगडंडी *वि.* एक पद या चरणवाला (पद्य या छंद)।

एकपाद *वि.* (तत्.) एक टांग वाला, लंगड़ा *पुं.* 1. शिव, महादेव 2. विष्णु।

एकपार्श्विक *वि.* (तत्.) 1. एक पार्श्व वाला 2. पत्तियाँ जो डंडी के एक ही ओर पूरी तरह से लगी हों।

एकप्राण *वि.* (तत्.) जो व्यक्ति परस्पर विचारों और भावनाओं में पूरी तरह समान हों, आत्मीय व्यक्ति, घनिष्ठ, अभिन्नहृदय।

एकफसली *वि.* (तत्.+फा.) जिस भूमि पर वर्ष में केवल एक फसल पैदा हो सके, जो बहु-फसली न हो।

एकबारगी *अव्य.* (तत्.+फा.) 1. एक ही बार में, एक स्थान, एक ही समय 2. अकस्मात्, अचानक।

एकबिंदुगामी *वि.* (तत्.) एक बिंदु से जाने/गुजरने वाले, जैसे- एकबिन्दुगामी रेखाएँ।

एकबीज पत्री *वि.* (तत्.) वन. आवृत बीजी पादप जिनके भ्रूण में एक ही बीजपत्र होता है। जैसे- घास, ताड़ तु. द्विबीजपत्री monocot

एकभाव *वि.* (तत्.) समान भाव वाले, एकनिष्ठ, तल्लीन।

एकभाषाकोश *पुं.* (तत्.) जिस कोश में शब्द और उस का अर्थ दोनों एक भाषा में हो।

एकभुक्त *वि.* (तत्.) दिन में एक ही बार भोजन करने वाला *पुं.* दिन में एक ही समय भोजन करने का नियम।

एकमंजिला *वि.* (तत्.,फा.) जिसमें एक ही मंजिल हो, एक तल्ले वाला भवन।

एकमत *वि.* (तत्.) 1. जो (लोग) किसी विषय में एक मत, या एक सा मत रखते हो 2. एक ही तरह की राय रखने वाले।

एकमत निर्णय *वि.* (तत्.) सभी की परस्पर सहमति से किया गया फैसला पर्या. सर्वसम्मत निर्णय। unanimous decision

एकमति *वि.* (तत्.) समान विचार, समान सोच तथा समान मत वाले।

एकमात्र *वि.* (तत्.) अकेला, एकमेव केवल।

एकमात्रिक *वि.* (तत्.) जिसमें एक ही मात्रा हो, एक ही मात्रा (शब्दादि) वाला।

एक मुखी/एक मुँहा *वि.* (तत्.) एक मुख वाला, जिसका एक ही मुँख हो, एकमुखी रुद्राक्ष।

एकमुश्त *वि.* (तत.+फा.) वाणि. कई किस्तों या कई बार न दिया जाकर जो एक ही बार में दिया जाए।

एकमेक *वि.* (तत्.) किसी के साथ मिलकर एक हो जाना

एकमेव *वि.* (तत्.) एकमात्र, एक ही।

एकमोला *वि.* (तत्.+तद्.) निर्धारित एक ही मूल्य वाला, जिसमें मोल भाव न करना हो।

एकयुग्मजीव *वि.* (तत्.) प्राणि. जो एक ही निषेचित अंडे से उत्पन्न होते हैं।

एकरंगा *वि.* (तद्.) एक ही रंग वाला।

एकरंगी *वि.* (तद्.) 1. एक रंग का, एकरूप 2. सच्चा, कपटहीन (फा.) एकरंगी।

एकरस *वि.* (तत्.) 1. जो सदा एक जैसा रहे, कभी बढ़े घटे नहीं 2. जो किसी के साथ मिल कर एक हो गया हो।

एकरसता *वि.* (तत्.) एक जैसा होने की स्थिति, समानता, अभेदता।

एकरात्र *पुं.* (तत्.) एक ही रात्रि का कार्यक्रम, एक रात्रि, एक ही रातिर् में पूरा होने वाला कार्य (यज्ञादि)।

एकरुखी/एकरुखा *वि.* (तत्.+फा) 1. जिसका मुँह एक ही ओर हो, एकतरफा, जिसकी एक ही दिशा हो 2. वस्त्र, कागज आदि जिस पर एक ही ओर बेल-बूटे आदि बने हों।

एकरूप *वि.* (तत्.) 1. समान रूप वाला, जो सभी अवस्थाओं में समान हो 2. अपरिवर्तनशील, हमेशा एक सा रहने वाला।

एकरूपता *स्त्री.* (तत्.) 1. एक रूप होने की अवस्था या भाव 2. सायुज्य।

एकरूपिणी *वि.* (तत्.) एक रूप वाली, जिसके अनेक रूप न हो।

एकरूपिता *स्त्री.* (तत्.) रसा. किसी पदार्थ का अनेक क्रिस्टलीय रूपों में पाया जाना जिनमें से केवल एक स्थाई होता है और शेष अस्थाई रूप में कुछ समय रहकर स्वयं स्थायी रूप में बदल जाते हैं।

एकरेखीय *वि.* (तत्.) 1. एक रेखा वाला, सरल रेखा में होने वाला 2. निरंतर प्रगतिशील।

एकल *वि.* (तत्.) 1. एकाकी, अकेला 2. बेजोड़, अनुपम, अद्वितीय।

एकल अभिकर्ता *वि.* (तत्.) वाणि. विनिर्माता द्वारा किसी क्षेत्र या देश विशेष में अपने उत्पाद की बिक्री के लिए नियुक्त अनन्य व्यक्ति या व्यावासायिक प्रतिष्ठान। solo agent

एकल पीठ *स्त्री.* (तत्.) विधि. न्यायालय में प्रस्तुत वाद की सुनवाई के लिए गठित एक सदस्य वाली खंडपीठ। single member bench

एकल शाखी *वि.* (तत्.) एक शाखा वाला *पुं.* वन. ससीमाक्षी पुष्पक्रम जिसमें अंत्य पुष्प के नीचे से केवल एक ही शाखा निकलती है। monochasium

एकलक *वि.* (तत्.) रसा. एकल अणु अथवा एकल अणुओं वाला पदार्थ जिसका अणुभार कम और संरचना अपेक्षाकृत सरल होती है। monamer

एकलव्य *वि.* (तत्.) महाभारत काल का एक निषाद जिसने द्रोणाचार्य की मूर्ति को अपना गुरु मानकर उसके सामने बाणविद्या सीखी और और बाद में उनके मांगने पर गुरु दक्षिणा के रूप में अपना दायाँ अँगूठा काट कर दे दिया।

एकला *वि.* (तद्.) 1. अकेला, एकाकी, अकेला रहने वाला 2. एक व्यक्ति द्वारा 3. बेजोड़, अद्वितीय, अनुपम।

एकलिंग *पुं.* (तत्.) 1. जो (शब्द) सदैव एक ही लिंग में प्रयुक्त होता हो 2. एकलिंगी, शिवलिंग जो मेवाड़ के गहलौत राजपूतों के कुल देवता है।

एकलिंगाश्रयिता *स्त्री.* (तत्.) वन. पादपों की वह अवस्था जिसमें नर और मादा फूल भिन्न भिन्न पादपों पर पाये जाते हैं।

एकलिंगाश्रयी *वि.* (तत्.) वन. जिसमें अलग-अलग पादपों पर अलग-अलग लिंगों (नर-मादा) के पुष्प उपस्थित हों; जैसे- पपीता dioecious तु. उभयलिंगाश्रयी।

एकलिंगी *वि.* (तत्.) जीव. जिसमें एक व्यष्टि एक ही लिंग का (नर या मादा) हो, अर्थात् उभय लिंगी न हो।

एकलौता *वि.* (तद्.) दे. 'इकलौता'।

एकवचन *वि.* (तत्.) 1. गणनीय संज्ञा शब्दों में एक होने का भाव 2. व्याकरण में वह वचन जिससे एक का बोध होता हो। singular

एकवर्ण *वि.* (तत्.) 1. एक रंग, एक ही रंग के 2. वर्ण-व्यवस्था में एक वर्ण वाला समाज, समान वर्ण (जाति) वाले, समान रंग वाले, जैसे- सभी गौरवर्ण हैं।

एकवर्षीय *वि.* (तत्.) 1. जो एक वर्ष का हो चुका हो, एक वर्ष की उम्र का 2. जिसका कार्यकाल एक वर्ष हो, जैसे- एक वर्षीय पौधा, एक वर्षीय योजना, कार्यक्रम, एक वर्षीय पाठ्यक्रम।

एक वस्त्रा *वि.* (स्त्री.) 1. स्त्री जिसने केवल एक कपड़ा पहना हो 2. रजस्वला स्त्री टि. प्राचीन समय में गरीबी एवं शुचिता की दृष्टि से रजस्वला स्त्रियाँ केवल एक वस्त्र से काम चलाती थी ताकि अन्य वस्त्र अशुद्ध न हों।

एकवाक्यता *स्त्री.* (तत्.) एक ही वाक्य में बोलने का भाव, समान विचारों वाला होने का भाव।

एकविध *वि.* (तत्.) 1. एक प्रकार का, एक ही किस्म का 2. एक ही प्रकार से होने या रहने वाला।

एकविवाह *पुं.* (तत्.) एक समय में एक ही व्यक्ति व्यक्ति से विवाहित होने की प्रथा। एक ही पति अथवा एक ही स्त्री होने की स्थिति। monogamy

एकवीर *पुं.* (तत्.) प्रसिद्ध योद्धा, महावीर, अपने जैसा अकेला वीर।

एकवृत्तीय *वि* (तत्.). गणि./ज्या. एक ही वृत्त पर स्थित। एक वृत्त वाला।

एकवेणी *वि.* (तत्.) अपने केशों की केवल एक चोटी बनाने वाली, उक्त प्रकार से चोटी करने वाली (पति-वियोग आदि में); प्रयो. कृस तनु सीस जटा एक वेणी, जपति हृदय रघुपति गुण श्रेणी- रा.च.मानस, (सुंदर कांड)।

एकशः *क्रि.वि.* (तत्.) एक-एक करके, एक के बाद एक।

एकशफ *वि.* (तत्.) जिसका प्रत्येक खुर प्राकृतिक रूप से पूरा (एक) होता है, बीच से फटा नहीं होता जैसे- घोड़ा और गधा एकशफ पशु हैं।

एकशिरीय *वि.* (तत्.) वन. एक ही मध्यशिरा वाला पत्ता; जैसे- पीपल का पत्ता।

एकशेष *पुं.* (तत्.) द्वंद्व समास का एक भेद जिसमें दो पदों में से एक ही पद शेष रह जाता है जो दोनों पदों का अर्थ देता है, जैसे- "माता च पिता च" का समस्त पद 'पितरौ' बनने में एकशेष समास है।

एकश्रुत *वि.* (तत्.) एक ही बार सुना हुआ।

एकश्रुति *स्त्री.* (तत्.) वेद पाठ का वह प्रकार जिसमें उदात्त, अनुदात्त आदि स्वरों का विचार नहीं किया जाता है।

एक संयोजी *वि.* (तत्.) रसा. एक संयोजकता वाला (तत्व) जो यौगिक बनने पर दूसरे पदार्थ से हाइड्रोजन परमाणु को स्वीकार या विस्थापित करे उदा. क्लोरीन। monovalent, univalent

एकसठ *वि.* (तद्.) जो गिनती में साठ और एक हो, इकसठ।

एकसत्ताक *वि.* (तत्.) एक तंत्र, एक व्यक्ति का शासन।

एकसदनवाद *वि.* (तत्.) विधि. विधायिका के गठन की वह पद्धति जिसमें एक ही सदन होता है और उस सदन के सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित होते हैं। unicameralism

एकसदनी *वि.* (तत्.) राज. किसी देश की विधायिका का वह प्रकार जिसमें केवल एक सदन है।

एक सदनीय *वि.* (तत्.) विधायिका या विधान-मंडल का वह प्रकार जिसमें मतदाताओं द्वारा निर्वाचित सदस्यों का एक ही सदन होता है। unicameral legislature

एकसर *वि.* (तत्.) 1. अकेला व्यक्ति 2. जिसमें एक ही परत या पल्ला हो। क्रि.वि. 1. एक सिरे से दूसरे सिरे तक 2. निरंतर, लगातार 3. पूर्णतः, बिल्कुल।

एक सा/एकसमान *वि* (तत्.+तद्.) 1. क्षेत्र में एक ही प्रकार का, एक सा 2. अपरिवर्तित।

एक साक्षिक *वि* (तत्.) विधि. जिसका केवल एक गवाह या साक्षी हो, एक ही साक्ष्य अथवा प्रमाण पर आधारित।

एकसार *वि.* (तत्.) 1. एक समान, सर्वत्र समान, एक ही प्रकार का 2. समतल।

एकसाला *वि.* (तत्.+फा.) जो एक साल तक वैध हो, एक वर्ष की समय सीमा वाला, एकवर्षी।

एकसूत्र *वि.* (तद्.) 1. जिसमें एक ही धागा हो, *पुं.* डमरू 2. एकरूप 3. एक साथ बँधा या लगा हुआ।

एकस्थ *वि.* (तद्.) 1. एक स्थान पर स्थित या केंद्रित 2. मनोयोग 3.दुविधारहित, आत्मस्थित।

एकस्थानिक *वि.* (तत्.) समाज. एक ही स्थान का निवासी, एक ही स्थान पर उत्पन्न या प्रचलित।

एकस्व *पुं.* (तत्.) 1. वाणि. सरकार और अनुसंधानकर्ता/आविष्कर्ता के बीच संपन्न संविदा जिसके अंतर्गत सरकार उसे अपनी खोज या आविष्कार का एक नियत अवधि तक अनन्य प्रयोग करने का अधिकार प्रदान कर देती है 2. आविष्कार की गई वस्तु के निर्माण, विक्रय आदि के संबंध में एकाधिकार 3. सरकारी पत्र द्वारा आरक्षित आविष्कार patent

एकस्व कार्यालय *पुं.* (तद्.) एकस्व का अधिकार प्रदान करने वाला सरकारी कार्यालय। patent office

एकस्व पत्र *पुं.* (तत्.) किसी आविष्कृत वस्तु के निर्माण, विक्रय आदि का अधिकार प्रदान करने वाला सरकारी पत्र। letters patent

एकस्व भेषज *पुं* (तत्.) एकस्व की गई दवा, पेटेंट औषधि।

एकस्वरक *वि.* (तत्.) भाषा. (स्वर) जिसका उच्चारण करते समय स्थान और प्रयत्न में किसी प्रकार का अंतर परिलक्षित नहीं होता, जैसे- सभी सामान्य स्वर monophthong विलो. संध्यक्षर, द्विस्वरक।

एकहत्था *वि.* (तत्.+तद्.) 1. एक ही हाथ या हत्थे (दस्ता, मूंठ) वाला 2. जिस पर किसी एक ही व्यक्ति या संस्था का अधिकार हो/एकाधिकार वाली संस्था।

एकहरा *वि.* (तत्.) एक परत का, इकहरा।

एकहार *पुं.* (तत्.) कला. स्तंभशीर्ष के नीचे शृंखला के समान नक्काशी का काम।

एकांक *वि.* (तत्.)1. एक अंक वाला 2. एकांकी।

एकांकी *वि.* (तत्.) 1. एक अंकवाला (नाटक) 2. दृश्य काव्य की एक विशेष विधा 3. दस प्रकार के रूपकों में से एक।

एकांग *वि.* (तत्.) 1. एक अंगवाला 2. विकलांग 3. जिसका एक अंग नष्ट हो गया हो और दूसरा ही शेष बच गया हो। पुं. 1. बुध ग्रह 2. सिर 3. चंदन।

एकांगघात *पुं.* (तत्.) शरीर के एक अंग पर होने वाला पक्षाघात। monoplegia

एकांडजी *वि.* (तत्.) प्राणी. एक ही अंडे से उत्पन्न, एक युग्मजी।

एकांत *पुं.* (तत्.) 1. निर्जन अथवा सूना (स्थान) 2. अकेलापन, तनहाई 3. एक को छोड़कर

किसी अन्य की ओर ध्यान न देने वाला, जैसे- वह रुद्र का 'एकांत' भक्त है *पुं.* ऐसा स्थान जहाँ जहाँ कोई न हो, निर्जन स्थान।

एकांतता *स्त्री.* (तत्.) एकांत होने की अवस्था अथवा भाव, अकेलापन, तनहाई।

एकांतर *वि.* (तत्.) प्रशा. किसी शृंखला में एक के बाद एक छोडक़र आने या घटने वाला। alternate 1. एक को छोडक़र अगला 2. बीच में एक को छोडक़र अगला जैसे 1, 3, 5, 7 एकांतर संख्यायें हैं, तथा सोम, बुध, शुक्र एकांतर दिवस हैं। alternate numbers, alternate days

एकांतरकोण *वि.* (तत्.) गणि. दो समांतर रेखाओं को छेदने वाली रेखा पर बने आसन्नेतरकोण जो विपरीत दिशाओं में होते हैं एकांतर कोण कहलाते है। alternate angle

एकांतवाद *वि.* (तत्.) दर्श. अद्वैतवाद, एकात्मवाद, एकात्मवाद, जीवात्मा-परमात्मा की अभेदता का सिद्धांत।

एकांतवास *पुं.* (तत्.) 1. एकांत अर्थात् निर्जन स्थान में निवास करने की क्रिया या भाव 2. संन्यास लेना 3. अकेला रहना 4. संन्यासियों द्वारा कुछ दिन अकेले एकांत में समय बिताने का व्रत।

एकांतवासी *वि.* (तत्.) 1. एकांत, निर्जन स्थान में रहने वाला 2. एकांतवास करने वाला *स्त्री.* एकांत वासिनी।

एकांतस्वरूप *वि.* (तत्.) अकेले रहने की प्रवृत्ति वाला, जो किसी के साथ मिलना-जुलना नहीं करता, निर्लिप्त।

एकांश *पुं* (तत्.) 1. एक अंश, एक भाग या हिस्सा 2. इकाई। unit

एकांश भिन्न *स्त्री.* (तत्.) गणि. सरल भिन्न जिसका अंश सदैव एक हो, जैसे- 1/2, 1/3, 1/4 आदि।

एका *पुं.* (तत्.) एकता, संगठन, ऐक्य, मेल।

एकाएक *क्रि.वि* (देश.) अकस्मात्, अचानक, सहसा।

एकाएकी *अव्य.* (देश.) अचानक, अकस्मात, सहसा, एकाएक।

एकाकार *वि.* (तत्.) जो आपस में मिलकर एक हो गया हो, भेद का अभाव।

एकाकिनी *वि.* (तद्.) अकेली।

एकाकी *वि.* (तत्.) अकेला, जिसके साथ कोई और न हो।

एकाकीपन *पुं.* (तत्.) अकेलापन, अलगाव, एकांत।

एकाक्ष *वि.* (तत्.) 1. एक आंख वाला, काना 2. एक ही धुरी वाला 3. कौवा, काग 4. दैत्यगुरु शुक्राचार्य, 5. समदर्शी 6. सुई।

एकाक्षर *वि.* (तत्.) एक अक्षर वाला *पुं.* एकाक्षर मंत्र, प्रणव, ओम्।

एकाक्षरी कोश *पुं.* (तत्.) वह कोश जिसमें केवल अक्षरों (स्वर, व्यंजन) के विविध अर्थ दिए गए हों।

एकाक्ष रुद्राक्ष *पुं.* (तत्.) एक मुखी रुद्राक्ष।

एकाग्र *वि.* (तत्.) किसी एक ही विषय पर ध्यान केंद्रित करने वाला, ध्यानस्थ, अनन्यचित्त।

एकाग्रचित्त *वि.* (तत्.) स्थिरचित्त, जिसका मन पूरी तरह एक ही ओर लगा हो, लीनचित्त।

एकाग्रता *स्त्री.* (तत्.) 1. एकाग्र होने की अवस्था या भाव, चित्त की स्थिरता, मन की तल्लीनता, अचंचलता 2. (योग दर्शन के अनुसार) चित्त की वह अवस्था जिसमें अस्थिरता नहीं रह जाती।

एकाग्रभूमि *स्त्री.* (तत्.) योग. मन की वह अवस्था जिसमें बाह्य वृत्तियों का निरोध होने से वह किसी विषय से एकाकार या तन्मय हो जाता है।

एकाग्र दृष्टि *वि.* (तत्.) किसी एक ही वस्तु पर दृष्टि जमाने वाला, एकाग्रता, स्थिर चित्त।

एकातपत्र *वि.* (तत्.) एक छत्र, चक्रवर्ती, सम्राट।

एकात्मक राज्य *पुं.* (तत्.) राज. वह राज्य जिसमें एकात्मक शासन हो।

एकात्मक शासन *पुं.* (तत्.) राज. ऐसी शासन प्रणाली जिसमें संपूर्ण देश के लिए एक केंद्रीय शक्ति सर्वोच्च होती है और कोई भी स्थानीय या प्रादेशिक प्रशासन उसका उल्लंघन नहीं कर सकता। sovereign state

एकात्मता *स्त्री.* (तत्.) 1. एकात्म होने की अवस्था या भाव, एकता 2. अभेदरूपता।

एकात्मवाद *पुं.* (तत्.)वह सिद्धांत जिसमें आत्मा और परमात्मा की एकाकार स्थिति की मान्यता है, अद्वैतवाद।

एकात्म *वि.* (तत्.) (एक+आत्मन) एकात्म, जो किसी के साथ मिलकर एक हो गया है। तादात्म्य, अभिन्न।

एकादश *वि.* (तत्.) 1. ग्यारह, दस से ऊपर एक 2. क्रिकेट, हॉकी आदि खेलों में ग्यारह खिलाड़ियों का दल।

एकादशाह *पुं.* (तत्.) (एकादश+अह) मृत्यु के पश्चात् ग्यारहवें दिन किया जाने वाला कर्मकांड। कर्मकांड। अंतेष्टि क्रिया का ग्यारहवाँ दिन।

एकादशी *स्त्री.* (तत्.) प्रत्येक चांद्र मास के शुक्ल और कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं तिथि।

एकादेश *पुं.* (तत्.) व्या. 'आदेश' का एक रूप जिसमें दो शब्दों की संधि करने पर पहले शब्द के परवर्ण और दूसरे शब्द के पूर्ववर्ण के योग से एक नया वर्ण बनता है।, जैसे- रमा+ईश से रमेश शब्द बन गया। इसमें आ और ई के मेल से ए वर्ण बन गया।

एकाध *वि.* (तद्.) एक या दो जो गिनती में बहुत ही कम हो, संख्या में बहुत कम, जैसे- ऐसे एकाध मामले ही ध्यान में आए हैं।

एकाधिक *वि.* (तत्.) 1. एक से अधिक, अनेक जैसे- किसी क्षेत्र अथवा आदि में, पूर्वकाल में राजाओं के एकाधिक विवाहों के उदाहरण मिलते हैं।

एकाधिकार *वि.* (तत्.) वाणि. एक व्यक्ति या दल का अधिकार, एक का प्रभुत्व, बाजार की ऐसी स्थिति जिसमें किसी वस्तु या सेवा का मात्र एक ही विक्रेता या प्रदाता हो। monopoly

एकाधिकारी *वि.* (तत्.) 1. जिसका एकाधिकार हो, अपना ही पूर्ण अधिकार रखने वाला, एकाधिपत्य वाला 2. किसी माल, वस्तु को बेचने का एक ही कंपनी को एकाधिकार।

एकाधिपति *पुं.* (तत्.) 1. समूचे देश या क्षेत्र विशेष पर एकछत्र राज्य करने वाला, (एकमात्र) स्वामी या शासक 2. सम्राट्।

एकाधिपत्य *वि.* (तत्.) किसी कार्य या देश आदि पर होने वाला किसी एक व्यक्ति का पूर्ण अधिकार, एकमात्र प्रभुत्व।

एकानन *वि.* (तत्.) जिसका एक मुख हो, एक मुख वाला।

एकार *पुं.* (तत्.) 'ए' स्वर वर्ण तथा उसकी ध्वनि।

एकार्णव *वि.* (तत्.) 1. सागर 2. अनेक सागरों के मिलने से बना सागर 3. महासागर 4. अंतरिक्ष।

एकार्थक *वि.* (तत्.) 1. ऐसा शब्द जिसका एक ही अभिधेय अर्थ हो, जो द्विअर्थक न हो 2.पर्यायवाची, अर्थ के आधार पर वर्गीकृत वह शब्द समूह जिसका, प्रयोग एक ही अर्थ में होता है जैसे- आदित्य और मार्तंड एकार्थक हैं।

एकार्थकता *स्त्री.* (तत्.) एक अर्थ होने का भाव, एकार्थत्व, समानार्थकता, शब्द का एक ही अर्थ होने की स्थिति।

एकार्थता *स्त्री.* (तत्.) एक अर्थ होना, एकार्थत्व, समानार्थकता। शब्द का एक ही अर्थ होने की स्थिति।

एकार्थी *वि.* (तत्.) दे. 'एकार्थक'।

एकालाप *पुं.* (तत्.) नाट्य. 1. बहुत से लोगों के बीच किसी व्यक्ति का लंबा भाषण 2. एक ही पात्र वाला नाटक या अंक। monologue

एकावली *स्त्री.* (तत्.) एक लड़ की मोतियों की लंबी माला 2. एक अर्थालंकार जिसमें पदों की ऐसी शृंखला होती है कि पूर्व पद के विशेषण के रूप में उत्तरपद प्रयुक्त होता है 3. समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण, नगण, दो जगण, और लघु (भ,न,ज,ज,ल) के योग से कुल 13 वर्ण होते हैं, जैसे- कंजावलि, पंकजावली छंद।

एकावली व्रत *पुं.* (तत्.) जैन संप्र. श्रावण शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होकर एक वर्ष में प्रतिमास 7 उपवास और 7 पारायण वाला व्रत।

एकाश्म *पुं.* (तत्.) 1. एक ही पत्थर का बड़ा खंड, बृहत् पाषाण 2. एक ही पत्थर से निर्मित स्तंभ या मूर्ति 3. पाषाण जैसी लगने वाली कोई कठोर बड़ी वस्तु। monolithic

एकाहार *पुं.* (तत्.) 1. कोई एक ही भोज्य पदार्थ खाकर रहने का व्रत, जैसे- केवल दुग्धाहार या फलाहार 2. दिन-रात में केवल एक ही बार भोजन करने का व्रत।

एकाहारी *पुं.* (तत्.) एकाहार व्रत करने वाला।

एकीकरण *पुं.* (तत्.) 1. एक करना, एक में मिलाना, दो या दो से अधिक खंडों को मिलाकर एक करना 2. दो या अधिक, संस्थाओं, व्यापारिक संस्थाओं आदि को मिलाकर निकाय का रूप देना। amalgamation, unification

एकीकृत *वि.* (तत्.) किसी अन्य के साथ मिलाकर एक किया हुआ जिनका एकीकरण किया गया हो, संघटित। integrated

एकीकृत वेतनमान *पुं.* (तत्.) प्रशा. दो या दो से अधिक छोटे-छोटे वेतनमानों को मिलाकर बनाया गया वेतनमान। unified scale

एकीभाव *पुं.* (तत्.) 1. दो या अधिक वस्तुओं या विचारों आदि का मिलकर एक हो जाना, पूरी तरह मिलकर एक हो जाना 2. दो या अधिक वस्तुओं, बातों आदि का एक ही प्रकार या रूप हो जाना।

एकीभूत *वि.* (तत्.) 1. जो किसी से मिलकर एक हो गया हो 2. एकत्रित।

एकेंद्रिय *वि.* (तत्.) एक ही इंद्रिय वाला जीव, प्राणी जैसे- केंचुआ, जोंक।

एकेडेमी *स्त्री.* (अं.) 1. अकादमी 2. साहित्य, ललित कला या विज्ञान की उन्नति के लिए स्थापित सभा या समिति।

एकेश्वरवाद *पुं.* (तत्.) वह सिद्धांत जिसके अनुसार जगत् की उत्पत्ति और नियमन करने वाला तथा सभी का उपास्य एक ही ईश्वर है। monotheism

एकेश्वरवादी *वि.* (तत्.) एकेश्वरवाद को मानने वाला, संसार का उद्भव, स्थिति और संहार करनेवाली शक्ति के रूप में 'ईश्वर' एक ही है, इस विचार को माननेवाला।

एकैक *वि.* (तत्.) एक-एक, प्रत्येक।

एकैकश *क्रि.वि.* (तत्.) 1. एक-एक करके, एक के बाद एक 2. अलग-अलग, पृथक।

एकोतरा *वि.* (तत्.) एक दिन के अंतर से होने वाला, एक दिन छोड़कर होने वाला, आने वाला, जैसे- एकोतरा बुखार 2. एक रुपया प्रतिशत मासिक ब्याज।

एकोत्तर *वि.* (तत्.) दी हुई संख्या से एक अधिक। जैसे एकोत्तर शत (एक सौ एक)।

एकोदर *वि.* (तत्.) एक ही माँ के गर्भ से उत्पन्न भाई या बहिन, जिनके पिता भिन्न हों। uteine blood

एकोद्दिष्ट *वि.* (तत्.) किसी एक व्यक्ति के निमित्त या उद्देश्य से प्रति वर्ष किया जाने वाला श्राद्ध।

एकोन्माद *पुं.* (तत्.) एक ही बात की धुन, लगन, सनक।

एकोन्मुख *वि.* (तत्.) एकाग्र, एक ही कार्य में प्रवृत्त।

एक्का *वि.* (तद्.) 1. अकेला 2. बेजोड़ *पुं.* 1. एक प्रकार की दुपहिया घोड़ा गाड़ी, जिसमें एक ही घोड़ा जोता जाता है 2. वह पशु या पक्षी जो झुंड से अलग अकेला रहता हो 3. ताश में एक ही बूटी वाला पत्ता।

एक्जीमा *पुं.* (तत्.) चिकि. छाजन (रोग), एक प्रकार का चर्म रोग जिसमें खुजली होती है और रोग शरीर के किसी एक भाग के चर्म में फैलता जाता है और चमड़े का रंग काला पड़ने लगता है। eczema

एक्युपंक्चर *पुं.* (अं.) चिकि. सूची-वेधन चिकित्सा। शरीर के विभिन्न अंगों के खास बिन्दुओं पर विशेष प्रकार की लंबी, बारीक सुइयां चुभाकर चिकित्सा करने की पद्धति। acupuncture

एक्यूप्रेशर *पुं.* (अं.) चिकि. शरीर के विविध अंगों की रुधिरवाहिनियों के पास कुछ विशेष स्थानों पर हाथ या हल्की नोकदार वस्तु से दबाव देकर चिकित्सा करने की पद्धति। acupressure

एक्रलिक पेन्ट *पु.* (अं.) कला. रंगों का एक प्रकार जो जल और तेल दोनों में घुलनशील है।

एक्स-गुणसूत्र *पुं.* (अं.+तत्.) लिंग-निर्धारक गुणसूत्र जो मादा संतान के उत्पन्न होने का सूचक हैं। X- chromosome

एक्सचेंज *पुं.* (अं.) 1. आदान-प्रदान, परिवर्तन, विनिमय 2. विनिमय केंद्र, वह स्थान या संस्था जहाँ नगर के व्यापारी और बैंककर्मी व्यापारिक लेन-देन के लिए एकत्रित होते हैं 3. वह स्थान जहाँ से टेलिफोन या संचार-सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। exchange

एक्सटेंशन *पुं.* (अं.) 1. विस्तार 2. विस्तार करने का कार्य, विस्तारण। extension

एक्सपर्ट *पुं.* (अं.) किसी विषय विशेष का विशेष ज्ञान रखने वाला। विशेषज्ञ। expert

एक्सप्रेस डाक *स्त्री.* (अं.+देश.) दे. तुरंत वितरण वाली डाक।

एक्सरे *वि.* (अं.) एक प्रकार की विद्युत चुंबकीय तरंगें जिनकी सहायता से रोगों के निदान के लिए शरीर के भीतरी भागों का छाया चित्र लिया जाता है, क्योंकि ये मांस के भीतर से तो गुजर सकती हैं कितु हड्डियों से नहीं, अतएव इनसे खींची गई फोटो रोगनिदान के लिए आंतरिक अंगों की सही स्थिति की सूचना देने में सहायक होती है। X-ray

एज़िलेम *पुं.* (अं.) रसा. एक डायास्टेसी एन्जाइम जो प्रति स्थापित अम्लों के ऐमाइडों का निम्नीकरण कर देता है परन्तु वास्तविक पेप्टाइडों का निम्नीकरण नहीं करता।

एजुराइट *पुं.* (अं.) तांबा। एक खनिज जो रत्न के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, एक प्रकार का नीलम। Azurite

एजेंट *पुं.* (अं.) 1. वह (अधिकृत व्यक्ति) जो किसी अन्य व्यक्ति की ओर से प्रतिनिधित्व करता हो 2. अभिकर्ता 3. वह राजपुरुष या अधिकारी जो सरकार के प्रतिनिधि के रूप में किसी राज्य में या अन्यत्र नियुक्त किया गया हो। agent

एजेंडा *पुं.* (अं.) कार्यसूची, किसी बैठक, सभा आदि में किए जाने वाले कार्यक्रम के लिए (विचारार्थ) निर्धारित विषय। agenda

एजेंसी *स्त्री.* (अं.) 1. अभिकरण किसी व्यावसायिक अथवा राजकीय संगठन द्वारा अपना कार्य करवाने के लिए प्रतिनियुक्त अन्य संस्था 2. आढ़त, वह स्थान जहां किसी कारखाने या कंपनी का माल एजेंट के माध्यम से बिकता हो 3. वह स्थान जहाँ एजेंट किसी कंपनी के लिए माल खरीदते हों 4. वह स्थान जहाँ शासक या सरकार का ऐजेंट रहता हो।

एटमबम *पुं.* (अं.) दे. ऐटम बम।

एड़ *स्त्री.* (देश.) घोड़े को तेज दौड़ने का संकेत देने देने के लिए सवार द्वारा एड़ी को उसके पेट पर पर हल्का प्रहार करने की क्रिया।

एडिटर *पुं.* (अं.) संपादक, किसी समाचार-पत्र पत्रिका या पुस्तक की पांडुलिपि को ठीक करके उसे प्रकाशन योग्य बनाने वाला।

एडिसन रोग *पुं.* (अं.+तत्.) चिकि. अधिवृक्क (एडरीनल कॉर्टेक्स) की गड़बड़ी के कारण पर्याप्त पर्याप्त हार्मोन्स न निकलने से उत्पन्न रोग जिसमें शरीर में रक्त की कमी हो जाती है और और पीलापन आ जाता है।

एड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. पैर के नीचे पीछे का उभरा अथवा उठा हुआ भाग 2. उक्त स्थल को ढँकने वाला जूते का भाग मुहा. एड़ी घिसना या रगड़ना- बहुत दिनों से दौड़ भाग में लगे रहना, कष्ट उठाना, खूब दौड़-धूप करना; एड़ी से चोटी तक- सिर से पैर तक, प्रारंभ से अंत तक; एड़ी-चोटी का पसीना एक करना- अति परिश्रम करना।

एडीशनल *विं.* (अं.) अतिरिक्त के रूप में किसी व्यक्ति, या वस्तु की स्थिति, अपर। additional

एड्स *पुं.* (अं.) आयु. (नवीनतम एवं गंभीरतम रोग) यौन-संबंध जनित भीषण प्राण घातक रोग जिसमें शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली न्यूनतम स्थिति में पहुँच जाती है।

एण/एणाक *पुं.* (तत्.) 1. वह मृग जिसकी नाभि में कस्तूरी होती है और जिसका रंग काला होता है 2. मृग, कस्तूरी।

एणमद *पुं.* (तत्.) हिरन की कस्तूरी।

एणी *स्त्री.* (तत्.) कस्तूरी हिरण की जाति की हिरणी।

एतकाद *पुं.* (अर.) 1. भरोसा, विश्वास, यकीन, एतबार 2. श्रद्धा, आस्था।

एतत्पश्चात् *अव्य.* (तत्.) इसके बाद। hereafter

एतत्पूर्व *अव्य.* (तत्.) इससे पहले। herebefore

एतदद्वारा *अव्य.* (तत्.) विधि. इस (आदेश आदि) आदि) के माध्यम से। hereby

एतदर्थ *वि.* (तत्.) केवल इस काम के लिए, तदर्थ जैसे- एतदर्थनियुक्त *क्रि.वि.* इस कारण, इसलिए, इसलिए, इसके लिए।

एतदुपाबद्ध *वि.* (तत्.) विधि. (वह विलेख आदि) जो इसके साथ उपाबंध के रूप में दिया गया हो। here to annexed

एतद्देशीय *वि.* (तत्.) 1. इस देश, स्थान से संबंधित, इस देश, स्थान का 2. इस देश में होने वाला।

एतद्भिन्न *वि.* (तत्.) इससे अलग, दूसरा, अन्य

एतन्मय *वि.* (तत्.) इससे युक्त, इससे बना हुआ, हुआ, ऐसा।

एतन्मात्र *वि.* (एतद्+मात्र) (तत्.) इस परिमाण का, इतना ही, इतने परिमाण वाला।

एतबार *पुं.* (अर.) 1. विश्वास, भरोसा 2. प्रतीति मुहा. एतबार उठना- किसी के ऊपर से लोगों का विश्वास हटना; एतबार खोना- अपने ऊपर से लोगों का विश्वास हटना।

एतराज *पुं.* (अर.) 1. आपत्ति, असहमति, विरोध, उज्र 2. हस्तक्षेप, दस्तंदाजी।

एतस्मिन उपबंधित *वि.* (तत्.) विधि. जिसका उपबंध इस (अधिनियमादि) में है, जिसकी व्यवस्था इसमें है।

एतस्मिन् पूर्व *वि.* (तत्.) विधि. जिसका उल्लेख इसी (अधिनियमादि) में पहले हो चुका है।

एतादृश *वि.* (तत्.) इस जैसा, इस तरह का, इसके समान, ऐसा।

एतावद् *वि.* (तत्.) इतने परिमाण का, इसके बराबर, इतना।

एधा *स्त्री.* (तत्.) 1. सा.अर्थ. फलना-फूलना, हर्ष 2. वन. दारु और पोषवाह के बीच स्थित विभाजी ऊतक जिसकी कोशिकाओं के विभाजन

से एक ओर दारु और दूसरी ओर पोषवाह बनता है। cambium

एनज़ाइम विज्ञान *पुं.* (अं.+तत्.) जीव विज्ञान की एक शाखा जिसमें प्रकिण्वों (खमीर उत्पन्न करने वाले) का अध्ययन किया जाता है, प्रकिण्व विज्ञान।

एनमद पुं. (तत्.) कस्तूरी मृग का मद, कस्तूरी।

एनसाइक्लोपीडिया *पुं.* (अ.) पुस्त. ग्रंथ या ग्रंथमाला जिसमें वर्णक्रम में व्यवस्थित विविध विषयों से संबंधित समस्त अद्यतन जानकारी या ज्ञान संदर्भ के लिए उपलब्ध हो, विश्वकोश, ज्ञान कोश। encyclopedia

एनिमा *पुं.* (अं.) आयु. वस्तिकर्म, गुदा में पिचकारी से रेचक द्रव डालकर विरेचन कराना, जुलाब देना।

एन्जाइम *पुं.* (अं.) जीव. 1. जैव क्रियाओं के उत्प्रेरक जटिल प्रोटीन जो जीव कोशिका में बनते हैं पर कोशिका के बाहर भी कार्यक्षम होते हैं 2. खमीर उत्पन्न करने वाला रसायन। enzyme

एन्जाइमिकी *स्त्री.* (अं.) रसा. विज्ञान की वह शाखा जिसके अंतर्गत एन्जाइमों, उन की प्रकृति, सक्रियता, सार्थकता तथा उपयोग आदि का अध्ययन किया जाता है।

एप्रन *पुं.* (अ.) 1. गृह. बाहरी प्रभाव से बचने के लिए पहना जाने वाला वस्त्र-विशेष जिसका उपयोग रसोई, अस्पताल या प्रयोगशालाओं में होता है 2. हवाई अड्डों में वायुयानों के रखरखाव, मरम्मत आदि के लिए निर्धारित क्षेत्र।

एम *पुं.* (अं.) मुद्र. पंक्ति के मापने की इकाई, 12 प्वाइंट ऊँचा और इतना ही चौड़ा मुद्राक्षर जिसकी ऊँचाई को 'प्वाइंट' में कहा जाता है और चौड़ाई को 'एम' में कहा जाता है; एक एम=12 प्वाइंट या 1/6 इंच।

एमन *पुं* (तत्.) संगी. यमन नामक एक राग।

एमनेस्टी इंटरनेशनल *पुं.* (अं.) विधि. मानवाधिकारों के हनन की जाँच, विवेकशील कैदियों की मुक्ति या उनके प्रति मानवीय व्यवहार आदि के लिए अभियान, उत्पीड़न और मृत्युदंड की समाप्ति आदि कार्यों के प्रति समर्पित एक विश्वव्यापी संगठन, जिसके लाखों सदस्य विश्व भर में फैले हुए हैं। amnesty international

एयर कॉमोडोर *पुं.* (अं.) सै.वि. 'एयर वाइस मार्शल' से एक क्रम कनिष्ठ अफसर का ओहदा सामान्यत: एक बड़े वायु केंद्र का कमांडर। air commodore

एयर चीफ मार्शल *पुं.* (अं.) सै.वि. वायु सेनाध्यक्ष का ओहदा। air chief marshal

एयर बस *स्त्री.* (अं.) इंजी. हवा में उड़ने वाली बस बस जिसका निर्माण अपेक्षाकृत कम दूरी के लिए और कम खर्च पर बहुसंख्यक यात्रियों को ढोने की क्षमता को ध्यान में रख कर किया गया हो, वायुयान का एक प्रकार।

एयर मार्शल *पुं.* (अं.) सै.वि. ओहदे के क्रम में एयरचीफमार्शल से एक क्रम कनिष्ठ अफसर का ओहदा। सामान्यत: एक 'कमान' का सर्वोच्च अधिकारी।

एयर वाइस मार्शल *पुं.* (अं.) सै.वि. एयरचीफ मार्शल से एक क्रम कनिष्ठ अफसर का ओहदा।

एरंड *पुं.* (तत्.) रेंड का वृक्ष, रेंडी, रेंडी के बीज।

एरंड खरबूजा *पुं.* (तत्.+फा.) पपीता।

एरियल *पुं.* (अं.) भौ. 1. बेतार संचार में तार, छड़ वाला यंत्र जिसे विद्युत चुंबकीय तरंगों को ग्रहण करने या भेजने के लिए खुली जगह में लगाया जाता है 2. रेडियो, ट्रांजिस्टर के साथ लगाया गया धातु का छड़ीनुमा यंत्र जो ध्वनि तरंगों को प्राप्त करता है। aerial antenna

एरिया *पुं.* (अं.) गणि. 1. क्षेत्र 2. क्षेत्रफल 3. मैदान 4. कार्य क्षेत्र, विषय क्षेत्र।

एलर्जी *स्त्री.* (अं.) कुछ पदार्थों जैसे धूल, धुआं, पराग अथवा किसी वनस्पति, खाद्य पदार्थ

अथवा किसी दवा के प्रति किसी व्यक्ति विशेष के शरीर में अति संवेदना के कारण उत्पन्न शारीरिक या मानसिक विकार जिससे शरीर में पित्तियाँ या फफोले पैदा हो जाते हैं या त्वचा लाल होकर खुजली होती है या सांस लेने में तकलीफ होती है या बार-बार छींकें आती हैं 2. प्रत्यूर्जता 3. ला.अर्थ. किसी वस्तु, व्यक्ति के प्रति घृणा/जुगुप्सा/विकर्षण। allergy

एला *स्त्री.* (तत्.) 1. इलायची का पौधा, इलायची (छोटी इलायची और बड़ी इलायची इसकी दो किस्में हैं) 2. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सगण, जगण 2. नगण और यगण (स ज न न य) के योग से 15 वर्ण होते हैं तथा 5-10 पर यति होती है। 3. शुद्ध राग का एक प्रकार *पुं.* (देश.) एक किस्म की कांटेदार बेल जिसकी पत्तियाँ चटनी के लिए प्रयोग की जाती हैं।

एलाउंस *पुं.* (अं.) प्रशा. किसी अधिकारी/कर्मचारी को वेतन के अतिरिक्त नियमित रूप से अथवा विशेष प्रयोजन से दी जाने वाली राशि यथा महँगाई भत्ता, स्थानांतरण भत्ता। allowance

एलान *पुं.* (अर.) सार्वजनिक घोषणा, अभिज्ञापन, मुनादी, उद्घोष।

एलॉट *पुं.* (अं.) आबंटन, सरकार/संस्था आदि द्वारा द्वारा कोई प्लॉट, मकान, फ्लैट आदि किसी व्यक्ति विशेष के नाम करना।

एलिनवार *पुं.* (अं.) रसा. एक प्रकार के इस्पात का व्यापारिक नाम जिसमें 36 प्रतिशत निकिल और 12 प्रतिशत क्रोमियम होता है, इसका उपयोग मुख्यतः घड़ियों की कमानी बनाने में किया जाता है।

एलिवेटर *पुं.* (अं.) उत्थापक, ऊपर पहुँचने वाला, ऊँचाई पर या ऊँचाई से नीचे लाने वाला यांत्रिक साधन।

एलुआ/एलुवा *पुं.* (तद्.) एलवालुक औषधि के रूप में प्रयुक्त पदार्थ, कैथ का फल, बाजार में बिकने बिकने वाला "एलुवा" नामक पदार्थ प्रायः कैथ का फल होता है जिसे अरबी में 'मुसब्बर' कहा जाता है।

एलोपैथी *स्त्री.* (अं.) पश्चिमी चिकित्सा पद्धति या अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति जो आजकल सर्वाधिक प्रचलित है।

एल्फा किरणें *स्त्री.* (ग्रीक.+तत्.) भौ. रेडियोधर्मी पदार्थों से निकलने वाली एक प्रकार की किरणें जो धनविद्युत आवेश वाली होती हैं तथा प्रकाश के वेग के दसवें हिस्से के समान वेगवाली होती हैं।

एल्यूमीनियम *पुं.* (अं.) हल्के सफेद रंग का एक रासायनिक धात्विक तत्व जिसका उपयोग बर्तनों और यंत्रों के पुरजे आदि बनाने में किया जाता है।

एवं *अव्य.* (तत्.) 1. और जैसे- राम एवं कृष्ण 2. इस प्रकार, ऐसा, जैसे- एवमस्तु।

एवंभूत *वि.* (तत्.) इस प्रकार का, ऐसा।

एवंविध *वि.* (तद्.) 1. इस रूप का, ऐसा 2. *क्रि.वि.* ऐसे, इस प्रकार, ऐसे।

एव अव्य. (तत्.) निश्चयात्मक अर्थ, ही जैसे- आप आप ही, केवल आप ही, वह ही, कोई अन्य नहीं जैसे- "त्वमेव माता च पिता त्वमेव" आप ही माता हो, आप ही पिता हो।

एवज़ *पुं.* (अर.) 1. बदले में, प्रतिफल, प्रतिकार 2. के स्थान पर 3. परिवर्तन।

एवजी *पुं.* (अर.) 1. दूसरे की जगह पर कुछ समय के लिए काम करनेवाला आदमी 2. स्थानापन्न व्यक्ति 3. किसी वस्तु या सेवा के बदले मिलने वाला जैसे- एवजी छुट्टी।

एवमस्तु अव्य. (तत्.) ऐसा ही हो, तथास्तु, प्रायः वरदान देने की भाषा में प्रयुक्त, जैसा मांगा वैसा ही प्राप्त करो उदा. एवमस्तु तुम बड़ तप कीह्ना -मानस.।

एवरी *पुं.* (देश.) हरे और पीले रंग का पत्थर जो पच्चीकारी के काम में आता है।

एवेन्यू *पुं.* (अं.) 1. चौड़ा मार्ग जिसके दोनों ओर प्रायः वृक्ष लगे होते हैं 2. रास्ता, मार्ग।

एशिया *पुं.* (अं.) 1. इबरीन शब्द 'अशु' से निकला शब्द जिसका अर्थ है 'वह दिशा जहाँ से सूर्य निकले अर्थात् पूर्व देश 2. विश्व के सात महाद्वीपों में से एक जिसके अंतर्गत भारतवर्ष, चीन, जापन, ईराक, ईरान, आदि देश सम्मिलित हैं।

एशियाई *वि.* (अं.+तद्.) 1. एशिया का, एशिया का मूल निवासी या एशिया में निर्मित, एशिया संबंधी, एशिया में स्थित 2. भारतीय उप-महाद्वीप के संबंध में प्रयुक्त।

एषणा *स्त्री.* (तत्.) इच्छा, आकांक्षा, कामना टि. मुख्यतः तीन मानव एषणाएँ- पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा, इन्हें एषणात्रय कहा जाता है।

एषणात्रय *पुं.* (तत्.) तीन प्रमुख एषणाएँ- वित्त, पुत्र, लोक।

एसिड *पुं.* (अं.) तेजाब, अम्ल।

एसेंबली *स्त्री.* (अं.) 1. सभा 2. परिषद्, मंडल।

एस्चरी *पुं.* (अं.) भूवि. वह स्थान जहाँ नदी समुद्र में मिलती है, नदी का मुख, नदी का मुहाना, नदी की धारा और ज्वार का संगम स्थान।

एस्कीमो *पुं.* (अं.) उत्तरी ध्रुव प्रदेशीय क्षेत्रों (ग्रीनलैंड आदि) में रहने वाली एक जाति या उसका व्यक्ति *स्त्री.* उक्त जाति की भाषा।

एस्केलेटर *पुं.* (अं.) स्टेशनों, विमान पत्तनों, बहुमंजिली इमारतों, मॉल्स में लोगों को ऊपर-नीचे या दांये-बाएं लाने, ले जाने वाली चलती-फिरती सीढ़ीनुमा गोलाकार रबर की बेल्ट जैसी मशीन जो मोटर से चलती है।

एस्टाटीन *पुं.* (अं.) रसा. एक रेडियोसकिर्‌य हैलोजन तत्व जो यूरेनियम आदि के रेडियोसकिर्‌य विखंडन से उत्पन्न होता है।

एस्टिमेट *पुं.* (अं.) किसी काम का आकलन करना, अनुमान लगाना, प्राक्कलन, अंदाज, अनुमान, तखमीना।

एस्पिरिन *स्त्री.* (अं.) आयु. एक सफेद रवादार कार्बन यौगिक जिसका प्रयोग सिर दर्द, ज्वर, पीड़ा आदि में औषधि के रूप में किया जाता है, पीड़ाहर दवा।

एस्पिरैंटो/एस्पिरांतो *स्त्री.* (लैटिन+फ्रां.) एक कृत्रिम विश्वभाषा जिसे लैटिन तथा यूरोप की अनेक आधुनिक भाषाओं के समान शब्दों से 1887 ई. में बनाया गया था, जिसके निर्माता बहुभाषाविद् डॉ. जमेनहाफ थे।

एस्बेस्टस *पुं.* (अं.) रसा. मैग्नेशियम और कैल्शियम का रेशेवाला अज्वलनशील सिलीकेट जो खनिज रूप में मिलता है जिसकी शीट्स भवन निर्माण आदि में काम आती हैं।

एहतमाम *पुं.* (अर.) 1. बंदोबस्त, प्रबंध, इंतजाम 2. तत्वावधान 3. निरीक्षण, देख-रेख, निगरानी।

एहतियात *स्त्री.* (अर.) 1. चौकसी, सावधानी 2. सुरक्षा, बचाव 3. परहेज।

एहतियातन *क्रि.वि.* (अर.) सावधानी या चौकसी के लिए या सावधानी के रूप में, बचाव के विचार से।

एहतियाती कार्रवाई *स्त्री.* (अर.) खतरे से बचने के लिए की जाने वाली सुरक्षात्मक कार्रवाई।

एहसान *पुं.* (अर.) नेकी, भलाई, उपकार, आभार।

एहसानफरामोश *वि.* (अर.+फा.) एहसान न मानने वाला, कृतघ्न, अकृतज्ञ, किए गए उपकार को भूल जाने वाला।

एहसानमंद *वि.* (अर.+फा.) कृतज्ञ, एहसान मानने वाला विलो. एहसान फरामोश

एहसास *पुं.* (अर.) दे. अहसास।

ऐ

हिंदी वर्णमाला का सानुनासिक स्वरवर्ण, जिसका उच्चारण स्थान कंठ, तालु और नासिका है; इस शब्द का प्रयोग सुनी गई बात को फिर से समझने के लिए होता है 2. संबोधन सूचक शब्द।

ऐं *पुं.* (तद्.) 1. महादेव, शिव 2. आमंत्रण, स्मरण आदि अर्थ में, प्रयुक्त।

ऐंग्लो-अमेरिकन *पुं.* (अं.) इंग्लैंड और अमरीका से संबंधित व्यक्ति, वस्तु।

ऐंग्लो-इंडियन *वि.* (अं.) जो इंग्लैंड में जन्मा हो और भारत में काफी अरसे से रह रहा हो, अंग्रेजी परिभाषा जैसी भारत में बोली जाती है। पुं. ब्रिटिश और भारतीय माता-पिता की संतति।

ऐंग्स्ट्रम *पुं.* (अं.) भौ. लंबाई का एक मापक जिसके द्वारा प्रकाश, पराबैंगनी किरणों, विकिरणों आदि की तरंग-दीर्घता को व्यक्त करने करने में किया जाता है।

ऐंचन *पुं.* (देश.) खिंचाव, झुकाव।

ऐंचना *स.क्रि.* (देश.) खींचना, तानना।

ऐंचाताना *वि.* (देश.) जिस व्यक्ति की आँख की पुतली देखते समय खिंचे एक ओर और वह देखे किसी अन्य ओर।

ऐंचातानी *स्त्री.* (देश.) अपनी-अपनी ओर खींचने का प्रयत्न; ला.अर्थ. असहमति, बहस।

ऐंचीला *वि.* (देश.) जिसमें खिंचाव हो, लचीला।

ऐंठ *स्त्री.* (देश.) ऐंठन, अकड़, ठसक, घमंड, अंहकार-भरी चेष्टा।

ऐंठन *स्त्री.* (तद्.) वह स्थिति जो रस्सी या लचीली लचीली चीज को मरोड़ने से उत्पन्न हो, घुमाव, लपेट, मरोड़, खिचाव 2. वात आदि के प्रकोप के कारण शरीर के किसी अंग में होने वाली मरोड़, कष्ट आदि, जैसे- पेट में होने वाली ऐंठन।

ऐंठना *स.क्रि.* (देश.) 1. मरोड़ना, घुमाव देना, कसना 2. भय दिखाकर धन आदि ले लेना *स.क्रि.* अकड़ना।

ऐंठा *वि.* (देश.) जो अकड़ या अभिमान दिखाता हो।

ऐंठू *वि.* (देश.) बहुत अकड़ दिखाने वाला।

ऐंड़ *पुं.* (देश.) 1. गर्व, घमंड 2. पानी का चक्रवात।

ऐंड़दार *वि.* (देश.+फा.) 1. ऐंठ दिखाने वाला, घमंडी, अकड़ू 2. टेढ़ा व्यक्ति 3. घुमावदार।

ऐंडना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ऐंठना 2. अंगड़ाई लेना 3. घमंड प्रकट करना, इतराना।

ऐंड़-बैंड़ *वि.* (देश.) अंड़-बंड 1. अनाप-शनाप, असंबद्ध प्रलाप 2. गाली-गलौज *वि.* बेसिर पैर का।

ऐंड़ा *वि.* (देश.) 1. ऐंठा हुआ, तिरछा, टेढ़ा 2. घमंडी।

ऐंड़ा-बैड़ा *वि.* (देश.) 1. बेढंगा 2. ऊट-पटांग।

ऐंदव *वि.* (तत्.) जो इंदु (चंद्रमा) से संबंधित हो पुं. मृगसिरा नक्षत्र।

ऐंद्र *पुं.* (तत्.) 1. इंद्र का पुत्र 2. अर्जुन 3. बालि 4. ज्येष्ठा नक्षत्र। *वि.* इंद्र संबंधी, इंद्र का, जैसे- ऐंद्र व्याकरण।

ऐंद्रजाल *पुं.* (तत्.) इंद्रजाल, बाजीगरी, जादूगरी, दृष्टिभ्रम।

ऐंद्रजालिक *पुं.वि.* (तत्.) इंद्रजाल दिखाने वाला, जादूगर, बाजीगर।

ऐंद्रिय *वि.* (तत्.) 1. जो इंद्रियों से संबंधित हो 2. जो इंद्रियों का विषय हो, जिसे इंद्रियों द्वारा जाना जा सके।

ऐंद्रियता *स्त्री.* (तत्.) इंद्रियों से संबंध होने का भाव या स्थिति।

ऐंद्री *स्त्री.* (तत्.) 1. इंद्र की पत्नी शची 2. दुर्गा 3. इलायची।

ऐंबुलेंस *स्त्री.* (अं.) रोगी अथवा घायल व्यक्ति को एक स्थान से अन्य स्थानों तक ले जाने के लिए विशेष वाहन।

ऐंबेसडर *पुं.* (अं.) किसी दूसरे देश में आधिकारिक रूप से अपने देश की सरकार का पक्ष रखने वाला राजनयिक, राजदूत।

ऐ *अव्य* (तद्.) स्मरण, बुलावा और संबोधन बोधक *पुं.* शिव, महादेव।

ऐक *वि.* (तत्.) जिसका संबंध एक से हो, एक का *पुं.* (तद्.) एक होने का भाव, समानता।

ऐकमत्य *पुं.* (तत्.) एकमत होने की स्थिति, सहमति, मतैक्य।

ऐकांतिक *वि.* (तत्.) 1. जो एकांत से संबंधित हो, अकेला-अकेला, एकांत में होने वाला 2. सबसे अनोखा या निराला।

ऐकाग्र *वि.* (तत्.) 1. एकाग्र, चंचलता रहित 2. जिसका ध्यान एक ओर लगा हो।

ऐकात्म्य *पुं.* (तत्.) 1. एकात्मता, एकरूपता 2. तादात्म्य, अभेद।

ऐकायनिक *वि.* (तत्.) जो केवल एक विषय वस्तु या व्यक्ति से सम्बंधित हो, एकनिष्ठ 2. एकांत।

एकांत।

ऐकार *पुं.* (तत्.) स्वर वर्ण 'ऐ' या उसकी ध्वनि।

ऐकार्थ्य *पुं.* (तत्.) एक ही अर्थ होने की स्थिति या भाव, अर्थ की समानता।

ऐकाह्निक *वि.* (तत्.) एक दिन में पूरा होने वाला कार्य, अनुष्ठान, व्रत आदि।

ऐक्टीनियम *पुं.* (अं.) रसा. एक प्रकार का रेडियो ऐक्टिव धातु-तत्व।

ऐक्ट्रेस *स्त्री.* (अं.) (नाटक आदि में) अभिनय करने वाली महिला नटी, अभिनेत्री।

ऐक्य *पुं.* (तत्.) 1. एक का भाव, एकत्व 2. एका, मेल 3. एकत्रीकरण, समाहार।

ऐक्शन *पुं.* (अं.) 1. कार्य या कोई क्रिया 2. घटना 3. अभिनय की रीति।

ऐक्ष्वाक *वि.* (तत्.) इक्ष्वाकु से संबंध रखने वाला, इक्ष्वाकु का, इक्ष्वाकु विषयक *पुं.* इक्ष्वाकु का वंशज।

ऐच्छिक *वि.* (तत्.) 1. जो अपनी इच्छा पर निर्भर हो 2. अपनी इच्छा से लिया या दिया जानेवाला, स्वैच्छिक, वैकल्पिक।

ऐटम *पुं.* (अं.) रसा.भौ. किसी तत्व की सूक्ष्मतम इकाई। परमाणु।

ऐडमिरल *पुं.* (अं.) नौसेना का सर्वोच्य अधिकारी, नौसेनाध्यक्ष।

ऐडवोकेट *पुं.* (अं.) विधि. जिसको उच्च न्यायालय में किसी पक्ष की ओर से अपनी बात कहने का अधिकार प्राप्त हो, अधिवक्ता, वकील

ऐतराज *पुं.* (अर.) एतराज, विरोध, आपत्ति।

ऐतरेय *पुं.* (तत्.) 1. ऋग्वेद का एक ब्राह्मण ग्रंथ 2. एक आरण्यक ग्रंथ जो वानप्रस्थों के लिए है 3. एक उपनिषद्।

ऐतिहासिक *वि.* (तत्.) इतिहास-संबंधी, जो इतिहास से सिद्ध हो, जो इतिहास पर आधारित हो।

ऐतिहासिक भूविज्ञान *पुं.* (तत्.) पृथ्वी के इतिहास की प्रमुख घटनाओं का काल क्रमानुसार विवरण प्रस्तुत करने वाला विज्ञान।

ऐतिहासिक समाज शास्त्र *पुं.* (तत्.) समाजशास्त्र के सिद्धांतों को उपलब्ध कराने के लिए ऐतिहासिक विवरण।

ऐतिह्य *पुं.* (तत्.) दर्श. परंपरा से प्राप्त प्रमाण, प्रत्यक्ष, अनुमान आदि चार प्रमाणों के अतिरिक्त अर्थापत्ति जिनके वक्ता अज्ञात है परंतु परंपरा से जिनका प्रयोग होता रहा हो, परंपरा से प्राप्त शिक्षा।

ऐन *पुं.* (तद्.) 1. गति 2. पथ मार्ग 3. सूर्य या चंद्र, जैसे- उत्तरायण, दक्षिणायन की गति 4.

आवास, निवास स्थान, स्थान *वि.* (अर.) 1. उपयुक्त, ठीक, सटीक 2. बिल्कुल, पूरा-पूरा।

ऐनक *स्त्री.* (अर.) आँखों की शक्ति बढ़ाने वाला यंत्र, चश्मा।

ऐनिस्थेटिक *वि.* (अं.) चिकि. संवेदनारहित करने वाली औषधि, बेहोश करने वाली दवा।

ऐपन *पुं.* (तद्.) पूजा और मांगलिक कार्यों में रंगोली, चतुष्कोण आदि बनाने के लिए तैयार किया गया विशेष प्रकार का लेप जो चावल और हल्दी को पीसकर बनाया जाता है जिसे लोकभाषा में 'अरिपन' भी कहते हैं।

ऐफिडेबिट *पुं.* (अं.) विधि. किसी वाद के प्रारंभ में न्यायालय में या अन्यत्र प्रस्तुत किया जाने वाला शपथ पत्र या हलफनामा।

ऐब *पुं.* (अर.) 1. दोष, दूषण, अवगुण, दुर्व्यसन 2. पाप 3. त्रुटि, गलती।

ऐबदार *वि.* (अर.) 1. दोषयुक्त, अवगुणी, पापी, दुष्ट 2. त्रुटियुक्त, विकलांग।

ऐबी *वि.* (अर.) 1. दुर्व्यसनी 2. दोषयुक्त।

ऐबोहुनर *पुं.* (अर.+फा.) बुराई और अच्छाई का सम्मिश्रण, गुणदोष, बुराई और अच्छाई।

ऐम्पियर *पुं.* (अं.) भौ. विद्युत धारा की तीव्रता की की इकाई।

ऐयार *वि.* (अर.) 1. धूर्त, छली 2. तिलस्मी कथाओं में ऐसा पात्र जो चालाकी से अनोखे काम करता हो पुं. गुप्तचर, जासूस।

ऐयारी *स्त्री.* (अर.) धूर्तता, ठगी, छल, गुप्तचरी, जासूसी।

ऐयाश *वि.* (अर.) विलासी, बहुत ऐश-आराम करनेवाला, भोग-विलास में रत, विषयासक्त 2. कामुक, लंपट, इंद्रियलोलुप।

ऐयाशी *स्त्री.* (अर.) ऐयाश होने की अवस्था या भाव, भोग-विलास में लिप्त रहने की स्थिति। दे. दे. ऐयाश

ऐरन *पुं.* (तद्.) लोहे का एक छोटा उपकरण जिस पर सोना रखकर स्वर्णकार हथोड़ी से धीरे-धीरे पीटकर सोने को बड़ा और चौड़ा करता है।

ऐरागैरा *वि.* (अर.) 1. ऐसा-वैसा, तुच्छ, नगण्य, निकृष्ट 2. बेगाना, अजनबी, जिससे कुछ वास्ता न हो मुहा. ऐरागैरा नत्थू-खैरा- जिसकी कोई हैसियत न हो, साधारण व्यक्ति, तुच्छ।

ऐराब *पुं.* (अर.) शतरंज के खेल में 'शह' बचाने के लिए बादशाह और शह देने वाले मोहरे के बीच में रखा जाने वाला मोहरा।

ऐरावत *पुं.* (तत्.) 1. इंद्र का हाथी 2. बिजली से प्रदीप्त बादल 3. इंद्रधनुष।

ऐरावती *स्त्री.* (तत्.) 1. रावी नदी का पुराना नाम 2. म्याँमार की इरावती नदी।

ऐरेय *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की मदिरा।

ऐरौमैटिक रसायन *पुं.* (अं+तत्.) रसा. कार्बनिक रसायन शास्त्र की वह शाखा जिसमें ऐरोमेटिक यौगिकों का विस्तृत अध्ययन किया जाता है।

ऐल *पुं.* (तत्.) 1. इला का पुत्र, पुरुखा (तद्.) 1. अधिकता 2. कोलाहल ।

ऐलक *स्त्री.* (तद्.) चालनी, पिसी वस्तु के मोटे-पतले अंश को छानकर अलग करने का जालीदार उपकरण। (तद्.) न्यूनतम कपड़े पहनने वाला (जैन) श्रावक।

ऐलान *पुं.* (अर.) सार्वजनिक घोषणा, सूचना, मुनादी।

ऐलिफैटिक यौगिक *पुं.* (अं+तत्.) रसायन कार्बनिक यौगिक जिसमें कार्बन परमाणुओं की रेखाएँ होती हैं न कि वलय।

ऐलुमिनीकरण *पुं.* (अं.+तत्.) लोहा या इस्पात पर एलुमिनियम की फुहार करने की क्रिया।

ऐल्बम *पुं.* (अं.) डाक-टिकट आदि दुर्लभ सामग्री को संग्रह कर सुरक्षित रखने वाली कॉपी।

ऐल्लक *पुं.* (प्रा.) जैनसाधु जो वरिष्ठ हो टि. छोटे जैन साधु को 'क्षुल्लक' कहते हैं।

ऐश *पुं.* (अर.) 1. भोग-विलास, विषय-सुख 2. चैन।

ऐशगाह *पुं.* (अर.) केलिभवन, विलासगृह।

ऐशतलब *वि.* (अर.फा.) विलासी या भोग विलास का आनंद चाहने वाला।

ऐशान *वि.* (तत्.) 1. ईशान कोण से संबंधित, उत्तरपूर्वी 2. शिव संबंधी।

ऐशो आराम *पुं.* (अर.) सुख-चैन, भोग-विलास।

ऐशो इशरत *स्त्री.* (अर.) दे. ऐशो आराम।

ऐशोहशरत *स्त्री.* (अर.) भोगविलास का आनंद, खुशी, सुख।

ऐश्वरिक *वि.* (तत्.) 1. जिसका संबंध ईश्वर से हो हो 2. शिव संबंधी *पुं.* ईश्वर की सत्ता मानने वाला नेपाल का बौद्ध संप्रदाय।

ऐश्वर्य *पुं.* (तत्.) 1. विभूति 2. अणिमादि आठ सिद्धियों से प्राप्त ईश्वरीय शक्ति 3. प्रभुत्व।

ऐश्वर्यवती *वि.* (तत्.) जो ऐश्वर्य वाली है, ऐश्वर्यशालिनी, संपन्न।

ऐश्वर्यवान् *वि.* (तत्.) वैभवशाली, धन-संपन्न, ऐश्वर्यशाली, ऐश्वर्ययुक्त।

ऐश्वर्यशालिनी *वि.* (तत्.) ऐश्वर्यवाली।

ऐश्वर्यशाली *वि.* (तत्.) जो ऐश्वर्य वाला है, संपन्नता वाला।

ऐसा *वि.* (तद्.) इस प्रकार का, इसके समान।

ऐसिड *पुं.* (अं.) अम्ल, खटाई, तेजाब *वि.* तेज, तीक्ष्ण।

ऐसिल *अव्य.* (तद्.) इसी प्रकार का, ऐसे ही।

ऐसे *क्रि.वि.* (तद्.) इस ढंग से, इस तरह से।

ऐहलौकिक *वि.* (तत्.) इहलोक अर्थात् इस संसार का, सांसारिक, भौतिक, ऐहिक।

ऐहिक *वि.* (तत्.) दे. ऐहलौकिक।

ऐहिकता *स्त्री.* (तत्.) इस संसार से संबंधित भाव स्थिति, लौकिकता।

ऐहिकतापरक *पुं.* (तत्.) इस लोक संबंधी, ऐहलौकिक *वि.* जिसका संबंध सांसारिक बातों से हो।

ऐहिकदर्शी *वि.* (तत्.) दुनियादार, व्यवहारकुशल।

ऐहै *अ.क्रि.* (तद्.) आएगा, जो आने वाला हो।

ओ

ओ *अव्य.* (तत्.) 1. एक संबोधनसूचक शब्द 2. विस्मयादि बोधक, आश्चर्यसूचक शब्द, ओह 3. हिंदी वर्णमाला का दसवाँ स्वर जिसका उच्चारण ओष्ठ और कंठ से होता है।

ओंइछना *स.क्रि.* (देश.) न्यौछावर करना।

ओंकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. कै करना 2. ऊबना 3. (मन) फिर जाना, दूर होना।

ओंकार *पुं.* (तत्.) 1. 'ओं' की ध्वनि या उसका उच्चारण 2. सम्मान सूचक स्वीकृति 3. मंगल 4. ब्रह्म, प्रणव।

ओंगन *पुं.* (देश.) गाड़ी की धुरी में दिया जाने वाला तेल या चिकनाई।

ओंगना *स.क्रि.* (देश.) गाड़ी की धुरी में चिकनाई लगाना। पुं. अरंडी के बीज के फल का छिलका, अंडी के फल का तेल।

ओंघना *अ.क्रि.* (देश.) आलस्य में झपकी लेना, अर्धनिद्रा में होना।

ओंठ *पुं.* (तद्.) मुँह के बाहरी उभरे हुए मांसल छोर जो दाँतों को ढके रहते हैं, ओष्ठ, होठ, लब 2. घड़े, कप आदि के मुँह का किनारा। मुहा. ओंठ उखाड़ना- परती खेत को पहले-पहल जोतना; ओंठ-काटना, ओंठ चबाना- क्रोध और दुख से ओंठ को दाँतों के नीचे दबाना।

ओंदफरी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की घास जिसके पत्ते गोल और छोटे, पीले फूल और पतली फलियाँ होती हैं।

ओंध *स्त्री.* (देशज.) छप्पर/छाजन बनाने के लिए, बाँस की बत्तियों को आपस में बाँधने वाली रस्सी।

ओंधेरी/ओंधेली *स्त्री.* (देश.) आँधी जैसी लगने वाली घास, तिकोने पत्ते और लौंग सदृश लाल फूल वाली घास।

ओक *स्त्री.* (देश.) 1. अँजुरी, अंजलि 2. मतली, कै, उबकाई। *पुं.* (तत्.) 1. निवासस्थान, घर 2. पनाह 3. पक्षी 4. नक्षत्रों का मेल।

ओकना *स.क्रि.* (देश.) 1. 'ओ' जैसी ध्वनि करना या वमन करना 2. भैंस की तरह चिल्लाना।

ओकपति *पुं.* (तत्.) 1. ग्रहों और नक्षत्रों का स्वामी, नक्षत्रपति 2. सूर्य ।

ओकलाई *स्त्री.* (देश.) उल्टी (कै) करने की इच्छा, वमन करने की चाह।

ओकार *पुं.* (तत्.) ओ अक्षर की ध्वनि।

ओकारांत *वि.* (तत्.) जिस शब्द के अंत में 'ओ' स्वर आता हो, जैसे- खाओ, जीतो आदि।

ओकारादि *वि.* (तत्.) जिस शब्द के आदि में 'ओ' आता हो या 'ओ' से शुरू होने वाले शब्द, जैसे- ओकपति।

ओख *स्त्री.* (तद्.) 1. मिश्रण, मिलावट 2. सोने में तांबे का मिश्रण, चांदी में तांबे अथवा जस्ते की मिलावट 3. ज्वाला या जलन, दाह।

ओखली *स्त्री.* (तद्.) काठ का या पत्थर का बना हुआ गहरा बरतन जिसमें धान आदि अन्न को डालकर उसकी भूसी को अलग करने के लिए मूसल से कूटते हैं मुहा. ओखली में सिर देना- जानबूझकर किसी झंझट में पड़ना, कष्ट झेलने पर उतारू होना।

ओखा *वि.* (देश.) 1. रूखा-सूखा 2. कठिन 3. खोटा, मिलावटी 4. झीना 5. ओछा, हलका विलो. चोखा।

ओखाण/ओखान *पुं.* (तद्.) आख्यान, उपाख्यान।

ओखिया *वि.* (तद्.) 1. जो अशुद्ध हो या जिसमें मिलावट हो 2. सोने, चांदी का आभूषण, जिसमें तांबे की मिलावट हो, बट्टा मिला गहना।

ओगल *पुं.* (तद्.) अनुर्वर या ऊसर भूमि, कुआं।

ओघ *पुं.* (तत्.) 1. समूह, ढेर, अधिकता, बाढ़ 2. (जल की) धारा, प्रवाह।

ओछा *वि.* (देश.) तुच्छ, क्षुद्र, खोटा, छिछोरा हलका जिसमें गंभीरता न हो।

ओछाई *स्त्री.* (देश.) नीचता, छिछोरापन, क्षुद्रता।

ओछापन *पुं.* (देश.) दे. ओछाई।

ओछी *वि.* (देश.) जो तुच्छता से भरी हो, जिस स्त्री में ओछापन हो जैसे- ओछी बात, ओछी राजनीति।

ओज *पुं.* (तत्.) 1. आत्मिक बल, तेज, दीप्ति; शरीर की कांति 2. बल, प्रताप 3. उजाला, तेज, प्रकाश 4. काव्य. कविता का वह गुण जिससे सुननेवाले के मन में आवेश उत्पन्न हो।

ओजस्विता *स्त्री.* (तत्.) 1. तेज 2. दीप्ति 3. प्रताप 4. प्रभावोत्पादकता।

ओजस्वी *वि.* (तत्.) 1. ओजभरा, जोश पैदा करने वाला 2. बल-वीर्यशाली, शक्तिमान, प्रतापी 3. दीप्त, चमकीला।

ओजित *वि.* (तत्.) ओजस्वी, ओजयुक्त।

ओजोन *स्त्री.* (अं.) रसा. ऑक्सीजन का एक अन्य रूप जो अति अभिक्रियाशील फीकी नीली सी या कहे रंगहीन गैस है जिसकी ऊपरी वायुमंडल में स्थित पतली परत पराबैंगनी किरणों से पृथ्वी की रक्षा करती है और जिसकी उपस्थिति धरती के निचले स्तर पर हानिकारक होती है।

ओजोन मंडल *पुं.* (अं.+तत्.) भौ. ऊपरी वायुमंडल की वह परत जहाँ ओजोन का घनत्व सर्वाधिक है, यह परत सूर्य की परा बैंगनी किरणों के कुप्रभाव से पृथ्वी की रक्षा करता है।

ओझकना *अ.क्रि.* (राज.) चौंकना, घबड़ाना, कँपकँपाना।

ओझरी *स्त्री.* (देश.) 1. उदर 2. आँत।

ओझल *वि.* (देश.) आँखों से दूर, दृष्टि से परे, अदृश्य, ओट, आड़।

ओझा *पु.* (तद्.) 1. ब्राह्मणों का एक वर्ग 2. भूत-प्रेत झाड़नेवाला, सयाना।

ओझागिरी/ओझौती *स्त्री.* (तद्.) 1. भूतबाधा को मंत्रोपचार से समाप्त करने की क्रिया 2. 'ओझा' एक प्रकार के मांत्रिक ब्राह्मण की वृत्ति।

ओट *स्त्री.* (तद्.) 1. ऐसी रोक जिससे उसके पीछे की वस्तु दिखाई न दे 2. व्यवधान 3. रुकावट, आड़ 4. परदे के लिए बनाई गई दीवार मुहा. आँखों की ओट होना- दृष्टि से छिप जाना।

ओटन *स्त्री.* (तद्.) चरखी का डंडा जिससे कपास से बिनौला अलग किया जाय।

ओटना *स.क्रि.* (तद्.) 1. कपास से बिनौले अलग करना उदा. चौबे से दूबे बने, ओटन लगे कपास। 2. किसी बात या काम को बार-बार करते जाना 3. अपने जिम्मे ले लेना।

ओटनी *स्त्री.* (तद्.) कपास से बिनौले अलग करने की चरखी।

ओटा *पुं.* (तद्.) 1. परदे के लिए बनी हुई दीवार, ओट, आड़ 2. ओटने का काम करने वाला 3. सुनारों का एक औजार।

ओडव *पुं.* (तत्.) संगी. सात स्वरों में से केवल पाँच स्वरों वाला आपस में राग।

ओडिस *वि.* (तत्.) उत्कल देश से संबंधित, उड़ीसा का उत्कलीय।

ओडिसी *स्त्री.* (तद्.) उड़ीसा प्रांत की एक शास्त्रीय नृत्यशैली।

ओड्र *पुं.* (तत्.) 1. जवाकुसुम वृक्ष, गुड़हल का वृक्ष 2. उत्कल प्रांत का रहने वाला, उड़िया 3. उत्कल प्रांत का प्राचीन नाम।

ओड़ *पुं.* (देश.) गधों पर ईंट, चूना, मिट्टी ढोने वाली एक श्रमिक जाति।

ओड़चा *पुं.* (तद्.) नीची जमीन से ऊँची जमीन में पानी उछालने की गहरी टोकरी।

ओड़ना *स.क्रि.* (तद्.) प्रहार रोकना, आधात रोकना।

ओढ़नहार, ओढ़नहारा *वि.* (तद्.) ओढ़ने वाला।

ओढ़ना *पुं.* (देश.) 1. ओढ़ने का वस्त्र *स.क्रि.* किसी वस्त्र आदि को बिना पहने कपड़े से बदन को ढँकना 2. अपने जिम्मे लेना, स्वीकार करना।

ओढ़नी *स्त्री.* (देश.) स्त्रियों का सिर और वक्ष पर ओढ़ने का वस्त्र, चुनरी, दुपट्टा।

ओढ़वाना *प्रे.क्रि.* (देश.) किसी से ओढ़ने का काम करवाना।

ओढ़ाना *प्रे.क्रि.* (देश.) कपड़े आदि से किसी के शरीर को ढाँकना, कपड़े से आच्छादित करना।

ओत *वि.* (देश.) सूत से बुना गया कपड़ा *पुं.* बुने हुए कपडे, में लंबाई में लगा सूत जिसे ताना कहते हैं टि. बुने हुए कपड़े में लम्बा धागा 'ताना' कहलाता है और चौड़ा धागा 'बाना' कहलाता है।

ओतप्रोत *वि.* (तत्.) 1. ताने-बाने की तरह आपस में गुँथा हुआ 2. भरपूर भरा हुआ, लिपटा हुआ जिसे अलग करना असम्भव सा हो।

ओदक *पुं.* (तत्.) जलसंबंधी प्राणी, जलजंतु, जलचर।

ओदन *पुं.* (तत्.) पका हुआ चावल, भात

ओध *पुं.* (तद्.) पशु (गाय आदि) का स्तन।

ओधना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. उलझना 2. काम में लगना 3. शुरू होना *स.क्रि.* 1. छेद करना, बेधना 2. अवधि निर्धारित करना।

ओनत *वि.* (तद्.) जो अवनत है, नत, झुका हुआ, विनम्र।

ओना *पुं.* (देश.) तालाब, झरना आदि से पानी निकालने का रास्ता या मार्ग।

ओनाड़ *वि.* (देश.) 1. बहादुर, बलशाली 2. जिसमें उद्दंडता भरी हो।

ओनाना *अ.क्रि.* (देश.) प्रवृत्त होना, किसी कार्य में लग जाना, ध्यान देना, कान लगाकर सुनना।

ओनामासीधम *स्त्री.* (तद्.) 1. विद्यारंभ करते समय बालकों के द्वारा किया जाने वाले मंगलाचरण 'ओम् नमःशिवाय' का भ्रष्ट रूप, सिद्धियों को प्रणाम 2. किसी कार्य का शुभारंभ 3. विद्यारंभ।

ओप *स्त्री.* (देश.) चमक, दीप्ति, शोभा।

ओपची *पुं.* (देश.) चमकदार कवच या शस्त्रधारण करने वाला योद्धा।

ओपना *स.क्रि.* (देश.) ओप या शोभा से युक्त करना, चमकाना *अ.क्रि.* चमकना *पुं.* चमकाने के पत्थर का वह टुकड़ा जिससे तलवार आदि को माँजा/चमकाया जाए।

ओपनी *स्त्री.* (देश.) दे. 'ओप' *वि.* चमकीली, शोभा, कांति से युक्त।

ओपल *पुं.* (तद्.) दूधिया पत्थर जिसका रंग विल्लौर जैसा होता है और रंग बदलता है opal

ओपित *वि.* (देश.) ओपयुक्त, चमकता हुआ।

ओपी *वि.* (देश.) जो चमक रहा हो, चमकीला, शोभायमान।

ओपेरा *पुं.* (अं.) संगीतमय नाटय रूप, संगीतिका।

ओफ *अव्य.* (अर.>उफ़) पीड़ा और आश्चर्यजनक शब्द, ऊफ।

ओबरी *स्त्री.* (देश.) घर का अंदरूनी भाग, कोठरी।

ओम *पुं.* (जर्मन) भौ. ओम के नाम पर नामित 'ओम' नामक विद्युत प्रतिरोध की मापक एक इकाई जो उस चालक के प्रतिरोध के तुल्य है जिसके सिरों पर एक वोल्ट का विभवांतर चालक में एक ऐम्पियर की धारा उत्पन्न करता है।

ओम् *पुं.* (तत्.) ओंकार, आदिनाद, ब्रह्म, सर्वव्याप्त ईश्वर का वाचक, प्रणव, कर्मकांड आदि के प्रारंभ में बोली जाने वाली पवित्र ध्वनि।

ओरंग-ऊटंग *पुं.* (मलेशि.) (ओरंग=मनुष्य, ऊटंग= वन) एक प्रकार का पुच्छहीन वानर या वनमानुष जो बोर्नियो और सुमात्रा में पाया जाता है।

ओर *स्त्री.* (तद्.) 1. किसी निश्चित स्थान के अतिरिक्त शेष दिशा-विस्तार, जिसे दाहिनी, बायी, ऊपर, नीचे, पूर्व, पश्चिम आदि शब्दों से निश्चित करते हैं जैसे- पूर्व की ओर, उत्तर की ओर, आदि, तरफ, दिशा 2. पक्ष। *पुं.* (तद्.) अंत, सिरा, किनारा।

ओराँव *स्त्री.* (देश.) 1. एक पहाड़ी जनजाति का नाम जो झारखंड के छोटा नागपुर की पहाड़ियों में निवास करती है 2. इस जनजाति की बोली।

ओरानाँ *वि.* (तद्.) जो वस्तु समाप्त हो चुकी हो।

ओराना *अ.क्रि.* (तद्.) किनारे पर पहुँचना, खत्म होना, समाप्त करना।

ओरि *क्रि.वि.* (तद्.) आखिर तक, अंत समय तक।

ओरिया *स्त्री.* (तद्.) 1. कपड़ा बुनाई में ताना तानने के समय खूँटी के पास गाड़ी जाने वाली एक लकड़ी 2. *वि.* तरफवाला, पक्ष वाला।

ओल *स्त्री.* (तद्.) 1. गोद 2. आड़ 3. शरण, पनाह-(देना-लेना) 4. कंद प्रजाति की एक सब्जी, सूरन, ज़िमींकंद *वि.* गीला या आर्द्र।

ओलक *पुं.* (तद्.) पर्दा, ओट, आड़।

ओलगिया *वि.* (देश.) अलग रहने वाला, प्रवास में रहने वाला।

ओलचा *पुं.* (देश.) 1. लकड़ी का हत्थेदार बर्तन जिससे पानी फेंक खेत को सींचा जाता है 2. छिछली टोकरी जिससे पानी उलीचने या अनाज ओसाने का काम किया जाता है, दौरी।

ओलती *स्त्री.* (देश.) छप्पर या छाजन का छोर जहाँ से वर्षा का पानी जमीन पर गिरता है।

ओलना *स.क्रि.* (देश.) सहनशील होना, अपने ऊपर उत्तरायित्व ले लेना। रोकना।

ओलमना *अ.क्रि.* (देश.) नमना, झुकना।

ओला *पुं.* (देश.) 1. वर्षा के रूप में गिरने वाले बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े 2. मिश्री के लड्डू, *वि.* (देश.) बहुत ठंडा।

ओलिंपिक खेल *पुं.* (अं.+तत्.) खेल. सामान्यत: हर चार वर्ष बाद विश्व के अलग-अलग नगरों में आयोजित खेल-स्पर्धाओं का मेला, जिसमें विश्व के अनेक देशों के खिलाड़ी भाग लेते हैं।

ओलिंपियाड *पुं.* (अं.) खेल. हर चार वर्ष की अवधि के बाद ग्रीष्म ऋतु में आयोजित ओलंपिक खेलों का नाम। दे. 'ओलिंपिक खेल'।

ओलियाना *स.क्रि.* (देश.) 1. गिराकर किसी वस्तु का ढेर लगाना 2. किसी वस्तु को गोद में या पात्र में भरना।

ओली *स्त्री.* (देश.) 1. गोद 2. ऐसी झोली जिसे आँचल या चुनरी से बना लिया जाय।

ओवर *पुं.* (अं.) खेल. क्रिकेट में विकेट के एक छोर से गेंदबाज द्वारा एक के बाद एक फेंकी गई छह गेदों का अनुक्रम। over

ओवरकोट *पुं* (अं.) बहुत लंबा कोट जो जाड़े में कपड़ों के ऊपर पहना जाता है।

ओवरटाइम *पुं.* (अं.) जब निर्धारित समय के अतिरिक्त समय में कार्य किया जाए, समयोपरि।

ओवर ड्राफ्ट *पुं.* (अं.) वाणि. बैंक द्वारा अपने ग्राहक को उसके खाते में जमा रकम से अधिक रकम निकाल सकने की प्रदत्त सुविधा जो ग्राहक की साख पर निर्भर होती है। over draft

ओवर थ्रो *पुं.* (अ.) फेंकी गई वस्तु का लक्ष्य से परे चला जाना, क्रिकेट में बल्लेबाज द्वारा गेंद पर प्रहार के बाद क्षेत्ररक्षक द्वारा विकेट को लक्ष्य करके फेंकी गई गेंद जो न तो लक्ष्य वेध करती है और न पास खड़े किसी क्षेत्ररक्षक से रुकती है, जिसके परिणाम स्वरूप बल्लेबाज या तो दौड़कर कुछ अतिरिक्त रन बना लेता है या फिर गेंद सीमा रेखा को पार कर जाने के कारण चौका मान लिया जाता है। over throw

ओवरसियर *पुं.* (अं.) इंजीनियर के अधीन एक अधिकारी जो चल रहे निर्माण-कार्य की निगरानी करता है।

ओषजन *पुं.* (तत्.) दे. ऑक्सीजन।

ओषण *पुं.* (तत्.) कटुता, तीक्ष्णता, तेज स्वाद।

ओषधि *स्त्री.* (तत्.) 1. जड़ी-बूटी जो दवा के काम काम आए 2. वनस्पति दे. 'औषधि'।

ओषधिप्रस्थ *पुं.* (तत्.) ओषधि का स्थान (हिमालय)।

ओषधिधर/ओषधीधर *पुं.* (तत्.) 1. औषधि को जो धारण करे (वैद्य) 2. चंद्रमा।

ओषधिनाथ/ओषधीनाथ *पुं.* (तत्.) चंद्रमा ।

ओषधीश *स्त्री.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. कपूर।

ओष्ठ *पुं.* (तत्.) होंठ, ओंठ, आयु., प्राणि. किसी रंध्र को घेरने वाले पदार्थ, मांसल पटल या उनमें से कोई एक, उदा. मुख के ऊपर-नीचे के अथवा भग की दरार के दोनों ओर की माँसल संरचनाएँ।

ओष्ठरंजनी *स्त्री.* (तत्.) ओठों को रंगने वाली रंग की बनी बत्ती। lipstick

ओष्ठरति *स्त्री.* (तत्.) मनो. ओठों के चुंबन से जागृत काम-आवेग या काम-संवेदना।

ओष्ठाकार *वि.* (तत्.) ओठ के आकार वाला।

ओष्ठागत *वि.* (तत्.) जो ओठों तक आया हो।

ओष्ठाधर *पुं.* (तत्.) ओष्ठ और अधर (ऊपर का ओठ और नीचे का अधर)।

ओष्ठी *स्त्री.* (तत्.) बिम्बफल (कुंदरू) टि. ओठों की की तुलना बिंबफल से की जाती है और इसी कारण बिंबफल को ओष्ठी कहते हैं।

ओष्ठ्य *वि.* (तत्.) ओठ से संबंधित; ओष्ठों से उच्चरित; जैसे- ओष्ठ्य वर्ण।

ओष्ठ्यवर्ण *पुं.* (तत्.) भाषा. वर्ण जिनके उच्चारण में ओठों की सहायता लेनी पड़ती है, जैसे- उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म।

ओष्ण *वि.* (तत्.) कुनकुना, थोड़ा गर्म, गुनगुना।

ओस *स्त्री.* (तद्.) हवा में मिली हुई भाप जो रात में सर्दी से संतृप्त होकर जल-बिंदु के रूप में पदार्थों पर लग जाती है, शबनम। कृषि. वायु मंडलीय नमी की छोटी-छोटी द्रवीभूत बूँदें जो पत्तों, मिट्टी आदि की सतह पर एकत्रित हो जाती है। dew

ओसर *स्त्री.* (तद्.) 1. गर्भधारण करने योग्य बछिया या भैंस की पड़िया 2. अवसर, मौका 3. समय।

ओसांक *पुं.* (तद्.+तत्.) भौ. वह ताप जिस पर वायु जलवाष्प संतृप्त होती है जिससे कम तापमान होने पर जल-वाष्प ओस की बूंदों में बदल जाती हैं। dew point

ओसाई *स्त्री.* (देश.) गेहूँ आदि को सूप या टोकरी में भरकर बहती हवा में ऊपर उठाकर नीचे गिराने की क्रिया जिसमें भूसा उड़ जाता है, हवा उड़ाकर अनाज की भूसे से अलग करने की क्रिया।

ओसाई मशीन *स्त्री.* (देश.+अं.) कृषि. मशीन जिसमें एक या दो छन्नियाँ और एक पंखा लगा होता है, जिससे हवा फेंक कर दाने और भूसे को अलग-अलग किया जाता है। winnower

ओसान *पुं.* (तद्.) समाप्ति, अवसान, अंत।

ओसाना *स.क्रि.* (देश.) 1. भूसा मिले अनाज का हवा में ऊँचाई से गिरा कर दाने को भूसे आदि से अलग करना 2. चावल के उबलने के बाद अतिरिक्त जल से अलग करना।

ओसार *पुं.* (तद्.) 1. फैलाव, आगे का विस्तार, चौड़ापन 2. मकान के आगे का ओसारा या दालान, बरामदा।

ओसारी *स्त्री.* (तद्.) मकान के आगे बनी बैठक या दालान।

ओह *अव्य.* (तद्.) 1. आश्चर्यसूचक शब्द 2. दुख-सूचक शब्द, अहो, आह।

ओहदा *पुं.* (अर.) सैवि. 1. पद, पदवी, समान स्तर के एकाधिक पद भले ही उन पदों के नाम (पदनाम) अलग हों, जैसे- लेफ्टिनेंट (थल सेना), फ्लाइंग ऑफिसर (वायु सेना), सब लेफ्टिनेंट (नौ सेना)। rank

ओहदेदार *पुं.* (अर.+फा.) हाकिम, अधिकारी, पदाधिकारी।

ओहना *स.क्रि.* (देश.) कृषि. पके अनाज के डंठलों को ऊपर उठाकर हिलाते हुए उनके दाने नीचे गिराना।

ओहरना *अ.क्रि.* (तद्.) बढ़ती हुई चीज की कमी होना या घटना।

ओहार *पुं.* (देश.) पालकी या रथ को ढँकने वाला पर्दा।

ओहो *अव्य.* (तद्.) 1. प्रसन्नता, आनंदसूचक शब्द 2. आश्चर्य सूचक शब्द।

औ

औ *पुं.* (तत्.) 1. हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ वर्ण जो अ+ओ के संयोग से बना है इसका उच्चारणकण्ठ और ओष्ठ से होताहै 2. शेषनाग। शेषनाग।

औंगना *स.क्रि.* (तद्.) बैलगाड़ी या अन्य वाहन की धुरी में तेल लगाना।

औंघना *अ.क्रि.* (देश.) दे. ऊँघना।

औंघाई *स्त्री.* (देश.) आलस्य में नींद की झपकी, ऊँघ।

औंटन *स्त्री.* (देश.) जमीन में गड़ी लकड़ी की चौड़ी चौड़ी मोटी लकड़ी जिस पर रखकर पशुओं के लिए चारा या गन्ने की गंडेरी आदि काटी जाती है।

औंठ *पुं.* (तद्.) 1. किसी पात्र का उठा किनारा 2. कपड़े की किनारी।

औंदकना *अ.क्रि.* (तद्.) अचंभे में पड़ना, चौंकना, कूद-फाँद करना।

औंदना *अ.क्रि.* (तद्.) घबरा जाना, व्याकुल होना, ऊबना।

औंध *स्त्री.* (देश.) आलस्य, तंद्रा, ऊँघ।

औंधना *अ.क्रि.* (देश.) उलट जाना, औंधा होना स.क्रि. उलट देना, औंधा करना।

औंधाकार *पुं.* (देश.) एक फूल का पौधा जिसमें बारीक तिकोनी पत्ती और लाल फूल आते हैं।

औंधाना *स.क्रि.* (देश.)विपरीत स्थिति में कर देना, ऊपरी हिस्सा नीचे कर देना, गिरा देना।

औंधी *वि.* (तद्.) उलटा कर रखी वस्तु, उल्टी वस्तु।

औंधी समझ *स्त्री.* (तद्.) विपरीत बुद्धि, मंद गति, न समझने वाली बुद्धि।

औंधे मुँह *वि.* (तद्.) नीचे मुँह करके, मुँह के सहारे मुहा. औंधे मुँह गिरना- बहुत बुरी तरह गिरना।

औंस *स्त्री.* (तद्.) उमस, घुटनभरी गर्मी।

औंसना *स.क्रि.* (तद्.) उमस होना, गर्मी से व्याकुलता होना।

औकन *स्त्री.* (देश.) समूह, ढेर।

औकाई *स्त्री.* (देश.) वमन, उल्टी, उबकाई।

औकात *स्त्री.* (अर.) 1. हैसियत, बिसात 2. मान-मर्यादा, प्रतिष्ठा *पुं.* वक्त, समय मुहा. अपनी औकात पहचानना-खुद की कमी या कमजोरी का ज्ञान होना।

औकार *पुं.* (तत्.) 'औ' अक्षर, 'औ' की ध्वनि, 'औ' की मात्रा।

औखा *पुं.* (देश.) गाय का चमड़ा, गौ-चर्म, *वि.* कठिन, मुश्किल।

औखी *वि.* (देश.) गहरा, गंभीर, कठिनाई।

औगी *स्त्री.* (देश.) 1. चाबुक 2. जंगली जानवर फँसाने के लिए बना हुआ गड्ढा।

औगुन/औगुण *पुं.* (तद्.) अवगुण, दोष।

औगुनी *वि.* (तद्.) 1. जिसमें अवगुण हो, बुरा 2. दोषी।

औग्रय *पुं.* (तत्.) उग्र होने की स्थिति या भाव।

औघ *पुं.* (तत्.) जलप्लावन, बाढ़।

औघट *वि.* (तद्.) 1. कठिन, ऊँच-नीच, 2. ऊँचा-नीचा 3. अटपटा।

औघट घाट *वि.* (तद्.) कठिन मार्ग, दुर्गम पथ। मुहा. औघट घाट उतारना- विपत्ति में फँसाना, संकट में डालना।

औघड़ *पुं.* (तद्.) 1. अघोर मत को मानने वाला साधु, अघोर 2. काम में सोच-विचार न करने वाला, अविवेकी वि. 1. अनगढ़, अटपटा, अंड-बंड 2. विलक्षण, अनोखा।

औघड़दानी *वि.* (तद्.) अकारण दान देने वाला, मनमौजी दान देने वाला।

औघर *वि.* (देश.) आश्चर्यजनक, अद्भुत संगीत. आरोह-अवरोह से युक्त तान।

औचक *क्रि.वि.* (तद्.) अचानक, सहसा, अकस्मात् उदा. 'औचक ही देखी तहँ राधा, भाल विशाल लाल दिए गोली'- सूर।

औचट *स्त्री.* (देश.) 1. कठिनाई 2. संकट *क्रि.वि.* 1. अचानक 2. भूल से।

औचिंत *वि.* (तद्.) जिसे चिंता न हो, निश्चिंत।

औचिती *स्त्री.* (तद्.) उचित की स्थिति या भाव। औचित्य।

औचित्य *पुं.* (तत्.) 1. उचित होने का भाव या अवस्था, उपयुक्तता 2. सही मानने का कारण।

औचित्य प्रश्न *पुं.* (तत्.) राज. व्यवस्था या आदेश आदेश का प्रश्न।

औचित्य संप्रदाय *पुं.* (तत्.) काव्य. 1. 'औचित्य' को काव्य की आत्मा मानने वाला संप्रदाय या मत, औचित्यवाद का प्रवर्तन काव्यशास्त्र के आचार्य क्षेमेंद्र ने (ग्यारहवी. शती में) किया 2. औचित्य मतवाद के समर्थक आचार्यों का समुदाय।

औछ *स्त्री.* (देश.) दारू हल्दी की जड़ या गाँठ।

औछार *पुं.* (देश.) वृष्टि की झड़ी या बौछार।

औजना *अ.क्रि.* (देश.) कलश से किसी दूसरे पात्र में जल गिराना।

औजनि *स्त्री.* (देश.) दो हाथ लंबा पौधा जिसके पत्ते और बालें चिरचिटा की-सी होती है।

औजसिक *वि.* (तत्.) 1. ओजस्वी, ओजवाला 2. शक्तिमान 3. उत्साह वाला, जोशीला *पुं.* वीर पुरुष।

औजार *पुं.* (अर.) वे यंत्र जिनसे वैज्ञानिक, इंजीनियर, छात्र, लोहार आदि अपना काम करते हैं, हथियार, उपकरण, आला tool

औजारबंद हड़ताल *स्त्री.* (अर.) वह हड़ताल जिसमें कर्मचारी अपनी उपस्थिति तो दर्ज कराते हैं, पर काम नहीं करते tool down strike

औज्ज्वल्य *पुं.* (तत्.) उज्ज्वल होने की स्थिति, चमक, द्युति।

औझक *अव्य.* (देश.) औचक, अचानक, एकाएक।

औझड़/औझर *क्रि.वि.* (तद्.) अविराम, निरंतर, लगातार।

औटन *स्त्री.* (तद्.) द्रव पदार्थ को आग पर गरम करने की क्रिया, उबलना।

औटना *स.क्रि.* (तद्.) दूध, रस आदि को आँच देकर गाढ़ा करना, खौलना, देर तक उबलना।

औटपाय *पुं.* (देश.) नटखटपन, शरारत भरा काम, उद्दंडता, विपरीत आचरण।

औटाना *स.क्रि.* (देश.) आंच देकर गाढ़ा करना, उबालना।

औटी *स्त्री.* (देश.) 1. ईख का औटा हुआ रस 2. हल्दी, गुड़ आदि मिलाकर गाढ़ा पकाया हुआ दूध 3. गाय को ब्याने पर दी जाने वाली पुष्टई।

औडव *पुं.* (तत्.) 1. संगी. राग की तीन जातियों में से एक 2. खगो. तारों से संबंधित, नक्षत्रीय।

औड़ा *वि.* (देश.) प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ, उमड़ा हुआ।

औड़ा-बौड़ा *वि.* (देश.) अव्यवस्थित, उलटा-पुलटा।

औड़ी *वि.* (देश.) जिसमें तेजी या तीक्ष्णता हो, द्रुत, तीव्र।

औढर *वि.* (देश.) 1. मनमौजी 2. जिसका कुछ ठौर-ठिकाना न हो 3. चाहे जिधर ढल जाने वाला।

औढरदानी *पुं.* (देश.) उदारता के साथ मनमाने ढंग से बहुत अधिक देनेवाला।

औणी *स्त्री.* (देश.) 1. बैलगाड़ी में बैलों को नियंत्रित करने वाला उपकरण, चाबुक 2. हाथी को फँसाने के लिए गड्ढा।

औत *पुं.* (तद्.) 1. व्रण का भरना 2. विश्राम।

औतार *पुं.* (तद्.) दे. अवतार।

औतिक *वि.* (तत्.) ऊतक संबंधी, ऊतकों का।

औतिकी *स्त्री.* (तत्.) जीव. कोशिकाओं और ऊतकों की सूक्ष्म रचना और कार्य का ज्ञान करने वाला विज्ञान, ऊतक विज्ञान histology

औत्कंठ्य *पुं.* (तत्.) 1.उत्कंठा 2.चिंता 3. इच्छा।

औत्तरेय *पुं.* (तत्.) अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा का पुत्र, परीक्षित।

औत्तापिक *वि.* (तत्.) 1. जो उत्ताप से संबंधित हो 2. उत्ताप से उत्पन्न।

औत्पत्तिक *वि.* (तत्.) 1. जो उत्पत्ति से संबंधित हो 2. जन्म से ही, जन्मना।

औत्पातिक *वि.* (तत्.) 1. जो उत्पात से सम्बंधित हो 2. अशुभकारी।

औत्स *वि.* (तत्.) उत्पत्ति स्थल या मूल से संबंधित, स्रोत संबंधी।

औत्सर्गिक *वि.* (तत्.) 1. उत्सर्ग संबंधी 2. जो स्वाभाविक हो, (संस्कृत व्याकरण) ऐसा नियम जो साधारण रूप से सब जगह लागू होता हो।

औत्सुक्य *पुं* (तत्.) उत्सुक होने की अवस्था या भाव, उत्सुकता।

औथरो *वि.* (तद्.) जो गहरा न हो, ओथरा, छिछला, उथला।

औदर *वि.* (तत्.) 1. उदर-संबंधी 2. पाचन-संबंधी।

औदरिक *वि.* (तत्.) 1. उदर से सम्बंधित, पेट संबंधी 2. अधिक खाने वाला, पेटू।

औदार्य *पुं.* (तत्.) 1. उदारता 2. सात्विक नायक का एक गुण 3. अर्थगांभीर्य 4. महत्ता।

औदास्य *पुं.* (तत्.) 1. उदासीनता, उदासी 2. एकाकीपन, वैराग्य।

औदीच्य *वि.* (तत्.)उत्तर (उदीची) का रहने वाला, उत्तरी पुं. गुजराती ब्राह्मणों की एक उपजाति।

औदुंबर *वि.* (तत्.) 1.उदुंबर (गूलर) की लकड़ी से बना हुआ 2. गूलर की लकड़ी और फल 3. गूलर के अधिक वृक्षों वाला स्थल/प्रदेश 4.ताम्र धातु।

औद्धत्य *पुं.* (तत्.) 1. उग्रता, अक्खड़पन 2. ढिठाई, धृष्टता।

औद्भिद *पु.* (तत्.) प्राकृतिक स्रोत का जल *वि.* पृथ्वी से उपलब्ध।

औद्भिदजल *पुं.* (तत्.) पृथ्वीतल से धारा रूप में प्रवहमान जल, स्रोत, पानी का स्रोत।

औद्भिदलवण *पुं.* (तत्.) सैंधव लवण, सेंधा नमक।

औद्योगिक *वि.* (तत्.) उद्योगसंबंधी।

औद्योगिक अपशिष्ट *पुं.* (तत्.) औद्योगिक (रासायनिक, कोयला आदि से संबंधित) कूड़ा-करकट।

औद्योगिक अशांति *स्त्री.* (तत्.) औद्योगिक प्रतिष्ठान के कर्मचारियों, श्रमिकों में उत्पन्न असंतोष का भाव।

औद्योगिक कला *स्त्री.* (तत्.) वह कला जो व्यापारिक वस्तुओं को आकर्षण पूर्ण बनाने के लिए प्रयोग में लाई जाती है, ललित कला से भिन्न होती है।

औद्योगिक कल्याण *पुं.* (तत्.) औद्योगिक प्रतिष्ठान में कार्यरत कर्मचारियों के लिए किया जाने वाला कल्याण कार्य।

औद्योगिक क्रांति *स्त्री.* (तत्.) 1. अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में यूरोपीय देशों के उद्योग में हुए क्रांतिकारी परिवर्तन 2. उद्योग-क्षेत्र में द्रुतगामी प्रगति। industrial revolution

औद्योगिक न्यायालय *पुं.* (तत्.) औद्योगिक प्रतिष्ठानों के विवाद सुलझाने के लिए सरकारी न्यायालय।

औद्योगिक बस्ती *स्त्री.* (तत्.) प्रशा. वह क्षेत्र जहाँ जहाँ सरकार ने उद्योग को स्थापित करने के लिए जमीन तथा अन्य बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध कराई हों। industrial estate

औद्योगिक मनोविज्ञान *पुं.* (तत्.) उद्योगों में मनोवैज्ञानिक नियमों के उपयोग के लिए व्यावहारिक मनोविज्ञान की एक शाखा।

औद्योगिक रसायन *पुं.* (तत्.) रसायन विज्ञान का का वह भाग, जो वस्तुओं के औद्योगिक निर्माण से सम्बंधित विषयों का अध्ययन प्रस्तुत करता है।

औद्योगिक समाजशास्त्र *पुं.* (तत्.) समाज शास्त्र शास्त्र की एक शाखा जो समाज में उद्योगों के उद्भव, विकास, पुनर्गठन, उत्पादन, उपभोग, वितरण और सामाजिक व्यवस्था के साथ उद्योगों के संबंधों का समाजशास्त्रीय सिद्धांतों और पद्धतियों से विश्लेषण करती है।

औद्योगिकीकरण *वि.* (तत्.) उद्योग स्थापित करने करने की प्रक्रिया, उद्योगों के विस्तार का कार्य या योजना। industrialization

औद्वाहिक *वि.* (तत्.) विवाह से संबंध रखने वाला वाला *पुं.* विवाह में प्राप्त धन या भेंट।

औद्विभज्ज *वि.* (तत्.) भूमि से प्राप्त। पुं. सेंधा नमक।

औधान *पुं.* (तद्.) 1. धारण करने की क्रिया या अवस्था 2. धारण किया हुआ गर्भ।

औन *पुं.* (तद्.)1. धरती, जगह, गृह, मकान 2. न्यून।

औना-पौना *वि.* (देश.) तीन चौथाई हिस्सा। थोड़ा बहुत। मुहा. औने-पौने निकालना या बेचना-हानि उठाकर भी विक्रय कर देना।

औनिपति *पुं.* (तद्.) अवनीपति, धरती का स्वामी, राजा।

औपक्रमिक *वि.* (तत्.) 1. किसी कार्य या अनुष्ठान से पहले की जाने वाली तैयारियाँ 2. उपक्रम के रूप में होने वाला।

औपचारिक *वि.* (तत्.) 1. उपचार मात्र के लिए, दिखावटी, बनावटी 2. विधि के अनुसार, नियमानुसार।

औपचारिक संगठन *वि.* (तत्.) निर्धारित नियमों और अधिकारों से संपन्न सामूहिक संगठन।

औपचारिकता *स्त्री.* (तत्.) प्रथा या कानून के अनुसार की जाने वाली आवश्यक कार्रवाई, औपचारिक होने की क्रिया या भाव।

औपदेशिक *वि.* (तत्.) उपदेश संबंधी पुं. शिक्षण-कार्य से प्राप्त राशि, उपदेश या शैक्षिक कार्य से जीविका कमाने वाला।

औपनिवेशिक *पुं.* (तत्.) 1. उपनिवेश से संबंधित 2. उपनिवेश में रहने वाला।

औपनिवेशिक स्वराज्य *पुं.* (तत्.) किसी साम्राज्य के अधीन उपनिवेश के रूप में स्थापित अन्य देश को मिली आंतरिक किंतु सीमित स्वाधीनता।

औपनिषद *वि.* (तत्.) 1. उपनिषद् संबंधी 2. उपनिषद् पर आश्रित 3. उपनिषद् का अनुयायी।

औपनिषदिक *वि.* (तत्.) 1. उपनिषद् संबधी 2. उपनिषदों जैसा।

औपन्यासिक *वि.* (तत्.) उपन्यास-विषयक, विलक्षण *पुं.* उपन्यासकार।

औपपत्तिक *वि.* (तत्.) 1. जो तर्क द्वारा सिद्ध हो हो 2. कल्पना पूर्ण हो

औपयोगिक *वि.* (तत्.) उपयोग से संबंधित।

औपवासिक *वि.* (तत्.) जो व्यक्ति उपवास कर सकता हो, उपवास के उपयुक्त।

औपशमिक *वि.* (तत्.) 1. शमन करने वाला 2. शांति देने वाला।

औपश्लेषिक *वि.* (तत्.) विशेष अनुराग रखने वाला, घनिष्ठ संबंध रखने वाला।

औपसर्गिक *वि.* (तत्.) 1. उपसर्ग से संबंधित 2. संक्रमणशील 3. जो विपत्ति का सामना कर सके।

औपहारिक *वि.* (तत्.) 1. जो उपहार के योग्य हो 2. उपहार संबंधी।

औपाधिक *वि.* (तत्.) 1. उपाधि से सम्बंधित 2. सापेक्ष।

औम-तिथि *स्त्री.* (तत्.) 1. अवम तिथि 2. वह तिथि जो सूर्योदय के बाद प्रारंभ होकर अगले दिन के सूर्योदय से पहले समाप्त हो जाय।

औरंग *पुं.* (तद्.) 1. मक्का, ज्वार, बाजरा आदि के पौधों में लगने वाला एक रोग जिसमें पौधे के डंठलों पर सफेद दाग पड़ जाते हैं 2. (फा.) 1. राजसिंहासन 2. बुद्धिमत्ता 3. मुगलसम्राट औरंगजेब के नाम का संक्षिप्त रूप।

और (संयोजक) *अव्य.* (तद्.) दो शब्दों, पदों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़नेवाला संयोजक (संबंधबोधक) सर्व. अन्य कोई, दूसरा।

औरत *स्त्री.* (अर.) 1. स्त्री, महिला 2. पत्नी।

औरन *सर्व.* (तद्.) और का बहुवचन रूप।

औरस *पुं.* (तत्.) अपनी पत्नी से उत्पन्न पुत्र, *वि.* जो अपनी पत्नी से उत्पन्न हो, वैध, जायज।

औरी-बौरी *स्त्री.* (अनु.) बौराई या पागल स्त्री।

औरे *अव्य.* (देश.)अन्य ही, और ही, कुछ अनोखा उदा. वो चितवन औरे कछु।

औरेब *पुं.* (तद्.) 1. तिरछापन, टेढ़ापन, वक्रता 2. कपड़े की तिरछी काट 3. पेंच, चाल 4. कठिनाई, संकट 5. दोष।

और्ण/और्णिक *वि.* (तत्.) 1. ऊन से संबंधित, ऊनी, ऊन से निर्मित।

और्ध्वदेह *पुं.* (तत्.) अंत्येष्टि, प्रेतकर्म।

और्ध्वदेहिक/और्ध्वदैहिक *वि.* (तत्.) जो मृत व्यक्ति से संबंधित हो *पुं.* मरे हुए व्यक्ति के लिए किया गया (कृत्य), मरने के बाद किए जाने वाले कर्म अंत्येष्टि आदि।

और्व *वि.* (तत्.) 1. भूमि से उत्पन्न 2. भूमि से संबंधित पु. 1. बड़वाग्नि। 2. एक भृगुवंशी ऋषि का नाम।

और्वशेय *पुं.* (तत्.) 1. उर्वशी का पुत्र 2. अगस्त्य या वशिष्ठ।

औल *पुं.* (देश.) 1. गड्ढा, खाई 2. गुफा।

औलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. गरमी सहना 2. तप्त होना। *स.क्रि.* 1. तपाना 2. क्लेश देना।

औलाद *स्त्री.* (अर.) संतति, पुत्र-पुत्री आदि।

औलिया *पुं* (अर.) वली का बहुवचन, मुसलमानों के सिद्‌ध पुरुष, फकीर, संत, महात्मा।

औली *स्त्री.* (तद्.) कृषि की नई फसल से लाया गया अन्न, नवान्न।

औलूक्य *पुं.* (तत्.) 1. उलूक की संतान 2. (वैशेषिक दर्शन के प्रणेता) कणाद मुनि।

औशनस *वि.* (तत्.) 1. शुक्राचार्य से संबंधित 2. शुक्राचार्य का शिष्य 3. शुक्राचार्य द्वारा रचित शास्त्र (शुक्रनीति)।

औशनसी *स्त्री.* (तत्.) शुक्राचार्य की पुत्री (देवयानी) 2. शुक्रनीति नामक पुस्तक।

औशीर *पुं.* (तत्.) खस (उशीर) की जड़ 2. खस का लेप 3. (खस की) चटाई 4. पंखें या चँवर की डंडी। वि. उशीर (खस) का, उससे संबंधित।

औषध *स्त्री.* (तत्.) दवा, औषधि, जड़ी-बूटी।

औषध निघंटु *पुं.* (तत्.) चिकित्सा में काम आने वाली औषधियों का अध्ययन, औषध-निघंटु में औषधि-विज्ञान, भेषजी, औषधि-गुणविज्ञान और चिकित्सा शास्त्र सम्मिलित हैं।

औषधशाला *स्त्री.* (तत्.) औषधि बनाने या बेचने का भंडार। pharmacy

औषधालय *पुं* (तत्.) (वह स्थान जहाँ दवाएँ बनती/बिकती या रोगियों को दी जाती है।

औषधि *स्त्री.* (तत्.) दवा के रूप में प्रयुक्त कोई पदार्थ, भेषज, औषध। drug

औषधीय *वि.* (तत्.) 1. औषधि से सम्बंधित 2. जड़ी-बूटी वाली औषधि।

औषधोपचार *पुं.* (तत्.) औषधि द्वारा चिकित्सा, दवा-दारु, दवाई से इलाज।

औष्ट्र *वि.* (तत्.) जो ऊँट (उष्ट्र) से संबंधित हो, ऊँट ऊँट का।

औष्ट्ररथ *पुं.* (तत्.) ऊँट द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी।

औष्ट्रिक *वि.* (तत्.) ऊँट से उत्पन्न होने वाला, ऊँट से प्राप्त होने वाला।

औष्ठ्य *वि.* (तत्.) 1. ओठ संबंधी 2. जिस अक्षर का उच्चारण ओठ से होता है उसे औष्ठ्य वर्ण कहते हैं। प,फ आदि प वर्ग के अक्षर इस श्रेणी में आते हैं।

औसत *पुं.* (अर.) 1. एक से अधिक राशियों के योग को उनकी संख्या से भाग देने पर प्राप्त होने वाली राशि 2. सामान्य स्तर।

औसत आय *स्त्री.* (अर.+तत्.) किसी उत्पाद की कुल संख्या या मात्रा की बिक्री से प्राप्त होने वाली कुल आमदनी को उस वस्तु की बिक्री इकाइयों से भाग देने पर एक इकाई से प्राप्त आय।

औसतन *क्रि.वि.* (अर.) 1. सामान्य रूप से 2. साधारणतः 2. औसत के रूप में

औसना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ज्यादा उमस होना 2. फलों का भूसा या गर्त्तों के अंदर पकना 3. खाद्य पदार्थों का देर तक रखे रहने से सड़ना।

औसर *पुं.* (तद्.) अवसर, मौका, समय।

औसान *पुं.* (अर.) चेतना, होश, सुध-बुध (तद्.) 1. अंत 2. परिणाम।

औसाना *स.क्रि.* (देश.) कच्चे फलों को भूसा में रखकर पकाना।

औसेर *स्त्री.* (देश.) 1. उलझन, अटकने का भाव, अटकाव 2. देर, विलंब 3. चिंता।

औसेरना *अ.क्रि.* (देश.) 1. उलझन में पड़ना 2. देर करना 3. दुखी होना।

औहठी *वि.* (देश.) खराब हठ करने वाला, दुःसाहसी।

औहत *स्त्री.* (तद्.) 1. अकालमृत्यु 2. दुर्दशा, दुर्गति।

क

देवनागरी वर्णमाला का पहला व्यंजन। क वर्ग का पहला वर्ण। उच्चारण स्थान कंठ।

कंकड़ *पुं.* (तद्.) 1. पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े, रोड़ी 2. पत्थर का छोटा टुकड़ा मुहा. कंकड़, पत्थर- बेकार की चीज।

कंकड़ी *स्त्री.* (तद्.) छोटा कंकड़ दे. कंकरी।

कंकण *पुं.* (तत्.) कलाई में पहनने का एक आभूषण, कंगन, कड़ा, चूड़ा।

कंकरीट *पुं.* (अं.) चूना, सीमेंट, कंकड़, बजरी, बालू आदि के मिश्रण से बना, मसाला, बजरी।

कंकाल *पुं.* (तत्.) शरीर की हड्डियों का ढाँचा, ठठरी।

कंकालशेष *वि.* (तत्.) 1. जो हड्डियों का ढाँचा मात्र रह गया हो 2. अतिकृश।

कंगन *पुं.* (तद्.) दे. कंकण मुहा. हाथ कंगन को आरसी क्या- प्रत्यक्ष बात के लिए किसी प्रमाण की जरूरत नहीं *स्त्री.* (देश.) 1. हाथ में पहनने का छोटा कंगन 2. द्वारों के उपरी भाग में शोभा शोभा के लिए बनाई गई पट्टी (तद्.) 3. वर्षा-ऋतु में खेतों में बोया जाने वाला एक प्रकार का अनाज, जिसकी बालियों में छोटे दाने निकलते हैं। corrice

कंगारू *पुं.* (अं.) बड़े आकार का एक पादप-आहारी पशु जिसकी पिछली टाँगे बहुत मजबूत होती हैं, लंबी मोटी पूँछ होती है और जो अपने शिशु को पेट के बाहर बनी जेब जैसी थैली में रखता है, यह ऑस्ट्रेलिया में पाया जाता है तथा वहाँ का राष्ट्रीय पशु है। kangaroo

कंगाल *वि.* (तद्.) 1. जिसके पास सामान्य रूप से जीवनयापन के लिए धन का अभाव हो पर्या. निर्धन, गरीब।

कंगाली *स्त्री.* (तद्.) अति निर्धनता, धनहीनता मुहा. कंगाली में आटा गीला होना- अभाव की दशा में और अधिक (आर्थिक) संकट सहना।

कंगूरा/कंगूरा *पुं.* (फा.कुंगर) बुर्ज या गुंबद 1. भवन के ऊपर का शिखर 2. किले की दीवार पर चारों ओर ऊँचाई पर चोटी पर बने सुरक्षात्मक स्थान।

कंघा *पुं.* (तद्.) लकड़ी या प्लास्टिक की बनी वस्तु जिसमें लंबे-लंबे पतले दाँत होते हैं, जिससे सिर के बाल संवारे, झाड़े या साफ किए जाते हैं।

कंघी *स्त्री.* (तद्.) छोटा कंघा मुहा. कंघी चोटी करना (स्त्रियो का) -बनाव-सिंगार करना 2. एक प्रकार का जंगली पौधा।

कंचन *पुं.* (तत्.) 1. सोना, सुवर्ण 2. धन 3. धतूरा 4. एक प्रकार का कचनार मुहा. कंचन बरसना- अपार धन-दौलत होना (वि.) 1. सोने के रंग का 2. सुंदर, स्वच्छ 3. नीरोग, स्वस्थ।

कंचुक *पुं.* (तत्.) 1. प्राचीन काल में घुटनों तक पुरुषों द्वारा पहना जाने वाला एक विशेष वस्त्र, आधुनिक युग में कुर्ता 2. स्त्री की अंगिया या चोली 3. जामा, चोलक 4. बख्तर 5. साँप की केंचुली 6. भूसी या छिलका 5. पोशाक।

कंचुकी *पुं.* (तत्.) 1. स्त्रियों का वस्त्र, चोली, अंगिया 2. अंतःपुर का रक्षक द्वारपाल 3. साँप 4. (ट्यूनिकेटा वर्ग का) प्राणी जिसके शरीर पर कवच या खोल होता है।

कंचुकी बंद *स्त्री.* (तत्+फा.) चोली का बंधन।

कंज *पुं.* (तत्.) जल में उत्पन्न होने वाला 1. एक पौधा कमल 2. केश 3. ब्रह्मा 4. अमृत।

कंजई *वि.* (तद्.) कंजा की फली जैसे रंग का, खाकी।

कंजक *पुं.* (तत्./तद्.) 1. पक्षी विशेष कोयल, मैना 2. कन्यक, नवरात्रों में कन्या पूजन के अर्थ में प्रयुक्त।

कंजड़ी *स्त्री.* (तद्.) कंजर जाति की स्त्री।

कंजर/कंजड़ *पुं.* (तद्.) 1. वनों आदि में घूम फिर कर सांप, गोह, मधुमक्खी का शहद आदि प्राप्त कर जीविका चलाने वाली एक मानव जाति, या उसका एक व्यक्ति 2. सूर्य 2. हाथी 2. उदर 2. ब्रह्मा 2. मोर।

कंजरवेटिव *वि.* (अं.) कंजर्वेटिव, रूढिवादी, परंपरावादी 2. अनुदार 3. ब्रिटेन का एक राजनीतिक दल। conservative

कंजा *स्त्री.* (तद्.) 1. एक कँटीली झाड़ी, करंज 2. गहरा खाकी रंग *पुं.* भूरे नयनों वाला व्यक्ति 3. देश. बेल के रूप में फैली पीली मंजरी वाली घास।

कंजूस *पुं.* (देश.) जो धन का भोग न करे, कृपण, सूम, मक्खीचूस।

कंजूसी *स्त्री.* (देश.) कृपणता, उदारता का अभाव। कंजूस होने का भाव।

कंटक *पुं.* (तत्.) 1.काँटा 2. कार्य में होने वाली बाधा/विघ्न, बखेड़ा, रोमांच 3. बबूल आदि पेड में होने वाला नुकीला अंकुर।

कंटूनमेंट *पुं.* (अं.) सैन्य दल जहाँ एकत्रित होकर रहता है, छावनी, कटक।

कंट्रैक्ट *पुं.* (अं.) 1. अनुबंध या संविदा के आधार पर दिया जाने वाला किसी कार्य को करने का ठेका 2. इकरारनामा।

कंट्रैक्टर *वि.* (अं.) ठेकेदार, संविदाकार। contractor

कंट्रोल *पुं.* (अं.) 1. नियंत्रण, काबू 2. किसी वस्तु की समुचित व्यवस्था के लिए सरकारी अधिकार।

कंठ *पुं.* (तत्.) गला 1. गले के अंदर का वह स्वर यंत्र जिससे आवाज निकलती है 2. *वि.* याद किया गया, मुहा. कंठ फूटना- आवाज खुलना, मुंह से शब्द निकलना।

कंठतालव्य *वि.* (तत्.) वह वर्ण जिसका उच्चारण कंठ और तालु स्थानों से मिलकर हो, 'ए' और 'ऐ' कंठतालव्य वर्ण हैं।

कंठ संगीत *पुं.* (तत्.) वाद्य की अपेक्षा मुख से गाया गया गीत।

कंठस्थ *वि.* (तत्.) 1. जबानी याद होना 2. किनारे या तट के पास पर्या. कंठगत।

कंठहार *पुं.* (तत्.) हार, गले का हार, आभूषण। necklace

कंठाग्र *वि.* (तत्.) [कंठ+अग्र] जबानी याद किया हुआ, कंठस्थ।

कंठोष्ठ्य *पुं.* (तत्.) वह ध्वनि या वर्ण जो एक साथ कंठ और ओठ के सहारे बोला जाए, 'ओ' और 'औ' कंठोष्ठ्य वर्ण कहलाते हैं।

कंठ्य *वि.* (तत्.) 1. गले से उत्पन्न, जिसका उच्चारण कंठ से किया जाए *पुं.* ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण कंठ से होता है जैसे- हिंदी में अ, क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्ग।

कंडम *वि.* (अं.) निकम्मा ठहराना, निंदा करना 1. बेकार 2. दोषित 3. निंदित 4. क्षतिग्रस्त। condemn

कंडरा *स्त्री.* (तत्.) अस्थि में पेशी के रूप में अंतर्ग्रथित दृढ़ रेशेदार ऊतक रज्जु। tendon

कंडा *पुं.* (तद्.) 1. सूखा गोबर जो ईंधन के काम आता है 2. गोबर पाथकर बनाया गया विशेष ईंधन, उपला।

कंडिका *(स्त्री.)* (तत्.) 1. छोटे रूप में संग्रहीत वैदिक ऋचाएँ 2. अध्याय।

कंडील *पुं.* (अर.) कंदील, मिट्टी या पारदर्शी कागज की बनी हुई लालटेन जिसमें दीया जलाकर लटकाते हैं।

कंत *पुं.* (तत्.) पति, स्वामी, प्रेमी, ईश्वर।

कंथा *स्त्री.* (तत्.) गुदड़ी, फटे-पुराने कपड़ों को सिल कर बनाया गया (ओढ़ने या बिछाने का) कपड़ा, कथरी।

कंद *पुं.* (तत्.) वह जड़ जो गूदेदार हो और बिना रेशे की हो जैसे- सूरन, मूली, शकरकंद।

कंदमूल *पुं.* (तत्.) कंद वाली जड़, ऐसा पौधा जिसकी जड़ गोल, मोटी और गूदेदार होती है।

कंदरा *स्त्री.* (तत्.) पर्वत के मध्य पाया जाने वाला एक विशेष रिक्त स्थान (गुफा), गुहा, घाटी।

कंदर्प *पुं.* (तत्.) कामदेव, प्राणियों के अंदर कामभाव को उत्पन्न करने वाला देवता।

कंदुक *पुं.* (तत्.) गेंद।

कंधा *पुं.* (तद्.) मनुष्य के शरीर का वह अस्थियुक्त भाग जो गले और भुजाओं के बीच में होता है मुहा. कंधा देना- अरथी में कंधा लगाना, सहारा देना।

कंधार *पुं.* (तद्.) 1. गर्दन, ग्रीवा 2. गांधार, कंदहार, अफगानिस्तान का एक नगर और प्रदेश का नाम।

कंधारी *वि.* (तद्.) जो कंधार देश में उत्पन्न हुआ हो, कंधार का, जैसे- कंधारी घोड़ा या अनार।

कंपकंपी *स्त्री.* (तद्.) दे. कंपन।

कंपनी *स्त्री.* (अं.) 1. कोई व्यावसायिक प्रतिष्ठान 2. (सैन्य) बटालियन की सबसे छोटी इकाई 3. संगति। company

कंपमान *वि.* (तत्.) हिलता हुआ, काँपता हुआ।

कंपा *स्त्री.* (देश.) बाँस की पतली-पतली तीलियाँ जिनमें लासा लगाकर चिड़ियों को फँसाते हैं।

कंपाउंड *पुं.* (अं.) 1. अहाता, चारदीवारी के अंदर की खुली जगह 2. दवाइयों का मिश्रण।

कंपाउंडर *पुं.* (अं.) डाक्टर/चिकित्सक का सहायक।

कंपायमान *वि.* (तत्.) हिलता हुआ, कंपित।

कंपास *पुं.* (अं.) कुतबनुमा, दिशासूचक उपकरण, दिक्सूचक।

कंपित *वि.* (तत्.) 1. काँपता हुआ 2 अस्थिर।

कंपीटीशन *पुं.* (अं.) किसी विषय में दो या दो से अधिक वर्गों/दलों के मध्य होने वाली स्पर्धा, प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता, होड़।

कंपोज करना *स.क्रि.* (अं.) शब्दों और वाक्यों के अनुसार टाइप के अक्षरों को जोड़ना, अक्षर-योजन।

कंपोजिंग *पुं.* (अं.) दे. कंपोज करना।

कंबल *पुं.* (तत्.) ऊन का बना हुआ मोटा वस्त्र।

कंसर्ट *पुं.* (अं.) अनेक गायकों-वादकों द्वारा संगीत की सार्वजनिक प्रस्तुति।

कँकड़ीला *वि.* (तद्.) कंकड़ युक्त।

कँखवारी *स्त्री.* (तद्.) बगल या काँख में उठा हुआ कष्टप्रद फोड़ा।

कँखिया *स्त्री.* (तद्.) 'काँख' (तत्.-कक्ष) का देशज या तद्भव रूप, बाहुमूल के नीचे की ओर का गड्ढा, बगल उदा. एक कहत मोहि सकुच अति रहा बालि की काँख -मानस।

कँखौरी *स्त्री.* (तद्.) दे. कँखवारी।

कँगना *पुं.* (तद्.) 'कंकण' 1. कलाई या पहुँचे में पहने जाने वाला चाँदी, सोने या अन्य धातु का गोलाकार आभूषण 2. वह मांगलिक-धागा जो वर और वधू को विवाह के अवसर पर उसकी कलाई में बाँधा जाता है और जिसमें लोहे का छल्ला और राई नमक आदि रखे जाते हैं और यह कलावे का बना होता हैं 3. कड़ा, वलय 4. वह गीत जो कंगन बाँधते या खोलते समय गाया जाता है।

कँगनी *स्त्री.* (तद्.) 1. छोटा कंगन, ('कँगना' का स्त्री.) 2. छोटे दानों वाला मोटा अनाज जो वर्षा ऋतु में बो कर मात्र तीन महिनों में पक जाता है तथा इसके दाने लाल, पीले, सफेद तथा काले रंगों के होते हैं इसे 'कँगनी' या 'कँगुनी' कहते है। 3. छत या छाजन के नीचे दीवार में उकेरी या उभरी हुई लकीर जो प्रायः सुंदरता के लिए बनाई जाती है, कगर, कार्निस 4. बाहरी किनारों पर दाँत या नुकीले कँगूरों वाला गोल चक्कर।

कँगला *वि.* (तद्.) 1. दीन और अत्यंत गरीब, भुखमरा, भूखा तथा विपत्ति या अकाल का मारा

2. दरिद्र *पुं.* (तद्.) दीन, दरिद्र तथा विपत्ति का मारा हुआ व्यक्ति।

कँघेरा *पुं.* (तद्.) कंघा बनाने वाला व्यक्ति।

कँचेरा *पुं.* (तद्.) काँच की वस्तुएँ, बर्तन, चूड़ी आदि बनाने वाला व्यक्ति।

कँजियाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. अंगारे का ठंडा पड़ जाना, काला पड़ जाना 2. नेत्रों या आँखों का हल्के नीलेपन के साथ काला होना।

कँटकारा *पुं.* (तत्.) कँटकार 1. सेमल 2. एक तरह का काँटेदार बबूल।

कँटकारी *स्त्री.* (तत्.) 1. भटकटैया, कटहरी (कटेरी) 2. सेमल, छोटी कटाई।

कँटिया *स्त्री.* (देश.) 1. मछली फँसाने की बंसी 2. इमली की बीजरहित छोटी फलियाँ 3. अंकुश, छोटी कील 4. सिर का एक गहना।

कँटियाना *स.क्रि.* (देश.) काँटे में फँसाना 2. पौधे में काँटे आने की अवस्था 3. काँटा-युक्त होना।

कँटीला *वि.* (देश.) काँटेदार, काँटों वाला।

कँटेरी *स्त्री.* (तद्.) भटकटैया, कटेहरी।

कँड़हारा *पुं.* (तद्.) कर्णधार, नाविक, मल्लाह (खेने वाला) माँझी।

कँदला *पुं.* (देश.) तारकशों द्वारा तार बनाने के लिए लिए प्रयुक्त चांदी की लंबी छड़ या गुल्ली। पासा, पासा, रैनी, गुल्ली, 2. सोने या चाँदी का पतला तार प्रयो. कँदला गलाना, चाँदी और सोने के टुकड़ों को मिलाकर गलाना।

कँदैला *वि.* (तद्.) पंकिल, कीचड़ युक्त, मैला, गंदा, गँदला।

कँधावर *स्त्री.* (तद्.) 1. कंधे पर डाली हुई चादर 2. 2. किसी चीज को कंधे पर लटकाने के लिए प्रयोग की गई रस्सी 3. हल या गाड़ी के जुए के वे भाग जो बैलों के कंधों पर रखे जाते हैं।

कँधियाना *स.क्रि.* (देश.) 1. कँधे पर रखना, कँधे पर उठाकर किसी को सहारा देना 3. किसी कारण से बैल के कंधे का सूज जाना (कंधा आ जाना या कँधिया जाना)।

कँधेला *पुं.* (तद्.) कंधे पर डाला जाने वाला महिलाओं की साड़ी का हिस्सा या भाग।

कँधैया *स्त्री.* (तद्.) 1. बच्चों को कंधे पर बैठाकर ले जाने की क्रिया अथवा भाव 2. कंधा 3. कंधा देने या कंधे पर बिठाकर ले जाने वाला व्यक्ति।

कँधोली *स्त्री.* (तद्.) बैल या घोड़े आदि की पीठ को को छिलने से बचाने के लिए सामान लादने से पहले रखी जाने वाली वस्तु या साज।

कँप/कंपन *पुं.* (तत्.) कँपकँपी, थरथराहट, ठंड या भय आदि के कारण शरीर में अंगों का बारबार हिलना।

कँप-कँप *क्रि.वि.* (तद्.) काँप-काँप कर, कंपित होते हुए उदा. "कँप-कँप हिलोर रह जाती रे मिलता नहीं किनारा"

कँपकँपी *स्त्री.* (तद्.) काँपना, कंपना 2. भय या अन्य कारणों से शरीर के अंगों का थरथराना, काँपना कँपकपी छूटना- अत्यंत भयभीत होना।

कँपना *अ.क्रि.* (तद्.) काँपना, कंपन होना *पुं.* (तद्.) कंपन, 'कँपकपी'।

कँपनी *स्त्री.* (तद्.) कँपकँपी, काँपना, कंपन होना, कंपन।

कँपाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. किसी को काँपने हेतु प्रेरित या विवश करना 2. हिलाना-डुलाना 3. भयभीत करना, डराना 4. दहला देना।

कँबनी *वि.* (तद्.) कमनीय, सुंदर।

कँबरी *स्त्री.* (देश.) 1. पचास पानों की गड्डी (प्रायः पान बेचने वाले लोगों द्वारा इस अर्थ में प्रयुक्त शब्द)।

कँवर *पुं.* (तद्.) 'कुँवर'। 1. सम्मानार्थक उपाधि के रूप में प्रयुक्त शब्द यथा- 'कँवर-राजेन्द्र सिंह *स्त्री.* *स्त्री.* कँवरी (कुमारी)।

कँवरी *स्त्री.* (देश.) (तत्.-'कुमारी') केशों की चोटी, कवरी।

कँवल *पुं.* (तद्.) 'कमल'।

कँवलघट *पुं.* (तद्.) कमलगट्टे का छत्ता उदा. विहंसहि हँसहिं कँवलघट तोरहिं -मृगावती-कुतुबन।

कँवलाकंत *पुं.* (तद्.) कमलाकांत, लक्ष्मी के पति, विष्णु, ईश्वर उदा. जहाँ पउड़े श्री कँवला कंत-कबीर।

कँवा *पुं.* (देश.) मुर्गी से कुछ बड़े तथा बतख से कुछ छोटे आकार का जलबोदरी पक्षी उदा. "गुडरु कँवा खचियन भरे"- चंदायन- दाऊद 154/1।

कँवासा *पुं.* (देश.) पुत्री के पुत्र का बेटा अर्थात् पुत्री का पौत्र, परनाती।

ककहरा *पुं.* (देश.) 1. क से ह तक वर्णमाला 2. बच्चों को पढना सिखाने के लिए एक विशेष प्रकार की कविता उदा. क का कमल किरन में पावे, ख खा चाहै खोरि मनावै।

ककार *पुं.* (तत्.) 'क' अक्षर या उसकी ध्वनि।

कक्ष *पुं.* (तत्.) 1. काँख, बगल 2. कछार, कच्छ 3. जंगल 4. सूखी घास 5. कमरा 6. आंगन 7. धोती का छोर।

कक्षा *स्त्री.* (तत्.) 1. श्रेणी 2. परिधि 3. ग्रह के परिभ्रमण का मार्ग 4. देहली 5. काँछ 6. एक तौल, रत्ती 8. कमर 9. कटिबंध 10. प्राचीर 11. करधनी।

कगार *पुं.* (देश.) 1. नदी का ऊँचा किनारा 2. ऊँचा और ढलवाँ टीला।

कच *पुं.* (तत्.) 1. बाल (सिर का) 2. पपड़ी 3. झुंड 4. बादल 5. बृहस्पति का पुत्र 6. सुगंधवाला।

कचकच *पुं.* (अनु.) वाग्युद्ध, बकवाद।

कचकचाना *अ.क्रि.* (देश.) दे. किचकिचाना।

कचनार *पुं.* (तद्.) पतली-पतली डालियों वाला एक छोटा पेड़, इसकी कली की सब्जी बनती है, लेग्यूमिनोसी कुल का पादप 'बहूनिया बैरिगेटा लिन', इसकी छाल तथा पुष्प रक्त पित्त, रक्त प्रदर आदि रोगों के लिए लाभकारी हैं।

कचपच *पुं.* (देश.) थोड़े सी जगह में बहुत चीजों या लोगों का भर जाना, गिचपिच।

कचरकचर *पुं.* (देश.) मूली, गाजर आदि कच्चा भोजन करने पर निकलने वाली आवाज।

कचरा *पुं.* ((देश.) कूड़ा-करकट (लाक्ष.अर्थ.) निकृष्ट, अनुपयोगी वस्तु।

कचरी *स्त्री.* (देश.) 1. ककड़ी जाति की एक बेल, पेहँटा, पेहटुल 2. सब्जियों के पतले-पतले टुकड़े और उनकी सब्जी 3. चावल से बनी सूखी सेव।

कचहरी *स्त्री.* (तद्.) 1. न्यायालय 2. दरबार 3. गोष्ठी मुहा. कचहरी चढ़ना-अदालत तक मामला ले जाना।

कचालू *पुं.* (देश.) एक कंदीय जड़ वाला एक पौधा जिसकी कंद तरकारी या चाट के रूप में खाई जाती है; टैरो, बंडा, अरबी, घुंइयां

कचूमर *पुं.* (देश.) कुचल कर बनाई गई वस्तु 2. अचार 3. मसौदा मुहा. कचूमर करना या निकालना 1. खूब कूटना पीटना, चूर चूर करना 3. नष्ट करना।

कचोट *स्त्री.* (देश.) रह रहकर बार बार होनेवाली वेदना, भीतरी पीड़ा, चुभन।

कचोटना *अ.क्रि.* (देश.) 1. किसी की याद में दुःखी होना 2. कोई बात मन में चुभना 3. मानसिक पीड़ा होना ।

कचौड़ी (कचौरी) *स्त्री.* (देश.) दाल आदि की पीठी से भरी पूरी।

कच्चा *वि.* (तद्.) 1. बिना पका हुआ, अपक्व 2. अपरिष्कृत।

कच्चा घड़ा *पुं.* (तद्.) वह घड़ा जिसे पकाया न गया हो (लाक्ष.) फिलहाल संस्कार हीन (बालक)।

कच्चा चिट्ठा *पुं.* (देश.) 1. गुप्त वृत्तांत, व्यक्तिगत जीवन के रहस्य मुहा. कच्चा चिट्ठा खोलना- गुप्त बातें बता देना 2. वाणि. तलपट, अंतिम खाता बनाने से पहले का लेखा। trial balance

कच्चा पड़ना *अ.क्रि.* (देश.) झूठा ठहरना, गलत सिद्‌ध होना।

कच्चापन *पुं.* (देश.) कच्चे होने की स्थिति या अपरिपक्वता।

कच्ची गोली *स्त्री.* (देश.) मिट्‌टी की गोली जो पकाई न गई हो मुहा. कच्ची गोली खेलना- अनाड़ीपन या अनुभवहीनता या तजुरबे का काम करना जो भविष्य में नुकसानकारक हो।

कच्ची नकल *स्त्री.* (देश.) वह नकल जो किसी सरकारी कागज या मिसिल से सक्षम अधिकारी द्वारा प्रमाणित न हो कर सादे कागज पर उतरवाई जाए।

कच्ची नींद *स्त्री.* (देश.+तद्.) वह नींद जो पूरी न हुई हो, झपकी।

कच्ची रसोई *स्त्री.* (देश.) पानी में पकाया हुआ अन्न, जिसे घी-तेल दूध में न पकाया गया हो।

कच्ची सड़क *स्त्री.* (देश.) वह सड़क जिसे डामर कंक्रीट आदि से पक्का न किया गया हो ।

कच्ची सिलाई *स्त्री.* (देश.) कपड़े पर जगह छोड़-छोड़ कर की गई सिलाई।

कच्छ *पुं.* (तत्.) 1. दलदल भूमि, अनूप देश, नदी किनारे की भूमि, कछार 2. गुजरात का एक अंतरीप 3. कच्छा।

कच्छप *पुं.* (तत्.) 1. कछुआ 2. कछुए के रूप में विष्णु के एक अवतार को कच्छप या कूर्म कहते है। turtrle

कच्छा *पुं.* (तद्.) जाँघिया।

कछार *पुं.* (तद्.) समुद्र या नदी के किनारे की भूमि जो तर और नीची होती है, खादर दियारा।

कछुआ *पुं.* (तद्.) दे. कच्छप।

कजरा *पुं.* (तद्.) 1. काजल 2. काले रंग का।

कजली *स्त्री.* (देश.) एक त्यौहार। यह बुंदेल खंड में सावन की पूर्णिमा को और मिर्जापुर, बनारस में भादौ बदी तीज को मनाया जाता है, इसमें कच्ची मिट्‌टी के पिंडों में गोदे हुए जौ के अंकुर किसी ताल में डाले जाते हैं 2. एक प्रकार का गीत जो सावन में गाया जाता है।

कजली तीज *पुं.* (तद्.) भादों बदी तीज।

कट *पुं.* (अं.) विधि, ढंग जैसे अंग्रेजी कट बाल, घुमाकर *वि.* (तद्.) काटने वाला, जैसे परकटा, नक्कटा *पुं.* (तत्.) 1. सरकंडा आदि घास के डंठलों से बनी चटाई 2 हाथी का गंडस्थल 3. 'काटना' का लघु रूप जैसे यौगिक शब्दों से कटखना।

कटक *पुं.* (तत्.) 1. सेना, फौज 2. पहाड़ के बीच का ऊंचा भाग ridge 3. उड़ीसा का एक नगर।

कटकट *पुं.* (अनु.) दाँतों के आपस में टकराने से बजने का शब्द 2. ला.अर्थ. लड़ाई-झगड़ा, वाद विवाद, व्यर्थ की कहासुनी।

कटकटाना *स.क्रि.* (अनु.) क्रोध में दांतों का कटकट करना, दाँत पीसना, दे. कटकट।

कटखना *पुं.* (देश.) काट खानेवाला ला.अर्थ. अत्यधिक गुस्सैल एवं अभद्र।

कट ग्लास *पुं.* (अं.) मजबूत काँच जिस पर नक्काशी की गई हो।

कटघरा *पुं.* (तद्.) 1. काठ का जंगला 2. बड़ा भारी पिंजड़ा 3. अदालत में वह जगह जहाँ विचार के समय अभियुक्त या अपराधी खड़े किए जाते हैं।

कटड़ा *पुं.* (देश.) भैंस का नर बच्चा, पाड़ा।

कटना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. चाकू आदि से काटे जाने पर दो टुकड़े होना 2. किसी भाग का अलग हो जाना 3. किसी से अलगाव चाहना।

कटपीस *पुं.* (अं.) नए कपड़ों का वह टुकड़ा जो थान कुछ बड़ा होने से उसमें से काट लिया जाता है या थान से बचा अंतिम वह टुकड़ा जो ग्राहक को कुछ सस्ते दाम में बेच दिया जाता है।

कटर *वि.* (अं.) काटनेवाला उपकरण *पुं.* सिलाई के लिए कपड़े काटने वाला कारीगर।

कटहल *पुं.* (तद्.) 1. बड़े आकार का एक सदाबहार घना वृक्ष जिसके फल बहुत बड़े-बड़े और काँटेदार छिलके वाले होते हैं 2. उक्त वृक्ष का फल jack fruit

कटा *वि.* (तद्.) कटना का भूतकालिक रूप कटा हुआ जैसे- कटाफटा वस्त्र।

कटाई *स्त्री.* (देश.) 1. काटना, काटने का काम 2. काटने की मजदूरी, कटाई-छंटाई।

कटाक्ष *पुं.* (तत्.) 1. तिरछी चितवन 2.व्यंग्य, ताना।

कटाना *स.क्रि.* (देश.) काटना का प्रेरणार्थक, 1. काटने का काम करवाना 2. साँप से डसवाना।

कटार *पुं.* (तद्.) 1. एक बालिश्त का एक छोटा, तिकोना और दुधारा हथियार जो पेट मे घुसेड़ा जाता है।

कटाव *पुं.* (देश.) 1. काट 2. काट-छाँट 3. कतरब्यौंत।

कटिंग *स्त्री.* (अं.) 1. कतरन 2. किसी विवरण का संकलित अंश 3. काट-छाँट।

कटि *स्त्री.* (तत्.) शरीर का मध्यभाग जो पेट और पीठ के नीचे है, कमर।

कटिबंध *पुं.* (तत्.) 1. कमरबंद 2. भू. गर्मी-सर्दी के आधार पर किए गए पृथ्वी के पाँच भागों में से कोई एक भाग।

कटिबद्ध *वि.* (तत्.) 1. कमर बाँधे हुए, तैयार 2. तत्पर।

कटिसूत्र *पुं.* (तत्.) 1. नाड़ी 2. कमर का आभूषण, तगड़ी, करधनी।

कटीला *वि.* (देश.) 1. काँटेदार 2. काटने वाला 3. बहुत तीखा असर डालनेवाला 4. सुंदरता से हृदय को वेधन या मोहित करने वाला 5. आन-बानवाला 6. नुकीला।

कटु *पुं.* (तत्.) 1. जीभ के स्वाद के छह रसों में से एक रस, कड़वा, चरपरा 3. काव्य में रस के विरुद्ध वर्णों की योजना जैसे शृंगार में ट, ठ, ड आदि वर्ण *वि.* जो मन को न भाए, बुरा लगने वाला, उद्वेगजनक विलो. मधुर।

कटुक *वि.* (तत्.) 1. कड़ुआ 2. अप्रिय।

कटुभाषी *वि.* (तत्.) कड़वी बात बोलनेवाला।

कटोरदान *पुं.* (देश.) पीतल का एक गोल ढक्कनदार बरतन जिसमें तैयार भोजन रखा जाता है।

कटोरा *पुं.* (देश.) किसी धातु, लकड़ी आदि का बना एक खुले मुँह और चौड़ी पेंदी का छोटा गोल बरतन, जिसका उपयोग प्राय: दाल-सब्जी आदि खाने के लिए होता है।

कटोरी *स्त्री.* (देश.) छोटा कटोरा।

कटौती *स्त्री.* (देश.) 1. किसी रकम को देते हुए उसमें से किसी कारण कुछ कम करके देना, माँग से छोटी रकम देने का प्रस्ताव 2. इसी प्रकार काम में से कुछ कुछ अंश कम कर देना।

कट्टर *वि.* (देश.)काटना 1. काट खाने वाला कटहा 2. अपने विचार या मत के प्रतिकूल बात न सहनेवाला, अंधविश्वासी, हठी जैसे-कट्टर देशभक्त।

कठगुलाब *पुं.* (देश.) एक प्रकार का जंगली गुलाब जिसके फूल छोटे-छोटे होते हैं।

कठघरा *पुं.* (देश.) 1. काठ का जंगलेदार घर 2. बड़ा पिंजड़ा जिसमें जानवर रखे जाते हैं दे. कटघरा।

कठपुतला *पुं.* (तद्.) 1. काठ का पुतला 2. वह व्यक्ति जो दूसरों के संकेत पर किसी महत्वपूर्ण पद पर रह कर कार्य करे।

कठपुतली *स्त्री.* (तद्.) 1. काठ की गुड़िया जिसको तार या धागे द्वारा नचाते हैं 2. किसी की आज्ञा आज्ञा या संकेत पर तुरंत काम करने वाला।

कठफोड़वा *पुं.* (तद्.) एक छोटी चिड़िया, कठफोड़ा।

कठमुल्ला *पुं.* (देश.) कट्टरपंथी मौलवी 2. अपने सिद्धांत के प्रति अतिआग्रहशील।

कठमुल्लापन *पुं.* (देश.) अपने सिद्धांत के प्रति कट्टरता।

कठिन *वि.* (तत्.) 1. कड़ा, कठोर, मुश्किल 2. क्रूर, निर्दय, उग्र 3. कष्टकारक।

कठिनता *(स्त्री.)* (तत्.) संयुक्त, कठोरता, मुश्किल, असाध्यता।

कठोर *वि.* (तत्.) 1. कठिन, सख्त 2. निर्दय।

कठोरता *स्त्री.* (तत्.) कड़ाई, निर्दयता।

कठोरपन *पुं.* (तद्.) कठोरता, कड़ापन।

कठौती *स्त्री.* (देश.) काठ की छोटी कटोरी या थाली।

कड़क *स्त्री.* (अनु.) कड़क्ड़ 1. कडक्ड़ाहट का शब्द 2. तड़प, दपेट 3. गाज, वज्र 4. घोड़े की सरपट चाल 5. दर्द जो रुक-रुक कर हो।

कड़कड़ *पुं.* (अनु.) 1. दो वस्तुओं के आघात का कठोर शब्द/घोर शब्द 2. कड़ी वस्तु के टूटने या फूटने का शब्द।

कड़कड़ाता *वि.* (देश.) 1. कड़कड़ शब्द करता हुआ 2. कड़ाके का, घोर।

कड़कना *अ.क्रि.* (देश.) 1. कड़कड़ शब्द करना, गड़गड़ाना 2. चिटकने का शब्द होना 4. फटना, दरकना।

कड़छा *पुं.* (देश.) लोहे की बड़ी कलछुल।

कड़वा *वि.* (तद्.) 1. कड़ुआ 2. तीता 3. अप्रिय।

कड़ा *पुं.* (तद्.) हाथ या पैर में पहनने का चूड़ा धातु का छल्ला।

कड़ा *वि.* (तद्.) कठोर।

कड़ाई *वि.* (देश.) कड़ा होने का भाव, कठोरता, सख्ती।

कड़ाका *पुं.* (अनु.) 1. किसी बड़ी वस्तु के टकराने, गिरने या टूटने का शब्द मुहा. कड़ाके का-जोर का 2. प्रचंड 3. उपवास, फाका।

कड़ा प्रसाद *पुं.* (तद्.) कड़ाही प्रसाद, प्रसाद रूप में बाँटने के लिए सिक्खों का कड़ाह में बना प्रसाद।

कड़ाह *पुं.* (तद्.) आँच पर चढ़ाने के लिए लोहे का बहुत बड़ा गोल बरतन, जिसमें दोनों ओर कड़े लगे हों।

कड़ाही *स्त्री.* (तद्.) छोटा कड़ाह।

कड़ी *वि.* (देश.) कठिन, कठोर *स्त्री.* (तत्.कांड) कठिनाई, मुसीबत *स्त्री.* 1. छोटी धरन, छोटा शहतीर जो छत पाटने में प्रयुक्त होता है *स्त्री.* 1. जंजीर की लड़ी का एक छल्ला 2. छोटा छल्ला जो किसी वस्तु को लटकाने के लिए लगाया जाए 3. लगाम 4. गीत का एक पद 5. खंड, विभाग।

कड़ुआ *वि.* (तद्.) कटु, तीक्ष्ण स्वाद मुहा. कड़ुआ घूँट पीना- असहनीय बात को सह जाना।

कड़ुआ तेल *पुं.* (तद्.) सरसों का तेल जिसमें बहुत झाग होती है।

कढ़ना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. निकलना 2. उदय होना, पहले की अपेक्षा अधिक समझदार हो जाना।

कढ़ी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार का सालन मुहा. बासी कढ़ी में उबाल आना- बुढापे में पुन: युवावस्था सी उमंग।

कण *पुं.* (तत्.) 1. किनारा, जर्रा 2. बहुत छोटा टुकड़ा 3. भिक्षा 4. अन्न का एक दाना।

कतई *क्रि.वि.* (अर.) नितांत, बिल्कुल।

कतरन *स्त्री.* (तद्.) कपड़े, धातु, कागज आदि के छोटे छोटे टुकड़े।

कतरना *सं क्रि.* (तद्.) किसी वस्तु को कैंची से काटना।

कतरनी *स्त्री.* (तद्.) कैंची, कपड़ा आदि काटने का एक औजार।

कतरब्योंत *स्त्री.* (देश.) 1. काट छाँट, हेरफेर 2. उधेड़बुन, सोचविचार 3. हिसाब किताब बैठाना।

कतरा *पुं.* (अर.) 1. बूँद 2. कटकर या काटकर निकाला हुआ छोटा टुकड़ा।

कतराना *अ.क्रि.* (देश.) 1. किसी वस्तु या व्यक्ति को बचा कर किनारे से निकल जाना 2. किसी काम को करने में हिचकना 3. नाक-भौं सिकुड़ना *स.क्रि.* किसी वस्तु को कतरना जैसे- चारा कतराना।

कतल *पुं.* (अर.) कत्ल, वध, हत्या।

कताई *स्त्री.* (देश.) 1. कातने की क्रिया 2. कतौनी। कतौनी।

कतार *स्त्री.* (अर.) पंक्ति।

कतिपय *वि.* (तत्.) कितने ही, कई एक, कुछ थोड़े से।

कत्थई *पुं.* (देश.) खैर के रंग का, खैरा।

कत्थक *पुं.* (तत्.) 1. एक जाति जिसका काम नाचना, गाना और बजाना है 2. नृत्य की एक शैली।

कत्था *पुं.* (तद्.) 1. खैर के पेड़ की लकड़ियों को उबाल कर निकाला गया रस 2. कत्थे का पेड़।

कत्ल *पुं.* (अर.) वध, हत्या।

कथन *पुं.* (तत्.) कहना, बात, उक्ति।

कथनी *स्त्री.* (तत्.) बात, कथन; बकवास।

कथनीय *वि.* (तत्.) कहने योग्य, वर्णनीय।

कथमपि *क्रि.वि.* (तत्.) किसी भी प्रकार से, जैसे-तैसे।

कथरी *स्त्री.* (तद्.कन्था) वह बिछावन जो पुराने चिथड़ों को सिल कर बनाया जाता है, गुदड़ी।

कथांतर *पुं.* (तत्.) दूसरी कथा, किसी कथा के अंतर्गत गौण कथा।

कथा *स्त्री.* (तत्.) वह जो कही जाय, बात, यौ. 1. कथोपकथन-परस्पर बातचीत, धर्म विषयक कथाख्यान 2. कथामुख, कथारंभ, कथोदय, कथोद्घात-कथा का प्रारंभिक भाग 3. कथापीठ-कथा का मुख्य भाग 4. उपन्यास का एक भेद 5. बात, चर्चा 6. समाचार।

कथाकार *पुं.* (तत्.) कथावाचक।

कथानक *पुं.* (तत्.) 1. कथा 2. छोटी कथा।

कथावस्तु *स्त्री.* (तत्.) नाटक या आख्यान आदि का कथन या कहानी।

कथावार्ता *स्त्री.* (तत्.) अनेक प्रकार की बातचीत।

कथित *वि.* (तत्.) 1. कहा हुआ 2. अपुष्ट कथन।

कथोपकथन *पुं.* (तत्.) बातचीत, वादविवाद।

कथ्य *वि.* (तत्.) कहने योग्य, कथनीय।

कदंब *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसका फल गोल पीला होता है 2. समूह, खंड।

कद *पुं.* (अर.) शरीर का डील, ऊँचाई, लंबाई आदि।

कदम *पुं.* (अर.) 1. पैर, पाँव, पग मुहा. कदम उखड़ना- भाग जाना; कदम चूमना- अत्यंत आदर करना; कदम डगमगाना या लड़खड़ाना- डावाँडोल होना, ढीला पड़ना; कदम बढ़ाना- तेज चलना; कदम रखना- प्रवेश करना, पैर रखना; कदम पर कदम रखना- ठीक पीछे चलना, अनुकरण करना 2. चलने पर एक पैर से दूसरे पैर के बीच का अंतर।

कदर *स्त्री.* (अर.) आदर सम्मान यौ. कदरदान विलो. बेकदर।

कदर्थना *स्त्री.* (तत्.) 1. दुर्गति, बुरी दशा 2. अपमान, तिरस्कार।

कदली *स्त्री.* (तत्.) केले का पेड़।

कदा *क्रि.वि.* (तत्.) कब, किस समय।

कदाचन *क्रि.वि.* (तत्.) किसी समय, शायद।

कदाचार *पुं.* (तत्.) *वि.* बुरी चाल, बदचलनी।

कदाचारी *वि.* (तत्.) कुचाली, बदचलन।

कदाचित् *क्रि.वि.* (तत्.) कभी, शायद।

कदापि *क्रि.वि.* (तत्.) कभी भी, किसी समय।

कद्दावर *वि.* (अर.कद+फा.आवर) बड़े डील-डौल वाला, लंबा चौड़ा।

कद्दू *पुं.* (फा.कद्दू) सब्जी आदि के काम आने वाला लंबा व गोलाकार एक विशेष प्रकार का फल जो बेल पर लगता है, लौकी।

कद्दूकश *पुं.* (फा.) लोहे या पीतल की छोटी चौकी जिसमें ऐसे बहुत सारे छेद होते हैं, जिनका एक किनारा उठा हुआ और दूसरा दबा हुआ होता है। इस पर कद्दू आदि को रगड़कर/कस कर रायता आदि बनाते हैं।

कद्र *स्त्री.* (अर.) आदर, सम्मान, कीमत।

कद्रदान *वि.* (कद्र+दान, अर+फा.) आदर करने वाला, गुण पहचानने वाला।

कद्रदानी *स्त्री.* (अ.+फा.) गुण की परख, गुणज्ञता।

कन *पुं.* (तद्.) 1. किसी वस्तु का बहुत छोटा टुकड़ा, जर्रा 2. कान यौ. कनकटा, कनफटा, कनटोप।

कन अँगुरी *स्त्री.* (तद्.) कानी अंगुली, सबसे छोटी उँगली-कनिष्ठिका।

कनक *पुं.* (तत्.) 1. सोना 2. *पुं.* (तद्.) गेहूँ का आटा, गेहूँ।

कनकटा *पुं.* (तद्.) 1. जिसका कान कटा हुआ हो, बूचा 2. कान काटने वाला।

कनकनाना *अव्य.* (अनु.) अरबी, सूरन आदि के खाने से मुँह में एक प्रकार की चुनचुनाहट होना, अरुचिकर लगना।

कनकनिकष *पुं.* (तत्.) कसौटी।

कनकरेखा *पुं.* (तत्.) प्रभात या सायंकाल आकाश में पड़नेवाली सुनहली रेखा।

कनकी *स्त्री.* (तद्.) चावलों के छोटे टुकड़े, छोटा कण।

कनकौवा *पुं.* (देश.) (कान, कौआ) पतंग, गुड्डी।

कनखजूरा *पुं.* (तद्.) एक जहरीला कीड़ा, इसे गोजर भी कहते है।

कनखियाना *स.क्रि.* (देश.) कनखी से देखना, तिरछी नजर से देखना, कनखी मारना।

कनखी *स्त्री.* (देश.) तिरछी आँखों से देखना। दूसरों की दृष्टि बचाकर देखने का ढंग 2. आँख का इशारा।

कनछेदन *पुं.* (तद्.) हिंदुओं का एक संस्कार जो प्रायः मुंडन के साथ होता है जिसमें बच्चों का कान छेदा जाता है, कर्णवेध।

कनटोप *पुं.* (देश.) सिर और कानों को ढँकनेवाली टोपी।

कनपटी *स्त्री.* (तद्.) कान और आँख के बीच का स्थान, गंडस्थल।

कनफटा *पुं.* (देश.) गोरखनाथ के अनुयायी योगी जो कानों को फड़वाकर उसमें बिल्लोर आदि की मुद्राएँ पहनते हैं।

कनफुँका *पुं.* (देश.) 1. कान फूँकनेवाला गुरु 2. कान फुँकवाने वाला चेला।

कनफूल *पुं.* (तद्., कर्णफूल) फूल के आकार का कान का गहना।

कनफेशन *पुं.* (अं.) अपराध, गलती, बुराई आदि कबूल करना।

कनफोड़ा *पुं.* (देश.) एक लता जो दवा के काम आती है, यह कड़वी, ठंडी ओर विषघ्न होती है।

कनबतियाँ *स्त्री.* (देश.) कानाफूसी, निंदा जो खुलकर न की जाए।

कनबाती *स्त्री.* (देश.) कान में मुँह लगाकर बात करना।

कनमनाना *अ.क्रि.* (अनु.) सोने की अवस्था में व्याकुलता के कारण कुछ हिलना डुलना, किसी प्रकार की क्रिया या चेष्टा करना।

कनरस *पुं.* (देश.) 1. संगीत स्वर, रुचि, आनंद 2. गाना बजाना या बात सुनने का व्यसन।

कनरसिया *पुं.* (देश.) गाना-बजाना सुनने का शौकीन। संगीतप्रिय, नादप्रिय।

कनवास *पुं.* (अं.) (कैनवस) एक मोटा कपड़ा जिससे नावों के पाल और जूते आदि बनते हैं।

कनसुई *स्त्री.* (देश.) आहट, टोह मुहा. कनसुई या कनसुइयाँ लेना- 1. छिप कर किसी की बात सुनना 2. भेद लेना 3. सगुन विचारना।

कनस्तर *पुं.* (अं.) टीन का चौखुटा पीपा जिसमें घी तेल आदि रखते हैं। canister

कनागत *पुं.* (तद्.) (कन्यागत) 1. क्वार के महीने का अँधेरा पक्ष, पितृपक्ष, (जब सूर्य कन्या राशि में जाता है) इस समय श्राद्ध पितृकर्म अच्छा समझा जाता है।

कनात *स्त्री.* (तुर्की.) मोटे कपड़े की वह दीवार जिससे किसी स्थान को घेर कर आड़/पर्दा करते हैं।

कनाल *पुं.* (देश.) पंजाब में जमीन की एक नाप जो बीघे के चौथाई भाग के बराबर होता है *स्त्री.* (अं.) नहर जो किसी बड़ी नदी या बड़े जलाशय से कृषि कार्यों हेतु निकाली जाती है।

कनिष्ठ *वि.* (तत्.) 1. बहुत छोटा, सबसे छोटा 2. जो पीछे उत्पन्न हुआ हो 3. हीन, निकृष्ट।

कनिष्ठिका *स्त्री.* (तत्.) हाथ की पाँचों उंगलियों में में जो सबसे छोटी होती है, छिगुनी।

कनी *स्त्री.* (तद्.) 1. सबसे छोटा टुकड़ा 2. हीरे का छोटा टुकड़ा 3. चिनगारी 4. वर्षा की बूँद।

कनीज *स्त्री.* (फा.) दासी, सेविका, बाँदी।

कनेल *पुं.* (तद्.) एक पौधा जिसमें पतली हरी पत्तियाँ तथा पीले या लाल फूल लगते हैं।

कनौजिया *वि.* (देश.) 1. कन्नौज का निवासी या जिसके पूर्वज कनौज से आए हों कनौजिया ब्राह्मण, कनौजिया इत्र आदि।

कनौड़ा *वि.* (देश.) जिसकी एक आँख हो या जिसकी दृष्टि सीधी न पड़ती हो 1. काना 2. अपंग 3. कलंकित 4. क्षुद्र, दीन 5. लज्जित 6. उपकृत, अहसानमंद।

कन्नड़ *पुं.* (देश.) 1. दक्षिण भारत का एक प्रदेश जहाँ की भाषा कन्नड़ है 2. *स्त्री.* कन्नड़ प्रदेश की भाषा 3. *वि.* कन्नड़ का निवासी, कर्नाटक से संबंधित।

कन्ना *पुं.* (देश.) 1. पतंग का वह डोरा जो काँप से बाँधा जाता है जिससे उड़ानेवाली लंबी डोर बंधी होती है 2. पतंग का छेद जिसमें कन्ना बाँधा जाता है 3. कोर, किनारा 4. चावल की धूल 5. किसी वस्तु का कोई कोना

कन्नी *पुं.* (तद्.) राजगीरों का वह औजार जिससे दीवार पर गारे लगाकर चुनाई की जाती है *स्त्री.* (देश.) पतंग के दोनों ओर के किनारे 2. पतंग के संतुलन के लिए कन्नी में जो धज्जी बाँधी जाती है 3. किनारा, सिरा।

कन्नौज *पुं.* (तद्.कान्यकुब्ज) फर्रुखाबाद का एक नगर जो पहले एक विस्तृत राज्य की राजधानी था।

कन्नौजी *स्त्री.* (तद्.) कन्नौज की भाषा *वि.* कन्नौज का निवासी।

कन्या *स्त्री.* (तत्.) 1. अविवाहिता लड़की यौ. शब्द-शब्द-पंचकन्या; पुराण के अनुसार पाँच पवित्र स्त्रियाँ-आहिल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा, मंदोदरी, नवकन्या-तंत्र के अनुसार नौ जातियों की पवित्र स्त्रियाँ-नाटी, कापालिकी, वेश्या, धोबिन, नाइन, ब्राह्मणी, शूद्रा, ग्वालिन और मालिन 2. 12 राशियों में से छठी राशि।

कन्याकुमारी *स्त्री.* (तत्.) दक्षिण भारत में रामेश्वर रामेश्वर के निकट का एक अंतरीप।

कन्यादान *पुं.* (तत्.) विवाह में वर को कन्या देने की रीति।

कन्वास *पुं.* (अं.) सूत, पट्ट आदि का वस्त्र जो पाल, तंबू, आदि बनाने के काम में लाया जाता है।

कन्हाई *पुं.* (देश.) श्रीकृष्ण।

कन्हैया *पुं.* (देश.) श्रीकृष्ण, पि्रय, व्यक्ति।

कप *पुं.* (अं.) प्याला।

कपट *पुं.* (तत्.) 1. स्वार्थसाधन के लिए हृदय की बात छिपाने की वृत्ति। छल, धोखा, 2. दुराव, छिपाव।

कपटी *वि.* (तत्.) धूर्त, धोखेबाज।

कपड़छन *वि.* (देश.) कपड़े से छना हुआ।

कपड़ा *पुं.* (तद्.) 1. रुई, रेशम, ऊन या सन के तागों से बुना हुआ आच्छादन, वस्त्र, पट, यौ. कपड़ा-लत्ता, व्यवहार के योग्य सब कपड़े 2. पहनावा, पोशाक।

कपाट *पुं.* (तत्.) किवाड़, पट, द्वार।

कपाल *पुं.* (तत्.) 1. खोपड़ा, खोपड़ी, कपार, ललाट यौ. कपालक्रिया 2. अदृष्ट, भाग्य।

कपालक्रिया *स्त्री.* (तत्.) दाहसंस्कार के अंतर्गत एक कृत्य जिसमें जलते हुए शव की खोपड़ी को बाँस से फोड़ देते हैं।

कपास *स्त्री.* (तद्.) एक पौधा जिसके डोडों से रुई निकलती है, कपास ओटना-चर्खी में रुई डाल कर बिनौले को अलग करना।

कपिंजल *पुं.* (तत्.) 1. चातक, पपीहा 2. गौरा पक्षी 3. तीतर 4. एक मुनि का नाम। *वि.* पीले रंग का।

कपि *पुं.* (तत्.) 1. बंदर 2. हाथी 3. करंज 4. सूर्य।

कपिल *पुं.* (तत्.) 1. महादेव 2. सूर्य 3. विष्णु 4. सांख्यशाख के प्रवर्तक मुनि 5. पुराण के अनुसार एक मुनि जिन्होंने सगर के पुत्रों को भस्म किया था 6. अग्नि 7. कुत्ता 8. चूहा *वि.* (तत्.) भूरा, मटमैला।

कपिलवस्तु *पुं.* (तत्.) गौतम बुद्ध का जन्मस्थान जो नेपाल की तराई में हैं।

कपिश *पुं.* (तत्.) काले और पीले रंगों का मिश्रण, मटमैला, पीला भूरा, लाल भूरा, बादामी।

कपूत *पुं.* (तद्.) वह पुत्र जो कुलधर्म के विरूद्ध आचरण करे, बुरा लडका।

कपूर *पुं.* (तद्.) एक सफेद रंग का जमा हुआ सुगंधित द्रव्य जो वायु में उड़ जाता है और जलाने से जलता है *वि.* (तत्.) सुगंधित।

कपोत *पुं.* (तत्.) 1. कबूतर, परेवा 2. पक्षी मात्र।

कपोतवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) रोज कमाना रोज खाना।

कपोतव्रत *पुं.* (तत्.) चुपचाप दूसरे के अत्याचारों को सहना। कबूतर कष्ट के समय नहीं बोलता।

कपोती *पुं.* (तत्.) कपोत के रंग का, खाकी *स्त्री.* (तत्.) 1. कबूतरी 2. पेडुकी।

कपोल *पुं.* (तत्.) गाल।

कपोलकल्पित *वि.* (तत्.) बनावटी, मनगढंत, गप्प।

कप्तान *पुं.* (अं.) कैप्टेन 1. जहाज या सेना का एक अफसर, दल का नायक।

कफ *पुं.* (अं.) कमीज या कुर्ते की आस्तीन के आगे की वह दोहरी पट्टी जिसमें बटन लगाते हैं cuff

कफ *पुं.* (तत्.) 1. वह गाढ़ी लसीली वस्तु जो खाँसने पर मुँह से बाहर आती है cough 2. वैद्यक के अनुसार शरीर के भीतर की एक धातु।

कफन *पुं.* (अर.) वह कपड़ा जिसमें लपेट कर मुर्दा गाड़ा या फूँका जाता है। मुहा. कफन को कौड़ी न देना- अत्यन्त दरिद्र, अत्यंत त्यागी होना, कफन फाडक़र उठना- मुर्दे का उठना, कफन सिर से बाँधना- मरने को तैयार होना, जान जोखिम में डालना।

कफन दफन *पुं.* (अर.) अंत्येष्टि।

कबंध *पुं.* (तत्.) 1. पीपी 2. बादल 3. पेट 4. जल 5. बिना सिर के धड़ 6. एक दानव 7. राहु।

कब *अव्य.* (तद्.) 1. किस समय 2. कदापि नहीं।

कबड्डी *स्त्री.* (देश.) लडक़ों के एक खेल का नाम। मुहा. कबड्डी खेलना-कूदना। कबड्डी खेलते फिरना-बेकाम घूमना।

कबरा *वि.* (तद्.) सफेद रंग पर काले, लाल आदि के धब्बेवाला, चिलता, कल्माष, चितकबरा।

कबा *पुं.* (अर.) एक प्रकार का पहनावा जो घुटनों के नीचे तक लंबा और कुछ कुछ ढीला होता है। प्राय: आगे से खुला होता है।

कबाड़ *पुं.* (तद्.) 1. रद्दी चीज, तुच्छ वस्तु 2. अंड बंड काम 3. अनुपयोगी 4. पूरी तरह इस्तेमाल किया हुआ 5. बेकार।

कबाड़खाना *पुं.* (तद्.+फ़ा.) वह स्थान जहाँ बहुत सी टूटी-फूटी वस्तुएँ अव्यस्थित रूप में पड़ी हो।

कबाड़ा *पुं.* (देश.) व्यर्थ की बात, झंझट मुहा. कबाड़ा करना- किसी काम को बिगाड़ देना।

कबाड़िया *पुं.* (देश.) 1. रद्दी बेचनेवाला, टूटा फूटा सामान खरीदने और बेचने वाला, कबाड़ी।

कबाब *पुं.* (अर.) सीखों पर भुना हुआ माँस मुहा. जलभुन कर कबाब होना- क्रोध से जलना।

कबाबचीनी *पुं.* (फा.) 1. मिर्च की जाति की एक लिपटनेवाली झाड़ी जो सुमात्रा जावा आदि टापुओं में होती है, शीतलचीनी।

कबायली *वि.* (अर.कबीलो फा.काबुल) कबीलों या फिरकों में रहने वाले।

कबीर *पुं.* (अर.) 1. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त 2. होली में गाया जानेवाला एक गीत या पद *वि.* (अर.) श्रेष्ठ, बड़ा यौ. कबीरपंथी।

कबीला *पुं.* (अर.) 1. कुल का वंश 2. जाति 3. जंगली जातियों का छोटा समूह *स्त्री.* (अर.) 1 स्त्री, जोरू 2. जाति, घर 3. स्वजन।

कबुलवाना *स.क्रि.* (अर.) कबूल करवाना।

कबूतर *पुं.* (फा.) तुलनीय (तद्.) कपोत, एक पक्षी।

कबूतरखाना *पुं.* (फा.) वह स्थान जहाँ बहुत से कबूतर पाले हुए होते हैं। कबूतरों का बड़ा दरबा।

कम अक्ल *वि.* (अर.) ना समझ, कम बुद्धिवाला।

कम *वि.* (फा.) थोड़ा, न्यून, अल्प यौ. कमअक्ल-अल्पबृद्धि, कमजोर, कमसिन-थोड़ी अवस्था का मुहा. कम से कम- अधिक नही तो इतना अवश्य जैसे- कमबख्त, कमअक्ल।

कम उम्र *वि.* (फा.) अल्पवयस्क, छोटी उम्र का।

कमजोर *वि.* (फा.) निर्बल, अशक्त।

कमजोरी *स्त्री.* (फा.) निर्बलता, दुर्बलता।

कमतर *वि.* (फा.) बहुत कम, न्यूनतर।

कमती *वि.* (फा.) थोड़ा, कम *स्त्री.* (फा.) कमी, घटती *वि.* मान, मात्रा आदि के विचार से थोड़ा कम।

कमनीय *वि.* (तत्.) कामना करने योग्य, मनोहर, सुंदर।

कमबख्त *वि.* (फा.) भाग्यहीन, बदनसीब।

कमर *स्त्री.* (फा.) शरीर का मध्य भाग जो पेट और और पीठ के नीचे पेडू और चूतड़ के ऊपर होता है, कटि मुहा. कमर कसना- उद्यत होना, कटिबद् कटिबद्ध होना, गमनोद्यत होना; कमर खोलना-कमरबंद खोलना- विश्राम करना, दम लेना; कमर टूटना- आशा टूटना, निराश होना; कमर तोड़ना- हताश करना; कमर सीधी करना- लेटकर थकावट मिटाना।

कमरख *पुं.* (तद्.) मध्यम आकार का एक पेड़, या उसका फल, कमरंग।

कमरबंद *पुं.* (फा.) लंबा कपड़ा जिससे कमर बाँधते हैं, पटुका 2. पेटी, नाड़ा *वि.* किसी कार्य के लिए पूरी तरह तैयार, कटिबद्ध ।

कमरा *पुं.* (लैटिन) कक्ष, कोठरी।

कमर्शल *वि.* (अं.) व्यापारिक, वाणिज्यिक। commercial

कमल *पुं.* (तत्.) पानी में होनेवाला एक पौधा, फूल यौ. कमलगट्टा, कमलनाल।

कमल-ककड़ी *स्त्री.* (तत्.देश.) तरकारी के रूप में प्रयुक्त किया जाने वाला कमल का डंठल, भसींड़ा, भँसीड़ा।

कमलगट्टा *पुं.* (तद्.) कमल का बीज।

कमलनयन *वि.* (तत्.) कमल की पंखुड़ी की तरह बड़ी और सुंदर आँखों वाला।

कमली *स्त्री.* (तद्.) छोटा कंबल *वि.* (तद्.) पीलिया रोग से पीडित।

कमाना *स.क्रि.* (देश.) 1. काम से नाम, काम काज से रुपया पैदा करना 2. सुधारना, काम के योग्य बनाना जैसे खेत कमाना, चमड़ा कमाना 3. कर्म करना जैसे-पाप कमाना मुहा. कमाई हुई देह-कसरत से बलिष्ठ किया हुआ शरीर।

कमानी *स्त्री.* (फा. कमाना) लोहे की तीली या कोई लचीली वस्तु जो दाब पड़ने पर दब जाए पर हटने पर फिर अपनी जगह आ जाए। spring

कमानीदार *वि.* (फा.) जिसमें कमानी लगी हुई हो, कमानीवाला।

कमिटी *स्त्री.* (अं.) सभा, समिति, कमेटी। committee

कमिश्नर *पुं.* (अं.) 1. प्रशासन का वह बड़ा अफसर अफसर जिसके अधिकार में कई जिले हों 2. आयुक्त। commissioner

कमिश्नरी *पुं.स्त्री.* (अं.) 1. वह भू भाग जो किसी कमिश्नर के प्रबंधाधीन हो, डिवीजन, प्रमंडल 2. कमिश्नर की कचहरी 3. कमिश्नर का पद।

कमी *स्त्री.* (फा.)1. न्यूनता 2. नुकसान, टोटा।

कमीज *स्त्री.* (अर.) कमीस, पहनने का एक प्रकार का कुर्ता या कमीज।

कमीना *वि.* (फा.कमीन) ओछा, नीच।

कमीनापन *पुं.* (फा.हि.) नीचता, ओछापन, क्षुद्रता।

कमीबेशी *स्त्री.* (फा.) न्यूनता और अधिकता, स्वल्पता या बाहुल्य।

कमीशन *पुं.* (अं.) (प्रशासन) चुने हुए विद्वानों की वह समिति जो कुछ समय के लिए किसी गूढ विषय पर विचारार्थ नियत हो, आयोग 2. किसी दूर रहनेवाले व्यक्ति की गवाही के लिए एक या अधिक वकीलों का नियत होना 2. दलाली, दस्तूरी।

कमेटी *स्त्री.* (अं.) सभा, समिति।

कमेडी *स्त्री.* (अं.) कॉमेडी, जिस नाटक के अंत में आनंद हो जाए, सुखांतिकी, कामदी। comedy

कमेरा *पुं.* (तद्.) मातहत नौकर, कमाने वाला मजदूर आदि *वि.* कमाऊ, परिश्रमी।

कमोड *पुं.* (अं.) लोहे या चीनी मिट्टी का बना हुआ कड़ाही के आकार का पात्र जिसमें शौच करते हैं 2. गमला।

कमोरा *पुं.* (देश.) 1. मिट्टी का चौड़े मुँहवाला बर्तन जिसमें दूध दुहा जाता है 2. घड़ा 3. मटका।

कमोरी *स्त्री.* (देश.) (कम ओरी) मिट्टी का चौड़े मुँहवाला बर्तन जिसमें दूध,दही रखते हैं, मटकी, गगरी।

कम्युनिक *पुं.* (अं.) सरकारी विज्ञप्ति या सूचना communique

कम्युनिज्म *पुं.* (अं.) वह सिद्धांत जिसमें संपत्ति का अधिकार समाज का माना जाता है समष्टिवाद, साम्यवाद। communism

कयामत *पुं.* (अर.) मुसलमानों, ईसाइयों का वह दिन जब सब मुर्दे उठ खड़े होंगे और ईश्वर उनके कार्यों का लेखा रखेगा, अंतिम दिन 2. आफत, उपद्रव मुहा. कयामत का- गजब का, अत्यंत प्रभाव डालनेवाला; कयामत का सामना होना- भारी संकट आ जाना; कयामत बरपा करना- कयामत ढाना, आफत आना।

कयास *पुं.* (अर.) अनुमान, अटकल मुहा. कयास लगाना- अनुमान बाँधना; कयास में आना- ध्यान में आना।

करंड *पुं.* (तत्.) 1. मधुकोश 2. तलवार 3. बाँस की बनी टोकरी 4. एक प्रकार की चमेली *पुं.* (तद्.) सं कुरुविंद, कुरुल पत्थर जिस पर छुरी और हथियार तेज किए जाते हैं।

करंडक *पुं.* (तत्.) बाँस का बना छोटा पिटारा।

करंडिका *स्त्री.* (तत्.) बाँस की पिटारी।

करंडी *स्त्री.* (देश.) कच्चे रेशम की बनी चादर।

करंभ *पुं.* (तत्.) दही में सना सत्तू , दलिया, पंक।

कर *अव्य.* (देश) पूर्वकालिक क्रिया के अंत में पूर्व क्रिया की समाप्ति का सूचक जैसे- खाकर, सोकर सोकर आदि।

कर *पुं.* (तत्.) हाथ मुहा. कर गहना- हाथ पकड़ना, पाणिग्रहण करना, कर मलना-पछताना, हाथ मलना 2. हाथी की सूँड 3. सूर्य या चंद्रमा की किरण 4. ओला 5. राज्य द्वारा प्रजा से उगाहा हुआ धन, महसूल, मालगुजारी, टैक्स tax *वि.* (समस्तपद में) उत्पन्न करने वाला जैसे- सुखकर।

करई *स्त्री.* (देश.) छोटा करवा, पानी रखने का टोटीदार बरतन।

करक *पुं.* (तत्.) 1. कमंडलु, करवा 2. अनार 3. कचनार, पलाश, बकुल, मौलसिरी 4. हाथ 5. उपल 6. ऊँची ध्वनि 7. राजस्व, कर।

करक *पुं.* (देश.) 1. रुक-रुक कर उठनेवाला दर्द, कसक, चिनक।

करकना *अ.क्रि.* (देश.) कड़ी वस्तु का कड़-कड़ कर टूटना, फूटना, चटकना।

करगत *वि.* (तत्.) हाथ में रखा हुआ, हस्तगत, प्राप्त।

करग्रह *पुं.* (तत्.) 1. सरकार की कर लगाने की प्रक्रिया 2. हाथ पकड़ना 3. पाणिग्रहण, विवाह।

करघा *पुं.* (फा.) जुलाहों का कपड़ा बुनने का यंत्र। जुलाहों का कारखाना।

करछुल *पुं.* (देश.) कलछी।

करछुला *पुं.* (देश.) भड़भूजों की बड़ी कलछी जिस में हाथ-डेढ़ हाथ का लकड़ी का बेंट लगा रहता है।

करज *पुं.* (तत्.) नाखून, उँगली, करंज, कंजा *पुं.* (अर.) दे. कर्ज।

करजदार *वि.* (अर.+फा.) ऋणी।

करण *पुं.* (तत्.) 1. व्याकरण में एक कारक जिसके द्वारा कर्ता क्रिया को सिद्ध करता है, करण का चिह्न 'से' लगाया जाता है 2. हथियार 3. इंद्रिय 4. देह 5. क्रिया 6. कारण 7. स्थान 8. कान 9. कौरव पक्ष के एक महारथी कर्ण यौ. करणग्राम-इंद्रिय समूह, करणविभक्ति-करण कारक का चिह्न (सूचक पद)।

करणीय *वि.* (तत्.) करने योग्य, कर्तव्य।

करतब *पुं.* (तद्.) 1. कार्य, काम, करतूत 2. कला, हुनर 3. करामात, जादू।

करतल *पुं.* (तत्.) हथेली।

करतलध्वनि *स्त्री.* (तत्.) ताली।

करतार *पुं.* (तद्.) सृष्टि करनेवाला, ईश्वर।

करताल *पुं.* (तत्.) 1. दोनों हथेलियों के परस्पर आघात का शब्द 2. लकड़ी, काँसे आदि का एक बाजा जिसका एक एक जोड़ा हाथ में लेकर बजाया जाता है, झाँझ, मजीरा।

करतूत *स्त्री.* (देश.) करनी, काम।

करद *वि.* (तत्.) 1. कर देनेवाला, मालगुजारी देने वाला, अधीन 2. सहारा देनवाला *पुं.* कटार, छुरी, चाकू

करदाता *पुं.* (तत्.) कर देनेवाला।

करधनी *स्त्री.* (तद्.) सोने या चाँदी का कटि में पहननेवाला एक जेवर, तगड़ी 2. कई लड़ी का सूत जो कमर में पहना जाता है मुहा. करधन टूटना- साहस छूटना, धन का बल न रहना, दरिद्र होना।

करनफूल *पुं.* (तद्.) स्त्रियों के कान में पहनने का सोने या चाँदी का गहना।

करना *स.क्रि.* (तद्.) 1. किसी काम को चलाना, निबटाना, अमल में लाना यौ. करनाधरना 2. पका कर तैयार करना जैसे-रोटी कराना 3. ले जाना, पहुँचाना, जैसे- उसे बाप के यहाँ कर आ। मुहा. करगुजरना- विलक्षण कार्य कर डालना *पुं.* (तद्.) सुदर्शन जाति का लंबा और बिना काँटो वाला एक पौधा या उसका सफेद फूल।

करनाटक *पुं.* (तद्.) कर्णाटक प्रदेश।

करनाल *पुं.* (तत्.+देश) 1. नरसिंहा, भौंपू, धूतू 2. एक बड़ा ढोल जो गाड़ी पर लाद कर चलता है 3. हरियाणा का एक नगर।

करनैल *पुं.* (अं.) कर्नल, सेना का एक उच्च अधिकारी। colonel

करपत्र *पुं.* (तत्.) आरा।

करपल्लव *पुं.* (तत्.) हाथ की उँगली, कोमल हाथ।

करपात्र *पुं.* (तत्.) वस्तुग्रहण के लिए गहरी की हुई दोनों हाथों की संयुक्त हथेली।

करपात्री *वि.* (तत्.) अन्न जल आदि ग्रहण करने के लिए अंजलि ही जिसका बरतन हो, विरक्त साधु।

करफ्यू *पुं.* (अं.) 1. घंटा बजना जो निश्चित समय पर रोशनी, आग आदि बुझाने के लिए होता था, साइरन बजाकर भी इसकी सूचना दी जाती है 2. किसी विषम परिस्थिति में घर से बाहर न निकलने या शासन द्वारा जारी किया आदेश। curfew

करबला *पुं.* (अर.) कर्बला 1. अरब का वह उजाड़ मैदान जहाँ हुसैन मारे गए थे 2. वह स्थान

जहाँ ताजिए दफन किए जाएँ 3. वह स्थान जहाँ पानी न मिले।

करभ *पुं.* (तत्.) 1. हथेली के पीछे का भाग 2. ऊँट का बच्चा 3. हाथी का बच्चा 4. ऊँट 5. कटि, कमर 6. दोहे का एक भेद 7.'नख' नामक सुगंधित पदार्थ।

करभार *पुं.* (तत्.) कर का बोझ।

करम *पुं.* (अर.) 1. मेहरबानी 2. एक प्रकार का गोंद या पश्चिमी गुग्गुल जो अरब या अफ्रीका से आता है।

करम *पुं.* (तद्.) कर्म, काम, करनी।

करमकल्ला *पुं.* (अर.+देश.) बंदगोभी, पातगोभी।

करमधरम *पुं.* (तद्.) आचार व्यवहार मुहा. करम फूटना- भाग्य मंद होना; करम टेढ़ा होना- भाग्य का साथ न देना करम का धनी- जिसका भाग्य प्रबल हो, करम रेखा- भाग्य का लिखा।

करमरेख *स्त्री.* (तद्.) दे. कर्मरेखा।

करमहीन *वि.* (तद्.) दे. कर्महीन।

करमुक्त *वि.* (तत्.) कर से मुक्त 2. फेंका हुआ।

करमुखा *वि.* (तद्.) कलमुखा, जिसका मुख काला हो ऐसा व्यक्ति या अन्य जीव, काले मुँह वाला, कलमुहाँ, कलंकित *पुं.* लंगूर।

करमुखी *वि.* (तद्.) काले मुख वाली, कलमुँही।

करमुहाँ/करमुँहा *वि.* (तद्.) 1. कलमुँहा, काले मुख वाला 2. कलंकित *पुं.* लंगूर *स्त्री.* करमुही *वि.* काले मुँह वाली, कलमुँही, कलंकिता।

कररना/करराना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. कठोर और कर्कश स्वर करना 2. कड़ा पड़ना 3. चरमराकर टूट पड़ना।

करान *स्त्री.* (देश.) धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाने या धनुष खींचने का शब्द।

करी (कर्री) *वि.* (देश.) (कड़ी) कड़ी, कर्री उदा. तेग कमान गही करी-कवि गंग क. (369)।

कररूह *पुं.* (तत्.) नख, नाखून, कर अर्थात् हाथ से उगा हुआ अगला भाग।

कररेचकरत्न *स्त्री.* (तत्.) नृत्य क्रिया में हाथ घुमाने-फिराने की एक जटिल मुद्रा।

करल *वि.* (तद्.) जो हाथ या मुट्ठी भर हो उदा. तीखा लोयण, कटि करल-ढोला (459)।

करली *स्त्री.* (तद्.) कल्ली, कोमल पत्तियों युक्त पौधे पौधे या डाल का ऊर्ध्व भाग 2. कोंपल, फुनगी।

करलुरा *पुं.* (देश.) सफेद तथा गुलाबी फूलों वाली काँटेदार बेल।

करवंचक *वि.* (तत्.) कर की चोरी करने वाला, टैक्स या कर देने से बचने वाला *पुं.* जो कर या टैक्स चालाकी से बचाता हो ऐसा व्यक्ति, कर चुराने (बचाने) वाला चालाक आदमी।

करवंचन *स्त्री.* (तद्.) चतुराई या चालाकी से टैक्स बचा लेने की क्रिया या भाव। tax evader

करवट *स्त्री.* (तद्.) (तत्. "करवर्त्त"-पहाड़ की ढाल) 1. हाथ के बल लेटने की मुद्रा, दाएँ या बाएँ पार्श्व पर लेटना 2. ढंग 3. पहलू जैसे- भोजन के के उपरांत कुछ देर बायीं करवट लेटना चाहिए, करवट दायीं ओर या बायीं ओर-दो ही प्रकार से संभव होता है मुहा. 1. करवट बदलना-पलटा खाना, और का और हो जाना, एक पक्ष छोड़कर दूसरी ओर आ जाना 2. करवटों में रात काटना-व्याकुलता, बेचैनी या उत्कंठा में रात बिताना 3. करबट न लेना- किसी उत्तरदायित्व या कर्तव्य का ध्यान न रखना। कुछ न करना, खबर न लेना 4. करवटें बदलना-बिस्तर पर बेचैन रहना, तड़पते रहना 5. करवट लेना-जागना, सचेत हो जाना, सोते समय एक पहलू से दूसरे पहलू होना।

करवत *पुं.* (तद्.) (करपत्र) आरा, लकड़ी चीरने का औजार उदा. काशी करवत लेना-काशी में मुक्ति पाने के लिए मरने की प्राचीन रीति उदा. तेरे कारन जोगिन हूँगी, करवत लूँगी- काशी-मीरा (पद 49)।

करवतिया *वि.* (देश.) आरा चलाने वाला, लकड़ी चीरने वाला *पुं.* लकड़ी चीरने वाला व्यक्ति।

करवर *स्त्री.* (तत्.+तद्.+कर-बल) भुजा या बाहुबल

करवरना *अ.क्रि.* (तद्.+तत्.) चहकना, चहचहाना, कलरव करना।

करवरा *स्त्री.* (देश.) मुसीबत; विपत्ति, आफत, संकट संकट उदा. आनंद बधावनो मुदित गोप-गोपी-गन, आजु परी कुसल कठिन करवर तै - गीतावली।

करवा *पुं.* (तद्.-<करक) मिट् टी या धातु का टोंटीदार लोटा उदा. पातक, पीन, कुदारिदा दीन, मलीन धरे कबरी करवा है (कवितावली) 2. काला, काले रंग का, श्याम जैसे- "करवा से प्रीति कहाँ"।

करवा चौथ *स्त्री.* (तद्.) करवाचतुर्थी (करका चतुर्थी), कार्तिक कृष्ण चतुर्थी, उक्त तिथि में पति परायणा सुहागिन महिलाओं द्वारा निराहार व्रत रखा जाता है जो चंद्रदर्शन के उपरांत पूर्ण होता है।

करवान (कृपाण) *स्त्री.* (तद्.) तलवार, कृपाण उदा. उदा. कीनौ कतलान करवान गहि कर में।

करवानक (कलविङ्क) *पुं.* (तद्.) चटक पक्षी, गौरैया, चिड़ा उदा. सारस से सूवा-करवानक से साहजादे। भूषण ग्रंथा. (529)।

करवाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. दूसरे को काम करने में लगाना या प्रवृत्त 'करना' का प्रेरणार्थक रूप, जैसे- मुझे बच्चों से आज घर का काम करवाना है, करवाया, कराया- (स.क्रि.) उदा. "मारि निसाचर निकर जग्य करवायउ (तुलसी-जानकी. 38)।

करवार *स्त्री.* (तद्.) तलवार, कृपाण।

करवारी *स्त्री.* (तद्.) तलवार, कृपाण।

करवाल *स्त्री.* (तत्.) तलवार, कृपाण।

करवाह्यता *स्त्री.* (तत्.) 1. 'करापात' 2. कर या टैक्स के भार को वास्तविक तौर पर वहन करना।

करवी *स्त्री.* (तद्.) कबरी, गुंथी हुई चोटी *स्त्री.* (देश.) 1. ज्वार और बाजरे के सूखे पौधे (जिन्हें गड़ासे या मशीन से कूट (कुट्टी करके) कर पशुओं को चारे के रूप में खिलाया जाता है 2. पशुओं का चारा, कड़वी।

करवीर *पुं.* (तत्.) 1. कनेर का फूल उदा. "वीर करै करवीर झरै निखिलै हरषै छबि आपनी पाइकै" 2. तलवार 3. मरघट, श्मशान।

करवील *स्त्री.* (तद्.) करील वृक्ष।

करवैया *वि.* (देश.) काम करने वाला, काम कराने वाला।

करशीकर *स्त्री.* (तत्.) हाथी के द्वारा अपनी सूंड़ से से फेंका गया पानी।

करष *स्त्री.* (तद्.) 1. मनमुटाव, खिंचाव, तनाव, द्रोह, विरोध, बातहिं-बात करष बढि आई" (मानस) 2. जोश, ताब 3. आकर्षण 4. वैर- "कंत करष हरि सन परिहरहू" -तुलसी (मानस)।

करषक *पुं.* (तद्.) किसान, खेती करने वाला, कृषक।

करषना/करसना *स.क्रि.* (तद्.) (कर्षण) 1. खींचना, तानना, घसीटकर ले जाना 2. सोखना, सुखाना 3. आकर्षित करना 4. बुलाना, नियंत्रित करना उदा. उर वतमाल पदिक प्रति सोभित, बिप्र चरन चित कहँ करषै" 5. समेटना, बटोरना उदा. चहुँ ओरन करषतैं"- भूषण ग्रंथ (236) *अ.क्रि.* खिंचना, निकलना उदा. देखत विषादु- मिटै, मोदु करषतु है- तुलसी-कवितावली 6/58।

करषा *पुं.* (तद्.) 1. जोश, उमंग, उत्साह 2. क्रोध, आवेश 3. स्पर्धा उदा. 1. एकहिं एक बढ़ावहिं करषा" -मानस 2. "राति दिवस बरषत झर लाए दिन दूनी करषा सौं" -सूरसागर 10/4116)।

करसंपुट *पुं.* (तत्.) 1. दोनों हाथों की हथेलियों को जोड़कर बनाई हुई अंजलि 2. विनती के समय हाथ जोड़ने की स्थिति या मुद्रा।

करस *पुं.* (तद्.) 1. कलश 2. कंगूरा उदा. "रूप अनूप, जात रूप के करस हैं।"

करसना *स.क्रि.* (तद्.) दे. करषना।

करसान *पुं.* (तद्.) कृषाण (तत्.), खेतिहर, किसान, कृषक।

करसायर/करसायल *पुं.* (तद्.) कृष्णसार (तत्.) 1. काला-हिरन, कृष्णसार, काला मृग उदा. जाके कुल की जौन है, गहे रहै सो तौन, करसायल के सींग की ऐंठ जमावत कौन"।

करसि/करसी (करीष) *स्त्री.* (तद्.) 1. कंडा, उपला 2. कंडे का टुकड़ा या चूरा, गोसा 3. कंडों की आग उदा. सिर करवत तन करसी लै लै जायसी-पद्मावत (114/8) "काशी करवत लेने" की की तर्ज पर प्रयाग में कंडों की आग पर शरीर को भस्म करना, इसे "करही लेना" कहा जाता है तथा यह भी साधनापूर्वक मरने की एक रीति है।

करहंत *पुं.* (तद्.) दे. करहंस।

करहंस *पुं.* (तत्.) प्रत्येक चरण में एक नगण, एक सगण और अंत्य लघु कुल सात वर्णों से युक्त एक वर्णवृत्त (वर्णिक छंद) 'करहंत' छंद उदा. "निसि लखु गुपाल, ससिहिं सम बाल लखत अरिकंस नखत करि हंस।

करह *पुं.* (तद्.) करभ, 'ऊँट' *स्त्री.* (तद्.) कली (फूल की)।

करहरा *वि.* (देश.) काले अंश वाला उदा. "टेसू करहर मानो क्यैला अधजरे धरे" गंग (कृ. 225)।

करहरिया *पुं.* (देश.) काले और हरे रंग का घोड़ा उदा. "सेमनि सरसत करहरिया" -पद्माकर ग्रंथ.।

करहा *पुं.* (तद्.) 'करभ', 'ऊँट'।

करहाट *पुं.* (तत्.) 1. करहाटक 2. कमल की छतरी, छत्ता, कमल-छत्र 3. कमल की रेशेदार जड़, भसींड़ उदा. "कोऊ कहै करहाट के तंत में कोक-परागन में उनमानी" (शृंगार.)

करहाटक *पुं.* (तत्.) 1. दे. 'करहाट' 2. कर अर्थात् हाथ का सोने का आभूषण।

करांगुलि *स्त्री.* (तत्.) कर की अँगुलि, हाथ की अंगुली (उँगली)।

करॉकुल *स्त्री.* (तद्.) 1. कूँज पक्षी, क्रौंच, जलाशयों के किनारे पर रहने वाली एक बड़ी चिड़िया या पक्षी।

करॉंद/करॉंत (करपत्र) *पुं.* (तद्.) 'आरा' (जिससे लकड़ी चीरी जाती है, 'करॉंती' 1. आरा चलाने वाला 2. छोटा आरा 3. हँसिया जिसमें आरे की तरह के दाँते होते हैं।

करा *पुं.* (तद्.) (उगने वाले) पौधे का कोमल पत्ता, कल, कोपल, फुनगी 2. कला 3. कड़ा।

कराइत *पुं.* (देश.) एक प्रकार का बहुत विषैला और काला साँप, करैत साँप।

कराई *स्त्री.* (देश.) 1. काम करने की मजदूरी (पारिश्रमिक) 2. काम करने या कराने की क्रिया या भाव 2. उरद, मटर, अरहर तथा चना आदि दालों के दलने के उपरांत निकले छिलके या भूसी। 3. कालापन, श्यामलता।

कराकुल *पुं.* (तद्.) करॉकुल, क्रौंच पक्षी। उदा. भयभीत कराकुल पक्षियों की पंक्तियाँ "कररर कर्र"-करती हुई -तितली. प्रसाद)।

कराघात *पुं* (तत्.) हाथ से किया हुआ आघात, वार, प्रहार।

कराचोली *स्त्री.* (देश.) 1. लोहे की कड़ियों से निर्मित कवच जो वक्षस्थल पर पहना जाता है 2. एक छोटी तलवार, किरच।

कराड़ *स्त्री.* (तद्.) 1. खरीददार। 2. महाजन, क्रेता, क्रय करने वाला।

कराना *स.क्रि.* (तद्.) करने का प्रेरणार्थक रूप, किसी से कोई कार्य करवाना, किसी को किसी कार्य को करने में प्रवृत्त करना 2. किसी के कार्य में सहयोग देना।

करापात *पुं.* (तत्.) कर अथवा टैक्स के भार को वास्तविक तौर पर वहन करना, 'करवाह्यता'।

करामत *स्त्री.* (अर.) 1. चमत्कार 2. कारगुजारी 3. कृपा, दया।

करामलक *पुं.* (तत्.) 1. कर अर्थात् हथेली पर रखा हुआ आँवला 2. हथेली पर रखे हुए आँवले के समान-स्पष्ट तथ्य या बात, हस्तामलक न्याय।

करामात *स्त्री.* (अर.) करिश्मा, चमत्कार, अनोखा कार्य व्यापार; 'करामत' का बहुवचन।

करामाती *वि.* (अर.) 1. करामात (चमत्कार) करने या दिखाने वाला, चमत्कारी (व्यक्ति या वस्तु) 2. 2. करिश्मा दिखाने वाला, सिद्ध।

करायल *वि.* (देश.) कुछ-कुछ काले रंग वाला *स्त्री.* तेल मिली हुई राल।

करार *पुं.* (अर.) 'करार' ठहराने का या निश्चित करने का भाव, ठहराव, स्थिरता 2. धीरज, धैर्य, चैन, आराम, तसल्ली, संतोष 3. वादा, इकरार, प्रतिज्ञा जैसे- 1. करार पूरा करना-वादा पूरा करना 2. करार आना- चैन या संतोष आना।

करार *पुं.* (देश.) 1. नदी का खड़ा तथा ऊँचा किनारा 'कगार', 'टीला' 2. *पुं.* काग, कौवा *वि.* भयानक, विकराल।

कराररदात *स्त्री.* (अर.करार+फा.+दाद.) तय किया हुआ दहेज।

कराररना *अ.क्रि.* (अनु.) कर्कश स्वर निकालना, कॉव-कॉव करना।

करारा *वि.* (देश.) 1. कड़ा, कठोर 2. खाने में स्वादिष्ट और कुरकुरा 3. हृष्ट-पुष्ट 4. उग्र, तेज, तेज, दृढ़चित्त, खरा जैसे- करारा पापड़, करारा जबाब 5. चीनी का एक प्रकार *पुं.* (तद्.) 1. काक, कौवा उदा. रटहिं कुभाँति कुखेत करारा - मानस. 2/158/2) 2. नदी का ऊँचा टीला या किनारा जो बहते हुई जलधार के काटने से बना हो, ऊँचा-किनारा, टीला, ढूह।

करारापन *पुं.* (देश.) सख्ती, कठोरता, कड़ा होने का भाव या प्रवृत्ति, कड़ापन, काठिन्य 2. तगड़ापन, हृष्ट-पुष्टता 3. स्वादिष्टता और कुरकुरापन 4. उग्रता, तेजी, खरापन, दृढ़चित्तता।

करारी *वि.* (अर.) इकरार या वायदा करने वाला *वि.* (तद्.) 1. भयानक, विकराल 2. जोरदार, भारी उदा. आपकी इस केस में करारी पराजय हुई है।

कराल *वि.* (तत्.) 1. भीषण, भयानक, डरावना, विकराल 2. बहुत ऊँचा 3. विशालकाय 4. अशोभनीय, अशोभन 5. रौद्ररूप, उग्र, तीक्ष्ण 6. अदमनीय 7. विस्तृत मुँह और निकले हुए दाँतो वाला 8. खूब खुला हुआ *पुं.* 1. करायल 2. दाँतों का एक रोग।

करालदंष्ट्र *वि.* (तत्.) भयंकर दाढ़ों तथा दाँतों वाला।

करालललोचन *वि.* (तत्.) भयानक नेत्रों वाला।

करालवदन *वि.* (तत्.) भयंकर मुख वाला।

करालवदना *वि.* (तत्.) भयंकर मुखवाली *स्त्री.* (तत्.) काली देवी।

कराला *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा का एक रूप।

करालानन *वि.* (तत्.) दे. करालवदन।

करालिका *स्त्री.* (तत्.) चंडी, काली, दुर्गा का एक रूप।

कराली *स्त्री.* (तत्.) 1. दुर्गा का एक नाम (रूप) 2. चंडी 3. काली 4. अग्नि की सात जिह्वाओं तथा नौ नौ समिधाओं में से एक 2. वि. भीषण रूप वाली।

करावलंब *पुं.* (तत्.) 'कर का अवलंब', सहारा, हाथ का सहारा।

करावल *पुं.* (तुर्की) 1. पहरेदार, प्रहरी 2. घुड़सवार 3. सैनिक जिन्हें शत्रु का भेद लेने भेजा जाता है।

करावलि/करावली *स्त्री.* (तत्.) किरणों की शृंखला या पंक्ति। किरणों का समूह।

करावा *पुं.* (देश.) 1. काम (विशेष रूप से विवाह आदि के काम), सगाई 2. बिना विवाह के पति या पत्नी बना लेना, बैठावा 3. विधवा स्त्री से विवाह।

कराह *स्त्री.* (देश.) 1. कराहने की क्रिया या भाव 2. 2. कराहने से उत्पन्न पीड़ा 3. कराहने की पीड़ा का शब्द, 'आह', 'ऊँह', 'हाय' आदि *पुं.* (तद्.) कड़ाह, बड़ी कड़ाही, कराही-स्त्री. 'कड़ाही'।

कराहना *अ.क्रि.* (अर.) असहनीय वेदना या पीड़ा के कारण परेशानी सूचक शब्द, आह, ऊँह, आह, हाय आदि शब्द।

करिंद *पुं.* (तद्.) तत्. 'करींद्र' 1. इंद्र का ऐरावत नामक सफेद हाथी 2. उत्तम तथा श्रेष्ठ (बड़ा) हाथी 3. गजराज।

करिंदा *पुं.* (फा. कारिंदा) जमीदारों की ओर से जमींदारी का प्रबंध करने के लिए नियुक्त एक कर्मचारी जो प्रायः स्थायी और वैतनिक होता है 2. प्रतिनिधि।

करिअ *पुं.* (देश.) पतवार (नाव की)।

करिअट *पुं.* (देश.) किलकिला, मछलियाँ पकड़कर खाने वाला एक पक्षी।

करिआ *पुं.* (देश.) 1. नाव का खेने वाला- करिया, कर्णधार, माझी, केवट 3. काम करने वाला या करने धरने वाला व्यक्ति *वि.* 1. काम करने वाला वाला 2. काला।

करिका *स्त्री.* (तत्.) नाखून से लगने वाली खरोंच, नखक्षत।

करिकुंभ *पुं.* (तत्.) हाथी का माथा, हाथी का मस्तक।

करिखई *स्त्री.* (देश.) 1. कालिख, कलंक 2. कालापन, कालिमा।

करिखा *पुं.* (देश.) 1. कालिमा-धुएँ के जमने से लगने वाली कलौंछ, कालिख। 2. कलंक।

करिगन *पुं.* (तद्.) करिगण, हाथियों का समूह या झुंड।

करिणी *स्त्री.* (तत्.) हथिनी।

करिनि *स्त्री.* (तद्.) 'हथिनी' उदा. "मानो ब्रज तैं करिनि चली मदमाती' -सूरसागर।

करिनिका *स्त्री.* (तद्.) कर्णिका, कान की बाली।

करिनी *स्त्री.* (तद्.) 'हथिनी'।

करिमुख *वि.* (तत्.) करिवदन, गणेश (हाथी के समान मुख वाला)।

करिया *पुं.* (देश.) 1. नाव को खेने या पार लगाने वाला नाविक 2. मल्लाह, केवट, माझी टि. नाव को खेने वाला अर्थात् पतवार संभालने वाले मल्लाह को 'करिया' कहते हैं, तो डाँड़ चलाने वाले मल्लाह को "खेवक" कहा जाता है 3. *वि.* काला उदा. "करिया बासन कर गेह, कालिख लागत अंग" -रहीम 4. 'करने योग्य'।

करियारी *स्त्री.* (तद्.) 1. लगाम, बागडोर 2. कलियारी या कलिहारी नामक विषैली वनस्पति।

करिल *वि.* (देश.) काला उदा.- "करिल केस-बिसहर बिसभरे'। जायसी (पद्म. 62/4) *पुं.* (तद्.) 'करील वृक्ष'। (प्रा.) "करिल्ल" कोपल।

करिवदन *पुं.* (तत्.) हाथी के मुख के समान मुख है जिसका गणेश, गजानन।

करिवर *पुं.* (तत्.) 1. श्रेष्ठ हाथी 2. (तद्.) 'कर्वर'- सिंह आदि हिंसक जीव, आपत्ति, संकट, बला, मुसीबत।

करिवार *पुं.* (तद्.) करवाल, तलवार।

करिश्मा *पुं.* (फा.) 1. चमत्कार, अद्भुत काम।

करिष्णु *वि.* (तत्.) 1. कर्तव्य परायण, कर्तव्यनिष्ठ कर्तव्यनिष्ठ 2. कर्तव्य करने वाला, अपना काम करने के लिए सदा तत्पर।

करिसन *स्त्री.* (तद्.) कर्षण, कृषि, खेती।

करिहा *स्त्री.* (देश.) कमर, कटि, कटिभाग। उदा. "अंग तेरो केसरि सो करिहा केसरी" -गंग कवि (79)।

करींद्र *पुं.* (तत्.) 1. इंद्र का ऐरावत नामक सफेद हाथी 2. उत्तम हाथी।

करी *पुं.* (तद्.) 1. हाथी 2. कली *वि.* (तद्.) कड़ी, कठोर, सुदृढ़ *स्त्री.* 1. कठोर, सुदृढ़ करने वाली, 'प्रसन्नकारी', 'मंगलकारी'।

करीना *पुं.* (अर.करीन) 1. काम करने का ढंग या शैली 2. शिष्टता, तमीज 3. तरतीब, क्रम।

करीब *क्रि.वि.* (अर.) 1. पास, समीप, निकट 2. प्रायः लगभग उदा. 1. आपके स्कूल के करीब 2. करीब पचास लोग आज मेरे पास आए थे।

करीबी *वि.* (अर.) निकट का, पास वाला, नजदीकी *पुं.* करीबी रिश्तेदार।

करीम *वि.* (अर.) 1. कृपावंत, कृपालु 2. दयालु *पुं.* परमेश्वर भगवान।

करील *पुं.* (तद्.) करीर, एक कँटीली झाड़ी जो ऊसर और कंकरीली भूमि में होती है और उसमें पत्तियाँ नहीं होती। पर उसका कच्चा फल, अचार के काम आता है उदा. नव रसालवन विहरन सीला, सोहकि कोकिल विपिन करीला -मानस।

करीश/करीश्वर *पुं.* (तत्.) 1. विशाल और उत्तम हाथी 2. इंद्र का सफेद रंग का ऐरावत हाथी।

करीष *पुं.* (तत्.) 1. अरना, कंडा, बिना पाथा हुआ उपला, वन में पड़ा सूखा गोबर जिसे जंगलों से एकत्रित करके जलाने के काम में लिया जाता है।

करीस/करीसुर *पुं.* (तद्.) करीश, करीश्वर, विशाल एवं उत्तम हाथी, ऐरावत।

करुआ *पुं.* (देश.) दालचीनी की जाति का एक वृक्ष *वि.* (तद्.) 1. कड़ुआ, कटु 2. (देश.) करवा- मिट्टी का टोंटीदार लोटा।

करुआई *स्त्री.* (देश.) 'कड़वापन', कटुता उदा. "धूमहु "धूमहु तजै सहज करुआई" -मानस।

करुआना *अ.क्रि.* (देश.) 1. कड़ुआ लगना 2. आँख का दुखना।

करुई *स्त्री.* (देश.) कड़वी वस्तु *वि.* कटु, कड़ुवी उदा. उदा. "सुनि-सुनि जोग-संदेसनु लागत ज्यों करुई ककरी।"

करुण *वि.* (तत्.) दया के योग्य, दयनीय, करुणाजनक, दयार्द्र, करुणामय *पुं.* (तत्.) काव्य के नव रसों में से एक 2. एक बुद्ध 3. एक तीर्थ 4. एक राक्षस 5. परमेश्वर।

करुणा *स्त्री.* (तत्.) किसी दुखी या विपत्ति ग्रस्त व्यक्ति के दुख को देखकर उत्पन्न हुई सहानुभूति सहानुभूति तथा दुख दूर करने की प्रेरणा व भावना, दया, रहम, तरस 2. वियोग से उत्पन्न मनोविकार।

करुणा-अयन *वि.* (तत्.) करुणा के आलय, अर्थात् अति दयालु।

करुणाकर *वि.* (तत्.) 1. करुणा से युक्त, बहुत दयालु 2. करुणा करने वाला, दयावान, दयालु।

करुणात्मक *वि.* (तत्.) करुणा, दया या शोक से युक्त, (काव्य के अर्थ में) करुण रस से युक्त काव्य।

करुणा-दृष्टि *स्त्री.* (तत्.) दयादृष्टि, करुणा से युक्त युक्त नजर।

करुणा-धाम *पुं.* (तत्.) 1. करुणा से परिपूर्ण, असीम दयालु 2. ईश्वर।

करुणानिधान *पुं.* (तत्.) जो सदैव दयालु बना रहता हो, करुणा से आपूरित हृदय वाला ईश्वर।

करुणापर *वि.* (तत्.) अति दयावान, ईश्वर।

करुणा-पारावार *वि.* (तत्.) करुणा का समुद्र, अति दयासागर, असीम दयामय।

करुणामय *वि.* (तत्.) करुणा से आपूरित, अत्यंत दयावान, दयालु।

करुणामूल *वि.* (तत्.) अति दयावंत, दया का सागर।

करुणार्द्र *वि.* (तत्.) करुणा या दया से द्रवित हृदय-वाला, दयार्द्र, दयामय।

करुणालय *वि.* (तत्.) अत्यंत करुणायुक्त, दयावंत, दयालु।

करुणावत्सल *वि.* (तत्.) दयावान, करुणायुक्त, अत्यंत कारुणिक।

करुणावरुणालय *पुं.* (तत्.) करुणा का समुद्र अर्थात् दयासागर, अत्यंत दयावान व्यक्ति 2. परमेश्वर।

करुणा-विमुख *वि.* (तत्.) निष्ठुर, कठोर हृदय वाला, दयारहित।

करुणा-सागर/करुणा-सिंधु *पुं.* (तत्.) 1. अपरिमित दयावान व्यक्ति, करुणा तथा दया से परिपूरित

समुद्र के समान गंभीर व्यक्ति 2. परमात्मा, परमपिता *वि.* असीम दयालु।

करुन *वि.* (तद्.) 'करुणा'। 'करुणावान्'।

करुना *स्त्री.* (तद्.) दे. 'करुणा'।

करुबेल *स्त्री.* (तद्.) इंद्रायण, इंद्रायन, सुंदर फल देने वाली बेल जिसके फल करुए (कड़ुए) होते हैं, तथा औषध के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

करुवार *पुं.* (देश.) (नाव को खेने का) डाँड़, यह पतवार से कुछ भिन्न स्वरूप का होता है।

करूर *वि.* (देश.) कठोर, क्रूर, निष्ठुर।

करूला *पुं.* (देश.) हाथ में पहनने का कड़ा 2. घटिया सोना 3. कुल्ला।

करेजा *पुं.* (देश.) दे. कलेजा।

करेटा *वि.* (देश.) श्याम वर्ण वाला, काला, (उपेक्षा या व्यंग्यपरक रूप में प्रयुक्त) उदा. पेटे की न पाई या करेटे अहरेटे की -ठाकुर (रीतिबद्ध-5)।

करेणु *पुं.* (तत्.) 1. कनेर, कर्णिकार का पौधा, कनेर का पेड़ 2. हाथी (हथिनी)।

करेणुका *स्त्री.* (तत्.) 'हथिनी'।

करेत *पुं.* (देश.) 'करैत' नामक एक प्रकार का काला अत्यंत जहरीला साँप।

करेतर *वि.* (तत्.) कर से इतर 1. हाथ से भिन्न (अंग) 2. कर या टैक्स से भिन्न 3. उस धन आदि से भिन्न जो कर लगने के योग्य हो यथा- करेतर आमदनी।

करेनु *पुं.* (तद्.) हाथी 'करेणु'।

करेनुका (करेणुका) *स्त्री.* (तद्.) 'हथिनी'।

करेब *स्त्री.* (अं.) लहरदार पारदर्शी झीना रेशमी (बनावटी रेशमी) कपड़ा। crape

करेमू *पुं.* (तद्.) एक ऐसी घास जो जलाशयों में उत्पन्न होती तथा फैल जाती है। इसके पीले और पतले डंठल से निकलने वाले दो बड़े पत्तों का शाक बनाया जाता है तथा इसके रस से अफीम का नशा उतर जाता है। कलेब या कलंबु, 'कलंबिका'।

करेर/करेरा *वि.* (देश.) 1. कठोर, कड़ा, कठिन। 2. दृढ़ मजबूत, तगड़ा, हृष्ट-पुष्ट उदा. करेरा जवाब, करेरा मूल्य।

करेरी *वि.* (देश.) करेर या करेरा का स्त्री रूप।

करेरुआ *पुं.* (देश.) एक काँटेदार औषधोपयोगी बेल (लता), इसके फल में बहुत से बीज होते हैं।

करेल *पुं.* (देश.) दोनों हाथों से घुमाए जाने वाला एक बड़ा मुग्दर।

करेला *पुं.* (तद्.) 'कारबेल्ल', हरे कड़ुए कुछ लंबे दानेदार फलों की छोटी बेल जिसके फलों की तरकारी कड़वी होते हुए भी स्वादिष्ट होती है 2. हुमेल या माला के बड़े दानों के बीच में लगाई जाने वाली लंबी गुरिया विशे. करेला को वर्ष में दो बार उगाया जाता है।

करेली *स्त्री.* (तद्.) 1. छोटे छोटे फलों वाला जंगली करेला।

करेवा *पुं.* (देश.) दे. कलेवा।

करै *अ.क्रि.* (देश.) 1. करे उदा. 'कोउ कछु करै' 2. करेगा (करैगा.) उदा. "काज करै को अनत पठायसि -कुतुबन मृगा. 88/2।

करैत *वि.* (देश.) एक तरह का फनदार साँप जो अत्यंत विषैला तथा काला होता है।

करैया *वि.* (देश.) कर्ता, करने वाला।

करैल *स्त्री.* (देश.) 1. तालाबों (जलाशयों) के किनारे किनारे पाई जाने वाली काली मिट्टी जो बहुत उपजाऊ होती है, यह मिट्टी दीवारों को बनाने, लीपने तथा कुम्हारों द्वारा खिलौने आदि बनाए जाने के लिए बहुत उपयोग होती है 2. मालवा क्षेत्र की मिट्टी के समान काली और चिकनी मिट्टी 3. बाँस का नरम कल्ला 3. डोम कौआ।

करोट *पुं.* (तत्.) 1. कटोरा या प्याला 2. खोपड़ी।

करोटन *पुं.* (तद्.) विलक्षण आकार की रंग-बिरंगे फूलों वाली वनस्पति जो साज-सज्जा हेतु लगाई जाती है।

करोटना *अ.क्रि.* (देश.) करवट लेना।

करोटि *स्त्री.* (तत्.) खोपड़ी, 'करोटी'।

करोड़ *वि.* (तद्.) 1. गिनती करने में जो सौ लाख हो (10000000/-) 2. असंख्य *पुं.* सौ लाख की संख्या।

करोड़पति *पुं.* (तद्.) एक करोड़ रुपए अथवा उससे अधिक राशि या उसी कीमत की संपत्ति का स्वामी, धनपति।

करोदक *पुं.* (तत्.) 1. कर का उदक अर्थात् हाथ में स्थित जल, हाथ में रखा हुआ पानी *वि.* खुरचने या कुरेदने वाला।

करोदना *स.क्रि.* (देश.) खुरचना, रगडक़र साफ करना।

करोना *स.क्रि.* (देश.) 1. कुरेदना 2. खुरचना या खरोंचना, ब्रज में 'करोव' भी प्रयुक्त हुआ है उदा. "धरनी नखन करोवति" सूर सागर 10/2146)।

करोर *पुं.* (देश.) 1. एक करोड़ की संज्ञा, *वि.* एक करोड़।

करोरना *स.क्रि.* (देश.) दे. करोना।

करोरि *वि.* (देश.) 1. करोड़ या करोड़ों का मालिक 2. करोड़पति, धनी व्यक्ति *वि.* धनी, करोड़ों की संपत्ति वाला।

करौंदा *पुं.* (तद्.) 'करमर्द', एक काँटेदार झाड़ जिस पर छोटे बेर के समान सुंदर खट्टे फल लगते हैं तथा उनका भोजन में कई रीतियों से प्रयोग किया जाता है, फलों का आधा भाग लाल और आधा सफेद होता है 2. कान के पास होने वाली करौंदे के आकार की गिलटी।

करौंदिया *वि.* (देश.) 1. करौंदे के रंग वाला 2. कुछ स्याही लिए लाल रंग का *पुं.* नीलापन लिए हुए लाल रंग।

करौंदी *स्त्री.* (तद्.) बड़े करौंदा से भिन्न छोटा "करौंदा" होता है जिसके फल भी अपेक्षाकृत छोटे होते हैं।

करौत *पुं.* (तद्.) लकड़ी चीरने का आरा। स्त्री. 'करौती', 'करौंती 2. रखैल स्त्री (वह स्त्री जो विधिवत ब्याही न हो) 3. काली चिकनी मिट्टी।

करौता *पुं.* (तद्.) दे. करौत।

करौती *स्त्री.* (तद्.) 1. आरी, लकड़ी चीरने का औजार 2. शीशा गलाने की भट्टी 3. शीशे का छोटा बर्तन उदा. "काँच करौती जल ज्यों जानति" -सूरसागर (10/2753)।

करौना *पुं.* (देश.) 1. नक्काशी करने हेतु प्रयुक्त लोहे की कलम 2. खुरचना 3. कुरेदना।

करौला *पुं.* (अर.<करावल) (करौली) शिकार का पीछा करना 1. हँकवा करने वाला या हॉकने वाला 2. शिकारी उदा. भायकै "सिंह" कह्यौ समुझाय करौलानि आय अचेत उठाए (भूषण) 3. सैनिक, सिपाही, आखेटक। 4. वह फौज जो आगे चलती तथा शत्रु की सेना की खबर देती थी।

करौली *स्त्री.* (तद्.) 'करवाली' 1. एक छोटा शस्त्र 2. 2. एक प्रकार की सीधी छुरी 3. भुजाली (जिसे भोंक कर प्रतिपक्षी पर वार किया जा सकता है)।

कर्क *पुं.* (तत्.) 1. बारह राशियों में से चौथी राशि 2. केकड़ा 3. दर्पण 4. शोभा, सुंदरता 5. आग 6. काकड़ासिंगी।

कर्कट *पुं.* (तत्.) 1. कर्क राशि 2. केकड़ा 3. करकटिया, करकरा, एक प्रकार का सारस 4. लौकी, घीया 5. कमल की मोटी जड़, मसीठ 6. सड़सी 7. कैंसर (एक घातक रोग) 8. तराजू का सिरा या छोर 9. हाथों के रखने का ढंग 10. एक प्रकार का ज्वर।

कर्कटार्बुद *पुं.* (तत्.) [कर्कट+अर्बुद] कैंसर (कर्कट) रोग की गाँठ, फोड़ा।

कर्क-नीहारिका *स्त्री.* (तत्.) खगो. रोहिणी तारा से एक अंश उत्तर-पश्चिम में स्थित आकाश-गंगा की की एक नीहारिका।

कर्कर *पुं.* (तत्.) 1. कॉकर, कंकड़ 2. चूने का कंकड़ 3. एक प्रकार का नीलम 4. कड़ा, कठोर, खुरखुरा 5. ईख, कटार 6. तलवार 7. करारा, मजबूत, दृढ़। कर्कराक्ष (कर्कर+अक्ष) कड़ी आँख वाला व्यक्ति)।

कर्करेटु *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का सारस पक्षी 2. गला पकड़ने के समान आकृति वाला हाथ।

कर्कश *पुं.* (तत्.) 1. तलवार 2. कटार 3. ईख की एक प्रजाति 4. कमीले का पेड़ 5. ईख *वि.* कठोर, कड़ा, सख्त, निष्ठुर, कटु।

कर्कशता *स्त्री.* (तत्.) 1. कर्कश होने की अवस्था, भाव, गुण 2. कठोरता 3. निष्ठुरता 4. तीव्रता 5. 5. उद्दंडता।

कर्कशा *स्त्री.* (तत्.) 1. झगड़ालू (स्त्री) 2. तेज और और उग्र स्वभाव वाली (स्त्री) 3. लड़ाकी (स्त्री)।

कर्कशी *वि.* (तत्.) 1. कटु व तीव्र (स्वर) 2. क्रूर, निर्दयी 3. निष्ठुर 4. कठोर, कड़ा 5. खुरखुरा, काँटेदार, प्रचंड, तेज।

कर्कस *वि.* (तद्.) दे. कर्कश।

कर्केतन *पुं.* (तत्.) जमुर्रद (बेरिल) नामक एक रत्न रत्न विशेष।

कर्कोट *पुं.* (तत्.) 1. ककोड़ा, खेखसा 2. पीले फूलों वाला एक शाक 3. बेल का पेड़।

कर्ज *पुं.* (अर.) 1. उधार लिया हुआ धन इत्यादि 2. कर्जा, ऋण मुहा. कर्ज उतारना- कर्जा (ऋण) चुकाना, उधार उतार देना; कर्ज़ खाना- कर्ज लेना, उपकृत होना, ऋण लेकर काम चलाना; कर्ज खाए बैठना- सदा हर तरह तत्पर रहना।

कर्जदार *वि.* (अर.) ऋणी, जिसने उधार ले रखा हो।

कर्ण *पुं.* (तत्.) 1. महाभारत का पराक्रमी तथा यशस्वी योद्धा जो कुंती का सबसे बड़ा बेटा था जिसे उसने त्याग दिया था और उसे अधिरथ तथा राधा ने पाला-पोसा था 2. जिस इंद्रिय से शब्द सुनाई देते है, श्रवणेद्रिंय, कान 3. वृत्त की मध्य रेखा 4. नाव की पतवार 5. एक सममात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 30 मात्राएँ होती हैं तथा अंत में दो गुरु होते हैं 6. समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने वाली रेखा मुहा. कर्ण का पहरा- प्रातःकाल (दान, पुण्य का समय)।

कर्णक *पुं.* (तत्.) 1. (किसी वस्तु का) कान के समान बाहर निकला अंग 2. पेड़ की डालियाँ और पत्ते 3. बर्तन आदि वस्तुओं को पकड़ने का कुंदा (कुंडा)।

कर्णकटु *वि.* (तत्.) 1. सुनने में अप्रिय या कर्कश प्रतीत होने वाला 2. अप्रिय (बात या शब्द)।

कर्णकुहर *पुं.* (तत्.) 1. कान का छेद जिससे शब्द सुनाई देने में सहायता मिलती है।

कर्णग *वि.* (तत्.) 1. कान में गमन करने वाला अर्थात् आवाज, ध्वनि, शब्द 2. कान तक फैला हुआ 3. कर्ण-स्थित 4. कान में पड़ा हुआ 5. आकर्ण।

कर्णगूथ *पुं.* (तत्.) कर्ण मल, कान का मैल।

कर्णगोचर *वि.* (तत्.) 1. सुनाई पड़ने वाला, जो कानों से सुनाई दे 2. जो सुन पड़े, सुना जा सके 3. जो सुना गया हो।

कर्णजप *पुं.* (तत्.) 'कानाफूसी'।

कर्णदर्शी *वि.* (तत्.) कान की जाँच करने का एक यंत्र। otoscope

कर्णधार *पुं.* (तत्.) 1. नाविक, माझी 2. किसी संस्था का नेतृत्व संभालने वाला व्यक्ति 3. सहायता करने वाला व्यक्ति, सहारा, अवलंब।

कर्णनाद *वि.* (तत्.) 1. कान में सुनाई पड़ती हुई ध्वनि, गूँज, 'झनझनाहट या 'घनघनाहट' 2. कान का एक रोग जिसके कारण कान में हर समय कुछ गूंज सुनाई पड़ती रहती है, कर्णनाद रोग।

कर्ण-पटह *पुं.* (तत्.) कान का पर्दा, कान की नली के अंत में स्थित एक चमकदार पर्दा-या अर्धपार दर्शी झिल्ली टि. कर्ण-पटह के तिरछे लगे होने से कभी कुरेदने अथवा बाह्य चोट लगने से कान का पर्दा फट जाता है।

कर्ण-परंपरा *स्त्री.* (तत्.) एक से दूसरे और दूसरे से से तीसरे को सुनने तथा इसी तरह बात या ज्ञान फैलने की पद्धति।

कर्णपालि *स्त्री.* (तत्.) कान के नीचे लटका हुआ कोमल भाग, कान की लौर, कर्णपाली।

कर्णपाली *स्त्री.* (तत्.) कान में पहने जाने वाला आभूषण, लौंग, कान की बाली, कर्णफूल, मुरकी।

कर्ण-पिशाची *स्त्री.* (तत्.) एक देवी विशेष जिसकी सिद्धि प्राप्त होने पर (जैसा कहा जाता है) व्यक्ति व्यक्ति वांछित (अज्ञात) जानकारी प्राप्त कर सकता है।

कर्णपुर *पुं.* (तत्.) आधुनिक भागलपुर का पुराना नाम, चंपा नगरी।

कर्णपूर *पुं.* (तत्.) 1. नीला कमल 2. अशोक वृक्ष 3. सिरिस का पेड़ 4. कर्णफूल (करनफूल) 5. कान का आभूषण।

कर्णमधुर *वि.* (तत्.) कानों को मधुर लगने वाला, श्रुतिमधुर।

कर्णमाधुर्य *पुं.* (तत्.) सुनने में मधुर लगने का भाव, श्रुतिमधुरता, सुश्रव्यता।

कर्णमूल *पुं.* (तत्.) 1. कान का नीचे वाला भाग 2. कान की जड़ 3. कानों का एक रोग, कनपेड़ा रोग गलसुआ। mumps

कर्णवेध *पुं.* (तत्.) 1. बालकों के कान छेदने का संस्कार, 'कनछेदन', कान को छेदना।

कर्णशरीष *पुं.* (तत्.) अलंकार या आभूषण की तरह कान पर रखा हुआ शरिष का फुल (पुष्प)।

कर्णशष्कुली *स्त्री.* (तत्.) कान का निचला बाहरी भाग जिसमें छेद करके बालियाँ पहनी जाती हैं टि. कर्णशष्कुली के छेद से मध्य कान की बाहरी दीवार तक जाने वाली नली "कर्णांजलि" कही जाती है।

कर्णशोथ *पुं.* (तत्.) कान की सूजन।

कर्णस्राव *पुं.* (तत्.) (आयु.) कान बहने (कान से पीप निकलना) का रोग।

कर्णहीन *वि.* (तत्.) कानों से रहित, बिना कानों वाला, सर्प (साँप), कर्णहीन।

कर्णांतिक *वि.* (तत्.) कान के समीप स्थित।

कर्णाकर्णि *वि.* (तत्.) कानोंकान, कानाफूसी।

कर्णाका *स्त्री.* (तत्.) 1. ताटंक, बाली या बाला नामक कान का आभूषण 2. कमल का बीजकोश 3. हाथ की मध्यमा (बिचली) उँगली 4. हाथी की सूँड़ की नोक 5. रवती, सफेद गुलाब 6. कलम, लेखनी 7. डंठल।

कर्णाट *पुं.* (तत्.) वर्तमान कर्नाटक प्रांत का (क्षेत्र का) पुराना नाम 2. मेघराज का दूसरा पुत्र माना जाने वाला संपूर्ण जाति का एक राग, इसे प ध नि सा रे ग म प स्वर पाठ के माध्यम से रात के पहले पहर में गाया जाता है।

कर्णाटक *पुं.* (तत्.) दे. कर्णाट

कर्णाटी *स्त्री.* (तत्.) 1. कर्नाटक की स्त्री, वस्तु 2. कर्नाटक प्रदेश का संगीत (एक रागिनी) जो रात्रि की दूसरी धड़ी में गायी जाती है 3. कन्नड भाषा (कर्नाटक की भाषा) 4. शब्दालंकार की एक वृत्ति जिसमें केवल कवर्ग के ही अक्षर आते हैं।

कर्णादर्श *पुं.* (तत्.) कान का एक गहना, कर्णफूल।

कर्णाधार *पुं.* (तत्.) कर्णधार, नायक, मार्गदर्शक उदा. विसर्जन ही है कर्णाधार, वही पहुँचा देगा उस पार-यामा पृ 190 महादेवी।

कर्णारि *पुं.* (तत्.) कर्ण का अरि (शत्रु) 'अर्जुन'।

कर्णार्बुद *पुं.* (तत्.) कान का अर्बुद, कान का फोड़ा, कान का मस्सा।

कर्णालंकृति *स्त्री.* (तत्.) कान की शोभा 2. कान की सजावट 3. कान का आभूषण।

कर्णिकार *पुं.* (तत्.) 1. कनेर का वृक्ष 2. कनेर का फूल 3. अमलतास का वृक्ष या फूल।

कर्णी *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का बाण जिसका सिरा कान के आकार का होता है 2. कर्णधार, मल्लाह, नाविक 3. अमलतास का वृक्ष 4. कनपटी 5. कानों वाला 6. पतवार वाला 7. गठीला 8. बड़े कानों वाला (दीर्घकर्ण)।

कर्णोपकर्णिका *स्त्री.* (तत्.) 1. किंवदंती, अफवाह 2. कानाफूसी करने वाली स्त्री।

कर्तन *पुं.* (तत्.) 1. कतरनी या काटने का भाव, काटना, कतरना 2. कातना, कताई (सूत की)

कर्तनी *पुं.* (तत्.) कैंची, (कर्तनिका) चाकू, कटार, काटने या कतरने का उपकरण।

कर्तरि *पुं.* (तत्.) 1. कर्ता के अनुसार (अनुरूप) 2. कर्ता में, कर्ता के अनुरूप प्रयोग।

कर्तरि प्रयोग *पुं.* (तत्.) वह प्रयोग जहाँ क्रिया, कर्ता के लिंग, वचन का अनुसरण करती है या उसके अनुसार बदलती है। active voice

कर्तरी *स्त्री.* (तत्.) कैंची, काटने या कतरने का उपकरण 2. छुरी या कटार।

कर्तव्य *पुं.* (तत्.) 1. करने योग्य कार्य 2. करणीय, करने योग्य 3. नैतिक, धार्मिक दृष्टि से से आवश्यक कार्य 4. धर्म 5. फर्ज 6. उचित काम उदा. सब विधि सब कर्तव्य तुम्हारे - मानस।

कर्तव्य-विमुख *वि.* (तत्.) जो अपने कर्तव्य का पालन न करता हो।

कर्तव्य-विमूढ *वि.* (तत्.) घबराहट के कारण या विशेष उलझन में पड़कर जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या करना है, भौंचक्का, घबराया हुआ।

कर्ता/कर्त्ता *पुं.* (तत्.) 1. बनाने या करने वाला व्यक्ति 2. ब्रह्मा, विधाता, ईश्वर 3. जिसे सब कुछ करने का अधिकार हो व्या. कारक का एक भेद *वि.* 1. किसी कार्य या क्रिया को करने वाला 2. बनाने वाला।

कर्नल *पुं.* (अं.) सेना का एक वरिष्ठ अधिकारी दो या अधिक वाहिनी के रेजिमेंट का कमांडर। colonel

कर्नाटक-पद्धति *स्त्री.* (तत्.) दक्षिण भारत में प्रचलित भारत की संगीत की प्रमुख पद्धति जो उत्तर भारतीय या हिंदुस्तानी पद्धति से भिन्न होती है।

कर्पट *पुं.* (तत्.) कपड़ा, चिथड़ा, फटा कपड़ा, गूदड़।

कर्पटिक/कर्पटी *वि.* (तत्.) जो चिथड़े लपेटे हो 1. *पुं.* भिखारी 2. दीन या निर्धन व्यक्ति।

कर्पास *पुं.* (तत्.) 1. कपास 2. रुई।

कर्पूरमणि *पुं.* (तत्.) हाथ पर घिसे जाने पर तिनकों को आकर्षित करने वाला एक प्रकार का सफेद पत्थर, 'तृणमणि' 2. एक औषध।

कर्बर *वि.* (तद्.) दे. कर्बुर।

कर्बला (करबला) *पुं.* (अर.) वह स्थान जहाँ पर मुसलमानों द्वारा अपने मुहर्रम के ताजियों को दफनाया जाता है।

कर्बुर *वि.* (तत्.) चितकबरा, रंगबिरंगा *पुं.* 1. चितकबरा रंग 2. पाप 3. धतूरा 4. सोना 5. कचूर 6. जल।

कर्म *पुं.* (तत्.) 1. जिसे किया जाए, किर्‌या, काम 2. नैतिक या धार्मिक दृष्टि से कर्तव्य के रूप में किए गए कार्य जैसे- शिक्षक का कर्तव्य, अध्यापन 3. शास्त्र सम्मत विधि-विधान से करने करने योग्य धार्मिक कार्य, (यथा-वैवाहिक कर्म, अंत्येष्टि कर्म) 4. इंद्रियों द्वारा स्वाभाविक रूप से से करने के कार्य 5. तकदीर, भाग्य 6. अनुचित या लोकनिषिद्ध कार्य, करतूत 7. प्रशंसनीय कार्य 8. व्यवसाय विषयक कार्य-शिल्पकर्म, काष्ठ कर्म 9. कौशल *व्या.* वाक्य में प्रयुक्त पद जिस पर क्रिया क्रिया का फल या प्रभाव पड़ता है।

कर्मकरी *स्त्री.* (तत्.) जो काम करती हो, काम करने वाली मजदूरनी।

कर्मकांड *पुं.* (तत्.) 1. धर्म संबंधी कृत्य या कार्य 2. वेद के विभाग के रूप में वह शास्त्र जिसमे यज्ञ, संस्कार आदि धार्मिक तथा नैमित्तिक कर्मों की विधि आदि को वर्णित किया गया हो 3. धार्मिक कृत्य/कर्म या विधि-विधान।

कर्मकांडकार *वि.* (तत्.) 1. वह व्यक्ति जो धार्मिक कृत्य या कर्मकांड संपन्न करता हो, कर्मकांडी पंडित-विद्वान 2. कर्मकांड में निपुण।

कर्मकांडपरता *स्त्री.* (तत्.) विधि विधान युक्त कर्मों कर्मों में निष्ठा।

कर्मकांडवाद *पुं.* (तत्.) 1. धार्मिक कर्मकांड से अभीष्ट-प्राप्ति का दृढ़ विश्वास 2. ब्रह्मज्ञान या कल्पना-प्रवण धर्म का विरोधी मत या विश्वास।

कर्मकांडी *वि.* (तत्.) 1. कर्मकांडकर्ता 2. *पुं.* पुरोहित, कर्मकांड करने में निपुण व्यक्ति।

कर्मकार *पुं.* (तत्.) 1. मजदूर 2. कारीगर, लुहार, बढ़ई।

कर्मकारक *पुं.* (तत्.) कारकों का एक भेद, वह पद जो क्रिया के फल के आश्रय के स्वरूप में प्रयुक्त प्रयुक्त होता है।

कर्मक्षय *पुं.* (तत्.) किए हुए कर्मों का नाश।

कर्मक्षेत्र *पुं.* (तत्.) कर्मभूमि, कार्यक्षेत्र।

कर्मग्रंथि *स्त्री.* (तत्.) कर्मों की वह गाँठ या बंधन जो अज्ञातपरक वासना दोष से उत्पन्न होता है तथा वही जो बारंबार जन्म-मरण का कारण बनता है।

कर्मचांडाल *पुं.* (तत्.) अपने कुकर्मों या नीच कर्मों के कारण चांडाल के समान माना गया या माना जाने योग्य व्यक्ति, कृतघ्न, कपटी, चुगलखोर, परनिंदक, अत्यंत क्रोधी व क्रूर व्यक्ति।

कर्मचारी *पुं.* (तत्.) नियमित वेतन या मजदूरी पर किसी काम पर तैनात (नियुक्त) व्यक्ति।

कर्मचारी-वर्ग *पुं.* (तत्.) किसी प्रकार की संस्था या कारखाने आदि में काम करने वाले कर्मचारियों का समूह।

कर्मज *वि.* (तत्.) कर्म से पैदा या उत्पन्न *पुं.* कर्म-फल।

कर्मठ *वि.* (तत्.) 1. जो कार्य को निष्ठापूर्वक करता करता हो 2. कर्म में तत्पर, कर्मशील, कर्मनिष्ठ, कर्मण्य 3. कर्म-कुशल, कार्यकुशल।

कर्मठता *स्त्री.* (तत्.) कर्मण्य या कर्मठ होने की प्रवृत्ति, कर्मण्यता, कर्मशीलता, कार्यकुशलता।

कर्मणा *क्रि.वि.* (तत्.) कर्म से, कर्म द्वारा जैसे- मनसा, वाचा कर्मणा, मन, वचन और कर्म से।

कर्मणि *पुं.* (तत्.) 1. कर्म में 2. कर्मानुसार।

कर्मणि प्रयोग *पुं.* (तत्.) दे. कर्मप्रधान वाक्य।

कर्मण्य *वि.* (तत्.) क्रियाशील, काम करने में भरोसा रखने वाला विलो. अकर्मण्य।

कर्मण्यता *स्त्री.* (तत्.) कर्मठता, किर्याशीलता, करने की ललक, प्रवृत्ति विलो. अकर्मण्यता।

कर्मतः *क्रि.वि.* (तत्.) कर्म से, कर्म द्वारा, कर्मणा।

कर्मधारय समास *पुं.* (तत्.) समास का एक भेद जिसमें प्रथम तथा द्वितीय पद क्रमशः विशेषण और विशेष्य होते हैं या उपमेय और उपमान होते हैं उदा. 'नीलमणि', 'चंद्रमुख'।

कर्मना *क्रि.वि.* (तद्.-तत्.-कर्मणा) कर्म से, कर्म द्वारा। उदा. 'मनसा, वाचा कर्मना, कबीर सुमिरन सुमिरन सार' -कबीर (साखी 2/4)।

कर्मनिष्ठ *वि.* (तत्.) 1. कर्मशील, कर्म करने में तत्पर, निष्ठापूर्वक काम करने वाला 2. श्रद्धापूर्वक धर्मशास्त्र सम्मत कर्मकांड को करने वाला।

कर्म-पाक *पुं.* (तत्.) पूर्वकृत कर्मों का परिणाम, किए गए कर्मों का फल।

कर्मप्रधान *वि.* (तत्.) कर्म की प्रमुखता या प्रधानता वाला/से संबंधित, भौतिक पदार्थों, कार्यों तथा अनुभूतियों से संबंधित उदा. करम प्रधान विश्वकरि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा। (रामच. 2/219/2)।

कर्मप्रधान क्रिया *स्त्री.* (तत्.) (व्या.) लिंग और वचन में कर्म का अनुसरण करती हुई कर्मवाच्य की क्रिया।

कर्मप्रधान वाक्य *पुं.* (तत्.) (व्या.) वह वाक्य जिसमें क्रिया का लिंग, वचन निर्धारण कर्म के अनुसार हो, वाक्य में कर्म की प्रधानता हो।

कर्म-फल *पुं.* (तत्.) 1. किए हुए कर्म या कर्मों का परिणाम 2. पिछले जन्मों या इस जन्म में किए हुए कर्मों का फल या परिणाम।

कर्मबंध *पुं.* (तत्.) पहले या इस जन्म में किए गए कर्मों के परिणामस्वरूप होते रहने वाला 2. जन्म-मरण का बंधन।

कर्मभूमि *स्त्री.* (तत्.) 1. कर्म करने का स्थान 2. धर्म-शास्त्रों के अनुसार निर्दिष्ट उत्तम कार्यों के लिए उचित भूमि, यथा-"भारतभूमि हम भारतीयों की कर्मभूमि है।

कर्मभोग *पुं.* (तत्.) पहले किए (कृत कर्म) गए कर्मों के फल का भोग।

कर्मयोग *पुं.* (तत्.) 1. चित्त की शुद्धि के लिए किया गया शास्त्र सम्मत कर्म। 2. सफलता और असफलता के अवसर में समान भाव रखते हुए किया गया कर्तव्य पालन, -मात्र कर्तव्य समझकर कार्य करने की भावना, निष्काम-भाव से कर्म करने का साधन-मार्ग 3. 'गीता' के तीसरे अध्याय का नाम।

कर्मयोगी *वि.* (तत्.) 1. निष्काम भाव से सभी कर्मों का कर्ता 2. कर्मयोग का साधक या अनुयायी 2. *पुं.* निष्काम भाव से कार्यों को करने वाला व्यक्ति 3. कर्मयोग का साधक योगी।

कर्म-रेखा *स्त्री.* (तत्.) 1. कर्म या भाग्य का लेखा 2. भाग्य रेखा (हस्त या सामुद्रिक शास्त्र सम्मत)।

कर्मवश्यता *स्त्री.* (तत्.) कर्म की अधीनता, कर्म के अनुसार या अधीन होने का भाव।

कर्मवाच्य *स्त्री.* (तत्.) (व्या.) ऐसी वाक्य-रचना जिसमें कर्म का प्रयोग कर्ता की जगह होता हो तथा कर्म के अनुसार क्रिया भी प्रयुक्त होती हो।

कर्मवाद *पुं.* (तत्.) "कर्म का फल अवश्य भोगना होता है" इस भाव पर आधारित एक दार्शनिक सिद्धांत 2. मीमांसादर्शन।

कर्मवादी *पुं.* (तत्.) 1. मीमांसा दर्शन का अनुयायी, कर्मवाद का अनुयायी व्यक्ति या विद्वान 2. कर्मवाद का पालन या उसमें विश्वास करने वाला व्यक्ति, कर्मकांडी व्यक्ति।

कर्मवान *वि.* (तत्.) 1. कर्म या काम में तत्पर रहने वाला, कर्मठ, कर्मण्य, कर्मशील 2. प्रशंसा योग्य कार्य करने वाला।

कर्मविधि *स्त्री.* (तत्.) 1. काम करने की विधि या तरीका 2. काम का नियम।

कर्म-विपर्यय *पुं.* (तत्.) 1. कर्मों का उलटफेर 2. कर्म-व्यतिक्रम।

कर्म-विपाक *पुं.* (तत्.) पूर्व जन्मों में किए हुए कर्म या कर्मों का फल।

कर्मवीर *वि.* (तत्.) 1. साहस के कार्यों को उत्साहपूर्वक करने वाला। 2. बाधाओं की परवाह न करके उत्साहपूर्वक कर्तव्य-पालन करने वाला, कर्मठ 3. प्रशंसनीय कार्यों का कर्ता।

कर्मशाला *स्त्री.* (तत्.) यंत्रों आदि के निर्माण या मरम्मत करने का स्थान या प्रतिष्ठान, कारखाना, कारखाना, वर्कशाप।

कर्मशील *वि.* (तत्.) 1. कर्म करने वाला, कर्तव्य-निष्ठ, कर्म-तत्पर 2. उद्योगी, उद्यमी 3. मेहनती, परिश्रमी।

कर्मशूर *वि.* (तत्.) 'कर्मवीर', काम करने में शूरों सी प्रवृत्ति वाला।

कर्मसंकुल *वि.* (तत्.) 1. कर्मलीन, कर्ममय, कर्मों में व्यस्त, जो सदैव कर्मों की योजनाएँ रचता तथा कार्यरत रहता हो उदा. वह पूर्णतः कर्मसंकुल परिवार है।

कर्मसंन्यास *पुं.* (तत्.) धर्मशास्त्र सम्मत कर्मकांड का विधिपूर्वक त्याग (विरक्ति) 2. वह व्रत या सिद्धांत जिसमें सब प्रकार के नित्य, नैमित्तिक आदि कर्म तो किए जाते हैं पर उनके फल की कामना नहीं की जाती।

कर्म-संन्यासी कर्म-संन्यास लेने या करने वाला 2. कर्म-संन्यास के सिद्धांतों के अनुसार जीवन बिताने वाला व्यक्ति।

कर्म-साक्षी *पुं.* (तत्.) 1. प्राणियों के शुभ तथा अशुभ कर्म या कर्मों के प्रत्यक्षदर्शी नौ-गवाह, सूर्य, चंद्र, यम, पृथ्वी, काल, अग्नि, जल, वायु और आकाश 2. *वि.* कर्म को देखने वाला व्यक्ति, गवाह।

कर्म-स्थान *पुं.* (तत्.) कार्य-स्थल, कार्यालय, कार्यशाला कारखाना ज्यो. जन्मकुंडली में लग्न से दशम भाव।

कर्महीन *वि.* (तत्.) 1. अकर्मण्य, निठल्ला 2. अभागा, भाग्यहीन।

कर्मांत *पुं.* (तत्.) कर्म का अंत, कार्य या कर्म की समाप्ति, कार्य परिपूर्णता।

कर्मा *वि.* (तत्.) 1. समास युक्त पद के अंत में प्रयुक्त, कर्म वाला, करने वाला। यथा सत्यकर्मा, सुकर्मा, श्रमकर्मा 2. कर्म।

कर्माक्षम *वि.* (तत्.) जो काम करने में सक्षम न हो, अपितु अक्षम हो, काम करने में असमर्थ 2. जो काम न कर सके 3. निकम्मा।

कर्मिष्ठ *वि.* (तत्.) जो काम करने में निष्ठा रखता रखता हो, कर्मनिष्ठ, कर्मकुशल।

कर्मी *वि.* (तत्.) 1. काम करने वाला 2. मजदूर 3. समासयुक्त पद के अंत में प्रयुक्त उदा. सत्यकर्मी, कुकर्मी आदि 4. फल प्राप्ति की इच्छा इच्छा से धार्मिक कर्म-यज्ञ आदि करने वाला *पुं.* कारीगर, उद्यमी।

कर्मेंद्रिय *स्त्री.* (तत्.) काम करने वाली इंद्रियाँ, (उल्लेख है कि पाँच ज्ञानेंद्रियाँ है तथा पाँच कर्मेंद्रियाँ- हाथ, पैर, वाणी (जीभ), गुदा और उपस्थ।

कर्र *पुं.* (देश.) लाल और पीले फूलों वाला पौधा, इसका फूल 'कसूम' अथवा 'कुसुंभ' कहलाता है।

कर्रा *पुं.* (तद्.) 1. जुलाहों द्वारा सूत को फैलाकर तानने की प्रक्रिया 2. *वि.* (देश.) कड़ा, सख्त।

कर्राना *अ.क्रि.* (देश.) 1. कड़ा पड़ जाना, सख्त होना, सख्त होने की क्रिया करना 2. 'कर-कर' का शब्द होना, 'कर-कर' का शब्द करना।

कर्री *वि.* (देश.) कड़ी, सख्त, (कर्रा का स्त्री.)।

कर्वट *पुं.* (तत्.) 1. गाँव, ग्राम 2. गाँव में लगने वाला बाजार 3. पहाड़ का ढाल 4. जिले का मुख्य स्थान।

कर्वर *पुं.* (तत्.) 1. पाप 2. राक्षस, व्याघ्र (बाघ) *वि.* चितकबरा।

कर्ष *पुं.* (तत्.) 1. खिंचाव, तनाव 2. आकर्षण 3. अस्सी रत्ती वाली एक तोल 4. पुराने जमाने का एक सिक्का, हूण, ताव, जोश 5. जुताई, जोतना, खींचना 6. खरोंच 7. अनिष्ट की आशंका वाला दबाव 2. बढ़ेड़ा, फल-विभीतक वृक्ष *स्त्री.* आमलकी।

कर्षक *पुं.* (तत्.) 1. कृषक, किसान, जोतने वाला व्यक्ति, खेतिहर 2. *वि.* खींचने वाला, घसीटने वाला।

कर्षण *पुं.* (तत्.) 1. खींचने की क्रिया, खींचकर लकीर-बनाना, खिंचाई 2. जमीन जोतना 3. आकर्षण 4. घसीटकर लाना आयु. रोगी के वात, पित्त, कफ को कम करना, घटाना।

कर्षण/विकर्षण *पुं.* (तत्.) खींचतान (खींचातानी)।

कर्षना *स.क्रि.* (तद्.तत्.-कर्षण) 1. तानना 2. खींचना 3. बुलाना 4. बटोरना, इकट्ठा करना 5. समेटना।

कर्षिणी *स्त्री.* (तत्.) 1. खींचने के साधन वाली वस्तु, रस्सी, घोड़े की लगाम *वि. स्त्री.* 1. घसीटने वाली 2. खींचने वाली 3. जोतने वाली (खेत या भूमि को)।

कर्षित *वि.* (तत्.) जिसे जोत दिया गया हो, खींचा गया 1. जोता हुआ 2. खींचा हुआ 3. घसीटा हुआ उदा. यह भली-भाँति कर्षित खेत है।

कर्षी *वि.* (तत्.) 1. वह जो कर्षित करता या जोतता हो, खींचता हो 2. खींचने वाला 3. जोतने वाला (खेत को)।

कलंक *पुं.* (तत्.) 1. लांछन, बदनामी, दोष 2. धब्बा, दाग, कालिख 3. चंद्रमा पर दिखाई देने वाला धब्बा 4. लोहे का मोरचा 5. पारे की कजली मुहा. कलंक का टीका- बदनामी का दाग, लांछन; कलंक चढ़ाना/लगाना- बदनाम करना; कलंक धोना- अपयश दूर करना; कलक लगना- बदनाम होना।

कलंक अंक *पुं.* (तत्.) 1. कलंक या बदनामी की बात 2. पाप या बदनामी का निशान 3. कलंक या बदनामी का चिह्न।

कलंकधर *पुं.* (तत्.) कलंक को धारण करने वाला, चंद्रमा।

कलंकांक *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा का काला धब्बा 2. बदनामी का निशान या दोष।

कलंकित *वि.* (तत्.) कलंक लगा हुआ, बदनाम, अपयशी, मोरचा या जंग लगा हुआ, कलंकी।

कलंगड़ा *पुं.* (तद्.) 1. तरबूज 2. संगीत का एक राग।

कलंगी *स्त्री.* (देश.) 1. जंगली या पहाड़ पर पैदा होने वाली भाँग 2. कलगी, मुर्गे की चोटी 3. मुर्गे की चोटी की भाँति का चीरा।

कलंज *पुं.* (तत्.) 1. एक पक्षी (चिड़िया) 2. जहरीले अस्त्र से मारा हुआ मृग या पक्षी 3. ऐसे पक्षी का मांस जिसे खाया जाना निषिद्ध हो 4. तंबाकू का पौधा।

कलंदर *पुं.* (अ.) 1. मुसलमान साधुओं का समुदाय 2. उक्त समुदाय का व्यक्ति 3. बंदर भालू नचाने नचाने वाला 4. ईश्वर के ध्यान तथा भजन में मस्त रहने वाला, फक्कड़ 5. खेमे का आँकुड़ा 6. एक वर्णसंकर जाति, उस जाति का व्यक्ति।

कलंब *पुं.* (तत्.) 1. बाण 2. कदंब 3. साग आदि का डंठल।

कलंबक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का कदंब।

कलंबिका *स्त्री.* (तत्.) 1. गर्दन 2 पीठ की ओर के गले का भाग 3. एक साग।

कल[1] *स्त्री.* (तद्.) 1. सुख, चैन, शांति में रहने की अवस्था 2. संतोष या धैर्य की स्थिति या भाव. उदा. "कल न परति दिन-रैन" मुहा. कल पड़ना- चैन आना, शांति मिलना 3. आज से ठीक पहले का दिन 4. *क्रि.वि.* आने वाला दिन, 'कल' (देश) जैसे- आज तो सोमवार है, रमेश कल मंगलवार को आएगा", कल का क्या ठिकाना, कल क्या होगा?।

कल[2] *वि.* (तत्.) 1. मंद मधुर, अस्पष्ट मधुर (ध्वनि) 2. सुहावना, सुंदर, कोमल, श्रुति मधुर, प्रिय पक्षियों का कलरव उदा. बाल-मरालन्हि के कल जोटा -तुलसी. मानस 1/22/1)।

कल[3] *स्त्री.* (तद्.) 1. अंग, अवयव 2. यंत्र, मशीन उदा. नई कल लगने से कारखाने में अच्छा काम हो रहा है 3. यंत्र या मशीन का पुर्जा, पेंच आदि जिसे घुमाना, दबाना उस यंत्र को सकि्रय करने या सकि्रयता नियंत्रित करने की युक्ति हो 4. उपाय, युक्ति, तरकीब यथा- "बल से नहीं कल से से काम लेना ठीक रहेगा" मुहा. कल ऐंठना/घुमाना/फेरना- किसी के मन को मनचाही दिशा में मोड़ देना, बहका देना, कल पाना- ढंग मालूम होना, कल-पुरजे जानना- पूरी स्थिति जानना, मनोवृत्ति पहचानना 5. कल्य, आरोग्य, तंदुरुस्ती, आराम, सुख 6. *स्त्री.* (कला) पार्श्व, बगल, पहलू *वि.* काला का संक्षिप्त रूप, जैसे- 'कलमुँहा'।

कलई *स्त्री.* (अर.) 1. राँगा 2. राँगे का पतला लेप जिससे पीतल आदि धातुओं के बरतनों को चमकाया जाता है 3. मुलम्मा 4. चूना 5. चूने से की गई पुताई 6. बाहरी चमक-दमक 7. बनावटी स्वरूप, कृत्रिमता मुहा. 1. कलई-खुलना, रहस्य या भेद खुलना, असलियत प्रगट हो जाना 2. कलई खोलना/भंग करना, रहस्य प्रगट कर देना।

कलईगर *पुं.* (अर.) कलई करने वाला व्यक्ति।

कलईदार *वि.* (अर.) कलई किया हुआ, चमक-दमक वाला।

कलऊ *पुं.* (तद्.) 'कलियुग'।

कलकंठ *पुं.* (तत्.) मधुर स्वर करने वाला-हंस, कबूतर *स्त्री.* कोयल काक उदा. कहहिं-कलकंठ कठोरा -तुलसी-मानस 1/69/17।

कलकंठि *स्त्री.* (तद्.) "कलकंठिनी", मधुर कंठ वाली-कोयल, कोकिल उदा. सुनि कलख कलकंठि लजानी।

कलकंठिनी *स्त्री.* (तत्.) कलकंठी, मधुर कंठ स्वर वाली; कोयल, कोकिल।

कलकंठी *वि.* (तत्.) मधुर कंठ स्वर वाला।

कलकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. जोर से चिल्लाना 2. चीत्कार करना। 3. कल-कल का स्वर करना।

कलकना *पुं.* (देश.) झरनों आदि से जल के गिरने या बहने का "कल-कल" शब्द, कोलाहल, शोर, परस्पर कलह के कारण शोर।

कल-कल *पुं.* (अनु.) 1. नदी या अन्य प्रकार के जल-बहाव की मधुर 'कल-कल' ध्वनि या शब्द 2. कोमल और मधुर शब्द।

कलकलाची *स्त्री.* (देश.) बीच से फटी हुई लंबी दुम वाली दुबली-पुतली, फुर्तीली तथा कर्कश ध्वनि वाली, चमकीली, काली एक चिड़िया जो हानिकारक कीड़ों को खाने की प्रवृत्ति वाली होने के कारण खेतों की फसल के लिए लाभदायक होती है, अतः गाँवों में प्राय: खुले स्थानों पर मिलती है।

कलकलाना *स.क्रि.* (अनु.) "कल-कल" शब्द करना, कलरव करना, चहचहाना *अ.क्रि.* 1. चुनचुनी, हलकी खुजली का अनुभव होना, सुरसुराना 2. किसी प्रकार की प्रवृत्ति होना जैसे- 1. क्या बोलने को जीभ कलकला रही है 2. तुम्हारी पिटने को पीठ कलकला रही लगती हैं।

कलकान *वि.* (देश.) दुखी, परेशान उदा. "कोकिला कुहकि-कुहकि कान कलकान करी है" -आलम (आलमकेलि-113)।

कलकानि *स्त्री.* (देश.) कलह, परेशानी, दुख, हैरानी।

कल-कारखाना *पुं.* (तत्.+फा.) 1. वह स्थान जहाँ मशीन से चीजें बनाई जाती हैं, उद्योगशाला, शिल्पशाला 2. मशीन से चलने वाला कारखाना 3. मशीन और कारखाना।

कलकी *पुं.* (तद्.) कल्कि (अवतार)।

कलकूजक *वि.* (तत्.) मधुरभाषी, मधुर स्वर में बोलने वाला 2. मृदुभाषी।

कलकूजिका *वि.स्त्री.* (तत्.) 1. मृदुभाषिणी 2. सुंदर तथा मधुर स्वर में बोलने वाली, मधुर भाषिणी।

कलघोष *वि.* (तत्.) कलकंठ, मधुर लगने वाला स्वर, मधुर स्वर *पुं.* (तत्.) 1. हंस 2. कबूतर 3. कोकिल *स्त्री.* कोयल, कोकिला।

कलक्टर *पुं.* (अं.) जिले का प्रमुख राजस्व अधिकारी, जिला प्रशासन का सर्वोच्च अधिकारी, जिलाध्यक्ष, जिलाधिकारी *वि.* एकत्रित करने वाला अधिकारी, टिकट कलेक्टर, टैक्स कलक्टर।

कलक्टरी *स्त्री.* (देश.) 1. जिलाधिकारी का कार्यालय, कलक्टर की कचहरी 2. कलक्टर का पद 3. कलक्टर संबंधी, कलक्टर का।

कलगान *पुं.* (तत्.) कलरव, मधुर नाद, मधुर-स्वर वाला गीत जैसे- कोकिल का कलगान।

कलगी *स्त्री.* (तुर्की.-कल्गी) 1. पक्षियों के सिर की चुटिया (चोटी), बालों का गुच्छा 2. राजाओं की पगड़ी में लगाए जाने वाले पक्षियों के खूबसूरत बहुमूल्य पर 3. सोने और मोतियों से बनाया हुआ सिर का एक आभूषण 4. टोपी या पगड़ी में लगाया जाने वाला-फुँदना या तुर्रा 5. लावनी की एक तर्ज जिसके गायक को कलगीबाज कहा जाता है।

कलचिड़ी *स्त्री.* (देश.) लाल चोंच और काले पेट वाली एक चिड़िया।

कलछँवों *वि.* (देश.) 1. गहरा काला, झाँवें के समान काला 2. जो झुलसा हुआ सा लगे।

कलछा *पुं.* (तद्.) एक पात्र जिसकी डाँड़ी लंबी और बड़ी होती है तथा पाकशाला में काम आता है।

कलछी *स्त्री.* (तद्.) कड़ाही आदि में व्यंजन पकाने आदि कामों में प्रयुक्त होने वाला लंबी डंडी का एक पात्र (बरतन)।

कलछुला *पुं.* (देश.) भड़भूँजों द्वारा अनाज आदि भूलने में प्रयुक्त लोहे का बड़ा कलछा।

कलजिब्भा *वि.* (तद्.+तत्.) 1. काली जीभ वाला (पशु आदि), 2. ऐसा व्यक्ति जिसकी कही हुई अशुभ बातें ठीक या सत्य साबित होती हो।

कलजीहा *वि.* (तद्.) दे. कलजिह्वा।

कलजुग *पुं.* (तद्.) कलियुग।

कलजुगी *वि.* (तद्.) 1. कलियुग संबंधी, कलियुग का, कलियुगी 2. झूठ, पाप, हिंसात्मकता आदि दुर्गुणों वाला।

कलठोरा *वि.* (देश.) 1. काली चोंच वाला 2. *पुं.* काली चोंच वाला सफेद कबूतर।

कलत्थना *अ.क्रि.* (देश.) 1. व्याकुल होना, विकल होना 2. छटपटाना, दुखी होना उदा. उलत्थैं, पलत्थैं, कलत्थैं कराहैं, न पावैं कहूँ सोक सिंधून थाहैं -पद्‌माकर ग्रंथा. (हिम्मतबहादुर, 75)।

कलत्र *स्त्री.* (तत्.) भार्या, पत्नी।

कलत्रोचित *वि.* (तत्.) नारीसुलभ, नारियों में स्वभावतः होने वाला, स्त्रियोचित।

कलदार *पुं.* (फा.) 1. रुपए का सिक्का 2. मशीन से ढला हुआ रुपया।

कलदुमा *पुं.* (फा.) काली पूँछ वाला पक्षी, कलदुमा पक्षी *वि.* काली पूँछ वाला।

कलधुनि *स्त्री.* (तद्.) कोमल स्वर में होती हुई मधुर ध्वनि, कल-कल निनाद, कल-कल ध्वनि।

कलधुरी *स्त्री.* (देश.) नगरों तथा ग्रामों में जाड़े में पथरीले, झाड़-झंखाड़ वाले स्थानों में पाई जाने वाली एक छोटी काली चिड़िया।

कलधूत *पुं.* (तत्.) दे. कलधौत।

कलधौत *पुं.* (तत्.) सोना, कंचन, स्वर्ण उदा. "कोटिकहू कलधौत के धाम करील के कुँजन ऊपर वारौं" -रसखान (सुजान रसखान 2) 2. चाँदी, 3. मंद एवं मधुर ध्वनि *वि.* 1. सुनहला, सोने का 2. रुपहला, चाँदी के समान।

कलध्वनि *पुं.* (तत्.) 1. मंद और मधुर स्वर, हल्की-हल्की मीठी बोली 2. हंस 3. कबूतर 4. कोकिल, कोयल *वि.* मधुर ध्वनि करने वाला।

कलन *पुं.* (तत्.) 'भली भाँति समझने तथा जानने का भाव" 1. समझना, जानना 2. हिसाब लगाना या गणना करना, गणन 3. अच्छी तरह जानने की क्रिया 4. दोष 5. अपराध 6. त्रुटि 7. दाग या धब्बा 7. शब्द 8. रचना, बनावट 9. ग्रहण, पकड़ चिकि. गर्भ का प्रथम रूप जो विकसित रूप में 'कलल' पुकारा जाता है गणि. फलनों (functions) के आकलन, समाकलन (intigration) तथा संबंधित संकल्पनाओं और अनुप्रयोगों का अध्ययन करने वाली गणित की एक विधि या शाखा। (calculous)

कलना[1] *स्त्री.* (तद्.) 1. ग्रहण, पकड़ 2. ज्ञान, समझ 3. मनोहर रचना, बनावट उदा. देवसृष्टि की सुख विभावरी ताराओं की कलना थी" -प्रसाद।

कलना[2] *स.क्रि.* (तद्.) 1. कलन करने की क्रिया, कलन करना, गिनना या हिसाब लगाना 2. जानकारी लेना, जानना 3. पहनना 4. छोड़ना।

कलनाद *पुं.* (तत्.) 1. मधुर एवं कोमल नाद या स्वर करने वाला जीव, हंस 2. कोमल और मधुर स्वर।

कलप *पुं.* (तद्.) 1. एक हजार चतुर्युगी का समय या अवधि, ब्रह्मा का एक दिन-'कल्प' उदा. 'पलक कलप सम जात' -सूरसागर (10/2346), रचना, बनावट 2. समूह, झुंड 3. समर्थ, योग्य 4. समान 3. कलपने की क्रिया या भाव 2. दुःख उदा. 'मेटि कलप तू होहि कलपतरु' -सूरसागर (10/2817)।

कलप-कलप *क्रि.वि.* (तद्.) 1. हर कल्प में 2. अनेक कल्पों तक, अनेक कल्पों में 3. बहुत काल या लंबी अवधि तक।

कलपतरु *पुं.* (तद्.) 1. स्वर्ग का वृक्ष जो समुद्र-मंथन से निकले हुए 14 रत्नों में से एक और जो जो मनवांछित माँग पूरी करने वाला माना जाता है, कल्पवृक्ष 2. एक वृक्ष जो अफ्रीका और भारत के मद्रास (दक्षिण भारत) तथा महाराष्ट्र में है 3. पर्वतों पर पाया जाने वाला मजबूत लकड़ी वाला एक सफेद वृक्ष।

कलपना *स.क्रि.* (तत्.-कल्पन) 1. कल्पना करना 2. रचना बनाना, गढ़ना 3. सुव्यवस्थित करना, सजाना 4. सजाने की क्रिया में नीचे-ऊपर रखना 5. काटना उदा. "सोई जानहिं बापुरे जो सिर करहिं कल्प" -जायसी (पद्‌मावत 123/9)। 6. पेड़ पौधों को कलम करना 7. कलम काटना तथा नए स्थान पर उसे लगाना 8. कुतरना 9. ध्यान करना-"कलपत दोउ पर जोरि -सूरसागर (10/477) 2. *अ.क्रि.* 1. तरसना 2. बिलखना,

तड़पना उदा. "जाके हिरदै हरि बसै, सो नर कलपै काँइ -"कबीर (साखी 35) 3. कुढ़ना, आहें भरना, दुखी होना 4. *स्त्री.* तड़पने या व्याकुल होने की क्रिया या भाव, कलप, तड़प, 'अकुलाहट'।

कलपनी *स्त्री.* (तद्.) कैंची, कतरनी।

कलपबर *पुं.* (तद्.) महाकल्प *वि.* महाकल्प के समान "पल अंतर चलि जात कलपबर" -सूरसागर (10/1665)।

कलपलता *स्त्री.* (तद्.) कल्पलता, कल्पवृक्ष।

कलपाना *स.क्रि.* (देश.) 1. कलपने का कारण होना या कलपने हेतु विवश कर देना 2. रुलाना 3. सताना, दुखी करना 4. तरसना।

कलपित *वि.* (तद्.) दे. कल्पित।

कल पुर्जा *पुं.* (देश.) मशीन तथा उसके पुर्जे।

कलपोटिया *स्त्री.* (देश.) आँख के ऊपर काले पोटा (पलक) वाला पक्षी।

कलप्पा *पुं.* (देश.) 1. कभी-कभी नारियल में प्राप्त होने वाला एक नीलाभ, सफेद और कठोर पदार्थ (विशेष), चीन में इसे नारियल का मोती बोला जाता है।

कलफ *पुं.* (देश.) धुले कपड़े को सीधा रखने के उद्देश्य से लगाया जाने वाला माँड़।

कलफदार *वि.* (देश.) कलफ लगा हुआ, कलफ लगाकर कडक और सलवटविहीन किया हुआ।

कलबल *पुं.* (तत्.) 1. उपाय 2. दाँव-पेंच उदा. "कल बल छल करि मारि तुरत हैं" -सूरसागर (10/1396) 2. शृंगार, सज्जा 3. कला या यंत्र के बल 4. शोरगुल, कोलाहल 5. अस्पष्ट शब्द उदा. कलबल करि बोलनि" -सूरसागर (10/91)।

कलबलाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. शोर करना 2. कुलबुलाना।

कलबूत *पुं.* (फा.) 1. ऐसा सांचा या ढाँचा जिस पर चढ़ाकर जूता सीया जाता है। ऐसे साँचे पर टोपी तथा पगड़ी भी चढ़ाई जाकर तैयार की जाती हैं ये साँचे टीव या मिट्टी के भी होते हैं 2. साँचा या ढाँचा।

कलभ *पुं.* (तत्.) 1. पाँच वर्ष तक का हाथी का बच्चा 2. हाथी का बच्चा 3. हाथी 4. ऊँट का बच्चा 5. ऊँट 6. धतूरे का वृक्ष।

कलभी *स्त्री.* (तद्.) 1. हथिनी 2. पाँच वर्ष तक का हाथी का मादा बच्चा 3. ऊँट का मादा बच्चा 4. ऊँटनी।

कलम *स्त्री.* (तत्.) 1. लेखनी 2. लिखने की कुशलता कुशलता उदा. आपकी कलम खूबसूरत है 3. चित्रकार की कूँची 4. चित्रकारी की शैली या क्षेत्र या प्रकार उदा. राजस्थानी कलम के चित्र 5. सुनारों तथा शीशा काटने वालों आदि का एक उपकरण जिससे वे बेलबूटे आदि बनाते हैं 6. पेड़-पौधों की कटी हुई शाखा जो दूसरी जगह रोपी या लगाई जाती है जैसे- "मैंने इस पार्क में सफेद गुलाब की कुछ कलमें लगा दी हैं" 7. उक्त उक्त प्रकार से कटी हुई कलमों से उगा हुआ पौधा 8. कनपटी के बाल उदा. "आज नाई ने मेरी कलम थोड़ी ऊपर से काट दी" मुहा. 1. कलम उठाना- लिखना; कलम का मजदूर- लिखने से आजीविका कमाने वाला; कलम का सिपाही- अपनी रचनाओं से समाज सुधार आदि के कार्यों में संघर्षरत लेखक; कलम का धनी- उत्कृष्ट लेखक; कलम घसीटना- लिखना; कलम घिसना- सतत लिखने रहना, लेखन कार्य करना; कलम चलना- लिखा जाना; कलम चूमना- किसी लेखक की बहुत प्रशंसा करना; कलम तोड़ना- रचना कौशल की पराकाष्ठा करना; कलम न उठ सकना- संकोचवश न लिख पाना; कलम न रुकना- लिखने ही रहना; कलम फेरना- (किसी के) लिखे हुए को काट देना, लिखित को निरस्त कर देना; कलम में जादू होना- (जोर होना)- लेखक का प्रभावशील होना; कलम करना- काट कर अलग कर देना; कलम कराना- कटवा डालना; कलम रोपना/लगाना- (गुलाब आदि) किसी पौधे की टहनी को अन्य पौधे की शाखा पर लगाना।

कलमकार *पुं.* (तत्.) 1. लेखक 2. चित्रकार 3. लेखनी से कलात्मक या दस्तकारी का काम करने वाला।

कलमकारी *स्त्री.* (तत्.) 1. कलम की कारीगरी 2. लेखनी या कूँची से दस्तकारी का काम, लेखन कार्य।

कलमख *पुं.* (तद्.) दे. कल्मष।

कलमदान *पुं.* (अर.+फा.) कलम रखने का पात्र जो लकड़ी या शीशे का बना हुआ होता है।

कलमना *स.क्रि.* (देश.) 1. टुकड़े कर देना 2. तराशना 3. पेड़-पौधे की कलम काटना।

कलमबंद *वि.* (अर.+फा.) लिपिबद्ध, लिखा हुआ, लिखित।

कलमलना/कलमलाना *अ.क्रि.* (अर.) अंगों का इधर-उधर से ज्यादा दब जाने के कारण आगे पीछे हिलना-डुलना जैसे- 'ज्यादा बोझ लदा होने से मेरे कंधे और गर्दन कलमलाने लगे थे' 2. कसमसाना 3. बेचैन होना 4. व्याकुल होना 5. तिलमिलाना 6. घबराना।

कलमष *पुं.* (तद्.) 1. पाप 2. गंदगी, मैल।

कलमा *पुं.* (अर.) 1. वचन, वाक्य 2. इस्लाम धर्म के अनुसार एक अरबी वाक्य जिसका भावार्थ है कि ईश्वर एक है और मुहम्मद उसका पैगंबर अर्थात् संदेश वाहक है मुहा. कलमा पढ़ना- मुसलमान बन जाना; कलमा पढ़ाना- मुसलमान बनाना।

कलमास *वि.* (तद्.) कल्माष, चितकबरा।

कलमी *वि.* (अर.) कलम संबंधी, कलम का 2. हाथ का लिखा हुआ 3. हस्तलिखित 4. वृक्ष की शाखा को काट करके लगाई जाने वाली कलम से उत्पन्न पौधे का फूल या फल उदा. "कलमी आम बहुत मीठा होता है"।

कलमी आम *पुं.* (अर.+तद्.) बंबइया, फ़ज़ली, मालदह आदि आमों की एक किस्म टि. यह आम दो प्रकार के पौधों की भिन्न जातियों के योग से बनता है।

कलमी शोरा *पुं.* (अर.+फा.) लंबे रवों वाला और साफ शोरा।

कलमुँहा *वि.* (देश.) 1. जिसका मुँह काला हो, काले मुँह वाला 2. कालिख के पुते हुए मुख वाला 3. कलंकित 4. लांछित 5. दुश्चरित्र।

कलरव *पुं.* (तत्.) 1. मधुर स्वर या ध्वनि 2. पक्षियों की चहचहाट जो कानों को प्रिय तथा मधुर लगती है उदा. "कलरव कर जाग पड़े मेरे ये मनोभाव" -प्रसाद-(कामायनी, इड़ा)।

कलमुँही *वि.* (देश.) 1. काले मुँह वाली 2. कलंकित 3. लांछित 4. दुश्चरिता।

कलरिन *स्त्री.* (देश.) कल्लर जाति की महिला (जौंक-लगाने वाली स्त्री)।

कलरिया *पुं.* (देश.) अरहर की फसल एवं बीज में लगने वाला एक कीड़ा।

कलल *पुं.* (तत्.) चिकि. गर्भ का प्रारंभिक रूप टि. यह 'कलन' का विकसित रूप है।

कलवादिता *स्त्री.* (तत्.) मधुर ध्वनि, मधुर तथा मनोहर ध्वनि या स्वर में की गई बातचीत।

कलवार *पुं.* (तद्.) शराब बनाने और बेचने का पेशा करने वाली एक जाति, कलाल।

कलवारिन *स्त्री.* (तद्.) कलाल जाति की स्त्री।

कलविंग *पुं.* (तद्.)कलवींक, गौरैया पक्षी, चटक उदा. "गगन में उड़ते कलविंग के" -अनूप शर्मा।

कलवीर *पुं.* (देश.) एक वृक्ष जिसकी जड़ रेशम पर पीला रंग चढ़ाने के काम आती है और यह भाँग के पौधे जैसा होता है।

कलश *पुं.* (तत्.) 1. मिट्टी तथा धातु आदि से बना हुआ घड़ा, कलसा 2. मंदिर के शिखर पर लगा हुआ घड़े के आकार का बड़ा कंगूरा *वि.* श्रेष्ठ जैसे जैसे कुल कलश।

कलस *पुं.* (तद्.) 'कलश' दे. कलश।

कलसभव *पुं.* (तद्.) अगस्त्य ऋषि।

कलसजोनि *पुं.* (तद्.) 'कलशयोनि' अगस्त्य मुनि (ऋषि), घटयोनि।

कलसा *पुं.* (तद्.) कलश, घड़ा, पीतल या अन्य धातु का घड़ा, मटका।

कलसिया *स्त्री.* (तद्.) छोटा घड़ा, छोटा कलसा, गगरी।

कलसिरी *वि.* (देश.) 1. झगड़ा करने वाली स्त्री 2. *स्त्री.* (तद्.) झगड़ालू स्त्री।

कलसी *स्त्री.* (तद्.) 1. छोटा कलश या छोटा घड़ा, गगरी, गगरिया, मटकी।

कलस्वर *पुं.* (तत्.) 1. प्यारा तथा कर्णपिर्य मधुर स्वर, चहचहट, मिनमिनाहट जैसी मधुर ध्वनि जैसे- भँवरों का कलस्वर, गुंजन, चिड़ियों का कलरव।

कलहंस *पुं.* (तत्.) 1. राजहंस 2. हंस 3. परमात्मा, बतख, छंद प्रत्येक चरण में क्रमशः सगण, जगण, दो सगण तथा एक गुरु वर्ण (सज स स ग) के योग से तेरह वर्णों से निर्मित एक समवार्णिक छंद *वि.* इस छंद के कुटजा, नंदिनी, सिंहनाद आदि अन्य नाम भी हैं।

कलहंसिनी *स्त्री.* (तत्.) राजहंसिनी, हंसिनी, उत्तम रानी (राजमहिषी)।

कलह *पुं.* (तत्.) विवाद, झगड़ा, क्लेश, वाक्-युद्ध।

कलहकार *वि.* (तत्.) विवादी, रारी, झगड़ालू, झगड़ा करने वाला, कलहकारी।

कलहकारिणी *वि.* (तत्.) 1. झगड़ा करने वाली, विवाद बढ़ाने वाली, झगड़ालू (नारी) 2. *स्त्री.* झगडालू स्त्री, विवादी औरत।

कलहप्रिय *वि.* (तत्.) 1. झगड़ालू 2. कलह करने में संकोच न करने वाला 3. जिसे कलह से भय न हो 4. जो बात-बात में कलह करता हो।

कलहप्रिया *वि.* (तत्.) 1. जो स्त्री बात-बात में कलह करती हो 2. कलह से न डरने वाली 3. झगडालू 2. *स्त्री.* (तद्.) झगड़ालू स्त्री।

कलहांतरिता *पुं.* (तत्.) काव्य. वह नायिका जो अपने पति (प्रिय या नायक) का अपमान करने के बाद पश्चात्ताप करती हो।

कलहास *पुं.* (तत्.) सुंदर या मधुर हास, मंद तथा मधुर ध्वनि या स्वर वाली हँसी, मधुर हास।

कलहिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. झगड़ा या विवाद (रार) खड़ा करने वाली स्त्री 2. *वि.* कलहप्रिया, कलहकारिणी, प्रायः कलह करने वाली।

कलही *वि.* (तत्.) झगड़ा या विवाद खड़ा करने वाला।

कलाँ *वि.* (फा.) बड़े आकार (विस्तार) वाला, दीर्घाकार, बड़ा *वि.* अनेक ग्रामों के साथ कलाँ या 'खुर्द' का प्रयोग होता है जैसे- कोसी कलाँ, "कोसी खुर्द" है।

कलाँच *वि.* (देश.) 'दरिद्र, निर्धन। 2. अंशभूत उदा. आए हो पठाए वा छती से छजिया के हतै। बीस बिसै उधौ बीरवावन कलाँच ह्वै -उद्धवशतक रत्नाकर।

कला *स्त्री.* (तत्.) 1. ऐसा कार्य जिसके संपादन के लिए ज्ञान, कौशल तथा अभ्यास तीनों ही आवश्यक हो 2. किसी वस्तु का बहुत छोटा अंश उदा. सब पहचाने से लगते अपनी ही एक कला से -प्रसाद (कामायनी-आनंद सर्ग) 3. अंश, भाग, चंद्रमा या उसके प्रकाश का सोलहवाँ भाग टि. पूर्णिमा के दिन चंद्रमा की सोलह कलाएँ होती है और अमावस्या को केवल एक जो प्रतिदिन बढ़ती है और पूर्णिमा के बाद कम होती जाती हैं 4. सूर्य या उसके प्रकाश का बारहवाँ भाग 5. समय का एक विभाग जो तीस काष्ण का होता है 6. राशि के तीसवें अंश का साठवाँ भाग, राशिचक्र के एक अंश का साठवाँ भाग 7. छंदशास्त्र में मात्रा 8. ललित कार्य-यथा-चित्रकला, चित्रकला, काव्य कला, मूर्तिकला आदि 9. ललित गुण जैसे प्राचीन ग्रंथों के अनुसार चौंसठ कलाएँ 10. चतुराई, कौशल, निपुणता 11. माया, कपट, छल 12. विद्या, कारीगरी, हुनर 13. गुण, गुण, विशेषता 14. विभूति, तेज, प्रभाव उदा. कासी हू की कला गई, मथुरा मसीत भई -भूषण ग्रंथ 15. शक्ति, सामर्थ्य 16. शोभा, छटा 17. प्रभा, ज्योति, कांति 18. तरंग, लहर उदा. छूटी लट डुलति कलाजनु कलंदिनी-पजनेस कदि

(शिवसिंह सरोज, 868 वा छंद)। 19. युक्ति, उपाय 20. नट या बाजीगर द्वारा दिखाए जाने वाले अनोखे करतब, कौतुक, लीला, खेल उदा. कोटिक कला काछि दिखराई -सूरसागर 1/153) (छंद) चार वर्णों का एक समवार्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण और गुरु के योग से कुल चार वर्ण होते है। शैव द. ईश्वर की संकुचित कर्त्तव्य शक्ति जो सृष्टि-विकास का एक एक तत्व है और जीव को आवृत करने वाले षटकंचुकों में से एक है चिकि. कुछ अंगों के तल और शरीर की गुहाओं की अंतःस्थ परत के ढकने वाला एक पतला और लचीला ऊतक झिल्ली (अ. मेम्ब्रेन) प्रयो. कला-करना अपने करतब दिखाना (नट, नटी आदि द्वारा)।

कलाई *स्त्री.* (तद्.) हाथ के पहुँचे का वह भाग जहाँ जहाँ हथेली का जोड़ होता है, मणिबंध, गट्टा, पहुँचा 2. *स्त्री.* सूत का लच्छा।

कलाकंद *पुं.* (फा.) बरफी, मावा (खोए) और स्वच्छ खांड़ के संयोग (मेल) से जमाकर बनाई गई मिठाई।

कला-कलित *वि.* (तत्.) 1. कला से पूर्ण, कला-कारीयुक्त, कलात्मक 2. चौंसठ कलाओं की जानकारी से युक्त।

कलाकार *पुं.* (तत्.) 1. कला विशेष का ज्ञानी या जानकार व्यक्ति 2. कला विशेष के माध्यम से आजीविका चलाने वाला व्यक्ति 3. कलावंत 4. अभिनेता, चित्रकार आदि।

कलाकारिता *स्त्री.* (तत्.) कलाकार व्यक्ति का व्यवसाय, काम, धंधा। 2. कलाकार का हुनर, कौशल।

कलाकारी *स्त्री.* (तत्.) 1. कलाकार का हुनर, कौशल 2. कला, काम, धंधा, कलाकारिता।

कला-कार्य *पुं.* (तत्.) 1. कला या हुनर का कार्य 2. कलात्मक कार्य, कलाकारी, किसी वस्तु के आवरण, शीर्ष तथा प्रस्तुति में प्रदर्शित कलात्मकता, चित्रांकन।

कला-कुशल *वि.* (तत्.) कला में कुशल, कला में निपुण।

कलाकृति *स्त्री.* (तत्.) कलायुक्त रचना, कलापूर्ण कृति, ऐसी रचना जो कलापूर्ण हो।

कलाकोण *पुं.* (तत्.) खगो. (अ.) फेज ऐंगल, किसी क्षण पर किसी ग्रह और पृथ्वी को जोड़ने वाली रेखा और उस ग्रह को सूर्य से जोड़ने वाली काल्पनिक रेखा के बीच का काल्पनिक कोण।

कला-कौशल *पुं.* (तत्.) 1. कला का कौशल, कला में निपुणता, कला और शिल्प।

कला-क्षय *पुं.* (तत्.) 1. धीरे-धीरे क्रमशः होने वाला क्षय या हानि 2. कृष्ण-पक्ष में चंद्रमा की कलाओं की क्रमशः होने वाली हानि या क्षण, चंद्र का ह्रास।

कला-तत्व *पुं.* (तत्.) कला के आधार पर जो किसी कला-कृति के अंग होते हैं जैसे- बिंदु रेखा, रंग, लय, तकनीक आदि कला तत्वों का महत्व, कला का तत्व। art eliment

कलातीत *वि.* (तत्.) कला से अतीत अर्थात् जो सभी कलाओं से परे हो।

कलात्मक *वि.* (तत्.) जिसमें कला का सुंदर प्रदर्शन हुआ हो, कलापूर्ण, कलामय।

कलादा *पुं.* (देश.) महावत के बैठने का हाथी की गर्दन वाला भाग।

कलाधर *पुं.* (तत्.) 1. जो कलाओं से युक्त हो या कलाओं को धारण करता हो 2. कला का जानकार ज्ञाता, कलाकार 3. चंद्रमा, शिव, (छंद) दंडक छंद का वह भेद जिसमें गुरु और लघु के क्रम से 15 गुरु तथा 15 लघु वर्णों के बाद अंत में एक गुरु वर्ण होता है।

कलाना *स.क्रि.* (देश.) पकाना, तलना, भूनना।

कलानाथ *पुं.* (तत्.) 1. कला का स्वामी 2. कलाकार 3. चंद्रमा।

कलानिधि *पुं.* (तत्.) 1. कलाएँ ही हैं निधि जिसकी 2 कलाओं का मंजर। 3. कलाओं में पारंगत 4.

चंद्रमा 5. गुणवान उदा. "राम मोहि सतगुर मिले अनंक कलानिधि" -कबीर (पद. 265/1)।

कलाप *पुं.* (तत्.) एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह 1. समुदाय, समूह, झुंड, यथा-कार्य-कलाप, क्रिया-कलाप 2. मोर की पूँछ 3. तूणीर 4. तरकश 5. कमरबंद 6. पेटी 7. चंद्रमा 8. कलावा 9. बाण 10. जेवर, गहना 11. व्यापार 12. बुद्धिमान मनुष्य 13. एक ही छंद में रचित संस्कृत की पद्य-रचना 14. गट्ठर (घास आदि का)।

कलापक *पुं.* (तत्.) 1. घास आदि का गट्ठर (गट्ठा), समूह 2. स्त्रियों की करधनी, कमरबंद 3. हाथी के गले की रस्सी 4. माथे पर तिलक विशेष 5. मोतियों की माला 6. चार श्लोकों का एक वर्ग जिनका परस्पर संबंध होता है (सामूहिक अन्वय)।

कलापक्ष *पुं.* (तत्.) काव्य. साहित्यिक रचना के कलापक्ष तथा भावपक्ष संज्ञक दो पक्षों में से छंद, अलंकार, शैली आदि से संबंधित पक्ष, कविता की कलात्मकता के मूल्यांकन वाला पक्ष।

कला-पारखी *वि.* (तत्.+देश.) 1. कला को समझने वाला, कला का मूल्यांकन कर्ता, गुणग्राहक 2. *पुं.* किसी कलाकार अथवा कला वर्ग अथवा कला की कलात्मकता का गुणग्राहक व्यक्ति।

कलापिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. मोरनी, मयूरी 2. रात, यामिनी, रात्रि।

कलापी *पुं.* (तत्.) 1. मोर 2. कोयल 3. वटवृक्ष *वि.* जिसके पास तरकश या तूणीर हो, तरकशधारी, झुंड में रहने वाला।

कलाबत्तू *पुं.* (तुर्की.) सूती, रेशमी धागा या डोरा जिसे लाल-पीले रंगों से रँगा जाकर सोने/चाँदी के तार घने रूप में लपेट दिए जाते हैं *वि.* 'कलाबत्तू' से गोटा, डोरी, आदि अनेक प्रकार की चीजें बनाई जाती हैं तथा उसका मांगलिक कार्यों में विविध रूपों में प्रयोग किया जाता है।

कलाबाज *पुं.* (तत्.+फा.) कलाबाजी (कौतुक पूर्ण क्रियाएँ/कलाएँ) दिखाने या करने वाला व्यक्ति 2. 2. *वि.* कलाबाजी करने वाला।

कलाबाजी *स्त्री.* (कला तत्.+बाज फा.) 1. शारीरिक स्फूर्ति (फुर्ती के खेल) की क्रियाओं का प्रदर्शन या कला, नट-विद्या 2. सिर नीचे की ओर पैर ऊपर करके उलट जाना, कला-खाना इत्यादि शारीरिक स्फूर्ति की किर्याएँ करना।

कलाबीन *पुं.* (देश.) असम में पैदा होने वाला एक ऊँचा वृक्ष जिसके फलों का तेल औषधोपयोगी होता है।

कलाभवन *पुं.* (तत्.) 1. वह भवन जिसमें कलात्मक वस्तुओं की रचना या प्रदर्शन होता हो 2. चित्रशाला।

कलामंत *पुं.* (तद्.) कलावान् व्यक्ति, संगीत का ज्ञाता, संगीतज्ञ, कलाबाजी करने वाला, नट, कलाकार।

कलाम *पुं.* (अर.) 1. वाक्य, वचन, बातचीत 2. उक्ति 3. रचना 4. उज्र, एतराज।

कलाम पाक *पुं.* (अर.) दे. कलाम मजीद।

कलाम मजीद *पुं.* (अर.) पवित्र कुरान, (इस्लामी धर्म ग्रंथ) 'कलाम-पाक'।

कलार/कलाल *पुं.* (देश.) कलवार, शराब का व्यापार करने वाले या बेचने वाला व्यक्ति।

कलारी *स्त्री.* (देश.) 1. कलाली या कलारी 2. वह स्त्री जिसके परिवार के लोग शराब बेचने का धंधा करते हों 3. वह स्थान या दुकान जिस पर शराब बेची जाती हो, शराब बनाने या बेचने का स्थान।

कलालखाना *पुं.* (अर.) शराब बनाने तथा बेचने का स्थान, मद्य शाला, शराबघर।

कलावंत *पुं.* (तत्.) 1. वह गायक जिसने विधिवत शिक्षा तथा प्रशिक्षण प्राप्त किया हो 2. गायक, वादक, गवैया 3. कुशल ध्रुपद (आदि) का गायक 4. कलाकार, कलामंत 5. कला-विशेषज्ञ 6. किसी कला में निपुण 7. कलात्मक तरीके से कार्य करने वाला व्यक्ति 8. कलाबाज, नट।

कलावती *स्त्री.* (तत्.) 1. वह स्त्री जो किसी कला में निपुण या विदुषी हो 2. कलाकार स्त्री।

कलावा *पुं.* (तद्.) (तत्.-कलापक) 1. कच्चे सूत का लाल-पीला रँगा हुआ वह धागा या डोरा जो मांगलिक अवसरों पर कलाई या कलश आदि पर बाँधा जाता है 2. कलाबत्तू 3. सूत की लच्छी, गोला।

कलावाद *पुं.* (तत्.) (काव्य) 1. कलाकार के लिए सौंदर्य-सृष्टि और सौंदर्यानुभूति को ही महत्वपूर्ण तथा "कला के लिए कला" भर मानने वाला विशिष्ट मत जिसके अनुसार नैतिकता या उपयोगिता का कोई महत्व नहीं होता 2. "कला का उद्देश्य कला" मानने वाला मत।

कलावान *वि.* (तत्.) 1. कलाओं का मर्मज्ञ। 2. कलाकार, कलावंत *पुं.* कलाकार व्यक्ति, कलाकुशल, कलाकार।

कलाविद् *पुं.* (तत्.) 1. किसी कला का ज्ञाता या मर्मज्ञ व्यक्ति 2. कलाकार, कलावंत।

कला-समीक्षा *स्त्री.* (तत्.) 1. कला या कलात्मक वस्तु की समीक्षा 2. सौंदर्य, गुण-दोष तथा कलात्मकता का मूल्यांकन 3. कला-कृति की सुंदरता संबंधी गुण-दोषों की विवेचना, जाँच या परख।

कलिंग *पुं.* (तत्.) 1. एक प्राचीन देश (जहाँ सम्राट् अशोक को युद्ध के उपरांत विरक्ति हुई थी, उड़ीसा प्रांत का एक भाग 2. तरबूज 3. कुलंग पक्षी। 4. एक राग (विशेष)।

कलिंगड़ा *पुं.* (तद्.) 1. तरबूज 2. कलिंग क्षेत्र का रहने वाला।

कलिंद *पुं.* (तत्.) 1. तरबूज 2. बहेड़े का वृक्ष 3. सूर्य 4. यमुना का उद्गम 5. एक पर्वत।

कलि *पुं.* (तत्.) 1. कलियुग (सतयुग, त्रेता, द्वापर के बाद का चौथा युग) 2. *स्त्री.* कली (फूल) या 'कलिका' 3. (तत्.) झगड़ा, युद्ध 4. दुष्ट व्यक्ति 5. कलह, क्लेश 6. पाप 7. पाँसे का एक पक्ष (जिस पर एक बिंदी बनी हो।) 2. *क्रि.वि.* सुख पूर्वक, चैन से।

कलि-अंकुस *वि.* (तद्.) 1. कलियुग के प्रभाव पर नियंत्रण रखने वाला 2. पापों का बाधक।

कलिअल *पुं.* (देश.) 1. कलकल ध्वनि 2. पक्षियों के चहचहाने की ध्वनि 3. कलरव 4. मधुर रव या स्वर।

कलिकर्म *पुं.* (तत्.)1. बुरा या निकृष्ट कर्म 2. युद् ध, झगड़ा, कलह, क्लेश।

कलिका *स्त्री.* (तत्.) कली (फूल की) जैसे- कुसुम-कलिका।

कलिकारक *वि.* (तत्.) 1. कलह करने वाला, झगड़ालू 2. विवादी *पुं.* नारद (ऋषि)।

कलिकाल *पुं.* (तत्.) कलियुग।

कलित *वि.* (तत्.) 1. युक्त 2. विभूषित 3. रचित जैसे- कनक कलित 4. सुंदर 5. गणना किया हुआ, आँका हुआ उदा. जासु रूप गुन नहिं कलित -गीतावली तुलसी 6. मधुर तथा अस्पष्ट ध्वनि।

कलितरु *पुं.* (तत्.) 1. बबूल का वृक्ष (जिसमें काँटे होते हैं) 2. पापरूपी वृक्ष।

कलिप्रिय *वि.* (तत्.) 1. कलहप्रिय, जिसे झगड़ा तथा कलह करने में झिझक न हो 2. दुष्ट स्वभाव वाला। *पुं.* (तत्.) ऋषि नारद।

कलिमल *पुं.* (तत्.) 1. कलियुग का पाप 2. दोष 3. कलुष 4. कालिमा 5. दाग, कालापन।

कलिया *पुं.* (अर.) घी और मसालों में भूना हुआ रसयुक्त मांस 2. पशुओं का कच्चा मांस 3. पकाया हुआ मांस।

कलियाना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. वृक्षों या बेलों पर फूलों की नई कली आना 2. पौधे पर नई कलियाँ फूटना 3. पक्षियों के नए-नए पर आना।

कलियारी *स्त्री.* (तद्.) 1. कलहप्रिय नारी 2. कलह करने वाली।

कलियुग *पुं.* (तत्.) ज्यो. सतयुग, त्रेता तथा द्वापर द्वापर के उपरांत 3102 वर्ष ई.पू. प्रारंभ होने वाला (आधुनिक मान्यता के अनुसार) वर्तमान-'कलियुग' नामक चौथा युग जिसकी कुल अवधि 4,32000 वर्ष होती है 2. ऐसा काल या समय

जिसमें समाज में प्राय: अधार्मिक तथा स्वार्थपूर्ण क्रिया-कलापों एवं प्रवृत्तियों का बाहुल्य हो।

कलियुगाद्या *स्त्री.* (तत्.) 1. वर्तमान कलियुग के प्रारंभ होने की तिथि, 'माघ पूर्णिमा'।

कलियुगी *वि.* (तत्.) 1. कलियुग का, कलियुग संबंधी 2. दुर्गुणी 3. झगड़ालू 4. पापी।

कलिल *वि.* (तत्.) 1. मिश्रित, मिला हुआ 2. घना 3. गहन 4. भरा हुआ 5. दुर्गम 6. ढका हुआ 7. अभेद्य 8. प्रभावित 2. *पुं.* (तत्.) 1. समूह 2. राशि 3. ढेर उदा. मोह कलिल व्यापित मति मोरी -मानस (7/82/7 तुलसी) 4. भ्रम 5. झुंड।

कलि-वर्ज्य *वि.* (तत्.) 1. कलियुग में जिसे निषिद्ध या वर्जित माना गया हो 2. *पुं* (तत्.) कलिकाल में धर्मशास्त्रों के अनुसार वर्जित कर्म।

कलिहारी *वि.* (तत्.) 1. कलह करने वाली स्त्री, कलहकारिणी (तद्.) हल्दी जैसा एक गुल्म जिसका कंद अदरक के समान होता है, 'कलियारी' इसका पौधा डंडे जैसा सीधा तथा 60 से 150 से.मी. ऊँचा होता है आयु. विशल्या टि. विशल्या की विशेषता यह है कि यदि शरीर के भीतर किसी तीर का अंश रह जाता है तो इसके लेप से वह अंश (शल्य) ऊपर आ जाता है।

कलींदा *पुं.* (तद्.) कलिंद, तरबूज।

कली *स्त्री.* (तत्.) 1. बिना खिला फूल 2. मुँह बँधा फूल 3. कलिका 4. बौडी 5. हुक्के का नीचे वाला भाग 6. कुर्ता आदि में लगने वाला लंबोतरा तिकोना कपड़ा जैसे- कुर्ते की कली या कलीदार कुर्ता 7. गीत आदि का कोई चरण 8. चिडियों का नया निकला हुआ पर 9. तीन भगण लघु और गुरु (भभभ लग) के योग से बना ग्यारह वर्णों वाला समवर्णिक छंद मुहा. कली खिलना- चित्त प्रसन्न होना; कली फूटना- चिड़िया के परों का प्रथम बार निकलना, पौधे में छोटी शाख या पत्ते का कोमल भाग फूटना (अर.) पत्थर या सीप आदि का जलाया हुआ टुकड़ा जिससे चूना बनाया जाता है जैसे- "कली का चूना"।

कलीरा *पुं.* (देश.) विवाह, उत्सव आदि के अवसर पर उपहार में दी जाने वाली कौड़ियों और छुहारों (मेवा आदि) की एक मांगलिक माला।

कलील *पुं.* (अर.) थोड़ा, कम।

कलीसा *पुं.* (यूनानी) ईसाइयों या यहूदियों का उपासनाघर, गिरजाघर।

कलीसाई *वि.* (यूनानी.) 1. ईसाई संप्रदाय का 2. ईसाई संप्रदाय से संबंधित *पुं.* ईसाई।

कलीसिया *पुं.* (यूनानी<इकलीसिया) *स्त्री.* 1. यहूदियों या ईसाईयों का धार्मिक संप्रदाय 2. एक ईसाई संप्रदाय।

कलु *पुं.* (देश.) कल, चैन, सुख उदा. औरनि को कलु गो -तुलसी (कविता. 4/6)।

कलुआबीर *पुं.* (देश.) 1. झाडफूँक करने वालों द्वारा द्वारा सिद्ध एक प्रेतात्मा।

कलुख *पुं.* (तद्.) दे. कलुष।

कलुखाई *स्त्री.* (तद्.) कलुष।

कलुखी *वि.* (देश.) दे. कलुषी।

कलुष *पुं.* (तत्.) 1. मैल, गंदगी, मलिनता 2. पाप उदा. सरजू सरि कलि कलुष नसावनि -मानस. (1/16/1) 3. कलंक 4. अपवित्रता 5. दोष 6. क्रोध।

कलुषचेता *पुं.* (तत्.) 1. बुरे कर्मों या प्रवृत्तियों वाला व्यक्ति 2. पापात्मा, मन में पाप रखने वाला आदमी।

कलुषाई *स्त्री.* (तद्.) 1. कलुष 2. चित्त का विकार 3. मलिनता (मन की) 4. बुद्धि की मलिनता।

कलुषित *वि.* (तत्.) 1. कलुष या पाप से युक्त 2. पापी 3. मैला, मलिन 4. दूषित 5. काला।

कलुषी *वि.* (तत्.) 1. दोषी 2. गंदी 3. पापिनी 4. कलुषिता *पुं.* 1. मलिन 2. दोषी 3. कलुषित 4. पापी 5. गंदा।

कलुसी *स्त्री.* (तद्.) दे. कलुषी।

कलूटा *वि.* (देश.) काला *स्त्री. वि.* कलूटी जैसे- 1. कलूटा आदमी 2. कलूटी नायिका।

कलेंडर *पुं.* (अं.) एक या अधिक वर्षों के दिनांक वार आदि बताने वाला पत्र, तिथि-पत्रक, दिनांक-पत्रक।

कलेंडर मास *पुं.* (अं+तत्.) माह के दिनांक एक से अंतिम दिनांक तक की अवधि को कलेंडर मास कहा जाता है।

कलेंडर वर्ष *पुं.* (अं.+तत्.) वर्ष के प्रथम मास की दिनांक एक से अंतिम मास की अंतिम दिनांक तक सामान्यतः 365 दिनों की अवधि को कलेंडर वर्ष कहा जाता है।

कलेउ/कलेऊ *पुं.* (देश.) 1. प्रातःकाल का जलपान, नाश्ता 2. कलेवा।

कलेजई *पुं.* (देश.) कसीस, मजीठ आदि को मिलाकर बनाया जाने वाला पदार्थ, काला मिला लाल रंग *वि.* (देश.) काले लाल मिश्रित रंग का।

कलेजा *पुं.* (देश.) 1. हृदय, दिल 2. जिगर 3. लाक्ष. साहस, हिम्मत मुहा. कलेजा उछलना- प्रसन्न होना, मुग्ध होना; कलेजा काँपना- डर लगना; कलेजा कड़ा करना- हिम्मत या साहस करना (कर लेना); कलेजा निकाल कर रख देना (किसी के आगे)- दिल की बात कहना, कुछ न छिपाना, स्वयं किसी पर न्योछावर हो जाना, सारी शक्ति लगा देना, अपनी प्यारी से प्यारी वस्तु दे देना; कलेजा रखना- किसी वस्तु या काम को बारंबार देने या करने की हठ करना, तंग या परेशान करना; कलेजा खोलकर रख देना- मन की बात बता देना, कुछ न छिपाना; कलेजा चीर कर रख देना/दिखाना- पूरा विश्वास कराने का प्रयास करना, कोई कपट न रखना; कलेजा छलनी होना- मानसिक कष्ट पहुँचना, कष्ट कष्ट पाते-पाते अति दुखी होना; कलेजा छलनी करना- मर्मभेदी बातों से मन को कष्ट पहुँचाना; कलेजा छिदना/छिलना- कष्टप्रद बातों से मन दुखी होना; कलेजा छेदना- कड़वी या बहुत अपिर्‌य बात कहकर किसी का जी दुखाना; कलेजा-जलना- अत्यंत क्रुद्ध होना, मन को बहुत क्लेश/पहुँचना; कलेजा टुकड़े-टुकड़े होना- मन को बहुत कष्ट पहुँचना (शोक के कारण); कलेजा ठंडा ठंडा होना/करना- संतोष होना या करना; कलेजा थाम कर बैठना/कलेजा थामना/पकड़ लेना- मन मसोस कर रह जाना, विपत्ति आने पर हृदय कठोर कर लेना, धीरज धारण करके रहना, विपत्ति सह लेना; कलेजा दूना होना- और अधिक उत्साहित होना; कलेजे का धकधक करना- (किसी आंशका से) भयभीत होना, मन में व्याकुल हो जाना, घबरा जाना; कलेजा धडकना/धडकाना- भय या रोग आदि के कारण आशंकित हो जाना/डरा देना; कलेजा निकाल लेना- अति प्यारी वस्तु छीन लेना, सर्वस्व ले लेना, बहुत कष्ट पहुँचाना, अत्यंत दुख देना; कलेजा पक जाना- दुख सहते-सहते तंग आ जाना; कलेजा फटना- मन में अत्यंत कष्ट होना; कलेजा मुँह को आना- बहुत घबराना या विकल होना; कलेजे पर साँप लोटना- किसी बात को याद करके अचानक शोकाकुल होना, अचानक दुःख का अनुभव करना, ईर्ष्या से संतप्त होना, बहुत बेचैन होना; कलेजा ठंडा होना- मन को शांति पहुँचना, कलेजा तर होना; बड़ा कलेजा होना- उदार हृदय होना; पत्थर का कलेजा होना- करुणा, प्रेम तथा सहानुभूति आदि से रहित होकर निष्ठुर व्यक्ति होना, भारी कष्ट और दुख सहने वाला व्यक्ति होना; कलेजे में बिठाना- बहुत बहुत प्रेम करना, हर क्षण ध्यान में रखना; बड़े कलेजे वाला- साहसी मनुष्य; कलेजे में गाँठ पड़ना- मनमुटाव होना, किसी कारणवश मनोमालिन्य होना।

कलेजी *स्त्री.* (देश.) (पशु-पक्षियों के) कलेजे का मांस।

कलेवर *पुं.* (तत्.) 1. शरीर 2. ऊपरी ढाँचा 3. डील डौल-आकार 4. देवता की मूर्ति पर चढ़ाने वाला घी मिश्रित सिंदूर, जो प्रायः हनुमान की मूर्ति पर चढ़ाया जाता है जैसे- हनुमान की मूर्ति पर कलेवर चढ़ाने से मनोकामना की पूर्ति होती है। मुहा. कलेवर बदलना- स्वर्गवास होना, नया रूप धारण करना, चिकित्सा के बाद रोगी का शरीर से पूर्ण नीरोग होना।

कलेवा *पुं.* (तद्.) 1. प्रातःकाल का जलपान 2. मार्ग में खाने के लिए साथ लिया गया भोजन 3. कुँवर कलेवा (कुंवर कलेऊ) की वैवाहिक रीति।

कलेस *पुं.* (तद्.) 1. कला का ईश अर्थात् वह कलाकार जो सारी तथा बड़ी से बड़ी कलाओं का ज्ञाता और स्वामी है, ईश्वर, परमात्मा 2. क्लेश, दुख या कष्ट 3. योगसाधना में बाधक पाँच क्लेश (अविद्या आदि)।

कलेसकारी *वि.* (तद्.) 1. कष्ट या क्लेश देने या पहुँचाने वाला 2. क्लेश या झगड़ा करने वाला।

कलेसहर *वि.* (तद्.) दुखों को हरने या मिटाने वाला, दुख दूर करने वाला।

कलेसहारी *वि.* (तद्.) कलेसहर, दुःख दूर करने वाला।

कलै *क्रि.वि.* (देश.) 1. अपनी इच्छा से 2. स्वेच्छापूर्वक 3. सुख चैनपूर्वक 4. अवसर पर उदा. बरषै हरषि आपनैं कलै -नंददास ग्रंथ (रसमंजरी, 5)।

कलैया *स्त्री.* (देश.) 1. कलाई, मणिबंध 2. कलाबाजी, सिर के बल उलटकर कला खाना, कला जैसे- कलैया खाकर दिखाओ 3. किसी वृक्ष या पौधे की शाख का प्रारंभिक रूप, भाग, नई फूटी हुई शाखा उदा. 1. अरे! यह पौधा तो अब कलैया छोड़ने लगा 2. इस ठूँठ में तो कलैया फूट उठी।

कलोर *स्त्री.* (देश.) 1. जवान बछिया, वह गाय जो अभी गाभिन न हुई हो, तरुण बछड़ा उदा. "बगरे सुरधेनु के धौल कलोरे -तुलसी 7/144) 2. (तत्.-कल्लोल) *स्त्री.* (तद्.) 1. मौज-मस्ती 2. तरंग, लहर 3. क्रीड़ा उदा. सूखे सरवर उठै हिलोर बिनु जल चकवा करत कलोर -कबीर (पद 152)।

कलोल *स्त्री.* (तद्.) कल्लोल 1. तरंग, लहर, क्रीड़ा, मौज-मस्ती 2. *वि.* 'मनोहर', सुंदर, मनमोहक।

कलोलकारी *वि.* (तद्.) क्रीड़ाशील।

कलोलना/कल्लोलना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. हिलना-डुलना 2. मौज मस्ती करना 3. क्रीड़ा करना 4. तरंगित होना उदा. कलोलकारी खग का कलोलना -हरिऔध (प्रियप्रवास)।

कलौंजी *स्त्री.* (देश.) 1. मंगरैल नामक पौधा जिसके बीज मसाले में काम आते हैं 2. मसाले से भरी हुई तली गई भिंडी, बैंगन आदि तरकारी 3. छौंक में प्रयुक्त होने वाले प्याज के बीज 4. कच्चे आम की वह तरकारी जो गुड़ या शक्कर डालकर तैयार की जाती है जिसे प्रायः "लौंजी" कहा जाता है।

कलौंस *स्त्री.* (देश.) 1. कालिख 2. हल्की कालिमा 3. कलौंछ 4. स्याही 5. कलंक।

कलौंछ *स्त्री.* (देश.) हल्की-हल्की कालिमा, कालेपन की झलक, कालिख।

कल्क *पुं.* (तत्.) तेल आदि के नीचे जम जाने वाली तलछट या मैल, किट्ट, काँइट 2. कान का मैल 3. कपट 4. दंभ 5. पाप आयु. किसी वस्तु का कुछ जल मिलाकर पीसा हुआ चूर्ण।

कल्क कषाय *पुं.* (तत्.) ताजी हरी वनस्पति को पानी के साथ धोकर पीसने से प्राप्त चूर्ण जो खाने के लिए रोगी को दिया जाता है।

कल्क प्रक्षेप *पुं.* (तत्.) ताजी वनस्पति को जल से धोकर पीसा गया चूर्ण जिसे घी, तेल, आसव आदि मिलाकर खाने के लिए रोगी को दिया जाता है।

कल्प *वि.* (तत्.) 1. बहुत थोड़ा कम या लगभग बराबर जैसे- 'देवकल्प' 2. उचित, योग्य, ठीक 3. साध्य, होने लायक, संभव (समासयुक्त) पद के अंत में प्रयुक्त जैसे- देवकल्प, ऋषिकल्प आदि; समान, सदृश्य, लगभग व समान, समर्थ *पुं.* (तत्.) 1. छह वेदांगों (शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त आदि) में से एक जिसमें यज्ञों एवं संस्कारों इत्यादि की विधियाँ वर्णित होती है 2. 4,3200,00,000 सौर वर्षों के बराबर एक हजार चतुर्युग वाला ब्रह्मा का (भारतीय काल-गणनानुसार) एक दिन 3. धर्मशास्त्र सम्मत धार्मिक कर्तव्यों का विधि-विधान लाक्ष. एक विशाल कालखंड उदा. "निमिष से मेरे विरह के

कल्प बीते है" -महादेवी वर्मा (दीपशिखा 26) 5. प्रलय 6. चिकित्सा जैसे- दुग्ध कल्प पुरा. युग, कालावधि जैसे- 'मध्य कल्प', पूर्व कल्प।

कल्पक *वि.* (तत्.) 1. जो कल्पना करता हो, कल्पना करने वाला, रचयिता, निर्माता 3. काटने वाला जैसे- "केश कल्पक" 2. *पुं.* (तत्.) विधि विधान से नेग लेने वाला, नाई अन्य परिचारक जो धार्मिक तथा अन्य संस्कारों में सहायता करता हो।

कल्प-कानन *पुं.* (तत्.) कल्पवृक्ष का वन, (स्वर्गस्थ) नंदन-कानन (नंदनवन) उदा. उड़ी आ रही छूट कुसुम-वल्लियाँ कल्प-कानन से -दिनकर (उर्वशी-प्रथम अंक)।

कल्पकार *पुं.* (तत्.) 'कल्पसूत्र के रचनाकार (आश्वलायन, आपस्तम्ब, बोधायन या कात्यायन) सजाने-सँवारने वाला व्यक्ति 3. नाई, नापित।

कल्प-क्षय *पुं.* (तत्.) कल्पांत में होने वाला प्रलय, कल्प की आखिरी घड़ी (अंत समय) में घटित होने वाला सृष्टि का विनाश या अंत।

कल्पतरु *पुं.* (तत्.) दे. कल्पवृक्ष।

कल्पद्रुम *पुं.* (तत्.) कल्पतरु दे. कल्पवृक्ष।

कल्पन *पुं.* (तत्.) 1. कल्पना करके किसी वस्तु की रचना करने या रूप देने की क्रिया, भाव 2. कल्पना करना 3. काटना या छाँटना।

कल्पनक *पुं.* (तत्.) 1. कल्पनाएँ करते रहने वाला व्यक्ति 2. उत्तम कल्पना करने वाला आदमी 2. *वि.* (तत्.) कल्पना-शक्ति वाला 2. सदा कल्पना करते रहने वाला 3. कल्पनाशील।

कल्पना *स्त्री.* (तत्.) मौलिक तथा नई बात या वस्तु की रचना विषयक चिंतन 1. कोई नई बात सोचना 2. मौलिक उद्भावना या सोच 3. चिंतन 4. किसी अनदेखी अनसुनी बातों के स्वरूप का चिंतन-मनन 5. किसी वस्तु में अन्य वस्तु का आरोप 6. नई-सोच तथा तदनुसार स्वरूप निर्धारण 7. नई वस्तु या घटना आदि की संभावना 8. मानसिक चित्र 9. रूप-विधान 10. अनुमान, रचना, बनावट 11. मनगढंत बात।

कल्पना-चित्र *पुं.* (तत्.) 1. वह चित्र जो अपने मन में बने विचार-सूत्रों से बनाया गया हो, कल्पना से निर्मित या बनाया गया चित्र।

कल्पना-दृष्टि *स्त्री.* (तत्.) 1. कल्पना या अनुमान करने की शक्ति, समझ या सूझ 2. नई वस्तु की की रचना की सूझ।

कल्पनानुरंजित *वि.* (तत्.) कल्पना की क्रिया में तल्लीन, कल्पना करने में रमा या रंगा हुआ, कल्पनाशील।

कल्पना-प्रसूत *वि.* (तत्.) 1. जो कल्पना से उत्पन्न हुआ हो, कल्पना-रचित 2. मनगढंत।

कल्पनावाद *पुं.* (तत्.) (काव्य.) कला को अनुभूत कल्पना भर मानने वाला मत या वाद।

कल्पना शक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. उद्‌भावना-शक्ति 2. 2. वह क्षमता या चिंतन-मनन की शक्ति जिससे नवीन रचना संभव हो सके 3. उद् भावना शक्ति।

कल्पनाशील *वि.* (तत्.) 1. कल्पना शक्ति से संपन्न या युक्त 2. सूझ तथा वैचारिक क्षमता वाला, चिंतन-मननशील।

कल्पना-सृष्टि *स्त्री.* (तत्.) 1. काल्पनिक रचना अथवा अथवा वह रचना जो मात्र कल्पना पर आधारित हो, मनगढ़ंत रचना।

कल्पनीय *वि.* (तत्.) 1. जिसकी कल्पना संभव हो, कल्पना में आने योग्य 2. जिसकी कल्पना करनी हो।

कल्प-पादप *पुं.* (तत्.) दे. कल्पवृक्ष।

कल्प-लता *स्त्री.* (तत्.) 1. कल्पवृक्ष की शाखा, कल्पवृक्ष की लता।

कल्प-लतिका *स्त्री.* (तत्.) 'कल्पलता', कल्पवृक्ष की की लता या शाखा।

कल्प-वयन *पुं.* (तत्.) कल्पना की उधेड़-बुन, काल्पनिक चिंतन-मनन का कार्य, क्रिया-कलाप।

कल्प-वल्ली *स्त्री.* (तत्.) कल्पलता, कल्पवृक्ष।

कल्पवास *पुं.* (तत्.) घर छोड़कर माघ में गंगा तट पर संयमपूर्वक किया गया पुण्य प्रवास या वास।

कल्पवृक्ष *पुं.* (तत्.) 1. स्वर्ग का एक विशेष वृक्ष जिसके नीचे बैठे व्यक्ति की सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं 2. लाक्ष. अत्यंत उदार व महादानी-संस्था या व्यक्ति आदि 3. ऊँचा, विशाल तथा दीर्घजीवी वृक्ष जो समुद्रमंथन के समय चौदह रत्नों में से एक रत्न के रूप में समुद्र से निकला निकला था पर्या. कल्पतरु, कल्पद्रुम, कल्पपादप, कल्पलता।

कल्पशिल्पी *पुं.* (तत्.) ब्रह्मा, सभी का निर्माता उदा. "धन्य है उस कल्प-शिल्पी की कला"।

कल्प-हिंसा *स्त्री.* (तत्.) वह जीव-हिंसा जो अन्न की पिसाई तथा पाचन (भोजन पकाने) के कारण होती है।

कल्पांत *पुं.* (तत्.) 1. कल्प का अंत 2. प्रलय-काल 3. संपूर्ण सृष्टि के अंत का काल 4. प्रलय।

कल्पांतर *पुं.* (तत्.) कल्प का बदलना, कल्प का परिवर्तन 2. कोई अन्य कल्प जैसे- "यह वर्तमान कल्प नहीं, कल्पांतर की कथा है।

कल्पादि *पुं.* (तत्.) 1. कल्प का प्रारंभ-काल 2. कल्प की शुरुआत, सृष्टि का आरंभ-काल।

कल्पित *वि.* (तत्.) 1. जिसकी कल्पना की गई हो 2. मनगढ़ंत 3. आरोपित 4. रचित 5. बनावटी 6. फर्जी, नकली 7. मनमाना।

कल्पित बिंब *पुं.* (तत्.) (काव्य.) 1. कल्पना शक्ति द्वारा रचित मौलिक सृजन 2. मानस-कल्पित रचना या सर्जना।

कल्मष *पुं.* (तत्.) 1. पाप 2. मैल, गंदगी 3. पीब, मवाद।

कल्मषगताचार *वि.* (तत्.) पापी उदा. लंपट, खल कल्मष गताचार -निराला (राम की शक्ति पूजा)।

कल्माष *वि.* (तत्.) 1. काला 2. चित्र-विचित्र 3. (चित्रवर्ण) चितकबरा 4. धब्बा 5. पिशाच।

कल्माषकंठ *पुं.* (तत्.) नीले कंठ वाले अर्थात् भगवान शिव, जिनका कंठ गरल-पान (जहर पी लेने) के कारण अपने मौलिक स्वरूप में न रहकर नीला हो गया था।

कल्य *पुं.* (तत्.) 1. सवेरा, भोर, प्रातःकाल 2. आनेवाला कल 3. शराब, मधु 2. *वि.* (तत्.) 1. स्वस्थ, नीरोग बलवान 2. दक्ष, चतुर, निपुण 3. अनुकूल 4. शुभ 5. शिक्षाप्रद 6. गूंगा-बहरा।

कल्यपाल *पुं.* (तत्.) वह व्यक्ति जो शराब बनाता और बेचता है, कलवार, कलाल।

कल्यवर्त *पुं.* (तत्.) प्रातःकाल का जलपान, 'कलेवा', 'कलेऊ'।

कल्याण *पुं.* (तत्.) 1. भलाई, शुभ कर्म, मंगल 2. सोना 3. एक रोग 4. विवाह 5. स्वर्ग 6. सौभाग्य, सुख, समृद्धि 7. गुण पुण्य 8. शील, सदाचार *वि.* (तत्.) 1. भला, अच्छा 2. सुंदर 3. तेजस्वी 4. धर्मात्मा, गुणज्ञ 5. शुभ 6. उदार 7. लाभप्रद 8. श्रेष्ठ 9. सुखी, समृद् ध, भाग्यशाली 10. उचित, ठीक।

कल्याणकर *वि.* (तत्.) कल्याण (भलाई, मंगल) करने वाला, मंगलकारी।

कल्याणकारी *वि.* (तत्.) कल्याण करने वाला, शुभ कर्म करने वाला, मंगलकारी, शुभ, अच्छा, मंगलप्रद।

कल्याण-ज्योति *स्त्री.* (तत्.) (शैव दर्शन) वह ज्योति या दिव्य प्रकाश जो कल्याणप्रद हो, परम-शिव का प्रकाश उदा. सूक्ष्म रूप से जो कल्याण-ज्योति मानवता में अंतर्निहित हैं -प्रसाद (आँधी पृ. 20)

कल्याणार्थ *क्रि.वि.* (तत्.) कल्याण के लिए उदा. हमें अपने राष्ट्र के कल्याण के लिए ही सोचते रहना चाहिए।

कल्याणी *वि.स्त्री.* (तत्.) 1. कल्याण करने वाली 2. मंगलकारिणी 3. भाग्यशालिनी 4. सुंदरी 5. रूपवती 6. गाय *स्त्री.* (तत्.) 1. भद्र महिला 2. गाय 3. कामधेनु 4. उत्तरप्रदेश के प्रयाग में स्थित एक प्रसिद्ध देवी।

कल्यान *पुं.* (तद्.) दे. कल्याण।

कल्यानी *स्त्री.* (तद्.) दे. कल्याणी।

कल्लर *पुं.* (देश.) 1. छोटे-छोटे काम करने के साथ जोंक लगाने का काम करने वाली एक उपजाति

2. रेह 3. नोनी मिट्टी 4. ऊसर भूमि 5. बंजर उदा. (लोकोक्ति) "कल्लर खेत रहे जिस पास, वाके होय नाज न घास"।

कल्लाँच *वि.* (तुर्की.) वि. 1. गुंडा, लुच्चा, बदमाश 2. निर्धन, दरिद्र, कंगाल।

कल्ला *पुं.* (तुर्की.) (तत्.-कलंब) 1. पौधे का डंठल 2. हरी और नई निकली हुई टहनी 3. अंकुर, कलफा, गोंफा उदा. आज इस पौधे में नया कल्ला फूटने लगा है 2. *पुं.* (फा.) कल्लः 1. पशुओं का सिर 2. लैंप का सिरा 3. जबड़ा (मुख के अंदर का एक अंग) 4. जबड़ें से नीचे गले तक का स्थान, स्वर मुहा. कल्ला चलाना, बोलना- भोजन आदि खाना; कल्ला दबाना- बोलने से रोकना; 3. कल्ला मारना- डींग हाँकना/मारना।

कल्लाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. किसी अंग या त्वचा में जलननुमा ज्यादा पीड़ा होना 2. त्वचा का दुखते- रहना उदा. आज मेरे माथे में चोट लग गयी जिससे वह बहुत कल्ला रहा है।

कल्लू *वि.* (देश.) (काला) 'काले रंग का' या 'काला' काले रंग वाला 2. *पुं.* काले रंग वाला व्यक्ति।

कल्लोल *पुं.* (तत्.) 1. पानी की तरंग, लहर 2. क्रीड़ा 3. आमोद-प्रमोद 4. मन की लहर या तरंग।

कल्लोलिनी *वि.* (तत्.) 1. क्रीड़ा करने वाली 2. तरंगों या लहरों वाली, तरंगवती, तरंगिनी 3. *स्त्री.* 'नदी'।

कल्लोलिनी वल्लभ *पुं.* (तत्.) नदी का स्वामी, समुद्र, सागर।

कल्हक *पुं.* (तद्.) कलहंस, कबूतर के आकार का लाल रंग का, एक पक्षी विशेष।

कल्हर *पुं.* (देश.) दे. कल्लर।

कल्हरना *अ.क्रि.* (देश.) पकाने या तलने के कड़ाही आदि पात्र में थोड़ा घी या तेल डालकर तला या पकाया जाना।

कल्हार *स्त्री.* (देश.) 1. कल्हारने की क्रिया, भाव या तरीका 2. *पुं.* (तद्.) सफेद कमल।

कल्हारना *अ.क्रि.* (देश.) 1. कोलाहल या शोर करना, चिल्लाना 2. कराहना, पीड़ा से अस्पष्ट शब्द करना *स.क्रि.* (तद्.) कडाही आदि पात्र में घी/तेल डालकर तलना, पकाना।

कल्हू *क्रि.वि.* (देश.) 'कल' 1. अगला दिन 2. बीता हुआ दिन।

कवक *पुं.* (तत्.) 1. कौर, ग्रास, निवाला 2. एक प्रकार का एककोशीय पौधा, कुकुरमुत्ता 3. फफूंद।

कवक *पुं.* (तत्.) चक्रवाक पक्षी (चकवा-चकवी का जोड़ा रात को बिछुड़ जाता है और सूर्योदय होते ही मिल जाता है)।

कवकजाल *पुं.* (तत्.) एक कोशीय पौधों के तंतुओं का समूह।

कवकतंतु *पुं.* (तत्.) कवकजाल की एक शाखा।

कवकनाशी *पुं.* (तत्.) एक यौगिक जो कवकों पर विषैला प्रभाव करता है (छोड़ता है)।

कवकरोधी *वि.* (तत्.) एक यौगिक विशेष जो कवक को मारे बिना रस की वृद्धि को रोकता है।

कवक विज्ञान *पुं.* (तत्.) 1. कवकों का अध्ययन करने वाली वनस्पति विज्ञान की एक शाखा।

कवच *पुं.* (तत्.) 1. योद्धाओं द्वारा युद्ध के समय शरीर पर पहने जाने वाला लोहे की कड़ियों का जालनुमा पहनावा 2. बाहरी आघातों को रोकने या उनसे रक्षा करने वाला आवरण 3. तनुत्र, जिरह-बख्तर, संनाह 4. आवरण 5. तंत्रशास्त्र की एक शाखा या अंग जिसमें मंत्रों द्वारा शरीर के अंगों की रक्षा के लिए प्रार्थना की जाती है 6. रक्षा मंत्र, लिखा हुआ ताबीज 7. बड़ा नगाड़ा, पटह, डंका 8. जहाज तथा गाड़ियों की रक्षा के लिए लगी हुई लोहे की मोटी चादर।

कवचधारी *वि.* (तत्.) 1. कवच पहना हुआ 2. जिसने कवच धारण किया हुआ हो।

कवच-पत्र *पुं.* (तत्.) (तंत्र.) कवच मंत्र आदि लिखने के लिए प्रयुक्त भोज-पत्र।

कवचित *वि.* (तत्.) कवच से युक्त जैसे- 'कवचित वक्ष, कवचित टैंक।

कवचित यान *पुं.* (तत्.) लोहे की मोटी चादरों से बाहर की ओर से मढ़ी सुरक्षित (आवरण युक्त) युद्ध में प्रयुक्त गाड़ी।

कवची *वि.* (तत्.) कवचित, कवच से युक्त (चीज) 2. कवच धारण किए हुए सैनिक।

कवन *सर्व.* (देश.) कौन, क्या उदा. अवगुन कवन नाथ मोहि मारा -मानस. (तुलसी 4/9/3)।

कवनीय *क्रि.वि.* (देश.) किस प्रकार, किस तरह 2. *वि.* मनोहर, सुंदर।

कवयिता *स्त्री.* (तत्.) कवयित्री, (महिला कवि) जैसे- मीरा, सुभद्रा कुमारी, महादेवी वर्मा-इत्यादि कवयित्रियाँ।

कवर *पुं.* (तद्.) 1. कवल, कौर, ग्रास (भोजन का) 2. *वि.* कबर (तद्.) 1. रंग-बिरंगा, मिशि्रत, 3. *पुं.* (तद्.) 1. चोटी, जूड़ा 2. चितकबरापन 4. *पुं.* (अं.) 1. पत्रिका या पुस्तक का आवरण-पत्र, अभ्यास पुस्तिका आदि का कवर (चढ़ाया हुआ कागज, आवरण)।

कवरपुच्छ *पुं.* (तत्.) मोर, मयूर।

कवरपुच्छी *स्त्री.* (तत्.) मयूरी, मोरनी।

कवरा/कबरा *वि.* (तद्.) 1. मिश्रित 2. जड़ी हुई 3. रंग बिरंगी *स्त्री.* 'कबरी'।

कवरी *स्त्री.* (तत्.) 1. केशों को गूंथकर निर्मित चोटी 2. जूड़ा 3. वन-तुलसी।

कवर्ग *पुं.* (तत्.) देवनागरी वर्णमाला के व्यंजनों का प्रथम वर्ग, पाँच वर्णों का वर्ग, क, ख, ग, घ और ङ अक्षरों का समूह।

कवल *पुं.* (तत्.) 1. भोजन का कौर, ग्रास, निवाला 2. एक बार में मुँह साफ करने के लिए लिया गया पानी, कुल्ली या कुल्ला 3. एक प्रकार की मछली 4. एक प्रकार की तौल *पुं.* (देश.) एक पक्षी विशेष 2. घोड़े की एक जाति।

कवलग्रह *पुं.* (तत्.) 1. कुल्ला करने के लिए मुँह में घूँट के रूप में एक बार लिया गया पानी 2. तौल की एक प्राचीन इकाई।

कवलन *पुं.* (तत्.) 1. पकड़ 2. ग्रास 3. किसी वस्तु को खाने के उद्देश्य से मुँह में रखना, कौर लेने की क्रिया या भाव।

कवलित *वि.* (तत्.) जिसे कौर के रूप में ग्रहण दिया गया या निगल लिया गया हो, खाया या चबाया हुआ 2. निगला हुआ 3. पकड़ा हुआ 4. ग्रहण किया हुआ।

कवाट *पुं.* (तत्.) 1. किवाड़, कपाट 2. द्वार।

कवायद *पुं.* (अ.) 'कायदा' का बहुवचन, कायदे 2. किसी कार्य या विशिष्ट बात के नियम या फायदे फायदे 2. कार्य विधि 3. व्याकरण 4. तौर-तरीका *स्त्री.* सैन्य व्यवस्था में कराया गया अभ्यास या प्रविधि जो उन्हें युद्ध के क्षेत्र में व्यवस्थित रहने, आक्रमण करने तथा आत्म-रक्षा करने के हुनर सिखाता है।

कवार *पुं.* (तद्.) 1. कवाट, कपाट, किवाड़।

कवि *पुं.* (तत्.) जो अधिकारपूर्वक जीवनोपयोगी बात कहता हो 1. कविता करने वाला 2. ललित साहित्य का प्रणेता 3. रचनाकार या रचयिता व्यक्ति 4. ब्रह्मा 5. ऋषि 6. तत्वज्ञ 7. विद्वान, विद्वान, प्रज्ञावान 8. कलाविद् 9. शुक्राचार्य 10. 10. अग्नि 11. सूर्य 12. वरुण 13. इंद्र 14. छिपकर युद्ध करने वाला 15. (सांख्य दर्शन) आत्मा 16. लगाम।

कवि-कर्म *पुं.* (तत्.) 1. काव्य-रचना 2. कविता करना 3. कवि का काम।

कविका *स्त्री.* (तत्.) 1. लगाम 2. एक प्रकार की मछली 3. केवड़ा।

कवि-कृत *वि.* (तत्.) 1. कवि द्वारा प्रणीत या रचित जैसे-तुलसीदास कविकृत रामचरित मानस 2. कवि द्वारा किया हुआ।

कवि-ज्येष्ठ *पुं.* (तत्.) 1. वरिष्ठ कवि, कवियों में ज्येष्ठ या बड़ा कवि 2. आदि कवि महर्षि वाल्मीकि।

कविता *स्त्री.* (तत्.) 1. व्यक्ति के मनोविकारों को प्रभावित करने वाली रसात्मक, रमणीय पद्य-

रचना या पद्यमय वर्णन 2. काव्य 3. कवि की कृति 4. पद्य-रचना।

कविताई *स्त्री.* (तद्.) दे. कविता।

कवित्त *पुं.* (तत्.) 1. काव्य, कविता 2. 31 से 33 अक्षरों (वर्णों) वाला, मनहर, जनहरण, कलाधर, रूपघनाक्षरी, जलहरण, डमरु, कृपाण, विजया और देवघना क्षारी-नामक नौ प्रकारों का दंडक वार्णिक छंद 4. लाक्ष. वह कविता जिसमें कल्पना प्रसूत अतिशयोक्ति पूर्ण कथन हो उदा. यह गुनकथन कवित्त न होई -बोधा ग्रं. (7)।

कवित्व *पुं.* (तत्.) 1. काव्य-रचना 2. काव्य-कौशल, रचना-कौशल 3. काव्य-प्रतिभा या शक्ति 4. काव्य का गुण 5. बुद्धि, समझ, प्रज्ञा।

कवि-दृष्टि *स्त्री.* (तत्.) 1. कवि अर्थात् रचनाकार का दृष्टिकोण 2. विचारधारा या उद्भावना 3. कवि-कल्पना।

कवि-निरंकुशता *स्त्री.* (तत्.) कवि को प्राप्त वह विशेष स्वतंत्रता या अधिकार जिसके आधार पर वह अपनी रुचि या विशिष्टता के अनुरूप व्याकरण के नियमों के विपरीत शब्द-रूपों की स्थितियों तथा छंद विधान का मनमाना प्रयोग कर सकता है।

कवि-पुत्र *पुं.* (तत्.) कवि का सुत, बेटा, अर्थात् शुक्राचार्य, सूर्य-पुत्र का अर्थ सूर्य भी होता है।

कवि-प्रसिद्ध *स्त्री.* (तत्.) दे. कविसमय।

कवि-भूप *पुं.* (तत्.) 'कविराज', श्रेष्ठ कवि, कवियों का राजा।

कविराज *पुं.* (तत्.) 1. कवियों में श्रेष्ठ 2. चारण 3. वैद्यों की एक उपाधि।

कविराय *पुं.* (तद्.) दे. कविराज।

कविलास *पुं.* (तत्.) कैलाश, कैलास, स्वर्ग।

कविसत्तम *वि.* (तत्.) कवियों में श्रेष्ठ जैसे- अश्वघोष और कालिदास जैसे- कवि-सत्तम - निराला (गीत कुंज पृ. 54)।

कवि-समय *पुं.* (तत्.) वर्णन संबंधी कवियों में प्रसिद्ध कतिपय ऐसी परिपाटियाँ व मान्यताएँ जिनकी सत्यता संदिग्ध होने पर भी कवियों द्वारा (काव्य में) मान्य एवं प्रसिद्ध है जैसे- हंस का दूध और पानी के मिश्रण में से दूध मात्र पी लेने विषयक गुण को केवल 'कवि समय' माना जाता है।

कवि-स्वातंत्र्य *पुं.* (तत्.) काव्य. 1. रचना को प्रभावशील बनाने के लिए अथवा उसके प्रभाव की रक्षा के लिए कवि को प्राप्त वह छूट या स्वतंत्रता जिसके आधार पर किसी तथ्य अथवा कठोर नियम की उपेक्षा या उल्लंघन कर सकता है 2. कवि-निरंकुशता।

कवींद्र *पुं.* (तत्.) श्रेष्ठ कवि।

कवीश्वर *पुं.* (तत्.) 1. कवियों में श्रेष्ठ, सर्वोत्तम कवि, कवींद्र।

कवीसुर *पुं.* (तद्.) दे. कवीश्वर।

कवौंछ *स्त्री.* (देश.) हल्की-हल्की कालिमा, कालेपन झलक, कालिख।

कव्य *वि.* (तत्.) वह अन्न या द्रव्य जिससे पिंडदान-पितृ-यज्ञादि किए जाएँ 2. स्तवन करने योग्य 3. *पुं.* एक पितृलोक।

कव्यवाह-कव्यवाहन *पुं.* (तत्.) 1. पितृपक्ष के समय की अग्नि जिसमें पिंड से आहुति दी जाती है 2. अग्नि।

कव्वाल *पुं.* (अर.) 1. कव्वाली गाने वाला 2. कव्वाली गायन का पेशा करने वाला।

कव्वाली *स्त्री.* (अर.) संतों की कब्रों आदि पर गाए-जाने वाला इस्लामी (समूह) गीत 2. कव्वाली की शैली में रचित तथा गाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के गीत 3. (संगीत) एक ताल।

कशमकश *स्त्री.* (फा.) 1. खींचातानी 2. भीड़-भाड़ 3. धक्कम-धक्का 4. आगा-पीछा, सोच-विचार, असमंजस 5. संघर्ष, प्रतिस्पर्धा।

कशमीरा/कश्मीरा *पुं.* (देश.) एक प्रकार का मोटा, ऊनी कपड़ा।

कशा *स्त्री.* (तत्.) 1. चाबुक, कोड़ा 2. रस्सी।

कशाघात *पुं.* (तत्.) 1. कशा का आघात, कोड़े की मार 2. चाबुक मारना, कोड़े से मारना 3. लाक्ष. किसी कार्य को करने के लिए विवश करने वाली तीव्र प्रेरणा।

कशिश *स्त्री.* (फा.) 1. खिंचाव, आकर्षण 2. आकर्षण-शक्ति।

कशीदा *पुं.* (फा.) कपड़े पर बेल-बूटे काढ़ने का काम, कपड़े पर तागे से बनाए या काढ़े गए बेल बूटे।

कशीदाकार *वि.* (फा.) 1. चिकन काढ़ने वाला, कशीदा-कारी करने वाला 2. *पुं.* कशीदा काढ़ने का काम करने वाला व्यक्ति, कशीदाकारी करने वाला कारीगर।

कशीदाकारी *स्त्री.* (फा.) 1. कपड़े पर बेल-बूटे काढ़ना, चिकन काढ़ना 2. कशीदे का काम या कारीगरी।

कशीदेदार जिल्द *स्त्री.* (फा.) पुस्तक पर चढ़ी हुई ऐसी जिल्द जिस पर कढ़ा हुआ कपड़ा चढ़ा हो।

कशेरुका *स्त्री.* (तत्.) रीढ़, मेरुदंड।

कशेरुकी *पुं.* (तत्.) प्राणि. वे प्राणी जिनके रीढ़ होती है, रीढ़ वाले प्राणी, इन प्राणियों के पाँच वर्ग होते है, स्तनी, सरीसृप, पक्षी, मछलियाँ तथा उभयचर।

कशेरू *पुं.* (तत्.) 1. रीढ़, मेरुदंड 2. जल में पैदा होने वाला कसेरू नामक पौधा 3. कसेरू का फल।

कशेरूक *पुं.* (तत्.) रीढ़ बनाने वाली छोटी-छोटी हड्डियों में से प्रत्येक हड्डी, गुरिया, मेरू 2. जल में उत्पन्न होने वाले 'कसेरू' नामक पौधे के 'फल' 3. कसेरू नामक जलज पौधा।

कशेरूक दंड *पुं.* (तत्.) रीढ़ की हड्डी, मेरुदंड।

कश्ती *स्त्री.* (फा.) नौका, नाव, किश्ती।

कश्मकश *पुं.* (फा.) दे. कशमकश।

कश्मल *पुं.* (तत्.) (i) 1. उत्साहहीनता, पाप, मोह, मूर्च्छा *वि.* मैला, गंदा 2. दूषित, बुरा 3. मानसिक दीनता 4. निंदाकार।

कश्मीर *पुं.* (तत्.) एक सुंदर प्रदेश।

कश्मीरज *पुं.* (तत्.) 1. कश्मीर में उत्पन्न होने वाला प्राणी, वस्तु 2. केशर *वि.* कश्मीर में उत्पन्न।

कश्मीरा *पुं.* (तद्.) दे. कशमीरा।

कश्मीरी *पुं.* (तत्.) वह व्यक्ति जो कश्मीर में रहता रहता हो, कश्मीर का निवासी *स्त्री.* (तत्.) 1. कश्मीर की वस्तु 2. कश्मीर की भाषा *वि.* (तत्.) कश्मीर का (की), कश्मीर से संबंधित, कश्मीर विषयक।

कष *पुं.* (तत्.) कसने, जांचने तथा परखने की क्रिया, भाव 2. जाँच, परीक्षा 3. निकष, कसौटी 4. रगड़ने वाला (कसौटी वाला पत्थर)।

कषण *पुं.* (तत्.) 1. कसौटी पर कसने या जाँचने की क्रिया, भाव 2. जाँच, परीक्षण 3. रगड़ने, घिसने की क्रिया या भाव।

कषन *स.क्रि.* (तद्.) 1. रगड़ना। 2. चिह्न लगाना 3. परखना जाँचना *पुं.* कसने जाँचने की क्रिया, भाव *वि.* कच्चा।

कष-पट्टिका *स्त्री.* (तत्.) कसौटी, निकष।

कषाय *वि.* (तत्.) 1. कसैला 2. गेरु के रंगवाला, गैरिक 2. गेरुए रंग का *पुं.* (तत्.) 1. कसैला स्वाद 2. कसैले स्वाद वाला पदार्थ 3. क्वाथ, काढ़ा।

कषायित *वि.* (तत्.) जिसे कसैला किया गया हो 1. कसैले स्वाद से युक्त 2. बुरे-मनोविकारो से बिगड़ा हुआ 3. गेरु के रंग से रँगा हुआ, गेरुआ।

कषासा *वि.* (तत्.) जिससे रगड़ पैदा होती हो, रगड़ पैदा करने वाला।

कषित *वि.* (तत्.) 1. जिसे खींचा गया हो, खिंचा या खींचा हुआ 2. क्षतिग्रस्त 3. हानिग्रसित 4. कष्ट पाया हुआ, जिसे कष्ट हुआ हो।

कष्ट *पुं.* (तत्.) 1. दुख 2. पीड़ा, व्यथा 3. विपत्ति, मुसीबत 4. श्रम, परेशानी।

कष्टकर *वि.* (तत्.) 1. जिससे दुख या पीड़ा उत्पन्न हो, कष्ट या पीड़ा देने वाला 2. कठिनाई या मुसीबतदायक 3. कष्टकारी, कष्टकारक।

कष्टत्व *पुं.* (तत्.) (काव्य.) काव्य में एक अर्थदोष दे. 'कष्टार्थ'।

कष्टदायक *वि.* (तत्.) 1. कष्टकारी (कष्ट देने वाला) कष्टप्रद जैसे- कैसर का रोग बहुत कष्ट दायक होता है।

कष्ट-सह *वि.* (तत्.) 1. सहनशील, सहिष्णु 2. धीरज से कष्ट सहने करने वाला।

कष्ट-साध्य *वि.* (तत्.) 1. जिसे पूरा करना सरल न होकर श्रमसाध्य या कष्टकर हो, कष्टकारी।

कष्टार्तव *पुं.* (तत्.) (महिलाओं के लिए) कष्टपूर्वक होने वाला मासिक धर्म (रजःस्राव)।

कष्टार्थ *पुं.* (तत्.) खींच-तान कर (सरल रीति से न निकाले जाने वाला) निकाला गया अर्थ काव्य. काव्य का एक (काठिन्य) दोष, कष्टत्व दोष उदा. उदा. तो पर वारौं चार मृग, चारि विहँग, फल चारि अर्थात् नायिका के सौन्दर्य पर न्योछावर किए जाने वाले चार, पशुओं, चार पक्षियों तथा चार फलों का अनुमान लगाया जाना कठिन कार्य बन जाता है, चार पशु-हाथी, घोड़ा, मृग तथा सिंह, क्रमशः उसके गति, घूँघट, नेत्र और कटि के सौंदर्य के और शुक (तोता-नाक) के सौंदर्य हेतु तथा अनार (दाँत) श्रीफल (स्तन) बिंबाफल (अधर) और मधूक (कपोलों) के सौंदर्य के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

कष्य *वि.* (तत्.) 1. जिसे कसा या परखा जा सके 2. कसने योग्य 3. कसौटी पर कसे जाने योग्य 4. कोड़ा या चाबुक लगाए जाने योग्य *पुं.* (तत्.) कसे जाने योग्य वस्तु-धातु (सोना, चाँदी आदि)।

कस[1] *वि.* (तद्.) कैसा, किस प्रकार का उदा. ईश्वर जीवहि भेद कहहु कस -तुलसी ('मानस' *7/78/3*) *क्रि.वि.* कैसे, किस प्रकार से 2. क्यों उदा. कस न भजहु भ्रम त्यागि -तुलसी (मानस *7/74*) 2. *पुं.* (तद्.) 1. निचोड़ कर निकाला हुआ सारतत्व या रस, निचोड़ 2. स्वाद उदा. विषय विरत खटाई नाना कस -विनय पत्रिका. (204 तुलसी) 3. *स्त्री.* (तत्.) कसने या कसकर बाँधने वाली वस्तु 2. रोक, रुकावट 3. शक्ति, ताकत, बल 4. 4. नियंत्रण, काबू उदा. शादी क्या हुई -आपका मित्र तो पत्नी के कस में रहने लगा है।

कस[2] *पुं.* (तद्.) अर्क, सार, निकाला हुआ रस 2. कसैलापन 3. मदिरा को तीखा बनाने हेतु मिलाए जाने वाली वस्तु 4. लोहे आदि के विशेष उपकरण पर घिसकर लच्छे निकालने का भाव जैसे- कद्दूकस करना।

कसक *स्त्री.* (तद्.) किसी मानसिक या भौतिक आदि कष्टों के कारण उत्पन्न पीड़ा, टीस 2. मन मन में दबा हुआ पुराना वैर या द्वेष जिससे बदला लेने की इच्छा या प्रेरणा होती हो 3. बदला लेने की इच्छा 4. किसी के दुख के कारण होने वाली मानसिक पीड़ा। 5. रह-रह कर होने वाली हल्की पीड़ा।

कसकन *स्त्री.* (तद्.) कसक, हल्की-हल्की पीड़ा।

कसकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. वेदना या कष्ट होते रहना, किसी दुखद घटना के कारण रह-रह कर उठने वाली पीड़ा 2. खटकना, कसक होना उदा. काँटे-सी कसकति हियै वही कँटीली भौंह -बिहारी. (406) 3. किसी अन्य के कष्ट को सुनने या देखने से उत्पन्न मानसिक क्लेश होना।

कसकाना *स.क्रि.* (देश.) कष्ट देना, पीड़ा देना।

कसकुट *पुं.* (देश.) काँसा, काँसे आदि मिश्रित धातुओं से निर्मित धातु।

कसकौहाँ *वि.* (देश.) कसक पैदा करने वाला, कष्ट या पीड़ा पहुँचाने वाला।

कसगर *पुं.* (फा.) 1. मिट्टी की मूर्तियाँ बनाने वाला व्यक्ति या उपजाति 2. कसेरा, उपजाति या उस जाति का व्यक्ति।

कसदम *वि.* (अर.) जिसमें कस या शक्ति हो, शक्तिशाली, बलशाली, ताकतवर।

कसदार *वि.* (देश.) जो शक्ति सामर्थ्य संपन्न हो 1. 1. बलवान, शक्तिशाली 2. चतुर, श्रेष्ठ।

कसन *स्त्री.* (तद्.) कसने की क्रिया, भाव, ढंग 2. कसाव, कसावट 3. पीड़ा दुख, कष्ट।

कसना *स.क्रि.* (तद्.) 1. जकड़ने या बाँधने के लिए तार, डोरी आदि को खींचना, तानना 2. मजबूती या दृढ़ता से बाँधना जैसे- ढीली गठरी को कसना, वीणा के तारों को कसना 3. पुर्जों को मजबूती से लगाना या बैठाना, पेंच कसना 4. बंधन को कड़ा करना 5. बर्तन आदि को बहुत ज्यादा भरना 6. घोड़ा या सवारी के साज को मजबूती से बाँधकर उसे तैयार करना 7. नियंत्रित करना उदा. अपने बेटे को कसो कहीं बिगड़ न जाय 8. घिसना, रगड़ना 9. कसौटी पर कसना, परखना 10. किसी उद्देश्य से मन को पक्का करना 11. दबाव डालना *अ.क्रि.* 1. मजबूती से बँधना 2. बँधे हुए अंग आदि का ज्यादा जकड़ा जाना उदा. कमरबंद से कमर कस गई 3. आभूषण या वस्त्र आदि पहनने की वस्तु का तंग होना 4. स्वयं को काबू में रख कर व्यवहार करना 5. कमी करना।

कसनि *स्त्री.* (तद्.) कसने का भाव या क्रिया।

कसनिया *स्त्री.* (तद्.) दे. कसनी।

कसनी *स्त्री.* (तद्.) 1. कसौटी, निकष 2. रस्सी 3. गिलाफ, खोली 4. कंचुकी, चोली (शरीर में पहनने का वस्त्र) उदा. हुलसे कुच कसनी बँद टूटे टूटे -जायसी(पद्मावत 280/4)।

कसपत *पुं.* (देश.) 1. कूटू का पौधा 2. काले रंग का अन्न, कूटू।

कसब *पुं.* (अर.) 1. उपार्जन, कमाई 2. व्यवसाय, उद्यम, धंधा 3. परिश्रम, कारीगरी 5. स्त्री का व्यभिचार से धन कमाना 6. वेश्यावृत्ति।

कसबल *पुं.* (तद्.) 1. सामर्थ्य 2. क्षमता, शक्ति, ताकत 3. साहस, हिम्मत, हौसला उदा. मैं तो समझती थी कि तुममें भी कुछ कसबल है - प्रेमचंद (मानसरोवर-अलग्योझा), किसी प्रकार की योग्यता।

कसबी *पुं.* (अर.) 1. व्यवसायी उदा. कोई फेरै माला कोई फेरे तसबी देखो रे लोगां दोनों कसबी - कबीर (पद 38) 2. व्यभिचार से धन कमाने वाली स्त्री।

कसबीखाना *पुं.* (अर.) वेश्याओं का रहने का स्थान, वेश्यालय, कोठा।

कसम *स्त्री.* (अर.) सौगंध, शपथ मुहा. कसम उतारना- शपथ पूरी करके बंधन से मुक्त होना (स्वयं बंधन मुक्त होना); कसम खाना- किसी तरह की प्रतिज्ञा करना; कसम खिलाना/चढ़ाना/देना/दिलाना- शपथ देकर काम करने को बाध्य करना; कसम तोड़ना- किसी बात को शपथपूर्वक करने का वायदा करके भी शपथ पूरी न करना; कसम खाने को भी नहीं- नाम मात्र के लिए भी नहीं।

कसमई *स्त्री.* (देश.) 1. काले पंखों, गुलाबी पीठ एवं सीना तथा लाल चोंच वाला एक पक्षी 2. कसने की क्रिया या कार्य।

कसमस *स्त्री.* (अनु.) दे. कसमसाहट।

कसमसाना *अ.क्रि.* (देश.) चेष्टा करने या सक्रिय होने को आतुर होने लगना, परस्पर घर्षण करना जैसे- भीड़ में मनुष्यों का कसमसाना, कसमसाना *अ.क्रि.* 1. कुछ करने के लिए उत्सुक या सक्रिय होना 2. बेचैन होना 3. हल्की सी चेष्टा करना 4. 4. कुलबुलाना, हिलना-डुलना।

कसमसाहट *स्त्री.* (देश.) कसमसाने की क्रिया, भाव, कुलबुलाहट 2. तनिक चेष्टा या प्रयत्नशीलता 3. कुछ करने को थोड़ी सक्रियता, उत्सुकता।

कसमा-कसमी *स्त्री.* (अर.) 1. परस्पर शपथ लेकर की हुई प्रतिज्ञा 2. दूसरे को शपथ लेते देखकर स्वयं भी उसके विपरीत शपथ लेना 3. दोनों पक्षों का शपथ लेने का कार्य।

कसमिया *क्रि.वि.* (अर.) शपथ पूर्वक।

कसर *स्त्री.* (अर.) 1. कमी, न्यूनता 2. त्रुटि, दोष, विकार उदा. क्या है ऐसी कसर तुझमें -हरिऔध (पिर्यवास 15/28) 3. लेन-देन आदि में थोड़ी सामान्य हानि, टोटा मुहा. कसर करना, छोड़ना, कसर रखना- किसी काम में कमी छोड़ देना; कसर खाना/सहना- हानि, घाटा उठाना, सहना;

कसर न उठा रखना/न छोड़ना/न रखना- कोई कमी न रखना, सभी प्रकार पूरा कर देना; कसर निकलना- कमी या हानि पूरी होना, बदला ले लेना; कसर निकालना- क्षतिपूर्ति करना; किसी से कसर निकालना- किसी को हानि पहुँचाकर संचित द्वेष/वैर का बदला लेना; (परस्पर) कसर पड़ना- द्वेष के कारण संबंधों में परस्पर अंतर आना।

कसरत *स्त्री.* (अर.) 1. व्यायाम 2. अधिकता, प्रचुरता।

कसरती *वि.* (अर.) 1. व्यायामशील, व्यायाम करने वाला 2. व्यायाम से पुष्ट।

कसरहट्टा *पुं.* (देश.) 1. कसेरे लोगों का बाजार 2. काँसे ताँबा, पीतल के बरतनों का बाजार।

कसली *स्त्री.* (तद्.) एक प्रकार का छोटा फावड़ा, कसी।

कसवाई *स्त्री.* (देश.) 1. कसने या कसवाने का मेहनताना (पारिश्रमिक) 2. कसवाने की क्रिया, भाव।

कसवाना *स.क्रि.* (देश.) कसना का प्रेरणात्मक- किसी वस्तु को कसने का काम किसी अन्य से कराना, कसाना।

कसा *वि.* (तद्.) 1. मजबूती से बँधा अथवा तना हुआ, वीणा के कसे तार 2. पूरी तरह साज से युक्त जैसे- कसा घोड़ा 3. पूरी तरह तैयार जैसे- कसा-कसाया *वि.* ढीला।

कसाइया *वि.* (तद्.) 1. कषाय वर्ण का 2. गेरुए या लाल रंग वाला।

कसाई *पुं.* (अर.) 1. जानवारों को काटकर उनके माँस का रोजगर करने वाला व्यक्ति, बूचड़ 2. अत्यंत निर्दयी आदमी *स्त्री.* कसने की मजदूरी/कार्य, भाव मुहा. कसाई के खूटे से बंधना- निष्ठुर निष्ठुर या निर्दय व्यक्ति का साथ होना या व्याह व्याह हो जाना, निर्दयतापूर्ण (निष्ठुर) व्यवहार वाले स्थान पर जा फँसना पहुँचना।

कसाईखाना *पुं.* (अर.+फा.) 1. वह स्थान जहाँ माँस के व्यवसाय हेतु पशुवध होता है 2. पशुओं को काटे जाने का स्थान।

कसाकस *क्रि.वि.* (देश.) 1. अच्छी तरह कसे हुए होने का भाव 2. अच्छी तरह कसा हुआ अथवा भरा हुआ उदा. आज रेल के डिब्बे में कसाकस भीड़ थी *वि.* 1. अच्छी तरह 2. ठसाठस।

कसा-कसाया *वि.* (देश.) 1. कसे हुए सोने वाला 2. पूर्ण रूप से तैयार 3. प्रस्थान के लिए तैयार या उद्यत।

कसाकसी *स्त्री.* (देश.) 1. बहुत अधिक कसे होने की अवस्था 2. परस्पर तनातनी द्वेष या वैर-विरोध 3. खींचातानी उदा. बाबू व अफसर दोनों की कसाकसी में मेरे प्रकरण का निराकरण नहीं हो पाया।

कसाना *स.क्रि.* (तद्.) दे. कसवाना।

कसामसी *स्त्री.* (देश.) 1. अधिक भीड़ के कारण सीमित स्थान में परस्पर धक्का-मुक्की, धक्कम धक्का, (घर्षण) 2. स्थान की संकीर्णता।

कसार *पुं.* (देश.) 1. चीनी, बूरा, मेवा आदि मिलाकर भूना हुआ आटा 2. कथा आदि के प्रसंग में प्रसाद-स्वरूप वितरित किए जाने वाली पंजीरी, पँजीरी 3. (तद्.) कासार छोटा तालाब उदा. फूले कमल कसार।

कसाला *पुं.* (तद्.) विपत्ति, कष्ट, मुसीबत उदा. छाले छाले परे पगनि, अधर पै जाले परे, कठिन कसाले परे, लाले परे जान के -उद्धव (शतक-111-रत्नाकर)।

कसाव *पुं.* (देश.) 1. कसने का तरीका, अवस्था, भाव 2. खिंचाव, तनाव 3. कसावट 4. कसैलापन।

कसावट *स्त्री.* (देश.) कसे हुए होने, कसने तथा कसाने की क्रिया, अवस्था, भाव 2. बनावट, कसन, गठन और कार्य करने की योग्यता या शक्ति 3. शरीर की गठन या कस-बल।

कसावड़ा *पुं.* (देश.) कसाई।

कसावर *पुं.* (देश.) एक प्रकार का देहाती बाजा।

कसि *क्रि.वि.* (तद्.) 1. कसकर, मजबूती से बाँधकर उदा. कमर में पेटी कसि लो 2. परखकर, जाँचकर, कस कर उदा. कनक सौं लेहु कसि -

सूरसागर (10/2420) *वि.* कैसी उदा. मेरे हृदय कृपा कसि काउ -मानस (1/280/1 तुलसी) *क्रि.वि.* कैसे।

कसिया *स्त्री.* (तद्.) 1. छोटा फावड़ा, कसी *स्त्री.* (देश.) मटमैले रंग की (भूरी) एक चिड़िया।

कसियाना *क्रि.वि.* (देश.) कसैला हो जाना, काँसे, पीतल आदि के पात्र में रखी हुई किसी वस्तु का कसैला हो जाना, कसाना, (स्वाद) में कसैला हो जाना।

कसिवान *पुं.* (तद्.) कसौटी, सोना, चाँदी परखने की निकष।

कसी *स्त्री.* (तद्.) 1. भूमि आदि खोदने में प्रयुक्त छोटा फावड़ा, कुसी 2. *स्त्री.* (तद्.) रस्सी *पुं.* गवेधुक नामक पौधा।

कसीटना *स.क्रि.* (देश.) 1. कसना 2. रोकना उदा. प्राण ही कूँ धारि धारणा कसीटियतु हैं "सुंदर"।

कसीदा *पुं.* (अर.) 1. ऐसी कविता जो किसी की प्रशंसा के लिए (फारसी में) रची गई हो, प्रशंसात्मक पद्य-रचना उदा. तुमने तो अपनी कविता में आज आज अपने मित्र के कसीदे जी भर कर पढ़े।

कसीदा *पुं.* (फा.) सुई तथा धागे से कपड़े पर बेल-बूटे तथा पशु-पक्षियों के चित्र काढ़ने की क्रिया या काम, कसीदाकारी।

कसीर *वि.* (अर.) मान, मात्रा तथा संख्या आदि के विचार से बहुत ज्यादा, प्रचुर, अधिक।

कसीला *वि.* (देश.) 1. कसावट वाले शरीर का, सुगठित शरीर वाला 2. कसा हुआ उदा. 1. कसीले शरीर वाला युवक 2. कसीले वस्त्र पहनना पहनना अच्छा नहीं लगता।

कसीस *पुं.* (तद्.) लोहे के विकारी रूप का एक खनिज पदार्थ, हरा थोथा टि. हरा थोथा जहाँ लोहे का यौगिक होता है वहीं नीला थोथा ताँबे का।

कसीस *स्त्री.* (फा.) 1. खिंचाब, आकर्षण 2. तनाव 3. प्रयत्न, कोशिश 4. निर्दयता, कठोर व्यवहार।

कसीसना *स.क्रि.* (देश.) 1. तानना, खींचना, चढ़ाना उदा. हाय इतै वर बान कसीसत।

कसुबा छठ *स्त्री.* (तद्.) श्रावण के शुक्ल पक्ष की षष्ठी (छठ) भक्तों द्वारा इस दिन भगवान कृष्ण (विष्णु) की पूजा करने के बाद कुसुंभी रंग के वस्त्र पहने जाते हैं।

कसून *पुं.* (देश.) 1. कर्र 2. कर्र के पौधे का लाल-पीला फूल 3. लाल-पीले रंग के फूलों वाला पौधा।

कसूमर *पुं.* (तद्.) कुसुम नामक फूल, कुसुंभ *वि.* कुसुंभ पुष्प के रंग का, केसरिया।

कसूमल *पुं.* (तद्.) दे. कसूमर उदा. कहो कसूमल साड़ी रँगावाँ, कहो तो भगवाँ भेस -मीरा (पद 153)।

कसूर/कुसूर *पुं.* (अर.) 1. अपराध, दोष, जुर्म 2. त्रुटि, गलती।

कसूरवार *वि.* (अर.) अपराधी, दोषी।

कसेरा *पुं.* (तद्.) 1. कांस्यकार, ठठेरा 2. काँसे-पीतल के बरतन बनाने वाला व्यक्ति तथा उपजाति।

कसेरु *पुं.* (तद्.) एक प्रकार की मौथा घास की जड़ जो गाँठों के रूप में होती है तथा मीठी एवं स्वादिष्ट होने के कारण फल के रूप में खाई जाती है, यह प्रायः झीलों तथा तालाबों के समीप उगती हैं, इसका छिलका काला होता है।

कसैया *वि.* (देश.) 1. कसकर या जकडक़र बाँधने वाला 2. परखने या जाँचने वाला 3. पशुओं को कसाई के घर ले जाने वाला 4. पशु-वध करने वाला (कसाब) *पुं.* 1. कसकर बाँधने वाला व्यक्ति 2. कसाव।

कसैला *वि.* (तद्.) 1. कषाय या कसैले स्वाद वाला 2. स्वाद में ऐसी वस्तु जिसके खाने में जीभ में हल्की ऐंठन, चुनचुनी या तनाव होता हो तथा जिसका स्वाद आँवले, फिटकिरी के समान होता हो।

कसैलापन *पुं.* (देश.) कसैला होने की स्थिति, अवस्था या भाव।

कसैली *वि.* स्त्री. (तद्.) 1. कषाय स्वाद वाली 2. सुपारी या फिटकिरी के समान स्वाद वाली।

कसोरा *पुं.* (देश.-काँसा+ओरा) काँसे का चौड़े मुँह वाला छोटा कटोरा या प्याला (उसी के समान मिट्टी का एक प्रसिद्ध छोटा बरतन)।

कसौटी *स्त्री.* (तद्.) कषपट्टी, कसवट्टी', काले रंग का एक पत्थर जिस पर रगडक़र सोने की गुणवत्ता या उत्तमता परखी जाती है, निकष 2. परखने का मानक आधार, मानदंड। मुहा. कसौटी पर कसना, तोलना- भली-भाँति परीक्षण करना।

कस्टम *पुं.* (अं.) 1. रीति-रिवाज, प्रथा 2. सीमा-शुल्क।

कस्तूर *पुं.* (तद्.) 1. नाभि में कस्तूरी वाला हिरन, कस्तूरी मृग 2. सुगंधित पदार्थ जो कस्तूरी की भाँति कई प्रकार के जीवों के अंगों से निकलते है।

कस्तूरा *पुं.* (तद्.) 1. कस्तूरी मृग 2. लोमड़ी की तरह का एक प्रकार का प्राणी 3. कश्मीर से असम तक पाया जाने वाला भूरे रंग का एक सुरीला पक्षी जो प्राय: झुंड में रहता है 4. मोती वाली सीपी 5. पोर्ट ब्लेयर की चट्टानों से खुरच कर निकाली जाने वाली बलकारक सुगंधित औषधि 6. जहाज में जड़े हुए तख्तों का जोड़ या संधि 7. मुश्क, सुगंध, कस्तूरी।

कस्तूरिका *पुं.* (तत्.) कस्तूरी मृग, मुश्की हिरन, पीले, काले रंग के गले वाला मृग जो डरपोक और निर्जन स्थानों को पसंद करने वाला होता है।

कस्तूरिका *स्त्री.* (तत्.) कस्तूरी, मुश्क।

कस्तूरिया *पुं.* (तद्.) कस्तूरी मृग *वि.* (तद्.) 1. वह हिरन जिसकी नाभि में कस्तूरी हो 2. वह जिसमें कस्तूरी हो 3. कस्तूरी के समान रंग वाला, मुश्की 4. कस्तूरी संबंधी 5. कस्तूरी मिश्रित।

कस्तूरी *स्त्री.* (तत्.) एक सुगंधित पदार्थ जो एक विशिष्ट प्रकार के हिरन की नाभि से निकलता है, है, मुश्क, यह हिरन नर होता है तथा पदार्थ नाभि के पास थैली में पाया जाता है।

कस्तूरी मृग *पुं.* (तत्.) 1. कस्तूर 2. कस्तूरी वाला मृग 3. मुश्की हिरन 4. हिरन की जाति का एक प्रकार का छोटा बिना सींगों वाला जंतु जिसके शरीर पर मटमैले रंग की चित्तियाँ होती है।

कस्द *पुं.* (अर.) 1. विचार, इरादा 2. संकल्प, दृढ़-निश्चय।

कस्दन *क्रि.वि.* (अर.) निश्चयपूर्वक, जान-बूझकर, इरादतन।

कस्बा *पुं.* (अर.) 1. वह बस्ती जो गाँव से बड़ी और नगर (शहर) से छोटी हो 2. कृषि से (प्राय:) भिन्न कार्यों में संलग्न लोगों की बस्ती।

कस्बाई *वि.* (अर.) 1. कस्बे या कस्बों से संबंधित 2. कस्बे या कस्बों का।

कस्मल *पुं.* (तद्.) दे. कश्मल।

कस्मिया *क्रि.वि.* (अर.) कसम से, शपथपूर्वक।

कस्या *पुं.* (देश.) कसी, छोटा फावड़ा, फावड़ा।

कस्साब *पुं.* (अर.) 1. मांस बिकने की जगह (स्थान) 2. पशु-वध का स्थान, कसाई खाना।

कस्सी *स्त्री.* (देश.) 1. दो कदम अथवा 49-1/4 इंच के बराबर जमीन मापने की रस्सी 2. जमीन का उक्त माप 2. जमीन खोदने का छोटा फावड़ा।

कहँ *पुं.* (तद्.) 1. 'वास्ते', 'के लिए' 2. *क्रि.वि.* कहाँ।

कहकशाँ *स्त्री.* (फा.) आकाश गंगा।

कहकहा *पुं.* (फा.) ठहाका मारना या लगाना, अट्टहास, (ठहाका मारकर हँसना)।

क़हक़हाट *स्त्री.* (फा.) कहकहा मुहा. कहकहा/कहकहे मारना, लगाना 1. हँसी उड़ाना 2. अट्टहास करना 3. उपहास करना।

कहगिल *स्त्री.* (फा.) घास फूस मिला हुआ चिकनी मिट्टी का गारा *वि.* इस प्रकार का गारा (कहगिल) कच्ची दीवारों को लीपने (कच्चे फर्श को भी) अथवा कच्ची ईंट जोडक़र दीवारें चिनने के काम आता है।

क़हत *पुं.* (अर.) 1. बहुत कमी, अभाव 2. दुर्भिक्ष, अकाल।

कहन *स्त्री.* (तद्.) 1. कथन, कहना 2. लोकोक्ति, उक्ति 3. 3. वचन, कही हुई बात 4. कहावत 5. लोक में प्रचलित किसी पद्य या गद्य का महत्वपूर्ण अंश। अंश।

कहनहारी *स्त्री.* (देश.) 1. कहने वाली 2. कहने योग्य, बताने योग्य, कथनीय।

कहना *स.क्रि.* (तद्.) 1. बोलकर विचार प्रगट करना या भावों की अभिव्यक्ति करना 2. सार्थक सार्थक पद का उच्चारण करना, बोलना। 3. सूचना देना 4. घोषणा करना 5. समझाना-बुझाना *पुं.* (तद्.) 1. कथन, वचन (बात) 2. आदेश 3. सलाह 4. अनुरोध, प्रार्थना, निवेदन उदा. मुझे जो कहना था सो बता दिया, अब अपनी बात कहो (सुनाओ) मुहा. कहना बदना- किसी बात का निश्चय करना; कहना-सुनना- बातचीत या वार्तालाप करना; किसी के कहने (कहने-सुनने) में आना- किसी की असंगत या झूठी बातों में आकर (ठीक समझकर) उनके अनुसार चलना; किसी के कहने पर चलना- आदेश या सलाह के अनुसार काम करना, अनुचित या अनुपयुक्त बात कहना, (भली-बुरी बात करना) जैसे- जो एक कहेगा वह चार सुनेगा पद. 1. कहने की बात- महत्वपूर्ण बात 2. कहने को (कहने भर को)- नाममात्र को, यों ही, 3. कहने-सुनने को- कहने भर को।

कहनाउत *स्त्री.* (देश.) दे. कहनावत।

कहनावत *स्त्री.* (देश.) कहावत, लोकोक्ति, (उक्ति) उदा. ठाकुर या कहनावत और की साँचियै आजहूँ आनि परी है -ठाकुर (45)।

कहनि *स्त्री.* (तद्.) कहनी, कथन, उक्ति।

कहनी *स्त्री.* (देश.) कथन, कहानी, कथा, वार्ता।

कहर *पुं.* (अर.) 1. दैवी कोप 2. विपत्ति, आपदा संकट 3. दैवी आपदा 4. विकराल क्रोध मुहा. कहर करना घोर अत्याचार करना, बड़ी आपदा खड़ी करना, भीषण काम करना; कहर टूटना/ गिरना/ पड़ना/ढलना- भीषण विपत्ति आ जाना; कहर ढाना (तोड़ना)- भीषण क्रोध करना; कहर बरसना- गजब करना; कहर मचाना- भीषण उत्पात या उपद्रव होना।

कहरना *अ.क्रि.* (देश.) 'कराहना' *क्रि.वि.* (देश.) कराह कर उदा. कहरि-कहरि उठै -तुलसी (कविता. 6/42)।

कहरवा *पुं.* (देश.) संगी. संगीत की एक ताल, धुन।

कहरी *वि.* (अर.) 1. उत्पाती, कहर ढाने (मचा देने) वाला जैसे- कहरी आपदा, कहरी बाढ़ 2. अत्याचारी 3. बहुत संकट या मुसीबत (आपदा) लाने वाला 4. बहुत क्रोधी।

कहरुबा *पुं.* (फा.) घास को अपनी ओर आकर्षित करने वाला एक हल्का पत्थर, तृणमणि 2. एक पेड़ जिसका गोंद या राल धूप नाम से प्रसिद्ध है।

कहल *पुं.* (देश.) 1. ताप, गर्मी 2. वर्षाकाल में हवा बंद हो जाने पर होने वाली गर्मी, उमस 3. दुख, वेदना, दुख-दर्द *स्त्री.* (तद्.) 'कहन' 'कहना', उपदेश।

कहलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. अकुलाना 2. गर्मी से व्याकुल होना 3. चैन न पड़ना (बेचैन होना)।

कहलवाना *स.क्रि.* (देश.) कहलाना, (कहना का प्रेरणार्थक रूप)।

कहलाना[1] *स.क्रि.* (देश.) 1. कहने का काम किसी अन्य व्यक्ति से कराना ('कहना' का प्रेर. रूप) 2. 2. किसी के द्वारा संदेश भेजना *अ.क्रि.* (तद्.) किसी विशिष्ट नाम या 'अल्ल- से पुकारा जाना, (प्रसिद्ध होना) उदा. जीवन लाल अपनी सादगी और भक्तों जैसी प्रकृति के कारण 'भगत जी' कहलाते हैं।

कहलाना[2] *अ.क्रि.* (देश.) गर्मी से बेचैन या व्याकुल होना 2. अकुलाना।

कहलाने *वि.* (देश.) 1. ग्रीष्म या ताप से व्याकुल उदा. कहलाने एकत बसत अहि मयूर मृग बाघ -बिहारी(489) 2. व्याकुल बेचैन, अकुलाया हुआ।

कह्लार *पुं.* (देश.) कह्लार, कोकाबेली, सफेद कमल 2 कमल।

कह्वत *स्त्री.* (देश.) 1. कहावत 2. कही हुई बात, कथन 3. कथा-कहानी उदा. राधिका की कह्वत कह दीजौ मोहन सौं -पद्‌माकर (जगद्. 486)।

कह्वा *पुं.* (अर.) 1. एक वृक्ष जिसके सफेद फूलों से निकले दानों या बीजों से एक पेय बनता है 2. कह्वा वृक्ष के दानों या बीजों से तैयार किया गया पेय पदार्थ 3. कह्वा के बीज या दाने coffee

कह्वाखाना *पुं.* (अर.+फा.) 1. वह स्थान जहाँ पेय के रूप में कह्वा बेचा जाता है (अर.) कॉफी हाउस, केक, कह्वाघर।

कह्वैया *वि.* (देश.) 1. कहने वाला उदा. कहानी का कह्वैया बड़ा गुणी है 2. जो किसी से कुछ कहे *पुं.* (तद्.) कहने वाला व्यक्ति।

कहाँ *अव्य.क्रि.वि.* (तद्.) 1. स्थान विषयक प्रश्न या या जिज्ञासा के प्रसंग में प्रयुक्त एक प्रश्नवाचक प्रमुख अव्यय 2. किस जगह जैसे- अब आप कहाँ चले, मैं तो अभी आया हूँ 2. किसी, अवधि, सीमा या स्थिति के विषय में प्रयुक्त प्रश्न प्रश्न वाचक अव्यय उदा. (क) बताइए वह कहाँ तक पहुँचा है (ख) उनकी कहाँ तक प्रतीक्षा की जाए 4. उपेक्षा, तिरस्कार के प्रसंगों में प्रयुक्त अज्ञात एवं अनिश्चित स्थानवाचक अव्यय उदा. आपने यह कहाँ से मुसीबत मोल ले ली, आप तो न जाने कहाँ-कहाँ भटकते रहते हैं पद. 1. कहाँ-कहाँ- पारस्परिक अंतर या भेद का सूचक उदा. "कहाँ मुरारीलाल है, कहाँ बिहारीलाल, कहाँ (क) किसी नगण्य या उपेक्षित स्थान का, आपने कहाँ का झगड़ा मोल ले लिया? (ख) काकु से- कहीं का नहीं उदा. वह कहाँ का विद्वान है जो आपको पढा रहा है, कहाँ का कहाँ- प्रसंग से बहुत दूर, कहाँ की बात-पूर्णतः अनहोनी बात, कहाँ तक, किस अवधि, सीमा या परिणाम तक उदा. कहाँ तक कहा जाय, इतने में ही समझ लीजिए कि वह निरा मूर्ख है *पुं.* (अर.) छोटे से शिशु का रोने का शब्द।

कहा *पुं.* (देश.) 1. कथन, कही हुई बात 2. आदेश जैसे बड़ो का मानना अच्छी बात है 3. उपदेश, सलाह *स.क्रि.* (तद्.) 'कहना' क्रिया का भूतकालिक रूप कथित, कथन किया *सर्व.* (ब्रज) क्या; *वि* (ब्रज) क्या उदा. "हमकौं कियौ है कहा, कहन सबै लगी" -उद्‌धवशतक(26 रत्नाकर) *स्त्री.* (तद्.) 'कथा' क्रिया. *वि.* किस प्रकार का, कैसा।

कहा-कही *वि.* (देश.) 1. कहा-सुनी 2. परस्पर किसी कारण से हुई बातचीत।

कहानी *स्त्री.* (तद्.) कथानिका, बड़ी कथा 2. लिखित या मौखिक, कल्पित या वास्तविक और गद्य या पद्य में वर्णित घटना जो शिक्षापद मनोरंजक तथा ज्ञानप्रद होती है 3. मनगढंत बात मुहा. कहानी गढ़ना- मनगढ़ंत या झूठी बात बनाना; कहानी जोड़ना-जरूरत से ज्यादा निरर्थक बात जोड़ना; जग में कहानी रह जाना-मौत के बाद केवल चर्चा शेष रह जाना पद. रामकहानी- लंबी चौड़ी दास्तान।

कहानीकार *पुं.* (तद्.) 1. कहानी लिखने वाला 2. कहानी का लेखक।

कहानो *पुं.* (तद्.) 1. बड़ी कथा 2. वृत्तांत 3. कहानी 4. कथन-वर्णन उदा. सीख कीन्यो जस और प्रताप कौ कहानो है -ठाकुर (7)।

कहान्यो/कहान्यौ *पुं.* (देश.) वृत्तांत, कहानी उदा. यह अकथ कहान्यौ -ठाकुर (218)।

कहार *पुं.* (तद्.) पानी भरने और पालकी ढोने का कार्य करने वाली एक उपजाति *स्त्री.* कहारिन।

कहाल *पुं.* (देश.) एक प्रकार का बाजा, एक वाद्य यंत्र।

कहावत *स्त्री.* (तद्.) कथावृत, कोई लोक प्रचलित कथन, लोगों द्वारा बातचीत में उद्‌भूत किए जाने वाला संक्षिप्त अनुभवपूर्ण, ज्ञानप्रद, अलंकृत तथा तथा चमत्कार पूर्ण भाषा वाला वाक्य (उक्ति) लोकोक्ति जैसे- (i) थोथा चना बाजै घना (ii) चिराग तले अंधेरा 4. सारगर्भितता-संक्षिप्तता प्राण-वानता विषयक गुणों के साथ लोक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और मान्य व्यक्ति या विद्वान का कथन होता है।

कहा-सुना *पुं.* (देश.) 1. जिसे कहा तथा सुना गया हो 2. अनजाने में हुआ कथन तथा प्रत्युत्तर 3. बोलने तथा व्यवहार में भूल-चूक।

कहा-सुनी *स्त्री.* (देश.) 1. उत्तर-प्रत्युत्तर 2. हुज्जत 3. भूलचूक 4. तकरार, विवाद उदा. प्रायः इन दोनों भाइयों में कहासुनी होती ही रहती है।

कहिअ *क्रि.वि.* (देश.) 1. काहे, किसलिए 2. क्यों।

कहिया *क्रि.वि.* (देश.) किस रोज, किस दिन *स्त्री.* (तद्.) धातुओं के बरतनों को रांगा रखकर जोड़ने में प्रयुक्त एक उपकरण या औजार।

कहीं[1] *पुं.* (देश.) 1. एक समय से हटकर किसी दूसरी जगह, बिल्कुल अलग या बहुत दूर, कहीं न कहीं, किसी न किसी स्थान पर, कहीं-कहीं-कुछ अवसरों या स्थलों पर मुहा. कहीं का न रहना-किसी भी काम या पद के योग्य न रहना 2. ऐसा स्थान जिसका उल्लेख न किया गया हो उदा. यह पुस्तक कहीं रख दीजिए 3. किसी अज्ञात पर संभावित अवस्था या दशा में।

कहीं[2] *क्रि.वि.* (अव्य.देश.) 1. अज्ञात एवं अनिश्चित अनिश्चित जगह या स्थान उदा. मेरे भाई साहब तो आज कहीं चले गए हैं, कहीं और- किसी दूसरे स्थान पर, कहीं का- न जाने किस स्थान का (उपेक्षात्मक भाव से)।

कहुँ *क्रि.वि.* (देश.) किसी स्थान पर, किसी जगह कहीं उदा. न कहुँ गयौ न आयौ -सूरदास 4/13) 2. किसी- वह आई कहूँ और गाँव है -सूरसागर (10/2157) 3. के लिए, को, वास्ते उदा. राज देन कहुँ शुभ दिन साधा -तुलसी मानस- 54/4)

कहुँक *क्रि.वि.* (देश.) 1. कहीं 2. कहीं-कहीं 3. कभी।

कहुँ-कहुँ *क्रि.वि.* (देश.) कहीं-कहीं।

कहूँ *क्रि.वि.* (देश.) कहीं उदा. 'कहूँ पीत, कहूँ लाल, कहूँ सित -देव दीपशिख (52)।

कहूँक *क्रि.वि.* (देश.) कहीं-कहीं।

कहेसि *स.क्रि.* (देश.) कहा, कहा गया, कहे उदा. कहेसि-अमित आचरज बखानी -तुलसी-मानस (1/163/3)।

कांक्षणीय *वि.* (तत्.) चाहने वाला।

कांक्षा *स्त्री.* (तत्.) आकांक्षा, इच्छा, चाह, चाहना।

कांक्षित *वि.* (तत्.) 1. चाहा हुआ, वांछित 2. जिसकी इच्छा या चाहना की गई हो।

कांक्षी *वि.* (तत्.) इच्छा करने वाला, आकांक्षा करने वाला, आकांक्षी, इच्छुक।

कांचन *पुं.* (तत्.) 1. सोना, स्वर्ण 2. कंचन 3. धन-संपत्ति 4. कचनार 5. चंपा 6. नागकेशर 7. गूलर 8. धतूरा *वि.* 1. उत्तम, श्रेष्ठ 2. परम सुंदर।

कांचनक *पुं.* (तत्.) 1. हरताल 2. चंपा (पौधा एवं फूल)।

कांचनगिरि *पुं.* (तत्.) सुमेरु पर्वत, स्वर्ण का पहाड़।

कांचनजंगा *पुं.* (तत्.) कांचन शृंग, नेपाल और सिक्किम के मध्य स्थित हिमालय पर्वत की एक चोटी, 'काँचनचंगा' की चोटी।

कांचन पुरुष *पुं.* (तत्.) मृतक के श्राद्ध के समय शय्या पर रखकर दान में दी जाने वाली सोने की मूर्ति।

कांचनी *स्त्री.* (तत्.) 1. गोरोचन 2. हल्दी *वि.* कंचन की, सोने की, 'कांचनीय'।

कांची *स्त्री.* (तत्.) स्त्रियों के द्वारा पहने जाने वाली वाली छोटी-छोटी घंटियों वाली एक प्रकार की करधनी 2. कांजीवरम (दक्षिण भारत), प्राचीन भारत की सात पवित्र नगरियों में से एक-कांची टि. "अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवंतिका, पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः 3. घुंघुची 4. कपड़ों पर टाँकने का गोटा पट्टा।

कांजी *स्त्री.* (तत्.) 1. ऊख के रस में नमक, राई आदि डालकर तैयार किया जाने वाला एक प्रसिद्ध पेय पदार्थ जो स्वाद में खट्टा होता है 2. मट्ठे या दही का पानी, छाछ 3. बिगड़ा या फटा हुआ दूध।

कांडकार *पुं.* (तत्.) 1. बाण बनाने वाला 2. सुपारी का पेड़।

कांड-तिक्त *पुं.* (तत्.) चिरायता।

कांडत्रय *पुं.* (तत्.) तीन कांडों (कर्मकांड, ज्ञानकांड तथा उपासना कांड) का समूह।

कांड-पट *पुं.* (तत्.) 1. परदा 2. कनात।

कांड पृष्ठ *पुं.* (तत्.) 1. सैनिक, शस्त्रजीवी 2. बाण चलाने वाला 3. वेश्या का पति 4. अपनी जाति या कुल का त्याग करने वाला व्यक्ति 5. नीच व्यक्ति 6. दत्तक पुत्र 7. कर्ण का धनुष 8. भारी धनुष।

कांड-भंग *पुं.* (तत्.) अस्थि भंग, हड्डी का टूट जाना।

कांडर्षि *पुं.* (तत्.) वेद के किसी कांड (ज्ञान कांड, कर्मकांड तथा उपासना कांड) का विवेचन करने वाले ऋषि।

कांडवान *पुं.* (तत्.) 'तीरंदाज'।

कांडवीणा *स्त्री.* (तत्.) चंडालवीणा, एक वाद्य।

कांडारी *पुं.* (तत्.) कर्णधार, खिवैया, मल्लाह उदा. करोड़ों की नौका का एक कुशल कांडारी तू - मैथिलीशरण गुप्त (अंजलि 38)।

कांडिका *स्त्री.* (तत्.) 1. पुस्तक का कोई खंड या भाग 2. एक तरह का कुम्हड़ा 3. एक प्रकार का अन्न।

कांड़ी *स्त्री.* (तद्.) 1. डंडी, डंडा 2. किसी वस्तु का छोटा-लंबा टुकड़ा 3. छाजन में काम आने वाला कुछ वृक्षों का लंबा पतला तना।

कांत *वि.* (तत्.) 1. सुंदर 2. प्रिय और मनोहर 3. कांतिवान 4. कोमल और मनोहर *पुं.* (तत्.) किसी से अनुराग रखने वाला व्यक्ति, प्रेमी 2. पति, स्वामी 3. (लक्ष्मी के स्वामी-लक्ष्मीकांत-विष्णु) 3. विष्णु 4. शिव 5. कार्तिकेय 6. चंद्रमा 7. वसंत ऋतु 8. कुंकुम 9. हिंजल का पेड़ 10. कांतिसार लोहा।

कांतपक्षी *पुं.* (तत्.) मोर, मयूर।

कांत-पाषाण *पुं.* (तत्.) चुंबक पत्थर।

कांत-लौह *पुं.* (तत्.) कांतिसार लोहा।

कांता *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रिय तथा सुंदर स्त्री 2. प्रिया, प्रेमिका 3. भार्या, पत्नी।

कांतार *पुं.* (तत्.) 1. बहुत घना तथा भीषण जंगल या वन 2. बहुत उजाड़ या भयावना स्थान, बाँस 4. छेद, छिद्र 5. दरार, संधि 6. केतारा ऊख 7. दुरूह तथा कठिन मार्ग।

कांतारक *पुं.* (तत्.) केतारा (ऊख, ईख)।

कांतासक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. वह भक्ति जिसमें स्वयं स्वयं को प्रेयसी या पत्नी तथा ईश्वर को प्रेमी या या पति मानकर की जाती है 2. पत्नी या प्रिया में आसक्ति 3. पति या प्रेमी में आसक्ति।

कांति *स्त्री.* (तत्.) 1. चमक, आभा, दीप्ति 2. सौंदर्य, छवि, शोभा 3. शृंगार 4. चंद्रमा की सोलह कलाओं में से एक 5. सुंदर स्त्री 6. सोलह सोलह लघु और पच्चीस गुरु वर्णों वाला आर्या छंद 7. दैहिक या वैयक्तिक शृंगार या सजावट और उसके कारण बना हुआ मोहक रूप।

कांतिकर *वि.* (तत्.) 1. सुशोभित करने वाला 2. शोभा या कांति बढ़ाने वाला।

कांतिभृत *पुं.* (तत्.) चंद्रमा (कांति धारण करने वाला)।

कांतिमान *वि.* (तत्.) 1. कांति से युक्त 2. चमक वाला, चमकीला 3. सुंदर।

कांतोत्पीड़ा *स्त्री.* (तत्.) 1. वियोग का कष्ट या दुःख 2. छंद. प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण, मगण, सगण, मगण (भ म स म) के योग से बारह वर्णों वाला समवर्णिक छंद।

कांथरि *स्त्री.* (तत्.) कथरी।

कांदन *पुं.* (तद्.) 'मारकाट' उदा. 'पुनि सलार कांदल मतिमांहा -जायसी *पुं.* (तद्.) क्रंदन-रोना-पीटना।

कांदव *पुं.* (तत्.) चूल्हे अथवा लोहे की कड़ाही में भुनी हुई वस्तु।

कांदव *पुं.* (देश.) काँदों-कांदा।

कांदविक *पुं.* (तत्.) 1. हलवाई 2. खाद्य पदार्थ बनाने और बेचने वाला व्यक्ति।

कांदा *पुं.* (तद्.) 1. कंद 2. कांदा, प्याज।

कांस्टेबिल *पुं.* (अं.) पुलिस का सिपाही।

काँइ *क्रि.वि.* (देश.) 1. क्यों जैसे- काँइ जाओगे? 2. कहाँ 3. किस ओर।

काँइ-काँइ *क्रि.वि.* (देश.) 1. व्यर्थ बोले जाते रहने की ध्वनि 2. अनावश्यक शब्दों का उच्चारण।

काँइयाँ *वि.* (देश.) 1. बहुत चालाक 2. धूर्त।

काँई *क्रि.वि* (देश.) क्यों, किसलिए *सर्व.* किसको, किसने।

काँठ-काँठ *पुं.* (देश.) कौवे के बोलने की ध्वनि, का शब्द।

काँक *पुं.* (तद्.) सफेद चील, कंका, कंगनी नामक एक चावल, खाद्यान्न।

काँकर *पुं.* (तद्.) कंकड़।

काँकर-पाथर *पुं.* (तद्.) कंकड़-पत्थर।

काँकरी *स्त्री.* (तद्.) कंगनी।

काँख *स्त्री.* (तद्.) बगल, बाहुमूल के नीचे का गड्ढा।

काँखना *अ.क्रि.* (देश.) 1. गले में बलगम आदि निकालते समय जोर लगाने पर गले से भारी तथा जोर की खाँसने की आवाज का होना, जोर से खाँसना 2. भारी बोझ उठाते समय गले से निकलने वाली खाँसने जैसी ध्वनि या आवाज।

काँखा-सोती *वि.* (देश.) 1. जनेऊ की तरह, एक ओर काँख के नीचे और दूसरी ओर कान के नीचे कंधे पर धारण किया हुआ 2. *स्त्री.* दुपट्टा डालने का एक ढंग जिसमें वह जनेऊ की तरह काँख के नीचे और दूसरी कंधे पर कान के नीचे डाला जाता है।

काँखी *स्त्री.* (तद्.) इच्छा, आकांक्षा उदा. "बाकी रही काँखी" -सूरसागर (10/1172)।

काँगड़ा *पुं.* (तद्.) पश्चिमी हिमालय का एक पहाड़ी प्रदेश जिसमें एक छोटा ज्वालामुखी पर्वत है जो "ज्वालाजी" नाम से प्रसिद्ध है *पुं.* मटमैले रंग का एक पक्षी जिसकी चोटी काले रंग की होती है "कक" *स्त्री.* कच्ची धातु।

काँगड़ी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की छोटी दस्तेदार कश्मीरी अँगीठी *वि.* ठंड से बचने के लिए पहाड़ों के निवासी काम करते समय अपने कलेजे और उदर (पेट) को गर्म रखने के लिए, प्रायः काँगड़ी गले में लटकाए रहते हैं।

काँग्रेस *स्त्री.* (अं.) 1. वह महासभा जिसमें भिन्न-भिन्न स्थानों पर रहने वाले खास लोग (प्रतिनिधि) एकत्र होकर सार्वजनिक विषयों पर विचार-विमर्श करते हैं 2. भारत की एक प्रसिद्ध अखिल भारतीय राजनैतिक संस्था "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस"।

काँग्रेसी *वि.* (अं.) 1. काँग्रेस में भाग लेने वाला सदस्य (काँग्रेस का सदस्य) 2. काँग्रेस से संबंधित 3. काँग्रेस का कार्यकर्ता।

काँच *स्त्री.* (देश.) 1. दोनों जाँघ के बीच में से ले जाकर कमर में खोंसा जाने वाला धोती का सिरा, काँग-कांछ मुहा. काँच खोलना- कायरता प्रगट करना, साहस छोडक़र किसी सामने आए हाथ में लिए हुए काम से पीछे हटना, प्रसंग या संयोग करना 2. गुदावर्त्त, गुदाचक, गुदेंद्रिय का भीतरी भाग, काँच निकलना-दुर्बलता, परिश्रम, आघात के कारण गुदा-चक्र का बाहर निकल आना, एक प्रकार का रोग *पुं.* (तद्.) बालू (रेह) सोड़ा चूने आदि के योग से बनाए जाने वाला एक प्रसिद्ध चमकीला, पारदर्शी तथा साफ-स्वच्छ पदार्थ, शीशा, ग्लास।

काँचनाचल *पुं.* (तत्.) कांचनगिरि, सुमेरु पर्वत (सोने का पहाड़)।

काँच-बँगला *पुं.* (देश.) 1. काँच का मकान 2. ऐसा मकान जिसमें काँच का काम अधिकतर हुआ हो।

काँचली *स्त्री.* (तद्.) साँप की काँचुरी (त्वचा) जो जाड़े के दिनों में सूखकर अपने आप खोल के रूप में गिर जाया करती हे, केंचुली, साँप की केंचुली मुहा. साँप का केंचुली बदलना- वेशभूषा बदलना।

काँचा *वि.* (देश.) जो काँच की भाँति जल्दी टूट सकता हो, कच्चा।

काँचाभ *वि.* (देश.+तत्.) काँच की सी आभा या चमक वाला, काँच सा चमकीला *स्त्री.* (तत्.) काँच की चमक, काँच-सी शोभा, चमक या आभा।

काँचुरी *स्त्री.* (देश.) दे. काँचली उदा. "काँचुरी भुअंगम तमही"-सूर।

काँछ *पुं.* (तद्.) 1. काछ 2. पेडू और जाँघ तथा उसके नीचे का स्थान 3. धोती का कमर में कसे जाने वाला भाग जिसे कमर में खाँसा जाता है, लाँग 4. नटों का अभिनय के समय वेश धारण करना।

काँछना *स.क्रि.* (देश.) काछना, सँवारना, पहनना।

काँछा *स्त्री.* (देश.) 1. पहना, सँवारा, काछा 2. 'काँछना' क्रिया का भूतकालिक रूप।

काँजी हाउस *पुं.* (अं) 1. काइन हाउस 2. मवेशी खाना 3. वह बाड़ा जिसमें दूसरों के खेत चर जाने वाले बहके या छूटे हुए पशुओं को पकड़ कर रखा जाता है।

काँट *पुं.* (देश.) 'काँटा'।

काँटा *पुं.* (तद्.) 1. कंटक 2. कुछ विशेष प्रकार के पेड़-पौधों की शाखाओं, तनों तथा फलों पर उगता हुआ वह कड़ा नुकीला तथा लंबा अंश जो ज्यादातर सीधा और कभी-कभी टेढ़ा और मुड़ा हुआ होता है जैसे- बबूल, वेरा, नागफनी, गुलाब आदि के काँटे 2. मछली पकड़ने की कंटिया 3. लोहे की लंबी पतली कील 4. कुएँ में गिरे हुए बरतन-बाल्टी, कलश आदि को बाहर निकालने के लिए बनाया गया अंकुसों का गुच्छा या समूह 5. खाते समय गले में चुभने वाली मछली की बारीक हड्डी 6. लोहे या पीतल की तराजू की डाँड़ी में बीचो बीच लगी हुई सुई 7. सोने या चाँदी तोलने का तराजू 8. घड़ी की सुई 9. वह आला जिससे भूसा या अनाज आदि तोले जाते हैं 10. वह क्रिया जिसके हिसाब से सही-गलत होने की जाँच की जाती है 11. नाक की कील 12. झाड़ आदि टाँगने का हुक 13. एक आला जिससे यूरोपीय लोग खाना उठाकर खाते हैं मुहा. काँटा निकलना- मन की कसक या क्लेश मिटाना; राह का काँटा होना- किसी कार्य में बाधा बनना, अनिष्टकारी होना; काँटा होना- दुबला हो जाना, ठठरी भर रह जाना; काँटे की तौल- बिल्कुल ठीक तोल (न कम न ज्यादा); राह में काँटे-बिछाना- बाधा खड़ी करना, रोड़े अटकाना; काँटे-बोना- बुराई या अनिष्ट करना; काँटों में घसीटना- अनुचित तारीफ द्वारा लज्जित लज्जित करना; काँटो पर लोटना- बेचैन होना, तड़पना, ईर्ष्या से जलना; काँटो का ताज- कष्टों तथा चुनौतियों भरा काम; काँटे सा खटकना- बुरा लगना, अखरना।

काँटी *स्त्री.* (देश.) कँटिया, छोटा काँटा, रुई का फुचड़ा मुहा. काँटी उड़ाना- लंगर लड़ाना, लड़कों का एक खेल।

काँटेदार *वि.* (तद्.+फ़ा.) 1. कंटक युक्त 2. जिसमें कांटे हो 3. कष्टों से परिपूर्ण।

काँठली *स्त्री.* (देश.) 1. कंठा 2. गले का आभूषण।

काँठा *पुं.* (तद्.) 1. गले में पहने जाने वाला गहना, कंठा 2. नदी आदि का किनारा, तट (गंगा का कांठा) 3. बगल, पार्श्व 4. सहारा, आश्रय।

काँड *पुं.* (तद्).) 1. किसी वस्तु का भाग या खंड 2. वनस्पतियों के तने की दो गांठों के बीच का भाग 3. वृक्षों का तना 4. वृक्ष या वनस्पतियों की शाखाएँ 5. किसी कार्य या रचना का कोई भाग 6. किसी ग्रंथ या पुस्तक का अध्याय या प्रकरण 7. समूह 8. गुच्छा 9. सरकंडा 10. धनुष के बीच का मोटा भाग 11. बाण, तीर 12. हाथ या टाँग की लंबी हड्डी 13. घड़ी, डंडा 14. जल 15. निर्जन स्थान 16. प्रपंच 17. अवसर 18. कोई बड़ी दुर्घटना, कोई अशुभ या अप्रिय घटना जैसे हत्या या उसी तरह की अप्रिय घटना *वि.* बुरा, कुत्सित।

काँड़ना *स.क्रि.* (तद्.) 1. रौंदना, कुचलना 2. कूटना (धान आदि) 3. ज्यादा मारना-पीटना 4. धान को कूटकर चावल निकालना।

काँड़ा *पुं.* (तद्.) लकड़ी का लंबा लट्ठा 1. दाँत का कीड़ा 2. पेड़ पर लगने वाला एक रोग 3. लकड़ी में लगने वाला एक कीड़ा।

काँती *स्त्री.* (तद्.) कर्तरी, कड़ाही आदि बनाने में काम आने वाला साधारण लोहा।

काँथरि *स्त्री.* (तद्.) कथरी, गुदड़ी, कंथा, कथूलिया।

काँद *पुं.* (तद्.) 1. कांदव, हलवाई 2. भड़भूँजा 3. एक उपजाति (भाँड़ भूजने वाली) 4. क्रंदन, रोना, चिल्लाना।

काँदन *पुं.* (तद्.) 1. क्रंदन, रोना-पीटना, रोना-चीखना 2. काटने की क्रिया, भाव, गुण।

काँदना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. जोर से चिल्लाकर रोना, चिल्लाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. रौंदना 2. पानी मिलाकर गूंथना जैसे- आटा काँदना 3. काटना- धातु-काँदना।

काँदला *वि.* (तद्.) 1. मैला, गंदा *पुं.* (तद्.) कीचड़।

काँदा *पुं.* (तद्.) कर्दभ, कीचड़।

काँदो *पुं.* (तद्.) कीचड़।

काँध *पुं.* (तद्.) स्कंध, कंधा।

काँधना *स.क्रि.* (तद्.) 1. कंधे (कंधों) पर लेना, उठाना या उठाकर रख लेना, वृद्ध आदि को उठाना, युद्ध आदि ठान लेना उदा. रहा न देसर ओहि सौं काँधा -जायसी(पद्य.25/10) 2. ग्रहण करना 3. स्वीकार करना 4. सहना उदा. "जाकी बात कही तुम हमकौं, सु धौं कहौ को काँधी" -सूरसागर (10/3540)।

काँधरा *पुं.* (तद्.) कन्हैया, श्रीकृष्ण, कान्हा।

काँधी *पुं.* (तद्.) कंधा, स्कंध।

काँप *स्त्री.* (तद्.) 1. कान का एक गहना (आभूषण) (आभूषण) 2. बाँस की पतली तथा लचीली तीली 3. पतंग में लगाए जाने वाली बाँस की पतली लचीली तीली 4. सूअर का खाँग 5. हाथी का दाँत।

काँपना *स.क्रि.* (तद्.) 1. क्रोध, भय आदि के कारण शरीर के अंगों का कंपित होना, हिलना-डुलना 2. हिलना 3. बहुत डरना 4. भय से थर्राना।

काँब *स्त्री.* (देश.) छड़ी।

काँबी *स्त्री.* (देश.) पैर का एक आभूषण।

काँय-काँय *स्त्री.* (अनु.) 1. कौए का 'काँब-काँब शब्द 2. अप्रिय शब्द 3. कर्कश ध्वनि 4. व्यर्थ या बेकार की बातें 5. लाक्ष. विवाद, झगड़ा।

काँव-काँव करना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. कौए का बोलना 2. व्यर्थ आलोचना करना 3. व्यर्थ की निंदात्मक चर्चा करना 4. बेकार का विवाद-बढ़ाना।

काँवड़/काँवर *स्त्री.* (देश.) बाँस की लंबी मोटी लाठी से बनी, कंधे पर रखकर भार या वजन ढोने के लिए, बहँगी, जिसके दोनों छोरों पर बँधे छीकों में वस्तुएँ रखकर ढोई जाती हैं, प्रायः तीर्थयात्री विशेष पर्वों पर गंगाजल बहंगी के दोनों पलड़ों या टोकरी में रखकर शिवतीर्थों में जाकर चढ़ाते हैं।

काँवरा *वि.* (देश.) 1. घबराया हुआ, हक्का-बक्का, भौंचक्का 2. व्याकुल, विकल।

काँवरि *स्त्री.* (देश.) कॉवर, कॉवड़।

काँवरिया *पुं.* (देश.) काँवर लेकर पैदल चलने वाला, तीर्थयात्री।

काँवरू *पुं.* (तद्.) कामरूप देश (आसाम) 2. कमल रोग।

काँवारथी *पुं.* (तद्.) कामार्थी, (कामना लेकर-चलने वाला) वह यात्री जो किसी तीर्थ यात्रा पर कोई कामना लेकर कंधे पर काँवर उठाए जाता है।

काँस *पुं.* (तद्.) 1. कास, काश 2. शरद ऋतु में होने तथा फूलने वाली लंबी सफेद फूलों वाली घास, (वनस्पति)।

काँसा *पुं.* (तद्.) 1. कांस्य, ताँबे, जस्ते आदि की मिलावट से बनी हुई एक मिश्र धातु 2. भीख माँगने का खप्पर।

काँसागर *पुं.* (तद्.) 1. काँसे की धातु का काम करने वाला व्यक्ति 2. काँसे की वस्तुएँ बनाने वाला कारीगर।

काँसार *पुं.* (तद्.) 'कसेरा' काँसे का काम करने वाला।

काँसी *स्त्री.* (तद्.) 1. काँसा 2. धान के पौधे का एक रोग।

काँसुला *पुं.* (तद्.) सुनारों के पास घुंडी आदि बनाने के काम में आने वाला काँसे का चौकोर टुकड़ा।

का *सर्व.* (तद्.) 1. क्या 2. संबंध कारक की विभक्ति।

काइलिया *वि.* (तत्.) 1. भीरु, कायर या भयभीत 2. अधीर, आकुल।

काई *स्त्री.* (तद्.) 1. जल या सीलन में होनेवाली एक प्रकार की महीन घास 2. खड़े पानी के ऊपर आनेवाली हरीपत्तियों की एक घास 3. सेवार मुहा. काई छुड़ाना- मैल दूर करना, दुख दूर करना; काई सा फट जाना- तितर बितर हो जाना, छँट जाना।

काएनात *स्त्री.* (अर.) सृष्टि, संसार उदा. जिससे है कायम यह कुल काएनात -कबीर।

काक *पुं.* (तत्.) 1. कौआ 2. एक द्वीप 3. कौओं की तरह पानी में केवल सिर डुबा कर स्नान करना 4. धूर्त व्यक्ति 5. ढीठ, व्यक्ति 6. एक प्रकार की नर्म लकड़ी जिसकी डाट बोतलों में लगाई जाती है, काग।

काकगवेषण *पुं.* (तत्.) प्रयत्न, अनहोनी वस्तु की खोज।

काकचेष्टा *स्त्री.* (तत्.) कौए के समान चौकन्ना रहना।

काकजंघा *स्त्री.* (तत्.) एक वनौषधि, घुंघची।

काकजंबु *पुं.* (तत्.) कौए के वर्ण की तरह का जंबु फल, काला जामुन, काकफला (वनजामुन)।

काकजात *पुं.* (तत्.) कोयला।

काकतालीय *वि.* (तत्.) किसी घटना का केवल संयोगवश होना।

काकदंत *पुं.* (तत्.) कोई असंभव बात, जिसका अस्तित्व नहीं, विशे. कौए को दाँत नहीं होते, शशश्रृंग, बंध्यापुत्र आदि की भाँति यह भी असंभववाचक है, व्यर्थचेष्टा।

काकध्वज *पुं.* (तत्.) बाड़वाग्नि।

काकन्याय *पुं.* (तत्.) किसी घटना का केवल संयोगवश होना जैसे- कौए के बैठते ही ताड़ के पके फल का गिर पड़ना।

काकपक्ष *पुं.* (तत्.) बालों के पट्टे जो दोनों ओर कनपटियों के ऊपर रहते है, जुल्फ उदा. काकपच्छ सिर सोहत नीके -तुलसी।

काकपद *पुं.* (तत्.) 1. वह चिह्न जो छूटे हुए शब्द के स्थान को सूचित करने के लिए पंक्ति के नीचे बनाया जाता है और वह छूटा हुआ शब्द ऊपर लिख दिया जाता है।

काकपाली *स्त्री.* (तत्.) कोयल।

काकभुशुंडि *पुं.* (तत्.) एक ब्राह्मण जो लोमश ऋषि के शाप से कौआ हो गया था। मान्यता है कि काकभुशुंडि रामायण इनकी रचना है।

काकयव *पुं.* (तत्.) अन्न का पौधा जिसके बाल में दाने न हो।

काकरव *वि.* (तत्.) कौए की बोलने की 'काँव काँव' आवाज।

काकरेज *पुं.* (फा.) बैगनी रंग, काले और लाल रंग के मेल से बना हुआ रंग।

काकल *पुं.* (तत्.) 1. गले में सामने की ओर निकली हुई हड्डी, मुख के अंदर का कौआ, घंटी टेंटुआ 2. पहाड़ी कौआ 3. कंठ की मणि, गले की मणि।

काकला *स्त्री.* (तत्.) 1. चतुर्दश ताला (संगीत) का एक भेद 2. आयु. काकजंघा नाम की औषधि।

काकली *स्त्री.* (तत्.) 1. मधुर ध्वनि, कलनाद जैसे- पिय बिनु कोकिल काकली भली अली दुख देत 2. साठी धान 3. घुंघची, गुंजा।

काका *पुं.* (फा.) 1. पिता का भाई, चाचा 2. चमारों के नाच में करिंगे का वह साथी जिससे वह हास्य, व्यंग्यपूर्ण सवाल-जवाब करता है, इसे 'काका फोकली' भी कहते हैं उदा. काका उसका है साथी नट, गदके उस पर जमा पटापट, उसे टोकता गोली खाकर आँख जाएगी क्यों बे नटखट? भुन न जाएगा भुनगे सा झट, ग्राम्या।

काकातुआ *पुं.* (देश.) एक प्रकार का बड़ा तोता जो प्रायः सफेद रंग का होता है, विशेषतः इसके सिर पर टेढ़ी चोटी होती है, इस चोटी को यह ऊपर

नीचे हिला सकता है, इसका शब्द बड़ा कर्कश होता है और सुनने में 'क क तु अ' की तरह मालूम होता है।

काकातूआ *पुं.* (देश.) दे. काकातुआ।

काकिणी *स्त्री.* (तत्.) 1. घुंघची, गुंजा 2. पण का चतुर्थ भाग 3. माशे का चौथाई भाग 4. कौड़ी।

काकी *स्त्री.* (तत्.) कौए की मादा, चाची।

काकु *पुं.* (तत्.) 1. छिपी हुई चुटीली बात, व्यंग्य, ताना उदा. राम बिरह दशरथ दुखित कहत कैकयी काकु, अलंकार में वक्रोक्ति के दो भेदों में से एक जिसमें शब्दों के अन्यार्थ या अनेकार्थ से नहीं बल्कि ध्वनि ही से दूसरा अभिप्राय ग्रहण किया जाता है जैसे-क्या वह अब भी न समझेगा? अर्थात् अवश्य समझेगा 3. अस्पष्टकथन 4. जिह्वा पर बल देना।

काकोलूकीय *पुं.* (तत्.) 1. काक और उलूक का सा सहज बैर 2. पंचतंत्र का तीसरा तंत्र यो. काकोलूकीय तंत्र-पंचतंत्र का तीसरा तंत्र, काकोलूकीय न्याय-वह न्याय जहाँ कौआ और उल्लू की सहज शत्रुता की स्थिति हो।

काग *पुं.* (तद्.) कौआ, वायस मुहा. काग के गले की घाँटी उड़ाना-किसी के आने का शकुन विचारना *पुं.* (अं.कार्क) 1. बोतल की डाट जो काग नामक पेड़ की छाल से बनती है 2. बलूत जाति का एक पेड़।

कागज *पुं.* (अर.) 1. सन, रुई, पटुए, बाँस, लकड़ी आदि को पीस कर या सड़ा कर उसकी लुगदी से बनाया हुआ पत्र जिस पर अक्षर छापे जाते हैं।

कागजपत्र *पुं.* (अर+तत्.) 1. किसी मामले से संबंधित, लिखे हुए कागज, प्रामाणिक लेख, कागजात, दस्तावेज जैसे- संगत कागज पत्रों के साथ मसौदा प्रस्तुत किया जाए मुहा. कागज काला करना- व्यर्थ की बातें लिखना; कागज रंगना- कागज पर कुछ लिखना; कागज की नाव- क्षणभंगुर वस्तु; कागज की लेखी-ग्रंथों में लिखी बातें; उदा. मैं कहता हूँ आखिन देखी, तू कहता है कागज की लेखी -कबीर कागज दौड़ाना, कागजी घोड़े दौड़ाना- खूब लिखा पढ़ी करना; कागज पर चढ़ाना- कहीं लिख लेना, टाँकना; 2. लिखा हुआ कागज, लेख, प्रामाणिक लेख 3. संवाद पत्र, समाचार पत्र, अखबार 4. नोट

काग़ज़ात *पुं.* (फा.) 1. कागज का बहुवचन 2. दे. कागजपत्र।

काग़ज़ी *वि.* (फा.) 1. कागज का 2. जो कागज की तरह पतला हो जैसे- कागजी नींबू, कागजी बादाम। अर्थात (पतले छिलके वाला)।

कागजी कार्रवाई *पुं.* (अर.+फा) कार्रवाई, लिखा-पढ़ी।

कागजी बादाम *पुं.* (फा.) एक प्रकार का बढ़िया बादाम।

कागजी सबूत *पुं.* (फा.+अर.) कागज पर लिखा हुआ सबूत, लिखित प्रमाण।

कागारौल *पुं.* (तद्.) हल्ला, शोरगुल, कौओं की काँव काँव।

काचक *पुं.* (तत्.) 1. शीशा, काँच 2. पत्थर 3. खारी मिट्टी ।

काछ *पुं.* (तद्.) 1. पेडू और जांघ के जोड़ पर या उसके कुछ नीचे तक का स्थान 2. धोती का वह भाग जो इस स्थान पर से होकर पीछे खोंसा जाता है, धोती की लांग 3. अभिनय के लिए नटों का वेश।

काछना *स.क्रि.* (देश.) 1. कमर में लपेटे हुए वस्त्र के लटकते भाग को जांघों पर से ले जाकर पीछे कस कर बाँधना 2. बनाना, पहनना उदा. गौर किशोर वेष वर काछे -तुलसी 3. शोभित होना।

काछनी *स्त्री.* (देश.) कसकर और कुछ ऊपर चढ़ा कर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों लांगें पीछे खोंसी जाती हैं, कछनी उदा. सीस मुकुट कटि काछनी धर मुरली कर माल -बिहारी

काछा *पुं.* (तद्.) 1. कसकर और कुछ ऊपर चढ़ा कर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों लाँगें पीछे

खोंसी जाती है 2. पेड़ू के नीचे या जंघाओं के बीच का स्थान।

काज *पुं.* (तद्.) 1. प्रयत्न जो किसी उद्देश्य की सिद् सिद्धि के लिए किया जाए, कार्य, कृत्य मुहा. के काज- के हेतु, निमित्त 2. व्यवसाय, रोजगार जैसे- तुम्हे कोई काम-काज नहीं है 3. प्रयोजन 4. विवाह संबंध।

काज *पुं.* (पुर्त.) छेद जिसमें बटन डालकर फँसाया जाता है, बटन का घर।

काजर *पुं.* (तद्.) दे. काजल मुहा. काजर की कोठरी- काजर की कोठरी में कैसे हूँ सयानो जाए, एक लीक काजर की लागै पै लागै री।

काजल *पुं.* (तद्.) वह कालिख जो दीपक के धुँए से किसी ठीकरे पर जमाई जाती है और आँखों में लगाई जाती है मुहा. काजल घुलाना, डालना, देना, सारना- (आँखों में) काजल लगाना; काजल-पारना- दीपक के धुएँ की कालिख को किसी बरतन में जमाना; काजल की ओबरी या कोठरी- ऐसा स्थान जहाँ जाने से व्यक्ति दोष या कलंक से उसी प्रकार नहीं बच सकता, जैसे काजल की कोठरी में जाकर काजल लगने से, कलंक का स्थान; यह मथुरा काजल की ओरी जे आवहि ते कारे -सूर.।

क़ाज़ी *पुं.* (अर.) मुसलमानों के धर्म और राजनीति के अनुसार न्याय की व्यवस्था करनेवाला जैसे. काजी जी दुबले क्यों शहर के अंदेशें से।

काजू *पुं.* (देश.) (कोंक काज्जु) 1. एक पेड़ और उसका फल जिसकी गिरी मेवे के रूप में खाई जाती है।

काट *स्त्री.* (देश.) काटने की क्रिया जैसे- छुरी की काट अच्छी है।

काट-कपट *स्त्री.* (देश.+तत्) चोरी छिपे किसी चीज चीज को कम कर देने की स्थिति।

काट छाँट *स्त्री.* (देश.) 1. मारकाट 2. कतरन 3. किसी वस्तु में कमी वेशी 4. घटाव बढ़ाव।

काटन *पुं.* (अं.) 1. कपास, रूई 2. रूई का कपड़ा।

काटना *क्रि.स.* (तद्.) 1. किसी धारदार चीज की दाब या रगड़ से दो टुकड़े करना जैसे- सब्जी काटना, हाथ काटना मुहा. काटो तो खून या लहू नहीं- किसी दुखदायी, भयानक या अपना रहस्य खोलनेवाली बात जिसे सुनकर एक बारगी सन्न रह जाना 2. पीसना, मसाला काटना, भंग काटना; जैसे- वह बट्टा जो खूब मसाला काटता है 3. घाव करना जैसे- जूते का काटना 4. युद्ध में मारना जैसे- उस लड़ाई में सैकड़ों सैनिक काट दिये गए 5. दूर करना जैसे- पाप काटना, मैल काटना 6. समय बिताना जैसे- रात काटना मुश्किल हो गया 7. कलम की लकीर से लिखावट को रद्द करना, जैसे- उसने तुम्हारा लिखा काट दिया, मुहा. जेल में दिन बिताना- जेल काटना, काटने दौड़ना- चिड़चिड़ाना; अन्य प्रयोग- रास्ता काटना, पतंग काटना, बात काटना, काटे खाना या काटने दौड़ना 8. बुरा मालूम होना जैसे- उनके बिना घर काटे खाता है।

काट फाँस *स्त्री.* (देश.) 1. किसी को अलग करने या किसी को अपने जाल में फँसाने की क्रिया 2. जोड़ तोड़ 2. इधर की उधर लगाना।

काटू *पुं.* (देश.) 1. काटनेवाला 2. डरावना।

काठ *पुं.* (तद्.) 1. पेड़ का कोई स्थूल अंग जो पेड़ से अलग हो गया हो, लकड़ी, काठ कठंगर-निस्सार वस्तु, सामान जो बेकार हो गया हो मुहा. काठ का उल्लू- जड़, घोर अज्ञानी; काठ की घोड़ी- आस्तित्वहीनता का आधार; काठ की हांड़ी- धोखे की चीज, ऐसी वस्तु जिसका धोखा एक बार से अधिक न चल सके जैसे- जैसे हांड़ी काठ की चढ़े न दूजी बार; काठ का घोड़ा- वैसाखी; काठ होना-संज्ञा शून्य होना, समस्त पद बनने से 'काठ' को 'कठ' हो जाता है जैसे- कठफोड़वा, कठपुतली, गूदाहीन फल वाले वृक्ष जैसे- कठजामुन, कठबेर।

काठक *पुं.* (तत्.) कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा।

काठ-कबाड़ *पुं.* (देश.) 1. लकड़ियों के टूटे-फूटे टुकड़े 2. उपयोगी लकड़ी 3. वह सामान जो बेकार हो गया हो, टूटा-फूटा सामान।

काठनीम *पुं.* (देश.) एक प्रकार का वृक्ष जिसे गंधेल भी कहते हैं दे. गंधेल।

काठबेल *स्त्री.* (देश.) इंद्रायन की तरह की एक बेल जो हिंदुस्तान के शुष्क प्रदेश और अफगानिस्तान में होती है, जिसके बीज से तेल निकलता है और जलाने के काम आता है।

काठमांडू *पुं.* (तद्.) नेपाल की राजधानी जिसका नाम काठ के मकान अधिक होने से पड़ा।

काठिन्य *पुं.* (तत्.) कड़ापन, सख्ती।

काठियावाड़ *पुं.* (तद्.) भारत क्षेत्र के गुजरात प्रदेश का पश्चिमी भाग जो कच्छ की खाड़ी और खंभात की खाड़ी के बीच में है।

काठी *स्त्री.* (देश.) 1. घोड़े की पीठ पर कसने की जीन जिसमें नीचे काठ लगा रहता है 2. ऊँट की पीठ पर रखने की काठ युक्त गद्दी 3. काठ की म्यान जिस पर चमड़ा या कपड़ा चढ़ा रहता है (तद्.) शरीर की गठन, कदकाठी।

काड़ी काँवर *पुं.* (देश.) वह काँवर जिसे मार्ग में कभी भूमि पर नहीं रखा जाता, कंधे या लकड़ी पर ही रखते हैं।

काढ़ना *स.क्रि.* (तद्.) 1. किसी वस्तु के भीतर से कोई वस्तु बाहर निकालना 2. खोल कर दिखाना 3. किसी वस्तु से अलग करना 4. लकड़ी, पत्थर, कपड़े आदि पर तेल बूटे बनाना उकेरना जैसे-वेल बूटा काढ़ना, कसीदा काढ़ना 5. उधार लेना जैसे-कहीं से काढ़ कर पैसे दे दो 6. कड़ाहे में से पकाकर निकालना जैसे- पूड़ी काढ़ना, जलेबी काढ़ना।

काढ़ा *पुं.* (देश.) औषधियों को पानी में उबाल कर बनाया हुआ शर्बत, जोशाँदा, क्वाथ।

काण्व *पुं.* (तत्.) 1. कण्व का वंशज 2. कण्व का अनुयायी।

कातंत्र *पुं.* (तत्.) कलाप व्याकरण जिसे कार्तिकेय की कृपा से सर्ववर्मा ने बनाया था।

कात *पुं.* (तद्.) 1. एक प्रकार की कैंची जिससे गड़रिये भेड़ों के बाल काटते है 2. मुर्गे के पैर का कांटा।

कातना *स.क्रि.* (तद्.) 1. रूई से सूत बनाना 2. ढेर से सन या मूँज आदि की रस्सी बनाना मुहा. महीन कातना- बहुत कुशलता से गढ़ कर बातें करना।

कातर *वि.* (तत्.) 1. अधीर, व्याकुल 2. डरा हुआ, भयभीत 3. डरपोक 4. आर्त, दुःखित।

कातरता *स्त्री.* (तत्.)1. अधीरता 2. दुख की व्याकुलता 3. डर।

कातरोक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. दुख या संकट में कही जानेवाली दीनतायुक्त बात 2. विनती 3. विवशता, लाचारी।

काता *पुं.* (तद्.) बाँस काटने या छीलने की छुरी।

कातिक *पुं.* (तद्.) वह महीना जो शरद ऋतु में क्वार के बाद पड़ता है, कार्तिक।

कातिब *पुं.* (अर.) लिखनेवाला, लेखक।

कातिल *पुं.* (अर.) 1. वध करनेवाला मनुष्य, हत्यारा 2. प्राण लेनेवाला, घातक।

काती *स्त्री.* (तद्.) 1. कैंची 2. सुनारों की कतरनी 3. चाकू, छूरी 4. छोटी तलवार, कत्ती।

कात्यायन *पुं.* (तत्.) 1. कत ऋषि के गोत्र में उत्पन्न ऋषि जिनमें तीन प्रसिद्ध हैं-एक विश्वामित्र के वंशज, दूसरे गोभिल के पुत्र और तीसरे सोमदत्त के पुत्र वररुचि कात्यायन 2. एक बौद्ध आचार्य 3. पालि व्याकरण के कर्ता एक बौद्ध आचार्य जिन्हें पालि ग्रंथों में 'काच्चायन' कहते हैं।

कात्यायनी *स्त्री.* (तत्.) 1. कत गोत्र में उत्पन्न स्त्री 2. कात्यायन ऋषि की पत्नी 3. कषाय वस्त्र वस्त्र धारण करनेवाली अधेड़ विधवा स्त्री 4. कल्पभेद से कत गोत्र में उत्पन्न एक दुर्गा 5. याज्ञवल्क्य ऋषि की पत्नी 6. पार्वती।

कात्यायनीपुत्र *पुं.* (तत्.) कात्यायनी का पुत्र, कार्तिकेय।

काथिक *पुं.* (तत्.) कहानी लिखने वाला या कहने वाला व्यक्ति।

कादंब *पुं.* (तत्.) 1. कदंब का पेड़ या फल, फूल 2. एक प्रकार का हंस, कलहंस 3. ईख 4. बाण 5. शराब, मदिरा, कदंब की बनी शराब *वि.* (कदंब संबंधी) सामूहिक।

कादंबर *पुं.* (तत्.) 1 दही की मलाई 2. ईख का गुड़ 3. कदंब के फूलों की शराब 4. मदिरा 5. हाथी का मद।

कादंबरी *स्त्री.* (तत्.) 1. कोकिल 2. सरस्वती 3. मदिरा 4. मैना 5. बाणभट्ट की लिखी आख्यायिका की नायिका का नाम।

कादंबिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. मेघमाला, घटा 2. मेघ राग की एक रागिनी।

कादिर *पुं.* (अर.) 1. ताकतवर 2. सामर्थ्यवान 3. भाग्यवान।

काद्रव *पुं.* (तत्.) गहरे पीले रंग का।

काद्रवेय *पुं.* (तत्.) 1. कद्रु का पुत्र 2. नाग, सर्प 3. तक्षक

कान *पुं.* (तद्.) वह इंद्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है, सुनने की इंद्रिय, श्रवण, श्रुति, श्रोत्र मुहा. कान उठाना- आहट लेना, चौकन्ना होना; कान उड़ जाना- लगातार देर तक कड़ा या गंभीर शब्द सुनने से कान में पीड़ा और चित्त में घबराहट होना; कान उड़ा देना- हल्ला गुल्ला करके कान को पीड़ा पहुँचाना; कान काट लेना- अधिक चतुर होना; कान उड़ाना- ध्यान न देना; कान उमेठना- दंड देने के लिए कान मरोड़ना, दंड द्वारा चेतावनी देना, कोई काम न करने की कड़ी प्रतिज्ञा करना जैसे- मैं कान उमेठता हूँ फिर कभी गलती न करूँगा; कान कतरना- दे. 'कान काटना'; कान करना- सुनना; कान काटना- नीचा दिखाना; कान का कच्चा- शीघ्र विश्वासी जो दूसरों के बहकावे में आ जाए; कान का पतला- हर तरह ही बात को मान लेनेवाला; कान की मैल निकलवाना- सुनने में समर्थ होना; कान खड़ा करना- चौकन्ना होना, सजग कर देना, भूल बता देना; कान गरम करना या कर देना- कान उमेठना; कान भुन्नाना- तेज आवाज सुनने से काम का सुन्न हो जाना; कान छेदना- बाली पहनने के लिए कान की लौ में छेद करना; कान दबाना-विरोध न करना; कान देना- ध्यान देना; कान धरना- ध्यान से सुनना; कान न दिया जाना- न सुना जाना; कान पक जाना- ऊब जाना; कान पकड़ना- दंड देना, अपनी भूल स्वीकार करना, तोबा करना फिर न करने की प्रतिज्ञा करना; कान पकड़कर उठना बैठना-एक प्रकार का दंड जो लडकों को दिया जाता है; कान पकडकर निकाल देना-अपमानित करके बाहर कर देना; कान पड़ना, कान में पड़ना-सुनने में आना; कान पर जूँ न रेंगना- कुछ भी परवाह न करना, बेखबर रहना; कान पर हाथ धरकर सुनना- ध्यान से सुनना; कान फाड़कर सुनना- एकाग्र होकर सुनना; कान फुकवाना- गुरू से मंत्र लेना; कान फूंकना- दीक्षा देना; कान फटना- कड़े शब्द सुनते सुनते जी ऊबना; कान फूटना-दे., 'कान फटना', 'कान का पर्दा फटना'; कान फोड़ना- शोर मचा कर कानों को कष्ट देना; कान बजना-कान में वायु के कारण सांय सांय शब्द होना; कान बहना-कान से पीब निकलना; कान बींधना-कान छेदना; कान भर जाना- सुनते-सुनते जी ऊब जाना; कान भरना-किसी के विरुद्ध किसी के मन में कोई बात बैठा देना; कान मलना- दे. 'कान उमेठना'; कान में तेल डालना- बहरा बन जाना; कान में तेल डाल बैठना-बहरा बन जाना, बेखबर रहना; (कोई बात) कान में डाल देना-सुना देना; (किसी का किसी के) कान लगाना- गुप्त रीति से मंत्रण करना; कान लगाना-ध्यान देना, कानाफूसी करना चुपके चुपके कान में बात कहना; कानावाती करना- चुपके चुपके कान में बात करना; कानों पर हाथ धरना- बिलकुल इन्कार करना; कानों में उँगली देना- किसी बात से विरक्त होकर उसकी चर्चा से बचना; कानों सुनना न आंखों देखना- पूर्णतः

अज्ञात, जिसके निश्चय में लेशमात्र जानकारी न हो; कानोकान खबर न होना-कुछ भी सुनने में न आना।

कान *पुं.* (तद्.) अधूरे, अपूर्ण उदा. "हरि विणि सब सुख कानै" -मीरा (पद 73)।

कानन *पुं.* (तत्.) 1. वाटिका 2. घर 3. जंगल 4. ब्रह्मा का मुख।

काननाग्नि *स्त्री.* (तत्.) दावानल, जंगल की आग जो डालों की रगड़ से लग जाती है।

काननौका *पुं.* (तत्.) जंगल में रहनेवाला।

कानफरेंस *पुं.* (अं.) 1. सभा 2. किसी आवश्यक निर्णय के लिए एकत्र जनसमूह 3. किसी विषय पर किसी निष्कर्ष के लिए एकत्रित विशिष्ट लोग।

कानवेंट *पुं.* (अं.) 1. ईसाई संन्यासियों का संघ 2. पादरियों द्वारा संचालित शिक्षा संस्था।

काना *पुं.* (तद्.काण) 1. जिसकी एक आँख फूट गई हो, एकाक्ष मुहा. काने को काना कहना- बुरे को बुरा कहना; 2. जिसका कुछ भाग कीड़ों ने खा लिया हो, दागी 3. टेढ़ा, तिरछा *पुं.* चौसर के पासे की बिंदी (तीन काने)।

कानाकानी *स्त्री.* (देश.) कानाफूसी, चर्चा प्रयो. मुझे मुझे तब पता चला जब लोगों में इस बात की कानाकानी हो रही थी।

कानागोसी *स्त्री.* (देश.) कानाफूसी।

कानाफूसी *स्त्री.* (देश.) वह बात जो कान के पास जाकर धीरे से कही जाए।

कानाबाती *पुं.* (देश.) चुपके चुपके कान में बात कहना, कानाफूसी।

कानि *स्त्री.* (देश.) लोकमर्यादा, लोक लज्जा।

कानी ऊंगली *स्त्री.* (देश.) सबसे छोटी ऊंगली, छिगुनी।

कानी कौड़ी *स्त्री.* (देश.) झंझी कौड़ी मुहा. कानी कौड़ी न होना- बिलकुल निर्धन होना।

कानी *स्त्री.* (देश.) 1. एक आँखवाली 2. सबसे छोटी छोटी ऊंगली।

कानीन *वि.* (तत्.) क्वारी कन्या से उत्पन्न, कन्याजात *पुं.* (तत्.) कुमारी कन्या का पुत्र जैसे- व्यास और कर्ण।

कानून *पुं.* (अर.) 1. राज्य में शांति रखने का नियम, राज नियम, विधि मुहा. कानून छाँटना-कानूनी बहस करना, कुतर्क करना, इज्जत करना 2. एक रूमी बाजा।

कानूनगो *पुं.* (अर.कानून फा.गो) माल का एक कर्मचारी जो पटवारियों के उन कागजों की जाँच करता है जिनमें खेतों और उनके लगान आदि का हिसाब किताब रखता है।

कानूनदाँ *पुं.* (अर.+फा) 1. कानून जानने वाला 2. कानून छाँटनेवाला, कुतर्की।

कानूनी *वि.* (अर.) 1. कानून से संबद्ध 2. जो नियमानुकूल हो 3. अदालती 4. जो कानून जाने 5. तकरार करने वाला।

कान्हड़ा *पुं.* (तद्.) संगी. एक राग जो मेघ राग का पुत्र समझा जाता है।

कान्हड़ा नट *पुं.* (तद्.) एक संकर राग जो कान्हड़े और नट के मिलाने से बनता है, यह रात के दूसरे पहर में गाया जाता है।

कान्हड़ी *स्त्री.* (तद्.) एक रागनी जो दीपक राग की की पत्नी मानी जाती है।

कान्हा *पुं.* (तद्.) श्री कृष्ण।

कापालिक *पुं.* (तत्.) 1. शैवमत का तांत्रिक साधु जो मनुष्य की खोपड़ी लिए रहता है और मद्य मांसादि खाता है 2. 'तंत्रसार' के अनुसार बंग देश की एक वर्णसंकर जाति।

कापालिका *स्त्री.* (तत्.) प्राचीन काल का एक बाजा बाजा जो मुँह से बजाया जाता है।

कापाली/कपाली *पुं.* (तत्.) 1. शिव 2. एक प्रकार का वर्ण संकर 3. कपालों की माला धारण करने वाला।

कापी *स्त्री.* (अं.) 1. नकल प्रतिरूप 2. लिखने की सादी पुस्तिका।

कापीराइट *पुं.* (अं.) कानून के अनुसार वह अधिकार जो ग्रंथकार या प्रकाशक को प्राप्त होता है।

कापुरूष *पुं.* (तत्.) कायर, डरपोक उदा. वर न सका कापुरूष जिसे तू, उसे व्यर्थ ही हर लाया। (साकेत)।

काफ *पुं.* (अर.) 1. अरबी और फारसी वर्णमाला का एक अक्षर 2. अबजद में 100 की सूचक संख्या 3. कोहकाफ जो काला सागर और कास्पियन सागर के मध्य में है, काकेशस पहाड़ 4. एक कल्पित पहाड़ जिसके बारे में धारणा है कि वह क्षितिज तक विस्तृत है मुहा. काफ से काफ तक- एक छोर से दूसरे छोर तक, सारी पृथ्वी में 1. बातचीत और तर्क 2. सजावट 3. मूर्ख, बेवकूफ।

काफिया *पुं.* (अर.) तुकबंदी, काफिया, मिलाना मुहा. काफिया तंग करना- बहुत परेशान करना, नाको दम करना; काफिया तंग रहना या होना- किसी काम से तंग रहना या होना; काफिया मिलाना- तुक मिलाना, अपना साथी बनाना।

काफिर *वि.* (अर.) 1. मुसलमानों के अनुसार उनसे भिन्न धर्म को माननेवाला, मूर्तिपूजक 2. ईश्वर को न माननेवाला 3. निष्ठुर 4. दुष्ट, बुरा 5. काफिर देश का रहनेवाला 6. नास्तिक।

काफिला *पुं.* (अर.) यात्रियों का झुंड जो तीर्थ, व्यापार आदि के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करता है।

काफिला सालार *पुं.* (अर.) यात्रियों का मुखिया, सार्थपति।

काफी *वि.* (अर.) किसी काम के लिए जितना आवश्यक हो उतना, पर्याप्त, पूरा।

काफी *स्त्री.* (अर.) एक प्रकार का पेय पदार्थ कहवा *पुं.* (तद्.) संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें कोमल गांधार लगता है और जो रात्रि के दूसरे पहर में गाया जाता है।

काफूर *पुं.* (फा.) कपूर मुहा. काफूर होना- उड़ जाना, अदृश्य हो जाना।

काबा *पुं.* (अर.) 1. अरब के मक्का शहर का एक स्थान जहाँ मुसलमान लोग हज करने जाते है, मुसलमानों का पवित्रस्थल 2. चौकोर इमारत 3. पाँसा।

काबाड़ी *पुं.* (देश.) 1. गुदड़ी का सामान जुटाने और बेचनेवाला 2. लकड़हारा, लकड़ी काटनेवाला।

काबिज *वि.* (अर.) 1. जिसका किसी वस्तु पर अधिकार हो, अधिकारी 2. ऐसी वस्तु जिसमें कब्जा हो।

काबिल *वि.* (अर.) 1. योग्य, लायक 2. विद्वान, पंडित।

काबिलियत *स्त्री.* (अर.) 1. योग्यता, लियाकत 2. पांडित्य , विद्वत्ता।

काबिलेतारीफ *वि.* (अर.) प्रशंसनीय, श्लाघ्य, प्रशंसा के योग्य।

काबिलेदाद *वि.* (अर.) प्रशंसनीय, दाद देने योग्य।

काबिस *पुं.* (अर.) 1. सोंठ, मिट्टी, बबूल की पत्ती, बाँस की पत्ती, आम की छाल और रेह के घिसने से बना एक रंग जिससे मिट्टी के कच्चे वर्तन रंगकर पकाए जाते है 2. एक प्रकार की लाल मिट्टी, पानी डालने से यह लसदार हो जाती है।

काबी *स्त्री.* (फा.) कुश्ती का एक पेंच।

काबुक *पुं.* (फा.) 1. कबूतरों का दरबा 2. कपड़े की गद्दी जिस पर रोटी रखकर तंदूर में लगाते है।

काबुल *पुं.* (फा.) 1. एक नदी जो अफगानिस्तान से आकर अटक के पास सिंधु नदी में गिरती है 2. अफगानिस्तान की राजधानी 3. अफगानिस्तान का पुराना नाम मुहा. काबुल में भी गधे होते है- अच्छी जगह में भी बुरे लोग होते है।

काबुली चना *पुं.* (फा, तद्.) एक प्रकार का चना जिसके दानें बड़े होते है तथा रंग साफ होता है।

काबुली मटर *स्त्री.* (फा., तद्.) एक प्रकार की मटर जिसके दाने बड़े होते है।

काबू *पुं.* (तुर्की.) वश, अधिकार, जोर, बल, कस। मुहा. काबू में करना या काबू करना- अधिकार में आना; काबू चढ़ना या काबू पर चढ़ना-अधिकार में आना, दाँव पर चढ़ना; काबू पाना-अधिकार पाना, दाँव पाना।

काभीरु *पुं.* (तत्.) उल्लू।

काम- *पुं.* (तत्.) 1. इच्छा 2. महादेव 3. कामदेव 4. इंद्रियों की अपने अपने विषयों की ओर प्रवृत्ति (कामशास्त्र) 5. सहवास की इच्छा 6. चतुर्वर्ग या पुरुषार्थ में से एक 7. प्रद्युम्न 8. बलराम 9. ईश्वर 10. प्रेम 11. वीर्य 12. एक प्रकार का आम *पुं.* (तद्.) 1. वह जो किया जाए, कर्म, कार्य 2. धंधा, रोजगार, व्यापार 3. नौकरी 4. अर्थ, प्रयोजन मुहा. काम अटकना- काम रुकना; काम आना- लड़ाई में मारा जाना, जैसे- सिपाही युद्ध में काम आए; काम कर दिखाना- महत्वपूर्ण काम करना; काम करना-असर करना, जैसे- तुम्हारा उपदेश काम कर गया; काम चलना- काम जारी रखना, जैसे- बिजली के आने तक मोमबत्ती से काम चलेगा; काम चलाना- काम जारी रखना; काम छेड़ना- काम शुरू करना; काम तमाम करना- मार डालना, जैसे- राम ने रावण का काम तमाम कर दिया; काम तमाम होना- नष्ट हो जाना; काम देखना-अपने काम की ओर ध्यान देना; काम बँटाना- किसी काम में सहायक होना; काम बनना-बात बनना; काम बिगड़ना-मामला बिगड़ना; काम भुगतना- काम निपटाना; काम लगाना- काम जारी होना; काम लगा रहना- व्यापार जारी रहना, गाडियाँ आती जाती रहती है, यही काम लगा रहता है; काम होना- मरना जैसे- छत से गिरते ही उसका काम हो गया; काम करना- अर्थ साधना, चोर पलक झपकते अपना काम कर गया; काम का-जिससे कोई उद्देश्य सिद्ध हो, जैसे- वह बड़े काम का आदमी है; काम चलना- कार्य का निर्वाह होना, जैसे- इतने पैसे से मेरा काम चल जाएगा; काम निकालना- मतलब गांठना, स्वार्थी मित्र सिर्फ अपना काम निकाल लेते है; काम पड़ना- आवश्यकता होना; काम बनाना- मतलब गाँठना, जैसे- उसके आने से सब काम बन जाएगा; काम लगना- आवश्यकता होना, जैसे- जब काम लगा, तो पैसे लेने आ गए; काम संवारना- काम बनाना, उदा. रामचंद्र के काम संवारे, हनु.चा.; काम सधना- काम सिद्ध होना; काम सरना- काम निकलना; काम साधना- काम पूरा करना; काम साध देना- सिद्ध करना, पूरा कर देना; आवश्यकता होना काम पड़ना- किसी से पाला पड़ना, उदा. चंदन बपुरा का करै, पड़ा नीच से काम (शब्द.); काम रखना- वास्ता रखना; काम से काम रखना- अपने कार्य से प्रयोजन रखना; काम आना- उपयोग होना जैसे- वह मूर्ख किसी के काम नहीं आ सकता, साथ देना जैसे- विपत्ति में अपने ही काम आते है; काम का- उपयोगी, व्यवहार योग्य; काम देना- उपयोगी होना, जैसे- जो वक्त पर काम न दे वह बेकार बोझ होता है; काम लेना- उपयोग करना, रात में टार्च से काम लो; काम में आना- व्यवहार में आना; काम में लाना-उपयोग में लाना, व्यवहार करना; काम खुलना- कारोबार चलना, नया कारखाना जारी होना; काम चमकना- व्यवसाय में वृद्धि होना; काम पर जाना- कार्यालय में जाना, रोजगार की जगह जाना; काम बढ़ाना- व्यापार बढ़ाना; काम बिगड़ना- व्यवसाय नष्ट होना, रोजगार में घाटा उठाना, बनते बनते काम में रुकावट आना या बिगड़ जाना; काम सीखना- कारोबार सीखना जैसे- वह बढ़ई का काम सीख रहा है, काम उतारना- किसी दस्तकारी के काम को पूरा करना, काम चढ़ाना-किसी चीज की तैयारी के लिए करघे आदि पर चढ़ाना; काम बनाना-किसी वस्तु का तैयार होना।

कामअंध *पुं.* (तत्.) दे. कामांध।

कामकला *स्त्री.* (तत्.) 1. रति मैथुन 2. काम क्रीड़ा की कला 3. कामदेव की स्त्री 4. एक तंत्रोक्त विद्या 5. सौंदर्य की प्रतिमूर्ति।

कामकाज *पुं.* (देश.) कारोबार, काम धंधा।

कामकाजी *वि.* (देश.) काम करनेवाला, उद्योग धंधे धंधे में रहने वाला।

कामकेलि *स्त्री.* (तत्.) रतिक्रीड़ा।

कामक्रिया *स्त्री.* (तत्.) रति क्रीड़ा।

कामक्रीड़ा *स्त्री.* (तत्.) संभोग, रति।

कामगार *पुं.* (फा.) दे. कामदार, मजदूरी करके रोजी कमानेवाला व्यक्ति।

कामगिरि *पुं.* (तत्.) चित्रकूट, कामदगिरि।

कामचर *पुं.* (तत्.) अपनी इच्छानुसार सब जगह जाने वाला, स्वेच्छापूर्वक विचरनेवाला।

कामचलाऊ *वि.* (देश.) 1. जिससे किसी प्रकार काम चल सके 2. जिससे आवश्यकता की पूर्ति की जाए 3. पूरी तरह काम न दे सकने पर भी थोड़े समय के लिए कारगर हो।

कामचोर *वि.* (देश.) काम से जी चुरानेवाला, अकर्मण्य, आलसी, जाँगरचोर।

कामजित *वि.* (तत्.) काम को जीतनेवाला।

कामता *पुं.* (तद्.) चित्रकूट, चित्रकूट के पास एक गाँव।

कामदगिरि *पुं.* (तत्.) चित्रकूट का एक पर्वत जो कामनाओं की पूर्ति करनेवाला माना जाता है।

कामदहन *पुं.* (तत्.) कामदेव को जलानेवाले, शिव।

कामदानी *स्त्री.* (फा.) 1. बेलबूटा जो चाँदी के तार या सलमे सितारे से बनाया जाए 2. वह कपड़ा जिस पर सलमे-सितारे के बेलबूटे बने हों।

कामदार *पुं.* (फा.) कर्मचारी, कारिंदा, कामगार।

कामदार *वि.* (फा.) जिस पर कलाबत्तू, जरदोजी आदि के बेलबूटे बने हों जैसे- कामदार टोपी।

कामदेव *पुं.* (तत्.) 1. स्त्री-पुरूष के संयोग की प्रेरणा देनेवाला एक पौराणिक देवता, जिसकी स्त्री स्त्री रति, साथी वसंत, वाहन कोकिल, अस्त्र फूलों फूलों का धनुष और वाण है, उसकी ध्वजा पर मीन का चिह्न है।

कामधाम *पुं.* (तद्.) कामकाज, धंधा, कामकाज और रहने का स्थान ।

कामधेनु *स्त्री.* (तत्.) 1. एक गाय जो पुराणानुसार समुद्र के मथने से निकली थी, स्वर्ग की गाय जो सब कामनाओं की पूर्ति करनेवाली मानी जाती है 2. वशिष्ठ की शवला या नंदिनी नाम की गाय, जिसके लिए विश्वामित्र के साथ उनका युद्ध हुआ था 3. दान के लिए सोने की बनाई गई गाय।

कामध्वज *पुं.* (तत्.) वह जो कामदेव की ध्वज पर हो, मछली, कामदेव की ध्वजा।

कामनवेल्थ *पुं.* (अं.) राष्ट्रमंडल, राष्ट्रकुल।

कामना *स्त्री.* (तत्.) 1. इच्छा, मनोरथ 2. वासना।

कामपरता *स्त्री.* (तत्.) विषय भोग, और इच्छाओं के वशीभूत रहने की स्थिति, कामुकता।

कामबाण *पुं.* (तत्.) कामदेव के बाण, जो पाँच है- मोहन, उन्माद, संतापन, शोषण और निश्चेष्टीकरण।

काममोहित *वि.* (तत्.) कामातुर, काम के वशीभूत।

कामयाब *वि.* (फा.) 1. जिसका प्रयोजन सिद्ध हो गया हो, सफल 2. (परीक्षा में) उत्तीर्ण।

कामयाबी *स्त्री.* (फा.) सफलता, कृतकार्यता।

कामरत *पुं.* (तत्.) कामलिप्त, वासनालिप्त।

कामरिपु *पुं.* (तत्.) शिव का एक नाम।

कामरूप *पुं.* (तत्.) 1. आसाम का एक जिला जहाँ कामाख्या देवी का क्षेत्र है, इसका प्रधान नगर गुवाहाटी है 2. एक अस्त्र जिससे प्राचीन काल में शत्रु के फेंके हुए अस्त्र व्यर्थ किए जाते थे 3. बरगद की जाति का एक बड़ा सदाबहार वृक्ष 4. 26 मात्राओं का एक छंद, जिसमें 9,7 और 10 के अंतर पर विराम होता है, अंत में गुरु लघु होते हैं 5. यथेच्छ रूप धारण करने वाला।

कामरूपत्व *पुं.* (तत्.) जैन मत के अनुसार एक प्रकार की सिद्धि जो कर्मादि से निरपेक्ष होने पर प्राप्त होती है, इससे यथेच्छ रूप धारण करने की शक्ति मिल जाती है।

कामरूपिणी *स्त्री.* (तत्.) इच्छानुसार रूप बदलने वाली, मायाविनी।

कामरूपी *पुं.* (तद्.) इच्छानुसार रूप धारण करनेवाला, मायावी।

कामरेड *पुं.* (अं.) 1. सहयोगी, साथी, साथ काम करने वाला 2. साम्यवादियों का एक दूसरे के लिए संबोधन।

कामर्स *पुं.* (अं.) व्यापार, वाणिज्य, कारोबार।

कामलोक *पुं.* (तत्.) बौद्ध दर्शन के अनुसार एक परोक्ष लोक।

कामवती *स्त्री.* (तत्.) दारुहल्दी *वि.* (तत्.) काम की वासना रखनेवाली, अत्यंत रूपवती।

कामवन *पुं.* (तत्.) 1. वह वन जहाँ बैठ कर शिव ने कामदेव को भस्म किया था 2. मथुरा के पास एक प्रसिद्ध वन जो तीर्थ माना जाता है।

कामवश *वि.* (तत्.) काम के अधीन, कामयुक्त।

कामवृद्धि *स्त्री.* (तत्.) काम का आवेश या वेग।

कामशास्त्र *पुं.* (तत्.) वह विद्या या ग्रंथ जिसमें स्त्री स्त्री पुरूषों के परस्पर समागम आदि के व्यवहारों व्यवहारों का वर्णन हो।

कामसखा *पुं.* (तत्.) 1. वसंत 2. चैत्रमास।

कामसुख *पुं.* (तत्.) काम का आनंद, विषयानंद।

कामसूत्र *पुं.* (तत्.) 1. वात्स्यायन द्वारा रचित कामशास्त्र 2. प्रेमसूत्र।

कामांध *वि.* (तत्.) काम की अधिकता से जिसका विवेक नष्ट हो गया हो।

कामा *पुं.* (अं.) एक विराम चिह्न जो दो वाक्यों या शब्दों के बीच होता है, इसका चिह्न (,) अर्धविराम।

कामाख्या *स्त्री.* (तत्.) 1. देवी का एक अभिग्रह 2. 2. सती का योनिपीठ, कामरूप 3. असम के कामरूप क्षेत्र में स्थित दुर्गा देवी की एक प्राचीन मूर्ति।

कामारि *पुं.* (तत्.) शिवजी का एक नाम।

कामिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. कामवती स्त्री 2. स्त्री 3. दारुहल्दी 4. मदिरा 5. पेड़ों पर का बाँदा 6. मालकोश राग की एक रागिनी 7. एक लकड़ी जिससे मेज कुर्सी आदि बनती है।

कामिल *वि.* (अर.) 1. पूरा, पूर्ण, समूचा 2. योग्य 3. व्युत्पन्न 4. चमत्कारी।

कामी *पुं.* (तत्.) 1. चकवा 2. कबूतर 3. चिड़ा 4. सारस 5. चंद्रमा 6. काकड़ासींगी 7. विष्णु का एक नाम 8. शिव का एक विशेषण।

कामी *वि.* (तत्.) कामना रखनेवाला, इच्छुक 2. विषयी, कामुक, लंपट।

कामुक *वि.* (तत्.) 1. इच्छा करनेवाला, चाहनेवाला 2. कामी, विषयी।

कामुका *स्त्री.* (तत्.) इच्छा करनेवाली, धन की कामना करने वाली स्त्री।

कामुकी *स्त्री.* (तत्.) अत्यंत रति की इच्छा रखनेवाली, पुंश्चली, व्यभिचारिणी।

कामेडियन *पुं.* (अं.) 1. श्रृंगार रस या हास्य रस का अभिनेता 2. सुखांत नाटक लिखनेवाला।

कामेडी *स्त्री.* (अं.) वह नाटक जिसका अंत आनंद या सुखमय हो, सुखांत (नाटक), कामदी।

कामोत्थाप्य *पुं.* (तत्.) वह नौकर जिसकी नौकरी अस्थायी हो।

कामोद *पुं.* (तत्.) संपूर्ण जाति का एक राग जो मालकोश का पुत्र माना जाता है, इसके गाने का समय रात का पहला आधा पहर है तथा इसका उपयोग करुणा और हास्य में होता है।

कामोदनट *पुं.* (तत्.) एक संकर राग जो कामोद और नट के मेल से बनता है, इसके गाने का समय रात का पहला पहर है।

कामोदसामंत *पुं.* (तत्.) एक संकर राग जो कामोद और सामंत के योग से बनता है, इसके गाने का समय रात का तीसर पहर है।

कामोद्दीपक *वि.* (तत्.) काम को उद्दीप्त करनेवाला, जिससे मनुष्य में सहवास की इच्छा अधिक हो।

कामोद्दीपन *पुं.* (तत्.) 1. काम का वेग 2. उन्माद जो काम के वेग से होता है।

काम्य *वि.* (तत्.) 1. जिसकी इच्छा हो 2. जिससे कामना की सिद्धि हो जैसे- काम्य कर्म *पुं.* (तत्.) वह यज्ञ या कर्म जो किसी कामना की सिद्धि के लिए किया जाए जैसे- पुत्रेष्टि।

काम्यकर्म *पुं.* (तत्.) वह कर्म जो किसी कामना की प्राप्ति के लिए किया जाए।

काम्यदान *पुं.* (तत्.) 1. रत्न आदि का दान 2. वह दान जो पुत्र आदि की कामना से किया जाए।

काम्यमरण *पुं.* (तत्.) 1. इच्छानुसार मृत्यु 2. मुक्ति।

काम्या *स्त्री.* (तत्.) 1. इच्छा 2. प्रार्थना 3. गाय।

काम्रेड *पुं.* (अं.) दे. कामरेड।

कायँकायँ *पुं.* (तत्.) 1. कौवे की बोली 2. स्यार की बोली।

काय *पुं.* (तत्.) 1. शरीर, देह, जिस्म 2. प्रजापति तीर्थ, कनिष्ठा उँगली का निचला भाग 3. प्रजापति का हवि, वह हवि जो प्रजापति के निमित्त हो 4. प्राजापत्य विवाह 5. मूल धन 6. वस्तु स्वभाव, लक्षण 7. लक्ष्य 8. समुदाय 9. बौद्ध भिक्षुओं का संघ 10. पेड़ का तना 11. तारों के बिना वीणा का ढाँचा 12. निवास स्थान।

कायचिकित्सा *स्त्री.* (तत्.) सुश्रुत के किए गए चिकित्सा के आठ विभागों में से एक।

कायदा *पुं.* (अर.) 1. नियम 2. चाल, दस्तूर, ढंग 3. विधि, विधान 4. क्रम, व्यवस्था 5. व्याकरण।

कायम *वि.* (अर.) 1. ठहरा हुआ 2. स्थापित 3. निर्धारित, मुकर्रर 4. जिसमें किसी पक्ष की हार जीत न हो, ड्रा मुहा. कायम उठाना- हार जीत के बिना शतरंज की बाजी समाप्त होना।

कायममिजाज *पुं.* (अर.) सुस्थिरचित्त आत्मकथा।

कायर *वि.* (तत्.) डरपोक, भीरु, कमहिम्मत।

कायरता *स्त्री.* (तत्.) डरपोकपन, भीरुता।

कायल *वि.* (अर.) 1. जो दूसरे की बात की यथार्थता को स्वीकार कर ले, जो तर्क से सिद्ध बात को मान ले 2. जो दूसरे से प्रभावित होने पर अपना पक्ष छोड़ दे, कबूल करनेवाला 3. निरुत्तर मुहा. कायल करना- समझा बुझा कर कोई बात मनवाना; कायल होना- दूसरे की बात की सच्चाई स्वीकार करना जैसे- हम उसकी बुद्धिमानी के कायल हो गए।

कायस्थ *वि.* (तत्.) काय में स्थित, शरीर में रहनेवाला *पुं.* (तत्.) 1. एक जाति का नाम जो चित्रगुप्त के वंशज कहलाते है, कायथ 2. जीवात्मा 3. परमात्मा।

काया *स्त्री.* (तत्.) शरीर, देह मुहा. काया पलट जाना- रूपांतर हो जाना जैसे- मरम्मत के बाद मकान की काया पलट गई; काया पलट देना- और से और कर देना।

कायाकल्प *पुं.* (तत्.) 1. औषध के प्रभाव से वृद्ध शरीर को पुनः शक्ति संपन्न और तरुण करने की क्रिया 2. वह चिकित्सा जिससे जर्जर शरीर नया हो जाए।

कायापलट *पुं.* (तद्.) 1. भारी हेर-फेर, बहुत बड़ा परिवर्तन 2. शरीर का नया रूप प्राप्त करना।

कायिक *वि.* (तत्.) 1. शरीर संबंधी, शरीर से उत्पन्न जैसे- कायिक कर्म 3. संघ संबंधी (बौद्ध)।

कायिका *स्त्री.* (तत्.) ऋण के बदले मिलने वाला ब्याज, सूद।

कायिकी *स्त्री.* (तत्.) शरीर की क्रियाओं का विज्ञान। physiology

कायोत्सर्ग *पुं.* (तत्.) 1. जैन शिल्प में अर्हत् की वीतराग अवस्था में खड़ी मूर्ति 2. जैन धर्म के अनुसार एक प्रकार की अग्नि, तपस्या 3. देहत्याग, मरण।

कार *स्त्री.* (अं.) गाड़ी, मोटर गाड़ी। motor car

कार *पुं.* (तत्.) 1. (यौगिक अर्थ में) क्रिया, कार्य जैसे- उपकार, स्वीकार, अहंकार 2. (समास के अंत में) करनेवाला, बनानेवाला, रचनेवाला जैसे-

ग्रंथकार, साहित्यकार, स्वर्णकार 3. एक शब्द जो वर्णमाला के अक्षरों के आगे लग कर, उनका स्वतंत्र बोध करता है जैसे- चकार, मकार आदि 4. एक शब्द जो अनुकृतिमूलक ध्वनि के साथ लगकर उसका संज्ञावत् बोध कराता है जैसे- फूत्कार, चीत्कार, फुफकार, टंकार, फटकार 5. बर्फ से ढँका पहाड़ हिमालय 6. पूजा की बलि 7. पति 8. चेष्टा।

कार *पुं.* (फा.) 1. कार्य, धंधा यो. कारगुजारी, कारबार, कार्रवाई 2. एक प्रत्यय जो फारसी शब्दों के अंत में जुड़ता हो जैसे- काश्तकार।

कारक *वि.* (तत्.) करनेवाला जैसे- दु:खकारक, वातकारक *पुं.* (तत्.) व्या. संज्ञा या सर्वनाम शब्द की वह अवस्था जिसके द्वारा किसी वाक्य में उसका क्रिया के साथ संबंध प्रकट होता है कारक छह हैं- कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण।

कारकदीपक *पुं.* (तत्.) काव्य में वह अर्थालंकार जिसमें कई एक क्रियाओं का एक ही कर्ता वर्णन किया जाए। जैसे- इत आवति चलिजात उत चलन छ सातक हाथ। चढ़ी हिंडोरे सी रहे लगी उसासनि साथ (बिहारी)।

कारकुन *पुं.* (फा.) 1. किसी के बदले काम करनेवाला, प्रबंधकर्ता 2. कारिंदा।

कारखाना *पुं.* (फा.) 1. वह स्थान जहाँ व्यापार के लिए कोई वस्तु बनाई जाती है जैसे- छापाखाना, बूचड़खाना 2. कारबार, कामकाज, व्यवसाय जैसे- आज कल महाविद्यालय सफेदपोश बाबुओं को ढालने के कारखाने हो गए है 3. घटना, मामला 4. क्रिया।

कारखानेदार *पुं.* (फा.) कारखाने का मालिक।

कारगर *पुं.* (फा.) 1. प्रभावोत्पादक, असरदार जैसे- मैने इस मामले में कई उपाय किए किंतु वे कारगर नहीं हो सके।

कारगुजारी *स्त्री.* (फा.) मुस्तैदी और होशियारी से काम करना, कर्तव्यपालन, होशियारी।

कारचोब *पुं.* (फा.) 1. लकड़ी का एक चौखटा जिस पर कपड़ा तानकर जरदोजी या कसीदे का काम बनाया जाता है, अड्डा 2. जरदोजी का काम करनेवाला, जरदोज 3. गुलकारी का काम जो जरी के तारों को लेकर लकड़ी के चौखटे पर बनाया जाता है।

कारचोबी *स्त्री.* (फा.) जारदोजी, गुलकारी, कशीदाकारी।

कारज *पुं.* (तत्.) कार्य। दे. कार्य।

कारट्रिज *पुं.* (अं.) दफ्ती, टीन, ताँबे आदि का बना हुआ वह आवरण जिसके अंदर बंदूक में रखकर चलाई जानेवाली गोली या छर्रा रहता है, कारतूस।

कारटून *पुं.* (अं.) वह उपहासपूर्ण कल्पित चित्र जिससे किसी घटना या व्यक्ति के संबंध में किसी गूढ रहस्य का ज्ञान होता है, व्यंग्य- चित्र।

कारटूनिस्ट *पुं.* (अं.) व्यंग्य चित्रकार, कार्टून बनाने वाला।

कारड *पुं.* (अं.) दे. कार्ड।

कारण *पुं.* (तत्.) 1. हेतु, वजह, संबंध।

कारणमाला *स्त्री.* (तत्.) 1. हेतुओं की श्रेणी 2. काव्य में एक अलंकार जिसमें किसी कारण से उत्पन्न कार्य पुन: किसी अन्य कार्य का कारण होता हुआ वर्णन किया जाए।

कारणशरीर *पुं.* (तत्.) 1. वेदांत के अनुसार सुषुप्त अवस्था का कल्पित शरीर 2. सूक्ष्मशरीर और स्थूल शरीर से भिन्न शरीर, नैमित्तक शरीर, लिंग शरीर।

कारतूस *पुं.* (पुर्त.) पीतल, दफ्ती आदि की बनी खोली जिसमें छर्रा और बारूद भरी रहती है और उसके एक सिरे पर टोपी लगी रहती है, इसे बंदूक, रिवालवर, राइफल आदि में भरकर चलाते है।

कारबन *पुं.* (अं.) भौतिक सृष्टि के मूल तत्वों में से से एक, यह कारबोनिक एसिड (गैस), कोयला, हीरा आदि में होता है।

कारबन पेपर *पुं.* (अं.) वह गहरे काले या नीले रंग का कागज जिसे कागज के नीचे लगा देते हैं, तथा जिस पर लिखते या टाइप करते है, इस प्रकार उसके माध्यम से लेख की प्रतिलिपि भी साथ साथ तैयार होती जाती है।

कारबार *पुं.* (फा.) कामकाज, व्यापार, पेशा।

कारबारी *वि.* (फा.) कामकाजी।

कारबोलिक *पुं.* (अं.) एक सार पदार्थ जो (पत्थर के) कोयले के तेल या अलकतरे से निकाला जाता है, यह घाव या फोड़े फुंसियों पर कीड़ों को मारने या दूर रखने के लिए लगाया जाता है।

कारयिता *पुं.* (तत्.) सृष्टि करनेवाला, (कार्य) करानेवाला।

कारयित्री *वि.* (तत्.) 1. रचना करने वाली स्त्री 2. प्रेरक शक्ति, वह आंतरिक शक्ति जो रचना के लिए प्रेरित करे।

काररवाई *स्त्री.* (फा.) 1. काम, कृत्य जैसे- अधिकारी ने आपके प्रार्थना पत्र पर कोई काररवाई नहीं की 2. कार्यतत्परता, कर्मण्यता।

कारवाँ *पुं.* (फा.) यात्रियों का झुंड जो एक देश से दूसरे देश की यात्रा करता हो।

कारवाँ सराय *पुं.* (फा.) यात्रियों के रहने का स्थान।

कारस्तानी *स्त्री.* (फा.) 1. कैद, बंधन 2. पीड़ा, कलेश छिपाकर किया गया काम 3. दूती 4. सोनारिन।

कारागार *पुं.* (तत्.) बंदीगृह, कैदखाना।

कारागारिक *पुं.* (तत्.) दे. कारापाल, कारागार संबंधी।

कारागृह *पुं.* (तत्.) कैदखाना, बंदीगृह।

कारापाल *पुं.* (तत्.) कारागारिक, बंदीगृह का रक्षक, या अधिकारी, जेलर।

कारारुद्ध *पुं.* (तत्.) कैद में डाला गया, बंदी।

कारावास *पुं.* (तत्.) कैद, कैदी को बंदीगृह में रहने का दंड।

कारावासी *पुं.* (तत्.) कैदी, बंदी।

कारिंदा *पुं.* (फा.) दूसरे की ओर से काम करनेवाला, कर्मचारी, गुमाश्ता।

कारिका *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी सूत्र की श्लोकबद्ध व्याख्या 2. किसी सूत्र का श्लोकबद्ध विवरण 2. नाटक करनेवाले नट की स्त्री 3. संकीर्ण राग का एक भेद (संगीत) 4. पीड़ा देना, उत्पीड़न 5. ब्याज, सूद 6. व्यापार, वाणिज्य।

कारिख *स्त्री.* (तद्.) 1. कलौंछ, स्याही, कालिमा 2. काजल 3. कलंक, दोष।

कारिणी *वि.* (स्त्री.) (समास के अंत में लगने वाले शब्द) करनेवाली जैसे- हितकारिणी, कार्यकारिणी।

कारित *वि.* (तत्.) कराया हुआ।

कारिस्तानी *स्त्री.* (फा.) गुप्त कार्य।

कारी *वि.* (तत्.) (समास के अंत में लगने वाले शब्द) करनेवाला, बनानेवाला जैसे- गुणकारी, हितकारी।

कारीगर *पुं.* (फा.) हाथ से अच्छी-अच्छी वस्तु बनानेवाला आदमी, धातु, लकड़ी, पत्थर आदि से विशाल और सुंदर वस्तुओं की रचना करनेवाला पुरुष, दस्तकार, शिल्पकार टि. हाथ से निर्माण करने में कुशल, निपुण, हुनरमंद।

कारीगरी *स्त्री.* (फा.) 1. अच्छी-अच्छी वस्तु बनाने की कला, निर्माणकला 2. सुंदर बना हुआ काम, मनोहर रचना उदा. कारीगरी के क्षेत्र में उसका कोई जवाब ही नहीं है।

कारु *वि.* (तत्.) शिल्पी, कारीगर, दस्तकार 1. करनेवाला, बनानेवाला 2. कलावस्तु बनानेवाला, कला का रचयिता 3. यंत्र बनानेवाला 4. भीषण, भयंकर 5. विश्वकर्मा, शिल्प।

कारुक *पुं.* (तत्.) 1. शिल्पी, कारीगर 2. कलाकार 3. बुनकर, जुलाहा।

कारुण्य *पुं.* (तत्.) 1. करुण का भाव 2. वह गुण जो दूसरे के मन में करुणा उत्पन्न करे 3. दया, मेहरबानी।

कारूँ *पुं.* (अर.) 1. हजरत मूसा का चचेरा भाई जो बड़ा धनी था, पर खैरात नहीं करता था, कहा जाता है 40 खच्चरों पर उसके खजानों की कुंजियाँ चलती थी, कंजूसी के कारण अब उसके नाम का अर्थ ही कंजूस पड़ गया है मुहा. कारूँ का खजाना- असीम धन, अनंत संपत्ति, कुबेर की सी संपत्ति 2. कंजूस, मक्खीचूस, कृपण।

कारुणिक *वि.* (तत्.) 1. करुणायुक्त 2. कृपालु, दयालु।

कारोबार *पुं.* (फा.) दे. कारबार।

कार्क *पुं.* (अ.) एक प्रकार की बहुत ही हल्की लकड़ी की छाल जिससे बोतल में लगाने की डाट बनती है।

कार्ड *पुं.* (अं.) 1. मोटा कागज, मोटे कागज का तख्ता 2. पत्ते का कागज 3. छोटे तथा मोटे कागज पर लिखा हुआ खुला पत्र जैसे- पोस्टकार्ड, विजिटिंग कार्ड, प्लेइंग कार्ड।

कार्तवीर्य *पुं.* (तत्.) कृतवीर्य का पुत्र सहस्रार्जुन जो तंत्रशास्त्र का आचार्य माना जाता है, इसके हजार हाथ थे, इसका वध परशुराम ने किया था।

कार्तिक *पुं.* (तत्.) 1. एक चंद्रमास जो आश्विन और अग्रहायण के बीच में पड़ता है 2. वह संवत्सर जिसमें बृहस्पति कृत्तिका या रोहिणी नक्षत्र में हो, वार्हस्पत्य वर्ष 3. कुमार स्कंद का एक विशेषण।

कार्तिकी *स्त्री.* (तत्.) कार्तिक मास की पूर्णिमा तिथि।

कार्तिकेय *पुं.* (तत्.) कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न होने वाले स्कंद, षडानन।

कार्तिकेयप्रसू *स्त्री.* (तत्.) कार्तिकेय की माता, पार्वती।

कार्पण्य *पुं.* (तत्.) 1. कृपण होने का भाव, कृपणता, कंजूसी 2. दया, सहानुभूति 3. गरीबी, निर्धनता।

कार्पास *पुं.* (तत्.) 1. कपास का बड़ा कपड़ा 2. कपास 3. कागज।

कार्पासिक *वि.* (तत्.) कपास से या कपास का बना हुआ।

कार्पासिका *स्त्री.* (तत्.) कपास का पौधा।

कार्पेट *पुं.* (अं.) कालीन, गलीचा।

कार्बन *पुं.* (अं.) दे. कारबन।

कार्मिक *पुं.* (तत्.) 1. कार्य में संलग्न व्यक्ति, काम करनेवाला, सेवारत कर्मचारी 2. वह वस्त्र जिसमें बुनावट में ही शंख, चक्र स्वस्तिक आदि के चिह्न बने हों 3. रंगीन सूत मिला गोटे का काम *वि.* 1. कर्मशील 2. निर्मित, कृत, बनाया हुआ 3. बीच बीच में रंगीन सूत मिला गोटेदार (कपड़ा) 4. अनेक रंगों या डिजायनों के योग से बुना हुआ।

कार्य *पुं.* (तत्.) 1. काम 2. व्यापार, धंधा 3. वह जो कारण से उत्पन्न हो, वह जो कारण का विकार हो, जो कारण के बिना न हो 4. फल, परिणाम 5. नाटक का अंतिम फल 6. आचरण *वि.* 1. करने योग्य 2. बनाने योग्य।

कार्यकर *वि.* (तत्.) 1. उपयोगी, उपादेय 2. काम करनेवाला।

कार्यकर्ता *पुं.* (तत्.) 1. काम करनेवाला, कर्मचारी 2. मित्र, हितकारी।

कार्यकारणभाव *पुं.* (तत्.) 1. कार्य और कारण का संबंध 2. किसी कार्य का विशेष कारण।

कार्यकारण संबंध *पुं.* (तत्.) कार्य और कारण का पारस्परिक योग।

कार्यकाल *पुं.* (तत्.) 1. काम करने का समय 2. सुअवसर 3. किसी पद या स्थान पर रहने का समय।

कार्यक्रम *पुं.* (तत्.) कार्य की सूची, दिए जाने वाले या होनेवाले कामों का क्रम या व्यवस्था। programme

कार्यक्षेत्र *पुं.* (तत्.) कर्मभूमि।

कार्यगौरव *पुं.* (तत्.) 1. कार्य का महत्व 2. कार्य की पूर्ति के प्रति आदर।

कार्यदर्शी *पुं.* (तत्.) काम की देख-भाल करने वाला सचिव, निरीक्षक।

कार्यपद्धति *स्त्री.* (तत्.) काम करने का ढंग।

कार्यभ्रंशकारी *वि.* (तद्.) काम बिगाड़नेवाला।

कार्यवाही *स्त्री.* (तत्.) 1. संस्था या सभा में किसी विषय पर हुआ वाद-विवाद या चर्चा 2. कार्रवाई।

कार्यवृत्त *पुं.* (तत्.) संस्था या सभा में किसी विषय पर हुए वाद विवाद या चर्चा का विवरण।

कार्याकार्य *पुं.* (तत्.) करनेयोग्य और न करने योग्य कार्य, सत् और असत्य कार्य।

कार्याधिकारी *पुं.* (तत्.) वह जिसके सुपुर्द किसी कार्य का प्रबंध आदि हो। officer

कार्याध्यक्ष *पुं.* (तत्.) मुख्य कार्यकर्त्ता। officer

कार्यान्वय *पुं.* (तत्.) दे. कार्यान्वयन।

कार्यान्वयन *वि.* (तत्.) किसी प्रस्ताव आदेश का कार्यरूप में परिणत होना।

कार्यान्वित *पुं.* (तत्.) 1. कार्यरूप में परिणत या प्रयुक्त लागू 2. कार्य से संबद्ध।

कार्यार्थ *पुं.* (तत्.) 1. किसी कार्य का लक्ष्य 2. काम पाने का आवेदनपत्र 3. उद्देश्य।

कार्यार्थी *वि.* (तत्.) 1. कार्य की सिद्धि चाहने वाला 2. काम चाहने वाला व्यक्ति, किसी बैठक, सभा सम्मेलन आदि की कार्यसूची के अनुसार चली समस्त प्रक्रिया जैसे- विचार-विमर्श खंडन-मंडन, निष्कर्ष आदि। proceeding

कार्यालय *पुं.* (तत्.) कार्य करने की जगह या स्थान, सरकारी या गैर सरकारी कार्यकर्ताओं के लिए निर्धारित कार्यानुसार कार्मियों के लिए सुविधा संपन्न कार्यस्थल। office

कार्यालय संवाददाता *पुं.* (तत्.) समाचार पत्र में प्रकाशनार्थ समाचार देने वाला व्यक्ति।

कार्यालय-प्रतिनिधि *पुं.* (तत्.) किसी समाचार पत्र या अन्य सरकारी दफ्तर का अधिकृत वैतनिक कार्यकर्ता या कर्मचारी जो सूचना (समाचार) संकलित करता हो 2. समाचार प्रतिष्ठान द्वारा कार्यालय के अतिरिक्त बाहरी स्थानों से समाचार लाकर प्रस्तुत करने वाला।

कार्यालयीन *वि.* (तत्.) 1. कार्यालय या शासन से संबंधित 2. सार्वजनिक अधिकारी द्वारा अधिसूचित सूचना या विज्ञप्ति जैसे- कार्यालय द्वारा प्रसारित कोई पत्राचार। official

कार्यावलि *स्त्री.* (तद्.) कार्यों की सूची, किए गए या या किए जाने वाले कार्यों का विवरण।

कार्यावली *स्त्री.* (तत्.) दे. कार्यावलि।

कार्यावस्था *स्त्री.* (तत्.) कार्य की अवस्था, नाटय. किसी नाटक में नायक द्वारा शुरू किए गए कार्य कार्य की पाँच अवस्थाएँ, इनके नाम है- आरंभ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति और फलागम।

कार्येक्षण *पुं.* (तत्.) कार्य का निरीक्षण, दूसरों के द्वारा किए गए काम का अवलोकन।

कार्रवाई *स्त्री.* (तद्.) 1. किसी कार्य को करने में होने वाली आवश्यक क्रिया, कार्यवाही 2. किसी सभा या बैठक के विचार-विमर्श पर कार्यवाही 3. विचार-विमर्श से किया गया प्रयास।

कार्श्य *पुं.* (तत्.) कृशता का भाव, दुर्बलता, कमी, अल्पता।

कार्षापण *पुं.* (तत्.) प्राचीन काल में प्रयुक्त होने वाला तांबा, चांदी या सोने का सिक्का जिसका माप अस्सी रत्ती का होता था, धन या सिक्का के अर्थ में प्रयुक्त शब्द।

कार्ष्ण *वि.* (तत्.) कृष्ण या कृष्ण द्वैपायन व्यास से संबंधित, कृष्ण रंग का।

काल *पुं.* (तत्.) 1. कालों का काल अर्थात् महाकाल 2. समय, अवसर, युग, मृत्यु, मौसम, समय का विभाजित रूप जैसे- भूत, वर्तमान, भविष्य मुहा. कालकवलित होना- मृत्यु होना; काल सा लगना- दुखदायी होना; काल नाचना- मृत्यु नजदीक होना *वि.* अतिशय भयोत्पादक ।

कालकंठ *पुं.* (तत्.) महादेव, शिव, मयूर पक्षी, नीलकंठ पक्षी या गौरैया पक्षी।

कालक *वि.* (तत्.) काले रंग का, आँखों का काला हिस्सा, पानी में रहने वाला एक प्रकार का साँप।

काल-कवल *पुं.* (तत्.) 1. काल या मृत्यु का कौर 2. मृत्यु।

काल-कवलित *वि.* (तत्.) जिसे काल ने ग्रास बना लिया हो, मृत व्यक्ति।

कालकूट *पुं.* (तत्.) सागरमंथन से निकला भयंकर तेज विष जिसे शिव ने पी लिया था, हलाहल।

कालकोठरी *स्त्री.* (तत्.+तद्.) दुर्दांत अपराधियों को रखने के लिए बनाया गया अंधेरा कारागार लाक्ष. घुप्प अंधेरे वाला छोटा कमरा।

कालक्रम *पुं.* (तत्.) समय का क्रम, काल की गति, समय गति का निर्देश।

कालक्रम-विपर्यय *पुं.* (तत्.) किसी घटना के काल के संबंध में त्रुटि या वैपरीत्य, काव्य में ऐसे विषयकावर्णन जो संबंधित काल में असंभव हो।

कालक्रमान्वयी *वि.* (तत्.) जो कालक्रम के अनुसार हो।

कालक्रमिक *वि.* (तत्.) जो कालक्रम से संबंधित हो, कालक्रम के अनुसार।

कालक्रमिक कोश *पुं.* (तत्.) ऐसा कोश जिसमें संबंधित काल के साथ-साथ आगामी विकास काल से संबंधित सूचना भी हो।

कालक्षेप *पुं.* (तत्.) समय बिताना, कालयापन, समय बिताकर देरी करना।

कालखंड *पुं.* (तत्.) काल का एक भाग या अंश, थोड़ा समय जैसे- समय के किसी विशेष भाग में किसी काम या घटना का होना उस कालखंड में होना माना जाएगा।

कालचक्र *पुं.* (तत्.) 1. काल रूपी पहिया जिसके घूमने से समय परिवर्तित होता है 2. युग परिवर्तन 3. भाग्य चक्र।

कालचिह्न *पुं.* (तत्.) काल (मृत्यु) समीप होने के लक्षण।

कालजयी *वि.* (तत्.) 1. समय पर विजय प्राप्त कर कर लेने वाला 2. किसी व्यक्ति या वस्तु का काल विशेष में ही श्रेष्ठ न होकर उसकी विशिष्टता युगों तक बने रहने से उसे कालजयी माना जाता है जैसे- कालिदास, व्यास, वाल्मीकि आदि की रचनाएँ कालजयी मानी जाती है।

कालज्ञ *वि.* (तत्.) काल या समय को समझने वाला *पुं.* 1. अवसर को महत्व देने वाला व्यक्ति 2. दैवज्ञ या ज्योतिषी 3. मुर्गा पक्षी।

कालज्ञान *पुं.* (तत्.) 1. काल, समय का ज्ञान 2. समय, कुसमय की जानकारी होना।

कालत्रय *पुं.* (तत्.) भूत, वर्तमान और भविष्य इन तीनों कालों का समुदाय।

कालदंड *पुं.* (तत्.) काल या यमराज का दंड, मरण।

कालदोष *पुं.* (तत्.) काव्य. काव्य में किसी वस्तु या घटना के काल के संबंध में त्रुटि जो उस काल में संभव न हो।

कालधर्म *पुं.* (तत्.) 1. ऐसे आचरण जो किसी समय विशेष के लिए उपयुक्त माने गए हैं 2. किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के समय के अनुकूल सहज गुण धर्म 3. मरण।

कालधारणा *स्त्री.* (तत्.) काल का निर्धारण या समय का ज्ञान।

कालनाथ *पुं.* (तत्.) 1. महादेव 2. महादेव के प्रतिनिधि काल भैरव।

काल निर्धारण *पुं.* (तत्.) काल निश्चय करना भू. गिरिशैलों के समय का आकलन। dating

काल निशा *स्त्री.* (तत्.) 1. भयंकर अंधेरी रात्रि 2. दीपावली की रात-कालरात्रि।

कालनेमि *स्त्री.* (तत्.) 1. काल रूप चक्र की परिधि परिधि 2. कालनेमि नामक लंका का एक राक्षस, जिसे रावण ने लक्ष्मण को शक्ति लगने पर संजीवनी लाने को उद्यत हनुमान के मार्ग में मुनि वेष में बैठकर भ्रमित करने को नियुक्त किया था।

कालपरक *वि.* (तत्.) 1. काल के अनुसार, काल से संबंधित 2. समयाधारित काम पर नियुक्त कर्मचारियों को निर्धारित पारिश्रमिक।

कालपाश *पुं.* (तत्.) 1. यमराज का मृत्यु बंध जिससे किसी की मृत्यु हो 2. मृत्युदंड 3. समय का बंधन या जाल।

कालपाशिक *पुं.* (तत्.) मृत्युदंड प्राप्त अपराधी को, दंड के पाश से बाँधने वाला, या मारने वाला, जल्लाद लाक्ष.अर्थ अत्याचारी क्रूर व्यक्ति।

कालपुरुष *पुं.* (तत्.) 1. कालरूप पुरुष, महाकाल 2. मृत्यु।

कालप्रभाव *पुं.* (तत्.) 1. समय का प्रभाव 2. विज्ञा. पदार्थ में समयानुसार होने वाले परिवर्तन।

कालफल *पुं.* (तत्.) इन्द्रवारुणी वनौषधि लता का फल जिसे इंद्रायन कहते हैं और जो प्राणघातक होता है, अतः उसे कालफल कहते हैं।

कालबंजर *स्त्री.* (तद्.) अत्यधिक पुरानी बंजर भूमि, भूमि, जिसे सरलता से जोता-बोया न जा सके।

कालबाधित *वि.* (तत्.) जिसका समय व्यतीत हो चुका हो।

कालबूत *पुं.* (फा.काल्बुद) एक प्रकार का मिट्टी या लकड़ी का साँचा जिस पर रखकर जूते पगड़ी, टोपी आदि बनाई जाती है।

कालभट *पुं.* (तत्.) काल (यम) का दूत या सेवक।

कालभैरव *पुं.* (तत्.) शिव, शिव का मुख्य गण, जिसकी प्रतिष्ठा काशी में की जाती है।

कालभैरवाष्टमी *स्त्री.* (तत्.) कालभैरव देवता की तिथि, जो मार्गशीर्ष मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को निर्धारित है।

कालम *पुं.* (अ.) 1. खंभा, स्तंभ 2. सैन्यपंक्ति।

कालमान *पुं.* (तत्.) समय का माप।

कालमापी *स्त्री.* (तत्.) घड़ी, टाइमकीपर।

कालमिति *स्त्री.* (तत्.) समय के अन्तर की माप।

कालमुख *पुं.* (तत्.) काले मुँह वाला वानर जिसे लंगूर भी कहते हैं।

कालयापन *पुं.* (तत्.) काल या समय बिताना।

कालयोग *पुं.* (तत्.) 1. भाग्य का प्रभाव 2. अदृष्ट, अदृष्ट, नियति।

कालर *पुं.* (अं.) 1. गले की कंठी या पट्टी जो कैदी या पशु, कुत्ते को लगाई जाती है, 2. कमीज, कोट आदि का कॉलर (देश.) नोनी मिट्टी, ऊसर जमीन।

कालरा *पुं.* (अं.) एक प्रकार का रोग, हैजा।

कालरात *स्त्री.* (तद्.) दे. कालरात्रि।

कालरात्रि *स्त्री.* (तत्.) 1. भयावनी अँधेरी रात 2. प्रलय की वह रात्रि जिसमें सृष्टि का नाश हो जाता है, विनाश की रात्रि 3. दीपावली की रात।

कालवाचक/कालवाची *पुं.* (तत्.) 1. समय का बोध कराने वाला 2. कालवाचक विशेषण।

कालविपाक *पुं.* (तत्.) समय का पूरा हो जाना, काल का परिणाम।

कालशकल *पुं.* (तत्.) समय का कोई भाग या खंड।

कालश्रेणी *स्त्री.* (तत्.) समय-समय पर लिए गए किसी संबंध में आँकड़े time series

कालसर्प *पुं.* (तत्.) काल (मृत्यु) रूपी साँप, अत्यंत जहरीला साँप।

कालांग *वि.* (तत्.) काले शरीर वाला।

कालांतक *पुं.* (तत्.) सबका नाश करने वाला काल नामक देवता।

कालांतर *पुं.* (तत्.) दूसरा समय, समय का अंतर।

कालांतरित *वि.* (तत्.) बीते हुए समय वाला, जिसकी अवधि बीत चुकी है।

कालांश *पुं.* (तत्.) काल का एक भाग, या हिस्सा।

काला *वि.* (तद्.) काले रंग का, अंधेरे से युक्त, दूषित *वि.* मलिन, काला कानून-अन्यायपूर्ण कानून।

काला कलूटा *वि.* (देश.) बहुत अधिक काला, कुरूप।

काला कानून *पुं.* (तद्.) ऐसा कानून जिससे जनसामान्य के प्रति अन्याय हो।

काला तवा *पुं.* (देश.) अत्यंत काले रंग का व्यक्ति।

काला धन *पुं.* (तद्.+तत्.) 1. अनुचित उपायों द्वारा द्वारा प्राप्त और छिपाकर रखा गया धन 2. सरकार से छिपाकर रखा गया गुप्तधन।

काला नमक *पुं.* (तद्.) 1. एक प्रकार का काले रंग का नमक जो पाचन क्रिया को ठीक करने के लिए खाया जाता है 2. औषधिक रूप में प्रयोग में लाया जाने वाला नमक।

काला नाग *पुं.* (तद्.+तत्.) काला (भयंकर) सर्प लाक्ष. अत्यंत दुष्ट व्यक्ति के लिए 'काला नाग' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

काला बगला *पुं.* (तद्.) चितकबरे रंग का एक जलपक्षी जिसका आकार छोटे बगुले सा होता है।

काला बाजार *पुं.* (तद्.+फा.) वस्तु-विक्रय का वह बाजार जहाँ निर्धारित की अपेक्षा अधिक दर पर लोगों को दुर्लभ चीजें बेच दी जाती हैं।

काला बाजारी *स्त्री.* (तद्.+फा.) चोरी-छिपे अधिक दाम पर दुर्लभ वस्तुओं का विक्रय। चोरबाजारी।

काला बारूद *पुं.* (तत्.+फा.) रसा. एक विस्फोटक पदार्थ जिसे पोटेशियम नाइट्रेट, गंधक और कोयला से बनाया जाता है।

काला भुजंग *वि.* (तद्.+तत्.) काले साँप के समान बहुत काला व्यक्ति, काला नाग।

कालाक्षर *पुं.* (तद्.) सरलता से न पढ़ने योग्य लेख।

कालाक्षरिक *वि.* (तद्.+तत्.) कालाक्षर पढ़ने का विशेषज्ञ।

कालाक्षरी *वि.* (तद्.+तत्.) दे. कालाक्षरिक।

कालागुरु *पुं.* (तद्.+तत्.) एक प्रकार का अगरु या सुगंधित वृक्ष की लकड़ी।

कालाग्नि *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रलयकालीन आग 2. प्रलयंकारी शिव का रौद्र रूप।

कालाचोर *पुं.* (तद्.) सिद्धहस्त चोर, चौरकर्म में निपुण।

कालाजार *पुं.* (तद्.+फा.आजार) एक प्रकार का संक्रामक और घातक ज्वर, जिसमें यकृत और प्लीहा बढक़र शरीर में रक्त की कमी करते हैं, इसे 'कालाज्वर' नामक रोग भी कहते हैं।

कालातिक्रमण *पुं.* (तत्.) समय का बीत जाना, विलंब होना।

कालातिपात *पुं.* (तत्.) समय बीतना, समय नष्ट होना, देर होना।

कालातिरेक *पुं.* (तत्.) दे. कालातिपात।

कालातीत *वि.* (तत्.) जिसका समय बीत गया हो, बीते हुए समय वाला, अवैध।

कालात्यय *पुं.* (तत्.) समय व्यतीत होना, समय नष्ट होना।

कालानल *पुं.* (तत्.) प्रलय काल की अग्नि, शिव का रौद्ररूप।

कालानुक्रम *पुं.* (तत्.) 1. समय की क्रमपूर्ण व्यवस्था 2. इति. ऐतिहासिक घटनाओं/विवरणों का पूर्व, पश्चात् क्रम से संयोजन 3. कालविभाजन का विज्ञान। cronology

कालानुक्रमिकी *स्त्री.* (तत्.) भूवि. काल के विभाजित क्रम के अनुसार समय का मापन कर घटनाओं/विवरणों का तिथि-निर्धारण करने वाला विज्ञान।

कालापानी *पुं.* (तद्.) 1. देश निष्कासन का दंड 2. अंग्रेजी सरकार भारतीयों को कालापानी का दंड देकर अंडमान द्वीप भेजती थी, अतः वह द्वीप 'कालापानी' के नाम से जाना जाने लगा 3. बंगाल की खाड़ी का काला पानी वाला अंश चिकि. नेत्ररोग जो क्रमशः ज्योति कम करके व्यक्ति को अंधा बना बना देता है, उसे ग्लूकोमा कहते हैं।

कालाभ्र *पुं.* (तत्.) काला मेघ, काला बादल जो पानी से भरे होने का प्रतीक बन जाता है और बरसता है।

कालावधि *स्त्री.* (तत्.) समय की निश्चित सीमा, परिपक्वता की अवधि या मियाद।

कालाशुद्धि *पुं.* (तत्.) 1. शुभकाम के लिए शास्त्र निषिद्ध दोषपूर्ण समय 2. किसी के जन्म के समय 'जननाशौच' तथा मृत्यु होने पर 'मरणशौच' के कुछ दिन।

कालिंग *वि.* (तत्.) 1. कलिंग देश से संबधित 2. हाथी।

कालिंगड़ा *पुं.* (तद्.) संगी. एक प्रकार का राग जो रात के अंतिम पहर में गाया जाता है।

कालिंदी *स्त्री.* (तत्.) 1. यमुना नदी 2. कृष्ण की एक पत्नी का नाम।

कालि *क्रि.वि.* (देश.) आने वाला कल या अगला दिन।

कालिक *वि.* (तत्.) काल संबंधी, समय पर आश्रित *पुं.* नियमित समय पर होने वाला।

कालिका *स्त्री.* (तत्.) काले रंग की, दुर्गा का एक रूप-काली।

कालिकेय *पुं.* (तत्.) एक असुर का नाम।

कालिख *स्त्री.* (तद्.) कालिमा, काला मैल।

कालिज *पुं.* (अं.) कॉलेज, महाविद्यालय।

कालिमा *स्त्री.* (तत्.) कालापन या कालिख, अँधेरा लाक्ष. दोष, कलंक।

कालिय दमन *पुं.* (तत्.) कालियनाग का दमन करने वाला, कृष्ण।

कालियमर्दन *पुं.* (तत्.) दे. कालियदमन।

काली *वि.* (देश.) काले रंग वाली।

काली करतूत *स्त्री.* (देश.) ऐसा काम जिसमें लांछन लगे, शर्मनाक करतूत।

काली छाया *स्त्री.* (तद्.+तत्.) अशुभ होने का संदेह संदेह मुहा. काली छाया मँडराना।

काली जबान *स्त्री.* (तद्.+फा.) ऐसी जिह्वा जिससे निकली बात अशुभ हो।

काली मिट्टी *स्त्री.* (तद्.) एक प्रकार की चिकनी मिट्टी जो काले रंग की होती है और लीपने-पोतने के काम आती है।

काली मिर्च *स्त्री.* (देश.) काले रंग का गोल और छोटाफल जिसका स्वाद कड़ुवा होता है तथा औषधीय गुण वाला होता है, यह भारत के अतिरिक्त सिंगापुर, मलाया, दक्षिणी द्वीपसमूह आदि में होता है।

काली सूची *स्त्री.* (तद्.+तत्.) ऐसी सूची/नामावली जिसमें अनुपयोगी व्यक्तियों, देशों आदि के नाम उल्लिखित हों।

काली हरड़ *स्त्री.* (देश.) छोटी हरड़ (काली छोटी हरड़ पाचन क्रिया को ठीक करने के लिए उपयोगी औषधि मानी गई है)।

कालीन *पुं.* (तुर्की.) मोटा, ऊनी गलीचा, जिसे फर्श पर बिछाया जाता है।

कालीय *वि.* (तत्.) काल से संबंधित।

कालुष्य *पुं.* (तत्.) कालापन, बुराई लाक्ष.अर्थ दोष, लांछन।

कालेश *पुं.* (तत्.) काल का स्वामी, सूर्य, शिव।

कालौंच/कालौंछ *पुं.* (देश.) कालुष्य, कालापन, दोष लाक्ष. कलंक।

कालोनी *स्त्री.* (अं.) लोगों के रहने के भवन वाली बस्ती, उपनगरी।

काल्पनिक *वि.* (अं.) कल्पना से बनाया गया, कहा गया, जो वास्तविक न हो, स्वयं गढ़ी गई बात।

काल्य *वि.* (तत्.) 1. काल या अवसर के अनुसार 2. प्रातःकाल का समय या कृत्य।

काल्ह/काल्हि *क्रि.वि.* (तद्.) आने वाला कल, बीता हुआ कल।

कावड़िया/काँवरिया *पुं.* (देश.) काँवर लेकर तीर्थयात्रा करने वाला व्यक्ति।

कावा *पुं.* (अर.-काब:) 1. मक्के की एक इमारत, जिसे मुसलमान ईश्वर का घर समझते हैं 2. चक्कर, चौकोर।

काव्य *पुं.* (तत्.) 1. कविता करने का काम, कविकर्म, 2. कविता के नियमों अथवा छंद शास्त्रानुकूल रचित रचना।

काव्य चोर *पुं.* (तद्.) किसी दूसरे कवि की कविता की चोरी करने वाला।

काव्य-दोष *पुं.* (तत्.) किसी कविता या काव्य के सौंदर्य/रस की हानि करने वाले तत्व, काव्यग्रंथों में कविता के तीन दोषों का उल्लेख मिलता है- शब्द दोष, अर्थदोष, रसदोष।

काव्यन्याय *पुं.* (तत्.) काव्य. काव्य के लिए उपयुक्त न्याय।

काव्य प्रयोजन *पुं.* (तत्.) काव्य या काव्य-रचना का उद्देश्य, (काव्य समीक्षकों ने काव्य के पाँच मुख्य उद्देश्य बताए हैं, यश की प्राप्ति, धन का लाभ, व्यावहारिक ज्ञान, अमंगल का अपहार और अलौकिक आनंद की प्राप्ति।

काव्यलिंग *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का अर्थालंकार, इस अर्थालंकार में पद के द्वारा किसी कथन का कारण बताए जाने का चमत्कार होता है।

काव्यहरण *पुं.* (तत्.) किसी कवि की रचना को स्वयं के नाम से प्रसिद्ध कर देना।

काव्यानुभूति *स्त्री.* (तत्.) 1. काव्य की आनंदमयी अनुभूति 2. रसानुभूति या सौंदर्यानुभूति।

काव्यार्थापत्ति *स्त्री.* (तत्.) अर्थापत्ति नामक एक अलंकार, इस अर्थालंकार में कठिनता से सरल कार्य की सिद्धि का कथन होता है।

काव्योचित न्याय *पुं.* (तत्.) किसी काव्य में दुष्टों का दुखद अंत और सज्जनों के सुखद अंत का वर्णन।

काश *पुं.* (अर.) 1. ईश्वर करे, खुदा करे 2. शीशा, काँच।

काश *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार की घास जिसमे सफेद फूल होते हैं 2. खाँसी का रोग 3. प्रकाश, चमक।

काशिका *स्त्री.* (तत्.) काशी नगरी का एक नाम, पाणिनि की अष्टाध्यायी की प्रसिद्ध टीका *वि.* प्रकाशित करने वाली।

काशिराज *पुं.* (तत्.) काशी का राजा।

काशी *पुं.* (तत्.) प्राचीन भारत के एक राज्य का नाम, काशी राज्य की राजधानी, उसे वाराणसी भी कहते है।

काशी-करवट *पुं.* (तत्.+तद्.) भारतीय मान्यता के अनुसार काशी में मृत्यु होने से मुक्ति मिलती है और इसके लिए लोग काशी जाकर प्राण छोड़ते हैं इसे काशी करवट कहते हैं और इसे पुण्यदायक माना जाता है, काशी में एक स्थान निर्धारित है जिसे काशी करवट कहते हैं।

काशीफल *पुं.* (तत्.) एक फल जिसे कद्दू कहते हैं और सब्जी के रूप में खाते हैं।

काश्त *स्त्री.* (फा.) खेती, खेत की जगह, कृषि काश्तः (फा.) *वि.* जोता-बोया (जिस पर कृषि की गयी हो)।

काश्तकार *वि.* (फा.) कृषि का काम करने वाला, कृषक।

काश्तकारी *स्त्री.* (फा.) खेती या कृषि का काम, किसानी।

काश्मीरा *पुं.* (तत्.) मोटा ऊनी कपड़ा टि. (ऊनी कपड़े प्रायः काश्मीर में निर्मित होने के कारण 'काश्मीरा' शब्द उससे संबद्ध माना जाता है।

काश्मीरी *वि.* (तत्.) काश्मीर में उपलब्ध होने वाला या उत्पन्न होने वाला व्यक्ति, वस्तु आदि।

काश्यप *वि.* (तत्.) कश्यप ऋषि के वंश या गोत्र से संबंधित, कश्यप वंशज।

काश्यपि *पुं.* (तत्.) 1. गरुड़ 2. सूर्य का सारथी अरुण।

काश्यपी *स्त्री.* (तत्.) धरती या पृथ्वी।

काश्यपेय *पुं.* (तत्.) 1. कश्यप ऋषि के पुत्र 2. सूर्य के सारथी अरुण, गरुड़।

काष *पुं.* (तत्.) 1. परख करने की कसौटी 2. धारदार चीज पर धार चढ़ाने का पत्थर।

काषाय *वि.* (तत्.) जिसे कसैले या गेरुए रंग में रँगा गया हो। गेरुआ, कसैली वस्तुओं के रस में रँगा गया कपड़ा (गेरुआ वस्त्र)।

काष्ठ *पुं.* (तत्.) लकड़ी या काठ। लकड़ी का लट्ठा, ईंधन।

काष्ठ-कीट *पुं.* (तत्.) लकड़ी में लगने वाला घुन या या कीड़ा।

काष्ठ-कुट्टिम *पुं.* (तत्.) लकड़ी जड़ा फर्श या लकड़ी का फर्श।

काष्ठ-तक्ष *पुं.* (तत्.) लकड़ी चीरने वाला।

काष्ठ-तक्षक *पुं.* (तत्.) लकड़ी चीरने/काटने का काम करने वाला कर्मकार या बढ़ई, लकड़हारा।

काष्ठ-दारु *पुं.* (तत्.) देवदारु नामक वृक्ष, ढाक या पलाश का पेड़।

काष्ठ-पुत्तलिका *स्त्री.* (तत्.) काठ की पुतली, कठपुतली।

काष्ठ-प्राचीर *पुं.* (तत्.) लकड़ी की चारदीवारी या दीवाल।

काष्ठभारिक *पुं.* (तत्.) काष्ठ (लकड़ी) का भार ढोने ढोने वाला, लकड़हारा।

काष्ठा *स्त्री.* (तत्.) 1. जगत का कोई भाग या प्रदेश प्रदेश अथवा दिशा 2. उन्नति, ऊँचाई 3. समय का एक अंश या माप जो 18 पल के बराबर होता है।

काष्ठागार *पुं.* (तत्.) लकड़ी का बना महल या घर। घर।

काष्ठिक *वि.* (तत्.) जो लकड़ी से संबंधित या लकड़ी से निर्मित हो *पुं.* काष्ठवाहक (लकड़हारा)।

काष्ठिका *स्त्री.* (तत्.) लकड़ी का टुकड़ा। लकड़ी से संबंधित।

काष्ठीय *वि.* (तत्.) लकड़ी से संबंधित, लकड़ी का।

काष्ठौषधि *स्त्री.* (तत्.) 1. ऐसी लकड़ी जो औषधि के रूप में प्रयुक्त होती हो 2. जड़ी-बूटी।

कास *पुं.* (तत्.) 1. खाँसी या कास का रोग 2. सहिजन का पेड़ 3. एक प्रकार की वनस्पति जो प्राय: नदियों या तालाबों के किनारे शरद् ऋतु में उगती है।

कासघ्न *पुं.* (तत्.) कास (खाँसी) रोग को नष्ट करने वाली औषधि *वि.* खाँसी दूर करने वाली।

कासनी *स्त्री.* (फा.) एक वनस्पति जिसमें नीले आसमानी रंग के फूल आते हैं और जिसके बीज औषधि के रूप में काम आते हैं *वि.* आसमानी नीला रंग।

कासा *पुं.* (फा.) 1. पियाला (प्याला), चषक 2. खाना, आहार 3. काँसे का बर्तन, थाली 4. भिक्षापात्र।

कासार *पुं.* (तत्.) 1. सरोवर, तालाब या झील 2. एक वर्णिक छंद का भेद।

कासिद *पुं.* (फ़ा.) पत्र ले जाने वाला, संदेशवाहक *वि.* जिसका प्रचलन न हो, जाली या खोटा।

कासी *स्त्री.* (तद्.) काशी शब्द के लिए प्रयुक्त।

कासीस *पुं.* (देश.) लोहे और गंधक का यौगिक जिसका रंग हरा होता है।

कासु *सर्व./वि.* (देश.) किससे, किस को।

कासूँ/कासौं *पुं.* (देश.) दे. कासु।

कास्टर ऑयल *पुं.* (अं.) एरंड का तेल (औषधि के रूप में प्रयुक्त होने वाला अरंडी का तेल अत्यंत लाभप्रद माना गया है)।

कास्टिक सोडा *पुं.* (अं.) कपड़े धोने वाला सोडा।

कास्मिक किरणें *स्त्री.* (अं+तत्.) भौति. सौरमंडल में संचरण करने वाली सभी दिशाओं से पृथ्वी पर उतरने वाली किरणे।

काह *क्रि.वि.* (तद्.) क्या, कौन सी चीज।

काहल *पुं.* (तत्.) 1. बिलाड़ 2. एक पक्षी-मुर्गा 3. ध्वनि जो स्पष्ट न हो 4. कर्कश/कठोर ध्वनि करने वाला, ढोल।

काहिं *क्रि.वि.* (देश.) कैसे।

काहि *सर्व.* (देश.) किसको या किसे *क्रि.वि.* किसके लिए।

काहिल *वि.* (फा.) आलसी, सुस्त।

काहीं *पुं.* (देश.) दे. काहिं।

काही *वि.* (फा.) घास जैसा हरा-काला रंग।

काहु *सर्व.* (देश.) किसको या किसी को, कोई।

काहू *सर्व.* (देश.) किसी के या कोई।

काहें *सर्व.* (देश.) किससे *क्रि.वि.* किसलिए, क्यो।

काहे *क्रि.वि.* (देश.) किसलिए, किस प्रकार।

किंकर *पुं.* (तत्.) सेवक, दास या नौकर।

किंकर्तव्यविमूढ *वि.* (तत्.) क्या करना है, क्या नहीं करना है यह निर्णय करने में जो असमर्थ हो।

किंकिणी *स्त्री.* (तत्.) 1. बजने वाली घंटियों से युक्त कमर का आभूषण 2. ध्वनि करने वाला गहना।

किंकिर *पुं.* (तत्.) 1. अश्व 2. कोयल 3. कामदेव 4. भौंरा।

किंगरि *स्त्री.* (तद्.) 1. वाद्ययंत्र 2. भर्तृहरि (भरथरी) संप्रदाय के लोगों द्वारा गीत गाकर बजाया जाने वाला वाद्य या चिकारा।

किंच *अव्यय.* (तत्.) 1. किंतु, लेकिन 2. और क्या।

किंचन *क्रि.वि.* (तत्.) अल्पमात्रा में, थोड़ा सा, कुछ-कुछ।

किंचित् *क्रि.वि.* (तत्.) थोड़ा सा, कुछ-कुछ।

किंचित्कर *वि.* (तत्.) थोड़ा करने वाला, कुछ करने वाला।

किंचित्काल *पुं.* (तत्.) कुछ समय।

किंचित्प्राण *वि.* (तत्.) अल्पप्राण वाला, थोड़े जीवन वाला।

किंचिन्मात्र *वि.* (तत्.) बहुत थोड़ा।

किंछा *पुं.* (देशज.) जल का छिटका।

किंजल्क *पुं.* (तत्.) कमल पुष्प का पीले रंग का पराग, या कमल का फूल।

किंडरगार्टन *पुं.* (अं.) शि.वि. 1. शिक्षाविज्ञान में निर्दिष्ट शिक्षा की एक ऐसी पद्धति जिसमें बालक-बालक-बालिकाओं को प्रांरभिक स्तर पर शिक्षा देने के लिए खेलविधि को अपनाया जाता है 2. बाल विहार 3. खेलकूद द्वारा बच्चों की शिक्षा की की व्यवस्था का स्थान।

किंतु *अव्य.* (तत्.) लेकिन, तब भी।

किंपुरुष *पुं.* (तत्.) कायर व्यकित या कायर पुरुष।

किंभूत *वि.* (तत्.) किस प्रकार का, कैसी प्रकृति का।

किंरूप *वि.* (तत्.) किस रूप का, कौन सी शक्ल वाला।

किंवदंती *स्त्री.* (तत्.) 1. परंपरा से सुनी जाने वाली वाली बात 2. लोकश्रुति, केवल सुनी हुई बात।

किंशुक *पुं.* (तत्.) पलाश या टेसू का पेड़ अथवा फूल।

किंसुक *पुं.* (तद्.) दे. किंशुक।

कि *क्रि.वि.* (देश.) 1. अथवा, किस रीति से।

किकियाना *अ.क्रि.* (देश.) 'की' की ध्वनि करके चिल्लाना, दुखी होकर रोना।

किचकिच *स्त्री.* (देश.) व्यर्थ की बकवास या विवाद।

किचकिचाना *अ.क्रि.* (अनु.) दाँत रगड़कर वाद-विवाद करना, व्यर्थ विवाद करना।

किचपिच *स्त्री.* (अनु.) 1. कीचड़ भरा, पंकिल 2. भीड़भरा 3. दुर्दशा 4. व्यर्थ बकवास *वि.* स्पष्टता रहित।

किचरपिचर *स्त्री.* (अनु.) दे. किचपिच।

किछु *वि.* (देश.) कुछ, थोड़ा *क्रि.वि.* कुछ भी।

किजाकी *स्त्री.* (तत्.) 1. डाका डालना, दस्युवृत्ति 2. 2. शठता 3. चतुरपन।

किटकिट *स्त्री.* (अनु.) 1. दाँतों के टकराने से उत्पन्न ध्वनि 2. निरर्थक वाद विवाद 3. कलह।

किटकिटाना *अ.क्रि.* (अनु.) दाँतों की टकराहट की ध्वनि *स.क्रि.* क्रोध में दाँत किटकिटाना 2. व्यर्थ कलह करना।

किट्ट *पुं.* (तत्.) 1. तेल आदि द्रव पदार्थ की गंदगी जो बर्तन में नीचे जम जाती है, मलिन तत्व 2. किसी वस्तु या लोहे पर जमा मैल या जंग कृषि. एक प्रकार का रोग जिसमें पौधा जंग लगा दिखाई पड़ता है।

किडनी *स्त्री.* (अं.) गुर्दा, शरीर का एक आंतरिक अंग। kidney

किड़ाना *पुं.* (देश.) 1. कीड़े उत्पन्न होना 2. विकृत होकर सड़ जाना।

किण *पुं.* (तत्.) 1. रगड़ के कारण हाथ में पड़ने वाला निशान 2. घाव जैसा निशान 3. तिल का निशान 4. लकड़ी में लगने वाला कीड़ा, घुन *सर्व.* किसने।

किणकिण *पुं.* (अनु.) आभूषण की ध्वनि।

किणता *स्त्री.* (तत्.) कड़ापन, कठोरता।

किण्व *पुं.* (तत्.) 1. दुर्गुण 2. उफान या उबाल आना।

किण्वन *पुं.* (तत्.) दे. किण्व।

किण्वभोज *पुं.* (तत्.) जिसपर उबाल आए, ऐसा पदार्थ।

किण्वित *वि.* (तत्.) उबाल लाया गया वस्तु, पदार्थ।

कित *क्रि.वि.* (तद्.) किस दिशा में, किस ओर, कहाँ, *वि.* कितनी मात्रा, कितना।

कितउ *क्रि.वि.* (देश.) कहीं या कहीं भी।

कितक *क्रि.वि.* (तद्.) कितना, कहाँ *वि.* कई।

कितन *क्रि.वि.* (देश.) कितना।

कितना *वि.* (देश.) कितनी मात्रा का।

कितव *पुं.* (तत्.) 1. द्यूत (जुआ) खेलने वाला 2. धूर्त, शठ, छली 3. पागल 4. धतूरे का फल *वि.* कपटी, छली।

किता *पुं.* (अर.) 1. भूमिखंड। काव्य. उर्दू और फारसी कविता का एक भेद जिसकी तुलना गजल से की जाती है।

किताब *स्त्री.* (अर.) 1. ग्रंथ, पुस्तक 2. व्यापारियों का बही खात मुहा. किताब का कीड़ा- वह व्यक्ति जो हर समय किताब पढ़ने में लगा रहता है; किताब चाटना- पूरी किताब अच्छी तरह पढ़ लेना।

किताबत *पुं.* (अर.) लिखने का काम।

किताबी *वि.* (अर.) 1. पुस्तक से संबंधित 2. पुस्तक लिखित 3. जो केवल पुस्तक में हो व्यवहार में दिखाई न दे।

किताबी कीड़ा *पुं.* (अर.+तत्.) 1. किताब में लगने वाली दीमक 2. हमेशा पढ़ते रहने वाला व्यक्ति।

किताबी ज्ञान *पुं.* (अर.+तत्.) केवल पुस्तक से संबंधित ज्ञान।

कितिक *वि.* (देश.) कितने परिमाण का *क्रि.वि.* अधिम मात्रा।

किते/कितेक *वि.* (देश.) कितना, अनेक।

कितेब *वि.* (तद्.) कपटी, धूर्त।

कितै *क्रि.वि.* (देश.) किस स्थान पर, कहाँ।

कितौ *क्रि.वि.* (देश.) कितना।

किधर *क्रि.वि.* (देश.) किस तरफ, किस दिशा में।

किधौं *अव्य.* (देश.) या तो, अथवा संभवतः।

किन *पुं.* (देश.) कठोर वस्तु की रगड़ से त्वचा पर पड़ा निशान।

किनका *पुं.* (देश.) अनाज का टूटा कण या दाना।

किनकिना *क्रि.अ.* (देश.) धीरे-धीरे रोना।

किनकी *स्त्री.* (तद्.) अनाज की छोटी कणिका।

किनना *क्रि.स.* (तद्.) क्रय करना, खरीदना, मोलभाव करना।

किनर-मिनर *स्त्री.* (देश.) 1. निन्दाभाव 2. नाक भौं सिकोड़ने की क्रिया।

किनवानी *स्त्री.* (देश.) पानी के बूंदों की फुहार।

किनहा *वि.* (देशज.) सड़ा हुआ, कीड़ा लगा हुआ।

किनाठी *स्त्री.* (देश.) मिट्टी के बर्तन के मुँह का किनारा या कोर।

किनाती *स्त्री.* (देश.) एक पक्षी जो तालाब के किनारे रहता है और उसका रंग सफेद तथा चोंच हरी होती है।

किनाना *वि.* (देश.) 1. क्रय किया गया, खरीदा गया 2. वश में किया हुआ।

किनार *स्त्री.* (देश.) किनारा।

किनारदार *वि.* (देश.) किनारे वाला।

किनारा *पुं.* (फा.) 1. छोर 2. विस्तार का अंतिम हिस्सा मुहा. किनारा खींचना- दूर हो जाना या अलग हो जाना; किनारा मिलना- प्रतिबंध रहित हो जाना या बंधनमुक्त हो जाना; किनारे लगाना- संकटमुक्त हो जाना; किनारे पहुँचना- कार्य का अंत कर देना।

किनाराकशी *स्त्री.* (फा.) अलग हो जाना।

किनारी *स्त्री.* (फा.) कपड़ों के किनारे लगाये जाने वाला रंगदार गोटा।

किनारीदार *वि.* (फा.) जिसमें किनारी लगी हो।

किनारे *क्रि.वि.* (फा.) 1. तट पर स्थित 2. पृथक।

किनारे-किनारे *क्रि.वि.* (फा.) दूरी पर, अलग।

किफ़ायत *स्त्री.* (अर.) कम खर्च करना, मितव्ययिता।

किफ़ायतशिआरी *स्त्री.* (अर.) व्यय करने में कमी, कम खर्च करना।

किफायती *वि.* (अर.) किफायत करने वाला, कम खर्च करने वाला, कम खर्च वाली वस्तु।

किबला *पुं.* (अर.) 1. अरब के मक्का शहर का एक स्थान जहाँ विशेष काला पत्थर स्थित है और जिसकी ओर मुँह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं, काबा 2. सम्माननीय व्यक्तियों के लिए प्रयोज्य संबोधन का शब्द या आदरणीय व्यक्ति 3. पश्चिम दिशा।

किमाम *पुं.* (अर.) गाढ़ा किया हुआ रस। खमीर (किमाम का प्रयोग पान खाने के साथ किया जाता है)।

किमि *क्रि.वि.* (तद्.) कैसे, किस रीति से।

कियत्काल *पुं.* (तत्.) कुछ समय।

किया-कराया *वि.* (देश.) स्वयं किया गया और अन्यों से कराया गया काम मुहा. किए-कराए पर पानी फेरना- पूरा श्रम निष्फल कर देना; किया कराया मिट्टी में मिलना/किए कराए पर पानी फिरना- किया हुआ प्रयास नष्ट हो जाना।

कियाह *पुं.* (तद्.) 1. लाल रंग 2. लाल रंग का घोड़ा।

किरका *पुं.* (तद्.) पत्थर का छोटा टुकड़ा, कंकड़, किरकिरा जैसे- प्रायः अन्न के साथ छोटे किरकिरे मिले होते हैं।

किर-किर *स्त्री.* (अनु.) कुछ खाने में दाँत के नीचे पत्थर के कण के आ जाने से होने वाली किर-किर की ध्वनि।

किरकिरा *वि.* (देश.) 1. कंकड़ का छोटा कण वाला अंश जो भोज्य पदार्थ में होता है 2. किरकिराहट उत्पन्न करने वाला।

किरकिरी *वि.* (देश.) 1. छोटी कनी या कण 2. अनादर या अपमान।

किरकिल *पुं.* (तद्.) गिरगिट।

किरकिला *पुं.* (देश.) एक पक्षी।

किरच *स्त्री.* (देश.) 1. काँच का छोटा टुकड़ा 2. माला का एक दाना 3. एक प्रकार की छोटी तलवार।

किरचिया *पुं.* (देश.) एक पक्षी जिसकी आकृति बगुले जैसी होती है।

किरची *पुं.* (देश.) रेशमी सूत की लच्छी।

किरण *स्त्री.* (तद्.) प्रकाश की रेखा।

किरण केतु *पुं.* (तत्.) सूरज, जिसके पास किरणों का ध्वज हो।

किरणदल *पुं.* (तत्.) किरणों का समुदाय, रश्मिमाला।

किरणन *पुं.* (तत्.) किरण उत्पन्न करना या किरणें डालना, फैलाना, विकिरण भौति. एक्सकिरण, गामा किरण, परावैंगनीकिरण आदि किरणों का किसी व्यक्ति, पदार्थ पर फैलाना eradiation

किरणपति *पुं.* (तत्.) दिनपति, किरणों का स्वामी-सूर्य।

किरणमाली *पुं.* (तत्.) जो किरणों की माला धारण करे- सूर्य, रश्मिमाली।

किरणीयन *पुं.* (तद्.) विकिरणीकरण वन. पौधों के रूप और गुण में वृद्धि के लिए बीज, पराग तथा दूसरे भागों में विकिरण करना eradiation

किरदार *पुं.* (फा.+कर्दार) 1. व्यवहार, आचरण 2. किसी के आचरण या चरित्र को व्यवहार में लाना।

किरना *स.क्रि.* (तद्.) 1. इधर-उधर बिखर जाना, फैल जाना 2. धारदार वस्तु का कुंठित हो जाना।

किरनीला *वि.* (देश.) जिसमें किरणे हों, चमकदार।

किरनीलापन *पुं.* (तद्.) चमकने या प्रकाशित होने का भाव।

किरमई *स्त्री.* (देश.) लाख का एक प्रकार।

किरमाला *पुं.* (तद्.) कृतमाला या अमलतास का पेड़ जो आयुर्वेद में औषधोपयोगी माना जाता है टि. अमलतास वृक्ष की पत्तियाँ, लंबी फली, पीले फूल छाल, बीज, फल और गूदा आदि सभी ओषधि के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

किरमिच *पुं.* (देश.) एक प्रकार का मोटा कपड़ा, जिससे जूते बनाए जाते हैं।

किरमिज *पुं.* (तद्.) 'कृमिज' का तद्भव रूप 1. मटमैला लाल रंग 2. एक प्रकार का घोड़ा जिसका रंग मटमैले रंग का होता है।

किरमिजी *वि.* (तद्.) मटमैले लाल रंग वाला।

किरराना *अ.क्रि.* (अनु.) कीर या तोता पक्षी का बोलना।

किरसानी *पुं.* (तद्.) 1. कृषक, कृषि कर्म करने वाला 2. किसान का काम या किसानी।

किराएदार *पुं.* (फा.) 1. किराए पर कोई वस्तु आदि लेने वाला या किराया देने वाला 2. किराए पर घर लेकर रहने वाला।

किराएदारी *स्त्री.* (फा.) 1. किराए पर कोई वस्तु लेना 2. किराए पर घर लेकर रहना।

किरात *पुं.* (तद्.) 1. वनवासी जाति का व्यक्ति 2. प्राचीन वनवासी भील, कोल आदि जाति।

किरात-पति *पुं.* (तत्.) महादेव टि. भील कोल जाति के स्वामी शिव को माना जाता है।

किरातिनी *स्त्री.* (तत्.) किरात की पत्नी।

किराती *स्त्री.* (तद्.) 1. किरातजाति की स्त्री 2. दुष्ट दुष्ट महिला 3. दुर्गा का एक नाम।

किरान *अव्य.* (अर.) पास, निकट।

किराना *स.क्रि.* (तद्.) 1. वस्तु को बिखेरना या गिराना 2. पंसारी की दुकान पर मिलने वाली चीजें।

किरानी *पुं.* (तद्.) 1. कार्यालय में लिखित काम करने वाला कर्मचारी *पुं.* (अं.) 1. ईसाई 2. भारतीय और यूरोपीय माता-पिता की संतान।

किराया *पुं.* (अरबी-किराय:) वह धनराशि जो वस्तु के प्रयोग करने के बदले, वस्तु के स्वामी को दी जाय।

किरायानामा *पुं.* (अर.) किराए पर वस्तु लेने की संविदा।

किरायेदार *पुं.* (फा.) किराए पर कोई वस्तु लेने वाला, किराया देने वाला।

किरावल *पुं.* (तुर्की.) 1. एक सैनिक टुकड़ी जो आगे-आगे चलकर मैदान साफ करती है 2. शिकार करने वाला।

किरिच *स्त्री.* (देश.) काँच आदि का छोटा टुकड़ा।

किरिया *स्त्री.* (तद्.) 1. क्रिया-कर्म 2. मृतक व्यक्ति व्यक्ति का कर्म।

किरीट *पुं.* (तत्.) 1. मुकुट 2. खगो. सूर्य का प्रभामंडल।

किरीटधारी *पुं.* (तत्.) मुकुट धारण करने वाला।

किरीटमाल *स्त्री.* (तत्.) मुकुटों की माला या समूह। समूह।

किरीटमाली *पुं.* (तत्.) 1. मुकुट की माला धारण करने वाला 2. अर्जुन।

किरीटमुकुट *पुं.* (तत्.) मुकुटों से सुसज्जित बड़ा मुकुट।

किरीटी *वि.* (तत्.) 1. किरीट पहनने वाला 2. इंद्र 3. अर्जुन 4. राजा।

किर्च *स्त्री.* (देश.) दे. किरच।

किर्दार *पुं.* (फा.) दे. किरदार।

किर्मीर *पुं.* (तत्.) 1. चितकबरा रंग 2. किर्मीर नामक राक्षस जिसे कुंतीपुत्र भीम ने मारा था।

किर्र किर्र *स्त्री.* (अनु.) 1. मशीन के चलने से उत्पन्न उत्पन्न होने वाली ध्वनि 2. कीट-पतंगों के संचरण की ध्वनि।

किर्रा *स्त्री.* (तद्.) नक्काशी करने का यंत्र या छेनी।

किलक *स्त्री.* (देश.) 1. खुशी व्यक्त करने में होने वाली ध्वनि 2. बच्चों की किलकारी।

किलकन *स्त्री.* (अनु.) दे. किलक।

किलकना *अ.क्रि.* (अनु.) वानरों का की-की शब्द करना।

किलकार *स्त्री.* (अनु.) 1. बंदरों द्वारा खुशी में व्यक्त व्यक्त की गई किलकार की ध्वनि 2. खुशी व्यक्त व्यक्त करना।

किलकारना *अ.क्रि.* (अनु.) बंदरों की हर्ष ध्वनि करना, किलकारी मारना।

किलकारी *स्त्री.* (अनु.) बंदरों/बच्चों द्वारा खुशी में की जाने वाली ध्वनि।

किलकिंचित् *पुं.* (तत्.) काव्य. नायिका द्वारा प्रेमी के समक्ष प्रकट किया जाने वाला क्रोध, रोष, हास्य रुदन आदि का सम्मिलित भाव।

किलकिल *स्त्री.* (अनु.) 1. किलकारी का शब्द 2. निरर्थक कलह या विवाद।

किलकिला *पुं.* (देशज.) एक पक्षी जिसका रंग कत्थई और नीला तथा चोंच और पैर मटमैले लाल रंग के होते हैं टि. प्रायः किलकिला पक्षी मछली का शिकार करने के लिए तालाबों के किनारे रहता है।

किलकिलाना *अ.क्रि.* (अनु.) खुशी व्यक्त करने के लिए किलकिल ध्वनि करना।

किलकिलाहट *स्त्री.* (अनु.) किलकिलाने की ध्वनि।

किलकी *स्त्री.* (देश.) किलकारी, व्याकुलता।

किलचिया बगला *पुं.* (देश.) सफेद रंग की एक चिड़िया जिसकी चोंच और टाँग काली तथा गर्दन लंबी चितकबरी होती है।

किलना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. कीलित कर देना, कील से जड़ देना 2. वश में कर लेना।

किलनी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो गाय, बैल, कुत्ता आदि पशुओं के शरीर से चिपक कर उनका खून पीता है।

किलबिल *स्त्री.* (देश.) कीट पतंगों के रेंगने की क्रिया।

किलबिलाना *अ.क्रि.* (देश.) कीट समुदाय का हिलना-डुलना, चंचलता।

किलवाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. कीलने की क्रिया, कील ठुकवाने की क्रिया 2. तांत्रिकों द्वारा मंत्र आदि से से भूत-प्रेत बाधा को दूर करवाना।

किलविषी *वि.* (तद्.) 1. पाप से पूर्ण रोगी, दोषी, अपराधी।

किलसना *अ.क्रि.* (तद्.) क्लेशित होना, दुखी होना।

किलहटा *पुं.* (देश.) मैना पक्षी टि. मैना पक्षियों में एक विशेष प्रकार के देशी मैना का यह नाम है)।

किला *पुं.* (अर.) राजमहल, दुर्ग (लाक्ष.अर्थ) बड़ा और बहुत मजबूत भवन मुहा. किला टूट जाना- बहुत कठिन काम सरल हो जाना, बड़ी बाधा दूर हो जाना; किला फतह करना- काम पूरा कर लेना या विजय हासिल कर लेना; किला बाँधना- रक्षा का पूरा इंतजाम कर लेना, शतरंज के खेल में बादशाह को शह न लगने देना।

किलाना *स.क्रि.* (तद्.) किसी से कील ठुकवाने का काम करवाना।

किलाबंदी *स्त्री.* (फा.) 1. किला बनवाना 2. आक्रमण से बचने के लिए की जाने वाली सुरक्षात्मक कार्यवाही, जिसमें चारदीवारी, खाई आदि होती है।

किलावा *पुं.* (फा.) 1. हाथी की गरदन में बाँधी जाने वाली रस्सी 2. सुनारों द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाला एक यंत्र।

किलिक *पुं.* (फा.किलक) नरकट की लकड़ी जिससे लिखने की कलम बनती है।

किलेदार *पुं.* (फ़ा.) दुर्ग का प्रधान अधिकारी।

किलेदारी *स्त्री.* (फा.) किलेदार का काम या पद।

किलेबंदी *स्त्री.* (फा.) दे. किलाबंदी।

किलो *वि.* (अं.) अंग्रेजी उपसर्ग जैसे- किलोग्राम, किलोमीटर आदि। एक हजार का अर्थ द्योतक/ अंग्रेजी उपसर्ग।

किलोग्राम *पुं.* (अं.) तौल की एक माप, एक हजार ग्राम का समानार्थक।

किलोमीटर *पुं.* (अं.) लंबाई और दूरी की माप के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द, एक हजार मीटर लंबाई के लिए एक किलोमीटर शब्द का प्रयोग होता है।

किलोल *पुं.* (तद्.) (कल्लोल शब्द के लिए प्रयुक्त) 1. लहर, तरंग 2. खेल की उछल कूद।

किलोलीटर *पुं.* (अं.) 1000 लीटर के माप के लिए प्रयुक्त माप शब्द।

किलोवाट *पुं.* (अं.) बिजली की माप के लिए प्रयुक्त प्रयुक्त दाशमिक प्रणाली का शब्द (1000 वाट)।

किल्लत *स्त्री.* (अं.) कमी, न्यूनता या अभाव।

किल्ला *पुं.* (तद्.) 1. पशुओं को बाँधने के लिए खूँटा 2. चक्की के बीच गड़ी मेख।

किल्ली *स्त्री.* (तद्.) छोटा किल्ला।

किल्विष *पुं.* (तत्.) 1. पाप 2. बुराई 3. रोग।

किल्विषी *वि.*(तत्.)1.पापी 2. रोगी 3. विपद्ग्रस्त।

किवाँच *पुं.* (देश.) एक वनौषधि जिसके छूने से शरीर में खुजली होती है।

किवाड़ *पुं.* (तद्.) 1. कपाट, दरवाजा 2. दरवाजे के लिए लकड़ी का पल्ला।

किवाम *पुं.* (अर.) अवलेह, काढ़ा या चाशनी, किमाम।

किशमिश *स्त्री.* (फा.) एक मेवा, सुखाया हुआ अंगूर अंगूर जिसमें बीज न हो।

किशमिशी *वि.* (फा.) किशमिश के रंग वाला, हल्का मीठा।

किशमिशी अंगूर *पुं.* (फा.) वह अंगूर जिसे सुखाकर किशमिश बनाई जाती है, किशमिश वाला अंगूर।

किशलय *पुं.* (तद्.) 1. वृक्ष का नया कोमल पत्ता 2. नव अंकुर, नया कल्ला, इसे किसलय भी कहते है।

किशोर *पुं.* (तत्.) 11 वर्ष से 15 वर्ष की अवस्था का बालक।

किशोरावस्था *स्त्री.* (तत्.) 11 से 15 वर्ष के बीच की अवस्था।

किशोरी *स्त्री.* (तत्.) 1. वह बालिका जिसकी आयु 11 से 15 वर्ष के बीच की हो।

किश्त *स्त्री.* (फा.) 1. शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे की घात में पड़ जाना, शह 2. खेती, कृषि 3. नियमित अंतराल पर होने वाला भुगतान।

किश्तकार *पुं.* (फा.) किसान, काश्तकार।

किश्तकारी *स्त्री.* (फा.) खेती का काम, कृषि कर्म।

किश्तजार *पुं.* (फा.) वह भू-भाग जहाँ चारों ओर हरे-भरे खेत हों।

किश्तवार *पुं.* (फा.) पटवारियों का एक कागज़ जिसमें खेतों के नंबर, रकबा आदि दर्ज रहता है।

किश्तिया *वि.* (फा.) संकर, किश्ती के आकार की।

किश्ती *स्त्री.* (फा.कश्ती) नाव।

किश्तीनुमा *वि.* (फा.कश्ती) नाव के आकार का जैसे- किश्तीनुमा टोपी।

किष्किंधा *स्त्री.* (तत्.) 1. किष्किंध पर्वतश्रेणी 2. किष्किंध पर्वत की गुफा 3. रामायण का एक कांड जिसमें बालि-सुग्रीव के किष्किंध देश का वर्णन है।

किस *वि.* (तद्.) कौन का वह रूप जो विभक्ति लगाने पर प्राप्त होता है जैसे- किस व्यक्ति को। को। किस शब्द के अंत में जब निश्चयार्थक 'ही' लगता है तब उसका रूप 'किसी' हो जाता है।

किसबत *स्त्री.* (अर. किस्वत) 1. कई खानों वाला वह थैला जिसमें नाई अपने औज़ार रखता है, नाई की पेटी 2. वस्त्र 3. लिबास, पोशाक।

किसम *स्त्री.* (फा.) दे. 'किस्म' यो. जैसे-किसम-किसम का, भाँति-भाँति का, अनेक प्रकार का।

किसलय *वि.* (तत्.) दल, नवपल्लव।

किसान *पुं.* (तद्.) खेतिहर, कृषक, काश्तकार।

किसानी *स्त्री.* (तद्.) कृषिकर्म, किसान का काम, खेती।

किस्म *स्त्री.* (अर.) 1. प्रकार, भाँति, तरह 2. जाति जाति जैसे- यह किस किस्म का आम है, यह पद किस किस्म के लोगों के लिए आरक्षित है।

कीकना *अ.क्रि.* (देश.) की-की करके चिल्लाना, हर्ष, क्रोध या भयसूचक शब्द करना, चीत्कार करना।

कीकर *वि.* (तद्.) बबूल का पेड़।

कीकरी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार का कीकर या बबूल जिसकी पत्तियाँ बहुत महीन होती है।

कीच *पुं.* (देश.) कीचड़, कर्दम।

कीचक *वि.* (तत्.) 1. बाँस 2. पोला बाँस 3. राजा विराट का साला और उसकी सेना का प्रमुख।

कीचकजित् *पुं.* (तत्.) भीम, क्योंकि अज्ञातवास के सयम कीचक के द्रोपदी के साथ छेड़-छाड़ करने पर उसकी हत्या भीम ने की थी।

कीचड़ *पुं.* (देश.) 1. गीली मिट्टी, कर्दम पंक मुहा. कीचड़ में फँसना- असमंजस में पड़ना, संकट में पड़ना; 2. आँख का सफेद मल जो आँख के कोने पर आ जाता है लाक्ष.अर्थ विपत्ति, निंदा, मुहा. कीचड़ उछालना- किसी पर दोष मढ़ना।

कीट *वि.* (तत्.) 1. रेंगने या उड़नेवाला क्षुद्र जंतु, कीड़ा, मकोड़ा।

कीटक *वि.* (तत्.) 1. कीड़ा 2. एक मागध जाति का बंदीजन।

कीटघ्न *वि.* (तत्.) गंधक।

कीटज *पुं.* (तत्.) रेशम *वि.* कीड़ों से निकला गोंद या लाख, चपड़ा।

कीटभृंग *वि.* (तत्.) एक न्याय जिसका प्रयोग उस समय होता है जब दो या कई वस्तुएँ बिल्कुल एक रूप हो जाती हैं।

कीटमणि *स्त्री.* (तत्.) जुगनू, खद्योत।

कीटाणु *पुं.* (तत्.) अत्यंत छोटा कीड़ा। सूक्ष्म कीट जो सूक्ष्मवीक्षण यंत्र से दिखाई पड़े या उससे भी न दिखाई पड़े।

कीड़ा *पुं.* (तद्.कीट) 1. कीट, छोटा उड़ने या रेंगनेवाला जंतु, मकोड़ा जैसे- कनखजूरा, बिच्छू, भिड़ आदि 2. कृमि, सूक्ष्म कीट मुहा. कीड़े काटना- चुनचुनाहट आदि, बेचैनी होना; कीड़े पड़ना- किसी वस्तु में कीड़े उत्पन्न होना जैसे- घाव में कीड़े पड़ना, बुरा फल मिलना; कीड़े लगना- बाहर से आकर कीड़ों का किसी वस्तु को नष्ट करने के लिए घर करना 3. साँप 3. जूँ, खटमल आदि।

कीड़ाफतिंगा *पुं.* (देश.) 1. कीट 2. परदार (पंखदार) कीड़ा पतंगा।

कीड़ामकोड़ा *वि.* (देश.) छोटा कीड़ा, चींटा।

कीड़ी *स्त्री.* (तद्.) 1. छोटा कीड़ा 2. चींटी।

कीदृश *वि.* (तत्.) कैसा (रूप या स्वभाव में)।

कीना *पुं.* (फा.) 1. बैर, द्वेष 2. हेंठी।

कीनाकश *वि.* (फा.) दोष रखनेवाला।

कीनापरवर *वि.* (फा.) कीना रखनेवाला।

कीनावर *वि.* (फा.) मन में द्वेष रखनेवाला।

कीनाश *वि.* (तत्.) 1. गरीब 2. खेती करने वाला 3. थोड़ा 4. क्षुद्र 5. अकिंचन, तुच्छ *पुं.* 1. किसान 2. यम 3. एक प्रकार का बंदर।

कीनिया *वि.* (फा.) 1. कपट रखनेवाला 2. छलिया, कीना या हेठी रखनेवाला।

कीप *स्त्री.* (अर.) वह चोंगी जिसे तंग मुँह के बरतन में लगाकर तेल, अर्क आदि द्रव पदार्थ डालते है, कुप्पी, छुच्छी।

कीमत *पुं.* (अर.) वह धन जो किसी चीज के बिकने पर उसके बदले में मिलता है, दाम, मूल्य मुहा. कीमत चढ़ना या बढ़ना- चीज का महँगा होना, महत्व होना; कीमत उतरना- चीज़ का सुलभ होना, महत्व घटना; कीमत ठहरना- मूल्य निश्चित होना; कीमत ठहराना- मूल्य निश्चित

करना; कीमत चुकाना- दाम देना; कीमत लगाना- दाम आँकना।

कीमती *वि.* (अर.) अधिक दामों का, बहुमूल्य।

कीमा *पुं.* (फा.) बहुत छोटे-छोटे टुकड़ों में कटा हुआ गोश्त मुहा. कीमा करना- किसी चीज़ के छोटे-छोटे टुकड़े करना।

कीमिया *स्त्री.* (अर.) 1. रासायनिक क्रिया, रसायन 2. सोना, चाँदी बनाने की विद्या 3. वह रसायन जो अमोघ हो 4. कार्यसिद्ध करनेवाली युक्ति।

कीमियागर *वि.* (अर.फा.) 1. रसायन बनानेवाला 2. ताँबे आदि से सोना, चाँदी बनानेवाला 3. कार्यकुशल।

कीमियागरी *स्त्री.* (अर.फा.) रसायन बनाने की विद्या।

कीर *पुं.* (तत्.) 1. शुक, तोता 2. व्याध, कश्मीर देश, कश्मीर देशवासी 4. मांस।

कीरात *पुं.* (अर.) चार जौ की तौल (तद्.) किरात।

कीरी *स्त्री.* (तद्.) 1. महीन छोटे कीड़े जो गेहूँ, जौ आदि की बाल के भीतर जाकर उसका दूध खा जाते हैं 2. चीटी, कीड़ी 3. बहेलिया की स्त्री।

कीर्तन *पुं.* (तत्.) 1. भगवान का यशोगान, भगवान की लीलाओं का भजन, कथन, गुण वर्णन।

कीर्तनकार *पुं.* (तत्.) कीर्तन करनेवाला।

कीर्तनिया *पुं.* (तद्.) कृष्णलीला के भजन और कथा सुनानेवाला, कीर्तनकार।

कीर्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. ख्याति, यश 2. पुण्य 3. सीता की एक सहेली 4. आर्या छंद का एक भेद, जिसमें 14 गुरु और 19 लघु वर्ण होते हैं 5. दशाक्षरी वृत्तों में से एक जिसके प्रत्येक चरण में तीन सगण और एक गुरु होता है 6. प्रसाद 7. शब्द 8. विस्तार 9. कीचड़ 10. दक्ष प्रजापति की एक कन्या और धर्म की पत्नी।

कीर्तिमान *वि.* (तत्.) यशवती, मशहूर।

कीर्तिशेष *वि.* (तत्.) दिवंगत कीर्तिमान, नामशेष, आलेख्य शेष।

कीर्तिस्तंभ *पुं.* (तत्.) 1. वह स्तंभ जो किसी की कीर्ति की स्मृति में बनाया जाय 2. वह वस्तु जो कीर्ति स्थायी करे।

कील *स्त्री.* (तत्.) 1. लोहे या काठ की मेख, कांटा, परेग, खूँटी 2. वह मूढ़-गर्भ जो योनि में अटक जाता है 3. नाक में पहनने का एक छोटा गहना, लौंग 4. मुँहासे की मांसकील 5. स्त्री प्रसंग में एक प्रकार का आसन 6. खूँटी जिस पर कुम्हार का चाक घूमता है 7. अग्निशिखा 8. सूक्ष्म कण 9. शिव 10. जुआरी।

कीलक *पुं.* (तत्.) 1. खूँटी 2. पशुओं के बाँधने का खूँटा 3. तंत्र के अनुसार एक देवता 4. किसी मंत्र का मध्य भाग 5. वह मंत्र जिससे किसी अन्य मंत्र की शक्ति को नष्ट कर दिया जाए 6. एक स्तव या स्तोत्र जो सप्तशती पाठ करने के समय किया जाता है 7. केतु विशेष।

कील-काँटा *पुं.* (तद्.) 1. लोहार या बढ़ई का औज़ार 2. हरबा, हथियार।

कीलना *स.क्रि.* (तद्.कीलन) 1. मेख जड़ना 2. मंत्र के प्रभाव को नष्ट करना 3. साँप को ऐसा मोहित करना कि वह किसी को काट न सके 4. अधीन करना।

कीला *पुं.* (तद्.) बड़ी कील, काँटा दे. कील।

कीलाक्षर *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की प्राचीन लिपि, जिसके अक्षर कील के आकार के होते थे। इस लिपि के लेख ईसा के कई सौ वर्ष पूर्व पाए गए हैं।

कीलित *वि.* (तत्.) 1. जिसमें कील जड़ी हो 2. मंत्र से स्तंभित, कीला हुआ 3. जिसका प्रभाव रोक दिया गया हो।

कीली *स्त्री.* (तद्.) 1. किसी चक्र के ठीक मध्य के छेद में पड़ी हुई वह कील या डंडा जिस पर चक्र घूमता है, धुरी जैसे- पृथ्वी अपनी कीली पर घूमती है

कुंकुम *पुं.* (तत्.) 1. केसर, जाफरान 2. लाल रंग की बुकनी (पावडर), जिसे स्त्रियाँ माथे में लगाती है, रोली 3. कुमकुम।

कुंकुमफूल *पुं.* (तत्.+तद्.) दुपहर में खिलने वाला फूल।

कुंकुमा *पुं.* (तद्.) लाख का बना पोला गोला, जिसमें गुलाल भरकर मारते हैं।

कुंकुमाद्रि *पुं.* (तत्.) कश्मीर के एक पर्वत का नाम।

कुंचन *पुं.* (तत्.) 1. सिकुड़ने की क्रिया 2. आँख का एक रोग, जिसमें आँख की पलकें सिकुड़ जाती हैं।

कुंचिका *स्त्री.* (तत्.) 1. कुंजी, चाभी 2. घुँघची, गुंजा 3. बाँस की टहनी 4. एक प्रकार की मछली।

कुंचित *वि.* (तत्.) 1. घूमा हुआ, वक्र 2. घुँघराले (बाल)।

कुंची *स्त्री.* (तद्.) ताली, चाभी।

कुंज *पुं.* (तत्.) 1. वह स्थान जिसके चारों ओर घनी लता छाई हो उदा. सघन कुंज छाया सुखद सीतल मंद समीर। मन ह्वै जात अजौं वहै कालिंदी के तीर -बिहारी (कुंज की खोरी) प्रयो. कुंजगली 2. हाथी का दाँत 3. नीचे का जबड़ा 4. दाँत 5. गुफा।

कुंज कुटीर *स्त्री.* (तत्.) लतागृह, कुंजगृह।

कुंजगली *स्त्री.* (तद्.) 1. बगीचों में लता से छाया हुआ पथ 2. पतली तंग गली 3. भूल-भुलैया।

कुंजर *पुं.* (तद्.) 1. हाथी 2. एक नाग का नाम 3. बाल, केश 4. एक देश का नाम 5. रामायण के अनुसार एक पर्वत का नाम।

कुंजरारि *वि.* (तत्.) हाथी का शत्रु, सिंह।

कुंजरी *स्त्री.* (तत्.) हथिनी, धव (औषधि वाला एक जंगली पेड़) पलाश।

कुंजल *पुं.* (तद्.) काँजी।

कुंजविहारी *पुं.* (तत्.) 1. कुंजो में विहार करनेवाला पुरुष 2. श्रीकृष्ण।

कुंजिका *स्त्री.* (तत्.) 1. कृष्णजीरा, कालाजीरा 2. कुंजी 3. टीका, गद्य/पद्य की व्याख्या।

कुंजी *स्त्री.* (तद्.) चाभी, ताली मुहा. (किसी की) कुंजी हाथ में होना- किसी का वश में होना, किसी की चाल या गति का वश में होना 2. पुस्तक जिससे किसी दूसरी पुस्तक का अर्थ खुले, टीका।

कुंठ *वि.* (तत्.) सुस्त, ढीला, अनाड़ी, मूढ, काहिल।

कुंठधी *वि.* (तत्.) मूर्ख, कुंदजेहन, जिसकी बुद्धि मंद हो।

कुंठमना *वि.* (तत्.) दे. कुंठधी।

कुंठा *स्त्री.* (तत्.) 1. खीझ, चिढ़ 2. निराशा 3. मन की गाँठ, मानसिक ग्रंथि। complex

कुंठाजात *पुं.* (तत्.) निराशा, खीझ टि. कुंठा से उत्पन्न (निराशा)।

कुंठित *वि.* (तत्.) 1. जिसकी धार चोखी या तीक्ष्ण न हो, कुंद, गुठला, भोथरा 2. मंद, बेकाम, निकम्मा 3. विकृत 4. मूर्ख, जड़ 5. बाधित 6. आलसी, सुस्त।

कुंड *पुं.* (तत्.) 1. चौड़े मुँह का गहरा कुंडा 2. एक प्राचीन काल का माप जिससे अनाज नापा जाता था 3. छोटा बँधा हुआ जलाशय, बहुत छोटा तालाब 4. पृथ्वी में खोदा हुआ गड्ढा अथवा मिट्टी या धातु का बना हुआ पात्र जिसमें अग्नि जलाकर हवन करते हैं 5. बटलोई, स्थाली 6. जलपात्र 7. शिव का एक नाम 8. गर्त, गड्ढा 9. लोहे का टोप 10. हौदा।

कुंडक *पुं.* (तत्.) 1. पात्र 2. मटका, कुंडा।

कुंडनी *स्त्री.* (तत्.) मिट्टी का बड़ा बरतन।

कुंडल *पुं.* (तत्.) 1. सोने, चाँदी आने का बना हुआ एक मंडलाकार आभूषण जिसे लोग कानों में पहनते हैं, बाली, मुरकी 2. सींग, लकड़ी काँच तथा सोने आदि धातुओं का बना पहिये के आकार का एक आभूषण जिसे गोरखनाथ के अनुयायी कानों में पहनते हैं 3. रस्सी आदि का गोल फंदा 4. लोहे का वह गोल मँडरा जो मोट या चरस के मुँह पर लगाया जाता है, मेखड़ा, मेंड़री 5. वह मंडल जो कुहरे या बदली में चंद्रमा या सूर्य के किनारे दिखाई पड़ता है 6. छंद में वह मात्रिक गण जिसमें दो मात्राएँ हों पर एक ही अक्षर हो,

जैसे- 'श्री' 7. बाईस मात्राओं का एक छंद जिसमें बारह और दस पर विराम होता है और अंत में दो गुरु होते हैं।

कुंडलाकार *वि.* (तत्.) 1. वर्तुलाकार, गोल 2. मंडलाकार।

कुंडलिका *स्त्री.* (तत्.) 1. मंडलाकार रेखा 2. जलेबी नाम की एक मिठाई 3. कुंडलिया छंद।

कुंडलित *वि.* (तत्.) 1. जो कुंडली मारे हुए हो, कई बलों में घूमा हुआ 2. कुंडल नामक आभूषण से युक्त।

कुंडलिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. तंत्र और उसके अनुयायी हठयोग के अनुसार एक कल्पित शक्ति का, जो कुंडल के आकार में मूलाधार में सुषुम्ना नाड़ी के नीचे मानी गई है पर्या. कुटिलांगी, भुजंगी, ईश्वरी शक्ति, कुंडली 2. जलेबी नाम की मिठाई इमरती 3. गुडुची, गिलोय।

कुंडलिया *स्त्री.* (तत्.) एक मात्रिक छंद जो एक दोहे और रोले के योग से बनता है।

कुंडली *पुं.* (तत्.) 1. साँप 2. वरुण 3. मयूर, मोर 4. चित्तल हरिण 5. विष्णु 6. शिव।

कुंडली *स्त्री.* (तत्.) 1. जलेबी 2. कुंडलिनी 3. गुडुचि, गिलोय 4. कचनार 5. केवाँच 6. जन्मकाल के ग्रहों को बतलानेवाला एक चक्र जिसमें बारह घर होते हैं 7. गेंडुरी, इंडुवा 8. साँप के बैठने की मुद्रा 9. खँझरी, डफली।

कुंडलीकरण *पुं.* (तत्.) किसी चीज़ को खींच कर इतना मोड़ना कि वह कुंडल के आकार का हो जाए।

कुंडलीकृत *वि.* (तत्.) कुंडली के समान गोल आकृति का बनाया हुआ।

कुंडा *पुं.* (तत्.) मिट्टी का बना हुआ चौड़े मुँह का एक गहरा बरतन, जिसमें पानी अनाज आदि रखा जाता है, बड़ा मटका, कछरा।

कुंडा *पुं.* (तद्.) 1. दरवाजे की चौखट में लगा हुआ कोढ़ा जिसमें साँकल फँसाई जाती है और ताला लगाया जाता है 2. कुश्ती का एक पेंच।

कुंडिका *स्त्री.* (तत्.) 1. कमंडल 2. कूँडी, अथरी, पथरी 3. ताँबे का कुंड, जिसमें हवन किया जाता है।

कुंडी *स्त्री.* (तद्.) पत्थर या मिट्टी का कटोरा जिसमें लोग दही, चटनी आदि रखते हैं, पत्थर की कुंडी में भाँग भी घोटी जाती है 1. जंजीर की कूँड़ी 2. किवाड़ में लगी साँकल जो दरवाजे को बंद करने के लिए कुंडी में फँसाई जाती है।

कुंत *पुं.* (तत्.) 1. भाला, बरछी 2. जूँ 3. चंड 4. गवेधुक (पक्षी), कोडिल्ला, केसई भाव, क्रूर भाव 5. जल 6. कुश 7. अग्नि 8. आकाश 9. काल 10. कमल 11. खड्ग।

कुंतक *पुं.* (तत्.) संस्कृत साहित्य में वकोक्तिजीवित के रचयिता और वक्रोक्ति संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य।

कुंतल *वि.* (तत्.) 1. सिर के बाल, केश 2. प्याला, चुक्कड़ 3. जौ 4. सुगंधवाला 5. हल 6. संगीत में एक प्रकार का ध्रुपद 7. एक देश का नाम जो कोंकण और बरार के बीच में था 8. सूत्रधार 9. वेश बदलने वाला पुरुष 10. राम की सेना का एक बंदर।

कुंती *स्त्री.* (तत्.) युधिष्ठिर, अर्जुन भीम और कर्ण की माता, पृथा, पांडु की पत्नी *स्त्री.* (तद्.) 1. बरछी, भाला 2. कंजे की जाति का एक पेड़ जो प्राय: मध्य बंगाल, म्यांमार आसाम आदि स्थानों में होता है, इसके बीज से तेल निकाला जाता है।

कुंद *पुं.* (तत्.) 1. जूही की तरह का एक पौधा, जिसमें सुगंधित व सफेद फूल लगते हैं और वह कुछ रेचक, पाचक तथा रुधिर विकार में लाभकर होता है 2. कनेर का पेड़ 3. कमल 4. कंदर नाम का गोंद 5. एक पर्वत का नाम 6. कुबेर की नौ निधियों में से एक 7. नौ की संख्या 8. विष्णु 9. खराद *वि.* (फा.) 1. कुंठित, गुठला 2. स्तब्ध, मंद बुद्धि।

कुंदकर *पुं.* (तत्.) खराद का काम करने वाला व्यक्ति।

कुंदजेहन *वि.* (तत्.+फा.) मंदबुद्धि, मोटी अक्ल वाला।

कुंदन *पुं.* (देश.) बहुत अच्छे और साफ सोने का पतला पत्तर, जिसे लगा कर जाड़िए नगीने जड़ते हैं, स्वच्छ सुवर्ण, बढिया सोना मुहा. कुंदन सा दमकना- स्वच्छ सोने सा चमकना; कुंदन हो जाना- खूब स्वच्छ और निर्मल हो जाना, निखर जाना *वि.* कुंदन के समान चोखा, स्वच्छ, नीरोग।

कुंदलता *पुं.* (तत्.) 1. छब्बीस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति जिसे 'सुख' भी कहते है 2. माधवी लता।

कुंदा *पुं.* (फा.कुंद.) 1. लकड़ी का बहुत बड़ा मोटा और बिना चीरा टुकड़ा जिस पर बढ़ई गढ़ते हैं, हाना, निहठा 2. बंदूक में वह पिछला लकड़ी का तिकोना भाग जिसमें घोड़ा और नली आदि जड़े रहते हैं और बंदूक चलाने वाले की ओर रहता है मुहा. कुंदा चढ़ाना- बंदूक की नली में लकड़ी जड़ना 3. वह लकड़ी जिसमें अपराधी के पैर ठोंके जाते हैं, काठ 4. मूठा, बेंत, दस्ता 5. लकड़ी की बड़ी मोंगरी जिससे कपड़ों की कुंदी की जाती है।

कुंदी *स्त्री.* (तद्.) 1. धुले या रंगे कपड़ों की तह करके उनकी सिकुड़न दूर करने तथा तह जमाने के लिए उसे लकड़ी की मोगरी से कूटने की क्रिया, इस्तरी करने की एक प्राचीन विधि 2. खूब मारना, ठोंकना, पीटना।

कुंदीगर *पुं.* (तद्.) कपड़ो की कुंदी करनेवाला।

कुंदू *पुं.* (तत्.) चूहा।

कुंबी *वि.* (तत्.) 1. कायफल 2. एक वनस्पति जो जलाशयों में होती है जलकुंभी 3. कुंभ नामक पेड़ 4. एक प्रकार का वृक्ष।

कुंभ *पुं.* (तत्.) 1. मिट्टी का घड़ा, घट कलश 2. हाथी के सिर के दोनों ओर उभरे हुए भाग 3. एक राशि जो दसवीं मानी जाती है 4. योगशास्त्र के अनुसार प्राणायाम के तीन भागों में से एक-कुंभक 5. एक पर्व जो 12 वर्गों में एक बार लगता है जब बृहस्पति कुंभ राशि में होता है 6. गुग्गुल 7. एक पेड़ का नाम जिसकी लकड़ी मजबूत होती है।

कुंभक *पुं.* (तत्.) प्राणायाम का एक भाग, जिसमें सांस लेकर वायु को शरीर के भीतर ही रोक लेते हैं।

कुंभकर्ण *पुं.* (तत्.) रावण का भाई जो छह महीने सोता था।

कुंभकार *पुं.* (तत्.) 1. एक संकर जाति 2. कुम्हार 2. मुर्गा, कुक्कुट 3. साँप 4. जंगली पक्षी।

कुंभज *वि.* (तत्.) 1. घड़े से उत्पन्न 2. अगस्त्य मुनि 3. वशिष्ठ 4. द्रोणाचार्य।

कुंभनदास *पुं.* (तत्.) ब्रज के अष्टछाप कवियों में से एक कवि। यह सखा भाव से कृष्ण की उपासना करते थे।

कुंभपंजर *पुं.* (तत्.) वह स्थान या आधार जो दीवार में बना हो, गवाक्ष।

कुंभशाला *स्त्री.* (तत्.) मिट्टी के घड़े बनाने का स्थान।

कुंभिल, कुंभिलक *वि.* (तत्.) 1. वह चोर जो सेंध लगाता हो, सेंधिया चोर 2. वह संतान जो अपूर्ण गर्भ में उत्पन्न हो 3. साला 4. एक प्रकार की मछली 5. साहित्यिक चोर।

कुंभी *स्त्री.* (तत्.) 1. छोटा घड़ा 2. कायफल का पेड़ 3. दंती का पेड़ 4. पाँडर का पेड़ 5. तरबूज 6. वंसी 7. एक पेड़ 8. एक वनस्पति जो जलाशयों में पानी के ऊपर फैलती है, जलकुंभी 9. एक नरक का नाम, कुंभीपाक, नरक 10. सलई का पेड़ 11. गनियारी या अरंडी का पेड़ 12. तल, आधार दे. कुंबी।

कुंभीपाक *पुं.* (तत्.) 1. पुराणानुसार एक नरक जिसमें पशुवध करनेवाले खौलते तेल में डाले जाते हैं 2. एक प्रकार का सन्निपात जिसमें नाक के रास्ते काला खून आता है और सिर घूमता है 3. हंडिया में पकाई कोई वस्तु।

कुंभीर *वि.* (तत्.) 1. नक्र या नाक नामक जंतु जो जल में होता है 2. एक प्रकार का छोटा कीड़ा 3. एक यक्ष।

कुंभीपुर *वि.* (तत्.) हस्तिनापुर, पुरानी दिल्ली।

कुँअर *वि.* (तद्.) 1. लड़का, पुत्र, बालक यो. राजकुँअर 2. राजपुत्र, राजकुमार।

कुँअरि *स्त्री.* (तद्.) 1. कुमारी 2. राजकुमारी।

कुँअरि, कुँअरी *स्त्री.* (तद्.) 1. कुमारी कन्या 2. राजकुमारी।

कुँआ *पुं.* (तद्.) पानी निकालने के लिए पृथ्वी में खोदा हुआ गड्ढा, कूप पर्या. कूप, अंधु, उदपान, अवट, कोट्टार मुहा. कुँआ खोदना- दूसरे की बुराई के लिए कार्य करना, दूसरे को हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना, जीविका के लिए परिश्रम करना; कुँआ चलाना या जोतना- कुँए से खींचने के लिए पानी निकालना; कुआ या कुँए झांकना- यत्न में इधर उधर दौड़ना, खोज में चारों ओर मारे फिरना, कोशिश में हैरान घूमना; कुँए में गिरना- आपत्ति में फंसना, विपत्ति में पड़ना जैसे- जो जानबूझ कर कुँए में गिरे उसे कौन बचाए; कुँए की मिट्टी कुँए में लगना- जहाँ की आमदनी होगी वही खर्च होगा; कुँए में डाल देना- जन्म नष्ट करना जैसे- उस घर में शादी करके तुमने लडकी को कुँए में डाल दिया; कुँए में बाँस डालना- बहुत तलाश करना, बहुत छानबीन करना जैसे- उसके लिए कुँए में बाँस डालने पर वह न मिला; कुँए में भांग पड़ना- सब की बुद्धि मारी जाना जैसे- मेरा सुझाव कोई नहीं मानता, जब कुँए में ही भांग पड़ी है तो कोई क्या करे; कुँए में बोलना या कुएँ में से बोलना- इतने धीरे बोलना कि सुनाई न पड़े; कुँए पर से प्यासे आना- ऐसे स्थान से निराशा लौटना जहाँ काम बनने की पूरी उम्मीद हो; अंधा कुँआ-वह कुँआ जिसमें पानी न हो और जो घासपात से ढका हुआ हो।

कुँआरा *वि.* (तद्.) अविवाहित, जिसका ब्याह न हो *पुं.* अविवाहित व्यक्ति, कुमार।

कुँआरी *वि.* (तद्.) कुमारी, जो ब्याही न हो स्त्री. अविवाहित कन्या, कुमारी।

कुँइआँ *स्त्री.* (देश.) छोटा कुआँ।

कुँई *स्त्री.* (तद्.) कुमुदनी, कुमुदों से भरा सरोवर।

कुँईयाँ *स्त्री.* (देश.) कुँआ यो. कठकुँइयाँ एक छोटा कुँआ जो काठ का बना हो।

कुँजड़ा *पुं.* (तद्.) एक जाति जो सब्जियाँ बोती और बेचती है मुहा. कुँजड़े कसाई- नीच जाति के लोग, नीची श्रेणी के मुसलमान; कुँजड़े का गल्ला- वह गल्ला राशि या वस्तु जिसके लेन-देन का लेखा न लिखा जाता हो, गड़बड़ हिसाब, गोल माल; कुंजड़े की दुकान- वह स्थान जहाँ छोटे बड़े सब जा सकें, जहाँ भीड़-भाड़ और शोरगुल हो।

कुँड़ *पुं.* (तद्.) 1. खेत में वह गहरी रेखा जो हल जोतने से पड़ जाती है।

कुँडरा *पुं.* (तद्.) 1. मंडलाकार खींची हुई रेखा (क) जिसके भीतर खड़े होकर लोग शपथ करते है (ख) जिसके भीतर किसी वस्तु को रखकर उसे मंत्र आदि से रक्षित करते हैं (ग) जिसके भीतर भोजन रखकर उसे छूत से बचाते है 2. कई फेरे लेकर लपेटी हुई रस्सी का कपड़ा जिसे सिर पर रखकर बोझ या घड़ा उठाते है, इंडुवा, गेंडुरी 3. कुंडा, मटका।

कुँडी सोंटा *पुं.* (देश.) 1. भाँग घोटने का डंडा।

कुँदरू *वि.* (देश.) एक बेल जिसके फल चार-पाँच अंगुल लंबे होते हैं और जिनकी सब्जी बनती है पर्या. बिंबी, बिंबा, रक्तफला, तुंडी।

कुँदेरा *पुं.* (देश.) खरादनेवाला, खरादी।

कुअन्न *पुं.* (तत्.) रद्दी अन्न, मोटा अनाज।

कुआरा *वि.* (तद्.) जिसका ब्याह न हुआ हो बिना ब्याहा विलो. विवाहित।

कुइयाँ *स्त्री.* (देश.) कुआँ।

कुकड़ना *अ.क्रि.* (देश.) सिकुड़कर रह जाना, संकुचित हो जाना।

कुकड़ी *स्त्री.* (तद्.) 1. कच्चे सूत का लपेटा हुआ लच्छा, जो कात कर तकले पर से उतारा जाता है, अंटी 2. मदार का डोडा या फल 3. मुरगी।

कुकनू *पुं.* (यूनानी.) एक कल्पित पक्षी, जिसके बारे में प्रसिद्ध है कि जब वह गाता है तो उसके शरीर से आग निकल पड़ती है और वह जल जाता है।

कुकर *पुं.* (अं.) खाना पकाने का एक आधुनिक उपकरण जिसमें कई डब्बे होते हैं और जिसमें भाप

की सहायता से दाल, चावल, तरकारी आदी चीजें अलग-अलग रखकर एक ही समय में पकाई जाती हैं।

कुकरी *स्त्री.* (तद्.) 1. मुरगी, बनमुरगी 2. कच्चे सूत का लपेटा हुआ लच्छा, अंटी, कुकड़ी।

कुकर्म *पुं.* (तत्.) बुरा काम जैसे- उसे अपना कुकर्म ही ले डूबेगा।

कुकर्मी *वि.* (तत्.) बुरा काम करने वाला व्यक्ति।

कुकुद *पुं.* (तद्.) 1. चोटी, शिखर 2. सींगी 3. राज चिह्न 4. बैल का डिल्ला।

कुकुभ *पुं.* (तत्.) एक राग का नाम 2. एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 16 और 14 के विराम से 30 मात्राएँ होती है, छंद के पदांत में दो गुरु का होना आवश्यक है।

कुकुरखाँसी *स्त्री.* (देश.) वह सूखी खाँसी जिसमे कफ न गिरे, जिसमें खाँसने पर कुत्ते के खाँसने की तरह आवाज होती है तथा साँस लेते समय पीड़ा अनुभव होती है जैसे- उसे कुकुरखाँसी हो गई है, इसलिए खाँसने पर उसके सीने में दर्द होने लगता है।

कुकुरमाछी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की मक्खी जो घोड़े, बैल, कुत्ते आदि के शरीर पर लगती है, यह बहुत जोर से काटती है।

कुकुरमुत्ता *पुं.* (देश.) एक प्रकार का खुम्बी/खुम्भी/खुभी जिसमें बुरी गंध निकलती है *वि.* दे. खुमी।

कुकूल *पुं.* (तत्.) 1. भूसी 2. भूसी का आग 3. वह गड्ढा जिसमें लकडियाँ भरी हों 4. कवच।

कुक्कुट *पुं.* (तत्.) 1. मुर्गा 2. चिनगारी 3. जटाधारी, मुर्गकेश।

कुक्कुटी *स्त्री.* (तत्.) मुर्गी।

कुक्कुटनाड़ी *स्त्री.* (तत्.) एक टेढ़ी नली या यंत्र जिससे भरे बरतन से खाली बरतन में पानी आदि पहुँचाया जाता है।

कुक्कुटयंत्र *पुं.* (तत्.) दे. कुक्कुटनाड़ी।

कुक्कुटव्रत *पुं.* (तत्.) एक व्रत जो भादों की शुक्ल सप्तमी को होता है, इसमें स्त्रियाँ संतान के लिए शिव और दुर्गा की पूजा करती है।

कुक्कुटि/कुक्कुटी *स्त्री.* (तत्.) 1. मुर्गी 2. पाखंड 3. सेमल का पेड़ 4. एक प्रकार का कीड़ा, छिपकली।

कुक्कुर *पुं.* (तत्.) 1. कुत्ता 2. आंध्र प्रदेश का एक यदुवंशी राजा 3. यदुवंशियों की एक शाखा, कुकुर 4. एक मुनि का नाम 5. एक वनस्पति, ग्रंथिपर्णी, गांडर।

कुक्ष *पुं.* (तत्.) पेट 1. पेटू 2. स्वार्थी 2. कोख, गर्भाशय।

कुक्षिंभरि *वि.* (तत्.) 1. पेटू 2. स्वार्थी।

कुक्षि *पुं.* (तत्.) 1. एक दानव 2. राजा बलि 3. एक प्राचीन देश 4. गुहा 5. पेट 6. गर्भाशय।

कुक्षिगत *वि.* (तत्.) गर्भ में आगत, गर्भस्थ 1. किसी चीज के बीच का भाग 2. गुहा 3. संतति 4. गर्त 5. खाड़ी 6. घाटी।

कुक्षिज *वि.* (तत्.) पुत्र।

कुक्षिस्थ *वि.* (तत्.) दे. कुक्षिगत।

कुखड़ी *स्त्री.* (तद्.) कच्चे सूत का लपेटा हुआ लच्छा, अंटी, कुकड़ी।

कुखेत *पुं.* (तद्.) बुरा स्थान, कुंठाँव।

कुख्यात *वि.* (तत्.) निंदित, बदनाम।

कुख्याति *स्त्री.* (तत्.) निंदा, बदनामी।

कुगति *स्त्री.* (तत्.) दुर्गति, बुरी, हालत।

कुग्रह *पुं.* (तत्.) खोटे ग्रह, पाप ग्रह।

कुच *पुं.* (तत्.) स्तन, छाती, उरोज।

कुचकुंभ *पुं.* (तत्.) स्थूलाकार गोल स्तन।

कुचकुचाना *क्रि.सं.* (अनु.) 1. लगातार कोंचना, बार बार नुकीली चीज से बाँधना 2. थोड़ा कुचलना।

कुचक्र *पुं.* (तत्.) दूसरों को हानि पहुँचानेवाला गुप्त प्रयत्न, षड्यंत्र, साजिश जैसे- उसने मोहन के विरुद्ध ऐसा कुचक्र चलाया कि वह उसमें बुरी तरह फंस गया।

कुचक्री *वि.* (तत्.) षड्यंत्र रचनेवाला।

कुचतटी *स्त्री.* (तत्.) दे. स्तनाग्रभाग, स्तन का चढाव या ढलाव।

कुचर *वि.* (तत्.) 1. बुरे स्थानों में घूमनेवाला 2. नीच कर्म करनेवाला 3. परनिंदक 4. धीरे धीरे चलनेवाला 5. चोर।

कुचरचा/कुचर्चा *स्त्री.* (तद्/तत्.) अपवाद, अपकथन।

कुचलना *स.क्रि.* (तद्.) 1. मसलना 2. पैरों से रौंदना, पांव से दबाना मुहा. सिर कुचलना- पराजित करना, मान ध्वंस करना; कुचल देना- शक्तिहीन कर देना।

कुचांशुक *पुं.* (तत्.) स्तनों को बाँधने का कपड़ा, चोली।

कुचाग्र *पुं.* (तत्.) युवती के कुच का अगला भाग, चूचुक, चूची।

कुचाल *स्त्री.* (देश.) बुरा आचरण, खराब चाल-चलन, दुष्टता, पाजीपन, बदमाशी।

कुचाली *वि.* (देश.) 1. कुमार्गी 2. दुष्ट 3. धूर्त 4. छली, प्रपंची, शराबी।

कुचियादांत *पुं.* (देश.) वह दाँत जिससे आहार को कुचल-कुचल कर खाते है, डाढ़, चौसर।

कुचुमार *पुं.* (तत्.) कामशास्त्र के एक प्रधान आचार्य का नाम जिनका मत वात्स्यायन के कामशास्त्र में उद्धृत है।

कुचेल *पुं.* (तत्.) 1. मैला कपड़ा वि. 1. मैला कपड़ा पहननेवाला 2. मैला, मलिन।

कुचेष्ट *वि.* (तत्.) बुरी चेष्टा वाला।

कुचेष्टा *स्त्री.* (तत्.) 1. बुरी चेष्टा, कुप्रयत्न बुरी चाल चाल 2. चेहरे का बुरा भाव।

कुचैन *स्त्री.* (तद्.) 1. कष्ट 2. व्याकुलता।

कुचैल *वि.* (तत्.) फटा, पुराना, मैला वस्त्र।

कुचैला *वि.* (तत्.) 1. जिसका कपड़ा मैला हो 2. मैला, गंदा।

कुच्ची *पुं.* (फा.) मिट्टी का लंबा बरतन जिससे तेली तेल नापते है।

कुछ *वि.* (देश.) थोड़ी मात्रा या संख्या का, जरा, थोड़ा जैसे- उसके पास कुछ वस्तुएँ ऐसी थीं जो बहुत सुदंर थी मुहा. कुछ एक- थोड़ा सा, कुछ ऐसा-विलक्षण; कुछ कुछ- थोड़ा; कुछ न कुछ- थोड़ा-बहुत; कितना कुछ- बहुत अधिक -कुछ का कुछ- और का और, विपरीत जैसे- तुम तो कुछ का कुछ कर देते हो; कुछ से कुछ होना- भारी उलट फेर होना; कुछ कह बैठना- कड़ी बात कह देना जैसे- बोलो मत, गुस्से से वह कुछ कह बैठेगा तो पछताओंगे; कुछ कहना- कड़ी बात कहना, कुछ सुनोगे या सुनने पर लगे हो जैसे- बिना कुछ कहे सुने तुम जाओगे नहीं; कुछ खा लेना- जहर खा लेना; कुछ खा कर मर जाना- विष खाकर मर जाना; कुछ कर देना- जादू टोना कर देना; कुछ हो जाना- कोई रोग या प्रेत लगना; कुछ भी हो- 1. चाहे जो हो; 2. कोई बड़ी बात, कोई अच्छी बात 3. कोई सार वस्तु, कोई कल की चीज मुहा. कुछ न रहना- इज्जत न रहना; कुछ लगाना- (अपने को) बड़ा समझना; कुछ हो जाना- किसी योग्य हो जाना।

कुज *पुं.* (तत्.) 1. मंगल ग्रह 2. वृक्ष, पेड़ 3. नरकासुर का नाम, जो पृथ्वी का पुत्र माना जाता है *वि.* (मंगल के समान) लाल रंग का।

कुजन *पुं.* (तत्.) बुरा व्यक्ति, दुर्जन।

कुजन्मा *वि.* (तत्.) 1. नीच से उत्पन्न, अकुलीन 2. पृथ्वी से उत्पन्न।

कुजा *स्त्री.* (तत्.) 1. सीता 2. कात्यायनी का एक नाम।

कुजात *स्त्री.* (तत्.) दे. कुजाति।

कुजाति *स्त्री.* (तत्.) नीच जाति *पुं.* 1. बुरी जाति का आदमी, नीच पुरुष 2. पतित या अधम पुरुष।

कुज्जा *पुं.* (फा.) 1. मिट्टी का प्याला, पुरवा 2. मिट्टी के प्याले में जमाई गई मिश्री की गोल डली।

कुज्झटिका *स्त्री.* (तत्.) कुहरा, कुहेलिका।

कुटंक *पुं.* (तत्.) छाजन, छप्पर, छत।

कुटंगक *पुं.* (तत्.) 1. लता कुंज, लता मंडप 2. झोपड़ी, कुटी, आवास, वृक्ष पर फैलने वाली लता 3. वृक्ष पर चढ़ी लता से बना हुआ मंडल, लताकुंज 4. छत, छाजन 5. कुटीर 6. अन्न का भंडार।

कुटंत *स्त्री.* (देश.) 1. कूटने का भाव, कुटाई 2. मार, प्रहार जैसे- उसकी खूब कुटंत करो जिससे वह सीधा हो जाए।

कुट *पुं.* (तत्.) 1. घर, गृह 2. कोट, गढ़ 3. कलश 4. वह हथौड़ा जिससे पत्थर तोड़ा जाता है 5. वृक्ष 6. पर्वत 7. अचल 8. छन्नी 9. जाली *वि.* बनावटी जैसे- कूट-मुद्रा।

कुटक *पुं.* (तत्.) 1. हल का फल 2. मथानी की रस्सी लपेटने का डंडा 3. भागवत वर्णित एक देश और उसके निवासी 4. वृक्ष विशेष का नाम।

कुटका *पुं.* (तद्.) 1. किसी वस्तु छोटा टुकड़ा 2. कसीदे में काढा हुआ तिकोना बूटा, तिघाड़ा।

कुटकी *स्त्री.* (तद्.) 1. एक पौधा जिसकी जड़ शीतल प्रकृति की होती है और दवा के काम आती है 2. एक जड़ी जो शिमला से कश्मीर तक पांच से दस हजार फुट की ऊँचाई पर पहाड़ों में होती है, यह बल और वीर्यवद्र्धक होती है पर्या. तिक्ता, चक्रांगी, कुलादिनी, कुटका, मत्स्यपित्ता, नकुलासादिनी महौषधि 3. एक अत्यंत छोटा कीड़ा जो मच्छर की तरह पशुओं, मनुष्यों को काटता है।

कुटज *पुं.* (तत्.) 1. कुरैया, वनचमेली, इंद्रजौ 2. अगस्त्य मुनि 3. द्रोणाचार्य का एक नाम 4. कमल।

कुटना *अ.क्रि.* (देश.) 1. कूटा जाना 2. मारा या पीटा जाना।

कुटना *पुं.* (तद्.) 1. वह औजार या हथियार जिससे कुटाई की जाए 2. कूटे जाने की क्रिया।

कुटनी *स्त्री.* (तद्.<कुट्टनी) 1. स्त्रियों को बहलाकर उन्हें पर पुरुष से मिलाने अथवा संदेश पहुँचाने वाली स्त्री, दूती 2. चुगली करके दो व्यक्तियों में झगड़ा करानेवाली स्त्री, इधर की उधर लगानेवाली।

कुटप *पुं.* (तत्.) 1. 32 तोले की एक तौल 2. घर से लगा या समीपवर्ती बगीचा 3. संत, तपस्वी 4. कमल।

कुटर *पुं.* (तत्.) 1. वह डंडा जिसमें मथानी की रस्सी लपेटी जाती है 2. चूहे, गिलहरी आदि द्वारा द्वारा कड़ी वस्तु कुतरने की ध्वनी।

कुटल *पुं.* (तत्.) छप्पर, छत।

कुटवाना *स.क्रि.* (देश.) कूटने की क्रिया कराना, कूटने में तत्पर करना।

कुटवार *पुं.* (देश.) गाँव के पंचायत का अधिकारी, चौकीदार।

कुटवारी *स्त्री.* (देश.) कोतवाल का कार्य नगर रक्षा या चौकसी दे. कोतवाली।

कुटस *पुं.* (तत्.) 1. काग 2. तंबू, खीमा।

कुटाई *स्त्री.* (देश.) 1. कूटने का काम 2. कूटने की मजदूरी 3.किसी को बहुत अधिक पीटना, कुटास।

कुटास *स्त्री.* (देश.) खूब मारना, पीटना, पिटाई।

कुटि *स्त्री.* (तत्.) 1. कुटी, झोपड़ी 2. देह 3. वृक्ष 4. मोड़ 5. घुमाव, टेढ़ापन।

कुटिया *वि.* (तद्.) घास-फूस का बना छोटा घर, छोटी झोपड़ी, कुटी।

कुटिर *पुं.* (तत्.) झोपड़ी, कुटिया।

कुटिल *वि.* (तत्.) वक्र, टेढ़ा यो. कुटिलकीट- सांप, कुटिलबुद्धि, कुटिलमति, कुटिलाशय, दुरात्मा 2. दगाबाज, कपटी, छली, चालबाज 3. दुष्ट, खोटा *पुं.* 1. वह जिसका रंग पीलापन लिए सफेद हो और आँखे लाल हों 2. चौदह अक्षरों का एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में स,भ,न,य,ग,ग होते है 4, 10 पर यति होती है (3) तगर का फूल 4. टिन।

कुटिलगति *स्त्री.* (तत्.) 1. वक्रगति, टेढ़ी चाल 2. एक वर्णवृत्त।

कुटिलता *स्त्री.* (तत्.) 1. टेढ़ापन 2. खोट, छल, कपट।

कुटिलपन *पुं.* (तद्.) दे. 'कुटिलता'।

कुटिलिका *स्त्री.* (तत्.) 1. बिना आहट के पैर दबाकर आना, नि:शब्द आगमन 2. लोहार की धौंकनी।

कुट्टित *वि.* (तत्.) 1. कटा हुआ 2. पिसा हुआ।

कुट्टिम *वि.* (तत्.) 1. वह भूमि जिस पर कंकड़ पत्थर या ईंटे बैठाई गई हों, पक्का फर्श, गच 2. अनार 3. रत्न की खान 5. कुटी, छोटा घर।

कुटी *स्त्री.* (तत्.) 1. जंगलों या देहात में रहने के लिए घास फूस से बनाया छोटा घर, पर्णशाला, कुटिया, झोपड़ी 2. मुरा नामक गंधद्रव्य 3. सफेद कुडा, कुटज 4. मरूआ नामक पौधा 5. मदिरा 6. लतागृह 7. पुष्प का स्तवक 8. मोड़, घुमाव।

कुटीचक्र *पुं.* (तत्.) चार प्रकार के संन्यासियों में से पहला, जो शिखासूत्र का त्याग नहीं करता, दंड और कमंडलु रखता है, कषाय पहनता और त्रिकाल संध्या करता है अपने कुटुंबियों और बंधुओं के अतिरिक्त दूसरे के घर भिक्षा नहीं लेता।

कुटीचर *पुं.* (तत्.) गृहस्थी का भार संतान को सौप कर तप में लगने वाला संन्यासी।

कुटीर *पुं.* (तत्.) 1. दे. कुटी 2. रति-क्रिया 3. एक पौधा।

कुटुंब *पुं.* (तत्.) 1. परिवार, खानदान 2. परिवार के प्रति कर्तव्य कर्म 3. रिश्तेदार 4. नाम 5. जाति 6. समूह जैसे- उसके कुटुंब में पत्नी एक लडका और दो लडकियाँ है, कुटुंब वंशावली।

कुटुंबिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. एक क्षुद्र गुल्म जो मीठा, संग्रहक, कफ पित्त का नाशक रक्तशोधक प्रण में उपकारी 2. घर गृहस्थी वाली स्त्री, परिवारवाली परिवारवाली स्त्री 3. कुटुंब के प्रधान की पत्नी 4. घर की नौकरनी।

कुटुंबी *पुं.* (तत्.) 1. परिवारवाला 2. कुटुंब के लोग, संबंधी 3. वह व्यक्ति जो किसी वस्तु की देखभाल करता हो 4. किसान।

कुटेक *स्त्री.* (तद्.) अनुचित दृढता, बुरी जिद।

कुटेव *स्त्री.* (देश.) खराब आदत, दुर्व्यसन।

कुटेशन *पुं.* (अं.) दे. कोटेशन।

कुटौनी *स्त्री.* (देश.) घास कूटने का काम।

कुटौनी पिसौनी *स्त्री.* (देश.) 1. धान कूटने और गेहूँ पीसने का काम 2. जीविका के लिए कठिन परिश्रम 3. धान कूटने की मजदूरी।

कुट्टनी *स्त्री.* (तत्.) 1. कुटनी, दूती 2. झगड़ा लगाने के लिए चुगली करने वाली।

कुट्टमित *पुं.* (तत्.) रति. 1. संयोग शृंगार का एक काल अर्थात सुख के अनुभव काल में स्त्रियों की मिथ्या दु:खचेष्टा 2. यह 11 प्रकारों के भावों में से एक है, हेमचंद्र ने इसे स्त्रियों के दस अलंकारों में से एक माना है।

कुट्टार *पुं.* (तत्.) 1. कंबल 2. रति क्रिया 3. पहाड़ 4. पृथकता, पार्थक्य।

कुट्टी *स्त्री.* (तद्.) 1. घास, चारे को छोटे छोटे टुकड़े में काटने की क्रिया 2. गंडासे से बारीक कटा हुआ चारा 3. कूटा और सड़ाया हुआ कागज, जिससे पुट्ठे और कलमदान बनते है 4. लड़को का एक शब्द जिसका प्रयोग मित्रता तोड़ते समय दाँतों से नाखून खुट से बुलाकर वे करते है 5. मैत्रीभंग 6. परकटा कबूतर।

कुठला *पुं.* (तद्.) 1. अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बर्तन 2. चूने की भट्टी।

कुठाँव *स्त्री.* (देश.) 1. बुरा ठौर, बुरी ठौरा, बुरी जगह 2. मर्मस्थान 3. शरीर का कोमल अंग मुहा. कुठाँव मारना- मर्म स्थान पर मारना, घोर आघात पहुँचाना, बुरी मौत मरना।

कुठाट *पुं.* (देश.) 1. बुरा समाज 2. बुरा प्रबंध, बुरा आयोजन।

कुठार *पुं.* (तत्.) 1. कुल्हाड़ी 2. परशु 3. नाश करनेवाला, कुलकुठार 4. वृक्ष पेड़ (तद्.) अनाज आदि रखने का बड़ा बरतन, काठिला जैसे- कुठार में धान भरा है, उसे खाली कर दे।

कुठारपाणि *वि.* (तत्.) जो हाथ में कुठार लिए हुए हो *पुं.* (तत्.) परशुराम का एक नाम।

कुठाराघात *पुं.* (तत्.) 1. कुल्हाड़ी का आघात 2. भारी संख्या, गहरी चोट 3. पूर्णतः नष्ट करनेवाला व्यवहार।

कुठारी *स्त्री.* (तत्.) कुल्हाड़ी, टांगी।

कुठाली *स्त्री.* (तद्.कुद+स्थाली) मिट्टी की घरिया जिसमें सोना चांदी गलाते हैं।

कुठिया *स्त्री.* (देश.)(कु हि.ठौर) अनाज रखने का मिट्टी का गहरा बरतन।

कुठेर *पुं.* (तत्.) 1. तुलसी का पौधा 2. अग्नि।

कुठेरक *पुं.* (तत्.) श्वेत तुलसी का पौधा।

कुठेरू *वि.* (तत्.) चंवर या पंखे की हवा।

कुठौर *पुं.* (देश.) 1. कुठाँव, बुरी जगह 2. बेठिकाना, बेसमय।

कुड़की *स्त्री.* (फ़ा.) दे. कुर्की।

कुड़कुड़ *पु.* (देश.) एक निरर्थक अनुरणात्मक शब्द, जिसे बोल कर पशु, पक्षी आदि खेत से हटाए जाते है।

कुड़कुड़ाना *अ.क्रि.* (देश.) किसी अनुचित या प्रतिकूल बात को देख या सुनकर भीतर ही भीतर क्षुब्ध होना, मन ही मन कुढ़ना।

कुड़कुड़ी *स्त्री.* (देश.) भूख या अजीर्ण से होनेवाली पेट की गुड़गुड़ाहट।

कुड़बुड़ाना *अ.क्रि.* (देश.) मन ही मन कुढ़ना, कुड्कुड़ाना जैसे- उसकी बात को दिल में मत लगाओ उसकी तो कुड़बुड़ाने की आदत है।

कुड़माई *स्त्री.* (देश.) विवाह के निश्चय के उपलक्ष्य में होनेवाला विवाहपूर्व लोकाचार, विवाहस्थिरता, मंगनी, सगाई जैसे- शीला की कुड़माई कल हुई है।

कुड़री *स्त्री.* (तद्.<कुंडली) 1. गेंडुरी, बिड़ई 2. वह भूमि जो नदी के घूमने से बीच में पड़कर तीन तरफ जल से घिर जाए।

कुड़ल *स्त्री.* (तद्.<कुंचन) शरीर में ऐंठन जो रक्त की कमी या उसके ठंडे पड़ने से होती है। यह अवस्था मिरगी आदि के कारण होती है।

कुडि *स्त्री.* (तद्.<कुण्डिका) मिट्टी या काठ का बना हुआ जल पात्र।

कुड्क *स्त्री.* (देश. कुड़क) 1. अंडा न देने वाली मुर्गी 2. निरर्थक वस्तु।

कुडौल (देश.)*वि.* (तत्-कु.तद्.डौल) बेढंगा, भद्दा।

कुड्मल *पुं.* (तद्.) 1. कली, मुकुल 2. नोक।

कुढंग *वि.* (तद्.) (तत्-कु.तद्.ढंग) 1. बुरी चाल का 2. बेढंगा *पुं.* (तद्.) बुरा ढंग, कुचाल।

कुढ़न *स्त्री.* (तद्.) 1. वह क्रोध जो मन में ही रहे, चिढ़, वह दुख जो दूसरे के अनिवार्य कष्ट को देख कर हो जैसे- तुम भाइयों के सामने तो कुछ नहीं बोली, लेकिन अब क्यों कुढ़न है 2. खीज, चिढ़।

कुढ़ना *स.क्रि.* (तद्.) 1. भीतर ही भीतर क्रोध करना 2. डाह करना, जलना 3. मसोसना जैसे- भाइयों के सामने तो चुप रहा, बाद में कुढ़ता रहा।

कुढ़ाना *क्रि.स.* (देश.) 1. क्रोध दिलाना, चिढ़ाना 2. कलपाना।

कुणक *पुं.* (तत्.) सद्यः उत्पन्न पशुशावक।

कुणप *पुं.* (तत्.) 1. मृत शरीर शव 2. इंगुदी 3. रांगा 4. बरछा 5. अशुचि गंध।

कुणाल *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार की चिडिया 2. अशोक का एक पुत्र।

कुतका *पुं.* (तद्.) 1. गतका 2. मोटा डंडा, सोटा 3. भांग घोटने का डंडा, भंगघोटना मुहा. कुतका दिखलाना या देखना- किसी चीज के देने से मना करना, अंगूठा दिखाना।

कुतकी *स्त्री.* (तद्.) छोटी लकड़ी, छड़ी।

कुतप *पुं.* (तत्.) 1. दिन का आठवाँ मुहूर्त जो मध्याह्न समय में होता है 2. एक बाजा 3. बकरी के बाल का कंबल 4. सूर्य 5. अग्नि 6. द्विज 7. अतिथि 8. भांजा 9. अन्न 11. कुश।

कुतरन *पुं.* (देश.) कुतरा हुआ टुकड़ा।

कुतरना *स.क्रि.* (तद्.) किसी वस्तु में से थोड़ा सा भाग दाँत से काट कर अलग करना प्रयो. बकरी ने पौधे कुतर डाले।

कुतरु *वि.* (तत्.) बुरा पेड़।

कुतर्क *पुं.* (तत्.) बुरा तर्क, बेढंगी दलील, बकवाद।

कुतला *पुं.* (तद्.) हँसिया।

कुताल *पुं.* (तत्.) संगीत में वह ताल जो अनियमित हो।

कुतिया *स्त्री.* (देश.) कुत्ते की मादा, कूकरी।

कुतुक *पुं.* (तत्.) 1. इच्छा, लालसा 2. कौतुक 3. उत्कट, कामना।

कुतुप *पुं.* (तत्.) 1. दिनमान (24 घंटे) का आठवाँ भाग 2. तेल रखने की चमड़े की कुप्पी।

कुतुब *पुं.* (अर.) 1. ध्रुव तारा 2. नेता, गायक 3. पुस्तकें (किताब का बहुवचन)।

कुतुबखाना *पुं.* (फा.) पुस्तकालय।

कुतुब जनूबी *पुं.* (अर.) दक्षिणी ध्रुव।

कुतुबनुमा *पुं.* (फा.<कुत्बनुमः) एक यंत्र जिससे दिशा का ज्ञान होता है, दिग्दर्शक यंत्र (यह यंत्र सामुद्रिक नौकाओं और मापकों के काम आता है)।

कुतुबफरोश *पुं.* (फा.) पुस्तकविक्रेता।

कुतुबमीनार *स्त्री.* (अर.) पुरानी दिल्ली की एक ऊँची मीनार, जिसे गुलाम वंश के बादशाह कुतुबुद्दीन ऐबक ने निर्मित कराया था।

कुतुबशुमाली *पुं.* (अर.) उत्तरी ध्रुव।

कुतूहल *पुं.* (तत्.) 1. किसी वस्तु को देखने या सुनने की प्रबल इच्छा 2. आश्चर्य 3. नायिका का अलंकार

कुत्ता *पुं.* (देश.) 1. भेड़िया, प्रजाति का एक मांसभक्षी पशु, जो अब प्राय: पालतू पशु हो गया है, श्वान, कूकुर मुहा. क्या कुत्ते ने काटा है -क्या क्या पागल हुए है? कुत्ता घसीटना- नीच काम करना; कुत्ते की मौत मारना- बहुत बुरी तरह मारना; कुत्ते की सी हुडुक उठना- 1. पागल कुत्ते के काटने की लहर उठना 2. कुसमय में किसी वस्तु के लिए आतुर होना। कुत्ते की दुम- कभी अपनी बुरी चाल न छोड़ने वाला, जिस पर सत्संग का प्रभाव न पड़े; 2. एक प्रकार की घास जो कपड़ों में लिपट जाती है, जिसे लपटौवा भी कहते है 3. कल का वह पुरजा जो किसी चक्कर को उलटा या पीछे की ओर घूमने से रोकता है 4. लकड़ी का एक छोटा चौकोर टुकड़ा जो दरवाज़े में लगा रहता है और जिसके नीचे गिरा देने से दरवाजा नहीं खुल सकता है 5. संदूक का घोड़ा 6. नीच मनुष्य।

कुत्ती *स्त्री.* (देश.) देशी कुतिया।

कुत्तेखसी *स्त्री.* (देश.) लाक्ष.अर्थ लोभी, तुच्छ, दुष्ट दुष्ट तुच्छ और व्यर्थ के कार्य।

कुत्सन *पुं.* (तत्.) 1. निंदा 2. नीच काम, निंदित कर्म 3. भर्त्सना करना।

कुत्सा *स्त्री.* (तत्.) किसी अन्य के कुल, आचरण आदि की निंदा करना।

कुत्सित *पुं.* (तत्.) 1. कुष्ठ या कुटा नाम की औषधि 2. कुड़ा कोरैया *वि.* 1. नीच, अधम 2. निंदित, खराब।

कुथ *पु.* (तत्.) 1 गलीचा, कालीन 2. हाथी की झूल 3. कुश 4. एक कीड़ा।

कुथना *अ.क्रि.* (तद्.) बहुत मार खाना।

कुथा *स्त्री.* (तत्.) 1. कथा, कथरी 2. हाथी की झूल।

कुथुआ *पुं.* (देश.) बालकों की आँख का एक रोग जिसमें पलकों के भीतर दाने पड़ जाते हैं और खुजली होती है।

कुदकना *अ.क्रि.* (तद्.) उछलकूद करना।

कुदक्कड़ *वि.* (देश.) कूदने में कुशल, कूदनेवाला।

कुदक्का *पुं.* (देश.) उछल कूद करना मुहा. कुदक्का मारना- इधर उधर कूदते फिरना।

कुदरत *स्त्री.* (अर.) 1. प्रकृति 2. माया. महिमा 3. शक्ति, प्रमुख, सामर्थ्य मुहा. कुदरत का खेल- ईश्वरीय लीला उदा. पढ़ै फारसी बेचें तेल, यह देखो कुदरत का खेल 3. कारीगारी, रचना।

कुदरती *वि.* (अर.) 1. प्राकृतिक रूप से, स्वाभाविक रूप से 2. दैवी, ईश्वरीय।

कुदर्शन *वि.* (तत्.) जो देखने में बुरा मालूम हो, कुरूप, भद्दा।

कुदलाना *अ.क्रि.* (देश.) कूदते हुए चलना, उछलना उदा. एहि विधि वरषा ऋतु के माहीं। वन मछरू तिन सम कुदलाही।

कुदशा *स्त्री.* (तत्.) बुरी गति, अधोगति।

कुदसियाँ *पुं.* (अर.) 1. फरिश्ता, पवित्र 2. औचट, बुरी स्थिति 3. बुरा स्थान, विकट स्थान।

कुदाँव *पुं.* (तत्.कु+तद्. दाँव) (देश.) 1. विश्वासघात 2. अनुचितचाल 3. गलत ।

कुदाता *पुं.* (तत्.) 1. कृपण 2. पृथ्वी का दान करनेवाला।

कुदान *पुं.* (तत्.) 1. बुरा दान (लेनेवाले के लिए) विशे. शय्या दान, गजदान आदि लेने वाले बुरे समझे जाते हैं 2. कुपात्र या अयोग्य आदि को दान *स्त्री.* 1. कूदने की क्रिया 2. उतनी दूरी पार पार करना जितनी एक बार कूद कर पार की जाए, छलांग जैसे- वह बड़ी लंबी कुदान मारता है 3. कूदने का स्थान।

कुदाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. कूदने का प्रेरणार्थक रूप, कूदने में प्रवृत्त करना 2. घोड़े आदि पर चढ़ कर उसे दौड़ाना 3. कुधान्य।

कुदाम *पुं.* (देश.) खोटा सिक्का, बुरा धन।

कुदाल *स्त्री.* (तद्.) लोहे का बना एक औजार टि. यह 10 इंच लंबा और चार अंगुल चौड़ा होता है, इसके एक सिरे पर छेद में लकड़ी का एक लंबा बेट लगा रहता है, यह मिट्टी खोदने या खेत गोड़ने के काम आता है मुहा. कुदाल बजाना- (घर का) खोदा जाना।

कुदाली *स्त्री.* (देश.) छोटी कुदाल।

कुदास *पुं.* (तत्.) बुरा सेवक।

कुदिन *पुं.* (तत्.) आपत्ति का समय, कष्ट के दिन।

कुदृष्टि *स्त्री.* (तत्.) बुरी नजर, बद निगाह।

कुदेरना *स.क्रि.* (देश.) खुरचना, छीलना।

कुदेव *पुं.* (तत्.) 1. (पृथ्वी के देवता) भूदेव, भूसुर 2. (बुरा देव) राक्षस 3. जैनियों के अनुसार अन्य धर्मावलंबी के देवता।

कुद्रंक *पुं.* (तत्.) घंटाघर, वह स्थान जहाँ ऊँची जगह पर घड़ी लगी हो।

कुद्रव *पुं.* (तत्.) कोदो, कोदई।

कुधर *पुं.* (तद्.) 1. पहाड़, भूधर 2. शेषनाग।

कुधातु *स्त्री.* (तत्.) बुरा धातु, लोहा जैसे- पारस के स्पर्श से लोहे जैसी कुधातु भी सोना बन जाती है।

कुधान्य *पुं.* (तत्.) वह अन्न जो पाप की कमाई का हो जैसे- तुमने जिस कुधान्य का सेवन किया है, उसी के परिणाम से तुम्हारी यह अवस्था हुई है।

कुधी *वि.* (तत्.) 1. मंदबुद्धि, मूर्ख 2. बदमाश।

कुनना *स.क्रि.* (तद्.) 1. चमकीला व चिकना करने के लिए बर्तन खरादना 2. खुरचना, छीलना।

कुनबा *पुं.* (तद्.<कुटुम्ब) खानदान उदा. कहीं की ईट कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा मुहा. कुनबा जोड़ना- एक कुटुंब के लोगों को इकट्ठा करना, परिवार जुटाना।

कुनमुनाना *अ.क्रि.* (अनु.) सोते शिशु का कुछ हलचल करना, कुलबुलाना 2. कुछ धीरे-धीरे शिशु का रोना।

कुनवा *पुं.* (देश.) खरादनेवाला व्यक्ति, बरतन आदि आदि चरख पर चढ़ा कर खरादनेवाला व्यक्ति, खरादी।

कुनाई *स्त्री.* (तद्.) 1. वह चूरा या बुकनी जो किसी किसी वस्तु को खरादने पर निकलती है, बुरादा 2. खरादने की क्रिया 3. खरादने की मजदूरी।

कुनाम *पुं.* (देश.) कुख्याति, बदनामी।

कुनिया *पुं.* (तद्.) खरादने वाला व्यक्ति।

कुनीति *स्त्री.* (तत्.) दुर्नीति, अविचार।

कुनेर-कुनेरा *पुं.* (देश.) लोहे पीतल आदि के बरतनों की कुनाई करनेवाली जाति और उस जाति का व्यक्ति।

कुनैन *पुं.* (अं.<क्विनीन) एक औषधि जो मलेरिया ज्वर के लिए अत्यंत उपयोगी मानी जाती है, कुनाइन टि. यह एक पेड़ की छाल का सत है, जिसे सिंकोना/सिकाना कहते है, जो दक्षिण अमेरिका में ही होता था अब यह भारतवर्ष के नीलगिरि, मैसूर, सिक्किम आदि पर्वतीय स्थानों में भी लगाया जाता है, सिंकोन कई प्रकार का होता है- भूरी, लाल और पीली छाल वाला।

कुन्याय *पुं.* (तत्.) न्यायविरूद्ध, अन्याय।

कुपंथ *पुं.* (तत्.) 1. बुरा मार्ग 2. निषिद्ध आचरण, कुचाल 2. बुरा मत, कुत्सित सिद्धांत।

कुपथगामी *वि.* (तत्.) कुमार्गी, वह आहार विहार जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो, बदपरहेजी।

कुपात्र *वि.* (तत्.) 1. किसी विषय का अनधिकारी, अयोग्य 2. वह जिसे दान देना शास्त्रों में निषिद्ध है।

कुपित *वि.* (तत्.) 1. क्रुद्ध, क्रोधित 2. नाराज।

कुपुत्र *पुं.* (तत्.) 1. वह पुत्र जो कुपथगामी हो, कुपूत।

कुप्पा *पुं.* (तद्.) चमड़े का बना हुआ घड़े के आकार का एक बड़ा बरतन जिसमें घी, तेल आदि रखते हैं मुहा. कुप्पा लुढना या लुढकना- किसी बड़े आदमी का मरना, अधिक व्यय होना; कुप्पा होना या हो जाना- फूल जाना, सूजना जैसे- कीड़े के काटने पर उसका मुँह कुप्पा हो गया, मोटा होना- वह कुछ ही दिनों में कुप्पा हो गया, रूठना जैसे- जरा सी बात में वह कुप्पा हो जाता है; फूल कर कुप्पा होना- मोटा होना, अत्यंत हर्षित होना जैसे- अपनी प्रशंसा सुनकर वह फूल कर कुप्पा हो गए, किसी का मुँह कुप्पा होना- किसी का नाराज होकर मुँह फुलाना जैसे- जरा सी बात पर उसका मुँह कुप्पा हो गया; कुप्पा सा मुँह करना- रूठ कर बोलचाल बंद करना।

कुप्पासाज *पुं.* (तद्.+फा.) कुप्पा बनानेवाला व्यक्ति।

कुप्पी *स्त्री.* (देश.) चमड़े का बना हुआ कुप्पे से छोटा बरतन जिसमें तेल-फुलेल आदि रखते हैं, फुलेली।

कुफर *पुं.* (अर.<कुफ्र) नास्तिकता, कृतघ्नता अनुचित बात।

कुफेर *पुं.* (देश.) बुरे दिनों का चक्कर, दुर्भाग्य।

कुफ्र *पुं.* (अर.) 1. मुस्लिम मत से भिन्न अन्य मत 2. मुस्लिम धर्म के विरूद्ध वाक्य।

कुबड़ा *पुं.* (तद्.) वह पुरूष जिसकी पीठ कुब्ज रोग के कारण टेढ़ी हो गई हो या झुक गई हो *वि.* झुका हुआ, टेढ़ा, कुबड़ी (स्त्री.)।

कुबड़ापन *पुं.* (तद्.) कुबड़ा होने का भाव।

कुबरी *स्त्री.* (देश.) 1. वह छड़ी जिसका सिरा झुका हो, टेढ़िया 2. कंस की एक दासी जिसकी पीठ टेढ़ी थी, वह कृष्ण से प्रेम करती थी, कुब्जा 3. एक प्रकार की मछली जो भारत, लंका और चीन में पाई जाती है।

कुबली *स्त्री.* (तत्.) पिंडी, गोला।

कुबुद्धि *पुं.* (तत्.) जिसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई हो, जिसकी अक्ल खराब हो गई हो स्त्री 1. मूर्खता 2. बुरी सलाह।

कुबुबशाही *स्त्री.* (अर.) दक्षिण भारत की पाँच बहमनी राज्यों में से एक।

कुबेर *पुं.* (तत्.) 1. एक देवता, जो इंद्र की नौ निधियों के भंडारी और महादेवजी के मित्र समझे जाते हैं, धन का देवता टि. यह विश्रवस ऋषि के पुत्र और रावण के सौतेले भाई थे, इनकी माता का नाम इडविडा था, इन्होंने विश्वकर्मा से लंका

बनवाई थी, रावण द्वारा इन्हें निकाल देने पर ब्रह ब्रह्मा ने इन्हे देवता बना कर उत्तर दिशा का राज दे दिया और इंद्र का भंडारी बना दिया, यक्षराज, कुबेर।

कुबेराद्रि *पुं.* (तत्.) कुबेर नामक पर्वत।

कुबेला *स्त्री.* (तद्.) बुरा समय, अनुपयुक्त काल।

कुबोल *स्त्री.* (देश.) बुरी बात, अशुभ वचन।

कुबोलनी *स्त्री.* (देश.) अशुभ भाषिणी।

कुब्ज *वि.* (तत्.) जिसकी पीठ टेढ़ी हो, कुबड़ा।

कुब्जा *स्त्री.* (तत्.) 1. कंस की एक दासी, जिसकी पीठ टेढ़ी थी 2. कैकेयी की मंथरा नाम की दासी।

कुब्जिका *स्त्री.* (तत्.) 1. आठ वर्ष की अवस्था की लडकी 2. दुर्गा का एक नाम।

कुभा *स्त्री.* (तत्.) 1. पृथ्वी की छाया 2. बुरी दीप्ति दीप्ति 3. काबुल नदी।

कुभाव *पुं.* (तत्.) 1. अनुचित भाव, दुर्वृत्ति 2. प्रेमशून्य भाव।

कुमंत्रणा *स्त्री.* (तत्.) बुरी सलाह।

कुमंत्रित *वि.* (तत्.) जिसे गलत सलाह दी गई है।

कुमक *स्त्री.* (तुर्की.) 1. सेना की सहायता के लिए भेजी हुई सेना 2. सहायता, मदद 3. पक्षपात, तरफदारी मुहा. कुमक पर होना- हिमायत करना, पक्ष लेना।

कुमकी *स्त्री.* (तुर्की.) हाथियों के पकड़ने के लिए सिखाई हुई हथिनी।

कुमकुम *पुं.* (तद्.) 1. केशर 2. कुमकुमा।

कुमकुमा *पुं.* (अर.<कुम्कुम) 1. कांच का बना गोल लट्टू, सजावटी बल्व 2. लाख का बना पोला गोल लट्टू जिसमें अबीर गुलाल भर कर होली में एक दूसरे पर मारते है 3. एक प्रकार का तंग मुँह का छोटा लोटा 4. एक प्रकार की टांकी, जिससे सुनार गहनों में नक्काशी के काम में प्रयोग करते है।

कुमति *स्त्री.* (तत्.) खराब बुद्धि।

कुमाऊनी *स्त्री.* (देश.) कुमाऊँ की भाषा, कुमाऊँ प्रदेश का वासी।

कुमाच *पुं.* (अर.<कुमाश) 1. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा 2. गंजीफे के पत्ते के एक रंग का नाम *पुं.* (देश.) बेडौल रोटी, जो कहीं से पतली और कहीं से मोटी हो।

कुमार *पुं.* (तत्.) 1. पाँच वर्ष की आयु का बालक 2. पुत्र, लड़का 3. युवराज 4. कार्तिकेय 5. सिंध नद 6. तोता 7. खरा सोना 8. सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार आदि ऋषि जो सदा बालक ही रहते है 9. युवावस्था या उससे पहले की अवस्था वाला पुत्र 10. जैनियों के अनुसार 21 वें जिन 11. एक ग्रह 12. मंगल ग्रह 13. साईस 14. अग्नि के एक पुत्र का नाम जिन्होंने कई वैदिक मंत्रों का प्रकाश किया था 15. अग्नि 16. एक प्रजापति का नाम 17. भारत वर्ष का नाम 18. एक ऊँचा वृक्ष जिसका पतझड़ बरसात में होता है *वि.* (तत्) अविवाहित, कुँआरा *स्त्री.* कुमारी।

कुमारक *पुं.* (तत्.) 1. बच्चा 2. आँख की पुतली।

कुमारजीव *पुं.* (तत्.) पुत्रजीवक नाम का एक वृक्ष।

कुमारतंत्र *पुं.* (तत्.) वैद्यक का वह भाग जिसमें बच्चों के रोगों का निदान व चिकित्सा हो, बालतंत्र।

कुमारभृत्य *पुं.* (तत्.) 1. बच्चों की देखभाल 2. प्रसूता की देखभाल, दाई का काम।

कुमारव्रत *पुं.* (तत्.) जीवनभर ब्रह्मचर्य पालन करने का व्रत।

कुमारिका *स्त्री.* (तत्.) कुमारी उदा. जागी पृथ्वी तनया कुमारिका छवि, अच्युत।

कुमारी *स्त्री.* (तत्.) 1. दस वर्ष से बारह वर्ष की अवस्था की कन्या 2. अविवाहित कन्या 3. कन्या, पुत्री 4. घीकुआँर 5. नवमल्लिका 6. बांझ ककोड़ी 7. बड़ी इलाचयी 8. यामा पक्षी 9. सीताजी का एक नाम 10. पार्वती 11. दुर्गा 12. एक अंतरीप जो भारत के दक्षिण में है 13. चमेली 14. सेवती

15. पृथ्वी का मध्य भाग 16. लंकद्वीप की एक नदी 17. अपराजिता *स्त्री* (तत्.) वह कन्या जिसका विवाह न हुआ हो।

कुमारीपुत्र *पुं.* (तत्.) 1. कुमारी से उत्पन्न पुत्र 2. कर्ण का नाम।

कुमारीपूजन *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की पूजा जो देवीपूजन के समय होती है और जिससे कुमारी बालिकाओं का पूजन करके उन्हें मिष्टान्न खिलाया जाता है।

कुमार्ग *पुं.* (तत्.) 1. बुरा मार्ग 2. अधर्म।

कुमार्गगामी *पुं.* (तत्.) 1. कुपंथी 2. अधर्मी।

कुमार्गी *वि.* (तत्.) 1. बदचलन, कुचाली 2. अधर्मी, धर्महीन।

कुमुद *पुं.* (तत्.) 1. कुई 2. लाल कमल 3. निर्दय, बेरहम 4. कंजूस 5. चांदी 6. विष्णु 7. एक बंदर का नाम जो रावण से लड़ा था 8. एक प्रकार का दैत्य 9. एक द्वीप का नाम 10. एक नाग का नाम, इसकी बहन कुमुद्वती कुश की पत्नी थी 11. 11. आठ दिग्गजों में से एक जो दक्षिण पश्चिम कोण में रहता है 12. विष्णु का एक पार्षद 13. संगीत का एक ताल 14. एक केतु तारा जो कुई के आकार का है टि. यह पश्चिम में उदय होता है और एक ही रात को दिखाई देता है इसकी शिखा पूर्व की ओर होती है, कहते है उसके उदय होने पर दस वर्ष तक अकाल पड़ता है।

कुमुदकला *स्त्री.* (तत्.) 1. चंद्रकला, चाँदनी 2. ज्योत्स्ना।

कुमुदकिरण *स्त्री.* (तत्.) चंद्रमा की किरण।

कुमुदबंधु *पुं.* (तत्.) चंद्रमा पर्या. कुमुदनाथ, कुमुदपति, कुमुदबांधव।

कुमुदिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. कुई 2. वह स्थान जहाँ कुमुद हो।

कुमुदिनीपति *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

कुमुद्वती *स्त्री.* (तत्.) 1. षड्ज स्वर की चार श्रुतियों में से दूसरी श्रुति 2. नागराज कुमुद की बहन और कुश की स्त्री 3. कुमुद से पूर्ण बाबड़ी।

कुमेरू *पुं.* (तत्.) दक्षिणी ध्रुव।

कुम्हड़ा *पुं.* (तद्.) 1. फैलनेवाली बेल जिसके फलों की तरकारी और मुरब्बा, पाक आदि बनाए जाते हैं पर्या. काशीफल, पेठा मुहा. कुम्हड़ बतिया-कुम्हड़े का छोटा फल, अशक्त और निर्बल मनुष्य।

कुम्हड़ौरी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की बरी, जो उड़द उड़द की दाली की पीठी में कुम्हड़े के महीन टुकड़े मिलाकर बनाई जाती है।

कुम्हरौटी *स्त्री.* (देश.) 1. एक प्रकार की काली मिट्टी जिससे कुम्हार लोग घड़े आदि बनाते हैं, जटाव 2. कुम्हारों की बस्ती।

कुम्हलाना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. ताजगी का जाता रहना, सरसता और हरापन न रहना, मुरझाना जैसे- फूल पत्ते आदि का कुम्हलाना 2. सूखने पर होना 3. प्रफुल्लता रहित होना, प्रभावहीन होना जैसे- धूप के कारण चेहरा कुम्हला गया।

कुम्हार *पुं.* (तद्.) 1. मिट्टी काबरतन बनाने वाला 2. मिट्टी का बरतन बनाने वाली एक जाति।

कुम्हिलाना *क्रि.अ.* (तत्.) दे. कुम्हलाना।

कुरंग *पुं.* (तत्.) 1. बादामी या तामड़े के रंग का हिरन 2. मृग, हिरण 3. बरवै छंद का एक नाम 4. चंद्रमा का धब्बा 5. बुरा रंग ढंग, बुरा, लक्षण 6. घोड़े का एक रंग जो लोहे के समान होता है, नीला, कुम्मैत, लखौरी 7. इस रंग का घोड़ा।

कुरंगनयना *वि.* (तत्.) (स्त्री.) हिरण की आँखों के समान बड़ी-बड़ी आँखोवाली पर्या. कुंरगनयनी, कुरंगलोचना।

कुरंगलांछन *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

कुरंगसार *पुं.* (तत्.) कस्तूरी, मुश्क।

कुरंगी *वि.* (तत्.) बुरे लक्षणवाला, भद्दे रंग वाला।

कुरंगी *स्त्री.* (तत्.) हरिणी, मृगी।

कुरंड *पुं.* (तत्.) 1. कुलक्षणी चमकीला एक प्रकार का कड़ा खनिज पदार्थ 2. मानिकरेत एक प्रकार का रत्न जो रंग के अनुसार मानिक (लाल) नीलम पुखराज, गोमेद आदि कहलाता है 3. अंडवृद्धि का एक रोग।

कुरंडक *पुं.* (तत्.) पीली कटसरैया।

कुरआन *पुं.* (अर.) दे. कुरान।

कुरकी *स्त्री.* (तत्.) दे. 'कुर्की'।

कुरकुट *पुं.* (तद्.) 1. मुर्गा 2. मुर्गे की बोली 3. किसी वस्तु का छोटा टुकड़ा।

कुरकुटा *पुं.* (देश.) 1. किसी वस्तु का कूटा हुआ रवा, टुकड़ा 2. रोटी का टुकड़ा।

कुरकुरा *वि.* (देश.) सिंकी या तली भुनी हुई ऐसी चीज जिसे तोड़ने या खाने पर 'कुरकुर' की आवाज आती है।

कुरखेत *पुं.* (तद्.) वह खेत जिसकी जुताई हो गई हो किंतु बुवाई न हुई हो।

कुरगरा *पुं.* (देश.) एक छोटी थापी जिससे कारनिस आदि का बारीक काम किया जाता है।

कुरचिल्ल *पुं.* (तत्.) केकड़ा।

कुरट *पुं.* (तत्.) 1. चमड़ा बेचनेवाला 2. जूते बनानेवाला, चर्मकार।

कुरता *स्त्री.* (तु.) कमीज की तरह का एक ढीला पहनावा।

कुरती *स्त्री.* (देश.) 1. स्त्रियों का एक पहनावा जिसमें आगे बटन लगे रहते है 2. कुरता का लघु रूप 3. सुनारों की बोली में, स्त्री।

कुरबक *पुं.* (तत्.) 1. कुरैया का वृक्ष और उसके लाल फूल, कुरव 2. एक काँटेदार क्षुप।

कुरबान *वि.* (अर.) किसी उददेश्य से किसी देवता आदि के लिए दी गई जीव या पशु की बलि 1. जो न्यौछावार किया गया हो 2. न्यौछावर, निसार 3. बलि मुहा. कुरबान करना-न्यौछावर करना, कुरबान होना- न्यौछावर होना,मारना, प्राण देना।

कुरबानी *स्त्री.* (अ.) 1. किसी देवता आदि के लिए जीव को बलिदान करने की क्रिया, कुरबान करने का काम 2. आत्मत्याग 3. त्याग, स्वार्थत्याग।

कुरमुराना *अ.क्रि.* (अनु.) कुर-कुर करना, गतिशील होना।

कुरर *पुं.* (तत्.) 1. गिद्ध की गति का एक पक्षी जिसके लाल पाँव, लंबी चोंच तथा वह जलतट में रहती है 2. कराँकुल, क्रौंच।

कुररी *स्त्री.* (तत्.) 1. आर्या छंद का एक भेद जिसमें चार गुरु और उनचास लघु होते हैं 2. कुररा का स्त्रीलिंग रूप, क्रौंची।

कुरल *पुं.* (तत्.) 1. क्रौंच पक्षी 2. बाज पक्षी 3. कुंचित केश, घुँघराले बाल 4. मद्रास के निकट मयलापुरम् में जन्म लेनेवाले संत कवि तिरूवल्लुवर रचित तमिल का धर्मनीति शास्त्र ग्रंथ जो तमिलवेद नाम से प्रसिद्ध है।

कुरला *पुं.* (देश.) 1. खेल, क्रीड़ा 2. कुल्ला।

कुरव *पुं.* (तत्.) 1. एक वृक्ष जिसके फूल लाल होते हैं, लाल फूल की कटसरैया, लाल कुरैया, कुरबक, मड़ुवा 2. सफेदजमदार, आक 3. सियार 4. कर्णकटु शब्द, कर्कश स्वर।

कुरव *वि.* (तत्.) कर्कश, कटु शब्द, करनेवाला।

कुरसथ *पुं.* (देश.) एक प्रकार की मैली खांड।

कुरसा *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार के वृक्ष की लकड़ी जो मकान और पुल बनाने के काम आती है। यह प्रायः कुमाऊँ, नीलगिरि, बंगाल, आसाम में होती है 2. जंगली गोभी।

कुरसी *स्त्री.* (अर.) 1. एक व्यक्ति के बैठने का ऊँचे पाये का आसन जिसमें पीछे की ओर सहारे के लिए पटरी सी लगी होती है, किसी-किसी में हाथों के सहारे के लिए बाजू भी होते है यौ. आराम कुरसी-एक प्रकार की बड़ी कुरसी जिस पर आदमी लेट सकता है 2. इमारत की सतह ऊँची करने के लिए बनाया गया चबूतरा, पीढ़ी, पुश्त 3. डोगियों में दोनों ओर बनी हुई बैठने की जगह 4. वह चौकोर ताबीज जो हुमेल के बीच में रहती है, चौकी, उखती 5. नाव के किनारे की तख्तबंदी 6. जहाज के ऊपर की आड़ी तिरछी लकड़ियाँ जिन पर मल्लाह पाल की रस्सियाँ कसते है 7. नाव की लंबाई में आरोहियों के बैठने के लिए पट्टियों क चौरस स्थान।

कुरसीनामा *पुं.* (फा.) वंशवृक्ष, लिखित वंश परम्परा।

कुरान *पुं.* (अर.) अरबी भाषा की एक पुस्तक जो मुसलमानों का धर्मग्रंथ है और जिसके 'पारा' नामक 30 भाग है मुहा. कुरान उठाना या कुरान पर हाथ रखना- कुरान की साखी देना, कुरान की कसम खाना; कुरान की जामा पहनना- अत्यंत धर्मनिष्ठ बनना।

कुराह *स्त्री.* (देश.) कुमार्ग, खराब रास्ता।

कुराही *वि.* (देश.) कुमार्गी, बदचलन।

कुरियाल *स्त्री.* (देश.) चिडियों का मौज में बैठ कर पंख खुजलाना या झड़झड़ाना मुहा. कुरियाल में आना- चिडियों का आनंद में होना, मौज में आना; कुरियाल में गुलेल लगाना- रंग में भंग होना।

कुरीति *स्त्री.* (तत्.) 1. बुरी रीति, कुप्रथा 2. कुचाल।

कुरीर *पुं.* (तत्.) 1. स्त्रियों का शिरोवास, स्त्रियों के सिर का एक पहनावा, कुंब 2. संभोग।

कुरुराज *पुं.* (तत्.) 1. दुर्योधन 2. युधिष्ठिर।

कुरुल *पुं.* (तत्.) बाल की लट जो माथे पर बिखरी हो।

कुरु *पुं.* (तत्.) 1. वैदिक आर्यों का एक कुल 2. दो भागों में विभक्त-उत्तर कुरू और दक्षिण का एक प्राचीन देश इसको पहले स्वर्ग भी कहते थे 3. एक सोमवंशी राजा जिसके वंश में पांडु और धृतराष्ट्र हुए थे 4. कुरू वंश में उत्पन्न पुरू 5. पुरोहित, कर्ता 6. पका हुआ चावल, भात।

कुरुई *स्त्री.* (तद्.) बाँस या मूँज की बनी छोटी डलिया, मौनी।

कुरुकंदक *पुं.* (तत्.) मूलक, मूली।

कुरुक्षेत्र *पुं.* (तत्.) एक बहुत प्राचीन तीर्थ, जिसमें महाभारत का युद्ध हुआ था।

कुरुख *वि.* (तत्.+फा.रुख) जो मुँह बनाए हुए हो, नाराज, कुपित।

कुरुजांगल *पुं.* (तत्.) पांचाल देश के पश्चिम में एक प्राचीन देश।

कुरुव *पुं.* (तत्.) सदा बहार का फूल।

कुरुवक *पुं.* (तत्.) कुरबक।

कुरुविंद *पुं.* (तत्.) 1. मोथा 2. काच लवण 3. उरद 4. मानिक 5. दर्पण 6. ईगुर, शिंगरफ।

कुरुविल *पुं.* (तत्.) एक पुरानी तौल का नाम।

कुरुविस्त *पुं.* (तत्.) स्वर्ण का निश्चित परिमाण (700 ट्राय ग्रेन के बराबर 4 तोले सोने का तोल)।

कुरुवृद्ध *पुं.* (तत्.) भीष्म।

कुरुश्रेष्ठ/कुरुसत्तम *पुं.* (तत्.) अर्जुन।

कुरूप *वि.* (तत्.) बुरी शक्ल का, बदसूरत, बेडौल।

कुरूपता *स्त्री.* (तत्.) कुरूप होने का भाव, बदसूरती।

कुरूप्य *पुं.* (तत्.) टीन।

कुरूला *स्त्री.* (तद्.) संगीत के एक प्रकार की गमक।

कुरेदना *स.क्रि.* (तद्.) खुरचना, खरोचना।

कुरेदनी *स्त्री.* (तद्.) लकड़ी या लोहे आदि का बना लंबा, नुकीला और छड़े के आकार का एक औजार जो भट्ठे की आग, ढेर आदि कुरेदने के काम आता है, दाँत, कान आदि कुरेदनी की चाँदी, ताँबे, लकड़ी आदि की तीली।

कुर्क *वि.* (तुर्की.) अपराधी,देनदार के माल जायदाद आदि की जब्ती।

कुर्क अमीन *पुं.* (तु.कुर्क+फा.अमीन) वह सरकारी कर्मचारी जो अदालत के आदेशानुसार जायदाद की कुर्की करता है।

कुर्कट *पुं.* (तत्.) 1. मुर्गा, कुक्कुट 2. कूड़ा, करकट।

कुर्कनामा *पुं.* (तुर्की.फा.) अदालत का वह आदेश जिसके अनुसार कुर्क अमीन किसी जायदाद की कुर्की करता है, जब्ती का परवाना।

कुर्कर *पुं.* (तद्.) कुत्ता, श्वान।

कुर्की *स्त्री.* (तुर्की.) देनदारी न चुकाने वाला या भागे हुए अपराधी को अदालत में हाजिर कराने के लिए उसकी जायदाद का जब्त किया जाना मुहा.

कुर्की उठाना- जब्त की हुई जायदाद को छोड़ देना; कुर्की बैठाना- कुर्क करना; कुर्की ले जाना- कुर्कनामा लेकर कुर्की कराने जाना।

कुर्ता *पुं.* (तुर्की.) दे. कुरता।

कुर्ती *स्त्री.* (तुर्की.) दे. कुरती।

कुर्बान *पुं.* (अर.) दे. कुरबान।

कुर्बानी *स्त्री.* (अर.) दे. कुरबानी।

कुर्मी *पुं.* (देश.) हिंदुओं की एक जाति जो खेती करती है, कुरमी।

कुर्रा *पुं.* (अर.) 1. रमल के काम में प्रयुक्त पाँसा, पाशक, सारि 2. *पुं.* सुख, चैन, ठंडक, जोति 3. *पुं.* गधे या घोड़े का बच्चा, कोड़ा, चाबुक।

कुर्री *स्त्री.* (देश.) 1. हेंगा, पटरा, पटेला, सुहागा 2. कुरकुरी हड्डी 3. गोल टिकिया।

कुर्सी *स्त्री.* (अर.) दे. कुरसी।

कुलंजन *पुं.* (देश.) अदरक की तरह का एक पौधा, कुलंज, कुर्णज, गंधमूल 2. पानी की जड़ या डंठल जिसे लोग खाली या कत्था, चूना मिलाकर खाते हैं 3. पान की जड़।

कुलंधर *वि.* (तत्.) वंश परंपरा को चलाने वाला।

कुल *पुं.* (तत्.) वंश, घराना, खानदान यौ. कुलकानि, कुलपति, कुलकलंक, कुलांगार, कुलतिलक, कुलभूषण कुलकंटक मुहा. कुल बखानना- वंश विरुदावलि वर्णन करना बहुत गालियाँ देना 2. जाति 3. समूह, समुदाय, झुंड जैसे- कविकुलभूषण, कविकुलतिलक 4. भवन, घर 5. तंत्र के अनुसार प्रकृति, काल, आकाश, जल, तेज, वायु आदि पदार्थ 6. वाम मार्ग, कौशल धर्म 7. संगीत में एक ताल जिसमें इस प्रकार 15 मात्राएँ होती है- द्रुत, लघुद्रुत, लघु, द्रुत, लघु, द्रुत, द्रुत, द्रुत, द्रुत और लघु 8. स्मृति के अनुसार व्यापारियों या कारीगरों का संघ, श्रेणी, कंपनी 9. कौटिल्य के अनुसार शासन में आने वाले उच्च लोगों का मंडल, कुलीनतंत्र राज्य 10. देह शरीर 11. अगला भाग 12. एक प्रकार का नीला पत्थर 13. गोल 14. नगर, जनपद 15. योग के अनुसार कुंडलिनी शक्ति जो मूलाधार चक्र में है।

कुल *वि.* (अर.) समस्त, सब, सारा, पूरा, तमाम यौ. कुलजमा 1. सब मिलाकर 2. केवल मात्र।

कुलकंटक *पुं.* (तत्.) अपनी कुचाल से अपने वंशवालों को दुःखी करने वाला।

कुलक *वि.* (तत्.) अच्छे कुल खानदान का *पुं.* 1. मकर, तेंदुआ नाम का वृक्ष 2. कुचिला 3. परवल या उसकी लता 4. हरा साँप 5. दीपक 6. श्रेणी या समूह का प्रधान 7. समूह 8. वल्मीक, बाँबी 9. संस्कृत में गद्य लिखने का एक ढंग 10. संस्कृत में कविता लिखने का एक विशेष ढंग जो 5 से 14 तक एक साथ अन्वित होता है।

कुलकज्जल *वि.* (तत्.) वंश को कलंकित करने वाला।

कुलकना *अ.क्रि.* (देश.) आनंदित होना उदा. 'लक्ष्मण का तन पुलक उठा, मन मानों कुछ कुलक उठा' -साकेत।

कुलकन्या *स्त्री.* (तत्.) श्रेष्ठ कुल की कन्या।

कुलकलंक *पुं.* (तत्.) 1. अपनी कुचाल से अपने वंश की कीर्ति में धब्बा लगाने वाला।

कुलकानि *स्त्री.* (तद्.) कुल की मर्यादा उदा. 'छूटेऊ लाज डगरियाऔर कुलकानि। करतजात अपरधना परि गइ बानि' -रहीम।

कुलकुल *पुं.* (अनु.) बोतल या सुराही से मदिरा या जल गिराने के समय होने वाली आवाज *पुं.* (अनु.) प्रयो. पक्षियों की मधुर ध्वनि खगकुल कुलकुल सा बोल रहा -लहर।

कुलकुलाना *अ.क्रि.* (अर.) कुल कुल शब्द करना। मुहा. आँते कुलकुलाना-अत्यंत भूख लगना।

कुलकेतु *पुं.* (तत्.) कुल में पताका के समान श्रेष्ठ, कुल को यशस्वी बनाने वाला व्यक्ति।

कुलक्षण *पुं.* (तत्.) 1. बुरा लक्षण 2. कुचाल, बदचलनी *वि.* बुरे लक्षण वाला 2. दुराचारी

कुलक्षणी *वि.* (तत्.) 1. बुरे लक्षण वाला 2. दुराचारी *स्त्री.* बुरे लक्षणवाली, दुराचारिणी।

कुलक्षय *पुं.* (तत्.) वंश का विनाश।

कुलगरिमा *स्त्री.* (तत्.) वंश का गौरव।

कुलगुरु *पुं.* (तत्.) 1. वंश का गुरु 2. कुलपुरोहित।

कुलगृह *पुं.* (तत्.) उच्च वंश के लोगों का भवन, प्रतिष्ठित घर।

कुलचंद *वि.* (तद्.) कुल को चंद्रमा के समान प्रकाशित करने वाला, कुलभूषण।

कुलचा *पुं.* (फा.) 1. एक प्रकार की फूली हुई खमीरी रोटी 2. तंबू या खेमे के डंडे के ऊपर का गोल लट्टू 3. छिपा कर इकठ्ठा किया हुआ रूपया।

कुलजा *स्त्री.* (तत्.) कुलवधू।

कुलजात *वि.* (तत्.) वंश में उत्पन्न, वंशोद्भव।

कुलजाया *स्त्री.* (तत्.) कुलीन स्त्री, पतिव्रता।

कुलट[1] *पुं.* (तत्.) औरस के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार का पुत्र, क्षेत्रज, गोलक, दत्तक या क्रीत पुत्र।

कुलट[2] *पुं.* (तत्.) बहुत स्त्रियों से प्रेम रखने वाला व्यभिचारी।

कुलटा *स्त्री.* (तत्.) बहुत पुरुषों से प्रेम रखने वाली (स्त्री) बदचलन, व्यभिचारिणी 2. वह परकीया नायिका जो बहुत पुरूषों से प्रेम रखती हो पर्या. पुंश्चली, स्वैरिणी, पांशुला, व्यभिचारिणी।

कुलतंतु *पुं.* (तत्.) वह पुरुष जिसे छोड़ कर और कोई दूसरा सहारा उसके कुलवानों का न हो।

कुलत *स्त्री.* (तद्.) बुरी आदत, कुटेव।

कुलतारन *वि.* (तद्.) कुल को तारने वाला।

कुलतिलक *पुं.* (तत्.) वंश की प्रतिष्ठा बढाने वाला पुरुष *वि.* कुल की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला, कुल में श्रेष्ठ।

कुलथी *स्त्री.* (तद्.) उरद की तरह का एक मोटा अन्न जो प्राय: बरसात में ज्वार के साथ बोया जाता है पर्या. ताम्रबीज, वेतबीज, सिततेर, कालवृंत, ताम्रवृंत।

कुलदीप *पुं.* (तत्.) वंश को दीप की भाँति प्रकाशित करने वाला व्यक्ति।

कुलदुहिता *स्त्री.* (तत्.) दे. कुलकन्या।

कुलदेव *पुं.* (तत्.) कुल की वह देवता जिसकी पूजा पीढ़ी दर पीढ़ी होती आई है, कुलदेवता *पुं.* (तत्.) दे. कुलदेवता।

कुलदेवता *स्त्री.* (तत्.) षोडश मातृकाओं में से एक। एक।

कुलदेवी *स्त्री.* (तत्.) वह देवी जिसकी पूजा किसी कुल में परंपरा से होती आई है।

कुलद्रुम *पुं.* (तत्.) दस प्रमुख वृक्ष, जिनके नाम है 1. पीपल 2. बरगद 3. बेल 4. नीम 5. कदंब 6. गूलर 7. इमली 8. आमला 9. लसोड़ा 10. करंज।

कुलधन *वि.* (तत्.) जिसका धन वंश की प्रतिष्ठा में लगे।

कुलधर *पुं.* (तत्.) पुत्र, बेटा।

कुलधर्म *पुं.* (तत्.) वंश परंपरा से आनेवाला कर्तव्य कर्म, पूर्वपुरुषों द्वारा पालित धर्म।

कुलना *अ.क्रि.* (तद्.) टीस मारना, दर्द करना।

कुलनार *पुं.* (देश.) एक प्रकार का खनिज पदार्थ या पत्थर जो सफेद या कुछ सुरमई रंग लिए होता है और इसे भस्म करके 'प्लास्टर आफ पेरिस' बनाया जाता है, इसे खिलखाड़ी, संग जराहत, सफेद सुरमा और कर्पूर शिलाजीत भी कहते हैं।

कुलपति *पुं.* (तत्.) 1. किसी विश्वविद्यालय का वैधानिक प्रधान 2. वह अध्यापक जो छात्रों का भरण पोषण करता हुआ उन्हें शिक्षा देता है 3. शास्त्रानुसार वह ऋषि जो दस हजार मुनियों या ब्रह्मचारियों को अन्नदान और शिक्षा दे. महंत 4. घर का मालिक, मुखिया।

कुलपरंपरा *स्त्री.* (तत्.) वंश में पहले से चली आ रही कुल की रीती।

कुलपर्वत *पुं.* (तत्.) सात पहाड़ों का एक समूह जिसके अंतर्गत आने वाले पर्वतों के नाम- महेंद्र, मलय, सहज, शक्ति, ऋक्ष, विंध्य और परियात्र हैं।

कुलपालक *वि.* (तत्.) वंश या खानदान का पालन और रक्षण करनेवाला।

कुलपुरुष *पुं.* (तत्.) कुलीन मनुष्य, सम्माननीय कुल का व्यक्ति।

कुलपूज्य *वि.* (तत्.) जिसका मान वंशपरंपरा से होता आया हो प्रयो. गुरु वशिष्ठ राम के कुलपूज्य थे।

कुलफत *स्त्री.* (अर.) मानसिक चिंता या दुःख, विकलता।

कुलफी *स्त्री.* (अर.<कुफल) 1. टीन या किसी धातु या मिट्टी आदि का बना हुआ चोंगा जिसमें दूध भरकर बर्फ जमाते है 2. उपर्युक्त प्रकार से जमा हुआ दूध, मलाई आदि 3. धातु का वह टुकड़ा जो किसी चीज में घूमने अथवा उसे घुमाने के लिए पेंच से कसा जाता हो, पेंच।

कुलबुल *पुं.* (अर.) छोटे छोटे जीवों के हिलने डुलने की आहट।

कुलबुलाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. धीरे धीरे हिलना डुलना 2. चंचल होना, आकुल होना 3. बहुत से छोटे जीवों का एक साथ मिलकर हिलना डुलना, इधर-उधर होजाना।

कुलबुलाहट *पुं.* (देश.) धीरे धीरे हिलने डुलने की स्थिति, इधर उधर रेंगना।

कुलबोरन *वि.* (तत्.+देश) 1. कुल को डुबाने वाला कुलकुठार 2. अयोग्य, नालायक।

कुलवंत *वि.* (तत्.) कुलीन।

कुलस्त्री *स्त्री.* (तत्.) ऊँचे कुल की नारी, साध्वी स्त्री।

कुलह *स्त्री.* (फा.) 1. टोपी 2. शिकारी 3. चिड़ियों की आँखों पर का ढक्कन, अंधियारी।

कुलहीन *वि.* (तत्.) अकुलीन, निम्न कुल का।

कुलाँच *स्त्री.* (तुर्की., कुलाच) 1. दोनों हाथों के बीच की दूरी 2. छलांग, उछाल 3. चौकड़ी 4. तेजी से की गई उन्नति।

कुलाँचना *अ.क्रि.* (देश.) चौकड़ी भरना।

कुलाचार *पुं.* (तत्.) 1. कुलपरंपरा से आगत आचार व्यवहार, कुलरीति 2. वाममार्ग, कौलाचार।

कुलाचार्य *पुं.* (तत्.) कुलगुरु, पुरोहित।

कुलाबा *पुं.* (अर.<कुलावः) 1. लोहे का जमुरका जिसके द्वारा किवाड़ बाजू से जकड़ा जाता है, पायजा 2. मछली फँसाने का काँटा 3. जुलाहों के करघे की वह लकड़ी जो चकवा की बीच लगी रहती है 4. नाली, मोरी 5. जंजीर, सिकड़ी।

कुलाय *पुं.* (तत्.) 1. शरीर देह 2. खोता, घोंसला 3. स्थान, जगह।

कुलायिका *स्त्री.* (तत्.) 1. पक्षिशाला, चिड़ियाघर 2. पिंजर, पिंजड़ा।

कुलाल *पुं.* (तत्.) 1. मिट् टी के बरतन बनानेवाला, कुम्हार 2. जंगली मुर्गा।

कुलालचक्र *पुं.* (तत्.) 1. कुम्हार का चाक 2. जंगली मुर्गा 3. उलूक, उल्लू।

कुलालिका *स्त्री.* (तत्.) चिड़ियाखाना।

कुलाली *स्त्री.* (तत्.) 1. कुम्हार की पत्नी, कुम्हारिन 2. कुम्हार जाति की स्त्री 3. अंजन या सुरमें में प्रयुक्त होने वाला एक प्रकार का नीला पत्थर।

कुलाली *स्त्री.* (देश.) दूरबीन।

कुलिश *पुं.* (तत्.) 1. हीरा 2. बिजली, गाज, चिल्ली 3. ईश्वरावतार राम, कृष्ण आदि के चरणों का एक चिह्न, जो वज्र के आकार का माना जाता है 4. कुठार 5. एक प्रकार की मछली।

कुलिशधर *पुं.* (तत्.) इंद्र, सुरराज, बज्रधर।

कुलिशपाणि *पुं.* (तत्.) दे. कुलिशधर।

कुली *पुं.* (तुर्की.) 1. बोझ ढोनेवाला, मजदूर, मोटिया 2. गुलाम *स्त्री.* (देश.) 1. बड़ी साली, पत्नी की बड़ी बहन 2. भटकटैया।

कुली कबाड़ी *पुं.* (देश.) छोटी जाति के लोग।

कुलीन *वि.* (तत्.) 1. उत्तम कुल में उत्पन्न, खानदानी 2. पवित्र, शुद्ध *पुं.* 1. बंगाली ब्राह्मणों का एक वर्ग जिन्हें पंचगौड़ा के महाराज आदिसूर अपने राज्य में साग्निक ब्राह्मण होने के कारण, आठवी शती में काशी से अपने साथ ले गए थे

2. अच्छी नस्ल का घोड़ा 3. नाखून में होने वाला एक रोग 4. शक्तिपूजक

कुलुक *पुं.* (तत्.) जीभ पर जमनेवाली मैल, जिह्वामल, झिल्ली।

कुलुफ *पुं.* (अर.<कुफ़्ल) ताला।

कुलेल *स्त्री.* (तद्.) क्रीड़ा, केलि-कल्लोल, ऊँची आवाज करने वाली लहर, मौज, आनंद।

कुलेलना (देश.) क्रीड़ा करना, आमोद प्रमोद करना।

कुलोपदेश *पुं.* (तत्.) कुल का नाम, कुलगत नाम।

कुल्माष *पुं.* (तत्.) 1. हाथी 2. उड़द, माष 3. बोरो धान 4. वह अन्न जिसमें दो भाग या दल हो जैसे- मटर, चना 5. बन कुलथी 6. सूर्य का एक पारिपार्श्वक 7. खिचड़ी 8. कांजी 9. एक प्रकार का रोग।

कुल्या *स्त्री.* (तत्.) 1. एक कृत्रिम नदी, नहर 2. छोटी नदी, नाला 3. पनाला, नाली 4. कुलीन स्त्री स्त्री 5. जीवंती नामक औषधि 6. आठ द्रोण के बराबर का एक प्राचीन तौल 7. साध्वी स्त्री 8. परिखा, खाई।

कुल्ला *पुं.* (तद्.कवल) 1. मुँह के अंदर दाँत, जीभ आदि साफ करने की क्रिया, गरारा 2. उतना पानी जितना एक बार में मुँह में लिया जाए 3. घोड़े का एक रंग या उस रंग का घोड़ा 4. कटोरानुमा टोपी।

कुल्ला *पुं.* (फा.) अलक, जुल्फ

कुल्ली *स्त्री.* (देश.) 1. मुँह के अंदर के भागों यथा दाँत, जीभ आदि को पानी से साफ़ करने की क्रिया 2. उतना पानी जितना एक बार मुँह में लिया जाए, पानी का एक घूँट (फ़ा) जुल्फ पटटा।

कुल्लूक *पुं.* (तत्.) मनुसंहिता (मनुस्मृति) के टीकाकार जो दिवाकर भट्ट के पुत्र का नाम।

कुल्हड़ *स्त्री.* (देश.) पुरवा, चुक्कड़।

कुल्हाड़ा *पुं.* (देश.) एक औजार, जिससे बढ़ई पेड़ काटते और लकड़ी चीरते है, कुठार, टांगा।

कुल्हाड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. छोटा कुल्हाड़ा 2. बसूला।

कुल्हिया *स्त्री.* (देश.) छोटा, कुल्हड़, चुक्कड़ मुहा. कुल्हिया में गुड़ फोड़ना- इस प्रकार कार्य करना कि दूसरे किसी को कानों कान खबर न हो।

कुवलय *पुं.* (तत्.) 1. नील कमल 2. भू-मंडल 3. एक प्रकार के असुर।

कुवलयानंद *पुं.* (तत्.) संस्कृत का प्रसिद्धअलंकार ग्रंथ जिसके रचयिता 17 वीं शताब्दी के अप्पय दीक्षित थे।

कुवलयापीड़ *पुं.* (तत्.) एक हाथी का नाम, जिसे कंस ने कृष्ण को मारने के लिए धनुषयज्ञ के द्वार पर छोड़ा था का लेकिन श्रीकृष्ण ने ही इसे मार डाला था।

कुवलयाश्व *पुं.* (तत्.) 1. धुंधुमार राजा का एक नाम 2. प्रतर्दन का एक नाम 3. ऋतुध्वज राजा का नाम 4. पुराणों के अनुसार एक घोड़ा, जिसे ऋषियों का यज्ञ विध्वंस करनेवाले पातालकेतु को मारने के लिए सूर्य ने पृथ्वी पर भेजा था।

कुवाक्य *पुं.* (तत्.) 1. अयोग्य गाली 2. बुरी बात।

कुवाच्य *पुं.* (तत्.) कठोर वचन, दुर्वचन, गाली *वि.* (तत्.) जो कहने योग्य न हो, गंदा, बुरा।

कुवासना *स्त्री.* (तत्.) 1. पापमय विचार या दुष्ट कर्म की इच्छा, बुरी इच्छा।

कुविंद *पुं.* (तत्.) जुलाहा, कोरी, वस्त्र बुनने वाली उपजाति या उसका कोई व्यक्ति।

कुविचार *पुं.* (तत्.) बुरा विचार।

कुविचारी *वि.* (तत्.) बुरे विचार वाला।

कुवेणी *स्त्री.* (तत्.) 1. तुरंत पकड़ी गई मछलियों को रखने की टोकरी, मछली रखने की डलिया 2. बिना तरीके गुँथी हुई वेणी, सिर के बेतरतीब केशगुच्छ।

कुवेर *पुं.* (तत्.) दे. कुबेर।

कुवेर-बांधव *पुं.* (तत्.) शिव पर्या. त्र्यंबक, यक्षराज, गुह्यकेश्वर, मनुष्यधर्मा, धनद, धनाधिप, धनाधिप, वैश्रवण, नरवाहन, यज्ञ, एकपिंग, ऐलविल, श्रीद, पुण्यजनेश्वर, हर्यक्ष, अलकाधिप 2.

जैन मत में वर्तमान अवसर्पिणी (कालगति) के 19 वें अर्हत् का एक उपासक 3. तुन का पेड़।

कुवेराचल *पुं.* (तत्.) कैलास पर्वत का एक नाम।

कुश *पुं.* (तत्.) 1. कांस की तरह की एक पवित्र नुकीली तीखी और कड़ी घास, दाभ, डाभ, दर्भ, 2. जल, पानी 3. एक राजा जो उपरचरि वसु का पुत्र था 4. रामचंद्र का एक पुत्र 6. पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक द्वीप 7. फाल, कुसिया, कुर्सी (हल की) पर्या. दर्भ, पवित्र, बर्हि, ह्रस्वगर्भ, कुतुप, सूच्यग्र।

कुशद्वीप *पुं.* (तत्.) पुराणानुसार सात द्वीपों में से से एक, जो चारों ओर घृतसमुद्र से घिरा है।

कुशन *पुं.* (अं.) मोटा गद्दा।

कुशपत्रक *पुं.* (तत्.) फोड़ा चीरने का एक औजार, (वैद्यक)।

कुशमुद्रिका *स्त्री.* (तत्.) कुश की बनी अंगूठी, पवित्री, पैंती।

कुशय *पुं.* (तत्.) पानी पीने का बरतन, आबखोरा, पानपात्र, जलकुंड, होम आदि।

कुशल *वि.* (तत्.) 1. चतुर, दक्ष 2. श्रेष्ठ अच्छा 3. पुण्यशील जैसे- वह एक कुशल इंजीनियर है *पुं.* 1. क्षेम, मंगल, राजी खुशी 2. जिसके हाथ में कुश हो 3. शिव का एक नाम 4. कुशद्वीप का निवासी 5. गुण 6. चतुरता, चतुराई।

कुशलकाम *वि.* (तत्.) कुशल की कामना रखनेवाला, राजी खुशी चाहनेवाला।

कुशलक्षेम *पुं.* (तत्.) 1. राजीखुशी, खैरो आफियत।

कुशलता *स्त्री.* (तत्.) 1. चतुराई 2. योग्यता, प्रवीणता 3. क्षेम, कुशलाई।

कुशलप्रश्न *पुं.* (तत्.) किसी का कुशल मंगल पूछने पूछने की क्रिया।

कुशलमंगल *पुं.* (तत्.) दे. कुशलक्षेम।

कुशस्तरण *पुं.* (तत्.) होम करने के पहले यज्ञभूमि या यज्ञकुंड के चारों ओर कुश बिछाने का काम, कुशकंडिका।

कुशस्थली *स्त्री.* (तत्.) 1. द्वारिका का एक नाम 2. 2. कुशावती नामक नगरी जो विंध्यपर्वत पर थी और जहाँ रामचंद्र के पुत्र कुश राज्य करते थे।

कुशहस्त *वि.* (तत्.) हाथ में कुशा लिए हुए श्राद्ध, तर्पण या दान करने के लिए उद्यत।

कुशांगुरीय/कुशांगुलीय *पुं.* (तद्.) कुश की बनी अंगूठी, पैंती, पवित्री।

कुशांब *पुं.* (तद्.) निमि वंशीय राजा कुश का पुत्र जिसने पिता के आदेश से कोशांबी नगरी बसाई थी।

कुशांबु *पुं.* (तत्.) कुश के अगले भाग से टपकता हुआ जल।

कुशा *स्त्री.* (तत्.) 1. कुश 2. रस्सी 3. एक प्रकार का मीठा नींबू 4. लगाम, वल्गा 5. लकड़ी का टुकड़ा।

कुशाग्र *वि.* (तत्.) कुश की नोक की तरह तीखा तीव्र, तेज, नुकीला जैसे- कुशाग्र बुद्धि, तीव्र बुद्धिवाला।

कुशावती *स्त्री.* (तत्.) रामचंद्र जी के पुत्र कुश की राजधानी का नाम।

कुशासन *पुं.* (तत्.) कुश का बना आसन, बुरा शासन, अव्यवस्थित राज्य।

कुशिक *पुं.* (तत्.) 1. एक प्राचीन आर्य वंश, विश्वामित्र जी इसी वंश के थे 2. एक राजा जो विश्वामित्र के पितामह और गाधि के पिता थे टि. च्यवन ऋषि को जब ध्यानावस्था में यह विदित हुआ कि कुशिक वंश के द्वारा उनके वंश में क्षत्रिय धर्म का संचार होगा, तब उन्होंने कुशिक वंश को भस्म करने का विचार किया और कुशिक राजा को दोषी ठहराना चाहा, पर उनमें कोई दोष नहीं मिला तो प्रसन्न होकर उन्होंने राजा कुशिक को वरदान दिया कि तुम्हारा पौत्र ब्रह्मत्व को प्राप्त करेगा 3. कुशिक वंश का पुरुष 4. हल की कुर्सी, फाल 5. बहेड़ा 6. साल, साखू 7. तेल की तलछट।

कुशीनार *पुं.* (तत्.) वह स्थान जहाँ साल वृक्ष के नीचे गौतमबुद्ध का निर्वाण हुआ था, आजकल इसे कसाया कहते हैं, कुशीनगर।

कुशीलव *पुं.* (तत्.) 1. कवि, चारण 2. नाटक खेलने वाला, नट 3. गवैया 4. वाल्मीकि ऋषि का एक नाम 5. वार्ता प्रसारक, संवाददाता 6. गप्प हाँकनेवाला व्यक्ति।

कुशूल *पुं.* (तत्.) अन्न रखने का घेरा, कोठला, कोठार, डेहरी। 2. तुषाग्नि 3. कड़ाही 4. एक राक्षस 5. बुरी पीड़ा।

कुशूलधान्यक *पुं.* (तद्.) गृहस्थों का एक भेद, वह गृहस्थ जिसके पास तीन वर्ष के लिए खाने भर को अन्न संचित हो।

कुश्तमकुश्ता *पुं.* (फा.) उठापटक, गुत्थमगुत्था, लड़ाई।

कुश्ता *पुं.* (फा.कुश्तः) 1. वह भस्म जो धातुओं को रासायनिक क्रिया से फूँककर बनाया जाए, भस्म जैसे- सोने का कुश्ता, चांदी का कुश्ता 2. वह जो मार डाला गया हो, निहत 3. लाश।

कुश्ती *स्त्री.* (फा.) दो आदमियों का परस्पर एक दूसरे को बलपूर्वक पछाड़ने या पटकने के लिए लड़ना, मल्लयुद्ध यो. कुश्तीबाज-कुश्ती लड़नेवाला मुहा. कुश्ती में बढ़ा रहना- कुश्ती में जीत होना; कुश्ती बराबर रहना या छूटना- कुश्ती में किसी का न हारना; कुश्ती मारना- कुश्ती जीतना, कुश्ती में दूसरे को पछाड़ना; कुश्ती मांगना- (किसी को) अपने साथ कुश्ती लड़ने के लिए कहना; कुश्ती लड़ना- (किसी को) शिक्षा देने के लिए (उससे) लड़ना; कुश्ती खाना- कुश्ती में हार जाना।

कुषीतक *वि.* (तत्.) 1. एक ऋषि का नाम 2. एक पक्षी।

कुषीद *स्त्री.* (तत्.) तटस्थ, उदासीन।

कुषुंभ *पुं.* (तत्.) कीड़ों की वह थैली जिसमें उसका विष रहता है।

कुष्ठ *पुं.* (तद्.) 1. कोढ़ 2. कुट नामक औषधि 3. कुड़ा नामक वृक्ष 4. नितंब का गड्ढा।

कुष्ठसूदन *पुं.* (तत्.) अमलतास, कुश्ती लड़नेवाला, पहलवान।

कुष्ठहृत *पुं.* (तत्.) 1. खैर का पेड़ 2. विड्खदिर 3. कुष्ठ नाशक।

कुष्ठा *स्त्री.* (तत्.) टोकरी का मुँह।

कुष्ठारि *पुं.* (तत्.) 1. अर्क पत्र 2. गंधक 3. परवल।

कुष्मांड *पुं.* (तद्.) 1. कुम्हड़ा 2. एक प्रकार के देवता जो शिव के अनुचर है 3. जरायु, गर्भस्थली।

कुष्मांड नवमी *स्त्री.* (तत्.) कार्तिक शुक्ल नवमी इसी दिन कुम्हड़े में स्वर्णादि रखकर दान करते हैं।

कुष्मांडी *स्त्री.* (तत्.) 1. पार्वती का नाम 2. एक ऋचा 3. यज्ञ में प्रयुक्त क्रिया या कर्म 4. कुम्हड़ा।

कुसंग *पुं.* (तत्.) बुरे लोगों का साथ।

कुसंगति *स्त्री.* (तत्.) बुरे लोगों का साथ।

कुसंस्कार *पुं.* (तत्.) अंतःकरण में अयथार्थ या निषिद्ध बात का प्रभाव जिससे बुद्धि ठीक निश्चय न कर सके या मन अच्छे कामों में न लगे, बुरा संस्कार।

कुसमय *पुं.* (तत्.) 1. बुरा समय 2. समय जो किसी कार्य के लिए ठीक नही 3. नियत समय से आगे या पीछे का समय 4. संकट काल।

कुसीद *पुं.* (तत्.) 1. ब्याज पर रुपया देने की रीति, सूद, ब्याज 2. ब्याज पर दिया हुआ धन 3. रक्त चंदन 4. सूद देने वाला व्यक्ति, सूदखोर *वि.* आलसी, सुस्त, अकर्मण्य।

कुसीदजीवी *पुं.* (तत्.) सूदखोर।

कुसीदा *स्त्री.* (तत्.) ऋण देनेवाली स्त्री।

कुसीदी *पुं.* (तत्.) महाजन या सूदखोर।

कुसुंभ *पुं.* (तत्.) 1. कुसुम, अग्निशिखा 2. केसर, कुमकुम 3. तपस्वी का जलपान 4. स्वर्ण 5. बाह्य प्रेम, दिखावटी प्रेम 6. बर्रे 7. क्षुप जाति का का एक पौधा जिसमें काँटेदार पत्ते व लाल फूल होते हैं।

कुसुंभी *वि.* (तत्.) कुसुम रंग का, लाल।

कुसुम *पुं.* (तत्.) 1. फूल 2. वह गद्य जिसमें छोटे-छोटे-छोटे वाक्य हो 3. आँख का एक रोग 4. जैनियों के अनुसार वर्तमान अवसर्पिणी के छठे अर्हत् के गणधार 5. एक राजा का नाम 6. मासिक धर्म, रजोदर्शन 7. छंद में ठगण का छठा भेद, जिसमें क्रमशः लघु, गुरु, लघु, लघु होते हैं जैसे- 'कृपा किए 8. एक प्रकार का फल 9. अग्नि का एक रूप या भेद मुहा. कुसुम का रोग -रक्तस्राव का रोग।

कुसुमदल *स्त्री.* (तत्.) फूल की पंखुरी या पत्री।

कुसुमधन्वा *पुं.* (तत्.) दे. कुसुमबाण।

कुसुमपंचक *स्त्री.* (तत्.) कमल, अशोक, आम, नवमल्लिका और नीलकमल-ये पाँच फूल कामदेव के बाण में कहे गए है।

कुसुमपुर *पुं.* (तत्.) पाटलिपुत्र, पटना का एक प्राचीन नाम।

कुसुमबाण *पुं.* (तत्.) कामदेव। मदन।

कुसुमरेणु *पुं.* (तत्.) पराग, पुष्परेणु।

कुसुमांजन *पुं.* (तत्.) जिस्ते का भस्म।

कुसुमांजलि *पुं.* (तत्.) फूल से भरी अंजली 2. षोडशोपचार पूजन का अंतिम उपचार जिसमें देवता पर अंजलि में फूल भरकर चढ़ाते है 3. न्यायशास्त्र का एक ग्रंथ 'न्यायकुमांजलि' जिसके रचयिता उदयनाचार्य हैं।

कुसुमाकर *पुं.* (तत्.) 1. वसंत 2. छप्पय का एक भेद जिसमें 6 गुरु और 140 लघु अर्थात् कुल 146 वर्ण या 152 मात्राएँ अथवा 6 गुरु, 136 लघु, कुल, 142 वर्ण या 148 मात्राएँ होती है 3. बाग, उपवन, वाटिका।

कुसुमागम *पुं.* (तत्.) वसंत।

कुसुमायुध *पुं.* (तत्.) शा.अर्थ कुसुम अर्थात् पुष्प जिसका आयुध-शस्त्र है, कामदेव।

कुसुमावलि *स्त्री.* (तत्.) फूलों का गुच्छा।

कुसुमासव *पुं.* (तत्.) फूलों का रस 2. मधु, पुष्पमधु।

कुसुमित *वि.* (तत्.) फूला हुआ, पुष्पित।

कुसूर *पुं.* (अर.) दे. कसूर।

कुसूरमंद *वि.* (अर.) 1. अपराधी, कुसूरवार 2. दोषी विलो. बेकसूर।

कुसृति *पुं.* (तत्.) 1. इंद्रजाल, हथकंडा 2. दुराचार 3. शठता 4. जालसाजी, धोखादेही।

कुस्तुंबरी *स्त्री.* (तत्.) धनिया।

कुस्तुभ *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. समुद्र, सागर।

कुहक *पुं.* (तत्.) 1. माया, धोखा, फरेब 2. धूर्त, वंचक 3. मेंढक 4. मुर्गे की बाँग 5. नाग विशेष 6. इंद्रजाल जानने वाला।

कुहक *स्त्री.* (अनु.) 1. ध्वनि, आवाज 2. मुर्गे की बाँग 3. मोर की बोली 4. पक्षियों की मधुर आवाज।

कुहकजीवी *वि.* (तत्.) इंद्रजाली, वंचक।

कुहकना *क्रि.अ.* (अनु.) 1. कोयल, मोर आदि पक्षियों का मधुर स्वर में बोलना पीकना, कूजना।

कुहकनी *स्त्री.* (देश.) कुहकने वाली, कोयल।

कुहकवृत्ति *वि.* (तत्.) दे. कुहकजीवी।

कुहकाना *स.क्रि.* (देश.) कूकने के लिए प्रेरित करना।

कुहकुहाना *अ.क्रि.* (अनु.) कोयल या मोर का बोलना।

कुहन *पुं.* (तत्.) 1. चूहा, भूसा 2. मिट्टी का बर्तन 3. शीशे का बर्तन 4. साँप *वि.* (तत्.) ईर्ष्या करने वाला, मक्कार।

कुहना *स.क्रि.* (देश.) कोयल के मधुर स्वर/बोल।

कुहना *स.क्रि.* (तद्.) मारना, बुरी तरह से मारना।

कुहनिका *स्त्री.* (तत्.) 1. स्वार्थ सिद्धि के निमित्त धार्मिक व्रत पूजा का दिखावा 2. ढोंग।

कुहनी *स्त्री.* (तद्.) 1. हाथ और बाहु के जोड़ की हड्डी 2. तांबे या पीतल की बनी हुई टेढ़ी नली जो हुक्के की निगाली में लगाई जाती है।

कुहमुख *पुं.* (तद्.) 1. कोयल 2. विपत्ति 3. दूज का चाँद।

कुहर *पुं.* (तत्.) 1. गड्ढा, गर्त 2. बिल, छेद 3. कान 4. गला. कंठ 5. समीपता, निकटता 6. रतिक्रिया 7. कंठस्वर 8. वातायन 9. गले का छेद 10 कुहरा।

कुहरा *पुं.* (तद्.कुहेरिका) वायु में जल के अत्यंत सूक्ष्म कणों का समूह जो ठंड पाकर वायु में मिली हुई भाप के जमने से उत्पन्न होता है, ये जलकण पत्तियों पर पड़ कर बूंदों के रूप में दिखाई पड़ते हैं।

कुहराम *पुं.* (अर.) 1. विलाप, रोना पीटना, आर्तनाद, बावेला 2. हलचल।

कुहरी *स्त्री.* (तद्.) हल्का कुहरा, कुहेलिका।

कुहासा *पुं.* (देश.) कुहरा, कुहेसा।

कुही *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की शिकारी चिड़िया जो बाज से छोटी होती है।

कुहुक *पुं.* (अनु.) पक्षियों का मधुर स्वर।

कुहुककार *पुं.* (अनु.) कपटी, छली।

कुहुकना *अ. क्रि.* (अनु.) पक्षियों का मधुर स्वर में बोलना।

कुहुकबान *पुं.* (देश.) एक प्रकार का बाण, जो बाँस की कई पट्टियों को जोड़ कर बनाया जाता है और जिसे चलाते समय कुछ शब्द निकलता है।

कुहू *स्त्री.* (तत्.) 1. वह अमावस्या जिसमें चंद्रमा बिल्कुल दिखाई न दे अर्थात् जो चतुर्दशी अथवा प्रतिपदा से विद्ध न हो 2. अमावस्या की अधिष्ठात्री देवी और अंगिरा ऋषि की कन्या, जो उनकी श्रद्धा नाम की स्त्री के गर्भ से उत्पन्न हुई थी 3. प्लक्ष द्वीप की एक नदी 4. मोर या कोयल की कूक।

कुहूकंठ *स्त्री.* (तत्.) कोयल, कोकिल।

कुहूकाल *पुं.* (तत्.) अमावस्या का दिन।

कुहू-कुहू *स्त्री.* (तत्.) मयूर या कोयल की बोली।

कुहेलिका *स्त्री.* (तत्.) 1. कुहरा 2. कुहरे के कारण फैला अंधकार।

कूँग *पुं.* (देश.) एक यंत्र जिस पर कसेरे पीतल, तांबे के बरतन खरादते और जिला (कलई) करते हैं। खराद। चरख।

कूँगा *पुं.* (देश.) बबूल की छाल का काढ़ा जिसमें डुबो कर चमड़ा सिकाया जाता है।

कूँचा *पुं.* (तद्.) 1. किसी रेशेदार लकड़ी या मूँज आदि का कूट कर बनाया हुआ झाड़ू जिससे चीजों को झाड़ते हैं 2. झाड़ू, बुहारी 3. टूटे हुए जहाज के टुकड़े।

कूँची *स्त्री.* (देश.) 1. छोटा कूँचा, छोटी झाड़ू 2. कूटी हुई मूँज या बालों का गुच्छा, जिससे चीजों का मैल साफ करते या उन पर रंग फेरते हैं जैसे- सफेदी करने की कूँची, सोनार की कूँची, तसवीर रंगने की कूँची मुहा. कूँची देना 1. कूंची में रंग चढ़ाना 2. कूँची से साफ करना 3. खेत को एक कोने से दूसरे कोने तक जोतना 4. चित्रकार के रंग भरने की कूँची, तूलिका *स्त्री.* (फा.) 1. कुल्हिया जिसमें मिसरी जमाई जाती है जैसे- कूँची की चीनी 2. मिट्टी का वह बरतन जिसमें कोल्हू से निकल कर रस इकट्ठा होता है।

कूँचू/कूंच *स्त्री.* (देश.) 1. खस या नारियल के रेशे का बना हाथ डेढ़ हाथ लंबा एक बड़ा बुरुश जिससे जुलाहे ताने का सूत साफ करते हैं 2. लोहारों की बड़ी संड़सी।

कूँजड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. कुँजड़े की स्त्री 2. वह स्त्री जो शाक भाजी बेचती हो।

कूँड़ *स्त्री.* (तद्.) 1. सिर को बचाने के लिए लोहे की ऊँची टोपी, खोद 2. चौगोशिया टोपी के आकार का, मिट्टी या लोहे का गहरा बरतन, जिसे ढेंकुल में लगाकर सिंचाई के लिए कुएँ से पानी निकालते है 3. वह गहरी लकीर जो खेत में हल जोतने से बन जाती है, कुंड 4. मिट्टी, तांबे या पीतल का बना गहरा पात्र जिसके ऊपर चमड़ा मढ़ कर 'बायाँ' या 'ठेका' बजाते हैं, तबले का बायाँ, डग्गा।

कूँड़ा *पुं.* (तद्.) 1. पानी रखने का मिट्टी का गहरा बरतन 2. छोटे पौधे लगाने का थाला, गमला 3. रोशनी करने की एक प्रकार की बड़ी हाँड़ी, जिसे ढोल भी कहते है 4. मिट्टी या काठ का बड़ा बरतन जिसमें आटा गूँथते हैं, कठौता, मठौता।

कूँड़ी *स्त्री.* (तद्.) 1. पत्थर का बना हुआ कटोरे के आकार का बरतन, पत्थर की प्याली, पथरी 2. छोटी नाँद 3. कोल्हू के बीच का वह गड्ढा जिसमें जाठ रहता है 4. सिर पर घड़ा आदि रखने से पहले सिर पर रखी जाने वाली गेंडुरी।

कूईं *स्त्री.* (तद्.) जल में उत्पन्न कमल की तरह का एक पौधा, जिसके पत्ते कमल के पत्ते की तरह होते हैं पर कुछ लंबे और कटावदार होते हैं पर्या. कैरव, कुमुदिनी, कुमुद, कोकाबेली, गर्दभ सौगंधिक, कच्छ, सितोत्पल, कुवल, हल्लक, कोका, उत्पल, हिमाब्ज, छोटा कुआँ आदि।

कूक *स्त्री.* (देश.) घड़ी या बाजे में कुंजी देने की क्रिया।

कूक *स्त्री.* (तद्.) 1. लंबी सुरीली ध्वनि 2. मोर या कोयल की बोली 3. महीन और सुरीले स्वर से रोने का शब्द (जैसे स्त्रियों का)।

कूकना *अ.क्रि.* (तद्.) लंबी सुरीली ध्वनि निकालना 2. कोयल या मोर का बोलना।

कूकना *स.क्रि.* (देश.) कमानी कसने के लिए घड़ी या बाजे के पेंच को घुमाना, कुंजी भरना।

कूकर *पुं.* (तद्.) कुत्ता, श्वान।

कूकरकौर *पुं.* (देश.) 1. कुत्ते के आगे डाली जाने वाली जूठन, टुकड़ा 2. तुच्छ वस्तु लाक्ष.अर्थ स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी को दिया जाने वाला प्रलोभन।

कूकरनिंदिया *स्त्री.* (देश.) वह हल्की नींद जो थोड़े से खटके से टूट जाए।

कूका *पुं.* (देश.) चिल्लाहट भरी लंबी पुकार, सिक्खों का एक पंथ।

कूखना *अ.क्रि.* (देश.) दुःख या क्लेश से ऊँह-ऊँह शब्द करना, काँखना।

कूच *पुं.* (फ़ा.) 1. प्रस्थान, रवानगी 2. मृत्यु, परलोकयात्रा मुहा. कूच कर जाना -मर जाना; (किसी के) देवता कूच कर जाना- होश हवाश जाता रहना, भय या और कारण से विवेक नष्ट हो जाना; कूच का डंका या नक्कारा बजाना- फौज का समूह का रवाना होना, मर जाना; कूच बोलना- प्रस्थान करना।

कूचा *पुं.* (फा.) छोटा रास्ता, गली मुहा. कूचा झाँकना इधर-उधर- ठोकर खाना, गली गली मारा फिरना; 2. रेशेदार लकड़ी या मूँज को कूटकर बनाया हुआ झाड़न 3. झाड़ू, बोहारी।

कूचागर्दी *पुं.* (फा.) इधर-उधर फिरना, व्यर्थ घूमना, अवारागर्दी करते घूमना।

कूचिका *स्त्री.* (तद्.) 1. कूँची, कूर्चिका 2. कुंजी, ताली।

कूज *स्त्री.* (तद्.) ध्वनि, शब्द 2. शब्द करने की क्रिया 3. पहियों की घरघराहट 4. कूजने की क्रिया, कू कू की ध्वनि।

कूजना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. कोयल, मयूर का मधुर शब्द करना।

कूजा *पुं.* (तद्.) मोतिया या बेले का फूल।

कूजा *पुं.* (फा.) 1. प्याले या पुरबे के आकार का मिट्टी का बरतन, कुल्हड़, 2. मिट्टी के पुरबे में जमाई हुई अर्द्ध गोलाकार मिसरी 3. कुब्ज, कूबड़ा।

कूजित *वि.* (तत्.) 1. जो बोला या कहा गया हो, ध्वनित 2. गूँजा हुआ या ध्वनिपूर्ण।

कूट *पुं.* (तत्.) 1. पहाड़ की ऊँची चोटी जैसे- हेमकूट, चित्रकूट 2. सींग 3. (अनाज आदि की) ऊँची और बड़ी राशि या ढेरी जैसे अन्नकूट 4. हल की वह लकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है, खोंपी, परिहारी 5. लोहे का मोंगरा, हथौड़ा 6. हरिनों के फँसाने का फंदा या जाल 7. लकड़ी के म्यान में छिपा हुआ हथियार जैसे- तलवार, गुप्ती गुप्ती आदि 8. छल, धोखा, जैसे- कूटनीति 9. मिथ्या, झूठ 10. अगस्त्य मुनि का एक नाम 11. घड़ा 12. गुप्त बैर, कीना 13. नगर का द्वार द्वार 14. गूढ़ भेद, गुप्त रहस्य 15. जिसके अर्थ में हेर फेर हो, जिसका समझना कठिन हो, जैसे- सूर के कूट (पद) 16. वह हास्य या व्यंग्य जिसका अर्थ गूढ़ हो 17. निहाई 18. वह बैल जिसके सींग टूटे हो 19. घर, आवास 20. घट, घड़ा 21. उभार सहित माथे की हड्डी 22. सिर, छोर, किनारा *वि.* (तत्.) 1. झूठा, मिथ्यावादी 2. धोखा

देनेवाला, छलिया 3. कृत्रिम, बनावटी 4. प्रधान, श्रेष्ठ 5. निश्चल 6. धर्मभ्रष्ट 7. जिसका अर्थ सरलता से स्पष्ट न हो, पहली।

कूटकर्म *पुं.* (तत्.) 1. छल, कपट, धोखा 2. (कौटिल्य के अनुसार) जूआ खेलते समय बेईमानी करना या हाथ की सफाई से पासे उलटना।

कूटकर्मा *वि.* (तत्.) छली, कपटी।

कूटकार *पुं.* (तत्.) 1. दुष्ट या धोखा देने वाला व्यक्ति 2. झूठा गवाह।

कूटकोष्ठ *पुं.* (तत्.) मकान का सबसे ऊपरी भाग 2. कूटशाला।

कूटतुला *स्त्री.* (तत्.) वह तराजू जिसमें पसंगा हो या जिसकी डंडी में कुछ फेर फार हो, डाँडीचोर तराजू।

कूटना *स.क्रि.* (तद्.) 1. किसी चीज को नीचे रखकर ऊपर से लगातार बलपूर्वक आघात पहुँचाना, जैसे धान कूटना, सडक़ कूटना, छत कूटना, छाती कूटना मुहा. कूटकूटकर भरना- ठूँस-ठूँस कर भरना, कस-कस कर भरना, ठसाठस भरना जैसे- उनमें कूट-कूट कर करुणा भरी है; 2. मारना, पीटना, ठोंकना 3. सिल, चक्की आदि में टांकी से छोटे-छोटे गडढे करना या दाँत निकालना 4. बैल या भैंसे का अंडकोष कूटकर उसे बधिया बनाना।

कूटनीति *स्त्री.* (तत्.) दाँव पेंच की नीति या चाल, वह चाल या नीति जिसका रहस्य कठिनता से खुले।

कूटपाठ *पुं.* (तत्.) संगीत में मृदंग के चार वर्णों में से एक वर्ण।

कूटपालक *पुं.* (तत्.) 1. कुम्हार 2. कुम्हार का आँवा।

कूटपाश *पुं.* (तत्.) पक्षियों को फँसाने का जाल, फंदा।

कूटप्रश्न *पुं.* (तत्.) पहेली, बुझौवल, प्रहेलिका।

कूटमान *पुं.* (तत्.) 1. वह पैमाना जो ठीक मान से बड़ा या छोटा हो 2. वह बाट जो ठीक तौल से हलका या भारी हो।

कूटमुद्रा *स्त्री.* (तत्.) कौटिल्य के मत से जाली मुहर मुहर या परवाना।

कूटयंत्र *पुं.* (तत्.) पशुओं या पक्षियों को फँसाने का जाल।

कूटयुद्ध *पुं.* (तत्.) वह लड़ाई जिसमें शत्रु को धोखा दिया जाता है, धोखे की लड़ाई।

कूटरचना *स्त्री.* (तत्.) 1. जाल, फंदा 2. कुटनियों का माया जाल।

कूटरूप *पुं.* (तत्.) (कौटिल्य के अनुसार) जाली रुपया या सिक्का।

कूटलिपि *स्त्री.* (तत्.) 1. झूठा या जाली दस्तावेज 2. ऐसी गूढ़ लिखावट जो समझ में न आए।

कूटलेख *पुं.* (तत्.) झूठा या जाली दस्तावेज।

कूटस्वर्ण *पुं.* (तत्.) 1. खोटा सोना, बनावटी सोना।

कूटायुध *पुं.* (तत्.) छिपाकर रख गया हथियार।

कूटार्थ *पुं.* (तत्.) वह छिपा अर्थ जिसे बौद्धिक प्रयत्न से समझा जा सके।

कूड़ा *पुं.* (देश.) 1. जमीन पर पड़ी हुई गर्द, खर पत्ते आदि जिन्हें साफ करने के लिए झाड़ू दिया जाता है।

कूड़ाकरकट *पुं.* (देश.) व्यर्थ और निकम्मी चीज, बेकाम चीज।

कूड़ाखाना *पुं.* (देश.+फ़ा.) वह स्थान जहाँ कूड़ा फेंका जाता है, कबाड़ खाना।

कूढ़ *वि.* (देश.) नासमझ, अज्ञानी, बेवकूफ।

कूढ़ *पुं.* (देश.) 1. हल का वह भाग जिसके एक सिरे पर मुठिया और दूसरे सिरे पर खोंपी होती

है, जाँघा, हलपत, परिहत 2. बोने की वह प्रक्रिया जिसमें हल की गरारी में बीज डाला जाता है।

कूढ़मग्ज *वि.* (तद्.+फा.) जिसे कोई बात समझने में बहुत कठिनता हो, मंदबुद्धि, कुंदजेहन।

कूत *पुं.* (तद्.) 1. वस्तु को बिना गिने, नापे या तौले उसकी संस्था, मूल्य या परिमाण का अनुमान 2. दे. कनकूत।

कूतना *स.क्रि.* (देश.) 1. अनुमान करना, अंदाज लगाना 2. किसी वस्तु को बिना गिने, नापे या तौले उसकी संख्या, मूल्य या परिमाण का अनुमान करना 3. कनकूत करना।

कूद *स्त्री.* (तद्.) कूदने की क्रिया या भाव।

कूदना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. दोनों पैरों को पृथ्वी या किसी दूसरे आधार पर से बलपूर्वक उठाकर शरीर को किसी ओर फेंकना, उछलना, फांदना जैसे- वह लड़की रस्सी कूद रही है, वह यहाँ से कूद कर वहाँ चला गया 2. जानबूझ कर ऊपर से नीचे की ओर गिरना जैसे- वह कुँए में कूद गया 3. किसी काम या बात में सहसा आ मिलना जैसे- हमारे बीच मत कूदो 4. क्रम भंग करके एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच जाना जैसे- तुम तो सातवें स्थान पर थे फिर कूद कर तीसरे स्थान पर कैसे पहुँच गए 5. अत्यंत प्रसन्न होना, खुशी से फूलना 6. बढ़ बढ़ कर बातें करना, शेखी बघारना मुहा. किसी के बल पर कूदना- किसी का सहारा पाकर बहुत बढ़ बढ़ कर बातें करना *स.क्रि.* (तद्) उल्लंघन कर जाना, लाँघ जाना, फलाँग जाना जैसे- हनुमान समुद्र कूद गए तो सच्चे रामदूत बन गए।

कूदफाँद *स्त्री.* (देश.) कूदने या उछलने की क्रिया, उछलकूद।

कूदाकूदी *पुं.* (देश.) स्त्री।

कूप *पुं.* (तत्.) 1. कुआँ, इनारा 2. छिद्र, सूराख 3. गहरा गड्ढा, कुंड 4. चमड़े का कुप्पा 4. नदी के बीच की चट्टान 6.नाव आदि बाँधने का खूँटा 7. मस्तूल।

कूपक *पुं.* (तत्.) 1. छोटा कुआँ 2. चमड़े का बना हुआ तेल या घी रखने का पाल, कुप्पा 3. नाव बाँधने का खूँटा 4. नाव या जहाज का मस्तूल 5.चिंता 6. कूल्हे के नीचे का गड्ढा 7. नौका, नाव 8. छिद्र, छेद।

कूपकच्छप *पुं.* (तत्.) 1. कुएँ में रहने वाला कछुआ 2. सीमित जानकारी रखने वाला मनुष्य, कूपमंडूक, अनुभवहीन व्यक्ति।

कूपकार *पुं.* (तत्.) कुआँ बनाने वाला, कुआँ खोदने वाला, कूपखनक।

कूपखनक *पुं.* (तत्.) दे. कूपकार।

कूपचक्र *पुं.* (तत्.) कुएँ से पानी खींचने की चर्खी, रहट, कूपयंत्र।

कूपन *पुं.* (अं.) 1. नियंत्रित या सीमित किसी वस्तु को प्राप्त करने की चिट 2. मनीआर्डर फार्म का वह भाग जिस पर रुपया भेजने वाला कुछ समाचार आदि लिख सकता है और जो रुपया पाने वाले के पास रह जाता है।

कूपमंडूक *पुं.* (तत्.) 1. कुएँ का मेंढक, कुएँ में रहने वाला मेंढक 2. वह मनुष्य जो अपना स्थान छोडकर कहीं नही जाता 3. जिसे बाह्य जगत की की कुछ खबर न हो, अनुभवहीन व्यक्ति।

कूपयंत्र *पुं.* (तत्.) दे. कूपचक्र।

कूपयंत्रघटिका *स्त्री.* (तत्.) 1. कुएँ से पानी खींचने के यंत्र में लगी छोटी डोल, रहट में लगी डोलची जिनसे पानी क्रमशः गिरता रहता है 2. सांसारिक अस्तित्व की विभिन्न अवस्थाओं को व्यक्त करने का एक न्याय, जिसमें रहट की डोली को क्रमशः ऊँचा-नीचा, भरा खाली, भरता हुआ, खाली होता हुआ आदि स्थितियों के द्वारा सांसारिक स्थिति व्यक्त की जाती है।

कूपी *स्त्री.* (तत्.) 1. छोटा कुआँ 2. कुप्पी, बोतल 3. नाभि।

कूबड़ *पुं.* (तद्.) 1. पीठ का उभार लिए टेढ़ापन 2. किसी वस्तु का टेढ़ापन।

कूबते बाज *पुं.* (अर.) भुजबल।

कूबतेबाह *पुं.* (अर.) रतिकर्म की शक्ति।

कूबतेरुहानी *स्त्री.* (अर.) आत्मबल, मनोबल।

कूबर *पुं.* (तत्.) 1. कुबड़ा व्यक्ति 2. गाड़ी या रथ की वह बल्ली जिससे जुआ बाँधा जाता है *वि.* 1. सुंदर, रुचिकर, प्रिय 2. कूबड़वाला।

कूबरी *स्त्री.* (तत्.) दे. कुबरी 2. पर्दे आदि से ढँकी गाड़ी 3. रथ या गाड़ी की बल्ली जिससे जुआ बाँधा जाता है।

कूर *वि.* (तद्.) 1. दयारहित, निर्दय 2. भयंकर 3. मनहूस, असगुनियाँ 4. दुष्ट, बुरा, कुमार्गी 5. जिसका किया कुछ न हो, अकर्मण्य 6. नासमझ, अनजान *पुं.* (देश.) लगान की वह कमी जो उच्च जातियों को मुजरा दी जाती है, जिससे वे लोग हलवाहा रख सके *पुं.* (तत्.) उबाला हुआ चावल, भात।

कूरता *स्त्री.* (तद्.) निर्दयता, बेरहमी, कठोरता 2. जड़ता, मूर्खता 3. अरसिकता 4. कायरता, डरपोकपन।

कूरपन *पुं.* (तद्.) दे. कूरता।

कूर्च *पुं.* (तत्.) 1. मुठ्ठी भर कुश 2. दोनों भौहों के बीच का स्थान 3. अंगूठे और तर्जनी के बीच का स्थान 4. झूठ, असत्य 5. दंग 6. एक प्रकार का आसन 7. कूँची, मस्तक, सिर 8. गोदाम, भांडार 9. दाढ़ी 10. मोरपंख।

कूर्चक *पुं.* (तत्.) 1. कूँची 2. दाँतों को स्वच्छ करने की कूँची 3. एक माप या तौल।

कूर्चिका *स्त्री.* (तत्.) 1. कूँची 2. कली 3. कुंजी 4. सुई 5. फटा हुआ दूध, छेना।

कूर्दन *पुं.* (तत्.) 1. कूदने की क्रिया, उछलना कूदना।

कूर्प *पुं.* (तत्.) भौहों के बीच का स्थान, भृकुटी।

कूर्पर *पुं.* (तत्.) 1. पैर के बीच का जोड़, घुटना 2. हाथ के बीच का जोड़, कुहनी।

कूर्म *पुं.* (तत्.) 1. कच्छप, कछुआ 2. पृथ्वी 3. प्रजापति का एक अवतार 4. एक ऋषि, जिन्होंने ऋग्वेद के कई सूत्रों का विकास किया था 5. एक वायु जिसका निवास आँखों में है और जिसके प्रभाव से पलकें खुलती बंद होती हैं, वह दस प्राणों में से एक है 6. नाभिचक्र के पास की एक नाड़ी, कछुआ, पोतनहर 7. विष्णु का दूसरा अवतार 8. एक मुद्रा या आसन, जिसका व्यवहार देवता के ध्यान के समय किया जाता है 9. दे. 'कूर्मासन'।

कूर्मपुराण *पुं.* (तत्.) अठारह मुख्य पुराणों में से एक।

कूर्मपृष्ठ *पुं.* (तत्.) 1. कछुए की पीठ 2. वह स्थान जो कछुए की पीठ की तरह ऊँचा नीचा हो 3. बाणपुष्प या अम्लान नामक वृक्ष 4. तश्तरी या किसी वस्तु का ढक्कन।

कूर्मा *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की वीणा।

कूर्मासन *पुं.* (तत्.) योग मे एक प्रकार का आसन जिसमें शरीर को कछुए की आकृति का बनाया जाता है।

कूर्मिका *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार का बहुत पुराना बाजा, जिसमें बजाने के लिए तार लगे होते हैं।

कूर्मी *स्त्री.* (तत्.) दे. कूर्मिका।

कूलंकष *वि.* (तत्.) तट को छूने वाला *पुं.* (तत्.) 1. नदी की धारा या प्रवाह 2. समुद्र, सागर, कूलंकणा *स्त्री.* (तत्.) सरिता, नदी।

कूलंज *पुं.* (अर.) आंत का दर्द, अंतड़ियों की पीड़ा।

कूल *पुं.* (तत्.) 1. किनारा, तट, तीर 2. सेना के पीछे का भाग 3. समीप, पास 4. बड़ा नाला, नहर 5. तालाब 5. ढूहा, टीला।

कूलक *पुं.* (तत्.) 1. तट, किनारा 2. बल्मीक, बाँबी 3. ढूह, टीला।

कूलवती *स्त्री.* (तत्.) नदी।

कूला *पुं.* (तद्.) 1. वह छोटा नाला जो किसी नदी नाले से पानी लाने के लिए खोदा गया हो, छोटी नहर 2. दे. कूल्हा।

कूलिका *स्त्री.* (तत्.) वीणा या सितार के नीचे का भाग।

कूलिनी *स्त्री.* (तत्.) नदी।

कूल्हा *पुं.* (देश.) 1. कोख के नीचे, कमर में पेट के दोनों ओर निकली हुई हड्डियाँ 2. कुश्ती का एक भेद, जिसमें पहलवान सामने खड़े हुए विपक्षी की पीठ पर दाहिनी तरफ से अपना दाहिना हाथ ले जाकर उसका दाहिनी ओर से जाँघिया पकड़ता है और अपने बाएँ हाथ से उसका दाहिना पहुँचा पकडक़र खींचता हुआ अपने कूल्हे पर से लाद पर सामने चित्त गिरा देता है। मुहा. कूल्हा उतरना या सरकना- गिरने या किसी आघात के कारण कूल्हे का अपने स्थान से हट जाना; कूल्हा मटकाना- चूतड़ मटकाना।

कूवत *स्त्री.* (अर.) शक्ति, बल, ताकत।

कूवते जिस्मानी *स्त्री.* (अर.) शारीरिक शक्ति।

कूवर *पुं.* (तत्.) 1. रथ का वह भाग जिस पर जूआ बाँधा जाता है, युगंधर, हरसा 2. रथ में रथी के बैठने का स्थान 3. कुबड़ा 4. कुब्जक, कूजा। *वि.* मनोहर, सुंदर।

कूष्मांड *पुं.* (तत्.) 1. कुम्हड़ा 2. पेठा 3. वैदिक काल के एक ऋषि 4. एक प्रकार के पिशाच जो शिव के गण है 5. बाणासुर का प्रधानमंत्री।

कूष्मांडा *स्त्री.* (तत्.) नौ दुर्गा में से चौथी दुर्गा। दुर्गा का एक रूप।

कूष्मांडी *स्त्री.* (तत्.) 1. दुर्गा 2. यजुर्वेद की एक ऋचा, जिसके द्रष्टा कूष्मांड ऋषि थे।

कृकलास *पुं.* (तत्.) गिरगिट।

कृकाटिका *स्त्री.* (तत्.) कंधे और गले का जोड़, घाटी।

कृच्छ्र *पुं.* (तत्.) 1. कष्ट, दु:ख 2. पाप 3. मूत्रकृच्छ्र रोग 4. कृच्छ्रव्रत जिसमें पंचगव्य प्राशन कर दूसरे दिन उपवास किया जाए, कृच्छ्रसांतपन *वि.* 1. कष्टसाध्य 2. कष्टयुक्त 3. दुष्ट, बुरा 4. पापी, पापात्मा।

कृत *वि.* (तत्.) करने या बनाने वाला, कर्ता, समासांत में प्राय: प्रयुक्त जैसे- ग्रंथकृत 2. किया हुआ, संपादित, बनाया हुआ, रचित जैसे- बाल्मीकि कृत रामायण 3. संबंध रखनेवाला, तत्संबंधी *पुं.* (तत्.) 1. धातु के साथ मिलकर विशेषण आदि बनाने वाले प्रत्यय 2. उक्त प्रत्ययों के योग से बना हुआ शब्द 3. चार युगों में से पहला युग, सतयुग 4. पंद्रह प्रकार के दासों में से एक, वह दास जिसने कुछ नियत समय तक सेवा करने का व्रत लिया हो 5. एक प्रकार का पासा, जिसमें चार चिह्न बने होते हैं 6. चार की संख्या 7. फल, परिणाम 8. उद्देश्य, लक्ष्य 9. उपकार 10. कर्म, काम, कृत्य 11. युद्ध में प्राप्त धन या इनाम 12. देवता या सम्मानित व्यक्ति को अर्पित वस्तु।

कृतकर्मा *पुं.* (तत्.) 1. तीनो ऋणों (ऋषि, देव, पितृ) से मुक्त संन्यासी 2. परमेश्वर।

कृतकाम *वि.* (तत्.) जिसकी कामना पूरी हो गई हो।

कृतकार्य *वि.* (तत्.) जिसका प्रयोजन सिद्ध हो चुका हो, सफलमनोरथ, कामयाब।

कृतकृत्य *वि.* (तत्.) जिसका काम पूरा हो चुका हो, काम हो जाने पर आदर, सम्मान श्रद्धा आदि सूचित करने के लिए कृतज्ञता प्रकट करना, कृतार्थ जैसे- आपने दर्शन देकर मुझे कृतकृत्य कर दिया।

कृतघ्न *वि.* (तत्.) किए हुए उपकार को न मानने वाला, अकृतज्ञ, नमकहराम।

कृतघ्नता *स्त्री.* (तत्.) किए हुए उपकार को न मानने का भाव, अकृतज्ञता, नमकहरामी।

कृतघ्नी *वि.* (तत्.) किए हुए उपकार को न मानने वाला, एहसानफरामोश।

कृतज्ञता *स्त्री.* (तत्.) किए हुए उपकार को मानने का भाव, निहोरा मानना, एहसानमंदी।

कृततीर्थ *वि.* (तत्.) 1. जो तीर्थस्थानों में भ्रमण कर चुका हो 2. अध्यापन वृत्ति वाले अध्यापक से शिक्षा प्राप्त करने वाला 3. जिसे तरकीब खूब सूझती है 4. पथप्रदर्शक 5. सरल किया हुआ।

कृतनिश्चय *वि.* (तत्.) जिसने दृढ़ निश्चय कर लिया हो, कृतसंकल्प, दृढ़प्रतिज्ञ।

कृतपूर्व *वि.* (तत्.) पहले किया हुआ, पूर्वतः संपन्न।

कृतप्रतिज्ञ *वि.* (तत्.) जिसने प्रतिज्ञा कर ली हो।

कृतयुग *पुं.* (तत्.) सतयुग।

कृतविद्य *वि.* (तत्.) जिसे विद्या का अभ्यास हो, जानकार।

कृतशोभ *वि.* (तत्.) 1. शानदार 2. सुंदर 3. पटु, चतुर, दक्ष।

कृतशौच *वि.* (तत्.) पवित्र, शुद्ध किया हुआ 2. जिसने स्नानादि नित्यकर्म कर लिया हो।

कृतसंकल्प *वि.* (तत्.) दे. कृतनिश्चय।

कृतसंज्ञ *वि.* (तत्.) 1. होश में लाया हुआ, चेतना प्राप्त 2. उद्बोधित, जगाया हुआ 3. पैनी बुद्धिवाला, तीक्ष्णद्धि।

कृतहस्त *वि.* (तत्.) 1. किसी काम को करने में होशियार, चतुर, कुशल 2. बाण चलाने में निपुण।

कृतांक *पुं.* (तत्.) पासे का वह भाग जिस पर चार बिंदु हो।

कृतांजलि *वि.* (तत्.) हाथ जोड़े हुए, हाथ बाँधे हुए।

कृतांत *वि.* (तत्.) समाप्त करने वाला *पुं.* (तत्.) 1. 1. यम, धर्मराज 2. पूर्व जन्म में किए हुए शुभ और अशुभ कर्मों का फल 3. सिद्धांत 4. मृत्यु 5. पाप 6. शनिवार 7. देवतामान 8. भरणी नक्षत्र 9. दो की संख्या 10. शनि ग्रह।

कृतांतजनक *पुं.* (तत्.) सूर्य।

कृतांतपुर *पुं.* (तत्.) यमलोक।

कृतांतभगिनी *स्त्री.* (तत्.) यमराज की बहन, यमुना।

कृताकृत *पुं.* (तत्.) 1. किया हुआ, बिना किया हुआ 2. अधूरा काम 3. कार्य और कारण 4. सोना और चाँदी 5. वह द्रव्य जो कच्चा और अपक्व हो जैसे- कच्चे चावल।

कृतात्मा *पुं.* (तत्.) वह मनुष्य जिसकी आत्मा शुद्ध हो, महात्मा।

कृतापराध *वि.* (तत्.) दोषी, अपराधी।

कृतार्थ *वि.* (तत्.) 1. जिसका अभिप्राय पूरा हो गया हो, जो अपने सब कार्य कर चुका हो, कृतकृत्य 2. संतुष्ट 3. कुशल, निपुण 4. जो मुक्ति प्राप्त कर चुका हो।

कृतालय *वि.* (तत्.) जिसने कहीं घर बना लिया हो, घर बना लेने वाला।

कृतावधि *वि.* (तत्.) 1. जिसकी समय सीमा निश्चित हो, निर्धारित समय का 2. सीमित।

कृताह्वान *वि.* (तत्.) जिसे पुकारा गया हो।

कृति *स्त्री.* (तत्.) 1. करतूत, करनी 2. कार्य 3. आघात, क्षति 4. इंद्रजाल, जादू 5. गणित में दो समान अंकों का घात, वर्ग संख्या 6. डाकिनी 7. अनुष्टुप् जाति का एक छंद, इसमें बीस तीस अक्षरों के चार चरण होते है 8. बीस की संख्या 9. कटारी 10. रचना 11. चाकू, छूरी 12. मारण, वध।

कृतिकार *पुं.* (तत्.) गद्य पद्य में रचना करने वाला वाला व्यक्ति, रचनाकार।

कृती *पुं.* (तत्.) च्यवन ऋषि के पुत्र और उपरिचर वसु के पिता *वि.* (तत्.) 1. कुशल, निपुण जैसे- कालिदास सचमुच कृती थे 2. साधु 3. पुण्यात्मा 4. कृतकार्य, सफल 5. सौभाग्यशाली 6. अनुवर्ती, आज्ञाकारी।

कृतोत्साह *वि.* (तत्.) 1. उत्साहयुक्त 2. परिश्रमी।

कृतोदक *वि.* (तत्.) नहाया हुआ, स्नात।

कृतोद्वाह *वि.* (तत्.) विवाहित।

कृत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. मृगचर्म 2. चमड़ा, खाल 3. भोजपत्र 4. कृत्तिका नक्षत्र 5. भूर्जवृक्ष 6. गृह, मकान।

कृत्तिका *स्त्री.* (तत्.) 1. सत्ताईस नक्षत्रों में से तीसरा नक्षत्र जिसमें छह तारे हैं और इसका आधार अग्निशिखा के समान होता है 2. चंद्रमा की पत्नी 3. कार्तिकेय की पालनकर्त्री।

कृत्तिकातनय *पुं.* (तत्.) कार्तिकेय, छकड़ा, बैलगाड़ी।

कृत्तिकासुत *पुं.* (तत्.) दे. कृत्तिकातनय।

कृत्तिवास *पुं.* (तत्.) दे. कृत्तिवासा।

कृत्तिवासा *पुं.* (तत्.) शिव, गजासुर का वध कर उसकी खाल ओढ़ने वाले महादेव।

कृत्य *पुं.* (तत्.) कर्तव्य कर्म, वेदविहित आवश्यक कार्य 2. अभिचार 3. काम, कर्म 4. जादू।

कृत्याकृत्य *वि.* (तत्.) करने और न करने योग्य काम, भला और बुरा काम।

कृत्यादूषण *पुं.* (तत्.) कृत्या के प्रतिकार के लिए किया जाने वाला एक विशेष कृत्य।

कृत्रिम *वि.* (तत्.) 1. जो असली न हो, नकली, बनावटी, जाली 2. बारह प्रकार के पुत्रों में से एक, जिसे धन-संपत्ति का लोभ दिखाकर पुत्रवत् अपने साथ रखा जाए।

कृत्रिमवन *पुं.* (तत्.) उपवन, उद्यान।

कृत्स्न *वि.* (तत्.) संपूर्ण, सब, पूरा।

कृदंत *पुं.* (तत्.) वह शब्द जो धातु (के अंत) में कृत् प्रत्यय लगाने से बने जैसे- पाचक, नंदन, भुक्त, भोक्ता।

कृप *पुं.* (तत्.) 1. वैदिक काल के एक ऋषि का नाम 2. दे. 'कृपाचार्य'।

कृपण *पुं.* (तत्.) 1. अनुदार या सूम व्यक्ति 2. एक प्रकार का कीट 3. बुरी हालत, दुर्दशा।

कृपणता *स्त्री.* (तत्.) 1. कंजूसी 2. दीनता, दैन्य।

कृपणधी *वि.* (तत्.) क्षुद्रबुद्धि।

कृपया *क्रि.वि.* (तत्.) कृपापूर्वक, अनुग्रहपूर्वक जैसे- कृपया यहाँ न थूकें।

कृपा *स्त्री.* (तत्.) 1. बिना किसी प्रतिकार की आशा के दूसरे की भलाई करने की इच्छा या वृत्ति, दया, अनुग्रह 2. क्षमा, माफी जैसे- मेरे अवगुण न देखो, कृपा करो।

कृपाचार्य *पुं.* (तत्.) गौतम के पौत्र और शरद्वत के के पुत्र, अश्वत्थामा के मामा, कौरवों-पांडवों के गुरु।

कृपाण *पुं.* (तत्.) 1. तलवार 2. कटार 3. दंडक वृत्त का एक भेद जिसमें 32 वर्ण होते हैं।

कृपाणी *स्त्री.* (तत्.) 1. छोटी तलवार 2. कैंची, कतरनी 3. कटारी या बरछी।

कृपादृष्टि *स्त्री.* (तत्.) दया की दृष्टि।

कृपापात्र *पुं.* (तत्.) वह व्यक्ति जिस पर कृपा हो, कृपा का अधिकारी, कृपा का पात्र।

कृपाभाजन *पुं.* (तत्.) दया का पात्र।

कृपायतन *पुं.* (तत्.) दया के निवास, दयालु।

कृपालु *वि.* (तत्.) कृपा करने वाला प्रयो. श्री रामचंद्र कृपालु भजु मन, हरणभवभयदारुणम् - तुलसी।

कृपालुता *स्त्री.* (तत्.) दया का भाव, मेहरबानी।

कृपासिंधु *वि.* (तत्.) दयानिधि, अकारण कृपा करने वाला 2. परमेश्वर प्रयो. बंदऊ गुरुपद कंज, कृपासिंधु नररूप हरि -तुलसी।

कृपी *स्त्री.* (तत्.) कृपाचार्य की बहन जो द्रोणाचार्य को ब्याही थी और अश्वत्थामा की माता थी।

कृपीसुत *पुं.* (तत्.) अश्वत्थामा।

कृमि *पुं.* (तत्.) 1. क्षुद्र कीट, छोटा कीड़ा 2. हिरमिजी कीड़ा या मिट्टी, किरमिजी 3. लाह 4. गधा 5. मकड़ा।

कृमिकोश *पुं.* (तत्.) रेशम के कीड़े का घर, कोया, ककून, कुसवारी।

कृमिरोग *पुं.* (तत्.) आमाशय और पक्वाशय में केंचुए या कीड़े उत्पन्न होने का रोग।

कृश *वि.* (तत्.) 1. दुबला पतला, क्षीण 2. गरीब, नगण्य 3. अल्प, छोटा।

कृशता *स्त्री.* (तत्.) 1. दुबलापन, दुर्बलता, क्षीणता 2. अल्पता, सूक्ष्मता, कमी।

कृशत्व *पुं.* (तत्.) 1. क्षीणता, दुबलापन 2. अल्पता, सूक्ष्मता।

कृशन *पुं.* (तत्.) 1. मुक्ता, मोती 2. सोना, हिरण्य 3. आकार, आकृति, गठन।

कृशर *पुं.* (तत्.) 1. तिल और चावल की खिचड़ी 2. लोबिया मटर, केसारी, दुबिया।

कृशरान्न *पुं.* (तत्.) खिचड़ी।

कृशांग *पुं.* (तत्.) शिव *वि.* (तत्.) दुबला, पतला।

कृशानु *पुं.* (तत्.) 1. अग्नि 2. चित्रक, चीता।

कृशाश्व *पुं.* (तत्.) 1. भागवत के अनुसार तृणबिंदु वंश का एक राजर्षि जो संयम का पुत्र और महादेव का बड़ा भाई था 2. दक्ष के एक जामाता 3. हरिवंश के अनुसार धुंधमारवंशी एक राजा, जो नाट्यशास्त्र के एक आचार्य माने जाते हैं।

कृशोदर *वि.* (तत्.) जिसका पेट बढ़ा न हो, कृश उदरवाला।

कृषक *पुं.* (तत्.) 1. किसान, खेतिहर 2. हल का फल 3. बैल।

कृषि *स्त्री.* (तत्.) 1. खेती, काश्त, किसानी 2. हल चलाना, जोतना-बोना 3. पृथ्वी, जमीन, धरती।

कृषिकर्म *पुं.* (तत्.) खेती का काम, किसानी।

कृषिकार *पुं.* (तत्.) किसान, खेतिहर।

कृषिजीवी *वि.* (तत्.) खेती के द्वारा जीविका उपार्जित करने वाला (किसान)।

कृष्ट *वि.* (तत्.) 1. जोता हुआ, हल चलाया हुआ 2. खींचा हुआ, घसीटा हुआ।

कृष्टपच्य *वि.* (तत्.) खेत में बोने से पैदा होने वाला।

कृष्ण *वि.* (तत्.) 1. श्याम, काला, सियाह 2. नीला या आसमानी 3. दुष्ट, अनिष्टकारक *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु के दस अवतारों में आठवाँ, यदुवंशी वसुदेव के पुत्र, जो भोजवंशी देवक की कन्या देवकी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे 2. एक असुर जिसे इंद्र ने मारा था 3. एक ऋषि जिन्होंने ऋग्वेद के कई मंत्रों का प्रकाश किया था 4. अथर्ववेद का एक उपनिषद 5. छप्पय छंद का एक भेद 6. चार अक्षरों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और एक लघु होता है 7. वेदव्यास 8. अर्जुन 9. कोयल 10. कौवा 11. कदम का पेड़ 12. मास का वह पक्ष जिसमें चंद्रमा का ह्रास हो, अंधेरा पक्ष 13. कलियुग 14. करौंदा 15. पीपल 16. नील 17. जैनियों के नौ काले वासुदेवों में से एक 18. बौद्धों के अनुसार एक राक्षस जो बुद्ध का शत्रु माना जाता है 19. चंद्रमा का धब्बा 20. लोहा 21. सुरमा।

कृष्ण कर्म *पुं.* (तत्.) 1. हिंसा आदि पाप कर्म 2. निष्काम कर्म 3. फोड़े की चिकित्सा की एक प्रक्रिया।

कृष्णकाय *पुं.* (तत्.) 1. महिष, भैंसा 2. काले रंग का प्राणी या वस्तु।

कृष्णकाष्ठ *पुं.* (तत्.) कृष्णागुरु, काला चंदन या अगर।

कृष्णकेलि *स्त्री.* (तत्.) कृष्ण की लीला।

कृष्णग्रीव *पुं.* (तत्.) नीलकंठ, शिव।

कृष्णचंद्र *पुं.* (तत्.) दे. कृष्ण।

कृष्णद्वैपायन *पुं.* (तत्.) पराशर के पुत्र वेदव्यास, पराशर्य।

कृष्णपक्ष *पुं.* (तत्.) 1. वह पक्ष जिसमें चंद्रमा का ह्रास हो, अंधियारा पक्ष 2. अर्जुन का एक नाम।

कृष्णमृग *पुं.* (तत्.) कृष्णसार मृग, काला मृग।

कृष्णयजुष *पुं.* (तत्.) यजुर्वेद के दो भेदों में से एक, इसमें 86 शाखाएँ हैं, जिनमें तैत्तिरीय और आपस्तंब आदि शाखाएँ प्रमुख हैं *वि.* दे. 'यजुर्वेद'।

कृष्णसखा *पुं.* (तत्.) कृष्ण का मित्र, 2. सुदामा 3. अर्जुन।

कृष्णसखी *स्त्री.* (तत्.) 1. कृष्ण की सखी 2. द्रौपदी 3. राधा, विशाखा आदि गोपियाँ।

कृष्णसार *पुं.* (तत्.) 1. काला मृग, काला हिरण 2. सेंहुड़ 3. शीशम का वृक्ष 4. खैर का वृक्ष।

कृष्णा *स्त्री.* (तत्.) 1. राज द्रुपद की पुत्री द्रौपदी 2. 2. पीपल ठ 3. दक्षिण भारत की एक नदी जो पश्चिमी घाट से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है 4. कच्चे नील की बट्टी 5. कालीदास 6. काला जीरा 7. अगर, ऊद (लकड़ी) 8. काली (देवी) 9. एक प्रकार की जहरीली जोंक 10. पपरी

नाम का गंध द्रव्य 11. कुटकी 12. राई 13. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक 14. एक योगिनी 15. काले पत्ते वाली तुलसी 16. आँखों की पुतली।

कृष्णागुरु *पुं.* (तत्.) काला अगर, काला चंदन।

कृष्णागुरुवर्त्तिका *स्त्री.* (तत्.) काले अगर की बत्ती।

कृष्णाचल *पुं.* (तत्.) 1. रैवतक पर्वत, प्राचीन द्वारका इसी पर्वत पर थी 2. नीलगिरि पर्वत।

कृष्णाजिन *पुं.* (तत्.) 1. काले मृग का चमड़ा, मृगचर्म 2. एक प्राचीन ऋषि का नाम।

कृष्णार्पण *पुं.* (तत्.) कृष्ण के निमित अर्पण करना या देना।

कृष्णाष्टमी *स्त्री.* (तत्.) भादों के कृष्णपक्ष की अष्टमी, जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था, कृष्ण जन्माष्टमी।

कृष्य *वि.* (तत्.) कर्षण या खेती के योग्य जैसे-कृष्य भूमि।

कें कें *स्त्री.* (अनु.) 1. चिडियों का कष्ट सूचक शब्द 2. झगड़ा या असंतोषमूलक शब्द।

केंचुआ *पुं.* (तद्.) 1. एक बरसाती लंबा कीड़ा 2. केंचुए के आकार का सफेद कीड़ा जो मल द्वारा पेट से बाहर निकलता है।

केंचुल *स्त्री.* (तद्.) सर्प आदि के शरीर की त्वचा या खोल जो प्रतिवर्ष स्वयं अलग होकर गिर जाती है मुहा. केंचुल बदलना-पोशाक बदलना, कपड़ा बदलना।

केंचुली *स्त्री.* (तद्.) सर्प आदि के शरीर की त्वचा या खोल जो प्रतिवर्ष स्वयं उतर जाती है।

केंद्र *पुं.* (तत्.) 1. किसी वृत्त के अंदर का वह भाग या बिंदु जिससे परिधि तक खींची गई सब रेखाएँ बराबर हों, नाभि 2. किसी निश्चित अंश से से 90, 180, 270 और 360 अंश के अंतर का स्थान 3. ज्योतिषशास्त्र में ग्रहों के दो केंद्र-शीघ्र केंद्र और मंद केंद्र 4. फलित के अनुसार कुंडली में पहला, चौथा, सातवाँ और दसवाँ स्थान 5. मुख्य या प्रधान स्थान 6. सदा रहने का स्थान 7. बीच का स्थान 8. किसी वस्तु के उत्पादन, वितरण आदि का स्थान, सेंटर।

केंद्रगामी *वि.* (तत्.) केंद्र की ओर गमन करने वाला।

केंद्रस्थ *वि.* (तत्.) जो केंद्र में स्थित हो, केंद्रस्थान।

केंद्राभिमुखी *वि.* (तत्.) 1. केंद्र की ओर जाने वाला, केंद्र का समर्थन करने वाला।

केंद्रिक *वि.* (तत्.) केंद्र में बने रहने वाला, केंद्रसंबंधी, केंद्र का, केंद्रीय।

केंद्रित *वि.* (तत्.) 1. केंद्र में स्थित 2. निश्चित स्थान पर एकत्रित।

केंद्रीभूत *वि.* (तत्.) केंद्र में स्थित या एकत्रित, पुंजीभूत।

केंद्रीय *वि.* (तत्.) 1. केंद्रसंबंधी 2. केंद्रस्थ, केंद्र में स्थित 3. मुख्य, वरिष्ठ, प्रधान, श्रेष्ठ।

के *पुं.* (हि.) संबंधसूचक 'का' विभक्ति का बहुवचन का रूप जैसे-मोहन के पैसे।

केक *पुं.* (अं.) चीनी फल और आटे के मिश्रण द्वारा द्वारा तैयार की हुई एक तरह की अंगरेजी मिठाई मिठाई जो गोल तथा ऊँची होती है।

केकड़ा *पुं.* (तद्.) पानी का एक कीड़ा जिसकी आठ टाँगें और दो पंजे होते हैं।

केकय *पुं.* (तत्.) 1. एक प्राचीन देश का नाम जो व्यास और शाल्मली नदी के दूसरी ओर था, अब यह कश्मीर राज्य के अंतर्गत है 2. केकय देश का निवासी या राजा 3. दशरथ के श्वसुर और कैकई के पिता का नाम।

केकयी *स्त्री.* (तत्.) 1. केकय देश की स्त्री 2. राजा राजा दशरथ की रानी जिससे भरत जी उत्पन्न हुए थे दे. कैकेयी।

केकर *पुं.* (तत्.) 1. ऐंचा, भेंगा 2. तंत्र में चार अक्षरों का एक मंत्र।

केका *स्त्री.* (तत्.) मोर, मोर की बोली, मोर की कूक।

केकारव *स्त्री.* (तत्.) मोर की बोली।

केचित् *पुं.* (तत्.) कोई, कोई-कोई।

केड़वारी *स्त्री.* (देश.) वह बाग जिसमें साग सब्जी फलादि बोए और लगाए जाएँ, नए पौधों का बाग, नौरंगा।

केड़ा *पुं.* (देश.) 1. नया पौधा या अंकुर, कोंपल, कल्ला 2. नवयुवक 3. खेत से काटी हुई फसल या घास का गट्ठा।

केत *पुं.* (तत्.) 1. घर, भवन 2. स्थान, जगह, बस्ती 3. केतु, ध्वजा 4. बुद्धि, प्रज्ञा 5. संकल्प, इच्छाशक्ति 6. मंत्रणा, सलाह 7. अन्न 8. केवड़ा 9. आकाश 10. निमंत्रण।

केतकी *स्त्री.* (तत्.) 1. एक प्रकार का छोटा झाड़ या पौधा, केवड़ा 2. एक प्रकार का सुगंधित फूल।

केतन *पुं.* (तत्.) 1. निमंत्रण, आह्वान 2. ध्वजा, चिह्न 3. घर, धब्बा 4. शरीर, संस्थान, जगह।

केतली *स्त्री.* (अं.) पानी गरम करने का एक टोंटीदार बरतन, जिसके मुँह पर ढक्कन होता है।

केतु *पुं.* (तत्.) 1. ज्ञान 2. दीप्त, प्रकाश 3. ध्वजा, पताका 4. पुराण के अनुसार एक राक्षस का कबंध जो समुद्रमंथन के समय देवों की पंक्ति में बैठ कर अमृत पी गया था, जिस कारण विष्णु ने इसका सिर काट डाला था, अमृत के प्रभाव से इसका सिर राहु और कबंध केतु हो गया 6. एक प्रकार का तारा जिसके प्रकाश की एक पूंछ दिखाई देती है, इसे पुच्छल तारा भी कहते हैं 7. नवग्रहों में से एक ग्रह 8. प्रकाश किरण 9. प्रधान व्यक्ति 10. दिन का समय 11. आकार, आकृति 12. शत्रु 13. एक रोग।

केतुकुंडली *स्त्री.* (तत्.) फलित ज्योतिष के अनुसार बारह कोष्ठों का एक चक्र जिससे प्रत्येक वर्ष का स्वामी निकाला जाता है।

केतु तारा *पुं.* (तत्.) पुच्छल तारा।

केतुपताका *स्त्री.* (तत्.) फलित ज्योतिष के अनुसार नौ कोष्ठों का एक चक्र जिससे वर्षेश निकाला जाता है।

केतुमान *वि.* (तत्.)1. तेजवान, तेजस्वी 2. ध्वजा वाला 3. बुद्धिमान 4. प्रतीकयुक्त।

केतुमान *पुं.* (तत्.) हरिवंश के अनुसार काशिराज दिवोराज के वंश का एक राजा जो धन्वंतरि का पुत्र था 2. एक दानव का नाम।

केतुमाल *पुं.* (तत्.) जंबूद्वीप के नौ खंडों में से एक एक खंड।

केतुयष्टि *स्त्री.* (तत्.) ध्वज का दंड।

केतुरत्न *पुं.* (तत्.) लहसुनियाँ नामक रत्न।

केतुवसन *पुं.* (तत्.) पताका, ध्वजा।

केतुवृक्ष *पुं.* (तत्.) पुराणानुसार मेरु के चारों ओर के पर्वतों पर के चार वृक्षों के नाम।

केदार *पुं.* (तत्.) 1. वह खेत जिसमें धान रोपा या बोया जाता है, कियारी 2. वृक्ष के नीचे जमीन पर बना हुआ थाला 3. मेघनाथ का चौथा पुत्र 4. हिमालय का एक शिखर जहाँ केदारनाथ नाम का एक शिवलिंग है 5. शिव का एक नाम।

केदारक *पुं.* (तत्.) साठी धान।

केदारखंड *पुं.* (तत्.) 1. स्कंदपुराण का एक खंड जिसमें केदारतीर्थ के महात्म्य का वर्णन है 2. स्कंदपुराण (काशी खंड) के अनुसार वाराणसी के तीन खंडों या भूभागों में से एक का नाम, काशी का दक्षिणवर्ती खंड जहाँ केदारनाथ का मंदिर है 3. जल रोकने के लिए बनाया गया मिट्टी का छोटा बांध।

केदारगंगा *स्त्री.* (तत्.) उत्तराखंड की एक प्रसिद्ध नदी जो गंगा में मिलती है।

केदारनट *पुं.* (तत्.) षाड़व जाति का एक संकर राग जो नट और केदार को मिलाकर बनता है।

केदारनाथ *पुं.* (तत्.) हिमालय के एक पर्वत का नाम, जिसके शिखर पर केदारनाथ नामक शिवलिंग है।

केदारी *स्त्री.* (तत्.) दीपक राग की पाँचवी रागिनी जो रात के समय दूसरे पहर की पहली घड़ी में गायी जाती है।

केन *पुं.* (तत्.) एक प्रसिद्ध उपनिषद् जिसका पहला मंत्र 'केन' शब्द से प्रारंभ होता है यह सामवेदी है और इसमें चार खंड़ों में 34 मंत्र हैं।

केना *पुं.* (देश.) 1. वह थोड़ा सा अन्न जिससे देहात में लोग तरकारी मोल लेते हैं 2. सागपात, भाजी 3. एक प्रकार की बरसाती घास जो साग के रूप में काम आती है।

केनार *पुं.* (तत्.) 1. एक नरक का नाम 2. कपोल 3. खोपड़ी 4. सिर 5. संधि, जोड़।

केबिल *पुं.* (अं.) (केबल) समुद्र में बिछाया गया तार 2. दूरदर्शन को ध्वनि तरंगों से जोड़ने वाला तार 3. केबिल ग्राम।

केम *पुं.* (तद्.) कदंब, कदम उदा. अब तजि नाहिं उपाय को आए पावस मास, खेलु न रहिबो खेम जो केम कुसुम की बास, बिहारी।

केमद्रुम *पुं.* (तत्.) ज्योतिष में चंद्रमा का एक योग।

केमरा *पुं.* (अं.) फोटो खींचने का यंत्र प्रयो. केमरा गायब हो गया उसमें नई रील डाली थी।

केयूर *पुं.* (तत्.) 1. बाँह में पहनने का एक आभूषण, बिजायठ, बजुल्ला, अंगद, भुजबंद 2. एक प्रकार का रतिबंध।

केयूरी *पुं.* (तत्.) जो केयूर पहने हो, केयूरधारी।

केरल *पुं.* (तत्.) दक्षिण भारत का एक प्रदेश।

केरा *पुं.* (तद्.) केला (वृक्ष या फल), अव्य. संबंध सूचक अव्यय का उदा. पानी केरा बुदबुदा अस मानस की जात -कबीर।

केराट *पुं.* (तत्.) 1. बकरा 2. खटमल 3. जूँ 4. कामदेव का एक बाण 5. विष्णु।

केराना *पुं.* (देश.) नमक, मसाला, हल्दी आदि नित्य व्यवहार की चीजें जो पंसारियों के यहाँ मिलती है।

केरानी *पुं.* (अर.) 1. वह मनुष्य जिसके माता पिता में से कोई एक यूरोपियन और दूसरा हिंदुस्तानी हो, किरंटा, यूरेशियन 2. अंगरेजी दफ्तर में लिखने पढ़ने का काम करने वाला मुंशी, क्लर्क।

केरी *स्त्री.* (देश.) आम का कच्चा, छोटा, नया फल, फल, अमिया, आंबिया।

केरोसिन *पुं.* (अं.) मिट्टी का तेल।

केल *पुं.* (देश.) एक वृक्ष जो हिमालय पर 6000 से 11000 फुट की ऊँचाई पर होता है।

केलक *पुं.* (तत्.) नृत्य करने वाला व्यक्ति, नर्तक, तलवार की धार पर चलने वाला या नृत्य करने वाला व्यक्ति।

केला *पुं.* (तद्.) एक प्रसिद्ध पेड़, कदली 2. केले का फल पर्या. रंभा, मोचा, कदली, अंशुमत्फला, वारणवुषा, वाखुषा, सुफला, नि:सारा, चर्मण्वती।

केलि *स्त्री.* (तत्.) 1. क्रीड़ा, खेल 2. रति, मैथुन समागम 3.हँसी ठठ्ठा मजाक, दिल्लगी 4.पृथ्वी।

केलिक *पुं.* (तत्.) अशोक वृक्ष।

केलिकला *स्त्री.* (तत्.) 1. सरस्वती की वीणा 2. रति, केलि, रतिक्रीड़ा।

केलिकिल *पुं.* (तत्.) नाटक का विदूषक 2. शिव के अनुचर का एक नाम।

केलिकीर्ण *पुं.* (तत्.) क्रमेलक, ऊँट।

केलिकोप *स्त्री.* (तत्.) 1. नट, नर्तक।

केलिवन *पुं.* (तत्.) क्रीड़ा उपवन।

केली *स्त्री.* (तत्.) 1. खेल, क्रीडा 2. कामकेलि।

केली *स्त्री.* (देश.) केले की एक जाति जिसमें फल छोटे होते हैं।

केलीपिक *पुं.* (तत्.) मनोविनोद के लिए रखी कोयल।

केलीबनी *स्त्री.* (तत्.) प्रमोदवाटिका।

केलीशुक *पुं.* (तत्.) मनोरंजनार्थ पाला गया सुग्गा।

केवट *पुं.* (तद्.) कैवर्त क्षत्रिय और वैश्य माता से उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति इस जाति के लोग

नाव चलाते और मिट्टी खोदते हैं प्रयो. मांगी नाव न केवट आना -तुलसी।

केवटीदाल *स्त्री.* (देश+तद्.) दो या अधिक प्रकार की दालों का मिश्रण।

केवटीमोथा *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का सुगंधित मोथा जिसका प्रयोग औषधि के रूप में होता है।

केवड़ा *पुं.* (तद्.) 1. एक प्रसिद्ध पौधा, जिसके पत्ते लंबे, पतले और घने तथा फूल सुगंधित होता हैं 2. उक्त पौधे का फूल जो सुगंधित और कँटीला होता है 3. उक्त पौधों के फूलों से उतारा हुआ अर्क।

केवल *वि.* (तत्.) 1. एक मात्र, अकेला 2. उत्कृष्ट, अभिश्रित 3. शुद्ध, पवित्र 4. पूर्ण समस्त 5. नग्न, अनाश्त *क्रि.वि.* सिर्फ *पुं.* 1. वह ज्ञान जो भ्रांतिशून्य और विशुद्ध हो 2. जैन समयानुसार यह सम्यक् ज्ञान है 3. किसी अन्य से असंपृक्त, अमिश्रित, शुद्ध, खालिस, स्वयं में ही पूर्ण।

केवलात्मा *पुं.* (तत्.) 1. पाप और पुण्य से रहित ईश्वर 2. शुद्ध स्वभाव वाला मनुष्य।

केवलान्वयी *पुं.* (तत्.) न्याय में एक प्रकार का हेतु जिसकी सहायता अनुमान में ली जाती है, जिसे पूर्ववत् भी कहते हैं दे. अनुमान।

केवली *पुं.* (तत्.) 1. मुक्ति का अधिकारी साधु, केवल ज्ञानी 2. मुक्तिप्राप्त साधु, तीर्थंकर (जैन) *वि.* 1. अकेला, निःसंग 2. विशुद्ध आत्मैक्य के सिद्धांत को मानने वाला 3. पूर्ण ज्ञान प्राप्त।

केवा *पुं.* (तद्.) कमल कली, बहाना, मिस, आनाकनी प्रयो. भौंर खोज जस पावे केवा-पद्मावत।

केश *पुं.* (तत्.) सिर के बाल।

केशक *वि.* (तत्.) केशरचना में दक्ष।

केशकर्तनालय *पुं.* (तत्.) बाल कटवाने की दुकान।

केशकर्म *पुं.* (तत्.) बाल झाड़ने और गूँथने की कला, केश विन्यास 3. केशांत नामक संस्कार।

केशकीट *पुं.* (तत्.) जूँ।

केशघ्न *पुं.* (तत्.) गंजापन।

केशर *पुं.* (तत्.) दे. केसर

केशव *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. परमेश्वर 3. विष्णु का एक नाम 4. विष्णु के अवतार कृष्ण 5. हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि *वि.* सुंदर बालों वाला।

केश विन्यास *पुं.* (तत्.) बाल सँवारना।

केशांत *पुं.* (तत्.) सोलह संस्कारों में से एक जो उपनयन और समावर्तन के अवसर पर होता है 2. मुंडन 3. बाल का सिरा 4. रश्मि, किरण 5. ब्रह्म की शक्ति का भेद 6. वरूण 7. शिव 8. विष्णु 9. सूर्य 10. शेर या घोडे के गले पर के बाल 11. एक गंधद्रव्य।

केशाकेशी *स्त्री.* (तत्.) वह लड़ाई जिसमें बाल खींच खींच कर एक दूसरे से लड़ते है।

केशि *पुं.* (तद्.) एक राक्षस जिसे श्री कृष्ण ने मारा था।

केशिक *वि.* (तत्.) अलंकृत या घुँघराले चिकने बालों वाला।

केशिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. जटाँमासी 2.दुर्गा 3. चोरपुष्पी नाम की एक औषधि 4. वह स्त्री जिसके सिर पर बाल सुदंर और बड़े हों 5. एक अप्सरा का नाम जो कश्यप की पत्नी और पृधा की कन्या कन्या थी 6. पार्वती की एक कचहरी 7. राजा अमीढ़ की रानी का नाम 8. राजा सगर की एक रानी का नाम 9. रावण की माता कैकसी का एक नाम 10. एक प्राचीन नगर का नाम 11. दयमंती की उस दूती का नाम जो नल के पास भेस बदलकर दमयंती का संदेशा लेकर गई थी।

केशी *पुं.* (तत्.) 1. प्राचीन काल के एक गृहपति का नाम 2. एक असुर जिसे कृष्ण ने मारा था 3. घोड़ा 4. सिंह 5. एक यादव का नाम *वि.* 1. किरण या प्रकाश वाला 2. सुंदर घने बालों वाला *स्त्री.* 1. नील का पौधा 2. भूत केश नाम की औषधि 3. केवाँच, कौंच 4. एक वृक्ष जिसकी पत्तियाँ खजूरी की पत्तियों से मिलती जुलती होती है, 5. दुर्गा 6. चोटी।

केस *पुं.* (अं.) 1. किसी चीज को रखने का खाना या घर जैसे- चश्मे का केस 2. मुकदमा 3.

दुर्घटना 4. लकड़ी का एक चौकोर घेरा जिसमें टाइप रखने के छोटे छोटे खाने बने होते हैं *पुं.* (तद्) बाल।

केसर *पुं.* (तत्.) 1. बाल की तरह पतली-पतली वे सींके जो फूलों के बीच में रहते हैं, किंजल्क 2. एक प्रकार के फूल के बीच की पतली सींक या केसर जिसका पौधा बहुत छोटा होता है और पत्तियाँ घास की तरह पतली और लंबी होती हैं 3. घोड़े और सिंह आदि जानवरों की गरदन पर के बाल, अयाल 4. नागकेसर 5. मौलसिरी 6. पुन्नाग 7. एक विशिष्ट वृक्ष जिस पर हींग उत्पन्न होती है 8. एक प्रकार का विष 9. स्वर्ग 10. कसीर पर्या. काश्मीरजन्य एक प्रकार का आम।

केसरि *पुं.* (तद्.) हनुमान के पिता का नाम।

केसरिकिशोर *पुं.* (तत्.) 1. हनुमान, केसरितनय, केसरिनंदन, केसरिसुत 2. सिंह शावक।

केसरिय *पुं.* (तद्.) 1. केसर के रंग की पीली चीज़ 2. केसर के रंग में रंगा हुआ समान।

केसरिया *वि.* (तद्.) 1. केसर के रंग का पीला, जर्द 2. केसर के रंग में रंगा हुआ 3. केसर मिश्रित जैसे- केसरिया चंदन, केसरिया बर्फी।

केसरी *पुं.* (तत्.) 1. सिंह 2. घोड़ा 3. नागकेसर 4. पुन्नाग 5. बिजौरा नीबू 6. हनुमान जी के पिता का नाम 7. उड़ीसा का एक प्राचीन राजवंश 8. एक प्रकार का बगुला ।

केसारी *स्त्री.* (तद्.) मटर की जाति का एक अन्न, दुबिया मटर, कसारी, खेसारी, लतरी, मटरी।

केसु *पुं.* (तद्.) टेसू, पलास, ढाक।

केहर *पुं.* (तद्.) केहरी, सिंह।

केहरी *पुं.* (तद्.) सिंह, शेर *स्त्री.* (तद्.) एक छोटा थैला जिसमें दर्जी, मोची आदि अपनी सिलने की चीजें रखते हैं, स्त्रियाँ आवश्यक चीजें रखती हैं छोटी थैली, बटुआ।

केहुनी *स्त्री.* (तद्.) कोहनी, कुहनी।

कैंचा *पुं.* (देश.) बड़ी कैंची।

कैंची *स्त्री.* (तुर्की.) बाल, कपड़े आदि काटने या कतरने का एक औजार, कतरनी मुहा. कैंची करना-काटना छाँटना जैसे- माली पौधों को कैंची कर रहा है; कैंची काटना- कतराना; कैंची बांधना- विपक्षी को अपने नीचे लाकर दोनों रानों से दबाना -कुश्ती।

कैंटीन *स्त्री.* (अं.) जलपानगृह, ऐसे जलपानगृह छात्रावासों, सैनिक छावनियों में होते हैं, जहाँ उस विभाग के लोगों को चाय, जलपान की व्यवस्था होती है।

कैंडा *पुं.* (देश.) 1. किसी कार्य का अच्छी तरह और कुशलता से करने का ढंग या प्रकार 2. प्रकार अथवा बनावट का विशेष ढंग 3. एक प्रकार का उपकरण जिससे कोई निर्माण या रचना से पूर्व उसका रूप, विस्तार आदि निश्चित किया जाता है 4. नपने का पात्र।

कैंप *पुं.* (अं.) हाकिमों या सैनिकों के ठहरने का स्थान, पड़ाव, लश्कर, छावनी।

कैंसर *पुं.* (अं.) एक प्रकार का विषम रोग, कैंसर, कर्कट रोग, कर्कटार्बुद 2. कर्कट, केकड़ा 3. बुराई 4. कर्क राशि 5. कर्क रेखा।

कै *स्त्री.* (अर.) वमन, उलटी।

कैकय *पुं.* (तत्.) एक प्राचीन देश दे. केकय।

कैकसी *स्त्री.* (तत्.) सुमाली राक्षस की कन्या और रावण की माता।

कैकेय *पुं.* (तत्.) 1. कैकय गोत्र का पुरुष 2. केकय देश का राजा।

कैकेयी *स्त्री.* (तत्.) कैकय गोत्र में उत्पन्न स्त्री 2. राजा दशरथ की रानी जो भरत की माँ थी।

कैटभ *पुं.* (तत्.) मधु नामक दैत्य का छोटा भाई जिसे विष्णु ने मारा था।

कैटभारि *पुं.* (तत्.) विष्णु

कैटलॉग *पुं.* (अं.) सूचीपत्र, फेहरिस्त।

कैतव *पुं.* (तत्.) धोखा, छल, कपट 2. जुआ, द्यूत-क्रीडा 3. वैदूर्य मणि, लहसुनियाँ 4. धतूरा।

कैतवापह्नुति *स्त्री.* (तत्.) अपह्नुति अलंकार का एक भेद जिसमें प्रकृत अर्थात् वास्तविक विषय का गोपन या निषेध स्पष्ट शब्दों में न करके ब्याज से किया जाए जैसे- रसना जिस विधि ने धरी, साँपिन खल मुख माहिं, इसमें जिह्वा का निषेध शब्दों द्वारा नहीं बल्कि अर्थ से होता है इसे आर्थी भी कहते हैं।

कैतुन (कैतून) *स्त्री.* (तुर्की.) एक प्रकार की बारीक लैस जो कपड़ों में किनारे किनारे लगाई जाती है। यह प्रायः सुनहले तार और रेशम से बनती है, पर कभी कभी खाली ऊन या रेशम की भी बनाई जाती है।

कैथ *पुं.* (तद्.) एक कंटीला पेड़ जो बेल के पेड़ के समान होता है और जिसमें फल बेल के आकार के लगते हैं पर्या. कपित्थ, दधित्थ, ग्ाहरी, मनमथ, दधिफल, पुष्पफल, मालूर, मंगल्य, नील मल्लिका, ग्रहिफल, चिरपाकी, ग्रंथिफल, गंधफल, दंतफल, करबल्लम, करंजफलक, काठिन्यफल टि. इसका फल खट्टा-मीठा तथा कसैला होता है, चटनी तथा अचार के काम आता है।

कैथी *स्त्री.* (देश.) 1. एक पुरानी लिपि जो नागरी से मिलती-जुलती होती है 2. एक प्रकार का कैथ जिसके फल छोटे-छोटे होते हैं।

कैद *स्त्री.* (अर.) 1. बंधन, अवरोध 2. एक प्रकार का दंड जो राजनियम के अनुसार या राजाज्ञा से दिया जाता है और इसमें अभियुक्त को किसी बंद स्थान में रखते हैं, कारागारवास, कारावास 3. किसी प्रकार की शर्त या प्रतिबंध मुहा. कैद काटना या भरना- कैद में दिन बिताना, कैद में रहना।

कैदखाना *पुं.* (फा.) वह स्थान जहाँ कैदी रखे जाते हों, कारागार, बंदीगृह, जेलखाना।

कैदार *पुं.* (तत्.) 1. पशाखा नाम की लकड़ी, पशकाष्ठ 2. शालिधान 3. एक प्रकार का बढ़िया धान 4. खेतों का समूह *वि.* क्यारी में उपजा हुआ।

कैदी *पुं.* (अर.) वह जो कैद किया गया हो, वह जिसे कैद की सजा दी गई हो, बंदी, कारावास में रहने वाला सजा प्राप्त अपराधी।

कैधों *अव्य.* (देश.) या, वा, अथवा, मानो।

कैन *स्त्री.* (देश.) बाँस की टहनी 2. किसी वृक्ष की पतली टहनी।

कैना *पुं.* (देश.) एक प्रकार का पौधा, जिसकी पत्तियों का साग बनाते हैं।

कैफियत *स्त्री.* (अर.) 1. विवरण, तफसील मुहा. कैफियत तलब करना- कारण पूछना 2. आश्चर्यजनक या हर्षोत्पादक घटना 3. समाचार वर्णन।

कैफी *वि.* (अर.) 1. मतवाला, मदभरा 2. नशेबाज।

कैफीन *स्त्री.* (अं.) रसा. काफी/चाय में पाया जाने वाला एक गंधहीन और कड़वा क्षारीय पदार्थ।

कैबिनेट *स्त्री.* (अं.) 1. वह कमरा जिसमें राजा महाराजा आदि अपने विश्वासपात्र मंत्रियों के साथ प्रबंध संबंधी सलाह करते हैं 2. प्रमुख मंत्रियों की वह विशेष समिति जो किसी एकांत स्थान में बैठकर राज्यप्रबंध पर विचार करे, मंत्रिमंडल 3. लकड़ी का बना सामान जैसे मेज, आलमारी, दराज आदि 4. फोटो का एक आकार जो कार्ड साइज से दूना होता है।

कैमरा *पुं.* (अं.) छाया चित्र या फोटो खीचने का यंत्र।

कैमा *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का कदंब, करमा जिसकी लकड़ी इमारतों में लगती है।

कैमुतिक *पुं.* (तत्.) एक न्याय या उक्ति जो यह दिखाने के लिए होता है कि जब इतना बड़ा काम हो गया तो यह क्या है।

कैया *पुं.* (देश.) टीन का काम करने वालों का एक औजार जिससे बरतन राँगा लगाकर जोड़े जाते हैं, यह कलछी के आकार का लोहे का होता है जिसमें एक तरफ लकड़ी की मूठ लगी रहती है 2. मध्य भारत में घी, तेल नापने का एक मान जो लगभग आधा पाव का होता है।

कैरट *पुं.* (अं.) साढ़े तीन ग्रेन की एक तौल 2. एक प्रकार का मान जिससे सोने की शुद्धता और उसमें दिए हुए मेल का हिसाब जाना जाता है।

कैरव *पुं.* (तत्.) 1. कुमुद 2. सफेद कमल 3. शत्रु 4. जुआरी।

कैरवबंधु *पुं.* (तत्.) चंद्रमा, निशाकर।

कैरविनी *स्त्री.* (तत्.) 1. कुमुदयुक्त वापी 2. कुमुद पुष्पों का समूह।

कैरवी *पुं.* (तत्.) चंद्रमा *स्त्री.* (तत्.) 1. चाँदनी रात रात 2. मेथी।

कैरा *पुं.* (तद्.) 1. भूरा रंग 2. वह सफेदी जिसमें ललाई की आभा हो 3. रंग के भेद से एक प्रकार का बैल जिसके सफेद रोओं के अंदर चमड़े की ललाई झलकती हो, सोकना, सोकन।

कैरा *वि.* (तद्.) 1. कैरे के रंग का 2. जिसकी आँखे भूरी हों, कंजा।

कैराक *पुं.* (तत्.) स्थावर विष का एक भेद, जिसके अंतर्गत अफीम, कनेर, संखिया आदि आते हैं।

कैरात *पुं.* (तत्.) 1. किरात जाति 2. शबर चंदन 3. बलवान् मनुष्य 4. करैत साँप 5. एक प्रकार की चिड़िया 6. संगी. शुद्ध राग का एक भेद, किरात देश का राजा।

कैरी *वि.* (तद्.) 1. भूरे रंग की, जैसे-कैरी आँख 2. ललाई लिए सफेद रंग की, जैसे कैरी गाय।

कैल *पुं.* (तत्.) 1. खेल, क्रीडा 2. मनोविनोद।

कैल *स्त्री.* (देश.) किसी वृक्ष की नई निकली हुई लंबी पतली शाखा, कनखा।

कैलास *पुं.* (तत्.) 1. हिमालय की एक चोटी जो उत्तरी सीमा में स्थित है तथा सदा बर्फ से ढकी रहती है, यह प्रसिद्ध तीर्थ है, यह शिव और कुबेर का निवास स्थान माना जाता है 2. स्वर्ग 3. राजमहल।

कैलासनाथ *पुं.* (तत्.) शिव।

कैलासपति *पुं.* (तत्.) भगवान शंकर का एक नाम।

कैलासवास *पुं.* (तत्.) मृत्यु 1. मरण 2. एक प्रकार का षट्कोण देवमंदिर जिसमें आठ भूमियाँ और अनेक शिखर होते हैं 3. स्वर्ग।

कैलेंडर *पुं.* (अं.) अंग्रेजी तिथिपत्र या पंचांग जिसमें महीनों, वार और तारीखों का विवरण छपा रहता है 2. सूची, फेहरिस्त, रजिस्टर।

कैवर्त *पुं.* (तत्.) ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार कैवर्त की उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और वैश्य माता से मानी गई है, इसी से केवट शब्द की व्युत्पत्ति मानी गई है।

कैवल्य *पुं.* (तत्.) 1. शुद्धता 2. एकता 3. मुक्ति 4. एक उपनिषद् का नाम।

कैश *पुं.* (अं.) रुपया पैसा/सिक्का/नकदी *वि.* जिसका दाम नकद दिया गया हो।

कैशबुक *पुं.* (अं.) रोकड़ बही।

कैशमेमो *पुं.* (अं.) नकद खरीदे गाए माल की रसीद।

कैवल *पुं.* (तत्.) वायविडंग।

कैशिक *वि.* (तत्.) 1. केश वाला 2. बाल के समान, केश के समान सूक्ष्म *पुं.* 1. केशसमूह 2. शृंगार 3. नृत्य का एक भाव जिसमें सुकुमारता से किसी की नकल की जाती है 4. प्रेम, प्रणय।

कैशिक निषाद *पुं.* (तत्.) संगीत में एक विकृत स्वर जो तीव्रनामक श्रुति से आरंभ होता है और इसमें तीन श्रुतियाँ लगती हैं।

कैशिकी *स्त्री.* (तत्.) 1. नाटक की चार वृत्तियों में से एक जो शृंगार-रस प्रधान नाटकों में होती है 2. दुर्गा।

कैशियर *पुं.* (अं.) वह कर्मचारी जिसके पास रुपया पैसा जमा रहता है, आमदनी लेने और खर्च करने वाला कर्मचारी, खजांची।

कैशोर *पुं.* (तत्.) किशोर अवस्था, बचपन, किशोर वय *वि.* किशोर संबंधी।

कैशोर्य *पुं.* (तत्.) बृह्दारण्यक उपनिषद् में उल्लिखित एक ऋषि 2. किशोरावस्था, किशोर वय, किशोरता।

कैसर *पुं.* (अर.) 1. सम्राट, बादशाह 2. जर्मनी के सम्राट की उपाधि।

कैसा *क्रि.वि.*(तद्.) किस तरह का *वि.* (देश.)1. किस प्रकार का 2. (निषेधार्थक प्रश्न के रूप में) किस प्रकार का। किसी प्रकार का नहीं जैसे- जब हमने लिया ही नहीं तो देना कैसा।

कैसे *क्रि.वि.* (देश.) किस तरह, किस प्रकार जैसे- यह कैसे होगा कि तुम चले जाओ और वह रह जाए 2. किस लिए? क्यों जैसे- तुम उसे कैसे पुरस्कार दोगे।

कोंकण *पुं.* (तत्.) महाराष्ट्र और कर्नाटक से लगा दक्षिण भारत का समुद्र के किनारे का एक क्षेत्र 2. उक्त देश का निवासी (व्यक्ति) 3. एक प्रकार का शस्त्र।

कोंकणसुत *पुं.* (तत्.) परशुराम।

कोंकणा *स्त्री.* (तत्.) परशुराम की माता रेणुका जो कोंकणावती भी कहलाती हैं।

कोंकणी *स्त्री.* (तत्.) कोंकण देश की भाषा जो भाषाओं के मेल से बनी है।

कोंचना *स.क्रि.* (तद्.) चुभाना, गोदना, गाड़ना।

कोंचा *पुं.* (देश.) 1. बहेलियों की वह लंबी लग्घी जिसके पतले सिरे पर वे लोग लासा लगाए रहते हैं और जिससे वृक्ष पर बैठे हुए पक्षी को कोंच कर फंसा लेते है, खोंचा 2. भड़भूँजे का वह कलछा जिससे बालू निकाला जाता है 3. मोटी लिट्टी।

कोंचिड़ा *पुं.* (देश.) जंगली प्याज जो दक्षिण हिमालय में होती है और दवा के काम में आती है, कौड़ा।

कोंछ *पुं.* (देश.) स्त्रियों के अंचल का एक कोना। मुहा. कोछ भरना-सौभाग्यवती स्त्रियों के अंचल के के कोने में चावल, मिठाई, हल्दी आदि मंगलद्रव्य डालना।

कोंछना *स.क्रि.* (देश.) कोछियाना।

कोंछियाना *स.क्रि.* (देश.) स्त्रियों की साड़ी का वह भाग चुनना जो पहनने में पेट के आगे खोंसा जाता है, फुबती चुनना *2.* (स्त्रियों के) कोंछ में कोई चीज भरकर उसके दोनों छोरों को आगे की ओर कमर में खोस देना।

कोंछी *स्त्री.* (देश.) साड़ी या धोती का वह भाग जिसे चुनकर स्त्रियाँ पेट के आगे खोंसती हैं, फुबती, तिन्नी, नीबी।

कोंडरा *स्त्री.* (तद्.) लोहे का वह कड़ा जो मोट के मुँह पर लगा रहता है, गोंडरा।

कोंडरी *स्त्री.* (तद्.) हुडुक बाजे की वह लकड़ी जिस पर चमड़ा मढ़ा रहता है।

कोंथना *अ.क्रि.* (तद्.) कूथना या कराहना।

कोंवर *वि.* (तद्.) नरम, मुलायम, नाजुक।

कोंस *पुं.* (देश.) लंबी फली, छीमी।

को *पुं.* (देश.) कर्म और संप्रदान का विभक्ति प्रत्यय जैसे- मोहन को यह पुस्तक दो।

कोआ *पुं.* (देश.) 1. रेशम के कीड़े का घर, कुसियारी 2. टसर नामक रेशम का कीड़ा 3. महुए का पका फल, कोलैंदा, गोलैंदा 4. कटहल के पके हुए बीज कोश 5. धुनी हुई ऊन की पोनी, जिसे कात कर ऊन का तागा निकालते हैं 6. दे. कोया।

कोइरान *पुं.* (देश.) वह बस्ती जहाँ कोइरी रहते हैं।

कोइरी *पुं.* (देश.) साग पात बेचने वाली एक जाति, इस जाति के लोग सब्जियाँ बोते और बेचते हैं, काछी।

कोइल *स्त्री.* (देश.) 1. दही बिलोते समय मटके के उपर रखी जाने वाली गोल और छेद वाली लकड़ी 2. कोयल।

कोइली *स्त्री.* (देश.) 1. वह कच्चा आम जिसमें किसी प्रकार का आघात लगने से एक काला धब्बा पड़ा जाता है, ऐसा आम कुछ सुगंधित और स्वादिष्ट होता है 2. आम की गुठली।

कोई *सर्व.* (तद्.) 1. ऐसा एक मनुष्य या पदार्थ जो ज्ञात न हो, न जाने कौन एक जैसे- वहाँ कोई है जो साफ दिखता नहीं 2. ऐसा एक जो अनिर्दिष्ट हो, बहुतों में से चाहे जो एक, अविशेष वस्तु या

व्यक्ति जैसे- यहाँ बहुत से फल हैं, तुम भी कोई ले लो। 3 एक भी (मनुष्य) जैसे- वहाँ कोई नहीं पहुँचा मुहा. कोई एक या कोई सा- जो चाहे सो एक *वि.* 1. ऐसा एक (मनुष्य या पदार्थ) जो अज्ञात हो, न जाने कौन एक जैसे- वहाँ कोई गया है मुहा. कोई दम का मेहमान- थोड़े समय तक जीने वाला, शीघ्र मरने वाला; 2. बहुतों में से चाहे जो एक जैसे- इसमें से कोई एक चला जाए 3. एक भी, कुछ भी जैसे- कोई चिंता नहीं, *क्रि.वि.* लगभग, करीब करीब जैसे- कोई पाँच बजा होगा कि मैं जाग गया।

कोक *पुं.* (तत्.) 1. चकवा पक्षी, चक्रवाक, सुरखाब 2. एक पंडित का नाम जो रतिशास्त्र का आचार्य था 3. विष्णु 4. मेंढक।

कोक आगम *पुं.* (तत्.) कामशाला, कामकला।

कोकई *वि.* (तुर्की.) ऐसा नीला जिसमें गुलाबी की झलक हो, कौडियाला *पुं.* नील, शाहाब और मजीठ के योग से बना कौडियाला रंग।

कोककला *स्त्री.* (तत्.) रतिविद्या, संभोग संबंधी विद्या।

कोकट *वि.* (तद्.) मटमैले रंग का, गंदा।

कोकटी *स्त्री.* (तद्.) 1. मुलायम सूत की, बिना किनारे की घुटने तक ही चौड़ी धोती जिसे पहले मिथिला में शिष्ट लोग पहनते थे 2. एक प्रकार का रंग, जो लाली लिए हल्का पीला होता है।

कोकदेव *पुं.* (तत्.) 1. कोकशास्त्र या रतिशास्त्र के रचयिता 2. सूर्य 3. कपोत, कबूतर।

कोकनद *पुं.* (तत्.) लाल कमल, लाल कुमुद।

कोकना *स.क्रि.* (फा.) कच्ची सिलाई करना, कच्चा करना, लंगर डालना *अ.क्रि.* (देश.) बुलाना, चिल्लाना।

कोकनी *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का तीतर *वि.* (देश.) 1. छोटा, नन्हा 2. जैसे कोकनी केला 2. घटिया, निकृष्ट।

कोकबंधु *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य, रवि 2. संगीत का छठा भेद जिसमें नायिका, नायक, रस, रसाभास, अलंकार, उद्दीपन, आलंबन, समय और समाज आदि का ज्ञान आवश्यक होता है 3. विष्णु 4. भेड़िया 5. मेंढक 6. जंगली खजूर 7. कोयल 8. छिपकली या गिरगिट।

कोकशासन *पुं.* (तत्.) कोककृत रतिशासन।

कोकशास्त्र *पुं.* (तत्.) आचार्य कोकदेव द्वारा रचित रचित कामशास्त्र विषयक ग्रंथ।

कोकहर *पुं.* (तत्.) चकवा का आनंद हरने वाला, चंद्रमा।

कोका *पुं.* (अं.) दक्षिणी अमेरिका का एक वृक्ष जिसकी पत्तियाँ चाय या कहवे की भाँति होती हैं और इसी से कोकीन निकलता है *स्त्री.* (तु.) धाय की संतान, दूध पिलाने वाली की संतति, दूधभाई, दूधबहन *पुं.* (देश.) एक प्रकार का कबूतर *स्त्री.* (तत्.) कुमुदिनी।

कोकाबेरी *स्त्री.* (देश.) नीली कुमुदिनी जिसका आटा आटा व्रत में खाया जाता है।

कोकाबेली *स्त्री.* दे. कोकाबेरी।

कोकाह *पुं.* (तत्.) सफेद रंग का घोड़ा।

कोकिल *पुं.* (तत्.) 1. कोयल 2. नीलम की एक छाया 3. एक प्रकार का चूहा जिसके काटने से जलन होती है और ज्वर आता है 4. छप्पय का एक भेद 5. जलता हुआ अंगारा।

कोकिलकंठी *स्त्री.* (तत्.) कोयल जैसा मधुर बोलने वाली।

कोकिलबैनी *स्त्री.* (तत्.+तद्.) दे. कोकिल कंठी।

कोकिला *स्त्री.* (तत्.) 1. कोयल, पिक 2. आग का अंगारा।

कोकिलाख *पुं.* (तद्.) ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

कोकिलाप्रिय *पुं.* (तत्.) संगीत में एक ताल जिसमें एक प्लुत (प्लुत की तीन मात्राएँ), एक लघु (लघु की एक मात्रा), और फिर एक प्लुत होता है।

कोकिलावास *पुं.* (तत्.) आम का वृक्ष, रसालतरु।

कोकिलेष्टा *स्त्री.* (तत्.) बड़ा जामुन, फरेंदा।

कोकी *स्त्री.* (तत्.) चकवी, चक्रवाकी।

कोकीन *स्त्री.* (अं.) कोका नामक वृक्ष की पत्तियों से तैयार की हुई एक प्रकार की औषध, जो गंधहीन और सफेद रंग की होती है।

कोकेनची *पुं.* (तत्.) मादक द्रव्य की भाँति कोकेन का उपयोग करने वाला।

कोको *पुं.* (अं.) 1. ताड़वृक्ष के आकार का एक पेड़ जिसके बीज के चूर्ण से बनाया हुआ पेय पीने के उपयोग में लाया जाता है 2. कौआ, बच्चों को बहकाने का शब्द।

कोकोजम *पुं.* (अं.) साफ करके जमाया हुआ नारियल का तेल जिसका उपयोग घी के स्थान पर होता है।

कोकोजेम *पुं.* (अं.) दे. कोकोजम।

कोख *पुं.* (तद्.) 1. उदर पेट 2. पसलियों के नीचे, पेट के दोनों बगल का स्थान 3. गर्भाशय मुहा. कोख लगना या सटना- पेट खाली रहने या बहुत अधिक भूख लगने के कारण पेट अंदर धंस जाना; कोख उजड़ना- संतान मर जाना,. गर्भ गिर जाना; कोख बंद होना- बंध्या होना, संतति उत्पन्न करने योग्य न होना; कोख से ठंडी या भरी पूरी रहना- बालक और पति का सुख देखते रहना; कोख मारी जाना- संतान उत्पन्न करने योग्य न होना, बांझपन होना।

कोख जली *स्त्री.* (तद्.) जिसको संतान उत्पन्न न हो या जिसकी संतान जीवित न रहती हो।

कोच *पुं.* (अं.) 1. एक प्रकार की चौपहिया घोड़ागाड़ी 2. गद्देदार, बढ़िया पलंग, बेंच या आरामकुर्सी *पुं.* (देश.) वह लंबी छड़ जिसकी सहायता से भट्ठे में से ढले हुए बरतन निकाले जाते हैं।

कोचना *स.क्रि.* (तद्.) धँसाना, चुभाना, बारबार किसी को तंग करना।

कोचनी *स्त्री.* (देश.) 1. लोहे का एक छोटा औजार जो सुई के आकार का होता है और जिससे तलवार की म्यान के ऊपर का चमड़ा सिला जाता है 2. बैल हाँकने की छड़ी, पैना 3. कोंचने की कोई वस्तु।

कोचबकस *पुं.* (देश.) घोड़ा गाड़ी में हाँकने वाले के बैठने की जगह।

कोचवान *पुं.* (अं.+फ़ा) घोड़ागाड़ी हाँकने वाला।

कोचा *पुं.* (देश.) 1. तलवार या छुरी का हलका घाव जो पार न हुआ हो 2. लगती हुई बात, चुटीली बात, ताना, व्यंग्य।

कोची *पुं.* (देश.) बबूल की तरह का एक जंगली पेड़ जिसकी छाल और पत्तियाँ प्राय: औषध के काम आती हैं, वनरीठा, शिकाकाई।

कोचीन *पुं.* (देश.) भारत के दक्षिण भाग में केरल राज्य का एक महत्वपूर्ण नगर।

कोजागर *पुं.* (तत्.) आश्विन मास की पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा।

कोजागरी *वि.* (तद्.) कोजागर के पर्व वाला, कोजागर या आश्विन पूर्णिमा संबंधी, शरद पूर्णिमा पूर्णिमा की रात।

कोट *पुं.* (अं.) 1. अंग्रेजी ढंग का एक पहनावा जो कमीज के ऊपर पहना जाता है (तत्.) 2. दुर्ग, गढ़, किला 3. शहरपनाह, प्राचीर 4. राजमंदिर, महल 5. छप्पर, झोपड़ा 6. दाढ़ी 7. कुटिलता।

कोटपतलून *पुं.* (अं.) साहबी पहनावा, यूरोपीय पोशाक।

कोटर *पुं.* (तत्.) 1. पेड़ का खोखला भाग 2. कोट के आसपास का वह कृत्रिम वन जो रक्षा के लिए लगाया जाता है।

कोटर पुष्पी *स्त्री.* (तत्.) विधारा नामक वृक्ष।

कोटरी *स्त्री.* (तत्.) 1. दुर्गा, चंडिका, काली 2. बाल बाल खोले हुए नग्न स्त्री।

कोटा *पुं.* (अं.) वह निर्धारित अंश जो किसी को देने या लेने के लिए हो।

कोटि *वि.* (तत्.) सौ लाख की संख्या, करोड़ *स्त्री.* (तत्.) 1. धनुष का सिरा, कमान का कोना 2. किसी अस्त्र की नोक या धार 3. वर्ण, श्रेणी,

दरजा 4. किसी वाद विवाद का पूर्वपक्ष 5. उत्कृष्टता 6. अर्धचंद्र का सिर 7. समूह 8. किसी 90 अंश के चाप के दो भागों में से एक 9. किसी त्रिभुज या चतुर्भुज की भूमि या आधार और कर्ण से भिन्न रेखा 10. राशिचक्र का तृतीय अंश 11. असवर्ग नामक सुगंधित द्रव्य जो औषध के काम आता है 12. अंतिम सीमा।

कोटिक्रम *पुं.* (तत्.) श्रेणी का क्रम, विकास क्रम।

कोटिज्या *स्त्री.* (तत्.) ग्रहों की स्पष्टता के लिए बनाए हुए एक प्रकार के क्षेत्र का एक विशेष अंश।

कोटितीर्थ *पुं.* (तत्.) तीर्थ विशेष, इस नाम के तीर्थ अनेक हैं पर उज्जैन और चित्रकूट के तीर्थ प्रसिद्ध हैं।

कोटिशः *वि.* (तत्.) बहुत अधिक, बहुत-बहुत जैसे- आपको कोटिशः बधाई।

कोटीश *पुं.* (तत्.) करोड़पति, कोट्यधीश।

कोट्यधीश *पुं.* (तत्.) [कोटि+अधीश] करोड़पति, करोड़ी।

कोठर *पुं.* (तत्.) अंकोल का पेड़।

कोठरी *स्त्री.* (देश.) मकान का वह छोटा स्थान जो चारों ओर दीवारों से घिरा हो और ऊपर से छाया हो, छोटा कमरा मुहा. कालकोठरी- भयंकर अपराधियों को अकेले रखने के लिए जेल में तंग और अंधेरी कोठरी।

कोठा *पुं.* (तद्.) 1. बड़ी कोठरी, चौड़ा कमरा 2. वह स्थान जहाँ बहुत सी चीजें संग्रह करके रखी जाएँ, भंडार 3. मकान की छत या पाटन के ऊपर का कमरा, अटारी मुहा. कोठे पर चढ़ना- किसी ऐसे स्थान पर पहुँचना जहाँ सब लोग देख सके, अधिक प्रसिद्ध होना जैसे- ओठों निकली, कोठो चढ़ी 4. बड़ा मकान, संपन्न व्यक्ति का बड़ा मकान 5. वह स्थान जहाँ वेश्या निवास करती है; मुहा. कोठे पर बैठना- वेश्या बनना, वेश्यावृत्ति करना; पेट, आमाशय मुहा. कोठा बिगड़ना- अपच रोग होना; कोठा साफ होना- साफ दस्त के बाद पेट का हल्का हो जाना 7. गर्भाशय धरन, कोठा बिगड़ना-गर्भाशय में किसी प्रकार का रोग होना।

कोठादार *पुं.* (तद्.फा.) भंडारी, कोठारी, भंडार का अधिकारी।

कोठार *पुं.* (तद्.) अन्न, धान्यादि रखने का स्थान, भंडार जैसे- गृहस्थ कोठार की रक्षा बड़े यत्न से करते हैं।

कोठारी *पुं.* (तद्.) वह अधिकारी जो भंडार का प्रबंध करता है जैसे- कोठारी जी के आने पर तुम्हें अन्न आदि मिल सकेगा।

कोठी *स्त्री.* (तद्.) 1. उन बाँसों का समूह जो एक साथ मंडलाकार उगते है 2. बड़ा पक्का मकान, पुराने समय में अंग्रेजों के रहने का मकान, बंगला 3. वह मकान जिसमें रुपए का लेन देन या कोई बड़ा कारोबार हो मुहा. कोठी करना- महाजनी का काम शुरु करना, लेन देन का काम करना, बड़ी दूकान खोलना; कोठी चलाना- महाजनी का कारोबार करना; कोठी बैठना- दिवाला निकलना, कारोबार में घाटा आना 4. अनाज रखने का कुठला, दरबार, गंज जैसे- कोठी में अनाज डाल दो 5. कुएँ की दीवार 6. गर्भाशय, बच्चादानी 7. म्यान की साम 8. कोल्हू के बीच का वह स्थान या घेरा जिसमें पेरने के लिए गन्ने के टुकड़े डाले जाते है।

कोठेवाली *स्त्री.* (देश.) वेश्या, बाजारू स्त्री।

कोड *पुं.* (अं.) 1. वह पुस्तक जिसमें किसी प्रकार के संकेत और उनके प्रयोग के नियम लिखे जाते है, संकेतपद्धति, संकेत विधान 2. किसी विषय पर प्रयोग के नियमों का संग्रह, संहिता।

कोड़ना *स.क्रि.* (तद्.) खेत की मिट्टी को कुछ गहराई तक खोदकर उलट देना, गोड़ना।

कोड़वाना *स.क्रि.* (देश.) कोड़ना का प्रेरक रूप, दूसरों के द्वारा कोड़ने का काम कराना।

कोड़ा *पुं.* (देश.) 1. छोटा डंडा या दस्ता चमड़े या सूत को बट कर लगाया जाता है और जो मनुष्यों और जानवरों को मारने के काम में आता

है, चाबुक, साँटा, दुर्रा 2. उत्तेजक बात कहना, मर्मस्पर्शी बात 3. चेतावनी *पुं.* (देश.) एक प्रकार का बाँस, जो दक्षिण में होता है, कुश्ती का एक पेंच।

कोड़ाई *स्त्री.* (देश.) खेत गोड़ने की मजदूरी 2. खेत गोड़ने का काम।

कोड़ाना *पुं.* (देश.) दूसरे के द्वारा गोड़ने का काम कराना।

कोड़ार *पुं.* (देश.) लोहे का एक प्रकार का गोल बंद जो कोल्हू के चारों ओर इसलिए जड़ा होता है कि वह फट न जाए, कुंडर, तौक।

कोड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. बीस का समूह, बीसी 2. तालाब का पक्का निकास जिससे पानी भर जाने पर फालतू पानी निकल जाता है, पक्का *वि.* बीस।

कोढ़ *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का रक्त और त्वचा संबंधी रोग जो संक्रामक और वंशानुक्रमिक होता है मुहा. कोढ़ चूना या टकपना- कोढ़ के कारण अंगों का गल गल कर गिरना; कोढ़ की खाज या कोढ़ में खाज- दु:ख पर दु:ख।

कोढ़ा *पुं.* (देश.) 1. खेत में वह बाड़ा या स्थान जहाँ खाद के लिए गोबर आदि संग्रह हेतु पशुओं को रखते है 2. साँकल आदि लगाने या फँसाने के लिए लोहे आदि को गोला 3. धातु का वह छल्ला या कड़ा जिसमें जंजीर या और कोई वस्तु अटकाई जाती है।

कोढ़ी *पुं.* (तद्.) 1. कोढ़ रोग से पीड़ित मनुष्य 2. *स्त्री.* (तद्.) मुँहबँधी कली, अनखिली कली।

कोण *पुं.* (तत्.) 1. एक बिंदु पर मिलती या कटती हुई दो ऐसी रेखाओं के बीच का अंतर, कोना, गोशा 2. दो दिशाओं के बीच की दिशा, विदिशा 3. सारंगी की कमानी 4. तलवारों आदि की धार 5. सोटा, डंडा 6. ढोल पीटने का चोब।

कोणार्क *पुं.* (तत्.) जगन्नाथपुरी का एक प्रसिद्ध तीर्थ, जहाँ का सूर्य मंदिर प्रसिद्ध है।

कोत *स्त्री.* (तद्.) बल, शक्ति 1. दिशा, ओर, तरु 2. कोना।

कोतल *पुं.* (फा.) 1. सजा सजाया घोड़ा जिस पर कोई सवार न हो, जलूसी घोड़ा 2. राजा की सवारी का घोड़ा 3. वह घोड़ा जो जरूरत के वक्त के लिए साथ रखा जाता है।

कोतवाल *पुं.* (तद्.) पुलिस का एक प्रधान अधिकारी जो किसी जिले के प्रधान नगर में रहता है (देश.) वह कार्यकर्ता जिसका काम पंडितों की सभा या पंचायतवाली बिरादरी अथवा साधुओं के अखाड़े की बैठक, भोज आदि का निमंत्रण देना और उनका ऊपरी प्रबंध करना हो।

कोतवाली *स्त्री.* (देश.) 1. वह स्थान जहाँ पुलिस के कोतवाल का कार्यालय हो 2. कोतवाल का पद।

कोताही *स्त्री.* (फा.) त्रुटि, कमी।

कोथ *पुं.* (तत्.) 1. आँख की पलक के भीतर का एक रोग, कथुआ 2. भगंदर 3. मंथन 4. सड़न।

कोदंड *पुं.* (तत्.) 1. धनुष, कमान 2. धनराशि 3. भौंह 4. एक प्राचीन देश।

कोदंडकला *स्त्री.* (तत्.) धनुर्विद्या।

कोदरैता *पुं.* (देश.) कोदो दलने की चक्की जो प्राय: चिकनी मिट्टी की बनती है।

कोदव *पुं.* (तद्.) कोदो।

कोदो *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का अनाज जो काले रंग का होता है, कोदरा, कोदई प्रयो. कोदो सवाँ जुरतो भरि पेट नरोत्तमदास मुहा. कोदौ देकर पढ़ना या सीखना-अधूरी या बेढंगी शिक्षा पाना; कोदो दलना- निकृष्ट पर अधिक श्रम का कार्य करना; छाती पर कोदो दलना- किसी को चिढ़ाने के लिए उसकी जानकारी में कोई काम करना।

कोनसिला *पुं.* (देश.) कोनिया की छाजन में वह मोटी लकड़ी जो बँडेर के सिरे से दीवार के कोने तक तिरछी गई हो, कोरो इसी के आधार पर रखे जाते हैं।

कोना *पुं.* (तद्.) 1. एक बिंदु पर मिलती हुई दो रेखाओं के मिलने का स्थान, अंतराल, गोशा 2. नुकीला किनारा या छोर प्रयो. उसके हाथ में शीशे का कोना धँस गया 3. छोर का वह स्थान जहाँ लंबाई-चौड़ाई मिलती हो, खूँटे जैसे- दुपट्टे का कोना 4. कोठरी या घर के अंदर की वह सँकरी जगह जहाँ लंबाई चौड़ाई की दीवारें मिलती हैं, गोशा 5. एकांत और छिपा हुआ स्थान जैसे- कोने में बैठकर गाली देना वीरता नहीं है 6. चार भागों में से एक, चौथाई, चहारूम मुहा. कोना झाँकना- किसी बात के पड़ने पर भय या लज्जा से जी चुराना, किसी बात से बचने का उपाय करना।

कोप *पुं.* (तत्.) 1. क्रोध, टिस, गुस्सा 2. आयुर्वेद में शारीरिक त्रिदोष विकार।

कोपना *अ.क्रि.* (तद्.) क्रोध करना, नाराज होना।

कोपभवन *पुं.* (तत्.) वह स्थान जहाँ कोई रूठी हुई स्त्री या नायिका घर के प्राणियों से रूठ कर जा रहे उदा. कोपभवन गवनी कैकेयी -तुलसी।

कोपभाजन *पुं.* (तत्.) किसी के गुस्से का शिकार।

कोपल *स्त्री.* (देश.) वृक्ष आदि की छोटी, नई और मुलायम पत्ती, अंकुर, कल्ला, कनखा।

कोपानल *पुं.* (तत्.) 1. क्रोध की अग्नि, क्रोधाग्नि 2. क्रोध रूपी अग्नि।

कोफ्त *पुं.* (फा.) 1. रंज, दुःख, खेद 2. परेशानी 3. लोहे आदि पर सोने चाँदी की पच्चीकारी।

कोफ्ता *पुं.* (फा.) कूटे हुए मांस अथवा आलू आदि का बना एक प्रकार का कबाब जो जामुन के आकार का होता है और जिसके अंदर अदरक, पुदीना खसखस, भुने चने का आटा आदि भरा रहता है।

कोबरा *पुं.* (तद्.) 1. निवास, कोठरी, कोठर 2. दे. कोपर (अं.) नाग की एक प्रजाति जो अत्यधिक विषैली होती है।

कोमल *वि.* (तत्.) 1. मृदु, मुलायम, नरम 2. सुकुमार, नाजुक 3. अपरिपक्व 4. सुंदर, मनोहर।

कोमलता *स्त्री.* (तत्.) 1. मृदुलता, नरमी 2. मधुरता, मधुरता, लालित्य।

कोमलांग *वि.* (तत्.) 1. कोमल अंगों वाला, जिसका शरीर मृदुल हो।

कोमलांगी *वि.* (तत्.) सुकुमार अंगों वाली।

कोमला *स्त्री.* (तत्.) 1. शांत, करुण और अद्भुत रस-प्रधान नाटकों की रचना में प्रयुक्त एक वृत्ति (शैली) जिसमें कोमल वर्णों (वर्गों के तृतीय वर्ण य, व, स), छोटे समासों और अनुप्रास अलंकार का प्रयोग होता है।

कोयल *स्त्री.* (तद्.) काले रंग की एक प्रकार की चिड़िया, कोकिला, कोइली।

कोयला *पुं.* (देश.) 1. वह जला हुआ अंश या पदार्थ जो जली हुई लकड़ी के अंगारों को बुझाने से बचा रहता है 2. एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो जलाने के काम में आता है मुहा. कोयलों पर मोहर होना- केवल छोटे और तुच्छ खर्चों की अधिक जाँच पड़ताल करना, तुच्छ पदार्थ की अनावश्यक रक्षा करना।

कोया *पुं.* (देश.) 1. आँख का ढेला 2. आँख का कोना 3. कटहल के अंदर की वह गुठली जो चारों ओर गूदे से ढँकी रहती है, कटहल का बीजकोश 4. रेशम के कीड़े की खोल या आवरण।

कोर *स्त्री.* (तद्.) 1. किनारा, तट 2. सिरा, हाशिया 3. गोशा, कोना 4. अंतराल 5. द्वेष, बैर, वैमनस्य 6. ऐब 7. कमी, कसर 8. हथियार की धार 9. बाढ़ 10. पंक्ति, कतार मुहा. कोर निकालना- किनारा बनाना; कोर मारना या छाँटना- बढ़े हुए धारदार किनारे को कम करना या बराबर करना; कोर दबाना- किसी प्रकार के दबाव के वश में होना *पुं.* (अं.) पलटन, सैन्यदल जैसे- कैडेट कोर।

कोरक *पुं.* (तत्.) 1. कली मुकुल 2. फूल या कली का वह बाहरी भाग जो प्रायः हरा होता है, फूल की कटोरी 3. कमल की नाल या डंडी, मृणाल 4. चोटक नाम का गंधद्रव्य 5. शीतल चीनी।

कोर-कसर *स्त्री.* (देश.) 1. दोष या त्रुटि 2. ऐब, कमी 4. अधिकता या न्यूनता, कमी बेसी प्रयो. अगर इस काम में कुछ कोर कसर हो तो उसे ठीक कर दीजिए।

कोरना *स.क्रि.* (देश.) 1. लकड़ी आदि से कोर निकालना 2. छील छालकर ठीक करना 3. किनारा बनाना, छाँटना 4. खरोचना।

कोरनी *स्त्री.* (देश.) पत्थर पर खुदाई का काम, संगतराशी, किसी वस्तु में कोर/किनारा निकालने का उपकरण।

कोरम *पुं.* (अं.) किसी सभा या समिति के उतने सदस्य जितने की उपस्थिति कार्य निर्वाह के लिए जरूरी होती है, कार्यनिर्वाहक सदस्य संख्या, गणपूर्ति जैसे- लोकसभा में कल कोरम पूरा न होने के कारण सभा की कार्रवाई रोक दी गई।

कोरमकोर *वि.* (देश.) 1. पूर्णतः, पूरे तौर से 2. एक मात्र, सिर्फ जैसे- हमारा जीवन कोरमकोर धर्म पर आधारित है।

कोरमा *पुं.* (तुर्की.) अधिक घी से भुना हुआ माँस जिसमें जल का अंश बिलकुल न हो।

कोरस *पुं.* (अं.) पाँच छह व्यक्तियों का एक साथ गान, समूह गान, समवेत गान।

कोरहा *वि.* (देश.) 1. नोकदार, कोरदार 2. मन में किसी बात की कोर-कसर बनाए रखने वाला, बुराई का बदला लेने वाला।

कोरही सबरी *पुं.* (देश.) कसेरों की वह पतली और छोटी सबरी जो महीन काम करने के लिए होती है।

कोरा *वि.* (देश.) 1. जो बरता न गया हो, नया, अछूता 2. जो धोया न गया हो, जिससे जल का स्पर्श न हो जैसे- कोरा घड़ा, कोरा कपड़ा 3. जो रंगा न गया हो, जिस पर कुछ लिखा या चित्रित न किया गया हो, जिस पर कोई दाग या चिह्न न लगा हो, सादा जैसे- कोरा कागज 4. खाली, रहित, विहीन जैसे- उन पर किसी ने रंग नहीं डाला, वे कोरे लौट आए 5. जिन पर कोई आघात या बुरा प्रभाव न पड़ने पाया हो, निरापद, निष्कलंक, बेदाग 6. विद्याहीन, मूर्ख 7. धनहीन 8. केवल, खाली मुहा. कोरा छुरा या उस्तरा-वह उस्तरा जिस पर ताजा सान रखा गया हो; कोरे छुरे या उस्तरे से मूँड़ना- ताजी धार के छुरे से सिर मूँड़ना, जिससे कष्ट हो।

कोरापन *पुं.* (देश.) नवीनता, अछूतापन।

कोरी *पुं.* (देश.) 1. हिंदुओं की एक जाति जो सादे और मोटे कपड़े बुनती है, हिंदु जुलाहा *वि.* (स्त्री.) 2. जो काम में न लाई गई हो, अछूती नवीन 2. जो रंगा न हो, जिस पर कुछ लिखा न हो, सादी।

कोर्ट *पुं.* (अं.) अदालत, कचहरी।

कोर्टपीस *पुं.* (अं.) एक प्रकार का ताश का खेल जो चार आदमियों में होता है।

कोर्टफीस *स्त्री.* (अं.) अदालती शुल्क।

कोर्टमार्शल *पुं.* (अं.) फौजी अदालत जिसमें सेना के नियमों को भंग करने वाले, सेना छोडक़र भागने अथवा बागी सिपाहियों के मामलों पर विचार होता है।

कोर्टशिप *स्त्री.* (अं.) एक पाश्चात्य प्रथा जिसके अनुसार पुरुष किसी स्त्री को अपने साथ विवाह करने के लिए राजी करता है, कन्यासंवरण, भारतीय परंपरा में एक प्रकार का गांधर्व विवाह।

कोर्मा *पुं.* (तुर्की) घी में भुना हुआ मांस।

कोर्स *पुं.* (अं.) उन विषयों का क्रम जो किसी विश्वविद्यालय, स्कूल, कालेजों में पढ़ाए जाते हैं, पाठ्यक्रम जैसे- इस बार बी.ए. के कोर्स से साहित्यशाला हटा दिया गया है।

कोल *पुं.* (तत्.) 1. सूअर, शूकर 2. गोद, उत्संग 3. आलिंगन करने में दोनों भुजाओं के बीच का स्थान 4. चीता नाम की ओषधि, चिचक 5. शनैश्चर ग्रह 6. बेर, बदरीफल 7. एक तौल जो तोले भर की होती है 8. काली मिर्च 9. शीतल चीनी 10. पुरुवंशी आक्रीड़ नामक राजा का पुत्र 11. एक प्रदेश या राज्य का प्राचीन नाम 12. एक जंगली, जाति।

कोलक *पुं.* (तत्.) अखरोट का पेड़ 2. काली मिर्च, शीतल चीनी।

कोलना *स.क्रि.* (देश.) लकड़ी, पत्थर आदि के बीच से खोदकर उसे पोला या खाली करना 2. विह्वल होना, घबराना।

कोलाहल *पुं.* (तत्.) बहुत से लोगों की अस्पष्ट चिल्लाहट, शोर, हल्ला, रौला 2. संगी. एक राग जो कल्याण, कान्हड़ा और विंहाग के मेल से बनता है।

कोलिक *स्त्री.* (देश.) जुलाहा, तंतुवाय।

कोलिया *स्त्री.* (देश.) 1. तंग रास्ता, पतली गली 2. छोटा खेत जिसका आकार लंबा और पतला हो।

कोलियाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. तंग गली में चले जाना, तंग गली से चले जाना 2. कोने में छिप कर खड़े होना।

कोलियारी *स्त्री.* (अं.) पत्थर के कोयले की खान।

कोली *स्त्री.* (तद्.) 1. गोद, अंकवार 2. कोना, कोण 3. संकरी गली *पुं.* कोरी, जुलाहा।

कोल्हाड़ *पुं.* (देश.) वह स्थान जहाँ ऊख पेरकर रस निकाला जाता है और गुड़ बनाया जाता है।

कोल्हू *पुं.* (देश.) तेल या ईख पेरने का यंत्र जो कुछ कुछ डमरु के आकर का होता है मुहा. कोल्हू काट कर मोंगरी बनाना- कोई छोटी चीज बनाने के लिए बड़ी चीज नष्ट करना; कोल्हू का बैल- बहुत कठिन परिश्रम करने वाला, एक ही जगह बार बार चक्कर लगाने वाला; कोल्हू में डालकर पेरना- बहुत अधिक कष्ट पहुँचाकर प्राण लेना।

कोविद *वि.* (तत्.) पंडित, विद्वान 2. प्रवीण।

कोविदार *पुं.* (तत्.) 1. कचनार का पेड़ 2. कचनार का फूल।

कोश *पुं.* (तत्.) 1. वह ग्रंथ जिसमें अर्थ या पर्याय के सहित शब्द इकट्ठे किए गए हों 2. संचित धन 3. समूह 4. अंड, अंडा 5. संपुट, डिब्बा 6. फूलों की बंधी कली 7. मद्यपात्र 8. पंचपात्र 9. तलवार, कटार आदि का म्यान 10. आवरण, खोल 11. वेदांत के अनुसार जीवात्मा के पाँच कोश-अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय 12. थैली।

कोशकार *पुं.* (तत्.) 1. शब्दकोशों के लिए शब्दों का संग्रह करने वाला 2. तलवार, कटार आदि के लिए म्यान बनाने वाला 3. रेशम का कीड़ा 4. एक प्रकार की ईख।

कोशज *पुं.* (तत्.) 1. रेशम 2. सीप, शंख, घोघे आदि में रहने वाले जीव 3. मोती, मुक्ता।

कोशपति *पुं.* (तत्.) कोशाध्यक्ष, खजांची।

कोशल *पुं.* (तत्.) 1. सरयू या घाघरा नदी के दोनों तटों के आस--पास का क्षेत्र देश 2. उपर्युक्त देश में बसने वाली क्षत्रिय जाति 3. अयोध्या नगर 4. संगी. एक राग जिसमें गांधार और धैवत को कोमल और शेष सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

कोशलिक *पुं.* (तत्.) उत्कोच, घूस।

कोशवासी *पुं.* (तत्.) सीप, शंख घोंघा आदि में रहने वाले जीव।

कोशवृद्धि *स्त्री.* (तत्.) 1. खजाने का बढ़ना 2. अंडवृद्धि का रोग।

कोशिका *स्त्री.* (तत्.) 1. सतावरी 2. धमनी आदि से निकलने वाली सूक्ष्म नलिकाएँ।

कोशिश *पुं.* (फा.) प्रयत्न, चेष्टा, उद्योग।

कोशी *स्त्री.* (तत्.) 1. कली 2. बीजकोश 3. पादुका 4. अन्न की बालों का टूँड़

कोषाध्यक्ष *पुं.* (तत्.) 1. कोश का अध्यक्ष या स्वामी, वह जिसके पास कोश रहता है 2. खजांची, रोकड़िया।

कोष्ठ *पुं.* (तत्.) 1. उदर का मध्य भाग, पेट का भीतरी हिस्सा 2. शरीर के अंदर का कोई भाग जो किसी आवरण से घिरा हो और जिसके अंदर कोई शक्ति रहती हो जैसे- पक्वाशय, मूत्राशय, गर्भाशय आदि 3. कोठा, घर का भीतरी भाग 4. वह स्थान जहाँ अन्न संग्रह किया जाए, गोला 5. कोश, भंडार 6. प्राकार, कोट, शहर पनाह 7. वह स्थान जो किसी प्रकार चारों ओर से घिरा हो 8.

शरीर के भीतरी छह चक्रों में से एक जो नाभि के पास है जिसे मणिपूर भी कहते हैं।

कोष्ठक *पुं.* (तत्.) 1. लिखने में एक प्रकार के चिह् नों का जोड़ा जिसके अंदर कुछ वाक्य या अंक आदि लिखे जाते है, यह कई प्रकार का होता है जैसे- ( ), { }, [ ] आदि 2. किसी प्रकार की दीवार, लकीर या और कोई चीज जो किसी स्थान को घेरने के काम आती है 3. किसी प्रकार का चक्र जिसमें बहुत से खाने या घर हों, सारणी 4. कोष्ठ, अन्न भंडार 5. चहारदीवारी 6. पक्का हौज।

कोष्ठबद्ध *पुं.* (तत्.) पेट में मल का रुकना, कब्जीयत।

कोष्ठागार *पुं.* (तत्.) भंडार, कोषागार।

कोष्ठागारिक *पुं.* (तत्.) 1. भंडारी 2. कोशवासी प्राणी।

कोष्ठाग्नि *स्त्री.* (तत्.) पाचन शक्ति, आग्नेय रस। रस।

कोष्ण *वि.* (तत्.) कुछ गरम और कुछ ठंडा, कदुष्ण, कुनकुना।

कोस *पुं.* (तद्.) दूरी का एक नाम जो लगभग दो मील मानी जाती है मुहा. कोसों या काले कोसों- बहुत दूर; कोसों दूर रहना- अलग रहना, बहुत बचना; कोसों भागना- अलग रहना।

कोसना *स.क्रि.* (तद्.) दुर्वचन कह कर बुरा मनाना, शाप के रूप में गालियाँ देना मुहा. पानी पी-पी कर कोसना- बहुत अधिक कोसना; कोसना काटना- शाप और गाली देना।

कोसल *पुं.* (तद्.) एक प्राचीन जनपद, अवध।

कोसली *स्त्री.* (तत्.) संगी. षाड़व जाति की एक रागिनी जिसमें ऋषभ वर्जित है *वि.* कोसल प्रदेश से संबंधित।

कोसा *पुं.* (तद्.) 1. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा 2. मिट्टी का कसोरा।

कोसाकाटी *स्त्री.* (देश.) संयुक्त शाप के रूप में गाली 2. बद्दुआ 3. कोसने की क्रिया या भाव।

कोसिया *स्त्री.* (देश.) 1. मिट्टी का छोटा कसोरा 2. चूना रखने की कुंडी।

कोसी *स्त्री.* (तत्.) बिहार प्रदेश की एक नदी जो नेपाल के पहाड़ों से निकल कर चंपारन के पास गंगा में मिलती है।

कोह *पुं.* (तद्.) क्रोध, गुस्सा, रिस *पुं.* (फा.) पर्वत, पहाड़।

कोह आतिश *पुं.* (फा.) ज्वालामुखी पहाड़।

कोहकाफ *पुं.* (फा.) एक पहाड़ जो यूरोप और एशिया के बीच में है, 'काकेशस' पर्वत।

कोहडोरी *स्त्री.* (देश.) कुम्हड़े या पेठे की बनाई हुई बड़ी।

कोहड़ौरी *स्त्री.* (देश.) कुम्हड़े या पेठे की बनाई हुई बटी।

कोहनूर *पुं.* (फा.+अर.) एक बहुत बड़ा और प्रसिद्ध हीरा, माना जाता है कि यह हीरा महाभारत के राजा कर्ण, मालवा के राजा विक्रमादित्य, गोलकुंडा के बादशाह नादिरशाह, राजा रणजीत सिंह से होता हुआ अब अंग्रेजों के कब्जे में है।

कोहरा *पुं.* (देश.) कुहासा, कुहिर, कुहरा।

कोहरान *पुं.* (देश.) वह बस्ती जहाँ कोंहार रहते हैं।

कोहल *पुं.* (तत्.) 1. जौ की शराब 2. कुम्हड़े की शराब 3. एक प्रकार का बाजा 4. एक मुनि जिन्होंने सोमेश्वर से संगीत सीखा था और नाट्यशास्त्र के प्रणेता कहे जाते हैं *वि.* (तत्.) अस्पष्ट बोलने वाला।

कोहान *पुं.* (फा.) ऊँट की पीठ का कूबड़।

कोहिल *पुं.* (देश.) नर शाही बाज।

कोहिस्तान *पुं.* (फा.) पर्वतस्थली, पहाड़ी देश।

कोही *वि.* (तद्.) क्रोध करने वाला, गुस्सैल प्रयो. बाल ब्रह्मचारी अति कोही विश्वविदित क्षत्री कुल द्रोही -तुलसी।

कौंच *पुं.* (तद्.) हिमालय का एक पर्वत, कौंच पर्वत।

कौंची *स्त्री.* (देश.) बांस की पतली टहनी।

कौंतेय *पुं.* (तत्.) 1. कुंती के पुत्र युधिष्ठिर, अर्जुन आदि।

कौंध *स्त्री.* (देश.) बिजली की चमक।

कौंधना *अं.क्रि.* (तद्.) बिजली का चमकना।

कौंधा *स्त्री.* (देश.) 1. बिजली की चमक, कौंध 2. बिजली।

कौंसलर *पुं.* (अं.) परामर्शदाता, सलाहकार।

कौंसिल *स्त्री.* (अं.) 1. किसी विषय पर विचार करने के लिए विद्वानों की सभा, कोई विशिष्ट कार्य करने के लिए गठित संस्था, विधान सभा, जैसे- मैट्रोपोलिटन कौंसिल, नेशनल एडवाइजरी कौंसिल।

कौटिलीय *वि.* (तत्.) कौटिल्य का।

कौटिल्य *पुं.* (तत्.) 1. टेढ़ापन, कुटिलता, कपट 2. चाणक्य का एक नाम।

कौटुंबिक *वि.* (तत्.) कुटुंब का, कुटुंब संबंधी 2. परिवारवाला।

कौड़ा *पुं.* (तद्.) बड़ी कौड़ी, बूई नाम का पौधा जिसे जलाकर सज्जी खार निकालते हैं *वि* (तद्.) कड़ुआ।

कौड़िया *वि.* (देश.) कौड़ी की तरह का, कौड़ी के रंग का, कुछ स्याही लिए हुए सफेद रंग का।

कौड़ियाला *वि.* (देश.) कौड़ी के रंग का हलका नीला (रंग) जिसमें कुछ गुलाबी सी झलक हो, कोकई *पुं.* (तद्.) कोकई रंग का 2. एक प्रकार का विषैला साँप जिस पर कौड़ी के रंग और आकार की चित्तियाँ पड़ी रहती हैं 3. कंजूस अमीर, एक पौधा जो ऊसर भूमि में पैदा होता है, शंखपुष्पी पर्या. मेध्या, चंडा, सुपुष्पी, किरीटी, कंडुमालिनी, भुलग्न, यममालिनी, मलविनाशिनी, सर्पाक्षी।

कौड़ियाही *वि.* (देश.) बहुत थोड़े धन के लालच से कोई भी शुभ-अशुभ कार्य करने वाली।

कौड़ी *स्त्री.* (तद्.) 1. समुद्र का एक कीड़ा जो घोंघे की तरह एक अस्थिकोश के अंदर रहता है 2. प्राचीन काल की एक मुद्रा मुहा. कौड़ी का- जिसका कुछ मूल्य न हो, तुच्छ; कौड़ी काम का नहीं- किसी काम का नहीं, निकम्मा; कौड़ी या दो कौड़ी का- जिसका कुछ मूल्य नही, निकृष्ट, खराब; कौड़ी के तीन तीन बिकना- बहुत सस्ता होना; कौड़ी के तीन-तीन होना-बहुत सस्ता होना, बेकदर होना; कौड़ी मोल या कौड़ी के मोल बिकना-बहुत सस्ता बिकना; कौड़ी को न पूछना- मुफ्त भी न लेना, नितांत तुच्छ समझना; कौड़ी कोस दौड़ना- एक कौड़ी के पीछे कोसों का धावा मारना, थोड़े लाभ के लिए बहुत परिश्रम करना; कौड़ी कौड़ी- एक एक कौड़ी; कौड़ी कौड़ी को मुहताज- रुपये पैसे से बिलकुल खाली; कौड़ी कौड़ी अदा करना- चुकाना या भरना, सब ऋण चुका देना; कौड़ी कौड़ी भर पाना- सारा लहना वसूल कर लेना; कौड़ी-कौड़ी जोड़ना- थोड़ा थोड़ा करके धन इकट्ठा करना; कौड़ी फिरना- जुए में अपना दाँव पड़ने लगना; कौड़ी के बदले हीरा देना- खराब वस्तु लेकर अच्छी वस्तु देना; कौड़ियों पर दाँत देना- लोभी होना; कौड़ी फेरे करना-बहुत फेरे लगाना; कौड़ी भर- बहुत थोड़ा सा; कानी या फूटी कौड़ी- बहुत कम धन; गाँठ में कानी फूटी कौड़ी नहीं. चले हैं व्यापार करने।

कौतुक *पुं.* (तत्.) 1. कुतूहल 2. आश्चर्य 3. विनोद 4. आनंद, प्रशंसा 5. खेल तमाशा 6. वह मांगलिक सूत्र (कंगन) जो विवाह से पहले पहना जाता है 7. पर्व उत्सव 8. उत्सुकता 9. आश्चर्यजनक वस्तु।

कौतुकी *वि.* (तत्.) 1. खेल-तमाशा करने वाला 2. विनोदी 3. विवाह-संबंध कराने वाला।

कौतूहल *पुं.* (तत्.) 1. जिज्ञासा 2. उत्सव।

कौपीन *पुं.* (तत्.) 1. गुह्य भाग को ढकने वाला वस्त्र 2. लंगोटी, वस्त्रखंड 3. चीथड़ा 4. पाप, कुकर्म।

कौम *स्त्री.* (अर.) 1. वर्ण, जाति 2.सल्तनत, राष्ट्र

कौमपरस्त *वि.* (अर.) राष्ट्रवादी (जातिवादी)।

कौमार *पुं.* (तत्.) 1. कुमार अवस्था, जन्म से 16 वर्ष तक की आयु 2. कुमार 3. एक पर्वत का नाम 4. कुमारी का पुत्र।

कौमारभृत्य *पुं.* (तत्.) बालकों के लालन पालन चिकित्सा आदि की विद्या, धात्रीविद्या दाईगिरी।

कौमारव्रत *पुं.* (तत्.) जीवन भर अविवाहित रहने का संकल्प।

कौमारी *स्त्री.* (तत्.) 1. कार्तिकेय की शक्ति 2. ऐसे पुरुष की स्त्री जिसने दूसरा विवाह न किया हो 3. एक रागिनी।

कौमार्य *पुं.* (तत्.) कुमार अवस्था, कुँवारापन।

कौमियत *स्त्री.* (अर.) कौम का भाव, जातीयता, राष्ट्रीयता, जाति की विचारधारा।

कौमी *वि.* (अर.) किसी कौम या जाति संबंधी, जातीय जैसे- कौमी नारा।

कौमीयत *स्त्री.* (अर.) कौमियत, जाति का भाव, राष्ट्रीयता।

कौमुदी *पुं.* (तत्.) 1. ज्योत्स्ना, चाँदनी 2. कार्तिकोत्सव, जो कार्तिक पूर्णिमा को होता है 3. कार्तिक पूर्णिमा 4. आश्विनपूर्णिमा 5. कुमुदनी, कोई 6. दक्षिण भारत की एक नदी 7. उत्सव।

कौमुदीपति *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

कौमुदीमहोत्सव *पुं.* (तत्.) शरत् पूर्णिमा के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला उत्सव।

कौर *पुं.* (तद्.) 1. उतना भोजन जो एक बार मुँह में डाला जाए, ग्रास, गस्सा, निवाला मुहा. मुँह का कौर छिन जाना- जीविका का संकट होना; मुँह का कौर छीनना- देखते देखते किसी का हिस्सा हड़प लेना; कौर खाना- खा जाना।

कौरव *पुं.* (तत्.) कुरु राज की संतान, कुरु के वंशज।

कौरवपति *पुं.* (तत्.) दुर्योधन, महाभारत में धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र।

कौरव्य *पुं.* (तत्.) 1. कौरव, कुरु संतान 2. एक नगर जिसका वर्णन महाभारत में आया है।

कौल *पुं.* (अर.) 1. प्रतिज्ञा, प्रण, वादा 2. कथन, उक्ति, वाक्य मुहा. कौल का पूरा या पक्का- बात का सच्चा, जबान का धनी; कौल तोड़ना- किसी को दी हुई जबान से मुकरना; कौल देना- वचन देना; कौल से फिरना- वादा खिलाफी करना *पुं.* (तत्.) 1. कुल विषयक 2. कुलीन 3. पैतृक।

कौल करार *पुं.* (अर.) परस्पर दृढ़ प्रतिज्ञा।

कौलाचार *पुं.* (तत्.) कौल संप्रदाय का आचार, वाममार्ग।

कौवा *पुं.* (तद्.) 1. काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी, काक, काग 2. बहुत धूर्त मनुष्य, काइयाँ 3. वह लकड़ी जो बड़ेरी से सहारे के लिए लगाई जाती है, कौहा 4. गले के अंदर तालू के झालर के बीच चटकता हुआ मांस का टुकड़ा। घाटी, लंगर, ललरी।

कौवा गुहार *पुं.* (तद्.+देश.) बहुत अधिक बकबक, बहुत जोर से और व्यर्थ बोलना, कागारोल मुहा. कौवा गुहार में पड़ना या फँसना- शोर में फँसना; कौवे उड़ाना- व्यर्थ का अनावश्यक कार्य करना।

कौवारोर *पुं.* (तद्.) कौवा की काँव-काँव, बहुत शोर, कौवा गुहार।

कौवाल *पुं.* (अर.) कव्वाल, मुसलमानों में गवैयों का एक वर्ग जो कव्वाली गाते है।

कौवाली *स्त्री.* (अर.) एक प्रकार का गाना जो पीरों की मजार या सूफियों की मजलिसों में गाया जाता है, कव्वाली; इस धुन में गाई जानेवाली गजलें 3. संगीत में तिताला बजाने का एक भेद।

कौविंदी *स्त्री.* (तत्.) जुलाहे की स्त्री।

कौश *वि.* (तत्.) 1. रेशमी 2. कुश-निर्मित। *पुं.* (तत्.) 1. कुशद्वीप 2. कान्यकुब्ज देश।

कौशल *पुं.* (तत्.) 1. कुशलता, चतुराई 2. मंगल 3. कौशल देश का निवासी।

कौशलिक *पुं.* (तत्.) उत्कोच, रिश्वत, घूस।

कौशलिका *स्त्री.* (तत्.) 1. उपहार 2. कुशल मंगल। मंगल।

कौशल्या *स्त्री.* (तत्.) 1. कोशल के राजा दशरथ की प्रधान पत्नी और रामचंद्र की माता 2. पुरुराज की

की स्त्री और जनमेजय की माता 3. धृतराष्ट्र की माता 4. पंचमुखी आरती, पाँच बत्ती की आरती।

कौशांब *पुं.* (तत्.) राम के पौत्र और कुश का पुत्र जिसने कोशांबी नगर बसाया था, वत्सपट्टन 2. बौद्धों का तीर्थ स्थान।

कौशांबी *स्त्री.* (तत्.) वत्सदेश की प्राचीन राजधानी जिसे कुश के पुत्र कौशंब ने बसाया था, कोसम।

कौशिक *पुं.* (तत्.) 1. इंद्र 2. कुशिक राजा के पुत्र गाधि, जो इंद्र के अंश से उत्पन्न हुए थे 3. कुशिक राजा के वंशज विश्वामित्र 4. जरासंध का एक सेनापति 5. कोशाध्यक्ष 6. कोशकार 7. उल्लू 8. नेवला 9. एक प्रकार का शालवृक्ष, अश्वकर्ण 10. रेशमी कपड़ा 11. शृंगार रस 12. मज्जा 13. एक उपपुराण 14. एक राग जिसकी कुकुभा, खंभावती, गुणकिरी, गौरी और टोड़ी आदि रागिनियाँ पत्नी है 15. अथर्ववेद का एक सूक्त 16. गुगुल 17. सपेरा 18. शिव का एक नाम।

कौशिकक्रिय *पुं.* (तत्.) रामचंद्र।

कौशिकफल *पुं.* (तत्.) 1. नारियल का वृक्ष 2. नारियल का फल।

कौशिका *स्त्री.* (तत्.) 1. जल आदि पीने का बरतन, कटोरा 2. गुग्गुल।

कौशिकायुद्ध *पुं.* (तत्.) 1. वज्र 2. इंद्रधनुष।

कौशिकी-कान्हड़ा *पुं.* (देश.) कौशिकी और कान्हड़ा के योग से बना कोल स्वर का एक संकर राग।

कौशेय *पुं.* (तत्.) रेशमी, रेशम का *पुं.* (तत्.) रेशमी वस्त्र, रेशम।

कौषीतकी *स्त्री.* (तत्.) 1. अगस्त्य मुनि की पत्नी का नाम 2. ऋग्वेद की एक शाखा 3. ऋग्वेद के अंतर्गत एक ब्राह्मण या उपनिषद्।

कौसर *पुं.* (अर.) स्वर्ग का एक कुंड या हौज।

कौस्तुभ *पुं.* (तत्.) 1. पुराणानुसार एक मणि जो समुद्र के मथने से निकली थी, जिसे विष्णु अपने वक्षस्थल पर धारण करते हैं 2. तंत्र के अनुसार एक प्रकार की मुद्रा 3. घोड़े की गर्दन के बाल 4. एक प्रकार का तेल।

क्या *सर्व.* (तद्.) एक प्रश्नवाचक शब्द जो उपस्थित उपस्थित या अभिप्रेत वस्तु विषयक जिज्ञासा को अभिव्यक्त करता है, उस वस्तु को सूचित करने का शब्द, जिसे पूछना रहता है जैसे- तुम्हारा नाम क्या है, तुम क्या करने आए थे?

क्यों *क्रि.वि.* (तद्.) 1. किसी घटना या काम के विषय में कारण जानने के लिए जैसे- वह वहाँ क्यों जा रहा है मुहा. क्योंकर, किस प्रकार, कैसे? जैसे- मैं वहाँ क्योंकर जाऊँ, क्यों नहीं-हाँ, जैसे- प्रश्न-तुम किताब पढ़ोगे, उत्तर क्यों नहीं।

क्योंकि *क्रि.वि.* (देश.) कारण यह है कि।

क्रंदन *पुं.* (तत्.) रोना।

क्रंदित *वि.* (तद्.) रुदित।

क्रकच *पुं.* (तत्.) 1. ज्योतिष में एक योग जब वार और तिथि का योग 13 होता है 2. करील का पेड़ 3. आरा, करवत 4. एक प्रकार का बाजा।

क्रकचच्छद *पुं.* (तत्.) केतक वृक्ष।

क्रकचपत्र *पुं.* (तत्.) सागौन वृक्ष।

क्रकचपाद *पुं.* (तत्.) गिरगिट।

क्रकचपृष्ठी *स्त्री.* (तत्.) कवई नाम की मछली।

क्रतु *पुं.* (तत्.) 1. निश्चय 2. इच्छा 3. विवेक 4. इंद्रिय 5. जीव 6. विष्णु 7. यज्ञ 8. आषाढ़ 9. ब्रह् मा के मानसपुत्र सप्त ऋषियों में से एक जिसकी उत्पत्ति ब्रह्मा के हाथ से हुई थी और विवाह कर्दम प्रजापति की कन्या क्रिया से हुआ था 10. विश्वदेवा में से एक 11. कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

क्रतुध्वंसी *पुं.* (तत्.) शिव, दक्ष प्रजापति के यज्ञ का ध्वंस करने वाला।

क्रतुपति *पुं.* (तत्.) 1. यज्ञ करने वाला व्यक्ति 2. विष्णु।

क्रतुपशु *पुं.* (तत्.) यज्ञ का घोड़ा, अश्व।

क्रतुपुरुष *पुं.* (तत्.) विष्णु।

क्रतुफल *पुं.* (तत्.) यज्ञ का उद्देश्य 2. यज्ञ का फल 3. स्वर्ग।

क्रतुभुक *पुं.* (तत्.) 1. वह पदार्थ जो यज्ञ में देवताओं को अर्पित किया जाता है 2. देवता, सुर।

क्रतुभुज *पुं.* (तत्.) दे. क्रतुभुक।

क्रतुराज *पुं.* (तत्.) 1. ऐसा यज्ञ जो सब यज्ञों में श्रेष्ठ माना जाए 2. राजसूय यज्ञ 3. अश्वमेध यज्ञ।

क्रम *पुं.* ((तत्.) 1. वस्तुओं, घटनाओं, कार्यों व्यक्तियों आदि का आगे पीछे होने का नियम 2. पूर्वापर व्यवस्था, तरतीब, प्रणाली 3. किसी कार्य को सिलसिलेवार करने का नियम 4. पैर रखने की क्रिया, डग भरने की क्रिया 5. किस कार्य के बाद कौन सा कार्य करें इसका विधान 6. आक्रमण 7. काव्यालंकार का वह भेद जिसमें पहले कही गई वस्तुओं का वर्णन क्रम से किया जाय, इसे यथासंख्य अलंकार भी कहते हैं जैसे- अमिय हलाहल मद भरे, स्वेत स्याम रतनार। जियत, मरत, झुकि झुकि परत जेहि चितवत एकबार।

क्रमदंडक *पुं.* (तत्.) वेदपाठ का एक प्रकार।

क्रमपाठ *पुं.* (तत्.) संहिता और पाद दोनों को मिलाकर वेदपाठ करना।

क्रमबद्ध *वि.* (तत्.) क्रम के अनुसार व्यवस्थित।

क्रमभंग *पुं.* (तत्.) सिलसिला टूट जाना।

क्रमविकास *पुं.* (तत्.) धीरे धीरे होने वाला विकास।

क्रमशः *क्रि.वि.* (तत्.) 1. क्रम से, सिलसिलेवार, धीरे धीरे।

क्रमसंख्या *स्त्री.* (तत्.) क्रम को व्यक्त करने वाली संख्या।

क्रमांक *पुं.* (तत्.) दे. क्रमसंख्या।

क्रमागत *वि.* (तत्.) 1. क्रमशः किसी रूप को प्राप्त 2. जो सदा से होता आया हो, परंपरागत।

क्रमानुकूल *वि.* (तत्.) श्रेणी के अनुसार, क्रम से, सिलसिलेवार।

क्रमान्वय *पुं.* (तत्.) एक के बाद एक।

क्रमिक *पुं.वि.* (तत्.) 1. क्रमयुक्त, क्रमागत 2. परंपरागत।

क्रमिकता *स्त्री.* (तत्.) क्रमबद्ध होने की स्थिति।

क्रमेलक *पुं.* (तत्.) ऊँट, शुतुर।

क्रय *पुं.* (तत्.) मोल लेने की क्रिया, खरीद।

क्रयक्रीत *वि.* (तत्.) खरीदा या मोल लिया हुआ।

क्रयण *पुं.* (तत्.) खरीद, क्रय।

क्रयलेख *पुं.* (तत्.) विक्रयपत्र, बैनामा।

क्रयविक्रय *वि.* (तत्.) खरीदने और बेचने की क्रिया।

क्रयविक्रयिक *पुं.* (तत्.) व्यापारी, सौदागर।

क्रयारोह *पुं.* (तत्.) वह स्थान जहाँ खरीदने बेचने का काम होता हो, बाजार, मंडी।

क्रयी *पुं.* (तत्.) मोल लेने वाला।

क्रव्य *पुं.* (तत्.) कच्चा मांस, गोश्त।

क्रव्याद *वि.* (तत्.) कच्चा मांस खानेवाला *पुं.* (तत्.) 1. मांसभक्षी, 2. राक्षस 3. मृत शरीर खाने वाला *स्त्री.* 1. वह आग जिससे शव जलाया जाता है, चिता की आग।

क्रशित *वि.* (तत्.) क्षीण काय, दुबला-पतला।

क्रांत *वि.* (तत्.) 1. लांघा हुआ, ऊपर से आकर दबाया हुआ 2. आगे बढा हुआ, जात 3. जिससे आगे कोई बढ़ गया हो 4. वश में किया हुआ *पुं.* (तत्.) 1. पाँव 2. घोड़ा।

क्रांति *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी स्थिति में भारी परिवर्तन, उलट फेर जैसे- राज्यक्रांति 2. डग भरने की क्रिया, कदम रखना, गति 3. खगोल में वह कल्पित वृत्त, जिस पर सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता जान पड़ता है पर्या. अपमंडल, अपवृत्त, अपक्रम।

क्रांतिकारी *वि.* (तत्.) किसी व्यवस्था में भारी उलट फेर करने वाला, इनकलाब लाने वाला।

क्रांतिक्षेत्र *पुं.* (तत्.) गणित में वह क्षेत्र जो क्रांति करने या निकालने के लिए बनाया जाए।

क्रांतिज्या *स्त्री.* (तत्.) क्रांतिवृत्त क्षेत्र में अक्षक्षेत्र का एक अंग *वि.* वृत्त या वृत्तांश के चाप के दो बिंदुओं को मिलाने वाली सरल रेखा।

क्रांतिदर्शी *वि.* (तत्.) 1. सर्वज्ञ 2. त्रिकालदर्शी *पुं.* ईश्वर, परमेश्वर।

क्रांतिपात *पुं.* (तत्.) वे बिंदु जिन पर क्रांतिवलय और खगोलीय विषुवत् की रेखाएं एक दूसरी को काटती हैं, जब उन बिदुओं पर पृथ्वी आती है, तब रात और दिन बराबर होते हैं।

क्रांतिभाग *पुं.* (तत्.) खगोलीय नाभिमंडल से क्रांतिमंडल के किसी बिंदु की दूरी।

क्रांतिमंडल *पुं.* (तत्.) वह वृत्त जिस पर सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ जान पड़ता है।

क्रांतिवृत्त *पुं.* (तत्.) सूर्य का मार्ग, क्रांतिवलय।

क्राइस्ट *पुं.* (अं.) ईसा मसीह।

क्राउन *पुं.* (अं.) 1. राज मुकुट, ताज 2. राजा, शाह, सुलतान 3. राज्य 4. छापने के कागज की एक माप जो 15 इंच चौड़ी और 20 इंच लंबी होती है।

क्रिकेट *पुं.* (अं.) एक प्रकार का गेंद और बल्ले का खेल, जो ग्यारह ग्यारह खिलाड़ियों के दो पक्षों में खेला जाता है, गेंद- बल्ला।

क्रिज *स्त्री.* (अं.) 1. इस्तरी करके कपड़े पर छोड़ा हुआ निशान, लोहा करते समय पतलून पर पड़ी हुई धारी 2. क्रिकेट के खेल में वह निर्धारित किया हुआ निशान वाला स्थान जिसके अंदर बल्लेबाज खेलता है 3. सिकुड़न जैसे- वह अपने कपड़ों की क्रीज का बड़ा ध्यान रखते हैं।

क्रिपीपति (कृपीपति) *पुं.* (तत्.) माता 'कृपी' के स्वामी, द्रोणाचार्य।

क्रिमिनल *वि.* (अं.) अपराधी।

क्रियमाण *पुं.* (तत्.) 1. वह जो किया जा रहा हो 2. कर्म के चार भेदों में से एक, दे. 'कर्म'।

क्रिया *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी प्रकार का व्यापार, कर्म 2. प्रयत्न, हिलना, डोलना 3. अनुष्ठान 4. व्याकरण का वह अंग जिससे किसी काम का होना, करना या कराना पाया जाय जैसे- आना, जाना, लगाना, तोड़ना आदि 5. शौच आदि कर्म, नित्यकर्म, स्नान, संध्या, तर्पण आदि 6. श्राद्ध आदि प्रेतकर्म 7. प्रायश्चित आदि कर्म 8. उपाय, उपचार 9. न्याय या विचार का साधन, मुकदमे की कार्रवाई 10. अध्यापन 11. किसी कला पर अधिकार या उसका ज्ञान 12. आचरण, व्यवहार 13. कार्य की विधि।

क्रियाकर्म *पुं.* (तत्.) मृतक क्रिया, अंत्येष्टि।

क्रियाकलाप *पुं.* (तत्.) 1. शास्त्र के अनुसार किया जाने वाला कार्य 2. किसी व्यवसाय का संपूर्ण विवरण।

क्रियाकल्प *पुं.* (तत्.) 1. रोग निदान का एक खास तरीका 2. रोग निर्णय 3. काव्यरचना की विधि।

क्रियात्मक *वि.* (तत्.) व्यावहारिक जैसे-मात्र सिद्धांत से काम नहीं चलेगा, उसे क्रियात्मक रूप भी देने की आवश्यकता है।

क्रियापटु *वि.* (तत्.) कार्यकुशल जैसे- जो क्रियापटु होगा उसे पदोन्नति मिलेगी।

क्रियापद *पुं.* (तत्.) व्याकरण में क्रिया अथवा क्रियावाचक शब्द।

क्रियाफल *पुं.* (तत्.) 1. वेदांत के अनुसार कर्म के चार फल उत्पत्ति, आप्ति, विकृति और संस्कृति 2. मीमांसा में गुणकर्म या उसके चार फल।

क्रियामाधुर्य *पुं.* (तत्.) वास्तु अथवा कला का निर्माणगत सौंदर्य।

क्रियायोग *पुं.* (तत्.) 1. पुराणों के अनुसार देवताओं की पूजा करना और मंदिर बनवाना 2. क्रिया के साथ संबंध 3. साधन का प्रयोग।

क्रियार्थकसंज्ञा *स्त्री.* (तत्.) वह संज्ञा जो क्रिया का भी काम करे (व्याकरण)।

क्रियावाचक *वि.* (तत्.) क्रिया का बोध कराने वाला, क्रियार्थक।

क्रियावाची *वि.* (तत्.) दे. क्रियावाचक।

क्रियावाद *पुं.* (तत्.) ज्ञान, कर्म और उपासना नामक तीन कांडों में से कर्मकांड को प्रधानता देना, कर्मवाद, कर्म को प्रधानता देने वाला सिद्धांत।

क्रियाविशेषण *पुं.* (तत्.) वह शब्द जिससे क्रिया के किसी विशेष काल, भाव या रीति आदि का बोध हो व्या. जैसे- अब, तब, यहाँ, वहाँ, क्रमशः, अचानक।

क्रियाशील *वि.* (तत्.) क्रियावान्, कर्मठ।

क्रियाशून्य *वि.* (तत्.) कर्महीन।

क्रिश्चन/क्रिश्चियन *पुं.* (अं.) दे. क्रिस्तान, ईसाई धर्म का मानने वाला।

क्रिस्टल *पुं.* (अं.) 1. स्फटिक, बिल्लौर 2. शोरे आदि का जमा हुआ खादर टुकड़ा।

क्रिस्तान *पुं.* क्रिश्चियन (अं.) ईसाई मत पर चलने वाला, ईसाई।

क्रिस्तानी *वि.* (देश.) 1. ईसाइयों का 2. ईसाई मत के अनुसार।

क्रीडक *पुं.* (तत्.) 1. खेलने वाला, खिलाड़ी 2. द्वाररक्षक, द्वारपाल।

क्रीडन *पुं.* (तत्.) 1. खेल, क्रीडा 2. खिलौना, खेलने की वस्तु।

क्रीडनक *पुं.* (तत्.) खिलौने।

क्रीड़ा *स्त्री.* (तद्.) 1. खेलकूद 2. कल्लोल, केलि, आमोद-प्रमोद 3. संगी. ताल के सात मुख्य भेदों में से एक, जिस ताल में केवल एक प्लुत हो, उसे क्रीड़ा ताल कहते है छंद. 4. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में एक यगण और गुरु होता है।

क्रीड़ाकानन *पुं.* (तद्.+तत्.) दे. क्रीड़ावन।

क्रीड़ागृह *पुं.* (तद्.+तत्.) खेलने के लिए बनाया गया स्थान, केलिमंदिर।

क्रीड़ानारी *स्त्री.* (तद्.+तत्.) वेश्या।

क्रीड़ारत *वि.* (तद्.+तत्.) खेल में लगा हुआ।

क्रीडावन *पुं.* (तत्.) क्रीड़ा के लिए उद्यान, आमोद-प्रमोदवन।

क्रीड़ाशैल *पुं.* (तद्.+तत्.) उद्यान आदि में बनाया जाने वाला कृत्रिम पर्वत।

क्रीत *पुं.* (तत्.) 1. मनु के अनुसार बारह प्रकार के पुत्रों में से एक जो मोल लिया गया हो, क्रीतक 2. प्रंद्रह प्रकार के दासों में से एक जो मोल लिया गया हो *वि.* (तत्.) खरीदा हुआ, क्रय किया हुआ।

क्रीतक *पुं.* (तत्.) क्रीत पुत्र *वि.* (तत्.) क्रय द्वारा प्राप्त।

क्रीतदास *पुं.* (तत्.) खरीदा हुआ दास, गुलाम।

क्रुद्ध *वि.* (तत्.) 1. कोपयुक्त, क्रोध से भरा हुआ 2. क्रूर, निर्दय।

क्रूजर *पुं.* (अं.) तेज चलने वाला सशस्त्र या हथियारबंद जलप्रोत जिसका काम अपने देश के जहाजों की रक्षा करना और शत्रु के जहाज को नष्ट करना एवं लूटना होता है, रक्षक जहाज।

क्रूर *वि.* (तत्.) 1. क्रूर काम करने वाला 2. तितलौकी का पेड़ 3. सूरजमुखी, अर्कपुष्पी।

क्रूरग्रह *पुं.* (तत्.) विषम (पहली, तीसरी, पांचवीं, सातवीं, नवीं और ग्यारहवीं) राशियाँ 2. रवि, मंगल, शनि, राहु और केतु ये पाँच ग्रह जिन्हें पापग्रह भी कहते हैं 3. किसी राशि में पापग्रह के साथ (ज्योतिष) आने वाला शुभ ग्रह।

क्रूरता *स्त्री.* (तत्.) निर्दयता, निष्ठुरता 2. कठोरता।

क्राकृति [क्रूर+आकृति] *वि.* (तत्.) डरावनी शकल वाला *पुं.* भयानक तथा डरावनी आकृति वाला व्यक्ति, राक्षस *स्त्री.* डरावनी शक्ल (आकृति)।

क्रूरात्मा [क्रूर+आत्मा] *पुं.* (तत्.) शनि *वि.* क्रूर स्वभाव वाला।

क्रूस (क्रॉस) *पुं.* (अं.) क्रास, ईसाई धर्म का एक प्रकार का धर्मचिह्न, सूली, फाँसी (वह टिकटी जिस पर ईसामसीह को फाँसी दी गई थी, सलीब।

क्रेडिट *पुं.* (अं.) बाजार में वह मान-मर्यादा जिसके कारण मनुष्य लेन देन कर सकता हो, साख जैसे- अगर बाजार में क्रेडिट न रह जाए तो कोई माल नहीं मिल सकता।

क्रेता *पुं.* (तत्.) खरीदने वाला, खरीदार।

क्रोड *स्त्री.* (तत्.) 1. आलिंगन में दोनों बाँहों के बीच का भाग, भुजांतर, वक्षःस्थल 2. गोद, अलंकार 3. सूअर 4. शनिग्रह 5. वाराहीकंद 6. किसी वस्तु का मध्यभाग 7. कोटर 8. कोड।

क्रोध *पुं.* (तत्.) 1. किसी अनुचित तथा अन्यायपूर्ण बात से उत्पन्न तीक्ष्ण मनोविकार, गुस्सा, कोप, 2. रौद्र रस का स्थायी भाव।

क्रोधना *वि.* (तत्.) क्रोधी स्वभाव वाली स्त्री *स्त्री.* क्रूद्ध स्त्री।

क्रोधित *वि.* (तत्.) 1. कुपित, नाराज, क्रुद्ध, क्रोध में आया हुआ।

क्लीव *वि.* (तत्.) 1. नपुंसक, नामर्द 2. डरपोक, कायर 3. नीच, अधम 4. सुस्त।

क्लेद *पुं.* (तत्.) 1. ओदापन, गीलापन, आर्द्रता 2. पसीना 3. दुख 4. घाव या फोड़े का स्वभाव, मवाद, पीब।

क्लेदक *वि.* 1. पसीना लाने वाला 2. गीला या नम करने वाला।

क्लेदन *पुं.* (तत्.) 1. गीला करने का भाव/कार्य 2. शरीर में पांच प्रकार की श्लेष्माओं में से एक जो आमाशय से उत्पन्न होती है और भोजन को पचाती है 3. पसीना आना।

क्लेश *पुं.* (तत्.) 1. दुख, कष्ट, वेदना 2. योगशास्त्र के अनुसार क्लेश के पाँच भेद हैं अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश 3. झगड़ा, लड़ाई, टंटा जैसे- वह कामधाम कुछ करता नहीं, घर में क्लेश किए रहता है।

क्लेशक *वि.* (तत्.)) दे. क्लेशकर।

क्लेशकर *वि.* (तत्.) कष्ट पहुँचाने वाला, दुःखदायी।

क्लेशक्षम *वि.* (तत्.) दुःख सहने में समर्थ।

क्लेशी *वि.* (तत्.) 1. क्लेशकर, दुःखद 2. आहत करने वाला।

क्लोम *पुं.* (तत्.) दाहिनी ओर का फेफड़ा, फुफ्फुस 2. प्यास, पिपासा।

क्लोरोफार्म *पुं.* (अं.) प्रसिद्ध तरल औषधि जिसे सूंघते ही थोड़ी देर में मनुष्य अचेत हो जाता है मुहा. क्लोरोफार्म देना- क्लोरोफार्म सुँघाना।

क्वचित् *क्रि.वि.* (तत्.) कोई कहीं, बहुत कम।

क्वण *पुं.* (तत्.) 1. वीणा का शब्द 2. घुँघरू का शब्द 3. आवाज, ध्वनि।

क्वणन *पुं.* (तत्.) 1. शब्द, ध्वनि 2. किसी वाद्य या घुंघरू, आभूषण आदि की ध्वनि 3. मिट्टी का छोटा पात्र।

क्वार *पुं.* (तद्.) 1. आश्विन का महीना 2. दे. क्वारा।

क्वारा *पुं.वि.* (तद्.) जिसका विवाह न हुआ हो, कुआरा।

क्वारापन *पुं.* (देश.) क्वारे अथवा अविवाहित होने की अवस्था या भाव।

क्वार्टर *पुं.* (अं.) 1. छोटा मकान 2. वर्ग विशेष वालों की बस्ती, बाड़ा 3. किसी संस्था द्वारा बनाई बनाई गई अफसरों और कर्मचारियों के रहने की जगह, जैसे- रेलवे क्वार्टर 4. वह स्थान जहाँ सेना ने डेरा डाला हो, छावनी, मुकाम 5. चौथाई भाग, चौथा हिस्सा 6. पौंड का एक तौल।

क्वार्टर मास्टर *पुं.* (अं.) 1. सेना का एक अधिकारी जो सैनिकों के लिए रसद, मकान आदि की व्यवस्था करता है 2. जहाज का एक अधिकारी जो मल्लाहों को आवश्यक संकेत देता है।

क्षंतव्य *वि.* (तत्.) क्षमा करने के योग्य, क्षम्य।

क्षंता *वि.* (तत्.) क्षमाशील, क्षमा करने वाला।

क्ष *पुं.* (तत्.) 1. विध्वंस, विनाश 2. हानि 3. अंतर्धान/ लोप 4. खेत, कृषक, किसान 5. विष्णु का चौथा अवतार-नृसिंह 6. विद्युत 7. एक राक्षस।

क्षण *पुं.* (तत्.) 1. काल या समय का एक बहुत छोटा भाग, थोड़ी देर, लम्हा, सेकेंड के बराबर का समय 2. अवसर, अवकाश 3. शुभकाल, उत्सव, आनंद जैसे- क्षणभर के लिए तो कुछ परेशान हो गया था।

क्षणतु *पुं.* (तत्.) घाव, जख्म।

क्षणद *पुं.* (तत्.) 1. जल 2. ज्योतिषी 3. वह जिसे रात को दिखाई न पड़ता हो, रात को दिखाई न पड़ने का एक रोग, रतौंधी।

क्षणदा *स्त्री.* (तत्.) 1. रात 2. जल्दी।

क्षणदाकर *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

क्षणद्युति *स्त्री.* (तत्.) विद्युत, बिजली।

क्षणन *पुं.* (तत्.) 1. चोट पहुँचाना, प्रहार करना 2. हनन, वध करना 3. घायल करना।

क्षणप्रभा *स्त्री.* (तत्.) बिजली, विद्युत।

क्षणभंग *पुं.* (तत्.) 1. बौद्धों का क्षणिकवाद सिद्धांत, जिसमें वस्तुओं की स्थिति एक क्षण की मानी गई है 2. संसार *वि.* (तत्.) क्षणभर में नष्ट होने वाला, अनित्य, नाशवान।

क्षणभंगुर *वि.* (तत्.) शीघ्र नष्ट होने वाला, क्षणभर में नष्ट होने वाला, अनित्य, अस्थायी प्रयो. उल्का के क्षणभंगुर प्रकाश की भाँति वह हँसी मेरे मन में आशंका को दीप्त कर गई -बाणभट्ट की आत्मकथा)

क्षणमूल्य *पुं.* (तत्.) नकद दाम, तुरंत ही दी जाने वाली कीमत।

क्षणविध्वंसी *पुं.* (तत्.) 1. अनीश्वरवादी दार्शनिकों का एक समुदाय, जो यह मानता है कि संसार प्रतिक्षण नष्ट होता और नया जन्म प्राप्त करता है 2. क्षणभर में नष्ट होने वाला उपादान-संसार।

क्षणिक *वि.* (तत्.) एक क्षण रहनेवाला, क्षण-भंगुर, अनित्य।

क्षणिकता *स्त्री.* (तत्.) क्षणिक होने का भाव, क्षणभंगुरता।

क्षणिकवाद *पुं.* (तत्.) बौद्धों का एक सिद्धांत जिसमें प्रत्येक वस्तु को उसकी उत्पत्ति से दूसरे क्षण में नष्ट हो जानेवाला मानते हैं, जो प्रतिक्षण बदलती रहती है।

क्षणिकवादी *पुं.* (तत्.) क्षणिकवाद पर विश्वास रखनेवाला व्यक्ति।

क्षणिका *स्त्री.* (तत्.) बिजली, विद्युत।

क्षणिनी *स्त्री.* (तत्.) रात, क्षणदा।

क्षणी *वि.* (तत्.) अवकाशयुक्त, क्षणस्थायी।

क्षत *वि.* (तत्.) 1. घायल, कटा-फटा हुआ 2. क्षतिग्रस्त, खंडित, भग्न *पुं.* (तत्.) 1. घाव, जख्म 2. व्रण, फोड़ा 3. भय, खतरा, डर 4. दुख 5. एक प्रकार का फोड़ा जो गिरने, दौड़ने या किसी प्रकार का क्रूर कर्म करने से हृदय में हो जाता है, इसमें रोगी को ज्वर आता है और खाँसने से मुँह से रक्त निकलता है।

क्षतकास *पुं.* (तत्.) क्षतज खाँसी, क्षत या आघात से होनेवाली खाँसी।

क्षतचिह्न *पुं.* (तत्.) चोट लगने, जल जाने या फोड़े आदि के कारण पड़ा हुआ निशान।

क्षतज *पुं.* (तत्.) 1. रक्त, रुधिर, खून 2. पीव 3. एक प्रकार की खाँसी जो क्षय रोग में होती है, इसमें खखार के साथ रुधिर निकलता है और शरीर के जोड़ों में पीड़ा होती है।

क्षतजतृष्णा *स्त्री.* (तत्.) चोट लगने या शरीर से अधिक रक्त निकल जाने से उत्पन्न प्यास।

क्षतजदाह *पुं.* (तत्.) किसी घाव के कारण होने वाली जलन, जिसमें दाह के कारण प्यास, मूर्च्छा और प्रलाप आदि लक्षण होते हैं।

क्षतयोनि *वि.* (तत्.) जिस स्त्री का पुरुष से समागम हो चुका हो, जिसका कौमार्य नष्ट हो चुका हो।

क्षतविक्षत *वि.* (तत्.) 1. घायल, लहूलुहान, वह व्यक्ति जिसे बहुत चोट लगी हो, जिसकी देह घावों से भरी हो 2. वह वस्तु जो बहुत जगह कट-फट गई हो जैसे- सुनहरी बाग में पुलिस को एक लाश क्षत-विक्षत अवस्था में मिली।

क्षतवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) जीविका का साधन न होना, रोजी का सहारा न रहना।

क्षतव्रण *पुं.* (तत्.) 1. चोट पक जाने से होने वाला फोड़ा, वैद्यक में छह प्रकार के फोड़ों में से एक 2. किसी स्थान के कटने या उस पर चोट लगने के बाद, उस स्थान को क्षतव्रण कहते हैं।

क्षतसर्पण *पुं.* (तत्.) गतिहीनता, गमन शक्ति का ह्रास।

क्षता *स्त्री.* (तत्.) वह कन्या जिसका कौमार्य विवाह विवाह से पहले ही नष्ट हो चुका हो।

क्षतारि *वि.* (तत्.) विजयी, विजेता।

क्षताशौच [क्षत+अशौच] *पुं.* (तत्.) घायल होने का अशौच, वह अशौच जो किसी मनुष्य को घायल होने के कारण लगता है, इस अशौच में मनुष्य किसी प्रकार का स्मृति कार्य नहीं कर सकता।

क्षति *स्त्री.* (तत्.) 1. हानि, ह्रास, घाटा 2. क्षय, नाश 3. चोट, घाव।

क्षतिग्रस्त *वि.* (तत्.) जिसकी हानि हुई हो, क्षति उठाने वाला।

क्षतिपूर्ति *स्त्री.* (तत्.) क्षति पूरी होने का भाव या क्रिया, मुआवजा, घाटे का पूरा हो जाने का भाव या क्रिया।

क्षतोदर *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का उदर रोग, जिसमें अन्न के साथ रेत, तिनका, लकड़ी, हड्डी या काँटा आदि पेट में उतर जाने से या कम भोजन करने से आँतें छिद जाती हैं या कट जाती हैं।

क्षत्ता *पुं.* (तत्.) 1. द्वारपाल, दरबान 2. मछली 3. दासीपुत्र 4. सारथी 5. ब्रह्मा 6. रथी 7. कोषाध्यक्ष 8. 8. नियोग करने वाला पुरुष 9. वह वर्ण संकर जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय माता और शूद्र पिता से हो 10. काटने वाला।

क्षत्र *पुं.* (तत्.) 1. बल 2. राष्ट्र 3. धन 4. शरीर 5. 5. जल 6. क्षत्रिय 7. योद्धा 8. क्षत्रिय 9. अधिकार, प्रभुता।

क्षत्रकर्म *पुं.* (तत्.) क्षत्रियोचित कर्म, वह कर्म जिसका करना क्षत्रियों के लिए आवश्यक हो, जैसे- युद्ध करना, दान देना।

क्षत्रधर्म *पुं.* (तत्.) क्षत्रियों का धर्म, क्षत्रिय के कर्तव्य, शौर्य।

क्षत्रधर्मा *वि.* (तत्.) क्षात्र धर्म का पालन करने वाला, वीर योद्धा।

क्षत्रधृति *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का यज्ञ, जो सावन की पूर्णिमा को किया जाता है, राजसूय यज्ञ का एक भाग।

क्षत्रप *पुं.* (तत्.) 1. क्षत्रपति, राजा 2. शक अथवा पारस के प्राचीन साम्राज्य में मांडलिक राजाओं की उपाधि या पद, प्रांताधिपति, राज्यपाल, राजा की ओर से किसी देश या प्रांत का शासन करनेवाला प्रधान अधिकारी।

क्षत्रपति *पुं.* (तत्.) 1. राजा, किसी राज्य का स्वामी 2. शिवाजी की उपाधि।

क्षत्रबंधु *पुं.* (तत्.) नाम मात्र का क्षत्रिय, कर्तव्य रहित क्षत्रिय, ऐसा व्यक्ति जो जन्म से तो क्षत्रिय हो, परंतु क्षत्रियों जैसे कर्म न करता हो।

क्षत्रबद्ध *पुं.* (तत्.) तेरहवें मनु के पुत्र का नाम।

क्षत्रयोग *पुं.* (तत्.) ज्योतिष में एक प्रकार का योग जो मनुष्य को प्रायः राजा या उसके समान बनाता है।

क्षत्रविद्या *स्त्री.* (तत्.) क्षत्रियों की विद्या/धनुर्विद्या, युद् युद्धविद्या, युद्धकला।

क्षत्रवृक्ष *पुं.* (तत्.) मुचकुंद नामक वृक्ष।

क्षत्रवेद *पुं.* (तत्.) धनुर्वेद।

क्षत्रसव *पुं.* (तत्.) एक यज्ञ जिसे केवल क्षत्रिय ही कर सकता है जैसे- अश्वमेध यज्ञ।

क्षत्रांतक [क्षत्र+अंतक] *पुं.* (तत्.) क्षत्रियों का अंत करने वाला योद्धा, परशुराम (जिन्होंने क्षत्रियों का अंत किया था)।

क्षत्राणी *स्त्री.* (तत्.) क्षत्रिय की स्त्री, वीर नारी।

क्षत्रान्वय *पुं.* (तत्.) क्षत्रिय जाति का, क्षत्रिय संबंधी।

क्षत्रिय *पुं.* (तत्.) हिंदुओं के चार वर्णों में से दूसरा वर्ण, योद्धा जाति, इस वर्ण का पुरुष, राजा।

क्षत्रियका *स्त्री.* (तत्.) क्षत्रिय जाति की स्त्री, क्षत्राणी।

क्षत्री *पुं.* (तत्.) क्षत्रिय।

क्षदन *पुं.* (तत्.) 1. काटना 2. चीरना 3. फाड़ना 4. खाना।

क्षप *पुं.* (तत्.) जल, पानी।

क्षपण *पुं.* (तत्.) 1. बौद्ध, भिक्षु 2. अशौच 3. नष्ट करना 4. दमन करना 5. उपवास।

क्षपणक *पुं.* (तत्.) 1. बौद्ध संन्यासी का भिक्षु 2. विक्रमादित्य की राजसभा के नौ रत्नों में से एक *वि.* (तत्.) निर्लज्ज, नंगा।

क्षपणी *स्त्री.* (तत्.) 1. पतवार, नाव खेने का डंडा 2. जाल।

क्षपण्यु *पुं.* (तत्.) अपराध।

क्षपांत [क्षपा+अंत] *पुं.* (तत्.) प्रभात, भोर, क्षपा (रात्रि) का अंत।

क्षपांध्य [क्षपा+आंध्य] *पुं.* (तत्.) रात को होने वाली-अंधता का रोग, रतौंधी, वह रोग जिसमें रात में दिखाई नहीं पड़ता।

क्षपा *स्त्री.* (तत्.) 1. रात 2. हल्दी 3. सहनशीलता 4. धैर्य 5. क्षमा 6. पृथ्वी 7. दुर्गा, पार्वती 8. एक समवार्णिक छंद।

क्षपाकार *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. कपूर।

क्षपाघन *पुं.* (तत्.) काला बादल, कृष्ण, मेघ।

क्षपाचर *पुं.* (तत्.) 1. वह निशाचर जो रात्रि में विचरण करता है 2. राक्षस 3. उल्लू।

क्षपाट *पुं.* (तत्.) 1. राक्षस 2. रात्रि में चलने वाला।

क्षपानाथ *पुं.* (तत्.) 1. रात्रि का स्वामी, चंद्रमा 2. कपूर।

क्षपापति *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. कपूर।

क्षपित *वि.* (तत्.) 1. नष्ट किया हुआ 2. दमित, दबाया हुआ।

क्षम *वि.* (तत्.) सहन करने में समर्थ, योग्य, उपयुक्त, सशक्त, यह शब्द केवल समास में आता है जैसे- अक्षम, सक्षम *पुं.* (तत्.) 1. शक्ति, बल 2. योग्यता, उपयुक्तता 3. युद्ध 4. शिव।

क्षमणीय *वि.* (तत्.) 1. क्षमा करने योग्य, क्षम्य 2. चुपचाप सहने योग्य।

क्षमता *स्त्री.* (तत्.) शक्ति, सामर्थ्य, योग्यता।

क्षमताशील *वि.* (तत्.) क्षमतावाला, योग्य, समर्थ।

क्षमना *पुं.* (तत्.) क्षमा करना, माफ करना।

क्षमा *स्त्री.* (तत्.) 1. चित्त की वह वृत्ति जिससे मनुष्य दूसरे के द्वारा पहुँचाया हुआ कष्ट चुपचाप चुपचाप सहन कर लेता है और कष्ट पहुँचाने वाले के प्रति मन में कोई विकार नहीं आने देता, सहनशीलता, सहिष्णुता, माफी 2. खैर का पेड़ 3. पृथ्वी 4. वेतवा नदी का एक नाम 5. दक्ष की एक कन्या का नाम 6. एक की संख्या 7. एक प्रकार का छंद 8. दुर्गा का एक नाम 9. राधिका की एक सखी।

क्षमाई *स्त्री.* (देश.) क्षमा करने की क्रिया या भाव।

क्षमातल *पुं.* (तत्.) 1. पृथ्वी तल, जमीन की सतह 2. धरातल।

क्षमादंश *पुं.* (तत्.) सहिजन का पेड़।

क्षमाना *स.क्रि.* (देश.) क्षमा करना, माफ करना।

क्षमाधर *पुं.* (तत्.) भूधर, पर्वत।

क्षमाधृति *पुं.* (तत्.) राजा।

क्षमापति *पुं.* (तत्.) दे. क्षमाधृति।

क्षमापाल *पुं.* (तत्.) दे. क्षमाधृति।

क्षमापन *पुं.* (तत्.) क्षमा करने का काम, माफी, माफ करने का काम/क्रिया।

क्षमाभुक *पुं.* (तत्.) पृथ्वीपति, भूपति, राजा।

क्षमाभुज *पुं.* (तत्.) मंगल ग्रह।

क्षमाभृत *पुं.* (तत्.) 1. पर्वत, पहाड़ 2. राज कुमार।

क्षमावान *वि.* (तत्.) 1. क्षमा करने वाला, माफ करने वाला 2. सहनशील, सहिष्णु।

क्षमाशील *वि.* (तत्.) 1. माफ कर देने की सद्वृत्ति सद्वृत्ति वाला, क्षमावान 2. सहनशील, शांत प्रकृति वाला, सहिष्णु।

क्षमाष्ट *पुं.* (तत्.) संगीत में चतुर्दश ताल का एक भेद।

क्षमित *वि.* (तत्.) क्षमा प्राप्त, जिसे क्षमा किया गया हो।

क्षमितव्य *वि.* (तत्.) क्षमा करने योग्य, क्षंतव्य, जिसे क्षमा किया जा सके।

क्षमिता *वि.* (तत्.) क्षमा करने वाला, क्षमाशील।

क्षमी *वि.* (तत्.) 1. क्षमाशील, क्षमावान, माफ करने वाला 2. समर्थ।

क्षम्य *वि.* (तत्.) 1. क्षमा करने योग्य, माफ करने योग्य 2. जो दंडनीय न हो।

क्षयंकर *वि.* (तत्.) नाश करने वाला, क्षयकारी, नाशक।

क्षय *पुं.* (तत्.) 1. धीरे-धीरे घटना, ह्रास 2. अपचय 3. प्रलय, कल्पांत, नाश 4. घर, मकान वासस्थान 5. यक्ष्मा नामक रोग, क्षयी 6. संवत्सरों में अंतिम संवत्सर का नाम 7. ऋण राशि 8. राजा के अष्टवर्ग (ऋषि, बरती, दुर्ग, सेतु, हस्तिबंधन, खान, करग्रहण और सेना) की अवनति 9. चांद्रमास, जिसमें सूर्य की दो संक्रातियाँ होती है 10. वंश, जाति 11. यमालय 12. गणित में ऋण का चिह्न या राशि 13. हाथी के घुटने का एक भाग।

क्षयकारी *वि.* (तत्.) क्षयरोग से ग्रस्त।

क्षयकाल *पुं.* (तत्.) प्रलयकाल, संहार का समय।

क्षयकास *पुं.* (तत्.) क्षयरोग में होने वाली खाँसी।

क्षयण *पुं.* (तत्.) 1. शांत जलवायु 2. बंदरगाह या खाड़ी 3. निवास स्थान 4. क्षय होने का भाव।

क्षयतरु *पुं.* (तत्.) 1. स्थाली नामक वृक्ष, बेलिया, पीपल।

क्षयतिथि *स्त्री.* (तत्.) वह तिथि जो व्यवहार में लुप्त मानी जाए, तिथि क्रम में इसकी गणना नहीं की जाती।

क्षयथु *पुं.* (तत्.) क्षय की खाँसी, कास।

क्षयपाख़ *पुं.* (तत्.तद्.+) कृष्ण पक्ष, अँधेरे का पक्ष, चांद्रमास का वह पक्ष जिसमें चंद्रमा नित्य कुछ क्षीण होता है।

क्षयमास *पुं.* (तत्.) दो सक्रांतियों वाला चांद्रमास जो 341 वें वर्ष और कभी-कभी 19 वें वर्ष में आता है, हीन मास।

क्षयरोग *पुं.* (तत्.) यक्ष्मारोग, तपेदिक, वह रोग जिसमें शरीर धीरे-धीरे क्षीण होता जाता है।

क्षयरोगी *वि.* (तत्.) क्षयरोग से पीड़ित, क्षयी।

क्षयवान् *वि.* (तत्.) नाशवान, नष्ट होने वाला।

क्षयवायु *स्त्री.* (तत्.) प्रलयकाल में बहने वाली वायु।

क्षयिक *वि.* (तत्.) क्षयरोग ग्रस्त, क्षय पीड़ित।

क्षयित्व *पुं.* (तत्.) क्षय होने का भाव।

क्षयिष्णु *वि.* (तत्.) क्षय होने वाला, छीजने वाला, नष्ट होने वाला।

क्षयी *वि.* (तत्.) क्षय होने वाला, नष्ट होने वाला, क्षय रोग ग्रस्त *पुं.* (तत्.) चंद्रमा। *स्त्री.* (तत्.) एक रोग, यक्ष्मा, राज यक्ष्मा, तपेदिक।

क्षय्य *वि.* (तत्.) क्षय होने योग्य, जिसका क्षय हो सके।

क्षर *वि.* (तत्.) 1. नाशवान, नष्ट होने वाला 2. चल, जंगम *पुं.* (तत्.) 1. जल 2. मेघ 3. जीवात्मा 4. शरीर 5. अज्ञान 6. कारण और कार्य।

क्षरण *पुं.* (तत्.) 1. रिस-रिस के चूना, तरल पदार्थ का किसी पात्र में बूँद-बूँद करके गिरना 2. छूटना 3. झड़ना, क्षीण होना।

क्षरित *वि.* (तत्.) टपका हुआ, चुआ हुआ।

क्षरी *पुं.* (तत्.) वर्षाकाल, बरसात।

क्षव *पुं.* (तत्.) छींक, खाँसी।

क्षवथु *पुं.* (तत्.) 1. अधिक छींकें आना, खाँसी 2. नाक के रोगों में से एक 3. गले का दुखना।

क्षवपत्री *स्त्री.* (तत्.) द्रोण पुष्पी, गूमा।

क्षविका *स्त्री.* (तत्.) 1. एक प्रकार का वनभंटा 2. एक प्रकार का चावल, नारी।

क्षांत *वि.* (तत्.) 1. क्षमाशील, क्षमा करने वाला 2. सहनशील, सहिष्णु, पृथ्वी, क्षमा किया हुआ *पुं.* (तत्.) 1. एक ऋषि का नाम 2. एक व्याध जिसे अपने गुरु की गौएँ मार डालने के कारण शाप मिला था 3. महादेव, शिव।

क्षांता *स्त्री.* (तत्.) पृथ्वी, भूमि।

क्षांति *स्त्री.* (तत्.) 1. क्षमा 2. सहिष्णुता 3. सहनशीलता।

क्षांतु *पुं.* (तत्.) पिता, जनक *वि.* (तत्.) सहनशील, क्षमावान, सहिष्णु।

क्षा *स्त्री.* (तत्.) पृथ्वी।

क्षात्र *वि.* (तत्.) क्षत्रिय संबंधी, क्षत्रियोचित।

क्षात्र *पुं.* (तत्.) क्षत्रिय का कर्म, क्षत्रियत्व, क्षत्रियोचित पराक्रम।

क्षात्रि *पुं.* (तत्.) क्षत्रिय पुरुष और अन्य जाति की स्त्री से उत्पन्न संतान।

क्षाम *वि.* (तत्.) 1. क्षीण, दुबला, कमजोर 2. अल्प, थोड़ा।

क्षाम *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु का एक नाम 2. क्षय, नाश।

क्षामा *स्त्री.* (तत्.) पृथ्वी, धरती, भूमि।

क्षाम्य *वि.* (तत्.) क्षम्य, क्षमा किए जाने योग्य।

क्षार *पुं.* (तत्.) 1. खार, जवाखार 2. शोरा 3. सुहागा 4. भस्म, राख 5. काँच, शीशा 6. किसी वस्तु का सत या स्वरस 7. दाहक, विस्फोटक 9. खनिज द्रव्यों का रासायनिक विधि से बनाया हुआ नमक *वि.* (तत्.) 1. खारा 2. क्षरणशील 3. रिसने-बहने वाला, क्षरणशील।

क्षारक *पुं.* (तत्.) 1. क्षार, खार 2. सज्जी 3. कालिका 4. धोबी 5. जाल, चिड़ियों का पिंजड़ा 6. मछलियों को पकड़ने का खाँची या दौरी *वि.* दाहक, जलानेवाला।

क्षारगद *पुं.* (तत्.) आचार्य सुश्रुत के अनुसार एक औषध।

क्षारगुड़ *पुं.* (तत्.) 1. पांडु, प्लीहा 2. अर्श 3. शोथ 4. कफ आदि रोगों में दी जाने वाली औषधि।

क्षारगुण *पुं.* (तत्.) खारापन।

क्षारण *पुं.* (तत्.) 1. खार बनाना 2. टपकाना 3. पारे का पंद्रहवाँ संस्कार 4. अपवाद लगाना (विशेष कर व्यभिचार का) 5. तेजाब को प्रभावहीन करना।

क्षारदशक *पुं.* (तत्.) 1. सहिंजन 2. मूली 3. पलास 4. चूका शाक 5. चित्रक 6. अदरक 7. नीम 8. ईख 9. अपामार्ग 10. केले के क्षारों का समूह।

क्षारपत्र *पुं.* (तत्.) बथुआ नामक साग।

क्षारपाक *पुं.* (तत्.) मोरवा के पौधे से बना हुआ एक पाक जिसका प्रयोग फोड़ों का मवाद बहाने में होता है।

क्षारभूमि *स्त्री.* (तत्.) ऊसर जमीन।

क्षारमेह *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का प्रमेह रोग।

क्षारलवण *पुं.* (तत्.) खारा नमक।

क्षारवर्ग *पुं.* (तत्.) सज्जी खार, सोहागा और शोरा, इन तीनों का समूह, क्षारत्रय।

क्षाराक्ष *पुं.* (तत्.) काँच की बनी हुई नकली आँख *वि.* (तत्.) बनावटी आँख लगाने वाला।

क्षाराष्टक *पुं.* (तत्.) आयु. आठ प्रकार के क्षारों का समूह धव, अपामार्ग, कौरैया, तिल और मोरवा आदि। छह प्रकार के क्षारों का समूह (पलाश (ढाक) आक, जवाखार, सज्जी आदि का समूह)।

क्षारिकर *स्त्री.* (तत्.) भूख, बुभुक्षा।

क्षारित *वि.* (तत्.) 1. जिसका क्षरण हुआ हो 2. टपकाया हुआ 3. दूषित 4. जिस पर व्यभिचार का मिथ्या अपवाद लगाया गया हो।

क्षारोद *पुं.* (तत्.) खारा समुद्र, लवण समुद्र।

क्षारोदक *पुं.* (तत्.) दे. क्षारोद।

क्षारोदधि *पुं.* (तत्.) दे. क्षारोद।

क्षालन *पुं.* (तत्.) धोना, साफ करना, निर्मल करना।

क्षारीय *वि.* (तत्.) क्षार से संबंध रखने वाला।

क्षालित *वि.* (तत्.) धोया हुआ, साफ किया हुआ।

क्षित *वि.* (तत्.) 1. क्षीण, छीजा हुआ 2. नष्ट, ध्वस्त 3. दीन 4. दुर्बल किया हुआ।

क्षित *पुं.* (तत्.) 1. बध 2. आघात, प्रहार।

क्षिति *पुं.* (तत्.) 1. पृथ्वी 2. रहने का स्थान, जगह 3. क्षय 4. प्रलयकाल 5. एक की संख्या 6. पंचम स्वर की एक श्रुति जैसे- छलकती मुख की छवि-पुंजता। छिटकती क्षितिज तन की छटा। बगरती बर दीप्ति दिगंत में। क्षितिज में क्षणदा कर कांति सी।

क्षितिक्षम *पुं.* (तत्.) खैर का पेड़।

क्षिति *पुं.* (तत्.) पृथ्वी।

क्षितिज *पुं.* (तत्.) 1. वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिले हुए जान पड़ते हैं 2. दृष्टि सीमा 3. 3. मंगल ग्रह 4. नरकासुर 5. केंचुवा 6. वृक्ष, पेड़ उदा. तारागण नभ प्रांत क्षितिज छोर में चंद्र था। फैला कोमल ध्वांत, दीपक जलाकर बुझ गए -झरना)।

क्षितिजा *स्त्री.* (तत्.) पृथ्वी की कन्या, सीता।

क्षितितनय *पुं.* (तत्.) मंगल ग्रह।

क्षितितनया *स्त्री* (तत्.) सीता।

क्षितितल *पुं.* (तत्.) पृथ्वी तल, धरातल।

क्षितिदेव *पुं.* (तत्.) 1. ब्राह्मण 2. भूसुर।

क्षितिधर *पुं.* (तत्.) पर्वत, भूधर।

क्षितिपति *पुं.* (तत्.) राजा, भूपति।

क्षित्यदिति *स्त्री.* (तत्.) कृष्ण की माता देवकी।

क्षित्यधिप *पुं.* (तत्.) राजा, पृथ्वी का स्वामी।

क्षिद्र *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य 2. रोग 3. सींग।

क्षिप *वि.* (तत्.) 1. फैंकनेवाला 2. अपमान करने वाला 3. मारने वाला।

क्षिप *पुं.* (तत्.) फैंकने की क्रिया, झिड़कने का कार्य।

क्षिपक *पुं.* (तत्.) 1. तीरंदाज, योद्धा।

क्षिपण *पुं.* (तत्.) 1. फैंकना 2. भेजना 3. डालना 4. बिखराना 5. अभियोग लगाना 6. भर्त्सना करना।

क्षिपणि *स्त्री.* (तत्.) डाँड, चप्पू 2. जाल 3. हथियार 4. क्षेप्यास्त्र।

क्षिपणी *स्त्री.* (तत्.) चाबुक का प्रहार, कशाघात।

क्षिपण्यु *पुं.* (तत्.) 1. शरीर 2. बसंत ऋतु 3. सुवास, सुगंध।

क्षिपा *स्त्री.* (तत्.) 1. फैंकना 2. डालना 3. रात।

क्षिप्त *वि.* (तत्.) 1. फैंका हुआ 2. त्यागा हुआ 3. विकीर्ण 4. अवज्ञात 5. अपमानित 6. पतित 7. वात रोग से ग्रस्त 8. पागल, विक्षिप्त *पुं.* (तत्.) चित की पाँच वृत्तियों में से एक, जिसमें चित्त रजोगुण के द्वारा सदा अस्थिर रहता है।

क्षिप्ता *स्त्री.* (तत्.) रात्रि, रात।

क्षिप्र *क्रि वि.* (तत्.) शीघ्र, जल्दी, तत्क्षण, तुरंत *वि.* (तत्.) 1. तेज, जल्द 2. चंचल *पुं* (तत्.) 1. शरीर में अँगूठे और उँगली के बीच का स्थान 2. एक मुहूर्त का पंद्रहवाँ भाग।

क्षिप्रकर *वि.* (तत्.) कुशल, मुस्तैद, तेजी से काम करने वाला।

क्षिप्रचेता *वि.* (तत्.) सचेत, जागरूक, प्रत्युत्पन्नमति।

क्षिप्रमूत्र *पुं.* (तत्.) मूत्रेंद्रिय संबंधी एक प्रकार का रोग।

क्षिप्रश्येण *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का बाज पक्षी।

क्षिप्रहस्त *वि.* (तत्.) जिसका हाथ बहुत तेज चलता हो, जल्दी काम करने वाला कुशल *पुं.* (तत्.) अग्नि का एक नाम, एक राक्षस का नाम।

क्षिप्रहोम *पुं.* (तत्.) सायंकाल और प्रातकाल: का होम, जो जल्दी और संक्षिप्त होता है।

क्षिया *स्त्री.* (तत्.) 1. विनाश, बर्बादी 2. हानि 3. आचार का उल्लंघन 4. अनौचित्य 5. क्षय।

क्षीजन *पुं.* (तत्.) बाँस की सरसराहट।

क्षीण *वि.* (तत्.) 1. दुबला, पतला 2. सूक्ष्म 3. क्षयशील 4. घटा हुआ, जो काम हो गया हो, थोड़ा 5. मृत, समाप्त 6. निर्धन।

क्षीणकंठ *वि.* (तत्.) 1. कम आवाज में, धीमी आवाज में 2. जिसका गला सूख गया हो, सूखे गले वाला उदा. जरा क्षीण कंठ से मैंने अभिनय करते हुए कहा, हला, लज्जा तो तरुणियों का स्वाभाविक अलंकार है -बाणभट्ट की आत्मकथा।

क्षीणकाय *वि.* (तत्.) दुबले-पतले शरीर वाला, दुर्बल।

क्षीणचंद्र *पुं.* (तत्.) सात या इससे कम कलाओं वाला चंद्रमा।

क्षीणता *स्त्री.* (तत्.) 1. निर्बलता, कमजोरी, दुबलापन, पतलापन 2. सूक्ष्मता।

क्षीणपाप *वि.* (तत्.) जिसके पाप नष्ट हो गए हों।

क्षीणपुण्य *वि.* (तत्.) जो अपने सब पुण्य कर्मों का फल भोग चुका हो।

क्षीण प्रकृति *वि.* (तत्.) क्षुद्र या तुच्छ प्रकृति वाला, जिस (राजा) की प्रकृति के कारण प्रजा दीन-हीन हो गई हो या दरिद्र होती जाती हो।

क्षीणमध्य *वि.* (तत्.) पतली कमर वाला।

क्षीणविक्रांत *वि.* (तत्.) पौरुषहीन।

क्षीणवित्त *वि.* (तत्.) गरीब, कंगाल।

क्षीणवीर्य *वि.* (तत्.) शक्तिहीन, जिसका पराक्रम घट गया हो।

क्षीणवृत्ति *वि.* (तत्.) बेरोजगार, बेकार।

क्षीणसार *वि.* (तत्.) 1. सूखा, शुष्क 2. जिसका रस सूख गया हो, रसरहित, रसहीन 3. तत्वहीन।

क्षीणार्थ *वि.* (तत्.) निर्धन, जिसकी संपत्ति नष्ट हो गई हो।

क्षीबा *स्त्री.* (तत्.) 1. मदिरा पी हुई स्त्री 2. जो स्त्री स्त्री मदिरा पिए हुए मस्त हो उदा. अंतःपुर की परिचारिकाएँ ही नहीं कुसुमलताएँ भी क्षीबा बनी हुई थीं -बाणभट्ट की आत्मकथा।

क्षीयमाण *वि.* (तत्.) नाशवान, नित्य घटने या कम होने वाला, जो छीजता जाए।

क्षीर *पुं.* (तत्.) 1. दूध, पय 2. तरल पदार्थ 3. जल, पानी 4. बरगद, गूलर आदि वृक्षों से निकलने वाला दुग्ध रूप रस 5. सरल नामक वृक्ष का गोंद।

क्षीरकंठ *पुं.* (तत्.) दूध पीने वाला बच्चा, दुधमुँहा।

क्षीरकाकोली *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की जड़ी जो वीर्यवर्धक मानी जाती है।

क्षीरखर्जूर *पुं.* (तत्.) पिंड खजूर।

क्षीरघृत *पुं.* (तत्.) दूध मथकर निकाला हुआ मक्खन।

क्षीरज *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. शंख 3. कमल 4. दही 5. मोती 6. समुद्र मंथन से उद्भूत अमृत 7. शेषनाग 8. समुद्री नमक।

क्षीरजा *स्त्री.* (तत्.) लक्ष्मी।

क्षीरतुंबी *स्त्री.* (तत्.) लौकी, कद्दू।

क्षीरतैल *पुं.* (तत्.) वैद्यक में एक प्रकार का औषध औषध सिद्ध तेल।

क्षीरदल *पुं.* (तत्.) आक, मदार।

क्षीरद्रुम *पुं.* (तत्.) पीपल, अश्वत्थ।

क्षीरधात्री *स्त्री.* (तत्.) दूध पिलाने वाली धाय।

क्षीरधि *पुं.* (तत्.) समुद्र, क्षीर सागर, दुग्ध का समुद्र।

क्षीरधेनु *स्त्री.* (तत्.) दूध पिलाने या देने वाली गाय, दान के लिए घड़े आदि को स्थापित करके बनाई गई एक प्रकार की कल्पित गौ।

क्षीरनिधि *पुं.* (तत्.) समुद्र, क्षीरसागर।

क्षीरनीर *पुं.* (तत्.) 1. दूध और पानी 2. आलिंगन, गले लगाना 3. मिलन, मिल जाना।

क्षीरप *पुं.* (तत्.) दुधमुँहा बच्चा, शिशु।

क्षीरपर्णी *स्त्री.* (तत्.) मदार, आक।

क्षीरपलांडु *पुं.* (तत्.) सफेद प्याज।

क्षीरपुष्पी *स्त्री.* (तत्.) शंखपुष्पी।

क्षीरभृत *वि.* (तत्.) केवल दूध पर निर्भर रहने वाला (प्राणी) अपने वेतन के रूप में दूध लेने वाला चरवाहा।

क्षीरवृक्ष *पुं.* (तत्.) गूलर, महुआ, अश्वत्थ, खिरनी, वह वृक्ष जिससे दूध निकले।

क्षीरव्रत *पुं.* (तत्.) केवल दूध पीकर रहने का व्रत।

क्षीरस *पुं.* (तत्.) दूध, दही आदि की मलाई।

क्षीरसागर *पुं.* (तत्.) पुराण में वर्णित सात समुद्रों में से एक।

क्षीरसार *पुं.* (तत्.) नवनीत, मक्खन।

क्षीरा *स्त्री.* (तत्.) काकोली नामक जड़ी।

क्षीराब्धि *पुं.* (तत्.) क्षीरसागर, दूध का समुद्र।

क्षीरिक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का साँप।

क्षीरिका *स्त्री.* (तत्.) 1. पिंड खजूर, वंशलोचन 2. दूध से बना खाद्य पदार्थ।

क्षीरिणी *स्त्री.* (तत्.) 1. क्षीरकाकोली 2. खिरीन, दुद् दुद्धी नामक लता 3. वराहक्रांता।

क्षीरी *वि.* (तत्.) दूध देने वाला, जिससे दूध निकले।

क्षीरोद *पुं.* (तत्.) क्षीर समुद्र, क्षीरसागर।

क्षीरोद तनय *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

क्षीरोद तनया *स्त्री.* (तत्.) लक्ष्मी।

क्षीरोदधि *पुं.* (तत्.) क्षीरसागर।

क्षीरौदन *पुं.* (तत्.) दूध में पका हुआ चावल, खीर।

क्षीव *पुं.* (तत्.) उन्मत्त, मतवाला, उत्तेजित, मत्त।

क्षुण *पुं.* (तत्.) रीठा।

क्षुणी *स्त्री.* (तत्.) धरती, भूमि, पृथ्वी।

क्षुण्ण *वि.* (तत्.) 1. चूर किया हुआ, पिसा हुआ, खंडित दलित 2. पराजित 3. अभ्यस्त।

क्षुण्णक *पुं.* (तत्.) अंत्येष्टि के समय बजाया जाने वाला एक ढोल।

क्षुत *स्त्री.* (तत्.) 1. छींक 2. भूख, क्षुधा।

क्षुतक *पुं.* (तत्.) काली सरसों या राई।

क्षुतपिपासा *स्त्री.* (तत्.) भूख-प्यास।

क्षुति *स्त्री.* (तत्.) छींकने की क्रिया, छींक।

क्षुद *पुं.* (तत्.) आटा, मैदा, पिसा हुआ गोधूम का चूर्ण।

क्षुद्र *वि.* (तत्.) 1. छोटा 2. नीच, अधम, पापी 3. कंजूस 4. अल्प 5. खोटा 6. दरिद्र, निर्धन *पुं.* (तत्.) 1. चावल का कण 2. मधुमक्खी या बर्र उदा. 'हृदय ही तुम्हें दान कर दिया क्षुद्र था, उसने गर्व किया' -झरना।

क्षुद्रक *पुं.* (तत्.) 1. तोला 2. क्षुद्र व्यक्ति 3. एक प्रकार का बाण 4. एक परिमाण 6. पंजाब के अंतर्गत एक प्राचीन जनपद।

क्षुद्र कुलिश *पुं.* (तत्.) वैक्रांतमणि, एक बहुमूल्य पत्थर।

क्षुद्र घंटिका *स्त्री.* (तत्.) घूंघरूदार करधनी, प्राचीन घुँघरूदार आभूषण जो कमर में पहना जाता था।

क्षुद्र चंचु *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का झाड़।

क्षुद्रता *स्त्री.* (तत्.) नीचता, कमीनापना, ओछापन।

क्षुद्रपति *पुं.* (तत्.) कुबेर।

क्षुद्रपद *पुं.* (तत्.) दस अंगुल के बराबर लंबाई की नाप।

क्षुद्र प्रकृति *वि.* (तत्.) खोटे तथा ओछे स्वभाववाला, ओछा, खोटा।

क्षुद्र बुद्धि *वि.* (तत्.) ओछे विचार वाला, छोटी या तुच्छबुद्धि वाला, मूर्ख, नासमझ।

क्षुद्रम *पुं.* (तत्.) धातु आदि तौलने के लिए छह मासे की एक तौल, छदाम।

क्षुद्र रोग *पुं.* (तत्.) छोटे रोग।

क्षुद्र शार्दूल *पुं.* (तत्.) चीता।

क्षुद्र शीर्ष *पुं.* (तत्.) मयूरशिखा वृक्ष।

क्षुद्र श्वास *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का श्वासरोग।

क्षुद्र स्वर्ण *पुं.* (तत्.) पीतल।

क्षुद्रांजन *पुं.* (तत्.) आँवले आदि के योग से बनाया हुआ एक प्रकार का अंजन।

क्षुद्रांत्र *पुं.* (तत्.) हृदय के पास की एक छोटी नाड़ी।

क्षुद्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. निम्न विचारों वाली स्त्री 2. कुलटा, वेश्या 3. मक्खी 4. मधुमक्खी 5. विकलांग स्त्री 6. अमलोनी 7. जटामासी 8. प्राचीन समय की छोटी नाव 8. नृत्यांगना 9. कंटकारी 10. हिचकी।

क्षुद्राग्निमंथ *पुं.* (तत्.) छोटी मनियारी।

क्षुद्रात्मा *वि.* (तत्.) नीच, हीन विचार वाला।

क्षुद्राशय *वि.* (तत्.) नीच प्रकृति वाला, कमीना, नीच, 'महाशय' का विलोम।

क्षुद्रिका *स्त्री.* (तत्.) छोटी घंटी, डाँस।

क्षुद्रुल *वि.* (तत्.) 1. बहुत ही छोटा या तुच्छ 2. परम हीन।

क्षुधा *स्त्री.* (तत्.) 1. भूख 2. किसी चीज की विशेष आवश्यकता 3. अतृप्ति।

क्षुधाक्षीण *वि.* (तत्.) भूख से दुर्बल, अनाहार से सूखा हुआ।

क्षुधातुर *वि.* (तत्.) भूखा, जिसे भूख लगी हो, भूख से पीड़ित।

क्षुधानिवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) भूख की शांति, पेट भरना।

क्षुधार्त *वि.* (तत्.) भूख से कातर, भूखा, भूख से पीडित।

क्षुधालु *वि.* (तत्.) जिसे सदैव भूख लगी रहती हो, भुक्खड़, पेटू।

क्षुधावंत *वि.* (तत्.) भूखा, क्षुधा से पीड़ित।

क्षुधित *वि.* (तत्.) भूखा, जिसे भूख लगी हो, बुभुक्षित।

क्षुप *पुं.* (तत्.) 1. छोटे तने, डालियों वाला पेड़ 2. झाड़ 3. इक्ष्वाकु के पिता 4. कृष्ण का एक पुत्र।

क्षुपक *पुं.* (तत्.) झाड़ी, गुल्म।

क्षुब्ध *वि.* (तत्.) 1. क्षोभयुक्त, उत्तेजित, अशांत, व्याकुल 2. भयभीत, डरा हुआ 3. कुपित, क्रुद्ध *पुं.* (तत्.) 1. मथानी की डंडी 2. एक प्रकार का रतिबंध या कामशास्त्र की क्रिया।

क्षुभ *वि.* (तत्.) 1. उत्तेजित करने वाला 2. प्रवर्तक।

क्षुभा *स्त्री.* (तत्.) 1. एक तरह का हथियार, एक प्रकार के सूर्य के परिषद् देवता।

क्षुमा *स्त्री.* (तत्.) 1. रेशेदार पौधा-अलसी, पटसन, आदि 2. बाण।

क्षुभित *वि.* (तत्.) 1. अशांत 2. क्रुद्ध, क्षुब्ध 3. भीत।

क्षुर *पुं.* (तत्.) 1. क्षुरा, उस्तरा 2. बाण की या छुरे की धार जैसी गाँसी 3. खुर 4. गोबर 5. चारपाई का पावा।

क्षुरधार *पुं.* (तत्.) 1. छुरे की धार जैसे पत्तों वाला (वृक्ष) 2. क्षार नामक बाण 3. छुरे की धार जैसा पैना पत्ता *वि.* छुरे की जैसी धार वाला।

क्षुरपत्र *वि.* (तत्.) छूरे की धार जैसे पत्तों वाला।

क्षुरिका *स्त्री.* (तत्.) 1. छुरी, चाकू 2. पालक नामक साग 3. एक प्रकार की मिट्टी का पात्र 4. एक यजुर्वेदीय उपनिषद का नाम।

क्षुरिणी *स्त्री.* (तत्.) नाइन, नाई जाती की स्त्री।

क्षुरी *स्त्री.* (तत्.) छोटा, थोड़ा, अल्प।

क्षुल्लक *वि.* (तत्.) 1. क्षुद्र, छोटा, थोड़ा 2. कुटिल, नीच 3. पीड़ित 4. कठिन *पुं.* क्षुद्र शंख।

क्षुव *पुं.* (तत्.) 1. छींक 2. खाँसी।

क्षेत्र *पुं.* (तत्.) 1. खेत, समतल भूमि, उत्पत्ति स्थान 2. घर नगर, प्रदेश जैसे- हरिहर क्षेत्र, कुरुक्षेत्र, पुण्यक्षेत्र, तीर्थ क्षेत्र 3. राशि (मेष, वृष आदि) 4. शरीर, बंदन 5. अंतःकरण 6. वह स्थान जो रेखाओं से घिरा हो 7. पाँचों ज्ञानेंद्रियों, कर्मेंद्रियों, शब्द स्पर्श, मन, इच्छा, द्वेष, सुख, दुख, संस्कार, चेतनता और धृति आदि का समाहार 8. बाड़ा, घेरा 9. रेखाचित्र 10. अन्न क्षेत्र।

क्षेत्रकर *पुं.* (तत्.) किसान, खेतिहर।

क्षेत्रकर्षक *पुं.* (तत्.) किसान, खेतिहर।

क्षेत्रगणित *पुं.* (तत्.) गणित विद्या की वह शाखा, जिसमें क्षेत्रों (खेतों) के नापने और उनके क्षेत्रफल निकालने की विधि का वर्णन रहता है geometry

क्षेत्रज *वि.* (तत्.) 1. खेत में उपजा हुआ 2. शरीर से उत्पन्न 3. धर्मशास्त्र के अनुसार विधिवत् नियुक्त पुरुष से उत्पन्न पुरुष 4. बारह प्रकार के पुत्रों में से एक।

क्षेत्रजा *स्त्री.* (तत्.) 1. सफेद कंटकारी 2. ककड़ी 3. गोमूत्रिका 5. शिप्पिका।

क्षेत्रज्ञ *पुं.* (तत्.) 1. जीवात्मा 2. शरीर का अधिष्ठाता 3. परमात्मा 4. किसान, खेतिहर 5. साक्षी 6. अंतर्यामी 6. बटुकभैरव का भेद *वि.* (तत्.) ज्ञानी, दक्ष, ज्ञाता, जानकार।

क्षेत्रपति *पुं.* (तत्.) 1. जमीन का मालिक 2. खेत का रखवाला, काश्तकार 3. जीवात्मा 4. परमात्मा।

क्षेत्रपाल *पुं.* (तत्.) 1. खेत का रखवाला, क्षेत्र-रक्षक 2. द्वारपाल 3. भैरव का एक भेद 4. किसी स्थान का प्रधान प्रबंधकर्ता 5. स्वयंभू 6. भूमिया।

क्षेत्रफल *पुं.* (तत्.) किसी क्षेत्र या आकृति के पृष्ठीय विस्तार का माप या परिमाण जो प्रायः उसकी लंबाई और चौड़ाई के गुणन से जाना जाता है।

क्षेत्ररक्षक *पुं.* (तत्.) क्रिकेट, बेसबाल आदि के खेल में क्षेत्ररक्षण का कार्य करने वाला खिलाड़ी।

क्षेत्रविद् *वि.* (तत्.) जिसे किसी इलाके या क्षेत्र के स्थानों और मार्गों का पूरा ज्ञान हो।

क्षेत्रहिंसा *स्त्री.* (तत्.) खेत को हानि पहुँचाना।

क्षेत्राजीव [क्षेत्र+आजीव] *पुं.* (तत्.) किसान, खेती करने वाला, खेती से जीविका चलाने वाला।

क्षेत्राधिकार *पुं.* (तत्.) किसी विशेष क्षेत्र या विशेष प्रकार के मुकदमें सुनने का अधिकार। jurisdiction

क्षेत्राधिप *पुं.* (तत्.) खेत का मालिक, ज्योतिष के अनुसार किसी राशि का स्वामी।

क्षेत्रानुगत *वि.* (तत्.) घाट या बंदरगाह पर लगा हुआ (जहाज)।

क्षेत्राधिदेवता *पुं.* (तत्.) क्षेत्र या सिद्ध स्थान विशेष का अधिष्ठाता देवता।

क्षेत्राभिरक्षक *पुं.* (तत्.) नागरिक संगठन का वह अधिकारी जो हवाई हमले के समय क्षेत्र विशेष के नागरिकों की रक्षा के काम में सहायता करे।

क्षेत्रिक *वि.* (तत्.) खेत से संबंध रखनेवाला *पुं.* किसान।

क्षेत्रिय *वि.* (तत्.) 1. खेत संबंधी 2. खेत में उपजा हुआ *पुं.* असाध्य रोग 2. चरागाह 3. पर स्त्री से संबंध रखनेवाला पुरूष।

क्षेत्री *वि.* (तत्.) 1. खेत का मालिक, स्वामी *पुं.* 1. असाध्य रोग 2. आत्मा 3. परमात्मा 4. नाम मात्र का पति।

क्षेद *पुं.* (तत्.) रोना, धोना, शोक करना।

क्षेप *पुं.* (तत्.) 1. फेंकने तथा उछालने का कार्य 2. भेजना, गिराना 3. हिलाना 4. बिताना 5. आघात 6. विलंब 7. निंदा 8. अपमान 9. आक्षेप 10. दर्प 11. लेपन 12. पुष्पगुच्छ 13. नाव की डाँड खेना।

क्षेपक *वि.* (तत्.) 1. फेंकने वाला 2. मिलाया हुआ, मिश्रित 3. निंदनीय, अपमानजनक *पुं.* (तत्.) 1. केवट, मल्लाह 2. कर्णधार 3. पुस्तकादि में पीछे से मिलाया हुआ अंश।

क्षेपण *पुं.* (तत्.) 1. फेंकना, गिरना 2. बिताना, गुजरना 3. अपवाद, निंदा 4. आक्षेप करना 5. फेंकने का साधन (गोफन, ढेलवांस आदि)।

क्षेपणि *स्त्री.* (तत्.) 1. चप्पू, डांड 2. मछली पकड़ने का जाल 3. गोफन 4. गुलेल।

क्षेपणिक *पुं.* (तत्.) 1. मल्लाह, केवट, नाव या जहाज चलाने वाला 2. नाविक।

क्षेपणीय *वि.* (तत्.) फेंकने योग्य, जो फेंका जा सके (ढेला आदि)।

क्षेप्ता *वि.* (तत्.) 1. फेंकनेवाला, क्षेपण करने वाला वाला 2. तिरस्कार करने वाला।

क्षेप्य *वि.* (तत्.) 1. फेंकने योग्य 2. नष्ट करने योग्य 3. रखने योग्य, भीतर रखने योग्य 4. जोड़ने योग्य।

क्षेप्यास्त्र *पुं.* (तत्.) अस्त्र जो मंत्र की सहायता से बहुत दूर तक प्रेषित किया जा सके, मिसाइल।

क्षेमंकर *वि.* (तत्.) शुभ या मंगल करने वाला, हितावह, कल्याणकर।

क्षेमंकरी *स्त्री.* (तत्.) 1. एक प्रकार की चील, जिसका गला सफेद होता है 2. एक देवी का नाम।

क्षेम *पुं.* (तत्.) 1. कुशल, मंगल, कल्याण 2. सुरक्षा, प्राप्त वस्तु की रक्षा 3. अभ्युदय 4. सुख, आनंद 5. मुक्ति 6. फलित ज्योतिष के अनुसार जन्म के नक्षत्र से चौथा नक्षत्र 7. विश्राम का स्थान 8. समृद्ध *वि.* (तत्.) 1. सुखी, आनंदयुक्त 2. कल्याणकर 3. सुरक्षित 4. श्रेयस्कर।

क्षेमक *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का गंध द्रव्य 2. लक्षद्वीप का एक खंड 3. शिव का एक अनुचर 4. एक राक्षस का नाम 5. परीक्षित का अंतिम वचन।

क्षेमकर्ण *पुं.* (तत्.) अर्जुन के पौत्र का नाम, जो जनमेजय का सखा था।

क्षेत्रकल्याण *पुं.* (तत्.) हम्मीर और कल्याण के योग से बना हुआ एक संकर राग, एक संगीत।

क्षेमकारी *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा का एक रूप।

क्षेमफला *स्त्री.* (तत्.) गूलर, उदुंबर।

क्षेमरात्रि *स्त्री.* (तत्.) वह रात जिसमें चोरी, हत्या आदि न हुई हो (कौटिल्य)।

क्षेमवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) वर्तमान स्थिति, व्यवस्था बनाए रखने का भाव, परिवर्तन-भीरूता।

क्षेमा *स्त्री.* (तत्.) 1. कात्ययिनी का एक नाम 2. एक अप्सरा 3. दुर्गा।

क्षेमासन *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का आसन, तंत्र के अनुसार इस आसन में दाहिने हाथ पर दाहिना पैर रखकर बैठते हैं। इस आसन से उपासना करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

क्षेमी *वि.* (तत्.) 1. क्षेमयुक्त, सुरक्षित, निरापद 2. क्षेम चाहने वाला 3. मंगलकारक, शुभदायक, कुशल चाहने वाला।

क्षेमेंद्र *पुं.* (तत्.) संस्कृत के एक प्रसिद्ध कश्मीरी साहित्यकार।

क्षेम्य *पुं.* (तत्.) 1. शिव 2. विश्राम *वि.* (तत्.) 1. शांतिदायक 2. कल्याणकर, हितकर 3. स्वास्थ्यकर 4. भाग्यवान 5. मंगलदायक।

क्षेम्या *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा।

क्षेय *वि.* (तत्.) क्षय, नाश करने योग्य।

क्षैण्य *पुं.* (तत्.) क्षीणता, दुबलापन, क्षय।

क्षैत्र *पुं.* (तत्.) क्षीणता, दुबलापन, क्षय।

क्षैत्र *पुं.* (तत्.) क्षेत्र-समूह, खेतों का समूह, खेत।

क्षैत्रज्ञ *पुं.* (तत्.) आत्मज्ञानी, तत्वज्ञानी।

क्षैप्र *पुं.* (तत्.) 1. क्षिप्रता, त्वरा, श्री, धृता 2. व्याकरण में एक प्रकार की स्वरसंधि।

क्षैरेय *वि.* (तत्.) दूध से बना हुआ।

क्षोड़ *पुं.* (तत्.) हाथी बाँधने का खूँटा, आलान।

क्षोणि *स्त्री.* (तत्.) 1. पृथ्वी 2. एक की संख्या प्रर्या. अचला, इड़ा, इला, उर्वरा, उर्वी, धरणि, महि, मेदिनी, रत्नगर्भा, वसुधा, वसुंधरा, वसुमती, मुद्रवसना।

क्षोणिदेव *पुं.* (तत्.) 1. ब्राह्मण 2. भूसुर।

क्षोणिय *पुं.* (तत्.) राजा, भूपाल।

क्षोणिपति *पुं.* (तत्.) दे. क्षोणिय।

क्षोणिपाल *पुं.* (तत्.) दे. क्षोणिय।

क्षोणिरूह *पुं.* (तत्.) वृक्ष।

क्षोद *पुं.* (तत्.) 1. चूर्ण 2. धूल 3. चूर-चूर करना, पीसना 4. सिल या पत्थर जिसपर चूर्ण पीसा जाए, जल, पानी।

क्षोदक्षम *वि.* (तत्.) परीक्षा में टिका रहने वाला, जो कसौटी पर खरा उतरे।

क्षोदित *वि.* (तत्.) पीसा हुआ, चूर किया हुआ।

क्षोदित *पुं.* (तत्.) 1. आटा, चूर्ण 2. धूल 3. कोई पिसी हुई चीज।

क्षोदिमा *स्त्री.* (तत्.) 1. तुच्छता, लघुता 2. सूक्ष्मता, बारीकी 3. अल्पता, न्यूनता।

क्षोभ *पुं.* (तत्.) 1. व्याकुलता 2. भय, डर 3. शोक 4. रोष 5. असंतोष 6. हलचल, खलबली *वि.* (तत्.) क्षुब्ध, क्षुभित, रोषयुक्त उदा. उस समय मुझे अपने अनधिकार प्रवेश पर बड़ा क्षोभ हुआ -बाणभट्ट की आत्मकथा।

क्षोभक *पुं.* (तत्.) कामाख्या का एक पहाड़ *वि.* (तत्.) क्षुब्ध करने वाला, क्षोभकारी।

क्षोभण *वि.* (तत्.) क्षोभित करने वाला, क्षोभकारी *पुं* (तत्.) 1. कामदेव का एक बाण 2. विष्णु 3. शिव।

क्षोभना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. व्याकुल होना 2. क्षुब्ध होना।

क्षोभ सीमा *स्त्री.* (तत्.) वायु मंडल में लगभग 6 से 10 मील की ऊँचाई पर स्थित वायु की एक पतली तह जो नीचे के क्षोभमंडल को ऊपर के समताप मंडल से अलग करती है।

क्षोभिणि *स्त्री.* (तत्.) संगीत में निषाद स्वर की दो दो श्रुतियों में से अंतिम श्रुति।

क्षोभित *वि.* (तत्.) 1. घबराया हुआ, व्याकुल, विचलित 2. चलायमान 3. डरा हुआ, भयभीत 4. क्रुद्ध।

क्षोभी *वि.* (तत्.) 1. उद्वेगशील, व्याकुल 2. चंचल।

क्षौ *पुं.* (तत्.) दे. क्षौम।

क्षौणी *स्त्री.* (तत्.) 1. पृथ्वी 2. एक की संख्या।

क्षौणीपति *पुं.* (तत्.) भूपति, राजा।

क्षौणी प्राचीर *पुं.* (तत्.) समुद्र।

क्षौणीधर *पुं.* (तत्.) पर्वत, पहाड़।

क्षौत्र *पुं.* (तत्.) सान, छूरे, चाकू आदि की धार तेज करने का यंत्र।

क्षौद्र *पुं.* (तत्.) 1. क्षुद्रता 2. चंपा का पेड़ 2. छोटी मक्खी का शहद 4. जल 5. धूल 6. एक संकर जाति।

क्षौद्रक *पुं.* (तत्.) शहद, मधु।

क्षौद्रज *पुं.* (तत्.) क्षुद्रा मक्खी का शहद।

क्षोद्रमेह *पुं.* (तत्.) मधुमेह का रोग।

क्षौद्रेय *पुं.* (तत्.) मोम।

क्षौम *पुं.* (तत्.) अलसी सन आदि के रेशे से बुना हुआ कपड़ा, वस्त्र, घर या अटारी के ऊपर का कमरा, अलसी।

क्षौर *पुं.* (तत्.) केश कर्तन, हजामत।

क्षौरकर्म *पुं.* (तत्.) बाल बनवाना, दाढ़ी बनवाना।

क्षौरिक *पुं.* (तत्.) नाई, हज्जाम।

क्षौरालय *पुं.* (तत्.) बाल बनवाने की दुकान।

क्ष्वेड *पुं.* (तत्.) 1. शब्द या ध्वनि 2. विष, जहर 3. मन का एक रोग, जिसमें सनसनाहट सुनाई पड़ती है 4. चिकनाई 5. त्याग *वि.* (तत्.) कुटिल, नीच, छिछोरा, कपटी।

क्ष्वेडा *स्त्री.* (तत्.) 1. बाँस 2. युद्ध की ललकार 3. 3. सिंहनाद, युद्ध करना।

क्ष्वेला *स्त्री.* (तत्.) 1. क्रीड़ा, खेल 2. हंसी मजाक।

ख

देवनागरी वर्णमाला में कवर्ग का दूसरा महाप्राण अक्षर

खं *पुं.* (तत्.) 1. शून्य स्थान, खाली जगह 2. बिल, छिद्र 3. आकाश 4. इंद्रिय 5. बिंदु 6. शून्य, सिफर 7. स्वर्ग, देवलोक 8. सुख 9. कर्म 10. कुंडली में जन्म लग्न से दसवाँ स्थान 11. ब्रह्मा 12. अभ्रक 13. मोक्ष, निर्वाण।

खंक *वि.* (तद्.) 1. दुर्बल, बलहीन 2. छूंछा, रिक्त, खाली, निर्धन, उजाड़।

खंकर *पुं.* (तत्.) 1. अलक, बालों की लट 2. घूंघर।

खंख *वि.* (तद्.) 1. छूछा, खाली 2. उजाड़ 3. वीरान, कंगाल, धनहीन।

खंखणा *स्त्री.* (तद्.) 1. घुँघरू, घंटी, नूपुर आदि की की ध्वनि 2. खनन-खनन की ध्वनी करने वाली वस्तु।

खंखर *वि.* (तद्.) 1. मुरझाया हुआ , दुर्बल, क्षीण 2. सूखने के कारण कड़ा।

खंखर *पुं.* (तद्.) पलाश का वृक्ष, खखरा या खकरा।

खंग *पुं.* (तद्.) 1. तलवार 2. घाव, चीरा।

खंगड़ *पुं.* (तद्.) 1. उग्र व्यक्ति 2. उजड्ड आदमी।

खंगड़ *वि.* (तद्.) 1.मुरझाया हुआ 2. दुर्बल, क्षीण 3. शुष्क 4. निष्क्रिय 5. सूखने के कारण कड़ा।

खंगनखार *पुं.* (तद्.) एक पौधा जिसे जलाकर सज्जी खार तैयार किया जाता है।

खंगर *पुं.* (देश.) अधिक पकने के कारण परस्पर सटी हुई कई ईटों का चक 2. ऐसे कंकड़ जो आकार में बड़े पर वजन में कम होते हैं।

खंगर *वि.* (तद्.) 1. बहुत रूखा, शुष्क 2. क्षीण मुहा. खंगर लगना-सुखंडी रोग होना, दुर्बलता का रोग होना।

खंगालना *स.क्रि* (देश.) 1. मँजे-धुले बर्तन को पूरी सफाई के लिए फिर से धोना 2. सब कुछ उठा ले जाना 3. साफ करना 4. खाली करना 5. झाड़ू फेर देना।

खंगुवा *पुं.* (देश.) गैंडे का सींग।

खंज *पुं.* (तद्.) खंजन पक्षी *वि.* (तत्.) लंगड़ा, पंगु।

खंजक *पुं.* (देश.) पिस्ते की जाति का एक पेड़।

खंजक *वि.* (तत्.) लंगड़ा, पंगु।

खंजड़ी *स्त्री.* (देश.) डफली के ढंग का आकार में उससे छोटा एक बाजा।

खंजन *पुं.* (तत्.) 1. काले या मटमैले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी, खडरिच।

खंजनक *पुं.* (तत्.) दे. खंजन।

खंजना *स्त्री.* (तत्.) खंजन के सदृश एक पक्षी, सरसों।

खंजनाकृति *स्त्री.* (तत्.) खंजन के आकार का एक पक्षी।

खंजनासन *पुं.* (तत्.) तंत्र के अनुसार एक प्रकार का आसन, इस आसन से उपासना करने पर विजय लाभ होता है।

खंजनिका *स्त्री.* (तत्.) खंजन के आकार की एक चिड़िया जो प्राय: दलदलों में रहती है, सर्षपी।

खंजर *पुं.* (अर.) 1. कटार, कटारी, बड़ा छुरा 2. भुजाली मुहा. खंजन तेज करना- मार डालने के लिए उद्यत होना।

खंजरीटक *पुं.* (तत्.) 1. खंजन पक्षी 2. एक ताल।

खंजा *वि.* (तत्.) 1. खंज 2. लंगडा। *स्त्री* (तत्.) एक अर्धसम वर्णिक छंद जिसके समवृत्तों में से एक वृत्त जिसमें विषम पदों में 30 लघु और अंत में एक गुरु तथा सम पदों में 28 लघु और अंत में एक गुरु होता है उदा. नरधन जग मैह

नित उठ मनपति कर जस बरनत अति हित सौ। तन मन धन सन जतर रहत तिहिं भजन करत भल अति चित सौं। किमि अरसत मन भजत न किमि तिहिं भज भज भज भज शिव धरि चित हीं। हर हर हर हर हर हर हर हर हर हर हर कह नितहीं।

खंड *पुं.* (तत्.) 1. भाग, टुकड़ा, हिस्सा, ग्रंथ का भाग या अंश 2. मकान की मंजिल 3. देश 4. समूह 5. समीकरण की एक क्रिया 6. खांड, चीनी 7. काला नमक 8. रत्न का एक दोष 9. प्रदेश *वि.* (तत्.) 1. खंडित 2. छोटा, लघु, विकलांग 4. दोषयुक्त।

खंडकंद *पुं.* (तत्.) शंकरकंद, खंडकर्ण।

खंडक *पुं.* (तत्.) 1. खंड, भाग, टुकड़ा 2. शर्करा, चीनी, मिसरी 3. वह प्राणी जिसके नाखून न हो *वि.* (तत्.) 1. खंडन करने वाला, मत या विचार को काटने वाला 2. विभाग करने वाला, टुकड़ों में विभक्त करने वाला 3. दूर करने या हटाने वाला।

खंडकथा *स्त्री.* (तत्.) कथा का एक भेद, लघु कथा, कथा, छोटी कथा, उपन्यास का भेद।

खंडकर्ण *पुं.* (तत्.) शकरकंद, एक प्रकार का कंठदार पौधा।

खंडकाव्य *पुं.* (तत्.) 1. छोटा काव्य 2. वह काव्य जिसमें महाकाव्य के पूरे लक्षण न हो जैसे-कालिदास द्वारा रचित 'मेघदूत' एक खंडकाव्य है। है।

खंडचाल *स्त्री.* (देश.) चूना, सुर्खी आदि से खंड या टुकड़े अलग कर देने की जाली।

खंडज *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की शर्करा, गुड़, भेली।

खंडताल *पुं.* (तत्.) संगीत में एक ताल नामक ताल, जिसमें केवल एक द्रुत होता है।

खंडधारा *स्त्री.* (तत्.) कतरनी, कैंची।

खंडन *पुं.* (तत्.) 1. काटना, तोड़ना 2. नाश करना 3. हानि करना 4. निराश करना 5. बाधक होना 6. धोखा देना 7. विद्रोह, विरोध करना 8. बर्खास्त करना 9. किसी बात को गलत बताना 10. दूसरे के मत का युक्तिपूर्वक निराकरण करना, विलोम मंडन।

खंडनकार *पुं.* (तत्.) 'खण्डन खण्ड खाद्य' नामक संस्कृत दर्शन ग्रंथ के प्रणेता श्री हर्ष।

खंडन मंडन *पुं.* (तत्.) वाद विवाद, खंडन और मंडन, पक्ष-विपक्ष में तर्क देना, बहस, विवाद।

खंडन रत *वि.* (तत्.) ध्वंस कार्य में निपुण।

खंडना *स.क्रि.* (तद्.) 1. खंडन करना, तोड़ना 2. निराकरण करना 3. टुकड़े-टुकड़े करना 4. किसी बात को अनुपयुक्त ठहराना 5. उल्लंघन करना, न मानना।

खंडनी *स्त्री.* (तद्.) माल गुजारी की किश्त, कर।

खंडनीय *वि.* (तत्.) 1. खंडन करने योग्य, तोड़ने फोड़ने लायक, जिसका खंडन न हो सके 2. निराकरण के योग्य 3. जिसे अनुचित ठहराया जा सके।

खंडपति *पुं.* (तत्.) राजा।

खंडपरशु *पुं.* (तत्.) 1. महादेव, शिव 2. विष्णु 3. परशुराम 4. राहु 5. वह हाथी जिसके दाँत टूटे हों।

खंडपर्शु *पुं.* (तत्.) दे. खंडपरशु।

खंडपाल *पुं.* (तत्.) मिठाई बनाने और बेचने वाला, हलवाई।

खंडपीठ *पुं.* (तत्.) उच्च न्यायालय की शाखा, बैंच।

खंडप्रलय *पुं.* (तद्.) 1. वह प्रलय जो चतुर्युगी या ब्रह्मा का एक दिन बीत जाने पर होती है 2. संघर्ष, झगड़ा, लड़ाई।

खंड प्रस्तार *पुं.* (तत्.) संगीत में एक प्रकार का ताल।

खंडमोदक *पुं.* (तत्.) गुड़, एक प्रकार की शक्कर।

खंडर *पुं.* (तद्.) मिठाई, खांड से बनी वस्तु।

ख़त *पुं.* (अर.) 1. लकीर, रेखा 2. पत्र, चिट्ठी 3. मूँछ, दाढ़ी 4. लेख, तहरीर 5. परवाना राजादेश 6. चिह्न, निशान।

ख़तकश *पुं.* (फा.) वह आला जिससे बढ़ई चीरने के लिए लकड़ी पर निशान लगाते है।

ख़त किताबत *पुं.* (अर.) पत्र, व्यवहार, चिट्ठी पत्री प्रयो. अधिकांश शिक्षितों के खत किताबत में भी फारसी का प्रयोग हुआ है।

खतना *पुं.* (अर.) मुसलमान बच्चे के लिंग के अगले हिस्से की त्वचा काट देने की रस्म या संस्कार, सुन्नत।

ख़तम *वि.* (अर.) दे. खत्म, मरा हुआ।

ख़तमी *स्त्री.* (अर.) गुलखैरू जाति का एक पौधा जिसकी जड़ और बीज दवा के काम आते हैं।

ख़तरनाक *वि.* (फा.) 1. खतरे से युक्त, भयंकर 2. भयजनक, डरावना।

ख़तरा *पुं.* (अर.) 1. डर, भय 2. आशंका, जोखिम जैसे- हथियार अधिक जमा करने से युद्ध का खतरा बढ़ जाता है।

खतरानी *स्त्री.* (तद्.) खत्री जाति की स्त्री, खेत्राणी।

खतरेटा *पुं.* (देश.) खत्री, खत्री का बेटा।

खता *पुं.* (देश.) 1. खत, घाव 2. किसी काम को रोक देना-फल देना *स्त्री.* (अर.) 1. कुसूर 2. अपराध 3. धोखा, फरेब 4. भूल, चूक, गलती मुहा. खता खाना- धोखे में पड़ना; खता होना- गलती करना/चूकना *पुं.* (फा.) चीन देश का एक प्रदेश।

खताकार *वि.* (फा.) 1. दोषी, मुजरिम 2. पापी, गुनहगर, पातकी।

खतावार *वि.* (अर.) 1. दोषी 2. अपराधी।

खतिया *स्त्री.* (देश.) छोटा गड्ढा।

खतियाना *क्रि.स.* (देश.) खाते में चढ़ाना, लिखना।

खतियौनी/खतौनी *स्त्री.* (देश.) पटवारी का वह कागज जिसमें प्रत्येक आसामी (भूमिपति) का रकबा और लगान आदि दर्ज हो।

खतीब *वि.* (अर.) खुतबा पढ़ने वाला, धर्मोपदेशक, वक्ता।

खतौनी *स्त्री.* (देश.) दे. खतियौनी।

खत्ता *पुं.* (तद्.) गड्ढा, अन्न रखने का स्थान।

खत्म *पुं.* (अर.) 1. अंत, समाप्ति 2. पूरा होना, पूर्ण मुहा. खत्म करना- मार डालना; खत्म होना- मर जाना, प्राण निकल जाना।

खत्री *पुं.* (तद्.) हिंदुओं की एक क्षत्रिय जाति जो अधिकतर पंजाब में बसती है और प्रायः व्यापार करती है।

खदखदाना *अ.क्रि* (अनु.) दे. खदबदाना।

खदबद *स्त्री.* (अनु.) खदखद या बदबद शब्द जो प्रायः किसी तरल या गाढ़े पदार्थ को खौलाने से उत्पन्न होता है।

खदबदाना *अ.क्रि.* (अनु.) किसी चीज का उबलते समय खदबद शब्द करना।

खदरा *पुं.* (देश.) 1. घास का एक भेद 2. गड्ढा *वि.* (देश.) निकम्मा, रद्दी, बेकाम।

खदान *स्त्री.* (देश.) वह गड्ढा, जिसे खोदकर कोई पदार्थ निकाला जाए।

खदिका *पुं.* (तत्.) 1. भुना हुआ अन्न 2. लावा।

खदिर *पुं.* (तत्.) 1. खैर का पेड़ 2. चंद्रमा 3. इंद्र।

खदीजा *स्त्री.* (अर.) हजरत मुहम्मद की पहली पत्नी जो इस्लाम ग्रहण करने वाली पहली स्त्री और फातिमा की माँ थी।

खदुका *पुं.* (तद्.) ऋणी, कर्जदार।

खदेड़ना *स.क्रि.* (देश.) 1. भगाना, पीछा करते हुए भगाना 2. हटाना।

खदेरना *स.क्रि.* (देश.) दे. खदेड़ना।

खद्दर *पुं.* (देश.) हाथ का कता-बुना कपड़ा, खादी।

खद्योत *पुं.* (तत्.) 1. जुगनू 2. सूर्य।

खन *पुं.* (तद्.) 1. क्षण, लमहा 2. समय, वक्त 3. तुरंत, तत्काल 4. खंड, हिस्सा, भाग 5. तल्ला,

मंजिल *पुं* (देश.) 6. वृक्ष विशेष 7. एक तरह का कपड़ा जिससे महाराष्ट्र की स्त्रियाँ चोली बनाती है है *स्त्री* (अर.) रुपए, पैसे आदि के बजने की आवाज, खनक।

खनक *पुं.* (तत्.) 1. खान खोदने वाला आदमी 2. सेंध लगाने वाला चोर, वह स्थान जहाँ सोना आदि उत्पन्न होता है 3. भूगर्भ शास्त्र जानने वाला व्यक्ति 4. चूहा, मूसा *स्त्री.* (अनु.) खनखनाने की क्रिया या भाव, खनखनाहट *वि.* (देश.) जमीन खोदनेवाला।

खनकना *अ.क्रि.* (अनु.) खन-खन करके बजना, खनखनाना।

खनकाना *सं.क्रि.* (देश.) 'खन' 'खन' ध्वनि उत्पन्न करना जैसे- उसने जब चूड़ियाँ खनकाई, तो सभी लोगों की नजर उसकी ओर चली गई।

खनकार *स्त्री.* (अनु.) खनक, झंकार।

खनन *पुं.* (तत्.) खोदना, गाड़ना।

खनना *स.क्रि.* (तद्.) खोदना, कोड़ना।

खनयित्री *स्त्री.* (तत्.) खोदने का औजार, खंती।

खनवाना *स.क्रि.* (देश.) किसी को खनन के काम में प्रवृत्त करना।

खनहन *वि.* (तद्.) 1. दुबला पतला, कमजोर, जिसमें भद्दापन न हो, खूबसूरत, सुंदर।

खनि *स्त्री.* (तत्.) 1. रत्नों की खान 2. गुफा, कंदरा कंदरा 3. गर्त, गड्ढा।

खनिक *स्त्री.* (तत्.) खदान या खान खोदने वाला व्यक्ति 2. खान का स्वामी *वि.* (देश.) खान खोदने वाला।

खनिज *पुं.* (तत्.) खाने से खोद कर निकाला हुआ पदार्थ जैसे- खनिज पदार्थ।

खनिता *पुं.* (तत्.) खनक या खोदने वाला व्यक्ति।

खनित्र *पुं.* (तत्.) 1. खंता 2. फावड़ा।

खनित्रिका *स्त्री.* (तत्.) 1. खंती 2. छोटी कुदाली।

खनिभोग *पुं.* (तत्.) वह प्रदेश जिसमें धातु की खानें हों और जहाँ के निवासियों का निर्वाह खानों में काम करने से होता हो।

खनियाना *स.क्रि.* (देश.) 1. खाली करना, रिक्त करना 2. खोदना।

खन्ना *पुं.* (तद्.) 1. चारा काटने का स्थान 2. खत्रियों का एक वर्ग।

खपचा *पुं.* (देश.) 1. बाँस का नोकदार चौड़ा टुकड़ा 2. लकड़ी की कलछी *स्त्री.* बाँस की खपच्ची।

खपची *स्त्री.* (देश.) 1. बाँस की पतली तीली 2. कमठी 3. कबाब भूनने की सीक या सलाई 4. बाँस की वह पटरी जिससे डॉक्टर या जर्राह टूटा हुआ अंग बाँधते हैं।

खपच्ची *स्त्री.* (देश.) बाँस का पतला चौड़ा टुकड़ा *वि.* (देश.) दुर्बल।

खपटी *स्त्री.* (देश.) 1. छोटा कपड़ा 2. खपची।

खपड़ा *पुं.* (तद्.) 1. मिट्टी का आग में पका हुआ टुकड़ा जो मकान की छाजन पर रखने के काम आता है, मिट्टी का खप्पर 2. टूटे हुए बर्तन का टुकड़ा 3. चौड़े फल का बाण 4. घड़े का नीचे का आधा भाग 5. कछुए की पीठ का कवच या कड़ा आवरण।

खपड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. मिट्टी का कटोरानुमा बर्तन जिसमें भड़भूँजे दाना भूनते है 2. ठीकरा, छोटा खपड़ा।

खपत *स्त्री.* (देश.) 1. खपने का भाव, खर्च 2. माल की बिक्री 3. निबाह।

खपना *अ.क्रि.* (देश.) 1. खर्च करना, लगना 2. चल जाना निभ जाना 3. गुजारा होना, समाई होना 4. तंग होना, मरना उदा. बाजार में माल खपना, ब्याह में रुपया खपना, पूड़ियों में घी खपना।

खपराली *स्त्री.* (देश.) खप्पर धारण करने वाली जोगिनी, डाकिनी आदि।

खपरिका *स्त्री.* (तद्.) छतरी, छाता।

खपुआ *वि.* (देश.) 1. डरपोक, कायर 2. भगोड़ा *पुं.* (देश.) दरवाजे के नीचे चूल को छेद में ठीक तरह से बैठाने के लिए लगाई जाने वाली लकड़ी।

खपुर *पुं.* (तत्.) 1. गंधर्व मंडल, जो कभी-कभी आकाश में उदित होता है और जिसके आने के शुभ फल माने जाते हैं 2. पुराणानुसार एक नगर जो आकाश में है, जिसके प्रलोक और काल का नाम भी दैत्य कन्याओं की प्रार्थना पर ब्रह्मा ने दिया था 3. राजा हरिश्चन्द की पुरी जो आकाश में मानी जाती है 4. सुपारी का पेड़, भद्रमोथा।

खपुष्प *पुं.* (तत्.) 1. आकाश कुसुम 2. असंभव बात 3. अनहोनी घटना।

खप्पर *पुं.* (तद्.) 1. तसले के आकार का मिट्टी का पात्र 2. काली देवी के हाथ में रहने वाला रूधिर पात्र, कपाल 3. भिक्षा पात्र मुहा. खप्पर भरना- खप्पर में मदिरा आदि भर कर देवी पर चढ़ाना।

खफकान *पुं.* (अर.) 1. हृदय की धड़कन का रोग, धड़का 2. बहशत, पागलपन।

खफकानी *वि.* (अर.) 1. हृदय रोगी 2. घबड़ाने वाला 3. बहशी।

खफगी *स्त्री.* (फा.) अप्रसन्नता, नाराजगी, क्रोध, कोप, रोष।

खफ़ा *वि.* (फा.) अप्रसन्न, नाराज, कुपित, रूष्ट जैसे- इस छोटी सी बात पर वे मुझसे खफ़ा हो गए।

खफीफ *वि.* (अर.) 1. अल्प, थोड़ा, तुच्छ, हल्का 2. लज्जित मुहा. खफीफ होना- लज्जित होना।

खफ़ीफ़ा *स्त्री.* (अर.) 1. छोटी रकमों के दावे सुनने वाली अदालत जिसकी अपील नहीं होती 2. बदचलन (औरत)।

ख़बत *पुं.* (अर.) पागलपन, सनक, झक, धुन।

ख़बर *स्त्री.* (अर.) 1. सूचना, समाचार, वृतांत, हाल, संदेश मुहा. खबर उड़ना- चर्चा फैलना/ अफवाह होना; खबर लेना- समाचार जानना/ वृतांत समझना/सहायता करना जैसे- आप तो कभी हमारी खबर नहीं लेते 2. दंडित करना, सजा देना जैसे- आज उनकी खूब खबर ली गई 3. सूचना, ज्ञान, जानकारी जैसे- हमें क्या खबर कि आप आए हुए है, उन्हें इन बातों की क्या खबर है 4. भेजा हुआ समाचार, संदेश 5. चेत, सुधि, संज्ञा जैसे- उन्हें अपने तन की भी खबर नहीं रहती।

खबरगीर *वि.* (फा.) 1. खोज खबर लेने वाला 2. देखरेख करने वाला रक्षक, पालक सहायक 3. गुप्तचर *पु.* (फा.) गुप्तचर, जानकारी प्राप्त करने वाला व्यक्ति

खबरगीरी *स्त्री.* (फा.) 1. देखरेख, देखभाल, चौकसी 2. सहानुभूति और सहायता 3. पालन पोषण।

खबरदार *वि.* (फा.) 1. सावधान, होशियार, सजग 2. चैतन्य, मुक्त।

ख़बरदारी *स्त्री.* (फा.) सावधानी, होशियारी, सतर्कता।

ख़बरनवीस *वि.* (फा.) समाचार लिखने वाला कर्मचारी, सूचना या समाचार ले जाने वाला।

ख़बरी *पुं.* (फा.) 1. दूत, संदेशवाहक 2. गुप्त संदेश देनेवाला, मुखबिर।

ख़बीस *पुं.* (अर.) 1. दुष्ट, क्रूर, नापाक 2. भूत प्रेत आदि।

ख़बीसी *स्त्री.* (अर.) 1. दुष्टता, बदमाशी, फरेब, नापाकी 2. खबीस स्त्री।

ख़ब्ती *वि.* (अर.) जिसकी विकृत बुद्धि हो, सनकी पागल।

खब्बा *वि.* (देश.) 1. बायाँ, दाहिने का उल्टा 2. बाएँ हाथ से काम करने वाला।

ख़भरना *स.क्रि.* (देश.) मिश्रित करना, मिलाना, हलचल, खलबली मचाना।

खभरूआ *वि.* (देश.) पुंश्चली से उत्पन्न (बालक), छिनाल अथवा कुलटा स्त्री का (लडक़ा)।

ख़म *पुं.* (फा.) झुकाव, टेढ़ापन, वक्र मुहा. खम खाना- मुड़ना, झुकना, दबना, हारना, पराजित; खम ठोकना- लड़ने के लिए ताल ठोकना,

ललकारना; खम ठोंककर- ताल ठोंककर, ललकारकर जैसे- मैं खम ठोंककर यह बात कह सकता हूँ *वि.* (फा.) समर्थ, शक्तिमान, झुका हुआ, वक्र, टेढ़ा।

ख़मकाना *अ.क्रि.* (देश.) खम खम शब्द करना।

खमदम *पुं.* (फा.) हिम्मत, जोश।

खमदार *वि.* (फा.) घुँघराले (बाल), झुकरा हुआ, खम खाया हुआ।

खमशा/खम्सः *पुं.* (अर.) 1. वह पद्य जिसके हर बंद में पाँच-पाँच मिसरे हों 2. संगीत की एक ताल जिसमें पाँच आघात और तीन खाली होते है 3. पाँचों उँगलियाँ *वि.* (अर.) पाँच संबंधी, पंचक।

ख़मीदगी *स्त्री.* (फा.) टेढ़ापन, वक्रता।

ख़मीदा *वि.* (फा.) झुका हुआ, टेढ़ा, खमदार।

ख़मीर *पुं.* (अर.) गुथे हुए आटे में खटास और उभार मुहा. खमीर उठना-आटे आदि का खमीर पैदा हो जाने से फूल कर उठना, फैलना, बिगड़ना-स्वभाव या व्यवहार आदि में भेद पड़ना।

खमीरा *वि.* (फा.) ख़मीर वाला, ख़मीर मिलाया हुआ जैसे- ख़मीरी रोटी, खमीरा तंबाकू *पुं.* (फा.) 1. चीनी या शीरे में पका कर बनाई हुई औषधि 2. पीने का सुगंधित तंबाकू।

खम्माच/खमाज *स्त्री.* (देश.) औडव जाति की मालकोस राग की दूसरी रागिनी, जो रात को दूसरे पहर की पिछली घड़ी में गाई जाती है।

खम्माच कान्हड़ा *पुं.* (देश.) संपूर्ण जाति का एक संकर राग जो रात के दूसरे पहर में गाया जाता है।

खम्माचटोरी *स्त्री.* (देश.) संपूर्ण जाति की एक रागिनी जो संभावती और टोरी से मिलकर बनती है, 'संकर रागिनी'।

ख़याल *पुं.* (अर.) 1. ध्यान, चिंता, सोच विचार 2. कल्पना 3. मत, विचार 4. लिहाज 5. याद मुहा. ख़याल में न लाना- लिहाज, परवाह न करना; ख़याल में समाना- ध्यान में चढ़ जाना, हर बात याद रहना; ख़याल से उतरना- याद न रहना, भूल जाना 6. गायन का एक प्रकार।

ख़याली *वि.* (अर.) कल्पित, सोचा-माना हुआ।

ख़याली पुलाव *पुं.* (फा.) मन से गढ़ी हुई बात, मनोराज्य मुहा. ख़याली पुलाव पकाना- कल्पना के महल खड़े करना।

ख़य्याम *पुं.* (अर.) 1. फारसी के मधुवादी कवि उमर ख्य्याम 2. खटिया बनाने वाला, तंबू सीनेवाला।

खरंजा *पुं.* (देश.) वह ईंट जो बहुत पकाने के कारण जल गई हो, झावाँ, खड़ंजा।

खर *पुं.* (तत्.) 1. गधा, खच्चर 2. बगुला 3. कौवा 4. एक राक्षस जो रावण का भाई था और राम के हाथों मारा गया था 5. तृण, तिनका, घास, खरपतवार-फसल के साथ उगने वाले बेकार के पौधे 6. साठ संवत्सरों में से 26 वाँ संवत्, इसमें बहुत उपद्रव होते है 7. छप्पय छंद का एक भेद 8. एक चौकोर वेदी जिस पर यज्ञों में यज्ञपात्र रखे जाते हैं 9. क्रौंच पक्षी 10. कुत्ता, श्वान *वि.* (तत्.) 1. कड़ा, सख्त 2. तेज, तीक्ष्ण 3. घना, मोटा, हानिकर 4. अमांगलिक दे. खरमास 5. तेज धार का 6. आड़ा, तिरछा।

खर *पुं.* (फा.) गधा *वि.* (फा.) 1. मूर्ख 2. भद्दा 3. बदशक्ल 4. बहुत बड़ा मुहा. (घी) खरकाना - (घी) गरम करके तपाना।

खरक *पुं.* (तद्.) 1. बाँस, बल्लों से बनाया हुआ गाय रखने का बाड़ा, गोठ 2. चरागाह 3. ठट्टर *स्त्री.* (तत्.) खड़क, खटक।

खरकना *अ.क्रि.* (अर.) खर-खर शब्द होना, खरखराना, खडक़ाना।

खरकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. फाँस चुभने का दर्द 2. खड़क़ना 3. सरकना।

खरकर *पुं.* (तत्.) सूर्य, दिनकर।

खरका *पुं.* (देश.) सूखा कड़ा तिनका, दाँत खोदने का तिनका मुहा. ख़रका करना- भोजन के बाद दाँत में फँसे तिनकों को खोदकर निकालना।

खरकुटी *स्त्री.* (तत्.) 1. गदहों का निवास स्थान 2. नाई का निवास या दुकान 3. नाई का चमोटा जिसपर वह औजार रगड़कर धार तेज करता है।

ख़रख़शा *पुं.* (फा.) 1. झगड़ा, विवाद, बखेड़ा, झंझट 2. आशंका, डर।

खरगेह *पुं.* (तद्.) कुटिया, तंबू।

ख़रगोश *पुं.* (फा.) ख़रक, खरहा, मुलायम बालों वाला और लंबे कानों वाला एक छोटा जानवर जो वन में बिलों में रहता है और पाला भी जाता है।

ख़रच *पुं.* (फा.) दे. खर्च मुहा. ख़रच कर डालना- समाप्त करना/ मार डालना।

खरचनहार *वि.* (देश.) ख़रच करने वाला, व्यय करने वाला।

ख़रचना *स.क्रि.* (फा.) 1. व्यय करना, खर्च करना 2. उठाना, लगाना 3. व्यवहार में लाना, बरतना।

खरची *स्त्री* (फा.) दे. खर्चा।

खरतनी *स्त्री.* (देश.) खरादने का औजार।

खरतर *वि.* (तत्.) 1. अधिक तीक्ष्ण, बहुत तेज 2. लेनदेन में खरा, व्यवहार का सच्चा।

ख़रतल *वि.* (तत्.) 1. खरा, स्पष्टवादी, शुद्ध हृदयवाला, शील संकोच न करने वाला 2. साफ, स्पष्ट 3. प्रचंड, उग्र।

खरतुआ *पुं.* (देश.) बथुए की तरह का एक खरपतवार, चमरबथुआ।

खरदंड *पुं.* (तत्.) पद्म, कमल।

ख़रदना *सक्रि.* (फा.) 1. खराद पर चढ़ाकर किसी वस्तु को साफ और सुडौल करना 2. काट छाँट कर सुडौल बनाना।

खरदा *पुं.* (देश.) अंगूर को लगने वाला एक रोग।

ख़रदिमाग *वि.* (फा.) 1. नितांत मूर्ख, उजड्ड, नासमझ 2. हठी, घमंडी।

ख़रदिमागी *स्त्री.* (फा.) नासमझी, मूर्खता, उजड्डपना।

खरदूषण *पुं.* (तत्.) 1. धतूरा 2. झरबेरी 3. खर और दूषण नामक राक्षस जो रावण के भाई थे *वि.* (तत्.) जिसमें बहुत दोष हो।

खरधार *पुं.* (तत्.) तेज धार वाला अस्त्र *वि.* तेज धार वाला।

खरध्वंसी *पुं.* (तत्.) 1. दुष्टों का नाश करने वाला 2. रामचन्द्र।

खरपत *पुं.* (देश.) एक प्रकार का वृक्ष।

खरपा *पुं.* (देश.) 1. एक तरह की मिरजई, चौबगला 2. एक तरह की देहाती चप्पल जिसे केवल स्त्रियाँ पहनती हैं।

खरपात *पुं.* (देश.) घासपात, घासफूस, खरपतवार।

खरब *पुं.* (तद्.) 1. सौ अरब 2. संख्या गणना का बारहवाँ स्थान।

ख़रबुजा *पुं.* (फा.) दे. 'खरबूजा'।

ख़रबूज *पुं.* (फा.) दे. 'खरबूजा'।

ख़रबूजा *पुं.* (फा.) ककड़ी की जाति का एक गोल और मीठा फल जो गरमी के मौसम में होता है मुहा. ख़रबूज़े को देखकर खरबूज़े का रंग बदलना- किसी एक व्यक्ति की देखा-देखी या संग से दूसरे का भी वैसा ही हो जाना।

खरबूज़ी *वि.* (फ़ा.) ख़रबूज़े के रंग का।

खरभर *पुं.* (अनु.) 1. खलबली, हलचल 2. शोर, हल्ला।

खरभरना *अ.क्रि.* (देश.) हलचल, मचना, चंचल होना, व्याकुल होना।

खरमंडल *पुं.* (तद्.) गोलमाल, विघ्न, गुलगपाड़ा उदा. संस्था में सुव्यवस्था करने की बात चली तो खरमंडल मच गया।

खरमस्ता *वि.* (देश.) 1. दुष्ट 2. शरारती, मतवाला 3. कामुका।

खरमास *पुं.* (तत्.) धनु और मीन के सूर्य वाला महीना जिसमें मांगलिक कार्य करना वर्जित है।

खरमुख *पुं.* (तत्.) 1. एक राक्षस जिसे कैकय देश के भरत ने मारा था 2. तुरंग मुख 3. किन्नर *वि.* गधे की मुखाकृति वाला, बदशक्ल, कुरूप।

खरयान *पुं.* (तत्.) गाड़ी जिसमें गधे जुते हों।

खरल *पुं.* (तद्.) पत्थर या लोहे की कुंडी जिसमें दवाएँ कूटते हैं।

खरली *स्त्री.* (तद्.) दे. 'खली'।

खरशब्द *पुं.* (तत्.) 1. गर्दभ का स्वर 2. कुरर नामक पक्षी ।

खरशाला *पुं.* (तत्.) गधों के रहने का स्थान।

खरशिला *पुं.* (तत्.) मंदिर आदि की कुरसी या चौकी या पादांग का वह ऊपरी भाग जिस पर सारी इमारत खड़ी रहती है।

खरस *पुं.* (फा.) रीछ, भालू।

खरसा *स्त्री.* (तद्.) एक प्रकार का भोज्य पदार्थ *स्त्री स्त्री* (देश.) एक प्रकार की मछली *पुं.* (देश.) 1. ग्रीष्म ऋतु, गरमी का दिन 2. अकाल 3. खाज, खुजली, खारिश।

खरसैला *वि.* (तद्.) जिसे खुजली हुई हो, खुजली रोग वाला (पशु)।

खरहर *पुं.* (देश.) हिमालय की तराई में होने वाला एक पेड़।

खरहरा *पुं.* (देश.) 1. कई दंत पंक्तियों वाली लोहे की चौकोर कंघी जिससे घोड़ों के बदन की गर्द साफ की जाती है 2. अरहर के डंठलों की झाड़ू।

खरहरी *स्त्री.* (देश.) एक मेवा, छुहारा।

खरहा *पुं.* (तद्.) 1. मुलायम बालों वाला और लंबे कान वाला एक जंतु 2. कद में बिल्ली के बराबर खरगोश।

खरांशु *पुं.* (तत्.) सूर्य।

खरा *वि.* (देश.) 1. विशुद्ध, बिना मिलावट का, स्वच्छ, बढ़िया 2. अच्छा 3. तेज, तीखा, चोखा 4. सच्चा विलो. खोटा जैसे- खरा सोना, खरा रूपया, सेंक कर कड़ा किया हुआ, करारा मुहा. खरा खोटा- भला बुरा; खरा खोटा परखना- अच्छे बुरे की पहचान करना; जी खरा खोटा होना- चित्त चलायमान होना, मन डिगना, बुरी नियत होना; कान खरा करना- कान गरम करना, कान मलना; खरा आदमी-व्यवहार में सच्चा आदमी, ईमानदार; खरा खेल- साफ मामला, शुद्ध व्यवहार; रुपए खरे होना- रुपए मिलने का निश्चय होना; खरी सुनाना-सच्ची बात कहना।

खराई *स्त्री.* (देश.) खरापन, खरा होने का भाव, स्पष्टवादिता *स्त्री.* (देश.) प्रातः काल कुछ खाने को न मिलने के कारण तबीयत का कुछ खराब होना मुहा. खराई मारना- जलपान करना, कलेवा करना।

खरागरी *स्त्री.* (तत्.) देवताड़ वृक्ष।

खरातिक *पुं.* (तद्.) दे. खरालक।

ख़राद *पुं.* (फा.) लकड़ी खरादने का औजार, चरख प्रयो. मानों खराद चढ़े रवि की किरणें सुमेरू के ऊपर आ गिरी मुहा. खराद पर चढ़ना- ठीक होना, सुधरना, लौकिक व्यवहार में कुशल होना, अनुभव प्राप्त होना; खराद पर चढ़ाना- ठीक करना, सुधरना, खरादने के लिए चरख पर चढ़ाना *स्त्री.* (फा.) 1. खरादने का भाव, खरादने की क्रिया, खरादने का काम 2. ढंग, बनावट, गढन।

खरादगर *पुं.* (अर.) खराद का काम करने वाला व्यक्ति, खरादी।

खरादी *पुं.* (देश.) खराद का काम करने वाला।

खरापन *पुं.* (देश.) खरा होने का भाव, स्पष्टवादिता, सत्यता, सच्चाई मुहा. खरापन बघारना- सच्चाई की डींग मारना।

ख़राब *वि.* (अर.) 1. बुरा, निकृष्ट, हीन, दुर्दशाग्रस्त जैसे- मुकदमे को लड़कर उन्होंने आपने आपको खराब कर दिया 2. पतित, मर्यादा-भ्रष्ट, दुश्चरित्र मुहा. खराब करना- कुकर्म करना, बदचलन बनाना; खराब होना -बदलचन होना 3. विध्वस्त, बरबाद, निर्जन, वीरान विलो. अच्छा।

ख़राबा *वि.* (फा.) 1. उजड़ा हुआ, वीरान 2. खेती के अयोग्य।

ख़राबात *पुं.* (फा.) 1. शराबखाना, मधुशाला, मादिरालय 2. जुए का अड्डा 3. चकला, कुलटा स्त्रियों का अड्डा।

ख़राबाती *वि.* (फा.) 1. शराबी, मदमस्त 2. रंडी बाज, वेश्यागामी।

ख़राबी *स्त्री.* (फा.) 1. बुरापन, दोष, अवगुण 2. दुर्दशा, दुरवस्था 3. विध्वंस, बरबादी।

खराब्दांकुरक *पुं.* (तत्.) लहसुनिया नाम का रत्न, वैदूर्य मणि।

खरारि *पुं.* (तत्.) 1. रामचंद्र 2. विष्णु 3. कृष्ण 4. बलराम 5. बत्तीस मात्राओं का एक छंद।

खरारी *पुं.* (तद्.) दे. खरारि।

खरालक *पुं.* (तत्.) 1. नापित, हज्जाम 2. नाई का सामान रखने का थैला 3. तकिया 4. लोहे का तीर।

खराश *स्त्री.* (फा.) 1. त्वचा का छिल जाना, खरोंच लगने से छिलना 2. खुजली 3. जुकाम के कारण गले में चुभन जैसी दशा।

खराह्वा *स्त्री.* (तत्.) अजमोदा, अजवाइन।

खरिका *स्त्री* (तत्.) कस्तूरी का चूर्ण।

ख़रिया *स्त्री.* (देश.) पतली रस्सी से बनी जाली जो भूसा आदि बाँधने के काम में आती है, झोली, थैला *स्त्री.* (देश.) कंडे की राख।

खरियान *पुं.* (देश.) खलिहान।

खरियाना *स.क्रि.* (देश.) झोली में डालना, थैली में भरना, हस्तगत करना, ले लेना, झोली में से गिराना।

खरिहान *पुं.* (तद्.) दे. खलिहान।

खरी *स्त्री.* (तत्.) गधी *स्त्री.* (देश.) 1. एक प्रकार की ईख 2. खड़िया *वि.* (देश) दे. खरा मुहा. खरी सुनाना- साफ, दो टूक बात कहना, अप्रिय सत्य कहना; खरी खोटी सुनाना- सच्ची बात कहना, भला बुरा कहना विलो. खोटी, कड़वी कसैली।

खरीक *पुं.* (तद्.) तिनका।

खरी-खोटी *स्त्री.* (देश.) स्पष्ट और कड़ी लगने वाली बात, खरी खोटी सुनाना- सत्य वचन सुनाना जो कड़वे हों।

खरीता *पुं.* (अर.) 1. सीमा, जेब 2. थैली 3. बड़ा लिफाफा जिसमें सरकारी आदेश भेजे जाते हैं 4. सुई धागे रखने की थैली।

ख़रीद *स्त्री.* (फा.) 1. मोल लेने की क्रिया या भाव, क्रय 2. खरीदी हुई वस्तु जैसे- इस शाल की खरीद पचास रुपए है।

खरीदना *स.क्रि.* (फा.) मोल लेना, क्रय करना, दाम देकर लेना।

ख़रीद फरोख्त *स्त्री.* (फा.) क्रय विक्रय।

ख़रीदा *स्त्री.* (अर.) 1. कुमारी कन्या 2. लज्जाशील लज्जाशील स्त्री *पुं.* (अर.) 1. बिना बिंधा हुआ मोती 2. दासी पुत्र *वि.* (फा.) खरीद किया हुआ, क्रीत।

ख़रीदार *पुं.* (फा.) 1. मोल लेने वाला, ग्राहक 2. चाहने वाला, इच्छुक।

ख़रीदारी *स्त्री.* (फा.) खरीद, क्रय, मोल लेने की क्रिया।

ख़रीफ *स्त्री.* (अर.) वह फसल जो कार्तिक के आधे माह और अगहन के बीच काटी जाए, धान मकई, बाजरा, उड़द, मोठ, मूँग आदि।

खरीवृष *पुं.* (तद्.) गधा।

खरु *पुं.* (तद्.) 1. अश्व, घोड़ा 2. दांत 3. गर्व, शान 4. कामदेव 5. शिव का नाम 6. श्वेत वर्ण 7. वर्जित वस्तुओं को लेने की इच्छा *स्त्री.* (तत्.) (तत्.) अपना पति स्वयं चुनने वाली कन्या *वि.* (तत्.) 1. सफेद 2. मूर्ख 3. निष्ठुर 4. निषिद्ध वस्तुओं को लेने का इच्छुक।

खरोंच *स्त्री.* (देश.) नख आदि लगने से त्वचा का छिल जाना, खराश, छिल जाने का निशान जैसे- सडक़ पर पैर फिसलने से कुहनी में खरोंच आ गई।

खरोचना *स.क्रि.* (देश.) खुरचना, छीलना।

ख़रोश *पुं.* (फा.) जोर की आवाज, हल्ला, शोर।

खरोष्ट्री *स्त्री.* (तत्.) दे. खरोष्ठी।

खरोष्ठी *स्त्री.* (तत्.) एक प्राचीन लिपि जो फारसी की तरह दाहिने से बाएँ लिखी जाती थी और मौर्य काल में पश्चिमोत्तर भारत में चलती थी, इसे गांधार लिपि भी कहते हैं।

खर्खोद *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का इंद्रजाल।

ख़र्च *पुं.* (अर.) किसी काम में किसी वस्तु का लगना, व्यय, खपत, आवश्यक कार्यों में लगने वाला पैसा मुहा. खर्च उठाना-व्यय का भार सहना जैसे- खर्च उठाना- इस महीने उन्हें बहुत खर्च उठाना पड़ा खर्च चलना- व्यय का निर्वाह करना; खर्च में डालना- व्यय के लिए विवश करना, रकम को खर्च के मद में लिखना; खर्च निकलना- लागत प्राप्त होना; खर्च में पड़ना- व्यय के लिए विवश होना, रकम का खर्च के मद में लिखना।

ख़र्चना *स.क्रि.* (देश.) दे. खरचना।

ख़र्चा *पुं.* (फा.) दे. खर्च।

ख़र्ची *स्त्री.* (देश.) कुकर्म कराने के लिए मिला धन। धन।

खर्चीला *वि.* (देश.) बहुत खर्च करने वाला।

खर्चु *स्त्री.* (तद्.) 1. खुजली, कीड़ा, धतूरा 2 जंगली जंगली खजूर।

खर्जिका *स्त्री.* (तत्.) उपदेश, रोग, गरमी की बीमारी।

खर्जुर *पुं.* (तत्.) 1. चाँदी, खजूर।

खर्जूर *पुं.* (तत्.) 1. खजूर 2. चाँदी 3. हरताल 4. बिच्छू 5. धतूरा।

खर्जूरक *पुं.* (तत्.) खजूर का रस, ताड़ी, एक मादक पेय।

खर्जूरी *पुं.* (तत्.) खजूर यौ. खर्जूरीरस- खजूर का रस, खर्जूरीरसज-खजूर के रस का बना गुड़।

खर्परी *स्त्री.* (तत्.)) खपरिया नाम की एक उप धातु।

खर्ब *पुं.* (तद्.) 1. छोटा, लघु, क्षुद्र 2. बौना, ठिंगना 3. विकलांग 4. सौ अरब।

खर्बुज *पुं.* (देश.) दे. खरबूजा।

खर्रा *पुं.* (देश.) 1. लंबा कागज जिसमें सारा हिसाब या विवरण हो 2. चर्मरोग।

खर्रांच *वि.* (फा.) खर्चीला जैसे- बेशक उसी ने तो चोरी छिपे रुपए देकर मानिक को ऐसा खर्रांच होने दिया था।

ख़र्राटा *पुं.* (अनु.) सोते समय नाक से निकलने वाली खर्र-खर्र की आवाज मुहा. खर्राटा भरना, मारना या लेना- बेखबर सोना जैसे- गाड़ी में लोग सो रहे थे और खर्राटे भर रहे थे।

ख़र्राती *स्त्री.* (अर.) खरादी का काम या पेशा।

ख़र्राद *पुं.* (फा.) खरादी, खराती।

खर्व *वि.* (तत्.) 1. जिसका अंग भंग हो, न्यूनांग 2. छोटा, लघु, वामन, बौना उदा. यहाँ खर्च नर रहते युग-युग से अभिशापित *पुं.* (तत्.) संख्या का बारहवाँ स्थान, सौ अरब, बारहवें स्थान की संख्या, वैदिक काल में संख्या का 35 वाँ स्थान खर्व कहलाता था।

ख़र्वट *पुं.* (तद्.) 1. पहाड़ की तराई में बसा हुआ गाँव 2. दौ सौ गाँवों के मध्य का प्रमुख ग्राम 3. नदी के किनारे बसा हुआ कस्बा, हाट, बाजार।

खर्वित *वि.* (तत्.) छोटा किया हुआ, नष्ट, क्षीण अथवा कम किया हुआ।

खर्विता *स्त्री.* (तत्.) वह अमावस्या जिसमें चतुर्दशी मिली हुई हो, वह तिथि जिसका कालमान पहले दिन की तिथि के कालमान से कुछ कम हो।

खल *वि.* (तत्.) 1. क्रूर, कठोर 2. नीच, अधम, दुर्जन, दुष्ट 3. चुगलखोर 4. निर्लज्ज, बेहया 5. धोखे बाज, फरेब। पुं. (तत्.) 1. सूर्य 2. तमाल का पेड़ 3. धतूरा 4. खलिहान 5. कोठिला 6. धूलिपुंज 7. युद्ध लड़ाई 8. तेल छट 9. पृथ्वी 9. स्थान 10. खरल मुहा. खल करना- खल में महीन पीसना; खल होना-पिसना, चूर-चूर होना; 11. पत्थर का बड़ा टुकड़ा 12. सोनारों का किटकिटा नाम का ठप्पा।

खलई *स्त्री.* (देश.) खलता, दुष्टता, दुष्ट होने का भाव या क्रिया।

खलक *पुं.* (तद्.) घड़ा, कुंभ *पुं.* (अर.) 1. सृष्टि का प्राणी या जीवधारी 2. दुनिया, संसार, जगत *स्त्री.* (देश.) खलकने का भाव या क्रिया।

खलकत *स्त्री.* (अर.) 1. सृष्टि 2. भीड़, झुंड 3. जन साधारण, जनता।

खलकना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. खलखल ध्वनि करना 2. छलकना, बहना।

खलता *स्त्री.* (तत्.) दुष्टता, नीचता, खल होने का भाव या क्रिया *पुं.* (देश.) सिपाहियों का वह थैला जिसमें वे अपना जरूरी सामान रखते है, थैला, झोला।

खलतिक *पुं.* (तत्.) पर्वत, पहाड़।

खलना *अ.क्रि.* (देश.) अखरना, अनुचित, अप्रिय या कष्टदायक प्रतीत होना, बुरा जान पड़ना, ठीक प्रकार से न फबना, खटकना प्रयो. मुझे उसकी अनुपस्थिति खल रही है *स.क्रि.* (देश.) 1. खरल में डालकर घोंटना 2. नष्ट करना, पीस डालना।

खलबलाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. खलबल शब्द करना 2. खौलना 3. उबलना, कुलबुलाना 4. हिलना, डोलना 5. विचलित होना, खड़बड़ाना।

खलबलाहट *स्त्री.* (देश.) बेचैनी, व्याकुलता, खलबली।

खलबली *स्त्री.* (देश.) हलचल, घबराहट, व्याकुलता मुहा. खलबली मचना- अशांति होना।

खलल *पुं.* (अर.) 1. रोक, अवरोध, रुकावट, बाधा 2. विकार।

खलल-अंदाज *वि.* (अर.) हस्तक्षेप या विरोध करने वाला, बाधा या खलल डालने वाला।

खलल-अंदाजी *स्त्री.* (अर.+फा.) बाधा डालने का कार्य।

खलल-दिमाग *वि.* (अर.) सनकी, पागल।

खल-संसर्ग *पुं.* (तत्.) दुष्ट या बुरे लोगों का साथ।

खलाना *स.क्रि.* (देश.) 1. खाली करना, पात्र में से भरी हुई चीज बाहर निकालना, गड्ढा बनाना, जैसे कुँआ खोदना 2. सोने के पत्तर को कटोरी की तरह बनाना, किसी फूली हुई सतह को नीचे की ओर धंसाना, पिचकाना मुहा. पेट खलाना- पेट पिचकाकर यह सूचित करना कि हम बहुत भूखे हैं।

खलाल *पुं.* (अर.) धातु आदि का बना नुकीला छोटा टुकड़ा जिससे दाँतों में फँसा हुआ अन्न आदि निकालते हैं *स्त्री.* (अर.) पूरी मात, पूरी बाजी की हार (ताश आदि के खेल में) मुहा. खलाल देना- मात करना।

खलास *वि.* (अर.) 1. खत्म, समाप्त 2. छूटा हुआ, मुक्त *पुं.* (अर.) 1. छुटकारा, मोक्ष, मुक्ति 2. वीर्यपात।

खलासी *स्त्री.* (अर.) मुक्ति, रिहाई, छुटकारा, छुट्टी *पुं.* (अर.) 1. जहाज पर या रेलगाडियों में छोटे-छोटे काम करने वाला मजदूर 2. तोपची।

खलित *वि.* (तद्.) स्खलित 1. चलायमान, चंचल, डिगा हुआ 2. अपने स्थान से हटा हुआ, गिरा हुआ 3. पतित 4. अस्पष्ट मुहा. खलित होना- वीर्य पात होना 5. गंजा, खल्वाट।

खलिन *पुं.* (तत्.) घोड़े की लगाम, वह लोह उपकरण जिससे लगाम बँधी रहती है।

खलियान *पुं.* (तद्.) दे. खलिहान, वह स्थान जहाँ फसल काट कर रखी और मांडी जाती है मुहा. खलियान करना- काटी हुई फसल का ढेर लगाना, नष्ट करना।

खलियाना *स.क्रि.* (देश.) 1. खाल उतारना, मृत पशु के शरीर की खाल खींचकर अलग करना 3. खाली करना।

ख़लिश *स्त्री.* (फा.) 1. चुभन, खटक 2. रंजिश, बैर, टीस, उलझन, फिक्र।

ख़लिहान *पुं.* (तद्.) वह स्थान जहाँ फसल काट कर रखी जाती है।

खली *स्त्री.* (तत्.) तेल निकाल लेने पर तिलहन की की बची हुई सीठी जैसे- मवेशियों को खली खिलाई जाती है *वि.* (तत्.) 1. खलने या खटकने वाला, अनुचित और अप्रिय 2. जिसमें तलछट हो *पु.* (तत्.) 1. महादेव 2. एक दानव जिन्हें वशिष्ठ जी ने मारा था।

ख़लीफ़ा *पुं.* (अर.) 1. प्रतिनिधि, नुमाइंदा, नायब 2. अध्यक्ष, अधिकारी 3. खानसामा, बावर्ची 4. हज्जाम, नाई 5. मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी 6. खुर्राट 7. दरजी।

खलु *अव्य.* (तत्.) 1. निश्चय, निषेध, जिज्ञासा आदि अर्थ सूचक 2. अवश्य ही, सचमुच।

खलूरिका *स्त्री.* (तत्.) अस्त्र संचालक के अभ्यास का स्थान।

खलेल *पुं.* (देश.) तेल में रह जाने वाला खली का अंश।

ख़ल्क *स्त्री.* (अर.) दे. खलक।

खल्त मल्त *वि.* (देश.) मिला जुला, मिश्रित, गड्डमड्ड।

खल्या *स्त्री.* (तत्.) खलियानों का समूह।

खल्ल *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का कपड़ा 2. चमड़ा, चमड़े की मशक 3. चातक 4. खरल 5. गड्ढा 6. नहर।

खल्लड़ *पुं.* (देश.) 1. चमड़े का थैला 2. औषधि कूटने का खरल।

खल्लिका *स्त्री.* (तत्.) कड़ाही।

खल्लिट *वि.* (तद्.) गंजा, खलवाट।

खल्ली *पुं.* (देश.) एक वायु रोग जिसमें हाथ पांव मुड़ जाते है।

खल्व *पुं.* (तत्.) 1. एक रोग जिसके कारण सिर के बाल झड़ जाते है 2. एक प्रकार का धान 3. चना।

खल्वाट *पुं.* (तत्.) गंजेपन का रोग जिसमें सिर के बाल झड़ जाते हैं, गंजा।

खवा *पुं.* (देश.) कंधा, भुजमूल मुहा. खवे खवा छिलना- कंधे से कंधा छिलना।

खवाई *स्त्री.* (देश.) खाने की क्रिया, भोजन करने के के बदले प्राप्त धन टि. विवाह के अवसर पर वर पक्ष के लोगों को जलपान के समय कहीं-कहीं कन्या पक्ष की ओर से नेग देने का प्रचलन है।

खवाना *स.क्रि.* (देश.) खिलाना, भोजन कराना।

खवाब *पुं.* (फा.) 1. स्वप्न, नींद 2. सोने की अवस्थां।

खवारी *स्त्री.* (फा.) 1. खराबी, बर्बादी, भ्रष्टता 2. अनादर, तिरस्कार, बेइज्जती, अपमान।

खवास *पुं.* (अर.) 1. खास खिदमतगार, विशिष्टजन, खास लोग 2. गुण धर्म।

खवासी *स्त्री.* (अर.) 1. खिदमतगीरी 2.खवास का काम या पद 3. हौदे या गाड़ी में पीछे खवास के बैठने की जगह।

खविद्या *स्त्री.* (तत्.) ज्योतिर्विद्या, ज्योतिष।

खवैया *पुं.* (देश.) खाने वाला।

खशख़श *पुं.* (फा.) पोस्ते का पौधा और उसका बीज, खसखस।

खशी *वि.* (तत्.) हल्का आसमानी।

खश्म *पुं.* (फा.) कोप, क्रोध, रोष यौ. खश्मगीन- गुस्से से भरा हुआ, प्रकुपित।

खष्म *पुं.* (फा.) 1. कोप, क्रोध, गुस्सा 2. क्रूरता, निर्दयता, हिंसा, नथने का टूट जाना।

खस *पुं.* (फा.) वर्तमान गढ़वाल और उसके उत्तरवर्ती प्रांत का नाम 2. इस प्रदेश की एक प्राचीन जाति 3. खुजल, पोस्ते का पौधा *स्त्री.* सूखी घास, गॉडर नामक घास की सुगंधित जड़, जिसकी टट्टियाँ दरवाजों और खिडक़ियों पर लगाई जाती है।

खसकना *अ.क्रि.* (देश.) स्थानांतरित होना, सरकना, खिसकना जैसे- यह ईंट खसक गई है।

ख़सखस *स्त्री.* (तत्.-खस्खस) पोस्ते का दाना या बीज।

ख़सखसा *वि.* (देश.) 1. भुरभुरा 2. बहुत छोटा 3. पोस्ते के दाने जैसा।

ख़सख़ाना *पुं.* (फा.) खसकी टट्टियों में घिरा हुआ स्थान, वह घर जिसके चारों ओर खस की टट्टियाँ लगी हों।

ख़सम *पुं.* (अर.) 1. पति, खाविंद, स्वामी, मालिक 2. बैरी, दुश्मन, 3. बुद्‌ध का एक नाम मुहा. खसम करना- पर पुरूष से पति-संबंध स्थापित करना; खसमपीटी- विधवा, पति की मृत्यु देखने वाली।

ख़सरा *पुं.* (अर.) पटवारी का एक कागज जिसमें प्रत्येक खेत का नंबर, रकबा आदि लिखा होता है, हिसाब का कच्चा चिट्ठा *पुं.* (फा.) एक प्रकार का रोग जिसमें बदन पर छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं और सारे बदन पर खुजली होती है।

ख़सलत *स्त्री.* (अर.) स्वभाव, आदत, गुण, प्रकृति।

ख़साना *स.क्रि.* (देश.) गिराना, फेंकना।

ख़सारत *स्त्री.* (अर.) 1. कंजूसी, कृपणता 2. नीचता, अधमता।

ख़सारा *पुं.* (अर.) हानि, घाटा, नुकसान।

ख़सिया *वि.* (अर.) नपुंसक, हिजड़ा, बधिया *पुं.* बकरा मुहा. खसिया करना-बधिया करना।

ख़सियाना *स.क्रि.* (देश.) खसी करना, बधिया करना, नपुंसक बनाना।

ख़सीस *वि.* (अर.) 1. कंजूस, कृपण 2. कमीना, नीच, पामर, क्षुद्रहृदय।

ख़सोट *स्त्री.* (देश.) बलपूर्वक छीनने की क्रिया।

खसोटना *स.क्रि.* (देश.) नोंचना, उखाड़ना, छीन लेना जैसे- बाल खसोटना, पत्ते खसोटना।

ख़सोटा *पुं.* (देश.) 1. लुटेरा 2. कुश्ती का एक पेंच।

ख़स्ता *वि.* (फा.) 1. भुरभुरा, थोड़ी दाब से टूटने वाला, बहुत नरम 2. खिन्न 3. क्लांत 4. घायल, संकटमय, दुर्दशाग्रस्त 5. अकिंचन, दरिद्र।

ख़स्ता कचौड़ी *स्त्री.* (फा.+देश.) टिकिया की शक्ल की मोमनदार कचौड़ी।

खस्ता हाल *पुं.* (फा.) फटेहाल।

ख़स्सी *वि.पुं* (अर.) बधिया, हिजड़ा, नपुंसक।

खांड *पुं.* (तत्.) 1. खांड से बनी चीज 2. खंडित होना।

खांडव *पुं.* (तत्.) 1. कुरूक्षेत्र का एक प्राचीन वन, एक वन जिसे अग्नि ने अर्जुन की सहायता से जलाया था 2. खांड से बनी मिठाई।

खांडवप्रस्थ *पुं.* (तत्.) धृतराष्ट्र से पांडवों को मिला हुआ स्थान जहाँ उन्होंने इंद्रप्रस्थ नगर बसाया था।

खांडवराग *पुं.* (तत्.) खांड़ से बना मिष्ठान जैसे- तिल, मधु, धृत मिलाकर खांडव राग तैयार किया जाता है।

खाँ *पुं.* (फा.) दे. खान।

खाँखर *वि.* (देश.) 1. झीना, सुराखदार, जिसमें बहुत छेद हो 2. खोखला, पोला जैसे- खाँखर कपड़ा, खाँखर खटिया।

खाँग *पुं.* (तद्.) 1. काँटा, कंटक 2. गैंडे के मुँह के ऊपर का सींग 2. जंगली सुअर का दाँत जो मुँह के बाहर काँटे की तरह निकला होता है 4. तीतर आदि के पैर का काँटा।

खाँगर *वि.* (देश.) 1. खाँगवाला 2. हथियारबंद, शस्त्रधारी 3. बलवान 4. अक्खड़, उद्‌दंड।

खाँच *पुं.* (देश.) 1. संधि, जोड़ 2. खींच कर बनाया हुआ निशान 3. खचन, गठन 4. दो वस्तुओं के बीच की जगह।

खाँचा *पुं.* (देश.) 1. झाबा 2. बड़ा पिंजड़ा 3. पतली टहनी का बना टोकरा 5. प्रेम जैसे- खिलौने वाले खाँचा बनाते है, फिर उस पर कपड़ा चढ़ाते हैं।

खाँड *स्त्री.* (तद्.) बिना साफ की हुई चीनी, कच्ची शक्कर।

खाँडविक *पुं.* (तद्.) हलवाई, मिठाई बनाने वाला।

खाँड़ा *पुं.* (तद्.) 1. भाग, टुकड़ा 2. सीधी और कुछ चौड़ी तलवार।

खाँड़ा *स्त्री.* (तद्.) टुकड़ा, फाँक।

खाँणी *स्त्री.* (देश.) कमी, घाटा, त्रुटि।

खाँसना *अ.क्रि.* (देश.) गले में रूका हुआ कफ या अटकी चीज निकालने या केवल शब्द करने के

लिए वायु को झटके के साथ कंठ से बाहर निकालना, खखारना।

खाँसी *स्त्री.* (तद्.) खाँसने की क्रिया, एक रोग, जिसमें फेफड़े से झटके और आवाज के साथ हवा बाहर निकलती है।

ख़ाइन *वि.* (अर.) रुपया खा जाने वाला, बेईमान, खयानत करने वाला, व्यवहार में खोटा।

खाई *स्त्री.* (देश.) किले, परकोटे के चारों ओर रक्षा हेतु खोदी हुई नहर, खंदक, पुच्छ क्षेत्र में सुधारार्थ खोदे जाने वाले गड्ढे।

खाउबीर *वि.* (देश.) दूसरों का माल हड़प जाने वाला।

खाऊ *वि.* (देश.) 1. बहुत खाने वाला, पेटू 2. घूस लेने वाला।

खाऊमीन *पुं.* (देश.) मतलब का दोस्त, मतलबी दोस्त, खाने के लिए की जाने वाली दोस्ती।

खाक *स्त्री.* (फा.) 1. धूल, रज, गर्द 2. राख, भस्म 2. मिट्‌टी, मृत्तिका मुहा. खाक उड़ना- बरबाद होना; खाक उड़ाना- उपहास करना (किसी का); खाक करना- नष्ट करना; खाक का पुतला- आदमी; खाक चाटना-सिर नवाना; खाक छानना- बहुत ढूँढना, मारा-मारा फिरना; खाक डालना- छिपाना, दबाना; खाक में मिलना- बरबाद होना, चौपट होना; खाक में मिलाना- बिगाड़ना, तबाह करना; खाक सिर पर उड़ाना- शोक करना।

खाकदान *पुं.* (फा.) 1. कूड़ाखाना, कूड़ा घर 2. संसार, दुनिया।

खाकशी *पुं.* (फा.) वनस्पति का दाना जो औषधि के काम में प्रयुक्त होता है।

खाकसार *वि.* (फा.) 1. विनीत, विनम्र 2. असहाय, निराश्रित, दीन।

खाकसीर *स्त्री.* (फा.) खूब कलां नामक औषधि।

खाका *पुं.* (फा.) 1. नक्शा, मानचित्र 2. ढाँचा।

खाकान *पुं.* (फा.) 1. सम्राट, महाराज, शहंशाह 2. तुर्की और चीन के पुराने शासकों की उपाधि।

खाकी *वि.* (फा.) 1. मिट्‌टी के रंग का, मटियाला 2. पुलिस या फौज की मटियाले रंग की बर्दी 3. साधुओं का एक संप्रदाय।

खाख *स्त्री.* (फा.) छेद, सुराख, मिट्‌टी, धूल, रज।

ख़ाग *पुं.* (फा.) मुर्गी का अंडा।

ख़ागना *अ.क्रि.* (देश.) 1. चुभना, गड़ना।

खागीना *पुं.* (फा.) अंडे की तरकारी, अंडे का आमलेट।

ख़ाज *स्त्री.* (तद्.) 1. खुजली, खारिश 2. त्वचा में खुजली होने का रोग मुहा. कोढ़ में खाज होना- दुख में दुख बढ़ाना।

खाजा *पुं.* (तद्.) 1. खाद्य पदार्थ, खाने की वस्तु 2. 2. मैदे की बनी मिठाई 3. एक जंगली वृक्ष।

खाजिक *पुं.* (तत्.) 1. भुना हुआ अन्न या धान्य 2. लावा।

खाजिन *पुं.* (अर.) कोषाध्यक्ष, खजांची।

खाट *स्त्री.* (तद्.) चारपाई, खटिया, पलंगड़ी मुहा. खाट पर चढ़ना- बहुत बीमार पड़ना; खाट करना- खाट पर ही मल मूत्र त्याग का प्रबंध होना, सख्त बीमार होना; खाट से उतारा जाना-मरने की समीप होना; खाट से लगना- बहुत बीमार होना *स्त्री.* (तत्.) अरथी, टिखटी।

खाट खटोल *पुं.* (देश.) खाट खटोला-कपड़ा लत्ता

खाटी *वि.* (देश.) 1. साफ, बिना मिलावट का, निरा 2. पूर्णतया 3. गड्ढा, निचली जमीन 4. खट्‌टी *स्त्री.* (तत्.) अरथी।

खाडव *पुं.* (तद्.) षाडव, छः स्वरों वाला राग।

खाड़ी *स्त्री.* (तद्.) 1. समुद्र का वह भाग जो तीन ओर थल से घिरा हो, उपसागर 2. अरहर का सूखा और बिना फल पत्ते का पौधा 3. किसी चीज से आखिरी बार निकाला हुआ रंग।

खात *पुं.* (तत्.) 1. खोदा हुआ स्थान 2. तालाब 3. कुआँ, गड्ढा 4. वह गड्ढा जिसमें खाद बनाने के लिए कूड़ा या मैला जमा किया जाता है 6. मद्य मद्य बनाने के लिए रखा हुआ महुए का ढेर *वि.* (तत्.) 1. खोदा हुआ 2. मैला, गंदा।

खातक *पुं.* (तत्.) खोदने वाला व्यक्ति, कर्जदार, तलैया, खाई।

खातम *पुं.* (अर.) 1. अंगूठी 2. मोहर वाली अंगूठी, मुद्रा।

खातम बंद *वि.* (अर.+फा.) मुहर की अंगूठी बनाने वाला, हाथी दाँत के उपर नक्काशी करने वाला।

ख़ातमा *पुं.* (फा.) दे. खातिमा।

ख़ातर *अव्य.* (अर.) दे. खातिर।

खाता *स्त्री.* (तद्.) 1. तालाब या बावड़ी *पुं.* (देश.) वह बही या किताब जिसमें प्रत्येक ग्राहक या असामी का अलग-अलग हिसाब रखा जाता है 2. व्यापार में हिसाब-किताब रखने की प्रक्रिया जैसे- बैंक में बचत खाता खोल दिया है 3. किसी मद में कुछ राशि रखना, धर्मशाला, खर्च खाता जैसे- महाजन ने कुछ राशि धर्म खाते में रख दी मुहा. खाता खोलना-नया व्यवहार करना; खाता डालना-हिसाब खोलना, लेन देन आरंभ करना; खाते में पड़ना- पक्की बही में लिख जाना।

खाति *स्त्री.* (तत्.) खुदाई।

खातिम *वि.* (अर.) खत्म या समाप्त करने वाला *पुं.* (अर.) समाप्ति।

खातिमा *पुं.* (अर.) 1. अंत, समाप्ति, पुस्तक का आखिरी अध्याय का परिच्छेद 2. फल, परिणाम, नतीजा, अंजाम।

ख़ातिर *स्त्री.* (अर.) 1. सत्कार, सम्मान, आदर, लिहाज 2. मन में उत्पन्न होने वाला, विचार 3. आकांक्षा, इच्छा 4. के वास्ते, के लिए, कारण, निमित्त।

खाती *स्त्री.* (तद्.) 1. गड्ढा, छोटा तालाब, तलैया, खोदी हुई भूमि 2. बढ़ई 3. जमीन खोदने वाली जाति, समाजशास्त्र *वि.* (अर.) जानबूझ कर अपराध करने वाला।

ख़ातून *स्त्री.* (तुर्की.) 1. भद्र कुलीन महिला 2. तुर्की भाषा में भले घर की स्त्रियों का संबोधन, बीबी, श्रीमती, महिला।

खातेदार *पुं.* (खाता तद्.+दार-फा.) खाता खोलने वाला व्यक्ति, लेन देन प्रारंभ करने वाला व्यक्ति जैसे- पटवारी ने सभी खातेदार बुला लिए हैं।

ख़ात्मा *पुं.* (अर.) दे. खातिमा।

खात्र *पुं.* (तद्.) 1. फावड़ा, कुदाल जैसे- वह खात्र लेकर खेत में जा रहा है 2. बड़ा तालाब जैसे- कुरूक्षेत्र में प्राचीन खात्र प्रसिद्ध है 3. सूत, डोरा 4. जंगल, वन, अरण्य 5. त्रास, भय, डर।

खाद *स्त्री.* (तद्.) जमीन का उपजाऊपन बढ़ाने वाली वस्तु।

खादक *पुं.* (तत्.) कर्जदार व्यक्ति, ऋण लेने वाला व्यक्ति *वि.* खाने वाला भक्षक।

खादन *पुं.* (तत्.) 1. भक्षण, भोजन, खाना 2. दाँत 3. खाने की क्रिया या भाव।

खादनीय *वि.* (तत्.) भक्षणीय, खाने योग्य।

खादर *पुं.* (तद्.) 1. नदी, झील आदि के किनारे की वह नीची जमीन जिसमें वर्षा का पानी बहुत दिनों तक रुका रहता है, तराई, कछार 2. चारागाह जैसे- पशुपालकों के लिए खादर के निकट रहना अच्छा है मुहा. खादर लगाना- पशुओं के चरने योग्य घास उगाना।

खादित *वि.* (तत्.) 1. खाया हुआ, भक्षित।

खादिता *स्त्री.* (तत्.) खानेवाली वस्तु, भक्षण करने वाली चीज़ *वि.* खानेवाला, भक्षक।

खादिम *पुं.* (अर.) 1. नौकर, सेवक 2. दरगाह का रक्षक या पुजारी।

खादिमा *स्त्री.* (अर.) नौकरानी, सेविका जैसे- बादशाह के जनान-खाने में उसकी खास खादिमा रहती थी।

खादिर *पुं.* (तत्.) खैर, कत्था *वि.* 1. खदिर से उत्पन्न 2. खैर/कत्था का बना हुआ।

खादिर सार *पुं.* (तत्.) कत्था।

खादिरी *स्त्री.* (तत्.) 1. खदिर वृक्ष की लकड़ी 2. जालवंती 3. वराहक्रांता लता।

खादी *स्त्री.* (देश.) 1. हाथ का बुना मोटा कपड़ा 2. खद्दर जैसे- स्वतंत्रता संग्राम के दौरान स्वदेशी वस्त्र के रूप में खादी का बहुत प्रयोग हुआ है *वि.* (तत्.) 1. खाने वाला, भक्षक 2. शत्रु का नाश करने वाला, रक्षक।

खादी आश्रम *पुं.* (देश.+तत्.) वह स्थान जहाँ खादी के वस्त्र आदि विक्रय किए जाते हैं।

खादी धारी *वि.* (देश.+तत्.) खादी के वस्त्र पहनने वाला।

खादुक *वि.* (तत्.) 1. हिंसक, जिसकी प्रवृत्ति सदा हिंसा की ओर रहे 2. हानिकर।

खाद्य *वि.* (तत्.) खाने योग्य, भोज्य, भक्ष्य *पुं.* (तत्.) वह जो खाया जाय, भोजन।

खाद्यमंत्री *पुं.* (तत्.) किसी देश या राज्य के खाद्य खाद्य विभाग का मंत्री।

खाद्यान्न *पुं.* (तत्.) वे अन्न जो खाने के काम आते हैं।

खाद्योज *पुं.* (तद्.) 1. पोषकतत्व, जीवन तत्व, विटामिन 2. प्राकृतिक खाद्य पदार्थों में पाया जाने वाला सूक्ष्म तत्व जो प्राणियों के स्वास्थ्य एवं अभिवृद्धि के लिए आवश्यक माना जाता है।

खाधुक *वि.* (तत्.) खानेवाला उदा. कहेसि पंखि खाधुक मानव-जायसी।

खाधू *वि.* (तत्.) दे. खाधुक।

खान *स्त्री.* (तद्.) 1. खदान, वह स्थान जहाँ से धातु और पत्थर खोदकर निकाले जाते है जैसे- मकराने की खान बहुत प्रसिद्ध है 2. खोदने का कार्य, खोदना, खनन*पुं.* (देश.) 1. खाने की क्रिया 2. भोजन, भोजन की सामग्री 3. भोजन करने का ढंग *पुं.* (फा.) 2. सरदार, उमराव, पठानों की उपाधि।

खानज़ादा *पुं.* (फा.) 1. खान या सरदार का लड़का, ऊँचे घराने का व्यक्ति 2. एक प्रकार के क्षत्रिय जिनके पूर्वज मुसलमान हो गए थे।

खानबहादुर *पुं.* (खान-फा.+बहादुर-तुर्की.) एक खिताब जो ब्रिटिश शासन में भारत सरकार की ओर से मुसलमानों को दिया जाता था, खाँ बहादुर।

ख़ानसामा *पुं.* (फा.) 1. रसोइया, खाना बनाने वाला 2. अंग्रेजों एवं मुसलमानों आदि के भोजन का प्रबंध करने वाला कर्मचारी 3. भंडारी।

ख़ान साहब *पुं.* (फा.) पठानों के लिए प्रयुक्त आदरसूचक शब्द, एक उपाधि।

खानक *पुं.* (तत्.) 1. खानें खोदने वाला व्यक्ति, बेलदार 2. सेंध मारने वाला चोर।

खानखाना *पुं.* (फा.) सरदारों का सरदार, बहुत बड़ा सरदार।

खानगी *स्त्री.* (फा.) व्यभिचार के द्वारा धन कमाने कमाने वाली वेश्या, कसबी, व्यभिचारिणी *वि.* (फा.) जिससे बाहर वालों का संबंध न हो, निजका, आपस का, घरेलू।

खानदान *पुं.* (फा.) वंश, कुल, घराना जैसे- बहादुरशाह जफर मुगल खानदान के बादशाह थे।

खानदानी *वि.* (फा.) 1. ऊँचे वंश का, अच्छे कुल का 2. पैतृक/पुश्तैनी 3. अकुलीन (व्यंग्यपरक प्रयोग)।

खानपान *पुं.* (तद्.) 1. अन्न-पानी, भोजन और जल, खाना-पीना 2. खाने-पीने का ढंग, खाने-पीने की क्रिया।

खानम *स्त्री.* (तुर्की.) खान की स्त्री, कुलीन या प्रतिष्ठित महिला।

खाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. पेट भरने के लिए मुँह में आहार चबाकर निगल जाना, भोजन करना, भक्षण करना 2. हिंसक पशुओं का शिकार पकड़ना और भक्षण करना 3. चूसकर खाना, चबाना (पान) जैसे- वह पान खाना चाहता है, वह गन्ने की गंड़ेरिया खाना चाहता है 4. चाट जाना (कीड़ों आदि का) जैसे- मेरी इस किताब को कीड़े खा गए 5. खर्च करना 6. नष्ट करना 7. जो खोखला कर दे 8. काटना 9. सहना 10. धूप हवा लगाने देना।

ख़ाना *पुं.* (फा.) 1. घर, मकान, आलय 2. किसी चीज़ को रखने का स्थान, केस 3. आलमारी, मेज या संदूक आदि में चीजें रखने के लिए पटरियों या तख्तों के द्वारा किया हुआ विभाग 4. सारिणी या चक्र का विभाग, कोष्ठक।

खाना-पीना *पुं.* (देश.) खाने-पीने का व्यवहार, खान-पान।

ख़ाना पूरी *स्त्री.* (देश.) 1. सारणी चक्र आदि के कोठों में यथास्थान अभिप्रेत या अभीष्ट स्थानों में संख्याएँ आदि भरना 2. नक्शा करना 3. केवल दिखावे के लिए बेमन से काम करना।

ख़ानाबदोश *वि.* (फा.) जिसके रहने या ठहरने का कोई निश्चित स्थान न हो, यायावर।

खानि *स्त्री.* (तत्.) 1. खान, खदान 2. उत्पत्ति, वह स्थान जहाँ कोई वस्तु, अधिकता से हो, खजाना।

खानिल *पुं.* (तत्.) सेंध मारने वाला तस्कर।

खानोदक *पुं.* (तत्.) नारियल का वृक्ष।

खाप *पुं.* (देश.) चोट, वार, आघात।

खापगा *स्त्री.* (तत्.) आकाश गंगा।

खापट *स्त्री.* (देश.) वह भूमि जिसमें लोहे का अंश अधिक हो तथा केवल धान ही पैदा हो पाता है।

खामखयाल *पुं.* (फा.) व्यर्थ के विचार, गलत विचार।

खामखयाली *स्त्री.* (फा.) गलत धारणा, व्यर्थ का विचार।

खामना *स.क्रि.* (देश.) 1. गीली मिट्टी या आटे आदि से किसी पात्र का मुँह बंद करना 2. गोंद लगाकर लिफाफे का मुँह बंद करना।

ख़ामियाजा *पुं.* (फा.) 1. अँगड़ाई 2. जंभाई 3. शिकंजे में कसकर दंड देना, दंड 4. करनी का फल, परिणाम 5. बदला 6. कष्ट 7. हानि मुहा. खामियाजा उठाना-करनी का फल, दंड पाना 8. *पुं.* (फा.) परिणाम, नतीजा।

ख़ामी *स्त्री.* (फा.) 1. कमी, अपूर्णता, त्रुटि 2. कच्चाई, कच्चापन।

ख़ामोश *वि.* (फा.) चुप, मौन, शांत जैसे- मूर्खों के बीच खामोश रहना ही अच्छा होता है।

ख़ामोशी *स्त्री.* (फा.) मौन, चुप्पी।

खार *पुं.* (तत्.-क्षार) क्षार, खारा पदार्थ, नोनी मिट्टी, कल्लर, रेह, धूल, भस्म, राख, एक प्रकार की झाड़ी जिसे जलाने पर खार नामक पदार्थ निकालते हैं (फा.) 1. दूसरों की उन्नति देखकर मन में होनेवाला दुख, द्वेष, जलन, डाह 2. काँटा, काँटा, फाँस, मुर्गा, तीतर आदि के पाँव का काँटा मुहा. ख़ार ख़ाना- डाह करना, जलना; ख़ार गुजरना- मन में बुरा लगना; ख़ार निकालना- मन में छिपे द्वेष के कारण किसी को कष्ट पहुँचाकर सुखी होना।

ख़ारा *पुं.* (फा.) 1. कड़ा पत्थर, चट्टान 2. खार, लहरदार रेशमी कपड़ा *वि.* (तद्.) 1. जिसमें क्षार का अंश या गुण हो 2. जो क्षार के मिलने से कुछ नमकीन स्वाद रखता हो 3. अप्रिय या अरुचिकर *पुं.* (तद्.) 1. घास या सूखे पत्ते बाँधने की जाली 2. बड़ा टोकरा, झाबा 3. एक धारीदार कपड़ा।

ख़ारिक *पुं.* (फा.) 1. ताजा खजूर का फल, जो ज्यादा पकने पर मेवा बनता है 2. फारस की खाड़ी का एक टापू।

ख़ारिक़ *वि.* (अर.) फाड़नेवाला, निदारक।

ख़ारिज *वि.* (अर.) 1. प्रार्थना पत्र, जो अस्वीकृत, अलग किया हुआ हो 2. बाहर किया हुआ, बहिष्कृत, अलग किया हुआ मुहा. खारिज करना- विचार के अयोग्य मानना/नामंजूर।

ख़ारिजी *वि.* (अर.) 1. बाहरी, विदेश संबंधी, बाह्य 2. मुसलमानों के लिए उपेक्षा सूचक शब्द।

ख़ारिश *स्त्री.* (फा.) खुजली, खाज, कंडू।

ख़ारिश्त *स्त्री.* (फा.) दे. खारिश।

ख़ारी *स्त्री.* (तद्.) 1. खारी नमक जो दवा के काम आता है 2. चार अथवा सोलह द्रोण की पुरानी तौल *वि.* (तद्.) क्षार या खार से युक्त, खारा।

खारेजा *पुं.* (फा.) जंगली फूल या बेंर, बनकुसुम।

खार्जूर *पुं.* (तत्.) खजूर के रस से बनी शराब, वैद्यक में इसे कफनाशक, कषाय और मद्य पान पान माना जाता है *वि.* (तत्.) खजूर संबंधी खजूरी।

खार्वा *स्त्री.* (तत्.) त्रेतायुग, दूसरा युग।

खाल *स्त्री.* (देश.) 1. मनुष्य, पशु आदि के शरीर से उतारी गई त्वचा, चमड़ा 2. किसी चीज का अंगीकृत आवरण 3. मृत शरीर, धौंकनी, भाती मुहा. खाल उधेड़ना (खींचना)- शरीर पर से चमड़ा खींचकर अलग करना, बहुत मारना या पीटना, कड़ा दंड देना अपनी खाल में मस्त रहना- अपने पास जो कुछ हो उसी में मस्त रहना *स्त्री.* (देश.) 1. नीची भूमि 2. खाड़ी 3. खाली जगह, अवकाश 4. गहराई, निचाई *पुं.* (अर.) 1. शरीर का काला दाग, तिल 2. अभिमान, अहंकार, गरूर 3. मामूँ (माता का भाई)।

खालसा/खालिस *वि.* (अर.) 1. जिसमें किसी प्रकार का मेल न हो शुद्ध 2. जिस पर केवल एक का अधिकार हो 3. सिखों का एक विशेष संप्रदाय जैसे- सिखों के दसवें गुरू गोविन्द सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी मुहा. खालसा करना- स्वायत्त करना, जब्त करना।

ख़ाला *स्त्री.* (अर.) माँ की बहन, मौसी *वि.* (देश.) नीचा, निम्नस्थान मुहा. खाला का घर- सहज काम, बहुत आसान काम।

खालिक *वि.* (तत्.) खलिहान की तरह *पुं.* (अर.) बनाने वाला, सृष्टिकर्ता, ईश्वर जैसे- खालिक की मेहरबानी से सब दुख दूर हो जाते हैं।

खालिफ *वि.* (अर.) बहुत अधिक प्रतिकूल पुरुष, जिससे किसी को यश न मिले, रावटी का खंबा।

ख़ालिस *वि.* (अर.) 1. शुद्ध, खरा 2. सच्चा 3. जिसमें कोई दूसरी वस्तु न मिली हो, बेमेल जैसे- खालिस दूध ही स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।

खालिसाना *पुं.* (अर.) शुद्ध निस्वार्थ भाव से।

खाली *पुं.* (अर.) तबला, मृदंग आदि बजानें में वह ताल जो खाली छोड़ दिया जाता है और जिसमें बाएँ हाथ का आघात नहीं लगाया जाता इसका व्यवहार ताल की गिनती ठीक रखने के लिए किया जाता है जैसे- रूद्रताल 16 तालों का होता है जिसमें ग्यारह आघात और पाँच खाली होते है *वि.* 1. जो भरा न हो, रीता, रिक्त, जिसके अंदर कुछ न हो जैसे- भावनाओं से खाली व्यक्ति पत्थर के समान है 2. जिस पर कुछ न हो, जिसपर कोई काम न हो, सावकाश, व्यर्थ, बेकार जैसे- गर्मियों में किसान खाली नजर आते है 3. रिक्त, रहित, विहीन जैसे- उनका घर खाली पड़ा है, यह जंगल जानवरों से खाली हो गया, हमारा मकान खाली कर दो 4. जिसे कुछ काम न हो या किसी कार्य में न लगा हो 5. जो व्यवहार में न हो या जिसका काम न हो 6. व्यर्थ, निष्फल मुहा. खाली हाथ होना- निर्धन होना; खाली पेट- बासी मुँह, बिना अन्न खाए; खाली हाथ-बिना कुछ चीज या पैसे के; खाली बैठना- बेरोजगार रहना, बेकार बैठना; खाली जाना- निशाने पर लगना, व्यर्थ होना; बात खाली जाना- वचन निष्फल होना; खाली दिन- जिस दिन कोई शुभ कार्य न किया जाए; खाली कर देना- दूसरे के बार को बचा जाना; खाली महीना या खाली चाँद- मुसलमानों का ग्यारहवाँ महीना जो अशुभ माना जाता है।

खालू *पुं.* (फा.) 1. माँ की बहन का पति, मौसा 2. मामूँ।

ख़ाविंद *पुं.* (फा.) 1. पति, खसम, शौहर 2. मालिक, स्वामी मुहा. खाविंद करना- नया पति करना।

ख़ाविंदी *स्त्री.* (फा.) 1. स्वामित्व, पतित्व 2. दया, कृपा।

ख़ास *वि.* (अर.) 1. विशेष, मुख्य, प्रधान 2. आत्मीय, प्रिय 3. स्वयं, खुद 4. ठेठ, ठीक मुहा. ख़ास-ख़ास- चुनिंदा, गिने-चुने विलो. आम।

ख़ासगी *वि.* (अर.) 1. राजा या मालिक का 2. निज का, निजी।

ख़ासा *पुं.* (अर.) 1. राज भोज 2. राजा की सवारी का घोड़ा या हाथी 3. एक प्रकार के मलमल का सफेद कपड़ा 4. मोयनदार पूरी *वि.* (अर.) जितना आवश्यक हो उतना, यथेष्ट 2. अच्छा, भला 3. सुंदर, सुडौल 4. भरपूर पूरा *वि.* (अर.) 1. अच्छा, बढिया, उत्तम 2. स्वस्थ्य, नीरोग, सुडौल 3. भरपूर, पूरा।

ख़ासियत *स्त्री.* (अर.) 1. गुण 2. प्रकृति, स्वभाव 3. हुनर 4. प्रभाव, असर।

ख़ासिया *स्त्री.* (देश.) खासिया पहाड़ में रहने वाली अनुसूचित जनजाति।

ख़ासी *वि.* (अर.) 1. राजा के बाँधने की तलवार, ढाल या बंदूक 2. खासिया जनजाति की भाषा 3. *वि.* (अर.) 'खासा' का स्त्रीलिंग रूप।

ख़ास्तई *वि.* (फा.) कबूतर का विशिष्ट रंग।

ख़ास्सा *पुं.* (अर.) स्वभाव, प्रकृति, बान।

खाहमखाह *वि.* (फा.) दे. ख्वाम ख्वाह।

खिंकिर *पुं.* (तत्.) लोमड़ी।

खिंचना *अ.क्रि.* (देश.) 1. खींचा जाना, किसी दिशा में बढ़ना, घिसटना 2. किसी कोश, थैले आदि में से किसी वस्तु का बाहर निकलना 3. किसी वस्तु के एक या दो छोरों का एक या दोनों ओर बढ़ना, तनना 4. किसी ओर बढना या आकर्षित होना, प्रवृत्त होना मुहा. चित्त खिंचना- मन मोहित होना; दर्द खिंचना- दर्द दूर होना; हाथ खिंचना- देना बंद होना।

खिंचाई *स्त्री.* (देश.) 1. खींचने की क्रिया 2. खींचने खींचने की मजदूरी 3. किसी व्यक्ति की खिल्ली उड़ाना या मजाक करना।

खिंचाव *पुं.* (देश.) 1. खींचे जाने का भाव, तनाव 2. विरक्ति 3. नाराजगी।

खिंचावट *स्त्री.* (देश.) खींचने का भाव, खींचने की क्रिया।

खिंडाना *स.क्रि.* (देश.) इधर-उधर फैलना, बिखराना, छितराना। प्रयो. उसने चावल खिंडा दिए।

खिचड़वार *पुं.* (देश.) मकर संक्रांति।

खिचड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. दाल और चावल को एक साथ मिला कर पकाने से बनने वाला भोज्य पदार्थ 2. दो या दो से अधिक चीजों की मिलावट 3. विवाह की एक रस्म जिसमें वर और उसके छोटे भाइयों को खिचड़ी खिलाते है 4. मकर संक्रांति, इस दिन खिचड़ी दान दी जाती है 5. बेरी या फूल 6. वह पेशगी धन जो वेश्या को ठीक नाच करने के समय दिया जाता है, बयाना, साई मुहा. खिचड़ी पकना- गुप्त मंत्रणा, साजिश होना; खिचड़ी होना- खल्त मल्त होना, बालों का पकना; खिचड़ी खाते पहुँचा उतरना- बहुत मजाक होना *वि.* (तद्.) मिश्रित, मिला-जुला, गड्ड-मड्ड, मिश्रित जैसे- आजकल दूरदर्शन पर अंग्रेजी ओर हिन्दी खिचड़ी भाषा का प्रयोग बहुतायत से हो रहा है।

खिचना *अ.क्रि.* (तद्.) दे. खिंचना।

ख़िज *पुं.* (अर.) मार्गदर्शक, एक पैगंबर जो अमर माने जाते हैं।

खिजर *पुं.* (अर.) दे. खिज।

खिजलाना *अ.क्रि.* (देश.) चिढ़ना, झुंझलाना, खीजना।

ख़िजाँ *स्त्री.* (फा.) 1. पतझड़ की ऋतु 2. अवनति का समय, ह्रासकाल।

ख़िजाना *स.क्रि.* (तद्.) दे. खिझाना।

ख़िजाब *पुं.* (अर.) सफेद बालों को काला करने की औषध, केश-कल्प।

ख़िजालत *स्त्री.* (अर.) लज्जा, शर्मिंदगी।

ख़िझ *स्त्री.* (तद्.) दे. खीझ।

ख़िझाना *अ.क्रि.* (देश.) खीजना *स.क्रि.* (देश.) चिढ़ाना, छेड़ना, गुस्सा दिलाने वाली बात करना उदा. मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो-सूरदास।

ख़िझावना *स.क्रि.* (देश.) दे. खिझाना।

खिड़कना *अ.क्रि.* (देश.) चुपचाप कहीं से हट जाना या चल देना, चले जाना, खिसक जाना।

खिड़काना *स.क्रि.* (देश.) 1. अलग करना, टालना, टरकाना, हटाना 2. बेच देना।

खिड़की *स्त्री.* (देश) 1. मकान, रेल, जहाज आदि में हवा और रोशनी आने के लिए बनाया हुआ छोटा दरवाजा, झरोखा, वातायन 2. किले या नगर का चोर दरवाजा 3. खिड़की की तरह खुला हुआ कोई स्थान जैसे- खिड़कीदार अंगरखा, खिड़कीदार पगड़ी मुहा. खिड़की निकालना- खिडकी बनाना।

खिड़कीबंद *वि.* (देश.+फा.) वह मकान जो एक ही किराएदार द्वारा पूरा लिया गया हो 2. यथेष्ट खिड़कियों वाला मकान।

ख़िताब *पुं.* (अर.) 1. पदवी, उपाधि 2. मुखातिब होना, किसी की ओर मुँह करके बातचीत करना।

.खिताबी *वि.* (अर.) जिसे .खिताब मिला हो।

.खित्ता *पुं.* (अर.) भूखंड, प्रदेश, क्षेत्र, इलाका।

.खिदमत *स्त्री.* (अर.) सेवा टहल, सुश्रूषा 2. दासता, दासता, नौकरी।

खिदमतगार *पुं.* (फा.) सेवक, खिदमत करने वाला, नौकर, टहलुआ 2. दास।

.खिदमती *वि.* (अर.) 1. खिदमत करने वाला 2. खिदमत के बदले में प्राप्त जागीरी।

.खिदाल *पुं.* (अर.) दे. ख्याल।

.खिदिर *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. तपस्वी 2. दीन 4. इंद्र।

.खिद्र *पुं.* (तत्.) 1. सिंह के रहने की माँद, आड़, पर्दा 2. व्याधि, रोग 3. दरिद्रता, गरीबी।

.खिन (छिन-क्षण) *पुं.* (तद्.) क्षण, लमहा।

खिन्न *वि.* (तत्.) 1. अप्रसन्न, असंतुष्ट 2. असहाय, दीन-हीन 3. चिंतित।

.खियाबाँ *पुं.* (फा.) 1. उद्यान, बाग, पौधों की क्यारी।

.खिरका *पुं.* (अर.) गुदड़ी, कंथा, पुराना कपड़ा।

.खिरद *स्त्री.* (फा.) बुद्धि, मेधा, अक्ल।

खिरदमंद *वि.* (फा.) बुद्धिमान, मेधावी, मनीषी, अक्लमंद।

.खिरनी *स्त्री.* (तद्.) 1. एक प्रकार का सदाबहार, छायादर ऊँचा पेड़ 2. एक प्रकार का चावल।

.खिरमन *पुं.* (फा.) 1. खलियान, अंबार 2. फसल।

.खिरस *पुं.* (फा.) रीछ, भालू।

.खिराज *पुं.* (अर.) राजस्व, कर, मालगुजारी।

.खिराम *पुं.* (फा.) मस्त चाल, धीमी चाल, भटकन संदर्श चाल।

खिरामाँ *वि.* (फा.) .खिरामावाले, मस्ती की चाल वाले, भटका, नाज नखरे के साथ चलने वाला।

खिरैटी *स्त्री.* (देश.) गोल पत्तों तथा सफेद फलों वाला एक पौधा।

खिलंदरा *वि.* (देश.) खिलाड़ी।

खिल *पुं.* (तत्.) 1. ऊसर धरती, रेतीली भूमि 2. रिक्त स्थान, खाली स्थान 3. परिशिष्ट 4. संकलन 5. शून्यता, खालीपन 6. शेष भाग, शेषांश 7. ब्रह्मा 8. विष्णु।

.खिलअत *स्त्री.* (अर.) जोड़ा पोशाक, वह पहनावा जो राजा या बादशाह किसी को सम्मानार्थ प्रदान करे।

.खिलकत *स्त्री.* (अर.) 1. संसार, सृष्टि 2. भीड़ बहुत से लोगों का समूह।

.खिलखिलाना *अ.क्रि.* (अनु.) आवाज के साथ खुलकर हँसना, कहकहा लगाना, अट्टहास करना।

.खिलखिलाहट *स्त्री.* (देश.) खिल-खिलाकर हँसने का भाव।

.खिलजी *पुं.* (देश.) पठानों की एक जाति, हिंदुस्तान का एक पठान राजवंश।

खिलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. कली का विकसित होना, फूल बनना। प्रयो. चलने का संबल लेकर दीपक पंतग से मिलता, जलने की दीन दशा में वह फूल सदृश है खिलता 2. प्रसन्न होना, प्रमुदित होना 3. शोभित होना, उपयुक्त होना या उचित जँचना 4. बीच से फट जाना 5. अलग-अलग हो जाना

खिलवत *स्त्री.* (अर.) एकांत, निर्जन, जन शून्य स्थान, तनहाई।

खिलवाड़ *पुं.* (देश.) 1. मन बहलाने या समय बिताने के लिए बच्चों की तरह का किया जाने वाला काम 2. मनबहलाव, दिल्लगी 3. बहुत ही साधारण रूप से किया हुआ काम।

.खिलवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किसी को भोजन कराना 2. किसी को तृप्त तृप्त करना 3. प्रफुल्लित कराना 4. खीले बनवाना।

खिलाई *स्त्री.* (देश.) 1. भोज की क्रिया, खाने का काम 2. खिलाने का काम।

खिलाई-पिलाई *स्त्री.* (देश.) खिलाने-पिलाने की क्रिया या भाव 2. खाने या खिलाने का पारिश्रमिक।

.खिलाफ़ी *स्त्री.* (अर.) मुखालफत, विरोध (प्राय: समास में) जैसे. वादाखिलाफी।

खिलाड़ *वि.* (देश.) 1. बहुत खेलने वाला *स्त्री.* (देश.) बदचलन, पुश्चली, चंचल, हाव-भाव में प्रवीण।

खिलाड़ी *वि.* (देश.) 1. खेलने वाला 2. खेल करने वाला 3. कुश्ती करने वाला *पुं.* (देश.) 1. खेलने वाला व्यक्ति 2. जादूगर, बाजीगर 3. पहलवान।

.खिलाना *स.क्रि.* (देश.) खिलने की प्रेरणार्थक क्रिया 1. भोजन कराना, दावत देना 2. प्रफुल्ल करना 3. खेल कराना, किसी को खेल में नियोजित करना।

.खिलाफ़ *वि.* (अर.) विरुद्ध, प्रतिकूल, उलटा।

खिलाफत *स्त्री.* (अर.) 1. खिलाफ या विरोध होने का भाव 2. खलीफा का पद 3. स्थानापन्नता 4. ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध एक छेड़ा गया आंदोलन 'खिलाफत आंदोलन'।

.खिलाल *स्त्री.* (अर.) 1. दाँत खोदने का तिनका 2. दो चीजों के बीच का फासला 3. ताश आदि खेल में पूरी बाजी की हार।

खिलौना *पुं.* (देश.) काठ, मोम, मिट्टी की बनी चीज जिससे बालक खेलते हैं, खेलने की चीज या साधन, किसी को मन बहलाने का साधन या सामग्री मुहा. हाथ का खिलौना- आमोद प्रमोद की वस्तु, प्रिय वस्तु।

खिल्त *स्त्री.* (अर.) 1. यूनानी वैज्ञानिकों की मानी हुई शरीर की धातुओं (वात, पित्त, कफ़) में से कोई 2. एक मिला-जुला, एक में मिला हुआ।

खिल्ली *स्त्री.* (देश.) 1. हँसी, मजाक, दिल्लगी 2. पान का बीड़ा, गिलौरी जैसे- वह पाने में खिल्ली दबाए हुए है 3. कील, काँटा मुहा. खिल्ली उड़ाना- किसी का मजाक उड़ाना, उपहास करना।

खिल्लीबाज *पुं.* (देश.+फा.) खिल्ली उड़ाने वाला, दिल्लगी बाज, विनोदी, हँसी-मज़ाक करने वाला।

खिसकना *अ.क्रि.* (देश.) हटना, सरकना, चुपके से दूसरों की दृष्टि बचाते हुए उठ कर चल देना।

खिसकाना *स.क्रि.* (देश.) हटाना, सरकाना, चुपके से हथिया लेना, चुपके से किसी की कोई वस्तु उठाकर चल देना।

.खिसलना *अ.क्रि.* (देश.) दे. फिसलना।

.खिसलाहट *स्त्री.* (देश.) फिसलने या खिसलने का भाव या क्रिया।

.खिसिआना *अ.क्रि.* (देश.) लज्जित होकर, अप्रसन्न होकर अथवा रुष्ट होकर दाँत निकाल देना या सिर झुका लेना।

खिसी *स्त्री.* (देश.) खींचने का क्रिया या भाव।

खींचतान *स्त्री.* (देश.) 1. किसी वस्तु की प्राप्ति के के लिए व्यक्तियों द्वारा एक दूसरे से छीनने का का व्यापार आदि 2. विभिन्न दिशाओं में विभिन्न पक्षों द्वारा खींच कर ले जाने की क्रिया क्रिया या प्रयास 3. खींचा-खींची, नोंक-झोंक 4. किसी तरह खींच-खींच कर शब्द या वाक्य का अन्य अर्थ लगाना।

खींचना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी वस्तु को अपनी ओर आकृष्ट करना, घसीटना 2. किसी वस्तु या स्थान से कोई चीज बलपूर्वक बाहर निकालना

3. किसी वस्तु का तत्व, सार या सुगंध निकालना जैसे- वह गुलाब का इत्र खींचने में निपुण है 4. चूसना या सोखना 5. चित्रित या अंकित करना 7. कौशल पूर्वक किसी के अधिकार से कोई चीज निकल कर अपने हाथ में करना 8. व्यापारिक वस्तुएँ मंगाना मुहा. चित्त खींचना- मोहित करना; दर्द खींचना- औषध से दर्द दूर करना; खींच-खाँच करना- झटपट टेढ़ा सीधा लिखना; हाथ खींचना- कोई काम बंद करना।

खींचा-खीची *स्त्री.* (देश.) दे. खींचतान।

खींचातान *स्त्री.* (देश.) दे. खींचतान।

खींचातानी *स्त्री.* (देश.) दे. खींचतान।

खीज *स्त्री.* (तद्.) दे. खीझ।

खीजना *अ.क्रि.* (तद्.) झुँझलाना, दुखी और क्रुद्ध होना।

खीझ *स्त्री.* (तद्.) 1. खीझने का भाव, झुंझलाहट, कुढ़न 3. गुस्सा।

खीझना *अ.क्रि.* (तद्.) किसी अप्रिय बात, कार्य या व्यवहार आदि का प्रतिकार न कर सकने पर उससे खिन्न होकर झुँझलाना।

खीनता (क्षीणता) *स्त्री.* (तद्.) क्षीणता, कृशता।

खीनताई *स्त्री.* (देश.) 1. दुर्बलता, 2. सूक्ष्मता।

खीप *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार का घना सीधा पेड़ 2. लज्जालु 3. गंध प्रसारिणी, गंध पसारा।

खीर (क्षीर) *स्त्री.* (तद्.) 1. दूध में चावल डालकर उबालने और चीनी मिलाने से बनने वाला भोज्य पदार्थ *पुं.* (तद्.) दूध।

खीर चटाई *स्त्री.* (देश.) बच्चे को पहली बार अन्न खिलाने का संस्कार, अन्न प्राशन।

खीर मोहन *पुं.* (देश.) छेने की बनी हुई एक प्रकार की बंगला मिठाई।

खीरा *पुं.* (तद्.) ककड़ी की जाति का एक फल मुहा. खीरा-ककड़ी- अत्यंत तुच्छ, वस्तु देय।

खीरी *स्त्री.* (तद्.) 1. गाय, भैंस आदि के थन के ऊपर का भाग 2. खिरनी का फल।

खील *स्त्री.* (देश.) 1. भुना हुआ धान, लावा 2. कील, काँटा मेख 3. लौंग नामक आभूषण जिसे स्त्रियाँ नाक में पहनती हैं 4. वह भूमि जो जोती जाने जाने से पहले बहुत दिन तक परती छोड़ी गई हो।

खीलना *स.क्रि.* (देश.) पान के बीड़े को तैयार करके तिनका गोदना।

खीवर *पुं.वि.* (तद्.) 1. शूर, वीर, बहादुर 2. मतवाला।

खीस *स्त्री.* (देश.) 1. खिसियाने का भाव, लज्जा 2. अप्रसन्नता, नाराजगी, क्रोध, रोष, गुस्सा 3. ओठ से बाहर निकले हुए दाँत, गिड़गिड़ाकर माँगना 4. घाटा, हानि 5. गाय, भैंस का वह दूध जो ब्याने के पीछे सात दिन तक निकलता है, पेउस या पेवसी *वि.* (देश.) नष्ट, बरबाद मुहा. खीस काढ़ना- इस तरह हँसना कि दाँत दिखाई दे; खीस डालना- नष्ट होना; खीस निकालना- दीन होकर कुछ माँगना; खीस निपोरना- गिड़गिड़ाना।

खीसना *अ.क्रि.* (देश.) नष्ट होना, खराब होना, बरबाद होना।

खीसा *पुं.* (फा.) 1. थैला, थैली 2. बटुआ, जेब, खलीत 3. ओंठ से बाहर निकले हुए दाँत।

खुंट कढ़वा *पुं.* (देश.) कान का मैल निकालने वाला, कन मैलिया।

खुंडला *पुं.* (देश.) 1. टूटा फूटा सामान 2. छोटा झोंपड़ा।

खुंदवाना *स.क्रि.* (देश.) कुचलवाना, दबवाना, रौंदवाना, खुँदाना।

खुंदाना *स.क्रि.* (देश.) 1. खूँदने में प्रवृत्त करना 2. (घोड़ा) कुदाना या कुदाते हुए चलाना।

खुंभी *स्त्री.* (तद्.) 1. कान में पहनने का एक गहना 2. एक वनस्पति या उद्‌भिज जिसका एक छोटा डंठल होता है, खुंबी, खुमी, (मशरूम), खंभे के नीचे का वह भाग जो ऊपर के भाग से कुछ बाहर निकला रहता है।

खुँड *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार की मोटी घास 2. एक प्रकार का पहाड़ी टट्टू, गुँठा।

खुगाह *पुं.* (देश.) काला घोड़ा।

खुजलाना *अ.क्रि.* (तद्.) शरीर के किसी अंग में रक्त का संचार रुक जाने से नाखून या उंगली से बार-बार उस स्थान पर रगड़ना या मलना।

खुजली *स्त्री.* (देश.) 1. शरीर के किसी अंग में रक्त संचार रूक जाने के कारण होने वाली सुरसुरी 2. एक चर्म रोग, जिसमें शरीर पर छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं मुहा. खुजली उठना- दंड पाने की इच्छा होना, शामत आना (बालकों के लिए)।

खुटकना *स.क्रि.* (तद्.) किसी वस्तु का शिरोभाग तोड़ना या नोच लेना/ खोंटना।

खुटाई *स्त्री.* (देश.) खोटापन, दोष।

खुटिला *पुं.* (देश.) करनफूल नामक कान का आभूषण।

खुट्टी *स्त्री.* (देश.) 1. तिल और गुड़ से बनने वाली एक प्रकार की मिठाई, रेवड़ी 2. बालकों की एक क्रिया, जिससे वे परस्पर संबंध विच्छेद करते हैं, कुट्टी।

खुट्ठी *स्त्री.* (देश.) घाव पर जमी हुई पपड़ी, खुरंड।

खुड्डी *स्त्री.* (देश.) पाखाने में पैर रखने के पायदान, पाखाना फिरने का गड्ढा।

खुतबा *पुं.* (अर.) 1. तारीफ, प्रशंसा 2. प्रशंसात्मक लेख या कविता 3. धार्मिक व्याख्यान जो नमाज के बाद इमाम खड़ा होकर देता है तथा जिसमें तत्कालीन खलीफा के लिए दुआ दी जाती है मुहा. किसी के नाम का खुतबा पढ़ा जाना- किसी के सिंहासनासीन होने की घोषणा होना।

खुत्थ *पुं.* (देश.) कटे हुए पेड़ की जड़ और उसके ऊपर का भाग।

खुद *अव्य.* (फा.) स्वयं, आप मुहा. खुद-ब-खुद- आप से आप, दूसरे की सहायता के बिना।

खुदकुशी *स्त्री.* (फा.) आत्महत्या, अपने हाथों अपने को मार डालना।

खुदगरज *वि.* (फा.) अपना मतलब साधने वाला, स्वार्थी, मतलबी।

खुदगरजी *स्त्री.* (फा.) स्वार्थ परता।

खुदना *अ.क्रि.* (देश.) खोदने का कार्य होना, खोदा जाना।

खुदपरस्त *वि.* (फा.) 1. मतलबी, स्वार्थी 2. अहंकारी, घमंडी।

खुदपसंद *वि.* (फा.) 1. हठी 2. खुदराय, अपनी पसंद पर डटने वाला।

खुद मुख्तार *वि.* (फा.) जिस पर किसी का दबाव न हो, स्वतंत्र, स्वच्छंद।

खुदरा *पुं.* (फा.) 1. छोटी और साधारण वस्तु, फुटकर चीज विलो. थोक जैसे- थोक के व्यापारी खुदरा माल नहीं बेचते।

खुदराई *स्त्री.* (फा.) स्वेच्छाचारिता।

खुदवाई *स्त्री.* (देश.) 1. खुदवाने की क्रिया 2. खोदने का भाव या मजदूरी।

खुदवाना *स.क्रि.* (देश.) 'खोदना' का प्रेरणार्थक रूप, खोदने का काम कराना।

खुदा *पुं.* (फ़ा.) ईश्वर, परमात्मा, स्वयंभू मुहा. खुदा-खुदा करके- बहुत कठिनता से; खुदा की मार- ईश्वर का प्रकोप।

खुदाई *स्त्री.* (देश.) 1. खोदने का भाव, खोदने का काम 2. खोदने की मजदूरी *स्त्री.* (फा.) 1. सृष्टि सृष्टि संसार ज़गत, दुनिया 2. ईश्वरत्व, खुदापन *वि.* दैवी, आस्मानी, ग़ैबी।

खुदी *पुं.* (फा.) 1. 'खुद का भाव' अहंभाव 2. अभिमान, घमंड 3. शेखी।

खुद्दार *वि.* (फा.) 1. अपनी प्रतिष्ठा को ध्यान में रखने वाला व्यक्ति, आत्माभिमानी 2. आत्मनिग्रही, स्वाभिमानी।

खुनकी *स्त्री.* (फा.) सरदी, ठंडक, शीतकाल, ज़ाड़ा, नामर्दी, नपुंसकता।

खुनखुना *पुं.* (अनु.) बच्चों का एक खिलौना, जो खुन खुन शब्द करता है, झुनझुना।

खुनस (खुनिस-खुंस) *स्त्री.* (तद्.) ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित प्रेरित क्रोध, रोष, गुस्सा।

खुनसी *स्त्री.* (तद्.) क्रोधी, गुस्सा करने वाला।

खुफिया *वि.* (अर.) गुप्त, छिपा हुआ।

खुब्बाजी *स्त्री.* (अर.) चंगेल नामक पौधे का फल जो दवा के काम आता है।

खुभना *अ.क्रि.* (तद्.) चुभना, धँसना, घुसना।

खुभराना *अ.क्रि.* (तद्.) उत्पात के लिए घूमना उमड़ना, इतराए फिरना, इठलाते फिरना।

खुम *पुं.* (फा.) घड़ा, मटका, शराब का मटका।

खुमरा *पुं.* (अर.) एक प्रकार के भीख माँगने वाले मुसलमान।

खुमारी *स्त्री.* (अर.) 1. मद, नशा 2. वह दशा जो नशा उतरने के समय होती है और जिसमें कुछ हल्की थकावट महसूस होती है 3. वह दशा जो रात भर जागने से होती है, इसमें भी शरीर शिथिल रहता है।

खुमी *स्त्री.* (देश.) 1. एक उद्‌भिद वर्ग, जिसके अंतर्गत कुकरमुत्ता आदि पौधे आते है 2. दाँत में जड़ी हुई सोने की कील 3. हाथी के दाँत पर चढ़ाया हुआ छल्ला।

खुरंड *पुं.* (देश.) सूखते हुए घाव के ऊपर जमने वाली पपड़ी।

खुर *पुं.* (तत्.) 1. सींग वाले पशुओं के पैर का अगला सिरा जो प्राय: गोल और बीच में से फटा होता है, टॉप, सुम 2. चारपाई या चौकी के पाए का निचला हिस्सा जो पृथ्वी से लगा रहता है 3. छुरा, उस्तरा।

खुरक *स्त्री.* (देश.) 1. खटका, अंदेशा 2. चिंता, सोच *पुं.* (तत्.) 1. तिल का पौधा 2. एक प्रकार का नृत्य।

खुरखुर *स्त्री.* (अनु.) साँस लेते समय कफ आदि रहने के कारण होने वाली आवाज, घरघराहट, घरघर शब्द।

खुरखुरा *वि.* (देश.) 1. जो चिकना न हो, जिसको छूने से हाथ से असमतल कठोर वस्तु सा गड़े 2. असमतल विलो. चिकना।

खुरखुराना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. खुर खुर शब्द करना 2. गले में कफ के कारण घरघराहट होना, छूने में खुरखुरा या ऊबड़-खाबड़ लगना, खुरखुर शब्द उत्पन्न करना।

खुरखुराहट *स्त्री.* (देश.) 1. साँस लेते समय गले के के शब्द में वह विकार, जो कफ आदि के कारण होता है 2. खुरदरापन।

खुरचन *स्त्री.* (देश.) 1. जो वस्तु खुरच कर निकाली जाए 2. दूध पकाने के बर्तन में से खुरच कर निकाला हुआ दूध का अंश, जो जमा हुआ होता है 3. गुड़ के कड़ाह से खुरच कर निकाला हुआ गुड़ 4. किसी वस्तु का बचा हुआ या अंतिम अंश 5. खुरचनी।

खुरचना *अ.क्रि.* (देश.) किसी जमी हुई वस्तु को उसके आधार पर से कुरेदकर अलग करना।

खुरचनी *स्त्री.* (देश.) 1. कोई चीज खुरचने का उपकरण या औजार 2. चर्मकारों की खुरचनी।

खुरजी *स्त्री.* (फा.) वह झोला, जिसमें जरूरी सामान सामान रखकर घुड़सवार अपने घोड़े पर रखता है, बड़ा थैला।

खुरट *पुं.* (तद्.) 1. एक रोग जिसमें पशुओं के खुर पक जाते है 2. खुर पका रोग।

खुरदरा *वि.* (देश.) जिसकी सतह चिकनी न हो, दानेदार, खुरखुरा।

खुरपा *पुं.* (देश.) 1. घास काटने, छीलने का एक औजार 2. चर्मकारों या मोचियों का वह उपकरण जिससे वे चमड़ा छीलकर साफ करते है।

खुरपात *पुं.* (देश.) दे. खुराफात।

खुरपी *स्त्री.* (देश.) छोटे आकार का खुरपा।

खुरमा *पुं.* (अर.) 1. खजूर 2. एक प्रकार का पकवान 3. बालूशाही।

खुरली *स्त्री.* (तत्.) 1. सेना का युद्‌धाभ्यास 2. अभ्यास करने का स्थल।

खुरशीद *पुं.* (फा.) सूर्य, दिनकर, रवि, दिवाकर।

खुरा *पुं.* (देश.) 1. खुरपका रोग 2. लोहे का वह काँटा जो हल के फाल में जड़ा रहता है।

खुराई *स्त्री.* (देश.) वह रस्सी जिससे पशुओं के अगले या पिछले पैर बाँधे जाते हैं।

खुराक *पुं.* (फा.) 1. वह जो खाया जाए, खाद्य पदार्थ, भोजन 2. भोजन की उतनी मात्रा जो एक बार या एक दिन में खाई जाए 3. दवा की एक मात्रा।

खुराकी *वि.* (देश.) अधिक खाने वाला *स्त्री.* (फा.) 1. खुराक के बदले दिया जाने वाला पैसा, भोजन व्यय।

खुराघात (खुर+आघात) *पुं.* (तत्.) खुर का प्रहार, टाप से मारना।

खुराफात *स्त्री.* (अर.) 1. बेहूदी बातें, बकवास, शरारत 2. गाली-गलौज, बखेड़ा, झगड़ा, उत्पात।

खुराफाती *वि.* (अर.) 1. बेहूदा और रद्दी बात करने वाला 2. गाली-गलौज करने वाला 3. झगड़ा, बखेड़ा या उत्पात करने वाला।

खुरालक *पुं.* (तत्.) लोहे का बान।

खुरालिक *पुं.* (तत्.) 1. नाई का सामान रखने की किसबत या थैली 2. तकिया।

खुरासान *पुं.* (फा.) फारस देश का एक बड़ा सूबा या भू-भाग।

खुरिया *स्त्री.* (फा.) 1. कटोरी, छोटी प्याली 2. घुटने के जोड़ पर की हड्डी।

खुरी *स्त्री.* (देश.) 1. टाप का चिह्न 2. सुम का निशान 3. बहते पानी की वह धार जिसके विपरीत नाव को चलाया जा सके (मल्लाहों की भाषा)।

खुरू *पुं.* (तद्.) 1. खुर से मिट्टी खोदने की क्रिया, जिसमें पशु रंभाते या डकराते भी हैं, चौपाए ऐसा क्रोध या प्रसन्नता के समय किया करते है 2. उत्पात, नटखटपन, बखेड़ा 3. सत्यानाश, ध्वंस।

खुर्द *वि.* (फा.) छोटा, लघु, अल्पवयस्क।

खुर्दबीन *स्त्री.* (फा.) 1. एक विशेष प्रकार के शीशें का बना हुआ वह यंत्र जिससे छोटी वस्तु बहुत बड़ी दीख पड़ती है 2. सूक्ष्मदर्शक यंत्र।

खुर्द-बुर्द *वि.* (फा.) 1. नष्ट-भ्रष्ट 2. समाप्त 3. गायब 4. खा-पी जाने की क्रिया होना।

खुर्राट *वि.* (देश.) 1. चालाक, काइयाँ 2. धूर्त 3. बूढ़ा, वृद्ध।

खुलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. बंधी या बाँधी हुई वस्तु का बंधन हट जाना उदा. जब शांत मिलन संध्या को हम हेमजाल पहनाते काली चादर के स्तर का खुलना देख न पाते (आँसू) 2. ठहरे और रुके यानों का गंतव्य स्थान की ओर प्रस्थान करना प्रयो. राजधानी एक्सप्रेस ठीक समय पर खुलेगी 3. शरीर के किसी अंग का कार्य के लिए उपयुक्त बनना 4. कष्ट या विपत्ति के दिन दूर होने पर सुख-सौभाग्य के दिन दिखाई देना जैसे- उसे नई नौकरी क्या मिली कि उसकी तकदीर ही खुल गई मुहा. खुलकर खेलना- लज्जा या संकोच त्याग देना; खुलकर बैठना- ऐसा स्थान जो घिरा न हो; खुल जाना- गांव से बाहर रहना, खो जाना; खुले आम- सबके सामने, प्रकट में; खुलकर-अच्छी तरह साफ- साफ, बेधड़क।

खुलवाना *स.क्रि.* (देश.) 'खोलना' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप, खोलने का काम कराना।

खुला *वि.* (देश.) 1. जो बंधा या बंद न हो, बंधन रहित 2. आच्छादन रहित 3. जिसमें कोई रुकावट न हो 3. अवरोधहीन 4. जो छिपा न हो, स्पष्ट, प्रकट, जाहिर 5. जो तंग घिरा हुआ न हो, लंबा-चौड़ा मैदान मुहा. खुला खजाना- सबके सामने स्पष्ट रूप से; खुले दिल से- उदारतापूर्वक; खुली हवा- वह हवा जिसकी गति का अवरोध न होता हो।

खुलापल्ला *पुं.* (देश.) संगी. तबला बजाने का एक ढंग।

खुलासा *वि.* (अर.) 1. खुला हुआ 2. विस्तृत 3. स्पष्ट, साफ।

खुल्लमखुल्ला *क्रि.वि.* (देश.) प्रकाशित रूप से खुले आम, सर्वसाधारण को सूचित करते हुए।

खुश *वि.* (फा.) 1. प्रसन्न, मुदित, आनंदित, प्रफुल्लित 2. अच्छा खुशआमदीद- भले पधारे/स्वागत वाक्य, खुश आवाज- अच्छे स्वर वाला, सुरीला, खुशगवार- रुचिकर, सुखद, रोगहीन देह।

खुशकिस्मत *वि.* (फा.) भाग्यवान, अच्छी किस्मत वाला।

खुशखत *वि.* (फा.) 1. जिसकी लिखावट सुंदर हो 2. सुंदर अक्षर लिखने वाला 3. सुलेखक।

खुशखबरी *स्त्री.* (फा.) अच्छी खबर, खुश करने वाला समाचार।

खुशनुमा *वि.* (फा.) 1. सुंदर, मनोहर 2. जो देखने में भला लगता हो।

खुशबू *स्त्री.* (फा.) सुगंध, सौरभ।

खुशबूदार *वि.* (फा.) सुंगधित, सुगंधयुक्त।

खुशमिजाज़ *वि.* (फा.) प्रसन्नचित, हँसमुख।

खुशमिजाजी *स्त्री.* (फा.) जिंदादिली, प्रसन्नता।

खुशहाली *स्त्री.* (फा.) संपन्नता, समृद्धि, अच्छी अवस्था।

खुशामद *स्त्री.* (फा.) 1. खुश करने वाली बात, चापलूसी 2. किसी को प्रसन्न करने के लिए की जाने वाली झूठी प्रशंसा।

खुशामदी *पुं.* (फा.) खुशामद की कमाई खाने वाला, जी हुजूर *वि.* चाटुकार, चापलूस, खुशामद करने वाला।

खुशी *स्त्री.* (फा.) 1. आनंद, प्रसन्नता, हर्ष 2. इच्छा, मरजी।

खुश्क *वि.* (फा.) 1. शुष्क पदार्थ, जिसमें जल का अंश सूख कर निकल गया हो, सूखा 2. जो तर न हो, जिसमें चिकनाहट न लगी हो, इस होटल की रोटी बहुत खुश्क है 3. जो केवल रूपयों के रूप में मिलता हो (वेतन) 4. जिसके हृदय में कोमलता, रसिकता आदि का अभाव हो, रूखे स्वभाव वाला।

खुश्की *स्त्री.* (फा.) 1. सूखापन, रूखापन, रसहीनता, शुष्कता, नीरसता 2. स्थल या भूमि (जलका विरोधी) 3. सूखा आटा, जो आटे की लोई पर लगाया जाता है, पलेथन 4. अकाल, अवर्षण।

खुसफुसाहट *स्त्री.* (अनु.) कानाफूसी।

खुसिया *पुं.* (अर.) फोता, अंडकोश।

खुसुर-फुसुर *स्त्री.* (अनु.) कानाफूसी, बहुत धीमी आवाज में बात करना *क्रि.वि.* (देश.) अस्फुट स्वर से फुसफुस।

खुसूसियत *स्त्री.* (अर.) 1. विशेषता, खास बात 2. प्रेमभाव, मेल, सौहार्द।

खूँखार *वि.* (फा.) 1. खून पीने वाला, रक्त पान करने वाला 2. भयंकर, डरावना 3. क्रूर, निर्दय।

खूँट *पुं.* (तद्.) 1. कोना, घोर 2. भारी, चौकोर या गोल पत्थर जो मकान की मजबूती के लिए कोनों पर लगाया जाता है 2. छोटी पूरी, जो देवी देवताओं को चढाने के लिए बनती है 4. कान में पहनने का एक प्रकार का गहना 5. दिशा, भाग *स्त्री.* (देश.) 1. कान का एक गहना जो दिये के आकार का होता है 2. आठ सेर की तौल जो घी तेल आदि के लिए पहले प्रचलित थी।

खूँटना *स.क्रि.* (देश.) 1. पूछताछ करना 2. छेड़छाड़ करना 3. कम होना।

खूँटा *पुं.* (देश.) 1. लकड़ी या बाँस की मेख, जिसे गाड़कर गाय, भैस को बाँधते है 2. खड़ी गाड़ी हुई लकड़ी।

खूँटी *स्त्री.* (देश.) 1. छोटी मेख 2. दीवार में चीज टाँगने, बाँधने, लटकाने आदि के लिए गाड़ी जाने वाली कील 3. चक्की की किल्ली 4. सितार, सारंगी, खडाऊं आदि में जड़ी छोटी मेख 5. अरहर या ज्वार के पौधे का सूखा डंठल जो फसल काट लेने पर खेत में गड़ा रह जाता है 6. गुल्ली, अंटी 7. बालों के कड़े अंकुर जो मूँड़ने के पीछ रह जाते हैं या निकलते है मुहा. खूँटी कसना-सितार आदि तंत्र वाद्यों के तार को खूँटी ऐंठ कर कसना।

खूँदना *अ.क्रि.* (देश.) 1. घोड़े का बलात रोके जाने पर उसी जगह हटना-बढ़ना, घूमना, पांव मारना, टाप से जमीन खोदना, रौंदना 2. कुचलना, कूदना।

खूझा *पुं.* (देश.) 1. फल, तरकारी का रेशेदार भाग जो खाने योग्य समझ कर फेंक दिया जाता है 2. सूत, रेशम आदि के उलझे हुए धागों का लच्छा।

खूटना *अ.क्रि.* (देश.) 1. अवरुद्ध हो जाना, रुक जाना, बंद हो जाना 2. कम हो जाना, चुक जाना, खत्म हो जाना।

खूद *पुं.* (देश.) किसी तरल चीज को छानने, निथारने से निकलने वाला मैल, तलछट।

खून *पुं.* (फा.) 1. रक्त, लहू, रूधिर 2. लाल रंग का वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो मनुष्यों, पशुओं आदि के शरीर में नाड़ियों, शिराओं आदि में होकर चक्कर लगाता रहता है मुहा. खून खौलना- क्रोध से शरीर लाल होना, गुस्सा चढ़ना; खून जमना-रक्त प्रवाह रुक जाना; आँखों में खून उतरना- क्रोध के कारण आँखें लाल

होना; खून के आँसू रोना- अत्यंत दुखी होना; खून का प्यासा- बध का इच्छुक/जानी दुश्मन; खून सूखना- अत्यंत भयभीत होना; खून सफेद होना- करुण रहित हो जाना; खून बहना- किसी के लिए प्राण तक देने पर उतारू होना; खून सिर चढ़ना- किसी को मारने के लिए उद्यत होना; खून का घूँट पीना- गुस्सा सह लेना; खून का जोश- वंश या कुल का प्रेम; खून पीना- बहुत सताना, मार डालना।

खून खराबा *पुं.* (फा.) 1. मारकाट 2. एक प्रकार की वार्निश जो लकड़ी पर की जाती है।

खूनी *वि.* (फा.) 1. खून करने वाला, कातिल, क्रूर, जालिम 2. खून संबंधी, खून का, जैसे खूनी बवासीर।

खूब *वि.* (फा.) अच्छा, भला, उमदा, उत्तम, बढिया, अच्छी तरह, बहुत 2. साधुवाद, वाह, वाह खूब।

खूबकलाँ *स्त्री.* (फा.) एक तरह की घास जिसके बीज दवा के काम आते है।

खूबसूरत *वि.* (फा.) सुदंर, रूपवान प्रयो. ताजमहल बहुत ही खूबसूरत इमारत है।

खूबसूरती *स्त्री.* (फा.) सुंदरता जैसे- तीन-चार सौ साल बीत जाने के बाद भी ताजमहल की खूबसूरती आज भी बरकरार है।

खूबानी *स्त्री.* (फा.) एक प्रसिद्ध मेवा, जरदालू।

खूबी *स्त्री.* (फा.) 1. भलाई, अच्छाई, अच्छापन 2. गुण, विशेषता, विलक्षणता।

खूरन *स्त्री.* (तद्.) हाथी के पैरों के नाखून का एक रोग।

खूसट *पुं.* (देश.) उल्लू, घुग्घू।

खृष्टीय *वि.* (अर.) ईसा संबंधी, ईसा का, ईसाई, मसीही।

खेकसा *पुं.* (देश.) 1. परवल के आकार का एक फल जो तरकारी के काम आता है, ककोड़ा 2. एक तरह की सफेद धारी जैसे चिहन जो युवावस्था में मनुष्य के पेट, जाँघ आदि पर प्राय: दिखाई देती है।

खेचर *वि.* (तत्.) आकाश में चलने वाला, आकाशचारी *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य, चंद्रमा आदि ग्रह 2. तारागण 3. वायु 4. देवता 5. विमान 6. पक्षी 7. बादल 8. भूत-प्रेत 9. राक्षस 10. शिव 11. पारा 12. कसीस, तूतिया।

खेचरान्न *पुं.* (तत्.) खिचड़ी, चावल से बना एक व्यंजन।

खेचरी गुटिका *स्त्री.* (तत्.) तंत्र के अनुसार एक प्रकार की योगसिद्ध गोली जिसे मुँह में रखने से आकाश में उड़ने की शक्ति आ जाती है।

खेचरी *स्त्री.* (तत्.) 1. आकाशचारिणी 2. परी 3. दुर्गा 4. आकाश में उड़ने की विद्या या शक्ति।

खेचरी मुद्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. योगसाधना की एक मुद्रा जिसमें जीभ उलटकर तालु से लगाई जाती है और दृष्टि त्रिकुटी पर स्थापित की जाती है इस स्थिति में चित्त और जीभ दोनों ही आकाश में स्थित रहते है 2. तंत्र के अनुसार एक प्रकार की मुद्रा जिसमें दोनों हाथों को एक दूसरे पर लपेट लेते हैं।

खेट *पुं.* (तत्.) 1. किसानों की बस्ती, खेड़ा 2. घास 3. घोड़ा 4. मृगया, शिकार, आखेट 5. कफ 6. ढाल 7. लाठी, छड़ी 8. चमड़ा 9. एक प्रकार का अस्त्र 10. ग्रह, नक्षत्र आदि 11. नीच, अधम 12. तिनका 13. बलराम की गदा।

खेटकी *पुं.* (तत्.) 1. ज्योतिषी 2. भंडोरिया 3. शिकारी।

खेटितान *पुं.* (तत्.) 1. वैतालिक, चारण 2. गीत वाद्य के द्वारा स्वामी को जगाने वाला बंदीजन।

खेटी *वि.* (तत्.) 1. चरित्रहीन, दुर्बल चरित्रवाला 2. गाँव में रहने वाला 3. नागरिक 4. वैतालिक, चारण।

खेड़ा *पुं.* (देश.) 1. छोटा गाँव 2. कच्चा मकान 3. कबूतरों, चिड़ियों आदि को खिलाया जाने वाला रद्दी अन्न।

खेड़ापति *पुं.* (देश.) 1. गांव का मुखिया, पुरोहित।

खेड़ी *स्त्री.* (देश.) एक तरह का इस्पात, लोहा।

खेत *पुं.* (तद्.) वह भूखंड जो जोतने, बोने और फसल उत्पन्न करने योग्य हो, जोतने-बोने की

जमीन मुहा. खेत कमाना- खाद डाल कर खेत को उपजाऊ बनाना; खेत चौकस करना- भूमि समतल करना; खेत काटना- खेत में उपजी फसल काटना; खेत छोड़ना- पीठ दिखलाना, परास्त होना; खेत आना- वीरगति को प्राप्त करना; खेत रहना- युद् ध में मारा जाना; खेत रखना- समर में विजय प्राप्त करना।

खेतिहर *पुं.* (तद्.) खेती करने वाला किसान, कृषक।

खेती *स्त्री.* (देश.) खेत जोतने-बोने का काम, किसानी, काश्तकारी।

खेतीबारी *स्त्री.* (देश.) खेत में बोई हुई फसल जैसे-जैसे- आजकल खेतीबारी में किसान को कोई लाभ नहीं मिलता।

खेद *पुं.* (तत्.) 1. अप्रसन्नता, दुख, रंज 2. चित्त की शिथिलता, थकावट, ग्लानि।

खेदा *पुं.* (देश.) 1. किसी जंगली जानवर को घेर कर शिकार की जगह ले जाना 2. शिकार, आखेट।

खेदित *वि.* (तत्.) दुखित, खिन्न, आहत, पीड़ित, क्लांत, शिथिल।

खेना *स.क्रि.* (तद्.) 1. नाव चलाने के लिए डांड मारना 2. कष्टपूर्वक दिन बिताना।

खेप *स्त्री.* (तद्.) 1. एक बार में ढोया जाना वाला बोझ या माल 2. एक बार के बोझ का सामान 3. बोझ वाले व्यक्ति का एक ही बार आना जाना 4. एक फेरा 5. ऐब, दोष 6. खोटा सिक्का मुहा. खेप करना- माल ढोकर ठीक जगह पहुँचा आना; खेप हारना- ढोया माल गँवाना या नष्ट होना, व्यर्थ श्रम करना।

खेपना *स.क्रि.* (देश.) बिताना, काटना, गुजारना, समाहित करना, बिदा करना।

खेम *पुं.* (तद्.) दे. क्षेम।

खेमटा *पुं.* (देश.) 1. एक ताल 2. ताल पर गाया जाने वाला गीत 3. ताल पर होने वाला एक नृत्य।

खेमा *स्त्री.* (अर.) तंबू, डेरा।

खेय *वि.* (तत्.) 1. खोदने योग्य, जो खोदा जा सके 2. खंदक, खाई, पुल।

खेरिया *स्त्री.* (देश.) 1. छोटा कटोरा या बेलिया, पानी पीने का छोटा बर्तन 2. वे सितारे या बुंदे जो स्त्रियाँ अपने मुँह पर शोभा के लिए लगाती है।

खेल *पुं.* (तत्.) 1. मन बहलाने और समय बिताने के लिए किया जाने वाला कोई काम 2. बहुत साधारण या तुच्छ काम 3. वह छोटा कुंड जिसमें चौपाए पानी पीते है मुहा. खेल के दिन- बाल्यावस्था, लडकपन; खेल खेलना- चाल चलना; खेल खेलना-तंग या हैरान करना; खेल समझना- आसान समझना; खेल बनाना- काम बनाना; खेल बिगड़ना- काम बिगड़ना।

खेलन *पुं.* (तत्.) 1. हिलाना, डुलाना, नचाना 2. खेलने का भाव आमोद-प्रमोद, मन बहलाव 3. नाटक, स्वांग, अभिनय आदि खेल।

खेलना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. मन बहलाव या चित्त के उल्लास के लिए दौड़ना, नाचना, कूदना-उछलना, क्रीड़ा करना 2. विहार करना मुहा. खेलना खाना- आनंद से दिन बिताना प्रयो. अभी तुम्हारे खेलने खाने के दिन है, सोच करने के नही मुहा. खेली-खाई-पुरूष समागम की जानकार स्त्री; खेल खेलना- खुल्लम खुल्ला कोई काम करना *स.क्रि.* (देश.) 1. ऐसी क्रिया जो केवल मन बहलाव, व्यायाम आदि के लिए की जाती है, जिसमें कभी कभी हार जीत का भी विचार होता है जैसे- गेंद खेलना, ताश खेलना, जुआ खेलना 2. किसी वस्तु को लेकर अपना जी बहलाना, किसी वस्तु को मनोरंजन के लिए हिलाना-डुलाना आदि मुहा. जान पर खेलना- प्राण भय में डालना।

खेलनी *स्त्री.* (तद्.) खेलने की वस्तु, खेल का उपकरण।

खेलवाड़ *पुं.* (देश.) 1. खेल, क्रीड़ा, तमाशा 2. मन बहलाव, दिल्लगी

खेला *स्त्री.* (तत्.) क्रीड़ा, खेल, मन बहलाव।

खेवक *पुं.* (तद्.) नाव खेने वाला, मल्लाह, केवट, माँझी।

खेवट *पुं.* (देश.) 1. पटवारी या लेखपाल का एक कागज, जिसमें गाँव के हर जमींदार की माल

गुजारी का विवरण रहता है 2. मल्लाह, माँझी, केवट।

खेवटिया *पुं.* (देश.) खेवट, मल्लाह, केवट।

खेवनहार *पुं.* (देश.) 1. खेने वाला, मल्लाह, केवट 2. ठिकाने तक पहुँचाने वाला, पार लगाने वाला।

खेवा *पुं.* (देश.) 1. नाव से पार उतरने के बदले दी जाने वाली मज़दूरी, पारिश्रमिक, किराया आदि 2. नदी पार करने का कार्य 3. नाव की खेप 4. अवसर, वार 5. बोझ से दबी नाव।

खेवाई *स्त्री.* (देश.) 1. नाव खेने का काम, नाव संचालन 2. नाव खेने की मज़दूरी 3. डाँड को नाव से बाँधने के लिए प्रयुक्त रस्सी।

खेवैया *पुं.* (देश.) खेने वाला, केवट, नाव खेंकर पार ले जाने वाला व्यक्ति।

खेस *पुं.* (देश.) एक तरह की मोटे सूत की चादर।

खेसर *पुं.* (तत्.) खच्चर।

खेसारी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की मटर, जिसकी फलियाँ चिपटी होती है जिसकी दाल बनती है, चिपटैया मटर।

खेह *स्त्री.* (देश.) 1. धूल मिट्टी, राख मुहा. खेह खाना- धूल फाँकना, व्यर्थ समय खोना।

खैंचनी *स्त्री.* (देश.) औजार साफ करने की लकड़ी कल तख्ती।

खैंचातान *स्त्री.* (देश.) खींचतान।

खैंचातानी *स्त्री.* (देश.) खींचतान।

खैता *पुं.* (देश.) जवान बछड़ा जिसे अभी हल आदि में जोता न गया हो, नाटा बछड़ा।

खैबर *पुं.* (देश.) भारत और पाकिस्तान के बीच पड़ने वाला एक दर्रा जो उस दिशा से भारत का मुख्य प्रवेश द्वार है।

खैयात *पुं.* (अर.) दर्जी, सूचीकार, सिलाई करने वाला।

खैयाम *पुं.* (अर.) 1. खेमा बनाने वाला 2. तंबू बनाने वाला 2. फारसी का प्रसिद्ध कवि उमर खैयाम।

खैर *पुं.* (तद्.) 1. बबूल की जाति का एक पेड़ जिसकी लकड़ी को उबालकर कत्था बनाते हैं, और उसे चूने के साथ लगाकर खाया जाता है 2. भूरे रंग का एक पक्षी *स्त्री.* (फा.) कुशलक्षेम, भलाई अव्य (फा.) 1. अस्तु 2. अच्छा, ऐसा ही सहीं, कोई चिंता नहीं, देखा जाएगा।

खैर माही *स्त्री.* (फा.) भलाई सोचना, शुभ चिंतक।

खैर ख्वाह *वि.* (फा.) भलाई चाहने वाला, शुभ चिंतक।

खैरा *वि.* (तद्.) कत्थई, खैर के रंग के कत्थई रंग का कबूतर या घोड़ा *पुं.* (देश.) 1. धान की फसल का एक रोग, जिसमें उसकी बाल पीली पड़ जाती है 2. तबला बजाने में एक ताल (ताल) की धुन स्त्री. (देश.) एक प्रकार की मछली जो बंगाल की नदियों में पाई जाती है।

खैरात *पुं.* (अर.) पुण्य कर्म, दान-पुण्य।

खैराती *वि.* (फा.) खैरात का, धर्मार्थ संचालित, मुफ्त का जैसे- खैराती दवाखाना, खैराती माल, खैराती अस्पताल।

खैरियत *स्त्री.* (फा.) 1. कुशल क्षेम, राजी खुशी 2. भलाई, कल्याण।

खैल *पुं.* (अर.) समुदाय, जमावड़ा, जन समूह।

खैला *स्त्री.* (अर.) फूहड़, मूर्खा, बोडम स्त्री।

खैला *स्त्री.* (तद्.) मथानी।

खोंखना *अ.क्रि.* (देश.) खाँसना।

खोंगा *पुं.* (देश.) रूकावट, अटकाव।

खोंच *स्त्री.* (देश.) 1. किसी नुकीली चीज से छिलने का आघात 2. किसी नुकीली चीज में फंस कर कपड़े आदि का कट जाना ला.अ. दोष, आरोप।

खोंचा *पुं.* (देश.) 1. बहेलियों का वह बांस जिसके सिरे पर लासा लगाकर वे पक्षियों को फँसाते है 2. पेड़ों से फल तोड़ने की लग्घी।

खोंचा *पुं.* (फा.) वह थाल जिसमें फेरी वाले मिठाइयां आदि रखकर बेचते हैं, खोंमचा।

खोंचिया *पुं.* (देश.) 1. खोंची लेने वाला 2. भिक्षुक, भिखमंगा।

खोंची *स्त्री.* (देश.) वह अन्न, तरकारी आदि जो दुकानदार मंडी या बाजार में छोटी सेवाएँ करने वालों या भिखमंगों को देते है।

खोंटना *स.क्रि.* (देश.) 1. पौधों आदि के ऊपरी भाग को चुटकी से दबाकर तोड़ना 2. टुकड़े-टुकड़े करना 3. नोंचना।

खोंता *पुं.* (देश.) घोंसला, वृक्षों पर घास, फूस आदि से बना हुआ चिड़ियों का निवास-स्थान।

खोंप *स्त्री.* (देश.) 1. सिलाई में दूर-दूर लगा हुआ टांका 2. दरार।

खोंपना *स.क्रि.* (देश.) गड़ाना, धँसाना, भोंकना, चुभा देना।

खोंसना *स.क्रि.* (देश.) अटकाना, फंसाना जैसे- कमर में धोती की लाँग खोंसना, टोपी में कलगी खोंसना।

खोइया *पुं.* (देश.) 1. धोती या साड़ी का अंचल, किनारा 2. शकुन के रूप में किसी (स्त्री) के आंचल में चावल, गुड़ आदि देना।

खोई *स्त्री.* (देश.) 1. ईख का वह भाग जो रस निकल जाने के बाद कोल्हू में शेष रह जाता है 2. भुने हुए चावल या धान की खील, लाई।

खोखर *पुं.* (देश.) एक राग, खोखला।

खोखला *वि.* (देश.) भीतर से खाली, पोला, सारहीन, खाली स्थान, पोली जगह, बड़ा छेद, रंध्र जिसमें तत्व का सार न हो, थोथा, निस्सार।

खोखा *पुं.* (देश.) 1. वह कागज जिस पर हुँडी लिखी हुई हो 2. चुकाई हुई हुंडी 3. बालक, लड़का 4. लकड़ी से बनी एक छोटी अस्थायी दुकान जैसे- पान का खोखा ।

खोज *स्त्री.* (देश.) 1. अनुसंधान, शोध, तलाश, अन्वेषण 2. छिपी हुई वस्तु को ढूंढने का काम 3. चिह्न, निशान 4. पहिये की लीक मुहा. खोज खबर लेना- हाल चाल जानना; खोज मिटाना-नष्ट करना, ध्वस्त करना, बरवाद करना; खोज मारना- लीक या पैर का चिह् न नष्ट करना, जिसमें कोई पता न लगा सके।

खोजक *वि.* (देश.) खोज करने वाला, तलाश करने वाला, ढूँढने वाला।

खोजना *स.क्रि.* (देश.) ढूँढना, तलाश करना, पता लगाना।

खोजा *पुं.* (फा.) 1. हिजड़ा 2. वह व्यक्ति जो मुसलमानी हरमों में सेवक या द्वार रक्षक की भाँति रहता है 3. सेवक, नौकर 4. एक तिजारत पेशा मुसलमान आदि।

खोजी *वि.* (देश.) 1. खोजने वाला, ढूँढने वाला 2. नौकर, 3. शोधकर्ता, अन्वेषक (व्यंग्य)।

खोट *स्त्री.* (देश.) 1. दोष, बुराई, खता, कसूर 2. किसी उत्तम वस्तुओं में निकृष्ट वस्तु की मिलावट जैसे- सुनार ने इस गहने में कुछ खोट मिलाया है 3. किसी बात में होने वाला दोष, खोटापन।

खोटा *वि.* (देश.) 1. जिसमें खोट हो, बुरा, खरा का उलटा 2. नकली, बनावटी, दुष्टात्मा 4. झूठा जैसे- खोटा रुपया, खोटा सोना, खोटा आदमी मुहा. खरा-खोटा- बुरा भला; खोटा खाना-बेईमानी से कमाकर खाना; खोटा बोलना- बुरी बात बोलना; खरी खोटी सुनाना- दुर्वचन कहना।

खोटाई *स्त्री.* (देश.) 1. खोटापन, बुराई 2. छल 3. दोष, दुष्टता।

खोटापन *पुं.* (देश.) 1. खोटा होने का भाव 2. क्षुद्रता।

खोटि/खोटी *स्त्री.* (देश.) 1. दुश्चरित्र, व्यभिचारिणी 2. चालबाज औरत, मक्कार।

खोड़ *वि.* (तद्.) अपंग, विकलांग, लंगड़ा-लूला *स्त्री.* भूत-प्रेत का आवेश, दैव कोप, ऊपरी फेर *पुं.* (तद्) वह छेद जो पुराने पेड़ की लकड़ी के सड़ जाने से होता है।

खोड़रा *पुं.* (तद्.) 1. पुराने पेड़ का खोखला भाग, कोटर 2. दांत आदि के भीतर का गड्ढा।

खोद *पुं.* (फा.) लोहे का बना टोप, शिरस्त्राण।

खोदना *स.क्रि.* (देश.) 1. खुरचना, कुरेदना, गड्ढा करना, खोदकर उखाड़ना जैसे- कुआँ खोदना, जमीन खोदना 2. किसी आघात से कोई चीज तोड़ना 3. किसी वस्तु पर जमा हुआ मैल निकालना 4. धातु, पत्थर, लकड़ी पर कुछ उकेरना 5. उत्तेजित करने या उकसाने का प्रयत्न करना मुहा. खोद-खोद कर पूछना- एक एक बात पर शंका करके पूछना, अच्छी तरह पूछना।

खोदनी *स्त्री.* (देश.) खोदने का छोटा औजार *स्त्री.* (देश.) कान खोदनी- कान से खोदकर मैल निकालने की सींक, दाँत खोदनी-दाँत से खोदकर मैल निकालने की कील।

खोदवाना *स.क्रि.* (देश.) खोदने में लगाना, खोदने का काम करवाना।

खोदाई *स्त्री.* (देश.) 1. खोदने का काम 2. खोदने की मजदूरी 3. कड़ी वस्तु पर नोकदार चीज से अंक, बेल बूटे बनाने का काम।

खोना *स.क्रि.* (देश.) 1. गँवाना, पास की वस्तु का निकल जाना 2. भूल से किसी वस्तु को कहीं छोड़ आना 3. खराब होना, बिगड़ना, नष्ट होना जैसे- दुर्घटना में उसने अपनी आंखे खो दी।

खोपड़ा *पुं.* (देश.) 1. सिर, कपाल 2. गरी का गोला 3. नारियल 4. भिक्षुकों का खप्पर जिसमें वे भीख लेते हैं।

खोपड़ी *स्त्री.* (तद्.) 1. सिर की हड्डी, कपाल 2. सिर मुहा. खोपड़ी चाट जाना- बकवास करके कष्ट पहुँचाना; खोपड़ी खाली हो जाना- दिमाग थक जाना; खोपड़ी खुजलाना- चिंतन करना, (व्यंग्य में) पिटने को जी चाहना; खोपड़ी गंजी होना- खूब मार खाना, सिर पर खूब जूते पड़ना।

खोपा *पुं.* (देश.) छप्पर का कोना, जूड़ा बंधी हुई चोटी, केश-विन्यास का एक भेद, गरी का गोला।

खोभार *पुं.* (देश.) 1. गड्ढा जिसमें कूड़ा-करकट फेंका जाए 2. सुअरों को बंद करने की झोंपड़ी 3. तंग स्थान या कोठरी।

खोया *पुं.* (देश.) औटाकर लुगदी जैसा बनाया हुआ दूध, मावा; ईट पाथने का गारा।

खोर *स्त्री.* (तत्.) 1. संकरी गली, बस्तियों की तंग गली, कूचा 2. नांद, जिसमें चौपायों को चारा दिया जाता है *पुं.* (देश.) बबूल की जाति का ऊँचा सुंदर पेड़।

खोरना *अ.क्रि.* (देश.) नहाना, स्नान करना।

खोरनी *स्त्री.* (देश.) वह लकड़ी जिससे भड़भूँजे बाहर बचा हुआ ईंधन भाड़ के भीतर करते हैं।

खोरा *पुं.* (देश.) 1. कटोरा, बेला 2. पानी पीने का बर्तन, गिलास।

खोरि *स्त्री.* (देश.) 1. तंग गली, छोटी कोठरी 2. दोष, बुराई, दोष के रूप में लज्जाजनक बात।

खोल *वि.* (तत्.) 1. लंगड़ा, विकलांग 2. आवरण, ऊपर से चढ़ा हुआ ढकना, शिरस्त्राण, खोल, म्यान, मोटी चादर, उछलने कूदने वाले कीड़ों का ऊपरी चमड़ा, जिसे वे समय समय पर बदला करते हैं।

खोलक *पुं.* (तत्.) 1. शिरस्त्राण, कपाल 2. बाँबी, बल्मीक 3. सुपारी का आवरण या छिलका 4. कटाह 5. कड़ाही, गीच।

खोलना *स.क्रि.* (देश.) 1. आवरण, अवरोध हटाना, अनवृत करना जैसे- घर में जाने के लिए किवाड़ खोलना आवश्यक था 2. बंधन मुक्त या बंधन-रहित करना जैसे- उसने खूँटे में बंधी गौ को खोल दिया 2. रस्सी की गाँठ खोलना 3. छेद करना 4. किसी बंधी वस्तु को मुक्त करना जैसे- धोती खोलना 5. टाँके हटाना 6. कल पुरजे अलग करना 7. चीरना, उधेड़ना 8. प्रकट करना, जाहिर करना 9. उद्घाटित करना 10. आरंभ करना, चलाना 11. कार्यारंभ करना 12. स्पष्ट करना जैसे- वह श्लोक का अर्थ खोलकर समझाता है।

खोलि *स्त्री.* (देश.) तरकश।

खोली *स्त्री.* (तद्.) 1. गिलाफ, थैली 2. मोटी चादर 3. कोठरी।

खोवा *पुं.* (देश.) मावा, खोया।

खोवाई *स्त्री.* (देश.) (खेवाई) 1. नाव खेने का काम, काम, नाव चलाने की क्रिया 2. नाव खेने की मजदूरी 3. वह रस्सी जो डाँड को नाव से बाँधने के काम आती है।

खोशा *पुं.* (तद्.) 1. गेहूँ या जौ की बाल 2. फलों का गुच्छा, खोशाची 3. खेत में गिरे दाने चुनने वाला 4. लाभ उठाने वाला 5. दूसरे की विद्या या या पांडित्य से लाभ उठाने वाला।

खोसना *स.क्रि.* (देश.) छीनना, झपटना।

खोह *स्त्री.* (तद्.) 1. गुहा, गुफा, कंदरा 2. दो पहाड़ों के बीच की तंग जगह, दर्रा।

खोही *स्त्री.* (तद्.) 1. बच्चों की छतरी 2. घोघी।

खौं *स्त्री.* (देश.) 1. खात, गड्ढा, अन्न एकत्र करने का गहरा गड्ढा।

खौंचा *पुं.* (देश.) 1. साढ़े छह का पहाड़ा जैसे- ढौंचा, पौवा, खौंचा 2. मिठाई आदि खाने की चीजे रखने का संदूक।

खौड़ा *वि.* (देश.) 1. विकलांग 2. जिसके आगे के दो तीन दांत टूटे हुए हो 3. जिसका कोई अंग भंग हो 4. अपूर्ण।

खौफ *पुं.* (अर.) डर, भय, दहशत, आतंक।

खौफनाक *वि.* (अर.) डरावना, भयानक, भीतिप्रद, डर उत्पन्न करने वाला।

खौर *स्त्री.* (देश.) 1. चंदन का आड़ा तिलक, त्रिपुंड, स्त्रियों का माथे पर का एक गहना, एक तरह का का मछली पकड़ने का जाल।

खौरहा *वि.* (देश.) 1. खौरा रोग वाला, गंजा 2. जिसके सिर के बाल झड़ गये हों 2. जिसे शरीर में खुजली का रोग हो।

खौरा *पुं.* (देश.) एक प्रकार की खुजली जिसमें चमड़ा बिल्कुल सूखा हो जाता है, और बाल प्रायः झड़ जाते हैं, यह रोग कुत्तों और बिल्लियों आदि को भी होता है।

खौलना *अ.क्रि.* (देश.) उबलना, जोश खाना।

खौहा *वि.* (देश.) बहुत अधिक खाने वाला, पेटू, दूसरे की कमाई खाने वाला।

ख्यात *वि.* (तत्.) 1. प्रसिद्ध, मशहूर 2. कथित, वर्णित।

ख्याति *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रसिद्धि, शोहरत, नाम, ज्ञापन, अभिधान 3. वर्णन, कथन 4. प्रशंसा, प्रशस्ति।

ख्यापक *वि.* (तत्.) ख्यापन करने वाला, व्यक्त करने वाला।

ख्यापन *पुं.* (तत्.) 1. विख्यात करना, प्रसिद्ध करना 2. व्यक्त करना, खोलना, उद्घाटित करना 3. अपराध स्वीकार करना 4. घोषणा करना।

ख्याल *पुं.* (अर.) 1. ध्यान 2. अनुमान, अंदाज 3. अटकल जैसे- हमारा ख्याल है कि वह यहाँ नहीं आएगा 4. विचार, भाव, सम्मति जैसे- उनके बारे में आपका क्या ख्याल है 4. आदर, लिहाज, अदब 5. एक विशेष प्रकार की गायन-पद्धति जैसे- ख्याल कदारा, ख्याल देश, ख्याल जैतश्री, ख्याल सिंदूरिया आदि लावनी गाने का एक ढंग 6. खेल, क्रीड़ा, हँसी, दिल्लगी, मजाक मुहा. ख्याल करना- सोचना, याद करना; ख्याल में रखना- ध्यान रखना, याद रखना; ख्याल से उतरना- भूल जाना; ख्याल बाँधना- अनुमान करना, कल्पना करना; ख्याल में आना- समझ में आना।

ख्याल *पुं.* (फा.) 1. कल्पनिक सोच, फर्जी विचार, ध्यान, अनुभाव 2. शक, सनक, वहम मुहा. ख्याली पुलाव पकाना- असंभव बातें सोचना।

ख्यालिया *वि.* (देश.) 1.ख्याल गाने वाला, वह जो ख्याल गाता हो 2. वह जो विविध थोथी कल्पनाएँ करता रहता हो, कोरी कल्पनाएँ करने वाला।

ख्रिष्टीय *वि.* (तद्.) 1. ईसा संबंधी 2. ईसाई धर्म संबंधी।

ख्रीष्ट *पुं.* (अं.) ईसामसीह।

ख्वाजा *पुं.* (फा.) 1. ऊँचे दर्जे का मुसलमान फकीर 2. मालिक, स्वामी, पति 3. सरदार 4. कोई प्रसिद्ध पुरूष 5. बड़ा व्यापारी 6. रनिवास का हिजड़ा सेवक, खोजा।

ख्वादाँ *वि.* (फा.) 1. पढ़ा लिखा, शिक्षित।

ख्वार *वि.* (फा.) 1. बर्बाद, खराब 2. नष्ट भ्रष्ट, सत्यानाश 2. अनादृत, तिरस्कृत, बेइज्जत, अपमानित।

ख्वारी *स्त्री.* (फा.) 1. अपमान, अमदार, ज़िल्लत, दुर्दशा, बदहाली।

ख्वास्त *स्त्री.* (फा.) 1. चाह, इच्छा 2. प्रार्थना, मांग, याचना।

ख्वाह *पुं.* (फा.) चाहने वाला, अच्छा लगने वाला जैसे- मन को अच्छा लगने वाला 'दिलख्वाह'।

ख्वाह-म-ख्वाह *क्रि.वि.* (फा.) चाहे या न चाहे, अपनी टेक से मजबूर।

ख्वाहाँ *वि.* (फा.) 1. इच्छा रखने वाला, इच्छुक 2. चाहने वाला 2. अनुरागी, प्रेमी 'ख्वाहिशमंद'।

ख्वाहिश *स्त्री.* (फा.) अभिलाषा, आकांक्षा।

ख्वाहिशमंद *वि.* (फा.) इच्छुक, आकांक्षी, ख्वाहिश रखने वाला।

ख्वारि *स्त्री.* (फा.) बहन, भगिनी।

ग

देवनागरी वर्णमाला में क वर्ग का तीसरा व्यंजन जो कंठ्य स्पर्शी, अल्पप्राण तथा सघोष है।

गंगका *स्त्री.* (तत्.) गंगा नदी।

गंगरेन *स्त्री.* (तद्.) नाग बला नामक पौधा, जो हवा के काम आता है।

गंगा *स्त्री.* (तत्.) 1. भारतवर्ष की एक प्रधान और पवित्र नदी जो हिमालय से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है, भागीरथी मुहा. गंगा नहाना- कृतार्थ होना, छुट्टी पाना; गंगा उठाना- गंगा जल लेकर शपथ खाना पर्या. विष्णु नदी, जाह्नवी, त्रिपथगा, अलकनंदा, मंदाकिनी, सुरनदी, अध्वगा *पुं.* (तत्.) 2. एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में नौ मात्राएँ होती हैं, इसके अंत में दो गुरु होते है 3. गंग नामक एक कवि का नाम जो अकबर के समय में थे।

गंगांबु *पुं.* (तत्.) 1. गंगा का जल 2. वर्षा का शुद्ध जल।

गंगाई *स्त्री.* (देश.) मैना की तरह की एक भूरे रंग की चिडिया।

गंगा क्षेत्र *स्त्री.* (तत्.) गंगा की धारा तथा दोनों किनारों से दो-दो कोस तक का भूभाग किंवदंती के अनुसार इसके अंदर मरने वाले को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

गंगागति *स्त्री.* (तत्.) मोक्ष, मुक्ति।

गंगा-जमुनी *वि.* (तत्.+तद्.) 1. मिला-जुला, संकर, दो रंगा 2. सोने-चांदी या पीतल-तांबे आदि दो धातुओं का बना हुआ 3. काला-उजला, स्याम-सफेद *स्त्री.* (देश.) कान का एक गहना 2. कवेटी ढाल 3. मिली-जुली संस्कृति, सामासिक संस्कृति।

गंगा-जल *पुं.* (तत्.) 1. गंगा का पानी 2. एक प्रकार का बढ़िया सूती रेशमी कपड़ा जिसकी पगड़ियाँ बनती थी।

गंगाजली *स्त्री.* (तत्.) धातु या शीशे की सुराही नुमा लुटिया जिसमें यात्री तीर्थों से पवित्र जल लाते है मुहा. गंगा जली उठाना- गंगा जल हाथ में लेकर शपथ खाना, गंगा की कसम।

गंगादत्त *पुं.* (तत्.) भीष्म पितामह पर्या. गंगा पुत्र, गंगासुत, गांगेय।

गंगाद्वार *पुं.* (तत्.) हरिद्वार।

गंगाधर *पुं.* (तत्.) 1. शिव, महादेव 2. समुद्र 3. वैद्यक में एक प्रकार का रस (गंगाधार रस) 4. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ रगण होते है, इसे गंगोदक भी कहते हैं।

गंगापुत्र *पुं.* (तत्.) 1. भीष्म 2. कार्तिकेय 3. गंगा आदि के घाटों पर बैठने और पंडों का काम करने वाला ब्राह्मण।

गंगा पूजा *स्त्री.* (तत्.) 1. मरणासन्न व्यक्ति को गंगा के तट पर मरने के लिए ले जाने की पुरानी प्रथा 2. मृत्यु, स्वर्गवास 3. *स्त्री.* (तद्.) विवाह के बाद वर-वधू की गाजे-बाजे के साथ होने वाली देव पूजा 4. गंगा तथा देवताओं आदि की पूजा जो गंगा तट या किसी जलाशय के किनारे संपन्न होती है।

गंगाल *पुं.* (तद्.) पानी रखने का बड़ा बर्तन, कंडाल।

गंगाला *पुं.* (तद्.) कछार, वह भूमि जहाँ तक गंगा का चढ़ाव पहुँचता है।

गंगावतरण *पुं.* (तत्.) गंगा का स्वर्ग से पृथ्वी पर आना।

गंगा-सागर *पुं.* (तत्.) 1. एक तीर्थ स्थान जहाँ गंगा समुद्र में गिरती है 2. मोटे कपड़े की छपी जनानी धोती।

गंगा सुत *पुं.* (तत्.) 1. (गंगा का पुत्र) 1. कार्तिकेय 2. भीष्म 3. गंगा के घाटों व तटों पर तीर्थ-दान लेने वाला पंडा, ब्राह्मण।

गंगोटी *स्त्री.* (तद्.) एक प्रकार की वनौषधि।

गंगोत्री *स्त्री* (तत्.) हिमालय क्षेत्र में वह स्थान जहाँ से गंगा का उद्गम माना जाता है।

गंगोदक *पुं.* (तत्.) (गंगा+उदक) 1. गंगा जल 2. चौबीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसमें आठ रगण होते हैं।

गंगोद्भेद *पुं.* (तत्.) गंगा का उद्गम स्थान।

गंगोला *पुं.* (तद्.) गोमेद मणि, एक रत्न।

गंगौटी *स्त्री.* (तद्.) गंगा के किनारे की सख्त व पवित्र मिट्टी।

गंगौलिया *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का खट्टा नींबू।

गंज *पुं.* (देश.) गंजापन, सिर के बाल झड़ जाने का रोग, खल्वाट, बाल खोरा रोग 2. सिर में निकलने वाली एक प्रकार की फुंसियाँ *पुं.* (फा.) 1. खजाना, कोष, ढेर, अंबार, राशि, अटाला 2. समूह, झुंड 4. वह स्थान जहाँ अन्नादि रखा जाए 5. गल्ले की मंडी, हाट, बाजार मुहा. गंज डालना- बाजार लगना, मंडी आबाद करना 6. वह आबादी जिसमें बनिए बसाए जाते हैं और बाजार लगता है, एक नगर जैसे- दारांगज, पहाड़गंज 7. मद्यपात्र 8. मदिरालय *पुं.* (तत्.) 1. अवज्ञा, तिरस्कार 2. गौशाला, गोठ।

गंजन *पुं.* (तत्.) 1. अवज्ञा 2. तिरस्कार करना 3. हरा देना, नाशक 4. नीचा दिखाने वाला।

गंजना *स.क्रि.* (देश.) 1. अवज्ञा करना, निरादर करना 2. परास्त करना।

गंजनी *स्त्री.* (देश.) एक घास जिसमें नींबू की सी महक होती है।

गंजा *पुं.* (देश.) 1. गंजापन 2. पर्णकुटी, झोंपडी 3. मदिरालय, शराब खाना 4. मद्य पीने का पात्र 5. 5. रत्नों की खान 6. दानव *वि.* जिसके सिर के बाल झड़ गए हो, खल्वाट।

गंजिका *स्त्री.* (तत्.) शराबखाना, मदिरालय।

गंजिया *स्त्री.* (देश.) 1. सूत की बुनी हुई रुपया रखने की जालीदार थैली 2. घास रखने की जाल की थैली 3. गंजी, कंदा।

गंजीना *पुं.* (फा.) कोष, खजाना।

गंजीफा *पुं.* (फा.) एक खेल जो आठ रंग के 96 पत्तों से खेला जाता है।

गंजेडी *वि.* (देश.) गाँजा पीने वाला।

गंटम *पुं.* (तद्.) ताड़पत्र पर लिखने की लोहे की कलम।

गंठकटा *पुं.* (तद्.+देश.) गाँठ में बँधे रुपये पैसे काट लेने वाला गिरहकट, उचक्का, पॉकेटमार।

गंठजोड़ *पुं.* (तद्.+देश.) विवाह करना या संबंध स्थापित करना जैसे- रमानाथ दयाशंकर के लडके से अपनी पुत्री का गंठजोड़ करना चाहते है।

गंठ *पुं.* (तद्.) गाँठ।

गंठित *वि.* (तद्.) 1. बाँधा हुआ 2. गूँथा हुआ 3. गाँठ वाला।

गंठुआ *पुं.* (देश.) ताने या बाने के टूटे हुए तागों को कपड़े के तागे से जोड़ना (जुलाहा)।

गंड *पुं.* (तत्.) 1. कपोल, गाल 2. कनपटी 3. गाल से कनपटी तक का भाग 4. गंडा जो गले में पहना जाता है 5. फोड़ा 6. चिह्न, लकीर, दाग 7. गांठ, ग्रंथि 8. गैंडा 9. नाटक का एक अंग जिसमें सहसा प्रश्नोत्तर होने लगते है।

गंडक *पुं.* (तत्.) 1. गले में पहनने का जंतर या गंडा 2. गांठ 3. एक रोग जिसमें बहुत से फोडे निकलते हैं 4. गैंडा 5. चिह्न, निशान 6. रुकावट, बाधा 7. पार्थक्य, अलगाव 8. चार कौड़ियों के मूल्य का सिक्का 9. फलित ज्योतिष, 10. एक नदी जो हिमालय से निकल कर गंगा में मिलती है (देश.) श्वान, कुत्ता।

गंडकी *पुं.* (तत्.) संगीत में एक ताल *स्त्री.* गंडक नदी, मादा गैंडा।

गंडतरा *पुं.* (तद्.) वह मोटा और छोटा वस्त्र या कथरी जो छोटे बच्चों के नीचे बिछा दी जाती है ताकि पेशाब-पाखाने से बिस्तर खराब न हो।

गंडदेश *पुं.* (तत्.) गाल, कनपटी।

गंडनी *स्त्री.* (तद्.) सरपोका, सरकंडे की जाति की एक वनस्पती 'सरहटी' ।

गंड प्रदेश *पुं.* (तत्.) दे. गंडदेश।

गंडमंडल *पुं.* (तत्.) दे. गंडदेश।

गंडमाला *स्त्री.* (तत्.) गलगंड, कंठमाला रोग।

गंड मूर्ख *वि.* (तत्.) भारी बेवकूफ, घोर मूर्ख।

गंडरा *पुं.* (तद्.) तर जमीन में होने वाली घास, गांडर घास।

गंडरी *पुं.* (तद्.) 1. पोई का साग जो कफ नाशक होता है 2. सेहुड़।

गंडस्थली *पुं.* (तत्.) दे. गंडदेश।

गंडांत *स्त्री.* (तत्) ज्यो. ज्येष्ठा, आश्लेषा, और रेवती रेवती नक्षत्रों के अंत की पांच या तीन घटी या मूल मघा और अश्विनी के अंत के तीन घटी।

गंडा *पुं.* (देश.) 1. तागे, रस्सी आदि में लगाई जाने वाली गाँठ 2. वह धागा जिसे रोगी के गले या हाथ में बाँधते है।

गंडासा *पुं.* (देश.) चारा काटने का औजार, परशु।

गंडु *पुं.* (तत्.) 1. ग्रंथि, गांठ 2. अस्थि, हड्डी 2. गेंडुक, तकिया।

गंडूल *वि.* (तत्.) 1. गाँठो वाला, गाँठदार 2. टेढ़ा वक्र, झुका हुआ।

गंडूष *पुं.* (तत्.) 1. हथेली का गड्ढा, चुल्लू 2. पानी से किया जाने वाला कुल्ला 3. हाथी की सूंड की नोक।

गंडेरी *स्त्री.* (तद्.) ईख या गन्ने के छोटे टुकड़े जो छोटे कोल्हू में पेरने या चूसने के लिए काटे जाते है।

गंडोरा *पुं.* (तद्.) हरी कच्ची खजूर।

गंडोल *पुं.* (तत्.) 1. कच्ची शक्कर, गुड 2. कौर, निवाला।

गंतव्य *वि.* (तत्.) जहाँ किसी को जाना हो, गम्य, चलने योग्य।

गंता *पुं.* (तत्.) 1. जाने वाला 2. पाने वाला, सहवास करनेवाला।

गंतु *वि.* (तत्.) 1. जानेवाला, चलने वाला 2. पथिक, बटोही 3. पथ मार्ग।

गंत्रिका *स्त्री.* (तत्.) छोटी गाड़ी।

गंत्री *स्त्री.* (तत्.) छोटी गाड़ी, बैलगाड़ी।

गंद *स्त्री.* (फा.) 1. मलिनता, सड़ांध, गंदगी 2. दोष, खराबी 3. अशुद्धि 4. मटमैलापन।

गंदगी *स्त्री.* (फा.) 1. मैलापन, मलिनता 2. अपवित्रता, अशुद्धता 3. नापाकी 4. मैला, गलीज, मल 5. दुर्गंध, बदबू।

गंदना *पुं.* (तद्.) 1. प्याज लहसुन की जाति का एक मसाला 2. एक प्रकार की घास।

गंदम *पुं.* (देश.) एक पक्षी विशेष।

गंदा *वि.* (फा.) 1. मैला, मलिन 2. नापाक, अशुद्ध 3. घिनौना, घृणित।

गंदा पानी *पुं.* (फा.) 1. मद्य, शराब 2. वीर्य, रज।

गंदुम *पुं.* (फा.) गेहूँ।

गंदुमी *वि.* (फा.) गेहूँ के रंग का, ललाई लिए हुए भूरा, गेहूंआ।

गंध *स्त्री.* (तत्.) 1. वह गुण विशेष जो नाक द्वारा द्वारा सूंघने पर प्रतीत होता है, बास, महक 2. सुगंध, सुवास 3. वह सुगंधित द्रव्य जो शरीर में लगाया जाता है 4. सामान्यतः हवा के रूप में किसी के आने का पता लगाना उदा. आपके आने की तो गंध तक न मिली।

गंधक *पुं.* (तत्.) एक तीक्ष्ण गंधयुक्त खनिज पदार्थ जो दवाओं तथा अन्य उपयोगी रूपों में प्रयुक्त होता है, शोभांजन, सुगंध।

गंधकाम्ल (गंधक+अम्ल) *पुं.* (तत्.) गंधक का अम्ल, गंधक का तेज़ाब।

गंधकाष्ठ *पुं.* (तत्.) 1. अगर की लकड़ी, अगरू 2. 2. चंदन।

गंधकी *वि.* (तद्.) गंधक के रंग का, हलका पीला।

गंध केलिका *स्त्री.* (तत्.) कस्तूरी।

गंध कोकिल *पुं.* (तत्.) 1. एक सुंगधित वस्तु 2. सुगंध कोकिल (एक विशिष्ट गंध-द्रव्य।

गंधनकल *पुं.* (तद्.) छछूंदर।

गंधपत्र *पुं.* (तत्.) 1. सफेद तुलसी 2. मरुवा 3. नारंगी 4. बेल।

गंध पुष्पा *पुं.* (तत्.) सुगंध युक्त फूल, केवड़ा, गनियारी।

गंध पूतना *स्त्री.* (तत्.) एक प्रेतिनी या चुड़ैल।

गंध प्रसारिणी *स्त्री.* (तत्.) दवा के उपयोग में आने वाली एक लता।

गंध बबूल *पुं.* (देश.) 1. बबूल की जाति का वह छोटा वृक्ष, जिसके फूल विशेष सुगंधित होते हैं।

गंधमादन *पुं.* (तत्.) 1. एक पर्वत का नाम 2. भौंरा 3. गंधक 4. रावण का नाम।

गंधमासी *स्त्री.* (तत्.) जटामासी।

गंधमृग *पुं.* (तत्.) 1. कस्तूरी मृग 2. गंध बिलाव।

गंधराज *पुं.* (तत्.) 1. मोगरा, बेला 2. चंदन 3. जवादि गंध-द्रव्य।

गंधर्व *पुं.* (तत्.) 1. देवताओं का एक उपभेद जो देवलोक के गायक माने जाते है, गायक 2. मृग 3. घोड़ा 4. जन्म-मरण के बीच की अवस्था वाला जीव 5. सूर्य 6. कोकिल 7. एक हिंदू जाति जिसकी लड़कियाँ नाचने गाने का पेशा करती हैं 8. एरंड 9. संत 10. एक मानस रोग जिसे 'ग्रह' कहते हैं।

गंधर्व-खंड *पुं.* (तत्.) भारत-वर्ष के नव खण्डों में से एक का नाम।

गंधर्वराज *पुं.* (तत्.) गंधर्वो का राज चित्ररथ।

गंधर्वलोक *पुं.* (तत्.) विद्याधर और गुह्यक लोक के के मध्य में कथित एक लोक जहाँ गंधर्वो का निवास स्थान माना जाता है।

गंधर्व-विद्या *स्त्री.* (तत्.) गाने बजाने की विद्या, संगीत- कला।

गंधर्व-विवाह *वि.* (तत्.) आठ प्रकार के विवाहों में से एक, वह संबंध जो माता-पिता की अनुमति के बिना वर-वधू अपने मन से परस्पर कर लेते हैं।

गंधर्व-वेद *पुं.* (तत्.) चार उपवेदों में से एक, संगीत शास्त्र।

गंधर्वा *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा का एक नाम।

गंधर्वास्त्र *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र (दिव्यास्त्र)।

गंधर्वी *स्त्री.* (तत्.) 1. गंधर्व की स्त्री 2. सुरभि की पुत्री जो घोड़ों की माता थी।

गंधलता *स्त्री.* (तत्.) प्रियंग, नाम की लता।

गंधलोलुपा *स्त्री.* (तत्.) 1. मधुकर, भ्रमर 2. मक्खी या मच्छर।

गंधवटी *स्त्री.* (तत्.) एक प्रसिद्‌ध मादक पौधा।

गंधवती *वि.* (तत्.) 1. गंध वाली, गंध युक्त *स्त्री.* 1. चमेली का एक भेद, वनमल्लिका 2. गंधोत्तम, सुरा 3. मुरा नाम का गंध द्रव्य 4. व्यास की माता, सत्यवती का नाम 5. पृथ्वी 6. वरुणपुरी।

गंधवह *पुं.* (तत्.) 1. वायु 2. नाक।

गंधवही *स्त्री.* (तत्.) नासिका, नाक।

गंध हस्ती *पुं.* (तत्.) मदोन्मत्त हाथी, वह हाथी जिसके कुंभ से मद बहता हो।

गंधवाह *पुं.* (तत्.) हवा।

गंधा *पुं.* (तद्.) वह वस्तु जिसमें अच्छी महक हो, सुंगध युक्त वस्तु।

गंधाजीव *पुं.* (तत्.) इत्र बेचने वाला, गंधी, इत्रफ़रोश।

गंधाढ्य *वि.* (तत्.) खुशबूदार पुं. 1. चंदन 2. नारंगी का वृक्ष आदि अति सुगंधित पौधा।

गंधात्ता *स्त्री.* (तत्.) एक गंधमयी लता।

गंधाना *पुं.* (देश.) रोला छंद का एक नाम *अ.क्रि.* महकना, गंध निकलना।

गंधाम्ला *स्त्री.* (तत्.) जंगली नींबू।

गंधायित *वि.* (तत्.) गंधयुक्त, सुवासित।

गंधार *पुं.* (तत्.) दे. गांधार।

गंधारव *पुं.* (तत्.) छछूंदर।

गंधारी *स्त्री.* (तत्.) दे. गांधारी।

गंधाली *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रसारिणीलता, गंधपसार 2. भिड़, ततैया।

गंधालु *वि.* (तत्.) गंधयुक्त, खुशबूदार, सुगांधित।

गंधाविरोजा *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का गोंद जिसका मरहम फोड़े आदि पर लगाते है, चंद्रस पर्या. श्रीवास, श्री वेष्ट, वृक्ष धूपक, श्री पिष्ट, श्री रस, धूपांग, तिलर्ण।

गंधाशन *पुं.* (तत्.) पवन, वायु।

गंधाश्मा *पुं.* (तत्.) गंधक।

गंधाष्टक *पुं.* (तत्.) आठ गंध द्रव्यों का मिश्रण, अष्ट गंध।

गंधिक *वि.* (तत्.) गंधयुक्त, सुगंधित।

गंधिनी *पुं.* (तत्.) गंधी, इत्रफरोश, गंधक *स्त्री.* मदिरा, गंधद्रव, शराब।

गंधिया *पुं.* (देश.) दुर्गंध करने वाला एक बरसाती कीड़ा एक फुनगा जो धान आदि की फसल को नुकसान पहुँचाता है।

गंधी *पुं.* (तत्.) 1. सुगंधित, तेल, इत्र बेचने वाला, अत्तर 2. गंधिया नाम की घास, खटमल।

गंधेंद्रिय *स्त्री.* (तत्.) घ्राणेंद्रिय नासिका, नाक।

गंधेल *पुं.* (तद्.) एक वृक्ष जिसकी पत्तियाँ मसाले के और छाल, जड़ आदि दवा के काम आती है।

गंधैला *स्त्री.* (तद्.) 1. एक चिड़िया 2. गंधप्रसारिणी लता।

गंधोत्कट *पुं.* (तत्.) दौना, दमनक।

गंधोत्तमा *स्त्री.* (तत्.) इत्रफरोश, गंधी, गंध विक्रेता।

गंधोली *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की सुगंधित लता जिसकी जड़ दवा के काम आती है।

गंधोष्ठीय *पुं.* (तत्.) सिंह।

गंधौतु *पुं.* (तत्.) गंध विलाव।

गंभारी *स्त्री.* (तत्.) एक पेड़ जिसकी छाल और फल दवा के काम आती है टि. 1. इसकी छाल सफेद रंग की होती है, उसमें से दूध निकलता है, इसके फूल और फल पीले होते हैं, वैद्यक में यह भारी, दीपक, पाचक, मेधा जनक तथा रेचक मानी गई है 2. गंभारी की लकड़ी वर्षों तक जल में रहने पर भी खराब नहीं होती 3. गंभारी के पत्तों का पीछे का हिस्सा बहुत सफेद होता है इसका प्रयोग आमशूल, बवासीर, शोध, क्षपी और ज्वरादि में होता है, फल पकने पर कसैला और खट्टा-मीठा होता है पर्या. कश्मीर, श्रीपर्णी, मधुपर्णी, भद्रपर्णी, भद्राकृष्ण फल, कटफल, कंभारी, कुमुदा, हीरा, सर्वतोभद्रिका, महामुद्रा, रोहिणी, मधुमती, सुफला, मधुरसा।

गंभीर *वि.* (तत्.) 1. सौम्य, शांत 2. जिसके अर्थ तक पहुँचना कठिन हो 3. गहरा, जिसकी तह जल्दी न मिले, जिसमें जल्दी घुस न सके, घना, गहरा 5. घोर, भारी जैसे- गंभीर नाद 6. रहस्यमयय जैसे- गंभीर साधना।

गंभीर ज्वर *पुं.* (तत्.) मल के रुक जाने से, जलन से, श्वास खाँसी से उत्पन्न ज्वर।

गंभीर वेदी *पुं.* (तत्.) अंकुश की परवाह न करने वाला हठीला मत्त हाथी।

गंभीरक *वि.* (तत्.) गहरा, गंभीर।

गंभीरा *स्त्री.* (तत्.) एक नदी।

गंभीरिका *स्त्री.* (तत्.) एक बड़ा ढोल।

गँवई *स्त्री.* (देश.) 1. छोटा गाँव 2. गाँव।

गँवाऊ *वि.* (देश.) गँवाने वाला, उड़ाने वाला विलो. कमाऊ।

गँवाना *स.क्रि.* (देश.) खोना, नष्ट करना या नष्ट हो जाने देना जैसे- लोभ से उसने अपने हाथ की पूँजी भी गँवा दी।

गँवार *वि.* (देश.) 1. असभ्य 2. बेवकूफ़, मूर्ख, अनाड़ी, नासमझ 3. गाँव का रहने वाला, ग्रामीण, देहाती।

गँवारी *स्त्री.* (देश.) 1. गँवार स्त्री 2. मूर्खता, बेवकूफ़ी 3. गँवारपन।

गँवारू *वि.* (देश.) 1. गँवार का-सा 2. भद्दा, बेढंगा 3. असभ्य।

गँसना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. अच्छी तरह, कसकर जकड़ना, बाँधना, गाँठना 2. बुनावट में सूतों का खूब पास-पास होना।

ग *पुं.* (तत्.) 1. गीत 2. गंधर्व 3. छंदशास्त्र में गुरु मात्रा 4. गणेश 5. संगीत में 'गंगाधर' स्वर का संक्षिप्त रूप सूचक वर्ण 6. समासांत में 'जाने वाला' अर्थ देने वाला।

गऊ *स्त्री.* (तद्.) गाय, गौ।

गकरिया *स्त्री.* (देश.) लिट्टी, बाटी।

गगनगढ़ *पुं.* (तत्.+देश.) गगन-स्पर्शी प्रासाद, बहुत ऊँचा महल।

गगन गिरा *स्त्री.* (तत्.+देश.) आकाशवाणी।

गगन गुफा *पुं.* (तत्.+तद्) ब्रह्म रंध्र।

गगनचर *पुं.* (तत्.) 1. आकाशचारी 2. पक्षी 3. ग्रह, नक्षत्र 4. देव, देवता 5. राशिचक्र।

गगन धूलि *स्त्री.* (तत्.) 1. केतकी या केवड़े के पेड़ पर पडी धूल 2. एक प्रकार का कुकुरमुत्ता।

गगन ध्वज *पुं.* (तत्.) 1. बादल 2. सूर्य।

गगन *पुं.* (तत्.) 1. आकाश, अंतरिक्ष, शून्य 2. शून्य स्थान 3. काव्य. छप्पय छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं तथा जो क्रमशः 3 पगण और 2 गुरु के योग से बनता है 4. रहस्य संप्रदाय में अंतःकरण या ब्रह्म के रहने का स्थान।

गगन कुसुम *पुं.* (तत्.) आकाश कुसुम, अवास्तविक वस्तु।

गगनचुंबी *वि.* (तत्.) आकाश को छूने वाला, बहुत ऊँचा।

गगन पति *पुं.* (तत्.) इंद्र।

गगन-वाणी *स्त्री.* (तत्.) आकाशवाणी।

गगन विहारी *पुं.* (तत्.) 1. प्रकाश पिंड 2. सूर्य 3. देवता *वि.* आकाशचारी, नभचारी।

गगन स्पर्शी *वि.* (तत्.) आकाश को छूने वाला, बहुत ऊँचा।

गगनांगन *पुं.* (तत्.) पच्चीस मात्राओं का एक छंद दे. गगनांगना।

गगनांगना *स्त्री.* (तत्.) 1. अप्सरा 2. एक छंद का का नाम जिसके प्रत्येक चरण में 25 मात्राएं होती हैं, 16-9 पर यति होती हैं और अंत में यगण होता है।

गगनांबु *पुं.* (तत्.) वर्षा का जल, बरसाती पानी, आकाश से गिरा हुआ जल।

गगनाध्वज *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य 2. ग्रह 3. देवता।

गगनापगा *स्त्री.* (तत्.) आकाश गंगा।

गगनेचर *पुं.* (तत्.) 1. ग्रह, नक्षत्र 2. पक्षी 3. देवता 4. वायु 5. राक्षस,दैत्य, दानव 6. बाण, इषु 7. चंद्र।

गगनोल्मुक *पुं.* (तत्.) मंगल ग्रह।

गगरा *पुं.* (तद्.) ताँबे, पीतल या लोहे का बना हुआ घड़ा, कलसा।

गगरिया *स्त्री.* (देश.) दे. गंगरी।

गगरी *स्त्री.* (तद्.) मिट्टी का घड़ा, धातु का छोटा कलश।

गगल *पुं.* (तत्.) साँप का जहर, सर्प विष।

गच *स्त्री.* (देश.) 1. किसी नरम वस्तु में किसी कड़ी या पैनी वस्तु के धँसने का शब्द 2. चूने, सुरखी आदि के मेल से बना मसाला, जिससे जमीन पक्की की जाती है, पक्का फर्श 3. पक्की छत।

गचकारी *स्त्री.* (देश.+फा.) गच पीटने का काम, चूने सुरखी का काम।

गचाका *पुं.* (देश.) गच से गिरने की आवाज *स्त्री.* (अनु.) जवान औरत, जवानी से भरी स्त्री (बाजारू) *वि.* (देश.) भरपूर।

गच्चा *स्त्री.* (देश.) 1. धोखा 2. बेइज्जती 3. जोखिम, हानि की संभावना 4. गड्ढा, गर्त।

गचागच *क्रि.वि.* (अनु.) बार-बार धँसने का शब्द।

गच्छ *पुं.* (तत्.) 1. पेड़, गाछ 2. जैन साधुओं का मठ।

गज *पुं.* (तत्.) 1. हाथी 2. दिग्गज 3. आठ की संख्या 4. गजासुर (महिषासुर का पुत्र) 5. राम की सेना का एक बंदर 6. मकान की नींव *पुं.* (फा.) 1. लंबाई नापने की एक माप जो सोलह गिरह या तीन फुट की होती है मुहा. गजभर छाती होना- बहुत प्रसन्नता होना; गजभर की जबान होना- बड़ा बोल बोलना 2. लोहे की छड़ जिससे पुरानी चाल की बंदूकों में बारूद भरते थे 3. सारंगी बजाने की कमानी 4. पुरानी चाल का एक प्रकार का तीर 5. वह पतली लकड़ी जो बैलगाड़ी के पहिए में मूंड़ी से पुट्ठी तक लगाई जाती है 6. लकड़ी की पटरी जो घोडियों के ऊपर रखी जाती है।

गजक *पुं.* (फा.) 1. वह वस्तु जो शराब आदि पीने के बाद मुँह का स्वाद बदलने के लिए खाई जाती है जैसे- कबाब, पापड़, दालमोठ, सेव, बादाम, पिस्ता आदि शराब के बाद तथा मिठाई, दूध, रबडी आदि 2. तिलपड़ी, तिलशकरी 3. नाश्ता, जलपान 3. चटपट खा जाने की चीज।

गज कुंभ *पुं.* (तत्.) हाथी का उभरा हुआ मस्तक।

गज कुसुम *पुं.* (तत्.) नाग केसर।

गजकेसर *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का धान जो अगहन में तैयार होता है।

गजक्रीड़ित *पुं.* (तत्.) नृत्य में एक प्रकार का भाव।

गजगति *स्त्री.* (तत्.) 1. हाथी की चाल 2. हाथी की-सी मंद और मस्त चाल 3. मृगशिरा और आर्द्रा में गुरु की स्थिति या गति, रोहिणी 4. एक प्रकार का वर्ण वृत्त।

गजगमन *पुं.* (तत्.) हाथी की-सी चाल, मंद चाल।

गजगामिनी *वि.* (तत्.) हाथी के समान मंद गति वाली, गज गवनी।

गजगामी *वि.* (तत्.) हाथी के समान मंद गति से चलने वाला, मंदगामी।

गजगाह *पुं.* (तद्.) 1. हाथी की झूल 2. पाखर।

गजगौहर *पुं.* (तत्.+फा.) गजमोती, गजमुक्ता।

गजचर्म *पुं.* (तत्.) हाथी का चमड़ा 2. एक प्रकार का रोग जिससे शरीर का चमड़ा हाथी के चमड़े की तरह मोटा और कड़ा हो जाता है।

गजच्छाया *स्त्री.* (तत्.) फलित ज्योतिष का एक योग जो श्राद्ध के लिए प्रशस्त माना जाता है।

गजट *पुं.* (अं.) 1. सरकारी अखबार, समाचार पत्र 2. वह सामयिक पत्र जिसमें सरकारी सूचनाएँ प्रकाशित हो मुहा. गजट कराना- किसी सूचना को गजट में प्रकाशित कराना; गजट होना- किसी बात का गजट में प्रकाशित होना, किसी बात का बहुत अधिक प्रसिद्ध होना।

गजदंत *पुं.* (तत्.) 1. हाथी का दाँत 2. एक दाँत के ऊपर निकलने वाला दूसरा दाँत 3. दीवार में लगी हुई कपड़े टाँगने की खूँटी 4. नृत्य में एक प्रकार का भाव प्रकट करने की मुद्रा 5. गणपति का एक विशेषण।

गजदंती *वि.* (तत्.) हाथी के दाँत का बना हुआ।

गजधर *पुं.* (तत्.) 1. मकान बनाने वाला, मिस्त्री, राज, मेमार 2. वह राज या मेमार जो घर बनाने के पहले उसका नक्शा तैयार करता है।

गजनवी *वि.* (फ़ा.) गजनी नगर का रहने वाला 2. गजनी नगर से संबध रखने वाला जैसे- महमूद गजनवी।

गजनी *पुं.* (फा.) 1. अफगानिस्तान का एक नगर जो महमूद की राजधानी थी 2. एक प्रकार की चिकनी मिट्टी, गजनी।

गजपति *पुं.* (तत्.) 1. वह राजा जिसके पास बहुत से हाथी हो 2. कलिंग देश के पुराने राजाओं की उपाधि 3. बहुत बड़ा हाथी।

गजपाल *पुं.* (तत्.) महावत, हाथीवान।

गजपुंगव *पुं.* (तत्.) बड़ा या विशाल हाथी।

गजपुट *पुं.* (तत्.) धातुओं के फूँकने की एक रीति।

गजपुर *पुं.* (तत्.) हस्तिनापुर।

गजबंध *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का चित्र काव्य, जिसमें किसी छंद में अक्षरों की योजना इस प्रकार होती है कि वे हाथी के चित्र में बिठाये जा सकते है।

गज़ब *पुं.* (अर.) 1. कोप, रोष, गुस्सा पद- गजब इलाही-ईश्वर का कोप, दैवीकोप 2. आपत्ति, आफत, विपत्ति 3. अनर्थ 4. अंधेर, अन्याय, जुल्म जैसे- क्या गजब छाया है कि तुम दूसरे की बात भी नहीं सुनते 5. विलक्षण बात, विचित्र बात मुहा. गज़ब का- विलक्षण, अपूर्व; गज़ब ढाना- विलक्षण कार्य करना।

गजबाग *पुं.* (तद्.) हाथी का अंकुश।

गजबीला *वि.* (अर.) 1. गज़ब का 2. गज़ब करने वाला।

गजभक्षण *पुं.* (तत्.) पीपल।

गजमंडल *पुं.* (तत्.) हाथी के माथे पर चित्रित की हुई रंगीन रेखाएँ।

गजमणि *स्त्री.* (तत्.) गज-मुक्ता।

गजमुख *पुं.* (तत्.) 1. गणेश का नाम 2. जिसका मुख हाथी के समान हो।

गजमोचन *पुं.* (तत्.) विष्णु का एक रूप जिसे धारण कर उन्होंने ग्राह से एक हाथी की रक्षा की थी।

गजयूथ *पुं.* (तत्.) हाथी का झुंड।

गजर *पुं.* (तद्.) 1. पहर-पहर पर घंटा बजने का शब्द 2. भोर का घंटा 3. जगाने की घंटी, जगोनी 4. चार, आठ और बारह बजने पर उतनी ही बार घंटा बजने का शब्द 5. लाल और सफेद मिला हुआ गेहूँ।

गज़रा *पुं.* (देश.) 1. फूलों की माला, हार 2. एक गहना जो कलाई में पहना जाता है 3. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा 4. गाजर का पत्ता।

गजराज *पुं.* (तत्.) बड़ा हाथी।

गजरी *स्त्री.* (देश.) कलाई पर पहनने का छोटा गहना।

गज़ल *स्त्री.* (फा.) 1. उर्दू-फ़ारसी में मुक्तक काव्य का एक भेद, जिसका प्रधान विषय प्रेम होता है 2. वह कविता जिसमें नायिका के सौंदर्य और उसके पति प्रेम का वर्णन हो।

गज़ल गो *वि.* (फा.) गज़ल रचने या बनाने वाला।

गजवान *पुं.* (तत्.) महावत, हाथीवान।

गजवैद्य *पुं.* (तत्.) हाथी का चिकित्सक, हस्तिवैद्य। हस्तिवैद्य।

गजशाला *स्त्री.* (तत्.) वह स्थान जहाँ हाथी बाँधे जाते हैं, फ़ीलखाना, हथिसाल।

गजशिक्षा *स्त्री.* (तत्.) हस्तिशास्त्र, जिसमें हाथियों के विषय में सारी ज्ञातव्य बातों का समावेश है।

गजस्नान *पुं.* (तत्.) 1. हाथी का स्नान 2. निरर्थक कार्य, क्योंकि हाथी नहाने के बाद अपने ऊपर धूल, कीचड़ आदि डाल लेता है।

गजा *पुं.* (फा.गज) नगाड़ा बजाने का डंडा *स्त्री.* एक बंगला मिठाई।

गजाधर *पुं.* (तद्.) दे. गदाधर।

गजानन *पुं.* (तत्.) गणेश।

गजायुर्वेद *पुं.* (तत्.) हस्ति-चिकित्सा-शास्त्र।

गजारि *पुं.* (तत्.) 1. सिंह 2. शिव का एक नाम 3. एक वृक्ष।

गजारोह *पुं.* (तत्.) फ़ीलवान, महावत, हाथी पर चढ़ना।

गजाला *पुं.* (अर.) मृगशावक, हिरण का बच्चा।

गजाशन *पुं.* (तत्.) 1. पीपल का पेड़ 2. कमल की जड़।

गजासुर *पुं.* (तत्.) एक दैत्य जिसका संहार शिव ने किया था।

गजी *पुं.* (फा.) 1. एक प्रकार का मोटा देशी सस्ता कपड़ा, गाढ़ा *वि.* (तत्.) हाथी पर सवार व्यक्ति, गजारोही *स्त्री.* नारी, मादा गज, हथिनी।

गर्जेंद्र *पुं.* (तत्.) 1. ऐरावत 2. बड़ा हाथी, गजराज 2. इन्द्रद्युम्न नामक राजा जो अगस्त्य मुनि के शाप से हाथी हो गया था और ग्राहग्रस्त होने पर भगवान को याद कर शाप मुक्त हुआ।

गर्जेंद्र गुरु *पुं.* (तत्.) संगीत में रुद्रताल का एक भेद।

गजेटियर *पुं.* (अं.) सरकार की ओर से प्रकाशित परिचायक सामयिक पत्र जैसे- उत्तर प्रदेश गजेटियर/बनारस गजेटियर

गट *पुं.* (अनु.) दे. गट्ट किसी तरल पदार्थ को निगलने में होने वाली आवाज।

गटकना *स.क्रि.* (अनु.) 1. निगलना 2. उदरस्थ करना 3. हड़पना, दबा लेना।

गटकीला *वि.* (देश.) निगल जाने वाला, खा जाने वाला।

गटगट *पुं.* (अनु.) किसी पदार्थ को कई बार करके निगलने या घूँट-घूँट पीने में गले से उत्पन्न होने वाला शब्द *क्रि. वि.* गटगट शब्द सहित। धड़ाधड़, लगातार जैसे- कर्नल साहब देखते देखते सारी बोतल गटगट खाली कर गए।

गटपट *स्त्री* (अनु.) 1. दो या दो से अधिक मनुष्यों मनुष्यों या पदार्थों का परस्पर बहुत अधिक मेल, मिलावट 2. सहवास, संयोग, प्रसंग।

गटर *वि.* (अं.) गंदा नाला।

गटरमाला *स्त्री.* (देश.) बड़े-बड़े दानों की माला।

गटा पारचा *वि.* (देश.) एक तरह का गोंद जो रबर की तरह कड़ा करके विभिन्न वस्तुएँ तैयार करने में प्रयुक्त होता है।

गटागट *क्रि.वि.* (देश.) दे. गटगट।

गटी *स्त्री.* (तद्.) 1. गांठ, समूह, गठरी।

गट्ठर *पुं.* (देश.) 1. बड़ी गठरी, बोझा 2. बड़े कपड़े में लपेट तथा गाँठ लगाकर बांधा हुआ सूप 3. रस्सियों आदि से बँधा हुआ सामान।

गट्ठा *पुं.* (देश.) 1. गाँठ 2. हथेली और पहूँचे के बीच का जोड़, कलाई 3. पैर की तली और तलुए के बीच की गाँठ, टखना 4. बीज (कमल गट्टा) 5. एक प्रकार की देहाती मिठाई 6. बड़ी गठरी 7. घास लकड़ी आदि का बोझ 8. प्याज या लहसुन की गाँठ 9. जरीब का बीसवाँ भाग जो तीन गज का होता है, कट्ठा।

गठन *पुं.* (तद्.) 1. बनावट, रचना 2. अंगों का कसाव, दृढ़ता।

गठना *वि.* (तद्.) 1. दो वस्तुओं का परस्पर मिलकर एक होना, जुड़ना, सटना 2. सिलाई होना, बड़े-बड़े टाँके लगाना 3. बुनावट का दृढ़ होना।

गठबंधन *पुं..* (तत्.+तद्) 1. विवाह में एक रीति जिसमें वर और वधू के वस्त्रों के छोर को परस्पर मिलाकर गाँठ बाँधते हैं 2. पक्का रिश्ता 3. साँठ- गाँठ, गुप्त समझौता, गठबधना।

गठरी *स्त्री.* (देश.) 1. कपड़े में बँधा हुआ सामान, बोझ 2. संचित धन, जमा की हुई संपत्ति 3. एक प्रकार की तैराकी मुद्रा. गठरी बाँधना- यात्रा की तैयारी करना; गठरी मारना- ठगना।

गठरी मुटरी *स्त्री.* (देश.) गठरी में बँधा हुआ सामान, यात्री का सामान।

गठवाई *स्त्री.* (देश.) गठवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

गठवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. गाँठने का काम दूसरे से कराना 2. सिलाई करवाना 3. संयोग करवाना मिलवाना।

गठिया *स्त्री.* (तद्.) 1. एक रोग जिससे जोड़ों में विशेषकर घुटनों में सूजन और पीड़ा होती है, वात रोग, संधिवात 2. टाट का वह थैला या बोरा जिसमें बैलों, घोड़ों आदि पर लादने के लिए अनाज भरा जाता है, खुरजी 3. पोटली, छोटी गठरी 4. कोरे कपड़े की थानों की बंधी हुई बड़ी गठरी 5. पौधों या वृक्षों का एक रोग जिसमें डालियों का बढ़ना बंद हो जाता है।

गठियाना *स.क्रि.* (देश.) 1. गाँठ देना, गाँठ लगाना 2. गाँठ में बाँधना, गाँठ में रखना।

गठीला *वि.* (देश.) 1. जिसकी गठन या बनावट अच्छी और सुंदर हो, गठा हुआ 2. मजबूत 3. सुदृढ़, अच्छा 3. गाँठ वाला, जिसमें बहुत-सी गाँठें हों।

गठौत *स्त्री.* (देश.) 1. मेल-मिलाप, मित्रता, घनिष्ठता 2. गठी गठाई बात, मिलकर पक्की की की गई बात अभिसंधि 3. उपयुक्तता।

गड़ंत *स्त्री.* (देश.) वह वस्तु जिसे लोग टोटके या अभिचार के लिए गाड़ देते है।

गड़ *पुं.* (तद्.) 1. ओट, आड़ 2. घेरा, मंडल 3. चार दीवारी, प्राचीर 4. गड्ढा 5. खाई 6. एक प्रकार की मछली।

गड़क *पुं.* (देश.) एक प्रकार की मछली।

गड़कना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. 'गड़-गड़ शब्द करना 2. गर्क होना, डूबना।

गड़-गड़ *पुं.* (अनु.) 1. गड़गड़ शब्द जो हुक्का पीने के समय या सुराही से पानी उलटने के समय होता है 2. पेट में होने वाला गड़गड़ शब्द।

गड़गड़ाना *अ.क्रि.* (देश.) गरजना, गड़गड़ शब्द होना।

गड़गड़ाहट *स्त्री.* (देश.) 1. गड़गड़ाने का शब्द 2. गाड़ी या बादलों की गड़गड़ाहट, हुक्के की आवाज।

गड़ना *अ.क्रि.* (देश.) 1. धँसना, घुसना, चुभना, चुभने की पीड़ा होना 2. जमना, ठहरना, स्थिर होना, गाड़ा जाना, दफन होना, खड़ा किया जाना 3. शरीर में चुभने की-सी पीड़ा होना, खुरखुरा लगना 4. दर्द करना, पीड़ित होना मुहा. गड़ें मुर्दे उखाड़ना- पुरानी बात उभाड़ना; गड़ जाना- झेंप जाना, लज्जित होना 5. खड़ा होना, जमीन पकडना, भूमि पर ठहरना।

गड़प *स्त्री.* (अनु.) 1. पानी, कीचड़ आदि में किसी चीज के सहसा गिरने या डूबने का शब्द 2. किसी वस्तु को बिना चबाए निगल जाने की क्रिया।

गड़पना *स.क्रि.* (अनु.) 1. निगलना, खा लेना 2. किसी की चीज हजम करना, किसी की वस्तु पर अनुचित अधिकार करना।

गड़बड़ *वि.* (अनु.) 1. ऊँचा-नीचा, असमतल 2. क्रमविहीन, अस्त व्यस्त, ऊट पटांग, अनियमित, बेठिकाने 3. उपद्रव, दंगा 4. खराबी, रोगादि का प्रकोप।

गड़बड़ा *पुं.* (अनु.) वह गड्ढा जिसका मुँह ऊपर से घास आदि रखकर छिपा दिया गया हो, खत्ता, गड्ढा।

गड़बड़ाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. गड़बड़ी में पड़ना, चक्कर में आना, भूल में पड़ना 2. क्रम भ्रष्ट होना, अव्यवस्थित होना 3. अस्त-व्यस्त होना, बिगड़ना, नष्ट होना जैसे- वहाँ का सब कार्य गड़बड़ा गया।

गड़बड़िया *वि.* (देश.) गड़बड़ करने वाला, क्रम बिगाड़ने वाला, उपद्रव करने वाला।

गड़बड़ी *स्त्री.* (देश.) अव्यवस्था, गोलमाल।

गड़रिया *पुं.* (देश.) एक जाति जो भेड़ें पालती और उनके ऊन से कंबल बुनती है।

गड़वाना *स.क्रि.* (देश.) गाड़ने का काम कराना, गाड़ने में लगाना।

गड़हरी *स्त्री.* (देश.) 1. लात 2. जूता।

गड़हा *पुं.* (देश.) खाता, गड्ढा, खड्ड।

गड़ा *पुं.* (तद्.) 1. ढेर, राशि, अटाला, अंबार 2. काटी हुई फसल के डंठलों का ढेर।

गड़ाना *स.क्रि.* (देश.) 1. चुभाना, धँसाना, भोंकना 2. गाड़ने का काम कराना।

गड़ारी *स्त्री.* (देश.) 1. गंडलाकार रेखा, गोल लकीर, वृत्त 2. घेरा, मंडल 3. आड़ी धारी, आड़ी लकीरों की पंक्ति 4. गोल चरखी जिस पर रस्सी चढ़ा कर कुएँ से पानी खींचते हैं, घिरनी।

गड़ावन *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का नमक।

गड़ासा *पुं.* (देश.) दे. गंडासा।

गडु *पुं.* (तत्.) कूबड़, गलगंड, गडुवा, वह जिसके कूबड़ हो, केचुवा, *वि.* गड़ने या चुभने वाला।

गडुई *स्त्री.* (देश.) पानी पीने का एक छोटा पात्र, जिसमें टोटी लगी हो, झारी।

गड्डुक *पुं.* (तत्.) गड्डवा, अंगूठी, मुँदरी।

गड्डुल *पुं.* (तत्.) कुबड़ा, आदमी *वि.* (तत्.) कुब्ज, कूबडवाला।

गड्डुलना *पुं.* (तद्.) बच्चों को घुमाने की छोटी गाड़ी।

गडेर *पुं.* (तद्.) मेघ, बादल।

गड़ेरदार *वि.* (तद्.+फ़ा.) घेरदार।

गड़ेरन *स्त्री.* (देश.) गड़रिया स्त्री।

गड़ेरिया *पुं.* (देश.) दे. गड़रिया।

गड़ेरूआ *पुं.* (देश.) चौपायों का एक रोग।

गड़ोना *स.क्रि.* (देश.) चुभाना, धँसाना, घुसेड़ना।

गडोल *पुं.* (तद्.) 1. ग्रास, कौर 2. गुड़, कच्ची चीनी।

गड़ोलना *पुं.* (देश.) बच्चों को घुमाने फिराने की छोटी गाड़ी।

गड्ड *पुं.* (देश.) 1. एक पर एक रखी चीजों की राशि 2. ताश के पत्तों, कागज आदि का ढेर।

गड्डमगोल *पुं.* (देश.) दे. गड़बड़झाला।

गड्डमड्ड *पुं.वि.* (देश.) घालमेल, घपला, बेमेल की मिलावट, बिना किसी क्रम या नियम के।

गड्डी *स्त्री.* (देश.) छोटा गडड्, ढेर, एक ही आकार की ऐसी वस्तुओं का ढेर जो तले ऊपर रखी हो जैसे- कागज की गड्डी, ताश की गड्डी, पान की गड्डी

गड्ढर-गड्डुल *पुं.* (तत्.) भेड़ मेष।

गड्ढा *पुं.* (तद्.) 1. गढ़ा, गर्त 2. पेट 3. किसी तल का वह भाग जो आस-पास से कुछ नीचा हो जैसे- गालों में गड्ढा पड़ना 4. ला.अ. विपत्ति, संकट या हानि जैसे- आगे बढने में गड्ढों से मत डरो।

गढंत *वि.* (देश.) गढ़ा हुआ, कल्पित, बनावटी जैसे- तुम्हारी गढंत बातों पर कौन विश्वास करेगा *स्त्री.* *स्त्री.* गढ़ी हुई बात।

गढ़ *पुं.* (तद्.) 1. कोट, किला 2. खाई 3. अड्डा 4. केंद्र मुहा. गढ़ जीतना- किला जीतना/अधिकार करना, कठिन काम करना।

गढ़त *स्त्री.* (देश.) गठन, बनावट, ढाँचा, रचना, आकृति।

गढ़न *स्त्री.* (तद्.) बनावट, गठन।

गढ़ना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. दो वस्तुओं का परस्पर मिलकर एक होना, जुड़ना सटना 2. मोटी सिलाई होना, बड़े-बड़े टांके लगाना 3. बुनावट का दृढ़ होना।

गढ़ना *स.क्रि.* (तद्.) 1. किसी सामग्री को काट-छाँट कर ठोंक-ठाक कर कोई काम की चीज बनाना, सुघटित करना, रचना, निर्माण करना।

गढ़पति (गढ़-पति) *पुं.* (तद्.) 1. किलेदार 2. राजा, सरदार।

गढ़ा *पुं.* (तद्.) दे. गड्ढा।

गढ़ाई *स्त्री.* (देश.) 1. गढ़ने की क्रिया, गढ़ने का काम 2. गढ़ने की मजदूरी, वह मजदूरी जो सुनार, बढ़ई आदि को कोई चीज बनाने के बदले दी जाती है।

गढ़िया *पुं.* (देश.) गढ़ने वाला।

गढ़ी *स्त्री.* (देश.) 1. छोटा किला 2. किले या कोट के ढंग का मजबूत मकान।

गढ़ीस *वि.* (तद्.) गढ़पति, किलेदार।

गढैया *वि.* (देश.) गढ़ने वाला, बनाने वाला, रचने वाला।

गण *पुं.* (तत्.) 1. समूह, झुंड, जत्था 2. श्रेणी, जाति कोटि 3. समान उद्देश्य वाले मनुष्यों का समूह 4. संघ 5. अनुचर 6. अनुयायी वर्ग 6. अक्षौहिणी सेना का एक विभाग जिसमें 27 हाथी, 27 रथ, 81 घोड़े, 135 पैदल होते हैं 7. नक्षत्रों की तीन कोटियों में से एक 8. काव्य. छंदशास्त्र में तीन वर्णों का समूह 9. गणेश 10. शिव के सेवकों का समुदाय।

गणक *पुं.* (तत्.) 1. ज्योतिषी 2. गणना करने वाला 3. लेखापाल चुनाव में प्राप्त मतों या

परीक्षा में प्राप्त अंकों को क्रम से रखकर जोड़ने वाला व्यक्ति या यंत्र।।

गणराज्य *पुं.* (तत्.) प्रजा से चुने हुए मुखियों या गणों के द्वारा चलाया जाने वाला राज्य।

गणतंत्र *पुं.* (तत्.) वह राज्य या राष्ट्र जिसमें जनसाधारण सामूहिक रूप से अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों के द्वारा शासन और न्याय का विधान करते हो।

गणदेवता *पुं.* (तत्.) समूहचारी देवता।

गणन *पुं.* (तत्.) गिनना।

गणना *स्त्री.* (तत्.) 1. गिनती 2. हिसाब 3. संख्या।

गणनाध्यक्ष *पुं.* (तत्.) लेखापाल accountant

गणनायक *पुं.* (तत्.) 1. गणेश 2. शिव 3. गणों का स्वामी या मालिक।

गणनीय *वि.* (तत्.)1. गिनने योग्य 2. नामी, प्रसिद्ध, विख्यात।

गणपति *पुं.* (तत्.) 1. गणों का स्वामी 2. गणेश 3. शिव।

गणवेश *पुं.* (तत्.) वरदी, परिधान, पहनावा।

गणाधिप *पुं.* (तत्.) 1. गणों का मालिक 2. गणेश 3. जैनियों के अनुसार साधुओं के समुदाय में सबसे श्रेष्ठ या वृद्ध।

गणिका *स्त्री.* (तत्.) 1. वेश्या 2. धन के लोभ से नायक से प्रेम करने वाली नायिका 3. एक फूल जो चमेली से मिलता जुलता होता है 4. हथिनी।

गणिकाध्यक्ष *पुं.* (तत्.) 1. वेश्याओं का निरीक्षक 2. राजकर्मचारी या चौधरी।

गणित *पुं.* (तत्.) वह शास्त्र जिसमें मात्रा, संख्या और परिमाण का विचार हो, अंकशास्त्र, हिसाब *वि.* जो गिना हुआ हो 2. जोड़ा हुआ

गणितज्ञ *वि.* (तत्.) 1. गणितशास्त्र जानने वाला, हिसाबी 2. ज्योतिषी।

गणितशास्त्र *पुं.* (तत्.) दे. गणित।

गणेरुका *स्त्री.* (तत्.) 1. गणिका, कुटनी 2. नौकरानी, सेविका 3. हथिनी।

गणेश *पुं.* (तत्.) एक प्रसिद्ध हिंदू देवता जो शिव-पार्वती के पुत्र माने जाते है और पंच देवों में परिगणित हैं, शिव, गणनायक पर्या. विनायक, गणाधिप, एकदंत, लंबोदर, गजानन, विघ्नेश *वि.* (तत्.) गणों का मालिक, गण का स्वामी, गण में जो प्रधान हो।

गणेश क्रिया *स्त्री.* (तत्.) योग की क्रिया जिसमें उँगली आदि की सहायता से गुदा का मल साफ करते हैं।

गणेश चतुर्थी *स्त्री.* (तत्.) प्रत्येक पक्ष की चतुर्थी तिथि, मुख्यत: भादों की शुक्ल और माघ की कृष्ण चतुर्थी जिसमें गणेश का व्रत और पूजन किया जाता है।

गण्य *वि.* (तत्.) 1. गिनने योग्य, गिनती के लायक 2. जिसकी पूछ हो, जिसे लोग कुछ समझे, प्रतिष्ठित।

गण्य पण्य *पुं.* (तत्.) गिनती के हिसाब से बिकने वाली वस्तुएँ, वे पदार्थ जिनकी बिक्री गिनती के हिसाब से हो।

गत *वि.* (तत्.) 1. गया हुआ, बीता हुआ जैसे-गतमास, गत दिन, गतवर्ष 2. मरा हुआ, मृत 3. रहित, हीन, खाली मुहा. गत होना, मरना, मर जाना *स्त्री.* (तद्.) 1. अवस्था, दशा, हालत मुहा. गत बनाना-दुर्दशा करना, दुर्गति करना *पुं.* मुहा. गत बनाना- उपहास करना, लज्जित करना उदा. वह अपने को बड़ा बोलने वाला समझता था, कल उसकी भी खूब गत बनाई गई 2. रूप, रंग, वेश, आकृति मुहा. गत बनाना- रूप रंग बनाना, वेश धारण करना प्रयो. तुमने अपनी क्या गत बना रखी है 4. दुर्गति, दुर्दशा, नाश प्रयो. तुमने तो इस पुस्तक की क्या गत कर डाली है 5. मृतक का क्रिया कर्म 6. संगीत में बाजों के कुछ बोलों का क्रमबद्ध मिलान 7. नृत्य में शरीर का विशेष संचालन और मुद्रा, नाचने का ठाठ।

गतक *पुं.* (तत्.) गमन, गति, जाना।

गतकल्मष *पुं.* (तत्.) पाप रहित।

गतका *पुं.* (तद्.) लकड़ी का डेढ़-दो हाथ लंबा चमड़ा चढ़ा मुठियादार डंडा जिससे एक खास खेल खेला जाता है।

गतचेतन *वि.* (तत्.) चेतना रहित, बेहोश।

गतशैशव *पुं.* (तत्.) आठ वर्ष से अधिक अवस्था का।

गतस्पृह *पुं.* (तत्.) जिसे कोई चाह या इच्छा न हो।

गतांक *वि.* (तत्.) 1. पिछला अंक, संख्या 2. गया बीता, निकम्मा।

गतांत *वि.* (तत्.) जिसका अंत आ गया हो।

गताक्ष *वि.* (तत्.) नेत्रविहीन, अंधा।

गतागत *वि.* (तत्.) आया गया *पुं.* (तत्.) 1. आवागमन 2. जन्म मरण 3. पैतरा।

गतागति *स्त्री.* (तत्.) दे. गतागत।

गतानुगतिक *वि.* (तत्.) अतीत का अंधानुसरण करने वाला।

गतायु *वि.* (तत्.) 1. जिसकी आयु समाप्त प्राय हो, अत्यंत वृद्ध 2. निर्बल, कमजोर, अशक्त।

गतार *स्त्री.* (देश.) बोझ बाँधने की रस्सी, जुए से बैल की गरदन बाँधने की रस्सी।

गतार्तवा *वि.* (तत्.) 1. जिसे ऋतु या रजोदर्शन न होता हो 2. बंध्या 3. वृद्ध।

गतार्थ *वि.* (तत्.) 1. धनहीन, निर्धन 2. अर्थहीन, अर्थ रहित 3. जाना या समझा हुआ।

गतालोक *वि.* (तत्.) प्रकाश रहित, ज्योतिहीन।

गति *स्त्री.* (तत्.) 1. एक स्थान से दूसरे स्थान पर पर क्रमशः जाने की क्रिया, चाल, रफ्तार 2. जाना, गमन 3. हिलने, डोलने की क्रिया, हरकत 4. अवस्था, दशा, हालत 5. रूप-रंग, वेष 6. पहुँच, प्रवेश 7. पैठ 8. दखल 9. प्रलय की सीमा 10. अंतिम उपाय 11. तदबीर 12. सहारा, अवलंब, शरण 13. चेष्टा 14. करनी, क्रिया कलाप जैसे- उसकी गति सदा हमारे प्रतिकूल रहती है 15. लीला, विधान, माया 16. ढंग, रीति, दस्तूर 17. जीवात्मा का एक शरीर से दूसरे में गमन 18. मृत्यु के उपरांत जीवात्मा की दशा, मोक्ष, मुक्ति 19. कुश्ती लड़ने वालों के पैर की चाल, पैतरा 20 ग्रहों की चाल 21. ताल और स्वर के अनुसार अंग संचालन।

गतिक *पुं.* (तत्.) 1. गति, गमन 2. आसरा, आश्रय, सहारा 3. मार्ग, राह, रास्ता 4. अवस्था, स्थिति।

गति भंग *पुं.* (तत्.) 1. ठहरना, रुकना 2. छंद, गान आदि में गायन या पाठ के क्रम में रूकावट या अवरोध।

गतिमान *वि.* (तत्.) गतियुक्त, गतिशील।

गतिरोध *पुं.* (तत्.) चाल में रुकावट, गति रोकने की क्रिया।

गतिवान् *वि.* (तत्.) वेग युक्त, गति वाला, क्रियाशील।

गतिविधि *स्त्री.* (तत्.) 1. उद्यम 2. चाल-ढाल, कार्य जैसे- सेना की गतिविधि देखने के लिए एक रणदक्ष सेनापति की आवश्यकता है।

गतिहीन *वि.* (तत्.) 1. स्थिर, ठहरा हुआ 2. असहाय, परित्यक्ता।

गत्ता *पुं.* (देश.) कागज की कई परतों को काट कर बनाई गई दफ़्ती।

गत्वर *वि.* (तत्.) 1. जाने वाला, गमनशील 2. क्षणिक, नाशवान।

गद *पुं.* (अनु.) 1. किसी नरम चीज पर कड़ी या कड़ी चीज पर नरम चीज के गिरने की आवाज प्रयो. उसकी पीठ पर गेंद गद से गिरी 2. स्थूलता, मोटापन।

गदगद *वि.* (अनु.) हर्ष, प्रेम आदि के अतिरेक से जिसका गला भर आया हो, जिसके मुँह से स्पष्ट शब्द न निकलते हो, पुलकित, आनंदित।

गदगदकंठ *पुं.* (तत्.) हर्षादि से भरा हुआ गला।

गदयित्नु *वि.* (तत्.) 1. मुखर, बातूनी, वाचाल 2. कामी, कामुक *पुं.* (तत्.) 1. शब्द, घोष 2. धनुष 3. कामदेव।

गदर *पुं.* (अर.) विप्लव, बगावत, विद्रोह, उपद्रव *स्त्री.* (देश.) ठाकुर जी को पहनाई जाने वाली कई तरह की बगलबंदी।

गदराना *अ.क्रि.* (देश.) 1. पकने पर होना 2. यौवनागम में अंगों का भरना 3. आँख में कीचड़ आना।

गदला *वि.* (देश.) मिट्टी या कीचड़ मिला हुआ, मटमैला गंदा।

गदहपन *स्त्री.* (देश.) मूर्खता, बेवकूफी।

गदहा *पुं.* (तत्.) रोग हरने वाला, वैद्य, चिकित्सक तद्. गधा।

गदहिला *पुं.* (देश.) 1. वह गधा, जिस पर ईंट, सुरखी, आदि लादते हैं 2. गुबरैले की तरह का विषैला कीड़ा।

गदांतक *पुं.* (तत्.) अश्विनी कुमार।

गदांबर *पुं.* (तत्.) मेघ, बादल।

गदा *स्त्री.* (तत्.) 1. लोहे का बना एक पुराना हथियार, जिसके एक सिरे पर बड़ा नोंकदार लट्टू जैसा गोला लगा होता है, इसका डंडा पकड़ कर लट्टू की ओर से शत्रु पर प्रहार करते हैं 2. बाँस के डंडे में पहनाया हुआ पत्थर का गोला जिसे मुद्गर की तरह भाँजते हैं।

गदाई *वि.* (फा.) 1. तुच्छ, नीच, शुद्र 2. रद्दी, निकम्मा।

गदाका *वि.* (देश.) सुडौल शरीर वाला *पुं.* (अनु.) किसी को उठाकर जमीन पर पटकने की क्रिया।

गदाख्या *पुं.* (तत्.) कुष्ठ रोग।

गदागद *स्त्री.* (अनु.) किसी मुलायम चीज पर गिरने या आघात करने से उत्पन्न शब्द।

गदाग्रज *पुं.* (तत्.) कृष्ण, गद के बड़े भाई।

गदाग्रणी *पुं.* (तत्.) क्षयरोग, यक्ष्मा।

गदाधर *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु, नारायण, विष्णु ने गदासुर नामक राक्षस की हड्डियों से एक गदा बनाकर उसे धारण किया था इसीलिए उनका गदाधर नाम पड़ा।

गदारति *पुं.* (तद्.) दवा, औषध।

गदाला *पुं.* (देश.) हाथी की पीठ पर कसा जाने वाला गद्दा।

गदित *वि.* (तत्.) कहा हुआ, कथित।

गदी *वि.* (तत्.) 1. रोगी 2. जो गदा लिए हुए हो *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. कृष्ण।

गदेला *पुं.* (देश.) रूई से भरा हुआ मोटा ओढ़ना या बिछौना 2. गद्-गद् स्वर।

गद्गद *वि.* (तत्.) 1. अस्पष्ट स्वर, हकलाना *वि.* 1. अत्यधिक हर्ष, प्रेम, श्रद्धा आदि के आवेग से इतना पूर्ण कि अपने आपको भूल जाए और स्पष्ट शब्द का उच्चारण न कर सके 2. अधिक हर्ष, प्रेम आदि के कारण रुका हुआ, अस्पष्ट, या असबंद्ध स्वर जैसे- गद्गद् वाणी 3. प्रसन्न, अनाहित, पुलकित *पुं.* 1. वह रोग जिसमें रोगी शब्दों का स्पष्ट उच्चारण नही कर सकता 2. हकलाना।

गद्द *वि.* (अनु.) 1. मुलायम स्थान पर किसी वस्तु के गिरने का शब्द 2. शीघ्र न पचने वाली वस्तु खाने के कारण पेट का भारी होना, 3. एक कल्पित लकड़ी जिसके स्पर्श से लोगों का वश में हो जाना माना जाता है।

गद्दार *वि.* (अर.) 1. विद्रोही 2. अपने देश, संस्था या शासन के विरुद्ध होकर उसे हानि पहुंचाने वाला।

गद्दार *वि.* (देश.) 1. अधपका, अधकचरा 2. मोढा।

गद्दी *स्त्री.* (देश.) 1. छोटा गद्दा 2. वह कपड़ा जो जो घोड़े, ऊँट आदि की पीठ पर काठी या जीन आदि रखने के लिए डाला जाता है 3. व्यवसायी या दुकानदार आदि के बैठने का स्थान जैसे- सराफ की गद्दी 4. किसी बड़े अधिकारी का पद जैसे- राजा की गद्दी, महंत की गद्दी 5. राजवंश की पीढ़ी या शिष्य परंपरा 6. हाथ या पैर की हथेली 7. एक प्रकार का मिट्टी का गोल बर्तन जिसमें छीपी रंग रख कर छपाई का काम करते है मुहा.

गद्दी पर बैठना- सिंहासनारूढ होना, उत्तराधिकारी होना; गद्‌दी चलाना- शिष्य परम्परा का जारी होना।

गद्दी नशीन *वि.* (देश.+फ़ा.) 1. सिंहासनारूढ़, जिसे राज्याधिकार मिला हो 2. उच्चाधिकारी।

गद्य *पुं.* (तत्.) 1. साहित्य का वह भेद जो छंदोबद् छंदोबद्ध न हो, वचनिका विलो. पद्य 2. ऐसी सीधी सादी भाषा जिसमें किसी प्रकार की बनावट न हो।

गद्यात्मक *वि.* (तत्.) गद्य में लिखा या रचा हुआ, हुआ, गद्य का।

गधा *पुं.* (तद्.) दे. गदहा *वि.* नामसझ, मूर्ख, अहमक मुहा. गधा पीटे घोड़ा नहीं होता- सिखाने से मूर्ख व्यक्ति समझदार नहीं होता; गधे को बाप बनाना- काम निकालने के लिए मूर्ख की खुशामद करना; गधे पर चढ़ाना- जलील, बेइज्जत करना; गधे से हल चलवाना- बिलकुल उजाड़ देना, बरबाद कर देना।

गधापन *पुं.* (देश.) मूर्खता, नासमझी।

गधूल *पुं.* (देश.) एक फूल का नाम।

गन *पुं.* (तद्.) 1. दूत, सेवक 2. परिषद।

गनगनाना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. खड़ा होना 2. रोमांच होना।

गननाना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. शब्द से भर जाना, गूँजना 2. चक्कर में आना, घूमना, फिरना।

गनगौर *स्त्री.* (तद्.) 1. चैत्र शुक्ला तृतीया, इस दिन गणेश और गौरी की पूजा होती है 2. पार्वती, गिरिजा।

गन मेटल *पुं.* (अं.) कांस्य की एक किस्म जिसमें 90 प्रतिशत तांबा और 10 प्रतिशत टिन होता है।

गनिका *स्त्री.* (तद्.) 1. वेश्या 2. धन के लोभ से प्रेम करने वाली स्त्री।

गनियारी *स्त्री.* (देश.) एक झाड़ जिसकी लकड़ी रगड़ने से आग निकलती है, छोटी अरनी।

गनी *वि.* (अर.) 1. धनी, धनवान 2. निस्पृह, अनिच्छुक 3. बेपरवाह 4. संतुष्ट *स्त्री.* (देश.) पटसन की रस्यिों से बुना हुआ मोटा टाट जिसके बोरे या थैले बनते हैं।

गनी बैग *पुं.* (अर.+अं.) बोरा।

गनीम *पुं.* (अं.) 1. लुटेरा, डाकू 2. बैरी, शत्रु।

गनीमत *स्त्री.* (अर.) 1. लूट का माल 2. वह माल जो बिना परिश्रम मिले, मुफ्त का माल जैसे- उससे जो कुछ मिल जाए वही गनीमत है 3. संतोष की बात, धन्य मानने की बात 4. बड़ी बात जैसे- किसी तरह पेट पाल ले यही गनीमत है।

गन्ना *पुं.* (देश.) ईख, ऊख।

गप *स्त्री.* (तद्.) 1. इधर उधर की बात, जिसकी सत्यता का निश्चय न हो 2. वह बात जो किसी प्रयोजन से न की जाए, बकवाद 3. झूठी बात, मिथ्या प्रसंग, कपोल कल्पना 4. झूठी खबर, अफवाह, मिथ्या-संवाद 5. वह झूठी खबर जो बड़ाई करने के लिए की जाए, डींग (अनु.) बहुत जल्दी खाने/निगलने की क्रिया।

गपकना *स.क्रि.* (देश.) चटपट निगलना, झट से खा लेना।

गपड़चौथ *पुं.* (देश.) 1. गड़बड़, गोलमाल 2. व्यर्थ की बकवास, गप।

गपचना *स.क्रि.* (देश.) फैंकी गई वस्तु को दोनों हथेलियाँ जोड़कर या एक हाथ से दृढ़तापूर्वक पकड़ना।

गपना *स.क्रि.* (देश.) गपमारना, बकवाद करना, व्यर्थ बात करना।

गपागप *क्रि.वि.* (देश.) जल्दी-जल्दी (खाना) चटपट।

गपिया *वि.* (देश.) गप मारने वाला, बकवादी, गप्पी, झूठ बात कहने वाला।

गपोड़ *पुं.* (देश.) दे. गपोड़ा।

गपोड़ा *पुं.* (देश.) मिथ्या बात, कपोलकल्पना, गप।

गपोड़े बाजी *स्त्री.* (देश.) झूठ-मूठ की बकवास।

गप्प *स्त्री.* (देश.) दे. गप।

गप्पी *वि.* (देश.) 1. गप मारने वाला, छोटी बात को बढाकर कहने वाला 2. मिथ्या भाषी, झूठा।

गप्फा *पुं.* (देश.) बहुत बड़ा ग्रास, नफा, लाभ।

गफ *वि.* (तद्.) घना, गाढ़ा, झीना का उलटा।

गफर *वि.* (अर.) क्षमा करने वाला, दयालु।

ग़फ़लत *स्त्री.* (अर.) 1. असावधानी, बेपरवाही 2. प्रमाद, भूल, चूक, भ्रम।

गफ़्फ़ार *वि.* (अर.) बहुत बड़ा उदार तथा दयालु, ईश्वर का एक विशेषण।

ग़बन *पुं.* (अर.) अमानत की रकम खा जाना, मालिक या किसी दूसरे के सौंपे हुए माल को खा जाना, ख्यानत।

गबर *पुं.* (देश.) वह पाल जो जहाज में सब पालों के ऊपर लगाया जाता है *क्रि.वि.* (देश.) शीघ्रता, जल्दबाजी।

गबर गंड *वि.* (देश.+तत्.) मूर्ख, अज्ञानी, जड़, बहुत बड़ा मूर्ख।

गबररून *पुं.* (फा.) एक प्रकार का मोटा धारीदार कपड़ा।

गबरहा *वि.* (देश.) गोबर मिला हुआ, गोबर लगा।

गबरू *वि.* (फा.) 1. नौजवान 2. भोला, भाला, सीधा *पुं.* (फा.) दूल्हा, पति।

गबी *वि.* (अर.) मंद बुद्धि, कम अक्ल।

गब्बर *वि.* (देश.) 1. घमंडी, गर्वीला, अहंकारी 2. ढीठ, हठी 3. किसी काम को जल्दी न करने वाला, अड़ियल 4. बहुमूल्य, कीमती 5. धनी, मालदार।

गब्भा *पुं.* (देश.) 1. वह बिछावन जिसमें रूई भरी हो, गद्दा, तोशक 2. चारे का गट्ठा।

गब्र *पुं.* (फा.) अग्नि पूजक, पारसी।

गभरू *पुं.* (फा.) प्रिय।

गभस्ति *पुं.* (तत्.) 1. किरण 2. सूर्य 3. बाँह, हाथ *स्त्री.* अग्नि की स्त्री, स्वाहा।

गभस्तिमान *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य 2. एक द्वीप का नाम 3. पाताल का नाम 4. भारत का एक खंड *वि.* किरण युक्त, प्रकाशयुक्त, चमकीला।

गभीर *वि.* (तत्.) गहरा।

गभीरिका *स्त्री.* (तद्.) गंभीर ध्वनि देने वाला बड़ा ढोल।

गभुआर *वि.* (देश.) 1. जन्म के समय का 2. जिसका मुंडन न हुआ हो 3. अनजान, नासमझ।

गभुवार *वि.* (देश.) दे. गुभआर।

गभोलिक *पुं.* (तद्.) छोटा गाव तकिया।

गम *पुं.* (तत्.) 1. राह, मार्ग, रास्ता 2. गमन, प्रयान 3. मैथुन, सहवास 4. पथ, सडक़ 5. शत्रु पर अभियान, कूच 6. अविचारिता, विचारशून्यता 7. ऊपरीपन, अटकल पच्चू निरीक्षण 8. पासे का खेल *स्त्री.* प्रवेश, पहुँच *पुं* (अर.) 1. दुख 2. शोक शोक 3. रंज 2. चिंता, फिक्र, ध्यान।

गमक *वि.* (तत्.) 1. जाने वाला 2. बोधक, सूचक, बतलाने वाला। *पुं.* 1. संगी. में, गाने में एक श्रुति से दूसरी श्रुति पर जाने की एक रीति 2. तबले की गंभीर आवाज। *स्त्री.* महक, सुगंध जैसे- इस फूल की गमक चारों ओर फैल रही है।

गमकना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. सुगंधि देना, महकना 2. गूँज पैदा होना 3. खुशी या उत्साह से भरना।

गमकीला *वि.* (देश.) गमकने या महकने वाला, सुगंधित।

गमखार *वि.* (अर.) सहनशील।

गमखारी *स्त्री.* (अर.) सहनशीलता।

गमखोरी *स्त्री.* (फा.) सहिष्णुता, सहनशीलता।

गमगीन *वि.* (फा.) दुखी, उदास, खिन्न, व्यथित।

गमछा *पुं.* (देश.) बदन पोंछने का कपड़ा, अँगोछा।

गमत *पुं.* (तद्.) 1. रास्ता 2. मार्ग 3. पेशा, व्यवसाय।

गमथ *पुं.* (तत्.) 1. मार्ग, राह 2. व्यापार, पेशा 3. आमोद-प्रमोद 4. राह चलने वाला, पथिक।

गमन *पुं.* (तत्.) 1. जाना, चलना, यात्रा करना 2. दूसरे स्थान को प्राप्त करना 3. संभोग, मैथुन 4. राह, रास्ता 5. सवारी आदि जिनकी सहायता से यात्रा की जाए 6. प्राप्त करना, पहुँचाना।

गमना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. जाना, चलना 2. गम करना, शोक करना।

गमनागमन *पुं.* (तत्.) आना-जाना, यातायात।

गमला *पुं.* (देश.) 1. मिट्टी का बर्तन जिसमें फूल के पौधे लगाए जाते हैं 2. पाखाना करने का, चीनी मिट्टी का पात्र, कमोड।

गमागम *पुं.* (तत्.) आना-जाना।

गमि *स्त्री.* (तत्.) पहुँच, पैठ, प्रवेश।

गमी *वि.* (तत्.) जाने वाला, गमन करने वाला *पुं.* पथिक, यात्री *स्त्री.* (अर.) 1. शोक की अवस्था या काल 2. मृत्यु/मरनी।

गम्य *वि.* (तत्.) 1. जाने योग्य, गमन योग्य 2. प्राप्य, लभ्य 3. गमन करने योग्य 4. संभोग करने योग्य 5. समझ में आ जाने वाला, सुबोध।

गयंद *पुं.* (तत्.) 1. बड़ा हाथी 2. दोहे का एक भेद।

गय *पुं.* (तत्.) 1. घर, मकान 2. अंतरिक्ष, आकाश 3. धन 4. प्राण 5. राम की सेना का एक सेनापति 6. महाभारत के अनुसार एक राजर्षि का नाम 7. पुत्र 8. एक असुर का नाम 9. गया नामक तीर्थ 10 गज, हाथी।

गया *पुं.* (तत्.) बिहार या मगध देश का एक विशेष तीर्थ स्थान जिसका उल्लेख महाभारत वाल्मीकि रामायण और पुराणों में मिलता है। स्त्री. गया तीर्थ में होने वाली पिंडोदक आदि क्रियाएँ। *अ.क्रि.* (देश.) 1. जाना, क्रिया या भूत कालिक रूप, प्रस्थापित हुआ 2. गुजरा, बीता, निकृष्ट, फटे हाल वाला, दीन दशा को प्राप्त मुहा. गया गुजरा या गया बीता- बुरी दशा को पहुँचा हुआ।

गयाल *स्त्री.* (देश.) वह जायदाद जिसका कोई उत्तराधिकारी या दावेदार न हो।

गर *पुं.* (तत्.) 1. एक कड़वा पेय 2. एक रोग जिसमें मूर्च्छा आती है 3. विष, जहर 4. निगलना, *प्रत्यय* (फा.) 1. बनाने वाला 2. करने वाला, गला गर्दन।

गांभीर्य *पुं.* (तत्.) 1. गहराई, गंभीरता 2. स्थिरता, अचंचलता 3. शांति का भाव 4. धीरता 5. गहनता, जटिलता

गाफिल *वि.* (अर.) 1. बेसुध, बेखबर 2. बेपरवाह।

गाभिन *वि.* (तद्.) गाय, भैस, आदि पशु जो गर्भिणी हो *पुं.* (अ.) पंग, कदम, डग, लगाम

गरक *वि.* (अर.) 1. डूबा हुआ, निमग्न 2. विलुप्त, नष्ट, तबाह, बरबाद 3. लीन (किसी कार्य आदि में) मग्न*स्त्री.* (अर.) 1. वह ज़मीन जो पानी में डूबी रहे 2. लँगोटी 3. बाढ़ 4. डूबने की क्रिया या भाव 5. गराड़ी 6. वह नीची भूमि जो प्रायः बाढ़ के कारण डूब जाती है मुहा. किसी को ग़रक़ी देना- बहुत अधिक कष्ट या दुख देना।

गरकाब *वि.* (अर.) 1. निमग्न, डूबा हुआ 2. बहुत अधिक लीन पुं. (फा.) डूबने की क्रिया या भाव।

गरगज़ *पुं.* (अर.) 1. किले की चहार दीवारी का बुर्ज़, जिस पर तोप चढी रहती है 2. युद्ध सामग्री रखने के लिए बना हुआ टीला 4. ऊपर की छत 4. फ़ाँसी की टिकठी, वह तख्ता जिस पर फ़ाँसी देने के लिए अपराधी को खड़ा किया जाता है।

गरचे *स्त्री.* (अर.) दे. गरज़, यद्यपि, हालांकि।

ग़रज *स्त्री.* (अर.) 1. आशय, प्रयोजन, मतलब 2. आवश्यकता, जरूरत 3. चाह, इच्छा मुहा. गरज का बावला- अपनी गरज के लिए सब कुछ करने वाला; गरज कि- मतलब यह कि तात्पर्य यह कि *क्रि.वि.* 1. निदान, आखिरकार, अंततोगत्वा, अस्तु 2. भला, अच्छा, खैर 3. गरजने की क्रिया या भाव *स्त्री.* (तत्.) 1. ऊँची, गंभीर आवाज 2. शेर की दहाड़, वीरों की आवाज *स्त्री.* (तत्.) गर्जना, गंभीर शब्द, गरज।

गरजन *पुं.* (तद्.) 1. गंभीर शब्द, गरज, कडक़ 2. गरजने का भाव 3. गरजने की क्रिया।

गरजना *वि.* (तद्.) गरजने वाला। जोर से बोलने वाला *अ.क्रि.* 1. बहुत गंभीर और तुमुल शब्द करना जैसे- बादलों का गरजना, शेर का गरजना, वीरों का गरजना 2. चटकना, तड़कना।

गरजमंद *वि.* (अर.) 1. जिसे आवश्यकता हो, जरूरत वाला 2. इच्छुक, चाहने वाला।

गरजी *वि.* (फा.) 1. गरज वाला, चाहने वाला 2. इच्छा वाला।

गरजुआ *पुं.* (देश.) एक प्रकार की खुंभी।

गरट्ट *पुं.* 1. समूह, झुंड।

गरण *पुं.* (तत्.) 1. निगलना 2. छिडकना।

गरदन *स्त्री.* (फा.) 1. धड़ और सिर को जोड़ने वाला अंग, ग्रीवा, गला मुहा. गरदन उठाना- विरोध करना, सिर उठाना; गरदन उड़ाना- सिर काटना, मार डालना; गरदन ऐंठना- अभिमान में रहना; गरदन काटना- मार डालना, हानि पहुँचाना; गरदन झुकना-आज्ञाकारी या अधीन होना, लज्जित होना, शरमाना; गरदन झुकाना- अधीनस्थ होना, आत्मसर्पण करना; गरदन ढलना- मरने की अवस्था तक पहुँचाना; गरदन न उठाना- सह लेना, लज्जित होना; गरदन नापना- बेइज्जती करना; गरदन पर छुरी फेरना- अन्याय करना, जुल्म करना; गरदन पर जुआ रखना- जानबूझकर मुसीबत मोल लेना; गरदन फँसना-वश में होना; गरदन मरोड़ना-मार डालना; गरदन में हाथ देना- बेइज्जत करना 2 वह लंबी लकड़ी जो जुलाहों की लपेट के दोनों सिरों पर आड़ी खींची जाती है 3. बर्तन आदि का ऊपरी पतला भाग।

गरदन तोड *पुं.* (देश.) कुश्ती का एक दाँव।

गरदना *पुं.* (देश.) मोटी गरदन, गरदन पर लगाया जाने वाला झटका।

गरदनियाँ *स्त्री.* (देश.) गरदन में हाथ डाल कर निकालने की क्रिया।

गरदनी *स्त्री.* (देश.) 1. कुरते आदि का गला, गरेबान 2. गले में पहनने का एक गहना, हँसुली 3. घस्सा, जो पहलवान एक दूसरे की गरदन पर लगाते हैं, रद्दा, कुंदा 4. वह कपड़ा जो घोड़े की गरदन और पीठ पर उढ़ाया जाता है 5. कुश्ती का एक पेंच।

गरदा *पुं.* (फा.) धूल, मिट्टी, गर्द, खाक, हवा के साथ उड़ने वाली धूल मिट्टी।

गरदान *पुं.* (फा.) घूम फिरकर एक ही स्थान पर आने वाला वह कबूतर जो सदा घूम फिरकर अपने अड्डे पर लौट आता है।

गरदानना *स.क्रि.* (फा.) 1. शब्दों का रूप साधना 2. बार-बार कहना 3. गिनना, समझना, मानना।

गरदी *वि.* (देश.) मटमैला।

गरदुआ *पुं.* (देश.) पशुओं को होने वाला एक प्रकार का ज्वर।

गरधरन *पुं.* (तद्.) विष को धारण करने वाले शिव, महादेव।

गरना *अ.क्रि.* (देश.) गारा जाना, निचोड़ा जाना, टपकाना।

गरबना *अ.क्रि.* (देश.) गर्व करना, अभिमान करना, शेखी करना।

गरबा *पुं.* (देश.) 1. गुजराती स्त्रियों का नृत्य, जिसमें वे सिर पर घड़ा रखकर घेरा बनाते हुए नाचती हैं।

गरबीला *वि.* (देश.) घमंडी, अभिमानी, गर्वयुक्त।

गरभाना *अ.क्रि.* (देश.) गर्भ से होना, पौधों में बाल लगना।

गरम *वि.* (फा.) 1. जो प्राणियों के स्वाभाविक तापमान से अधिक हो 2. जिसका तापमान स्वाभाविक रूप से अधिक हो जैसे बुखार में होता है 3. असम तापमान वाला 4. जिस पदार्थ के छूने से शरीर में जलन होती हो प्रयो. कड़ाही गरम है, इसे मत छूना 5. जिस पदार्थ में विद्युत विद्युत की धनात्मक धारा प्रवाहित हो रही हो प्रयो. बिजली की गरम तार का छूना प्राणियों के लिए घातक होता है 6. जो प्रदेश या भू-भाग विषुवत रेखा के पास होता है 7. जो खाद्य पदार्थ पदार्थ शरीर के अंदर पहुंच कर ताप उत्पन्न

करते है जैसे- जायफल, मिर्च, लौंग, आदि मसाले गरम होते है। 8. जिसके स्वभाव में उग्रता, द्वेष, क्रोध आदि बातें प्रबल रहती है मुहा. मुहा. गरम होना- क्रोध में आकर झगड़ने पर उतारू होना 9. जो पशु काम-वासना के वश में होकर गर्भ-धारण के लिए उत्सुक हो जैसे- यह कुतिया गरम हो रही है 10. जिस बात या चर्चा का यथेष्ट प्रचलन हो 11. जिस बातचीत के प्रसंग में उत्तेजना का कटुता आ गई हो 12. जहाँ बाजार भाव में तेजी या चहल-पहल हो मुहा. बाजार गरम होना- बहुत अधिकता, प्रबलता; गरम चोट- ताजा घाव; मिजाज गरम होना- क्रोध आना।

गरमागरम *वि.* (फा.) 1. काफी गरम, तुरंत का पका हुआ, ताजा 2. जिसमें गरमी की उत्तेजना हो।

गरमागरमी *स्त्री.* (फा.) जोश, उत्साह, तत्परता।

गरमाना *अ.क्रि.* (फा.) 1. गरमाहट अनुभव करना, गरम होना, उष्ण होना 2. उमंग भर आना- मस्ताना, मद में भरना 3. आवेश में आना, क्रोध करना, नाराज होना, आना बबूला होना, झल्लाना 4. कुछ दूर दौड़ने से घोड़े का गरमाना *स.क्रि.* गरम करना, तपाना, औटाना।

गरमाहट *स्त्री.* (देश.) गरमी, उष्णता।

गरमी *पुं.* (फा.) 1. उष्णता, ताप, जलन 2. तेजी, उग्रता, प्रचंडता 3. आवेश, क्रोध, गुस्सा 4. उमंग, जोश 5. ग्रीष्म ऋतु, कड़ी धूप के दिन 6. आतशक, उपदंश, दुष्ट मैथुन से उत्पन्न छूत का रोग (सिफलिस) मुहा. गरमी करना- प्रकृति में उष्णता लाना; गरमी निकालना- गर्व दूर करना।

गरराना *अ.क्रि.* (देश.) 1. भीषण ध्वनि करना, गड़गड़ाना, गरजना 2. गुर्राना।

गररी *स्त्री.* (देश.) एक चिड़िया, सिरोही।

गरल *स्त्री.* (तत्.) 1. विष, जहर, गर 2. सर्प विष 3. घास का मुट्ठा, पूला।

गरलधर *पुं.* (तत्.) 1. विष धारण करने वाले महादेव 2. साँप।

गरलारि *पुं.* (तत्.) मरकत, पन्ना।

गरली *वि.* (तत्.) विषैला, विषयुक्त।

गराँडील *वि.* (देश.) 1. लंबा तगड़ा या मोटा ताजा 2. बहुत बड़ा।

गराड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. चरखी, घिरनी 2. रगड़ से पड़ी हुई लकीर।

गराधिका *स्त्री.* (तत्.) 1. लाख का कीड़ा 2. लाख का रंग।

गराना *स.क्रि.* (देश.) 1. गलाना 2. निचोड़ना 3. बहाना।

गरानी *स्त्री.* (फा.) 1. भारीपन 2. महँगी 3. पेट का भारी होना, अजीर्ण।

गरारा *वि.* (देश.) 1. अभिमानी, घमंडी 2. प्रबल, बलवान 3. तेज, प्रचंड *पुं.* 1. पायजामें की ढीली मोहरी 2. ढीली मोहरी का पायजामा 3. खेमा तंबू आदि भरने का बड़ा थैला 4. मुँह में पानी भरकर गर-गर शब्द करके कुल्ली करना।

गरिमा *स्त्री.* (तत्.) 1. गुरुत्व, भारीपन, बोझ 2. महिमा, महत्व, गौरव 3. गर्व, घमंड, अहंकार 4. आत्मश्लाघा, शेखी 5. आठ सिद्धियों में एक सिद्धि, जिसमें साधक इच्छानुसार अपना वजन बढ़ा सकता है।

गरियाना *अ.क्रि.* (देश.) दुर्वचन कहना, गाली देना, अपशब्द कहना।

गरियार *वि.* (देश.) जल्दी न उठने वाला, सुस्त, बोदा, मट्ठर (पशु आदि)।

गरियालू *पुं.* (देश.) एक प्रकार का रंग जो काला-नीला होता है।

गरिष्ठ *वि.* (तत्.) 1. जो पचने में हल्का न हो, जो जो जल्दी न पचे, कब्ज करने वाला 2. अति गुरू, अत्यंत भारी 3. अत्यंत आवश्यक, अत्यंत महत्वपूर्ण 4. गौरव युक्त, गरिमा मंडित *पुं.* (तत्.) 1. एक राजा का नाम 2. एक दानव का नाम 3. एक तीर्थ का नाम।

गरी *स्त्री.* (तत्.) देवताड़ वृक्ष, नारियल का मग्ज, खोपारा, गिरी, बीज के अंदर की गूदी।

गरीब *वि.* (अर.) 1. नम्र, दीन, हीन 2. दरिद्र, निर्धन, अकिंचन, कंगाल 3. विदेशी, परदेशी 4. मुसाफ़िर, सफ़र करने वाला संगी. ईरानी संगीत का एक राग।

गरीब खाना *पुं.* (अर+फा.) 1. दीन या निर्धन का घर 2. विनम्र भाव से अपने घर को 'गरीब खाना' कहना।

गरीब निवाज *पुं.* (अर.+फा.) दीनों पर दया करने वाला, दुखियों का दुख दूर करने वाला, दयालु।

गरीब परवर *वि.* (अर.+फा.) गरीबों को पालने वाला, दीन प्रतिपालक, दीनों का रक्षक।

गरीबाना *वि.* (अर.+फा.) गरीबों की तरह का।

गरीबी *स्त्री.* (अर.) 1. निर्धनता, दरिद्रता, कंगाली, मुहताजी 2. दीनता, अधीनता 3. नम्रता प्रयो. देश के अनेक प्रांतों में गरीबी अधिक है।

गरीयस *वि.* (तत्.) 1. भारी, गुरु 2. महान, प्रबल 3. महत्वपूर्ण, गौरवान्वित।

गरु *वि.* (तत्.) 1. भारी, वजनदार 2. जिसका स्वभाव गंभीर हो, शांत।

गरुअ *वि.* (तद्.) 1. भारी, वजनी 2. गंभीर, उत्तम 3. गौरवयुक्त।

गरुड़ *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु का वाहन जो पक्षियों का राजा माना जाता है, विनता के गर्भ से उत्पन्न कश्यप का पुत्र पर्या. गरुत्मान, सुपर्ण, नागांतक, पन्नगाशन, पन्नगरि, पक्षिराज, विष्णुनाथ, खगेश्वर, अमृताहरण 2. उकाब, लंबी गरदन वाला एक पक्षी जो मछलियाँ पकड़ कर खाता है 3. सफेद रंग का पक्षी जो पानी के किनारे रहता है 4. सेना की एक प्रकार की व्यूह रचना, गरुड़ व्यूह 5. गरुड़ाकार, आगे पीछे नोकदार, बीच में चौड़ा प्रसाद 6. चौदहवाँ कल्प 7. नृत्य में एक प्रकार का स्थानक, जिसमें बाएँ पैर को सिकोड़ कर दाहिने पैर का घुटना जमीन पर टेकते है।

गरुड़ केतु *पुं.* (तत्.) कृष्ण।

गरुड़ ध्वज *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. वह खंभा जिस पर गरुड़ की मूर्ति बनी होती है 3. गुप्त राजाओं का राजकीय चिह्न।

गरुड़पाश *पुं.* (तत्.) 1. पुराने समय में आयुध रूप में व्यवहृत एक तरह का फंदा।

गरुड़पुराण *पुं.* (तत्.) अठारह पुराणों में से एक जिसमें नरक, यमपुर तथा प्रेतकर्म विधान का वर्णन होता है और किसी वृद्ध व्यक्ति की मृत्यु के अनंतर इसकी कथा होती है।

गरुड़-व्यूह *पुं.* (तत्.) वह व्यूह या सैन्य-रचना जिसमें सेना का मध्य भाग चौड़ा तथा अगला पिछला भाग पतला होता है।

गरुडांक *पुं.* (तत्.) विष्णु।

गरुड़ाग्रज *पुं.* (तत्.) 1. गरुड़ का ज्येष्ठ भ्राता 2. सूर्य का सारथि, अरुण।

गरुड़ाश्मन् *पुं.* (तत्.) पन्ना, मरकत मणि।

गरुत *पुं.* (तत्.) 1. पक्ष, पंख, पर 2. निगलना, भक्षण।

गरुवा *वि.* (तद्.) 1. भारी बोझ वाला 2. गंभीर, श्रेष्ठ, धीर।

गरूर *पुं.* (अर.) घमंड, अभिमान, गर्व।

गरूरा *वि.* (अर.) 1. अहंकारी, अभिमानी, घमंडी 2. मत्त, मस्त, मतवाला।

गरूरी *वि.* (अर.) घमंडी, अभिमानी।

गरेबान *पुं.* (फा.) 1. अँगरखे, कुरते आदि का वह भाग जो गले के नीचे और छाती के ऊपर रहता है 2. कोट आदि में वह पट्टी जो गले पर रहती है, कालर मुहा. गरेबान फाड़ना- पागल होना; गरेबान में मुँह छिपाना- लज्जित होना, अपराध स्वीकार करना।

गरेरना *स.क्रि.* (देश.) 1. घेरना 2. छेकना, रोकना।

गरेरी *स्त्री.* (देश.) 1. गराडी, घिरनी 2. गँडेरी।

गरोह *पुं.* (फा.) झुंड, जत्था, समूह, जमात, दल।

गर्क *वि.* (अ.) डूबा हुआ।

गर्ग *पुं.* (तत्.) 1. एक गोत्र प्रवर्तक एवं मंत्र का वैदिक ऋषि 2. एक प्राचीन ज्योतिषी 3. बैल, साँड 4. केंचुआ 5. बिच्छू 6. एक पर्वत का नाम

7. ब्रह्मा के एक मानस पुत्र का नाम, जिसकी उत्पत्ति गया में यज्ञ के लिए हुई थी, 8. संगीत में एक ताल।

गर्गर *पुं.* (तत्.) 1. भँवर 2. वैदिक काल का एक बाजा 3. दही मथने का मटका 4. गागर 5. एक प्रकार की मछली।

गर्गरी *स्त्री.* (तत्.) 1. वह बर्तन जिसमें दही मथी जाती है, दहेड़ी 2. गगरी, कलसी, मथनी।

गर्ज *पुं.* (तत्.) 1. हाथी की चिंघाड 2. मेघ का गरजना 3. गर्जन 4. चिघाड़ता हुआ हाथी।

गर्जक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की मछली।

गर्जन *पुं.* (तत्.) 1. गरजने की क्रिया 2. भीषण ध्वनि, गरजना, गंभीर वाद।

गर्जन तर्जन *पुं.* (तत्.) 1. तड़प, डांटना, धमकाना 2. शोर, आवाज, कोलाहल 3. क्रोध, आवेश 4. संग्राम, रन, युद्ध 5. तिरस्कार, झिडकी, भर्त्सना।

गर्जना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. बहुत गंभीर और तुमुल शब्द करना 2. चटकना, तडक़ना।

गर्जर *पुं.* (तत्.) गाजर।

गर्जा *स्त्री.* (तत्.) बादलों की गर्जना।

गर्त *पुं.* (तत्.) 1. गड्ढा 2. दरार 3. घर 4. रथ 5. जलाशय 6. एक नरक का नाम 7. नहर 8. समाधि का कब्र 9. एक प्रकार का रोग 10. सिंह की माँद या गुफा 11. त्रिगर्त देश का एक भाग।

गर्तकी *स्त्री.* (तत्.) तंतुशाला, जुलाहे का कपड़ा बुनने का एक स्थान।

गर्ता *स्त्री.* (तत्.) 1. बिल, छेद 2. गुफा, खोह।

गर्द *स्त्री.* (फा.) 1. धूल, राख, खाक मुहा. गर्द उड़ाना- हवा के साथ धूल फैलना; गर्द उड़ाना- नष्ट या चौपट करना, धूल में मिलाना, बरबाद करना 2. नष्ट होना, चौपट होना।

गर्दखोर *पुं.* (फा.) दरवाजे के सामने पैर पोंछने के लिए बिछाई गई नारियल की चटाई।

गर्दन *स्त्री.* (फा.) दे. गरदन।

गर्दभ *पुं.* (तत्.) 1. गधा, गदहा 2. सफेद कुमुद, सफेद कुई 3. बिडंग 4. गदहिला नामक कीड़ा।

गर्दभांड *स्त्री.* (तत्.) पकड़, पिपल, पाखर।

गर्दभिका *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार का रोग जिसमें लाल फुंसियाँ निकलती है।

गर्दभी *स्त्री.* (तत्.) 1. सुश्रुत के अनुसार एक कीड़ा 2. गर्दभिका नामक रोग 3. गदही।

गर्दाना *वि.* (फा.) धूल से भरा हुआ।

गर्दाबाद *वि.* (फा.) 1. गर्द से भरा हुआ 2. उजाड़, ध्वस्त 3. बेसुध, बेहोश।

गर्दालु *पुं.* (फा.) आलू बुखारा।

गर्दिश *स्त्री.* (फा.) 1. घुमाव, चक्कर 2. विपत्ति, आपत्ति, दिनों का फेर 3. परिवर्तन, परिभ्रमण 4. गति, हरकत।

गर्दू *पुं.* (फा.) 1. गाड़ी, यान, रथ 2. आकाश।

गर्ध *पुं.* (तत्.) 1. स्पृहा, लिप्सा, लोभ, औत्सुक्य 2. गर्दभांड नामक वृक्ष।

गर्बीला *वि.* (तद्.) अभिमानी, गर्वयुक्त, घमंडी।

गर्भ *पुं.* (तत्.) 1. उदर के अंदर का बच्चा 2. शुक्रडिंब के संयोग से उत्पन्न मांस-पिड 3. सोख 4. गर्भाशय 5. गर्भाधान काल 6. किसी वस्तु का भीतरी मध्यवर्ती भाग 7. बिल 8. नदी का पेटा 9. सूर्य किरणों द्वारा शोषित और आकाश में संचित वाष्प राशि 10. घर-मंदिर का भीतरी, केन्द्रवर्ती भाग 11. अन्न 12. अग्नि 13. नाटक की पाँच प्रकार की संधियों में से एक 14. कटहल का कंटीला, छिलका 15. संयोग 16. पद्म कोश 17. कमल कमल का कोश मुहा. गर्भ गिरना- गर्भपात होना; गर्भ गिराना-गर्भपात करना।

गर्भक *पुं.* (तत्.) 1. पुत्र जीव वृक्ष 2. बालों के बीच धारण की हुई माला 3. दो रातों और उनके बीच के दिन का समय।

गर्भकाल *पुं.* (तत्.) 1. गर्भाधान के उपयुक्त काल 2. ऋतु काल।

गर्भ क्षय *पुं.* (तत्.) गर्भपात, गर्भ, च्युति।

गर्भगृह *पुं.* (तत्.) 1. मकान के बीच की कोठरी, मध्य का घर 2. घर का मध्य भाग, आँगन 3. मंदिर के बीच की वह प्रधान कोठरी जिसमें मुख्य प्रतिमाएँ रखी जाती है 4. प्रसूति का गृह।

गर्भ दिवस *पुं.* (तत्.) 1. गर्भकाल 2. कार्तिकी पूर्णिमा से लेकर लगभग 195 दिनों का समय जबकि मेघों के गर्भ में आने अर्थात् आकाश में बनने का समय होता है।

गर्भधारण *पुं.* (तत्.) 1. गर्भवती होने की क्रिया या भाव, हमल रहना।

गर्भनाल *स्त्री.* (तत्.) फूलों के अंदर की वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भ केसर होता है।

गर्भपात *पुं.* (तत्.) 1. गर्भ का पाँचवे या छठे महीने गिर जाना, गर्भ गिरना।

गर्भवती *वि.* (तत्.) गर्भवाली, गर्भिणी, हामिला।

गर्भव्यूह *पुं.* (तत्.) युद्ध में सेना की एक प्रकार की रचना।

गर्भ संधि *स्त्री.* (तत्.) नाट्य शास्त्र के अनुसार पाँच संधियों में से एक।

गर्भांक *पुं.* (तत्.) नाटक के अंक का एक अंश जिसमें केवल एक दृश्य होता है।

गर्भाधान *पुं.* (तत्.) 1. गर्भ की स्थिति, गर्भ धारण 2. गुह्य सूत्र के अनुसार मनुष्य के सोलह संस्कारों में से पहला संस्कार।

गर्भारित *पुं.* (तत्.) छोटी इलाचयी।

गर्भाशय *पुं.* (तत्.) बच्चादानी, स्त्रियों के पेट में वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है।

गर्भाष्टम *पुं.* (तत्.) गर्भ में आठवाँ महीना।

गर्भिणी *वि.* (तत्.) जिसे गर्भ हो, गर्भवती *स्त्री.* (तत्.) 1. प्राचीन काल की एक प्रकार की नाव 2. खिरनी, क्षीरिका।

गर्भित *वि.* (तत्.) 1. गर्भयुक्त 2. भरा हुआ, पूर्ण, पूरित जैसे- वह अर्थगर्भित शब्दों का प्रयोग करता है *पुं.* काव्य का एक दोष जिसमें कोई अतिरिक्त वाक्य किसी वाक्य के अंतर्गत आ जाता है।

गर्भोपनिषद् *पुं.* (तत्.) अथर्ववेद संबंधी एक उपनिषद जिसमें गर्भ की उत्पत्ति तथा उसके बढ़ने का वर्णन है।

गर्रा *वि.* (देश.) लाख जैसा रंग पुं 1. लाखी रंग 2. लाखी रंग का घोड़ा 3. लाखी रंग का कबूतर (अर.) 1. अभिमान, घमंड 2. सतलुज नदी का एक नाम, 3. अभिमान के प्रदर्शन के लिए किया गया उग्र कार्य।

गर्राना *अ.क्रि.* (देश.) घमंडी बन जाना, हठीला या उद्धत बनना।

गर्व *पुं.* (तत्.) 1. अहंकार, घमंड 2. एक प्रकार का संचारी भाव 3. अपने को सबसे बड़ा और दूसरों को छोटा समझने का भाव 4. गरूर।

गर्वर *वि.* (तत्.) जिसे गर्व हो।

गर्वरी *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा।

गर्वाट *पुं.* (तत्.) द्वारपाल, चौकीदार।

गर्वित *वि.* (तत्.) गर्वयुक्त, घमंडी, अभिमान भरा।

गर्विता *स्त्री.* (तत्.) साहि. अपने रूप गुण पर गर्व करने वाली नायिका।

गर्वी *वि.* (तत्.) घमंडी, अहंकारी।

गर्वीला *वि.* (तद्.) घमंड से भरा हुआ, अभिमान युक्त, घमंडी।

गर्वोक्ति *स्त्री.* (तत्.) गर्वपूर्ण कथन या बात।

गर्हण *पुं.* (तत्.) निंदा, शिकायत, दोष लगाना।

गर्हणीय *वि.* (तत्.) निंदा करने योग्य, बुरा, निंदनीय।

गर्हा *स्त्री.* (तत्.) निंदा।

गर्हित *वि.* (तत्.) 1. जिसकी निंदा की जाए 2. निंहित 2. दूषित, बुरा।

गलंतिका *स्त्री.* (तत्.) छोटा कलश, छेद युक्त घड़ा घड़ा जिससे शिवलिंग पर जल का अभिषेक होता रहता है।

गलंश *पुं.* (तद्.) वह संपत्ति जिसका कोई मालिक या वारिस न हो।

गल *पुं.* (तत्.) 1. गला, कंठ, गरदन 2. गडाकू नामक मछली 3. एक प्राचीन बाजे का नाम 4. रस्सी 5. साल का गोंद।

गल कंबल *पुं.* (तत्.) गाय-बैल के गले के नीचे लटकने वाला भाग, झालर, लहर।

गलक *पुं.* (तत्.) 1. गला 2. गड़ाकू मछली 3. मोती।

गलका *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार का फोड़ा जो हाथ या पाँव की उँगलियों के अगले भाग में होता है और बहुत कष्ट देता है 2. एक तरह का चाबुक, गल कोड़ा 3. कच्चे फल का शकर तथा मसालों से बनाया गया अचार।

गलगंड *पुं.* (तत्.) 1. गले का एक रोग, घेंघा 2. हरगीला नाम की चिड़िया।

गलगला *वि.* (देश.) 1. भीगा हुआ, आर्द्र, तर।

गल गाजना *अ.क्रि.* (देश.) खुशी से गरजना, गाल बजाना, बढ़-बढ़ कर बातें करना।

गलगौज *पुं.* (तत्.) बकबक, व्यर्थ विवाह, गप्पाष्टक।

गलग्रह *पुं.* (तत्.) 1. गला पकड़ना 2. कृष्ण पक्ष की कुछ तिथियाँ 3. मछली का काँटा 4. वह आपत्ति जो कठिनता से टले 5. गला घोटना 6. अध्ययन आरंभ होने पर उसमें बाधा पड़ना।

गलछट *स्त्री.* (देश.) मछली के गलफड़े के दोनों ओर की हड्डियों का बना भाग।

गलजोत *स्त्री.* (देश.) 1. वह रस्सी जिससे दो बैल एक साथ बाँधे जोते जाए 2. गले का हार।

गलतंस *पुं.* (तद्.) वह संपत्ति जिसका मालिक या वारिस न हो, नि:संतान मृत व्यक्ति।

गलत *वि.* (अर.) 1. अशुद्ध, भ्रममूलक 2. असत्य, मिथ्या, झूठ।

गलतनामा *पुं.* (अर.+फा.) अशुद्धियों का विवरण या परिशिष्ट, शुद्धि पत्र।

गलतफहमी *स्त्री.* (अर.+फा.) किसी ठीक बात को गलत समझना, भूल से कुछ का कुछ समझना, भ्रम।

गलती *स्त्री.* (अर.) 1. भूल, चूक, धोखा 2. भूल मुहा. गलती में पड़ना-धोखाखाना, भूल करना।

गलदश्रु *स्त्री.* (तत्.) रोते जाना, छोटी-छोटी बात पर आँसू बहाना।

गलन *पुं.* (तत्.) 1. बूँद-बूँद गिरना, चूना, टपकना, रिसना, क्षरण 2. झड़ना 3. गलना 4. पिघलना 5. सरकना।

गलना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. ठोस वस्तु का तरल होना, पिघलना, कड़ी चीज का नरम होना, सीझना, घुलना, जीर्ण होना, सड़ना, दुबला होना, ठिठुरना, नष्ट होना 2. किसी पदार्थ के घनत्व का कम होना या नष्ट होना 3. बहुत जीर्ण होना 4. बहुत अधिक सर्दी के कारण हाथ-पैर का ठिठुरना 5. वृथा या निष्फल होना, बेकाम होना, नष्ट होना मुहा. रुपया गलना- व्यर्थ व्यय होना।

गलपोटू *वि.* (देश.) 1. गला घोटने वाला 2. अप्रिय।

गलफड़ा *पुं.* (देश.) 1. जल जंतुओं का वह स्वभाव जिससे वे पानी में साँस लेते हैं 2. गाल का चमड़ा।

गलफाँसी *स्त्री.* (देश.) 1. गले की फाँसी का फंदा 2. कष्टदायक वस्तु या कार्य 3. मलखंभ की एक कसरत।

गलबाँही *स्त्री.* (तत्.) 1. गले में बाँह डालना, कंठालिंगन, गले से आलिंगन करना।

गलमुच्छा *पुं.* (देश.) दोनों गालों पर मूंछ की सीध में बढ़ाए हुए बाल, गल गुच्छा।

गलल *पुं.* (तद्.) गाल, कपोल।

गलवाना *स.क्रि.* (देश.) गलाने का काम कराना, गलाने में लगाना।

गलशोथ *पुं.* (तत्.) जुकाम आदि के कारण गले के भीतर होने वाली पीड़ा या सूजन।

गल-स्तन *पुं.* (तत्.) 1. गलथना, स्तन के आकार की पसली की थैलियाँ जो एक प्रकार की बकरियों के गले के दोनों ओर लटकती रहती है।

गलहार *पुं.* (तत्.) गले का हार, कंठहार।

गलांकुर *पुं.* (तत्.) गले की घंटी का सूज जाना।

गला *पुं.* (तद्.) सिर को धड़ से जोड़ने वाला अंग 1. कंठ, हलक 2. सुर, आवाज़ 3. अंग आदि का गरेबान 4. घड़े, लोटे आदि का मुँह के नीचे का तंग भाग मुहा. गला आना- गले के अंदर छाला पड़ना, सूजन होना; गला कटना- गरदन कटना; गला कटाना- अपनी इच्छा से अपनी हानि सहना, जान देना; गला काटना- गरदन काटना, कष्ट पहुंचाना गला घुटना- दम रुकना। गला घोंटना- टेटुआ दबाना; गला छुड़ाना- पीछा छुड़ाना, पल्ला छुड़ाना; गला जोड़ना- मैत्री करना, साथ देना; गला दबाना- मार डालना; गला फँसना- बंधन में पड़ना/लाचार होना; गला फँसाना- बंधन में डालना, आपत्ति में फँसाना; गला फाड़ना- जोर से आवाज लगाना; गला फूलना-उकता जाना, दम फूलना; गला बंधना- विवश होना; गला रेतना-अत्यंत कष्ट पहुँचाना, दुख देना; गले का बोझ- व्यर्थ का भार; गले का हार- अत्यंत प्रिय, चिर सहचर।

गलागल *स्त्री.* (देश.) 1. एक प्रकार का बहुत बड़ा नींबू 2. अलसी और चूने को मिला कर बनाया हुआ एक मसाला 3. चर्बी की बत्ती का एक टुकड़ा।

गला घोटू *वि.* (देश.) 1. गला घोंटने वाला।

गलाना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी वस्तु को नरम या गीला या द्रव करना 2. नरम या मुलायम करना 3. किसी वस्तु को धीरे-धीरे लुप्त करना 4. रुपया खर्च करना।

गलित *वि.* (तत्.) 1. गला हुआ 2. पिघला हुआ 3. पुराना पड़ा हुआ, जीर्ण-शीर्ण, खंडित 4. चुआ हुआ 5. नष्ट-भ्रष्ट 6. परिपुष्ट 7. मिला हुआ, एक तान।

गलियारा *पुं.* (देश.) पतली या तंग छोटी गली।

गली *स्त्री.* (तद्.) सडक से कम चौड़ा रास्ता, जिसके दोनों ओर मकान बने हो मुहा. गली में कुत्ते भौंकना- रौनक न रह जाना, गली-गली भूँसते फिरना- व्यर्थ इधर-उधर घूमना; गली कमाना- मेहतर का काम करना, गली में झाड़ू देना।

गलीचा *पुं.* (फा.) सूत या ऊन के धागे से बना हुआ बिछौना, कालीन।

गलीज *वि.* (अर.) 1. कूड़ाकरकट, गंदी वस्तु, मैला, गंदगी 2. पारखाना, मल, विष्ठा।

गलेगंड *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का पक्षी।

गलेफ *पुं.* (अ.) गिलाफ, गिलेफ।

गलोड़ित *वि.* (देश.) 1. नशे में चूर 2. बीमार, अस्वस्थ 3. मूर्ख।

गलौआ *पुं.* (देश.) 1. बंदरों के गाल के अंदर की थैली, जिसे गलाया गया हो *वि.* जिसे गलना हो, जो गलाया गया हो।

गलौघ *पुं.* (तत्.) गले का एक रोग, गले का अर्बुद।

गल्प *स्त्री.* (तत्.) 1. मिथ्या प्रलाप, गप्प, डींग 2. शेखी 3. मृदंग के बारह प्रबंधों में से एक 4. छोटी-छोटी कहानियाँ।

गल्भ *पुं.* (तत्.) 1. धृष्ट, ढीठ 2. अभिमान, अहंकारी 3. वाचाल।

गल्लक *पुं.* (तत्.) 1. मद्य पीने का पात्र 2. चषक। चषक।

गल्ला *पुं.* (अर.) 1. शोर, हल्ला 2. झुंड, दल 3. उतना अन्न जितना एक बार चक्की में पीसने के लिए डाला जाए 4. अन्न, अनाज, पैदावार, उपज।

गल्लाई *पुं.* (अर.) उपज के रूप में लिया जाने वाला लगान, बटाई पर जोता जाने वाला खेत।

गवय *पुं.* (तत्.) 1. नीलगाय 2. एक बंदर जो राम की सेना में था 3. एक छंद जिसके प्रथम चरण में 19 मात्राएँ होती हैं और 11 मात्राओं पर विराम होता है, दूसरे चरण में दोहा होता है।

गवर्नर *पुं.* (अं.) 1. शासक, हाकिम 2. किसी प्रांत का राजा या राज्य की ओर से नियुक्त शासक 3. राज्यपाल। governer

गवर्नमेंट *स्त्री.* (अं.) 1. शासन, हुकूमत 2. शासक-मंडल, सरकार 3. शासन पद्धति। government

गवर्नर जनरल *पुं.* (अ.) किसी देश का सबसे बड़ा शासक, प्रधान शासक, बडे लाट। governer general

गवल *पुं.* (तत्.) 1. जंगली भैसा, जंगली भैंसे का सींग।

गवाक्ष *पुं.* (तत्.) छोटी खिडकी, झरोखा।

गवाक्षी *स्त्री.* (तत्.) 1. इंद्रायन 2. एक प्रकार की ककड़ी 3. सिहोर नामक पेड़, 4. अपराजिता लता।

गवादन *पुं.* (तत्.) 1. गोचर भूमि, चरागाह 2. घास।

गवाधिका *स्त्री.* (तत्.) लाक्षा, लाख।

गवाना *स.क्रि.* (देश.) खोना।

गवामयन *पुं.* (तत्.) दस या बारह महीने में पूरा होने वाला एक वैदिक यज्ञ।

गवारा *वि.* (फा.) 1. अनुकूल, पसंद, रुचिकर 2. सह्य, अंगीकार।

गवाशन *पुं.* (तत्.) जाति से बहिष्कृत, चमार, चांडाल *वि.* (तत्.) गोभक्षी।

गवाह *पुं.* (फा.) 1. जिसने किसी घटना को अपनी आँखों से देखा हो या उसे जानता हो 2. साक्षी, अदालत में घटना को बताने वाला मुहा. गवाह बनाना- साक्षी बनाना; चश्मदीद गवाह- वह गवाह जिसने कोई घटना आँखों से देखी है।

गवाही *स्त्री.* (फा.) गवाह की हैसियत से दिया जाने जाने वाला बयान, साक्ष्य।

गविष्ठ *पुं.* (तत्.) सूर्य, रवि।

गविष्ठि *स्त्री.* (तत्.) 1. इच्छा, आकांक्षा 2. युद्ध कराने की इच्छा 3. उत्सुकता *वि.* गायों की इच्छा रखने वाला, इच्छुक

गवीश *पुं.* (तत्.) 1. गायों का मालिक 2. गोस्वामी 3. विष्णु 4. सांड।

गवेड़ *पुं.* (तद्.) 1. मेघ, बादल 2. धान्य विशेष।

गवेधुक *पुं.* (तत्.) 1. रूद्रदेवता को दी जाने वाली आहुति 2. एक प्रकार का सर्प 3. गेरु।

गवेषण *पुं.* (तत्.) 1. हरी हुई या चुराई हुई गाय को ढूँढना, खोजना, तलाश *स्त्री.* 2. खोज, अन्वेषण, तलाश, छानबीन 3. किसी विषय का विशेष परिश्रम और सावधानी के साथ अध्ययन करना, छानबीन।

गवेषित *वि.* (तत्.) जिसके विषय में गवेषणा हुई हो।

गवैया *वि.* (देश.) गाने वाला, गायक।

गवैहाँ *वि.* (तत्.) गाँव का रहने वाला, ग्रामीण, देहाती।

गव्य *वि.* (तत्.) 1. गाय से उत्पन्न, प्राप्त (दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र आदि) 2. गोवंश के उपयुक्त *पुं.* 1. गाय का झुंड, गो समूह 2. पंच गव्य 3. गोदुग्ध 4. गोचर भूमि, चरागाह 5. प्रत्यंचा 6. गोरोचन।

गव्या *स्त्री.* (तत्.) 1. गायों का झुंड 2. दो कोस की एक माप, गव्यूति।

गश *वि.* (फा.) 1. बेहोशी, मूर्च्छा, असंज्ञा मुहा. गश खाना- मूर्च्छित होना, बेहोश होना।

गशी *स्त्री.* (अर.) बेहोशी, मूर्च्छा।

गश्त *पुं.* (फा.) 1. टहलना, घूमना-फिरना, भ्रमण, दौरा, चक्कर 2. पुलिस कर्मचारी का पहरे के लिए रात में घूमना 3. वेश्याओं का बरात के आगे नाचते हुए चलना। मुहा. गश्त लगाना-चारों ओर फिरना, चक्कर लगाना।

गश्ती *वि.* (फा.) घूमने वाला, फिरने वाला, चलता-फिरता *स्त्री.* व्यभिचारिणी, कुलटा।

गसना *स.क्रि.* (तद्.) 1. ग्रसना 2. पकड़ना, जकड़ना, कसना 3. बुनावट।

गसीला *वि.* (देश.) 1. गढ़ा हुआ, जकड़ा हुआ, गुँथा हुआ 2. बुना हुआ, जिसकी बुनावट घनी हो।

गस्सा *पुं.* (तद्.) ग्रास, कौर, निवाला मुहा. गस्सा मारना- कौर मुंह में डालना।

गहकना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. ललकना, लालसा युक्त होना, चाह से भरना 3. उमंग से भरना।

गहगह *वि.* (तद्.) प्रफुल्लित, उमंग से भरा, प्रसन्नता पूर्ण, धूमधाम वाला।

गहगहा *क्रि.वि.* (तद्.) दे. गहगह।

गहगहाना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. खुशी से भर उठना, बहुत आनंदित होना, आनंद और उमंग से फूलना 2. फसल आदि का बहुत अच्छी तरह तैयार होना, खेती लहलहाना प्रयो. किसान अपनी फसल गहगहते देखकर खुश होता है।

गहडोरना *स.क्रि.* (देश.) मथकर गंदला करना।

गहन *वि.* (तत्.) 1. गंभीर, गहरा, अथाह 2. दुर्गम, घना, दुर्भेद्य 3. कठिन, दुरुह 4. निबिड *वि.* 1. गहराई, थाह 2. दुर्गम स्थान 3. कुंज, निकुंज वन या कानन में गुप्त स्थान 4. दुख, कष्ट 5. जल, सलिल 6. गुफा, कंदरा 7. छिपने की जगह 8. एक आभूषण 9. ईश्वर, परमात्मा 10. बंधक, रेहन *स्त्री.* (देश.) 1. पकड़, पकड़ने का भाव 2. हठ, जिद 3. अड़।

गहना *पुं.* (तद्.) 1. आभूषण, जेवर *स.क्रि.* (देश.) पकड़ना, धरना, थामना।

गहनी *स्त्री. पुं.* (देश.) 1. अनाज को डंडे से पीट कर दाना झाड़ने वाली क्रिया 2. एक मात्रिक छंद।

गहबरना *अ.क्रि.* (देश.) 1. घबराना, व्याकुल होना 2. करुणा के कारण जी भरना।

गहमागहमी *स्त्री.* (देश.) 1. चहल-पहल, गर्म बाजारी, रौनक, धूम-धाम 2. भीड़-भाड।

गहरना *अ.क्रि.* (देश.) 1. देर लगाना, बिलंब करना 2. झगड़ना, उलझना 3. कुपित होना, कुढ़ना।

गहरबार *पुं.* (तत्.) एक क्षत्रिय वंश।

गहवरना *अ.क्रि.* (देश.) 1.घबराना, व्याकुल होना 2. करुणा के कारण जी भरना।

गहरा *वि.* (तद्.) 1. जिसकी थाह बहुत नीचे हो, गंभीर, निम्न, अतलस्पर्श 2. गूढ, जो जल्दी समझ में न आ सके 3. घोर, प्रचंड, भारी मुहा. गहरा असामी- बड़ा आदमी, मालदार आदमी; गहरा हाथ- शस्त्र का पूरा आघात; गहरा हाथ मारना- भारी माल उड़ाना, खूब धन चुराना प्रयो. इस बार तो तुमने गहरा हाथ मारा है।

गहराई *स्त्री.* (देश.) गहरापन, गहरा होना, गहरेपन की माप (देश.) गह्न पकड।

गहराना *अ.क्रि.* (देश.) गहरा होना, नाराज होना, रूठना।

गहलौत *पुं.* (तद्.) राजपूतों का एक वंश।

गहवारा *पुं.* (फा.) रस्सी में लटकाया हुआ खटोला जिस पर बच्चों को सुलाकर झुलाते हैं, पालना, झूला, हिंडोला।

गहित *वि.* (तत्.) 1. गहना किया हुआ 2. प्रविष्ट, पैठा हुआ

गहिना *वि.* (तत्.) 1. पैठने वाला, गाहन करने वाला 3. मथने वाला 4. विनाशक।

गहिला *वि.* (देश.) पागल, बावला, उन्मत्त।

गहीला *वि.* (देश.) गर्वयुक्त, घमंडी, गर्वीला।

गहुआ *पुं.* (देश.) एक प्रकार की संडसी जिसका मुँह बहुत छोटा होता है।

गहेला *वि.* (देश.) 1. हठी, घमंडी, अहंकारी, मानी 2. पागल, खब्ती 3. गँवार, मूर्ख।

गहैया *वि.* (देश.) 1. पकड़ने वाला 2. स्वीकार करने वाला।

गह्वर *पुं.* (तत्.) 1. गूढस्थान 2. गुफा, कंदरा 3. विषम स्थान 4. बिल, जमीन में छोटा सुराख 5. निकुंज, लता ग्रह 6. झाड़ी 7. जंगल।

गह्वर *वि.* (तत्.) 1. दुर्गम, विषम 2. छिपा हुआ, गुप्त 3. घना, गहरा, निबिड़।

गह्वरी *स्त्री.* (तत्.) गुफा, खोह, कंदरा।

गंग *वि.* (तत्.) गंगा का, गंगासंबंधी *पुं.* (तत्.) 1. भीष्म 2. कार्तिकेय 3. सोना 4. धतूरा 5. वर्षा का पानी 6. गंगा नदी का किनारा 7. हेलसा मछली 8. लंबा और बड़ा तालाब, सागर।

गांगट *पुं.* (तत्.) 1. केकड़ा, एक तरह की मछली।

गांगटक *पुं.* (तत्.) दे. गांगट।

गांगायनि *पुं.* (तत्.) 1. भीष्म 2. कार्तिकेय 3. एक प्रवरकार ऋषि।

गांगेय *पुं.* (तत्.) 1. भीष्म 2. कार्तिकेय 3. सोना 4. धतूरा 5. दक्षिण का एक राजवंश।

गांधर्व *पुं.* (तत्.) 1. गंधर्व विद्या, गंधर्व वेद 2. गान विद्या, संगीत शास्त्र 3. वह मंत्र जिसका देवता गंधर्व हो 4. आठ प्रकार के विवाहों में से एक 5. घोड़ा 6. गंधर्व 7. भारत का एक उपद्वीप।

गांधर्व *वि.* (तत्.) 1. गंधर्व संबंधी 2. गंधर्व जाति का।

गांधार *पुं.* (तत्.) 1. सिंधु तट के पश्चिम का देश 2. संगीत में सात स्वरों में तीसरा स्वर 3. सिंदूर।

गांधारी *स्त्री.* (तत्.) 1. धृतराष्ट्र की पत्नी, दुर्योधन दुर्योधन की माता 2. मेघ राग की पाँचवी रागिनी 3. तंत्र के अनुसार एक नाड़ी 3. जवासा, गांजा।

गाँज *पुं.* (फा.) 1. राशि, ढेर, अंबार 2. डंठल, खर।

गाँजा *पुं.* (तद्.) भाँग की एक जाति का एक पौधा।

गाँजिकाय *पुं.* (तत्.) बत्तख।

गाँठ *स्त्री.* (तद्.) 1. रस्सी, धागे आदि का फंदा कसने की पड़ी गुत्थी 2. गिरह, ग्रंथी 3. गठरी, बोरा, गट्ठा 4. अंग का जोड़, बंद 5. ईख, बाँस आदि में थोड़े अंतर पर उभरा हुआ कड़ा स्थान, जिसमें गड्ढा या चिह्न पड़ा रहता है प्रयो. पर्व, जोड़ 6. गांठ के आकार की जड़, गुत्थी 7. घास का वह बोझ जिसे एक मनुष्य उठा सके, गट्ठा मुहा. गाँठ खुलना- उलझ मिटना; गाँठ खोलना- उलझन मिटाना, इच्छा प्रकट करना; गाँठ कटना- जेब कटना; मन में गाँठ रखना- जी में बुरा मानना, बैर रखना; गाँठ का पूरा- पैसे वाला, मालदार; गाँठ जोड़ना- विवाह के समय स्त्री पुरुष के कपड़ों के पल्ले को एक में बाँधना, ग्रंथि बंधन करना; गांठ में बाँधना- स्मरण रखना, सदा ध्यान में रखना; गाँठ से-अपने पास से।

गाँठकट *पुं.* (देश.) 1. गिरहकट 2. अधिक मूल्य पर सौदा करने वाला ठग।

गाँठ कतरा *पुं.* (तद्.) गाँठ काटने वाला व्यक्ति, गिरहकर।

गाँठना *स.क्रि.* (तद्.) 1. गाँठ लगाना, बाँधकर मिलाना 2. फटी हुई चीजों को टाँकना, मरम्मत करना, जूता गाँठना, जूते की मरम्मत करना 3. मिलाना 4. तरतीब देना, क्रम बद्ध करना 5. मनचाही बात करने को तैयार कर लेना 6. निश्चय करना 7. दबाना, दबोचना मुहा. मतलब गाँठना- काम निकालना।

गाँठी *स्त्री.* (तद्.) 1. आभूषण, जिसे स्त्रियाँ हाथों की कुहनी में पहनती है 2. भूसे या डंठल का छोटा टुकड़ा।

गांडर *स्त्री.* (तद्.) 1. एक घास जिसकी जड़ को खस कहते है 2. एक प्रकार की दूब।

गांडीव *पुं.* (तत्.) 1. अर्जुन के धनुष का नाम।

गाँड *स्त्री.* (देश.) गुदा, तला, पेंदा, वह इंद्रिय जिससे मल बाहर आता है मुहा. गाँड चाटना- चापलूसी करना; गाँड जलना- बुरा लगना; गाँड में लंगोटी न होना- अत्यंत दरिद्र होना।

गाँडा *पुं.* (तद्.) 1. ईख का बोने या पेरने के लिए काटा हुआ टुकड़ा 2. गंडेरी 3. मेंडरी।

गाँडाली *स्त्री.* (तत्.) एक तरह की घास।

गाँडू *वि.* (देश.) 1. जिसे गुदा भंजन करने की लत हो 2. निकम्मा 3. डरपोक।

गाँथना *स.क्रि.* (तद्.) 1. गूँथना, गूंधना 2. गाँठना, जोड़ना।

गाँधी *पुं.* (तत्.) 1. हरे रंग का छोटा कीड़ा 2. एक घास 3. हींग 4. किराने का व्यापारी 5. गुजराती वैश्यों की एक उपजाति 5. बीसवीं सदी का महान नेता (मोहनदास कर्मचंद गांधी)।

गाँव *पुं.* (तद्.) ग्राम, छोटी बस्ती, खेड़ा।

गाँस *स्त्री.* (देश.) 1. रोक-टोक, बाधा, प्रतिरोध, बंधन 2. बैर, द्वेष, ईर्ष्या, मनोमालिन्य मुहा. गांस निकालना- बैर निकालना 3. भेद की बात, रहस्य 4. गाँठ, फंदा 5. गठन, बनावट, जमावट 6. तीर या बरछी का फल, हथियार की नोक 7. वश, अधिकार, शासन मुहा. गांस में रखना- अधिकार में रखना 8. देखरेख, निगरानी।

गाँसना *स.क्रि.* (देश.) 1. गूँथना, कसना 2. सालना, छेदना, चुभोना आर-पार करना 3. रस्सी या धागे को बुनते हुए ताने में कसना, ठस करना।

गाँसी *स्त्री.* (देश.) 1. तीर या बरछी का फल, हथियार की नोक 2. गाँठ, गिरह 3. कपट 4. मनोमालिन्य।

गाइगर-मूलर गणित *पुं.* (अं.+तत्.) कांच की नली का बना यंत्र जो आयनकारी विकिरण (गामा बीटा या एल्फा किरण) की उपस्थिति का पता लगाने के लिए प्रयुक्त होता है giger-muller counter

गाइड *पुं.* (अं.) 1. पथ प्रदर्शक 2. यात्रियों, पर्यटकों को दर्शनीय स्थान, वस्तुएँ आदि दिखाने वाला 3. वह पुस्तक जिसमें किसी विशेष संस्था या कार्य-विभाग के नियम आदि लिखे हों guide

गाउन *पुं.* (अं.) 1. पश्चिमी देशों की स्त्रियों का एक लंबा पहनावा 2. एक विशिष्ट लंबा परिधान जो वकालत, विज्ञान, गणित आदि की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर स्नातकों द्वारा विशेष अवसरों पर पहना जाता है 3. ईसाई धर्म के प्रचारकों द्वारा पहना जाने वाला वस्त्र gown

गागर *स्त्री.* (तद्.) गगरी, घड़ा, कलसा। मुहा. गागर में सागर भरना-थोडे में बहुत अधिक बातों का समावेश करना।

गागरा *पुं.* (देश.) भंगियों की एक जाति।

गागरी *स्त्री.* (तद्.) घड़ा, गगरी।

गाच *पुं.* (देश.) एक तरह का जालीदार कपड़ा।

गाछ *पुं.* (तद्.) 1. पौधा 2. एक प्रकार का पान 3. छोटा पेड़।

गाछी *स्त्री.* (देश.) 1. पेड़ों का कुंज, बाग 2. खजूर की नरम कोंपल 3. पशुओं की पीठ पर बोझ लादने के लिए बोरा।

गाज *स्त्री.* (तद्.) 1. बिजली की कडक़ 2. गर्जन, गरज, शोर 3. फेन, झाग मुहा. गाज पड़ना- बिजली गिरना, ध्वंस होना।

गाजना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. शब्द करना, हुँकार करना, चिल्लाना 2. हर्षित होना, प्रसन्न होना मुहा. गल गाजना- हर्षित होना।

गाजर *स्त्री.* (तद्.) एक मीठा मूल जो कच्चा और अचार मुरब्बे के रूप में खाया जाता है मुहा. गाजर मूली समझना- तुच्छ समझना।

गाजा *पुं.* (अर.) सुगंधित पाउडर जिसे स्त्रियाँ सौंदर्य वृद्धि के लिए मुंह पर लगाती हैं।

गाजी *पुं.* (अर.) 1. काफिरों से लड़ने वाला मुसलमान योद्‌धा 2. बहादुर, वीर।

गाटर *पुं.* (अं.) लोहे का शहतीर जिसे दीवारों पर डाल कर छत पाटी जाती है *स्त्री.* (तत्.) जुआठे की लकड़ी जिसके इधर-उधर बैल जोते जाते हैं।

गाटा *पुं.* (देश.) खेत का छोटा टुकड़ा।

गाड़ *स्त्री.* (देश.) 1. गड्ढसा 2. खत्ता 3. खेत की मेंड़।

गाड़ना *स.क्रि.* (देश.) 1. जमीन के अंदर दफ़नाना 2. जमाना 3. धँसाना 4. गुप्त रखना, छिपाना।

गाड़र *स्त्री.* (देश.) भेड़।

गाड़व *पुं.* (तद्.) मेघ, बादल।

गाड़ा *पुं.* (देश.) 1. छकड़ा, बैल गाड़ी 2. घात में बैठने का गड्ढा 3. वह गड्ढा जो कोल्हू के नीचे रहता है, जिसमें तेल या रस जमा करने के लिए बरतन रखा जाता है।

गाड़ी *स्त्री.* (तद्.) पहिये के सहारे चलने वाली सवारी, शकट मुहा. गाडी भर- बहुत-सा; गाड़ी छूटना- उद्‌देश्य प्राप्ति में असफल होना।

गाड़ी खाना *पुं.* (देश.+फा.) वह स्थान जहाँ गाड़ियाँ रखी जाती है।

गाड़ीवान *पुं.* (देश.) 1. गाड़ी हाँकने वाला, कोचवान।

गाढ़ *पुं.* (तद्.) 1. कठिनाई, आपत्ति, संकट 2. जुलाहों का करघा मुहा. गाढ़े में पड़ना- संकट में पड़ना *वि.* (तत्.) 1. अधिक, बहुत, अतिशय 2. दृढ़, मजबूत 3. घना, गाढ़ा 4. उथाह, गहरा 5. विकट, कठिन, दुरूह, दुर्गम।

गाढ़ा *वि.* (तद्.) 1. जो अधिक पतला न हो 2. जिसकी तरलता घनत्व के लिए हो 2. जिसकी सूत परस्पर खूब मिले हो, ठस, मोटा 3. कठिन, विकट, प्रचंड, कट्टर, दुरूह मुहा. गाढ़ी कमाई-मेहनत से कमाई हुई राशि, उपार्जित धन; गाढ़ी छनना-खूब भांग पिया जाना; गाढ़े का साथी-विपत्ति में साथ देने वाला *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का मोटा और भद् दा सूती कपड़ा जिसे जुलाहे बुनते हैं और गरीब आदमी पहनते हैं 2. मस्त हाथी।

गाढ़े *क्रि.वि.* (देश.) 1. दृढ़ता से, जोर से, अच्छी तरह।

गाणपत्य *वि.* (तत्.) 1. गणपति संबंधी 2. गण नायकत्व *पुं.* एक सम्प्रदाय जो गणेश की उपासना करता है।

गाणिक्य *वि.* (तत्.) गणिकाओं का समूह।

गात *पुं.* (तत्.) 1. शरीर, अंग 2. लज्जा का अंग, गुप्तांग 3. स्तन, कुच 4. गर्भ।

गातव्य *वि.* (तत्.) गाने योग्य, गेय।

गाता *पुं.* (तत्.) 1. गाने वाला, गवैया 2. गंधर्व, देव गायक।

गाती *स्त्री.* (तद्.) चादर ओढ़ने का एक ढंग।

गातु *पुं.* (तत्.) 1. गंधर्व 2. गवैया 3. कोयल 4. पथिक 5. पृथ्वी 6. गाने की क्रिया या भाव।

गात्र *पुं.* (तत्.) 1. अंग, देह, शरीर 2. हाथी के अगले पैर का ऊपरी भाग 3. शरीर का अंग।

गात्र गुप्त *पुं.* (तत्.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

गात्रवान *वि.* (तत्.) सुंदर शरीर वाला।

गात्रानुलेपनी *स्त्री.* (तत्.) उबटन, अंगराग।

गात्रावरण *पुं.* (तत्.) कवच, जिरह-बख्तर।

गाथक *पुं.* (तत्.) गाथा कहने वाला, गायक।.

गाथा *स्त्री.* (तत्.) 1. स्तुति, प्रशंसागीत, छंद बद्ध कथा 2. वह श्लोक जिसमें स्वर का नियम न हो 3. आर्या नाम की वृत्ति 4. प्राकृत का एक भेद 5. पारसियों के धर्म ग्रंथ का एक भेद।

गाथिका *स्त्री.* (तत्.) गायिका, गाने वाली।

गाथी *पुं.* (तत्.) 1. सामवेद गाने वाला 2. गानों से परिचित।

गाद *पुं.* (देश.) 1. तलछट, कोई गाढ़ी चीज 2. तेल का चीकट कीट 3. गाढ़ी चीज मुहा. गाद बैठना- तलछट बैठना।

गादड़ *वि.* (तद्.) कायर, डरपोक, भीरू (देश.) गीदड़।

गादर *वि.* (तद्.) 1. डरपोक 2. गदराया हुआ 3. सुस्त, मट्ठर *पुं.* गीदड़, मट्ठरे बैल।

गादा *पुं.* (तद्.) 1. अधपका अनाज 2. बेपकी फसल 3. महुए का फूल 4. हरा महुआ।

गादी *स्त्री.* (देश.) 1. एक पकवान का नाम।

गादुर *पुं.* (देश.) चमगादड़।

गाध *पुं.* (तत्.) 1. स्थान, जगह 2. जल के नीचे का स्थल, थाह 3. नदी का बहाव, कूल 4. लोभ, लिप्सा *वि.* (तत्.) 1. जिसे चलकर पार कर सके, जो बहुत गहरा न हो, छिछला 2. थोड़ा, स्वल्प।

गाधि *पुं.* (तत्.) विश्वामित्र के पिता का नाम।

गाधेय *पुं.* (तत्.) विश्वामित्र।

गान *पुं.* (तत्.) 1. गाने की क्रिया, संगीत, गाना 2. गीत 3. ध्वनि, आवाज 4. स्तवन, प्रशसन 5. गमन, चलना।

गानपत्य *पुं.* (तद्.) 1. गणेश का उपासक 2. सेना की टुकड़ी का नायक।

गाना *पुं.* (तद्.) 1. ताल, लयताल के साथ शब्दों का उच्चारण करना 2. गीत को ताल सुर के साथ कहना 3. वर्णन करना 4. स्तुति करना, प्रशंसा करना प्रयो. मोहन का गीत गाना बड़ा पसंद है मुहा. गाना बजाना- आमोद-प्रमोद करना, उत्सव मनाना।

गाब *पुं.* (देश.) एक पेड़ जिसके फल से एक चिपचिपा पदार्थ निकलता है जो नाव के पेंदे में

लगने और जाल में मांझा डालने के काम आता है।

गाभ *पुं.* (तद्.) पशु का गर्भ दे. गाभा।

गाभा *पुं.* (तद्.) 1. कोमल, नरम पत्ता, नया कल्ला 2. पेड़ के बीच का हीर 3. लिहाफ, रजाई आदि के अंदर की निकली हुई रूई, गूदड़ 4. कच्चा अनाज, खड़ी खेती।

गामा किरण *स्त्री.* (अं.+तत्.) उच्च ऊर्जा की विद्युत चुंबकीय तरंगें।

गामी *वि.* (तत्.) 1. चलने वाला, चालवाला 2. गमन करने वाला, संभोग करने वाला, रमण करने वाला।

गामी *वि.* (तद्.) 1. ग्राम का निवासी 2. गँवार, मूर्ख।

गाय *स्त्री.* (तद्.) 1. जो जातीय मादा पशु जो दूध देने वाले पशुओं में प्रधान तथा हिंदू धर्म में पूज्य मानी जाती है, धेनु *वि.* बहुत सीधा, दीन मनुष्य प्रयो. सीता तो पूरी गाय है, किसी से कुछ कहती ही नहीं।

गायक *पुं.* (तत्.) गाने वाला, गवैया।

गायकवाड़ *पुं.* (देश.) बड़ौदा-नरेशों की उपाधि।

गायकी *स्त्री.* (तत्.) 1. गाने की क्रिया या भाव 2. गाने का तौर-तरीका 3. गाने का काम।

गायत *वि.* (अर.) बहुत अधिक, अत्यंत *स्त्री.* (तत्.) (तत्.) 1. उद्देश्य, मतलब 2. अंत, सीमा, छोर, किनारा

गायताल *पुं.* (देश.) 1. बैलों में निकृष्ट, निकम्मा चौपाया 2. निकम्मी रद्दी चीज, गई गुजरी, चीज मुहा. गायताल लिखना-बट्टे खाते डालना।

गायत्री *स्त्री.* (तत्.) 1. एक वैदिक छंद 2. सावित्री 3. दुर्गा 4. गंगा।

गायन *पुं.* (तत्.) 1. गान 2. गाने का व्यवसाय 3. गाने वाला, गवैया, गायक 4. कार्तिकेय।

गायब *वि.* (अर.) लुप्त, अंतर्धान, अदृश्य, छिपा हुआ, अनुपस्थित मुहा. गायब करना- चुरा लेना, उड़ा लेना।

गायिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. गाने वाली स्त्री 2. एक मात्रिक छंद।

गारंटी *स्त्री.* (अं.) 1. आश्वासन 2. विश्वास, वचन 3. प्रतीति। प्रयो. वह अपने मित्र की सुरक्षा की गारंटी लेने को तैयार है।

गारत *वि.* (अर.) नष्ट, बरबाद, मटियामेट, ध्वस्त, तबाह।

गारद *स्त्री.* (अर.) 1. सिपाहियों का छोटा दस्ता 2. 2. सिपाहियों की टुकड़ी जो किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिए नियुक्त की गई हो 3. पहरा, रक्षक, प्रहरी, गार्ड मुहा. गारद बैठना-पहरा बैठना; गारद में करना- हवालात में बंद करना; गारद में रखना-नजरबंद रखना प्रयो. मंत्रियों की सुरक्षा के लिए नियुक्त गारद पर व्यय अधिक हो रहा है।

गारना *स.क्रि.* (तद्.) 1. निचोड़ना 2. दुहना 3. घिसना 4. त्यागना, निकालना, दूर करना 5. नष्ट करना, खोना, बरबाद करना।

गारा *पुं.* (देश.) 1. मिट्टी या चूने सुर्खी का लेप जिससे ईंट जोड़ी जाती है 2. संकीर्ण जाति का एक राग जो दोपहर को गाया जाता है 3. वह नीची भूमि जिसमें पानी बहुत दिन न टिके।

गारी *पुं.* (तद्.) 1. गर्व, घमंड, अहंकार, अभिमान 2. मान, प्रतिष्ठा 3. गृह निवास, घर। *पुं.* (देश.) 1. असम का एक पहाड़ 2. एक जंगली जाति जो गारी पहाड़ पर रहती है।

गारी *स्त्री.* (तद्.) 1. गाली, दुर्वचन 2. कलंकजनक आरोप, चरित्र संबंधी लांछन 3. विवाह के अवसर पर गाया जाने वाला गीत। मुहा. गारी लगाना- कलंक लगाना, बदनामी होना। गारी बकना- अश्लील शब्द कहना।

गारुड़ *पुं.* (तत्.) 1. वह मंत्र जिसका देवता गरुड़ हो, सांप का जहर उतारने का मंत्र 2. गरुड़-व्यूह (सेना की व्यूह रचना) 3. पन्ना, मरकतमणि 4. सोना, सुवर्ण 5. गरुड़ास्त्र 6. गरुड़ पुराण।

गारुड़ि *पुं.* (तत्.) 1. संगीतशास्त्र में आठ प्रकार के तालों में से एक 2. मंत्र से साँप पकड़ने वाला, सपेरा।

गार्ग *वि.* (तत्.) 1. गर्ग संबंधी 2. गर्ग द्वारा कथित *पुं.* 1. संगीत में एकताल।

गार्गी *स्त्री.* (तत्.) 1. गर्ग गोत्र में उत्पन्न स्त्री 2. दुर्गा 3. याज्ञवल्क्य ऋषि की एक स्त्री का नाम।

गार्गेय *पुं.* (तत्.) 1. गर्ग गोत्र का पुरुष 2. गर्ग रचित ग्रंथ।

गार्ग्य *पुं.* (तत्.) 1. गर्ग गोत्र में उत्पन्न पुरुष 2. पाणिनि के पूर्ववर्ती वैयाकरण।

गार्जर *पुं.* (तत्.) गाजर नामक कंद।

गार्डेन *पुं.* (अं.) बाग, बगीचा।

गार्डेन पार्टी *स्त्री.* (अं.) वह भोज जो नगर के बाहर किसी बाग-बगीचे में दिया जाता है garden party

गार्दभ *वि.* (तत्.) गर्भ संबंधी, गदहे का।

गार्ध्र *पुं.* (तत्.) 1. लालच, लोभ 2. तीर, बाण।

गार्भ *वि.* (तत्.) 1. गर्भ संबंधी, गर्भ का 2. गर्भ से उत्पन्न गर्भज 3. गर्भ के लिए हितकर।

गार्हपत *पुं.* (तत्.) गृहपतित्व, गृहपति संबंधी।

गार्हमेध *पुं.* (तत्.) गृहस्थ के लिए कर्तव्य, पंच यज्ञ।

गार्हस्थ्य *पुं.* (तत्.) 1. गृहस्थाश्रम 2. गृहस्थ के मुख्य कर्तव्य कर्म (पंच महायज्ञ)।

गार्हस्थ्य विज्ञान *पुं.* (तत्.) वह विज्ञान जिसमें गृहस्थ संबंधी बातों का विवरण रहता है।

गाल *पुं.* (देश.) 1. कपोल, चेहरे के दोनों ओर ठुड्डी और कनपटी के बीच का भाग 2. बकवाद करने की लत, मुँह जोरी मुहा. गाल फुलाना- अभिमान प्रकट करना; गाल बजाना- डींग मारना, बढ़-बढ़ कर बातें करना; काल के गाल में जाना- मृत्यु के मुख में पड़ना/मरना; गाल में जाना- मुँह में पड़ना।

गालन *पुं.* (तत्.) 1. निचोड़ना 2. गलाना।

गालव *पुं.* (तत्.) 1. विश्वामित्र के एक शिष्य, ऋषि 2. एक प्रसिद्ध वैयाकरण जिसका मत पाणिनी ने अष्टाध्यायी में उद्धत किया है 3. लोध का पेड़ 4. एक स्मृतिकार।

गाला *पुं.* (फा.) 1. धुनी हुई नरम रुई का गोला मुहा. रुई का गाला- बहुत उज्ज्वल।

गालि *स्त्री.* (तत्.) गाली।

गालित *वि.* (तत्.) 1. निचोड़ा हुआ 2. गलाया हुआ।

गालिब *वि.* (अर.) 1. जीतने वाला, विजयी, श्रेष्ठ 2. 2. उर्दू के एक प्रसिद्ध शायर का उपनाम।

गालिबन *क्रि.वि.* (अर.) संभवतः, संभव है।

गाली *स्त्री.* (तद्.) 1. अपशब्द, निंदा या कलंक सूचक वाक्य, फूहड़बात, दुर्वचन 2. विवाह आदि में गाया जाने वाला परिहास पूर्ण अश्लील गीत मुहा. गाली खाना-दुर्वचन सुनना; गाली देना- दुर्वचन कहना प्रयो. ऐसा मत कहो, तुम्ही को गाली पड़ेगी।

गाली-गलौज *स्त्री.* (देश.) गाली देना।

गालू *वि.* (देश.) 1. व्यर्थ बढ़-बढ़ कर बातें करने वाला, गाल बजाने वाला, बकवादी 2. शेखी बाज, डींग हांकने वाला।

गालोडित *वि.* (तत्.) 1. नशे में चूर 2. बीमार, अस्वस्थ 3. मूर्ख *पुं.* 1. परीक्षण 2. अनुसंधान।

गालोड्य *पुं.* (तत्.) 1. कमल गट्टा 2. एक प्रकार का अनाज।

गाव *पुं.* (तद्.) 1. गाय 2. बैल 3. वृष राशि।

गावदी *वि.* (फा.) कुंठित बुद्धि का, अबोध, नासमझ, बेवकूफ, मंदमति, जड़।

गावडी *स्त्री.* (देश.) गाय।

गाव तकिया *पुं.* (फा.) 1. वह तकिया जिससे कमर लगा कर लोग फर्श पर बैठते है 2. मसनद।

गावनिया *वि.* (देश.) गाने वाला।

गावलाणि *पुं.* (तत्.) धृतराष्ट्र का मंत्री संजय।

गावल *पुं.* (देश.) दलाल।

गावी *स्त्री.* (देश.) जहाज में ऊपर का पाल।

गाह *पुं.* (तत्.) 1. गहन, दुर्गम 2. अवगाहन 3. गहराई 4. ग्राहक 5. ग्राह, मगर *स्त्री.* (फा.) 1. स्थान, जगह 2. समय, काल 3. अवसर, बारी ।

गाहक *पुं.* (तद्.) 1. ग्राहक, लेने वाला, खरीदार 2. अवगाहन करने वाला, मोल लेने वाला 3. कद्र करने वाला, चाहने वाला, अभिलाषी। मुहा. जी का गाहक-प्राण लेने वाला।

गाहकी *पुं.* (तद्.) ग्राहक, खरीदार।

गाहकी *स्त्री.* (तद्.) 1. खरीदारी 2. बिक्री मुहा. गाहकी पटना- सौदा पटना।

गाहन *पुं.* (तत्.) पानी में धँसना, बैठना, गोता लगाना, थाह लेना विलोड़ना, मथना, छानना।

गाहना *स.क्रि.* (तत्.) 1. थाह लेना, अवगाहन करना 2. मथना, बिलोड़ना, हलचल मचाना, क्षुब्ध करना 3. अनाज झाड़ने में डंठल को उठाकर डंडे से मारना। 4. खेत में दूर-दूर तक जोताई करना 5. घूमना, फिरना, चलना।

गाहबगाहे *क्रि.वि.* (फा.) कभी-कभी, समय-समय पर।

गाही *स्त्री.* (तद्.) पाँच चीजों का समूह, फल आदि गिनने की एक रीति जैस- बीस गाही सेब- 100 सेब।

गिंजाई *स्त्री.* (देश.) गींजने की क्रिया।

गिंजाई *स्त्री.* (देश.) बरसात में पैदा होने वाला एक कीड़ा, घिनौरी, ग्वालिन।

गिंदुक *पुं.* (तत्.) छोटा गेंद।

गिंदौड़ा *पुं.* (फ़ा.) बहुत मोटी रोटी के आकार में जमाई हुई चीनी, गोल आकार में जमाया हुआ गुड़ टि. इसका प्रयोग प्राय: विवाह आदि शुभ कार्यों में बिरादरी में बाँटने के लिए होता है।

गिचपिच *वि.* (अनु.) 1. जो पास-पास लिखा हुआ हो, अस्पष्ट 2. बहुत सटाकर लिखा हुआ।

गिजगिजा *वि.* (अनु.) 1. गीला 2. पिलपिला प्रयो. पैर के नीचे कुछ गिजगिजा-सा मालूम हुआ, देखा तो मरा साँप पड़ा था।

गिजा *स्त्री.* (अर.) आहार, भोजन, खाद्य पदार्थ।

गिजाई *वि.* (अर.) 1. आहार संबंधी 2. जो आहार रूप में हो।

गिट कौरी *स्त्री.* (देश.) कंकड़ी, पत्थर का छोटा गोल टुकड़ा।

गिट-पिट *स्त्री.* (अनु.) निरर्थक शब्द, अस्पष्ट शब्द शब्द मुहा. गिटपिट करना- टूटी-फूटी अंग्रेजी बोलना 2. ठीक प्रकार से बात न कहना।

गिट्टक *स्त्री.* (देश.) 1. चिलम के छेद पर रखने की कंकड़, चुगल 2. धातु या लकड़ी का छोटा और मोटा टुकड़ा 3. फलों की गुठली।

गिट्टा *पुं.* (तद्.) चिलम का कंकड, चिलम के छेद पर रखने की कंकडी।

गिट्टी *स्त्री.* (तत्.) 1. ईट, पत्थर के छोटे तोड़े हुए टुकड़े जो छत बनाने में काम आते हैं 2. मिट्टी के बरतन का छोटा टुकड़ा 3. चिलम की गिट्टक 4. लकड़ी का गोल छोटा टुकड़ा जिस पर धागा लपेटा जाता है।

गिठुआ *पुं.* (देश.) जुलाहे का करघा।

गिड़गिड़ाना *अ.क्रि.* (अनु.) दीनभाव से प्रार्थना करना, चिरौरी करना।

गिड़गिड़ाहट *स्त्री.* (अनु.) 1. विनती, चिरौरी 2. गिड़गिड़ाने का भाव।

गिड्डा *वि.* (देश.) नाटा, ठिंगना।

गिटार *पुं.* (अं.) वह बाजा जिसमें छः तार होते है जो उँगलियों से बजाया जाता है।

गिद्दा *पुं.* (देश.) स्त्रियों के गाने का एक गीत, पंजाब लोक-गीत से संबंधित, नकटा।

गिद्ध *पुं.* (तत्.) 1. एक मांसाहारी बड़ा पक्षी, जिसकी दृष्टि तीक्ष्ण होती है 2. एक तरह की बड़ी पतंग 3. बहुत बड़ा चालाक या धूर्त 4. छप्पय छंद का एक भेद।

गिधराज *पुं.* (तत्.) पुं. जटायु 2. बड़ा गिद्ध।

गिनगिनाना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. पकड़कर घुमाना या धिक्कार देना, देह का कांपना 2. झकझोरना प्रयो. वह पत्थर पकड़कर बहुत देर तक गिनगिनाता रहा पर पत्थर न हटा।

गिनती *स्त्री.* (देश.) 1. गिनने की क्रिया, गणना, शुमार प्रयो. बच्चों को गिनती अवश्य सिखानी चाहिए मुहा. गिनती में आना-कुछ समझा जाना; गिनती पर जाना- हाजिरी देने जाना; गिनती कराना-किसी कोटि के अंतर्गत समझा जाना प्रयो. वह विद्वानों में अपनी गिनती कराने के लिए भाग-दौड़ करता रहता है 2. संख्या/तादाद प्रयो. ये फल गिनती में कितने होंगे मुहा. गिनती के- बहुत थोड़े 3. एक से सौ तक की अंक माला 4. उपस्थिति की जाँच।

गिनना *स.क्रि.* (तद्.) 1. गिनती करना, हिसाब लगाना मुहा. गिन-गिनकर मारना-खूब पीटना; गिन-गिन कर दिन काटना- बहुत कष्ट से समय बिताना; गिन-गिन कर पैर रखना- बहुत धीरे-धीरे चलना; दिन गिनना- आशा में समय बीतना 2. गणित करना, हिसाब लगाना प्रयो. ज्योतिषी ने गिन कर कह दिया कि मुहूर्त अच्छा है 3. महत्व समझना, मान करना, प्रतिष्ठा करना, खातिर में लाना प्रयो. यहाँ तुम्हारे जैसों की गिनती कहाँ है?

गिनवाना *प्रे.क्रि.* (देश.) 1. गिनती पढ़ाना या सिखाना, सम्मान करवाना 2. अहंकार से दूसरों के द्वारा अपनी प्रतिष्ठा कराना।

गिनाना *प्रे.क्रि.* (देश.) गिनने का काम दूसरे से कराना।

गिनी *स्त्री.* (अं.) 1. एक विलायती घास 2. सोने का एक अंग्रेजी सिक्का जो शिलिगं का होता है टि. यह सिक्का 1936 में, इंगलैंड में आरंभ हुआ और 1913 से मिलना बंद हो गया। यह अफ्रीका महाद्वीप गिनी नामक देश से आए सोने से बनाया गया था।

गिन्नी *स्त्री.* (देश.) चक्कर मुहा. गिन्नी खाना-चक्कर खाना।

गिब्बन *पुं.* (अं.) जावा, सुमात्रा आदि में पाया जाने वाला एक प्रकार का बंदर।

गिमटी *स्त्री.* (अं.) 1. एक प्रकार का मजबूत सूती कपड़ा जो बिछाने के काम आता है 2. गोलाकार या चौकोर कमरा जो रेलवे लाइन के किनारे बना होता है।

गियाह *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का घोड़ा।

गिरंट *पुं.* (अं.) एक रेशमी कपड़ा, ग्वारनट, देशी सूती मलमल।

गिर *पुं.* (तद्.) 1. पहाड़, पर्वत 2. संन्यासियों के दस भेदों में से एक 3. काठियावाड़ देश का भैंसा।

गिरई *स्त्री.* (देश.) एक छोटी मछली।

गिरगिट *पुं.* (तद्.) छिपकली की जाति का एक जंतु जो कई तरह के रंग बदल सकता है मुहा. गिरगिट की तरह रंग बदलना- मत या सिद्धांत बदल लेना, कभी कुछ कहना, तो कभी कुछ कहना।

गिरगिट्टी *स्त्री.* (देश.) एक छोटा पेड़ जिसकी छाल खाकी रंग की होती है।

गिरगिरी *स्त्री.* (अनु.) चिकारे की तरह का एक खिलौना।

गिरजा *पुं.* (पुर्त.) 1. ईसाइयों का उपासना गृह 2. एक प्रकार का पक्षी।

गिरजाघर *पुं.* (पुर्त.) ईसाईयों का प्रार्थना मंदिर।

गिरदा *पुं.* (फा.) 1. घेरा, चक्कर 2. तकिया 3. कपड़े का वह गोल टुकड़ा जो हुक्के के नीचे रखा जाता है 4. ढोल या खंजड़ी का मेंडरा।

गिरदान *पुं.* (देश.) गिरगिट।

गिरदावर *पुं.* (फा.) दे. गिरदावरी।

गिरदावरी *स्त्री.* (फा.) 1. गिरदावर का काम 2. गिरदावर का पद।

गिरधर *पुं.* (तद्.) 1. पहाड़ उठाने वाला व्यक्ति 2. कृष्ण, वासुदेव।

गिरधारी *पुं.* (तद्.) दे. गिरधारी,कृष्ण 2. समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सगण, 2 नगण-यगण, सगण के योग से 15 वर्ण होते हैं।

गिरना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. ऊपर से नीचे गिरना 2. जमीन पर पड़ जाना 3. अपनी जगह से नीचे

आना प्रयो. वह छत पर से नीचे गिर गया। 4. खड़े रहने में असमर्थ होकर जमीन पर आ जाना प्रयो. भूकंप आने पर मकानों का गिरना आवश्यक है 5. अवनति पर होना, ह्रासोन्मुख होना 6. जलधारा का जलाशय में मिलना प्रयो. गंगा हजारों मील चलकर समुद्र में गिरती है 7. शक्ति, स्थिति, मूल्य आदि का कम या मंदा होना प्रयो. वह अपने समाज की दृष्टि में गिर गया।, बीमारी के कारण उसका शरीर गिर गया, मुद्रास्फीति से बाजार भाव गिर गया 8. किसी पदार्थ को लेने के लिए तेजी से बढ़ना प्रयो. कबूतर को देखते ही बाज उस पर गिर पड़ा 9. जीर्ण होने पर वस्तु का स्थान से हट जाना या निकल जाना प्रयो. बीमारी के कारण उसके सभी बात गिर गए 10. ऐसा रोग जो दिमाग से नीचे की ओर आता है मुहा. गिरकर सौदा करना- दबाव के साथ सौदा करना, मामला हल करना।

गिरनार *पुं.* (तद्.) जैनियों का एक पवित्र तीर्थ टि. यह गुजरात में जूनागढ़ के निकट पर्वत पर स्थित है इसे रैवतक पर्वत भी कहते हैं।

गिरनारी *वि.* (तद्.) गिरनार पर्वत का निवासी।

गिरफ्त *स्त्री.* (फा.) 1. पकड़ 2. गलती पकड़ना 3. आपत्ति, एतराज 4. अधिकार, कब्जा 5. चंगुल में आना।

गिरफ्तार *वि.* (फा.) 1. जुर्म आदि करने के कारण पकड़ा हुआ 2. कष्ट आदि संकट से ग्रसा हुआ, ग्रस्त।

गिरफ़्तारी *स्त्री.* (फा.) 1. गिरफ्तार करना या होना, कैद मुहा. गिरफ्तारी निकलना- बारंट निकलना।

गिरबान *पुं.* (फा.) गर्दन, गला।

गिरमिट *पुं.* (अं.) 1. इकरारनामा, प्रतिज्ञा पत्र, शर्तनामा 2. लकड़ी लोहे आदि में छेद करने वाला बड़ा बरमा।

गिरमिटिया *पुं.* (देश.) अंग्रेजी शासनकाल में शर्त के साथ किसी उपनिवेश में गया हुआ भारतीय मजदूर जैसे- गिरमिटिया-प्रथा।

गिरवाना *प्रे.क्रि.* (देश.) गिराने का काम दूसरे से कराना 2. किसी को कोई चीज गिराने में प्रवृत करना।

गिरवार *पुं.* (तत्.) बड़ा पहाड़।

गिरवी *स्त्री.* (फा.) बंधक, रेहन वि. 1.बंधक संबधी 2. ऋण आदि लेने के लिए जिसे बंधक रखा गया हो।

गिरस्ती *स्त्री.* (तद्.) दे. गृहस्थी।

गिरह *स्त्री.* (फा.) 1. गाँठ, ग्रंथि, गुत्थी 2. जेब, खीसा, खरीता 3. दो पोरों के जुड़ने का स्थान 4. एक माप जो सवा दो इंच के बराबर होती है 5. कुश्ती का एक पेंच मुहा. गिरह खोलना- गाँठ खोलना, मन से बुराई दूर करना; गिरह पड़ना- गांठ पड़ना, भेद पैदा होना; गिरह बाँधना- मन में बैठा लेना।

गिरहकट *वि.* (फा.+हि.) जेब कतरने वाला, पाकिटमार।

गिरहबाज *पुं.* (फा.) 1. वह कबूतर जो उड़ते हुए कलाबाजी करता है 2. लोटन कबूतर।

गिराँ *वि.* (फा.) 1. जिसका दाम अधिक हो, बहुमूल्य 2. भारी, वजनी 3. जो भला न मालूम हो, अप्रिय।

गिरा *स्त्री.* (तत्.) 1. वाणी, सरस्वती 2. जिह्वा, जीभ, जबान 3. बोल, वचन 4. सरस्वती नदी 5. भाषा, बोली 6. कविता, शायरी।

गिरई *स्त्री.* (देश.) एक छोटी मछली।

गिराना *स.क्रि.* (देश.) 1. नीचे डालना, पतन करना प्रयो. उसने छत पर से पत्थर गिराना शुरु कर दिया। 2. जमीन पर डाल देना 3. अवनत करना, ह्रास करना 4. बहाना 5. मूल्य शक्ति, प्रतिष्ठा आदि घटाना प्रयो. जनता ने माल खरीदना बंद करके बाजार गिरा दिया 6. बुरी दशा को ले जाना प्रयो. तुम्हारी लापरवाही तुम्हीं पर नजला गिराएगी। 7. युद्ध में मार डालना प्रयो. उसने युद्धभूमि में शत्रुओं को मार गिराया।

गिरावट *स्त्री* (देश.) 1. ह्रास, पतन 2. न्यूनता, कमी 3. अवनति, अपकर्ष 4. अध:पात, पतन 5. मान या पद की मर्यादा में दोष या बाधा होना।

गिराह *पुं.* (तद्.) दे. ग्राह।

गिरि *पुं.* (तत्.) 1. पर्वत, पहाड़ 2. संन्यासियों की एक उपाधि 3. तांत्रिक संन्यासियों का एक भेद 4. पारे का एक दोष 5. आँख का एक रोग जिसमें ढेंढर या पुतली निकल आती है और आँख कानी हो जाती है 6. गोंद 7. मेघ, बादल 8. शिला, चट्टान।

गिरि दुहिता *स्त्री.* (तत्.) पार्वती।

गिरि सुता *स्त्री.* (तत्.) पार्वती, उमा।

गिरिक *पुं.* (तत्.) 1. शिव, महादेव 2. पर्वत से उत्पन्न 3. गेंद।

गिरिका *स्त्री.* (तत्.) 1. चुहिया 2. पुरुवंशी वसु राजा की स्त्री जिसकी कथा महाभारत में है 3. छोटी पहाड़ी, उपगिरि।

गिरिज *पुं.* (तत्.) 1. शिलाजीत 2. लोहा 3. अभ्रक 4. गेरू 5. महुआ *वि.* पहाड़ में या पहाड़ पर उत्पन्न होने वाला।

गिरिजा *स्त्री.* (तत्.) 1. पार्वती 2. गंगा 3. चकोतरा 4. पहाड़ी केला 5. चमेली।

गिरिजाघर *पुं.* (तत्.) दे. गिरजाघर।

गिरित *वि.* (तत्.) 1. खाया हुआ, भक्षित 2. निगला हुआ।

गिरि दुहिता *स्त्री.* (तत्.) पार्वती।

गिरिधर *पुं.* (तत्.) तस्कर, चोर, श्री कृष्ण, गिरि अर्थात गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले श्री कृष्ण, पर्वत वासी।

गिरिधारी *पुं.* (तत्.) श्री कृष्ण।

गिरिनाथ *पुं.* (तत्.) 1. महादेव, शिव 2. हिमालय 3. गोवर्धन पर्वत।

गिरिपथ *पुं.* (तत्.) दो पहाड़ों के बीच का संकरामार्ग, दर्रा।

गिरिमान *पुं.* (तत्.) विशालकाय हाथी।

गिरिराज *पुं.* (तत्.) 1. बड़ा पर्वत 2. हिमालय 3. गोवर्धन पर्वत 4. मेरु।

गिरिसार *पुं.* (तत्.) 1. लोहा 2. शिलाजीत 3. राँगा 4. मलय पर्वत।

गिरिसुत *पुं.* (तत्.) मैनाक पर्वत।

गिरींद्र *पुं.* (तत्.) 1. बड़ा पर्वत 2. हिमालय 3. शिव 4. आठ पर्वतों के आधार पर आठ की संख्या।

गिरीश *पुं.* (तत्.) 1. महादेव, शिव 2. हिमालय पर्वत 3. बृहस्पति 4. बहुत बड़ा पर्वत या पर्वतों का राजा।

गिरेबान *पुं.* (फा.) 1. गले में पहनने के कपड़े का भाग जो गर्दन के चारों ओर रहता है।

गिरेवा *पुं.* (देश.) 1. छोटी पहाड़ी, टीला 2. चढ़ाई का रास्ता।

गिरेश *पुं.* (तत्.) 1. ब्रह्मा 2. विष्णु।

गिरो *वि.* (फा.) रेहन, बंधक, गिरवी।

गिरोही *पुं.* (देश.) 1. समूह का आदमी, संगी, साथी।

गिर्गिट *पुं.* (देश.) दे. गिरगिट।

गिर्द *अव्य.* (फा.) आसपास, चारों ओर जैस- इर्द-गिर्द मुहा. गिर्द होना- पास-पास होना।

गिर्दागिर्द *अव्य.* (फा.) चारों ओर, इर्द-गिर्द।

गिर्दावर *पुं.* (फा.) 1. घूमने वाला, दौरा करने वाला 2. घूम-घूमकर काम की जाँच करने वाला टि. गिर्दावर कानूनगो-कलक्टरी महकमें का छोटा अफ़सर होता है जो पटवारियों के काम-काज की जाँच करता है।

गिल *पुं.* (तत्.) 1. मगर 2. घड़ियाल 3. जंबीरी नींबू।

गिल गिली *पुं.* (देश.) 1. घोड़े की एक जाति 2. गुदगुदी 3. मंद सुरसुराहट वि. निगलने या खाने वाला स्त्री. 1. मिट्टी 2. गारा।

गिलगिलिया *स्त्री.* (अनु.) सिरोही नामक पक्षी टि. इसे कहीं-कहीं किलहँटी भी कहते है।

गिलजई *स्त्री.* (देश.) अफगानिस्तान में रहने वाली एक वीर जाति।

गिलट *पुं.* (अं.) 1. मुलम्मा 2. सोने का पानी चढ़ाने का काम 3. चाँदी के रंग की घटिया धातु।

गिलटी *स्त्री.* (तद्.) 1. शरीर के संधिस्थान की गाँठ 2. एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर के विभिन्न अंगों में गाँठें निकलती हैं।

गिलन *पुं.* (तत्.) निगलने की क्रिया या भाव।

गिलना *स.क्रि.* (तद्.) 1. निगलना 2. मन में रखना, प्रकट न होने देना।

गिलबिला *वि.* (अनु.) 1. बहुत कोमल 2. पिलपिला 3. अस्पष्ट उच्चारण करने वाला।

गिल बिलाना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. अस्पष्ट वचन बोलने वाला 2. व्याकुल होकर बोलना।

गिलम *स्त्री.* (फा.) 1. ऊनी कालीन 2. मोटा गद्दा।

गिलमिल *पुं.* (फा.) एक तरह का बढ़िया कपड़ा।

गिलहरी *स्त्री.* (फा.) पेड़ों पर रहने वाला चूहे जैसा छोटा जंतु।

गिला *पुं.* (फा.) 1. उलाहना 2. शिकायत, निंदा।

गिलाजत *स्त्री.* (अर.) 1. गाढ़ापन 2. गंदगी, अपवित्रता, नापाकी।

गिलाफ *पुं.* (अर.) 1. तकिये की खोली 2. लिहाफ 3. म्यान।

गिलावा *पुं.* (देश.) गारा, मिट्टी और पानी का बना हुआ वह गाढ़ा घोल जिससे राज मजदूर दिवारों की चुनाई करते हैं।

गिलास *पुं.* (अं.) 1. शीशे या धातु का बना पानी पीने का लंबा गोल पात्र 2. ओलची नामक पेड़ जिसके फल मुलायम और स्वादिष्ट होते हैं।

गिलित *वि.* (तत्.) निगला हुआ, भक्षित।

गिलोय *स्त्री.* (फा.) गुडूची, एक प्रकार की कड़वी बेल जिसके पत्ते दवा के काम आते हैं।

गिलोल *स्त्री.* (फा.) दे. गुलेल।

गिलोला *पुं.* (फा.) गुलेल से फेंकी जाने वाली मिट्टी की गोली।

गिलौरी *स्त्री.* (देश.) घन या तिकौना या चौकोना बीड़ा।

गिल्ली *स्त्री.* (देश.) दे. गुल्ली मुहा. गिल्लियाँ गढ़ना- व्यर्थ बकवाद करना।

गींजना *स.क्रि.* (देश.) 1. नरम नाजुक चीज को मसल कर खराब करना 2. खाने के पदार्थ को हाथ से एक दूसरे से मिलाना।

गीत *पुं.* (तत्.) 1. गाने की चीज, गाना 2. एक तरह की तान 3. स्वरों का उतार-चढ़ाव मुहा. गीत गाना- बड़ाई करना, प्रशंसा करना; अपना ही गीत गाना- अपनी ही बात कहना 4. बड़ाई, यश *वि.* 1. गाया हुआ 2. घोषित, कथित।

गीतक *वि.* (तत्.) 1. गीत गाने वाला 2. गीत बनाने वाला *पुं* 1. गीत, गाना 2. प्रशंसा, बड़ाई।

गीतकार *पुं.* (तत्.) गीत लिखने वाला।

गीतगोविंद *पुं.* (तत्.) जयदेव कृत संस्कृत का प्रसिद्ध गीति काव्य।

गीतप्रिय *पुं.* (तत्.) 1. शिव 2 श्री कृष्ण 3. गीतों का प्रेमी।

गीतमोदी *पुं.* (तत्.) किन्नर।

गीतशास्त्र *पुं.* (तत्.) संगीत विद्या।

गीता *स्त्री.* (तत्.) 1. ज्ञानमय उपदेश 2. भगवद्गीता 3. संकीर्ण राग का एक भेद 4. मात्रा का एक छंद जिसमें 14 और 12 मात्राओं पर विराम होता है 5. वृतांत, कथा, हाल।

गीतायन *पुं.* (तत्.) गायन के साधन, मृदंग, वीणा, बाँसुरी आदि।

गीति *स्त्री.* (तत्.) 1. गान, गीत 2. एक मात्रिक छंद जिसके विषम चरणों में 12 और सम चरणों में 18 मात्राएँ होती हैं 3. गीत-गायन की एक पद्धति।

गीतिका *पुं.* (तत्.) 1. एक छोटा गीत 2. एक मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में 23 मात्राएँ होती हैं 3. एक वर्ण वृत्त।

गीतिकाव्य *पुं.* (तत्.) गेय प्रधान और आत्मपरक काव्य, प्रगीत काव्य।

गीति नाट्य *पुं.* (तत्.) गेय नाटक।

गीति रूपक *पुं.* (तत्.) साहि. रूपक, एक प्रकार का रूपक जो पूरा या बहुत कुछ पद्य में लिखा होता है। opera

गीथा *स्त्री.* (तत्.) 1. गीत, गाना 2. वचन, वाणी।

गीदड़ *पुं.* (फा.गीदी) 1. सियार, शृगाल 2. भेड़िये की जाति का एक जानवर मुहा. गीदड़ बोलना- बुरा शकुन होना *वि.* डरपोक, बुजदिल जैसे- गीदड़ भभकी- दिखाऊ धमकी।

गीदी *वि.* (फा.) 1. जिसे साहस न हो, डरपोक, कायर 2. बेहया, निर्लज्ज।

गीध *पुं.* (तद्.) 1. गृध, गिच्छ 2. जटायु नामक गिद्ध ला.अर्थ अत्यंत चतुर और लालची एवं लोभी व्यक्ति।

गीबत *पुं.* (अर.) 1. अनुपस्थिति, गैर हाज़िरी 2. चुगुलखोरी, चुगली।

गीर *स्त्री.* (तद्.) 1. वाणी *वि.* (फा.) 2. एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अंत में लगकर निम्नलिखित अर्थ देता है जैसे- राहगीर, दामनगीर, जहाँगीर 1. पकड़ने वाला 2. अपने अधिकार में रखने वाला।

गीरथ *पुं.* (तत्.) 1. बृहस्पति का एक नाम 2. जीवात्मा।

गीर्ण *वि.* (तत्.) 1. वर्णित, कहा हुआ 2. निगला हुआ।

गीर्वाण *पुं.* (तत्.) देवता, सुर।

गीर्वाण कुसुम *पुं.* (तत्.) लवंग, लौंग।

गीर्वाणी *स्त्री.* (तत्.) देववाणी, संस्कृत।

गीर्वि *वि.* (तत्.) निगलने वाला।

गीला *पुं.* (देश.) एक जंगली लता *वि.* (देश.) भीगा हुआ, नम, आर्द्र।

गुंगा *वि.* (फा.) दे. गूंगा।

गुंगी *स्त्री.* (फा.) 1. चुप्पी, मौन 2. वाक् शक्ति का का अभाव।

गुंगुआना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. धुँआ देना, अच्छी तरह न जलना 2. गूँ गूँ शब्द करना, अस्पष्ट शब्द निकालना, गूँगे की तरह बोलना।

गुंचा *पुं.* (फा.) 1. कली, कोरक 2. नाच रंग 3. जश्न, आनंद-मंगल।

गुंची *स्त्री.* (तद्.) दे. घुँघची।

गुंज *स्त्री.* (तत्.) 1. गुँजार, भौरों के भनभनाने का शब्द 2. कलरव 3. गले में पहनने का एक गहना 4. फूलों का गुच्छा।

गुंजक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का पौधा *वि.* गुंजन करने वाला।

गुंजन *पुं.* (तत्.) 1. भौरों के गूँजने की क्रिया, गुंजार, भनभनाना।

गुंजल्क *स्त्री.* (फा.) 1. शिकन, सिलवट 2. गेंडुली 3. उलझन की बात, गुत्थी 4. गाँठ, ग्रंथि।

गुंजा *स्त्री.* (तत्.) घुँघची नाम की लता।

गुंजाइश *पुं.* (फा.) 1. स्थान, जगह, अँटने की जगह, समाने भर की जगह, अवकाश प्रयो. इस मकान में दस व्यक्तियों से अधिक की गुंजाइश नहीं है 2. समाई, सुबीता प्रयो. अभी इतने की गुंजाइश हमारे यहाँ नहीं है 3. लाभ, बचत।

गुंजान *वि.* (देश.) घना, अविरल, सघन।

गुंजार *पुं.* (तद्.) भौरों की गूंज, भनभनाहट।

गुंजिका *स्त्री.* (तत्.) दे. घुँघची, गुंज।

गुंजिया *स्त्री.* (देश.) कान का एक गहना।

गुंठन *पुं.* (तत्.) 1. आच्छादन, ढक्कन 2. घूँघट 3. लेपन।

गुंठा *वि.* (देश.) नाटे कद का, नाटा, बौना *पुं.* नाटे कद का घोड़ा।

गुंठित *वि.* (तत्.) 1. ढका हुआ 2. छिपा हुआ 3. आवृत्त 4. लेपन किया हुआ, लेपित।

गुंड *पुं.* (तत्.) 1. कसेरू का पौधा 2. फलों का पराग 3. मलार राग का भेद *वि.* चूर किया या पीसा हुआ।

गुंडई *स्त्री.* (देश.) गुंडापन, बदमाशी।

गुंडक *पुं.* (तत्.) 1. धूल 2. चूर्ण 3. तेल रखने का बरतन, तैल पात्र 4. कर्णप्रिय, कोमल, मधुर ध्वनि 5. गंदा आटा 6. गंदी, धूल मिली भोज्य सामग्री।

गुंडली *स्त्री.* (देश.) कुंडली, गेंडुरी।

गुंडा *पुं.* (देश.) 1. बदमाश आदमी, खोटे चाल-चलन वाला 2. गोला।

गुंडासिनी *स्त्री.* (तत्.) गोंदला नाम की घास।

गुंडिक *पुं.* (तत्.) आटा, चूर्ण।

गुंडित *वि.* (तत्.) 1. चूर्ण किया हुआ 2. धूल से ढका हुआ।

गुंडी *स्त्री.* (देश.) सूत की लच्छी, पीतल का छोटा जल पात्र, कलसा।

गुंधाई *स्त्री.* (देश.) 1. गूँधने की क्रिया या भाव 2. गूँधने की मजदूरी।

गुंधावट *स्त्री.* (देश.) गूंधने का ढंग।

गुंफ *पुं.* (तत्.) 1. उलझन, फँसाव 2. गुच्छा 3. दाढ़ी, गुलमुच्छा 4. कारणमाला अलंकार 5. सज्जा 6. बाजूबंद 7. संयोजन, रचना, व्यवस्था।

गुंफन *पुं.* (तत्.) 1. उलझन, फंसाव, गुत्थम गुत्था, गूँधना 2. क्रमबद्ध करना 3. डोरे आदि में पिरोना 4. भरने का काम।

गुंफना *स्त्री.* (तद्.) 1. गूँथना 2. व्यवस्था, रचना 3. शब्दों और अर्थ की वाक्य में सम्यक् रचना।

गुंबद *पुं.* (फा.) गुंबज, वस्तु रचना में वह शिखर जो आधे गोले के आकार का और अंदर से पोला हो जैसे- मसजिदों का गुंबद।

गुंबदी *वि.* (फा.) 1. गुंबद की शक्ल का, गुंबद वाला।

गुंबा *पुं.* (फा.) सिर में चोट लगने और उसके फलस्वरूप खून से जमने वाली गाँठ, गुलमा।

गुँथना *अ.क्रि.* (तद्.) दे. गुथना।

गुँदला *पुं.* (तद्.) नागरमोथा नाम की धारा।

गुँधना *अ.क्रि.* (तद्.) पानी में सान कर मसला जाना, माँडा जाना प्रयो. वह आटा गूँध रहा है।

गुआर पाठा *पुं.* (देश.) दे. ग्वारपाठा।

गुग्गुल *पुं.* (तत्.) एक कांटेदार पेड़ 2. सलईका पेड़ जिससे धूप या राल निकलती है 3. राल जो सुगंधि के लिए जलाते हैं।

गुग्गुलक *पुं.* (तत्.) दे. गुग्गुल।

गुची *स्त्री.* (तद्.) सौ पानों की गड्डी, आधी ढोली।

गुच्ची *स्त्री.* (अनु.) गुल्ली आदि खेलने के लिए जमीन में बना बहुत छोटा गड्ढा *वि.* (तत्.) बहुत छोटी, नन्ही।

गुच्छ *पुं.* (तत्.) 1. गुच्छा, एक में बंधे फूलों का समूह 3. घास की जूड़ी 4. झाड़ 5. बत्तीस लड़ी का हार 6. मोती का हार 7. मोर की पूंछ।

गुच्छ पत्र *पुं.* (तत्.) ताड़ का पेड़।

गुच्छ पुष्प *पुं.* (तत्.) 1. अशोक वृक्ष 2. रीठा, छतिवन।

गुच्छ फल *पुं.* (तत्.) 1. रीठा 2. निर्मली 3. दौना 4. मकोय 5. अंगूर 6. कदली।

गुच्छा *पुं.* (तत्.) 1. कई पत्तों या फलों का समूह 2. छोटी वस्तुओं का समूह 3. झब्बा।

गुज़रना *अ.क्रि.* (फा.) 1. समय व्यतीत करना, होना, कटना, बीतना प्रयो. रात तो जैसे-तैसे काट ली परन्तु दिन गुजारना कठिन है मुहा. किसी पर गुजरना- संकट पड़ना; गुजर जाना- मर जाना 2. किसी से होकर आना या जाना 3. नदी पार करना 4. निर्वाह होना, निपटना, निभना प्रयो. चिंता की बात नहीं, दोनों की खूब गुजरेगी 5. मन में आना, विचार में आना।

गुज़र-बसर *पुं.* (फा.) निर्वाह, गुजारा मुहा. गुजर बसर होना-समय व्यतीत होना।

गुजरबान *पुं.* (फा.) 1. मल्लाह, पार उतारने वाला 2. जो व्यक्ति घाट की उतराई वसूल करता है।

गुजरात *पुं.* (तद्.) भारत के दक्षिण-पश्चिम में स्थित राज्य।

गुजराती *पुं.* (तद्.) गुजरात का निवासी, गुजरात में रहने वाला *वि.* (तत्.) गुजरात का, गुजरात का बना *स्त्री.* (तत्.) 1. गुजरात देश की भाषा 2. छोटी इलाचयी।

गुजेर *पुं.* (फा.) 1. जीवन निर्वाह, गति प्रयो. इस तरह गुजर करना बहुत कठिन है 2. आने-जाने, निकलने का द्वार या मार्ग प्रयो. इस कमरे में हवा का गुज़र नहीं है 3. पहुँच, पैठ, प्रवेश।

गुज़ेरान *पुं.* (फा.) निर्वाह, गुजर।

गुजरानना *स.क्रि.* (देश.) 1. उपस्थित करना 2. बिताना, व्यतीत करना।

गुजरिया *स्त्री.* (देश.) दे. गूजरी, गूजर जाति की स्त्री, ग्वालिन, गोपी।

गुजरी *स्त्री.* (तद्.) 1. कलाई में पहनने की एक पहुंची 2. दीपक राग की एक रागिनी, शाम को सड़क या मार्ग के किनारे लगने वाला बाज़ार।

गुजरेटा *पुं.* (देश.) 1. गूजर का पुत्र 2. गूजर जाति का व्यक्ति, ग्वाला।

गुजरेटी *स्त्री.* (देश.) गूजर-कन्या, गूजरी, ग्वालिन।

गुजायमान *वि.* (तद्.) 1. मधुर ध्वनि करता हुआ, गूँजता हुआ।

गुज़ार *वि.* (फा.) समासांत में गुजारने वाला, करने वाला, अदा करने वाला प्रयो. वह आपका शुक्र गुज़ार है।

गुज़ारा *पुं.* (फा.) 1. गुजर, निर्वाह 2. जीवन निर्वाह के लिए दी जाने वाली वृत्ति 3. नाव या घाट की उतराई 4. मार्ग 5. घाट।

गुज़ारिश *स्त्री.* (फा.) निवेदन, अर्जी, प्रार्थना।

गुजी *स्त्री.* (देश.) नाक का सूखा हुआ मल, नकटी।

गुज्जरी *स्त्री.* (तद्.) 1. गूजरी 2. भैरव राग की स्त्री।

गुज्झा *पुं.* (तद्.) 1. बाँस की कील 2. गोझा 3. रेशेदार गूदा 4. एक प्रकार की कंटीली घास।

गुझरौट *पुं.* (देश.) 1. कपड़े की सिकुड़न, शिकन, सिलवट 2. स्त्रियों की नाभि के आस-पास का भाग।

गुझिया *स्त्री.* (तद्.) मैदे की कुसली में मेवा, खोया आदि डाल कर बनाया हुआ पकवान, खोये की बनी एक मिठाई।

गुट *पुं.* (अनु.) कबूतरों के बोलने का स्वर (तद्.) 1. विशेष अभिप्राय से बनाया हुआ दल 2. झुंड, समूह।

गुटकना *अ.क्रि.* (अनु.) कबूतर का मस्त होकर गुटरगूँ करना *स.क्रि.* (तत्.) 1. निगलना 2. खा जाना।

गुटका *पुं.* (तद्.) 1. छोटे आकार की पुस्तक 2. लट्टू 3. पान में खाने का एक मसाला 4. गुपचुप नाम की मिठाई ।

गुटकाना *स.क्रि.* (अनु.) 1. बजाना 2. गुट की ध्वनि करना।

गुटकी *स्त्री.* (तद्.) दे. गुटिका।

गुट निरपेक्ष *वि.* (तत्.) वह व्यक्ति या राष्ट्र जो किसी गुट में न हो।

गुटबंदी *स्त्री.* (हि.+फा.) 1. कुछ लोगों का आपस में मिलकर छोटा-सा दल बनाना 2. किसी संस्था में विरोध या स्वार्थ के आधार पर अलग लोगों का गुट बनाना।

गुटरगूँ *स्त्री.* (अनु.) कबूतरों की बोली।

गुटिका *स्त्री.* (तत्.) 1. वाटिका, वटी, गोली 2. एक सिद्धि।

गुट्ट *पुं.* (तत्.) झुंड, दल, यूथ प्रयो. उन लोगों ने अपना अलग गुट्ट बना लिया है।

गुट्ठल *वि.* (तत्.) 1. जिसमें बड़ी गुठली हो 2. जड़, मूर्ख, कूढ़ मगज 3. गुठली के आकार का।

गुट्टा *पुं.* (देश.) लाख की चौकोर गोटी जिनसे लडकियाँ खेलती हैं *वि.* छोटे कद का, नाटा, ठिंगना।

गुट्ठी *स्त्री* (तद्.) मोटी गांठ, पैरकान्द, टखना।

गुठला *पुं.* (तद्.) 1. बड़ी गुठली 2. अंगूठे में पहनने का आभूषण *वि.* कुंठित, भोथरा।

गुठलाना *अ.क्रि.* (देश.) गुठली की तरह कड़ा और गोल होना *अ.क्रि.* चाकू या अस्त्र-शास्त्र की धार का कुंठित होना।

गुठली *स्त्री.* (तद्.) 1. किसी फल का बड़ा और कड़ा बीज 2. गिलटी।

गुड ईवनिंग *स्त्री.* (अं.) संध्या के समय का अंग्रेजी अभिवादन का वचन जो किसी से मिलने के समय कहा जाता है, इसका अभिप्राय है कि यह संध्या आपके लिए शुभ हो। good-evening

गुड़ *पुं.* (तद्.) 1. गेंद, कुंदुक 2. ग्रास, कौर 3. हाथी का कवच 4. कपास का पेड़ 5. गोली 6. ईख या ताड़-खजूर के रस को गाढ़ा करके बनाई हुई बट्टी या भेली मुहा. गुड़गोबर करना-चौपट करना, खराब करना; गुड़ गोबर होना-खराब होना; गुड़ दिखाकर ढेला मारना- लाभ का लोभ देकर कष्ट देने का काम करना; गुड़ होगा तो मक्खियाँ आएँगी- धन होगा तो खाने वाले आएँगे; कुल्हिया में गुड़ फूटना-छिपे-छिपे सलाह होना, गुप्त रीति से कोई पाप होना; गुड़ दिए मरे तो हजर क्यों दे- नरमी से काम चले तो कड़ाई क्यों करे।

गुड़क *पुं.* (तत्.) 1. गोल पदार्थ 2. ग्रास, कौर 3. गुड़ में पकाकर बनाई गई दवा।

गुड़गुड़ाना *अ.क्रि.* (अनु.) गुड़गुड़ शब्द होना।

गुड़ांब *पुं.* (देश.) गुड़ की चाशनी में डाल कर पकाया हुआ कच्चा आम।

गुलगुथना *वि.* (देश.) मोटा ताजा, जिसका बदन खूब भरा और गाल फूले हो।

गुड़-गुड़ *पुं.* (अनु.) हुक्का पीने या आँतों में वायु के संचार से होने वाला शब्द।

गूँजना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. गुनगुनाना 2. भौरों का भनभनाना।

गूँधना *स.क्रि.* (तद्.) आटा आदि को पानी मिलाकर माँड़ना।

गृद्ध (गुद्ध) *पुं.* (तत्.) गृध्र, गिद्ध (पक्षी)।

गृध्रसी *स्त्री.* (तत्.) एक वातरोग जिसमें कमर से एड़ी तक भीषण दर्द होता है।

गृह *पुं.* (तत्.) घर, मकान।

गृह-कार्य *पुं.* (तत्.) 1. घर का काम-काज, घरेलु काम 2. विद्यार्थी को शिक्षक के द्वारा घर पर करने के लिए दिया गया कार्य।

गृह किंकरी *स्त्री.* (तत्.) 1. घरेलू काम करने वाली सेविका 2. दासी।

गृहजन *पुं.* (तत्.) घर के सब लोग, कुटुंबी।

गृहजात *वि.* (तत्.) जो घर में उत्पन्न हो, गृहज जैसे- गृहजात उलझने।

गृहत्याग *पुं.* (तत्.) 1. घर का त्याग 2. विरक्त भाव से घर छोड़कर चले जाना।

गृहत्यागी *वि.* (तत्.) घर त्यागकर जाने वाला *पुं.* वानप्रस्थी या संयासी।

गृहदाह *पुं.* (तत्.) 1. घर में आग लगना 2. ऐसा घरेलू कलह जिससे घर की सुख, शांति आदि नष्ट हो जाए।

गृह-देवता *पुं.* (तत्.) घर का अधिष्ठाता देवता या देवी, कुल-देवता।

गृह-देवी *स्त्री.* (तत्.) गृहस्वामिनी, पत्नी, गृहिणी, भार्या।

गृहपति *पुं.* (तत्.) 1. घर का स्वामी/मालिक 2. अग्नि।

गृहपत्नी *स्त्री.* (तत्.+तद्.) घर की मालकिन, गृहस्वामिनी।

गृह-पशु *पुं.* (तत्+तद्.) पालतु पशु।

गृह-पालित *वि.* (स.) घर में पाला-पोसा हुआ।

गृहपाल *वि.* (तत्.) घर का रक्षक, चौकीदार।

गृह-बलि *स्त्री.* (तत्.) घर में पके अन्न के शेष बचे अंश से नित्य पशु, पक्षी आदि प्राणियों को दिया जाने वाला आहार।

गृह-भूमि *स्त्री.* (तत्.) वह स्थान जिस पर मकान स्थित हो, वास्तु-स्थान।

गृह-प्रवेश *पुं.* (तत्.) नए बने या खरीदे हुए मकान में निवास आरंभ करने से पहले परिवारके साथ किया जाने वाला शास्त्रीय अनुष्ठान और पूजा-पाठ।

गृह (मंत्रालय) *पुं.* (तत्.) राष्ट्र के आंतरिक कार्यों की देखभाल करने वाला कार्यालय, गृहमंत्री का कार्यालय।

गृह-मृग *पुं.* (तत्.) कुत्ता।

गृहमेध *पुं.* (तत्.) गृहस्थ के करने योग्य पाँच यज्ञ।

गृहमेधी *पुं.* (तत्.) पंचयज्ञ करने वाला गृहस्थ।

गृहयुद्ध *पुं.* (तत्.) किसी राज्य के भीतर दो या अधिक गुटों के बीच शासन पर अधिकार/नियंत्रण करने के लिए सैनिक संघर्ष।

गृहलक्ष्मी *स्त्री.* (तत्.) 1. घर की लक्ष्मी/स्वामिनी, पत्नी 2. ऐसी पत्नी जिसकी सुशीलता, बुद्धिमत्ता और कार्यकुशलता के कारण घर में सुख समृद्धि हो।

गृह-वाटिक *स्त्री.* (तत्.) घर से लगा हुआ छोटा बगीचा जिसमें पेड़ लगाते हैं तथा सब्ज़ियाँ उगाते हैं।

गृह-सचिव *पुं.* (तत्.) गृह-मंत्रालय का प्रमुख प्रशासिनक अधिकारी।

गृह-सज्जा *स्त्री.* (तत्.) घर की सजावट।

गृहस्थ *पुं.* (तत्.) विवाहित पुरुष।

गृहस्थाश्रम *पुं.* (तत्.) ब्रह्मचर्य के बाद का आश्रम जीवन।

गृहस्थी *स्त्री.* (तत्.) परिवार और घर की सब जीवनोपयोगी सामग्री।

गृहस्वामिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. घर की मालकिन 2. पत्नी।

गृहस्वामी *पुं.* (तत्.) घर का स्वामी, गृहपति।

गृहागत *वि.* (तत्.) घर आया हुआ *पुं.* अतिथि, मेहमान।

गृहाश्रम *पुं.* (तत्.) गृहस्थाश्रम।

गृहासक्त *वि.* (तत्.) 1. घर-परिवार से बहुत अनुराग रखने वाला 2. हर समय पत्नी, बच्चों आदि की चिंता में डूबा रहने वाला।

गृहिणी *स्त्री.* (तत्.) गृहस्वामिनी।

गृही *पुं.* (तत्.) गृहस्वामी, गृहस्थ व्यक्ति।

गृहीत *वि.* (तत्.) ग्रहण या प्राप्त किया हुआ।

गृहीतार्थ *वि.* (तत्.) जिसने अर्थ समझ लिया है, अर्थ-ज्ञाता।

गृहोद्यान *पुं.* (तत्.) गृह-वाटिका।

गृहोपकरण *पुं.* (तत्.) घर में आवश्यक सामान (वस्त्र, बर्तन आदि)।

गृह्य *वि.* (तत्.) घर में किया जानेवाला कार्य *पुं.* ग्रहण करने योग्य।

गेंड *पुं.* (तद्.) 1. डंठलों आदि से किसान द्वारा बनाया हुआ वह घेरा जिसमें वह अपनी फसल काटकर अनाज रखता है 2. मंडलाकार रेखा, मंडल या घेरा (देश.) ईख के ऊपर के पत्ते, अगौरा, गैड़ा।

गेंड़ना *स.क्रि.* (देश.) 1. गेंड़ बनाना 2. खेतों की सीमा पर चारों ओर मेड़ बनाना 3. खेत आदि को तार आदि लगाकर चारों ओर से घेरना 4. मंडलाकार रोक बनाना।

गेंड़ली *स्त्री.* (तद्.) 1. कुंडली 2. मंडलाकार रेखा या घेरा।

गेंडा *पुं.* (तद्.) एक जंगली पशु जिसके थुथने पर सींग होते हैं और भैंसे से मिलता-जुलता आकार-प्रकार होता है।

गेंड़ा *पुं.* (तद्.) ईख/ऊख के ऊपर के पत्ते, अगौरा 2. गन्ने के छोटे टुकड़े, गँडेरी।

गेंडुआ *पुं.* (तद्.) सिर के नीचे रखने का तकिया 2. लंबा और गोल तकिया, मसनद।

गेंडुरी/गेंडुली *स्त्री.* (तद्.) 1. कुंडली 2. सिर पर घड़ा या कोई बोझा रखने से पहले रखी जाने वाली कपड़े की गोल गद्दी आदि, ईंडुरी।

गेंद *स्त्री.* (तद्.) कपड़ा, रबड़ या लकड़ी आदि की बनी एक छोटी गोलाकार वस्तु जिससे खेलते है।

गेंदई *वि.* (देश.) 1. गेंदे के फूल/पौधे से संबंधित, गेंदे का 2. गेंदे के फूल जैसे रंग का, पीला।

गेंदतड़ी *स्त्री.* (देश.) एक खेल जिसमें खिलाड़ी एक दूसरे को गेंद मारते है।

गेंदबल्ला (गेंदबल्ला) *पुं.* (देश.) 1. गेंद और बल्ला 2. गेंद और बल्ला से खेला जाने वाला खेल।

गेंदा *पुं.* (देश.) पीले, लाल और नारंगी रंग के फूलों वाला एक छोटा पौधा, उक्त पौधे के फूल।

गे *अ.क्रि.* (देश.) गए उदा. प्रात क्रिया करि गे गुरु पाहीं - तुलसी *अव्य.* हे उदा. ननदी गे टि. 'गे' का प्रयोग पूर्वी हिंदी के तिरहुत क्षेत्र में होता है।

गेठ *पुं.* (देश.) गली, मार्ग।

गेज *पुं.* (अं.) 1. माप, नाप, पैमाना 2. रेल की दोनो पटरियों के बीच का अंतर (टि. उक्त अंतर सामान्यत: 56.5 इंच है जिसकी पटरियों को 'बड़ी लाइन' कहते हैं, उससे कम होने पर 'छोटी लाइन'।)।

गेट *पुं.* (अं.) फाटक, द्वार, दरवाजा जैसे- गेट खुला खुला हुआ था 2. प्रवेश-मार्ग, प्रवेश-द्वार।

गेटिस *पुं.* (अं.) मोज़ा बाँधने का फ़ीता।

गेड़ना *अ.क्रि.* (अं.) किसी वस्तु आदि के चारों ओर चक्कर काटना।

गेड़ी *स्त्री.* (देश.) किसी वस्तु के चारों ओर खींची जाने वाली मंडलाकार रेखा।

गेय *पुं.* (तत्.) गाने योग्य, जो गाया जा सके विलो. अगेय।

गेयता *स्त्री.* (तत्.) गाए जाने की योग्यता, गेयत्व।

गेर *स्त्री.* (देश.) ओर।

गेरना *स.क्रि.* (देश.) 1. गिराना 2. डालना।

गेराँब *पुं.* (देश.) 1. चौपायों के गले में बाँधने की रस्सी, पगहा 2. उक्त रस्सी का वह भाग जो गले में रहता है।

गेरुआ *वि.* (तद्.) 1. गेरू के रंग का, भगवा 2. गेरू में रंगा हुआ।

गेरूई *स्त्री.* (देश.) 1. गेरुआ 2. गेहूँ के पौधों में होने वाला एक रोग जो जड़ों में लगे गेरुए रंग के एक कीड़े के कारण होता है।

गेरू *पुं.* (तद्.) एक प्रकार की लाल और कड़ी मिट्टी जो कपड़ों, दीवारों आदि को रँगने में काम आती है।

गेल *अ.क्रि.* (तद्.) गया।

गेला *अ.क्रि.* (तद्.) गया, मुर्ख, गया।

गेली *अ.क्रि.* (तद्.) गयी जैसे- सोता गली वि. 1. गयी-बीती, मूर्ख 2. गयी बीती, तुच्छ उदा. पिया कारण भई गेली -मीरा (पद, 80)।

गेवड़ा *पुं.* (देश.) गाँव के बाहर का मैदान।

गेसू *पुं.* (फा.) केशों की लट, अलक, जुल्फ।

गेस्ट हाउस *पुं.* (अं.) अतिथि-गृह।

गेह *पुं.* (तद्.) गृह, घर, मकान।

गेहनी *स्त्री.* (तद्.) गृहिणी, पत्नी।

गेह-पति *पुं.* (तत्.) गृहस्वामी, गृहपति।

गेहरा *पुं.* (तत्.) घर उदा. तुम बिनु सूनो वाकौ गेहरा -सुरसागर।

गेह शूर *वि.* (तद्.+तत्.) 1. जो घर में वीर हो, बाहर नही 2. कायर।

गेही *वि.* (तद्.) घर में रहने वाला, परिवार वाला *पुं.* गृहस्थ।

गेहुअँन *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार का सर्प जो गेहूँ के रंग का फनवाला और बहुत विषैला होता है 2. विषैला साँप।

गेहुआँ *वि.* (तद्.) गेहूँ जैसे रंग का, गंदुमी *पुं.* गेहूँ जैसा रंग।

गेहूँ *पुं.* (तद्.) 1. एक पौधा जिसकी बालों में छोटे और लंबोतरे बीज/दाने लगते हैं जिनके आटा से बनी रोटी, पूरी आदि खायी जाती है 2. उक्त पौधे के बीज/दाने मुहा. गेहूँ के साथ घुन पिसना 1. बड़ों के साथ में होने के कारण निर्दोष छोटों का भी नाश या हानि होना 2. कुसंगति के कारण नाश/हानि होना।

गैंडग्रीन *स्त्री.* (अं.) ऊतकों को रक्त मिलना बंद होने के कारण अंग के नष्ट होने की स्थिति।

गैंग *पुं.* (अं.) 1. कैदियों, दासों या कर्मियों का जत्था 2. बुरा काम करने वालों का दल, गिरोह।

गैंडा *पुं.* (देश.) 'गेंडा' नामक जंगली पशु।

गैंता (गैंता) *पुं.* (देश.) कुदाल, मिट्टी खोदने का एक उपकरण जिसका लोहे का बना भाग आगे से चौड़ा तथा धारदार होता है।

गै *पुं.* (तद्.) है गै वाहन सघन धन, छत्र धुजा फहराइ- कबीर (साखी) *अ.क्रि.* 1. गया, गयी 2. व्यतीत हो गया/गयी, बीता/बीती।

गैगई *स्त्री.* (देश.) मैना के आकार की एक चिड़िया जिसका रंग फीका धूसर-भूरा होता है तथा आवाज 'केए-केए' जैसी होती है।

गैगहण/गैगहन *वि.* (तत्.) डिंगल आकाश गुँजाने वाला।

गैति *स्त्री.* (तद्.) हाथियों का समूह/झुंड।

गैन *पुं.* (तद्.) 1. गमन, जाना 2. गगन, आकाश।

गैन *पुं.* (तद्.) श्रेष्ठ हाथी, गजेंद्र *वि.* (देश.) छोटे कद का नाटा पुं. नाटा बैल *स्त्री.* (फा.) फारसी वर्णमाला का एक वर्ण जिसकी ध्वनि 'ग' होती है जैसै- 'गरीब' शब्द 'गैन' से लिखी जाता है।

गैना *पुं.* (देश.) आभूषण, गहना *वि.* छोटे कद का/नाटा पुं. नाटा बैल।

गैडोलीनियम *पुं.* (अं.) एक धातु (रसायन) एक धात्विक तत्व।

गैनी *वि.* (तत्.) छोटे कद की, नाटी।

गैब *पुं.* (अर.) 1. परोक्ष 2. अदृश्य लोक, परलोक 3. भाग्य।

गैबर्डीन *पुं.* (अं.) एक विशेष प्रकार का कुछ मोटा कपड़ा जो सूती/ऊनी दोनो प्रकार का होता है।

गैबर *पुं.* (देश.) एक चिड़िया जिसकी चोंच और पैर लाल होते है तथा दुम काली होती है।

गैबी *वि.* (अर.) गैब से संबंधित 1. परोक्ष की 2. परलोक की 3. देवी 4. गुप्त 5. नया और अपरिचित 6. किसी अज्ञात जगह से लाया हुआ।

गैयर *वि.* (तद्.) गजवर, गजेंद्र।

गैयर *वि.* (देश.) गाय जैसा सरल स्वभाव का जैसे- गैयर आदमी।

गैया *स्त्री.* (तद्.) गाय, गऊ।

गैर *स्त्री.* (देश.) गली, मार्ग *पुं.* (देश.) स्थान, ठौर 2. आश्रय *वि.* (अर.) अन्य, दूसरा, पराया।

ग़ैरत *स्त्री.* (अर.) 1. लज्जा, शर्म 2. स्वाभिमान।

गैरिक *पुं.* (तद्.) 1. गेरू 2. स्वर्ण, सोना।

गैरियत *स्त्री.* (अर.) 1. गैर होने की अवस्था/भाव, परायापन 2. आत्मीयता का अभाव।

गैल *स्त्री.* (देश.) 1. मार्ग, रास्ता 2. गली।

गैलन *पुं.* (अं.) द्रवों के आयतन की एक इकाई टी. सामान्यतः 1 गैलन 4.55 लिटर।

गैलरी *स्त्री.* (अं.) दीर्घा, दालान जैसे- दर्शक-गैलरी।

गैला *पुं.* (देश.) 1. बैलगाड़ी आदि के पहियों की लीक 2. बैलगाड़ी आदि के चलने का मार्ग 3. यात्री, पथिक *अ.क्रि.* गया *वि.* गया-बीता, तुच्छ।

गैलियम *पुं.* (अं.) एक धातु (रसायन) एक धात्विक तत्व।

गैली *अ.क्रि.* (देश.) गयी जैसे- लड़की गैली वि. गयी-बीती, तुच्छ जैसे- गैली दुनिया

गैली *स्त्री.* (अं.) 1. धातु की एक लंबी आयताकार रकाबी जो ऊपर से खुली होती है तथा जिसमें यष्टिक (अ.स्टिक) से अक्षरसंयोजित की गयी सामग्री लाकर रखी जाती है 2. उक्त में लगभग 20 इंच सामग्री आ सकने के कारण सामग्री के माप के रूप में प्रयुक्त इकाई।

गैलेक्सी *स्त्री.* (अं.) (खगोल.) एक तारामंडल जो अन्य तारामंडलों से आकाश गंगा जैसे विस्तृत आकाशीय क्षेत्रों द्वारा अलग रहता है परंतु स्वयं गुरुत्वाकर्षण द्वारा संघटित बना रहता है।

गैस *पुं.* (अं.) किसी भी पदार्थ का वायवीय रूप जैसे- हाइड्रोजन गैस।

गैस मास्क *पुं.* (अं.) मुख तथा श्वास प्रणाली को विषैली गैसों से बचाने वाला मुखौटा।

गैस (सिलिंडर) *पुं.* (अं.) गैस का बेलनाकार खोखला पात्र जिसमें आक्सीजन गैस आदि भरते हैं।

गैसा *वि.* (देश.) गया-सा, गया-गुज़रा, बुरा 2. मलिन, कपटी।

गो *स्त्री.* (तत्.) 1. गौ, गाय जैसे- गोशाला 2. इंद्रिय उदा. माया गुन गो पार *वि.* (फा.) जानने/कहने/बोलने/समझने वाला या व्याख्या करने वाला जैसे- कानूनगों; किस्सागो।

गोइ/गोय *क्रि.वि.* (तद्.) छिपाकर उदा. रहिमन निज मन की विथा, मन ही राखो गोय। -रहीम

गोमा *स्त्री.* (देश.) गोमती नदी।

गोमाता *स्त्री.* (तत्.) गो-माता, गऊ माता, मातृतुल्य गोजाति 2. ग्रोवंशली आदिमाता 3. कश्यप की पत्नी जिसका नाम सुरभि था।

गोमाय *पुं.* (तद्.) दे. गोमायु।

गोमायु *पुं.* (तत्.) 1. सियार, गीदड़, शृंगला 2. एक गंधर्व का नाम 3. एक प्रकार का मेंढक 4. गाय की खाल।

गोमुख *पुं.* (तत्.) गौ का मुँह 2. मगर नामक जलजंतु 3. नरसिंहा नामक एक बाजा 4. योग में एक प्रकार का आसन 5. यक्ष का नाम *वि.* गौ के समान मुँह वाला जैसे गोमुख संधि या मेंध।

गोमुखी *स्त्री.* (तत्.) ऊन आदि की बनी हुई एक प्रकार की थैली जिसमें हाथ रख कर जप करते समय माला फेरते हैं टि. इसका आकार गाय के मुख का-सा होता हैं, इसे जपमाली कहते है 2. गंगा का उद्गम स्थान जो गौ के मुख के आकार आकार का है।

गोमेद *पुं.* (तत्.) 1. गोमेद मणि 2. शीतल चीनी, कबाव चीनी।

गोमेदक *पुं.* (तत्.) एक प्रसिद्ध मणि जिसकी गणना नौ रत्नों में होती है 2. काकोल नामक विष जो काला होता है 3. पत्रक नामक साग 4. अंगराग लेपन।

गोमेध *पुं.* (तत्.) अश्वमेध के ढंग का एक यज्ञ टि. इसमें गौ से हवन किया जाता था, इसका अनुष्ठान कलयुग में वर्जित है, इसे गोसल यज्ञ भी कहते हैं मनु के अनुसार ब्रह्म हत्या के प्रायश्चित के लिए और गोभिल गृह्य सूत्र के अनुसार पुष्टिकामना से इस यज्ञ का अनुष्ठान होता है।

गोयंद *पुं.* (तद्.) दे. गोविंद।

गोय *पुं.* (फा.) गेंद।

गोया *अव्य.* (फा.) मानो प्रयो. आप तो ऐसे कह रहे हैं, जैसे गोया आप वहाँ थे ही नही।

गोर *पुं.* (अर.) फ़ारस देश के एक प्रांत का नाम।

गोर *पुं.* (तद्.) गोरा, उज्ज्वल वर्ण का, सफेद।

गोरक्ष *पुं.* (तत्.) ग्वाला 2. गोरक्षण 3. नारंगी 4. नेपाल देश का निवासी।

गोरक्षक *वि.* (तत्.) 1. गायों की रक्षा करने वाला *पुं.* 1. गोपालक 2. ग्वाला।

गोरख *पुं.* (तद्.) दे. गोरखनाथ।

गोरखधंधा *पुं.* (देश.) 1. कई तारो, कड़ियों या लकड़ी के टुकड़ों इत्यादि का समूह जिसे जोड़ने के लिए विशेष् बुद्धि बल की आवश्यकता होती है, ऐसा झंझट या बखेड़ा जिससे जल्दी छुटकारा न हो।

गोरखनाथ *पुं.* (तद्.) एक प्रसिद्ध अवधूत जो 15 वी शताब्दी में हुए थे ये अवधूत बहुत सिद्ध माने जाते है और इनका चलाया हुआ संप्रदाय अब तक जारी है, गोरखपुर इनका प्रधान निवास स्थान था और वहीं इन्होंने सिद्धि प्राप्त की थी।

गोरखपंथ *पुं.* (तद्.) गोरखनाथ का चलाया हुआ संप्रदाय जिसे नाथ संप्रदाय भी कहते हैं।

गोरखपंथी *पुं.* (तद्.) गोरखनाथ का अनुगामी, गोरखनाथ के द्वारा चलाए हुए संप्रदाय वाला।

गोरखर *पुं.* (फा.) गधे की जाति का एक जंगली पशु जो गधे से बड़ा और घोड़े से छोटा होता है तथा यह पश्चिमी भारत, मध्य और पश्चिमी एशिया में पाया जाता है, यह बहुत चौकन्ना और तेज धावक होता है।

गोरखा *पुं.* (तद्.) 1. नेपाल के अंतर्गत एक प्रदेश 2. इस प्रदेश का निवासी।

गोरखाली *पुं.* (देश.) नेपाल में स्थित गोरखा नामक प्रदेश *स्त्री.* (देश.) नेपाली भाषा का नाम।

गोरखी *स्त्री.* (देश.) दे. गोरख ककड़ी।

गोरज *पुं.* (तत्.) गौ के खुरों से उड़ती हुई पवित्र धूल।

गोरण *पुं.* (तत्.) उद्योग, अध्यवसाय।

गोरसर *पुं.* (देश.) वह पतली लचीली तीली जिसे बांस के पंखों की डंडी के आसपास देकर बंधन से जकड़ देते हैं।

गोरसा *पुं.* (तद्.) वह बच्चा जो गाय के दूध से पला हो।

गोरसी *स्त्री.* (तत्.) दूध गर्म करने की अंगीठी, बोरसी टि. प्राचीन काल में प्रत्येक घर में गोरसी हुआ करती थी, गांवों में आज भी घर-घर गोरसी पाई जाती है।

गोरा *पुं.* (तद्.) फिरंगी, अमेरिका, यूरोप आदि देशों का निवासी।

गोरा *पुं.* (तद्.) सफेद और स्वच्छ वर्णवाला (मनुष्य) जिसके शरीर का चमड़ा सफेद और साफ़ हो।

गोरा *स्त्री.* (फा.) वह गढ्ढा जिसमें मृत शरीर गाड़ा जाए।

गोराधार *पुं.* (देश+तत्.) मूसलाधार।

गोरिका *स्त्री.* (तत्.) दे. गोराहिका।

गोरिल्ला *पुं.* (अफ्रीका) चिंपैंजी जाति का एक बहुत बड़े आकार का बनमानुस।

गोरी *स्त्री.* (तद्.) सुंदर और गौर वर्ण की स्त्री, रूपवती (फा.) गोर निवासी, ग़र का बशिंदा *पुं.* ग़र निवासी, शहबुद्दीन गोरी।

गोरू *पुं.* (तद्.) 1. सींगवाला पशु, गाय, बैल, भैस इत्यादि चौपाया मवेशी 2. दो कोस की दूरी।

गोरोचन *पुं.* (तत्.) पीले रंग का एक प्रकार का सुगंध द्रव्य जो गौ के ह्दय के पास पित्त में से निकलता है।

गोर्द *पुं.* (तत्.) मस्तिष्क।

गोलंदाजी *स्त्री.* (फा.) तोप के गोले चलाने का काम या कला।

गोल *पुं.* (तत्.) जिसका घेरा वृत्ताकार हो, चक्र के आकार का प्रयो. गाड़ी का पहिया गोल होता है, गोल-गोल बातें न किया करो। *पुं.* (तत्.) 1. मंडलाकार क्षेत्र, वृत्त, गोलाकार पिंड, गोलक 3. गोल यंत्र 4. विधवा का जारज पुत्र 5. मुर नाम की ओषधि 6. मदन नाम का वृक्ष, मैनफल का पेड़ 7. मंडली,झुंड समूह 8. उपद्रव, खलबली, गड़बड़, गोलमाल प्रयो. यहाँ सब गोलमाल है (अं.) हॉकी फुटबाल आदि में वह स्थान जहाँ गेंद पहुँचा देने से विराधी पक्ष की जीत हो जाती है।

गोलक *पुं.* (तत्.) 1. गोलोक 2. गोलपिंड 3. विधवा का जारज पुत्र 4. मिट्टी का बड़ा कुंज 5. इत्र 6. आँख का डेला।

गोलदाज *पुं.* (फा.) लेप में गोला रख कर चलाने वाला। लोप में बत्ती देनेवाला।

गोलगप्पा *पुं.* (देश.) तेल या घी में तला हुआ छोटा और फूला हुआ आटे या सूजी का वह गोलाकार करारा खाद्य पदार्थ जिसमें उबले हुए चने या आलू भरकर खट्टे-मीठे पानी के साथ खाया जाता है, एक छोटी और पतली करारी फुलकी जिसे खटाई के रस में डुबो कर खाते हैं।

गोलमाल *पुं.* (तत्.+अर.) गड़बड़ अव्यवस्था।

गोलमिर्च *स्त्री.* (देश.) काली मिर्च।

गोलमेज कान्फ्रेंस *स्त्री.* (अं.) दे. राउंड टेबल कान्फ्रेंस।

गोलयंत्र *पुं.* (तत्.) वह यंत्र जिससे सूर्य चंद्र, पृथ्वी आदि की स्थिति, नक्षत्रों की गति और अयन परिवर्तन आदि जाने जाते हैं।

गोलयोग *पुं.* (तत्.) ज्योतिष में एक योग जो एक राशि में किसी के मत में छह और किसी के मत से सात ग्रहों के एकत्र होने से होता है 2. गड़बड़ 3. गोलमाल टि. पालित ज्योतिष के अनुसार इसका फल दुर्भिक्ष और राष्ट्र तथा राजाओं का नाश है।

गोलविद्या *स्त्री.* (तत्.) ज्योतिष विद्या का वह अंग अंग जिससे पृथ्वी की गोलाई, आकार, विस्तार, चाल, ऋतु परिवर्तन आदि बातें जानी जाती है, आकाशीय पिंडों का हाल-चाल जानना भी इसी के अंतर्गत आता है।

गोलहोत *पुं.* (देश.) क्षत्रियों की एक जाति।

गोला *पुं.* (देश.) 1. गेंद के सदृश गोल या गोलाकार रचना 2. तोप से फेंका जाने वाला गोल पिंड 3. बम नामक विस्फोटक पदार्थ गणि. तीन विमों की ऐसी आकृति जिसके पृष्ठ के सभी बिंदु उसके केंद्र में त्रिज्या की दूरी पर होते हैं, गोल *स्त्री.* बच्चों के खेलने की गेंद 2. जल रखने का मटका 3. गोदावरी नदी का एक प्राचीन नाम जैसे- गोला-चलाना, गोला फेकना, गोला-बरसाना।

गोलाई *स्त्री.* (देश.) गोल होने का भाव, गोलपन।

गोलाकार *वि.* (तत्.) जिसका आकार गोल हो, गोल शक्लवाला।

गोलाकृति *पुं.* (तत्.) गोलाकार।

गोलाध्याय *पुं.* (तत्.) भास्कराचार्य का एक ग्रंथ जिसमें भूगोल और खगोल का वर्णन है।

गोलाबारी *स्त्री.* (देश.+फा.) तोप से होने वाली गोलों की वर्षा।

गोलाबारूद *स्त्री.* (देश.+फा.) तोप के गोले और बारूद 2. युद्धसामग्री।

गोलार्ध *पुं.* (तत्.) पृथ्वी का आधा भाग जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक बीचों-बीच काटने से बनता है।

गोलास *पुं.* (तत्.) कुकुरमुत्ता, छत्रक।

गोलासन *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की तोप।

गोलियाना *पुं.* (देश.) किसी चीज को गोल आकार का करना, गोल बाँधना, छोटी-छोटी गोलियाँ बनाना।

गोली *स्त्री.* (तद्.) छोटा गोलाकार पिंड, वाटिका, वटी।

गोलीय *पुं.* (तत्.) 1. गोल विषयक 2. खगोल भूगोल आदि से संबंधित।

गोलोकवास *पुं.* (तत्.) स्वर्गवास, देहांत।

गोलैंदा *पुं.* (देश.) महुए का फल, कोइँदा।

गोल्डन *पुं.* (अं.) सोने का, सोने के रंग का सुनहरा।

गोल्फ *पुं.* (अं.) एक प्रकार का खेल जो डंडे और गेंद से खेला जाता है।

गोवध *पुं.* (तत्.) गो को मारना, गो की हत्या करना।

गोवना *पुं.* (तद्.) दे. गोना।

गोवर *पुं.* (तत्.) गोबर का चूर्ण।

गोवरधन *पुं.* (तद्.) दे. गोवर्धन।

गोवर्धन *पुं.* (तत्.) पर्वत का नाम, जिसे कृष्ण भगवान ने अपनी उंगली पर उठाया था 2. गौओं का पालन, रक्षण और वृद्धि करने का काम।

गोविंद *पुं.* (तत्.)1.श्रीकृष्ण 2. वेदांत वेत्ता 3. तत्वज्ञ 4. बृहस्पति 5. शंकराचार्य के गुरू का नाम 6. सिक्खों के दसवें गुरु 7. परब्रह्म 8. गोशाला का मालिक।

गोविंदपद *पुं.* (तत्.) मोक्ष, निर्वाण।

गोविंदपाद/गोविंदाचार्य *पुं.* (तत्.) शंकराचार्य के गुरु।

गोवैद्य *पुं.* (तत्.) 1. नीम हकीम, अज्ञानी वैद्य 2. 2. पशुओं की चिकित्सा करने वाला वैद्य।

गोश *पुं.* (फा.) सुनने की इंद्रिय, कान।

गोशा *पुं.* (फा.) 1. कोना, अंतराल, कोण 2. एका।

गोश्त *पुं.* (फा.) माँस, आमिष।

गोष्ठी *स्त्री.* (तत्.) 1. बहुत से लोगों का समूह, सभा, मंडली 2. वार्तालाप, बातचीत 3. परामर्श, सलाह 4. एक ही अंक का वह रूपक या नाटक जिसमें पाँच या सात स्त्रियाँ और नौ या दस पुरुष हो।

गोष्पद *पुं.* (तत्.) गौओं के रहने का स्थान, गोष्ठ 2. गौ के खुर से बना गड्ढा।

गोस *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का झाड़ जिसमें से गोंद निकलता है 2. प्रातःकाल से दो घड़ी पहले का समय 3. ग्रीष्म ऋतु 4. लोबान।

गोसा *पुं.* (तद्.) गोइँठा, उपला, कंडा।

गोसाईं *पुं.* (तद्.) गौओं का स्वामी 2. स्वर्ग का मालिक 3. संन्यासियों का एक संप्रदाय जिसके दस भेद होते हैं और जिसे दशनाम् भी कहते हैं 4. विरल साधु, अतीत 5. वह जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो।

गोसी *पुं.* (देश.) समुद्र में चलने वाली एक प्रकार की नाव जिसमें 2 से लेकर 7 तक मस्तूल होते हैं।

गोसुत *पुं.* (तत्.) गौ का बच्चा, बछड़ा।

गोसूक्त *पुं.* (तत्.) अथर्ववेद का वह अंश जिसमें ब्रह्मांड की रचना का गौ के रूप में वर्णन किया गया हो, गोदान के समय इसका पाठ किया जाता है।

गोस्तन *पुं.* (तत्.) 1. गाय का थन 2. कली आदि का गुच्छा 3. चार लड़ी का मोती का हार 4. एक प्रकार का दुर्ग।

गोस्वामी *पुं.* (तत्.) 1. वह जिसने इंद्रियों को वश में कर लिया हो, जितेंद्रिय 2. वैष्णव संप्रदाय में आचार्यों के वंशधर या उनकी गद्दी के अधिकार 3. गायों को पालने वाला व्यक्ति, गोपालक।

गोह *स्त्री.* (तद्.) छिपकली की जाति का एक जंगली जंतु जो आकार में नेवले से कुछ बड़ा होता है, यह दो प्रकार की होती है- चंदन गोह और पटरा गोह जो बड़ी और चपटी होती है टि. चंदन गोह की दीवार पर पकड़ बहुत मजबूत होती है, चंदन गोह का प्रयोग रस्सी बाँधकर दीवार पर फेंक ऊपर चढ़ने में करते हैं।

गोहत्या *स्त्री.* (तत्.) गोवध।

गोहन *पुं.* (तद्.) 1. संग रहनेवाला, साथी जैसे- गोहन लगुआ-दूसरा पति करनेवाली स्त्री के साथ जानेवाला पूर्व पति से उत्पन्न लड़का।

गोहर *स्त्री* (तद्.) बिसखोप नामक विषैला जंतु।

गोहरा *स्त्री.* (तद्.) सुखाया हुआ गोबर जो जलाने के काम आता है, उपला, कंडा।

गोहराना *पुं.* (देश.) पुकारना, बुलाना।

गोहरौर *पुं.* (देश.) पाथ कर रखे हुए कंडों का ढेर।

गोहलोत *पुं.* (तत्.) क्षत्रियों की एक जाति।

गोहार *स्त्री.* (तत्.) 1. पुकार, दुहाई, रक्षा के लिए चिल्लाना मुहा. गोहार मारना- सहायता के लिए पुकार मचाना; गोहार लड़ना-सबको ललकारना 2. एक आदमी का कई आदमियों से लड़ना।

गोहिर *पुं.* (तत्.) एंड़ी।

गोही *पुं.* (देश.) 1. दुराव-छिपाव 2. छुपी हुई बात, गुप्तवार्ता।

गोहेरा *पुं.* (तद्.) बिसखोपरा नामक विषैला जंतु।

गौंजिक *पुं.* (तत्.) 1. स्वर्णकार 2. जौहरी।

गौंहा *पुं.* (तद्.) गाँव सम्बन्धी, गांव का, देहाती।

गौ *पुं.* (तत्.) गाय *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रयोजन सिद्ध होने का स्थान या अवसर, सुयोग, मौका, घात, दांव, गौ घात-उपयुक्त अवसर, मौका मुहा. गौं गाठना- अपना मतलब निकालना, स्वार्थ साधना; गौ निकालना- काम निकालना; गौं पड़ना- काम पड़ना 3. ढब, चाल।

गौगा *पुं.* (तद्.) 1. शोर-गुल 2. जन श्रुति, अफवाह।

गौट *पुं.* (देश.) एक प्रकार का छोटा वृक्ष।

गौड़ *पुं.* (तत्.) 1. वंग देश का एक प्राचीन विभाग, जो किसी के मत से मध्य बंगाल से उड़ीसा की उत्तरी सीमा तक और किसी के मत से वर्तमान बर्दबान के आसपास था विशे. कूर्मपुराण आदिलिंग पुराण से जाना जाता है कि वर्तमान गोंडा के आसपास का प्रदेश, जिसकी राजधानी श्रावस्ती थी, गौंड प्रदेश कहलाता था, कौशाम्बी को भी इसी प्रदेश के अंतर्गत लिखा है 2. स्कन्द पुराण में लिखा है ब्राह् मणों की एक कोटि जिसमें सारस्वत, कान्यकुब्ज, उत्कल, मैथिल और गौड़ सम्मिलित है 3. ब्राह्मणों की एक जाति जो पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली के आसपास तथा राजपूताने में पाई जाती है 4. गौड़ प्रदेश का निवासी 5. 36 प्रकार के राजपूतों में से एक जो उत्तर पश्चिम भारत में अधिकता से पाए जाते हैं 6. राजतरंगिणी में पंच गौंड शब्द आया है जिससे जान पड़ता है कि किसी समय पांच गौंड प्रदेश थे 7. दसवी और ग्यारहवी शताब्दी के चेदिराजाओं के ताम्रपत्रों आदि शिलालेखों से पता चलता है कि वर्तमान गोंडवाना के पास का देश भी गौंड़ कहलाता है।

गौड़नट *पुं.* (तत्.) संगीत में गौड़ और नट के योग से बना हुआ एक संकर राग।

गौड़पाद *पुं.* (तत्.) स्वामी शंकराचार्य के गुरु थे जिन्होंने मांडूक्योपनिषद् पर कारिका लिखी थी और सायव्य कारिका का भाष्य लिया था।

गौड़िक *पुं.* (तत्.) 1. गुड़ से संबंधित 2. गुड़ुआ।

गौड़िया *पुं.* (तद्.) 1. गौड़ देश का, गौड़ देश से संबंधित 2. गौड़िया संप्रदाय-चैतन्य महाप्रभु का चलाया हुआ वैष्णव संप्रदाय।

गौड़ी *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की मदिरा जो गुड़ से बनती है, वैधक में इसे वात और पित्तनाशक, बल और कांतिवर्द्धक और रूचिकर कहा है 2. काव्य में एक एक प्रकार की वृत्ति जिसे परुषा भी कहते हैं, यह ओजगुण प्रधान होती है इसमें 'टवर्ग' और संयुक्त अक्षर अथवा समास अधिक आते हैं, विशेष: कुछ लोग इसे कल्याण राग का एक भेद मानते है, यह वीर और शृंगार रस के वर्णन के लिए बहुत उपयुक्त होती है।

गौड़ीय *पुं.* (तत्.) गौड़ देश का व्यक्ति।

गौड़ीय भाषा *स्त्री.* (तत्.) बँगला भाषा।

गौड़ेश्वर *पुं.* (तत्.) कृष्ण चैतन्य स्वामी जिन्हें गौरांग महाप्रभु भी कहते हैं।

गौण *पुं.* (तत्.) 1. जो प्रधान या मुख्य न हो 2. सहायक, संचारी 3. गुण संबंधी।

गौणिक *वि.* (तत्.) जिससे वाच्य का गुण प्रकाशित हो, गुणद्योतक 2. सत्, रज, तम आदि आदि गुणों से संबंध रखनेवाला 3. गुणी 4. एक प्रकार के बोरे या गौण से संबंध रखनेवाला।

गौणी *स्त्री.* (तत्.) अप्रधान, साधारण जो मुख्य न हो।

गौतम *पुं.* (तत्.) 1. गौतम ऋषि के वंशज 2. न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य और प्रणेता एक ऋषि टि. ये ईसा से प्राय: 600 वर्ष पूर्व हुए थे 3. रामायण, महाभारत और पुराणों आदि के अनुसार एक ऋषि टि. इन्होंने अपनी स्त्री अहिल्या को इंद्र के साथ अनुचित संबंध रखने के संदेह के कारण शाप दे कर पत्थर बना दिया था, जिसका उद्धार भगवान राम ने किया था 4. बुद्धदेव का नाम 5. एक पर्वत का नाम 6. सप्तर्षिमंडल के

ताराओं में से एक टि. यह नासिक के पास है और इसमें से गोदावरी नदी निकलती है 7. क्षत्रियों का एक भेद 8. भूमिहारों का एक भेद 9. एक ऋषि जिन्होंने स्मृति बनाई है 10. एकविष 11. गौतम ऋषि के पुत्र शतानंद 12. कृपाचार्य।

गौतमी *पुं.* (तत्.) 1. गौतम ऋषि की स्त्री अहिल्या 2. कृपाचार्य की स्त्री जो प्रसिद्ध तपस्विनी थी 3. 3. गोदावरी नदी जो गौतम नामक पर्वत से निकली है 4. गौतम ऋषि की बनाई हुई स्मृति 5. बुद्ध के उपदेश 6. गोरोचन।

गौद *पुं.* (देश.) दे. घोद।

गौनई *स्त्री.* (देश.) 1. गान 2. संगीत।

गौनई *स्त्री.* (देश.) जिसका गौना हाल ही में हुआ हो।

गौनहार *स्त्री.* (देश.) वह स्त्री जो दुल्हिन के साथ उसके ससुराल जाए।

गौनहारी *स्त्री.* (तद्.) गानेवाली स्त्रियाँ जो समूह में में गाती हों, ये प्रायः छोटी जाति की होती हैं, ये स्त्रियाँ गायन को पेशा बना लेती हैं।

गौना *पुं.* (तद्.) विवाह के बाद की एक रस्म जिसमें वर अपने ससुराल जाता है और कुछ रीति-रस्म पूरी करके वधू को अपने साथ ले आता है, द्विरागमन, मुकलावा मुहा. गौना देना- वधू को वर के साथ पहिले-पहल ससुराल भेजना; गौना लाना- वर का अपने ससुराल जाकर वधू को अपने साथ ले आना टि. पूरब में 'गौने जाना, गौने का आना' आदि भी बोलते हैं।

गौपुच्छ *वि.* (तत्.) गाय की एक पूँछ के समान।

गौप्तेय *पुं.* (तत्.) वैश्य स्त्री का पुत्र।

गौमुखी *स्त्री.* (तत्.) गौ के मुख के आकार की बनी हुई थैली जिसमें माला रखकर जप करते हैं।

गौमेद *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का रत्न जो चार रंग का होता है. श्वेत, पीताभ, लाल और गहरा नीला, इसकी गणना उप रत्नों में होती है।

गौर *पुं.* (तत्.) 1. गोर चमड़े वाला, श्वेत, उज्ज्वल, सफेद 2. लाल रंग 3. पीला रंग 4. चंद्रमा 5. धव का पेड़ 6. सोना 7. याज्ञवल्क्य के अनुसार एक प्रकार का बहुत छोटा मान जो तोलने के काम आता है, और प्रायः तीन सरसों के दानों के बराबर होता है 7. केसर 8. एक प्रकार का मृग जिसके खुर बीच में सफेद नहीं होते 9. सफेद सरसों 10. चैतन्य महाप्रभु का एक नाम 11. एक पर्वत जो ब्रह्मांडपुराण के अनुसार कैलास के उत्तर में है 12. एक प्रकार का भैंसा 13. बृहस्पतिग्रह *स्त्री.* पार्वती

ग़ौर *पुं.* (अर.) 1. सोच-विचार करना, चिंतन 2. ख्याल, ध्यान, ग़ौर से-ध्यानपूर्वक।

गौरक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का धान।

गौरग्रीव *पुं.* (तत्.) पुराणानुसार एक देश जो कूर्म्म विभाग के मध्य में है।

गौरचंद्र *पुं.* (तत्.) महाप्रभु-चैतन्य देव।

ग़ौरतलब *पुं.* (अर.) गौर करने योग्य, विचारणीय।

गौरबासन *पुं.* (तत्.) गौरवपूर्ण पद, सम्मानित पद।

गौरव *पुं.* (तत्.) 1. बड़प्पन, महत्व 2. गुरुता, भारीपन।

गौरवशाली *पुं.* (तत्.) गौरवमय।

गौरवान्वित *पुं.* (तत्.) सम्मान प्राप्त, गौरवयुक्त।

गौरवित *वि.* (तत्.) गौरवान्वित, सम्मानपूर्ण।

गौरांग *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. श्री कृष्ण 3. चैतन्य महाप्रभु *वि.* गोरे अंग या शरीर वाला।

गौरांगी *स्त्री.* (तत्.) 1. गोरी, सुंदरी।

गौरा *स्त्री.* (तत्.) गोरे रंग की स्त्री 2. पार्वती 3. हल्दी 4. संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

गौराटिका *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार का कौआ।

गौरार्द्रक *पुं.* (तत्.) अफीम, संखिया, कनेर आदि स्थावर विष।

गौरास्य *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का बंदर जिसके शरीर का रंग काला और मुँह गोरे रंग का होता है।

गौराहिक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का साँप।

गौरि *पुं.* (तत्.) आंगिरस ऋषि।

गौरिक *स्त्री.* (तत्.) गोरा वि. सफेद सरसों।

गौरिका *स्त्री.* (तत्.) क्वांरी लड़की, गौरी।

गौरिल *पुं.* (तत्.) 1. सफेद सरसो 2. लौह चूर्ण 3. लोहे का चूरा।

गौरिष्य *पुं.* (तद्.) 1. शिव, महादेव।

गौरी *स्त्री.* (तत्.) 1. गोरे रंग की स्त्री 2. पार्वती 3. 3. आठ वर्ष की कन्या दूब 5. दारूहल्दी 6. तुलसी 7. गोरोचन 8. सफेद दूब 9. सफेद रंग की गाय 10. मजीठ, गंगा नदी 11. चमेली 12. सोन कदली 13. प्रियंगु नामक वृक्ष 14. पृथ्वी 15. बुद्ध की एक शक्ति का नाम 16. शरीर की एक नाड़ी 17. एक बहुत प्राचीन नदी जो पूर्वकाल में भारत की पश्चिमोत्तर सीमा पर थी और जिसका वर्णन वेदों और महाभारत में आया है 18. गुड़ से बनी हुई शराब, गौड़ी 19. वरुण की पत्नी 20. 20. वाणी 21. एक प्रकार का राग जिसे गौरी राग कहते है 22. अनाहद चक्र की आठवी मात्रा।

गौरीशंकर *पुं.* (तत्.) 1. महादेव, शिव 2. हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी का नाम।

गौरीशिखर *पुं.* (तत्.) हिमालय पर्वत की वह चोटी जिस पर पार्वती ने तपस्या की थी।

गौरीसर *पुं.* (तद्.) हंसराज नाम की बूटी, सेंमलपत्ती।

गौरैया *स्त्री.* (देश.) दे. गौरिया *पुं* मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का छोटा हुक्का।

गौलक्षणिक *पुं.* (तत्.) गाय बैलों के अच्छे बुरे लक्षणों को पहचानने वाला।

गौला *स्त्री.* (तद्.) गौरी, पार्वती, गिरिजा।

गौलिक *पुं.* (तत्.) 1. मुष्कक नामक वृक्ष 2. एक प्रकार का लोध।

गौल्मिक *पुं.* (तत्.) 30 सिपाहियों का नायक या अफ़सर।

गौल्य *पुं.* (तत्.) 1. शरबत 2. शराब।

गौशतिक *पुं.* (तत्.) सौ गायों का रखने वाला।

गौशृंग *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का समगान।

गौष्ठीन *पुं.* (तत्.) पुरानी गौशाला का स्थान।

गौसम *पुं.* (फा.) कोसम का पेड, कोसम पेड़ की लकड़ी।

गौसहस्रक *पुं.* (तत्.) सहस्र गाएँ रखने वाला या पालनेवाला।

गौहर *पुं.* (फा.) 1. मुक्ता, मोती, जौहर।

ग्मा *स्त्री.* (तत्.) पृथ्वी।

ग्यामन *स्त्री.* (देश.) दे. गामिन।

ग्यारस *स्त्री.* (तद्.) एकादशी तिथि।

ग्यारह *पुं.* (तद्.) दस और एक, दस और एक की सूचक संख्या जो इस प्रकार (11) लिखी जाती है।

ग्रंथ *पुं.* (तत्.) 1. पुस्तक, किताब 2. गाँठ, ग्रथिन।

ग्रंथकर्ता *पुं.* (तत्.) पुस्तक बनानेवाला 2. पुस्तक लिखने वाला।

ग्रंथकार *पुं.* (तत्.) दे. ग्रंथकर्ता।

ग्रंथन *पुं.* (तत्.) 1. दो चीजों को इस प्रकार जोड़ना कि गाँठ पड़ जाए 2. जोड़ना 3. गूँथना।

ग्रंथमाला *स्त्री.* (तत्.) एक ही स्थान से समय-समय पर प्रकाशित होने वाली एक ही प्रकार अथवा वर्ग की अनेक पुस्तकों की अवली या शृंखला।

ग्रंथलिपि *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की लिपि जो दक्षिण में प्रचलित है टि. भारतीय प्राचीन लिपिमाला की भूमिका में इसके संबंध में कहा गया है कि यह लिपि मद्रास के इहाते के उत्तरी और दक्षिणी आर्कट, सलेम, त्रिचनापल्ली, मदुरा और तिन्नेवेल्लि ज़िलो में मिलती है ई.स. की सातवीं शताब्दी से 15 वी शताब्दी तक इसके कई रूपांतर होते हुए इससे वर्तमान ग्रंथलिपि बनी और उससे वर्तमान मलयालम आदि तुलु लिपियाँ निकली।

ग्रंथांतर *पुं.* (तत्.) अन्यग्रंथ, भिन्न ग्रंथ।

ग्रंथागार *पुं.* (तत्.) 1. पुस्तकालय 2. वह स्थान जहां विविध विषयों की पुस्तकें एकत्र हो।

ग्रंथान *वि.* (अ.) ग्रंथन 1. गूंथने की क्रिया 2. एक जगह नत्थी करना 3. जमा करना।

ग्रंथावलि *स्त्री.* (तत्.) ग्रंथालय, ग्रथमाला।

ग्रंथावलोकन *पुं.* (तत्.) ग्रंथ का अध्ययन।

ग्रंथि *स्त्री.* (तत्.) 1. गाँठ 2. बंधन 3. मायाजाल 4. कुटिलता, टेढ़ापन 5. एक प्रकार का रोग जो खून बिगड़ जाने के कारण होता है और जिसमें गोल गाँठों की तरह सूजन हो जाती है, ये गाँठे प्रायः पक जाती है और चिरवानी पड़ती है 6. आलू 7. भद्रमोथा 8. ग्रथापर्जी 9. गुठली 10. ईख, बाँस आदि की गाँठ 11. शरीर के अंगों का जोड़ 12. शरीर के अंदर की वे गाँठे जिनसे एक प्रकार का रस स्राव होता रहता है 13. अंटी 14. गिरह।

ग्रंथित *पुं.* (तत्.) 1. गाँठदार, गंठली, गूँथा हुआ 2. गाँठ दिया हुआ, जिसमें गाँठ लगी हो।

ग्रंथिल *पुं.* (तत्.) गाँठदार, गठीला।

ग्रंथिमान *पुं.* (तत्.) बंधा हुआ, ग्रंथित।

ग्रंथी *पुं.* (तत्.) 1. अनेक पुस्तकों का अध्येता 2. पुस्तकीय ज्ञान से संपन्न 3 अनेक ग्रंथ रखनेवाला।

ग्रंस *पुं.* (देश.) 1. कुटिलता 2. छल-कपट 3. दुष्ट, उपद्रवी।

ग्रथित *वि.* (तत्.) 1. एक जगह नत्थी किया हुआ या बंधा हुआ 2. रचित 3. क्रमबद्ध, श्रेणीबद्ध 4. जमा हुआ 5. आहत, क्षत 6. अधिकृत 7. वर्जित 8. गाँठ युक्त।

ग्रभ *पुं.* (अ.) दे. गर्भ।

ग्रसन *पुं.* (तत्.) 1. भक्षण, निगलना 2. पकड़ 3. खाने के लिए पकड़ना, इस प्रकार चंगुल में फाँसना जिसमें छूटने न पाए 4. ग्रास 5. एक असुर का नाम 6. ग्रहण 7. दस प्रकार के ग्रहणों में से एक जिसमें चंद्र या सूर्यमंडल पाद, अर्ध या त्रिपाद ग्रस्त हो।

ग्रसना *पुं.* (तद्.) 1. बुरी तरह पकड़ना, इस प्रकार पकड़ना कि छूटे न।

ग्रसिष्णु *पुं.* (तत्.) 1. परमात्मा वि. 1. निगलने या हड़पने वाला 2. जो ग्रसन का अभ्यस्त हो।

ग्रस्त *पुं.* (तत्.) 1. पकड़ा हुआ 2. पीड़ित 3. खाया हुआ 4. आधे उच्चारण किए हुए 5. ग्रहण युक्त।

ग्रस्ता *वि.* (तत्.) ग्रास करने वाला, ग्रसित, पकड़नेवाला।

ग्रस्तास्त *वि.* (तत्.) ग्रहण लगने पर सूर्य या चंद्रमा का बिना मोक्ष हुए अस्त होना।

ग्रस्ति *स्त्री.* (तत्.) ग्रसने की क्रिया।

ग्रस्तोदय *पुं.* (तत्.) चंद्रमा या सूर्य का उस अवस्था में उदय होना जब उन पर ग्रहण लगा हो।

ग्रस्य *वि.* (तत्.) ग्रसने योग्य, खा जाने योग्य।

ग्रह *पुं.* (तत्.) वे तारे जिनकी गति, उदय और अस्त काल आदि का पता ज्योतिषियों ने लगा लिया था, बुरी तरह तंग करने वाला 2. ग्रहण करने, पकड़ने या वश में करने की क्रिया या भाव 3. वह आकाशस्थ पिंड जो किसी सौर जगत का अंग हो और उस जगत के सूर्य की परिक्रमा करता हो जैसे- पृथ्वी, बुध, शुक्र आदि।

ग्रहक *पुं.* (तत्.) वह जो ग्रहण करने वाला हो, ग्राहक 2. कैदी।

ग्रहण *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य, चंद्र या किसी दूसरे आकाशचारी पिंड की ज्योति का आवरण जो दृष्टि और उस पिंड के मध्य में किसी दूसरे आकाशचारी पिंड के आ जाने के कारण उसकी छाया पड़ने से होता है, अथवा उस पिंड और उसे ज्योति पहुँचाने वाले पिंड को मध्य में आ पड़ने वाले किसी अन्य पिंड की छाया पड़ने से होता है जैसे- चंद्र और सूर्य के मध्य में पृथ्वी के आ जाने के कारण चंद्रग्रहण आदि सूर्य तथ पृथ्वी के मध्य में चंद्रमा के आ जाने के कारण सूर्य ग्रहण का होना मुहा. ग्रहण लगना-ग्रहण छूटना 2. पकड़ने लेने या हस्तगत करने की क्रिया 3. स्वीकार 4. अर्थ, तात्पर्य 5. कथन, उल्लेख 6. धारण करना 7. अधिकार 8. ध्वनि ग्रहण 9. हाथ 10. ज्ञानेंद्रिय 11. कैदी 12. पाणिग्रहण 13. क्रय 14. चयन 15. सेवा 16. प्रशंसापूर्ण उल्लेख।

ग्रहणांक *पुं.* (तत्.) ग्रहण करने वाला।

ग्रहणांत *पुं.* ((तत्.) अध्ययन की समाप्ति।

ग्रहणि *स्त्री.* (तत्.) दे. ग्रहणी।

ग्रहणी *स्त्री.* (तत्.) 1. सुश्रुत के अनुसार उदर में पकवाशय और आमाशय के बीच एक नाड़ी जो अग्नि या पित्त का प्रधान आधार है इस नाड़ी के दूषित होने से उत्पन्न एक प्रकार का रोग जिसमें खाया हुआ पदार्थ पचता नहीं।

ग्रहणीय *पुं.* (तत्.) ग्रहण करने वाला।

ग्रहदशा *स्त्री.* (तत्.) गोचर ग्रहों की स्थिति 2. ग्रहों ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली-बुरी दशा 3. दुर्भाग्य।

ग्रहदाय *स्त्री.* (तत्.) ग्रहों की स्थिति के आधार पर किसी जातक की आयु का निर्धारण।

ग्रहदृष्टि *स्त्री.* (तत्.) फलित ज्योतिष में जो कुंडली कुंडली बनाई जाती है, उसमें प्रत्येक ग्रह की दूसरे ग्रहों पर एक विशेष 'दृष्टि" होती है, शुभ ग्रह की दृष्टि का फल शुभ और अशुभ ग्रह की दृष्टि का फल दूषित या अशुभ होता है।

ग्रहनायक *पुं.* (तत्.) सूर्य।

ग्रहमंडल *पुं.* (तत्.) ग्रहों का समूह।

ग्रहयुद्ध *पुं.* (तत्.) सूर्य सिद्धांत के अनुसार बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि या मंगल में से किसी एक ग्रह या चंद्रमा के साथ अथवा उक्त ग्रहों में से किन्ही दो ग्रहों का एक साथ एक राशि के एक अंश पर इस प्रकार एकत्र होना कि उस ग्रह पर ग्रहण लगा हुआ जान पड़े, फलित ज्योतिष के अनुसार इसका फल भयंकर होता है।

ग्रहविप्र *पुं.* (तत्.) बंगाल और दक्षिण में ऐसे ब्राह् मण जो कुछ विशिष्ट क्रियाओं से ग्रहों के शुभाशुभ फल बताते हैं।

ग्रहागम *पुं.* (तत्.) ग्रहों या भूत-प्रेतादि की कष्टदायक बाधा होना।

ग्रहाचार्य *पुं.* (तत्.) दे. ग्रहविप्र।

ग्रहाधार *पुं.* (तत्.) ध्रुव नक्षत्र, ध्रुरवा।

ग्रहामय *पुं.* (तत्.) 1. भृंगी 2. मूर्च्छा 3. प्रेत बाधा, भूतावेश।

ग्रह्य *पुं.* (तत्.) भूतांकुश नामक वृक्ष।

ग्रहालुंचन *पुं.* (तत्.) शिकार या झपटकर उसे चीर फाड़ डालना।

ग्रहावमर्दन *पुं.* (तत्.) राहु 2. ग्रह युद्ध

ग्रहावर्त *पुं.* (तत्.) जन्मपत्री।

ग्रहाशी *पुं.* (तत्.) ग्रहनाश वृक्ष।

ग्रहाश्रय *पुं.* (तत्.) दे. ग्रहाधार।

ग्रहिल *पुं.* (तत्.) ग्रहण करने वाला 2. हठी, दुराग्रही, प्रेतबाधित 3. किसी विषय का अनुरागी।

ग्रहीत *वि.* (तत्.) "गृहीत"।

ग्रहीता *पुं.* (तत्.) 1. लेने वाला, ग्रहण करने वाला 2. निरीक्षण कर्ता 3. ऋणी 4. खरीदनेवाला 5. पकड़नेवाला।

ग्रांडील *वि.* (अं.) ऊँचे कद का, बहुत बड़ा या ऊँचा जैसे- ग्रांडील हाथी।

ग्राम *पुं.* (तत्.) छोटी बस्ती, गांव 2. जनपद 3. समूह, ढेर बरसाना राधा का गांव है टी. इस अर्थ में यह शब्द केवल यौगिक शब्दों के अंत में आता है जैसे- गुणग्राम 4. शिव 5. जाति 6. क्रम से सात स्वरों का समूह (सप्तक) 'स्वर ग्राम'- 'सा' (षड्ज) से प्रारंभ करके (सा रे गा म पा धा नी) जो सात स्वर हो उनके समूह को षड्ज ग्राम कहते है *पुं.* (अं.) अंग्रेजी का तोल-10 ग्राम प्रयो. मुझे 10 ग्राम इलाचयी देना, 10 ग्राम सोने का भाव 25 हजार रुपए है।

ग्रामक *पुं.* (तत्.) ग्रामीण, आनंददायक समूह।

ग्रामकूट *पुं.* (तत्.) 1. शूद्र 2. ग्राम का मुखिया।

ग्रामघात *पुं.* (तत्.) गाँव को लूटना।

ग्रामघोषी *पुं.* (तत्.) 1. जनसमूह या सेना में घोष या ध्वनि करने वाला 2. इंद्र का विशेषण।

ग्रामजाल *पुं.* (तत्.) ग्रामों का समूह, मंडल।

ग्रामटिका *स्त्री.* (तत्.) छोटा गाँव, कुछ घरों का पुर, बस्ती, अभागा या दरिद्र गाँव।

ग्रामणी *पुं.* (तत्.) 1. गाँव का मुखिक 2. प्रधान, अगुआ 3. विष्णु 4. यक्ष 5 नाऊ, हज्जाम 6. कामी पुरुष 7. एक यक्ष *स्त्री.* 1. वेश्या 2. नील का पेड़।

ग्रामदेवता *पुं.* (तत्.) 1. किसी एक गाँव में पूजा जाने वाला देवता 2. गाँव की रक्षा करने वाला देवता।

ग्रामधर्म *पुं.* (तत्.) 1. ग्रामीण परम्पराएँ, गाँव की रीति-नीति 2. *स्त्री.* संभोग, मैथुन।

ग्रामपंचायत *स्त्री.* (तत्.) ग्रामीण व्यक्तियों की वह आधिकारिक व्यवस्था जो गाँव के झगड़ों का न्याय, गाँव में सफाई, स्वच्छता की व्यवस्था करने आदि का कार्य करती है।

ग्रामर *पुं.* (अं.) व्याकरण।

ग्रामवधू *स्त्री.* (तत्.) गाँव की बहू।

ग्रामवल्लभा *स्त्री.* (तत्.) वेश्या, रंडी 2. पालक का साग।

ग्रामांत *पुं.* (तत्.) गाँव की सीमा, गाँब से सटा हुआ भाग।

ग्रामांतर *पुं.* (तत्.) दूसरा गाँव, अन्य ग्राम।

ग्रामाचार *पुं.* (तत्.) गाँव के रीति-रिवाज़।

ग्रामाधान *पुं.* (तत्.) आखेट, मृगया, शिकार।

ग्रामाधिकृत, ग्रामाधिप *पुं.* (तत्.) ग्राम का प्रबंध करने वाला अधिकारी, गाँव का मुखिया।

ग्रामिक *वि.* (तत्.) गाँव का, देहाती 2. गाँव में उपजने वाला या होने वाला पुं. मुखिया, ग्रामीण, ग्रामक।

ग्रामिणी *स्त्री.* (तत्.) नील का पौधा।

ग्रामी *वि.* (तत्.) 1. गाँव का 2. असभ्य, गँवार 3. कामी, ग्राम्य।

ग्रामीण *पुं.* (तत्.) 1. देहाती 2. गँवार 3. गाँव का 4. ग्रामवासी।

ग्रामीणा *स्त्री.* (तत्.) गाँव की रहने वाली, ग्राम निवासिनी।

ग्रामीय *पुं.* (तत्.) गाँव का, गांव से संबंधित।

ग्रामेय *पुं.* (तत्.) गाँव में उत्पन्न 2. देहाती 3. गँवार।

ग्रामेयी *पुं.* (तत्.) वेश्या स्त्री।

ग्रामेश, ग्रामेश्वर *पुं.* (तत्.) ग्राम का प्रधान या मुखिया।

ग्रामोद्योग *पुं.* (तत्.) गाँव के उद्योग धंधे, ग्रामीण-उद्योग।

ग्रामोफोन *पुं.* (अं.) एक विशेष प्रकार का बाजा जिसमें गीत आदि भरे और इच्छानुसार समय-समय पर सुने जा सकते हैं।

ग्राम्य *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का रति बंध 2. काव्य का एक दोष 3. वह काव्य जिसमें गांता शब्दों का प्रयोग अधिक हो या जिसमे गँवारू विषयों का वर्णन हो 4. इसे दोष समझा जाता है 5. अश्लील शब्द या वाक्य 6. मैथुन स्त्री-प्रसंग 7. मिथुन राशि 8. गधा, घोड़ा, खच्चर आदि जानवर जो गाँवों में पाले जाते है।

ग्राम्य *वि.* (तत्.) 1. गाँव से संबंध रखनेवाला, ग्रामीण 2. बेवकूफ 3. मूढ 4. प्राकृत।

ग्राम्या *स्त्री.वि.* (तत्.) 1. ग्राम में रहने वाली 2. गँवार स्त्री।

ग्राम्याश्व *पुं.* (तत्.) गधा।

ग्राव *पुं.* (तत्.) 1. पत्थर 2. ओला, बिनौरी 3. पर्वत 4. बादल *वि.* कठोर, कड़ा, सख्त।

ग्रास *पुं.* (तत्.) उतना भोजन जितना एक बार मुँह में आ जाए, गस्सा, कौर, निवाला 2. पकड़ने की क्रिया, पकड़ा, गिरफ़्त 3. सूर्य या चंद्रमा में ग्रहण लगना 4. संगीत का एक भेद 5. आहार निगलने का कार्य।

ग्राह *पुं.* (तत्.) 1. मगर, घड़ियाल 2. ग्रहण, उपराग 3. पकड़ना 4. ज्ञान 5. आग्रह 6. कैदी 7. चयन 8. प्राप्ति 9. समझ, बोध 10. निश्चय 11. रोग 12. बड़ा मत्स्य 13. कार्यारंभ 14. लकवा 15. हत्या *वि.* ग्रहण करने वाला।

ग्राहक *पुं.* (तत्.) ग्रहण करने वाला 2. खरीदार 3. लेने या पाने की इच्छा रखने वाला 4. वह ओषधि जिसके सेवन से दस्त बंद हो जाते हैं 5. बाज पक्षी 6. एक प्रकार का साग जिसे चौपतिया कहते हैं 7. विष को दूर करने वाला वैद्य 8. पुलिस।

ग्राही *वि.* (तत्.) 1. वह जो ग्रहण करे, स्वीकार करनेवाला 2. मल को रोकने वाला पदार्थ 3. कैथ, कपित्थ *स्त्री.* (तत्.) ग्राह या घड़ियाल की मादा।

ग्राह्युक *पुं.* (तत्.) 1. लेने योग्य 2. स्वीकार करने योग्य 3. जानने योग्य 4. कैद करने योग्य 5. मान्य, स्वीकृत।

ग्रीक *पुं.* (अं.) यूनान देश का *स्त्री.* ग्रीस, यूनान देश की भाषा।

ग्रीज *पुं.* (अं.) 1. पशुओं की चर्बी, गाढ़ा किया हुआ तेल मिश्रित कोई पदार्थ जो काग़ज़ चिपकाने,

जिल्दबंदी करने, रबर आदि जोड़ने वाला, पुर्जों आदि को चलता रखने के काम में इस्तेमाल किया जाता है।

ग्रीवा *स्त्री.* (तत्.) गर्दन टि. समस्त होने पर इस शब्द का रूप ग्रीव हो जाता है सुग्रीव।

ग्रीवालिका *स्त्री.* (तत्.) दे. ग्रीवा।

ग्रीष्म *स्त्री.* (तत्.) गर्मी का मौसम, गरमी, ताप।

ग्रीष्मकाल *पुं.* (तत्.) गर्मी की ऋतु।

ग्रीष्मकालीन *वि.* (तत्.) ग्रीष्मकाल का, ग्रीष्म ऋतु से संबंधित।

ग्रेजुएट *पुं.* (अं.) कोई स्नातक उपाधि परीक्षा पास किया हुआ विद्वान 2. स्नातक।

ग्रेट प्राइमर *पुं.* (अं.) एक प्रकार का छापे का अक्षर जो 16 प्वांइट का होता है और आकार-प्रकार गोल होता है।

ग्रेट ब्रिटेन *पुं.* (अं.) इंग्लैंड और स्कॉटलैंड देश।

ग्रेन *पुं.* (अं.) एक अंग्रेजी तौल जो एक रत्ती के बराबर होती है।

ग्रेनाइट *पुं.* (अं.) एक तरह का आग्नेय पत्थर जो बहुत कड़ा होता है टि. यह एक ऐसा पत्थर होता है जिससे काटना सरल नहीं होता और काफी खर्चीला भी होता है, यही कारण है कि साधारण इमारतों में इसका बहुत कम व्यवहार होता है, पुल आदि इमारतों जिसमें बहुत अधिक मजबूती की आवश्यकता होती है उन्हीं में इसका प्रयोग होता है, इसमें अबरक का भी बहुत कुछ अंश मिला रहता है।

ग्रैवेयक *पुं.* (तत्.) 1. गले में पहनने की वस्तु 2. गले का आभूषण 3. हाथी के गले की जंजीर।

ग्रैष्मिक *पुं.* (तत्.) ग्रीष्म से संबंधित।

ग्रैष्म *पुं.* (तत्.) ग्रीष्म से संबंधित।

ग्रैष्मक *पुं.* (तत्.) जो गर्मी में बोया जाए।

ग्रामकूट *पुं.* (तत्.) शुद्र।

ग्लपित *पुं.* (तत्.) थकित, क्लांत।

ग्लान *पुं.* (तत्.) 1. बीमार, रोगी 2. कमजोर 3. थका हुआ शिथिल।

ग्लानि *स्त्री.* (तत्.) 1 शारीरिक या मानसिक शिथिलता, अनुत्साह, खेद, अक्षमता 2. मन की एक वृत्ति जिसमें अपने किसी की बुराई या दोष आदि को देखकर अनुत्साह, अरुचि और खिन्नता उत्पन्न होती है, पश्चाताप 3. साहित्य में वीभत्स रस का एक स्थाई भाव टि. साहित्य दर्पण के अनुसार यह व्याभिचारी भाव के अंतर्गत है, रीति, परिश्रम, मनस्ताप और भूख-प्यास आदि से उत्पन्न दुर्बलता ही ग्लानि है, इसमें शरीर काँपने लगता है शक्ति घट जाती है और किसी कार्य में मन नहीं लगता 4. पतन, ह्रास।

ग्लास *पुं.* (अं.) 1. पानी पीने का एक पात्र, गिलास 2. शीशा, काँच।

ग्लूकोज *पुं.* (अं.) फलों की चीनी 2. अंगूर की चीनी, यह रासायनिक तरीके से तैयार की जाती है।

ग्लेशियर *पुं.* (अं.) 1. हिमखंड, हिमशिला जो गतिशील होती है, यह धीरे-धीरे चलकर नीचे उतरता है और फिर किसी नदी में मिल जाता है।

ग्वार *स्त्री.* (तद्.) एक वार्षिक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी और बीजों की दाल होती है, कोरी, खुरथी।

ग्वारनट *स्त्री.* (अं.) एक प्रकार का रंगीन रेशमी कपड़ा।

ग्वारपाठा *पुं.* (देश.) ग्वार नाम पौधों की फली जिसकी सब्जी बनती है, घी कुवार, घी गुवार।

ग्वारिन *स्त्री.* (देश.) दे. ग्वालिन।

ग्वारी *स्त्री.* (देश.) ग्वारिन, अधेरनी।

ग़्वाल *पुं.* (तद्) 1. अहीर 2. एक छंद का नाम जिसे सार और शानु भी कहते है, इसके प्रत्येक चरण में दो अक्षर होते हैं, जिनमें से पहला गुरु और दूसरा लघु होता है।

ग्वालबाल *पुं.* (देश.) ग्वाला।

ग्वालिन *स्त्री.* (तद्.) ग्वाले की स्त्री, ग्वाल जाति की स्त्री 2.गवार, खुरथी, कैरी 3. तीन-चार अंगुल अंगुल लंबा एक बरसाती कीड़ा जिसे घिनोरी या गिंजाई भी कहते हैं।

ग्वाली *स्त्री.* (तद्.) ग्वाले की स्त्री।

ग्वैंठा *पुं.* (देश.) गाँव के आसपास की भूमि।

ग्वैड़ें *पुं.* (देश.) निकट, पास।

घ

हिंदी वर्णमाला के व्यंजनों में से कवर्ग का चौथा व्यंजन जिसका उच्चारण जिह्वामूल या कंठ से होता है, यह स्पर्श वर्ण है, इसमें घोष, नाद, संचार और महाप्राण होते हैं।

घंट *पुं.* (तत्.) 1. घड़ा 2. पानी का वह घड़ा जो किसी के मरने पर उसकी आत्मा को जल पहुँचाने के लिए 10 या 12 दिनों तक पीपल में बाँधकर लटकाते हैं।

घंटक *पुं.* (तत्.) एक क्षुप जिसका मूल कफ नाशक है।

घंटा *पुं.* (तत्.) धातु का एक यंत्र जो ध्वनि उत्पन्न करने के लिए होता है, मंदिर आदि में यह बजाया जाता है टी. यह दो प्रकार का होता है एक तो औंधे बरतन के आकार का होता है, जिसमें लंगर लटकता रहता है और उस लंगर को हिलाने से यह बजता है दूसरा जिसे घडियाल कहते है यह थाली की तरह का होता है इसे किसी लकड़ी आदि की हथौड़ीनुमा चीज से ठोंक कर बजाया जाता है।

घंटाकर्ण *पुं.* (तत्.) शिव के एक उपासक का नाम जो कान में इसलिए घंटा बाँधे रहता था कि जब कहीं राम या विष्णु का नाम लिया जाए, तब वह अपना सिर हिला दे और घंटे की ध्वनि के कारण वह राम का नाम न सुन सके 2. एक पौधा।

घंटाघर *पुं.* (तत्.) वह ऊँचा मिनार जिस पर एक ऐसी बड़ी धर्मघड़ी लगी हो जो चारों ओर से दूर तक दिखाई देती हो और जिसका घंटा दूर तक सुनाई देता हो।

घंटानाद *पुं.* (तत्.) 1. घंटे की ध्वनि 2. कुबेर के एक मंत्री का नाम।

घंटापथ *पुं.* (तत्.) वह सड़क जो दस धनुष चौड़ी हो, नगर की मुख्य सड़क, राजमार्ग 2. भारवि के किरातार्जुनीय महाकाव्य पर मल्लिनाथ की टीका का नाम।

घंटिका *पुं.* (तत्.) 1. मगर 2. घड़ियाल *स्त्री.* (तत्.) बहुत छोटा घंटा, घंटी, छोटे-छोटे लंबे घड़े जो रहट पर लगे रहते हैं, घरिया।

घंटी *पुं.* (तत्.) बहुत छोटी घंटी, घुंघरु, घंटी की आवाज़।

घंटील *स्त्री.* (देश.) एक घास जो चारे के काम में आती है और जमीन पर दूर तक फैलती है, गधे इसे बहुत खाते हैं।

घंटु *पुं.* (तत्.) 1. ताप, प्रकाश, ज्योति 2. हाथी की सजावट से उसकी छाती पर बाँधी जाने वाली घुंघरूदार पट्टी गजघंटा।

घंड *पुं.* (तत्.) मधुमक्खी।

घँघरा *पुं.* (देश.) दे. घघरा।

घँघराघोर *पुं.* (देश.) छूआछूत के विचार का अभाव, भ्रष्टाचार, घालमेल।

घँघरी *स्त्री.* (देश.) 'घघरी'।

घँघोरना *स.क्रि.* (देश.) दे. घँघोलना।

घँघोलना *स.क्रि.* (देश.) हिलाकर घोलना, पानी को हिलाकर उसमें कुछ मिलाना।

घई *स्त्री.* (तद्.) नदी में पानी का तेजी से गोलाई में घूमना (भँवर) 2. थूनी, टेक 3. जिसकी थाह न लग सके, अत्यंत गंभीर, बहुत गहरा, अथाह।

घघरबेल *स्त्री.* (देश.) 1. एक प्रकार की विषनाशक लता, बंदालु, गरागरी, देवदाली,कर्कटी, जीभूत।

घघरा *पुं.* (देश.) स्त्रियों के पहनने का एक अधो वस्त्र जिसमें बहुत सी चुन्नटें होती हैं यह कटि से लेकरपांव तक पहना जाता है, लहंगा, घाधरा।

घट *पुं.* (तत्.) 1. घड़ा, जलपात्र, कलसा 2. पिंड, शरीर 3. मन, हृदय 4. कुंभक प्राणायाम 5. कुंभराशि 6. एक तौल 8. द्रोण की तौल जो 16 या 32 सेर की मानी जाती है 9. हाथी का कुंभ 10. किनारा 11. नौ प्रकार के द्रव्यों में से एक जिसे तुला भी कहते हैं 12. कम, थोड़ा, घटा हुआ, छोटा, मध्यम प्रयो. अकेले इसका क्रियावत प्रयोग 'घटकर' ही होता है वह कपड़ा इससे कुछ 'घटकर' है 13. मेघ, बादल, घटा।

घटक *पुं.* (तत्.) 1. दो पशुओं में बातचीत करानेवाला, बीच में पड़नेवाला, मध्यस्थ, योजक, मिलानेवाला 2. किसी वस्तु का बनाने या रचना करने वाला 3. चतुर, चालाक विवाह-संबंध तय कराने वाला व्यक्ति 4. दलाल 5. काम पूरा करने वाला 6. वंश परम्परा बताने वाला 7. उपादान वस्तु, अन्य वस्तु 8. बिना फूल-फल देनेवाला वृक्ष जैसे- गूलार 9. घड़ा।

घटकर्कट *पुं.* (तत्.) संगीत में एक प्रकार का ताल।

घटकर्ण *पुं.* (तत्.) कुंभकर्ण।

घटकर्पर *पुं.* (तत्.) नीतिसार नामक काव्य के प्रणेता कवि घटकर्पर हुए हैं जो विक्रमादित्य की सभा के नौ रत्नों में से एक थे, इनका छोटा-सा काव्य यमक अलंकार से परिपूर्ण है, यदि कोई इससे सुंदर यमकालंकार कविता करेगा तो मैं फूटे घड़े के टुकड़े से उसका जल भरूँगा, इसी प्रतिज्ञा के कारण इन्हें 'घटकर्पर' कहते हैं।

घटका *पुं.* (तत्.) मरने के पहले की वह अवस्था जिसमें साँस रुक-रूकर घरघराहट के साथ निकलती है, घर्रा, कंठावरोध *स्त्री.* घटिया, समय सूचक घड़ी।

घटती *स्त्री.* (देश.) 1. कमी, कसर, न्यूनता, अवनति।

घटन *पुं.* (तत्.) 1. गढ़ा जाना, रूप या आकार देना 2. होना, घटित होना 3. मिलाना, जोड़ना 4. प्रयास, गति, प्रयत्न।

घटना *पुं.* (तत्.) 1. घटित होना, उपस्थित होना 2. लगना, सटीक बैठना, मेल, मिल जाना 3. बनाना, रचना करना 4. हादसा, वारदात।

घटना *अ.क्रि.* (देश.) कम होना, छोटा होना, क्षीण होना प्रयो. बारिश अधिक न होने के कारण यमुना का जलस्तर दिनोंदिन घट रहा है।

घटपल्लव *पुं.* (तत्.) वास्तु विद्या में वह खंभा जिसका सिरा घड़े आदि के आकार का बना हो।

घटबढ़ *स्त्री.* (देश.) 1. कमीबेशी, न्यूनाधिकता 2. कमवेश, अपेक्षित से कम या अधिक 3. नृत्य संगीत में लय घटने-बढ़ने की क्रिया।

घटवाई *पुं.* (देश.) 1. घाटवाला, घाट का कर लेने वाला 2. बिना तलाशी लिए न जाने देनेवाला, रोकनेवाला।

घटवार *पुं.* (देश.) घाट का महसूल लेनेवाला 2. मल्लाह, केवट, घाट पर बैठ कर दान लेने वाला ब्राह्मण 4. घाट का देवता।

घटवारिया *पुं.* (देश.) घटवालिया, पंडा, पुरोहित, तीर्थ में दान लेने वाला।

घटवाह *पुं.* (देश.) 1. घाट का ठेकेदार, घाट का कर वसूलनेवाला।

घटहा *पुं.* (देश.) घाट का ठेकेदार 2. वह नाव जो इस पार से उस पार जाती है।

घटा *स्त्री.* (तत्.) 1. मेघों का बना समूह, मेघमाला, कादंबिनी 2. समूह 3. चेष्टा, प्रयत्न 4. सैनिक कार्य के लिए एकत्र हाथियों का झुंड 5. सभा, गोष्ठी।

घटाकाश *पुं.* (तत्.) आकाश का उतना भाग जितना एक घड़े के अंदर आ जाए, घड़े के अंदर की खाली जगह।

घटाग्र *पुं.* (तत्.) वास्तुस्तंभ का अष्टम भाग, वास्तु विद्या में खंभे के नौ भागों में से आठवाँ भाग।

घटाटोप *पुं.* (तत्.) अंधकार पैदा करने वाले बादलों का समूह 2. पालकी को ढकने का आवरण 3. बादलों की भांति चारों ओर से घेर लेने वाला समूह।

घटाना *स.क्रि.* (देश.) 1. कम करना 2. क्षीण करना 3. बाकी निकालना, काटना 3. अप्रतिष्ठा करना।

घटाव *पुं.* (देश.) कम होने का भाव, न्यूनता, कमी 2. अवनति 3. नदी की बाढ़ का घटना या कम होना।

घटिक *पुं.* (तत्.) घंटा पूरा होने पर घड़ियाल बजानेवाला व्यक्ति, घंटा बजानेवाला सिपाही, घड़ियाली 2. घड़नई के सहारे जलाशय को पार कराने वाला 3. नितंब।

घटिका *स्त्री.* (तत्.) घड़ी यंत्र, घड़ी 2. एक घड़ी का का समय, 24 मिनट का समय 3. छोटा घड़ा,

गगरी 4. घुटना 5. समय का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला तांबे का छोटा कलश या लोटा जिसके पेंदे में एक छेद होता है।

घटिका शतक *पुं.* (तत्.) 1. एक घड़ी में सौ श्लोक बनाने वाला 2. एक घड़ी में एक साथ सौ काम करने वाला।

घटिघम *पुं.* (तत्.) कुंभकार, कुम्हार।

घटित *पुं.* (तत्.) 1. बना हुआ, रचित, रचा हुआ, निर्मित 2. जो हुआ हो।

घटिया *पुं.* (देश.) जो अच्छे मोल का न हो, कम मोल का, खराब, सस्ता 2. अधम, तुच्छ, कम गुणवत्ता का।

घटिहा *पुं.* (तद्.) 1. घात या धोखेबाजी करने वाला 2. चालाक, मक्कार 3. व्यभिचारी 4. दुष्ट, नीच।

घटी *स्त्री.* (तत्.) 24 मिनट का समय, घड़ी, मुहूर्त 2. समय सूचक यंत्र 3. छोटा घड़ा 4. घरिया 5. प्राचीन काल में समय जानने के काम में आने वाला एक विशेष जलपात्र।

घटीयंत्र *पुं.* (तत्.) 1. समय सूचक यंत्र, घड़ी 2. संग्रहणी रोग का एक भेद जो असाध्य माना जाता है 3. समय जानने का जलपात्र 4. रहट में बंधी गगरी जिससे कुँए में से पानी निकाला जाता है।

घटूका *पुं.* (तत्.) भीमसेन का घटोत्कच नामक पुत्र जो हिड़िंबा राक्षसी से पैदा हुआ था।

घटोत्कच *पुं.* (तत्.) हिडिंबा राक्षसी से उत्पन्न भीमसेन का पुत्र जिसे महाभारत युद्ध में कर्ण ने मारा था।

घटोद्भव *पुं.* (तत्.) अगस्त्य मुनि, कुंभज।

घट्ट *पुं.* (तत्.) घड़ा, कुंभ 2. शरीर 3. घाट, चुंगी या महसूल लेने का स्थान 4. क्षुब्ध करना, क्षोभण।

घट्टन *पुं.* (तत्.) 1. हिलाना-डुलाना, चलाना 2. संघटन, संयोजग 3. घोटना ।

घट्टा *पुं.* (देश.) 1. घाटा, घटी, कमी 2. दरार, छेद।

घट्टाना *पुं.* (तत्.) 1. हिलाना, डुलाना, 2. रगड़ना, घोटना, मलना 3. जीविका, पेशा।

घट्ठा *पुं.* (तद्.) शरीर पर वह उभरा हुआ चिह्न जो किसी वस्तु की रगड़ लगने से पड़ जाता है, गाँठ, छाला।

घड़घड़ *स्त्री.* (अनु.) बादल गरजने, गाड़ी चलने आदि का शब्द।

घड़घड़ाना *अ.क्रि.* (अनु.) गड़गड़ या घड़घड़ शब्द करना, बादल गरजने या गाड़ी चलने का शब्द होना।

घड़घड़ाहट *स्त्री.* (अनु.) किसी वस्तु को चलाने या खींचने से उत्पन्न घड़घड़ शब्द होने का भाव 2. बादल की आवाज 3. गाड़ी चलने का शब्द।

घड़त *स्त्री.* (देश.) दे. गढ़त।

घड़नई *स्त्री.* (देश.) दे. घड़नैल।

घड़ना *पुं.* (देश.) दे. गढ़ना।

घड़नैल *पुं.* (देश.) बांस में घड़े बांधकर बनाया हुआ ढांचा जिससे छोटी-छोटी नदियाँ पार करते है।

घड़ा *पुं.* (तद्.) मिट्टी का बना हुआ गगरा, जलपात्र, बड़ी गगरी, कलसा, कुंभ मुहा. घड़ों पानी पड़ जाना- अत्यंत लज्जित होना; चिकना घड़ा- निर्लज्ज व्यक्ति।

घड़ाई *स्त्री.* (देश.) दे. गढ़ाई।

घड़ाना *स.क्रि.* (देश.) दे. गढ़ाना।

घड़िया *स्त्री.* (तद्.) मिट्‌टी का बर्तन जिसमें रखकर सोनार लोग सोना-चांदी गलाते हैं 2. मिट्टी का छोटा प्याला 3. शहद का छत्ता 4. गर्भाशय 5. मिट्टी की नांद जिसमें लोहार लोहा गलाते हैं 6. रहट में लगी हुई छोटी-छोटी घटिया जिसमें पानी भरकर आता है।

घड़ियाल *पुं.* (तद्.) 1. छिपकली की जाति का परंतु काफी बड़ा मांसाहारी, हिंसक जलजंतु, मकर, ग्राह, मगरमछ 2. बड़ा धंटा।

घड़ियाली *पुं.* (देश.) समय की सूचना के लिए घंटा बजाने वाला व्यक्ति।

घड़ी *स्त्री.* (तद्.) 60 पल या 24 मिनट का कालमान, घटी, दंड, समय बताने वाला एक यंत्र 2. पानी, बिजली आदि की खर्च के परिमाण का सूचक यंत्र मुहा. घड़ी-घड़ी- बार-बार; घड़ी-तोला घड़ी-माशा- कभी कुछ कभी कुछ; घड़ी गिनना- प्रतीक्षा करना; घड़ी में घड़ियाल है- जिंदगी का कोई ठिकाना नहीं, न जाने कब काल आए 3. समय, काल 4. अवसर, उपयुक्त, समय 5. समय समय सूचक यंत्र।

घड़ी-दीया *पुं.* (तद्.) वह दीपक जो किसी के मर जाने पर घर में रखा जाता है और 10-12 दिनों तक रहता है, घड़े के पैंदे में छेद कर दिया जाता हैं, जिसमें से होकर बूँद-बूँद पानी टपकता है और घड़े के मुंह पर एक दीपक जलाकर रख दिया जाता है, इसे घंट भी कहते हैं।

घड़िसाज़ *पुं.* (हि. घड़ी+फा. साज) घड़ी की मरम्मत करनेवाला।

घड़िसाजी *स्त्री.* (तद्.+फा.) घड़ी की मरम्मत का कार्य।

घड़ोला *पुं.* (देश.) छोटा घड़ा, झंझर।

घड़ौंची *स्त्री.* (देश.) पानी से भरा घड़ा रखने की तिपाई या ऊँची जगह।

घढ़ढ *पुं.* (देश.) घाटी, तलहटी।

घणकठा *पुं.* (देश.) डिंगल के अनुसार एक लवैणा नामक छंद का एक भेद।

घतिया *वि.* (तद्.) घाती, धोखा देने वाला, विश्वासघाती।

घतियाना *पुं.* (तद्.) अपनी घात या दांव में लाना 2. चुराना, छिपाना।

घन *पुं.* (तत्.) 1. बादल, मेघ 2. लोहारों का बड़ा हथौड़ा जिससे वे गरम लोहा पीटते हैं।

घनकना *पुं.* (तद्.) घनकना, गरजना, तेज़ आवाज़ करना, धड़राना।

घनकारा *वि.* (तद्.) गर्जन करनेवाला, ऊँची आवाज करने वाला।

घनकोदंड *पुं.* (तत्.) इंद्रधनुष।

घनगरज *पुं.* (तत्+तद्.) बादल के गरजने की ध्वनि 2. कुकुरमुत्ता की तरह सब्जी वाला पौधा।

घनघटा *स्त्री.* (तत्.) बादलों का जमघट, गहरी काली घटा।

घनघनाना *पुं.* (अनु.) घन्-घन् शब्द होना, घंटे की-सी ध्वनि निकलने का भाव।

घनघनाहट *स्त्री.* (अनु.) घन्-घन् शब्द निकलने का का भाव। घन्-घन् की ध्वनि।

घनघोर *वि.* (तत्.) बहुत घना, गहरा 2. जिसे देख और सुनकर जी दहल जाए, जिसका दर्शन और श्रवण भयानक हो, भीषण, भयावह जैसे- 'घनघोर युद्ध'। युद्ध'।

घनचक्कर *पुं.* (तद्.) मूर्ख, बेवकूफ़ 2. निठल्ला, आवारागर्द।

घनता *स्त्री.* (तत्.) घना होने का भाव, घनापन 2. ठोसपन 3. दृढ़ता, मजबूती 4. लंबाई-चौड़ाई और मोटाई का समूह या भाव।

घनत्व *पुं.* (तत्.) 1. घना होने का भाव, घनापन, सघनता, अणुओं का परस्पर मिलान, ठोसपन, लंबाई-चौड़ाई और मोटाई का भाव।

घननाद *पुं.* (तत्.) बादलों की गर्जना 2. रावण, का पुत्र, मेघनाद।

घनपटल *पुं.* (तत्.) मेघाडंबर, बादलों का समूह या आवरण।

घनप्रिय *पुं.* (तत्.) मोर, मोर शिखा 2. एक घास जिसकी पत्तियाँ डंठल की ओर पतली और ऊपर की ओर चौड़ी होती है। यह पहाड़ों पर मिलती है और औषध के काम में आती है।

घनफल *पुं.* (तत्.) लम्बाई-चौड़ाई और मोटाई तीनों का गुणन फल 2. यह गुणनफल जो किसी संख्या को उसी संख्या से दो बार गुणा करने से प्राप्त हो।

घनमान *पुं.* (तत्.) किसी पदार्थ की लंबाई-चौड़ाई और मोटाई का सम्मिलित मान दे. घनफल।

घनरस *पुं.* (तत्.) जल पानी 2. कपूर 3. हाथियों में होने वाला एक रोग जिसमें उसका खून बिगड़ जाता है, पैर के नाखून गलने लगते हैं, इस रोग को हाथियों का कोढ़ समझना चाहिए 4. घना या गाढ़ा रस 5. मोरट नाम का पौधा जिसका रस गाढ़ा होता है 6. पीलुपर्णी।

घनवर्ग *पुं.* (तत्.) गणित में घन संख्या का वर्ग।

घनवाहन *पुं.* (तत्.) पवन, वायु, हवा 2. इंद्र, जिसका वाहन मेघ है, शिव, जिनका वाहन घन की तरह श्वेत हो।

घनश्याम *पुं.* (तत्.) काला बादल 2. श्री कृष्ण 3. श्री राम चंद्रजी 4. बादलों के समान काला।

घनसार *पुं.* (तत्.) जल, पानी 2. कपूर 3. महामेघ, घना बादल 4. पारद, पारा 5. चंदन।

घनांजनी *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा, काली *वि.* घनों के सामान काली।

घनांत *पुं.* (तत्.) वर्षा का समाप्तिकाल 2. शरद् ऋतु 3. वेद मंत्रों के 'घन' नामक विकृति पाठ के कर्ता यौ. घनांत पाठी-वे वेदपाठी जो घनपाठ नामक अष्ट विकृतियों के पाठ में निष्णात हो।

घनांधकार *पुं.* (तत्.) गहरा अंधेरा, निबिड़ अंधकार।

घना *स्त्री.* (तद्.) 1. रूद्रजटा 2. माषपर्णी 3. एक प्रकार का वाद्य 4. जिसके अवयव या अंश पास-पास-पास सटे हों, सघन, पास-पास।

घनाकर/घनागम *पुं.* (तत्.) वर्षा ऋतु, बरसात।

घनाक्षरी *पुं.* (तत्.) दंडक या मनहर छंद जिसे साधारण लोग कवित्त कहते हैं।

घनाघन *पुं.* (तत्.) 1. इंद्र 2. मस्त हाथी 3. बरसने वाला बादल।

घनात्मक *पुं.* (तत्.) 1. जिसकी लंबाई-चौड़ाई और मोटाई बराबर हो 2. जो लंबाई-चौड़ाई, और मोटाई (गहराई, ऊंचाई) को गुणा करने से निकला हो (क्षेत्रफल)।

घनात्यय *पुं.* (तत्.) शरद् ऋतु, घनीत।

घनानंद *पुं.* (तत्.) गद्य काव्य का एक भेद 2. हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि जिन्हें आनंदवघन भी कहते हैं।

घनामय *पुं.* (तत्.) खजूर।

घनाश्रय *पुं.* (तत्.) आकाश।

घनिष्ठ *वि.* (तत्.) गाढ़ा घना, बहुत अधिक 2. सबसे अधिक घना, सबसे अधिक निकट, अत्यंत निकट, पास का, नजदीकी।

घनिष्ठता *स्त्री.* (तत्.) घनिष्ठ होने की स्थिति या भाव 2. गाढ़ी मैत्री, घनी दोस्ती या पक्की दोस्ती।

घनीतर *वि.* (तत्.) जो ठोस न हो 2. तरल।

घनीभाव *पुं.* (तत्.) वह तरल पदार्थ जो अत्यंत गाढ़ा या सघन हो।

घनीभूत *पुं.* (तत्.) अत्यंत गाढ़ा, प्रगाढ़, सघन, कैंद्रीभूत।

घनेरे *पुं.* (देश.) बहुत अधिक, अनगिनत, अधिक।

घनोत्तम *पुं.* (तत्.) मुखाकृति, मुखड़ा, चेहरा।

घनोदधि *पुं.* (तत्.) एक नरक का नाम।

घनोदय *पुं.* (तत्.) वर्षाकाल, वर्षा काल का आरंभ।

घनोपल *पुं.* (तत्.) ओला, पत्थर, उपल, बिजौरी।

घपची *स्त्री.* (हि.) किसी वस्तु को पकडक़र घेर रखने के लिए दोनों हाथों के पंजों की गठनता, दोनों हाथों की मजबूत पकड़ उदा. घपची बांधकर पानी में कूदना।

घपचियाना *अ.क्रि.* (देश.) किसी को चक्कर में डालना, घबराहट पैदा करना, चकराना।

घपला *पुं.* (देश.) दो परस्पर भिन्न वस्तुओं की ऐसी मिलावट जिसमें एक से दूसरे को अलग करना कठिन हो 2. गड़बड़, गोलमाल, घोटाला।

घपुआ *वि.* (देश.) मूर्ख, जड़, उल्लू, नासमझ।

घबड़ाना *पुं.* (देश.) दे. 'घबराना'।

घबराना *पुं.* (देश.) 1. व्याकुल करना, अधीर करना, शांति भंग करना 2. भौंचक्का करना 3. जल्दी में डालना, हड़बड़ी में डालना 4. डरना।

घबराहट *स्त्री.* (देश.) व्याकुलता, अधीरता 2. किंकर्तव्यविमूढ़ता 3. हड़बड़ी, उतावलापन।

घमंका *पुं.* (तत्.) 'घम' की ध्वनि करना 2. घूँसा 3. मुष्टि का प्रहार 2. वह प्रहार जिसके पड़ने से 'घम' की ध्वनि हो।

घमंड *पुं.* (देश.) अभिमान, गह्वर, अहंकार, गर्व मुहा. घमंड पर आना या होना- अभिमान करना; घमंड निकलना- गर्व चूर्ण होना; घमंड टूटना- मानध्वस्त होना।

घमंडी *वि.* (देश.) अहंकारी, अभिमानी, मग़रूरी।

घमक *पुं.* (अनु.) घम-घम की आवाज़, गंभीर ध्वनि।

घमकना *पुं.* (अनु.) घम् घम् या और किसी प्रकार का गभीर शब्द होना 2. ऐसी चोट या आघात जिससे घम की आवाज़ हो।

घमका *पुं.* (अनु.) प्रहार का शब्द, चोट की आवाज, आघात की ध्वनि।

घमाई *स्त्री.* (देश.) बाँस के पौधे का एक ऐसा रोग जिसके हो जाने पर बाँस के नए कल्ले नहीं निकलते, घमाई रोग ।

घमखोर *पुं.* (हि.धाम+फा.खोर) घाम खानेवाला, वह जो धूप में रह सके।

घमर *पुं.* (अनु.) नगाड़े ढोल आदि का भारी शब्द, गंभीर ध्वनि।

घमरा *पुं.* (देश.) भृंगराज नामक बूटी, भँगरा, भँगरैया।

घमरौल *स्त्री.* (देश.) हल्ला-गुल्ला, ऊधम, गड़बड़, घोटाला 2. अव्यवस्था 3. भीड़भाड़।

घमसा *पुं.* (देश.) 1. वह गरमी जो अधिक धूप और हवा रुकने के कारण होती है, धूप की गर्मी, उमस 2. घनापन, सघनता, आधिक्य।

घमसान *वि./पुं* (अनु.) भयंकर युद्‌ध, घोर रण, गहरी लड़ाई, धमासान।

घमाघम *क्रि.वि.* (तत्.) 1. घम्-घम् की ध्वनि 2. धूमधाम, चहल-पहल 3. भारी आघात का शब्द, मारपीट।

घमाघमी *स्त्री.* (अनु.) दे. घमाघम 2. मारपीट।

घमाना *अ.क्रि.* (देश.) घाम लेना, सरदी हटाने के लिए धूप में बैठना 2. धूप खाना 3. *स.क्रि.* फल आदि का घाम लगवाकर पीला होना, धूप से सेकना।

घमायल *वि.* (देश.) घाम की गर्मी से पका हुआ, घाम के प्रभाव से युक्त, प्रायः फल के लिए प्रयुक्त।

घमोय *स्त्री.* (देश.) एक छोटा पौधा जो गोभी की तरह होता है, टि. इसके पत्ते कटावदार तथा काँटे भरे होते है, इसके फूल पीले और प्याले के आधार के होते है, फूलों के झड़ जाने के बाद कंटीले बीज कोश रह जाते है, डंठलों और पत्रों से एक प्रकार का पीला रस निकलता है जो आँख के रोगों के लिए उपयोगी माना जाता है, यह पौधा उजाड़ स्थानों पर अपने आप उगता है, भड़भाड़, स्वर्णक्षीरी।

घमीला *वि.* (देश.) घाम खाया हुआ, घाम या धूप लगने से मुरझाया हुआ।

घमौरी *स्त्री.* (देश.) अम्हौरी, घमोरी, गर्मी के कारण शरीर में नकली छोटी-छोटी फुंसियाँ।

घर *पुं.* (तद्.) मनुष्यों के रहने का स्थान, मकान, आवास स्थान मुहा. अपना घर समझना- आराम की जगह समझना; घर उजड़ जाना- बरबाद हो जाना; घर करना- बसना (पत्नी भाव से किसी के के साथ रहना); घर का आदमी- अपने कुटुंब का प्राणी; अच्छे घर का- समृद्‌ध कुल का; घर का चिराग- दे. घर का उजाला; घर का चिराग गुल होना- सर्वनाश होना; घर का न घाट का-जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान न हो; घर बंद होना- ताला लगना; घर बेचिराग होना- नामलेवा न रह जाना।

घर गृहस्थ *पुं.* (तद्.+तत्) परिवार के साथ रहने वाला व्यक्ति जो गृहस्थी के निर्वाह के लिए धनोपार्जन करता है।

घर गृहस्थी *स्त्री.* (तद्+तत्.) परिवार के सभी सदस्य तथा उनके उपभोग की सभी वस्तुएं।

घमाका *पुं.* (देश.) घम् का शब्द, भारी आघात का शब्द।

घरघराहट *स्त्री.* (अनु.) घर्र-घर्र शब्द निकलने का भाव 2. कफ के कारण गले से साँस लेते समय निकला हुआ शब्द।

घरजाया *पुं.* (हि. घर+सं. जाया) दास, अपने ही घर में उत्पन्न सेवक, पुश्तैनी सेवक।

घरट्ट *पुं.* (तत्.) चक्की, जाँता।

घरणी *पुं.* (तद्.) घरनी, वह स्त्री जिसके पास घर हो प्रयो. "बिन घरनी घर भूत का डेरा" 2. पत्नी, भार्या।

घरन *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की पहाड़ी भेड़ जिसे जुंबली भी कहते हैं।

घरनई *स्त्री.* (देश.) दे. घड़नैल।

घरनी *स्त्री.* (तद्.) घरवाली, भार्या, गृहिणी।

घर प्रांतर *पुं.* (तद्.) 1. घर और पड़ोस 2. घर का पड़ोस।

घर फोड़ना *पुं.* (देश.) घर में झगड़ा लगाना, घर के प्राणियों में बिगाड़ कराने करना।

घरफोरी *वि.* (देश.) परिवार में कलह फैलाने वाली।

घरबंदी *स्त्री.* (देश.) 1. नजरबंदी, किसी को घर में ही रहने को बाध्य करना 2. चित्रकला के पहले छोटे-छोटे चिह्नों से स्थान घेरकर अलग अलग वस्तुओं के लिए स्थान नियत करना।

घरबसी *स्त्री.* (देश.) घर बसाने वाली, भाग्यवती, पत्नी, घर की समृद्धि करने वाली 2. उपपत्नी, रखैल।

घरबार *पुं.* (देश.) 1. रहने का स्थान, ठिकाना 2. घर का जंजाल 3. घर गृहस्थी का सामान।

घरर घरर *पुं.* (अनु.) वह शब्द जो किसी कड़ी वस्तु को रगड़ने से होता है, घिसने का शब्द।

घरवा *पुं.* (देश.) छोटा-मोटा घर, कुटी।

घरवाला *पुं.* (देश.) पति, स्वामी, भर्ता।

घरवाली *स्त्री.* (देश.) गृहिणी, भार्या, पत्नी।

घरसा *पुं.* (तद्.) रगड़ाना, घिस्सा।

घरहाँई *स्त्री.* (देश.) 1. घर में विरोध कराने वाली स्त्री, चुगलखोर, अपकीर्ति फैलानेवाली।

घरा *पुं.* (देश.) दे. घड़ा।

घराऊ *वि.* (देश.) घर का, गृहस्थ 2. आपस का, निज का, घर के प्राणियों या इष्ट मित्रों के बीच का, घर में होने वाला या उससे संबंधित ।

घराण *पुं.* (देश.) खानदान, वंश, घराना।

घराती *पुं.* (देश.) विवाह में कन्या पक्ष के लोग।

घराना *पुं.* (देश.) खानदान, वंश।

घरानि *स्त्री.* (देश.) घरनी, धरवाली।

घरिया *स्त्री* (देश.) दे. घड़िया।

घरियाना *पुं.* (देश.) घरि लगाना, कपड़े की तह लगा कर लपेटना।

घरियारी *पुं.* (देश.)) दे. घड़ियाली।

घरी *स्त्री.* (देश.) 1. तह, परत, लपेट 2. समय, काल, घड़ी।

घरु *वि.* (देश.) जिसका संबंध घर गृहस्थी से हो, घर का।

घरुआ *पुं.* (देश.) घर का अच्छा प्रबंध, गृहस्थी का ठीक ठीक निर्वाह 2. वह व्यक्ति जो गृहस्थी का प्रबंध समझ बूझ से करे।

घरेलू *वि.* (देश.) 1. जो घर के आदमियों के पास रहे, पालतू 2. घर से संबंधित 3. ऐसा धंधा जो घर में बैठकर किया जा जाए।

घरैया *वि.* (देश.) घर का, अपने कुटुंब का, अत्यंत घनिष्ठ संबंधी *पुं.* घर का आदमी, घर का प्राणी, निकट संबंधी।

घरौंदा *पुं.* (देश.) 1. कागज, मिट्टी, बालू आदि का बना हुआ छोटा घर जिसे बच्चे खेलने के लिए बनाते हैं 2. छोटा-सा घर।

घर्घरक *पुं.* (तत्.) घर्घर की ध्वनि, घाघरा नदी।

घर्घरिका *स्त्री.* (तत्.) आभूषणों में प्रयुक्त घुँघरू, नुपूर, एक प्रकार की वीणा, लावा।

घर्घरित *पुं.* (देश.) सूअर के घुरघुराने की आवाज।

घर्घरीं *स्त्री.* (तत्.) 1. घर्घरा, एक प्रकार की वीणा 2. घुंघरूदार करधनी।

घर्म *पुं.* (तत्.) 1. घाम, धूप, सूर्य ताप 2. पसीना, स्वेद 3. एक प्रकार का यज्ञ 4. ग्रीष्मकाल।

घर्मबिंदु *पुं.* (तत्.) पसीना, स्वेद।

घर्मस्वेद *पुं.* (तत्.) ताप के कारण जिसके शरीर से पसीना निकल रहा है।

घर्मांबु *पुं.* (तत्.) स्वेद, पसीना।

घर्मांशु *पुं.* (तत्.) सूर्य।

घर्मांट *पुं.* (तत्.) ग्रीष्म ऋतु का अंत, वर्षा का आरंभ।

घर्मोदक *पुं.* (तत्.) पसीना।

घर्रा *पुं.* (अनु.) एक प्रकार का अंजन जो अफ़ीम, फिटकरी, घी, कपूर, हड़, जली, बत्ती, इलाचयी, नीम की पत्ती इत्यादि को घिस कर बनाया जाता है 2. गले की घरघराहट 3. कुएँ आदि की मिट्टी 4. जल को व्यक्तियों द्वारा बैल की तरह खींचने का काम।

घर्राटा *पुं.* (अनु.) घर्र-घर्र का शब्द, वह शब्द जो गहरी नींद में साँस लेते समय नाक से निकलता है मुहा. खर्राटा भरना- नींद में सोना; खर्राटा लेना- खर्राटा मारना।

घर्रामी *पुं.* (देश.) छप्पर छाने का काम करनेवाला।

घर्ष *पुं.* (तत्.) रगड़, घर्षण, पीसना, चूर्ण करना।

घर्षक *पुं.* (तत्.) रगड़नेवाला, पीसनेवाला, माँजने वाला।

घर्षण *पुं.* (तत्.) 1. रगड़, घिस्सा 2. पेषण, चूर्णीकरण।

घर्षित *पुं.* (तत्.) घिसा-पिसा अथवा रगड़ा हुआ 2. अच्छी तरह साफ किया हुआ, माँजा हुआ।

घलना *अ.क्रि.* (देश.) छूट कर गिर पड़ना, फेंका जाना 2. हथियार का चल जाना, चढ़े हुए तीर या भरी हुई गोली का छूट जाना 3. मारपीट।

घलाघल *स्त्री.* (देश.) मारपीट, आघात, प्रतिघात।

घलुआ *पुं.* (देश.) वह अधिक वस्तु जो ग्राहक को उचित तोल के अतिरिक्त दी जाए, घाल।

घसकना *अ.क्रि.* (देश.) दे. खिसकना।

घसखुदा *वि.* (देश.) घसियारा, अनाड़ी, मूर्ख, वह व्यक्ति जो घास खोदने का काम करता हो।

घसना *स.क्रि.* (तद्.) घिसना, रगड़ना 2. भक्षण करना।

घसिटना *अ.क्रि.* (देश.) किसी वस्तु का इस प्रकार खिंचना कि वह भूमि से रगड़ खाती हुई एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाए, घसीटा जाना।

घसियारा *पुं.* (देश.) घास बेचनेवाला, घास छीलकर लाने वाला।

घसियारिन *स्त्री.* (देश.) घास बेचानेवाली, घास छीलने वाली।

घसीट *स्त्री.* (देश.) जल्दी-जल्दी लिखने का भाव 2. 2. जल्दी लिखा हुआ लेख 3. घसीटने का भाव 4. वह मोटा फीता या इसी प्रकार की और कोई पट्टी जिसकी सहायता से हवा में उड़ते हुए पालों को मस्तूल आदि से बाँधते है।

घसीटनाँ *स.क्रि.* (देश.) किसी वस्तु को इस प्रकार खींचना कि वह भूमि से रगड़ खाती हुई एक स्थान से दूसरे स्थान को जाए 2. जल्दी-जल्दी लिखना 3. किसी मामले में डालना 4. खींच कर ले जाना।

घस्मर *वि.* (तत्.) पेटू, भक्षक 2. विध्वसंक, विनाशक।

घस्र *पुं.* (तत्.) दिन, दिवस 2. सूर्य 3. शिव 4. कुंकुम *वि.* हानिकार।

घस्सा *पुं.* (तद्.) दे. घिस्सा।

घहनाना *अ.क्रि.* (अनु.) धातु खंड पर आघात लगने से शब्द होना, घंटे आदि की ध्वनि, घहरना 2. बजाकर ध्वनि उत्पन्न करना, घंटा आदि बजना 3. गरजना।

घहराना *अ.क्रि.* (अनु.) गरजने का शब्द करना, गंभीर ध्वनि निकलना, गरजना, चिंघाड़ना, गंभीर ध्वनि निकालना, गरजने का-सा शब्द निकालना।

घांटी *स्त्री.* (तद्.) गले के अंदर की घंटी, कौआ, ललरी 2. गला दे. (कौवा) उतरा घाँटी हुआ माटी।

घाँघरा *पुं.* (देश.) वह चुन्नटदार और घेरदार पहनावा जो स्त्रियाँ कमर में पहनती हैं और जो पैर तक लटकता रहता है, लहँगा 2. लोबिया, बजरबट्टू।

घाँघरी *स्त्री.* दे. घघरा।

घाँटो *पुं.* (देश.) एक प्रकार का चैती की तरह का गाना जो चैत-बैसाख के महीनों में गाया जाता है।

घाँह *स्त्री.* (देश.) तरफ, ओर।

घा *स्त्री.* (तत्.) ओर, तरफ

घाई *पुं.* (देश.) दे. घाव।

घाई *स्त्री.* (देश.) ओर, तरफ, अलग 2. पानी में पड़नेवाला, भंवर, गिरदाब 3. दो वस्तुओं के बीच का स्थान *स्त्री.* (देश.) 1. चोट, आघात, मार, प्रहार, बार मुहा. घाइयाँ बताना- झांसा देना, टालटूल करना।

घाऊघप *वि.* (देश.) चुपचाप माल हजम करनेवाला 2. गुप्त रूप से दूसरे का धन खानेवाला, जिसका भेद कोई न पाए, जिसकी चाल जल्दी न खुले।

घागा *पुं.* (देश.) दे. घाघ। चतुर, काइयाँ, खुर्राट।

घाघ *पुं.* (देश.) उल्लू की जाति का एक पक्षी जो चील के बराबर होता है, घाघस (देश.) अत्यंत चतुर, अनुभवी, सयाना, खुर्राट, इंद्रजाली, जादूगर, गोंड़े के रहने वाले एक बड़े चतुर और अनुभवी व्यक्ति का नाम जिनकी कही हुई बहुत-सी कहावते उत्तरी भारत में प्रसिद्ध है, खेती- बारी, ऋतुकाल तथा लग्न मुहुर्त आदि के संबंध में इनकी विलक्षण उक्तियाँ किसान तथा सर्वसाधारण लोग बहुत कहा करते है।

घाघरा *स्त्री.* (तद्.) सरजू नदी का नाम।

घाघस *पुं.* (देश.) दे. घाघ।

घाघी *पुं.* (तत्.) मछली फँसाने का बड़ा जाल।

घाट *पुं.* (तत्.) नदी, सरोवर या किसी जलाशय का वह स्थान जहाँ लोग पानी भरते या नहाते धोते हैं, नदी, झील आदि का वह किनारा जिस पर पानी तक उतरने के लिए सीढियाँ बनी होती हैं 2. नदी या जलाशय के किनारे का वह स्थान जहाँ धोबी कपड़े धोते हैं 3. नदी या जलाशय के किनारें का वह स्थान जहाँ नाव पर चढ़कर या पानी में तैर कर लोग पार उतरतें हैं मुहा. घाट धरना- राह देखना; घाट मारना- नदी की उतराई न देना 3. तंग पहाड़ी रास्ता, चढ़ाव-उतार का पहाड़ी मार्ग *स्त्री.* 1. धोखा, छल, कपट।

घाटा *पुं.* (देश.) घटी, हानि, नुकसान प्रयो. इस बार मटर की फसल में किसानों को बड़ा घाटा हुआ मुहा. घाटा पड़ना- नुकसान होना; घाटा उठाना- हानि सहना; घाटा भरना- हानि भरना।

घाटारोह *पुं.* (तद्.) घाट का रोकना, घाट से किसी को उतरने न देना।

घाटि *स्त्री.* (तत्.) गले का पिछला भाग।

घाटिका *स्त्री.* (तत्.) 1. गरदन और रीढ़ का संधि भाग 2. गरदन का पिछला भाग।

घाटिया *पुं.* (देश.) तीर्थ स्थानों के घाटों पर बैठकर स्नान करने वालों से दक्षिणा लेनेवाले, ब्राह्मण, गंगापुत्र।

घाड़ *पुं.* (देश.) दे. घाव।

घात *पुं.* (तत्.) प्रहार, चोट, मार, धक्का मुहा. घात चलाना- जादू टोना करना 2. वध, हत्या 3. अहित, बुराई 4. गुणनफल 5. (ज्योतिष में) प्रवेश, संक्रांति 6. बाण, तीर, इषु *स्त्री.* (तत्.) अभिप्राय सिद्ध करने का उपयुक्त स्थान और

अवसर, कोई कार्य करने के लिए अनुकूल स्थिति मुहा. दाँव घात चढ़ाना- किसी की ऐसी स्थिति होना जिससे दूसरे का मतलब सिद्ध हो; घात लगाना- सुयोग मिलना; घात लगाना- अवसर हाथ में लेना। घात में फिरना- ताक में रहना; घात में रहना-किसी के विरूद्ध कोई कार्य करने के लिए अनुकूल अवसर ढूँढ़ते रहना 3. दांव-पेंच, छल, कपट मुहा. घाते लगाना- चाल सिखाना 4. रंगढंग, तौर-तरीका, ढब, धज

घातक *पुं.* (तत्.) 1. घात करनेवाला 2. मार डालने वाला, हत्यारा, हिंसक 3. हानिकर *पुं.* (तत्.) 1. घात करनेवाला व्यक्ति 2. जल्लाद, बधिक 3. फलित ज्योतिष में वह योग जिसका फल किसी की मृत्यु हो 4. शत्रु, दुश्मन।

घातन *पुं.* (देश.) वध करनेवाला, कत्ल करनेवाला।

घाता *पुं.* (देश.) वह थोड़ी सी चीज जो सौदा खरीदने के बाद ऊपर से ली या दी जाती है, घाल, घलुआ।

घाति *स्त्री.* (तत्.) 1. आघात 2. पक्षियों को जाल में फँसाना 3. चिड़िया फँसाने का जाल।

घातिनी *वि./स्त्री.* (तत्.) 1. मारने वाली, वघ करनेवाली 2. नाश करनेवाली।

घातिया *पुं.* (तद्.) दे. घाती।

घाती *पुं.* (तत्.) 1. वध करने वाला, मारने वाला, घातक, संहारक 2. नाश करने वाला *पुं.* छली, विश्वासघाती, घात में रहने वाला।

घातुक *पुं.* (तत्.) 1. हिंसक, नाशकारी 2. क्रूर, निष्ठुर, अनिष्टकारी।

घात्य *पुं.* (तत्.) मारे जाने योग्य, वध्य।

घान *पुं.* (तत्.) 1. प्रहार, चोट, आघात 2. हथौड़ा 3. बादल, मेघ 4. लोहारों का बड़ा हथौड़ा, जिससे वे गरम लोटा पीटते है 5. (देश. घाण) कोल्हू/चक्की/कड़ाही आदी में पेरने/पीसने/तलने हेतु एक बार में डाली गई मात्रा।

घाना *पुं.* (तद्.) मारना, संहार करना, नाश करना टि. इस शब्द का प्रयोग ब्रजभाषा में 'घायबो' या 'घैबो' के रूप में मिलता है।

घानी *स्त्री.* (देश.) उतनी वस्तु जितनी एक बार में चक्की में डालकर पीसी या कोल्हू में डालकर पेरी जा सके दे. घान मुहा. घानी करना- पेरना 2. ढेर, समूह।

घाम *पुं.* (तद्.) धूप, सूर्यातप मुहा. घाम खाना- गर्मी के लिए धूप में रहना 2. ऐसे स्थान पर रहना जहाँ धूप या सूर्य की गर्मी का प्रभाव पड़े, घाम लगना- लू लगना, घर में घाम आना- बड़ी मुसीबत होना।

घामड़ *पुं.* (देश.) घाम या धूप से व्याकुल चौपाया, धूप लग जाने के कारण हर समय हाँफने वाला 2. जिसके होश ठिकाने न हो। मूर्ख, नामसमझ, जड़ 3. आलसी।

घायल *पुं.* (देश.) आहत, जख्मी, चोट खाया हुआ।

घार *पुं.* (तत्.) छिडक़ना, तर करने की क्रिया, आर्द्र करना।

घारी *स्त्री.* (देश.) घासफूस से छाया हुआ वह मकान जहाँ चौपाए बाँधे जाते हैं।

घाल *पुं.* (देश.) सौदे की उतनी वस्तु जितनी ग्राहक को तोल के ऊपर दी जाए, घलुआ मुहा. घाल न गिनना- पासँग बराबर भी न समझना, तुच्छ समझना।

घालक *पुं.* (तद्.) मारनेवाला, नाश करने वाला।

घालकता *स्त्री.* (तद्) मारने का काम, विनाश करने करने की क्रिया।

घालना *पुं.* (देश.) किसी वस्तु के भीतर या ऊपर रखना, डालना 2. फेंकना, चलाना, छोड़ना 3. कर डालना टि. पूर्वी हिंदी (प्रांतिक) में 'घालना' क्रिया का प्रयोग 'डालना' के समान संयो. क्रि. के रूप में भी होता है 3. बिगाड़ना, नाश करना 4. मार डालना दे. नाखना, नंखना।

घालमेल *पुं.* (देश.) कई भिन्न प्रकार की वस्तुओं की एक साथ मिलावट, गड्डबड्ड 2. मेल जोल, घनिष्ठता।

घालिका *स्त्री.* (तद्.) नष्ट करने वाली, विनाश करने वाली।

घाव *पुं.* (तद्.) शरीर पर का वह स्थान जो कट या चिर गया हो, क्षत, ज़ख़्म, चोट 2. आघात, प्रहार।

घावरिया *पुं.* (देश.) घावों की चिकित्सा करने वाला, सतिया, जर्राह।

घास *पुं.* (तत्.) अहार, खाद्य पदार्थ 2. चारा, तृण *स्त्री.* (तत्.) पृथ्वी पर उगनेवाले छोटे-छोटे उद्भिद जिन्हें चौपाए चरते हैं, तृण, चारा यौ. घास-पात-तृण और वनस्पति 2. खर पतवार, कूड़ा कर्कट, बेकार की चीज़ मुहा. घास काटना या खोदना- तुच्छ काम करना, व्यर्थ काम करना, किसी काम को लापरवाही से करना।

घासि *स्त्री.* (तत्.) 1. अग्नि, घास।

घासियारिन *स्त्री.* (देश.) घास बेचने वाली।

घासी *स्त्री.* (देश.) घास, चारा, तृण।

घिऔड़ा *पुं.* (देश.) घी रखने का मिट्टी का बर्तन, घृत पात्र, अमृतबान।

घिग्गी *स्त्री.* (अनु.) 1. सांस लेने में वह रुकावट जो रोते-रोते पड़ने लगती है, हिचकी, सुबकी 2. डर के मारे मुँह से स्पष्ट शब्द न निकलना, बोलने में रुकावट, जो भय के मारे पड़ती है।

घिघियाना *अ.क्रि.* (देश.)) रो-रो कर विनती करना, करुण स्वर से विनती करना, गिड़गिड़ाना।

घिचपिच *पुं.* (तद्.) 1. स्थान की संकीर्णता, जगह की तंगी, संकरापन 2. थोड़े समय में बहुत से व्यक्तियों या वस्तुओं का समूह 3. किसी काम को करने के समय आगा पीछा करना, जो साफ न हो, अस्पष्ट प्रयो. आपका लेख बड़ा घिचपिच है पढ़ा ही नहीं जाता।

घिड *पुं.* (देश.) दे. घी।

घिन *स्त्री.* (तद्.) चित्त की वह खिन्नता जो किसी बुरी या कुत्सित वस्तु को देखकर या सुनकर उत्पन्न होती है।

घिनाना *पुं.* (देश.) नफ़रत करना, घृणा करना।

घिनावना *पुं.* (देश.) जिसे देखकर घिन लगे, घृणित, बुरा, गंदा, घिनौना।

घिनौना *पुं.* (देश.) दे. घिनावना।

घिया *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार की बेल जिसके फलों की तरकारी होती है 2. घियातोरी 3. नेनुँवा।

घियाकश *पुं.* (देश.+फा) चौकी के आकार की एक वस्तु जिस पर उभरे हुए छेद होते हैं और जो घिया, कद्दू और पेठे आदि को बारीक करने के काम आते हैं, कद्दूकश।

घियातरोई *पुं.* (देश.) दे. घियातोरी।

घिरत *पुं.* (तद्.) दे. घृत।

घिरना *पुं.* (तद्.) किसी वस्तु के चारों ओर व्यास होना, आवृत्त होना, घेरे में आना टि. घटा घिरना- इस शब्द का प्रयोग मुख्यतः घटा और बादल के साथ होता है।

घिरनी *स्त्री.* (तद्.) 1. चरखी 2. चक्कर, फेरा 3. लोटन कबूतर 4. रस्सी बटने की चरखी 5. एक जलपक्षी जो जल के ऊपर फड़फड़ाता रहता है और मछली देखते ही चट से उस पर टूट पड़ता है।

घिरवाना *पुं.* (देश.) 1. किसी से घेरने का काम करवाना 2. एक जगह इकट्ठा करवाना।

घिराई *स्त्री.* (देश.) 1. घेरने की क्रिया या भाव 2. पशुओं को चराने का काम 3. पशुओं को चराने की मजदूरी।

घिरायंद *पुं.* (देश.) मूत्र की दुर्गंध।

घिराव *पुं.* (देश.) 1. घेरने की क्रिया या भाव 2. घेरा 3. किसी मिल आदि पर सार्वजनिक या सरकारी अधिकार या नियंत्रण करने के लिए छोटे कर्मचारियों और मजदूर वर्ग द्वारा घेरा डालने का आंदोलन, घेराव।

घिरिया *स्त्री.* (देश.) मनुष्यों का घेरा जो शिकार को घेरने के लिए बनाया जाता है।

घिरौरा *पुं.* (देश.) घूस का बिल।

घिर्री *स्त्री.* (देश.) दे. घिरनी, एक प्रकार की घास।

घिसकना *पुं.* (देश.)) दे. खसकना।

घिसटना *पुं.* (देश.) दे. घसिटना।

घिसना *पुं.* (तद्.) 1. एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर रखकर खूब दबाते हुए इधर-उधर फिराना, रगड़ना मुहा. घिस-घिस कर चलना- खूब काम में लाना, रगड़ खाकर कम होना या छीजना।

घिसपिस *स्त्री.* (तद्.) दे. घिसघिस 2. सट्‌टा-बट्‌टा, मेल-जोल।

घिसफिस *स्त्री.* (तद्.) 1. वह देर जो सुस्ती के कारण हो, कार्य में शिथिलता, अनुचित विलंब।

घिसवाना *पुं.* (देश.) घिसने का काम करवाना, रगड़वाना।

घिस्मघिस्सा *पुं.* (देश.) 1. गहरा धक्का, खूब भीड़-भाड़ 2. लड़कों का एक खेल जिसमें एक अपनी डोरी या नख को दूसरे की डोरी या नख में फँसा कर झटका देता है या रगड़ता है जिससे दूसरे की डोरी कट जाए 2. धक्का, ठोकर 3. कुंदा 4. वह आघात जो पहलवान अपनी कुहनी और कलाई के बीच की हड्‌डी की रगड़ से देते हैं।

घिसा *पुं.* (तद्.) घिसा हुआ, रगड़ा हुआ 2. पुराना 3. जीर्ण।

घिसाई *स्त्री.* (देश.) घिसने की क्रिया 2. घिसने का का भाव।

घिसाना *पुं.* (देश.) रगड़ना।

घिसाव *स्त्री.* (देश.) रगड़, घिसन 2. कमी।

घिसिआना *पुं.* (देश.) घसीटना।

घिसिरपिसिर *स्त्री.* (अनु.) दे. घिसपिस।

घींच *स्त्री.* (तद्.) गरदन, ग्रीवा।

घींचना *पुं.* (देश.) खींचना।

घी *पुं.* (तद्.) दूध का चिकना सार जिसमें से जल का अंश तपा कर निकाल दिया गया हो 2. तपाया हुआ मक्खन, घृत मुहा. घी कड़कडाना- साफ और सोंधा करने के लिए घी को तपाना; घी को कुप्पा लुढकाना- किसी बड़े व्यक्ति की मृत्यु, भारी हानि; घी के चिराग जलाना- घी के दिए जलाना- मनोकामना पूर्ण होना; घी खिचड़ी होना- अभिन्न हृदय होना; पाँचो उंगलियाँ घी में होना- खूब आराम चैन मिलना।

घीकुआर *पुं.* (तत्.) दे. घी।

घीसना *स्त्री.* (देश.) रगड़ना, घसीटना।

घीसा *पुं.* (देश.) घिसने या रगड़ने की क्रिया, रगड़।

घुंघट *पुं.* (देश.) 'घूँघट'।

घुंटिका *पुं.* (तत्.) कंडा।

घुंडी *स्त्री.* (तद्.) कपड़े का गोल बटन, मटर के आकार की कपड़े की सिली हुई गोली जिसे अंगरखे या कुरते का पल्ला बंद करने के लिए बाँधते है मुहा. घुंडी लगाना- अँगरखे या कुरते आदि का पल्ला अटकाना 2. हाथ या पैर के पहनने के कड़े के दोनों छोरों पर की गाँठ जो कई प्रकार की बनाई जाती है 3. बाजू जोशन आदि गहनों में लगी हुई धातु की गोल गाँठ जिसे सूत के धागे में डाल कर गहनों को कसते है 4. एक प्रकार की घास।

घुँगची *स्त्री.* (देश.) 'घुँघची'।

घुँघची *स्त्री.* (तद्.) एक प्रकार की मोटी बेल जो प्रायः जंगलों में बड़ी-बड़ी झाडियों के ऊपर फैली हुई पाई जाती है टि. इसकी पत्तियाँ इमली की पत्तियों की-सी और खाने में कुछ मीठी होती है, इसके फूल सेम के फूलों के समान होते है, फूलों के झड़ जाने के बाद मटर की तरह फलियाँ गुच्छों में लगती है, जो जाड़े में सूख कर फट जाती है, जिनके अंदर लाल-लाल बीज दिखाई पड़ते हैं, यही बीज घुंघची होती है; सफेद रंग की घुंघची भी होती है, लाल घुंघची पूरी लाल होती है, इसके मुख पर काला छींटा होता है, जो बहुत सुंदर लगता है, मुलेठी इसी घुँघची की जड़ होती है, सफेद घुंघची वशीकरण की सामग्री मानी जाती है, वैद्यक में घुंघची कड़ुवी, बलकारक, केश और त्वचा के लिए हितकारी मानी गई है।

घुँघनी *स्त्री.* (देश.) भिगोकर घी या तेल में तला हुआ चना, मटर या और कोई अन्न, घुघरी मुहा. घुँघनी मुँह में रख कर बैठना-मौन होकर रहना।

घुँघर *पुं.* (देश.) दे. घूंघर।

घुँघरदार *पुं.* (देश+फा.) जिसमें घुँघरू लगी हो।

घुंघराले *पुं.* (देश.) घूमे हुए, कुंचित, घुँघरवाले, छल्लेदार बाल, टेढ़े और बल खाए बाल।

घुँघरू *पुं.* (अनु.) 1. किसी धातु की बनी हुई गोल और पोली गुरिया जिसके अंदर घन घन बजने के लिए कंकर भर देते है 2. चौरासी, मंजीर मुहा. घुघँरू-सा लदना- चेचक निकलना 3. ऐसी गुरियों का बना हुआ पैर का गहना जो बच्चे या नाचने वाले पहनते हैं मुहा. घुँघरू बाँधना- नाचने के लिए तैयार होना; घुँघरू बोलना- मरते समय गले से निकलने वाली आवाज 4. गले का वह घुर-घुर शब्द जो मरते समय कफ के कारण निकलता है, घटवा, घटुका 4. वह कोश जिसके अंदर चने का दाना रहता है, बूट के अंदर का खोला, सनई का फल जिसके अंदर बीज रहते है।

घुग्घी *पुं.* (देश.) 1. तिकोना लपेटा हुआ कंबल आदि जिसे किसान या गड़ेरिए धूप, पानी और शीत से बचने के लिए सिर पर डालते है। घोंघी, खड्डआ 2. कपोत जाति की पर कुछ छोटी एक चिड़िया जिसका रंग खूब पकी ईंट की तरह का होता है, इसकी बोली कबूतर से भिन्न होती है, पंडुक, फाख्ता।

घुग्घू *पुं.* (तद्.) उल्लू नाम की चिड़िया, उलूका 1. मिट्टी का एक खिलौना जो फूँकने से बजता है।

घुघुआना *पुं.* (देश.) 1. उल्लू का बोलना 2. बिल्ली का गुर्राना 3. उल्लू की तरह बोलना 4. बिल्ली की तरह गुर्राना।

घुघुरी *स्त्री.* (देश.) दे. घुँघुरु।

घुघुवाना *पुं.* (देश.) दे. घुघुआना।

घुटकना *पुं.* (देश.) 1. घूँट-घूँट करके पीना, पी जाना, पान करना 2. निगलना।

घुटकी *स्त्री.* (देश.) गले की वह नली जिसके द्वारा द्वारा खाना-पानी आदि पेट में जाते है, घुटकने की नली।

घुटन *स्त्री.* (देश.) दम घुटने की स्थिति या भाव 2. मन में घबराहट होने की स्थिति।

घुटना *पुं.* (तद्.) 1. पाँव में मध्य का भाग या जोड़, जाँघ के नीचे आई टाँग के ऊपर का जोड़, टाँग और जाँघ के बीच की गाँठ मुहा. घुटना टेकना- पराजित होना; घुटनों में सिर देना- लज्जित होना 2. साँस का भीतर ही दब जाना, बाहर न निकल सकना, फँसना मुहा. घुट-घुट कर मरना- दम तोड़ते हुए सांसत से मरना 2. उलझ कर कड़ा पड़ जाना, फँसना, घोटा-जाना, पिस जाना मुहा. घुटा हुआ- छँटा हुआ; 3. रगड़ खाकर चिकना होना 4. घनिष्ठता होना 5. मिलजुलकर बात होना।

घुटन्ना *पुं.* (देश.) 1. घुटनों तक का पायजामा 2. पतली मोहरी का पायजामक।

घुटरूँ *पुं.* (तद्.) पाँव के मध्य भाग का जोड़, घुटना।

घुटरून *पुं.* (देश.) घुटनों के बल।

घुटवाना *पुं.* (देश.) घोटने का काम 2. बाल मुँड़ाना।

घुटा *पुं.* (देश.) 1. मुंडित 2. चतुर, चालाक।

घुटाई *स्त्री.* (देश.) 1. घोटने या रगड़ने का भाव या या क्रिया 2. रगड़ कर चिकना और चमकीला बनाने का भाव या क्रिया, रगडक़र चिकना करने की मजदूरी।

घुट्टी *स्त्री.* (देश.) वह दवा जो छोटे बच्चों को पचाने के लिए पिलाई जाती है मुहा. घुट्टी में पड़ना- स्वभाव के अंतर्गत होना प्रयो. सच बोला तो इनकी घुट्टी में पड़ा है।

घुड़ *पुं.* (देश.) घोड़ा का लघु रूप जो यौगिक शब्दों के आरंभ में प्रयुक्त होता है, घुड़चढ़ा, घुड़साल।

घुड़कना *पुं.* (देश.) किसी पर क्रुद्ध होकर उसे डराने के लिए जोर से कोई बात कहना, कड़ककर बोलना, डाँटना।

घुड़की *स्त्री.* (अनु.) वह बात जो क्रोध में आकर डराने के लिए जोर से कही जाए, डाँट-डपट, फटकार 2. घुड़काने की क्रिया मुहा. बंदर घुड़की, झूठ-मूठ डर दिखाना।

घुड़चढ़ी *स्त्री.* (देश.) 1. विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा घोड़े पर चढक़र दुलहिन के घर जाता है 2. देहाती तवायफ जो प्राय: घोड़े पर चढ़ कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाती है, निकृष्ट श्रेणी की गानेवाली वेश्या 3. एक प्रकार की छोटी तोप जो घोड़े पर रख कर चलाई जाती है।

घुड़दौड़ *स्त्री.* (देश.) घोड़ों की दौड़ 2. घोड़े दौड़ाने का स्थान या सडक़ 2. एक प्रकार का जुए का

खेल जिसमें व्यक्ति एक निश्चित स्थान से अपने अपने घोड़े दौड़ाता है, जिसका घोड़ा निर्धारित स्थान पर सबसे पहले पहुँचे वही घुड़दौड़ जीत जाता है 3. अश्वारोही सेना की परेड या कवायद।

घुड़नाल *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की तोप जो घोड़ों पर चलती है।

घुड़ला *पुं.* (देश.) 1. मिट्टी या किसी धातु या मिठाई का बना हुआ घोड़ा 2. कोई छोटी रस्सी या पतली जंजीर जिससे जहाज वाले अनेक काम लेते हैं।

घुड़साल *स्त्री.* (तद्.) घोड़ों के बाँधने का स्थान, अस्तबल, पैंड़ा।

घुड़ीदार *पुं.* (देश.) 1. जिसमे घुंडी लगी हो 2. एक प्रकार की सिलाई जिसमें एक टांके के बाद दूसरा टांका फंदा डाल कर लगाते हैं।

घुण *पुं.* (तत्.) दे. घुन।

घुन *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो अनाज, पौधे और लकड़ी में लगता है इसकी अनेक प्रजातियाँ हैं, लकड़ी का घुन अनाज के घुन से भिन्न होता है मुहा. घुन लगना- घुन का अनाज या लकड़ी को खाना।

घुनघुना *पुं.* (अनु.) लकड़ी, पीतल इत्यादि का बना हुआ एक छोटा-सा खिलौना, जिसे लडक़े हाथ में लेकर बजाया करते है, इसका आकार गोल या लंबोतरा होता है, झुनझुना।

घुनना *पुं.* (देश.) घुन के द्वारा लकड़ी आदि का खाया जाना, किसी दोष के कारण किसी चीज का अंदर ही अंदर छीजना।

घुनाक्षर *पुं.* (तद्.) ऐसी कृति या रचना जो अनजाने में उसी प्रकार हो जाए, जिस प्रकार घुनों के खाते खाते लकड़ी में अक्षर की तरह के बहुत से चिह्न या लकीरें बन जाती हैं टि. इस न्याय का उक्ति का प्रयोग ऐसे स्थानों पर करते हैं, जहाँ किसी के द्वारा आकस्मिक कार्य हो जाता है जो उसे अभीष्ट न रहा हो।

घुनाक्षरन्याय *पुं.* (तद्.) दे. घुनाक्षर।

घुन्ना *पुं.* (अनु.) जो अपने क्रोध, द्वेष आदि भावों को मन ही में रखे और चुपचाप उनके अनुसार कार्य करे। मन-ही-मन बुरा माननेवाला, चुप्पा।

घुन्नी *स्त्री.* (अनु.) अपने मन का भाव गुप्त रखनेवाली, चुप्पी *स्त्री.* (तत्.) चुप्पी, मौन।

घुप *पुं.* (तद्.) गहरा अंधेरा, निबिड़-अंधकार।

घुमंतू *वि.* (देश.) बराबर इधर-उधर घूमनेवाला।

घुमँड़ना *अ. क्रि.* (देश.) दे. घुमड़ना।

घुमक्कड़ *वि.* (देश.) बहुत घूमनेवाला।

घुमटा *पुं.* (देश.) सिर का चक्कर जिसमें आँख के आगे अंधेरा आ जाता है और आदमी खड़ा नहीं रह सकता।

घुमड़ना *अ.क्रि.* (देश.) बादलों का घूम-घूम कर इकट्‌ठा होना, घने मेघों का छाना, बादलों का इधर उधर घने होकर जमना।

घुमड़ाना *स.क्रि.* (देश.) दे. घुमड़ना।

घुमड़ी *स्त्री.* (देश.) किसी केंद्र पर स्थित रह कर चारों ओर फिरने की क्रिया, कुम्हार के चाक की तरह घूमने की क्रिया 2. वह चक्कर जो इस प्रकार घूमने से लोगों के सिर में आता है 3. सिर में चक्कर आने का रोग जिसमें आँखों के आगे अंधेरा छा जाता है 4. परिक्रमा 5. पशुओं का एक रोग।

घुमरी *स्त्री.* (देश.) दे. घुमड़ी।

घुमनी *स्त्री.* (देश.) जो इधर-उधर घूमे फिरे।

घुमाना *स.क्रि.* (देश.) 1. चक्कर देना, चारों ओर फिराना 2. इधर-उधर टहलाना, सैर कराना 3. किसी ओर प्रवृत्त करना, ऐंठना।

घुमाव *पुं.* (देश.) फेर, चक्कर, घूमने या घुमाने का मान।

घुमावदार *वि.* (देश.) चक्करदार, जिसमें कुछ घुमाव-फिराव हो।

घुमेर *पुं.* (देश.) फेर, चक्कर, बेसुधी।

घुर *पुं.* (तत्.) घूर का समासगत रूप।

घुरकना *पुं.* (अ.क्रि.) दे. घुड़कना।

घुरका *पुं.* (अनु.) चौपायों की एक बीमारी।

घुरघुर *पुं.* (अनु.) घुरघुर शब्द जो बिल्ली या सूअर के गले से निकलता हैं, यह शब्द मनुष्य के गले से भी निकलता है।

घुरघुरा *पुं.* (अनु.) 1. झिंगुर नाम का कीड़ा 2. गले का एक रोग, कंठमाला।

घुरघुराना *पुं.* (अनु.) गले से घुरघुर शब्द निकलना।

घुरघुराहट *स्त्री.* (अनु.) घुरघुर शब्द निकालने का भाव।

घुरड़ *पुं.* (देश.) नीलगाय।

घुराना *अ.क्रि.* (देश.) चारों ओर छा जाना, घेर लेना।

घुरिका *स्त्री.* (तत्.) घुर-घुर की आवाज, खर्राटा।

घुरी *स्त्री.* (तत्.) सूअर का मुँह।

घुरूँवा *पुं.* (देश.) जानवरों का एक रोग विशेष. यह रोग एक पशु से उड़ कर दूसरे में जा व्यापता है और कठिनाई से दूर होता है, इससे पशु का गला सूज जाता है और बहुत तेज ज्वर चढ़ता है।

घुरूहरी *स्त्री.* (देश.) घुरहुरी।

घुर्घुर *पुं.* (तत्.) 1. घुर घुर की ध्वनि 2. शूकर या श्वान की आवाज 2. चील 3. यमकीट।

घुर्घुरक *पुं.* (तत्.) कलकल ध्वनि या गड़गड़ाहट की ध्वनि।

घुलंच *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का तृण धान्य, कसेई, गवेधुक।

घुलघुलारव *पुं.* (तत्.) गुटरगूँ करने वाला, कबूतर।

घुलना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. पानी, दूध आदि पतली चीजों में घुल मिल जाना, किसी द्रव पदार्थ में मिश्रित हो जाना, हटा देना मुहा. घुल-घुल कर बातें करना-खूब मिलजुल कर बातें करना 2. जल आदि के संयोग से किसी पदार्थ के अणुओं का अलग होना, गलना, द्रवित होना मुहा. घुला हुआ- बुड्ढा; घुलघुलकर काँटा होना- बहुत दुबला होना, घुलघुल कर मरना- बहुत दिनों तक कष्ट भोग कर मरना 3. दाँव हाथ से निकल जाना 4. समय बीतना प्रयो. जरा से काम में वर्षो घुल गए।

घुलवाना *स.क्रि.* (देश.) गलवाना, द्रवित कराना, आँख में सुरमा डालना।

घुलाना *स.क्रि.* (देश.) गलाना, पिघलाना, द्रवित करना 2. शरीर दुर्बल करना, शरीर क्षीण करना।

घुलावट *स्त्री.* (देश.) घुलने का भाव।

घुषित *वि.* (तत्.) घोषित, जिसकी घोषणा की गई हो, ध्वनित, कथित।

घुष्ट्र *पुं.* (तत्.) गाड़ी, शकट।

घुसना *अ.क्रि.* (देश.) प्रवेश करना, अंदर जाना, कुछ वेगपूर्वक अथवा दूसरे की इच्छा के विरूद् ध अंदर जाना।

घुसपैठ *स्त्री.* (देश.) पहुँच, गति, प्रवेश 2. दखल, हस्तक्षेप।

घुसपैठिया *पुं.* (देश.) वह व्यक्ति जो बिना नागरिकता प्राप्त किए हुए शत्रु राष्ट्र में चोरी छिपे छिपे रहता हो और वहाँ की खबर अपने राज्य को देता है, भेदिया।

घुसवाना *प्रे.क्रि.* (देश.) घुसाने का काम कराना।

घुसाना *स.क्रि.* (देश.) भीतर घुसेड़ना, अंदर पैठाना, चुभाना, धँसाना।

घुसृण *पुं.* (तत्.) कुंकुम, केशर, जाफ़रान।

घुसेड़ना *स.क्रि.* (देश.) घुसाना, पैठाना 2. धँसाना, चुभाना।

घूँघा *पुं.* (देश.) दे. घूँसा।

घूँट *पुं.* (देश.) 1. पानी या किसी द्रव पदार्थ का उतना अंश जितना एक बार में गले के नीचे उतारा जाय, चुसकी मुहा. घूँट फेंकना- किसी पीने की वस्तु का बहुत थोड़ा-सा अंश पीने के पहले पृथ्वी पर गिरना, जिससे नजर न लगे या देवी-देवता का अंश निकल जाए; घूँट लेना- थोड़ा-थोड़ा करके पीना; घूँट-घूँट करके मारना- तंग कर करके मारना 2. पहाड़ी टट्टुओं की एक जाति जिसे गूंठ या गुंठा भी कहते है।

घूँटना *स.क्रि.* (देश.) पीना, किसी द्रव पदार्थ को गले के नीचे उतारना।

घूँटा *पुं.* (तद्.) टाँग और जाँघ के बीच का जोड़, घुटना।

घूँटी *स्त्री.* (देश.) एक औषध जो स्वास्थ्यकर और पाचक होने के कारण छोटे बच्चों को नित्य पिलाई जाती है मुहा. जन्म घूँटी-एक घूँटी जो

बच्चे के जन्म के दूसरे दिन पेट साफ करने के लिए पिलाई जाती है।

घूँसा *पुं.* (देश.) 1. बँधी हुई मुट्ठी जो मारने के लिए उठाई जाए 2. बँधी हुई मुट्ठी का प्रहार, मुक्का मुहा. घूँसा खाना-घूँसा चलाना।

घूँसेबाज *वि.* (देश.+फा) घूँसा मारनेवाला 2. घूँसेबाजी का खेल खेलने वाला।

घूआ *पुं.* (देश.) बाँस, मूँज या सरकंडे आदि का रूई की तरह का फूल जो लंबे सींकों में लगा होता है 2. पानी के किनारे मिट्टी में रहने वाला एक कीड़ा, जिसे बुलबुल आदि पक्षी खाते है, रेवां 3. दरवाजे में ऊपर या नीचे का वह छेद जिसमें किवाड़ की चूल अटकाई जाती है।

घूक *पुं.* (तत्.) 1. घुग्घू, उल्लू 2. बाँस, बेंत, रँहटे या मूँज आदि का बना हुआ तंग मुँह का बर्तन।

घूकारि *पुं.* (तत्.) कौआ।

घूगस *पुं.* (देश.) ऊँचा बुर्ज।

घूघँट *पुं.* (तद्.) दे. घूँघट, स्त्रियों की साड़ी या चादर के किनारे का वह भाग जिसे वे लज्जावश या परदे के लिए सिर पर से नीचे बढ़ाकर मुँह पर डाले रहती हैं।

घूघ *स्त्री.* (देश.) लोहे या पीतल की बनी टोपी जो लड़ाई के समय सिर को चोट से बचाने के लिए पहनी जाती है।

घूघी *स्त्री.* (देश.) जेब, घुग्घी, फाख्ता।

घूटका *पुं.* (तत्.) भीमसेन का घटोत्कच नाम का पुत्र जो हिडिंबा राक्षसी से पैदा हुआ था।

घूड़ा *पुं.* (देश.) दे. घूरा।

घूननि *स्त्री.* (देश.) घूमने का भाव।

घूम *स्त्री.* (देश.) फेर, घूमने का भाव, मोड़, वह स्थान जहाँ से किसी ओर मुड़ना पड़े 2. निद्रा।

घूमना *अ.क्रि.* (देश.) 1. चारों ओर फिरना, चक्कर खाना 2. सैर करना, टहलना 3. देशांतर में भ्रमण करना 4. एक वृत की परिधि में घूमना, काटना 5. किसी ओर मुड़ना 6. वापस आना, लौटना मुहा. घूम जाना-गायब हो जाना। घूम पड़ना-बिगाड़ उठना 7. उत्मत्त होना, मतवाला होना।

घूमर *वि.* (देश.) मत्त, मत्तवाला *पुं.* एक राजस्थानी लोक नृत्य।

घूर *पुं.* (तद्.) 1. वह स्थान जहाँ कूड़ा करकट फैंका जाए 2. कूड़े का ढेर 3. किसी पोली चीज़ में उसको भारी करने के लिए भरा हुआ बालू और सुहागा।

घूरना *अ.क्रि.* (तद्.) बार-बार आँख गड़ाकर बुरे भाव से देखना, बुरी नीयत से एकटक देखना, कुपित दृष्टि से ताकना।

घूरा *पुं.* (तद्.) कूड़े का ढेर, वह स्थान जहाँ कूड़ा फ़ेका जाता है।

घूराघारी *स्त्री.* (देश.+अनु) घूरने की क्रिया या भाव।

घूर्णन *पुं.* (तत्.) घूमना, चक्कर खाना 2. भ्रमण।

घूर्णि *स्त्री.* (तत्.) दे. घूर्णन।

घूर्णित *वि.* (तत्.) 1. घूमता हुआ, चकराता हुआ 2. भ्रमित

घूला *पुं.* (देश.) बाँस, बेत, रहटे या मूज इत्यादि का बना हुआ तंग मुँह का बर्तन।

घूस *स्त्री.* (तद्.) चूहे के वर्ग का एक बड़ा जंतु जो प्राय: धरती में बिल खोदकर रहता है। एक प्रकार का बड़ा चूहा *स्त्री.* (तत्.) वह द्रव्य जो किसी को को अपने अनुकूल कोई कार्य करने के लिए अनुचित रूप से दिया जाए, रिश्वत।

घूसखोर *पुं.* (देश.+फा. खोर) घूस लेने वाला, रिश्वत लेनेवाला।

घृणा *स्त्री.* (तत्.) 1. घिन, नफरत 2. वीभत्स रस का स्थाई भाव 3. दया, करुणा, तरस।

घृणास्पद *वि.* (तत्.) घृणा करने योग्य।

घृणि *पुं.* (तत्.) 1. प्रकाश की किरण 2. गर्मी, धूप 3. तरंग, लहर, जल 4. क्रोध, कोप 5. सूर्य।

घृणित *वि.* (तत्.) घृणा करने योग्य, तिरस्कृत, निंदित।

घृणी *वि.* (तत्.) घृणा करने वाला।

घृण्य *वि.* (तत्.) दे. घृणित।

घृत *पुं.* (तत्.) 1. घी, तपाया हुआ मक्खन 2. जल, तेजस (तत्.) आर्द्र किया हुआ, सिंचित, तर 2. द्योतित, आलोकित।

घृतकुमारी *स्त्री.* (तत्.) घीकुवार, गवारपाठा ।

घृतधारा *स्त्री.* (तत्.) घी की धारा 2. पश्चिम देश की एक नदी 3. पुराणानुसार कुश दीप की एक नदी।

घृतप्रमेह *पुं.* (तत्.) प्रमेह रोग का एक प्रकार जिसमें मूत्र घी के समान गाढ़ा और चिकना होता है।

घृतांत *पुं.* (तत्.) घृतयुक्त अन्न 2.प्रज्वलित अग्नि।

घृताक्त *पुं.* (तत्.) घी से तर, घी से चुपड़ा हुआ।

घृताचि *पुं.* (तत्.) प्रज्वलित अग्नि।

घृताची *स्त्री.* (तत्.) स्वर्ग की एक आप्सरा 2. वह करछुली जिससे यज्ञों में घी अग्नि में डाला जाता है, श्रुवा 3. गायत्री देवी स्वरूपा देवी। कुशनाभ-नामक एक प्राचीन राजा की रानी का नाम।

घृताहवन *पुं.* (तत्.) अग्नि।

घृताहुति *स्त्री.* (तत्.) हवन के समय अग्नि में घी डालने की क्रिया।

घृतेली *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार का कीड़ा, घी का कीड़ा, तेल चट्टा।

घृतोदंक *पुं.* (तत्.) घी रखने का कुप्पा।

घृतोद *पुं.* (तत्.) पुराणों में वर्णित सात महासागरों में से एक, घृत समुद्र।

घृष्ट *पुं.* (तत्.) घिसा हुआ।

घृष्टि *स्त्री.* (तत्.) घर्षण, रगड़ा 2. विष्णुक्रांता, अपराजिता 3. होड़, स्पर्धा *पुं* (तत्.) शूकर, सूअर।

घेंटा *पुं.* (देश.) सूअर का बच्चा।

घेंटी *स्त्री.* (देश.) चने की फली के अंदर बीज रूप से चना होता है 2. एक पक्षी 3. चने की फल के आकार की कोई वस्तु।

घेघा *पुं.* (देश.) 1. गले की नली जिससे भोजन या पानी पेट में जाता है 2. गले का एक रोग जिसमे गले में सूजन आ जाती है।

घेर *पुं.* (देश.) चारों ओर का फैलाव, घेरा, परिधि, घेरने की क्रिया।

घेरना *स.क्रि.* (तद्.) 1. बाँधना, रोकना, चारों ओर से बाँधना 2. किसी स्थान को अपने अधिकार में रखना 3. सेना का शत्रु के किसी नगर या दुर्ग के चारों ओर आक्रमण के लिए स्थित होना 4. खुशामद करना, विनती करना।

घेरदार *वि.* (देश.+फा. दार) बड़े घेरे वाला, बड़े घेरे का, चौड़ा।

घेरा *पुं.* (देश.) 1. चारों ओर की सीमा 2. किसी तल के सब ओर के बाहरी किनारे 3. लंबाई चौड़ाई आदि का विस्तार 4. घिरा हुआ, फैला हुआ 5. किसी लंबे और घन पदार्थ की चौड़ाई और मोटाई का विस्तार, पेटा।

घेराघार *स्त्री.* (देश.+तत्.) चारों ओर से घेरने या छा जाने की क्रिया 2. चारों और का फैलाव, विस्तार 3. किसी कार्य के लिए किसी के घर बार-बार उपस्थित होने का कार्य, खुशामद, विनती।

घेराबंदी *स्त्री.* (देश.+फा. बंदी) किसी के चारों ओर घेरा डालने की स्थिति या भाव

घेराव *पुं.* (देश.) दे. घिराव।

घेरेदार *वि.* (देश.) चारों ओर से घिरा हुआ, घेरदार।

घेवर *पुं.* (देश.) एक प्रकार की मिठाई जो पतले घुले हुए मैदे, घी और चीनी से बनाई जाती है और बड़ी टिकिया या खजले के आकार की और सूराखदार होती है।

घेवरना *स.क्रि.* (तद्.) लगाना, पोताना, लेप लगाना।

घैया *पुं.* (देश.) गाय के थन से निकली हुई धार जो मुँह लगाकर पी जाए *स्त्री.* ओर, तरफ, दिशा।

घैर *पुं.* (देश.) बदनामी, अपयश

घैल *पुं.* (तद्.) घड़ा, कलसा, गगरा

घोंगा *पुं.* (देश.) दे. घोंघा।

घोंघ *पुं.* (तत्.) बीच का अंतर या अवकाश।

घोंघा *पुं.* (देश.) शंख की तरह का एक कीड़ा जो प्राय: नदियों, तालाबों तथा अन्य जलाशयों में पाया जाता है टि. इसकी बनावट घुमावदार होती है, पर इसका मुँह गोल होता है, जो खुल भी सकता है और बंद भी हो सकता है, इसके ऊपर का अस्थिकोश शंख से बहुत पतला होता है 2. गेहूँ की बाल में वह कोथली जिसमें दाना रहता है, जिसमें कुछ सार न हो, सारहीन 3. मूर्ख, जड़।

घोंचवा *पुं.* (देश.) एक प्रकार का बैल, घोंघा।

घोंचा *पुं.* (देश.) गोद, गुच्छा, स्तवक, वह बैल जिसके सींग मुड़कर कान से जा लगे हों।

घोंची *स्त्री.* (देश.) वह गाय जिसके सींग कानों की ओर मुड़े हों।

घोंचू *वि.* (देश.) मूर्ख।

घोंटना *स.क्रि.* (देश.) गला इस प्रकार दबाना कि दम रुक जाए, गला मरोड़ना।

घोंटा *पुं.* (तत्.) सुपारी।

घोंटू *वि.* (देश.) घोंटनेवाला, (गला), (दम) घोंटू 2. रटनेवाला, रट्टू

घोंपना *स.क्रि.* (देश.) भोंकना, चुभाना, धँसाना 2. बुरी तरह सीना, गाँठना।

घोंसला *पुं.* (देश.) वृक्ष, पुरानी दीवार के मोखे आदि पर खर, पत्ते, घास-फूँस और तिनके आदि से बना हुआ वह स्थान जिसमें पक्षी रहते हैं, नीड़, खोता।

घोखना *स.क्रि.* (तद्.) धारण करने के लिए बार-बार पढ़ना, स्मरण रखने के लिए बार-बार पढ़ना, रटना, घोटना।

घोखवाना *स.क्रि.* (देश.) बार-बार कहलाना, याद करना, रटवाना।

घोघा *पुं.* (देश.) एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो चने की फसल को हानि पहुँचाता है। यह कीड़ा सरदी से पैदा होता है और चने की घेंटियों के अंदर घुसकर दाने खा जाता है, जिससे खाली घेंटी रह जाती है।

घोटक *पुं.* (तत्.) घोड़ा, अश्व।

घोटकारि *पुं.* (तत्.) घोड़े का शत्रु, भैंसा, महिष।

घोटना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी वस्तु को दूसरी वस्तु पर इसलिए बार-बार रगड़ना कि वह दूसरी वस्तु चिकनी और चमकीली हो जाए, रगड़ना, बारीक पीसने के लिए बार-बार रगड़ना जैसे- भांग पीसना, आटा पीसना, चंदन घिसना *पुं.* घोटने का औजार, वह वस्तु जिससे कुछ घोटा जाए जैसे- भँगघोटना।

घोटनी *स्त्री.* (देश.) वह छोटी वस्तु जिसमें या जिससे कोई वस्तु घोटी जाए।

घोटवाना *स.क्रि.* (देश.) रगड़वाना, घोटना, चिकना करना 2. पालिश करवाना 3. सिर या दाढ़ी आदि के बाल बनवा डालना।

घोटा *पुं.* (देश.) 1. वह वस्तु जिससे घोटने का काम किया जाए 2. रँगरेज का एक औजार जिसे वे रंगे हुए कपड़ों पर चमक लाने के लिए रगड़ते है, दुवाली, मोहरा 2. घुटा हुआ चमकीला कपड़ा 4. भांग घोंटने का सोटा या डंडा 5. बाँस का वह चोंगा जिससे घोड़ो, बैलों आदि पशुओं को नमक, तेल या और कोई औषध पिलाई जाए 6. नग जड़ियों का एक औजार 7. रगड़ा 8. क्षौर, हजामत।

घोटाई *स्त्री.* (देश.) घोटने का भाव, घोटने की क्रिया।

घोटाला *पुं.* (देश.) घपला, गड़बड़, गोलमाल।

घोटिका *स्त्री.* (तत्.) घोड़ी।

घोटू *पुं.* (देश.) 1. वह जो घोटे, घोटनेवाला 2. घोटने का औजार, घोटा।

घोठ *पुं.* (तद्.) गाँठ, गोष्ठ।

घोड़ *पुं.* (तद्.) घोड़ा।

घोड़ा *पुं.* (तद्.) गंधर्व अश्व, बाजि, तुरंग, चार पैरों वाला एक बड़ा शक्तिशाली जानवर जो सवारी के काम आता है टि. इसके पैरों में गोलाकार (सुम टाप) होते हैं, यह गधे से बड़ा, मजबूत और दौड़ने में बहुत तेज होता है, प्राचीन काल से ही मनुष्य घोड़े से सवारी का काम लेता रहा है, घोड़े की चालों में कदम, दुलकी, पोइया, रहवाल, लंगूरी आदि है, घोड़े की बोली को हिनहिनाना कहते हैं, उत्तम् मध्यम और कनिष्ठ घोड़ों के प्रकार है, इनकी अवस्था का अनुमान इसके दाँतों से किया जाता है, अरब, स्पेन आदि देशों के घोड़े अच्छी जाति के माने जाते है, भारत में कच्छ, काठियावाड़ और सिंध (पाकिस्तान) के घोड़े उत्तम नस्ल के माने गए है मुहा. घोड़ा छोड़ना- किसी ओर घोड़ा दौड़ाना; घोड़ा बेचकर सोना- गहरी नींद सोना।

घोड़ागाड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. वह गाड़ी जो घोड़े द्वारा चलाई जाती है 2. डाक गाड़ी, मेलकार्ट 3. वह गाड़ी जो डाक के थैले ऐसी जगह पहुँचाती है जहाँ रेल आदि नहीं जाती, बहुधा इस गाड़ी में घोड़े ही जाते हैं।

घोड़ानस *स्त्री.* (देश.) वह मोटी नस जो पैर में ऐड़ी ऐड़ी से ऊपर की ओर गई होती हैं।

घोड़िया *स्त्री.* (देश.) 1. छोटी घोड़ी 2. दीवार में गड़ी हुई खूंटी जिससे कपड़े लटकाए जाते हैं।

घोड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. घोड़े की मादा 2. पायों पर खड़ी काठ की लंबी पटरी जो पानी के घड़े रखने, गोटे पट् टे की बुनाई में तार कसने, सेवई पूरने, सेब बनाने आदि से बहुत से कामों में आती है, पाटा 3. दूर दूर रखे हुए दो जोड़े बाँसों के बीच में बँधी हुई डोरी या अलगनी जिस पर धोबी कपड़े सुखाते हैं 4. विवाह की वह रीति जिसमें दूल्हा घोड़ी पर चढक़र दुलहिन के घर जाता है मुहा. घोड़ी चढ़ना- बारात में चढ़ना 5. वे गीत जो विवाह में वर पक्ष की ओर से गाए जाते है 6. खेल में वह लडक़ा जिसकी पीठ पर दूसरे लड़के सवार होते है 7. जुलाहों का एक औजार जिसमें दोहरे पायों के बीच में एक डंडा लगा रहता है 8. हाथी दाँत का वह छोटा लंबोतरा टुकड़ा जो तंबूरे, सारंगी, सितार आदि में तुंबे के ऊपर लगा रहता है, जवारी।

घोणस *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का साँप

घोणा *स्त्री.* (तत्.) नासिका, नाक 2. घोड़े या सूअर का थूथन 3. उल्लू की चोंच 4. एक पौधा।

घोनी *स्त्री.* (तद्.) शूकर, सूअर।

घोर *पुं.* (तत्.) भयंकर, भयानक, विकराल 2. सघन घना, दुर्गम 3. कठिन 4. गहरा 5. बुरा 6. बहुत अधिक *पुं.* (तत्.) 1. शिव का एक नाम 2. विष 3. भय 4. पूज्य भाव 5. जाफरान 6. स्कंद के पारिषद् गण की उपाधि *स्त्री.* (तत्.) शब्द, गर्जन, ध्वनि, आवाज।

घोरा *स्त्री.* (तत्.) 1. श्रवण, चित्रा और शतभिषा नक्षत्रों में बुध की गति 2. रात्रि, रात।

घोराकार, घोराकृति *पुं.* (तत्.) भयानक, डरावना।

घोल *पुं.* (देश.) 1. मथा हुआ दही जिसमें पानी न डाला गया हो, तक्र 2. लस्सी 3. घोल कर बनाई गई वस्तु *पुं.* (देश.) घोड़ा।

घोलना *पुं.* (देश.) पानी या किसी द्रव पदार्थ में किसी वस्तु को हिलाकर मिलाना, चीनी घोलना, शरबत घोलना, हल करना मुहा. घोल पीना- घोलकर पीना; घोलकर पी जाना- सहज में मार डालना।

घोला *पुं.* (देश.) वह जो घोल कर बना हो, घोली हुई अफीम।

घोलुवा *वि.* (देश.) घोला हुआ, जो घोल कर बना हो।

घोष *पुं.* (तत्.) अमीरपल्ली, अहीरों की बस्ती 2. अहीर 3. गोशाला 4. बंगाली कायस्थों का एक उपनाम 5. तट 6. ईशान कोण का एक देश 7. शब्द 8. गरजने का शब्द 9. ताल के 60 मुख्य भेंदो में से एक 10. शब्दों के उच्चारण में 11 बाह् य प्रयत्नों में से एक, ग, घ, ज, झ, ड, ढ, द, ध, ब, भ ङ., ञ, ण, न, य, र, ल, व, ह 11. शिव 12. जनश्रुति 13. कुटी 14. कांस्य।

घोषक *पुं.* (तत्.) घोषणा या मुनादी करने वाला।

घोषण *पुं.* (तत्.) दे. घोषणा।

घोषणा *स्त्री.* (तत्.) 1. उच्च स्वर से किसी बात की घोषणा 2. राजाज्ञा का प्रचार, मुनादी, गर्जन, ध्वनि, शब्द, आवाज।

घोषयित्नु *पुं.* (तत्.) 1. कोकिला 2. ब्राह्मण 3. घोषणा करने वाला 4. चारण।

घोषवती *स्त्री.* (तत्.) वीणा।

घोषवत् *पुं.* (तत्.) वह शब्द जिसमें घोष प्रयत्न वाले अक्षर अधिक हो।

घोषा *स्त्री.* (तत्.) सौंफ 2. कर्कटशृंगी।

घोषाल *पुं.* (तत्.) बंगाली ब्राह्मणों का उपनाम।

घोसना *स्त्री.* (तद्.) दे. घोषणा (तत्.) घोषित करना, उच्चारित करना।

घोसी *पुं.* (तद्.) अहीर, ग्वाला, दूध बेचने वाला टि. जो अहीर मुसलमान होते हैं वे घोसी कहलाते हैं।

घ्राणेंद्रिय *स्त्री.* (तत्.) नाक, नासिका।

घ्रात *वि.* (तत्.) सूँघा हुआ।

घ्रातव्य *वि.* (तत्.) सूँघने योग्य, जिसे सूँघा जा सके।

घ्राता *वि.* (तत्.) सूँघने वाला।

घ्राति *स्त्री.* (तत्.) 1. सूँघने की क्रिया 2. सौरभ, सुगंध 3. नाक।

घ्रेय *वि.* (तत्.) सूँघने योग्य।

च

संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का बाईसवाँ अक्षर और छठा व्यंजन जिसका उच्चारण स्थान तालु और स्पर्श वर्ण है, यह श्वास, विवार, घोष और अल्पप्राण है।

चंक *वि.* (तद्.) पूरा-पूरा, समूचा, सारा, समस्त *पुं.* एक उत्सव जो उत्तर भारत तथा मध्य प्रदेश आदि में फसल कटने पर मनाया जाता है।

चंक्रम *पुं.* (तत्.) टहलने का स्थान।

चंक्रमण *पुं.* (तत्.) 1. धीरे-धीरे इधर से उधर घूमना, टहलना 2. बार-बार घूमना 3. उछलना, कूदना, फाँदना 4. मंद गति से टेढ़े-मेढ़े आना-जाना।

चंक्रमित *वि.* (तत्.) बार-बार घूमा हुआ या चक्कर खाया हुआ।

चंग *स्त्री.* (फा.) 1. डफली के आकार का एक छोटा वाद्य यंत्र जिसे लावनी लोकगीत के गायन के साथ नृत्योत्सव आदि के दौरान बजाया जाता है। 2. सितार का चढ़ा हुआ पंचम सुर 3. पतंग 4. कलंक *वि.* (तत्.) 1. दक्ष, चतुर, कुशल 2. स्वभाव 3. सुंदर, शोभाशाली, शोभायुक्त, रम्य 4. अच्छा, उत्तम।

चंगला *स्त्री.* (तत्.) मेघराग से संबंधित एक रागिनी।

चंगा *स्त्री.* (तद्.) 1. कुशल, चतुर 2. स्वस्थ 3. सुंदर, शोभायुक्त 4. अच्छा, उत्तम।

चंगुल *पुं.* (फा. चंगाल) चिड़ियों अथवा पशुओं का मुड़ा हुआ पंजा जिससे वे कोई वस्तु या शिकार को पकड़ते हैं **मुहा.**- चुंगल में फँसना- काबू में आना या होना।

चंच *पुं.* (तत्.) 1. पाँच अंगुल की एक नाप 2. डलिया।

चंचत्क *वि.* (तत्.) 1. उछलने वाला, कूदने वाला 2. गमनशील, चलने वाला 3. काँपने वाला, हिलने वाला।

चंचनाना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. लड़ना, झगड़ना 2. बुड़बुड़ाना 3. आवेश में आना 4. ज्यादा आँच से दरार पड़ जाना 5. फली का चटक कर बिखरना।

चंचरी *स्त्री.* (तत्.) 1. भ्रमरी, भंवरी, भौंरी 2. चाचरि, चांचरि, होली के अवसर पर गाया जाने वाला गीत 3. हरिप्रिया छंद।

चंचरी *स्त्री.* (देश.) 1. एक चिड़िया जो जमीन पर घास के नीचे घोंसला बनाती है 2. अनाज के वे दाने जो पीटने पर भी बाली में लगे रह जाते हैं।

चंचरीक *पुं.* (तत्.) भ्रमर, भौंरा।

चंचरीकावली *स्त्री.* (तत्.) [चंचरीक+आवली] 1. भौंरों की पंक्ति 2. तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

चंचल *वि.* (तत्.) 1. चलायमान, अस्थिर 2. अधीर 3. अव्यवस्थित 4. अस्थितप्रज्ञ 5. नटखट, चुलबुला, मनमौजी।

चंचलता *स्त्री.* (तत्.) 1. चपलता 2. शरारत 3. अस्थिरता 4. स्वेच्छाचारिता।

चंचला *स्त्री.* (तत्.) 1. लक्ष्मी 2. बिजली 3. पिप्पली 4. एक वर्णवृत्त *वि.* अस्थिर, चलायमान।

चंचलाई *स्त्री.* (तद्.) 1. चंचलता 2. चपलता 3. अस्थिरता।

चंचा *पुं.* (तत्.) घास-फूस अथवा बेंत आदि का पुतला जिसे खेतों में पक्षियों आदि को डराने के लिए गाड़ा जाता है 2. तुच्छ व्यक्ति *स्त्री.* बेंत आदि की टोकरी।

चंचु *वि.* (तत्.) 1. प्रसिद्ध, विख्यात, विदित, यशस्वी 2. चतुर, प्रवीण (इस शब्द का प्रयोग समासांत में होता है जैसे अक्षरचंचु, शास्त्रचंचु आदि) *पुं.* 1. पक्षी 2. बरसात में उगने वाला एक साग (चेंच का साग.) *स्त्री.* चोंच ।

चंचुमान *पुं.* (तत्.) 1. पक्षी 2. चोंचवाला।

चंचुर *वि.* (तत्.) दक्ष, निपुण *पुं.* (तत्.) चेंच का साग।

चंचू *स्त्री.* (तत्.) चोंच। **दे.** चंचु।

चंट *वि.* (तद्.) 1. चालाक, सयाना, होशियार 2. धूर्त, छँटा हुआ, चालबाज।

चंड *वि.* (तत्.) 1. तीक्ष्ण, तेज, प्रखर 2. प्रबल, घोर, हानिकर 3. बलवान, दुर्दमनीय, कठिन, कठोर 4. क्रोधी, उद्धत, उग्र, विकट 5. उष्ण, गरम, स्फूर्तिमान *पुं.* 1. ताप, क्रोध 2. यमदूत 3. कार्तिकेय 4. शिव का गण-भैरव 5. इमली का पेड़।

चंडता *स्त्री.* (तत्.) 1. उग्रता, प्रबलता 2. बल, प्रताप।

चंडांशु *पुं.* (तत्.) [चंड+अंशु] तीक्ष्ण या तेज किरणों वाला, सूर्य।

चंडा *स्त्री.* (तत्.) 1. उग्र स्वभाव की महिला 2. कर्कशा 3. गुस्सैल स्त्री।

चंडाल *पुं.* (तत्.) (स्त्री. चंडालिनि, चंडालिनी) 1. एक छोटी जाति का व्यक्ति 2. क्रूर या नीच कर्म करने वाला व्यक्ति 3. श्वपच 4. पतित मनुष्य (एक गाली या अपशब्द) *वि.* 1. क्रूर कर्म करने वाला 2. अत्यंत क्रूरतापूर्ण व्यवहार वाला।

चंडाल पक्षी *पुं.* (तत्.) 1. कौआ, काक।

चंडालिका *स्त्री.* (तत्.) 1. दुर्गा का एक नाम 2. चंडाल वीणा 3. एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ आदि दवा के काम आती हैं।

चंडालिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. चंडाल वर्ण की स्त्री 2. दुष्टा 3. दुष्ट या क्रूर प्रकृति की स्त्री 3. वह दोहा जिसके आदि में जगण पड़े।

चंडावल *पुं.* (तद्.) 1. सेना के पीछे का भाग 2. पीछे रहने वाले सेना के सिपाही 3. हरावल दस्ते का उल्टा 4. वीर योद्धा 5. संतरी।

चंडिका *स्त्री.* (तत्.) 1. दुर्गा का एक नाम 2. लड़ाकी स्त्री 3. कर्कशा 4. गायत्री देवी 5. तेरह मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसके अंत में रगण रहता है, इस छंद का दूसरा नाम भरणी भी है।

चंडिमा *स्त्री.* (तत्.) 1. आवेश, क्रोध 2. उग्रता, तीक्ष्णता 3. उष्णता, ताप, गर्मी।

चंडिल *पुं.* (तत्.) 1. शिव, रुद्र 2. नाई।

चंडी *स्त्री.* (तत्.) 1. दुर्गा का वह प्रचंड रूप जो उन्होंने महिषासुर का वध करने के लिए धारण किया था 2. उग्र नारी, क्रोध करती हुई स्त्री 3. कर्कशा 4. तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

चंडीपति *पुं.* (तत्.) दुर्गा के पति-शिव, महादेव।

चंडु *पुं.* (तत्.) 1. चूहा 2. एक प्रकार का छोटा बंदर।

चंडू *पुं.* (तद्.) 1. अफीम का किवाम जिसका धुआँ नशे के लिए एक नली के द्वारा पिया जाता है।

चंडूखाना *पुं.* (तद्.+फा.) एक स्थान या बैठक जहाँ इकट्ठे होकर लोग चंडू पीते हैं **मुहा.** चंडूखाने की गप या बात- बेतुकी बात, नशेबाजों की झूठी बकवास, पूरी तरह झूठी बात।

चंडूबाज *पुं.* (तद्.+फा.) 1. चंडू पीने वाला आदमी 2. चंडू के नशे का आदि या व्यसनी व्यक्ति 3. नशेड़ी आदमी **ला.अ.** झूठी और बेतुकी बात करने वाला व्यक्ति *वि.* 1. चंडू पीने वाला 2. नशेड़ी 3. चंडू के नशे का व्यसनी।

चंडूल *पुं.* (देश.) 1. खाकी रंग का छोटा किरीट पक्षी (*स्त्री.* चिड़िया) जो बहुत सुंदर घोंसला बनाता है और बहुत सुरीला गाता है 2. मूर्ख, निहायत बेवकूफ।

चंडेश्वर *पुं.* (तत्.) [चंड+ईश्वर] 1. शिव का एक नाम 2. भगवान शंकर का एक रक्तवर्ण वाला विशेष रूप।

चंडोग्रा *स्त्री.* (तत्.) [चंड+उग्रा] दुर्गा की एक शक्ति।

चंडोदरी *स्त्री.* (तत्.) [चंड+उदरी] एक राक्षसी जिसे रावण ने सीता को समझाने के लिए नियत किया था।

चंडोल *पुं.* (तद्.) 1. हाथी के हौदे के आकार की एक पालकी 2. मिट्टी का एक खिलौना जिसे चौघड़ा भी कहा जाता है।

चंद *पुं.* (तद्.) (तत्-चंद्र) 1. चंद्रमा, चाँद 2. कपूर 3. पृथ्वीराज रासो के रचयिता महाराजा पृथ्वीराज के मित्र एवं दरबारी कवि चंदरवरदाई *वि.* (फा.) थोड़े से, कुछ **जैसे-** अभी उन्हें घर छोड़कर गए हुए चंद रोज ही हुए है।

चंदक *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा, चाँद 2. छोटी चमकीली मछली 3. माथे पर पहनने का एक नगजड़ा अर्धचंद्राकार गहना (शीशफूल)।

चंदन *पुं.* (तत्.) 1. दक्षिण भारत में उगने वाला एक सुगंधित अंत:काष्ठ युक्त वृक्ष या उसकी लकड़ी, संदल 2. उस लकड़ी को पानी से पत्थर पर घिसकर तैयार किया गया लेप 3. उक्त लकड़ी का टुकड़ा।

चंदनगिरि *पुं.* (तत्.) चंदन वृक्षों की बहुतायत वाला मलय पर्वत।

चंदनपुष्प *पुं.* (तत्.) 1. चंदन का फूल 2. लवंग, लौंग।

चंदनहार *पुं.* (तत्.) 1. गले में पहनने की एक माला जो कई प्रकार की हो सकती है **दे.** चंद्रहार।

चंदनादि *पुं.* (तत्.) चंदन, खस, कपूर, बकुची, इलायची आदि पित्तनाशक दवाओं का वर्ग।

चंदनादि तेल *पुं.* (तत्.) (आयु.) लाल चंदन के योग से बनने वाला आयुर्वेद विधि से तैयार किया हुआ एक तेल।

चंदबान *पुं.* (तद्.) **दे.** चंद्रबाण।

चंदा *पुं.* (तद्.) 1. चंद्रमा, चंद्र, चाँद 2. *पुं.* (फा.) अंशदान के रूप में लोगों से उनकी स्वेच्छा से प्राप्त धनराशि **3.** किसी सामयिक पत्रिका या समाचार-पत्र आदि का वार्षिक या मासिक शुल्क 4. किसी समिति को दान या ग्राहकता शुल्क रूप में प्रदत्त राशि।

चंदावत *पुं.* (देश.) क्षत्रियों की एक उपजाति या शाखा।

चंदावती *स्त्री.* (तत्.) श्रीराग की सहचरी एक रागिनी।

चंदावल *पुं.* (फा.) सेना के पीछे रक्षार्थ चलने वाले सैनिक।

चंदिनि/चंदिनी *स्त्री.* (देश.) 1. चंद्रिका, चाँदनी 2. चंद्रमा की रोशनी या प्रकाश।

चंदिर *पुं.* (देश.) 1. चंद्रमा 2. हाथी 3. कपूर।

चंदेरी *स्त्री.* (देश.) 1. एक नगरी जहाँ के राजा शिशुपाल थे 2. चंदेर क्षेत्र की साड़ी।

चंदेल *पुं.* (देश.) क्षत्रियों की एक शाखा जो कभी कालिंजर और महोबा क्षेत्र (बुंदेलखंड) में शासन करती थी, परमार्दिदेव या राजा परमाल इसी वंश के थे जिनके सामंतों में आल्हा-ऊदल थे और नगरों में प्रसिद्ध खजुराहो तथा वहाँ के मंदिर आदि हैं, संस्कृत पुरालेखों में यह वंश 'चंद्रात्रेय' के नाम से वर्णित है।

चंदोवा/चंदोआ *पुं.* (देश.) 1. छोटा शामियाना या छोटा मंडप 2. टोपी के ऊपर वाला भाग 3. कपड़े पर लगी गोलाकार थेगड़ी या पैबंद।

चंद्र *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. काव्य में एक की संख्या सूचित करने का प्रतीक 3. मोर की पूँछ की चंद्रिका 4. कपूर 5. रोचनी नाम का पौधा 6. भूगोल (पौराणिक) के अठारह उपद्वीपों में से एक 7. वह बिंदी जो सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगाई जाती है 8. लाल रंग का मोती 9. मृगशिरा नक्षत्र 10. कोई आनंददायक या सुंदर वस्तु 11. नेपाल स्थित एक पर्वत 12. चंद्रभागा नदी में गिरने वाली एक नदी 13. अर्ध-विसर्ग का चिह्न।

चंद्रक *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. चाँदनी, चंद्रिका 3. मोर की पूंछ की चाँदनी या चंदोवा 4. नाखून, नख 5. कपूर 6. एक प्रकार की मछली 7. चंद्रमा का घेरा या मंडल 8. चंद्रमा के जैसा मंडल या घेरा।

चंद्रकन्या *स्त्री.* (तत्.) एला, इलायची।

चंद्रकर *पुं.* (तत्.) 1. चाँदनी, चंद्रिका 3. चंद्रमा का प्रकाश।

चंद्रकला *स्त्री.* (तत्.) 1. चंद्रमंडल का सोलहवाँ अंश 2. चंद्रमा की किरण या ज्योति 3. एक वर्णवृत्त जिसमें आठ सगण और एक गुरु वर्ण होता है 4. माथे पर पहनने का गहना (शीशफूल) 5. छोटा ढोल 6. एक प्रकार की मछली 7. एक बंगाली मिठाई 8. एक नखाघात का चिह्न (नखक्षत) 9. एक सतताला ताल 10. चंद्रमा की सोलह कलाओं में से प्रत्येक (पूषा, यशा, सुमनसा, रति, प्राप्ति, धृति, ऋद्धि, सौम्या, मरीचि, अंशुमालिनी, अंगिरा, शशिनी, छाया, संपूर्णमंडला, तुष्टि और अमृता)।

चंद्रकलाधर *पुं.* (तत्.) सिर पर चंद्रमा धारण करने वाले शिव, महादेव।

चंद्रकांत *पुं.* (तत्.) 1. चंदन 2. हिंडोल राग का पुत्र राग 3. कुमुद, कमल 4. लक्ष्मण के एक पुत्र चंद्रकेतु की राजधानी का नाम 5. एक मणि जिसके विषय में चर्चित है कि वह चंद्रमा की किरणों के स्पर्श से द्रवित हो जाती है।

चंद्रकांता *स्त्री.* (तत्.) 1. चंद्रमा की पत्नी, रात्रि 2. पंद्रह अक्षरों (वर्णों) वाला एक वृत्त 3. वर्तमान पाकिस्तान में स्थित एक नगरी का नाम जहाँ कभी लक्ष्मण के पुत्र चंद्रकेतु राज्य करते थे।

चंद्रकांति *स्त्री.* (तत्.) 1. चाँदनी 2. चाँदी, रजत 3. चंद्रमा की दीप्ति या चमक।

चंद्रकी *स्त्री.* (तत्.) जिसके पंखों में चंद्र की भाँति आँखे बनी हों अर्थात् मोर।

चंद्रकुमार *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा का पुत्र 2. एक बौद्ध जातक कथा का नाम।

चंद्रकुल्या *स्त्री.* (तत्.) कश्मीर की एक प्राचीन नदी।

चंद्रकूट *पुं.* (तत्.) असम प्रदेश में कामरूप क्षेत्र का एक पर्वत जिसकी महिमा या महात्म्य कालिका पुराण में वर्णित है।

चंद्रकेतु *पुं.* (तत्.) 1. जिसकी ध्वजा या पताका में चंद्रमा अंकित हो 2. लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम जो चंद्रकांत नामक प्रदेश के राजा थे।

चंद्रक्षय *पुं.* (तत्.) अमावस्या (जिस तिथि में चंद्रमा का पूरा क्षय या लोप हो जाने से चंद्र दर्शन न होता हो)।

चंद्रगिरि *पुं.* (तत्.) नेपाल में स्थित एक पर्वत।

चंद्रगुप्त *पुं.* (तत्.) तत्कालीन मगध देश का प्रथम मौर्यवंशी सम्राट 2. गुप्तवंशीय एक प्रतापी राजा 3. समुद्रगुप्त का पुत्र 4. चित्रगुप्त का एक नाम।

चंद्रगृह *पुं.* (तत्.) **ज्यो.** कर्क राशि, जिस राशि में चंद्रमा उच्च का माना जाता है।

चंद्रग्रह *पुं.* (तत्.) चंद्रमा को मस्तक पर धारण करने वाले देव 1. शिव 2. चंद्रमौलि।

चंद्रचूड़ामणि *पुं.* (तत्.) फलित ज्योतिष में ग्रहों का एक ऐसा योग जिसमें भाग्य स्थान का स्वामी कर्म स्थान में और कर्म स्थान का स्वामी भाग्य स्थान में स्थित होता है।

चंद्रदेव *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. महाभारत में कौरवों की ओर से युद्धरत एक योद्धा।

चंद्रद्युति *स्त्री.* (तत्.) 1. चंद्रमा का प्रकाश या चमक 2. चंद्रमा की किरण 3. चाँदनी 4. चंदन 5. चंदनकाष्ठ या लकड़ी।

चंद्रपंचांग *पुं.* (तत्.) चांद्रतिथि-मास के अनुसार तैयार तिथि-पत्रक।

चंद्रपुली *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की बंगाली मिठाई जो नारियल की गरी से बनाई जाती है।

चंद्रप्रभ *वि.* (तत्.) चंद्रमा की तरह दीप्तिकाय, चंदा की सी चमक वाला *पुं.* जैनों के आठवें तीर्थंकर *स्त्री.* चंद्रिका, चाँदनी।

चंद्रप्रभा *स्त्री.* (तत्.) 1. चाँदनी 2. आयुर्वेद में वर्णित चंद्रप्रभावटी।

चंद्रबंधु *पुं.* (तत्.) 1. समुद्र से चंद्रमा के साथ ही उत्पन्न होने के कारण भाई, शंख, विष 2. कुमुद, जो चंद्रमा के उदित होने पर खिलता है।

चंद्रबधूटी *स्त्री.* (तत्.) बीरबहूटी, चंद्रवधू।

चंद्रबाण *पुं.* (तत्.) अर्धचंद्राकार फल वाला, एक प्रकार का बाण जो पहले के युग में युद्ध में काम आता था।

चंद्रबाहु *पुं.* (तत्.) एक पौराणिक राक्षस (असुर) का नाम।

चंद्रबिंदु *पुं.* (तत्.) चाँद में लगा बिंदु, अर्धचद्रांकार चिह्न में लगा बिंदु, जो स्वर के उच्चारण में अनुनासिकता को व्यक्त करता है अर्थात् जिसकी ध्वनि मुख तथा नासिका से एक साथ निकलती है **जैसे-** साँप, हँसना आदि।

चंद्रबिंब *पुं.* (तत्.) 1. पूर्णिमा (पूर्णमासी) का पूरा गोल चाँद 2. चंद्रमा का मंडल, चंद्रमंडल।

चंद्रभस्म *पुं.* (तत्.) **आयु.** कपूर।

चंद्रभा *स्त्री.* (तत्.) 1. चंद्रमा का प्रकाश 2. चाँदनी, चंद्रिका 3. सफेद रंग की कंटकारि अर्थात् भटकटैया (कटेहरी)।

चंद्रभाग *पुं.* (तत्.) हिमालय की शृंखला में स्थित एक पर्वत जहाँ ब्रह्मा ने चंद्र के दो भाग देवताओं और पितरों के लिए किए थे।

चंद्रभागा *स्त्री.* (तत्.) चंद्रभाग पर्वत से निकली हुई एक नदी।

चंद्रभानु *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा और सूरज 2. श्रीकृष्ण की पत्नी सत्यभामा का एक पुत्र।

चंद्रभूषण *पुं.* (तत्.) चंद्रमा है आभूषण जिनका, शिव।

चंद्रमंडल *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा का बिंब 2. चंद्रमा का घेरा।

चंद्रमा *पुं.* (तत्.) पृथ्वी की प्रदक्षिणा (परिक्रमा) करने वाला सौरमंडल का उपग्रह जो सूर्य से प्रकाश ग्रहण करता है और रात में चमकता तथा प्रकाश देता है।

चंद्रमाला *स्त्री.* (तत्.) 1. चंद्रहार 2. अट्ठाईस मात्राओं का एक छंद **उदा.** "रघुपति सायक निज कर करषत दरपत विश्व-समजा।"

चंद्रमुख *वि.* (तत्.) चंद्रमा जैसे सुंदर मुखवाला *पुं.* 1. चंद्रमा की भांति कांतियुक्त सुंदर मुख 2. चंद्रमा के समान सुंदर मुखवाला व्यक्ति।

चंद्रमुखी वि.*स्त्री.* (तत्.) चंद्रमा के समान सुंदर मुख वाली स्त्री।

चंद्रमौलि *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा को मस्तक पर धारण करने वाले शिव 2. चंद्रशेखर।

चंद्रवंश *पुं.* (तत्.) पुरुखा से प्रारंभ हुआ क्षत्रियों के प्रधान राजकुलों में से एक, दूसरा सूर्यवंश है।

चंद्रवदन *पुं.* (तत्.) **दे.** चंद्रमुख।

चंद्रवधू *स्त्री.* (तत्.) बीरबहूटी।

चंद्रविंदु *स्त्री.* (तत्.) **दे.** चंद्रबिंदु।

चंद्रशाला *स्त्री.* (तत्.) 1. घर में सबसे ऊपर की कोठरी 2. अटारी।

चंद्रशिला *स्त्री.* (तत्.) चंद्रकांत मणि।

चंद्रशेखर *पुं.* (तत्.) सिर पर चंद्रमा धारण करने वाले, महादेव, शिव 2. म्यांमार में स्थित एक पर्वत 3. संगीत की अष्टतालों में से एक ताल।

चंद्रसरोवर *पुं.* (तत्.) ब्रज में गोवर्धन पर्वत के समीप स्थित सरोवर जो एक तीर्थ-स्थल है।

चंद्रहार *पुं.* (तत्.) 1. सोने अथवा चाँदी की गोल-गोल टिकुलियों से बनाया गया हार या बहुमूल्य श्वेत प्रस्तर के मनकों पर सोने का काम करके बनाया गया हार 2. नौलखा हार 3. आतिशबाजी का एक प्रकार।

चंद्रहास *पुं.* (तत्.) 1. चमकती हुई तलवार या खड्ग 2. चंद्रमा का प्रकाश 3. रावण की तलवार का नाम।

चंद्रांकित *पुं.* (तत्.) चंद्रमा की कांति से जिनकी मौलि आलोकित है अर्थात् शिव, महादेव।

चंद्रांशु *पुं.* (तत्.) चंद्रमा की किरण।

चंद्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. चँदोवा 2. छोटी इलायची 3. मरणासन्न व्यक्ति की वह दशा जब कफ़ से गला रुँध जाने पर उसकी टकटकी लग जाती है और वह बोल नहीं पाता 4. खुला दालान।

चंद्रातप *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा का प्रकाश, चाँदनी 2. चँदोवा, वितान।

चंद्रात्मज *पुं.* (तत्.) चंद्रमा का पुत्र बुध (ग्रह)।

चंद्रानन *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा के समान सुंदर मुख 2. चंद्रमा के समान सुंदर मुखवाला व्यक्ति *वि.* चंद्रमा के समान सुंदर मुख वाला।

चंद्रायण (चांद्रायण) *पुं.* (तत्.) धर्मशास्त्रीय प्रायश्चित विधि वाला एक व्रत जिसमें कृष्ण पक्ष में प्रतिदिन आहार में एक ग्रास घटाना और शुक्ल पक्ष में बढ़ाना होता है तथा वह एक मास में पूरा होता है, इसमें चंद्रदर्शन के उपरांत भोजन का विधान होता है।

चंद्रायतन *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रशाला 2. घर के ऊपर की अटारी जिसमें बैठकर चंद्रदर्शन का आनंद लिया जाता है।

चंद्रार्ध *पुं.* (तत्.) चंद्रमा का आधा भाग, अर्ध चंद्र **जैसे-** चंद्रार्ध चूड़ामणि शिव।

चंद्रालोक *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा की चाँदनी या प्रकाश 2. संस्कृत काव्य शास्त्र का जयदेव कृत एक ग्रंथ।

चंद्रिका *स्त्री.* (तत्.) 1. चंद्रमा का प्रकाश, चाँदनी, ज्योत्स्ना 2. मोर के पंख का वह अर्धचंद्राकार चिह्न जो सुनहरे मंडल से घिरा होता है 3. इलायची 4. चाँद नाम की मछली 2. चंद्रभागा नदी 6. कनफोड़ा घास 7. जूही या चमेली।

चंद्रिकातप *पुं.* (तत्.) 1. चाँदनी की शीतलता, चाँदनी 2. चंद्रमा की चमक या प्रकाश।

चंद्रिकांबुज *पुं.* (तत्.) 1. चाँदनी में खिलने वाला श्वेत कुमुद, नलिनी, कमलिनी।

चंद्रिकाभिसारिका *स्त्री.* (तत्.) 1. शुक्लाभिसारिका 2. वह नायिका जो चाँदनी रात में प्रिय से मिलन और अभिसार के लिए संकेत-स्थल की ओर निकली हो।

चंद्रिमा *स्त्री.* (तत्.) चाँदनी, चंद्र का प्रकाश।

चंद्रिल/चंडिल *पुं.* (तत्.) 1. शिव 2. नाई 3. बथुए का साग *वि.* चंद्र की आभा या चंद्रमा से युक्त।

चंद्रोदय *पुं.* (तत्.) चंद्रमा का उदित होना या निकलना 2. आयुर्वेद की एक रसौषध (यह गंधक, पारे और सोने को भस्म करके बनाया जाता है, इसे शक्ति बढ़ाने के लिए मरणासन्न व्यक्ति को भी दिया जाता है) 3. चंदोवा 4. वितान।

चंद्रोपराग *पुं.* (तत्.) चंद्रग्रहण।

चंद्रोपल *पुं.* (तत्.) चंद्रकांत मणि।

चंप *पुं.* (तद्.) 1. चंपा 2. कचनार, कोबिदार वृक्ष।

चंपई *वि.* (देश.) चंपा के फूल के रंग का।

चंपक *पुं.* (तत्.) चंपा।

चंपकमाला *स्त्री.* (तत्.) 1. चंपा के फूलों की माला 2. एक वर्णवृत्त।

चंपकारण्य *पुं.* (तत्.) चंपक वन, आधुनिक चंपारण।

चंपकावती *स्त्री.* (तत्.) चंपापुरी।

चंपत *वि.* (देश.) गायब हो जाना, चले जाना (चलता) **मुहा.** चंपत हो जाना-गायब हो जाना **उदा.** चोर पर्स लेकर चंपत हो गया।

चंपा *पुं.* (तत्.) एक मझोले कद के फूल का पौधा जिसके हलके पीले रंग के फूल बहुत तीव्र सुगंध वाले होते हैं, इन फूलों से भौंरे दूर रहते हैं *स्त्री.* (तत्.) **दे.** चंपापुरी।

चंपाकली *स्त्री.* (तद्.) रेशम के धागे में गूंथा गया, चंपा की कली के आकार के सोने के काम से युक्त दानों वाला गहना जिसे महिलाएँ गले में पहनती हैं।

चंपानेर *पुं.* (देश.) एक मध्यकालीन नगर जो मुंबई के निकट स्थित है।

चंपापुरी *स्त्री.* (तत्.) अंगदेश के राजा कर्ण की राजधानी कर्णपुरी जो बिहार में भागलपुर के पास स्थित है।

चंपारण्य *पुं.* (तत्.) प्राचीन भारत का घने वनों वाला एक प्रदेश, संभवतः वर्तमान चंपारन।

चंपारन *पुं.* (तद्.) बिहार प्रांत का एक जिला।

चंपावती *स्त्री.* (तत्.) **दे.** चंपापुरी।

चंपू *पुं.* (तत्.) साहित्य की गद्य-पद्यमय वह आदिकालीन काव्य-शैली जो निरंतर प्रचलित रही है और जिसमें गद्य के बीच-बीच में पद्य भी होता है, वह "चंपू-काव्य" कहलाता है।

चंबल *स्त्री.* (तद्.) विंध्य पर्वत से निकलने वाली एक नदी जो राजस्थान के कोटा की ओर से निकलकर इटावा (उत्तर प्रदेश) के आस-पास यमुना में मिलती है *पुं.* 1. भीख माँगने का प्याला, कटोरा या खप्पर 2. नहरों के किनारे पर सिंचाई के लिए पानी ऊपर चढ़ाने की लकड़ी का लंबा टुकड़ा 3. चिलम का ऊपरी भाग, सरपोश।

चंबी *स्त्री.* (देश.) मोमजामे या कागज का एक वह टुकड़ा जो छपाई करते समय कपड़ों पर उन स्थानों पर रखा जाता है जहाँ रंग नहीं चढ़ाना होता है।

चंबू *पुं.* (देश.) 1. पहाड़ों पर वर्षाधीन भूमि पर उगने वाला धान 2. देवमूर्तियों पर जल चढ़ाने के लिए प्रयुक्त धातु निर्मित छोटे मुँह की कलसी।

चँदवा *पुं.* (तद्.) 1. सिंहासन या गद्दी के ऊपर चाँदी या सोने के खंभों पर बनाया गया मंडप, चंदोवा 2. मंडप, वितान, गोल आकार की चकती 3. मोर पंख की चंद्रिका 4. एक प्रकार की मछली।

चँदिया *स्त्री.* (देश.) 1. छोटी रोटी (प्राय: पहली रोटी जो गाय के लिए बनाई जाती थी 2. रोटी का टुकड़ा 3. खोपड़ी या सिर का ऊपरी भाग।

चँवर *पुं.* (तद्.) सुरा गाय की पूँछ के बालों का गुच्छा जो काठ, सोने या चाँदी की डंडी में लगा रहता है **टि.** इसे राजाओं, देवमूर्त्तियों एवं दूल्हे के सिर पर पीछे या बगल से डुलाया जाता है ताकि उनके ऊपर मक्खियाँ आदि न बैठें 2. घोड़े या हाथी के सिर पर लगने वाली कलगी।

चँवरी (चौरी) *स्त्री.* (तद्.) लकड़ी की बेंत या डंडी में लगा हुआ घोड़े की पूँछ के बालों का गुच्छा जिससे घोड़े के ऊपर की मक्खियों को उड़ाया जाता है।

च *पुं.* (तत्.) 1. कच्छप या कछुआ 2. चंद्रमा 3. चोर 4. दुर्जन 5. शिव 6. चर्वण या भक्षण *वि.* 1. बुरा, अधम 3. विशुद्ध 3. बिना बीज का, निर्बीज।

चइ *स्त्री.* (अनु.) महावतों की बोली का एक शब्द जिसका प्रयोग हाथी को घुमाने के लिए किया जाता है।

चई *स्त्री.* (देश.) एक पेड़ जिसकी लकड़ी तथा जड़ औषध के काम आती है।

चउहट्ट *पुं.* (देश.) चौहट्ट, चौराहा।

चक *पुं.* (तद्.) 1. चकई, चक्रवाक पक्षी (चकवा) 2. 'चक्र' नामक अस्त्र 3. चक्का, पहिया 4. जमीन का एक बड़ा टुकड़ा (पट्टी) *वि.* भरपूर, ज्यादा, अधिक *वि.* (देश.)1. चकपकाया हुआ, भ्रांत 2. भौंचक्का।

चकई *स्त्री.* (तद्.) मादा चकवा **दे.** चकवा *स्त्री.* (देश.) घिरनी या गरारी के आकार का एक छोटा खिलौना जिसके घेरे में डोरी लपेटी रहती है, इसी डोरी के सहारे बच्चे इसे नचाते एवं फिराते हैं।

चकचकाना *अ.क्रि.* (अनु.) पानी, खून, रस या किसी द्रव का सूक्ष्म कणों के रूप में किसी वस्तु के अंदर से बाहर आना, रिस-रिस कर ऊपर आना, गीला हो जाना, भींगना।

चकचकी *स्त्री.* (अनु.) करताल नामक बाजा।

चकचाना *अ.क्रि.* (देश.) चौंधिया जाना, चकाचौंध लगना।

चकचाव *पुं.* (अनु.) चकाचौंध।

चकचून *वि.* (तद्.) चूरा किया हुआ, पिसा हुआ, चकनाचूर।

चकचौंधना *अ.क्रि.* (देश.) अत्यधिक प्रकाश के कारण आँख का न ठहर सकना, आँख का तिलमिलाना, चकाचौंध होना।

चकडोर *स्त्री.* (देश.) 1. चकई की डोरी 2. चकई नाम के खिलौने में लपेटा जाने वाला सूत या अन्य प्रकार का लंबा धागा 3. जुलाहों के करघे की वह डोरी जो चक या नचनी में लगी हुई नीचे लटकती है और उसमें बेसर बँधी रहती है।

चकडोल *स्त्री.* (देश.) पालकी।

चकत *पुं.* (देश.) दाँत की पकड़, चकोटा।

चकती *स्त्री.* (देश.) 1. किसी चादर जैसी वस्तु का छोटा गोल टुकड़ा, चगड़े, कपड़े आदि से काटा हुआ गोल या चौकोर टुकड़ा, पट्टी, गोल या चौकोर धज्जी 2. किसी कपड़े, चमड़े, बरतन आदि के फटे या फूटे हुए स्थान पर दूसरे कपड़े, चमड़े या धातु इत्यादि का टंका हुआ या लगा हुआ टुकड़ा, थिगड़ी (पैबंद)।

चकत्ता *पुं.* (देश.) 1. शरीर के ऊपर बना या किसी कारण पड़ जाने वाला गोल दाग 2. खुजलाने आदि के कारण चमड़ी के ऊपर थोड़े से घेरे में पड़ी हुई चिपटी और सूजन से उभरी हुई चकती की तरह दिखाई देने वाला दाग, ददोरा 3. दाँतो से या द्वारा काटने का चिह्न, दाँत चुभने का निशान।

चकना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. चकित होना 2. भौंचक्का रहना, चकपकाना 3. चौंकना।

चकनाचूर *वि.* (देश.) 1. जिसके टूट कर अनेक या बहुत से टुकड़े हो गए हों, चूरचूर, खंड-खंड, चूर्णित 2. बहुत थका हुआ।

चकपक *वि.* (अनु.) भौंचक्का, चकित, स्तंभित, हक्का-बक्का।

चकपकाना *अ.क्रि.* (अनु.) आश्चर्य से इधर-उधर ताकना, विस्मित होकर चारों ओर देखना।

चकबंदी *स्त्री.* (देश.+फा.) किसानों की भूमि के कई छोटे-छोटे भागों को एक स्थान पर एक-साथ सम्मिलित करने की क्रिया, जमीन की हदबंदी।

चकबस्त *पुं.* (देश.) कश्मीरी ब्राह्मणों का एक भेद।

चकमक *पुं.* (तुर्की-चकमाक) एक प्रकार का सख्त पत्थर जिस पर चोट या रगड़ लगने पर तुरंत आग की चिनगारी निकलती है।

चकमा *पुं.* (तद्.) 1. भुलावा, धोखा 2. हानि 3. एक बौद्ध धर्मानुयायी कबीला जो पूर्वोत्तर और प्राय: बांग्लादेश में बसा हुआ है **मुहा.** चकमा खाना- धोखे में आ जाना 3. बबून नामक बंदर की जाति।

चकमाकी *स्त्री.* (देश.) बंदूक।

चकरवा *पुं.* (तद्.) 1. चक्कर, फेर 2. कठिन स्थिति 3. बखेड़ा, झगड़ा 4. ऐसी अवस्था जिसमें यह न सूझे कि क्या करना चाहिए; किंकर्तव्यविमूढ़ अवस्था।

चकराई *स्त्री.* (देश.) चौड़ाई, फैलाव।

चकराना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. सिर घूमना, सिर का चक्कर खाना 2. भ्रमित या भ्रांत होना, चकित होना, भूलना, आश्चर्य में डालना, चकित रहना।

चकरिया *स्त्री.* (देश.) नौकरी, चाकरी *वि.* नौकरी-चाकरी करने वाला, नौकर, चाकर, सेवक।

चकरी *स्त्री.* (तद्.) चक्की, चक्की का पाट।

चकल *पुं.* (देश.) 1. किसी पौधे को एक स्थान से दूसरे स्थान पर रोपने या लगाने के लिए मिट्टी सहित उखाड़ने की क्रिया 2. मिट्टी की वह पिंडी जो पौधे को दूसरी जगह लगाने के लिए उखाड़ते समय जड़ के आस-पास लगी रहती है।

चकलई *स्त्री.* (देश.) चौड़ाई।

चकला *पुं.* (तद्.) 1. पत्थर या काठ का गोल पाटा जिस पर रोटी बेली जाती है, चौका 2. चक्की 3. देश का एक विभाग जिसमें कई गाँव या नगर होते हैं, इलाका या क्षेत्र 4. व्यभिचारिणी स्त्रियों का अड्डा, वेश्याओं का बाड़ा या मुहल्ला *वि.* चौड़ा।

चकलाना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी पौधे को एक स्थान से दूसरे स्थान पर लगाने के लिए मिट्टी सहित उखाड़ना, चकल उठाना अर्थात् जड़ के साथ की मिट्टी सहित उठाना 2. चौड़ा करना।

चकली *स्त्री.* (देश.) 1. घिरनी, गरारी 2. चंदन घिसने के लिए छोटा चकला *वि.* चौड़ी।

चकवँड *पुं.* (तद्.) 1. लगभग डेढ़-दो हाथ ऊँचा एक पौधा, इसकी पत्तियाँ नुकीली और चौड़ी होती हैं, पीले रंग के छोटे-छोटे फूल झड़ जाने पर इसमें पतली लंबी फलियाँ लगती हैं, इसके बीज उड़द के दाने की तरह होते हैं जो स्वाद में कड़वे होते हैं 2. पमार (राजपूतों की एक उपजाति) *पुं.* (तत्.) कुम्हारों के चाक के पास रखा हुआ जलपात्र

जिससे पानी हाथ में लगाकर चाक पर चढ़े हुए मिट्टी के लौंदे को चिकना करते हैं।

चकवा *पुं.* (तद्.) जाड़े में नदियों और बड़े जलाशयों के किनारे दिखाई देने वाला एक पक्षी "चक", इसे सुरखाब भी कहते हैं, यह दक्षिण को छोड़कर सारे भारत में पाया जाता है, यह प्राय: झुंड में रहता है, यह हंस की जाति का पक्षी अधिक गर्मी पड़ने पर भारत से चला जाता है, ऐसी प्रसिद्धि है कि रात्रि में इसके नर और मादा अलग-अलग रहते हैं, प्रात:काल मिलते हैं, शाम को फिर अलग-अलग हो जाते हैं *पु.* (देश.) 1. एक बहुत ऊँचा पेड़ जो मध्य प्रदेश, दक्षिण भारत तथा चटगाँव की ओर बहुतायत में मिलता है 2. हाथ से बनाई हुई आटे की लोई 3. जुलाहों की चरखी तथा बटाई में लगी हुई बाँस की छड़ी।

चकवी *स्त्री.* (तद्.) मादा चकवा।

चकवृद्धि *स्त्री.* (तत्.) मूलधन पर ब्याज-गणना का एक प्रकार जिसमें उत्तरोत्तर ब्याज पर ब्याज लगता/बढ़ता रहता है तथा संचयी क्रम से भी ब्याज मूल में सूद-दर-सूद जुड़ता रहता है।

चका *पुं.* (तद्.) 1. पहिया, चक्का 2. चाक *वि.* चकित, स्तंभित।

चकाचक *वि.* (तत्.) 1. तर, सरोबर 2. खूब, भरपूर (**अनु.**) भरपेट, अघाकर, अति प्रीतिकर।

चकाचोंध *स्त्री.* (देश.) **दे.** चकाचौंध।

चकाचौंध *स्त्री.* (देश.) यकायक अत्यंत तेज प्रकाश के कारण दृष्टि का उधर न ठहर पाना, प्रकाश के कारण आँख का तिलमिला उठना।

चकाना *अ.क्रि.* (देश.) हैरान होना, आश्चर्य से ठिठक जाना।

चकाबू *पुं.* (तद्.) प्राचीन काल में युद्ध के समय किसी व्यक्ति या व्यवस्था की रक्षा के लिए उसके चारों ओर कई मंडलाकार पंक्तियों में सैनिकों की तैनाती, चक्रव्यूह।

चकार *पुं.* (तत्.) 1. वर्णमाला में छठा व्यजंन वर्ण 2. दुख या सहानुभूति सूचक शब्द।

चकित *वि.* (तत्.) चकपकाया हुआ, विस्मित, आश्चर्ययुक्त, दंग 2. भ्रांत।

चकिता *स्त्री.* (तत्.) 1. चकपकाई हुई, विस्मिता, भ्रांता 2. एक वर्णवृत्त।

चकुलिया *स्त्री.* (तद्.) एक प्रकार का पौधा या झाड़ी।

चकृत *वि.* **दे.** चकित।

चकेठ *पुं.* (तद्.) बाँस या लकड़ी का एक नोकदार डंडा जिससे कुम्हार अपना चाक घुमाते हैं, कुलाल दंड।

चकोट *पुं.* (देश.) 1. गाड़ी के पहिए से जमीन पर बनने वाली लीक या लकीर 2. चिकोटी, नोंचना।

चकोतरा *पुं.* (देश.) नींबू की प्रजाति का एक बड़ा फल जो खाने में खट्टा-मीठा होता है और शीत ऋतु में मिलता है, जंबीरी, नींबू, बड़े नींबू का एक प्रकार, सुगंधा, धुकर्कटी, मातुलंग।

चकोता *पुं.* (देश.) एक ऐसा चर्म रोग जिसमें घुटने के नीचे छोटी-छोटी फुंसियाँ उभरती हैं और बढ़ती चली जाती हैं।

चकोर *पुं.* (तत्.) 1. तीतर की जाति का बड़ा पहाड़ी पक्षी जो नेपाल, उत्तराखंड, पंजाब एवं अफगानिस्तान के पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है, यह चंद्रमा को देखकर प्रसन्न होता है, विषैले भोजन को देखकर इसकी आँखें लाल हो जाती हैं 2. एक वर्णवृत्त जो सवैया के प्रकार का होता है।

चकोरी *स्त्री.* (तत्.) मादा चकोर।

चकोहा *पुं.* (तद्.) 1. प्रवाह में घूमता हुआ पानी 2. भँवर।

चकौटा *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार का लगान जो प्रति बीघे धनराशि के हिसाब से नहीं लिया जाता 2. वह पशु जो ऋण के बदले दिया जाए, इसे 'मुलवन' भी कहा जाता है।

चक्क *पुं.* (तद्.) चकवा (चक्रवाक) 2. कुम्हार का चाक 3. प्रांत, दिशा *वि.* भरपेट (भोजन), तृप्ति देने वाला, तृप्त।

चक्कर *पुं.* (तद्.) पहिए के आकार की घूम सकने वाली गोल वस्तु, चाक, मंडलाकार पटल चाक 2. गोल या मंडलाकार घेरा 3. मंडलाकार मार्ग 4. धुरी पर भ्रमण 5. चक्रगति 6. घुमाव, सिर घूमना, बेहोशी, मूर्च्छा **मुहा.** किसी के चक्कर में आना- धोखे में आना या धोखा खा जाना; चक्कर पड़ना- जटिल बाधा या परिस्थिति पैदा होना।

चक्करदार *वि.* (तद्.+फा.) घुमाव वाला, मोड़ों वाला, घुमावदार।

चक्कल *वि.* (तत्.) गोल, वर्तुल।

चक्कवा *पुं.* (तद्.) चक्रवाक, चकवा।

चक्कस *पुं.* (फा.) बुलबुल, बान आदि पक्षियों के बैठने का स्थान/ठिकाना/ठीहा/अड्डा।

चक्का *पुं.* (तद्.) 1. पहिया 2. पहिए के आकार की गोल वस्तु 3. ढेला 4. थक्का 5. गिनने के लिए क्रम से लगाई गई वस्तु का ढेर।

चक्की *स्त्री.* (तद्.) 1. आटा आदि पीसने या दाल दलने का पत्थर का यंत्र, जोता 2. पैर के घुटने की गोल हड्डी 3. ऊँट के शरीर पर प्राकृतिक गोल कूबड़ 4. बिजली, वज्र।

चक्खी *स्त्री.* (देश.) 1. चखी जाने या खाने की चरपरी वस्तु, चाट 2. बुलबुलों या बटेरों की चुगाई 3. स्वाद चखने की क्रिया या भाव।

चक्नस *पुं.* (देश.) 1. बेईमान 2. छल-कपट 3. धूर्तता।

चक्र *पुं.* (तत्.) 1. पहिया 2. चक्की 3. कुम्हार का चाक 4. पानी का भँवर 5. दल, झुंड, समूह 6. मंडल, एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक फैला प्रदेश **मुहा.** चक्र चलाना- षड्यंत्र करना 7. भ्रमण, घेरा 8. दिशा 9. हाथ की रेखाएँ **ज्यो.** सामुद्रिक शास्त्र में इनके अनेक प्रकार के शुभाशुभ फल देखते हैं 10. वर्षों का समूह (चक्र.)।

चक्रक *पुं.* (तत्.) 1. नव्य न्याय में एक तर्क 2. युद्ध की एक शैली *वि.* 1. गोल 2. चक्रवत् (पहिए जैसा)।

चक्रगति *स्त्री.* (तत्.) गोलाई या परिधि में चलना या गमन करना।

चक्रचर *पुं.* (तत्.) 1. तेली 2. कुम्हार 3. बाजीगर 4. गाड़ीवान।

चक्रताल *पुं.* (तत्.) ताल वाद्य में चौताला ताल जिसमें सोलह मात्राएँ होती हैं।

चक्रतीर्थ *पुं.* (तत्.) 1. कर्नाटक प्रदेश में वह स्थान जहाँ ऋष्यमूक पर्वत शृंखला के बीच में तुंगभद्रा नदी घूमकर बहती है 2. गुजरात के समुद्र तटवर्ती प्रभास क्षेत्र का एक जलाशय।

चक्रदंती *स्त्री.* (तत्.) 1. दंती वृक्ष 2. जमालगोटा नामक एक रेचक औषधि।

चक्रधर *पुं.* (तत्.) 1. चक्र धारण करने वाले 2. विष्णु 3. श्री कृष्ण 4. बाजीगर 5. सर्प 6. कई ग्रामों का अधिपति 7. गाँव का पुरोहित।

चक्रधारी *पुं.* (तत्.) चक्रधर।

चक्रनाभि *स्त्री.* (तत्.) पहिए का वह स्थान जिसमें धुरा घूमता है, पहिए का केंद्र-स्थान।

चक्रपाणि *पुं.* (तत्.) हाथ में चक्र धारण करने वाले विष्णु।

चक्रपाल *पुं.* (तत्.) 1. प्रदेश का शासक, सूबेदार 2. चक्रधारी 3. वृत्त, गोलाई 4. एक शुद् धराग 5. क्षितिज 6. व्यूह-रक्षक 7. सेनापति।

चक्रभ्रमर *पुं.* (तत्.) एक क्षेत्रीय लोकनृत्य।

चक्रमंडल *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का लोकनृत्य जिसमें नृत्य करने वाला मंच पर चकरी की तरह घूमता है।

चक्रमीमांसा *स्त्री.* (तत्.) शंख, चक्र आदि पर गंभीर विवेचन या विमर्श 2. विजयेंद्र स्वामी द्वारा प्रणीत एक ग्रंथ जिसमें चक्र-मुद्रा धारण की विधि वर्णित है।

चक्रमुद्रा *स्त्री.* (तत्.) विष्णु के चक्र तथा गदा आदि आयुधों के चिह्न जो वैष्णव अपनी बाहु या अन्य अंगों पर छापते और लगाए रहते हैं।

चक्रयंत्र *पुं.* (तत्.) ज्योतिष का एक यंत्र।

चक्रलिप्ता *स्त्री.* (तत्.) ज्योतिष में राशिचक्र का कलात्मक भाग अर्थात 21,600 भागों में से एक भाग।

चक्रवत *पुं.* (तत्.) **दे.** चक्रवर्ती।

चक्रवती *स्त्री.* (तत्.) चकवी (पक्षी) (प्रसिद्धि है कि चकवा-चकवी रात्रि के समय अलग-अलग रहते हैं तथा दिन में परस्पर मिल पाते है)।

चक्रवर्ती *पुं.* (तत्.) 1. आसमुद्रांत या समुद्र-पार पास-पड़ोस के राज्यों का एकछत्र शासक, सार्वभौम 2. एक राज्यचक्र का अधीश्वर, सम्राट।

चक्रवाक *पुं.* (तत्.) चकवा (पक्षी)।

चक्रवात *पुं.* (तत्.) वेग से चक्कर खाती हुई तेज वायु, बवंडर, तूफान।

चक्रवान *पुं.* (तत्.) 1. चक्रधारी 2. चक्रवर्ती सम्राट 3. एक पौराणिक पर्वत जिसे समुद्र के मध्य स्थित माना गया है 4. विष्णु।

चक्रवाल *पुं.* (तत्.) 1. पुराणप्रसिद्ध एक पर्वत जिसे भूमंडल के चारों ओर स्थित प्रकाश और अंधकार का विभाजक माना जाता है, लोकालोक पर्वत 2. मंडल, घेरा।

चक्रव्यूह *पुं.* (तत्.) महाभारत युद्ध में द्रोणाचार्य द्वारा सेना की व्यूह-रचना जो कुंडलाकार रक्षा योजना थी, ऐसी व्यूह-रचना जो इतनी चक्करदार होती है कि इसमें प्रवेश करके सुरक्षित निकल पाना अत्यंत कठिन होता है, द्रोण गुरु की इस व्यूह रचना में अभिमन्यु का वध हुआ था।

चक्रसंज्ञ *पुं.* (तत्.) 1. रांगा 2. चकवा।

चक्रसंवर *पुं.* (तत्.) बौद्ध जातक कथाओं के अनुसार बुद्ध का एक नाम।

चक्रांक *पुं.* (तत्.) वैष्णव भक्तों द्वारा भुजाओं आदि शरीर के अंगों पर लगवाया गया चक्र या चिह्न या छाप।

चक्रांकित *पुं.* (तत्.) जिस पर चक्र का चिह्न छापा या लगा हो।

चक्रांकी *स्त्री.* (तत्.) 1. चक्रवाकी, चकई 2. हंसिनी।

चक्रांकी *स्त्री.* (तत्.) चक्रवाकी, चकई।

चक्रांगा *पुं.* (तत्.) गाड़ी या रथ का पहिया, चकबा *स्त्री.* सुदर्शन लता, काकड़ा सिंगी, नागर मोथा।

चक्रांत *पुं.* (तत्.) किसी अनुचित कार्य अथवा किसी को हानि पहुँचाने के लिए कोई गुप्त अभिसंधि, दुष्चक्रपूर्ण षड्यंत्र।

चक्रांश *पुं.* (तत्.) ज्योतिषशास्त्रीय राशि-चक्र का 360वाँ अंश।

चक्रा *स्त्री.* (तत्.) काकड़ा सिंगी।

चक्राकार *वि.* (तत्.) पहिए के आकार का गोला।

चक्राट *पुं.* (तत्.) 1. मदारी 2. धूर्त 3. सपेरा या साँप का विष झाड़ने वाला ओझा 4. सोने का सिक्का।

चक्राधिवासी *पुं.* (तत्.) 1. नारंगी 2. नारंगी का पेड़।

चक्रानुक्रम *पुं.* (तत्.) 1. घटना का अनेक बार होते रहना 2. ऊपर-नीचे होती रहने वाली बारंबारता।

चक्रायुध *पुं.* (तत्.) 1. सुदर्शन चक्र रूपी अस्त्र वाले श्रीकृष्ण 2. विष्णु।

चक्रावल *पुं.* (तद्.) 1. घोड़ों के पैरों में हो जाने वाला एक रोग।

चक्राह्व *पुं.* (तत्.) 1. चकवा 2. चकवड़।

चक्रिक *पुं.* (तत्.) 1. च्रक धारण करने वाला 2. विष्णु।

चक्रिका *स्त्री.* (तत्.) 1. चक्की 2. झुंड, समूह 3. सेना 4. दुरभिसंधि 5. घुटने की हड्डी।

चक्रिण *पुं.* (तत्.) 1. तेली 2. कुम्हार का लड़का 3. चकवा 4. साँप।

चक्री *पुं.* (तत्.) 1. चक्रधारी 2. विष्णु 3. गाँव का पंडित 4. बकरा 5. चकवा 6. सर्प 7. जासूस 8. तेली 9. चक्रवर्ती 10. कौवा 11. रथ पर सवार व्यक्ति 12. गधा 13. सभा।

चक्रेश्वर *पुं.* (तत्.) **दे.** चक्रवर्ती।

चक्रेश्वरी *स्त्री.* (तत्.) जैनो की महाविद्याओं में से एक।

चक्ष *पुं.* (तत्.) 1. नकली या बनावटी दोस्त 2. आँख।

चक्षण *पुं.* (तत्.) 1. गजक 2. चाट 3. कृपादृष्टि, अनुग्रह 4. कथन।

चक्षा *पुं.* (तत्.) 1. बृहस्पति 2. आचार्य 3. गुरु 4. स्पष्टता 5. दर्शन 6. नेत्र, चक्षु।

चक्षुः *पुं.* (तत्.) चक्षुस् शब्द का प्रतिपाक्षिक रूप, नेत्र, आँख।

चक्षु:पथ *पुं.* (तत्.) दृष्टिपथ, क्षितिज।

चक्षु:पीड़ा *स्त्री.* (तत्.) आँख में होने वाली पीड़ा, आँख का दुखना आदि।

चक्षु *पुं.* (तत्.) 1. आँख, नेत्र 2. गंगा नदी की एक शाखा, वंक्षु नामक नदी 3. विष्णु पुराण में वर्णित अजमीढ़ वंशी एक राजा, पुराजानु का पुत्र और हर्पस्व का पिता 4. देखने की शक्ति, प्रकाश 5. तेज, कांति।

चक्षुगोचर *वि.* (तत्.) दृष्टिगोचर, दिखाई देने वाला।

चक्षुरिंद्रिय *स्त्री.* (तत्.) आँख, देखने की इंद्रिय।

चक्षुर्निरोध *पुं.* (तत्.) आँख की पट्टी।

चक्षुर्विषय *पुं.* (तत्.) 1. दृष्टि क्षेत्र, स्थिति 2. दृष्टि का विषय 3. जिसे देखा जा सके, क्षितिज।

चक्षुश्रवा *पुं.* (तत्.) कान की जगह नेत्र से सुनने-समझने वाला सर्प, साँप।

चक्षुष्मान *वि.* (तत्.) आँखों वाला, सुंदर आँखों वाला।

चक्षुष्य *वि.* (तत्.) 1. जो आँखों या नेत्रों के लिए हितकारी या सुखदायी हो 2. नेत्रों से उत्पन्न 3. सुंदर।

चख *पुं.* (तद्.) **दे.** चक्षु।

चख *स्त्री.* (फा.) निरर्थक कहासुनी, अनावश्यक वाद-विवाद, नोंक-झोंक।

चखना *स.क्रि.* (तद्.) स्वाद लेना, स्वाद के लिए मुँह में रखना।

चखा *स.क्रि.* (तद्.) 'चखना' क्रिया का भूतकाल एक वचन रूप *वि.* (तद्.) चखने वाला, स्वाद या आस्वाद लेने वाला 2. प्रेमी।

चखाचखी *स्त्री.* (फा.) 1. कहासुनी 2. विरोध 3. तनातनी।

चखाना *प्रे.क्रि.* (देश.) थोड़ा सा खिलाना, स्वाद चखाना या स्वाद दिलाना *स.क्रि.* चखना का प्रेर रूप।

चखिया *वि.* (फा.) 1. विवादी, चख-चख करने वाला 2. झगड़ा करने वाला।

चखौती *स्त्री.* (देश.) चटपटा खाना, तीखे-चटपटे स्वाद वाला भोजन, चटपटे पदार्थ/खाना।

चगड़ *वि.* (देश.) 1. चालाक, चतुर 2. स्वार्थ-साधना में दक्ष 3. सयाना।

चगताई *पुं.* (तु.) मध्य एशिया के निवासी अफगान तुर्कों का एक प्रसिद्ध वंश जिसमें चंगेज खाँ का बेटा चगताई खाँ हुआ था, बाबर, अकबर आदि भारत के मुगल बादशाह इसी वंश के थे।

चगताई खाँ *पुं.* (तु.) चंगेज खाँ का एक अत्यंत न्यायप्रिय बेटा **टि.** चंगेज खाँ ने सन् 1227 ई. में उसे बद्खाशाँ काशगर आदि प्रदेशों का राज्य दिया था, सन् 1241 ई. में उसकी मृत्यु हुई, बाबर भी इसी वंश का था।

चचर *स्त्री.* (देश.) वह परती जमीन जो बहुत दिनों बाद एक बार बोई जाती है।

चचा *पुं.* (देश.) **दे.** चाचा।

चचिया *वि.* (देश.) चाचा से संबंधित या संबंध रखने वाला **जैसे-** 'चचिया ससुर', 'चचिया सास'।

चचींडा *पुं.* (तद्.) 1. साग-सब्जी के लिए एक फल जो तोरई के समान लंबा होता है 2. अपामार्ग, चिंचड़ा।

चची *स्त्री.* (देश.) चाचा की पत्नी, काकी।

चचेड़ना *स.क्रि.* (अनु.) दबा-दबा कर चूसना, दाँत से खींच-खींच कर या दबाकर रस चूसना **उदा.** कुत्ता हड्डी को चचेड़ रहा था।

चचेरा *वि.* (देश.) चाचा से उत्पन्न या चाचा से संबंध या रिश्ते के कारण वाला, चचाजात।

चचेरी स्त्री. (देश.**)** चाचा से उत्पन्न या संबंधित मादा।

चचोड़ना *स.क्रि.* (देश.) **दे.** चचेड़ना।

चच्चर *पुं.* (तद्.) 1. चाँचर, होली के समय गाया जाने वाला गीत 2. चौराहा, चतुष्पथ।

चच्चरी *स्त्री.* (तद्.) 1. एक नृत्य 2. एक गीत।

चच्छ *पुं.* (तद्.) **दे.** चक्षु।

चट *पुं.* (तद्.) 1. जल्दी से, झट, तुरंत, शीघ्र, चटपट *पुं.* (देश.) 1. दाग 2. घाव का चकत्ता 3. कलंक, लांछन *स्त्री.* किसी कड़ी वस्तु के चटकने या टूटने पर होने वाली आवाज़ **उदा.** अरे! यह लकड़ी तो चट से टूट गई *पुं.* खा-पीकर चट कर जाने का भाव **उदा.** मलाई तो खा-पीकर चट कर दी गई है *वि.* (तद्.) 1. चट किया हुआ, खा-पीकर चट किया **मुहा.** चट मँगनी पट ब्याह- तत्काल कार्य होना।

चटक *पुं.* (तत्.) गौरा पक्षी, नर गौरैया, चिड़ा *स्त्री* (देश.) 1. चमक-दमक, कांति 2. परस्पर प्रेम की ऊष्मा 3. छपे कपड़ों को साफ करके धोने की रीति, गहरा रंग *वि.* (तद्.) चटकीला, चमकीला, शोख *स्त्री.* 1. तेजी 2. फुर्ती 3. शीघ्रता, स्फूर्ति *क्रि.वि.* चटपट, शीघ्रता से 6. वि. तेज फुर्तीला **उदा.** जौ चाहत चटक न घटे, मैलो होइ न मित रज-राजसु न छुवाई तौ नेह चीकनौ चित्त - बिहारी **प्रयो.** वह चटक कपड़े पहनना पसंद करता है।

चटकई *स्त्री.* (देश.) तेजी, चुस्ती, फुर्ती, शारीरिक चटक या स्फूर्ति, शीघ्रता।

चटका *स्त्री.* (तत्.) मादा चिड़िया/मादा गौरैया, पक्षी।

चटकन *पुं.* (अनु.) 1. चट शब्द की ध्वनि से टूटना या फूटना 2. कड़कन, तड़कन हल्की आवाज के साथ टूटना, थप्पड़ पड़ने की आवाज।

चटकना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. चट शब्द के माध्यम से टूटना या फूटना 2. कड़कना, तड़कना, तनिक आवाज के साथ टूटना, दरार पड़ना **जैसे-** तेज आँच के कारण लालटेन का शीशा चटक गया। कोयले आदि जलने पर "चट-चट" की ध्वनि होना 3. चिड़चिड़ाना झुँझलाना 4. धूप या खुली हवा में पड़ी रहने से किसी वस्तु का दरकना या उसमें दरार पड़ जाना 5. कलियों का चटकना या खिलना 6. मोड़कर दबाने या खींचने पर उँगलियों का 'चटचट' शब्द 7. अनबन होना, संबंधों में दरार पड़ना, *पुं.* (देश) चपत या थप्पड़।

चटकनी *स्त्री.* (अनु.) खिड़की या दरवाजे की किवाड़ बंद करने या रखने के लिए लगी सिटकनी या कुंडी।

चटक-मटक *स्त्री.* (अनु.) 1. बनाव-सिंगार, वेश-विन्यास, नाज़-नखरा, ठसक, चमक-दमक **उदा.** सोहन बहुत चटक- मटक वाला लड़का है।

चटका *पुं.* (देश.) दाग, अनबन, चकत्ता *स्त्री.* मादा चिड़िया (चटिका) 'चटका-चटकी', 'कहासुनी', तनातनी, *क्रि.वि.* जल्दी से, शीघ्रता से, चटक से।

चटकाना *क्रि.स.* (अनु.) 1. ऐसा करना कि जिससे कोई वस्तु चटक या दरक जाए, तोड़ना 2. उँगलियों को खींचकर या मोडक़र "चट-चट" शब्द निकालना 3. गेंद चटकाना **मुहा.** जूतियाँ चटकाना- व्यर्थ और बेरोजगार घूमते-फिरना **उदा.** आजकल वह यों ही जूतियाँ चटकाता फिरता है।

चटकारा *वि.* (देश.) 1. चटकीला, चमकीला 2. चंचल, चपल, तेज *पुं.* (अनु.) वह शब्द जो किसी स्वादिष्ट वस्तु को खाते समय तालू से जीभ चटकाने से निकलता है, स्वाद से जीभ चटकाने का शब्द।

चटकाहट *स्त्री.* (देश.) 1. चटकते, चिटकने या फूटने का शब्द 2. दरकने या तडक़ने का भाव 3. कलियों के प्रस्फुटित होने या खिलने का भाव।

चटकिका *स्त्री.* (तत्.) मादा चिड़िया।

चटकी *स्त्री.* (तत्.) गौरैया, बुलबुल की तरह की एक चिड़िया जो आठ या दस अंगुल लंबी होती है।

चटकीला *वि.* (देश.) 1. गहरे रंग वाला, जिसका रंग हल्का या फीका न हो, शोख 2. तीखा, चरपरा, चटपटा 3. भटकदार, भड़कीला 4. स्फूर्तिवान या सुस्फूर्त, फूर्तीला 5. आभायुक्त।

चटखनी *स्त्री.* (देश.) **दे.** चटकनी।

चटखार *पुं.* (देश.) स्वादपूर्वक खाने एवं चाटने का शब्द।

चटखारा *पुं.* (देश.) स्वादिष्ट वस्तु खाते समय मुँह में आने वाली आवाज़ **मुहा.** चटखारे भरना- आनंदपूर्वक स्वाद से खाना, मजे के साथ खाना।

चटचट *स्त्री.* (अनु.) चटकने का शब्द, टूटने का शब्द 2. जलती हुई लकड़ियों की 'चट-चट' आवाज, 'चटचटाहट' 3. उँगली चटकाने से हुआ शब्द 'चट चट'।

चटचटाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. चटचट करते हुए टूटना या फूटना 2. गांठदार लकड़ी और कोयले आदि का 'चट-चट' शब्द करते हुए जलना।

चटनी *स्त्री.* (देश.) 1. चाटने की चीज़ या पदार्थ, अवलेह 2. वह चरपरी वस्तु जो पुदीना, हरा धनिया, मिर्च, खटाई आदि के साथ पीसने से बनती है **मुहा.** चटनी करना- बहुत महीन पीसना, चूर-चूर कर देना; चटनी समझना-आसान समझना; चटनी होना- पिस जाना, चुक जाना, खत्म हो जाना, उड़ जाना।

चटपटा *वि.* (देश.) चरपरा, तेज स्वाद का, मजेदार *पुं.* चटपटा भोजन, चटपटी वस्तु, चाट।

चटपटाना *अ.क्रि.* (देश.) जल्दी करना, हड़बडी मचाना।

चटपटी *स्त्री.* (देश.) 1. शीघ्रता, फुर्ती, जल्दी 2. 'चटपटा' का स्त्रीलिंग रूप *क्रि.वि.* (देश.) चटपटी वस्तु, चाट *वि.* चरपरी, तेज स्वाद की, मजेदार 2. आतुरता, हड़बड़ी, उतावली 3. किसी संक्रामक रोग से मनुष्यों की यकायक एवं जल्दी मृत्यु होना 4. चटपट, अत्यंत-शीघ्र, तुरंत **उदा.** उन्हें सवेरे बुखार आया और दोपहर तक स्वर्ग सिधार गए, क्या ही चटपटी मौत हुई।

चटरजी (चटर्जी) *पुं.* (बं.) 'चट्टोपाध्याय' का तद्भव रूप (बंगदेश के ब्राहमणों की एक उपजाति) उपाधि।

चटवाना *प्रेर.क्रि.* (देश.) 1. चाटने की क्रिया करना 2. किसी तेज धार वाले हथियार छुरी, तलवार आदि पर सान रखवाना।

चटशाला *स्त्री.* (देश.+तत्) (चटशाला या चटसार) छोटी पाठशाला, बच्चों के पढ़ने का स्थान।

चटाई *स्त्री.* (देश.) 1. घास, बेंत तथा बांस आदि की छाल का बना हुआ बिछौना 2. चाटने की क्रिया।

चटाक *पुं.* (अनु.) 1. लकड़ी आदि के टूटने, चटकने अथवा चपत या थप्पड़ पड़ने पर होने वाला शब्द **उदा.** 'यकायक फैक देने पर उसकी लकड़ी की छड़ी **चटाक** से टूट गई 2. चकत्ता, दाग, धब्बा।

चटाचट *स्त्री.* (अनु.) 1. किसी वस्तु के टूटने या फूटने में 'चट-चट' का शब्द 2. किसी वस्तु के टूटने-फूटने में 'चट-चट' की आवृत्तियुक्त ध्वनि या आवाज।

चटाना *स.क्रि.* (देश.) 1. चाटने का काम कराना, किसी वस्तु को जीभ से चाटते हुए थोड़ा-थोड़ा करके मुँह में डालने की क्रिया कराना 2. किसी चटनी या अवलेह सदृश पदार्थ को दूसरे की जीभ या मुँह में डालना या तरल पदार्थ को चटाना 3. काम कराने के लिए उत्कोच या घूस देना **उदा.** हरेश ने बड़े ओहदेदारो को **चटाया** होगा तभी इतनी बड़ी नौकरी मिली है 4. छुरी, तलवार आदि पर सान रखवाना।

चटावन *पुं.* (देश.) 1. अन्नप्राशन (बच्चे को पहले-पहल अन्न चटाना) संस्कार।

चटिका *स्त्री.* (तत्.) 1. मादा गौरैया 2. पिपरामूल।

चटियल *वि.* (देश.) 1. सपाट मैदान जहाँ पेड़-पौधे न हो, खुला मैदान 2. अनावृत्त।

चटी *पुं.* (देश.)1. बालकों के पढ़ने का स्थान, पाठशाला 2. काठ या अन्य वस्तु की पैरों में पहनने की वस्तु, चट् टी 3. पादत्राण (जूती) का एक प्रकार।

चटु *पुं.* (तत्.) 1. पूजा के लिए बैठने हेतु एक आसन 2. पेट या उदर 3. मीठी-मीठी खुशामदी बातें, चापलूसी 4. चिल्लाहट।

चटुक *पुं.* (तत्.) काठ का बरतन, कठौता।

चटुकार *वि.* (तत्.) **दे.** चटु।

चटुल *वि.* (तत्.) 1. चंचल, चपल, चालाक 2. सुंदर, प्रियदर्शी, मनोहर।

चटुला *स्त्री.* (तत्.) 1. चंचला, चपला 2. बिजली।

चटोर *वि.* (देश.) 'चटोरा'।

चटोरपन *पुं.* **दे.** चटोरापन।

चटोरा *वि.* (देश.) 1. चटपटी तथा स्वादिष्ट वस्तुओं को खाने का शौकीन, स्वाद लेना **उदा.** वह बड़ा **चटोरा** व्यक्ति है 2. लालची, लोलुप, लोभी।

चटोरापन *पुं.* (देश.) अच्छी-अच्छी स्वादिष्ट वस्तुएँ खाने का व्यसन, स्वाद लोलुपता।

चट्टा *पुं.* (देश.) चेला, शिष्य, विद्यार्थी, चकत्ता *वि.* (देश.) 1. चट्ट किया हुआ या चाट-पोंछकर खाया हुआ 2. चट किया हुआ या समाप्त, गायब, नष्ट।

चट्टान *स्त्री.* (देश.) मैदान, बड़ी शिला, बृहत् प्रस्तर-खंड, बड़ा विशाल पत्थर।

चट्टा-बट्टा *पुं.* (देश.) 1. छोटे काठ के खिलोने, झुनझुने आदि का समूह 2. बाजीगर के थैले से निकलने वाले गोले या गोलियाँ **मुहा.** एक ही थैली के चट्टे-बट्टे- एक ही गुट या विचारों के लोग; चट्टे-बट्टे लड़ाना- इधर-उधर की लगाकर झगड़ा कराना **प्रयो.** आपका काम ही **चट्टे-बट्टे** लड़ाना है।

चट्टी *पुं.* (देश.) एड़ी की ओर से खुला हुआ जूता-स्लीपर 2. लकड़ी या अन्य पदार्थ से बनी हुई पादत्राण 3. हानि, घाटा, टोटा, नुकसान 4. दंड, जुरमाना 5. यात्रियों के ठहरने का स्थान 6. यात्रा का पड़ाव **मुहा. चट्टी** भरना- हानि पूरी करना।

चड़-चड़ *पुं.* (अनु.) सूखी लकड़ी के टूटने या जलने का शब्द।

चड़-बड़ *स्त्री.* (अनु.) 'बक-बक', 'टर-टर'।

चड़सी *पुं.* (देश.) चरस पीने वाले लोग।

चड़ाक *वि.* (देश.) 1. टूटी हुई, टूटा हुआ 2. टूटने का शब्द 3. भंजित।

चड्डी *स्त्री.* (देश.) 1. जाँघिया 2. बच्चों का जाँघिया 3. एक प्रकार का लंगोट या कच्छा।

चड्ढी *स्त्री.* (देश.) 1. पीठ की सवारी 2. एक बच्चे का दूसरे की पीठ पर सवार होकर खेलना **मुहा.** चड्ढी गाँठना- सवार होना, चड्ढी देना- हार कर पीठ पर चढ़ाना 2. कच्छा, कछौटी।

चढ़त *स्त्री.* (देश.) 1. देवता को चढ़ाई गई वस्तु 2. देवता की भेंट, पुजापा, चढ़ौती।

चढ़ता *क्रि.वि* (देश.) 1. उठता हुआ 2. ऊपर आता हुआ 3. आरंभ होता हुआ 4. अग्रसर होता हुआ **प्रयो.** आकाश में चाँद चढ़ता चला आ रहा है।

चढ़ना *अ.क्रि.* (देश.) 1. नीचे से ऊपर की ओर जाना, ऊँचे स्थान पर जाना, तेज होना 2. सवार होना 3. दल-बल के साथ जाना, हमला करना या चढ़ाई करना, ऊँचा उठना, उन्नति करना 4. बहाव के विरुद्ध जाना 5. जल स्तर बढ़ना 6. पकने के लिए चूल्हे पर चढ़ाना 7. तेज या महँगा होना **प्रयो.** आजकल अनाज के दाम बहुत चढ़ गए है 8. देवार्चित या देवताओं पर चढ़ाना, भेंट होना प्रयो. देवताओं को फूल चढ़ाना मंगलकारी होता है 9. स्वर का तीव्र होना (ऊँचा उठना, ऊँचा होना) 10. सवारी करना **प्रयो.** वह घोड़े पर चढ़ना भली भाँति जानता है। कर्ज या ऋण हो जाना, ब्याज चढ़ना **प्रयो.** रमेश के ऊपर एक वर्ष में बैंक का ही बहुत ज्यादा ब्याज चढ़ गया है।

चढ़वाना *स.क्रि.* (देश.) चढ़ाने का काम करना।

चढ़ाई *स्त्री.* (देश.) 1. चढ़ने की क्रिया या भाव 2. ऊँचाई की ओर जाने वाली (जाती) भूमि **प्रयो.** पहाड़ की **चढ़ाई** बहुत कठिन है।

चढ़ाना *स.क्रि.* (देश.) 1. नीचे से ऊपर ले जाना, उच्च स्तर या ऊँचाई पर पहुँचाना **प्रयो.** इस सामान को छत पर चढ़ाना उचित रहेगा 2. चढ़ने का काम कराना **प्रयो.** बच्चे को पेड़ पर चढ़ाना ठीक नहीं, कहीं गिर न पड़े।

चढ़ानी *स्त्री.* (देश.) 1. ऊँचाई की ओर ले जाने वाली सतह या उत्तरोत्तर ऊँची होती गई जमीन।

चढ़ाव *पुं.* (देश.) 1. चढ़ने का भाव 2. बढ़ने का भाव, वृद्धि, बढ़ोतरी **प्रयो.** नदी के जल स्तर का चढ़ाव देखकर पार करने का प्रयास करना।

चढ़ावा *पुं.* (देश.) 1 दूल्हे की ओर से दुलहिन को विवाह के अवसर पर चढ़ाए जाने या पहनाए जाने वाला गहना 2. वह सामग्री जो देवता को अर्पित की जाए या देवता पर चढ़ाई जाए, 'पुजापा' 3. चौराहे पर टोटके के रूप में रखी जाने वाली सामग्री।

चढ़ैत *पुं.* (देश.) चढ़ने वाला, सवार होने वाला।

चढ़ैता *पुं.* (देश.) दूसरों के घोड़ों को फिराने अथवा प्रशिक्षित करने वाला, चाबुक सवार।

चढ़ौवॉ (चढ़ौआ) *पुं.* (देश.) चंढैमा (ब्रज.) उठी हुई एड़ी का जूता।

चण *पुं.* (तत्.) चना।

चणक *पुं.* (तत्.) 1. एक गोत्रकार-ऋषि 2. चना।

चणिया *स्त्री.* (देश.गुज.) एक घास जिसके खाने से गाय अधिक दूध देती है 2. यह घास दवा के काम में भी आती है।

चणिमा *पुं.* (तत्.) एक छोटा लहँगा या घाघरा।

चतरना *अ.क्रि.* (देश.) छितरना, बिखरना।

चतरभंग *पुं.* (तद्.) बैलों में पाया जाने वाला एक दोष जिसमें उसके डिल्ले (टाठ) का मांस एक ओर लटक जाता है **टि.** इस दोष वाले बैल को पालना या रखना पालक परिवार के लिए हानिकारक या अशुभ माना जाता है।

चतराना *अ.क्रि.* (देश.) छितराना।

चतस्र *पुं.* (तत्.) चार।

चतु:शाल *पुं.* (तत्.) 1. वह मकान जिसमें चार बड़े-बड़े कमरे हों 2. चौपाल, बैठक, दीवानखाना।

चतु:षष्ठ *वि.* (तत्.) चौंसठवाँ।

चतु:संप्रदाय *पुं.* (तत्.) वैष्णवों के चार प्रधान संप्रदाय- श्री, माध्व, रुद्र और सनक।

चतु:सन *पुं.* (तत्.) ब्रहमा के चार पुत्र- सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार, ये विष्णु के अवतार माने जाते हैं।

चतुमूर्ति *पुं.* (तद्.) 1. ईश्वर 2. विष्णु 3. ब्रह्मा 4. जो चारों अवस्थाओं, ('विराट्', 'सूत्रात्मा', 'अध्याकृत' और 'तुरीय') में रहता हो, परमात्मा।

चतुरंग *पुं.* (तत्.) 1. सरगम, तराना, तबला, मृदंग आदि के बोलों को बैठाकर गाए जाने वाला गाना 2. चतुरंगिणी (हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल) सेना का (प्राचीनयुगीन) प्रधान अधिकारी 3. शतरंज का खेल 4. चतुरंगिणी सेना *वि.* चार अंगों (पैदल, रथ, हाथी और घोड़ा) वाला।

चतुरंगिणी *वि. (स्त्री.)* चार अंगो वाली *स्त्री.* (तत्) चार अंगों वाली सेना।

चतुर *वि.* (तत्.) 1. टेढ़ी चाल चलने वाला, वक्रगामी 2. फुरतीला (स्फूर्त) 3. तेज़ 4. प्रवीण, होशियार, निपुण 5. धूर्त, चालाक 6. कार्य कुशल 7. सुंदर 8. चार *पुं.* (तत्.) 1. शृंगार रस में नायक का एक भेद, क्रिया चातुर्य और वचन चातुर्य के द्वारा प्रेमिका से संभोग करने वाला नायक 2. वह स्थान जहाँ हाथी रहते हों, हाथीखाना 3. नृत्य में एक प्रकार की चेष्टा या हावभाव 4. चार की संख्या 5. वक्रगति (टेढ़ी चाल) 6. धूर्तता, प्रवीणता, होशियारी 7. गोल तकिया।

चतुरक्रम *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की ताल जिसमें दो गुरु, दो प्लुत और इसके बाद एक गुरु होता है, यह बत्तीस अक्षरों की होती है, इसका व्यवहार शृंगार रस में होता है।

चतुरनीक *पुं.* (तत्.) ब्रह्मा, चतुरानन।

चतुरपन *पुं.* (देश.) चतुराई, चतुरता, कुशलता।

चतुरश्र *पुं.* (तत्.) 1. ब्रह्म संतान नाम का केतु 2. ज्योतिष में चौथी अथवा आठवीं राशि 3. चौकोर या बराबर लंबाई चौडाई वाला खेत या क्षेत्र *वि.* (तत्.) 1. चौकोर, चार बराबर कोणों वाला चतुष्कोण, सुडौल।

चतुरा *पुं.* (तद्.) 1. चतुर, प्रवीण 2. चालाक, धूर्त।

चतुराई *स्त्री.* (तद्.) होशियारी, निपुणता, दक्षता 2. धूर्तता, चालाकी

चतुरानन *पुं.* (तत्.) चार मुखों वाले, ब्रह्मा।

चतुराश्रम *पुं.* (तत्.) मानव जीवन के चार आश्रम-ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास।

चतुरिंद्रिय *पुं.* (तत्.) चार इंद्रियों वाले प्राणी, मक्खी, भौंरे, सर्प, (सांप) आदि, वैद्यक के अनुसार प्राचीन काल में इस प्रकार के जीवों को श्रवणोंद्रियहीन माना जाता था। इसी से ये चतुरिंद्रिय कहलाते है।

चतुरी *पुं.* (देश.) पुराने ढंग की एक प्रकार की पतली नाव जो प्राय: एक ही लकड़ी में खोदकर बनाई जाती है।

चतुरूपण *पुं.* (तत्.) सोंठ, काली मिर्च, पीपर तथा पीपरामूल का समूह (इन्ही चार गरम पदार्थों का योग वैद्यक में चतुरूपण कहलाता है।)

चतुर्जातक *पुं.* (तत्.) इलाचयी (फल) दालचीनी (छाल), तेज पात (पत्ता), नागकेशर (फूल), इन चार पदार्थों का समूह या योग।

चतुर्थ *वि.* (तत्.) चौथा, चार की संख्या के क्रम वाला **प्रयो.** इस पुस्तक का चतुर्थ अध्याय बहुत बड़ा है।

चतुर्थक *पुं.* (तत्.) हर चौथे दिन आने वाला बुखार, चौथिया बुखार।

चतुर्थांश *पुं.* (तत्.) किसी वस्तु के चार भागों में से एक भाग, चौथाई 2. चार अंशों या भागों में से एक अंश का अधिकारी अर्थात् एक चौथाई भाग का मालिक।

चतुर्थाश्रम *पुं.* (तत्.) चार आश्रमों (ब्रह् मचर्य, गार्हस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास) में से चौथा, संन्यास आश्रम **प्रयो.** मानव को चतुर्थाश्रम का आनंद लेने के लिए घर का मोह छोड़ देना श्रेयकर होता है।

चतुर्थी *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी पक्ष (कृष्ण या शुक्ल) की चौथी तिथि, चौथ 2. वह विशिष्ट कार्य जो विवाह के चौथे दिन होता है 3. चौथा, एक रस्म जिसमें प्रेत कर्म करने वाले परिवार के यहाँ किसी की मृत्यु से चौथे दिन बिरादरी या सामाजिक एकत्र होते हैं 4. एक तांत्रिक मुद्रा 5. संस्कृत व्याकरण में संप्रदाय के स्थान पर लगने वाली विभक्ति *पुं.* (तत्.) तत्पुरुष समास का एक भेद जिसमें संप्रदान की विभक्ति लुप्त रहती है।

चतुर्थी विद्या *स्त्री.* (तत्.) चौथा वेद (अथर्ववेद) **प्रयो.** वैज्ञानिक दृष्टि से चतुर्थी विद्या अर्थात् अथर्ववेद बहुत महत्वपूर्ण है।

चतुर्दंत *पुं.* (तत्.) ऐरावत हाथी जिसके चार दाँत हैं *वि.* चार दाँतों वाला।

चतुर्दंष्ट्र *पुं.* (तत्.) 1. ईश्वर 2. कार्तिकेय की सेना 3. एक राक्षस।

चतुर्दर्शनावरण *पुं.* (तत्.) जैन शास्त्र में वह कार्य जिसके उदय होने से चक्षु द्वारा सामान्य बोध की प्राप्ति का विधान हो।

चतुर्दशपदी *स्त्री.* (तत्.) चौदह चरणों वाली अंग्रेजी साहित्य की एक विशेष प्रकार की कविता जिसे 'सानेट' कहा जाता है, आधुनिक काल में हिंदी में भी इस प्रकार की कविता होने लगी थी।

चतुर्दिश *पुं.* (तत्.) चारों दिशाएँ (चारों दिशाओं का समाहार) *अव्य.* चारों ओर।

चतुर्दोल *पुं.* (तत्.) 1. चार डंडों का हिंडोला या पालना 2. वह सवारी जिसे चार आदमी कंधों पर उठाते हैं-पालकी।

चतुर्द्वार *पुं.* (तत्.) 1. चार द्वार या चार दरवाजे 2. चार दरवाजों वाला घर *वि.* (तत्.) चार दरवाजों वाला।

चतुर्धा *अव्यय.* (तत्.) चार विधियों या प्रकार से चतुर्विधा 2. चार खंडो में।

चतुर्धाम *पुं.* (तत्.) चारों धाम, चार मुख्य तीर्थ (बद्रीनाथ, द्वारकापुरी, जगन्नाथ पुरी तथा रामेश्वर)।

चतुर्बीज *पुं.* (तत्.) कालाजीरा, अजवाइन, मेंथी तथा चंसुर (हालिम)- इन चारों के बीजों का समूह।

चतुर्भाज *वि.* (तत्.) 1. प्रजा द्वारा पैदा किए गए अन्न आदि में से राजा द्वारा कर स्वरूप लिया गया एक चौथाई 1/4 अंश *पुं.* (तत्.) चौथे भाग का अधिकारी राजा।

चतुर्भुज *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. चार भुजाओं और चार कोणों वाला क्षेत्र।

चतुर्भुजा *स्त्री.* (तत्.) 1. एक विशिष्ट देवी 2. गाय की रूप धारिणी महाशक्ति।

चतुर्भुजी *पुं.* (तत्.) 1. एक वैष्णव संप्रदाय जिसके आचार-विचार एवं व्यवहार आदि रामानंदियों से मिलते हैं 2. इस संप्रदाय (चतुर्भुजी) का अनुयायी *वि.* (तत्.) 1. चार भुजाओं वाला 2. चतुर्भुजी मूर्ति या प्रतिमा।

चतुर्मास *पुं.* (तत्.) वर्षाकाल के चार मास (महिने) सावन, भादों, क्वार और कार्तिक का चौमासा (आषाढ़ की पूर्णिमा से कार्तिक मास के अंत तक)।

चतुर्मुख *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का चौताला ताल जिसमें क्रम से एक लघु, एक गुरु, एक लघु और एक प्लुत मात्रा होती है 2. नृत्य में एक प्रकार की चेष्टा 3. विष्णु *वि.* (तत्.) चार मुखों वाला *अव्यय.* चारों ओर।

चतुर्मेध *पुं.* (तत्.) चारों मेध का बलिदान (अश्वमेध, पुरुषमेध, सर्पमेध तथा पितृमेध) करने वाला।

चतुर्युगी *स्त्री.* (तत्.) 1. चौयुगी, चार युगों का समय, (कृतयुग (सतयुग), त्रेता, द्वापर और कलियुग) 2. चौकड़ी।

चतुर्वर्ग *पुं.* (तत्.) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, चारों का समाहार।

चतुर्वर्ण *पुं.* (तत्.) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र विषयक चारों वर्णों का समाहार।

चतुर्वाही *पुं.* (तत्.) 1. चौकड़ी 2. चार घोड़ों की गाड़ी।

चतुर्विंश *वि.* (तत्.) चौबीसवाँ।

चतुर्विद्या *स्त्री.* (तत्.) चारों वेदों की विद्या (ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और सामवेद, चारों का ज्ञान)।

चतुर्विध *क्रि.वि.* **अव्य.** (तत्.) चार रूपों में, चारों प्रकार से।

चतुर्वेद *पुं.* (तत्.) 1. परमेश्वर (ईश्वर) 2. चारों वेद *वि.* (तत्.) चारों वेदों का ज्ञाता/जानने वाला।

चतुर्वेदी *पुं.* (तत्.) 1. चारों वेदों का ज्ञाता (जानकर) 2. ब्राह्मणों की एक उपजाति।

चतुर्व्यूह *पुं.* (तत्.) 1. चार मनुष्यों या पदार्थों का समूह **जैसे-** राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न चार भाई 2. संसार, संसार का हेतु, मोक्ष, मोक्ष का उपाय 3. वैष्णव दर्शन में वासुदेव, संकर्षण (बलराम) प्रद्युम्न और अनिरुद्धा 4. (योगदर्शन में) हेय, हेय हेतु, हान और हानोपाय 5. आयुर्वेद (चिकित्सा शास्त्र) में रोग, रोग-निदान हान (आरोग्य) और हानोपाय (भैषज्यमिति) 1. चारों का समुच्चय 2. विष्णु 3. योगशास्त्र 4. आयुर्वेद शास्त्र।

चतुर्होता *पुं.* (तत्.) वेद में वर्णित अथवा वेद सम्मत चारों होम करने वाला।

चतुल *पुं.* (तत्.) 1. स्थापक (स्थापना करने वाला)।

चतुष्क *वि.* (तत्.) 1. जिसके चार पहलू या पार्श्व हो, चौपहला 2. चार कोनों वाला 3. चार वाद्यों तथा गायकों का *पुं.* (तत्.) 1. चौराहा 2. चार का समुच्चय या समूह 3. चार अंगों वाला व्यक्ति 4. चार कोनों वाला प्रांगण या घर 5. एक प्रकार का घर 6. एक प्रकार की छड़ी या डंडा।

चतुष्कल *वि.* (तत्.) 1. चार कलाओं वाला 2. चार मात्राओं वाला **जैसे-** छंदशास्त्र में चतुष्कल गण, संगीत की चतुष्कल ताल।

चतुष्की *स्त्री.* (तत्.) 1. पुष्करिणी का एक भेद 2. मसहरी 3. चौकी।

चतुष्टोम *पुं.* (तत्.) 1. अश्वमेध यज्ञ का एक अंग 2. वायु 3. चार स्तोम वाला एक यज्ञ।

चतुष्ट्य *पुं.* (तत्.) 1. चार की संख्या 2. चार वस्तुओं का समूह।

चतुष्पथ *पुं.* (तत्.) 1. चौराह, चौमुहानी 2. ब्राह्मण।

चतुष्पद *पुं.* (तत्.) 1. चार पैरों वाला जीव या पशु, चौपाया 2. ज्योतिष में एक प्रकार का करण जिसमें जन्म लेने वाला दुराचारी, दुर्बल, और निर्धन होता है 3. वैद्य, रोगी, औषध और परिचारक का समूह *वि.* (तत्.) 1. चार पदों (पैरो) वाला 2. जिसके चार पद, पाए या पैर हों।

चतुष्पदी *स्त्री.* (तत्.) 1. चौपाई छंद, जिसके चार चरणों में से प्रत्येक में सोलह-सोलह मात्राएँ होती हैं और अंत में गुरु लघु होते हैं 2. चार पदों का गीत।

चतुष्पाटी *स्त्री.* (तत्.) नदी।

चतुष्पाठी *स्त्री.* (तत्.) 1. पाठशाला, (छात्रों की पढ़ने की जगह या स्थान या शाला)।

चतुष्पाणि *पुं.* (तत्.) चार हाथों वाला (वाले), विष्णु, चतुर्भुज।

चतुस्तन *स्त्री.* (तत्.) चार स्तनों वाली, गाय, भैंस आदि या अन्य प्राणि, चतुस्तनी।

चतूरात्र *पुं.* (तत्.) चार रात्रियों में संपन्न होने वाला एक प्रकार का यज्ञ।

चत्वर *पुं.* (तत्.) 1. चौरस्ता, चौराहा, चौमुहानी 2. वह स्थान जहाँ भिन्न-भिन्न देशों से आकर लोग रहते हैं 3. होम के लिए साफ किया हुआ स्थान। 4. चार रथों का समूह।

चत्वाल *पुं.* (तत्.) 1. होमकुंड 2. कुश नामक घास, दाब (डाभ) 3. गर्भ 4. वेदी, चबूतरा।

चद्दर *स्त्री.* (फा.) 1. चादर, (ओढ़ने बिछाने की) 2. किसी धातु का आयताकार बहुत बड़ा पत्तर या टुकड़ा 3. लोहे या टीन की 'चद्दर' **मुहा.** चद्दर पड़ना- बिछना **प्रयो.** "आज रात्रि के शीतकाल के कारण खेतों में पाले की चद्दर- सी बिछ गई है 3. एक प्रकार की तोप।

चनक *वि.* (तद्.) 1. क्षणिक 2. खुलना और बंद होना।

चनकना *अ.क्रि.* (देश.) **दे.** चटकना।

चनखना *अ.क्रि.* (देश.) चिढ़ना, खफा होना, रुष्ट होना, रूठ जाना, चिटकना।

चनचना *पुं.* (अनु.) 'झनझना' नामक कीड़ा जो तंबाकू की फसल को हानि पहुँचाता है।

चनचनाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. चिढ़ जाना 2. क्रुद्ध होना 3. कलह कर बैठना 4. खफा होना।

चना *पुं.* (तद्.) चैती (रवी की) फसल का एक प्रधान अन्न जिसका पौधा बहुत लंबा नहीं होता उसको विभिन्न प्रकार से प्रयोग करके खाने के काम में लाया जाता है, इसके लिए अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती **टि.** चने की कोमल छोटी-छोटी पत्तियाँ कुछ खटाई और खार (क्षार) लिए होती हैं, ये खाने में स्वादिष्ट और रुचिकर होती हैं, फल आने से पूर्व पत्तियों को तोडक़र नमक के साथ खाया जाता है, चने के दाने प्राय: गोल होते हैं तथा उनके ऊपर का छिलका उतारने पर अंदर से दो दालें निकलती हैं जो अन्य दालों की तरह पकाकर खाने के अतिरिक्त अन्य रूपों में भी खाने के लिए प्रयुक्त होती हैं, ताजा पका हरा चना लोग कच्चा भी खाते हैं, सूखा चना भाड़ में भुनवाकर खाया जाता है, यह शक्तिवर्धक और पौष्टिक होता है, तथापि यह थोड़ा गुरुपाक या गरिष्ठ होता है, भारत में इसे घोड़ों तथा अन्य चौपायों को भी खिलाया जाता है ताकि वे बलिष्ठ बनें, वैद्यक में इसे मधुर, रूखा, कृमि तथा रक्तपित्तनाशक, दीपक, रूचि बलवर्धक

माना गया है, इसे 'बूट' 'छोले' नामों से भी पुकारा जाता है, इसे पीसने पर बेसन तथा "हरे" पके चने के "हौला" (होरा) रूप भी होते हैं **मुहा.** चने का मारा भरना- बहुत दुर्बल हो जाना; नाकों चने चबवाना- बहुत हैरान परेशान करना; नाकों चने चबाना- बहुत परेशान होना; लोहे के चने चबाना- अत्यंत कठिन काम करना ।

चनाब *स्त्री.* (तत्.) पंजाब की पाँच नदियों में से एक **टि.** यह नदी लद्दाख के पर्वतों से निकल कर सिंध में मिलती है, यह प्राय: छ: सौ मील लम्बी है।

चनार *पुं.* (फा.) एक प्रकार का बहुत ऊँचा पेड़ जो उत्तर भारत, विशेषत: कश्मीर में बहुत अधिकता से होता है **टि.** इस वृक्ष की लकड़ी देर से जलती है और मेज कुर्सियां बनाने के काम आती है।

चनेठ *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार की घास 2. इस घास से बनी हुई औषध जो प्राय: पशुओं को दी जाती है।

चपकन *स्त्री.* (देश.) 1. एक प्रकार का अँगरखा 2. लोहे या पीतल का एक साज जिसे किवाड़, संदूक आदि में लगाते हैं, जिससे उसके पत्ते अटके रहें और झटके आदि से न खुलें 3. एक छोटी कील जो हल की हरिष में आगे की ओर लगी होती है।

चपकलश *स्त्री.* (तुर्की) 1. तलवार का युद्ध 2. दंगा 3. लड़ाई, झगड़ा 4. स्थान की कमी 5. भीड़ 6. दिक्कत/अड़चन।

चपका *पुं.* (देश.) एक प्रकार का कीड़ा।

चपकाना *स.क्रि.* (देश.) **दे.** चिपकाना।

चपकुलिश *स्त्री.* (तुर्की.) चपकुलश 1. कठिन स्थिति, अड़चन, फेर, कठिनाई, झंझट 2. कसामसी, खींचातानी, आपाधापी 3. भीड़-भाड़, जगह की तंगी।

चपट *पुं.* (तद्.) 1. चपत/तमाचा 2. दे. चपेट।

चपटा *वि.* (तद्.) **दे.** चिपटा।

चपटाना *स.क्रि.* (देश.) **दे.** चिपकाना।

चपटी *स्त्री.* (देश.) 1. एक प्रकार की किलनी जो चौपाये को लगती है 2. ताली 3. योनि/भग **मुहा.** चपटी खेलना- दो स्त्रियों का परस्पर योनि मिलाकर रगड़ना।

चपड़ गट्टू *वि.* (देश.) 1. आफत का मारा 2. गुत्थमगुत्था।

चपड़ चपड *स्त्री.* (अनु.) (तद्.) वह शब्द जो कुत्तों के मुँह से खाते या पानी पीते समय निकलता है।

चपड़ा *पुं.* (देश.) 1. साफ की हुई लाख का पत्तर 2. लाल रंग का एक कीड़ा, जो प्राय: पाखानों तथा सीड़ लिए हुए गंदे स्थानों में होता है 3. चिपटी वस्तु, पत्तर।

चपत *पुं.* (तद्.) 1. तमाचा या थप्पड़ जो सिर या गाल पर मारा जाए **मुहा.** चपत झाड़ना- चपत मारना 2. धक्का, हानि, नुकसान **प्रयो.** उसे बैठे-बिठाए हजारों रुपये की चपत लग गई।

चपतियाना *स.क्रि.* (देश.) चपत लगाना **प्रयो.** उसने सामने वाले को पकड़ा और चपतियाना शुरू कर दिया।

चपना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. दबना, दाब में पड़ना, कुचल जाना 2. लज्जा से गड़ जाना, लज्जित होना, सिर नीचा करना, शरमाना, झेंपना 3. चौपट होना।

चपनी *स्त्री.* (देश.) 1. छिछला कटोरा, कटोरी **मुहा.** चपनी भर पानी में डूब मरना- लज्जा के मारे मुँह न दिखाना 2. एक प्रकार का कमंडल जो दरियाई नारियल का होता है 3. हाँडी का ढक्कन **मुहा.** चपनी चाटना- बहुत थोड़ा अंश पाकर रह जाना 4. घुटने की हड्डी, चक्की।

चपरगट्ट *वि.* (देश.) 1. सत्यानाशी, चौपटा 2. आफत का मारा, अभागा 3. एक में उलझा हुआ।

चपरना *स.क्रि.* (देश.) 1. चिपचिपी वस्तु को दूसरी वस्तु पर फैलाकर लगाना 2. परस्पर मिलाना, सानना, ओत-प्रोत करना 3. भाग जाना, खिसक जाना 4. जल्दी करना।

चपरनी *स्त्री.* (देश.) मुजरा, गाना (वेश्याओं की बोली)।

चपरा *वि.* (देश.) हठात्, कोई बात कहकर या कोई काम करके उससे इनकार करने वाला, मुकर जाने वाला, झूठा।

चपरास *स्त्री.* (फा.) 1. पीतल आदि की धातुओं की एक छोटी पट्टी जिसे पेटी में लगा कर सिपाही, चौकीदार, अरदली आदि पहनते हैं और जिस पर उनके मालिक, कार्यालय आदि के नाम खुदे रहते हैं, बिल्ला, बैज 2. मुलम्मा करने की कलम 3. बढइयों के आरे के दाँतों का दाहिने और बाएँ झुकाव।

चपरासी *पुं.* (फा.) वह नौकर जो चपरास पहने हो और मालिक के साथ रहे, सिपाही, प्यादा, अरदली।

चपरि *क्रि.वि.* (तद्.) फुरती से, चपलता से, तेजी से, जोर से, सहसा, एक बारगी।

चपल *पुं.* (तत्.)1. पारा, पारद 2. मछली 3. चातक, पपीहा 4. एक प्रकार का पत्थर 5. चौर (चोरक) नामक सुगंधित द्रव्य 6. राई 7. एक प्रकार का चूहा *वि.* (तत्.) 1. कुछ काल तक एक स्थिति में रहने वाला, चंचल, तेज फुरतीला, चुलबुला 2. बहुत काल तक न रहने वाला, क्षणिक 3. उतावला, हड़बड़ी मचाने वाला, जल्दबाज 4. अभिप्राय साधने में उद्यत, अवसर न चूकने वाला, चालाक, धृष्ट।

चपलता *स्त्री.* (तत्.) 1. चंचलता, तेजी, जल्दी, उतावली 2. धृष्टता, ढिठाई।

चपला *स्त्री.* (तत्.) 1. लक्ष्मी 2. बिजली, चंचल 3. आर्या छंद का एक भेद 4. पुंश्चली स्त्री 5. पीपल 6. जीभ, जिह्वा 7. विजया, भाँग 8. मदिरा 9. प्राचीन काल की एक नाव जो 48 हाथ (72 फीट) लम्बी, 24 हाथ (36 फीट) चौड़ी और 24 हाथ (36 फीट) ऊँची होती थी और केवल नदियों में चलती थी *स्त्री.* (देश.) जहाज में लोहे या लकड़ी की पट्टी जो पतवार के दोनों ओर उसकी रोक के लिए लगी होती है।

चपलाना *अ.क्रि.* (तद्.) चलना, हिलना, डोलना।

चपाक *क्रि.वि.* (देश.) 1. अचानक 2. चटपट, झटपट, तुरंत।

चपाती *स्त्री.* (तद्.) वह पतली रोटी जो हाथ से बेलकर बनाई जाती है, रोटी **मुहा.** चपाती सा पेट- वह पेट जो बहुत निकला हुआ न हो, क्रशोदर।

चपाना *वि.* (देश.) 1. रस्सी जोड़ना 2. दबाने का काम करना, दबवाना 3. लज्जा से दबाना, लज्जित करना, शर्मिंदा करना।

चपेट *स्त्री.* (तत्.) 1. रगड़ के साथ वह दबाव जो किसी भारी वस्तु के वेगपूर्वक चलने से पड़े, झोंका, रगड़ा, धक्का, आघात 2. झापड़, थप्पड़, तमाचा 3. दबाव, संकट **मुहा.** चपेट में आना- संकट में फँसना, मारा जाना।

चपेटना *स.क्रि.* (तद्.) 1. दबाना, दबोचना, दबाव में डालना, रगड़ा देना 2. बलपूर्वक भगाना 3. फटकार लगाना, डाँटना **प्रयो.** उसने सभी बच्चों को **चपेटना** शुरू कर दिया।

चपेटा *पुं.* **दे.** चपेट।

चपेटी *स्त्री.* (तत्.) भाद्रपद की शुक्ला षष्ठी **विशे.** यह संतान के हितार्थ पूजन के लिए गिनाई गई द्वादश षष्ठियों में से एक है।

चपौटी *स्त्री.* (देश.) छोटी टोपी, सिर में जमी हुई टोपी।

चप्पल *पुं.* (देश.) पैर में जूते के बदले पहनने की वस्तु जिसमें एड़ी खुली होती है।

चप्पा *पुं.* (तद्.) 1. चतुर्थांश, चौथाई भाग 2. थोड़ा भाग, न्यून अंश 3. चार अंगुल जगह 4. थोड़ी जगह **प्रयो.** उसने चप्पा-चप्पा छान मारा किन्तु कहीं कुछ नहीं मिला।

चप्पी *स्त्री.* (देश.) धीरे-धीरे हाथ पैर दबाने की क्रिया, चरण सेवा।

चप्पू *पुं.* (देश.) एक प्रकार का डाँड जो पतवार का भी काम देता है।

चबक *स्त्री.* (देश.) रह-रह कर उठने वाला दर्द, चिलक, टीस, हूल, पीड़ा *वि.* (देश.) दब्बू, डरपोक

चबकना *अ.क्रि.* (देश.) रह रहकर दर्द करना, टीसना, चमकना, पीड़ा उठना।

चबर-चबर *स्त्री.* (अनु.) 1. मुँह में कुछ चबाने से होने वाली ध्वनि 2. व्यर्थ की बकवास

चबाई *स्त्री.* (देश.) चलाने की क्रिया, ढंग या भाव।

चबाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. दाँतों से कुचलना, जुगालना **मुहा.** चबा चबाकर बातें करना- एक-एक शब्द धीरे-धीरे बोलना।

चबारा *पुं.* (देश. चौबारा) घर के ऊपर का बंगला, चौबारा।

चबूतरा *पुं.* (तद्.) 1. बैठने के लिए चौरस बनाई गई ऊँची जगह, चौतरा 2. कोतवाली, बड़ा थाना।

चबेना *पुं.* (देश.) चबाकर खाने के लिए भूना हुआ अनाज, चर्वण, भूजा।

चबैना *पुं.* (देश.) **दे.** चबेना।

चभक *पुं.* (अनु.) पानी में वस्तु के डूबने का शब्द, काटने या डंक मारने की क्रिया।

चभाना *स.क्रि.* (देश.) किसी को चाभने या खाने में प्रवृत्त करना, भोजन कराना।

चभोक *पुं.* (देश.) बेवकूफ, मूर्ख।

चभोरना *स.क्रि.* (देश.) 1. डुबोना, गोता लगाना, आप्लावित करना, भिगोना।

चमक *स्त्री.* (देश.) 1. प्रकाश, ज्योति, रोशनी। **प्रयो.** अंधकार में बिजली की चमक सब कुछ रोशन कर देती है 2. कांति, दीप्ति, आभा, झलक **प्रयो.** सोने की चमक सभी को मोह लेती है **मुहा.** चमक मारना-चमकना, झलकना, चमक लाना-झलकाना 3. कमर आदि का वह दर्द जो चोट लगने या एक बारगी अधिक बल पड़ने से होता है, लचक, झटका **प्रयो.** उसकी कमर में चमक आ गई है।

चमक चाँदनी *स्त्री.* (देश.) बनी ठनी रहने वाली दुश्चरित्र स्त्री।

चमक-दमक *स्त्री.* (देश.) 1. दीप्ति, आभा, झलक, तडक़-भडक़ 2. ठाट-बाट **प्रयो.** महल की चमक-दमक देखकर लोग दंग रह गए।

चमकदार *वि.* (देश.+फा.) जिसमें चमक हो, चमकीला, भड़कीला।

चमकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. प्रकाशित होना, देदीप्यमान होना, जगमगाना 2. कांति या आभा से युक्त होना, झलकना, दमकना **प्रयो.** सोने चाँदी का चमकना सभी को अच्छा लगता है 3. कीर्ति लाभ प्राप्त करना, प्रसिद्ध होना, समृद्धि प्राप्त करना, श्री संपन्न होना, उन्नति करना **प्रयो.** वह विदेश जाते ही चमक गया 4. वृद्धि प्राप्त करना, बढ़ना, बढ़ती पर होना **प्रयो.** आजकल उसकी वकालत खूब चमक रही है 5. चौकना, भड़कना, चंचल होना **प्रयो.** लाल कपड़ा देखकर घोड़ा चमक गया है 6. फुरती से खिसक जाना, झट से निकल जाना 7. एक बारगी दर्द होना **प्रयो.** अधिक बोझ उठाते ही उसकी कमर चमक गई 8. मटकना, उँगलिया हिलाकर भाव बताना 9. मटक कर कोप प्रकट करना 10. लड़ाई करना, झगड़ा होना **प्रयो.** आजकल उन दोनों में खूब चमक हो रही है 11. कमर में चिक आना, अधिक बल पड़ने या चोट पहुँचने के कारण कमर में दर्द उठना, झटका लगना, लचक आना **प्रयो.** लकडी का बोझ इतना भारी था कि उसे उठाने में उसकी कमर ही चमक गई।

चमकनी *स्त्री.* (देश.) 1. चमक जाने वाली, जल्दी भड़क जाने वाली 2. हाव-भाव करने वाली।

चमकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. चमकीला करना, दीप्तिमान करना, झलकाना 2. उज्ज्वल करना, निर्मल करना, साफ करना 3. झड़काना, चौंकाना 4. चिढ़ाना, खिझाना 5. घोड़े को चंचलता के साथ बढ़ाना 6. उँगली चमकाना।

चमकीला *वि.* (देश.) 1. जिसमें चमक हो, चमकने वाला, चमकदार 2. अड़कदार, भड़कीला, शानदार।

चमकौवल *स्त्री.* (देश.)1. चमकाने की क्रिया, शरीर के अंगों को नखरे से चमकाने-मटकाने की क्रिया 2. भड़काने की क्रिया।

चमगादड़ *पुं.* (तद्.) रात में उड़ने वाला एक बड़ा जंतु जिसके चारों पैर झिल्लीदार होते हैं **विशे.** यह जमीन पर अपने पैरों से चल फिर नहीं

सकता या तो हवा में उड़ता रहता है या किसी पेड़ की डाल में चिपटा रहता है, दिन के प्रकाश में यह बाहर नहीं निकलता, किसी अंधेरे स्थान में पैर ऊपर और सिर नीचे करके औंधा लटका रहता है, इनके झुँड के झुँड पुराने खंडहरों में लटके हुए पाए जाते हैं, यह हवा में ऊपर तक उड़ता है पर इसमें चिड़ियों के लक्षण नहीं है, इसकी बनावट चूहे जैसी होती है, इसके कान होते है और अंडा नहीं होता, बच्चा होता है, यह प्राय: कीड़े-मकोड़े और फल खाता है।

चमचम *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की बंगला मिठाई जो दूध फाड़कर उसके छेने से बनाई जाती है।

चमचमाना *अ.क्रि.* (देश.) चमकना, प्रकाशमान होना, दीप्तिमान होना, झलकना, चमकाना, झलकाना, दमक लाना।

चमचा *पुं.* (देश.) 1. डाँडी लगी हुई एक प्रकार की छोटी कटोरी या पात्र जिससे दूध, चाय आदि उठाकर पीते है, चम्मच 2. चिमटा 3. नाव में डाँड का चौड़ा अग्र भाग 4. कोयला निकालने का एक प्रकार का फावड़ा।

चमची *स्त्री.* (देश.) 1. छोटा चम्मच 2. आचमनी 3. छोटा चिमटा 4. चूना या कत्था निकालने और पान पर फैलाने की चिपटे और चौड़े मुँह की सलाई।

चमड़ा *पुं.* (तद्.) 1. प्राणियों के सारे शरीर का वह ऊपरी आवरण जिसके कारण माँस, नसें आदि दिखाई नहीं देती, चर्म, त्वचा, जिल्द **मुहा.** चमड़ा उधेड़ना या खींचना- चमडे को शरीर से अलग करना, बहुत मार मारना 2. छाल, छिलका।

चमड़ी *स्त्री.* (देश.) चर्म, त्वचा, खाल।

चमत्कार *पुं.* (तत्.) 1. आश्चर्य, विस्मय 2. आश्चर्य का विषय, अद्भूत व्यापार, विचित्र घटना, असाधारण एवं अलौकिक बात, करामात 3. अनूठापन, विचित्रता, विलक्षणता **प्रयो.** उनकी कविता में कोई चमत्कार नहीं है 4. डमरू 5. अपामार्ग, चिचड़ा।

चमत्कारक *वि.* (तत्.) चमत्कार उत्पन्न करने वाला, विलक्षण, अनूठा।

चमत्कारवाद *पुं.* (तत्.) साहित्य में वह मत जो बाह्य सौंदर्य अर्थात् अंलकारादि को कविता के लिए आवश्यक मानता है, काव्य में चमत्कार का समर्थन करने वाला वाद या सिद्धांत।

चमत्कारिक *वि.* (तत्.) 1. चमत्कार संबंधी 2. चमत्कार पैदा कर देने वाला 3. विचित्र प्रतीत होने वाला।

चमत्कारित *वि.* (तत्.) चमत्कृत, विस्मृत।

चमत्कृत *वि.* (तत्.) विस्मित, आश्चर्यित।

चमन *पुं.* (फा.) 1. हरी क्यारी 2. फुलवारी, घर के अंदर का छोटा बगीचा 3. गुलजार बस्ती, रौनकदार शहर।

चमर *पुं.* (तत्.) 1. सुरागाय 2. सुरागाय की पूँछ से बना चँवर, चामर 3. एक दैत्य का नाम 4. चमार से संबंधित, तुच्छ, हीन।

चमरक *पुं.* (तत्.) मधुमक्खी।

चमरख *स्त्री.* (देश.) दुबली, पतली।

चमर टोला *पुं.* (देश.) चमारों का मुहल्ला या निवास।

चमर टोली *स्त्री.* (देश.) 1. चमारों की बस्ती 2. चमारों का झुंड।

चमर पुच्छ *पुं.* (तत्.) 1. चँवर 2. लोमड़ी 3. गिलहरी।

चमर बैल *पुं.* (देश.) याक नाम का एक पहाड़ी बैल जिसके कंधो पर बड़े-बड़े बाल होते है **प्रयो.** चमर बैल धीरे-धीरे सभी चारा खत्म कर गए।

चमरशिखा *स्त्री.* (तत्.) घोड़ों की कलँगी।

चमरस *पुं.* (देश.) वह घाव जो चमड़े या जूते की रगड़ से पैर में हो जाए।

चमरावत *स्त्री.* (देश.) चमड़े के मोट आदि बनाने की मजदूरी जो जमींदार या काश्तकार की ओर से चमारों को मिलती है।

चमरी *स्त्री.* (तत्.) 1. सुरागाय 2. चँवरी 3. मंजरी।

चमरौट *पुं.* (देश.) चमारों को उनके काम के बदले मिलने वाला फसल आदि का भाग।

चमरौटी *स्त्री.* (देश.) चमारों की बस्ती।

चमरौधा *पुं.* (देश.) देशी ढंग का बना भारी, भद्दा जूता, चमौआ।

चमला *पुं.* (देश.) भीख माँगने का ठीकरा, भिक्षा पात्र।

चमस *पुं.* (तत्.) 1. सोमपान करने का चम्मच के आकार का एक यज्ञ पात्र जो पलाश आदि की लकडी से बनता है 2. कलछा, चम्मच 3. पापड़ 4. मोदक, लड्डू 5. उड़द का आटा 6. एक ऋषि का नाम 7. नौ योगीश्वरों में से एक।

चमसि *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की रोटी या लिट्टी।

चमसी *स्त्री.* (तत्.) 1. चम्मच के आकार का लकड़ी का यज्ञ पात्र 2. उड़द, मूंग, मसूर आदि की पीठी *वि.* (तत्.) सोमरस से पूर्ण चमस पाने का अधिकारी।

चमाचम *क्रि.वि.* (देश.) उज्ज्वल कांति सहित झलक के साथ **प्रयो.** होटल के बर्तन चमाचम चमकते रहते हैं।

चमार *पुं.* (तद्.) 1. एक जाति 2. उक्त जाति का व्यक्ति

चमारनी *स्त्री.* **दे.** चमारी।

चमारी *स्त्री.* (तद्.) 1. चमार जाति की स्त्री, चमार की स्त्री 2. कमल का वह फूल जिसमें कमल गट्टे के जीरे खराब हो जाते है *वि.* 1. (तद्.) चमार संबंधी

चमीकर *पुं.* (तत्.) प्राचीन भारत में प्रसिद्ध सोने की एक प्राचीन खान, इसी से सोने को चामीकर भी कहते हैं।

चमू *स्त्री.* (तत्.) 1. सेना, फौज 2. नियत संख्या की सेना जिसमें 729 हाथी, 729 रथ, 2187 घुड़सवार और 3645 पैदल होते थे।

चमूचर *पुं.* (तत्.) 1. सिपाही 2. सेनापति।

चमूरु *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का मृग, बालदार पूँछ वाला मृग।

चमेठी *स्त्री.* (देश.) पालकी के कहारों की एक प्रकार की बोली।

चमेली *स्त्री.* (तद्.) 1. चंपक बेली, झाड़ी या लता जो अपने सुगंधित फूलों के लिए प्रसिद्ध है **विशे.** चमेली के फूलों से तेल बनाया जाता है जो चमेली का तेल कहलाता है, यह तेल सिरदर्द और नेत्र रोगों की उत्तम औषधि है 2. नदी या समुद्र की ऊँची लहर की वह थपेड़ जिससे नावें आदि डगमगाने लगती हैं और कभी कभी डूब जाती हैं।

चमोटा *पुं.* (देश.) पाँच छः अंगुल का मोटे चमड़े का टुकड़ा जिस पर नाई छुरे को उसकी धार तेज करने के लिए बार-बार रगड़ते हैं।

चमोटी *स्त्री.* (देश.) 1. चाबुक, कोड़ा 2. पतली छड़ी, कमची, बेंत 3. वह चमड़ा जो बेडियों के भीतरी भाग में इसलिए लगाया जाता है कि पैरों में लोहे की रगड़ न लगे 4. चमड़े का वह पट्टा जिसकी सहायता से खराद का चक्कर खींचा जाता है।

चम्मच *पुं.* (तद्.) हलकी कलछी जिससे दूध चाय तथा खाने-पीने की चीजें चलाते और निकालते हैं।

चम्मल *पुं.* **दे.** चमला।

चय *पुं.* (तत्.) 1. समूह, ढेर, राशि 2. टीला, ढूह 3. गढ़, किला 4. किसी किले या शहर के चारों ओर रक्षा के लिए बनाई गई दीवार, चार दीवारी, कोट, प्राकार 5. बुनियाद, जिसके ऊपर दीवार बनाई जाती है, नींव 6. चबूतरा 7. चौकी, ऊँचा-आसन 8. कफ, वात या पित्त की विशेष अवस्था 9. यश के लिए अग्नि आदि का विशेष संस्कार 10. दुर्ग का द्वार या फाटक 11. तिपाई 12. लकडी का ढेर 13. आवरण।

चयक *वि.* (तत्.) चयन करने वाला।

चयन *पुं.* (तत्.) 1. इकट्ठा करने का कार्य, संग्रह, संचय 2. चुनने का कार्य 3. यज्ञ के लिए अग्नि

का संस्कार 4. क्रम से लगाने की क्रिया 5. क्रम से रखना या लगाना।

चयनिका *स्त्री.* (तत्.) 1. चुनी हुई रचनाओं का संग्रह (कविता, कहानी आदि का) पत्र-पत्रिकाओं का विशिष्ट स्तंभ जिसमें अन्य पत्रों से लिए हुए लेखांश, टिप्पण आदि दिए जाते हैं 2. चयन करने वाली स्त्री।

चयनीय *वि.* (तत्.) चयन करने योग्य।

चर *पुं.* (तत्.) 1. वह व्यक्ति जो राज्य या राष्ट्र की ओर से देश-विदेश की बातों पर छिपकर पता लगाने के लिए नियुक्त हो, जासूस, गुप्त दूत, गूढ़ पुरुष 2. किसी विशेष कार्य के लिए कहीं भेजा गया आदमी, दूत 3. वह जो चले 4. ज्योतिष में देशांतर, जिसकी सहायता दिनमान निकालने में ली जाती है 5. खंजन पक्षी 6. कौड़ह, कपर्दिका 7. मंगल, भौम 8. दलदल, कीचड़ 9. नदियों के बीच में बालू का बना हुआ टापू 10. छिछला पानी *वि.* (तत्.) 1. अपने आप चलने वाला, जंगम 2. अस्थिर 3. खाने वाला, आहार करने वाला।

चरई *स्त्री.* 1. (देश.) पशुओं को चारा-पानी देने के लिए पत्थर आदि का बना हुआ हौज 2. तार की खूँटी।

चरक *पुं.* (तत्.) 1. दूत, कासिद, चर 2. गुप्तचर, भेदिया, जासूस 3. वैद्यक के प्रधान आचार्य, जिनका रचा हुआ 'चरक-संहिता' ग्रंथ आयुर्वेद का प्रधान ग्रंथ माना जाता है 4. मुसाफिर, बटोही, पथिक 5. भिखमंगा 6. बौद्धों का एक संप्रदाय, एक प्रकार की मछली 7. सफेद कुष्ठ का दाग।

चरकटा *पुं.* (देश.) 1. चारा काटने वाला व्यक्ति 2. तुच्छ मनुष्य 3. अयोग्य व्यक्ति।

चरक संहिता *स्त्री.* (तत्.) चरक मुनि का बनाया हुआ वैद्यक संबंधी सर्वमान्य और प्राचीन उपलब्ध संस्कृत ग्रंथ।

चरका *पुं.* (फा.) 1. हल्का घाव, जख्म, खरोंच 2. गरम लोहे से दागने का निशान 3. हानि, नुकसान, धक्का 4. धोखा।

चरख *पुं.* (फा.) 1. पहिए के आकार का गोल घूमने वाला चक्कर, चाक 2. खराद 3. सूत कातने का चरखा 4. गोफन, ढेलबाँस 5. वह गाड़ी जिस पर तोप चढ़ी रहती है 6. लकड़बग्घा नामक जंगली हिंसक पशु 7. बाज की तरह की शिकारी चिड़िया।

चरखड़ी *स्त्री.* (देश.)एक प्रकार का दरवाजा।

चरख पूजा *स्त्री.* (फा.-चर्ख+तत्.) एक प्रकार की पूजा जो चैत की संक्रांति को होती है **विशे.** इसमें खंभे पर बरछा लगाकर लोग गाते बजाते और नाचते हुए चक्कर लगाते हैं और बरछे से अपनी जीभ या शरीर छेदते हैं, बाण नामक शैव राजा ने अपना रक्त चढ़ाकर शिव को प्रसन्न किया था जिसकी स्मृति में यह पूजा होती थी, यह ब्रिटिश शासन काल में बंद कर दी गई थी।

चरखा *पुं.* (फा.) 1. हाथ से सूत कातने का काष्ठ निर्मित यंत्र 2. रहट/कुएँ से पानी निकालने का यंत्र 3. ईख का रस निकालने के लिए बनी लोहे की मशीन 4. सूत लपेटने की गरारी, चरखी, रील, घिरनी 5. बडा या बेडौल पहिया 6. रेशम खोलने का 'उड़ा' नामक औजार 7. वह स्त्री या पुरुष जिसके सब अंग बुढ़ापे के कारण शिथिल हो गए हैं 8. झंझट का काम 9. कुश्ती का एक पेंच।

चरखी *स्त्री.* (देश.) 1. घूमने वाला चक्कर 2. चाक 3. ओटनी 4. छोटा चरखा 5. सूत लपेटने की फिरकी 6. एक आतिशबाजी जो चक्कर खाते हुए घूमती है 7. जुलाहों का एक औजार 8. कुएँ से पानी निकालने की गरारी 9. हिंडौला।

चरचना *स.क्रि.* (तद्.) 1. चंदन केसर आदि का लेप करना 2. पहचानना 3. लड़ना 4. भाँपना 5. पूजा करना।

चरचर *स्त्री.* (अनु.) चरचराने की ध्वनि या स्थिति।

चरचरा *वि.* (अनु.) **दे.** चिड़चिड़ा।

चरचराना *अ.क्रि.* (अनु.)1. चर-चर शब्द के साथ टूटना या जलना 2. तनाव के कारण दर्द होना, चर-चर शब्द करते हुए कोई चीज गिराना या तोड़ना।

चरचराहट *स्त्री.* (देश.)1. चरचराने की क्रिया या भाव 2. चर-चर शब्द के साथ किसी चीज के टूटने या फटने का शब्द।

चरचा *स्त्री.* (देश.) **दे.** चर्चा।

चरचारी *वि.* (देश.) 1. चरचराने वाला 2. निंदक, शिकायत करने वाला।

चरजना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. बहकावा या भुलावा देना 2. अनुमान करना, अंदाज लगाना।

चरट *पुं.* (तत्.) खंजन पक्षी।

चरण *पुं.* (तत्.) 1. पग, पैर, पाँव, कदम **मुहा.** चरण छूना- दंडवत् प्रणाम करना; चरण देना- पैर रखना; चरण पड़ना- आगमन करना; चरण लेना- पैर छूकर प्रणाम करना 2. बड़ों का सान्निध्य, बड़ों की समीपता, बड़ो का संग 3. किसी छंद, श्लोक या पद्य आदि का एक पद, दल 4. किसी पदार्थ का चतुर्थांश 5. मूल, जड़ 6. गोत्र 7. क्रम 8. आचार 9. विचरण करने का स्थान, घूमने की जगह 10. सूर्य की किरण 11. अनुष्ठान 12. गमन, जाना 13. भक्षण, चरने का काम 14. नदी का वह भाग जो तटवर्ती पर्वत, गुफा आदि तक चला गया हो 15. वेद की कोई शाखा 16. खंभा, स्तंभ 17. किसी संप्रदाय का विहित कर्म 18. आधार, सहारा।

चरण कमल *पुं.* (तत्.) कमल के समान सुंदर पैर।

चरणकरणानुयोग *पुं.* (तत्.) जैन साहित्य में ऐसा ग्रंथ जिसमें किसी के चरित्र का बहुत ही सूक्ष्म दृष्टि से विचार या व्याख्या की गई हो।

चरणगत *वि.* (तत्.) 1. चरणों पर गिरा हुआ 2. आश्रित, अधीन।

चरणगुप्त *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का चित्र काव्य जिसके कई भेद होते हैं। इसमें कोष्ठक बनाकर उनमें कविता के चरणों या पंक्तियों के अक्षर भरे जाते हैं, इनके पढ़ने के क्रम भिन्न होते हैं।

चरण चार *पुं.* (तत्.) गमन, गति, चलना।

चरण चिह्न *पुं.* (तत्.) 1. पैरों के तलुए की रेखा, पाँव की लकीरें 2. कीचड़, धूल या बालू आदि पर पड़ा पैर का निशान 3. पत्थर पर बनाया हुआ चरण के आकार का चिह्न जिसकी पूजा होती है।

चरण दास *पुं.* (तत्.) 1. चरणों की सेवा करने वाला दास या सेवक 2. दिल्ली के एक महात्मा साधु जो धूसर बनिए थे **विशे.** इनका जन्म संवत् 1760 में तथा शरीरांत संवत् 1838 वि. में हुआ था, इनके चलाए संप्रदाय के साधु चरणदासी साधु कहलाते हैं।

चरणदासी *वि.* (तत्.) चरणदास के संप्रदाय का, चरणदास का अनुयायी *स्त्री.* 1. स्त्री, पत्नी 2. जूता, पनही।

चरणप *पुं.* (तत्.) वृक्ष, पादप, पेड़।

चरण-पादुका *स्त्री.* (तत्.) 1. खडाऊँ, पाँवड़ी 2. पत्थर पर बना चरण के आकार का चिह्न, जिसकी पूजा होती है, चरण चिह्न।

चरण-रज *पुं.* (तत्.) पाँव की धूल जो बहुत पवित्र समझी जाती है।

चरण सेवक *पुं.* (तत्.) 1. वह जो पाँव दबा कर सेवा करे 2. भृत्य, नौकर।

चरण सेवा *स्त्री.* (तत्.) पैर दबाना, बड़ों की सेवा।

चरणसेवी *पुं.* (तत्.) 1. सेवक, नौकर 2. चरणों में रहने वाला।

चरणाक्ष *पुं.* (तत्.) अक्षपाद, गौतम ऋषि का एक नाम।

चरणागति *स्त्री.* (तत्.) पैरों पर गिरना।

चरणाद्रि *पुं.* (तत्.) चुनार नामक स्थान जो काशी और मिर्जापुर के बीच है।

चरणानुग *वि.* (तत्.) 1. (किसी के) पीछे चलने वाला, अनुगामी 2. शरणागत।

चरणामृत *पुं.* (तत्.) 1. वह जल जिसमें किसी देवभूमि या पूज्य पुरुष के चरण धोए गए हों, पादोदक **मुहा.** चरणामृत लेना- किसी महात्मा या बड़े का चरण धोकर पीना 2. दूध, दही, घी, शक्कर और शहद का मिश्रण जिसमें देवमूर्ति को स्नान कराया जाता है **मुहा.** चरणामृत पीना- पंचामृत लेना।

चरणायुध *पुं.* (तत्.) मुरगा, जो अपने पैरों के पंजों से लड़ता है।

चरणाविंद *पुं.* (तत्.) कमल के समान चरण, चरणकमल।

चरणोदक *पुं.* (तत्.) **दे.** 'चरणामृत'।

चरणोपधान *पुं.* **(**तत्.) पाँव रखने का स्थान, पाँव दान।

चरता *स्त्री.* (तत्.) 1. चलने का भाव 2. पृथ्वी।

चरती *पुं.* (देश.) व्रत न रखने वाला व्यक्ति।

चरथ *वि.* (तत्.) चलने वाला, जंगम *पुं.* 1. वह जो गतिशील हो 2. जीवन 3. मार्ग 4. गति।

चरनदासी *स्त्री.* (तद्.) जूता, पनही, चरणों की दासी।

चरना *स.क्रि.* (तद्.) पशुओं का घास आदि खाने के लिए खेतों और मैदानों में फिरना **प्रयो.** उस बडे मैदान में गौएँ चर रही हैं *अ.क्रि.* (तद्.) घूमना फिरना, विचरना।

चरनि *स्त्री.* (तत्.) चाल, गति *स्त्री.* (देश.) 1. पशुओं के चरने का स्थान, चरी, चरागाह 2. वह नाँद जिसमें पशुओं को खाने के लिए चारा दिया जाता है 3. पशुओं का आहार, घास, चारा आदि।

चरपट *पुं.* (तद्.) 1. चपत, तमाचा, थप्पड़ 2. किसी की वस्तु उठाकर भाग जाने वाला, उचक्का 3. एक प्रकार का छंद।

चरपरा *वि.* (अनु.) खाने में तीक्ष्ण, झालदार, तीता, चुस्त, फुर्तीला **विशे.** नमक, मिर्च, खटाई आदि के संयोग से यह स्वाद उत्पन्न होता है।

चरपराना *अ.क्रि.* (देश.) घाव का चर्राना, घाव में खुश्की के कारण पीड़ा होना।

चरपराहट *स्त्री.* (देश.) 1. स्वाद की तीक्ष्णता, झाल 2. घाव आदि की जलन 3. द्वेष, डाह, ईर्ष्या।

चरब *वि.* (फा.) 1. तेज, तीखा 2. चरबीदार, चिकना, स्निग्ध।

चरब जबान *वि.* (फा.) 1. बहुभाषी 2. वाचाल 3. चापलूस 4. बिना सोचे समझे बोलने वाला।

चरबदस्त *वि.* (तत्.) 1. कुशल चालक 2. कारीगर।

चरबन *पुं.* (देश.) भुना हुआ अन्न, चबैना, दाना।

चरबाँक *वि.* **(फ़ा.)** 1. चतुर, चालाक, होशियार 2. शोख, निर्भय, निडर, चंचल **मुहा.** चरबाँक दीदा- जिसकी दृष्टि चंचल हो।

चरबा *पुं.* (फा.) प्रतिमूर्ति, नकल, खाका **मुहा.** चरबा उतारना- नक्शा उतारना, किसी की नकल उतारना।

चरबाई *स्त्री.* (देश.) 1. चराने का काम 2. चराने की मजदूरी *वि.* (देश.) चरवाक।

चरबी *स्त्री.* (फा.) माँस के ऊपर और त्वचा के नीचे रहने वाला सफेद या पीले रंग का चिकना पदार्थ, वसा, मेद **मुहा.** चरबी चढना- मोटा होना।

चरम *वि.* (तत्.) अंतिम, हद दर्जे का, सबसे बढ़ा हुआ, चोटी का, पराकाष्ठा *पुं.* (तत्.) 1. पश्चिम 2. अंत 3. चर्म।

चरमर *पुं.* (अनु.) चलने में जूते से या चारपाई पर बैठने से होने वाली आवाज **प्रयो.** उसके जूत खूब चरमर की आवाज करते हैं।

चरमरा *वि.* (अनु.) चरमर शब्द करने वाला।

चरमराना *अ.क्रि.* (देश.) चरमर आवाज होना।

चरमोत्कर्ष *पुं.* **(**तत्.) अत्यंत उन्नति, सर्वोपरि विकास **प्रयो.** प्राचीन काल में गुप्त साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर था।

चरवा *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार का बढ़िया और मुलायम चारा 2. एक बर्तन का नाम

चरवाना *स.क्रि.* (देश.) चराने का काम कराना।

चरवाहा *पुं.* (देश.) गाय-भैंस आदि चराने वाला, वह जो पशु चराए, चौपायों का रक्षक।

चरवाही *स्त्री.* 1. (देश.) [सं-चर+हि.वाही] पशु चराने का काम 2. वह धन या वेतन जो पशु चराने के बदले में दिया जाता है, चराने की मजदूरी 3. इधर-उधर फिरना, आवारा की तरह घूमना।

चरवॉक *वि.* (देश.) [चर्-वाँक्] **दे.** चरबॉक।

चरवैया *वि.* 1. (देश.) चरने वाला 2. चराने वाला।

चरस *पुं.* (तद्.) 1. भैंस या बैल आदि के चमड़े से बना थैला 2. चमड़े का बना हुआ बड़ा ढोल जिससे प्राय: खेत सींचने के लिए पानी निकाला जाता है **विशे.** इसमें पानी बहुत अधिक आता है और उसे खींचने के लिए प्राय: एक या दो बैल लगते हैं 3. भूमि नापने का एक परिमाण जो किसी के मत से 2100 हाथ का होता है, गोचर्म *पुं.* (फा.) गाँजे के पौधों के डंठलों से निकला हुआ एक प्रकार का गोंद जो देखने में प्राय: मोम की तरह और हरे या कुछ पीले रंग का होता है, इसे लोग गाँजे या तंबाकू की तरह पीते हैं, नशे में यह प्राय: गाँजे के समान होता है *पुं.* (फा.) असम प्रांत में होने वाला पक्षी जिसे वन मोर या चीनी मोर भी कहते हैं।

चरसा *पुं.* (देश.) 1. बैल, भैंस, आदि का चमड़ा 2. चमड़े का बना बड़ा थैला 3. चरस, मोट, पुर 4. भूमि का एक परिमाण, गोचर्म।

चराई *स्त्री.* (देश.) 1. चरने का काम, चरने की क्रिया 2. चराने का काम, चराने की मजदूरी।

चराग *पुं.* (फा. चिराग) **दे.** चिराग।

चरागान *पुं.* (फा.) दीपोत्सव।

चरागाह *पुं.* **(फा.)** पशुओं के चरने-चराने की जगह, घास का मैदान।

चराचर *वि.* (तत्.) 1. चर और अचर, जड़-चेतन 2. जगत, संसार 3. कौड़ी।

चरान *पुं.* (देश.) 1. चरागाह 2. समुद्रतट के पास खारे पानी का दलदल जिसमें से नमक निकाला जाता है।

चराना *स.क्रि.* (देश.) 1. पशुओं को चारा खिलाने के लिए मैदान में ले जाना 2. किसी को धोखा देना, मूर्ख बनाना **प्रयो.** वह तुम्हारे जैसे लोगों को रोज चराया करता है।

चराव *पुं.* (तद्.) चरागाह, चरनी।

चरित *पुं.* (तत्.) 1. आचरण, रहन-सहन 2. काम, करतूत, कृत्य **प्रयो.** उसके चरित को समझना बहुत कठिन है 3. किसी के जीवन की घटनाओं का वर्णन, जीवन चरित, जीवनी *वि.* (तत्.) 1. गाया हुआ, गत 2. किया हुआ, आचरित 3. प्राप्त 4. जाना हुआ।

चरित नायक *पुं.* (तत्.) वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र को लेकर कोई पुस्तक लिखी जाए।

चरित-लेखक *पुं.* (तत्.) जीवनी लिखने वाला लेखक।

चरितार्थ *वि.* (तत्.) 1. जिसके उद्‌देश्य या अभिप्राय की सिद्‌धि हो चुकी हो, कृतकृत्य, कृतार्थ 2. जो पूरा उतरे **प्रयो.** आप वाली कहावत ठीक चरितार्थ होती है।

चरितार्थी *वि.* (तत्.) सफलता की इच्छा रखने वाला।

चरित्तर *पुं.* (तद्.) धूर्तता की चाल, नखरे, नकल **प्रयो.** यह सब स्त्रियों के चरित्तर हैं।

चरित्र *पुं.* (तत्.) 1. स्वभाव 2. कार्य, जो किया जाए 3. करनी, करतूत 4. व्यवहार, आधार।

चरित्रवान *वि.* (तत्.) 1. अच्छे चरित्र वाला 2. अच्छे चाल-चलन वाला, सदाचारी।

चरित्रांकन *पुं.* (तत्.) चरित्र का पूरा विवरण देना, व्याख्या सहित चरित्र प्रस्तुत करना।

चरित्रा *स्त्री.* (तत्.) इमली का पेड़।

चरी *स्त्री.* (देश.) संदेशा ले जाने वाली दूती 2. मजदूरनी, दासी, नौकरानी *स्त्री.* (तत्.) 1. पशुओं

के चरने के लिए जमींदार की ओर से बिना लगान के दी गई भूमि 2. गोचारण भूमि 3. छोटी ज्वार के हरे पेड़ जो चारे के काम आते हैं, कड़वी।

चरु *पुं.* (तत्.) 1. हवन या यज्ञ की आहुति के लिए पकाया हुआ अन्न, हव्यान्न 2. वह बरतन जिसमें चरु पकाया जाए 3. पशुओं के चरने की जमीन 4. यज्ञ 5. बादल।

चरेली *स्त्री.* (देश.) ब्राह्मी बूटी।

चरैया *पुं.* (देश.) चराने वाला, चरने वाला।

चर्ख *पुं.* (फा.) 1. चक्र 2. कुम्हार का चाक 3. आकाश 4. खराद 5. खिंची हुई कमान 6. ढेल-वास, गोफन 7. चरखी 8. पहिया 9. रहट 10. एक तरह का बाज 11. चारों ओर घूमना 12. कुरते का गला।

चर्च *पुं.* (अं.) गिरजा, वह मंदिर जिसमें ईसाई प्रार्थना करते हैं *पुं.* (तत्.) विचार, ध्यान, चिंतन।

चर्चक *पुं.* (तत्.) चर्चा करने वाला।

चर्चन *पुं.* (तत्.) 1. चर्चा 2. लेपन।

चर्चरिका *स्त्री.* (तत्.) 1. चर्चरी 2. नाटक में परदा गिराने के बाद और दूसरा परदा उठाने के पहले गाया जाने वाला गाना 2. आमोद-प्रमोद की धूम 3. चापलूसी 4. घुँघराले बाल।

चर्चरी *स्त्री.* (तत्.) 1. बसंत में गाया जाने वाला गाना, फाग 2. होली की धूमधाम, होली का हुल्लड़ 3. करतल ध्वनि 4. ताल का एक भेद 5. एक वर्ण वृत्त 6. एक तरह का ढोल 7. गाना-बजाना, नाचना कूदना, आनंद की धूम।

चर्चरीक *पुं.* (तत्.) 1. महाकाल भैरव 2. साग, भाजी 3. केश विन्यास, बाल सँवारने की क्रिया।

चर्चा *स्त्री.* (तत्.) 1. जिक्र, वर्णन, बयान 2. वार्तालाप, बातचीत 3. किंवदंती, अफवाह 4. लेपना, पोतना 5. गायत्री रूपा महादेवी 6. दुर्गा।

चर्चि *स्त्री.* (तत्.) 1. आवृत्ति 2. विचारणा।

चर्चिका *स्त्री.* (तत्.) 1. चर्चा, जिक्र 2. दुर्गा।

चर्चित *वि.* (तत्.) 1. लेपित 2. विचारित 3. इच्छित।

चर्पट *पुं.* (तत्.) 1. चपत, थप्पड़ 2. फैली हुई हथेली 3. चेतावनी *वि.* विपुल, अधिक।

चर्पटी *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की रोटी या चपाती।

चर्पण *पुं.* (तद्.) **दे.** चर्वण।

चर्बित *वि.* (तद्.) **दे.** चर्वित।

चर्बी *स्त्री.* (फा.चर्बी) **दे.** चरबी।

चर्भट *पुं.* (तत्.) ककड़ी।

चर्भटी *स्त्री.* (तत्.) 1. चर्चरीगीत 2. चर्चा 3. आनंद, क्रीड़ा 4. गर्वोक्ति।

चर्म *पुं.* (तत्.) 1. चमड़ा 2. ढाल 3. स्पर्शेंद्रिय।

चर्मकार *पुं.* (तत्.) चमड़े का काम करने वाला, चमार, मोची *वि.* मनु के अनुसार निषाद पुरुष और वैदेही स्त्री के गर्भ में इस जाति की उत्पत्ति हुई है। पराशर ने तीवर और चांडाली से चर्मकार की उत्पत्ति मानी है।

चर्म कार्य *पुं.* (तत्.) चर्मकार का काम, चमड़े के जूते, जीन आदि की सिलाई का काम।

चर्म कूप *पुं.* (तत्.) 1. शरीर छिद्र, रोम छिद्र 2. चमड़े का कुप्पा।

चर्म चक्षु *पुं.* (तत्.) साधारण चक्षु, स्थूल दृष्टि।

चर्म चित्रक *पुं.* (तत्.) 1. श्वेत कुष्ठ, सफेद कोढ़ 2. फूल।

चर्मणा *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की मक्खी।

चर्मण्वती *स्त्री.* (तत्.) 1. चंबल नदी 2. केले का पेड़ *वि.* यह नदी विंध्याचल पर्वत से निकल कर इटावा के पास यमुना में मिलती है। इसका दूसरा नाम शिवनद भी है।

चर्म दंड *पुं.* (तत्.) चमड़े का बना हुआ कोड़ा या चाबुक।

चर्म दल *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का कोढ़।

चर्म दूषिका *स्त्री.* (तत्.) दाद का रोग।

चर्म दृष्टि *स्त्री.* (तत्.) साधारण दृष्टि, आँख, ज्ञान दृष्टि का उलटा।

चर्ममय *पुं.* (तत्.) चमड़े का बना हुआ।

चर्म वाद्य *पुं.* (तत्.) ढोल, नगाड़ा।

चर्म वृक्ष *पुं.* (तत्.) भोजपत्र का पेड़।

चर्म सार *पुं.* (तत्.) देह से आहार में उत्पन्न होने वाला रस।

चर्मांत *पुं.* (तत्.) सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का उपयंत्र जिसका प्राचीन काल में चीर-फाड़ के लिए होता था।

चर्माभस् *पुं.* (तत्.) दे. चर्मसार।

चर्माख्य *पुं.* (तत्.) कोढ़ रोग का भेद।

चर्मानुरंजन *पुं.* (तत्.) बदन रंगाने के लिए प्रयुक्त सिंदूर की तरह का द्रव्य।

चर्मार *पुं.* (तत्.) चर्मकार, चमार।

चर्मिक *पुं.* (तत्.) हाथ में ढाल लेकर लड़ने वाला योद्धा *वि.* ढालवाला, जिसके हाथ में ढाल हो।

चर्मी *पुं.* (तत्.) 1. चर्म धारण करने वाला सैनिक 2. भोजपत्र का वृक्ष 3. केला।

चर्य *वि.* (तत्.) 1. जो करने योग्य हो 2. कर्तव्य।

चर्या *स्त्री.* (तत्.) 1. आचरण, पालन, जीविका, नियमपूर्वक अनुसरण, गति, भ्रमण 2. आचार, चाल-चलन 3. सेवा 4. विहित कार्य का अनुष्ठान और निषिद्ध का त्याग।

चर्र *पुं.* (अनु.) कोई चीज फाड़ने से उत्पन्न ध्वनि *वि.* इसका *क्रि.वि.* रूप से व्यवहार होता है अत: लिंग निर्वचन अनावश्यक है **मुहा.** चर्र-चर्र फाड़ना-चर्र चर्र की आवाज करते हुए फाडना।

चर्राना *क्रि.* (अनु.) 1. लकड़ी आदि का टूटने के समय चर्-चर् शब्द करना 2. घाव पर जमी पपड़ी के उखड़ जाने पर होने वाली पीड़ा 3. खुश्की के कारण किसी अंग में तनाव और हल्की पीड़ा होना **उदा.** बहुत दिनों से तेल मालिश नहीं की, अंत: बदन चर्राता है 4. किसी बात की वेगपूर्ण इच्छा **उदा.** आजकल उसे घूमने का शौक चर्राया है।

चर्री *स्त्री.* (तत्.) लगने वाली बात, चुटीली बात।

चर्वण *पुं.* (तत्.) 1. किसी चीज को मुँह में रखकर तोड़ने की क्रिया, चबाना 2. वह वस्तु जो चबाई जाए 3. चबैना 4. आस्वादन 5. रसास्वादन।

चर्वणा *स्त्री.* (तत्.) 1. चर्वण करना 2. चबाने वाला दाँत 3. रसास्वादन।

चर्वा *स्त्री.* (तत्.) 1. थप्पड़, चाँटा, झापड़, चपत 2. चबाने का कार्य।

चर्वित *वि.* (तत्.) 1. चबाया हुआ, दाँतों से कुचला हुआ 2. आस्वादित 3. रसास्वादित।

चर्वित पात्र *पुं.* (तत्.) उगलदान, पीकदान।

चर्विल *पुं.* (अं.) गाजर की तरह अंग्रेजी तरकारी, जो कार्तिक में बोई जाती है।

चर्व्य *वि.* (तत्.) 1. चबाने योग्य 2. जो चबाकर खाया जाए *पुं.* आहार, भोजन, खाद्य।

चर्षणि *स्त्री.* (तत्.) कुल्टा स्त्री, बंधकी *वि.* 1. निरीक्षक, पर्यवेक्षक 2. गायनशील, गतिशील, फुर्तीला, सक्रिय।

चलंता *वि.* (तत्.) 1. चलता हुआ 2. चलने वाला।

चल *वि.* (तत्.) 1. चंचल, अस्थिर, चलायमान 2. हिलने-डुलने वाला 3. एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने योग्य 4. गतिशील 5. घबराया हुआ 6. क्षणिक, अस्थायी *पुं.* 1. पारा 2. दोहा छंद का एक भेद जिसमें 11 गुरु और 26 लघु मात्राएँ होती है 3. शिव, महादेव 4. विष्णु 5. कंपन, काँपना 6. दोष 7. भूल, चूक 8. धोखा, छल, कपट 9. नृत्य की एक चेष्टा विशेष 10. वायु 11. काक 12. कौआ *स्त्री.* 1. चाल, गड़बड़ 2. भागना।

चलकना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. चमकना 2. दे. चिलकना।

चल चंचु *पुं.* (तत्.) चकोर।

चल-चलाव *पुं.* (तद्.) 1. प्रस्थान, यात्रा 2. महाप्रस्थान, मृत्यु, मौत।

चलचाल *वि.* (तत्.) चल-विचल, चंचल, अस्थिर।

चलचित्त *वि.* (तत्.) चंचल चित्त वाला, अनिश्चयपूर्ण मन वाला।

चलचित्र *पुं.* (तत्.) 1. गतिशील चित्र 2. चलता-फिरता दिखने वाला चित्र 3. सिनेमा, बाइसकोप।

चलता *वि.* (तद्.) 1. चलता हुआ, गमन करता हुआ, गतिमान **मुहा.** 1. चलता करना- हटाना, भगाना **उदा.** इस कागज को आज चलता करो 2. चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना- होते कार्य में बाधा डालना 3. चलता बनना- चल देना, प्रस्थान करना 4. चलता होना- प्रस्थान करना 5. चलता फिरता नजर आना- चलता बनना 2. जिसका क्रम भंग न हुआ हो, जो बराबर जारी हो 3. जिसका चलन अधिक हो, प्रचलित **उदा.** वह चलती चीज है इसी का व्यापार ठीक है 4. काम करने योग्य **उदा.** यह चलता बैल है इसी को खरीदना ठीक है 5. व्यवहार में तत्पर, चालाक, चुस्त, व्यवहारपटु *पुं.* (देश.) एक सदाबहार विशाल वृक्ष *स्त्री.* (तत्.) चंचलता, अस्थिरता।

चलती *स्त्री.* (तत्.) मान-मर्यादा, प्रभाव, अधिकार **उदा.** आजकल सरकार में नेता जी की खूब चलती है।

चल दंग *पुं.* (तत्.) एक तरह की झींगा मछली।

चल दल *पुं.* (तत्.) पीपल का वृक्ष।

चलद्विष *पुं.* (तत्.) कोकिल।

चलन *पुं.* (तत्.) 1. चलने का भाव, गति, चाल, भ्रमण 2. रिवाज, रस्म, व्यवहार, रीति 3. किसी चीज का उपयोग या प्रचार **उदा.** आजकल फास्ट फूड का चलन बढ़ रहा है 4. ज्योतिष का एक गणित जिसके द्वारा दिनमान का घटना बढ़ना जाना जाता है 5. काँपना 6. हिरन 7. चरण, पैर 8. नृत्य में एक प्रकार की चेष्टा।

चलनक *पुं.* (तत्.) स्त्रियों के पहनने का छोटा घाघरा।

चलनसार *वि.* (तत्.) 1. जिसका उपयोग प्रचलित हो, प्रचलित (सिक्का) 2. चलने वाला, टिकाऊ **उदा.** यह कपड़ा चलनसार है।

चलना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना, गमन करना, प्रस्थान करना *वि.* हालाँकि 'जाना' और 'चलना' दोनो क्रियाएँ कभी-कभी समान अर्थ में प्रयुक्त होती हैं, किंतु दोनों के भावों में अंतर है। 'जाना' क्रिया में स्थान विशेष की ओर लक्ष्य रहता है **जैसे-** चलती गाड़ी पर सवार होना ठीक नहीं है। चलना क्रिया से भूतकाल में किसी स्थान पर पहुँचने का बोध नहीं होता **जैसे-** 'वह दिल्ली चला'। परंतु 'जाना' से भूतकाल में पहुँचने का बोध हो सकता है **जैसे-** 'वह गाँव गया' 2. गति में होना, हरकत करना, हिलना-डुलना **मुहा.** किसी का चलना- निर्वाह होना, पेट चलना- दस्त होना। मन चलना- इच्छा होना। मुँह चलना- खाया जाना, भक्षण होना। हाथ चलना- मारने के लिए हाथ उठाना 3. कार्य निर्वाह में समर्थ होना, निभाना करना **उदा.** यह लड़का कक्षा में चल जाएगा **मुहा.** चल निकलना- किसी कार्य में उन्नति 4. प्रवाहित होना, बहना 5. वृद्धि पर होना 6. किसी कार्य का आगे बढना 7. आरंभ होना 8. जारी रहना 9. बराबर काम देना, टिकना 10. व्यवहार में आना 11. प्रचलित या प्रचार पाना 12. प्रयुक्त होना 13. अच्छी तरह काम होना 14. गोली का या तीर का छूटना 15. लड़ाई-झगड़ा होना 16. व्यवसाय की वृद्धि होना 17. पढ़ा जाना 18. कृतकार्य होना, सफल होना, कारगर होना 19. आचरण करना, व्यवहार करना 20. निगल जाना, खाया जाना 21. बासी होना, सड़ना 22. पूरा पड़ना *पुं.* 1. बड़ी मछली 2. लोहे का बड़ा कलछुआ 3. हलवाइयों का एक औजार जिससे चाशनी साफ की जाती है।

चलनिका *स्त्री.* (तत्.) 1. स्त्रियों के पहनने का घाघरा 2. रेशमी झालर।

चलनी *स्त्री.* (तत्.) दे. छलनी।

चलनौस *पुं.* (देश.) 1. चोकर, चालन, छलनी में रहने वाला पदार्थ।

चल पूँजी *स्त्री.* (तत्.) वह पूँजी जिससे एक मनुष्य एक बार उत्पादन कर सकता है।

चलबाँक *वि.* (तत्.) तेज चलने वाला, शीघ्र गामी।

चलवाना *प्रे.क्रि.* (तत्.) 1. चलवाने का कार्य, दूसरे से कराना।

चल-विचल *वि.* (तत्.) जो अपने स्थान से हट गया हो, बेठिकाने।

चलवैया *वि.* (तत्.) चलने वाला।

चल संपत्ति *स्त्री.* (तत्.) वह संपत्ति जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाई जा सके।

चलांतक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का वातरोग, आमवात।

चला *स्त्री.* (तत्.) 1. बिजली, दामिनी 2. पृथ्वी, भूमि 3. लक्ष्मी 4. पिप्पली, पीपल *पुं.* 1. व्यवहार, प्रचार, रिवाज, चाल, रीति, रस्म 2. अधिकार, प्रभुत्व, स्वामित्व।

चलाऊ *वि.* (तत्.) जो बहुत दिन तक चले, चिरस्थायी, मजबूत टिकाऊ, बहुत चलने-फिरने वाला।

चलाचल *स्त्री.* (तत्.) 1. चलाचली 2. गति 3. चाल *वि.* चंचल, चपल।

चलाचली *स्त्री.* (तत्.) 1. चलने का समय की घबराहट, चलने की हड़बड़ी 2. बहुत से लोगों का प्रस्थान 3. चलने की तैयारी 4. महाप्रस्थान की तैयारी, अंतिम समय *वि.* चलने वाला, जो चलने के लिए तैयार हो।

चलान *स्त्री.* (तत्.) 1. भेजे जाने की क्रिया 2. चलाने की क्रिया 3. अपराधी को न्याय के लिए न्यायालय में भेजना **प्रयो.** वह कल पकड़ा गया और आज उसकी चलान हो गई 4. माल का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजना **प्रयो.** आज यहाँ से दूसरे स्थान पर दस बोरी का चलान हो गया 5. वह कागज जिसमें किसी सूचना के लिए भेजी हुई चीजों की सूची या विवरण आदि हो *वि.* इस प्रकार की चलान सरकारी खजानों या तहसीलों आदि से दूसरे दफ्तरों में भेजे जाने वाले रुपयों के साथ भेजी जाती है।

चलाना *स.क्रि.* (तत्.) 1. किसी को चलने में लगाना, चलने के लिए प्रेरित करना 2. गति देना, हिलाना-डुलाना, हरकत देना **प्रयो.** वह प्रतिदिन दो घंटे चरखा चलाता है 3. कार्य निर्वाह में समर्थ करना, निभाना 4. प्रवाहित करना 5. वृद्धि करना, उन्नति करना 6. किसी कार्य को अग्रसर करना 7. आरंभ करना 8. जारी रखना 9. खाने-पीने की वस्तु परोसना 10. बराबर काम में लाना, टिकाना **प्रयो.** वह अपना कोट तीन बरस और चलाएगा 11. व्यवहार में लाना **प्रयो.** उसने तो यह फटा नोट भी चला दिया 12. प्रचलित करना, प्रचार करना **प्रयो.** आप तो रोज नई रीति चलाते हो 13. किसी वस्तु से प्रहार करना 14. व्यापार की वृद्धि करना 15. आचरण कराना।

चलानी *स्त्री.* (तत्.) बिक्री के लिए माल बाहर भेजने का कार्य।

चलायमान *वि.* (तत्.) 1. चलने वाला 2. चंचल 3. विचलित।

चलाव *पुं.* (तत्.) 1. चलने का भाव, यात्रा, प्रयाण, पयान, रवानगी।

चलावा *पुं.* (तत्.) 1. रीति, रस्म, रिवाज 2. द्विरागमन, गौना, मुकलावा 3. एक प्रकार का उतारा जो प्राय: गाँवों में भयंकर बीमारी पड़ने के समय किया जाता है।

चलार्थ *वि.* (तत्.) प्रचलन वाला, हमेशा चलने वाला।

चलासन *पुं.* (तत्.) बौद्धों के मत से एक प्रकार का दोष जो सामयिक व्रत में आसन बदलने के कारण होता है।

चलि *पुं.* (तत्.) 1. आवरण 2. अंगरखा।

चलित *वि.* (तत्.) 1. अस्थिर, चलायमान 2. चलता हुआ *पुं.* नृत्य में एक तरह की चेष्टा।

चलित्र *वि.* (तत्.) अपनी ही शक्ति से चलने वाला।

चलिष्णु *वि.* (तत्.) चलने का इच्छुक, चलने को उद्यत, गमनशील।

चलु *पुं.* (तत्.) पूरे मुँह में भरा हुआ पानी।

चलुक *पुं.* (तत्.) चुल्लू में लिया हुआ जल, एक छोटा पात्र।

चलैया *वि.* (तत्.) चलने वाला।

चलौना *पुं.* (देश.) दूध आदि चलाने की कड़छी, वह लकड़ी का टुकड़ा जिससे चरखा चलाया जाता है।

चवन्नी *स्त्री.* (तत्.) चार आने मूल्य का सिक्का, रुपए का चतुर्थांश।

चवरा *पुं.* (तत्.) लौबिया।

चवर्ग *पुं.* (तत्.) 'च' से 'ञ' तक के अक्षरों का समूह, इन अक्षरों का उच्चारण तालु से होता है।

चवाई *वि.* (तत्.) बदनामी की चर्चा फैलाने वाला, दूसरों की बुराई करने वाला, निंदक।

चवाव *पुं.* (तत्.) 1. चारों ओर फैलने वाली चर्चा, अफवाह 2. बदनामी, निंदा, चुगलखोरी।

चशक *स्त्री.* यूरोपियों के बावर्चियों को विशेष अवसरों पर मिलने वाला भोजन।

चशम *स्त्री.* (फा.) नेत्र, आँख, लोचन, नमन **मुहा.** चश्म बद दूर-बुरी नजर दूर हो **टि.** इस वाक्य का व्यवहार किसी चीज की प्रशंसा करते समय उसे नजर लगने से बचाने के अभिप्राय से किया जाता है।

चश्मक *स्त्री.* (फा.) 1. मनमुटाव, वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष 2. चश्मा, ऐनक 3. आँख का इशारा।

चश्मदीद *वि.* (फा.) जो आँखों से देखा गया हो, प्रत्यक्षदर्शी (गवाह)।

चश्मा *पुं.* (फा.) 1. ऐनक, कमानी में जड़ा हुआ शीशे के तालों (लेंस) का जोड़ा जो आँखों पर लगाया जाता है 2. पानी का सोता/स्रोत 3. छोटी नदी 4. कोई जलाशय 5. सुई का छेद।

चषक *पुं.* (तत्.) 1. शराब पीने का प्याला 2. मधु, शहद 3. एक विशेष प्रकार की मदिरा।

चषण *पुं.* (तत्.) 1. भोजन, भक्षण 2. वध करना, क्षय करना, हनन करना।

चषाल *पुं.* (तत्.) यज्ञ के खंभे में पशु बाँधने के लिए लगी हुई लकड़ी या लोहे की फिरकी।

चसक *स्त्री.* (देश.) 1. हलका दर्द, कसक 2. मगजी के आगे लगाई जाने वाली पतली गोट।

चसकना *अ.क्रि.* (देश.) हलकी पीड़ा होना, मीठा दर्द होना, टीसना।

चसका *पुं.* (तत्.) 1. किसी चीज का मजा मिलने से उसे फिर करने, भोगने की इच्छा होना, शौक, चाव 2. इस प्रकार पड़ी हुई आदत, लत **प्रयो.** उसे शराब पीने का चसका लग गया है।

चसना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. प्राण त्यागना, मरना 2. किसी ग्राहक का माल खरीदना 3. चखना, स्वाद लेना, चाटना 4. दो चीजों का एक में सटना, लगना, चिपकना।

चस्पा *वि.* (फा.) चिपकाया हुआ, सटाया हुआ।

चह *पुं.* (तत्.) 1. नदी में बल्ले गाड़कर तथा तख्ते बिछाकर बनाया हुआ अस्थायी पुल *स्त्री.* (फा.) गड्ढा, गर्त।

चहक *पुं.* (देश.) 'चहकना' का भाव, लगातार होने वाला पक्षियों का मधुर शब्द।

चहकना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. पक्षियों का चहचहाना, आनंद में भरकर कलरव करना 2. प्रसन्नता से भरकर अधिक बोलना *स.क्रि.* जलाना, आग लगाना।

चहका *पुं.* (देश.) 1. ईटों का फर्श, जलती हुई लकड़ी लुआठी 2. होली के अवसर पर गाया जाने वाला एक प्रकार का गीत 3. कीचड़।

चहचहा *पुं.* (अनु.) 1. 'चहचहाना' का भाव 2. हँसी, दिल्लगी, चुहलबाजी, ठट्ठा।

चहचहाना *अ.क्रि.* (अनु.) पक्षियों का उमंग से आकर लगातार बोलना, चहकना।

चहचहाट *स्त्री.* (अनु.) चहचहाने का भाव या स्थिति।

चहनना *स.क्रि.* (तत्.) रौंदना, अच्छी तरह मिलाना।

चहबच्चा *पुं.* (फा.) 1. गंदा पानी रखने का छोटा गड्ढा या हौज 2. धन गाड़ने या छिपाने का छोटा तहखाना **टि.** कुछ लोग इसे 'चौबच्चा' भी कहते हैं।

चहर *स्त्री.* (तत्.) 1. आनंद की धूम, रौनक 2. जोर का शब्द, शोरगुल 3. उपद्रव, उत्पात *वि.* 1. बढिया, उत्तम 2. चुलबुला, तेज *पुं.* चौक, बाजार।

चहल *स्त्री.* (अनु.) कीचड़, कीच, कर्दम *स्त्री.* (तत्.) आनंद की धूम, आनंदोत्सव, रौनक।

चहलकदमी *स्त्री.* (तद्.+फा.) धीरे-धीरे टहलना, घूमना या चलना।

चहल-पहल *स्त्री.* (अनु.) 1. किसी स्थान पर बहुत से लोगों के आने-जाने की धूम, रौनक, आनंदोत्सव, आनंद की धूम।

चहली *स्त्री.* (देश.) कुएँ से पानी निकालने की चरखी, गरारी, घिरानी।

चहा *स्त्री.* (देश.) चाह, इच्छा, मनोरथ, कामना।

चहार *वि.* (फा.) चार, चार की संख्या।

चहारदीवारी *स्त्री.* (फा.) किसी स्थान के चारों ओर की दीवार, प्राचीन कोट, परिखा, परकोटा।

चहारुम *वि.* (फा.) चौथा, चतुर्थ।

चहुँ *वि.* (तत्.) चार, चारों।

चहेता *वि.* (तत्.) जिसके साथ प्रेम किया जाए, जिसे चाहा जाए, प्यारा।

चहेती *वि.* (तत्.) जिसे चाहा जाए, प्यारी।

चहाड़ना *स.क्रि.* (देश.) दे. चहोरना।

चहोरना *अ.क्रि.* (देश.) 1. रोपना, संभालना, सहेजना।

चहोरा *पुं.* (देश.) अगहनी धान, रौपुण धान।

चांग *पुं.* (तत्.) 1. दाँतों की सफेदी या सुंदरता 2. चंगेरी नामक साग।

चांगेरी *स्त्री.* (तत्.) जिसका साग अमलोनी होता है, खट्टी लोनी।

चांचल्य *पुं.* (तत्.) चंचलता, चपलता।

चांडाल *पुं.* (तत्.) 1. नीच जाति, डोम, श्वपच, निषाद 2. कुकर्मी, दुष्ट, दुरात्मा, क्रूर, निष्ठुर, पतित मनुष्य।

चांडालिका *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा का एक नाम।

चांडाली *स्त्री.* (तत्.) चांडाल जाति की स्त्री।

चांदनिक *वि.* (तत्.) 1. चंदन का बना हुआ 2. चंदन से बासा हुआ।

चांद्र *वि.* (तत्.) चंद्रमा संबंधी *पुं.* 1. चांद्रायण व्रत 2. चंद्रकांत मणि 3. अदरक 4. मृगशिरा नक्षत्र।

चांद्रमस *वि.* (तत्.) चंद्रमा संबंधी *पुं.* 1. मृगशिरा नक्षत्र 2. चांद्र वर्ष।

चांद्रमास *पुं.* (तत्.) वह मास जो चंद्रमा की गति के अनुसार हो **टि.** चांद्रमास दो प्रकार का होता है एक गौण दूसरा मुख्य, कृष्ण प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक का काल गौण और शुक्ल प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक का काल मुख्य चांद्रमास कहलाता है।

चांद्राख्य *पुं.* (तत्.) अदरक।

चांद्रायण *पुं.* (तत्.) महीने भर में पूरा होने वाला कठिन व्रत जिसमें चंद्रमा के घटन-बढने के अनुसार आहार घटाना-बढ़ाना पड़ता है।

चांद्रायणिक *वि.* (तत्.) चांद्रायण व्रत करने वाला।

चांद्रि *पुं.* (तत्.) बुध ग्रह।

चांद्री *स्त्री.* (तत्.) 1. चंद्रमा की पत्नी 2. चाँदनी, ज्योत्स्ना 3. सफेद भटकटैया।

चांपेय *पुं.* (तत्.) 1. चंपक 2. नागकेसर 3. किंजल्क 4. सोना, स्वर्ण 5. धतूरा।

चांपेयक *पुं.* (तत्.) किंजल्क, केसर।

चांस *पुं.* (अं.) अवसर, मौका।

चांसलर *पुं.* (अं.) विश्वविद्यालय का सर्वोच्च अधिकारी, कुलपति।

चाँई *वि.* (देश.) 1. ठग, उचक्का 2. होशियार, छली, चालाक *स्त्री.* (देश.) सिर में होने वाली एक प्रकार की फुंसियाँ जिनसे बाल झड़ जाते हैं।

चाँक *पुं.* (देश.) 1. काठ की थापी, जिस पर अक्षर खुदे होते हैं 2. खलियान में अन्न की राशि पर डाला गया चिह् न 3. टोटके के लिए शरीर के किसी पीड़ित स्थान के चारों ओर खींचा हुआ घेरा।

चाँगला *वि.* (देश.) 1. स्वस्थ, तंदुरुस्त, हष्ट-पुष्ट 2. चतुर, चालाक।

चाँचर, चाँचरि *पुं.* (देश.) टट्टी या परदा जो किवाड़ के बदले काम में लाया जाए।

चाँचिया *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार की छोटी जाति जो चोरी, लूट-मार का काम करती है 2. चोर 3. डाकू।

चाँट *पुं.* (देश.) हवा में उड़ता हुआ जल-कण का प्रवाह जो तूफान आने पर समुद्र में उठता है **मुहा.** चाँट मारना- जहाज के पाल पर पानी छिड़कना।

चाँटा *पुं.* (देश.) थप्पड़, तमाचा, चपत।

चाँड *वि.* (तत्.) 1. प्रबल, बलवान 2. उग्र, उद्धत, शोख 3. बढ़ा-चढ़ा, श्रेष्ठ 4. अघाया हुआ, अफरा हुआ, तृप्त 5. चतुर, चालाक *स्त्री.* 1. भार संभालने का खंभा, टेक, थूनी 2. तात्कालिक आवश्यकता, भारी जरूरत, गहरी चाल, भारी लालसा **जैसे.** रुपए की चाँड लगते ही वह हमारे पास आता है **मुहा.** चाँड सरना- इच्छा पूरी होना, लालसा पूरी होना। चाँड सराना- लालसा मिटाना 3. दबाव, संकट **जैसे-** गहरी चाँड लगाने पर ही पानी निकलेगा 4. प्रबल इच्छा, गहरी चाह, छटपटी 5. प्रबलता, अधिकता।

चाँडना *स.क्रि.* (तत्.) 1. खोदना, खोदकर गिराना 2. उखाड़ना, उजाड़ना।

चाँद *पुं.* (तद्.) चंद्रमा **मुहा.** चाँद का कुंडल बैठना- चाँद के चारों ओर वृत्ति या घेरा बनना। चाँद का टुकड़ा होना- अत्यंत सुंदर होना। चाँद चढ़ना- ऊपर आना। चाँद पर थूकना- किसी महात्मा पर कलंक लगाना, जिससे स्वयं अपमानित होना पड़े **टि.** ऊपर की ओर थूकने से अपने ही मुँह पर थूक पड़ता है। इसी से यह मुहावरा बना है। चाँद पर थूल डालना- किसी निर्दोष पर कलंक लगाना। चाँद सा मुखड़ा होना- अत्यंत सुंदर मुख होना 2. चांद्रमास, महीना 3. द्वितीया के चंद्रमा के आकार का एक आभूषण 4. ढाल के ऊपर की गोल फुलिया 5. घोड़े के सिर की एक भौंरी का नाम 6. एक प्रकार का गोदना जो स्त्रियों की कलाई के ऊपर गोदा जाता है 7. भालू की गरदन में नीचे की ओर सफेद बालों का घेरा *स्त्री.* 1. खोपड़ी का मध्य भाग 2. खोपड़ी **मुहा.** चाँद गंजी करना- खूब मूँड़ना, जूते लगाना।

चाँद तारा *स्त्री.* (**तद्.**+तत्.) एक प्रकार की पतंग जिसमें रंगीन कागज के चाँद-तारे चिपके होते हैं।

चाँदना *पुं.* (तद्.) 1. प्रकाश, उजाला 2. चाँदनी।

चाँदनी *स्त्री.* (तद्.) 1. चंद्रमा का प्रकाश, चंद्रिका, ज्योत्स्ना, कौमुदी **मुहा.** चाँदनी छिटकना- शुभ्र ज्योत्स्ना फैलना, चार दिन की चाँदनी-क्षणिक समृद्धि।

चाँदमारी *स्त्री.* (देश.) 1. बंदूक से निशाना लगाने का अभ्यास 2. दीवार या कपड़े पर बने हुए चिह्नों को लक्षित करके गोली चलाने का अभ्यास।

चाँदवाला *पुं.* (देश.) कान में पहनने वाला बाला या बाली जो अर्धचंद्राकार होती है।

चाँद-सूरज *पुं.* (तद्.) 1. चोटी में गूँथ कर पहना जाने वाला एक प्रकार का गहना 2. गले में पहनाए जाने वाले, छोटे बच्चों के लिए धागे में पिरोए हुए चंद्रमा और सूरज की तरह के (अर्धचंद्राकार और गोल) चांदी के छोटे गहने या छोटा-सा आभूषण।

चाँदा *पुं.* (देश.) 1. वह लक्ष्य स्थान जहाँ दूरबीन लगाई जाती है 2. भूमि की पैमाइश या माप में हदबंदी

करने के लिए केंद्र में रखे जाने वाला स्थान या बिंदु 3. छप्पर का पारवा 4. चंद्रमा की आकृति का ज्योमेट्री (ज्यामिति) में प्रयुक्त होने वाला एक उपकरण जो कोण बनाने के काम में आता है।

चाँदी *स्त्री.* (देश.) एक सफेद चमकीली धातु जो बहुत नर्म होती है और उसके सिक्के तथा आभूषण आदि बनाए जाते हैं, साथ ही प्रौद्योगिकी द्वारा औद्योगिक इलेक्ट्रॉनिक उत्पादन में इसका उपयोग होता है **मुहा.** चाँदी काटना/चाँदी होना- खूब माल मारना या खूब धन की आमद होना, अचानक आय में खूब बढ़ोतरी होना; चाँदी का जूता- उत्कोच या घूस अथवा लालच; चाँदी होना- भाग्य खुल जाना **प्रयो.** आजकल तो आप खूब चाँदी काट रहे हैं, अब उनकी तो खूब चाँदी हो रही है या नवरात्र या अन्य त्यौहारों (रमजान) आदि के समय फलवालों की खूब चाँदी हो जाती है।

चाँप *स्त्री.* (देश.) सोने की कीलें जिन्हें लोग अपने दाँतों में लगवाते हैं *पुं.* चंपा का फूल।

चाँपना *स.क्रि.* (तत्.) 1. दबाना 2. मोड़ना।

चाँपाकल *स्त्री.* (देश.) वह कल या मशीन जिसे हाथ से दबा या चलाकर पानी निकाला जाता है।

चाँय-चाँय *स्त्री.* (देश.) 1. व्यर्थ की बातें या बकबक 2. परस्पर कहासुनी।

चाँवचाँव *स्त्री.* (तत्.) चाँय-चाँय।

चाँवर *स्त्री.* (देश.) *पुं.* चावल।

चाउर *पुं.* (देश.) *स्त्री.* चामर, चावल।

चाक *पुं.* (तद्.) 1. पहिए के आकार वाला वह गोल पत्थर जो एक कील पर घूमता है, इस पर मिट्टी का लोंदा रखकर कुम्हार बर्तन बनाते हैं 2. गाड़ी या रथ या पहिया 3. चरखी, जिस पर कुएँ से पानी खींचने की रस्सी रहती है, घिरनी 4. थापा जिससे खलियान की राशि पर छाप लगाते है 5. सान-जिस पर छुरी, कटार आदि की धार तेज की जाती है 8. मंडलाकार चिह्न की रेखा *पुं.* (फा.) 1. दरार, चीर 2. आस्तीन का खुला मोहरा *वि.* (तुर्की) 1. दृढ़ मजबूत, पुष्ट, हृष्ट-पुष्ट, तंदुरूस्त।

चाकचक *वि.* (अनु.) चारों ओर से सुरक्षित, दृढ़।

चाकचका *स्त्री.* (तत्.) चमक-दमक, शोभा, सुंदरता, उज्ज्वलता।

चाकचिक्य *पुं.* (तत्.)1. चमक 2. चकाचौंध।

चाकना *स.क्रि.* (देश.) सीमा या हद खींचना, सीमा बाँधने के लिए किसी वस्तु को रेखा या चिह्न खींचकर चारों ओर से घेरना 2. खलियान में अनाज की राशि पर मिट्टी या राख से छापा लगाना जिससे यदि अनाज निकाला जाए तो मालूम पड़ जाए।

चाकर *पुं.* (फा.) दास, नौकर, सेवक।

चाकरनी *स्त्री.* (देश.) **दे.** चाकरानी।

चाकरानी *स्त्री.* (देश.) नौकरानी, दासी, सेविका।

चाकरी *स्त्री.* (फा.) नौकरी, खिदमत।

चाकलेट *पुं.* (अं.) 1. ककाओं के बीज को पीसकर तैयार किया गया भोज्य पदार्थ 2. एक विशेष आधुनिक मिठाई।

चाकसू *पुं.* (तद्.) बनकुलथी का पौधा।

चाका *पुं.* (देश.) चाक।

चाकि *पुं.* (तद्.) 1. बिजली 2. वज्र।

चाकू *पुं.* (तुर्की) कलम, फल, सब्जी इत्यादि को काटने या छीलने का औज़ार, छुरी।

चाक्र *वि.* (तत्.) 1. चक्र संबंधी 2. चक्र की आकृति का 3. जिस पर पहिए लगे हो 4. चक्र द्वारा किए जाने वाला युद्ध।

चाक्रायण *पुं.* (तत्.) चक्र नामक ऋषि के वंशज।

चाक्रिक *पुं.* (तत्.) 1. मंडलाकार में स्तुति गायक, चारण, भाट 2. तेली 3. गाड़ीवान 4. कुम्हार 5. अनुचर।

चाक्रेय *वि.* (तत्.) चक्र संबंधी।

चाक्षुष *वि.* (तत्.) 1. चक्षु (आँख संबंधी), नेत्र का 2. प्रत्यक्ष प्रमाण *पुं.* 1. प्राचीन न्याय दर्शन में

प्रत्यक्ष प्रमाण का एक भेद 2. ऐसा सीधा अनुभव जिसका बोध नेत्रों द्वारा हो 3. छठे मनु का नाम 4. स्वयंभू मनु के पुत्र का नाम 5. चौदहवे मन्वंतर के एक देवगण का नाम।

चाक्षुष यज्ञ *पुं.* (तत्.) सुंदर दृश्य को देखकर संतुष्ट होने की क्रिया या भाव, नाटक आदि देखना।

चाख *पुं.* (तद्.) नीलकंठ पक्षी।

चाखनहार *वि.* (देश.) चखने वाला, स्वाद लेने वाला।

चाचपुट *पुं.* (तत्.) ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

चाचर *पुं.* (तद्.) मस्तक।

चाचर-चाचरी *स्त्री.* (तद्.) 1. होली के अवसर पर (वसंत में) गाया जाने वाला एक क्षेत्रीय लोकगीत। चर्चरी राग जिसके अंतर्गत होली, फाग, स्वांग आदि लोकगीत गाए जाते हैं 2. उपद्रव, दंगा 3. युद्‌ध क्षेत्र।

चाचरी *स्त्री.* (तद्.) योग की एक मुद्रा।

चाचा *पुं.* (देश.) पिता का भाई, काका।

चाची *स्त्री.* (देश.) चाचा की पत्नी, काकी।

चाट *स्त्री.* (देश.) 1. चटपटी चीजें खाने या चाटने की प्रबल इच्छा, स्वाद लेने की इच्छा 2. एक बार किसी वस्तु का आनंद लेने के बाद पुन: उसी का आनंद लेने की तीव्र लालसा, चसका 4. प्रबल इच्छा, लोलुपता 4. लत 5. मिर्च, खटाई, नमक आदि डालकर बनाई हुई चरपरे स्वाद की भोज्य वस्तु **जैसे-** आलू टिक्की दही बड़े आदि जैसी वस्तुएँ *पुं.* (तत्.) विश्वासघाती चोर, ठग, वह जो किसी के मन में अपने प्रति विश्वास पैदा करके उसका धन हरण कर ले।

चाट की टँगड़ी *स्त्री.* (देश.) कुश्ती का एक दाँव-पेंच जो उस समय काम में लाया जाता है जब प्रतिपक्षी पहलवान पेट के नीचे घुस जाता है और अपना बायाँ हाथ उसकी कमर पर रख लेता है।

चाटना *स.क्रि.* (तत्.) 1. खाने या स्वाद लेने के लिए किसी वस्तु को जीभ से ग्रहण करना 2. पोंछ कर खा जाना, चट कर जाना 3. प्यार से किसी वस्तु पर जीभ फेरना 4. कीड़ों द्वारा किसी वस्तु को खा जाना **प्रयो.** गाय बछड़े को चाट रही है, दीमक किवाड़ को पूरी तरह चाट गई 5. धन संपत्ति पूरी तरह हड़प लेना, बेच देना 6. खुशामद करना।

चाटु *पुं.* (तत्.) 1. मीठी बात 2. झूठी प्रशंसा, चापलूसी, खुशामद।

चाटुक *पुं.* (तत्.) मीठी बात।

चाटुकार *पुं.* (तत्.) 1. खुशामद करने वाला व्यक्ति, प्रशंसक, खुशामदी व्यक्ति *वि.* खुशामदी।

चाटुकारिता *स्त्री.* (तत्.) मिथ्या प्रशंसा करने की क्रिया या भाव।

चाटुकारी *स्त्री.* (तत्.) झूठी प्रशंसा करने का काम *वि.* खुशामदी।

चाटुलोल *वि.* (तत्.) 1. चाटुकार 2. कुशल चापलूस 3. खूबसूरती से हिलने-डुलने वाला।

चाटूक्ति *स्त्री.* (तत्.) खुशामद, चापलूसी, चापलूसी से युक्त कथन या बात।

चाड़ी *स्त्री.* (देश.) चुगली, पिशुनता, पीठ पीछे की गई निंदा।

चाणक *पुं.* (तत्.) चाल, ईर्ष्या, कपट।

चाणक्य *पुं.* (तत्.) चणक ऋषि के वंश में उत्पन्न एक बड़े विचारक विद्‌वान जिनका 'अर्थशास्त्र', राजनीति का प्रसिद्‌ध ग्रंथ है, उनका नाम "विष्णुगुप्त" था, वे चंद्रगुप्त के प्रधानमंत्री थे तथा वे "कौटिल्य" नाम से भी जाने जाते हैं।

चाणाक्ष *वि.* (तत्.) दूरदर्शी, क्रांतिदर्शी।

चाणूर *पुं.* (तत्.) कंस का प्रसिद्‌ध मल्ल जिसे मथुरा में आयोजित धनुष यज्ञ में श्रीकृष्ण ने कुश्ती में पछाड़ कर मारा था।

चातक *पुं.* (तत्.) पपीहा, एक पक्षी जो केवल वर्षाकाल में 'पी-पी' कर बोलता है **वि.** वर्षाकाल के स्वाति नक्षत्र में ही अपनी चोंच में आए जल को पीकर वर्ष भर जीवित रहता है, ऐसा कवि समय में मिलता है।

चातकनी *स्त्री.* (तद्.) चातकी, पपीहरी।

चातकानंदन *पुं.* (तत्.) चातकों को प्रसन्न करने या खुशी देने वाला, वर्षाकाल 2. बादल।

चातर *वि.* (देश.) **दे.** चातुर और चतुर।

चातुमसि *पुं.* (तत्.) **दे.** चातुमास।

चातुर *वि.* (देश.) 1. दृश्यमान 2. चतुर 3. खुशामदी 4. गोल तकिया (मसनद) 5. चार, चौथा 6. चार पहिये की गाड़ी।

चातुरक्ष *पुं.* (तत्.) चार पासों का खेल 2. छोटा गोल तकिया।

चातुरता *वि.* (तद्.) **दे.** चतुरता।

चातुरमास (चातुर्मास) *पुं.* (तद्.) आषाढ़ शुक्ल एकादशी से लेकर कार्तिक शुक्ल एकादशी तक-चार माह की अवधि (वर्षाकाल का समय), **तु.** बरसाती *वि.* चातुर्मासिक चार महिनो में होने वाला, वैदिक यज्ञ, कर्म आदि, चार माह का -चातुर्मास्य *पुं.* (तत्.) चार महीनों में होने वाला वैदिक यज्ञ।

चातुराई *स्त्री.* (देश.) **दे.** चतुराई।

चातुरिक *पुं.* (तत्.) सारथी, रथवान, गाड़ीवान।

चातुरी *स्त्री.* (तत्.) चातुर्य, चतुराई, चतुरता, निपुणता।

चातुर्जति (चातुर्जतिक) *पुं.* (तत्.) 1. आयुर्वेद के भावप्रकाश निघंटु ग्रंथ के अनुसार चार सुगंध-द्रव्य- नागकेसर, इलाचयी, तेजपात और दालचीनी आदि का मिश्रण 2. गुजरात के प्राचीन राजाओं के प्रधान कर्मचारी की उपाधि, प्रशासक।

चातुर्थक *वि.* (तत्.) चौथे दिन आने वाला ज्वर, चौकिया या चौथिया बुखार, चातुर्थिक।

चातुर्दशिक *वि.* (तत्.) चतुर्दशी की तिथि से विद्या आरंभ करने वाला 2. चतुर्दशी तिथि को होने वाला कार्य।

चातुर्भद्रक *पुं.* (तत्.) 1. चार पदार्थ- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष 2. वैद्यक के अनुसार ये चार औषधियाँ- पीपल, नागरमोथा, अतीस, काकड़ासिंगी 3. गिलोय, नागरमोथा, अतिविधा एवं मुस्ता, इन चार बूटियों के संयोग का संयुक्त नाम।

चातुर्भद्रावलेह *पुं.* (तत्.) आयुर्वेद के अनुसार पीपल, जायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी को एक साथ कूट कर तथा पीस कर बनाया गया अवलेह।

चातुर्मासिक *वि.* (तत्.) चार महीनों की अवधि तक चलने वाला व्रत, यज्ञ, कर्म आदि।

चातुर्मासी *स्त्री.* (तत्.) पौर्णमासी (पूर्णमासी)।

चातुर्मास्य *पुं.* (तत्.) 1. चौमासा 2. चार महीनों में होने वाला यज्ञ 3. चार महीनों में होने वाला अनुष्ठान या यज्ञ आदि जो वर्षाकाल में होता है।

चातुर्य *पुं.* (तत्.) चतुराई, निपुणता, दक्षता, कुशलता, कौशल।

चातुर्वर्ण्य *पुं.* (तत्.) 1. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र चारों वर्णों के होने की स्थिति 2. चार वर्णों द्वारा करने योग्य आचरण तथा धर्म, जैसे ब्राह्मण का कर्म यज्ञ, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान तथा प्रतिग्रह।

चातुर्विद्य *पुं.* (तत्.) 1. चारों वेदों का ज्ञाता 2. चारों वेदों के होने की स्थिति।

चातुर्होत्र *पुं.* (तत्.) वह यज्ञ जो चार होताओं द्वारा संपन्न हो।

चात्र *पुं.* (तत्.) अग्निमंथन-यंत्र का एक अवयव **वि.** यह बारह अंगुल की खैर की लकड़ी होती है जिसके अगले छोर में लोहे की एक कील लगी होती है और पीछे की ओर छेद होता है।

चात्रक *पुं.* (तत्.) **दे.** चातक।

चात्रिक *पुं.* (तत्.) **दे.** चातक।

चादर *स्त्री.* (फा.) 1. कपड़े का लंबा-चौड़ा टुकड़ा जो बिछाने एवं ओढ़ने के काम में आता है 2. चौड़ा तथा बड़ा दुपट्टा, हल्का ओढ़ना **मुहा.** चादर उतारना- बेपर्दा करना अर्थात् इज्जत उतारना;

चादर ओढ़ाना- किसी विधवा स्त्री को अपना कर अपनी अर्धांगिनी बना लेना, उसका घर बसाना; चादर के बाहर पैर फैलाना- अपनी आय से ज्यादा खर्च करना 3. किसी धातु का बड़ा चौकोर पत्तर, चद्दर 4. पानी की चौड़ी धार जो ऊपर से गिरती हो 5. बढ़ी हुई नदी या वेग से बहते हुए प्रवाह में स्थान-स्थान पर पानी का फैलाव जो बिलकुल बराबर होता है अर्थात् जिसमें भंवर या हिलोरा न हो 6. चादर की आकृति की पुष्प राशि जो किसी देवता पर चढ़ाई जाती है **उदा.** मजार पर चादर चढ़ाना 7. खेमा, तंबू 8. पिछौरी।

चादरा *पुं.* (देश.) बड़ी चादर, मरदानी चादर।

चादिर *पुं.* (तत्.) 1. कपूर 2. चंद्रमा 3. गज, हाथी 4. सर्प (साँप)।

चानस *पुं.* (अं./देश.) चांस, मौका, अवसर।

चाप *पुं.* (तत्.) 1. धनुष कमान 2. गणित में वृत्त का क्षेत्र 3. ज्योतिष में धनु राशि।

चापट *स्त्री.* (देश.) दाने की वह भूसी जो आटा पीसने पर निकलती है- चोकर।

चापड़ *पुं.* (तद्.) चिपटा अथवा जो दबकर चिपटा हो गया है 2. बराबर समतल 3. मटियामेट, चौपट, उजाड़ *स्त्री.* (देश.) चोकर, भूसी।

चापण *पुं.* (देश.) गुजरात का एक प्रसिद्ध प्राचीन राजपूत वंश जिसने कई सदियों तक गुजरात में राज किया।

चापनता *स्त्री.* (तत्.) चंचलता।

चापना *स.क्रि.* (तद्.) 1. दबाना, मीड़ना, जोतना **उदा.** चरण चापना (पैर दबाना) 2. अधिकार में करना।

चापर (तद्.) **दे.** चापड़।

चापल *पुं.* (तत्.) 1. चंचलता, चांचल्य 2. अस्थिरता 3. क्षोभ, शोखी *वि.* चंचल, चपल, अस्थाई प्रकृति वाला।

चापलूस *वि.* (फा.) चाटुकार, खुशामदी, जीहजूरी-स्वभाव वाला।

चापल्य *पुं.* (तत्.) **दे.** चापल।

चापी *पुं.* (तत्.) 1. धनुष धारण करने वाला व्यक्ति धनुर्धर 2. शिव 3. धनुराशि वाला व्यक्ति।

चाफंद *पुं.* (देश.) मछली पकड़ने का एक प्रकार का जाल।

चाब *स्त्री.* (तत्.) 1. गजपिप्पली की जाति का एक पौधा जिसकी लकड़ी, फल और जड़ औषधि के काम में आती हैं 2. चार की संख्या 3. कपड़ा 4. चौखूँटी डाढ़ 5. बच्चे के जन्मोत्सव तथा विवाहोत्सवों में परस्पर निभाई जाने वाली लोकरीति।

चाबना *स.क्रि.* (तद्.) 'चबाना', दाँतो से कुचल-कुचल कर खाने की क्रिया चबाना 2. खूब भोजन करना।

चाबी *स्त्री.* (देश.) कुंजी-ताली **मुहा.** चाबी भरना- ऐसी युक्ति करना जिससे किसी व्यक्ति से मनचाहा कार्य कराया जा सके।

चाबुक *पुं.* (फा.) 1. कोड़ा, हंटर 2. कुछ खास कार्य के लिए उत्तेजना पैदा करने वाली बात **उदा.** आपकी बात तो रामशंकर पर चाबुक का-सा असर कर गई 3. तेज, फुर्तीला, तीव्र *पुं.* (तुर्की) प्याला।

चाबुक-सवार *पुं.* (फा.) 1. घोड़े को विविध प्रकार की चालें सिखाने वाला व्यक्ति 2. वह व्यक्ति जो घोड़े की चाल दुरुस्त करे।

चाभ *स्त्री.* (देश.) **दे.** चाबी।

चाभना *स.क्रि.* (तद्.) जल्दी-जल्दी खाना, भक्षण करना।

चाभा *पुं.* (देश.) बैलों का एक रोग।

चाम *पुं.* (तद्.) **'चर्म'** चमड़ा, खाल, चमड़ी।

चामर *पुं.* (तत्.) 1. चँवर, चौरी 2. मोरछल 3. एक वार्णिक छंद।

चामरिक *पुं.* (तत्.) चँवर डुलाने वाला व्यक्ति, चाँवरिया।

चामरी *स्त्री.* (तत्.) सुरा गाय।

चामीकर *पुं.* (तत्.) 1. सोना 2. धतूरा, वि. सुनहला।

चामीकराचल, (चामीकराद्रि) *पुं.* (तत्.) सुमेरु पर्वत।

चामुंडा *स्त्री.* (तत्.) शुंभ-निशुंभ के सेनापतियों चंड और मुंड नाम के दो राक्षसों का वध करने वाली देवी दुर्गा के एक रूप का नाम।

चाय *स्त्री.* (देश.) 1. प्राय: दो से चार हाथ तक ऊँचा (लंबा) एक पौधा जिसकी पत्तियों को उबालकर स्वादिष्ट पेय के रूप में लगभग पूरे विश्व में पिया जाता है 2. चाय पत्ती डालकर उबाला हुआ पानी, चाय का काढ़ा 3. दूध तथा चीनी मिश्रित चाय का उबला पानी, दूध या चीनी रहित चाय का गर्म पानी।

चायक *पुं.* (तत्.) 1. चाहने वाला व्यक्ति, प्रेम करने वाला व्यक्ति, प्रेमीजन।

चायदान *पुं.* (देश.) 1. वह बर्तन जिसमें चाय उबाली जाती है अथवा चाय बना या तैयार कर रखी जाती है 2. केतली।

चार *वि.* (तद्.) गिनती में तीन से एक ज्यादा, दो और दो चार **मुहा.** चार-पाँच करना- इधर-उधर की बातें करना, हुज्जत, तकरार, कई, बहुत से; चार मगज- चार वस्तुएँ, खीरा, ककड़ी, तरबूज, खरबूज के बीजो का समूह; आँखे चार होना- आँखें मिलाना, देखादेखी होना, भेंट या साक्षात्कार होना, होशियार या चतुर बन जाना; चार चाँद लगाना- चौगुनी प्रतिष्ठा बढ़ जाना, चौगुनी शोभा बढ़ जाना; चारों आँख फूटना- मति मारी जाना, बुद् धि खराब होना; चार आदमी- 'कई लोग', 'समाज के लोग'; चार-दिन की चाँदनी- थोड़ा समय, 'थोड़े दिनों की बात'; चार पैसे- कुछ धन **उदा.** "आजकल जिसके पास चार पैसे हैं उसी को सभी पूछते हैं, बाकी को नहीं" *पुं.* (तद्.) 1. चार का अंक, चार की संख्या 2. गति, चाल, गमन 3. बंधन, कारागार 4. गुप्तदूत, गुप्तचर, जासूस 5. दास 6. चिरौंजी दाना, चिरौंजी का पेड़ 7. कृत्रिम विष 8. आचार, रीति यथा द्वार-चार।

चारक *पुं.* (तत्.) 1. गाय-भैंस चराने वाला व्यक्ति, चरवाहा, ग्वाला 2. चलाने या संचालन करने वाला व्यक्ति, संचारक आदमी 3. गति, चाल 4. चिरौंजी का पेड़ 5. कारागार 6. गुप्तचर, जासूस 7. सहचर (साथ चलने वाला आदमी) 8. अश्वारोही व्यक्ति 9. परिभ्रमण कर्ता या घूमने वाला ब्रह्मचारी व्यक्ति 10. मनुष्य 11 चरक द्वारा निर्मित ग्रंथ, **प्रयो./मुहा.** "चार-एक" थोड़े अर्थात् कम।

चारखाना *पुं.* (फा.) परस्पर असमान दिशाओं में खिंची हुई रंगीन धारियों वाला कपड़ा।

चारचक्षु *पुं.* (तत्.) वह व्यक्ति जो दूतों के माध्यम से ही सारी जानकारी प्राप्त करता हो, 'राजा' 2. गुप्तचरों द्वारा प्रजा पर निगरानी रखने वाला व्यक्ति- 'नृप'।

चारचश्म *वि.* (फा.) नमकहराम, निर्लज्ज, कृतघ्न।

चारज *पुं.* (अं.) कार्यभार; काम की जिम्मेदारी, चार्ज, उत्तरादियत्व charge

चारज देना *स.क्रि.* (अं.+तद्.) किसी काम या पद को छोड़ते समय उसका दायित्व अपने स्थान पर नियुक्त व्यक्ति को सहेज कर देना या सौंपना।

चारज लेना *पुं.* (तत्.) किसी कार्यभार को उससे अलग होने वाले व्यक्ति से सहेज कर लेना 2. सुपुर्दगी 3. निगरानी 4. रक्षा का भार।

चारजामा *पुं.* (फा.) चमड़े या कपड़े का बना हुआ बिछावन (बिछौना) जिसे घोड़े की पीठ पर कस कर सवारी करते हैं, जीन, काठी, गद्दी पलान।

चारटिका *स्त्री.* (तत्.) नली नामक गंध द्रव्य।

चारण *पुं.* (तत्.) राजवंश की कीर्ति गायन करने वाला व्यक्ति; कीर्तिगायक, भाट, बंदीजन 2. राजस्थान की एक जाति 3. भ्रमणकारी।

चारण विद्या *स्त्री.* (तत्.) अथर्ववेद का एक अंश।

चार दिन *पुं.* **(तद्.)** थोड़े दिन।

चार धाम *पुं.* (तद्.) हिंदुओं के चार प्रमुख तीर्थों का सामूहिक नाम, बदरिकाश्रम (बद्रीनाथ) 2. जगन्नाथ पुरी 3. रामेश्वरम् 4. द्वारका।

चारपाई *स्त्री.* (देश.) खाट, छोटा पलंग, खटिया **मुहा.** चारपाई पर पड़ना/पकड़ना- रोगग्रस्त होना, बीमार हो जाना।

चारपाया *पुं.* (फा.) चौपाया; चार पैरों वाला कोई पशु।

चारा *पुं.* (देश.) 1. पशुओं के खाने की घास, पत्ती, चेरी, डंठल आदि 2. चिड़ियों, मछलियों या अन्य जीवों के खाने की वस्तु 3. आटा या अन्य कोई खाद्य पदार्थ जिसे कटिया में लगाकर मछली फंसाते हैं *पु.* (फा.) उपाय, इलाज, तदवीर।

चारायण *पुं.* (तत्.) काम शास्त्र के प्रवक्ता एक आचार्य जिनके मत का उल्लेख वात्स्यायन ने किया है।

चारि *वि.* (तद्.) चार।

चारिका *स्त्री.* (तत्.) 1. दासी, सेविका 2. भ्रमण।

चारिणी *स्त्री.* (तत्.) 1. घूमने वाली, भ्रमण करने वाली, चलने वाली 2. आचरण करने वाली।

चारित *वि.* (तत्.) 1. चलाया हुआ, जो चलाया गया हो 2. उतारा हुआ 3. अर्क निकाला हुआ 4. खींचा हुआ 5. भभके के द्वारा खींचा हुआ।

चारित्र *पुं.* (तद्.) 1. कुल क्रमागत आचार 2. चाल-चलन, व्यवहार, स्वभाव 3. शील।

चारित्रवती *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की समाधि, अवस्था।

चारित्रिक *वि.* (तत्.) 1. चरित्र संबंधी 2. उत्तम चरित्रवाला।

चारित्री *पुं.* (तत्.) सदाचारी, उत्तम चरित्र वाला व्यक्ति।

चारित्र्य *पुं.* (तत्.) चरित्र संबंधी गुण।

चारी *वि.* (तत्.) चलने वाला **जैसे-** नभचारी जलचारी, भूचारी 2. आचरण करने वाला, व्यवहार करने वाला *पुं.* 1. पैदल सेना, पदाति सैन्य दल 2. पैदल सिपाही 3. संचारी भाव *स्त्री.* नृत्य का एक अंग, शृंगार आदि रसों का उद्दीपन करने वाले हाव-भाव।

चारु *वि.* (तत्.) सुंदर, मनोहर *पुं.* (तत्.) 1. बृहस्पति 2. रुक्मिणी से उत्पन्न कृष्ण का एक बेटा 3. कुंकुम, केसर।

चारुक *पुं.* (तत्.) सरपत के बीज जो दवा के काम में आते हैं।

चारुकेशरी *पुं.* (तत्.) 1. नागर मोथा 2. सेवती का फूल।

चारुगर्भ *पुं.* (तत्.) श्री कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

चारुगुप्त *पुं.* (तत्.) श्री कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

चारुता *स्त्री.* (तत्.) सुंदरता, मनोहरता, मनोज्ञता।

चारुत्व *पुं.* (तत्.) **दे.** चारुता।

चारुदर्शन *वि.* (तत्.) देखने में सुंदर लगने वाला।

चारुदेष्ण *पुं.* (तत्.) रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न कृष्ण के एक पुत्र का नाम जिसने निकुंभ आदि दैत्यों से युद्ध किया था।

चारुनेत्र *पुं.* (तत्.) हिरन, (हरिण) चारूलोचन *वि.* सुंदर नेत्रों वाला।

चारुपर्णी *स्त्री.* (तत्.) एक औषधि *वि.* सुंदर पत्तों वाली।

चारुबाहु *पुं.* (तत्.) श्री कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

चारुमती *स्त्री.* (तत्.) 1. श्री कृष्ण की एक कन्या का नाम *वि.* बुद्धिमती, विशिष्ट बुद्धिवाली।

चारुविक्रम *पुं.* (तत्.) 1. बलशाली, बली, बलवान 2. सुंदर, मनोहर 3. गति-विशिष्ट *वि.* विशिष्ट गति वाला।

चारुशिला *स्त्री.* (तत्.) 1. मणि विशेष 2. हीरा।

चारुशील *वि.* (तत्.) अच्छे स्वभाव वाला, मनमोहक या सुंदर स्वभाव एवं आचार-विचार वाला।

चारुहासिनी *वि.* (तत्.) सुंदर-हास या मुस्कान वाली, मनोहर हँसी (हँसने) वाली *स्त्री.* (तत्.) वैताली छंद का एक भेद।

चारेक्षण *पुं.* (तत्.) राजनीतिज्ञ, नरेश, भूपाल, राजा।

चारोली *पुं.* (देश.) गुठली।

चार्चिक *वि.* (तत्.) 1. वेद पाठ में कुशल व्यक्ति 2. कुशल एवं निपुण वेदपाठी।

चार्चिक्य *पुं.* (तत्.) 1. अंगराग लेपन 2. अंगराग 3. अंग को सुगंधित करना।

चार्ज *पुं.* (अं.) 1. कार्यभार 2. किसी काम का उत्तरदायित्व 3. संरक्षण, सुपुर्दगी, देखरेख, अधिकार 4. मूल्य, दाम, भाड़ा **प्रयो.** आपकी गाड़ी से घर जाने पर चार्ज तो ज्यादा देना पडेगा पर आराम रहेगा 5. लाठी चार्ज, हमला, आक्रमण।

चार्जशीट *स्त्री.* (अं.) 1. आरोप पत्र, आरोपों की तालिका या सूची 2. अभियोग-पत्र, जुर्मनामा।

चार्टर *पुं.* (अं.) वह आलेख या अधिपत्र जिसमें किसी शासन या सरकार की ओर से किसी को कोई स्वत्व या अधिकार देने की बात लिखी हो, सनद, अधिकार-पत्र 2. शर्त विशेष पर जहाज को किराए पर देना अथवा लेना **जैसे-** भारतीय व्यापारियों ने माल ले जाने के लिए तीन माह के लिए एक-एक फ्रांसीसी जहाज चार्टर किए हैं 3. जो राजा की सनद से स्थापित हुआ हो।

चार्म *वि.* (तत्.) 1. चर्म संबंधी 2. चमड़े वाला, चमड़े का 3. चमड़े से मढ़ा हुआ 4. ढाल वाला।

चार्मण *वि.* (तत्.) चमड़े से ढका हुआ।

चार्मिक *वि.* (तत्.) चमड़े का बना हुआ।

चार्य *पुं.* (तत्.) व्रात्य वैश्य द्वारा सवर्ण स्त्री से उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति, (मनु) 2. दूतकार्य 3. दैत्य 4. जासूसी।

चार्या *स्त्री.* (तत्.) कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित एक या दो दंड चौड़ा एक प्रकार का मार्ग या पथ।

चार्वाक *पुं.* (तत्.) 1. एक अनीश्वरवादी, नास्तिक तथा तार्किक चिंतक ऋषि 2. नास्तिक मत के प्रवर्तक बृहस्पति के शिष्य एक मुनि जो प्रत्ययवादी थे, वे पुनर्जन्म एवं परलोक को नहीं मानते थे।

चार्वी *स्त्री.* (तत्.) 1. बुद् धि 2. चाँदनी, ज्योत्स्ना दीप्ति 3. उद्दीप्त, आभा 4. सुंदर स्त्री 5. कुबेर की पत्नी 6. दारुहल्दी।

चाल *स्त्री.* (देश.) 1. गति, गमन चलने की क्रिया **उदा.** इस गाड़ी की चाल तो घोड़े की चाल से भी धीमी है 2. व्यवहार, बर्ताव 3. आचरण चाल-चलन 4. चाल-ढाल *पुं.* 1. घर का छप्पर या छत 2. छायायुक्त घरों की बस्ती 3. स्वर्णाचूड़ पक्षी 4. चलना या गतिशील होना 5. नीलकंठ पक्षी।

चालक *वि.* (तत्.) चलाने वाला, संचालक *पुं.* 1. नटखट हाथी, अंकुश न मानने वाला (निरंकुश) हाथी 2. नृत्य में भाव बताने या दर्शाने तथा सुंदरता लाने के लिए हस्त-संचालन (हाथ चलाने) की क्रिया करने वाला *वि.* चाल चलने वाला, धूर्त, छली, धूर्त व्यक्ति, छली आदमी, चाल चलने वाला पुरुष।

चाल-चलन *पुं.* (देश.) आचरण, व्यवहार, आचार-विचार, चरित्र, शील **उदा.** अभी जो मिला था, उसका चाल-चलन अच्छा नहीं है।

चाल-ढाल *स्त्री.* **(देश.)** आचरण, व्यवहार, 2. ढंग, तौर-तरीका।

चालन *पुं.* (तत्.) 1. चलाने की क्रिया, परिचालन 2. चलने की क्रिया, गति 3. चलनी-छलनी 4. चालने या छानने की क्रिया।

चालनहार *वि.* (देश.) चलाने वाला।

चालना *स.क्रि.* (तद्.) 1. चलाना, परिचालन करना 2. एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना 3. बिदा करवा कर ले जाना 4. हिलाना 5. कार्य-निर्वाह करना 6. बात उठाना, प्रसंग छेड़ना 7. आटे या अन्य पदार्थ को छलनी में डालकर इधर-उधर हिलाना जिससे आटा या अन्य महीन पदार्थ छन कर अलग हो जाए और भूसी, चोकर तथा मोटा पदार्थ रह जाए, अर्थात् छानना।

चालनी *स्त्री.* (तद्.) चलनी, छलनी।

चालनीय *वि.* (तद्.) जो चलाया या हिलाया (छाना) जा सके।

चालबाज *वि.* (फा.) धूर्त, चाल चलने वाला, छली (चालाकी करके छल करने वाला)।

चालबाजी *स्त्री.* (फा.) छल-कपट, धूर्तता, चालाकी।

चाला *पुं.* (देश.) 1. प्रस्थान, कूच, रवानगी 2. विदाई (बहू का पहले-पहल मायके से ससुराल और ससुराल से मायके आना-जाना) 3. यात्रा का मुहूर्त **यथा.** "आज दक्षिण दिशा का चाला नहीं है", या "दक्षिण का चाला नहीं है आज।" **मुहा.** चाला देखना- यात्रा का मुहूर्त देखना।

चालाक *वि.* (फा.) चतुर, कुशल, व्यवहार कुशल, दक्ष, पटु 2. धूर्त।

चालाकी *स्त्री.* (फा.) 1. चतुराई, निपुणता, दक्षता, पटुता 2. धूर्तता **मुहा.** चालाकी चलना या चालाकी खेलना- चालाकी करना, चालबाजी का कार्य करना 3. युक्ति, कौशल।

चालान *पुं.* (तत्.) 1. भेजे हुए पदार्थों की सूची अथवा फेहरिस्त; बीजक 2. भेजा हुआ माल अथवा रुपया अथवा उसका विवरण 3. पुलिस द्वारा अभियुक्तों या अपराधियों का विचार के लिए अदालत में भेजा जाना।

चालानदार *पुं.* (फा.) वह व्यक्ति जो भेजे हुए माल के साथ जाता है और जिसकी जिम्मेदारी पर माल भेजा जाता है जमादार 2. जिसके जिम्मे चालान तामील का कागज हो 3. चालान करने वाला।

चालिया *वि.* (देश.) चालबाज, धूर्त, छली-कपटी, धोखेबाज।

चालिस *वि.* (देश.) दस का चार गुना **दे.** 'चालीस'।

चाली *वि.* (देश.) चालिया, धूर्त 2. चंचल, नटखट *स्त्री.* 1. चाल, रस्म, चाल चलने का तरीका 2. गति 3. छतदार मकानों की बस्ती, कतार में बने हुए मकानों की बस्ती।

चालीस *वि.* (देश.) तीस और दस का योग (उनतालीस के आगे आने वाला अंक)।

चालीसवाँ *वि.* (तद्.) क्रम में उनतालीसवें के आगे पड़ने वाला अंक 2. चहल्लुम, मुस्लिम मृतक के मरने के चालीसवें दिन की जाने वाली रस्म, चिल्ला।

चालीसा *पुं.* (देश.) 1. चालीस पंक्तियों (चौपाइयों) की रचना जैसे हनुमान चालीसा, "शिव-चालीसा" आदि 2. चालीस दिवस का समय 3. चिल्ला 4. चालीस वर्षों का समय 5. चालीस वर्ष का व्यक्ति।

चालुका *पुं.* (तत्.) दक्षिण का एक प्रतापी राजवंश जिसने छठी सदी से तेरहवीं सदी तक शासन किया।

चाल्हा *पुं.* (देश.) नाव में बनी (निर्धारित) वह जगह जो नरिया के पास बांस की फट्टियों से पटी होती है और जहाँ नाव खेने वाले मल्लाह बैठते हैं।

चाव *पुं.* (देश.) 1. प्रबल इच्छा, अभिलाषा, लालसा 2. अरमान 3. प्रेम, रुचि, शौक, उत्कंठा, लाड़-दुलार 4. उमंग, उत्साह।

चावड़ी *स्त्री.* (देश.) पड़ाव, यात्रियों के रुकने ठहरने, विश्राम करने का स्थान, चूड़ी।

चावल *पुं.* (देश.) कोदो, सवाँ तथा धान आदि का भूसी-रहित सार अन्न अथवा इसका आग पर पकाया हुआ भात 2. तोल में एक रत्ती का आठवाँ भाग।

चाशनी (चाशिनी) *स्त्री.* (फा.) 1. चीनी या गुड़ को पानी सहित आँच पर पकाकर बनाया गया गाढ़ा लसीला पदार्थ, शीरा **मुहा.** चाशनी में पागना- मीठा करने के लिए चाशनी में डुबाना 2. किसी में थोड़े से मीठे की मिलावट 3. चसका, मजा 4. सुनार को देते समय सोने की पहचान के लिए रखा हुआ नमूना।

चाष *पुं.* (तत्.) 1. नीलकंठ पक्षी 2. आँख 3. यक्ष।

चासा *पुं.* (देश.) उड़ीसा की एक जनजाति जो खेती पर ही निर्भर रहती है 2. हलवाहा 3. कृषक, किसान।

चाह *स्त्री.* (देश.) 1. इच्छा, अभिलाषा, लालसा 2. प्रेम, अनुराग, आदर 3. माँग, जरूरत।

चाहक *पुं.* (देश.) 1. चाहने वाला व्यक्ति 2. प्रेम और अनुराग करने वाला पुरुष।

चाहत *स्त्री.* (देश.) चाह, इच्छा, लालसा 2. प्रेम।

चाहना *स. क्रि.* (देश.) 1. इच्छा करना, अभिलाषा करना 2. प्रेम या स्नेह करना 3. लेने या प्राप्त करने की इच्छा प्रगट करना, माँगना 4. प्रयत्न करना 5. उत्कंठापूर्वक देखना, ताकना, निहारना 6. ढूँढना, खोजना, तलाश करना या तलाशना *स्त्री.* (तत्)1. इच्छा, अभिलाषा 2. उत्कंठा, लालसा, प्रेम।

चाहा *पुं.* (देश.) 1. बगुले की तरह का एक जल का पक्षी 2. इच्छा किया हुआ, ऐच्छित।

चाहिए *अव्य.* (देश.) मुनासिब या उपयुक्त है, उचित है। यह शब्द "विधि-सूचक" होने से संयोजक क्रिया की भांति क्रियाओं में भी लगता है **जैसे-** आपको सदा सच बोलना चाहिए, आपको चोरी नहीं करनी चाहिए।

चाही *वि.* (देश.) 1. जो चाही जाए, जिसकी इच्छा की जाए चहेती, चाही हुई, वांछित (प्राय: समासांत में प्रयुक्त)।

चाहे *क्रि.वि.* (देश.) 1. इच्छा हो तो, मन माने तो 2. किंवा, अथवा **जैसे-** जैसा जी चाहे वैसा करो, इनमें से जिसे चाहे ले लो।

चिंआ *पुं.* (देश.) इमली का बीज।

चिंगारी *स्त्री.* (तद्.) चिनगारी।

चिंगुरना *अ. क्रि.* (देश.) 1. सिकुड़ना, पूरे फैलाव में बल पड़ने से कमी आना 2. बहुत देर तक एक स्थिति में रहने के कारण किसी अंग का जल्दी न फैलना।

चिंघाड़ *स्त्री.* (तद्.) चीत्कार, चीख मारने का शब्द, चिल्लाहट 2. हाथी की चिल्लाहट 3. गरजना।

चिंघाड़ना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. चीखना, चिल्लाना 2. हाथी का चिल्लाना।

चिंचा *स्त्री.* (तत्.) 1. इमली, इमली का फल, 2. गुंजा 3. इमली का चिआँ।

चिंचाम्ल *पुं.* (तत्.) चूका या चूक नाम का साग 2. एक प्रकार का फेनक जो इमली से बनता है।

चिंचिका *स्त्री.* (तत्.) घुँघची, गुंजा।

चिंचिनी *स्त्री.* (तत्.) इमली का पेड़ या उसका फल।

चिंची *स्त्री.* (तत्.) 1. घुँघची 2. गुंजा।

चिंचोटक *पुं.* (तत्.) 1. चेंच 2. चेंच का साग, चिचाटक।

चिंजा *पुं.* (तद्.) बेटा, पुत्र, लड़का।

चिंजी *स्त्री.* (तद्.) कन्या, लडक़ी, बेटी।

चिंड *पुं.* (तत्.) 1. नृत्य का एक भेद, एक किस्म का नाच।

चिंतक *वि.* (तत्.) विचारक, दार्शनिक, ध्यान या मनन करने वाला *पु.* (तत्.) चिंतन-मनन करने वाला व्यक्ति।

चिंतन *पुं.* (तत्.) 1. विचार, मनन, ध्यान, विवेचन, बारबार याद या स्मरण, गौर।

चिंतना *स.क्रि.* (तद्.) 1. चिंतन करना, ध्यान करना, स्मरण करना, किसी के बारे में सोचना 2. सोचना-समझना, गौर करना *स्त्री.* सोच-विचार, मनन, गौर, बारंबार स्मरण।

चिंतनीय *वि.* (तत्.) 1. चिंतन या विचार करने योग्य 2. भावनीय 3. ध्यान देने योग्य, गौर करने योग्य 4. सोच-विचार के लायक।

चिंता *स्त्री.* (तत्.) 1. सोच, फ्रिक 2. भावना 3. परवाह 4. किसी दुख या सुख की आशंका से उपजी भावना या सोच-विचार 5. गंभीर विचार मनन, चिंतन **मुहा.** चिंता लगना- सतत सोच-विचार या चिंता बनी रहना, कोई चिंता नहीं- कोई परवाह नहीं; साहित्य में 'चिंता' को करुण रस का व्यभिचारी भाव माना जाता है, अत: वियोग की दस दशाओं में से चिंता को दूसरी दशा माना गया है।

चिंताकुल *वि.* (तत्.) चिंता से व्यग्र।

चिंतातुर *वि.* (तत्.) फिक्रमंद, चिंता से घबराया हुआ।

चिंतामग्न *वि.* (तत्.) गहरे विचार से लीन।

चिंतामणि *पुं.* (तत्.) 1. वह कल्पित रत्न जिसके बारे में यह प्रसिद्ध है कि वह सभी अभिलाषाओं को पूर्ण कर देता है 2. ब्रह्म 3. परमेश्वर 4. बुद्ध का एक नाम 5. घोड़े के गले की एक भौंरी जो बहुत शुभ मानी जाती है 6. वह घोड़ा जिसके गले में भौंरी होती है 7. यात्रा का योग 8. वैद्यक के अनुसार पारा, गंधक, अभ्रक और जयपाल (जमालगोटा) के योग से बनने वाली रससिद्ध औषधि।

चिंतित *वि.* (तत्.) 1. फिक्रमंद 2. चिंतायुक्त।

चिंतिति *स्त्री.* (तत्.) **दे.** चिंता।

चिंतिया *पुं.* (देश.) **दे.** चिंता।

चिंत्य *वि.* (तत्.) 1. विचार योग्य, विचारणीय 2. संदिग्ध।

चिंदी *स्त्री.* (देश.) 1. कागज या कपड़े का टुकड़ा 2. टुकड़ा।

चिंपांजी *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का वनमानुष, जंगलों में पाए जाने वाला एक मानव-सा प्राणी 2. अफ्रीका का एक वनमानुष जो आकृति में मनुष्य की आकृति से मिलता-जुलता होता हुआ चिपटे सिर, दबे हुए माथे, बहुत चौड़ा मुँह, उभरे और बड़े कानों, चिपटी नाक तथा शरीर पर काले और मोटे बालों वाला होता है। ये झुंड में रहते हैं और इनका कद मनुष्य के बराबर होता है।

चिउँटा *पुं.* (देश.) मीठी वस्तुओं के पास शीघ्र आने वाला एक कीड़ा, चींटा (यह जिस वस्तु से चिपट जाता है उसे आसानी से नहीं छोड़ता) **मुहा.** गुड़-चीटा (चिउँटा) होना-एक दूसरे से गुथ जाना; चींटे (चिउँटे) के पार निकलना- ऐसा काम करना जिससे मौत हो जाए **टि.** चींटे (चिउँटे) के जब पर निकलते है तो वे उड़ने लगते है और फिर जल्दी ही मर जाते हैं।

चिउँटी *स्त्री.* (देश.) मीठे के पास बहुत जल्दी जाने वाला छोटा-सा कीड़ा जो अपने नुकीले मुँह से काटता और चिपट जाता है 1. चीटी 2. पिपीलिका **विशे**. चींटियों (चिउँटियो) के मुँह के दोनों किनारों पर दो नोंके निकली होती हैं जिनसे वह काटती और चिपटती है, उसकी जीभ एक नली के मानिंद होती है जिससे वह रसीली चीजें चूसती रहती है, ये झुंड में रहती हैं तथा उनके झुंड में व्यवस्था और नियम का अनोखा पालन होता है, इनका श्रम बहुत प्रसिद्ध है **मुहा.** चींटी की चाल चलना- धीरे-धीरे चलना।

चिउड़ा *पुं.* (तद्.) चिड़वा, चूड़ा (एक प्रकार की चबाने की वस्तु (अन्न) जो हरे, भिगोए या उबाले हुए धान को कूटने से बनता है।

चिउली *पुं.* (देश.) हिमालय के आसपास भूटान तक पाए जाने वाले महुए की जाति का एक जंगली पेड़ **विशे.** इस पेड़ में से एक प्रकार का तेल निकलता है जो मक्खन की तरह जम जाता है इस तेल के जमे हुए कतरों को चिउली का पानी कहते हैं, नेपाल में इसे घी में मिलाया जाता है 2. एक प्रकार का रंगीन रेशमी कपड़ा।

चिक *स्त्री.* (तुर्की) बाँस या सरकंडे की तीलियों का बना हुआ झंझरीदार पर्दा, चिलमन 2. पशुओं को मारकर उनका मांस बेचने वाला, बूचर, कसाई 2. चिलक, चमक 3. एक बार अधिक बल पड़ने के कारण होने वाला कमर का दर्द, (चिक चली जाना) झटका, लचक।

चिकट *पुं.* (देश.) एक प्रकार का रेशमी या टसर का कपड़ा 2. भाई द्वारा बहन को उसकी संतान के विवाह के समय दिए जाने वाले कपड़े, 'भात के कपड़े', भात।

चिकटना *स. क्रि.* (देश.) जमे हुए मैल के कारण शरीर का चिपचिपाना या चिपचिपा होना।

चिकटा *वि.* (देश.) **दे.** चिकट।

चिकन *पुं.* (फा.) एक प्रकार का सूती कपड़ा जिस पर सूई और डोरे से कढ़े हुए उभारदार फूल या बूटियाँ बनी होती हैं (अं.) मुर्गी के चूजे के मांस से बना भोज्य पदार्थ।

चिकना *वि.* (तद्.) 1 जो छूने में खुरदरा न हो, जो ऊबड़-खाबड़ न हो 2. साफ और समतल 3. सरकने में रुकावट न देने वाला **उदा.** संभल कर चलो मार्ग बहुत चिकना और रपटीला है, फिसल मत जाना **मुहा.** चिकना घड़ा- निर्लज्ज 4. साफ-सुधरा, सँवरा हुआ 5. स्नेही, अनुरागी **मुहा.** चिकना-चुपड़ा- बना ठना; चिकनी-चुपड़ी/चिकनी चुपड़ी बातें- बनावटी या कृत्रिम व्यवहार, चिकनी चुपड़ी बातें करने वाला, खुशामदी, चाटुकार, *पुं.* तेल-घी आदि चिकने पदार्थ।

चिकनाई *स्त्री.* (तद्.) चिकनापन, चिकनाहट, स्निग्धता, चिकना होने का भाव, घी तेल आदि का सहज चिकनापन, सरसता।

चिकनाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. चिकना करना, खुरदरापन मिटाना, रुखा न रहने देना 2. मैल आदि साफ करके निखारना, चिकना होना 3. स्निग्ध होना 4. चर्बी से युक्त होना, मोटाना 5. स्नेहयुक्त होना, अनुरक्त होना।

चिकनापन *पुं.* (तद्.) चिकना होने का भाव, चिकनाई, चिकनाहट।

चिकनियाँ *वि.* (देश.) बना-ठना, छैला, छैल-चिकनियाँ, शौकीन, बाँका **उदा.-** आज तो आप नए कपड़े पहनकर पूरे छैल-चिकनिया बने हो जबकि रोज वही मैले कपड़े पहनते थे, क्या बात है?

चिकनी *पुं.* (देश.) **दे.** चिकना।

चिकरना *अ.क्रि.* (तद्.) चीत्कार करना, जोर से चिल्लाना, चीखना, चिंघाड़ना।

चिकारा *पुं.* (देश.) 1. सारंगी जैसा एक लोक-वाद्य (बाजा) 2. चीख-पुकार का शब्द, डरावना शब्द 3. हिरण की जाति का एक जंगली फुर्तीला जानवर, इसे छिकारा भी (छिकरा) कहते हैं।

चिकारी *स्त्री.* (देश.) छोटा चिकारा।

चिकित *पुं.* (तत्.) एक ऋषि का नाम।

चिकितान *पुं.* (तत्.) एक ऋषि का नाम।

चिकित्सक *पुं.* (तत्.) रोगी का उपचार कर्ता व्यक्ति, वैद्य, डॉक्टर, रोग दूरकर्त्ता/करने वाला व्यक्ति।

चिकित्सन *पुं.* (तत्.) चिकित्सा करने की विधि या तरीका, चिकित्सा 2. रोग दूर करने का उपाय 3. उपचार, इलाज।

चिकित्सा *स्त्री.* (तत्.) 1. रोग दूर करने की युक्ति या क्रिया, शरीर को स्वस्थ या नीरोग करने का उपाय, रोग शांति का उपाय, इलाज, उपचार 2. वैद्य या डॉक्टर का व्यवसाय, पेशा, बैदगी।

चिकित्सालय *पुं.* (तत्.) वह स्थान जहाँ रोगियों तथा बीमारों का इलाज किया जाता है, शफाखाना अस्पताल। hospital

चिकित्सावकाश *पुं.* (तत्.) चिकित्सक के परामर्श पर किसी कर्मचारी को बीमारी के इलाज के लिए अधिकारी द्वारा दिये गये जाने वाल अवकाश।

चिकित्साव्यवस्था *पुं.* (तत्.) वैद्य या चिकित्सक का पेशा या उसके द्वारा दी गई व्यवस्था।

चिकित्साशास्त्र *पुं.* (तत्.) वह शास्त्र जिसमें रोगों के लक्षणों तथा उपचारों आदि की विवेचना रहती है, चिकित्सा-विद्या।

चिकित्सित *वि.* (तत्.) जिसकी दवा-दारू हो गई हो, जिसकी चिकित्सा या उपचार हो गया हो।

चिकित्स्य *वि.* (तत्.) जो चिकित्सा के योग्य हो।

चिकिल *पुं.* (तत्.) पंक, कीचड़।

चिकीर्षक *पुं.* (तत्.) 1. कार्य करने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति *वि.* कार्य करने की इच्छा रखने वाला।

चिकीर्षा *स्त्री.* (तत्.) करने की इच्छा।

चिकीर्षित *पुं.* (तत्.) मनोरथ, इच्छा, तात्पर्य *वि.* करने के लिए इच्छित।

चिकुटी *स्त्री.* (देश.) **दे.** 'चकोटी'।

चिकुर *पुं.* (तत्.) 1. सिर के बाल, केश 2. पर्वत 3. साँप आदि रेंगने वाले जंतु 4. छछूंदर 5. पक्षी विशेष 6. वृक्ष विशेष 7. गिलहरी *वि.* चंचल।

चिक्क *वि.* (तत्.) चपटी नाक वाला *पुं.* छछूँदर।

चिक्कट *पुं.* (तत्.) गर्द तेल आदि का मैल जो कहीं जम गया हो, कीट, मैला-कुचैला-पदार्थ या कपड़ा *वि.* गंदा, मैला-कुचैला।

चिक्कण *पुं.* (तत्.) 1. सुपारी का पेड़ या फल 2. हरड़ (हर्रे) 3. आयुर्वेद में पाक या आँच की तीन अवस्थाओं में से एक, कुछ तेज आँच *स्त्री.* (तत्.) सुपारी।

चिक्कदेव *पुं.* (तत्.) मैसूर के एक यादववंशी राजा का नाम जिसने सन् 1672 ई. से 1704 ई. तक राज्य किया था।

चिक्करना *अ.क्रि.* (तद्.) चीत्कार करना, चिल्लाना, चीखना, जोर से चिल्लाना।

चिक्कस *पुं.* (देश.) 1. जौ का आटा 2. उबटन की तरह हल्दी और तेल में मिला हुआ जौ का आटा जो जनेऊ या विवाह के अवसर पर मला जाता है *पुं.* (देश.) बुलबुल, तोते आदि बैठाए जाने के लिए लोहे, पीतल की छड़ों से बनाया गया अड्डा।

चिक्का *स्त्री.* (तत्.) 1. सुपारी 2. चूहा 3. हाथी के शरीर का मध्यवर्ती भाग विशेष, मातंग।

चिक्कार *पुं.* (तद्.) चीत्कार।

चिक्कारा *पुं.* (देश.) **दे.** चिकारा।

चिक्किण *पुं.* (तत्.) **दे.** चिक्कण।

चिक्किर *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार का चूहा 2. गिलहरी।

चिक्लिद *पुं.* (तत्.) 1. नमी, आर्द्रता 2. चाँद, चंद्रमा।

चिखर *पुं.* (देश.) 1. चूने का छिलका 2. चूने की भूसी।

चिखल्ल *पुं.* (तत्.) दलदल, कीचड़।

चिखुर *पुं.* (देश.) गिलहरी, चिखुरा।

चिखुरन *पुं.* (देश.) जुते हुए खेत से चिखुरी या निकाली गई घास, निराने के बाद प्राप्त घास।

चिखुरना *स.क्रि.* (देश.) जुते हुए खेत से घास चुनना, चिखुरना या निकालना।

चिखुरा *पुं.* (देश.) **दे.** चिखुर।

चिखुराई *स्त्री.* (देश.) चिखुरने का काम या भाव 2. चिखुरने या घास निकालने की मजदूरी।

चिखौना *पुं.* (देश.) 1. चखने की वस्तु 2. चखने या स्वाद लेने की क्रिया।

चिगना *क्रि.स.* (देश.) **दे.** चिनना।

चिघाड़ *स्त्री.* (देश.) **दे.** चिंघाड़।

चिघाड़ना *अ.क्रि.* (देश.) **दे.** चिंघाड़ना।

चिचड़ा *पुं.* (तद्.) 1. डेढ़-दो हाथ ऊँचा पौधा, जो दवा के काम में आता है 2. ओंगा 3. अपामार्ग 4. अंझाझार 5. लटजीरा (बरसात में अन्य घास-पात के साथ उगने वाला यह पौधा अत्यंत पवित्र गुणकारी तथा औषध के रूप में उपयोगी होता है) 6. किल्ली या किलनी नामक कीड़ा जो पशुओं की चमड़ी के साथ चिपटकर उनका ख़ून (रक्त) पीता है।

चिचड़ी *स्त्री.* (देश.) किलनी या किल्ली नामक लाल रंग का चौपायों, कुत्ते, बिल्लियों तथा पशुओं की खाल से चिपटकर उनका रक्त पीने वाला कीड़ा।

चिचिंगा *पुं.* (तद्.) चंचीड़ा।

चिचिंड *पुं.* (तद्.) चिचिंडा, चिचीड़ा।

चिचिंडा *पुं.* (तद्.) चचींडा, एक तरकारी विशेष।

चिचिनी *स्त्री.* (तद्.) इमली का पेड़ या फल।

चिचियाना *अ.क्रि.* (देश.) चिल्लाना, चीखना, हल्ला करना।

चिचुकना *अ.क्रि.* (देश.) चुचुकना।

चिचोड़ना *अ.क्रि.* (देश.) चचोड़ना।

चिच्चिटिंग *पुं.* (देश.) एक विषैला कीड़ा।

चिच्छक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. चित्तशक्ति, परमात्मा, 'चित्' समझी एवं पुकारी जाने वाली अध्यात्म शक्ति।

चिच्छल *पुं.* (तत्.) 1. महाभारत के अनुसार एक देश का नाम 2. चिच्छल देशवासी।

चिट *स्त्री.* (अं./देश.) 1. पुरजा 2. कागज का छोटा टुकड़ा 3. छोटा पत्र 4. एक्का 5. कपड़े आदि का छोटा टुकड़ा।

चिटकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. सूखकर जगह-जगह पर फटना 2. खरा होने से दरकना 3. गठीली-लकड़ी का जलते समय "चिट-चिट" शब्द करना 4. चिढ़ना, चिड़चिड़ाना, बिगड़ना 5. शीशे आदि का फूटना 6. शुष्क होना, सूखना।

चिटी *स्त्री.* (तत्.) तंत्रविद्या के अनुसार चांडाल वेशधारिणी योगिनी जिसकी उपासना वशीकरण के लिए की जाती है।

चिट्ट *स्त्री.* (देश.) सफेद, धवल, श्वेत 2. गोरा, गोरा-चिट्टा।

चिट्ठा *पुं.* (देश.) 1. हिसाब की बही, खाता, लेखा 2. जमा खर्च लेने-देने की किताब 3. रसद 4. खर्च की सूची 5. वर्ष भर के नफा-नुकसान को दर्शाने वाला आय-व्यय का ब्यौरा (विवरण) 6. वह रुपया जो दैनिक साप्तहिक अथवा मासिक वेतन के रूप में बाँटा जाता है **मुहा.** कच्चा चिठ्ठा लिखना- पूर्ण और ठीक-ठीक पूरा वृत्तांत जानना या रखना; कच्चा चिठ्ठा खोलना- पूर्ण विवरण के साथ गुप्त बातों को प्रकट करना।

चिट्ठी *स्त्री.* (देश.) 1. पत्र, खत अर्थात वह कागज जिस पर एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजने के लिए समाचार आदि लिखा जाता है 2. वह छोटा पुरजा जो किसी माल विशेषत: कपड़े आदि के साथ रहता है और जिस पर उस माल की कीमत लिखी होती है 3. आज्ञा-पत्र 4. निमंत्रण पत्र 5. किसी माल को पाने वाले अथवा किसी काम के करने वाले अधिकारी को निश्चित करने की क्रिया।

चिट्ठी-पत्री *स्त्री.* (देश.) 1. पत्र, खत 2. पत्र-व्यवहार 3. खत-खिताबत।

चिड़ *स्त्री.* (तत्.) चिड़िया, चिड (चिढ़) *स्त्री.* (देश.) क्रोध, कुढ़न, अरुचि।

चिड़चिड़ा *वि.* (देश.) 1. तुनकमिजाज 2. शीघ्र ही चिढ़ने वाला।

चिड़चिड़ाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. गठीली लकड़ी, पानी मिले हुए तेल या घी आदि के जलने पर 'चिड़-चिड़' शब्द होना 2. सूखकर जगह-जगह से फटना 3. खरा होना 4. दरकना 5. चिढ़ना, बिगड़ना, झुंझलाना, क्रोध से बोल उठना **उदा.** जाडे की हवा से होंठ चिड़चिड़ा गए है 2. बात-बात पर रमेश का चिड़चिड़ाना शोभा नहीं देता, वह तो बड़ा आदमी है।

चिड़वा *पुं.* (तद्.) हरे भिगोए या कुछ उबाले हुए धान को भाड़ में भूनकर तथा बाद में कूटकर बनाया हुआ चिपटा (चावल का) दाना, "चिडवा" या "चिउड़ा"।

चिड़ा *पुं.* (देश.) गौरा पक्षी, गौरेया का नर पक्षी।

चिड़ाना *क्रि.स.* (तद्.) **दे.** चिढ़ाना।

चिड़िया *स्त्री.* (तद्.) 1. आकाश में उड़ने वाला जीव, पंछी (पक्षी), पखेरू 2. अंगिया की वह सीवन जिससे कटोरियाँ मिली रहती हैं 3. पाजामे या लहंगे का नली की तरह का वह भाग जो पोला होता है और नाड़ा या इजारबंद पड़ा रहता है 4. ताश का एक रंग जिसमें तीन गोल पंखुरियों की बूटी बनी होती है, 'चिड़ी'।

चिड़ियाखाना *पुं.* (फा.) वह आवास, घर या स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पक्षी तथा पशु देखने के लिए रखे जाते हैं, पक्षीशाला।

चिड़ियाघर *पुं.* (तद्.) **दे.** चिड़ियाखाना।

चिड़ी *स्त्री.* (देश.) **दे.** चिड़िया।

चिड़ीमार *पुं.* (देश.) 1. बहेलिया, व्याध 2. शिकारी।

चिढ़ *स्त्री.* (देश.) 1. चिढ़ने का भाव, क्रोध से युक्त घृणा, विरक्ति 2. अप्रसन्नता, कुढ़न **मुहा.** चिढ़ निकालना- अप्रसन्नता की स्थिति में ऐसी बात कह डालना जिससे कोई चिढ़े या अप्रसन्न हो।

चिढ़ना *अ.क्रि.* (देश.) 1. नाराज होना, अप्रसन्न होना, खीझना, कुढ़ना, झल्लाना 2. द्वेष करना या रखना, बुरा मानना।

चिढ़ाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. नाराज करना, अप्रसन्न करना, खिजाना 2. किसी को कुढ़ाने के लिए मुँह बनाना, हाथ-मुँह मटकाना या कोई अन्य कायिक चेष्टा करना, किसी की नकल उतारना या करना।

चित *वि.* (तत्.) पीठ के बल पड़ा हुआ, पट का उलटा, इस तरह लेटा या पड़ा हुआ जिसमें वक्षस्थल (छाती) ऊपरी ओर हो **मुहा.** चित्त करना- कुश्ती में पछाड़ना, उलटना; चारों खाने चित्त- हाथ-पैर फैलाकर बिलकुल पीठ के बल पड़ा हुआ, पूर्णत: पराजित, हारा हुआ; चित देना (लगाना)- ध्यान देना, मन लगाना।

चितकबरा *वि.* (तत्.) सफेद रंग पर काले, लाल, या पीले दागों वाला, रंगबिरंगा, कबरा, चितला

उदा. आपकी चितकबरी आज नहीं दिखी, मेरा चितकबरा बैल बड़ा भाग्यशाली था।

चितचोर *पुं.* (देश.) 1. चित्त या मन को चुराने वाला 2. सुंदर 2. गुणवान, मनोहर 3. प्रिय, मनभावन 4. मन को आकर्षित करने वाला।

चितपट *पुं.* (देश.) एक प्रकार का खेल या बाजी जिसमें किसी फेंकी हुई वस्तु के चित्त या पट्ट (पट) पड़ने पर ही जीत-हार का निर्णय हो जाता है 2. कुश्ती, मल्ल युद्ध।

चितबाहु *पुं.* (देश.) तलवार चलाने के बत्तीस हाथों (चरणों) में से एक।

चितभंग *पुं.* (देश.) चित्त का न लगना, उचाट, उदासी 2. मतिभ्रम, बुद्धि का लोप या भ्रमित हो जाना, भौंचक्कापन।

चितरन *पुं.* (तद्.) **दे.** चित्रण।

चितरना *स.क्रि.* (तद्.) चित्रित करना, रँगना, चित्र बनाना।

चितरवा *पुं.* (तद्.) ईंट के समान लाल रंग वाली चिड़िया जिसके डैनों पर काली चित्तियाँ पड़ी होती हैं और आँखे अनारदाने के समान सफेद और लाल होती हैं।

चितला *वि.* (तद्.) कबरा, चितकबरा, रंगबिरंगा।

चितवन *स्त्री.* (तद्.) ताकने का भाव या ढंग, अवलोकन, कटाक्ष, निगाह, दृष्टि, देखना **मुहा.** चितवन चढ़ाना- क्रोध की दृष्टि से देखना।

चितविलास *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का डिंगल गीत।

चिता *स्त्री.* (तत्.) मुर्दे को जलाने के लिए चुनी हुई लकड़ियों का ढेर, शवदाह के लिए बिछाई या चिनी हुई लकड़ियों की राशि, श्मशान में शवदाह की क्रिया **मुहा.** चिता सजाना (चुनना)- शवदाह के लिए लकड़ियाँ को क्रम से रखना; चिता पर (में) बैठना- सती होना; चिता पर चढना- मरना, मरघट।

चिताना *स.क्रि.* (तद्.) 1. सचेत करना, सावधान करना 2. किसी आवश्यक विषय की ओर ध्यान दिलाना 3. आत्मबोध करना 5. ज्ञानोपदेश करना 5. जगाना 6. जलाना।

चितापिंड *पुं.* (तत्.) शवदाह से पूर्व श्मशान में किया जाने वाला पिंडदान।

चिताभूमि *स्त्री.* (तत्.) श्मशान, मरघट।

चितारना *स.क्रि.* (तद्.) स्मरण करना, याद में लाना।

चितारी *पुं.* (तद्.) **दे.** चितेरा।

चितारोहण *पुं.* (तत्.) विधवा का सती होने पर पति की चिता पर जाना या भस्म होने हेतु चढ़ना।

चितावनी *स्त्री.* (तद्.) सतर्क होने की क्रिया, चेताने की क्रिया, चेतावनी, सावधान रहने की पूर्व सूचना।

चिति *स्त्री.* (तत्.) 1. चिता 2. समूह, ढेर 3. चुनाई या चुनने या इकट्ठा करने की क्रिया 4. शतपथ ब्राह्मण के अनुसार अग्नि का एक संस्कार 5. दीवार में ईंटों की चुनाई (चिंनाई) 6. यज्ञ में ईंटों का एक संस्कार 7. चैतन्य 8. दुर्गा 9. समझ या बोध।

चितिका *स्त्री.* (तत्.) करधनी, मेखला **दे.** चिति।

चितेरा *पुं.* (तद्.) चित्रकार, चित्र बनाने वाला, तस्वीर खींचने वाला।

चितेरिन *स्त्री.* (तद्.) 1. चित्रकार की स्त्री 2. चित्र बनाने वाली स्त्री।

चितौनि *स्त्री.* (तद्.) **दे.** चितवन।

चितौल *स्त्री.* (तद्.) **दे.** चितवन।

चित् *स्त्री.* (तत्.) चेतना, चैतन्य, ज्ञान *पुं.* 1. चुनने वाला आदमी, बीनने वाला व्यक्ति, इकट्ठा करने वाला व्यक्ति 2. अग्नि 3. रामानुजाचार्य के अनुसार तीन पदार्थों में से एक जो जीव-पद-वाक्य, भोक्ता अपरिच्छिन्न, निर्मल ज्ञान-स्वरूप और नित्य कहा जाता है, अन्य दो पदार्थ अचित्' और 'ईश्वर' है *अव्य.* (तत्.) संस्कृत का एक अनिश्चयवाची प्रत्यय जो 'क:', 'किम्' आदि सर्वनाम शब्दों में लगता है **जैसे-** 'किंचित्' 'कदाचित्' आदि।

चित्त *पुं.* (तत्.) 1. अंत:करण का भेद, अंतकरण की एक वृत्ति 2. मन, बुद्‌धि, चित्त और अहंकार- इन चार वृत्तियों में से एक 3. जी, मन, दिल 4. वह मानसिक शक्ति जिससे धारण, भावना उत्पन्न होती है **मुहा.** चित्त चढ़ना- ध्यान पर चढ़ना; चित्त उतरना- जी न लगना, विरक्ति होना; चित्त चुराना- मन को मोहना; चित्त से न टलना- बराबर ध्यान में बने रहना, किसी को आकर्षित करना, विचारित 5. अनुभूत या अनुभवगम्य 6. इच्छित, चाहा हुआ 7. इंद्रिय गम्य, इंद्रिय गोचर।

चित्तचारी *वि.* (तत्.) 1. दूसरे की इच्छानुसार आचरण करने वाला 2. जिसका मन चलायमान रहता हो।

चित्तप्रसादन *पुं.* (तत्.) मैत्री, करुणा, हर्ष, उपेक्षा आदि के उपयुक्त व्यवहार द्‌वारा योग में होने वाला चित्त का संस्कार **जैसे-** किसी को दुखी देखकर मित्रभाव रखना।

चित्तभंग *पुं.* (तत्.) बदरिकाश्रम के एक पर्वत का नाम।

चित्तभूमि *पुं.* (तत्.) योग में चित्त की अवस्थाएँ। **विशे.** व्यास जी के अनुसार ये अवस्थाएँ पाँच हैं, क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्‌ध, समाधि की भी चार भूमियाँ हैं, मधुमती, मधुप्रतीका, विशोका और ऋतंभरा।

चित्तभेद *पुं.* (तत्.) 1. विचार संबंधी भेद 2. चंचलता, अस्थिरता।

चित्तभ्रम *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का सन्निपात जिसमें संताप, मोह, विकलता, हँसना, गाना, नाचना, धतूरा खाए हुए जैसी अवस्था आदि उपद्रव होते हैं।

चित्तरसारी *स्त्री.* (तद्.) चित्रसारी।

चित्तराग *पुं.* (तत्.) कामना, अनुराग।

चित्तल *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का हिरन, मृग, चीतल।

चित्तविकार *पुं.* (तत्.) विचार या भाव का परिवर्तन।

चित्तविक्षेप *पुं.* (तत्.) योग में बाधक बनने वाली चित्त की चंचलता या अस्थिरता।

चित्तविद *पुं.* (तत्.) 1. वह जो चित्त की बात जाने 2. बौद्‌ध दर्शन के अनुसार चित्त के भेदों और रहस्यों को जानने वाला पुरुष।

चित्तवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. चित्त की गति, चित्त की अवस्था 2. विचार 3. मन:स्थिति, भाव।

चित्तवेदना *स्त्री.* (तत्.) चित्त की पीड़ा दुख या वेदना।

चित्तशुद्‌धि *स्त्री.* (तत्.) विकार रहित चित्त होने का भाव, निर्विकार चित्त होना।

चित्तहारी *वि.* (तत्.) मन को लुभाने वाला।

चित्ता *पुं.* (तत्.) औषध, पौधा-विशेष।

चित्ताकर्षक *वि.* (तत्.) मनमोहक, चित्त को आकर्षित करने वाला।

चित्तापहारक *वि.* (तत्.) 1. चित्त को चुराने वाला 2. मनोहर, सुंदर, चित्तहारी।

चित्ताभोग *पुं.* (तत्.) 1. संपूर्ण चेतना 2. आसक्ति।

चित्तासंग *पुं.* (तत्.) प्रेम, अनुराग, चित्त की आसक्ति।

चित्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रज्ञा, बुद्‌धि, वृत्ति, चिंतन 2. ख्याति 3. कर्म 4. अथर्व ऋषि की पत्नी का नाम।

चित्ती *स्त्री.* (तत्.) 1. छोटा-सा दाग, धब्बा, या चिह्न, बुंदकी **मुहा.** चित्ती पड़ना- 1. खरी सेंकने पर रोटियों में जगह-जगह जलने जैसा काला दाग पड़ जाना या पड़ना 2. कुम्हार के चाक के किनारे का वह गड्ढा जिसमें डंडा डालकर चाक को घुमाया जाता है 2. गुनिया 3. अजगर की जाति का एक मोटा साँप जिसके शरीर पर चित्तियाँ होती हैं, चीतल।

चित्तोद्रेक *पुं.* (तत्.) 1. विरक्ति का भाव 2. परेशानी 3. व्याकुलता 4. चित्त की अशांति 5. अहंकार।

चित्तौड़ *पुं.* (तत्.) **दे.** चित्तौर।

चित्तौर *पुं.* (तत्.) एक इतिहास प्रसिद्ध प्राचीन नगर जो उदयपुर (राजस्थान) के महाराजाओं की राजधानी थी।

चित्य *वि.* (तत्.) 1. चुनने या एकत्र करने योग्य 2. चिता संबंधी।

चित्या *स्त्री.* (तत्.) 1. एकत्र करना, चुनने का कार्य 2. चिता।

चित्र *पुं.* (तत्.) 1. चंदन आदि से माथे पर लगाया हुआ तिलक 2. अनेक वस्तुओं की विविध रंगों के मेल से बनी हुई आकृति, किसी वस्तु या स्वरूप या आकार जो कागज, कपड़े, पत्थर, लकड़ी, शीशे आदि पर तूलिका से अथवा कलम, कूंची तथा रंगों आदि के द्वारा बनाया गया हो, तस्वीर **मुहा.-** चित्र उतारना- चित्र बनाना, वर्णन आदि के द्वारा हूबहू दृश्य सामने उपस्थित कर देना 3. काव्य के तीन अंगों में से एक जिसमें व्यंग्य की प्रधानता नहीं रहती, अलंकार 4. आकाश 5. एक प्रकार का कोढ़ जिसमें शरीर में सफेद दाग अथवा चित्तियाँ पड़ जाती हैं 6. एक यम का नाम 7. चित्रगुप्त 8. रेंड का पेड़ 9. अशोक का पेड़ 10. चीते का पेड़ 11. धृतराष्ट्र के सौ बेटों में से एक 12. अद्भुत, विचित्र, आश्चर्यजनक 2. रंग-बिरंगा विविध प्रकार का 3. चितकबरा।

चित्रकंठ *पुं.* (तत्.) कबूतर, कपोत।

चित्रकंदक *पुं.* (तत्.) जिमीकंद।

चित्रकंबल *पुं.* (तत्.) 1. कालीन 2. हाथी की झूल जिस पर चित्र बने रहते हैं।

चित्रकर्म *पुं.* (तत्.) 1. चित्र बनाना, चित्रकारी 2. चित्रकार 3. विचित्र कार्य करना 4. आलेखन 5. इंद्रजाल।

चित्रकला *स्त्री.* (तत्.) चित्र बनाने की विद्या, तस्वीर बनाने का हुनर।

चित्रकार *वि.* (तत्.) 1. चित्र बनाने वाला 2. चितेरा।

चित्रकारी *स्त्री.* (तत्.) चित्र विद्या, चित्र बनाने की कला 2. चित्रकार का काम 3. चित्र बनाने का व्यवसाय।

चित्रकाव्य *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का काव्य जिसमें अक्षरों को विशेष क्रम से लिखने से कोई विशेष चित्र बन जाता है, ऐसा काव्य अधम माना जाता है।

चित्रकुष्ठ *पुं.* (तत्.) श्वेत कुष्ठ, सफेद कोढ़।

चित्रकूट *पुं.* (तत्.) एक प्रसिद्ध रमणीक पर्वत जहाँ वनवास के समय राम, सीता और लक्ष्मण बहुत दिनों तक रहे थे।

चित्रकेतु *पुं.* (तत्.) 1. वह जिसके पास चित्रित पताका हो 2. श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार लक्ष्मण के पुत्र का नाम 3. गरुड़ के पुत्र का नाम 4. वशिष्ठ के पुत्र का नाम 5. वंसा के गर्भ से उत्पन्न देवभाग यादव का एक पुत्र 6. भागवत में वर्णित शूरसेन देश का एक राजा जिसे पुत्रशोक से संतप्त देख नारद ने मंत्रोपदेश किया था।

चित्रगुप्त *पुं.* (तत्.) 1. चौदह यमराजों में से एक जो प्राणियों के पाप और पुण्य का लेखा रखते हैं।

चित्रण *पुं.* (तत्.) 1. चित्रमय वर्णन, शब्दों द्वारा ऐसा वर्णन करना जिससे वर्ण्य विषय का मानसिक चित्र उपस्थित हो जाए, संश्लिष्ट रूप योजना।

चित्रताल *पुं.* (तत्.) संगीत में एक प्रकार की चौताला ताल जिसमें दो द्रुत, एक प्लुत और फिर एक द्रुत होता है।

चित्रधर्मा *पुं.* (तत्.) महाभारत में उल्लिखित एक राक्षस (दैत्य) का नाम।

चित्रधाम *पुं.* (तत्.) यज्ञ आदि में पृथ्वी पर बनाया हुआ एक चौखूंटा चक्र जो चार खाने की तरह होता था और जिसके खानों को भिन्न-भिन्न रंगों से भरा जाता था, सर्वतोभद्रमंडल।

चित्रपत्र *पुं.* (तत्.) वह कपड़ा, कागज़ या पटरी जिस पर चित्र बनाया या उकेरा जाए अथवा बना हुआ हो, चित्राधार 2. वह वस्त्र जिस पर चित्र बने हो, छींट 3. चित्र, तस्वीर 4. सिनेमा।

चित्रपदा *पुं.* (तत्.) 1. मैना पक्षी, सारिका 2. लजालू नाम की लता, छुईमुई 3. एक प्रकार का

छंद जिसके प्रत्येक चरण में दो भगण और दो गुरु होते है।

चित्रपुट *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की छह ताला ताल जिसमें दो लघु, दो द्रुत, एक लघु और एक प्लुत होता है।

चित्रफल *पुं.* (तत्.) 1. तरबूज 2. चितला मछली।

चित्रभानु *पुं.* (तत्.) 1. अग्नि 2. सूर्य 3. चित्रक 4. चीते का पेड़ 5 अर्क मदार 6. भैरव, अश्विनी कुमार 7. साठ संवत्सरों के बारह युगों में से चौथे युग के पहले वर्ष का नाम।

चित्रमति *पुं.* (तत्.) 1. विलक्षण बुद्धिवाला व्यक्ति 2. विचित्र बुद्धिवाला व्यक्ति *वि.* विशेष एवं विलक्षण बुद्धिवाला।

चित्ररथ *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य 2. कश्यप मुनि और दक्ष कन्या के पुत्र एक गंधर्व का नाम 3. श्री कृष्ण के पुत्र गद के पुत्र का नाम 4. अंग देश के राजा का नाम।

चित्ररेखा *स्त्री.* (तत्.) बाणासुर की पुत्री ऊषा की एक सहेली का नाम, चित्रलेखा।

चित्ररेफ़ *पुं.* (तत्.) भागवत के अनुसार शाकद्वीप के राजा प्रियव्रत के पुत्र मेधातिथि के सात पुत्रों में से एक **विशे.** मेधातिथि ने अपने सात पुत्रों को सात वर्ष बाँट दिए थे जिनके नामों के अनुसार ही उन वर्षों के नाम पड़े 2. एक वर्ष या भू-विभाग का नाम।

चित्रल *वि.* (तत्.) रंग-बिरंगा, चितकबरा, चितला।

चित्रलेखन *पुं.* (तत्.) 1. चित्र बनाना 2. सुंदर अक्षर लिखना।

चित्रलेखा *स्त्री.* (तत्.) 1. चित्र बनाने की कलम 2. बाणासुर की बेटी ऊषा की सहेली जो चित्रकला में बड़ी निपुण थी 3. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, मगण, नगण और तीन यगण होते हैं।

चित्रलोचना *स्त्री.* (तत्.) सारिका, मैना।

चित्रवदाल *पुं.* (तत्.) 1. पाठीन मत्स्य 2. पहिना मछली।

चित्रवन *पुं.* (तत्.) गंडकी के किनारे का पुराण-प्रसिद्ध एक वन।

चित्रवर्मा *पुं.* (तत्.) धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम, मुद्राराक्षस के अनुसार कुलूत देश के एक राजा का नाम।

चित्रवाण *पुं.* (तत्.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

चित्रवाहन *पुं.* (तत्.) मणिपुर के एक राजा का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में मिलता है।

चित्रविचित्र *वि.* (तत्.) 1. रंगबिरंगा 2. बेलबूटेदार 3. कई रंगों का।

चित्रविद्या *स्त्री.* (तत्.) चित्र बनाने की कला या विद्या **दे.** चित्रकला।

चित्रशाला *स्त्री.* (तत्.) 1. वह घर जहाँ चित्र बनते हों अथवा बेचने हेतु रखे जाते हो 2. वह घर जहाँ चित्र हों 3. वह स्थान जहाँ चित्रकारी सिखाई जाती हो 4. वह भवन जहाँ भित्तियों पर चित्र बने हों।

चित्रशिर *स्त्री.* (तत्.) 1. एक गंधर्व का नाम 2. सुश्रुत के अनुसार मलमूत्र से उत्पन्न एक विष, गंदगी का जहर।

चित्रशिल्पी *पुं.* (तत्.) चित्रकार।

चित्रसेन *पुं.* (तत्.) 1. धृतराष्ट्र का एक पुत्र 2. एक गंधर्व 3. पुरुवंशी राजा परीक्षित के पुत्रों में से एक 4. चित्तौर का एक राजा।

चित्रांकन *पुं.* (तत्.) 1. चित्र बनाना 2. आलेखन कार्य 3. चित्र अंकित करना।

चित्रांग *वि.* (तत्.) 1. विचित्र अंगों वाला व्यक्ति या प्राणी 2. धारियों या चित्तियों के अंग (शरीर) वाला प्राणी या व्यक्ति *पुं.* 1. चीता 2. एक प्रकार का सर्प 3. चीतल मृग 4. ईंगुर 5. हरताल।

चित्रांगद *पुं.* (तत्.) 1. सत्यवती और राजा शांतनु के एक पुत्र जो विचित्रवीर्य के छोटे भाई थे 2. एक गंधर्व।

चित्रांगदा *स्त्री.* (तत्.) मणिपुर के राजा चित्रवाहन की बेटी जो अर्जुन को ब्याही थी 2. रावण की एक पत्नी जो वीरबाहु की माता थी।

चित्रांगी *स्त्री.* (तत्.) कनसलाई नाम का एक कीड़ा 2. मजीठ, कनखजूरा।

चित्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. सत्ताईस नक्षत्रों में से चौदहवाँ नक्षत्र 2. मूषिकपर्णी 3. ककड़ी या खीरा 4. मजीठ 5. दंती वृक्ष, गंड दूर्वा 6. अजवाइन 7. सुभद्रा 8. एक सर्प का नाम 9. एक नदी का नाम 10. एक अप्सरा का नाम 11. एक रागिनी का नाम 12. चितकबरी गाय।

चित्राक्ष *पुं.* (तत्.) धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम।

चित्राक्षी *स्त्री.* (तत्.) मैना, सारिका।

चित्राटीर *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. शिव का अनुचर घंटाकर्ण 3. बलि दिए हुए रक्त से रंजित मस्तक या ललाट।

चित्रादित्य *पुं.* (तत्.) स्कंद पुराण के प्रभास खंड में वर्णित प्रभास क्षेत्र में भगवान शिव द्वारा स्थापित सूर्य की मूर्ति।

चित्राधार *पुं.* (तत्.) 1. चित्र रखने का स्थान 2. चित्र-संग्रह 3. चित्रपट 4. अनेक चित्रों का संग्रह करके रखी या बनाई हुई एक पुस्तक।

चित्रायस *पुं.* (तत्.) इस्पात, लोहा।

चित्रायुध *पुं.* (तत्.) विलक्षण अस्त्र 2. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

चित्रालय *पुं.* (तत्.) चित्रशाला।

चित्रालिपि *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की लिपि जिसमें संकेतों के व्यंजक चित्रों द्वारा अभिप्राय या आशय का बोध कराया जाता है, लिपि-विकास की वह अवस्था जिसमें चित्रात्मक रेखा-प्रतीकों से भाषा का लेखन किया जाता रहा है, चित्रात्मक लिपि।

चित्रावसु *स्त्री.* (तत्.) नक्षत्रों से मंडित रात्रि।

चित्राश्व *पुं.* (तत्.) सत्यवान का नाम।

चित्रिक *पुं.* (तत्.) चैत का महीना।

चित्रिणी *स्त्री.* (तत्.) सुंदर स्त्री **विशे.** कामशास्त्र एवं काव्यशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेद हैं- पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी तथा हस्तिनी, चित्रिणी स्त्री का वह रूप या भेद है जो समस्त कलाओं में तथा शृंगार रचना में निपुण होती है।

चित्रित *वि.* (तत्.) 1. चित्र में खींचा हुआ, चित्र द्वारा दिखाया हुआ, जिसका रंग रूप चित्र में दिखाया गया हो 2. जिस पर चित्र बने हों।

चित्री *वि.* (तत्.) चित्रयुक्त, चित्रित 2. चितकबरा।

चित्रीकरण *पुं.* (तत्.) 1. चित्रांकन 2. अनेक वर्णों से रंगना 3. चित्र बनाने का कार्य या क्रिया।

चित्रेष *पुं.* (तत्.) चित्रा नक्षत्र के पति चंद्रमा।

चित्रोक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. आकाश 2. अलंकृत भाषा में कथन, सुंदर भाषण।

चित्रोत्तर *पुं.* (तत्.) 1. वह काव्यालंकर जिसमें प्रश्न के शब्दों में उनका उत्तर हो अथवा कई प्रश्नों का एक ही उत्तर हो **जैसे-** "को शुभ अक्षर कौन युवतिजो धनवश कीनी विजय सिद्धि संग्राम राम कहँ कौने दीनी" इस शैली को प्रश्नोत्तर शैली भी कहते है।

चित्रोत्पला *स्त्री.* (तत्.) उड़ीसा की "चितरतला" नामक नदी 2. मत्स्य 3. मछली।

चित्र्य *वि.* (तत्.) 1. पूज्य 2. चुनने या इकट्ठा करने योग्य।

चिथड़ा *पुं.* (देश.) फटा-पुराना कपड़ा, गूदड़, लत्ता।

चिथड़िया *वि.* (देश.) 1. चिथडे वाला 2. चिर कुटिया 3. गूदड़िया।

चिथाड़ना *स.क्रि.* (देश.) 1. चीरना, फाड़ना, धज्जी-धज्जी करना 2. अपमानित करना, लज्जित करना, नीचा दिखाना।

चिदाकाश *पुं.* (तत्.) आकाश के समान निर्लिप्त और सबका आधारभूत ब्रह्म, परब्रह्म।

चिदात्मा *पुं.* (तत्.) चैतन्य स्वरूप परब्रह्म।

चिदानंद *पुं.* (तत्.) चैतन्य और आनंदमय परब्रह्म।

चिदाभास *पुं.* (तत्.) चैतन्य स्वरूप परब्रह्म का आभास या प्रतिबिंब जो अंत:करण पर पड़ता है 2. जीवात्मा।

चिदालोक *पुं.* (तत्.) सदैव बना रहने वाला आत्म प्रकाश।

चिद् *पुं.* (तत्.) **दे.** चित्।

चिद्रूप *पुं.* (तत्.) चैतन्य स्वरूप ब्रह्म, ज्ञानमय परमात्मा या परमात्म तत्व।

चिद्‌विलास *पुं.* (तत्.) चैतन्य स्वरूप परमात्मा की माया।

चिन *पुं.* (देश.) हिमालय पर शिमला के आसपास बहुतायत में पाया जाने वाला सदाबहार जाति का बहुत बड़ा पेड़।

चिनक *स्त्री.* (देश.) जलनयुक्त पीड़ा, दर्द, चुनचुनाहट, मूत्र-नली में होने वाली जलन या पीड़ा *क्रि.* चिनगना- जलन होना, चुनचुनाना।

चिनगटा *पुं.* (देश.) चिथड़ा, चिथड़े का टुकड़ा।

चिनगारी *स्त्री.* (देश.) जलती हुई आग का छोटा-सा कण, 'स्फुलिंग' 2. दहकती आग में से फूट-फूट कर उड़ने वाला कण, अग्निकण।

चिनगी *स्त्री.* (देश.) चिनगारी।

चिनना *स.क्रि.* (देश.) चुनना।

चिनवाना *स.क्रि.* (देश.) चुनवाना।

चिनाई *स्त्री.* (देश.) चिनना, चुनना, ईंटों से दीवाल आदि की जुड़ाई करने का कार्य अथवा उस कार्य की मजदूरी।

चिनाना *स.क्रि.* (देश.) चुनवाना, ईंट आदि की जुड़ाई करना, घर या दीवार आदि उठवाना।

चिनाब *पुं.* (देश.) पंजाब की एक नदी 'चंद्रभागा'।

चिनार *पुं.* (देश.) एक प्रकार का वृहद् वृक्ष जो कश्मीर में होता है।

चिनिया *वि.* (देश.) चीनी के रंग का, सफेद, चीनी, चीन देश का।

चिनौटिया *वि.* (देश.) चुन्नन या चुभन वाला, चुभा हुआ।

चिन्मय *वि.* (तत्.) ज्ञानमय, भक्ति में लीन *पुं.* परमेश्वर।

चिपकना *अ.क्रि.* (देश.) किसी लसीली वस्तु के दो चीजों के बीच में आने के कारण उनका परस्पर जुड़ जाना जिससे कि वे अलग न हो सके, 'सटना' श्लिष्ट होना, चिमटना 2. प्रगाढ़ रूप से संयुक्त होना, लिपटना 3. रोजगार से लगना।

चिपकाना *स.क्रि.* (देश.) किसी लसीली वस्तु को दो वस्तुओं के बीच में लगाकर परस्पर इस तरह जोड़ना कि वे जल्दी अलग न हो सके, कागज पर टिकट चिपकाना, लिपटाना, परस्पर जोड़ना 2. नौकरी लगाना, काम-धंधे से लगाना।

चिपचिप *पुं.* (अनु.) किसी लसदार वस्तु को छूने से होने वाला शब्द या अनुभव।

चिपचिपा *वि.* (देश.) लसदार, जिसे छूने से हाथ चिपकता हुआ जान पड़े, कसीला, चिपकने या चिपकाने वाला।

चिपचिपाहट *स्त्री.* (देश.) चिपचिपाने का भाव, चिपकने की प्रवृत्ति का भाव, लसीलापन।

चिपट *वि.* (देश.) 1. चपटा, सटा हुआ, जिसकी सतह दबी हुई हो, बैठा या धँसा हुआ 2. चिपटी नाक वाला।

चिपटना *अ.क्रि.* (देश.) 1. इस प्रकार जुड़ना कि शीघ्र अलग न हो सके 2. किसी के पीछे पड़कर उसका साथ न छोड़ना।

चिपटा *वि.* (देश.) जो कहीं से उठा हुआ और उभरा हुआ न हो, बराबर फैली सतह वाला।

चिपटाना *स.क्रि.* (देश.) 1. चिपकाना, लिपटाना 2. किसी के साथ लगा देना।

चिपटी *वि.* (देश.) धँसी हुई, जो उठी हुई न हो *स्त्री.* 1. कान में पहने जाने वाली बाली जिसे नेपाली स्त्रियाँ प्राय: पहनती हैं 2. भग, योनि।

चिपड़ा *वि.* (देश.) जिसकी आँख में अधिक चीपड़ रहता हो 2. कीचड़युक्त आँख वाला *पुं.* चीपड़ या कीचड़ वाली आँख-वाला आदमी।

चिपड़ी *स्त्री.* (देश.) गोबर के पाथे हुए चिपटे-कंडे, उपले।

चिपुट *पुं.* (तत्.) चिउड़ा।

चिप्पड़ *पुं.* (देश.) 1. छोटा चिपटा टुकड़ा 2. पपड़ी 3. किसी वस्तु को ऊपर से छील कर निकाला हुआ भाग, पपड़ी या छिलका।

चिप्पिका *स्त्री* (तत्.) 1. वृहत्संहिता के अनुसार एक रात्रिचर (रात में विचरने वाला) जंतु 2. एक चिड़िया का नाम।

चिप्पी *स्त्री.* (देश.) 1. फटे हुए कागज या बर्तन के ऊपर लगाए जाने वाला कागज या उसी धातु का छोटा टुकड़ा 2. छोटा चिप्पड़ 3. उपली 4. वह बटखरा जिससे सीधा तौला जाता है 4. सीधा 5. पच्चर 6. लकड़ी का छोटा टुकड़ा जिसे जोड़ कसने के लिए लगाते हैं।

चिबिल्ला *वि.* (देश.) चिलबिला।

चिबु *पुं.* (तत्.) चिबुक।

चिबुक *पुं.* (तत्.) 1. ठुड्डी, ठोड़ी 2. मुचकुंद का वृक्ष 3. एक वृक्ष विशेष 4. ओठ के नीचे का भाग।

चिमगादड़ *पुं.* (तद्.) चमगादड़।

चिमटना अ.*क्रि.* (देश.) चिपकना, सटना, लिपटना 2. गुंथना 3. प्रगाढ़ आलिंगन करना 4. किसी का साथ पकड़ लेना।

चिमटा *पुं.* (देश.) लोहे अथवा पीतल आदि धातुओं की दो लंबी, लचीली फाड़ियों का बना हुआ एक औजार जिसे उस स्थान की वस्तुओं को पकड़ते और उठाते हैं जहाँ व्यक्ति का हाथ नहीं पहुँचता। यह रोटी सेंकने या अन्य कार्यों में उपयोगी होता है।

चिमटाना *स.क्रि.* (देश.) 1. चिपकाना, सटाना 2. लिपटाना।

चिमटी *स्त्री.* (देश.) 1. छोटा चिमटा 2. सुनारों का एक औजार जिससे तार आदि मोड़ने और महीन तथा सूक्ष्म चीजें उठाने का काम लिया जाता है।

चिमनी *स्त्री.* (अं.) ऊपर उठी हुई शीशे की वह नली जिससे लैंप का धुआँ बाहर निकलता है और प्रकाश फैलाता है 2. किसी मकान, कारखाने या भट्ठी के ऊपर लोहे या ईंटो का बना वह लंबा छेद जिससे धुआँ बाहर निकलता है।

चिमि *पुं.* (तत्.) तोता।

चिमिक *पुं.* (तत्.) चिमि।

चिमोटी *स्त्री.* (देश.) चिमटी।

चिरंजीव *पुं.* (तत्.) बेटा, पुत्र, आत्मज **जैसे-** 'आपके चिरंजीव कैसे हैं *वि.* (तत्.) 1. एक आशीष भरा शब्द, दीर्घायु होने का आशीर्वाद, चिरंजीवी, बहुत दिनों तक जीने वाला अमर 2. दीर्घकालवर्ती।

चिरंटी *स्त्री.* (तत्.) युवती।

चिरंतन *वि.* (तत्.) 1. पुराना, पुरातन, चिरकालीन 2. सदा बना रहने वाला, शाश्वत 3. सदैव मौजूद रहने वाला।

चिर *वि.* (तत्.) 1. चिरायु 2. दीर्घकालवर्ती 3. सभी कालों में मौजूद रहने वाला 4. बहुत दिनों का (चिरकालिक), सदा, सभी समय 5. बहुत दिन 6. हर समय, दीर्घकालीन *क्रि.वि.* बहुत दिन तक, सदैव वर्तमान पुं. एक औषधि।

चिरई *स्त्री.* (देश.) 1. चिडिया, पंछी, पक्षी।

चिरकढाँस *स्त्री.* (देश.) एक-न-एक रोग का नित्य बना रहना, कभी कुछ रोग, कभी कुछ 2. सदा बनी रहने वाली रुग्णता 3. नित्य का झगड़ा।

चिरकना *अ.क्रि.* (देश.) थोड़ा-थोड़ा मल निकलना।

चिरकाल *पुं.* (तत्.) दीर्घकाल, सदा, सब समय, बहुत समय।

चिरकीन *पुं.* (फा.) उर्दू भाषा के एक वीभत्स रस के कवि।

चिरकुट *पुं.* (देश.) फटा-पुराना कपड़ा, चिथड़ा (चीथड़ा)।

चिरचना *पुं.* (देश.) चिड़चिड़ाना।

चिरचिटा *पुं.* (तत्.) 1. चिचड़ा; अपमार्ग, एक प्रकार की घास का पौधा जो डेढ़-दो फीट का होता है और इसे पशु खाते हैं 2. एक प्रकार का पौधा जिसे पशु नहीं खाते और उस पर छोटे-छोटे

काँटो वाला फल लगता है जो भेड़ों की ऊन के शरीर तथा अन्य सभी पास से निकलने वालों से चिपट जाता है साथ ही सहज ही नहीं छुटता, कांटे चुभने वाले होते हैं, चिरचिटा दो प्रकार के होते हैं।

चिरचिरा *वि.* (देश.) चिड़चिड़ा।

चिरचिराहट *स्त्री.* (देश.) चिडचिड़ाहट।

चिरजीवी *वि.* (तत्.) 1. बहुत दिनों तक जीने वाला, दीर्घजीवी 2. अमर *पुं.* 1. विष्णु 2. कौवा 3. जीवक वृक्ष 4. सेमर का पेड़ 5. मार्कंडेय ऋषि 6. अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम सभी चिरजीवी और अमर माने जाते है।

चिरत *पुं.* (तद्.) चरित।

चिरता *अ.क्रि.* (देश.) 1. फटना 2. सीध में काटना 3. लकीर के रूप में घाव होना, सीधा क्षत होना *पुं.* (तद्.) चीरने का औज़ार, सोनारों का एक औज़ार 3. कुम्हारों का वह धारदार लोहा जिससे वे नरिया चीरते हैं *स्त्री.* अमरता।

चिरनिद्रा *स्त्री.* (तत्.) मृत्यु, मौत।

चिरपरिचित *वि.* (तत्.) 1. सदा से जान-पहचान वाला 2. पुराना परिचित।

चिरप्रवृत्त *वि.* (तत्.) 1. दीर्घ काल से किसी कार्य में लगा हुआ 2. बहुत दिनों तक टिकने या कार्य में लगा होने वाला।

चिरबत्ती *वि.* (तद्.) चिथड़ा-चिथड़ा, टुकड़ा-टुकड़ा; पुरजा-पुरजा।

चिरम *स्त्री.* (तद्.) 1. गुंजा 2. घुंघुची।

चिरमिटी *स्त्री.* (देश.) **दे.** चिरम।

चिरमी *स्त्री.* (तत्.) **दे.** 'चिरम'।

चिरवल *पुं.* (तद्.) बंगाल और उड़ीसा से लेकर मद्रास तथा सिंहल तक होने वाला एक पौधा जिसकी जड़ और छाल से लाल रंग प्राप्त किया जाता है।

चिरवाई *स्त्री.* (देश.) 1. चिरवाने का भाव या कार्य 2. चिरवाने की मजदूरी 3. पानी बरसने पर खेतों को पहले-पहल जोता जाना।

चिरस्थायी *वि.* (तत्.) बहुत दिनों तक रहने वाला।

चिरस्नेह *पुं.* (तत्.) बहुत समय से मिलने वाला प्यार।

चिरस्मरणीय *वि.* (तत्.) 1. बहुत दिनों तक याद रखने योग्य 2. पूजनीय 3. आदरणीय 4. प्रशंसनीय।

चिरहँटा *पुं.* (देश.) 1. बहेलिया, चिड़ीमार 2. व्याध।

चिरांद *पुं.* (देश.) माँस चर्बी आदि किसी वस्तु के भुनने या जलने की गंध **मुहा.** चिरांद फैलाना- बदनामी करना।

चिरांदा *वि.* (देश.) 1. चिड़चिड़ा 2. छोटी और थोड़ी-सी बात पर बिगड़ने वाला।

चिराई *स्त्री.* (देश.) 1. चीरने का भाव या क्रिया 2. चीरने की मजदूरी।

चिराग *पुं.* (फा.) दीया, दीपक **मुहा.** 1. चिराग गुल करना- दीया बुझाना; चिराग गुल होना- दीपक बुझ जाना; चिराग बढ़ाना- रोशनी बुझाना; चिराग बत्ती करना- दीया जलाना; चिराग दिखाना-रोशनी दिखाना-या पास लाना; चिराग से चिराग जलना- एक दूसरे से लाभान्वित होना।

चिरागी *स्त्री.* (अर.) 1. चिराग जलाने का खर्च 2. वह भेंट जो किसी मजार पर चढ़ाई जाए 3. किसी स्थान पर दीया बाती करते रहने की मजदूरी।

चिराटिका *स्त्री.* (तत्.) 1. चिरायता 2. सफेद पुनर्नवा।

चिराद *पुं.* (तत्.) बतख की जाति की एक बड़ी चिड़िया।

चिराना *स.क्रि.* (देश.) चीरने का काम कराना, फड़वाना।

चिरायता *पुं.* (तत्.) दो-ढाई हाथ (तीन फीट) ऊँचा एक पौधा जो हिमालय के किनारे के कम ठंडे

स्थानों में पाया जाता है और ज्वर आदि रोगों में औषध के काम आता है।

चिरायु *वि.* (तत्.) 1. बड़ी और दीर्घ उम्रवाला 2. चिरजीवी, चिरंजीवी 3. दीर्घायु 4. बहुत लंबी उम्र तक जीवित रहने वाला।

चिरारी *स्त्री.* (तद्.) चिरौंठी।

चिराव *पुं.* (देश.) 1. चीरने का भाव या क्रिया 2. चिरने से या चीरने से होने वाला घाव।

चिरि *पुं.* (तद्.) तोता।

चिरिका *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार का पुराना अस्त्र।

चिरिया *स्त्री.* (तद्.) **दे.** चिड़िया।

चिरिहार *पुं.* (देश.) 1. बहेलिया, चिड़िया फँसाने वाला व्यक्ति 2. चिड़ीमार 3. चिड़िया चोर।

चिरू *पुं.* (तत्.) 1. कंधे और बाँह का मोड़ 2. मोढ़ा।

चिरैया *स्त्री.* (देश.) **दे.** चिड़िया।

चिरौंजी *स्त्री.* (तद्.) पियार या पियाल वृक्ष के फलों के बीजों की गिरी (यह खाने में बहुत स्वादिष्ट होती है)।

चिरौटा *पुं.* (देश.) 1. चिड़ा 2. नर गौरा पक्षी 3. चिड़िया का छोटा बच्चा।

चिरौरी *स्त्री.* (देश.) प्रार्थना, विनती, खुशामद, अनुनय।

चिर्क *पुं.* (फा.) गंदगी, मैल, मल, मवाद।

चिर्भटी *स्त्री.* (तत्.) ककड़ी।

चिलक *स्त्री.* (देश.) 1. आभा 2. कांति, चमक द्युति।

चिलकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. रह-रह कर चमकना 2. दर्द का रह-रह कर होना या उठना 3. एक बार पीड़ा होकर बंद हो जाना।

चिलका *पुं.* (देश.) 1. चमकता हुआ चाँदी का सिक्का 2. घने बादलों के बीच से यकायक निकली हुई धूप की चमक।

चिलकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. चमकाना, झलक दिखाना 2. उज्ज्वल करना, चमका देना (किसी वस्तु को इतना रगड़कर मांजना कि वह चमक उठे)।

चिलगोजा *पुं.* (फा.) 1. एक प्रकार की मेवा 2. चीड़ या सनोवर का फल।

चिलचिल *पुं.* (देश.) 1. अबरक, अभ्रक 2. भोंडल।

चिलचिलाना *पुं.* (देश.) तेज चमकना, कड़ी धूप, चमकना।

चिलड़ा *पुं.* (देश.) एक पकवान, चीला।

चिलता *पुं.* (फा.) एक प्रकार का कवच।

चिलबिल *पुं.* (तत्.) मजबूत लकड़ी वाला एक बड़ा जंगली पेड़ जिसकी लकड़ी खेती के औजार बनाने के काम आती है 2. इमली की पत्तियों से मिलती-जुलती पत्तियों वाला एक बड़ा पौधा।

चिलबिला *वि.* (तद्.) चिबिल्ला, चंचल, चपल, नटखट, शोख।

चिलम *स्त्री.* (फा.) कटोरे या कटोरी के आकार का लंबी पतली पोली नली के आधार वाला मिट्टी का बर्तन जिसे हुक्के के नहचे के ऊपर जमाकर उसमें तंबाकू तथा आग रखकर धूम्रपान किया जाता है 2. यह हाथ से भी पिया जाता है **मुहा-** चिलम चढ़ाना- चिल्लम में तंबाकू तथा अंगार भरकर पीने के लिए तैयार करना।

चिलमचट *पुं.* (फा.) 1. बहुत अधिक चिलम पीने वाला व्यक्ति 2. चिलम को इस प्रकार खींचकर पीने वाला आदमी कि भरी चिलम दूसरे के धूम्रपान के योग्य न रहे।

चिलमची *स्त्री.* (फा.) देग के आकार का फैले किनारों वाला एक बर्तन।

चिलमन *स्त्री.* (फा.) 1. चिक, बाँस की फट्टियों का एक पर्दा 2. परदा। (चिलवन)।

चिलहुल *पुं.* (तद्.) एक प्रकार की मछली जो पंजाब, सिंध, उत्तर प्रदेश और बंगाल में पाई जाती है।

चिलुआ *स्त्री.* (देश.) चेल्हा (मछली)।

चिल्ल *पुं.* (तत्.) 1. चील 2. दुखती हुई आँख।

चिल्लका *पुं.* (तत्.) झींगुर।

चिल्लड़ *पुं.* (तद्.) जूं की तरह का एक बहुत छोटा सफेद रंग का कीड़ा जो मैले कपड़ों में पड़ जाता है *स्त्री.* (देश.) प्रताड़ना, चिल्लाहट, डाँट फटकार।

चिल्लपों *स्त्री.* (देश.) शोर, चिल्लाना।

चिल्लवाँस *स्त्री.* (देश.) बच्चों के जमुवा रोग में होने वाली चिल्लाने की स्थिति, चिल्लाहट, चीख।

चिल्लवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. चिल्लाने में प्रवृत्त करना 2. दूसरे से चिल्लाने का काम कराना।

चिल्ला *पुं.* (फा.) 1. चालीस दिनों का समय 2. चालीस दिन का व्रत *पुं.* (देश.) 1. एक जंगली पेड़ 2. उड़द, मूँग आदि की रोटी, चीला, उलटा 3. धनुष की प्रत्यंचा 4. पगड़ी का छोर जिसमें कलाबत्तू का काम रहता है।

चिल्लाना *अ. क्रि.* (देश.) 1. शोर मचाना 2. जोर से बोलना, हल्ला करना।

चिल्लाभ *पुं.* (तत्.) 1. छोटी-छोटी चोरियाँ करने वाला व्यक्ति, जेब काटने वाला या गिरहकट आदमी।

चिल्लाहट *स्त्री.* (देश.) चिल्लाने का भाव, हल्ला, शोरगुल्ल।

चिल्लिका *स्त्री.* (तत्.) 1. दोनो भौंहों के बीच का स्थान 2. एक प्रकार का बथुआ साग जिसकी पत्तियाँ बहुत छोटी होती हैं 3. झिल्ली नाम का कीड़ा, झींगुर 4. वज्र 5. बिजली।

चिल्ली *स्त्री.* (तत्.) 1. झिल्ली नाम का कीड़ा 2. एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी छाल गहरे खाकी रंग की होती है और जिस पर सफेद चित्तियाँ होती हैं।

चिल्होर *स्त्री.* (देश.) चील नामक पक्षी।

चिविट *पुं.* (तत्.) चिवड़ा, चिउड़ा, चिउरा।

चिविल्लिका *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की झाड़ी।

चिवी *स्त्री.* (तत्.) चिबुक, ठोड़ी, ठुड्डी।

चिष्टिक *पुं.* (तत्.) **दे.** चिपीटक।

चिहुँकना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. चिकोटी काटना 2. चमोटना।

चिहुँटी *स्त्री.* (देश.) चुटकी, चिकोटी।

चिहुटनी *स्त्री.* (देश.) चौंटनी, गुंजा, घुंघुची, चिरमिटी।

चिहुर *पुं.* (तद्.) केश, सिर के बाल।

चिहुरार *पुं.* (तद्.) केशभार, चिकुरभार।

चिह्न *पुं.* (तत्.) 1. निशान, वह लक्षण जिससे कोई वस्तु पहचानी जा सके 2. पताका, झंडी 3. किसी प्रकार का दाग, छाप या धब्बा 4. रेखा 5. पद आदि का सूचक निशान 6. लक्ष्य 7. स्मृति या याद दिखाने वाली वस्तु।

चिह्नित *वि.* (तत्.) 1. चिह्न लगाया हुआ 2. निशान लगाया हुआ 3. चिह्न युक्त।

चींचपड़ *स्त्री.* (देश.) किसी बड़े या सबल के सामने किए जाने वाला प्रतिकार या विरोध का स्वर या शब्द।

चींची *स्त्री.* (अनु.) 1. पक्षियों के छोटे बच्चों का अत्यंत मंद और महीन शब्द 2. पक्षियों का मंद और आकर्षक स्वर में बोलना या उनका महीन स्वर 3. मंद-मंद शोर **मुहा.** चीं बोलना- अक्षमता या अयोग्यता स्वीकार करना।

चींटवा *पुं.* (देश.) चीटा *स्त्री.* चींटी (चिउंटी, चीउँटी)।

चींतना *अ.क्रि.* (देश.) चीतना 1. चिंता करना 2. चेतना, जागरुक होना, सजग होना।

चीक *स्त्री.* (तद्.) 1. चिल्लाहट 2. पीड़ा अथवा कष्ट आदि के कारण बहुत जोर से चिल्लाने का शब्द *पुं.* कसाई, कीचड़।

चीकट *पुं.* (देश.) 1. तेल के मैल से युक्त चिकनापन 2. तलछट 3. लसार मिट्टी।

चीकना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. पीड़ा या कष्ट के कारण जोर से चिल्लाना 2. बहुत जोर से बोलना।

चीकर *पुं.* (देश.) कुएँ के ऊपर बना हुआ स्थान।

चीख *स्त्री.* (तद्.) चीत्कार, चिल्लहाट।

चीखना *स.क्रि.* (तद्.) चिल्लाना, किसी वस्तु का स्वाद जानने के लिए उसे थोड़ा चखना, स्वाद लेना, थोड़ी मात्रा में खाना *पुं.* (तद्.) भोजन में स्वाद लाने के लिए थोड़ी मात्रा में खाया जाने वाला पदार्थ **जैसे-** चटनी, तरकारी आदि।

चीखर, चीखल *पुं.* (देश.) 1. कीच, कीचड़ 2. गारा

चीखुर *पुं.* (देश.) गिलहरी।

चीज *स्त्री.* (फा.) 1. वास्तविक, काल्पनिक अथवा संभावित पर दूसरों से पृथक् सत्ता वाली वस्तु, पदार्थ, द्रव्य 2. आभूषण 3. गाने की चीज, राग, गीत 4. कोई विलक्षण वस्तु, विलक्षण जीव 5. महत्व की वस्तु 6. गिनती करने योग्य वस्तु **उदा.** 1. कोई अच्छी चीज सुनाओ 2. वाह जी बढ़िया चीज है यह।

चीड़ *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार का देशी लोहा 2. एक वृक्ष 3. उस वृक्ष की लकड़ी 4. जूते के लिए चमड़ा साफ करने की क्रिया।

चीढ़ *पुं.* (देश.) एक प्रकार का बहुत ऊँचा पेड़ जो भूटान से काश्मीर और अफगानिस्तान में बहुतायत में पाया जाता है या होता है 2. 'चीढ़' नाम का देशी लोहा **विशे.** चीढ़ के पेड़ के गोंद से गंधा बिरोजा और तारपीन का तेल निकलता है।

चीतल *पुं.* (तद्.) सफेद रंग की चित्तियों से युक्त शरीर वाला एक प्रकार का हिरन 2. एक प्रकार का अजगर-सा चित्तीदार सर्प/साँप 3. एक प्रकार का सिक्का।

चीता *पुं.* (तद्.) 1. बिल्ली की जाति का एक प्रकार का बड़ा हिंसक पशु 2. एक प्रकार का बहुत बड़ा क्षुप जिसकी पत्तियाँ जामुन की पत्तियों से मिलती जुलती होती हैं तथा इसकी छाल औषधि के काम में आती है 3. चित्त, चेतना, होश।

चीतार *पुं.* (तद्.) 1. चितेरा 2. चित्र बनाने वाला व्यक्ति।

चीत्कार *पुं.* (तत्.) हल्ला, चीख-पुकार, चिल्लाहट, शोर।

चीथड़ा *पुं.* (देश.) फटे-पुराने कपडे का छोटा रद्दी टुकड़ा **मुहा.** चीथड़ा लपेटना- रद्दी कपड़ा पहनना; चीथड़े लगाना- दरिद्र होना।

चीथना *स.क्रि.* (तद्.) फाड़ना, टुकड़े-टुकडे करना, क्षत-विक्षत कर देना।

चीदा *वि.* (फा.) चुना हुआ, अच्छा, बढ़िया।

चीन *पुं.* (तत्.) 1. दक्षिण पूर्व एशिया का प्रसिद्ध महा देश **टि.** यहाँ के अधिकांश निवासी प्राय: बौद्ध हैं। चीन के निवासी अपनी भाषा में अपने देश को 'चंगक्यूह' कहते हैं, कदाचित इसीलिए भारत तथा फारस के प्राचीन निवासियों ने इस देश का नाम अपने यहाँ 'चीन' रख लिया था, चीन का उल्लेख महाभारत, मनुस्मृति, आदि ग्रंथों में बराबर मिलता है 2. झँडी, पताका 3. सीसा नामक धातु 4. तागा, सूत 5. रेशमी कपड़ा 6. एक प्रकार का हिरन 7. एक प्रकार की ईख 8. एक तरह का सावाँ *पुं.* चिह्न।

चीनक *पुं.* (तत्.) 1. चेना नामक अन्न 2. कंगनी, अन्न 3. चीनी कपूर।

चीनांशुक *पुं.* (तत्.) 1. चीन में बनने या चीन से आने वाला रेशमी कपड़ा 2. रेशमी वस्त्र।

चीना *पुं.* (तत्.) 1. चीन देशवासी 2. एक तरह का सावाँ 3. एक प्रकार का सफेद कबूतर *वि.* चीन देश का।

चीनाक *पुं.* (तत्.) चीनी कपूर।

चीनिया *वि.* (देश.) चीनी, चीन देश का।

चीनी *स्त्री.* (देश.) ईख, खजूर आदि के रस से बना हुआ सफेद दानेदार चूर्ण जो गुड़-खाँड की जगह काम में लाया जाता है।

चीनी मिट्टी *स्त्री.* (देश.) पकाई हुई सफेद मिट्टी जिसके बर्तन, खिलौने बनते हैं **विशे.** यह मिट्टी पहले पहल चीन के किंग चिन नामक पहाड़ से निकली थी और अब अन्य देशों में भी कहीं-कहीं पाई जाती है।

चीन्हना *स.क्रि.* (तद्.) पहचानना।

चीप *स्त्री.* (देश.) 1. एक बार कुदाल चलाने से निकलने वाला मिट्टी का खंड 2. चार अंगुल की एक लकड़ी जो जूते के कलबूत में पीछे भरी जाती है *पुं.* (तत्.) वृक्ष, पेड़ *वि.* (अं.) सस्ता, कम दाम का।

चीपड़ *पुं.* (देश.) आँख का कीचड़।

चीफ *पुं.* (अं.) बडा सरदार या राजा, मुखिया, जाति या कबीले का नेता या सरदार *वि.* (तत्.) प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य, बड़ा।

चीफ कमिश्नर *पुं.* (अं.) 1. एक प्रमुख अधिकारी 2. छोटे प्रदेश का प्रधान अधिकारी।

चीफ कोर्ट *पुं.* (अं.) ब्रिटिश व्यवस्था के अनुसार किसी छोटे प्रांत का प्रधान न्यायालय।

चीफ जस्टिस *पुं.* (अं.) कोर्ट का प्रधान जज।

चीफ मिनिस्टर *पुं.* (अं.) मुख्य मंत्री, राज्य विधान सभा के बहुमत दल का नेता।

चीमड़ *वि.* (देश.) 1. जो जल्दी फटे या टूटे नहीं 2. जल्दी पीछा न छोड़ने वाला व्यक्ति *पुं.* (फा.) 1. अमल्तास की जाति का छोटा पौधा 2. एक पौधा जिसके बीज दवा के काम आते है।

चीमर *पुं.* (देश.) **दे.** चीमड़।

चीर *पुं.* (तत्.) 1. वस्त्र, कपड़ा 2. वृक्ष की छाल 3. पुराने कपड़े का टुकड़ा, चिथड़ा, लत्ता 4. गौ का थन 5. चार लड़ियों वाली मोतियों की माला 6. बौद्ध भिक्षुओं के पहनने का वस्त्र 7. एक पक्षी 8. धूप का पेड़ 9. छप्पर का मँगरा 10. सीसा नामक धातु *स्त्री.* 1. चीरने का भाव या क्रिया 2. फटने की क्रिया या भाव 3. कुश्ती का एक पेंच।

चीरक *पुं.* (तत्.) लिखित प्रमाण का एक भेद, विकृत लेख।

चीर चोर *पुं.* (तत्.) चीर हरण करने वाले श्री कृष्ण।

चीरना *स.क्रि.* (तद्.) कागज, कपड़े, लकड़ी आदि को फाड़ना, टुकड़े करना, विभक्त, विदीर्ण करना **प्रयो.** वह आरी से लकड़ी चीरने में दक्ष है।

चीर फाड़ *स्त्री.* (देश.) 1. चीरने-फाड़ने का काम, चीरने फाड़ने का भाव।

चीरवासा *पुं.* (तत्.) 1. शिव, महादेव 2. यक्ष *वि.* (तत्.) 1. छाल या वल्कल पहनने वाला 2. चिथड़े पहनने वाला।

चीरहरण *पुं.* (तत्.) श्री कृष्ण की लीला जिसमें वे गोपियों का वस्त्र लेकर उस समय वृक्ष पर चढ़ गए थे जब वे यमुना में स्नान कर रही थीं।

चीरा *पुं.* (तद्.) 1. चीरने का घाव 2. पगड़ी बनाने के काम आने वाला, लहरियादार कपड़ा 3. गाँव की सीमा पर गड़ा हुआ पत्थर या खंभा आदि **मुहा.** चीरा उतारना- कौमार्य नष्ट करना।

चीराबंदी *स्त्री.* (देश.) ताश के कपड़े पर पगडी बनाने के लिए की जाने वाली बनावट।

चीरि *स्त्री.* (तत्.) आँख पर बाँधने की पट्टी।

चीरिका *स्त्री.* (तत्.) झिंगुर, झिल्ली।

चीरिणी *स्त्री.* (तत्.) बद्रीनाथ के निकट की एक प्राचीन नदी का नाम **विशे.** इसके पास वैवस्वत मनु ने तपस्या की थी, इसका नाम महाभारत में आया है।

चीरी वाक् *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का कीड़ा।

चीर्ण *वि.* (तत्.) फटा हुआ, चीरा हुआ।

चील *स्त्री.* (तद्.) गिद्ध और बाज जाति की परंतु उनसे कुछ दुर्बल एक प्रसिद्ध चिड़िया।

चीलड़ *पुं.* (देश.) चीलर, पहने जाने वाले गंदे कपड़ों अथवा कुछ पशुओं के शरीर में पड़ने वाला एक प्रकार का कीड़ा।

चीला *पुं.* (देश.) चिलड़ा या चिल्ला।

चीलिका *स्त्री.* (तत्.) झिल्ली, झींगुर।

चीवर *पुं.* (तत्.) 1. साधु-संन्यासियों का पहनावा 2. बौद्ध भिक्षुओं का ऊपरी पहनावा, कंथा।

चीवरी *पुं.* (तत्.) 1. बौद्ध भिक्षुक 2. भिखमंगा।

चीस *स्त्री.* (देश.) 1. किलकारी, चिटकार, चिचियाहट 2. टीस, दर्द।

चीसना *अ.क्रि.* (देश.) **दे.** चीखना।

चुंगल *पुं.* (देश.) पशु-पक्षियों, विशेष कर शिकारी चिड़ियों, जानवरों का पंजा, चुंगल, बुकटा, पकड़ **मुहा.** चुंगल में फँसना- वश में आना/काबू में होना।

चुंगी स्त्री. (देश.) 1. चुंगल-भर वस्तु, चुटकी-भर चीज 2. अनाज आदि बेचने वालों से सीमा शुल्क के रूप में लिया जाने वाला महसूल।

चुंघाना *स.क्रि.* (देश.) चुसाना, चुसाकर पिलाना।

चुंचुरी *स्त्री.* (तत्.) पासे के बदले इमली के बीजों से खेला जाने वाला जुआ।

चुंचुल *पुं.* (तत्.) विश्वामित्र के पुत्र का नाम जो संगीत का बहुत बड़ा पंडित था।

चुंटा *स्त्री.* (तद्.) **दे.** चुंडा।

चुंडा *पुं.* (तत्.) छोटा कुआँ, कूप।

चुंदी *स्त्री.* (तत्.) 1. कुटनी, दूती 2. चुटिया।

चुंधा *वि.* (देश.) 1. छोटी आँखो वाला 2. जिसकी दृष्टि क्षीण हो।

चुंधियाना *अ.क्रि.* (देश.) चौधना, 'चुंधलाना' चौंधियाना।

चुंबक *पुं.* (तत्.) 1. चुंबन करने वाला 2. कामुक, कामी 3. धूर्त मनुष्य 4. ग्रंथों को केवल इधर-उधर उलटने वाला, विषय को अच्छी तरह न समझने वाला 5. घडे के मुँह पर लगाया जाने वाला फंदा, फाँस 6. एक प्रकार का पत्थर या धातु जिसमें लोहे को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति होती है।

चुंबकीय *वि.* (तत्.) 1. चुंबक संबंधी 2. जिसमें चुंबक का गुण हो।

चुंबन *पुं.* (तत्.) चूमने की क्रिया, बोसा, छूना, स्पर्श।

चुंबा *स्त्री.* (तत्.) **दे.** चुंबन।

चुंबित *वि.* (तत्.) 1. चूमा हुआ 2. प्यार किया हुआ 3. स्पर्श किया हुआ, छुपा हुआ।

चुंबी *वि.* (तत्.) 1. चुंबन करने वाला, छूने वाला **विशे.** यौगिक शब्द बनाने में इसका प्रयोग अधिक होता है **जैसे-** गगन-चुंबी।

चुँदरी *स्त्री.* (देश.) चुनरी।

चुँधलाना *अ.क्रि.* (देश.) चौधना, चकाचौंध होना, आँखों का तिलमिलाना।

चुआई *स्त्री.* (देश.) 1. चुआने का काम 2. चुआने की मजदूरी।

चुआन *स्त्री.* (देश.) नहर, सोता, जल आने का स्थान, खाई।

चुआना *स.क्रि.* (देश.) 1. टपकाना, बूँद-बूँद गिराना 2. चुपड़ना चिकना करना, रसमय करना, रसीला बनाना 3. भभके से अर्क खींचना।

चुआव *स्त्री.* (देश.) चुआने की क्रिया या भाव।

चुकंदर *पुं.* (फा.) गाजर या शलजम की शक्ल का लाल रंग का मूल जो साग-भाजी के रूप में खाया जाता है और जिसके रस से चीनी भी बनती है।

चुक *पुं.* (देश.) **दे.** 'चूक'।

चुकचुकाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. रिसकर बाहर आना 2. पसीजना, आर्द्र होना 3. बिलकुल चुक जाना, समाप्त होना **प्रयो.** सब कुछ चुकचुकाने पर तुम आए हो।

चुकटा *स्त्री.* (देश.) चंगुल, चुटकी, चुटकी-भर वस्तु।

चुकता *वि.* (देश.) जो चुका दिया गया हो, अदा, बेबाक। प्रयो. हम शीघ्र ही तुम्हारा सब रुपया चुकता कर देंगे।

चुकना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. समाप्त होना, बाकी न रहना, निपटना, नि:शेष होना 2. बेबाक होना, अदा होना **प्रयो.** उनका सब ऋण चुक गया 3. चूकना, भूल करना, त्रुटि करना, अवसर के अनुसार कार्य न करना 4. खाली जाना, निष्फल होना, व्यर्थ होना *वि.* चुकने वाला, अवसर खोने वाला, भूलने वाला।

चुकवाना *स.क्रि.* (तद्.) अदा करना, बेबाक करना।

चुकाई *स्त्री.* (तद्.) चुकता होने का भाव।

चुकाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. बेबाक करना, अदा करना, परिशोध करना **प्रयो.** उसे बैंक का ऋण

अवश्य चुकाना चाहिए 2. निबटाना, तय करना, ठहराना।

चुकावरा *पुं.* (देश.) कर्ज चुका देने की क्रिया या भाव।

चुकिया *स्त्री.* (देश.) कुल्हिया, छोटा पुरवा।

चुकौता *पुं.* (देश.) ऋण का परिशोध, कर्ज की सफाई।

चुक्कड़ *पुं.* (देश.) पानी या शराब पीने का मिट्टी का गोल-सा पात्र, पुरवा, कुल्हड़।

चुक्कार *पुं.* (तत्.) सिंहनाद, गरज, गर्जन।

चुक्र *पुं.* (तत्.) काँजी, खटटा साग।

चुक्रक *पुं.* (तत्.) चूका का साग।

चुक्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. अमलोनी का साग 2. इमली।

चुक्रिका *स्त्री.* (तत्.) 1. अमलोनी का साग, नोनिया 2. इमली।

चुक्रिमा *स्त्री.* (तत्.) खट्टापन, खटास।

चुक्षा *स्त्री.* (तत्.) 1. हिंसा, वध 2. क्षालन, प्रक्षालन।

चुखाना *स.क्रि.* (तद्.) दुहते समय गाय के थन से दूध उतारने के लिए पहले उसके बछड़े को पिलाना 2. चखाना।

चुग़द *पुं.* (फा.) 1. उल्लू पक्षी 2. मूर्ख व्यक्ति, बेवकूफ आदमी।

चुग़ना *स.क्रि.* (देश.) चिड़ियों का चोंच से दाना उठाकर खाना, चोंच से दाना बीनना *पुं.* (तत्.) चिड़ियों का आहार चुग्गा।

चुग़ल *पुं.* (फा.) 1. परोक्ष में दूसरे की निंदा करने वाला 2. पीठ पीछे निंदा बुराई करने वाला, मुखबिर 3. चिलम की गिट्टी, वह कंकड जिसे चिलम के छेद में रख कर तंबाकू भरते हैं।

चुग़ल खोर *पुं.* (फा.) पीठ पीछे निंदा, बुराई करने वाला, चुग़ली खाने वाला।

चुग़ल खोरी *स्त्री.* (फा.) चुग़ली खाने का काम, निंदा करने की क्रिया या भाव।

चुग़ला *पुं.* (तत्.) **दे.** चुगलखोर।

चुग़ली *स्त्री.* (फा.) पीठ पीछे की शिकायत **मुहा.** चुगली खाना- पीठ पीछे निंदा करना।

चुगाना *स.क्रि.* (देश.) चिड़ियों को दाना खिलाना।

चुगुल *पुं.* (फा.) **दे.** चुग़ल।

चुगुलखोर *पुं.* (फा.) चुगल खोर।

चुगुलखोरी *स्त्री.* (फा.) चुगलखोरी।

चुग्गा *पुं.* (देश.) चिड़ियों का चारा।

चुचकारना *स.क्रि.* (अनु.) 1. चुमकारना, पुचकारना, दुलारना।

चुचकारी *स्त्री.* (देश.) चुचकारने की क्रिया या भाव।

चुचाना *अ.क्रि.* (देश.) चूना, रिसना, टपकना, बूँद-बूँद करके निकलना।

चुचि *स्त्री.* (तद्.) 1. स्तन, चूँची 2. थन।

चुचुआना *अ.क्रि.* (तद्.) **दे.** चुचाना।

चुचुक *पुं.* (तत्.) 1. कुचाग्र भाग, स्तन के सिरे पर का भाग, जो गोल घुंडी के रूप में होता है, ढिपनी।

चुचुकना *अ.क्रि.* (तद्.) सूखकर सिकुड़ जाना, नीरस होकर संकुचित हो जाना।

चुच्चु *पुं.* (तत्.) पालक की जाति का एक साग।

चुटक *पुं.* (देश.) एक तरह का गलीचा *पुं.* कोड़ा, चाबुक।

चुटकना *स.क्रि.* (देश.) 1. कोड़ा मारना, चाबुक मारना 2. चुटकी से दबाना।

चुटकला *पुं.* (देश.) **दे.** चुटकुला।

चुटकी *स्त्री.* (देश.) 1. किसी चीज को पकड़ने, उठाने आदि के लिए अँगूठे और तर्जनी या बीच की उँगली को परस्पर सटाना 2. अँगूठे और मध्यमा और तर्जनी के योग से ध्वनि पैदा करना **विशे.** चुटकी प्राय: संकेत करने, किसी का ध्यान आकर्षित करने, किसी को बुलाने, जगाने अथवा

ताल देने आदि के लिए बजाई जाती है, हिंदुओं में यह प्रथा है कि जब किसी को जँभाई आती है, तब पास के लोग चुटकियाँ बजाते है **मुहा.** चुटकी बजाना- शब्द निकालना; चुटकियों पर उड़ाना- कुछ न समझना/परवाह न करना 3. भीख/थोड़ा **प्रयो.** साधु को चुटकी भर आटा दे दो **मुहा.** चुटकी माँगना- भिक्षा माँगना 4. चुटकी बजने का शब्द 5. अँगूठे और तर्जनी के संयोग से किसी प्राणी के चमडे को दबाने या पीडित करने की क्रिया **मुहा.** चुटकी भरना- चुटकी काटना; चुटकी लगाना- चुटकी से पकड़ना; चुटकी लेना- हँसी उड़ाना, उपहास करना 6. बंदूक का घोड़ा 7. कटावदार गुलबदन या मशरू 8. पैर की उँगलियों में पहनने का चाँदी का एक गहना 9. कपड़ा छापने की रीति 10. कागज, नलिका आदि को पकड़ने का आला, क्लिप 11. पेचकस 12. दरी के ताने का सूत।

चुटकुला *पुं.* (देश.) 1. विलक्षण बात, लतीफा, विनोदपूर्ण उक्ति **मुहा.** चुटकुला छोड़ना- दिल्लगी की बात कहना **प्रयो.** हरियाणवी व्यक्ति चुटकुले सुनाने में निपुण होते हैं 2. छोटा-सा, सस्ता और गुणकारक दवाई का नुसखा।

चुटला *पुं.* (देश.) 1. चोटी पर पहना जाने वाला एक गहना, स्त्रियों की वेणी, चुटीला।

चुटिया *स्त्री.* (देश.) सिर के बीचों-बीच छोड़ रखे हुए लंबे बाल, चोटी, शिखा, चुंदी।

चुटियाना *स.क्रि.* (देश.) 1. चोट पहुँचाना, घायल करना 2. काटना, डसना।

चुटीलना *स.क्रि.* (देश.) चोट पहुँचाना।

चुटीला *वि.* (देश.) 1. चोट खाया हुआ, जिसे चोट लगी हो, घायल 2. लगने वाला **प्रयो.** उसका एक-एक शब्द चुटीला था 3. चोट करने वाला *पुं.* (तद्.) छोटी चोटी, अगल बगल की छोटी पतली चोटी *वि.* (तद्.) भड़कदार, सबसे बढिया।

चुड़िहारा *पुं.* (देश.) चूड़ी बनाने वाला या बेचने वाला, पहनाने वाला।

चुडुक्का *पुं.* (देश.) लाल की तरह की एक छोटी चिड़िया।

चुड़ैल *स्त्री.* (तद्.) 1. भूत की स्त्री, भूतनी, डायन 2. कुरूप स्त्री, पिशाचिनी 3. क्रूर स्वभाव वाली स्त्री।

चुत्था *पुं.* (देश.) वह बटेर जिसे दूसरे बटेर ने घायल किया हो।

चुदक्कड़ *पुं.* (देश.) अत्यंत कामी।

चुदना *पुं.* (देश.) पुरुष द्वारा संभोग किया जाना, पुरुष से संयुक्त होना।

चुदवाई *स्त्री.* (देश.) संभोग करने या कराने के बदले मिलने वाला धन।

चुदवास *स्त्री.* (देश.) मैथुन कराने की कामना।

चुदाई *स्त्री.* (देश.) मैथुन, स्त्री के साथ संभोग प्रसंग।

चुदाना *अ.क्रि.* (देश.) मैथुन कराना।

चुन *पुं.* (तद्.) 1. आटा, पिसान 2. चूर्ण, रेत।

चुनचुना *वि.* (देश.) 1. लगने वाला, चिड़चिड़ा, चिढ़ने वाला *पुं.* मलाशय में पैदा होने वाला सफेद सूत जैसा कीड़ा, चुन्ना।

चुनचुनाना *अ.क्रि.* (अनु.) जलन के सथ खुजली पैदा होना, चुभना।

चुनट *स्त्री.* (देश.) सिलवट, कपड़े, कागज आदि में दाब के कारण पड़ने वाली सिकुड़न।

चुनना *स.क्रि.* (तद्.) 1. छोटी वस्तुओं को एक-एक करके बीनना या उठाना 2. बहुतों से छाँट-छाँट कर अलग करना **प्रयो.** वह अनाज में से कंकड़ चुनकर अलग रख रहा है 3. इच्छानुसार संग्रह करना, बहुतों में से कुछ को पसंद करके रख लेना **प्रयो.** इस संकलन में अच्छी कविताएँ चुनकर रखी गई हैं 4. सजाकर रखना, क्रम से स्थापित करना 5. तह पर तह लगाना **मुहा.** दीवार में चुनना- जीते जी किसी को दीवार में गड़वा देना 6. चुनट डालना।

चुनरी *स्त्री.* (देश.) 1. लाल रंगा हुआ कपड़ा जिस पर सफेद या दूसरे रंग की बूटियाँ बनी हों 2. लाल रंग के एक नग का छोटा टुकड़ा, चुननी।

चुनवाँ *पुं.* (देश.) 1. लड़का, शागिर्द 2. चुना हुआ, चुनिंदा, बढिया।

चुनवाना *स.क्रि.* (देश.) चुनने का काम कराना।

चुनांचे *अव्य.* (फा.) इसलिए, वास्ते, अतः।

चुनाई *स्त्री.* (देश.) चुनने की क्रिया या भाव, दीवार की जोड़ाई।

चुनाव *पुं.* (देश.) 1. चुनने का काम 2. किसी पद या कार्य विशेष के लिए पसंद किया जाने वाला काम **प्रयो.** इस वर्ष संसद का चुनाव बहुत अच्छा हुआ है 3. बहुमत के आधार पर किसी को चुनना।

चुनावट *स्त्री.* (देश.) चुनन, चुनट।

चुनिंदा *वि.* (फा.) 1. चुना हुआ, छंटा हुआ 2. बहुतों में से पसंद किया हुआ, अच्छा, बढ़िया 3. गण्य-मान्य, प्रधान खास-खास।

चुनियागोंद *पुं.* (देश.) ढाक का गोंद।

चुनी *स्त्री.* (तद्.) 1. रत्न का छोटा टुकड़ा 2. मोटे अन्न या दाल का पीसा हुआ चूर्ण जिसे प्रायः गरीब लोग खाते हैं 2. ओढ़नी।

चुनौटी *स्त्री.* (देश.) डिबिया की तरह का बर्तन जिसमें पान लगाने या तंबाकू में मिलाने के लिए गीला चूना रखा जाता है।

चुनौती *स्त्री.* (देश.) 1. बढ़ावा 2. युद्ध 3. शास्त्रार्थ आदि के लिए आह्वान, ललकार (देना) 4. उत्तेजना 5. प्रचार।

चुन्नी *स्त्री.* (तद्.) 1. माणिक या रत्न का छोटा टुकड़ा 2. अनाज का चूर, भूसी मिले अन्न के टुकड़े 3. स्त्रियों की चद्दर, ओढ़नी 4. लकड़ी का बारीक चूरा जो आरी से चीरने पर निकलता है।

चुप *स्त्री.* (तत्.) मौन, खामोश।

चुपका *वि.* (देश.) 1. मौन, खामोश 2. घुन्ना। **मुहा.-** चुपके से-शांत भाव से, गुप्त रूप से।

चुपकी *स्त्री.* (देश.) खामोशी।

चुपचाप *क्रि.वि.* (देश.) मौन, खामोश।

चुपड़ना *स.क्रि.* (देश.) 1. तेल, घी या दूसरी तरल चीज लगाना, पोतना 2. दोष छिपाना 3. चापलूसी करना, खुशामद करना।

चुपड़ा *पुं.* (देश.) कीचड़ से भरी आँखों वाला।

चुपड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. घी लगाई सादी रोटी 2. चिकनी बात, प्रिय वचन।

चुपरना *स.क्रि.* (देश.) **दे.** चुपड़ना।

चुप्पा *वि.* (देश.) जो बहुत कम बोले, चुप रहने वाला, घुन्ना।

चुप्पी *स्त्री.* (देश.) मौन, खामोशी।

चुबलाना *स.क्रि.* (देश.) किसी चीज को मुँह में रखकर जीभ से थोड़ा हिलाते-डुलाते हुए स्वाद लेना।

चुभकाना *स.क्रि.* (देश.) पानी में गोता देना, बार-बार पकड़कर डुबाना जिससे मुँह से चुभ-चुभ शब्द निकले।

चुभकी *स्त्री.* (देश.) 1. डुबकी, गोता 2. चुभकने की क्रिया या भाव।

चुभना *स.क्रि.* (देश.) धँसना, नुकीली चीज का भीतर घुसना, मन में बसना, खटकना, सालना **प्रयो.** उसकी बात मेरे दिल में चुभ गई।

चुभर-चुभर *पुं.* (देश.) बच्चों के दूध पीने की आवाज।

चुभवाना *स.क्रि.* (देश.) चुभाने का कार्य दूसरे से कराना।

चुभीला *वि.* (देश.) 1. नुकीला 2. मन में चुभने वाला 2. मन को आकर्षित करने वाला।

चुभोना *स.क्रि.* (देश.) चुभाना, ऐसी क्रिया करना जिससे नुकीली चीज या उसका सिरा अंदर धँसे।

चुमकार *स्त्री.* (देश.) पुचकार, चूमने का सा शब्द जो प्यार दिखाने के लिए निकालते है।

चुमकारना *स.क्रि.* (देश.) प्यार दिखाने के लिए चूमने जैसा शब्द निकालना, पुचकारना, दुलारना **प्रयो.** वह चुमकार कर बच्चे से सारी बात पूछने लगा।

चुमवाना *स.क्रि.* (देश.) चूमने का काम दूसरे से कराना।

चुम्मा *पुं.* (देश.) चुंबन, बोसा।

चुर *पुं.* (देश.) 1. हिंसक जंतु की माँद 2. कुछ लोगों के मिलकर बैठने का स्थान 3. सूखे पत्ते, कागज आदि के फटने का शब्द।

चुरकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. चहकना 2. चूर होना 3. टूटना, फटना।

चुरकी *स्त्री.* (देश.) चुटिया, शिखा।

चुरकुट *क्रि.वि.* (देश.) 1. चकनाचूर, चूर्णित 2. घबराया हुआ।

चुर कुस *पुं.* (देश.) चूर-चूर, चूर्ण।

चुर चुराना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. थोड़े आघात से चूर-चूर हो जाना 2. चुर-चुर शब्द करना 3. पक जाना *स.क्रि.* खरी चीज को चूर-चूर करना।

चुरना *अ.क्रि.* (तद्.) सीझना, गीली वस्तु का गरम होना, पानी में पकना, गुप्त मंत्रणा होना *पुं.* (तत्.) सफेद कीड़े जो बच्चों के मल के साथ निकलते है, चुन चुना।

चुरमुराना *अ.क्रि.* (अनु.) चुर-चुर शब्द करके टूटना *स.क्रि.* चुर चुर शब्द करके तोड़ना।

चुरवाना *स.क्रि.* (देश.) पकाने का काम कराना, चोरी कराना।

चुरस *स्त्री.* (देश.) कपड़े आदि की शिकन, सिल्वट, सिकुड़न *पुं.* चुरुट।

चुराई *स्त्री.* (देश.) चुरने या पकाने की क्रिया *वि.* चोरी की हुई **प्रयो.** उसने महाकवि की कविता चुराई है।

चुराना *स.क्रि.* (तद्.)1. दूसरे की वस्तु को उसकी जानकारी या अनुमति के बिना ले लेना, छिपाना, बचाना, देने में कसर रखना, उचित से कम देना, चोरी करना **मुहा.** चित्त चुराना- मन को आकर्षित करना; आँख-चुराना- नजर बचाना; जी चुराना- काम की उपेक्षा करना।

चुरुट *पुं.* (अं.) शरुट तंबाकू के पत्ते की बत्ती जिसका धुआँ लोग पीते है।

चुल *स्त्री.* (देश.) 1. खुजलाहट 2. मस्ती 3. कामोद्वेग **मुहा.** चुल उठना- काम का वेग होना; चुल मिटाना- काम वासना तृप्त करना *स्त्री.* माँद, चुर।

चुलचुलाना *अ.क्रि.* (अनु.) खुजलाहट होना।

चुलचुली *स्त्री.* (देश.) खुजलाहट।

चुलबुल *स्त्री.* (देश.) चंचलता, चपलता, चुलबुलाहट।

चुलबुला *वि.* (देश.) चंचल, नटखट, जो स्थिर न रह सके, जिसके अंग उमंग के कारण बहुत अधिक हिलते डोलते रहें।

चुलबुलाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. चुल बुल करना, बार-बार हिलना, डोलना, स्थिर न रह सकना, चंचलता दिखाना।

चुलबुलापन *पुं.* (देश.) चंचलता, चपलता, शोखी।

चुलबुली *स्त्री.* (देश.) चंचलता, चपलता, शोखी *वि.* ऐसे गुण वाली।

चुलाव *पुं.* (देश.) 1. बिना मांस का पुलाव 2. चुआने की क्रिया।

चुलियाला *पुं.* (तत्.) एक मात्रिक छंद, विशेष: इस छंद में 13 और 16 के विश्राम से 29 मात्राएँ होती हैं, इसके अंत में एक जगण और एक लघु होता है।

चुलुंप *पुं.* (तत्.) बच्चों को लाड-प्यार, लालन।

चुलुक *पुं.* (तत्.) 1. भारी दलदल, गहरा कीचड़ 2. गहरी हुई हथेली जिसमें पानी इत्यादि पी सके, चुल्लू 3. प्राचीन काल का एक बर्तन जो नापने के काम आता था 4. उड़द का धोवन 5. एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

चुलुका *स्त्री.* (तत्.) महाभारत में वर्णित एक नदी।

चुलुकी *पुं.* (तत्.) जलसूकार, सूँस के आकार का एक मत्स्य।

चुलुपा *स्त्री.* (तत्.) बकरी।

चुल्ल *वि.* (तत्.) कीचड़ भरी आँख वाला।

चुल्लपन *पुं.* (तत्.) चंचलता, नटखटपन, पाजीपन, शरारतीपन।

चुल्ली *वि.* (देश.) नटखट।

चुल्लु *पुं.* (तत्.) एक हाथ की हथेली का गड्ढा, उँगलियों को थोड़ा मोड़कर गहरी की हुई हथेली। **मुहा.** चुल्लू-चुल्लू साधना- थोड़ा थोड़ा करके अभ्यास करना; चुल्लुभर पानी में डूब मरो- मुँह न दिखाओ; चुल्लु भर लहू पीना- शत्रु को मारकर खून पीना; चुल्लू में उल्लू होना- भाँग या शराब पीकर मस्त होना।

चुवा *पुं.* (देश.) चौपाया, पशु।

चुवाना *स.क्रि.* (देश.) टपकाना, गिराना।

चुसकी *स्त्री.* (देश.) तरल पदार्थ को होठों से हुक्के के कश की तरह खीचकर पीना, हुक्के का कश, घूँट।

चुसना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. होठो से पिया जाना, चूसा जाना, निचुड़ना, चचोड़ा जाना 2. निचुड़ जाना, निकल जाना, 4. सारहीन होना, शक्तिहीन होना 4. धन शून्य होना, पास में पैसा न रहना।

चुसनी *स्त्री.* (तद्.) 1. बच्चों का खिलौना 2. दूध पिलाने की शीशी।

चुसवाना *स.क्रि.* (तद्.) चूसने का काम कराना, चूसने देना।

चुसाना *स.क्रि.* (तद्.) चूसने का काम कराना, चूसने में प्रवृत्त करना।

चुसौवल *पुं.* (देश.) 1. अधिकता से चूसने की क्रिया 2. बहुत से आदमियों द्वारा चूसने की क्रिया।

चुस्की *स्त्री.* (देश.) **दे.** चुसकी।

चुस्त *वि.* (फा.) 1. कसा हुआ, जो ढीला न हो 2. जिसमें आलस्य न हो, तत्पर, फुरतीला *पुं.* 1. भुने हुए मांस का ऊपरी जला हुआ भाग 2. भूसी 3. छाल, छिलका।

चुस्ता *पुं.* (फा.) बकरी या भेड़ के बच्चे का आमाशय, मलाशय।

चुस्ती *स्त्री.* (फा.) 1. फुरती, तेजी 2. कसावट, तंगी 3. दृढ़ता, मजबूती।

चुहँटी *स्त्री.* (देश.) चुटकी।

चुह चुहाता *वि.* (देश.) रसभरा, रसीला, सरस, रँगीला, मजेदार।

चुह चुहाना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. रस टपकना, चटकीला लगाना 2. चिड़ियों का कलरव, चहचहाना।

चुहचुहाहट *स्त्री.* (अनु.) चिड़ियों का शब्द, चहकार।

चुह चुही *स्त्री.* (अनु.) एक छोटी चंचल चिड़िया जिसकी बोली प्यारी होती है।

चुहट *स्त्री.* 1. (देश.) चुहटने की क्रिया या भाव 2. शपथ, कसम, सौगंध।

चुहटना *स.क्रि.* (देश.) 1. रौंदना, कुचलना 2. चिकोटी काटना।

चुहड़ा *पुं.* (देश.) 1. भंगी, हलालखोर 2. नीच, धोखे बाज व्यक्ति।

चुहल *स्त्री.* (देश.) हँसी, ठिठोली, विनोद, मनोरंजन।

चुहल बाज *वि.* (देश.) हँसी ठिठोली करने वाला, विनोदी।

चुहल बाजी *स्त्री.* (देश.) हँसी, ठिठोली, मसखरापन, दिल्लगी।

चुहिया *स्त्री.* (देश.) मादा चूहा, छोटा चूहा।

चुहिली *स्त्री.* (देश.) चिकनी सुपारी।

चुहुँटना *स.क्रि.* (अनु.) 1. चिकोटी काटना 2. चुटकी से पकड़ना।

चूँ *पुं.* (अनु.) 1. छोटी चिड़ियों या उनके बच्चों के बोलने का शब्द **मुहा.** चूँ तक न करना- चुप रहना, एक दम मौन रहना *क्रि.वि.* (फा.) 1. क्यों, किसलिए 2. जो, यदि, अगर, सदृश।

चूँकि *अव्य.* (फा.) इस कारण से कि, क्योंकि, इसलिए कि, यत:।

चूँ-चूँ *पुं.* (अनु.) 1. चिड़ियों के बोलने का शब्द 2. किसी प्रकार का चूँ-चूँ शब्द 3. कोलाहल, निरर्थक शब्द ,बेमतलब की बात **मुहा.** चूँ चूँ का मुरब्बा- बेमेल चीजों का योग।

चूँच *स्त्री.* (तद्.) चोंच।

चूँटना *अ.क्रि.* (देश.) चुटकी से पकड़कर तोड़ना।

चूँदरी *स्त्री.* (देश.) **दे.** चुनरी।

चूक *स्त्री.* (तत्.) 1. भूल, गलती, खता, अपराध 2. दरार, दर्ज 3. छल, कपट, फरेब, धोखा। *पुं.* 1. नींबू का सुखाया हुआ रस जो बहुत खट्टा होता है 2. एक प्रकार का खट्टा साग *वि.* (तत्.) बहुत अधिक खट्टा।

चूकना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. भूल करना, गलती करना 2. लक्ष्य भ्रष्ट होना 3. सुअवसर खो देना 4. समाप्त होना, चुकना 5. कोई बात करने, कहने से बाज आना।

चूका *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का खट्टा साग, वैद्यक में इसे हल्का, रुचिकारक और दीपक माना जाता है।

चूखना *स.क्रि.* (देश.) **दे.** चूसना।

चूची *स्त्री.* 1. (तद्.) स्तन का अग्र भाग, कुच के ऊपर की घुंडी 2. स्त्री की छाती, स्तन, कुच।

चूजा *पुं.* (फा.) मुरगी का बच्चा *वि.* जिसकी अवस्था अधिक न हो, कमसिन।

चूड़क *पुं.* (तत्.) 1. चोटी, शिखा 2. मस्तक पर लगी कलगी 3. चंद्रचूड़ नामक दैत्य 4. खंभे, मकान या पहाड़ आदि का ऊपरी भाग, कंकण 5. छोटा कुआँ।

चूडांत *वि.* (तत्.) चरम सीमा, पराकष्ठा।

चूड़ा *स्त्री.* (तत्.) 1. चोटी, शिखा, चुरकी 2. मोर के सिर पर की चोटी 3. पहाड़ की चोटी, मस्तक 4. कलाई पर पहनने का गहना, कड़ा, कंकण 5. कुआँ 6. चूड़ाकरण संस्कार 7. घुँघची *पुं.* (तत्.) **दे.** चुहड़ा, चिहड़ा *पुं.* 1. कंकण, कड़ा, वलय 2. हाथों में पहनने के लिए छोटी-बड़ी बहुत-सी चूड़ियों का समूह जो कहीं-कहीं नव वधू और प्राय: विवाहिता स्त्रियाँ पहनती हैं **विशे.** प्राय: चूड़ा हाथी दाँत के बनते है, उनमें सब से छोटी चूड़ी पहुँचे के पास रहती है।

चूड़ाकरण *पुं.* (तत्.) किसी बच्चे का पहले पहल सिर मुड़वाकर चोटी रखवाना, मुंडन **विशे.** हिंदुओं के 16 संस्कारों में से एक, यह बच्चे की उत्पत्ति से तीसरे या पाँचवे वर्ष होता है।

चूड़ा मणि *पुं.* (तत्.) 1. शीश में पहनने का शीश फूल नामक एक गहना, बीज 2. सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति, सबसे श्रेष्ठ, सरदार, मुखिया, अग्रगण्य 3. घुँघची, गुंजा।

चूड़ाम्ल *पुं.* (तत्.) इमली।

चूड़ार *वि.* (तत्.) 1. कलगीदार, चूड़ा युक्त 2. जिसके मस्तक पर चूड़ा हो (मनुष्य) 3. जिसके मस्तक पर कलगी हो (पक्षी)।

चूड़ाल *पुं.* (तत्.) सिर *स्त्री.* 1. सफेद घुँघची 2. नागर मोथा 3. निर्विषी घास।

चूड़िया *पुं.* (देश.) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

चूड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. काँच, लाख, सोने, चाँदी, हाथी दाँत आदि का बना वृत्ताकार आभूषण जिसे स्त्रियाँ कलाई पर पहनती हैं **विशे.** भारतीय स्त्रियाँ चूड़ी को सौभाग्य चिह्न समझती हैं **मुहा.** चूड़ियाँ तोडना- वैधव्य का चिह्न धारण करना; चूड़ियाँ पहनना- औरत बनना (व्यंग्य में) **प्रयो.** यदि किसी की रक्षा नहीं कर सकते तो चूड़ियाँ पहन लो; चूड़ियाँ पहनाना- विधवा स्त्री का विवाह कराना; चूड़ियाँ बढाना- चूड़ियों को हाथों से अलग करना; विशेष-चूड़ियों के साथ 'उतारना' शब्द का प्रयोग स्त्रियों में अनुचित और अशुभ समझा जाता है 2. वृत्ताकार पदार्थ 3. ग्रामोफोन बाजे का रेकार्ड जिसमें गाना भरा रहता है, अथवा भरा जाता है 4. चूड़ी की आकृति का गोदना जो स्त्रियाँ हाथों पर गोहाती है 5. रेशम साफ करने वालों का एक औजार।

चूड़ीदार *वि.* (देश.+फा.) जिसमें चूड़ी, छल्ले या इसी आकार के घेरे पड़े हों।

चूत *पुं.* (तत्.) आम का पेड़ *स्त्री.* भग, योनि, स्त्रियों की भगेंद्रिय।

चूतक *पुं.* (तत्.) 1. आम का पेड़ 2. छोटा कुआँ।

चूतड़ *पुं.* (देश.) कमर के नीचे और जाँघ के ऊपर गुदा के बगल का माँसल भाग **मुहा.** चूतड़ दिखाना- कठिन समय पर भाग जाना, पीठ दिखाना; चूतड़ पीटना- बहुत प्रसन्न होना।

चूतिया *वि.* (देश.) मूर्ख, बुद्धू, नासमझ।

चूतियापंथी *स्त्री.* (देश.) मूर्खता, नासमझी, बेवकूफी।

चून *पुं.* (तद्.) 1. आटा, पिसान 2. चुगने या खाने की वस्तु।

चूना *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार का तीक्ष्ण क्षार भस्म जो पत्थर, कंकड़, मिट्टी सीप, शंख या मोती आदि पदार्थों को भट्ठियों में फूँककर बनाया जाता है **मुहा.** चूना काटना- खुजली होना; चूना फेरना- चूने की सफेदी करना; चूना लगाना- धोखा देना, लज्जित करना *अ.क्रि.* 1. टपकना 2. बूँद-बूँद करके नीचे गिरना 3. पके या सूखे फल का नीचे गिरना **प्रयो.** बरसात में छत से पानी चूने लगता है 4. गर्भ गिरना।

चूनादानी *स्त्री.* (देश.) वह छोटी डिबिया या इसी प्रकार का पात्र जिसमें पान या सुरती के साथ खाने के लिए चूना रखा जाता है, चुनौटी।

चूपड़ी *स्त्री.* (देश.) घी चुपड़ी या लगी हुई रोटी।

चूमना *स.क्रि.* (तद्.) स्नेह प्रकाशन के लिए होठों से किसी (प्रिय जन) के होठों, गालों आदि का स्पर्श करना, दबाना, चूम लेना, सम्मान-प्रकाश के लिए किसी के हाथ या पाँव को होठों से छूना, चुंबन करना, बोसा लेना **मुहा.** चूमना चाटना- प्यार करना *पुं.* (तत्.) हिंदुओं में विवाह की एक रस्म जिसमें वर की अंजुली में चावल और जौ भर कर पाँच सुहागिनी स्त्रियाँ मंगल गीत गाती हुई वर के माथे, कंधे और घुटने आदि पाँच अंगों को हरी दूब से छूती हैं और तब उस दूब को चूमकर फेंक देती है।

चूमा *पुं.* (तद्.) चूमने की क्रिया, चुंबन।

चूमाचाटी *पुं.* (देश.) चूमने और चाटने का काम, चुंबन-आलिंगन, चूम और चाट कर प्रेम प्रकट करने की क्रिया।

चूर *पुं.* (तद्.) 1. किसी पदार्थ के बहुत छोटे-छोटे टुकड़े जो उस पदार्थ को खूब तोड़ने, कूटने आदि से बनते हैं **मुहा.** चूर चूर करना- किसी पदार्थ के बहुत छोटे-छोटे टुकड़े करना 2. किसी पदार्थ के महीन कण जो रेतने या आरी से चीरने पर निकलते है, बुरादा, भूर *वि.* 1. तन्मय, निमग्न, तल्लीन 2. जिस पर नशे का बहुत प्रभाव हो, नशे में मदमस्त **प्रयो.** वह भाँग के नशे में चूर था।

चूरण *पुं.* (तद्.) **दे.** चूर्ण।

चूरन *पुं.* 1. (तद्.) **दे.** चूर्ण 2. बहुत महीन पिसी हुई पाचक औषधी का चूर्ण।

चूरनहार *पुं.* (तद्.) एक प्रकार की जंगली बेल, जिसके पत्ते बहुत लंबे, चिकने और कुछ मोटे होते हैं।

चूरना *स.क्रि.* (तद्.) 1. चूर करना, टुकड़े-टुकड़े करना 2. तोड़ना।

चूरमा *पुं.* (तद्.) रोटी या पूरी को चूर-चूर करके घी में भूना हुआ और चीनी मिलाया हुआ एक खाद्य पदार्थ।

चूरा *पुं.* (तद्.) किसी वस्तु का पीसा हुआ भाग, चूर्ण, बुरादा।

चूर्ण *पुं.* (तत्.) 1. सूखा पीसा हुआ या बहुत ही छोटे टुकड़े में किया हुआ पदार्थ 2. कई पाचक औषधियों का बारीक पीसा हुआ चूरन 3. अबीर 4. धूल, गर्द 5. चूना 6. कौड़ी, कपर्दक 7. आटा 8. गंध द्रव्य का चूर्ण *वि.* 1. किसी प्रकार तोड़ा-फोड़ा या नष्ट भ्रष्ट किया हुआ 2. चूर्ण किया हुआ।

चूर्णक *पुं.* (तत्.) 1. सत्तू, सतुआ 2. वह गद्य जिसमें छोटे-छोटे शब्द हो तथा श्रुति कटु अक्षर न हो 3. एक प्रकार का वृक्ष 4. गंध द्रव्य का चूर्ण।

चूर्णकार *पुं.* (तत्.) 1. चूर्ण करने वाला 2. आटा बेचने वाला 3. एक वर्ण संकर जाति *वि.* (तत्.) 1. चूर्ण करने वाला, पीसने वाला 2. चूना फूँकने वाला।

चूर्णहार *पुं.* (तत्.) चूरनहार नाम की बेल।

चूर्णा *पुं.* (तत्.) 1. आर्या छंद का दसवाँ भेद, जिसमें 18 गुरु तथा 21 लघु होते हैं 2. तौल में 32 रत्ती मोतियों की संख्या के हिसाब से भिन्न भिन्न लड़ियाँ।

चूर्णि *स्त्री.* (तत्.) 1. कौड़ी, कपर्दक 2. चूर्ण करना या बनाना 3. एक सौ कौड़ियों का समूह 4. पाणिनि कृत अष्टाध्यायी के सूत्रों पर पतंजलि मुनि प्रणीत महाभाष्य।

चूर्णिका *स्त्री.* (तत्.) 1. सत्तू, सतुआ **साहि.** 1. गद्य का एक भेद 2. ग्रंथ की जानकारी के लिए उसका भाष्य या शब्दार्थ देना।

चूर्णिकार/चूर्णिकृत *पुं.* (तत्.) महाभाष्यकार पतंजलि मुनि।

चूर्णित *वि.* (तत्.) 1. चूर्ण किया हुआ 2. पीसा हुआ।

चूर्णी *वि.* (तत्.) 1. चूर्ण, मिलाया हुआ या चूर्ण बनाया हुआ 2. कार्षापण नामक प्राचीन सिक्का।

चूर्ति *स्त्री.* (तत्.) जाना, गमन करना।

चूर्मा *पुं.* (तद्.) **दे.** चूरमा।

चूल *पुं.* (तत्.) 1. चोटी, शिखा 2. रीछ के बाल 3. सिर के बाल 4. सबसे ऊपर का कमरा *स्त्री.* (देश.) किसी लकड़ी का वह सिरा जो किसी दूसरी लकड़ी के छेद में उसके साथ जोड़ने के लिए ठोका जाए 5. पुराने समय में दरवाजों की निचली नोक जिसकी सहायता से दरवाजा खुलता था।

चूलदान *पुं.* (देश.) 1. बावर्ची खाना, रसोई घर, पाठशाला 2. गेलरी।

चूला *स्त्री.* (देश.) चोटी, शिखा, सबसे ऊपर का कमरा, चंद्रशाला।

चूलिक *पुं.* (देश.) मैदे की पतली पूरी, लूची नामक पकवान।

चूलिका *स्त्री.* (तत्.) 1. चूलक 2. नाटक का एक अंग जिसमें नेपथ्य से किसी घटना के हो जाने की सूचना दी जाती है 3. मुर्गे की कलँगी 4. हाथी की कनपटी या कर्ण मूल 5. धनुष का सिरा या ऊपरी भाग।

चूलिकोपनिषद् *स्त्री.* (तत्.) अथर्ववेदीय एक उपनिषद का नाम।

चूल्हा *पुं.* (तद्.) मिट्टी, ईटों आदि की बनी हुई तीन बाजुओं वाली अंगीठी, जिस पर खाना पकाते हैं **मुहा.** चूल्हा जलना- खाना पकना; चूल्हा न्यौतना- घर के सब लोगों को निमंत्रण देना; चूल्हा फूँकना- भोजन पकाना; चूल्हे में डालना- नष्ट भ्रष्ट करना; चूल्हे में पड़ना- अस्तित्व मिटना **प्रयो.** चूल्हे में जाए तुम्हारा यह तमाशा।

चूषण *पुं.* (तत्.) चूसने की क्रिया।

चूषा *स्त्री.* (तत्.) 1. हाथी की कमर से बाँधी जाने वाली बड़ी पेटी या पट्टा 2. चूसने का कार्य या स्थिति 3. पेटी या कमरबंद।

चूष्य *वि.* (तत्.) चूसने के योग्य, जो चूसा जा सके।

चूसना *स.क्रि.* (तद्.) 1. जीभ और होठ के संयोग से किसी पदार्थ का रस लेते हुए पीना 2. किसी चीज का सार भाग ले लेना **प्रयो.** एक बदमाश ने उस भले आदमी का सारा धन चूस लिया 3. किसी वस्तु को चूस-चूस कर समाप्त करना 4. किसी वस्तु का गीलापन सोख लेना।

चूहड़ *पुं.* (देश.) **दे.** चूहड़ा।

चूहड़ा *पुं.* (देश.) 1. भंगी या मेहतर, चांडाल 2. निम्न प्रकार का लफंगा व्यक्ति।

चूहा *पुं.* (देश.) चार पैरों वाला छोटा जंतु जो प्राय: घरों या खेतों में बिल बनाकर रहता है, मूषा, मूषक।

चूहादान *पुं.* (देश.) चूहों को फँसाने का एक प्रकार का पिंजडा, चूहेदानी।

चें *स्त्री.* (अनु.) चिड़ियों के बोलने का शब्द, चें-चें।

चेंच *पुं.* (देश.) एक प्रकार का साग जो बरसात में बहुत उगता है।

चेंचरी *स्त्री.* (देश.) मस्तक का सबसे ऊपरी भाग, खोपड़ी।

चेंज *पुं.* (अं.) 1. वायु परिवर्तन के लिए जाना, हवा बदलना 2. एक गाड़ी से उतर कर दूसरी पर चढ़ना, बदलना 3. बड़े सिक्कों का छोटे सिक्कों में बदलना, विनिमय।

चेंटुआ *पुं.* (देश.) चिड़िया का बच्चा।

चेंपें *स्त्री.* (अनु.) 1. वह धीमा शब्द या कार्य जो किसी बड़े के सामने किसी प्रकार का विरोध प्रकट करने के लिए किया जाए, चीं-चपड़ 2. व्यर्थ की बकवाद, बकबक।

चेंबर *पुं.* (अं.) कमरा, जज का कमरा जिसमें वह ऐसे मुकदमें सुनता है जिन्हें अदालत में सुनने की जरूरत न हो, सभागृह।

चेंबर आफ कामर्स *पुं.* (अं.) किसी नगर के प्रधान व्यापारियों की वह सभा जिसका संगठन उन व्यापारियों के व्यापार संबंधी हितों की रक्षा के लिए हुआ हो।

चेअर *स्त्री.* (अं.) 1. बैठने की कुरसी 2. किसी विश्वविद्यालय में किसी विषय के पढ़ाने के लिए किसी महान व्यक्ति के नाम पर स्थापित की हुई व्यवस्था 3. अध्यक्ष के पद पर बैठा हुआ व्यक्ति।

चेअरमैन *पुं.* (अं.) किसी सभा या बैठक का प्रधान, सभापति, अध्यक्ष।

चेक *पुं.* (अं.) 1. वह रुक्का या आज्ञापत्र जो किसी बैंक आदि के नाम लिखा गया हो और जिसके देने पर वहाँ से उस पर लिखी हुई रकम मिल जाए, एक प्रकार की हुंडी **टि.** किसी बैंक के नाम चेक लिखने का अधिकार उसी को होता है जिसका रुपया बैंक में जमा हो 2. बहुत सी सीधी रेखाओं पर आड़ी खींची हुई रेखाओं से बना चौकोर खाना, चार खाना 3. एक प्रकार के चार खाने का कपड़ा।

चेकितान *पुं.* (तत्.) 1. महादेव, शिव 2. केकय देश के राजा धृष्टकेतु के पुत्र का नाम जिसने महाभारत के युद्ध में पांडवों की सहायता की थी *वि.* बहुत बड़ा ज्ञानी।

चेचक *स्त्री.* (तु.) शीतला या माता नामक रोग, ऐसा छुतहा रोग जिसमें ज्वर के साथ सारी देह में दाने निकल आते हैं।

चेट *पुं.* (तत्.) 1. दास, सेवक, नौकर 2. पति, खाविंद 3. नायक और नायिका को मिलने वाला प्रवीन पुरुष, भड़ुवा 4. एक मछली 5. भाँड।

चेटक *पुं.* (तत्.) 1. सेवक, दास, नौकर 2. चटक-मटक 3. दूत 4. जल्दी, फुरती 5. चाट, चसका, मजा *पुं.* 1. इंद्रजाल, बाजीगरी विद्या, नजरबंद का तमाशा 2. भाँडो का तमाशा, कौतुक।

चेटकी *पुं.* (तत्.) 1. इंद्रजाली, जादूगर 2. कौतुकी।

चेटिका *स्त्री.* (तत्.) सेवा करने वाली स्त्री, दासी, लौंडी।

चेटी *स्त्री.* (तत्.) दासी, लौंडी।

चेटुवा *पुं.* (तत्.) चिड़िया का बच्चा।

चेड़िका *स्त्री.* (तद्.) **दे.** चेटिका।

चेत *पुं.* (तत्.) 1. चित्त की वृत्ति, चेतना, संज्ञा, होश 2. ज्ञान, बोध 3. सावधानी, चौकसी 4. ख्याल, स्मरण, सुध 5. चित्त, मन।

चेतक *पुं.* (तत्.) महाराणा प्रताप का प्रसिद्ध ऐतिहासिक घोड़ा *वि.* 1. सचेत करने वाला 2. चेतन 3. जादू भरी।

चेतकी *स्त्री.* (तत्.) 1. हरीतकी, हर्र का पेड़, साधारण हड़ 2. चमेली का पौधा 3. एक रागिनी का नाम।

चेतन *पुं.* (तत्.) 1. आत्मा, जीव 2. मनुष्य, आदमी 3. प्राणी, जीवधारी 4. परमेश्वर।

चेतनकी *स्त्री.* (तत्.) हरीतकी, हर्र का पेड़, हड़।

चेतनता *स्त्री.* (तत्.) चेतन का धर्म, चैतन्य, सज्ञानता।

चेतना *स्त्री.* (तत्.)1. बुद्धि 2. मनोवृत्ति 3. ज्ञानात्मक मनोवृत्ति 4. स्मृति, सुधि, याद 5. चेतनता, चैतन्य, होश, संज्ञा *अ.क्रि.* 1. संज्ञा में होना, होश में आना 2. सावधान होना 3. चौकस होना *स.क्रि.* विचारना, समझना, ध्यान देना, सोचना।

चेतनीय *वि.* (तत्.) 1. जो चेतन करने योग्य हो 2. जानने योग्य, ज्ञेय।

चेतनीया *स्त्री.* (तत्.) ऋद्धि नामक लता।

चेतव्य *वि.* (तत्.) जो चयन करने योग्य हो, संग्रह योग्य।

चेता *पुं.* (तत्.) 1. संज्ञा होना, बुद्धि 2. स्मृति, याद।

चेताना *स.क्रि.* (तद्.) 1. भूली बात याद दिलाना 2. ज्ञानोपदेश करना 3. चेतावनी देना 4. जलाना या सुलगाना 5. धमकी देना।

चेतावनी *स्त्री.* (तद्.) सावधान करने, किसी हानिकारक कार्य से रोकने के लिए कही गई बात, खतरे की पूर्व सूचना देना।

चेत् *अव्य.* (तत्.) 1. यदि, अगर 2. शायद, कदाचित।

चेत्य *वि.* (तत्.) 1. जो जानने योग्य हो, ज्ञातव्य 2. जो स्तुति करने योग्य हो।

चेदि *पुं.* (तत्.) 1. एक प्राचीन देश का नाम **टि.** वर्तमान बुंदेलखंड का चंदेरी नगर इसी प्राचीन देश की सीमा के अंतर्गत है, इस देश का नाम त्रैपुर और चैद्य भी है 2. इस प्राचीन देश का राजा 3. इस देश का निवासी 4. कौशिक मुनि के पुत्र का नाम।

चेदिराज *पुं.* (तत्.) 1. शिशुपाल नामक राजा, जिसका वध श्री कृष्ण ने किया था 2. एक वसु का नाम जिन्हें इंद्र से एक विमान मिला था।

चेन *स्त्री.* (अं.) बहुत-सी छोटी-छोटी कड़ियों को एक में गूँथ कर बनाई हुई शृंखला, जंजीर **प्रयो.** उसने गले में सोने की चेन पहन रखी थी।

चेना *पुं.* (देश.) 1. कंगनी या साँवाँ की जाति का एक अन्न जो चैत, बैसाख में बोया या आसाढ़ में काटा जाता है 2. चेंच नाम का साग।

चेप *पुं.* (देश.) 1. गाढ़ा, चिपचिपा या लसदार रस 2. लासा जो चिड़ियों को फँसाने के लिए बाँस की लग्घियों में लगाया जाता है।

चेपना *स.क्रि.* (देश.) चिपकाना, सटाना।

चेपांग *पुं.* (देश.) नेपाल में रहने वाली एक पहाड़ी जाति।

चेबुला *पुं.* (देश.) एक पेड़ जिसकी छाल चमड़ा सिझाने और रंग बनाने के काम आती है।

चेय *वि.* (तत्.) जो चयन करने योग्य हो, चयनीय *स्त्री.* (तत्.) वह अग्नि जिसका विधान पूर्वक संस्कार हुआ हो।

चेयर *स्त्री.* (अं.) **दे.** चेअर।

चेयरमैन *पुं.* (अं.) **दे.** चेअरमैन।

चेरा *पुं.* (देश.) 1. नौकर, दास, सेवक, गुलाम 2. चेला, शिष्य, शागिर्द, विद्यार्थी *पुं.* (देश.) मोटे ऊन का बना हुआ गलीचा।

चेराई *स्त्री.* (देश.) दासत्व, सेवा, नौकरी, गुलामी, शागिर्दी, चाकरी।

चेरी *स्त्री.* (देश.) सेविका, दासी।

चेरू *स्त्री.* (देश.) एक पुरानी जाति।

चेल *पुं.* (तद्.) वस्त्र, कपड़ा *वि.* अधम, निकृष्ट।

चेलक *पुं.* (तत्.) 1. वैदिक काल के एक मुनि का नाम 2. बालक, कुमार, शिशु।

चेलगंगा *पुं.* (तत्.) महाभारत में वर्णित दक्षिण भारत की एक नदी।

चेलहाई *स्त्री.* (देश.) चेलों का समूह, शिष्य वर्ग।

चेला *पुं.* (देश.) शिष्य, शागिर्द, दीक्षा, गुरुमंत्र लेने वाला, विद्यार्थी *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार का साँप जो बंगाल में पाया जाता है 2. एक प्रकार की छोटी मछली।

चेलान *पुं.* (तत्.) तरबूज की लता।

चेलिका *स्त्री.* (तद्.) 1. रेशमी कपड़ा 2. चोली, अंगिया।

चेली *स्त्री.* (तद्.) शिष्या।

चेलुक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार के बौद्धभिक्षु।

चेवी *स्त्री.* (तत्.) एक रागिनी का नाम।

चेष्ट *पुं.* (तत्.) 1. अंगों की गति, भाव भंगी 2. क्रिया।

चेष्टक *वि.* (तत्.) 1. चेष्टा करने वाला *पुं.* एक रतिबंध।

चेष्टन *पुं.* (तत्.) चेष्टा करना।

चेष्टा *स्त्री.* (तत्.) 1. गति, हरकत, क्रियासाधक कायिक व्यापार 2. शरीर के अंगों की गति जिससे मन का भाव प्रकट हो 3. नायक या नायिका का प्रयत्न, जो प्रेम प्रकट करने के लिए हो 4. उद्योग, प्रयत्न, कोशिश 5. कार्य 6. श्रम, परिश्रम 7. इच्छा, कामना 8. मुँह की आकृति जिससे मानसिक स्थिति प्रकट होती है।

चेष्टा नाश *पुं.* (तत्.) सृष्टि का अंत, प्रलय, गतिहीन होना।

चेष्टा बल *पुं.* (तत्.) **ज्यो.** ग्रह का स्थिति विशेष में अधिक बलवान हो जाना।

चेष्टित *वि.* (तत्.) चेष्टा युक्त, सचेष्ट।

चेस *पुं.* (अं.) 1. शतरंज 2. लोहे का फ्रेम जिसमें कंपोज किए हुए टाइप छापने के लिए रखे जाते हैं।

चेस्टर *स्त्री.* (अं.) बड़ा और लंबा कोट।

चेहरई *स्त्री.*(देश.) 1. चित्रकला में मूर्ति की बनावट 2. चेहरे में रंग भरना 3. वह छड़ी जिस पर चेहरा बना हो।

चेहरा *पुं.* (फा.) 1. सिर का सामने का माथे से ठुड्डी तक का भाग, मुखमंडल, वदन **मुहा.** चेहरा उतरना- उदासी, प्रफुल्लता न रहना; चेहरा जर्द होना- चेहरा सूखना; चेहरा तमतमाना- चेहरा लाल होना; चेहरा सफेद हो जाना- चेहरे की चमक गायब हो जाना; चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना- भय से चेहरे का रंग बदल जाना 2. कागज, मिट्टी या धातु आदि का बना हुआ किसी देवता, दानव या पशु आदि की आकृति बना साँचा जो लीला या स्वांग आदि में स्वरूप बनने के लिए चेहरे के ऊपर पहना जाता है।

चेहलुम *पुं.* (फा.) 1. वह रस्म जो मुसलमानों में मुहर्रम के चालीसवें दिन होती है 2. मृत्यु का चालीसवाँ दिन।

चैकितान *वि.* (तत्.) चेकितान वंश में उत्पन्न।

चैत *पुं.* (तद्.) चैत्र मास, फाल्गुन के बाद और बैसाख से पहले का महीना।

चैतन्य *पुं.* (तत्.) 1. चित् स्वरूप आत्मा 2. ज्ञान **टि.** न्याय में ज्ञान और चैतन्य को एक ही माना है और उसे आत्मा का धर्म बतलाया है, परंतु सांख्य के मत से ज्ञान से चैतन्य भिन्न है 3. परमेश्वर 4. प्रकृति 5. वैष्णवों के एक संप्रदाय के प्रवर्तक कृष्ण चैतन्य, गौरांग महाप्रभु *वि.* 1. चेतना युक्त, सचेत 2. होशियार, सावधान।

चैतन्य भैरवी *स्त्री.* (तत्.) तांत्रिकों की एक भैरवी।

चैता *पुं.* (तद्.) एक पक्षी जिसका सिर काला, छाती चितकबरी और पीठ काली होती है।

चैती *स्त्री.* (तद्.) वह फसल जो चैत में काटी जाए, रबी।

चैत्य *पुं.* (तत्.) 1. मकान, घर 2. मंदिर, देवालय 3. यज्ञशाला 4. वृक्षों का समूह 5. बुद्ध 6. बुद्ध की मूर्ति 7. अश्वत्थ का पेड़ 8. बेल का पेड़ 9. बौद्ध भिक्षु 10. बौद्ध विहार 11. चिता 12. वल्मीक 13. समाधि मंदिर 14. चिंतन, विचार 15. राजमार्ग स्थित कोई वृक्ष।

चैत्यक *पुं.* (तत्.) 1. अश्वत्थ, पीपल 2. चैत्य का प्रधान अधिकारी।

चैत्य तरु *पुं.* (तत्.) 1. अश्वत्थ, पीपल।

चैत्य विहार *पुं.* (तत्.) 1. बौद्धों का मठ 2. जैनियों का मठ।

चैत्र *पुं.* (तत्.) 1. वह मास जिसकी पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र पड़े, संवत् का प्रथम मास, चैत 2. बौद्ध भिक्षुक 3. यज्ञ भूमि 4. देवालय, मंदिर 5. चैत्य।

चैत्र रथ *पुं.* (तत्.) चित्ररथ गंधर्व का बनाया हुआ कुबेर का उद्यान।

चैत्रवती *स्त्री.* (तत्.) एक नदी जिसका नाम हरिवंश में आया है।

चैत्र सखा *पुं.* (तत्.) कामदेव, मदन।

चैत्रावली *स्त्री.* (तत्.) चैत्र की पूर्णिमा, चैत्र शुक्ला त्रयोदशी।

चैत्री *स्त्री.* (तत्.) चित्रा नक्षत्र युक्त पूर्णिमा।

चैन *पुं.* (देश.) 1. आराम, सुख, आनंद **मुहा.** चैन उड़ाना- आनंद करना; चैन पड़ना- सुख मिलना; चैन से कटना- सुखपूर्वक समय बीतना; चैन की बाँसुरी बजाना- आनंद का भोग करना 2. शांति, मानसिक शांति।

चैल *पुं.* (तत्.) 1. कपड़ा, वस्त्र 2. पोशाक।

चैलक *पुं.* (तत्.) शूद्र पिता और क्षत्रिय माता से उत्पन्न एक प्राचीन वर्णसंकर जाति।

चैला *पुं.* (देश.) जलाने के लिए चीरी हुई लकड़ी, फट्टा।

चैली *स्त्री.* (देश.) 1. छोटा चैला 2. गरमी के कारण नाक से निकलने वाला जमा हुआ खून।

चैलेंज *पुं.* (अं.) मुकाबला करने के लिए दी हुई ललकार, चुनौती।

चोंक *स्त्री.* (देश.) चुंबन का चिह्न।

चोंका *पुं.* (देश.) चूसने/होठों से रस पान करने की क्रिया।

चोंगा *पुं.* (देश.) बाँस की खोखली नली जिसका एक सिरा गाँठ के कारण बंद हो और दूसरा खुला हो *वि.* अनाड़ी, मूर्ख, बेवकूफ।

चोंच *स्त्री.* (तद्.) 1. चिड़ियों के मुँह का अगला भाग, जिसके द्वारा वे कोई चीज उठाते या तोड़ते और खाते हैं, टोंट मुँह (व्यंग्य) 2. मुँह **प्रयो.** बहुत हो चुका अब अपनी चोंच बंद करो (व्यंग्य) **मुहा.** चोंच खोलना- बात कहना; चोंच बंद कराना- चुप कराना।

चोंटना *स.क्रि.* (देश.) नोचना, तोड़ना।

चोंटली *स्त्री.* (देश.) सफेद घुँघची।

चोंथ *पुं.* (देश.) गाय, बैल आदि का उतना गोबर जितना वह एक बार में करे।

चोंथना *स.क्रि.* (देश.) खोटना, नोचना, चीपना।

चोंधर *वि.* (देश.) बहुत छोटी आँखों वाला, मूर्ख।

चोआ *पुं.* (देश.) 1. कई गंध द्रव्यों को मिलाकर बनाया जाने वाला एक सुगंधित द्रव्य 2. किसी चीज की कमी पूरी करने के लिए उसके साथ रखी जाने वाली चीज 3. बाट की कमी पूरी करने के लिए पलड़े पर रखा जाने वाला कंकड़, पासंग।

चोई *स्त्री.* (देश.) भिगोकर मलने से निकलने वाला दाल का छिलका।

चोक *पुं.* (तत्.) भड़भाँड़ या सत्यानासी नामक पौधे की जड़ जो दवा के काम आती है।

चोकर *पुं.* (देश.) आटे का वह अंश जो छानने के बाद छलनी में बच जाता है।

चोकस *वि.* (देश.) चौकस, सावधान।

चोखना *स.क्रि.* (तद्.) चूसना या चूस कर पीना *अ.क्रि.* थन से मुँह लगाकर दूध पीना।

चोखा *वि.* (देश.) खालिस, बेमेल, सच्चा, खरा, तीखी धार वाला *पुं.* (देश.) आलू, बैंगन आदि का भरता।

चोखाना *स.क्रि.* (देश.) 1. स्तनपान करना (बच्चों द्वारा) 2. दूध दुहना (गाय आदि का) 3. धार चोखी करना।

चोगर *पुं.* (फा.) वह घोड़ा जिसकी आँखे उल्लू की सी हो **टि.** ऐसा घोड़ा ऐबी समझा जाता है।

चोगा *पुं.* (देश.) चुगा, चिड़ियों का चारा *पुं.* (फा.) पैरों तक लटकता हुआ बहुत ढीला पहनावा जिसका आगा खुला होता है, लबादा।

चोच *पुं.* (तत्.) 1. छाल, वल्कल 2. चमड़ा, खाल 3. तेजपत्ता 4. दालचीनी 5. नारियल 6. केला 7. फल का वह अंश जो खाद्य न हो 8. तालफल, ताड़ का फल।

चोचक *पुं.* (तत्.) वल्कल, छाल।

चोचला *पुं.* (देश.) 1. नखरा, हाव-भाव, नाज।

चोज *पुं.* (तत्.) 1. चमत्कारपूर्ण उक्ति 2. व्यंग्य भरी हँसी की बात, उपहास।

चोट *स्त्री.* (तद्.) 1. आघात, प्रहार, वार, मार **मुहा.** चोट खाना- प्रहार सहना; चोट उभरना- पीड़ा होना; चोट खाली जाना- आक्रमण व्यर्थ होना 2. किसी को मारने के लिए हथियार चलाने की क्रिया, वार 3. किसी हिंसक पशु का आक्रमण **प्रयो.** हाथी आदमियों पर बहुत कम चोट करता है 4. हृदय पर का आघात, मानसिक व्यथा, शोक, संताप 5. व्यंग्यपूर्ण विवाद, बौछार, ताना 6. विश्वासघात, धोखा, दगा **प्रयो.** वह व्यक्ति ठीक समय पर चोट करता है।

चोटा *पुं.* (देश.) राब के ऊपर उठ आने वाला शीरा, जूसी।

चोटार *वि.* (देश.) 1. चोट करने वाला 2. चोट खाया हुआ, चुटैल।

चोटिका *स्त्री.* (तत्.) लहँगा।

चोटिया *पुं.* (देश.) चोटीधारी, चोटी वाला, छात्र, बालों की लट।

चोटियाना *स.क्रि.* (देश.) चोट पहुँचाना, चोटी पकड़ना।

चोटी *स्त्री.* (तद्.) 1. सिर के बीच रखे गए लंबे बाल, शिखा 2. स्त्रियों के सिर के गूँथे हुए बाल 3. रंगीन डोरा जो चोटी बाँधने के काम आता है 4. पक्षियों के सिर पर कलगी 5. पहाड़ का सबसे ऊँचा भाग, शिखर 6. चरम सीमा **प्रयो.** आजकल चीनी का भाव चोटी पर है।

चोटीदार *वि.* (देश.) चोटी वाला।

चोटी-पोटी *वि.* (देश.) 1. चिकनी-चुपड़ी (बात), खुशामद भरी हुई 2. झूठी, बनावटी।

चोटी वाला *पुं.* (देश.) भूत, प्रेत या पिशाच।

चोट्टा *पुं.* (देश.) चोर, एक गाली।

चोड़ *पुं.* (देश.) 1. दुपट्टा, उपरना 2. कुरती, अंगिया 3. चोल नामक प्राचीन देश।

चोड़क *पुं.* (देश.) कुरता, अंगिया।

चोड़ा *पुं.* (देश.) बड़ी गोरखमुंडी।

चोड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. साड़ी 2. कुरती, चोली।

चोथ *पुं.* (देश.) **दे.** चौंथ।

चोथाई *स्त्री.* (देश.) 1. चोथने का काम या स्थिति 2. चोथने की मजदूरी।

चोद *पुं.* (तत्.) 1. चाबुक 2. वह लकड़ी जिसके सिरे पर तेज नुकीला लोहा लगा हो *वि.* प्रेरक।

चोदक *वि.* (तत्.) प्रेरणा करने वाला, काम के लिए उकसाने वाला।

चोदक्कड़ *पुं.* (देश.) अधिक स्त्री प्रसंग करने वाला, अत्यंत कामी।

चोदना *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रेरणा 2. जिस वाक्य में काम करने का विधान हो *स.क्रि.* (देश.) स्त्री प्रसंग करना, संभोग करना।

चोदाई *स्त्री.* (देश.) संभोग की क्रिया।

चोदास *स्त्री.* (देश.) संभोग की प्रबल कामना।

चोद्य *वि.* (तत्.) प्रेरणा करने योग्य प्रश्न 2. वाद विवाद में पूर्व पक्ष।

चोप *पुं.* (देश.) 1. चाह, इच्छा, ख्वाहिश 2. चाव, शौक, रुचि 3. उत्साह, उमंग 4. बढ़ावा, उत्तेजना 5. कच्चे आम की ढेपनी तोड़ने से निकलने वाला तेजाबी रस।

चोपदार *पुं.* (फा.) **दे.** चोबदार।

चोपन *वि.* (देश.) हिलने-डुलने वाला *पुं.* मंदगति से जाना।

चोपना *अ.क्रि.* (देश.) किसी वस्तु पर मोहित हो जाना, मुग्ध हो जाना।

चोपी *वि.* (देश.) 1. इच्छा रखने वाला, चाह रखने वाला 2. जिसके मन में उत्साह हो, उत्साही।

चोब *स्त्री.* (फा.) 1. शामियाना खड़ा करने का बड़ा खंभा 2. नगाड़ा या ताशा बजाने की लकड़ी 3. सोने या चाँदी से मढ़ा हुआ डंडा 4. छड़ी, सोंटा, डंडा।

चोबदार *पुं.* (फा.) असाबरदार, वह दरबान जिसके हाथ में चोब (मोटा डंडा) रहता है।

चोबा *पुं.* (फा.) डंडा, लोहे की खूँटी।

चोभ *स्त्री.* (देश.) 1. चुभने की स्थिति या भाव, चुभन 2. चुभने वाली चीज।

चोभा *पुं.* (देश.) 1. दवाओं की पोटली जिससे कोई पीड़ित अंग सैंका जाए 2. एक प्रकार का औजार

जिसमें लकड़ी के दस्ते या लट्टू में आगे की ओर चार-पाँच मोटी सुइयाँ रहती हैं।

चोम *पुं.* (देश.) 1. जोश, उत्साह 2. गर्व, घमंड, अभिमान।

चोरंगा *वि.* (तद्.) चार रंगों का, सुंदर।

चोर *पुं.* (तत्.) 1. छिपकर दूसरे की वस्तु का अपहरण करने वाला, चोरी करने वाला, तस्कर 2. मोह लेने वाला 3. उचित से कम काम करने वाला 4. बेईमान 5. जो मन का भाव प्रकट न होने दे **मुहा.** चोर की दाढ़ी में तिनका- सशंकित रहना; चोर के पाँव कितने- हिम्मत कम होना; चोर-चोर मौसेरे भाई- बुरे लोगों में स्नेह सहयोग होना *वि.* जिसके वास्तविक स्वरूप का ऊपर से देखने से पता न चले।

चोर उरद *पुं.* (देश.) उरद का वह कड़ा दाना जो न तो चक्की में पिसता है और न गलाने से गलता है।

चोरक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का गंध द्रव्य जिसका व्यवहार औषधियों में होता है।

चोर कट *पुं.* (देश.) चोर, उचक्का, चोट्टा।

चोर खाना *पुं.* (देश.) संदूक, अलमारी का छिपा खाना।

चोर खिड़की *स्त्री.* (देश.) छोटा चोर दरवाजा।

चोर गणेश *पुं.* (तत्.) तांत्रिकों के एक गणेश।

चोर गली *स्त्री.* (देश.) 1. संकरी गली जिसका पता कुछ ही लोगों को हो 2. पाजामे की मियानी।

चोरटा *पुं.* (देश.) **दे.** चोट्टा।

चोर ताला *पुं.* (देश.) वह ताला जिसका पता दूर से या ऊपर से न लगे, किवाड़ के अंदर लगा हुआ गुप्त ताला।

चोर थन *वि.* (देश.) दूहते समय दूध चुरा रखने वाली (गौ, भैंस या बकरी)।

चोर दंत *पुं.* (देश.) वह दाँत जो बत्तीस दाँतों के अतिरिक्त निकलता है और निकलने के समय बहुत कष्ट देता है।

चोर दरवाजा *पुं.* (देश.) मकान के पिछवाड़े का गुप्त द्वार जिसका पता कुछ ही लोगों को हो।

चोरपेट *पुं.* (देश.) 1. वह पेट जिसमें गर्भ का पता जल्दी न लगे 2. किसी चीज के मध्य में गुप्त स्थान जिसमें रखी चीज प्रकट न हो 3. जिसकी खुराक तगड़ी हो, किंतु पेट छोटा हो।

चोर बत्ती *स्त्री.* (देश.) बिजली की एक प्रकार की बत्ती जो बटन दबाकर जलाई जाती है, टॉर्च।

चोर बाजार *पुं.* (देश.) जहाँ अवैध व्यापार होता हो, चोरी से चीजें बिकती हों।

चोर बाजारी *स्त्री.* (देश.) चोर बाजार का व्यापार, जहाँ चोरी से नाजायज तरीके से माल बेचा, खरीदा जाए।

चोर महल *पुं.* (देश.) वह महल जिसमें किसी राजा या रईस की प्रेमिका रहे।

चोर सीढ़ी *स्त्री.* (देश.) वह सीढ़ी जिसका पता जल्दी न लगे, गुप्त सीढ़ी।

चोर हटिया *पुं.* (देश.) चोरों से माल खरीदने वाला दुकानदार।

चोरा *स्त्री.* (तत्.) चोर पुष्पी, शंखा हुली।

चोरा चोरी *क्रि.वि.* (देश.) छिपे-छिपे, चुपके-चुपके।

चोराना *स.क्रि.* (देश.) **दे.** चुराना।

चोरिका *स्त्री.* (तत्.) चुराने का काम, चोरी।

चोरित *वि.* (तत्.) चुराया हुआ।

चोरी *स्त्री.* (देश.) 1. छिपकर दूसरे की वस्तु लेने का काम, चुराने की क्रिया 2. चुराने का भाव **मुहा.** चोरी-चोरी- छिपाकर, गुप्त रूप से; चोरी लगाना- चोरी का अभियोग लगाना।

चोलंडुक *पुं.* (देश.) पगड़ी।

चोल *पुं.* (तत्.) 1. एक प्राचीन देश का नाम, आधुनिक तंजौर 2. उक्त देश का निवासी 3. स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की अंगिया, चोली 5. कुरते के ढंग का एक प्रकार का लंबा पहनावा जिसे चोला कहते हैं 5. मजीठ 6. छाल, वल्कल 7. कवच *वि.* मजीठ का रंग, लाल

चोलक *पुं.* (तत्.) **दे.** चोल।

चोलकी *पुं.* (तत्.) 1. बाँस का कल्ला 2. नारंगी का पेड़ 3. हाथ की कलाई 4. करील का पेड़।

चोला *पुं.* (तद्.) 1. एक प्रकार का बहुत लंबा और ढीला कुरता जो प्राय: साधु, फकीर और मुल्ला पहनते हैं 2. शिशु को पहली बार पहनाया जाने वाला कपड़ा 3. शरीर, बदन, जिस्म, तन **प्रयो.** इस दवाई के खाने से कुछ ही समय में चोला कंचन-सा हो जाएगा **मुहा.** चोला छोड़ना- मरना, प्राण त्यागना।

चोली *स्त्री.* (तत्.) 1. स्त्रियों का एक पहनावा जो अंगिया से मिलता-जुलता होता है, इसमें पीछे की ओर बंद नहीं होता है 2. डलिया जिसमें पान आदि रखते हैं **मुहा.** चोली दामन का साथ- बहुत अधिक घनिष्ठता।

चोली मार्ग *पुं.* (तत्.) वाम मार्ग का एक भेद।

चोष *पुं.* (तत्.) 'भावप्रकाश' के मत से एक प्रकार का रोग जिसमें रोगी को बगल में जलन मालूम होती है।

चोषक *वि.* (तत्.) चूषने वाला, चूसने वाला।

चोषण *पुं.* (तत्.) चूसने की क्रिया, चूसना।

चोषना *स.क्रि.* (तत्.) चूसना।

चोसा *पुं.* (देश.) लकड़ी रेतने की रेती जो एक हाथ लंबी और दो अंगुल चौड़ी होती है।

चोस्क *पुं.* (तत्.) 1. उत्तम जाति का घोड़ा 2. सिंधुवार नामक पेड़।

चौंक *स्त्री.* (देश.) चौंकने का भाव, झिझक, भड़क।

चौंकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. भय, विस्मय या पीड़ा की अचानक अनुभूति से चंचल हो जाना, काँप उठना **प्रयो.** बम की आवाज से वह चौंक उठा 2. चौकन्ना होना, सतर्क होना **प्रयो.** वह उसके पिछले व्यवहार से चौंक उठता है 3. चकित होना, हैरान होना, विस्मित होना **प्रयो.** वह अपने विदेशी मित्र के अचानक घर पर आगमन से चौंक उठा 4. किसी कार्य में प्रवृत्त होने से डरना, हिचकना।

चौंटली *पुं.* (देश.) सफेद घुंघची, श्वेत चिरमिटी।

चौंडा *पुं.* (तद्.) छोटा कच्चा कुआँ जो खेत के पास सिंचाई के लिए खोद लिया जाता है।

चौंतरा *पुं.* (देश.) **दे.** चबूतरा।

चौंध *स्त्री.* (देश.) चकाचौंध, तिलमिलाहट।

चौंधना *अ.क्रि.* (देश.) 1. किसी वस्तु का क्षणिक प्रकाशित होना, चमकना 2. तेज प्रकाश आँखों पर पड़ने से अंधकार के अतिरिक्त कुछ न दिखाई देना।

चौंधियाना *अ.क्रि.* (देश.) चकाचौंध होना, दृष्टिमंद होना।

चौंधी *स्त्री.* (देश.) 1. चकाचौंध, तिलमिलाहट 2. आँखों का एक रोग। इसके रोगी को रात में केवल रोशनी दिखाई देती है और कुछ नही।

चौंबक *वि.* (तद्.) जिसमें चुंबक शक्ति हो, आकर्षण करने वाला।

चौंर *पुं.* (तद्.) 1. सुरा या चौंरी मृग, चँवर 2. गाय की पूँछ के बालों का गुच्छा जो राजा-महाराजाओं या देव मूर्तियों के सिरों पर हिलाया जाता है जिससे मक्खियाँ आदि न बैठने पाएँ।

चौंरा *पुं.* (तद्.) 1. अनाज रखने का गड्ढा 2. सफेद पूँछ वाला बैल।

चौंरी *स्त्री.* (देश.) 1. घोड़े की पूँछ के बालों का गुच्छा जो मक्खियाँ उड़ाने के काम आता है 2. चोटी या वेणी बाँधने की डोरी 3. सफेद पूँछ वाली गाय।

चौंसठ *वि.* (तद्.) जो गिनती में साठ और चार हो।

चौंसठवाँ *वि.* (तद्.) जो क्रम में तिरसठवें के बाद हो।

चौ *वि.* (तद्.) चार (संख्या)। *पुं.* (तत्.) मोती तौलने का एक मान, जौहरियों का एक तौल।

चौआ *पुं.* (देश.) चौपाया।

चौआना *अ.क्रि.* (देश.) 1. चकपकाना, चकित होना, विस्मित होना 2. चौकन्ना होना, घबरा जाना 3. सतर्क होना।

चौक *पुं.* (तद्.) 1. चौकोर भूमि, चौखूँटा, सहन, आँगन 2. मंगल अवसरों पर आँगन में आटे,

अबीर की रेखाओं से बना हुआ चौखूंटा क्षेत्र, जिसमें कई खाने और चित्र बने होते हैं 3. नगर का मुख्य बाजार 4. वेश्याओं की बस्ती या मुहल्ला जो अधिकतर चौक या मुख्य चौराहों के पास होता है **मुहा.** चौक में बैठना-वेश्यावृत्ति करना 5. नगर के बीच का स्थान जहाँ से चारों ओर रास्ते गए हों, चौराहा 6. चौसर खेलने का कपड़ा, बिसात 7. सामने के चार दाँतों की पंक्ति 8. सीमंत कर्म 9. चार समूह।

चौक चाँदनी *स्त्री.* (तद्.) भादों के कृष्ण पक्ष में पड़ने वाला एक त्यौहार।

चौकठ *पुं.* (तद्.) **दे.** चौखट।

चौकड़ा *पुं.* (देश.) 1. कान में पहनने की बाली जिसमें दो मोती हों 2. फसल की एक प्रकार की बँटाई, जिसमें जमींदार को चौथाई मिलता है।

चौकड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. कुलांच, उड़ान, छलांग, हिरण की वह दौड़ जिसमें वह चारों पैर एक साथ फेंकता है **मुहा.** चौकड़ी भूल जाना- वृद्धि का काम न करना 2. चार आदमियों का गुट, मंडली 3. एक प्रकार का गहना 4. चार युगों का समूह 5. पलथी 6. चारपाई की वह बुनावट जिसमें चार-चार सुतलियाँ इकट्ठी करके बुनी गई हो 7. मंदिरों का शिखर जो चार खंभों पर स्थित रहता है 8. चार घोड़ों की गाड़ी।

चौकन्ना *वि.* (देश.) सावधान, होशियार, चौकस, सजग।

चौकस *वि.* (देश.) 1. सावधान, सचेत, चौकन्ना, होशियार, खबरदार 2. ठीक, दुरुस्त, पूरा **प्रयो.** वह व्यापार करते समय चौकस रहता है।

चौकसी *स्त्री.* (देश.) सावधानी, होशियारी, निगरानी, खबरदारी।

चौका *पुं.* (तद्.) 1. पत्थर का चौकोर टुकड़ा, चौखूँटी सिल 2. पत्थर का पाटा जिस पर रोटी बेलते हैं, चकला 2. सामने के चार दाँतों की पंक्ति 4. सिर का एक गहना 5. वह ईंट जिसकी लंबाई तथा चौड़ाई बराबर हो 6. वह लिपा-पुता स्थान जहाँ हिंदू लोग रसोई बनाते और खाते हैं 7. बल्ले के एक ही प्रहार से बनाए गए चार रनों का समूह (क्रिकेट) 8. मिट्टी या गोबर का लेप 9. चार सींगों वाला जंगली बकरा 10. ताश का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों 11. एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो फर्श बनाने के काम आता है **मुहा.** चौका बरतन करना- बरतन माँजने और रसोई का काम करना; चौका करना- लीप पोतकर बराबर करना।

चौकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. भय उत्पन्न करके चंचल कर देना, भड़काना **प्रयो.** उसने बंदूक छुड़ाकर घोड़े को चौका दिया 2. खबरदार करना, सतर्क करना, किसी बात का खटका पैदा करना 3. चकित करना, आश्चर्य में डालना।

चौकी *स्त्री.* (देश.) 1. काठ या पत्थर का चार पायों वाला आसन, छोटा तख्त 2. मंदिर में मंडप के बीच के खंभों का स्थान 3. पड़ाव या ठहरने की जगह, टिकान, अड्डा, सराय **प्रयो.** चलो आगे की चौकी पर विश्राम करेंगे 4. वह स्थान जहाँ आस-पास की रक्षा के लिए थोड़े से सिपाही रहते हों **प्रयो.** सरकार ने इन लोगों की रक्षा के लिए पुलिस चौकी बना दी है 5. वह भेंट या पूजा जो किसी देवी, देवता, ब्रह्म, पीर आदि के स्थान पर चढ़ाई जाती है 6. जादू, टोना 7. तेलियों के कोल्हू में लगी हुई लकड़ी 8. गले में पहनने वाला एक गहना जिसमें चौकोर पटरी होती है 9. रोटी बेलने का छोटा चकला 10. भेड़ों और बकरियों का रात के समय किसी खेत में रहना 11. मेलों के अवसर पर निकलने वाली देवमूर्तियों की सवारी।

चौकीदार *पुं.* (देश.+फा.) 1. पहरा देने वाला 2. गोड़ैत।

चौकीदारा *पुं.* (देश.+फा.) चौकीदार रखने का चंदा, चौकीदारी।

चौकीदारी *स्त्री.* (देश.+फा.) 1. पहरा देने का काम, रखवाली, पहरेदारी 2. चौकीदार का पद 3. वह चंदा या कर जो चौकीदार रखने के लिए दिया जाए।

चौकुर *पुं.* (देश.) फसल की बटाई जिसमें से तीन-चौथाई भाग काश्तकार और एक-चौथाई जमींदार लेता है।

चौक्ष *वि.* (तत्.) 1. पवित्र, निर्मल, स्वच्छ 2. सुंदर, लुभावना, आनंददायक 3. चोखा।

चौखंड *पुं.* (देश.) 1. वह घर जिसमें चार खंड हो, चौमंजिला मकान 2. वह घर जिसमें चार आँगन या चौक हों।

चौखंडा *पुं.* (देश.) डीठा, डिठौना, काला बिंदु जिसे स्त्रियाँ बच्चों के सिर में इसलिए लगा देती हैं जिससे उन्हें नजर न लगे।

चौखट *स्त्री.* (देश.) 1. द्वार पर लगा हुआ चार लकड़ियों का ढाँचा जिसमें किवाड़ के पल्ले लगे रहते हैं।

चौखटा *पुं.* (देश.) **दे.** चौखट, चार लकड़ियों का ढाँचा जिसमें मुँह देखने का या तस्वीर का शीशा जड़ा जाता है, तस्वीर का फ्रेम।

चौखा *पुं.* (देश.) 1. वह स्थान जहाँ चार गाँवों की सीमा मिलती हो।

चौखूँटा *वि.* (देश.) जिसमें चार कोने हों, चौकोना, चतुष्कोण।

चौगड्डा *पुं.* (देश.) 1. वह स्थान जहाँ चार गाँवों की सीमा मिली हो, चौहद्दा 2. चार चीजों का समूह।

चौगान *पुं.* (फा.) 1. गेंद-बल्ले का खेल जो पोलो से मिलता-जुलता है 2. चौगान खेलने की लकड़ी जो आगे की ओर टेढ़ी या झुकी होती है 3. चौगान खेलने का मैदान 4. नगाड़ा बजाने की लकड़ी।

चौगानी *स्त्री.* (फा.) हुक्के की सीधी नली जिससे धुँआ खींचते हैं निगाली, सटक।

चौगुना *वि.* (तद्.) चार बार और उतना ही, चतुर्गुण **मुहा.** मन चौगुना होना- उत्साह बढ़ना।

चौगून *पुं.* (देश.) 1. चौगुना होने का भाव 2. आरंभ में गाने या बजाने में जितना समय लगाया जाए, आगे चलकर उसके चौथाई समय में गाना या बजाना।

चौगोड़ा *पुं.* (देश.) खरगोश, खरहा।

चौगोड़िया *स्त्री.* (देश.) 1. एक प्रकार की ऊँची चौकी जिसके पायों में चढ़ने के लिए सीढ़ी की तरह डंडे लगे रहते हैं, 2. बाँस की तीलियों का बना हुआ एक ढाँचा या फंदा जिसके चारों पल्लों में तेल में पकाया हुआ पीपल का गोंद लगा रहता है।

चौगोशिया *पुं.* (देश.+फा.) तुरकी घोड़ा।

चौघड़ *पुं.* (देश.) चौभड़, किनारे का वह चौड़ा और चिपटा दाँत जो आहार कूँटने या चबाने के काम में आता है।

चौघड़ा *पुं.* (देश.) 1. चाँदी-सोने आदि का बना हुआ एक प्रकार का डिब्बा जिसमें चार खाने बने होते हैं 2. चार खानों का बरतन जिसमें मसाला आदि रखते हैं 3. पत्ते की खोंगी जिसमें चार बीड़े पान हो 4. बड़ी जाति की गुजराती इलायची 5. एक प्रकार का बाजा, चौडोल।

चौघड़िया *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की छोटी ऊँची चौकी जिसमें चार पाए होते हैं, स्टूल।

चौघड़िया मुहूर्त *पुं.* (देश.+तत्.) एक प्रकार का मुहूर्त जो प्राय: किसी जल्दी के काम के लिए, एक-दो दिन के अंदर ही निकाला जाता है।

चौघरा *पुं.* (देश.) 1. पीतल का दीपक जिसके दीए में चार बत्तियाँ जलती हैं 2. दे. 'चौघड़ा'।

चौचंद *पुं.* (देश.) 1. कलंक-सूचक अपवाद, बदनामी की चर्चा, निंदा **मुहा.** चौचंद पारना- बदनामी करना 2. शोर।

चौचंदहाई *वि.* (देश.) बदनामी फैलाने वाली, दूसरों की बुराई करने वाली।

चौड *पुं.* (तत्.) चूड़ाकरण संस्कार *वि.* चौपट, सत्यानाश।

चौड़ा *वि.* (देश.) लंबाई से भिन्न दिशा की ओर फैला हुआ, चकला *पुं.* 1. वह गड्ढा जिसमें अनाज रखते हैं।

चौड़ाई *स्त्री.* (देश.) लंबाई से भिन्न दिशा की ओर का विस्तार, लंबाई के दोनों किनारों के बीच का फैलाव।

चौड़ान *स्त्री.* (देश.) **दे.** चौड़ाई।

चौड़ाना *स.क्रि.* (देश.) चौड़ा करना, फैलाना।

चौतरफा *पुं.* (देश.) चारों ओर, चारों तरफ।

चौतरा *पुं.* (देश.) **दे.** चबूतरा *वि.* चार तारों वाला, जिसके चार तार हों।

चौतही *स्त्री.* (देश.) खेस की बनावट वाला चार तह वाला कपड़ा।

चौताल *पुं.* (देश.) 1. मृदंग का एक ताल 2. एक प्रकार का गीत जो होली में गाया जाता है।

चौताला *वि.* (देश.) चार तालों वाला, जिसमें चार ताल हों।

चौताली *स्त्री.* (देश.) कपास की कली जिसमें से रुई निकलती है।

चौतीस *वि.* (तद्.) जो गिनती में तीस और चार हो।

चौतुका *पुं.* (देश.) एक प्रकार का छंद जिसके चारों चरणों की तुक मिली हो।

चौथ *स्त्री.* (तद्.) 1. प्रतिपदा से चौथी तिथि, हर पखवाड़े का चौथा दिन, चतुर्थी 2. चतुर्थांश, चौथाई भाग 3. मराठों का लगाया हुआ एक प्रकार का कर जिसमें आमदनी या तहसील का चतुर्थांश ले लिया जाता था *वि.* चौथा।

चौथपन *पुं.* (देश.) मनुष्य के जीवन की चौथी अवस्था, बुढ़ापा।

चौथा *वि.* (तद्.) तीसरे के उपरांत का *पुं.* कुछ क्षेत्रों में मृतक के घर होने वाली एक रीति जिसमें निकट संबंधी तथा बिरादरी के लोग इकट्ठे होते हैं और दाह करने वाले को रुपया, पगडी आदि देते हैं, यदि मृतक की विधवा स्त्री जीवित हो तो उसे धोती चद्दर आदि दी जाती है **प्रयो.** कल उनके यहाँ चौथा होगा।

चौथाई *पुं.* (तद्.) चौथा भाग, चतुर्थांश।

चौथिया *पुं.* (देश.) वह ज्वर जो प्रति चौथे दिन आए। **प्रयो.-** वह चौथिया बुखार से पीड़ित है 2. चौथाई का हकदार, चतुर्थांश का अधिकारी।

चौथी *स्त्री.* (देश.) 1. विवाह के चौथे दिन दूल्हा-दुलहिन के कंगन खोलने की रीति **मुहा.** चौथी का जोड़ा- वर के घर से आने वाला जोड़ा जिसे दुलहिन चौथे दिन पहनती है 2. विवाह तथा गौने के चौथे दिन वधू के घर से वर के घर आने वाला उपहार 3. मुसलमानों की एक प्रथा, जिसमें शादी के बाद पति अपनी पत्नी से मिलने के लिए सुसराल जाता है 4. फसल की बाँट, जिसमें जमींदार चौथाई लेता है और असामी तीन चौथाई, चौकुर।

चौदंता *वि.* (तद्.) 1. चार दाँतों वाला, उभरती जवानी का 2. अल्हड़, उग्र, उद्दंड *पुं.* स्याम देश के हाथी की एक जाति जिसके चार दाँत होते हैं।

चौदंती *स्त्री.* (तद्.) अल्हड़पन, उद्दंडता, धृष्टता, ढिठाई।

चौदस *स्त्री.* (तद्.) वह तिथि जो किसी पक्ष के चौदहवें दिन होती है, चतुर्दशी।

चौदसी *स्त्री.* (तद्.) 1. चतुर्दशी 2. पूर्णिमा (मुसलमान पूनम को चौदहवीं कहते हैं)।

चौदह *पुं.* (तद्.) दस और चार के जोड़ की संख्या।

चौदहवीं *स्त्री.* (तद्.) मुसलमानों के अनुसार पूर्णिमा की तिथि **मुहा.** चौदहवीं का चाँद- पूरे चाँद जैसा सुंदर व्यक्ति।

चौधर *पुं.* (देश.) घोड़ों की एक जाति।

चौधराई *स्त्री.* (देश.) चौधरी का पद या काम।

चौधरात *स्त्री.* (देश.) **दे.** चौधराना।

चौधराना *पुं.* (देश.) 1. चौधरी का काम 2. चौधरी का पद 3. वह धन जो चौधरी को उसके काम के बदले मिले 4. कुनबियों का मुहल्ला या टोला।

चौधरानी *स्त्री.* (देश.) चौधरी की स्त्री।

चौधरी *पुं.* (तद्.) 1. किसी जाति/समाज का मुखिया या सरदार, प्रधान 2. कुनबी या कुर्मी नामक जाति।

चौपट *वि.* (तद्.) चारों ओर से खुला हुआ, अरक्षित, विध्वंस, तबाह, सत्यानाश, बरबाद।

चौपटा *वि.* (तद्.) चौपट करने वाला, नाश करने वाला, सत्यानाशी, काम बिगाड़ने वाला।

चौपड़ *स्त्री.* (तद्.) 1. चौसर नामक खेल 2. चौसर खेल की बिसात और गोटियाँ 3. पलंग की बनावट जिसमें चौसर जैसे खाने बने हों 4. आँगन की बनावट जिसमें चौसर जैसे खाने बने हों।

चौपत *पुं.* (तद्.) पत्थर का वह टुकड़ा जिसमें एक कील लगी रहती है और जिस पर कुम्हार का चाक टिका रहता है।

चौपतना *स.क्रि.* (देश.) तह लगाना, परत लगाना (कपड़े आदि की)।

चौपहरा *वि.* (तद्.) 1. चार पहर का 2. चार-चार पहर के अंतर का।

चौपहिया *वि.* (देश.) चार पहियों का, जिसमें चार पहिए हों। *स्त्री.* चार पहियों की गाड़ी।

चौपाई *स्त्री.* (तद्.) 1. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। इसके बनाने में द्विकल और त्रिकल का ही प्रयोग होता है, इसमें किसी त्रिकल के बाद दो गुरु और सबसे अंत में जगण या तगण नहीं पड़ना चाहिए 2. चारपाई, खाट।

चौपाड़ *पुं.* (देश.) **दे.** चौपाल।

चौपाया *पुं.* (तद्.) चार पैरों वाला पशु (गाय, बैल, भैंस आदि) *वि.* जिसमें चार पाए लगे हों।

चौपाल *पुं.* (देश.) 1. खुली हुई बैठक, लोगों के बैठने का स्थान जिसमें ऊपर से छाया हो पर चारों ओर से खुला हो 2. बैठक 3. दालान, बरामदा 4. घर के सामने का छायादार चबूतरा 5. खुली पालकी जिसमें परदे या किवाड़ नहीं होते, चौपहला।

चौफला *वि.* (देश.) जिसमें चार फल या धारदार लोहे के फलक हों।

चौफेरी *स्त्री.* (देश.) चारों ओर घूमना, परिक्रमा।

चौबंदी *स्त्री.* (तद्.+फा.) 1. छोटा चुस्त अंगा या कुरता, बगलबंदी 2. राजस्व, कर 3. घोड़े के चारों सुमों की नालबंदी।

चौबच्चा *पुं.* (तद्.+फा.) 1. कुंड, हौज, छोटा गड्ढा जिसमें पानी रहता है 2. वह गड्ढा जिसमें धन गड़ा हो **प्रयो.** राजा के किले में कई चौबच्चे भरे पड़े हैं।

चौबरसी *स्त्री.* (तद्.) 1. वह उत्सव या क्रिया जो किसी घटना के चौथे बरस हो 2. वह श्राद्ध जो किसी के निमित्त उसके मरने के चौथे बरस हो।

चौबा *पुं.* (देश.) 1. ब्राह्मणों की एक जाति या शाखा 2. मथुरा का पंडा **दे.** चौबे।

चौबाइन *स्त्री.* (देश.) चौबे की स्त्री।

चौबाई *स्त्री.* (देश.) 1. चारों ओर से बहने वाली हवा 2. अफवाह किंवदंती, उड़ती खबर 3. धूमधाम की चर्चा।

चौबारा *पुं.* (देश.) 1. कोठे के ऊपर की वह कोठरी जिसके चारों ओर दरवाजे हों 2. खुली हुई बैठक *क्रि.वि.* चौथी दफा, चौथी बार।

चौबाहा *वि.* (देश.) बोने से पूर्व चार बार जोता जाने वाला (खेत)।

चौबीस *पुं.* (तद्.) बीस से चार अधिक की संख्या।

चौबे *पुं.* (देश.) ब्राह्मणों की एक जाति या शाखा। **टि.** मथुरा के पंडे चौबे कहलाते हैं।

चौबोला *पुं.* (देश.) एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 8 और 7 के विश्राम से 15 मात्राएँ होती हैं, अंत में लघु गुरु होता है।

चौमंजिला *वि.* (तद्.+फा.) चार खंडों वाला (मकान आदि)।

चौमासा *पुं.* (तद्.) 1. वर्षा काल के चार महीने, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन, चातुर्मास 2. वर्षा ऋतु से संबंधित कविता 3. खरीफ की फसल उगने का समय 4. वह खेत जो वर्षा काल के चार महीनों में जोता गया हो 5. किसी स्त्री के गर्भवती होने के चौथे महीने में किया जाने वाला उत्सव। *वि.* चार मास में होने वाला।

चौमुख *क्रि.वि.* (तद्.) चारों ओर, चारों तरफ।

चौमुखा *वि.* (तद्.) 1. चार मुँह वाला, जिसके मुँह चारों ओर हों।

चौमेखा *वि.* (तद्.+फा.) चार मेखों वाला, जिसमें चार कीलें हों। *पुं.* एक प्रकार का कठोर दंड जिसमें अपराधी को जमीन पर चित्त या पट लिटाकर उसके दोनों हाथों और दोनों पैरों में मेखें ठोक देते थे।

चौरंगी *स्त्री.* (देश.) 1. चौराहा, पश्चिम बंगाल में कोलकाता का एक प्रमुख स्थान।

चौर *पुं.* (तत्.) 1. दूसरों की वस्तु चुराने वाला, चोर 2. एक गंध द्रव्य 3. चोर पंचाशिका के रचयिता संस्कृत के एक कवि का नाम।

चौरस *वि.* (तद्.) 1. जो ऊँचा-नीचा न हो, समतल, बराबर 2. चौपहल, वर्गात्मक।

चौरसा *पुं.* (देश.) 1. ठाकुर जी की शय्या की चद्दर 2. चार रुपये भर का बाट। *वि.* जिसमें चार रस हो, चार रसों वाला।

चौरा *पुं.* (देश.) 1. चौतरा, चबूतरा, वेदी 2. किसी देवी-देवता आदि का स्थान जहाँ चबूतरा बना रहता है 3. लोबिया 4. वह बैल जिसकी पूँछ सफेद हो। *स्त्री.* गायत्री का एक नाम।

चौराई *स्त्री.* (देश.) 1. चौलाई नाम का साग 2. एक चिड़िया।

चौरानवे *वि.* (तद्.) नब्बे से चार अधिक। *पुं.* नब्बे से चार अधिक की संख्या जो अंकों में इस प्रकार की लिखी जाती है- 94।

चौराष्टक *पुं.* (तत्.) षाड़व जाति का एक संकर राग जो प्रात:काल गाया जाता है।

चौरासी *वि.* (तद्.) अस्सी से चार अधिक *पुं.* 1. अस्सी से चार अधिक की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है -84 2. चौरासी लाख योनि **टि.** पुराणों के अनुसार जीव चौरासी लाख प्रकार के माने जाते हैं।

चौराहा *पुं.* (देश.+फा.) वह स्थान जहाँ चार रास्ते या सड़कें मिलती हों।

चौरी *स्त्री.* (तत्.) 1. छोटा चबूतरा, वेदी 2. किसी देवी-देवता आदि के लिए बनाया गया छोटा चौरा या चबूतरा, जिस पर छोटा स्तूप जैसा बना होता है 3. चोरी 4. गायत्री का एक नाम।

चौर्य *पुं.* (तत्.) 1.चोरी, स्तेय 2. चोरी करने वाला।

चौलाई *स्त्री.* (देश.) एक पौधा जिसका साग खाया जाता है।

चौलिक *पुं.* (तत्.) कपड़े का टुकड़ा।

चौवन *पुं.* (तद्.) पचास से चार अधिक की संख्या जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है- 54।

चौवा *पुं.* (तद्.) 1. हाथ की चार उंगलियों का समूह 2. हाथ की उँगलियों का विस्तार, चार अंगुल की माप।

चौसर *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का खेल जो बिसात पर चार रंगों की चार गोटियों और तीन पासों से दो मनुष्यों में खेला जाता है, चौपड़।

चौहत्तर *पुं.* (तद्.) तिहत्तर के बाद की संख्या, सत्तर से चार अधिक की संख्या जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है- 74।

चौहद्दी *स्त्री.* (तद्.+फा.) चारों ओर की सीमा।

चौहरा *वि.* (तद्.) जिसमें चार फेरे या तहें हों, चार परत वाला।

चौहान *पुं.* (देश.) अग्निकुल के अंतर्गत क्षत्रियों की शाखा। भारत के प्रसिद्ध अंतिम सम्राट पृथ्वीराज इसी चौहान जाति के थे।

च्यवन *पुं.* (तत्.) 1. चूना, झरना, टपकना 2. एक ऋषि का नाम।

च्यवनप्राश *पुं.* (तत्.) आयुर्वेद में एक प्रसिद्ध अवलेह जिसके विषय में कहा जाता है कि ऋषि का वृद्धत्व और अंधत्व नाश करने के लिए अश्विनी कुमारों ने इसे बनाया था **टि.** इस अवलेह से स्वर भंग, यक्ष्मा, शुक्र दोष आदि दूर होते हैं और स्मृति, कांति, इंद्रिय सामर्थ्य, बल वीर्य आदि की वृद्धि होती है।

च्युत *वि.* (तत्.) 1. टपका हुआ, गिरा हुआ, झड़ा हुआ 2. गिरा हुआ, पतित 3. भ्रष्ट 4. अपने स्थान से हटा हुआ 5. विमुख, पराङ्मुख।

च्युति *स्त्री.* (तत्.) 1. पतन, स्खलन, झड़ना, गिरना 2. गति, उपयुक्त स्थान से हटना 3. चूक, कर्त्तव्य-विमुखता 4. अभाव, कसर 5. गुदाद्वार, गुदा 6. भग, योनि।

च्युतसंस्कारता *स्त्री.* (तत्.) साहित्य दर्पण के मत से काव्य का वह दोष जो व्याकरणविरूद्ध पद-विन्यास से होता है, काव्य का व्याकरण संबंधी दोष।

च्युप *पुं.* (तत्.) मुख, चेहरा।

च्यूत *पुं.* (तत्.) आम का पेड़ या फल।

छ

हिंदी देवनागरी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा अक्षर, इसके उच्चारण का स्थान 'तालु' है यह स्पर्श ध्वनि व्यंजन है। इसके उच्चारण में अघोष और महाप्राण नामक प्रयत्न लगते हैं।

छंगा *पुं.* (देश.) छह उंगलियों वाला, जिसके एक या दोनों हाथों/पैरों में छह उंगलियाँ हों।

छंद *पुं.* (तत्.) 1. वेद का एक अंग 2. वेद की ऋचा 3. वर्ण, मात्रा आदि की गणना के अनुसार होने वाली कविता की रचना 4. पद्य जैसे- चौपाई, दोहा, सवैया आदि 5. इच्छा, उत्साह, स्वैच्छिक आचरण 6. मंतव्य, उद्देश्य, अभिप्राय 7. उपाय, तरीका, कौशल 8. चालाकी, छल-कपट, विष 9. स्त्रियों की कलाई में पहनने का एक आभूषण।

छंदक *वि.* (तत्.) 1. रक्षक 2. छली *पुं.* 1. कृष्ण का एक नाम 2. बुद्ध के सारथि का नाम 3. कपट, धोखा।

छंदज *पुं.* (तत्.) वैदिक देवता, जिनकी स्तुति वेदों में की गई हो, देवगण।

छंदन *पुं.* (तत्.) संतुष्ट करना, प्रसन्न करना, रिझाना।

छंदना *अ.क्रि.* (देश.) 1. कविता की रचना करना 2. रस्सी से पैरों को बाँधना (बैल आदि पशुओं के)।

छंद बंद *पुं.* (देश.) छलकपट का व्यवहार, धोखाधड़ी।

छंद वासिनी *वि.* (तद्.) स्वतंत्र जीविका वाली (स्त्री) जो किसी दूसरे पर निर्भर न रहती हो।

छंदशास्त्र *पुं.* (तत्.) वह शास्त्र जिसमें पद्य रचना के नियम, नाम, भेद आदि का विवेचन किया गया हो पिंगल शास्त्र।

छंदस्कृत *पुं.* (तत्.) 1. छंद युक्त वेद ऋचा 2. वेद-मंत्र।

छंदानुवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) खुशामद करना, चापलूसी करना, प्रसन्न करना, संतुष्ट करना।

छंदित *वि.* (तत्.) संतुष्ट किया हुआ, तोषित, प्रसन्न, रीझा हुआ।

छंदी *स्त्री.* (तद्.) एक आभूषण, जिसे स्त्रियाँ हाथ की कलाई में पहनती है। *वि.* कपटी, धोखे बाज, छल करने वाला।

छंदोबद्ध *वि.* (तत्.) जो रचना पद्य के रूप में हो, पद्यमय रचना।

छंदोभंग *पुं.* (तत्.) छंद रचना का एक दोष, जिसमें मात्रा, वर्ण आदि की गणना या लघु, गुरु आदि के नियम का पालन नहीं हुआ हो।

छँटना *अ.क्रि.* (देश.) 1. कटकर अलग होना, किसी वस्तु के अवयवों का छिन्न होना जैसे- पेड़ की डाल का छँटना उसकी बढ़ोतरी के लिए आवश्यक होता है 2. छाँटकर अलग कर देना, जैसे- इस ढेर से अच्छे अच्छे आम छाँट कर रख देना 3. साफ होना 4. क्षीण होना, दुर्बल होना, जैसे- व्यायाम करने से उसका बदन छँट गया है।

छँटनी *स्त्री.* (देश.) 1. छाँटने की क्रिया या छँटाई 2. काम करने वालों में से कुछ को हटा देना, कर्मचारियों की संख्या में कमी करना।

छँटवाना *प्रेर.क्रि.* (देश.) 1. किसी वस्तु का अनुपयोगी या बढ़ा हुआ भाग कटवा देना 2. बहुत-सी वस्तुओं में से कुछ वस्तुओं को पृथक कराना 3. छिलवाना।

छँटाई *स्त्री.* (देश.) 1. छाँटने का काम, छँटनी 2. चुनने की क्रिया 3. साफ करने का काम 4. छाँटने की मजदूरी।

छँटाव *पुं.* (देश.) छाँटने का भाव और क्रिया, छँटाई।

छँड़ना *स.क्रि.* (देश.) 1. छोड़ना, त्यागना 2. अन्न को ओखली में डालकर कूटना या छाँटना।

छँड़ाना *स.क्रि.* (देश.) छीन लेना, दूसरे के हाथ से बलपूर्वक ले लेना।

छँडुआ *वि.* (देश.) 1. छोड़ा हुआ, मुक्त 2. जो दंड आदि से मुक्त हो 3. जिसके ऊपर किसी का दबाव या शासन न हो।

छ *पुं.* (तद्.) भाग, हिस्सा *वि.* हिस्सा करने वाला, छह की संख्या *पुं.* (तत्.) 1. काटना 2. ढाँकना, आच्छादन 3. घर 4. खंड, टुकड़ा *वि.* 1. निर्मल, साफ 2. तरल, चंचल।

छक *स्त्री.* (देश.) 1. तृप्ति, परिपूर्णता 2. मद, नशा नशा 3. आकांक्षा, लालसा।

छकड़ा *पुं.* (देश.) बोझ लादने की दुपहिया गाड़ी जिसे बैल खींचते है, बैलगाड़ी, सग्गड़ जिसका ढाँचा-ढीला हो गया हो, जिसके अंजर पंजर ढीले हो गए हों, जीर्ण-शीर्ण और पुराना।

छकड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. छह का समूह। छह की राशि 2. वह पालकी जिसे छह कहार उठाते हो, छकड़िया 3. चारपाई बुनने का एक ढंग जिसमें छह बाण उठाए और छह बैठाए जाते हैं।

छकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. खा पीकर अघाना, तृप्त होना, अफरना 2. नशे में चूर होना 3. हैरान होना 4. चतुरता 5. कौशल आदि में परास्त होना 6. चकराना, अचंभे में पड़ना।

छकाछक *क्रि.वि.* (देश.) 1. तुप्त, अघाया हुआ, संतुष्ट 2. परिपूर्ण, भरा हुआ 3. उन्मत्त, नशे में चूर।

छकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. खिला पिलाकर तृप्त करना 2. मद्य आदि से मदमत्त करना, चालाकी से किसी को हरा देना 3. अचंभे में डालना 4. हैरान करना, तंग करना।

छक्का *पुं.* (देश.) 1. छह अवयवों वाली वस्तु, छह का समूह 2. जुए के चार दाँवों में से एक मुहा. छक्का पंजा- दाँव पेंच, चालबाजी 3. जुए का एक दाँव जिसमें पासा फेंकने से छह बिंदियाँ ऊपर पड़े 4. जुआ, द्युत 5. छह बूटियों वाला तारा 6. पाँच ज्ञानेंद्रियों और छठे मन का समूह, होश-हवास, चेतना, संज्ञा मुहा. छक्के छूटना- होश हवास खो देना, साहस खत्म हो जाना, घबड़ा जाना प्रयो. कल नेताजी की बात सुनकर सभी के छक्के छूट गए, नई फौज के आते ही दुश्मनों के छक्के छूट गए।

छग *पुं.* (तद्.) छाग, बकरा।

छगड़ा/छगरा *पुं.* (तद्.) बकरा।

छगन *पुं.* (तद्.) छोटा बच्चा, प्रिय बालक।

छगमय *पुं.* (तत्.) 1. बकरे जैसी आकृति वाला 2. कार्तिकेय का बकरे जैसा छठा मुख।

छगल *पुं.* (तद्.) 1. छाग, बकरा 2. अत्रि ऋषि का नाम।

छगुनी *स्त्री.* (देश.) हाथ के पंजे की सबसे छोटी उँगली, कनिष्ठिका।

छछिया *स्त्री.* (देश.) 1. छाछ पीने का या मापने का बर्तन 2. छाछ, मट्ठा, तक्र जैसे- गोपियाँ कृष्ण को छछिया भर छाछ के लिए नाच नचाती थी।

छछूंदर/छुछुंदर *पुं.* (तत्.) 1. चूहे की जाति का एक जीव 2. एक प्रकार का यंत्र या ताबीज जिसे राजपूतानों में पुरोहित अपने यजमानों को पहनाता है 3. एक आतिशबाजी जिसे छोड़ने पर छू-छू शब्द होता है 4. वह व्यक्ति जो छूछूँदर की तरह इधर उधर भटकता रहता है।

छजना *अ.क्रि.* (देश.) 1. शोभा देना, सजना, अच्छा लगना 2. उपयुक्त होना, ठीक जँचना, उचित लगना।

छज्जा *पुं.* (देश.) 1. छत का वह भाग जो दीवार के बाहर निकला रहता है 2. कोठे का वह भाग जो कुछ दूर तक दीवार के बाहर निकला रहता है, उस पर लोग बाहर का दृश्य देखने के लिए बैठते है 3. दीवार के बाहर निकली हुई पत्थर की पट्टी 4. टोपी या टोप के किनारे का निकला हुआ वह भाग जिससे धूप से रक्षा होती है।

छटंकी *स्त्री.* (देश.) 1. एक सेर का सोलहवाँ भाग वाला तौल, जिससे कोई वस्तु तोली जाए 2. एक छटाँक का बाट *वि.* 1. बहुत छोटा, छटाँक भर का, दुबला पतला, थोड़ा 2. नटखट, चंचल (बालक)।

छटकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. किसी वस्तु का तेजी से निकल जाना, हाथ से सरक जाना 2. दूर-दूर रहना, अलग-अलग फिरना जैसे- वह कुछ दिन से छिटकता फिर रहा है 3. वश में से निकल जाना, बहक जाना, दाँव से निकल जाना, हत्थे न चढ़ना, हाथ न आना जैसे- उसे दिलासा देते रहना अन्यथा वह छटक जाएगा 4. कूदना, उछलना।

छटका *पुं.* (देश.) मछलियाँ पकड़ने के लिए दो खेतों के बीच की मेड़ पर बनाया हुआ गड्ढा।

छटकाना *अ.क्रि.* (देश.) किसी वस्तु को पकड़ से निकल जाने देना *स.क्रि.* 1. झटका देकर किसी की पकड़ से छुड़ाना 2. खोलना, मुक्त करना, छोड़ देना 3. बंधन को जोर से दूर कर देना।

छटना *अ.क्रि.* (देश.) दे. छँटना।

छटपट *पुं.* (देश.) छटपटाने की क्रिया या भाव *वि.* चंचल, चपल, नटखट, तेज, फुर्तीला।

छटपटाना *अ.क्रि.* (देश.) व्याकुल होना, तड़पना, किसी वस्तु के लिए आतुर होना जैसे- बच्चा माँ के पास जाने के लिए छपटपटा रहा है।

छटपटी *स्त्री.* (देश.) 1. घबराहट, व्याकुलता, बेचैनी, अधीरता 2. गहरी उत्कंठा, किसी वस्तु के लिए आतुरता।

छटाँक *स्त्री.* (देश.) 1. एक सेर का सोलहवाँ भाग, पाव भर का चौथा हिस्सा।

छटा *स्त्री.* (तत्.) 1. शोभा, छवि, दीप्ति, झलक, प्रभा, सौंदर्य 2. बिजली 3 परंपरा, अविच्छिन्न शृंखला, लड़ी 4. ढेर, पुँज, राशि, संघात।

छटैल *वि.* (देश.) 1. छँटा हुआ 2. चालाक।

छठ *स्त्री.* (तद्.) चांद्र मास के कृष्ण या शुक्ल पक्ष की छठी तिथि, कार्तिक शुक्ला षष्ठी को होने वाला एक व्रत या पर्व।

छठा *वि.* (तद्.) जो संख्या के क्रम में पाँच के बाद हो।

छठी *स्त्री.* (तद्.) 1. बच्चे के जन्म से छठे दिन का पूजा उत्सव मुहा. छठी का दूध निकलना- कठिन श्रम करना, भारी संकट पड़ना; छठी का दूध याद आना- घोर संकट में पड़ना, कठिन परिश्रम करना 2. भाग्य, नियति, तकदीर 3. एक देवी जिसकी पूजा षष्ठी तिथि को होती है मुहा. छठी का राजा- पुस्तैनी अमीर, जन्म का दरिद्र (व्यंग्य में); छठी में न पड़ना- भाग्य में न होना।

छड़ *स्त्री.* (तद्.) धातु या लकड़ी का लंबा गोल पतला डंडा, लोहे की छड़।

छड़ना *स.क्रि.* (देश.) 1. छाँटना 2. छोड़ना।

छड़ा *पुं.* (देश.) 1. चाँदी के तार का बना चूडी जैसा गहना जो पाँव में पहना जाता है 2. मोतियों की लड़ियों का गुच्छा *वि.* अकेला, एकाकी, जिसका विवाह न हुआ हो ऐसा युवक, कुँवारा।

छड़िया *पुं.* (देश.) छड़ी वाला, दंडधारी, दरबान, द्वारपाल।

छड़ी *स्त्री.* (तद्.) 1. सीधी पतली लकड़ी, पतली लाठी जो चलने में सहारा हो 2. पीरों के मजार पर चढ़ाने की झंडी 3. गोखरू, चुटकी आदि की सीधी टँकाई *वि.* अकेली, अविवाहिता स्त्री मुहा. छड़ी सवारी- बिना किसी साथी के, अकेले।

छड़ीदार *वि.* (देश.) 1. छड़ी वाला 2. लकीरदार *पुं.* चोबदार, द्वारपाल, रक्षक।

छड़ीबरदार *पुं.* (देश.) बड़े आदमियों की सवारी के साथ सोने-चाँदी की छड़ी लिए हुए चलने वाला, सेवक, चोबदार।

छत *स्त्री.* (तद्.) 1. घर की दीवारों की ऊपर चूना, कंकड़ आदि डालकर पाटा गया फर्श, पाटन 2. घर के ऊपर का खुला हुआ कोठा जैसे- गर्मियों में लोग खुली छत पर सोते हैं।

छतनार *वि.* (देश.) छाते की तरह दूर तक फैला हुआ छायादार पेड़ जिसकी डालियाँ या टहनियाँ दूर तक फैली हो, घना पेड़।

छतरी *स्त्री.* (तद्.) 1. वर्षा या धूप से बचने के लिए बनाया हुआ कपड़े का आच्छादन, छाता 2. पत्तों का बना हुआ छाता 3. किसी की चिता या समाधि के ऊपर स्मारक के रूप में बनाया गया

छज्जेदार मंडप 4. कबूतरों के बैठने के लिए बाँस की फट्टियों का बना ठट्र 5. डोली के ऊपर छाया के लिए रखा हुआ ठट्टर 6. बहली या इक्के आदि के ऊपर का छाजन 7. जहाज के ऊपर का भाग 8. कुकुरमुत्ता 9. एक प्रकार का गुब्बारा या छाता जिसके सहारे वायुयान से कूदकर जमीन पर आया जा सकता है।

छतरी बाज *पुं.* (देश.) 1. छतरी या पैराशूट के सहारे वायुयान से उतर कर आक्रमण करने वाले सैनिक 2. घाव, जख्म।

छतिया *स्त्री.* (देश.) दे. छाती।

छतियाना *स.क्रि.* (देश.) 1. छाती से लगाना, सटाना 2. बंदूक छोड़ने के समय कुंदे को छाती के पास लगाना, बंदूक तानना।

छतीसा *वि.* (देश.) 1. चतुर, सयाना, चालाक 2. मक्कार, धूर्त प्रयो. नाई की जाति स्वभावत: छत्तीसी होती है।

छत्ता *पुं.* 1. (तद्.) छाता, छतरी 2. छत, जिसके नीचे से रास्ता हो 3. मधुमक्खी, भिड़ आदि के रहने का घर जो मोम का होता है, जिसमें बहुत से खाने होते हैं 4. छाते की तरह दूर तक फैली हुई वस्तु 5. कमल का बीज कोष 6. छत्रसाल राजा।

छत्तीस *वि.* (तद्.) जिसमें तीस और छह की संख्या मिली हो, तीस और छह की मिली संख्या।

छत्तीसा *पुं.* (तद्.) 1. नाई, हजाम, छत्तीस जातियों की सेवा करने वाला मुहा. छत्तीसी करना- धूर्तता या धोखेबाजा करना; छत्तीसी होना- ढोंगी का काम करना।

छत्र *पुं.* (तत्.) 1. छाता, छतरी 2. राजचिह्न के रूप में प्रयुक्त होने वाला छाता 3. कुकुरमुत्ता, खुमी 4. छतरिया विष 5. गुरु या श्रेष्ठजन के दोष का गोपन।

छत्रक *पुं.* (तत्.) 1. छतरी, कुकुरमुत्ता, शहद का छत्ता 2. शिव मंदिर, कौड़िल्ला नामक चिड़िया, मछरंग।

छत्रधारी *वि.* (तत्.) जो राज चिह्न छत्र धारण करे *पुं.* 1. छत्र धारण करने वाला, राजा 2. राजा के ऊपर राज चिह्न, लगाने वाला सेवक।

छत्रपति *पुं.* (तत्.) 1. राजा, महाराज, चक्रवर्ती शासक, सम्राट 2. शिवाजी की उपाधि, स्वतंत्र शासक की राजकीय उपाधि।

छत्रपत्र *पुं.* (तत्.) 1. स्थल पद्म 2. भोज पत्र का वृक्ष 3. मान पत्ता 4. छितवन।

छत्रपुत *पुं.* (तद्.) राजपूत, क्षत्रिय का बेटा।

छत्र भंग *पुं.* (तत्.) 1. राजा का नाश 2. ज्योतिष का एक योग जो शासक का नाश करने वाला माना गया है 3. वैधव्य 4. अराजकता, पराधीनता।

छत्रवती *स्त्री.* (तत्.) पांचाल के दक्षिण में पड़ने वाला अहिच्छत्र नामक एक राज्य जिसे जीतकर अर्जुन ने द्रोणाचार्य को गुरुदक्षिणा में दिया था।

छत्राक *पुं.* (तत्.) कुकुरमुत्ता, तालमखाने की जाति जैसा एक पौधा।

छत्री *वि.* (तत्.) 1. छत्रयुक्त, छत्रधारण करने वाला *पुं.* नापित, नाई।

छत्वर *पुं.* (तत्.) 1. घर 2. कुंज।

छद *पुं.* (तत्.) 1. ढकने वाली वस्तु, आवरण, (चादर, ढक्कन, छाल आदि) 2. चिड़ियों का पंख 3. पत्ता, पर्ण 4. ग्रंथि पर्णी नामक वृक्ष, गँठिवन 5. तमाल वृक्ष 6. तेजपत्रा 7. म्यान, खोल।

छदन *पुं.* (तत्.) 1. आवरण, आच्छादन, ढक्कन 2. पत्ता 3. चिड़ियों का पंख।

छदाम *पुं.* (देश.) पैसे का चौथाई भाग जो पहले प्रचलित था, टुकड़ा।

छदि *स्त्री.* (तत्.) 1. मकान की छत 2. गाड़ी के ऊपर की छत, ढकना।

छद्म *पुं.* (तत्.) 1. छिपाव, गोपन 2. ब्याज, बहाना 3. छल, कपट, धोखा 4. झूठ।

छद्मवेश *पुं.* (तत्.) दूसरों को धोखा देने के लिए बनावटी पोशाक, कृत्रिम वेश।

छद्मवेशी *वि.* (तत्.) जो वेश बदले हो, जो अपना असली रूप छिपाए हो।

छद्मी *वि.* (तत्.) बनावटी वेशधारी, असली रूप छिपाने वाला, कपटी, छली।

छनकना *अ.क्रि.* (देश.) किसी वस्तु को वेग से फेंकना, छन-छन शब्द करना।

छनक *स्त्री.* (अनु.) 1. छन-छन करने का शब्द, झनझनाहट, झनकार 2. किसी आशंका से चौक कर भागने की क्रिया, भड़क।

छनकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. पानी या किसी तरह पदार्थ को आग पर रखकर गरम करना 2. फेंकना, छोड़ना, छटकाना 3. रुपए पैसे जैसी वस्तु को हिलाडुलाकर छन्-छन्, झन्-झन् शब्द उत्पन्न करना 5. चौंकाना, चौकन्न करना, भड़काना।

छनछनाना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. छन-छन की आवाज होना, झनकार होना 2. जलन का अनुभव होना, चुनचुनाना।

छनन-मनन *पुं.* (अनु.) कडक़ड़ाते घी-तेल आदि में किसी गीली वस्तु या पानी के पड़ने से आवाज होना।

छनना *अ.क्रि.* (देश.) 1. छानने की क्रिया होना 2. छोटे-छोटे छिद्रो से होकर निकलना जैसे- पेड़ की पत्तियों के बीच से धूप छन-छन कर आ रही है 3. नशीली वस्तु पीना जैसे- होली पर खूब भाँग छनती रही मुहा. गहरी छनना- खूब मेल जोल होना, गाढ़ी मैत्री होना जैसे- उन दोनों में आजकल खूब छन रही है 4. छेदों से युक्त होना, छलनी हो जाना जैसे- यह कपड़ा पहनते पहनते छनना हो गया है 5. बिंध जाना, अनेक स्थानों पर चोट खाना प्रयो. युद्ध में उसका सारा शरीर छन गया है 6. निर्णय होना, छानबीन होना प्रयो. कोर्ट में सारा केस छन गया है *पुं.* छनने की वस्तु तरल या अन्य प्रकार के वस्तु को छानने का साधन (महीन कपड़ा)।

छननी *स्त्री.* (देश.) छेददार वस्तु जिसमें कोई वस्तु छानी जाए, चलनी।

छन भंगुर *वि.* (तद्.) अनित्य, नाशवान, क्षणभंगुर।

छनभर *वि.क्रि.* (तद्.) थोड़ी देर, एक क्षण।

छनाना *स.क्रि.* (देश.) 1. छनवाना 2. नशा आदि पिलाना।

छनिक *वि.* (तद्.) क्षणिक।

छन् *पुं.* (तद्.) 1. पर्व का समय, पुण्यकाल 2. उत्सव 3. नियम 4. मुहूर्त 5. काल, समय *स्त्री.* जलती या तपती वस्तु पर पानी पड़ने से उत्पन्न ध्वनि छनक, घुँघरू आदि के बजने की आवाज, झनकार।

छन्न *वि.* (तद्.) 1. ढका हुआ, आवृत्त, आच्छादित 2. लुप्त, गायब, अदृश्य *पुं.* 1. एकांत स्थान, गुप्त स्थान 2. हाथ में पहनने का एक गहना।

छप *स्त्री.* (देश.) 1. पानी में किसी वस्तु के जोर से से गिरने की 'छप' ध्वनि 2. छप की आवाज बार-बार होना *वि.* गायब, लुप्त, अस्पष्ट।

छपक *स्त्री.* (अनु.) 1. छिपने या दुबकने की स्थिति 2. तलवार आदि के चलने की आवाज 3. 'छपक-छपक' की आवाज।

छपकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. पतली कमची से किसी को मारना, पतली छड़ी से किसी को पीटने की क्रिया। 2. तलवार के आघात से किसी वस्तु को काटना, छिन्न करना 3. जल में हाथ-पैर चलाकर छप-छप की आवाज करना।

छपका *पुं.* (देश.) 1. सिर में पहनने का स्त्रियों का एक गहना 2. पतली कमची, पतली छड़ी 3. खुरपका 4. पानी का छींटा 5. कबूतर को फँसाने वाला जाल 5. पानी में हाथ पैर मारने से उत्पन्न शब्द 6. दाग, धब्बा 7. छापा।

छपछपाना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. पानी पर कोई वस्तु जोर से पटक कर छप-छप शब्द उत्पन्न करना, पानी पर हाथ-पाँव पटकना 2. तैरने के लिए पानी में हाथ-पैर मारना प्रयो. वह तालाब में तैरता थोड़े ही है, बस यूँ ही छपछपा लेता है।

छपटना *अ.क्रि.* (देश.) 1. चिपकना, किसी वस्तु से लगना या सटना 2. आलिंगित करना।

छपटाना *स.क्रि.* (देश.) 1. चिपकाना, चिपटाना 2. छाती से लगाना, हृदय या गले से लगाना *स्त्री.* लकड़ी का टुकड़ा जो छीलने से निकले।

छपटी *वि.* (देश.) दुबला, पतला, कृश।

छपद *पुं.* (तद्.) भ्रमर या भौंरा, षट्पद (छह पैरों वाला)।

छपन *वि.* (देश.) 1. लुप्त, गायब, गुप्त *पुं.* विनाश, नाश, संहार।

छपना *अ. क्रि.* (देश.) 1. छापा जाना 2. अंकित होना 3. मुद्रित होना जैसे- आजकल पुस्तक छपना काफी सरल हो गया है 4. चेचक का टीका लगाना।

छपरा *पुं.* (देश.) 1. बॉस, फूस से बना खाली स्थान को ढकने के लिए छप्पर 2. बाँस का टोकरा जो पत्तों से मढ़ा होता है और जिसमें तमोली पान रखते हैं 3. बिहार प्रदेश का एक जिला और नगर जिसको सारन भी कहते हैं।

छपरी *स्त्री.* (देश.) झोपड़ी, मढ़ी।

छपा *स्त्री.* (देश.) 1. रात्रि (क्षपा) 2. हरिद्रा (हल्दी)।

छपाई *स्त्री.* (देश.) छापा खाने में होने वाला छपने का काम, मुद्रण, अंकन 2. छापने का ढंग 3. छापने की मजदूरी।

छपाकर *पुं.* (देश.) 1. क्षपाकर (चंद्रमा) या चाँद 1. कपूर

छपाका *पुं.* (अनु.) 1. पानी पर किसी चीज के गिरने की आवाज 2. जोर से उछालकर फेंका गया पानी, तरल वस्तु का छींटा।

छपाना *स.क्रि.* (देश.) 1. छापने का काम करना 2. चिह्नित कराना, अंकित कराना 3. मुद्रित कराना 4. चेचक का टीका लगवाना।

छप्पन *वि.* (तद्.) जिस संख्या में पचास और छह हो, संख्या पचास में मिली छह संख्या इसका सूचक अंक है- 56 मुहा. छप्पन टके का खर्च- अधिक खर्च; छप्पन छुरी- सौंदर्य और शृंगार से मादक आकर्षण वाली छलकपट पूर्ण स्त्री; छप्पन भोग- छप्पन प्रकार के बहुत अधिक स्वादिष्ट भोजन 2. चतुर, चुस्त चालाक।

छप्पय *पुं.* (तद्.) एक मात्रिक छंद जिसमें छह चरण होते हैं विशे. इस छंद में पहले रोला के चार पद, फिर उल्लाला के दो पद होते हैं, लघु गुरु के क्रम से इस छंद के 71 भेद होते हैं।

छप्पर *पुं.* (देश.) 1. बाँस या लकडी की फट्टियों और फूस आदि की बनी हुई छाजन जो मकान के ऊपर बनाई जाती है, छाजन, छान मुहा. छप्पर पर रखना- दूर रखना, अलग रखना; छप्पर पर फूस न होना- अत्यंत निर्धन होना; छप्पर फाड़ कर देना- देव योग से बिना श्रम किए आवश्यकता से अधिक धन मिलना प्रयो. ईश्वर जब देता है तो छप्पर फाड़कर देता है; छप्पर रखना- एहसान रखना, उपकृत करना 2. छोटा ताल या गड्ढा, तलैया, पोखर।

छबड़ा *पुं.* (देश.) बाँस का बना डाला या टोकरा, झाबा।

छबि *स्त्री.* (तद्.) शोभा, सुंदरता।

छबीला *वि.* (देश.) शोभा युक्त, सुहावना, सुंदर, सजधज कर, बाँका।

छब्बीस *वि.* (तद्.) जो बीस और छह की मिली संख्या हो।

छमंड *पुं.* (देश.) बिना माँ-बाप का बच्चा, अनाथ।

छम *स्त्री.* (अनु.) 1. घुँघरु आदि के बजने का शब्द 2. पानी बरसने की ध्वनि *वि.* शक्तियुक्त, क्षमयुक्त, समर्थ, सक्षम।

छमक *स्त्री.* (देश.) चाल ढाल की बनावट, ठसका, ठाट-बाट।

छमकना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. घुँघरु आदि हिलाकर छम-छम करना 2. गहने आदि बजाना, गहनों की झनकार 3. स्त्रियों द्वारा ठसक दिखाना।

छमछम *स्त्री.* (अनु.) 1. पैर में पहने हुए घुँघरू या गहनों के बजने से होने वाला शब्द 2. जलवृष्टि से होने वाली ध्वनि।

छमछमाना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. छम-छम शब्द करना 2. छम-छम शब्द करके चलना।

छमाछम *स्त्री.* (अनु.) 1. गहनों के बजाने का शब्द 2. पानी बरसने का शब्द *क्रि.वि.* छम-छम की निरंतर ध्वनि, लगातार छम-छम शब्द के साथ।

छमावान *वि.* (तद्.) दे. क्षमावान।

छमासी *स्त्री.* (देश.) वह श्राद्ध जो किसी की मृत्यु से छः महीने पर किया जाए *विशे.* छः मास की अवधि वाली।

छमी *वि.* (तद्.) क्षमी, क्षमाशील, समर्थ।

छय *पुं.* (तद्.) नाश, विनाश, क्षय।

छर *पुं.* (देश.) दे. छल *स्त्री.* (अनु.) छर्रों या कणों के वेग से निकलने का शब्द जैसे- प्रातः से ही छर-छर कंकड़ियाँ गिर रही है।

छरकना *अ.क्रि.* (देश.) छर-छर करके छिटकना या बिखरना।

छरकीला *वि.* (देश.) छिटकने वाला, दूर रहने वाला जैसे- जो स्वभाव से छरकीले होते हैं उनमें अपनी बातें छिपाने का रोग होता है।

छरछर *पुं.* (अनु.) 1. कणों या छर्रों के वेग से निकलने और दूसरी वस्तुओं पर गिरने का शब्द 2. पतली लचीली छड़ी के लगने का शब्द।

छरछराना *अ.क्रि.* (देश.) 1. नमक या क्षार आदि लगने से शरीर के घाव या छिले स्थान में पीड़ा होना, चुनचुनाना 2. कणों का वेग से किसी वस्तु पर गिरना या बिखरना।

छरछराहट *स्त्री.* (देश.) 1. कणों के वेगपूर्वक एक साथ निकलने और गिरने का भाव 2. घाव में नमक आदि लगने से उत्पन्न पीड़ा या टीस।

छरना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. चूना, बहना, टपकना, झरना 2. चुचुवाना 3. छँटना, दूर होना 4. चावल को फटक कर साफ किया जाना 5. छँटकर अलग होना 6. भूत-प्रेत आदि द्वारा आक्रांत होना *स.क्रि.* 1. कंकड़-पत्थर या अन्य गंदगी अलग करने के लिए चावल को फटकना 2. ओंखली में डालकर धान आदि को कूटना और छँटाई करना 3. छल-कपट करना, धोखा देना, ठगी करना।

छरपुरी *स्त्री.* (देश.) 1. छरीला, पत्थर फूल 2. एक पुड़िया जिसमें छरपुरी आदि सुगंधित द्रव्य होते हैं जो विवाह में चढ़ाए जाते हैं।

छरहरा *वि.* (देश.) 1. पतले बदन वाला जिसमें स्थूलता न हो 2. स्फूर्ति वाला, चुस्त, चालाक, तेज।

छरहरापन *पुं.* (देश.) 1. कृशता, दुबलापन 2. चुस्ती, फुर्ती।

छराना *स.क्रि.* (देश.) ठगना, भयभीत करना, मुग्ध करना, भुलाना, आक्रांत करना।

छरीदा *वि.* (अर.) 1. एकाकी, बिना किसी साथी का 2. बिना कोई भार लिए, बोझहीन (यात्रा के संबंध में प्रयोग किया जाने वाला शब्द)।

छरीला *पुं.* (देश.) 1. जलाशय में होने वाली वनस्पति (सेवार) काई 2. शिलासुमन, औषध में प्रयोग किया जाने वाली वनस्पति।

छर्द *पुं.* (तत्.) वमन या उल्टी करना, खाया-पीया कै करके बाहर निकालना।

छर्रा *पुं.* (देश.) 1. छोटी कंकड़ी 2. लोहे या सीसे के छोटे-छोटे टुकड़े जो कारतूस में भरे जाते हैं।

छल *पुं.* (देश.) 1. असली रूप को छिपाना जिससे दूसरों को धोखा दिया जाए 2. ठगने वाली बात या व्यवहार, ठगी 3. बहाने वाली, नियमविरुद्ध आचरण 4. कपटपूर्ण व्यवहार, छल *पुं.* (देश./अनु.) जल के गिरने का छल छल शब्द।

छलक *स्त्री.* (देश.) छलकने की क्रिया।

छलकन *स्त्री.* (देश.) 1. जल के छलकने का भाव 2. अंतःस्थित भावों का बाहर प्रकट होना, उद्गार।

छलकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. जल या किसी तरल पदार्थ का बरतन के हिलने डुलने के कारण बाहर आना 2. उमड़ पड़ना बाहर आ जाना, छलक पड़ना।

छलकाना *स.क्रि.* (देश.) भरा हुआ जल हिला डुलाकर बाहर निकालना, छितराना ला. बाहर प्रकट करना।

छलछलाना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. आँखों में आँसू भर आना, आँखे भर जाना 2. छल-छल शब्द करना।

छलछाया *पुं.* (तत्.) कपट की छाया, मायाजाल, मृगतृष्णा।

छलछिद्र *पुं.* (तत्.) छल पूर्ण व्यवहार, धूर्तता का व्यवहार, कपटपूर्ण व्यवहार।

छलन *पुं.* (देश.) छल करने का भाव।

छलना *अ.क्रि.* (तत्.) धोखा देना, भ्रम में डालना, ठगी करना *स्त्री.* (तत्.) कपट, भ्रम में रखना।

छलनी *स्त्री.* (तद्.) महीन कपड़ा या छेद दार जाली जाली का उपकरण, आटा छानने की चालनी मुहा. छलनी कर देना- जर्जर कर देना, छेदों से भर देना; छलनी हो जाना- बेकार हो जाना, वस्तु में बहुत छेद हो जाना; छलनी में डाल छाज में उडाना- बात का बतंगड़ बनाना, थोड़े दोष को बढ़ाकर कहना; कलेजा छलनी होना- निरंतर कष्ट से जी ऊब जाना।

छलविद्या *स्त्री.* (तत्.) माया जाल, जादू, इंद्रजाल।

छलाँग *स्त्री.* (देश.) चौकड़ी, कुदान, फलाँग, पैरों को को दूर तक फैंक कर वेग के साथ आगे बढ़ने का कार्य।

छलाँगना *अ.क्रि.* (देश.) चौकड़ी भरना, कूद-फाँदकर आगे बढ़ना, छलांग मारना।

छला *पुं.* (देश.) उँगली में पहनने का गहना या छल्ला *स्त्री.* कांति, दिव्यता, चमक, द्युति।

छलाना *स.क्रि.* (देश.) छलावा देना, ठगी करवाना, प्रतारणा देना।

छलावा *पुं.* (देश.) 1. भूत-प्रेत का भय या आतंक 2. जंगल में दिखाई देने वाला क्षणिक प्रकाश 3. इंद्रजाल, जादू।

छलिक *पुं.* (तत्.) नाट्यशास्त्र के अंतर्गत रूपकों का एक प्रकार।

छलित *वि.* (तत्.) किसी के द्वारा धोखा दिया गया, छल प्रपंच में फँसा, किसी की वंचना से प्रताड़ित।

छलिया *वि.* (तद्.) कपटी, धोखेबाज, छल-प्रपंच करने वाला, धोखा देने वाला, जिसका व्यवहार कपटपूर्ण हो।

छली *वि.* (तत्.) प्रतारक, प्रपंची, कपटी।

छल्ला *पुं.* (देश.) 1. किसी धातु के तार से बनी सामान्य अंगूठी जो हाथ या पैर की उंगली में पहनी जाए, मुद्रिका, बिछिया या बिछुआ 2. उंगलियों में पहनने के धातु से बनी अंगूठी नुमा गोल चीज 3. कच्ची दीवार की रक्षा के लिए उससे सटाकर बनाई गई पक्की दीवार 4. पंजाबी गीत या तुकबंदी।

छल्ली *स्त्री.* (तत्.) वृक्ष की छाल, त्वचा 2. लता 3. विशेष प्रकार का फूल।

छल्लेदार *वि.* (देश.) 1. छल्लें वाला गोलाकार चिह्न वाला, जिसमें घेरे हो 2. घुंघराला (बालों के लिए)।

छवाई *स्त्री.* (देश.) 1. किसी छप्पर को घास-फूस से छाने का काम 2. छाने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

छवाना *स.क्रि.* (देश.) प्रेर. छप्पर आदि छाने का काम करना।

छवि *स्त्री.* (तत्.) 1. सुंदरता, चमक, आभा, शोभा 2. सुंदर, चमड़ी 3. त्वचा का रंग 4. तेज, प्रकाश, रश्मि *स्त्री.* (अर.) आकृति, चित्र, फोटो, प्रतिकृति।

छवैया *पुं.* (देश.) छाने वाला, जो छप्पर आदि छाने का काम करे।

छहरना *अ.क्रि.* (देश.) फैलाना, छिटकना।

छहराना *स.क्रि.* (देश.) 1. फैलाना, छिटकाना 2. राख कर देना, जला देना।

छहरीला *वि.* (देश.) 1. छरहरा, हल्का 2. फुर्तीवाला, क्रियाशील 3. बिखरने वाला।

छांदस *वि.* (तद्.) 1. छंद:शास्त्र का ज्ञाता, वेदज्ञ या वैदिक ब्राह्मण 2. पिंगलशास्त्र संबंधी 3. मूर्ख *पुं.* (तत्.) 1. वेद विद्या 2. वेद में निपुण।

छांदोग्य *पुं.* (तत्.)1. सामवेद से संबंधित एक ब्राह्मण ग्रंथ 2. छांदोग्य नामक ब्राह्मण ग्रंथ का उपनिषद् (सारतत्व या रहस्य)।

छाँट *स्त्री.* (देश.) 1. छाँटने का काम, काटना, कतरने का काम 2. काटने का तरीका 3. अनाज का ऊपरी विकार या भूसी।

छाँटन *स्त्री.* (देश.) 1. वह तत्व जो अलग कर दिया जाए, विकार 2. अलग की हुई बेकार की चीज।

छाँटना *स.क्रि.* (देश.) 1. काटना, कतरना, किसी पदार्थ से उसके किसी अंश को चुनकर हटाना। प्रयो. सर्दी आते ही माली ने पेड़ छाँटना शुरू कर दिया 2. काट-छाँटकर कोई वस्तु नियोजित करना प्रयो. दरजी कमीज बनाने के लिए कपड़ा छाँटता है 3. अनाज से भूसी अलग करना प्रयो. वह धान से भूसी छाँट रहा है।

छाँदना *स.क्रि.* (देश.) 1. रस्सी से पैरों को बाँधना, जकड़ना या कसना 2. वस्तुएँ या सामान बाँधना।

छाँस *स्त्री.* (देश.) 1. अनाज छाँटने के क्रम में निकली भूसी आदि 2. कूड़ा-करकट।

छाँह *स्त्री.* (देश.) 1. छाया 2. धूप, ताप या वर्षा से से बचने के लिए छाया युक्त स्थान 3. शरण, आश्रय, प्रतिबिंब मुहा. छाँह करना- ओट करना, सामने न पड़ना; छाँह में होना- छिप जाना; छाँह धूप न गिनना- सुख-दुख को न विचारना।

छाँही *स्त्री.* (देश.) दे. छाँह।

छा *स्त्री.* (देश.) 1. छादन, छाना 2. छोटा बच्चा, शिशु

छाई *स्त्री.* (देश.) 1. भस्म या राख 2. जले हुए कोयले का चूर्ण या भस्म *अ.क्रि.* आवृत हो गई, फैल गई, भर गई, अच्छादित।

छाक *स्त्री.* (देश.) 1. तृप्ति या तृप्त होने का भाव 2. दोपहर में किया जाने वाला भोजन 3. मादकता, नशा, मस्ती 4. मैदे से बना एक प्रकार का पकवान (माठ)।

छाकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. खा पीकर तृप्त होना, अघाना 2. नशीली चीज से मदमस्त हो जाना।

छाग *पुं.* (तत्.) 1. बकरी का शावक, बकरा 2. मेष राशि (ज्यो.) 3. न चल सकने वाला घोड़ा 4. यज्ञ में डाली जाने वाली आहुति 5. बकरी का दूध।

छागल *पुं.* (तत्.) 1. बकरा 2. बकरे की खाल से बनी हुई वस्तु, मशक आदि 3. एक प्रकार की मछली *स्त्री.* 1. पानी भरने के लिए चमड़े की मशक 2. मिट्टी से बना करवा 3. एक प्रकार का गहना जिसे स्त्रियाँ पैरों में पहनती हैं 4. घुंघरुओं वाला चांदी का गोल कड़ा।

छाछ *स्त्री.* (देश.) मक्खन निकले दूध या दही का मट्ठा।

छाज *पुं.* (तद्.) सूप, अन्न को साफ करने के लिए सींक का बना पात्र।

छाजन *पुं.* (देश.) ढँकने का कपड़ा, प्रयोग में जैसे भोजन छाजना (खाना कपड़ा) *स्त्री.* (देश.) 1. छप्पर, खपरेल आदि की छत 2. छप्पर को छाने या ढकने की क्रिया 3. सजावट, वेशभूषा आयु. तलवा और उंगलियों के जोड़ के पास फटकर चिड़चिड़ाने वाला कुष्ठ का रोग।

छाजना *अ.क्रि.* (देश.) 1. शोभामय लगना, सुंदर दिखाई पड़ने वाला, फबना, सुशोभित होना 2. छाजन लगाना।

छाता *पुं.* (देश.) धूप, ताप, वर्षा से सुरक्षित रखने वाला प्राय: लोहे की कीली और तीलियों पर आच्छदित वस्त्र से बनी युक्ति।

छाती *स्त्री.* (तद्.) 1. सीना, ह्रदयस्थल 2. पेट और गरदन के बीच का भाग मुहा. छाती जलना- संतप्त होना, मन में जलना, डाह से मन में जलन होना; छाती ठंडी करना- जी की जलन मिटाना; छाती निकालकर चलना- अकड़ कर चलना; छाती पर चढ़ना- कष्ट पहुँचाने के लिए पास जाना; छाती पर साँप लोटना- मन मसोरना, मानसिक व्यथा होना, ईर्ष्या से दुखी होना; छाती पीटना- शोक के आवेग में वक्ष पर आघात

करना; छाती से लगना- गले लगना; छाती से लगाना-गले लगाना, आलिंगन करना; छाती से लगा रखना- अपने पास से जाने न देना; छाती वज्र की होना- अत्यंत सहिष्णु हृदय 2. कलेजा, हृदय, मन, जी मुहा. छाती ठंडी होना- कामना का पूर्ण होना; छाती धड़कना- भय या आशंका से हृदय का कंपित होना; छाती भर आना- प्रेम या करुणा से गद्‌गद् होना 3. स्तन, कुच मुहा. छाती उभरना- युवावास्था के आरंभ होने पर स्त्रियों के स्तनों का बढ़ना 4. हिम्मत, साहस, दृढ़ता।

छात्र *पुं.* (तत्.) 1. विद्‌यार्थी, अंतवासी 2. शिष्य, चेला 3. मधुमक्खियों के छत्ते (छत्र) से निकला शहद।

छात्रवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) अध्ययन के लिए विद्‌यार्थी को दी जाने वाली नियमित धनराशि, वजीफा।

छात्रावास *पुं.* (तत्.) जहाँ विद्‌यार्थी के रहने खाने का प्रबंध हो।

छात्रालय *पुं.* (तत्.) छात्रों के रहने का स्थान।

छाद *पुं.* (तत्.) भवन या चौपाल को ऊपर से ढका हुआ भाग, छप्पर 2. छत।

छादक *वि.* (तत्.) 1. ढकने वाला 2. खपरैल या छप्पर छाने का काम करने वाला 3. कपड़ा लत्ता देने वाला।

छादन *पुं.* (तत्.) 1. ढकने का काम 2. वह वस्तु जिससे छाया या ढका जाए, आवरण, आच्छादन 3. छिपाव, गोपन।

छादित *वि.* (तत्.) जिस पर आवरण पड़ा हो, छाया हुआ, आवृत।

छादिनी *स्त्री.* (तत्.) चमड़े का आवरण।

छादी *वि.* (तद्.) आच्छादन करने वाला, ढकने वाला।

छान *स्त्री.* (तद्.) 1. छप्पर, घास फूस की छाजन 2. पशु के पैर में बाँधी जाने वाली रस्सी।

छानना *स.क्रि.* (देश.) 1. तरल पदार्थ को महीन कपड़े या चलाना जैसी वस्तु से छानकर।

छानबीन *स्त्री.* (देश.) 1. पूर्ण अनुसंधान या पूरी जाँच पड़ताल 2. विवेचना।

छानवे *वि.* (देश.) छियानवे, नब्बे और छह को मिली सख्या, नब्बे से छह अधिक *पुं.* (तद्.) छानवे की संख्या या अंक, जिसके लिखने का प्रकार है- 96

छाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. आच्छादित करना 2. धूप आदि से बचाव के लिए किसी स्थान के ऊपर से कोई वस्तु फैला देना जैसे- छप्पर छाना 3. बिछाना, फैलाना 4. शरण में लेना, रक्षा करना *अ.क्रि.* 1. फैलाना, पसरना, बिछाना, भर जाना जैसे- बादल छाना, हरियाली छाना 2. डेरा डाल लेना, वास करना, टिके रहना।

छानी *स्त्री.* (देश.) छप्पर, बसेरा।

छाप *स्त्री.* (देश.) 1. खुदे या उभरे हुए ठप्पे का चिह् चिह्न 2. असर, प्रभाव 3. मुहर का चिह्न, मुद्रा 4. शंख, चक्र गदा, पद्‌म आदि के चिह्न जिन्हें वैष्णव अपने अंगों पर गरम धातु से चिह्नित कराते हैं 4. विशिष्ट स्वरूप 5. लकड़ी का बोझ 6. बाँस की टोकरी।

छापना *स.क्रि.* (देश.) मुद्रित की जाने वाली सामग्री या पाठ आदि को पहले सांचे में बनाकर, गढकर या ढाल कर किसी अन्य सतह पर उसकी छाप लगाना 2. ठप्पे से निशान डालना, मुद्रित करना 3. टीका लगाना, चेचक का टीका लगाना।

छापा *पुं.* (देश.) 1. ऐसा साँचा जिस पर कोई रंग या स्याही आदि पोतकर किसी वस्तु पर उसकी अथवा उस पर खुदे चिह्नों का ठप्पा लगाया जाए 2. मुहर, मुद्रा 3. चिह्न 4. व्यापार-चिह्न मार्का (ट्रेड मार्क) 5. शरीर पर किसी ठप्पे से अंकित चिह्न या आकृति 6. मुद्रण यंत्र, प्रेस 7. प्रतिकृति 8. असावधान शत्रु पर धावा।

छापा खाना *पुं.* (देश.+फ़ा.) वह स्थान जहाँ पुस्तके आदि छापी जाती है, मुद्रणालय, प्रेस।

छापामार *वि.* (देश.) बेखबर शत्रु या अपराधी पर अचानक छापा मारने वाला।

छाया *स्त्री.* (तत्.) 1. हल्का अंधेरा, साया 2. छाया वाला स्थान जहाँ किसी प्रकार की आड़ या व्यवधान के कारण सूर्य या दीपक आदि का प्रकाश न पड़ता हो 3. परछाई 4. प्रतिबिंब, दर्पण आदि में दिखाई पड़ने वाली वस्तुओं की आकृति, अक्स 5. तद्रूप वस्तु, प्रतिकृति, सदृश वस्तु 6. अनुकरण, नकल 7. कांति, दीप्ति, शरण, रक्षा 8. आर्या छंद का भेद जिसमें 17 गुरु और लघु होते हैं 9. भूत-प्रेत का प्रभाव 10. झलक।

छायाकर *पुं.* (तत्.) 1. छाया करने वाला 2. किसी के लिए छाता लेकर में चलने वाला 3. एक छंद 4. (अस्पष्ट) दीखने वाली आकृति।

छाया कृति *स्त्री.* (तत्.) छाया के रूप में (अस्पष्ट) दीखने वाली आकृति।

छाया चित्र *पुं.* (तत्.) फोटो, कैमरे से लिया गया चित्र।

छाया चित्रण *पुं.* (तत्.) कैमरे से फोटो खींचने की प्रक्रिया, फिल्म बनाना।

छायातरु *पुं.* (तत्.) छायादार वृक्ष, छायम।

छायादान *पुं.* (तत्.) बरतन के रखे तेल में अपनी छाया देखकर ग्रह शांति के लिए दान की गई राशि।

छाया नाटक *पुं.* (तत्.) ऐसा नाटक जिसमें परदे के पीछे से पात्रों पर प्रकाश डालकर परदे पर उनकी आकृति प्रदर्शित की जाती है, छायानाट्य (शैडो प्ले)।

छायापथ *पुं.* (तत्.) आकाश गंगा, देव पथ।

छायामय *पुं.* (तत्.) छायायुक्त, छायादार।

छायायुक्त *वि.* (तत्.) छाया से परिपूर्ण या भरा हुआ।

छाया लोक *पुं.* (तत्.) काल्पनिक जगत्

छायावाद *पुं.* (तत्.) आधुनिक हिंदी साहित्य की तीसरी काव्यधारा जो द्विवेदी युग के बाद आई, स्वच्छंदतावादी भावधारा को प्रश्रय देने वाली यह काव्यधारा मनुष्य और प्रकृति के मध्य रहस्यवादी मनोवृति को उजागर करती है। छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह भी कहा जाता है।

छायावान *वि.* (तत्.) 1. छायायुक्त, छाँह वाला 2. शांतियुक्त।

छायाविप्रतिपत्ति *स्त्री.* (तत्.) रोगी की कांति, आभा, चेष्टा आदि में उलटफेर या परिवर्तन देखकर यह निश्चय करना कि अब यह आसान्न-मरण है या नहीं अथवा अच्छा होगा या नहीं।

छायावेष्टित *वि.* (तत्.) अस्पष्ट, धुँधला।

छार *पुं.* (तद्.) 1. क्षार, जली हुई वनस्पतियों या रासायनिक क्रिया से धुली हुई धातुओं की राख का नमक 2. खारा नमक 3. खारा पदार्थ 4. भस्म, राख, खाक 5. धूल, गर्द, रेणु।

छार्दे *स्त्री.* (तत्.) 1. कै करने का रोग, मचली या वमन 2. छत वाला घर, सुरक्षित जगह 3. तेज 4. अंदर का उद्गार।

छाल *स्त्री.* (तद्.) 1. पेड़ों के धड़, शाखा, टहनी और जड़ के ऊपर चिपका आवरण जो किसी-किसी में मोटा और कड़ा होता है और किसी में पतला और मुलायम, वृक्ष की त्वचा, वल्कल, बक्कल 2. छाल का बना वस्त्र 3. त्वचा, चमड़ा 4. एक प्रकार की मिठाई।

छालना *अ.क्रि.* (देश.) 1. छलनी में रखकर साफ करना, छानना, चालना 2. छेद करना, झँझरा करना।

छाला *पुं.* (देश.) 1. फफोला, क्षत व्रण 2. छाल या चमड़ा 3. शीशे आदि पर उभरा हुआ दाग।

छाली *स्त्री.* (देश.) 1. कटी हुई सुपारी 2. पूगी फल।

छाव *स्त्री.* (देश.) 1. छाया, साया 2. शरण, पनाह 3. प्रतिबिंब, अक्स।

छावनी *स्त्री.* (देश.) 1. सेना के ठहरने का स्थान, किसी नगर का वह स्थान जिसमें सेना के कार्यालय, आवास, बाजार आदि होते हैं 2. छप्पर, छान 3. डेरा, पड़ाव, सैन्य शिविर।

छासठ *वि.* (देश.) छियासठ, जो गिनती में साठ और छह हो।

छिंकना *स.क्रि.* (अनु.) छींकने में प्रवृत्त करना।

छिःछिः *अव्य.* (अनु.) 1. घृणासूचक शब्द, घिन जताने का शब्द 2. तिरस्कार या अरुचिसूचक शब्द।

छिकनी *स्त्री.* (देश.) 1. एक बूटी जिसे सूँघने से बहुत छींक आती हैं 2. नक छिकनी, नसवार।

छिक्कनी *स्त्री.* (देश.) दे. छिकनी।

छिगुनी *स्त्री.* (देश.) 1. सबसे छोटी उँगली 2. कनिष्ठिका।

छिछड़ा *पुं.* (देश.) छीछड़ी।

छिछड़ी *स्त्री.* (देश.) लिंगेद्रिय के ऊपर का आवरण जिसे मुसलमानों में खतने के समय काट दिया जाता है।

छिछलना *अ.क्रि.* (देश.) छितरना, फिसलना, छटकना, छूते हुए निकल जाना।

छिछला *वि.* (देश.) 1. उथला 2. क्षुद्र, छिछोरा 3. निम्न स्तर का जिसमें गांभीर्य न हो।

छिछियाना *अ.क्रि.* (अनु.) कुत्सा करना, निंदा करना, घिन करना।

छिछोरपन *पुं.* (देश.) छिछोरा होने का भाव, क्षुद्रता, ओछापन, नीचता।

छिछोरा *वि.* (देश.) क्षुद्र, ओछ, जो गंभीर या सौम्य न हो, नीच प्रकृति का।

छिछोरापन *पुं.* (देश.) दे. छिछोरपन।

छिजाना *अ.क्रि.* (देश.) छीजना का प्रेर. रूप, किसी वस्तु को ऐसा करना कि वह धीरे-धीरे नष्ट हो जाए या छीज जाए, छीजने या नष्ट होने देना।

छिटकना *अ.क्रि* (अनु.) 1. गिरकर या फटकर इधर-उधर फैलना, चारों ओर बिखना, छितराना 2. प्रकाश की किरणों का चारों ओर फैलाना, प्रकीणनि जैसे चाँदनी, या तारों का छिटकना 3. छटकना, दूर भागना, अलग हो जाना।

छिटका *पुं.* (देश.) पालकी का परदा।

छिटकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. चारों ओर फैलाना, इधर-उधर बिखराना 2. छटकना, दूर करना।

छिड़कना *स.क्रि.* (देश.) 1. जल या दूसरे द्रव के छींटे करना 2. न्योछावर करना 3. भुरभुराना।

छिड़कवाना *स.क्रि.* (देश.) छिड़कने का काम कराना।

छिड़काव *पुं.* (दे.) छिड़कने की क्रिया, छीटों से तर करना प्रयो. यहाँ सडक़ों पर छिड़काव नहीं होता।

छिड़ना *अ.क्रि.* (देश.) 1. आरंभ होना, शुरु होना 2. अनवन या लड़ाई होना।

छितराना *स.क्रि.* (देश.) छोटे टुकड़ो या कणों का गिरकर इधर-उधर फैलना, तितर-बितर होना, बिखरना, इधर-उधर।

छिति *स्त्री.* (तद्.) दे. क्षिति।

छितिज *पुं.* (तद्.) दे. क्षितिज।

छितिनाथ *पुं.* (तद्.) दे. क्षितिनाथ।

छितीश *पुं.* (तद्.) दे. क्षितिश

छिदना *अ.क्रि.* (देश.) 1. छेद युक्त होना, सूराखदार होना, भिदना, बिंधना 2. छेद हो जाना 2. क्षतविक्षत होना, घायल होना, जख्मी होना प्रयो. उसका सारा शरीर तीरों से छिद गया था।

छिदरा *वि.* (देश.) ओछा।

छिदि *स्त्री.* (तत्.) 1. कुल्हाड़ी 2. उच्छेदन की क्रिया।

छिद्र *पुं.* (तत्.) 1. छेद, सूराख 2. गड्ढा, विवर, बिल 3. अवकाश, जगह 4. दोष, त्रुटि।

छिद्रक *पुं.* (तत्.) कागजों आदि में छेद करने वाला उपकरण।

छिद्रदर्शी *वि.* (तत्.) दोषदर्शी, पराया दोष देखने वाला, नुक्स निकालने वाला 2. भेद की बात ढूँढने वाला।

छिद्रान्वेषण *पुं.* (तत्.) पराया दोष ढूँढना, नुक्स निकालना, छिद्रानुसंधान।

छिद्रान्वेषी *वि.* (तत्.) छिद्र ढूँढने वाला, पराया दोष ढूँढने वाला।

छिद्रित *वि.* (तत्.) 1. छेदा हुआ, बेधा हुआ 2. छिद्र युक्त जिसमें दोष लगा हो 3. दूषित, ऐबी।

छिनकना *स.क्रि.* (देश.) साँस के साथ नाक का मल बाहर निकालना, नाक छिनकना।

छिनना *अ.क्रि.* (देश.) 1. छीन लिया जाना, हरण होना 2. पत्थर का छेनी या टाँकी के आघात से कटना 3. सिल, चक्की आदि का छेनी के आघात से खुरदरी या गड्ढेदार होना; कुटना।

छिनवाना *स.क्रि.* (देश.) छीनने का काम कराना।

छिनार, छिनाल *स्त्री.* (देश.) व्यभिचारिणी, कुलटा, पर-पुरुष गामिनी।

छिनाला *पुं.* (देश.) स्त्री-पुरुष का अनुचित सहवास, व्याभिचार।

छिन्न *वि.* (तत्.) 1. जो कटकर अलग हो गया हो, खंडित 2. क्षीण, थका हुआ, क्लांत 3. दूर किया हुआ, नष्ट-भ्रष्ट।

छिन्नक *वि.* (तत्.) अंशत: फटा हुआ, जिसका कुछ अंश कटा हो।

छिन्न-भिन्न *वि.* (तत्.) 1. कटा फटा, खंडित, टूटा-फूटा, नष्ट भ्रष्ट 2. जिसका क्रम खंडित हो गया हो, अस्त व्यस्त, तितर-बितर।

छिन्न मस्तक *वि.* (तत्.) जिसका सिर कट गया हो।

छिन्न मस्ता *वि.* (तत्.) 1. शा. अर्थ जिसका सिर कटा हो, तंत्रशास्त्र में उल्लिखित दश देवियों में से एक जो अपना सिर हथेली पर धरे गले से निकलती रक्त धारा को पीती हुई मानी जाती है।

छिन्न मूल *वि.* (तत्.) जड़ से कटा हुआ, मूलोच्छेद किया हुआ।

छिन्न संशय *वि.* (तत्.) जिसके मन का तर्क-वितर्क का संदेह दूर हो गया हो, संशय-रहित।

छिपकली *स्त्री.* (देश.) 1. एक रेंगने वाला जंतु जो अक्सर घर की दीवारों पर दिखाई देता है और कीड़े-मकोड़े खाता है, गृहगोधा, भित्तिका 2. कृश शरीर की औरत 3. कान का एक गहना।

छिपना *अ.क्रि.* (देश.) 1. आवरण या ओट में हो जाना, ऐसी जगह पद चले जाना जहाँ कोई देख न सके, दृश्य न होना 2. अदृश्य होना 3. स्पष्ट न होना 4. गुप्त रहना।

छिपाछिपी/छिपा छिपौअल *क्रि.वि.* (देश.) चुपके से छिपछिप कर, छिपाकर *स्त्री.* लुकाछिपी का खेल, आँख मिचौनी।

छिपाना *स.क्रि.* (देश.) 1. दूसरों को दिखाई न पड़ने के उद् देश्य से किसी वस्तु अथवा व्यक्ति का गुप्त स्थान में आड़ में करना 2. शरीर के किसी अंग को ढँकना 3. प्रकट न करना, गुप्त रखना।

छिपाव *पुं.* (देश.) छिपना अथवा छिपाने की क्रिया या भाव, गोपन।

छिपिया *पुं.* (देश.) दर्जी *स्त्री.* (देश.) छोटा छीपा, डलिया।

छिपे-छिपे *क्रि.वि.* (देश.) इस प्रकार गुप्त रूप से कि दूसरों को पता न चले।

छिप्र *क्रि.वि.* (तद्.) क्षिप्र।

छिमता *स्त्री.* (तद्.) क्षमता।

छियना *क्रि.* (देश.) क्षीण होना।

छिया *स्त्री.* (देश.) गुह, मल।

छियाज *पुं.* (देश.) ब्याज की रकम पर भी जोड़ा जाने वाला ब्याज, कटुआँ ब्याज।

छियानबे *वि.* (तद्.) जो गिनती में नब्बे से छ: अधिक हो *पुं.* उक्त की सुचक संख्या 96।

छियालीस *वि.* (तद्.) जो गिनती में चालीस से छ: अधिक हो *पुं.* उक्त की सूचक संख्या 46।

छियासठ *वि.* (तद्.) जो गिनती में साठ से छ: अधिक हो *पुं.* उक्त की सूचक संख्या 66।

छियासी *वि.* (तद्.) जो गिनती में अस्सी से छ: अधिक हो *पुं.* उक्त की सूचक संख्या 86।

छियासठ *वि.* (तद्.) जो गिनती में साठ से छ: अधिक हो *पुं.* उक्त की सूचक संख्या 66।

छिकरना *क्रि.* (देश.) छिड़कना।

छिरना *अ.क्रि.* (देश.) छिलना।

छिरिआना *अ.क्रि.* (देश.) छिटकना उदा. उपसल केस कुसुम छिरिआयल -विद्यापति।

छिलक *पुं.* (देश.) तिलक नामक वृक्ष।

छिलकना *अ.क्रि.* (देश.) छिड़कना।

छिलका *पुं.* (तद्.) वह आवरण जिसके अन्तर्गत फल का सार भाग रहता है, फल की त्वचा जैसे- केले या सेब का छिलका।

छिलन *स्त्री.* (देश.) 1. छिलने या छीलने की क्रिया या भाव 2. शरीर के किसी अंग की त्वचा रगड़ आदि के कारण छिल जाने से होने वाला घाव।

छिलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. फलों आदि का छिलका उतारा जाना 2. वृक्ष आदि की छाल उतारी जाना 3. पशु आदि की खाल मांसल भाग पर से उतारी जाना 4. शरीर के किसी अंग में रगड़ लगने से त्वचा का उतर जाना।

छिलवाना *स.क्रि.* (देश.) छलना का प्रे. रूप, छीलने का काम दूसरे से कराना।

छिलाई *स्त्री.* (देश.) छिलने या छीलने की क्रिया या भाव, छीलने की मजदूरी।

छिलाना *स.क्रि.* (देश.) छीलने का काम दूसरे से कराना।

छिल्लड़ *पुं.* (देश.) छिलका।

छींक *स्त्री.* (तद्.) 1. शरीर का एक प्राकृतिक व्यापार जिसमें श्वास की वायु अकस्मात नाक और गले से एक साथ ही एक विशिष्ट प्रकार का शब्द करती हुई निकलती है 2. उक्त शारीरिक व्यापार से होने वाला शब्द।

छींकना *अ.क्रि.* (देश.) सहसा जोर से नाक और मुँह से इस प्रकार साँस फेंकना कि जोर का शब्द हो।

छींका *पुं.* (तद्.) 1. दीवार की खूंटी अथवा छत की कड़ी में टाँगा या लटकाया जाने वाला तारों या रस्सियों का वह उपकरण जिसमें खाने, पीने आदि की रखी हुई वस्तुएँ चूहों, बिल्लियों, बच्चों आदि से सुरक्षित रहती हैं मुहा. बिल्ली के भाग्य से छींका टूटना- संयोग से कोई अभीष्ट या वांछित घटना घटित होना 2. बैलों के मुँह पर बाँधी जाने वाली रस्सियों की जाली 3. झूला।

छींट *स्त्री.* (तद्.) 1. पानी अथवा किसी द्रव पदार्थ का किसी तल से टकराने पर उड़ने वाला छोटा जल-कण या बूँद 2. किसी वस्तु, वस्त्र, शरीर आदि पर उक्त जल-कण या बूँद पड़ने से होने वाला दाग या धब्बा 3. एक प्रकार का वह कपड़ा जिस पर छापकर बेल-बूटे या फूल पत्तियाँ बनाई गई हों 4. चित्र कला में, चित्रों में बनाए जाने वाले बेल-बेटे या फूल-पत्तियाँ।

छींटना *स.क्रि.* (देश.) छितरना।

छींटा *पुं.* (देश.) 1. झटके से उछली या उछाली हुई जल अथवा द्रव पदार्थ की बूँदें जैसे- मुँह पर पानी का छिंटा देना, कीचड़ में पत्थर फेंकने से छीटे उड़ना 2. उक्त बूँदों के वस्त्र आदि पर पड़ने से होने वाला धब्बा 3. हलकी वृष्टि 4. मुट्ठी में बीज भरकर एक बार में खेत में बिखेरने की प्रक्रिया 5. बोआई का वह ढंग जिसमें बीज खेत में छींटे जाते हैं 6. चंडू या मदक की एक मात्रा, दम 7. किसी का खिन्न या लज्जित करने के लिए कही जाने वाली चुभती हुई व्यंगपूर्ण बात।

छी *अव्य.* (अनु.) घृणा, तिरस्कार, धिक्कार, आदि का सूचक एक अव्यय मुहा. छी-छी करना- घृणा करना *स्त्री.* छिया, मल।

छीअना *स.क्रि.* (देश.) छूना।

छीआ *स्त्री.* (देश.) छिया।

छीआ-बीआ *वि.* (अनु.) छिन्न-भिन्न।

छीका *पुं.* (देश.) छींका।

छीछ *वि.* (देश.) क्षीण, दुर्बल उदा. लाज की आंचनि या चित राचन नाच नचाई हों नेह न छीछैं -देव।

छीछड़ा *पुं.* (देश.) 1. कटे हुए मांस का रद्दी टुकड़ा 2. पशुओं की अँतड़ी का वह भाग जिसमें मल भरा होता है।

छीछना *क्रि.* (देश.) क्षीण होना।

छीछला *वि.* (देश.) छिछला।

छीछा *वि.* (देश.) छिछला।

छीछालेदर *स्त्री.* (देश.) बुरी तरह से की हुई दुर्गति।

छीज *स्त्री.* (देश.) 1. किसी वस्तु का वह अंश जो नष्ट हो गया हो 2. कमी, घाटा, हानि।

छीजना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. उपयोग, व्यवहार आदि में आते रहने अथवा पुराने पड़ने के कारण किसी चीज का क्षीण होना या घिस जाना 2. उपयोग में आ जाने अथवा व्यय होने के कारण किसी चीज का कम होना 3. हानि होना उदा. लंकापति-तिय कहति पियासों या मैं कछू न छीजो -सूर 4. नष्ट होना।

छीटा *स्त्री.* (देश.) छींट *पुं.* (देश.) 1. बाँस की खमाचियों या किसी अन्य वृक्ष की पतली टहनियों का बना हुआ टोकरा 2. चिलमन, चिक *स्त्री.* छिटनी।

छीड़ *स्त्री.* (देश.) मनुष्यों के जमघट का अभाव, भीड़ का विपर्याय।

छीण *वि.* (तद्.) क्षीण, दुर्बल, टूटा हुआ उदा. छीणे जाणि छछोहा छूटा -प्रिथीराज।

छीत *स्त्री.* (देश.) 1. छूने या स्पर्श करने की क्रिया या भाव 2. संपर्क, संबंध उदा. सो करू सूर जेहि भाँति रहै पति जनि बल बाँधि बढ़ावहु छीति -सूर।

छीदा *वि.* (देश.) जो घना या सघन न हो उदा. मांहिली माँड़ली छीदा होइ -नरपतिनाल्ह।

छीन *वि.* (तद्.) क्षीण।

छीन-झपट *स्त्री.* (देश.) (छीनना+झपटना) किसी से अथवा आपस में एक दूसरे से कुछ छीनने के लिए झपटने की क्रिया या भाव।

छीनना *स.क्रि.* (तद्.) 1. छिन्न करना, काटकर अलग करना 2. किसी के हाथ से कोई वस्तु बलात् ले लेना 3. अनुचित रूप से किसी की वस्तु अपने अधिकार में कर लेना 4. किसी को दिया हुआ अधिकार, सुविधा आदि वापस ले लेना।

छीना *स.क्रि.* (देश.) छूना।

छीना खसोटी *स्त्री.* (देश.) छीन-झपट।

छीना झपटी *स्त्री.* (देश.) छीन-झपट।

छीप *स्त्री.* (देश.) 1. मुद्रण का चिह्न, छाप 2. चिह्न 3. दाग 4. एक प्रकार का चर्म रोग *वि.* (तद्) तेज, वेगवान।

छीपा *पुं.* (देश.) 1. बाँस आदि की खमाचियों का टोकरा 2. थाली।

छीपी *पुं.* (देश.) 1. वह व्यक्ति जो कपड़ों पर बेल-बूटे आदि छापने का काम करता हो 2. दरजी।

छीबर *स्त्री.* (तद्.) 1. छींट नामक कपड़ा 2. एक प्रकार की चुनरी उदा. हा हा हमारी सौं साँची कहौ वह कौन ही छोहरी छीवर वारी -देव।

छीबी *स्त्री.* (देश.) 1. पौधों की फली जिसमें बीज रहते हैं 2. मटर की फली 3. पशुओं विशेषतः गाय, बकरी, भैंस आदि के थन में फली के आकार का वह अंश जो नीचे लटकता रहता है और जिसे खींच तथा दबाकर दूध निकाला जाता है।

छीमर *स्त्री.* (देश.) छीबर।

छीमी *स्त्री.* (देश.) छीबी।

छीया *पुं.* (अनु.) विष्ठा।

छीर *पुं.* (देश.) क्षीर 1. चीर 2. कपड़े की लम्बाई वाले सिरे का किनारा 3. उक्त किनारे पर की पट्टी या धारी।

छीरज *पुं.* (तद्.) 1. चन्द्रमा 2. दही।

छीरधि *पुं.* (तद्.) क्षीरधि, समुद्र।

छीरप *पुं.* (तद्.) क्षीरप दूध-पीता बच्चा, शिशु *वि.* दूध पीनेवाला।

छीर-फेन *पुं.* (तद्.) (सं. क्षीर+फेन) दूध पर की मलाई।

छीर-सागर *पुं.* (तद्.) क्षीर-सागर।

छीलक *पुं.* (देश.) छिलका।

छीलन *स्त्री.* (देश.) 1. छीलने की क्रिया या भाव 2. किसी वस्तु के वे छोटे टुकड़े जो उसे छीलने पर निकलते हैं।

छीलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. किसी चीज के ऊपर जमे या सटे आवरण को तह या परत खींचकर उससे अलग करना जैसे- फल के ऊपर का छिलका, पेड़ पर की छाल छीलना, प्याज छीलना 2. उगी या जमी हुई चीज का काट, खुरच या नोचकर निकालना या हटना जैसे- घास छीलना, खोटे उस्तरे से दाढ़ी छीलना, रंदे से लकड़ी छीलना।

छीलर *पुं.* (देश.) पानी का भरा हुआ छोटा गड्ढा *वि.* छिछला।

छीव *पुं.* (देश.) क्षीव।

छीवना *स.क्रि.* (देश.) छीना, छूना।

छीवर *स्त्री.* (देश.) छीबर।

छीवनी *स्त्री.* (देश.) छँगुली।

छीवली *स्त्री.* (देश.) छँगुली।

छीआई *स्त्री.* (देश.) छूने या छुआने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

छीआना *स.क्रि.* (देश.) छुलाना।

छुई-मुई *स्त्री.* (देश.) छुई-मुई नामक एक पौधा।

छुगकूँ *पुं.* (देश.) घुँघरू।

छुच्छ *वि.* (देश.) छूछा।

छुच्छी *स्त्री.* (देश.) 1. कोई छोटी नली जैसे- दीए में की छुच्छी, जिसके अंदर कपड़े की बत्ती रहती है 2. कान या नाक में पहनने के फूल या लौंग का वह पूरक अंश जो बहुत छोटी पतली नली के रूप में होता है और जिसमें फूल या लौंग के नीचे की कील घुमा या धँसाकर जमाई या बैठाई जाती है 3. कीप, जिसकी सहायता से बोतलों में तेल डाला जाता है।

छुच्छू *वि.* (देश.) 1. मूर्ख 2. तुच्छ।

छुछमछली *स्त्री.* (देश.) मेंढक आदि कई छोटे जल-जंतुओं के बच्चों का वह आरंभिक रूप जो बहुत-कुछ लंबी पूंछ वाले कीड़े अथवा मछली के बच्चे जैसा होता है।

छुछहँड़ *स्त्री.* (देश.) 1. वह हाँड़ी जिसमें से पकाई हुई खाद्य वस्तु निकाल ली गई हो 2. खाली हाँडी।

छुछूंदर *स्त्री.* (देश.) छछूँदर।

छुट *अव्य.* (देश.) छोड़कर, अतिरिक्त, सिवा जैसे- जिसमें हिंदी छुट और किसी बोली का पुट न हो -इंशाउल्ला खाँ *प्रत्य.* एक प्रत्यय जो कुछ यौगिक शब्दों के अंत में लगाकर अनियंत्रित आचरण करने वाले का सूचक होता है जैसे- बत-छुट, हथ-छुट आदि करने वाला *वि.* छोटा का लघु रूप जो उसे यौगिक शब्दों में प्राप्त होता है जैसे- छुट-भैया।

छुटकना *अ.क्रि.* (देश.) छुटना (छोड़ा जाना)।

छुटकाना *स.क्रि.* (देश.) छुड़ाना।

छुटकारा *पुं.* (देश.) 1.छूटने अथवा छुड़ाए जाने अर्थात् मुक्त होने या मुक्त किए या कराए जाने की अवस्था, क्रिया या भाव, मुक्ति जैसे- कारागार से छुटकारा पाना या मिलना 2. किसी प्रकार की विपत्ति, संकट आदि से सकुशल बच निकलने का भाव जैसे- कष्टों से छुटकारा पाना या मिलना।

छुटना *अ.क्रि.* (देश.) छूटना।

छुटपन *पुं.* (देश.) 1. छोटे होने की अवस्था या भाव, छोटाई 2. बचपन, लड़कपन।

छुट-पुट *वि.* (देश.) 1. मूल अंग से कटकर छोटे-छोटे टुकड़ों के रूप में इधर-उधर फैला हुआ 2. जो थोड़ा-थोड़ा करके कभी कहीं और कभी कहीं घटित हो, चुट-पुट जैसे- छुट-पुट मुठभेड़, छुट-पुट वर्षा आदि।

छुटभैया *पुं.* (देश.) व्यक्ति जिसकी गिनती बड़े आदमियों में न होकर छोटे या साधारण आदमियों में होती हो, बड़ों की तुलना में अपेक्षया निम्न स्थिति का व्यक्ति।

छुटलना *अ.क्रि.* (देश.) छुटना।

छुटाना *स.क्रि.* (देश.) छुड़ाना।

छुटौती *स्त्री.* (देश.) छूट।

छुट्टा *वि.* (देश.) 1. (वह) जो बंधन से मुक्त होकर स्वतंत्रतापूर्वक विचरण कर रहा हो 2. (जंतु या जीव) जो अपने दल, वर्ग से निकलकर अलग हो गया हो जैसे- छुट्टा कबूतर, छुट्टा बंदर 3. एकाकी, अकेला 4. फुटकर।

छुट्टी *स्त्री.* (देश.) 1. छूटने या छोड़े जाने की क्रिया या भाव, छुटकारा जैसे- चलो इस काम से भी छुट्टी मिली 2. कोई काम कर चुकने के उपरान्त अथवा कुछ निश्चित समय तक काम करने के उपरान्त मिलने वाला अवकाश जैसे- भोजन करने के लिए दस मिनट की छुट्टी मिलती है 3. वह दिन जिसमें नियमित रूप से लोग काम पर उपस्थित नहीं होते जैसे- होली की दो दिन की छुट्टी मिलती है 4. वह दिन जिसमें काम पर से अनुपस्थित रहने की स्वीकृति मिलती है जैसे- विवाह में चलने के लिए दो दिन की छुट्टी लेनी पड़ेगी 5. कहीं से चलने या जाने की अथवा इसी प्रकार के और किसी काम की अनुमतिया आज्ञा।

छुड़ाई *स्त्री.* (देश.) छोड़ने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक, *स्त्री.* (तद्.) छुड़ाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

छुड़ाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. बंधन, बाधा आदि से मुक्त कराना, उन्मुक्त या स्वतंत्र कराना जैसे-जेल से कैदी छुड़ाना 2. जकड़, पकड़ आदि से अलग या रहित करना जैसे- पल्ला या हाथ छुड़ाना 3. डोरे, रस्सी आदि में का उलझाव दूर करना जैसे- गाँठ छुड़ाना 4. देन चुकाकर अथवा और किसी प्रकार से अपनी वस्तु वापस लेना जैसे-(क) ऋण चुकाकर धरोहर छुड़ाना (ख) दंड भरकर कांजी हौज से गाय छुड़ाना 5. किसी को सेवा से अलग करना, नौकरी से हटाना 6. किसी के साथ चिपकी, सटी या लगी हुई वस्तु अथवा उसका कोई अंश अलग करना जैसे- (क) लिफाफे पर से टिकट छुड़ाना (ख) कपड़े पर का दाग या धब्बा छुड़ाना 7. (देय धन में) कुछ कमी कराना जैसे- सौ रुपयों में से दस रुपए तो तुमने छुड़ा ही लिए 8. किसी प्रकार की क्रिया, प्रवृत्ति आदि से रक्षित या रहित करना जैसे-(क) बालक की पढ़ाई छुड़ाना (ख) किसी का अभ्यास या आदत छुड़ाना (ग) हाथा-बाहीं करने वाले लागों को छुड़ाना 9. छुड़वाना जैसे- आतिशबाजी छुड़ाना।

छुड़ैया *वि.* (देश.) बंधन से छुड़ाने या मुक्त कराने वाला *स्त्री.* 1. छोड़ने की क्रिया या भाव 2. गुड्डी गुड्डी उड़ाने वाले की सहायता के लिए उसकी गुड्डी को कुछ दूर ले जाकर इस प्रकार उसे हवा में छोड़ना कि उड़ानेवाला उसे सहज में उड़ा सके *प्र.क्रि.* देना।

छुतहा *वि.* (देश.) 1. (रोग) जो छूत से फैलता या बढ़ता हो, छूतवाला, संक्रामक 2. जो किसी प्रकार की छूत लगने के कारण अस्पृश्य हो गया हो 3. जिसे किसी कारण से छूना निषिद्ध हो।

छुतिहर *वि.* (देश.) छुतहा।

छुतिहा *वि.* (तद्.) छुतहा।

छुद्र *वि.* (तद्.) क्षुद्र।

छुद्रघंटिका *स्त्री.* (तद्.) क्षुद्रघंटिका।

छुद्रावली *स्त्री.* (तद्.) क्षुद्रघंटिका।

छुधा *स्त्री.* (तद्.) क्षुधा।

छुधावंत *वि.* (तद्.) जिसे भूख लगी हो, भूखा।

छुधित *वि.* (तद्.) क्षुधित, भूखा।

छुन्य *वि.* (देश.) शून्य।

छुप *पुं.* (तद्.) क्षुप।

छुपना *अ.क्रि.* (देश.) छिपना।

छुभित *वि.* (देश.) क्षुब्ध।

छुभिराना *अ.क्रि.* (देश.) क्षुब्ध होना।

छुरहंडी *स्त्री.* (देश.) वह आधान या पात्र जिसमें नाई उस्तरा, कैंची आदि रखते हैं, किस्बत।

छुरा *पुं.* (तद्.) 1. लंबे फलवाला बड़ा चाकू 2. बाल मूड़ने वाला उस्तरा।

छुरिका *स्त्री.* (तद्.) छुरी।

छुरित *पुं.* (तत्.) लास्य नृत्य का वह प्रकार जिसमें नायक और नायिका परस्पर आलिंगन, चुंबन आदि भी करते चलते हैं।

छुरी *स्त्री.* (तद्.) लंबे फलवाला एक प्रकार का चाकू, मुहा. (किसी पर) छुरी चलाना या फेरना - जान-बूझकर ऐसा काम करना जिससे किसी की बहुत बड़ी हानि हो।

छुलरधार *स्त्री.* (देश.) 1. छुरे की धार 2. किसी हथियार की तेज धार *वि.* तेज धारवाला (अस्त्र)।

छुलाना *स.क्रि.* (देश.) स्पर्श करना।

छुवना *स.क्रि.* (देश.) छूना।

छुवाना *स.क्रि.* (देश.) छुलाना।

छुहना *अ.क्रि.* (देश.) 1. छूआ जाना 2. किसी तरल पदार्थ से लेपा या पोता जाना मुहा. त्यौं त्यौं छुही गुलाब सै छतिया अति सियराति-बिहारी *स.क्रि.* छूना।

छुहारा *पुं.* (देश.) खजूर की जाति का एक सूखा मेवा।

छुही *स्त्री.* (देश.) खड़िया नाम की सफेद मिट्टी।

छूँछा *वि.* (देश.) छूछा।

छूँटा *पुं.* (देश.) एक प्रकार का गहना जो काले काँच की गुरियों का बना होता है।

छू *पुं.* (अनु.) मंत्र पढक़र फूँक मारने का शब्द; मुहा. छू मंतर होना-चंपत होना, गायब होना।

छूआछूत *स्त्री.* (देश.) 1. अछूत अर्थात् अस्पृश्य को को न छूने या उससे अपने को न छुलाने की भावना या विचार 2. धार्मिक या सामाजिक दृष्टि से अस्पृश्य वस्तुओं या व्यक्तियों से छूए जाने का भाव 3. बच्चों का एक खेल, जिसमें किसी एक लडक़े को दूसरे लडक़ों को छूना पड़ता है।

छूई-मुई *पुं.* (देश.) लजालू या लज्जावंती नाम का पौधा जो स्पर्श किए जाने पर अपनी पत्तियाँ सिकोड़ लेता है।

छूछा *वि.* (देश.) 1. (पात्र) जिसमें कुछ भी न हो, खाली 2. (व्यक्ति) जिसके पास या हाथ में धन, हथियार आदि कुछ न हो जैसे- छूछे हाथ चला आया हूँ 3. तत्वहीन, नि:सार।

छूछम *वि.* (देश.) 1. सूक्ष्म, 2. अल्प, थोड़ा, थोड़ी मात्रा का।

छूट *स्त्री.* (देश.) 1. छूटने अर्थात् बंधन आदि से मुक्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव जैसे- बच्चों को मिलने वाली खेलने की छूट 2. नियम, बंधन, मर्यादा आदि से मिली हुई स्वतंत्रता 3. वह रियायत या सुविधा जिसके कारण किसी को कोई कर्तव्य या दायित्व पूरा न करने पर भी दंड का भागी नहीं समझा जाता है 4. देयधन चुकाने में किसी कारण से मिलने वाली वह सुविधा जिसमें उसका कुछ अंश नहीं देना पड़ता 5. असावधानता, जल्दी आदि के कारण कार्य के किसी अंग पर ध्यान न जाने अथवा उसके छूट या रह जाने की अवस्था या भाव 6. मालखंभ की एक कसरत 7. स्त्री-पुरुष का संबंध त्याग 8. परिहास के समय अशिष्ट, अश्लील आदि बातों का किया जाने वाला प्रयोग।

छूटना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. बंधन आदि से मुक्त होकर स्वतंत्र होना जैसे- (i) कैदियों का छूटना (ii) सांसारिक आवागमन या जन्म-मरण से छूटना 2. जकड़, पकड़ आदि से रहित होकर अलग या दूर होना जैसे- हाथ में पकड़ा हुआ गिलास या शीशा छूटना 3. द्रव पदार्थ का बंधन टूटने या हटने पर धारा के रूप में वेगपूर्वक आगे बढ़ना जैसे- रक्त की धारा छूटना 4. द्रव पदार्थ का किसी चीज में से रस-रसकर निकलना जैसे- (i) शरीर में से पसीना छूटना (ii) पकाते समय तरकारी में सेपानी छूटना 5. निर्दोष सिद्ध होने पर अभियोग, आरोप आदि की क्रियाओं से मुक्त या रहित होना, बरी होना।

छूटा *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की बरछी *वि.* छूट्टा।

छूत *स्त्री.* (देश.) 1. छूने की क्रिया या भाव मुहा. छूत छुड़ाना-पीछा छुड़ाने या नाम-मात्र के लिए यों ही अवज्ञापूर्वक कोई काम करना 2. ऐसा निषिद्ध संसर्ग जिससे रोग आदि का संचार होता हो 3. गंदी अथवा घृणित वस्तु का संसर्ग

4. धार्मिक क्षेत्र में अपवित्र होने अथवा अपवित्र वस्तु छूने पर लगने वाला दोष 5. यह धारणा कि अमुक वस्तु या व्यक्ति छूने अथवा उससे छूए जाने पर हम अपवित्र हो जायेंगे 6. व्यक्ति पर पड़ने वाली भूत-प्रेत आदि की छाया या उससे होने वाली बाधा मुहा. छूत झाड़ना-प्रेत बाधा दूर करना।

छूत-छात *स्त्री.* (देश.) स्पृश्य और अस्पृश्य का भाव, छुआछूत।

छूना *स.क्रि.* (देश.) 1. उँगलियों या हाथ से किसी वस्तु या व्यक्ति को अथवा उसके तल का कोई अंश स्पर्श करना मुहा. आकाश-छूना- बहुत ऊँचा होना 2. शरीर के किसी अंग का अथवा पहने हुए किसी वस्त्र का किसी से लगना या स्पर्श करना 3. दान के लिए कोई वस्तु स्पर्श करना जैसे- चावल छूकर भिखमंगे को बाँटना 4. ऐसा काम करना जिससे किसी चीज में गति उत्पन्न हो जैसे- हृदय के तार छूना 5. किसी विषय के संबंध में कुछ कहना या लिखना जैसे- इस विषय को भी उन्होंने छुआ है 6. लीपना, पोतना जैसे- कमरा छूना।

छेंक *स्त्री.* (देश.) 1. छेंकने की क्रिया या भाव 2. रोक *पुं.* छेद।

छेंकन *स्त्री.* (देश.) 1. छेंकने की क्रिया या भाव 2. वास्तु कला में, मकान आदि बनाने से पहले उसके भूमि-तल के संबंध में यह निश्चय या स्थिर करना कि आँगन, कोठरियाँ, बैठक, रसोई आदि विभाग कहाँ-कहाँ रहेंगे जैसे- इस मकान की छेंकन बहुत अच्छी हुई है।

छेंकना *स.क्रि.* (देश.) 1. स्थान घेरना 2. विभाग आदि करने के लिए लकीरों से अवकाश घेरना 3. जाने वाले के सामने खड़े होकर उसे जाने से रोकना 4. किसी का मार्ग अवरुद्ध करना, मिटाना 5. किसी के नाम लिखी हुई चीज या रकम लौट आने पर काट कर रद् द करना।

छेक *पुं.* (देश.) छेद (पश्चिम) *पुं.* (देश.) 1. पालतू पशु-पक्षी 2. शब्दालंकार का एक भेद, छेकानुप्रास, *वि.* 1. पालतू 2. नागरिक।

छेकानुप्रास *पुं.* (तत्.) कवित्त में एक प्रकार का अनुप्रास जिसमें एक हीचरण में दो या अधिक वर्णों की आवृत्ति कुछ अंतर पर होती है।

छेकापह्नुति *स्त्री.* (तत्.) साहित्य में अपहुति अलंकार का एक भेद जिसमें किसी से कही जाने वाली कोई भेद की बात किसी तीसरे या अनभीष्ट व्यक्ति के सुन लेने पर कोई दूसरी बात बनाकर वह भेद छिपाने का उल्लेख होता है, 'कह मुकरी' या मुकरी में यही अलंकार होता है।

छेकोक्ति *स्त्री.* (तत्.) साहित्य में एक अलंकार जिसमें कोई बात सिद्‌ध करने के लिए उसके साथ किसी लोकोक्ति या कहावत का भी उल्लेख किया जाता है।

छेड़ *स्त्री.* (देश.) 1. छेड़ने की क्रिया या भाव 2. ऐसा शब्द, पद या बात जिसके कहने से कोई चिढ़ जाता हो, चिढ़ाने वाली बात 3. दे. चिढ़ोनी 4. झगड़ा 5. किसी कार्य का आरंभ श्री गणेश 6. अपनी ओर से कोई ऐसी बात आरंभ करना कि उसका उत्तरदायित्व या भार अपने ऊपर आता हो, पहल उदा. हम तो चुपचाप बैठे थे, छेड़ तो तुम्हीं ने की मुहा. छेड़ निकालना- उक्त प्रकार से कोई ऐसा काम या बात करना जिससे कोई लड़ाई-झगड़ा या वैर-विरोध खड़ा हो सकता हो।

छेड़खानी *स्त्री.* (देश.) छेड़-छाड़।

छेड़छाड़ *स्त्री.* (अनु.) 1. किसी को तंग करने के लिए छेड़ने की क्रिया या भाव 2. अनुचित रूप से किसी के प्रति आरंभ किया जाने वाला व्यवहार।

छेड़ना *स.क्रि.* (देश.) 1. इस प्रकार छूना या स्पर्श करना कि उसके फलस्वरूप कोई क्रिया या व्यापार घटित हो जैसे- बीन या सितार के तार छेड़ना 2. जीव जन्तुओं आदि को इस प्रकार स्पर्श करना या उन्हें तंग करना जिससे वे क्षुब्ध होकर आक्रमण कर कसते हों जैसे- कुत्ते, साँड या साँप को छेड़ना 3. व्यक्ति को चिढ़ाने या तंग करने के लिए हँसी-ठट्ठे के रूप में कोई ऐसी बात कहना अथवा कोई ऐसा काम करना जिससे वह चिढ़ या दु:खी होकर प्रतिकार कर

सकता हो जैसे- पागल, बच्चे या स्त्री को छेड़ना 4. किसी को तंग करने के लिए उसके काम में अड़ंगा लगाना या बाधा खड़ी करना 5. किसी चीज को अकारण या व्यर्थ में छूना जिससे उसमें विकास उत्पन्न हो सकता हो जैसे- घाव या उसमें बंधी पट्टी को छेड़ना 6. किसी को कोई ऐसी बात (छेड़) बार-बार कहना जिससे कोई चिढ़ता हो 7. कोई कार्य या बात आरंभ करना जैसे- मकान की मरम्मत छेड़ना 8. संगीत में गीत, वाद्य आदि कलापूर्ण ढंग से आरंभ करना 9. चिकित्सा के क्षेत्र में, फोड़ा बहाने के लिए नश्तर से उसका मुँह खोलना।

छेड़वाना *सं.क्रि.* (देश.) छेड़ने का काम दूसरे से करवाना।

छेड़ी *स्त्री.* (देश.) छोटी और तंग गली।

छेत *पुं.* (देश.) 1. अलग होने की क्रिया या भाव, पार्थक्य 2. वियोग 4. छेद।

छेतना *स.क्रि.* (तद्.) 1. छेदना, ठोंक-पीटकर कोई चीज तैयार करना या बनाना जैसे- चाँदी की गुल्ली से कड़ा छेता 2. अच्छी तरह मारना-पीटना या प्रहार करना जैसे- किसी का मुँह छेतना।

छेति *स्त्री.* (देश.) बाधा।

छेत *वि.* (देश.) छेद करने या छेदने-वाला।

छेत्र *पुं.* (देश.) सत्र (अन्नसत्र)।

छेद *पुं.* (तत्.) 1. काटने, छेअने या विभक्त करने की क्रिया या भाव जैसे- उच्छेद, विच्छेद 2. बकरे आदि मारने की 'झटका' नाम की क्रिया 3. विनाश, बरबाद; *पुं.* (तद्.) 1. किसी वस्तु का दोनों ओर सेखुला हुआ छोटा अंश, छिद्र, सुराख 2. किसी घन या ठोस वस्तु का वह गहरा स्थान जिसमें से उस वस्तु का कुछ अंश निकाल लिया गया हो जैसे- जमीन या दीवार में का छेद 3. विवर, बिल 4. दोष, दूषण।

छेदक *वि.* (तत्.) छेदने वाला।

छेदन *पुं.* (तत्.) छेदने की क्रिया या भाव।

छेदनहार *वि.* (देश.) छेदने वाला 2. काटने वाला 3. नष्ट करने या मिटाने वाला।

छेदना *स.क्रि.* (तद्.) 1. किसी तल में नुकीली वस्तु धंसाकर उसमें छेद या सुराख करना 2. शरीर में क्षत या घाव करना जैसे- तीरों से किसी का शरीर छेदना 3. छिन्न करना, काटना।

छेदनीय *वि.* (तत्.) जिसका छेदन हो सकता हो या किया जाने को हो।

छेदि *वि.* (तत्.) छेद करने वाला *पुं.* बढ़ई।

छेदिका *स्त्री.* (तत्.) 1. छेदन करने वाली चीज या रेखा 2. ज्यामिति में वह रेखा जो किसी वक्र रेखा को दो या अधिक भागों में काटती हो।

छेदित *भू.कृ.* (तत्.) 1. जिसमें छेद किया गया हो, छेदा हुआ 2. कटा या काटा हुआ।

छेना *पुं.* (तद्.) फटे या फाड़े हुए दूध का वह गाढ़ा अंश जो उसका पानी निकाल देने पर बच रहता है।

छेनी *स्त्री.* (देश.) धातु, पत्थर आदि काटने का चौड़े चौड़े फलवाला एक प्रसिद्ध उपकरण, टाँकी।

क्षेम *पुं.* (तत्.) क्षेम।

क्षेमकरी *स्त्री.* (तत्.) सफेद चील।

छेर *स्त्री.* (देश.) छेरी (बकरी)।

छेरना *अ.* (देश.) बार-बार पतला मल त्याग करना।

छेरवा पुं. (देश.) छुहारा।

छेरा *पुं.* (देश.) पतला मल, पतला दस्त *पुं.* (देश.) 1. बच्चा 2. बकरा।

छेरी *स्त्री.* (देश.) बकरी।

छेलक *पुं.* (तद्.) बकरा।

छेलरा *पुं.* (देश.) छैला।

छेव *पुं..* (तद्.) 1. किसी वस्तु के तल का कुछ अंश काटने या छीलने की क्रिया या भाव 2. कुछ विशिष्ट वृक्षों का रस निकालने के लिए उनके तने का कुछ अंश काटने या छीलने की क्रिया या भाव 3. प्रहार, वार 4. चोट, घाव 5. नाश 6. मृत्यु 7. विपत्ति, संकट 8. कपटपूर्ण व्यवहार।

छेवना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी चीज में छेव लगाना 2. आघात, प्रहार या वार करना 3. चोट पहुँचाना 4. कष्ट आदि झेलना या सहना जैसे- अपने जी पर छेवना 5. फेंकना *सं.* (तद्.) 1. काटना 2. चिह्न लगाना।

छेवला *पुं.* (देश.) पलाश का वृक्ष।

छेवा *पुं.* (देश.) 1. छीलने, काटने आदि का काम 2. काटने, छीलने आदि से पड़ा हुआ निशान 3. महाजनी बही खाते में वह चिह्न जो कहीं से लौटी हुई चीज या रकम के लेख पर यह सूचित करने के लिए लगया जाता है कि अब वह प्राप्य नहीं रह गई 4. पानी का तेज बहाव; *पुं.* छेद।

छेह *पुं.* (देश.) 1. दे. छेव 2. ध्वंस, नाश, 3. वियोग, विच्छेद 4. परंपरा का भंग 5. अंत, समाप्ति *वि.* 1. खंडित 2. न्यून।

छेहर *स्त्री.* (देश.) छाया।

छेहरा *पुं.* (देश.) छेह।

छै *वि.* (देश.) छः *पुं.* क्षय।

छैदिक *पुं.* (तत्.) बेत।

छैना *अ.क्रि.* (देश.) 1. क्षय होना 2. क्षीण होना *स.क्रि.* 1. नष्ट करना 2. क्षीण करना *पुं.* (छन छन से अनु.) छोटी झाँझ (बाजा)।

छैपा *पुं.* (देश.) बच्चा *वि.* (देश.) छाने वाला।

छैल *स्त्री.* (देश.) छैलने या छैलाने की क्रिया या भाव, लडकों की सी मचल या हठ *पुं.* छैला।

छैलचिकनिया *पुं.* (देश.) छैला।

छैल छबीला *पुं.* (देश.) छैला।

छैलना *अ.क्रि.* (देश.) छैलाना।

छैला *पुं.* (देश.) बहुत बन-ठनकर रहने वाला नवयुवक।

छैलाना *अ.क्रि.* (देश.) लड़कों का कोई काम करने या कोई चीज पाने के लिए मचलना और हठ करना *स.क्रि.* किसी को छैलाने या हठ करने में प्रवृत्त करना।

छोंचा *पुं.* (देश.) शौच।

छोआ *पुं.* (देश.) दे. खोई।

छोई *स्त्री.* (तद्.) 1. दे. खोई 2. निस्सार वस्तु, रद्दी चीज।

छोकरा *पुं.* (देश.) लड़का, बालक (उपेक्षा सूचक)।

छोछा *वि.* (देश.) (स्त्री. छोछी) दे. छूछा।

छोट *वि.* (देश.) छोटा।

छोटा *वि.* (देश.) मान, विस्तार आदि में अपेक्ष या कम या थोड़ा जैसे- 1. छोटा पेड़, छोटा मकान 2. जिसकी अवस्था या उमर किसी की तुलना में कम हो, थोड़े वय का 3. प्रतिष्ठा, मान आदि में औरों से घटकर होने वाला, तुच्छ, हीन।

छोटाई *स्त्री.* (देश.) छोटे होने की अवस्था या भाव, छोटापन।

छोटापन *पुं.* (देश.) छोटाई।

छोटिका *स्त्री.* (तत्.) चुटकी।

छोटी (टिन्) *पुं.* (तत्.) मछुआ।

छोटी इलायाची *स्त्री.* (देश.) छोटे आकार की एक प्रकार की इलायची जिसका छिलका पीलापन लिये सफेद होता है।

छोड़ अव्य. (देश.) छोड़कर, अतिरिक्त, सिवाय जैसे- तुम्हें छोड़ और कोई ऐसा नहीं कहता।

छोड़ना *स.क्रि.* (देश.) 1. बंधन से मुक्त करना, स्वतंत्र करना जैसे- कैदियों को छोड़ना 2. अभियोग, आरोप आदि से मुक्त करना जैसे- अदालत ने उन्हें छोड़ दिया है 3. कोई काम, चीज या बात कुछ समय के लिए अथवा सदा के लिए न करने का निश्चय करना, त्याग देना अथवा संबंध विच्छेद करना, परित्याग करना 4. कथन, लेख आदि के प्रसंग में, कोई आवश्यक अक्षर, पद या वाक्य का उपयोग या व्यवहार न करना अथवा न लिखना 5. कोई चीज जान-बूझकर या भूल से कहीं रख देना या रहने देना 6. उत्ताधिकार आदि के रूप में किसी के लिए कुछ बचा या बाकी रहने देना, जैसे- पिता का पुत्र के लिए ऋण या संपत्ति छोड़ना 7. अवशिष्ट या बाकी रहने देना, जैसे- आज का काम कल पर छोड़ना 8. कोई चीज किसी में अथवा किसी पर डालना 9. किसी वस्तु पर से अपना अधिकार, प्रभुत्व या स्वामित्व हटा लेना 10. कोई चीज किसी से उदारतापूर्वक या रियायत करते हुए न लेना 11. उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक जाने देना, ध्यान न देना 12. कोई ऐसी यांत्रिक या रासायनिक क्रिया करना जिससे कोई चीज गति में आ जाए या अपना कार्य करने लगे 13. अनुसंधान या पीछा करने के लिए किसी को गुप्त रूप से नियुक्त करना 14. कोई ऐसा कार्य

या व्यापार करना जिससे किसी चीज या बात का उपयुक्त परिणाम या फल निकले, उसका कोई प्रभाव पड़े अथवा स्पष्ट रूप से सामने आए 15. आश्रय के रूप में रहने वाली चीज का अपने ऊपर टिकी, ठहरी या लगी हुई चीज को अपने से अलग या दूर करना 16. कर्त्तव्य, कार्य आदि का निर्वाह या पालन न करना।

छोड़वाना *स.क्रि.* (देश.) छोड़ने का काम दूसरे से करवाना, छुड़वाना।

छोत *स्त्री.* (देश.) छूत।

छोतरा *पुं.* (देश.) 1. छिलका 2. अफीम।

छोना *स.क्रि.* (देश.) छूना।

छोनिप *पुं.* (तद्.) क्षोणिप।

छोनिय *स्त्री.* (तद्.) क्षोणी (पृथ्वी)।

छोनी *स्त्री.* (तद्.) क्षोणी (पृथ्वी)।

छोप *स्त्री.* (देश.) 1. छोपने की क्रिया का भाव 2. छोपा हुआ अंश, छोपकर जमाई या लगाई हुई तह।

छोपना *स.क्रि.* (देश.) 1. बहुत गाढ़ी वस्तु या सानी हुई वस्तु को किसी दूसरी वस्तु पर थोपना या लगाना 2. ढकना 3. दबोचना।

छोभ *पुं.* (तद्.) क्षोभ।

छोभन *पुं.* (तद्.) क्षोभ।

छोभना *अ.क्रि./स.क्रि.* (तद्.) क्षुब्ध होना या करना।

छोभित *वि.* (तद्.) क्षोभित।

छोम *वि.* (देश.) 1. चिकना 2. कोमल।

छोर *पुं.* (देश.) किसी वस्तु के किनारे या सिरे पर का अंश, भाग या विस्तार, अंतिम सिरा *पुं.* छोरा।

छोरटा *पुं.* (देश.) छोर।

छोरना *पुं.* (तद्.) 1. गाँठ आदि खोलना 2. पहने हुए वस्त्र उतारना 3. किसी की चीज बलात् लेना, छीनना।

छोलंग *पुं.* (तत्.) नींबू।

छोलना *स.क्रि.* (देश.) 1. छीलना 2. अनावश्यक और फालतू रूप से अधिक योग्यता दिखाना, छाँटना *पुं.* वह उपकरण जिससे कोई चीज छीली जाय।

छोला *पुं.* (देश.) 1. छोलने या छीलने का काम करने वाला व्यक्ति 2. चना।

छोह *पुं.* (तद्.) 1. प्रेम, स्नेह 2. अनुग्रह, दया।

छोहगर *वि.* (देश.) छोह या प्रेम करने वाला, प्रेमी।

छोहना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. प्रेम या स्नेह करना 2. विचलित या क्षुब्ध होना।

छोहर *पुं.* (देश.) छोकरा, लडक़ा।

छोहाना *अ.क्रि.* (देश.) छोहना।

छोहारा *पुं.* (देश.) छुहारा।

छोहिनी *स्त्री.* (देश.) अक्षौहिणी।

छोही *वि.* (देश.) 1. प्रेम करने वाला 2. अनुग्रह या दया करने वाला।

छौंक *स्त्री.* (देश.) 1. छौंकने की क्रिया या भाव, बघार 2. 2. वह मसाला जिससे तरकारी, दाल आदि छौंकी जाती है, तड़का, बघार।

छौंकन *स्त्री.* (देश.) छौंक।

छौंकना *पुं.* (देश.) 1. दाल, तरकारी को सुगंधित या सोंधा करने के लिए उसमें जीरे, मिर्च, हींग आदि से मिला हुआ कड़कड़ाता घी या तेल छोड़ना, बघारना 2. शिकार को पकड़ने के लिए हिंसक जंतु का अकस्मात् उछलकर आगे बढ़ना जैसे- बकरी पर शेर का छौंकना 3. आक्रमण या वार करने के लिए अचानक उछलकर आगे बढ़ना।

छौंक-बघार *स्त्री.* (देश.) 1. दाल, तरकारी आदि छौंकने की क्रिया या भाव 2. किसी बात में उसे आकर्षक या रोचक बनाने के लिए अपनी ओर से कुछ बातें मिलाकर कहना।

छौंड़ा *पुं..* (देश.) (स्त्री. छौंडी) लड़का, बालक।

छौना *पुं.* (देश.) 1. पशु का बच्चा जैसे- मृग-छौना 2. बच्चा, बालक।

छौर *पुं.* (देश.) क्षौर।

छौलदारी *स्त्री.* (देश.+फा.) एक प्रकार का छोटा खेमा, रावटी।

छवाना *स.क्रि.* (देश.) छुलाना।

ज

देवनागरी वर्णमाला में चवर्ग का तीसरा वर्ण, घोष-अल्पप्राण स्पर्श व्यंजन (आधुनिक भाषाविज्ञान में इसे स्पर्श-संघर्षी माना गया है)।

ज *पुं.* (तत्.) 1. मृत्युंजय 2. विष्णु 3. पिता 4. विष 5. पिशाव 6. जन्म *प्रत्य.* (तत्.) उत्पन्न, जात, जैसे देशज, वातज आदि।

जंक्शन *पुं.* (अं.) 1. दो रास्तों के मिलने का स्थान 2. दो या अधिक रेल-लाइनों वाला स्टेशन। जैसे- पटना जंक्शन।

जंग *स्त्री.* (फ़ा.) 1. लड़ाई, युद्ध 2. धातु का मैल, पपड़ी या मोरचा 3. घंटा 4. हब्शियों का देश (अफ्रीका)।

जंगम *वि.* (तत्.) 1. चर 2. चलता-फिरता, चलने-फिरने वाला 3. प्राणिजन्य 4. लिंगायत संप्रदाय के गुरुओं की उपाधि।

जंगल *पुं.* (तत्.) 1. वन, अरण्य 2. रेगिस्तान 3. एकांत स्थान, उजाड़ स्थान 4. मांस 5. बंजरभूमि मुहा. जंगल जाना- जंगल फिरना, टट्टी जाना, पाखाना जाना; जंगल में मंगल- सुनसान जगह पर चहल-पहल होना।

जंगलजलेबी *स्त्री.* (तत्.+देश.) जलेबी की शक्ल वाला मल (गू), 2. बरियारे की जाति का एक पौधा जिसमें पीले रंग का फूल होता है और उसमें कुडलाकर लिपटे हुए बीज होते है।

जंगला *पुं.* (पुर्त.) 1. जाली या छड़ लगी चौखट या खिड़की 2. छत या बरामदे में लगी बाड़ जिसमें लोहे या लकड़ी के छड़ जड़े हो 3. दुपट्टे आदि पर कढ़े हुए बेल-बूटे 4. एक राग 5. एक मछली जो बारह इंच लंबी होती है 6. अनाज का डंठल जिससे अनाज निकाल लिया गया हो।

जंगली *वि.* (तद्.) 1. जंगल में पैदा होने, मिलने या रहने वाला 2. बिना बोए उगने वाली जैसे-जंगली घास 3. असभ्य, उजड्ड 4. जो पालतू न हो जैसे-जंगली पशु, पर्या. वन्य विलो. सभ्य, पालतू।

जंगा *पुं.* (फ़ा.) घुँघरू का दाना।

जंगार *पुं.* (फ़ा.) 1. ताँबे का कसाब, तूतिया 2. एक प्रकार का रंग।

जंगारी *वि.* (फ़ा.) नीला।

जंगाल *पुं.* (देश.) पानी रोकने का बाँध।

जंगाली *वि.* (फ़ा.) दे. जंगारी।

जंगी *वि.* (फ़ा.) जंग, लड़ाई, युद्ध से संबंधित या संबंध रखने वाला 2. फौजी, सैनिक 3. युद्धोपयोगी (जंगी, जहाज) 4. विशालकाय, लंबा-चौड़ा 5. वीर, लड़ाका, बहादुर।

जंगी-जहाज *पुं.* (फ़ा.+अर.) 1. लड़ाई, युद्ध में प्रयोग होने वाला जहाज 2. युद्ध पोत।

जंगी-बेड़ा *पुं.* (फ़ा.+तद्.) लड़ाकू जहाजों का बेड़ा, युद्ध पोतों का समूह।

जंगुल *पुं.* (तत्.) विष, जहर।

जंघा *स्त्री.* (तत्.) 1. जाँघ 2. पिंडली 3. रान 4. कैंची का दस्ता।

जंघार *स्त्री.* (देश.) जाँघ का फोड़ा।

जंघारथ *पुं.* (तत्.) 1. एक ऋषि का नाम 2. गोत्र का नाम।

जंघारा *पुं.* (देश.) राजपूतों की एक उप जाति विशेष।

जंघारि *पुं.* (तत्.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

जंघाल *पुं.* (तत्.) 1. दूत 2. हिरण 3. धावक *वि.* तेज दौड़ने वाला।

जंजर *पुं.* (फ़ा.) जंजीर, शृंखला।

जंजार *पुं.* (देश.) दे. जंजाल

जंजाल *पुं.* (देश.) 1. बखेड़ा, झंझट, माया, बंधन, झमेला 2. पानी का भँवर 3. लंबी नाल वाली पलीतेदार बंदूक 4. एक बड़े मुँह की तोप मुहा. जंजाल तोड़ना- बंधन तोड़ना; जंजाल में पड़ना-

कठिनाई में न पड़ना या फँसना; जी का जंजाल- जान की मुसीबत।

जंजालिया *वि.* (देश.) जंजाल रचने वाला, बखेड़ा खड़ा करने वाला।

जंजाली *वि.* (देश.) झगड़ालू, फसादी, बखेड़ा खड़ा करने वाला *स्त्री.* रस्सी या घिरनी जिससे पाल चढ़ाने का काम लिया जाता है।

जंजीर *स्त्री.* (फा.) साँकल, शृंखला, सिकड़ी, कड़ियों की लड़ी 2. बेड़ी, किवाड़ की कुंडी या सिकड़ी मुहा. जंजीर डालना- पैरों में बेड़ियाँ डालना, बंदी बनाना; जंजीर बजाना- कुंडी खटखटाना; जंजीर लगाना- कुंडी बंद करना।

जंजीर खाना *पुं.* (फ़ा.) जेल खाना, बंदीगृह, कारागृह, कैदखाना।

जंजीरी *वि.* (फ़ा.) 1. जंजीर से बँधा हुआ, बंदी, कैदी 2. जंजीरदार 3. एक गहना।

जंटिल मैन *पुं.* (अं.) भला आदमी, सभ्य पुरुष 2. अंग्रेजी चाल ढाल वाला व्यक्ति।

जंतर *पुं.* (तद्.) 1. कल, औजार, यंत्र 2. तांत्रिक, यंत्र, ताबीज 3. गले में पहना जाने वाला एक गहना 4. वेध शाला।

जंतर-मंतर *पुं.* (तद्.) 1. यंत्र-मंत्र, जादू-टोना 2. वेधशाला 3. भूत बाधा उतारने या डालने वाला यंत्र।

जंतरा *स्त्री.* (तद्.) गाड़ी के ढाँचे पर कसी, बाँधी या या तानी जाने वाली रस्सी।

जंतरी *स्त्री.* (तद्.) छोटा जंतु जिस पर सुनार तार खींचकर पतले करते हैं 2. पंचांग, तिथि पत्र, पत्रा 3. जादूगार 4. बाजा बजाने वाला मुहा. जंतरी में खीचना- टेढ़ा पन निकालना, सीधा करना।

जंता *पुं.* (तद्.) 1. यंत्र, कल 2. सुनारों का एक औजार 3. पिता, बाप *वि.* दंड देने वाला, यंत्रणा देने वाला।

जंताना *पुं.* (देश.) जंते से दबकर कुचला जाना।

जंती *पुं.* (देश.) जंतरी-एक छोटा जंता जिससे सुनार तार खींचते हैं।

जंतु *पुं.* (तत्.) प्राणी, जीव, कीड़ा मकोड़ा छोटे आकार के पशु।

जंतु नाशक *पुं.* (तत्.) हींग *वि.* जंतुओ या कीड़ो का नाश करने वाला।

जंतुफल *पुं.* (तत्.) गूलर।

जंतुमति *पुं.* (तत्.) पृथ्वी, धरती।

जंतुमारी *स्त्री.* (तत्.) नींबू।

जंतुशाला *स्त्री.* (तत्.) चिड़ियाघर, प्राणि- उद्यान।

जंतुह्न *पुं.* (तद्.) कीट नाशी, प्राणिनाशी।

जंत्र *पुं.* (तद्.) कल, औजार, यंत्र, 2. तांत्रिक यंत्र 3. ताला 4. बाजा।

जंत्रना *स.क्रि.* (देश.) बंद करना, जकड़ना, ताल लगाना *स्त्री.* यंत्रणा, कष्ट।

जंत्री *स्त्री.* (तद्.) वीणावादक, बाजा बजाने वाला *वि.* *वि.* बाँधने वाला, जकड़ने वाला।

जंब *पुं.* (तत्.) कीचड़, पंक, कर्दम।

जंबक *पुं.* (अर.) चंपा का फूल।

जंबाल *पुं.* (तत्.) कीचड़, पंक 2. शैवाल 3. काई 4. केवड़ा।

जंबालिनी *स्त्री.* (तत्.) एक नदी का नाम।

जंबीर *पुं.* (तत्.) जंबीरी नींबू 2. मुँह से बजाने वाली एक प्रकार की सीटी 3. बनतुलसी।

जंबीरी नींबू *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का खट्टा नींबू।

जंबील *स्त्री.* (फ़ा.) झोली, पिटारी, टोकरी।

जंबु *पुं.* (तत्.) जामुन का वृक्ष या फल।

जंबुक *पुं.* (तत्.) 1. बड़ा जामुन 2. स्यार, शृंगाल 3. केवड़ा 4. वरुण 5. नीच व्यक्ति।

जंबु मत *पुं.* (तत्.) एक नगर का नाम, पर्वत।

जंबु माली *पुं.* (तद्.) एक राक्षस का नाम।

जंबुमति *पुं.* (तत्.) एक अप्सरा का नाम।

जंबु स्वामी *पुं.* (तद्.) एक जैन स्थाविर का नाम।

जंबु खंड *पुं.* (तत्.) जंबुद्वीप।

जंबु द्वीप *पुं.* (तत्.) जंबु द्वीप पुराणों के सात द्वीपों में से एक यह द्वीप पृथ्वी के मध्य भाग में माना जाता है।

जंबू *पुं.* (तत्.) 1. जामुन का पेड़ एवं फल 2. आज का जम्मू नगर *वि.* बहुत ऊँचा, बहुत बड़ा।

जंबूका *स्त्री.* (तत्.) किशमिश।

जंबूद्वीप *पुं.* (तत्.) दे. जंबु द्वीप।

जंबूनद *पुं.* (तत्.) सोना, स्वर्ण।

जंबू नदी *स्त्री.* (तत्.) पुराणों के अनुसार जंबुद्वीप की एक नदी।

जंबूर *पुं.* (अर.) जंबूरा 2. भिड़, शहद की मक्खी, बर्र 3. पुराने समय की एक छोटी तोप।

जंबूरक *स्त्री.* (फ़ा.) 1. एक छोटी तोप 2. तोप की चर्ख 3. भंवर कली।

जंबूरा *पुं.* (फा.) एक औजार बाँक, जिससे तारों को पकड़कर ऐंठते या कसते हैं, चर्ख, जिस पर तोप चढ़ाई जाती है।

जंबूल *पुं.* (तत्.) जामुन का वृक्ष, केवड़े का पेड़।

जंभ *पुं.* (तत्.) 1. दाढ़, जबड़ा, ठुड्डी 2. जम्हाई 3. एक दैत्य का नाम, जिसे इंद्र ने मारा था 4. प्रह्लाद का पुत्र 5. जँबीरी नींबू 5. कंधा और हँसली।

जंभक *वि.* (तत्.) जम्हाई या नींद लेने वाला 2. हिंसक, भक्षक 3. कामुक।

जंभा *स्त्री.* (तत्.) जँभाई, जम्हाई।

जंभारि *पुं.* (तत्.) 1. इंद्र 2. अग्नि 3. विष्णु।

जंभिका *स्त्री.* (तत्.) जम्हाई।

जंभीरी *पुं.* (तद्.) जंबीरी नींबू।

जँगरा *पुं.* (देश.) दाना निकाल लेने के बाद उर्द, मूँग आदि की डंठल।

जँगरैत *वि.* (देश.) परिश्रमी, मेहनती।

जँगला *पुं.* (देश.) जंगला।

जँचना *अ.कि.* (देश.) 1. जाँच में ठीक उतरना 2. उचित प्रतीत होना, पसंद आना, ठीक लगना।

जँजाल *पुं.* (देश.) एक प्रकार की प्राचीन बंदूक।

जँबुर *पुं.* (फा.) एक प्रकार की तोप जिसे ऊटों से चलाया जाता था।

जँमाई *स्त्री.* (देश.) 1. जम्हाई 2. उबासी, जँभाई आना *अ.क्रि.* जँमाई लेना।

जँवाई *स्त्री.* (देश.) 1. जामाता 2. दामाद।

जई *स्त्री.* (देश.) जौ की जाति का पौधा तथा अनाज मुहा. जई डालना- अंकुरित करना; जई लेना- अंकुरित करने की परीक्षा लेना।

जईफ़ी *स्त्री.* (फा.) बुढ़ापा।

जकंद *स्त्री.* (फा.) छलाँग, चौकड़ी।

जक *पुं.* (तद्.) 1. चक्ष, भूत-प्रेत 2. कंजूस व्यक्ति *स्त्री.* (देश.) जिद्दी, हठ मुहा. जक पकड़ना- रट लगाना *स्त्री.* (फा.) 1. हार, पराजय, पराभव; 2. भय, डर, खौफ *स्त्री.* (अर.) सुख, शांति।

जकड़ *स्त्री.* (देश.) जकड़ने या कसकर बाँधने का भाव मुहा. जकड़ बंद करना- अच्छी तरह फँसाना, खूब कसकर बाँधना।

जकड़ना *स.क्रि.* (तद्.) कस कर बाँधना 2. हिलने डुलने लायक न रहना।

जकात *स्त्री.* (अर.) 1. दान, खैरात 2. कर, महसूल।

जकाती *स्त्री.* (अर.) दे. जगाती।

जकुट *पुं.* (तत्.) 1. मलयाचल 2. बैंगन का फूल 3. कुत्ता 4. जोड़ा।

जक्षण *पुं.* (तत्.) भोजन, खाना।

ज़खम *पुं.* (फा.) 1. जख्म, घाव 2. आघात सदमा।

ज़खमी *पुं.* (फा.) जख्मी, घायल।

ज़खीर *पुं.* (फा.) 1. खजाना, कोष 2. संग्रह।

ज़खीरा *पुं.* (फा.) 1. संग्रह 2. खजाना, कोष।

जख्म *पुं.* (फा.) दे. जखम।

जग *पुं.* (तद्.) 1. संसार, विश्व, जगत 2. जन समुदाय 3. यज्ञ।

जगकर्ता *पुं.* (तद्.+तत्.) 1. परमेश्वर, ईश्वर, परमात्मा 2. संसार का निर्माता।

जगकारन *पुं.* (तद्.) परमेश्वर, ईश्वर, परमात्मा।

जगजगाना *अ.क्रि.* (अनु.) चमकना, जगमगाना।

जगजननि *स्त्री.* (तद्.) जगत जननी, परमेश्वरी।

जगजामिनी *स्त्री.* (तद्.) संसार रूपी रात्रि, भवनिशा।

जगजाहिर *वि.* (हि.+अर.) विश्व प्रसिद्ध सर्वविदित, स्पष्ट।

जगण *पुं.* (तत्.) तीन अक्षरों का एक गण-जिसमें मध्य का अक्षर गुरु और आदि एवं अंत के अक्षर लघु होते हैं जैसे- सुरेश।

जगत *स्त्री.* (तत्.) 1. कुएँ का चबूतरा 2. संसार, विश्व, दुनिया।

जगती *स्त्री.* (तत्.) 1. संसार, विश्व, दुनिया 2. पृथ्वी, भूमि, धरती।

जगत्/जगन् *पुं.* (तत्.) 1. विश्व, संसार 2. वायु 3. महादेव।

जगत्प्रभु *पुं.* (तत्.) 1. ब्रह्मा 2. विष्णु 3. महेश।

जगत्मय *पुं.* (तत्.) विष्णु।

जगत्सेतु *पुं.* (तत्.) 1. ईश्वर, परमात्मा, परमेश्वर।

जगदंबा *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा, भवानी, जगदंबा।

जगदंबिका *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा, भवानी, जगदंबा।

जगदगुरु *पुं.* (तत्.) 1. परमेश्वर 2. शिव 3. विष्णु 4. ब्रहमा 5. शंकराचार्य।

जगदात्मा *पुं.* (तत्.) 1. परमात्मा, परमेश्वर 2. वायु, हवा।

जगदाधार *पुं.* (तत्.) 1. परमेश्वर 2. वायु, हवा 3. शेषनाग 4. काल, समय।

जगदानंद *पुं.* (तद्.) परमेश्वर, ईश्वर।

जगदीश *पुं.* (तत्.) 1. परमेश्वर 2. विष्णु 3. जगन्नाथ।

जगदीश्वर *पुं.* (तत्.) 1. परमेश्वर, जगदीश 2. इंद्र 3. शिव, शंकर।

जगदीश्वरी *स्त्री.* (तत्.) भगवती।

जगद्दाता *पुं.* (तत्.) 1. ब्रहमा 2. विष्णु 3. शिव, महादेव, त्रिदेव।

जगद्दीप *पुं.* (तत्.) 1. ईश्वर 2. महादेव 3. शिव 3. सूर्य आदित्य।

जगद्धाता *पुं.* (तत्.) 1. ब्रह्मा 2. विष्णु 3. शिव, महादेव, त्रिदेव।

जगद्धात्री *स्त्री.* (तत्.) 1. दुर्गा 2. सरस्वती 3. जगत को धारण करने वाली।

जगद्विख्यात *वि.* (तत्.) 1. लोक प्रसिद्ध, लोक विख्यात, विश्वश्रुत।

जगद्विनाश *पुं.* (तत्.) प्रलय, जगत का विनाश या या नाश हो जाना।

जगन *पुं.* (देश.) यज्ञ की अग्नि।

जगना *अ.क्रि.* (देश.) 1. जागना, नींद से उठाना 2. सजग होना, सचेत होना 3. उत्तेजित होना 4. जलना, बलना, दहकना 5. चमकना, जगमगाना।

जगनिक *पुं.* (देश.) एक प्रसिद्ध कवि।

जगन्नाथ *पुं.* (तत्.) 1. ईश्वर 2. विष्णु 3. पुरी के अधिष्ठाता। देव- जगन्नाथ।

जगन्नु *पुं.* (तत्.) 1. अग्नि 2. जंतु, कीट 3. पशु।

जगन्मयी *स्त्री.* (तत्.) 1. सारे संसार के चलाने वाली माता 2. लक्ष्मी।

जगन्माता *स्त्री.* (तत्.) 1. सारे संसार की माता 2. 2. लक्ष्मी 3. दुर्गा का एक नाम।

जगन्मोहिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. सारे संसार को मोहने वाली, दुर्गा 2. महामाया।

जग बीती *स्त्री.* (तत्.) संसार की अद्भुत लोकवृत्त बातें, संसार का अनुभव।

जगमग *वि.* (अनु.) 1. चमकीला, चमकदार 2. प्रकाशित 3. जगमगाहटयुक्त।

जगमगाना *पुं.* (अनु.) 1. जगमग करना, चमकना, दमकना 2. प्रकाशित होना।

जगमगाहट *पुं.* (देश.) चमक, जगमगर करने का भाव।

जगमोहन *वि.* (तत्.) 1. जगत को मोहित करने वाला, विश्व को मुग्ध करने वाला।

जगर *पुं.* (तत्.) कवच।

जगरन *पुं.* (देश.) दे. जागरण।

जगल *पुं.* (तत्.) पीठी की शराब 2. गोबर 3. शराब की सीठी 4. मदन वृक्ष 5. गोबर *वि.* धूर्त, चालाक।

जगवाना *पुं.* (देश.) किसी के माध्यम से उठवाना, निद्रा भंग करवाना 2. अभिमंत्रित करके प्रभाव डालना।

जग हँसाई *स्त्री.* (देश.) लोकनिंदा, बदनामी, कुख्याति।

जगह *स्त्री.* (फा.) 1. स्थान, स्थल 2. स्थिति, पद प्रयो. जगह देना, जगह छोड़ना, जगह पाना, जगह करना, जगह मिलना, जगह-जगह-सब स्थानो पर सब जगह।

जगहर *स्त्री.* (देश.) जगना, जगने की अवस्था।

जगात *पुं.* (अर.) 1. दान, खैरात 2. महसूल, कर।

जगाती *पुं.* (अर.) 1. महसूल या कर अधिकारी 2. कर उगाहने का काम।

जगाना *स.क्रि.* (देश.) 1. जागने की प्रेरणा देना, होश में लाना, चैतन्य करना 2. आग सुलगाना, चिलम की आग को तेज करना प्रयो. जग डालना, जागा रखना, जगा लेना, मंत्र जगाना- मंत्र सिद्ध करना, भूत जगाना- भूत-प्रेत सिद्ध करना।

जगार *स्त्री.* (देश.) जागरण, जागृति।

जगारिता *वि.* (देश.) जाग्रत, चैतन्य।

जगी *स्त्री.* (देश.) मोर की जाति का एक पक्षी।

जगीस *पुं.* (देश.) दे. जगदीश।

जगैया *पुं.* (देश.) जगाने वाला।

जगोटा *पुं.* (तद्.) योग मार्ग।

जग्धि *स्त्री.* (तत्.) वध करने वाला 2. वध करने का अस्त्र।

जग्योपवीत *पुं.* (तद्.) यज्ञोपवीत।

जघन *पुं.* (तत्.) कमर के नीचे का भाग, पेडू 2. नितंब, चूतड़ 3. सेना का पिछला भाग।

जघन गौरव *पुं.* (तत्.) नितंब भार।

जघनचपला *स्त्री.* (तत्.) कामुक स्त्री, कुलय, व्यभिचारिणी 2. आर्या छंद का एक भेद।

जघन्य *वि.* (तत्.) 1. गर्हित, अत्यंत बुरा 2. क्षुद्र, नीच।

जघन्यता *स्त्री.* (तत्.) क्रूरता, क्षुद्रता, नीचता।

जच्छपति *पुं.* (तद्.) यज्ञपति, कुबेर।

जज *पुं.* (अं.) न्यायाधीश, न्याय करने वाला, दीवानी और फौजदारी मुकदमों का फैसला करने वाला।

जजन *पुं.* (तद्.) यज्ञ कार्य।

जजबात *पुं.* (अर.) भावनाएँ, विचार।

जजमान *पुं.* (तद्.) दे. यजमान।

जजमानी *स्त्री.* (तद्.) दे. यजमानी।

जजमेंट *पुं.* (अं.) फैसला, निर्णय।

जजल कांतार *पुं.* (तत्.) वरुण।

जजा *स्त्री.* (अर.) 1. बदला, प्रतिकार 2. प्रतिफल, परिणाम।

जजिमान *पुं.* (देश.) दे. यजमान।

जजिया *पुं.* (अर.) एक कर जो मुसलमान राज्य में गैर इस्लामी धर्म वालों पर लगाया जाता था। *स्त्री.* (संकर.) 1. जज की कचहरी 2. जज का पद।

जजीरा *पुं.* (अर.) टापू, द्वीप।

जज्जा *स्त्री.* (फा.) सद्य प्रसूता स्त्री प्रयो. जच्चा खाना-प्रसूति गृह, जच्चा-बच्चा-प्रसूता और नवजात शिशु, जच्चागीरी- धात्री या दाई का नाम।

जज्ब *पुं.* (अर.)1. आकर्षण, खिंचाव 2. सोखना, आत्मसात करना।

ज़ज़्बा *पुं.* (अर.) 1. भावना, मनोवृत्ति 2. जोश।

जज्बाती *वि.* (अर.) भावुक।

जट *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार का गोदना जो साड़ी के आकार का होता है 2. पंजाब में खेती करने वाली एक जाति।

जटना *पुं.* (देश.) ठगना।

जटल *स्त्री.* (तद्.) गप, बकवाद, झूठ-मूठ की बात।

जटा *स्त्री.* (तत्.) 1. उलझे हुए तथा एक दूसरे से चिपके हुए बड़े बड़े बाल 2. उलझे हुए रेशे 3. पेड़ पौधों की जड़ शाखा, वेद पाठ की एक प्रणाली पर्या. जटि, जूट, कोटीर प्रयो. नारियल की जटा, बरगद की जटा।

जटाचीर *पुं.* (तत्.) महादेव।

जटाजिनी *पुं.* (तद्.) जटाधारी और मृगचर्म धारण करने वाला।

जटाधर *पुं.* (तत्.) 1. शिव 2. बुद्ध का एक नाम 3. जटाधारी।

जटाधारी *वि.* (तत्.) 1. जटावाला 2. महादेव 3. साधु, वैरागी 4. मुर्गकेश (पौधा)।

जटाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. घटना का प्रेरणार्थक 2. ठगा जाना।

जटामंडल *पुं.* (तत्.) जटा जूट, जूड़ा।

जटामाली *पु.* (तत्.) शिव, महादेव।

जटामासी *स्त्री.* (तद्.) एक वनस्पति की जड़ जो सुगांधित होती है, बाल छड़, बालूचर वैद्यक में यह औषधि के रूप में प्रयुक्त होती है।

जटायु *पुं.* (तत्.) रामायण का एक प्रसिद्ध पात्र- गिद्ध सीताहरण में इसने रावण का विरोध किया था तथा मुकाबला करते-करते अपने प्राण दे दिए थे 2. गुग्गुल।

जटाल *पुं.* (तत्.) बरगद, वटवृक्ष 2. कचूर 3. गुग्गुल।

जटाला *पुं.* (तत्.) जटामांसी।

जटावती *स्त्री.* (तत्.) दे. जटामासी।

जटावल्ली *स्त्री.* (तत्.) शंकर जटा, रुद्रजटा 2. एक प्रकार की जटामासी, गंध मासी।

जटाशंकरी *स्त्री.* (तद्.) शंकर की जटाओं में रहने वाली, गंगा।

जटासुर *पुं.* (तत्.) महाभारत का एक प्रसिद्ध राक्षस।

जटि *पुं.* (तत्.) 1. बरगद का पेड़ 2. जटा 3. जटामासी 4. समूह।

जटित *वि.* (तत्.) जड़ा हुआ।

जटिल *वि.* (तत्.) 1. जटाधारी 2. कठिन 3. उलझा हुआ, पेचीदा, दुरुह 3. हिंसक, क्रूर *पुं.* 1. सिंह 2. जटामासी 3. शिव 4. ब्रह्मचारी 5. बकरा।

जटिलता *स्त्री.* (तत्.) 1. पेचीदगी 2. उलझन 3. कठिनाई।

जटिला *स्त्री.* (तत्.) ब्रह्मचारिणी 2. जटामासी 3. पीपल 4. वचा 5. दोना 6. गौतम वंश की एक ऋषि कन्या जिसका विवाह सात ऋषियों से हुआ था।

जटी *स्त्री.* (तत्.) जटामासी *पु.* (तद्.) 1. शिव 2. वट वृक्ष 3. साठ वर्षीय हाथी *वि.* जटाधारी।

जटुल *पुं.* (तत्.) शरीर पर जन्मजात धब्बा।

जट्टू *वि.* (देश.) ठगने वाला।

जठर *पुं.* (तत्.) 1. पेट 2. कोख, कुक्षी 3. एक प्रकार का पेट का रोग, जिसमें पेट फूल जाता है 4. शरीर, देह प्रयो. जठर यंत्रणा, जठर यातना- गर्भावास का कष्ट; जठराग्नि- पेट की आग *वि.* 1. बूढ़ा, वृद्ध 2. कठिन।

जठरगाद *पुं.* (तद्.) आँत का एक रोग।

जठर ज्वाला *स्त्री.* (तत्.) 1. पेट की आग, भूख 2. पेट का दर्द, उदरशूल।

जठराग्नि *स्त्री.* (तत्.) पेट की आंत जिससे भोजन पचता है, यह चार प्रकार की होती है- मंदाग्नि, विषमाग्नि, तीक्ष्णग्नि और समाग्नि।

जठरानल *स्त्री.* (तत्.) दे. जठराग्नि।

जठाइन *स्त्री.* (तद्.) जले हुए जैसा स्वाद।

जठागनि *स्त्री.* (तद्.) दे. जठराग्नि।

जठाणी *स्त्री.* (तद्.) दे. जेठानी।

जठरामय *पुं.* (तत्.) अतिसार, जलोदर रोग।

जठेरा *वि.* (देश.) जेठा, बड़ा।

जड़ *वि.* (तत्.) 1. अचेतन 2. चेष्टाहीन 3. मंद्‌धी, मूर्ख 4. सर्दी से ठिठुरा हुआ, अकड़ा हुआ 5. बहरा, गूँगा 6. अनजान, अनभिज्ञ 7. मोह के कारण वेद पढ़ने में असमर्थ *स्त्री.* 1. जल, पानी 2. अचेतन पदार्थ 3. सीसा *स्त्री.* (तद्.) पेड़-पौधों की जड़ जिसके माध्यम से उनका पोषण होता है 2. कारण, सब उभार प्रयो. जड़मूल-नींव, बुनियाद, जड़ पदार्थ-अचेतन पदार्थ, जड़ावाद-एक दार्शनिक मत, जड़विज्ञान- पदार्थ विज्ञान मुहा. जड़ काटना- खोदना, उखाड़ना, किसीका समूह नाश करना; जड़ जमना- पकड़ना, मजबूत होना; जड़ पड़ना- नींव पड़ना, शुरू होना; जड़ में पानी देना- जड़ खोदना; जड़ में मठ्ठा डालना- सर्वनाश करना।

जड़ जगत *पुं.* (तत्.) अचेतन जगत, जड़ प्रकृति, अचेतन पदार्थ।

जड़ता *स्त्री.* (तत्.) 1. अचेतना 2. चेष्टाहीनता का भाव, स्तब्धता, अचलता 3. मूर्खता ।

जड़ताई *स्त्री.* (देश.) दे. जड़ता।

जड़त्व *स.क्रि.* (तत्.) 1. अचेतना का गुण 2. स्थिति या गति की इच्छा का अभाव।

जड़ना *पुं.* (देश.) 1. पच्चीकारी करना, किसी चीज को दूसरी चीज में बैठना 2. प्रहार करना जैसे थप्पड़ जड़ना, बैंत जड़ना *पुं.* जड़ाई का काम।

जड़ पदार्थ *पुं.* (तत्.) भौतिक पदार्थ, अचेतन पदार्थ।

जड़ प्रकृति *स्त्री.* (तत्.) जड़ जगत।

जड़वत *वि.* (तत्.) जड़ के समान, चेतना रहित।

जड़वाद *पुं.* (तत्.) एक दार्शनिक मत, जिसमें पुनर्जन्म को नहीं माना जाता।

जड़वादी *वि.* (तत्.) जड़वाद को मानने वाला, गड़वाना (कीट, आदि)।

जड़वाना *पुं.* (देश.) जड़ने का काम करवाना।

जड़विज्ञान *पुं.* (तत्.) 1. भौतिक विज्ञान 2. जड़वाद।

जड़हन *पुं.* (देश.) धान का एक भेद।

जड़ा *पुं.* (तत्.) 1. भुई, आंवला 2. केवांच, कौछ।

जड़ाई *स्त्री.* (देश.) 1. जड़ने का काम, पच्चीकारी 2. जड़ने की मजदूरी।

जड़ाऊ *वि.* (देश.) पच्चीकारी किया हुआ 2. जड़ा हुआ।

जड़ाना *पुं.* (देश.) 1. जड़ाई या पच्चीकारी का काम कराना 2. ठंड से ठिठुरना, ठंड से साँस न ले पाना।

जड़ाव *पुं.* (देश.) जड़ने का काम या भाव।

जड़ावट *स्त्री.* (देश.) जड़ने का भाव।

जड़ावर *पुं.* (देश.) जाड़े में पहनने के कपड़े, गरम कपड़े।

जड़ित *वि.* (तद्.) जड़ा हुआ, पच्चीकारी किया हुआ।

जड़िमा *स्त्री.* (तत्.) जड़त्व, जड़ता, मूर्खता।

जड़िया *पुं.* (देश.) जड़ाई या पच्चीकारी का काम करने वाला कारीगार।

जड़ी *स्त्री.* (देश.) औषध के रूप में काम में लाई जाने वाली वनस्पति प्रयो. जड़ी-बूटी, वनौषधि, वनस्पति।

जड़ीभूत *वि.* (तत्.) गतिहीन, स्तब्ध, निश्चल।

जड़ीला *वि.* (देश.) जड़ युक्त वनस्पति जैसे- गाजर, मूली।

जड़ैया *स्त्री.* (देश.) जूड़ी बुखार।

जढ़ाना *अ.क्रि.* (देश.) जड़ हो जाना 2. जिद करना, हठ करना, किसी बात पर अड़ना।

जतनी *पुं.* (तद्.) यत्न करने वाला 2. चालाक।

जतलाना *स.क्रि.* (देश.) दे. जताना।

जताना *स.क्रि.* (देश.) बताना, ज्ञात कराना 2. पूर्व सूचना देना, आग्रह करना।

जति *वि.* (तद्.) जेता, जीतने वाला।

जतु *पुं.* (तत्.) 1. गोंद 2. लाख 3. शिलाजीत *स्त्री.* (तद्.) चमगादड़।

जतुक *पुं.* (तत्.) 1. हींग 2. लाख 3. शरीर पर जन्मजात चिह्न।

जतुका *स्त्री.* (तत्.) पहाड़ी नामक लता 2. चमगादड़ 3. लाख।

जतुनी *स्त्री.* (तत्.) चमगादड़।

जतू *स्त्री.* (तत्.) 1. चमगादड़ 2. लाख का बना रंग।

जतूका *स्त्री.* (तत्.) दे. जतुका।

जत्था *पुं.* (देश.) समूह, झुंड, गिरोह प्रयो. जत्थेदार- समूह का प्रधान।

जत्रु *पुं.* (तत्.) हँसी, हँसिया।

जत्वश्मक *पुं.* (तत्.) शिलाजीत।

जद *क्रि.वि.* (देश.) जब-जब, जब-कभी *अव्य.* (तत्.) अगर, यदि।

जदनि *वि.* (फ़ा.) वध करने योग्य।

जदपि *क्रि.वि.* (तद्.) यद्यपि।

जदल *पुं.* (अर.) 1. युद्ध, संघर्ष 2. झगड़ा।

जदवर *पुं.* (अर.) एक निर्विषी घास।

जदा *वि.* (फा.) पीड़ित, संत्रस्त।

जदु वीर *पुं.* (देश.) श्री कृष्ण।

जदुकुल *पुं.* (देश.) दे. यदुवंश।

जदुनाथ *पुं.* (तद्.) दे. यदुनाथ।

जदुपति *पुं.* (तद्.) श्री कृष्ण।

जदुपुरी *स्त्री.* (तद्.) राजा यदु का नगर, यदुकुल की राजधानी, मथुरा एवं द्वारिका।

जदुयाल *पुं.* (तद्.) श्री कृष्ण।

जदुराई *पुं.* (तद्.) श्री कृष्ण, युदुनाथ।

जदुराज *पुं.* (तद्.) श्री कृष्ण।

जदुराम *पुं.* (तद्.) बलदेव।

जदुवंशी *पुं.* (तद्.) दे. यदुवंशी।

जद्यपि *क्रि.वि* (तद्.) दे. यद्यपि।

जद्दोजहद *स्त्री.* (अर.) दौड़धूप, प्रयत्न।

जनंगम *पुं.* (तत्.) चांडाल।

जन *पुं.* (तत्.) लोक, लोग प्रयो. जन अपवाद- लोकोपवाद, जन आंदोलन-जनसमूह द्वारा किया गया आंदोलन या हलचल, जन जीवन- लोक जीवन, जन समाज- लोगों का समाज, जन समूह- लोगों का समूह 2. प्रजा 3. गँवार 4. जाति 5. अनुयायी, अनुचर 6. मनुष्य, व्यक्ति।

जनक *पुं.* (तत्.) 1. पिता, पैदा करने वाला 2. जन्मदाता 3. सीता जी के पिता का नाम।

जनकपुर *पुं.* (तत्.) मिथिला की प्राचीन राजधानी।

जनक दुलारी *स्त्री.* (तत्.) जनक की प्रिय पुत्री, सीता, जानकी।

जनक नंदिनी *स्त्री.* (तत्.) जानकी, सीता।

जनकात्मजा *स्त्री.* (तत्.) जनक की पुत्री, सीता, जानकी।

जनकौर *पुं.* (देश.) जनक का स्थान, जनक नगर।

जनखा *वि.* (फा.) हिजड़ा, नपुंसक, स्त्रैण।

जनगणना *स्त्री.* (तत्.) लोगों, पशुओं, पेड़-पौधों की गिनती।

जनजागरण *पुं.* (तत्.) जनता में अपने हित, अहित का ज्ञान होना।

जन जाति *स्त्री.* (तत्.) जंगलों या पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाली जाति या वर्ग, आदिम जाति।

जनतंत्र *पुं.* (तत्.) जनता का शासन, लोक तंत्र, प्रजा तंत्र, जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों का शासन।

जनतांत्रिक *वि.* (तत्.) जनतंत्र संबंधी।

जनता *स्त्री.* (तत्.) जन समूह, लोक, जन, जन साधारण 2. जनन का भाव प्रयो. जनता जनार्दन- लोक रूपी ईश्वर।

जन धन *पुं.* (तत्.) सार्वजनिक धन, मनुष्य और संपदा प्रयो. जन धन योजना- आर्थिक रूप से

कमजोर वर्गों के लिए भारत सरकार द्वारा चलाई गई एक योजना जिसमें शून्य धनराशि पर बैंक आदि में खाता खोला जा सकता है।

जनन *पुं.* (तत्.) 1. संस्कार विशेष 2. उत्पत्ति जन्म, आविर्भाव।

जनना *सं.क्रि.* (तद्.) जन्म देना, पैदा करना, प्रसव करना।

जननि *स्त्री.* (तत्.) दे. जननी।

जन निर्देश *पुं.* (तत्.) दे. जनादेश।

जननी *स्त्री.* (तत्.) 1. जन्म देने वाली 2. माता, माँ, उत्पन्न करने वाली 3. चमगादड़ 4. कुटकी 5. मजीठ 6. जटामाँसी 7. पपड़ी।

जननेंद्रिय *स्त्री.* (तत्.) वह इंद्रिय जिससे संतान की की उत्पत्ति होती है; लिंग; भग, योनि, उपस्थ।

जनपद *पुं.* (तत्.) 1. लोगों के निवास का प्रदेश, देश 2. निवासी 3. प्रजा 4. लोग 5. राज्य, आंचलिक क्षेत्र।

जनपदीय *वि.* (तत्.) जनपद से संबंधित।

जनप्रवाद *पुं.* (तत्.) 1. अफवाह 2. किंवदंती 3. लोक निंदा, लोक प्रवाद।

जनप्रिय *वि.* (तत्.) सबका प्यारा, सर्व प्रिय। पु. (तद्.) 1. धनिया 2. सहजन का वृक्ष 3. महादेव, शिव।

जनप्रियता *पुं.* (तत्.) सबके प्रिय होने का भाव, लोकप्रियता।

जनम *पुं.* (तद्.) 1. जन्म, उत्पत्ति 2. जीवन, जिंदगी, आयु मुहा. जनम गँवाना- जन्म नष्ट करना, जीवन बिताना-आजीवन दुख सहना, आजीवन सेवा का संकल्पन करना।

जनम दिन *पुं.* (तद्.) दे. जन्म दिन।

जनमत *पुं.* (तत्.) जनता की राय, लोकमत प्रयो. जनमत संग्रह- जनता की राय का संग्रह।

जनमजला *वि.* (देश.) भाग्यहीन, अभागा, दुर्भाग्यग्रस्त।

जनमना *अ.क्रि.* (देश.) पैदा होना जन्म लेना, उत्पन्न होना *स.क्रि.* जन्म देना, पैदा करना।

जनमपत्री *स्त्री.* (तद्.) दे. जन्मपत्री।

जनमर्यादा *स्त्री.* (तत्.) लोकाचार, लोकरीति या लोक मर्यादा।

जनम संगी *वि.* (तद्.) जीवन साथी, पति या पत्नी।

जनमेजय *पुं.* (तत्.) कुरुवंशी राजा परीक्षित के पुत्र का नाम, अर्जुन का प्रपोत्र एवं अभिमन्यु का पौत्र।

जनयिता *पुं.* (तत्.) पिता, बाप।

जनरंजन *वि.* (तत्.) जनता को सुख देने वाला।

जनरल *पुं.* (अं.) 1. आम, साधारण 2. सेना नायक, सेनापति 3. महा उपसर्ग (जैसे- महा नियंत्रक, महा निदेशक)।

जनलोक *पुं.* (तत्.) ऊपर के सप्तलोकों में से पाँचवा लोक।

जनवरी *स्त्री.* (अं.) अंग्रेजी वर्ष का पहला महीना।

जनवल्लभ *पुं.* (तत्.) सफेद रोहित का पेड़, सफेद रोहिड़ा। *वि.* जनप्रिय, लोकप्रिय।

जनवाई *स्त्री.* (देश.) दे. जनाई।

जनवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. जनना का प्रेरणार्थक रूप 2. प्रसव कराना, जनने में सहायक होना 3. जानना का प्रेरणार्थक रूप।

जनवास *पुं.* (तद्.) 1. लोगों के ठहरने का स्थान 2. बरातियों के ठहरने का स्थान 3. समाज, सभा।

जनवासना *स.क्रि.* (तद्.) लोगों को ठहरने या बैठने के लिए स्थान देना।

जनवासा *पुं.* (तत्.) जनवास, बरातियों के ठहरने का स्थान, लोगों का आपसी बर्ताव।

जन व्यवहार *पुं.* (तत्.) लोक व्यवहार।

जनश्रुत *वि.* (तत्.) 1. जनता में सुना जाने वाला 2. प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर।

जनश्रुति *स्त्री.* (तत्.) अफवाह, किंवदंति।

जन शून्य *वि.* (तत्.) निर्जन, सुनसान।

जनसंख्या *स्त्री.* (तत्.) आवादी, किसी स्थान पर बसे हुए कुल लोग।

जनसमूह *पुं.* (तत्.) जन समुदाय, लोगों का मजमा।

जन साधारण *पुं.* (तत्.) साधारण लोग, आम जनता।

जन सेवक *वि.* (तत्.) जनता की सेवा करने वाला, जनसेवी, लोक सेवक।

जन सेवा *स्त्री.* (तत्.) जन साधारण यानी आम लोगों के उपकार के लिए किया गया काम।

जन स्थान *पु.* (तत्.) दंडकारण्य, दंडकवन।

जन हित *पुं.* (तत्.) 1. लोगों का हित 2. लोकोपयोगी कार्य 3. लोक कल्याण।

जनांत *पुं.* (तत्.) 1. वह स्थान जिसमें मनुष्य न रहते हों 2. यम 3. वह प्रदेश जिसकी सीमा निश्चित हो *वि.* मनुष्यों का नाश करने वाला।

जनांतिक *पुं.* (तत्.) सांकेतिक बातचीत जिसे अन्य लोग न समझ सकें।

जना *स्त्री.* (तत्.) पैदाइश, उत्पत्ति *वि.* (तद्.) उत्पन्न किया हुआ, जन्माया हुआ।

जनाई *स्त्री.* (देश.) 1. जानने का भाव एवं मजदूरी 2. जनाने वाली, दाई।

जनाचार *पुं.* (तत्.) लोकाचार, प्रचलित रीति।

जनाजा *पुं.* (अर.) मृतक शरीर, मुर्दा शव, लाश 2. अरथी या शवपेटी।

जनाती *पुं.* (देश.) घराती, कन्या पक्ष के लोग। विलो. बराती।

जनादेश *पुं.* (तत्.) जनमत संग्रह, जनता का फैसला।

जनाधिनाथ *पुं.* (तत्.) 1. ईश्वर 2. राजा।

जनाधिप *पुं.* (तत्.) राजा, नरेश 2. विष्णु का एक नाम।

जनानखाना *पुं.* (फा.) घर का वह भाग जिसमें स्त्रियाँ रहती हैं, अंतःपुर।

जनाना *स.क्रि.* (देश.) मालूम कराना, जताना 2. जनन का काम कराना *वि.* (*फ़ा.*) 1. स्त्रियों से संबंधित जैसे- जनाना अस्पताल *पुं.* (फ़ा) 1. नपुंसक, हिजड़ा, स्त्री, औरत, पत्नी।

जनानापन *पुं.* (फा.) स्त्रीत्व, स्त्री होने का गुण या अवस्था।

जनानी *वि.* (फा.) दे. जनाना।

जनाब *पुं.* (अर.) महाशय, महोदय, सर (आदर सूचक शब्द) 2. चौखट, देहली, ड्योढ़ी 3. मौजूदगी, उपस्थिति।

जनाबआली *पुं.* (अर.) मान्यवर, महोदय, (आदर सूचक संबोधन)।

जनाबा *स्त्री.* (अर.) श्रीमती।

जनार्दन *पुं.* (तत्.) विष्णु।

जनाव *पुं.* (देश.) जानने या सूचना प्राप्त करने का भाव या क्रिया।

जनावर *पुं.* (देश.) दे. जानवर।

जनाशन *पुं.* (तत्.) 1. आदम खोर 2. भेड़िया 3. मनुष्य भक्षक।

जनाश्रम *पुं.* (तत्.) धर्मशाला, सराय।

जनि *स्त्री.* (तत्.) जन्म, पैदायश 2. नारी, स्त्री 3. माता 4. पुत्रवधु 5. पत्नी, भार्या 6. जन्मभूमि *क्रि.वि.* मानो *अव्यय.* मत, नहीं, न।

जनिक *वि.* (तद्.) जनम देने वाला, उत्पन्न करने वाला।

जनित *वि.* (तत्.) उत्पन्न, पैदा हुआ।

जनिता *पुं.* (तत्.) पैदा करने वाला, पिता, जन्म देने वाली माता।

जनित्र *पुं.* (तत्.) 1. जन्म स्थान 2. मूल जन्म भूमि 3. जनरेटर (यंत्र), बिजली पैदा करने वाली मशीन।

जनित्री *स्त्री.* (तत्.) उत्पन्न करने वाली माता, माँ।

जनित्व *पुं.* (तत्.) पिता।

जनित्वा *स्त्री.* (तत्.) माता।

जनिभा *स्त्री.* (तद्.) उत्पत्ति, जन्म 2. संतान, संतति।

जनी *स्त्री.* (तत्.) 1. स्त्री, माता 2. कन्या, लड़की 3. दासी, सेविका।

जनु *क्रि.वि.* (तत्.) मानो *स्त्री.* (तत्.) जन्म, उत्पति।

जनू *स्त्री.* (तत्.) जन्म, उत्पत्ति।

जनून *पुं.* (अर.) पागलपन, सनक, उन्माद, खब्त।

जनूनी *पुं.* (अर.) पागल, सनकी, उन्मादी, खब्ती।

जनूब *पुं.* (अर.) दक्षिण (दिशा)

जनूबी *वि.* (अर.) दक्षिणी, दक्खिनी।

जनेंद्र *पुं.* (तत्.) राजा।

जने *पुं.* (तद्.) व्यक्ति, आदमी, लोग।

जनेऊ *पुं.* (देश.) 1. यज्ञोवीत, ब्रह्मसूत्र 2. यज्ञोपवीत संस्वर मुहा. जनेऊ का हाथ- तलवारबाजी का ऐसा आघात जो प्रतिद्वंद्वी की छाती पर जनेऊ जैसा चिह्न बना देता है।

जनेत *स्त्री.* (देश.) वरयात्रा, बरात।

जनेरा *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का बाजरा।

जनेश *पुं.* (तत्.) राजा, नरेश, भूपति।

जनेष्ट *वि.* (तत्.) लोकप्रिय, जनप्रिय।

जनेष्टा *स्त्री.* (तत्.) 1. हल्दी 2. चमेली का पेड़ 3. 3. पर्पटी, वृद्धि नाम की औषधि।

जनेस *पुं.* (देश.) दे. जनेश।

जनोपयोगी *वि.* (तत्.) जन साधारण के लिए उपयोगी, लोकोपयोगी जैसे- जनोपयोगी भवन।

जन्नत *पुं.* (अर.) 1. स्वर्ग 2. उद्यान, वाटिका।

जन्म *पुं.* (तत्.) गर्भ से निकलकर जीवन धारण करने की क्रिया एवं भाव, उत्पत्ति, पैदायश 2. जीवन/जिंदगी का आरंभ मुहा. जनम लेना- पैदा होना; जन्म बिगाड़ना- धर्म नष्ट होना; जन्म हारना- व्यर्थ जन्म गँवाना।

जन्मकुंडली *स्त्री.* (तत्.) जन्म के समय के ग्रहों की स्थिति का ज्ञान कराने वाला राशि चक्र।

जन्मक्षेत्र *पुं.* (तत्.) जन्म स्थान, जन्म भूमि।

जन्म गत *वि.* (तत्.) जन्म से ही प्राप्त।

जन्म ग्रहण *पुं.* (तत्.) जन्म लेने का भाव, उत्पत्ति।

जन्म घूँटी *स्त्री.* (तद्.) औषध की घूँट जो बच्चों को जन्म से लेकर दो-तीन वर्ष तक पिलाई जाती है मुहा. जन्म घूँटी में पड़ना- आदत पड़ना प्रयो. झूठ बोलना और कामचोरी तो उसकी जनम घूँटी में ही पड़ा है।

जन्मजात *वि.* (तत्.) जन्म के साथ उत्पन्न, जन्म से ही प्राप्त।

जन्म तिथि *स्त्री.* (तत्.) 1. जन्मदिन, जन्म की तारीख 2. वर्षगाँठ।

जन्मदाता *पुं.* (तद्.) जन्म देने वाला, पिता।

जन्म दात्री *स्त्री.* (तद्.) जन्म देने वाली, माता।

जन्म नक्षत्र *पुं.* (तत्.) जन्म के समय का नक्षत्र।

जन्मना *क्रि.वि.* (तद्.) जन्म से, जन्म द्वारा जन्म लेना, पैदा होना, अस्तित्व में लाना।

जन्मपत्र *पुं.* (तत्.) 1. जन्म पत्री 2. जन्म का विवरण 3. आदि से अंत तक विस्तृत विवरण।

जन्मपत्री *स्त्री.* (तत्.) जन्म पत्र, जन्म के समय के ग्रहों, नक्षत्रों की स्थिति, दशा, अंतर्दशा, आदि का विवरण।

जन्म प्रतिष्ठा *स्त्री.* (तत्.) 1. माता, माँ 2. जन्म स्थान।

जन्मभूमि *स्त्री.* (तत्.) जन्म स्थान, वह देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो।

जन्म राशि *स्त्री.* (तत्.) वह राशि जिसमें किसी के उत्पन्न होने के समय चंद्रमा अथवा पाश्चात्य मत के अनुसार सूर्य हो।

जन्म रोगी *वि.* (तद्.) जन्म से रोगी, जन्म से रोगग्रस्त।

जन्म विधवा *स्त्री.* (तत्.) बचपन से विधवा, जिसका पति के साथ संपर्क न हुआ हो, अक्षतयोनि विधवा।

जन्म वृत्तांत *पुं.* (तत्.) जन्म से लेकर मरने तक का विवरण।

जन्म शोधन *पुं.* (तत्.) जन्म से प्राप्त ऋण का परिशोधन।

जन्म सिद्ध *वि.* (तत्.) जन्म से मान्य, जन्म से प्राप्त, पैदायशी।

जन्म स्थान *पुं.* (तत्.) 1. जन्मभूमि 2. माता का गर्भ।

जन्मांतर *पुं.* (तत्.) अन्य जन्म, दूसरा जन्म।

जन्मांध *वि.* (तत्.) जन्म से अंधा।

जन्मा *वि.* (तद्.) पैदा हुआ, जन्म लिया हुआ।

जन्माधिप *पुं.* (तत्.) 1. जन्म लग्न का स्वामी 2. शिव का एक नाम।

जन्माष्टमी *स्त्री.* (तत्.) कृष्ण की जन्मतिथि।

जन्मेजय *पुं.* (तत्.) दे. जनमेजय।

जन्मेश *पुं.* (तत्.) जन्म राशि का स्वामी।

जन्मोत्सव *पुं.* (तत्.) 1. जन्म संबंधी उत्सव जैसे रामजन्मोत्सव 2. वर्षगांठ 3. जातक के छटे या बारहवे दिन होने वाला समारोह।

जन्य *वि.* (तत्.) 1. किसी जाति या वंश से संबंधित 2. सामान्य *पुं.* जनक, पिता 2. वर का सखा, बराती 3. देह 4. जाति 5. अफवाह, किंवदंति 6. पुत्र 7. जमाता, जमाई।

जन्या *स्त्री.* (तत्.) 1. वधू की सहेली 2. वधू 3. प्रीति, स्नेह 4. सुख, आनंद।

जन्यु *पुं.* (तत्.) 1. अग्नि 2. ब्रह्मा, विधाता 3. जन्म, उत्पत्ति 4. एक ऋषि का नाम।

जप *पुं.* (तत्.) 1. किसी मंत्र का धीरे-धीरे बार-बार पाठ करना 2. पूजा, संध्या आदि में मंत्र का संख्यापूर्वक पाठ।

जपजी *पुं.* (देश.) सिक्खों का पवित्र धर्मग्रंथ।

जपत *पुं.* (देश.) दे. जब्त।

जपतप *पुं.* (तद्.) पूजा पाठ।

जपतव्य *वि.* (तत्.) दे. जपनीय।

जपता *पुं.* (तत्.) जप कार्य, जप करने का भाव।

जपन *पुं.* (तत्.) जपने का काम, जप।

जपना *स.क्रि.* (तद्.) किसी वाक्य/वाक्यांश का बार-बार उच्चारण करना 2. हड़पना, हजम करना 3. यज्ञ करना, यजन करना।

जपनीय *वि.* (तत्.) जप करने योग्य।

जपमाला *स्त्री.* (तत्.) जप करने के लिए प्रयुक्त माला।

जपयज्ञ *पुं.* (तत्.) जप, जपात्मक यज्ञ।

जपा *स्त्री.* (तत्.) जवा पुष्प, अड़हुल।

जपी *पुं.* (देश.) जप करने वाला।

जप्य *वि.* (तत्.) जपने योग्य।

जफ़र *स्त्री.* (अर.) सफलता, जय, विजय (अर.) परोक्ष ज्ञान की विद्या।

जफा *स्त्री.* (फा.) सख्ती, अन्यायापूर्ण व्यवहार।

जफीरी *स्त्री.* (अर.) एक प्रकार की कपास जो मिस्र में होती है।

जब *क्रि.वि.* (देश.) जिस समय।

जबड़ा *पुं.* (तद्.) मुँह में ऊपर-नीचे का हड्डियों वाला भाग जिनमें दाढ़े होती हैं मुहा. जबड़ा फाड़ना- मुँह खोलना प्रयो. जबड़ा तोड़-जबरदस्त।

जबर जद *वि.* (फा.) पुखराज।

जबर जद्द *पुं.* (देश.) दे. जबर जद।

जबरजस्त दे. जबरदस्त।

जबरदस्त *वि.* (फा.) बलवान, शक्तिशाली 2. मजबूत, दृढ़।

जबरदस्ती *स्त्री.* (फा.) अन्याय, अत्याचार, सीनाजोरी, बलपूर्वक कराया गया काम, जियादती 1. बलपूर्वक 2. इच्छा के विरुद्ध।

जबरन *क्रि.वि.* (अर.) जबरदस्ती, बलपूर्वक।

जबरा *वि.* (फा.) बलवान, बली 2. मजबूत, दृढ़ 3. ऊपरी, ऊँचा *क्रि.वि.* ऊपर *पु.* ह्रस्व-अकार बोधक चिह्न।

जबराइल *पुं.* (अर.) फरिश्ता, देवदूत

जबर्दस्ती *स्त्री.* (अर.) दे. जबरदस्ती।

जबल *पुं.* (अर.) पहाड़, पर्वत।

जबान *स्त्री.* (फा.) 1. जीभ, जिह्वा 2. भाषा मुहा. जबान कतरनी की तरह चलना- बहुत अधिक अनुचित बातें करना; जबान को लगाम देना- चुप हो जाना; जबान खींचना- कठोर दंड देना; जबान खुलवाना- कहने पर विवश होना; जबान खोलना- बोलना; जबान चलाना- अनुचित शब्द बोलना; जबान पर ताला लगाना- चुप रहने को विवश करना; जबान पर मुहर लगाना- बोलने पर रोक लगाना; जबान पर लाना- उच्चरित करना, मुँह से कहना; जबान पलटना- वचन तोड़ना; जबान पर होना- याद रहना, स्मरण रहना; जबान बंद करना- चुप होना, वाद विवाद में कुछ न बोलना, हरा देना; जबान बिगड़ना- अशुद्ध उच्चारण करना, अपशब्द बोलना; जबान में कीड़े पड़ना- अशुभ बोलने का फल मिलना; जबान रोकना- सोच समझकर बोलना; जबान निकालना- उच्चारित होना, बोल जाना; जबान हिलाना- मुँह से शब्द निकालना; जबान बदलना- अपनी बात से फिर जाना, जबान पलटना; जबान देना- वचन देना।

जबान दराजी *स्त्री.* (फा.) धृष्टता, ढिठाई, गुस्ताखी।

जबान बंद *पुं.* (फा.) 1. जबान बंद करने वाला ताबीज 2. लिखित साक्षी या इजहार।

जबान बंदी *स्त्री.* (फा.) साक्षी के रूप में कथन 2. लिखित इजहार 3. मौन, चुप्पी।

जबानी *वि.* (फा.) मौखिक।

जबाब *पुं.* (अर.) दे. जवाब।

जबावी *वि.* (अर.) जवाब संबंधी, जिसका जबाव देना हो।

जबु प्रस्थ *पुं.* (तत्.) एक प्राचीन नगर, संभवत: आज का जम्मू नगर।

जब्त *पुं.* (अर.) दंड स्वरूप संपत्ति का हरण, जायदाद छीनना 2. धैर्य 3. प्रबंध, इतंजाम।

जब्ती *स्त्री.* (अर.) जब्त करने ही क्रिया या भाव, कुर्की।

जब्बर *पुं.* (फा.) बलवान, शक्तिशाली।

जब्बार *वि.* (फा.) बलवान, ताकतवर, शक्तिशाली।

जब्रन *क्रि.वि* (अर.) बलपूर्वक, जबरदरती से।

जब्री *वि.* (अर.) जबरन, जबरदस्ती, बलपूर्वक।

जब्रीया *क्रि.वि.* (तत्.) जबरदस्ती से (अर.) जो ईश्वर या नियति को सर्वोपरि मानता है।

जब्रील दे. जिब्रील।

जब्ह *पुं.* (अर.) गला काटकर जान लेने का काम मुहा.- जब्ह करना, बहुत कष्ट देना।

जम *पुं.* (फा.) दे. यम।

जमई *वि.* (फा.) जमा संबंधी, नगदी।

जमघट *पुं.* (देश.)लोगों की भीड़, जमावड़ा, मजमा।

जमघट्ट *पुं.* (देश.) दे. जमघट।

जमघर *पुं.* (तद्.) यमराज का घर, यमलोक, यमालय।

जमदग्नि *पुं.* (तत्.) एक वैदिक ऋषि जिसकी गणना सप्त ऋषि में की जाती है।

जमना *अ.क्रि.* (तद्.) किसी द्रव का ठंडक के कारण गाढ़ा होना तथा ठोस हो जाना 2. अच्छी तरह स्थित होना 3. एकत्र होना मुहा. दृष्टि जमना- किसी पर नजर गड़ना; मन में बात जमना- किसी बात का दिल पर अंकित हो जाना; रंग जमना- प्रभाव पड़ना, पैदा होना, फूटना, उत्पन्न होना *स्त्री.* 1. एक प्रकार की घास जो वर्षा के बाद खेतों में उगती है। 2. यमुना नदी।

जमनोत्तरी *स्त्री.* (तद्.) यमुना का उद्गम स्थान।

जमपुर *पुं.* (तत्.) दे. यमपुर।

जमशेद *पुं.* (ईरा.)ईरान के प्राचीन शासक का नाम

जमहूर *पुं.* (अर.) सर्व साधारण, जनता।

जमहूरियत *स्त्री.* (अर.) प्रजातंत्र, लोकतंत्र।

जमा *अ.क्रि.* (अर.) 1. एकत्रित, इकट्ठा, संग्रहीत प्रयो. कुल जमा- कुल मिलाकर, मूलधन, पूँजी, धन 2. भूमिकर, मालगुजारी, लगान मुहा. जमा मारना/ जमा हजम करना- किसी का धन मार लेना।

जमा पूँजी *स्त्री.* (तद्.) धन, संपत्ति, नगदी और सामान।

जमाई *पुं.* (तद्.) जँवाई, जामाता, दामाद (*स्त्री.* पद्.) जमने की क्रिया या भाव 2. जमाने की क्रिया, मजदूरी।

जमाखर्च *पुं.* (फ़ा.) आय-व्यय।

जमात *स्त्री.* (अर.) 1. समूह, गिरोह या जत्था 2. कक्षा, श्रेणी, दरजा 3. पंक्ति, कतार।

जमादार *पुं.* (फा.) सिपाहियों/पहरेदारों का प्रधान 2. पुलिस का बड़ा सिपाही 3. सफाई कर्मचारियों का निरीक्षक, सफाई कर्मचारी।

जमादारी *स्त्री.* (अर.) जमादार का पद या काम।

जमानत *स्त्री.* (अर.) 1. वह धन राशि जो किसी की जिम्मेदारी लेते समय जमा की जाती है 2. जिम्मेदारी, किसी के लिए दंड या हरजाना भरने की जिम्मेदारी।

जमानतनामा *स्त्री.* (अर.) जमानत का नियमित प्रमाण।

जमानती *स्त्री.* (अर.) जमानत लेने वाला *वि.* 1. जमानत संबंधी 2. जमानत के रूप में।

जमाना *स.क्रि.* (देश.) किसी द्रव पदार्थ को गाढ़ा या ठोस करना 2. किसी पदार्थ को किसी पर बैठाना, अच्छी तरह स्थित करना मुहा. रंग जमाना- प्रभाव डालना 3. प्रहार करना उदा. उसने गुस्से में आकर उसे थप्पड़ जमा दिया 4. मुँह में रखना उदा. उसने पान के दो बीड़े जमा लिए 5. उत्पन्न करना- उपजना *पुं.* (फा.) काल, समय, वक्त, मुद्दत 2. सौभाग्य के दिन उदा. आजकल तो चोर उचक्कों का ही जमाना है 2. संसार, दुनिया उदा. आजकल सारा जमाना भौतिकता की ओर भाग रहा है मुहा. जमाना पलटना- समय बदलना; जमाना छानना- बहुत सोचना; जमाना देखना- बहुत अनुभव प्राप्त करना; जमाना बदलना- अच्छे या बुरे दिन आना; जमाने की गर्दिश- समय का फेर।

जमाबंदी *स्त्री.* (फा.) पटवारी का खाता जिसमें असामियों तथा उससे प्राप्त लगान का विवरण दिया जाता है।

जमाल गोटा *पुं.* (तद्.) एक पौधे का बीज जो रेचक होता है, जायफल, दंतीफल।

जमाली *वि.* (अर.) रूपवान, सुंदर रूप वाला।

जमाव *पुं.* (देश.) 1. जमने का भाव 2. जमाने का भाव 3. भीड़-भाड, जमावड़ा।

जमावट *स्त्री.* (देश.) जमने का भाव दे. जमाव।

जमावड़ा *पुं.* (देश.) लोगों का समूह, भीड़।

जमींकद *पुं.* (फा.) सूरन, जिमींकद।

जमींदार *पुं.* (फा.) भूपति, जमीन का मालिक।

जमींदारी *स्त्री.* (फा.) 1. जमीन का मालिक 2. जमींदारी का हक/अधिकार 3. जमींदार होने की दशा या अवस्था।

जमींदोज *वि.* (फा.) 1. जमीन पर गिरा हुआ या सटा हुआ 2. गिराकर या ढककर जमीन के बराबर किया हुआ 3. भूगर्भ में स्थित।

जमीन *स्त्री.* (फा.) 1. पृथ्वी (ग्रह) 2. पृथ्वी का ठोस भाग जिस पर हम लोग रहते है, भूमि, धरती, सतह मुहा. जमीन आसमान एक करना-बहुत दौड़ धूप करना; जमीन-आसमान का फरक-बहुत अधिक अंतर; जमीन का पैरों तले से निकलना- सन्नाटे में आवाज होश-हवास खोना; जमीन देखना- नीचा देखना, जमीन पकड़ना- जमकर बैठ जाना; जमीन पर पैर न रखना- अभिमान करना, बहुत इतराना।

जमीनी *वि.* (फा.) जमीन संबंधी।

जमीर *पुं.* (अर.) अंतकरण, हृदय, मन।

जमील *वि.* (अर.) 1. सुंदर रूपवान 2. विवेक।

जमीला *वि.* (अर.) सुंदरी।

जमुना *स्त्री.* (तद्.) यमुना नदी।

जमुनिका *स्त्री.* (तद्.) दे. यवनिका।

जमुरदी *वि.* (अर.) हरा, नीलापन लिए हरा रंग।

जमुरी *स्त्री.* (फा.) चिमटी, सँडसी।

जमुर्रद पुं. (अर.) पन्ना।

जमूरा *पुं.* (तत्.) जमूरक।

जमैयत *स्त्री.* (अर.) समुदाय, दल 2. जमात 3. सभा, गोष्ठी।

जमोगाना *स.क्रि.* (देश.) हिसाब किताब करना 2. किसी को अपना भार सौंपना 3. तसदीक करना।

जमौआ *वि.* (देश.) जमाया हुआ, जमाकर बनाया हुआ।

जम्म *पुं.* (तद्.) यम।

जम्म भूमि *स्त्री.* (देश.) दे. जन्मभूमि।

जम्मण *पुं.* (देश.) जन्म, पैदायश, उत्पत्ति।

जम्मू *पुं.* (तद्.) जंबू, काश्मीर का नगर-जम्मू।

जम्हाई *स्त्री.* (देश.) दे. जँभाई।

जम्हाना *अ.क्रि.* (तद्.) जँभाना, जँभाई लेना।

जयंत *पुं.* (तत्.) 1. विजयी 2. बहुरूपिया 3. एक रुद्र का नाम 4. धर्म के पुत्र का नाम 5. अज्ञातवास के दौरान भीम का बनावटी नाम 6. ज्योतिष के अनुसार एक योग जिसमें यात्रादि पर विचार किया जाता है।

जयंतपुर *पुं.* (तत्.) एक प्राचीन नगर का नाम जिसकी स्थापना निमिराज ने की थी, यह गौतम ऋषि के आश्रम के निकट था।

जयंतिका *स्त्री.* (तत्.) दे. जयंती।

जयंती *स्त्री.* (तद्.) विजयिनी 2. ध्वजा, पताका 3. हलदी 4. जन्मतिथि या वर्षगाँठ का उत्सव 5. दुर्गा तथा पार्वती का एक नाम 6. ज्योतिष में एक योग, जय (*स्त्री.* तत्) 1. विजय, जीत मुहा. जय मनाना- विजय की कामना करना, समृद्धि चाहना 2. जयंती का पेड़ 3. वशीकरण 4. पुराणों में कई महान व्यक्तियों के नाम।

जय जयवंती *पुं.* (देश.) एक रागिनी का नाम इसे मेध राग की भार्या एवं मालकोश की सहचारी कहते हैं।

जयकंकण *पुं.* (तत्.) विजय प्राप्त करने पर दिया जाने वाला कंकण।

जयक *वि.* (तत्.) जीतने वाला, विजयी।

जयकार *पुं.* (तत्.) जयघोष।

जयखाता *पुं.* (देश.) जयकार, जय-जय की आवाज।

जयघोष *पुं.* (तत्.) जयकार, जय-जय की आवाज।

जयचंद *पुं.* (तद्.) एक प्रसिद्ध राजा 2. देशद्रोही व्यक्ति।

जयति *पुं.* (तद्.) 1. एक राग जो गौरी और ललित के योग से बनता है 2. *स्त्री.* (तत्.) श्री राग की एक रागिनी का नाम।

जयतिश्री *स्त्री.* (देश.) एक रागिनी जिसे दीपक राग राग की भार्या माना जाता है।

जयतु *क्रि.वि.* (तत्.) आशीर्वाद सूचक 'जय हो'।

जयदुंदुभी *स्त्री.* (तत्.) जीत का डंका, विजय श्री।

जयदुर्गा *स्त्री.* (तत्.) तंत्र के अनुसार दुर्गा की एक मूर्ति।

जयदेव *पुं.* (तत्.) गीतगोविंदम् के रचयिता का नाम जो कि प्रसिद्ध वैष्णव भक्त कवि थे।

जयद्रथ *पुं.* (तत्.) महाभारत के अनुसार दुर्योधन का बहनोई।

जय ध्वज *पुं.* (तत्.) जय पताका, जयंती।

जय ध्वनि *स्त्री.* (तत्.) जयघोष।

जयन *पुं.* (तद्.) 1. जय, जीत 2. जिरह-बख्तर।

जयपत्र *पुं.* (तत्.) विजय पत्र।

जय पत्री *स्त्री.* (तद्.) जावित्री।

जय पराजय *स्त्री.* (तत्.) जीत-हार।

जयपाल *पुं.* (तत्.) 1. जमालगोटा 2. विष्णु 3. ब्रह्मा का एक नाम।

जय प्रिय *पुं.* (तत्.) राजा विराट के भाई का नाम 2. ताल का मुख्य भेद।

जयफर *पुं.* (तद्.) दे. जायफल।

जयभेरी *स्त्री.* (तत्.) विजय डंका, जीत का नगाड़ा।

जय मंगल *पुं.* (तद्.) राजा के सवार होने योग्य हाथी 2. ताल का एक भेद।

जयमार *स्त्री.* (तद्.) जयमाला।

जयमाल *स्त्री.* (तद्.) जयमाला 2. विजयी को पहनाई जाने वाली माला।

जय यज्ञ *पुं.* (तत्.) अश्वमेध यज्ञ।

जय लक्ष्मी *स्त्री.* (तत्.) दे. जयश्री।

जय वाहिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. विजय करने वाली सेना 2. इंद्राणी, शची।

जय श्री *स्त्री.* (तत्.) विजयलक्ष्मी 2. विजय, जीत 3. एक ताल का नाम।

जय स्तंभ *पुं.* (तत्.) विजय स्तंभ

जय स्वामी *पुं.* (तद्.) शिव का एक नाम 2. छांदोग्य सूत्र व आश्वलायन ब्राह्मण के व्याख्याकार।

जयशाली *वि.* (तत्.) जैसलमेर के संस्थापक यादव वंशी राजा का नाम।

जया *स्त्री.* (तत्.) 1. दुर्गा का नाम 2. पार्वती का एक नाम 3. दूब 4. हरड़ 5. पताका, ध्वजा 6. दोनों पक्षों की तृतीय, अष्टमी और त्रयोदशी की तिथियाँ 7. जया का फूल, अड़हुल का फूल।

जयाजय *पुं.* (तत्.) जय और पराजय, हारजीत।

जयावह *वि.* (तत्.) जीत प्राप्त करने वाला।

जयावहा *स्त्री.* (तत्.) भद्रदंती का पेड़।

जयाश्रया *स्त्री.* (तत्.) जरड़ी घास।

जयिष्णु *वि.* (तत्.) जयशील, जो हमेशा जीतता हो।

जयी *वि.* (तत्.) विजयी, जयशील।

जयेत *पुं.* (तत्.) एक राग का नाम जो पूरिया और कल्याण के योग से बनता है।

जयेती *स्त्री.* (तत्.) एक रागिनी जो गौरी, जय श्री के योग से बनती है।

जयेद गौरी *स्त्री.* (देश.) एक रागिनी का नाम जो जयंत और गौरी के योग से बनती है।

जय्य *वि.* (तत्.) जीतने योग्य।

जरंड *वि.* (तत्.) 1. वृद्ध 2 क्षीण 3. पुराना।

जरंत *पुं.* (तद्.) वृद्ध व्यक्ति, बूढ़ा आदमी।

जर *पुं.* (तत्.) 1. बुढ़ापा, वृद्धावस्था, क्षय होने वाला 2.क्षीण, पुराना, वृद्ध 3. क्षीण करने वाला।

जरई *स्त्री.* (तद्.) धान आदि के अंकुरित बीज।

जरकटी *पुं.* (देश.) एक शिकारी पक्षी।

जरकस *वि.* (फा.) सोना, स्वर्ण 2. धन-दौलत, रुपया।

जरकसी *वि.* (फा.) जिस पर सोने के तार लगे हो।

जर खरीद *वि* (फा.) नकद खरीद।

जरगह *स्त्री.* (फा.) एक घास जिसे जानवर बड़े चाव चाव से खाते है।

जरगा *स्त्री.* (फा.) दे. जरगह।

जरछार *वि.* (देश.) 1. नष्ट 2. भस्मीभूत।

जरज *पुं.* (देश.) एक कंद जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

जरजर *वि.* (देश.) दे. जर्जर।

जरठ *वि.* (तत्.) कर्कश, कठोर *पुं.* बूढ़ा, वृद्ध (व्यक्ति), बुढ़ापा।

जरठाई *स्त्री.* (तद्.) वृद्धावस्था, जीर्णता।

जरडा *स्त्री.* (तत्.) एक घास का नाम, जिसे वैद्यक में रक्त रोधक, मधुर, शीतल और रुचिकर माना

जाता है। इसे खाकर गाय भैंस अधिक दूध देती हैं।

जरण *पुं.* (तत्.) 1. हींग 2. जीरा 3. काला नमक 4. जरा, बुढ़ापा।

जरणा *स्त्री.* (तत्.) 1. बुढ़ापा 2. काला जीरा 3. प्रशंसा।

जरता बलता *पुं.* (देश.) जलता बलता।

जरतिका *स्त्री.* (तत्.) वृद्धा स्त्री, बूढ़ी महिला।

जरतुरत *पुं.* (फा.) पारसी धर्म के प्रवर्तक-जेंद अवेस्ता के रचयिता।

जरत् *वि.* (तत्.) बूढ़ा, वृद्ध *पुं.* बूढ़ा आदमी, वृद्ध व्यक्ति।

जरदा *वि.* (फा.) 1. एक प्रकार का व्यंजन (चावल का) जिसे मुसलमान खाते हैं 2. सुगंधित सुरती।

जरद्रव *पुं.* (तत्.) बूढ़ा बैल *वि.* (तत्.) प्राचीन, जीर्ण।

जरद्विष *पुं.* (तत्.) जल।

जरनल *पुं.* (अं.) पत्र-पत्रिका, आवधिक पत्रिका।

जरनलिस्ट *पुं.* (अं.) पत्रकार।

जरना *अ.क्रि.* (देश.) दे. जलना 2. जड़ना (नग आदि)।

जरनैल *पुं.* (अं.) दे. जनरल।

जरपरस्त *वि.* (फा.) कंजूस, सूम 2. लोभी।

जरपोस *पुं.* (फा.) जरी का कपड़ा, जरी की पोशाक।

जरफ *वि.* (अर.) साफ, स्वच्छ।

जरब *स्त्री.* (अर.) आघात, चोट।

जरबफ्त *पुं.* (फा.) बेल बूटों से कढ़ा हुआ रेशमी कपड़ा।

जरबाफ *पुं.* (फा.) सोने के तारों से कपड़े पर कढ़ाई करने वाला कारीगर, जरदोज।

जरमन *वि.* (अं.) जर्मनी देश का निवासी 2. जर्मनी देश का *स्त्री.* (अं.) 2. जर्मनी देश की भाषा।

जरमनी *पुं.* (अं.) एक यूरोपीय देश का नाम।

जरर *पुं.* (अर.) 1. हाथी 2. नुकसान, क्षति।

जरस *स्त्री.* (फ़ा.) घंटा, घड़ियाल *पु.* (देश.) एक प्रकार की समुद्री घास।

जरा *स्त्री.* (तत्.) बुढ़ापा, वृद्‌वास्था *पुं.* (तत्.) 1. जरा नाम की राक्षसी 2. एक बहेलिए का नाम, जिसके बाण से कृष्ण देवलोक सिधारे थे *वि.* (अर.) थोड़ा, कम प्रयो. जरा-जरा- थोड़ा-थोड़ा *क्रि.वि.* थोड़ा, कुछ, कम।

जराउ *वि.* (तद्.) दे. जड़ाऊ।

जरांकुश *पुं.* (तद्.) नींबू के सुगंध वाली एक जंगली घास।

जराग्रस्त *वि.* (तत्.) वृद्ध, बुड्ढा, बूढ़ा।

जराजीर्ण *वि.* (तत्.) 1. वृद्ध, बूढ़ा 2. बुढ़ापे के कारण कमजोर।

जरातुर *वि.* (तत्.) जराग्रस्त, बूढ़ा, वृद्ध।

जराफल *स्त्री.* (फा.) मसखरापन।

जरायणि *पुं.* (तत्.) जरासंध का एक नाम।

जरायम *पुं.* (अर.) पाप, जुर्म, दोष।

जरायु *क्रि.वि.* (तत्.) 1. गर्भाशय की झिल्ली 2. योनि 3. साँप की केंचुल।

जराव *वि.* (देश.) जड़ा हुआ, जड़ाऊ।

जरासंध *पुं.* (तत्.) जरासंध, महाभारत काल का मगध देश का एक राजा जो बृहद्रथ का पुत्र और कंस का ससुर था।

जरासुत *पुं.* (तत्.) जरासंध।

जरिणी *स्त्री.* (तत्.) बूढ़ी, वृद्धा।

जरित *वि.* (तत्.) 1. बूढ़ा, वृद्ध 2. क्षीण, दुर्बल। *वि.* (तद्.) दे. जड़ना।

जरिया *वि.* (तत्.) दे. जड़िया।

जरीफ *वि.* (अर.) मसखरा, परिहास करने वाला।

जरीब *स्त्री.* (फा.) भूमि नापने की जंजीर 2. लाठी, छड़ी।

जरीबी *वि.* (फा.) जरीब से नापी गई भूमि 2. बीघा।

जरीया *पुं.* (तत्.) 1. साधन 2. कसीला, लगाव।

जरूर *क्रि.वि.* (अर.) अवश्य, निस्संदेह *पुं.* (अर.) दवा की बुकनी जो जख्म पर और आँख में डाली जाती है।

जरूरत *स्त्री.* (अर.) आवश्यकता, प्रयोजन प्रयो. जरूरतमंद- इच्छुक, आकांक्षी, मुहताज।

जरूरतन *क्रि.वि.* (अर.) आवश्यकतावश, जरूरत से।

जरूरियात *स्त्री.* (अर.) आवश्यक चीजें।

जरूरी *वि.* (फ़ा.) आवश्यक।

जर्जर *वि.* (तत्.) 1. जीर्ण 2. फटा हुआ 3. वृद्ध, बूढ़ा 4. किसी पात्र के टूटने की ध्वनि।

जर्जरता *स्त्री.* (तद्.) जीर्णता, पुरानापन।

जर्जरित *वि.* (तत्.) जीर्ण, पुराना- फटा हुआ, टूटा-फूटा।

जर्जरीक *वि.* (तत्.)बहुत बूढ़ा 2. अनेक छिद्रोंवाला।

जर्ण *पुं.* (तत्.) चंद्रमा (कृष्ण पक्ष का) 2. वृक्ष, पेड़।

जर्तिल *पुं.* (तत्.) जंगली तिल।

जर्त्त *पुं.* (तत्.) 1. हाथी 2. योनि।

जर्त्तु *पुं.* (तत्.) दे. जर्त्त।

जर्द *वि.* (फा.) पीला, पीले रंग का।

जर्दा *पुं.* (फा.) दे. जरदा।

जर्नल *पुं.* (अ.) दे. जरनल।

जर्नलिस्ट *पुं.* (अं.) पत्रकार

जर्रा *पुं.* (अर.) 1. अणु, छोटा-सा टुकड़ा 2. छोटे-छोटे कण।

जर्राफ *वि.* (अर.) 1. हँसोड़ 2. प्रतिभाशाली।

जर्रार *वि.* (अर.) 1. बलवान, बलशाली, बलिष्ठ 2. बहादुर, वीर 3. भारी, विशाल।

जर्राह *पुं.* (अर.) चीड़ फाड़ करने वाला 2. शल्यचिकित्सक।

जर्राही *स्त्री.* (अर.) चीर फाड़ का काम, शल्य चिकित्सा, शस्त्रचिकित्सा।

जलंग *पुं.* (तत्.) महाकाल नाम की लता।

जलंगम *पुं.* (तत्.) चांडाल।

जलंधर *पुं.* (तत्.) एक पौराणिक राक्षस का नाम 2. एक प्राचीन ऋषि का नाम 3. योग का एक बंध।

जलंबल *पुं.* (तत्.) 1. नदी 2. अंजन।

जल *पुं.* (तत्.) 1. पानी 2. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, जन्मकुंडली का चौथा स्थान।

जलकंटक *पुं.* (तत्.) सिंघाड़ा, कुंभी।

जलकंडु *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की खुजली जो अधिक समय तक जल में रहने से होती है।

जल कंद *पुं.* (तत्.) 1. केला, कदली 2. जल कँदरा।

जल कँदरा *पुं.* (तद्.) काँदा नामक गुल्म जो तालों के किनारे होता है।

जल करंक *पुं.* (तत्.) 1. नारियल, कमल 2. शंख 3. लहर।

जल कल्क *पुं.* (तत्.) 1 शैवाल 2. कीचड़-काई।

जल कल्मष *पुं.* (तत्.) समुद्र मंथन से निकला हुआ विष।

जल कांत *पुं.* (तत्.) हवा, वायु, पवन।

जल काक *पुं.* (तत्.) जल कौआ नामक पक्षी।

जल कामुक *पुं.* (तत्.) सूर्यमुखी।

जल कुंतल *पुं.* (तत्.) शैवाल, सेवाल।

जल कुकरी *स्त्री.* (तद्.) मुर्गाबी।

जल कुक्कुट *पुं.* (तत्.) मुर्गाबी।

जल कूपी *स्त्री.* (तत्.) 1. कुआँ 2. तालाब 3. भँवर।

जल कौआ *पुं.* (देश.) एक प्रकार का जल पक्षी।

जल क्रिया *स्त्री.* (तत्.) देव तथा पितृ आदि का तर्पण।

जल क्रीड़ा *स्त्री.* (तत्.) जलविहार, जलाशयों में की जाने वाली क्रीड़ा।

जल खर *पुं.* (देश.) दे. जलावरी।

जल खरी *स्त्री.* (देश.) रस्सी या धागे से बनी हुई थैली।

जल चरी *स्त्री.* (तत्.) मछली।

जल जंतु *पुं.* (तत्.) जलचर, जल में रहने वाले जंतु।

जल जंत्र *पुं.* (तद्.) झरना, फुहार।

जल दान पुं. (तत्.) तर्पण।

जल देवता *पुं.* (तत्.) जल के अधिष्ठाता देवता, वरुण।

जल द्रविप *पुं.* (तत्.) एक जल जंतु, जल हस्ती।

जल निर्गम *पुं.* (तत्.) पानी का निकास।

जल नीलिका *स्त्री.* (तत्.) सेवार, शैवाल।

जल पक्षी *पुं.* (तत्.) जल के आसपास रहने वाला पक्षी।

जल पद्धति *स्त्री.* (तत्.) नहर, नाला, जलपथ।

जल पात्र *पुं.* (तत्.) पानी का बर्तन 2. पानी पीने का बर्तन।

जल पान *पुं.* (तत्.) नाश्ता, कलेवा, प्रातः काल या सायं काल लिया जाने वाला हल्का भोजन।

जल पिंड *पुं.* (तत्.) आग, अग्नि।

जल पिप्पली *स्त्री.* (तत्.) जल पीपल नामक औषधि।

जल प्रपात *पुं.* (तत्.) झरना 2. किसी ऊँचे स्थान से नदी का गिरना।

जल प्रलय *पुं.* (तत्.) जलप्लावन।

जल प्रवाह *पुं.* (तत्.) 1. पानी का बहाव 2. शव को नदी में बहाने की क्रिया या भाव 3. किसी वस्तु को बहते जल में छोड़ने की क्रिया या भाव।

जल प्रांत *पुं.* (तत्.) नदी या जलाशय के आस-पास का स्थान।

जल प्रिया *स्त्री.* (तत्.) 1. चातकी 2. पार्वती-दुर्गा 3. मछली।

जल प्लव *पुं.* (तत्.) ऊद बिलाव।

जल प्लावन *पुं.* (तत्.) पानी की बाढ़, जल-प्रलय।

जल बालिका *स्त्री.* (तत्.) बिजली, विद्युत।

जल बिंब *पुं.* (तत्.) पानी का बुलबुला, पानी की परछाई।

जल बुद्बुद् *पुं.* (तत्.) बुलबुला, पानी का बुलबुला।

जल मार्ग *पुं.* (तत्.) जलपथ, जल से होकर जाने वाला रास्ता।

जल मार्जार *पुं.* (तत्.) ऊदबिलाव।

जल यंत्र *पुं.* (तत्.) 1. कुएँ से पानी खींचने का यंत्र, रहट, चरखी 2. जलघड़ी 3. फुहारा, फौआरा।

जल रुह *पुं.* (तत्.) कमल।

जल वल्कल *पुं.* (तत्.) जलकुंभी।

जल वल्ली *स्त्री.* (तत्.) सिघांड़ा।

जल वाह *पुं.* (तद्.) पानी भरने वाला, जल घड़िया।

जल वाहक *पुं.* (तद्.) पनभरा, जलड़िया।

जल व्याघ्र *पुं.* (तत्.) सील जाति का जंतु, जो हिसंक होता है।

जल संस्कार *पुं.* (तत्.) 1. नहाना, स्नान करना 2. धोना, पखारना।

जल समाधि *स्त्री.* (तत्.) जल में डूबकर प्राण त्यागना।

जल समुद्र *पुं.* (तत्.) पुराणानुसार सात समुद्रों में से अंतिम समुद्र।

जल सर्पिणी *स्त्री.* (तत्.) जोंक।

जल सुत *पुं.* (तत्.) कमल, जलज।

जल सूर्य *पुं.* (तत्.) पानी में सूर्य का प्रतिबिंब।

जल स्तंभन *पुं.* (तत्.) मंत्रादि से पानी बाँधना।

जल स्राव *पुं.* (तत्.) आँख से पानी बहना, एक नेत्र रोग।

जल स्रोत *पुं.* (तत्.) जल का सोता, नदी का निकास, चश्मा, जल प्रवाह।

जलक *पुं.* (तत्.) 1. शंख 2. कौड़ी।

जलकना *पुं.* (अर.+हि.) चमकना, जगमगाना।

जलकपि *पुं.* (तत्.) शिशुमा नामक जलजंतु।

जलकपोत *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की चिड़िया जो पानी के किनारे होती है।

जलकर *पुं.* (तत्.) 1. जलाशयों के पदार्थों पर लगाया जाने वाला कर 2. जल की आपूर्ति करने के लिए वसूला जाने वाला कर।

जलकल *पुं.* (तत्.) पानी का नल।

जलकांक्ष *पुं.* (तत्.) हाथी।

जलकाय *पुं.* (तत्.) जल के शरीर वाला।

जलकुंभी *स्त्री.* (देश.) कुंभी नाम की वनस्पति जो जलाशयों में पानी के ऊपर होती है।

जलकेतु *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का पुच्छल तारा जो पश्चिम में उदय होता है।

जलचर *पुं.* (तत्.) जल जंतु।

जलचार *पुं.* (तत्.) प्याऊ, छबील, वह स्थान जहाँ जनसाधारण को पानी पिलाया जाता है।

जलचारी *पुं.* (तत्.) जलचर, जल में रहने वाला जीव।

जलज *वि.* (तत्.) जल में पैदा होने वाला *पुं.* 1. कमल 2. शंख 3. सेवार 4. मछली 5. जलजंतु 6. मोती 7. चौलाई 8. कुचले का पेड़।

जलजन्म *पुं.* (तद्.) कमल, जलज।

जलजन्य *पुं.* (तत्.) कमल।

जलजला *पुं.* (फा.) भूकंप, भूचाल।

जलजलाना *अ.क्रि.* (तद्.) झिलमिलाना, चमकना।

जलजात *वि.* (तत्.) जल में उत्पन्न होने वाला, कमल।

जलजासन *वि.* (तत्.) कमल के आसन पर बैठने वाले ब्रह्मा।

जलडमरूमध्य *पुं.* (तत्.) जल का वह पतला भाग जो जल के दो बड़े भागों को मिलाता है।

जलतरंग *पुं.* (तत्.) लहर, एक प्रकार का बाजा।

जलतरोई *स्त्री.* (देश.) मछली।

जलताल *पुं.* (तत्.) सलई का पेड़।

जलत्रा *स्त्री* (तत्.) छाता।

जलत्रास *पुं.* (तत्.) जल को देखने से भय उत्पन्न होना (जो आम तौर पर कुत्ते, गीदड़ आदि के काटने से होता है)।

जलथंभ *पुं.* (तद्.) जल स्तंभन, मंत्रों से जल को रोकने की क्रिया।

जलद *पुं.* (तत्.) 1. जल देने वाला 2. बादल, मेघ 3. कपूर 4. मोथा।

जलदस्यु *पुं.* (तत्.) समुद्री डाकू।

जलदागम *पुं.* (तत्.) वर्षा काल।

जलदाता *पुं.* (तत्.) देव, पितृ आदि को जल देने वाला, तर्पण करने वाला।

जलदाभ *वि.* (तत्.) बादल के रंग का, काला।

जलदाशन *पुं.* (तत्.) साखू का पेड़।

जलदेव *पुं.* (तत्.) जल-देवता, वरुण।

जलधर *पुं.* (तत्.) 1. बादल 2. समुद्र 3. जलाशय, झील, तालाब।

जलधरा *पुं.* (तत्.) वह स्थान जहाँ जल रखा जाता है।

जलधार *पुं.* (तत्.) दे. जलधारा।

जलधारा *स्त्री.* (तत्.) पानी का प्रवाह, पानी की धारा।

जलधारी *वि.* (तद्.) जलधारक।

जलधि दैवत *पुं.* (तत्.) वरुण, पूर्वाषाड़ा नक्षत्र।

जलधि *पुं.* (तत्.) समुद्र, सिंधु।

जलन *अ.क्रि.* (तद्.) जलने की पीड़ा या दुख 2. ईर्ष्या।

जलना *अ.क्रि.* (तद्.) भस्म होना प्रयो. मशाल जलना, दीपक जलना, घर जलना, दिल जलना।

जलनाली *स्त्री.* (तत्.) नाली, मोरी, जल बहने का मार्ग।

जलनिधि *पुं.* (तत्.) समुद्र, सागर।

जलपति *पुं.* (तत्.) 1. वरुण 2. समुद्र 3. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।

जलपथ *पुं.* (तत्.) नाली या नहर।

जलपाई *स्त्री.* (देश.) रुद्राक्ष की जाति का एक वृक्ष।

जलपाक *वि.* (तत्.) बकवादी, वाचाल, व्यर्थ की बाते करने वाला।

जलपाटल *पुं.* (तद्.) काजल।

जलपिप्पलिका *स्त्री.* (तत्.) जल पीपल।

जलपीपल *पुं.* (तत्.) पीपल के आकार की एक गंधहीन औषधि।

जलपोत *पुं.* (तत्.) पानी का जहाज।

जलभसी *पुं.* (तत्.) 1. बादल, मेघ 2. एक तरह का कपूर।

जलभू *स्त्री.* (तत्.) जलप्राय भूमि, कच्छ।

जलभूषण *पुं.* (तत्.) कच्छ, हवा, वायु।

जलमंडल *पुं.* (तत्.) एक बड़ी मकड़ी जिसके विष से मनुष्य मर सकता है।

जलमग्न *वि.* (तत्.) जल में डूबा हुआ, जल में निमग्न।

जलमय *वि.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. शिव की एक मूर्ति। *वि.* जल से पूर्ण।

जलमानुष *पुं.* (तत्.) एक कल्पित जल जंतु, जिसका आधा भाग मनुष्य का और आधा भाग मछली का होता है।

जलमाला *स्त्री.* (तत्.) मेघमाला, बादलों का समूह।

जलमुक्त *पुं.* (तद्.) बादल, मेघ।

जलमुच *पुं.* (तत्.) बादल, मेघ।

जलमुर्गा *पुं.* (तत्.+देश.) मुर्गाबी, जलकुक्कुट।

जलमुलेठी *स्त्री.* (तद्.) जलाशय के तट पर पैदा होने वाली मुलेठी।

जलमूर्ति *पुं.* (तत्.) शिव।

जलमूर्तिका *स्त्री.* (तत्.) ओला, करका।

जलयात्रा *स्त्री.* (तत्.) वह यात्रा जो अभिषेक के लिए पवित्र जल लाने के लिए की जाती है। मेवाड़ का एक उत्सव 2. जलमार्ग (विशेषकर समुद्र पार) की यात्रा।

जलयान *पुं.* (तत्.) नाव, पानी का जहाज।

जलयुद्ध *पुं.* (तत्.) पानी में होने वाली लड़ाई 2. जलपोतों का युद्ध।

जलरंक *पुं.* (तद्.) बगुला, बक।

जलरंकु *पुं.* (तत्.) मुर्गाबी, जलकुक्कुट।

जलरंज *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का बगुला।

जलरंड *पुं.* (तत्.) 1. भवँर 2. पानी की बूँद 3. साँप, सर्प।

जलरस *पुं.* (तत्.) 1. सांभर नमक 2. नमक।

जलराशि *स्त्री.* (तत्.) 1. समुद्र 2. ज्योतिष के अनुसार कर्क, मकर, कुंभ, मीन राशियाँ।

जलरास *पुं.* (तद्.) समुद्र, सागर।

जलरूप *पुं.* (तत्.) 1. मगर, घड़ियाल 2. मकर राशि।

जललता *स्त्री.* (तत्.) पानी की लहर, तरंग।

जलवा *पुं.* (अर.) शोभा, तड़क-भड़क।

जलवाना *प्रे.क्रि.* (देश.) किसी से जलाने का काम कराना।

जलवायु *पुं.* (तत्.) मौसम, आबोहवा।

जलशायी *पुं.* (तत्.) विष्णु *वि.* (तत्.) जल में रहने या शयन करने वाला *पुं.* 1. तालाब, नदी, नाला, समुद्र 2. सिंघाड़ा 3. मछली।

जलसा *पुं.* (अर.) आनंद, उत्सव मनाने के लिए लोगों का एकत्र होना 2. सभा, समिति का अधिवेशन।

जलसाई *पुं.* (तद्.) भगवान विष्णु।

जलसिंह *पुं.* (तद्.) सील की जाति का एक जंतु।

जलसिक्त *वि.* (तत्.) गीला, आर्द्र, जल से खींचा हुआ।

जलसीप *स्त्री.* (तद्.) वह सीप, जिसमें मोती होता है।

जलसेना *स्त्री.* (तत्.) जहाजी बेड़ों पर तैनात सेना।

जलसेनापति *पुं.* (तत्.) नौसेनापति, वह सेनापति जिसके अधीन जल सेना हो।

जलस्थल *पुं.* (तत्.) जल-थल, जल और जमीन।

जलह *पुं.* मोती।

जलहर *वि.* (तत्.) जलमय, जल से भरा हुआ *पुं.* (तत्.) मेघ, बादल 2. तालाब, सरोवर।

जलहार *पुं.* (तत्.) जल भरने वाला, पनिहारा।

जलहारिणी *स्त्री.* (तत्.) पानिहारिन, जल भरने वाली।

जलहारी *पुं.* (तद्.) पनिहारा, जलहारक।

जलहास *पुं.* (तत्.) झाग, फेन, समुद्र फेन।

जलांचल *पुं.* (तत्.) पानी का स्रोत 2. पानी की नहर, झरना 3. काई।

जलांजलि *स्त्री.* (तत्.) पानी से भरी अंजुलि 2. पितरों आदि को अंजुलि में जल भर कर देना।

जलांटक *पुं.* (तद्.) मगर, घड़ियाल।

जलांतक *पुं.* (तत्.) सात समुद्रों में से एक समुद्र।

जलांबिका *स्त्री.* (तत्.) कुआँ, कूप।

जलात्यय *पुं.* (तद्.) वर्ष की समाप्ति का समय, शरत् काल।

जलाऊ *वि.* (तत्.) जलाने के काम आने वाला।

जलाक *स्त्री.* (तत्.) 1. पेट की जलन 2. तेज धूप की लपट।

जलाकर *पुं.* (तत्.) समुद्र, नदी, कुआँ, जलस्रोत।

जलाकांक्ष *पुं.* (तद्.) हाथी।

जलाका *स्त्री.* (तत्.) जोंक।

जलाकाश *पुं.* (तत्.) जल में आकाश का प्रतिबिंब।

जलाक्षी *पुं.* (तद्.) जल पीपल।

जलाखु *पुं.* (तद्.) ऊदबिलाव।

जलागर्भ *पुं.* (तत्.) बुद्ध के प्रधान शिष्य आनंद के पूर्वजन्म का नाम।

जलाजल *पुं.* (तद्.) झलाझल, गोटे आदि की झालर।

जलाटन *पुं.* (तद्.) कंक पक्षी।

जलाटनी *स्त्री.* (तद्.) जोंक।

जलाटीन *पुं.* (अं.) एक प्रकार का सरेश।

जलातंक *पुं.* (तद्.) जलत्रास नामक रोग।

जलातवतरण *पुं.* (तत्.) पोत को पानी में उतारना।

जलात्मिका *स्त्री.* (तद्.) जोंक 2. कुँआ, कूप।

जलाधार *पुं.* (तत्.) जलाशय।

जलाधिप *पुं.* (तत्.) 1. वरुण 2. फलित ज्योतिष के अनुसार संवत्सर का अधिपति ग्रह।

जलाना *स.क्रि.* (देश.) 1. प्रज्वलित करना 2. झुलसाना 3. किसी के मन में ईर्ष्या आदि पैदा करना मुहा. जलाकर मारना- खूब तंग करना, दुख देना।

जलापा *पुं.* (देश.) डाह, ईर्ष्या के कारण जलन (अं.) एक विलायती औषध जो रेचक होती है।

जलापात *पुं.* (तत्.) जल प्रपात।

जलायल *पुं.* (तत्.) सिंघाड़ा।

जलायुका *स्त्री.* (तत्.) जोंक।

जलार्क *पुं.* (तत्.) जल में प्रतिबिंबित सूर्य।

जलार्णव *पुं.* (तत्.) वर्षा काल, बरसात 2. समुद्र, सागर।

जलार्द्र *पुं.* (तत्.) गीला वस्त्र, जल से भीगा हुआ पदार्थ या स्थल।

जलार्द्रा *स्त्री.* (तत्.) गीला वस्त्र।

जलाल *पुं.* (अर.) 1. तेज, प्रकाश 2. आतंक, महिमा का प्रभाव।

जलालत *स्त्री.* (अर.)अपमान, तिरस्कार, बेइज्जती।

जलाली *वि.* (अर.) प्रकाशित, दीप्त।

जलालुक *पुं.* (तत्.) कमल की जड़, भसींड़।

जलालुका *स्त्री.* (तत्.) जोंक।

जलालोका *स्त्री.* (तत्.) दे. जलालुका।

जलाव *पुं.* (देश.) खमीर या आटे का उठना।

जलावतन *वि.* (अर.) देश निकाले का दंड प्राप्त व्यक्ति, निर्वासित।

जलावतनी *स्त्री.* (अर.) देश निकाला।

जलावतार *पुं.* (तत्.) नदी का घाट जहाँ चढ़ने-उतरने के लिए नाव लगाई जाती है।

जलावन *पुं.* (देश.) जलाने के काम आने वाली लकड़ी, ईंधन आदि।

जलावर्त्त *पुं.* (तत्.) पानी का भँवर।

जलाशया *स्त्री.* (तत्.) गुँदला, नागरमोथा।

जलाशयोत्सर्ग *पुं.* (तत्.) 1. नए बने कूच या तालाब आदि की प्रतिष्ठा 2. तालाब में (देव प्रतिमा आदि का) विसर्जन।

जलाश्रय *पुं.* (तत्.) 1. जलाशय 2. सारस, वक 3. दीर्घनाल नामक तृण।

जलाश्रया *स्त्री.* (तत्.) शूली घास।

जलाष्ठीला *स्त्री.* (तत्.) बड़ा चौकोर तालाब।

जलासुका *स्त्री.* (तत्.) जोंक।

जलाहल *वि.* (देश.) जलमय।

जलाह्वय *पुं.* (तत्.) कमल, कुमुद, कुई।

जलिका *स्त्री.* (तत्.) जोंक।

जलील *वि.* (अर.) तुच्छ, बेकदर, अपमानित, तिरस्कृत।

जलु *पुं.* (तत्.) अग्नि।

जलूका *स्त्री.* (तत्.) जोंक।

जलूस *पुं.* (अर.) बहुत से लोगों का सजधज कर निकलना 2. जलसा, धूमधाम।

जलेंद्र *पुं.* (तत्.) 1. वरुण 2. महासागर 3. शिव।

जलेंधन *पुं.* (तत्.) 1. बाड़वाग्नि 2. जिससे पानी सूखता है 3. सूर्य 4. विद्युत।

जलेचर *पुं.* (तत्.) जलचर।

जलेच्छया *पुं.* (तत्.) जल में पैदा होने वाला हाथी सूँड का पौधा।

जलेज *पुं.* (तत्.) कमल, जलज।

जलेतन *वि.* (देश.) असहिष्णु, जिसे जल्दी क्रोध आता हो, ईर्ष्यालु।

जलेबा *पुं.* (देश.) बड़ी जलेबी।

जलेबी *स्त्री.* (देश.) 1. एक प्रकार की मिठाई जो कुंडलाकर होती है 2. बरियार की जाति का एक पौधा 3. कुंडली, गोल घेरा।

जलेभ *पुं.* (तद्.) जलहस्ती।

जलेरा *पुं.* (तत्.) वरुण, समुद्र, जलाधिप।

जलेरुहा *स्त्री.* (तत्.) सूरजमुखी का पौधा 2. एक गुल्म।

जलेवाह *पुं.* (तत्.) गोताखोर।

जलेशय *पुं.* (तत्.) 1. मछली 2. विष्णु का एक नाम।

जलेश्वर *पुं.* (तत्.) 1. समुद्र 2. वरुण।

जलोका *स्त्री.* (तत्.) जोंक।

जलोच्छवास *पुं.* (तत्.) 1. जलाशयों में उठने वाली ऊँची-ऊँची लहरें 2. पानी को बाहर निकलने या प्रविष्ट करने के लिए किया गया उपाय।

जलोढ़ भूमि *स्त्री.* (तत्.) कच्छ, कछारी भूमि, बाढ़ आदि से लाई गई भूमि।

जलोत्तोलन यंत्र *पुं.* (तत्.) पानी खींचने का यंत्र, जलपंथ।

जलोत्सर्ग *पुं.* (तत्.) पुराणनुसार कुएँ, ताल, बावली आदि का विवाह।

जलोदर *पुं.* (तत्.) एक रोग जिसमें नाभि के पास पेट की चमड़ी के नीचे पानी भर जाता है।

जलोद्भवा *स्त्री.* (तत्.) छोटी ब्राह्मी।

जलोद्वहन यंत्र *पुं.* (तत्.) पानी खींचने का यंत्र, जलपंथ।

जलोरगी *स्त्री.* (तत्.) जोंक।

जलौकस *पुं.* (तत्.) जोंक, जलौका।

जल्द *क्रि.वि* (अर.) शीघ्र, झटपट, अविलंब, तेजी से।

जल्दबाज *वि.* (फा.) उतावली करने वाला, शीघ्रता करने वाला।

जल्दबाजी *स्त्री.* (फा.) उतावली, शीघ्रता।

जल्दी *क्रि.वि* (अर.) दे. जल्द *स्त्री.* शीघ्रता, फुरती।

जल्प *पुं.* (तत्.) 1. कथन, कहना 2. बकवास, प्रलाप, व्यर्थ की बात।

जल्पक *वि.* (तत्.) बकवादी, वाचाल, बातूनी।

जल्पन *पुं.* (तत्.) बकवाद, प्रलाप, गपशप, बेकार की बात, बातूनी, वाचाल।

जल्पना *अ.किर्.* (तद्.) बकवाद करना, ढींग शेखी बघारना।

जल्पित *वि.* (तत्.) 1. मिथ्या 2. कथित, कहा हुआ।

जल्ला *पुं.* (देश.) 1. झील 2. ताल 3. हौज।

जल्लाद *पुं.* (अर.) प्राणदंड प्राप्त व्यक्तियों के प्राण लेने वाला *वि.* बेरहम, निर्दयी, क्रूर।

जल्वा *पुं.* (अर.) दे. जलवा।

जल्सा *पुं.* (अर.) दे. जलसा

जव *पुं.* (तत्.) वेग।

जवन *वि.* (तत्.) वेगवान, तेज *पु.* (तद्.) 1. वेग 2. घोड़ा 3. स्कंद का एक सैनिक 4. दे. यवन *सर्व.* जिस

जवनिका *स्त्री.* (तद्.) परदा, यवनिका।

जवनिमा *स्त्री.* (तद्.) गति, वेग, क्षिप्रता।

जवनी *स्त्री.* (तत्.) अजवाइन, जवाइन 2. तेजी, वेग 3. भवन *स्त्री* 4. दे. जवनिका।

जवस *स्त्री.* (तत्.) घास।

जवाँ *पुं.* (फा.) युवक, युवा।

जवाँ मर्द *वि.* (फा.) शूरवीर, बहादुर।

जवाँ मर्दी *स्त्री.* (फा.) वीरता, बहादुरी।

जवाइन *स्त्री.* (तद्.) जवाइन, अजवाइन।

जवाधिक *पुं.* (तत्.) बहुत तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा।

जवान *वि.* (फा.) युवा, तरुण 2. वीर, बहादुर।

जवानिल *पुं.* (तत्.) 1. तेज़ हवा 2. आँधी 3. तूफ़ान।

जवानी *स्त्री.* (तद्.) जवाइन, अजवाइन *स्त्री.* (फा.) यौवन, तरुणाई, युवावस्था 2. मस्ती, मद मुहा. जवानी उठना- यौवन का प्रारंभ होना; जवानी उतरना- उमर ढलना, बुढ़ापा आना; जवानी चढ़ना- यौवन का आगमन होना; जवानी पर आना- मस्ती में आना; जवानी फटी पड़ना- जवानी का पूर्ण विकास होना।

जवाब *पुं.* (अर.) उत्तर, जवाब तलब करना-जवाब माँगना, जवाब मिलना-निषेधात्मक उत्तर मिलना।

जवाब तलब *वि.* (अर.) जवाब माँगने लायक, जिसके संबंध में जवाब माँगा गया हो।

जवाब तलबी *स्त्री.* (अर.) जवाब माँगना, उत्तर माँगना।

जवाब दारी *स्त्री.* (अर.) उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी।

जवाब देह *वि.* (फ़ा.) उत्तरदायी, जिम्मेदार।

जवाब देही *पुं.* (फ़ा.) 1. उत्तरदायित्व 2. जिम्मेदारी।

जवाब सवाल *पुं.* (अर.) 1. प्रश्नोत्तर 2. वाद-विवाद।

जवार *पुं.* (अर.) 1. पड़ोस 2. आसपास का प्रदेश *स्त्री.* 1. जुआर 2. एक प्रकार का अन्न *पुं.* 1. बुरे दिन 2. जंजाल, झंझट *पुं.* दे. जवाहर।

जवारा *पुं.* (देश.) जई, जौ के हरे-हरे अंकुर।

जवारिश *स्त्री.* (अर.) अवलेह जैसी हकीमी या यूनानी औषध।

जवारी *स्त्री.* (देश.) जौ, छुहारे, मोती आदि का गुथा गुथा हुआ हार (*स्त्री.* तद्.) वाद्यंत्र (सितार, तंबूरा सारंगी आदि) में तारों को उठाए रखने वाला लकड़ी का टुकड़ा 2. तार वाले बाजे।

जवाल *पुं.* (अर.) 1. अवनति, घटाव, उतार 2. जंजाल, आफत, झंझट।

जवाशीर *पुं.* (फा.) एक प्रकार का गंधा विरोजा।

जवाह *पुं.* (देश.) आँख का एक रोग प्रवाल, परवाल, बैलों की आँख का एक रोग जिसमें आँख के नीचे का मांस बढ़ जाता है।

जवाहर *पुं.* (तत्.) रत्न, मणि।

जवाहरात *पुं.* (अर.) अनेक प्रकार की रत्न मणि।

जवाहिर *पुं.* (देश.) दे. जवाहर।

जवाहिरात *पुं.* (देश.) दे. जवाहरात।

जवाही *वि.* (देश.) जिसकी आँख में जवाह रोग हो 2. जवाह रोग युक्त।

जविन *वि.* (तत्.) वेगवान, गतिशील।

जवी *वि.* (तद्.) वेगवान, वेगयुक्त।

जवीय *वि.* (तत्.) 1. घोड़ा, ऊँट।

जवैया *पुं.* (देश.) जाने वाला, गमनशील।

जशन *पुं.* (फा.) 1. उत्सव, जलसा 2. आनंद, हर्ष 3. नाच-गाना, महफिल।

जश्न *पुं.* (फा.) दे. जशन।

जसद *पुं.* (तद्.) जस्ता।

जसामत *स्त्री.* (अर.) 1. लंबाई, चौड़ाई, मोटाई, गहराई, ऊँचाई आदि 2. शारीरिक स्थूलता।

जसीम *वि.* (अर.) मोटा, स्थूल।

जसु *स्त्री.* (तत्.) यशोदा, नंद की पत्नी।

जसुदा *स्त्री.* (तद्.) दे. यशोदा।

जसुरि *पुं.* (तत्.) वज्र।

जसोदा *स्त्री.* (तद्.) दे. यशोदा।

जस्टिस *पुं.* (अं.) 1. न्याय, इंसाफ 2. न्यायाधीश।

जस्त *पुं.* (फा.) छलाँग, कुलाँच।

जस्ता *पुं.* (तद्.) कालापन लिए सफेद या खाकी रंग की धातु, इसका प्रयोग बर्तन बनाने, औषधों और रंगों में होता है।

जहक *स्त्री.* (तत्.) 1. कुढ़न, चिढ़, खीझ 2. उत्तेजना, आवेश *वि.* (तद्.) छोड़ने या त्याग करने वाला *पु.* (तद्.) 1. समय 2. बालक 3. साँप की केंचुल।

जहकना *अ.क्रि* (देश.) मस्त होना, प्रसन्न होना *स.किर्.* (देश.) 1. चिढ़ना, कुढ़ना।

जहका *स्त्री.* (तद्.) एक जंतु कटास।

जहत्स्वार्था *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की लक्षणा जिसमें पद या वाक्य का वाच्यार्थ न होकर अभिप्रेत अर्थ लिया जाता है, इसे जहलक्षण भी कहते हैं।

जहदना *अ.क्रि.* (देश.) कीचड़ होना, दलदल हो जाना।

जहन्नुम *पुं.* (अर.) नरक, दोजख मुहा. जहन्नुम में जाना- नरक में जाना, नष्ट होना, आँखों से दूर होना।

जहन्नुमी *वि.* (फ़ा.) जहन्नुम में जाने वाला, नरक-गामी।

जहमत *स्त्री.* (अर.) आपत्ति, मुसीबत, आफत, तकलीफ़, कष्ट।

जहर *स्त्री.* (फा.) विष, गरल, *वि.* घातक, प्राण लेने वाला *पुं.* जोहर मुहा. जहर व्रत- जौहर का व्रत

जहरबाद *पुं.* (फा.) रक्त विकार से उत्पन्न एक भयंकर और विषाक्त फोड़ा।

जहरी *वि.* (देश.) जहर वाला, विषाक्त।

जहरीला *वि.* (देश.) जहरदार, विषाक्त।

जहल *पुं.* (अर.) नासमझी, मूर्खता, बुद्धिहीनता।

जहाँ *वि.* (तद्.) जिस जगह मुहा. जहाँ का तहाँ- अपने पहले के स्थान पर; जहाँ का तहाँ रह

जाना- आगे न बढ़ना *पुं.* (फा.) संसार, जहान, लोक प्रयो. जहाँगर्द- घुमक्कड़, जहाँ गर्दी- विश्वभ्रमण; जहाँगीर- विश्वविजयी।

जहाँआरा *वि.* (फा.) संसार को शोभित करने वाला।

जहाँगीर *पुं.* (फा.) मुगल सम्राट अकबर का पुत्र।

जहाँगीरी *वि.* (फा.) 1. एक प्रकार का जड़ाऊ गहना 2. इमरती (मिठाई)।

जहाँपनाह *पुं.* (अर.) 1. संसार का रक्षक 2. शरणागतरक्षक 3. राजा के लिए संबोधन।

जहाज *पुं.* (अर.) बहुत बडी नाव, पोत।

जहाजरानी *पुं.* (फा.) 1. जहाज चलाने का व्यवसाय 2. जहाज चलाना।

जहाजी *वि.* (फा.) जहाज से संबंधित।

जहान *पुं.* (फा.) लोक, जगत प्रयो. जान है तो जहान है।

जहानक *पुं.* (तत्.) प्रलय।

जहालत *स्त्री.* (अर.) अज्ञान, मूर्खता।

जहीन *वि.* (अर.) बुद्धिमान, समझदार।

जहूदी *वि.* (फा.) बाप-दादा की जायदाद।

जहेज *पुं.* (अर.) दहेज, वह धन संपत्ति जो कन्या के विवाह में पिता की ओर से वर को दी जाती है।

जह्न *पुं.* (अर.) विष, जहर।

जह्नु *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. एक राजर्षि का नाम।

जह्नु कन्या *स्त्री.* (तत्.) गंगा।

जह्नु तन्या *स्त्री.* (तत्.) गंगा।

जह्नु सुता *स्त्री.* (तत्.) गंगा।

जांइदा *पुं.* (तद्.) जना हुआ, जात।

जांगल *पुं.* (तद्.) 1. तीतर 2. मांस 3. वह देश जहाँ जल बरसता है, गरमी अधिक पड़ती है *वि.* (तद्.) जंगल संबंधी, जंगली।

जांगलू *वि.* (फ़ा.) गँवार, जंगली।

जांतव *वि.* (तत्.) जंतुसंबधी, जंतुओं से प्राप्त/उत्पन्न।

जांधिक *पुं.* (तद्.) 1. ऊँट 2. एक प्रकार का मृग 3. हरकारा।

जांबवंत *पुं.* (तत्.) दे. जांबवान।

जांबवती *पुं.* (तत्.) जांबवान की कन्या जिससे श्री कृष्ण ने विवाह किया था।

जांबवत् *पुं.* (तद्.) दे. जांबवान।

जांबवान *पुं.* (तद्.) सुग्रीव के मंत्री का नाम जो ब्रह्मा का पुत्र माना जाता है।

जांबवी *स्त्री.* (तद्.) 1. जांबवान की पुत्री 2. नाग दमनी।

जांबीर *पुं.* (तत्.) जंबीरी नींबू।

जांबुक *वि.* (तत्.) जंबुक संबंधी।

जांबुमाली *पुं.* (तत्.) लंका का एक राक्षस जो अशोक वाटिका को उजाड़ते समय हनुमान द्वारा मारा गया था।

जांबूनद *पुं.* (तत्.) सोना, धतूरा।

जांबोष्ठ *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का अस्त्र जिससे फोड़े आदि जलाए जाते थे।

जांभील *पुं.* (तत्.) 1. घुटने के जोड़ पर गोल चिपटी हड्डी 2. जंबीरी नींबू।

जाँगड़िया *पुं.* (देश.) दे. जाँगड़ा।

जाँगर *पुं.* (संकर.) 1. शरीर, देह 2. हाथ पैर 3. पौरुष।

जाँघ *स्त्री.* (तद्.) घुटने और कमर के बीच का अंग, अंग, उरु।

जाँघा *पुं.* (देश.) 1. हक 2. कुएँ पर गड़ा रखने का खंभा।

जाँघिया *पुं.* (देश.) लंगोट की तरह का जाँघ को ढकने का वस्त्र, कच्छा।

जाँघिलत *पुं.* (तद्.) वह बैल जिसका पैर चलने में लचक खाता है *वि.* जिसका पैर लचक खाता है

स्त्री. (देश) खाकी रंग की एक प्रकार की चिड़िया। चिड़िया।

जाँच *स्त्री.* (देश.) जाँचने की क्रिया या भाव प्रयो. जाँच पड़ताल- खोजबीन, छानबीन।

जाँचक *पुं.* (देश.) दे. जाचक या चायक।

जाँचकता *स्त्री.* (देश.) दे. जाचकता या याचकता।

जाँचना *स.क्रि.* (देश.) किसी को जाँच करना, किसी की गलत, ठीक, योग्यता-अयोग्यता आदि का निर्णय करना।

जाँझ *स्त्री.* (देश.) तेज हवा के साथ वर्षा।

जाँझा *पुं.* (देश.) दे. जाँझ।

जाँत *पुं.* (देश.) जाँता, आटा पीसने की चक्की।

जाँता *पुं.* (देश.) आटा पीसने की पत्थर की बड़ी चक्की 2. सुनारों, चक्की, तारकशों का एक औजार।

जाँ पनाह *पुं.* (फा.) दे. जहाँपनाह।

जाँबाज *पुं.* (फा.) प्राण न्योछावार करने वाला, साहसी, जान की बाजी लगा देने वाला।

जाँवत *अव्य.* (तद्.) सब।

जा *स्त्री.* (तत्.) 1. माता, माँ 2. देवरानी *वि.* (फ़ा.) उत्पन्न करने वाला *सर्व.* (देश.) जो *वि.* (फा.) मुनासिब, उचित, वाजिब प्रयो. बेजा- नामुसिब, अनुचित।

जाइफर *पुं.* (देश.) दे. जायफल।

जाइफल *पुं.* (देश.) दे. जायफल।

जाई *स्त्री.* (देश.) कन्या, बेटी, पुत्री।

जाईदा *वि.* (फा.) जना हुआ, जात।

जाउर *पुं.* (देश.) चावल, खीर।

जाकड़ *पुं.* (देश.) शर्त पर लाया गया माल प्रयो. जाकड़ बही- जाकड़ पर दिए माल का हिसाब किताब।

जाकिट *स्त्री.* (अं.) दे. जाकेट।

जाकेट *स्त्री.* (अं.) कुर्ती या सदरी की तरह पहनने वाला एक वस्त्र।

जाग *पुं.* (तद्.) यज्ञ *स्त्री.* (फ़ा.) जगह, स्थान, ठिकाना (देश.) जगाने की क्रिया या भाव *पु.* काले रंग का कबूतर (अर.) जहाज का भंडार रक्षक।

जागत *पुं.* (तद्.) जगती छंद।

जागता *वि.* (तद्.) 1. सजग, सचेत 2. चमत्कारिक, तेजस्वी।

जागतिक *पुं.* (तत्.) जगत संबंधी, सांसारिक।

जागना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. सोकर उठना, नींद त्यागना 2. जाग्रत अवस्था में होना, संजग होना 3. समृद्ध होना 4. प्रज्वलित होना 5. प्रसिद्ध होना *अ.क्रि.* यज्ञ करना।

जागर *पुं.* (तत्.) जागरण, जागने की क्रिया।

जागरक *वि.* (तत्.) चैतन्य, जाग्रत।

जागरण *वि.* (तत्.) निद्रा का अभाव, जागना 2. किसी विशेष अवसर पर इष्टदेव का भजन करते हुए सारी रात जागना।

जागरा *पुं.* (तत्.) दे. जागरण।

जागरित *पुं.* (तत्.) 1. नींद का न होना, जागरण 2. वेदांत के अनुसार एक अवस्था जिसमें मनुष्य के इद्रियों द्वारा सब प्रकार के कार्यों का अनुभव होता रहता है।

जागरी *वि.* (तद्.) दे. जागरिता।

जागरु *पुं.* (देश.) 1. भूसा आदि मिला हुआ अन्न जो अच्छा अन्न निकालने के बाद रह जाता है 2. भूसा।

जागरूक *पुं.* (तत्.) जाग्रत, चैतन्य *वि.* 1. जागता हुआ 2. निद्रारहित 3. सावधान।

जागर्ति *स्त्री.* (तद्.) 1. जागृति, जागरण 2. चेतनता।

जागी *पुं.* (देश.) भाट।

जागीर *पुं.* (फा.) 1. जमीन या गाँव आदि जो राजा, नवाब आदि किसी की सेवा के पुरस्कार के रूप में प्रदान करते थे 2. भूमि, जमीन-जायदाद मुहा. जागरी खिदमती- सेवा के बदले मिली जागीर; जागीर मनसबी- किसी पद के कारण प्राप्त जागीर।

जागीरदार *पुं.* (फा.) जागीर का मालिक।

जागीरदारी *स्त्री.* (फा.) दे. जागीरी।

जागीरी *स्त्री.* (फा.) जागीर के रूप में प्राप्त मिलकियत।

जागुड़ *पुं.* (तत्.) 1. केसर 2. प्राचीन देश का नाम तथा उसका निवासी।

जागृति *स्त्री.* (तत्.) दे. जागरण।

जाग्रत *वि.* (तत्.) 1. वह अवस्था जिसमें शब्द, स्पर्श आदि का परिज्ञान हो 2. जो जागा हुआ है।

जाग्रति *स्त्री.* (तत्.) जागरण, जागने की क्रिया।

जाघनी *स्त्री.* (तत्.) 1. जाँघ, जंघा 2. पूँछ।

जाचक *पुं.* (देश.) माँगने वाला, भिखारी, भिक्षुक।

जाचकता *स्त्री.* (देश.) माँगने का भाव, भीख माँगने माँगने की क्रिया।

जाचना *स.क्रि.* (तत्.) याचना, माँगना।

जाजरा *वि.* (तद्.) जर्जर, जीर्ण।

जाजरी *पुं.* (देश.) बहेलिया, चिड़ीमार।

जाजिम *स्त्री.* (तुर्की) 1. एक प्रकार की छपी हुई भारी चादर जो फर्श पर बिछाई जाती है 2. गलीचा, कालीन।

जाजी *पुं.* (तद्.) योद्धा, वीर।

जाज्वल्य *वि.* (तत्.) 1. प्रज्वलित, प्रकाशयुक्त 2. तेजवान।

जाज्वल्यमान *पुं.* (तत्.) 1. प्रज्वलित, दीप्तिमान 2. तेजस्वी, तेजवान।

जाट *पुं.* (देश.) कृषि कार्य करने वाली एक प्रसिद्ध जाति जो पंजाब, सिंध, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में फैली हुई है।

जाटलि *स्त्री.* (तत्.) पलाश की जाति का एक पेड़-मोरवा या झाटलि।

जाटू *पुं.* (देश.) हिसार, करनाल और रोहतक के जाटो की बोली, इसे हरियाणवी या बांगरू भी कहते है।

जाठ *पुं.* (देश.) 1. लकड़ी का मोटा और ऊँचा लट्ठा जो कोल्हू में पेरने के काम आता है 2. तालाब आदि के बीच गड़ा हुआ लट्ठा।

जाठर *पुं.* (तत्.) 1. पेट, उदर 2. पेट की वह अग्नि जिससे खाया हुआ अन्न पचता है, जठराग्नि 3. भूख।

जाठराग्नि *पुं.* (तत्.) दे. जठराग्नि।

जाठरानल *पुं.* (तत्.) दे. जाठराग्नि।

जाड़ा *पुं.* (तद्.) शीतकाल, सर्दी का मौसम।

जाड्य *पुं.* (तत्.) 1. जड़ का भाव 2. जीभ का कुंठित होना 3. स्वाद ग्रहण न करना।

जाड्यारि *पुं.* (तत्.) जंबीरी नींबू।

जात *पुं.* (तत्.) 1. जन्म 2. पुत्र, बेटा 3. जीव, प्राणी 4. वर्ग-श्रेणी वि. 5. उत्पन्न 6. जन्मजात 7. प्रशस्त 8. जिसमें जन्म ग्रहण किया हो 9. शरीर, देह, काया 10. कुल वंश 11. व्यक्तित्व 12. जाति 13. अस्तित्व।

जातक *वि.* (तत्.) 1. पैदा हुआ, उत्पन्न *पुं.* 2. बच्चा 3. भिक्षु 4. एक प्रकार की बौद्ध कथा जिसमें भगवान बुद्ध के पूर्वजन्मों का विवरण, बात होती है 5. जातकर्म संस्कार जैसे- जातक चक्र-नवजात शिशु के शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति का बोधक चक्र (देश.) हींग का पेड़।

जातकर्म *पुं.* (तत्.) हिंदुओं में एक संस्कार जो बालक के जन्म के समय होता है।

जाति *स्त्री.* (तत्.) 1. हिंदुओं में समाज का वह विभाग जो पहले कर्मानुसार होता था, अब जन्मानुसार हो गया है जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि जातियाँ 2. मनुष्य समाज का एक विभाग जो निवास स्थान, वंश परंपरा या गुण, धर्म, आकार की समानता के आधार पर किया जाता है 3. वर्ण 4. कुल 5. वंश 6. गोत्र 7. सामान्य 8. जाविञी 9. जायफल 10. मात्रिक छंद *स्त्री.* (तद्.) 1. चमेली, आमलकी 3. माली 4. जायफल।

जाति कोश *पुं.* (तत्.) जायफल।

जाति च्युत *वि.* (तत्.) जाति से निकाला हुआ।

जातित्व *पुं.* (तत्.) जाति का भाव, जातीयता।

जाति धर्म *पुं.* (तत्.) जाति या वर्ण का धर्म।

जाति पत्र *पुं.* (तत्.) जावित्री।

जाति पाँति *स्त्री.* (तत्.) जाति या वर्ण आदि।

जाति फल *पुं.* (तत्.) जायफल।

जाति ब्राह्मण *पुं.* (तत्.) ऐसा ब्राह्मण जो केवल जन्म से ही ब्राह्मण हो।

जाति भ्रष्ट *वि.* (तत्.) जातिच्युत, जाति से बहिष्कृत।

जाति लक्षण *पुं.* (तत्.) जातिसूचक भेद।

जाति वाचक *पुं.* (तत्.) संज्ञा का एक भेद जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु की जाति विशेष का बोध होता है जैसे- मनुष्य, पशु आदि।

जाति व्यवसाय *पुं.* (तत्.) जातिगत पेशा, जातीय धंधा।

जाति संकर *पुं.* (तत्.) दो जातियों का मिश्रण, वर्णसंकरता, दोगलापन।

जाति स्वभाव *पुं.* (तत्.) 1. जातिगत स्वभाव, प्रकृति या लक्षण 2. एक प्रकार का अलंकार जिसमें आकृति, गुण का वर्णन किया जाता है।

जाति हीन *वि.* (तत्.) निम्न जाति का।

जातिमान *वि.* (तत्.) कुलीन।

जातिमाना *वि.* (अर.) 1. अत्याचार या अन्यायपूर्ण 2. जालसाज युक्त 3. फरेब या धोखा देने वाला।

जातीकोश *पुं.* (तद्.) जायफल।

जातीय *वि.* (तत्.) जाति संबंधी, जाति वाला।

जातीयता *स्त्री.* (तत्.) 1. जाति का भाव 2. जाति के प्रति ममता 3. जाति।

जातीरस *पुं.* (तत्.) एक गंधद्रव्य-बोल।

जातु *अव्यय.* (तत्.) 1. कभी, कदाचित 2. संभवतः, शायद *पुं.* (तत्.) जाँघ और पिंडली के मध्य का भाग, घुटना *पु.* फा. जाँघ (अव्य.तद्.)।

जातुक *पुं.* (तत्.) हींग।

जातुधान *पुं.* (तत्.) राक्षस, असुर, निशाचर।

जातुष *वि.* (तत्.) लाख का बना हुआ।

जातू *पुं.* (तत्.) वज्र।

जातेष्टि *पुं.* (तत्.) दे. जातकर्म।

जातोक्ष *पुं.* (तत्.) वह बैल जिसे बहुत छोटी उम्र में बधिया कर दिया गया हो।

जात्यंध *वि.* (तत्.) जन्मांध।

जात्य *वि.* (तत्.) उत्तम कुल में पैदा हुआ, कुलीन, श्रेष्ठ।

जादव *पुं.* (तद्.) श्रेष्ठ, यादव, यदुवंशी।

जादवपति *पुं.* (तद्.) श्री कृष्ण।

जादसंपत्ति *पुं.* (तद्.) जलजंतुओं का स्वामी वरुण।

जादुई *वि.* (फा.) जादू के प्रभाव वाला, इंद्रजाल संबंधी।

जादू *पुं.* (फा.) इंद्रजाल, तिलिस्म, वह अद्भूत दृश्य जिसे लोग अलौकिक और अमानवीय समझते हैं। मुहा. जादू चलना- प्रभावित होना; जादू काम करना- प्रभाव होना; जादू जगाना- जादू को चैतन्य करना 2. अद्भूत खेल जो दर्शको की दृष्टि और बुद्धि को धोखा देकर किया जाए 3. टोना, टोटका 4. मोहिनी।

जादूगर *पुं.* (फा.) जादू करने वाला मनुष्य।

जादूगरी *स्त्री.* (फा.) जादू करने की क्रिया।

जान *स्त्री.* (फा.) प्राण, जीव, प्राणवायु।

जानकार *वि.* (देश.) 1. जानने वाला 2. विज्ञ, चतुर।

जानकारी *स्त्री.* (देश.) जानकर होने की अवस्था, गुण गुण या भाव।

जानकी कंत *पुं.* (तत्.) राम।

जानकी जीवन *पुं.* (तत्.) श्री रामचंद्र।

जानकी नाथ *पुं.* (तत्.) जानकी के पति श्री रामचंद्र।

जानकी प्राण *पुं.* (तत्.) श्री रामचंद्र।

जानकी मंगल *पुं.* (तत्.) तुलसीदास द्वारा रचित एक ग्रंथ जिसमें श्री राम और जानकी विवाह का वर्णन है।

जानकी रमण *पुं.* (तत्.) श्री रामचंद्र।

जानकी रवन *पुं.* (तत्.) जानकी रमण, श्रीराम।

जानकी वल्लभ *पुं.* (तत्.) राम चंद्र।

जानदार *वि.* (फा.) 1. सजीव 2. जीवधारी 3. उत्कृष्ट, ओपदार।

जाननहार *वि.* (देश.) जागने या समझने वाला।

जानना *स.क्रि.* (तद्.) ज्ञान प्राप्त करना, बोध होना, परिचित होना मुहा. जान पड़ना- मालूम होना; जान बूझकर- नीयत के साथ, सोच-समझकर; जाने अनजाने- जान बूझकर या अनजाने में।

जाननहारा *वि.* (देश.) जानने वाला, समझने वाला।

जानपद *वि.* (तत्.) जनपद का निवासी, जनपद संबंधी, लोक 2. देश 3. कर, मालगुजरी।

जान पाति *वि.* (तद्.) ज्ञानपति, ज्ञानियों में श्रेष्ठ।

जानमनि *वि.* (तद्.) ज्ञानियों में श्रेष्ठ, ज्ञानमणि।

जानवर *पुं.* (फा.) 1. प्राणी, जीव 2. पशु, जंतु, हैवान *वि.* अहमक, जड़।

जानशीन *पुं.* (फा.) 1. स्थानापन्न 2. उत्तरदायित्व।

जानहार *वि.* (फा.) जानने वाला।

जानहु *अव्य.* (देश.) मानो।

जानाँ *पुं.* (फा.) माशूक, प्रिय, प्यारा।

जाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. गमन करना किसी ओर अग्रसर होना, स्थान, छोड़ना मुहा. जाने दो- माफ करो; जा पड़ना- अकस्मात पहुँचना 2. अलग होना 3. हाथ से निकलना 4. गायब होना, खोना 5. बीतना, गुजरना 6. नष्ट होना, बिगड़ना, बरबाद होना 7. मरना, बहना।

जानि *स्त्री.* (तत्.) स्त्री, भार्या *वि.* (तद्.) ज्ञानी, जानकार, जताने वाला।

जानिबदारी *स्त्री.* (फा.)पक्षपत, तरफदारी, हिमायत।

जानिव *स्त्री.* (अर.) तरफ, ओर, दिशा।

जानिवदार *वि.* (फा.) तरफदार, पक्षपाती, हिमायती।

जानी *पुं.* (अर.) व्यभिचारी व्यक्ति, विषयलपंट व्यक्ति 2. *वि.* (फा.) जान से संबंध रखने वाला, घनिष्ठ, गहरा मुहा. जानी दुश्मन- जान लेने को तैयार दुश्मन, घोर शत्रु; जानी दोस्त- घनिष्ठ मित्र 3. *स्त्री.* प्राणधारी, प्रिया, प्राणेश्वरी।

जाप *पुं.* (तत्.) किसी मंत्र या स्त्रोत का मन ही मन या अस्फुट स्वर में उच्चारण 2. भगवान का बार-बार नाम स्मरण और उच्चारण।

जापक *पुं.* (तत्.) 1. जपकर्ता 2. जपने वाला।

जापन *पुं.* (तत्.) 1. जप 2. निवर्तन।

जापा *पुं.* (तद्.) प्रसूती गृह।

जापी *पुं.* (तद्.) जापक, जप करने वाला।

जाप्य *वि.* (तत्.) जप करने योग्य।

जाफरान *पुं.* (अर.) 1. केसर 2. अफगानिस्तान की एक जाति का नाम।

जाफरानी *वि.* (अर.) केसरिया।

जाफरी *स्त्री.* (अर.) खपचियों का बना गट्टर, आड़ या परदा 2. गेंदे का एक प्रकार।

जाफा *पुं.* (अर.) वृद्धि, बढ़ती।

जाबा *पुं.* (फा.) बैल के मुँह में पहनाने वाली जाली, मुसका।

जाबाल *पुं.* (तत्.) एक मुनि जिसकी माता का नाम जाबाला था।

जाबालि *पुं.* (तत्.) कश्यप वंशीय एक ऋषि जो राजा दशरथ के गुरु एवं मंत्री थे।

जाबिता *पुं.* (अर.) दे. जाब्ता।

जाबिर *वि.* (फा.) 1. अत्याचारी 2. जबरदस्त, प्रचंड।

जाबिव *वि.* (अर.) 1. जब्त करने वाला 2. सहनशील।

जाबी *स्त्री.* (अर.) छोटा जाबा।

जाब्ता *पुं.* (अर.) नियम, कामदा, व्यवस्था कानून। मुहा. जाब्ता अदालत-अदालती कार्रवाई। जाब्ता

फौजदारी-दंडीय अपराधों से संबंधित कानून, जाब्ता दीवानी-सर्वसाधारण के परस्पर व्यवहार से संबंध रखने वाला कानून।

जाभा *पुं.* (फा.) 1. पहनावा, कपड़ा वस्त्र 2. घुटने के नीचे तक बड़े घेरे का पहनावा।

जाम *पुं.* (तद्.) याम, पहर, *पुं.* (फ़ा.) प्याला, प्याले के आकार का कटोरा *वि.* भीड़ की वजह से रुका हुआ, अवरुद्ध (रास्ता)।

जामगी *पुं.* (देश.) बंदूक या तोप का फैलीता।

जामदग्न्य *पुं.* (तत्.) ऋषि जमदग्नि के पुत्र, परशुराम।

जामदानी *स्त्री.* (फा.) कपड़ों की पेटी, चमड़े का संदूक जिसमें कपड़े रखे जाते हैं 2. कढ़ा हुआ फूलदार कपड़ा 3. शीशे या अबरक की बनी संदूकची।

जामन *पुं.* (देश.) थोड़ा-सा दही या कोई खट्टा पदार्थ, जो दही जमाने के लिए दूध में डाला जाता है *पु.* (तद्.) जामुन; पारस वृक्ष।

जामनी *वि.* (तद्.) 1. दे. यावनी 2. जामुनी (रंग)।

जामल *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का तंत्र।

जामवंत *पुं.* (तद्.) दे. जांबवान।

जामाता *पुं.* (तद्.) दामाद, बेटी का पति।

जामातृक *पुं.* (तत्.) जामाता, दामाद।

जामि *पुं.* (तत्.) 1. बहन 2. लडक़ी, कन्या 2. पुत्रवधु, बहू, पुतोहू 4. कुल स्त्री 5. घर की बहू-बेटी।

जामित्र *पुं.* (तत्.) विवाहादि शुभ कार्य के लग्न से सातवाँ स्थान।

जामिनी *स्त्री.* (तद्.) दे. यामिनी 2. *स्त्री.* (फा.) जमानत, जिम्मेदारी।

जामुन *पुं.* (तद्.) गरम देशों में होने वाला सदाबहार पेड़, जाम, जंबू।

जामुनी *वि.* (देश.) जामुन के रंग का।

जामेय *पुं.* (तत्.) भागिनेय, भानजा, बहन का बेटा।

जायक *पुं.* (तत्.) पीला चंदन।

जायका *पुं.* (अर.) स्वाद, लज्जत, खाने-पीने की चीजों का मज़ा।

जायकेदार *वि.* (अर.) स्वादिष्ट, मज़ेदार।

जायचा *पुं.* (फ़ा.) जन्म कुंडली, जन्मपत्री।

जायज *वि.* (अर.) उचित, मुनासिब, ठीक वाजिब *पु.* जाँच-पड़ताल मुहा. जायजा लेना- स्वाद चखना, पड़ताल करना, जाँचना, हाजिरी, गिनती।

जायत्री *स्त्री.* (तत्.) दे. जावित्री।

जायद *वि.* (फा.) 1. ज्यादा, अधिक 2. पालतू, अतिरिक्त।

जायदाद *स्त्री.* (फा.) भूमि, धन या सामान आदि जिस पर किसी का अधिकार हो, सपंत्ति, मिल्कियत प्रयो. मनकूला जायदाद- चल संपत्ति; गैरमनकूला जायदाद- अचल संपत्ति।

जायफल *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का सुगंधित फल, जो मसालों तथा औषध में काम आता है पर्या. सुमनफल, जातिशस्य, मज्जसार, जातिसार।

जायफल *वि.* (फा.) विनष्ट, बरबाद, समाप्त।

जायस *पुं.* (फा.) एक प्राचीन एवं ऐतिहासिक नगर जहाँ बहुत समय से साधू फकीरों की गद्दी है।

जायसवाल *पुं.* (देश.) 1. जायस का रहने वाला 2. बनियों की एक शाखा।

जायसी *पुं.* (तत्.) 1. जायस का निवासी 2. एक सूफ़ी कवि।

जाया *स्त्री.* (तत्.) 1. विवाहिता स्त्री, पत्नी जोरु, वह स्त्री जो किसी पुत्र को जन्म दे चुकी है 2. जन्मकुंडली में लग्न से सातवाँ स्थान जहाँ से पत्नी के संबंध में गणना की जाती है 3. *वि.* (अर.) ख़राब, नष्ट, व्यर्थ।

जायानु जीवी *पुं.* (तद्.) दे. जायाजीव।

जायी *पुं.* (तत्.) संगीत में धुपद की जाति का एक प्रकार का ताल।

जायु *वि.* (तद्.) जीतने वाला।

जार *पुं.* (तत्.) वह पुरुष जिसका किसी विवाहिता स्त्री से अवैध संबंध हो, पर स्त्री प्रेमी, यार, आशना *वि.* मारने वाला-नाश करने वाला।

जारक *वि.* (तत्.) 1. जलाने वाला 2. पाचक।

जार कर्म *पुं.* (तत्.) व्यभिचार, छिनाला।

जारज *पुं.* (तत्.) अवैध संतान, किसी स्त्री की संतान जो उसके जार या उपपति से पैदा हुई हो, दोगली संतति।

जारज योग *पुं.* (तत्.) फलित ज्योतिष में एक योग जिससे यह सिद्धांत निकाला जाता है कि बालक अपनी माता के उपपति से पैदा हुआ है।

जारजेट *स्त्री.* (अं.) एक प्रकार का महीन और बढ़िया कपड़ा।

जारण *पुं.* (तत्.) पारे का एक (ग्याहरवाँ) संस्कार, जलाना, भस्म करना, धातुओं को फूँकना।

जारणी *स्त्री.* (तत्.) बड़ा जीरा, सफेद जीरा।

जारन *पुं.* (तद्.) जलाने की लकड़ी।

जारिणी *स्त्री.* (तत्.) वह स्त्री जिसका किसी पर पुरुष से संबंध है, दुश्चरित्र स्त्री।

जारित *वि.* (तत्.) 1. गलाया हुआ 2. पचाया हुआ, शोधी हुई (धातु)।

जारी *पुं.* (अर.) 1. बहता हुआ, प्रवाहित 2. प्रचलित।

जारूथ्य *पुं.* (तत्.) वह अश्वमेध यज्ञ जिसमें तिगुनी दक्षिणा दी जाए।

जारोब *स्त्री.* (फा.) झाड़ू, बुहारी, कूँच।

जालंधर *पुं.* (तत्.) एक ऋषि का नाम 2. एक दैत्य का नाम 3. पंजाब में एक नगर।

जालंधरी विद्या *स्त्री.* (तद्.) मायाजाल, इंद्रजाल, माया।

जाल *पुं.* (तत्.) तार या सूत आदि की बुनी हुई रचना जिसका व्यवहार मछलियों/चिड़ियों को पकड़ने के लिए किया जाता है मुहा. जाल बुनना- षड्यंत्र करना; जाल फेंकना- फँसाना; जाल बिछाना- जाल फैलाना, किसी को फँसाने की युक्ति 2. मकड़ी का जाला 3. इंद्रजाल 4. झरोखा 5. आँखों का एक रोग।

जालक *पुं.* (तद्.) 1. झरोखा 2. मोतियों का बना एक प्रकार का आभूषण 3. केला 7. चिड़ियों का घोंसला।

जालकिनी *स्त्री.* (तत्.) भेड़ी।

जालकी *स्त्री.* (तद्.) बादल।

जालसाज *वि.* (अर.) धोखा रचने वाला व्यक्ति, दूसरों को धोखा देने वाला व्यक्ति।

जालसाजी *स्त्री.* (अर.) फरेब का काम, दगाबाजी।

जाला *पुं.* (तद्.) 1. मकड़ी का बुना हुआ जाल 2. सूत या सन का बना जाल जिसमें घास-भूसा आदि बाँधे जाते हैं 3. आँख का रोग।

जालाक्ष *पुं.* (तत्.) झरोखा, गवाक्ष।

जालिक *वि.* (तत्.) जाल से जीविका अर्जित करने वाला।

जालिका *स्त्री.* (तत्.) 1. पाश, फंदा 2. जाली 3. कवच 4. मकड़ी 5. लोहा 6. जोंक 7. केला।

जालिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. तोरई, घिया 2. चित्रशाला 3. परवल की लता 4. पिड़िका रोग का एक प्रकार जिसमे रोगी के शरीर में फुंसियाँ हो जाती हैं।

जालिम *वि.* (अर.) जुल्म करने वाला, अत्याचारी।

जालिया *वि.* (अर.+फा.) जाल, फरेब आदि करने या धोखा देने वाला।

जाली *स्त्री.* (देश.) 1. खल 2. तोरई 3. लकड़ी पत्थर या धातु से बने छोटे-छोटे छंदों का समूह *वि.* (अर.) नकी, बनावटी, झूठा प्रयो. जाली सिक्का- नकली सिक्का।

जाल्म *वि.* (तत्.) 1. पामर, नीच 2. मूर्ख, बेवकूफ 3. जालिम, कठोर, निष्ठुर।

जाल्य *पुं.* (देश.) शिव, महादेव।

जावँत दे. यावत।

जावक *पुं.* (तद्.) अलता, महावर।

जावत दे. यावत।

जावन *पुं.* (देश.) जाने का भाव या क्रिया।

जावन्य *पुं.* (तत्.) तेजी, वेग, शीघ्रता।

जावा *पुं.* (तत्.) पूर्वी एशिया का एक महाद्वीप।

जावित्री *स्त्री.* (तत्.) जायफल के ऊपर का छिलका जो बहुत सुगंधित होता है और औषध के काम आता है।

जासूँद *पुं.* (देश.) एक प्रकार का वृक्ष जिससे रस्सी बनाते हैं।

जासूस *पुं.* (अर.) गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाने वाला, मुखबिर, भेदिया।

जासूसी *स्त्री.* (अर.) जासूस का काम, गुप्त रूप से पता लगाने की क्रिया।

जास्ती *वि.* (अर.) आवश्यकता से अधिक, ज्यादा।

जाहिर *वि.* (अर.) जो दिया हुआ हो, प्रकट, 2. विदित, जाना हुआ।

जाहिरा *क्रि.वि.* (अर.) देखने में, प्रकट रूप से।

जाहिरी *वि.* (अर.) ऊपरी, वास्तव में, दिखाऊ।

जाहिल *वि.* (अर.) नासमझ, मूर्खता, अज्ञानता।

जाहिलियत *स्त्री.* (अर.) 1. इस्लाम की स्थापना से पहले का काल 2. नासमझी।

जाही *स्त्री.* (तद्.) चमेली की जाति का एक प्रकार का सुगंधित फूल 2. एक प्रकार की आतिशबाजी।

जाह्नवी *स्त्री.* (तत्.) जह्नु ऋषि से उत्पन्न, गंगा।

जिंक *स्त्री.* (अं.) जस्ते का क्षार।

जिंगिनी *स्त्री.* (तत्.) जिगिन का पेड़।

जिंगी *स्त्री.* (तत्.) मजीठ।

जिंजर *पुं.* (अं.) 1. अदरक 2. अदरक से बना एक प्रकार का पेय।

जिंदगानी *स्त्री.* (फा.) जीवन, जिंदगी।

जिंदगी *स्त्री.* (फा.) जीवन मुहा. जिंदगी से हाथ धोना- जीने से निराश होना; जिंदगी के दिन पूरा करना- दिन काटना।

जिंदा *वि.* (फा.) जीवित, जीता हुआ मुहा. जिंदा दिल- खुश मिजाज, विनोद प्रिय; प्रयो. जिंदाबाद- अमर रहे।

जिंदा दिल *वि.* (फा.) खुश मिजाज, दिल्लगीबाज, विनोदप्रिय।

जिंदा दिली *स्त्री.* (फा.) प्रसन्न रहने या विनोद का भाव।

जिंदाबाद *अव्य.* (फा.) चिरजीवी हो, अमर रहे प्रयो. इनकलाब जिंदाबाद- क्रांति चिरजीवी हो।

जिंवाना *स.क्रि.* (देश.) दे. जिमाना।

जिंस *स्त्री.* (अं.) 1. वस्तु 2. किस्म 3. लिंग 4. जाति।

जिउकिया *पुं.* (तद्.) जीविका करने वाला, रोजगारी।

जिक्र *पुं.* (अर.) चर्चा, बातचीत, प्रसंग।

जिगत्नु *पुं.* (तत्.) प्राणवायु।

जिगर *पुं.* (फा.) 1. कलेजा मुहा. जिगर का टुकड़ा होना- अत्यंत प्रिय होना; जिगर थाम कर बैठना- असह्य दुख से पीड़ित होना 2. चित्त, मन 3. साहस, हिम्मत 4. गूदा, सत्त, सार।

जिगरा *पुं.* (फा.) साहस, हिम्मत, जीवट।

जिगरी *वि.* (फा.) दिली, भीतरी, घनिष्ठ जैसे- जिगरी दोस्त।

जिगामिषा *वि.* (तत्.) जाने की इच्छा।

जिगामिषु *पुं.* (तत्.) जाने का इच्छुक।

जिगीषा *स्त्री.* (तत्.) 1. जय की इच्छा, विजय प्राप्ति की कामना 2. उद्योग, धंधा, व्यवसाय 3. प्रतिस्पर्धा।

जिगीषु *वि.* (तत्.) 1. युद्ध की इच्छा रखने वाला 2. विजय का इच्छुक।

जिघत्नु *वि.* (तत्.) वध की इच्छा रखने वाला।

जिघत्सा *स्त्री.* (तत्.) भूख, खाने की इच्छा 2. प्रयास करना।

जिघत्सु *वि.* (तत्.) भूखा, भोजन की इच्छा रखने वाला।

जिघांसक *वि.* (तत्.) मारने वाला, प्रतिहिंसक।

जिघांसु *वि.* (तत्.) दे. जिघंसक।

जिघृक्षा *स्त्री.* (तत्.) पकड़ने की इच्छा।

जिघृक्षु *पुं.* (तत्.) पकड़ने की इच्छा रखने वाला।

जिघ्र *वि.* (तत्.) 1. संदेही, शंकालु 2. सूँघने वाला 3. समझने वाला।

जिच *वि.* (तद्.) दे. 'जिच्य'।

जिच्य *स्त्री.* 1. बेबसी, तंगी, मजबूरी 2. शतरंज में एक ऐसी अवस्था जब चलने का न कोई घर हो और इर्दब में न कोई मोहरा हो 3. शतरंज की वह अवस्था जब किसी पक्ष का कोई मोहरा चलने की जगह न हो।

जिजमान *पुं.* (देश.) दे. यजमान।

जिजिया *स्त्री.* (देश.) जीजी, बहन *पुं.* (अर.) कर, महसूल (जिजिया कर) 2. वह कर जो मुगल शासन में गैर-मुगलों पर लगाया जाता था।

जिजीविषा *स्त्री.* (तत्.) जीने की इच्छा, जीने की अभिलाषा, जीवित रहने की स्वाभाविक इच्छा।

जिजीविषु *वि.* (तत्.) जीने की इच्छा करने वाला।

जिज्ञापपिषा *स्त्री.* (तत्.) जानकारी प्रदान करने या जताने की इच्छा या लालसा।

जिज्ञापयिषु *वि.* (तत्.) जानने या जानकारी देने की इच्छा रखने वाला।

जिज्ञासा *स्त्री.* (तत्.) 1. जाने अथवा ज्ञान प्राप्त करने की अभिलाषा या इच्छा 2. जानने की स्वाभाविक इच्छा, ज्ञान की चाह या लालसा।

जिज्ञासित *वि.* (तत्.) जिज्ञासा किया हुआ, पूछा हुआ, जिसकी जिज्ञासा की गई हो, जिसकी या जो जानकारी या ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा की गई हो।

जिज्ञासु *पुं.* (तत्.) 1. जानने की इच्छा रखने वाला 2. ज्ञान-प्राप्ति का इच्छुक 3. मुमुक्षु, परम तत्व का ज्ञान या मोक्ष-प्राप्ति का इच्छुक।

जिज्ञास्य *वि.* (तत्.) 1. जिसे जानना अपेक्षित हो, जिसकी जानकारी लेना या करना जरूरी हो 2. जिज्ञासा या जानने के योग्य 3. पूछने के काबिल या योग्य।

जिठानी *स्त्री.* (तद्.) जेठानी (जेठ की पत्नी), पति के बडे भाई की पत्नी।

जित *वि.* (तत्.) 1. जीता हुआ, जो जीत लिया गया हो, जिसे वश में किया गया या कर लिया गया हो, पराजित 2. जीत कर प्राप्त या अधिकार में किया हुआ 3. जीतने वाला, वश में करने वाला। *क्रि.वि.* जिस ओर, जिधर उदा. "जित तें हुती आस आवन की उततें धार बही" -सूरसागर।

जितना *वि.* (तद्.) 1. जिस मात्रा का, जिस परिमाण का 2. जिस तादाद का उदा. उतना ही खर्च करो जितना आसानी से इसके लिए शेष रहता हो *क्रि.वि.* 1. जिस मात्रा में 2. जितना बचता है उतना बाँट देते हैं। (बहुवचन) "जितने" *स्त्री.* जितनी *स.क्रि.* जीतना उदा. 1. तेहि बल ताहि न जितहिं पुरारी -तुलसी मानस (1/723/4)।

जितलोक *वि.* (तत्.) जो पुण्य कर्मों से स्वर्गादि प्राप्त करने का अधिकारी हो।

जितवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी को जीतने देना, किसी के जीतने में सहयोग देना।

जितवार *वि.* (देश.) जीतने वाला, विजयी, जयी।

जितवैया *वि.* (देश.) जीतने वाला, जिताने वाला।

जितशत्रु *वि.* (तत्.) शत्रु को जीतने वाला, विजयी, विजेता।

जिताक्ष *वि.* (तत्.) जितेंद्रिय दे. जितात्मा, जिसने अपनी इंद्रियों को वश में कर लिया हो।

जिताक्षर *वि.* (तत्.) अक्षर ज्ञानी अर्थात् पढ़ने-लिखने में कुशल, अच्छा पढ़ने-लिखने वाला, अध्ययन-पटु।

जिताना *स.क्रि.* (देश.) जीतने में सहायक या प्रेरक होना, जीतने में समर्थ करना दे. जितवाना।

जितात्मा *वि.* (तत्.) जितेंद्रिय।

जितारि *वि.* (तत्.) दुश्मन को जीत लिया है जिसने 1. शत्रुजित 2. काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को जीतने वाला 3. महात्मा बुद्ध का एक नाम।

जिताष्टमी *स्त्री.* (तत्.) पुत्रवती स्त्रियों द्वारा कृष्णाष्टमी के दिन पुत्र के जीवित रहने की कामना से किया जाने वाला व्रत।

जिताहार *वि.* (तत्.) भूख पर विजय प्राप्त करने वाला।

जिति *स्त्री.* (तत्.) विजय, जय, जीत।

जिती *वि.* (तद्.) जितनी।

जितुम *पुं.* (यूनानी.) मिथुन राशि।

जितेंद्रिय *वि.* (तत्.) जिसने अपनी इंद्रियों पर विजय पा ली हो, इंद्रियों को जीतने वाला *पुं.* इंद्रियों पर विजय पाने वाला व्यक्ति।

जितैया *वि.* (देश.) जेता, विजयी, जयी।

जित् *वि.* (तत्.) वश में करने वाला, जीतने वाला, जेता जैसे- इंद्रजित (मेघनाद) कामजित् (शंकर), शत्रुजित्, विश्वजित् आदि।

जित्तम, जित्म *पुं.* (यूनानी.) दे. जितुम।

जित्य *पुं.* (तत्.) 1. बड़ा हल, हेंगा 2. जोती गई जमीन को समतल करने वाला, पटेला, सरावन (कृषि संबंधी उपकरण का नाम)।

जित्या *स्त्री.* (तत्.) 1. हींग 2. पटेला, सरावन (क्रमश: ब्रज और अवधी बोलियों में क्षेत्रीय कृषि उपकरण का नाम)।

जित्वर *वि.* (तत्.) विजयी, जेता, जीतने वाला।

जिद *स्त्री.* (अर.) 1. हठ, दुराग्रह, जिद्द मुहा. जिद चढ़ना, जिद पकड़ना- हठ करना *वि.* जिद्दी-जिद करने वाला, हठी, दुराग्रही प्रयो. जिद करना, जिद आना अर्थात् अपनी बात पर ही अड़े रहना, अपनी जिद रखना।

जिदियाना *स.क्रि.* (देश.) हठ करना, जिद करना।

जिद्दन *क्रि.वि.* (अर.) जिद करते हुए, हठ करते हुए या हठ पर अड़े हुए।

जिद्दी *वि.* (अर.) अड़ने वाला, हठी, जिद करने वाला।

जिधर *क्रि.वि.* (तद्.) जिस ओर, जहाँ।

जिन (जिन्न) *पुं.* (अर.) 1. इस्लाम धर्म के अनुसार एक शैतान-भूत-प्रेत का रूप 2. बेदर्द आदमी।

जिन *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. सूर्य 3. बुद्ध 4. तीर्थंकर *वि.* "जिस" का बहुवचन।

जिना *पुं.* (अर.) व्यभिचार, छिनाली, पराई स्त्री या पुरुष के साथ अवैध संबंध प्रयो. 1. ज़िनाकार व्यभिचारी 2. ज़िनाबिल्र-बलात्कार।

जिनावर *पुं.* (देश.) दे. जानवर।

जिनेंद्र *पुं.* (तत्.) 1. एक बुद्ध 2. एक जैन संत।

जिन्नात *पुं.* (अर.) भूत-प्रेतादि।

जिन्नाती *वि.* (अर.) "जिन" या जिन्नात संबंधी।

जिन्नी *पुं.* (अर.) वह व्यक्ति जिसके वश में भूत-प्रेत हों, मलंग।

जिप्सी *पुं.* (अं.) 1. एक भ्रमणशील जाति, एक घुमंतु जाति 2. इस जाति का व्यक्ति 3. वर्तमान युग में एक (कार) गाड़ी का नाम।

ज़िबह *पुं.* (अर.) वध, हत्या, गला काटने की क्रिया या कार्य। *वि.* जिसका गला काटा गया हो।

ज़िब्रील *पुं.* (अर.) खुदा/परमेश्वर का एक फरिश्ता।

जिभला *वि.* (देश.) स्वादिष्ट चीजें चाटने वाला, चटोरा, चट्ट, स्वाद या जीभ का कच्चा।

जिभ्या *स्त्री.* (तद्.) दे. जिह्वा।

जिमखाना *पुं.* (अं.+अर.) व्यायामशाला, व्यायाम और श्रमपूर्ण खेल खेलने का सार्वजनिक स्थल।

जिमनास्टिक *पुं.* (अं.) व्यायाम, कसरत।

जिमाना *स.क्रि.* (देश.) भोजन कराना।

जिमित *पुं.* (तद्.) भोजन।

जिमींदार *पुं.* (देश.) दे. ज़मींदार।

जिम्मा *पुं.* (अर.) 1. उत्तरदायित्व, जवाबदेही 2. देखरेख, सुपुर्दगी।

जिम्मावार *पुं.* (अर.) जबावदेह, उत्तरदायी।

जिम्मावारी *स्त्री.* (अर.) 1. जवाबदेही, उत्तरारदायित्व 2. सुपुर्दगी।

जिम्मी *पुं.* (अर.) एक कर जो मुगल काल में गैर-मुगलों को देना पड़ता था।

जिम्मेदार *वि.* (अर.) दे. जिम्मावार।

जिम्मेदारी *स्त्री.* (अर.) दे. जिम्मावार।

जिम्मेवार *वि.* (अर.) दे. जिम्मावार।

जिम्मेवारी *स्त्री.* (अर.) दे. जिम्मावारी।

जियरा *पुं.* (देश.) 1. मन, चित्त 2. जीव।

जियांकार *स्त्री.* (तत्.) 1. हानि पहुँचाने वाला 2. बुरा आचरण करने वाला।

ज़िया *स्त्री.* (अर.) 1. चमक, कांति, आभा 2. सूर्य का प्रकाश *स्त्री.* (तत्.) धाय, दूध पिलाने वाली *पुं.* *पुं.* (तद्.) दीदी, जीजी दे. जियरा।

जियाना *स.क्रि.* (देश.) 1. जिलाना 2. पालना, पोसना।

जिरह *पुं.* (अर.) 1. हुज्जत 2. फेरफार 3. चीरा 4. बहस मुहा. जिरह करना- बहुत अधिक पूछताछ करना *स्त्री.* (फा.) बख्तर, कवच, पोश।

जिरही *वि.* (फा.) कवचधारी।

जिराफ़ *पुं.* (अं.) घास के मैदानों का एक लंबी गर्दन वाला वन्य पशु।

जिला *स्त्री.* (अर.) चमक-दमक मुहा. जिला करना- चमकाना, माँजना *पुं.* (अर.) 1. प्रांत (क्षेत्र विशेष), प्रदेश 2. प्रशासनिक दृष्टि से किसी प्रदेश का एक भाग जो एक कलेक्टर या डिप्टी कमिश्नर के अधीन आता है 3. ऐसा मकान या स्थान जहाँ जमींदार के आदमी महसूल या कर वसूल करने के लिए ठहरा करते थे।

जिला जज *पुं.* (अर.+अं.) जिले के प्रधान न्यायाधीश।

जिलादार *पुं.* (अर.+फा.) 1. लगान वसूल करने वाला अधिकारी 2. नहर-महकमे आदि का (किसी हलके में) काम करने वाला नियुक्त किया हुआ अधिकारी।

जिलाधीश *पुं.* (अर.+तत्.) जिला मजिस्ट्रेट, कलेक्टर, राजस्व विभाग का जिला स्तर का सर्वोच्च अधिकारी जो प्रशासन के सारे कार्यों के लिए उत्तरदायी होता है।

जिलाना *स.क्रि.* (देश.) 1. जीवन देना, जीवित करना, जिंदा करना 2. प्राण-रक्षा करना 3. पालना-पोसना।

जिलाबदर *पुं.* (अर.) 1. जिले से बाहर करना 2. जिले से निकाल बाहर करना प्रयो. उस बदमाश को चुनाव के समय जिलाबदर कर दिया।

जिला बोर्ड *पुं.* (अर.+अं) किसी जिले के करदाताओं के प्रतिनिधियों की सभा जिसका काम सड़कों की देखभाल करना, स्कूल चिकित्सालय आदि चलाना इत्यादि जिले के लिए भौतिक सुविधाएँ देना होता है।

जिला मजिस्ट्रेट *पुं.* (अर.+अं.) जिले का सबसे बड़ा हाकिम, जिलाधीश।

जिल्द *स्त्री.* (अर.) 1. किताब की रक्षा के लिए ऊपर चढ़ाया गया पट्ठा या दफ्ती 2. चमड़ी, खाल 3. ऊपर का चमड़ा 4. पुस्तक की एक प्रति 5. पुस्तक का भाग या खंड।

जिल्दबंदी *पुं.* (अर.+फा.) किताबों पर जिल्द बाँधने का काम, जिल्दसाजी।

जिल्दसाज *पुं.* (अर.+फा.) वह व्यक्ति जो जिल्द बाँधता हो, जिल्दसाज।

ज़िल्लत *स्त्री.* (अर.) 1. अनादर, अपमान, रव्वारी तिरस्कार, बेइज़्ज़ती 2. पतन, चूक, त्रुटि, भूल, पाप, गुनाह 3. फिसलने की क्रिया 4. गुमराही, रास्ता भूल जाना।

जिल्होर *पुं.* (देश.) एक प्रकार का धान जो अगहन में सबसे पहले काट लिया जाता है।

जिवड़ा *पुं.* (देश.) दे. जीव।

जिवाजिव *पुं.* (तद्.) चकोर पक्षी।

जिवाना *स.क्रि.* (देश.) जिलाना, जीवित करना, जिंदा करना।

जिष्णु *वि.* (तत्.) जीतने वाला, जेता, विजयी *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. इंद्र 3. अर्जुन 4. सूर्य 5. वस्तु।

जिस *सर्व.* (तद्.) 'जो' का तिर्यक रूप जैसे- जिस लड़के को जिस स्थान पर बिठाओ, बैठ जाएगा।

जिस्म *पुं.* (फा.) देह, शरीर।

जिस्मानी *वि.* (अर.) शरीर संबंधी, शारीरिक।

जिस्मी *वि.* (अर.) दे. जिस्मानी।

जिहाज *पुं.* (देश.) जहाज़, रेगिस्तान का जहाज़- ऊँट।

ज़िहाद *पुं.* (अर.) 1. धर्म के लिए युद्ध, धार्मिक युद्ध 2. वह लड़ाई जो मुसलमान लोग दूसरे धर्म वालों से अपने धर्म-प्रचार के लिए किया करते हैं। मुहा. ज़िहाद का झंडा- वह पताका जो मुसलमान लोग दूसरे धर्मावलंबियों से युद्ध करने के लिए लेकर चलते थे; ज़िहाद का झंडा खड़ा करना- धर्म या मज़हब के नाम पर लड़ाई करना।

जिहादी *वि.* (अर.) जिहाद करने वाला।

जिहालत *स्त्री.* (अर.) अज्ञानता, मूर्खता।

जिहासा *स्त्री.* (तत्.) त्याग करने की इच्छा।

जिहासु *वि.* (तत्.) त्याग करने का इच्छुक।

जिहीर्षा *स्त्री.* (तत्.) हरने या हरण करने की इच्छा, लेने की इच्छा।

जिहीर्षु *वि.* (तत्.) हरण करने की इच्छा रखने वाला।

जिह्म *पुं.* (अर.) बुद्धि, धारणा, समझ मुहा. जिह्म खुलना- बुद्धि का विकास होना, समझ होना, या आना; जिह्म लड़ाना- सोचना, बुद्धि दौड़ाना।

जिह्माक्ष *वि.* (तत्.) ऐंचा, भेंगा।

जिह्मित *वि.* (तत्.) घूमा हुआ, घिरा हुआ।

जिह्व *पुं.* (तद्.) जीभ, जिह्वा।

जिह्वक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का रोग जिसमें जीभ में काँटे पड़ जाते हैं।

जिह्वल *वि.* (तत्.) चटोरा, चट्टू, जिमला।

जिह्वा *स्त्री.* (तत्.) 1. जीभ, रसना 2. आग की लपट।

जिह्वाग्र *पुं.* (तत्.) जीभ का आगे का भाग, जीभ की नोक। *वि.* 1. जीभ के अगले भाग पर स्थित 2. अच्छी तरह याद किया हुआ, कंठस्थ मुहा. जिह्वाग्र करना- जबानी याद कर लेना, कंठस्थ कर लेना; जिह्वाग्र होना- जबानी याद होना।

जिह्वाप *वि.* (तत्.) जीभ से पानी पीने वाला प्राणी जैसे- कुत्ता, घोड़ा आदि।

जिह्वा मल *पुं.* (तत्.) जीभ पर जमा हुआ मैल।

जिह्वा मूल *पुं.* (तत्.) जीभ का पिछला स्थान या जीभ की जड़, जीभ का मूल या प्रारंभ का अंश।

जिह्वा रोग *पुं.* (तत्.) जीभ का रोग।

जिह्वा लोलुप *वि.* (तत्.) जीभ का चटोरा।

जिह्विका *स्त्री.* (तत्.) जीभी, जीभ साफ करने की की वस्तु।

जिह्वोल्लेखनिका *स्त्री.* (तत्.) जीभी।

जिह्वोल्लेखनी *स्त्री.* (तत्.) जीभी।

जिह्म *वि.* (तत्.) 1. टेढ़ा, वक्र 2. क्रूर, दुष्ट प्रकृति वाला 3. कपटी, कुटिला *पुं.* 1. अधर्म 2. कपट 3. बेईमानी 4. नगर का फूल।

जिह्मग *पुं.* (तत्.) 1. सर्प, साँप 2. बाण, तीर *वि.* टेढ़ा-तिरछा चलने वाला 2. धूर्त, कपटी, छली 3. मंद गति से चलने वाला।

जींगन *पुं.* (देश.) जुगनू।

जी *पुं.* (तद्.) 1. मन, चित्त, दिल 2. तबीयत 3. हिम्मत, जीवट 4. विचार, संकल्प 5. चाह मुहा. जी उकताना- चित्त न लगना, ऊब जाना; जी अच्छा होना- नीरोग होना; जी उचटना- चित्त न लगना, मन हटना; जी का जंजाल- झंझट; जी काँपना- डर लगना, कलेजा धक-धक करना; जी उदास हो जाना- मन खिन्न होना; जी घबराना- चित्त में व्यग्रता होना, व्याकुल होना *अव्य.* 1. सम्मानसूचक शब्द *वि.* (अर.) वाला, सहित प्रयो. जी शऊर- 1. तमीज़दार 2. समझदार।

जीअ *पुं.* (देश.) जीव।

जीअन *पुं.* (देश.) दे. जीवन।

जीगा *पुं.* (तुर्की) 1. तुर्रा 2. कलगी 3. शोर, कोलाहल।

जीजा *पुं.* (देश.) बहनोई, बड़ी बहन का पति।

जीजी *स्त्री.* (देश.) बड़ी बहन।

जीट *स्त्री.* (देश.) डींग, लंबी-चौड़ी बातें करना।

जीत *स्त्री.* (तद्.) जय, विजय, फतह।

जीतनहार *वि.* (देश.) जीतने वाला, विजयी, जयी, जेता, विजेता।

जीतना *स.क्रि.* (देश.) सफलता प्राप्त करना, विजय प्राप्त करना।

जीता *वि.* (देश.) 1. जीवित 2. विजय प्राप्त की उदा. रमेश महेश के विवाद में कौन जीता विलो. हारा।

जीतालू *पुं.* (देश.) 'अरारोट', एक विदेशी पौधा (जिसके कंद को कूटकर सार निकाला जाता है जो पथ्य में काम आता है)।

जीति *स्त्री.* (देश.) एक लता का नाम *स्त्री.* (तद्.) जीत, विजय।

जीन (जीर्ण) *वि.* (तद्.) पुराना, जीर्ण, जर्जर।

ज़ीन *पुं.* (फा.) 1. घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी, काठी 2. एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा।

ज़ीनत *स्त्री.* (अर.) 1. शोभा, खूबसूरती 2. सजावट, सजावट, शृंगार प्रयो. जीनत बख्शना- शोभा बढ़ाना।

जीना *स.क्रि.* (तद्.) जीवित रहना, जिंदा रहना मुहा. जीना भारी हो जाना- जीवन का आनंद जाते रहना।

जीप *स्त्री.* (अं.) एक प्रकार की खुली मोटर गाड़ी जो ऊबड़-खाबड़ जमीन पर भी दौड़ सकती है।

जीभ *स्त्री.* (देश.) जिह्वा, रसना मुहा. जीभ खींचना- जीभ निकालना; जीभ बंद करना- बोलना बंद करना; जीभ लड़ाना- अधिक बातें करना, विवाद करना।

जीभा *पुं.* (देश.) 1. जीभ के आकार की कोई चीज 2. चौपायों की एक बीमारी जिसमें जीभ के काँटे सूज जाते हैं 3. बैलों की आँखों की बीमारी जिसमें आँखों के नीचे का मांस लटक जाता है।

जीभी *स्त्री.* (देश.) 1. जीभ साफ करने की धातु या या प्लास्टिक की एक पतली, लचीली धनुषाकार वस्तु 2. छोटी जीभ 3. चौपायों की एक बीमारी।

जीमट *पुं.* (देश.) पेड़ों की शाखा, टहनी के भीतर का गूदा।

जीमना *स.किर्.* (तद्.) भोजन करना, खाना।

जीमूत *पुं.* (तत्.) 1. पर्वत 2. मेघ 3. नागरमोथा 4. सूर्य।

जीर *पुं.* (तद्.) 1. जीरा 2. केसर 3. तलवार *वि.* पुराना, जर्जर, जीर्ण।

जीरक *पुं.* (तत्.) जीरा।

जीरण *पुं.* (तत्.) जीर्ण, पुराना।

जीरा *पुं.* (तद्.) 1. एक पौधा 2. छोटे-छोटे महीन और लंबे बीज जो मसाले के काम आते हैं मुहा. ऊँट के मुँह में जीरा- खाने की किसी वस्तु का मात्रा में बहुत कम होना।

जीरिका *स्त्री.* (तत्.) वंशपत्री नामक एक घास।

जीरी *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का धान।

जीर्ण *वि.* (तत्.) 1. वृद्ध, बूढ़ा 2. पुराना 3. फटा-पुराना *पुं.* 1. जीरा 2. टूटा व्यक्ति 3. बुढ़ापा 4. वृक्ष।

जीर्णक *वि.* (तत्.) शुष्क और कुम्हलाया हुआ।

जीर्ण ज्वर *पुं.* (तत्.) पुराना बुखार।

जीर्णता *स्त्री.* (तत्.) 1. बुढ़ापा 2. पुरावसन।

जीर्ण वस्त्र *पुं.* (तत्.) फटा-पुराना कपड़ा।

जीर्णा *वि.* (तत्.) वृद्धा, बुढ़िया, अत्यंत क्षीण शरीर वाली।

जीर्णि *स्त्री.* (तत्.) पाचन, जीर्णता, बुढ़ापा।

जीर्णोद्धार *पुं.* (तत्.) 1. फटी-पुरानी चीजों की मरम्मत 2. पुराने मंदिर, तालाब, कुएँ आदि की मरम्मत।

जीर्णोद्यान *पुं.* (तत्.) पुराना अथवा देखरेख के अभाव में उजड़ा-सा उद्यान या बगीचा अथवा पार्क।

जीर्वि *पुं.* (तत्.) 1. कुठार 2. पशु 3. शरीर।

जीलानी *वि.* (फा.) जीलान नामक स्थान से संबंधित।

जीलि *स्त्री.* (फा.) मध्यम सुर, धीमा शब्द।

जीवंजीव *पुं.* (तद्.) चकोर पक्षी, एक वृक्ष का नाम।

जीवंत *वि.* (तत्.) जीता जागता, प्राणवान, सजीव। *पुं.* 1. जीवन, ज़िंदगी 2. जीवनी शक्ति, प्राण 3. औषध, दवाई।

जीवंतक *पुं.* (तद्.) 'जीवशाक', आहार, भोजन।

जीवंतता *स्त्री.* (तत्.) तेजस्विता, प्राणवानता।

जीवंतिक *पुं.* (तत्.) 1. बहेलिया 2. भोजन, आहार 3. जीवशाक।

जीवंतिका *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की वनस्पति जो दूसरे पेड़ पर उत्पन्न होती है 2. गुड़ुची 3. जीवंती लता, अमर बेल 4. एक प्रकार की हरड़।

जीवंती *स्त्री.* (तत्.) एक लता जिसकी पत्तियाँ दवाई के काम आती हैं।

जीव *पुं.* (तत्.) जीवात्मा, आत्मा, प्राण।

जीव अति-परीक्षा (जीवोति परीक्षा) *स्त्री.* (तत्.) जीव के ऊतकों की डाक्टरी जाँच। biopsy

जीवक *पुं.* (तत्.) 1. प्राण धारण करने वाला 2. सपेरा 3. ब्याज पर आजीविका चलाने वाला, सूदखोर 4. एक जड़ी अथवा पौधा।

जीवकोश *पुं.* (तत्.) शरीर का वह भाग जिसमें प्रजनन-शक्ति के तत्व संग्रहीत होते हैं, लिंग शरीर।

जीवजगत *पुं.* (तत्.) प्राणधारी समुदाय।

जीवट *पुं.* (तद्.) साहस, जिगरा, हिम्मत, मरदानगी।

जीवत (जीते) *वि.* (तद्.) जीवित रहते हुए, जिंदा, जीते हुए।

जीवत्पति *स्त्री.* (तत्.) सुहागिन, जीवित पति वाली पत्नी (नारी)।

जीवत्पत्नी *पुं.* (तत्.) वह पुरुष जिसकी पत्नी जीवित हो।

जीवत्पुत्रिका *स्त्री.* (तत्.) वह स्त्री जिसका पुत्र जीवित हो 2. कृष्णाष्टमी का व्रत।

जीवत्पुत्रिका व्रत *पुं.* (तत्.) जीवित पुत्र की लंबी आयु तथा कल्याण के लिए कामना करते हुए रखा गया आश्विन कृष्णाष्टमी का व्रत।

जीवथ *पुं.* (तत्.) 1. प्राण 2. सद्गुण 3. मोर 4. मेघ 5. कछुआ।

जीवद *पुं.* (तत्.) 1. जीवनदाता, जीवन का दान देने वाला व्यक्ति या तत्व 2. वैद्य 3. जीवंती 4. शत्रु।

जीवदान *पुं.* (तत्.) प्राण रक्षा, प्राणदान।

जीवद्रव *पुं.* (तत्.) जीवों और पौधों का मूलाधार। protoplasm

जीवधारी *पुं.* (तत्.) प्राणी, जानवर।

जीवन *पुं.* (तत्.) 1. जीवित रहने या विद्यमान रहने की वह शक्ति जो मृत शरीर तथा जड़ पदार्थों में नहीं होती, जीवन-शक्ति, जीवन अवस्था, जिंदगी मुहा. जीवन भरना/ढोना- जीवन व्यतीत करना, जिंदगी के दिन काटना (पूरे करना) प्रयो. जीवनदाता, जीवनधनद्य 2. प्राणाधार 3. जल 4. वायु 5. पुत्र 6. परमेश्वर 7. गंगा।

जीवनक *पुं.* (तत्.) 1. आहार, खाद्य 2. अन्न।

जीवनक्रम *पुं.* (तत्.) रहन-सहन का ढंग, जीवन-प्रणाली, जीवन पद्धति।

जीवन चरित् *पुं.* (तत्.) जीवन चरित्र, जीवन वृत्तांत 2. वह पुस्तक जिसमें (महापुरुष के) जीवन का वृत्तांत हो।

जीवन चरित्र *पुं.* (तत्.) दे. जीवन-चरित्।

जीवनचर्या *स्त्री.* (तत्.) दे. जीवनक्रम।

जीवन तत्व *पुं.* (तत्.) जीवन मर्म, जीवन का रहस्य।

जीवन-तरु *पुं.* (तत्.) जीवन रूपी वृक्ष।

जीवन दर्शन *पुं.* (तत्.) जीवन विषयक सिद्धांत, जीवनयापन के आदर्श।

जीवनदान *पुं.* (तत्.) प्राणदान।

जीवनधन *पुं.* (तत्.) 1. जीवन का सर्वस्व 2. प्राणों का आधार 3. प्यारा, प्राणप्रिय।

जीवनधर *वि.* (तत्.) 1. जीवन का आधार, प्राणाधार 2. जीवन रक्षक, जीवनदाता 3. बादल, जलधर।

जीवन बूटी *स्त्री.* (तद्.) 1. संजीवन 2. अति प्रिय वस्तु अथवा व्यक्ति।

जीवन-मरण *पुं.* (तत्.) जीना और मरना, जीवन और मरण।

जीवनमुक्त *वि.* (तत्.) जीवन के सभी बंधनों से मुक्त, सांसारिकता से छुटकारा पाया हुआ, परमात्मा से साक्षात्कार करने वाला।

जीवनमुक्ति *स्त्री.* (तत्.) जीवन के कर्म बंधनों से छूट कर मुक्त होने की स्थिति या दशा, परमात्मा से साक्षात्कार की स्थिति, जीवन में कर्मबंधनों से मुक्त हो जाने की दशा।

जीवनयापन *पुं.* (तत्.) जीवन-निर्वाह, जीवन व्यतीत करना, जिंदगी चलाने के लिए भोजन, वस्त्र, निवास आदि से संबंधित व्यवस्था, जीवन-संचालन।

जीवन वृत्त *पुं.* (तत्.) जीवनी, जीवन चरित, जीवन वृत्तांत।

जीवन वृत्तांत *पुं.* (तत्.) जिंदगी का ब्यौरा, जीवन-चरित्र, जीवनी, जिंदगी, जीवन में घटित सभी घटनाओं का वर्णन या विवरण।

जीवनवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) आजीविका, रोज़ी।

जीवन-संग्राम *पुं.* (तत्.) 1. जीवन के संघर्षों में जीवन-यापन 2. जीवन-संघर्ष 3. जीवन-संघर्षों को झेलकर आगे बढ़ने का प्रयास।

जीवनहार *पुं.* (तत्.) जीवन हरण करने वाला परमतत्व *वि.* 1. जीवन हरने वाला 2. पानी पीने वाला।

जीवन-हेतु *पुं.* (तत्.) जीविका, आजीविका, रोजी।

जीवनांत *पुं.* (तत्.) जीवन की समाप्ति, मृत्यु, मौत।

जीवनांतर *क्रि.वि.* (तत्.) जीवन के अनंतर या जीवन के बाद।

जीवना *स्त्री.* (तत्.) महौषध, जीवंती बेल या लता।

जीवनाघात *पुं.* (तत्.) 1. जीवन पर आघात, प्राणाघात 2. विष, प्राणघाती जहर।

जीवनाधार *पुं.* (तत्.) जीवन का आधार, जीने का सहारा।

जीवनार्ह *पुं.* (तत्.) दूध, अन्न।

जीवनावस *पुं.* (तत्.) जीवन का आवास 1. शरीर, देह 2. वरुण।

जीवनिकाय *पुं.* (तत्.) जीवों का समूह, जीव-समूह।

जीवनिशा (जीवनिका) *स्त्री* (तत्.) हरड़, हरीतिका।

जीवनी *स्त्री.* (तत्.) जीवन वृत्तांत, जिंदगी का हाल, जीवन-चरित।

जीवनीय *वि.* (तत्.)1. जीवनप्रद 2. बरतने योग्य।

जीवनीया *वि.* (तत्.) जीवंती लता।

जीवनोत्तर *वि.* (तत्.) जीवन के बाद का, जीवन के बाद की।

जीवनोत्सर्ग *पुं.* (तत्.) जीवन की बलि, जीवन का बलिदान, जीवनदान।

जीवनोपाय *पुं.* (तत्.) 1. जीवन की रक्षा के उपाय, जीवनौषधि 2. जीविका, रोज़ी।

जीवनौषध *पुं.* (तत्.) संजीवनी औषध, जिंदा रखने वाली दवा।

जीवन्मृत *वि.* (तत्.) जिसका मरना और जीना दोनों समान हो।

जीवन्यास *पुं.* (तत्.) मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा का मंत्र।

जीवपति *पुं.* (तत्.) धर्मराज। *स्त्री.* सुहागिन स्त्री, वह स्त्री जिसका पति जीवित हो।

जीवयोनि *स्त्री.* (तत्.) जीव-जंतु या जानवर का जीवन या सर्जना (सृष्टि)।

जीवरि *पुं.* (तद्.) जीवन-प्राण धारण करने की शक्ति।

जीवविज्ञान *पुं.* (तत्.) जीव-जंतुओं के विषय में जानकारी या ज्ञान, जीव-जंतुओं की शारीरिक जानकारी।

जीव-हत्या *स्त्री.* (तत्.) 1. प्राणियों की हत्या 2. प्राणियों की हत्या का दोष।

जीव-हिंसा *स्त्री.* (तत्.) जीवों का वध, प्राणियों की हत्या।

जीवांतक *पुं.* (तत्.) जीवों का वध करने वाला।

जीवा *स्त्री.* (तत्.) 1. ज्या 2. धनुष की डोरी 3. जीवन 4. जीविका 5. जीवंती।

जीवाणु *पुं.* (तत्.) अति सूक्ष्म जीव।

जीवातु *पुं.* (तत्.) 1. आहार, खाद्य 2. अस्तित्व 3. पुनर्जीवन 4. जीवन-रक्षक औषध।

जीवात्मा *पुं.* (तत्.) जीव, आत्मा, शरीर में स्थित आत्मा।

जीवादान *पुं.* (तत्.) बेहोशी, मूर्च्छा।

जीवाधार *पुं.* (तत्.) जीव का आश्रय स्थान, हृदय।

जीवानुज *पुं.* (तत्.) गर्गाचार्य मुनि, ये बृहस्पति के छोटे भाई माने जाते थे।

जीवावशेष *पुं.* (तत्.) जीवाश्म, प्राचीन काल के जीव-जंतुओं, वनस्पतियों के वे अवशिष्ट रूप जो जमीन की खुदाई करने पर निकलते हैं।

जीवास्तिकाय *पुं.* (तत्.) जैन दर्शन के अनुसार कर्म का करने वाला, कर्मफल भोगने वाला, किए गए कर्मों के अनुसार शुभाशुभ गति मे जाने वाला और सम्यक् ज्ञान के प्रभाव से कर्म के समूह का नाश करने वाला जीव।

जीविका *स्त्री.* (तत्.) भरण-पोषण का साधन, रोज़ी।

जीवित *वि.* (तत्.) 1. जीता हुआ, जिंदा 2. सजीव, सप्राण 3. वर्तमान, मौजूद।

जीवितव्य *वि.* (तत्.) जीवित रहने योग्य।

जीवितांतक *पुं.* (तत्.) शिव, शंकर, महादेव।

जीवितेश *पुं.* (तत्.) 1. प्यारा, प्राणनाथ, प्रिय 2. यमराज 3. इंद्र 4. सूर्य 5. शरीर में स्थित इड़ा और पिंगला नाड़ी 6. एक जीवनदायिनी औषधि जो मृतक को जीवित कर सकती है।

जीवितेश्वर *पुं.* (तत्.) शिव, महादेव।

जीवी *पुं.* (तत्.) जीने वाला, जीविका करने वाला। प्रयो. परजीवी, श्रमजीवी, बुद्धिजीवी।

जीवेंधन *पुं.* (तत्.) ईंधन, जलती हुई लकड़ी।

जीवेश *पुं.* (तत्.) परमात्मा, ईश्वर, परमेश्वर।

जीवोपाधि *स्त्री.* (तत्.) जीव की उपाधि, स्वप्न, सुषुप्ति, जागृति- तीन अवस्थाएँ।

जीस्त *स्त्री.* (फा.) जीवन, जिंदगी।

जीह *स्त्री.* (देश.) जीभ, जिह्वा, ज़बान, (ज़बाँ)।

जुंग *पुं.* (तद्.) विधारा नामक वृक्ष।

जुंगित *पुं.* (तत्.) बहिष्कृत, परित्यक्त।

जुंबाँ *वि.* (फा.) काँपता हुआ, हिलता हुआ, दोलायमान, कंपायमान, कंपित।

जुंबिश *स्त्री.* (फा.) चाल, गति, हरकत मुहा. जुंबिश रवाना- हिलना, डुलना।

जुंबुल *पुं.* (तत्.) जामुन, केतकी का वृक्ष, कान का रोग, सुयकनवा।

जुँआँ *पुं.* (तद्.) दे. जूँ।

जुआँ *पुं.* (तद्.) जूँ, ढील, सिर के बालों में पड़ने वाला कीड़ा।

जुआ *पुं.* (तद्.) 1. रुपए-पैसे या अन्य किसी प्रकार की बाजी लगाकर खेले जाने वाला खेल, द्यूतक्रीड़ा

प्रयो. जुआ खेलना, जुआ जीतना 2. हल, बैलगाड़ी आदि खींचने में बैलों के कंधों पर रखी जाने वाली लकड़ी या लकड़ी का बना हुआ कृषि कार्य के लिए एक उपयोगी उपकरण 3. मूठ।

जुआखाना *पुं.* (तद्.) वह स्थान जहाँ लोग जुआ खेलते हैं।

जुआघर *पुं.* (देश.) दे. जुआखाना।

जुआड़ना *स.क्रि.* (तद्.) बैल आदि को जुए में जोतना।

जुआरी *पुं.* (तद्.) जुआ खेलने वाला व्यक्ति। *वि.* जुआ खेलने वाला *स्त्री.* जुआरिन प्रयो. "कहें कबीर अंतकी बारी, हाथ के चले जुआरी" -कबीर।

जुईं *स्त्री.* (देश.) एक छोटा कीड़ा जो मटर, सेम आदि की फलियों में लग जाता है।

जुई *स्त्री.* (देश.) जुही।

जुकति *स्त्री.* (देश.) दे. जुगत।

जुकाम *पुं.* (अर.) एक रोग जिसमें नाक बहने लगती है और शरीर में ज्वर भी चढ़ जाता है। मुहा. 1. जुकाम बिगड़ना-जुकाम का सूख जाना 2. मेंढ़की को जुकाम होना-स्वभाव या अवस्था के विपरीत काम करना।

जुकिहारा *पुं.* (देश.) जोंक लगाने वाला।

जुकुट *पुं.* (तत्.) 1. कुत्ता 2. मलय पर्वत।

जुग *पुं.* (तद्.) युग, जमाना मुहा. जुग-जुग जियो-चिरकाल तक जीवित रहो, अमर रहो; जुग टूटना- फूट पड़ जाना।

जुगजुगाना *अ.क्रि.* (देश.) टिमटिमाना, 'झिलमिलाना', संपन्नता की ओर बढ़ना।

जुगजुगी *स्त्री.* (देश.) 1. एक चिड़िया-शकरखोरा 2. जुगनू नामक आभूषण।

जुगत *स्त्री.* (तद्.) युक्ति, उपाय, तरकीब मुहा. जुगत लगाना- जोड़-तोड़ भिड़ाना।

जुगती *स्त्री.* (तद्.) युक्ति, जोड़-तोड़।

जुगनी *स्त्री.* (देश.) दे. जुगनू।

जुगनू *पुं.* (देश.) 1. एक कीड़ा जिसकी दुम से प्रकाश निकलता है 2. एक प्रकार का आभूषण।

जुगराफ़िया *पुं.* (अर.) भूगोल।

जुगल *पुं.* (तद्.) दे. युगल, युगल का तद्भव रूप, दोनों।

जुगवना *स.क्रि.* (तद्.) 1. संचित करना, एकत्र करना 2. सुरक्षित रखना।

जुगाड़ *पुं.* (देश.) 1. व्यवस्था 2. युक्ति मुहा. जुगाड़ बैठाना- युक्ति करना, जोड़-तोड़ करना या बैठाना।

जुगादरी *वि.* (तद्.) बहुत दिनों का, बहुत पुराना।

जुगाना *स.क्रि.* (तद्.) जुगवाना, यत्नपूर्वक इकट्ठा करके सँभाल कर रखना।

जुगार *स्त्री.* (देश.) जुगाली।

जुगालना *अ.क्रि.* (देश.) पागुर करना, जुगाली करना।

जुगाली *स्त्री.* (देश.) गाय-बैल आदि का निगले हुए चारे को थोड़ा-थोड़ा निकाल कर फिर से चबाने की क्रिया।

जुगुति *स्त्री.* (तद्.) जुगत।

जुगुप्सक *वि.* (तत्.) दूसरे की निंदा करने वाला, निंदक, परनिंदक।

जुगुप्सन *पुं.* (तत्.) निंदा करना, बुराई करना।

जुगुप्सा *स्त्री.* (तत्.) 1. निंदा, परनिंदा 2. घृणा अरुचि, अश्रद्धा टि. काव्यशास्त्र के अनुसार वीभत्स रस का स्थायी भाव 3. ग्लानि, ग्लानिकारक कर्म 4. फटकार।

जुगुप्सित *वि.* (तत्.) निंदित, घृणित।

जुगुप्सु *वि.* (तत्.) निंदक, बुराई करने वाला, घृणा करने वाला।

जुज *पुं.* (अर.) 1. अंश, टुकड़ा 2. कागज के आठ या सोलह पृष्ठों का समूह, फार्म 3. ग्रंथ खंड, जिल्द। इस शब्द का सही एवं शुद् ध रूप है- जुज्ब।

जुजुवी *वि.* (अर.) बहुत थोड़ा, छोटा।

जुज्झ *पुं.* (देश.) युद्ध, लड़ाई, समर।

जुझाऊ *वि.* (देश.) 1. जूझने या युद्धरत रहने वाला 2. युद्ध संबंधी, लड़ाई में काम आने वाला।

जुझाना *स.क्रि.* (देश.) 1. जूझने, युद्ध करने के लिए प्रेरित करना 2. उत्साहित करना।

जुझार *वि.* (देश.) वीर, सूरमा, रणप्रिय, लड़ाका, जुझारू।

जुझावर *वि.* (देश.) 1. जुझाने वाला 2. जूझने वाला, जूझने में श्रेष्ठ, श्रेष्ठ लड़ाका।

जुट *स्त्री.* (देश.) 1. जोड़ा, युग्म 2. गुट, दल 3. अभिन्न मित्र।

जुटक *पुं.* (तत्.) जटा, चोटी, जूड़ा।

जुटना *अ.क्रि.* (देश.) 1. जुड़ना, सटना, चिमटना 2. पहुँचना 3. उपलब्ध होना 4. तल्लीन हो जाना।

जुटाना *स.क्रि.* (देश.) 1. इकट्ठा करना, जोड़ना 2. उपलब्ध कराना, पास पहुँचाना 3. इकट्ठा करना, जमा करना।

जुटाव *पुं.* (देश.) 1. जमाव 2. समागम 3. इकट्ठा होना 4. संलग्नता 5. मेल-मिलाप।

जुटिका *स्त्री.* (तत्.) 1. एक प्रकार का जूड़ा 2. शिखा, चोटी 3. एक प्रकार का कपूर।

जुट्टी *स्त्री.* (देश.) 1. पूला, जूड़ा 2. गट्ठी, गट्ठर, गड्डी प्रयो. एक जुट्टी पुदीना दीजिए।

जुठारना *स.क्रि.* (देश.) 1. पहले-पहल चखना 2. सर्वप्रथम मुख में डालकर श्रीगणेश करना।

जुठारी *क्रि.वि.* (देश.) 1. जूठा करके छोड़ा हुआ 2. पूर्व से प्रचलित, मान्य, जो नवीन न हो।

जुठालना *स.क्रि.* (देश.) 1. भोजन तैयार होने पर सम्मानित व्यक्ति द्वारा श्री गणेश करना 2. सम्मान के रूप में भोजन ग्रहण करना या चखना।

जुठिहारा *वि.* (देश.) जूठा खाने वाला।

जुठैल *वि.* (देश.) जूठा, उच्छिष्ठ।

जुड़ना *अ.क्रि.* (देश.) दो वस्तुओं का जुड़कर, बंधकर या चिपककर एक होना 2. संबद्ध होना, संयुक्त होना।

जुड़वाँ *वि.* (देश.) जुड़ा हुआ, सटा हुआ *पुं.* जोड़ा, एक साथ पैदा हुए दो बच्चे।

जुड़वाना *स.क्रि.* (देश.) दो या दो से अधिक को एकत्र कराना, इकट्ठा कराना 2. ठंडा करना, शांत करना, सुखी करना।

जुड़ाना *स.क्रि.* (देश.) 1. जुड़ने में प्रवृत्त करना, एकत्र करना 2. टूटे को जुड़वाना, ठीक कराना 3. संख्याओं का जोड़ कराना 4. शीतल करना या होना 5. ठंड लग जाना, सर्दी खा जाना 5. संतुष्ट या तृप्त होना 6. शांत तथा सुखी होना।

जुड़ापित्ती *स्त्री.* (देश.) शीत और पित्त से उत्पन्न एक रोग जिसमें शरीर में खुजली उठती है और शरीर पर बड़े-बड़े चकते निकल आते हैं।

जुत *वि.* (देश.) युक्त।

जुतना *अ.क्रि.* (देश.) जुटना, जोता जाना।

जुतवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. जोतने का कार्य कराना 2. घोड़े, बैल आदि को नथवाना 3. दूसरे से हल चलवाना।

जुताई *स्त्री.* (देश.) 1. जोतने की क्रिया 2. जोतने की मजदूरी या उजरत।

जुतिऔवल *स्त्री.* (देश.) परस्पर जूतों से मारपीट करना।

जुतियाना *स.क्रि.* (देश.) 1. जूता मारना, जूते लगाना 2. जूते मार कर दंडित करना, अपमानित करना, जलील करना।

जुदा *वि.* (फा.) अलग, पृथक, भिन्न।

जुदाई *स्त्री.* (फा.) 1. वियोग, विलगाव, बिछोह 2. विरह।

जुद्ध *पुं.* (तद्.) दे. युद्ध।

जुनून *पुं.* (अर.) सनक, पागलपन, धुन।

जुनूब *पुं.* (अर.) दक्षिण।

जुन्हरी *स्त्री.* (तद्.) ज्वार नाम का अन्न, खरीफ की फसल का एक अनाज, ज्वार (जुनेरी)।

जुन्हाई *स्त्री.* (तद्.) चाँदनी, चंद्रिका, चंद्रमा का प्रकाश।

जुन्हैया *स्त्री.* (तद्.) चाँदनी, चंद्रमा का प्रकाश, चंद्रिका।

जुफ्त *पुं.* (फा.) 1. युगम, जोड़ा 2. समसंख्या।

जुबति *स्त्री.* (देश.) दे. युवती।

जुबली *स्त्री.* (अर.) जश्न, जलसा, स्मारक महोत्सव।

जुबान *स्त्री.* (फा.) दे. जबान।

जुबानी *स्त्री.* (फा.) दे. जबान।

जुमला *वि.* (अर.) 1. कुल, सब 2. जोड़ 3. वाक्य।

जुमहूर *पुं.* (अर.) जनता, जनसाधारण।

जुमहूरियत *स्त्री.* (अर.) गणतंत्र, प्रजातंत्र, लोकतंत्र, जनतंत्र।

जुमहूरी *वि.* (अर.) लोक सत्तात्मक, प्रजातांत्रिक।

जुमहूरी सल्तनत *स्त्री.* (अर.) लोकतंत्र, प्रजातंत्र राज्य।

जुमा *पुं.* (अर.) शुक्रवार।

जुमा मसजिद (मस्जिद) *स्त्री.* (अर.) वह मस्जिद जिसमें शुक्रवार दोपहर को सामूहिक नमाज पढ़ी जाती हो।

जुमेरात *स्त्री.* (अर.) गुरुवार, बृहस्पतिवार।

जुम्मा *पुं.* (अर.) दे. जुमा।

जुयांग *पुं.* (देश.) एक प्रकार की जंगली जाति।

जुर *पुं.* (तद्.) दे. ज्वर।

जुरअत *स्त्री.* (अर.) साहस, हिम्मत, मरदानगी, बहादुरी।

जुराब *स्त्री.* (देश.) जुर्राब, मोजा।

जुर्म *पुं.* (अर.) 1. अपराध, दोष, कुसूर 2. आरोप, लांछन।

जुर्माना *पुं.* (फा.) अर्थदंड, धन के रूप में दी जाने वाली सज़ा।

ज़ुर्रत *स्त्री.* (अर.) दे. ज़ुरअत।

ज़ुलफ *स्त्री.* (फा.) दे. ज़ुल्फ।

ज़ुलफी *स्त्री.* (फा.) दे. ज़ुल्फ।

जुलम *पुं.* (अर.) दे. जुल्म।

जुलहा *पुं.* (देश.) दे. जुलाहा।

जुलाई *स्त्री.* (अं.) अंग्रेजी कैलेंडर का सातवाँ महीना।

जुलाब *पुं.* (अर.) रेचन, दस्तावर दवा, विरेचक। प्रयो. 'जुलाब लेना', 'जुलाब लगना'।

जुलाहा *पुं.* (फा.) 1. कपड़ा बुनने वाला, तंतुकार 2. पानी पर तैरने वाला कीड़ा मुहा. जुलाहे का तीर-झूठी बात; जुलाहे की सी दाढ़ी- छोटी या नोकदार दाढ़ी।

ज़ुलुफ़ *स्त्री.* (अर.) ज़ुल्फ।

जुलुम *पुं.* (अर.) जुल्म।

जुलुमी *वि.* (अर.) 1. जुल्म करने वाला, अत्याचारी 2. अत्यधिक मोहित करने वाला।

जुलूस *पुं.* (अर.) 1. उत्सव या समारोह की यात्रा, शोभा यात्रा, चल-समारोह 2. राजा आदि का गद्दी पर बैठना 3. बहुत से लोगों का इकट्ठा होकर किसी उद्देश्य से निकलना।

ज़ुल्फ़ *स्त्री.* (फा.) 1. सिर के लंबे बाल, कुल्ले 2. केशपाश, बालों की लट 3. केश, बाल 4. कनपटी के पास वाले बाल, अलकें या अलक।

जुल्फीन *स्त्री.* (फा.) शृंखला, सांकल, जंजीर।

जुल्म *पुं.* (अर.) 1. अत्याचार, अन्याय 2. दुर्बल या कमजोर को सताना 3. किसी का अधिकार हनन करना 4. बलात्, जबरदस्ती 5. नदी में पानी की बाढ़ प्रयो. जुल्म करना-अत्याचार या अन्याय करना 2. जुल्म पसंद-अत्याचारी प्रवृत्ति वाला, अत्याचारी मुहा. जुल्म टूटना- आफत आ पड़ना;

जुल्म ढाना- अत्याचार करना; जुल्म तोड़ना- अत्याचार करना।

जुल्मी *वि.* (अर.) अत्याचारी, कमजोर को सताने वाला, किसी का हक दबाने या मारने वाला।

जुल्लाब *पुं.* (अर.) जुलाब प्रयो. जुल्लाब लगना- परेशान होना।

जुवती *स्त्री.* (तद्.) युवती।

जुवराज *पुं.* (तद्.) युवराज।

जुष्य *वि.* (तत्.) पूजनीय, पूज्य, सेव्य।

जुस्तजू *स्त्री.* (फा.) खोज, तलाश, गवेषणा।

जुहार *स्त्री.* (फा.) 1. अभिवादन, प्रणाम, सलाम 2. पुकार मुहा. जुहार लगाना- पुकारना।

जुहारना *स.क्रि.* (अर.) 1. प्रणाम करना, सलाम करना 2. बुलाना, पुकारना।

जुही *स्त्री.* (तद्.) एक प्रकार का पौधा जिस पर चमेली से मिलती-जुलती सुंगध वाले सफेद फूल लगते हैं।

जुहू *पुं.* (तत्.) 1. पलाश की लकड़ी का बना हुआ यज्ञपात्र 2. अग्नि की जिह्वा, अग्नि शिखा।

जुहूर *पुं.* (अर.) 1. प्रगट, जाहिर होने की स्थिति 2. नुमाइश 3. उत्पत्ति, पैदाइश, आविर्भाव, अवतार।

जुहूराण *वि.* (तत्.) 1. वक्रता या कुटिलता करने वाला 2. वक्र, कुटिल 3. टेढ़ी चाल चलने वाला।

जुहूवान *पुं.* (तत्.) 1. अग्नि 2. वृक्ष 3. कठोर हृदय वाला व्यक्ति।

जूँ *स्त्री.* (तद्.) बालों में पड़ने वाला एक कीड़ा जो स्वेदज (पसीने से उत्पन्न) होता है।

जूँठ *स्त्री.* (तद्.) जूठा' होने का भाव, जूठ।

जूँठन *स्त्री.* (तद्.) जूठन।

जू *स्त्री.* (तद्.) 1. सरस्वती 2. वातावरण 3. वायु 4. बैल या घोड़े के माथे का टीका।

जूआ *पुं.* (तद्.) जुआ।

जूजू *पुं.* (अनु.) एक कल्पित जीव जिसका प्रयोग बच्चों को डराने के लिए किया जाता है।

जूझ *स्त्री.* (तद्.) युद्ध, लड़ाई-झगड़ा।

जूझना *अ.क्रि.* (देश.) लड़ना, लड़कर वीरगति प्राप्त कर जाना।

जूट *पुं.* (तत्.) 1. जटा, जूड़ा 2. लट 3. शिव की जटाएँ *पुं.* (अं.) पटसन, पटसन से बना कपड़ा।

जूठन *स्त्री.* (देश.) 1. खाकर शेष छोड़ा हुआ पदार्थ 2. किसी का बचा हुआ भोजन 3. वह पदार्थ या वस्तु जिसका व्यवहार एक-दो बार कर लिया गया हो।

जूठा *वि.* (तद्.) वह पदार्थ जिसे किसी ने खाकर या मुँह लगाकर छोड़ दिया हो 2. जूठा अन्न, जूठी पत्तल 3. अपवित्र मुहा. जूठे हाथ से कुत्ता भी न मारना- बहुत कंजूस होना *पुं.* (तद्.) जूठन, उच्छिष्ट भोज्य पदार्थ।

जूड़ा *पुं.* (तद्.) 1. सिर के बालों को सिरे पर एकत्र करके बाँधने से बना हुआ केश विन्यास (गाँठ) 2. महिलाओं द्वारा अपने सिर के ऊपर बाल इकट्ठा करके बाँधने से बनी हुई गाँठ जैसी आकृति 2. चोटी, कलगी 3. बच्चों का एक रोग जिसमें अधिक सर्दी लगने से जोर-जोर से साँस चलती है।

जूड़ी *स्त्री.* (तद्.) एक प्रकार का ज्वर जिसमें रोगी को खूब जोर के ज्वर ताप के साथ सर्दी (ठंड) महसूस होती है जिससे उसके शरीर में कंपन-सा (कंपकंपी) होने लगता है।

जूता *पुं.* (तद्.) चमड़े, कपड़े या रबर आदि के बने हुए पादत्राण (पैरों में पहनने वाली वस्तु) मुहा. जूते उठाना- हीन से हीन सेवा और चापलूसी करना, खुशामद करना, दासता करना, जूता मारने के लिए तैयार हो जाना; जूते चाटना- खुशामद करना, चापलूसी करना; जूता मारना- मुँहतोड़ जवाब दे देना; जूतों में दाल बँटना- परस्पर इतना विरोध होना कि सारी सहयोगशीलता जाती रहे, भारी अनबन होना।

जूताखोर *वि.* (देश.) 1. निर्लज्ज, बेहया 2. जो अपनी निर्लज्जता के कारण सदा तिरस्कृत और अपमानित होता हो 3. सदा मात खाना, मार खाने वाला 4. नीच।

जूति *पुं.* (तत्.) 1. वेग, तेजी 2. उत्तेजना, प्रवृत्ति, तेज रफ़्तार।

जूतिका *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार का कपूर।

जूतिया *पुं.* (देश.) जीव पुत्रिका व्रत।

जूती *स्त्री.* (देश.) स्त्रियों का जूता जो आकार में छोटा और वज़न में अपेक्षाकृत हलका होता है। मुहा. जूतियाँ उठाना- दासत्व करना; जूती की नोक पर मारना- किसी को कुछ न समझना; जूती की नोक से- बला से; जूती चाटना- चापलूसी करना; जूतियाँ चटकाते फिरना- मारा-मारा निरूद्देश्य फिरना 6. जूतियाँ बगल में दबाना- चुपचाप भागना।

जूतीखोर *वि.* (देश.) 1. निर्लज्ज, बेहया 2. नीच 3. जूतों की मार खाने वाला।

जूती छुपाई *स्त्री.* (देश.) 1. विवाह की एक रस्म जिसमें सालियों द्वारा दूल्हे के जूते छिपाने और लौटाने का नेग 'जूती छुपाई नेग' होता है, एक प्रकार का वैवाहिक नेग।

जूती-पैजार *स्त्री.* (देश.) 1. धौल-धप्पड़ 2. मारपीट 3. जूतों से मारपीट 4. कलह, दंगा, लड़ाई।

जूथ *पुं.* (तद्.) झुंड, समूह।

जूथका *स्त्री.* (तद्.) दे. यूथिका।

जूद *क्रि.वि.* (फा.) शीघ्र, जल्दी, झटपट।

जून *पुं.* (तद्.) समय, काल, बेला *पुं.* (अं.) अंग्रेजी कैलेंडर का छठा महीना।

जूना *पुं.* (तद्.) 1. बटकर बनाई गई घास-फूस की रस्सी 2. घास-फूस का लच्छा जो बरतन साफ करने के काम आता है।

जूनियर *वि.* (अं.) कालक्रम से पीछे का, छोटा विलो. सीनियर।

जूनी *स्त्री.* (तद्.) 1. दे. जूना 2. दे. योनि।

जूरिस्ट *पुं.* (अं.) विधि विशेषज्ञ, कचहरी के अनुकूल कानून में पारंगत।

जूरी *स्त्री.* (अं.) पंचों का वह मंडल जो फौजदारी मुकदमों में अपराधियों के बारे में अपनी राय देता है।

जूर्णाख्य *पुं.* (तत्.) कुश, तृण-विशेष।

जूर्णाह्वय *पुं.* (तत्.) देवधान्य।

जूर्णि *स्त्री.* (तत्.) 1. वेग 2. सूर्य 3. ब्रह्मा 4. क्रोध क्रोध 5. स्त्रियों का एक रोग *वि.* (तत्.) 1. वेगवान, तेज़ 2. गला हुआ 3. ताप देने वाला 4. स्तुति करने में कुशल।

जूर्ति *पुं.* (तत्.) 1. ज्वर 2. ताप, गर्मी।

जूलाई *स्त्री.* (अं.) दे. जुलाई।

जूवा *पुं.* (तद्.) दे. जुआ।

जूष *पुं.* (अं.) उबाली या पकाई गई दाल या सब्जी का पानी, फलों या गन्ने का रस, जूस।

जूषण *पुं.* (तत्.) धाय नामक पेड़।

जूसी *स्त्री.* (अं.) रसदार, गाढ़ा रसीला *पुं.* 1. गाढ़ा रसीला रस 2. राब।

जूही *स्त्री.* (तद्.) दे. 'जुही'।

जृंभ *पुं.* (तत्.) 1. जँभाई 2. आलस्य 3. विस्तार।

जृंभक *वि.* (तत्.) 1. जँभाई लेने वाला 3. एक अस्त्र का नाम।

जृंभकास्त्र *पुं.* (तत्.) एक अस्त्र का नाम जो ऋषि विश्वामित्र ने राम को ताड़का-वध के बाद दिया था।

जृंभण *पुं.* (तत्.) 1. जुमहाई लेना 2. अंगों को फैलाना 3. खिलना।

जृंभा *स्त्री.* (तत्.) 1. जँभाई 2. आलस्य।

जृंभिका *स्त्री.* (तत्.) दे. जृंभ।

जृंभित *वि.* (तत्.) 1. जम्हाई लेता हुआ 2. फैला हुआ, फैलाया हुआ 3. खिला हुआ।

जृंभिनी *स्त्री.* (तत्.) एलापर्णी लता।

जृंभी *वि.* (तत्.) 1. जम्हाई लेने वाला 2. विकसित होने वाला।

जेंटिलमैन *पुं.* (अं.) संभ्रांत व्यक्ति, भद्र पुरुष।

जेंताक *पुं.* (तत्.) पसीना निकालकर रोग को बाहर निकालने की क्रिया।

जेंवन *पुं.* (देश.) 1. भोजन 2. खाने की वस्तु 3. खाने की क्रिया।

जेंवनार *पुं.* (देश.) 1. सामाजिक स्तर पर दिया गया भोज 2. शादी-विवाह आदि उत्सवों पर बारात आदि को दिया गया भोज।

जेट *स्त्री.* (देश.) 1. राशि, ढेर 2. एक के ऊपर एक रखी हुई वस्तुओं की गड्डी, थाक।

जेट इंजन *पुं.* (अं.) जेट नोदन के सिद्धांत पर चलने या कार्य करने वाला इंजन।

जेट विमान *पुं.* (अं.+तत्.) ऐसा विमान जो तेजी से हवा फेंकते हुए आगे बढ़ता जाता है।

जेटी *स्त्री.* (अं.) नदी के या समुद्री किनारे बना हुआ चबूतरा जिस पर से माल लादा या उतारा जाता है।

जेठंस *पुं.* (देश.) पैतृक संपत्ति में बड़े भाई का हिस्सा।

जेठ (ज्येष्ठ) *पुं.* (देश.) 1. ज्येष्ठ का तद्भव 2. पति का बड़ा भाई 3. बैसाख और आषाढ़ के बीच के महीने का नाम।

जेठा *वि.* (देश.) 1. बड़ा, ज्येष्ठ, अग्रज 2. सबसे अच्छा।

जेठाई *स्त्री.* (देश.) बड़े होने का भाव, जेठापन।

जेठानी *स्त्री.* (देश.) जेठ की पत्नी, पति की भाभी (बड़े भाई की पत्नी)।

जेठी *स्त्री.* (देश.) जेठ में पकने वाली कपास या कोई अन्य फसल जो किसी अन्य माह में नहीं पकती है।

जेठी मधु *स्त्री.* (तद्.) मुलेठी।

जेठौत *पुं.* (तद्.) 1. जेठ का लड़का 2. पति के बड़े भाई का लड़का (पुत्र)।

जेतक *वि.* (देश.) जितना।

जेतव्य *वि.* (तत्.) जेय, जीतने योग्य, विजय प्राप्त करने योग्य।

जेता *वि.* (देश.) 1. जीतने वाला, विजेता 2. विजयी 3. विष्णु का एक नाम।

जेति *वि.* (तद्.) 1. जितना, जेता।

जेनरल *वि.* (अं.) आम, सामान्य।

जेन्ह *स्त्री.* (तद्.) 1. जुन्हाई, चाँदनी, जुन्हैया, ज्योत्स्ना 2. चंद्रमा।

जेप्लिन *पुं.* (जर्मन) एक प्रकार का बड़ा जहाज़।

जेब *स्त्री.* (अर.) पाकेट, खीसा, कमीज/कुरते/पेंट या अन्य सिले कपड़े में पैसे या कुछ अन्य वस्तुएँ रखने के लिए बना स्थान।

ज़ेब *स्त्री.* (फा.) सौंदर्य, शोभा।

जेबकट *पुं.* (देश.) जेब काटने वाला धन आदि का चोर, पाकिटमार या गिरहकट व्यक्ति, जेबकतरा पुरुष।

जेबकतरा *पुं.* (देश.) गिरहकट, जेबकट।

जेबखर्च *पुं.* (देश.) निजी खर्च, निजी खर्च के लिए मिलने वाली राशि या धन।

जेबरा *पुं.* (अं.) एक जंगली जानवर जिसके शरीर पर धारियाँ होती हैं।

ज़ेबा *वि.* (फा.) 1. सजने वाला 2. शोभाजनक, दिलकश 3. सुंदर मनोज्ञ 4. श्रीमान 5. ललित 6. सूक्ष्म, लतीफ़।

जेबाइश *स्त्री.* (फा.) 1. शोभा 2. सुंदर 3. सुंदरता 3. सजावट शृंगार, सज्जा।

जेबी *वि.* (फा.) जेब में रखने योग्य, बहुत छोटा।

ज़ेबुन्निसा *स्त्री.* (अर.) 1. फारसी की एक अच्छी कवयित्री जो औरंगजेब की पुत्री थी।

जेमन *पुं.* (तत्.) 1. भोजन की वस्तु 2. भोजन 3. खाद्य पदार्थ 4. आहार *अ.क्रि.* भोजन करना।

जेय *वि.* (तत्.) जिसे जीता जा सके, जीतने योग्य।

ज़ेर *वि.* (फा.) 1. नीचे, निम्न 2. निर्बल 3. परास्त, पराजित 4. निस्सहाय, अधीन *स्त्री.* (देश.) वह झिल्ली जिसमें गर्भस्थ शिशु रहता है।

जेरिया *स्त्री.* (देश.) चरवाहे का डंडा, खेती का एक औज़ार।

जेरी *स्त्री.* (देश.) दे. जेरिया।

जेल *पुं.* (अं.) बंदीगृह, कारागार, बंदीशाला, जेलखाना *पुं.* (फा.) 1. जंजाल 2. हैरानी या परेशानी का काम।

जेलखाना *पुं.* (देश.) कारागाह, बंदीगृह, जेल।

जेलर *पुं.* (अं.) जेल का अफसर, जेल का अध्यक्ष, जेल का एक पदाधिकारी।

जेली (जैली) *स्त्री.* (अं.) एक प्रकार की गाढ़ी मीठी चटनी।

जेवनार *स्त्री.* (देश.) भोज, दावत।

जेवर *पुं.* (फा.) 1. गहना, आभूषण 2. शोभा की वस्तु शृंगार।

जेवरात *पुं.* (फा.) गहने (जेवर का बहु.)।

जेहन *पुं.* (अर.) बुद्धि, समझ, धारणा-शक्ति, स्मरण-शक्ति।

जैंता *पुं.* (तत्.) जैत का पेड़।

जै *स्त्री.* (तद्.) जय (जय का तद्भव)।

जैगीषव्य *पुं.* (तत्.) योगशास्त्र के मर्मज्ञ एक ऋषि या मुनि का नाम।

जैजैवंती *स्त्री.* (तत्.) भैरव राग की एक रागिनी जो जो सवेरे गाई जाती है।

जैत *पुं.* (तद्.) जीत, विजय, फतह।

जैतवार *वि.* (तद्.) जीतने वाला, विजयी, विजेता।

जैती *स्त्री.* (तद्.) एक प्रकार की घास जो रबी की फसल में खेतों में अपने आप उग आती है।

जैतू *पुं.* (अर.) जैतून का तेल।

जैतून *पुं.* (अर.) एक सदाबहार पेड़ जिसका फल खाया जाता है, बीजों से तेल निकाला जाता है, जो खाने और विविध रोगों की दवा के काम आता है।

जैत्र *वि.* (तत्.) 1. जयी, विजयी, जयशील, श्रेष्ठ, उत्कृष्ट *पुं.* 1. विजय 2. श्रेष्ठता 3. उत्कृष्टता 4. पारा, पारद।

जैत्री *स्त्री.* (तत्.) जैत का पेड़, जयंती वृक्ष।

जैन *पुं.* (तत्.) 1. भारत का एक धर्म संप्रदाय *वि.* (जिनसे संबंधित) ऋषभदेव से महावीर स्वामी तक 24 तीर्थंकरों का उपासक एक धर्म संप्रदाय 2. उक्त धर्म संप्रदाय का अनुयायी व्यक्ति 'जैन'।

जैनी *वि.* (तद्.) जैन मतावलंबी।

जैन्य *वि.* (तत्.) जैन संबंधी।

जैमंगल *पुं.* (तद्.) 1. एक वृक्ष का नाम जिसकी लकड़ी मज़बूत होती है 2. राजा की सवारी का हाथी 3. संगीत में एक ताल।

जैमाल *स्त्री.* (तद्.) जयमाल या जयमाला।

जैमिनि *पुं.* (तत्.) पूर्व मीमांसा के प्रवर्तक एक ऋषि का नाम।

जैमिनीय *वि.* (तत्.) जैमिनि संबंधी, जैमिनि प्रणीत, जैमिनि के अनुयायी।

जैयद *वि.* (अर.) बहुत, बड़ा, भारी जैसे- जैयद आदमी, जैयद बेवकूफ़।

जैल *पुं.* (अर.) 1. दामन 2. इलाका, हलका 3. पंक्ति जैसे- जैलदार (एक राज्य-कर्मचारी)।

जैव *वि.* (तत्.) 1. जीव संबंधी 2. बृहस्पति संबंधी 3. बृहस्पति के क्षेत्र में धनु और मीन राशि का योग 4. पुष्य नक्षत्र 5. बृहस्पति के पुत्र।

जैवातृक *पुं.* (तत्.) 1. कपूर 2. चंद्रमा 3. औषध 4. कृषक 5. पुत्र *वि.* 1. दीर्घायु 2. दुबला-पतला।

जैविक *वि.* (तत्.) दे. जैव।

जैविकी *स्त्री.* (तत्.) दे. जीव-विज्ञान।

जैसा *वि.* (देश.) 1. जिस प्रकार का, जिस रूप-रंग का, जिस गुण और आकृति का प्रयो. जैसा राजा तैसी प्रजा 2. जितना 3. समान, बराबर।

जैसे *क्रि.वि.* (देश.) जिस प्रकार से, जिस ढंग से। प्रयोग. 1. जैसे-जैसे- जिस क्रम से, जैसे-तैसे- किसी तरह से।

जोंक *स्त्री.* (तद्.) पानी में रहने वाला एक कीड़ा जो जो चपेट में आने वाले जीवों के शरीर से चिपककर उनका खून पीता रहता है 2. दूसरे के श्रम पर पलने वाला, परजीवी।

जोंकी *स्त्री.* (तद्.) 1. पानी के साथ जोंक को पी जाने के कारण गाय-बैल आदि पशुओं के पेट में होने वाली जलन।

जोंग *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का जंगली पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत सुगंधित होती है, अगरु, अगर 2. अगरु की लकड़ी।

जोंगक *पुं.* (तत्.) जोंक, अगरु।

जोंगट *पुं.* (तत्.) दोहद, गर्भिणी की इच्छा।

जोंताला *स्त्री.* (तत्.) देवधान्य।

जोंदरी *पुं.* (देश.) दे. जोंधरी।

जोंधरी *स्त्री.* (देश.) 1. छोटे दानों वाली ज्वार 2. बाजरा।

जोंधैया *स्त्री.* (देश.) चाँदनी, जुन्हाई, जुन्हैया।

जो *सर्व.* (तद्.) संबंधवाचक सर्वनाम।

जोइन *स्त्री.* (तद्.) दे. योनि।

जोइला *पुं.* (देश.) हिजड़ा, जनखा, किन्नर।

जोइसी *पुं.* (देश.) दे. ज्योतिषी।

जोक *पुं.* (देश.) रुझान, चस्का (दक्खिनी)।

जोख *स्त्री.* (देश.) जाँचने का भाव या काम।

जोखना *स.क्रि.* (देश.) जाँचना, विचार करना, तौलना, वज़न करना।

जोखम *स्त्री.* (देश.) दे. जोखिम।

जोखा *पुं.* (देश.) 1. हिसाब, लेखा 2. तौलने का काम करने वाला प्रयो. लेखा-जोखा, हिसाब-किताब।

जोखिम *स्त्री.* (देश.) 1. खतरा, संकट, भय, डर 2. अनिष्ट, मुसीबत मुहा. जोखिम उठाना-हानि या अनिष्ट का खतरा मोल लेना; जोखिम में पड़ना-मुसीबत में पड़ना या जोखिम उठाना।

जोखिमी *वि.* (देश.) 1. प्राणों का भय होना 2. जोखिम युक्त, जोखिम वाला।

जोखुआ *पुं.* (देश.) तौलने वाला आदमी, नाप-जोख करने वाला व्यक्ति।

जोखों *स्त्री.* (देश.) दे. जोखिम।

जोगंधर *पुं.* (तद्.) शत्रु के अस्त्र से बचाव की युक्ति।

जोग *पुं.* (तद्.) 1. योग 2. संयोग, मिलाप *वि.* योग्य उदा. 'जोग कहाँ मुनि लोगन जोग, वहाँ अबला मति है चपला-सी', मतिराम *अव्य.* के लिए, वास्ते।

जोगड़ा *पुं.* (देश.) 1. नकली योगी 2. योगी 3. पाखंडी आदमी उदा. घर का जोगी जोगड़ा, आनगाँव का सिद्ध।

जोगिन *स्त्री.* (तद्.) 1. जोगी की स्त्री 2. विरक्त स्त्री, साध्वी 3. जोगन, जोगनिया, योगिनी 4. रण-पिशाचिनी 5. तपस्विनी 6. देवी, योगमाया, विशेष देवियाँ (शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, स्कंदमाता, कालरात्रि, कूष्मांडी, कत्यायनी, महागौरी), चंडिका।

जोगिनी *स्त्री.* (तद्.) योगिनी, जोगिनी।

जोगिया *वि.* (तद्.) 1. जोगी या योगी संबंधी 2. गेरू के रंग का, गेरूआ।

जोगींद्र *पुं.* (तद्.) 1. योगीराज, योगीश्रेष्ठ 2. शिव, महादेव।

जोगी *पुं.* (तद्.) 1. योगी 2. गेरुए कपड़े पहने हुए भिक्षुक 3. नाथपंथी शैव साधु 4. प्रात:काल गाए जाने वाला एक राग।

जोगीड़ा *पुं.* (देश.) 1. गाने-बजाने वालों का सामान 2. वसंत ऋतु में गाए जाने वाला गाना।

जोगीश्वर *पुं.* (तद्.) दे. योगीश्वर।

जोगेश्वर *पुं.* (तद्.) 1. श्रीकृष्ण 2. शिव 3. योग का अधिकारी ज्ञाता 4. सिद्ध पुरुष, सिद्ध योगी।

जोट *वि.* (देश.) 1. बराबरी का, मेल का, समतुल्य *पुं.* 1. जोड़ का आदमी 2. साथी *स्त्री.* जोड़ी उदा. बैलों की जोट कितनी मनमोहक है।

जोड़ *पुं.* (तद्.) 1. योग जोड़ने की क्रिया 2. योगफल (गणित) 3. संधि स्थान 4. पूरी पोशाक 5. बराबर वाला (व्यक्ति) मुहा. जोड़ बैठना- बराबरी या समतुल्यता होना, अपने हटे हुए स्थान से किसी अवयव का मूल स्थान पर आना; जोड़ बाँधना- कुश्ती के लिए बराबरी के संदर्भ में दो पहलवानों का चुनाव; जोड़ उखड़ना- जोड़ का ढीला पड़ जाना, संधि स्थान में कोई विकार होना, जोड़-तोड़- दाँव-पेच, छल-कपट।

जोड़ *पुं.* (तद्.) बंधन।

जोड़ना *स.क्रि.* (तद्.) 1. टूटी वस्तु के भागों को मिलाकर एक स्वरूप देना 2. क्रम से लगाना 3. इकट्ठा करना, संग्रह करना 4. योगफल निकालना 5. संबंध स्थापित करना।

जोड़वाई *स्त्री.* (देश.) 1. जोड़वाने (जोड़ लगवाने) की क्रिया 2. जोड़वाने की मजदूरी 3. जोड़वाने की मजूदरी का भाव या दर।

जोड़वाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. अन्य व्यक्ति से जोड़ लगवाना 2. दूसरे को जोड़ने में प्रवृत्त करना 3. जोड़ने का काम कराना।

जोड़ा *पुं.* (देश.) 1. दो समान पदार्थ व्यक्ति या प्राणी 2. दोनों पैरों में पहनने के जूते 3. पूरी पोशाक।

जोड़ाई *स्त्री.* (देश.) 1. जोड़ने की क्रिया 2. जोड़ने की मजदूरी।

जोड़ी *स्त्री.* (देश.) दो समान प्राणी, पदार्थ या व्यक्ति युग्म 2. स्त्री-पुरुष का युगल 3. दो बैलों, घोड़ों वाली गाड़ी 5. मजीरा, ताल 6. पूरी पोशाक।

जोत *स्त्री.* (देश.) 1. काश्त 2. जोतने की क्रिया।

जोतना *स.क्रि.* (देश.) घोड़ों, बैलों आदि को गाड़ी खींचने या तांगा आदि खींचने के लिए लगाना या बाँधना 2. हल की जोत से खेती के लिए जमीन को तैयार करना, हल चलाना, जोतने का काम करना।

जोता *पुं.* (देश.) जुआ में बाँधी गई रस्सियाँ 2. करघे से बटी हुई या बनाई गई सूत की चौड़ी डोरियाँ या पट्टियाँ जिनसे दोनों बैलों को जुए में जोता या बाँधा जाता है।

जोताई *स्त्री.* (देश.) 1. जोतने की क्रिया 2. जोतने की मजदूरी 3. जोतने का भाव या दर।

जोताना *स.क्रि.* (देश.) जोतने का कार्य करवाना या कराना।

जोतिमय *वि.* (तद्.) ज्योतिर्मय।

जोतिलिंग *पुं.* (तद्.) ज्येतिर्लिंग।

जोतिष *पुं.* (तद्.) ज्योतिष।

जोतिषी *पुं.* (तद्.) ज्योतिषी।

जोतिस *पुं.* (तद्.) ज्योतिष।

जोती *स्त्री.* (तद्.) 1. ज्योति 2. तराजू की रस्सी 3. घोड़े की लगाम 4. पानी खींचने की रस्सी।

जोत्सना *स्त्री.* (देश.) ज्योत्स्ना।

जोन्हाई *स्त्री.* (देश.) 1. चाँदनी, ज्योत्स्ना 2. चंद्रमा।

जोन्ही *स्त्री.* (देश.) जुन्हाई, जुन्हैया, चाँदनी।

जोफ़ *स्त्री.* (अर.) 1. कमजोरी, निर्बलता, निबलता 2. बुढ़ापा, सुस्ती।

जोबन *पुं.* (तद्.) 1. यौवन, जवानी, युवावस्था 2. स्तन, कुच, छाती 3. सुंदरता, खूबसूरती 4. बहार, रौनक मुहा. जोबन लूटना- किसी युवती नारी के साथ आमोद करना; जोबन उतरना- युवावस्था का ढलना, समाप्त होना; जोबन चढ़ना- युवावस्था का सौंदर्य खिल उठना।

ज़ोम *पुं.* (अर.) 1. उत्साह, उमंग 2. जोश, आवेश 3. अहंकार, अभिमान, घमंड।

ज़ोर (जोर) *पुं.* (फा.) बल, शक्ति, ताकत 2. प्रबलता, तेज़ी 3. वश, अधिकार मुहा. ज़ोर करना- बल प्रयोग करना, कुश्ती का अभ्यास करना; ज़ोर डालना- ताकत लगाना, विवश करना, बल का प्रयोग करना, आग्रह करना; ज़ोर देना- किसी बात को बलपूर्वक कहना, आग्रह करना, हठ करना; ज़ोर मारना- खूब प्रयास करना, खूब कोशिश करना, बल का प्रयोग करना; ज़ोर पकड़ना- तेज होना, प्रबल होना।

ज़ोर आज़माई *स्त्री.* (फा.) बल की जाँच या परीक्षण।

ज़ोरदार *वि.* (फा.) 1. बहुत ताकत या जोर वाला, प्रबल 2. अच्छा कार्यकर्ता 3. कार्य और व्यवहार में विशिष्ट और पटु 4. प्रचंड शक्तिशाली 5. प्रभावी 6. महत्वपूर्ण, जोशीला।

ज़ोर-शोर *पुं.* (फा.) 1. अत्यधिक प्रचंडता 2. पूर्ण तत्परता, पूर्ण प्रबलता 3. अधिक जोश, उत्साह 4. हौसला।

जोरा-जोरी *स्त्री.* (फा.) 1. जबरदस्ती 2. अत्याचार 3. बलपूर्वक 4. बलपूर्वक छीनने का प्रयास।

जोरावर *वि.* (फा.) ताकतवर, बलवान।

जोरू *स्त्री.* (देश.) स्त्री, पत्नी, भार्या, गृहिणी, घरवाली मुहा. जोरू का गुलाम- स्त्रैण, पत्नी के वशीभूत; जोरू जाँता- गृहस्थी, घर परिवार।

जोलाहा *पुं.* (देश.) दे. जुलाहा।

जोश *पुं.* (फा.) 1. उफान, उबाल, आवेग, जोर 2. उमंग, उत्साह, उत्तेजना, तीव्रता, तेजी, क्रोध, गुस्सा मुहा. जोश खाना- उबलना, खौलना, आवेश में आना; जोश देना- पानी के साथ उबालना; जोश मारना- उबलना, मथना; जोश में आना- उत्तेजित होना।

जोशन *पुं.* (फा.) बाजूबंद, एक प्रकार का गहना 2. कवच, जिरह बख्तर।

जोशाँदा *पुं.* (फा.) जोश, उत्साह, उमंग, आवेग।

जोशिश *स्त्री.* (फा.) काढ़ा, क्वाथ।

जोशी *पुं.* (देश.) जोषी, गुजराती, महाराष्ट्री ब्राह्मणों की एक जाति।

जोशीला *वि.* (फा.) जोश से भरा हुआ, आवेगपूर्ण।

जोष *पुं.* (तत्.) 1. प्रीति, प्रेम 2. सुख, सेवा 3. आवेशपूर्ण।

जोषण *पुं.* (तत्.) प्रेम, प्रीति, सेवा।

जोषा *स्त्री.* (तत्.) स्त्री, नारी, महिला।

जोषिका *स्त्री.* (तत्.) 1. कलियों का गुच्छा 2. नारी, स्त्री, औरत, महिला।

जोषिता *स्त्री.* (तत्.) योषिता, नारी, औरत, स्त्री।

जोहड़ *स्त्री.* (देश.) जोहड़, पोखर, छोटा तालाब, बावली।

जोहना *स.क्रि.* (देश.) देखना, निहारना, ताकना, अवलोकन करना 2. खोजना, ढूँढ़ना, पता लगाना 3. राह देखना, प्रतीक्षा करना।

जोहर *पुं.* (देश.) अभिवादन, प्रणाम, नमस्कार।

जौंरा-भौंरा *पुं.* (देश.) किले या महल का तहखाना जिसमें खजाना रखा जाता था।

जौ *पुं.* (तद्.) 1. एक प्रकार का अनाज मुहा. जौ-जौ बढ़ना- धीरे-धीरे बढ़ना, तिल-तिल बढ़ना; जौ-भर- जौ के दाने के बराबर 2. एक पौधा जिसकी लचीली टहनियों या तनों से टोकरे, झाड़ू आदि बनाए जाते हैं।

जौक *पुं.* (तत्.) 1. सेना 2. कतार 3. झुंड, गिरोह।

जौजा *स्त्री.* (अर.) स्त्री, पत्नी, भार्या।

जौजीयत *स्त्री.* (अर.) पत्नीत्व।

जौधिक *पुं.* (तद्.) तलवारों के 32 हाथों में से एक।

जौबन *पुं.* (तद्.) यौवन।

जौहर *पुं.* (अर.) 1. रत्न, बहुमूल्य पत्थर 2. राजस्थान की एक प्रथा जिसके अनुसार राजपूत स्त्रियाँ आक्रामक मुस्लमान शत्रुओं की विजय

निश्चित होने पर अपनी मर्यादा रक्षण हेतु जलती चिता में कूदकर प्राण-त्याग देती थीं ।

जौहरी *पुं.* (फा.) 1. बहुमूल्य नगों, पत्थरों, हीरे-जवाहरात के विक्रेता व्यक्ति 2. रत्न-पारखी व्यक्ति, परखैया 3. गुणग्राहक 4. कद्रदान।

ज्ञ ज और ञ के योग से बना हुआ एक अक्षर, जिसका उच्चारण 'ग्य' होता है *वि.* (तत्.) 1. ज्ञाता, जानकार, विज्ञ, बुद्धिमान, विद्वान 2. ज्ञानस्वरूप 3. बुध *पुं.* विज्ञ व्यक्ति, विद्वान मानव, बुद्धिमान व्यक्ति, ब्रह्म जैसे- शास्त्रज्ञ, संस्कृतज्ञ।

ज्ञप्त *वि.* (तत्.) जताया हुआ, ज्ञापित, सूचित।

ज्ञप्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. जानकारी, ज्ञान 2. बुद्धि 3. तुष्टि 4. स्तुति 5. प्रकटीकरण 6. कोई बात जतलाने या जानकारी प्राप्त करने की क्रिया या भाव।

ज्ञात *वि.* (तत्.) जो जाना हुआ हो, विदित, अवगत, मालूम।

ज्ञातजौवना *वि.* (तद्.) दे. ज्ञातयौवना।

ज्ञातनंदन *पुं.* (तत्.) जैनियों के एक तीर्थंकर, महावीर स्वामी का एक नाम।

ज्ञातयौवना *स्त्री.* (तत्.) वह नायिका जिसे अपने युवती होने का आभास या ज्ञान होने लगा हो, नवोढ़ा, मुग्धा नायिका।

ज्ञातव्य *वि.* (तत्.) 1. जो जानने के योग्य हो, जानने योग्य 2. ज्ञेय 3. बोधनीय 4. वेद्य।

ज्ञाता *वि.* (तत्.) जानकार, जानकारी रखने वाला *पुं.* जानकार व्यक्ति, ज्ञानी, बुद्धिमान व्यक्ति।

ज्ञाति *पुं.* (तत्.) 1. ऐसे संबंधी जिनके पुराने पूर्वज एक ही हों 2. एक गोत्र या वंश से संबंधित, भाई-बंधु, गोती भाई।

ज्ञातृत्व *पुं.* (तत्.) जानकारी, अभिज्ञता, ज्ञाता होने का भाव।

ज्ञातेय *पुं.* (तत्.) एक कुल या वंश का होना।

ज्ञान *पुं.* (तत्.) बोध, जानकारी, प्रतीति मुहा. ज्ञान बघारना (छाँटना)- अपनी विद्या, जानकारी पर घमंड करते हुए बढ़-बढ़कर बातें करना। जैसे- यथार्थ ज्ञान, तत्व ज्ञान (आत्म-ज्ञान)।

ज्ञान कांड *पुं.* (तत्.) 1. चारों वेदों में बिखरी हुई ईश्वर, जीव, आत्म और अनात्म तत्व, सृष्टि, ब्रह्म, विश्वविधान, प्रलय, इहलोक और परलोक तथा जन्म-मृत्यु आदि तात्विक बातों की गंभीर विवेचनाओं विषयक महर्षि बादरायण व्यास द्वारा किया हुआ संग्रह, उत्तर मीमांसा 2. कर्मकांड अतिरिक्ति वैदिक विवेचन।

ज्ञानगम्य *वि.* (तत्.) जो ज्ञान की पहुँच के योग्य हो, ज्ञानगोचर, ज्ञान से जानने योग्य पुं. परमात्मा, ब्रह्म।

ज्ञानगर्भ *वि.* (तत्.) ज्ञान से परिपूर्ण, ज्ञान से भरा हुआ।

ज्ञानगोचर *वि.* (तत्.) ज्ञानगम्य, ज्ञानेंद्रियों से जानने योग्य।

ज्ञानघन *वि.* (तत्.) ज्ञानी, तत्वज्ञ, तत्वविद।

ज्ञान चक्षु *पुं.* (तत्.) 1. अंतर्दृष्टि, ज्ञाननेत्र 2. ज्ञान की आँखों से देखने वाला।

ज्ञानत *क्रि.वि* (तद्.) 1. जानबूझकर 2. जानकारी में 3. समझ-बूझ कर।

ज्ञानतपा *वि.* (तद्.) ज्ञान के लिए तप करने वाला।

ज्ञानदा *स्त्री.* (तत्.) सरस्वती, ज्ञानदायिनी।

ज्ञानदाता *पुं.* (तत्.) ज्ञान देने वाला मनुष्य, देवता, गुरु, गणेश, ईश्वर।

ज्ञानदात्री *वि.* (तत्.) ज्ञान देने वाली *स्त्री.* सरस्वती, ज्ञानदायिनी।

ज्ञानधाम *वि.* (तत्.) परम ज्ञानी, ज्ञान का भंडार, अमित ज्ञान वाला *पुं.* अमित या परम ज्ञानी व्यक्ति।

ज्ञाननिष्ठ *वि.* (तत्.) 1. तत्वज्ञानी, ज्ञानी, परमज्ञानी 2. ज्ञान-प्राप्ति में ही जिसकी निष्ठा हो।

ज्ञान पिपासा *स्त्री.* (तत्.) ज्ञान प्राप्त करने की प्रबल इच्छा, ज्ञान की प्यास।

ज्ञान पिपासु *वि.* (तत्.) ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखने वाला, जिज्ञासु।

ज्ञानमद *पुं.* (तत्.) ज्ञानी होने का अहंकार, ज्ञान का घमंड, स्वयं को ज्ञानी मानकर मन में उत्पन्न अभिमान।

ज्ञानमय *वि.* (तत्.) 1. ज्ञान से भरा हुआ 2. ज्ञान रूप *पुं.* 1. परमात्मा, ब्रह्म 2. परम ज्ञान से परिपूर्ण व्यक्ति।

ज्ञानमुद्रा *स्त्री.* (तत्.) तंत्रानुसार पूजा की एक मुद्रा। मुद्रा।

ज्ञानमूढ *वि.* (तत्.) 1. केवल पुस्तकीय ज्ञान वाला 2. पठित मूर्ख 3. ज्ञानी होने पर भी अज्ञानीवत आचरण करने वाला *पुं.* ज्ञानी होने पर भी दुराचारी व्यक्ति।

ज्ञानयज्ञ *पुं.* (तत्.) 1. ज्ञान द्वारा ब्रह्मरूपी अग्नि में आत्मा-रूपी आहुति देने की साधना 2. ब्रह्मज्ञान। उत्तम ज्ञान के आदान-प्रदान का कार्य 3. अभेद ज्ञान।

ज्ञान योग *पुं.* (तत्.) ज्ञान के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति।

ज्ञानलक्षण *पुं.* (तत्.) न्याय में अलौकिक प्रत्यक्ष का एक भेद।

ज्ञानवान *वि.* (तत्.) 1. ज्ञानी 2. जिसने ज्ञान प्राप्त कर लिया है 3. समझदार, तत्वज्ञानी, विद्वान (स्त्री. ज्ञानवती) ।

ज्ञानवापी *स्त्री.* (तत्.) काशी स्थित एक सुप्रसिद्ध तीर्थस्थली।

ज्ञान-विज्ञान *पुं.* (तत्.) 1. विविध प्रकार का ज्ञान 2. सुव्यवस्थित रूप वाला विभिन्न प्रकार का ज्ञान।

ज्ञानवृद्ध *वि.* (तत्.) 1. ज्ञान प्राप्ति में लीन होकर श्रेष्ठ बने हैं जो 2. परम ज्ञानी, ज्ञानी श्रेष्ठ 3. अधिक जानकारी वाला, महाज्ञानी।

ज्ञान-शास्त्र *पुं.* (तत्.) भविष्य कथन का विज्ञान, भाग्यलेख को बताने की विद्या।

ज्ञानांजन *पुं.* (तत्.) 1. तत्व ज्ञान, तत्वदृष्टि, ब्रह्म भाव देखने की शक्ति 2. ज्ञान रूपी सुरमा।

ज्ञानाकार *पुं.* (तत्.) 1. बुद्ध 2. महान ज्ञानी 3. ज्ञान का भंडार।

ज्ञानापोह *पुं.* (तत्.) विस्मरण, भूल जाना।

ज्ञानावरण *पुं.* (तत्.) ज्ञान का परदा, ज्ञान का बाधक।

ज्ञानाश्रयी शाखा *स्त्री.* (तत्.) ज्ञान द्वारा भगवान को प्राप्त करने की भक्ति परंपरा।

ज्ञानासन *पुं.* (तत्.) योग का एक आसन जिसमें दाहिनी जंघा पर बाएँ पैर के तलवे को रखा जाता है।

ज्ञानी *पुं.* (तत्.) ज्ञानवान, जानकार, आत्मज्ञानी, तत्वज्ञ, ब्रह्मज्ञानी।

ज्ञानेंद्रिय *स्त्री.* (तत्.) 1. मन को बाहरी पदार्थों का ज्ञान कराने वाली पाँच इंद्रियाँ 2. ज्ञान की साधन इंद्रियाँ कान, त्वचा, आँखे, जिह्वा तथा नासिका। इसके विषय हैं शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध।

ज्ञानोदय *पुं.* (तत्.) ज्ञान का उदय, ज्ञानोन्मेष।

ज्ञाप *पुं.* (तत्.) दे. ज्ञापन।

ज्ञापक *वि.* (तत्.) जताने वाला, सूचक, व्यंजक।

ज्ञापन *पुं.* (तत्.) जताने या बताने का कार्य।

ज्ञापयिता *वि.* (तत्.) सूचक, ज्ञापक, बताने वाला।

ज्ञापित *वि.* (तत्.) 1. जाना हुआ 2. प्रशंसित, 3. तेज किया हुआ 4. सूचित, बताया हुआ, प्रकाशित, जिसका ज्ञान या जानकारी दे दी गई हो

ज्ञाप्य *पुं.* (तत्.) सूचित करने योग्य, ज्ञान कराने योग्य, ज्ञापित करने के योग्य।

ज्ञीप्सा *स्त्री.* (तत्.) जानने की इच्छा।

ज्ञेय *वि.* (तत्.) जो जाना जाने योग्य हो, जानने योग्य।

ज्या *स्त्री.* (तत्.) 1. धनुष की डोरी (प्रत्यंचा) 2. वह रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हो 3. पृथ्वी 4. माता 5. किसी वृत्त का व्यास, एक त्रिकोणमितीय फलन जो एक समकोण त्रिभुज में लंब और कर्ण का अनुमान होता है।

ज्याघोष *पुं.* (तत्.) धनुष की टंकार।

ज्यादती *स्त्री.* (फा.) 1. बहुतायत, अतिरेक, अधिकता 2. जबरदस्ती 3. अत्याचार, जुल्म।

ज्यानि *स्त्री.* (तत्.) 1. जरा, वृद्धावस्था, बुढ़ापा 2. त्याग, परित्याग 3. अत्याचार 4. उत्पीड़न 5. हानि।

ज्यूँ *अव्य.* (देश.) दे. ज्यों।

ज्यूरी *स्त्री.* (अं.) दे. जूरी।

ज्येष्ठ *वि.* (तत्.) 1. बड़ा, जेठ, जेठा 2. बूढ़ा, बड़ा उदा. ज्येष्ठ पुत्र, ज्येष्ठ भ्राता विलो. कनिष्ठ *पुं.* 1. जेठ का महीना 2. वह वर्ष जिसमें बृहस्पति का उदय ज्येष्ठा नक्षत्र में होता है।

ज्येष्ठता *स्त्री.* (तत्.) 1. श्रेष्ठता 2. ज्येष्ठ होने का भाव, बड़ाई।

ज्येष्ठांबु *पुं.* (तत्.) 1. माँड़ 2. चावल का धोवन।

ज्येष्ठांश *पुं.* (तत्.) 1. बड़े भाई का हिस्सा 2. पैतृक संपत्ति में बड़े भाई को मिलने वाला अधिक अंश।

ज्येष्ठा *स्त्री.* (तत्.) 1. एक नक्षत्र 2. वह स्त्री जो दूसरी औरतों (पत्नियों) की अपेक्षा पति को बहुत प्रिय हो 3. छिपकली 4. मध्यम उँगली 5. गंगा 6. लक्ष्मी।

ज्येष्ठाधिकार *पुं.* (तत्.) विरासत में बड़े बेटे का अधिकार।

ज्येष्ठाश्रम *पुं.* (तत्.) गृहस्थ आश्रम, उत्तमाश्रम, आश्रम व्यवस्था में दूसरा आश्रम जो अन्य आश्रमों का आधार है (गृहस्थाश्रम)।

ज्येष्ठाश्रयी *पुं.* (तत्.) गृही, गृहस्थ।

ज्यों *क्रि.वि.* (तद्.) जैसे, जिस प्रकार, जिस ढंग से मुहा. ज्यों-त्यों- किसी न किसी प्रकार से, किसी ढंग से; ज्यों का त्यों- जैसे का तैसा, उसी तरह। प्रयो. ज्यों ही, जैसे ही।

ज्योति:शास्त्र *पुं.* (तत्.) ज्योतिर्विद्या, ज्योतिष।

ज्योति *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रकाश, रोशनी 2. दीपक की की लौ 3. सूर्य 4. नक्षत्र 5. अग्नि 6. दृष्टि 7. आत्मा 8. ब्रह्म 9. विष्णु 10. आँखों की पुतली। मुहा. ज्योति जगाना, प्रकाश फैलाना 2. देवता के सामने दीप जलाया।

ज्योतित *वि.* (तत्.) प्रकाशित, उद्भासित।

ज्योतिपुंज *वि.* (तत्.) 1. दिव्य प्रकाश वाला 2. विशिष्ट प्रभायुक्त।

ज्योतिमान *वि.* (तत्.) दे. ज्योतिष्मान।

ज्योतिर *पुं.* (तत्.) दे. ज्योति।

ज्योतिर्मय *वि.* (तत्.) 1. जगमगाता हुआ 2. प्रकाशित 3. ज्योति या प्रकाश से परिपूर्ण *पुं.* 1. ब्रह्म 2. भगवान, परमेश्वर, परमसत्ता।

ज्योतिर्लिंग *पुं.* (तत्.) महादेव, शिव, भारत में बारह स्थानों पर स्थापित शिवलिंगों में से प्रत्येक जैसे- सोमनाथ, महाकाल (उज्जैन), विश्वेश्वर (वाराणसी), मल्लिकार्जुन, उँकारेश्वर, केदारनाथ, भीमशंकर, त्र्यंबकेश्वर वैद्यनाथ, नागेश्वर, रामेश्वर, घृष्णेश्वर।

ज्योतिर्लोकि *पुं.* (तत्.) 1. ध्रुवलोक 2. ध्रुवलोक के अधिपति 3. विष्णु, परमेश्वर।

ज्योतिर्विद्या *स्त्री.* (तत्.) ज्योतिषशास्त्र।

ज्योतिश्चक्र *पुं.* (तत्.) 1. नक्षत्र-मंडल 2. राशि-चक्र चक्र 3. आकाश-मंडल।

ज्योतिष *पुं.* (तत्.) वह विद्या जिसमें अंतरिक्ष में स्थित ग्रहों, नक्षत्रों की गति, स्थिति आदि पर विचार किया जाता है। (खगोल-विद्या)।

ज्योतिषिक *पुं.* (तत्.) ज्योतिषी, ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता, ज्योतिर्विद, ज्योतिषशास्त्र का अध्येता।

ज्योतिषिका *स्त्री.* (तत्.) मालकंगनी।

ज्योतिषी *पुं.* (तद्.) ज्योतिषशास्त्र का जानने वाला, ज्योतिर्विद, दैवज्ञ।

ज्योतिष्क *पुं.* (तत्.) ग्रह-तारा, नक्षत्र आदि का समूह।

ज्योतिष्टोम *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का वैदिक यज्ञ जिसमें सोलह ऋत्विक होते हैं।

ज्योतिष्पथ *पुं.* (तत्.) आकाश।

ज्योतिष्मती *स्त्री.* (तत्.) 1. सत्व गुण प्रधान मन की शांत अवस्था 2. रात्रि 3. एक प्रकार का वैदिक छंद 4. एक नदी का नाम।

ज्योतिष्मान *पुं.* (तत्.) ज्योतिर्मय, प्रकाशवान।

ज्योतिस् *स्त्री.* (तद्.) 1. ज्योति, प्रकाश 2. ब्रह्म ज्योति 3. बिजली, विद्युत 4. नक्षत्र 5. ज्योतिष 6. दिव्य जगत।

ज्योतिस्नात *वि.* (तत्.) प्रकाशपूर्ण, पूर्ण प्रकाशमान प्रयो. ज्योतिस्नात जीवन पथ।

ज्योतिहीन *वि.* (तत्.) प्रकाशरहित, प्रभाहीन।

ज्योत्स्ना *स्त्री.* (तत्.) 1. चाँदनी, चंद्रमा का प्रकाश प्रकाश 2. प्रकाश, उजाला 3. सौंफ।

ज्योत्स्नाप्रिय *वि.* (तत्.) चकोर (चकोर चंद्रमा के प्रकाश को टकटकी लगाकर देखता है)।

ज्योत्स्ना स्नात *वि.* (तत्.) 1. चाँदनी में नहाया हुआ 2. पूर्ण प्रकाशमय 3. चंद्रिका की आभा से युक्त।

ज्योत्स्नी *स्त्री.* (तत्.) दे. ज्योत्स्निका।

ज्योत्स्नेश *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

ज्योत्स्निका *स्त्री.* (तत्.) 1. चाँदनी रात 2. सफेद फूल वाली तोरई।

ज्योनार *पुं.* (देश.) 1. दावत 2. भोज 3. पका हुआ भोजन मुहा. ज्योनार बैठना- अतिथियों का भोजन करने बैठना; ज्योनार लगाना- अतिथियों के सामने व्यंजनों को क्रम से लगाना।

ज्वर *पुं.* (तत्.) 1. बुखार 2. स्वाभाविक ताप से-अधिक शारीरिक ताप जो अस्वस्थता प्रकट करे 3. मानसिक क्लेश, दुख मुहा. ज्वर उतरना- बुखार दूर होना, ज्वर का जाते रहना; ज्वर चढ़ना- ज्वर आना, ज्वर का प्रकोप होना।

ज्वरांकुश *पुं.* (तत्.) 1. कुश की तरह की एक घास 2. ज्वर की एक औषध।

ज्वरांगी *स्त्री.* (तत्.) भद्रदंती नाम का पौधा।

ज्वरांतक *पुं.* (तत्.) चिरायता, अमलतास।

ज्वरा *पुं.* (तत्.) मृत्यु, मौत।

ज्वराज *पुं.* (तत्.) ज्वर की एक औषध।

ज्वरातिसम् *पुं.* (तत्.) ज्वर के साथ अतिसार रोग।

ज्वरापात *स्त्री.* (तत्.) बेलपत्री।

ज्वरित *वि.* (तत्.) ज्वरयुक्त।

ज्वलंत *वि.* (तत्.) 1. जलता हुआ 2. प्रकाशमान 3. स्पष्ट प्रयो. ज्वलंत प्रमाण, स्पष्ट प्रमाण।

ज्वल *पुं.* (तत्.) 1. ज्वाला 2. जलता हुआ, दीप्ति, प्रकाश।

ज्वलका *स्त्री.* (तत्.) अग्निशिखा, आग की लपट।

ज्वलन *पुं.* (तत्.) 1. जलने की क्रिया, जलने का भाव 2. जलन 3. दाह 4. ज्वाला, लपट 5. चित्रक वृक्ष *वि.* 1. प्रकाश-कारक 2. प्रकाश-युक्त 3. प्रकाशित करने वाला।

ज्वलनांक *पुं.* (तत्.) 1. जलाने में सक्षम ताप की मात्रा 2. वह अवस्था जिस पर ताप इतना बढ़ जाता है कि जलने की स्थिति आ जाए या पैदा हो जाए।

ज्वलनाश्म *पुं.* (तत्.) सूर्यकांतमणि।

ज्वलित *वि.* (तत्.) दग्ध, जला हुआ, जलता हुआ, दीप्त।

ज्वलिनी *स्त्री.* (तत्.) मरोड़ फली, मूर्वा लता।

ज्वल्य *वि.* (तत्.) जल उठने योग्य।

ज्वान *वि.* (देश.) दे. जवान।

ज्वार *स्त्री.* (तद्.) एक प्रकार का मोटा अनाज जो खरीफ की फसल में पैदा होता है।

ज्वार-भाटा *पुं.* (देश.) 1. समुद्र के जल का-चढ़ाव-उतार 2. लहरों का घटना और बढ़ना।

ज्वारी *पुं.* (देश.) दे. जुआरी।

ज्वाल *पुं.* (तत्.) 1. अग्निशिखा, आग की लपट 2. मशाल।

ज्वालक *पुं.* (तत्.) जलाने वाला।

ज्वाला *स्त्री.* (तत्.) 1. लपट, अग्निशिखा 2. आग 3. ताप, जलन 4. विष की गरमी मुहा. ज्वाला फूँकना- गरमी पैदा करना।

ज्वालादेवी *स्त्री.* (तत्.) शारदा पीठ स्थित एक देवी।

ज्वालामुखी *स्त्री.* (तत्.) 1. अग्नि, लावा 2. लावा निकलने का स्थान।

ज्वालामुखी पर्वत *पुं.* (तत्.) वह पर्वत जिसकी चोटी के पास स्थित गर्त से कोयला, राख, जलता हुआ तरल पदार्थ एवं गैस आदि (लावा) निकलता है।

ज्वाली *वि.* (तत्.) ज्वालामय, ज्वालायुक्त *पुं.* शिव।

झ

हिंदी वर्णमाला का नौवाँ व्यंजन, तालव्य घोष महाप्राण व्यंजन।

झंकना *अ.क्रि.* (देश.) दे. झींखना।

झंकार *स्त्री.* (तत्.) झनझनाहट, झनझन प्रयो. पाजेब की झंकार, झाँझ की झंकार, झिल्लियों की झंकार।

झंकारना *स.क्रि.* (अनु.) झनझन शब्द पैदा करना या होना प्रयो. झाँझ का प्रयोग होने से झंकार पैदा होना या करना, झाँझ बजाने से उत्पन्न ध्वनि।

झंकारिणी *स्त्री.* (तत्.) गंगा, भागीरथी।

झंकारित *वि.* (तत्.) झंकृत, झंकार होती या करती हुई।

झंकारी *वि.* (तद्.) झंकार करने वाला, झनझन करने वाला।

झंकृत *वि.* (तत्.) 1. झंकार करता हुआ, झंकार-युक्त 2. धीरे या विशेष रूप से ध्वनि करता हुआ, ध्वनित।

झंकृता *स्त्री.* (तत्.) तारा देवी।

झंकृति *स्त्री.* (तत्.) झंकार, ध्वनि।

झंखाड़ *पुं.* (देश.) 1. घनी और काँटेदार झाड़ी या पौधा अथवा घने कांटेदार पौधों का झुंड या समूह 2. व्यर्थ का कूड़ा-करकट, रद्दी चीजों का ढेर। जैसे- झाड़-झंखाड़।

झंगुला *पुं.* (देश.) ढीला कुरता या पहनने का वस्त्र।

झंगुलिया *स्त्री.* (देश.) ढीला कुरता, अंगरखा।

झंझट *पुं.* (अनु.) 1. बेकार का झगड़ा, बखेड़ा 2. अनेक कठिनाइयों या प्रयत्नों से संपन्न होने वाला 3. टंटा 4. परेशानी, कठिनाई।

झंझटिया *वि.* (देश.) झंझट वाला कार्य, झंझट डालने वाला व्यक्ति, बाधा डालने वाला व्यक्ति या कार्य।

झंझटी *पुं.* (देश.) झंझट डालने या करने वाला व्यक्ति 2. झंझट से भरा हुआ कार्य 2. *वि.* झंझट से भरा हुआ, झंझट डालने या पैदा करने वाला।

झंझन *पुं.* (अनु.) झंकार, झुनझुन की मधुर ध्वनि।

झंझरा *वि.* (देश.) जालीदार *स्त्री.* जालीदार खिड़की, जाली, चलनी।

झंझा *पुं.* (तत्.) तेज आँधी जिसके साथ भारी वर्षा भी हो (आँधी-पानी), तेज-अंधड़, 'झंझा-झकोर गर्जन था -कामायनी।

झंझानिल *पुं.* (तत्.) आँधी, प्रचंड हवा, झंझावात।

झंझार *पुं.* (तद्.) आग की लपट, आग या ज्वाला की ऊँची लपट।

झंझावात *पुं.* (तत्.) प्रचंड वायु, आँधी, ऐसी तेज हवा जिसके साथ-साथ वर्षा भी हो रही हो, झंझानिल।

झंझी *स्त्री.* (देश.) फूटी कौड़ी, कानी कौड़ी *वि.* जर्जर फूटी।

झंझोटी *स्त्री.* (देश.) एक राग विशेष।

झंझोरना *स.क्रि.* (तद्.) दे. 'झंझोड़ना'।

झंड *पुं.* (देश.) जट, मुंडन से पहले के बाल, 'झंडूला'।

झंडा *पुं.* (देश.) ध्वजा, पताका, निशान, ध्वज मुहा. झंडा उठाना- आंदोलन प्रारंभ करना; झंडे तले आना- अनुयायी हो जाना; झंडे उखाड़ देना- प्रभाव समाप्त करना; झंडे तले की दोस्ती- राह चलते की जान-पहचान; झंडे पर चढ़ना- बदनाम होना; झंडे पर चढ़ाना- बदनाम करना।

झंडाल *स्त्री.* (देश.) 1. आग की ऊँची लपट 2. ज्वार-बाजरे के पौधों के ऊपर का नरफूल 3. जीरा।

झंडी *स्त्री.* (देश.) छोटा झंडा।

झंडीदार *वि.* (देश.) 1. झंडी वाला 2. ध्वजा लेकर चलने वाला 3. जिसमें झंडी लगी हो।

झंड़ूला *पुं.* (देश.) 1. मुंडन संस्कार से पहले के छोटे बच्चे के बाल 2. घनी पत्तियों वाला वृक्ष, सघन वृक्ष *वि.* गर्भ के बालों वाला।

झंप *पुं.* (तत्.) उछाल, फलांग, कुदान, कूद।

झंपना *अ.क्रि.* (तद्.) छिपाने की क्रिया, ढँकना, आच्छादित करना।

झंपना *स.क्रि.* (देश.) 1. झेंपना 2. लज्जित होना 2. पकड़कर दबा लेना, ढाँक लेना।

झंपाक *पुं.* (तत्.) वानर, कपि, बंदर।

झंपान *पुं.* (तद्.) पहाड़ों पर सवारी के काम आने वाली एक प्रकार की खटोली।

झंपारु *पुं.* (तत्.) बंदर, वानर, कपि।

झंपित *वि.* (तद्.) छिपा हुआ, ढंका हुआ।

झंपी *वि.* (तद्.) कपि, बंदर।

झंबकार *पुं.* (देश.) काला, श्याम वर्ण।

झंबाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. कुम्हलाना, मुरझाना 2. कुछ काला पड़ना 3. झाँबे से रगड़ना।

झँखना *अ.क्रि.* (देश.) झीखना, खीजना, बहुत अधिक दुखी होना।

झँझनाना *अ.क्रि.* (अनु.) झंकारना, झुनझुन की ध्वनि करना।

झँझर *पुं.* (तत्.) जल रखने के लिए मिट्टी का एक छोटा बर्तन, सुराही।

झँपकी *स्त्री.* (देश.) दे. झपकी।

झँपरिया *स्त्री.* (देश.) 1. गिलाफ (तकिए के ऊपर की खोली) 2. पालकी को ढकने की खोली।

झँबराना *अ.क्रि.* (देश.) कुम्हलाना, मुरझाना, कुछ काला पड़ जाना।

झँसना *स.क्रि.* (अनु.) 1. रगड़ना 2. सिर में धीरे-धीरे तेल मलना।

'झ' *पुं.* (तत्.) 1. झंझावात, वर्षा के साथ तेज आँधी 2. बृहस्पति 3. दैत्यराज।

झई *स्त्री.* (देश.) झाँई।

झउआ *पुं.* (देश.) 1. खाँचा, झाबा, मिट्टी या कोई अन्य पदार्थ ढोने का टोकरा 2. रेतीले मैदानों में पैदा होने वाला मोरपंखी जाति का घना पौधा।

झक *स्त्री.* (अनु.) धुन, सनक, लहर, खब्त मुहा. झक सवार होना- किसी बात की धुन या जिद सवार हो जाना।

झकखना *अ.क्रि.* (अनु.) झींखना।

झक-झक *स्त्री.* (अनु.) व्यर्थ का झगड़ा, वाद-विवाद, किचकिच।

झकझका *वि.* (अनु.) चमकीला, चमकदार।

झकझोर *वि.* (देश) तेज, झोंकेदार।

झकझोरना *स.क्रि.* (देश.) 1. झटका देकर हिलाना 2. झोंका देना, जोर से हिलाना।

झकझोरा *पुं.* (देश.) 1. झटका 2. झोंका।

झकझोलना *स.क्रि.* (देश.) दे. झकझोरना।

झकड़ *पुं.* (देश.) झक्कड, तेज आँधी।

झकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. व्यर्थ की क्रिया या बातें करना, झगड़ा करना 2. अनुचित बातें करना 3. आवेश में अनुचित बातें करना।

झकाझक *वि.*(देश.) चमकीला, चमकदार, उज्ज्वल।

झकूरा *पुं.* (देश.) छोटी साड़ी।

झकोर *पुं.* (देश.) 1. हवा का झोंका 2. हिलोर।

झकोरना *अ.क्रि.* (देश.) झोंका मारना, हिलाना।

झकोरा *पुं.* (देश.) हवा का झोंका।

झकोल *पुं.* (देश.) दे. झकोर।

झक्क *वि.* (देश.) चमचमाता हुआ, झकाझक चमकता हुआ, चमकीला।

झक्कड़ *पुं.* (देश.) तेज आँधी, तूफान, अंधड़।

झक्की *वि.* (देश.) व्यर्थ की बकवास करने वाला, बकबक करने वाला, सनकी, खब्ती।

झख *स्त्री.* (देश.) 1. झीखने की क्रिया या भाव मुहा. झख मारना-बेकार समय नष्ट करना,

लाचार होकर कुढ़ना, विवश हो जाना 2. झख (झष्) *पुं.* (तद्.) मछली (मत्स्य)।

झखना *अ.क्रि.* (देश.) झीखना।

झखी *स्त्री.* (तद्.) मीन, मछली।

झगड़ना *अ.क्रि.* (देश.) आवेश में आकार विवाद करना, झगड़ा करना, लड़ना।

झगड़ा *पुं.* (देश.) लड़ाई, वाद-विवाद।

झगड़ालू *वि.* (देश.) झगड़ा करने वाला, लड़ने-झगड़ने वाला।

झगड़ी *स्त्री.* (देश.) झगड़ा करने वाली नारी *वि.* झगड़ा करने वाली।

झगर *पुं.* (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

झगरी *स्त्री.* (देश.) दे. झगड़ी।

झगला *वि.* (देश.) एक प्रकार का ढीला कुरता, अँगरखा, झगुलि, झंगुलिया।

झगा *पुं.* (देश.) बच्चों का ढीला कुरता, अंगरखा।

झगुलि *स्त्री.* (देश.) दे. झगा।

झज्झर *पुं.* (देश.) चौड़े मुँह का पानी रखने का बरतन।

झझक *स्त्री.* (देश.) झझकने का भाव या क्रिया दे. झिझक मुहा. झझक दूर करना- झिझक या भय दूर करना।

झझकना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. यकायक भड़क उठना 2. झिझकना 3. बड़बड़ाना।

झझकार *स्त्री.* (देश.) झझकारने की क्रिया या भाव।

झझकारना *स.क्रि.* (देश.) डपटना, डाँटना, झिड़क देना, दुत्कारना।

झझरी *वि.* (देश.) सीना।

झझिया *स्त्री.* (देश.) दे. झिंझिया।

झट *क्रि.वि.* (देश.) तत्काल, झटपट, जल्दी, तेजी से।

झटकना *स.क्रि.* (देश.) 1. झटका देना 2. हथियाना, ऐंठना, छीन लेना 3. कपट या चालाकी से किसी की संपत्ति अपने अधिकार में कर लेना।

झटका *पुं.* (देश.) 1. हलका धक्का 2. विपत्ति, रोग तथा अन्य कष्ट या शोक के द्वारा कमजोर कर देने वाला आघात या चोट, मुसीबत या हानि।

झटकाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. झटका लगाना 2. खींचना।

झटकारना *स.क्रि.* (तद्.) 1. झटक देना, जोर से झटका लगाना 2. सलवटें मिटाने अथवा ठीक करने के लिए वस्त्र को ताकत से झटकना।

झटपट *क्रि.वि.* (देश.) 1. अतिशीघ्र 2. तुरंत, तत्काल।

झटा *स्त्री.* (तत्.) भू-आंवला।

झटाक *क्रि.वि.* (देश.) 1. झट, फुर्ती या तेजी से।

झटाका *क्रि.वि.* (देश.) चटपट, तुरंत, जल्दी में ही, तत्काल।

झटि *स्त्री.* (तत्.) झाड़ी, झाड़, झुप, गुल्म।

झटिका *स्त्री.* (देश.) जोर से चलने वाली हवा।

झटिति *क्रि.वि.* (तत्.) तुरंत, तत्काल, झटपट, वेगपूर्वक, जल्दी में।

झटी *स्त्री.* (देश.) धीरे-धीरे लगातार वर्षा होते रहना, रहना, अनवरत (लगातार) धीमी वर्षा प्रयो. बाहर जाना आसान नहीं, देखते हो झटी लगी हुई है।

झड़ *पुं.* (देश.) झर, धीरे-धीरे लगातार लगा रहने वाला वर्षा का क्रम *स्त्री.* लगातार तेज हवा के साथ होने वाली तेज वर्षा, झड़ी।

झड़कना *स.क्रि.* (अनु.) दे. झिड़कना।

झड़-झड़ *स्त्री.* (अनु.) 1. फलों, पत्तों या अन्य वस्तुओं के लगातार गिरने से होने वाली ध्वनि 2. तेजी से जल बरसने की आवाज।

झड़-झड़ाना *स.क्रि.* (अनु.) 1. झड़झड़ की आवाज होना या पैदा करना 2. झड़झड़ाना 3. झिड़क देना या आवेश से बोलना।

झड़न *स्त्री.* (देश.) 1. झड़ने की स्थिति या क्रिया 2. झड़ने का भाव 3. झाड़ने या झड़ने से निकली या गिरी हुई वस्तु।

झड़ना *अ.क्रि.* (देश.) 1. किसी वस्तु के कुछ हिस्सों का टूटकर या अन्य रीति से अलग हो जाना, गिरना 2. पत्तियों का झड़ना 3. बालों का झड़ना (अधिक मात्रा में गिरना) 4. झड़ जाना, साफ हो जाना जैसे- आपकी बैठक झड़ चुकी है।

झड़प *स्त्री.* (देश.) 1. आवेश में परस्पर संघर्ष, मुठभेड़, झड़पने की क्रिया या भाव 2. क्रोध में हुआ कटु वार्तालाप।

झड़पना *अ.क्रि.* (देश.) 1. झपट पड़ना, टूट पड़ना या आक्रमण कर देना 2. झटक लेना 3. आवेश में उलझना।

झड़पा-झड़पी *स्त्री.* (देश.) 1. परस्पर झड़पने की क्रिया 2. हाथापाई 3. गुत्थम-गुत्था 4. बार-बार थोड़ी-थोड़ी देरे में होने वाली झड़प।

झड़पाना *स.क्रि.* (देश.) 1. दो व्यक्तियों में मुठभेड़ कराना 2. झड़पने या झपट लेने में लगाना।

झड़बेरी *स्त्री.* (देश.) 1. जंगली बेर की झाड़ी (छोटा पौधा) 2. जंगली बेर की झाड़ी या काँटेदार क्षुपनुमा पौधा मुहा. झड़बेरी का काँटा- ऐसा आदमी जिससे पीछा छुड़ाना कठिन हो, झगड़ालू स्वभाव का व्यक्ति (विवादी आदमी)।

झड़वाई *स्त्री.* (देश.) 1. झाड़ने या झड़वाने की क्रिया या भाव 2. झाड़ने या झड़वाने की मजदूरी।

झड़वाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. किसी व्यक्ति से कमरा या घर साफ कराना, झाड़ू लगवाना 2. झाड़-फूँक करने वाले ओझा से झाड़-फूँक करवाना।

झड़ाई *स्त्री.* (देश.) 1. झाड़ू लगाने की मजदूरी 2. झाड़ू लगाने या साफ करने का कार्य या भाव।

झड़ाक *क्रि.वि.* (देश.) तुरंत, शीघ्र, तत्काल।

झड़ाका *पुं.* (देश.) 1. शीघ्रता, जल्दी 2 झड़प, मुठभेड़, हाथापाई।

झड़ाझड़ *क्रि.वि.* (अनु.) 1. लगातार 'झर-झर' की ध्वनि करते हुए (बरसना) 2. वेगपूर्वक 3 बिना रुके, अनवरत 4. बहुत तेजी से प्रयो. राम की आमदनी का क्या कहना, उसके ऊपर तो झड़ाझड़ रुपयों की वर्षा हो रही है।

झड़ी *स्त्री.* (देश.) झटी, लगातार वर्षा, लगातार झड़ना।

झणझण *पुं.* (अनु.) 'झन-झन' की ध्वनि।

झणत्कार *पुं.* (अनु.) झनकार।

झदी *स्त्री.* (तद्.) झड़ी, झरना, सोता।

झन *स्त्री.* (अनु.) किसी धातु के ऊपर चोट या आघात करने से होने वाली ध्वनि।

झनक *स्त्री.* (अनु.) झनकार, झनझनाहट।

झनकना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. झनकार की ध्वनि करना 2. झुंझलाना 3. खीझना।

झनकार *स्त्री.* (अनु.) झन-झन की ध्वनि, आवाज।

झनकारना *अ.क्रि.* (अनु.) झन-झन की आवाज होना या करना।

झनझना *वि.* (अनु.) झनझन की ध्वनि या आवाज।

झनझनाना *अ.क्रि.* (अनु.) झन-झन की ध्वनि करना, भय या सिहरन से रोमांचित होना, पुलकित होना।

झनझनाहट *स्त्री.* (अनु.) झुनझुनी, झनझन की ध्वनि, झंकार।

झनाझन *स्त्री.* (अनु.) झनझन की ध्वनि। *क्रि.वि.* झन-झन ध्वनि करते हुए।

झन्नाटा *पुं.* (देश.) 'झन्न' या झंकृति होने की क्रिया या भाव।

झन्नाना *अ.क्रि.* (देश.) झनझनाना।

झन्नाहट *स्त्री.* (देश.) झनकार की ध्वनि, झनझनाहट।

झप *क्रि.वि.* (देश.) जल्दी से, तुंरत, झट मुहा. झप खाना- पतंग का पेंदी के बल गिरना, झेंपना, झपना।

झपक *स्त्री.* (देश.) पलकों का गिरना, पलक झपकने या गिरने में लगने वाला समय।

झपकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. झपकी लेना 2. पलक गिरना 3. झंपना।

झपकी *स्त्री.* (देश.) हल्की नींद, ऊँघाई ऊँघने की क्रिया।

झपझुपी *स्त्री.* (देश.) दे. झुबझुबी।

झपट *स्त्री.* (देश.) 1. झपटने की क्रिया या भाव 2. 2. झपट्टा।

झपटना *अ.क्रि.* (देश.) 1. किसी पर टूट पड़ना ताकि वह कब्जे में हो सके 2. किसी व्यक्ति या वस्तु को लेने या पकड़ने के उद्देश्य से तेजी से आगे बढ़ना 3. लपक कर आवेश में पकड़ना 4. धावा बोलना।

झपटान *स्त्री.* (देश.) झपटने की क्रिया।

झपटाना *स.क्रि.* (देश.) 1. धावा कराना 2. झपटने के लिए प्रेरित करना, हमला कराना, झपटने के लिए उकसाना।

झपट्टा *पुं.* (देश.) दे. झपट प्रयो. मेरे ऊपर चील ने ऐसा झपट्टा मारा कि मैं घबरा गया, झपट्टामार- झपटने वाला मुहा. झपट्टा मारना- किसी पर टूट पड़ना।

झपड़ियाना *स.क्रि.* (देश.) चपत लगाना, झापड़ मारना।

झपताल *पुं.* (देश.) संगीत में एक ताल।

झपवाना *स.क्रि.* (देश.) किसी को झंपाने में प्रवृत्त करना।

झपसना *अ.क्रि.* (देश.) पेड़-पौधे या लता टहनियाँ छोड़कर बढ़ना।

झपाक *क्रि.वि.* (देश.) झटपट, चटपट।

झपाका *पुं.* (देश.) शीघ्रता, जल्दी, त्वरा *क्रि.वि.* जल्दी से, शीघ्र ही, तुरंत।

झपाटा *पुं.* (देश.) झपट, झपट्ट।

झपाना *स.क्रि.* (देश.) आँखे मूँदना, आँखे झपकना, आँखें बंद करना।

झपिया *स्त्री.* (देश.) 1. गले में पहनने का एक गहना 2. पिटारी।

झपेटना *स.क्रि.* (देश.अनु.) चपेटना, दबोच लेना।

झपेटा *पुं.* (देश.) 1. चपेट 2. झपट, झपट्टा 3. आक्रमण।

झपोला *पुं.* (देश.) (झँपोला) 1. ढक्कनदार छोटा टोकरा या पिटारा 2. पिटारी (झंपोली) *स्त्री.* पिटारी या ढक्कनदार टोकरी, झँपोली।

झप्प *स्त्री.* (अनु.) झप की तीव्र ध्वनि या आवाज।

झप्पड़ *पुं.* (देश.) थप्पड़, झापड़।

झप्पान *पुं.* (देश.) पहाड़ी क्षेत्रों में प्रयोग की जाने वाली एक प्रकार की पालकी, 'झँपान'।

झप्पानी *पुं.* (देश.) झँपान ढोने वाला व्यक्ति।

झब *पुं.* (अनु.) 1. धागों के टुकड़ों से बना हुआ, आभूषण जैसा सुशोभित फुँदना 2. लटकन 3. समूह या गुच्छा 4. झब्बा।

झबकार *पुं.* (देश.) काला, श्याम वर्ण।

झबरा *पुं.* (देश.) लंबे और बिखरे बालों वाला पशु अथवा आदमी जैसे- झबरा कुत्ता, झबरी बिल्ली *वि.* लंबे और बिखरे वालों वाला।

झबराना *अ.क्रि.* (देश.) 1. कुम्हला जाना, मुरझाना 2. कुछ काला पड़ जाना 3. झाबे से रगड़ना।

झबरीला *वि.* (तद्.) झबरा, झिबरैरा, झबरैला, कुछ बड़ा-सा।

झबला *पुं.* (देश.) 1. ढीला-ढाला कुरता 2. टोकरी।

झबा *पुं.* (देश.) दे. झब।

झबार *स्त्री.* (अनु.) झंझट, झगड़ा, बखेड़ा।

झबिया *स्त्री.* (देश.) 1. छोटा झब्बा, फुँदना 2. स्त्रियों का एक आभूषण 3. बाजूबंद आदि में लटकने वाले छोटे-छोटे टुकड़े जो छोटी-छोटी कटोरियों जैसे होते हैं और शोभा के लिए बनाकर लटकाए जाते हैं।

झबुआ *वि.* (अनु.) झबरा।

झबूंकना *अ.क्रि.* (देश.) चमकना, झलकना, झलक दिखाई देना।

झबूँकना *अ.क्रि.* (देश.) चौंक पड़ना या चौंकना।

झबोदरी *स्त्री.* (तत्.) मत्स्यगंधा, व्यास जी की माता।

झम *स्त्री.* (अनु.) 'छम्म' 1. टकराने या आघात लगने पर किसी धातु-पात्र के देर तक छनछनाने की ध्वनि विशेष 2. तेज वर्षा की ध्वनि।

झमक *स्त्री.* (देश.) 1. रुक-रुक कर होने वाली तेज प्रकाश की चमक जैसे- बिजली की चमक 2. झमकने की क्रिया या भाव 3. व्यक्ति की ठसक, ऐंठ या अकड़ 4. ठसक वाली चाल।

झमकना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. 'झम-झम' ध्वनि होना 2. तेजी से ध्वनि करते हुए चले आना 3. अकड़ या ऐंठ दिखाना 4. अचानक सामने आ जाना 4. चमकना, प्रकाश की किरणें फेंकना।

झमकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. पलकों का गिरना 2. आँखे झपकाना।

झमकारा *वि.* (देश.) चमक या झमक दिखलाता हुआ, झमकने वाला 3. बरसने की स्थिति वाला बादल।

झमकीला *वि.* (देश.) झमक दिखाता हुआ, चमक या झमक वाला 2. ऐंठ या अकड़ दिखाने वाला।

झमझम *क्रि.वि.* (देश.) 1. चमक-दमक के साथ, चमक-दमक युक्त 2. झम-झम करते हुए प्रयो. आज तो झमाझम वर्षा हो रही थी।

झम-झम *स्त्री.* (अनु.) घुंघुरुओं के जोर से बजने की आवाज 2. छम-छम की ध्वनि।

झमझमाना *स.क्रि.* (अनु.) 1. चमचमाना 2. झमझम की ध्वनि करना 3. रोमांचित होना।

झमझमाहट *स्त्री.* (अनु.) 1. चमचमाहट 2. भारी चमक-दमक 3. झम-झम शब्द की ध्वनि की स्थिति या भाव।

झमना *स.क्रि.* (देश.) 1. नम्र हो जाना, झुकना 2. पलकें झपकना 3. इकट्ठे होकर झूम जाना 4. दबना।

झमा *पुं.* (देश.) 1. सिर चकराने की स्थिति या दशा, चक्कर 2. पिघलकर ढेर हो जाना।

झमाट *पुं.* (देश.) दे. झुरमुट।

झमाना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. उत्तेजना शांत कर देना, झुका देना 2. गिराना 3. घेरना, छा जाना।

झमारना *स.क्रि.* (देश.) जल से भर देना, झाँवर कर देना।

झमाल *पुं.* (देश.) 1. इंद्रजाल 2. एक प्रकार का डिंगल गीत।

झमेला *पुं.* (देश.) झंझट, झगड़ा, बखेड़ा।

झमेलिया *वि.* (देश.) झगड़ा करने वाला, झंझटी, बखेड़ा करने वाला।

झर *स्त्री.* (तद्.) 1. झड़ी 2. निर्झर, झरना, पानी गिरने का स्थान 3. लगातार वर्षा 4. ताप, ज्वाला, आँच 5. ताले का कुत्ता 6. झुंड या समूह।

झरक *स्त्री.* (देश.) दे. झलक।

झरकना *अ.क्रि.* (देश.) दे. झलकना।

झरका *स्त्री.* (देश.) झलक।

झरकुट *पुं.* (देश.) 1. तोड़-मरोड कर डाला हुआ सूखा पदार्थ 2. तोड़-ताड़ कर डाला हुआ पदार्थ *वि.* तोड़-मरोड़ कर डाला हुआ *स.क्रि.* झुरकुट करना या उड़ा देना, तोड़-ताड़ कर डाल देना।

झर-झर *स्त्री.* (अनु.) 1. वर्षा की झड़ी लगने की ध्वनि 2. तेज हवा के चलने या उसके किसी वस्तु से टकराने की स्थिति, झरने का पानी या आँसू टपकने की स्थिति (ध्वनि)।

झरझराना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. झर-झर करते हुए गिरना 2. काँप उठना, कंपित होना।

झरना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. झड़ना 2. ऊँचे स्थान से पानी गिरना *पुं.* ऊँचे स्थान से गिरने वाला जल या प्रवाह, चश्मा, झरना, निर्झर।

झरनी *वि.* (देश.) झरने वाली।

झरप *स्त्री.* (देश.) 1. झोंका, झकोर 2. आग की हलकी-हलकी तपन 3. झड़प।

झरपना *अ.क्रि.* (देश.) झरप देना जिससे आँसू गिर पड़ें जैसे- कभी कभी सरसों का तेल झरपता भी है।

झरर-झरर *क्रि.वि.* (अनु.) झराझर।

झरवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. झड़वाना 2. बौछार मारना।

झरसना *अ.क्रि.* (देश.) झुलसना, झुलसाना, कुम्हलाना।

झरहरना *अ.क्रि.* (अनु.) झर-झर शब्द करना।

झरहरा *वि.* (देश.) छोटे-छोटे छड़ों वाला, जालीदार, झँझरा/झँझरी (झरहरी) *स्त्री.* जाली वाली।

झरहराना *अ.क्रि.* (देश.) झर-झर ध्वनि करते हुए पत्तों का नीचे आ गिरना, खड़बड़ाना।

झरहरि *क्रि.वि.* (अनु.) झर-झर शब्द करते हुए।

झरहिल *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

झरा *पुं.* (देश.) पानी से पैदा होने वाला एक प्रकार का धान *स्त्री.* झड़ी, झरना, सोता।

झराझर *क्रि.वि.* (देश.) 1. झर-झर शब्द सहित 2. बराबर, लगातार।

झरोखा *पुं.* (देश.) 1. झंझरी, छोटी खिड़की 2. गवाक्ष।

झर्झर *पुं.* (तत्.) 1. झाँझ 2. एक नद 3. कलियुग 4. झाँझर नामक गहना (पैरों में पहना जाता है, जो झन-झन करता बजता है)।

झर्झरक *पुं.* (तत्.) कलियुग।

झर्झरा *स्त्री.* (तत्.) तारा देवी का एक नाम 2. वेश्या, वारांगणा।

झर्झरावती *स्त्री.* (तत्.) 1. गंगा नदी 2. कटसरैया का पौधा।

झर्झरिका *स्त्री.* (तत्.) तारा देवी।

झर्झरिल *पुं.* (तत्.) शिव।

झर्झरी *स्त्री.* (तत्.) शिव।

झर्झरीक *पुं.* (तत्.) 1. देश 2. शरीर 3. चित्र।

झर्रा *पुं.* (देश.) बया पक्षी।

झल *पुं.* (देश.) 1. ताप, चिलचिलाती धूप 2. दाह, जलन, आँच, झरप 3. क्रोध 4. कामेच्छा, काम-वासना।

झलक *स्त्री.* (तद्.) 1. चमक, दमक, प्रकाश 2. प्रतिबिंब।

झलकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. चमकना, दमकना 2. आभास होना, प्रतिबिंबित होना।

झलकनि *स्त्री.* (देश.) झलक।

झलका *पुं.* (देश.) छाला, फफोला उदा. झलका झलकत पायन्ह कैसे। पंकज कोस ओसग जैसें।

झलकाना *स.क्रि.* (देश.) चमकाना, दमकाना, दरसाना, आभास देना।

झलकित *वि.* (देश.) 1. झलक से युक्त 2. जिसे झलकाया गया हो।

झलकी *स्त्री.* (देश.) 1. किसी कार्यक्रम आदि के पक्ष को प्रकट करने वाली बातें या घटना 2. झलक 3. हास्य-व्यंग्य प्रधान छोटी नाटिका *बहु.* झलकियाँ।

झलझल *स्त्री.* (देश.) चमचमाहट (आभूषणों आदि की), चमक-दमक *क्रि.वि.* 1. चमकते हुए, झलाझल 2. तेज आभा से युक्त होकर।

झलझला (झलज्झला) *स्त्री.* (अनु.) 1. बूँदों के गिरने का शब्द 2. हाथी के कान फटफटाने की आवाज।

झलझलाना *अ.क्रि.* (अनु.) चमकना, दमकना।

झलझलाहट *स्त्री.* (देश.) 1. चमक-दमक 2. झलकने की क्रिया या भाव।

झलना *स.क्रि.* (देश.) 1. पंखा आदि हिलाकर हवा करना 2. पंखा करना।

झलमल *क्रि.वि.* (देश.) झलझल, चमकता हुआ।

झलमला *वि.* (देश.) चमकीला, चमकता हुआ।

झलमलाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. रह-रह कर चमकना 2. चमचमाना।

झलराना *अ.क्रि.* (देश.) 1. लहराना 2. बढ़ना, फैलना।

झलरी *स्त्री.* (तत्.) झाँझ।

झलवाना *स.क्रि.* (देश.) झलने का काम कराना।

झला *पुं.* (देश.) 1. झालर 2. हलकी वर्षा 3. चमक, कांति।

झलाझल *वि.* (देश.) 1. चमकदार चमकीला 2. हाथ के पंखे को झलना और झलवाना *क्रि.वि.* झलाझल *स्त्री.* झलाझल होने की अवस्था या भाव।

झलाना *पुं.* (देश.) चमकता हुआ चमाचम।

झलाबोर *स.क्रि.* (तद्.) झलवाना, किसी से पंखा झलने का काम कराना।

झलामल *स्त्री.* (देश.) चमक, दमक।

झलि *स्त्री.* (तत्.) सुपारी, पुंगीफल।

झल्ल *स्त्री.* (तत्.) 1. लपट, ज्वाला 2. एक वर्णसंकर जाति 3. भाँड़।

झल्लक *पुं.* (तत्.) 1. मजीरा 2.झांझ 3. करताल।

झल्लकी *स्त्री.* (तत्.) दे. झल्लक।

झल्लरा *स्त्री.* (तत्.) एक वाद्य, हुडुक 2. झाँझ 3. स्वेद, पसीना 4. घुँघराले बाल।

झल्लरी *स्त्री.* (तत्.) झालरी दे. झल्लरा।

झल्ला *पुं.* (देश.) 1. बड़ा टोकरा, खाँचा 2. वर्षा, वृष्टि 3. बौछार *वि.* 1. तरल या पतला (जो गाढ़ा न हो) प्रयो. झल्ला रस, झल्ली भाँग।

झल्लाना *अ.क्रि.* (देश.) झुँझलाना, खीझना, तीखा बोलना *स.क्रि.* खिजाना, झुंझला देना।

झल्लिका *स्त्री.* (तद्.) 1. अंगोछा, शरीर पोंछने का कपड़ा 2. उबटन की झिल्ली 3. प्रकाश, चमक, दीप्ति।

झल्ली *स्त्री.* (देश.) झाबा, बड़ी टोकरी।

झव *पुं.* (तत्.) 1. मीन, मछली 2. मगर 3. गरमी, ताप 4. मीन राशि एवं लग्न।

झवर *पुं.* (देश.) झगड़ा।

झवारि *स्त्री.* (देश.) झगड़ा।

झषना *स.क्रि.* (देश.) झख मारना।

झषांक *पुं.* (तत्.) कामदेव।

झषा *स्त्री.* (तत्.) नागबला, गुलसकरी।

झषासन *पुं.* (तत्.) 1. सूंस 2. चार-पाँच हाथ लंबा जलजंतु जो नदी की धारा में कभी-कभी बलैया लेता हुआ-सा दीख पड़ता है। dolphin

झह्नाना *स.क्रि.* (देश.) झनकारना, झनकार करना।

झहराना *अ.क्रि.* (देश.) 1. कमजोर होकर गिर पड़ना 2. तिरस्कृत होना, झल्लाना *स.क्रि.* झकझोरना, हिलाना।

झांकृत *पुं.* (तत्.) 1. झंकार 2. नूपुर।

झाँईं *स्त्री.* (देश.) 1. परछाईं, छाया 2. अंधेरा, अंधकार मुहा. झाईं मारना- छाया या परछाईं दिखाई देना- आँखों में झाईं छा जाना- आँखों में अंधेरा छा जाना।

झाँक *स्त्री.* (देश.) झाँकने की क्रिया, ताक-झाँक मुहा. ताक-झाँक करना- छिपकर या आँखें बचाकर देखना।

झाँकना *अ.क्रि.* (देश.) आड़ या बगल से देखना, इधर-उधर देखना।

झाँका *पुं.* (देश.) झरोखा, जालीदार खाँचा।

झाँकी *स्त्री.* (देश.) 1. दृश्य 2. झरोखा 3. देखने या या झाँकने का भाव या क्रिया।

झाँख *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार का जंगली हिरन 2. अरहर का डंठल।

झाँखना *अ.क्रि.* (देश) दे. झींखना।

झाँखर *पुं.* (देश.) 1. झंखाड़ 2. कांटेदार झाड़ियों का झुंड।

झाँगला *वि.* (देश.) ढीला-ढाला (कपड़ा), झंगला।

झाँगा *पुं.* (देश.) दे. झांगा।

झाँझ *स्त्री.* (देश.) 1. मंजीरे जैसा पीतल का एक गोलाकार वाद्य यंत्र प्रयो. झांझ पीटना-दो झांझों को परस्पर पीटकर बजाना 2. क्रोध, आवेश 3. अड़ियलपन 4. शरारत *वि.* (तद्.) मामूली या हल्का भाँग का नशा।

झाँझड़ी *स्त्री.* (देश.) पैर में पहनने का कड़े जैसा गहना, झाँझन दे. 'झाँझ'।

झाँझन *स्त्री.* (देश.) कड़े जैसा गोल और भीतर से पोला और कंकडी जैसे पदार्थों से युक्त पैरों में पहने जाने वाला बजता हुआ एक गहना।

झाँझर *स्त्री.* (देश.) दे. झाँझन।

झाँझरि *स्त्री.* (देश.) दे. झाँझन।

झाँझरि *स्त्री.* (देश.) *वि.* 1. जर्जर 2. छेदों वाला (छिद्र युक्त)।

झाँझरी *स्त्री.* (देश.) झाँझ, झाँझन।

झाँझा *पुं.* (देश.) फसल में लगने वाला एक कीड़ा *वि.* 1. झाँझ 2. झंझट *वि.* जला हुआ, दग्ध।

झाँसा *पुं.* (देश.) धोखा।

झाँसिया *पुं.* (देश.) झाँसा देने वाला व्यक्ति, धोखेबाज आदमी *वि.* झाँसा देने वाला, धोखेबाज।

झाँसी *पुं.* (देश.) 1. महारानी लक्ष्मीबाई की राजधानी और वर्तमान उत्तर प्रदेश का प्रसिद्ध शहर 'झाँसी' 2. एक प्रकार का कीड़ा जिसके कारण तंबाकू और दाल की फसलों को नुकसान होता है।

झाँसू *पुं.* (देश.) 1. झाँसा देने वाला आदमी, धोखेबाज व्यक्ति 2. *वि.* झाँसा देने वाला, धोखेबाज।

झा *पुं.* (देश.) 1. मैथिल ब्राह्मणों तथा गुजरात के पंडितों के कुलों के नाम 2. 'उपाध्याय', 'ओझा' से व्युत्पन्न 'झा' संज्ञक उपाधि *स्त्री.* जलप्रपात।

झाई *स्त्री.* (देश.) झाँई।

झाऊ *पुं.* (देश.) रेतीले स्थानों में पैदा होने वाला छोटा झाड़।

झाक *वि.* (देश.) झकाझक।

झाग *पुं.* (देश.) फेन, गाज (दूध, समुद्र आदि के फेन या झाग)।

झाझ *पुं.* (देश.) जहाज।

झाझा *वि.* (देश.) 1. जला हुआ, दग्ध 2. बिहार के जमुई जिले का एक महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशन।

झाट *पुं.* (तत्.) 1. झाड़ी 2. कुंज 3. लता-बेलों से घिरा हुआ स्थान 4. घाव को धोना।

झाटल *पुं.* (तत्.) 1. घंटापाटलि 2. एक प्रकार का लोध (वृक्ष), मोरवा (वृक्ष)।

झाटा *पुं.* (तत्.) 1. जूही 2. भुई 3. आँवला 4. झाटिका पर्या. झाटा-झाटी।

झाटास्त्रक *पुं.* (तत्.) तरबूज।

झाड़ *स्त्री.* (देश.) 1. झाड़-फूँक, झाड़ने की क्रिया या या भाव 2. झाड़ने से निकला कूड़ा तथा धूल, झाड़न 3. डाँट- फटकार, भर्त्सना *पुं.* पेड़ का छोटा और अनेक तनों वाला पौधा 2. पेड़, वृक्ष 3. अनेक छोटी-बड़ी वस्तुओं का गुच्छा 4. कंटीला पेड़ 5. फानूस 6. एक प्रकार की आतिशबाजी 7. ताँता।

झाड़खंड *पुं.* (तत्.) 1. बहुत से काँटेदार छोटी-छोटी झाड़ियों वाला स्थान 2. 'झारखंड' एक राज्य का नाम जो बिहार से अलग करके बनाया गया है।

झाड़-झंखाड़ *पुं.* (देश.) 1. काँटेदार पेड़ों और झाड़ियों का समूह 2. अनुपयोगी कँटीले पौधे।

झाड़दार *वि.* (देश.) 1. घना, सघन 2. काँटेदार 3. घनी शाखाओं वाला पौधा।

झाड़न *स्त्री.* (देश.) 1. झाड़ने के बाद निकली धूल तथा अन्य वस्तुएँ 2. झाड़ने में काम आने वाला कपड़ा।

झाड़ना *स.क्रि.* (देश.) 1. झटकारना, धूल तथ गर्द साफ करना, बुहारना 2. नीचे गिराना 3. फटकारना 4. मंत्र पढ़कर झाड़-फूँक करना। मुहा. झाड़ लेना- युक्तिपूर्वक धन-सपंत्ति झटक या ऐंठ लेना; नजर झाड़ना- नजर उतारना; झाड़ देना- डाँटना फटकारना, दूर करना, निकाल देना।

झाड़-फूँक *स्त्री.* (देश.) मंत्रादि से झाड़ने-फूँकने की क्रिया मुहा. झाड़-फूँक करना-भूत प्रेतादि बाधाओं को दूर करने के लिए झाड़ना-फूँकना।

झाड़-बुहार *स्त्री.* (देश.) सफाई, झाड़ने-बुहारने की क्रिया प्रयो. झाड़-बुहार करना- सफाई करना।

झाड़ा *पुं.* (देश.) 1. झाड़-फूँक 2. तलाशी 3. झाड़ने, बुहारने मंत्र से झाड़ने तथा जेब टटोलकर तलाशी लेने की क्रिया या भाव 3. मंत्र आदि से की जाने वाली झाड़फूँक 4. मल-शौच जाने की क्रिया 5. ट्टटी या पाखाना मुहा. झाड़ा (जंगल-झाड़ू) जाना या फिरना- पाखाना जाना या मलोत्सर्ग करना; झाड़ा फिराना- छोटे बच्चों को मल-त्याग कराना।

झाड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. कंटीले पौधों का झुंड 2. छोटा पौधा 3. सूअर के बालों की कूंची।

झाड़ीदार *वि.* (देश.) 1. झाड़ी की तरह का 2. कँटीला 3. काँटेदार।

झाड़ू *पुं.* (देश.) 1. बुहारी, कूँचा मुहा. झाड़ू देना- झाड़ू की सहायता से कचरा साफ करना; झाड़ू- फिरना- सफाया हो जाना, कुछ भी शेष न रहना; झाड़ू फेरना- बिलकुल नष्ट कर देना; झाड़ू मारना- तिरस्कार करना 2. पुच्छल तारा, केतु।

झापड़ *पुं.* (देश.) तमाचा, थप्पड़, लप्पड़ मुहा.- झापड़ कसना/मारना- थप्पड़ मारना।

झाबर *पुं.* (देश.) दे. झाबा।

झाबा *पुं.* (देश.) 1. टोकरा, खाँचा 2. आटा छानने का एक गोल थालीनुमा पात्र।

झाबी *स्त्री.* (देश.) छोटी टोकरी।

झाम *पुं.* (देश.) 1. झब्बा, गुच्छा 2. डाँट-डपट, घुड़की 3. धोखा, छल, कपट।

झामक *पुं.* (तत्.) जली हुई ईंट, झावाँ।

झामर *पुं.* (तत्.) 1. पाँवों में पहने जाने वाला एक गहना 2. टेकुआ (तकुआ) रगड़ने की सान, सिल्ली।

झायं-झायं *स्त्री.* (देश.) 1. सुनसान में चलने वाली हवा की ध्वनि 2. झनकार, झन-झन का शब्द 3. किसी बात की बारंबार शिकायतपूर्ण चर्चा।

झार *वि.* (देश.) 1. जलन, ज्वाला, झरप 2. समूह, झुंड 3. केवल, निरा।

झारखंड *पुं.* (देश.)एक एज्य का नाम दे. झाड़खंड।

झारना *स.क्रि.* (देश.) 1. कंघी करना 2. छाँटना 3. झाड़ना।

झारा *पुं.* (देश.) 1. झरना, सूप 2. छनी हुई भाँग।

झारी *स्त्री.* (देश.) 1. एक टोंटीदार बरतन, गड़ुआ 2. एक खट्‌टा पेय।

झार्झर *पुं.* (तद्.) ढोल बजाने वाला।

झाल *पुं.* (तद्.) 1. झांझ (वाद्‌य यंत्र) 2. धातु की वस्तुओं को झालकर टाँका जोड़ने की क्रिया। *स्त्री.* *स्त्री.* 1. चरपराहट, तीखापन, वर्षा की झड़ी 2. बादलों के कारण होने वाला अंधेरा 3. गंध की तीव्रता 4. लपट, ज्वाला, झरप।

झालड़ *स्त्री.* (देश.) घड़ियाल (एक वाद्‌य यंत्र)।

झालना *स.क्रि.* (तद्.) 1. धातु की वस्तु को टाँका लगा कर जोड़ना 2. धारण करना 3. झेलना 4. स्वीकार करना, कबूल करना।

झालर *स्त्री.* (तद्.) 1. गोट, किसी वस्त्र, तकिया, पर्दा, पंखा आदि के सिरे पर शोभा के लिए लगाई जाने वाली गोट या किनारा जैसे- मोतियों की झालर 2. लटकने वाला हाशिया या किनारा 3. गाय के गले की झालर *पुं.* (देश.) एक प्रकार का पकवान।

झालरना *अ.क्रि.* (देश.) झालर का हिलना।

झाला *पुं.* (देश.) 1. राजपूतों की एक जाति 2. बकबक, झाँय-झाँय।

झालि *स्त्री.* (देश.) 1. पानी की झड़ी 2. झाल मुहा. झालि छाना, झालि पड़ना-झड़ी लगाना।

झावँ-झावँ *स्त्री.* (देश.) बकबक, बकवाद, तकरार, हुज्जत मुहा. झावँ-झावँ मचाना/करना- तकरार करना, बकबक करना।

झावु *पुं.* (तत्.) झाऊ, एक क्षुप।

झावुक *पुं.* (तत्.) एक क्षुप।

झिंगड़ना *अ.क्रि.* (देश.) झगड़ना।

झिंगन *पुं.* (देश.) 1. एक पेड़ 2. सारस्वत ब्राह्मणों की एक जाति।

झिंगवा *स्त्री.* (देश.) झींगा मछली।

झिंगाक *पुं.* (तत्.) 1. तोरई, तरोई।

झिंगिनी *स्त्री.* (देश.) 1. एक जंगली पेड़ 2. एक छोटा-कीट।

झिंगी *स्त्री.* (तत्.) दे. झिंगिनी।

झिंगुली *स्त्री.* (देश.) छोटे बच्चे (शिशु) की टोपी या या वस्त्र।

झिंझरी *स्त्री.* (देश.) जालीदार खिड़की।

झिंझिम *पुं.* (तत्.) जलता हुआ वन।

झिंझिया *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार का छोटा घड़ा जिसमें चारों ओर बहुत से छेद होते हैं और उसके भीतर दीपक जलाते हैं 'झेंझी' या 'झाँझी'।

झिंझिरिटा *स्त्री.* (तत्.) झिंझिरिटा नामक झाड़ी।

झिंझिरीटा *स्त्री.* (तद्.) एक प्रकार का झाड़ीनुमा पौधा, एक तरह की साड़ी।

झिंझी *स्त्री.* (तद्.) झींगुर, झिल्ली।

झिंझोटी *स्त्री.* (देश.) एक रागिनी का नाम।

झिंटी *स्त्री.* (तत्.) कटसरैया।

झिगरना *अ.क्रि.* (देश.) दे. झगड़ना।

झिझक *स्त्री.* (देश.) 1. संकोच, हिचक 2. ठिठकने की क्रिया या भाव।

झिझकना *अ.क्रि.* (देश.) हिचक, ठिठकना, संकोच करना।

झिझकार *स्त्री.* (देश.) झिझकने की क्रिया या भाव। भाव।

झिझकारना *स.क्रि.* (देश.) झिड़कना, दुत्कारना।

झिड़कना *स.क्रि.* (देश.) दुत्कारना, झिझकारना।

झिड़की *स्त्री.* (देश.) डाँट, फटकार, दुत्कार, झिड़क।

झिड़झिड़ाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. चिड़चिड़ाना 2. भला-बुरा कहना।

झिन *वि.* (तद्.) 1. क्षीण, जर्जर 2. सूक्ष्म, बारीक।

झिनवा *वि.* (देश.) झीना।

झिनाझिनी *स्त्री.* (देश.) झुनझुनी।

झिनायिका *स्त्री.* (तत्.) 1. दीर्घ कोषिका 2. शंबूक 3. सुतुही 4. घोंघा 5. शंख 6. हाथी के कुंभ का अंतिम भाग, हाथी की सूँड़ की नोंक।

झिपना *अ.क्रि.* (देश.) झेंपना, बंद होना।

झिपाना *स.क्रि.* (देश.) लज्जित करना, शर्मिंदा करना, झेपाना।

झिब्बा *पुं.* (देश.) 1. झाबा, बड़ा टोकरा, खाँचा, झाबर 2. चमड़े का कुप्पा जो पहले तेल या घी नापने या तौल मापने के काम आता था 3. छेदों वाला बड़ा कलछा जिसमें पूरियाँ कढ़ाही से निकाली जाती हैं, पौना, झार।

झिरकना *स.क्रि.* (देश.) दे. झिड़कना।

झिरझिर *क्रि.वि.* (देश.) मंद-मंद, धीरे-धीरे, झिर-झिर शब्द करते हुए *स्त्री.* पानी बहने की ध्वनि।

झिरझिरा *वि.* (देश.) बहुत पतला, झीना, झंझरा।

झिरना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. झरना 2. बहकना 3. गिरना 4. प्रवाहित होना।

झिरहर *वि.* (देश.) झीना, छेदों वाला।

झिरिका *स्त्री.* (तद्.) झींगुर।

झिरिया *स्त्री.* (देश.) छोटा झरना, झिरी, छोटी झिरी।

झिरी *स्त्री.* (देश.) 1. संधि 2. झरी 3. वह गड्ढा जिसमें रिस-रिस कर पानी भर जाता है 4. पाला, तुषार 5. ऐसी फसल जिसे पाला मार गया हो।

झिरीका *स्त्री.* (तद्.) दे. झिरिका।

झिलंगा *पुं.* (देश.) ढीली पड़ी हुई पुरानी चारपाई या खाट *वि.* 1. झीना 2. ढीला-ढाला।

झिलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. धँसना, घुसना 2. तृप्त होना, मग्न होना 4. झेला जाना *स.क्रि.* हमला करना *पुं.* झींगुर।

झिलम *स्त्री.* (देश.) लोहे का बना टोप, शिरस्त्राण।

झिलमलित *वि.* (देश.) झिलमिलाता हुआ।

झिलमिल *स्त्री.* (देश.) 1. रह-रहकर चमकती हुई रोशनी 2. झिलमिलाता हुआ।

झिलमिला *वि.* (देश.) 1. झीना, जिससे झिलमिलाती रोशनी निकले, झँझरा 2. चमकता हुआ, झलझलाता हुआ।

झिलमिलाना *अ.क्रि.* (देश.) रह-रहकर चमकना, टिमटिमाना, जुगजुगाना *स.क्रि.* 1. हिलाना, 2. रोशनी चमकाना (चमकना)।

झिलमिलाहट *स्त्री.* (देश.) झिलमिलाने की क्रिया या भाव।

झिलमिलि *वि.* (देश.) दे. झिलमिल।

झिलमिली *स्त्री.* (देश.) 1. चिलमन, चिक 2. कान में पहनने का गहना।

झिलवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. झेलने का काम कराना 2. सहन कराना, बर्दाश्त कराना।

झिल्ली *स्त्री.* (तद्.) 1. झींगुर 2. दीप्ति, सूर्य का प्रकाश 3. एक बाजा।

झिल्लीक *पुं.* (तद्.) झींगुर।

झिल्लीका *स्त्री.* (तद्.) 1. झिल्ली, झींगुर 2. सूर्य का प्रकाश, दीप्ति 3. उबटन का मैल, पपड़ी।

झींक *पुं.* (देश.) दे. झींका।

झींकना *स.क्रि.* (देश.) दे. झींखना।

झींका *पुं.* (देश.) अन्न की वह मात्रा जो चक्की में पीसने के लिए एक बार डाली जाती है 2. छींका।

झींख *स्त्री.* (देश.) झींखने का भाव या क्रिया, खीज।

झींखना *अ.क्रि.* (देश.) 1. खीजना, कुढ़ना 2. दुखड़ा रोना।

झींगन *पुं.* (देश.) मझले आकार का एक वृक्ष जिसका तना मोटा और डालियाँ बहुत कम होती हैं।

झींगा *पुं.* (देश.) एक प्रकार की मछली जिसकी पूँछ और मुँह पर लंबे बाल होते हैं।

झींगुर *पुं.* (देश.) 1. एक छोटा कीड़ा जिसकी आवाज बहुत तेज होती है 2. घुरघुरा, झिल्ली।

झींसी *स्त्री.* (देश.) फुहार, बूँदाबाँदी।

झीखना *अ.क्रि.* (देश.) दे. झींखना।

झीड़ना *अ.क्रि.* (देश.) 1. घुसना 2. धँसना।

झीना *वि.* (तद्.) 1. बहुत पतला, महीन, बहुत बारीक 2. मंद, धीमा।

झीनासारी *पुं.* (देश.) एक तरह का चावल।

झीम *स्त्री.* (देश.) ऊँघ, झपकी। व्यक्ति की नींद पर काबू पाने के कारण झूम जाने की स्थिति या भाव, ऊँघने का भाव या क्रिया।

झीमना *अ.क्रि.* (देश.) दे. झूमना।

झीमर *पुं.* (देश.) दे. झीवँर।

झीरिका *स्त्री.* (देश.) झींगुर।

झीरुका *स्त्री.* (देश.) झींगुर, झिल्ली।

झील *स्त्री.* (देश.) 1. प्रकृति निर्मित सरोवर, बहुत बड़ा तालाब 2. एक बहुत बड़ा अंत:स्थल-वाला (गहरा) प्राकृतिक स्थान जिसमें न बहने वाली-बहुत सी जलराशि हो।

झीलर *पुं.* (देश.) छोटी झील, छोटा तालाब।

झीवर *पुं.* (तद्.) माँझी, मल्लाह, मछुआरा।

झुंट *पुं.* (तद्.) झाड़ी, पेड़।

झुंड *पुं.* (तद्.) 1. समूह, गिरोह प्रयो. झुंड के झुंड लोग चले आ रहे थे 2. बहुत बड़ी संख्या में, बहुत अधिक।

झुंडी *स्त्री.* (देश.) पौधे की खूँटी जो फसल काटने के बाद जमीन में रह जाती है।

झुँझना *पुं.* (देश.) दे. झुनझुना।

झुँझलाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. खीजना, चिढ़ना 2. बहुत दुखी होकर या क्रोध में बात करना, झिड़झिड़ाना।

झुँझलाहट *स्त्री.* (देश.) खीज, चिढ़।

झुकना *अ.क्रि.* (देश.) टेढ़ा होना, लटकना 2. मुड़ना, दबना 3. झुँझलाना 4. लगना, प्रवृत्त होना 5. किसी ओर पक्षपात करना 6. क्रुद्ध होना मुहा. झुकझुक पड़ना- नशे या नींद के कारण सीधा खड़ा न रह पाना।

झुकरना *अ.क्रि.* (देश.) झुँझलाना, खीजना।

झुकराना *अ.क्रि.* (देश.) 1. झकोरा लेना, झूकना 2. आसपास घूमना या चक्कर काटना।

झुकराना *स.क्रि.* (देश.) झोंका खाना।

झुकवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी से झुकाने या झुकने की क्रिया या काम कराना 2. झुकने या झुकाने में प्रवृत्त करना।

झुकाई *स्त्री.* (देश.) 1. झुकाने या झुकने की क्रिया या भाव 2. झुकाने या झुकने की मजदूरी।

झुकाना *स.क्रि.* (देश.) टेढ़ा करना, मोड़ना 2. नीचा करना 3. प्रवृत्त करना 4. नम्र करना, विनीत करना।

झुकाव *पुं.* (देश.) 1. झुकने की स्थिति या झुकने का भाव 2. ढाल, उतार 3. प्रवृत्ति।

झुगिया *स्त्री.* (देश.) झोंपड़ी, कुटिया।

झुग्गी *स्त्री.* (देश.) झुगिया, 'झोंपड़ी, अत्यंत साधारण अस्थाई निवास-स्थल, कुटिया।

झुग्वी *स्त्री.* (देश.) पत्ते का बना सिर का आवरण या पत्ते का सिरस्त्राण।

झुझकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. उत्तेजित करना 2. भिड़ा देना 3. संघर्ष कराना।

झुटपुटा *पुं.* (देश.) वह समय जब कुछ अंधेरा-सा छा जाता है।

झुटुंग *वि.* (देश.) झोटेवाला, जटाधारी।

झुट्ठा *वि.* (देश.) दे. झूठा।

झुठलाना *स.क्रि.* (देश.) झूठा ठहराना, झूठा साबित करना।

झुठाई *स्त्री.* (देश.) झूठापन, असत्यता।

झुठाना *स.क्रि.* (देश.) झूठा ठहराना, झुठलाना, झूठा साबित करना।

झुठालना *स.क्रि.* (देश.) दे. झुठलाना।

झुणकार *स्त्री.* (देश.) रुनझुन, झनकार।

झुनक *स्त्री.* (देश.) 1. घुँघरु की ध्वनि या आवाज 2. रुनझुन की आवाज।

झुनकरना *अ.क्रि.* (देश.) झुनझुन शब्द करना *पु.* 'झुनझुना'।

झुनझुन *पुं.* (देश.) 1. झुनझुन या रुनझुन की ध्वनि या आवाज 2. नूपुर, पैंजनी के बजने की आवाज।

झुनझुना *पुं.* (देश.) झुनझुन करने वाला या झनकारने वाला खिलौना, घुनघुना।

झुनझुनाना *स.क्रि.* (देश.) झुनझुन की ध्वनि पैदा करना।

झुनझुनियाँ *स्त्री.* (देश.) 1. सनई के पौधे पर लगने वाला बजता हुआ सूखा फल या फली 2. झुनझुन शब्द या रव करने वाला बच्चों के द्वारा पैरों में पहनने का एक आभूषण 3. छोटी पायल 4. अपराधियों के पैरों में बाँधने की जंजीर या बेड़ी।

झुनझुनी *स्त्री.* (देश.) दे. झनझनाहट।

झुबझुबी *स्त्री.* (देश.) 1. कान में पहने जाने वाला एक प्रकार का गहना, कर्णफूल 2. एक प्रकार का पौधा जिसमें झुमके के आकार के फूल लगते हैं।

झुमरी *स्त्री.* (देश.) 1. लकड़ी की मुँगरी (मोंगरी) 2. पिटना।

झुमाना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी को झूमने में प्रवृत्त करना 2. धीरे-धीरे हिलाना।

झुरकुन *पुं.* (देश.) किसी चीज के बहुत छोटे-छोटे टुकड़े, चूरा।

झुरझुरी *स्त्री.* (देश.) कंपन, कँपकँपी, हलका-हलका कंपन होने का भाव या क्रिया।

झुरना *अ.क्रि.* (देश.) 1. सूखना, खुश्क होना 2. सूखकर जमीन पर गिर जाना 3. दुखी हो जाना, शोक करना 4. दुर्बल होना, घुलना।

झुरमुट *पुं.* (देश.) झाड़ियों या पत्तों का ऐसा समूह जिससे स्थान ढक जाए 2. पास-पास उगे हुए वृक्ष जिनकी शाखाओं तथा पत्तों के छा जाने से कुंभ-सा बन गया हो 2. समूह या गिरोह 3. चादर ओढ़कर शरीर को छिपाने की क्रिया।

झुर्री *स्त्री.* (देश.) सिलवट, शिकन, सिकुड़न, त्वचा का सिकुड़ना, झुर्रियाँ पड़ने की स्थिति, झुनझुना।

झुलना *पुं.* (देश.) 1. झूला, ढीला कुरता 2. एक सममात्रिक छंद जिसमें 7,7,7,5 की यति के साथ 26 मात्राएँ होती हैं, 'झूलना' 'छंद' *वि.* झूलने वाला, झूलता हुआ।

झुलनी *स्त्री.* (देश.) 1. नथ में लटकन के रूप में पहना जाने वाला नारियों का सोने या मोतियों का गहना 2. कान में पहने जाने वाला स्त्रियों का एक झुमका।

झुलवाना *स.क्रि.* (देश.) दूसरों से झुलाने का काम करवाना 2. झुलाने के काम में लगाना या प्रवृत्त करना।

झुलसन *स्त्री.* (देश.) 1. झुलसने की क्रिया या भाव भाव 2. शरीर को झुलसा देने वाली तेज गर्मी।

झुलसना *अ.क्रि.* (देश.) 1. किसी वस्तु के ऊपरी भाग का जलकर स्याह पड़ जाना 2. गर्मी या ताप से मुरझा जाना *स.क्रि.* किसी का अंशत: ऐसा जलना या जला देना कि उसका रंग काला पड़ जाए प्रयो. झुलस जाना, झुलसा देना।

झुलसा *पुं.* (देश.) पेड़-पौधों को लगने वाला झुलस जाने का रोग।

झुलसाना *स.क्रि.* (देश.) दे. झुलसवाना।

झुलाना *स.क्रि.* (देश.) 1. झूले में बैठाकर हिलाना 2. झूलने के लिए प्रवृत्त करना।

झुलिया *स्त्री.* (देश.) झंगुलिया, बच्चों (शिशुओं) का पहनने का वस्त्र या कुरता।

झुलैया *पुं.* (देश.) झूलने वाला व्यक्ति *वि.* झूलने वाला।

झुलौवा *पुं.* (देश.) 1. स्त्रियों का पहनने का वस्त्र (सलूका) 2. झूलने का साधन 3. झूलने वाला व्यक्ति *वि.* देश. झूलने वाला।

झुल्ला *पुं.* (देश.) दे. झूला।

झुहिरना *अ.क्रि.* (देश.) लदना, लादा जाना।

झूँक *पुं.* (देश.) दे. झोंका।

झूँकटी *स्त्री.* (देश.) छोटी झाड़ी।

झूँका *पुं.* (देश.) दे. झोंका।

झूँखना *अ.क्रि.* (देश.) दे. झोंखना।

झूँझल *स्त्री.* (देश.) दे. झुँझलाहट।

झूँटा *वि.* (देश.) दे. झूठा।

झूँठा *वि.* (देश.) दे. झूठा।

झूखना *अ.क्रि.* (देश.) दे. झींखना।

झूठ *पुं.* (देश.) असत्य, सच न बोलने की क्रिया या भाव, असत्यता, अयथार्थ मुहा. झूठ सच कहना- निंदा करना, शिकायत करना प्रयो. उसे झूठ बोलने की आदत है; झूठ के पुल बाँधना- एक के बाद एक झूठ बोलते जाना प्रयो. भाई! झूठ के पुल तो मत बाँधो; झूठ का पुतला- एकदम झूठा (कोरा झूठा); झूठमूठ में- यों ही, निरुद्देश्य प्रयो. मैंने तो यह बात झूठमूठ में कही है।

झूठन *स्त्री.* (देश.) दे. जूठन।

झूठमूठ *क्रि.वि.* (देश.) झूठे ही, यों ही अकारण, बिना किसी कारण या उद्देश्य के।

झूठ-सच *पुं.* (देश.) 1. झूठ और सच के मिश्रण वाला 2. झूठ-सच की खिचड़ी या झूठ-सच से मिश्रित।

झूठा *वि.* (देश.) 1. जो झूठ हो, असत्यवादी 2. मिथ्यावादी, झूठ बोलने वाला प्रयो. झूठों का कोई विश्वास नहीं करता मुहा. झूठा ठहराना- किसी को गलत साबित करना।

झूठामूठी *क्रि.वि.* (देश.) दे. झूठमूठ।

झूठी *क्रि.वि.* (देश.) 1. दे. झूठमूठ 2. दिखावे मात्र के लिए।

झूणि *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार की सुपारी 2. एक तरह का अपशकुन।

झूम *स्त्री.* (देश.) 1. झूमने की क्रिया या भाव 2. ऊँघ, झपकी।

झूमक *पुं.* (देश.) 1. झूमर, होली के समय गाया जाने वाला गीत 2. एक प्रकार का मंगलगीत 3. मोतियों का गुच्छा जिसे साड़ी-दुपट्टे पर टाँका जाता है।

झूमका *पुं.* (देश.) दे. झुमका।

झूमड़ *पुं.* (देश.) दे. झूमर।

झूमना *अ.क्रि.* (देश.) 1. लहराना, इधर-उधर हिलना-डुलना 2. नशे में लड़खड़ाना।

झूमर *पुं.* (देश.) 1. सिर पर पहनने वाला आभूषण (गहना) 2. कान में पहनने वाला झुमका 3. एक प्रकार का गीत जो होली के अवसर पर गाया जाता है 4. जमघटा, जमघट प्रयो. झूमर डालना, झूमर पड़ना।

झूमरा *पुं.* (देश.) संगीत का एक ताल *वि.* झूमने वाला।

झूमरि *स्त्री.* (देश.) दे. झूमर।

झूमरी *स्त्री.* (देश.) शालक राग का एक भेद।

झूरा *पुं.* (देश.) 1. सूखा स्थान 2. जलवृष्टि का अभाव। मुहा. झूरा पड़ना-सूखा पड़ना प्रयो. इस वर्ष हमारे प्रांत में झूरा पड़ गया।

झूल *स्त्री.* (देश.) 1. हाथी, बैल, घोड़े आदि की पीठ पर सजावट के लिए डाला गया सुंदर कपड़ा 2. ढीला- ढाला पहनावा 3. शीत के कारण पशु के ऊपर डाला गया सादा कपड़ा मुहा. गधे पर झूल पड़ना- अयोग्य अथवा कुरूप व्यक्ति के शरीर पर बहुमूल्य वस्त्र होना।

झूलन *पुं.* (देश.) 1. झूलने का उत्सव 'हिंडोल' 2. एक प्रकार का गाना।

झूलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. झूलने के लिए पेंग लेना, लटकना 2. किसी आशा में लटके होना *वि.* झूलने वाला, झूलना या झूलता *पुं.* एक प्रकार का छंद, पुल।

झूलनी *वि.* (देश.) झूलने वाली।

झूलर *पुं.* (देश.) झुंड, जमघट।

झूला *पुं.* (तद्.) 1. झूलने का साधन 2. हिंडोला 3. झूलने वाला पुल जैसे- लक्ष्मण-झूला।

झूलाना *स.क्रि.* (देश.) झुलाना, झुलाने की क्रिया या भाव।

झूलि *स्त्री.* (तद्.) दे. झूणि।

झूलो *स्त्री.* (देश.) अनाज ओसाने का कपड़ा।

झेंप *स्त्री.* (देश.) 1. लाज, शर्म, संकोच, लज्जा 2. हिचक, झिझक।

झेंपना *अ.क्रि.* (देश.) शरमाना, लज्जित होना।

झेंपू *वि.* (देश.) शरमीला, झेंपने वाला, संकोची।

झेंलनी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की जंजीर जो कान के गहने का भार संभालने के लिए बालों में अटकाई जाती है।

झेपना *अ.क्रि.* (देश.) दे. झेंपना।

झेरना *अ.क्रि.* (देश.) 1. झेलना, सहना 2. छेड़ना, शुरू करना, आरंभ करना।

झेल *स्त्री.* (देश.) 1. झेलने, सहने की क्रिया या भाव 2. तैरने में हाथ-पैर से पानी हटाने या फेंकने की क्रिया।

झेलना *स.क्रि.* (देश.) 1. अपने ऊपर लेना, सहना, बरदाश्त करना 2. तैरते समय पानी को हाथ-पैरों से इधर-उधर हटाना 3. पानी को हाथ-पैर से हिलाना 4. पानी में हिलकर पार जाना 5. हज़म करना, ग्रहण करना 6. ठेलना, आगे चलाना, ढकेलना।

झोंक *स्त्री.* (देश.) 1. झुकाव, प्रवृत्ति 2. तराजू के किसी पलड़े का किसी एक ओर अधिक झुकना या झुकने का भाव या क्रिया मुहा. झोंक मारना- डांड़ी मारना, कम तौलना प्रयो. यह दुकानदार प्राय: झोंक मारता है 2. भार, बोझ 3. वेग, झटका, 4. आवेश प्रयो. 1. सारी झोंक तो पिता जी की मुझे ही सहनी पड़ती है 2 झोंक में आकर रामू ने घर का सारा काम कर डाला, झोंक-झोंक-ठाट बाट की धुन, धूमधाम, झोंका।

झोंकना *स.क्रि.* (देश.) 1. वेगपूर्वक किसी वस्तु को आगे फेंकना, फेंक कर छोड़ना प्रयो. आँख में धूल झोंकना मुहा. भाड़ झोंकना- बेकार का काम करना प्रयो. वह दिल्ली गया, कमाकर कुछ नहीं लाया, मानो दिल्ली गया और भाड़ झोंकता रहा 2. ढकेलना प्रयो. उसे तो तुमने आगे और आगे ही झोंक दिया 3. अंधाधुंध खर्च करना शादी-विवाह में रुपया झोंकना 4. बरबाद करना 5. मढ़ना, आरोपित करना-सुधीश ने सारा आरोप

आप ही झोंक दिया 6. ठेलना-उसने तो अपनी बहू को ही चूल्हे-चौके के काम में झोंक रखा है, खुद कुछ नहीं करती।

झोंकवा *वि.* (देश.) झोंकने का काम करने वाला *पुं.* झोंकने का काम करने वाला आदमी।

झोंका *पुं.* (देश.) 1. हवा की हिलोर, तेज हवा का चल पड़ना (धक्का), पानी की हिलोर 2. ठाट, सजावट 3. मुट्ठी 4. थोडे समय के लिए झपकी जो अचानक लगने लगे 5. वेग से इधर-उधर झुकना, हिल जाना 6. झूले की पेंग 7. विपत्ति, आघात 8. नींद का जोर सहना।

झोंकाई *स्त्री.* (देश.) 1. झोंकने का भाव, या क्रिया 2. झोंकने की मज़दूरी।

झोंकारना *स.क्रि.* (देश.) झुलसा देना, जला देना।

झोंकिया *पुं.* (देश.) झोंकवा, झोंकने का काम करने वाला।

झोंकी *स्त्री.* (देश.) 1. बोझ, भार 2. जवाबदेही।

झोंझ *पुं.* (देश.) 1. घोंसला 2. पक्षियों में गले से थैलीनुमा लटकता हुआ मांस 3. खुजली, सुरसुराहट मुहा. झोंझ मारना- खुजली होना।

झोंझल *पुं.* (देश.) झुँझलाहट, कुढ़न।

झोंट *पुं.* (तद्.) 1. झाड़ी 2. झुरमुट 3. आड़ 4. जुट्टा दे. झोंटा।

झोंटा *पुं.* (तद्.) बड़े-बड़े बालों का समूह या जुट्टा। मुहा. झोंटा मारना- झूले को धक्का देना, पेंग मारना।

झोंटी *स्त्री.* (देश.) दे. झोंटा।

झोंपड़ा *पुं.* (देश.) घास-फूस से छाया हुआ कच्चा घर, कुटिया।

झोंपड़ी *स्त्री.* (देश.) छोटा झोंपड़ा, कुटिया, कुटी।

झोक *स्त्री.* (देश.) दे. झोंक।

झोखना *अ.क्रि.* (देश.) डालना, छोड़ना, देना।

झोझर *पुं.* (देश.) 1. पेट 2. अमाशय 3. पचौनी (पाचन-स्थल)।

झोटिंग *पुं.* (देश.) बहुत बड़े-बड़े खड़े बालों वाला व्यक्ति भूत, प्रेत, पिशाच आदि।

झोड़ *पुं.* (तद्.) सुपारी का वृक्ष।

झोपड़ा *पुं.* (देश.) दे. झोंपड़ा।

झोपड़ी *स्त्री.* (देश.) दे. झोंपड़ी।

झोर *पुं.* (देश.) दे. झोल।

झोरना *स.क्रि.* (देश.) 1. जोर से हिलाना, झकझोरना, झटका देकर हिलाना 2. छककर खाना 3. डाल को इस तरह हिलाना कि उसके फल तथा पत्ते भी झड़ जाएँ प्रयो. आम झोरना, इमली झोरना 4. इकट्ठा करना, एकत्र करना।

झोल *पुं.* (देश.) 1. आम का पना 2. तरकारी आदि का रस 3. कपड़े का लटकने या झूलने वाला अंश, झोर या झोरी 4. पल्ला, आँचल 5. परदा, ओट।

झोलदार *वि.* (देश.) जिसमें झोल हो, रसदार।

झोला *पुं.* (देश.) 1. कपड़े का थैला 2. गिलाफ, खोली चोला 3. एक प्रकार का वात रोग, लकवा या पक्षाघात। मुहा. झोला मारना-वात रोग से किसी अंग का बेकार हो जाना, पक्षाघात होना, सुस्त पड़ जाना 4. लू या साला आदि से पेड़ों का मुरझा जाना 5. झटका, आघात, धक्का।

झोली *स्त्री.* (देश.) 1. राख, भस्म 2. सफरी बिस्तर बिस्तर मुहा. झोली बुझाना-सब काम हो जाने पर उसे करने के लिए तैयार या तत्पर होना।

झौंद *पुं.* (देश.) पेट, उदर।

झौंर *पुं.* (देश.) 1. झुंड, समूह 2. झुरमुट 3. एक प्रकार का गहना।

झौंरना *अ.क्रि.* (अनु.) गूँजना, गुंजारना।

झौंरी *स्त्री.* (देश.) 1. झोली 2. पेट, झौझर 3. एक तरह की रोटी।

झौवा *पुं.* (देश.) खँचिया।

झौहाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. गुर्राना 2. झल्लाते हुए बोलना 3. चिड़चिड़ाना।

ट

हिंदी देवनागरी वर्णमाला का ग्यारहवाँ व्यंजन, टवर्ग का पहला व्यंजन उच्चारण स्थान मूर्धा।

टंक *पुं.* (तत्.) चार माशे का एक तौल 2. छेनी, पत्थर काटने का औज़ार 3. कुल्हाड़ी, फरसा 4. तलवार 5. दरार 6. कोष, खजाना 7. क्रोध 8. दर्प *पु.* (अं.) पानी रखने का हौज, तालाब *पु.* (देश.) थोड़ा अंश।

टंकक *पुं.* (तत्.) 1. चाँदी का सिक्का या रुपया 2. टाँकी, छेनी 3. टंकण कार्य करने वाला। typist

टंकण *पुं.* (तत्.) 1. सोहागा 2. टाइपराइटर पर टंकित करने का कार्य।

टंकण यंत्र *पुं.* (तत्.) टाइपराइटर।

टंकणक्षार *पुं.* (तत्.) सोहागा।

टंका *पुं.* (देश.) एक प्रकार का गन्ना या ईख।

टंकानक *पुं.* (तत्.) शहतूत।

टंकार *पुं.* (तत्.) 1. धातु खंड से आघात की ध्वनि, झनकार 2. धनुष की चढ़ी हुई डोरी को खींचकर छोड़ने से उत्पन्न ध्वनि 3. कीर्ति, प्रसिद्धि 4. कोलाहल, शोरगुल।

टंकारना *स.क्रि.* (तत्.) धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाकर आवाज़ करना।

टंकारी *पुं.* (तत्.) एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ लंबोतरी होती हैं।

टंकिका *स्त्री.* (तत्.) छेनी, टाँकी।

टंकी *स्त्री.* (तद्.) पानी भरने का कुंड, पानी या तेल तेल को रखने का बड़ा बर्तन।

टंकोरना *स.क्रि.* (देश.) 1. टंकारना 2. ठोकर लगाना।

टंकोरी *पुं.* (देश.) दे. टँकोरी।

टंग *पुं.* (तत्.) 1. कुदाल, फरसा 2. कुल्हाड़ी 3. टाँग, जंघा 4. सोहागा।

टंगण *पुं.* (तत्.) सोहागा।

टंगिनी *स्त्री.* (तद्.) पाठा।

टंच *वि.* (देश.) तैयार, मुस्तैद।

टंट-घंट *पुं.* (अनु.) पूजा-पाठ का आडंबर।

टंटा *पुं.* (देश.) 1. उपद्रव, दंगा, फसाद 2. झगड़ा, कलह।

टंडल *पुं.* (देश.) मजदूरों का मेठ या जमादार।

टंडैल *पुं.* (देश.) दे. टंडल।

टँकना *अ.क्रि* (देश.) टाँका जाना 2. सिलाई द्वारा जुड़ना।

टँकवाना *स.क्रि.* (देश.) दे. टँकाना।

टँकाई *स्त्री.* (देश.) टाँकने का काम या क्रिया, टाँकने की मजदूरी।

टँकाना *स.क्रि* (देश.) टाँकों से जुड़वाना या सिलवाना 2. याददाशत के लिए लिखवा देना 3. खुरदुरा करना।

टँकोरी *स्त्री.* (तद्.) सोना-चाँदी तौलने का छोटा काँटा।

टँगड़ी *स्त्री.* (देश.) घुटने से एड़ी तक का भाग, टाँग टाँग मुहा. टँगड़ी पर उड़ाना- कुश्ती में पैर से पैर फँसाकर गिराना।

टँगना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. लटकना 2. लटकाया जाना, फाँसी पर चढ़ना।

टँगरी *पुं.* (तत्.) दे. टँगड़ी।

टँगारी *स्त्री.* (तद्.) कुल्हाड़ी, कुठार।

टँगिया *स्त्री.* (तद्.) छोटी कुल्हाड़ी।

टँड़िया *स्त्री.* (देश.) बाँह पर पहनने का गहना।

ट *पुं.* (तत्.) 1. टंकार जैसा शब्द 2. नारियल का खोपड़ा 3. बौना।

टक *स्त्री.* (देश.) बिना पलक गिरे ताकना, स्थिर दृष्टि मुहा. टक बँधना- दृष्टि जमाकर देखना; टक बाँधना- किसी को स्थिर दृष्टि से देखना; टक लगाना- प्रतीक्षा में रहना।

टकटक *क्रि.वि.* (देश.) एकटक देखना, टकटकी लगाकर देखना।

टकटका *वि.* (देश.) एक जगह स्थित दृष्टि।

टकटकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. एकटक देखना, दृष्टि से देखना 2. टकटक ध्वनि करना 3. फल गिराने के लिए किसी पेड़ को हिलाना।

टकटकी *स्त्री.* (देश.) स्थिर दृष्टि, अपलक तकाई मुहा. टकटकी बँधना- स्थिर दृष्टि होना; टकटकी बाँधना- स्थिर दृष्टि से देखना।

टकटोरना *स.क्रि.* (देश.) छूकर पता लगाना या जाँचना, टटोलना।

टकटोलना *स.क्रि.* (देश.) टटोलकर देखने की क्रिया या काम।

टकटोहना *पुं.* (देश.) दे. टकटोलना।

टकतंत्री *स्त्री.* (तत्.) सितार की तरह का एक प्राचीन बाजा।

टकना *पुं.* (देश.) टाँग।

टकराना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ज़ोर से भिड़ना, ठोकर लग जाना 2. इधर-उधर घूमना, मारा-मारा फिरना *स.क्रि.* दो वस्तुओं को आपस में टकरा देना। मुहा. माथा टकराना- अनुनय-विनय करना, सिर मारना, हैरान होना, किसी को किसी से लड़ा देना।

टकराव *पुं.* (देश.) टकराहट, टक्कर।

टकराहट *स्त्री.* (देश.) टकराने का भाव या क्रिया 2. 2. संघर्ष, लड़ाई।

टकरोना *स.क्रि* (देश.) दे. टकटोलना।

टकसार *स्त्री.* (देश.) दे. टकसाल।

टकसाल *स्त्री.* (देश.) 1. सिक्कों की ढलाई का स्थान मुहा. टकसाल का खोटा- नीच, कमीना, दुष्ट; टकसाल चढ़ना- टकसाल में परखा जाना, पारंगत माना जाना; टकसाल बाहर- अप्रामाणिक। 2 निर्दोष वस्तु, असल चीज।

टकसाली *वि.* (देश.) 1. टकसाल का बना हुआ, खरा, चोखा 2. सर्वसम्मत 3. प्रामाणिक, पक्का, जँचा हुआ मुहा. टकसाली बात- पक्की बात, ठीक बात; टकसाली भाषा/बोली- शिष्ट भाषा/बोली।

टका *पुं.* (देश.) 1. चाँदी, ताँबे का सिक्का (जो दो पैसों के बराबर होता था) पर्या. अधन्ना, दो पैसे मुहा. टका सा जवाब देना- तुरंत अस्वीकार करना, साफ इनकार कर देना; टका सा मुँह लेकर रह जाना- शर्मिंदा होना, खिसिया जाना; टके ऐंठना- अनुचित रूप से पैसा प्राप्त करना; टके की औकात- गरीब आदमी; टके को न पूछना- ज़रा सा भी महत्व न होना 2. रुपया-पैसा प्रयो. टका पास हो सभी इज्ज़त करते हैं।

टकाना *स.क्रि.* (देश.) दे. टँकाना।

टकासी *स्त्री.* (देश.) टके रुपए का ब्याज, रुपए पर दो पैसे का सूद।

टकाही *स्त्री.* (देश.) टकासी, एक रुपए पर प्रतिमास दो पैसे का सूद देने-लेने का ढंग।

टकुआ *पुं.* (तद्.) 1. तकला, एक प्रकार का सुआ 2. छोटे तराजू या काँटे के पल्लों में लगा हुआ धागा।

टकुली *स्त्री.* (देश.) पत्थर काटने वाली छेनी, नक्काशी करने का एक औजार।

टकैत *वि.* (देश.) टके वाला, रुपए पैसे वाला 2. थोड़ी पूँजी या कम हैसियत वाला।

टकोटहन *पुं.* (देश.) छूकर या स्पर्श से जाँचना।

टकोर *स्त्री.* (देश.) 1. हलकी चोट, थपेड़ 2. डंके की की चोट 3. सेंक, सिंकाई।

टकोरना *स.क्रि.* (देश.) 1. डंके पर चोट करना 2. सेंकना, सिंकाई करना 3. ठोकर लगाना, आघात पहुँचाना।

टकोरा *पुं.* (देश.) डंके की चोट।

टकौरी *स्त्री.* (देश.) छोटा काँटा, सोना वगैरह तौलने तौलने का छोटा तराजू।

टक्क *पुं.* (तत्.) कंजूस व्यक्ति।

टक्कर *स्त्री.* (देश.) 1. ठोकर 2. दो चीजों का वेग के साथ आपस में भिड़ना 3. मुकाबला मुहा.

टक्कार का- जोड़ का, बराबरी का; टक्कर खाना- मुकाबले का होना; टक्कर लेना- वार सहना, भिड़ना; टक्कर मारना- मुकाबला करना, हैरान होना; टक्कर लड़ना- माथे से माथा भिड़ना; टक्कर लड़ाना- सिर से धक्का मारना 4. घाटा, हानि, नुकसान मुहा. टक्कर लगना- नुकसान होना प्रयो. बैठे बिठाए सौ रुपए की टक्कर लग गई; टक्कर झेलना- घाटा या हानि सहना।

टखना *पुं.* (देश.) एड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गाँठ।

टगण *पुं.* (तत्.) छह मात्राओं का एक गण।

टगना *अ.क्रि.* (देश.) टलना, डिगना।

टगर *पुं.* (देश.) 1. सोहागा 2. मेंड़, टीला *वि.* तिरछी निगाह से देखने वाला।

टघरना *स.क्रि.* (देश.) पिघलना।

टचटच *क्रि.वि.* (देश.) धायँ-धायँ करते हुए जलना, धू-धू कर जलना।

टचना *अ.क्रि.* (देश.) आग का जलना।

टचनी *पुं.* (देश.) बरतनों पर नक्काशी करने वाला एक औज़ार।

टटका *वि.* (देश.) 1. हाल ही का, ताज़ा 2. नया, कोरा प्रयो. टटका घड़ा- कोरा घड़ा।

टटल बटल *वि.* (देश.) ऊटपटांग, अंटसंट।

टटाना *अ.क्रि.* (देश.) सूख जाना।

टटावली *स्त्री.* (देश.) कुररी, टिरिहरी।

टटिया *स्त्री.* (देश.) टट्टी।

टटीरी *स्त्री.* (देश.) टिटिहरी चिड़िया।

टटुवा *पुं.* (देश.) दे. टिरिहरी।

टटोरना *स.क्रि* (देश.) दे. टटोलना।

टटोल *स्त्री.* (देश.) टटोलने का भाव या क्रिया।

टटोलना *स.क्रि.* (देश.) 1. उंगलियों से छूना/दबाकर देखना 2. किसी वस्तु को इधर-उधर हाथ फेरकर पता लगाना 3. किसी के बारे में पता लगाना, किसी के हृदय के भाव जानना, थाह लेना मुहा. मन टटोलना- हृदय के भाव का पता लगाना।

टटोहना *स.क्रि.* (देश.) दे. टटोलना।

टट्‌टनी *स्त्री.* (तद्.) छिपकली।

टट्‌टर *पुं.* (तत्.) परदे के लिए लगाया गया बाँस आदि की फट्टियों का पल्ला।

टट्‌टरी *स्त्री.* (तत्.) 1. ढोल या नगाड़े का शब्द 2. चुहुलबाजी, ठट्ठा 3. एक बाजा, ढोल।

टट्‌टा *पुं.* (तद्.) बाँस की फट्टियों का परदा या पल्ला, लकड़ी का पल्ला, बड़ी टट्टी।

टट्‌टी *स्त्री.* (तद्.) 1. बाँस की फट्टियों, सरकंडों आदि से जोड़ कर बनाया गया ढाँचा जिसे परदे के रूप में प्रयोग किया जाता है मुहा. टट्टी की आड़ से शिकार खेलना- छिपकर चाल चलना, गुप्त रूप से कार्य करना; टट्टी में छेद करना- खुले आम कुकर्म करना, बेशर्म होना, निर्लज्ज होना; टट्टी लगाना- परदा लगाना, आड़ करना, किसी के आगे भीड़ लगाना 2. चिक-चिलमन 3. पाखाना।

टट्‌टी संप्रदाय *पुं.* (तत्.) एक धार्मिक वैष्णव संप्रदाय।

टट्‌टुर *पुं.* (तत्.) भेरी का शब्द।

टट्‌टू *पुं.* (अनु.) छोटे कद का घोड़ा मुहा. ट्टटू पार होना-काम निकल जाना, प्रयोजन सिद्ध होना; भाड़े का टट्टू- पैसे लेकर काम करने वाला; टट्टू भड़कना- काम भड़कना-कामोद्दीपन होना।

टड़िया *स्त्री.* (देश.) बाँह पर पहना जाने वाला एक गहना, बाजूबंद, टाँड़।

टन *स्त्री.* (अनु.) 1. 1000 किलो का एक परिमाण 2. किसी धातुखंड से टकराने की ध्वनि, टनकार, झनकार मुहा. टन हो जाना- झट से मर जाना।

टनकना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. टनटन बजना 2. धूप लगने से सिर में दर्द होना, रह-रहकर पीड़ा होना।

टनकार *स्त्री.* (देश.) दे. टंकार।

टनटन *स्त्री.* (अनु.) घंटा बजने का शब्द।

टनटनाना *स.क्रि.* (अनु.) घंटा बजाना, टनटन की ध्वनि निकालना। *अ.क्रि.* टनटन बजना।

टनमन *पुं.* (तद्.) तंत्र-मंत्र, जादू-टोना ।

टनमना *वि.* (तद्.) 1. प्रसन्नचित्त, खुश मिजाज़ 2. स्वस्थ, चंगा।

टनमनाना *अ.क्रि.* (देश.) स्वस्थ होना, भला-चंगा होना।

टना *पुं.* (तद्.) 1. भग, योनि 2. स्त्रियों की योनि में निकला हुआ मांस का टुकड़ा।

टनाका *पुं.* (अनु.) बजने की ध्वनि।

टनाटन *स्त्री.* (अनु.) लगातार घंटा बजने की ध्वनि *क्रि.वि.* 1. अच्छी हालत में, बढ़िया 2. भला-चंगा।

टन्नाना *अ.क्रि.* (अनु.) टनटन की आवाज करना।

टप *स्त्री.* (देश.) 1. फिटन, टमटम का सायबान जो चढ़ाया या गिराया जा सकता है 2. बूँद या फल गिरने का शब्द *क्रि.वि.* बहुत जल्दी, शीघ्र, तुरंत मुहा. टप से- झट से, जल्दी ही *पुं.* (अं.) पानी रखने का खुला बरतन, टब।

टपक *स्त्री.* (देश.) 1. टपकने का भाव 2. बूँद-बूँद गिरने की ध्वनि 3. रुक-रुककर होने वाली पीड़ा।

टपकन *स्त्री.* (देश.) 1. टपकने की क्रिया या भाव 2. रुक-रुककर पीड़ा होने की स्थिति, टीस।

टपकना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. बूँद-बूँद गिरना, टप-टप करना, चूना, रिसना प्रयो. छत टपकना, टपक जाना मुहा. टपक पड़ना- आ धमकना 2. फल का पककर गिरना जैसे- आम टपकना, ऊपर से अचानक गिरना, टूट पड़ना 3. अभ्यास होना, झलकना जैसे- उसके हावभाव से शरारत टपकती थी 4. किसी पर मुग्ध होना, मोहित होना 5. किसी घाव का टीस मारना 6. फोड़े का पककर बहना, मवाद निकलना।

टपकवाना *स.क्रि.* (देश.) किसी को टपकाने के लिए प्रेरित करना।

टपका *पुं.* (देश.) 1. बूँद-बूँद गिरना 2. रह-रहकर होने वाली पीड़ा 3. जानवरों का एक रोग।

टपका-टपकी *स्त्री.* (देश.) 1. बूँदा-बाँदी, बारिश की हलकी झड़ी, फुहार 2. फलों का एक-एक कर गिरना 3. एक-दूसरे के बाद व्यक्तियों की मृत्यु *वि.* इक्का-दुक्का, भूला-भटका।

टपकाना *स.क्रि* (देश.) बूँद-बूँद गिरना, अर्क उतारना, चुआना।

टपकेबाज *वि.* (देश.) धूर्त, ठग।

टपना *अ.क्रि* (देश.) 1. बेकार बैठे रहना 2. खाए-पिए बिना पड़े रहना 3. ढकना, ढाँकना, आच्छादित करना।

टपरा *पुं.* (देश.) घास-फूस का छोटा मकान, झोंपड़ा।

टपरिया *स्त्री.* (देश.) मड़ैया, झोंपड़ी, घासफूस का मकान।

टपाटप *क्रि.वि.* (अनु.) 1. लगातार टप-टप के साथ गिरना, बूँद-बूँद करके गिरना 2. झटपट, जल्दी-जल्दी।

टपाना *स.क्रि.* (देश.) 1. बिना खिलाए-पिलाए रखना 2. बेकार आसरे में रखना, परेशान करना।

टप्पर *पुं.* (देश.) छप्पर, छाजन मुहा. टप्पर उलटना-टाट उलटना।

टप्पा *पुं.* (देश.) 1. उछलती हुई चीज का बीच-बीच में ज़मीन छूना 2. फलाँग, छलाँग 3. एक प्रकार का गीत।

टब *पुं.* (अं.) पानी रखने का बड़ा बरतन।

टमकी *स्त्री.* (देश.) छोटा नगाड़ा, डुगडुगी।

टमटम *स्त्री.* (देश.) एक घोड़े वाली दुपहिया खुली गाड़ी, टाँगा।

टमटी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार का बरतन।

टमस *स्त्री.* (तद्.) तमसा नदी।

टमाटर *पुं.* (देश.) एक प्रकार का खट्टा, गोल और छोटा प्रसिद्ध फल जो पकने पर लाल हो जाता है, तरकारी बनाते समय इसका इस्तेमाल किया जाता है तथा यह सलाद के रूप में भी प्रयुक्त होता

है, इसकी सहायता से कैचअप भी बनाई जाती है, इसका पौधा डेढ़-दो फीट से ऊँचा नहीं होता।

टमुकी *स्त्री.* (देश.) दे. टमकी।

टर *स्त्री.* (अनु.) 1. कटु शब्द 2. मेंढक की बोली।

टरकना *अ.क्रि.* (देश.) हट जाना, चला जाना, खिसक जाना, टल जाना मुहा. टरक देना- चुपचाप चला जाना, चुपचाप हट जाना।

टरकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. हटा देना, खिसका देना 2. किसी को बहाना करके टाल देना, चलता करना। प्रयो. उसने अपने देनदारों को टरका दिया।

टरकी *पुं.* (तुर्की) 1. एक प्रकार का मुर्गा जिसकी चोंच के नीचे गले में लाल झालर होती है 2. एक देश का नाम-तुर्की।

टरटराना *स.क्रि.* (देश.) 1. बक बक करना, अंडबंड बकना, बेमतलब बात करना 2. टर टर करना।

टरना *स.क्रि.* (देश.) दे. टलना।

टर्र *पुं.* (अनु.) 1. मेंढ़क 2. टर्राने वाला व्यक्ति 3. कौआ।

टर्र टर्र *स्त्री.* (अनु.) मेंढक की ध्वनि, बेमतलब की बात, बकवाद।

टर्रा *वि.* (अनु.) 1. टर्र-टर्र करने वाला 2. उजड्ड, धृष्ट, कटुवादी, घमंडी, अविनीत।

टर्राना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. घमंड से बात करना 2. चिढ़कर बोलना 3. बेमतलब की बात करना 4. कटु वचन कहना।

टल *पुं.* (तत्.) घबराहट।

टलन *स्त्री.* (तत्.) घबराहट।

टलना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. खिसकना, सरकना, अपने स्थान से हटना मुहा. बात से टलना- मुकर जाना, प्रतिज्ञा पूरी न करना 2. आपत्ति या संकट मिटना 3. स्थगित होना, मुलतवी होना।

टलमल *वि.* (देश.) हिलता हुआ।

टलवा *पुं.* (देश.) बैल।

टलाटली *स्त्री.* (देश.) टालमटोल, बहानेबाजी।

टल्ला *पुं.* (अनु.) धक्का, ठोकर, आघात।

टल्लेनवीसी *स्त्री.* (देश.+फा.) टाल-मटोल।

टवर्ग *पुं.* (तत्.) ट से ण व्यंजनों का वर्ग।

टवाई *स्त्री.* (तद्.) आवारागर्दी, बेकार घूमना।

टस *स्त्री.* (अनु.) किसी भारी चीज के हटने की आवाज, फटने की आवाज मुहा. टस से मस न होना- जरा सा भी न खिसकना या हिलना, अपनी बात पर अड़े रहना, कहने-सुनने का प्रभाव न पड़ना।

टसक *स्त्री.* (देश.) टीस, कसक, रुक-रुककर उठने वाली पीड़ा।

टसकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. अपनी जगह से हिलना, खिसकना 2. टीस मारना, टीसना 3. प्रभावित होना।

टसकाना *स.क्रि.* (देश.) किसी भारी चीज को खिसकाना, अपनी जगह से हिलाना, सरकाना।

टसर *पुं.* (तद्.) 1. एक प्रकार का कड़ा और मोटा रेशम 2. टसर का कपड़ा।

टसुआ *पुं.* (देश.) आँसू, अश्रु मुहा. टसुए बहाना- आँसू बहाना।

टहक *स्त्री.* (देश.) 1. जोड़ों की पीड़ा 2. रह-रहकर होने वाली पीड़ा, टीस, कसक।

टहकना *अ.क्रि.* (देश.) टीस मारना, रह रह कर पीड़ा होना, टसकना।

टहनी *स्त्री.* (देश.) वृक्ष की पतली और लचीली उपशाखा। प्रयो. नीम की टहनी।

टहल *स्त्री.* (देश.) सेवा, सुश्रूषा मुहा. टहल बजाना- सेवा करना, किसी की नौकरी करना।

टहलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. धीरे-धीरे चलना मुहा. टहल जाना- खिसक जाना, चुपचाप चले जाना 2. हवा खाना, सैर करना 3. सेवा-सुश्रूषा करने वाली दासी, लौंडी, नौकरानी।

टहलाना *स.क्रि.* (देश.) 1. धीरे-धीरे चलना 2. घुमाना, फिराना 3. सैर कराना, हवा खिलाना।

टहलुआ *पुं.* (देश.) टहल करने वाला, सेवक, खिदमतगार।

टहलू *पुं.* (देश.) सेवक, चाकर, नौकर।

टहूका *पुं.* (देश.) चुटकुला, पहेली।

टहोका *पुं.* (देश.) 1. झटका 2. हाथ या पैर से दिया जाने वाला धक्का मुहा. टहोका देना- झटकना, धक्का देना।

टांक *पुं.* (देश.) एक प्रकार की शराब।

टाँक *स्त्री.* (तद्.) 1. चार माशे की तौल 2. जाँच, परीक्षा 3. हिस्सा 4. कलम की नोक 5. लिखावट।

टाँकना *स.क्रि.* (तद्.) 1. एक वस्तु के साथ दूसरी वस्तु सिलकर जोड़ना 2. एक वस्तु में दूसरी वस्तु बिठाना 3. सीकर अटकना 4. कूटना, छीलना मुहा. मन में टाँक रखना- याद रखना 5. चटकर जाना, खा लेना प्रयो. वह सारे गुलाब जामुन टाँक गया।

टाँका *पुं.* (देश.) 1. वह वस्तु या कील, जिसके साथ दो वस्तुएँ जुड़ी रहती हैं प्रयो. टाँका उखड़ना, टाँका लगाना, टाँका उधरना, टाँका टूटना। मुहा. टाँका चलाना- कपड़े को सीने के लिए उसमें सुई चलाना; टाँका भरना- सिलाई करना, सीना; टाँका मारना- दूर-दूर सिलाई करना 2. सिलाई, सीवन 3. शरीर के फटे/कटे हुए भाग की सिलाई प्रयो. टाँका खुलना, टाँका टूटना, टाँका लगाना 4. धातुओं को जोड़ने का मसाला *पुं.* (तद्.) पत्थर काटने की छैनी।

टाँकी *स्त्री.* (तद्.) 1. पत्थर गड़ने का औजार मुहा. टाँकी बजना- पत्थर की गड़ाई होना, इमारत का काम लगना 2. तरबूज आदि का चौकोर कटाव 3. आरी का दाँता 4. चिप्पी 5. एक प्रकार का घोड़ा।

टाँग *पुं.* (देश.) 1. कुल्हाड़ा 2. दे. ताँगा।

टाँग *स्त्री.* (तद्.) 1. जाँघ से एड़ी तक का भाग 2. कुश्ती का एक पेच। मुहा. टाँग अड़ाना- अनधिकार किसी काम में हाथ डालना, विघ्न डालना; टाँग उठाना- संभोग करना, जल्दी-जल्दी चलना; टाँग उठाकर मूतना- कुत्तों की तरह मूतना; टाँग टूटना- थकावट होना; टाँग तले से निकलना- हार मानना; टाँग तले से निकालना- हराना, पराजित करना; टाँग तोड़ना- निकम्मा कर देना, किसी भाषा को गलत या अशुद्ध बोलना; टाँग पसारकर सोना- बेखटके सोना, चैन से दिन बिताना; टाँगे रह जाना- चलते-चलते पैर दर्द करना, पाँव लकवा मार जाना; टाँग से टाँग बाँधकर बैठना- हमेशा किसी के पास बैठा रहना।

टाँगन *पुं.* (देश.) छोटे कद का घोड़ा, टट्टू *स.क्रि.* किसी को ऊँचे आधार से लटकाना, फाँसी देना।

टाँगी *स्त्री.* (देश.) कुल्हाड़ी।

टाँगुन *स्त्री.* (देश.) बाजरे जैसा छोटे दाने का अनाज।

टाँघन *स्त्री.* (देश.) दे. टाँगन।

टाँच *स्त्री.* (देश.) टाँका, ऐसी बात जिससे बनता हुआ काम बिगड़ जाए, भाँजी मारना।

टाँचना *स.क्रि.* (देश.) 1. टाँकना, सीना 2. काटना, काट-छाँट करना, छीलना।

टाँची *स्त्री.* (देश.) 1. रुपए रखकर कमर में बाँधने की थैली 2. भाँजी।

टाँठा *वि.* (देश.) 1. कड़ा, कठोर 2. तगड़ा, हृष्ट-पुष्ट।

टाँड़ *स्त्री.* (देश.) 1. सामान रखने के लिए लकड़ी की पाटन 2. खेत में रखवाली के लिए बनाया गया मचान।

टाँड़ा *पुं.* (देश.) 1. बाजूबंद-एक प्रकार का गहना 2. व्यापारियों का समूह 3. हरा कीड़ा जो फसल को हानि पहुँचाता है।

टाँय-टाँय *स्त्री.* (अनु.) कर्कश शब्द, अप्रिय शब्द 2. 2. बक-बक, बकवाद मुहा. टाँय-टाँय करना- बेकार की बातें करना; टाँय-टाँय फिस होना- बढ़-चढ़ कर बातें करना किंतु परिणाम कुछ न निकलना।

टाँस *स्त्री.* (देश.) हाथ या पैर में नसों के तनाव के कारण होने वाली पीड़ा प्रयो. टाँस चढ़ना- नस चढ़ना।

टाँसना *अ.क्रि.* (देश.) दे. टाँचना, टाँकना।

टा *स्त्री.* (तत्.) 1. पृथ्वी, भूमि 2. शपथ, कसम।

टाइप *पुं.* (अं.) छपाई में काम आने वाला अक्षर।

टाइप कास्टिंग मशीन *स्त्री.* (अं.) टाइप ढालने की की मशीन।

टाइप मोल्ड *पुं.* (अं.) टाइप ढालने का साँचा।

टाइपराइटर *पुं.* (अं.) टंकण यंत्र, टाइप करने की मशीन, टंकक, टाइप करने वाला।

टाइम *पुं.* (अं.) वक्त, समय।

टाइमटेबुल *पुं.* (अं.) समय सूची, समय सारणी।

टाइमपीस *स्त्री.* (अं.) मेज घड़ी, मेज पर रखने वाली घड़ी।

टाई *स्त्री.* (अं.) अंग्रेजी पहनावे में गले से लटकाई जाने वाली कपड़े की पट्टी।

टाउन *पुं.* (अं.) शहर, कस्बा।

टाउनहाल *पुं.* (अं.) नगर भवन।

टाकर *पुं.* (देश.) 1. लंपट 2. कुटना।

टाकू *पुं.* (देश.) तकला, टकुआ।

टाट *पुं.* (तद्.) 1. सन या पटसन का मोटा कपड़ा मुहा. टाट में मूँज का बखिया- जैसी भद्दी चीज वैसी सजावट 2. बिरादरी, कुल मुहा. एक ही टाट का- एक ही कुल का; टाट से बाहर होना- बिरादरी से बहिष्कृत होना 3. साहूकार या महाजन की बैठने की गद्दी मुहा. टाट उलटना- दिवालिया निकालना।

टाटर *पुं.* (देश.) खोपड़ी, कपाल। दे. टट्टर।

टाठी *स्त्री.* (देश.) थाली।

टान *स्त्री.* (तद्.) 1. तनाव, खिंचाव खींचने की क्रिया 2. सितार बजाने का एक तरीका।

टानना *स.क्रि.* (देश.) तानना, खींचना।

टानिक *पुं.* (अं.) बलवर्धक पुष्टिकारक औषध, ताकत की दवा।

टाप *स्त्री.* (तद्.) 1. पैर के नीचे का भाग 2. घोड़े के पाँव की जमीन पर पड़ने वाली ध्वनि 3. छलाँग 4. मछली पकड़ने का झाबा, मुर्गियों को बंद करने का झाबा।

टापड़ *पुं.* (देश.) ऊसर मैदान।

टापना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ताकते रह जाना 2. टाप मारना। *स.क्रि.* लाँघना, कूदना।

टापा *पुं.* (देश.) 1. मैदान 2. ऊसर मैदान 3. उछाल, छलांग, कूद 4. झाबा।

टापू *पुं.* (देश.) जल से घिरा हुआ भू-भाग द्वीप।

टाबर *पुं.* (देश.) 1. बालक, लड़का 2. परिवार।

टामक *पुं.* (अनु.) डुग्गी, टिमटिमी।

टामन *पुं.* (देश.) टोटका, टोना।

टायफायड *पुं.* (अं.) एक प्रकार का विषैला बुखार- मोतिझरा।

टार *पुं.* (तत्.) 1. घोड़ा 2. लौंडा, कुटना, दलाल, भँडुआ 3. ढेर, राशि।

टारना *स.क्रि.* (देश.) दे. टालना।

टारपीडो *पुं.* (अं.) विध्वंसक पनडुब्बी जहाज़।

टाल *स्त्री.* (देश.) 1. वस्तुओं का ढेर, भारी राशि 2. 2. लकड़ी, भूस, कोयले आदि की बड़ी दुकान 3. बैलगाड़ी के पहिए का किनारा मुहा. टाल मारना- पहिए के किनारे का छीलना *स्त्री.* (देश.) गाय बैल आदि में बँधा घंटा 2. टालने का भाव 3. झूठा वादा, बहाना प्रयो. टालमटोल- बहाना, टाल टूल- टालने की क्रिया।

टालना *स.क्रि.* (देश.) 1. खिसकाना, सरकाना, हटाना मुहा. किसी पर टालना-किसी दूसरे के सिर मढ़ना 2. झूठा वादा करना 3. किसी को निष्फल लौटा देना 4. किसी अनुचित बात को सुनकर न बोलना।

टालाटूली *स्त्री.* (देश.) टालटूल।

टाली *स्त्री.* (देश.) 1. गाय-बैल के गले में बँधी घंटी घंटी 2. जवान गाय या बछिया।

टावर *पुं.* (अं.) 1. मीनार, लाट, बुर्ज 2. कोट, किला।

टाहली *पुं.* (देश.) टहल करने वाला, सेवक, नौकर।

टिंचर *पुं.* (अं.) किसी औषध का सार जो स्पिरिट के योग से बनाया जाता है, आयोडीन और स्पिरिट का घोल।

टिंटिनिका *स्त्री.* (तत्.) जोंक, अंबुशिरीषिका।

टिंड *पुं.* (देश.) ककड़ी की जाति की एक बेल।

टिंडल प्रभाव *पुं.* (तत्.) प्रकाश का प्रकीर्णन।

टिंडसी *स्त्री.* (देश.) ककड़ी की जाति की एक तरकारी, टिंडा।

टिंडा *पुं.* (तद्.) ककड़ी जाति की एक तरकारी।

टिंडिश *पुं.* (तत्.) टिंडा, डेंड़सी।

टिक *पुं.* (देश.) टिक्कर, पूआ।

टिकट *पुं.* (अं.) 1. महसूल, फीस या कर चुकाने पर दिया गया कागज का टुकड़ा, जिससे कोई काम किया जा सके (रेल का टिकट, सिनेमा का टिकट), प्रवेश-पत्र 2. किसी चुनाव में दल के प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ने का अधिकार या स्वीकृति 3. किसी काम के लिए कर, फीस या महसूल मुहा. टिकट लगाना- कर या महसूल लगाना; टिकट कटाना- मृत्यु को जाना।

टिकट घर *पुं.* (अं.+तद्.) टिकट जारी करने का स्थान या कमरा।

टिकटिक *स्त्री.* (अनु.) 1. घड़ी की आवाज 2. घोड़ा हाँकने के लिए किया गया शब्द।

टिकटिकी *स्त्री.* (देश.) 1. अपराधी को बाँधकर सजा देने का ढाँचा, फाँसी का तख्ता 2. टिकठी।

टिकड़ा *पुं.* (देश.) 1. चिपटा गोल टुकड़ा, धातु या पत्थर का टुकड़ा 2. आँच पर सिंकी हुई रोटी मुहा. टिकड़ा लगाना- बाटी सेंकना।

टिकड़ी *स्त्री.* (देश.) छोटा टिकड़ा।

टिकना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. थोड़े समय के लिए रहना, ठहरना, डेरा डालना 2. तल में जमना 3. स्थिर रहना (वह अपनी बात पर टिकता है) 4. युद्ध में डटे रहना 5. खराब न होना।

टिकरी *स्त्री.* (देश.) 1. टिकिया 2. एक नमकीन पकवान।

टिकली *स्त्री.* (देश.) 1. छोटी टिकिया, छोटी बिंदी, चमकी, सितारा 2. छोटा टीका, एक आभूषण।

टिकस *स्त्री.* (अं.) महसूल, कर।

टिकाऊ *वि.* (देश.) टिकने वाला, चलने वाला।

टिकान *स्त्री.* (देश.) 1. ठहरने या टिकने का भाव 2. पड़ाव, टिकने का स्थान, ठहरने के लिए जगह देना या व्यवस्था करना, ठहराना 2. किसी के सहारे खड़ा करना, जमाना 3. बोझ उठाने या ले जाने में सहायता करना।

टिकाव *पुं.* (देश.) 1. ठहराव, स्थिति 2. स्थिरता, स्थायित्व 3. पड़ाव।

टिकिया *स्त्री.* (देश.) 1. गोल या चपटा छोटा टुकड़ा टुकड़ा 2. एक मिठाई 3. बिंदी 4. चिलम की गोली (देश.) 1. माथा, ललाट 2. माथे पर लगी बिंदी।

टिकुरी *स्त्री.* (देश.) तकली, बिंदी, चमकी।

टिकुली *स्त्री.* (देश.) दे. टिकुली।

टिकैत *पुं.* (देश.) 1. युवराज, राजा का पुत्र जो राजतिलक का अधिकारी हो 2. सरदार।

टिकोरा *पुं.* (देश.) आम का छोटा कच्चा फल, अंबिया।

टिक्कड़ *पुं.* (देश.) 1. बड़ी टिकिया 2. बाटी, हाथ से बनी मोटी रोटी जो सेंकी गई हो 3. मालपुआ।

टिक्का *पुं.* (देश.) 1. मूँगफली के पौधे का एक रोग 2. टीका, बिंदी, तिलक 3. याद, सुध।

टिक्की *स्त्री.* (देश.) 1. टिकिया मुहा. टिक्की जमना- कोई उपाय होना, युक्ति लड़ना 2. ताश की बूटी।

टिघलना *अ.क्रि.* (देश.) पिघलना।

टिघलाना *स.क्रि.* (देश.) पिघलाना।

टिचन *वि.* (देश.) 1. दुरुस्त, ठीक 2. मुस्तैद, तैयार।

टिटकारना *स.क्रि.* (देश.) पशुओं को हाँकने के लिए टिक-टिक करके हाँकना।

टिटकारी *स्त्री.* (देश.) टिक-टिक करके हाँकने की आवाज।

टिटिभ *पुं.* (देश.) 1. टिटिहा 2. टिड्डी।

टिटिहरी *स्त्री.* (तद्.) पानी में रहने वाली एक प्रकार की चिड़िया, कुररी।

टिटिहा *पुं.* (देश.) टिटिहरी का नर।

टिड्डा *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का परदार कीड़ा जो पौधों को खाता है।

टिड्डी *स्त्री.* (तद्.) एक जाति का टिड्डा या उड़ने वाला कीड़ा जो झुंड में आकर फसल को हानि पहुँचाता है मुहा. टिड्डी दल- बहुत बड़ा झुंड, बड़ी भारी भीड़।

टिढ़बिंगा *वि.* (देश.) टेढ़ा-मेढ़ा, बेढंगा।

टिन *पुं.* (अं.) दे. टीन।

टिन्नाना *अ.क्रि.* (देश.) नाराज होना, क्रुद्ध होना।

टिप *स्त्री.* (देश.) साँप के काटने का एक प्रकार (अं.) बख्शीश।

टिपका *पुं.* (देश.) बूँद, कतरा।

टिपटिप *स्त्री.* (देश.) 1. टपकने का शब्द, टपकन 2. बूँद-बूँद होने वाली वर्षा, हलकी बूँदाबांदी।

टिपटिपाना *अ.क्रि* (देश.) हलकी वर्षा होना।

टिपवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. लिखवाना 2. दबवाना, चँपवाना।

टिपाई *स्त्री.* (देश.) टीपने की क्रिया, लेखन।

टिपारा *पुं.* (देश.+फा.) मुकुट के आकार की एक टोपी।

टिपिर टिपिर *क्रि.वि.* (अनु.) हवा के साथ बूँदा बाँदी होने की ध्वनि।

टिपुर *पुं.* (देश.) 1. अभिमान, घमंड 2. पाखंड, आंडबर।

टिप्पण *पुं.* (तत्.) 1. व्याख्या, टीका 2. किसी प्रस्ताव के बारे में अधिकारी की राय।

टिप्पणी *स्त्री.* (तत्.) टीका, संक्षिप्त टीका, व्याख्या।

टिप्पन *पुं.* (तद्.) 1. टीका, व्याख्या 2. जन्मकुंडली।

टिप्पनी *स्त्री.* (देश.) व्याख्या, टीका।

टिप्पस *स्त्री.* (देश.) युक्ति, उपाय।

टिप्पी *स्त्री.* (देश.) 1. किसी प्रयोजन को पूरा करने का ढंग 2. अंगूठे का किसी रंग से बना चिह्न/निशान दे. टिक्की।

टिफिन *स्त्री.* (अं.) अंग्रेजों का दोपहर के बाद का जलपान।

टिबरी *स्त्री.* (देश.) पहाड़ की छोटी चोटी।

टिमटिमाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. प्रकाशक्षीण होना 2. मंद-मंद जलना, झिलमिलाना।

टिमाक *स्त्री.* (देश.) बनाव, शृंगार, सिंगार।

टिरफिस *स्त्री.* (देश.) 1. विरोध 2. चींचपड़ 3. प्रतिवाद।

टिलवा *पुं.* (देश.) 1. चापलूस 2 नाटे कद का आदमी।

टिल्ला *पुं.* (देश.) धक्का, चोट, ठोकर।

टिहुकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ठिठकना 2. चमकना 3. चौंकना 4. कोयल का कूकना।

टिहुका *स्त्री.* (देश.) 1. ठिठक 2. चमक 3. रोना 4. कोयल की कूक।

टिहुनी *स्त्री.* (देश.) 1. घुटना 2. कोहनी।

टींड़ी *स्त्री.* (देश.) दे. टिड्डी।

टीकन *स्त्री.* (देश.) थूनी, चाँड़।

टीकना *स.क्रि.* (देश.) टीका लगाना, तिलक करना।

टीका *पुं.* (देश.) 1. तिलक 2. विवाहपूर्व की एक रस्म 3. किसी रोग से बचने के लिए शरीर में औषधि को सुई द्वारा प्रविष्ट कराने की क्रिया 4. किसी समुदाय का सिरमौर 5. राजतिलक 6. युवराज, राजकुँवर 7. राजा या जमींदार को दी जाने वाली भेंट 8. सोने का एक गहना 9. दाग-धब्बा मुहा. टीका टाकना- बकरे को बलिदान से पहले टीका लगाना; टीका देना- टीका लगाना।

टीकाकार *पुं.* (तत्.) व्याख्याकार, वृत्तिकार।

टीका टिप्पणी *स्त्री.* (तत्.) 1. आलोचना 2. निंदा, अप्रशंसा।

टीकी *स्त्री.* (देश.) 1. टिकुली 2. टिक्की, टिकिया 3. टीका।

टीकुर *पुं.* (देश.) ऊँची जमीन।

टीटा *पुं.* (देश.) स्त्रियों की योनि से बाहर निकला हुआ मांस, टना।

टीन *पुं.* (अं.) 1. राँगा 2. राँगे की कलई की हुई लोहे की चादर 3. कनस्तर।

टीप *स्त्री.* (देश.) 1. हाथ से दबाने की क्रिया या भाव 2. ईंटों के जोड़ों में मसा देकर बनाई हुई लकीर 3. जन्मपत्री 4. हुंडी 5. गच की पिटाई 6. स्मरण के लिए किसी बात को लिख लेना 7. चीनी का मैल छुड़ाने के लिए दूध और पानी का शीरा।

टीपटाप *स्त्री.* (देश.) 1. ठाटबाट, सजावट, तड़कभड़क 2. दरारों के जोड़ो में मसाला भरना, छिटपुट मरम्मत।

टीपणा *वि.* (देश.) दे. टीपना।

टीपन *स्त्री.* (देश.) गाँठ, धट्ठा।

टीपना *पुं.* (देश.) 1. हाथ या उँगली से दबाना 2. हलका आघात करना 3. दीवार या फर्श की मसाले से दरारें भरना *पुं.* तद्. जन्मपत्री।

टीबा *पुं.* (देश.) टीला, भीटा।

टीम *स्त्री.* (अं.) खेलने वालों का दल।

टीमटाम *स्त्री.* (देश.) 1. बनाव-सिंगार 2. सजावट, तड़कभड़क।

टीला *पुं.* (तद्.) 1. टीबा, भीटा, छोटी पहाड़ी 2. साधुओं का मठ 3. मिट्टी या बालू का ऊँचा ढेर।

टीस *स्त्री.* (देश.) रह रहकर उठने वाली पीड़ा, कसक मुहा. टीस उठना- दर्द शुरू होना; टीस मारना- रह रहकर पीड़ा होना।

टीसना *स्त्री.* (देश.) चुभती पीड़ा होना, रह रहकर दर्द उठना, कसक होना।

टुंग *पुं.* (तद्.) पहाड़ की चोटी।

टुंच *वि.* (तद्.) 1. तुच्छ, क्षुद्र 2. टुच्चा मुहा. टुंच भिड़ाना- थोड़ी पूँजी से काम शुरू करना; टुंच लड़ाना- जुए में धीरे-धीरे जीतना।

टुंटा *वि.* (देश.) लूला, ठूँठा, जिसके हाथ न हों।

टुंटुक *स.क्रि.* (देश.) 1. काला खैर पक्षी, 2. श्योणाक वृक्ष 3. आलू।

टुंटुनाना *स.क्रि.* (देश.) टुन-टुन की ध्वनि करना।

टुँगना *पुं.* (देश.) कुतरना, कुतरकर चबाना।

टुइयाँ *स्त्री.* (देश.) सुग्गा, छोटी जाति का तोता *वि. वि.* नाटा-बोना।

टुक *वि.* (तद्.) थोड़ा, जरा, कुछ मुहा. टुक सा- थोड़ा सा, जरा सा।

टुक टुक *क्रि.वि* (देश.) दे. टुकुर टुकुर।

टुकड़ *वि.* (देश.) टुकड़ा माँग कर खाने वाला।

टुकड़ा *पुं.* (देश.) किसी वस्तु का एक खंड या भाग मुहा. टुकड़े उतारना- काटकर कई खंड करना; टुकड़े करना- काटकर भाग करना; टुकड़े-टुकड़े करना- काटकर या तोड़कर खंड-खंड करना, चूर चूर करना, अंश या भाग; टुकड़ा तोड़ना- दूसरे के भोजन पर गुजारा करना; टुकड़ा तोडक़र जवाब देना- दो टूक जवाब देना, साफ मना कर देना; टुकड़ा देना- भिखमंगे को खाना देना; टुकड़े टुकड़े को मोहताज करना- दरिद्र या कंगाल हो जाना; टुकड़ा सा तोड़कर हाथ में दे देना- साफ इनकार कर देना।

टुकड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. छोट खंड या भाग, छोटा टुकड़ा 2. समुदाय, मंडली दल (जैसे सेना की टुकड़ी)।

टुकनी *स्त्री.* (देश.) दे. टोकनी।

टुकुर-टुकुर *क्रि.वि.* (अनु.) बिना पलक झपके, निर्निमेष मुहा. टुकुर टुकुर ताकना- ललचाई नजरों से किसी वस्तु या व्यक्ति को देखना।

टुक्का *पुं.* (देश.) टुकड़ा, अंश।

टुक्की *स्त्री.* (देश.) छोटा टुकड़ा, चौथाई भाग।

टुघलाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. चुभलाना 2. जुगाली करना।

टुच्चा *वि.* (देश.) ओछा, नीच, कमीना, छिछोरा, दुष्ट।

टुटनी *स्त्री.* (देश.) छोटी टोंटी।

टुटपुंजिया *वि.* (देश.) थोड़ी पूँजी वाला।

टुटरूँ *पुं.* (अनु.) पेंडुकी नामक चिड़िया, छोटी फ़ाख्ता मुहा. टुटरूँ सा- अकेला।

टुटुहा *पुं.* (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

टुड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. ठोड़ी 2. नाभि 3. टुकड़ी, टोली।

टुनगी *स्त्री.* (देश.) टहनी का सिरा, फुनगी।

टुनहाया *पुं.* (देश.) टोना करने वाला व्यक्ति।

टुनाका *स्त्री.* (तद्.) तालमूली, मुसली।

टुन्ना *पुं.* (तद्.) वह नाल जिसमें फल लटकते हैं जैसे- कद्दू का टुन्ना, ककड़ी का टुन्ना।

टुपकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. धीरे से डंक मारना या काटना 2. चुगली खाना 3. झगड़ा करने के लिए धीरे से कोई बात कह देना।

टुर्रा *पुं.* (देश.) टुकड़ा, दाना, कण।

टूँड़ *पुं.* (तद्.) 1. गेहूँ, जौ आदि की बाली के ऊपर की ओर निकला हुआ नुकीला भाग 2. मच्छर आदि कीड़ों के मुँह के आगे निकली पतली नोक।

टूँड़ी *स्त्री.* (तद्.) 1. लंबी नोक 2. नाभि 3. जौ आदि के दाने के ऊपर का नुकीला भाग।

टूअर *वि.* (देश.) वह बच्चा जिसकी माँ मर गई हो।

टूक *पुं.* (देश.) टुकड़ा, खंड मुहा. दो टूक करना- स्पष्ट करना; दो टूक जवाब देना- साफ-साफ मना कर देना।

टूका *पुं.* (देश.) 1. टुकड़ा 2. रोटी का टुकड़ा 3. भीख।

टूट *स्त्री.* (देश.) टूटकर अलग हुआ भाग, टूटन, खंड।

टूटदार *वि.* (देश.) 1. टूटने वाला 2. मोड़दार, फोल्डिंग (मेज, कुर्सी आदि)।

टूटन *स्त्री.* (देश.) 1. टूटने की क्रिया 2. शरीर में पीड़ा का भाव।

टूटना *अ.क्रि.* (देश.) खंडित होना, टुकड़े-टुकड़े होना, फूटना 2. किसी अंग का जोड़ उखड़ जाना या खुलना जैसे- हाथ टूटना, कोहनी टूटना 3. किसी पर झपटना जैसे- वह खाने पर टूट पड़ा 4. एकदम या एकबारगी बहुत आ जाना जैसे- दुकान पर ग्राहकों की भीड़ टूट पड़ी, मेले में दर्शकों की भीड़ टूट पड़ी मुहा. टूट टूटकर बरसना- मूसलाधार पानी बरसना या बारिश होना 5. सहसा आक्रमण करना, धावा बोलना, फौज दुश्मन पर टूट पड़ी 6. अलग होना, संबंध छूटना जैसे- नाता टूटना 8. दुबला पड़ना, क्षीण होना मुहा. पानी टूटना- कम होना 9. कंगाल हो जाना, धनहीन होना 10. बंद हो जाना जैसे- कठिनाई के कारण कई संस्थाएँ टूट गई 11. कोई स्थान शत्रु के अधिकार में आना जैसे- रणथंभोर का किला टूट गया 12. शरीर में पीड़ा, ऐंठन होना जैसे- मधुमेह में शरीर टूटता है मुहा. टूट पड़ना- अचानक आ जाना उदा. शव पर गिद्ध टूट पड़े, टूटी-फूटी- व्याकरणिक रूप से अशुद्ध, जैसे- वह टूटी-फूटी अंग्रेजी बोल लेती है।

टूटा *वि.* (देश.) 1. खंडित, टुकड़े किया हुआ 2. दुबला, कमजोर 3. गरीब, दीन, दरिद्र मुहा. टूटी बाँह गले पड़ना- किसी अपाहिज का बोझ सिर पर आ पड़ना।

टूटा-फूटा *वि.* (देश.) बिगड़ा हुआ।

टूम *स्त्री.* (देश.) 1. ज़ेवर, गहना, टूमटाम 2. बनाव, सिंगार 3. सुंदर स्त्री 4. साज शृंगार।

टूम-छल्ला *पुं.* (देश.) साधारण गहना मुहा. टूम देना- कबूतर को छतरी पर से उड़ाना।

टूरनामेंट, टूर्नामेंट *पुं.* (अं.) खेल प्रतियोगिता।

टूल *पुं.* (अं.) औजार, उपकरण।

टूसा *पुं.* (देश.) नुकीली कली, डोंडा।

टें *स्त्री.* (अनु.) तोते की बोली मुहा. टें टें- बेकार की की बकवास प्रयो. टें-टें लगा रखी है, टें बोल जाना-झटपट मर जाना।

टेंकिका *स्त्री.* (देश.) ताल का एक भेद।

टेंकी *स्त्री.* (तत्.) एक तरह का नृत्य, शुद्ध राग।

टेंगना *पुं.* (देश.) दे. टेंगर।

टेंगर *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की मछली।

टेंगरा *स्त्री.* (देश.) दे. टेंगर।

टेंट *स्त्री.* (देश.) 1. कपास का डोडा 2. करील का फल 3. धोती की गाँठ 4. जिसमें पैसे रखते हैं।

टेंटर *पुं.* (देश.) आँख के ऊपर उभरा हुआ मांस, ढेंढर।

टेंटवा *पुं.* (देश.) गला, घेंटू।

टेंटा *पुं.* (देश.) एक पक्षी।

टेंटिहा *वि.* (देश.) दे. टेंटी।

टें-टें *स्त्री.* (देश.) 1. तोते की बोली 2. बेकार की बकवाद मुहा. टें-टें लगाना- बकवाद करना, बेकार बोलना।

टेंडसी *स्त्री.* (देश.) टिंडा, टिंडे की बेल।

टेंडु *पुं.* (तद्.) सोना पाठा।

टेउकी *स्त्री.* (देश.) किसी वस्तु को गिरने से बचाने के लिए लगाई गई चीज।

टेक *स्त्री.* (देश.) 1. सहारा, टिकाने के लिए रखी गई वस्तु 2. चबूतरा 3. ऊँचा टीला 4. संकल्प, हठ, जिद मुहा. टेक गहना/टेक पकड़ा- जिद पकड़ना; टेक निभाना- प्रतिज्ञा पूरी करना।

टेकन *पुं.* (देश.) सहारा, टिकाने के लिए रखी गई वस्तु।

टेकना *सं.क्रि* (देश.) सहारा लेना, थाम लेना, सहारे के लिए कोई वस्तु पकड़ना मुहा. घुटने टेकना- हार मानना; माथा टेकना- प्रणाम करना।

टेकनी *स्त्री.* (देश.) सहारा लेने का आधार।

टेकनीक *स्त्री.* (अं.) 1. प्रविधि, शैली, तकनीक 2. रचना पद्धति।

टेकरा *पुं.* (देश.) 1. टीला 2. छोटी पहाड़ी।

टेकरी *स्त्री.* (देश.) दे. टेकरा।

टेकला *स्त्री.* (देश.) धुन, रट।

टेकान *पुं.* (देश.) 1. टेक 2. थूनी, ऊँचा चबूतरा, जिस पर बोझ ढोने वाले बोझा रखकर आराम करते हैं।

टेकाना *स.क्रि.* (देश.) हाथ का सहारा देना, थामना।

टेकानी *स्त्री.* (देश.) किल्ली, धुरी की कील जो पहिए को रोकती है।

टेकी *पुं.* (देश.) दृढ़ प्रतिज्ञ, हठी।

टेकुआ *पुं.* (देश.) 1. टिकाने या रोकने की वस्तु 2. तकला।

टेकुरी *स्त्री.* (देश.) 1. तकली 2. फिरकी 3. सुनार की सलाई 4. मूर्ति का तल चिकना करने का औजार।

टेकुवा *पुं.* (देश.) दे. टेकुआ।

टेढ़ा *वि.* (देश.) 1. झुका हुआ, वक्र, बाँका 2. कठिन, मुश्किल प्रयो. टेढ़ा सवाल, टेढ़ा काम, टेढ़ा-मेढ़ा-जो सीधा न हो प्रयो. टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता। टेढ़ा-बाँका-बना ठना, सजा-सँवरा मुहा. टेढ़ी खीर- मुश्किल काम 3. उग्र-उजड्ड, गुस्सैल प्रयो. टेढ़ा पड़ना प्रयो. जरा-जरा सी बात पर टेढ़ा पड़ने लगता है 4. रुखाई से बात करना, अकड़ना।

टेढ़ी *पुं.* (देश.) दे. टेढ़ा मुहा. टेढ़ी आँख से देखना- शत्रुता के भाव से देखना; टेढ़ी आँखे करना- गुस्से से देखना, बिगड़ना; टेढ़ी सीधी सुनाना- खरी खोटी सुनाना, भला-बुरा कहना।

टेढे *क्रि.वि.* (अर.) तिरछे, घुमाव-फिराव के साथ मुहा. टेढे-टेढ़े जाना- घमंड करना, इतराना।

टेना *स.क्रि.* (देश.) 1. धार तेज करना 2. (मूँछ) ऐंठना।

टेनिस *पुं.* (अं.) एक खेल का नाम।

टेनी *स्त्री.* (देश.) छोटी उंगली मुहा. टेनी मारना- तराजू की डाँडी को उँगली से दबा लेना, कम तौलना।

टेनेंट *पुं.* (अं.) किराएदार।

टेप *पुं.* (अं.) फीता।

टेपारा *पुं.* (देश.) टिपारा।

टेबलेट *पुं.* (अं.) 1. छोटी टिकिया 2. पत्थर, काँसे का फलक।

टेबुल *पुं.* (अं.) 1. मेज 2. नक्शा, सारणी प्रयो. टेबुल क्लाथ, टाइम टेबल।

टेम *स्त्री.* (देश.) दिए की लौ, दीपशिखा *पु.* (अं.) समय, वक्त।

टेमन *पुं.* (देश.) एक प्रकार का साँप।

टेर *स्त्री.* (देश.) 1. पुकार, हाँक 2. ऊँचा गायन।

टेरक *वि.* (तद्.) ऐंचाताना।

टेरना *स.क्रि.* (देश.) 1. तान लगाना, ऊँचे स्वर में गाना 2. हाँक लगाना, बुलाना 3. तय करना 4. बिताना, गुजारा करना प्रयो. वह तो गरीबी में ही जिंदगी टेर रहा है।

टेरवा *पुं.* (देश.) हुक्के की नली, जिस पर चिलम रखते हैं।

टेरा *पुं.* (देश.) तना, शाखा *वि.* (तद्.) ऐंचाताना।

टेरा कोटा *पुं.* (इतालवी.) 1. पकी हुई मिट्टी 2. पकी हुई मिट्टी का रंग।

टेरिऊल *पुं.* (अं.) टेरिलीन और ऊन से बना कपड़ा या वस्त्र।

टेरिकाट *पुं.* (अं.) टेरिलीन और सूत से बना कपड़ा या वस्त्र।

टेरिटोरियल फोर्स *स्त्री.* (अं.) देश रक्षक सेना, नागरिक सेना, सशस्त्र बल।

टेरिलिन *पुं.* (अं.) एक प्रकार का कृत्रिम रेशा या उससे बना वस्त्र।

टेरी *स्त्री.* (देश.) शाखा, टहनी जैसे- नीम की टेरी, आम की टेरी।

टेलर *पुं.* (अं.) दर्जी।

टेलिग्राफ *पुं.* (अं.) तार।

टेलिग्राम *पुं.* (अं.) तार, तार द्वारा भेजी गई खबर।

टेलिपैथी *स्त्री.* (अं.) भावनाओं को जानने की मानसिक क्रिया।

टेलिप्रिंटर *पुं.* (अं.) विद्युत संचालित टंकण यंत्र जिसमें तार द्वारा प्राप्त समाचार छपते हैं।

टेलिफोटोग्राफी *स्त्री.* (अं.) दूरबीन द्वारा चित्र खींचना।

टेलिफोन *पुं.* (अं.) दूरभाष, टेलीफोन।

टेलिविजन *पुं.* (अं.) दूरवीक्षण, दूरदर्शन, दृश्य प्रतिबिंबों का लघु रेडियो तरंगों द्वारा प्रेषण एवं पुनर्निर्माण।

टेलिस्कोप *पुं.* (अं.) दूरबीन, दूरदर्शक यंत्र।

टेली *पुं.* (देश.) एक पेड़ जिसकी लकड़ी लाल और मजबूत होती है।

टेव *स्त्री.* (देश.) आदत, अभ्यास, प्रकृति, स्वभाव।

टेवना *स.क्रि.* (देश.) टेना, अस्त्र की धार रगड़ कर तेज करना।

टेवा *पुं.* (देश.) जन्मपत्री, जन्म-कुंडली 2. लग्न-पत्र।

टेवैया *पुं.* (देश.) धार तेज करने वाला।

टेस *पुं.* (देश.) एक प्रकार की बढ़िया ऊन और उसका कंबल।

टेसुआ *पुं.* (देश.) दे. टेसू।

टेसू *पुं.* (तद्.) 1. पलाश या ढाक का फूल 2. एक उत्सव।

टेहुनी *स्त्री.* (देश.) कोहनी।

टैंक *पुं.* (अं.) 1. मोटर की तरह का एक युद्ध यान 2. तालाब।

टैक्स *पुं.* (अं.) कर या महसूल जैसे- सेल्स टैक्स, टोल टैक्स।

टैक्सी *स्त्री.* (अं.) किराए पर चलने वाली मोटर गाड़ी।

टैन *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की घास जिसका प्रयोग चमड़ा सिझाने में किया जाता है।

टैना *पुं.* (देश.) पशु-पक्षियों को डराने के लिए खेत में खड़ा किया जाने वाला पुतला।

टोंक *पुं.* (देश.) छोर, नोक।

टोंचना *स.क्रि.* (देश.) गड़ाना, गोदना, घँसाना।

टोंट *स्त्री.* (तद्.) चोंच।

टोंटनी *पुं.* (देश.) 'टोंटी'।

टोंटा *पुं.* (तद्.) 1. पानी गिरने की टोंटी 2. सिगरेट का अधजला टुकड़ा 3. घोड़िया।

टोंटी *स्त्री.* (तद्.) 1. बर्तन से पानी गिरने की नली 2. थूथन ।

टोक *स्त्री.* (देश.) रोक, टोकने की क्रिया *पु.* 1. किसी शब्द या पद का टुकड़ा प्रयो. टोक टाक- पूछताछ, रोक-टोक- मनाही 2. बुरी नजर मुहा. टोक में आना- बुरी नजर के सामने पड़ जाना।

टोकना *स.क्रि.* (देश.) 1. पूछताछ करना 2. किसी बात की याद दिलाना 3. ऐतराज करना।

टोकनी *स्त्री.* (देश.) डलिया, टोकरी, फल-तरकारी आदि रखने का गोल गहरा बर्तन।

टोकरा *पुं.* (देश.) 1. बड़ी डलिया, फल-तरकारी आदि रखने का गोल तथा गहरा बर्तन जो टहनियों को गाँछकर बनाया जाता है 2. झाबा, डला, खाँचा।

टोकरी *स्त्री.* (देश.) 1. छोटा टोकरा, झाँपी 2. देगची।

टोका-टाकी *स्त्री.* (देश.) किसी को बीच में टोक देने की क्रिया।

टोटक *पुं.* (देश.) दे. टोटका।

टोटका *पुं.* (देश.) टोना, यंत्र-मंत्र, लटका, बुरी नजर से बचाने के लिए रखी गई वस्तु मुहा. टोटका करके आना- तुरंत चला जाना; टोटका होना- चटपट हो जाना।

टोटल *पुं.* (अं.) जोड़, ठीक, कुल।

टोटा *पुं.* (तद्.) 1. बाँस आदि का टुकड़ा 2. घाटा, कमी मुहा. टोटा भरना- नुकसान की भरपाई करना, हर्जाना देना।

टोटि *स्त्री.* (तद्.) गलती, त्रुटि।

टोड़ा *पुं.* (तद्.) एक रागिनी।

टोड़ी *स्त्री.* (तद्.) टोंटा।

टोना *पुं.* (देश.) जादू, टोटका *स.क्रि.* टटोलना।

टोप *पुं.* (देश.) बड़ी टोपी, टोपा, शिरस्त्राण।

टोपा *पुं.* (देश.) बडी टोपी।

टोपी *स्त्री.* (देश.) 1. सिर का एक पहनावा मुहा. टोपी उछलना- बेइज्जती होना; टोपी उछालना- बेइज्जती करना; टोपी बदलना- संबंध जोड़ना 2. ढक्कन 3. लिंग का अग्र भाग, सुपारा 4. राजमुकुट, ताज।

टोपीवाला *वि.* (देश.) 1. टोपी पहना हुआ आदमी 2. टोपियाँ बेचने वाला।

टोल *स्त्री.* (देश.) 1. किले के चारों ओर का घेरा 2. मंडली, जत्था, समूह प्रयो. टोल-मटोल- झुंड के झुंड 3. मुहल्ला, बस्ती, टोला (अं.) चुंगी, मार्गकर।

टोला *पुं.* (देश.) 1. मुहल्ला, छोटी बस्ती 2. एक ही पेशे वालों की बस्ती जैसे- धोबी टोला।

टोली *पुं.* (तद्.) 1. छोटा मुहल्ला, बस्ती का छोटा भाग 2. झुंड, समूह, जत्था 3. सिल, पत्थर की चौकोर पटिया।

टोह *स्त्री.* (देश.) खोज, तलाश, टटोल मुहा. टोह मिलना- पता चलना, पता लगना; टोह में रहना- तलाश में लगे रहना, ढूँढ़ते रहना; टोह लगाना- पता लगाना, सुराग लगाना।

टोहक-विमान *पुं.* (देश.+तत्.) टोह लेने वाला विमान, खोजी विमान।

टोहना *स.क्रि.* (देश.) 1. खोजना, ढूँढना 2. छूना, टटोलना।

टोहाटाई *स्त्री.* (देश.) 1. देखभाल 2. छानबीन, तलाश।

टोहिया *वि.* (देश.) 1. पता लगाने वाला, टोह लगाने वाला 2. जासूस।

टोही *वि.* (देश.) पता लगाने वाला टोह लगाने वाला, तलाश करने वाला।

टौंस *स्त्री.* (देश.) विंध्य प्रदेश की एक छोटी नदी जिसका प्राचीन नाम 'तमसा' था।

टौर *पुं.* (देश.) झुंड, समूह।

टौरना *स.क्रि.* (देश.) 1. पता लगाना 2. जाँच करना।

टौरिया *स्त्री.* (देश.) 1. छोटी पहाड़ी 2. टीला।

ट्यूबवैल *पुं.* (अं.) नलकूप।

ट्रंक *पुं.* (अं.) लोहे का संदूक।

ट्रंप *पुं.* (अं.) ताश का एक खेल, तुरुप।

ट्रक *पुं.* (अं.) बोझा ढोने वाला खुला वाहन।

ट्रस्ट *पुं.* (अं.) न्यास, जन-कल्याण के लिए संपत्ति का प्रबंध सौंपना।

ट्रस्टी *पुं.* (अं.) न्यासी, वह व्यक्ति जिसे प्रबंध के लिए कोई संपत्ति सौंपी जाए।

ट्रांसपोर्ट *पुं.* (अं.) 1. एक स्थान से दूसरे स्थान पर सामान को ले जाना 2. सवारी गाड़ी।

ट्रांसफार्मर *पुं.* (अं.) ऐसा विद्‌युत उपकरण जो वोल्टता की धारा को परिवर्तित कर सके।

ट्रांसलेटर *पुं.* (अं.) अनुवादक, भाषांतरकार, तुर्जमाकार।

ट्रांसलेशन *पुं.* (अं.) अनुवाद, भाषांतर, तर्जुमा।

ट्राम *स्त्री.* (अं.) बिजली से चलने वाली यात्री गाड़ी।

ट्रूप *स्त्री.* (अं.) 1. सैन्यदल, पलटन 2. घुड़सवारों का दस्ता जो कप्तान की अधीनता में होता है।

ट्रूस *स्त्री.* (अं.) लड़ाई बंद करने की अल्पकालिक संधि, क्षणिक संधि।

ट्रेक्टर *पुं.* (अं.) हल चलाने वाली मशीन।

ट्रेजरर *पुं.* (अं.) खजांची, कोषाध्यक्ष।

ट्रेडमार्क *पुं.* (अं.) किसी व्यापारी द्‌वारा अपने माल पर लगाया गया विशेष चिह्न।

ट्रेडिल *पुं.* (अं.) छपाई करने का छोटा यंत्र।

ट्रेडिल मशीन *स्त्री.* (अं.) छापने की छोटी मशीन जिसे एक व्यक्ति चलाता है।

ट्रेन *स्त्री.* (अं.) रेल गाड़ी।

ट्रैजेडियन *पुं.* (अं.) 1. विषादांत नाटक लिखने वाला 2. गंभीर, भावव्यंजक अभिनय करने वाला अभिनेता।

ट्रैजेडी *पुं.* (देश.) विषादांत नाटक, त्रासदी।

ठ

देवनागरी वर्णमाला में टवर्ग का दूसरा वर्ण। उच्चारण स्थान मूर्धा। यह मूर्धन्य, स्पर्श, अघोष तथा महाप्राण ध्वनि है।

ठंठ *वि.* (देश.) 1. ठूँठ, ठूँठा, सूखा पेड़ 2. धन हीन, निर्धन 3. दूध न देने वाली गाय।

ठंठनाना *अ.क्रि.* (अनु.) 'ठंठ' शब्द की ध्वनि करना/होना।

ठंठर *वि.* (देश.) खाली, रीता।

ठंठी *स्त्री.* (देश.) 1. ज्वार 2. मूंग का दाना जो पीटने के बाद बाल में लगा रहता है *वि.* बूढ़ी गाय या भैंस।

ठंड *स्त्री.* (देश.) ठंठ, सरदी।

ठंडक *स्त्री.* (देश.) दे. ठंढक।

ठंडा *वि.* (देश.) दे. ठंढा।

ठंडाई *स्त्री.* (देश.) दे. ठंढ़ाई।

ठंढ *स्त्री.* (देश.) सर्दी, जाड़ा, शीत।

ठंढक *स्त्री.* (देश.) सर्दी, शीत मुहा. ठंढक पड़ना- सर्दी फैलना; ठंढक लगना- सर्दी महसूस होना, फैली हुई बीमारी की कमी या अभाव।

ठंढा *वि.* (देश.) शीतल, सर्द, दे. ठंडा मुहा. ठंढे-ठंढे- धूप निकलने से पहले तड़के, हँसी खुशी से; ठंढी साँस लेना- आह भरना; ठंडा करना- क्रोध शांत करना, ढाढ़स बँधाना; ठंडा पड़ना- शांत होना मर जाना।

ठंढाई *स्त्री.* (देश.) ठंडक पहुँचाने वाली औषधि, एक विशेष पेय।

ठ *पुं.* (तत्.) 1. शिव 2. भारी शब्द 3. शून्य।

ठअकन *स्त्री.* (देश.) दे. ठुमक।

ठक *स्त्री.* (देश.) ठोंकने का शब्द *वि.* (तद्.) भौंचक्का, स्तब्ध।

ठकठक *स्त्री.* (देश.) 1. ठक-ठक की ध्वनि 2. मनमुटाव, झगड़ा मुहा. ठकठक हो जाना- स्तब्ध रह जाना, भौंचक्का हो जाना।

ठकठकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. खटखटाना 2. पीटना, ठोंकना, ठकठकिया *वि.* (देश.) 1. झंझटी 2. विवादी, बखेड़िया।

ठकठौआ *पुं.* (देश.) 1. करताल 2. करताल बजाकर भीख माँगने वाला।

ठकना *स.क्रि.* (देश.) 1. ठीक करना 2. स्थिर करना।

ठकुर सुहाती *स्त्री.* (देश.) चापलूसी, खुशामद, लल्लो-चप्पो।

ठकुर सोहाती *पुं.* (देश.) दे. ठकुर सुहाती।

ठकुराइत *स्त्री.* (देश.) दे. ठकुरायत।

ठकुराइन *स्त्री.* (देश.) 1. ठाकुर की पत्नी 2. मालकिन, स्वामिनी।

ठकुराई *स्त्री.* (देश.) 1. प्रभुता, स्वामित्व, आधिपत्य 2. राज्य, प्रदेश 3. ठाकुरपन, उच्चता, बड़प्पन।

ठकुराना *पुं.* (देश.) ठाकुरों की बस्ती।

ठकुरानी *स्त्री.* (देश.) 1. ठाकुर की पत्नी 2. रानी 3. मालकिन, स्वामिनी।

ठकुरायत *स्त्री.*(देश.) आधिपत्य, स्वामित्व, प्रभुत्व।

ठकोरी *स्त्री.* (देश.) सहारा लेने के लिए एक विशेष लकड़ी।

ठक्कर *पुं.* (तद्.) गुजरातियों की एक जातीय उपाधि।

ठक्कुर *पुं.* (देश.) 1. देवता, ठाकुर, देव प्रतिमा।

ठग *पुं.* (तद्.) 1. धूर्त 2. धोखेबाज 3. धोखा देकर लूटने वाला।

ठगई *स्त्री.* (देश.) ठगपना, ठगी का काम, धोखेबाजी।

ठगण *पुं.* (तत्.) मात्रिक छंदो में से एक गण।

ठगना *स.क्रि.* (देश.) 1. धोखा देकर लूटना, धोखा देना, धोखेबाजी करना 2. अधिक दाम लेना।

ठगनी *स्त्री.* (देश.) 1. ठग की स्त्री 2. ठगने वाली, धूर्त स्त्री, कुटनी।

ठगलीला *स्त्री.* (देश.) धोखाधड़ी, वंचना, ठगों की माया। माया।

ठगवाना *स.क्रि.* (देश.) किसी को दूसरे से धोखा दिलवाना।

ठगविद्या *स्त्री.* (देश+तत्.) ठगों की कला, धोखेबाजी, धोखेबाजी, धूर्तता।

ठगहा *स्त्री.* (देश.) ठगपना, धूर्तता, धोखेबाजी।

ठगाई *स्त्री.* (देश.) ठगपना, ठगाठगी *स्त्री.* (देश.) धोखेबाजी, ठगी, धूर्तता, छल, ठगाना *अ.क्रि.* 1. ठगा जाना, धोखे में आ जाना 2. किसी वस्तु का अधिक दाम दे देना 3. किसी पर मुग्ध होना।

ठगाही *स्त्री.* (देश.) दे. ठगाई।

ठगिन *स्त्री.* (देश.) 1. धोखेबाज या दगाबाज *स्त्री.* 2. ठग की पत्नी 3. लुटेरिन।

ठगिनी *स्त्री.* (देश.) 1. लुटेरिन, धोखा देने वाली स्त्री 2. ठग की पत्नी 3. चालबाज स्त्री।

ठगिया *वि.* (देश.) छलिया, ठगने वाला।

ठगी *स्त्री.* (देश.) ठग का काम, ठगने का भाव, धोखेबाजी, चालबाजी।

ठगोरी *स्त्री.* (देश.) मोहित कर देने वाली क्रिया, जादू-टोना।

ठट *पुं.* (देश.) 1. वस्तुओं या लोगों का जमाव 2. समुदाय 3. भीड़।

ठटना *स.क्रि.* (देश.) 1. ठहराना, निश्चित करना, डटना 2. सजाना, तैयार करना मुहा. ठटकर बातें करना- बना बना कर बाते करना *अ.क्रि.* 1. खड़ा रहना, अड़ना 2. विरोध में डटा रहना, स्थित होना।

ठटरी *स्त्री.* (देश.) 1. अस्थि पंजर 2. हड्डी का ढाँचा मुहा. ठटरी होना- दुबला होना, कृश होना 3. अर्थी।

ठट्ठा *पुं.* (तद्.) हँसी, दिल्लगी, मसखरापन मुहा. ठट्ठा उड़ाना- दिल्लगी करना, मजाक (खिल्ली) उड़ाना; ठट्ठा मारना- ठहाका लागकर हँसना।

ठट्ठी *स्त्री.* (देश.) ठटरी, हड्डी का ढाँचा, पंजर।

ठठकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ठिकना 2. ठक रह जाना।

ठठका *स.क्रि.* (देश.) ठटना।

ठठरी *स्त्री.* (देश.) दे. ठटरी।

ठठवा *पुं.* (देश.) मोटा, खुरदरा कपड़ा।

ठठाना *स.क्रि.* (देश.) जोर से पीटना, ठोकना, आघात करना *अ.क्रि.* जोर से हँसना, अट्ठहास करना।

ठठिया *स्त्री.* (देश.) हड्डियों का ढाँचा, शरीर, काया। काया।

ठठुकना *अ.क्रि.* (देश.) दे. ठिठकना।

ठठेरा *पुं.* (देश.) कसेरा, धातु के बरतन बनाने वाला मुहा. ठठेरे की बिल्ली- जिस पर किसी का प्रभाव न पड़े।

ठठेरी *स्त्री.* (देश.) 1. ठठेरे की पत्नी 2. ठठेरे का काम 3. ठठेरा जाति की स्त्री विलो. ठठेरा।

ठठोल *वि.* (देश.) परिहास करने वाला, मसखरा, विनोदप्रिय, दिल्लगीबाज *पु.* दे. ठठोली, दिल्लगी, हँसी।

ठठोली *स्त्री.* (देश.) दिल्लगी, ठठोल, मसखरापन।

ठड़ा *वि.* (तद्.) 1. खड़ा 2. सीधा स्थित।

ठड़िया *पुं.* (देश.) 1. ऊँचा ओखल 2. पशुओं में पाया जाने वाला सूखा रोग 3. एक प्रकार का साग, मरसा।

ठढ़ा *वि.* (तद्.) 1. खड़ा 2. सीधा स्थित।

ठन *पुं.* (अनु.) धातु या बरतन के बजने की ध्वनि।

ठनक *स्त्री.* (देश.) 1. तबला, मृदंग आदि की ध्वनि, चसक 2. किसी धातु के बजने का शब्द 3. नखरा, ऐंड़, अकड़।

ठनकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ठन-ठन शब्द करना 2. आशंका पैदा होना 3. रह-रहकर पीड़ा होना मुहा. माथा ठनकना- किसी बुरे लक्षण को देखकर आशंका पैदा होना।

ठनका *पुं.* (देश.) दे. ठनक।

ठनकाना *स.क्रि.* (देश.) किसी धातुखंड या चमड़े के मढ़े बाजे पर आवाज निकालना।

ठनकार *स्त्री.* (देश.) किसी धातुखंड से उत्पन्न हुई ध्वनि।

ठनकारना *अ.क्रि.* (देश.) फुफकारना।

ठनगन *पुं.* (देश.) नेग पाने के लिए की गई हठ या अड़।

ठनगना *अ.क्रि.* (देश.) ठनगन करना।

ठनठन *स्त्री.* (देश.) धातुखंड के बजने का शब्द।

ठनठन गोपाल *पुं.* (देश.+तत्.) 1. निस्सार वस्तु 2. निर्धन व्यक्ति।

ठनठनाना *स.क्रि.* (अनु.) ठन-ठन की ध्वनि करना। *अ.क्रि.* ठन-ठन बजना।

ठनना *अ.क्रि.* (देश.) 1. निश्चित होना, पक्का होना 2. दृढ़ होना 3. छिड़ना प्रयो. युद्ध ठनना 2. ठहरना, लगना मुहा. किसी बात पर ठनना- किसी काम को करने के लिए तैयार होना।

ठनाका *पुं.* (अनु.) ठनकार, ठन-ठन की ध्वनि।

ठनाठन *क्रि.वि.* (अनु.) 'ठन-ठन' ध्वनि के साथ, झनकार के साथ जैसे- नगाड़ा ठनाठन बजने लगा।

ठप्पा *पुं.* (तद्.) 1. साँचा 2. छापा, छाप, नक्शा।

ठमक *स्त्री.* (तद्.) चलते-चलते रुकने का भाव, नज़ाकत से भरी चाल।

ठमकना *अ.क्रि.* (तद्.) चलते-चलते रुक जाना, ठिठकना, ठसकना 2. लचक खाते हुए चलना।

ठमका *स्त्री.* (अनु.) 1. झंझट, बखेड़ा 2. झोंका जैसे- नींद का ठमका।

ठमकाना *स.क्रि.* (देश.) ठहराना, चलते-चलते रोकना।

ठमना *स.क्रि* (देश.) दृढ निश्चय के साथ करना।

ठर्रा *पुं.* (देश.) 1. मोटा, खुरदरा सूत 2. अधपकी ईंट 3. भद्दा जूता 4. एक प्रकार की देसी शराब 4. अंगिया का बंद।

ठर्री *स्त्री.* (देश.) 1. बिना अंकुरित धान 2. बिना अंकुरित किए धान की बुआई।

ठलाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. ठेलना, रखना 2. निकलवाना, गिराना।

ठलुआ *वि.* (देश.) निठल्ला, बेकार विलो. व्यस्त।

ठवन *स्त्री.* (तद्.) खड़े होने, बैठने आदि की कोई विशिष्ट मुद्रा।

ठस *वि.* (तद्.) 1. ठोस, कड़ा 2. घनी बुनावट वाला 3. दृढ़, मजबूत 4. भारी, वजनी 5. खोटा जैसे- ठस रुपया 6. हठी, जिद्दी।

ठसकदार *वि.* (देश.) 1. अभिमानी, घमंडी 2. शानदार, भड़कीला।

ठसका *पुं.* (अनु.) 1. सूखी खाँसी 2. ठोकर, धक्का।

ठसाठस *क्रि.वि.* (देश.) ठूँस-ठूँसकर भरा हुआ, खचाखच।

ठस्सा *पुं.* (देश.) 1. ठसक, अभिमानपूर्ण हावभाव 3. धमंड, अहंकार 4. शान।

ठहर *पुं.* (देश.) 1. जगह, स्थान 2. चौका 3. लीपी हुई जगह।

ठहरना *अ.क्रि.* (देश.) 1. रुकना, थमना 2. स्थिर रहना मुहा. मन ठहरना- बेचैनी दूर होना, चित्त शांत होना 3. टिका होना 4. थिराना 5. धीरज

रखना, थमना 6. पक्का होना प्रयो. विवाह ठहरना, कीमत ठहरना मुहा. किसी बात का ठहरना- मन में किसी भी विचार का स्थिर होना, किसी बात का पक्का होना 7. गर्भ धारण करना।

ठहराई *स्त्री.* (देश.) 1. ठहरने की क्रिया, ठहरने की मजदूरी 2. कब्जा।

ठहराऊ *वि.* (देश.) 1. ठहरने वाला 2. टिकाऊ।

ठहराना *स.क्रि.* (देश.) रोकना, रुकवाना, टिकाना, तय करना जैसे- ठहराना *अ.क्रि.* रुकना, टिकना।

ठहराव *पुं.* (देश.) 1. ठहरने का भाव 2. निर्णय, समझौता।

ठहरौनी *स्त्री.* (देश.) दहेज आदि के लेन-देन का करार 2. निश्चय, निर्धारण।

ठहाका *पुं.* (अनु.) अट्टहास, जोर की हँसी, कहकहा प्रयो. ठहाका लगाना- कहकहे लगाना।

ठहियाँ *स्त्री.* (देश.) ठिकाना, स्थान, जगह।

ठहोर *स्त्री.* (देश.) ठहरने योग्य जगह, विश्राम स्थल।

ठाँ *पुं.* (देश.) दे. ठाँव।

ठाँई *स्त्री.* (देश.) स्थान, जगह *अव्य.* पास, निकट।

ठाँऊँ *स्त्री.* (देश.) 1. ठाँव, ठौर, स्थान, ठिकाना 2. पास, समीप।

ठाँठ *स्त्री.* (देश.) 1. ठाँव, स्थान, ठिकाना 2. पास, समीप।

ठाँय *पुं.* (अनु.) बंदूक छूटने का शब्द।

ठाँय *स्त्री.* (तद्.) दे. ठाँव।

ठाँयँ-ठाँयँ *स्त्री.* (अनु.) लगातार बंदूक छूटने का शब्द।

ठाँव *स्त्री.* (तद्.) 1. जगह, स्थान, ठिकाना 2. अवसर, मौका 3. ठहराव।

ठाँसना *स.क्रि.* (देश.) 1. दबाकर प्रविष्टि करना 2. कसकर भरना, दबादबा कर भरना 3. मना करना, रोकना।

ठाउर *पुं.* (देश.) ठौर, ठिकाना।

ठाकर *पुं.* (तद्.) ठाकुर, सरदार, प्रदेश का स्वामी।

ठाकुर *पुं.* (तद्.) 1. ईश्वर, परमेश्वर 2. नायक, सरदार 3. जमींदार 4. स्वामी, मालिक 5. नाई।

ठाकुर द्वारा *पुं.* (तद्.+तत्.) 1. विष्णु का मंदिर, देवालय, देव स्थान 2. पुरुषोत्तम धाम, जगन्नाथ जी का मंदिर।

ठाकुर प्रसाद *पुं.* (देश.) 1. नैवेद्य 2. एक प्रकार का धान।

ठाकुर बाड़ी *स्त्री.* (देश.) मंदिर, देवालय।

ठाकुरसेवा *स्त्री.* (तद्.) 1. देवता का पूजन 2. मंदिर को सौंपी गई संपत्ति।

ठाकुरी *स्त्री.* (तद्.) ठकुराई।

ठाट *पुं.* (देश.) 1. रोकने के काम आने वाला बाँस का ढाँचा 2. शान, सजधज जैसे- ठाटबाट- शान शौकत, आडंबर 3. ढाँचा, पंजर मुहा. ठाट खड़ा करना- ढाँचा तैयार करना 4. रचना, बनावट शृंगार मुहा. ठाट बदलना- पैंतरा बदलना, श्रेष्ठता प्रकट करना, बड़प्पन जताना 5. आडंबर, तड़क भड़क मुहा. ठाट मारना- मौज उड़ाना, पंख झाड़ना; ठाट से काटना- चैन से दिन काटना 6. ढंग, शैली, ढब 7. सामान, सामग्री 8. युक्ति, ढंग मुहा. ठाट बाँधना- वार करने की मुद्रा में होना 9. झुंड, समूह।

ठाट-बाट *पुं.* (देश.) 1. बनावट, सजधज 2. आडंबर, तड़क भड़क, शान-शौकत।

ठाटर *पुं.* (देश.) 1. ठट्टर 2. ठठरी, पंजर 3. ढाँचा 4. ठाटबाट, बनाव सिंगार, सजावट 5. नदी का अधिक गहरा स्थान, जहाँ बाँस न लगे।

ठाठ *स्त्री.* (देश.) दे. ठाट।

ठाठर *पुं.* (देश.) ढाँचा, ठठरी।

ठाड़ा *पुं.* (देश.) खेत की एक प्रकार की जुताई।

ठाढ़ *पुं.* (देश.) दे. ठाढ़ा।

ठाढ़ा *वि.* (देश.) 1. खड़ा 2. उत्पन्न 3. साबुत। मुहा. ठाढ़ा देना-ठहराना, स्थिर रखना, टिकाना।

ठाढेश्वरी *पुं.* (देश.) एक प्रकार के साधु जो दिन-रात खड़े रहते हैं।

ठान *पुं.* (देश.) स्थान, जगह।

ठानना *स.क्रि.* (देश.) 1. दृढ़ संकल्प के साथ प्रारंभ करना 2. स्थिर करना, ठहराना, पक्का करना। जैसे: हठ ठानना, झगड़ा ठानना।

ठार *पुं.* (देश.) 1. पाला 2. अधिक सर्दी।

ठाल *स्त्री.* (देश.) 1. काम का अभाव 2. बेरोजगारी 2. फुरसत, अवकाश।

ठाला *पुं.* (देश.) बेकारी, बेरोजगारी मुहा. गले पड़ना- खालीपन का अनुभव करना; ठाला बताना-बिना कुछ दिए चलता कर देना; बैठे ठाले- खाली बैठे हुए, कुछ काम धंधा न करते हुए *वि.* बेकार, निठल्ला।

ठालिनी *वि.* (देश.) करघनी, कमरबंद।

ठाली *वि.* (देश.) खाली, निठल्ला, बेकाम।

ठासा *पुं.* (देश.) लोहारों का एक औजार।

ठाह *स्त्री.* (देश.) गाने बजाने की विलंबित गति।

ठिंगना *वि.* (देश.) छोटे कद का, नाटा।

ठिक *स्त्री.* (देश.) धातु की चादर का कटा हुआ टुकड़ा, थिगली चकती *वि.* दे. ठीक।

ठिकठान *पुं.* (देश.) दे. ठिकठैन।

ठिकठेक *वि.* (देश.) ठीक-ठीक, ठीक प्रकार का।

ठिकठैन *पुं.* (देश.) प्रबंध, व्यवस्था, आयोजन।

ठिकरी *वि.* (देश.) दे. ठीकरी।

ठिकरौर *स्त्री.* (देश.) ऐसी जमीन जिसमें ठीकरे बहुत हों।

ठिकाना *पु.* (देश.) 1. स्थान, जगह 2. रहने की जगह 3. सहारा 4. उपाय, व्यवस्था, प्रबंध 5. पता मुहा. ठिकाना करना- ठहरना, स्थान निश्चित करना, काम-धंधा ठीक करना, वर ढूँढना; ठिकाना लगना- आश्रय या नौकरी मिलना, ठीक स्थान पर पहुँचाना; ठिकाना लगाना- ढूँढना, नौकरी का प्रबंध करना, ठीक स्थान पर पहुँचाना, काम में लाना; ठिकाने न रहना- होश, बुद्धि, ठिकाने न रहना *स.क्रि.* ठहराना, अड़ाना।

ठिकानेदार *पुं.* (देश.) जागीरदार।

ठिठकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ठनकना, मचलना, बनावटी तौर पर रोना 2. चलते-चलते सहसा रुक जाना 3. स्तंभित होना 4. स्तब्ध रह जाना।

ठिठुरन *स्त्री.* (देश.) ठिठुरने का भाव, ठरन।

ठिठुरना *अ.क्रि.* (देश.) 1. सर्दी से सिकुड़ जाना 2. बहुत अधिक ठंड लगना।

ठिठोली *स्त्री.* (देश.) दे. ठठोली।

ठिया *पुं.* (देश.) 1. जंगली पशुओं के ठहरने/रहने का स्थान 2. सीमा का चिह्न, सीमा का पत्थर।

ठिर *स्त्री.* (देश.) कड़ाके की सर्दी, पाला।

ठिरना *स.क्रि.* (देश.) सर्दी से ठिठुरना, जाड़े से अकड़ना।

ठिलठिलाना *अ.क्रि.* (देश.) जोर से हँसना, ठहाका लगाकर हँसना।

ठिलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. धकेला जाना, ठेला जाना 2. वेग से किसी ओर झुकना, घुसना 3. स्थिर होना।

ठिलिया *स्त्री.* (देश.) छोटा घड़ा, गगरी।

ठिलुआ *वि.* (देश.) निठल्ला, निकम्मा।

ठिल्ला *पुं.* (देश.) घड़ा, बड़ी गागर।

ठिल्ली *स्त्री.* (देश.) दे. ठिलिया।

ठींगा *वि.* (देश.) जबरदस्त, बलवान।

ठीक *वि.* (देश.) 1. सच, यथार्थ 2. उपयुक्त, अच्छा, उचित, भला मुहा. ठीक लगना- उचित लगना, भला जान पड़ना, किसी स्थान पर अच्छी तरह से जमना या बैठना; ठीक आना- ढीला या कसा हुआ न होना; ठीक करना- दंड देकर रास्ते पर लाना; ठीक बनाना- राह पर लाना, दुरूस्त करना; ठीक उतरना- जाँच करने पर सही पाया जाना प्रयो. ठीक-ठाक, बिल्कुल सही विलो. गलत *क्रि.वि.* उचित रीति से, हूबहू जैसे- ठीकम ठीक, एकदम ठीक।

ठीक ठाक *पुं.* (देश.) 1. व्यवस्था, प्रबंध, बंदोबस्त 2. पक्की बात *वि.* अच्छी तरह दुरुस्त, काम करने योग्य।

ठीकड़ा *पुं.* (देश.) दे. ठीकरा।

ठीकमठीक *स्त्री.* (देश.) बिल्कुल ठीक।

ठीकरा *पु.* (देश.) 1. मिट्टी के बर्तन का टूटा टुकड़ा, खपरैल का टुकड़ा मुहा. ठीकरा फोड़ना- किसी के मत्थे मढना, किसी को दोष देना; ठीकरा समझना- कुछ न समझना; ठीकरा होना- अंधाधुंध खर्च होना 2. भिक्षा पात्र, टूटा हुआ बर्तन 3. रुपया-पैसा।

ठीकरी *स्त्री.* (देश.) 1. मिट्टी के बर्तन का टूटा हुआ टुकड़ा 2. चिलम पर रखने वाला मिट्टी का तवा 3. तुच्छ चीज 4. उपस्थ-स्त्रियों की योनि का उभरा हुआ तल।

ठीका *पु.* (देश.) ठेका, जिम्मा।

ठीकेदार *पु.* (देश.) दूसरों से ठीके पर काम कराने वाला 2. ठीके पर काम का जिम्मा लेने वाला।

ठीठी *स्त्री.* (अनु.) 1. हँसी का शब्द 2. बेहूदी हँसी मुहा. ठीठी करना- बेहूदा हँसी हँसना।

ठीढ़ी ठाढी *वि.* (देश.) निश्चेष्ट, स्पंदनहीन।

ठीहा *पु.* (देश.) 1. जमीन में गड़ा हुआ लकड़ी का कुंदा 2. चारा काटने का कुंदा 3. ऊँची जगह, गद्दी, वेदी।

ठुक-ठुक *स्त्री.* (अनु.) किसी वस्तु को लगातार ठोकने की ध्वनि।

ठुकना *अ.क्रि.* (अनु.) ठोंका जाना, पिटना, गड़ना 2. हानि होना, चपत लगाना उदा. बेकार में सौ रुपए की ठुक गई 3. मार खाना।

ठुकराना *स.क्रि.* (देश.) 1. ठोकर मारना 2. लात मारना 3. तिरस्कार करना, उपेक्षा करना।

ठुकवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. पिटवाना 2. हानि कराना 3. संभोग करना।

ठुड्डी *स्त्री.* (तद्.) ठोढ़ी, चिबुक मुहा. ठुड्डी पकड़ना- खुशामद करना।

ठुनक ठुनक *स्त्री.* (अनु.) ठुनक कर चलने के कारण आभूषणों से निकलने वाली ध्वनि।

ठुनकना *अ.क्रि.* (देश.) दे. ठिनकना।

ठुनकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. हलके से ठोंकना 2. धीरे से उँगली से आघात करना।

ठुनकार *स्त्री.* (देश.) ठुनक की आवाज।

ठुनठुन *स्त्री.* (अनु.) 1. धातुखंड के बजने की ध्वनि 2. बच्चों की रह-रहकर रोने की आवाज।

ठुमक *स्त्री.* (देश.) 1. ठसक भरी आवाज 2. थोड़ी-थोड़ी दूरी पर पैर पटकते हुए चलना जैसे- ठुमक-ठुमक, उमंग के साथ और जल्दी-जल्दी पैर पटकते हुए चलना।

ठुमकना *अ.क्रि.* (देश.) बच्चों का उमंग से या जल्दी-जल्दी पैर पटकते हुए चलना।

ठुमका *पु.* (देश.) नाटा, ठिगना।

ठुमरी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार का गीत।

ठुसना *अ.क्रि.* (देश.) 1. कसकर भरना 2. कठिनता से घुसना।

ठुसवाना *प्रे.क्रि.* (देश.) कसकर भरवाना, घुसवाना।

ठुसाना *स.क्रि.* (देश.) 1. कसकर भरवाना 2. पेट भरकर खिलाना।

ठूँग *स्त्री.* (देश.) 1. चोंच 2. चोंच से मारने की क्रिया 3. मुड़ी हुई उँगली से ठोकर मारने की क्रिया।

ठूँठ *पु.* (देश.) 1. सूखा पेड़ 2. कटा हुआ हाथ।

ठूँठी *स्त्री.* (देश.) ज्वार-बाजरे आदि का डंठल जो जमीन में गड़ा रह जाता है।

ठूँसना *स.क्रि.* (देश.) दे. ठूसना।

ठूँसा *पु.* (देश.) मुक्का, घूँसा।

ठूठ *वि.* (देश.) दे. ठूँठ।

ठूसना *स.क्रि.* (देश.) 1. कसकर भरना 2. धुसेड़ना, जोर से घुसाना 3. बहुत अधिक खाना।

ठेंगा *पुं.* (देश.) 1. अंगूठा 2. डंडा, लट्ठ मुहा. ठेंगा दिखाना- अंगूठा दिखाना, साफ इनकार करना; ठेंगा बजाना- मारपीट होना, बेकार की खटखट होना।

ठेंगुर *पुं.* (देश.) उछल कूद करने वाले चौपायों की गति को नियंत्रित करने के लिए गले में बाँधा जाने वाला काठ का लंबा कुंदा।

ठेंघा *वि.* (देश.) दे. ठेंगा।

ठेंठा *पुं.* (देश.) सूखा हुआ, डंठल।

ठेंठी *स्त्री.* (देश.) 1. कान की मैल 2. काग, डाट।

ठेंपी *स्त्री.* (देश.) दे. ठेंठी।

ठेक *स्त्री.* (देश.) 1. सहारा, टेक 2. पेंदा 3. पच्चड़ 4. चकती।

ठेकना *स.क्रि.* (देश.) सहारा लेना, टेकना 2. टिकना, ठहरना, रहना।

ठेका *पुं.* (देश.) 1. ठेक, सहारे की वस्तु 2 अड्डा 3. तबला बजाने का एक प्रकार मुहा. ठेका भरना- घोड़े का उछल कूद करना 4. किसी काम को पूरा

करने का जिम्मा, ठीका 2. पट्टा जैसे- ठेका पट्टा, ठेका भेंट।

ठेकाई *स्त्री.* (देश.) किनारे की छपाई।

ठेकेदार *पुं.* (देश.) दे. ठीकेदार।

ठेगना *स.क्रि.* (देश.) 1. टेकना, सहारा लेना 2. रोकना, मना करना।

ठेगनी *स्त्री.* (देश.) टेकने की लकड़ी, सहारा।

ठेठ *वि.* (देश.) निपट, निरा, बिल्कुल जैसे-(ठेठ बृद्ध)।

ठेपी *स्त्री.* (देश.) 1. डाट, काग 2. छोटा ढक्कन।

ठेलना *स.क्रि.* (देश.) 1. ढकेलना, रेलना, धक्का देकर आगे बढ़ाना प्रयो. ढेलठाल/ढेलमठेल/ठेलाठेली 2. धक्कम धक्का 3. जबरदस्ती करना।

ठेलमठेल *स्त्री.* (देश.) धक्कम धक्का।

ठेस *स्त्री.* (देश.) 1. धक्का, चोट, ठोकर 2. सहारा, टेक।

ठेसमठेस *क्रि.वि.* (देश.) कसमकस के साथ धक्कम धक्का।

ठेहरी *स्त्री.* (देश.) किवाड़ की चूल के नीचे की लकड़ी।

ठेहुका *पु.* (देश.) वह जानवर जिसके पिछले घुटने चलते हुए रगड़ खाते हों।

ठेहुना *पु.* (देश.) दे. घुटना।

ठेहुनी *स्त्री.* (देश.) 1. घुटना 2. हाथ की कोहनी।

ठैल पैल *स्त्री.* (देश.) ठेलपेल।

ठोंक *स्त्री.* (देश.) ठोंकने की क्रिया या भाव।

ठोंकना *स.क्रि.* (देश.) 1. मारना, पीटना 2. चोट लगाकर धँसाना (जैसे- कील ठोंकना) 3. (मुकदमा) दायर करना (जैसे-मुकदमा ठोंकना) 4. जड़ना, अधिकारपूर्वक लगाना (जैसे- जुर्माना ठोंकना) मुहा. ठोंक ठोंककर लड़ना- डटकर लड़ना; ठोंकना बजाना- अच्छी तरह जाँचकर, परखकर; पीठ ठोंकना- शाबाशी देना, प्रोत्साहित करना 5. हाथ से मारकर बजाना (जैसे तबला, ठोंकना) लगाना, जड़ना (जैसे- ताला, ठोंकना)।

ठोंग *स्त्री.* (देश.) 1. चोंच 2. उंगली की ठोकर।

ठोंगना *स.क्रि.* (देश.) चोंच मारना, उंगली मोड़कर ठोकर मारना।

ठोंगा *पु.* (देश.) कागज की थैली, जिसमें दुकानदार सौदा देता है।

ठोकना *स.क्रि.* (देश.) दे. ठोंकना।

ठोकर *स्त्री.* (देश.) 1. वह चोट जो किसी पत्थर या या कड़ी वस्तु से टकराने से लगे 2. ठेस मुहा. ठोकर उठाना- दुख सहना, हानि उठाना; ठोकर खाना- क्षति सहना, मारा-मारा फिरना; ठोकर देना- ठोकर लगाना, ठोकर मारना; ठोंकरो पैर पड़ा रहना- किसी की सेवा कर के तथा मार-गाली खाकर गुजारा करना, अपमानित होकर रहना 3. आघात 4. जूते का अगला भाग।

ठोठ *वि.* (देश.) 1. सारहीन, तत्वहीन 2. जड़, मूर्ख 3. निराला।

ठोठरा *वि.* (देश.) पोपला, खाली।

ठोड़ी *स्त्री.* (देश.) ठुड्डी, चिबुक, दाढ़ी मुहा. ठोढ़ी पर हाथ धरकर बैठना- चिंतामग्न होना; ठोड़ी पकड़ना- प्यार करना, किसी को मनाना।

ठोढ़ी *स्त्री.* (देश.) दे. ठोड़ी।

ठोप *वि.* (देश.) बूँद, टप-टप।

ठोर *वि.* (देश.) 1. पूरी जैसा चीनी में सना हुआ एक प्रकार का पकवान, वल्लभ संप्रदाय के मंदिरों में इसका भोग लगाया जाता है 2. चोंच 3. होंठ।

ठोस *वि.* (देश.) जो भीतर से खाली हो, ठस *पुं.* कुढ़न, ईर्ष्या, डाह।

ठोसा *वि.* (देश.) अँगूठा, ठेंगा मुहा. ठोसा दिखाना- अँगूठा दिखाना, इनकार करना।

ठौका *पु.* (देश.) वह गड्ढा, जिसमें सिंचाई के लिए दौरी आदि से पानी गिराते हैं।

ठौर *पु.* (देश.) 1. स्थान, जगह 2. ठिकाना जैसे- ठौर ठिकाना- रहने की जगह मुहा. ठौर-कुठौर- अच्छी जगह, बुरी जगह, अनुपयुक्त स्थान पर, बेमौका, अवसर के बिना; ठौर न आना- समीप न आना; ठौर न रहना- जगह न रहना, निराश्रित होना; ठौर रखना- मार डालना।

ड

टवर्ग का तीसरा वर्ण, उच्चारण स्थल मूर्धा।

डंक *पु.* (तद्.) 1. बिच्छू, भिड़, मधुमक्खी आदि का जहरीला काँटा, दंश 2. चुभने वाली द्वेषपूर्ण बात 3. कलम की जीभ 4. डंक मारा हुआ स्थान।

डंकना *अ.क्रि.* (अनु.) तोप का गर्जन, भारी शब्द होना।

डंका *पु.* (देश.) नगाड़ा, धौंसा **मुहा.** डंका बजना- अधिकार चलना; डंके की चोट पर- खुल्लम खुल्ला, स्पष्ट।

डंकिनी *स्त्री.* (तद्.) **दे.** डाकिनी।

डंकी *स्त्री.* (देश.) कुश्ती का एक पेच *वि.* डंकवाला।

डंकीला *वि.* (देश.) डंकवाला।

डंकुर *पु.* (देश.) एक पुराना बाजा।

डंगर *पु.* (देश.) चौपाया।

डंगरा *पु.* (देश.) खरबूजा।

डंगोरी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार का मोटा बेंत।

डंठल *पु.* (देश.) तना।

डंड *पु.* (तद्.) 1. डंडा, सोंटा 2. एक प्रकार का व्यायाम, हाथ पैर के पंजो के बल पर किया जाने वाला व्यायाम 3. दंड, सजा 4. जुर्माना **मुहा.** डंड डालना- अर्थ दंड या जुर्माना करना; डंड भरना- हानि के बदले जुर्माना या हर्जाना भरना; डंड पेलना- कसरत करना 5. घाटा, हानि, नुकसान **मुहा.** डंड पड़ना- नुकसान होना।

डंडवत *पु.* (देश.) **दे.** दंडवत।

डंडा *पु.* (देश.) 1. लकड़ी या बाँस का टुकड़ा, लाठी, सोंटा, मोटी छड़ी **मुहा.** डंडा खाना- डंडे की मार सहना; डंडे खेलना- डंडों की लड़ाई का खेल खेलना; डंडा चलाना- डंडे से प्रहार करना 2. चारदीवारी **मुहा.** डंडा खींचना- चारदीवारी उठाना।

डंडाकरन *पु.* (तद्.) दंडक वन।

डंडा नाच *पु.* (देश.) एक प्रकार का नाच जिसमें लोग 'डंडा' लड़ाते हुए नाचते हैं।

डंडाल *पु.* (देश.) नगाड़ा डंका, दुंदुभि।

डंडी *वि.* (देश.) झगड़ा करने वाला, चुगलखोर।

डंडी *स्त्री.* (देश.) 1. हत्था, दस्ता, मूठ 2. डाँडी।

डंडीमार *वि.* (देश.) कम तोलने वाला *पु.* बनिया।

डंडौत *पु.* (देश.) **दे.** दंडवत।

डंपेल *पु.* (देश.) 1. कसरती पहलवान, डंड लगाने वाला 2. बलवान, तगड़ा आदमी।

डंबर *पु.* (तद्.) आंडबर, ढकोसला, धूमधाम।

डंबल *पु.* (अं.) लट्टू जैसे गोल सिरों वाला लोहे या लकड़ी का उपकरण, जिससे कसरत करते हैं।

डँगरी *स्त्री.* (देश.) **दे.** डाँगरी

डँगवारा *पु.* (देश.) किसानों की बैल आदि से की जाने वाली आपसी सहायता।

डँटैया *पु.* (देश.) डाँटने वाला, धमकाने वाला।

डँड़वारा *पु.* (देश.) चारदीवारी, रोक या घेरे के लिए बनाई गई कम ऊँची दीवार।

डँड़ियाना *स.क्रि.* (देश.) दो कपड़ो को लंबाई से मिलाकर सिलना।

डँडीर *स्त्री.* (देश.) सीधी रेखा।

डँडोरना *स.क्रि.* (अनु.) 1. ढूँढना 2. उलट-पलटकर देखना।

डँवाडोल *वि.* (देश.) अस्थिर, विचलित, चंचल।

ड *पु.* (तत्.) 1. शब्द, ध्वनि 2. नगाड़ा 3. डर, भय।

डऊ *वि.* (देश.) 1. बड़ा 2. डील-डौल वाला।

डकरना *अ.क्रि.* (देश.) डकार लेना **दे.** डकारना।

डकार *स्त्री.* (अनु.) आवाज के साथ मुँह से निकलने वाली हवा।

डकारना *अ.क्रि.* (देश.) 1. डकार लेना, पेट की वायु को मुँह से निकालना 2. किसी का माल उड़ा लेना, पचा जाना, हजम करना 3. बाघ या सिंह का गुर्राना, दहाड़ना।

डकिन *स्त्री.* (देश.) **दे.** डाकिनी।

डकैत *पु.* (देश.) लुटेरा, डाकू, डाका मारने वाला।

डकैती *स्त्री.* (देश.) डकैत का काम, डाका मारने का काम।

डकोटा *पुं.* (अं.) 1. एक प्रकार का वायुयान 2. लूटमार, छापा।

डकौत *पुं.* (देश.) सामुद्रिक, ज्योतिष आदि जानने का ढोंग करने वाला।

डक्कारी *स्त्री.* (तद्.) चांडाल वीणा।

डग *पुं.* (तद्.) कदम **मुहा.** डग भरना- चलने में आगे पैर रखना, कदम बढ़ाना।

डगडगाना *अ.क्रि.* (देश.) हिलना, काँपना।

डगडौरा *वि.* (देश.) डाँवाडोल, हिलने वाला।

डगना *अ.क्रि.* (देश.) 1. हिलना, विचलित होना, खसकना 2. चूकना, भूल करना 3. डगमगाना, लड़खड़ाना।

डगमग *वि.* (देश.) डाँवाडोल, अस्थिर *क्रि.वि.* हिलते-जुलते, लड़खड़ाता हुआ।

डगमगाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. इधर-उधर हिलना, डोलना, अस्थिर होना 2. विचलित होना *स.क्रि.* विचलित करना, अस्थिर करना।

डगर *स्त्री.* (देश.) रास्ता, मार्ग। **मुहा.** डगर बताना- उपदेश देना, रास्ता बताना **जैसे-** आजकल डगर बताने वाले तो बहुत मिल जाते हैं।

डगरनार *अ.क्रि.* (देश.) 1. चलना, धीरे-धीरे चलना 2. लुढ़कना।

डगरा *पुं.* (देश.) 1. रास्ता, मार्ग 2. बाँस का बना छबड़ा (बरतन)।

डगरी *स्त्री.* (देश.) **दे.** डगर।

डगा *पुं.* (देश.) डुग्गी बजाने की लकड़ी, नगाड़ा बजाने की लकड़ी।

डगाना *स.क्रि.* (देश.) **दे.** डिगना।

डग्गर *पुं.* (देश.) भेड़िए जैसा एक मांसाहारी जानवर।

डच *पुं.* (अं.) हालैंड का निवासी।

डटना *अ.क्रि.* (देश.) जमकर खड़ा होना, अड़ना, ठहरा रहना **जैसे-** आंदोलनकारी सुबह से डटे हुए हैं **मुहा.** डटा रहना- सामना करने के लिए तैयार रहना।

डटाई *स्त्री.* (देश.) 1. डटाने का काम, डटाने की मजदूरी 2. जोर से भिड़ाना 3. जमाना, खड़ा करना।

डटाना *स.क्रि.* (देश.) 1. सामने रखना, भिड़ाना 2. जमाना, सटाना।

डट्टा *पुं.* (देश.) 1. काग 2. हुक्के का नैचा।

डढ़न *स्त्री.* (तद्.) जलन, ताप।

डढ़ार *वि.* (देश.) 1. डाढ़ वाला 2. डाढ़ी वाला।

डढ़ियल *वि.* (देश.) डाढ़ी वाला।

डपट *स्त्री.* (देश.) 1. डाँट, घुड़की, झिड़की 2. दौड़, सरपट चाल।

डपटना *स.क्रि.* (देश.) डाँटना, कड़े स्वर में बोलना।

डपोर *वि.* (देश.) 1. बेबुनियाद 2. जोश या बकवास से भरा हुआ।

डपोरसंख *पुं.* (देश.) 1. डींग हाँकने वाला, शेखी बघारने वाला 2. मूर्ख।

डफ *पुं.* (अं.) कव्वाली वालों का बाजा, डफली।

डफली *स्त्री.* (अं.) छोटा डफ, खँजरी **मुहा.** अपनी अपनी डफली अपना अपना राग- जितने लोग उतनी राय।

डफार *स्त्री.* (अनु.) गला फाड़कर रोने-चिल्लाने की आवाज, चिंघाड़ना।

डफारना *अ.क्रि.* (अनु.) चिल्लाना, दहाड़ मारना, जोर जोर से चीखना-चिल्लाना।

डफोरना *अ.क्रि.* (अनु.) ललकारना, गरजना, चिल्लाना।

डफोल *पुं.* (देश.) बकवास।

डब *पुं.* (देश.) तरल **जैसे-** आँखों का डब-डब होना- आँखे भर आना।

डबकना *अ.क्रि.* (देश.) टीसना, आँखों का दर्द करना, डबडबाना *अ.क्रि.* (अनु.) आँखें भर आना, आँखों में आँसू भर आना।

डबरा *पुं.* (तद्.) छिछला गड्ढा, निचली जमीन जिसमें पानी भरता हो।

डबल *वि.* (अं.) दोगुना, दोहरा।

डबला *पुं.* (देश.) कुल्हड़, मिट्टी का चौड़े मुँह का बर्तन।

डबिया *स्त्री.* (देश.) छोटा डिब्बा, डिबिया।

डबुलिया *स्त्री.* (देश.) छोटा डबला।

डबोना *स.क्रि.* (अनु.) डुबाना, गोता खिलाना **दे.** डुबोना **मुहा.** नाम डबोना- ख्याति नष्ट करना, कलंकित करना; वंश डबोना- वंश का नाम डबोना, वंश को कंलकित करना; लुटिया डबोना- महत्व नष्ट करना, प्रतिष्ठा खोना।

डब्बा *पुं.* (देश.) 1. धातु का बना हुआ एक ढक्कनदार पात्र विशेष 2. रेलगाड़ी का डिब्बा।

डब्बू *पुं.* (देश.) करछुल जैसा एक बर्तन, छोटा डब्बा।

डभकना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. डूबना-उतरना 2. आँसू भर आना, डबडबाना।

डभकाना *स.क्रि.* (देश.) डभ की आवाज के साथ डुबोना।

डभकौरी *स्त्री.* (देश.) उड़द की पीठी की बड़ी।

डम *पुं.* (तत्.) डोम, नट और चांडाली से उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति।

डमका *पुं.* (देश.) भुना हुआ मटर या चना।

डमडम *स्त्री.* (अनु.) डमरू से उत्पन्न ध्वनि।

डमर *पुं.* (देश.) 1. भगदड़ 2. हलचल, दंगा।

डमरू *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का छोटा बाजा जो बीच में पतला होता है और हिलाने पर उसमें लगी घंटियों से बजता है।

डमरूमध्य *पुं.* (तत्.) धरती का पतला एवं तंग भाग जो दो बड़े भूखंडो को मिलाता है।

डमरू यंत्र *पुं.* (तत्.) अर्क खींचने और सिंगरफ का पारा, कपूर, नौशादर आदि उड़ाने के काम आता है।

डयन *पुं.* (तत्.) 1. उड़ान, उड़ने की क्रिया 2. पालकी।

डर *पुं.* (तद्.) 1. भय, भीति, खौफ **पर्या.** 1. भय 2. अंदेशा, आशंका।

डरना *अ.क्रि.* (देश.) 1. भय खाना, खौफ करना 2. आशंकित होना।

डरपोक *वि.* (देश.) कायर, भीरू, बुज़दिल **विलो.** निडर।

डरवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. डराना 2. भयभीत करना।

डराकू *वि.* (देश.) 1. बहुत डरने वाला, डरपोक, भीरू 2. डराने वाला।

डराना *स.क्रि.* (देश.) भयभीत करना, खौफ दिलाना।

डरापना *स.क्रि.* (देश.) भयभीत करना।

डरावना *वि.* (देश.) 1. भयानक 2. भयंकर 3. भय पैदा करने वाला।

डरावा *पुं.* (देश.) 1. फलदार पेड़ों में चिड़िया उड़ाने के लिए लगाई गई लकड़ी, खटका 2. डराने की दृष्टि से कही गई बात।

डल *पुं.* (देश.) टुकड़ा, खंड।

डलक *पुं.* (देश.) दौरा, बाँस का बना पात्र, डला।

डलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. डाला जाना, लटकाया जाना **जैसे-** पेड़ों पर झूले डल गए 2. घुसेड़ा जाना **जैसे-** सुई में धागा डल गया।

डलरी *स्त्री.* (देश.) छोटी डलिया, छोटी पिटारी।

डलवा *पुं.* (देश.) दौरा, गहरा बर्तन।

डलवाना *स.क्रि.* (देश.) किसी से डालने का काम करना।

डला *पुं.* (तद्.) टुकड़ा, खंड **प्रयो.** नमक का डला, मिस्री का डला।

डलिया *स्त्री.* (देश.) छोटा डला, छोटा टोकरा, दौरी।

डली *स्त्री.* (देश.) 1. छोटा टुकड़ा, छोटा ढेला **प्रयो.** नमक की डली, मिस्री की डली 2. सुपारी 3. छोटी टोकरी, डलिया।

डवरा *पुं.* (देश.) एक बड़ा कटोरा।

डवित्थ *पुं.* (देश.) लकड़ी का बना मृग।

डसन *स्त्री.* (देश.) डसने की क्रिया या भाव, डसने का ढंग।

डसना *स.क्रि.* (देश.) साँप आदि जहरीले जंतुओं का काटना, डंक मारना।

डसाना *स.क्रि.* (देश.) बिछाना।

डस्टर *पुं.* (अं.) झाड़न।

डहँकना *स.क्रि.* (देश.) कलियों, फूलों आदि का विकसित होना।

डहकना *स.क्रि.* (देश.) 1. छल करना, धोखा करना, ठगना 2. किसी वस्तु को लालच दिखाकर न देना।

डहकाना *स.क्रि.* (देश.) खोना, गँवाना *अ.क्रि.* धोखे में आना, छला जाना, ठगा जाना।

डहडहाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ताजा होना, हरा-भरा होना 2. आनंदित होना, डहडहाव *पुं.* (देश.) ताजगी, प्रफुल्लता, हरा भरा होने का भाव।

डहना *पुं.* (तद्.) 1. जलना, भस्म होना 2. कुढ़ना, बुरा मानना, चिढ़ना।

डहर *स्त्री.* (देश.) 1. रास्ता, डगर, मार्ग, पथ 2. आकाशगंगा 3. पगडंडी।

डहरना *पुं.* (देश.) टहलना, चलना, फिरना।

डहरिया *पुं.* (देश.) गाय-बैल का व्यापार करने वाला व्यक्ति।

डहोला *पुं.* (देश.) हलचल, उपद्रव।

डाँक *स्त्री.* (देश.) दमक, चमक, तांबे या चांदी का पत्तर *पुं.* डंक, दंश।

डाँकना *स.क्रि.* (देश.) 1. कूद कर पार करना, लाँघना, फाँदना 2. जोर से आवाज लगाना, पुकारना *अ.क्रि.* वमन करना, उलटी करना।

डाँकृति *स्त्री.* (तत्.) घंटिका बजाने की आवाज।

डाँगर *पुं.* (देश.) 1. ढोर, चौपाया, गाय-भैंस आदि पशु 2. मरा हुआ चौपाया *वि.* 1. दुबला-पतला 2. मूर्ख, जड़।

डाँट *स्त्री.* (देश.) 1. फटकार, झिड़की, डपट 2. शासन, दबाव **मुहा.** डाँट में रखना- वश में रखना, शासन में रखना।

डाँटना *स.क्रि.* (देश.) 1. घुड़कना, फटकारना, डपटना 2. भय दिखाने के लिए जोर से बोलना।

डाँड़ *पुं.* (देश.) 1. डंडा 2. गदका 3. चप्पू 4. रीढ़ की हड्डी 5. ऊँची मेढ़ **मुहा.** डाँड़ मारना- मेड़ उठाना, मेड़ बनाना, हदबंदी करना 6. सीमा, हद 7. अर्थदंड, जुर्माना, हर्जाना।

डाँड़ना *स.क्रि.* (देश.) 1. डंडा, छड़ 2. चप्पू 3. हद, सीमा 4. मेड़ **मुहा.** होली का डाँडा- होली जलाने के लिए इकट्ठा किया गया घास-फूस का ढेर।

डाँड़ा *पुं.* (देश.) अर्थदंड लगाना, जुर्माना लगाना।

डाँड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. हत्था, दस्ता 2. लंबी पतली लकड़ी 3. तराजू की डंडी 4. टहनी **मुहा.** डाँडी मारना- कम तोलना 5. शहनाई की लकड़ी, जिसमें पीतल का घेरा होता है 6. लीक, मर्यादा 7. पालकी के दोनों ओर निकले हुए लंबे डंडे, जिन्हें कहार कंधे पर रखते हैं 8. पालकी 9. सीमा, हद।

डाँवरा *पुं.* (देश.) लड़का, पुत्र, बेटा।

डाँवरी *स्त्री.* (देश.) लड़की, बेटी, पुत्री।

डाँवाडोल *वि.* (देश.) 1. इधर-उधर हिलता-डोलता हुआ 2. चंचल 3. विचलित 4. अस्थिर।

डाँस *पुं.* (तद्.) 1. बड़ा मच्छर दंश 2. एक प्रकार की मक्खी जो पशुओं को कष्ट देती है।

डा *स्त्री.* (तत्.) 1. डाकिनी 2. ढोकर ले जाई जाने वाली टोकरी।

डाइन *स्त्री.* (तद्.) 1. चुडैल, भूतनी 2. टोहनाई 3. कुरूपा एवं डरावनी स्त्री।

डाइनामाइट *पुं.* (अं.) एक विस्फोटक पदार्थ का नाम

डाइनिंग रूम *पुं.* (अं.) भोजन कक्ष।

डाइरेक्टर *पुं.* (अं.) निदेशक, कार्य संचालक।

डाइरेक्टरी *स्त्री.* (अं.) वह पुस्तक जिसमें नगर या देश के व्यापारियों की अक्षरक्रम से सूची दी गई हो।

डाई *पुं.* (अं.) 1. साँचा 2. ठप्पा 3. रंग।

डाईप्रेस *पुं.* (अं.) ठप्पा उठाने की मशीन।

डाईवोर्स *पुं.* (अं.) तलाक, विवाह-विच्छेद।

डाक *स्त्री.* (देश.) चिट्ठियों आदि के लाने-ले जाने का प्रबंध **प्रयो.** भारतीय डाक व्यवस्था को डेढ़ सौ वर्ष से अधिक हो गए हैं 2. डाक से प्राप्त पत्र आदि **जैसे-** कल की डाक कहाँ रखी है 3. नीलामी की बोली 4. पुकार।

डाकखाना *पुं.* (देश.+फा.) पोस्ट आफिस, डाक (चिट्ठियो) को लाने-ले जाने, वितरित करने का कार्यालय।

डाकगाड़ी *स्त्री.* (देश.) वह रेलगाड़ी जिससे डाक भेजने का प्रबंध हो।

डाकनवार *पुं.* (देश.) बुलाने वाला, पुकारने वाला।

डाक बंगला *पुं.* (देश.+अं.) वह स्थान (मकान या बंगला) जिसमें सरकारी अधिकारियों का रहने का प्रबंध हो।

डाक महसूल *पुं.* (देश.+फा.) डाक व्यय, डाक खर्च।

डाक मुंशी *पुं.* (देश.+अर.) डाकघर का अधिकारी, डाकपाल, पोस्ट मास्टर।

डाकरना *स.क्रि.* (देश.) लाँघना, फाँदना, कूदकर पार करना।

डाक व्यय *स्त्री.* (देश.+तत्.) डाक का खर्च, डाक महसूल।

डाका *पुं.* (देश.) माल लूटने के लिए लुटेरों द्वारा किया गया धावा, छापा, बटमारी **मुहा.** डाका डालना- लूटने के लिए धावा बोलना, जबरदस्ती माल छीनना; डाका पड़ना- लूट के लिए हमला होना; डाका मारना- बलपूर्वक माल लूटना।

डाकिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. एक देवी या पिशाची जो काली के गणों में समझी जाती है 2. डाइन, चुड़ैल।

डाकिया *पुं.* (देश.) डाक से प्राप्त चिट्ठियों को लोगों के पास पहुँचाने वाला कर्मचारी।

डाकी *पुं.* (देश.) पेटू, बहुत खाने वाला *स्त्री.* 1. वमन, उल्टी 2. डाकू।

डाकीय *पुं.* (देश.) पोस्टल ऑर्डर।

डाकू *पुं.* (देश.) 1. डाका डालने वाला, दस्यु, लुटेरा, बटमार 2. अधिक खाने वाला, पेटू।

डाकेट *पुं.* (अं.) पत्र का सार।

डाक्टर *पुं.* (अं.) 1. आचार्य, विद्वान, अध्यापक 2. वैद्य, चिकित्सक, हकीम।

डाक्टरी *स्त्री.* (देश.) 1. चिकित्साशास्त्र 2. डाक्टर का पेशा या काम, पाश्चात्य चिकित्साशास्त्र *वि.* 1. डाक्टर संबंधी 2. चिकित्सा संबंधी।

डाख *पुं.* (देश.) ढाक, पलाश।

डागल *पुं.* (देश.) शैल, पहाड़, पर्वत।

डाट *पुं.* (देश.) 1. टेक, चाँड, मेहराब के बीच का पत्थर या ईंट 2.बोतल का काग (अं.) नुक्ता, बिंदु।

डाटना *स.क्रि.* (देश.) 1. डाट या टेक लगाना 2. छेद बंद करना 3. ठूँस-ठूँसकर खाना 4. किसी वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ ढकेलना।

डाढ़ *स्त्री.* (देश.) 1. चबाने के दाँत, दाढ़ 2. बरगद के पेड़ की जटा 3. सुअर का बाहर निकला हुआ दाँत।

डाढ़ना *स.क्रि.* (तद्.) जलाना, दग्ध करना।

डाढ़ा *स्त्री.* (तद्.) 1. दावानल 2. आग 3. ताप, दाह, जलन।

डाढ़ी *स्त्री.* (देश.) 1. ठोड़ी, ठुड्डी 2. ठुड्डी और कनपटी के बाल **मुहा.** डाढ़ी छोड़ना- दाढ़ी न मुँडवाना; डाढ़ी उखाड़ना- दुर्दशा करना, अपमानित करना; पेट में डाढ़ी होना- छोटी अवस्था में बड़ी-बड़ी बातें करना; पेशाब से डाढ़ी मुँड़वाना- बहुत अपमानित करना; हाथ से डाढ़ी के बालों को झटकारना- उत्साह प्रकट करना।

डाबक *वि.* (अनु.) **दे.** डाभक।

डाबर *पुं.* (तद्.) 1. नीची जमीन जहाँ पानी ठहरता हो 2. पोखर, तालाब, तलैया 3. चिलमची, हाथ धोने का बर्तन 4. मैला पानी *वि.* मटमैला, गंदला, कीचड़ वाला।

डाभ *पुं.* (तद्.) 1. एक प्रकार की घास जो रेह वाली ऊसर जमीन में पैदा होती है 2. कुश 3. आम का बौर, आम की मंजरी 4. कच्चा नारियल।

डाभक *वि.* (देश.) कुएँ का ताजा पानी।

डामर *पुं.* (देश.) 1. शिवकथित एक तंत्र 2. हलचल, धूम 3. आडंबर, दिखावा 4. चमत्कार 5. एक संकर जाति।

डामल *स्त्री.* (देश.) 1. उम्र कैद 2. देश निकाला।

डायट *स्त्री.* (अं.) 1. राज्य सभा **जैसे-** जापान की इंपीरियल डायट 2. भोजन 3. पथ्य 4. खाद्य पदार्थ।

डायन *स्त्री.* (देश.) 1. पिशाचिनी, डाकिनी, चुड़ैल 2. बदसूरत स्त्री।

डायनासोर *पुं.* (अं.) एक विशालकाय सरीसृप जो करोड़ो वर्ष पहले पाया जाता था।

डायनामो *पुं.* (अं.) बिजली पैदा करने वाला यंत्र।

डायमंड कट *पुं.* (अं.) हीरे जैसी काट

डायरिया *पुं.* (अं.) दस्त की बीमारी, अतिसार।

डायरी *स्त्री.* (अं.) दैनिकी, दैंनंदिनी, रोजनामचा।

डायल *पुं.* (अं.) 1. घड़ी का चेहरा 2. टेलीफोन का फोन मिलाने वाला यंत्र।

डायलाग *पुं.* (अं.) संवाद, वार्तालाप।

डायस *पुं.* (अं.) 1. रंगमंच 2. चबूतरा

डायोड *पुं.* (अं.) जो प्रत्यवर्ती धारा को दिष्ट धारा में बदलती है।

डाल *स्त्री.* (तद्.) 1. शाखा, शाख **मुहा.** डाल का टूटा- डाल से पककर गिरा हुआ ताजा फल 2. बढ़िया 3. नया आया हुआ **मुहा.** डाल का पका-पेड़ पर पका हुआ 4. तलवार का फल 5. एक प्रकार का गहना जो मध्य भारत में पहना जाता है।

डालना *स.क्रि.* (देश.) 1. नीचे गिराना 2. छोड़ना 3. फेंकना 4. घुसाना **जैसे-** बच्चे ने गर्म पानी में हाथ डाल दिए 5. पहनना **जैसे-** कपड़े डालना 6. लगाना, उपयोग करना **जैसे-** व्यापार में पैसे डाना 7. बिछाना **जैसे-** खटिया डालना।

डालर *पुं.* (अं.) अमेरिकी मुद्रा।

डाली *स्त्री.* (देश.) 1. डालिया 2. फल, मेवे आदि जो सजाकर किसी के पास सम्मान के लिए भेजे जाते हैं **मुहा.** डाली लगाना- डलिया में मेवे सजाकर भेजना 3. **दे.** डाल।

डावरा *पुं.* (तद्.) लड़का, बेटा, पुत्र।

डावरी *स्त्री.* (तद्.) लड़की, कन्या, बेटी।

डासन *पुं.* (देश.) बिछौना, बिस्तर, बिछाने की चटाई।

डासना *स.क्रि.* (देश.) बिछाना, फैलाना, डालना।

डासनी *स्त्री.* (देश.) 1. खाट, चारपाई 2. बिछौना।

डाह *स्त्री.* (तद्.) जलन, ईर्ष्या, द्वेष।

डाहना *स.क्रि.* (तद्.) 1. परेशान करना, सताना, तंग करना 2. जलाना।

डाहुक *पुं.* (देश.) 1. टिटिहरी के आकार का पक्षी 2. पपीहा, चातक।

डिंगर *पुं.* (तद्.) 1. मोटा आदमी 2. दुष्ट, बदमाश 3. गुलाम, दास 4. नीच आदमी (देश.) मवेशियों के गले में बाँधने वाला काठ, ठिंगुरा।

डिंगल *वि.* (तद्.) नीच, कमीना (देश.) राजस्थान के चारणों और भाटों की काव्यभाषा का नाम।

डिंडस *पुं.* (तत्.) टिंडा नामक तरकारी।

डिंडसी *स्त्री.* (तत्.) टिंड या टिंडसी नाम की तरकारी।

डिंडिभ *पुं.* (तत्.) 1. जल सर्प, डौंड़हा 3. डुगडुगी 4. करौंदा।

डिंडिर *पुं.* (तत्.) समुद्र की झाग, समुद्र फेन।

डिंडिश *पुं.* (तत्.) टिंडा नामक तरकारी।

डिंडीर *पुं.* (तत्.) **दे.** डिंडिर।

डिंब *पुं.* (तत्.) 1. कोलाहल, हलचल 2. दंगा, लड़ाई 3. अंडा 4. फेफड़ा 5. भ्रूण की प्रारंभिक अवस्था।

डिंबाशय *पुं.* (तत्.) गर्भाशय की वे दो ग्रंथियाँ जिनमें डिंब रहते हैं और परिपक्व होते हैं।

डिंबाहव *पुं.* (तत्.) सामान्य युद्ध, झड़प।

डिंबिका *स्त्री.* (तत्.) 1. कामुक स्त्री, मदमाती स्त्री 2. बुलबुल, सोनापाटा।

डिंभ *पुं.* (तत्.) 1. छोटा बच्चा 2. पशु का छोटा बच्चा 3. मूर्ख 4. एक प्रकार का पेट का रोग (तद्.) 1. पाखंड, आडंबर 2. अभिमान, घमंड।

डिंभक *पुं.* (तत्.) 1. बच्चा, छोटा बच्चा 2. पशु का छोटा बच्चा।

डिंभिया *वि.* (देश.) 1. आडंबरी, पाखंडी 2. अभिमानी, घमंडी।

डिक्करी *स्त्री.* (तत्.) युवती, जवान औरत।

डिक्टेटर *पुं.* (अं.) 1. निरंकुश शासक, अधिनायक 2. पूर्ण अधिकार प्राप्त नेता या पथप्रदर्शक।

डिक्टेशन *पुं.* (अं.) श्रुतलेख, इमला।

डिक्री *स्त्री.* (अं.) फरमान, हुक्म, आज्ञा, न्यायालय द्वारा प्राप्त अधिकार।

डिक्लरेशन *पुं.* (अं.) घोषणा।

डिक्शनरी *स्त्री.* (अं.) शब्दकोश।

डिगंबर *वि.* (देश.) दिगंबर, नग्न, वस्त्र-रहित।

डिगना *अ.क्रि.* (देश.) हिलना, खिसकना, सरकना, हटना **जैसे-** डिग जाना-किसी बात पर स्थिर न होना, विचलित हो जाना।

डिगमिगाना *अ.क्रि.* (देश.) **दे.** डगमगाना *स.क्रि.* हिलाना, विचलित करना।

डिगरी *स्त्री.* (अं.) 1. विश्वविद्यालय की परीक्षा उत्तीर्ण होने पर प्राप्त उपाधि, पदवी 2. अंश, कलम 3. समकोण का 1/90वाँ भाग 4. न्यायालय की आज्ञा से प्राप्त स्वत्व या अधिकार।

डिगरीदार *पुं.* (देश.) जिसके पक्ष में डिगरी हुई हो।

डिगलाना *अ.क्रि.* (देश.) डगमगाना, हिलना, लड़खड़ाना।

डिगाना *स.क्रि.* (देश.) हटाना, सरकाना, खसकाना।

डिग्गी *स्त्री.* (देश.) हिम्मत, साहस।

डिजाइन *स्त्री.* (अं.) बनावट, खाका, तर्ज़।

डिटेक्टिव *पुं.* (अं.) जासूस, गुप्तचर, भेदिया, मुखबिर।

डिठार *वि.* (देश.) देखने वाला, आँख वाला, दृष्टि वाला।

डिठोना *पुं.* (देश.) **दे.** डिठौना।

डिठोहरी *स्त्री.* (देश.) नजरबट्टू।

डिठौना *पुं.* (देश.) बुरी नजर से बचाने के लिए बच्चों को लगाया जाने वाला काजल का टीका।

डिपो *पुं.* (अं.) 1. खाली बसों के ठहरने का स्थान **जैसे-** बस डिपो 2. बिक्री स्थल **जैसे-** तेल डिपो।

डिप्टी *पुं.* (अं.) 1. स्थानापन्न, नायब 2. प्रतिनिधि **प्रयो.** डिप्टी इंसपेक्टर, डिप्टी कलक्टर।

डिप्लोमा *पुं.* (अं.) 1. उपाधि-पत्र 2. (किसी पद या उपाधि का) प्रणाम पत्र।

डिप्लोमेसी *स्त्री.* (अं.) 1. राजनय 2. कूटनीति, चालाकी।

डिफ़्थीरिया *पुं.* (अं.) गले का एक घातक और संक्रामक रोग जो जीवाणुओं से होता है और तीव्र विषारक्तता उत्पन्न करता है, रोहिणी रोग, कंठरोहिणी।

डिबिया *स्त्री.* (देश.) छोटा डिब्बा।

डिबेट *स्त्री.* (अं.) वाद-विवाद, बहस।

डिब्बा (डब्बा) *पुं.* (फा.) 1. रेल का एक भाग जिसमें यात्री बैठते हैं 2. धातु या गत्ते का एक ढक्कनदार भाग।

डिब्बी *स्त्री.* (देश.) छोटा डिब्बा या डिबिया।

डिम *पुं.* (तत.) **नाट्य.** रूपक के दस प्रकारों में से एक, चार अंको का रौद्र रस-प्रधान रूपक जिसमें इंद्रजाल, लड़ाई आदि का चित्रण होता है।

डिमडिम *स्त्री.* (अनु.) 'डिमडिम' की ध्वनि **उदा.** जय-जय डिमडिम बाजे -विद्यावति पदावली।

डिमडिमी *स्त्री.* (अनु.) डुगडुगी।

डिमांस्ट्रेटर *पुं.* (अं.) 1. प्रदर्शक 2. प्रदर्शनकारी (प्रयोगशाला में) प्रयोग करके दिखानेवाला। demonstrator

डिमाई *स्त्री.* (अ.) छपाई के कागज का एक नाप जो अमरीका मे 21×16 इंच है तथा इंगलैंड आदि में 23.39×16.54 इंच (594×420 मिलीमीटर)

डिमिक-डिमिक *स्त्री.* (अनु.) मृदंग,डमरू की ध्वनि।

डिलीवरी *स्त्री.* (अ.) 1. (सामान की) सुपुर्दगी 2. (डाक आदि का) वितरण 3. शिशु-जन्म, प्रसव।

डिल्ला *पुं.* (देश.) **छंद** 1. एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे 16 मात्राएँ होती हैं, 8-8 पर यति होती है तथा अंत में भगण होता है 2. एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में दो सगण के योग से कुल 6 वर्ण होते हैं, तिल्ला, तिल्लाना, तिलका।

डिवाइडर *पुं.* (अ.) एक ज्यामितीय उपकरण, जो रेखा, कोण आदि को नापने या विभाजित करने के काम आता है।

डिवीजन *स्त्री.* (अ.) (परीक्षा की) श्रेणी **जैसे-** सेकंड डिवज़न में उत्तीर्ण विद्यार्थी *पुं.* 1. भाग **जैसे-** 16 की 4 से डिविज़न 2. मंडल (प्रशासन) **जैसे-** मुरादाबाद डिविज़न के कार्यालय।

डिसमिस *वि.* (अ.) 1. नौकरी से निकाला गया (व्यक्ति) 2. बर्ख़ास्त 3. ख़ारिज़ (मुकदमा)।

डिस्क *स्त्री.* (अं.) **चिकि.** 1. बिंब 2. थाली की तरह चपटी, गोलाकार वस्तु, चक्र, चक्रिका, मंडल।

डिस्काउंट *पुं.* (अं.) क़ीमत पर मिलनेवाली छूट, बट्टा।

डिस्टेंपर *स्त्री.* (अं.) दीवारों पर रंग करने का विशेष ढंग अथवा उसके लिए रंग समारंजन।

डिस्टिंक्शन *स्त्री.* (अं.) 1. भेद, अंतर 2. सम्मान गैरव 3. (साहित्यिक) वैशिष्टय, श्रेषठता (परिक्षा में) किसी विषय में 75 प्रतिशत अंक पाना।

डिस्ट्रिब्यूटर *पुं.* (अं.) (मुद्रण) छपाई हो जाने के बाद टाइपों को अलग-अलग उनके ख़ानों में रखनेवाला, वितरक।

डिस्पेंसरी *स्त्री.* (अं.) औषधालय।

डिहरी *स्त्री.* (देश.) 6000 गाँठों का एक मान 2. अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बर्तन।

डींग *स्त्री.* (तद्.) शेखी, बढ़-चढ़कर कही हुई बात, झूठी बढ़ाई **जैसे-** डींग हाँकना- शेखी बघारना, बढ़-चढक़र बातें करना।

डी.एन.ए *पुं.* (अं.) जटिल अणुओं से बने केंद्रकीय अम्ल जो वनस्पतियों और प्राणियों में होते हैं।

डीठ *स्त्री.* (देश.) 1. दृष्टि, नजर, निगाह **मुहा.** डीठ चुराना- नजर न मिलाना; डीठ छिपाना- नजर चुराना; डीठ जोड़ना- आँखें चार करना, नजर मिलाना; डीठ रखना- नजर रखना; डीठ लगाना- नजर लगाना 2. देखने की शक्ति 3. ज्ञान।

डीठे *स्त्री.* (देश.) **दे.** डीठ।

डीन *स्त्री.* (तत्.) उड़ान, पक्षियों की एक प्रकार की गति से उत्पन्न शब्द।

डीपो *पुं.* (अं.) **दे.** डिपो।

डीबी *स्त्री.* (देश.) कुंडलिनी, शक्ति।

डीमडाम *पुं.* (देश.) 1. ठाठ, घूमधाम, 2. गर्व, अहंकार।

डील *स्त्री.* (देश.) 1. शरीर की ऊँचाई, शरीर का विस्तार, कद, उठान **जैसे-** डील डौल-कद काठी, शरीर का ढाँचा 2. शरीर, देह, जिस्म।

डीवट *स्त्री.* (देश.) **दे.** दीवट।

डीह *पुं.* (देश.)गाँव, आबादी, बस्ती, गाँव का टीला।

डुंक *पुं.* (अनु.) घूँसा, मुक्का।

डुंग *पुं.* (तद्.) 1. ढेर 2. टीला, पहाड़ी।

डुंडुम *पुं.* (तत्.) पानी में रहने वाला साँप, डौंड़हा साँप।

डुंडुल *पुं.* (तत्.) छोटा उल्लू।

डुकरिया *पुं.* (देश.) 1. डोकरी, बुढ़िया 2. स्त्री।

डुकिया *स्त्री.* (देश.) **दे.** डोकिया।

डुकियाना *स.क्रि.* (देश.) घूँसों से मारना, घूँसे लगाना।

डुक्का-डुक्की *स्त्री.* (देश.) आँखमिचौनी, लुका-छिपी 2. घूसेबाजी।

डुगडुगाना *स.क्रि.* (अनु.) डुग्गी बजाना।

डुगडुगी *स्त्री.* (अनु.) डुग्गी, डौंगी।

डुग्गी *स्त्री.* (अनु.) डुगडुगी।

डुपटना *स.क्रि.* (देश.) दोहराना करना, तह लगाना।

डुपटा *पु.* (देश.) **दे.** दुपट्टा।

डुप्लीकेट *पुं.* (अं.) दूसरा, द्वितीय।

डुबकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. डूबना, उतराना 2. घबराना, चिंता करना।

डुबकनी *स्त्री.* (देश.) पनडुब्बी।

डुबकी *स्त्री.* (देश.) पानी में डूबने की क्रिया, गोता, डुब्बी।

डुबाना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी को गोता देना, बोरना 2. चौपट करना, नष्ट करना, बरबाद करना 3. यश/प्रतिष्ठा बरबाद करना **मुहा.** नाम डुबाना- यश बिगाड़ना, प्रतिष्ठा नष्ट करना; वंश डुबाना- कुल की मर्यादा नष्ट करना।

डुबाव *पुं.* (देश.) एक व्यक्ति के डूबने जितनी गहराई, डूबने-भर की गहराई।

डुबुकी *स्त्री.* (देश.) **दे.** डुबकी।

डुब्बा *पुं.* (देश.) **दे.** पनडुब्बा।

डुब्बी *स्त्री.* (देश.) दे. डुबकी।

डुमकौरी *स्त्री.* (देश.) पीठी की सुखाई हुई बड़ी।

डुलाना *स.क्रि.* (देश.) 1. हिलाना, चलाना। **जैसे-** पंखा डुलाना-पंखा चलाना/हिलाना 2. हटाना, भगाना 3. घुमाना, टहलाना।

डुलि *स्त्री.* (देश.) कछुई, कच्छपी।

डुलिका *स्त्री.* (तत्.) खंजन के आकार की एक चिड़िया।

डुली *स्त्री.* (तत्.) चिल्ला साग, लाल पत्तों वाला बथुआ।

डूँगर *पुं.* (देश.) 1. टीला 2. छोटी पहाड़ी।

डूँगर फल *पुं.* (देश.) देवदाली का फल।

डूँगरी *स्त्री.* (देश.) छोटी पहाड़ी।

डूँगा *वि.* (देश.) 1. चम्मच, चमचा 2. लकड़ी की नाव, डोंगा।

डूँड़ा *वि.* (देश.) 1. एक सींग वाला बैल 2. लूला, जिसका हाथ कटा हुआ हो।

डेंटिस्ट *पुं.* (अं.) दंत चिकित्सक, दाँतों का डाक्टर।

डेंड़सी *स्त्री.* (तद्.) टिंडे या ककड़ी की तरह की एक तरकारी।

डेउढ़ी *स्त्री.* (देश.) **दे.** ड्योढ़ा।

डेक *पुं.* (अं.) जहाज की छत या फर्श

डेक्रान *पुं.* (अं.) रासायनिक दृष्टि से संश्लेषित एक प्रकार का रेशा।

डेग *पुं.* (देश.) डग।

डेट *स्त्री.* (अं.) तारीख, तिथि।

डेडरा *पुं.* (देश.) पानी का साँप।

डेढ़ *वि.* (देश.) एक और आधा **जैसे-** डेढ़ रुपया, डेढ़ बजे, डेढ़ दिन **मुहा.** डेढ़ चावल की खिचड़ी

बनाना- अपनी राय अलग बनाना; डेढ़ चुल्लू- जरा सा; डेढ़ चुल्लू लहू पीना- खूब दंड देना।

डेढ़ा *वि.* (देश.) डेढ़ गुना, डेवढ़ा।

डेढ़िया *स्त्री.* (देश.) **दे.** डेढ़ी।

डेढ़ी *स्त्री.* (देश.) किसानों में प्रचलित एक प्रथा जसके अंतर्गत बुआई के समय दिए गए उधार बीज का फसल पर डेढ़ा लिया जाता है।

डेपूटेशन *पुं.* (अं.) 1. प्रतिनिधि मंडल, शिष्टमंडल 2. प्रतिनियुक्ति।

डेमोक्रेसी *स्त्री.* (अं.) लोकतंत्र, प्रजातंत्र democracy

डेमोक्रैट *पुं.* (अं.) लोकतंत्र का पक्षधर व्यक्ति democrat

डेरा *पुं.* (देश.) 1. ठहराव, टिकाव, टिकने का आयोजन, पड़ाव **जैसे-** फौज ने गाँव के बाहर डेरा डाल दिया 2. छावनी, टिकने का साज-सामान, तंबू, छप्पर आदि **जैसे-** यहाँ से फौरन डेरा उठाओ नहीं तो पुलिस आकर उठा देगी **मुहा.** डेरा डालना- ठहरना, टिकना; डेरा डंडा उखड़ना- रहने का साज-सामान हटाकर चले जाना 3. मंडली, दल 4. निवास स्थान, घर, मकान **जैसे-** आपका डेरा कहाँ है? *पुं.* 1. कटहल की तरह का पेड़ 2. ढेला, पत्थर मिट्टी या ईंट का टुकड़ा।

डेरी *स्त्री.* (अं.) 1. जहाँ गाय-भैंसे आदि रखी जाती हैं और दूध-मक्खन आदि बेचा जाता है 2. दूध, मक्खन आदि की दुकान।

डेल *स्त्री.* (देश.) वह जमीन जिसे रबी की फसल के लिए जोतकर छोड़ दिया जाता है।

डेलटा *पुं.* (अं.) नदियों के मुहाने पर बनी तिकोनी भूमि जो इधर-उधर धाराओं से घिरी होती है।

डेला *पुं.* (तद्.) 1. ढेला, रोड़ा 2. आँख का सफेद उभरा हुआ भाग।

डेलिगेट *पुं.* (अं.) प्रतिनिधि।

डेलिया *पुं.* (देश.) फूलों का एक पौधा जिसमें लाल या पीले फूल लगते हैं।

डेवढ़ा *वि.* (देश.) डेढ़ गुना *स्त्री.* सिलसिला, क्रम, तार *पुं.* 1. तंग रास्ता 2. ड्योढ़े का पहाड़ा 3. गाने में साधारण से कुछ ऊँचा स्वर।

डेवढ़ाना *स.क्रि.* (देश.) 1. कपड़े की तह लगाना 2. डेवढ़ा करना 3. आँच पर रोटी फुलाना।

डेवढ़ी *स्त्री.* (देश.) ड्योढ़ी, देहरी।

डेसिमल *पुं.* (अं.) दशमलव।

डेस्क *पुं.* (अं.) लिखने के लिए एक छोटी मेज।

डेहरी *स्त्री.* (तद्.) 1. दहलीज, देहली 2. अन्न रखने का कच्ची मिट्टी का बर्तन।

डेहल *पुं.* (तद्.) दहलीज, देहली।

डैंगू फीवर *पुं.* (अं.) ऐडीस मच्छर के काटने से होने वाला तेज ज्वर, इस ज्वर में प्लेट्लेट्स की मात्रा अत्यधिक कम हो जाती है तथा बीमार को उल्टी, दस्त एंव खारिश आदि होते हैं तथा इसमें जान जाने का भी खतरा होता है, डैंगू ज्वर।

डैगना *पुं.* (देश.) 1. पशुओं के गले में बाँधने वाला काठ का टुकड़ा 2. ठेंगुर, लंगर।

डैना *पुं.* (तद्.) 1. पंख, पक्ष, बाजू 2. नाव खेने का डंडा।

डैम फूल *पुं.* (अं.) मूर्ख, सत्यानाशी, एक अंग्रेजी गाली।

डैश *पुं.* (अं.) अंग्रेजी का एक विराम चिह्न।

डोंगर *पुं.* (देश.) 1. पहाड़ी, टीला 2. चिह्न।

डोंगा *पुं.* (देश.) बिना पाल की नाव **मुहा.** डोंगा पार लगाना-काम निपटाना।

डोंगी *स्त्री.* (देश.) 1. बिना पाल की छोटी नाव 2. वह बर्तन जिसमें लोहार लोटा लाल करके बुझाते हैं।

डोंडा *पुं.* (तद्.) 1. कारतूस 2. बड़ी इलायची।

डोंड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. पोस्ते का फल 2. कपास की कली 3. उभरा हुआ मुँह, टोंटी।

डोई *पुं.* (देश.) **दे.** डोम।

डोक *पुं.* (देश.) 1. पकी हुई खजूर 2. छोहारा।

डोकरा *पुं.* (तद्.) 1. वृद्ध व्यक्ति 2. पिता।

डोकरी *स्त्री.* (देश.) 1. बूढ़ी स्त्री 2. माता **विलो.** डोकरा।

डोका *पुं.* (देश.) काठ का छोटा बर्तन जिसमें तेल आदि रखते हैं।

डोकिया *स्त्री.* (देश.) काठ का छोटा कटोरा जिसमें तेल-उबटन आदि रखते हैं।

डोगरा *पुं.* (देश.) जम्मू, कश्मीर, कांगड़ा में रहने वाली एक जाति का नाम तथा उसका व्यक्ति।

डोगरी *स्त्री.* (देश.) डोगरा जाति के लोगों की भाषा।

डोज *स्त्री.* (अं.) मात्रा, खुराक।

डोड़ी *स्त्री.* (देश.) एक लता जो औषध के रूप में काम आती है, जीवंती लता।

डोडो *पुं.* (अं.) एक प्रकार की चिड़िया जो लगभग 100 वर्ष पूर्व मारिशस में पाई जाती थी।

डोढ़ी *स्त्री.* (देश.) **दे.** ड्योढ़ी।

डोब *पुं.* (देश.) डुबकी, गोता, डुबाने का भाव **मुहा.** डोब देना- डुबाना, गोता देना।

डोबा *पुं.* (देश.) गोता, डुबकी।

डोम *पुं.* (तद्.) एक जाति, मीरासी।

डोमनी *स्त्री.* (देश.) 1. डोम जाति की स्त्री 2. डोम की पत्नी **विलो.** डोम।

डोमिन *स्त्री.* (देश.) 1. डोम जाति की स्त्री 2. मीरासियों की स्त्री **विलो.** डोम।

डोमिनियन *पुं.* (अं.) उपनिवेश, औपनिवेशिक राज्य।

डोर *स्त्री.* (तत्.) 1. डोरा, तागा, सूत 2. पतंग उड़ाने का मांझेदार धागा 3. सहारा, आश्रय 4. बंधन, लगाव **मुहा.** डोर पर लगाना- रास्ते पर लाना, प्रवृत्त करना; डोर भरना- कपड़े के किनारे को छोड़कर उसमें धागा भरकर सीना; डोर मजबूत होना- जीवन का सूत्र दृढ़ होना; डोर होना- मुग्ध होना, लट्टू होना।

डोरक *पुं.* (देश.) डोरा, धागा, सूत्र।

डोरा *पुं.* (तद्.) 1. सूत, जोर, धागा 2. धारी, लकीर 3. आँखों की महीन लाल नसें 4. तलवार की धार 5. प्रेमबंधन, लगन **मुहा.** डोरा जलना- प्रेम सूत्र में बाँधना; डोरा लगना- स्नेह बंधन में बंधना।

डोरिया *पुं.* (देश.) 1. धारीदार कपड़ा 2. हरे पैर वाला बगुला जो ऋतु के अनुसार रंग बदलता है।

डोरियाना *स.क्रि.* (देश.) पशुओं को रस्सी से बाँधकर ले जाना।

डोरी *स्त्री.* (देश.) रस्सी **मुहा.** डोरी खींचना- अपने पास बुलाना; डोरी लगना- लगातार ध्यान बना रहना, बाँधने की डोरी, बंधन **जैसे-** रेशम की डोरी-प्यार का बंधन, राखी **मुहा.** डोरी टूटना- संबंध टूटना; डोरी ढीली छोड़ना- कम चौकसी बरतना **जैसे-** डोरी ढीली छोड़ने से बच्चे अक्सर बिगड़ जाते हैं।

डोल *पुं.* (तद्.) 1. कुएँ से पानी खींचने वाला बर्तन 2. झूला, हिंडोला, पालना 3. डोली, पालकी 4. जहाज का मस्तूल 5. खलबली, हलचल *वि.* चंचल, डोलाने वाला।

डोलक *पुं.* (तत्.) एक प्राचीन बाजा।

डोलची *स्त्री.* (देश.) 1. छोटा डोल 2. फल-फूल ले जाने का बाँस का बना हुआ पात्र।

डोलडाल *पुं.* (देश.) 1. चलना फिरना 2. पाखाने जाना।

डोलदहल *पुं.* (देश.) हलचल।

डोलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. हिलना-डुलना 2. टहलना, चलना-फिरना 3. अपने स्थान से हटना, अस्थिर होना, गतिमान होना *पुं.* डोला।

डोलाना *स.क्रि.* (देश.) 1. हिलाना-डुलाना, चलाना (पंखा) 2. दूर हटाना, भगाना।

डोलिया *स्त्री.* (देश.) डोली, पालकी।

डोली *स्त्री.* (देऽश.) पालकी।

डोलोत्सव *पुं.* (देश.+तत्.) **दे.** दोलोत्सव।

डोसा *पुं.* (देश.) पिसे हुए चावल तथा उड़द की दाल से बनने वाला एक दक्षिण भारतीय व्यंजन।

डौंड़ी *स्त्री.* (तद्.) डुग्गी, मुनादी, ढिंढोरा **मुहा.** डौंड़ी पीटना- मुनादी करना; डौड़ी बजना- घोषणा होना, जय-जयकार करना।

डौआ *पुं.* (देश.) 1. काठ का चम्मच 2.बड़ी करछी।

डौका *पुं.* (देश.) 1. पंडुक पक्षी 2. पुरुष।

डौकी *स्त्री.* (देश.) 1. पंडुकी 2. स्त्री।

डौर *पुं.* (देश.) ढंग, तरीका, प्रकार।

डौरू *पुं.* (देश.) डमरू।

डौल *पुं.* (देश.) 1. ढाँचा, आकार 2. क्रम **मुहा.** डौल डालना- ढाँचा खड़ा करना; डौल पर लाना- काट छाँटकर दुरूस्त करना, अपना प्रयोजन सिद्ध करना; डौल से लगाना- क्रम से लगाना 3. प्रकार, तरह, तरीका 4. उपाय, तदबीर **जैसे-** डील डौल- आकार प्रकार, कद काठी **मुहा.** डौल लगाना- उपाय करना 5. लक्षण **जैसे-** वर्षा का तो डौल नही लगता।

डौलडाल *पुं.* (देश.) प्रयत्न, उपाय, युक्ति

डौलदार *वि.* (देश.+फा.) सुडौल, खूबसूरत।

डौलना *स.क्रि.* (देश.) गढ़ना, ठीक करना।

डौला *पुं.* (देश.) सुडौल बाजू, हाथ का गट्टा।

डौलियाना *स.क्रि.* (देश.) 1. ढंग, पर लाना 2. ठीक-ठाक करना, दुरुस्त करना।

डौवा *पुं.* (देश.) बड़ी डोई।

ड्यूक *पुं.* (अं.) यूरोप में सामंतों को दी जाने वाली उपाधि।

ड्यूटी *स्त्री.* (अं.) 1. कर्तव्य, फर्ज, धर्म 2. पहरा, सेवा, खिदमत।

ड्यूट्रान *पुं.* (अं.) ड्यूटीरियम परमाणु का नाभिक।

ड्योढ़ा *वि.* (देश.) डेढ़ गुना, आधा और अधिक *पुं.* 1. तंग रास्ता 2. ड्योढ़े का पहाड़ा।

ड्योढ़ी *स्त्री.* (देश.) 1. दहलीज, चौखट, दरवाजा। **जैसे-** ड्योढ़ीदार मकान **मुहा.** ड्योढ़ी खुलना- आने जाने की आज्ञा मिलना; ड्योढी बंद होना- कहीं आने जाने की मनाही होना; ड्योढ़ी लगना- द्वार पर द्वारपाल का बैठना; ड्योढ़ी पर होना- किसी की अधीनता में होना *वि.* डेढ़ गुनी।

ड्योढ़ीदार *पुं.* (देश.+फा.) 'ड्योढ़ीवान'।

ड्योढ़ीवान *पुं.* (देश.) द्वारपाल, दरबान।

ड्यौढ़ा *पुं.* (देश.) डेढ़ गुना।

ड्यौढ़ी *वि.* (देश.) डेढ़ गुनी।

ड्रम *पुं.* (अं.) ढोल-नगाड़े के आकार का अंग्रेजी बाजा।

ड्रा *पुं.* (अं.) किसी खेल को हार-जीत के बिना घोषित करना।

ड्राइंग *स्त्री.* (अं.) रेखाओं के द्वारा आकृति बनाने की कला।

ड्राइंग रूम *पुं.* (अं.) बैठक, बैठने का कमरा।

ड्राइवर *पुं.* (अं.) गाड़ी चलाने वाला, चालक।

ड्राई-प्रिंटिंग *स्त्री.* (अं.) सूखी छपाई।

ड्राप *पुं.* (अं.) 1. बूंद 2. बिंदु।

ड्राप सीन *पुं.* (अं.) रंगमंच का आगे का पर्दा, यवनिका।

ड्राफ्ट *पुं.* (अं.) 1. मसौदा 2. चेक, हुंडी।

ड्राम *पुं.* (अं.) तीन माशे का एक परिमाण जो द्रव पदार्थ मापने के काम आता है।

ड्रामा *पुं.* (अं.) नाटक।

ड्रावर *पुं.* (अं.) दराज।

ड्रिंक *पुं.* (अं.) मद्यपान, शराबखोरी।

ड्रिल *स्त्री.* (अं.) कवायद।

ड्रेगन *पुं.* (अं.) 1. उग्र व्यक्ति 3. पंखदार साँप dragon

ड्रेगून *पुं.* (अं.) सिपाही, सवार dragoon

ड्रेन *पुं.* (अं.) गंदे पानी, मलमूत्र को बहाने वाली नाली।

ड्रेस *पुं.* (अं.) पोशाक।

ड्रेसिंग *स.क्रि.* (अं.) 1. घाव पर पट्टी बाँधना 2. मरहम-पट्टी करना 3. पत्थर आदि को चिकना करना 4. बाल छाँटना।

ढ

हिंदी वर्णमाला का टवर्ग का चौथा अक्षर, मूर्धन्य सघोष महाप्राण ध्वनि।

ढंकना *पुं.* (देश.) **दे.** ढकना।

ढंग *पुं.* (तद्.) 1. प्रणाली, रीति, तरीका, ढब **जैसे-** बोलने का ढंग, उठने-बैठने का ढंग 2. बनावट, प्रकार 3. युक्ति, तदबीर **जैसे-** कोई ढंग ऐसा निकालें कि काम बन जाए **मुहा.** ढंग पर चढ़ना- अभिप्राय पूरा होने के अनुकूल होना; ढंग पर लाना- अभिप्राय साधन के अनुकूल करना; ढंग का- व्यवहार-कुशल **जैसे-** वह काफी ढंग का व्यक्ति है; ढंग बरतना-शिष्टाचार दिखाना 4. बहाना, पाखंड 5. लक्षण, आसार **जैसे-** उसका ढंग अच्छा नहीं लगता 6. अवस्था, स्थिति **जैसे-** अगर उसका यही ढंग रहा तो उसका पतन निश्चित है।

ढंगी *वि.* (देश.) चालाक, चतुर, चालबाज।

ढंढस *पुं.* (देश.) ढँढरच।

ढंढार *वि.* (देश.) 1. बहुत बड़ा 2. बेढंगा।

ढंढोलना *स.क्रि.* (देश.) ढंढोरना, ढँढोरा पीटना।

ढँढातर *स्त्री.* (देश.) खोज, तलाश।

ढँकना *स.क्रि.* (देश.) **दे.** ढकना।

ढँग *पुं.* (देश.) तरीका, डौल।

ढँगलाना *स.क्रि.* (देश.) 1. लुढ़काना 2. धक्का देकर गिरना।

ढँढोरची *पुं.* (देश.) ढँढोरा फेरने वाला, मुनादी करने वाला।

ढँढोरा *पु.* (देश.) 1. डुगडुगी, डौंडी, ढोल 2. मुनादी **मुहा.** ढँढोरा पीटना- ढोल बजाकर कहना, मुनादी करना; ढँढोरा करना- ढँढोरा पीटना।

ढँढोरिया *वि.* (देश.) ढंढोरा पीटने वाला, मुनादी करने वाला।

ढँपना *अ.क्रि.* (देश.) ढकना, छिपना *स.क्रि.* छिपाना।

ढ *पुं.* (तत्.) 1. बड़ा ढोल 2. कुत्ता 3. कुत्ते की पूँछ 4. ध्वनि 5. साँप।

ढई *स.क्रि.* (देश.) ढहने की क्रिया या स्थिति।

ढकना *स.क्रि.* (तद्.) छिपाना *पुं.* ढक्कन *अ.क्रि.* छिपना, दिखाई न देना **विलो.** उघाड़ना।

ढकनिया *स्त्री.* (देश.) **दे.** ढकनी।

ढकनी *स्त्री.* (देश.) 1. ढक्कन, ढकने की वस्तु 2. फूल के आकार का एक प्रकार का गोदना।

ढका *पुं.* (देश.) धक्का, टक्कर।

ढकेलना *स.क्रि.* (देश.) 1. धक्का देकर आगे की ओर गिराना 2. आगे ठेलना।

ढकोसना *स.क्रि.* (अनु.) एक बार में पी जाना, जल्दी-जल्दी पीना।

ढकोसला *पुं.* (देश.) पाखंड, मिथ्याजाल, आडंबर।

ढक्क *पु.* (देश.) 1. बड़ा मंदिर 2. एक देश का नाम।

ढक्कन *पुं.* (देश.) वह वस्तु जो किसी वस्तु को छिपाने या बंद करने के काम आती हो।

ढक्का *स्त्री.* (तद्.) 1. बड़ा ढोल 2. नगाड़ा, डंका, डमरू 3. छिपाव, दुराव।

ढक्कारी *स्त्री.* (तत्.) तारा देवी का एक नाम।

ढगण *पुं.* (तत्.) तीन मात्राओं वाला एक मात्रिक गण।

ढचर *पुं.* (देश.) 1. ढाँचा, आयोजन 2. आडंबर, ढकोसला।

ढटींगड़ *पुं.* (तद्.) बडे डील-डौल वाला व्यक्ति।

ढटींगड़ा *पुं.* (तद्.) **दे.** ढटींगड़।

ढटीगर *पुं.* (तद्.) **दे.** ढटींगड़।

ढड्ढा *वि.* (तद्.) बहुत बड़ा, बेढंगा।

ढनक *स्त्री.* (अनु.) ढोल, नगाड़े आदि की ध्वनि।

ढनढन *स्त्री.* (अनु.) ढन-ढन का शब्द।

ढनमनाना *अ.क्रि.* (अनु.) लुढ़कना, चक्कर खाकर गिरना।

ढपना *अ.क्रि.* (देश.) ढका होना।

ढपरिया *स्त्री.* (तद्.) दुपहरिया।

ढपला *पुं.* (देश.) **दे.** डफला।

ढपली *स्त्री.* (देश.) **दे.** डफली।

ढपील *वि.* (देश.) ढापने वाली, ढकने वाला।

ढफला *पु.* (देश.) **दे.** डफला।

ढफार *पुं.* (अनु.) चिग्घार, डकार।

ढब *पुं.* (देश.) 1. ढंग, रीति, तरीका 2. तरह, प्रकार 3. रचना, बनावट, ढाँचा 4. काम निकालने की युक्ति, उपाय **मुहा.** ढब पर चढ़ना- अभिप्राय

साधन के अनूकूल होना; ढब पर लाना- अभिप्राय साधन के अनुकूल लाना; ढब डालना- आदत डालना, शऊर सिखाना; ढब पड़ना- आदि होना।

ढबका *पुं.* (देश.) उपाय, तरीका, युक्ति।

ढबरा *वि.* (देश.) **दे.** ढाबर।

ढबरी *स्त्री.* (देश.) ढिबरी।

ढबीला *वि.* (देश.) ढबवाला, चालाक, चतुर।

ढबुआ *पुं.* (देश.) तांबे का सिक्का, पैसा।

ढबैला *वि.* (देश.) मटमैला, गंदला (पानी)।

ढमकना *अ.क्रि.* (अनु.) ढम-ढम की आवाज होना।

ढमकाना *स.क्रि.* (देश.) ढोल, नगाड़ा आदि बजाना, ढमढम ध्वनि करना।

ढमढम *पुं.* (अनु.) ढोल या नगाड़े की ध्वनि।

ढमलाना *अ.क्रि.* (देश.) लुढ़कना *स.क्रि.* लुढ़काना।

ढयना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ध्वस्त होना 2. पस्त होना, शिथिल होना।

ढरकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ढलना, गिरकर बह जाना **मुहा.** दिन ढरकना- दिन ढलना, सूर्यास्त होना 2. नीचे की ओर बह जाना 3. आरंभ करना, लेटना।

ढरका *पुं.* (देश.) 1. आँख से पानी बहने का रोग 2. पशुओं के गले से दवा उतारने के लिए बाँस की नली 3. पशुओं को बाँस की नली से दवा उतारने की क्रिया।

ढरकी *स्त्री.* (देश.) जुलाहों का एक औजार, भरनी।

ढरकीला *पुं.*(देश.) बह जाने वाला, ढरक जाने वाला।

ढरकौंहा *वि.* (देश.) ढरक जाने वाला।

ढरनि *स्त्री.* (देश.) 1. गिरने का भाव या क्रिया 2. हिलने-डुलने की क्रिया 3. झुकाव 4. प्रवृत्ति।

ढरहरना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ढलना 2. सरकना, खसकना, झुकना।

ढरहरा *वि.* (देश.) ढालुवाँ, ढालू।

ढरहरी *वि.* (देश.) ढालू *स्त्री.* **दे.** पकौड़ी।

ढराना *स.क्रि.* (देश.) **दे.** ढलाना *अ.क्रि.* आँसू बहाना।

ढरारा *वि.* (देश.) 1. ढलने वाला, ढरकने वाला 2. लुढ़कने वाला 3. शीघ्र अनुरक्त होने वाला।

ढरैया *पुं.* (देश.) 1. ढालने वाला 2. ढलने वाला 3. प्रवृत्त होने वाला।

ढर्रा *पुं.* (देश.) 1. रास्ता, मार्ग **जैसे-** एक न एक दिन मैं उसे अपने ढर्रे पर ले आऊँगा 2. शैली, प्रणाली, तरीका 3. युक्ति, उपाय **जैसे-** कोई तो ढर्रा होगा, इस काम को निकालने का 4. चाल-चलन।

ढलकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. किसी द्रव पदार्थ का नीचे गिरना, ढलना 2. लुढ़कना 3. हिलना।

ढलका *पुं.* (देश.) ढरका।

ढलकाना *स.क्रि.* (देश.) लुढ़काना, नीचे गिराना।

ढलनशीलता *पुं.* (देश.) गलाकर ढाले जाने का गुण।

ढलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ढरकना, गिरकर बहना 2. समाप्त होना **मुहा.** जवानी ढलना- युवावस्था समाप्त होना; जोबन ढलना- जवानी का ढल जाना; दिन ढलना- सूर्य अस्त हो जाना; दिन ढले- शाम को 3. उड़ेला जाना **मुहा.** बोतल ढलना- खूब शराब पिया जाना; शाख ढलना- मद्यपान किया जाना 4. किसी की ओर आकर्षित होना, रीझना, प्रसन्न होना 5. साँचे के द्वारा बनना, साँचे में ढालकर बनाया जाना **मुहा.** साँचे में ढला हुआ-बहुत सुंदर और आकर्षक।

ढलमल *वि.* (अनु.) अस्थिर, चंचल, शिथिल।

ढलवाँ *वि.* (देश.) जिसे साँचे में ढालकर बनाया गया हो।

ढलवाना *स.क्रि.* (देश.) ढालने का काम कराना।

ढलवाही *स्त्री.* (देश.) हँसी-ठठ्ठा।

ढलाई *स्त्री.* (देश.) 1. ढालने का काम 2. ढालने की मजदूरी।

ढलात *स्त्री.* (देश.) ढलाई, ढालने का काम।

ढलाना *स.क्रि.* (देश.) ढलवाना।

ढलुवाँ *वि.* (देश.) ढलवाँ।

ढलैत *पुं.* (देश.) 1. ढाल बाँधने वाला 2. सिपाही।

ढसक *स्त्री.* (अनु.) सूखी खाँसी।

ढहना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. ध्वस्त होना 2. दीवार-मकान आदि का गिरना।

ढहराना *स.क्रि.* (देश.) 1. लुढ़काना 2. अनाज फटकना 3. गिराकर अलग करना।

ढहरी *स्त्री.* (तत्.) मिट्टी का बर्तन, मटका।

ढहवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. ढहाने का काम करना 2. गिरवाना।

ढहाना *स.क्रि.* (देश.) दीवार आदि गिराना, ध्वस्त करना।

ढाँक *पुं.* (देश.) 1. पलाश, ढाक 2. कुश्ती का एक पेंच।

ढाँकना *स.क्रि.* (देश.) ढकना, छिपाना।

ढाँख *पुं.* (देश.) पलाश **दे.** ढाक।

ढाँचा *पुं.* (देश.) 1. किसी वस्तु की बनावट का प्रारंभिक रूप 2. पंजर 3. टट्टर 4. चौखटा 5. बनावट, प्रकार, तरीका।

ढाँस *स्त्री.* (देश.) 1. सूखी खाँसी 2. खाँसने की आवाज।

ढाई *वि.* (तद्.) दो और आधा **मुहा.** ढाई घड़ी को आना- चटपट मौत आना; ढाई चुल्लू लहू पीना- मार डालना; ढाई दिन की बादशाहत- कुछ समय की मौज, दूल्हा बनना; *स्त्री.* (देश.) कौड़ियों का एक खेल, उक्त खेल की कौड़ियाँ।

ढाक *पुं.* (तद्.) 1. पलाश **मुहा.** ढाक के तीन पात- वहीं का वहीं, पहले जैसा, कोई परिवर्तन न होना 2. कुश्ती का एक पेंच।

ढाका *पुं.* (तद्.) बंगलादेश की राजधानी का नाम।

ढाटा *पुं.* (देश.) दाढ़ी बाँधने वाली कपड़े की पट्टी 2. मुर्दे का मुँह बाँधने वाला कपड़ा।

ढाठा *पुं.* (देश.) **दे.** ढाटा।

ढाठी *स्त्री.* (देश.) दाढ़ी बाँधने की पट्टी।

ढाड़ *स्त्री.* (अनु.) चीख, गरज **दे.** दहाड़ **मुहा.** ढ़ाड़ मारना- चीख चीखकर रोना।

ढाड़स *पुं.* (देश.) **दे.** ढाढस।

ढाढ़ *पुं.* (अनु.) एक प्रकार का बाजा।

ढाढ़स *पुं.* (देश.) 1. धैर्य, धीरज 2. सांत्वना, तसल्ली **मुहा.** ढाढ़स देना- तसल्ली देना, सांत्वना देना; ढाढ़स बँधाना- उत्साहित करना, धीरज बँधाना।

ढाढ़िन *स्त्री.* (देश.) ढाढ़ी जाति की स्त्री।

ढाढ़ी *पुं.* (देश.) गाने वालों की एक जाति जो बधाई के गीत गाते हैं।

ढाढ़ौन *पुं.* (तद्.) जलसिसि का पेड़ जो औषधीय गुणों से युक्त होता है।

ढाण *स्त्री.* (देश.) ऊँट की चाल **मुहा.** ढाण घालना- तेज चलाना।

ढाना *स.क्रि.* (देश.) 1. मकान आदि का गिराना, ध्वस्त करना 2. गिराकर जमीन पर डालना।

ढापना *स.क्रि.* (देश.) **दे.** ढाँपना।

ढाबरा *वि.* (देश.) गंदला, मटमैला।

ढाबा *पुं.* (देश.) 1. परछत्ती 2. रोटी की दूकान।

ढामक *पुं.* (अनु.) 1. नगाड़ा, ढोल 2. डंके, ढोल आदि का शब्द।

ढामरा *स्त्री.* (तत्.) हंसिनी, मादा हंस।

ढार *पुं.* (तद्.) 1. ढालू स्थान 2. रास्ता, पथ 3. ढाँचा *स्त्री.*(अनु.) 1. आर्तनाद 2. कान का एक गहना।

ढारस *पुं.* (देश.) **दे.** ढाढ़स।

ढाल *स्त्री.* (तत्.) 1. ढलान 2. उतार 3. तलवार, भाले आदि का वार रोकने का अस्त्र **मुहा.** ढाल बाँधना- ढाल हाथ में लेना।

ढालना *स.क्रि.* (तद्.) 1. किसी तरल पदार्थ को गिराना **मुहा.** बोतल ढालना- शराब पीना 2. दलाली करना 3. साँचे से कोई चीज तैयार करना **जैसे-** खिलौने ढालना।

ढालवाँ *वि.* (देश.) ढालू, ढलान वाला।

ढालिया *पु.* (देश.) बर्तन ढालने वाला 2. गहने बनाने वाला।

ढाली *पु.* (तद्.) ढाल से सुसज्जित योद्धा।

ढालुआँ *पु.* (तद्.) **दे.** ढालवाँ।

ढालू *वि.* (देश.) 1. जो कोई चीज बेचने को हो 2. जो आगे की ओर नीचा होता गया हो, ढलान।

ढावना *स.क्रि.* (देश.) गिराना, ढाहना।

ढास *पुं.* (देश.) लुटेरा, डाकू, दस्यु।

ढासना *पुं.* (देश.) टेक, सहारा।

ढिंढोरा *पुं.* (देश.) 1. मुनादी, डुग्गी 2. डुग्गी बजाकर की गई घोषणा।

ढिग *स्त्री.* (तद्.) तट, किनारा, हाशिया *क्रि.वि.* पास, समीप।

ढिठाई *स्त्री.* (देश.) बेअदबी, धृष्टता, निलज्जता।

ढिपनी *स्त्री.* (देश.) 1. उभरी हुई घुंडी 2. चूचुक।

ढिपुनी *स्त्री.* (तद्.) 1. चूचुक, स्तन का अग्रभाग 2. फल या पत्ते के साथ लगी हुई टहनी का नरम भाग।

ढिबरना *अ.क्रि.* (देश.) फिसलना।

ढिबरी *स्त्री.* (देश.) 1. दीपक जलाने की डिबिया 2. कसे जाने वाले पेच के ऊपर लोहे का छल्ला।

ढिमका *सर्व.* (देश.) फलाना, अमुक।

ढिमरिया *स्त्री.* (देश.) कहारिन, पानी लाने वाली।

ढिलढिल *पुं.* (देश.) **दे.** ढिलाढिला।

ढिलाई *स्त्री.* (तद्.) 1. शिथिलता, सुस्ती, आलस्य 2. ढीला होने का भाव 3. ढीला करने का काम।

ढिलाढाला *वि.* (तद्.) ढीला-ढाला, जो गाढा न हो।

ढिलाना *स.क्रि.* (देश.) 1. ढीला करना 2. बंधनमुक्त करना।

ढिल्लड़ *वि.* (देश.) सुस्त, ढील करने वाला।

ढिसरना *अ.क्रि.* (देश.) 1. फिसलना 2. झुकना।

ढींगर *पुं.* (तद्.) लंबा-चौड़ा आदमी।

ढींढ़स *पुं.* (तद्.) टिंडा।

ढींढा *पुं.* (तद्.) बड़ा-फूला हुआ पेट **मुहा.** ढींढा फूलना- पेट निकलना, गर्भ होना; ढींढा गिराना- गर्भपात कराना।

ढी *पुं.* (तद्.) **दे.** ढीह।

ढीच *पु.* (देश.) 1. कूबड़ 2. सफेद चील।

ढीट *वि.* (देश.) ढीठ, धृष्ट *स्त्री.* रेखा लकीर।

ढीठ *पु.* (देश.) 1. धृष्ट 2. साहसी।

ढीठा *वि.* (देश.) 1. धृष्ट 2. साहसी।

ढीड़ *पुं.* (देश.) आँख का कीचड़।

ढीमर *स्त्री.* (देश.) 1. धीवर जाति की स्त्री 2. पानी भरने वाली जाति, कहार।

ढीमा *पुं.* (देश.) ढेला, ढोंका।

ढील *स्त्री.* (देश.) 1. शिथिलता, सुस्ती 2. बेकार की देर 3. स्वच्छंदता, मनमानी **मुहा.** ढील देना- ध्यान न देना, पतंग की डोर बढ़ाना, स्वच्छंदता देना।

ढीलना *स.क्रि.* (देश.) 1. ढीला करना 2. बंधनमुक्त करना 3. किसी गाढ़ी वस्तु को पतला करना।

ढीला *वि.* (देश.) 1. सुस्त, आलसी 2. जिसमें कसाव या तनाव न हो 3. नपुंसक **मुहा.** ढीला छोड़ना- अंकुश न रखना, स्वच्छंद करना; ढीली आँख- अधखुली आँख।

ढीलापन *पुं.* (देश.) शिथिलता, ढीला होने का भाव।

ढीह *पुं.* (देश.) टीला, ढूह।

ढुंढ *पुं.* (देश.) ठग, लुटेरा, उचक्का।

ढुंढन *पुं.* (तद्.) खोज, तलाश।

ढुंढपाणि *पुं.* (तद्.) दंडपाणि, भैरव।

ढुंड पानि *पुं.* (तद्.) **दे.** ढुंढपाणि।

ढुंढवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. ढूँढने का काम करवाना 2. तलाश कराना, पता लगवाना।

ढुंढा *स्त्री.* (तद्.) हिरण्यकशिपु की बहन का नाम, एक राक्षसी।

ढुंढि *पुं.* (तद्.) गणेश का एक नाम।

ढुंढित *वि.* (तद्.) ढूँढा हुआ, अन्वेषित।

ढुंढी *स्त्री.* (तद्.) 1. नाभि 2. बाँह, मुश्क।

ढुकना *अ.क्रि* (तद्.) 1. घुसना 2. ताक में बैठना 3. टूट पड़ना।

ढुकास *स्त्री.* (अनु.) तेज प्यास।

ढुटौना *पुं.* (देश.) लडका, ढोटा।

ढुनमुनिया *स्त्री.* (देश.) लुढ़कने का भाव।

ढुरकना *अ.क्रि.* (देश.) लुढ़कना, फिसलकर सरकना।

ढुरना *अ.क्रि.* (देश.) 1. नीचे की ओर बहना 2. लुढ़कना 3. इधर-उधर डोलना 4. झुकना 5. अनुकूल होना।

ढुरहुरी *पुं.* (देश.) 1. लुढ़कने या फिसलने का भाव 2. पगडंडी, तंग रास्ता।

ढुराना *स.क्रि.* (देश.) 1. ढुलकाना, गिरना, ढरकाना 2. लहराना।

ढुर्री *स्त्री.* (देश.) पगडंडी, पतला रास्ता।

ढुलकना *अ.क्रि.* (देश.) लुढ़कना, नीचे की ओर फिसलना।

ढुलकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. टपकाना 2. गिराना 3. लुढ़काना 4. बहाना।

ढुलढुल *वि.* (देश.) 1. अस्थिर 2. लुढ़कने वाला **विलो.** स्थिर।

ढुलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. गिरकर बहना, ढरकना 2. झुकना 3. लुढ़कना 4. कृपालु होना 5. अस्थिर होना, इधर-उधर डोलना *पुं.* (तद्.) एक तरह का वाद्य यंत्र।

ढुलमुल *वि.* (देश.) **दे.** ढुलढुल।

ढुलमुलाना *अ.क्रि.* (देश.) हिलना, काँपना।

ढुलवाई *स्त्री.* (देश.) 1. ढोने का काम 2. ढोने की मजदूरी 3. ढुलाने की क्रिया, ढुलाने की मजदूरी।

ढुलवाना *स.क्रि.* (देश.) ढोने का काम कराना।

ढुलाई *स्त्री* (तद्.) 1. ढोने की क्रिया 2. ढोने की मजदूरी।

ढुलाना *स.क्रि.* (देश.) 1. गिराकर बहाना 2. गिराना 3. लुढ़काना 4. झुकाना 5. अनुकूल करना 6. इधर से उधर हिलाना 7. पोतना, फेरना 8. ढोने का काम कराना।

ढुलिया *स्त्री.* (देश.) छोटी ढोलक।

ढुलुआ *स्त्री.* (देश.) ताड़ या खजूर की बनी शक्कर या चीनी।

ढूँकना *अ.क्रि.* (देश.) **दे.** ढुकना।

ढूँका *पु.* (देश.) आड़ में छिपने की क्रिया।

ढूँढ़ *स्त्री.* (देश.) तलाश, खोज।

ढूँढ-ढाँढ *स्त्री.* (देश.) खोजबीन, तलाश।

ढूँढ़ना *स.क्रि.* (देश.) खोजना, तलाश करना, पता लगाना।

ढूँढी *स्त्री.* (देश.) भुने हुए आटे का लड्डू।

ढूढ़िया *पुं.* (देश.) श्वेतांबर जैनियों का एक संप्रदाय।

ढूसा *पु.* (देश.) कुश्ती का एक पेच।

ढूह *पुं.* (देश.) 1. ढेर 2. टीला।

ढूहा *पुं.* (देश.) **दे.** ढूह।

ढेंक *पुं.* (तत्.) बगुले की तरह का लंबी गरदन वाला एक जलीय पक्षी।

ढेंकली *स्त्री.* (देश.) 1. लंबी गरदन वाली चिड़िया 2. कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र 3. सिलाई का एक प्रकार 4. धान कूटने का लकड़ी का एक यंत्र 5. कलाबाजी।

ढेंका *पुं.* (देश.) 1. बड़ी ढेंकी 2. कोल्हू में जाठ के सिरे से कतरी (पाठ) तक लगा बाँस।

ढेंकिका *स्त्री.*(तत्.) एक प्रकार का नृत्य, एक ताल।

ढेंकी *स्त्री.* (देश.) अनाज कूटने का लकड़ी का एक यंत्र, ढेंकली।

ढेंकुर *पुं.* (देश.) **दे.** ढेंकली।

ढेंकुली *स्त्री.* (देश.) **दे.** ढेंकली।

ढेंटी *स्त्री.* (देश.) धव का पेड़।

ढेंढ *पुं.* (देश.) 1. एक अंत्यज जाति 2. कौवा *वि.* मूर्ख।

ढेंढर *पुं.* (देश.) आँख का एक रोग।

ढेंढवा *पुं.* (देश.) लंगूर।

ढेंढी *पुं.* (देश.) 1. कपास, पोस्त, सेमर का डोडा 2. कान का एक गहना।

ढेंप *स्त्री.* (देश.) 1. फल या फूल का वह भाग जो टहनी से लगा रहता है 2. कुचाग्र, चुचुकाग्र 3. ढिपनी।

ढेउआ *पुं.* (देश.) पैसा।

ढेकुला *पुं.* (देश.) **दे.** ढेंकली।

ढेबरी *स्त्री.* (देश.) **दे.** डिबरी।

ढेबुक *पुं.* (देश.) ढेउआ, पैसा।

ढेर *पुं.* (देश.) 1. रात्रि 2. पुंज *वि.* बहुत अधिक **मुहा.** ढेर करना- गिरा देना; ढेर रहना- गिरकर मर जाना; ढेर हो जाना- थक कर चूर हो जाना, मर जाना।

ढेरा *पुं.* (देश.) सुतली बटने का लकड़ी का एक औजार 2. एक वृक्ष (अंकोल)।

ढेला *पुं.* (देश.) ईंट, मिट्टी आदि का टुकड़ा 2. टुकड़ा (नमक का ढेला)।

ढेला चौथा *स्त्री.* (देश.) भाद्र शुक्ल चतुर्थी।

ढेलेबाज *वि.* (देश.) निशाना बाँधकर ढेला मारने वाला।

ढेवुका *स्त्री.* (तत्.) एक पैसे का सिक्का।

ढैंचा *पुं.* (देश.) एक प्रकार का पेड़ जिसकी छाल से रस्सियाँ बनाई जाती हैं।

ढैया *स्त्री.* (देश.) 1. ढाई सेर का बाट 2. ढाई का पहाड़ा 3. शनि का एक राशि पर स्थिर रहने का ढाई वर्ष का समय।

ढोंका *पुं.* (देश.) पत्थर आदि का अनगढ़ा टुकड़ा, बड़ा डला।

ढोंकिया *पुं.* (देश.) कपड़े की एक प्रकार की काट जिसमें लंबाई घट जाती है और चौड़ाई बढ़ जाती है।

ढोंग *पुं.* (देश.) 1. नाप, तौल, मान 2. पाखंड, ढकोसला, आडंबर।

ढोंगबाज *वि.* (देश.+फा.) पाखंडी, ढोंगी।

ढोंगबाजी *स्त्री.* (देश.) पाखंड, ढोंग।

ढोंगी *वि.* (देश.) पाखंडी।

ढोंचा *पुं.* (देश.) साढ़े चार का पहाड़ा।

ढोंटा *पुं.* (देश.) **दे.** ढोरा।

ढोंड़ी *स्त्री.* (तद्.) **दे.** ढोटी।

ढोंढ़ *पुं.* (तद्.) 1. कपास, पोस्त आदि का डोडा 2. कली।

ढोंढ़ी *स्त्री.* (देश.) 1. नाभि 2. डोडा, कली।

ढोंसना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. धूमधाम मचाना 2. आनंद मनाना।

ढोक *स्त्री.* (देश.) 1. एक प्रकार की मछली 2. ढेर।

ढोका *पुं.* (देश.) 1. बड़ा डला 2. पर्दा, खोल।

ढोटा *पुं.* (देश.) 1. पुत्र, बेटा 2. लड़का।

ढोटी *स्त्री.* (देश.) 1. पुत्री, बेटी 2. लड़की।

ढोना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी वस्तु को लादकर ले जाना 2. उठा ले जाना।

ढोर *पुं.* (देश.) गाय, बैल, भैंस आदि पशु, चौपाया।

ढोरा *पुं.* (देश.) **दे.** ढोर।

ढोरी *वि.* (देश.) 1. ढली हुई *स्त्री.* रट, धुन, लौ।

ढोल *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का बाजा जिसके दोनों ओर चमड़ा मढ़ा होता है **मुहा.** ढोल पीटना- घोषणा करना, चारों ओर जताते फिरना **जैसे-** वह अपने काम का ढोल पीटता रहता है 2. कान के भीतर का पर्दा।

ढोलक *स्त्री.* (तत्.) छोटा ढोल, ढोलकी।

ढोलकिया *पुं.* (देश.) ढोलक बजाने वाला।

ढोलकी *स्त्री.* (देश.) **दे.** ढोलक।

ढोलना *पुं.* (देश.) 1. दूल्हा, प्रिय 2. ढोलक के आकार का गले में पहनने का जंतर *स.क्रि.* 1. ढालना 2. ढरकाना, गिराना।

ढोलनी *स्त्री.* (तद्.) पालना, बच्चों का झूला।

ढोला *पुं.* (देश.) 1. फलों में लगने वाला सफेद कीड़ा 2. सीमासूचक निशान 3. शरीर, देह 4. मूर्ख व्यक्ति।

ढोलिनी *स्त्री* (देश.) ढोल बजाने वाली स्त्री।

ढोली *स्त्री.* (देश.) 1. पानों की गड्डी 2. हँसी, ठिठोली, दिल्लगी।

ढौंचा *पुं.* (देश.) एक पहाड़ा जिसमें साढ़े चार गुनी संख्या पढ़ी जाती है।

ढौंसना *अ.क्रि.* (देश.) धूमधाम मचाना, खुशी मनाना।

ढौकन *पुं.* (तद्.) रिश्वत, घूस।

ढौकित *वि.* (तद्.) पास लाया हुआ।

ढौरी *स्त्री.* (देश.) रट, धुन, लौ।

ण

हिंदी वर्णमाला का पंद्रहवाँ व्यंजन, मूर्धन्य अनुनासिक, अल्प प्राण, सघोष व्यंजन।

ण *पुं.* (तत्.) 1. बिंदुदेव-बुद्ध का एक नाम 2. आभूषण 3. निर्णय 4. ज्ञान 5. शिव का एक नाम *वि.* बुरा व्यक्ति।

णगण *पुं.* (तत्.) दो मात्राओं का एक मात्रिक गण।

ण्य *पुं.* (तत्.) ब्रह्मलोक का एक समुद्र।

त

देवनागरी वर्णमाला का 16 वाँ तथा तवर्ग का पहला व्यंजन-दंत्य, अघोष, अल्पप्राण।

तंक *पुं.* (तत्.) 1. डर, भय 2. वियोग का दुःख 3. टाँकी, छैनी 4. कष्टपूर्ण जीवन।

तंकन *पुं.* (तत्.) कष्टमय जीवन बिताना।

तंग *पुं.* (फा.) जीन कसने की पेटी *वि.* 1. कसा हुआ 2. दुःखी 3. हैरान, परेशान मुहा. तंग आना-परेशान होना; तंग करना- दुखी करना, सताना; हाथ तंग होना- पैसे पल्ले न होना 4. चुस्त, कसा हुआ जैसे- तंग कुरता।

तंग दिल *वि.* (फा.) कंजूस।

तंगनज़र *वि.* (अ.+फा) अनुदार, सीमित दृष्टिवाला।

तंगहाल *वि.* (फा.) गरीब, निर्धन।

तंगिया *स्त्री.* (तद्.) 1. मुसीबत में फँसा हुआ 2. बीमार।

तंगी *स्त्री.* (फा.) 1. संकोच, संकीर्णता 2. दुख-कष्ट 3. गरीबी 4. कमी।

तंड *पुं.* (तत्.) नृत्य, नाच।

तंडक *पुं.* (तत्.) 1. बाजीगर 2. खंजन पक्षी 3. पेड़ का तना 4. ऐसा वाक्य जिसमें कई समास हो।

तंडा *स्त्री.* (तत्.) 1. वध 2. आक्रमण।

तंडुरण *पुं.* (तत्.) चावल का पानी, माँड 2. कीट-पतंग।

तंडुरीण *पुं.* (तत्.) 1. चावल का धोवन 2. माँड 3. मूर्ख, बर्बर व्यक्ति 4. कीड़ा-मकोड़ा।

तंडुल *पुं.* (तत्.) 1. चावल 2. चौलाई का साग 3. सरसों का एक तौल।

तंडुल जल *पुं.* (तत्.) चावल का पानी जो औषधीय गुणों वाला होता है।

तंडुला *स्त्री.* (तत्.) 1. बायबिडंग 2. ककड़ी का पौधा 3. चौलाई का साग।

तंडुलांबु *पुं.* (तत्.) चावल का पानी।

तंडुली *स्त्री.* (तत्.) 1. चौलाई का साग 2. यवतिक्ता की लता।

तंडुलीक *पुं.* (तत्.) चौलाई का साग।

तंडुलीयिका *पुं.* (तत्.) 1. बायबिडंग 2. चौलाई का साग।

तंडुलू *स्त्री.* (तत्.) बायबिडंग, बिडंग।

तंडुलोत्थ *पुं.* (तत्.) चावल का पानी।

तंडुलोदक *पुं.* (तत्.) चावल का पानी।

तंडुलौघ *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का बाँस 2. चावल का ढेर।

तंत *स्त्री.* (तद्.) उतावली, आतुरता *पुं.* (तद्.) तारवाला बाजा।

तंतरी *पुं.* (तद्.) 1. तारवाला बाजा बजानेवाला 2. बाजे का तार।

तंति *स्त्री.* (तत्.) 1. तंत्री, वीणा 2. ताँत, डोरी।

तंतु *पुं.* (तत्.) 1. तागा, डोरी, सूत 2. संतान, बाल बच्चे 3. वंशपरंपरा।

तंतुक *पुं.* (तत्.) 1. सरसों 2. रस्सी 3. एक प्रकार का साँप।

तंतुण *पुं.* (तत्.) 1. बड़ी मछली 2. मगर।

तंतुमान *पुं.* (तत्.) अग्नि, आग।

तंतुर *पुं.* (तत्.) कमलगट्टा, मृणाल, कमलनाल।

तंतुवादक *पुं.* (तत्.) तारवाला बाजा बजाने वाला।

तंतुवाय *पुं.* (तत्.) 1. तांती, जुलाहा 2. मकड़ा।

तंतुविग्रह *पुं.* (तत्.) केले का पेड़।

तंतुशाला *स्त्री.* (तत्.) तांतघर, कपड़ा।

तंत्र *पुं.* (तत्.) 1. तंतु, तांत 2. सूत 3. जुलाहा 4. झाड़ने फूँकने का मंत्र 5. कारण 6. उपाय 7. राज्य 8. सेना 9. अधीनता 10. कुल, खानदान 11. शपथ, कसम 12 हिंदुओं का उपासना संबंधी शास्त्र।

तंत्रक *पुं.* (तत्.) नया कपड़ा।

तंत्रण *पुं.* (तत्.) शासन प्रबंध।

तंत्रता *स्त्री.* (तत्.) 1. बहूद्देशीय कार्य 2. अधीनता।

तंत्रधारक *पुं.* (तत्.) कर्मकांड में वह व्यक्ति जो पद्धति ग्रंथों को लिए रहता है।

तंत्र-मंत्र *पुं.* (तत्.) 1. जादूगीरी 2. उपाय, युक्ति 3. साधना में साधक द्वारा प्रयुक्त तंत्रादि।

तंत्रयुक्ति *स्त्री.* (तत्.) अर्थ को स्पष्ट करने की युक्ति।

तंत्रवाद्य *पुं.* (तत्.) तार वाले वाद्य यंत्र जैसे- वीणा, सितार, सारंगी आदि।

तंत्रा *स्त्री.* (तत्.) दे. तंद्रा।

तंत्रायी *पुं.* (तत्.) सूर्य।

तंत्रि *स्त्री.* (तत्.) 1. तांत, वीणा 2. वीणा का तार 3. नस, शिरा 4. पूँछ, दुम 5. विचित्र गुणों वाली 6. अमृता, गुडुची।

तंत्रिका *स्त्री.* (तत्.) गुडुची।

तंत्रिमुख *पुं.* (तत्.) हाथ की एक मुद्रा।

तंत्री *पुं.* (तत्.) 1. तार वाले बाजे का तार 2. गुडुची 3. शरीर की नस 4. रस्सी 5. तार वाला बाजा 6. वीणा 7. बाजा बजाने वाला 8. गवैया *वि.* (तद्.) 1. आलसी 2. अधीन।

तंदर *स्त्री.* (तद्.) दे. तंद्रा।

तंदुरुस्त *वि.* (फा.) स्वस्थ, निरोग।

तंदुरुस्ती *स्त्री.* (फा.) स्वास्थ्य, आरोग्य।

तंदुला दे. तंडुल।

तंदुलीयक *पुं.* (तद्.) चौलाई का साग।

तंदूर *पुं.* (फा.) एक तरह का चूल्हा, जिसमें रोटियाँ पकाते हैं।

तंदूरी *वि.* (फा.) 1. तंदूर संबंधी, जैसे तंदूरी रोटी, तंदूर का पका हुआ 2. एक प्रकार का रेशम।

तंदेही *स्त्री.* (फा.) 1. मेहनत, परिश्रम 2. कोशिश, प्रयत्न विलो. आलस्य 3. चेतावनी, ताकीद।

तंद्र *वि.* (तत्.) 1. थका हुआ 2. सुस्त, आलसी विलो. चुस्त।

तंद्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. थकान, ऊँघ 2. शिथिलता 3. हल्की बेहोशी।

तंद्रालस *वि.* (तत्.) 1. थका हुआ, क्लांत 2. सुस्त, आलसी।

तंद्रालु *पुं.* (तत्.) उनींदा, तंद्रा युक्त।

तंद्रि *स्त्री.* (तत्.) दे. तंद्रा।

तंद्रिक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का ज्वर।

तंद्रिक सन्निपात *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का ज्वर, मियादी बुखार।

तंद्रिका *स्त्री.* (तत्.) दे. तंद्रा।

तंद्रिल *वि.* (तत्.) 1. आलसी 2. तंद्रा से युक्त, तंद्रालु।

तंद्री *स्त्री.* (तत्.) 1. तंद्रा 2. भौंह *वि.* थका हुआ, आलसी।

तंबा *स्त्री.* (तत्.) गाय, गौ।

तंबाकू *पुं.* (अर.) तमाकू।

तंबिका *स्त्री.* (तद्.) गौ, गाय।

तंबिया *स्त्री.* (तत्.) 1. तांबे का बना हुआ 2. तसला।

तंबियाना *अ.क्रि.* (देश.) तांबे के रंग का हो जाना, तांबे के स्वाद का हो जाना।

तंबीर *पुं.* (तत्.) ज्योतिष का एक योग।

तंबीह *स्त्री.* (अर.) 1. नसीहत, शिक्षा 2. दंड, सजा।

तंबू *पुं.* (देश.) शामियाना, खेमा 2. शिविर, डेरा मुहा. तंबू तानना- डेरा डालना।

तंबूर *पुं.* (फा.) एक तरह का ढोल।

तंबूरची *पुं.* (फा.) तंबूर बजाने वाला।

तंबूरा *पुं.* (देश.) तानपूरा, सितार जैसा एक बाजा।

तंबोल *पुं.* (तद्.) 1. तांबुल, तमोल 2. एक प्रकार का पेड़, जिसके पत्ते लिसोड़े के पत्तों की तरह होते हैं 3. पान।

तंबोलिन *स्त्री.* (तद्.) पान बेचने वाली *स्त्री.* विलो. तंबोली।

तंबोली *पुं.* (तद्.) पान बेचने वाला विलो. तंबोलिन।

तंभ *पुं.* (देश.) एक अनुभव, स्तंभ।

तंभन *पुं.* (देश.) स्तंभन।

तंभावती *स्त्री.* (तत्.)संपूर्ण जाति की एक रागिनी।

तँबोलिन *स्त्री.* (तद्.) दे. तंबोलिन।

तँबोली *पुं.* (तद्.) दे. तबोली।

तँवार *स्त्री.* (देश.) 1. हरारत 2. घुमटा, चक्कर।

तअज्जुब *पुं.* (अर.) आश्चर्य, हैरानी, विस्मय, अचंभा।

तअमुल *पुं.* (अर.) दे. तअम्मुल।

तअम्मुल *पुं.* (अर.) 1. सोच-विचार 2. आगा-पीछा 3. देर, अटकाव।

तअल्लुक *पुं.* (अर.) संबंध, लगाव।

तअल्लुका *पुं.* (अर.) बड़ा हलका।

तअल्लुकेदार *पुं.* (अर.) तअल्लुके का मालिक।

तअस्सुब *पुं.* (अर.)1. पक्षपात 2. धार्मिक कट्टरता।

तइ *सर्व.* (तद्.) वह, उस।

तईं *क्रि.वि.* (तद्.) तभी *अव्य.* के प्रति, के बारे में, के लिए, के वास्ते।

तउ *अव्य.* (तद्.) 1. तदपि 2. त्यों 3. तब।

तक *अव्य.* (तद्.) सीमा या अवधि-सूचक अव्यय, तक, पर्यंत।

तकत *पुं.* (फा.) दे. तख्त।

तक़दमा *पुं.* (फा.) तखमीना, अनुमान, अंदाजा।

तक़दीर *स्त्री.* (अर.) भाग्य, किस्मत, नसीब।

तक़दीरवर *वि.* (अर.) भाग्यवान, भाग्यशाली।

तकदीरी *वि.* (अर.) भाग्य संबंधी।

तकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. देखना, निहारना 2. आश्रय लेना।

तक़नीक *स्त्री.* (अं.) 1. शिल्प 2. पद्धति technique

तक़बर *वि.* (अर.) घमंड, गर्व, अभिमान।

तक़बीर *स्त्री.* (अर.) ईश्वर की प्रशंसा।

तक़ब्बुर *पुं.* (अर.) घमंड, अभिमान, गर्व।

तक़मा *पुं.* (अर.) तमगा।

तक़मील *स्त्री.* (अर.) पूर्णता, पूरा होने का भाव।

तक़रार *स्त्री.* (अर.) 1. विवाद, झगड़ा का भाव लड़ाई 2. हुज्जत।

तकरारी *वि.* (अर.) विवाद करने वाला, तकरार करने वाला, झगड़ालू।

तकरीब *स्त्री.* (अर.) उत्सव, जलसा, समारोह।

तकरीबन *अव्य.* (अर.) लगभग।

तकरीर *स्त्री.* (अर.) 1. बातचीत 2. भाषण।

तकरीरी *वि.* (अर.) 1. मौखिक 2. विवादग्रस्त।

तकला *पुं.* (तद्.) सूत कातने तथा लपेटने में काम आने वाली, लोहे की सलाई, टेकुआ।

तकली *स्त्री.* (देश.) छोटा तकला, टेकुरी।

तकलीफ *स्त्री.* (अर.) क्लेश, कष्ट, दुख।

तकल्लुफ *पुं.* (अर.) 1. शिष्टाचार, बाहरी दिखावा 2. टीमटाम 3. संकोच, लिहाज 4. बेगानापन, परायापन।

तकवाना *स.क्रि* (देश.) ताकने का काम कराना, किसी को ताकने में प्रवृत्त करना।

तकवीयत *स्त्री.* (अर.) तसल्ली, आश्वासन, ढाढ़स।

तकसीम *स्त्री.* (अर.) विभाजन, बँटाई, बँटवारा प्रयो. तकसीम-ए-वतन-देश का विभाजन।

तकसीर *स्त्री.* (अर.) 1. गुनाह, अपराध, दोष 2. भूल-चूक 3. कमी 4. प्रचुरता, अधिकता।

तकाई *स्त्री.* (देश.) 1. ताकने की क्रिया या भाव, ताकने की मजदूरी 2. दूसरों का कुछ दिखाना।

तकाजा *पुं.* (अर.) 1. तगादा 2. आदेश 3. अनुरोध 4. स्वाभाविक प्रेरणा 5. जरूरत जैसे- उम्र का तकाजा 6. माँग, तकाजा-ए वक्त-समय की माँग।

तकातक *क्रि.वि.* (देश.) लगातार।

तकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. ताकने का काम कराना 2. ताकने में प्रवृत्त करना 3. किसी को उम्मीद बँधाना 4. दिखाना *अ.क्रि.* किसी ओर को जाना।

तकावी *स्त्री.* (अर.) बीज, बैल आदि खरीदने के लिए किसानों को दिया जाने वाला सरकारी ऋण।

तकित *वि.* (देश.) 1. थका हुआ 2. देखता हुआ।

तकिया *पुं.* (फा.) 1. रुई से भरी थैली जो सोते समय सिर के नीचे रखी जाती है, सिरहाना 2. फकीरों के रहने की जगह।

तकिया कलाम *पुं.* (देश.) 1. सखुनतकिया 2 वाक्य के भीतर वाक्य की पूर्ति के लिए प्रयुक्त परंतु अर्थ की दृष्टि से बेकार शब्द जिनका प्रयोग कुछ लोग आदतन बातचीत के दौरान करते हैं।

तकियागाह *पुं.* (अ.) पीर या फकीर के रहने का स्थान।

तकियादार *पुं.* (फा.) मज़ार पर रहने वाला फकीर।

तकिल *पुं.* (तद्.) 1. धूर्त, दुष्ट 2. औषध।

तकिला *स्त्री.* (तद्.) 1. औषध, दवा 2. एक जड़ी।

तक्कोल *पुं.* (तद्.) एक वृक्ष।

तक्र *पुं.* (तत्.) 1. छाछ, मट्ठा 2. शहतूत का एक रोग।

तक्रपिंड *पुं.* (तत्.) फटा हुआ दूध, छेना।

तक्रप्रमेह *पुं.* (तत्.) पुरुषों का एक रोग जिसमें छाछ की तरह का श्वेत मूत्र होता है और उसमें से मट्ठे की तरह की गंध आती है।

तक्रसंधान *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की काँजी।

तक्रसार *पुं.* (तत्.) मक्खन, नवनीत।

तक्राट *पुं.* (तत्.) मथानी।

तक्रारिष्ट *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का अरिष्ट जो मट्ठे में हरड़ और आँवले के चूर्ण से बनाया जाता है।

तक्राह्वा *स्त्री.* (तत्.) एक झाड़ी।

तक्वा *पुं.* (तत्.) 1. चोर 2. शिकारी चिड़िया।

तक्ष *पुं.* (तत्.) 1. राम के भाई भरत के बड़े पुत्र का नाम 2. पतला करने की क्रिया या भाव।

तक्षक *पुं.* (तत्.) 1. आठ नागों में से एक जिसने परीक्षित को काटा था 2. साँप, सर्प 3. सूत्रधार 4. विश्वकर्मा।

तक्षण *पुं.* (तत्.) 1. बढ़ई 2. लकड़ी छीलना या काटना।

तक्षणी *स्त्री.* (तत्.) लकड़ी तराशने का औजार, रंदा, बसूला।

तक्षशिला *पुं.* (तत्.) एक प्राचीन नगरी का नाम, महाभारत के अनुसार यहीं जनमेजय का नागयज्ञ हुआ था।

तक्षा *पुं.* (तद्.) बढ़ई।

तखड़ी *स्त्री.* (देश.) तराजू।

तखत *पुं.* (फा.) दे. तख्त मुहा. तखता पलटना- तख्ता उलटना।

तखमीना *पुं.* (अर.) अनुमान, अंदाज, अटकल।

तखरी *स्त्री.* (देश.) बड़ी तुला, तराजू।

तखलिया *पुं.* (अर.) एकांत स्थान, निर्जन स्थान।

तखल्लुस *पुं.* (अर.) कवि या शायर का उपनाम।

तखसीस *पुं.* (अर.) विशेषता, खासियत।

तखिया *स्त्री.* (फा.) लंबी टोपी।

तख्त *पुं.* (फा.) 1. लकड़ी का चीरा हुआ कम मोटा टुकड़ा 2. ऊँची चौकी 3. अरथी मुहा. तख्ता उलटना- किसी प्रबंध को नष्ट भ्रष्ट करना, बना बनाया काम बिगाड़ना; तख्त हो जाना- ऐंठ जाना

या अकड़ जाना 4. सिंहासन 5. बड़ी चौकी मुहा. तख्त का तख्ता हो जाना- बरबाद हो जाना।

तख्त ताऊस *पुं.* (फा.) एक प्रसिद्ध सिंहासन जिसे शाहजहाँ ने बनवाया था और 1739 में नादिर शाह इसे लूटकर ले गया था।

तख्तनशीनी *पुं.* (फा.) राज्यारोहण, राज्याभिषेक।

तख्तपोश *पुं.* (फा.) तख्त पर बिछाने की चादर।

तख्तापुल *पुं.* (फा.) लकड़ी के तख्त का पुल, जिसे किले की खंदक पर बनाया जाता था।

तख्ती *स्त्री.* (फा.) 1. लकड़ी या धातु का चौकोर टुकड़ा 2. काठ की पटरी जिस पर बालक लिखने का अभ्यास करते हैं।

तख्तोताज *पुं.* (फा.) शासन प्रबंध, राज्य भार।

तगड़ा *वि.* (देश.) 1. मजबूत 2. हट्टा कट्टा 3. बलवान, ताकतवर विलो. कमजोर।

तगड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. मोटी-ताजी 2. शक्तिशालिनी 3. कमर का एक आभूषण, करधनी, मेखला।

तगढा *पुं.* (अर.) दे. तकाजा।

तगण *पुं.* (तत्.) तीन वर्णों का एक छंद जिसमें पहले दो गुरु और तब एक लघु वर्ण होता है।

तगदमा *पुं.* (अर.) अंदाज, अनुमान, तखमीना दे. तकदमा, तखमीना।

तगना *अ.क्रि.* (अर.) तागा जाना।

तगमा *पुं.* (अर.) दे. तमगा।

तगर *पुं.* (तत्.) 1. एक वृक्ष जिसकी लकड़ी सुगंधित होती है, मदन वृक्ष 2. एक औषध।

तगला *पुं.* (देश.) 1. तकला 2. जुलाहों का औजार।

तगा *पुं.* (देश.) 1. तागा 2. ब्राह्मणों की एक जाति।

तगाई *स्त्री.* (देश.) 1. तागने का काम या भाव 2. तागने की मजदूरी।

तगाड़ *पुं.* (देश.) 1. गारा तथा सुरखी-चूना मिलाने का हौज 2. बड़ा तसला।

तगाना *स.क्रि.* (देश.) तागने का काम कराना।

तगियाना *स.क्रि.* (देश.) 1. तागे से सीना या बखिया करना 2. पिरोना 3. रजाई आदि में तागा डालना।

तज *पुं.* (तद्.) दारचीनी की जाति का एक पेड़ जिसके पत्तों को 'तेजपत्ता' कहते हैं, इसकी छाल वैद्यक में काम आती है पर्या. मुख शोधन, बहुगंध, कामवल्लभ।

तजकिरा *पुं.* (अर.) 1. जिक्र, चर्चा 2. बातचीत, वार्तालाप 3. प्रसिद्धि, ख्याति।

तजदीद *स्त्री.* (अर.) नया करना, नवीनीकरण (पट्टे आदि का)।

तजना *स.क्रि.* (तत्.) त्यागना, छोड़ना।

तजरबाकार *पुं.* (अर.) 1. उन्हें जीवन का काफी तजरबा है, अनुभवी 2. मैंने जो कहा उसका तजरबा किया है।

तजरबा *पुं.* (अर.) 1. अनुभव 2. परख।

तजरुबा *पुं.* (अर.) दे. तजरबा।

तजवीज *स्त्री.* (अर.) 1. राय, सम्मति 2. निर्णय, फैसला 3. विचार 4. प्रबंध, इंतजाम।

तजेब *स्त्री.* (फा.) एक प्रकार का महीन मलमल।

तज्जन्य *वि.* (तत्.) उससे उत्पन्न।

तज्ञ *वि.* (तत्.) 1. तत्व का जानकार, तत्वज्ञ 2. ज्ञानी।

तज्वी *स्त्री.* (तत्.) हिंगुपत्री।

तटंक *पुं.* (तद्.) कान का एक आभूषण, कर्ण फूल।

तट *पुं.* (तत्.) 1. क्षेत्र, प्रदेश 2. किनारा 3. शिव, महादेव 4. नदी किनारे की भूमि।

तटक *पुं.* (तद्.) नदी, तालाब आदि का किनारा।

तटका *वि.* (देश.) ताजा।

तटग *पुं.* (तत्.) तड़ाग।

तटनी *स्त्री.* (तत्.) नदी, सरिता।

तटवर्ती *वि.* (तत्.) 1. तट पर रहने वाली 2. तट पर स्थित।

तटस्थ *वि.* (तत्.) 1. निरपेक्ष, उदासीन 2. तट पर रहने वाला।

तटस्थता *स्त्री.* (तत्.) निरपेक्षता, उदासीनता।

तटस्थीकरण *पुं.* (तत्.) 1. किसी देश या स्थान को तटस्थ बनाने की क्रिया या घोषणा 2. निराकरण।

तटाक *पुं.* (तत्.) तड़ाग, तालाब।

तटाकिनी *स्त्री.* (तत्.) बड़ा तालाब।

तटाघात *पुं.* (तत्.) पशुओं द्वारा अपने सींगो से या या पैरों से जमीन खोदने की क्रिया।

तटिनी *स्त्री.* (तत्.) नदी, सरिता।

तटी *स्त्री.* (तत्.) 1. तट, किनारा 2. नदी, सरिता।

तट्य *वि.* (तत्.) पर्वत की ढाल पर रहने वाला, शिव।

तड़ *पुं.* (तद्.) 1. बिरादरी 2. थप्पड़ मारने की आवाज।

तड़क *स्त्री.* (देश.) तड़कने का भाव या क्रिया 2. तड़कने का चिह्न 3. थप्पड़ मारने की आवाज।

तड़कना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. चरकना, जैसे शीशा तड़कना 2. झुंझलाना 3. कर्कश स्वर में बोलना।

तड़का *पुं.* (देश.) 1. सुबह, सवेरा, प्रातःकाल 2. छौंक प्रयो. दाल को तड़का लगा दे।

तड़काना *स.क्रि.* (देश.) किसी चीज को 'तड़' शब्द के साथ तोड़ना 2. झुंझलाना, खिजाना, क्रोध दिलाना।

तड़कीला *वि.* (देश.) 1. चमकीला, भड़कीला 2. तड़कने वाला।

तड़क्का *पुं.* (अनु.) झटपट, शीघ्र।

तड़ग *पुं.* (तद्.) तालाब दे. तड़ाग।

तड़तड़ाना *अ.क्रि.* (अनु.) तड़-तड़ की ध्वनि होना। स.क्रि. तड़तड़ की ध्वनि पैदा करना।

तड़तड़ाहट *स्त्री.* (अनु.) तड़तड़ाने की क्रिया या भाव।

तड़प *स्त्री.* (देश.) 1. तड़पने की क्रिया या भाव 2. चमक-दमक।

तड़पदार *वि.* (देश.) चमकीला, भड़कीला।

तड़पना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. छटपटाना, तिलमिलाना 2. बहुत दुःखी होना।

तड़पवाना *प्रे.क्रि.* (देश.) किसी को तड़पाने का काम किसी दूसरे से कराना।

तड़पाना *स.क्रि.* (देश.) किसी को तड़पाना,अत्यंत कष्ट पहुँचाना।

तड़फड़ाना *अ.क्रि.* (देश.) तड़पना, छटपटाना।

तड़फड़ाहट *स्त्री.* (देश.) छटपटाहट, बेचैनी, छटपटाने का भाव।

तड़फना *अ.क्रि.* (देश.) दे. तड़पना।

तड़भड़ *स्त्री.* (अनु.) 1. जल्दी-जल्दी 2. हड़बड़।

तड़ाक *स्त्री.* (अनु.) किसी चीज के जोर से टूटने का का शब्द, तड़ाके की ध्वनि *वि.* झटपट, तुरंत, जल्दी *क्रि.वि.* जल्दी, चटपट, तुरंत।

तड़ाका *पुं.* (अनु.) तड़ की ध्वनि, *अव्य.* चटपट *स्त्री.* चमक, कांति।

तड़ाग *पुं.* (तत्.) तालाब, ताल, सरोवर, पोखरा।

तड़ागना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. तड़फड़ाना 2. उछलकूद करना 3. कोशिश करना 4. डींग हाँकना।

तड़ाघात *पुं.* (देश.) दे. तटाघात।

तड़ातड़ *क्रि.वि.* (अनु.) 1. तड़तड़ ध्वनि के साथ 2. जल्दी से।

तड़ातड़ी *क्रि.वि.* (अनु.) जल्दी में।

तड़ाना *स.क्रि.* (देश.) किसी दूसरे से ताड़ने का काम कराना 2. जल्दी मचाना।

तड़ावा *स्त्री.* (देश.) दिखावटी तड़क-भड़क, ऊपरी चमक दमक।

तड़ित *स्त्री.* (तत्.) बिजली, विद्युत।

तड़ित कुमार *पुं.* (तत्.) जैनों के एक देवता।

तड़ित गर्भ *पुं.* (तत्.) बादल।

तड़ित पति *पुं.* (तत्.) बादल, मेघ।

तड़ितप्रभा *स्त्री.* (तत्.) बिजली की चमक।

तड़ित वान *वि.* (तत्.) 1. बादल 2. नागरमोथा।

तड़िता *स्त्री.* (तद्.) दे. तड़ित।

तड़िन्मय *वि.* (तत्.) बिजली की कौंध वाला।

तड़ियाना *अ.क्रि.* (तत्.) जल्दी मचाना, जल्दी करना।

तड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. थप्पड़, चपत 2. धोखा, छल 3. धमकी 4. घाटा मुहा. तड़ी देना- धोखा देना, बेवकूफ बनाना; तड़ी मारना- शेखी बघारना; तड़ी बताना- धोखा देना; तड़ी में आना- धोखे में आना, झाँसे में आना 5. जल्दी, शीघ्रता।

तडु *पुं.* (तद्.) नंदी, नंदिकेश्वर।

तण *अव्य.* (देश.) की ओर।

तणई *स्त्री.* (तद्.) कन्या, पुत्री।

तत *सर्व.* (तत्.) वह, उस *पुं.* (तत्) 1. पिता 2. पुत्र 3. वायु 4. तार वाला बाजा *वि.* (तद्.) विस्तृत, फैला हुआ 2. ढका हुआ 3. झुका हुआ 4. गरम।

ततकाल *अव्य.* (तद्.) दे. तत्काल।

ततखन *क्रि.वि.* (तद्.) दे. तक्षण।

तताई *स्त्री.* (देश.) गरम होने का भाव, गरमी।

ततारना *स.क्रि.* (देश.) गरम पानी से धोना।

तति *स्त्री.* (तत्.) 1. पंक्ति 2. श्रेणी 3. समूह।

ततुरि *वि.* (तत्.) 1. हिंसक 2. तारने वाला *पुं.* 1. अग्नि 2. इंद्र।

ततूरी *स्त्री.* (तत्.) पैरों में तप्त भूमि की अनुभूति *वि.* 1. चालाक, तेज 2. बुद्धिमान 3. फुर्तीला।

ततैया *स्त्री.* (तद्.) 1. भिड़, बर्र 2. पतली तीखी मिर्च।

ततोधिक *वि.* (तत्.) उससे अधिक।

तत्काल *वि.* (तत्.) तुरंत, उसी समय का, फौरन, एकदम।

तत्कालीन *वि.* (तत्.) उसी समय का।

तत्क्षण *क्रि.वि.* (तत्.) उसी समय, फौरन।

तत्त *पुं.* (तद्.) दे. तत्व।

तत्ता *वि.* (तद्.) 1. गरम 2. जलता हुआ।

तत्ता थेई *स्त्री.* (अनु.) नाच के शब्द का बोल।

तत्तोथंबो *पुं.* (देश.) दिलासा, बहकावा।

तत्पद *पुं.* (तत्.) परम पद, निर्वाण।

तत्पर *वि.* (तत्.) 1. सन्नद्ध, तैयार, मुस्तैद 2. चतुर, होशियार।

तत्परता *स्त्री.* (तत्.) 1. मुस्तैदी 2. दक्षता 3. होशियारी, निपुणता।

तत्पुरुष *पुं.* (तत्.) परम पुरुष, परमेश्वर।

तत्र *क्रि.वि.* (तत्.) वहाँ, उस जगह।

तत्रक *पुं.* (देश.) एक पेड़ का नाम, जिसका प्रयोग वैद्यक में होता है।

तत्रत्य *वि.* (तत्.) वहाँ रहने वाला।

तत्व *पुं.* (तत्.) 1. वास्तविकता, सारतत्व असलियत 2. जगत का मूल कारण 3. पंचभूत।

तत्वज्ञ *वि.* (तत्.) तत्वज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी।

तत्वज्ञान *पुं.* (तत्.) ब्रह्मज्ञान, अध्यात्म का ज्ञान, ब्रह्म, आत्मा तथा जगत का ज्ञान।

तत्वज्ञानी *पुं.* (तत्.)ब्रह्मज्ञानी,दार्शनिक, अध्यात्मवेत्ता।

तत्वतः *पुं.* (अव्य.) वस्तुतः, वास्तव में, यथार्थ मे।

तत्वदर्शी *पुं.* (तत्.) तत्वज्ञानी।

तत्वदृष्टि *स्त्री.* (तत्.) ज्ञानचक्षु, दिव्य दृष्टि।

तत्वन्यास *पुं.* (तत्.) विष्णु पूजा में विहित एक न्यास।

तत्वरश्मि *पुं.* (तत्.) वधूबीज, तंत्र के अनुसार स्त्री देवता का बीज।

तत्ववाद *पुं.* (तत्.) दर्शन संबंधी विचार।

तत्ववादी *वि.* (तत्.) तत्व का ज्ञाता।

तत्वविद *वि.* (तत्.) दे. तत्वज्ञ।

तत्वविद्या *स्त्री.* (तत्.) 1. दर्शन शास्त्र, 2. अध्यात्म विद्या।

तत्ववेत्ता *पुं.* (तत्.) तत्वज्ञानी, तत्वज्ञ, दार्शनिक।

तत्वशास्त्र *पुं.* (तत्.) दर्शन शास्त्र।

तत्वांतरण *पुं.* (तत्.) किसी तत्व का दूसरे तत्व में परिवर्तित होना।

तत्वावधान *पुं.* (तत्.) 1. देखरेख 2. निरीक्षण।

तत्वावधानक *वि.* (तत्.) निरीक्षक, देखरेख।

तत्संबंधी *वि.* (तत्.) उससे संबंध रखने वाला।

तत्सम *वि.* (तत्.) उसके समान, किसी भाषा का शब्द मूल रूप में दूसरी भाषा में प्रयोग होता है।

तथा *अव्य.* (तत्.) 1. और 2. इसी तरह प्रयो. तथास्तु- ऐसा ही हो *पुं.* (तत्.) 1. सत्य 2. सच्चाई 3. सभा, यथार्थता।

तथाकथित *वि.* (तत्.) उस नाम का, नामधारी।

तथाकृत *वि.* (तत्.) उसी प्रकार किया हुआ।

तथागत *पुं.* (तत्.) महात्मा बुद्ध का एक नाम 2. जिन।

तथानुरूप *वि.* (तत्.) दे. तदनुरूप।

तथापि *अव्य.* (तत्.) तो भी, फिर भी।

तथाभाषी *वि.* (तत्.) सच्ची, सारगर्भित बात करने वाला।

तथाभूत *वि.* (तत्.) उसी प्रकार के गुण या तथास्तु।

तथास्तु *अव्य.* (तत्.) वैसा ही हो, एवमस्तु।

तथैव *अव्य.* (तत्.) वैसा ही, उसी प्रकार।

तथोक्त *वि.* (तत्.) जैसा कहा गया है, तथाकथित।

तथ्यवादी *वि.* (तत्.) तथ्यभाषी।

तदंतर *क्रि.वि.* (तत्.) इसके बाद।

तदनंतर *क्रि.वि.* (तत्.) उसके बाद, उसके पीछे।

तदनुकूल *वि.* (तत्.) उसके अनुसार, तदनुसार।

तदनुरूप *वि.* (तत्.) उसी के जैसा, उसी के रूप का।

तदनुसार *वि.* (तत्.) उसके अनुकूल, उसके अनुसार।

तदपि *पुं.* (अव्य.) तो भी, तथापि।

तदर्थ *अव्य.* (तत्.) उसके लिए, उसके वास्ते *वि.* किसी निश्चित प्रयोजन के लिए।

तदा *क्रि.वि.* (तत्.) उस समय, तब।

तदाकार *वि.* (तत्.) उसी तरह का, वैसा ही।

तदारूक *पुं.* (अर.) 1. पेशबंदी, बंदोबस्त, रोकथाम 2. जाँच 3. सजा, दंड।

तदीय *सर्व.* (तत्.) उसका, उससे संबंध रखने वाला।

तदुपरांत *क्रि.वि.* (तत्.) उसके बाद, उसके पीछे।

तद्धत *वि.* (तत्.) उस जैसा, उसके समान।

तद्धित *पुं.* (तत्.) संज्ञा के साथ लगने वाला प्रत्यय *वि.* उसके लिए उपयुक्त।

तद्गत *वि.* (तत्.) उसमें स्थित।

तद्गुण *वि.* (तत्.) 1. उस जैसे गुणवाला 2. अर्थालंकार का एक भेद, जिसमें अपना गुण छोड़कर दूसरे गुण को ग्रहण किया जाता है।

तद्भव *वि.* (तत्.) उससे उत्पन्न या विकसित।

तद्यपि *अव्य.* (तत्.) तथापि, तो भी।

तन *पुं.* (तद्.) शरीर, देह, जिस्म मुहा. तन को लगना- दिल में कुछ बैठना; तन देना- ध्यान देना; तन मन मारना- इद्रियों को वश में रखना; तन दिखाना- संभोग करना।

तनक *स्त्री.* (देश.) एक रागिनी का नाम *वि.* छोटा (अव्य.) जरा, तनिक।

तनकीद *स्त्री.* (अर.) आलोचना, समीक्षा।

तनकीह *स्त्री.* (अर.) 1. खोज, तहकीकात 2. अभियोग में अभियोजन के विषयों का निर्धारण, अभियोग में विवादास्पद बातों की सूची।

तनक्षीर *पुं.* (तत्.) आँवले का पेड़।

तनखाह *स्त्री.* (फा.) वेतन, दे. तनख्वाह।

तनख्वाह *स्त्री.* (फा.) 1. वेतन 2. वैतनिक, वेतनभोगी।

तनज *पुं.* (तत्.) ताना, मजाक।

तनजील *स्त्री.* (अर.) आतिथ्य।

तनजेब *पुं.* (फा.) महीन चिकनी मलमल, बढिया सूती कपड़ा।

तनज्जुल *पुं.* (अर.) अवनति, उतार।

तनज्जुली *स्त्री.* (फा.) अवनति, ह्रास।

तनतना *पुं.* (अर.) 1. दबदबा, रोब 2. झुंझलाहट।

तनतनाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. झुंझलाना 2. क्रोध करना, गुस्सा दिखाना 3. दबदबा दिखाना।

तनधारी *वि.* (तद्.) दे. तनुधारी।

तनना *अ.क्रि.* (देश.) 1. खिंचना, फैलना 2. रुष्ट होना, नाराज होना *पुं.* (देश.) तानने के लिए प्रयुक्त रस्सी।

तनय *पुं.* (तत्.) 1. पुत्र, बेटा, लड़का 2. ज्यो. जातक की कुंडली में जन्मलग्न से पाँचवा स्थान।

तनया *स्त्री.* (तत्.) पुत्री, बेटी, लड़की।

तनवाद *पुं.* (तत्.) भौतिकवाद।

तनवाना *स.क्रि.* (देश.) दूसरे से तानने का काम कराना, तनाना।

तनसीख *स्त्री.* (अर.) रद्द करना, मंसूखी, रद्दीकरण।

तनसुख *पुं.* (अर.) तनजेब या अद्धी जैसा बढ़िया कपड़ा।

तनहा *वि.* (फा.) अकेला, एकाकी *क्रि.वि.* अकेले।

तनहाई *स्त्री.* (फा.) 1. अकेलापन, एककीपान 2. एकांत स्थान।

तना *पुं.* (फा.) 1. पेड़ का जमीन के ऊपर का भाग जहाँ से शाखाएँ निकलती हैं 2. धड़ *क्रि.वि.* की ओर, की तरफ।

तनाजा *पुं.* (अर.) झगड़ा, लड़ाई, शत्रुता।

तनाना *स.क्रि.* (देश.) 1. दूसरे से तानने का काम कराना 2. किसी को तानने में लगाना।

तनाव *पुं.* (देश.) 1. तनने का भाव या क्रिया 2. खींचतान, द्वेष या विकर्षण की स्थिति 3. रस्सी, डोरी।

तनासुख *पुं.* (अर.) आवागमन।

तनि *वि.* (देश.) दे. तनिक।

तनिक *वि.* (देश.) थोड़ा, कम 2. छोटा *क्रि.वि.* जरा।

तनिका *स्त्री.* (तत्.) बाँधने की डोरी, तनी।

तनिया *स्त्री.* (देश.) 1. लंगोटी 2. जांघिया 3. चोली।

तनी *स्त्री.* (तद्.) बंद, बंधन (चोली का)।

तनु *स्त्री.* (तत्.) 1. शरीर, देह, जिस्म 2. जन्म कुंडली में लग्न स्थल 3. स्वभाव, प्रकृति 4. चर्म *वि.* 1. दुबला, पतला 2. थोड़ा कम 3. छिछला, तुच्छ।

तनुक *वि.* (देश.) 1. थोड़ा 2. पतला-क्षीण 3. छोटा।

तनुज *पुं.* (तत्.) पुत्र, बेटा, लड़का, जन्मकुंडली का पाँचवाँ स्थान।

तनुजा *स्त्री.* (तत्.) पुत्री, बेटी, लड़की।

तनुता *स्त्री.* (तत्.) 1. छोटाई, लघुता 2. दुर्बलता, कमजोरी।

तनुत्राण *पुं.* (तत्.) कवच, बख्तर।

तनुपोषक *वि.* (तत्.) अपने शरीर या परिवार का पोषण करने वाला।

तनुमध्य *पुं.* (तत्.) पतली कमर।

तनुमध्या *वि.* (तत्.) पतली कमर वाली, *स्त्री.* एक वर्णवृत्त।

तनुरस *पुं.* (तत्.) पसीना, स्वेद।

तनुराग *पुं.* (तत्.) एक सुगंधित उबटन।

तनुल *वि.* (तत्.) फैला हुआ, विस्तृत।

तनुवार *पुं.* (तत्.) कवच, बख्तर।

तनू *पुं.* (तत्.) 1. पुत्र, बेटा, लड़का 2. शरीर 3. प्रजापति 4. गौ।

तनूनप *पुं.* (तत्.) घी।

तनूपान *पुं.* (तत्.) अंगरक्षक।

तनूर *पुं.* (देश.) तंदूर, भट्टी।

तनेना *वि.* (देश.) तिरछा, टेढ़ा।

तनेनी *स्त्री.* (देश.) 1. टेढ़ी, तिरछी 2. रुष्ट।

तनै *अव्य.* (देश.) के लिए।

तनैया *स्त्री.* (तद्.) पुत्री, बेटी लड़की, कन्या।

तनोआ *पुं.* (देश.) चंदोआ।

तनोज *पुं.* (तद्.) 1. रोम, रोआँ 2. लड़का, बेटा।

तनोरुह *पुं.* (तद्.) रोम, रोआँ।

तन्ति *स्त्री.* (तत्.) कश्मीर की एक नदी का नाम।

तन्ना *पुं.* (देश.) ताने का सूत।

तन्नी *स्त्री.* (तत्.) तराजू की रस्सी, जोती।

तन्मयता *स्त्री.* (तत्.) लीनता, एकाग्रता लगन, तल्लीनता।

तन्मयासक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. भगवान के प्रति तल्लीनता 2. भगवद्‌भक्ति।

तन्मात्र *वि.* (तत्.) थोड़ी मात्रा का *पुं.* पंचभूतों के मूल सूक्ष्म रूप।

तन्य *वि.* (तत्.) तानने योग्य, खींचने योग्य।

तन्यतु *पुं.* (तत्.) वायु, हवा 2. रात, रात्रि 3. गर्जन।

तन्वंग *वि.* (तत्.) 1. सुकुमार 2. क्षीण शरीर वाला।

तन्वंगिनी *स्त्री.* (तत्.) तन्वंगी, सुकुमार अंगोंवाली स्त्री।

तन्वंगी *वि.* (तत्.) दुबली-पतली, नाजुक, सुकुमार शरीर वाली।

तन्वी *स्त्री.* (तत्.) एक वर्णवृत्त *वि.* 1. कोमलांगी 2. दुबली-पतली।

तप *पुं.* (तत्.) 1. तपस्या, मन इंद्रियों को एकाग्र करने की क्रिया 2. माघ का महीना 3. ज्योतिष में लग्न से नौवाँ स्थान 4. अग्नि 5. ताप-गर्मी 6. बुखार-ज्वर।

तपकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. टपकना 2. धड़कना।

तपती *स्त्री.* (तत्.) 1. सूर्य की एक कन्या का नाम 2. ताप्ती नदी।

तपन *पुं.* (तत्.) 1. तपने की क्रिया या भाव ताप, जलन 2. सूर्य, रवि, सूरजमुखी 3. मदार-आक 4. एक अलंकार यौ. तपनयौवन- सूर्य की प्रखरता।

तपनमणि *पुं.* (तत्.) सूर्यकांत मणि।

तपनांशु *पुं.* (तत्.) सूर्य किरण, रश्मि।

तपना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. घूप, आग आदि से गरम होना 2. किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए कष्ट सहना 3. तप करना।

तपनि *स्त्री.* (देश.) दे. तपन।

तपनी *स्त्री.* (देश.) 1. आग तापने का स्थान, अलाव 2. तपस्या, तव।

तपनीय *पुं.* (तत्.) सोना, *वि.* तपने या तपाने योग्य।

तपनीयक *पुं.* (तत्.) दे. तपनीय।

तपनेष्ट *पुं.* (तत्.) तांबा।

तपनोपल *पुं.* (तत्.) सूर्यकांत मणि।

तपलोक *पुं.* (तत्.) दे. तपोलोक।

तपवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. गरम करवाना, तापने के लिए किसी को प्रेरित करना 2. फिजूल खर्च करवाना।

तपश्चर्या *स्त्री.* (तत्.) तपस्या।

तपसा *स्त्री.* (तद्.) 1. तपस्या 2. ताप्ती नदी।

तपसालि *पुं.* (तद्.) दे. तपसाली।

तपसाली *पुं.* (तद्.) तपस्वी, घोर तपस्वी।

तपसोमूर्ति *पुं.* (तत्.) बारहवें मन्वंतर के एक ऋषि।

तपस्य *पुं.* (तत्.) 1. फागुन का महीना 2. तपस्या 3. अर्जुन।

तपस्या *स्त्री.* (तत्.) 1. तप, व्रत 2. कष्टमय प्रतीक्षा।

तपस्विनी *स्त्री.* (तत्.) 1. तपस्या करने वाली स्त्री 2. पतिव्रता स्त्री 3. जटामासी।

तपस्वी *वि.* (तत्.) 1. तपस्या करने वाला, बेचारा, कष्ट सहने वाला 2. तपसी मछली *पुं.* संन्यासी 2. दरिद्र मनुष्य 3. घुटकी 4. गोरखमुंडी।

तपाक *पुं.* (फा.) 1. आवेश, जोश 2. वेग-तेजी। मुहा. तपाक बदलना-बिगड़ जाना।

तपानल *पुं.* (तत्.) तप से उत्पन्न तेज।

तपाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. बहुत अधिक गर्म करना 2. कष्ट देना, संताप देना 3. तप करना।

तपावंत *पुं.* (तत्.) तपस्वी, तपसी।

तपाव *पुं.* (तत्.) तपने की क्रिया या भाव, गरमाहट।

तपाव्यय *पुं.* (तत्.) वर्षा ऋतु।

तपित *वि.* (तत्.) तपा हुआ, गरम।

तपिया *पुं.* (देश.) 1. तप करने वाला 2. एक वृक्ष (बिरमी), इसका प्रयोग वैद्यक में होता है।

तपिश *स्त्री.* (फा.) तपन, गरमी।

तपी *पुं.* (तत्.) तपस्वी, साधू *वि.* तप करने वाला।

तपीधन *वि.* (तत्.) 1. तपस्वी 2. तप ही जिसका धन हो।

तपीसर *वि.* (तद्.) 1. तपस्या करने वाला 2. तपीश्वर।

तपु *पुं.* (तद्.) 1. आग, अग्नि 2. सूर्य, शत्रु *वि.* 1. तपाने वाला 2. गरम।

तपुराग्र *पुं.* (तत्.) जिसका अगला भाग तपाया हुआ हो।

तपुराग्रा *स्त्री.* (तत्.) बरछी या भाला।

तपेदिक *पुं.* (फा.) क्षय रोग, यक्ष्मा।

तपोज *वि.* (तद्.) 1. तपस्या से उत्पन्न 2. अग्नि से उत्पन्न।

तपोदान *पुं.* (तत्.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

तपोद्युति *स्त्री.* (तत्.) बारहवें मनवंतर के एक ऋषि का नाम।

तपोबल *पुं.* (तत्.) तप से प्राप्त शक्ति।

तपोभूमि *स्त्री.* (तत्.) तपोवन, तप करने का स्थान।

तपोमय *वि.* (तत्.) तपमय, तपस्या करने वाला।

तपोवन *पुं.* (तत्.) तपस्वियों के रहने या तपस्या करने का स्थान।

तपोव्रत *पुं.* (तत्.) तपस्या संबंधी व्रत।

तपौनी *स्त्री.* (देश.) मुसाफिरों की लूटपाट के बाद ठगों द्वारा देवी को प्रसाद चढ़ाने की एक रस्म।

तप्त *पुं.* (तत्.) 1. तपाया हुआ 2. दुखी, पीड़ित।

तप्तक *पुं.* (तत्.) कड़ाही।

तप्तकांचन *पुं.* (तत्.) तपाया हुआ सोना।

तप्तकुंड *पुं.* (तत्.) गरम पानी का सोता।

तप्तपाषाण *पुं.* (तत्.) एक नरक।

तप्तमाष *पुं.* (तत्.) किसी के सच-झूठ को जानने की कठोर परीक्षा।

तप्तमुद्रा *पुं.* (तत्.) धातु की तपाई मुद्राओं द्वारा शरीर के किसी भाग पर दागा गया चिह्न।

तप्ता *पुं.* (तत्.) 1. तवा 2. भट्टी *वि.* तप्त करने वाला।

तप्ताभरण *पुं.* (तत्.) शुद्ध सोने का आभूषण।

तप्तायन *पुं.* (तत्.) दे. तप्तायनी।

तप्तायनी *स्त्री.* (तत्.) दीन दुखियो को सताकर प्राप्त की गई भूमि।

तप्ति *स्त्री.* (तत्.) ताप, गरमी।

तप्प *पुं.* (तद्.) दे. तप।

तप्य *पुं.* (तत्.) शिव।

तफ़क्कुर *पुं.* (अर.) चिंता, फिक्र।

तफ़ज्जुल *पुं.* (अर.) बड़ाई, बड़प्पन।

तफ़तीश *स्त्री.* (अर.) छानबीन, जाँच-पड़ताल।

तफ़रका *पुं.* (अर.) भेदभाव, विरोध, वैमनस्य।

तफ़रीक *स्त्री.* (अर.) 1. जुदाई, अलगाव, अलहदगी 2. घटा 3. अंतर, फर्क 4. बाँट, बँटाई।

तफ़रीह *स्त्री.* (अर.) 1. मनोरंजन, दिलबहलाव 2. हवाखोरी, सैर।

तफ़रीहन *क्रि.वि.* (अर.) मनबहलाव के लिए।

तफ़सीर *स्त्री.* (अर.) 1. टीका, व्याख्या 2. कुरान का भाष्य।

तफ़सील *स्त्री.* (अर.) 1. विस्तृत वर्णन, विवरण 2. सूची, फहरिस्त 3. टीका।

तफ़ावत *पुं.* (अर.) 1. अंतर, फर्क 2. मनमुटाव 3. दूरी फरमान।

तब *पुं.* (तद्.) उस समय, उस वक्त प्रयो. जब मैं वहाँ पहुचूँ, तब तुम आना 2. इस कारण, इस वजह से प्रयो. मुझे बुलाया गया था, तब मैं गया था *स्त्री.* (फा.) ताप, गर्मी, बुखार।

तबक *पुं.* (अर.) 1. लोक 2. परत 3. सोने-चाँदी के बरक 4. घोड़ो की एक बीमारी 5. परियो की नमाज।

तबकगर *पुं.* (अर.) सोने चांदी के वरक बनाने वाला।

तबकफाड़ *पुं.* (अर.) कुश्ती का एक दांव, तबदील *वि.* परिवर्तित, बदला हुआ प्रयो. आबोहवा तबदील करना- जलवायु का बदलना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।

तबका *पुं.* (अर.) 1. खंड, विभाग 2. तह, परत 3. आदमियों का वर्ग जैसे- कई तबके के लोग रहते है 4. रुतबा प्रयो. अपनी बिरादरी में उसका खास तबका था।

तबदीली *स्त्री.* (अर.) 1. परिवर्तन, बदलाव, स्थानांतरण स्थानांतरण 2. उथल-पुथल प्रयो. भारत में पिछले पचास वर्षों में काफी तबदीलियाँ आई है।

तबर *पुं.* (फा.) 1. कुल्हाड़ी 2. एक शस्त्र।

तबरदार *पुं.* (फा.) जिसके पास तबर (कुल्हाड़ी) हो, तबर रखने वाला आदमी।

तबर्रा *पुं.* (अर.) घृणा, नफरत।

तबर्रुक *पुं.* (अर.) आशीर्वाद स्वरूप प्रसाद।

तबल *पुं.* (अर.) 1. बड़ा ढोल 2. नगाड़ा 3. डंका।

तबलची *पुं.* (अर.) तबला बजाने वाला, तबलिया।

तबला *पुं.* (अर.) ताल देने का चमड़े का मढ़ा बाजा मुहा. तबला उतरना- तबले की बद्धी का ढीला पड़ना, तबले से धीमा स्वर निकलना; तबला चढ़ाना- तबले का तनाव ठीक करना; तबला ठनकना- गाना बजाना होना प्रयो. पहले विवाह के एक हफता पहले से ही तबला ठनकने लगता था।

तबलिया *पुं.* (अर.) तबलची, तबला बजाने वाला।

तबलीग *पुं.* (अर.) 1. धर्म प्रचार 2. धर्म परिवर्तन।

तबस्सुम *पुं.* (अर.) मुस्कराहट।

तबा *पुं.* (अर.) 1. प्रकृति 2. प्रतिभा।

तबादला *पुं.* (अर.) बदली, स्थानांतरण।

तबाशीर *पुं.* (अर.) बंसलोचन।

तबाह *वि.* (फा.) नष्ट, चौपट, बरबाद।

तबाही *स्त्री.* (फा.) नाश-बरबादी।

तबीअत *स्त्री.* (अर.) स्वास्थ्य की दृष्टि से किसी की शारीरिक या मानसिक स्थिति 2. मन, जी, चित्त, दिल मुहा. किसी पर तबीअत आना- किसी से प्रेम होना प्रयो. तुम्हारी तो हरेक पर तबीयत आ जाती है; तबीअत उलझना- जी धबराना प्रयो. काफी देर से तबीयत कुछ उलझ रही है; तबीयत फड़क उठना-मन प्रसन्न हो जाना; तबीयत भरना- तसल्ली होना, संतोष होना प्रयो. आम इतना खाया कि तबीयत भर गई; तबीअत लगना- मन प्रसन्न होना प्रयो. नई जगह उनकी तबीयत नहीं लग रही; तबीअत होना- जी चाहना प्रयो. आज फिल्म देखने की तबीयत हो रही है; तबीयत पर जोर डालना- विशेष ध्यान देना प्रयो. तबीयत पर जोर डालकर काम किया करो।

तबीब *पुं.* (अर.) चिकित्सक, वैद्य, हकीम।

तबेला *पुं.* (अर.) अस्तबल, घुड़साल मुहा. तबेले में लत्ती चलाना- किसी काम में अड़चन पैदा करना प्रयो. आजकल लोगों को दूसरों के तबेले में लत्ती चलाने की आदत है।

तभी *अव्य.* (देश.) उसी समय, उसी वक्त।

तमंग *पुं.* (तत्.) 1. रंगमंच 2. मंच।

तमंगक *पुं.* (तत्.) छज्जा, छत या छाज से बाहर निकला हुआ भाग।

तमंचा *पुं.* (फा.) पिस्तौल मुहा. तमंचे की टाँग- कुश्ती का एक पेच।

तम *पुं.* (तत्.) 1. अंधेरा, अंधकार 2. एक गुण- तमोगुण 3. राहु 4. कालिख 5. अज्ञान 6. तमाल वृक्ष *वि.* काला, दूषित, बुरा 7. विशेषणों के अंत में लगने वाला प्रत्यय जो सबसे बढक़र का अर्थ होता है- श्रेष्ठतम, अधिकतम आदि।

तमअ *स्त्री.* (अर.) 1. लालच, लोभ 2. इच्छा।

तमक *पुं.* (देश.) 1. जोश, आवेग 2. रोष 3. झुँझलाहट *पुं.* (तत्.) श्वास का एक रोग।

तमकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. जोश में आना 2. आवेश में आना 3. नाराज होना 4. झुँझलाना।

तमकाना *स.क्रि.* (देश.) तमकने की क्रिया करना।

तमगा *पुं.* (फा.) पदक, तगमा, मैडल।

तमगेही *वि.* (तद्.) अंधकार में रहने वाला *पुं.* पतंगा।

तमचुर *पुं.* (तद्.) मुरगा, कुक्कुट।

तमच्छन्न *पुं.* (तत्.) अंधकारमय।

तमत *वि.* (तत्.) इच्छुक, अभिलाषी।

तमतमाता *वि.* (देश.) 1. गरम 2. चमकता हुआ।

तमतमाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. धूप या गुस्से से चेहरा लाल होना 2. चमकना, दमकना।

तमतमाहट *स्त्री.* (देश.) तमतमाने का भाव।

तमन *पुं.* (तत्.) दम घुटने की स्थिति।

तमना *अ.क्रि* (तद्.) 1. तपना-गरम होना 2. दुखी होना *स.क्रि.* तपाना, गरम करना 2. दुखी करना।

तमन्ना *स्त्री.* (अर.) इच्छा, आकांक्षा, कामना, ख्वाहिश।

तमयी *स्त्री.* (तत्.) रात, रात्रि।

तमरंग *पुं.* (देश.) एक प्रकार का नींबू।

तमर *पुं.* (तत्.) बंग।

तमस *पुं.* (तत्.) 1. अंधकार, अंधेरा 2. एक प्रकार का गुण, तमोगुण।

तमसा *स्त्री.* (तत्.) टौंस नदी।

तमसाच्छन्न *वि.* (तत्.) अंधकार से ढका हुआ।

तमस्क *पुं.* (तत्.) 1. अंधेरा 2. दुख।

तमस्तति *स्त्री.* (तत्.) अंधकार।

तमस्नान *वि.* (तत्.) अंधकारमय, अंधकार की अधिकता।

तमस्वती *स्त्री.* (तत्.) दे. तमस्विनी।

तमस्विनी *वि.स्त्री.* 1. रात, रात्रि 2. हल्दी।

तमस्वी *वि.* (तत्.) अंधकार युक्त, अंधकार पूर्ण।

तमस्सुक *पुं.* (अर.) 1. ऋण पत्र, प्रोनोट 2. दस्तावेज।

तमहीद *स्त्री.* (अर.) भूमिका, प्रस्तावना।

तमा *स्त्री.* (तत्.) रात, रात्रि।

तमाई *स्त्री.* (देश.) खरपतवार निकालने की प्रक्रिया।

तमाकू *पुं.* (तत्.) दे. तंबाकू।

तमाचा *पुं.* (फा.) थप्पड़, झापड़।

तमादी *स्त्री.* (अर.) मियाद, मुद्दत (बीत जाना)।

तमाम *वि.* (अर.) 1. पूरा, कुल, सारा 2. समाप्त, खत्म मुहा. तमाम होना- समाप्त होना, मर जाना।

तमामी *स्त्री.* (अर.) एक जरीदार कपड़ा।

तमाल *पुं.* (तत्.) 1. एक सदाबहार वृक्ष, वरुण वृक्ष 2. तेजपत्ता 3. बाँस की छाल 3. सांप्रदायिक तिलक।

तमालिका *स्त्री.* (तत्.) 1. भुईं आँवला 2. तमाल के वृक्षों की अधिकता वाली जगह।

तमालिनी *स्त्री.* (तत्.) वह जगह जहाँ तमाल के वृक्षों की अधिकता हो।

तमाली *स्त्री.* (तत्.) 1. ताम्रवल्ली लता 2. वरुण वृक्ष।

तमाशबीन *पुं.* (अर.+फा.) तमाशा देखने वाला, सैलानी 2. ऐयाश, वेश्यागामी, रंडीबाज।

तमाशबीनी *स्त्री.* (अर.+फा.) 1. तमाशा देखना 2. ऐयाशी।

तमाशा *पुं.* (अर.) मनोरंजक दृश्य, चित्त को प्रसन्न करने वाला दृश्य मुहा. तमाशे की बात- अनोखी बात-अद्भुत बात प्रयो. तमाशाबाज- तमाशा करने वाला।

तमाशाई *पुं.* (अर.) तमाशा देखने वाला।

तमाह्वय *पुं.* (तत्.) तालीश पत्र।

तमि *पुं.* (तत्.) 1. रात 2. मोह।

तमिल *पुं.* (देश.) 1. तमिल प्रदेश, तमिलवासी 2. तमिल भाषाई।

तमिस्र *पुं.* (तत्.) 1. अंधेरा, अंधकार 2. गुस्सा, क्रोध 3. मोह, अज्ञान 4. कृष्ण पक्ष।

तमिस्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. अंधेरी रात 2. गहरा अंधेरा।

तमी *स्त्री.* (तत्.) 1. रात, रात्रि 2. हल्दी।

तमीचर *पुं.* (तत्.) निशाचर, राक्षस।

तमीज *स्त्री.* (अर.)1. विवेक 2. अदब 3. पहचान।

तमीनाथ *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

तमीश *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

तमूरा *पुं.* (देश.) तंबूरा।

तमेस *पुं.* (देश.) ताँबे का बरतन बनाने वाला।

तमोगुण *पुं.* (तत्.) प्रकृति के तीन गुणों में से एक जो अज्ञान, आलस्य क्रोध, भ्रम आदि का कारण होता है।

तमोगुणी *वि.* (तत्.) तमोगुण से युक्त वृत्ति वाला।

तमोजोति *स्त्री.* (तद्.) जुगनू।

तमो मणि *स्त्री.* (तत्.) पान, तांबूल।

तमोमय *वि.* (तत्.) 1. तमोगुण से भरा हुआ 2. अंधकारमय 3. ज्ञानहीन।

तमोरि *पुं.* (तत्.) सूर्य।

तमोल *पुं.* (तद्.) पान का बीड़ा, पान, तांबूल।

तमोलिन *स्त्री.* (तद्.) दे. तबोलिन।

तमोली *पुं.* (तत्.) दे. तंबोली।

तमोविकार *पुं.* (तत्.) तमोगुण से उत्पन्न विकार/रोग।

तमोहर *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. सूर्य 3. अग्नि 4. ज्ञान *वि.* अज्ञान दूर करने वाला, अंधेरा दूर करने वाला।

तय *वि.* (अर.) 1. समाप्त, पूरा किया हुआ 2. निर्णीत, निश्चित।

तरंग *स्त्री.*(तत्.) 1. पानी की लहर प्रयो. सागर में में लहरें उठती है 2. मौज, उमंग प्रयो. वह तरंग में गाए जा रहा था 3. एक प्रकार की चूड़ी 4. स्वर लहरी।

तरंगयित *वि.* (तत्.) दे. तरंगित।

तरंगवती *स्त्री.* (तत्.) नदी।

तरंगिका *स्त्री.* (तत्.) 1. लहर 2. स्वरलहरी।

तरंगित *वि.* (तत्.) लहराता हुआ, हिलोरे लेता हुआ।

तरंगी *वि.* (तद्.) 1. तरंग युक्त, लहरदार 2. मनमौजी, बेपरवाह।

तरंड *पुं.* (तत्.) 1. नाव 2. डॉड 3. बेड़ा।

तरंडा *स्त्री.* (तत्.) 1. नौका, नाव 2. बेड़ा।

तरंत *पुं.* (तत्.) 1. सागर, समुद्र 2. मेंढक 3. मूसलाधार वर्षा।

तरंती *स्त्री.* (तत्.) नाव, नौका।

तरंबुज *पुं.* (तत्.) तरबूज।

तर *वि.* (फा.) 1. गीला, आर्द्र 2. ठंडा-ठंडक पैदा करने वाला *क्रि.वि.* (तद्.) नीचे, तले (प्रत्य. तत्.) तुलनात्मक विशेषता का भाव प्रकट करने वाला प्रत्यय. जैसे गुरुतर, अधिकतर *पुं.* (तत्.) 1. अग्नि 2. वृक्ष 3. गति 4. घाट वाली नाव।

तरई *स्त्री.* (देश.) नक्षत्र।

तरक *स्त्री.* (तद्.) तड़क *पुं.* (तद्.) तर्क, ऊहापोह प्रयो. मेरे मन में तरक की स्थिति बनी रही।

तरकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. सोच विचार करना, तर्क करना 2. उछलना, कूदना।

तरकश *पुं.* (फा.) तीर रखने का चोंगा, तूणीर, निषंग।

तरकस *पुं.* (फा.) तरकश।

तरकसी *स्त्री.* (फा.) छोटा तरकश।

तरका *पुं.* (अर.) उत्तराधिकार में प्राप्त संपत्ति।

तरकारी *स्त्री.* (फा.) शाक, सब्जी, पकाया हुआ शाक।

तरकी *पुं.* (तद्.) फूल के आकार का कान का गहना।

तरकीब *स्त्री.* (अर.) 1. तरीका, उपाय, युक्ति प्रयो. इसके बनाने की तरकीब क्या है 2. रचना, बनावट 3. शैली प्रयो. उन्हें बुलाने की कोई तरकीब निकालो।

तरकुल *पुं.* (देश.) ताड़ का पेड़।

तरक्की *स्त्री.* (अर.) 1. उन्नति, वृद्धि प्रयो. देश की तरक्की में हाथ बटाइए 2. पदोन्नति प्रयो. उनकी अनुभाग अधिकारी के पद पर तरक्की हुई है प्रयो. उन्हें कई वर्षों बाद तरक्की मिली।

तरक्षु *पुं.* (तत्.) 1. एक तरह का बाघ 2. चीता।

तरखा *पुं.* (तत्.) पानी का तेज बहाव।

तरखान *पुं.* (तद्.) बढ़ई, तक्षक।

तरछाना *अ.क्रि.* (देश.) तिरछी आँख से इशारा करना, आँख से इशारा करना।

तरज *पुं.* (तद्.) दे. तर्ज।

तरजनी *अ.क्रि.* (तद्.) 1. डाँटना, डपटना 2. भला बुरा कहना, घुड़कना *स्त्री.* (तद्.) तर्जनी, अगूँठे के के पास वाली उंगली।

तरजीला *वि.* (देश.) तड़पवाला, चमकीला।

तरजीह *स्त्री.* (अर.) प्रधानता, वरीयता।

तरजुई *स्त्री.* (फा.) छोटी तराजू।

तरजुमा *पुं.* (अर.) अनुवाद, भाषांतर।

तरजुमान *पुं.* (अर.) अनुवाद करने वाला, अनुवादक।

तरण *पुं.* (तत्.) 1. नदी आदि पार करने की क्रिया 2. उद्धार 3. तैरने वाला तख्ता 4. बेड़ा 5. नौका।

तरणतारण *वि.* (तत्.) भवसागर के पार करने वाला।

तरणि *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य, किरण 2. मदार 3. ताँबा।

तरणि कुमार *पुं.* (तत्.) तरणि सुत।

तरणिजा *स्त्री.* (तत्.) 1. सूर्य की पुत्री, यमुना 2. एक वर्णवृत्त।

तरणि धन्य *पुं.* (तत्.) शिव।

तरणी *स्त्री.* (तत्.) 1. नौका-नाव 2. कमलिनी 3. घी कुआर।

तरतराता *वि.* (देश.) ऐसा खाद्य पदार्थ जिससे घी चूता हो, घी में अच्छी तरह डूबा हुआ।

तरतीब *स्त्री.* (अर.) क्रम, सिलसिला।

तरत् *स्त्री.* (तत्.) 1. बेड़ा 2. कांरडव पक्षी।

तरदीर *स्त्री.* (अर.) 1. खंडन 2. मंसूखी।

तरद्दुद *पुं.* (अर.) परेशानी, चिंता।

तरद्वती *पुं.* (तत्.) झंझट, फिक्र, अंदेशा।

तरद्वही *स्त्री.* (तत्.) एक पकवान।

तरन *पुं.* (तद्.) दे. तरण।

तरना *स.क्रि.* (तद्.) पार करना *अ.क्रि.* मुक्त होना, भवसागर से पार होना।

तरनाग *पुं.* (तद्.) एक प्रकार की चिड़िया।

तरनि *पुं.* (तद्.) दे. तरणि।

तरनी *स्त्री.* (तद्.) 1. नाव, नौका 2. खोंचा रखने का छोटा मोढ़ा।

तरन्नुम *पुं.* (अर.) 1. आलस्य 2. सुर।

तरप *स्त्री.* (देश.) तड़प।

तरपट *वि.* (देश.) टेढ़ापन *स्त्री.* टेढ़ी खटिया।

तरपत *पुं.* (तद्.) 1. अरमान 2. चैन 3. सुभीता।

तरपन *पुं.* (तद्.) तर्पण।

तरपना *अ.क्रि.* (देश.) तड़पना।

तरपर *क्रि.वि.* (देश.) 1. लगातार, निरंतर 2. नीचे ऊपर।

तरफ *स्त्री.* (अर.) 1. ओर, दिशा, (जैसे उस तरफ) 2. पक्ष, तरफ (जैसे-दाहिनी तरफ) प्रयो. आप हमारी तरफ रहेंगे या उनकी तरफ।

तरफदार *वि.* (अर.) हिमायती, पक्षपाती, समर्थक।

तरफदारी *स्त्री.* (अर.+फा.) 1. पक्षपात 2. हिमपात।

तरफराना *अ.क्रि.* (अनु.) तड़फड़ाना।

तरब *पुं.* (देश.) सारंगी के तार।

तरबड़ी *स्त्री.* (देश.) तराजू का पलड़ा।

तरबन *पुं.* (देश.) कान का गहना, कर्णफूल।

तरबहना *पुं.* (देश.) ठाकुर जी को नहलाने का बरतन।

तरबियत *स्त्री.* (अर.) 1. पालन-पोषण, परवरिश 2. तालीम, शिक्षा।

तरबूज *पुं.* (फा.) बालुई भूमि पर फैलने वाली बेल का फल जो गोलाकार, रसदार और तासीर में ठंडा होता है।

तरबूजा *पुं.* (फा.) 1. ताजा फल 2. तरबूज।

तरबूजिया *वि.* (देश.) तरबूज के रंग का।

तरबोना *स.क्रि.* (देश.) तराबोर करना, भिगोना।

तरमाना *अ.क्रि.* (देश.) किसी पर बिगड़ना, गुस्सा करना।

तरमीम *स्त्री.* (अर.) 1. संशोधन 2. काट-छाँट।

तरल *पुं.* (तत्.) 1. हार की मणि 2. हार 3. हीरा 4. लोहा 5. धतूरा 6. तल 7. सतत 8. धोड़ा *वि.* 9. द्रव 10. अस्थिर 11. चमकीला।

तरल नयन *पुं.* (तत्.) एक वर्णवृत्त।

तरला *स्त्री.* (तत्.) 1. शहद की मक्खी 2. जौ की माँड 3. यवागू।

तरलाई *स्त्री.* (देश.) 1. चंचलता 2. द्रवत्व।

तरलायित *वि.* (तत्.) हिलाया हुआ, कंपाया हुआ *स्त्री.* (तत्.) लहर, तरंग, हिलोर।

तरलित *वि.* (तत्.) 1. तरल किया हुआ 2. हिलता हुआ 3. प्रवाहमान।

तरवट *पुं.* (तत्.) एक झाड़ी।

तरवर *पुं.* (तद्.) एक पेड़ जिसकी छाल से चमड़ा सिझाया जाता है, तरोता।

तरवाना *स.क्रि.* (देश.) तारने की प्रेरणा देना।

तरवार *पुं.* (देश.) 1. तलवार 2. दातुन।

तरवारि *पुं.* (देश.) एक प्रकार की तलवार।

तरस *पुं.* (तत्.) 1. गति, वेग 2. शक्ति, बल, क्षमता 3. दया, रहम, करुणा मुहा. तरस खाना-दया करना, रहम करना 4. मांस।

तरसना *अ.क्रि.* (तद्.) किसी वस्तु को पाने या किसी व्यक्ति से मिलने के लिए बेचैन रहना।

तरसा *क्रि.वि.* (देश.) शीघ्र, जल्दी।

तरसान *पुं.* (देश.) नौका, नाव।

तरसाना *अ.क्रि* (देश.) ऐंठना, ऐंठ दिखाना *स.क्रि* 1. ललचाना 2. आशा दिलाकर इच्छा पूरी न करना।

तरसौहाँ *वि.* (देश.) तरसने वाला।

तरस्वान *वि.* (तत्.) तेज, गतिवान।

तरस्विन *स्त्री.* (तत्.)1. तपस्वी 2. वीर *पुं.* 1. शिव शिव 2. गरुड़ 3. वायु।

तरस्वी *वि.* (तत्.) 1. तेज, बलवान, साहसी 2. फुर्तीला *पुं.* 1. दूत, धावक 2. वीर, नायक 3. वायु, पवन।

तरह *स्त्री.* (फा.) 1. प्रकार, भाँति, किस्म मुहा. किसी किसी की तरह- किसी के समान 2. बनावट, रचना, शैली प्रयो. इस कपड़े की तरह ठीक नही है, तरह उड़ाना- नकल उतारना 3. युक्ति, ढंग, उपाय प्रयो. किसी तरह से यह काम करवा दो, तरह देना- जानबूझकर उपेक्षा करना, बचा पाना प्रयो. आप सभी बेवकूफियों को क्यो तरह देते हैं।

तरहदार *वि.* (फा.) सुंदर बनावट वाला जैसे- तरहदार छींट का पकड़ा

तरहर *वि.* (देश.) नीचे, तले।

तरहरी *स्त्री.* (देश.) नीची भूमि, तलहटी, पहाड़ की तराई।

तरहारि *क्रि.वि.* (देश.) दे. तरहर।

तरहेल *स्त्री.* (देश.) 1. पराजित 2. वशीभूत।

तराई *स्त्री.* (देश.) पहाड़ के नीचे की भूमि, तलहटी जैसे- नेपाल की तराई में।

तराजू *पुं.* (फा.) तोलने का यंत्र जिसमें दांडी के दोनों सिरों पर पलड़े बंधे होते है।

तराना *पुं.* (फा.) एक प्रकार का गाना।

तराबोर *वि.* (फा.) सराबोर, खूब भीगा हुआ।

तरामल *पुं.* (देश.) 1. बैलों के गले के जुए के नीचे की लकड़ी 2. छाजन के नीचे लगाए जाने वाले मूँज के मुट्ठे।

तरारा *पुं.* (देश.) 1. छलाँग 2. लगातार गिरने वाली जल की धारा।

तरालु *पुं.* (तत्.) चौड़े पेंदे की नाव।

तरावट *स्त्री.* (फा.) 1. नमी 2. शीतलता, ठंडक प्रयो. ठंडा शरबत पीने से तरावट आ गई 3. दुखी मन को प्रसन्न करने का भाव।

तराश *स्त्री.* (फा.) 1. तराशने की क्रिया 2. काट-छाँट, बनावट 3. काटने का ढंग।

तराशना *स.क्रि.* (फा.) 1. काटना 2. कलम करना।

तरास *पुं.* (फा.) त्रास, *स्त्री.* (फा.) तराश।

तरासना *स.क्रि.* (फा.) भयभीत करना, डराना, त्रस्त करना

तरिंदा *पुं.* (देश.) पानी पर तैरने वाला पीपा।

तरि *स्त्री.* (तत्.) नाव, नौका।

तरिक *पुं.* (तत्.) उतराई का महसूल लेने वाला माँझी, मल्लाह, केवट।

तरित्र *पुं.* (तत्.) बड़ी नाव, नौका, पोत।

तरिवन *पुं.* (देश.) कान का एक गहना, तरकी, कर्ण फूल।

तरी *स्त्री.* (तत्.) 1. नाव-नौका 2. पेटी-पिटारी 3. धुआँ 4. दामन *स्त्री.* (फा.) गीलापन, तरावट, आर्द्रता 2. ठंडक, शीतलता 3. कछार 4. तराई, तलहटी।

तरीकात *स्त्री.* (अर.) 1. ढंग, किसी रीति से काम करने का तरीका 2. व्यवहार 3. युक्ति, उपाय, तरकीब प्रयो. कोई तो तरीकात निकालिए ताकि काम बन जाए।

तरीष *पुं.* (तत्.) 1. सूखा गोबर, कंडा 2. नाव 3. समुद्र 4. कुशल व्यक्ति।

तरीषी *स्त्री.* (तत्.) 1. इंद्र की कन्या 2. सुंदर आकृति।

तरु *पुं.* (तत्.) 1. वृक्ष, पेड़ 2. एक विशेष पेड़ जिससे विरोजा गोंद निकालता है।

तरुट *पुं.* (तत्.) कमल की जड़ में रहने वाली, कमलगट्टा, भसीड़।

तरुण *वि.* (तत्.) 1. युवा, जवान 2. नया, नूतन *पुं.* बड़ा जीरा 2. एरंड अंकुर।

तरुणाई *स्त्री.* (तद्.) युवावस्था, जवानी।

तरुणास्थि *स्त्री* (तत्.) पतली, कोमल हड्डी।

तरुणिमा *स्त्री.* (तत्.) जवानी, युवावस्था।

तरुणी *वि.* (तत्.) युवा, जवान *स्त्री.* युवती, जवान स्त्री।

तरुनई *स्त्री.* (तद्.) दे. तरुनाई।

तरुनाई *स्त्री.* (तद्.) तरुणावस्था, जवानी

तरुनी *स्त्री.* (तद्) दे. तरुणी।

तरुमृग *पुं.* (तत्.) बंदर।

तरुराज *पुं.* (तत्.) पारिजात, कल्पवृक्ष।

तरुवर *पुं.* (तत्.) वृक्ष, पेड़।

तरुवरिया *स्त्री.* (तद्.) तलवार।

तरुवासिनी *स्त्री.* (तत्.) पेड़ पर रहने वाली।

तरूट *पुं.* (तत्.) कमल की जड़ भंसीड़, कमल गट्टा।

तरेंदा *पुं.* (देश.) 1. पानी में उतरने वाली वस्तु, जिसका सहारा लेकर पार उतरा जा सके 2. पानी में तैरता हुआ।

तरेट *पुं.* (देश.) 1. पेडू 2. नाभि के नीचे पेट का हिस्सा।

तरेटी *स्त्री.* (देश.) तराई, तलहटी, धाटी।

तरेड़ *स्त्री.* (देश.) दरार।

तरेरना *स.क्रि.* (देश.) किसी को डाँटने के लिए आँख तिरछी कर के देखना, आँख के इशारे से डाँटना।

तरैया *स्त्री.* (देश.) दे. तरई।

तरैला *पुं.* (देश.) किसी स्त्री या पुरुष का पहले पति पति या पत्नी से उत्पन्न पुत्र, सौतेला पुत्र।

तरैली *स्त्री.* (देश.) किसी स्त्री या पुरुष की पहले पति या पत्नी से उत्पन्न पुत्री, सौतेली पुत्री।

तरोता *पुं.* (देश.) दे. तरवट।

तरौंछ *पुं.* (देश.) तलछट।

तरौंटा *पुं.* (देश.) आटा पीसने की चक्की का नीचे का पाट।

तरौंता *पुं.* (देश.) छाजन की वे लकड़ियाँ जो ठाठ के नीचे दी जाती है।

तरौंदा *पुं.* (देश.) समुद्र तल पर तैयार जाने वाली पीवे।

तरौना *पुं.* (देश.) कान में पहनने का एक गहना, तरकी, कर्णफूल।

तर्क *पुं.* (तत्.) 1. न्यायशास्त्र 2. दलील 3. विवेचना 4. युक्ति 5. व्यंग्य, ताना 6. विचार-विचारणा प्रयो. उसके तर्क सही हैं *पुं* (अर.) 1. छोड़ने या त्यागने की क्रिया या भाव 2. दुनिया का त्याग करना, साधु या फकीर होना।

तर्कक *पुं.* (तत्.) 1. तर्कशास्त्री, तर्क करने वाला 2. वादी।

तर्कण *पुं.* (तत्.) तर्क करने की क्रिया।

तर्कणा *स्त्री.* (तत्.) तर्क करने की क्रिया।

तर्कना *स्त्री.* (तद्.) दे. तर्कणा।

तर्क-वितर्क *पुं.* (तत्.) ऊहापोह, वाद विवाद।

तर्कविद्या *स्त्री.* (तत्.) तर्कशास्त्र।

तर्कशास्त्र *पुं.* (तत्.) न्यायशास्त्र, तर्कविद्या।

तर्कसी *पुं.* (फा.) छोटा तरकश।

तर्काभास *पुं.* (तत्.) कुतर्क, गलत तर्क।

तर्कारी *स्त्री.* (तत्.) जयंती वृक्ष।

तर्किण *पुं.* (तत्.) पँवार, चकवँड़।

तर्कित *वि.* (तत्.) जिस पर तर्क किया गया हो, परीक्षित।

तर्किल *पुं.* (तत्.) चकवड़, पवाँर।

तर्की *वि.* (तत्.) तर्क करने वाला।

तर्कु *पुं.* (तत्.) तकला, टेकुआ।

तर्कुक *वि.* (तत्.) प्रार्थी, निवेदन करने वाला।

तर्कुटी *स्त्री.* (तत्.) तकला, टेकुआ।

तर्क्षु *पुं.* (तत्.) तेंदुआ, चीता।

तर्क्ष्य *पुं.* (तत्.) जवाखार नमक।

तर्ज *पुं.* (अर.) 1. रीति, ढंग, तरीका प्रयो. बोलने की तर्ज 2. प्रकार, शैली प्रयो. कई तर्ज के कपड़े।

तर्जन *पुं.* (तत्.) 1. धमकाने, डाँटने की क्रिया 2. फटकार 3. तिरस्कार 4. क्रोध।

तर्जना *अ.क्रि.* (तत्.) डाँटना, फटकारना *स्त्री.* (तत्.) दे. तर्जन।

तर्जनी *स्त्री.* (तत्.) अँगूठे और मध्यमा के बीच की उंगली।

तर्जित *वि.* (तत्.) 1. तिरस्कृत, अपमानित 2. जिसे फटकारा गया हो।

तर्जुमा *पुं.* (अर.) अनुवाद, भाषांतर।

तर्ण *पुं.* (तत्.) गाय का बछड़ा।

तर्णक *पुं.* (तत्.) 1. तुरंत पैदा हुआ 2. गाय का बछड़ा, बच्चा।

तर्तरीक *पुं.* (तत्.) नाव *वि.* पार जाने वाला।

तर्दू *स्त्री.* (तत्.) डोई।

तर्पण *पुं.* (तत्.) 1. तृप्त करने की क्रिया 2. कर्मकांड की एक क्रिया जिसमें पितरों को तुष्ट करने के लिए जल दिया जाता है 3. यज्ञाग्नि का ईंधन 4. भोजन, आहार 5. आँख में तेल डालना।

तर्पणी *स्त्री.* (तत्.) 1. खिरनी का वृक्ष 2. गंगा नदी *वि.* (तत्.) तृप्ति योग्य।

तर्पणेच्छु *पुं.* (तत्.) 1. तर्पण करने की इच्छा रखने वाला 2. तर्पण कराने का इच्छुक।

तर्पित *वि.* (तत्.) तृप्त किया हुआ, संतुष्ट।

तर्पी *वि.* (तत्.) 1. तृप्त करने वाला 2. तर्पण करने वाला।

तर्बट *पुं.* (तत्.) 1. चांद्र वर्ष 2. चकवँड़।

तर्बियत *स्त्री.* (अर.) शिक्षा-दीक्षा।

तर्बूज *पुं.* (फा.) दे. तरबूज।

तर्राना *पुं.* (फा.) दे. तराना।

तर्ष *पुं.* (तत्.) 1. तृष्णा 2. अभिलाषा 3. समुद्र 4. सूर्य 5. नौका।

तर्षण *पुं.* (तत्.) 1. अभिलाषा, इच्छा 2. प्यासा, तृषा।

तर्षित *वि.* (तत्.) 1. प्यास 2. इच्छुक।

तर्षुल *वि.* (तत्.) तर्षित।

तर्स *पुं.* (तद्.) तरस।

तर्हदारी *स्त्री.* (अर.) 1. छबीलापन, बाँकापन 2. हाव-भाव 3. सुंदरता, हुस्न।

तल *पुं.* (तत्.) 1. निचला भाग 2. पेंदा 3. सतह 4. जल के नीचे की भूमि मुहा. तल करना- छिपा लेना 5. पैर का तलवा 6. थप्पड़ 7. जंगल 8. कारण 9. आधार, सहारा 10. ताल, तालाब।

तलक *पुं.* (तत्.) 1. पोखरा, ताल 2. मिट्टी का बर्तन (अर.) 3. तक *वि.* (अर.) नष्ट, बरबाद।

तलकीन *स्त्री.* (अर.) 1. शिक्षा, उपदेश 2. दीक्षा।

तलख *वि.* (फा.) 1. कड़ुआ, अप्रिय 2. उग्र, नागवार।

तलखी *स्त्री.* (फा.) कड़ुआहट, कटुता, कड़ुवापन।

तलघी *स्त्री.* (फा.) 1. खराबी, बरबादी, तबाही 2. हानि।

तलछट *स्त्री.* (देश.) किसी द्रव पदार्थ के नीचे बैठी हुई मैल।

तलना *स.क्रि.* (देश.) घी या तेल में पकाना।

तलफना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. छटपटाना 2. व्याकुल होना, बेचैन होना।

तलफाना *स.क्रि.* (अनु.) तड़पाना।

तलफ्फुज *पुं.* (अर.) उच्चारण।

तलब *स्त्री.* (अर.) 1. खोज, तलाश 2. चाह 3. आवश्यकता, माँग मुहा. तलब करना- माँगना-मँगाना, बुला भेजना 4. बुलावा 5. तनख्वाह, वेतन।

तलबगार *वि.* (फा.) 1. माँगने वाला 2.चाहने वाला।

तलबनामा *पुं.* (अर.) अदालत का समन।

तलबाना *पुं.* (फा.) 1. गवाहों को अदालत में तलब किए जाने के लिए जमा किया जाने वाला खर्च 2. तावान, मालगुजारी समय पर न जमा करने पर।

तलबी *स्त्री.* (अर.) 1. माँग 2. बुलावा।

तलबेली *स्त्री.* (देश.) बेचैनी, छटपटाहट, उत्कंठा।

तलमलाना *अ.क्रि.* (देश.) तड़पना, तड़फड़ाना, बेचैन होना।

तलमलाहट *स्त्री.* (देश.) व्याकुलता, बेचैनी।

तलवकार *पुं.* (तत्.) 1. सामवेद की एक शाखा 2. एक उपनिषद् का नाम।

तलवा *पुं.* (तद्.) पैर के नीचे का भाग मुहा. तलवा खुजलाना- तलवे में खुजली होना जिसे यात्रा का शकुन माना जाता है; तलवे चाटना- बहुत

खुशामद करना; तलवे धो-धोकर पीना- खूब आवभगत करना; तलवे सहलाना- बहुत खुशामद करना।

तलवार *स्त्री.* (तद्.) खड़ग, कृपाण मुहा. तलवार के घाट उतारना- मारा जाना, वीरगति प्रयो. हल्दी घाटी के युद्ध में हजारों सैनिक तलवार के घाट उतार दिए गए; तलवार खींचना- म्यान से तलवार बाहर निकालना प्रयो. जरा सी बात पर उन्होंने तलवारें खींच ली।

तलहटी *स्त्री.* (देश.)तराई, पहाड़ के नीचे की भूमि।

तलांगुलि *स्त्री.* (तत्.) पैर का अँगूठा।

तला *वि.* (तद्.) दे. तल्ला।

तलाई *स्त्री.* (देश.) छोटा ताल, तलैया।

तलाक *पुं.* (अर.) वैधानिक रीति से विवाह-विच्छेद।

तलाघी *स्त्री.* (अर.) क्षतिपूर्ण।

तलाची *स्त्री.* (तत्.) चटाई।

तलातल *पुं.* (तत्.) सात पातालों में से एक।

तलाब *पुं.* (देश.) दे. तालाब।

तलाबेली *स्त्री.* (देश.) दे. तलबेली।

तलामली *स्त्री.* (देश.) दे. तलाबेली।

तलाश *स्त्री.* (तत्.) 1. खोज, अन्वेषण 2. अनुसंधान, शोध 3. आवश्यकता, चाह।

तलाशना *स.क्रि.* (फा.) खोजना, ढूँढना।

तलाशी *स्त्री.* (फा.) किसी गुमशुदा चीज या व्यक्ति को वहाँ खोजने की क्रिया, जहाँ उसके छिपे जाने का संदेह हो।

तलिका *स्त्री.* (तत्.) 1. तोबड़ा, अधोबंधन 2. तंग।

तलित *वि.* (तत्.) तला हुआ, भुना हुआ मांस।

तलिन *वि.* (तत्.) 1. दुबला, क्षीण 2. अलग-अलग 3. थोड़ा, कम 4. साफ, शुद्ध 5. ढका हुआ, आह्लादित।

तलिम *पुं.* (तत्.) 1. छत 2. पलंग, शैया।

तली *स्त्री.* (तद्.) 1. किसी चीज के नीचे की सतह, पेंदी 2. हथेली, तलवा।

तलुन *पुं.* (तत्.) 1. तरुण, युवा पुरुष 2. वायु।

तलुनी *स्त्री.* (तत्.) युवती, तरुणी।

तले *क्रि.वि.* (तद्.) नीचे मुहा. तले-ऊपर- एक दूसरे के ऊपर प्रयो. इन पुस्तकों को तले ऊपर रख दीजिए; जी तले ऊपर होना- जी मचलना, उबकाई आना प्रयो. जब से मैंने वह मिठाई खाई है जी तले ऊपर हो रहा है ।

तलेक्षण *पुं.* (तत्.) सुअर, शूकर।

तलेटी *स्त्री.* (तत्.) 1. तलहटी 2. पेंदी।

तलैटी *स्त्री.* (तत्.) दे. तलेटी।

तलैया *स्त्री.* (देश.) छोटा ताल।

तलोदर *वि.* (तत्.) तोंदवाला।

तलोदरी *स्त्री.* (तत्.) पत्नी, भार्या।

तलोदा *स्त्री.* (तत्.) नदी।

तलौवन *पुं.* (अ.) 1. मत परिवर्तन 2. छिछोरपन।

तल्क *पुं.* (तत्.) वन।

तल्ख *वि.* (फा.) कड़ुआ, कटु।

तल्खी *स्त्री.* (फा.) कड़ुआहट, कड़ुआपन।

तल्प *पुं.* (तत्.) 1. शैया, पलंग, सेज 2. अटारी 3. पत्नी

तल्पक *पुं.* (तत्.) पलंग बिछाने वाला नौकर।

तल्पन *पुं.* (तत्.) 1. हाथी की पीठ 2. हाथी का मांस।

तल्पल *पुं.* (तत्.) हाथी की रीढ़।

तल्लज *वि.* (तत्.) श्रेष्ठ।

तल्ला *पुं.* (तद्.) 1. जूते का वह भाग जो पैर के नीचे रहता है 2. मकान की मंजिल।

तल्लिका *स्त्री.* (तत्.) ताली, कुंजी।

तल्लीन *वि.* (तत्.) उसमें मग्न, लगा हुआ।

तल्व *पुं.* (तत्.) गंध द्रव्य को रगड़कर निकलने वाली सुगंध।

तल्वकार *पुं.* (तत्.) दे. तलवकार।

तवँचुर *पुं.* (तत्.) मुर्गा।

तव *पुं.* (तत्.) तुम्हारा।

तवक्का *स्त्री.* (अर.) 1. आशा 2. विश्वास 3. भरोसा।

तवक्कुफ *पुं.* (अर.) 1. देर, विलंब 2. ढील।

तवक्षीर *पुं.* (फा.) तबाशीर, तीखुर।

तवज्जह *स्त्री.* (अर.) ध्यान, रुख।

तवज्जुह *स्त्री.* (अर.) दे. तवज्जह।

तवनी *स्त्री.* (देश.) छोटा तवा।

तवराज *पुं.* (तत्.) 1. यवासशर्करा 2. तुरंजबीन।

तवा *पुं.* (देश.) 1. रोटी सेंकने का एक बरतन 2. छाती के बचाव के लिए पहना जाने वाला 'वक्षत्राण' मुहा. तवा सिर से बाँधना- सिर पर चोट सहने के लिए तैयार होना, अपने को सुरक्षित करना।

तवाखीर *पुं.* (तद्.) वंशरोचन, बंसलोचन।

तवाजा *स्त्री.* (अर.) 1. आदर, आवभगत 2. मेहमानदारी।

तवाना *वि.* (फा.) मोटा ताजा, बली *स.क्रि.* गरम कराना *स.क्रि.* (देश.) ढक्कन को चिपकाकर बरतन का मुँह बंद करना।

तवायफ़ *स्त्री.* (अर.) वेश्या, रंडी।

तवारा *पुं.* (देश.) जलन, दाह।

तवारीख *स्त्री.* (अर.) इतिहास।

तवारीखी *वि.* (अर.) ऐतिहासिक।

तवालत *स्त्री.* (अर.) 1. लंबाई 2. विस्तार 3. झंझट, झमेला।

तविष *पुं.* (तत्.) 1. स्वर्ग 2. व्यवसाय 3. समुद्र *वि.* बलवान, शक्तिशाली 2. वृद्ध।

तविषी *स्त्री.* (तत्.) 1. पृथ्वी 2. नारी 3. शक्ति।

तवी *स्त्री.* (देश.) 1. छोटा तवा 2. कश्मीर की एक नदी।

तवीष *पुं.* (तत्.) 1. स्वर्ग 2. समुद्र 3. सोना।

तवेला *पुं.* (देश.) भट्ठी।

तफ़तीश *स्त्री.* (अर.) 1. जाँच-पड़ताल, निश्चय 2. रोग का निदान 3. लगान निर्धारित करने की प्रक्रिया।

तराद्दुद *पुं.* (अर.) 1. ज्यादती, सख्ती 2. आक्रमण।

तशरीफ *स्त्री.* (अर.) 1. आदर-सम्मान 2. बुजुर्गी 3. महत्व मुहा. तशरीफ रखना- विराजना, बैठना; तशरीफ लाना- आना, पदार्पण करना; तशरीफ़ ले जाना- प्रस्थान करना, चले जाना।

तशरीह *स्त्री.* (अर.) व्याख्या।

तश्त *पुं.* (फा.) थाली के आकार का छोटा बरतन।

तश्तरी *स्त्री.* (फा.) छोटी रकाबी।

तष्ट *वि.* (तत्.) 1. छीला हुआ 2. दला हुआ।

तष्टा *पुं.* (फा.) तांबे की एक छोटी तश्तरी।

तष्टी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की रकाबी।

तस *वि.* (तद्.) तैसा, वैसा।

तसकीन *स्त्री.* (अर.) तसल्ली, सांत्वना, ढाढस, दिलासा।

तसगीर *स्त्री.* (अर.) 1. संक्षेप करना 2. संक्षेप करने की क्रिया या भाव।

तसदीक *स्त्री.* (अर.) 1.पुष्टि, समर्थन 2. प्रमाणित करना।

तसदीह *स्त्री.* (अर.) तकलीफ, कष्ट, पीड़ा।

तसद्दुक *पुं.* (अर.) 1. कुर्बानी, बलि 2. सदका।

तसनीफ *स्त्री.* (अर.) 1. ग्रंथ रचना 2. साहित्यिक कृति।

तसबीह *स्त्री.* (अर.) जपमाला, सुमिरिनी मुहा. तसबीह फेरना- नाप स्मरण करना, माला फेरना।

तसब्बुर *पुं.* (अर.) कल्पना।

तसमा *पुं.* (फा.) 1. जूते का फीता 2. चमड़े का कोड़ा मुहा. तसमा खींचना- गले में फंदा डालकर मारना, गला घोटना।

तसर *पुं.* (तत्.) 1. जुलाहों की ढरकी 2. एक प्रकार का रेशम।

तसल *स्त्री.* (फा.) छोटा तसला।

तसला *पुं.* (फा.) कटोरे के आकार का गहरा बरतन।

तसलीम *स्त्री.* (अर.) 1. सलाम, प्रणाम 2. स्वीकृति, हामी।

तसल्ली *स्त्री.* (अर.) 1. ढाढस, सांत्वना 2. धैर्य, धीरज 3. सब्र मुहा. तसल्ली दिलाना- सांत्वना देना, धीरज दिलाना।

तसवीर *स्त्री.* (अर.) चित्र मुहा. तसवीर उतारना- चित्र खींचना; तसवीर निकालना- चित्र बनाना।

तसवीस *स्त्री.* (अर.) 1. सोच, फिक्र, चिंता 2. भय, डर 3. व्याकुलता, घबराहट।

तसू *पुं.* (तद्.) इमारती काम का एक माप।

तस्कर *पुं.* (तत्.) 1. चोर 2. स्मगलर (बिना चुंगी/सीमाकर अदा किए दो प्रदेशों/देशों में चोरी से माल ले जाने वाला)।

तस्करी *स्त्री.* (तत्.) 1. चोरी का काम 2. चोरी से सीमा पार माल ले जाने की क्रिया *वि.* तस्कर संबंधी, चोरी से लाया हुआ माल।

तस्थु *वि.* (तत्.) स्थावर, अचल।

तस्नीफ *स्त्री.* (अर.) पुस्तक लेखन, ग्रंथ रचना।

तस्फिया *पुं.* (तत्.) 1. समझौता 2. फैसला, निर्णय 3. परिष्कार।

तस्मात *अव्य.* (तत्.) इसलिए।

तस्य *पुं.* (तत्.) उसका।

तस्वीर *स्त्री.* (अर.) 1. चित्र, प्रतिकृति 2. प्रतिमा, मूर्ति।

तहँ *क्रि.वि.* (देश.) दे. तहाँ।

तहँवाँ *क्रि.वि.* (देश.) दे. तहाँ।

तह *स्त्री.* (फा.) 1. परत मुहा. तह जमाना- परत पर पर परत बिठाना, भोजन पर भोजन किए जाना; तह जोड़ना- झगड़ा निपटाना 2. तल, पेंदा मुहा. तह का सच्चा- अपने छत्ते को न भूलने वाला कबूतर; तह की बात- रहस्य की बात; तह तक पहुँचना- असली बात समझ जाना।

तहकीक *स्त्री.* (अर.) 1. सच्चाई 2. जाँच पड़ताल, पूछताछ।

तहकीकात *स्त्री.* (अर.) जाँच पड़ताल मुहा. तहकीकात आना- किसी मामले में जाँच पड़ताल के लिए पुलिस का आना।

तहखाना *पुं.* (फा.) जमीन के नीचे बना कमरा या घर।

तहज़ीबयाफ़्ता *वि.* (अर.) सभ्य, शिष्ट।

तहजीब *स्त्री.* (अर.) 1. सभ्यता 2. शिष्टता।

तहदरज *वि.* (फा.) बिल्कुल नया।

तहना *अ.क्रि.* (देश.) 1. तपना 2. नाराज होना 3. जिसकी तह न खोली गई हो।

तहम्मुल *पुं.* (अर.) 1. सहनशीलता, सहिष्णुता 2. बर्दाश्त 3. धैर्य, सब्र।

तहरी *स्त्री.* (देश.) 1. एक प्रकार की खिचड़ी जो दाल, मटर और चावल से बनाई जाती है 2. कालीन बुनने वालों की दरकी।

तहरीक *स्त्री.* (अर.) 1. गति 2. उत्तेजन 3. कसाहट।

तहरीर *स्त्री.* (अर.) 1. लिखावट, लिखने का ढंग 2. 2. लिखित प्रमाण 3. लिखाई का मेहनताना/पारिश्रमिक।

तहरीरी *वि.* (फा.) लिखित, लेखबद्ध, लिपिबद्ध।

तहलका *पुं.* (अर.) 1. खलबली, हलचल 2. कोहराम।

तहलली *स्त्री.* (अर.) 1. पाचन, हाजमा 2. घुलना, मिलना।

तहवील *स्त्री.* (अर.) 1. अमानत, धरोहर 2. किसी के पास जमा रकम, रोकड़।

तहवीलदार *पुं.* (अर.) खजानची, रोकड़िया।

तहसनहस *वि.* (देश.) बरबाद, नष्ट।

तहसील *स्त्री.* (अर.) 1. वसूली, उगाही 2. मालगुजारी वसूल करने की क्रिया 3. वह दफ्तर

या कचहरी जहाँ सरकारी मालगुजारी वसूल की जाती है 4. तहसीलदार की कचहरी।

तहसीलदार *पुं.* (अर.) 1. तहसील का मुख्य अधिकारी 2. सरकारी मालगुजारी वसूल करने वाला।

तहसीलदारी *स्त्री.* (अर.) 1. तहसीलदार का काम 2. मालगुजारी वसूल करने का काम।

तहसीलना *स.क्रि.* (अर.) उगाहना, वसूल करना।

तहाँ *क्रि.वि.* (तद्.) वहाँ, उस स्थान पर प्रयो. जहाँ का तहाँ (वहीं का वहीं)।

तहाना *स.क्रि.* (देश.) तह करना, लपेटना।

तहाशा *पुं.* (अर.) 1. डर, भय 2. परवाह प्रयो. बेतहाशा।

तहियाँ *क्रि.वि.* (तद्.) तब, उस समय।

तहियाना *स.क्रि.* (देश.) तह लगाकर लपेटना।

तहीं *क्रि.वि.* (देश.) वहीं, उसी जगह।

तहू *क्रि.वि.* (देश.) तब भी।

तांडव *पुं.* (तत्.) 1. पुरुषों का नृत्य 2. शिव का उग्र नृत्य 3. शिव का नाम।

तांडवी *स्त्री.* (तत्.) संगीत के चौदह तालों में से एक।

तांडि *पुं.* (तत्.) नृत्य शास्त्र।

तांड्य *पुं.* (तत्.) सामवेद का एक ब्राह्मण ग्रंथ।

तांत *वि.* (तत्.) 1. थका हुआ 2. मुरझाया हुआ।

तांतव *वि.* (तत्.) 1. बुना हुआ 2. जाल 3. बुनकर तैयार किया गया कपड़ा।

तांतुवाय्य *पुं.* (तत्.) बुनकर का पुत्र।

तांतुवायि *स्त्री.* (तत्.) बुनकर का पुत्र।

तांत्रिक *पुं.* (तत्.) 1. तंत्रशास्त्र का ज्ञाता 2. तंत्र का प्रयोग करने वाला *वि.* तंत्र संबंधी।

तांबई *वि.* (देश.) तांबे के रंग का।

तांबूल *पुं.* (तत्.) 1. पान 2. पान का बीड़ा 3. सुपारी।

तांबूलपत्र *पुं.* (तत्.) पान का पत्ता।

तांबूलराग *पुं.* (तत्.) 1. पान की पीक 2. मसूर।

तांबूलिक *पुं.* (तत्.) पान विक्रेता, तमोली।

तांबूली *स्त्री.* (तत्.) पान की बेल।

ताँई *पुं.* (देश.) 1. तक 2. पास 3. पास के लिए।

ताँगा *पुं.* (देश.) दे. टाँगा।

ताँत *स्त्री.* (तद्.) 1. भेड़, बकरी आदि के चमड़े से बनाया गया धागा 2. धनुष की डोरी 3. सारंगी का तार मुहा. ताँत सा- बहुत दुबला-पतला।

ताँतड़ी *स्त्री.* (देश.) ताँत मुहा. ताँतड़ी सा- ताँत सा दुबला पतला।

ताँतवा *पुं.* (तत्.) आँत उतरने का रोग।

ताँता *पुं.* (देश.) 1. कतार 2. सिलसिला प्रयो. आने जाने वालों का ताँता लगा था मुहा. ताँता बाँधना- पंक्ति में खड़ा होना; ताँता लगना- तार न टूटना।

ताँतिया *वि.* (देश.) तांत जैसा दुबला पतला 2. तंतुवादक।

ताँती *स्त्री.* (देश.) तंतु *पुं.* जुलाहा।

ताँबा *पुं.* (देश.) लाल रंग की एक धातु *पुं.* (अर.) शिकारी पक्षियों के आगे डाला जाने वाला मांस का टुकड़ा।

ताँबी *स्त्री.* (देश.) 1. ताँबे का एक छोटा बरतन 2. ताँबे की करछी।

ताँवर *स्त्री.* (देश.) 1. जूड़ी, बुखार 2. बेहोशी, चक्कर।

ता *प्रत्यय.* (तत्.) भाववाचक प्रत्यय जो विशेषण से संज्ञा बनाने में प्रयोग किया जाता है।

ताई *स्त्री.* (देश.) 1. हल्का बुखार, हरारत 2. जूड़ी।

ताईद *स्त्री.* (अर.) 1. पक्षपात, तरफदारी 2. समर्थन *पुं.* (अर.) नायब, मुंशी।

ताऊ *पुं.* (तद्.) पिता के बड़े भाई मुहा. बछिया के ताऊ- अत्यंत मूर्ख व्यक्ति।

ताऊन *पुं.* (अर.) प्लेग की बीमारी।

ताऊस *पुं.* (अर.) मोर प्रयो. तख्त-ए-ताऊस-शाहजहाँ का बहुमूल्य रत्नों से जड़ा हुआ राज सिंहासन जो मोर के आकार का था।

ताऊसी *वि.* (अर.) मोर की तरह का, मोर के रंग का गहरा बैंगनी।

ताक *स्त्री.* (देश.) ताकने की क्रिया प्रयो. ताक-झांक-छिपकर ताकने की क्रिया मुहा. ताक में रहना-निगाह में रखना प्रयो. आपको अच्छे मौके की ताक में रहना चाहिए; ताक रखना- निगाह रखना; ताक बाँधना- टकटकी लगाना; ताक लगाना- मौका देखते रहना 2. खोज, तलाश प्रयो. किस ताक में हैं साहब! क्या किसी की जेब काटनी है *पुं.* (अर.) आला, ताखा मुहा. ताक पर रखना- उपयोग न करना प्रयो. आजकल नियम कानून तो ताक पर रखकर काम किए जाते हैं।

ताकत *स्त्री.* (अर.) बल, शक्ति।

ताकना *स.क्रि.* (देश.) 1. देखना 2. घात में रहना 3. ताड़ लेना।

ताकरी *स्त्री* (देश.) नागरी से मिलती जुलती एक लिपि का नाम।

ताका *वि.* (देश.) तिरछा देखने वाला, ताकने वाला।

ताकि *अव्य.* (फा.) जिससे, इसलिए कि।

ताकीद *स्त्री.* (अर.) किसी काम के लिए बार बार चेताने की क्रिया।

ताक्षण्य *पुं.* (तत्.) बढ़ई का लड़का।

ताखड़ी *स्त्री.* (देश.) तराज़ू, काँटा।

ताखा *पुं.* (देश.) दे. ताक।

ताखी *स्त्री.* (अर.) 1. जिसकी दोनों आँखे एक जैसी जैसी हों 2. साधुओं के पहनने की एक टोपी।

ताग *पुं.* (देश.) दे. तागा।

तागड़ी *स्त्री.* (देश.) करधनी, कमर में पहनने का एक गहना।

तागना *स.क्रि.* (देश.) 1. सुई में तागा डालना 2. रजाई आदि में मोटी सिलाई करना।

तागपाट *पुं.* (देश.) एक प्रकार का गहना जिसे वर का बड़ा भाई वधू को पहनाता है मुहा. तागपाट डालना- वर के बड़े भाई का वधू को तागपाट पहनाना।

तागा *पुं.* (तद्.) सूत, डोरा।

तागीर *पुं.* (अर.) दे. तगीर।

ताज *पुं.* (अर.) 1. मुकुट, राजमुकुट 2. कलगी 3. शिक्षा 4. ताजमहल का संक्षिप्त नाम।

ताजक *पुं.* (फा.) 1. एक ईरानी जाति 2. ताजाकिस्तान, ताजाकिस्तान के निवासी 3. यावनाचार्य कृत ज्योतिष का एक ग्रंथ।

ताजगी *स्त्री.* (फा.) 1. ताजा होने का भाव, ताजापन, हरापन 2. स्वस्थता।

ताजन *पुं.* (फा.) 1. कोड़ा, चाबुक 2. दंड, सजा।

ताजबीबी *स्त्री.* (अर.+फा.) शाहजहाँ की बीबी का नाम, जिसकी याद में ताजमहल बनाया गया था।

ताजमहल *पुं.* (अर.) बादशाह शाहजहां द्वारा अपनी अपनी बीबी मुमताज महल की याद में बनवाया सुप्रसिद्ध मकबरा।

ताजा *वि.* (फा.) 1. हरा भरा, जो सूखा या कुम्हलाया न हो 2. पेड़ या पौधे से तत्काल तोड़ा हुआ प्रयो. मोटा-ताजा- हृष्ट पृष्ट, तरो-ताजा, टटका, तुरंत का मुहा. हुक्का ताजा करना- हुक्के का पानी बदलना; ताजा करना- नए सिरे से उठाना प्रयो. दबी हुई बात को अब ताजा करने से क्या लाभ 2. याद दिलाना प्रयो. आपने भूली हुई यादें फिर से ताजा कर दीं।

ताजियाना *पुं.* (फा.) चाबुक, कोड़ा।

ताजी *वि.* (फा.) अरबी, अरब का *पुं.* (फा.) अरबी घोड़ा *स्त्री.* (फा.) अरबी भाषा।

ताजीम *स्त्री.* (अर.) बड़ों के प्रति आदर भाव।

ताजीमी *वि.* (अर.) प्रतिष्ठित।

ताजीरात *पुं.* (अर.) दंड विधि, दंड संहिता।

ताज्जुब *पुं.* (अर.) दे. तअज्जुब।

ताटंक *पुं.* (तत्.) कान का एक गहना।

ताटस्थ्य *पुं.* (तत्.)तटस्थता, उदासीनता, निरपेक्षता।

ताड़ *पुं.* (तद्.) 1. शब्द, ध्वनि 2. आघात 3. एक वृक्ष जिससे ताड़ी तथा नीरा प्राप्त किया जाता है।

ताड़क *वि.* (तद्.) ताड़ने या आघात करने वाला *पुं.* वधिक, जल्लाद।

ताड़का *पुं.* (तत्.) एक राक्षसी का नाम, जिसे राम ने मारा था।

ताड़काफल *पुं.* (तत्.) बड़ी इलाचयी।

ताड़कायन *पुं.* (तत्.) विश्वामित्र के पुत्र का नाम।

ताड़कारि *पुं.* (तत्.) रामचंद्र।

ताड़केय *पुं.* (तत्.) ताडक़ा का पुत्र, मारीच।

ताड़न *पुं.* (तत्.) 1. मार 2. फटकार 3. डाँट-डपट 4. अनुशासन।

ताड़ना *स.क्रि.* (तत्.) 1. भाँप लेना, जान लेना 2. मारना 3. सजा देना *स्त्री.* (तद्.) मार, प्रहार।

ताड़नी *स्त्री.* (तत्.) कोड़ा, चाबुक।

ताड़नीय *वि.* (तत्.) दंडनीय।

ताड़ल *वि.* (देश.) उतावला, अधीर।

ताड़ि *स्त्री.* (तत्.) दे. ताड़ी।

ताड़ित *वि.* (तत्.) 1. दंडित 2. मार खाया हुआ।

ताड़ी *स्त्री.* (तत्.) 1. छोटे ताड़ का पेड़ 2. एक आभूषण 3. ताड़ के वृक्ष से निकलने वाला मादक रस 4. संतों की ध्यानावस्था।

ताड़ुल *वि.* (तत्.) मारने-पीटने वाला।

ताड़ू *वि.* (देश.) ताड़ने वाला, भाँपने वाला।

ताड्य *वि.* (तत्.) 1. ताड़ने योग्य 2. दंड के लायक 3. डाँटने-डपटने योग्य।

ताड्यमान *वि.* (तत्.) 1. जिस पर मार पड़ती हो 2. लकड़ी से बजाए जाने वाला एक ढोल।

तात *पुं.* (तत्.) 1. पिता 2. गुरु 3. छोटे भाई या मित्र के लिए संबोधन।

तातन *पुं.* (तत्.) खंजन पक्षी।

तातल *पुं.* (तत्.) 1. लोहे का काँटा 2. ताप 3. पक्कापन 4. एक रोग *वि.* पितृतुल्य संबंधी।

ताता *वि.* (तद्.) 1. गरम 2. दुखदायी, कष्टदायक *स्त्री.* ताती।

ताताथेई *स्त्री.* (अनु.) 1. नृत्य का एक बोल 2. नृत्य।

तातार *पुं.* (फा.) 1. मध्य एशिया का एक देश 2. एक जाति।

तातारी *वि.* (फा.) 1. तातार देश से संबंधित 2. तातार देश का निवासी।

ताति *पुं.* (तत्.) लड़का, पुत्र।

तातील *स्त्री.* (अर.) छुट्टी का दिन, अवकाश मुहा. तातील मनाना- छुट्टी मनाना, मौज मस्ती करना।

तात्कालिक *वि.* (तत्.) 1. तत्काल का, तुरंत का 2. उसी समय का 3. उस समय का।

तात्पर्य *पुं.* (तत्.) 1. अभिप्राय, 2. अर्थ, मतलब प्रयो. मेरा तात्पर्य शायद आप समझ नहीं पाए।

तात्पर्य वृत्ति *स्त्री.* (तत्.) वाक्य के भिन्न पदों के के वाच्यार्थ को एक में समन्वित करने वाली वृत्ति।

तात्पर्यार्थ *पुं.* (तत्.) वाक्यार्थ से भिन्न अर्थ जो वक्ता या लेखक का होता है।

तात्विक *वि.* (तत्.) 1. तत्व संबंधी 2. वास्तविक।

ताथेई *स्त्री.* (अनु.) दे. ताताथेई।

तादर्थ्य *पुं.* (तत्.) 1. उद्देश्य की एकरूपता 2. उद्देश्य 3. अर्थ की समानता।

तादात्म्य *पुं.* (तत्.) अभिन्नता, दो वस्तुओं का मिलकर अभिन्न होने का भाव।

तादात्विक *पुं.* (तत्.) जिसका खजाना खाली रहता हो।

तादाद *स्त्री.* (अर.) संख्या, कुल संख्या।

तादृश *वि.* (तत्.) उसके समान, वैसा।

ताधा *स्त्री.* (तत्.) ताता थेई, नृत्य का एक बोल।

तान *स्त्री.* (तत्.) तानने का भाव या क्रिया, खींच, फैलाव *पुं.* 1. लाभ का विस्तार 2. आलस्य 3. ज्ञान का विषय मुहा. तान उड़ाना- गीत गाना; तान तोड़ना- लय को खींचकर झटके के साथ विराम देना।

तानना *स.क्रि.* (तत्.) 1. खींचना, फैलाना 2. खिंचाव पैदा करना प्रयो. वह चादर तान कर सो गया 3. किसी को मारने के लिए हाथ या हथियार उठाना प्रयो. लुटेरों ने बंदूकें तान ली मुहा. तानकर- बलपूर्वक प्रयो. उसने तानकर तमाचा मारा; तानकर सोना- आराम से सोना, निश्चिंत होकर सोना।

तानपूरा *पुं.* (तत्.+देश.) सितार के आकार का एक बाजा।

तानबाज *पुं.* (तत्.+फा.) संगीताचार्य।

तानबान *पुं.* (देश.) दे. तानाबाना।

तानव *पुं.* (तत्.) 1. तनुता, कृशता 2. लघुता, छोटाई।

तानसेन *पुं.* (तद्.) अकबर के दरबार का एक प्रसिद्ध गायक।

ताना *पुं.* (देश.) करघे में लंबाई के बल फैलाया गया सूत।

तानाबाना *पुं.* (देश.) बुनाई में लंबाई और चौड़ाई के बल फैलाया हुआ सूत।

तानारीरी *स्त्री.* (देश.) राग, आलस्य।

तानाशाह *पुं.* (देश.+फा.) 1. स्वेच्छाचारी 2. निरंकुश शासक 3. एक बादशाह का उपनाम।

तानाशाही *स्त्री.* (देश.) निरंकुशता, स्वेच्छाचारिता, मनमानी।

तानी *स्त्री.* (देश.) कपड़े की बुनावट में लंबाई के बल वाला सूत।

तानूर *पुं.* (तत्.) पानी का भँवर, वायु का बवंडर।

तान्व *पुं.* (तत्.) 1. औरस पुत्र 2. एक ऋषि का नाम जो तनु के पुत्र थे।

ताप *पुं.* (तत्.) 1. उष्णता, गर्मी, गर्माहट 2. ज्वर, बुखार 3. मानसिक व्यथा।

तापक *पुं.* (तत्.) 1. ताप पैदा करने वाला 2. रजोगुण 3. ज्वर 4. ताप या गर्मी उत्पन्न करने वाला यंत्र, हीटर।

तापक्रम *पुं.* (तत्.) शरीर या वायुमंडल की उष्णता का उतार-चढ़ाव।

तापती *स्त्री.* (तत्.) सूर्य की कन्या, एक नदी का नाम।

तापत्य *वि.* (तत्.) तापती से संबंधित।

तापद *वि.* (तत्.) कष्टदायक।

तापन *पुं.* (तत्.) 1. ताप देने की क्रिया 2. सूर्य 3. कामदेव का एक बाण 4. आक का पेड़ *वि.* गरमी देने वाला, कष्ट दायक।

तापना *अ.क्रि.* (तद्.) आग या ताप से शरीर को गरमाना प्रयो. आग तापना, धूप तापना *स.क्रि.* (तद्) 1. फूँकना 2. नष्ट करना, बरबाद करना।

तापनीय *पुं.* (तत्.) 1 एक उपनिषद् 2. एक प्राचीन तौल जो निष्क के बराबर होता था।

तापमान *पुं.* (तत्.) शरीर या वायुमंडल की ऊष्मा।

तापमान यंत्र *पुं.* (तत्.) तापमान मापने का यंत्र, थर्मामीटर।

तापमापी *पुं.* (तत्.) ताप मापने वाला यंत्र, थर्मामीटर।

ताप व्यंजन *पुं.* (तत्.) कौटिल्य के समय में ऐसे गुप्तचर जो तपस्वियों के भेष में रहते थे।

तापश्चित *पुं.* (तत्.) एक यज्ञ का नाम।

तापस *पुं.* (तत्.) 1. तपस्वी, तप करने वाला 2. बगुला 3. तेजपत्ता (वि.) तपस्या संबंधी।

तापसी *स्त्री.* (तत्.) 1. तपस्या करने वाली 2. तपस्वी की स्त्री।

तापसेक्षु *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की ईख।

तापसेष्टा *स्त्री.* (तत्.) मुनक्का, दाख।

तापस्य *पुं.* (तत्.) 1. तापस धर्म, तपस्या 2. वैराग्य, संन्यास।

तापावरोधक *पुं.* (तत्.) ताप का प्रभाव रोकने वाला।

तापिंज *पुं.* (तत्.) 1. सोनामक्खी 2. तमाल।

तापिच्छ *पुं.* (तत्.) तमाल का पेड़।

तापित *पुं.* (तत्.) 1. तापयुक्त 2. पीड़ित, दुखित।

तापितापिंछ *पुं.* (तत्.) दे. तापिंज।

तापिन *वि.* (तत्.) ताप देने वाला।

तापी *वि.* (तद्.) ताप देने वाला *पुं.* (तत्.) बुद्ध देव *स्त्री.* (तत्) 1. सूर्य की एक कन्या 2. तापती नदी 3. यमुना नदी।

तापुर *पुं.* (तद्.) महाबोधिसत्व का दूसरा नाम।

ताप्ती *स्त्री.* (देश.) दे. तापती।

ताफता *पुं.* (फा.) दे. ताफ्ता।

ताफ्ता *पुं.* (फा.) 1. एक प्रकार का चमकदार रेशमी कपड़ा 2. धूप-छाँह, रेशमी कपड़ा।

ताब *स्त्री.* (फा.) 1. ताप, गरमी 2. चमक-आभा 3. हिम्मत, सामर्थ्य 4. धैर्य।

ताबड़तोड़ *क्रि.वि.* (अनु.) लगातार, बराबर।

ताबीज *पुं.* (अर.) दे. तावीज।

ताबीर *स्त्री.* (अर.) स्वप्न का शुभ-अशुभ वर्णन।

ताबूत *पुं.* (अर.) मुर्दा ले जाने का संदूक।

ताबे *वि.* (अर.) 1. वशीभूत, मातहत, अधीन 2. हुक्म का पाबंद।

ताबेदार *वि.* (तत्.) आज्ञाकारी, हुक्म का पाबंद। पुं. नौकर, सेवक, अनुचर।

ताबेदारी *स्त्री.* (फा.) नौकरी, सेवा, टहल।

ताम *पुं.* (तत्.) 1. दोष, विकार, त्रुटि 2. अंधेरा 3. क्रोध (वि.) भयानक, व्याकुल।

तामजान *पुं.* (देश.) पालकी, एक तरह की खुली पालकी।

तामझाम *पुं.* (देश.) शान शौकत, धूमधाम।

तामड़ा *वि.* (तद्.) तांबे के रंग का प्रयो. तामड़ा रंग, तामड़ा कबूतर।

तामदान *पुं.* (देश.) दे. तामजान।

तामर *पुं.* (तत्.) 1. पानी 2. घी।

तामरस *पुं.* (तत्.) 1. कमल 2. ताँबा 3. सोना 4. धतूरा।

तामरसी *स्त्री.* (तत्.) वह तालाब जिसमें कमल खिलते हों।

तामलूक *पुं.* (तद्.) पश्चिम बंगाल के अंतर्गत एक स्थान जिसका प्राचीन नाम ताम्रलिप्त था।

तामलेट *पुं.* (देश.) एनेमल किया हुआ, बरतन।

तामलोट *पुं.* (देश.) दे. तामलेट।

तामस *वि.* (तत्.) 1. तमोगुण युक्त 2. कुटिल 3. पानी *पुं.* (तत्.) 1. साँप 2. उल्लू 3. खल 4. क्रोध, गुस्सा 5. अंधकार, अंधेरा।

तामसिक *वि.* (तत्.) 1. तमोगुण वाला 2. तमस से उत्पन्न।

तामसी *वि.* (तत्.)तमी गुण वाली, तामसी प्रकृति।

तामिल *स्त्री.* (देश.) द्राविड़ जाति की एक शाखा 2. 2. तामिल लोगों की भाषा।

तामिल लिपि *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की लिपि जिसमें तमिल भाषा लिखी जाती है।

तामिस्र *पुं.* (तत्.) 1. एक नरक का नाम 2. क्रोध 3. द्वेष 4. घृणा।

तामीर *स्त्री.* (अर.) 1. निर्माण, रचना 2. मकान 3. 3. इमारत का निर्माण 4. वास्तुक्रिया।

तामीरात विभाग *वि.* (अर.) लोक निर्माण विभाग।

तामील *स्त्री* (अर.) 1. पालन प्रयो. तामीले हुक्म-आज्ञा पालन 2. किसी सम्मन, वारंट आदि का निष्पादन 3. असमंजस।

ताम्मुल *पुं.* (अर.) सोच विचार, संकोच।

ताम्र *पुं.* (तत्.) 1. ताँबा 2. एक प्रकार का कोढ़ वि. 1. ताँबे का बना हुआ 2. ताँबे के रंग का।

ताम्रक *पुं.* (तत्.) ताँबा।

ताम्रकार *पुं.* (तत्.) तमेरा, ताँबे का बरतन बनाने वाला।

ताम्रकूट *पुं.* (तत्.) तंबाकू का पौधा।

ताम्रकृमि *पुं.* (तत्.) बीर बहूटी नामक कीड़ा।

ताम्र धातु *स्त्री.* (तत्.) 1. ताँबा 2. लाल खड़िया।

ताम्र मृग *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का लाल हिरण।

ताम्र युग *पुं.* (तत्.) इतिहास का वह काल जब मानव ताँबे के औजार, बरतन आदि प्रयोग में लाता था।

ताम्र योग *पुं.* (तत्.) एक रासायनिक औषधि।

ताम्रलिप्त *पुं.* (तत्.) पश्चिम बंगाल में मेदिनीपुर में तमलूक नामक स्थान का प्राचीन नाम।

ताम्र वर्ण *पुं.* (तत्.) 1. ताँबे के रंग का 2. रक्त वर्ण।

ताम्रशासन *पुं.* (तत्.) ताम्र पत्र पर खुदा हुआ दानपत्र।

ताम्रसार *पुं.* (तत्.) लाल चंदन का वृक्ष।

ताम्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. सिंहनी पीपल 2. दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम।

ताम्राक्ष *पुं.* (तत्.) 1. कोयल 2. कौआ 3. लाल चंदन। *वि.* लाल आँखों वाला।

ताम्रार्ध *पुं.* (तत्.) काँसा।

ताम्राश्मा *पुं.* (तत्.) पद्मराग मणि।

ताम्रिक *पुं.* (तत्.) दे. ताम्रकार *वि.* ताँबे का, ताँबे का बना हुआ।

ताम्रिका *स्त्री.* (तत्.) गुंजा, घुँघची।

ताम्रिभा *स्त्री.* (तत्.) ललाई, लालिमा।

ताम्री *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार का बाजा, जलघड़ी का का कटोरा।

ताम्रेश्वर *पुं.* (तत्.) ताँबे की तारक, ताम्र भस्म।

तायफा *स्त्री.* (अर.) 1. वेश्या, रंडी 2. नाचने गाने वाली वेश्याओं और उसके समाजियों की मंडली।

तार *पुं.* (तत्.) 1. चाँदी 2. महादेव 3. आबदार मोती 4. धातु-तंतु तारकाश 5. बिजली को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने के लिए धातु तंतु को तार कहते है 6. टेलीग्राफ प्रयो. तार घर, सूत, धागा, तंतु मुहा. तार-तार करना- नोचकर सूत सूत अलग करना प्रयो. कपड़ा तार तार हो गया-धज्जियाँ उड़ाना; तार टूटना- परंपरा खंडित हो जाना; तार बँधना- सिलसिला जारी रहना; तार बैठाना- ब्यौंत करना; तार जमाना- मुक्ति करना *वि.* (तत्.) स्वच्छ, निर्मल।

तारक *पुं.* (तत्.) 1. नक्षत्र, तारा 2. आँख 3. आँख की पुतली 3. कर्णधार 4. भगवान राम का षडक्षर मंत्र, जो गुरु शिष्य के कान में कहता है 5. मुद्रण में तारे का चिह्न 6. अंत्येष्टि करने वाला महाब्राह्मण।

तारका *स्त्री.* (तत्.) 1. तारा, नक्षत्र 2. आँख की पुतली *स्त्री.* दे. ताड़का।

तारकाक्ष *पुं.* (तत्.) तारकासुर का बड़ा लडका।

तारकामय *पुं.* (तत्.) शिव, महादेव।

तारकायण *पुं.* (तत्.) विश्वामित्र का पुत्र।

तारकारि *पुं.* (तत्.) कार्तिकेय।

तारकासुर *पुं.* (तत्.) एक असुर का नाम, जिसे कार्तिकेय ने मारा था।

तारकिणी *वि.* (तत्.) तारों से भरी हुई रात।

तारकित *वि.* (तत्.) तारों से भरा हुआ।

तारकूट *पुं.* (तत्.) चाँदी और पीतल के योग से बनी एक धातु।

तारकेश्वर *पुं.* (तत्.) 1. शिव 2. एक रसौषध।

तारकोल *पुं.* (देश.) कोलतार, अलकतरा।

तारख *पुं.* (तद्.) गरुड़।

तारघर *पुं.* (देश.) तार भेजने का स्थान।

तारघाट *पुं.* (देश.) कार्य सिद्धि का योग, व्यवस्था, आयोजन।

तारण *पुं.* (तत्.) 1. तारने या उद्धार करने की क्रिया 2. तारने वाला 3. विष्णु 4. शिव 5. नौका *वि.* तारने वाला, उद्धार करने वाला।

तारणी *स्त्री.* (तत्.) 1. नौका 2. कश्यप की एक पत्नी।

तारतम *पुं.* (तद्.) दे. तारतम्य।

तारतम्य *पुं.* (तत्.) सिलसिला, तरतीब दो वस्तुओं के परस्पर घट बढ़ होने का भाव।

तार-तार *वि.* (देश.) टुकड़े-टुकड़े, उधड़ा हुआ, घटा हुआ प्रयो. तार-तार करना- धज्जियाँ उड़ाना।

तारत्व *पुं.* (तत्.) सुर के तीखेपन का बोध कराने वाला ध्वनि का गुण।

तारन *पुं.* (तद्.) दे. तारण।

तारना *स.क्रि.* (तद्.) 1. पार लगाना, उद्धार करना 2. क्लेश आदि से छुटकारा दिलाना, मुक्त करना 3. तैराना।

तारनु *सर्व.* (तद्.) उसका।

तारपीन *पुं.* (अं.) चीड़ के पेड़ से निकाला हुआ तेल।

तारयिता *पुं.* (तत्.) तारने वाला, उद्धार कर्ता।

तारल *वि.* (तत्.) 1. चंचल, अस्थिर 2. लंपट।

तारल्य *पुं.* (तत्.) 1. तरल होने का भाव 2. द्रवत्व, तरलता।

तारांकित *वि.* (तत्.) जिसके पास सितारे का चिह्न चिह्न लगा हो।

तारा *पुं.* (तत्.) 1. नक्षत्र, सितारा 2. आँख की पुतली 3. भाग्य 4. तंत्र में कही गई दस महाविद्याओं में में एक 5. बृहस्पति की पत्नी का नाम 6. बालि की पत्नी का नाम 7. राजा हरिश्चंद्र की पत्नी का का नाम।

ताराकुमार *पुं.* (तत्.) 1. तारका का पुत्र 2. चंद्रमा का पुत्र, बुध 3. अंगद जिसे तारा ने जन्म दिया था।

ताराकूट *पुं.* (तत्.) ज्योतिष में विवाह के शुभाशुभ जानने के लिए विचारा जाने वाला कूट।

ताराक्ष *पुं.* (तत्.) तारकाक्ष दैत्य।

ताराग्रह *पुं.* (तत्.) मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि पाँच ग्रहों का समूह।

ताराचक्र *पुं.* (तत्.) तंत्र में एक चक्र जिसमें दीक्षा के शुभाशुभ फल पर विचार किया जाता है।

तारात्मक नक्षत्र *पुं.* (तत्.) आकाश में तारों का एक समूह जिनमें अश्विनी, भरणी आदि नक्षत्र आते हैं।

ताराधिप *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. शिव 3. बृहस्पति 4. बालि तथा सुग्रीव।

ताराधीश *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

ताराभ *पुं.* (तत्.) पारा, पारद।

ताराभ्र *पुं.* (तत्.) कपूर।

तारामंडल *पुं.* (तत्.) तारों का समूह।

तारायण *पुं.* (तत्.) 1. आकाश, आसमान 2. वटवृक्ष 3. तारा समूह, तारे।

तारारि *पुं.* (तत्.) एक धातु का नाम।

तारावटी *स्त्री.* (तत्.) एक दुर्गा।

तारावली *स्त्री.* (तत्.) तारों का समूह, तारों की पंक्ति।

तारिक *पुं.* (तत्.) 1. उतराई, महसूल 2. मल्लाह, नाव का किराया।

तारिका *स्त्री.* (तद्.) 1. ताड़ी 2. नक्षत्र 3. सिनेमा की अभिनेत्री।

तारिणी *स्त्री.* (तत्.) 1. तारने वाली, उद्धार करने वाली 2. सद्गति देने वाली।

तारित *वि.* (तत्.) तारा हुआ, जिसका उद्धार किया गया हो।

तारी *स्त्री.* (देश.) 1. ताली 2. कुंजी 3. ध्यान समाधि 4. दे. ताड़ी।

तारीख *स्त्री.* (अर.) 1. तिथि 2. इतिहास मुहा. तारीख डालना- तारीख नियत करना।

तारीखी *वि.* (अर.) ऐतिहासिक।

तारीफ *स्त्री.* (अर.) 1. परिचय 2. लक्षण, परिभाषा 3. प्रशंसा 4. गुण प्रयो. यही तो आयुर्वेदिक दवाओं की तारीफ है कि इनका कोई दुष्परिणाम नहीं होता मुहा. तारीफ के पुल बाँधना- अत्यधिक प्रशंसा करना।

तारुण *वि.* (तत्.) युवा, जवान।

तारुण्य *पुं.* (तत्.) यौवन, जवानी।

तारुण्यागम *पुं.* (तत्.) जवानी चढ़ना, यौवनारंभ।

तारेय *पुं.* (तत्.) 1. तारा या बालि का पुत्र अंगद 2. बृहस्पति की पत्नी तारा का पुत्र बुध।

तारेश *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

तार्किक *पुं.* (तत्.) 1. तर्कशास्त्र का ज्ञाता 2. दार्शनिक।

तार्क्ष *पुं.* (तत्.) 1. कश्यप 2. गरुड़।

तार्क्षी *स्त्री.* (तत्.)1. पाताल गरुड़ी लता 2. छिरेंटी।

तार्क्ष्य *पुं.* (तत्.) तृक्ष मुनि का गोत्रज।

तार्क्ष्यी *स्त्री.* (तत्.) एक वनलता।

तार्तीय *वि.* (तत्.) 1.तीसरा, तृतीय 2.तीसरा भाग।

तार्य *वि.* (तत्.) 1. तारने योग्य, उद्धार करने योग्य 2. जीतने योग्य *पुं.* (तत्.) नाव आदि का भाड़ा।

ताल *पुं.* (तत्.) 1. हथेली 2. करतल ध्वनि, ताली बजाने की ध्वनि प्रयो. तालमेल मुहा. ताल बेताल-बेमौके, अवसर के बिना प्रयो. वह ताल बेताल ऐसी हरकतें करता रहता है मुहा. ताल ठोंकना-लड़ने के लिए ललकारना 3. ताड़ का पेड़ या फल 4. बेल का पेड़ या फल 5. तलवार की मूठ 6. महादेव *पुं.* (तद्) जलाशय, तालाब, पोखरा।

तालक *पुं.* (तत्.) 1. हरताल 2. ताड़ का पेड़ या फल 3. ताला 4. अरहर *पुं.* (अं.) तअल्लुक।

तालकाश *पुं.* (तत्.) हरा रंग।

तालकी *स्त्री.* (तत्.) ताड़ी, तालरस।

तालकेश्वर *पुं.* (तत्.) एक औषध जो कुष्ठ, फोड़ा, फुंसी आदि में दी जाती है।

तालनवमी *स्त्री.* (तत्.) भाद्र शुक्ल की नवमी, इस दिन स्त्रियाँ व्रत रखती है और तालपत्र से गौरी का पूजन करती है।

तालमेल *पुं.* (देश.) 1. मेलजोल 2. ताल-सुर का मिलान, संगति मुहा. तालमेल रखना- सबसे मिलजुलकर रहना।

तालव्य *वि.* (तत्.) 1. तालु संबंधी 2. तालु से उच्चारण किये जाने वाले वर्ण चवर्ग य, श, इ, ई।

तालांकुर *पुं.* (तत्.) मेनसिल धातु।

ताला *पुं.* (तद्.) 1. जंदरा 2. कपाट बंद रखने का यंत्र *पुं.* (अर.) नसीब, किस्मत, भाग्य मुहा. ताला तोड़ना-किसी घर में से वस्तुएँ चुराने के लिए लगे हुए ताले को तोड़ना; ताला भेड़ना- ताला लगाकर बंद करना *पुं.* (देश.) छाती का कवच।

तालाकुंजी *पुं.* (तत्.) किवाड़, संदूक आदि को बंद करने का यंत्र, ताला-चाबी।

तालाख्या *पुं.* (तत्.) कपूरकचरी-एक गंध द्रव्य।

तालाब *पुं.* (देश.) जलाशय, सरोवर पोखर।

तालाबेलिया *पुं.* (देश.) व्याकुलता, बेचैनी।

तालाबेली *स्त्री.* (देश.) व्याकुलता, बेचैनी।

तालावचर *पुं.* (तत्.) 1. नर्तक 2. अभिनेता।

तालिक *पुं.* (तत्.) 1. तमाचा, चपत 2. नत्थी 3. तालपत्र का पुलिंदा 4. ताली।

तालिका *स्त्री.* (तत्.) 1. ताली, कुंजी 2. सूची 3. चपत, तमाचा 3. कागजों का पुलिंदा।

तालित *पुं.* (तत्.) 1. रंगीन कपड़ा 2. बाजा 3. रस्सी-डोरी।

तालिब *पुं.* (अर.) 1. चाहने वाला 2. शिष्य प्रयो. तालिब-ए-इल्म-विद्यार्थी।

तालिश *पुं.* (तत्.) पहाड़।

ताली *स्त्री.* (तत्.) 1. कुंजी, चाबी 2. ताड़ी 3. तालमूली-मूसली 4. भू आँवला 5. करतल ध्वनि मुहा. ताली पीटना या बजाना- उपहास करना; ताली बज जाना- उपहास होना; एक हाथ से ताली नहीं बजती- लड़ाई झगड़ा या प्रेम दोनों के करने से होता है 6. छोटा ताल, तलैया *स्त्री.* (दे.) पैर की बीच वाली ऊंगली का पोर या ऊपरी भाग।

तालीका *स्त्री.* (तत्.) 1. सामान की जब्ती 2. कुर्की 3. जब्त सामान की सूची।

तालीम *स्त्री.* (अर.) शिक्षा।

तालीशपत्र *पुं.* (तत्.) तेजपत्ते की जाति का पेड़।

तालु *पुं.* (तत्.) तालू।

तालुक *पुं.* (तत्.) 1. तालू 2. तालू का एक रोग।

तालू *पुं.* (तत्.) 1. दे. तालू 2. दिमाग मुहा. तालू चटकना- प्यास से मुँह सूखना; तालू में दांत जमना- बुरे दिन आना; तालू से जीभ न लगाना- चुप न रह पाना, बहुत बकबक करना।

तालूर *पुं.* (तत्.) पानी का भँवर।

तालूषक *पुं.* (तत्.) दे. तालु।

ताल्लुक *पुं.* (अर.) 1. संबंध 2. लगाव प्रयो. 1. उनका बड़े-बड़े लोगें से ताल्लुक रहा है 2. उनका अब सांसारिकता से कोई ताल्लुक नहीं है।

ताल्वबुर्द *पुं.* (तत्.) एक रोग जिसमें तालू में गुभड़ा हो जाता है।

ताव *पुं.* (तद्.) 1. ताप, आँच, वह गर्मी जो किसी वस्तु को पकाने के लिए पहुँचाई जाए मुहा. ताव आना- जितना चाहिए उतना गरम हो जाना प्रयो. अभी तवे पर रोटी मत डालो, पहले ताव आने दो; मुहा. ताव खाना- आवेश में आना प्रयो. क्यों ताव खा रहे हो, आखिर बात क्या है; ताव देना- आग पर रखना, तपाना; मूँछों पर ताव देना- घमंड में आना; ताव दिखाना- क्रोध प्रकट करना; ताव में आना- क्रोध या आवेश में आकर कुछ कर बैठना प्रयो. उसने ताव में आकर घड़ी को नीचे पटक दिया 2. कागज का एक तख्ता।

तावत *क्रि.वि.* (तत्.) 1. उतने समय तक 2. उतनी दूरी तक 3. उतने तक।

तावना *स.क्रि.* (तद्.) तपाना, गरम करना।

तावर *स्त्री.* (देश.) दे. तावरी *पुं.* (तत्.) घनुष की डोरी।

तावरा *पुं.* (तद्.) 1. ताप, गरमी, घाम 2. गर्मी से उत्पन्न सिर का चक्कर।

तावरी *स्त्री.* (तद्.) 1. ताप, जलन, दाह 2. धूप, धाम 3. बुखार 4. गर्मी में आया हुआ चक्कर।

तावान *पुं.* (फा.) 1. क्षतिपूर्ति, नुकसान का मुआवजा 2. दंड, जुरमाना।

ताविष *पुं.* (तत्.) दे. तावीष।

ताविषी *स्त्री.* (तत्.) 1. देव कन्या 2. नदी 3. पृथ्वी 4. स्वर्ग 5. सोना।

तावी *अव्य.* (देश.) थोड़ा।

तावीज *पुं.* (अर.) 1. रक्षा कवच, जंतर 2. सोने-चाँदी का विशेष आकार का आभूषण।

तावीष *पुं.* (तत्.) 1. समुद्र 2. सोना 3. स्वर्ग।

तावुरि *पुं.* (तत्.) वृष राशि।

ताश *पुं.* (अर.) 1. ताश का खेल 2. एक प्रकार का दफ्ती का टुकड़ा जिस पर तागा लपेटा जाता है 3. एक प्रकार का जरदोजी का कपड़ा।

ताशा *पुं.* (अर.) चमड़े से मढ़ा हुआ, एक प्रकार का बाजा जिसे गले में लटकाकर डंडियों से बजाया जाता है।

ताष्य *पुं.* (तत्.) सोनामक्खी।

तासीर *स्त्री.* (अर.) प्रभाव, असर, गुण प्रयो. दही की तासीर ठंडी होती है।

तास्कर्य *पुं.* (तत्.) चोरी।

तास्थ्य *पुं.* (तत्.) एक वस्तु में दूसरी वस्तु की स्थिति का भाव।

तास्सुब *पुं.* (अर.) 1. धर्म संबंधी कट्टरपन 2. धार्मिक पक्षपात।

ताहम *अव्य.* (फा.) तो भी।

तिंतिड़ *पुं.* (तत्.) 1. इमली का पेड़ या फल 2. इमली की चटनी।

तिंतिड़िका *स्त्री.* (तत्.) 1. इमली 2. इमली की चटनी।

तिंतिड़ी *स्त्री.* (तत्.) इमली का पेड़ या फल।

तिंतिलिका *स्त्री.* (तत्.) दे. तिंतिड़िका।

तिंतिली *स्त्री.* (तत्.) दे. तिंतिड़ी।

तिंदिश *पुं.* (तत्.) टिंडसी, डेडसी, टिंडा।

तिंदु *पुं.* (तत्.) तेदूं का पेड़।

तिंदुक *पुं.* (तत्.) तेंदू का पेड़।

तिंदुकी *स्त्री.* (तत्.) तेंदू का पेड़।

तिंदुल *पुं.* (तत्.) तेंदू का पेड़।

तिआ *स्त्री.* (देश.) दे. तिया।

तिआह *पुं.* (तत्.) मृत्यु के पैंतालीसवें दिन किया जाने वाला श्राद्ध *वि.* (तद्.) जिसका तीसरा विवाह होने को हो।

तिउरा *पुं.* (देश.) खेसारी नाम का कदंब।

तिकड़म *स्त्री.* (तद्.) 1. चाल, षडयंत्र 2. उपाय, तरकीब।

तिकड़मबाज *वि.* (देश.) दे. तिकड़मी।

तिकड़मी *वि.* (देश.) 1. तिकड़म बाज, चालाक 2. तिकड़म करने वाला 3. धोखेबाज, धूर्त।

तिकड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. तीन कड़ियों वाली 2. ऐसी चारपाई जिसमें तीन रस्सियाँ एक साथ हों।

तिकोन *वि.* (तद्.) दे. तिकोना *पुं.* (तत्.) त्रिकोण।

तिकोना *वि.* (तद्.) जिसमें तीन कोने हो *पुं.* (तद्.) समोसा 2. तिकोनी नक्काशी बनाने की छेनी।

तिकोनिया *स्त्री.* (तद्.) तीन कोनो वाला स्थान।

तिक्की *स्त्री.* (तद्.) ताश या गंजीफे के खेल का पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ हो।

तिक्ख *वि.* (तद्.) 1. तीखा 2. चालाक 3. तीव्र बुद्धि *वि.* (देश.) तिरछा, टेढ़ा।

तिक्खे *क्रि.वि.* (तद्.) तिरछे।

तिक्त *वि.* (तत्.) 1. चटपटा 2. तीखा 3. तीता 4. कड़ुआ *पुं.* 1. सुगंध 2. पित्त पापड़ा 3. वरुण वृक्ष 4. कुटज।

तिक्तक *पुं.* (तत्.) 1. परवल 2. चिरायता 3. काला खैर 4. नीम 5. कुटज 6. तिक्त रस *वि.* तीता।

तिक्तता *स्त्री.* (तत्.) 1. कड़ुआपन 2. तीतापन 3. चटपटापन।

तिक्त धातु *स्त्री.* (तत्.) पित्त।

तिक्तांगा *स्त्री.* (तत्.) पाताल गरुड़ी लता।

तिक्ता *स्त्री.* (तत्.) 1. कुटकी 2. पाठा 3. यवतिक्ता यवतिक्ता लता 4. खरबूजा।

तिक्तिका *स्त्री.* (तत्.) 1. तितलौकी 2. कुटकी।

तिक्तिरी *स्त्री.* (तत्.) तूमड़ी नामक बाजा, जिसे सपेरे बजाते है।

तिगम *वि.* (तद्.) तीक्ष्ण, तेज, प्रचंड *पुं.* (तत्.) 1. व्रज 2. पिप्पली 3. ताप 4. तीक्ष्णता, तीखापन।

तिगलिया *पुं.* (देश.) तिराहा, जहाँ तीन रास्ते निकलते है।

तिगुना *वि.* (तद्.) तीन गुना।

तिग्म *वि.* (तत्.) तीक्ष्ण, तेज, प्रचंड पुं. 1. वज्र 2. पिघली 3. ताप 4. तीक्ष्णता, तीखापन।

तिग्मकर *पुं.* (तत्.) सूर्य।

तिग्मतेज *पुं.* (तत्.) सूर्य।

तिग्मन्यु *पुं.* (तत्.) शिव, महादेव।

तिग्मरश्मि *पुं.* (तत्.) सूर्य।

तिग्मांशु *पुं.* (तत्.) सूर्य।

तिजारत *स्त्री.* (अर.) 1. व्यापार, वाणिज्य 2. रोजगार 3. सौदागरी

तिजिल *पुं.* (देश.) 1. चंद्रमा 2. राक्षस।

तिजोरी *स्त्री.* (अर.) लोहे की मजबूत अलमारी जिसमें रुपया पैसा आदि रखा जाता है।

तिड़ी *स्त्री.* (तद्.) तिक्की मुहा. तिड़ी करना- गायब करना, उड़ा कर ले जाना; तिड़ी होना- चुपके से चले जाना।

तिड़ीबिड़ी *वि.* (देश.) तितर-बितर, अस्त-व्यस्त।

तितर *पुं.* (तत्.) दे. तीतर।

तितर-बितर *वि.* (देश.) 1. छितराया हुआ, बिखरा हुआ 2. अस्त व्यस्त, अव्यवस्थित।

तितरोखी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

तितली *स्त्री.* (तद्.) 1. सुंदर पंखों वाला एक फतिंग 2. तड़क भड़क वाली स्त्री 3. एक प्रकार की घास जो गेहूँ के खेतों में होती है।

तितिंबा *पुं.* (अर.) 1. ढकोसला, ढोंग 2. परिशिष्ट, उपसंहार।

तितिक्ष *पुं.* (तत्.) एक ऋषि का नाम।

तितिक्षा *स्त्री.* (तत्.) 1. सहिष्णुता 2. सहनशीलता 3. क्षमा।

तितिक्षु *वि.* (तत्.) 1. क्षमाशील 2. सहिष्णु, सहनशील *पुं.* एक पुरुवंशीय राजा जो महामना का पुत्र था।

तितिभ *पुं.* (तत्.) जुगनू, बीर बहूटी।

तितिम्मा *पुं.* (अर.) 1. बचा हुआ भाग 2. परिशिष्ट।

तितिर *पुं.* (तत्.) तीतर।

तितिरि *पुं.* (तत्.) तीतर।

तितिल *पुं.* (तत्.) 1. तिल की खली 2. नाँद 3. ज्योतिष में सात करणों में से एक।

तितीर्षा *स्त्री.* (तत्.) तैरने या पार करने की इच्छा। इच्छा।

तितीर्षु *वि.* (तत्.) 1. तैरने की इच्छा करने वाला 2. तरने का अभिलाषी।

तिते *वि.* (तद्.) उतना।

तित्तरि *पुं.* (तत्.) 1. तीतर पक्षी 2. यजुर्वेद की एक शाखा का नाम।

तित्तिर *पुं.* (तत्.) 1. तीतर 2. तितली नाम की घास।

तिथ *पुं.* (तत्.) 1. कामदेव 2. अग्नि 3. समय 4. पतझड़ 5. वर्षाकाल।

तिथि *पुं.* (तत्.) 1. मिति 2. तारीख।

तिथि-पत्र *पुं.* (तत्.) पचांग, पत्रा, जंत्री।

तिथि-युग्म *पुं.* (तत्.) दो तिथियों का योग।

तिथ्यर्ध *पुं.* (तत्.) करण।

तिधर *क्रि.वि.* (तद्.) उधर, उस ओर।

तिधाज्ञ *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का थूहर, जिसमें पत्ते नहीं होते।

तिन *पुं.* (तद्.) तिनका, धास-फूस।

तिनकना *अ.क्रि.* (देश.) चिड़चिड़ाना, चिढ़ना, झल्लाना, नाराज होना।

तिनका *पुं.* (तत्.) तृण, घासफूस मुहा. तिनका दाँतों में पकड़ना या लेना- विनती करना; तिनके चुनना- बेसुध हो जाना, विक्षिप्त हो जाना, तिनके चुनवाना- पागल बना देना, मोहित कर देना; तिनके को पहाड़ करना- छोटी बात को बड़ा बताना; तिनके का सहारा- थोड़ी- सी सहायता; तिनके की ओट पहाड़- छोटी सी बात में कोई बड़ी बात छिपी होना; सिर से तिनका उतारना-थोड़ा बहुत काम करके उपकार जताना।

तिनगना *अ.क्रि* (देश.) दे. तिनकना।

तिन पहला *वि.* (देश.) तीन पहलों वाला 2. तीन पार्श्वों वाला।

तिनाशक *पुं.* (तत्.) तिनिश वृक्ष।

तिनिश *पुं.* (तत्.) शीशम की जाति का पेड़।

तिनुका *पुं.* (देश.) दे. तिनका।

तिन्ना *पुं.* (तद्.) तिन्नी के धान का पौधा।

तिन्नी *स्त्री.* (तद्.) अपने आप पैदा होने वाला धान धान जिसका चावल फलाहार के काम आता है।

तिन्ह *सर्व.* (देश.) दे. तिन।

तिपाई *स्त्री.* (देश.) 1. तीन पायों की चौकी 2. पानी का घड़ा रखने की चौकी, तिगोड़िया।

तिब *स्त्री.* (अर.) यूनानी चिकित्सा शास्त्र।

तिब्ब *स्त्री.* (अर.) यूनानी चिकित्सा शास्त्र।

तिब्बत *पुं.* (तद्.) हिमालय और चीन के बीच का देश।

तिब्बती *वि.* (देश.) 1. तिब्बत संबंधी 2. तिब्बत का रहने वाली 3. तिब्बती भाषा।

तिब्बिया *वि.* (अर.) तिब्ब संबंधी हकीमी।

तिमंजिला *वि.* (देश.) तीन मंजिल का, तीन खंडो का जैसे- तीन मंजिला मकान।

तिमिंगल *पुं.* (तत्.) एक समुद्री जंतु जो तिमि मत्स्य को भी निगल सकता है।

तिमि *पुं.* (तत्.) बहुत बड़े आकार का समुद्री मत्स्य *अव्य.* उस प्रकार, वैसे।

तिमि कोश *पुं.* (तत्.) समुद्र।

तिमित *वि.* (तत्.) 1. भीगा हुआ 2. गतिहीन 3. निश्चल, अचल, स्थिर 3. शांत, धीर।

तिमिर जाल *पुं.* (तत्.) अंधकार समूह।

तिमिरमय *पुं.* (तत्.) राहु, ग्रहण *वि.* अंधकार से भरा हुआ।

तिमिरारि *पुं.* (तत्.) अंधकार का शत्रु, सूर्य।

तिमिरारी *स्त्री.* (तत्.) अंधकार का समूह, घोर अंधेरा।

तिमिरावलि *स्त्री.* (तत्.) अंधकार का समूह।

तिमिला *स्त्री.* (तत्.) एक वाद्य यंत्र।

तिमिश *पुं.* (तत्.) तिनिश वृक्ष।

तिमिष *पुं.* (तत्.) ककड़ी, फूट।

तिय *स्त्री.* (देश.) स्त्री, औरत।

तियला *पुं.* (देश.) स्त्रियों का एक पहनावा।

तिया *पुं.* (देश.) गंजीफे या ताश का पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ होती है, तिक्की।

तियाग *पुं.* (तद्.) दे. त्याग।

तियागी *वि.* (तद्.)त्याग करने वाला, छोड़ने वाला।

तिरंग *पुं.* (तद्.) दे. तिरंगा।

तिरंगा *पुं.* (तद्.) तीन रंगों वाला राष्ट्रीय ध्वज *वि.* (देश.) तीन रंगो वाला।

तिरगुण *वि.* (तद्.) दे. त्रिगुण।

तिरकना *अ.क्रि.* (अनु.) तडक़ना, चटखना।

तिरखा *स्त्री.* (तद्.) दे. तृषा।

तिरछा *वि.* (तद्.) जो एक ओर झुका हुआ हो, बाँका, वक्र, कुटिल।

तिरछाना *अ.क्रि* (देश.) तिरछा होना।

तिरछापन *पुं.* (देश.) तिरछा होने का भाव।

तिरछे *क्रि.वि.* (देश.) तिरछेपन के साथ।

तिरछौहाँ *वि.* (देश.) कुछ-कुछ तिरछा।

तिरतालीस *वि.* (तद्.) दे. तैंतालीस।

तिरदेव *पुं.* (तद्.) दे. त्रिदेव।

तिरना *अ.क्रि.* (तद्.) दे. तरना, उतराना।

तिरनी *स्त्री.* (देश.) नीवी, फुबती, फुफुँदी।

तिरप *स्त्री.* (देश.) नृत्य का एक ताल।

तिरपट *वि.* (देश.) 1. तिरछा, टेढ़ा 2. कठिन।

तिरपन *वि.* (तद्.) पचास और तीन *पुं.* (तद्.) तिरपन की संख्या- 53।

तिरपाल *पुं.* (देश.) 1. छाजन के नीचे लगाया जाने वाला सरकंडे का मुट्ठा 2. पानी से बचाव के लिए एक मोटा कपड़ा।

तिरफला *पुं.* (तद्.) दे. त्रिफला।

तिरभंगी *वि.* (तद्.) दे. त्रिभंगी।

तिरमिरा *पुं.* (देश.) आँख का एक रोग जिसमें दृष्टि क्षीण हो जाती है और रोशनी असह्य लगती है 2. 2. चकाचौंध।

तिरमिराना *अ.क्रि.* (देश.) दे. तिलमिलाना।

तिरलोक *पुं.* (तद्.) दे. त्रिलोक।

तिरश्चीन *वि.* (तत्.) 1. तिरछा 2. टेढ़ा, कुटिल।

तिरसठ *पुं.* (तद्.) साठ से तीन अधिक की संख्या-63।

तिरसना *स्त्री.* (तद्.) दे. तृष्णा।

तिरसूल *पुं.* (तद्.) दे. त्रिशूल।

तिरस्कर *पुं.* (तत्.) आच्छादक *वि.* बढ़ा-चढ़ा हुआ।

तिरस्कार *पुं.* (तत्.) 1. अनादर, अपमान 2. भर्त्सना, फटकार।

तिरस्कृत *वि.* (तत्.) अनादृत, जिसका तिरस्कार किया गया हो।

तिरहा *पुं.* (देश.) वह स्थान जहाँ तीन रास्ते मिलते हो।

तिरहुत *पुं.* (देश.) बिहार में मिथिला, मुजफ्फरपुर और दरभंगा का प्रदेश।

तिरहेल *वि.* (देश.) तीसरा, क्रम में तीसरा।

तिरानवे *वि.* (तद्.) गिनती में नब्बे से तीन अधिक *पुं.* नब्बे से अधिक तीन की संख्या।

तिराना *स.क्रि.* (देश.) पानी के ऊपर तैराना, उतराना।

तिरासी *वि.* (तद्.) गिनती में अस्सी से तीन अधिक, तीन ऊपर अस्सी *पुं.* अस्सी और तीन की संख्या।

तिरिम *पुं.* (तत्.) एक धान।

तिरिय *वि.* (देश.) वक्र, कुटिल।

तिरिया *स्त्री.* (देश.) स्त्री, औरत।

तिरीछा *वि.* (तद्.) तिरछा।

तिरीट *पुं.* (तत्.) 1. लोध का पेड़ 2. किरीट।

तिरीफल *पुं.* (तद्.) दंती वृक्ष।

तिरेंदा *पुं.* (तद्.) 1. समुद्र में तैरता हुआ पीपा जो पानी के छिछलेपन या चट्टानों के खतरे की सूचना के लिए लगाया जाता है 2. नदी पार करने के लिए उतराने वाला काठ 3. मछली पकड़ने के लिए, बंसी की डोरी में बंधी हुई छोटी लकड़ी जो तैरती रहती है, तरेंदा।

तिरोधान *पुं.* (तत्.) अंतर्धान, या दृष्टि से ओझल होने की क्रिया, लोप।

तिरोभाव *पुं.* (तत्.) अंतर्धान, छिपाव।

तिरोभूत *वि.* (तत्.) अंतर्हित, ओझल, लुप्त।

तिरोहित *वि.* (तत्.) 1. छिपा हुआ 2. ढका हुआ, आच्छादित।

तिरौंछा *वि.* (देश.) दे. तिरछा।

तिरौंदा *पुं.* (तद्.) दे. तिरेंदा।

तिर्यंच *पुं.* (तत्.) 1. पशु 2. पक्षी 3. जीव-जगत।

तिर्यक *वि.* (तत्.) तिरछा, आड़ा-टेढा।

तिर्यंची *स्त्री.* (तत्.) पशु-पक्षियों की मादा।

तिलंगसा *पुं.* (तत्.) बबूल का एक भेद।

तिलंगा *पुं.* (तद्.) 1. तिलंगाने का निवासी 2. अंग्रेजी फौज का हिंदुस्तानी सिपाही।

तिलंगाना *पुं.* (तद्.) तैलंग प्रदेश।

तिलंगी *स्त्री.* (तद्.) एक प्रकार की पतंग 2. तेलंगाना का निवासी।

तिल *पुं.* (तत्.) 1. काले या सफेद छोटे दाने का तिलहन 2. तिल का पौधा 3. तिल के आकार का शरीर पर काला दाग 4. किसी चीज का बहुत छोटा भाग या टुकड़ा 5. आँख की पुतली के बीच का बिंदु मुहा. तिल का ताड़ करना- किसी छोटे मामले को बढ़ाचढ़ाकर दिखाना; तिल-तिल- थोड़ा-थोड़ा; तिल भर- थोड़ा सा, जरा सा।

तिलक *पुं.* (तत्.) 1. धार्मिकता या शोभा की दृष्टि से चंदन, केसर, रोली आदि का टीका 2. सिंहासन पर बैठते समय युवराज के मस्तक पर लगाया जाने वाला टीका 3. किसी कुल या समुदाय का श्रेष्ठ व्यक्ति 4. विवाह की एक रस्म, रस्म, जिसमें कन्या पक्ष के लोग वर के मस्तक पर टीका लगाते है और भेंट देते हैं 5. किसी ग्रंथ पर लिखी गई टीका या भाष्य प्रयो. संस्कृत के शास्त्रीय ग्रंथों पर लिखी गई तिलक टीका 6. प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी-लोकमान्य गंगाधर 'तिलक' 7. बिना आस्तीन का ढीला कुर्ता, जिसे मुसलमान महिलाएँ पहनती है।

तिलकना *अ.क्रि* (देश.) तड़कना, ताल की मिट्टी का सूखकर दरार के साथ फटना।

तिलका *पुं.* (तत्.) 1. हार का एक भेद 2. एक वर्णवृत्त।

तिलकावल *वि.* (तत्.) चिह्नों वाला।

तिलकाश्रय *पुं.* (तत्.) माथा, भाल, ललाट।

तिलकित *वि.* (तत्.) तिलक लगाया हुआ 2. चिह्नवाला।

तिलकुट *पुं.* (तत्.) 1. तिल का चूर्ण 2. एक मिठाई जो तिल के चूर्ण से बनती है।

तिलगिया *स्त्री.* (देश.) चिंनगारी।

तिलदानी *स्त्री.* (देश.) सुई-धागा आदि रखने की दर्जियों की थैली।

तिलपट्टी *स्त्री.* (देश.) खांड या गुड़ की चासनी में पडी हुई तिल की वस्तु।

तिल पपड़ी *स्त्री.* (देश.) दे. तिलपट्टी।

तिलपर्ण *पुं.* (तत्.) तिल का पत्ता 2. चंदन।

तिलबढ़ा *पुं.* (देश.) पशुओं का एक रोग।

तिलभेद *पुं.* (तत्.) पोस्त दाना।

तिलमिल *स्त्री.* (देश.) 1. तिलमिलाहट 2. चकाचौंध।

तिलमिलाना *अ.क्रि.* (देश.) दे. तिरमिराना।

तिलमिलाहट *स्त्री.* (देश.) 1. तिरमिराहट, तिलमिलाने का भाव या क्रिया 2. व्याकुलता, बेचैनी।

तिलमिली *स्त्री.* (देश.) तिलमिलाहट।

तिलरस *पुं.* (तत्.) तिल का तेल।

तिलवट *पुं.* (देश.) तिल पपड़ी, तिलपट्टी।

तिलवा *पुं.* (देश.) तिल का लड्डू।

तिलस्म *पुं.* (अर.) 1. जादू, इंद्रजाल 2. चमत्कार, करामात मुहा. तिलस्म तोड़ना- किसी स्थान के रहस्य को खोलना।

तिलस्मी *वि.* (अर.) 1. माया संबंधी, तिलस्म संबंधी 2. जादू का।

तिलहन *पुं.* (देश.) फसल के रूप में बोए जाने वाले तेल के पौधे जैसे तिल, सरसों अलसी आदि।

तिलांजलि *स्त्री.* (तत्.) दे. तिलांजली।

तिलांजली *स्त्री.* (तत्.) मृतक संस्कार का एक अंग।

तिलांबु *पुं.* (तत्.) तिलांजली।

तिला *पुं.* (देश.) 1. सोना 2. नपुंसकता दूर करने वाला एक तेल।

तिलान्न *पुं.* (तत्.) तिल की खिचड़ी।

तिलापत्या *स्त्री.* (तत्.) काला जीरा।

तिलिंग *पुं.* (तत्.) देश विशेष का नाम, आधुनिक तेलंगाना प्रदेश।

तिलित्स *पुं.* (तत्.) अजगर, गोनस सर्प।

तिलिस्मी *पुं.* (अर.) दे. तिलस्मी।

तिली *स्त्री.* (देश.) दे. तिल्ली।

तिलेती *स्त्री.* (देश.) तिलहन की खूटी, जो फसल कटाई के बाद खेत में बच जाती है।

तिलोत्तमा *स्त्री.* (तत्.) एक अप्सरा का नाम, जिसकी सृष्टि ब्रह्मा ने सुंद और उपसुंद नामक राक्षसों को मारने के लिए की थी ।

तिलोदक *पुं.* (तत्.) दे. तिलांजली।

तिलोनी *वि.* (देश.) फुलेल से सुगंधित।

तिलोरि *स्त्री.* (देश.) दे. तिलोरी।

तिलौंछना *स.क्रि.* (देश.) तेल लगाकर चिकना करना।

तिलौंछा *वि.* (देश.) 1. तेल के स्वाद वाला, चिकना।

तिलौरी *स्त्री.* (देश.) उर्द या मूँग की दाल की बड़ी जिसमें तिल लगा हो।

तिल्य *पुं.* (तत्.) तिल का तेल।

तिल्ला *पुं.* (अर.) कला बत्तू आदि का काम।

तिल्ली *स्त्री.* (तद्.) 1. प्लीहा 2. तिल।

तिल्व *पुं.* (तत्.) 1. लोध्र 2. तिल का तेल।

तिल्वक *पुं.* (तत्.) 1. लोध्र 2. तिनिश वृक्ष।

तिवाड़ी *पुं.* (देश.) दे. तिवारी।

तिवारी *पुं.* (तद्.) ताना, व्यंग्य।

तिव्यत *वि.* (तत्.) 1. दिनांकित, जिस पर कोई तिथि डाली गई हो 2. मृत्युदिवस 3. चांद्रमांस का एक दिन।

तिष्ट *वि.* (देश.) बनाया हुआ, रचा हुआ।

तिष्ठद्गु *पुं.* (तत्.) 1. संध्या, गोधूलि 2. दोहन काल।

तिष्ठन *अ.क्रि.* (तत्.) ठहरना, टिकना।

तिष्ठा *स्त्री.* (तत्.) तिस्ता नदी।

तिष्य *वि.* (तत्.) शुभ, भाग्यशाली, तिष्य नक्षत्र में उत्पन्न।

तिष्यक *पुं.* (तत्.) पौष का महीना।

तिष्या *स्त्री.* (तत्.) 1. आमलकी, आँवला 2. चमक, दीप्ति।

तिष्षन *वि.* (तद्.) तीक्ष्ण।

तिस *स्त्री.* (तद्.) तृष्णा, लालसा।

तिसना *स्त्री.* (तद्.) दे. तृष्णा।

तिसरेत *पुं.* (देश.) 1. तटस्थ, तीसरा व्यक्ति 2. तीसरे भाग का मालिक।

तिसाई *स्त्री.* (देश.) तीक्ष्णता, तीखापन।

तिसाना *अ.क्रि* (देश.) प्यासा होना।

तिसूती *वि.* (देश.) तीन सूत के ताने का बना हुआ।

तिस्र *स्त्री.* (देश.) शंख पुष्पी।

तिहत्तर *पुं.* (तद्.) तिहत्तर की संख्या *वि.* (तद्.) तीन अधिक सत्तर (73)।

तिहरा *पुं.* (देश.) तेहरा *स्त्री.* (देश.) दही जमाने का मिट्टी का बर्तन।

तिहराना *स.क्रि.* (देश.) तीसरी बार करना।

तिहरी *स्त्री.* (देश.) तीन लड़ियों की माला।

तिहा *पुं.* (तद्.) 1. रोग 2. धनुष 3. चावल।

तिहाई *पुं.* (तद्.) तीसरा भाग।

तिहाड *पुं.* (देश.) दे. तिहाव।

तिहार *सर्व.* (देश.) दे. तुम्हारा।

तिहारा *सर्व.* (देश.) दे. तुम्हारा।

तिहारो *सर्व.* (देश.) दे. तुम्हारा।

तिहाव *पुं.* (तत्.) 1. क्रोध, गुस्सा, रोष 2. अनबन, बिगाड़।

तिहि *सर्व.* (देश.) दे. तेहि।

तिहुँ *वि.* (देश.) तीन, तीनों।

तिहुँलोक *पुं.* (देश.) तीन लोक-स्वर्ग, पृथ्वी लोक, पाताल लोक।

तिहैया *पुं.* (तत्.) तीसरा भाग, तिहाई।

तीरंदाजी *स्त्री.* (फा.) तीर चलाने की विद्या या क्रिया।

ती *स्त्री.* (तद्.) 1. स्त्री 2. पत्नी।

तीकुर *पुं.* (देश.) तीसरा भाग, तिहाई, तीन भागों में फसल का बँटवारा।

तीक्षण *वि.* (तद्.) दे. तीक्ष्ण।

तीक्षन *वि.* (तद्.) दे. तीक्ष्ण।

तीक्ष्ण *वि.* (तत्.) तेज, प्रखर, तीव्र 2. चटपटा 3. तेज नोक या धार वाला 4. कठोर *पुं.* (तत्.) विष, जहर 2. इस्पात, लोहा 3. समुद्री नमक 4. नक्षत्रों का एक गण।

तीक्ष्ण कंटक *पुं.* (तत्.) 1. धतूरे का पेड़ 2. बबूल 3. करील का पेड़।

तीक्ष्ण कंटका *स्त्री.* (तत्.) कंथारी का पेड़।

तीक्ष्णक *पुं.* (तत्.) पीली सरसों।

तीक्ष्णता *स्त्री.* (तत्.) तीक्ष्ण होने का भाव, तीव्रता। तीव्रता।

तीक्ष्ण दंत *पुं.* (तत्.) तेज, नुकीले दाँतों वाला जानवर।

तीक्ष्ण दृष्टि *वि.* (तत्.) सूक्ष्म दृष्टि वाला।

तीक्ष्ण बुद्धि *वि.* (तत्.) जिस की बुद्धि तीक्ष्ण हो।

तीक्ष्णांशु *पुं.* (तत्.) सूर्य।

तीक्ष्णा *स्त्री.* (तत्.) 1. बच 2. सर्प कंकाली वृक्ष 3. 3. मिर्च 4. जोंक।

तीक्ष्णाग्नि *स्त्री.* (तत्.) 1. जठराग्नि 2. अजीर्ण रोग।

तीक्ष्णायस *पुं.* (तद्.) इस्पात।

तीखर *पुं.* (तद्.) दे. तीखुर।

तीखा *वि.* (तद्.) 1. तीक्ष्ण 2. तेज धार वाला 3. प्रचंड, उग्र।

तीखापन *पुं.* (तद्.) तीक्ष्णता, पैनापन।

तीखुर *पुं.* (तद्.) तवखीर, एक प्रकार का कंद जिसका सत्व मिठाई, खीर आदि बनाने के काम आता है।

तीखुल *पुं.* (तद्.) दे. तीखुर।

तीज *स्त्री.* (तद्.) प्रत्येक मास की तीसरी तिथि 2. हरतालिका व्रत-भादों सुदी की तीज।

तीजा *पुं.* (देश.) मुसलमानों में मृत्यु के बाद का तीसरा दिन *वि.* तीसरा।

तीतर *पुं.* (तद्.) एक पक्षी, जिसे लड़ाने के लिए पाला जाता है।

तीता *वि.* (तद्.) जिसका स्वाद तीखा और चटपटा हो। तिक्त।

तीन *वि.* (तद्.) दो और एक *पुं.* दो और एक की संख्या।

तीनि *वि.* (देश.) दे.तीन।

तीनी *स्त्री.* (तत्.) तिनी का चावल।

तीमार *स्त्री.* (फा.) रोगी की देखभाल, सेवा सुश्रूषा।

तीमार दार *वि.* (फा.) रोगी की सेवा करने वाला।

तीमारदारी *स्त्री.* (फा.) रोगी की सेवा करने का काम।

तीय *स्त्री.* (तद्.) स्त्री, नारी, औरत।

तीया *स्त्री.* (तद्.) दे. तीय।

तीरंदाज *पुं.* (फा.) तीर चलाने वाला धनुर्धर।

तीर *पुं.* (तत्.) नदी का किनारा *पुं.* (फा.) बाण मुहा. तीर चलाना- कोई युक्ति भिड़ाना प्रयो. उसने तीर तो बहुत अच्छा चलाया था लेकिन काम नहीं बना *पुं.* (देश.) जहाज का मस्तूल *वि.* पारंगत, जानकार।

तीरथ *पुं.* (तद्.) दे. तीर्थ।

तीरथ पति *पुं.* (तद.+तत्.) तीर्थराज प्रयाग।

तीरित *वि.* (तत्.) तय किया हुआ, निर्णीत।

तीरु *पुं.* (तत्.) 1. शिव, महादेव 2. शिव की स्तुति।

तीर्ण *वि.* (तत्.) 1. उत्तीर्ण 2. जो पार कर चुका हो।

तीर्णा *स्त्री.* (तत्.) एक छंद विशेष, जिसके एक चरण में एक नगण और एक गुरु होता है।

तीर्थंकर *पुं.* (तत्.) 1. जैनियो के उपास्य देव 2. विष्णु 3. शास्त्रकर्ता।

तीर्थ *पुं.* (तत्.) 1. वह पवित्र स्थान, जहाँ धर्म विशेष के लोग पूजा, स्नान आदि के लिए जाते है 2. कोई पवित्र स्थान 3. हाथ में कुछ विशिष्ट भाग ब्रह्मतीर्थ, अंगूठे और तर्जनी का मध्य भाग पितृतीर्थ कहलाता है इन्हीं तीर्थों से क्रमशः आचमन, पिंडदान आदि किया जाता है 4. रजस्वला का रक्त 5. अवतार 6. चरणामृत 7. ईश्वर 8. माता-पिता 9. अतिथि 10. योनि *वि.* (तत्.) 1. पवित्र, पावन 2. रक्षक, मुक्त करने वाला।

तीर्थंकर *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2.जिन 3. शास्त्रकार।

तीर्थ पुरोहित *पुं.* (तत्.) तीर्थ का पंडा।

तीर्थयात्रा *स्त्री.* (तत्.) तीर्थाटन, तीर्थ भ्रमण।

तीर्थराज *पुं.* (तत्.) प्रयाग।

तीर्थराजी *स्त्री.* (तत्.) काशी।

तीर्थाटन *पुं.* (तत्.) तीर्थयात्रा।

तीर्थिक *पुं.* (तत्.) 1. तीर्थ का ब्राह्मण 2. तीर्थंकर।

तीर्थ्य *पुं.* (तत्.) 1. एक रुद्र, 2. सहपाठी *वि.* तीर्थ संबंधी।

तीला *पुं.* (फा.) तिनका।

तीली *स्त्री.* (देश.) 1. मोटी सींक 2. सलाई।

तीवई *स्त्री.* (देश.) स्त्री, औरत।

तीवर *पुं.* (तत्.) 1. समुद्र 2. मछुआ 3. शिकारी।

तीव्र *पुं.* (तत्.) 1. अत्यंत, अतिशय 2. तेज 3. नितांत, बेहद 4. कडुवा 5. तीखा 6. लोहा 7. इस्पात 8. शिव 9. नदी का किनारा।

तीव्र गति *स्त्री.* (तत्.) हवा, वायु *वि.* तेज चाल वाला।

तीव्रगामी *वि.* (तत्.) तेज गतिवाला, तेज चाल का।

तीव्रता *स्त्री.* (तत्.) 1. तेजी 2. तीक्ष्णता 3. तीखापन।

तीव्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. राई 2. तुलसी 3. अजवाइन 4. चुटकी।

तीव्रानंद *पुं.* (तत्.) महादेव शिव।

तीव्रानुराग *पुं.* (तत्.) 1. उत्कट प्रेम 2. एक प्रकार का अतिचार।

तीस *वि.* (तद्.) बीस और दस, दस का तिगुना। तीसमार खाँ-बहुत वीर (व्यंग्य) वह अपने आपको बड़ा तीस मारखाँ समझता है *पुं.* (देश.) आमलकी, आँवला।

तीसरा *वि.* (देश.) 1. दूसरे के बाद का 2. गैर प्रयो. तीसरे आदमी के सामने आपको ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए थी।

तीसवाँ *पुं.* (देश.) क्रम में तीस के स्थान पर पड़ने वाला।

तीसी *स्त्री.* (तत्.) अलसी नामक तिलहन।

तुंग *वि.* (तत्.) 1. उन्नत, ऊँचा 2. पर्वत 3. नारियल 4. बुध ग्रह 5. ऊँचाई।

तुंगक *पुं.* (तत्.) 1. नागकेसर, पुन्नाग वृक्ष 2. एक पवित्र वन जहाँ समस्त मुनियों को वेद पढ़ाया जाता है।

तुंगता *स्त्री.* (तत्.) ऊँचाई।

तुंगत्व *पुं.* (तत्.) ऊँचाई, उच्चता।

तुंगनाथ *पुं.* (तत्.) हिमालय पर एक शिवलिंग और तीर्थ स्थान।

तुगभद्र *पुं.* (तत्.) मतवाला हाथी।

तुंग भद्रा *स्त्री.* (तत्.) एक नदी का नाम जो सह्याद्रि पर्वत से निकलकर कृष्णा में आ मिलती है।

तुंगमुख *पुं.* (तत्.) गैंडा।

तुंगवेणा *स्त्री.* (तत्.) महाभारतकालीन एक नदी का का नाम, कदाचित तुंगभद्रा का दूसरा नाम।

तुंगा *स्त्री.* (तत्.) 1. वंशलोचन 2. मैसूर की एक नदी 3. शमी वृक्ष।

तुंगारण्य *पुं.* (तत्.) ओरछा के पास और बेतवा के किनारे एक जंगल।

तुंगिनी *स्त्री.* (तत्.) महाशतावरी।

तुंगिमा *स्त्री.* (तत्.) ऊँचाई।

तुंगी *स्त्री.* (तत्.) 1. हल्दी 2. बनतुलसी 3. रात्रि, रात।

तुंगीपति *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

तुंगीश *पुं.* (तत्.) 1. शिव 2. कृष्ण 3. सूर्य, चंद्र।

तुंज *वि.* (तत्.) 1. दुष्ट 2. वज्र।

तुंड *पुं.* (तत्.) 1. मुँह, मुख 2. चोंच 3. थूथन 4. शिव, महादेव 5. हाथी की सूँड़ 6. तलवार की नोक।

तुंडि *स्त्री.* (तत्.) 1. मुँह 2. चोंच 3. नाभि, एक तरह का कुम्हड़ा।

तुंडिक *वि.* (तत्.) तुंडवाला, थूथन वाला।

तुंडिका *स्त्री.* (तत्.) 1. टोंटी 2. चोंच 3. नाभि।

तुंडिभ *वि.* (तत्.) तोंदल, तोंदवाला।

तुंडिल *वि.* (तत्.) 1. तोंद वाला, जिसकी नाभि उभरी या निकली हुई हो।

तुंडी *वि.* (तद्.) 1. मुँह वाला 2. चोंच वाला 3. थूथन वाला 4. सूँड़ वाला *स्त्री.* (तत्.) 1. नाभि 2. एक प्रकार का कुम्हड़ा।

तुंद *पुं.* (तत्.) पेट, उदर *वि.* (फा.) 1. तेज, उग्र, प्रचंड 2. जोशीला।

तुंदि *पुं.* (तत्.) 1. नाभि 2. पेट, उदर।

तुंदिक *वि.* (तत्.) 1. तोंद वाला 2 बड़ा-विशाल।

तुंदिका *स्त्री.* (तत्.) नाभि।

तुंदित *वि.* (तत्.) दे. तुंदिक।

तुंदिभ *वि.* (तत्.) दे. तुंदिक।

तुंदिलीकरण *पुं.* (तत्.) फुलाना, बढ़ाना।

तुंदी *स्त्री.* (तत्.) 1. नाभि *वि.* (तद्.) दे. तुंदिक *स्त्री.* (फा.) तेजी, तीव्रता 2. जोश 3. गुस्सा, क्रोध 4. लिंग का उत्थान।

तुंदैल *पुं.* (देश.) तोंद वाला, लंबोदर।

तुंफिल *वि.* (देश.) तोंदवाला, बड़े पेट वाला *पुं.* (तत्.) गणेश।

तुंब *पुं.* (तत्.) 1. लौकी, घीया 2. तूँबा 3. आँवला।

तुंबर *पुं.* (तत्.) 1. तानपूरा 2. एक गंधर्व का नाम।

तुंबरी *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार का अन्न।

तुंबा *पुं.* (तत्.) 1. कद्दू 2. कद्दू का पात्र 3. दुधार गाय 4. दूध का बर्तन।

तुंबिका *स्त्री.* (तत्.) दे. तुंबी।

तुंबी *स्त्री.* (तत्.) 1. छोटा कद्दू 2. तितलौकी 3. गोल कद्दू का खोपड़ा।

तुंबुरु *पुं.* (तत्.) 1. धनिया 2. तानपूरा।

तुअ *सर्व.* (देश.) दे. तुव।

तुअना *अ.क्रि.* (देश.) 1. चूना, टपकना 2. गिर पड़ना।

तुइ *सर्व.* (देश.) दे. तू।

तुई *स्त्री.* (देश.) तू ही 2. कपड़े पर बुनी हुई एक प्रकार की बेल।

तुऊर *पुं.* (देश.) अरहर।

तुक *स्त्री.* (देश.) 1. टुकड़ा, कड़ी 2. अक्षर मैत्री, काफ़िया मुहा. तुक जोड़ना- तुक मिलाना, कविता करना प्रयो. तुक जोड़ने से ही कविता नहीं हो जाती; तुक बैठाना- तुकबंदी करना प्रयो. वह कविता तो नहीं करता, बल्कि तुक बैठा लेता है *पुं.* (तद्.) मेल, सामंजस्य प्रयो. उनकी बात में कोई तुक नजर नहीं आती।

तुकतुकाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. तुकबंदी करना 2. भद्दी कविता करना।

तुकबंद *पुं.* (देश.) तुक्कड़, तुक बाँधने वाला।

तुकबंदी *स्त्री.* (देश.) 1. तुक जोड़ने का काम 2. भद् भद्दी कविता प्रयो. उसे बचपन से ही तुंकबदी करने का शौक है।

तुकमा *पुं.* (फा.) घुंडी फँसाने का फंदा।

तुकांत *पुं.* (तत्.) अंत्यानुप्रास, काफ़िया।

तुका *पुं.* (फा.) दे. तुक्का।

तुकार *पुं.* (देश.) अशिष्ट संबोधन।

तुकारी *स्त्री.* (देश.) 'तू-तू' करके संबोधित करने की क्रिया।

तुकासा *अ.क्रि.* (देश.) अशिष्ट संबोधन करना, तू-तू करके संबोधन करना।

तुक्कड़ *पुं.* (फा.) तुकबंदी करने वाला, तुक जोड़ने वाला।

तुक्कल *स्त्री.* (फा.) मोटी डोरी से उड़ने वाली पतंग।

तुक्का *पुं.* (फा.) बिना फल का बाण।

तुक्खार *पुं.* (तत्.) दे. तुखार।

तुखार *पुं.* (तत्.) 1. एक प्राचीन देश का नाम, तुखार देश का निवासी 2. घोड़ा, तुखार देश का घोड़ा।

तुख्म *पुं.* (फा.) 1. बीज, दाना 2. गुठली 3. औलाद, संतान 4. अंडा, वीर्य।

तुचार *पुं.* (तत्.) पैना

तुच्छ *वि.* (तत्.) 1. खोखला, निःसार 2. क्षुद्र 3. ओछा, नीच 4. थोड़ा *पुं.* सारहीन 2. भूसी 3. नील का पौधा।

तुच्छक *वि.* (तत्.) शून्य, खाली, रिक्त *पुं.* काले और हरे रंग का पन्ना या मरकत।

तुच्छता *स्त्री.* (तत्.) 1. नीचता 2. ओछापन, क्षुद्रता।

तुच्छा *स्त्री.* (तत्.) 1. नील का पौधा 2. छोटी इलाचयी 3. कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी।

तुच्छातितुच्छ *वि.* (तत्.) 1. छोटे से छोटा 2. अत्यंत निकृष्ट।

तुजुक *पुं.* (तुर्की.) 1. सजावट 2. प्रबंध, व्यवस्था 3. शान शौकत, ऐश्वर्य 4. आत्मचरित।

तुझ *सर्व.* (तद्.) तू का विभक्तियों के लगाने से बनने वाला रूप जैसे- तुझे, तुझ से, तुझ पर आदि।

तुझे *सर्व.* (तद्.) 'तू' का कर्म तथा संप्रदान कारक रूप जैसे तुझे, तुझ को।

तुटि *स्त्री.* (तत्.) छोटी इलायची।

तुटितुट *पुं.* (तत्.) शिव।

तुटुम *पुं.* (तत्.) मूषक, चूहा।

तुड़वाई *स्त्री.* (देश.) दे. तुड़ाई।

तुड़वाना *स.क्रि.* (देश.) तोड़ने का काम कराना, तोड़ने में प्रवृत्त करना।

तुड़ाई *स्त्री.* (देश.) 1. तोड़ने की क्रिया या भाव 2. तुड़ाने की क्रिया या भाव 3. तोड़ने की मजदूरी।

तुड़ाना *स.क्रि.* (देश.) 1. तोड़ने का काम कराना 2. बंधन छुड़ाना 3. संबंध तोड़ना।

तुड़ी *स्त्री.* (तत्.) एक रागिनी।

तुणि *पुं.* (तत्.) तुन का पेड़।

तुतराना *अ.क्रि.* (देश.) दे. तुतलाना।

तुतरौहा *वि.* (देश.) दे. तोतला।

तुतला *वि.* (देश.) दे. तोतला।

तुतलाना *अ.क्रि.* (देश.) अस्पष्ट उच्चारण करना, रुक रुक कर बोलना, साफ न बोलना प्रयो. अभी भी उनका लडक़ा तुतलाता है।

तुतली *वि.* (देश.) दे. तीतली।

तुत्थ *पुं.* (तत्.) 1. नीला थोथा, तूतिया 2. अग्नि 3. पत्थर।

तुत्थांजन *पुं.* (तत्.) तूतिया, नीला थोथा।

तुत्था *स्त्री.* (तत्.) 1. नील का पौधा 2. छोटी इलाचयी।

तुदन *पुं.* (तत्.) 1. व्यथा, पीड़ा 2. व्यथा देने की क्रिया।

तुन *पुं.* (देश.) एक विशेष वृक्ष।

तुनक *वि.* (फा.) दे. तुनुक।

तुनकना *अ.क्रि.* (देश.) दे. तिनकना।

तुनतुनी *स्त्री.* (अनु.) सारंगी, इकतारा, तुनतुन बजने वाला बाजा।

तुनी *स्त्री.* (देश.) तुन का पेड़।

तुनीर *पुं.* (तद्.) दे. तुणीर।

तुनुक *वि.* (फा.) 1. सूक्ष्म, बारीक 2. थोड़ा 3. नाजुक 4. दुबला-पतला।

तुनुकमिजाज *वि.* (फा.) 1. चिड़चिड़ा 2. जल्दी गुस्सा करने वाला 3. छोटी छोटी बात पर नाराज होने वाला।

तुनुकमिजाजी *पुं.* (फा.) 1. चिड़चिड़ापन 2. छोटी छोटी बात पर अप्रसन्न होने का भाव।

तुन्न *वि.* (तत्.) 1. तुन का पेड़ 2. फटे कपड़े का टुकड़ा।

तुपक *स्त्री.* (तुर्की.) 1. छोटी तोप 2. बंदूक।

तुफ *अव्य.* (फा.) धिक्, धिक्कार।

तुफक *स्त्री.* (फा.) बंदूक, तुपक, तुफंग।

तुफंग *स्त्री.* (फा.) बंदूक, तोप, तुपक प्रयो. तुफंग अंदाज- निशानेबाज, तुफंगची- बंदूकची।

तुफैल *पुं.* (अर.) कारण, जरिया।

तुभना *अ.क्रि.* (तद्.) स्तब्ध रहना, धक रह जाना।

तुम *सर्व.* (तद्.) 'तू' का बहुवचन रूप मुहा. तुम जानो तुम्हारा काम जाने- अपनी जिम्मेदारी पर।

तुमड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. गोल घिए या कद्दू का सूखा फल 2. सूखे कद्दू का बना हुआ पात्र।

तुमाना *स.क्रि.* (देश.) तूमने का काम कराना, रुई धुनने का काम करना।

तुमुल *पुं.* (तत्.) 1. सेना का कोलाहल 2. लड़ाई की हलचल 3. मुठभेड़ *वि.* 1. हलचल पैदा करने वाला 2. भयंकर 3 क्षुब्ध, घबराया हुआ।

तुम्हारा *सर्व.* (देश.) 'तुम' का संबंध कारक रूप।

तुम्हें *सर्व.* (देश.) तुम का तिर्यक रूप/विभक्ति परक रूप।

तुरंग *वि.* (तत्.) जल्दी चलने वाला *पुं.* 1. सात की संख्या 2. चित्त।

तुरंगक *पुं.* (तत्.) 1. बड़ी तोरई 2. घोड़ा।

तुरंगम *वि.* (तत्.) जल्दी चलने वाला *पुं.* 1. घोड़ा 2. चित्त।

तुरंगमी *स्त्री.* (तत्.) 1. घोड़ी 2. असगंध *पुं.* घुड़सवार, अश्वारोही।

तुरंगशाला *स्त्री.* (तत्.) अस्तबल, घुड़साल।

तुरंगारि *पुं.* (तत्.) 1. भैसा 2. कनेर।

तुरंगारूढ *पुं.* (तत्.) घुड़सवार, अश्वारोही।

तुरंगिका *स्त्री.* (तत्.) देवताली लता, घघरबेल।

तुरंगी *स्त्री.* (तत्.) 1. अश्वगंधा, असगंध 2. घोड़ी *पुं.* (तद्.) घुड़सवार।

तुरंज *पुं.* (फा.) 1. चकोता 2. बिजौरा नींबू 3. काढ़ा हुआ बडा बूटा।

तुरंत *क्रि.वि.* (तद्.) 1. जल्दी से, अतिशीघ्र 2. तत्क्षण, उसी समय, फौरन।

तुरंता *पुं.* (देश.) 1. गाँजा 2. सत्तू।

तुर *क्रि.वि.* (तत्.) शीघ्र, जल्दी *वि.* (तत्.) वेगवान, शीघ्रगामी।

तुरई *स्त्री.* (देश.) एक बेल जिसके लंबे फलों की तरकारी बनाई जाती है, तोरई।

तुरक *पुं.* (फा.) दे. तुर्क।

तुरकाना *पुं.* (फा.) 1. तुर्कों का सा, तुर्कों जैसा 2. तुर्कों की बस्ती।

तुरकानी *वि.* (फा.) तुर्कों की सी।

तुरकिन *स्त्री.* (फा.) तुर्क की स्त्री, तुर्क जाति की स्त्री।

तुरकिस्तान *पुं.* (फा.) दे. तुर्किस्तान।

तुरकी *वि.* (तुर्की.) 1. तुर्क देश का 2. तुर्क देश संबंधी *स्त्री.* तुर्की भाषा, तुर्किस्तान की भाषा।

तुरग *वि.* (तत्.) तेज चलने वाला।

तुरगारोह *पुं.* (तत्.) घुड़सवार।

तुरगोपचारक *पुं.* (तत्.) साईस।

तुरत *अव्य.* (देश.) शीघ्र, चटपट, तत्क्षण।

तुरपई *स्त्री.* (देश.) तुरपन।

तुरपन *स्त्री.* (देश.) तुरपने की क्रिया।

तुरपना *स.क्रि.* (देश.) 1. तुरपन की सिलाई करना 2. लुढियाना।

तुरपवाना *स.क्रि.* (देश.) दे. तुरपाना।

तुरम *पुं.* (तद्.) तुरही।

तुरमती *स्त्री.* (तुर्की.) एक शिकारी चिड़िया।

तुरय *पुं.* (तद्.) घोड़ा।

तुरसीला *वि.* (फा.) 1. खट्टा 2. पैना 3. कड़ा, 4. तीखा।

तुरही *स्त्री.* (देश.) फूँक कर बजाने वाला एक बाजा।

तुराई *स्त्री.* (तद्.) तोशक, गद्दा।

तुराना *अ.क्रि.* (देश.) दे. टूटना।

तुरायण *पुं.* (तत्.) 1. एक यज्ञ 2. अनासक्ति असंग।

तुरावत *वि.* (तत्.) वेग वाला, वेगवान।

तुरावती *स्त्री.* (तत्.) वेग वाली, तेज बहने वाली।

तुरावान *वि.* (तत्.) दे. तुरावत।

तुराषाट् *पुं.* (तत्.) इंद्र।

तुरासाह *पुं.* (तद्.) 1 इंद्र 2. विष्णु।

तुरिया *स्त्री.* (देश.) 1. जुलाहों का एक औजार 2. ऐसी गाय या भैंस जिसका बच्चा मर गया हो।

तुरी *स्त्री.* (तत्.) जुलाहों का एक औजार, तूलिका।

तुरीयंत्र *पुं.* (तत्.) सूर्य की गति जानने के लिए प्रयुक्त यंत्र।

तुरीय *वि.* (तत्.) चौथा, चतुर्थ।

तुरीयावस्था *स्त्री.* (तत्.) वेदांतियों के अनुसार चार अवस्थाओं में से अंतिम अवस्था।

तुरुक *पुं.* (देश.) दे. तुर्क।

तुरुप *पुं.* (देश.) ताश का एक खेल, ट्रंप।

तुरुपना *स.क्रि.* (देश.) दे. तुरपन'।

तुरुष्क *पुं.* (तत्.) 1. तुर्क जाति 2. तुर्किस्तान 3. लोबान 4. तुर्की घोड़ा।

तुर्क *पुं.* (फा.) तुर्किस्तान का निवासी।

तुर्कमान *पुं.* (फा.) 1. तुर्क जाति का मनुष्य 2. तुर्की घोड़ा।

तुर्कानी *पुं.* (फा.) दे. तुर्किन।

तुर्किन *स्त्री.* (फा.) तुर्क जाति की स्त्री, तुर्क की स्त्री।

तुर्किनी *स्त्री.* (फा.) दे. तुर्किन।

तुर्किस्तान *पुं.* (फा.) तुर्कों का देश, तुर्की।

तुर्की *वि.* (फा.) तुर्की का, तुर्किस्तान का *स्त्री.* तुर्किस्तान की भाषा 2. अकड़-गर्व मुहा. तुर्की तमाम होना- घमंड जाते रहना, शेखी निकल जाना प्रयो. थोड़ी ही देर में उनकी तुर्की तमाम हो गई।

तुर्रा *पुं.* (अनु.) चुसकी, भाँग आदि का घूँट।

तुर्वसु *पुं.* (तत्.) राजा ययाति के पुत्र का नाम।

तुर्श *वि.* (फा.) 1. खट्टा 2. रूखा 3. गुस्सैल, क्रुद्ध, बदमिजाज़।

तुर्शाना *अ.क्रि.* (देश.) खट्टा हो जाना प्रयो. दही तुर्शा गया है।

तुर्शी *स्त्री.* (फा.) 1. खटाई, अम्लता 2. अप्रसन्नता, नाराजगी।

तुलक *पुं.* (तत्.) राजा का सलाहकार राज-मंत्री।

तुलन *पुं.* (तत्.) 1. वजन, तौल 2. तौलना 3. तुलना करना।

तुलना *स.क्रि.* 1. तुलवाना, तौलाना 2. गाड़ी के पहियों को औंगाना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. तौला जाना 2. किसी आधार पर स्थित होना 3. ठान लेना मुहा. किसी काम या बात पर तुलना- कोई काम करने के लिए उतारू हो जाना प्रयो. भाई वह करने पर तुल जाए तो कुछ भी कर सकता है *स्त्री.* 1. किसी की बराबरी या घट-बढ़ का विचार 2. मिलान 3. समता 4. उपमा, परीक्षण करना, अनुमान लगाना।

तुलनात्मक *वि.* (तत्.) तुलना संबंधी।

तुलनी *स्त्री.* (तद्.) तराजू की डाँडी में सुई के दोनों ओर का लोहा।

तुलवाई *स्त्री.* (तत्.) तौलने की मजदूरी।

तुलवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. तौल करना, वजन कराना 2. पहिए की धुरी में तेल आदि पिलाना, औंगवाना।

तुलसारिणी *स्त्री.* (फा.) तरकस, तूणीर।

तुलसी *स्त्री.* (तत्.) तुलसी दल, एक पौधा जिसकी पत्तियों से एक प्रकार की तीक्ष्ण गंध निकलती है और इसमें कई औषधीय गुण हैं, यह अत्यंत पवित्र मानी जाती है।

तुलसी चौरा *पुं.* (तत्.) वह वर्गाकार उठा हुआ स्थान जहाँ तुलसी लगाई जाती है।

तुलसीदल *पुं.* (तत्.) तुलसी पत्र, तुलसी का पत्ता।

तुलसीदाना *पुं.* (तद्.) एक गहना।

तुलसीदास *पुं.* (तत्.) एक सुप्रसिद्ध भक्त कवि जो रामचरित मानस के रचयिता थे।

तुलसी पत्र *पुं.* (तत्.) तुलसी का पत्ता, तुलसी दल।

तुलसी वन *पुं.* (तत्.) 1. तुलसी का जंगल 2. तुलसी के पौधों का समूह।

तुलसी विवाह *स्त्री.* (तत्.) विष्णु की मूर्ति से तुलसी के विवाह का उत्सव यह कार्तिक शुक्ल पक्ष की प्रबोधिनी एकादशी को मनाया जाता है।

तुला *स्त्री.* (तत्.) 1. तुलना, मिलान 2. तराजू, काँटा 3. अनाज नापने का बरतन 4. एक राशि (तुला राशि) 5. मत्स्य की परीक्षा, जो प्राचीन काल में प्रचलित थी।

तुलाई *स्त्री.* (देश.) वह दोहरा कपड़ा जिसमें रुई भरी हो, यह ओढ़ने के काम आता है, दुलाई।

तुलादान *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का दान जिसमें व्यक्तियों के तौल के बराबर द्रव्य या पदार्थ का दान दिया जाता है।

तुलाना *अ.क्रि.* (देश.)पास आना, आ पहुँचना।

तुलि *स्त्री.* (तत्.) जुलाहों की कूँची, चित्र बनाने की कूँची।

तुलिका *स्त्री.* (तत्.) एक तरह का खंजन, एक तरह तरह की चिड़िया।

तुलित *वि.* (तत्.) 1. तुला हुआ 2. बराबर, समान।

तुलिनी *स्त्री.* (तत्.) सेमर का पेड़।

तुली *पुं.* (तत्.) दे. तुलि।

तुलीबास *पुं.* (देश.) एक प्रकार का महीन धान जिसका चावल बहुत सुगंधित होता है।

तुल्य *वि.* (तत्.) 1. समान, बराबर 2. सदृश 3. अभिन्न।

तुल्यता *स्त्री.* (तत्.) 1. बराबरी, समता 2. सादृश्य।

तुल्य दर्शन *वि.* (तत्.) 1. समान दृष्टि से देखने वाला 2. सबके प्रति समदृष्टि रखने वाला।

तुल्य योगिता *स्त्री.* (तत्.) अर्थालंकार का एक भेद।

तुल्य योगी *वि.* (तत्.) समान संबंध रखने वाला।

तुल्य रूप *वि.* (तत्.) समरूप, सदृश।

तुवर *वि.* (तत्.) 1. कसैला 2. बिना दाढ़ी-मूँछ का।

तुवरिका *स्त्री.* (तत्.) 1. गोपी चंदन 2. अरहर 3. फिटकरी।

तुवरी *स्त्री.* (तत्.) तूँबी, वैद्यक में प्रयुक्त छोटा पात्र, जो वात विकार या रक्त विकार दूर करने के लिए लगाया जाता है।

तुष *पुं.* (तत्.) 1. अन्न की भूसी 2. अंडे के ऊपर का छिलका 3. बेहड़े का पेड़।

तुषांबु *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की कांजी जो भूसी सहित कुटे हुए जौ को सड़ाकर बनाई जाती है।

तुषाग्नि *पुं.* (तत्.) तुषानल।

तुषानल *पुं.* (तत्.) 1. भूसी की आग 2. धासफूस की आग।

तुषार *पुं.* (तत्.) 1. पाला 2. हिम, बर्फ 3. एक प्रकार का कपूर 4. ओस।

तुषारर्तु *स्त्री.* (तत्.) ठंडक का मौसम, सर्दी का मौसम, शरद ऋतु।

तुषारांशु *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

तुषाराद्रि *पुं.* (तत्.) हिमालय पर्वत।

तुषित *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार के गण देवता 2. विष्णु।

तुषिता *स्त्री.* (तत्.) उपदेवियों का एक वर्ग।

तुषोत्थ *पुं.* (तत्.) तुषोदक।

तुषोदक *पुं.* (तत्.) 1. छिलके समेत कटे हुए जौ को सड़ाकर बनाई हुई काँजी, तुषांबु।

तुष्ट *वि.* (तत्.) 1. संतुष्ट, तृप्त 2. प्रसन्न, खुश।

तुष्टना *अ.क्रि.* (तद्.) तुष्ट होना, प्रसन्न होना।

तुष्टि *पुं.* (तत्.) 1. संतोष, तृप्ति 2. प्रसन्नता।

तुष्टिकरण *पुं.* (तत्.) तुष्ट करने की क्रिया।

तुष्टु *पुं.* (तत्.) कर्णमणि।

तुसार *पुं.* (तद्.) दे. तुषार।

तुस्त *स्त्री.* (तत्.) 1. धूल, गर्द 2. भूसी।

तुहमत *स्त्री.* (अर.) दे. तोहमत।

तुहमती *वि.* (अर.) इल्जाम लगाने वाला, आरोप लगाने वाला।

तुहिनांशु *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. कपूर।

तुहिन *पुं.* (तत्.) 1. पाला, तुषार, कुहरा 2. हिम 3. चाँदनी 4. शीतलता 5. ओस।

तुहिनाचल *पुं.* (तत्.) हिमालय पर्वत।

तुहिनाद्रि *पुं.* (तत्.) हिमालय पर्वत।

तूँबड़ा *पुं.* (तत्.) दे. तूँबा।

तूँबा *पुं.* (तत्.) 1. कदुआ गोल कद्‌दू, कड़वा गोल घिया, तितलौकी 2. साधुओं का कमंडल।

तूँबी *स्त्री.* (तत्.) 1. कदुआ गोल कद्‌दू 2. कद्‌दू को खोखला करके बनाया हुआ बर्तन मुहा. तूँबी लगाना- वात विकार के खींचने के लिए तूँबी का उपयोग करना।

तू *सर्व.* (तद्.) मध्यम पुरुष एक वचन सर्वनाम प्रयो. तू यहाँ क्या कर रहा है? तू-तड़ाक करना- कहा सुनी करना प्रयो. वह बात बात पर तू तड़ाक करने लगता है, अशिष्ट शब्दों का प्रयोग करना, गाली, गलौज करना।

तूअर *स्त्री.* (तद्.) अरहर का पौधा।

तूख *पुं.* (तद्.) सींक, खरका।

तूखना *क्रि.अ.* (तद्.) संतुष्ट होना *क्रि.स.* संतुष्ट करना।

तूटना *अ.क्रि.* (देश.) दे. टूटना।

तूठना *अ.क्रि.* (देश.) 1. तुष्ट होना, तृप्त होना 2. प्रसन्न होना, राजी होना।

तूण *पुं.* (तत्.) तरकश, तीर रखने का चोंगा।

तूणक *पुं.* (तत्.) एक छंद जिसका प्रत्येक चरण पंद्रह अक्षरों का होता है।

तूणि *स्त्री.* (तत्.) 1. तरकश, तूणीर 2. नील का पौधा 3. एक वात रोग जो मूत्राशय अथवा गुदा के भीतर होता है।

तूणी *पुं.* (तद्.) तुन का पेड़।

तूणीक *पुं.* (तत्.) तुन का पेड़।

तूत *पुं.* (फा.) शहतूत।

तूतक *पुं.* (तत्.) तूतिया।

तूतिया *पुं.* (तद्.) नीला थोथा।

तूती *स्त्री.* (फा.) 1. एक छोटी चिडिया जिसकी बोली बहुत मीठी होती है 2. कनेरी चिडिया मुहा. नक्कारखाने में तूती की आवाज- शोरगुल में धीमी आवाज का ना सुनना, बड़ों के सामने छोटों की कदर न होना; तूती बोलना -किसी की खूब चलना, धाक होना प्रयो. आजकल तो उनकी तूती बोल रही है।

तून *पुं.* (तत्.) 1. तुन का पेड़ 2. तूल नाम का लाल कपड़ा।

तूफान *पुं.* (अर.) 1. बाढ़, सैलाव 2. आँधी वायु के वेग का अंधड़ 3. आफत 4. बावैला 5. उपद्रव, झगड़ा।

तूफानी *वि.* (अर.) 1. तूफान संबंधी 2. तूफान खड़ा करने वाला, उपद्रवी, फसादी।

तूबरी *स्त्री.* (तत्.) 1. अरहर 2. गोपी चंदन।

तूमड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. तूँबी 2. तूँबी का बना हुआ बाजा।

तूमना *स.क्रि.* (देश.) 1. उधेड़ना 2. ऐब निकालना 3. गाली गलौज करना 4. नाक में दम करना 5. रहस्य खोलना, भेद प्रकट करना।

तूमा *पुं.* (देश.) दे. तूँबा।

तूमार *पुं.* (अर.) बात का बतंगड़।

तूर *पुं.* (तत्.) 1. नगाड़ा, एक प्रकार का बाजा 2. तुरही नामक बाजा, सिंघा।

तूरज *पुं.* (तद्.) दे. तूर्य।

तूरण *क्रि.वि.* (तद्.) 1. चटपट, तुरंत 2. शीघ्र, जल्दी।

तूरन *पुं.* (तद्.) दे. तूर्ण।

तूरना *स.क्रि.* (देश.) दे. तोड़ना।

तूरा *पुं.* (तत्.) तुरही नाम का बाजा *पुं.* (फा.) 1. ढेर-ढेरी 2. टीला 3. हदबंदी का निशान।

तूरान *पुं.* (फा.) फारस के उत्तरपूर्व में पड़ने वाला मध्य एशिया का भू भाग, तातार देश।

तूरानी *वि.* (फा.) 1. तूरान देश का 2. तूरान संबंधी।

तूरी *स्त्री.* (तत्.) धतूरे का पेड़।

तूर्ण *क्रि.वि.* (तत्.) शीघ्र, जल्दी तुरंत *वि.* फुर्तीला, वेगवान।

तूर्णक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का चावल जिसे त्वरितक भी कहते है।

तूर्त *क्रि.वि.* (तत्.) तुरंत, तत्काल, शीघ्र *वि.* तेज, फुर्तीला।

तूर्य *पुं.* (तत्.) 1. तुरही, सिंघा 2. मृदंग *वि.* चतुर्थ-चौथा प्रयो. तूर्य गोरव- एक काल सूचक यंत्र।

तूर्याश्रम *पुं.* (तत्.) चतुर्थाश्रम, संन्यासाश्रम।

तूल *पुं.* (तत्.) 1. आकाश 2. तूत का पेड़, शहतूत 3. रुई कपास 4. धतूरा *वि.* समान,सदृश *पुं.* (देश.) चटकीले रंग का सूती कपड़ा, गहरा लाल रंग।

तूलक *पुं.* (तत्.) रुई।

तूलता *स्त्री.* (देश.) तुल्यता, बराबरी।

तूलना *स.क्रि.* (तत्.) 1. बराबरी करना 2. धुरी में तेल देना।

तूलमतूल *क्रि.वि.* (देश.) आमने सामने, बराबरी पर।

तूला *स्त्री.* (तत्.) कपास।

तूलि *स्त्री.* (तत्.) दे. तूलिका।

तूलिका *स्त्री.* (तत्.) 1. चित्रकार की कूची, 2. रुई की बत्ती 3. रुई की गद्दी।

तूलिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. लक्ष्मण कंद 2. सेमर का पेड़।

तूली *स्त्री.* (तत्.) 1. नील का पौधा 2. रंग भरने की कूची 3. दिए की बाती।

तूवरिका *स्त्री.* (तत्.) 1. अरहर 2. गोपी चंदन।

तूवरी *स्त्री.* (तत्.) दे. तूवरिका।

तूष *पुं.* (तत्.) कपड़े का किनारा।

तूष्णी *स्त्री.* (तत्.) मौन, खमोशी, चुप्पी *वि.* (तद्.) मौन-चुप *क्रि.वि.* चुपचाप, बिना बोले।

तूष्णीक *वि.* (तत्.) मौन रहने वाला।

तूष्णीम *अव्यय.* (तत्.) चुपचाप, बिना बोले।

तूस *पुं.* (तद्.) भूसी, भूसा।

तूसदान *पुं.* (पुर्त.) कारतूस।

तूसना *स.क्रि.* (तद्.) संतुष्ट करना, तृप्त करना *अ.क्रि.* संतुष्ट होना-तृप्त होना।

तूसा *पुं.* (तद्.) चोकर-भूसी।

तूसी *वि.* (तत्.) 1. तूस के रंग का 2. स्लेटी रंग का।

तूस्त *पुं.* (तत्.) 1. धूल, रज 2. अणु 3. जटा 4. धनुष 5. पाप।

तृकुटि *स्त्री.* (तत्.) दे. त्रिकुटी।

तृक्ष *पुं.* (तत्.) कश्यप ऋषि।

तृख *पुं.* (तद्.) जायफल, जातीफल।

तृखा *पुं.* (तद्.) दे. तृषा।

तृजग *पुं.* (तद्.) दे. तिर्यक।

तृण *पुं.* (तत्.) 1. तिनका 2. घासपात 3. कुश 4. दूब प्रयो. तृणवत- तिनके के बराबर, अत्यंत तुच्छ; तृण तोड़ना- संबंध तोड़ना, नाता मिटाना।

तृणक *पुं.* (तत्.) घास की खराब पत्ती।

तृणकीया *स्त्री.* (तत्.) घास वाली जमीन।

तृणता *स्त्री.* (तत्.) तृणवत्त, निरर्थकता।

तृणप्राय *वि.* (तत्.) तिनके जैसा, तृणवत।

तृणमय *वि.* (तत्.) घास का बना हुआ।

तृणराज *पुं.* (तत्.) 1. ताड़ 2. नारियल 3. खजूर।

तृणवत *वि.* (तत्.) तिनके के समान।

तृणांजन *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का गिरगिट।

तृणाग्नि *स्त्री.* (तत्.) तिनके की आग।

तृणान्न *पुं.* (तत्.) तिन्नी।

तृणाम्ल *पुं.* (तत्.) लवण-तृण।

तृणेंद्र *पुं.* (तत्.) ताड़ का पेड़।

तृणोक *पुं.* (तत्.) घासफूस की झोपड़ी।

तृणोत्तम *पुं.* (तत्.) उखर्वल, ऊखल, तृण।

तृणोद्भव *पुं.* (तत्.) तिन्नी, निवार।

तृणोल्का *स्त्री.* (तत्.) घास फूस की मशाल।

तृतीय *वि.* (तत्.) तीसरा।

तृतीयक *पुं.* (तत्.) तीसरे दिन आने वाला ज्वर, तिजरा 2. तीसरी वार होने वाली स्थिति।

तृतीयांश *पुं.* (तत्.) तीसरा भाग।

तृतीया *स्त्री.* (तत्.) प्रत्येक पक्ष का तीसरा दिन, तीज 2. करण कारक।

तृतीया तत्पुरुष *पुं.* (तत्.) तत्पुरुष समास का एक भेद।

तृतीया नायिका *स्त्री.* (तत्.) नायिका भेद के अनुसार अधमा या सामान्य नायिका।

तृतीयाश्रम *पुं.* (तत्.) तीसरा आश्रम, वानप्रस्थ।

तृपत *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

तृपता *वि.* (देश.) दे. तृप्त।

तृपल *वि.* (तत्.) 1. प्रसन्न, संतुष्ट 2. व्याकुल, बेचैन *पुं.* पत्थर, उपल।

तृपला *स्त्री.* (तत्.) त्रिफला 2. लता।

तृप्त *पुं.* (तत्.) 1. घी 2. तर्पण करने वाला *वि.* संतुष्ट, अघाया हुआ।

तृप्ताना *अ.क्रि* (देश.) तृप्त होना।

तृप्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. संतुष्टि, संतोष 2. प्रसन्नता, खुशी।

तृफला *पुं.* (तद्.) दे. त्रिफला।

तृफू *स्त्री.* (तत्.) एक सर्प जाति।

तृभंगी *वि.* (देश.) दे. त्रिभंगी।

तृषा *स्त्री.* (तत्.) 1. प्यास 2. इच्छा, अभिलाषा 3. लोभ, लालच।

तृषालु *वि.* (तत्.) 1. प्यासा 2. लोभी।

तृषावंत *वि.* (तत्.) प्यासा।

तृषावान *वि.* (तत्.) प्यासा।

तृषित *वि.* (तत्.) 1. प्यासा 2. इच्छुक, अभिलाषी।

तृषितोत्तरा *स्त्री.* (तत्.) पटसन, असनपर्णी।

तृष्णा *पुं.* (तत्.) 1. प्यास 2. अप्राप्त वस्तु को पाने की तीव्र इच्छा 3. लोभ, लालच।

तृष्णाकुल *वि.* (तत्.) प्यास से विकल।

तृष्णारि *पुं.* (तत्.) पित्तपापड़ा।

तृष्णालु *वि.* (तत्.) 1. प्यासा 2. लोभी, लालची।

तृष्णावर्त *पुं.* (तत्.) चक्रवात, बवंडर।

तृष्णौषध *पुं.* (तत्.) एलवालु नामक गंध, द्रव्य।

तृष्य *पुं.* (तत्.) लोभ लालच।

तेंतालीस *वि.* (तद्.) चालीस और तीन *पुं.* (देश.) तेंतालीस की संख्या।

तेंतालीसवाँ *वि.* (देश.) क्रम में तेंतालीस के स्थान पर पड़ने वाला।

तेंतीस *वि.* (तद्.) तीस और तीन *पुं.* तीस से तीन अधिक की संख्या।

तेंतीसवाँ *वि.* (देश.) क्रम में तैंतीस के स्थान पर आने वाला।

तेंदु *पुं.* (तद्.) एक पेड़ जिसका हीर आबनूस के नाम से बिकता है।

तेंदुआ *पुं.* (तत्.) चीते की जाति का एक हिंसक जंतु जिसके शरीर पर गोल-गोल काले-काले धब्बे होते हैं।

ते *सर्व.* (तत्.) वे, वे लोग।

तेइ *सर्व.* (तद्.) उसे।

तेइस *वि.* (तद्.) दे. तेईस।

तेइसवाँ *वि.* (देश.) दे. तेईसवाँ।

तेईस *वि.* (तद्.) बीस और तीन *पुं.* बीस से तीन अधिक की संख्या।

तेईसवाँ *वि.* (देश.) क्रम में तेईस के स्थान पर आने वाला।

तेखना *अ.क्रि* (तद्.) 1. बिगाड़ना 2. क्रुद्ध होना 3. नाराज होना।

तेग *स्त्री.* (फा.) तलवार।

तेगा *पुं.* (फा.) 1. खाँडा 2. कुश्ती का एक दाँव।

तेज *पुं.* (तद्.) 1. तीखापन, तीक्ष्णता, उग्रता 2. कांति, चमक, दमक 3. पराक्रम, बल 4. वीर्य 5. ताप, गर्मी 6. सोना।

तेज़ *वि.* (फा.) 1. तीक्ष्ण धार का 2. फुर्तीला 3. तीक्ष्ण बुद्धि वाला 4. महँगा 5. प्रचंड, उग्र।

तेजक *पुं.* (तत्.) मूँज, सरपत।

तेजधारी *वि.* (तद्.) तेजस्वी।

तेजन *पुं.* (तत्.) 1. बाँस 2. मूँज 3. तेज उत्पन्न करने की क्रिया या भाव।

तेजनक *पुं.* (तत्.) 1. शर 2. सरपत।

तेजना *स.क्रि* (तद्.) दे. तजना।

तेजनी *स्त्री.* (तत्.) 1. गुच्छा, चटाई 2. तेजवल 4. 4. चाव।

तेजपत्ता *पुं.* (तद्.) दालचीनी की जाति का एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ मसाले के तौर पर प्रयुक्त होती है।

तेजपत्र *पुं.* (तत्.) तेज पत्ता, तेजपात।

तेजपात *पुं.* (देश.) दे. तेजपत्ता।

तेजफल *पुं.* (तत्.) तेजपत्ता के वृक्ष का फल।

तेजल *पुं.* (तत्.) 1. चातक 2. पपीहा।

तेजवंत *वि.* (देश.) दे. तेजवान।

तेजवान *वि.* (तद्.) 1. तेजस्वी, तेजवाला 2. कांतिमान, चमकीला 3. बलशाली *स्त्री.* तेजवती।

तेजस *पुं.* (तत्.) तेज।

तेजसा *स्त्री.* (तद्.) अनाहत चक्र की दूसरी मात्रा।

तेजसी *वि.* (तद्.) तेजवान, तेजयुक्त।

तेजस्व *पुं.* (तत्.) शिव, महादेव।

तेजस्वत *वि.* (तत्.) तेजस्वी, तेजयुक्त।

तेजस्वान *वि.* (तद्.) दे. तेजस्वत।

तेजस्विनी *स्त्री.* (तत्.) मालकँगनी *वि.* तेजयुक्त।

तेजस्विता *स्त्री.* (तत्.) तेजस्वी होने का भाव।

तेजस्वी *वि.* (तद्.) 1. तेजयुक्त, कांतिमान 2. प्रतापी, प्रतापवान।

तेजा *पुं.* (फा.) एक प्रकार का काला रंग *वि.* तेजी, महँगी।

तेजाब *वि.* (फा.) किसी क्षार का अम्ल।

तेजाबी *वि.* (फा.) तेजाब से संबंधित प्रयो. तेजाबी सोना।

तेजिका *स्त्री.* (तत्.) मालकँगनी।

तेजिनी *स्त्री.* (तत्.) तेजबल।

तेजिस *वि.* (तद्.)1. तेज किया हुआ 2. उत्तेजित।

तेजवान *वि.* (तद्.) 1. तेजवाला, कांतिवान, कांति युक्त 2. उत्साही।

तेजी *स्त्री.* (फ़ा.) 1. तीव्रता, उग्रता, प्रचंडता 2. जल्दी, शीघ्रता 3. तेज होने का भाव।

तेजोमय *वि.* (तत्.) 1. तेज से भरा हुआ 2. तेजवान, कांतिवान, कांति युक्त।

तेजोवती *स्त्री.* (तत्.) 1. तेजबल वाली 2. गजपिप्पली 3. मालकंगनी।

तेता *वि.पुं.* (तद्.) उतना, उसी कदर।

तेतालिस *वि.* (तद्.) *पुं.* (देश.) दे. तैंतालीस।

तेतिक *वि.* (देश.) उतना।

तेती *वि.* (देश.) दे. 'तेता'।

तेतीस *वि.* (तद्.) दे. तैंतीस *पुं.* (देश.) दे. तैंतीस।

तेतो *वि.* (देश.) दे. तैंता।

तेन *पु.* (तत्.) गीत का प्रारंभिक स्वर।

तेम *पु.* (तत्.) आर्द्रता, गीला होना।

तेमन *पु.* (तत्.) 1. पका हुआ भोजन, व्यंजन 2. गीलापन, आर्द्रता।

तेमनी *स्त्री.* (तत्.) चूल्हा।

तेमरू *पु.* (देश.) 1. तेंदू का वृक्ष 2. आबनूस का वृक्ष।

तेरस *स्त्री.* (देश.) किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि।

तेरसि *स्त्री.* (देश.) दे. तेरस।

तेरह *वि.* (तद्.) दस और तीन *पुं.* दस से तीन अधिक की संख्या।

तेरहवाँ *वि.* (देश.) तेरह के स्थान पर पड़ने वाला।

तेरही *स्त्री.* (देश.) 1. किसी के मरने का तेरहवाँ दिन 2. प्रेतकर्म की तेरहवीं तिथि, जिसमें पिंडदान और ब्राह्मण भोज के बाद मृतक के घर को शुद्ध माना जाता है।

तेरा *सर्व.* (तद्.) मध्यम पुरुष एकवचन का सूचक सर्वनाम शब्द, तू का संबंध कारकीय रूप।

तेरे *सर्व.* (तद्.) तू का बहुवचन संबंध कारकीय रूप।

तेलंग *पु.* (देश.) दे. तैलंग।

तेल *पु.* (तत्.) चिकना तरल पदार्थ जो बीजों या वनस्पतियों से निकलता है जैसे- सरसों का तेल, मगर का तेल, तारपीन का तेल मुहा. तेल में हाथ डालना- अपनी सत्यता प्रमाणित करना, शपथ खाना; तेल उठाना या चढ़ाना- तेल की रस्म पूरी करना।

तेलगू *स्त्री.* (देश.) 1. आंध्र प्रदेश की भाषा 2. तेलंगाना प्रदेश की भाषा।

तेलहन *पु.* (देश.) वह बीज जिससे तेल निकलता है जैसे- सरसो, तिल आदि।

तेलहा *वि.* (देश.) 1. तेल वाला, तेल संबंधी 2. जिसमें तेल हो, तेल युक्त, तेल से बना हुआ।

तेला *पु.* (देश.) तीन दिन का उपवास।

तेलिन *स्त्री.* (देश.) 1. तेली की स्त्री, तेली जाति की की स्त्री 2. एक बरसाती कीड़ा।

तेलिया *वि.* (देश.) 1. तेल के रंग वाला 2. तेल की तरह चिकना और चमकीला *पुं.* चिकना और चमकीला रंग 2. एक प्रकार का बबूल 3. एक प्रकार की छोटी मछली।

तेली *पु.* (देश.) तेल पेरने या बेचने का काम करने वाला मुहा. तेली का बैल- हर समय काम में लगा रहने वाला व्यक्ति।

तेवन *पु.* (तत्.) क्रीड़ा और आमोद प्रमोद का स्थान, विहार, उपवन।

तेवर *पु.* (देश.) क्रोध भरी दृष्टि मुहा. तेवर आना- चक्कर आना; तेवर चढ़ाना- गुस्सा होना; तेवर बदलना- नाराज हो जाना, मृत्यु का संकेत होना; तेवर बुरे दिखाई देना- प्रेम भाव में फर्क पड़ना; तेवर सहना- क्रोध सहना *स्त्री.* एक ताल का नाम जिसमें सात दीर्घ अथवा 14 लघु मात्राएँ होती हैं।

तेवरा *पु.* (देश.) एक ताल का नाम।

तेवरी *स्त्री.* (देश.) दे. त्यौरी।

तेवहार *पु.* (देश.) दे. त्यौहार।

तेवान *पु.* (देश.) सोच-विचार।

तेवाना *अ.क्रि.* (देश.) चिंता करना, सोचना।

तेह *पु.* (तद्.) 1. गुस्सा, क्रोध 2. घमंड, अहंकार 3. तेजी, प्रचंडता।

तेहरा *वि.* (देश.) 1. तीन परत वाला 2. तीसरी बार किया हुआ 3. तिगुना-तेहरी।

तेहराना *स.क्रि.* (देश.) तीन परत या लपेट का करना 2. तीसरी बार करना।

तेहा *पु.* (देश.) 1. गुस्सा, क्रोध 2. अहंकार, घमंड, शेखी।

तेहि *सर्व.* (देश.) उसे, उसको।

तेही *पु.* (देश.) 1. गुस्सा करने वाला, क्रोधी 2. घमंडी, अभिमानी।

तैं *क्रि.वि.* (देश.) दे. तें।

तैंड़ा *सर्व.* (तद्.) तेरा।

तैंतालीस *वि.* (तद्.) दे. तेंतालीस।

तैंतिडीक *वि.* (तत्.) इमली की कांजी से बनाया हुआ।

तैंतीस *वि.* (तद्.) दे. तेंतीस।

तै *क्रि.वि.* (तद्.) उतना, उस कदर *पुं.* (अर.) 1. समाप्ति, अंत 2. निपटान, फैसला 3. चुकता, बेबाकी प्रयो. उसने अपना कर्ज तै कर दिया।

तैक्त *पु.* (तद्.) तीतापन, चरपराहट।

तैक्ष्ण्य *पु.* (तत्.) 1. तीक्ष्णता, तीक्ष्णता का भाव 2. पैनापन 3. निर्दयता।

तैखाना *पु.* (फ़ा.) दे. तहखाना।

तैजस *पु.* (तत्.) 1. कोई चमकीला पदार्थ जैसे धातु, मणि 2. घी 3. पराक्रम 4. एक शारीरिक शक्ति जो आहार को रस और रस को धातु में बदलती है।

तैजसावर्तनी *स्त्री.* (तत्.) चांदी, सोने को गलाने की की घरिया, मूषा।

तैजसी *स्त्री.* (तत्.) गजपिप्पली।

तैतिक्ष *वि.* (तत्.) सहनशील, धैर्यवान।

तैतिर *पु.* (तद्.) तीतर।

तैतिरीयारण्यक *पु.* (तत्.) यजुर्वेद की तैत्तरीय शाखा का आरण्यक।

तैतिल *पु.* (तत्.) फलित ज्योतिष के अनुसार एक करण, जिसमें जन्म लेने वाला कलाकुशल, रूपवान, वक्ता, गुणी और सुशील होता है।

तैत्तिर *पु.* (तत्.) तीतर पक्षी, तीतरों का समूह।

तैत्तिरि *पु.* (तत्.) कृष्ण यजुर्वेद के प्रवर्तक एक ऋषि का नाम।

तैत्तिरीय *स्त्री.* (तत्.) 1. कृष्ण यजुर्वेद की छियासी शाखाओं में से एक 2. यजुर्वेद की शाखा का अनुयायी या अध्ययन करने वाला।

तैत्तिरीयक *वि.* (तत्.) दे. तैत्तिरीय।

तैनात *वि.* (अर.) काम पर नियुक्त या नियत।

तैनाती *स्त्री.* (अर.) किसी काम पर नियत या नियुक्ति की प्रक्रिया।

तैमिर *पु.* (तत्.) आँख का एक रोग जिसमें आँखों में धुँधलापन आ जाता है।

तैयार *वि.* (अर.) 1. जो बनकर बिलकुल ठीक हो 2. जो पककर खाने योग्य हो प्रयो. ये केले अब बिलकुल तैयार हैं 3. तत्पर, मुस्तैद प्रयो. फौज लड़ने के लिए बिलकुल तैयार थी मुहा. गला तैयार होना- गला सधा हुआ और सुरीला होना; हाथ तैयार होना- बहुत कुशल हो जाना 4. मोटा-ताजा, सुडौल 5. पूर्ण, पूरा 6. आमादा, कटिबद्ध, जाने को तैयार।।

तैयारी *स्त्री.* (अर.) 1. तैयार होने की क्रिया या भाव 2. तत्परता, मुस्तैदी 3. धूमधाम प्रयो. बारात पूरी तैयारी के साथ निकली 4. सजावट प्रयो. वह घर से पूरी तैयारी से निकलती है।

तैरणी *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की झाड़ी जिसका प्रयोग वैद्यक में किया जाता है।

तैरना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. उतरना, पानी के ऊपर रहना 2. किसी का हाथ पैर मारकर पानी पर चलना।

तैराई *स्त्री.* (देश.) 1. तैरने की क्रिया या भाव 2. तैरने की मज़दूरी।

तैराक *वि.* (देश.) तैरने वाला *पु.* तैरने में कुशल।

तैराकी *स्त्री.* (देश.) तैरने की कला।

तैराना *स.क्रि.* (देश.) दूसरे को तैरने में लगाना, तैरने का काम कराना।

तैर्थ *पु.* (तत्.) तीर्थ में किया जाने वाला कृत्य।

तैर्थिक *पु.* (तत्.) 1. तीर्थ संबंधी 2. शास्त्रकार 3. तीर्थ स्थान का जल।

तैलंग *पु.* (तद्.) तेलुगु प्रदेश, आंध्र प्रदेश।

तैलंगी *पु.* (देश.) 1. तैलंग देशवासी 2. तैलंग देश-संबंधी।

तैल *पु.* (तत्.) तिल, सरसों आदि किसी तिलहन से निकाला हुआ तेल।

तैलक *पु.* (तत्.) थोड़ा तेल।

तैल यंत्र *पु.* (तत्.) कोल्हू, तेल निकालने का यंत्र।

तैलवाहक पोत *पु.* (तत्.) तेल ले जाने वाला जहाज।

तैलांबुका *स्त्री.* (तत्.) तिलचट्टा।

तैलाक्त *वि.* (तत्.) तेल युक्त, जिसमें तेल लगा हो।

तैलाख्य *पु.* (तत्.) तुरुष्क या शिलारस नामक गंध द्रव्य।

तैलागुरु *पु.* (तत्.) अगर की लकड़ी।

तैलाभ्यंग *पु.* (तत्.) तेल की मालिश, शरीर पर तेल मलने की क्रिया।

तैलिक *वि.* (तत्.) तेल संबंधी।

तैलिन *पु.* (तद्.) तिल का खेत।

तैलिनी *स्त्री.* (तत्.) बत्ती।

तैलीन *पु.* (तत्.) तिल का खेत।

तैलीशाला *स्त्री.* (तत्.) तेल पेरने का स्थान।

तैल्वक *पु.* (तत्.) लोध।

तैश *पु.* (अर.) आवेश क्रोध मुहा. तैश में आना- बहुत गुस्सा होना।

तैष *पु.* (तत्.) पौष मास की पूर्णिमा का दिन 2. तिष्य नक्षत्र वाला।

तैषी *स्त्री.* (तत्.) पौष की पूर्णिमा।

तैसा *वि.* (तद्.) उसी प्रकार का।

तैसे *क्रि.वि.* (देश.) दे. वैसे।

तैसो *वि.* (देश.) दे. वैसा।

तों *क्रि.वि.* (देश.) दे. त्यों।

तोंअर *पु.* (देश.) दे. तोमर।

तोंद *स्त्री.* (तद्.) पेट का आगे बढा हुआ भाग मुहा. तोंद पिचकना- मोटापा दूर होना, पेट अंदर की ओर धँस जाना।

तोंदल *वि.* (देश.) तोंद वाला, जिसकी तोंद निकली हुई हो।

तोंदी *स्त्री.* (तद्.) नाभि।

तोंदीला *वि.* (देश.) दे. तोंदल।

तोंदूमल *वि.* (देश.) दे. तोंदल।

तो *अव्य.* (तद्.) उस स्थिति में।

तोइ *पु.* (तद्.) पानी, जल।

तोई *स्त्री.* (देश.) गोट, नेफ़ा।

तोक *पु.* (तत्.) शिशु, बच्चा।

तोकक *पु.* (तत्.) चातक, पपीहा।

तोक्म *पु.* (तत्.) 1. अंकुर 2. हरा कच्चा जौ 3. हरा रंग 4. कान का मैल।

तोटक *पु.* (तत्.) एक वर्णवृत्त जिसके एक चरण में चार सगण होते हैं।

तोड़ *पु.* (देश.) 1. तोड़ने की क्रिया या भाव 2. नदी के जल का जोरदार बहाव 3. कुश्ती का एक दाँव प्रयो. तोड़-जोड, जोड़- तोड़-दाँव पेच, उपाय।

तोड़ जोड़ *पु.* (देश.) दाँव पेच, चाल।

तोड़क *वि.* (देश.) तोड़ने वाला।

तोड़न *पु.* (तत्.) फाड़ना, विभाजित करना।

तोड़ना *स.क्रि.* (तद्.) 1. खडित करना, विभक्त करना 2. टुकड़े करना प्रयो. दीवार तोड़ना, लकड़ी तोड़ना।

तोड़-फोड़ *स्त्री.* (देश.) नष्ट करना, नष्ट करने की क्रिया या भाव।

तोड़-मरोड़ *स्त्री.* (देश.) 1. तोड़ने-मरोड़ने का काम 2. गलत अर्थ लगाना।

तोड़र *पु.* (देश.) एक गहने का नाम।

तोड़वाना *स.क्रि.* (देश.) तोड़ने का काम कराना।

तोड़ा *पु.* (देश.) 1. पैर या कलाई में पहनने का एक गहना 2. रुपए रखने की थैली मुहा. तोड़े गिनना या उलटना- हजारों रुपए देना 3. नदी का किनारा 4. घाटा, कमी 5. वह लोहा जिसे चकमक पर मारने से आग निकलती है 6. तीन बार तक ब्याई हुई भैंस।

तोड़ाई *स्त्री.* (देश.) दे. तुड़ाई।

तोड़ाना *स.क्रि.* (देश.) दे. तुड़ाना।

तोतक *पु.* (देश.) पपीहा।

तोतराना *अ.क्रि.* (देश.) दे. तुतलाना।

तोतला *वि.* (देश.) तुतलाकर बोलने वाला, जिसका उच्चारण अस्पष्ट हो।

तोतलाना *अ.क्रि.* (देश.) दे. तुतलाना।

तोतली *स्त्री.* (देश.) तुतलाकर बोलने वाली।

तोता *पु.* (फा.) 1. पक्षी, जिसकी चोंच लाल और रंग हरा होता है 2. बंदूक का घोड़ा मुहा. हाथों के

तोते उड़ जाना- बहुत घबरा जाना; तोता पालना- कोई दुर्व्यसन पाल लेना।

तोता चश्म *पु.* (फा.) बेवफ़ा, बेमुरव्वत।

तोती *स्त्री.* (फा.) तोते की मादा।

तोत्र. *पुं.* (तत्.) 1. कोड़ा 2. अंकुश 3. जानवरों को हाँकने की छड़ी।

तोद *पु.* (तत्.) पीड़ा, कष्ट, व्यथा।

तोदन *पु.* (तत्.) 1. चाबुक, कोड़ा 2. व्यथा, पीड़ा 3. एक पेड़ तथा उसका फल जो वैद्यक में काम आता है।

तोदरी *स्त्री.* (फा.) फारस का एक वृक्ष जिसके बीज दवा के काम आते हैं।

तोप *स्त्री.* (तुर्की.) युद्ध में गोलाबारी का एक अस्त्र मुहा. तोप की सलामी उतारना- किसी विशिष्ट व्यक्ति के आगमन पर तोप में बारूद भरकर चलाना; तोप के मुँह पर छोड़ना- किसी को निराश्रित छोड़ देना।

तोपखाना *पु.* (फा.) वह स्थान जहाँ तोपे रखी जाती है।

तोपना *स.क्रि.* (देश.) छिपाना, ढाँकना।

तोफ़गी *स्त्री.* (फ़ा.) तोफ़ा होने का भाव, अच्छापन।

तोफा *वि.* (अर.) बढ़िया।

तोबड़ा *पु.* (फ़ा.) घोड़े को दाना खिलाने वाला थैला।

तोबा *स्त्री.* (अर.) किसी घृणित काम को न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा मुहा. तोबा तिल्ला मचाना- चीखना, चिल्लाना; तोबा तोड़ना- अपनी बात से फिर जाना; तोबा बुलवाना- पूरी तरह से परास्त करना।

तोमड़ी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की आतिशबाजी।

तोमनोम *पु.* (देश.) गान का आरंभिक स्वर।

तोमर *पु.* (तत्.) 1. भाले की तरह का एक अस्त्र 2. राजपूत क्षत्रियों का एक राजवंश 3. काव्य. एक सममात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 12 मात्राएं होती हैं, अंत में क्रमश: गुरु-लघु होते हैं।

तोमरिका *स्त्री.* (तत्.) तुवरिका, गोपीचंदन, अरहर।

तोमरी *स्त्री.* (देश.) तूँमड़ी 2. कड़वा कद्दू।

तोय *अव्य.* (देश.) तो भी, फिर भी *सर्व.* तुझे।

तोयकर्म *पु.* (तत्.) तर्पण।

तोयदागम *पु.* (तत्.) वर्षा ऋतु, बरसात का मौसम।

तोयनिधि *पु.* (तत्.) समुद्र, सागर।

तोयांजलि *स्त्री.* (तत्.) दे. तोय कर्म।

तोयाग्नि *स्त्री.* (तत्.) बड़वानल।

तोयाधार *पु.* (तत्.) तालाब, जलाशय।

तोयाधिवसिनी *स्त्री.* (तत्.) पाटला वृक्ष।

तोयालय *पु.* (तत्.) समुद्र, सागर।

तोयाशय *पु.* (तत्.) 1. झील 2. जलाशय।

तोयेश *पु.* (तत्.) 1. वरुण 2. शतभिषा नक्षत्र 3. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।

तोयोत्सर्ग *पु.* (तत्.) वर्षा, बारिश।

तोर *स्त्री.* (अर.) तौर, तरीका, ढंग।

तोरई *स्त्री.* (देश.) दे. तुरई।

तोरण *पु.* (तत्.) किसी घर का बाहरी फाटक या बाहरी द्वार, जिसे मालाओं या पताकाओं से सजाया गया हो।

तोरन *पु.* (तद्.) दे. तोरण।

तोरना *स.क्रि.* (देश.) दे. तोड़ना।

तोरा *पु.* (फ़ा.) तुर्रा, कलगी *सर्व.* (देश.) तेरा, तुम्हारा।

तोराई *अव्य.* (तद्.) शीघ्रता, तेजी।

तोराना *स.क्रि.* (देश.) दे. तुड़ाना।

तोरावान *वि.* (तद्.) वेगवान, तेज।

तोरी *स्त्री.* (देश.) तुरई।

तोल *पु.* (तत्.) 1. तोला 2. तौल, वजन *पु.* (देश.) नाव का डाँडा।

तोलक *पु.* (तत्.) तोला।

तोलन *पु.* (तत्.) तोलने की क्रिया।

तोलना *स.क्रि.* (देश.) दे. तौलना मुहा. तोल तोलकर बोलना- सोच समझकर बोलना।

तोलवाना *स.क्रि.* (देश.) दे. तौलवाना।

तोला *पु.* (तत्.) 1. तोला 2. एक तोले का बाट।

तोल्य *पु.* (तत्.) तौलने की क्रिया।

तोशक *स्त्री.* (तुर्की.) 1. हलका गद् दा 2. गुदगुदा बिछौना।

तोशदान *पु.* (फ़ा.) 1. पाथेय रखने की थैली 2. कारतूस रखने की थैली

तोशा *पु.* (फ़ा) पाथेय।

तोष *पु.* (तत्.) 1. संतुष्टि, संतोष, तृप्ति 2. प्रसन्नता, आनंद, खुशी।

तोषक *वि.* (तत्.) संतुष्ट करने वाला, तुष्ट करने वाला।

तोषण *पु.* (तत्.) 1. संतोष, तृप्ति 2. संतुष्ट करने का भाव।

तोषणी *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा।

तोषना *अ.क्रि.* (तद्.) संतुष्ट करना, प्रसन्न करना।

तोषल *पु.* (तत्.) 1. मूसल 2. एक अस्त्र 3. कंस का एक मल्ल जिसे श्री कृष्ण ने धनुर्यज्ञ में मारा था।

तोषित *वि.* (तत्.) जिसे तुष्ट या तृप्त किया गया हो।

तोषी *वि.* (तत्.) 1. संतुष्ट करने वाला 2. प्रसन्न करने वाला।

तोसागार *पु.* (तुर्की.) तोशाखाना।

तोहफ़गी *स्त्री.* (अर.) भलाई, अच्छाई, खूबी।

तोहफ़ा *पु.* (अर.) सौगात, भेंट, उपहार *वि.* अच्छा, बढ़िया, उत्तम।

तोहमत *स्त्री.* (अर.) मिथ्या आरोप, लांछन।

तोहमती *वि.* (अर.) लांछन लगाने वाला, झूठा अभियोग लगाने वाला।

तोहरा *सर्व.* (देश.) दे. तुम्हारा।

तोहार *सर्व.* (देश.) दे. तुम्हारा।

तौंकना *अ.क्रि.* (देश.) दे. तौंसना।

तौंस *स्त्री.* (तद्.) घूप लगने से लगने वाली प्यास।

तौंसना *अ.क्रि.* (देश.) गरमी से झुलसना, तपना, प्यासा होना।

तौंसा *पु.* (तद्.) भीषण ताप, कड़ी गरमी।

तौ *क्रि.वि.* (देश.) तो।

तौक *पु.* (अर.) 1. हँसुली की तरह का एक गहना 2. पट्टा।

तौकीर *स्त्री.* (अर.) आदर, सम्मान, प्रतिष्ठा।

तौक्षिक *पु.* (तत्.) धनु-राशि।

तौतालिक *पु.* (तत्.) कुमारिल भट्ट कृत मीमांसा शास्त्र।

तौतिक *पु.* (तत्.) 1. मोती 2. मोती की सीप।

तौन *स्त्री.* (देश.) ऐसी रस्सी जिसे गाय को दुहते समय बछड़े को गाय के अगले पैर में बाँध देते है।

तौनी *स्त्री.* (देश.) रोटी सेंकने का छोटा तवा, तवी।

तौफ़ीक *स्त्री.* (अर.) 1. ईश्वर कृपा 2. शक्ति, सामर्थ्य 3. योग्यता, पात्रता।

तौबा *स्त्री.* (अर.) तोबा।

तौर *पु.* (तत्.) एक प्रकार का यज्ञ (अर.) 1. चाल चलन, तौर-तरीका 2. अवस्था, दशा, हालत मुहा. तौर-बेतौर होना-हालत खराब होना 3. प्रकार, भाँति (देश.) मथानी, मथने की रस्सी नेत्री।

तौरि *स्त्री.* (देश.) चक्कर, घुमैर।

तौरीत *पु.* (देश.) दे. तौरेत।

तौरेत *पु.* (इबरानी.) यहूदियों का प्रधान धर्मग्रंथ।

तौर्य *पु.* (तत्.) ढोल मंजीरा।

तौर्यत्रिक *पु.* (तत्.) नाच-गाना।

तौल *पु.* (तत्.) 1. तराजू 2. तुला राशि, *स्त्री.* भार, परिमाण 2. तौलने की क्रिया या भाव।

तौलना *स.क्रि.* (तद्.) 1. किसी पदार्थ का वजन करना 2. जोखना, अनुमान करना 3. तेल लगाना मुहा. तौल तौल कर कदम रखना-सावधानी बरतना, समझबूझकर व्यवहार करना; तौल तौल कर बोलना- सावधानीपूर्वक बोलना।

तौलवाई *स्त्री.* (देश.) दे. तौलाई।

तौलवाना *स.क्रि.* (देश.) किसी से तोलने का काम करना, तोलने में प्रवृत्त करना।

तौला *पु.* (देश.) 1. गल्ला तोलने वाला 2. मटका 3. महुए की शराब।

तौलाई *स्त्री.* (देश.) 1. तौलने की क्रिया या भाव 2. 2. तौलने की मजदूरी।

तौलाना *स.क्रि.* (देश.) 1. तौलने का काम कराना 2. तौलने के काम में लगाना।

तौलिक *पु.* (तत्.) चित्रकार।

तौलिया *पु.* (देश.) जिसे तोला जाए, तुलने योग्य *स्त्री.* (अर.) शरीर पोंछने का मोटा अंगोछा।

तौल्य *पु.* (तत्.) 1. वजन, भार 2. समानता, सादृश्य।

तौश्रवस *पु.* (तत्.) एक प्रकार का गान।

तौषर *पु.* (तत्.) पाला, ठंड *वि.* बर्फीला, तुषार युक्त।

तौसना *अ.क्रि.* (देश.) गर्मी से व्याकुल होना।

तौहीन *स्त्री.* (अर.) अपमान, बेइज्जती।

त्यक्त *वि.* (तत्.) छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ।

त्यक्त जीवित *वि.* (तत्.) मरने को तैयार, जिसने जीने की उम्मीद छोड़ दी हो।

त्यक्तव्य *वि.* (तत्.) त्यागने योग्य, जो छोड़ने योग्य हो।

त्यक्ता *वि.* (तत्.) त्यागने वाला *स्त्री.* जिसे छोड़ा गया हो।

त्यक्ताग्नि *वि.* (तत्.) गृहाग्नि की उपेक्षा करने वाला, ब्राह्मण।

त्यक्तात्मा *वि.* (तद्.) हताश, निराश।

त्यग्नायि *पु.* (तद्.) एक प्रकार का गीत।

त्यजन *पु.* (तत्.) छोड़ने का काम, त्याग।

त्यजनीय *वि.* (तत्.) त्यागने योग्य, त्याज्य।

त्यजित *वि.* (तत्.) दे. त्यक्त।

त्यज्यमान *वि.* (तत्.) त्यक्त, जिसका त्याग कर दिया गया हो।

त्याँ *पु.* (तद्.) जिस।

त्याग *पु.* (तत्.) 1. उत्सर्ग, किसी से नाता तोड़ने की क्रिया 2. ममत्व छोड़ना 3. कुर्बानी 4. दान।

त्यागना *स.क्रि.* (तद्.) छोड़ना, तजना, त्याग करना।

त्यागपत्र *पु.* (तत्.) 1. इस्तीफा 2. किसी चीज का त्याग करने के लिए लिखा गया पत्र।

त्यागवान *वि.* (तत्.) जिसमें त्याग करने की शक्ति हो, त्यागी।

त्यागी *वि.* (तद्.) जिसने सब कुछ त्याग दिया हो, विरक्त।

त्याजित *वि.* (तत्.) जिससे छुड़ाया गया हो, जिससे उपेक्षा कराई गई हो।

त्याज्य *वि.* (तत्.) छोड़ने योग्य, त्याग करने योग्य।

त्युँ *क्रि.वि.* (देश.) दे. त्यों।

त्यूँरस *पु.* (देश.) गत वर्ष से पहले का वर्ष।

त्यों *अव्य.* (देश.) 1. उस प्रकार, उस तरह, वैसे 2. उसी वक्त, उसी समय, तत्क्षण, ओर, तरफ।

त्योरी *स्त्री.* (देश.) 1. चितवन 2. निगाह मुहा. त्योरी चढ़ाना- आँखे चढ़ाना, क्रोध करना; त्योरी में बल पड़ना- त्योरी चढ़ना।

त्योहार *पु.* (ततछ.) पर्व का दिन, पर्व मुहा. त्योहार मनाना- उत्सव के दिन आमोद प्रमोद करना।

त्योहारी *स्त्री.* (देश.) वह धन जो त्योहार के उपलक्ष्य में दिया जाता है।

त्यौं *क्रि.वि.* (देश.) दे. त्यों।

त्यौनार *पु.* (देश.) तरीका, ढंग।

त्यौराना *अ.क्रि.* (देश.) माथा घूमना, सिर में चक्कर आना।

त्यौहार *पु.* (देश.) दे. त्योहार।

त्यौहारी *स्त्री.* (देश.) दे. त्योहारी।

त्रंबक *पु.* (तद्.) दे. त्र्यंबक।

त्रंबक्क *पु.* (तद्.) दे. त्र्यंबक।

त्र *वि.* (तत्.) 1. रक्षक 2. तीन।

त्रण *पु.* (तद्.) दे. तीन।

त्रपा *स्त्री.* (तत्.) 1. लज्जा, शर्म, हया 2. कीर्ति, यश।

त्रपित *वि.* (देश.) 1. लज्जित 2. लज्जाशील 3. विनम्र।

त्रपु *पु.* (तत्.) 1. राँगा 2. सीसा।

त्रपुटी *स्त्री.* (तत्.) छोटी इलायची।

त्रपुल *पु.* (तत्.) राँगा।

त्रपुष *पु.* (तत्.) 1. राँगा 2. खीरा।

त्रपुषी *स्त्री.* (तत्.) खीरा, ककड़ी।

त्रप्सा *स्त्री.* (तत्.) जमा हुआ कफ़।

त्रप्स्य *पु.* (तत्.) मठ्ठा।

त्रय *वि.* (तत्.) 1. तीन 2. तीसरा।

त्रयदेव *पु.* (तत्.) त्रिदेव, ब्रह्मा-विष्णु-महेश।

त्रयी *स्त्री.* (तत्.) 1. तीन वस्तुओं का समूह जैसे- वेद त्रयी 2. ब्रह्मा, विष्णु, महेश 3. वह स्त्री जिसका पति और बच्चे जीवित हों।

त्रयीमय *पु.* (तत्.) 1. सूर्य, परमेश्वर।

त्रयोदश *वि.* (तत्.) तेरह, तेरहवाँ।

त्रयोदशी *स्त्री.* (तत्.) किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि, तेरस।

त्रष्टा *पु.* (तत्.) दे. तष्टा।

त्रस *पु.* (तत्.) जैन धर्म के अनुसार जीवों का एक प्रकार, मनुष्य, पशु-पक्षी आदि।

त्रसन *पु.* (तत्.) 1. भय, डर 2. व्याकुलता।

त्रसर *पु.* (तत्.) तसर, जुलाहों का एक उपकरण, ढरकी।

त्रस रेणु *पु.* (तत्.) सूक्ष्म कण, धूल का एक सूक्ष्म कण जो छिद्र में आने वाले प्रकाश में दिखाई दे।

त्रसरैनि *स्त्री.* (तद्.) दे. त्रसरेणु।

त्रसाना *स.क्रि.* (देश.) डराना, भय दिखाना।

त्रसित *वि.* (तत्.) भयभीत, डरा हुआ।

त्रसुर *वि.* (तत्.) भीरू, डरपोक।

त्रस्त *वि.* (तत्.) डरा हुआ, भयभीत।

त्राटक *पु.* (तत्.) योग की एक क्रिया जिसमें किसी एक बिंदु पर दृष्टि रखते हैं।

त्राण *पु.* (तत्.) 1. रक्षा, बचाव 2. रक्षा का साधन, कवच प्रयो. शिरस्त्राण, पादत्राण।

त्राणक *पु.* (तत्.) रक्षक।

त्रात *वि.* (तत्.) बचाया हुआ, रक्षित।

त्रातव्य *वि.* (तत्.) रक्षा करने योग्य, बचाने योग्य।

त्राता *पु.* (तद्.) रक्षा करने वाला, रक्षक, बचाने वाला।

त्रातार *पु.* (तत्.) रक्षक, बचाने वाला।

त्रापुष *पु.* (तत्.) राँगे का बरतन या कोई पदार्थ।

त्रायंती *स्त्री.* (तत्.) त्रायमाण लता।

त्रायमाण *पु.* (तत्.) बनफशे के आकार प्रकार की एक लता जिसके कसैले बीज वैद्यक में काम आते आते हैं पर्या. देवबाला, बलभद्रा, भयनाशिनी, रक्षिणी *वि.* रक्षक, रक्षा करने वाला।

त्रायमाणिका *स्त्री.* (तत्.) दे. त्रायमाण।

त्रास *स्त्री.* (तत्.) 1. डर, भय 2. कष्ट, तकलीफ़।

त्रासक *पु.* (तत्.) 1. डराने वाला, भयभीत करने वाला 2. दूर करने वाला।

त्रासद *वि.* (तत्.) दुखद, दुखांत।

त्रासदी *स्त्री.* (तत्.) दुखांत नाटक।

त्रासन *पु.* (तत्.) 1. डराने का काम, धमकाने का काम 2. डराने वाला।

त्रासना *स.क्रि.* (तद्.) 1. डराना 2. धमकाना।

त्रासित *वि.* (तत्.) भयभीत, त्रस्त।

त्रासी *वि.* (तद्.) डराने वाला, त्रासक।

त्राहि *अव्य.* (तत्.) बचाओ! रक्षा करो! प्रयो. त्राहि-त्राहि करना-दया या रक्षा के लिए प्रार्थना करना। त्राहि मचना-रक्षा के लिए चीख पुकार होना।

त्रिंश *वि.* (तत्.) तीसवाँ।

त्रिंशत *वि.* (तत्.) तीस।

त्रि *वि.* (तत्.) तीन।

त्रिकंट *पु.* (तत्.) दे. त्रिकंटक।

त्रिकंटक *पु.* (तत्.) 1. गोखरू 2. त्रिशूल 3. टेंगरा मछली।

त्रिक *पु.* (तत्.) 1. तीन का समूह यौ. त्रिफला, त्रिकुटा, त्रिदेव आदि 2. रीढ़ के नीचे का भाग *वि.* 3. तिगुना, तिहरा, त्रिविध 4. तीन प्रतिशत।

त्रिका *स्त्री.* (तत्.) 1. कुएँ का ढक्कन 2. कुएँ की गरारी।

त्रिकाय *पु.* (तत्.) बुद्धदेव।

त्रिकाल *पु.* (तत्.) 1. तीनों काल- भूतकाल, वर्तमानकाल, भविष्यत्काल 2. तीनों समय-सुबह, दोपहर, शाम।

त्रिकालज्ञ *पु.* (तत्.) तीनों कालों का ज्ञाता, सर्वज्ञ।

त्रिकालदर्शिता *स्त्री.* (तत्.) त्रिकालज्ञता, तीनों कालों कालों की बातें जानने की शक्ति।

त्रिकालदर्शी *पु.* (तत्.) 1. त्रिकालज्ञ 2. तीनों कालों की बातों को देखने वाला व्यक्ति *वि.* त्रिकालज्ञ, तीनों कालों की बातों को देखने वाला।

त्रिकालाज्ञता *स्त्री.* (तत्.) तीनों कालों की बातें जानने की शक्ति।

त्रिकुटा *पु.* (तद्.) सोंठ, मिर्च और पीपल का समूह।

त्रिकोण *पु.* (तत्.) 1. तीन कोने वाला 2. त्रिभुज का क्षेत्र 3. योनि, भग 4. जन्मकुंडली में लगन, पाँचवा और नौवाँ स्थान।

त्रिगामी *वि.* (तत्.) 1. तीनों लोकों में बहने वाली 2. त्रिपथगा।

त्रिगुण *पु.* (तत्.) सत्व, रज और तम, तीन गुणों का समूह *वि.* तिगुना, तीन गुना, तीन गुणों वाला *स्त्री.* 1. दुर्गा 2. माया 3. तंत्र में एक प्रसिद्ध बीज।

त्रिगुणात्मक *वि.* (तत्.) तीन गुणों वाला *पुं.* तीन गुणों वाला व्यक्ति, तीनों गुणों से युक्त।

त्रिगुणी *स्त्री.* (तत्.) बेल का पेड़।

त्रिगुन *वि.* (तद्.) तीन गुणों वाला।

त्रित *पु.* (तत्.) 1. ब्रह्मा के मानस पुत्र एक ऋषि मनु 2. चाक्षुष के बारह पुत्रों में से एक 3. गौतम।

त्रितय *पु.* (तत्.) धर्म, अर्थ, काम तीनों का समूह।

त्रितिया *स्त्री.* (देश.) दे. तृतीया।

त्रिदशारि *पु.* (तत्.) असुर।

त्रिदशांकुश *पु.* (तत्.) वज्र।

त्रिदशाचार्य *पु.* (तत्.) इंद्र।

त्रिदशाधिप *पुं.* (तत्.) इंद्र।

त्रिदशाध्यक्ष *पु.* (तत्.) दे. त्रिदशायन।

त्रिदशायन *पु.* (तत्.) विष्णु।

त्रिदशायुध *पु.* (तत्.) वज्र।

त्रिदशालय *पु.* (तत्.) स्वर्ग, सुमेरु पर्वत।

त्रिदशाह्वार *पु.* (तत्.) अमृत।

त्रिदशेश्वर *पु.* (तत्.) इंद्र।

त्रिदशेश्वरी *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा।

त्रिदिवाधीश *पु.* (तत्.) इंद्र, देवता।

त्रिदिवेश *पु.* (तत्.) देवता, इंद्र।

त्रिदिवोद्भवा *स्त्री.* (तत्.) 1. बड़ी इलायची 2. गंगा।

त्रिदिवौका *पु.* (तत्.) देवता।

त्रिदोषना *अ.क्रि.* (तद्.) तीनो दोषों के कोप में पड़ना।

त्रिधर्मा *पु.* (तत्.) महादेव, शिव।

त्रिधा *क्रि.वि.* (तत्.) तीन प्रकार से, तीन तरह से *वि.* तीन तरह का।

त्रिधाम *पु.* (तत्.) 1. शिव, विष्णु, अग्नि 4. मृत्यु 5. स्वर्ग।

त्रिधारा *स्त्री.* (तत्.) 1. तीन धारा वाला सेहुड़ 2. स्वर्ग, मर्त्य और पाताल तीनों लोकों में बहने वाली गंगा।

त्रिनयन *वि.* (तत्.) तीन आँखों वाला *पुं.* शिव, महदेव।

त्रिनयना *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा।

त्रिनाथ *पु.* (तत्.) विष्णु।

त्रिनेत्र *पु.* (तत्.) 1. महादेव, शिव 2. सोना।

त्रिपथगा *स्त्री.* (तत्.) गंगा, तीनों लोकों- स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक में बहने वाली गंगा।

त्रिपद *स्त्री.* (तत्.) 1. गायत्री छंद 2. हंसपदी वृक्ष।

त्रिपदी *स्त्री.* (तत्.) 1. तिपाई 2. हंसपदी 3. गायत्री।

त्रिपर्ण *स्त्री.* (तत्.) पलाश का पेड़।

त्रिपर्णी *स्त्री.* (तत्.) 1. शालपर्णी 2. बनकपास।

त्रिपाठी *पु.* (तत्.) तीनों वेदों को जानने वाला व्यक्ति 2. त्रिवेदी, तिवारी, ब्राह्मणों की जाति।

त्रिपिटिक *पु.* (तत्.) भगवान बुद्ध के उपदेशों का संग्रह।

त्रिपिताना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. संग्रह कराना 2. तृप्ति पाना 3. तृप्त होना।

त्रिपुर *पु.* (तत्.) 1. तीनो लोक 2. वाणासुर का एक नाम 3. मय दानव द्वारा बनाए गए तीन नगर जो स्वर्ग, अंतरिक्ष और मर्त्यलोक में बनाए गए थे।

त्रिपुर सुंदरी *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा।

त्रिपुरांतक *पु.* (तत्.) महादेव, शिव।

त्रिपुरा *स्त्री.* (तत्.) कामाख्या देवी की एक मूर्ति।

त्रिपुरारि *पु.* (तत्.) त्रिपुर राक्षस के शत्रु या अंत करने वाले, शिव, महादेव।

त्रिपुरारी *पु.* (तत्.) दे. त्रिपुरारि।

त्रिपुरासुर *पु.* (तत्.) बाणासुर।

त्रिफला *पु.* (तत्.) आँवले, हरड़ और बेहड़े का समूह।

त्रिबली *स्त्री.* (तत्.) पेट पर पड़ने वाले तीन बल।

त्रिबेनी *स्त्री.* (तद्.) दे. त्रिवेणी।

त्रिभंग *वि.* (तत्.) तीन जगह से टेढ़ा।

त्रिभंगी *वि.* (तत्.) तीन जगह से टेढ़ा *पु.* 1. एक राग 2. एक मात्रिक छंद जिसमें 32 मात्राएँ होती हैं।

त्रिभुज *पु.* (तत्.) तीन भुजाओं वाला क्षेत्र प्रयो. तीन भुजाओं वाली आकृति त्रिभुज कहलाती है।

त्रिभुवन *पु.* (तत्.) तीन लोक- स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल।

त्रिमुख *पु.* (तत्.) 1. शाक्यमुनि 2. गायत्री जपने की एक मुद्रा।

त्रिमूर्ति *पु.* (तत्.) 1. ब्रह्मा, विष्णु और महेश 2. सूर्य *स्त्री.* 1. ब्रह्म की एक शक्ति 2. बौद्धों की एक देवी।

त्रिय *स्त्री.* (देश.) दे. त्रिया।

त्रिया *वि.* (तत्.) औरत, स्त्री, नारी।

त्रियाजीत *वि.* (तत्.) स्त्री के वश में न आने वाला। वाला।

त्रियातीत *वि.* (तत्.) तीन या त्रिगुण से परे टि. त्रियातीत की श्रेणी को सबसे बढ़कर बताया गया है।

त्रियोदश *वि.* (तद्.) दे. त्रयोदश।

त्रिरेख *वि.* (तत्.) तीन रेखाओं वाला।

त्रिलोक *पुं.* (तत्.) तीनों लोक, स्वर्ग-मर्त्य और पाताल लोक।

त्रिलोकनाथ *पुं.* (तत्.) तीनों लोकों का स्वामी, ईश्वर 2. कृष्ण 3. सूर्य 4. राम-कृष्ण आदि विष्णु का कोई अवतार।

त्रिलोकपति *पुं.* (तत्.) दे. त्रिलोकनाथ।

त्रिलोकमणि *पुं.* (तत्.) सूर्य।

त्रिलोकी *पुं.* (तद्.) 1. ईश्वर, भगवान 2. सूर्य।

त्रिलोकी नाथ *पुं.* (तद्.) दे. त्रिलोकनाथ।

त्रिलोकेश *पुं.* (तत्.) 1. ईश्वर, भगवान 2. सूर्य।

त्रिलोचन *पुं.* (तत्.) शिव, महादेव।

त्रिलोचना *स्त्री.* (तत्.) 1. दुर्गा 2. व्यभिचारिणी स्त्री।

त्रिवट *पुं.* (तत्.) दे. तिर्वण।

त्रिवण *पुं.* (तत्.) एक संपूर्ण जाति का राग जो दोपहर के समय गाया जाता है।

त्रिवणी *स्त्री.* (तत्.) एक रागिनी।

त्रिवली *स्त्री.* (तत्.) दे. त्रिबली।

त्रिविक्रम *पुं.* (तत्.) 1. वामन अवतार 2. विष्णु।

त्रिविध *वि.* (तत्.) तीन प्रकार का *क्रि.वि.* तीन प्रकार से।

त्रिवेणी *स्त्री.* (तत्.) तीन नदियों का संगम गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम स्थान, प्रयाग।

त्रिवेद *पुं.* (तत्.) ऋक, यजु तथा सामवेद 2. तीनो वेदों का ज्ञाता।

त्रिवेदी *पुं.* (तत्.) तीनो वेदों, ऋक, यजु, साम को जानने वाला।

त्रिशंकु *पुं.* (तत्.) एक सूर्यवंशी राजा जो हरिश्चंद्र के के पिता थे, जिन्हें ऋषि विश्वामित्र ने सशरीर स्वर्ग भेजा किंतु इंद्र ने उन्हें पुनः मर्त्य लोक की ओर धकेल दिया, तभी से वे बीच में लटके हुए हैं।

त्रिशक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. इच्छा, ज्ञान और क्रिया रूपी तीन शक्तियाँ 2. तांत्रिकों में काली, तारा, त्रिपुरा-तीनों देवियाँ 3. गायत्री।

त्रिशूल *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का अस्त्र, जिसके सिर पर तीन फल होते हैं 2. दैहिक, दैविक और भौतिक तीन दुख।

त्रिशूलधारी *पुं.* (तत्.) शिव।

त्रिशूली *पुं.* (तत्.) त्रिशूलधारी, शिव।

त्रिसित *वि.* (तद्.) दे. तृषित।

त्रुसिता *स्त्री.* (तत्.) त्रिशर्करा, गुड़, शक्कर, मिश्री-तीनों का मिश्रण।

त्रुटि *स्त्री.* (तत्.) 1. कमी, गलती 2. भूल-चूक 3. छोटी इलायची या उसका पौधा 4. समय का एक सूक्ष्म विभाग जो दो क्षण के बराबर होता है।

त्रुटित *वि.* (तत्.) 1. टूआ हुआ 2. आहत।

त्रेता *पुं.* (तत्.) चार युगों में से दूसरा युग, जिसमें भगवान राम हुए थे।

त्रेताग्नि *पुं.* (तत्.) दक्षिण, गार्हपत्य और आह्वनीय तीन प्रकार की अग्नियाँ।

त्रेतिनि *स्त्री.* (तत्.) दक्षिण, गार्हपत्य और आह्वनीय अग्नियों से संबद्ध क्रिया।

त्रेधा *क्रि.वि.* (तत्.) 1. तीन प्रकार से 2. तीन भागों में।

त्रै *वि.* (तद्.) तीन।

त्रैकालिक *वि.* (तत्.) 1. त्रिकाल संबंधी 2. तीनों कालों में होने वाला।

त्रैकाल्य *वि.* (तत्.) 1. तीनों कालों से संबंधित 2. तीन दशाएँ-उत्पत्ति, रक्षण और विनाश 3. सूर्योदय, अपराह्न और सूर्यास्त तीनों समय का।

त्रैकोणिक *पुं.* (तत्.) 1. तीन कोणों वाला 2. जिसके तीन पार्श्व हों।

त्रैगुणिक *वि.* (तत्.) 1. तीन गुणों वाला 2. तिगुना।

त्रैगुण्य *वि.* (तत्.) तीनों गुणों का भाव।

त्रैदशिक *वि.* (तत्.) ईश्वरीय, देवताओं से संबंधित।

त्रैध *वि.* (तत्.) तिगुना, तिहरा।

त्रैपुरुष *वि.* (तत्.) पुरुषों की तीन पीढ़ी तक चलने वाला।

त्रैमातुर *पुं.* (तत्.) लक्ष्मण।

त्रैमासिक *वि.* (तत्.) हर तीसरे महीने होने वाला। जैसे- त्रैमासिक पत्रिका।

त्रैमास्य *पुं.* (तत्.) तीन महीने का समय।

त्रैयंबक *वि.* (तत्.) त्र्यबंक संबंधी।

त्रैयंबिका *स्त्री.* (तत्.) गायत्री।

त्रैलोक *पुं.* (तत्.) इंद्र।

त्रैलोक्य *पुं.* (तत्.) 1. स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल- तीनों लोक 2. 21 मात्राओं वाला एक छंद।

त्रैवर्गिक *वि.* (तत्.) ऐसा कर्म जिससे धर्म, अर्थ और काम की सिद्धि हो।

त्रैवर्षिक *वि.* (तत्.) तीन वर्ष का।

त्रैवार्णिक *पुं.* (तत्.) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य- तीनों वर्णों का धर्म *वि.* त्रिवर्ण से संबंधित।

त्रैवार्षिक *वि.* (तत्.) तीन वर्षों में एक बार होने वाला, तीन वर्ष संबंधी।

त्रैविक्रम *पुं.* (तत्.) विष्णु।

त्रैविद्य *पुं.* (तत्.) 1. तीनों वेदों को जानने वाला 2. तीन वेदों का अध्ययन।

त्रैविश्वय *पुं.* (तत्.) 1. स्वर्ग में रहने वाला 2. देवता।

त्रैशंकव *पुं.* (तत्.) त्रिशंकु के पुत्र हरिश्चंद्र।

त्रैस्वर्य *पुं.* (तत्.) तीनों स्वर-उदात्त, उदात्त, और स्वरित।

त्रैहायण *पुं.* (तत्.) तीन वर्ष का समय।

त्रोटक *पुं.* (तत्.) 1. एक शृंगार प्रधान नाटक 2. एक राग 3. एक छंद 4. एक विषैला कीड़ा।

त्रोटकी *स्त्री.* (तत्.) संगीत में एक रागिनी।

त्रोटि *पुं.* (तत्.) 1. कायफल 2. चोंच 3. एक प्रकार की मछली।

त्रोण *पुं.* (तत्.) तरकश।

त्रोतल *वि.* (तत्.) तोतला, तुतलाकर बोलने वाला।

त्रोत्र *पुं.* (तत्.) 1. अस्त्र 2. चाबुक 3. एक प्रकार का रोग।

त्र्यंगुल *वि.* (तत्.) तीन अंगुल की लंबाई वाला।

त्र्यंजन *पुं.* तीन प्रकार के अंजन- कालांजन, रसांजन और पुष्पांजन।

त्र्यंबक *पुं.* (तत्.) 1. शिव, महादेव 2. एक रुद्र।

त्र्यंबका *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा जिसके सोम, सूर्य और अनल नेत्र माने जाते हैं।

त्र्यंबुक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार की मक्खी।

त्र्यक्ष *पुं.* (तत्.) तीन आँखों वाला, शिव।

त्र्यक्षक *पुं.* (तत्.) शिव, महादेव।

त्र्यक्षर *वि.* (तत्.) दे. त्र्यक्षरक।

त्र्यक्षरक *पुं.* (तत्.) 1. तीन अक्षरों वाला 2. तीन अक्षरों का यंत्र।

त्र्यध्वगा *स्त्री.* (तत्.) गंगा।

त्र्यमृतयोग *पुं.* (तत्.) ऐसा योग जो कुछ विशिष्ट दिनों, तिथियों, नक्षत्रों और वारों के संयोग से होता है।

त्र्यवरा *स्त्री.* (तत्.) तीन सदस्यों की शासक सभा।

त्र्यशीत *वि.* (तत्.) तिरासीवाँ।

त्र्यशीति *वि.* (तत्.) तिरासी।

त्र्यस्र *पुं.* (तत्.) त्रिकोण।

त्र्यहैहिक *पुं.* (तत्.) ऐसा गृहस्थ जिसके घर में तीन दिन तक निर्वाह करने की सामग्री हो।

त्र्यार्षेय *पुं.* (तत्.) 1. तीन प्रवरों वाला गोत्र 2. अंधा, बधिर और मूक (यज्ञ में इसका प्रवेश निषिद्ध है।

त्र्याहिक *वि.* (तत्.) तीन दिनों में होने वाला।

त्र्युषण *पुं.* (तत्.) दे. त्र्यूषण।

त्र्यूषण *पुं.* (तत्.) 1. सोठ, पीपल और मिर्च का चूर्ण 2. वैद्यक में एक प्रकार का घृत जो त्रिकुटा के मेल से बनाया जाता है।

त्र्योदशी *स्त्री.* (देश.) दे. त्रयोदशी।

त्वक *पु.* (तत्.) 1. छिलका, छाल 2. चमड़ी, त्वचा, खाल।

त्वङ्मय *वि.* (तत्.) चमड़े या छाल का बना हुआ।

त्वच *पु.* (तत्.) 1. दालचीनी 2. तेजपत्ता, तेजपात 3. छाल।

त्वचकना *अ.क्रि.* पिचकना, भीतर की ओर धँसना।

त्वचा *स्त्री.* (तत्.) चर्म, चमड़ा।

त्वचिसार *पु.* (तत्.) बाँस।

त्वदीय *सर्व.* (तत्.) तुम्हारा।

त्वरण *पु.* (तत्.) दे. त्वरा।

त्वरणीय *वि.* (तत्.) शीघ्रतापूर्वक करने योग्य।

त्वरा *स्त्री.* (तत्.) जल्दी, शीघ्रता।

त्वरारोह *पु.* (तत्.) कबूतर।

त्वरावान *वि.* (तद्.) 1. शीघ्रगामी 2. फुर्तीला 3 काम को जल्दी करने वाला।

त्वरि *स्त्री.* (तत्.) दे. त्वरा।

त्वरित *वि.* (तत्.) तेज।

त्वरितक *पु.* (तत्.) एक प्रकार का चावल जिसे तूर्णक कहते हैं।

त्वरितगति *स्त्री.* (तत्.) एक वर्णवृत्त का नाम इसे अमृतगति भी कहते हैं।

त्वरिता *स्त्री.* (तत्.) तंत्र में एक देवी का नाम।

त्वलग *पु.* (तत्.) पानी का साँप।

त्वष्टा *पु.* (तद्.) 1. विश्वकर्मा 2. महादेव 3. बढ़ई 4. ग्यारहवें आदित्य 5. एक देवता जो मनुष्यों और पशुओं के शरीर का निर्माण करते हैं 6. चित्रा नक्षत्र के अधिष्ठाता देवता का नाम।

त्वष्टि *स्त्री.* (तत्.) मनु स्मृति के अनुसार एक संकर जाति।

त्वष्ट्रा *पु.* (तत्.) 1. विश्वकर्मा का बनाया हुआ अस्त्र, वज्र 2. चित्रा नक्षत्र।

त्वाच *वि.* (तत्.) त्वचा संबंधी।

त्वाष्टी *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा।

त्वाष्ट्री *स्त्री.* (तत्.) विश्वकर्मा की कन्या का नाम।

त्विट्पति *पु.* (तत्.) सूर्य।

त्विष् *स्त्री.* (तत्.) 1. तीव्रता 2. प्रचंडता 3. घबराहट, परेशानी 4. सौंदर्य, सुंदरता।

त्विषि *स्त्री.* (तत्.) 1. किरण, दीप्ति 2. प्रकाशित।

त्विसा *स्त्री.* (तत्.) प्रभा, सौंदर्य, दीप्ति।

त्वेष *वि.* (तत्.) तेजस्वी, आभामय।

त्वेष्य *वि.* (तत्.) डरावना, भयावना।

त्विपति *पुं.* (तत्.) सूर्य।

त्विषामीश *पु.* (तत्.) 1. सूर्य 2. आक का पेड़।

त्सरू *पु.* (तत्.) 1. तलवार की मूठ 2. साँप।

त्सारुक *पु.* (तत्.) तलवार चलाने में निपुण।

थ

तवर्ग का दूसरा वर्ण, दंत्य, अघोष, महाप्राण।

थंडिल *पु.* (तत्.) यज्ञ की वेदी।

थंब *पु.* (तद्.) खंभा, स्तंभ।

थंभ *पु.* (तद्.) खंभा।

थंभन *पु.* (तद्.) 1. रुकावट, ठहराव 2. तंत्र का एक प्रयोग शरीर से निकलने वाली वस्तु को रोकने वाली औषधि।

थंभना *अ.क्रि.* (देश.) दे. थमना।

थंभा *पु.* (तद्.) दे. थंब।

थंभित *वि.* (तद्.) ठहरा हुआ, रुका हुआ।

थ *पु.* (तत्.) 1. रक्षक 2. पहाड़ 3. खतरे का एक रोग 4. भक्षण।

थक *पु.* (देश.) दे. थाक।

थकन *स्त्री.* (देश.) दे. थकान।

थकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. श्रम करके शिथिल हो जाना 2. परिश्रम करके हार जाना 3 हैरान हो जाना।

थकरी *स्त्री.* (देश.) स्त्रियों के बाल झाड़ने की कूँची। कूँची।

थकान *स्त्री.* (देश.) 1. थकने का भाव 2. शिथिलता।

थकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. थका देना 2. शिथिल करना 3. हज़्ना।

थकावट *स्त्री.* (देश.) 1. थकने का भाव 2. शिथिलता।

थकित *वि.* (देश.) 1. थका हुआ, शिथिल 2. मुग्ध।

थकौहाँ *वि.* (देश.) थका मांदा, कुछ थका हुआ।

थगित *वि.* (तद्.) ठहरा हुआ, रुका हुआ।

थणुसुत *पु.* (तद्.) गणेश, कार्तिकेय।

थति *स्त्री.* (देश.) दे. थाती।

थत्ती *स्त्री.* (देश.) 1. राशि 2. ढेर।

थथोलना *स.क्रि.* (देश.) ढूँढना, खोजना।

थन *पु.* (तद्.) चौपायों का स्तन।

थनी *स्त्री.* (तद्.) गलथना, दे. गलस्तन।

थनेला *पु.* (देश.) 1. स्त्रियों के स्तन पर होने वाला वाला एक फोड़ा 2. गुबरैल की जाति का एक कीड़ा।

थनेली *स्त्री.* (देश.) ऐसी गाय जिसका थन भारी हो।

थपकना *स.क्रि.* (अनु.) 1. लाड़-प्यार से किसी की पीठ पर थपथपाना 2. हथेली से धीरे धीरे आघात करना 3. किसी को शांत करना 4. पुचकारना।

थपका *पु.* (देश.) दे. थपकी।

थपकी *स्त्री.* (देश.) हथेली का हल्का आघात 2. मुँगरी 3. थापी मुहा. थपकी लगाना- हाथ से धीरे-धीरे ठोकना।

थपड़ी *स्त्री.* (देश.) ताली मुहा. थपड़ी बजाना/पीटना- उपहास करना।

थपथपी *स्त्री.* (देश.) दे. थपकी।

थपन *पु.* (तद्.) स्थापन, स्थापित करने की क्रिया। जैसे- थपनहार-स्थापित या प्रतिष्ठित करने वाला।

थपना *स.क्रि.* (तद्.) स्थापित करना *अ.क्रि.* स्थापित होना, प्रतिष्ठित होना।

थपाना *स.क्रि.* (देश.) स्थापित कराना।

थपुआ *पु.* (देश.) चौड़ा, चपटा, खपड़ा।

थपेड़ना *स.क्रि.* (देश.) थपेड़ा लगाना।

थपेड़ा *पु.* (देश.) 1. थप्पड, चपत 2. धक्का 3. घात प्रतिघात।

थप्पड़ *पु.* (देश.) झापड़, तमाचा मुहा. थप्पड़ लगाना- तमाचा मारना।

थम *पु.* (तद्.) 1. स्तंभ, खंभा 2. थूनी 3. केले की पेड़ी।

थमकारी *वि.* (तद्.) रोकने वाला, थामने वाला।

थमना *स.क्रि.* (तद्.) 1. ठहरना 2. बंद हो जाना, जारी न रहना 3. धैर्य रखना।

थमाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. पकड़ाना 2. टिकाना।

थर *स्त्री.* (तद्) तह, परत।

थरकना *अ.क्रि.* (अनु.) थर्राना, डर से काँपना।

थरकाना *स.क्रि.* (देश.) डर से कँपाना।

थरकौंहा *वि.* (देश.) 1. काँपता हुआ 2. चंचल, अस्थिर।

थर-थर *स्त्री.* (अनु.) थरथराहट।

थरथर कँपनी *स्त्री.* (देश.) एक छोटी चिडिया जो बैठने पर काँपती- सी प्रतीत होती है।

थरथराट *स्त्री.* (देश.) थरथराहट कँपकँपी।

थरथराना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. डर के मारे काँपना 2. काँपना।

थरथराहट *स्त्री.* (देश.) डर के कारण कँपकँपी।

थरथरी *स्त्री.* (देश.) डर के कारण कँपकँपी।

थरना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. थहराना, थर्राना 2. काँपना।

थरमस *पु.* (अं.) एक प्रकार का पात्र जिसमें किसी वस्तु को किसी तापमान पर सुरक्षित रखा जा सकता है।

थरसना *अ.क्रि.* (तद्.) 1.थर्राना, काँपना 2. डरना।

थरसल *वि.* (तद्.) स्तब्ध, हक्का-बक्का।

थरहाई *स्त्री.* (देश.) निहोरा।

थरि *स्त्री.* (देश.) 1. शेर आदि की मांद 2. चुर।

थरु *पु.* (तद्.) दे. थल।

थरुहट *पु.* (देश.) थारुओं की बस्ती।

थर्ड *वि.* (अं.) तीसरा।

थर्मस *पु.* (अं.) एक प्रकार की बोतल जिसमे रखी गई चीज काफी देर तक गरम या ठंडी रहती है।

थर्मामीटर *पु.* (अं.) 1. तापमापी 2. सर्दी-गर्मी नापने का यंत्र।

थर्राना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. थरथर काँपना 2. दहलना 3. डर के मारे काँपना।

थल *पु.* (तद्.) 1. स्थान, जगह 2. ठिकाना 3. सूखी भूमि प्रयो. लाक्षागृह में दुर्योधन को जल का थल और थल का जल दिखाई दिया।

थलकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ढीलेपन के कारण चलने में हिलना 2. मांस का लटकना प्रयो. चलते हुए उसकी तोंद थलक रही थी।

थलचर *पु.* (तद्.) पृथ्वी पर रहने वाले जीव।

थलथल *वि.* (देश.) मोटापे के कारण झूलता या हिलता हुआ मुहा. थलथल करना- मोटापे के कारण किसी अंग का हिलना या थकलना।

थलथलाना *अ.क्रि.* (देश.) मोटापे के कारण शरीर के मांस का झूलकर हिलना।

थलिया *स्त्री.* (देश.) थाली।

थली *स्त्री.* (तद्.) 1. स्थान, जगह 2. प्रदेश, भूमि 3. जल के नीचे की थली 4. रेतीली जमीन 5. बैठक।

थवई *पु.* (देश.) राजगीर, मकान बनाने वाला कारीगर।

थसकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. धसकना 2. नीचे की ओर दबना।

थहना *स.क्रि.* (देश.) थाह लेना, पता लगाना।

थहराना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. डर कर काँपना 2. कमजोरी से काँपना, हिलना।

थहाना *स.क्रि.* (देश.) थाह लेना, गहराई का पता लगाना।

थाँग *पु.* (देश.) 1. चोरों का गुप्त अड्डा 2. सुराग, खोज 3. भेद।

थाँगी *स्त्री.* (देश.) 1. चोरों का मुखिया 2. चोरों का माल लेने वाला 3. चोरों का पता लगाने वाला जासूस 4. चोरों को आश्रय देने वाला।

थाँवरा *पु.* (देश.) दे. थाँवला।

थाँवला *पु.* (देश.) 1. थाला 2. कोई गड्ढा जिसमें कोई पौधा लगा हुआ हो प्रयो. घर के बाहर थाँवले में तुलसी का पौधा लगा था।

था *अ.क्रि.* (तद्.) 'है' का भूतकालिक रूप।

थाई *वि.* (देश.) स्थायी *स्त्री.* जगह, बैठक जैसे- थाई भाव-स्थायी भाव।

थाक *पु.* (देश.) 1. सीमा, सरहद 2. थोक, ढेर 3. राशि समूह स्त्री. थकावट।

थाकना *अ.क्रि.* (देश.) थक जाना, शिथिल होना।

थाकि *स्त्री.* (देश.) थकावट, शिथिलता।

थाट *पु.* (देश.) 1.कामना, मनोरथ 2. ठट्ठ समूह।

थाति *स्त्री.* (देश.) स्थिरता, ठहराव।

थाती *स्त्री.* (देश.) 1. धरोहर, अमानत 2. संचित धन या पूँजी।

थान *पु.* (तद्.) 1. जगह, स्थान 2. ठोर, ठिकाना, ठहरने की जगह, डेरा, निवास 3. किसी देवी या देवता का स्थान 4. घुड़साल, अस्तबल 5. कपड़े, गोटे आदि का पूरा टुकड़ा जैसे- कपड़े का थान।

थानक *पु.* (तद्.) 1. स्थान जगह 2. नगर 3. देव स्थान, देवता 4. थाला।

थाना *पु.* (तद्.) पुलिस की चौकी, केंद्र, निवासस्थान।

थानु *पु.* (तद्.) शिव।

थानेदार *पु.* (तद्.+फा.) थाने का प्रधान, अधिकारी, दारोगा।

थानेदारी *स्त्री.* (तद्.+फा.) थानेदार का पद या काम।

थानैत *पु.* (तद्.) 1. किसी स्थान का अधिपति या मालिक 2. किसी स्थान का देवता, ग्रामदेवता।

थाप *स्त्री.* (तद्.) 1. तबले या मृदंग पर पूरे पंजे का आघात 2. तमाचा, थाप लगाना, तमाचा लगाना 3. निशान प्रयो. बालू पर शेर के पंजो की थाप थी 4. शपथ, सौंगध, कसम मुहा. किसी की थाप देना- किसी की कसम खाना प्रयो. उसने अपने बच्चों की थाप देकर कहा।

थापन *पु.* (तद्.) 1. स्थापित करने या बिठाने की क्रिया 2. किसी स्थान पर प्रतिष्ठित करना।

थापना *स.क्रि.* (तद्.) स्थापित करना, जमाना, बैठाना 2. साँचे से कोई वस्तु तैयार करना *स्त्री.* प्रतिष्ठा, स्थापना।

थापा *पु.* (देश.) 1. हाथ के पंजे की छाप 2. पुजौरा-गाँव के देवी-देवता की पूजा के लिए इकट्ठा किया गया चंदा।

थापी *स्त्री.* (देश.) 1. कुम्हार का चौड़े सिर का लकड़ी का या मिट्टी का एक औजार 2. पीठ थपथपाने की क्रिया।

थाम *पु.* (तद्.) 1. खंभा, स्तंभ 2. अवरोध, रोक।

थामना *स.क्रि.* (तद्.) 1. किसी वस्तु को रोकना 2. गिरने न देना 3. पकड़ना।

थाम्हना *स.क्रि.* (देश.) दे. थामना।

थायरॉइड ग्रंथि *स्त्री.* (अं.) एक ग्रंथि (ग्लैंड) जो शरीर में थायरोक्सिन हार्मोन का स्राव करती है।

थार *पु.* (देश.) दे. थाल।

थारी *स्त्री.* (तद्.) दे. थाली।

थारू *पु.* (देश.) एक जाति का नाम जो नेपाल की तराई में बसती है।

थाल *पु.* (देश.) 1. बड़ी थाली 2. कांसे या पीतल का बड़ा बरतन।

थाला *पु.* (देश.) 1. पौधे के आस पास बनाया गया घेरा 2. फोड़े की सूजन।

थालिका *स्त्री.* (तद्.) दे. थाली।

थाली *स्त्री.* (तद्.) 1. कांसे या पीतल का बड़ा छिछला बरतन 2. बड़ी तश्तरी मुहा. थाली का

बैंगन- अवसरवादी, कभी इस पक्ष में, कभी उस पक्ष में; थाली बजाना- साँप का विष उतारने के लिए थाली बजाकर मंत्र पढ़ना।

थावर *पु.* (तद्.) दे. स्थावर।

थाह *स्त्री.* (तद्.) 1. नदी, ताल आदि की नीचे की धरती 2. गहराई की सीमा मुहा. थाह मिलना- गहराई का पता चलना; थाह लेना- किसी रहस्य की जांच करना, गहराई का अनुमान लगाना; मन की थाह लेना- किसी की मन की बात जान लेना।

थाहना *स.क्रि.* (देश.) 1. थाह लेना 2. पता लगाना।

थाहरा *वि.* (देश.) छिछला, जो अधिक गहरा न हो।

थिएटर *पु.* (अं.) 1. रंगशाला, रंगभूमि 2. अभिनय।

थिगली *स्त्री.* (देश.) पैबंद, चकती, छेद बंद करने के लिए टाँका गया कपड़े का टुकड़ा मुहा. थिगली लगाना- जोड़ तोड़ करना।

थियेटर *पु.* (अं.) 1. नाट्य शाला, नाटकघर 2. नाटक, अभिनय।

थियोसोफ़िस्ट *पु.* (अं.) ब्रह्म विद्या का ज्ञाता।

थियोसोफी *स्त्री.* (अं.)ब्रह्म विद्या, ईश्वरीय ज्ञान।

थिर *स्त्री.* (तद्.) स्थिर, गतिहीन, अचल।

थिरक *पु.* (देश.) नृत्य में चंचलता के साथ पैरों का उठना, गिरना और हिलना।

थिरकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. चंचलता के साथ पैरों को उठाते, गिराते हुए नाचना 2. मटक-मटक कर नाचना।

थिरकौहां *वि.* (देश.) थिरकरने वाला।

थिरता *स्त्री.* (तद्.) 1. स्थिरता, ठहराव 2. स्थायित्व 3. धीरता, शांति।

थिरताई *स्त्री.* (तद्.) दे. थिरता।

थिरना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. पानी आदि द्रव पदार्थ का हिलना बंद होना 2. पानी में मिली वस्तु का तल में बैठना 3. स्वच्छ हो जाना 4. निथरना।

थिरा *स्त्री.* (तद्.) पृथ्वी।

थिराना *स.क्रि.* (देश.) 1. पानी आदि द्रव पदार्थों का हिलना बंद करना 2. निथारना, पानी की अस्वच्छता को नीचे बैठने देकर साफ करना।

थीकरा *पु.* (देश.) स्थिति या काम संभालने की जिम्मेदारी।

थीर *वि.* (तद्.) स्थिर, ठहरा हुआ।

थुकनी *स्त्री.* (देश.) बार-बार थूकने की क्रिया, प्रवृत्ति प्रवृत्ति या बीमारी।

थुकवाना *स.क्रि.* (देश.) दे. थुकाना।

थुकहाई *वि.* (देश.) ऐसी स्त्री जिसे सभी धिक्कारे।

थुकाई *स्त्री.* (देश.) थूकने का काम।

थुकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. थूकने में प्रवृत्त करना 2. थूकने का काम कराना 3. निंदा करना 4. उगलवाना।

थुक्का फजीहत *स्त्री.* (देश.+फा.) निंदा और तिरस्कार, धिक्कार और तिरस्कार।

थुडी *स्त्री.* (अनु.) 1. घृणा 2. लानत मुहा. थुड़ी-थुड़ी करना-धिक्कारना।

थुतकारना *स.क्रि.* (देश.) 1. थू-थू करना 2. धिक्कारना, घृणा प्रकट करना।

थुत्कार *पु.* (देश.) दे. थूत्कार।

थुथना *पु.* (देश.) दे. थूथन।

थुथराई *स्त्री.* (देश.) 1. कमी 2. मुँह लटकना।

थुथराना *अ.क्रि.* (देश.) थोड़ा पड़ना।

थुनी *स्त्री.* (देश.) टेक, सहारा।

थुनेर *पु.* (देश.) एक प्रकार का गठिवन।

थुन्नी *स्त्री.* (देश.) थूनी, खंभा।

थुपथुपी *स्त्री.* (देश.) 1. थपकी 2. झोंका।

थुरना *स.क्रि.* (देश.) 1. मारना, पीटना 2. कूटना *अ.क्रि.* कम पड़ना।

थुरहथा *वि.* (देश.) छोटे हाथ वाला।

थुलथुल *वि.* (देश.) 1. मोटापे के कारण ढीला शरीर या हिलता हुआ 2. कमख़र्च।

थुलमा *पु.* (देश.) दे. थुलना।

थुली *स्त्री.* (देश.) दलिया।

थूँक *पु.* (देश.) दे. थूक।

थू *अव्य.* (अनु.) 1. थूकने का शब्द 2. घृणा और तिरस्कार सूचक शब्द धिक्, छि. मुहा. थू-थू करना- धिक्कारना, छिःछिः करना।

थूक *पु.* (तद्.) लार की तरह का मुँह से निकलने वाला लसीला रस मुहा. थूक उछालना- बेकार की बात करना; थूक बिलोना- अनुचित प्रलाप करना; थूक लगाकर रखना- कंजूसी से जमा करना; *अ.क्रि.* मुँह से थूक निकालना मुहा. किसी पर थूकना- किसी से अत्यंत घृणा करना प्रयो. उसकी मृत्यु पर सभी उसपर थूक रहे हैं; थूककर चाटना- कहकर मुकर जाना।

थूत्कार *पु.* (तत्.) थूकने का शब्द, थू-थू करना।

थूथन *पु.* (देश.) लंबे मुँह का आगे निकला हुआ भाग।

थूथनी *स्त्री.* (देश.) लंबा निकला हुआ मुँह मुहा. थूथनी फैलाना- नाक भौं चढ़ाना, मुँह फुलाना, नाराज होना।

थूथुन *पु.* (देश.) दे. थूथन।

थूनी *स्त्री.* (देश.) 1. बोझ को रोकने के लिए, नीचे से लगाया गया खंभा, सहारे का खंभा 2. स्तंभ, खंभा।

थूला *वि.* (देश.) मोटा ताजा, हृष्ट पुष्ट।

थूली *स्त्री.* (देश.) दलिया, सूजी।

थूवा *पु.* (देश.) 1. दूह, टीला 2. सीमा सूचक स्तूप।

थूहड़ *पु.* (देश.) दे. थूहर।

थूहर *पु.* (देश.) सेहुँड का पेड़ पर्या. महावृक्षा, वज्रा, सिहुँड़।

थूही *स्त्री.* (देश.) दूह, मिट्टी की ढेरी।

थेंथर *वि.* (देश.) 1. थका हुआ, हैरान 2. बेहया।

थेइ थेइ *वि.* (अनु.) नाच का एक ढंग।

थेई-थेई *वि.* (अनु.) थिरक-थिरक कर नाचने की एक मुद्रा और ताल।

थेगली *स्त्री.* (देश.) दे. थिगली।

थेट *वि.* (देश.) 1. आरंभ का, असली 2. सीधा।

थै थै *वि.* (तत्.) दे. थेई थेई।

थैला *पु.* (देश.) 1. कपड़े या टाट का बना हुआ पात्र जिसमें वस्तुएँ रखी जा सकें 2. पायजामों का वह भाग जो जाँघ से घुटने तक होता है।

थैली *स्त्री.* (देश.) 1. छोटा थैला, बटुआ 2. रुपयों से भरी हुई थैली मुहा. थैली खोलना- उदारतापूर्वक धन देना, पानी की तरह पैसा खर्च करना।

थोक *पु.* (देश.) 1. ढेर 2. राशि 3. माल की बड़ी राशि मुहा. थोक करना- इकट्ठा करना; थोक का थोक-ढेर का ढेर।

थोड़ *वि.* (देश.) दे. थोड़ा।

थोड़ा *वि.* (देश.) कम, अल्प, जरा-सा मुहा. थोड़ा थोड़ा होना- लज्जित होना *वि.* अधिक, ज्यादा *क्रि.वि.* थोड़ी मात्रा में, ज़रा प्रयो. थोड़ा चलकर देखो, कहीं फ्रेक्चर तो नहीं है मुहा. थोड़ा ही- बिलकुल नहीं प्रयो. वह थोड़ा ही जाने वाला है।

थोथ *स्त्री.* (देश.) 1. खोखलापन 2. तोंद।

थोथरा *वि.* (देश.) 1. खोखला 2. निःसार 3. निकम्मा।

थोथा *वि.* (देश.) 1. खोखला, खाली 2. निकम्मा, बेकार प्रयो. इस थोथे ज्ञान से क्या लाभ मुहा. थोथी कथनी- व्यर्थ की बात।

थोपड़ी *स्त्री.* (देश.) चपत।

थोपना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी चीज को इस तरह रखना कि वह वहाँ चिपक जाए 2. छोपना 3. लेप चढ़ाना।

थोबड़ा *पु.* (देश.) 1. थूथन, तोबड़ा 2. क्रोध से फूला हुआ मुख।

थोर *वि.* (देश.) थोड़ा, मामूली, छोटा।

थ्यावस *पु.* (तद्.) स्थिरता, ठहराव।

द

देवनागरी वर्णमाला में तवर्ग का तीसरा व्यंजन। दंत्य घोष अल्पप्राण स्पर्श व्यंजन।

दंग *वि.* (फा.) 1. चकित, हक्का-बक्का मुहा. दंग रह जाना-चकित होना *पुं.* घबराहट, भय, डर (देश.) अग्निकण।

दंगई *वि.* (देश.) दंगा करने वाला, विप्लवी 2. फ़सादी, झगड़ालू।

दंगल *पुं.* (फा.) 1. पहलवानों की कुश्ती 2. अखाड़ा 3. बहुत मोटा गद्दा।

दंगली *वि.* (फा.) लड़ाका, दंगल करने वाला।

दंगवारा *पुं.* (देश.) हल, बैल आदि से की गई पारस्परिक सहायता।

दंगा *पुं.* (फा.) फ़साद, झगड़ा, बखेडा।

दंड *पुं.* (तत्.) 1. डंडा, सोटी, लाठी 2. बांस या लठ मुहा. दंड ग्रहण करना-संन्यास लेना, विरक्त होना यौ. भुजदंड, राजदंड 3. एक प्रकार की कसरत 4. दडंवत प्रणाम 5. जुर्माना 6. सजा प्रयो. उसे अपनी करनी का दंड मिला मुहा. दंड डालना- जुर्माना करना; दंड सहना- घाटा सहना प्रयो. उसकी सहायता कर मुझे सौ रुपए का दंड सहना पड़ा 7. दमन, वश प्रयो. संन्यासियों के लिए तीन प्रकार के दंड का उल्लेख मिलता है 8. ध्वजा या पताका का बाँस।

दंडक *पुं.* (तत्.) 1. डंडा 2. दंड देने वाला व्यक्ति, शासक 3. एक छंद जिसमें वर्णों की संख्या 26 से अधिक होती है 4. दंडकारण्य 5. एक प्रकार का वात रोग।

दंडकर्म *पुं.* (तद्.) दंड देने का काम।

दंडका *स्त्री.* (तत्.) दंडक वन, दंडकारण्य।

दंडकारण्य *पुं.* (तत्.) विंध्य के दक्षिण में एक प्राचीन वन जहाँ भगवान राम ने वनवास किया था, यहीं सीताहरण हुआ था।

दंडधारण *स्त्री.* (तत्.) ऐसा प्रदेश जहाँ सुव्यवस्था और शासन के लिए सेना रखनी पड़े।

दंडन *पुं.* (तत्.) दंड देने की क्रिया, शासन।

दंडना *स.क्रि.* (तद्.) 1. दंड देना, सजा देना 2. शासन करना।

दंड नीति *स्त्री.* (तत्.) शत्रुओं या अपराधियों को दंड देकर वश में रखने की नीति।

दंडनीय *वि.* (तत्.) दंड देने योग्य।

दंडपतानक *पुं.* (तत्.) एक वात एवं कफ़ रोग जिसमे शरीर सूखे काठ की तरह हो जाता है।

दंडपाल *पुं.* (तद्.) दे. दंडपालक।

दंडपालक *पुं.* (तत्.) 1. द्वारपाल, दरबान 2. एक प्रकार की मछली।

दंड प्रणाम *पुं.* (तत्.) साष्टांग, दंडवत प्रणाम।

दंड प्रनाम *पुं.* (तद्.) दे. दंड प्रणाम।

दंडमान *वि.* (तत्.) दंड पाने योग्य।

दंडमानव *पुं.* (तत्.) ऐसा बालक जिसे अक्सर दंड देना पड़ता है।

दंड यात्रा *स्त्री.* (तत्.) सेना की चढ़ाई, बारात।

दंडरी *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की ककड़ी।

दंडलासिका *पुं.* (तत्.) हैजा।

दंडवत *स्त्री.* (तत्.) साष्टांग प्रणाम।

दंडात्मक *वि.* (तत्.) दंड देने के उद्देश्य से।

दंडादंडि *स्त्री.* (तत्.) लट्ठ बाजी।

दंडादेश *पुं.* (तत्.) दंड देने का निर्णय या आदेश।

दंडादेशित *वि.* (तत्.) जिसे दंड देने का आदेश दिया गया हो।

दंडाधिकारी *पुं.* (तत्.) दंड देने वाला अधिकारी, अफ़सर, पर्या. मजिस्ट्रेट।

दंडाधिप *पुं.* (तत्.) प्रमुख दंडाधिकारी।

दंडानीक *पुं.* (तत्.) सेना का एक विभाग।

दंडापूप *पुं.* (तत्.) डंडा और पूआ।

दंडायमान *वि.* (तत्.) डंडे की तरह सीधा स्थित।

दंडार *पुं.* (तत्.) 1. धनुष 2. रथ 3. नाव 4. कुम्हार का चाक।

दंडालय *पुं.* (तत्.) 1. न्यायालय, अदालत 2. न्यायाधिकरण।

दंडाश्रम *पुं.* (तत्.) तीर्थ यात्री का अवस्थान।

दंडाश्रमी *पुं.* (तत्.) संन्यासी।

दंडाहत *वि.* (तत्.) डंडे का मारा हुआ।

दंडिका *स्त्री.* (तत्.) 1. छड़ी 2. मोतियों की लड़ी 3. रस्सी।

दंडित *वि.* (तत्.) 1. दंड पाया हुआ, सजा याफ़्ता 2. शासित।

दंडितक *पुं.* (तत्.) 1. दंडधारी एक पौधा 2. छड़ीबरदार 3. पुलिस का सिपाही।

दंडिनी *स्त्री.* (तत्.) दंडोत्पल।

दंडी *पुं.* (तद्.) 1. दंड धारण काने वाला 2. यमराज 3. द्वारपाल 4. दंडधारी संन्यासी 5. दौने का पौधा 6.संस्कृत के एक सुप्रसिद्ध कवि- दशकुमार चरित और काव्यादर्श के प्रणेता।

दंडोत्पल *पुं.* (तत्.) कुकरौंधे का पौधा।

दंडोत्पला *स्त्री.* (तत्.) दे. दंडोत्पल।

दंडोपनत *वि.* (तत्.) पराजित और अधीन।

दंडोपबंध *पुं.* (तत्.) किसी अधिनियम या संधि के न मानने पर दंड का उपबंध 2. शास्ति।

दंत *पुं.* (तत्.) दाँत यौ. दंत कथा, दंत चिकित्सा, दंत चिकित्सक 2. हाथी का दाँत 3. बाण की नोक।

दंतक *पुं.* (तत्.) 1. दाँत 2. पर्वत का शिखर 3. दीवार की निकली हुई खूँटी।

दंतकाष्ठ *पुं.* (तत्.) दतुवन, दातुन।

दंतपुष्प *पुं.* (तत्.) 1. निर्मली 2. कुंद का फूल।

दंतमूल *पुं.* (तत्.) 1. दाँत की जड़ 2. दाँत का एक रोग 3. एक औषध।

दंतशूल *पुं.* (तत्.) दाँत की पीड़ा।

दंतांतर *पुं.* (तत्.) दाँतो के बीच का अंतर।

दंताघात *पुं.* (तत्.) 1. दाँत का आघात 2. नींबू।

दंतादंति *स्त्री.* (तत्.) एक दूसरे से दाँत काटने की लड़ाई।

दंतायुध *पुं.* (तत्.) जंगली सुअर।

दंतार *वि.* (देश.) बड़े दाँतो वाला।

दंतारा *वि.* (देश.) दे. दंतार।

दंतार्बुद *पुं.* (तत्.) मसूड़े का फोड़ा।

दंताल *पुं.* (देश.) हाथी।

दंतालय *पुं.* (तत्.) मुख, मुँह।

दंतालि *स्त्री.* (तत्.) दाँतों की पंक्ति।

दंतालिका *स्त्री.* (तत्.) लगाम।

दंताली *स्त्री.* (तत्.) लगाम।

दंतावल *पुं.* (तत्.) हाथी।

दंतावली *स्त्री.* (तत्.) दाँतों की पंक्ति।

दंतिका *स्त्री.* (तत्.) 1. दंती 2. जमालगोटा।

दंतित *वि.* (तत्.) 1. दाँत वाला 2. हाथी 3. गणेश 4. पहाड़।

दंती *स्त्री.* (तत्.) अरंडी की जाति का एक पौधा पर्या. निकुंभी, दंतिनी, एरंड फला, विशीधनी *पुं.* (तद्.) 1. हाथी 2. गणेश, गजानन 3. पर्वत 4. व्याघ्र 5. कुत्ता।

दंतुर *वि.* (तत्.) दंतुला *पुं.* 1. हाथी 2. सुअर।

दंतुरित *वि.* (तत्.) 1. ढका हुआ 2. दे. दंतुरा 3. दाँतों वाला।

दंतुल *वि.* (तत्.) दे. दंतुर।

दंतोद्भेद *पुं.* (तत्.) दाँतों का निकलना।

दंतोलूखलिक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार के संन्यासी जो धान आदि को दाँतो से चबाकर खाते हैं।

दंतोष्ठ्य *वि.* (तत्.) दांत और होंठ से उच्चारित वर्ण जैसे- व, फ़ आदि।

दंत्य *वि.* (तत्.) 1. दंत संबंधी 2. दंत से उच्चारित होने वाले वर्ण जैसे तवर्ग 3. दाँतो के लिए हितकर औषध।

दंदश *पुं.* (तत्.) दाँत, दंत।

दंदशूक *पुं.* (तत्.) 1. सर्प 2. कीड़ा 3. साँपों से परिपूर्ण नरक *वि.* विषैला 2. हानिकर 3. हिंसक।

दंदान *पुं.* (फा.) दाँत।

दंदाना *अ.क्रि.* (देश.) गरमी अनुभव करना गरम चीज के पास होने से गरमी महसूस करना।

दंदारु *पुं.* (देश.) छाला, फफोला।

दंपति *पुं.* (तत्.) स्त्री-पुरुष का जोड़ा, पति-पत्नी का का जोड़ा।

दंभ *पुं.* (तत्.) 1. पाखंड, झूठा आडंबर 2. अभिमान, घमंड।

दंभक *वि.* (तत्.) पाखंडी, कपटी, ढोंगी।

दंभन *पुं.* (तत्.) पाखंड करना, ढोंग करना।

दंभान *पुं.* (तत्.) दे. दंभ।

दंभी *वि.* (तद्.) 1. पाखंडी 2. घमंडी, अभिमानी।

दंभोलि *पुं.* (तत्.) 1. वज्र 2. इंद्रास्त्र।

दंश *पुं.* (तत्.) 1. दाँत काटने से हुआ घाव, दंतक्षत 2. दाँत काटने की क्रिया 3. साँप या किसी विषैले जंतु के काटने का घाव, सर्पदंश।

दंशक *वि.* (तत्.) डंक मारने वाला, दाँत से काटने वाला।

दंशन *पुं.* (तत्.) 1. दाँत से काटना, डसना।

दंशना *स.क्रि.* (तद्.) 1. काटना 2. डसना।

दंशित *वि.* (तत्.) दाँत से काटा हुआ।

दंशिन *पुं.* (तत्.) 1. दे. दंशक 2. बैरी 3. बुरी लगने वाली बात कहने वाला।

दंशी *वि.* (तद्.) 1. दाँत से काटने वाला 2. डसने वाला 3. द्वेषी, वैर रखने वाला।

दंशूक *वि.* (तत्.) 1. डसने वाला, दंदशूक।

दंशोर *वि.* (तत्.) 1. दे. दंशूक 2. हानिकारक।

दंष्ट्रभ *पुं.* (तत्.) दे. दंष्ट्रायुध।

दंष्ट्रा *स्त्री.* (तत्.) मोटे दाँत।

दंष्ट्रायुध *पुं.* (तत्.) 1. वह जिसका हथियार दाँत हो 2. सुअर।

दंष्ट्राल *वि.* (तत्.) बड़े-बड़े दाँतों वाला।

दंष्ट्रिक *वि.* (तत्.) दे. दंष्ट्राल।

दंष्ट्रिका *स्त्री.* (तत्.) दे. दंष्ट्रा।

दंष्ट्री *वि.* (तद्.) बड़े-बड़े दाँतो वाला 2. मांस भक्षक, मांसाहारी।

दांति *पुं.* (तद्.) हाथी।

दँती *पुं.* (तद्.) हाथी, दंती।

दँतुरिया *स्त्री.* (देश.) बच्चों के नए-नए दाँत।

दँतुला *वि.* (तद्.) 1. जिसके दाँत आगे निकले हुए हो 2. बड़े-बड़े दाँतो वाला।

दँवरी *स्त्री.* (देश.) कृषि. गेहूँ, जौ इत्यादि के पौधों से दाने अलग करने की देशी विधि जिसमें इन पौधों को बैलों के द्वारा कुचलवाया या रौंदवाया जाता है, मँडनी।

दँवारि *स्त्री.* (देश.) दे. दावाग्नि।

दँवी *स्त्री.* (देश.) अनाज निकालने के बाद सूखे डंठलों को बैलों से रौंदवाना।

द *वि.* (तत्.) 1. उत्पन्न करने वाला 2. दाता, देने वाला।

दई *पुं.* (तद्.) 1. ईश्वर 2 विधि, भाग्य 3. प्रारब्ध, दैव संयोग मुहा. दई का घाला- ईश्वर का मारा हुआ, अभागा।

दक *पुं.* (तद्.) जल, पानी।

दकन *वि.* (फा.) 1. दक्षिण 2. देश का दक्षिणी भाग।

दकनी *वि.* (फा.) 1. दकन का, दक्षिणी 2. हैदराबाद में प्रचलित भाषा का नाम।

दकियानूस *पुं.* (अर.) एक रोमन सम्राट जो 349 ई. में हुआ था *वि.* पुराने ख्यालों वाला।

दकियानूसी *वि.* (अर.) 1. दकियानूस के समय का, पुराना 2. रूढ़िग्रस्त।

दकीका *पुं.* (अर.) युक्ति, उपाय मुहा. कोई दकीका बाकी न रहना- सारे उपाय कर चुकना, कोई कसर न रखना प्रयो. उसने काम निकालने के लिए कोई दकीका बाकी न रखा 2. क्षण।

दक्काक *वि.* (अर.) पीसने वाला, कूटने वाला।

दक्खिन *पुं.* (तद्.) 1. दक्षिण दिशा 2. दक्षिण दिशा में पड़ने वला प्रदेश *क्रि.वि.* दक्षिण की ओर।

दक्खिनी *वि.* (देश.) 1. दक्षिण का 2. दक्षिण देश में उत्पन्न *स्त्री.* दक्षिण देश की भाषा *पुं.* दक्षिण देश का निवासी।

दक्ष *वि.* (तत्.) 1. निपुण, कुशल 2. होशियार 3. सच्चा, ईमानदार *पुं.* दक्ष प्रजापति का नाम।

दक्षकन्या *स्त्री.* (तत्.) सती, दक्ष प्रजापति की सोलह कन्याओं में से एक जो रुद्र भगवान शिव की पहली पत्नी थी *वि.* दक्ष।

दक्षता *स्त्री.* (तत्.) निपुणता, योग्यता, कुशलता।

दक्षसुता *स्त्री.* (तत्.) दक्षकन्या।

दक्षांड *पुं.* (तत्.) मुर्गी का अंडा।

दक्षा *स्त्री.* (तत्.) कुशला, निपुणा।

दक्षाय्य *पुं.* (तत्.) 1. गरुड़ 2. गीध।

दक्षिण *वि.* (तत्.) 1. दाहिना हाथ 2. उत्तर की विपरीत दिशा 3. विष्णु 4. शिव 5. दक्षिण प्रदेश।

दक्षिणा *स्त्री.* (तत्.) 1. दक्षिण दिशा 2. यज्ञ, दान कर्म के अंत में पुरोहितों को दिया जाने वाला दान 3. भेंट, पुरस्कार।

दक्षिणाग्नि *स्त्री.* (तत्.) दक्षिण में रखी जाने वाली अग्नि।

दक्षिणाग्र *वि.* (तत्.) जिसका मुख दक्षिण की ओर हो।

दक्षिणाचल *पुं.* (तत्.) मलयाचल, मलयगिरि पर्वत।

दक्षिणाचार *पुं.* (तत्.) 1. शुद्ध आचरण 2. तंत्र में एक उपचार जिसमें अपने आप को शिव मानकर पंच तत्व से शिव की पूजा की जाती है।

दक्षिणाचारी *पुं.* (तद्.) शुद्ध आचरण वाला, सदाचारी।

दक्षिणापथा *स्त्री.* (तत्.) नैऋत्य कोण।

दक्षिणाभिमुख *वि.* (तत्.) दक्षिण की ओर मुँह किए हुए।

दक्षिणामूर्ति *पुं.* (तत्.) शिव की अनुकूल मूर्ति।

दक्षिणायन *पुं.* (तत्.) सूर्य की कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर जाना।

दक्षिणावह *पुं.* (तत्.) दक्षिण से आने वाली हवा।

दक्षिणावर्त *वि.* (तत्.) जिसका घुमाव दक्षिण की ओर हो।

दक्षिणाशा *स्त्री.* (तत्.) दक्षिण दिशा।

दक्षिणी *स्त्री.* (तत्.) दक्षिण देश की भाषा।

दक्षिणीय *वि.* (तत्.) 1. दक्षिण का, दक्षिण देश का 2. दक्षिण का पात्र।

दक्षिन *पुं.* (तद्.) दे. दक्षिणा।

दक्षिना *स्त्री.* (तद्.) दे. दक्षिणा।

दक्षिय *वि.* (तत्.) दान में प्राप्त *पुं.* दत्तक पुत्र।

दखमा *पुं.* (फा.) वह स्थान जहाँ पारसी लोग अपने मुर्दे (शव) पक्षियों के खाने के लिए रखते हैं।

दखल *पुं.* (अर.) 1. अधिकार, कब्जा यौ. दखलनामा 2. हस्तक्षेप 3. पहुँच।

दखलनामा *पुं.* (अर.+फा.) वह सरकारी पत्र जिसमें किसी को अधिकार देने की आज्ञा दी गई हो।

दगड़ *पुं.* (देश.) लड़ाई का डंका।

दगदगा *पुं.* (अर.) 1. डर-भय 2 संदेह-शक *वि.* चमकता हुआ।

दगदगाना *अ.क्रि.* (देश.) दमदमाना, चमकना।

दगदगाहट *स्त्री.* (देश). चमक, दमक।

दगधना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. जलना 2. पीड़ित होना *स.क्रि.* 1. जलाना 2. पीड़ित होना।

दगना *स.क्रि.* (देश.) बंदूक आदि का चलना या छूटना।

दगल *पुं.* (देश.) दे. दगला।

दगला *पुं.* (देश.) भारी लबादा, रुईदार अंगरखा।

दगली *स्त्री.* (देश.) दे. दगला।

दगवाना *स.क्रि.* (देश.) दागने का काम करवाना।

दगहा *वि.* (देश.) दागवाला, जिसमें दाग लगा हो।

दगा *स्त्री.* (अर.) कपट, छल, धोखा।

दगादार *वि.* (फा.) धोखेबाज, कपटी।

दगाबाज *वि.* (फा.) छली, कपटी, धोखे बाज *पुं.* धोखा देने वाला व्यक्ति।

दगाबाजी *स्त्री.* (फा.) कपट, छल, धोखा।

दगार्गल *पुं.* (तत्.) पृथ्वी के अंदर जल है- यह जानने की विद्या।

दग्ध *वि.* (तत्.) 1. जला हुआ 2. जिसके शरीर पर दागे जाने का निशान हो 3. अशुभ।

दग्धा *स्त्री.* (तत्.) 1. सूर्यास्त की दिशा, पश्चिम दिशा 2. विशिष्ट राशियों से युक्त कुछ विशिष्ट तिथियाँ जैसे- मेष और कर्क की छठ, इन तिथियों में शुभ कार्य करना हानिकर माना जाता है *वि.* 1. जलाने वाला 2. कष्ट देने वाला।

दग्धाक्षर *पुं.* (तत्.) व्या. कुछ अक्षर या वर्ण जिनका छंद के प्रारंभ में रखना वर्जित होता है जैसे- झ, ह, र, म और ष।

दग्धिका *स्त्री.* (तत्.) दे. दग्धा।

दग्धेष्टका *स्त्री.* (तत्.) जली और झुलसी हुई ईंट, झावा।

दचक *स्त्री.* (देश.) 1. दचकने की क्रिया 2. ठोकर, धक्का 3. दबाव।

दचकना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. ठोकर खाना 2. दबाना 3. झटका देना।

दचका *पुं.* (देश.) धक्का, ठोकर।

दच्छना *स्त्री.* (तद्.) दे. दक्षिणा।

दच्छिनता *स्त्री.* (तद्.) 1. दक्षिणता 2. अपनी नायिकाओं के साथ प्रेम रखने का गुण।

दच्छिना *स्त्री.* (तद्.) दे. दक्षिणा।

दछना *स्त्री.* (तद्.) दे. दक्षिणा।

दछिना *स्त्री.* (तद्.) दे. दक्षिणा।

दज्जाल *पुं.* (अर.) 1. झूठा, बेईमान 2. अत्याचारी।

दज्झना *अ.क्रि.* (तद्.) दे. दहना।

दढियल *वि.* (देश.) दाढ़ी वाला।

दतना *अ.क्रि.* (देश.) दे. डटना।

दतवन *स्त्री.* (देश.) दे. दतुवन।

दतारा *वि.* (देश.) 1. दाँत वाला 2. दाँतदार 2. बड़े-बड़े दाँतों वाला।

दतिया *स्त्री.* (देश.) छोटा दाँत *पुं.* एक पहाड़ी तीतर।

दतुउन *स्त्री.* (देश.) दे. दतुवन।

दतुवन *स्त्री.* (देश.) नीम या बबूल की छोटी टहनी, जिससे दाँत साफ करते है, दातुन।

दतून *स्त्री.* (देश.) दे. दतुवन।

दतौन *स्त्री.* (देश.) दे. दतुवन।

दत्त *पुं.* (तत्.) 1. दत्तात्रेय ऋषि 2. दान 3. दत्तक।

दत्तक *पुं.* (तत्.) गोद लिया हुआ लडक़ा मुहा. दत्तक लेना- किसी दूसरे के पुत्र को अपनाना।

दत्तचित्त *वि.* (तत्.) जिसका मन किसी कार्य में लगा हुआ हो, एकाग्र।

दत्तात्मा *पुं.* (तत्.) जो किसी का दत्तक पुत्र बना हो।

दत्तात्रेय *पुं.* (तत्.) एक प्रसिद्ध पौराणिक ऋषि, जो विष्णु के 24 अवतारों में एक माने जाते हैं।

दत्ताप्रदानिक *पुं.* (तत्.) दान में दी गई किसी वस्तु को पुनः प्राप्त करने का यत्न।

दत्तावधान *वि.* (तत्.) सावधान, दत्तचित्त, एकाग्र।

दत्ती *वि.* (तद्.) पत्तों वाला, दलयुक्त।

दत्तेय *पुं.* (तत्.) इंद्र।

दत्तोपनिषद *पुं.* (तत्.) एक उपनिषद का नाम।

दत्तोलि *पुं.* (तत्.) पुलस्त्य मुनि का एक नाम।

ददन *पुं.* (तत्.) 1. दान देना 2. दान।

ददिऔर *पुं.* (तत्.) दे. ददिहाल।

ददिता *वि.* (तद्.) 1. देने वाला 2. धन देने वाला।

ददिया ससुर *पुं.* (देश.) ससुर का पिता।

ददिया सास *स्त्री.* (देश.) 1. सास की सास 2. ददिया ससुर की स्त्री।

ददिहाल *पुं.* (देश.) दादा का घर, दादा का कुल।

ददोरा *पुं.* (देश.) मच्छर, बर्र आदि के काटने, खुजलाने से त्वचा में आई सूजन, चकत्ता।

दद्रु *पुं.* (तत्.) 1. दाद का रोग 2. कछुआ।

दध *पुं.* (तद्.) 1. दे. दधि 2. सागर, समुद्र *वि.* अशुभ, वर्जित।

दधि *पुं.* (तत्.) 1. दही जमाया हुआ दूध 2. वस्त्र, कपड़ा 3. समुद, सागर।

दधिजात *पुं.* (तत्.) मक्खन, नवनीत *पुं.* चंद्रमा।

दधित्थ *पुं.* (तत्.) कैथ।

दधित्थाख्य *पुं.* (तत्.) लोबान।

दधिदान *पुं.* (तत्.) दही का कर।

दधिमुख *पुं.* (तत्.) 1. भगवान राम की वानर सेना का एक सेनापति जो सुग्रीव का मामा था 2. एक प्रकार का साँप।

दधिषाय्य *पुं.* (तत्.) घी, घृत।

दधिसुत *पुं.* (तत्.) 1. कमल 2. मक्खन, नवनीत।

दधिसुता *स्त्री.* (तत्.) सीप।

दधीच *पुं.* (तत्.) दे. दधीचि।

दधीचि *पुं.* (तत्.) एक वैदिक ऋषि का नाम जिनकी हड्डियों से इंद्र के लिए वज्र का निर्माण किया गया था, इस वज्र द्वारा दैत्यों का नाश किया गया।

दपित्नु *वि.* (तत्.) दयावान, दयशील।

दबदबा *पुं.* (अर.) 1. रौबदार, प्रताप 2. आतंक।

दबना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. बोझा/भार के नीचे आना 2. दबाव में आना 3. दबाव में आकार किसी की इच्छानुसार काम करना 4. धीमा पड़ना। प्रयो. आज कल उसकी आवाज दब गई है मुहा. दबी आवाज-धीमी आवाज।

दबल *वि.* (तद्.) 1. जिस पर दबाव हो 2. दबने वाला, दब्बू।

दबवाना *प्रेर.क्रि.* (देश.) दबाने का काम, दूसरे से करबाना 2. दूसरे की दबाने में प्रवृत्त करना।

दबा *वि.* (देश.) दबा हुआ, विवश।

दबाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. बोझ रखना, किसी अंग पर दबाब डालना 3. दमन करना 4. किसी पर रौब डालना प्रयो. सरकार ने विद्रोह को दबा दिया 5. शांत करना प्रयो. मामले को वहीं दबा दीजिए 6. किसी को प्रभावित करना प्रयो. आप ही उसे दबा सकते है, वह और किसी की नही मानेगा 7. किसी की चीज को अनुचित रूप से अपने पास रख लेना प्रयो. उन्होंने मेरे पैसे दबा लिए।

दबाव *पुं.* (देश.) 1. दबाने की क्रिया 2. रौब।

दबीज *वि.* (फा.) मोटा, मजबूत।

दबीर *पुं.* (फा.) 1. लिखने वाला मुंशी 2. महाराष्ट्र के ब्राह्मणों की उपाधि।

दबोचना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी को धर दबाना 2. छिपाना, झपटकर दबा लेना प्रयो. बिल्ली ने चूहे को दबोच लिया।

दबोरना *स.क्रि.* (देश.) दबाना, अपने सामने टिकने न देना।

दबौनी *स्त्री.* (देश.) बरतनों पर फूल-पत्ते उभारने का का एक औजार।

दभ्र *वि.* (तत्.) थोड़ा, कम 2. कुंद।

दम *पुं.* (तत्.) दंड, दमन (फा.) साँस, श्वास *स्त्री.* 1. ताकत प्रयो. उसमें वास्तव में बहुत दम है मुहा. दम अटकना- साँस रुकना (विशेषकर मरते समय); दम उलटना- घबराहट होना, व्याकुलता होना; दम घुटना- साँस न ले पाना, साँस रुक जाना; दम चढ़ना- हाँफना, दमे का दौरा पड़ना; दम तोड़ना- अंतिम साँस लेना; दम मारना- आराम करना, विश्राम करना, झाड़फूँक करना; दम लेना- सुस्ताना; दम साधना- श्वास की गति को नियंत्रित करना 2. नशे के लिए साँस के साथ धुआँ खीचना मुहा. दम मारना- गँजे या चरस को चिलम पर रखक धुआँ खींचना 3. जी, प्राण मुहा. दम उलझना- जी घबराना; दम खुश्क होना- भय के कारण घबरा जाना; दम निकलना- मृत्यु होना, मरना, किसी पर इतना अधिक प्रेम करना 4. सब्जी विशेष यौ. दम आलू, दम चूल्हा, दम पुख्त 5. फरेब, छल यौ. दम झाँसा- छल कपट; दम दिलासा- झूठी आशा मुहा. दम लेना- फरेब देना, धोखा देना 6. बुनकरों की तिकोनी कमाची, झोंपड़ा।

दमक *स्त्री.* (देश.) चमक, चमचमाहट *पुं.* (तत्.) दमन करने वाला, दबाने वाला।

दमकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. चमकना, चमचमाना 2. सुलगना।

दमकल *स्त्री.* (देश.) आग बुझाने का यंत्र।

दमड़ी *स्त्री.* (देश.) पैसे का आठवाँ भाग मुहा. दमड़ी के तीन होना- बहुत सस्ता होना।

दमथ *पुं.* (तत्.) 1. आत्मनियंत्रण, दमन 2. दंड, सजा।

दमथु *पुं.* (तत्.) दे. दमथ।

दमदमा *पुं.* (फा.) नगाड़ा।

दमदार *वि.* (फा.) 1. जानदार 2. मजबूत।

दमन *पुं.* (तत्.) 1. दबाने की क्रिया 2. दंड, निग्रह 3. विष्णु 4. महादेव *वि.* दमन करने वाला, दमन कर्ता।

दमनक *पुं.* (तत्.) काव्य. एक छंद जिसमें एक लघु और एक गुरु होता है *वि.* दमन करने वाला, दमनशील।

दमनशील *वि.* (तत्.) दमन करने वाला।

दमनी *स्त्री.* (तत्.) 1. एक प्रकार का झाड़, अग्निदमनी 2. संकोच, लज्जा।

दमनीय *वि.* (तत्.) 1. दमन करने योग्य 2. जिसका दमन किया जा सके।

दमपुख्त *वि.* (तत्.) जो दम देकर पकाया जाए।

दमबाज *वि.* (फा.) 1 दम देने वाला 2. बहाना करने वाला 3. फुसलाने वाला।

दमबाजी *स्त्री.* (फा.) बहानेबाजी, धोखेबाजी।

दमयंतिका *स्त्री.* (तत्.) मदनथा वृक्ष।

दमयंती *स्त्री.* (तत्.) 1. एक प्रकार की बेल 2. राजा नल की पत्नी का नाम।

दमयिता *पुं.* (तत्.) 1. दमन करने वाला 2. विष्णु 3. शिव।

दमा *पुं.* (तत्.)एक रोग, श्वास रोग।

दमाद *पुं.* (तद्.) 1. जवाई, जामाता 2. कन्या का पति।

दमानदारी *स्त्री.* (अर.) ईमानदारी, सत्यनिष्ठा सच्चाई।

दमामा *पुं.* (फा.) नगाड़ा।

दमामी *वि.* (फा.) बहुत दिनों तक चलने वाला, स्थाई।

दमाह *पुं.* (तद्.) 1. बैलो का एक रोग 2. जिसे दमा हुआ हो।

दमित *वि.* (तत्.) 1. जिसका दमन किया गया हो 2. पराजित, विजित।

दमी *पुं.* (तत्.) दमनशील।

दमुना *पुं.* (तत्.) 1. अग्नि, आग 2. शुक्र का एक नाम।

दम्य *वि.* (तत्.) 1. दमन करने योग्य 2. बधिया करने योग्य (बैल) 3. सधाये जाने योग्य *पुं.* धुरा धारण करने योग्य बैल।

दय *पुं.* (तत्.) दया, कृपा।

दयनीय *वि.* (तत्.) दया करने योग्य, कृपा करने योग्य।

दयनीयता *स्त्री.* (तत्.) दया करने योग्य स्थिति।

दया *स्त्री.* (तत्.) 1. सहानुभूति का भाव 2. करुणा, करुणा, रहम यौ. दयादृष्टि 3. दक्ष प्रजापति की कन्या का नाम।

दयादृष्टि *स्त्री.* (तत्.) किसी के प्रति अनुग्रह का भाव, रहम की नजर।

दयानिधान *पुं.* (तत्.) दया का भंडार, जिसमें दया कूट कूटकर भरी हो।

दयानिधि *पुं.* (तत्.) दया का खजाना, अत्यधिक दयालु व्यक्ति।

दयरि *पुं.* (तद्.) देवदार का वृक्ष *वि.* दयालु *पुं.* (अर.) प्रदेश, प्रांत।

दयाकर *वि.* (तत्.) दयालु, दया करने वाला *पुं.* शिव।

दयादय *क्रि.वि.* (अनु.) 1. दम-दम का शब्द 2. लगातार बराबर।

दयानंद सरस्वती *पुं.*(तत्.)आर्यसमाज के संस्थापक का नाम।

दयानत *स्त्री.* (अर.) ईमान, सत्यनिष्ठा।

दयानतदार *वि.* (अर.) ईमानदार, सत्यनिष्ठ।

दयाना *अ.क्रि.* (देश.) दयालु होना, कृपालु होना।

दयापात्र *पुं.* (तत्.) दया करने योग्य, जिस पर दया की जा के।

दयामण *वि.* (तद्.) दया के योग्य, दयनीय।

दयामय *वि.* (तत्.) दया से पूर्ण, दयालु *पुं.* (तद्.) ईश्वर का एक नाम।

दयार्द्र *वि.* (तत्.)दयासे भीगा हुआ दयापूर्ण, दयालु।

दयाल *पुं.* (देश.) मधुर बोलने वाली एक चिड़िया।

दयालु *वि.* (तत्.) दयावान, जिसमें दया का भाव अधिक हो।

दयालुता *स्त्री.* (तत्.) दयालु होने का भाव, कृपा का भाव।

दयावंत *वि.* (तत्.) दयालु, दयावान।

दयावती *वि.* (तत्.) दया करने वाली।

दयावना *वि.* (देश.) दया के योग्य, दया का पात्र।

दयावान *वि.* (तत्.) दयालु, कृपालु।

दयावीर *पुं.* (तत्.) 1. जिसमे दया करने का अत्यधिक उत्साह हो 2. वीररस का एक भेद।

दयाशील *वि.* (तत्.) दयालु, कृपालु।

दयासागर *पुं.* (तत्.) अत्यधिक दयालु व्यक्ति।

दयित *पुं.* (तत्.) पति, वल्लभ।

दयिता *स्त्री.* (तत्.) पत्नी, प्रियतमा।

दर *पुं.* (तत्.) 1. शंख 2. गड्ढा 3. डर, भय 4. समूह, दल, सेना (फा.) 1. दरवाजा, द्वार मुहा. दर दर पर मारा मारा फिरना- दुर्दशाग्रस्त होकर फिरना, पेट पालने के लिए एक घर से दूसरे घर जाना 2. जगह, स्थान *स्त्री* 1. भाव, प्रयो. आजकल ब्याज की दर काफी कम हो गई है 2. ठीक ठिकाना, कदर, महत्व, प्रतिष्ठा यौ. दर असल- वास्तव में, दर बंदी- भाव तय करना, मोल भाव करना।

दरक *वि.* (तत्.) डरपोक, डरने वाला *स्त्री.* (देश.) 1. दरार, चीर 2. दरकने की क्रिया।

दरकच *स्त्री.* (देश.) रगड़ या ठोकर खाने से लगने वाली चोट।

दरकचना *स.क्रि.* (देश.) कुचलना।

दरकना *अ.क्रि.* (तद्.) दबाव या जोर पड़ने से फटना, चिरना प्रयो. उसकी पेंट का कपड़ा दरक गया।

दरका *पुं.* (देश.) चीर, दरार।

दरकाना *स.क्रि.* (तत्.) फाड़ना, चीरना।

दरकार *वि.*(फा.) 1. आवश्यक, जरूरी 2. अपेक्षित।

दर किनार *क्रि.वि.* (फा.) अलग, जुदा।

दरकीला *वि.* (फा.) 1. भरपूर 2. आसानी से टूटने वाला।

दरखत *पुं.* (फा.) दे. दरख्त।

दरखाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. दिखलाना 2. स्पष्ट करना, समझाना।

दरखास्त *स्त्री.* (फा.) प्रार्थना, प्रार्थनापत्र, अर्जी।

दरख्त *पुं.* (फा.) पेड़, वृक्ष।

दरगाह *स्त्री.* (फा.) 1. चौखट, देहरी 2. दरबार 3. किसी सिद्ध पुरुष की समाधि, मजार जैसे निजामुद्दीन ओलिया की दरगाह।

दरज *स्त्री.* (तत्.) दरार, चीर शिगाफ प्रयो. अब दोनों के दिलो में दरज पड़ गई है यौ. दरज बंदी- दीवार की दरारों को भरने का काम।

दरजन *पुं.* (अर.) दे. दर्जन।

दरजा *पुं.* (अर.) दे. दर्जा।

दरजिन *स्त्री.* (देश.) दे. दर्जिन।

दरजी *पुं.* (फा.) दे. दर्जी।

दरण *पुं.* (तत्.) 1. दलने या पीसने की क्रिया 2. पीसने की क्रिया, विदारण।

दरणि *पुं.* (तत्.) 1. प्रवाह 2. लहर 3. भँवर।

दरत *स्त्री.* (तत्.) 1. पर्वत, पहाड़ 2. बाँध 3. झरना, प्रपात 4. डर, भय।

दरद *पुं.* (तत्.) 1. काश्मीर और हिंदु कुश पर्वत के बीच के प्रदेश का प्राचीन नाम 2. एक जाति, जिसका उल्लेख शास्त्रों में मिलता है (फा.) 1. पीड़ा, दर्द, कष्ट दे. दर्द *वि.* (तत्.) भयंकर, भयदायक।

दरदबंद *वि.* (फा.) 1. दुखी, व्यथित 2. दयालु, कृपालु।

दरदमंद *वि.* (फा.) 1. दुखी 2. दयालु।

दरदर *क्रि.वि.* (फा.) दरवाजे-दरवाजे, जगह-जगह प्रयो. वह आजकल दर-दर मारा फिर रहा है।

दरदरा *वि.* (तद्.) जो मोटा पीसा गया हो, जिसके कण महीन या बरीक न हो।

दरदराना *स.क्रि.* (तत्.) किसी वस्तु को बहुत महीन न पीसना।

दरदी *वि.* (फा.) दुखी, पीडित।

दरना *स.क्रि.* (तद्.) 1. दलना, पीसना 2. नष्ट करना, ध्वस्त करना।

दरप *पुं.* (तद्.) दे. दर्प।

दरपन *पुं.* (तद्.) 1. आइना, आरसी 2. दर्पण।

दरपना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. गुस्सा करना, ताव में आना 2. घमंड करना, अहंकार करना।

दरपनी *स्त्री.* (तद्.) मुँह देखने का छोटा शीशा, छोटा आईना।

दरपित *वि.* (तद्.) दे. दर्पित।

दरब *पुं.* (तद्.) 1. द्रव्य, धन 2. खरी धातु 3. किनारेदार मोटी चादर।

दरबा *पुं.* (फा.) 1. कबूतरो-मुर्गियों आदि पक्षियों को रखने का खानेदार संदूक 2. पेड़ का खोखला भाग, कोटर, जिसमें पक्षी रहता है।

दरबान *पुं.* (फा.) द्वारपाल।

दरबार *पुं.* (फा.) 1. वह स्थान जहाँ सरदार या बादशाह की कचहरी लगती हो 2. राजसभा, कचहरी यौ. दरबारदार-चापलूस, खुशामदी मुहा. दरबार करना- राजसभा में बैठना; दरबार लगना- राजसभा के सभासदों का एकत्रित होना 3. महाराज, राजा 4. स्वर्ण मंदिर (सिक्खों का गुरुद्वारा) प्रयो. प्रयो. उन्होंने दरबार साहब में मत्था टेका।

दरबारदारी *स्त्री.* (फा.) 1. दरबार में हाजरी, राजसभा में उपस्थिति 2. किसी के पास जाकर बैठने या खुशामद करने का काम।

दरबार साहब *पुं.* (फा.+अर.) अमृतसर में सिक्खों का पवित्र तीर्थ स्थल जहाँ सिक्खों का धर्म ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहब रखा हुआ है।

दरबारी *पुं.* (फा.) 1. राजसभा का सभासद 2. दरबार में बैठने वाला *वि.* दरबार का 2. दरबार से संबंध रखने वाला।

दरमान *पुं.* (फा.) इलाज, दवा, औषध।

दरमियान *पुं.* (फा.) बीच, मध्य।

दरया *पुं.* (फा.) दे. दरिया।

दररना *स.क्रि.* (देश.) दे. दरना।

दरराना *स.क्रि.* (अनु.) हड़बड़ी में आना।

दरवाजा *पुं.* (फा.) 1. द्वार, मुहाना 2. किवाड, कपाट।

दरवेश *पुं.* (अ) फकीर, साधु।

दरवेशी *स्त्री.* (फा.) फकीरी, साधुता।

दरशनी हुंडी *स्त्री.* (देश.) वह हुडी जिसको देखते ही भुगतान दिया जाए।

दरस *पुं.* (तद्.) 1. देखा देखी, दर्शन, दीदार 2. छवि, सुंदरता।

दरसन *पुं.* (तद्.) दे. दर्शन।

दरसनी हुंडी *स्त्री.* (तत्.) दे. दरशनी हुंडी।

दरसाना *स.क्रि.* (तद्.) दिखलाना, बतलाना।

दरांती *स्त्री.* (तद्.) हँसिया, घास या फसल काटने का औजार। मुहा. दराँती पड़ना-कटाई शुरू होना।

दराई *स्त्री.* (देश.) दलने की मजदूरी, दलने की क्रिया

दराज *वि.* (फा.) बड़ा, भारी, लंबा प्रयो. उमर दराज लंबी उमर वाला *क्रि.वि.* (फा.) बहुत अधिक *स्त्री.* (अर.) मेज का एक खाना, जिसमें सामान रखकर ताला लगा सकते है।

दरार *स्त्री.* (तद्.) 1. शिगाफ 2. किसी चीज के फटने से पड़ने वाली लकीर।

दरारना *अ.क्रि.* (तत्.) फटना, विदीर्ण होना।

दरारा *पुं.* (देश.) धक्का, रगड़ा, दरेरा।

दरिंदा *पुं.* (फा.) हिंस्रक जंतु, मांस भक्षक जंतु।

दरित *वि.* (तत्.) 1. डरपोक, भीत 2. फटा हुआ, विदीर्ण।

दरिद्दर *वि.* (तद्.) दे. दरिद्र।

दरिद्र *वि.* (तत्.) 1. निर्धन, गरीब 2. कंगाल यौ. दरिद्र-नारायण-कंगाल, भिक्षुक *पुं.* निर्धन व्यक्ति, कंगाल आदमी।

दरिद्रता *स्त्री.* (तत्.) निर्धनता, कंगाली।

दरियादिली *स्त्री.* (फा.) उदारता।

दरिया *पुं.* (फा.) 1. नदी 2. समुद्र, सागर यौ. दरियादिल -उदार व्यक्ति *पुं.* (देश.) दलिया 2. निर्गुण पंथी संत।

दरियाई *वि.* (फा.) 1. नदी संबंधी 2. नदी में रहने वाला, जैसे दरियाई घोड़ा 3. समुद्र संबंधी *स्त्री* (फा.) एक प्रकार की रेशमी साटन का कपड़ा 2. एक प्रकार की तलवार।

दरियादिल *वि.* (फा.) उदार, दानी।

दरियाफ्त *वि.* (फा.) ज्ञात, मालूम।

दरियाव *पुं.* (फा.) दे. दरिया।

दरी *स्त्री.* (तत्.) 1. गुफा, खोह *स्त्री.* (देश.) मोटे सूत से बनी हुई चादर बिछोना 2. शतरंजी *वि.* (तद्.) फाड़ने वाला 2. डरने वाला, डरपोक।

दरीखाना *पुं.* (फा.) 1. ऐसा घर जिसमें कई खार हो 2. बारहदरी।

दरीचा *पुं.* (फा.) 1. खिड़की, झरोखा 2. छोटा दरवाजा, चोर दरवाजा।

दरीची *स्त्री.* (फा.) झरोखा, खिड़की।

दरीबा *पुं.* (तत्.) पान का बाजार, ऐसी जगह जहाँ तंबोली पान बेचने के लिए बैठते है।

दरेंद्र *पुं.* (तद्.) विष्णु का शंख, पांचजन्य।

दरेक *पुं.* (तद्.) बकाइन का पेड़।

दरेखा *स.क्रि.* (तद्.) रगड़ना, पीसना, रगड़ के साथ धक्का देना।

दरेग *पुं.* (अर.) कमी, कसर प्रयो. उसने सहायता करने में कोई दरेग नहीं रखी।

दरेश *पुं.* (तद्.) 1. रगड़, धक्का 2. बहाव का जोर 3. धावा।

दरेस *स्त्री.* (अं.) एक प्रकार की छींट का कपड़ा।

दरेसी *स्त्री.* (अं.) 1. तैयारी, मरम्मत 2. सजावट, ड्रेसिंग।

दरैंती *स्त्री.* (तद्.) अनाज दलने की छोटी चक्की।

दरोगा *पुं.* (फा.) दे. दारोगा।

दरोदर *पुं.* (तद्.) दे. दुरोदर।

दर्ज *स्त्री.* (फा.) दे. दरज *वि.* (फा.) लिखा हुआ, अंकित।

दर्जन *पुं.* (अर.) बाहर का समूह, बारह वस्तुओं का समाहार।

दर्जा *पुं.* (अर.) दरजा, प्रति मुहा. दर्जा उतारना- ऊँचे दर्जे से नीचे दर्जे में कर देना; दर्जा चढ़ाना- नीच दर्जे से ऊँचे दर्जे में कर देना *क्रि.वि.* (अर.) गुना प्रयो. वह उससे हजार दर्जे अच्छी है।

दर्जिन *स्त्री.* (फा.) 1. दर्जी जाति की स्त्री 2. दर्जी की स्त्री 3. कपड़ा सीने का व्यवसाय करने वाली वाली स्त्री।

दर्जी *पुं.* (फा.) 1. कपड़ा सीने वाला 2. कपड़ा सीने वाली जाति का पुरुष मुहा. दर्जी की सुई- बहुत काम का आदमी।

दर्द *पुं.* (फा.) 1. पीड़ा, व्यथा मुहा. दर्द उठना- दर्द पैदा होना; दर्द करना- किसी अंग का पीड़ा करना; दर्द लगना- पीड़ा शुरू होना 2. कष्ट, तकलीफ मुहा. दर्द आना- तकलीफ मालूम होना प्रयो. पैसा बहाते हुए उसे कोई दर्द नहीं आता 3. सहानुभूति, दया, तरस मुहा. दर्द खाना- तरस खाना, दया करना।

दर्दनाक *वि.* (फा.)कष्टजनक, दर्द पैदा करने वाला।

दर्दमंद *वि.* (फा.) 1. पीडित, दुखी दयावान 2. हमदर्द, करुणाशील।

दर्दर *वि.* (तत्.) टूटा हुआ, फटा हुआ।

दर्दराम्र *पुं.* (तत्.) एक पेड़ का नाम।

दर्दरीक *पुं.* (तत्.) 1. मेंढ़क, दादुर 2. मेघ, बादल 3. बाजा।

दर्द्रुण *वि.* (तत्.) दाद का रोगी।

दर्द्रु *पुं.* (तत्.) दाद नामक रोग।

दर्दुर *पुं.* (तत्.) 1. मेढ़क 2. बादल 3. अभ्रक 4. एक प्रकार का चावल।

दर्दुरक *पुं.* (तत्.) मेढ़क, दादुर।

दर्प *पुं.* (तत्.) 1. घमंड, अभिमान 2. उद्दंडता, अक्खड़पन 3. आतंक 4. उमंग, उत्साह।

दर्पक *पुं.* (तत्.) 1. दर्प करने वाला व्यक्ति 2. दर्प, अहंकार 3. कामदेव।

दर्पण *पुं.* (तत्.) 1. आईना, आरसी, शीशा 2. कुबेर पर्वत।

दर्पन *पुं.* (तद्.) दे. दर्पण।

दर्पमद्य क्रीड़ा *पुं.* (तत्.) रसिकता या रंगरेली का खेल।

दर्पित *वि.* (तत्.) गर्वित, अहंकारी।

दर्बारी *पुं.* (फा.) दे. दरबारी।

दर्भ *पुं.* (तत्.) डाभ, कुश।

दर्भट *पुं.* (तत्.) भीतरी कक्ष।

दर्भण *पुं.* (तत्.) कुश की चटाई।

दर्भांकुर *पुं.* (तत्.) डाभ का नुकीला गोफा।

दर्भासन *पुं.* (तत्.) कुश का आसन।

दर्भाह्वय *पुं.* (तत्.) मूँज।

दर्भि *पुं.* (तत्.) एक ऋषि का नाम।

दर्भेषिका *स्त्री.* (तत्.) कुश का निचला भाग या डंठल।

दर्मियान *पुं.* (तत्.) दे. दरमियान।

दर्मियानी *वि.* (फा.) दे. दरमियानी।

दर्यादिली *स्त्री.* (फा.) उदारता, दरियादिली।

दर्रा *पुं.* (फा.) 1. दो पहाड़ों के बीच होकर जाने वाला तंग रास्ता 2. दरार *पुं.* (तद्.) 1. मोटा आटा 2. सड़कों पर डाली जाने वाली कंकरीली मिट्टी।

दर्राना *क्रि.वि.* (अनु.) बेधड़क चले आना, धड़घड़ाना प्रयो. द्वारपाल के मना करने पर भी वह दर्राता हुआ अंदर घुस आया।

दर्व *पुं.* (तद्.) द्रव्य, धन, संपत्ति *पुं.* (तत्.) हिंसक व्यक्ति 2. राक्षस 3. एक जाति का नाम 4. साँप का फन 5. आघात, चोट।

दर्वट *पुं.* (तत्.) गाँव का चौकीदार 2. द्वारपाल।

दर्वरीक *पुं.* (तत्.) 1. इंद्र 2. वायु 3. एक तरह का वाद्य यंत्र।

दर्विक *पुं.* (तत्.) 1. चम्मच 2. कलछुल।

दर्विका *स्त्री.* (तत्.) 1. करछुल 2. आँख में लगाने का काजल जो घी के दीए में बत्ती जलाकर प्राप्त किया जाता है 3. चम्मच, डौआ।

दर्वीकर *पुं.* (तत्.) फनवाला साँप।

दर्श *पुं.* (तत्.) 1. दर्शन 2. सूर्य एवं चंद्रमा का संगम काल 3. अमावस्या 4. अमावस्या के दिन किया जाने वाला यज्ञ या कृत्य 5. प्रत्यक्ष प्रमाण।

दर्शक *वि.* (तत्.) 1. दर्शन करने वाला, देखने वाला 2. मार्गदर्शक 3. निरीक्षक, निगरानी करने वाला।

दर्शन *पुं.* (तत्.) 1. साक्षात्कार, अवलोकन 2. चाक्षुषज्ञान मुहा. दर्शन देना- किसी को अपने को दिखाना; भेंट, मुलाकात प्रयो. आजकल तो आपके महीनों दर्शन ही नही होते 3. तत्व ज्ञान संबंधी शास्त्र या विद्या।

दर्शनगृह *पुं.* (तत्.) सभा भवन, प्रेक्षागृह।

दर्शनपथ *पुं.* (तत्.) दृष्टिपथ, क्षितिज।

दर्शनाग्नि *स्त्री.* (तत्.) शरीर की एक प्रकार की अग्नि जो नेत्रेंद्रिय को कार्य में प्रवृत्त करती है।

दर्शनी हुंडी *पुं.* (तत्.) दे. दरशनी हुंडी।

दर्शनीय *वि.* (तत्.) देखने लायक, सुंदर।

दर्शयिता *वि.* (तत्.) 1. दिखाने वाला, प्रदर्शक 2. निर्देशक *पुं.* द्वारपाल 2. निर्देशक।

दर्शाना *स.क्रि.* (देश.) दे. दरसाना।

दर्शित *वि.* (तत्.) 1. दिखलाया हुआ 2. प्रकाशित 3. प्रमाणित।

दल *पुं.* (तत्.) 1. कटा हुआ टुकड़ा 2. अंश 3. पत्ता (जैसे तुलसी दल) 4. समूह, गुट, टोली, झुंड प्रयो. वह अपने दल के लोगों के साथ घूमता रहता है यौ. सैनिक दल, छात्र दल 5. म्यान।

दलक *स्त्री.* (अर.) गुदड़ी *पुं.* (देश.) राजगीरों का एक औजार।

दलकना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. फट जाना, चिर जाना 2. काँपना, डगमगाना 3. चौंकना वह उनकी कठोर बातें सुनकर दलक गया *स.क्रि.* डराना, भयभीत करना।

दलदल *स्त्री.* (तद्.) कीचड़, पंक मुहा. दलदल में फँसना- किसी कठिनाई में फँसना प्रयो. दिक्कत में पड़ना प्रयो. सरकार के अनिर्णय के कारण यह मामला दलदल में फँसा हुआ है।

दलदला *वि.* (देश.) दलदल वाला यौ. दलदली जमीन, दलदला मैदान।

दलन *पुं.* (तत्.) 1. कुचलने का भाव, पीसने की क्रिया 2. विनाश, संहार *वि.* विनाशकारी, नाशक, नष्ट करने वाला।

दलना *स.क्रि.* (तद्.) 1. रगड़ कर या पीसकर चूर्ण करना 2. रौंदना, मसलना 3. चक्की में डालना, पीसना (अनाज दलना) 4. नष्ट करना, ध्वस्त करना।

दलनि *स्त्री.* (देश.) दलने की क्रिया या ढंग।

दलपति *पुं.* (तत्.) किसी दल या समुदाय का प्रधान या मुखिया, सरदार 2. सेनापति।

दलबंदी *स्त्री.* (तत्.+फा.) गुटबाजी, दल बनाने का काम।

दलबल *पुं.* (तत्.) फौज, लावलश्कर प्रयो. शत्रु ने दलबल के साथ शहर पर आक्रमण कर दिया।

दलमलना *स.क्रि.* (देश.) 1. मसलना 2. रौंदना, कुचलना 3. मार डालना, नष्ट करना।

दलवाना *स.क्रि.* (तद्.) दलने का काम करवाना, पिसवाना से प्रयो. पास की चक्की दाल दलवा लाओ।

दलवैया *पुं.* (देश.) 1. दलने वाला 2. जीतने वाला।

दलहन *पुं.* (देश.) एक प्रकार का अन्न जिस से दाल तैयार की जाती है जैसे- चने, मटर, मूँग, मसूर आदि।

दलहरा *पुं.* (देश.) दाल बेचने वाला।

दलाई *स्त्री.* (देश.) चक्की से दाल दलवाने, पिसवाने का काम तथा मजदूरी।

दलाई लामा *पुं.* (तत्.) तिब्बत के सबसे बड़े लामा या धर्म गुरु, अब वे हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला में रहते हैं।

दलाढक *पुं.* (तत्.) जंगली तिल, 2. गेरु 3. झाग, फेन 4. बबंडर, तीव्र वायु 5. हाथी का कान 6. एक प्रकार का पलाश।

दलाढ्य *पुं.* (तत्.) कीचड़, पंक।

दलादली *स्त्री.* (तद्.) संघर्ष, होड़ भिडंत प्रयो. दोनों दोनों दलों की दलादली से मुझे क्या लेना, मैं इस चक्कर में नहीं फँसना चाहता।

दलान *पुं.* (देश.) दे. दालान।

दलाना *स.क्रि.* (देश.) दे. दलवाना।

दलामल *पुं.* (तत्.) 1. दोने का पौधा 2. मरुवे का पैधा, मैनफल का पेड़।

दलाम्ल *पुं.* (तत्.) लोनिया साग।

दलाल *पुं.* (अर.) वह व्यक्ति जो सौदे की खरीद-बेच में मध्यस्थ हो, बेश्याओं से संयोग कराने वाला।

दलालत *स्त्री.* (अर.) लक्षण, चिह्न।

दलाली *स्त्री.* (फा.) 1. दलाल का काम 2. दलाल के काम की मजदूरी।

दलाह्वय *पुं.* (तत्.) तेज पत्ता।

दलित *वि.* (तत्.) 1. रौंदा हुआ, कुचला हुआ 2. खंडित, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ 3. दबाया हुआ प्रयो. स्वतंत्रता के बाद भारत में दलितों के उत्थान के लिए कई कार्य किए गए है।

दलिद्दर *पुं.* (तद्.) 1. दरिद्रता, गरीबी 2. गंदगी 3. दरिद्र, गरीब।

दलिया *पुं.* (देश.) दलकर टुकड़े किया हुआ अनाज जैसे- गेहूँ का दलिया।

दलील *स्त्री.* (अर.) 1. तर्क, युक्ति 2. बहस, वाद विवाद।

दलेगंधि *पुं.* (तत्.) सप्तपर्णी वृक्ष।

दलेल *स्त्री.* (अर.) सजा के तौर पर कराई गई कवायद मुहा. दलेल बोलना- सजा के तौर पर कवायद करने की आज्ञा देना।

दलैया *पुं.* (देश.) 1. दलने या पीसने वाला 2. मारने वाला, नाशक, निहंता।

दल्भ *पुं.* (तत्.) 1. धोखा 2. पाप 3. बेईमानी 4. चक्र, पहिया।

दल्भि *पुं.* (तत्.) 1. इंद्र का वज्र 2. शिव का एक नाम।

दल्लाल *पुं.* (अर.) दे. दलाल।

दवँरी *स्त्री.* (तत्.) दे. दँवरी।

दव *पुं.* (तत्.) 1. वन, जंगल 2. जंगल की आग, दावानल 3. ज्वर, बुखार 4. पीड़ा यौ. दवदान-जंगल में आग लगाना। दववहन-दवाग्नि।

दवथु *पुं.* (तत्.) 1. दाह, जलन 2. संताप, दुख।

दवन *पुं.* (तद्.) 1. दमन 2. दौना नामक पौधा। *वि.* दमन करने वाला।

दवनपापड़ा *पुं.* (तद्.) पित्त पापड़ा।

दवा *स्त्री.* (फा.) औषध, दवाई यौ. दवा खाना, औषधालय, दवा-दारु-उपचार प्रयो. आजकल उनकी दवादारु चल रही है मुहा. दवा को भी न मिलना- जरा सा भी न मिलना, दुर्लभ होना 2. उपचार, चिकित्सा प्रयो. आप किसी अच्छे डाक्टर से दवा करवाना *स्त्री.* (तद्.) 1. वनाग्नि 2. आग, अग्नि।

दवाई *स्त्री.* (फा.) दे. दवा।

दवाई खाना *पुं.* (फा.) दे. दवाखाना।

दवाखाना *पुं.* (फा.) 1. वह स्थान जहाँ दवा मिलती है 2. औषधालय, चिकित्सालय।

दवागिन *स्त्री.* (तत्.) दे. दवाग्नि।

दवाग्नि *स्त्री.* (तत्.) दावानल वन में लगने वाली आग।

दवात *स्त्री.* (अर.) लिखने की स्याही का पात्र, मसि पात्र *पुं.* (फा.) औषध, दवाई।

दवानल *पुं.* (तत्.) दवाग्नि।

दवाम *क्रि.वि.* (अर.) हमेशा, सदा, नियम।

दवामी *वि.* (अर.) स्थायी चिरकालिक जैसे- दवामी बदोबस्त- जमीन का वह स्थायी बंदौबस्त जिससे मालगुजारी नियत कर दी जाए।

दवार *पुं.* (तद्.) दे. द्वार।

दवारि *स्त्री.* (तद्.) वनाग्नि, दावानल।

दवार्गन *स्त्री.* (तद्.) दे. दवाग्नि।

दश *वि.* (तत्.) दस प्रयो. दशकुमार चरित।

दशकंठ *पुं.* (तत्.) रावण, दस सिरों वाला।

दशकंठारि *पुं.* (तत्.) दशकंठ (रावण) के शत्रु-श्री रामचंद्र।

दशकंध *पुं.* (तद्.) रावण, दस कंधो वाला।

दशकंधार *पुं.* (तत्.) रावण।

दशक *पुं.* (तत्.) दस का समाहार, दस की ढेरी 2. दस वर्षो का समय।

दशकर्म *पुं.* (तद्.) गर्भाधान से लेकर विवाह तक के दस संस्कार, गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, निष्क्रमण, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन और विवाह।

दशकुमार चरित *पुं.* (तत्.) संस्कृत के कवि दंडी का लिखा हुआ एक गद्य काव्य का नाम।

दशग्राम *पुं.* (तत्.) दस ग्राम का वजन।

दशति *स्त्री.* (तत्.) सौ, शत।

दशद्वार *पुं.* (तत्.) शरीर के दस द्वार- दो कान, दो दो आँखें, दो नाक, एक मुख, एक गुदा, एक लिंग और एक ब्रह्माड।

दश धर्म *पुं.* (तत्.) मनु स्मृति में वर्णित धर्म के दस लक्षण जो मानवों के लिए अनुकरणीय है।

दशधा *वि.* (तत्.) 1. दस प्रकार का 2. दसवाँ, दशम।

दशन *पुं.* (तत्.) 1. दाँत 2. दांतों से काटने की क्रिया 3. कवच 4. चोटी, शिखर।

दशनांशु *पुं.* (तत्.) दाँतो की चमक।

दशनाढ्य *स्त्री.* (तत्.) लोनिया शाक।

दशनामी *पुं.* (देश.) संन्यासियों का एक वर्ग जो शंकराचार्य की शिष्य परंपरा के अंतर्गत आते हैं।

दशनोच्छिष्ट *पुं.* (तत्.) 1. होंठों आदि का चुंबन 2. निश्वास, होंठ।

दशबाहु *पुं.* (तत्.) पंचमुख, शिव, महादेव।

दशभुजा *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा का एक नाम।

दशमांश *पुं.* (तत्.) दसवाँ भाग, हिस्सा।

दशम *वि.* (तत्.) दसवाँ।

दशमिक प्रणाली *स्त्री.* (तत्.) दशमलव प्रणाली।

दशमिक भग्नांश *पुं.* (तत्.) दशमलव।

दशमिन *वि.* (तत्.) लगभग सौ की अवस्था 2. बहुत बूढा।

दशमी *पुं.* (तत्.) 1. किसी पक्ष की दसवीं तिथि 2. अंतिम अवस्था नब्बे वर्ष से अधिक की अवस्था *वि.* (तद्.) बहुत बूढा 2. बहुत पुराना।

दशमुख *पुं.* (तत्.) 1. रावण (तद्.) दसो दिशाएँ 2. त्रिदेव।

दशमुखांतक *पुं.* (तत्.) ब्रह्मा, विष्णु, महेश के दस मुख।

दशमूत्रक *पुं.* (तत्.) दस जीवों का मूत्र जो वैद्यक में काम आता है ये जीव है- हाथी, भैंस, ऊँट, गाय, बकरा, मेढ़ा, घोड़ा, गधा, पुरुष और स्त्री।

दशमूल *पुं.* (तत्.) दस पेड़ों की छाल या जड़ जो दवा के काम आती है।

दशमेश *पुं.* (तत्.) 1. जन्म कुंडली के दशम भाव का अधिपति 2. सिक्ख संप्रदाय के दसवें गुरु गोविंद सिंह।

दशरथ *पुं.* (तत्.) एक पौराणिक राजा का नाम जिसके पुत्र श्री रामचंद्र थे।

दशरथ सुत *पुं.* (तत्.) श्री राम चंद्र।

दशरूपक *पुं.* (तत्.) संस्कृत में नाट्य शास्त्र पर धनजंय का लिखा लक्षणग्रंथ।

दशवदन *पुं.* (तत्.) दशमुख।

दशहरा *पुं.* (तत्.) 1. ज्येष्ठ मास की शुक्ला दशमी तिथि, इस तिथि को गंगा का जन्म हुआ था 2. विजयादशमी

दश-हरा *स्त्री* (तत्.) दस प्रकार के पापों का हरण करने वाली गंगा।

दशांग *पुं.* (तत्.) दस सुगंधित द्रव्यों के मेल से बना धूप जो पूजन में प्रयुक्त होता है।

दशांगुल *पुं.* (तत्.) खरबूजा *वि.* जो माप में दस अंगुल का हो।

दशांत *पुं.* (तत्.) बुढ़ापा।

दशांतर *पुं.* (तद्.) जीवन की विभिन्न अवस्थाएँ।

दशांश ग्राम *पुं.* (तत्.) एक ग्राम का दसवाँ भाग।

दशांशमीटर *पुं.* (तत्.+अं.) एक मीटर का दसवाँ भाग।

दशा *स्त्री.* (तत्.) अवस्था, हालात प्रयो. आजकल उनकी दशा ठीक नही चल रही है 2. विरही की अवस्था 3. फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के जीवन में प्रत्येक ग्रह का नियत योगकाल 4. दीए की बाती 5. चित्त 6. किसी वस्त्र का किनारा।

दशाकर्मी *पुं.* (तद्.) दे. दशाकर्ष।

दशाकर्ष *पुं.* (तद्.) 1. कपड़े का किनारा या अंचल 2. दीपक, दीया।

दशाक्षर *पुं.* (तत्.) एक छंद।

दशाधिपति *पुं.* (तत्.) 1. ज्यो. फलित ज्योतिष के अनुसार दशाओं के अधिपति ग्रह 2. दस स्थितियों का नायक।

दशानन *पुं.* (तत्.) रावण।

दशानिक *पुं.* (तत्.) जमालगोटा।

दशाब्द *पुं.* (तत्.) दस वर्षों का समय, दशक।

दशामय *पुं.* (तत्.) रुद्र।

दशारुहा *पुं.* (तत्.) एक लता जिसके पत्तों के रस से कपड़े रंगे जाते है।

दशार्ण *पुं.* (तत्.) मध्य प्रदेश में विध्य पर्वत के दक्षिण पूर्व में स्थित प्रदेश का प्राचीन नाम, उस प्रदेश का राजा या निवासी।

दशार्णा *स्त्री.* (तत्.) विंध्य पर्वत से निकली धसान नदी।

दशार्द्ध *पुं.* (तत्.) दस का आधा पाँच-पाँच की संख्या, बुद्धदेव।

दशार्ह *पुं.* (तत्.) 1. एक लड़ाकू जाति 2. वृष्णिवंश का राजा 3. विष्णु 4. बुद्ध।

दशावतार *पुं.* (तत्.) भगवान विष्णु के दस अवतार।

दशावरा *स्त्री.* (तत्.) दस लोगों की शासक सभा 2. दस पंचों की सभा।

दशाश्व *पुं.* (तत्.) चंद्रमा का रथ जिस में दस घोड़े लगते है।

दशाश्वमेध *पुं.* (तत्.) काशी के अंतर्गत एक तीर्थ 2. प्रयाग में त्रिवेणी के पास एक घाट जहाँ तीर्थयात्री जल भरते हैं।

दशास्य *पुं.* (तत्.) दशमुख, रावण।

दशाह *पुं.* (तत्.) दस दिन, मृतक के संस्कार का दसवाँ दिन।

दशेंधन *पुं.* (तत्.) दीपक, दीया।

दशेर *पुं.* (तत्.) हिंस्र प्रणाली।

दशेरक *पुं.* (तत्.) मरुप्रदेश, मरुप्रदेश का वासी।

दशेश *पुं.* (तत्.) दस गाँवों का अधिपति या नायक।

दश्त *पुं.* (फा.) 1. जंगल, वन 2. सुनसान स्थान।

दस *वि.* (तद्.) 1. पाँच का दुगुना 2. नौ से एक अधिक 3. कई, बहुत।

दसकंध *पुं.* (तत्.) रावण।

दसगुना *वि.* (देश.) किसी संख्या का दस बार अधिक भाग।

दसठौन *पुं.* (तत्.) बच्चा जनने के दस दिन के बाद एक रीति जिसमें प्रसूता घर से बाहर निकलती है।

दसन *पुं.* (तत्.) दे. दशन *पुं.* (देश.) एक झाड़ी जिसकी छाल चमड़ा रिझाने के काम आती है *पुं.* 1. नाश, क्षय 2. निष्कासन 3. फैकना।

दसना *अ.क्रि.* (देश.) बिछना, फैलना *स.क्रि.* बिछाना, फैलाना *पुं.* बिछौना-बिस्तर।

दसमी *स्त्री.* (तद्.) दे. दशमी।

दसरत्थ *पुं.* (तद्.) दे. दशरथ।

दसवाँ *वि.* (तद्.) नौंवे के बाद का स्थान, गिनती के क्रम में दस के स्थान पर आने वाला।

दसहरी *पुं.* (तत्.) एक तरह का बढ़िया आम।

दसा *पुं.* (देश.) अग्रवालों में एक प्रधान भेद।

दसाना *स.क्रि.* (देश.) बिछाना।

दसारन *पुं.* (तद्.) एक प्रदेश दे. दशार्ण।

दसी *स्त्री.* (तद्.) 1. छोर 2. कपड़े का पल्ला, थान का आँचल 3. पता, निशान।

दसौंधी *पुं.* (तद्.) चारणों की एक जाति, भाट।

दस्तंदाज *वि.* (फा.) 1. किसी कार्य में अनावश्यक हस्तक्षेप करने वाला 2. बिना बुलाए किसी विषय में बोलने वाला 3. अनधिकृत रूप से सरकारी जमीन पर निर्माण कार्य करने वाला।

दस्तंदाजी *स्त्री.* (फा.) अनधिकृत हस्तक्षेप, अनावश्यक रूप से हाथ डालना।

दस्त *पुं.* (फा.) 1. हाथ 2. किसी हथियार या औजार आदि का हत्था या मुट्ठा 3. पतला अतिसार 4. मेहमानों को बैठाने का स्थान।

दस्तकार *वि.* (फा.) हाथों से कारीगरी करने वाला।

दस्तकारी *स्त्री.* (फा.) हाथों से बनाई गई या बनाई जाने वाली कलाकृति या यह विद्या।

दस्तखत *पुं.* (फा.) हाथ के अक्षर, हस्ताक्षर, स्वाक्षरी।

दस्तखती *वि.* (फा.) हस्ताक्षरों सहित, हस्ताक्षर युक्त।

दस्तरख्वान *पुं.* (फा.) 1. सामूहिक भोजन करने का फर्श या मेज 2. भोजन की मेज पर फर्श पर बिछाया जाने वाला कपड़ा।

दस्तवक *स्त्री.* (फा.) 1. ताली 2. दरवाजा खटखटाने की आवाज 3. माल लाने, ले जाने या पैसा वसूलने आदि का सरकारी आज्ञा पत्र 4. राजस्व, महसूल।

दस्ता *पुं.* (फा.) 1. औजार आदि की मूठ, दस्त 2. खरल का मुसल जिसे हाथ से पकड़ा जाता है (इमामदस्ता) 3. सैनिकों की टुकड़ी 4. गुच्छा जैसे- गुलदस्ता 5. चौबीस कागजों का समूह (24 कागज=1 दस्ता, 20 दस्ते= 1 रीम)।

दस्ताना *पुं.* (फा.) 1. एक हाथ में पहनने का (मोजे जैसा) वस्त्र 2. तलवार की मूठ जहाँ से तलवार पकड़ी जाती है 3. हाथ में (विशेषकर हथेली के भाग में) पहना जाने वाला जिरह या कवच।

दस्तावर *वि.* (फा.) आयु. जिसे खाने से पेट साफ हो जाता है, रेचक औषधि, जुलाब।

दस्तावेज *पुं.* (फा.) वह साधन जो हाथ मिलाने में (सुलह कराने में) सहायक हो, वह लिखित पत्र जो किसी व्यवस्था को कानूनी दृष्टि से पक्का या स्थायी कर दे, व्यवस्थापत्र, लेखपत्र, तहरीर, सनद।

दस्तावेजी *वि.* (फा.) 1. दस्तावेज संबंधी जैसे: दस्तावेजी कागज पत्र 2. दस्तावेज के रूप में जैसे- दस्तावेजी साक्ष्य।

दस्ती *वि.* (फा.) हाथ का, हाथ से ले जाने योग्य, *स्त्री.* (फा.) छोटा रूमाल, छोटा बेंट, मशाल।

दस्तूर *पुं.* (फा.) 1. तौर-तरीका, परंपरा जैसे-हमारे यहाँ का दस्तूर है कि 2. कायदा, प्रणाली जैसे-दस्तूर के अनुसार बड़े अधिकारी से पहले छोटे अधिकारी को मिल लेना चाहिए।

दस्तूरी *स्त्री.* (फा.) एक प्रकार की दलाली की रकम।

दस्यु *पुं.* (तत्.) 1. डाकू, लुटेरा, दुष्ट 2. प्राचीन धर्मशास्त्र के अनुसार जो आर्य न हो अर्थात् अधर्म-आचरण करे और धर्मकार्यों में विघ्न डाले।

दस्यु-वृत्ति *स्त्री.* (तत्.) डाकू का पेशा, डाकेजनी, डाका।

दह *पुं.* (तद्.) 1. नदी का वह भाग जो अत्यंत गहरा हो 2. नदी में प्राकृतिक रूप से बना हुआ गहरा कुंड जैसे कालिय दह भूवि. महासागर के तल में बना गहरा (18 हजार फीट से अधिक) खड्ड।

दहक *स्त्री.* (देश.) 1. आग की लपट, ज्वाला 2. जलन, ताप।

दहकन *स्त्री.* (देश.) दहकने की क्रिया या भाव।

दहकना *अ.क्रि.* (देश.) धू-धू कर जलना, लपट के साथ जलना।

दहकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. अत्यंत तीव्रता से या लपटों के साथ जलाना, इस प्रकार जलाना कि जलने वाली वस्तु जलकर आग बन जाए जैसे-कोयले दहकाना 2. (किसी को) अत्यंत उत्तेजित करना, भडक़ाना।

दहड़ दहड़ कर *अव्य.* (देश.) लपटों के साथ, धाँय-धाँय, धू-धू करके, धधक कर (जलना)।

दहन *पुं.* (तत्.) 1. जलने की क्रिया या भाव 2. अग्नि, आग 3. जलाने वाला रसा. ऑक्सीजन के संयोग से जलने की प्रक्रिया जिससे प्रकाश और ऊष्मा उत्पन्न हो।

दहनशील *वि.* (तत्.) 1. जलने या जलाने के गुण से युक्त 2. जलता हुआ।

दहना *स.क्रि.* (देश.) 1. जलाना, भस्म कर देना 2. कष्ट देना, मानसिक रूप से संतप्त करना *अ.क्रि.* जलना, भस्मीभूत हो जाना।

दहनि *पुं.* (तद्.) दे. दहन (कविता में प्रयोग)।

दहनीय *वि.* (तत्.) जलने या जलाने योग्य।

दहनोन्माद *पुं.* (तत्.) मनो. एक मानसिक विकृति जिसमें कामवासना से पीडित व्यक्ति को आग लगा देने की इच्छा होने लगती है।

दहल *स्त्री.* (देश.) घबराहट, भय से काँपने का भाव, थर्राहट।

दहलना *अ.क्रि.* (देश.) घबरा जाना, भय के कारण स्तब्ध हो जाना, बढ़ते कदम एकाएक रुक जाना।

दहला *वि.* (देश.) ताश के खेल में वह पत्ता जिस पर दस संख्या का चिह्न हो मुहा. नहले पर दहला-मुँहतोड़ जवाब *अ.क्रि.* दहलना क्रिया का भूतकाल का एकवचन का रूप।

दहलाना *स.क्रि.* (देश.) (किसी को) बुरी तरह डरा देना, इतना डरा देना कि सामने वाले शत्रु का साहस समाप्त हो जाए।

दहली *वि.* (तत्.) देहली या दहलीज, दहला का स्त्रीलिंग.।

दहलीज *स्त्री.* (फा.) दरवाजे की चौखट की वह लकड़ी जो जमीन से लगी रहती है, दरवाजे का जमीन से कुछ उठा हुआ वह भाग जो कमरे को बाहरी क्षेत्र से अलग दर्शाता है, देहरी, देहली।

दहशत *स्त्री.* (अर.) भय, आतंक की कल्पना मात्र से उत्पन्न होने वाला भय।

दहशत-अंगेज *वि.* (अर.+फा.) दहशत उत्पन्न करने वाला, दहशत से भरा हुआ, भयानक।

दहशत-अंगेजी *स्त्री.* (अर.+फा.) दहशत उत्पन्न करने का भाव, भयंकरता, आतंकित करने का प्रयत्न।

दहाई *स्त्री.* (देश.) भारतीय अंक गणना पद्धति में किसी अंक का दस गुना मान बताने वाला

स्थान अर्थात् दाहिनी ओर से दूसरा स्थान (पहला स्थान इकाई का माना जाता है)।

दहाड़ *स्त्री.* (देश.) 1. किसी हिंसक प्राणी का भय उत्पन्न करने वाला तीव्रता वाला शब्द, गर्जन 2. किसी वीर पुरुष की ललकार 3. करुण चीत्कार मुहा. दहाड़ मारना-जोर जोर से रोना।

दहाड़ना *अ.क्रि.* (देश.) 1. घोर गर्जन करना, भयंकर शब्द करना 2. ललकारना 3. शोक का प्रदर्शन करते हुए विलाप करना 4. अपना बड़प्पन दिखलाते हुए ऊँची आवाज़ से बोलना जिससे दूसरों की आवाज़ दब जाए।

दहाना *पुं.* (फा.) 1. किसी नदी या नाले इत्यादि का प्रारंभिक या अंतिम भाग जहाँ वह किसी बड़ी नदी या समुद्र में मिलती है, मुहाना 2. घोड़े की लगाम का वह भाग जो मुँह में रहता है 3. मशक का मुँह, जहाँ से पानी छोड़ा जाता है।

दहिना *वि.* (तद्.) दे. दाहिना।

दहिने *वि.* (तद्.) दाहिने।

दही *पुं.* (तद्.) दूध का वह परिवर्तित रूप जो आकार में ठोस जैसा और स्वाद में कुछ खटास लिए होता है, इसे मथकर इसमें से मक्खन और उससे घी निकाला जाता है टि. दही और छेने में अंतर यही है कि छेने में से घी नहीं निकाला जाता मुहा. हथेली में दही जमाना- असंभव कार्य; मुँह में दही जमा रहना- मौन धारण करना; टि. दही जमने में एक निश्चित समय लगता ही है, इस समयावधि को ध्यान में रखकर ये मुहावरे बने हैं।

दहेंड़ी *स्त्री.* (देश.) दही की हंड़ी, दही जमाने या रखने का मिट्टी का बर्तन।

दहेज *पुं.* (देश.) कन्या के विवाह के अवसर पर कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष को दिए जाने वाले उपहारों का सम्मिलित नाम।

दह्यमान *वि.* (तत्.) 1. जलता हुआ, जलाया जाता हुआ 2. अत्यंत दुखी मन वाला, संतप्त।

दांडिक *वि.* (तत्.) (विधि) दंड देने का अधिकारी, न्यायाधीश, दंडाधिकारी criminal jurisdiction

दांडिक अभियोजन *पुं.* (तत्.) विधि. दंड देने योग्य अपराधी को न्याय के अनुसार दंड दिलवाने के लिए की जाने वाली प्रक्रिया criminal prosecution

दांडिक कार्यवाही *स्त्री.* (तत्.+फा.) विधि. अपराधी को न्यायानुसार दंड दिलवाने के लिए की जाने वाली जाँच, अभियोजन, दंडन आदि संपूर्ण कार्यवाही। criminal proceedings

दांडिक जाँच *स्त्री.* (तत्.+फा.) आपराधिक मामलों में की जाने वाली जाँच। criminal enquiry

दांत *वि.* (तत्.) 1. इंद्रियों को वश में रखने वाला, दमन करने वाला 2. जिसका दमन किया गया हो 3. दाँत संबंधी 4. दाँत का बना हुआ। (हाथी दाँत का)।

दांति *स्त्री.* (तत्.) मन और इंद्रियों का दमन, आत्मनिग्रह, तपश्चर्या, संयम, क्लेश सहिष्णु होने का भाव।

दांपत्य *पुं.* (तत्.) 1. दंपति (पति-पत्नी) का परस्पर परस्पर व्यवहार 2. दांपत्य जीवन में किए जाने वाले अग्निहोत्र आदि धार्मिक कृत्य *वि.* (तत्.) दंपति संबंधी, दंपति का।

दांपत्य अधिकार *वि.* (तत्.) (विधि.) पति और पत्नी का (परस्पर) काम/यौन सुख प्राप्त कर सकने का अधिकार। conjugal rights

दांपत्य अधिकार का प्रत्यास्थापन *पुं.* (तत्.) साथ न रह पाने के कारण दांपत्य अधिकारों का पालन न कर पाने की स्थिति में, न्यायालय द्वारा तत्संबंधित आदेश। restitution of conjugal rights

दांभिक *वि.* (तत्.) दंभ या ढोंग करने वाला व्यक्ति, कपटी।

दाँ *पुं.* (देश.) बार, दफा जैसे- पहले दाँ-पहली बार, पहली दफा (पहले दाँव में) *प्रत्य.* (फा.) जानकार, जैसे- उर्दूदाँ-उर्दू का जानकार।

दाँत *पुं.* (तद्.) 1. मनुष्य या विभिन्न प्राणियों के मुँह में स्थित केवल हड्डियों से बना वह अंग जो भोज्य पदार्थ को काटने, फाड़ने या चबाने के काम आता है, मनुष्य के मुँह में सामान्यत: इनकी संख्या 32 होती है, दंत, रदन, कुछ प्राणी दाँतों का उपयोग अन्य कार्यों के लिए भी करते है जैसे- खोदना, लकड़ी आदि काटना, युद् ध में शस्त्र के रूप में आदि, हाथी के बाहरी दाँत भोजन के काम नहीं आते मुहा. दाँतकाटी रोटी- गहरी मित्रता; दाँत किटकिटाना- क्रोध करना; दाँत खट्टे करना- परास्त करना; दाँतो तले उँगली दबाना- चकित होना; दाँत पीसना- क्रोध करना (मन ही मन) 2. आरी, कंघी आदि के दाँते।

दाँतना *अ.क्रि.* (देश.) 1. दाँत आना, पशुओं का युवा होना (प्राय: दाँत गिनकर पशुओं की आयु निश्चित की जाती है) 2. शस्त्र या औजार का कुंठित हो जाना जैसे- कुल्हाड़ी दाँत गई है 3. दाँते निकालना- जैसे- आरी दाँतने योग्य हो गई है।

दाँत-पूँछ अनुपात *पुं.* (तद्.+तत्.) सैवि. सेना के योद्धी तथा अयोद्धी अंगों का परस्पर अनुपात जैसे- वायु सेना में लड़ाकू स्कवाड्रनों तथा अन्य सहायक अंगों का अनुपात। teeth to tale ratio

दाँता *पुं.* (देश.) नुकीले दाँत जैसे सिर वाला कंगूरा या अन्य कोई वस्तु जो संख्या में एकाधिक और पंक्तिबद्ध हो, दंदान।

दाँती *स्त्री.* (तद्.) 1. घास काटने का चंद्राकार औजार औजार जिसमें दाँते बने होते हैं, हँसिया 2. नाव बाँधने का लंगर या खूँटा 3. दंत पंक्ति, दंतावली।

दाँयाँ *वि.* (तत्.) दे. दायाँ।

दाँव *पुं.* (देश.) 1. उपयुक्त अवसर, मौका 2. उपाय, युक्ति, चाल 3. कपटपूर्ण चाल, किसी को धोखा देने का उपाय 4. बारी, दफा 5. कुश्ती लड़ने के विभिन्न प्रकार, प्रतिद्वंद्वी को हराने का उपाय या या चाल 6. वह धन जो जुए में लगाया जाता है 7. धूर्तता पूर्ण युक्तियाँ, शत्रु को हराने की विभिन्न तरकीबें।

दाँसिया *स्त्री.* (देश.) छोटे-छोटे दाँत, दूध के दाँत।

दा *पुं.* (तत्.) सितार के स्वर मिलाने के लिए एक निर्देश *वि.* देने वाली (समासांत में) जैसे- धनदा, सुखदा।

दाईं/दायीं *वि.* (देश.) दाहिनी ओर की, विलो. बाईं *स्त्री.* (देश.) बार, दफा जैसे- अगली दाईं ऐसा नहीं होगा।

दाई *स्त्री.* (तद्.) 1. धन लेकर दूसरे के बच्चे को दूध पिलाने वाली और पालन पोषण करने वाली महिला, धाय, धात्री, उपमाता आयु. प्रसूति कर्म में सहायिका का व्यवसाय करने वाली महिला 2. बच्चों की देखरेख करने वाली नौकरानी।

दाउ *स्त्री.* (तद्.) जंगल में अपने आप लगने वाली आग, दावानल।

दाऊ *पुं.* (देश.) 1. बड़ा भाई, दादा (क्षेत्रीय शब्द) 2. कृष्ण के भाई बलराम।

दाऊद *पुं.* (फा.) 1. एक पैगंबर का नाम 2. इसरायल का एक राजा जिसका नाम वहाँ की भाषा में डेविड था।

दाक्षायण *वि.* (तत्.) प्रजापति दक्ष से उत्पन्न या दक्ष का वंशज *पुं.* 1. दक्ष के गोत्र से उत्पन्न पुरुष 2. दक्ष द्वारा किया गया एक यज्ञ 3. सुवर्ण, स्वर्णाभूषण।

दाक्षायणी *वि.* (तत्.) 1. दक्ष गोत्र से उत्पन्न कन्या 2. कश्यप ऋषि की पत्नी अदिति 3. सती, दुर्गा 4. स्वर्णकुंडलधारी ब्रह्मचारी।

दाक्षि *पुं.* (तत्.) दक्ष का पुत्र।

दाक्षिण *पुं.* (तत्.) 1. एक होम 2. दक्षिणा संग्रह *वि.* (तत्.) 2. दक्षिणा से संबंधित 3. दक्षिण दिशा से संबंधित।

दाक्षिणात्य *वि.* (तत्.) 1. दक्षिण देश का 2. दक्षिण दिशा का *पुं.* 1. दक्षिण देश का व्यक्ति 2. नारियल।

दाक्षिण्य *वि.* (तत्.) 1. अनुकूल होने का भाव 2. प्रवीणता, कुशलता 3. उदारता 4. सरल स्वभाव

5. काव्य. नायक द्वारा नायिका के मनोनुकूल कार्य करना *वि.* दक्षिण या दक्षिण से संबंधित।

दाक्षी *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रजापति दक्ष की पुत्री 2. संस्कृत व्याकरणकार पाणिनि की माता का नाम।

दाक्षेय *वि.* (तत्.) दाक्षीपुत्र, संस्कृत वैयाकरण पाणिनि मुनि।

दाख *स्त्री.* (तद्.) अंगूर, मुनक्का, द्राक्षाफल।

दाखिनहा *वि.* (देश.) दक्षिण का, दक्षिणी।

दाखिल *वि.* (फा.) 1. प्रविष्ट, घुसा हुआ, शामिल 2. जमा।

दाखिल करना *स.क्रि.* (फा.) 1. जमा करना प्रयो. मैने प्रार्थना पत्र दाखिल कर दिया 2. भरना प्रयो. फीस दाखिल कर दी क्या?

दाखिल-खारिज *पुं.* (फा.) किसी धन या संपत्ति के अधिकार के नामांतरण की प्रक्रिया, नए अधिकारी का नाम दाखिल करना और पुराने अधिकारी का नाम खारिज करना mutaion

दाखिल-दफ्तर *पुं.* (फा.) सरकारी फाइल में किसी का नाम या किसी घटना का विवरण शामिल करना entry

दाखिला *पुं.* (फा.) 1. प्रवेश 2. समावेश 3. दाखिले की रसीद।

दाग *पुं.* (तद्.) 1. मृतक का दाह, शव जलाने का कर्म, दाग देना-अंतिम कर्म करना 2. पहचान के लिए जलाने का चिह्न (प्राय: पशुओं पर किसी गर्म वस्तु से दाग लगा दिया जाता है) (फा.) 1. धब्बा, खराबी का निशान, कलंक 2. किसी वस्तु पर पड़ा हुआ ऐसा निशान जो अलग रंग का स्पष्ट रूप से दिखे, धब्बा जैसे- गाय के शरीर पर काले काले दाग हैं 3. कृषि. एक रोग जिसके कारण पत्तियों, तनों, फूलों और फलों पर भी अनियमित आकार के धब्बे पड़ जाते हैं मुहा. दाग लगाना- दोषारोपण करना, कलंक लगाना; दाग धोना- कलंक मिटाना; दाग पड़ना- कोई धब्बा लग जाना।

दागना *स.क्रि.* (देश.) 1. जलाना, दग्ध करना 2. तपे हुए लोहे या किसी धातु से जलने का चिह्न बनाना 3. तोप में बत्ती लगाकर आग लगाना, बंदूक चलाना (फा.) धब्बा लगा देना।

दागी *वि.* (फा.) 1. जिस पर दाग लग गया हो, दागदार, कलंकित 2. चरित्रहीन, सजायाफ्ता 3. दूषित जैसे दागी फल।

दागी पक्वन *पुं.* (फा.+तत्) (कृषि) टमाटर पर पकते समय डंठल के आसपास हरे, पीले या सफेद धब्बे पड़ जाना blotchy ripening

दाघ *पुं.* (तत्.) 1. ताप, गरमी, धूप की तीव्रता 2. दाह, जलन, तेज धूप से होने वाला शारीरिक कष्ट।

दाज *पुं.* (तद्.) दहेज।

दाड़क *पुं.* (तत्.) दाढ़, पीसने वाला दाँत।

दाड़िंब *पुं.* (तत्.) अनार का वृक्ष।

दाड़िम *पुं.* (तत्.) 1. अनार, अनार का वृक्ष 2. छोटी इलायची।

दाढ़ *स्त्री.* (तद्.) 1. चबाने या पीसने वाले दाँत जो अपेक्षाकृत चौड़े तथा मुँह के अंदर की ओर होते हैं 2. सूअर के बाहर निकले हुए दाँत जो शस्त्र का काम करते है 3. कहीं कहीं घनी दाढ़ी के अर्थ में भी प्रयोग होता है।

दाढ़ी *स्त्री.* (तद्.) 1. दाढ़ों के बाहर की ओर की त्वचा पर ठोढी पर उगने वाले बाल 2. ठोढी, चिबुक, हनु मुहा. दाढ़ी में दाग लगना- बड़ी आयु में कलंक लगना; दाढ़ी पकना- आयु में बड़ा हो जाना, वृद्ध होना; पेट में दाढ़ी होना- बहुत चालाक होना।

दाढ़ीजार *पुं.* (देश.) एक प्रकार की गाली जो प्राय: स्त्रियाँ पुरुष को देती है।

दातन *पुं.* (तद्.) दे. दातौन।

दातव्य *वि.* (तत्.) 1. देने योग्य, जो देने के लिए ही हो 2. दान के लिए पुण्य के लिए, धर्मार्थ, खैराती जैसे- दातव्य चिकित्सालय, जो दान पर

चलता हो 3. जिसका देना आवश्यक/अनिवार्य हो जैसे- दातव्य शुल्क।

दाता *पुं.* (तत्.) 1. देने वाला, दानी 2. ऋण या उधार देनेवाला, उत्तमर्ण, महाजन 3. शिक्षा देने वाला 4. काटने वाला।

दातार *पुं.* (तत्.) देने वाला, प्रदाता।

दाति *स्त्री.* (तत्.) 1. देने का भाव, सौंपने या सुपुर्द करने का भाव, सुपुर्दगी।

दाती *स्त्री.* (तद्.) 1. देने वाली, दात्री 2. काटने वाली, दँराती, हँसिया।

दातुन/दातून *पुं.* (तत्.) दे. दातौन।

दातृता/दातृत्व *स्त्री./पुं* (तत्.) 1. दान देने की प्रवृत्ति, दानशील होने का भाव 2. दान की पात्रता/शक्ति।

दातौन *स्त्री.* (तद्.) नीम, बबूल की टहनी का लगभग 8-10 इंच लंबा टुकड़ा जिससे दाँतों की सफाई की जाती है।

दात्ति *स्त्री.* (तत्.) दान।

दात्र *पुं.* (तत्.) घास, फसल आदि काटने का औजार, हँसिया।

दात्री *स्त्री.* (तत्.) 1. छोटा हँसिया, दराँती 2. देने वाली।

दाद *पुं.* (तद्.) आयु. कवक (फफूंद) के संक्रमण से उत्पन्न रोग जिसमें त्वचा पर चकत्ते से बन जाते हैं जिसमें लगातार खुजली होती रहती है *स्त्री.* (फा.) 1. न्याय 2. न्याय के लिए की जाने वाली गुहार 3. प्रशंसा, वाहवाही, प्रोत्साहन मुहा. दाद देना-प्रशंसा करना।

दादरा *पुं.* (देश.) 1. संगी. छह मात्राओं वाला विशेष ताल जिसमें तीन तीन मात्राओं के दो भाग होते हैं 2. भारत का एक केंद्र शासित क्षेत्र, दादरा-नगर हवेली एक छोटा केंद्र शासित प्रदेश है जिसकी राजधानी सिलवासा है।

दादा *पुं.* (तद्.) 1. पिता के पिता, पितामह या पितामह के तुल्य वयोवृद्ध व्यक्ति 2. बड़ा भाई या उसी के समान सम्मानित व्यक्ति 3. अपने क्षेत्र में रौबदाब या आतंक रखने वाला, गुंडा 4. अपराधी वृत्ति का व्यक्ति

दादी *स्त्री.* (तद्.) 1. दादा की पत्नी या उसी के तुल्य (नाते में या आयु में) कोई महिला, पितामही 2. फरियादी, दाद (न्याय) माँगने वाला।

दादुर *पुं.* (तद्.) मेंढक, दर्दुर।

दादू *पुं.* (तद्.) 1. दादा या बड़े भाई के लिए स्नहेभरा संबोधन 2. बुंदेलखंड, बघेलखंड आदि क्षेत्रों में छोटे बालक के लिए संबोधन 3. दादूदयाल नामक प्रसिद्ध संत।

दादूपंथी *पुं.* (तद्.+तत्.) संत, दादूदयाल द्वारा चलाए गए पंथ का अनुयायी।

दाध *पुं.* (तत्.) दे. दाह।

दाधीच *पुं.* (तत्.) महर्षि दधीचि के वंशज या गोत्रज।

दान *पुं.* (तत्.) 1. देने की क्रिया या भाव 2. बदले में कुछ न चाहते हुए केवल धर्म या पुण्य की इच्छा से देने का भाव 3. दी हुई वस्तु 4. तुच्छ, दान (फा.) 1. एक प्रत्यय जिसका अर्थ है पात्र या वह वस्तु जिसमें कोई चीज रखी जाए जैसे-कलमदान, पानदान आदि 2. स्रोत या स्थान जैसे- रोशनदान, कूड़ादान।

दानकर *पुं.* (तत्.) दान की गई धनराशि या उपहार के मूल्य के बराबर राशि पर लगने वाला कर।

दानधर्म *पुं.* (तत्.) दान रूपी धर्म, दान द्वारा अर्जित अर्जित धर्म।

दानपत्र *पुं.* (तत्.) वह पत्र या लेख जिस पर कोई चल-अचल संपत्ति किसी को देने का उल्लेख हो।

दानलीला *स्त्री.* (तत्.) श्रीकृष्ण के जीवन का वह प्रसंग जिसमें उन्होंने गोपियों से कर के रूप में दूध मक्खन आदि ग्रहण किया था।

दानव *पुं.* (तत्.) कश्यप ऋषि की पत्नी एवं दक्ष प्रजापति की पुत्री दनु से उत्पन्न संतानें, अपने दुर्गुणो के कारण कुख्यात एक जाति जो देवताओं को अपना शत्रु समझती थी।

दानव-गुरु *पुं.* (तत्.) दानवों के गुरु शुक्राचार्य।

दानव-तारा *पुं.* (तत्.) एक विशालकाय तारा जो आकार में हमारे सौरमंडल के सूर्य से सामान्यतः बीस-तीस गुना बड़ा हो तथा जिसकी चमक हमारे सूर्य की चमक से सौ गुनी से भी अधिक हो giant star

दानवारि *पुं.* (तत्.) 1. देवता 2. इंद्र 3. विष्णु।

दानवी *वि.* (तत्.) दानव से संबंधित, दानवीय गुणों से युक्त *स्त्री.* (तत्.) दानव की स्त्री।

दानवीर *वि.* (तत्.) दान देने में आगे रहने वाला, अधिक दान करने वाला काव्य. वीर रस का एक भेद।

दानशील *वि.* (तत्.) दान के स्वभाव वाला, जो प्रत्येक कार्य में दान देता हो।

दाना *पुं.* (फा.) 1. अनाज, दालें, मूंगफली आहार, पोस्त आदि का बीज, माला का मनका या मणि या इसी प्रकार की छोटी लगभग गोलाकार वस्तु का एक अदद 2. शरीर पर होने वाली छोटी छोटी फुन्सियाँ मुहा. दाना डालना-फुसलाना; दाने दाने को तंग/मुहताज होना/ तरसना- गरीबी के कारण परेशान होना *वि.* (फा.) बुद्धिमान, चतुर।

दाना-पानी *स्त्री.* (देश.) 1. जीवन निर्वाह की आवश्यक वस्तुएँ 2. आजीविका।

दानार्थ *वि.* (तत्.) 1. दान के लिए 2. जिसका उद्देश्य दान या धर्म हो।

दानिनी *स्त्री.* (तत्.) दान करने वाली स्त्री।

दानिश *स्त्री.* (फा.) बुद्धि, अक्ल, समझ।

दानिशमंद *वि.* (तत्.) बुद्धिमान, अक्ल वाला, अक्लमंद, समझदार।

दानिशमंदी *स्त्री.* (फा.) बुद्धिमानी, अक्लमंदी, समझदारी, समझदार होने का भाव।

दानी *वि.* (तत्.) दान करने वाला, उदार विलो. कंजूस *स्त्री.* (फा.) (समासांत प्रत्यय) 1. कोई छोटा पात्र जिसमें कोई वस्तु हो जैसे- सुरमेदानी, सिंदूरदानी 2. जालीनुमा स्थान जैसे- चूहेदानी, मच्छरदानी।

दानीय *वि.* (तत्.) 1. दान करने योग्य 2. दान पाने योग्य।

दाप *पुं.* (तत्.) 1. दर्प, घमंड 2. प्रताप, तेज, चमक 3. बल 4. दबदबा, रौब 5. जलन, ताप।

दापक *वि.* (तत्.) 1. दमन करने वाला 2. रोधक।

दापन *पुं.* (फा.) 1. अंगरखे या अंगवस्त्र का लटकता हुआ भाग 2. साड़ी का पल्लू 3. समुद्री जहाज का पाल 4. पहाड़ी के नीचे का भाग, तराई का इलाका मुहा. दामन छोड़ना- किसी का सहारा छोड़ देना; दामन छुड़ाना- किसी को त्याग देना; दामन न छोड़ना- सहारे का त्याग न करना; दामन झटक लेना- पीछा छुड़ाना; दामन फैलाना- किसी के आगे दया की भीख माँगना।

दाब *पुं.* (देश.) 1. दबाने की क्रिया या भाव 2. दबाने वाली वस्तु या भार 3. प्रभावशाली व्यक्ति द्वारा किसी कार्य करने या न करने संबंधी आग्रह 4. भौ. किसी प्रति इकाई क्षेत्र पर लंबवत् लगने वाला बल, इसका मात्रक पास्कल है।

दाबछल्ला *पुं.* (देश.) किसी पात्र के दो भागों (मुख्य भाग और ढक्कन) के जुड़ने के क्षेत्र में लगाने के लिए रबर या कॉर्क आदि लचीले पदार्थ से बनी सपाट टिकली या छल्ला जो बर्तन बंद हो जाने के बाद अंदर या बाहर की वायु या द्रव को आर-पार जाने से रोके gasket

दाबना *स.क्रि.* (देश.) 1. ऊपर से भार या बल लगाना 2. शारीरिक पीड़ा थकान इत्यादि दूर करने के लिए अंगों पर एक ओर से या दोनों ओर से दबाव डालना जैसे- पैर दाबना, सिर दबाना 3. बलपूर्वक पीछे की ओर जाने के लिए दबाव डालना 4. किसी अशांति, उपद्रव आदि का दमन करना 5. किसी को पराजित करना या शक्तिहीन कर देना 6. किसी की धन/संपत्ति हड़प लेना 7. किसी शव या अन्य किसी वस्तु को जमीन में गाड़ना।

दाब विद्युत् प्रभाव *पुं.* (देश.+तत्.) भौ. स्फटिक या इसी प्रकार के कुछ क्रिस्टलों का एक प्राकृतिक गुणधर्म जिसके अनुसार क्रिस्टल के

पृष्ठों पर यांत्रिक बल लगते ही उनसे विद्युत ऊर्जा उत्पन्न होने लगती है।

दाबांतर मापी *पुं.* (देश.+तत्) गैस का दाब मापने का यंत्र, सामान्यतः यह अंग्रेजी यू के आकार का होता है जिसमें पानी, तेल आदि द्रव या पारा भरा होता है और पानी, तेल आदि गैस के सिलिंडर आदि से जुड़ा रहता है, दाब के अनुसार द्रव या पारा आगे बढ़ता है जिसके अनुसार गैस का दबाव मापा जाता है।

दाबा *पुं.* (देश.) किसी वृक्ष की नई पौध प्राप्त करने के लिए उसी वृक्ष की किसी टहनी को मिट्टी में दाबनेका कार्य, कलम लगाने का कार्य।

दाभ *पुं.* (तद्.) एक विशेष प्रकार की घास जिसकी नोक अत्यंत तीखी होती है तथा पूरी पत्ती पर अत्यंत सूक्ष्म काँटे होते है जो थोड़ी सी असावधानी से उँगलियों में घाव कर सकते हैं, धामिर्क कृत्यों विशेषकर श्राद्ध, तर्पण आदि पितृकर्मों में इसका विशेष उपयोग होता है, इसका बना आसन धार्मिक कृत्यों में प्रयोग होता है पर्या. कुश, दर्भ, अभ।

दाम *पुं.* (फा.) 1. पुराने समय का एक सिक्का जो अब प्रचलन में नहीं है, दमड़ी 2. कीमत, मूल्य उदा. इस कमीज का क्या दाम है? 3. धन उदा. पानी बाढै नाव में, घर में बाढौ दाम, दोऊ हाथ उलीचिए, यहि सज्जन कौ काम मुहा. दाम खरे करना- वस्तु बेच कर नकद मूल्य प्राप्त कर लेना; दाम भरना- मूल्य चुकाना *पुं.* (तत्.) 1. रस्सी 2. कमरबंद 3. माला *पुं.* (तत्.) राज. चार प्रकार की नीतियों में से एक जिसमें धन के प्रयोग से शत्रु को वश में किया जाता है (कहीं-कहीं दाम के स्थान पर दान का भी प्रयोग है)

दामन *पुं.* (तत्.) दमन या रोकने की कि्रया।

दामनी *स्त्री.* (तत्.) लंबी रस्सी जिससे पशुओं को बाँधा जाता है (फा.) 1. घोड़े की पीठ पर बँधा कपड़ा 2. औरतो की ओढ़नी *स्त्री.* (तद्.) बिजली दे. दामिनी।

दाम सूची *स्त्री.* (फा.+तत्) (प्रशा./वाणि.) दूकानदार, निर्माता या वितरक द्वारा प्रस्तुत सूची जिसमें विभिन्न वस्तुओं की कीमत दी रहती है, मूल्य-सूची, कीमत सूची।

दामाद *पुं.* (फा.) 1. बेटी का पति, जामाता, जवाँई, जमाई 2. वर, दूल्हा।

दामिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. आकाशीय विद्युत 2. स्त्रियों का एक आभूषण जो सिर पर पहना जाता है।

दामोदर *पुं.* (तत्.) (दाम है उदर में जिसके-दाम+उदर) 1. श्री कृष्ण-श्रीमद्भागवत की कथा के अनुसार माता यशोदा ने कृष्ण को एक बार रस्सी से बाँध दिया था, कृष्ण ने रस्सी से बँधे हुए ही नल-कूबर का उद्धार किया था, तभी से वे दामोदर कहलाए 2. इदि्रंयों को वश में रखने वाला कृष्ण,

दाय *पुं.* (तत्.) देने योग्य धन, विवाह के अवसर पर कन्या और जामाता को दिया जाने वाला धन विधि. पैतृक धन जो उत्तराधिकारियों में बाँटा जा सके, पैतृक संपत्ति, बपौती। inheritance

दायक *पुं.* (तत्.) देने वाला (समासांत में प्रयोग) जैसे- फलदायक, कष्टदायक, लाभदायक।

दायज/दायजा *पुं.* (देश.) मूल शब्द-जहेज दे. दहेज।

दायभाग *पुं.* (तत्.) उत्तराधिकारियों में पैतृक संपत्ति (दाय) का विभाजन।

दायर/दाइर *वि.* (अर.) 1. फिरने वाला, घूमने वाला 2. न्यायालय में किसी वाद का प्रस्तुतीकरण जैसे- मुकद्दमा दायर करना।

दायरा/दाइरा *पुं.* (अर.) 1. वृत्त की परिधि, घेरा, वृत्त, गोला 2. क्षेत्र, टोला, मोहल्ला, विस्तार।

दायाँ *वि.* (तद्.) दाहिना, दाहिनी ओर का मुहा. दायाँ हाथ- प्रमुख सहायक।

दायाँ/दाहिना प्रांगण *पुं.* (तद्+तत्) खेल. बैडमिंटन, टेनिस आदि में खेलते हुए खिलाडियों के अपने खेल क्षेत्र का दाहिना आधा भाग।

दायाद *पुं.* (तत्.) 1. उत्तराधिकार का लाभ प्राप्त करने वाला: पुत्र, पत्नी आदि 2. परिवार-जन, जाति के लोग, सपिंड संबंधी *स्त्री.* दायदा, दायादी।

दायाधिकारी *पुं./वि.* (तत्.) दाय का अधिकारी, उत्तराधिकारी।

दायिता *स्त्री.* (तत्.) दे. दायित्व।

दायित्व *पुं.* (तत्.) उत्तरादयित्व, जिम्मेवारी, जवाब देही, यह कार्य मेरा है और मुझे ही करना है-यह भावना।

दायित्वहीन *वि.* (तत्.) 1. जिम्मेवारी से मुक्ति 2. जिम्मेवारी न समझने वाला, गैरजिम्मेवार, लापरवाह।

दायिनी *वि.* (स्त्री.) देने वाली, पहुँचाने वाली (समासांत में प्रयोग) जैसे- जीवनदायिनी, मोक्षदायिनी *पुं.* दायी।

दायी *वि.* (तत्.) समासांत में प्रयुक्त शब्द, देने वाला- पहुँचाने वाला जैसे- उत्तरदायी, प्रेरणादायी पर्या. प्रद, दाता, प्रदाता *स्त्री.* दायिनी।

दार *पुं.* (तत्.) चीरने या फाड़ने का भाव, विदारण *स्त्री.* (तत्.) पत्नी, स्त्री, कलत्र *वि.* (फा.) से युक्त युक्त (समासांत में प्रयुक्त) जैसे- जालीदार, जायकेदार दुकानदार *पुं* (तद्.) काष्ठ, लकड़ी, दारु *स्त्री.* (तद्.) दाल।

दारक *पुं.* (तत्.) पुत्र, बालक, शावक *वि.* फाड़ने वाला, चीरने वाला, विदारक।

दारचीनी *स्त्री.* (देश.) एक विशेष वृक्ष की छाल जो सुगंधित तथा स्वाद में कुछ मधुर सी होती है तथा मसालों और दवा के काम आती है।

दारण *पुं.* (तत्.) 1. कोई शस्त्र जो लकड़ी या किसी धातु को चीरने या फाड़ने के काम आए 2. चीरने या फाड़ने की क्रिया *वि.* चीरने-फाड़ने वाला।

दारमदार *पुं.* (फा.) दे. दारोमदार।

दारा *स्त्री.* (तत्.) पत्नी, स्त्री, भार्या *पुं.* (फा.) मालिक, स्वामी, राजा, शाह।

दारिका *स्त्री.* (तत्.) 1. बालिका, पुत्री, अविवाहिता लडकी 2. वेश्या 3. छुरी *वि.* (तत्.) 1. चीरने वाली, फाड़ने वाली 2. कुलटा, व्यभिचारिणी।

दारित *वि.* (तत्.) फाड़ा हुआ, विदीर्ण।

दारिद्र/दारिद्य *पुं.* (तत्.) धनहीन होने का भाव, निर्धनता, गरीबी, फटेहाली, दरिद्रता।

दारु *स्त्री.* (फा.) 1. चिकित्सा, उपचार, इलाज 2. शराब, सुरा, मद्य 3. औषधि, दवा 4. बारूद।

दारुक *पुं.* (तत्.) 1. देवदारु वृक्ष, देवदार 2. कृष्ण के सारथि का नाम।

दारुकार *पुं.* (फा.) शराब बनाने वाला, कलवार।

दारुण *वि.* (तत्.) कठोर, निर्दय, भयंकर।

दारुणता *स्त्री.* (तत्.) दारुण होने का भाव।

दारुण्य *पुं.* (तत्.) कठोरता, निर्दयता।

दारुमय *वि.* (तत्.) लकड़ी से युक्ति, लकड़ी का बना हुआ।

दारू *पुं.* (तत्.) 1. लकड़ी, काष्ठ 2. पीतल 3. देवदारु एक विशेष वृक्ष जो हिमालय की ऊँचाई पर होता है वन. पौधे का रेशेदार आंतरिक भाग जिसके माध्यम से भूमिगत जल अवशोषित होकर पौधे के प्रत्येक भाग तक पहुँचाया जाता है यौ. दारुचीनी- दालचीनी दारुफल- पिस्ता, दारुयोषित्- कठपुतली, दारुसार- चंदन, दारुहरिद्रा- दारुहल्दी नाम की जड़ी *वि.* (तत्.) 1. दारण करने वाला, फाड़ने वाला 2. दानशील, उदार 3. जल्दी टूटने वाला, भंगुर।

दारोगा *पुं.* (फा.) 1. निरीक्षक, निगरानी करने वाला, ध्यान रखने वाला 2. पुलिस चौकी का बड़ा अधिकारी, थानेदार।

दारोगागिरी *स्त्री.* (फा.) 1. दारोगा का काम या पद 2. दारोगा जैसा रौब, दारोगाई, दरोगाई।

दारोमदार *पुं.* (फा.) 1. किसी कार्य के सफल या असफल होने की पूरी जिम्मेवारी प्रयो. वार्षिक-उत्सव का दारोमदार आपके ऊपर ही है 2. निर्भरता प्रयो. कार्यक्रम का दारोमदार अध्यक्षजी की घोषणा पर ही है 3. समझौता।

दार्ढ्य *पुं.* (तत्.) 1. मजबूत या स्थिर होने का भाव, दृढता।

दार्शनिक *पुं.* (तत्.) दर्शनशास्त्र का ज्ञाता, तत्ववेत्ता, अंतर्मुखी व्यक्तित्व वाला *वि.* (तत्.) 1. दर्शन संबंधी, तात्विक 2. गंभीर।

दाल *स्त्री.* (तद्.) 1. एक सामान्य खाद्य पदार्थ जो जो आम तौर पर फलियों में होता है और दो भागों (दल) में विभक्त होता है 2. पकाया हुआ

विशिष्ट व्यंजन मुहा. दाल गलना- सफल हो जाना; दाल न गलना- एक न चलना; दाल में नमक के बराबर- कम मात्रा में परंतु आवश्यकतानुसार; जूतियों में दाल बँटना- लड़ाई झगड़ा होना; दाल में कुछ काला होना- संदेहास्पद होना।

दाल-चीनी *पुं.* (तत्.) दे. दारचीनी।

दाल-भात *पुं.* (देश.) 1. सामान्य भोजन, उदा. किसी दिन हमारे घर का दाल भात भी ग्रहण कीजिए 2. रोजी रोटी प्रयो. किसी प्रकार दाल-भात चल रहा है।

दाल-मोठ *स्त्री.* (देश.) एक विशिष्ट व्यंजन जिसे बनाने के लिए दाल को (विशेष रूप से मूँग की या चने की दाल को) कुछ घंटे भिगोकर तेल में तल लिया जाता है, बाद में नमक, मसाले मिलाकर इसे खाते हैं।

दाल-रोटी *स्त्री.* (देश.) दे. दालभात मुहा. दालरोटी चलना- निर्वाह होना, जीविका चलना, काम चलाना; दालरोटी में काम चलाना- संतोषवृत्ति से निर्वाह करना, थोड़े में गुजारा करना; दालरोटी में खुश रहना- कम आमदनी में भी प्रसन्नचित्त रहना।

दालान *पुं.* (फा.) मेहराबदार दरवाजों से युक्त या तीन दरवाजों वाला लंबा कमरा, लंबा बरामदा जो एक ओर से खुला हो और जिसके ऊपर छत हो।

दाव *पुं.* (तत्.) 1. वन, अरण्य 2. अग्नि का एक भेद, वह भाग जो जंगलों में अपने आप (वृक्षों के परस्पर रगड़ने के कारण) लग जाती है, दावानल।

दावत *स्त्री.* (अर.) 1. भोज, सामूहिक भोजन 2. भोजन का निमंत्रण 3. किसी भी प्रयोजन से आमंत्रित करना 4. ईश्वर की प्रार्थना 5. सामूहिक एकत्रीकरण जैसे- जुमे (शुक्रवार) की नमाज की दावत।

दावतनामा *पुं.* (अर.) दावत के लिए निमंत्रण पत्र।

दावा *पुं.* (अर.) 1. किसी वस्तु पर अपना अधिकार स्थापित करने के लिए न्यायालय या अन्य उचित स्थान पर किया गया प्रतिवेदन 2. अधिकार, स्वत्व, हक 3. अधिकारपूर्ण उक्ति- जैसे- मेरा दावा है कि..... मुहा. दावा जमाना/ ठोंकना- अधिकार प्राप्ति के लिए मुकदमा करना।

दावागीर *वि.* (अर.) दावा करने वाला, अधिकार जताने वाला।

दावाग्नि *पुं.* (तत्.) दे. दाव।

दावानल *पुं.* (तत्.) दे. दाव।

दावेदार *पुं.* (अर.) दे. दावागीर।

दाशमिक *वि.* (तत्.) 1. दसवाँ (दशम) से संबंधित 2. गणित में अंकलेखन की पद्धति जिसमें बाईं ओर के अंक का मान दसगुना होता है, दस के आधार वाली (पद्धति), दशमलव की।

दाशरथ/दाशरथि *पुं.* (तत्.) दशरथ के पुत्र राम, लक्ष्मण आदि।

दाशरात्रिक *वि.* (तत्.) 1. दस रात्रि (दिन) की अवधि में होने वाला यज्ञ 2. दस रात्रियों से संबंधित।

दास *पुं.* (तत्.) 1. सेवा के लिए समर्पित व्यक्ति, नौकर, सेवक 2. बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश आदि में प्रचलित उपाधि

दासता *स्त्री.* (तत्.) दास होने का भाव, दासत्व, नौकरी, गुलामी, पराधीनता।

दासभाव *पुं.* (तत्.) दे. दासता।

दासानुदास *पुं.* (तत्.) दासों का भी दास (अत्यंत विनम्रता प्रकट करने के लिए इस शब्द का प्रयोग होता है)।

दासिका/दासी *स्त्री.* (तत्.) सेवा करने वाली स्त्री।

दासेय *पुं.* (तत्.) दासी का पुत्र, छोटा दास।

दास्ताँ/दास्तान *स्त्री.* (फा.) 1. कथा, कहानी, लंबी लंबी कहानी, किस्सा, वर्णन, आपबीती 2. इतिहास-कथा, वृत्तांत।

दास्य *पुं.* (तत्.) 1. दे. दासता 2. भक्ति के नौ प्रकारों में से एक। इसमें स्वयं को प्रभु का दास मानकर सेवाभाव से आराधना करना।

दास्यासक्ति *स्त्री.* (तत्.) दास्य भावना से की जानेवाली आराधना या इस प्रकार की प्रवृत्ति।

दाह *पुं.* (तत्.) 1. जलाने की क्रिया 2. जलन, ताप, शरीर का वह रोग जिसमें जलन होती है 3. मानसिक कष्ट।

दाहक *वि.* (तत्.) जलाने वाला *पुं.* (तत्.) 1. अग्नि 2. चीता 3. (रसा.) वह कर्मक जो सजीव ऊतकों को नष्ट कर दे जैसे- सल्फ्यूरिक अम्ल/ (कॉस्टिक)।

दाहकता *स्त्री.* (तत्.)1. जलाने का भाव 2. जलाने की शक्ति 3. जलाने की क्रिया।

दाहकत्व *पुं.* (तत्.) दे. दाहकता।

दाहकपोटाश *पुं.* (तत्+अं) रसा. पोटैशियम हाइड्रॉक्साइड, श्वेत, भंगुर और प्रस्वेद्य ठोस पदार्थ जो जल में घुलकर तीव्र क्षारीय और दाहक विलयन बनाता है, इसका उपयोग साबुन उद्योग में, विरंजन इत्यादि में होता है।

दाहकरजत *पुं.* (तत्.) (रसा.) सिल्वर नाइट्रेट, यह षड्भुजी या समचतुर्भुजी क्रिस्टलों में पाया जाता है।

दाहकसोड़ा *पुं.* (तत्+अं.) सोडियम हाइड्रॉक्साइड, इसके गुण धर्म दाहक पोटाश की ही तरह होते हैं, अंतर इतना ही है कि दाहक पोटाश पोटैशियम क्लोराइड के विद्युत अपघटन से बनता है जबकि दाहक सोडा सोडियम क्लोराइड के विद्युत अपघटन से बनता है।

दाहक्रिया *स्त्री.* (तत्.) मृत्यु के उपरांत शवदाह की की प्रक्रिया, दाहकर्म।

दाहगृह *पुं.* (तत्.) सरकारी व्यवस्थानुसार शवों को बिजली से जलाने का स्थान, विद्युत-शवदाह-गृह। गृह।

दाह ज्वर *पुं.* (तत्.) ज्वर (बुखार) का एक प्रकार जिसमें शरीर में तीव्र जलन होती है।

दाहदग्ध *वि.* (तत्.) जलाने के कारण जली हुई अवस्था वाला।

दाहन *पुं.* (तत्.) स्वयं या किसी अन्य के माध्यम से जलाने का कार्य करने का भाव।

दाहना *स.क्रि.* (तद्.) जलाना।

दाहसंस्कार *पुं.* (तत्.) अंतिम संस्कार, मृत्यु हो जाने के उपरांत शरीर का जलाने का कर्म तथा अन्य कर्म, अंत्येष्टि कर्म।

दाहस्थल *पुं.* (तत्.) शवदाह का स्थान, श्मशान।

दाह हरण *पुं.* (तत्.) ताप या जलन मिटाने वाली ओषधि जैसे खस।

दाहा *पुं.* (फा.) ताजिया, मुहर्रम का समय।

दाहिना *पुं.* (तद्.) दे. दायाँ।

दाहिने होना *अ.क्रि.* (देश.) 1. दायी और होना 2. अनुकूल होना।

दाही *वि.* (तत्.) जलाने वाला, जलन बढ़ाने वाला, कष्ट देने वाला।

दिआ *पुं.* (तद्.) दे. दिया।

दिक *वि.* (फा.) परेशान, जिसे बहुत तंग किया गया हो, उकताया हुआ, आजिज *पुं.* यक्ष्मा (टी.बी.) रोग में होने वाला या हमेशा रहने वाला हलका ज्वर, तपेदिक।

दिक् *स्त्री.* (तत्.) 1. दिशा, वह अनंत रेखा या उस उस पर स्थित एक सुदूर बिंदु जिसकी ओर कोई व्यक्ति, वस्तु, दृष्टि या बिंदु इत्यादि गमन करे, इस प्रकार हमारे चारों ओर असंख्य दिशाएँ है। इनमें प्रमुखता के क्रम में चार, छह, आठ या दस (या विशेष रूप से समुद्र यात्रा के प्रसंग में सोलह) दिशाएँ मानी जाती है विशे. मुख्य रूप से चार दिशाएँ मानी जाती है पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण, भूगोल के अनुसार पृथ्वी का काल्पनिक अक्ष, जिसके आधार पर पृथ्वी घूर्णन करती है, उत्तर और दक्षिण दिशा का निर्धारण करता है तथा घूर्णन की दिशा पूर्व तथा उसकी विपरीत दिशा पश्चिम (पश्च=पिछला भाग) कहलाती है, (इसीलिए उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव पर क्रमशः केवल दक्षिण और उत्तर दिशाएँ ही होती हैं) 2. देश या स्थान जैसेः दक्षिणनरेश

3. दृष्टिकोण- जैसे- इस दिशा से विचार करें 4. निर्देश।

दिक्कत *स्त्री.* (अर.) 1. कठिनाई, परेशानी, अवरोध, बाधा 2. सूक्ष्मता, बारीकी।

दिक्काल *पुं.* (तत्.) देश एवं काल।

दिक्कुंजर *पुं.* (तत्.) दिशाओं के नियंत्रक हाथी, भारतीय पौराणिक मान्यता के अनुसार आठ दिशाओं में आठ हाथी इन्हें संभाले हुए हैं जो इन्हें हिलने नहीं देते अर्थात् पृथ्वी के अक्ष एवं गति की दिशा को नियंत्रित रखते हैं और प्रकृति का संतुलन बनाए रखते हैं।

दिक्पति *पुं.* (तत्.) दिशाओं के स्वामी देवता जो दिक्कुंजरों या दिग्गजों पर सवार होकर प्रकृति को नियंत्रित रखते हैं, इनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं- इंद्र (पूर्व), अग्नि (अग्निकोण या पूर्वदक्षिण कोण), यम (दक्षिण), निर्ऋति (नैर्ऋत्य या दक्षिण पश्चिम कोण), वरुण (पश्चिम), मरुत् या वायु (वायव्य या उत्तरपश्चिम कोण), कुबेर (उत्तर), ईशान या शिव (ऐशान्य या पूर्व-उत्तर कोण), इनके अतिरिक्ति ऊर्ध्व और अधः ये दो दिशाएँ भी मानी जाती हैं इनमें दिग्गज नहीं माने गए है; इनके स्वामी है, ब्रह्मा (ऊर्ध्व या ऊपर) और अनंत (अधः या नीचे)।

दिक्-परिवर्तक *पुं.* (तत्.) भौ. दिष्ट धारा (डी सी) मोटर में विद्युत की धारा की दिशा परिवरित करने वाली युक्ति जो परिपथ में जोड़ी जाती है अथवा इसके विपरीत डाएनैमो में प्रत्यावर्ती धारा (ए सी) को दिष्ट धारा (डी सी) में परिवर्तित करने वाली युक्ति commitator

दिक्पात कोण *पुं.* (तत्.) खगोल. किसी खगोलीय पिंड (ग्रह, तारा आदि) की होरावृत्त से उत्तर या दक्षिण की ओर नापी गई सापेक्ष कोणीय दूरी, क्रांति अपक्रम। declination

दिक्पाल *पुं.* (तत्.) दे. दिक्पति।

दिक् सूचक *वि.* (तत्.) दिशा बतलाने वाला (यंत्र) पुं. इस प्रकार का यंत्र इस यंत्र में एक चुंम्बकीय सुई होती है जो सदैव उत्तर दिशा की ओर संकेत करती है, कुतुबनुमा।

दिखना *अ.क्रि.* (तद्.) रूप गुण से युक्त पदार्थों का दृक्-इंदिर्य (आँख) से ज्ञान प्राप्त होना, देना, चाक्षुष प्रत्यय।

दिखलाई *स्त्री.* (देश.) 1. दिखलाने का कार्य या उसका भाव 2. दिखलाने का शुल्क।

दिखलाना *पुं.* (देश.) 1. किसी अन्य व्यक्ति द्वारा दिखलाने का काम करवाना 2. देखने में प्रवृत्त करना।

दिखाई *स्त्री.* (देश.) 1. देखने का कार्य या भाव 2. 2. देखने का शुल्क या राशि।

दिखाव *पुं.* (देश.) दे. दिखाई।

दिखावट *स्त्री.* (देश.) 1. दिखाने का भाव 2. बाहरी आडंबर 3. देखने का कार्य।

दिखावटी *वि.* (देश.) जो मात्र देखने के लिए ही हो।

दिखावा *पुं.* (देश.) ऊपरी आवरण; ढोंग, आडंबर।

दिखौआ/दिखौवा *वि.* (देश.) दे. दिखावटी।

दिगंत *पुं.* (तत्.) [दिक+अंत] 1. दिशाओं का अंत अर्थात किसी दिशा में जहाँ तक देखा जा सकता है, वह स्थान 2. किसी दिशा में जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते हुए दिखते है।

दिगंबर *पुं.* (तत्.) दिशाएँ ही जिसके वस्त्र हों अर्थात् पूर्ण नग्न (व्यक्ति) *पुं.* 1. दिगंबर संप्रदाय के जैन साधु 2. शिव।

दिगंबरी *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा का एक नाम (दिक् और अंबर (आकाश) में व्याप्त)।

दिगंश *पुं.* (तत्.) क्षितिज के दक्षिण बिंदु से पश्चिम क्षितिज की दिशा में उस स्थान तक की दूरी की अंशीय माप जहाँ संबंधित खगोलीय पिंड से होकर जाने वाला ऊर्ध्वाधर वृत्त क्षितिज से मिलता है

दिगीश *पुं.* (तत्.) दे. दिक्पति।

दिगीश्वर *पुं.* (तत्.) दे. दिक्पति।

दिग् *स्त्री.* (तत्.) दिक् शब्द का संधिगत रूप/संस्कृत व्याकरण में संधि के नियमों के अनुसार विशिष्ट स्थितियों में क् का ग् हो जाता है (तृतीयाक्षर संधि) अर्थ के लिए दे. दिक्।

दिग्दर्शक *वि./पुं* (तत्.) 1. दिशा बतलाने वाला 2. कार्य की पद्धति, स्वरूप इत्यादि बतलाने वाला, निर्देशक 3. रंगमंच, चित्रपट आदि का निर्देशक directar

दिग्दर्शक यंत्र *पुं.* (तत्.) दे. दिक्सूचक।

दिग्दर्शन *पुं.* (तत्.) मार्गदर्शन, दिग्दर्शक का कार्य।

दिग्दिगंत *क्रि.वि.* (तत्.) सभी दिशाओं में दिगंत तक, जहाँ तक दृष्टि जाए, सर्वत्र पूरे संसार में *पुं.* दिशाएँ और दिगंत, समस्त स्थान जैसे- राम की कीर्ति दिग्दिगंत में व्याप्त है।

दिग्देवता *पुं.* (तत्.) दे. दिवपति।

दिग्ध *वि.* (तत्.) 1. सना हुआ या लिपा हुआ 2. मिट्टी में सना हुआ, गंदगी युक्त 3. विष से सना हुआ, विषयुक्त, विषाक्त (बाण आदि) *पुं.* (तत्.) 1. लेपने वाला पदार्थ जैसे- तेल, मरहम, उबटन आदि 2. विषाक्त बाण 3. कोई वास्तविक या काल्पनिक कथा।

दिग्बल *पुं.* (तत्.) ज्यो. किसी विशिष्ट दिशा में होने के कारण ग्रहों को प्राप्त करने वाला बल।

दिग्भ्रम *पुं.* (तत्.) 1. याद न रह पाने के कारण दिशा का ज्ञान न हो पाना 2. समुद्र, रेगिस्तान, जंगल इत्यादि स्थानों में, जहाँ सभी दिशाओं में एक जैसा दृश्य दिखता है, होने वाला दिशा का भ्रम 3. विचार न कर पाने की स्थिति।

दिग्मंडल *पुं.* (तत्.) दे. दिङ्मडल।

दिग्विजय *पुं.* (तत्.) 1. किसी पराक्रमी राजा का अन्य राजाओं को पराजित कर अपने अधीन करने के लिए सभी दिशाओं में यात्रा करने का अभियान 2. किसी विद्वान का शास्त्रार्थ के माध्यम से चारों दिशाओं में किया जाने वाला विजय अभियान या इस प्रकार प्राप्त विजय।

दिग्विजयी *वि.* (तत्.) दिग्विजय करने वाला।

दिग्विभाग *पुं.* (तत्.) किसी विशेष निमित्त से किया गया दिशा-विभाजन।

दिग्व्यापी *वि.* (तत्.) 1. सभी दिशाओं में व्याप्त रहने वाला, विश्वव्यापी 2. परमात्मा।

दिग्व्याप्त *वि.* (तत्.) दे. दिग्व्यापी।

दिङ्नाग *पुं.* (तत्.) 1. दे. दिक्कुंजर 2. चौथी शताब्दी के एक विख्यात बौद्ध आचार्य।

दिङ्मंडल *पुं.* (तत्.) 1. समस्त दिशाएँ 2. अंतरिक्ष मंडल मंडल जिसमें समस्त ग्रह-तारा विद्यमान है।

दिठौना *पुं.* (देश.) 1. वह काला चिह्न जो छोटे बच्चों को बुरी नजर से बचाने के लिए उनके मस्तक या गाल पर लगाया जात है, इसी प्रकार का कोई चिह्न जो बुरी नजर से बचाने के लिए लगाया जाता है 2. कोई ऐसी बात जो सबसे अलग हो और संपूर्ण सौंदर्य में कमी को प्रकट करे।

दिति *स्त्री.* (तत्.) पुराणों के अनुसार प्रजापति दक्ष दक्ष की कन्या और महर्षि कश्यप की एक पुत्री जिसके पुत्र दैत्य कहलाए।

दित्सा *स्त्री.* (तत्.) देने की इच्छा।

दित्सु *वि.* (तत्.) देने को इच्छुक।

दिदृक्षा *स्त्री.* (तत्.) देखने की इच्छा।

दिन *पुं.* (तत्.) 1. वह कालावधि जब सूर्य का प्रकाश फैला हुआ हो, प्रातःकाल और सायंकाल के बीच का काल, सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय विलो. रात्रि उदा. दिन में आना 2. सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक का काल, पृथ्वी के एक घूर्णन का काल उदा. दो दिन तक मुझे बुखार था 3. एक विशेष कालावधि उदा. वे अत्यंत कष्ट के दिन थे मुहा. दिन कटना- जैसे तैसे समय बीत जाना; दिन काटना- किसी

प्रकार समय व्यतीत करना; दिन में तारे दिखना- सिर घूमने लगना, बदहवास हो जाना; दिन में तारे देखना- तेज नजर होना; दिन को दिन रात को रात न समझना- अथक परिश्रम करना; दिन को रात बतलाना- उलटी बात कहना; दिन चढ़ना- धूप निकल आना; दिन ढलना/डूबना- सूर्यास्त हो जाना; दिन दहाड़े- खुल्लमखुल्ला, सीनाजोरी के साथ; दिन दूना रात चौगुना- निरंतर वृद्धिगत होना; दिन निकलना- सूरज उगना; दिन फिरना- सुख के बाद दुख या इसके विपरीत होना।

दिनकर *पुं.* (तत्.) सूर्य।

दिनचर्या *स्त्री.* (तत्.) 1. दिनभर के कार्यक्रम 2. दिन भर किए जाने वाले कार्यों की पूर्वयोजना।

दिन-दिन *अव्य.* (तत्.) दिन-प्रतिदिन, कालक्रमानुसार।

दिन-पंजी *स्त्री.* (तत्.) 1. डायरी, दैनंदिनी 2. वह पंजी जिसमें प्रतिदिन किए गए कार्यों का विवरण हो। daybook

दिनबल *पुं.* (तत्.) (ज्यो.) 1. ग्रहों का वह बल जो रात्रि की अपेक्षा दिन में अधिक होता है 2. राशियों का बल जो दिन में अधिक प्रभावी होता है उदा. सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ, मीन ये राशियाँ दिन में बली होती है।

दिनमणि *पुं.* (तत्.) सूर्य।

दिनमान *पुं.* (तत्.) ज्यौ. सूर्योदय से सूर्यास्त तक समय का ज्ञान विलो. रात्रिमान।

दिनरात *अव्य.* (तद्.) 1. सब समय, सर्वदा, सदा 2. लगातार पर्या. अहर्निश, अहोरात्र मुहा. दिन रात एक करना- अत्यंत परिश्रम करना; दिनरात लगे रहना- बिना रुके कार्य करते रहना।

दिनांक *पुं.* (तत्.) गणना के अनुसार दिन का विशिष्ट क्रमांक, तिथि, तारीख।

दिनांकर *पुं.* (तत्.) 1. तिथि अंकित करने का कार्य या भाव, तारीख डालना 2. तिथि निश्चित करना।

दिनांक दर्शक *पुं.* (तत्.) 1. दिनांक बतलाने वाला पत्रक, कैलेंडर, दिन दर्शिका 2. पुस्त. पाठको को वितरित पुस्तकों के कार्डों को चार्ज ट्रे में लगाने के लिए प्रयुक्त ऐसे गाइड जिनमें दिनांक अंकित अंकित हो date guide

दिनांक पर्ची *स्त्री.* (तत्.) पुस्त. 1. पुस्तक की जिल्द की जेब में रखी गई पर्ची या कार्ड जिस पर वितरण की तिथि लिखी जाती है 2. पुस्तक के अंतिम पृष्ठ पर चिपकाई गई पर्ची जिस पर वितरण/लौटाने की तिथि अंकित की जाती है।

दिनांकित *वि.* (तत्.) जिस पर तारीख पड़ी हो, ऐसा (पत्र, दस्तावेज आदि)।

दिनानुदिन *अव्य.* (तत्.) दिन प्रतिदिन, रोजाना, नित्य।

दिनेश *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य 2. ज्यौ. दिन का स्वामी ग्रह।

दिनेशज *पुं.* (तत्.) सूर्य के पुत्र, यम, शनि। *स्त्री.* दिनेशजा-यमुना।

दिनोंदिन *पुं.* (तत्.) 1. दे. दिन प्रतिदिन 2. कालक्रमानुसार, उत्तरोत्तर।

दिनौंधी *स्त्री.* (देश.) एक रोग, जिसमे धूप में या दिन में रोगी को स्पष्ट दिखलाई नहीं पड़ता।

दिपदिपाना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. चमकना, दिपना 2. क्रम से जलते बुझते रहना।

दिपना *अ.क्रि.* (तद्.) चमकना, दीप्त होना।

दिपाना *प्रेर.क्रि.* (तद्.) चमकाना, दीप्त करना।

दिमाग *पुं.* (अर.) 1. खोपड़ी के अंदर का मांसल भाग, गूदा, मस्तिष्क 2. बुद्धि, अक्ल दे. बुद्धि 3. अहंकार उदा. उसका दिमाग बहुत ऊपर हो गया है 4. ध्यान, एकाग्रता उदा. दिमाग से काम करो मुहा. दिमाग आसमान पर होना- बहुत घमंड

होना; दिमाग खाना- ज्यादा बोलकर परेशान करना; दिमाग खाली करना- अधिक बोलकर या सोचकर थक जाना; दिमाग चढ़ना-घमंडी होना; दिमाग घूम जाना- सिर चकरा जाना, सही गलत का विचार न कर पाना; दिमाग लड़ाना/दौड़ना- खूब सोच विचार करना।

दिमागदार *वि.* (अर.) दिमागवाला, समझदार, बुद्‌धिमान, अहंकारी

दिमागदारी *स्त्री.* (अर.) बुद्‌ धिमत्ता, समझदारी, घमंड।

दिमागी *वि.* (अर.) दिमाग से संबंधित, जिसमें दिमाग लगाना पड़े।

दिया *स.क्रि.* (तद्.) देना क्रिया या भूतकालिक रूप (ने के प्रयोग के साथ) *पुं.* (देश.) दीपक, दीया, दीआ।

दियानतदार *वि.* (अर.) ईमानदार, प्रामाणिक, सत्यनिष्ठ

दिया-बत्ती *स्त्री.* (देश.) शाम होने के बाद या समय से दीपक जलाने का कार्य।

दियारा *पुं.* (देश.) नदी के किनारे का फैला हुआ रेतीला भू भाग; कछार।

दिया-सलाई *स्त्री.* (देश.+फा) 1. लकड़ी की तीलियाँ जिसके एक सिरे पर रासायनिक लेप होता है जिसे निश्चित स्थान पर रगड़ने से तीली जल उठती है 2. ऐसी तीलियों की डिब्बी (माचिस, सेफ्टी मैच)।

दिरम/दिरहम *पुं.* (फा.) 1. मिस्र में प्रचलित एक चाँदी का सिक्का 2. एक तौल।

दिल *पुं.* (फा.) 1. जीव. शरीर का वह अवयव जिसके माध्यम से संपूर्ण शरीर में शुद्‌ध रक्त का का संचार होता है, दूषित रक्त के स्थान पर शुद्‌ध रक्त वितरित होता है और जिसकी प्रक्रिया प्रक्रिया के बंद होते ही शरीर का भी अंत हो जाता है 2. साहि. अंतःकरणों (मन, बुद्‌धि, चित्त, अहंकार) में से चित्त की वह वृत्ति जो, प्रेम, स्नेह, ममता, मोह आदि कोमल भावनाओं को जन्म देती हैं और उनका पोषण करती है 3. इच्छा 4. हिम्मत, साहस, हौसला मुहा. दिल अटकना-किसी से प्रेम हो जाना; दिल अटकाना- किसी से प्रेम करने लगना; दिल कड़ा/कठोर करना- दृढ़ होना, न घबराना; दिल का खोटा होना- मन में कपट होना; दिल गवाही देना- अंतरात्मा की आवाज होना; दिल का गुबार निकालना- मन की भड़ास निकालना; दिल का बादशाह- उदार होना, मनमौजी होना; दिल की आग बुझना-बदला पूरा होना; दिल की कली खिलना- प्रसन्न हो जाना; दिल की दिल में रह जाना- मन की इच्छा पूरी न हो पाना; दिल के फफोले फूटना-मन का उद्वेग शांत होना; दिल के के फफोले फोड़ना- उद्वेग शांत करना, दिल को करार देना- मन को शांति मिलना; दिल खट्टा होना-मन का उचाट हो जाना; दिल जमना- पसंद आ जाना; दिल जलाना- कष्ट देना; दिल डूबना-बहुत घबराना, बेहोश होने की स्थिति होना; दिल तोड़ना- हिम्मत छोड़ना, किसी को इच्छा का अनादर करना; दिल दहलना- हिम्मत टूट जाना; दिल दुखाना- मन को कष्ट देना; दिल देना- प्रेम में आसक्त हो जाना; दिल दौड़ना-कुछ प्राप्त करने की इच्छा होना; दिल धडकना-घबराना; दिल पकना- बातें सुन सुन कर दुखी हो जाना; दिल बैठना- दे. दिल डूबना; दिल भर आना- करुणा से भर जाना; दिल मिलना- मन मिल जाना; दिल में गाँठ पड़ जाना- कोई बात चुभ जाना; दिल में घर करना- मन में बैठ जाना; दिल में फफोले पड़ना- कष्ट होना; दिल में फर्क आ जाना- किसी कारण मन बदल जाना; दिल मैला करना- मन खराब हो जाना, मन में खोट होना; दिल से दूर करना- भूलना या भूलने का प्रयत्न कहना; दिल ही दिल में-मन ही मन में।

दिलकश *वि.* (फा.) लुभावना, चित्ताकर्षक।

दिलचला *वि.* (फा.) रसिक, मनमौजी।

दिलचस्प *वि.* (फा.) जो अच्छा लगे, रुचिकर।

दिलचस्पी *स्त्री.* (फा.) दिलचस्प होने का भाव।

दिलजला *वि.* (फा.) 1. दुखी 2. जिसके मन की कोमल भावनाएँ समाप्त हो चुकी हैं।

दिलजोई *स्त्री.* (फा.) सांत्वना, ढाढस, मातमपुरसी।

दिलदार *वि.* (फा.) 1. उदार 2. साहसी 3. रसिक, प्रेमी।

दिलदारी *स्त्री.* (फा.) दिलदार होने का भाव या कार्य।

दिलफेंक *वि.* (फा.) मनचला, किसी से भी केवल रूप देखकर प्रेम करने वाला।

दिलरुबा *वि.* (फा.) प्रिय लगने वाला, प्यारा *पुं.* तारों वाला एक बाजा।

दिलवाना *स.क्रि.* (देश.) किसी को अन्य किसी के लिए कोई वस्तु देने की प्रेरणा देना।

दिलशाद *वि.* (फा.) 1. जो दूसरों को खुश रखे, खुशनुमा 2. जो सदा खुश रहे, खुशमिजाज।

दिलहा *पुं.* (तद्.) दे. दिल्ला।

दिलाना *स.क्रि.* (देश.) 1. दे. दिलवाना 2. किसी को कुछ उपलब्ध करवाना।

दिलावर *वि.* (फा.) साहसी, दिलेर।

दिलासा *पुं.* (फा.) सांत्वना, ढाढस, धैर्य।

दिली *वि.* (फा.) 1. दिल से संबंधित, हार्दिक 2. अभिन्न, जिससे दिल मिले हो।

दिलेर *वि.* (फा.) 1. साहसी, हिम्मती, वीर 2. उदार।

दिलेराना *वि.* (फा.) साहस से युक्त, वीरतापूर्ण, वीरोचित।

दिलेरी *स्त्री.* (फा.) 1. साहस 2. उदारता।

दिल्लगी *स्त्री.* (फा.) 1. दिल लगने का भाव 2. परिहास, मजाक।

दिल्ला *पुं.* (देश.) प्रवेश द्वार या खिडकी के चारों ओर शोभा के लिए जड़ा गया लकड़ी का गढ़ा हुआ चौकोर टुकड़ा।

दिल्ली *स्त्री.* (देश.) यमुना के किनारे बसा एक नगर जो स्वतंत्र भारत की राजधानी है।

दिवंगत *वि.* (तत्.) जिसकी मृत्यु हो गई हो, स्वर्गीय।

दिवस *पुं.* (तत्.) दे. दिन।

दिवस-निरपेक्ष पादप *पुं.* (तत्.) कृषि. वह पौधा जिसके पुष्पन में दीप्तिकाल (सूर्योदय से सूर्यास्त सूर्यास्त तक का काल) का प्रभाव नहीं पड़ता day neutral plant

दिवस्पति *पुं.* (तत्.) स्वर्ग का राजा इंद्र।

दिवांध *वि.* (तत्.) जो दिन में (सूर्य के प्रकाश में) देख न सके। पुं. (तत्.) उल्लू।

दिवांधता *स्त्री.* (तत्.) दिवांध होने का भाव।

दिवा *पुं.* (तत्.) दे. दिन। क्रि.वि. (तत्.) दिन के समय पुं. (देश.) दीपक।

दिवाकर *पुं.* (तत्.) सूर्य।

दिवाचारी *वि.* (तत्.) जो मुख्यतः दिन में ही चलना-फिरना या काम करना इत्यादि करे।

दिवाना *वि.* (देश.) दीवाना *स.क्रि.* (देश.) दे. दिलाना।

दिवापुष्प *पुं.* (तत्.) कृषि. दिन में खिलने वाला और रात्रि में बंद हो जाने वाला या मुरझा जाने वाला फूल।

दिवाभिसारिका *स्त्री.* (तत्.) दिन में अभिसार करने वाली नायिका, दिन के प्रकाश में भी (न डरते हुए) शृंगार आदि करके प्रियतम से मिलने जाने वाली नायिका।

दिवाभीत/भीति *पुं.* (तत्.) दिन में डरने वाला। अर्थ- 1. उल्लू 2. कमलिनी का फूल 3. चोर *स्त्री.* (तत्.) दिन में डरने का भाव।

दिवामध्य *पुं.* (तत्.) दोपहर, मध्याह्न।

दिवाला *पुं.* (देश.) ऐसी परिस्थिति जिसमें व्यापारी अपनी समस्त चल-अचल संपत्ति बेचकर भी

अपनी देनदारियां चुकाने में असमर्थ हो जाए मुहा. दिवाला निकलना- समाज में सबको दिवाले की जानकारी मिल जाना; दिवाला निकालना- दिवाला निकलने की स्थिति निर्माण कर देना, ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाने की घोषणा करना।

दिवालियापन *पुं.* (देश.) दिवालिया होने का भाव

दिवास्वप्न *पुं.* (तत्.) 1. दिन का स्वप्न 2. दिन में सोना 3. जागते हुए भी स्वप्न देखना 4. मन में इच्छाएँ पूरी होने की कल्पना करना, हवाई किले बनाने का भाव।

दिवास्वप्न देखना *अ.क्रि.* (देश.) ऊँची ऊँची कल्पनाएँ करना।

दिव्य *पुं./वि.* (तत्.) 1. दिव से संबंधित, अलौकिक, भव्य 2. पवित्र 3. आनंद दायक 4. चमकदार, तेजोमय *पुं.* (तत्.) 1. साहि. नायक के तीन भेदों में से एक 2. नीति प्राचीन काल में प्रचलित एक प्रकार का साक्ष्य, जिसके पीछे मान्यता थी कि अपराधी का निर्णय प्रकृति स्वयं करेगी, इसके लिए संशयित व्यकित को अग्नि में जलाना भी एक प्रकार होता था, सीता की अग्निपरीक्षा भी इसी विधि से हुई थी।

दिव्यगंधा *स्त्री.* (तत्.) 1. जिसमें दिव्य (अलौकिक) सुगंध हो 2. बड़ी इलाचयी, बडी चेंच का साग।

दिव्यगायन *पुं.* (तत्.) गंधर्व, एक काल्पनिक मानवेतर जाति जो गायनकला में प्रवीण मानी जाती थी।

दिव्यचक्षु *पुं.* (तत्.) 1. सुंदर नेत्रों वाला 2. नेत्रहीन, अंधा, प्रज्ञाचक्षु।

दिव्यज्ञान *पुं.* (तत्.) अलौकिक ज्ञान, ऐसा ज्ञान जो सामान्य व्यक्ति को नहीं होता।

दिव्यता *स्त्री.* (तत्.) 1. दिव्य होने का भाव, क्रिया रूप या अवस्था 2. स्वर्ग जैसा, देवताओं जैसा, देवी, देवत्व 3. श्रेष्ठता, अलौकिकता, दिव्यत्व 4. सुंदरता, पवित्रता, भव्यता।

दिव्यदर्शी *वि.* (तत्.) असामान्य दृष्टि रखने वाला, अलौकिक पदार्थों, घटनाओं को देखने में समर्थ, ज्योतिषी।

दिव्यदृष्टि *स्त्री.* (तत्.) अलौकिक या भविष्य संबंधी घटनाओं को देखने की शक्ति, सूक्ष्मदृष्टि।

दिव्य पंचामृत *पुं.* (तत्.) पाँच दिव्य पदार्थों का योग, गाय का घी, दूध, दही, शहद और शर्करा को मिलाकर बना हुआ पदार्थ (पंचामृत)।

दिव्य परीक्षा *पुं.* (तत्.) दे. दिव्य।

दिव्य वाक्य *पुं.* (तत्.) आकाशवाणी, आकाशमार्ग से सुनी गई दैवी वाणी (जिसे भगवान् या किसी ऋषि की वाणी माना जाता है)।

दिव्य सरिता *स्त्री.* (तत्.) मंदाकिनी, गंगा।

दिव्यांगना *स्त्री.* (तत्.) स्वर्ग की अप्सरा।

दिव्या *वि.* (तत्.) 1. दिव्य या अलौकिक गुणों से युक्त (स्त्री) *स्त्री.* 1. लोकोत्तर नायिका 2. आयु. आयु. हरीतकी, ब्राह्मी, कर्कोटकी, श्वेतदूर्वा, शतावरी आदि जड़ी बूटियाँ।

दिव्यादिव्य *वि.* (तत्.) साहि. मध्यम कोटि का नायक जिसमें दिव्य (दैवी) और अदिव्य (मानुषी) दोनों प्रकार के गुण होते हैं *स्त्री.* दिव्या दिव्या- इस प्रकार के गुणों वाली नायिका।

दिव्यास्त्र *पुं.* (तत्.) दैवी अस्त्र, देवताओं के अस्त्र, ऐसे अस्त्र जो निष्फल नहीं होते परंतु जिन्हें देवताओं की कृपा के अभाव में चलाया नहीं जा सकता, ये अस्त्र मंत्रशक्ति से ही चलते है।

दिशा *पुं.* (तत्.) दे. दिक्।

दिशानिर्देश *पुं.* (तत्.) कार्य करने की विधि या पद्धति (बतलाना)।

दिशाभ्रम *पुं.* (तत्.) 1. किस दिशा में जाना उचित होगा इस विषय में भ्रम होना, दिग्भ्रम 2. रास्ता भटक जाना।

दिशावकाश *पुं.* (तत्.) 1. चारों दिशाओं के बीच के कोण-अग्नि कोण, नैर्ऋत्य कोण, वायु कोण और ऐशान्य कोण 2. दो दिशाओं के बीच का भाग।

दिष्ट *पुं.* (तत्.) भाग्य, काल *वि.* वर्णित, निश्चित, आदेश या उपदेश किया हुआ।

दिष्टकरण *पुं.* (तत्.) भौ. प्रत्यावर्ती धारा (ए सी) को दिष्ट धारा (डी सी) में बदलने की प्रक्रिया।

दिष्टकारी *वि.* (तत्.) भौ. दिष्टकरण की युक्ति rectifier

दिष्टधारा *स्त्री.* (तत्.) भौ. वह विद्युत धारा जो एक ही दिशा में बहती हो और जिसका मान अपरिवर्ती रहता हो, डी.सी. तुल. प्रत्यावर्ती धारा।

दिष्णु *वि.* (तत्.) देने वाला, दाता, जिसका स्वभाव देना हो।

दिसंबर *पुं.* (अं.) रोमन कैलेंडर के अनुसार वर्ष का बारहवाँ या अंतिम महीना, पहले यह दसवाँ महीना होता था इसीलिए इसमें डेसी (दसवाँ) प्रत्यय है।

दिहाड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. दिन 2. एक दिन के कार्य का पूरा समय 3. एक दिन की मजदूरी 4. एक दिन में किया जाने वाला कार्य।

दीक्षक *पुं.* (तत्.) दीक्षा देने वाला, गुरु, शिक्षक; गुरुमंत्र देने वाला, उपदेशक, धर्मोपदेशक।

दीक्षण *पुं.* (तत्.) शिक्षण, उपदेश देना; गुरुमंत्र देना दे. दीक्षा।

दीक्षांत *पुं.* (तत्.) 1. दीक्षा या शिक्षा की समाप्ति 2. दीक्षा या शिक्षा की समाप्ति पर किया जाने वाला अनुष्ठान।

दीक्षा *स्त्री.* (तत्.) 1. शिष्य के सम्यक् ज्ञान को जगाने के लिए और उसके मन, चित्त, बुद्धि पर पड़े मल (दोषो) को हटाने के लिए गुरु द्वारा द्वारा शिष्य का संस्कार 2. मंत्रोपदेश, गुरुमंत्र 3. 3. शिक्षा, उपदेश।

दीक्षित *पुं.* (तत्.) 1. दीक्षा प्राप्त व्यक्ति; गुरुमंत्र-प्राप्त व्यक्ति 2. शिक्षित व्यक्ति 3. ज्योतिष्टोम आदि वृहद् यज्ञों का करने वाला ब्राह्मण (वर्ण)।

दीखना *स.क्रि.* (तद्.) 1. दिखाई देना 2. आभास होना, प्रतीत होना।

दीगर *वि.* (फा.) 1. अन्य, दूसरा, और 2. पुनः, दुबारा फिर।

दीठ *स्त्री.* (तद्.) दे. दृष्टि मुहा. दीठ उतारना या झाड़ना- मंत्रादि से किसी (बच्चे) पर पड़ी बुरी नजर का असर नष्ट करना।

दीद *स्त्री.* (फा.) दर्शन, दीदार *वि.* (फा.) देखा हुआ, हुआ, जैसे चश्मदीद आंखों से देखा हुआ।

दीदा *पुं.* (फा.) 1. आँख 2. साहस, जुर्रत मुहा. दीदे मटकाना- आंखे मटकाना; दीदे निकालना- क्रोध में आंखे तरेडकर देखना।

दीदार *पुं.* (फा.) 1. दर्शन, अवलोकन 2. छवि, जलवा 3. साक्षात्कार।

दीदारबाजी *स्त्री.* (फा.) प्रिय से आँखे मिलाना या लड़ाना।

दीदी *स्त्री.* (देश.) बड़ी बहन (दादा अर्थात् भाई का स्त्रीलिंग)।

दीधिति *स्त्री.* (तत्.) 1. दीधी अर्थात् प्रकाश या प्रसार कारक 2. किरण 2. अंगुली।

दीन *वि.* (तत्.) 1. निर्धन, गरीब, अकिंचन, कंगाल 2. व्याकुल, दुखी, दर्दशा-ग्रस्त 3. नम्र, विनीत, उदास *पुं.* (अ.) मत, मजहब, पंथ।

दीन इलाही *पुं.* (अर.) अल्लाह का पंथ या समन्वयवादी ईश्वरीय धर्म या ईश्वरीय पंथ जिसे अकबर ने सभी मजहबों के अनुयायियों की धार्मिक सहिष्णुता या धार्मिक समरसता बढ़ाने के लिए चलाया था।

दीनता *स्त्री.* (तत्.) 1. निर्धनता, दरिद्रता 2. बेचारगी, दीनहीन स्थिति 3. नम्रता।

दीन-दुनिया *स्त्री.* (अर.) धर्म-पालन और दुनियादारी, स्वार्थ-परमार्थ; लोक-परलोक।

दीनबंधु *वि.* (तत्.) निर्धनों और असहायों का साथी *पुं.* परमात्मा।

दीनानाथ *वि.* (तत्.) निर्धनों और असहायों के पालक *पुं.* (तत्.) ईश्वर, राजा (कुवैत, ईरान इराक, जॉर्डन आदि अनेक देश में प्रचलित)।

दीनार *स्त्री.* (तत्.) राजकीय मुद्रा, स्वर्ण-मुद्रा, अशरफी।

दीप *पुं.* (तत्.) 1. दीपक, चिराग, दिया 2. काव्य. एक सममात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 10 मात्राएँ होती है एवं अंत: में क्रमश: नगण, गुरु, लघु होते हैं 3. द्वीप, टापू 4. महाद्वीप।

दीपक *पुं.* (तत्.) एक अर्थालंकार जिसमें उपमान और उपमेय दोनों का एक ही धर्म कहा जाता है अथवा जहाँ एक ही कर्ता के साथ अनेक क्रियाओं की आवृत्ति होती है दे. दीप।

दीपकमाता *स्त्री.* (तत्.) एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में भगण मगण, जगण और एक गुरु आदि 10 वर्ण होते है।

दीपदान *पुं.* (तत्.) 1. पूजा की कामना से नदी में जलता हुआ दीपक प्रवाहित करना 2. किसी व्यक्ति की मृत्यु के दस दिन तक पीपल के वृक्ष में रोज दीपक जलाना दे. दीपदानी।

दीपदानी *स्त्री.* (तत्.) 1. मिट्‌टी, ताँबे या कांसे का बना बना दिया रखने का पात्र जिस पर हत्था लगा रहता है 2. दीया-बाती का सामान रखने का पात्र।

दीपन *वि.* (तत्.) 1. प्रकाशित करने वाला 2. बढ़ाने वाला 3. उत्तेजित करने वाला।

दीपनी *वि.* (तत्.) 1. प्रकाशित करने वाला 2. तेज करने वाली *स्त्री.* अजवाइन, मेथी।

दीपमाला *स्त्री.* (तत्.)(जलते हुए)दीपकों की पंक्ति। पंक्ति।

दीपमालिका *स्त्री.* (तत्.) दे. दीपमाला।

दीपशिखा *स्त्री.* (तत्.) 1. दीए की लौ 2. कालिदास का एक उपनाम।

दीपस्तंभ *पुं.* (तत्.) लंबी, ऊर्ध्वाधर आकृति की ठोस रचना जिसके नीचे टेक होती है और ऊपर दीया रखने का स्थान, लंबा दीपाधार दे. प्रकाश स्तंभ।

दीपाग्नि *पुं.* (तत्.) दीपक की लौ की आँच।

दीपाधार *पुं.* (तत्.) 1. दीवट, वह आधार जहां रखकर दीया जलाया जाता है 2. दीप-स्तंभ।

दीपाराधन *पुं.* (तत्.) 1. दीपक जलाकर (आरती उतारते हुए) पूजा करना 2. किसी पूजा-अनुष्ठान से पूर्व दीपक की पूजा।

दीपालि, दीपाली *स्त्री.* (तत्.) दीप-माला, दीयों की की शृंखला या पंक्ति दे. दीवाली।

दीपावती *स्त्री.* (तत्.) एक रागिनी जिसकी उत्पत्ति दीपक और सरस्वती के योग से होती है।

दीपावली *स्त्री.* (तत्.) 1. कार्तिक अमावस्या को मनाया जाने वाला दीवाली का उत्सव 2. दीपों की पंक्ति, दीपकों की माला।

दीपिका *वि.* (तत्.) 1. छोटा दिया 2. प्रकाश फैलाने वाली, उजाला देने वाली 3. स्पष्ट करने वाली 4. किसी ग्रंथ के विषय को स्पष्ट करने वाली टीका 5. मार्गनिर्देशक सिद्धांतों की पुस्तिका पुस्तिका *स्त्री.* (तत्.) 1. ज्योत्सना, दीपज्योति 2. टीका, व्याख्या या परिचय-पुस्तिका, विवरणिका, नियमपुस्तिका, प्रकाशिका।

दीपित *वि.* (तत्.) 1. प्रकाशित, प्रदीप्त प्रकाशित किया हुआ, जलाया हुआ, चमक वाला, प्रज्वलित। 2. उत्तेजित, कुपित।

दीपोत्सव *पुं.* (तत्.) दीपों का उत्सव, दीये जलाने का पर्व, दीपावली।

दीप्त *वि.* (तत्.) 1. चमकता हुआ, प्रकाशमान, प्रकाशित, आभासित, *पुं.* (तत्.) सोना प्रज्वलित उत्तेजित, प्रकोपित 2. आयु. नाक का एक रोग जिसमें नाक से गरम हवा निकलती है और नथुनों में जलन होती है।

दीप्तकीर्ति *वि.* (तत्.) जिनका यश सर्वत्र व्याप्त हो, अति यशस्वी, प्रसिद्ध *पुं.* (तत्.) शिव के पुत्र कार्तिकेय।।

दीप्तवर्ण *पुं.* (तत्.) चमकता या दमकता हुआ रंग *वि.* चमकते हुए शरीर वाला।

दीप्तांशु *पुं.* (तत्.) 1. चमकदार किरण, चमकती किरणों वाला 2. सूर्य।

दीप्ता *वि.* (तत्.) चमक वाली, प्रकाश से पूर्ण *स्त्री.* मालकंगनी नाम की लता जिसके बीजों से तेल निकलता है, ज्योतिष्मती *पुं.* 1. लाल-लाल फूलों वाला, मालकंगनी का पौधा 2. सेंहुर, थूहर या नागफनी।

दीप्ताग्नि *स्त्री.* (तत्.) जली हुई आग *वि.* 1. तीव्र जठराग्नि वाला, प्रबल पाचन शक्ति वाला 2. बहुत भूखा *पुं.* वह ऋषि जो यज्ञ की अग्नि में सदैव प्रज्वलित रखता हो, जैसे अगस्त्य मुनि।

दीप्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. कांति, चमक, प्रकाश, उजाला, रोशनी 2. छवि, सुंदरता, शरीर की शोभा, तेज 3. लाख या लाह।

दीप्तिमान *वि.* (तत्.) प्रकाश से युक्त, चमकदार, प्रकाशमान, कांतिमान *पुं.* श्री कृष्ण के एक पुत्र का नाम, जो सत्यभामा के गर्भ से पैदा हुआ था।

दीप्यमान *वि.* (तत्.) प्रकाशमान, चमकता हुआ।

दीमक *पुं.* (फा.) चींटी की तरह का एक पीले रंग का कीड़ा जो कागज, लकड़ी आदि खाकर उसे खोखला करके नष्ट कर देता है मुहा. दीमक चाट जाना- 1. दीमक द्वारा नष्ट किया जाना प्रयो. दीमक खाया- दीमक के द्वारा खाकर नष्ट नष्ट किया गया 2. अंदर से खोखला किया हुआ।

दीयट *पुं.* (तद्.) दे. दीवट।

दीया *पुं.* (तद्.) दीपक, चिराग, वह पात्र जिसमें तेल डालकर और बत्ती जलाकर प्रकाश या उजाला किया जाता है मुहा. दीया बढ़ाना- दीया बुझाना; दीया जलने का समय-शाम का समय; दीया ठंडा होना- किसी की मृत्यु से खानदान में अँधेरा छा जाना या रौनक न रहना; दीया बत्ती करना- चिराग जलाना; दीया लेकर ढूँढना- चारों ओर हैरान होकर खोजना, छानबीन करके ढूँढना।

दीयासलाई *स्त्री.* (देश.+फा.) गंधक लगी लकड़ी की छोटी तीली या सींक जिसका एक सिरा रगड़ने से जल उठता है।

दीरध *वि.* (तद्.) दे. दीर्घ।

दीर्घ *वि.* (तत्.) लंबा, बड़ा, विस्तृत, फैला हुआ, विशाल 1. द्विमात्रिक वर्ण, दीर्घ मात्रा वाला व्यंजन 2. संगीत की दो मात्राएँ 3. ज्योतिष में पाँचवी, छठी, सातवीं और आठवीं राशि जो दीर्घ राशि के नाम से जानी जाती है।

दीर्घ अक्ष *पुं.* (तत्.) गणि. 1. वह धुरा या अक्ष जो दीर्घवृत से बड़ा हो 2. रुद्राक्ष का बड़ा बीज।

दीर्घकाय *वि.* (तत्.) बड़े शरीर वाला, बड़े डील डौल वाला, प्रभावी व्यक्तित्व वाला।

दीर्घकालीन *वि.* (तत्.) अधिक समय चलने वाला, दीर्घकाल तक चलने वाला, लंबी अवधि वाला।

दीर्घजीवी *वि.* (तत्.) बहुत दिनों तक जीवित रहने वाला, बहुत लंबी आयु वाला, चिरायु, चिरंजीवी।

दीर्घतपा *पुं.* (तत्.) 1. बहुत दिनों तक तपस्या करने वाला 2. अहिल्या के पति, गौतम।

दीर्घदर्शिता *स्त्री.* (तत्.) बहुत दूर तक की बात सोचने का गुण, बुद्धि का दूर तक की बातों का परिणाम सोचने का गुण, दूरदर्शिता।

दीर्घदर्शी *वि.* (तत्.) 1. दूरदर्शी, बहुत दूर तक देखने वाला, बहुत दूर तक की सोचने वाला या समझने वाला, बहुत समझदार 2. गिद्ध पक्षी जो बहुत दूर तक देख सकता है।

दीर्घदृष्टि *स्त्री.* (तत्.) दूर तक की बातों को देखने की दृष्टि, दूर तक दृष्टि डालने वाला, बहुत दूर तक देखने वाला, दूर तक का चिंतन करने वाला, दीर्घदर्शी।

दीर्घनिद्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. लंबी नींद, अधिक देर तक सोना 2. चिरनिद्रा मृत्यु, मौत।

दीर्घ निःश्वास *पुं.* (तत्.) लंबा श्वास, दुःख और शोक के कारण ली जाने वाली लंबी साँस।

दीर्घबाहु *पुं.* (तत्.) 1. हरिवंश पुराण में वर्णित शिव के एक अनुचर का नाम 2. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम *वि.* लंबी भुजा वाला।

दीर्घवृत्त *पुं.* (तत्.) गणि. अंडाकार बड़ा गोला या गोलाकार क्षेत्र जो ऐसी रेखा से घिरा हो जिसका प्रत्येक बिंदु उस क्षेत्र के मध्य बिंदु से समान अंतर पर हो *वि.* पृथ्वी की परिक्रमा दीर्घवृत्ताकार होती है जिसके कारण अधिक मास और क्षयमास निश्चित समय पर होता है, क्षय-मास का पहले और बाद वाला मास अधिक मास होता है।

दीर्घवृत्ताकार *वि.* (तत्.) दीर्घवृत्त के आकार वाला, अंडाकार।

दीर्घसंधि *स्त्री.* (तत्.) व्या. दो पदों में प्रथम पद के अंत में तथा द्वितीय पद के प्रारंभ में आने वाले समान स्वर के आपस में मिलने से हुई होने वाली संधि, स्वरसंधि का एक भेद।

दीर्घसूत्रता *स्त्री.* (तत्.) हर काम को लंबा खींचने या उसमें देरी करने की आदत, देर से काम करने की प्रवृत्ति।

दीर्घसूत्री *वि.* (तत्.) प्रत्येक काम में बहुत देर करने वाला, काम को पूरा करने में अपेक्षा से अधिक विलंब करने वाला।

दीर्घस्वर *पुं.* (तत्.) व्या. स्वर का उच्चारण, उसकी दो मात्राओं के बराबर करने पर उच्चरित स्वर। जैसे- आ, ई, ऊ आदि, ह्रस्व स्वर का विलोम।

दीर्घा *स्त्री.* (तत्.) 1. लंबा, कम चौड़ा, छतदार गलियारा या ड्योढ़ी 2. दर्शकों के लिए ऊँचाई पर बना हुआ स्थान, दर्शक दीर्घा 3. विशाल या लंबा भवन जिसमें पुस्तकों, कलाकृतियों या प्रदर्शनियों का आयोजन होता रहता है।

दीर्घाकार *वि.* (तत्.) बड़े आकार वाला लंबी या बड़ी आकृति वाला।

दीर्घाक्षर *पुं.* (तत्.) व्या. 1. बड़े अक्षर, दीर्घ आकार वाला अक्षर 2. अंग्रेजी (रोमन लिपि) के कैपिटल अक्षर।

दीर्घायु *वि.* (तत्.) दीर्घजीवी, लंबी आयु वाला, चिरजीवी, जिसकी उम्र लंबी हो।

दीर्घायुष्य *पुं.* (तत्.) लंबी उम्र, बहुत दिनों की आयु।

दीर्घावकाश न्यायाधीश *पुं.* (तत्.) दीर्घावकाश के दौरान काम करने के लिए नियुक्त न्यायाधीश।

दीर्घिका *स्त्री.* (तत्.) 1. बावड़ी, बावली या बाउली, (छोटा) जलाशय 2. एक प्रकार की लंबी नाव।

दीर्घीकरण *पुं.* (तत्.) 1. किसी वस्तु को दीर्घ करना, विस्तार करना 2. व्या. ह्रस्व वर्ण की मात्रा का दीर्घ हो जाना।

दीर्घीकृत *वि.* (तत्.) जिसे दीर्घ किया गया हो, जिसे बढ़ाया गया हो, विस्तृत।

दीर्ण *वि.* (तत्.)1. विदारित, चिरा हुआ, फाड़ा गया जिसमे दरका लग गया हो, भग्न।

दीर्धवृत्तज *पुं.* (तत्.) दीर्धवृत्त को उसके एक अक्ष के चारों ओर घुमाने से बना पृष्ठ, वह पृष्ठ जिसका समतल परिच्छेद दीर्घवृत्त होता है।

दीर्धावकाश *पुं.* (तत्.) लंबी छुट्‌टी, बहुत दिनों का अवकाश, न्यायालयों और विद्यालयों के सत्रों के बीच का अवकाश, जैसे गर्मी के दिनों की छुट्‌टी।

दीवट *पुं.* (तद्.) दीया रखने का आधार, पीतल या लकड़ी या लोहे का बना दीपक रखने का लंबा और ऊँचा आधार, चिरागदान, दीयट, दीप स्तंभ।

दीवा *पुं.* (तद्.) दे. दीप।

दीवान *पुं.* (अर.) 1. वजीर, मंत्री, राज्य का प्रबंधक 2. गजल संग्रह 3. राज सभा, कचहरी, न्यायालय, राजा के बैठने का स्थान, राज दरबार 4. लकड़ी का बना एक प्रकार का सोफा जिसका उपयोग बैठने के साथ साथ सोने के लिए भी होता है।

दीवान-ए-आम *पुं.* (अर.) सामान्य लोगों या जनता के लिए राजा का दरबार, राजदरबार, आम दरबार; आम दरबार, लगने के लिए सभा का स्थान या भवन।

दीवान-ए-आलम *पुं.* (अर.) दे. दीवान-ए-आम।

दीवान-ए-खास *पुं.* (अर.) राजा के यहाँ विशिष्ट लोगों की सभा।

दीवान-खाना *पुं.* (फा.) बैठक, घर के बाहर बैठने की जगह, दरबार लगाने का स्थान, जहाँ बड़े लोग बैठकर लोगों से मिलते या बाते करते हैं।

दीवानगी *स्त्री.* (फा.) दीवानापन, पागलपन, उन्मत्तता, विक्षिप्त होने की स्थिति।

दीवाना *वि.* (फा.) प्रेम में पागल, एक ही धुन में रहने वाला, विक्षिप्त, सनपकी उन्मत्त मुहा. दीवाना होना- किसी के प्रति अत्यधिक प्रेमासक्त होना, हर समय एक ही धुन में रहना।

दीवानी *स्त्री.* (फा.) 1. धन संपत्ति आदि के झगड़ों से संबंधित, व्यवहार-संबंधी 2. दीवान का पद 3. पागल या विक्षिप्त स्त्री से संबंधित।

दीवार *स्त्री.* (फा.) ईंट पत्थर को मिट्टी या सीमेंट से जोड़कर किसी स्थान पर उठाई कई ऊँची संरचना या भित्ति।

दीवाल *स्त्री.* (फा.) दे. दीवार।

दीवाला *पुं.* (देश.) दे. दिवाला।

दीवाली *स्त्री.* (तद्.) कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को मनाया जाने वाला उत्सव, जिसमें घर के चारों ओर दीपों को जलाकर रखा जाता है और लक्ष्मी की पूजा की जाती है, दीपावली, दीपोत्सव, दीपमालिका।

दीह *वि.* (तद्.) दीर्घ, बड़ा लंबा, बहुत ऊँचा *पुं.* 1. दिन, दिवस 2. चहार दीवारी, परकोटा।

दुंद *पुं.* (तद्.) दे. द्वद्व।

दुंदुभि *स्त्री.* (तत्.) अनुरणनात्मक नगाड़ा, बड़ा ढोल, विजय-घोषणा के लिए ताल वाद्य, प्रचार के लिए प्रयोग किया जाने वाला वाद्य मुहा. दुंदुभि बजाना-विजय-घोषणा करना, प्रचार करना।

दुंदुमा *स्त्री.* (तद्.) नगाड़े की आवाज, दुंदुभी या धौंसा बजाने की तड़तड़ाहट।

दुंबा *पुं.* (फा.) मेढ़े या भेड़ की एक किस्म, जिसकी पूँछ चक्की के पाट जैसी गोल और भारी होती है।

दुःख *पुं.* (तत्.) कष्ट, क्लेश, व्यथा, तकलीफ अनिष्ट, पीड़ा, विपत्ति, संकट, कष्ट मुहा. दुःख उठाना-दुख झेलना 2. दुःख देना-दुःखी करना 3. दुःख पहुँचाना-कष्ट देना 4. दुःख बँटाना- संकट में दुःखी व्यक्ति का साथ देना, सहानुभूति दिखाना 5. दुःख बाँटना-दुःख की बात औरों को बताना।

दुःखकर *वि.* (तत्.) दुःख देने वाला, दुःखदायी, दुःखकारी, क्लेश देने वाला, कष्ट पहुँचाने वाला।

दुःखकारी *वि.* (तत्.) दे. दुःखकर।

दुःखित *वि.* (तत्.) दुर्दशा की स्थिति में रहने वाला, बुरी हालत में स्थित।

दुःखत्रय *पुं.* (तत्.) दर्शन. तीन प्रकार के दुःखों का समाहार, आध्यात्मिक आधिभौतिक और आधि दैविक दुःख, आध्यात्मिक दुःख के अंतर्गत क्रोध, लोभ, मोह, चिंता आदि मानसिक दुःख आते हैं, आधिभौतिक दुःख के अंतर्गत पशु पक्षी, साँप, मच्छर कीट, आदि के द्वारा पहुँचाई गई हानियाँ आती हैं, आधिदैविक दुःख के अंतर्गत प्राकृतिक शक्तियों और देवताओं द्वारा पहुँचाए गए आँधी, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, वज्रपात, शीत, ताप आदि दुःख आते हैं।

दुःखद *वि.* (तत्.) कष्टप्रद, दुःखदायी, दुःख पहुँचाने वाला विलो. सुखद।

दुःखदाघ *पुं.* (तत्.) दुःख का ताप, दुःखाग्नि, असह्य दुःख।

दुःखदाता *वि.* (तत्.) दुःख या कष्ट देने वाला दुःखदायी *पुं.* दुःख देने वाला व्यक्ति।

दुःखदात्री *स्त्री.* (तत्.) दुख देने वाली स्त्री या कोई वस्तु।

दुःखदायक, दुःखदायी *वि.* (तत्.) दुःख देने वाला, कष्ट पहुँचाने वाला।

दुःखान्वित *वि.* (तत्.) दुःख से व्याकुल, कष्ट से भरा या व्यथित, दुःख में पड़ा (व्यक्ति)।

दुःखप्रद *वि.* (तत्.) दुःखदायक, दुःख देने वाला, कष्टदायी।

दुःखप्राय *वि.* (तत्.) दुःखों से परिपूर्ण, बहुत दुःखों वाला, दुख बहुल, जिसमें दुःख की अधिकता हो।

दुःखमय *वि.* (तत्.) दुःखपूर्ण, कष्टों से भरा।

दुःखवाद *पुं.* (तत्.) भा.दर्शन संसार को दुःखमय मानने का सिद्धांत।

दुःखसाध्य *पुं.* (तत्.) कठिनता से सिद्ध होने वाला, मुश्किल से होने वाला काम। कठिन काम।

दुःख-सुखांतक *पुं.* (तत्.) ऐसी साहित्यिक या नाट्य रचना जिसमें दुःखांतक (ट्रेजडी) और सुखांतक (कॉमेडी) दोनों के तत्व हों।

दुःखांत *वि.* (तत्.) 1. दुःखद अंत वाला (कथानक या नाटक या घटनावृत्त), जिसका परिणाम कष्टमय हो 2. जिसमें दुःख का नाश हो *पुं.* 1. दुःख का अंत 2. मोक्ष विलो. सुखांत।

दुःखांतक *वि.* (तत्.) जिसका अंत दुःख में हो, अंत में दुखद *पुं.* ऐसी साहित्यिक नाट्य रचना जिसमें जीवन के निराशाजनक पक्ष का चित्रण हो या जिसमें नायक या नायिका के जीवन की दुःखपूर्ण परिणति हो, त्रासदी।

दुःखातिरेकवाद *पुं.* (तत्.) जीवन में दुःख और निराशा की अधिकता मानने वाला सिद्धांत।

दुःखातीत *वि.* (तत्.) दुःख से परे, दुःख या कष्ट से मुक्त।

दुःखार्त *वि.* (तत्.) दुःख, कष्ट या व्यथा से परेशान, अति दुःखी।

दुःखित *वि.* (तत्.) व्यथित, खिन्न, पीड़ित, दुःखी, कष्ट में पड़ा (व्यक्ति)।

दुःखी *पुं.* (तत्.) दे. दुःखित।

दुःशकुन *पुं.* (तत्.) अशुभ शकुन, बुरा लक्षण, अपशकुन, अनिष्ट फल के सूचक लक्षण।

दुःशासन *पुं.* (तत्.) 1. बुरा शासन 2. धृतराष्ट्र का एक पुत्र और दुर्योधन का भाई जिसने पांडवों के जुए में हारने पर द्रौपदी को पकड़कर सभा स्थल में लाकर उसके वस्त्र खींचे थे *वि.* कठिनता से शासन करने योग्य, जो किसी का शासन या अधिकार न माने।

दुःशील *वि.* (तत्.) बुरे चरित्र या आचरण वाला, खराब स्वभाव वाला, अविनीत, उद्धत, बदचलन, निंदनीय चरित्र वाला।

दुःशोध *वि.* (तत्.) 1. कठिनता से शोधन योग्य (धातु), मुश्किल से सुधार करने योग्य 2. बड़ी कठिनाई से चुकाने योग्य (ऋण)।

दुःश्रव *वि.* (तत्.) 1. कर्णकटु, श्रवण कटु, सुनने में कर्कश या अप्रिय 2. काव्य में कर्कश वर्णों के बाहुल्य का (काक) दोष।

दुःश्रवता *पुं.* (तत्.) कर्णकटुता, कर्कशता।

दुःश्राव्यता *स्त्री.* (तत्.) कठिनता से सुने जाने की स्थिति या भाव, कर्णकटु दोष से युक्त, श्रुति कटुता।

दुःश्रुति *स्त्री.* (तत्.) 1. सुनी हुई खराब बात, अप्रिय समाचार 2. अपयश 3. वह कथा जिसका सुनना पापकारक हो जैसे- स्त्री कथा, भोग कथा, चोर कथा आदि।

दुःश्रेय *वि.* (तत्.) जो कल्याणकारी न हो, अप्रशंसनीय, निंदनीय *पुं.* अपयश, बदनामी।

दुःश्वास *पुं.* (तत्.) चिकि. खराब साँस, कठिनता से आने वाली सांस।

दुःसंकल्प *पुं.* (तत्.) अशुभ विचार, अशुभ संकल्प, खराब इरादा *वि.* बुरा विचार या संकल्प रखने वाला।

दु:संग *पुं.* (तत्.) कुसंगति, बुरे लोगों का साथ।

दु:संधान *पुं.* (तत्.) 1. खराब संयोग या जोड़, कठिनता से आपस में मिलना 2. आचार्य केशवदास के अनुसार काव्य में एक प्रकार का ऐसा रस जहाँ एक अनुकूलता और दूसरा प्रतिकूलता को प्रस्तुत करता है, वहाँ अनुकूल और प्रतिकूल दोनों की स्थिति होती है।

दु:संधेय *वि.* (तत्.) कठिनाई से आपस में मेल कराने के योग्य, कठिनाई से जोड़े जाने या जोड़ लगाने के योग्य।

दु:सह *वि.* (तत्.) कठिनता से सहन करने योग्य, असह्य अत्यधिक कष्टदायी।

दु:साधी *वि.* (तत्.) कठिन काम को कर देने वाला *पुं.* द्वारपाल।

दु:साध्य *वि.* (तत्.) 1. कठिनता से संपन्न करने योग्य, बड़ी मुश्किल से करने लायक, दुष्कर 2. असाध्य जिसका उपाय और प्रतिकार कठिन हो (रोग या काम)।

दु:साहस *पुं.* (तत्.) 1. असंभव या दुष्कर कार्य की सिद्धि के लिए किया गया साहस 2. अनुचित साहस, ऐसा साहस जिसका फल कुछ न हो अथवा जिससे कुछ भी लाभ न हो, निष्फल प्रयास 3. धृष्टता।

दु:साहसी/दुस्साहसी *वि.* (तत्.) 1. अनुचित साहस करने वाला या ढिठाई करने वाला 2. हठ या निष्फल प्रयास/कार्य के लिए साहस करने वाला।

दु:स्थिति *स्त्री.* (तत्.) खराब स्थिति, दुर्दशा, बुरी हालत।

दु:स्पर्श *वि.* (तत्.) 1. जिसे छूना कठिन या अनुपयुक्त हो 2. दुर्लभ *पुं.* करंज की बेल, एक प्रकार का क्षुप जिसके फल की औषधि बनती है, कंटकारी (भटकटैया) का पौधा, कपिकच्छु (केवाँच) की काँटेदार फली जिन्हें छूना कष्टकारी है।

दु:स्वप्न *पुं.* (तत्.) मनो. खराब सपना, अशुभ सपना जिसका फल बुरा हो, भयभीत कर देने वाला स्वप्न।

दु:स्वभाव *पुं.* (तत्.) खराब स्वभाव, दु:शील, नीचता या कुटिलता से भरा स्वभाव, दुष्ट प्रकृति, खराब मिजाज *वि.* दुष्ट प्रकृति वाला, नीच आदत वाला, बदमिजाज, बुरे स्वभाव का।

दु *वि.* (तद्.) संख्यावाचक दो शब्द का संक्षिप्त रूप जिसका प्रयोग समस्त पदों में पूर्वपद (दु) के रूप में किया जाता है, जैसे- दुपहरी।

दुअन्नी *स्त्री.* (तद्.) रुपये का आठवाँ भाग, दो आने का सिक्का जो अब प्रचलन नही हैं।

दुआ *स्त्री.* (अर.) 1. विनती, ईश्वर से की जाने वाली प्रार्थना 2. शुभकामना, आशीर्वाद मुहा. दुआ करना या मांगना- प्रार्थना करना; दुआ लगना- प्रार्थना का सफल होना या आशीर्वाद का फल मिलना।

दुआब, दुआबा *पुं.* (फा.) जिसके दोनों ओर पानी (की नदी) हो, दो नदियों के बीच का भूखंड या प्रदेश।

दुइ *वि.* (तद्.) दे. दो।

दुकड़ी *पुं.* (तद्.) 1. एक साथ दो वस्तुओं वाली चीज, युग्म 2. दो-दो बंधन वाली चारपाई की बुनावट जो एक साथ बुनी जाती है 2. दो घोड़ों वाली बग्घी, घोड़ों का दोहरा सामान 4. दो कड़ियों वाला बर्तन, कड़ाही, कंड़ाल, दो कड़ियों वाली लगाम।

दुकान *स्त्री.* (फा.) बिक्री की चीजें रखने का कक्ष या स्थान या जगह जहाँ जाकर ग्राहक स्वयं वस्तुएँ खरीदते हों, सौदा बिकने की जगह, माल खरीदने की जगह, हट्ट मुहा. 1. दुकान लगाना- अनेक प्रकार के सामान को बिक्री के लिए दुकान में रखना, चीजें बेचने के लिए फैलाकर रखना, (व्यंग्य में), अनेक वस्तुओं को इधर-उधर फैलाकर रख देना; दुकान चलना- दुकान में होने वाली बिक्री की बढ़ोतरी होना; दुकान बढ़ाना- दुकान बंद करना; दुकान उठाना- दुकान का कारबार बंद करके दुकानदारी छोड़ देना।

दुकानदार *पुं.* (फा.) 1. दुकान का मालिक, दुकान पर बैठकर वस्तुओं की बिक्री करने वाला 2. दुकान वाला 3. परोपकार का ढोंग रचकर धन अर्जित करने वाला।

दुकानदारी *स्त्री.* (फा.) 1. दुकानदार का काम या भाव, चीजें बेचने का काम 2. किसी को ठगने के लिए तरह-तरह की बातें करना या लुभाना।

दुकूल *पुं.* (तत्.) कपड़ा, वस्त्र, पहनने का वस्त्र, रेशमी कपड़ा, बारीक व चिकना कपड़ा।

दुकेला *क्रि.वि.* (तद्.) जिसके साथ कोई अन्य भी हो, जो अकेला नहीं है, एक अन्य साथ वाला।

दुक्का *वि.* (तद्.) जो एक या अकेला न हो, एक साथ दो वस्तुएँ, जो एक साथ दो हो, एक जोड़े के रूप में दो *पुं.* दो बूटियों वाला ताश का पत्ता।

दुक्की *स्त्री.* (तद्.) दो बूटियों वाली ताश की पत्ती, दुग्गी।

दुख *पुं.* (तद्.) दे. दुःख मुहा. दुख का मारा-विपत्ति में पड़ा हुआ; दुःख का दूर भागना- दुख मिट जाना।

दुखड़ा *पुं.* (तद्.) विपत्ति, तकलीफ, दुःख का समाचार, तकलीफ भरी कहानी मुहा. दुखड़ा रोना- दुःख या कष्टों का हाल सुनाना।

दुखना *अ.क्रि.* (तद्.) दर्द होना, पीड़ा होना।

दुखाना *स.क्रि.* (तद्.) दुख देना, कष्ट पहुँचाना, व्यथा देना जैसे- जी दुखाना- मानसिक कष्ट देना, मन को दुख पहुँचाना, मर्मस्थान को छूने वाला दुख देना।

दुखारी *वि.* (तद्.) दुख से भरा जो दुख में हो, दुखकारी, खिन्न *स्त्री.* दुःख में रहने वाली स्त्री।

दुखिया *वि.* (तद्.) दुख में पड़ा व्यक्ति, दुःखी, दुःखित।

दुखियारा *वि.* (तद्.) 1. किसी दुःख से दुःखी, दुःखित 2. संकटापन्न 3. रोगी, पीड़ित।

दुखी *वि.* (तद्.) दुख से परेशान, जो दुःख में हो, जो कष्ट में पड़ा हो, बीमार, रोगी।

दुगना *वि.* (तद्.) दे. दुगुना।

दुगुण *वि.* (तद्.) दे. द्विगुण।

दुगुना *वि.* (तद्.) दूना, दोगुना, द्विगुणित, मूल रूप रूप में कोई वस्तु जितनी है उतनी ही मात्रा में अधिक होने पर वह दुगुना होती है जैसे- दो का दुगुना चार।

दुगून *पुं.* (तद्.) दुगना, दूना *स्त्री.* प्रारंभिक लय से से दुगनी गति वाली लय।

दुग्ध *पुं.* (तत्.) 1. दूध 2. पौधों या वृक्षों का रस जो सफेद रंग का अर्थात् दूध जैसा होता है *वि.* दुह लिया गया, दुहा हुआ, चूसा हुआ या बाहर निकाला हुआ (रस)।

दुग्धकल्प *वि.* (तत्.) जो दूध के समान हो, दुग्ध सम, दुग्ध सदृश आयु. दुग्धकल्प नाम की एक चिकित्सा, एक प्राकृतिक चिकित्सा जिसमें दूध का एक निश्चित अनुमाप के अनुसार क्रमशः घटाकर व बढ़ाकर उपयोग किया जाता है।

दुग्धजनक *वि.* (तत्.) दूध पैदा करने वाली *पुं.* प्राणि. स्तन्य-स्रवण कराने वाली औषधि या द्रव्य, जैसे- दुग्धजनक ग्रंथिया।

दुग्धज्वर *पुं.* (तत्.) दुधारू गायों आदि का रोग जिसमें ब्याने के बाद पशु अचेत हो जाता है और उसके पिछले भाग में लकवा हो जाता है।

दुग्ध धवल *वि.* (तत्.) दूध की तरह सफेद, दूध की तरह स्वच्छ और पवित्र।

दुग्धमापी *पुं.* (तत्.) दूध के घनत्व का मापन करके उसकी शुद्धता की मात्रा को परखने वाला उपकरण या यंत्र। lactometer

दुग्धरोधक *पुं.* (तत्.) दुग्ध निकलने या दुग्ध स्राव को रोकने या कम करने वाली औषधि या पदार्थ।

दुग्धशर्करा *स्त्री.* (तत्.) दूध से प्राप्त होने वाली चीनी (शर्करा)।

दुग्धशाला *स्त्री.* (तत्.) 1. जहाँ दुधारू पशु गाय, भैंस आदि का दूध निकालकर बेचा जाता है वह

स्थान, गोशाला, पशुशाला 2. दुधारू पशुओं से दूध दुहकर मक्खन, घी तैयार करने की जगह, डेरी।

दुग्धस्रवण *पुं.* (तत्.) स्तन ग्रंथियों द्वारा दूध का उत्पादन और स्रवण, स्त्री आदि के स्तनों से दूध का निकलना या चूना।

दुग्धस्रवण अवधि *स्त्री.* (तत्.) स्तनों से दूध निकालने का समय।

दुग्धाहारी *पुं.* (तत्.) केवल दूध का आहार करने वाला व्यक्ति *वि.* जो आहार के रूप में केवल दूध पीता है।

दुग्धी *पुं.* (तत्.) 1. क्षीर वृक्ष नाम का पेड़ जिससे दूध निकले या बरगद आदि *स्त्री.* दूधिया नाम की घास या दुद्धी *वि.* दूध वाला, जिसके दूध हो।

दुग्धोद्योग *पुं.* (तत्.) दूध और उससे बनने वाले उत्पादों का उत्पादन भंडारण तथा बिक्री आदि का व्यवसाय, दुग्ध-व्यवसाय।

दुघड़िया *वि.* (तद्.) 1. दो घड़ी का 2. ज्यो. दो घड़ी का मुहूर्त जो ज्योतिष के अनुसार निकाला जाता है और अनिवार्य यात्रा के लिए शुभ माना जाता है, दो घड़ी के समय वाला।

दुजन्मा *वि.* (तद्.) दे. द्विजन्मा।

दुटूक *वि.* (तद्.) दे. दोटूक।

दुत *क्रि.वि.* (तद्.) 1. तिरस्कार-पूर्वक दूर हटाने के लिए बोला जाने वाला शब्द 2. किसी के द्वारा किसी की मूर्खता पर या अनुचित बात कहने पर प्रयोग में लाया जाने वाला तिरस्कार-सूचक शब्द 3. घृणा और अपमान-सूचक शब्द 4. कभी-कभी बच्चों के लिए प्रयुक्त होने वाला प्यार और स्नेह का शब्द *स्त्री.* ज्योति, द्युति, प्रकाश।

दुतकारना *स.क्रि.* (तद्.) किसी को अपने पास आने से दूर हटाने की क्रिया, दूर हटाना, किसी को दुत-दुत कहकर अपमानित या तिरस्कृत करना, धिक्कारना।

दुतरफा *वि.* (फा.दुतर्फ) दोनों ओर का, दो तरफ का, दुतर्फा जैसे- दुतरफा कार्यवाही, जो दो पक्षों में से किसी एक में न होकर दोनों ओर मिला हुआ हो।

दुतल्ला *वि.* (तद्.) दो तल्ले का, दोमंजिला, दुमंजिला *पुं.* दुमंजिला मकान।

दुति *स्त्री.* (तद्.) दे. द्युत, चमक, छवि, प्रकाश, सुंदरता, कांति।

दुद्धी *स्त्री.* (तद्.) 1. जमीन पर फैलने वाली एक वनस्पति जिसमें दूध जैसा स्राव निकलता है और इसे पेट के रोगों की औषधि माना जाता है, थूहर की जाति का एक पौधा 2. सफेद मिट्टी, खड़िया मिट्टी 3. सफेद किस्म का धान जिसे आयुर्वेद में कुक्कुटांडक कहते हैं।

दुधमुँहा *वि.* (तद्.) दे. दूधमुँहा।

दुधार *वि.* (तद्.) 1. दूध देने वाली 2. दूध-युक्त 3. गाय आदि पशु जो अधिक दूध देती हो।

दुधारा *वि.* (तद्.) दोनों ओर धार वाला *पुं.* दो धार वाली तलवार।

दुधारी *वि.* (तद्.) 1. अधिक दूध देने वाली गाय और भैंस 2. दो धार वाली तलवार आदि।

दुधारू *वि.* (तद्.) दे. दुधारी।

दुधैल *वि.* (तद्.) जो बहुत दूध देती हो।

दुधैली *स्त्री.* (तद्.) थूहर की जाति का दुद्धी नाम का एक पौधा।

दुनाली *वि./स्त्री* 1. दो नाल वाली बंदूक, जिसके दोनों नालो से दो गोलियाँ एक साथ छूटती हैं 2. जिसमें दो नल या नलियाँ हों।

दुनिया *स्त्री.* (अर. दुन्या.) 1. जगत्, संसार, विश्व 2. संसार के लोग, जनता 3. सांसारिक झंझट या प्रपंच मुहा. दुनिया उजड़ना- सर्वस्व समाप्त हो जाना; दुनिया की हवा लगना- संसार की बातों का अनुभव होना; दुनिया भर का- बहुत अधिक, पर्याप्त; दुनिया से उठ जाना- मृत्यु हो जाना; दुनिया देखना- अनुभव प्राप्त करना; दुनिया से नाम उठ जाना- संसार द्वारा विस्मृत हो जाना।

दुनियाई *वि.* (देश.) 1. दुनिया से संबंधित, सांसारिक, लौकिक 2. सांसारिक जनों की व्यवहारिकता।

दुनियादार *वि.* (अर.+फा.) 1. सांसारिक मोह में पड़ा व्यक्ति, गृहस्थ 2. लौकिक व्यवहार में कुशल।

दुनियादारी *स्त्री.* (अर.+फा.) 1. लोक-व्यवहार, व्यावहारिक कुशलता 2. गृहस्थी का 3. बनावटी व्यवहार, छल-प्रपंच।

दुनियावी *वि.* (अर.) सांसारिक, दुनिया से संबंधित।

दुपट्टा *पुं.* (तद्.) 1. दोहरा करके ओढ़ी जाने वाली चादर या दुशाला जिसका उपयोग स्त्रियाँ करती हैं 2. स्त्रियों द्वारा कंधे या गरदन पर डालने का कपड़ा 3. वस्त्र के दो पाटों को जोड़कर बनाई गई ओढ़ने की चादर मुहा. दुपट्टा बदलना- पक्की सहेली बनाना।

दुपट्टी *स्त्री.* (तद्.) छोटा दुपट्टा।

दुपतिया *वि.* (तद्.) दो पत्तों वाला या जिसमें दो पत्ते हों।

दुपरता *वि.* (देश.) दो परतों वाला कपड़ा।

दुपरती *पुं.* (तद्.) दो परतों वाली।

दुपर्दी *स्त्री.* (फा.) 1. जिसमे दोनों ओर पर्दे हों 2. बगलबंडी 3. दोनों ओर पर्दे वाली मिरजई।

दुपल्ला *वि.* (तद्.) दो टुकड़े जोडकर बनाया गया पल्ला जैसे- दुपल्ला दरवाजा *स्त्री.* दुपल्ली।

दुपहर *स्त्री.* (तद्.) दे. दोपहर।

दुपहरिया *स्त्री.* (तद्.) 1. दे. दोपहर 2. गुलदुपहरिया नामक एक छोटा सा पौधा जिसमें लाल फूल लगते हैं।

दुपहरी *स्त्री.* (तद्.) दोपहर या मध्याह्न का समय *वि.* हर दोपहर बीतने पर होने वाला।

दुफसली *वि.* (देश+अर.) 1. वह फसल जो रबी और खरीफ दोनों में पैदा हो 2. जिस भूमि में साल में दो फसलें हों।

दुबकना *अ.क्रि.* (तद्.) भय से छिपना या चुप हो जाना।

दुबला *वि.* (तद्.) दुबले शरीर वाला, जिसका शरीर कमजोर और हलका हो गया हो, कृशकाय, अशक्त।

दुबारा *क्रि.वि.* (फा.) 1. दूसरी बार 2. पुनः।

दुबे *पुं.* (तद्.) ब्राह्मण जाति का एक भेद या उपाधि या कुलनाम, द्विवेदी।

दुभाषिया *पुं.* (तद्.) 1. दो भाषाओं का ज्ञाता 2. एक भाषा में व्यक्त आशय को दूसरी भाषा में मौखिक रूप से अभिव्यक्त करने वाला भाषांतरण विशेषज्ञ या मध्यस्थ भाषांतरकार।

दुभाषी *पुं.* (तद्.) दे. दुभाषिया।

दुमंजिला, दुमंजिली *वि.* [फा.+अर.] दो तल्लों या मंजिलों वाला मकान आदि, दो तलों या मंजिलों वाली बस, दुमंजिली बस जिसमें ड्राइवर एक ही होता है।

दुम *स्त्री.* (फा.) पूँछ (ला.) 1. जो स्वार्थवश किसी के पीछे लगा रहे 2. जब किसी कार्य का अंतिम अंश रह जाए मुहा. दुम दबाकर भागना-डर के मारे सामने न ठहरना; दुम दबा जाना- डर से भाग जाना, हार मान लेना; दुम में घुस जाना-गायब हो जाना; दुम में घुसा रहना-खुशामद के लिए साथ लगे रहना; दुम हिलाना-कुत्ते द्वारा दुम हिलाकर प्रसन्नता प्रकट करना।

दुमक *स्त्री.* (तद्.) कृषि मृदा जिसमें 7-27 प्रतिशत मृत्तिका 28-50 प्रतिशत गाद तथा 52 प्रतिशत से कम बालू होती है।

दुमछल्ला *पुं.* (तद्.) पिछलग्गू पीछे लगे रहने वाला व्यक्ति, किसी का अंध अनुयायी बनकर उसके पीछे लगे रहने वाला, अंधानुकरण करने वाला व्यक्ति।

दुमति *वि.* (तत्.) 1. दुष्ट बुद्धि वाला 2. मंदबुद्धि 3. मूर्ख।

दुमुँहा *वि.* (तद्.) 1. दो मुँहों वाला, जिसके दोनों ओर मुँह हों 2. (ला.) अलग-अलग दो अवसर पर परस्पर-विरोधी बात कहने वाला।

दुरंगा *वि.* (तद्.) 1. दो रंगों वाला। जिसमें दो रंग हों, दुरंगा कपड़ा 2. दो या दोनों तरह का या दो प्रकार का सहारा लेने वाला, दोनों पक्षों का आश्रय लेने वाला 3. दो प्रकार की बात करने वाला।

दुरंगी *स्त्री.* (तद्.) 1. दो रंगों वाली जैसे दुरंगी साड़ी 2. दो रंगों वाली बात अर्थात् अलग-अलग तरह की बात जिसमें एक-रूपता न हो जैसे- दुरंगी चाल।

दुरंत *वि.* (तत्.) 1. बुरे परिणाम वाला, परिणाम में कष्टकर 2. जिसका अंत पाना कठिन हो, अत्यंत कष्ट-साध्य 3. प्रचंड 4. अतिगंभीर।

दुर *अव्य.* (तद्.) अपमान सहित दूर हटाने के लिए प्रयोग किया जाने वाला विस्मयादिबोधक शब्द, दुर्र *पुं.* (फा.) 1. मोती 2. कान में पहनने की बाली।

दुरतिक्रम *वि.* (तत्.) जिसका अतिक्रमण, उल्लंघन या अतिलंघन न किया जा सके, जिससे या जिसका पार पाना या जिसपर नियंत्रण करना कठिन हो, दुस्तर, अपराजेय।

दुरत्यय *वि.* (तत्.) 1. जिसे कठिनाई से जीता जा सके 2. कठिनाई से प्राप्य 3 अत्यंत कठिन, दुस्तर 4. जिसका पार पाना कठिन हो।

दुर-दुर *अव्य.* (तद्.) किसी को दूर हटाने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला तिरस्कार या अपमान-बोधक शब्द।

दुरदुराना *स.क्रि.* (अनु.) दुर-दुर कहकर दूर हटाना, तिरस्कारपूर्वक भगाना।

दुरधिगम *वि.* (तत्.) 1. पहुँच से बाहर, दुर्लभ 2. जिसे समझा न जा सके, दुर्बोध, अज्ञेय।

दुरध्यवसाय *पुं.* (तत्.) 1. अनुचित या गलत काम के लिए किया गया परिश्रम, निरर्थक परिश्रम 2. गलत धंधा।

दुरन्वय *वि.* (तत्.) 1. जिसका अनुसरण या पालन करना कठिन हो 2. जिसका अर्थज्ञान कठिनाई से हो, दुर्बोध 3. दुष्प्राप्य *पुं.* अशुद्ध निष्कर्ष काव्य. रचना के विविध अंगों या भागों में परस्पर संगति न होना।

दुरबीन *स्त्री.* (तद्.) दे. दूरबीन।

दुरभिग्रह *वि.* (तत्.) कठिनाई से पकड़े जाने योग्य *पुं.* अपामार्ग, चिचड़ी।

दुरभियोजन *पुं.* (तत्.) 1. षड्यंत्र करके अभियोग लगाना 2. छलकपट करना।

दुरभिसंधि *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी बुरे उद्देश्य से दो या अधिक व्यक्तियों के बीच किया गया गुप्त करार या समझौता, षड्यंत्र से की गई गुप्त संधि 2. साँठ-गाँठ, मिलीभगत, कुचक्र।

दुरमुट/दुममुस *पुं.* (तद्.) कंकड़-पत्थर और मिट्टी पीटकर समतल करने वाला लकड़ी और लोहे का बना एक उपकरण।

दुरवग्रह *वि.* (तत्.) जिस पर नियंत्रण न किया जा सके, कठिनाई से वश में आने वाला, जिसका प्रतिरोध न हो सके।

दुरवस्था *स्त्री.* (तत्.) दुर्दशा, दीन दशा, दुख:पूर्ण स्थिति, कष्ट या दरिद्रता की दयनीय स्थिति, खराब हालत।

दुरस्थि विकसन *पुं.* (तत्.) अस्थियों या हड्डियों का अव्यवस्थित या अपूर्ण विकास, अस्थि का विकृत विकास।

दुराकृति *स.* (तत्.) खराब आकृति, भद्दा स्वरूप या आकृति *वि.* बदसूरत, कुरूप व्यक्ति।

दुराक्रम *वि.* (तत्.) जिस पर आक्रमण न किया जा सके, अजेय, जिसे जीता न जा सके, पराक्रमी।

दुराक्रमण *पुं.* (तत्.) कपटपूर्ण आक्रमण, अनुचित हमला।

दुरागम *पुं.* (तत्.) अनुचित रूप से प्राप्ति, अवैध रूप से प्राप्त होना।

दुरागमन *पुं.* (तद्.) दे. द्विरागमन।

दुराग्रह *पुं.* (तत्.) बेकार की हठ या जिद, किसी बात पर अनुचित रूप से अड़ जाना।

दुराग्रही *वि.* (तत्.) अनुचित रूप से हठ करने वाला, जिद्दी, दुराग्रह करने वाला।

दुराचरण, दुराचार *पुं.* (तत्.) बुरा व्यवहार, दुष्ट आचरण, निंदनीय आचरण, अनाचार, दुष्टाचार।

दुराचारिता *स्त्री.* (तत्.) दुराचार करने की प्रवृत्ति या भाव।

दुराचारी *वि.* (तत्.) चरित्रहीन, दुराचरण करने वाला, निदंनीय आचरण करने वाला।

दुरात्मा *वि.* (तत्.) दुष्ट प्रकृति वाला, बुरा आचरण करने वाला, बुरा व्यक्ति।

दुराधर्ष *वि.* (तत्.) कठिनता से दबाने योग्य, दुर्जेय, अवश्य, जिसका पराभव कठिन हो *पुं.* 1. विष्णु 2. पीले रंग की सरसों।

दुराना *अ.क्रि.* (तद्.) दूर हो जाना, भागना, छिपना *स.क्रि.* छिपाना, आँखों से ओझल छोड़ना, हटाना।

दुराप *वि.* (तद्.) कठिनता से प्राप्य, दुर्लभ, सरलता से न मिल सके, दुष्प्राप्य।

दुराराध्य *वि.* (तत्.) जिसका आराधन (प्रसन्न करना) कठिन हो, जिसका आराधन कष्टसाध्य हो *पुं.* विष्णु।

दुरारुह *वि.* (तत्.) जिस पर चढ़ने में कठिनता हो *पुं.* नारियल, खजूर, ताल या ताड़ का वृक्ष, बेल।

दुरारोह *पुं.* (तत्.) दे. दुरारुह।

दुरालाप *पुं.* (तत्.) 1. अशिष्ट वार्ता 2. दुर्वचन, गाली।

दुरालापी *वि.* (तत्.) बुरा वचन कहने वाला, अप्रिय भाषी या कटु वक्ता *पुं.* अशिष्ट वार्ता।

दुराव *पुं.* (तत्.) छिपाव, किसी से किसी बात को छिपाने का भाव, छल-कपट से बात छिपाए रखने की स्थिति, छल।

दुराशय *पुं.* (तत्.) 1. खराब आशय, बदनीयती 2. बुरा स्थान, दुष्टात्मा *वि.* बुरे आशय वाला, जिसकी नीयत ठीक न हो, निंद्य विचार वाला, नीच हृदय का।।

दुराशा *स्त्री.* (तत्.) पूरा न होने वाली आशा, झूठी आशा या झूठी तसल्ली, अनुचित आकांक्षा।

दुरित *पुं.* (तत्.) 1. पाप, दुराचरण, पातक या उपपातक 2. दुष्टता 3. भय 4. कुमार्ग 5. संकट *वि.* 1. पापी, दुराचारी व्यक्ति, छिपकर दुराचरण करने वाला 2. कठिन 3. छिपा हुआ।

दुरियाना *स.क्रि.* (देश.) दूर हटाना, दुर दुराना, तिरस्कारपूर्वक भगाना।

दुरुक्त *पुं.* (तत्.) अनुचित ढंग से कथित (बात), अनुचित कथन या उक्ति, बुरा कथन *वि.* बुरी तरह से कहा हुआ।

दुरुखा *वि.* (फा.) 1. जिसके दोनों ओर रुख हो 2. दोनो ओर चिह्न वाली वस्तु 3. दो प्रवृत्तियों वाला व्यक्ति 4. दोनों ओर छपाई वाला वस्त्र आदि।

दुरुत्तर *वि.* (तत्.) जिसका उत्तर देना कठिन हो *पुं.* अनुपयुक्त उत्तर, अशिष्ट उत्तर, अनिष्ट उत्तर।

दुरुपयोग *पुं.* (तत्.) गलत उपयोग, अनुचित उपयोग विलो. सदुपयोग।

दुरुपयोजन *पुं.* (तत्.) प्राकृतिक संसाधनों का अति दोहन, शोषण *वि.* समुपयोजन।

दुरुस्त *वि.* (फा.) 1. सही स्थिति वाला, सही, उचित 2. स्वस्थ 3. त्रुटिरहित, दोषहीन 4. वास्तविक, उपयुक्त उचित मुहा. दुरुस्त करना-सुधारना, किसी को दंड देना।

दुरुस्ती *स्त्री.* (फा.) 1. दुरुस्त करने की क्रिया 2. सुधार शुद्धता।

दुरूह *वि.* (तत्.) कठिनता से समझे जाने योग्य, जिसे जानना कठिन हो, गूढ़, दुर्बोध, दुर्ज्ञेय।

दुरूहता *स्त्री.* (तत्.) कठिनता, गूढ़ता, दुर्बोधता।

दुरोदर *पुं.* (तत्.) 1. जुआरी 2. पासा।

दुर् *अव्य.* (तत्.) सदोषता, निंदा, निषेध, दुःख या संकट आदि अर्थों की अभिव्यक्ति के लिए संज्ञापदों और क्रियापदों से पूर्व प्रयुक्त किया जाने वाला एक उपसर्ग।

दुर्गंध *स्त्री.* (तत्.) 1. बुरी गंध, बुरी महक, बदबू *पुं.* 1. काला नमक 2. प्याज (आदि बदबूदार खाद्य)।

दुर्गंधक *पुं.* (तत्.) रसा. दुर्गंध उत्पन्न करने वाला रासायनिक पदार्थ जैसे हाइड्रोजन सल्फाइड *वि.* बदबू करने वाला, बुरी गंध वाला।

दुर्गंधि *वि.* (तत्.) बदबू वाला, बदबू करने वाला, बुरी गंध से भरी।

दुर्ग *पुं.* (तत्.) 1. विशाल प्राचीरों और रक्षा दीवारों के घिरा एक छोटा किला जिसमें सामंत और उसके सैनिक आदि रहते थे 2. दुर्ग नामक एक राक्षस, जिसे मारने के कारण आद्या शक्ति का नाम दुर्गा पड़ा 3. गढ़, किला, कोट *वि.* दुर्गम, दुर्बोध, कठिन।

दुर्ग अभियंता *पुं.* (तत्.) दुर्ग के कार्य के लिए सेना में नियुक्त इंजीनियर।

दुर्गत *वि.* (तत्.) दुर्दशा में पड़ा हुआ, बुरी गति वाला, विपन्न, गरीब।

दुर्गति *स्त्री.* (तत्.) दुर्दशा, गरीबी, शोचनीय स्थिति या हालत, नरक या परलोक में होने वाली दुर्दशा विलो. सद्गति/सुगति।

दुर्गम *वि.* (तत्.) 1. जहाँ सरलता से (शीघ्र) न पहुँचा जा सके, जहाँ जाना दुष्कर हो 2. कठिनता से जानने योग्य, दुर्बोध *पुं.* 1. दुर्ग, गढ़, किला, घनघोर जंगल, संकटाकीर्ण स्थान 2. भगवान विष्णु विलो. सुगम।

दुर्गमनीय *वि.* (तत्.) कठिनता से पहुँचने योग्य स्थान, जहाँ शीघ्रता से न पहुँचा जा सके दे. दुर्गम।

दुर्गम्य *वि.* (तत्.) दे. दुर्गम।

दुर्गलनीय *वि.* (तत्.) रसा. वह पदार्थ जिसे बड़ी कठिनाई से गलाया जा सके, जो उच्च ताप में गलने पर भी न गले, उच्च ताप सह। refractory

दुर्गा *स्त्री.* (तत्.) 1. दुर्ग नामक राक्षस या असुरों का वध करने वाली महाशक्ति का एक रूप, कठोर कर्म करने वाली देवी 2. नौ वर्ष की कन्या 3. संगीत में एक रागिनी जिसमें गौरी, मालश्री, सारंग और लीलावती रागिनी का मिश्रण होता है।

दुर्गाधिकारी *पुं.* (तत्.) दुर्ग का अधिकारी, दुर्गपाल, किले का अधिकारी, दुर्गेश।

दुर्गानवमी *स्त्री.* (तत्.) नौ दुर्गाओं के पूजन की अंतिम तिथि, चैत्र तथा आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की नवमी।

दुर्गा पूजा *स्त्री.* (तत्.) दुर्गा की पूजा, नवरात्र का उत्सव, आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से दशमी तिथि तक चलने वाला, दुर्गा का विशेष पूजनोत्सव।

दुर्गुण *पुं.* (तत्.) अवगुण, दोष, बुराई।

दुर्गुणी *वि.* (तत्.) जिसमें दुर्गुण या बुराइयाँ हों।

दुर्गेश *पुं.* (तत्.) 1. दुर्ग का प्रधान/स्वामी, दुर्गाध्यक्ष 2. दुर्ग का मालिक, किलेदार।

दुर्गोत्सव *पुं.* (तत्.) दे. दुर्गा पूजा।

दुर्ग्रह *वि.* (तत्.) 1. कठिनता से ग्रहण करने योग्य, जिसे कठिनता से प्राप्त किया जा सके दुष्प्राप्य 2. दुर्बोध्य ज्यो. *पुं.* अनिष्ट ग्रह, हानिकारक ग्रह।

दुर्ग्राह्य *वि.* (तत्.) 1. जिसे ग्रहण करना कठिन हो 2. जिसकी थाह जल्दी न मिल, अथाह 3. दुर्बोध।

दुर्घट *वि.* (तत्.) कठिनता से घटने योग्य, कष्ट साध्य, असंभव।

दुर्घटना *स्त्री.* (तत्.) दुःखकारी घटना, दुखद, वारदात।

दुर्घटना जोखिम *पुं.* (तत्.+फा.) दुर्घटना के फलस्वरूप उत्पन्न अनिष्ट की संभावना की स्थिति।

दुर्घटना जोखिम बीमा *पुं.* (तत्.+फा.) दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति या वाहन आदि की दुर्घटना में हुई क्षति की पूर्ति के लिए कराया जाने वाला बीमा।

दुर्घोष *वि.* (तत्.) बुरी आवाज करने वाला, अप्रिय शब्द कहने या निकालने वाला, कटु ध्वनि वाला *पुं.* 1. कटु-कर्कश ध्वनि 2. भालू।

दुर्जन *सं.* (तत्.) बुरा आदमी, खल, दुष्ट व्यक्ति विलो. सज्जन।

दुर्जर *वि.* (तत्.) 1. कठिनता से पचने योग्य (अन्न आदि) 2. जिसको जरा (बुढापा) बहुत देर में आए अर्थात् सदा युवा रहने वाला या बहुत देर में बूढा होने वाला।

दुर्जात *वि.* (तत्.) 1. नीच जाति का या नीच कुल या खानदान का, जिसकी जाति बिगड़ गई हो 2. दुष्ट स्वभाव वाला, नीच, बुरा 3. अभागा *पुं.* 1. नीच जाति, कुजाति 2. खराब स्थिति 3. व्यसन 4. विपत्ति।

दुर्जेय *वि.* (तत्.) कठिनता से जीते जाने योग्य, दुर्जय, अजेय।

दुर्ज्ञेय *वि.* (तत्.) जिसे कठिनता से समझा जा सके, दुर्बोध, जो जल्दी समझ में न आए *पुं.* शिव।

दुर्दम *वि.* (तत्.) 1. जिसका दमन बड़ी कठिनता से हो, जिसको दबाना कठिन हो, दुर्दम्य 2. प्रबल, प्रचंड, भयंकर 3. आयु. ऐसा रोग जिसका दमन (या जिसे पर काबू) न किया जा सके, असाध्य, दुर्दम्य जैसे- कैंसर विलो. सुदम।

दुर्दम अर्बुद *पुं.* (तत्.) ऐसा गुमड़ा, मांसपिंड, गांठ या दुष्ट व्रण जिसे चिकित्सा से ठीक करना बहुत कठिन होता है, जो दूसरे अंगों को संक्रमित करके रोग को फैलाता जाता है।

दुर्दमन *पुं.* (तत्.) दे. दुर्दम।

दुर्दमनीय-दुर्दम्य *वि.* (तत्.) दे. दुर्दम।

दुर्दर्श *वि.* (तत्.) 1. कठिनता से देखा जा सकने वाला 2. चकाचौंध करने वाला 3. जिसे देखने से डर लगे, या घृणा हो, घृणित, कुरूप, अशुभ दर्शन वाला।

दुर्दशा *स्त्री.* (तत्.) बुरी हालात, दुर्गति।

दुर्दांत *पुं.* (तत्.) दे. दुर्दम।

दुर्दिन/दुर्दिवस *पुं.* (तत्.) 1. खराब दिन, पानी बरसने या बरसात का दिन जिसमें घर से बाहर निकलना कठिन हो 2. जिस दिन बदली छाई रहे 3. दुर्दशा या दुःख के दिन, बुरा वक्त, विपत्ति काल विलो. सुदिन।

दुर्दृष्ट *वि.* (तत्.) 1. जिसे गलत ढंग से देखा गया हो, जिस पर सम्यक् विचार न किया गया हो 2. जिसका विवाद/मुकदमा उचित ढंग से न हुआ हो।

दुर्दैव *पुं.* (तत्.) दुर्भाग्य, अभाग्य, बदकिस्मती, बुरे दिन।

दुर्धर्ष *वि.* (तत्.) जो कठिनता से दमन करने योग्य हो, ढीठ, अविनीत, असहनशील।

दुर्नय *पुं.* (तत्.) 1. अनीति, दुर्नीति, नीति विरोधी आचरण 2. अन्याय 3. अनैतिकता।

दुर्नाम *पुं.* (तत्.) 1. बुरा नाम 2. अपयश 3. अपशब्द 4. घोंघा 5. सीप 6. बवासीर।

दुर्नामा *वि.* (तत्.) बुरे नाम वाला, बदनाम, अपयश वाला *पुं.* 1. घोंघा 2. सीप 3. अर्ग, बवासीर।

दुर्निग्रह *वि.* (तत्.) जिस पर नियंत्रण न किया जा सके, जिसको वश में नहीं किया जा सके।

दुर्निमित्त *पुं.* (तत्.) 1. भावी 2. दुर्घटना को सूचित करने वाला, अपशकुन 3. बुरा बहाना।

दुर्निरीक्ष्य *वि.* (तत्.) 1. जो देखने योग्य न हो, कुरूप 2. जो कठिनाई से देखा जा सके।

दुर्निवार-दुर्निवार्य *वि.* (तत्.) 1. जिसका निवारण कठिन हो 2. जिसे रोका न या टाला न जा सके, जिसे दूर न किया जा सके 3. जो अवश्यंभावी हो।

दुर्नीति *स्त्री.* (तत्.) 1. अनीति, अनुपयुक्त आचरण 2. अन्याय।

दुर्बल *वि.* (तत्.) 1. दुबला 2. कम बल वाला, कमजोर 3. कृशकाय 4. हलका, सामान्य।

दुर्बलता *स्त्री.* (तत्.) 1. दुर्बल होने की अवस्था या भाव 2. कमजोरी, बल की कमी, दुबलापन 3. शिथिलता, थकान 4. उत्साहहीनता।

दुर्बुद्धि *स्त्री.* (तत्.) 1. शारीरिक या मानसिक हीन हीन बुद्धि 2. दुष्ट बुद्धि, कुबुद्धि *वि.* 1. नीच बुद्धि वाला 2. उल्टे दिमाग वाला, मूर्ख।

दुर्बोध *वि.* (तत्.) 1. जो कठिनाई से समझ में आए 2. दुर्ज्ञेय 3. कठिन, क्लिष्ट 4. गूढ़।

दुर्भक्ष *वि.* (तत्.) 1. जिसे खाना कठिन हो 2. जिसका स्वाद अच्छा न हो।

दुर्भक्ष्य *वि.* (तत्.) 1. जिसे कठिनाई या अरुचि से खाया जा सके 2 खाने में खराब।

दुर्भग *वि.* (तत्.) मंद भाग्य, अभागा, बदकिस्मत।

दुर्भगा *वि.* (तत्.) अभागिन *स्त्री.* 1. जिस स्त्री का का पति न हो, विधवा 2. बुरे स्वभाव वाली झगड़ालू स्त्री।

दुर्भर *वि.* (तत्.) 1. कठिनता से वहन करने या उठाने योग्य 2. जो लादने योग्य न हो, भारी, वजनी, दूभर 3. संविदा या वचनबद्धता का वह स्वरूप जिसका निर्वाह करना कठिन हो जैसे- दुर्भर शर्त- ऐसी शर्त जिसका निर्वाह कठिन हो, जिस शर्त को पूरा करना या निभाना कठिन हो।

दुर्भागी *वि.* (तत्.) दुर्भाग्य वाला, मंद भाग्य वाला, भाग्यहीन, अभागा।

दुर्भाग्य *पुं.* (तत्.) मंद भाग्य, बदकिस्मती।

दुर्भाव *पुं.* (तत्.) 1. खराब भाव, ईर्ष्या द्वेष, मनमुटाव, मनमुटाव, दुर्भावना 2. दुःस्थिति।

दुर्भावना *स्त्री.* (तत्.) दुर्भाव, बुरी भावना, अशुभ होने का संदेह होना।

दुर्भावपूर्ण *वि.* (तत्.) बुरी भावना से भरा हुआ, दुर्भावनायुक्त।

दुर्भाव्य *वि.* (तत्.) 1. जो कठिनाई से ध्यान में आए, जो शीघ्र समझ में न आए 2. जिसकी कल्पना करना कठिन हो 3. जिसकी परिणति खराब होने वाली हो।

दुर्भिक्ष *पुं.* (तत्.) 1. वह समय जिसमें भोजन या भिक्षा कठिनाई से मिले 2. अकाल, क़हर।

दुर्भीति *स्त्री.* (तत्.) आयु. निराधार भय या दुश्चिंता से सतत अभिभूत रहने की स्थिति मनो. एक प्रकार का मानसिक रोग जिसमें किसी वस्तु से अकारण स्थायी व तीव्र भय लगता हो।

दुर्भेद्य *वि.* (तत्.) 1. जिसका बेधन या भेदन कठिन हो 2. जिसे तोड़ा न जा सके, जैसे अभेद्य अभेद्य दुर्ग 3. जिसका भेद न जाना जा सके।

दुर्मंत्र *पुं.* (तत्.) 1. बुरा मंत्र 2. बुरी सलाह, खराब परामर्श 3. ऐसी राय जिससे हानि हो।

दुर्मंत्रणा *स्त्री.* (तत्.) 1. बुरी राय 2. बुरी सलाह, अपमंत्रणा।

दुर्मद *वि.* (तत्.) नशे में मत्त, गर्वीला, अहंकार से पूर्ण, घमंडी।

दुर्मना *वि.* (तत्.) 1. दूषित मन वाला 2. जिसके मन में दुख हो, उत्साह हीन।

दुर्मर्ष *वि.* (तत्.) जिसे सहना कठिन हो, असह्य; दुःसह।

दुर्मर्षण *पुं.* (तत्.) विष्णु का एक नाम।

दुर्मल्लिका-दुर्मल्ली *स्त्री.* (तत्.) नाट्य. उपरूपक का एक भेद जिसमें हास्य रस की प्रधानता रहती है और चार अंक होते हैं।

दुर्मित्र *पुं.* (तत्.) 1. खराब मित्र, दुष्ट मित्र, कुमित्र 2. शत्रु, दुश्मन।

दुर्मिल *पुं.* (तत्.) काव्य. एक प्रकार का सममात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 31 मात्राएँ होती हैं, एक प्रकार का सवैया छंद जो समवर्णिक होता है तथा जिसके प्रत्येक चरण में 24 वर्ण होते है *वि.* 1. जिससे मिलना कठिन हो, या दुर्लभ 2. जो मेल का न हो।

दुर्मुख *वि.* (तत्.) 1. बुरी मुखाकृति वाला, कुरूप 2. बुरी बात कहने वाला, अप्रियवक्ता, कटुभाषी, बदजबान।

दुर्मुट-दुर्मुस *पुं.* (तत्.) दे. दुरमुट।

दुर्मुहूर्त *पुं.* (तत्.) खराब मुहूर्त, अशुभ मुहूर्त।

दुर्मेधा *वि.* (तत्.) मंदबुद्धि, कुबुद्धि।

दुर्मोह *पुं.* (तत्.) 1. सफेद घुंघुची का फल 2. काकतुंडभ्, कौआठोठी 2. दु:खदायी मोह।

दुर्योग *पुं.* (तत्.) यौ. 1. ग्रहों के मिलने से बनने वाला बुरा योग, ग्रहों का बुरा योग 2. खराब घड़ी का आ जाना।

दुर्योधन *पुं.* (तत्.) धृतराष्ट्र और गांधारी का ज्येष्ठ ज्येष्ठ पुत्र, कौरवों का अग्रज *वि.* भयंकर युद्ध डटकर लड़ने वाला, अपराजेय।

दुर्रानी *पुं.* (फा.) कानों में दूर अर्थात् मोती का बुंदा पहनने वाले पठानों/अफगानों की एक जाति जो कंधार के समीप बसी है या उस जाति का व्यक्ति।

दुर्लंघ्य *वि.* (तत्.) जिसे लांघा न जा सके या पार न किया जा सके, जिसे पार करना संभव न हो, दुस्तर।

दुर्लक्ष्य *वि.* (तत्.) जो कठिनाई से देखा जा सके *पुं.* बुरा लक्ष्य, बुरा उद्देश्य।

दुर्लभ *वि.* (तत्.) 1. कठिनता से पाने योग्य, जिसके मिलने की संभावना बहुत कम हो, विरल 2. श्रेष्ठ, सर्वोत्तम 3. अनुपम 4. मूल्यवान।

दुर्लभ धातु *स्त्री.* (तत्.) प्रकृति में अत्यल्प मात्रा में पाई जाने वाली तथा व्यापारिक दृष्टि से बहुत खर्च करके निकाली गई बहुमूल्य धातुएँ। rare metal

दुर्लभ मुद्रा *स्त्री.* (अर्थ.) वह मुद्रा जिसकी दूसरे देशों से पूर्ति की अपेक्षा माँग अधिक हो विलो. सुलभ मुद्रा। hard currency

दुर्लभ-मृदाएँ *स्त्री.* (तत्.) विरल रूप में पाए जाने वाली 15 धात्विक तत्वों का सामूहिक नाम। rare earths

दुर्ललित *वि.* (तत्.) जो अधिक लाड़-प्यार में पला हो, प्यार से बिगड़ैल, जो अच्छे रंग-ढंग वाला न हो, मनमानी करने वाला, नटखट, हठी, उद्धत।

दुर्लेख्य *पुं.* (तत्.) जाली रूप में लिखा गया प्रलेख, गैर-कानूनी दस्तावेज *वि.* जिसकी लिखावट इतनी बुरी हो कि पढ़ी न जा सके।

दुआर *पुं.* (तद्.) 1. घर के अंदर प्रवेश का मार्ग, द्वार 2. देहली, दहलीज 3. दरवाजे के सामने का का खुला स्थान।

दुरंगम *पुं.* (तत्.) दे. दूरगामी।

दुर्वृत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. बुरी वृत्ति (आजीविका) 2. दुराचरण 3. धोखा, छल, कपट।

दुर्वह *वि.* (तत्.) 1. जिसे ढोना या साथ ले जाना कठिन हो, बहुत भारी 2. जिसे बरदाश्त न किया जा सके, दुस्सह, असह्य।

दुर्वाच्य *वि.* (तत्.) 1. (ऐसे शब्द) जो बोलने में अशोभनीय हो, गाली भरे (वचन) 2. (ऐसे शब्द) जो उच्चारण करने में कठिन हों, दुष्पाठ्य कार्या. ऐसी (लिखावट) जो पढ़ी (बाँची) न जा सके।

दुर्वार्य *पुं.* (तत्.) दे. दुर्वार।

दुर्वार *वि.* (तत्.) जिससे बचना कठिन हो, जिसे रोकना या टालना कठिन हो, जिसे शांत या निष्क्रिय/निष्फल करना कठिन हो।

दुर्वारण *पुं.* (तत्.) दे. दुर्बार।

दुर्वासना *स्त्री.* (तत्.) बुरी वासना, चित्त की बुरी वृत्ति, कुसंस्कार के कारण जाग्रत बुरी इच्छाएँ।

दुर्वासा *पुं.* (तत्.) 1. जिसके वस्त्र स्वच्छ या व्यवस्थित न हों 2. जिसे वस्त्र प्राप्त न हुए हों, नग्न, दिगंबर 3. एक महाक्रोधी ऋषि जो अत्रि-अनुसूया के पुत्र थे, तुरंत क्रोध करना और शाप दे देना इनका स्वभाव बन गया था।

दुर्विकसन *पुं.* (तत्.) बुरा विकास, किसी ऊतक का असामान्य विकास, जैसा प्राय: कैंसर में होता है।

दुर्विगाह्य *वि.* (तत्.) जो इतना गहरा हो कि उसकी थाह पाना कठिन हो।

दुर्विज्ञेय *वि.* (तत्.) जिसका ज्ञान सामान्य बुद्धि से न हो सके, दुर्बोध।

दुर्विदग्ध *वि.* (तत्.) 1. जो थोड़े ज्ञान से अहंकार को प्राप्त हो गया हो 2. शास्त्र में कुशल पर व्यवहार में शून्य, मूर्खपंडित 3. मूर्ख, शास्त्र का दुरुपयोग करने वाला, वृथाभिमानी।

दुर्विनय *पुं.* (तत्.) अविनय, उद्धतता, हठधर्मिता, उद्दंडता, उच्छृंखलता।

दुर्विनियुक्त *वि.* (तत्.) जिसका विनियोग ठीक प्रकार से न किया गया हो, दुष्प्रयुक्त, दुरुपयुक्त।

दुर्विनियोग *पुं.* (तत्.) धन संपत्ति आदि का अनुचित तरीके से अपने हित में उपयोग विलो. विनियोग।

दुर्विनियोजन *पुं.* (तत्.) दुर्विनियोग की प्रक्रिया विलो. विनियोजन।

दुर्विनीत *वि.* (तत्.) जिसमें दुर्विनय हो, उद्दंड, उच्छृंखल, अक्खड़।

दुर्विपाक *पुं.* (तत्.) 1. कुपरिणाम, दुष्फल, कुफल 2. दुर्घटना, अनायास होने वाली बुरी घटना।

दुर्विवाह *पुं.* (तत्.) निंदनीय विवाह।

दुर्वृष्टि *स्त्री.* (तत्.) 1. आवश्यकतानुसार वृष्टि का न होना 2. अनावृष्टि, सूखा।

दुर्वृत्त *वि.* (तत्.) 1. जिसका आचरण-व्यवहार बुरा हो 2. जिसका चरित्र अच्छा न हो, दुश्चरित्र 3. बुरी निंदित आजीविका वाला *पुं.* निंदित आचरण।

दुर्व्यपदेशन *पुं.* (तत्.) विधि. मिथ्या एवं भ्रांत धारणा उत्पन्न करने के लिए या भ्रम उत्पन्न करने के लिए किया गया कथन अथवा आचरण।

दुर्व्यवस्था *स्त्री.* (तत्.) कुप्रबंध, अव्यवस्था।

दुर्व्यवहार *पुं.* (तत्.) बुरा या अनुचित व्यवहार, बदसलूकी, अनुचित आचरण।

दुर्व्यसन *पुं.* (तत्.) बुरी आदत, निषिद्ध या हानिकर बातों के प्रति लगाव, कुटेव।

दुर्व्यसनी *वि.* (तत्.) दुर्व्यसनों से युक्त, किसी दुर्व्यवसन वाला।

दुर्व्यापार *पुं.* (तत्.) अवैध वस्तुओं का या अवैध तरीके से किया गया व्यापार।

दुर्व्रत *वि.* (तत्.) जिसने गलत या अनुचित व्रत लिया हो, नियमों का पालन न करने वाला *पुं.* निंदनीय व्रत।

दुलकी *स्त्री.* (देश.) घोड़े के चलने का एक विशेष प्रकार जिसमें वह एक-एक पैर ठुमक-ठुमक कर रखते हुए आगे बढ़ता है।

दुलड़ा *वि.* (देश.) दो लड़ों वाला (हार आदि)।

दुलत्ती *स्त्री.* (देश.) 1. घोड़े, गधे, खच्चर आदि पशुओं द्वारा पीछे के दोनों पैरों से (पीछे की ओर) वार करना 2. इस प्रकार की गई चोट मुहा. दुलत्ती झाड़ना- तिरस्कार करना, दुर्व्यवहार।

दुलराना *अ.क्रि.* (देशे.) बच्चों की तरह मचलना, रुठना आदि, लाड़ले बच्चों की तरह व्यवहार करना *स.क्रि.* (बच्चे को) प्यार करना, लाड़ करना, पुचकारना, बहलाना आदि।

दुलहन/दुलहिन *स्त्री.* (तद्.) 1. नवविवाहिता, नवोढ़ा, नववधू 2. पत्नी 3. छोटे भाई, पुत्र आदि की पत्नियों को किया जाने वाला संबोधन।

दुलहा *पुं.* (तद्.) 1. जिसका विवाह होने जा रहा हो या अभी हुआ हो, वर, दूल्हा, नौशा 2. प्रमुख व्यक्ति (ला.)।

दुलाई *स्त्री.* (तद्.) बहुत हल्की और पतली-सी रजाई, रुई भरी हुई हल्की चादर।

दुलार *पुं.* (तद्.) छोटे बच्चों को दिया जाने वाला स्नेह या प्यार, इसके लिए की जाने वाली क्रियाएँ।

दुलारना *स.क्रि.* (तद्.) दुलार करना, बच्चे की इच्छाएँ पूरी करना।

दुलारा *वि.* (तद्.) 1. प्यारा, लाडला 2. वह जिसे बहुत लाड-प्यार मिलता हो।

दुलीचा *पुं.* (देश.) 1. गलीचा, गालीचा, कालीन, रोएंदार मोटा बिछावन 2. छोटा आसन।

दुवाल *पुं.* (फा.) 1. चमड़ा 2. चमड़े का बना हुआ पट्टा, जैसे घोड़े की पीठ पर या रकाब में कसा जाने वाला पट्टा या कमर में बाँधी जाने वाली पेटी, बेल्ट।

दुविधा *स्त्री.* (तद्.) मन की वह अवस्था जब कर्तव्य-अकर्तव्य में अंतर करना कठिन हो गया हो, अनेक विचारों के आ जाने के कारण अनिश्चय की स्थिति, असमंजस या किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति, ठीक रास्ता चुन न पाना।

दुशाला *पुं.* (फा.) 1. दो शालों को जोड़कर बनाई गई दोहरी ऊनी चादर 2. ऐसी दोहरी ऊनी शाल जिस पर पशमीने का काम किया हुआ हो 3. बेलबूटेदार ओढ़ने की मोटी चादर मुहा. दुशाला लपेट कर मारना- मीठे शब्दों से चोट पहुँचाना।

दुशासन *पुं.* (तद्.) दुर्योधन का छोटा भाई, धृतराष्ट्र का दूसरा पुत्र, दुःशासन।

दुश्चक्र *पुं.* (तत्.) शत्रु द्वारा पैदा की गई ऐसी समस्या या कपट जाल जिसमें से बाहर निकल पाना कठिन हो, शत्रु की कपट-योजना, छल।

दुश्चरित *पुं.* (तद्.) बुरा या निंदनीय आचरण, कदाचार, पापाचरण।

दुश्चरित्र *वि.* (तत्.) 1. जिसका आचरण अच्छा न हो, बुरे चाल-चलन वाला 2. जिसका चरित्र अच्छा न हो, चरित्रहीन विलो. सच्चरित्र।

दुश्चिंता *स्त्री.* (तत्.) ऐसी चिंता जिसका निवारण कठिन हो, भारी चिंता, किसी होने वाले अनिष्ट को दूर करने के लिए किया जाने वाला गहन चिंतन।

दुश्चिंत्य *वि.* (तत्.) जिसका चिंतन करना भी कष्टदायक हो।

दुश्चिकित्स्य *वि.* (तत्.) ऐसा (रोग) जिसका निदान और चिकित्सा अत्यंत कठिन हो, असाध्य (रोग), ठीक न होने वाला (रोग)।

दुश्चेष्टा *स्त्री.* (तत्.) 1. बुरी चेष्टा, कुकर्म 2. दुस्साहस।

दुश्चेष्टित *पुं.* (तत्.) बुरी नीयत से किया गया काम, कुकृत्य, ऐसा कर्म जिससे किसी को कष्ट हो।

दुश्मन *पुं.* (फा.) 1. शत्रु, वैरी 2. ऐसा, जिससे अपना अहित होने वाला हो विलो. दोस्त।

दुश्मनी *स्त्री.* (फा.) किए गए अपकार के प्रत्युत्तर में हानि पहुँचाने की भावना, शत्रुता, वैर-भाव विलो. दोस्ती।

दुश्वार *वि.* (फा.) कठिन परिस्थिति, मुश्किल, (हालात) विलो. आसान।

दुश्वारी *स्त्री.* (फा.) 1. कठिन होने की भावना, मुश्किलात/मुश्किल 2. विपत्ति, मुसीबत 3. ऐसी स्थिति जिसमें जीना मुश्किल हो गया हो, जैसे गरीबी, बेरोजगारी, भयंकर बीमारी आदि।

दुष्कर *वि.* (तत्.) जिसे करना अत्यंत कठिन हो, जो कष्टपूर्वक किया जाए, कष्टसाध्य, दुस्साध्य।

दुष्कर्ता *पुं.* (तत्.) दुष्कर्म करने वाला।

दुष्कर्म *पुं.* (तत्.) बुरा कार्य, निंदनीय कार्य, बुरी नीयत से किया गया कर्म, पाप।

दुष्कर्मा *वि.* (तत्.) दुष्कर्म करने वाला।

दुष्कर्मी *वि.* (तत्.) 1. दे. दुष्कर्मा 2. जिसे दुष्कर्म करने की आदत पड़ गई हो, जिसका स्वभाव दुष्कर्म करने का बन गया हो।

दुष्काल *पुं.* (तत्.) कष्ट का समय, बुरा समय, दुर्दिन, अकाल, दुर्भिक्ष, प्रलय-काल।

दुष्कीर्ति *स्त्री.* (तत्.) बदनामी, अपयश विलो. कीर्ति, यश।

दुष्कुल *पुं.* (तत्.) नीच कुल, बुरा खानदान, नीच जाति से संबंधित कुल।

दुष्कृत *वि./पुं* (तत्.) बुरे उद्देश्य से या गलत तरीके से किया गया, कुकर्म, पापकर्म, ऐसा कार्य जिससे औरों को हानि पहुँचे।

दुष्कृति *स्त्री.* (तत्.) बुरा कर्म, पाप *वि.* पापी, कुकर्मी।

दुष्कृती *वि.* (तत्.) बुरे कर्म करने वाला, पापी, अधर्मी।

दुष्क्रम *वि.* (तत्.) जिसका क्रम बिगड़ गया हो, क्रमरहित, भ्रामक क्रम वाला, अस्त-व्यस्त।

दुष्क्रमत्व *पुं.* (तत्.) सही क्रम में नहीं रहने की स्थिति या भाव, अक्रमता, अक्रमत्व, क्रम भंग काव्य. एक काव्य दोष।

दुष्क्रीत *वि.* (तत्.) जिसे खरीदते समय सावधानी न रखी गई हो, खरीदे जाने के बाद जिसके दोषों का पता चले।

दुष्चक्र *पुं.* (तत्.) ऐसी स्थिति जिसमें कारण और कार्य एक-दूसरे पर आश्रित होने के कारण चक्र की तरह पुनः पुनः आते रहते हैं जैसे- बीमारी और दुर्बलता का दुष्चक्र।

दुष्ट *वि.* (तत्.) 1. बुरे कर्म करने वाला, पापी, पामर, खल 2. जिसमें कोई कमी हो, क्षतिग्रस्त, निकम्मा।

दुष्टचेता *वि.* (तत्.) दुष्ट बुद्धि वाला, क्रूर हृदय वाला, कपटी।

दुष्टता *स्त्री.* (तत्.) 1. दुष्ट होने का भाव, दोष, कमी 2. नीचता, कपट 3. बदमाशी, पिशुनता 4. क्रूरता 5. नटखट या शरारती होने का भाव।

दुष्टव्रण *पुं.* (तत्.) आयु. ऐसा घाव जो कठिनाई से भरे, नासूर।

दुष्टा *स्त्री./वि.* (तत्.) दुष्ट स्त्री।

दुष्टाचार *पुं.* (तत्.) दुष्टों जैसा आचरण, कुकर्म।

दुष्टाचारी *वि.* (तत्.) दुष्टाचार करने वाला, दुराचारी, कुकर्मी।

दुष्टात्मा *वि.* (तत्.) दुष्ट स्वभाव से युक्त (व्यक्ति), दुरात्मा, मैले अंतःकरण वाला।

दुष्टान्न *पुं.* (तत्.) दूषित अन्न, दोष उत्पन्न करने वाला अन्न. पापपूर्वक अर्जित अन्न।

दुष्टाशय *वि.* (तत्.) 1. बुरे उद्देश्य वाला 2. दे. दुष्टात्मा।

दुष्टि *स्त्री.* (तत्.) दोष, विकार।

दुष्पच *वि.* (तत्.) कठिनाई से पचने योग्य, दुष्पाच्य विलो. सुपच, सुपाच्य।

दुष्पचन्न *पुं.* (तद्.) आयु. पाचन क्रिया में होने वाली गड़बड़, अजीर्णता।

दुष्परिमेय *वि.* (तत्.) जिसे मापना दुष्कर हो, असीम, अपरिमित, अनगिनत।

दुष्पोषण *पुं.* (तत्.) आयु. पोषण क्रिया में होने वाली गड़बड़ी।

दुष्प्रकृति *स्त्री.* (तत्.) खोटी प्रकृति, बुरा स्वभाव, कुटेव *वि.* बुरे स्वभाव वाला।

दुष्प्रवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) बुरी प्रवृत्ति, मन का बुरे कार्यों में आसक्त होना।

दुष्प्राप्य *वि.* (तत्.) जो कठिनाई से प्राप्त हो सके, दुर्लभ।

दुष्प्रेक्ष्य *वि.* (तत्.) जिसे कठिनाई से देखा जा सके, जिसे देखने के लिए अतिरिक्त साहस जुटाना पड़े।

दुष्प्रेरक *वि.* (तत्.) बुरी प्रेरणा देने वाला, बुरे कार्यों के लिए उकसाने या भड़काने वाला विधि. अपराध के लिए उकसाने वाला *पुं.* इस प्रकार का व्यक्ति।

दुष्प्रेरण *पुं.* (तत्.) बुरी प्रेरणा देने का कार्य, बुरे कार्य के लिए प्रेरित करना या बढ़ावा देना विधि. अपराध के लिए प्रेरणा देना।

दुष्प्रेरणा *स्त्री.* (तत्.) दे. दुष्प्रेरण।

दुसह *पुं.* (तत्.) दे. दुःसह।

दुसही *वि.* (तद्.) 1. असहनशील 2. द्वेष रखने वाला, जलने वाला, उन्नति न देख सकने वाला।

दुसाखा *वि.* (तद्.) दो शाखाओं वाला।

दुसाध *पुं.* (देश.) जाति विशेष, एक जाति जो सूअर पालती है।

दुसाला *वि.* (फा.) दो वर्ष का, दो वर्ष आयु वाला, दो वर्ष पुराना, प्रति दो वर्ष पर होने वाला *पुं.* (फा.) दे. दुशाला।

दुसूती *वि.* (तद्.) जिसके ताने और बाने दोनों में दोहरा सूत लगा हो *स्त्री.* इस प्रकार की चादर या या कपड़ा।

दुस्कर *वि.* (तद्.) दे. दुष्कर।

दुस्तर *वि.* (तत्.) जहाँ तैरना कठिन हो, जिसे पार करना कठिन हो, जिससे छुटकारा पाना कठिन हो।

दुस्त्यज *वि.* (तत्.) जिसे छोड़ना (त्याग करना) कठिन हो।

दुस्थिति *स्त्री.* (तत्.) 1. बुरी हालत, दुर्दशा, व्यवस्था ठीक न होने का भाव 2. बुरे दिन, दुर्दिन, अस्वस्थता या निर्धनता के दिन।

दुस्पर्श *वि.* (तत्.) जिसे स्पर्श न किया जा सके जैसे- आकाश दुस्पर्श।

दुस्पर्शा *स्त्री.* (तत्.) 1. काँटेदार पौधे जिन्हें स्पर्श न किया जा सके 2. ऐसे पौधे, फली या बीज जिन्हें स्पर्श करने से खुजली या व्रण हो जाता हो जैसे- जवास, केवाँच, भटकटैया आदि।

दुस्संधि *स्त्री.* (तत्.) किसी आपराधिक कृत्य के लिए दो या अधिक लोगों के बीच रची गई योजनाबद्ध प्रक्रिया, दुरभिसंधि।

दुस्सह *वि.* (तत्.) जिसे सह पाना कठिन हो, असह्य, दुःसह।

दुस्साध्य *वि.* (तत्.) (ऐसा मामला) जो इतना बिगड़ गया हो कि अब उसे ठीक करना संभव न हो।

दुस्साहस *पुं.* (तत्.) 1. परिणाम की चिंता किए बिना आवेश में आकर किया गया प्रयत्न 2. गलत काम के लिए किया गया साहस, अनधिकृत प्रयास।

दुस्स्वप्न *पुं.* (तत्.) बुरा सपना, डरावना सपना, बुरा फल देने वाला स्वप्न।

दुहत्था *वि.* (तद्.) 1. दो, हत्थों (मूठों या दस्तों) वाला, जिसमें दो हत्थे हों 2. दोनों हाथों से प्रयोग किया जाने वाला।

दुहना *स.क्रि.* (तत्.) 1. गाय-भैंस आदि दुधारू पशुओं का दूध निकालना 2. ला.अर्थ. किसी व्यक्ति से लाभ उठाना 3. किसी का शोषण करना मुहा. दुह लेना- अधिक से अधिक लाभ ले लेना, कुछ भी शेष न छोड़ना।

दुहरा *पुं.* (तत्.) दे. दोहरा।

दुहराना *स.क्रि.* (तत्.) 1. दुहरा या दोहराना, किसी बात को दूसरी बार या पुनःपुनः कहना 2. अपने लिखे हुए को पुनः पढ़ना (जिससे गलती न रह जाए) 3. किसी काम को पुनः करना, पुनरावृत्ति करना 4. दुगुना करना।

दुहरी *वि.* (तद्.) 1. दो परतों वाली जैसे- दुहरी चादर 2. दो पक्षों वाली जैसे- दुहरी भूमिका 3. दो गुनी जैसे- दुहरी दक्षिणा *पुं.* दुहरा तु. इकहरा।

दुहाई *स्त्री.* (तद्.) 1. दुहने की क्रिया 2. दुहने की मजदूरी 3. सहायता के लिए पुकार लगाना 4. कोई घोषणा, मुनादी, यशोगाथा 5. शपथ, सौंगध, कसम मुहा. दुहाई देना- बचाने के लिए पुकारना, दुहाई मचना- हाहाकार मच जाना।

दुहिता *स्त्री.* (तत्.) पुत्री, सुता, तनया, बेटी।

दुहु *वि.* (तद्.) दोनों।

दुहुधा/दुहुँधा *क्रि.वि.* (तद्.) दोनों प्रकार से, दोनों ओर से।

दुहेला *वि.* (तद्.) 1. दुःख भरा, कष्टों से युक्त 2. कठिन, दुर्गम 3. दुःखी।

दू *वि.* (तद्.) दो (ग्रामीण भाषा में प्रयुक्त)।

दूआ *पुं.* (तद्.) 1. ताश के पत्तों में से दो के अंक वाला पत्ता, दुक्का 2. पासे में वह दाँव जब ऊपर दो बिंदियाँ दिखें 3. कौड़ियों के खेल में दो कौड़ियों का खुलना 4. दूसरा, दूजा।

दूकान *स्त्री.* (फा.) दे. दुकना।

दूकानदार *पुं.* (तत्.) दे. दुकानदार।

दूकानदारी *पुं.* (फा.) दे. दुकानदारी।

दूखन *पुं.* (तद्.) दे. दूषण।

दूज *स्त्री.* (तद्.) चाँद्र मास के किसी पक्ष की दूसरी तिथि, द्वितीया मुहा. दूज का चाँद होना- कभी कभी (बहुत कम) दिखना (वस्तुतः मुसलमानों का त्यौहार ईद-उल-फितर दूज की तिथि को ही पड़ता है और उस दिन चंद्रमा कभी-कभार ही दिखलाई पड़ता है)।

दूजा *वि.* (तद्.) दूसरा।

दूत *पुं.* (तत्.) 1. संदेश पहुँचाने वाला व्यक्ति, हरकारा 2. आधिकारिक रूप से भेजा गया प्रतिनिधि जैसे- राजदूत।

दूतकर्म *पुं.* (तत्.) दूत का कार्य।

दूतकाव्य *पुं.* (तत्.) काव्यों का वह प्रकार जिसमें किसी संदेश को किसी वाहक/दूत के माध्यम से अन्यत्र भेजा जाता है, संस्कृत में ऐसे काव्यों की परंपरा रही है।

दूतमंडल *पुं.* (तत्.) राज. किसी देश द्वारा दूसरे देशों में समझौता करने, संबंध स्थापित करने आदि उद्देश्यो की पूर्ति हेतु आधिकारिक रूप से भेजा गया प्रतिनिधिमंडल।

दूतालय *पुं.* (तत्.) दे. दूतावास।

दूतावास *पुं.* (तत्.) 1. विदेशों में राजदूत के रहने का स्थान या कार्यालय 2. अपने देश में विदेशी राजदूतों का कार्यालय टि. राष्ट्रमंडलीय देशों के राजदूतों को उच्चायुक्त/हाई कमिश्नर और उनके कार्यालयों को उच्चायोग/हाईकमीशन कहा जाता है।

दूतिका *पुं.* (तत्.) दे. दूती।

दूती *स्त्री.* (तत्.) 1. महिला दूत 2. प्रेमी तथा प्रेमिका के प्रेम संदेशों को एक-दूसरे तक पहुँचाने वाली स्त्री।

दूध *पुं.* (तद्.) 1. स्तनपाई प्राणियों में स्त्री (मादा) के स्तनों से निकलने वाला सफेद द्रवपदार्थ जिसे उसके बच्चे (ठोस पदार्थ ग्रहण करने की आयु तक) पोषक आहार के रूप में पीते हैं 2. कच्चे अन्न के दानों या कुछ वृक्षों से निकलने वाला सफेद द्रवपदार्थ, पय, दुग्ध मुहा. दूध उतरना-पुत्र स्नेह के कारण स्तनों में दूध का आ जाना, मुहा. दूध का उबाल- क्षणिक आवेश जैसे- दूध के उबलने पर पानी का एक छींटा उसे शांत दूर कर देता है; दूध का जला-सामान्य व्यक्ति से भी जिसे धोखा मिला हो; दूध का दूध और पानी का पानी होना- सचमुच न्याय होना; दूध की मक्खी- निकृष्ट या निरुपयोगी; दूध के दाँत- जन्म के बाद पहली बार निकलने वाले दाँत, पाँच-छह वर्ष की आयु में ये दाँत गिर जाते हैं और उनके स्थान पर नए मजबूत दाँत निकलते हैं, बच्चा या अबोध होने का प्रतीक; दूध के दाँत टूटना- बचपन की समाप्ति और समझदारी का प्रारंभ जैसे- अभी तो दूध के दाँत नहीं टूटे; दूध छुड़ाना- माँ का दूध पीने की आदत छुड़ाना; दूध तोड़ना- किसी दुधारू पशु का दूध कम देने लगना; दूध देने वाली गाय- वह जिससे किसी प्रकार का लगातार लाभ मिलने लगा हो; दूध फटना- दूध का जल अंश और ठोस भाग अलग हो जाना; दूध फाड़ना- नींबू का रस इत्यादि मिलाकर दूध को फटने देना; दूधों नहाना पूतों फलना- सुख-संपत्ति और पुत्र-पौत्रों से घर भर जाना।

दूध-पूत *पुं.* (तद्.) धन-धान्य और बेटे-बेटी-नाती-पोतों से युक्त होने की स्थिति।

दूध-बहिन *स्त्री.* (तद्.) अपनी माँ का दूध पीने वाली या मानी जाने वाली बहन।

दूध-भाई *पुं.* (तद्.) एक माँ का दूध पीकर पले-बढ़े भाई जो सगे न हों।

दूधमापी *पुं.* (तद्.) दूध का गुरुत्व या गाढ़ापन अथवा शुद्धता मापने का यंत्र।

दूधमुँहा *वि.* (तत्.) वह (बालक) जो अभी दूध ही पी रहा है अर्थात् नन्हा बालक।

दूधवाला *वि.* (तद्.) 1. दूध बेचने वाला, दूध का कारोबार करने वाला 2. जिसमें से दूध निकलता हो ऐसा (वृक्ष आदि)।

दूधाधारी *वि.* (तद्.) 1. दूध पर ही आधारित रहने वाला 2. आहार में केवल दूध ग्रहण करने वाला।

दूधाहारी *पुं.* (तद्.) दे. दूधाधारी।

दूधिया *वि.* (तद्.) 1. दूध से संबंधित, दूध से बना जैसे- दूधिया हलवा, दूधिया भाँग 2. दूध के रंग वाला 3. कच्चा, दूध से युक्त 4. दूध वाला, दूध बेचने वाला *स्त्री.* (देश.) 1. एक तरह का सफेद पत्थर, सफेद मिट्टी 2. एक प्रकार की सफेद घास, दूधी घास, श्वेत दूर्वा।

दूधियापन *पुं.* (तद्.) अपारदर्शी चमकीली दूध जैसी सफेदी, श्वेत रंग की दीप्ति जैसे- ट्यूबलाइट या मोती की सफेदी, मणियों से निकलने वाली सफेद किरणों की चमक।

दून *स्त्री.* (तद्.) 1. दुगुना होने का भाव, जैसे- बाजार-भाव का दुगुना होना, दोहरापन जैसे- चार दूने आठ मुहा. दून की हाँकना- डींग हाँकना/मारना 2. पहाड़ों से घिरा हुआ चौड़ा स्थान, द्रोणि,दोने जैसे आकार वाला *वि.* दुगुना, दोहरा।

दूना *वि.* (तद्.) दुगुना, दोगुना।

दूब *स्त्री.* (तद्.) मैदान में फैलने वाली एक विशिष्ट जाति की प्रसिद्ध हरी घास जो प्राय: घरों के लॉन या मैदानों में लगाई जाती है। यह घास धार्मिक दृष्टि से भी उपयोगी है तथा गणेश को विशेष प्रिय है।

दूबस्थल *पुं.* (तद्.) घरों के आसपास या पार्कों आदि में बने घास से ढके सुरक्षित मैदान, जिनका विधिवत रख-रखाव किया जाता है।

दूबे *पुं.* (तद्.) ब्राह्मणों की एक उपाधि, द्विवेदी, दुबे तु. चौबे।

दूभर *वि.* (तद्.) अत्यंत कठिन, भारी, सहन न करने योग्य मुहा. जीना दूभर हो जाना-जीवन बिताना कठिन हो जाना।

दूर *वि.* (तत्.) 1. जो अत्यंत दूरी पर या फासले पर स्थित हो 2. काल की दृष्टि से आगे या पीछे की ओर होने वाला, सुदूर भविष्य या सुदूर भूतकाल में *क्रि.वि.* 1. देश-काल की दृष्टि से फासले पर 2. अलग, पृथक् जैसे- यह कथन सच्चाई से दूर है विलो. निकट, पास मुहा. दूर करना- अपने पास से हटाना या अलग करना; दूर की कहना- बहुत सूझबूझ वाली बात कहना, आगे की बात सोचकर कहना; दूर की बात- आगे आने वाले समय की बात, सामान्य बुद्धि से समझ न आने वाली बात; दूर की सोचना-बहुत आगे की सोचना; दूर भागना- बचने की कोशिश करना; दूर होना- अलग हो जाना, समाप्त हो जाना जैसे- संदेह दूर होना।

दूरगामी *वि.* (तत्.) 1. लंबा सफर करने वाला, दूर तक जाने वाला 2. लंबे समय तक या लंबे समय बाद असर करने वाला।

दूरचिकित्सा *स्त्री.* (तत्.) ऐसी चिकित्सा या चिकित्सा पद्धति जिसके अनुसार रोगी के सामने या निकट न होने पर भी रोग का निदान किया जा सके।

दूरचित्र *पुं.* (तत्.) तार के माध्यम से प्राप्त चित्र। telephoto

दूरतर संतति *पुं.* (तत्.) ऐसे वंशज जो स्वयं कई पीढ़ी दूर के हों।

दूरदर्शक *वि./पुं.* (तत्.) 1. दूर की वस्तुओं को देखने वाला, दूरदर्शी, विद्वान 2. दूर की वस्तुओं को दिखलाने वाला उपकरण, दूरबीन 3. दूरदर्शक यंत्र, टेलीविजन सेट, दृश्य बिंबों को रेडियो तरंगों के माध्यम से प्राप्त करके उन्हें पुन: देखने के लिए बनाया गया यंत्र 4. दूर तक देखने वाले प्राणी जैसे- कबूतर, गिद्ध।

दूरदर्शन *पुं.* (तत्.) 1. दृश्य-श्रव्य कार्यक्रमों एवं समाचारों आदि को रेडियो तकनीक के माध्यम से दूरस्थ स्थानों तक पहुँचाने के लिए बनाई गई सरकारी संस्था 2. दूर तक देखने की क्रिया या भाव।

दूरदर्शन/चलचित्र *पुं.* (तत्.) दूरदर्शन अर्थात् टेलीविजन पर दिखाने के लिए बनाई गई फिल्म।

दूरदर्शन पत्रकारिता *स्त्री.* (तत्.) दृश्य-श्रव्य साधनों के अनुरूप दूरदर्शन तंत्र के लिए समाचार-संकलन, समाचार लेखन, समाचार-संपादन, समाचार वाचन, वार्ता, साक्षात्कार आदि को संयोजित करने की कला या तकनीक। television journalism

दूरदर्शिता *स्त्री.* (तत्.) दूर की बात का विचार पहले से ही कर लेने की शक्ति या गुण।

दूरदर्शी *वि.* (तत्.) 1. दूर तक देख सकने वाला 2. आने वाले काल या होने वाले परिणामों का विचार कर लेने वाला, दूरंदेश, दूरंदाज।

दूरदृष्टि *वि.* (तत्.) 1. दूर तक देख सकने वाला 2. आयु. ऐसा (रोगी) जो निकट की छोटी वस्तुओं को स्पष्ट न देख सके या जिसे छोटे अक्षर पढ़ने में कठिनाई हो।

दूरदृष्टिता *स्त्री.* (तत्.) 1. आयु. केवल दूरस्थ वस्तुओं को ही ठीक से देख पाने की स्थिति 2. दूर की सोचने की क्षमता तु. निकटदृष्टिता।

दूर नियंत्रण *पुं.* (तत्.) कार्य के स्थान पर उपस्थित न रहकर भी यंत्रों आदि की सहायता से कार्य पर रखा जाने वाला नियंत्रण या देख-रेख।

दूरबीन *स्त्री.* (फा.) वह यंत्र जिससे दूर की वस्तुएँ पास और बड़ी दिखाई देती हैं। telescope

दूरभाष केंद्र *पुं.* (तत्.) वह कार्यालय जहाँ से संबंधित क्षेत्र के समस्त दूरभाष यंत्रों का संचालन, ध्वनि संकेतों के ग्रहण-प्रेषण-प्रसारण आदि एवं पूरी व्यवस्था की समुचित देखरेख की जाती है। telephone exchange

दूरमापी *वि.* (तत्.) किसी ज्ञात स्थान के कोणीय आयतन के आधार पर विद्युत या रेडियो तरंगों की सहायता से अज्ञात दूरी नापने का यंत्र जिसकी की सहायता से ग्रहों एवं तारों की दूरियाँ मापी जाती हैं। telemeter

दूरमारक *वि.* (तत्.) दूर तक मार करने वाला (अस्त्र)।

दूरमिति *स्त्री.* (तत्.) मौसम विज्ञान, अंतरिक्ष यात्रा आदि के संबंध के आँकड़े जुटाने तथा उनका अनुवीक्षण करते रहने के लिए उन्नत स्वचालित संचार-तंत्र की सहायता से दूरस्थ परिघटनाओं की जानकारी ग्राही यंत्र में प्राप्त करने और उसका प्रेषण करने की प्रविधि या प्रक्रिया। telemetry

दूरमुद्रक *वि.* (तत्.) वह यंत्र जिसके द्वारा एक स्थान पर टंकित या अभिलिखित सामग्री दूरस्थ किसी स्थान पर मुद्रित हो जाती है teleprinter

दूरमुद्रण *पुं.* (तत्.) दूरमुद्रक अथवा दूरमुदित्र (टेलीप्रिंटर) की सहायता से पाठ्य-सामग्री को दूरस्थ दूसरे दूरमुद्रित्र पर भेजना और वहाँ उसे मुद्रित रूप में ग्रहण करना। teleprinting

दूरलेख *पुं.* (तत्.) दूरलेखी या दूरलेखित्र से भेजी गई टेलीग्राफ द्वारा एक स्थान से प्रेषित सूचना जो विद्युत तरंगों के माध्यम से अन्यत्र छप जाती है।

दूरलेखी *वि.* (तत्.) दूर लेख के द्वारा होने या उससे संबंध रखने वाला, telegraphee *पुं.* दूरलेख प्रेषित करने वाला यंत्र। telegraph machine

दूरवर्ती *वि.* (तत्.) दूरी पर स्थित, दूरस्थ।

दूरवासी *वि.* (तत्.) जिस नगर आदि में गृह, संपत्ति आदि हो, उस नगर में न रहकर अन्य नगर में रहने वाला, अन्यत्रवासी।

दूरवासी स्वामित्व *पुं.* (तत्.) गृह, संपत्ति का वह मालिकाना हक जो उसके स्वामी के अन्यत्र रहने पर भी रहता है।

दूरवीक्षण *पुं.* (तत्.) दूरदर्शक यंत्र। television

दूरवेधी *वि.* (तत्.) दूर से ही लक्ष्य का वेध करने वाला (अस्त्र) जैसे- दूरवेधी मिसाइल।

दूरव्यापी *वि.* (तत्.) 1. दूरी तक व्याप्त या फैला हुआ 2. दूर तक पहुँचने वाला।

दूरसंचार *पुं.* (तत्.) संचार का वह विज्ञान या प्रौद्योगिकी जिसके अंतर्गत बिंबों, संकेतों, ध्वनियों आदि का अभिग्रहण और पुन:प्रेषण या प्रसारण इलैक्ट्रॉनिकी के माध्यम से त्वरित गति से किया जाता है, दूरदर्शन, दूरभाष, दूरमुद्रक, दूरलेख, रेडियो तथा अत्याधुनिक अंतर्जाल (इंटरनेट), ब्लॉग इत्यादि इसी के उदाहरण हैं।

दूरस्थ *पुं.* (तत्.) दे. दूरवर्ती।

दूरस्थ शिक्षा *स्त्री.* (तत्.) अध्यापन की वह पद्धति जिसके अंतर्गत दूरस्थ शिक्षा केंद्र से मुद्रित एवं दृश्य-श्रव्य सामग्री आदि के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था होती है और जिसमें अन्यत्र कार्य करते हुए भी अपनी समय-सुविधा के अनुसार विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर सकें पर्या. पत्राचार शिक्षा।

दूरस्थित *पुं.* (तत्.) दे. दूरवर्ती।

दूरागत *वि.* (तत्.) दूर से आया हुआ।

दूरान्वय *पुं.* (तत्.) कर्ता-क्रिया या विशेषण-विशेष्य की अन्विति करते समय दोनों पदों का इतनी दूरी पर होना कि अर्थ समझने में कठिनाई हो। यह रचना का दोष माना जाता है।

दूरारंभ पैरा *पुं.* (तत्.+अं.) पुस्त. लिखते या टंकण करते समय वह अनुच्छेद जिसमें सामान्य से अधिक हाशिया छोड़ा गया हो।

दूरारूढ़ *वि.* (तत्.) 1. दूरी पर या ऊँचाई पर पहुँचा हुआ 2. (पहुँचना कठिन होने के कारण) कठिन, कष्टदायक।

दूरारूढ कल्पना *स्त्री.* (तत्.) परस्पर असंबद्ध परिघटनाओं को तारतम्य में बाँधने का प्रयास करते हुए की गई कल्पना।

दूरी *स्त्री.* (तद्.) दूर होने का भाव, दो व्यक्तियों/स्थानों, कालों/विचारों आदि के बीच होने वाला अंतर या फासला।

दूरीकरण *पुं.* (तद्.) दूर करना, अंतर बढ़ाना।

दूर्वा *पुं.* (तत्.) दे. दूब।

दूलह *पुं.* (तत्.) दे. दुलहा।

दूल्हा *पुं.* (तत्.) दे. दुलहा।

दूषक *वि.* (तत्.) 1. दोष उत्पन्न करने वाला 2. दोष दिखलाने वाला, आक्षेप करने वाला 3. दुष्ट स्वभाव वाला, दोष न होते हुए भी दोषी बतलाने वाला 4. अपराध करने वाला, अपराध की शिक्षा देने वाला।

दूषण *पुं.* (तत्.) 1. दोषयुक्त कर देना 2. किसी के दोष दिखाना 3. किसी पर दोष मढ़ना, आक्षेप करना 4. अपराध करना या करवाना, नीति या विधि (कानून) के विपरीत आचरण 5. दोष।

दूषित *वि.* (तत्.) 1. दोषयुक्त 2. दोष उत्पन्न करने वाला (पदार्थ) 3. कलंकित।

दूषित आशय *पुं.* (तत्.) विधि. किसी आपराधिक कृत्य को करने या करवाने के लिए सोच समझकर योजना बनाने का उद्देश्य।

दूसरा *वि.* (तद्.) 1. क्रम में एक के बाद आने वाला 2. उपस्थित समूह से भिन्न, अलग, अन्य जैसे- तुम अपने दूसरे चित्र भी तो दिखलाओ, *सर्व.* अन्य बाहरी व्यक्ति जैसे- इस मामले में दूसरों को नहीं पड़ना चाहिए *सं.* (तद्.) क्रिके. गेंदबाज द्वारा गेंद करने की वह पद् पद्धति या की गई वह गेंद जो दिशा बदलने का आभास देकर सीधी निकल जाए। भारतीय खिलाड़ी हरभजन सिंह इसके विशेषज्ञ माने जाते हैं।

दृक् *पुं.* (तत्.) आँख, दृष्टि।

दृक्पात *पुं.* (तत्.) किसी को देखना, निगाह डालना, दृष्टिपात।

दृग *पुं.* (तत्.) दे. दृक्।

दृग्गोचर *वि.* (तत्.) दे. दृष्टिगोचर।

दृढ़ *वि.* (तत्.) 1. मजबूत, हृष्टपुष्ट, शक्तिशाली जैसे- दृढ़ दीवार, दृढ़ माँसपेशियाँ, दृढ़ शरीर 2.

जिसे डिगाया न जा सके, स्थिर जैसे- दृढ़ आस्था 3. जिसमें शिथिलता न आए जैसे- दृढ़ निश्चय 4. पक्का, मजबूती से बँधने वाला जैसे- दृढ़ बंधन 5. कठोर, जिसे पिघलाया न जा सके जैसे- दृढ़ हृदय।

दृढ़ ऊतक *पुं.* (तत्.) ऊतकों के पाँच प्रकारों में से एक, मृदु ऊतकों को सुरक्षा प्रदान करने वाली कोशिकाओं का समूह जिसकी भित्तियाँ मोटी होती हैं तु. मृदूतक।

दृढ़कारी *वि.* (तत्.) 1. दृढ़ या मजबूत करने वाला, मजबूती देने वाला 2. दृढ़तापूर्वक कार्य करने वाला।

दृढ़चेता *वि.* (तत्.) 1. पक्के मन वाला, बाधाओं से न डिगने वाला 2. दृढ़निश्चयी, इरादे न बदलने वाला।

दृढ़तः *क्रि.वि.* (तत्.) दृढ़ता से; दृढ़तापूर्वक, दृढ़ रहते हुए।

दृढ़तर *वि.* (तत्.) तुलनात्मक दृष्टि से अधिक दृढ़।

दृढ़ता *स्त्री.* (तत्.) दृढ़ होने का भाव, कठोरता, स्थिरता, प्रतिबद्धता, मजबूती, कसाव।

दृढनिश्चय *वि.* (तत्.) पक्के इरादे वाला, दृढ संकल्प करने वाला।

दृढफल *पुं.* (तत्.) कृषि. एककोशिकीय, कठोर, शुष्क तथा अस्फुटनशील (न फटने वाला) फल जैसे- सुपारी।

दृढ़व्रत *वि.* (तत्.) दे. दृढ़निश्चय।

दृढ़ीकरण *पुं.* (तत्.) दृढ़ या मजबूत करने/बनाने की क्रिया या भाव।

दृत *वि.* (तत्.) 1. आदरप्राप्त, सम्मानित 2. फाड़ा हुआ, विदीर्ण।

दृप्त *वि.* (तत्.) 1. चमकदार, तेजोमय, दीप्त 2. गर्वयुक्त, अहंकारग्रस्त 3. प्रसन्न, हर्षित।

दृश्य *पुं.* (तत्.) 1. जो दिखता है, देखने का विषय 2. झाँकी, देखने के लिए विशेष स्थान जैसे- पर्वतों का दृश्य, झरने का दृश्य (मनोरम) दृश्यावली, नजारा 3. देखने योग्य स्थान या घटना इत्यादि 4. दर्शन. संसार जो दिखता है 5. नाटक इत्यादि का वह भाग जो एक अभिनय के चरण-विशेष या मंच पर प्रदर्शित स्थिति-विशेष का सूचक होता है *वि.* 1. देखने योग्य, दर्शनीय 2. जिसे मानव-आँखों से देखा जा सके जैसे- दृश्य, स्पेक्ट्रम 3. काव्य. काव्य-रचना का वह प्रकार जो देखा जा सके दृश्य काव्य जैसे- नाटक आदि)।

दृश्यता *स्त्री.* (तत्.) 1. दिखलाई पड़ने का भाव या स्थिति 2. जहाँ तक मानव-आँखों से बिना किसी अन्य साधन की सहायता से देखा जा सके जैसे- कुहरे में दृश्यता कम हो जाती है।

दृश्यदर्शी *वि.* (तत्.) 1. कैमरे या मोबाइल इत्यादि में चित्र खींचने के लिए इच्छित दृश्य दिखलाने वाला चौखटा या छिद्र 2. किसी दूर के दृश्य या अत्यंत सूक्ष्म दृश्यों को देखने के प्रयुक्त किया जाने वाला उपकरण जैसे- दूरदर्शक या सूक्ष्मदर्शक यंत्र।

दृश्यमान *वि.* (तत्.) दिखलाई पड़ता हुआ, देखा जाता हुआ।

दृश्य-श्रव्य *वि.* (तत्.) प्रशा. जो एक साथ देखा व सुना जा सके जैसे- चलचित्र, दूरदर्शन आदि।

दृश्यमान कारण *पुं.* (तत्.) विधि. जो वास्तव में कारण न होते हुए भी कारण जैसा प्रतीत होता है।

दृश्य-श्रव्य विधि *स्त्री.* (तत्.) वह पद्धति जिसमें ध्वनि और चित्रों के माध्यम से कोई बात सिखलाई जाती है।

दृश्य-श्रव्य साधन *पुं.* (तत्.) शिक्षा, विज्ञापन या मनोरंजन आदि के लिए प्रयुक्त वह साधन जिसमें दृश्य और श्रव्य दोनों प्रकार की सामग्री हो।

दृषद् *पुं.* (तत्.) पत्थर का टुकड़ा, शिलाखंड, शिला, शिला से बनी चक्की, सिल-बट्टा, लोढ़ा आदि।

दृष्ट *वि.* (तत्.) देखा हुआ, ज्ञात, अनुभूत, भोगा हुआ *पुं.* दर्शन, ज्ञान, अनुभूति, भय।

दृष्टवत् *वि.* (तत्.) दृष्ट के समान, देखे हुए जैसा, जैसा पहले अनुभव किया हो वैसा ही।

दृष्टांत *पुं.* (तत्.) 1. किसी बात को समझाने के लिए प्रस्तुत की गई कोई समानधर्मी घटना, कथा या अन्य कोई बात टि. प्राय: किसी नियम, सिद्धांत या रुखे विषय को स्पष्ट करने के लिए दृष्टांतों का प्रयोग किया जाता है 3. न्याय जैसे- अंध-चटक न्याय (अंधे के हाथ बटेर लग जाना) 3. विधि. किसी नियम या कानून को स्पष्ट करने के लिए प्रस्तुत उदाहरण 4. साहि. एक सादृश्यमूलक अलंकार जिसमें उपमेय-उपमान के सामान्य गुणधर्म भिन्न होते हुए भी बिंब-प्रतिबिंब भाव झलकता हो 5. उदाहरण, मिसाल।

दृष्टार्थ *वि.* (तत्.) जिसका अर्थ स्पष्ट हो, व्यावहारिक।

दृष्टि *स्त्री.* (तत्.) 1. आँखों से देखकर ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति, देखने की शक्ति 2. देखने की वृत्ति, नज़र, निगाह, विलोकन 3. किसी विशेष प्रकार की विचारधारा के अनुसार समझना जैसे- छात्रों की दृष्टि से यह कठिन है 4. सम्मति, विचार जैसे- मेरी दृष्टि से यह ठीक नहीं है 5. देखने का अवयव, नेत्र, आँख 6. देखने का प्रकार जैसे- गिद्ध-दृष्टि 7. ज्यो. ग्रहों की अच्छे-बुरे प्रभाव देने की शक्ति मुहा. दृष्टि फिरना- पहले जैसा भाव न रहना; दृष्टि रखना- ध्यान रखना, निगरानी करना; दृष्टि लगाना- लगातार एकटक देखना, प्रेम करना, किसी आशा में ताकना।

दृष्टिक *वि.* (तत्.) दृष्टि से संबंधित, प्रत्यक्ष।

दृष्टिक निरीक्षण *पुं.* (तत्.) निरीक्षक द्वारा केवल कागजपत्रों पर आधारित न रहते हुए अपनी आँखों से किया गया निरीक्षण।

दृष्टिकोण *पुं.* (तत्.) देखने एवं सोचने-समझने की दिशा, वह पहलू जिससे किसी बात पर विचार किया जाए, लिहाज जैसे- गुणवत्ता के दृष्टिकोण से कपड़ा बहुत अच्छा है पर मूल्य के दृष्टिकोण से खरीदने लायक नहीं है।

दृष्टिक्षेत्र *पुं.* (तत्.) मनो. वह पूरा क्षेत्र जहाँ तक दृष्टि जाती है। field of vision

दृष्टिक्षेप *पुं.* (तत्.) नजर डालना, दृष्टिपात।

दृष्टिगत *वि.* (तत्.) जो नजर आ गया हो, जो दिख गया हो।

दृष्टिगोचर *वि.* (तत्.) जिसे आँखों से देखा जा सकता हो, प्रत्यक्ष दिखने वाला।

दृष्टिदोष *पुं.* (तत्.) 1. देखने की क्रिया में होने वाला दोष, नेत्ररोग 2. दृष्टिकोण ठीक न होना 3. बुरी नजर।

दृष्टिनिपात *पुं.* (तत्.) दे. दृष्टिक्षेप।

दृष्टिपटल *पुं.* (तत्.) आयु. नेत्र गोलक के अंदरूनी भाग में स्थित परदा जिसके पीछे के भाग में देखी जाने वाली वस्तु का प्रतिबिंब बनता है और जिसे कोशिकाओं के माध्यम से मस्तिष्क तक पहुँचाया जाता है।

दृष्टिपात *पुं.* (तत्.) दृष्टि डालने की क्रिया या भाव, दृष्टि पड़ने की क्रिया या भाव।

दृष्टिपूत *वि.* (तत्.) अच्छी तरह देखकर जाँचा हुआ, परखा हुआ देखा-भाला।

दृष्टिबोध *पुं.* (तत्.) 1. साहि. कवि के विशिष्ट दृष्टिकोण की जानकारी 2. कवि द्वारा अपने विशिष्ट दृष्टिकोण को लेखनी के माध्यम से जनसामान्य तक पहुँचाना।

दृष्टिभ्रम *पुं.* (तत्.) भौ. दर्शक की आँखों को भ्रम में डालने वाला दृश्य जैसे- उदय-अस्त के समय सूर्य-चंद्र का अपेक्षाकृत बड़ा दिखना या मृगमरीचिका।

दृष्टिमंदता *स्त्री.* (तत्.) नजर कमजोर होने का भाव, कोई दृश्य स्पष्ट दिखने के स्थान पर अस्पष्ट या धुँधला दिखने का भाव पर्या. दृष्टिमंदत्व।

दृष्टिमांद्य *पुं.* (तत्.) दे. दृष्टिमंदता।

दृष्टिमापी *वि.* (तत्.) आयु. वह यंत्र जिससे दृष्टिमंदता को मापा जाता है जिससे उचित

क्षमता वाले लेंस या चश्मे का उपयोग किया जा सके।

दृष्टिमिति *स्त्री.* (तत्.) वह विद्या जिससे दृष्टिमंदता की कोटि या स्थिति या अन्य किसी नेत्रविकार की जाँच की जा सके।

दृष्टिरेखा *स्त्री.* (तत्.) 1. सै.वि. लक्ष्य और लक्ष्यवेधक (सैनिक) की आँख को मिलाने वाली वह काल्पनिक रेखा जो बंदूक में लक्ष्य देखने के लिए बने छिद्र/छिद्रों से होती हुई जाती है, यह रेखा शुद्ध होने पर ही अचूक लक्ष्यबेध हो सकता है 2. खगो. किसी आकाशीय पिंड को दूरबीन में स्थित निश्चित बिंदु से जोड़ने वाली सीधी काल्पनिक रेखा जिसके आधार पर उक्त पिंड की दिशा एवं दूरी का निर्धारण होता है।

दृष्टिरोध *पुं.* (तत्.) 1. दृष्टि (की क्रिया) का रुकना या रोका जाना 2. दृष्टि के कार्य में होने वाली बाधा।

दृष्टिविकार *पुं.* (तत्.) दृष्टि संबंधी कोई खराबी या रोग।

दृष्टिविक्षेप *पुं.* (तत्.) तिरछी नज़र से देखना, कनखियों से देखना, कटाक्ष।

दृष्टिविभ्रम *पुं.* (तत्.) लुभाने के लिए या आकर्षित करने के लिए प्रेम से देखने की क्रिया।

दृष्टिसृष्टिवाद *पुं.* (तत्.) दर्श. वह सिद्धांत जिसके अनुसार व्यक्ति स्वयं-अनुभूत तथ्यों, प्रसंगों तथा परिघटनाओं के आधार पर ही अवधारणा बनाता या निर्णय करता है।

दे *पुं.* (देश.) बंगाली कायस्थों की एक उपाधि स्त्री. (तद्.) देवी का संक्षिप्त रूप जैसे- मीनल दे, *स.क्रि.* देना क्रिया का आज्ञार्थक एकवचन का रूप जैसे- मेघा पानी दे *क्रि.वि.* देकर का संक्षिप्त रूप जैसे- वह भिखारी को पैसे दे आगे बढ़ गया।

देख *स.क्रि./अ.क्रि.* (तद्.) देखना क्रिया का आज्ञार्थक एकवचन का रूप *क्रि.वि.* देखकर जैसे- यह देख मैं क्रोधित हो उठा *स्त्री.* देखने का भाव, समासगत रूप जैसे- देखरेख, देखभाल, देख-जाँच कर।

देखना *स.क्रि.* (तद्.) 1. आँखों के माध्यम से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि की आकृति, विस्तार, रंग आदि का बोध प्राप्त करना 2. खोजना उदा. मैं कोश में अमुक शब्द का अर्थ देख रहा हूँ 3. परखना उदा. जरा देखिए, नोट असली है या नकली 4. निगरानी करिए उदा. देखना, दूध गरम करने रखा है 5. प्रबंध करना उदा. आजकल एक संस्था का काम देख रहा हूँ 6. सोचना-समझना उदा. जरा इस निबंध को देखिए, कैसा बना है 7. निरीक्षण करना उदा. मैं संस्था का हिसाब-किताब देखना चाहता हूँ 8. अनुभव करना उदा. देखिए कितनी ठंड है 9. प्रतिक्रिया करना, देख लेना उदा. देख लूँगा 10. निर्णय करना उदा. आप स्वयं देख लीजिए किसकी गलती है मुहा. देखते की देखते- सबकी आँखों के सामने ही, तत्काल; देखते ही बनना- देखने में अत्यंत सुंदर, आकर्षक लगना।

देखभाल *स्त्री.* (तद्.) निगरानी, परवरिश, देख रेख निरीक्षण।

देखरेख *स्त्री.* (तद्.) निरीक्षण, व्यवस्था, देखभाल।

देखादेखी *क्रि.वि.* (तद्.) (किसी का) अनुकरण करते हुए *स्त्री.* एक-दूसरे को देखने का कार्य, साक्षात्कार।

देग *पुं.* (फा.) खाना पकाने का बड़ा बर्तन, बहुत बड़ा पतीला।

देगचा *पुं.* (फा.) छोटा देग।

देगची *स्त्री.* (फा.) बहुत छोटा देगनुमा बरतन।

देदीप्यमान *वि.* (तत्.) खूब चमकता हुआ, उत्साह युक्त।

देनदार *वि./पुं.* (तद्.+फा.) विधि./वाणि. कानून की दृष्टि से जो कर्जदार हो।

देनदारी *स्त्री.* (तद्.+फा.) देनदार होने की स्थिति, कर्ज, ऋण (जो चुकाना शेष हो)।

देना *स.क्रि.* (तद्.) 1. प्रदान करना, अपनी वस्तु का स्वामी किसी अन्य को बनाना 2. बेचना उदा. यहे कमीज कितने की दोगे 3. अर्पित करना, चढ़ाना जैसे- आहुति देना, दक्षिणा देना 4. बाँटना जैसे- प्रसाद देना, भीख देना 5. कुछ समय के लिए अन्य के पास रखना उदा. धोबी को कपड़े देना मत भूलना, अन्य कुछ 6. आशीर्वाद देना, बधाई देना, सलाह देना, समय देना, कष्ट देना, धन्यवाद देना, सुख देना, तनख्वाह देना, अंडे देना, बच्चे देना इत्यादि 7. कार्य पूर्ण करने के अर्थ में प्रयो. उसने शत्रु को मार दिया, जो भी काम उसे दें वह मिनटों में कर देता है विलो. लेना तु. लेना-काम कर दिया-काम कर लिया।

देय *वि.* (तत्.) देने योग्य, दातव्य, लौटाने योग्य।

देयक *पुं.* (तत्.) बीजक।

देयता *पुं.* (तत्.) दे. देनदारी।

देयादेय *पुं.* (तत्.) 1. देय राशि तथा प्राप्य राशि 2. निर्गम व प्राप्ति जैसे- पुस्तक लेने वालों को पुस्तकालय से पुस्तकें पढ़ने के लिए देना (निर्गम) तथा उनसे वापस प्राप्त करना (प्राप्ति)।

(प्राप्ति)।

देर *स्त्री.* (फा.) आवश्यकता से अधिक समय होने का भाव, विलंब।

देरसवेर *क्रि.वि.* (फा.) ठीक समय से कुछ पहले या बाद में।

देरी *स्त्री.* (फा.) दे. देर।

देव *पुं.* (तत्.) 1. स्वर्ग में विचरण करने वाले देवता, परमात्मा 2. उपासना करने योग्य देवता, दिव्य शक्तियों से युक्त शक्तियाँ 3. राजाओं के लिए प्रयुक्त संबोधन (फा.) राक्षस, दैत्य, बड़े आकार का मनुष्य।

देव ऋण *पुं.* (तत्.) शास्त्रोक्त तीन ऋणों में से एक। इससे उऋण होने के लिए उपासना, यज्ञ आदि कर्म किए जाते हैं, अन्य दो ऋण पितृऋण और ऋषिऋण हैं।

देवकथा *स्त्री.* (तत्.) पुराणोक्त कथाएँ जिनमें देवताओं की वंशावली, कार्यों आदि के विषय में बतलाया गया है, शास्त्रकथा।

देवकर्म *पुं.* (तत्.) देवताओं को संतुष्ट करने के लिए किए जाने वाले कार्य जैसे- संध्या, पूजा, व्रत, उपवास, हवन आदि।

देवकी *स्त्री.* (तत्.) श्रीकृष्ण को जन्म देने वाली माता का नाम।

देवकीनंदन *पुं.* (तत्.) देवकी पुत्र, कृष्ण।

देवगण *पुं.* (तत्.) 1. देवताओं का समूह, द्वादश आदित्य, अष्टा वसु आदि देवों का समूह 2. ज्यो. अश्विनी, रेवती आदि नौ नक्षत्रों का समूह 3. देवताओं का अनुचर 4. शिव के गण जिनके प्रमुख गणेश माने जाते हैं।

देवगायक *पुं.* (तत्.) गंधर्व नामक एक जाति जिनका मुख्य कार्य गाना-बजाना माना जाता है।

देवगिरा *स्त्री.* (तत्.) देववाणी या देवभाषा अर्थात् संस्कृत।

देवगुरु *पुं.* (तत्.) बृहस्पति, देवताओं के गुरु।

देवगृह *पुं.* (तत्.) 1. पूजा का स्थान, मंदिर, महल 2. बिहार राज्य में स्थित एक प्राचीन शहर, देवघर।

देवतरु *पुं.* (तत्.) 1. स्वर्ग के वृक्ष, देवताओं के पेड़ 2. पीपल का पेड़ दे. देवद्रुम।

देवतर्पण *पुं.* (तत्.) देवताओं की संतुष्टि के लिए जल देने की क्रिया।

देवता *पुं.* (तत्.) 1. विविध शक्तियों के अलग-अलग स्वामी जैसे- पवन देव 2. प्रकृति 3. दैवी शक्तियाँ ला.अर्थ. बहुत सीधा-सच्चा व्यक्ति *स्त्री.* देव-शक्ति, देवत्व मुहा. देवता का कूच कर जाना- त्रस्त हो जाना।

देवत्व *पुं.* (तत्.) देवताओं की शक्ति।

देवदार *पुं.* (तत्.) हिमालय पर्वत पर 6000 से 8000 फुट की ऊँचाई पर होने वाला एक ऊँचा वृक्ष जिसकी लकड़ी अत्यंत मजबूत मानी जाती है।

देवदूत *पुं.* (तत्.) ईश्वर का दूत, ईसाई मत या इस्लाम के मत में पैंगबर या फरिश्ता।

देवदेव *पुं.* (तत्.) देवों के भी देव, त्रिदेव- ब्रह्मा, विष्णु, महेश।

देवद्रुम *पुं.* (तत्.) देवदारु/देवदार नामक वृक्ष।

देवनागरी *स्त्री.* (तत्.) संस्कृत, हिंदी, मराठी, नेपाली आदि भाषाओं की लिपि।

देवनिंदक *वि.* (तत्.) नास्तिक, जो वेदों या देवों को नहीं मानता है।

देवपथ *पुं.* (तत्.) 1. जिस मार्ग से देवता आते हों, आकाशमार्ग 2. आकाशगंगा 3. देवमंदिर का मार्ग।

देवपूजा *स्त्री.* (तत्.) 1. देवताओं की पूजा, धूप-दीप-नैवेद्य आदि द्वारा की जाने वाली भाव भक्तिमय पूजा 2. मूर्तिपूजा।

देवपूजावाद *पुं.* (तत्.) देवी-देवताओं की पूजा में विश्वास रखने वाली विचारधारा।

देवबाँस *पुं.* (तत+तद्.) एक प्रकार का बाँस जो अपेक्षाकृत नरम होता है, जिसके कल्लों का अचार डाला जाता है।

देवभाषा *स्त्री.* (तत्.) संस्कृत भाषा।

देवभूमि *स्त्री.* (तत्.) देवताओं का कथित आवास-स्थान, स्वर्ग।

देवमाता *स्त्री.* (तत्.) देवताओं की माता, अदिति।

देवमुनि *पुं.* (तत्.) देवर्षि, नारद का एक नाम।

देवमूर्ति *स्त्री.* (तत्.) किसी देवता विशेष की प्रतिमा।

देवयज्ञ *पुं.* (तत्.) प्रतिदिन किया जाने वाला हवन, अग्निहोत्र।

देवयात्रा *स्त्री.* (तत्.) धूमधाम के साथ उत्सव के रूप में किसी देवता की पालकी निकालने का कार्यक्रम।

देवयान *पुं.* (तत्.) 1. किसी देवता का वाहन या सवारी 2. दर्शन. आत्मा का शरीर त्यागकर ब्रह्मलोक जाने का मार्ग।

देवयोनि *पुं.* (तत्.) देवताओं से भिन्न यज्ञ, किन्नर आदि योनियाँ।

देवर *पुं.* (तत्.) पति का छोटा भाई तुल. जेठ।

देवर-विवाह-अधिकार *पुं.* (तत्.) कुछ जातियों में प्रचलित एक प्रथा जिसके अनुसार पति की मृत्यु हो जाने पर विशेषकर संतानहीनता की स्थिति में स्त्री को देवर के साथ विवाह का अधिकार होता है, यदि देवर भी इसके लिए सहमत हो।

देवराज *पुं.* (तत्.) देवताओं के राजा, इंद्र।

देवरानी *स्त्री.* (तत्.) देवर की पत्नी तु./विलो. जेठानी।

देवल *पुं.* (तत्.) 1. देवपूजा से निर्वाह करने वाला, ब्राह्मण, पुजारी 2. धार्मिक व्यक्ति 3. देवालय।

देवलोक *पुं.* (तत्.) दे. देवभूमि।

देववाणी *पुं.* (तत्.) दे. देवगिरा।

देवविद्या *स्त्री.* (तत्.) 1. दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार आत्मसाक्षात्कार द्वारा ब्रह्म का स्वरूप और उसके कार्यों को जानने की विद्या 2. निरुक्त नामक वेदांग।

देववृक्ष *पुं.* (तत्.) दे. देवद्रुम।

देवस्थल/देवस्थान *पुं.* (तत्.) मंदिर।

देवस्वम् *पुं.* (तत्.) मंदिरों आदि द्वारा प्राप्त चढ़ावे चढ़ावे की राशि।

देवांगना *स्त्री.* (तत्.) देवलोक की स्त्रियाँ, अप्सरा।

देवांश *पुं.* (तत्.) 1. आय का एक भाग जो देवता के लिए सुरक्षित रखा जाता है, धर्मदाय 2. किसी देवता के अंश से उत्पन्न 3. विष्णु का अंशावतार।

देवागम सिद्धांत *पुं.* (तत्.) एक सिद्धांत जिसके अनुसार राजसत्ता दैवी आदेश एवं व्यवस्था के अनुसार प्राप्त होती है।

देवात्मा *पुं./वि.* (तत्.) 1. देवता-स्वरूप, जो साक्षात् देवता के समान हो जैसे- देवात्मा हिमराज या देवात्मा संत 2. पीपल का वृक्ष।

देवाधिदेव *पुं.* (तत्.) देवता भी जिसकी आराधना करते हों, देवों के भी देव, विष्णु, शिव, सर्वोच्च देव।

देवाराधन/देवाराधना *स्त्री.* (तत्.) देवताओं की आराधना, देवताओं को प्रसन्न करने के लिए किए गए प्रयत्न।

देवार्पण *पुं.* (तत्.) देवता को किया गया समर्पण, देवता के लिए किया जाने वाला त्याग।

देवालय *पुं.* (तत्.) 1. वह भवन जहाँ देव प्रतिमा स्थापित कर उस देवता की आराधना की जाती हो 2. वह स्थान जहाँ इष्टदेव की आराधना, ध्यान आदि किया जाता हो जैसे- मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारा आदि 3. देवताओं का आवास, स्वर्ग।

देवालय-क्षेत्र *पुं.* (तत्.) जमीन का वह भाग जो किसी देवालय के स्वामित्व के अंतर्गत हो तथा देवालय के उपयोग में आता हो।

देवासुरवाद *पुं.* (तत्.) अच्छाई और बुराई के (या उनके देवताओं के) बीच होने वाले संघर्ष को मानने का सिद्धांत।

देवासुर संग्राम *पुं.* (तत्.) विभिन्न पौराणिक गाथाओं के अनुसार दैवी और आसुरी शक्तियों के बीच हुआ युद्ध।

देवेंद्र *पुं.* (तत्.) देवताओं के राजा, इंद्र, इंद्रदेव।

देवेश *पुं.* (तत्.) 1. दे. देवेंद्र 2. देवताओं के भी पूज्य देव जैसे- विष्णु, शिव।

देवोत्थान *पुं.* (तत्.) 1. देवताओं का योगनिद्रा से उठना या जाग्रत होना 2. पौराणिक मान्यतानुसार कार्तिक शुक्ल एकादशी को भगवान विष्णु का जागरण टि. हिंदू धर्म की मान्यता के अनुसार आषाढ़ शुक्ल एकादशी को विष्णु चार मास के लिए योगनिद्रा में चले जाते हैं तथा कार्तिक में पुनः जाग्रत हो जाते हैं।

देवोत्पत्तिशास्त्र *पुं.* (तत्.) विभिन्न पुराणों के अनुसार विभिन्न देवताओं की उत्पत्ति एवं उनकी वंशावली बतलाने वाला शास्त्र।

देश *पुं.* (तत्.) 1. भौगोलिक या राजनैतिक सीमाओं से घिरा हुआ स्थान-विशेष जिसकी अपनी संस्कृति, इतिहास और परंपराएँ हों 2. कोई निश्चित स्थान या जगह 3. कोई क्षेत्र-विशेष, प्रदेश 4. पैतृक स्थान या जन्म स्थान जैसे- वह इस समय देश गया हुआ है।

देशधर्म *पुं.* (तत्.) 1. किसी देश विशेष की धर्म तथा संस्कृति के अनुरूप आचरण 2. देश के प्रति उत्तरदायित्व का निर्वाह, देश के प्रति निष्ठा।

देशनिकाला *पुं.* (तत्.+तद्.) 1. देश से जबरन किसी को बाहर भेजने की क्रिया या भाव 2. किसी अपराधी या देशद्रोही को देश से बाहर भेजने का दंड।

देश प्रत्यावर्तन *पुं.* (तत्.) 1. राज. देश से बाहर गए हुए व्यक्ति को पुनः देश में वापस लाने की प्रक्रिया 2. अर्थ. देश की उस पूँजी को, जो बाहर चली गई हो, पुनः वापस स्वदेश में ले जाना। repatriation

देशकाल *पुं.* (तत्.) स्थान और समय, दिक्काल जैसे- देशकाल के अनुसार ही व्यवहार करना चाहिए।

देशगांधार *पुं.* (तत्.) संगी. सायंकाल के समय गाया जाने वाला राग विशेष, देश राग का एक विशेष प्रकार।

देशज *वि.* (तत्.) 1. प्रशा. (अपने) देश में ही जन्मा (व्यक्ति) native 2. दे. देशज शब्द।

देशज नागरिक *पुं.* (तत्.) राज. नागरिकता का अधिकार प्राप्त वह व्यक्ति जो उसी देश में पैदा हुआ हो।

देशज शब्द *पुं.* (तत्.) भाषा. ऐसे शब्द जो किसी भाषा विशेष से व्युत्पन्न न होकर स्थानीय व्यवहार से चलन में आए हों तु. तत्सम, तद्भव शब्द।

देशद्रोह *पुं.* (तत्.) देश के तंत्र या शासन के विरुद्ध आवाज उठाना, शासनतंत्र के विरुद्ध लोगों को उकसाना, देश व समाज को हानि पहुँचाने वाला आचरण।

देशद्रोही *वि.* (तत्.) देशद्रोह करने वाला, शत्रु पक्ष से मिलकर शासनके विरुद्धआचरणकरने वाला।

देशभक्त *पुं.* (तत्.) देश के प्रति निष्ठा रखते हुए उसके लिए सर्वस्व न्यौछावर करने की भावना रखने वाला व्यक्ति।

देशभक्ति *स्त्री.* (तत्.) देशभक्त होने का भाव।

देशभाषा *स्त्री.* (तत्.) किसी देश या प्रदेश-विशेष की भाषा जो उस देश/प्रदेश से बाहर न बोली जाती हो।

देशमल्हार *पुं.* (तत्.) संगी. राग विशेष का वह प्रकार जो वर्षा ऋतु में सायंकाल के समय गाया-बजाया जाता है।

देशवासी *पुं./वि.* (तत्.) 1. अपने देश में रहने वाला 2. विदेश में स्थित वह व्यक्ति जो अपने ही देश का हो।

देशव्यवहार *पुं.* (तत्.) किसी देश, प्रदेश, क्षेत्र आदि मे प्रचलित रीति-रिवाज, लोक-व्यवहार, लोकाचार।

देशव्यापी *वि.* (तत्.) संपूर्ण देश में सर्वत्र होने वाला या सर्वत्रव्याप्त जैसे- देशव्यापी आंदोलन।

देशांतर *पुं.* (तत्.) 1. अपने देश से भिन्न अन्य कोई देश 2. मुख्य देशांतर रेखा या ग्रीनविच रेखा की तुलना में किसी देश (या स्थान विशेष) की पृथ्वी के केंद्र से कोणीय दूरी टि. यह दूरी ग्रीनविच (इंग्लैंड) से पूर्व या पश्चिम 180 डिग्री तक हो सकती है।

देशांतरण *पुं.* (तत्.) अपने देश को छोड़कर दूसरे देश में जाकर बसना, प्रव्रजन।

देशांतर रेखा *स्त्री.* (तत्.) भू. पृथ्वी के धरातल पर दोनों ध्रुवों को जोड़ने वाली अर्धवृत्ताकार कल्पित संदर्भ रेखा। ग्रीनविच (इंग्लैंड) से होकर जानेवाली देशांतर रेखा को 0 डिग्री देशांतर मानते हुए पूर्व और पश्चिम की ओर 180 डिग्री तक देशांतर रेखाएँ मानी जाती हैं। सूर्योदय के अनुसार प्रत्येक देशांतर रेखा पर औसतन 4 मिनट का अंतर होता जाता है इसी आधार पर विभिन्न देशों के मानक समय का निर्धारण होता है, तिथियाँ भी (रोम कैलेंडर में) इसी आधार पर बदलती हैं।

देशाचार *पुं.* (तत्.) दे. देशव्यवहार।

देशाटन *पुं.* (तत्.) देश-देश में घूमना, दूसरे देशों में भ्रमण, देश में पर्यटन करना।

देशिक *वि.* (तत्.) 1. देश से संबंध रखने वाला 2. देश में घटित होने वाला *पुं.* 1. शिक्षक, उपदेशक, मार्गदर्शक 2. विविध देशों से परिचित व्यक्ति 3. भ्रमणशील व्यक्ति।

देशी *वि.* (तद्.) 1. देश का या देश से संबंधित 2. अपने ही देश की, स्थान विशेष की भाषा. दे. देशज शब्द।

देशीकरण *पुं.* (तत्.) दे. देशीयकरण।

देशीकृत शब्द *पुं.* (तत्.) अन्य भाषा अथवा स्रोत से आया हुआ, परंतु अपनी भाषा के व्याकरणादि के अनुसार ढाला हुआ शब्द जैसे-कारें (मूल शब्द अंग्रेजी होने के बाद भी हिंदी बहुवचनसूचक एँ के व्याकरण प्रयोग के अनुसार स्वीकृत कर लिया गया है)।

देशी भाषा *स्त्री.* (तद्.+तत्.) 1. भाषा. अपने क्षेत्र में बोली जाने वाली वह भाषा जो उच्चारण, वाक्य रचना आदि की दृष्टि से समृद्ध न हो तथा शिक्षित वर्ग द्वारा प्रयुक्त न होती हो और प्राय: जिसका लिखित रूप न हो 2. देश में बोली जाने वाली भाषा।

देशीय *वि.* (तत्.) 1. देश से संबंध रखने वाला 2. देश मे होने वाला।

देशीय उत्पाद *पुं.* (तत्.) अर्थ. देश में स्वतंत्र रूप से उत्पादित किया जाने वाला स्थानीय माल, वस्तुएँ या पण्य।

देशीयकरण *पुं.* (तत्.) 1. राज. किसी विदेशी नागरिक को कानून के अनुसार अपना नागरिक बनाने की प्रक्रिया 2. अर्थ./भाषा. किसी अन्य उत्पाद या भाषागत शब्द आदि को स्वीकृत कर और अपने देश के अनुरूप बनाकर व्यवहृत करने की प्रक्रिया। naturalisation

देशीय बाजार *पुं.* (तत्+फा.) अर्थ. किसी स्थानीय उत्पाद की बिक्री के लिए तथा अपने क्षेत्र विशेष के लिए बनाया गया बाजार। home market

देशीय विधि *पुं.* (तत्.) 1. किसी देश में चला आ रहा कानून 2. राष्ट्रीय विधि। municipal law

देशीय व्यापार *पुं.* (तत्.) अर्थ. अपने देश या क्षेत्र में फैला हुआ व्यापार जो देश की अर्थव्यवस्था का मजबूत आधार होता है।

देशी राज्य *पुं.* (तद्.+तत्.) अंग्रेजों के शासन काल में भारत की रियासतों के लिए प्रयुक्त नाम।

देश्य *पुं.* (तत्.) दे. देशीय।

देस *पुं.* (तद्.) दे. देश।

देसी *वि.* (तद्.) दे. देशी।

देह *स्त्री.* (तत्.) शरीर, तन ला. जीवन मुहा. देह की खबर न होना- तन्मय हो जाना, सुधबुध खो बैठना; देह छूटना- मृत्यु हो जाना; देह छोड़ना/ त्यागना- देहांत होना; देह टूटना- शरीर में थकावट या बीमारी के कारण दर्द होना; देह धरना- जन्म लेना।

देहगत *वि.* (तत्.) देह संबंधी, देह में होने वाला।

देहज *पुं.* (तत्.) 1. शरीर से उत्पन्न 2. पुत्र।

देहत्याग *पुं.* (तत्.) इच्छानुसार शरीर छोड़ने का भाव, मृत्यु, देहांत।

देहदान *पुं.* (तत्.) शरीर दान करना आयु./समाज. किसी व्यक्ति द्वारा लिखित या मौखिक रूप से यह इच्छा प्रकट करना कि मृत्यु के उपरांत उसके शरीर का अंतिम संस्कार न करके उसे किसी चिकित्सा-संस्थान को सौंप दिया जाए जिससे वह दूसरों के काम आ सके।

देहधारण *पुं.* (तत्.) 1. जन्म लेना 2. अपने शरीर को काम करने योग्य बनाए रखना।

देहधारी *वि.* (तत्.) शरीर धारण करने वाला, देही, प्राणी, शरीरी।

देहपात *पुं.* (तत्.) मृत्यु, मरण, देहांत।

देहयात्रा *पुं.* (तत्.) 1. शरीर की यात्रा, जीवन यापन 2. जीवन चलते रहने की व्यवस्था, आजीविका, जीवन, निर्वाह 3. शरीर का भरण- पोषण।

देहरा *पुं.* (तद्.) देवस्थान, मंदिर।

देहरी *पुं.* (तद्.) दे. देहली।

देहली *स्त्री.* (तत्.) 1. वास्तु. कमरे या घर के प्रवेश द्वार की चौखट का जमीन से लगा हुआ भाग जिसे लाँघकर ही प्रवेश किया जाता है 2. भारत की राजधानी दिल्ली 3. मनो. अनुक्रिया उत्पन्न करने में समर्थ उद्दीपन की निम्नतम सीमा।

देहवंत/देहवान् *पुं.* (तत्.) दे. देहधारी।

देहांत *पुं.* (तत्.) शरीर का अंत, मृत्यु।

देहांतर *पुं.* (तत्.) 1. एक शरीर छोड़ने के बाद प्राप्त होने वाला दूसरा शरीर, दूसरा जन्म, पुनर्जन्म 2. दूसरा शरीर, अन्य व्यक्ति का शरीर।

देहांतरण *पुं.* (तत्.) एक शरीर से दूसरे शरीर में जाना, दूसरी देह धारण करना, पुनर्जन्म की प्रक्रिया।

देहात *पुं.* (फा.) गाँवों का समूह, ग्रामीण क्षेत्र।

देहाती *वि.* (फा.) देहात से संबंधित, देहात में होने वाला, देहात में रहने वाला, ग्रामीण, ग्रामवासी।

देहातीत *वि.* (तत्.) 1. जो शरीर से परे हो, जिसका ज्ञान शरीर रहते प्राप्त न हो 2. (वह व्यक्ति) जो शारीरिक संवेदनाओं से ऊपर उठ चुका हो 3. जिसे शरीर का अभिमान या उसके प्रति ममत्व आदि न हो।

देहात्मज्ञान *पुं.* (तत्.) यह ज्ञान कि देह और आत्मा एक ही हैं।

देहात्मवाद *पुं.* (तत्.) यह मत कि आत्मा और कुछ नहीं बल्कि यह शरीर ही आत्मा है, नास्तिकवाद, चार्वाक् मत।

देहात्मवादी *पुं.* (तत्.) देहात्मवाद का समर्थक, चार्वाक् के मत का अनुयायी, नास्तिक।

देहात्मा *पुं.* (तत्.) शरीर और आत्मा *वि.* प्रायः समस्त रूप में प्रयुक्त जैसे- देहात्मज्ञान।

देहावशेष *पुं.* (तत्.) 1. शरीर के छूटने के पश्चात् सुरक्षित रखे गए दाँत, केश आदि अंग टि. प्राचीनकाल में महापुरुषों के ये अंग मंजूषा आदि में सुरक्षित रखने की परंपरा थी, मिस्र के पिरामिड इन्हीं के लिए प्रसिद्ध हैं 2. दाह-संस्कार के पश्चात् बची हुई अस्थियाँ जिन्हें भारत में गंगा आदि में प्रवाहित करने की परंपरा है 3. ईसाई, मुस्लिम आदि धर्मों के अनुसार गाड़ी गई मृतदेहों के अवशेष।

देहावसान *पुं.* (तत्.) देहांत, शरीरांत, मृत्यु।

देही *वि.* (तत्.) देह या शरीर को धारण करने वाला, आत्मा, जीवात्मा।

दैत्य *पुं.* (तत्.) 1. कश्यप ऋषि की दिति नामक पत्नी से उत्पन्न पुत्र 2. विशालकाय और अत्यंत शक्तिशाली व्यक्तित्व 3. असुर 4. भयानक आकृति वाला व्यक्ति, दानव।

दैत्यगुरु *पुं.* (तत्.) दैत्यों के गुरु, शुक्राचार्य।

दैत्यारि *पुं.* (तत्.) 1. दैत्यों के शत्रु, देवता 2. इंद्र, विष्णु।

दैनंदिन *वि.* (तत्.) प्रतिदिन का, प्रतिदिन होने वाला अव्य. प्रतिदिन, दिन-प्रति-दिन, नित्य।

दैनंदिनी *वि.* (तत्.) प्रतिदिन होने वाली *स्त्री.* प्रशा. 1. दिन-प्रतिदिन के कार्यों या घटनाओं को क्रमानुसार लिखने की पुस्तिका (डायरी) 2. पुलिस थानों में रोज की सूचनाओं (रिपोर्ट) को दर्ज करने के लिए प्रयुक्त पुस्तिका, रोजनामचा, दैनिक रजिस्टर वाणि. लेखा प्रतिदिन के लेन-देन को लिखने के लिए प्रयुक्त प्रारंभिक पुस्तिका या बही।

दैनिक *वि.* (तत्.) 1. दिन से संबंधित 2. प्रतिदिन होने वाला या किया जाने वाला 3. एक दिन में होने वाला।

दैनिक भत्ता *पुं.* (तत्.+तद्) प्रशा. कार्यालय के काम से कार्यस्थल से बाहर (दूसरे शहर में) जाने या कार्यालयेतर कर्मचारियों के बाहर से आकर कार्यस्थल पर काम करने की स्थिति में दैनिक व्ययों की प्रतिपूर्ति के निमित्त कर्मचारी को प्रतिदिन के हिसाब से दी जाने वाली धनराशि।

दैनिक मजदूर *पुं.* (तत्.+फा.) वह मजदूर जो नियमित रूप से एक स्थान पर काम न करके प्रतिदिन की मजदूरी के आधार पर (कभी एक स्थान पर तो कभी दूसरे स्थान पर) काम करता है।

दैनिक मजदूरी *स्त्री.* (तत्.+फा.) किसी दैनिक मजदूर की एक दिन की मजदूरी।

दैनिक समाचार पत्र *पुं.* (तत्.) वह समाचार-पत्र जिसमें प्रतिदिन के समाचार होते हैं तथा जो प्रतिदिन छपता है।

दैनिकी *पुं.* (तत्.) दे. दैनंदिनी।

दैन्य *पुं.* (तत्.) 1. दीनता, गरीबी, निर्धनता 2. लाचारी, विवशता 3. अपने को छोटा समझने का भाव, हीनता।

दैया *पुं.* (तद्.) भाग्य, दैव, परमात्मा *स्त्री.* धाय, दाई, माता अव्य. (देश.) आश्चर्य, दुःख आदि की की सूचना देने वाला विस्मयबोधक शब्द।

दैर्घ्य *पुं.* (तत्.) दीर्घता, बड़ा होने का भाव, लंबाई।

दैव *वि.* (तत्.) 1. देव (देवता) से संबंधित, देवता का 2. दिव (स्वर्ग) से संबंधित, स्वर्ग का, स्वर्गीय 3. भाग्य से संबंधित 4. प्रकृति से संबंधित *पुं.* 1. भाग्य 2. भाग्य का निर्धारण करने वाली शक्ति, परमात्मा, ईश्वर, देवता।

दैवकृत *वि.* (तत्.) विधि. वह (घटना इत्यादि) जिसके लिए किसी व्यक्ति को उत्तरदायी न

माना जा सके जैसे- भूकंप, सुनामी, बाढ़ इत्यादि, दैवी घटना।

दैवगति *स्त्री.* (तत्.) 1. भाग्य की गति, भाग्य का का उलट-फेर 2. दैवी घटना (अच्छी या बुरी) 3. भाग्य, प्रारब्ध।

दैवज्ञ *वि./पुं.* (तत्.) भाग्य जानने वाला, भविष्य जानने वाला, ज्योतिषी, ज्योतिर्विद्।

दैवत *वि.* (तत्.) देवता से संबंधित *पुं.* 1. देवता, इष्ट देवता 2. देवताओं का विशिष्ट समूह 3. देवमूर्ति।

दैवदुर्विपाक *पुं.* (तत्.) भाग्य की खराबी, भाग्य का रूठ जाना, भाग्यदोष, दुर्भाग्य।

दैवदोष *पुं.* (तत्.) दे. दैवदुर्विपाक।

दैवयोग *पुं.* (तत्.) 1. बिना किसी कारण के अकस्मात् हुई घटना 2. संयोग, ईश्वरीय घटना, इत्तिफाक।

दैववश *पुं.* (तत्.) भाग्य का बल, ईश्वरीय बल *क्रि.वि.* ईश्वर की इच्छानुसार, भाग्य से।

दैववादी *पुं.* (तत्.) 1 भाग्य के भरोसे रहने वाला 2. आलसी, अकर्मण्य विलो. पुरुषार्थवादी।

दैव विवाह *पुं.* (तत्.) किसी बड़े यज्ञ के समय यजमान या यज्ञकर्ता द्वारा उसी यज्ञ के किसी पुरोहित के साथ करवाया गया अपनी कन्या का विवाह, शास्त्रोक्त आठ प्रकार के विवाहों में से एक।

दैवात् *क्रि.वि.* (तत्.) 1. भाग्य से, भाग्यवशात्, दैवयोग से, विधिवशात् 2. अकस्मात्।

दैवाधीन *वि.* (तत्.) जो भाग्य के अधीन हो अर्थात् जो अपने वश में न हो, ईश्वरेच्छाधीन।

दैवायत्त *पुं.* (तत्.) दे. दैवाधीन।

दैविक *वि.* (तत्.) 1. देवताओं से संबंधित 2. देवताओं के लिए किया जाने वाला 3. देवताओं के द्वारा किया जाने वाला, दैवकृत।

दैवी *वि.* (तत्.) 1. देवताओं से संबंधित 2. भाग्य से संबंधित 3. प्रकृति से संबंधित 4. दिव्य 5. आकस्मिक 6. दैवज्ञ, ज्योतिषी।

दैवी अधिकार *पुं.* (तत्.) 1. ईश्वर द्वारा प्रदत्त अधिकार 2. ईश्वर का अधिकार धर्म. यह भाव कि राजा को राज्य करने का अधिकार स्वयं ईश्वर को दिया हुआ है।

दैवी गति *स्त्री.* (तत्.) ईश्वरीय प्रेरणा, भाग्य का फेर दे. गति।

दैवी नियम *पुं.* (तत्.) 1. राज. यह भाव कि राजा जो भी करता है ईश्वर की आज्ञा से ही करता है 2. स्मृतियों के अनुसार दिव्य का विधान, जिसके अनुसार ईश्वर पापी को दंड दे देता है तथा निरपराध को क्षमा कर देता है जैसे- सीता की अग्निपरीक्षा में दैवी नियम से सीता नहीं जली 3. धर्म. ईश्वर द्वारा बनाए गए गए नियम जिनका उपदेश पैगंबर करते हों 4. यह नियम कि अच्छा या बुरा कर्म करने वाले को उसका फल अवश्य मिलता है।

दैवी प्रकोप *पुं.* (तत्.) महामारी, बाढ़, भीषण आग आदि जैसी आकस्मिक घटना जिसपर मानव का कोई वश नही होता और जो प्राकृतिक कारणों या ईश्वर के क्रोध के परिणामस्वरूप होती है।

दैवी संकट *पुं.* (तत्.) 1. देवी आपदा या विपदा 2. दे. दैवी प्रकोप।

दैवी समाधान *पुं.* (तत्.) दर्श. कथा नाटक आदि में प्रयुक्त वह युक्ति जिसके अनुसार किसी समस्या का समाधान किसी प्राकृतिक घटना आदि से हो जाता है जैसे- धीवर से प्राप्त अँगूठी से दुष्यंत को शकुंतला की याद आ गई।

दैवोपहत *वि.* (तत्.) भाग्य द्वारा सताया हुआ, अभागा।

दैशिक *वि.* (तत्.) दे. देशिक।

दैहिक *वि.* (तत्.) देह से संबंधित, देह का, शारीरिक।

दैहिक स्वतंत्रता *स्त्री.* (तत्.) विधि. मानव का वह अधिकार जिसके अनुसार वह अपने शरीर का यथेच्छ उपयोग कर सकता है, जब तक कि उसका वह कृत्य किसी विधि के विरुद्ध न हो।

दैह्य *वि.* (तत्.) दे. दैहिक

दो *वि.* (तद्.) एक से एक अधिक *पुं.* एक और तीन के बीच की संख्या *स.क्रि.* देना क्रिया का आज्ञार्थक मध्यम पुरुष एकवचन का रूप मुहा. दौ कौड़ी का- तुच्छ बेकार जैसे- दो कौड़ी का आदमी, दो कौड़ी की इज्जत, दो कौड़ी की बात; दो-चार- लगभग दो और चार के आसपास; दो-चार होना- सामना होना; आँखें दो-चार होना- पहली बार नजर मिलना; दो जीभ वाला- दो तरह की बातें करने वाला, दो गला; दो टूक- स्पष्ट और संक्षिप्त; दो दिन का- बहुत कम समय वाला; दो-दो हाथ करना- मुकाबला करना; दो नावों पर सवार होना या चढ़ना- दो भिन्न-भिन्न या परस्पर विरोधी कार्य एक साथ करना।

दोआब/दोआबा *पुं.* (फा.) दो नदियों के बीच का क्षेत्र, किसी देश/प्रदेश या जिले का वह भाग जो दो नदियों के बीच में पड़ता है।

दो-एक *वि.* (तद्.+तत्.) दो या एक, संख्या में बहुत कम।

दोगला *पुं.* (फा.) 1. वर्णसंकर, जिसके माता और पिता दोनों अलग-अलग जातियों के हों 2. जारज, अवैध संतान, विवाह पूर्व संतान 3. दो प्रकार की बातें करने वाला।

दोगाना *पुं.* (तद्.) संगी. गायन में दो कलाकारों (प्रायः एक पुरुष और एक स्त्री) द्वारा गाया हुआ हुआ गाना, युगल गीत।

दोगुना *वि.* (तद्.) जितना हो उतना ही और, द्विगुण, दो से गुणा किया हुआ, दुगुना।

दोग्धा *वि./पुं.* (तत्.) 1. दुहने वाला, ग्वाला 2. बछड़ा, वत्स।

दो चार *पुं.* (तद्.) दे. दो के अंतर्गत मुहा.।

दोज *पुं.* (तत्.) दे. दूज।

दोज़ख *पुं.* (फा.) नरक, जहन्नुम।

दो टूक *पुं.* (देश.) स्पष्ट, साफ-साफ, खरी बात।

दो-तरफा *वि.* (फा.) 1. जिसकी स्थिति दोनों ओर हो जैसे- इस पृष्ठ पर दो-तरफा छपाई की गई है है 2. दोनों ओर से होने वाला जैसे- शत्रु ने दो तरफा हमला बोल दिया 3. जो कभी इधर तो कभी उधर हो जाए जैसे- दोतरफा बातें मत करो।

दोतल्ला *वि.* (तद्.) दो तलों (मंजिलों) वाला (मकान)।

दोधक *वि.* (तत्.) दुहने वाला, दोग्धा *पुं.* छंद. एक विशिष्ट वार्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं तथा उसमें तीन भगण और दो गुरु होते हैं।

दो नंबर का पैसा *पुं.* (देश.) अवैध तरीके से कमाया गया धन जिसपर आयकर इत्यादि न दिया गया हो। black money

दोना *पुं.* (तद्.) 1. पत्तों (या आजकल प्लास्टिक) का बना कटोरी-नुमा पात्र 2. खाने की किसी वस्तु से भरा ऐसा पात्र मुहा. दोने चाटना- बाज़ार की चाट-पकौड़ी आदि शौक से खाना।

दोनाली *वि.* (तद्.) दो नलियों वाली (बंदूक)।

दोनिया/दोनी *स्त्री.* (तद्.) द्रोणी, छोटा दोना।

दोनों *वि.* (तद्.) दो में से प्रत्येक को शामिल करके (यह भी और वह भी), उभय मुहा. दोनों ओर से मरना- बचने का कोई रास्ता न होना; दोनो हाथों में लड्डू होना- हानि की संभावना न होना; दोनों हाथों लुटाना- उदारता से बाँटना।

दोपदा/दोपदे *वि.* (तद्.) द्विपदी का बहुवचन छंद. दो चरणों वाला छंद।

दोपहर *स्त्री.* (तद्.) दिन के दो पहर बीत जाने का समय, मध्याह्न-काल, दिन के बारह बजे के आसपास का समय, दुपहरी टि. पूरे दिन-रात में आठ पहर या प्रहर माने जाते हैं, इस प्रकार एक पहर लगभग तीन घंटे का होता है।

दोपारी पद्धति *स्त्री.* (तद्.+तत्.) किसी कार्य को दो पारियों में करने की पद्धति, कार्य के निश्चित घंटे पूरे हो जाने के बाद पुनः उतने ही

समय तक काम को जारी रखने की नियमित व्यवस्था करना, जैसा कि प्राय: फैक्टरियों तथा विद्यालयों में होता है।

दोफसली *वि.* (फा.) 1. रबी और खरीफ दोनों फसलों में पैदा होने वाला (अन्न) 2. वर्ष में दो बार फल देने वाला (वृक्ष) 3. दोनों फसलों में जोती जाने वाली (जमीन)।

दोमंजिला *वि.* (फा.) दो मंजिलों वाला मकान, दोतल्ला, दुमंजिला।

दोमट/दुमट *स्त्री.* (तत्.) चिकनी और बलुआ दोनों प्रकार की मिली-जुली मिट्टी।

दोमुँहा *पुं.* (तत्.) दे. दुमुँहा।

दोयम *वि.* (फा.) द्वि, द्वितीय, दूसरे दर्जे का, दो की क्रमसूचक संख्या।

दोर्दंड *पुं.* (तत्.) 1. डंडे के समान कठोर भुजाओं वाला व्यक्ति 2. डंडे के समान कठोर भुजा।

दोल *पुं.* (तत्.) 1. झूला, हिंडोला 2. झूल 3. डोली।

दोलन *पुं.* (तत्.) 1. किसी लटकी हुई वस्तु का बार-बार दोनों ओर झूलना जैसे- घड़ी के पेंडुलम का 2. भौ. गति का आवर्ती परिवर्तन अर्थात् झूलती हुई वस्तु के एक दिशा से दूसरी दिशा में जाने तथा वापस अपने स्थान पर आने के बीच की समस्त स्थितियों का अनुक्रम 3. कंपन।

दोलनदर्शी *पुं.* (तत्.) भौ. एक उपकरण जो विद्युत विद्युत संबंधी दोलनों को दृश्य प्रतिबिंबों में परिवर्तित कर परदे पर दिखलाता है।

दोलनमापी *पुं.* (तत्.) भौ. वह उपकरण जो वैद्युत दोलनों की गति, लंबाई, बारंबारता आदि का मापन करता है।

दोलनलेखी *पुं.* (तत्.) भौ. 1. वह उपकरण जो द्रुतपरिवर्ती वैद्युत दोलनों की गति, लंबाई, बारंबारता इत्यादि को दृश्य प्रतिबिंबों के रूप में तत्काल रिकॉर्ड कर लेता है 2. ऊपर लिखे हुए रिकॉर्ड का लेखाचित्र तुल. दोलनदर्शी, दोलनमापी।

दोलनी *वि.* (तत्.) दोलन उत्पन्न करने वाला या दोलन से युक्त।

दोला *स्त्री.* (तत्.) 1. झूला, हिंडोला 2. पालकी, डोली 3. किसी भी वस्तु का हिलना-डुलना, दाएँ-बाएँ या ऊपर-नीचे गति करना, अस्थिरता 4. घटना-बढ़ना 5. मन की अस्थिरता, दृढ़ न रह पाना 6. संदेह या अनिश्चय की स्थिति।

दोलायमान *वि.* (तत्.) 1. हिलता-डुलता हुआ, गति करता हुआ, चलायमान 2. घटता-बढ़ता हुआ 3. अस्थिर, झूलता हुआ, चंचल।

दोलायित *वि.* (तत्.) 1. दोलायमान, चंचल 2. दोलायमान किया हुआ।

दोलिका *स्त्री.* (तत्.) छोटा झूला, छोटी पालकी।

दोलित्र *पुं.* (तत्.) भौ. दोलनों के प्रयोग से वांछित आवर्तन उत्पन्न करने वाला उपकरण या यंत्र जैसे- दिष्ट धारा (डी.सी) को प्रत्यावर्ती धारा (ए.सी) में बदलने वाली युक्ति।

दोली *पुं.* (तत्.) दे. दोलिका।

दोलोत्सव *पुं.* (तत्.) 1. झूलने का उत्सव 2. देवमूर्ति आदि को झूले में झुलाने का समारोह।

दोष *पुं.* (तत्.) 1. बुराई, खोट, त्रुटि 2. धर्म. बुरा व्यवहार, पाप 3. आयु. त्रिदोषों (वात, पित्त, कफ) में से प्रत्येक 4. विधि. चूक, नुक्स, खराबी 5. विधि. कोई आपराधिक क्रिया 6. कानून का अतिक्रमण, अतिलंघन या उल्लंघन 7. विधि. आरोपित अपराध जो अभी सिद्ध होना है 8. कंप्यू. कंप्यूटर-यंत्र में आया हुआ बाधक या नाशक विकार 9. भाषा. भाषा प्रयोग की अशुद्धियाँ, त्रुटि 10. काव्य. रस निष्पत्ति में बाधक तत्व मुहा. दोष *देना/लगाना/मढ़ना/लादना*- किसी कार्य में कोई कमी होने, भूल होने या काम खराब हो जाने की स्थिति में (स्वयं को निर्दोष बताते हुए) किसी अन्य व्यक्ति को या परिस्थिति आदि को उत्तरदायी ठहराना; दोष निकालना- दूसरों के कार्य में कमी बतलाना।

दोषघ्न *वि.* (तत्.) दोष को नष्ट करने वाला आयु. शरीर के वात, पित्त, कफ दोषों को दूर करने वाली (औषध)।

दोषज्ञ *पुं.* (तत्.) दोषों को जानने-समझने व समाधान कर सकने वाला, विवेक-बुद्धि वाला।

दोषण *पुं.* (तत्.) दोष लगाने की क्रिया या भाव, दूषण।

दोषत्रय *पुं.* (तत्.) तीन दोषों का समूह आयु. वात, पित्त और कफ दर्श. काम, क्रोध और लोभ।

दोषत्व *पुं.* (तत्.) दोष होने का भाव।

दोषदर्शी *वि.* (तत्.) दोष देखने वाला, (केवल) दोष निकालने वाला भौ. किसी संयंत्र या कार्य में दोष बताने या दिखलाने वाला उपकरण या युक्ति।

दोषदृष्टि *स्त्री.* (तत्.) केवल दोष निकालने वाली नजर, दोष देखने का भाव, कमी या ऐब ढूँढने वाला दृष्टिकोण।

दोषदृष्टिता *स्त्री.* (तत्.) दोष दृष्टि होने की स्थिति या भाव।

दोषपूर्ण *वि.* (तत्.) दोष से युक्त, दूषित, त्रुटिपूर्ण, गलत, खराब।

दोषभाक्/दोषभाजन *वि.* (तत्.) 1. जिसे किसी दोष के लिए जिम्मेदार ठहराया जाए 2. दोषपात्र 3. दोषी।

दोषमय *वि.* (तत्.) दोषपूर्ण, दोष से भरा हुआ, दोषयुक्त, दूषित।

दोषमार्जन *पुं.* (तत्.) दोष दूर करना, दोष या त्रुटि का समाधान कंप्यू. कंप्यूटर के बाधक या नाशक विकार को हटाना।

दोषमुक्ति *स्त्री.* (तत्.) किसी दोष से छूट जाना (बरी हो जाना) विधि. सभी तर्कों को सुनने के बाद न्यायालय की ओर से अभियुक्त के दोषी न सिद्ध होने की औपचारिक घोषणा या निर्णय विलो. दोषसिद्ध।

दोषल *वि.* (तत्.) दोषयुक्त, दूषित।

दोषसिद्ध *वि.* (तत्.) दे. सिद्ध दोष।

दोषसिद्धि *स्त्री.* (तत्.) विधि. आरोप सिद्ध होने की न्यायालय द्वारा औपचारिक घोषणा या निर्णय।

दोषा *स्त्री.* (तत्.) 1. अँधेरी रात 2. निशा 2. दोष से युक्त काल, प्रदोष काल, संध्याकाल।

दोषारोपण *पुं.* (तत्.) 1. किसी व्यक्ति पर दोष लगाना 2. किसी वस्तु, व्यवहार, विधि, सोच आदि में दोष बताना 3. विधि. अभियोग लगाना, अभ्यारोपण।

दोषिता *स्त्री.* (तत्.) दोषी होने की स्थिति या भाव भाव विलो. निर्दोषिता।

दोषी *पुं.* (तत्.) 1. जिसने कोई दोषपूर्ण या आपराधिक कृत्य किया हो, अपराधी, अभियुक्त 2. जिस पर दोष करने का आरोप हो 3. दोषयुक्त 4. दूषित 5. सिद्ध दोष अपराधी विलो. निर्दोष।

दोसाला *वि.* (तद्+फा.) 1. दो वर्ष में एक बार होने वाला, द्विवार्षिक 2. दो वर्ष का 3. दो वर्ष पुराना।

दोस्त *पुं.* (फा.) 1. मित्र, सखा, सहपाठी 2. प्रेमी, प्रेमिका 3. हितैषी, भला चाहने वाला *स्त्री.* 1. सखी, सहेली 2. प्रेमी।

दोस्तदारी *स्त्री.* (फा.) दोस्ती निभाने का भाव, दोस्ती।

दोस्तनवाज *वि.* (फा.) दोस्तों पर नवाज अर्थात् मेहरबान, दोस्तों का दोस्त, दोस्ती निभाने वाला।

दोस्ताना *पुं.* (फा.) मित्रता, दोस्ती, मैत्री *वि.* मैत्रीपूर्ण, मित्रता वाला, दोस्त जैसा।

दोस्ती *स्त्री.* (फा.) मित्रता, सख्य, मैत्री।

दोहक *वि.* (तत्.) 1. दुहने वाला 2. जो उपलब्ध संसाधनों का पूरा-पूरा लाभ उठाता हो, समुपयोजन कर्ता 3. शोषण करने वाला, स्वार्थपूर्ति के लिए दूसरों का दोहन या उपयोग करने वाला 4. वह (उद्योग) जो अपने लाभ के लिए अन्य सह-उद्योगों के उत्पादों, विधियों आदि का उपयोग कर लेता हो।

दोहता *पुं.* (तद्.) दे. दौहित्र।

दोहत्थड़ *पुं.* (तद्.) दोनों हाथों को मिलाकर प्रायः उंगलियाँ फँसाकर किया जाने वाला आघात या प्रहार।

दोहत्था *पुं.* (तत्.) दे. दुहत्था।

दोहद *पुं.* (तत्.) 1. गर्भवती स्त्री की किसी वस्तु के प्रति प्रबल इच्छा 2. गर्भावस्था।

दोहदवती *वि./स्त्री.* (तत्.) 1. ऐसी गर्भवती महिला जिसे कुछ खाने, देखने, करने की प्रबल इच्छा हो रही हो 2. गर्भवती महिला।

दोहन *पुं.* (तत्.) 1. दुहना जैसे- दूध दुहना 2. धरती के गर्भ से खनिज आदि निकालना 3. उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग करते हुए अधिकाधिक लाभ उठाना 4. अपने स्वार्थ के लिए प्राकृतिक संसाधनों का या दूसरों की क्षमता का शोषण करना।

दोहना *स.क्रि.(तद्.)* 1. दोहन करना दे. दोहन 2. दोष लगाना 3. तुच्छ समझना।

दोहनी *स्त्री.* (तद्.) 1. दूध दुहने का पात्र 2. दूध दुहने की क्रिया या भाव।

दोहरना *अ.क्रि.* (देश.) दुहरा होना, दो परतों में होना, दोबारा होना।

दोहरा कराधान *पुं.* (देश.+तत्.) प्रशा. दो बार या दो स्थानों पर अलग-अलग कर वसूल करना।

दोहरा मानक *पुं.* (देश.+तत्.) 1. ऐसे नियम-कायदे जो एक व्यक्ति या समूह की अपेक्षा दूसरे व्यक्ति या समूह को बेहतर अवसर या आजादी या छूट प्रदान करते हैं 2. आचार या नैतिकता के वे नियम-कायदे जो एक वर्ग की अपेक्षा दूसरे वर्ग पर सख्ती से लागू किए जाते हैं।

दोहरा *वि.* (देश.) 1. दो परतों वाला 2. दोगुना जैसे- इसमें दोहरा किराया लगेगा।

दोहराना *स.क्रि.* (देश.) 1. पुनः वही क्रिया करना 2. लिखे हुए या याद किए हुए पाठ को पुनः पढ़ना या बोलकर देखना 3. दुगुना करना।

दोहरा शासन *पुं.* (देश.+तत्.) प्रशा. दो स्तरों पर चलने वाला शासन जैसे- अंग्रेजों के शासन के समय स्थानीय रियासतों को स्थानीय स्तर पर शासन का अधिकार होता था, परंतु शासन की सर्वोच्च सत्ता अंग्रेजों की ही थी।

दोहरी खतान पद्धति *स्त्री.* (देश.+तत्.) वाणि. बहीखाता लिखने की विशिष्ट पद्धति जिसमें हर लेन-देन की प्रविष्टि जमा और नामे में अलग अलग अर्थात दो बार की जाती है, फलतः मिलान स्वतः हो जाता है।

दोहरी तुक *स्त्री.* (देश.+फा.) छंद. दोहरा अंत्यानुप्रास, अंत्यानुप्रास में दो उच्चारणों का एकसमान होना।

दोहरी प्रविष्टि पद्धति *पुं.* (देश.+तत्.) दे. दोहरी खतान पद्धति।

दोहरी फसल *स्त्री.* (देश.+फा.) एक खेत में एक ही अवधि में उगाई गई दो या अधिक फसलें 2. एक ही अवधि/मौसम या समय में दो या अधिक बार प्राप्त पैदावार या उपज।

दोहदलक्षण *पुं.* (तत्.) गर्भावस्था के लक्षण, भ्रूण।

दोहा *पुं.* (तद्.) छंद हिंदी का अर्धसममात्रिक तुकांत छंद जिसमें दो पंक्तियाँ होती हैं तथा चार चरणों में 13, 11, 13, 11 मात्राएँ होती हैं।

दोह्य *वि.* (तत्.) दुहने योग्य (पशु), दुहे जाने योग्य, जिसे दुहा जाए *पुं.* दूध।

दोह्या *वि.* (तत्.) दोह्य का स्त्रीलिंग रूप, दुही जा सकने वाली *स्त्री.* दुधारू गाय।

दौ *स्त्री.* (तद्.) दाव, दावानल, जंगल में लगने वाली आग।

दौड़ *स्त्री.* (तद्.) 1. दौड़ने की क्रिया या भाव 2. दौड़ते हुए तेजी से सबसे आगे निकलने की होड़ 3. सीमा जैसे- शराबी की दौड़ मयखाने तक 4. गति मुहा. दौड़ लगाना-तेजी से भागना।

दौड़धूप *स्त्री.* (तद्.) तेजी से बारबार इधर-उधर दौड़ना-भागना, दौड़-भाग करते हुए की गई मेहनत, पूरी शक्ति लगाकर प्रयत्न करना।

दौड़ना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. चलने की बजाए काफी तेजी से आगे की ओर गति करना जिसमें दोनों पैर एक साथ जमीन पर नहीं पड़ते 2. किसी दिशा में तेजी से बढ़ना 3. ला.अर्थ तेजी से उभर जाना या छा जाना जैसे- उसके चेहरे पर भय की रेखाएँ दौड़ गईं।

दौड़भाग *पुं.* (देश.)दौड़ना तथा भागना दे. दौड़धूप।

दौड़ा दौड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. तेजी से एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ 2. बिना रुके तेजी से आगे बढ़ना।

दौड़ाना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी को दौड़ने के लिए प्रेरित करना 2. किसी को कोई जल्दी का काम सौंप कर तेजी से भेजना 3. किसी को अकारण परेशान करना।

दौत्य *वि.* (तत्.) 1. दूत का कर्म पद या भाव, दूतत्व 2. दूत संबंधी, दूत का।

दौर *पुं.* (अर.) 1. चक्र 2. बारी 3. रुक-रुक कर बार-बार होने वाले कार्यों में से एक बार में होने वाला कार्य 4. समय का परिवर्तन, ऋतु चक्र 5. गर्दिश मुहा. दौर चलना- कई बार होना जैसे- कार्यक्रम में बैठकों के कई दौर चले।

दौर-दौरा *पुं.* (फा.) प्रभावशाली होने का भाव।

दौरा *पुं.* (अर.) 1. दौर 2. प्रशा. निरीक्षण, व्यवस्था या अपने कार्य के सिलसिले में अधिकारियों का कार्य-स्थल से कुछ समय के लिए बाहर जाना 3. आयु. किसी रोग का आकस्मिक रूप से तीव्र हो जाना जैसे- दिल का दौरा, पागलपन का दौरा 4. गर्दिश मुहा. दौरा सुपुर्द करना- मुकदमे को सुनवाई हेतु सेशन न्यायाधीश के पास भेजना।

दौरा कार्यक्रम *पुं.* (अर.+तत्.) प्रशा. अधिकारी के दौरे का तारीख एवं समयवार लिखित ब्योरा जिसमें कार्य के स्वरूप का भी विवरण होता है।

दौरात्म्य *पुं.* (तत्.) दुरात्मा होने का भाव, दुरात्मता, दुष्टता, दुर्जनता।

दौरा रिपोर्ट *स्त्री.* (अर.+अं.) अधिकारी द्वारा अपने दौरे के दौरान किए गए कार्यों एवं निष्कर्षों का लिखित विवरण।

दौर्बल्य *पुं.* (तत्.) दुर्बलता, कमजोरी (शारीरिक, मानसिक या भावनात्मक)।

दौर्भाग्य *पुं.* (तत्.) दुर्भाग्य की स्थिति, भाग्य के खराब होने का भाव, दुर्दिन होने का भाव विलो. सौभाग्य।

दौर्मनस्य *पुं.* (तत्.) 1. मन के दुःखी होने का भाव, मानसिक पीड़ा 2. दुष्ट भाव, दृष्टता विलो. सौमनस्य।

दौर्हार्द *पुं.* (तत्.) दुर्हृद् अर्थात् शत्रु होने का भाव, शत्रुता विलो. सौहार्द।

दौलत *स्त्री.* (अर.) 1. धन-संपत्ति, चल-अचल संपत्ति, जागीर 2. ला. वस्तु जैसे- उत्तम स्वास्थ्य सबसे बड़ी दौलत है।

दौलतखाना *पुं.* (अर.+फा.) 1. धन-संपत्ति रखने का कक्ष 2. निवास-स्थान (सम्मानसूचक प्रयोग) टि. सामान्य शिष्टाचार में दूसरों के घर के लिए दौलतखाना और अपने घर के लिए गरीबखाना शब्द का प्रयोग होता है जैसे- आपका दौलतखाना कहाँ है।

दौलतमंद *वि.* (अर.+फा.) धनवान, दौलतवाला, धनी, रईस।

दौवारिक *पुं.* (तत्.) 1. द्वार से संबंधित, द्वार का 2. द्वार रक्षक, द्वारपाल, दरबान, द्वार रक्षण से से संबंधित कर्मचारी या अधिकारी।

दौहित्र *पुं.* (तत्.) दुहिता (बेटी) का बेटा, धेवता, नाती, नवासा।

दौहित्रायण *पुं.* (तत्.) दौहित्र का पुत्र, पुत्री का पौत्र।

दौहित्री *स्त्री.* (तत्.) पुत्री की पुत्री, धेवती, नातिन, नवासी।

द्यवना *स.क्रि.* (तद्.) दिलाना उदा. मेरिऔ सुधि द्याइबो कछु करुन कथा चलाइ-तुलसी।

द्यावा-पृथ्वी (द्यावा-पृथ्वी) *स्त्री.* (तत्.) आकाश और पृथ्वी।

द्यु *पुं.* (तत्.) 1. दिवस, दिन 2. आकाश 3. स्वर्ग स्वर्ग 4. अग्नि, आग 5. दीप्ति, चमक।

द्युचर *वि.* (तत्.) आकाश में चलने वाला *पुं.* 1. पक्षी, चिड़िया 2. चंद्र, मंगल आदि ग्रह।

द्यु-जय *पुं.* (तत्.) स्वर्ग-प्राप्ति।

द्युत *वि.* (तत्.) जिसमें प्रकाश हो, चमकीला *पुं.* रश्मि, किरण।

द्युति *स्त्री.* (तत्.) 1. शरीर की स्वाभाविक कांति, आभा, छवि 2. दीप्ति, चमक भौ. किसी वस्तु के के तल द्वारा परावर्तित प्रकाश की चमक।

द्युतिकर *वि.* (तत्.) चमकीला, चमकदार।

द्युतिधर *वि.* (तत्.) चमकीला, चमकदार।

द्युतिमंत *वि.* (तत्.) द्युतिमान्।

द्युतिमती *वि.* (*स्त्री.*) (तत्.) प्रकाशवाली, चमकीली।

द्युतिमय *वि.* (तत्.) 1. प्रकाशमय, कांतिमय, चमकीला 2. तेजस्वी।

द्युतिमा *स्त्री.* (तत्.) 1. द्युति, चमक 2. प्रकाश 3. 3. तेज।

द्युतिमान् *वि.* (तत्.) प्रकाशवाला, चमकीला।

द्यु-पथ *पुं.* (तत्.) आकाश-मार्ग।

द्यु-मणि *पुं.* (तत्.) सूर्य।

द्यु-लोक *पुं.* (तत्.) स्वर्ग।

द्यूत *पुं.* (तत्.) जुआ।

द्यूतकार *पुं.* (तत्.) 1. जुआखाने का स्वामी 2. जुआरी।

द्यूतक्रीड़ा *स्त्री.* (तत्.) जुए का खेल, जुआ।

द्यूत फलक *पुं.* (तत्.) जुए में बिसात बिछाने की की चौकी आदि, कौड़ी/पासा फेंकने या ताश के पत्ते डालने के लिए रखी जाने वाली चौकी आदि।

द्यूत भूमि *स्त्री.* (तत्.) जुआ खेलने का स्थान, जुआखाना, जुए का अड्डा।

द्योतक *वि.* (तत्.) 1. प्रकाश करने वाला, प्रकाशक, 2. प्रकट करने वाला 3. सूचक।

द्योतन *पुं.* (तत्.) 1. प्रकाश युक्त करने की क्रिया 2. 2. दिखना 3. प्रकटन, व्यक्त करना।

द्योतित *वि.* (तत्.) प्रकाशयुक्त किया हुआ, प्रकाशित 2. प्रकट, व्यक्त।

द्योस *पुं.* (तत्.) दिवस, दिन।

द्यौस *पुं.* (तत्.) दिवस, दिन।

द्यौसक *पुं.* (तत्.) दो एक दिन, कुछ ही दिन।

द्यौसमणि *पुं.* (तत्.) सूर्य।

द्यौहड़ा *पुं.* (तद्.) देवालय, मन्दिर।

द्रग *पुं.* (तद्.) दृग, नेत्र।

द्रब *पुं.* (तद्.) द्रव्य यौ. द्रबी *वि.* द्रव्य वाला, धनी।

द्रव *वि.* (तत्.) 1. चूने/टपकने वाला 2. बहने वाला 3. तरल, पनीला 4. पिघलता हुआ प्रदार्थ *पुं.* 1. तरल पदार्थ 2. रस।

द्रवक *वि.* (तत्.) 1. चूने/टपकने वाला 2. बहने वाला 3. द्रवित करने/होने वाला।

द्रवबलगतिकी *स्त्री.* (तत्.) गणित की वह शाखा जिसमें किसी पूर्णतः या अंशतः तरल द्रव्यात्मक निकाय की गतियों का अध्ययन किया जाता है।

द्रवस्थैतिक दाब *पुं.* भौ. किसी स्थिर जलराशि में एक विशिष्ट स्थल पर जल द्वारा पड़नेवाला दाब।

द्रवस्थैतिकी *स्त्री.* (तत्.) गणि. गणित की वह शाखा जिसमें किसी पूर्णतः या अशतः तरल द्रव्यात्मक निकाय के संतुलन का अध्ययन किया जाता है।

द्रवज *वि.* (तत्.) द्रव/तरल पदार्थ से निकला/बना हुआ *पुं.* किसी रस से बनी हुई वस्तु जैसे- गुड़, शीरा, चीनी इत्यादि गन्ने के रस से बने द्रवज।

द्रवण *पुं.* (तत्.) 1. बहना, रसना, 2. पिघलना 3. पसीजना 4. भाप का द्रवरूप में परिवर्तित 5. मन की दयापूर्ण होने की वृत्ति 6. कामदेव का एक बाण; (भू*वि.*) द्रव बनने या होने की क्रिया या प्रक्रम।

द्रवणांक *पुं.* (तत्.) ताप का वह माप जिस पर कोई वस्तु पिघलने लगती है।

द्रवता *स्त्री.* (तत्.) द्रव होने की अवस्था/गुण/ भाव, द्रवत्व।

द्रवना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. पिघलना 2. पसीजना 3. मन का करुणा/दया से पसीजना, दयार्द्र होना।

द्रविड़ *पुं.* (तत्.) 1. दक्षिण भारत के तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल और आंध्र के क्षेत्र का सामूहिक नाम 2. उक्त क्षेत्र का निवासी।

द्रविड़ प्राणायाम प्रयो. सीधे और सरल विधि से हो सकने वाले काम को टेढ़े और कठिन विधि

से करने का प्रयत्न, मुहा. द्रविड़ प्राणायाम करना- सीधी बात को घुमा-फिराकर कहना।

द्रविण *पुं.* (तत्.)1. धन-सम्पत्ति 2. सुवर्ण, सोना।

द्रवित *वि.* (तत्.) दे. द्रवीभूत।

द्रवीकरण *पुं.* (तत्.) ठोस या गैस को द्रव रूप में बदलना।

द्रवीभूत *वि.* (तत्.) 1. जो द्रव रूप में आया हो या लाया गया हो, तरलीकृत, द्रवित 2. पिघला/पिघलाया हुआ 3. जो दया-भाव से पसीज गया हो।

द्रव्य *पुं.* (तत्.) 1. वस्तु, पदार्थ, चीज़ 2. वह उपादान सामग्री या उपयुक्त वस्तु जिससे अन्य वस्तुएँ बनती हैं जैसे- चाँदी, सोना आदि 3. वह पदार्थ जो गुण का आश्रय हो 4. धन, सम्पत्ति, सामान आदि 5. मदिरा, शराब टि. धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल काल ओर जीव नामक छह द्रव्य जैन धर्म में माने गए हैं।

द्रव्यता *स्त्री.* (तत्.) द्रव्य होने की अवस्था/गुण/भाव।

द्रव्यमय *वि.* (तत्.) 1. द्रव्य से युक्त, पदार्थमय, 2. धनी, सम्पत्तिवान्।

द्रव्यमान *वि.* (तत्.) भौ. गणि. किसी वस्तु में विद्यमान पदार्थ की मात्रा, संहत पदार्थ, संहति। संहति।

द्रव्यवती *स्त्री.* (तत्.) दे. द्रव्यवान्।

द्रव्यवाद *पुं.* (तत्.) पा.दर्श. यह सिद्धांत कि दृश्य जगत् के पीछे कोई वास्तविक सत्ता है।

द्रव्यवान् *वि.* (तत्.) 1. द्रव्य/पदार्थ से युक्त, धनी, सम्पन्न।

द्रव्य-संस्कार *पुं.* (तत्.) यज्ञ आदि के लिए वस्तुओं की शुद्धि।

द्रव्यांतर *पुं.* (तत्.) प्रस्तुत द्रव्य से भिन्न कोई अन्य द्रव्य।

द्रव्यार्जन *पुं.* (तत्.) 1. धन की प्राप्ति 2. धन कमाने की क्रिया/भाव, धनोपार्जन।

द्रष्टव्य *वि.* (तत्.) 1. देखे जाने योग्य, दर्शनीय 2. 2. सुंदर, मनोहर।

द्रष्टा *वि.* (तत्.) देखने वाला, दर्शक *पुं.* 1. साक्षी 2. ऋषि 3. दर्शक व्यक्ति।

द्राक्षा *स्त्री.* (तत्.) अंगूर, दाख।

द्राव *पुं.* (तत्.) चूना, बहना।

द्रावक *वि.* (तत्.) किसी ठोस वस्तु को द्रव बना देने वाला 2. गलानेवाला 3. पिघलानेवाला 4. मन को करुणा/दया से कोमल बना देने वाला *पुं.* 1. चन्द्रकांत मणि 2. धूर्त व्यक्ति 3. मोम 4. सुहागा।

द्रावण *पुं.* (तत्.) 1. द्रवीभूत करने की क्रिया/भाव 2. द्रवीकरण, पिघलाना या गलाना।

द्राविड़ दे. द्रविड़।

द्रावित *वि.* (तत्.) 1. द्रव के रूप में किया हुआ, गलाया हुआ 2. दया-भाव से विह्वल किया हुआ, हुआ, दयार्द्र किया हुआ।

द्रिठि *स्त्री.* (देश.) दे. दृष्टि।

द्रिढ़ *वि.* (देश.) दे. दृढ़।

द्रिब्ब *पुं.* (देश.) द्रव्य।

द्रिष्टि *स्त्री.* (देश.) दृष्टि।

द्रुघण *पुं.* (तत्.) 1. काठ की हथौड़ी 2. कुल्हाड़ी 3 ब्रह्मा।

द्रुत *वि.* (तत्.) 1. वेगवान्, तेज़ 2. बहा हुआ 3. पिघला हुआ, जिसकी गति साधारण से अधिक हो जैसे- द्रुत लय।

द्रुतगति *वि.* (तत्.) तेज़ चलनेवाला, शीघ्रगामी।

द्रुतगामिनी *वि.स्त्री.* (तत्.) द्रुतगामी (स्त्री)।

द्रुतपद *पुं.* (तत्.) तेज़ चलने वाला, शीघ्रगामी चरण छंद. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में नगण, भगण, नगण, यगण (न भ न य) के योग से 12 वर्ण होते हैं।

द्रुतलय *स्त्री.* (संगीत.) मध्यलय की द्विगुण द्रुत लय। लय।

द्रूतविललंबित *पुं.* (तत्.) छंद. एक समवर्णिक छंद, सुंदरी छंद।

द्रुति *स्त्री.* (तत्.) 1. तरल पदार्थ, द्रव 2. द्रवित होने की अवस्था/भाव, द्रवण, पिघलाव।

द्रुतै *क्रि.वि.* (तद्.) शीघ्र, जल्दी।

द्रुतोच्चारिता *स्त्री.* (तत्.) मनो. एक प्रकार का मानसिक रोग जिसमें रोगी जल्दी-जल्दी और अस्पष्ट बोलता है तथा बीच-बीच के शब्द छूटे होते हैं।

द्रुपदात्मज *पुं.* (तत्.) 1. द्रुपद का पुत्र (धृष्टद्युम्न) शिखंडी आदि विलो. द्रुपद की पुत्री, द्रौपदी।

द्रुम *पुं.* (तत्.) 1. वृक्ष 2. पेड़ 2. पारिजात वृक्ष 3. कुबेर, द्रुम-दंड *पुं.* वृक्ष का तना।

द्रुमविज्ञ *पुं.* (तत्.) वह वनस्पतिवेत्ता जो वृक्षों का अध्ययन करता है, द्रुमविज्ञानवेत्ता।

द्रुमविज्ञान *पुं.* (तत्.) वन. वनस्पतिविज्ञान की वह शाखा जिसमें वृक्षों का अध्ययन किया जाता है, वृक्षविज्ञान।

द्रुमारि *पुं.* (तत्.) 1. वृक्षों का शत्रु 2. हाथी।

द्रुमालय *पुं.* (तत्.) वन, जंगल।

द्रुमाली *स्त्री.* (तत्.) 1. वृक्षों की पंक्ति जैसे- फूलों से लदी द्रुमाली 2. वृक्षों का समूह।

द्रुमाश्रय *वि.* (तत्.) वृक्षों पर रहने वाला *पुं.* गिरगिट।

द्रेष्काण स.*वि.* (तत्.) ज्यो. आकाशमंडल में प्रत्येक राशि के 10° के 36 अंशों में से प्रत्येक, राशि का तृतीय भाग जैसे- इस समय सूर्य मेष के द्वितीय द्रेष्काण में है।

द्रोण *पुं.* (तत्.) 1. लकड़ी का एक बड़ा पात्र, कठौता 2. जल से भरा बादल 3. वृक्ष 4. एक प्राचीन तोल/माप जो चार प्रस्थ/आढक या 16 सेर के तुल्य होती थी।

द्रोणकाक *पुं.* (तत्.) जंगली कौआ।

द्रोणाचल *पुं.* (तत्.) एक पर्वत जो हिमालय का एक भाग है, द्रोणगिरि, दूनागिरि।

द्रोणिका *स्त्री.* (तत्.) नील का पौधा भू.*वि.* दो पर्वतों के बीच की भूमि, द्रोणी, दून।

द्रोणी *स्त्री.* (तत्.) 1. जल रखने का एक पात्र, कठौता 2. *स्त्री.* छोटी नाव, डोंगी 3. पत्तों का छोटा दोना, दोनिया 4. लकड़ी की प्याली 5. दो पर्वतों के बीच की भूमि, दून 6. दो पर्वतों के बीच का संकीर्ण मार्ग, दर्रा 7. नील का पौधा 8. नाँद 9. 128 सेर की एक प्राचीन तोल/माप 10. केला भूवि. 1. भूपटल में तश्तरी जैसा गर्त जो तली के धँसने से बना होता है 2. किसी बड़ी नदी और उसकी सहायक नदियों का अपवाह क्षेत्र।

द्रोन *पुं.* (तद्.) द्रोण।

द्रोनाचल *पुं.* (तद्.) द्रोणाचल।

द्रोह *पुं.* (तत्.) 1. प्रतिहिंसा का भाव 2. द्वेष 3. विश्वासघात 4. विद्रोह।

द्रोही *वि.* (तद्.) द्रोह करने वाला, द्रोह में तत्पर *पुं.* शत्रु, वैरी।

द्रौणायन/दौणायनि/द्रौणि *पुं.* (तत्.) आचार्य द्रोण का पुत्र, अश्वत्थामा।

द्रौपद *वि.* (तत्.) राजा द्रुपद संबंधी, द्रुपद का; *पुं.* द्रुपद का पुत्र (धृष्टद्युम्न आदि)।

द्रौपदी *स्त्री.* (तत्.) महाभारतकालीन पंचाल देश के राजा द्रुपद की पुत्री, अर्जुन की पत्नी द्रौपदी मुहा. द्रौपदी का चीर- जो लंबाई में बहुत अधिक हो, कभी न समाप्त होने वाला कार्य आदि, ऐसा क्रम जो कभी समाप्त न होता दिखे; दिखे; द्रौपदी की पतीली- ऐसा भंडार जिसमें से भोजन या खाद्य सामग्री को कितना भी लिया जाए, फिर भी वह समाप्त न हो।

द्रौपदेय *पुं.* (तत्.) द्रौपदी का पुत्र।

द्वंगी *वि.* (तद्.) 1. दो अंगों वाला, दो अणुओं वाला 2. दो अणुओं की मात्रा के तुल्य मात्रा वाला; *पुं.* 1. दो अणुओं के संयोग से उत्पन्न 2. दो अणुओं की मात्रा या उसके तुल्य मात्रा।

द्वंद *पुं.* दे. (तद्.) द्वन्द्व।

द्वंद्व *पुं.* (तत्.) 1. दो वस्तुओं का जोड़ा, युगल 2. 2. दो परस्पर विराधी वस्तुओं/भावों का जोड़ा 3. संघर्ष टकराव, टक्कर 4. उत्पात, उपद्रव 5. कलह, झगड़ा, 6. उलझन, झंझट।

द्वंद्वचर *वि.* (तत्.) युगल रूप में या जोड़े से रहने रहने वाला (पशु-पक्षी) जैसे- चकवा पक्षी और सारस पक्षी।

द्वंद्वज *वि.* (तत्.) किसी द्वंद्व से उत्पन्न जैसे- वात वात और पित्त के द्वंद्वज रोग।

द्वंद्वजुद्ध *पुं.* (तद्.) द्वंद्व-युद्ध।

द्वयर्थ/द्वयर्थक *वि.* (तद्.) जिसके दो अर्थ हों, दो दो अर्थों वाला, द्वि-अर्थक।

द्वंद्वमूलक *वि.* (तत्.) संघर्ष पर आधारित या उससे उससे उत्पन्न जैसे- पाश्चात्य संस्कृति द्वंद्वमूलक है। द्वंद्वमूलक है।

द्वंद्व-युद् ध *पुं.* (तत्.) दो व्यक्तियों का परस्पर युद्ध।

द्वंद्वशः *क्रि.वि.* (तत्.) दो-दो करके, जोड़े में।

द्वंद्वात्मक *वि.* (तद्.) संघर्षपूर्ण, द्वंद्वशील।

द्वंद्वी *वि.* (तत्.) 1. परस्पर जोड़ा बनाने वाले दो दो 2. परस्पर लड़ते-झगड़ते या विरुद्ध रहने वाले दो 3. उपद्रव/झगड़ा करने वाला *पुं.* उपद्रवी/झगड़ालू व्यक्ति।

द्वय *वि.* (तत्.) 1. दुगना, दुहरा 2. दो प्रकार का *पुं.* 1. (समासयुक्त शब्दों के अन्त में) जोड़ा जैसे- नीतिद्वय 2. दो प्रकार का स्वभाव 3. मिथ्यापन।

द्वयवादी *वि.* (तत्.) दो परस्पर विरोधी दो प्रकार की बातें कहने वाला, दुरंगी बातें कहने वाला।

द्वयात्मक *वि.* (तत्.) दो प्रकार के स्वभाव वाला।

द्वादश *वि.* (तत्.) 1. बारह 2. बारह्वाँ।

द्वादशदली *वि.* (तत्.) (वन) वह फूल जिसमें बारह पंखुडियाँ हों।

द्वादश भाव *पुं.* (तत्.) किसी वस्तु का बारहवाँ भाग।

द्वादशाक्षर *पुं.* (तत्.) बारह अक्षर; *वि.* बारह अक्षरों अक्षरों वाला।

द्वादशांगुल *वि.* (तत्.) 1. जो नाप/माप में 12 अंगुल हो 2. जिसकी 12 उँगलियाँ हों।

द्वादशाभरण *पुं.* (तत्.) (मध्य काल में प्रचलित) स्त्रियों के बारह विशेष आभूषण-सीसफूल, टीका, बाली, बेसर, कंठश्री, हार, करधनी, नूपुर, बाजूबंद, चूड़ी, कंकण और अँगूठी।

द्वादशाह *पुं.* (तद्.) 1. बारह दिन चलने वाला एक यज्ञ 2. मृत व्यक्ति की मृत्यु के 12वें दिन दिन किया जाने वाला श्राद्ध।

द्वादशी *स्त्री.* (तत्.) चांद्र मास के शुक्ल/कृष्ण पक्ष पक्ष की 12वीं तीथि।

द्वादसबानी *वि.* (तद्.) बारहबानी, खरा।

द्वादसि *वि.* (तद्.) द्वादशी।

द्वापर/द्वापर *पुं.* (तत्.) सत्ययुग आदि चार युगों में से तीसरा युग, त्रेतायुग और कलियुग के बीच का युग।

द्वाभा *स्त्री.* (तद्.) 1. प्रातः और संध्या के समय का का धीमा प्रकाश 2. मंद प्रकाश।

द्वार *पुं.* (तत्.) ऐसा खुला स्थान जिससे होकर घर/भवन/कमरा आदि से बाहर निकला जा सके या उसमें प्रवेश किया जा सके, बहिर्गमन-मार्ग या प्रवेश-मार्ग, दरवाज़ा, रंध्र, छिद्र; उदा. दरवाजे के समान दो स्थानों के बीच का खुला स्थान जिससे आना-जाना सम्भव हो।

द्वार कपाट *पुं.* (तत्.) दरवाज़े का किवाड़।

द्वारकाधीश/द्वारकानाथ/द्वारकोश *पुं.* (तत्.) 1. द्वारका का स्वामी, कृष्ण 2. द्वारका में स्थित भगवान् कृष्ण की मूर्ति।

द्वार *स्त्री.* (तत्.) 1. विवाह के बाद वधू के ससुराल ससुराल आने पर उसकी ननद द्वारा वरवधू का मार्ग रोककर खड़े होने की रोचक प्रथा जिसमें वर अपनी बहिन को नेग देता है तब रास्ता खुलता है 2. उक्त अवसर पर बहन को दिया जाने वाला या मिलनेवाला धन आदि।

द्वारपंडित *पुं.* (तत्.) (मध्य युग में) किसी भवन/विश्वविद्यालय आदि में द्वार पर स्थित विद्वान् विद्वान् जो प्रवेश चाहने वाले व्यक्ति के ज्ञान की की परीक्षा ले तथा संतुष्टि होने पर ही प्रवेश करने दे।

द्वारपर्दा *पुं.* (तत्.+फा.) दरवाज़े पर टाँगने का पर्दा।

द्वारपाल *पुं.* (तत्.) दो आधारों वाली, द्वार पर नियुक्त रक्षक, ड्योढ़ीदार, दरबान।

द्वार-पूजा *स्त्री.* (तत्.) विवाह में कन्या के घर पर पर बरात बहुँचने के समय द्वार पर स्वागत के बाद होनेवाले पूजन आदि धार्मिक कृत्य, द्वाराचार।

द्वार-मंडप *पुं.* (तत्.) भवन का मुख प्रवेश मंडप या मुख्य द्वार।

द्वारस्थ *वि.* (तत्.) 1. दरवाज़े पर स्थित या बैठा हुआ, 2. दरवाज़े पर लगा हुआ *पुं.* द्वारपाल।

द्वारा[1] *क्रि.वि.* (तत्.) 1. माध्यम से, जरिए 2. किसी किसी व्यक्ति के हाथ से 3. (किसी प्रक्रिया/ कारण के) परिणामस्वरूप।

द्वारा[2] *पुं.* (देश.) 1. द्वार, दरवाज़ा 2. स्थान जैसे- ठाकुरद्वारा, गुरुद्वारा।

द्वाराचार *पुं.* (तद्.) बरात का कन्या के द्वार पर पर प्रथम आगमन और उसका स्वागत तथा द्वार पर की जाने वाली पूजा।

द्वारावती *पुं.* (तत्.) द्वारका/द्वारिका नगरी, द्वारिकापुरी। द्वारिकापुरी।

द्वारिका *स्त्री.* (तत्.) द्वारका/द्वारिका (नगरी), द्वारावती

द्वि *वि.* (तत्.) दो।

द्वि-अक्षरी *वि.* (तत्.) दो अक्षरों वाला शब्द।

द्वि अंगी *वि.* (तत्.) 1. दो अंगों वाला 2. दो भागों का बना हुआ।

द्विअर्थता *स्त्री.* (तत्.+तद्.) कोश. वह स्थिति जिसमें पद या वाक्य के दो या अधिक अर्थ होते हैं, द्वयर्थता।

द्विआधारी *वि.* (तत्.) दो आधार वाली, वह अंकन अंकन पद्धति जिसमें संख्याओं को अभिव्यक्त करने के लिए केवल दो अंकों 0 और 1 का प्रयोग होता है।

द्विककार *वि.* (तत्.) 1. जिसके नाम में दो ककार हों 2. जिस शब्द में दो ककार हों *पुं.* 1. काक 2. चक्रवाक।

द्विकर्मक *वि.* (तत्.) व्या. दो कर्मों वाला जैसे- द्विकर्मक क्रिया 1. जिसके साथ दो 'कर्म' हो (जैसे- 'बच्चे को दूध दो' में 'बच्चा' और 'दूध' दो कर्म हैं 2. ऐसी क्रिया जो 'अकर्मक' और 'सकर्मक' दोनों हो।

द्विकल *पुं.* (तत्.) छंद. दो मात्राओं का समूह।

द्विकालिक कोश *पुं.* (तत्.) (कोश.) दे. कालक्रमिक कोश।

द्विगु *वि.* (तद्.) दो गायों का समूह; *पुं.* व्या. एक एक प्रकार का समास जिसमें प्रथम शब्द संख्यावाचक होता है और दूसरा संज्ञा होता है तथा प्रधान भी, समस्त (समासयुक्त) पद से 'समूह' का बोध होता है जैसे- त्रिलोक, नवग्रह, चौराहा।

द्विगुण *वि.* (तत्.) दोगुना, दुगना, दूना जैसे- 4 का का द्विगुण 8 है।

द्विगुणित *वि.* (तद्.) 1. दो से गुणा किया हुआ 2. दो गुना, दुगुना, दूना।

द्विघात *पुं.* (तद्.) गणि. वह पद (अंक-गणितीय या या बीजगणितीय आदि) जिसका घातांक 2 हो जैसे- $स^2$, 8^2 और $(अ + ब)^2$ द्विघात पद हैं।

द्विचरण *वि.* (तद्.) दो पैरों वाला।

द्विज *वि.* (तत्.) 1. दो बार जन्मा हुआ (पक्षी, सर्प, सर्प, मछली आदि) अंडज जंतु 2. जिसने यज्ञोपवीत धारण कर गुरु से वेद आदि का अध्ययन किया हो, चार वर्णों में से ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण का व्यक्ति 3. दाँत।

द्विजन्मा *वि.* (तत्.) जिसका दो बार जन्म हुआ हो *पुं.* 1. जिसने यज्ञोपवीत धारण कर गुरु से वेद आदि का अध्ययन किया हो, चार वर्णों में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण का व्यक्ति 2. (पक्षी, सर्प, मछली आदि) अंडज जंतु 3. दाँत।

द्विजपति/द्विजराज *पुं.* (तत्.) 1. ब्राह्मण 2. चंद्रमा चंद्रमा 3. गरुड़।

द्विजिह्व *वि.* (तत्.) 1. दो जीभों वाला 2. एक व्यक्ति/पक्ष की बातें उसके विरोधी व्यक्ति/पक्ष को बतानेवाला, दो व्यक्तियों/पक्षों में विरोध उत्पन्न करनेवाला या विरोध को बढ़ाने वाला; *पुं.* 1. सर्प, साँप 2. चुगलखोर 3. कपटी मनुष्य 4. दुष्ट व्यक्ति।

द्विजेंद्र *पुं.* (तत्.) (द्विजों में श्रेष्ठ) ब्राह्मण।

द्वितल *वि.* (तत्.) जिसमें दो तल हों, दुतल्ला।

द्वितीय *वि.* (तत्.) दूसरा; *पुं.* साथी।

द्वितीयक *वि.* (तत्.) 1. दूसरा 2. दूसरी बार होने वाला 3. किसी वस्तु के अनुकरण द्वारा बनाया बनाया हुआ वैसा ही दूसरा।

द्वितीया *स्त्री.* (तत्.) 1. चंद्र मास के शुक्ल/ कृष्ण कृष्ण पक्ष की दूसरी तिथि, दूज 2. (पति के लिए) सहधर्मिणी, पत्नी व्या. एक विभक्ति जिसमें जिसमें प्रायः कर्म कारक का प्रयोग होता है।

द्वितीयाश्रम *पुं.* (तत्.) चार आश्रमों में दूसरा, गृहस्थाश्रम।

द्वित्व *पुं.* (तत्.) 1. एक साथ दो होने की अवस्था अवस्था 2. दोहरा होना व्या. किसी वर्ण या वर्ण-समूह को निरंतर दो बार लिखा या पढ़ा जाना जैसे- 'चम्मच' में 'म' व्यंजन का द्वित्व है।

द्विदंती *वि.* (तद्.) दो दाँतों वाला।

द्विदल *वि.* (तद्.) 1. दो दलों/खंडों/टुकड़ों वाला अन्न जैसे- चना द्विदल अन्न है 2. दो पत्तों वाला 3. दो पंखुडियों वाला (फूल)।

द्विदिवसीय *वि.* (तत्.) दो दिन चलने वाला।

द्विदिश *वि.* (तत्.) 1. जो दो दिशाओं में हो 2. जो दो दिशाओं में काम करता हो या कर रहा हो।

द्विदृष्टिता *स्त्री.* (तत्.) चिकि. नेत्रों का एक रोग जिसमें पेशियों के असंतुलन के कारण व्यक्ति को किसी एक बाह्य वस्तु के दो रूप दिखते हैं। हैं।

द्विदेशीय *वि.* (तत्.) दो देशों में परस्पर होने वाला वाला जैसे- देशीय युद्ध।

द्विधा *स्त्री.* (तत्.) 1. दो प्रकार से 2. दो भागों/टुकड़ों भागों/टुकड़ों में 3. असमंजस, दुविधा, उलझन।

द्विधातु *वि.* (तत्.) जो दो धातुओं के मिलने से बना हो *पुं.* दो धातुओं से बनी मिश्र धातु।

द्विधातुमान *पुं.* (तत्.) वाणि. वह मुद्रा-प्रणाली जिसमें सोना और चाँदी के सिक्के ढालने तथा उनका वैध मुद्रा के रूप में प्रयोग करने में दोनों धातुओं की समान प्रतिष्ठा होती है।

द्विधात्विक *वि.* (तद्.) दो धातुओं से संबंधित।

द्विधामूढ *वि.* (तत्.) दुविधाग्रस्त या दो प्रकार से से मूर्ख/अज्ञानी।

द्विनाराचिका *स्त्री.* (तद्.) अनंगशेखर नामक समवर्णिक छंद।

द्विनेत्री *वि.* (तद्.) दोनों आँखों से देखने का यंत्र *पुं.* दूरदर्शक, दूरबीन। bio-scope

द्विप *पुं.* (तत्.) गज, हाथी।

द्विपक्ष *वि.* (तद्.) द्विपक्षी (दे.) 2. जिसके दो पक्ष पक्ष हों या दोनों ओर पक्ष हों; *पुं.* पूरा चांद्र मास 2. पक्षी, चिड़िया।

द्विपक्षी *वि.* (तद्.) 1. एक महीने में होने वाला 2. 2. जिसका कुछ अंश शुक्ल और कृष्ण दोनों पक्षों में हो जैसे- गया में द्विपक्षी श्राद्ध की रीति रीति है।

द्विपद *वि.* (तत्.) जिसके दो पैर हों जैसे- मनुष्य द्विपद प्राणी हैं व्या. जिसमें दो पद/शब्द हों (ऐसे समासयुक्त या यौगिक पद/शब्द) गणि. दो पदों वाला बहुपद ज्यो. मिथुन, तुला, कुंभ और कन्या राशियों में से प्रत्येक तथा धनु राशि का पूर्व भाग।

द्विपनाह *पुं.* (तत्.+तद्.) (हाथी से श्रेष्ठ) सिंह, शेर। शेर।

द्विपाद *वि.* (तत्.) जिसके दो पैर हों।

द्विपायी *पुं.* (तद्.) गज, हाथी।

द्विपार्श्वघात *पुं.* (तत्.) चिकि. शरीर के दोनों पार्श्वों को प्रभावित करने वाला पक्षाघात।

द्विपार्श्विक *वि.* (तत्.) 1. दो पार्श्वों से संबंध रखने रखने वाला 2. दो पक्षों या दोनों पक्षों की ओर से होने वाला, द्विपक्षी।

द्विपार्श्वीय *वि.* (तत्.) 1. दो या दोनों पार्श्वों से संबंधित 2. द्विपक्षी।

द्विपृष्ठी *वि.* (तत्.) पत्र. (कोई रचना, शीर्ष पंक्ति, पंक्ति, शीर्षक या चित्र) जिसका कुछ भाग बाएँ पृष्ठ पर और कुछ दाएँ पृष्ठ पर छपा हो।

द्विबाहु *पुं.* (तत्.) जिसकी दो भुजाएँ हों *पुं.* दो भुजाओं वाला प्राणी।

द्विबाह्यदली *वि.* (दत्.) वन. (वे फूल) जिनमें दो बाह्य दल होते हैं।

द्विबीजी *वि.* (तद्.) वन. वे फूल जिनमें दो बीज हों।

द्विभाजक *वि.पुं.* (तत्.) गणि. किसी कोण या सरल रेखा आदि के दो समान भाग करने वाला, अर्धक, समद्विभाजक।

द्विभाजन *पुं.* (तद्.) दो भागों में विभाजन गणि. दो समान भाग करने की क्रिया/भाव।

द्विभाजी *वि.* (तद्.) दो भागों वाला जीव. जिसका जिसका दो भागों में विभाजन होता हो।

द्विभाषा *स्त्री.* (तद्.) दो भाषाएँ।

द्विभाषा कोश *पुं.* (तद्.) वह शब्दकोश जिसमें शब्दों की प्रविष्टियाँ एक भाषा में हों तथा उनका अर्थ आदि दूसरी भाषा में हो।

द्विभाषिता *पुं.* (तद्.) द्विभाषी होने का गुण/ भाव। भाव।

द्विभाषी *पुं.* (तद्.) 1. दो भाषाएँ जानने और बोलने बोलने वाला व्यक्ति 2. दुभाषिया 3. दो भिन्न प्रकार की बातें कहने वाला व्यक्ति।

द्विभुज *वि.* (तत्.) दो हाथों वाला; *पुं.* 1. कोण 2. दो हाथों वाला प्राणी 3. मनुष्य।

द्विमासिक *वि.* (तत्.) 1. दो मास में एक बार होने होने वाला 2. दो मास में एक बार प्रकाशित होने वाला।

द्विमुख *वि.* (तत्.) दो मुखों वाला जैसे- द्विमुख औज़ार *पुं.* द्विमुख साँप, पेट से निकलने वाला सफेद कीड़ा।

द्विरंगी *वि.* (तद्.) दो रंगों वाला, दुरंगा।

द्विरद *पुं.* (तत्.) गज, हाथी।

द्विरदांतक *पुं.* (तत्.) सिंह, शेर।

द्विरागमन *पुं.* (तद्.) 1. दूसरी बार आना, पुनः आगमन आगमन 2. वधू का दूसरी बार ससुराल आना, गौना।

द्विरुक्त *वि.* (तत्.) 1. दो बार कहा हुआ, दुहराया हुआ 2. अनावश्यक, निरर्थक (कथन) *पुं.* पुनर्कथन।

द्विरुक्ति *स्त्री.* (तत्.) (कोई बात) दुबारा कहना, पुनरुक्ति व्या. किसी शब्द-रूप या क्रिया-रूप को को दो बार पढ़ना।

द्विरूप *वि.* (तत्.) 1. रूपों वाला 2. रंगों वाला स्थिति/भाव रसा. एक ही रासायनिक यौगिक की दो क्रिस्टलीय रूपों में स्थिति।

द्विरेफ *पुं.* (तत्.) 1. दो रकार 2. भ्रमर, भौंरा।

द्विलिंगिता *स्त्री.* (तद्.) लिंगी/उभयलिंगी होने की स्थिति/भाव मनो. किसी व्यक्ति में स्त्री-पुरुष दोनों की शारीरिक या मानसिक विशेषताओं का होना, उभयलिंगिता।

द्विवर्णदृष्टि *स्त्री.* (तत्.) चिकि. प्राथमिक रंगों में से से केवल दो को देख पाने की शक्ति, द्विवर्णिक, द्विवर्णिक, रंगांधता।

द्विवर्षी *वि.* (तद्.) 1. दो वर्षों में एक बार होने वाला, द्विवार्षिक।

द्विवर्षीय *वि.* (तद्.) दो वर्षों का कुल मिलाकर एक एक बार होने वाला, द्विवर्षी।

द्विवार्षिक *वि.* (तद्.) दो वर्षों में कुल मिलाकर एक एक बार होने वाला; द्विवर्षी।

द्विविध *वि.* (तद्.) दो प्रकार का *क्रि.वि.* दो प्रकार से।

द्विवेद *वि.* (तद्.) दो वेदों का ज्ञाता।

द्विवेदी *वि.* (तद्.) 1. दो वेदों का ज्ञाता, द्विवेद 2. 2. एक ब्राह्मण उपजाति, दुबे।

द्विशः *क्रि.वि.* (तत्.) दो-दो करके।

द्विशत *वि.* (तत्.) दो सौ 2. एक सौ दो *पुं.* 1. दो दो सौ की संख्या 2. एक सौ दो की संख्या।

द्विशफ *वि.* (तत्.) 1. दो खुरों वाला पशु 2. (हिरन (हिरन इत्यादि) ऐसा पशु जिसके खुर चिरे/फटे हों *पुं.* चिरा हुआ खुर/सुम।

द्विशाखी *पुं.* (वन.) (शाखाएँ और पुष्पाक्ष) जो दो-दो में विभाजित होते जाएँ-धतूरा और करौंदे की शाखाएँ।

द्विशिर *वि.* (तत्.) जिसके दो सिर हों।

द्विष्ट *वि.* (तत्.) जिससे द्वेष हो या किया गया हो। हो।

द्विसदनवाद *पुं.* (तद्.) विधान-सभा या संसद् में दो सदन रखने की पद्धति या उसकी पक्षधरता का मत।

द्विसदनी *वि.* (तत्.) दो सदनों वाला।

द्विसमत्रिभुज *पुं.* (तत्.) गणि. ऐसा त्रिभुज जिसकी दो भुजाएँ समान हों।

द्विसहस्र *वि.* (तत्.) दो हज़ार *पुं.* दो हज़ार की संख्या (2000)।

द्विसहस्राक्ष *वि.* (तत्.) दो हज़ार नेत्रों वाला *पुं.* शेषनाग।

द्विसांस्कृतिक *पुं.* (तत्.) 1. दो संस्कृतियों से संबंधित दो संस्कृतियों का 2. दो संस्कृतियों का परस्पर।

द्विसाप्ताहिक *वि.* (तत्.) दो सप्ताहों या एक पक्ष पक्ष में एक बार (प्रकाशित होने वाली पत्रिका)।

द्वींद्रिय *वि.* (तत्.) वह प्राणी जिसके शरीर में दो इंद्रियाँ ही हों।

द्वीप *पुं.* (तत्.) नदी के बहाव से घिरा हुआ स्थान; स्थान; टापू।

द्वीपपुञ्ज *पुं.* (तत्.) अनेक छोटे-छोटे और समीप के द्वीपों का समूह।

द्वीपवती *स्त्री.* (तत्.) भूमि, नदी।

द्वीपवान् *वि.* (तत्.) द्वीपों वाला *पुं.* नद, समुद्र।

द्वीपशृंखला *स्त्री.* (तद्.) द्वीपों की पंक्ति, द्वीपों का का समूह।

द्वीपांतर *पुं.* (तत्.) अन्य द्वीप, भिन्न द्वीप।

द्वीपांतरण *पुं.* (तत्.) 1. द्वीप से दूसरे द्वीप में होने होने वाला, स्थानांतरण 2. (भारत में) कालापानी का दंड।

द्वीपी *वि.* (तत्.) 1. द्वीप-संबंधी, द्वीप का 2. द्वीप द्वीप में रहने वाला *पुं.* 1. चीता 2. लकड़बग्घा 3. चित्रक नामक वृक्ष।

द्वेष *पुं.* (तत्.) विरोध या शत्रुता के कारण किसी व्यक्ति को हानि पहुँचाने का भाव, वैर-भाव।

द्वेषण *पुं.* (तत्.) 1. द्वेष करने की क्रिया 2. घृणा घृणा 3. शत्रुता।

द्वेषाग्नि/द्वेषानल *पुं.* (तत्.) द्वेष-रूपी अग्नि, वैर वैर का प्रचंड/प्रबल रूप।

द्वेषांध *वि.* (तत्.) द्वेष से अंधा बना हुआ।

द्वेषी *वि.* (तत्.)द्वेष करने वाला, वैर रखने वाला।

द्वेष्टा *वि.* (तत्.) द्वेषी।

द्वेष्य *वि.* (तत्.) द्वेष के योग्य *पुं.* शत्रु।

द्वै *वि.* (तत्.) 1. दो 2. दोनों।

द्वैक *वि.* (तत्.) दो-एक, थोड़े-से, कुछ।

द्वैगुण्य *पुं.* (तत्.) 1. द्विगुणता, दुगनापन, दूनापन दूनापन 2. तीनों गुणों (सत्व, रज और तम) में से दो की प्रधानता से युक्त होने की अवस्था/भाव 3. दुगना धन/मूल्य/भाव।

द्वैत *पुं.* (तत्.) 1. दो होने की अवस्था/भाव 2. युगल, जोड़ा 3. भेद-भावना, परायापन 4. अज्ञान, मोह, ब्रह्म और आत्मा/जीवात्मा में अंतर।

द्वैतवाद *पुं.* (तत्.) भा.दर्श. दर्शन. भेदभाव, परायापन, ब्रह्म और आत्मा/जीवात्मा में अंतर मानने का सिद्धांत।

द्वैत्रिज्य *पुं.* (तत्.) गणि. किसी वृत्त का वह भाग जो दो त्रिज्याओं और उनके बीच के चाप से घिरा हो।

द्वैध *पुं.* (तत्.) 1. दो प्रकार के होने की अवस्था/भाव, द्वि प्रकारता 2. भेद-भाव 3. दो प्रकार का का स्वभाव 4. दो प्रकार का व्यवहार, दो प्रकार की नीतियों का व्यवहार करने की अवस्था/गुण/भाव 5. अंतर, फर्क 6. संदेह, शक।

द्वैधीकरण *पुं.* (तद्.) 1. किसी वस्तु के दो भाग करना 2. द्वैध उत्पन्न करना।

द्वैधीभाव *पुं.* (तद्.) 1. निश्चय का अभाव, अनिश्चय, दुविधा 2. दो प्रकार का व्यवहार करने की अवस्था/भाव, मन में जो भाव है, उससे भिन्न भाव व्यवहार में प्रकट करना।

द्वैभाषिकता *स्त्री.* (तद्.) दो भाषाओं में बोलने/लिखने की अवस्था/गुण/भाव।

द्वैमातृक *पुं.* (तत्.) वह क्षेत्र जहाँ खेती वर्षा के जल और नदी आदि के जल से भी होती है।

द्वैवार्षिक *वि.* (तद्.) प्रति दो वर्ष में होने वाला, द्विवार्षिक।

द्वैविध्य *पुं.* (तद्.) 1. असमंजस, दुविधा 2. भिन्नता, अंतर, फर्क 3. दो प्रकार का होने वाला भाव/गुण।

द्वौ *वि.* (तद्.) दोनों।

द्व्यात्मक *वि.* (तद्.) दो स्वभावों वाला।

ध

हिंदी तथा संस्कृत वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन और तवर्ग का चौथा वर्ण, व्याकरण तथा भाषाविज्ञान की दृष्टि से यह दंत्य, घोष, महाप्राण और स्पर्शी है।

धंका *पुं.* (देश.) आघात, चोट, धक्का।

धंगर *पुं.* (देश.) 1. चरवाहा 2. ग्वाला, अहीर (जातिसूचक)।

धंगा *पुं.* (देश.) 1. कीर्ति, यश 2. आघात, चोट 3. खाँसी।

धंदर *पुं.* (देश.) एक प्रकार का धारीदार मोटा कपड़ा।

धंध *पुं.* (देश.) 1. झंझट, बखेड़ा, झमेला 2. धुंध, कुहरा 3. धंधा 4. द्वंद्व 5. ज्वाला।

धंधक *पुं.* (देश.) 1. काम-धंधे का आडंबर, जंजाल, झंझट, बखेड़ा 2. एक प्रकार का ढोल।

धंधक धेरी *पुं.* (देश.) दे. धंधक धोरी।

धंधकधोरी *पुं.* (देश.) 1. काम-धंधे का बोझ लादे रहने वाला, हर घड़ी काम में जुता रहने वाला 2. दुनिया के बखेड़ों या जंजाल में फँसा रहने वाला व्यक्ति।

धंधा *पुं.* (तद्.) 1. जीविका के लिए उद्योग, काम-काज जैसे- वह वकालत का धंधा करता है, यौगिक-काम धंधा, गोरखधंधा 2. उद्यम, व्यवसाय, कारोबार, पेशा, रोजगार जैसे- (क) उसे किसी काम-धंधे में लगा दो (ख) आजकल कोई काम-धंधा नहीं है, खाली बैठे हैं टि. इस शब्द का प्रयोग लिखने-पढ़ने की भाषा में काम शब्द के साथ अधिक होता है 3. दूसरों का चौका-बरतन करने की नौकरी 4. अनैतिक कार्य उदा. वह औरत बुरा धंधा करती है।

धंधार *पुं.* (देश.) पत्थरों या लकड़ियों के उठाने के काम आने वाला लकड़ी का लंबा डंडा, औजार।

धंधारि *स्त्री.* (देश.) 1. धंधार 2. धंधारी 3. ज्वाला, लपट *वि.* एकाकी, अकेला, मानसिक संताप।

धंधारी *स्त्री.* (देश.) 1. गोरखपंथी साधुओं के हाथ में रहने वाला डंडा 2. अकेलापन, एकांत या सुनसान जगह 3. सन्नाटा, निस्तब्धता।

धंधाला *स्त्री.* (देश.) कुटनी, दूती।

धंधालू *वि.* (देश.) किसी काम अथवा धंधे में लगा रहने वाला *पुं.* काम-धंधे वाला व्यक्ति।

धंधु *पुं.* (देश.) उद्यम, काम।

धंस *पुं.* (देश.) ध्वंस, विनाश।

धँधका *पुं.* (देश.) स्त्री. दे. धंधक धंधकी।

धँधरक *पुं.* (देश.) काम-धंधे का आडंबर, जंजाल, बखेड़ा, बोझ।

धँधरकधोरी *पुं.* (देश.) काम-धंधे का बोझ लादे रहने वाला, हर घड़ी काम में जुता रहने वाला।

धँधला *अ.क्रि.* (देश.) 1. छल-कपटपूर्ण आचरण या व्यवहार करना 2. आडंबर करना, ढोंग करना, स्वांग करना 3. धाँधली करना 4. जल्दी मचाना *पुं.* 1. छल-कपटपूर्ण आचरण या व्यवहार 2. आडंबर, ढोंग 3. बहाना 4. धाँधली।

धँधार *स्त्री.* (देश.) दे. धंधार।

धँधेरा *पुं.* (देश.) राजपूतों की एक जाति।

धँधोर *स्त्री.* (देश.) 1. ज्वाला, आग की लपट 2. होली।

धँधौरा *पुं.* (देश.) 1. आग दहकने से धाँय-धाँय जैसी होने वाली ध्वनि 2. होलिका 3. ज्वाला, आग की लपट।

धँवना *स.क्रि.* (देश.) धौंकना उदा. विरहा पूत कोहार का धँवै हमारी देह -साखी।

धँवरख *स्त्री.* (देश.) पंडुक (एक प्रकार की चिड़िया)।

धँस *पुं.* (देश.) कीचड़, दलदल, जमीन आदि में प्रवेश, डुबकी, गोता।

धँसन *स्त्री.* (देश.) 1. धँसने की क्रिया या ढंग या भाव 2. ऐसी जगह जिसमें कोई धँस सकता है 3. दलदल।

धँसना *अ.क्रि.* (देश.) 1. किसी कड़ी अथवा नुकीली वस्तु का दाब पाकर भीतर या अंदर घुसना, गड़ना जैसे- कीचड़ में धँसना 2. नीचे या भीतर अथवा अंदर दब जाना या बैठ जाना या घुस जाना जैसे- सड़क, जमीन, आँख 3. नष्ट होना, तबाह होना 4. बात अथवा विचार के संदर्भ में, समझ में आना प्रयो. उस विद्यार्थी के दिमाग में कोई बात धँसती ही नहीं।

धँसनि *स्त्री.* (देश.) 1. धँसन 2. धसान 3. दलदली जमीन या भूखंड।

धँसा(ना) *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी नुकीली अथवा कड़ी वस्तु को घुसाना 2. गड़ाना, चुभाना 3. जोर लगाकर अंदर प्रविष्ट करना अथवा घुसेड़ना।

धँसान *स्त्री.* (देश.) 1. धँसने की क्रिया या ढंग 2. कीचड़ या दलदली जमीन जिसमें सहज ही कोई धँस सकता हो 3. ढालू जमीन 4. भीड़-भाड़ में तेजी से आगे बढ़ने की क्रिया जैसे- भेड़िया-धँसान।

धँसाव *पुं.* (देश.) दे. धँसान

ध *पुं.* (तत्.) 1. संगीत में धैवत स्वर का सूचक एक संक्षिप्त शब्द 2. धर्म, कुबेर, ब्रह्मा, धन *प्रत्य.* धारण करने वाला।

धई *स्त्री.* (देश.) एक किस्म का जंगली कंद जिसे छोटा नागपुर की पहाड़ी जातियों के लोग खाते हैं।

धउरहर *पुं.* (देश.) दे. धरहरा।

धक *स्त्री.* (तद्.) 1. हृदय की तीव्र धड़कन 2. भय आदि के कारण कलेजे के सहसा घड़कने की स्थिति जैसे- डाकू को देखते ही कलेजा धक-धक करने लगा मुहा. जी धक-धक करना- कलेजा धड़कना; हृदय में धक होना- भय अथवा उद्वेग से हृदय धड़क उठना; भय से हृदय का दहल जाना, चौंक पड़ना 3. मन की उमंग या भाव 4. साहस, हिम्मत 5. *क्रि.वि.* अचानक, सहसा, वेगपूर्वक 6. *स्त्री.* (देश.) सिर में होने वाली एक प्रकार की छोटी जूँ, लीख।

धकधक *क्रि.वि.* (अनु.) 1. धक-धक की ध्वनि के साथ दहकता हुआ 2. खटका, आशंका मुहा. जी धकधक करना- अकस्मात् आशंका या खटका होना।

धकधकना *अ.क्रि.* (अनु.) दे. धकधकाना।

धकधकाना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. भय, उद्वेग, घबराहट आदि के कारण हृदय या कलेजे का तेजी से धड़कना 2. अग्नि का तेज लपट के साथ जलना, दहकना, सुलगना, धधकना, सुलगाना, भभकना 3. ऐसा कार्य करना जिससे किसी अन्य का हृदय धड़कने लगे।

धकधकाहट *स्त्री.* (तद्.) 1. जी के धक-धक करने की क्रिया, धड़कन 2. खटका, आशंका।

धकधकी *स्त्री.* (तद्.) 1. कलेजे या हृदय के धक-धक करने की क्रिया, अवस्था या भाव, हृदय की धड़कन, धुकधुकी 2. आशंका, खटका मुहा. धकधकी लगना- आशंका या खटका होना; जी धड़कना, दिल धड़कना-अचानक आशंका पैदा होना।

धकना *अ.क्रि.* (तद्.) तपना, सुलगना, तप्त होना, जलना, धिकना।

धकपक *स्त्री.* (देश.) 1. जी की धड़कन, धकधकी 2. आशंका, खुटका, खटका, भय 3. *क्रि.वि.* धड़कते हुए जी के साथ, डरते हुए।

धकपकाना *अ.क्रि.* (देश.) भय खाना, दहशत खाना, आतंकित होना।

धकपेल *स्त्री.* (देश.) धक्कमधक्का, रेलपेल, धकापेल।

धका *पुं.* (तद्.) धक्का, आघात, धूम *स्त्री.* रेलपेल, भीड़-भाड़ में होने वाली धक्केबाजी, धक्कम धक्का।

धकाधक *क्रि.वि.* (देश.) तेजी से, अत्यधिक मात्रा में।

धकाधकी *स्त्री.* (देश.) धक्कमधक्का, रेलपेल।

धकाधूम *स्त्री.* (देश.) भीड़भाड़, धकापेल, रेलपेल।

धकाना *स.क्रि.* (तद्.) जलाना, दहकाना।

धकापेल *स्त्री.* (देश.) भीड़-भाड़ में होने वाली धक्केबाजी, धक्कमधक्का, ठेला-ठेली।

धकार *पुं.* (देश.) 1. ध वर्ण या उसकी ध्वनि 2. कान्यकुब्ज तथा सरजूपाणि ब्राह्मणों के वर्ग का वह बाह्मण जो उनकी दृष्टि में निम्न कुल का हो 3. एक राजपूत जाति 4. कम पानी में होने वाला धान।

धकारा *पुं.* (देश.) धकधकी, खटका, आशंका।

धकियाना *स.क्रि.* (देश.) धक्का देना, ढकेलना।

धकेलना *स.क्रि.* (देश.) ढकेलना, धक्का देना, ठेलना।

धकेलू *पुं.* (देश.) धक्का देने वाला, ढकेलने वाला।

धकैत *वि.* (देश.) धक्कम-धक्का करने वाला, धक्का देने वाला।

धक्क *स्त्री.* (देश.) दे. धक *पुं.* दे. धक्का।

धक्कपक्क *स्त्री.* (देश.) दे. धकपक *क्रि.वि.* (देश.) धड़कते हुए जी के साथ, डरते हुए।

धक्कमधक्का *पुं.* (देश.) अत्यधिक भीड़-भाड़ में बहुत सारे आदमियों द्वारा परस्पर धक्का देने की की क्रिया, ढेलमठेल, रेल-पेल।

धक्का *पुं.* (तद्.) 1. किसी को धकेलने या आगे बढ़ाने के लिए उसके पीछे की ओर से डाला जाने वाला दबाव या आघात प्रयो. दरवाजा धक्के से खुला 2. टक्कर के साथ वेगपूर्वक लगने वाला आघात प्रयो. गाड़ी के धक्के से वह जमीन पर गिर पड़ा 3. हानि, घाटा प्रयो. उन्हें व्यापार में आपकी वजह से सौ रुपए का धक्का लगा 4. विपत्ति 5. कष्ट का आघात, मार्मिक पीड़ा प्रयो. पत्नी की मृत्यु के धक्के ने उसे कमजोर कर दिया 6. कुश्ती का एक पेंच जिसमें बायाँ पैर आगे रखकर विपक्षी की छाती पर दोनों हाथों से धक्का देते हुए नीचे गिराया जाता है मुहा. धक्का खाना- धक्का सहना, ठोकर खाना प्रयो. जीवन में सफल होने से पहले उन्होंने बहुत धक्के खाये/सहे; धक्का (या धक्के) देकर निकालना- अनादर या तिरस्कारपूर्वक दूर करना या हटाना।

धक्काड़ *वि.* (देश.) जिसकी खूब धाक जमी हो, धाकड़ 2. अपने विषय में पारंगत जो बड़ा विद्वान हो, प्रभावशाली।

धक्कामुक्की *स्त्री.* (देश.) ऐसी लड़ाई जिसमें लोग एक-दूसरे को धक्के दें, धूँसों आदि से मारें 2. अपने लिए स्थान बनाने या बचाव के लिए अन्य लोगों को धकेलने की क्रिया या भाव की स्थिति।

धखना *अ.क्रि.* (देश.) जलना, प्रज्जवलित होना।

धगड़ *पुं.* (देश.) दे. धगड़ा।

धगड़ा *पुं.* (देश.) 1. किसी स्त्री का जार, उपपति 2. बिना विवाह किए जिसे किसी स्त्री ने पति बना लिया हो 3. लुच्चा।

धगड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. व्यभिचारिणी स्त्री 2. रखैल 3. धाय (राजस्थान में)।

धगधगाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. धड़कना (दिल का, हृदय का) 2. दहकना 3. धकधक करना, धड़कना (हृदय का, जी का)।

धगरा *पुं.* (देश.) दे. धगड़ा।

धगरिन *स्त्री.* (देश.) 1. शिशु जन्म के बाद नाल काटने वाली स्त्री 2. धाँगर जाति की स्त्री 3. अहीरिन।

धगरी *स्त्री.* (देश.) व्यभिचारिणी, कुलटा स्त्री।

धगवरी *वि.* (देश.) 1. पति की मुँह लगी, दुलारी 2. कुलटा, व्यभिचारिणी।

धगा *पुं.* (देश.) धागा, डोरा, तागा, सूत।

धगुला *पुं.* (देश.) हाथ में पहनने का एक आभूषण।

धग्गड़ *पुं.* (देश.) 1. आटे आदि की वह टिकिया जो फोड़े, सूजन आदि पर उसे दबाने या इलाज की दृष्टि से बाँधी जाती है 2. धगड़ा।

धचकचाना *स.क्रि.* (देश.) 1. डराना, दहलाना 2. धचकना (स्थानिक प्रयोग)।

धचकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. दलदल में धँसना 2. संकट में पड़ना।

धचका *पुं.* (देश.) 1. झटका, धक्का, आघात, झोंका 2. धचकने की क्रिया या भाव 3. क्षति, नुकसान।

धचकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. दलदल में फँसाना 2. संकट में डालना 3. दबाने के लिए हल्का आघात पहुँचाना।

धज *स्त्री.* (तद्.) चिह्न, पताका 1. सजावट, बनाव-सिंगार 2. कोई काम करने का सुंदर ढंग या तरीका 3. ठसक, नखरा 4. शोभा यौ. शब्द सजधज प्रयो. उसकी बारात बड़ी सजधज (साज-सज्जा से) से निकली।

धजना *अ.क्रि.* (देश.) सजना, सजधन करना उदा. सीतामाता थी आज नई धज धारे (साकेत-आठवाँ मैथिलीशरण गुप्त)

धजनेज *स्त्री.* (देश.+फा) भाले/बरछी में लगी हुई ध्वजा।

धजबड़ *स्त्री.* (देश.) ध्वजा बढ़ाने वाला, तलवार।

धजा *स्त्री.* (तद्.) 1. ध्वजा, पताका, कपड़े की धज्जी 2. सजधज, सजावट 3. सिर (पूर्वी बोली) 4. धजा उड़ाना।

धजी *स्त्री.* (तद्.) धज्जी, टुकड़ा।

धजीला *वि.* (तद्.) धजवाला, सजीला, आकर्षक, बनाव-सिंगार किया हुआ।

धज्जी *स्त्री.* (तद्.) कपड़े, कागज आदि का लंबा पतला टुकड़ा या पट्टी जो इन्हें काटने या फाड़ने पर निकलती है मुहा. धज्जियाँ उड़ना- कट-फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जाना; धज्जियाँ उड़ाना- चीर-फाड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर देना; पूरे तौर पर ध्वस्त या खंडित कर डालना प्रयो. दुश्मन के व्यूह की धज्जियाँ उड़ा दी गईं।

धट *पुं.* (तत्.) 1. तुला, तराजू 2. तुला राशि 3. तुला परीक्षा 4. धर्म।

धटक *पुं.* (तत्.) एक पुरानी तौल जो बयालीस रत्तियों की होती थी।

धटिका *स्त्री.* (तत्.) 1. पंसेरी, पाँच सेर की एक पुरानी तौल 2. कौपीन, लंगोटी 3. चीर 4. गर्भ के पश्चात या गर्भकाल में स्त्री द्वारा पहना जाने वाला वस्त्र।

धटी *स्त्री.* (देश.) 1. चीर 2. लंगोटी 2. प्राचीनकाल में गर्भाधान के पश्चात् या गर्भकाल में स्त्रियों द्वारा धारण करने के लिए दिया जाने वाला वस्त्र यौ. धटीदान-गर्भाधान के बाद स्त्री को पुराना वस्त्र देना *वि.* (तत्.) तुलाधारक, डाँडी पकड़ने वाला।

धड़ंग *वि.* (तद्.) नंगा, इसका प्रयोग प्रायः नंगा शब्द के साथ होता है जैसे- नंग-धड़ंग।

धड़ *पुं.* (तद्.) 1. शरीर का कमर से गले तक का भुजा रहित भाग 2. पशु-पक्षियों में सिर, हाथ पैर, पूँछ तथा पंख को छोड़कर शरीर का शेष भाग 3. वृक्ष में जमीन के ऊपर से वहाँ तक का भाग जहाँ से शाखाएँ फटती हैं, तना 4. एक प्रकार का बड़ा ढोल या नगाड़ा मुहा. धड़ से- बेखटके, बिना रुके, जल्दी से, चटपट; धड़ में डालना- पेट में डालना *स्त्री.* (देश.) वह शब्द जो किसी वस्तु के एकाएक गिरने से उत्पन्न होता है।

धड़क *स्त्री.* (अनु.) 1. हृदय के स्पंदन, धड़कने की क्रिया, अवस्था या भाव 2. खटका, हिचक, आशंका, रुकावट मुहा. धड़क खुलना- हिचक या संकोच का खत्म हो जाना।

धड़कन *स्त्री.* (देश.) हृदय का स्पंदन, कलेजे की धक-धक, कलेजे का कपकपाना।

धड़कना *अ.क्रि.* (देश.) 1. हृदय का स्पंदित होना 2. जी का धक-धक करना मुहा. छाती/दिल धड़कना- आशंकित होना, भयभीत होना 3. धड़-धड़ का शब्द या ध्वनि उत्पन्न होना।

धड़का *पुं.* (अनु.) 1. दिल की धड़कन 2. खटका, अंदेशा, हिचक 3. खेतों में चिड़ियों को भगाने के लिए खड़ा किया जाने वाला पुतला, धोखा 4. वस्तु आदि के गिरने आदि का शब्द।

धड़काना *स.क्रि.* (देश.) 1. दिल में धड़कन पैदा करना 2. मन में आशंका या खटका उत्पन्न करके दहलाना 3. किसी भारी वस्तु को फेंक कर या गिरा कर या छोड़कर शब्द उत्पन्न करना।

धड़क्का *पुं.* (देश.) 1. धड़का 2. धड़ाका 3. धूम का निरर्थक अनुकरणात्मक शब्द, धूम धड़क्का-खूब धूमधाम/भीड़-भाड़/बड़ा समारोह या ठाटबाट।

धड़चना *स.क्रि.* (तद्.) 1. मारना 2. फाड़ना, विदीर्ण करना।

धड़टूटा *वि.* (देश.) 1. जिसकी कमर झुकी हुई हो 2. झुकी कमर वाला, कुबड़ा।

धड़धड़ *स्त्री.* (अनु.) किसी वस्तु या भारी वस्तु के गिरने, चलने आदि से उत्पन्न होने वाली आवाज़ प्रयो. ट्रेन धड़धड़ करती भागी चली जा रही थी 2. धड़कन *क्रि.वि.* 1. धड़धड़ शब्द के साथ उदा. धड़धड़ पटाखे छूट रहे थे 2. बेधड़क, बिना रुकावट के उदा. वह धड़धड़ करता अंदर घुस आया।

धड़धड़ाना *अ.क्रि.* (अनु.) धड़-धड़ शब्द उत्पन्न करना या होना, वह किवाड़ धड़धड़ा रहा है मुहा. धड़धड़ाता हुआ- वेग के साथ।

धड़ल्ला *पुं.* (अनु.) धड़-धड़ शब्द वेग के साथ गिरने आदि की ध्वनि मुहा. धड़ से या धड़ल्ले के साथ- बिना किसी रुकावट के, बेधड़क प्रयो. मैंने धड़ल्ले से उन्हें सच्चाई बता दी।

धड़वा *पुं.* (देश.) एक किस्म का मैना पक्षी।

धड़वाई *पुं.* (देश.) धड़ा बाँधने वाला, तौलने वाला।

धड़हड़ना *अ.क्रि.* (देश.) काँपना, लरजना।

धड़ा *पुं.* (तद्.) 1. एक प्रकार की पुरानी तौल जो कहीं चार तो कहीं पाँच सेर की मानी जाती रही है 2. तौलने बाट 3. तराजू, तुला मुहा. धड़ा करना- कोई चीज रख कर तौलने के पहले तराजू के दोनो पलड़ों को बराबर करना 4. दल प्रयो. उनकी पार्टी में दो धड़े हैं।

धड़ाक *क्रि.वि.* (अनु.) 1. धड़ शब्द करते हुए 2. एकाएक।

धड़ाका *पुं.* (अनु.) किसी वस्तु के जोर से गिरने, फटने आदि से उत्पन्न होने वाली जोरदार ध्वनि उदा. बंदूक का धड़ाका, धूम-धड़ाका मुहा. धड़ाके से- झट से, बिना रुक कर प्रयो. धड़ाके से वह काम कर डालो।

धड़ाधड़ *क्रि.वि.* (अनु.) 1. धड़-धड़ आवाज करते हुए, लगातार 2. जल्दी-जल्दी, बिना रुके प्रयो. वह सारे सवालों के धड़ाधड जवाब देता चला गया।

धड़ाबंदी *स्त्री.* (तद्.+फा.) 1. किसी भी वस्तु को तौलने से पहले तराजू का धड़ा करना, अर्थात् किसी वस्तु आदि को रखकर ठीक करने की क्रिया या भाव 2. युद्ध से पहले दो दलों द्वारा अपना सैन्य दल बराबर करना 3. किसी प्रकार की प्रतियोगिता, विरोध आदि के लिए प्रस्तुत होने के समय अपने सब अंगों और पक्षों को ठीक करना 4. दलबंदी उदा. राजनीतिक पार्टियों में धड़ाबंदी आम बात है 5. गुटबाजी।

धड़ाम *पुं.* (अनु.) जमीन, पानी इत्यादि पर जोर से गिरने, कूदने आदि की आवाज।

धड़ी *स्त्री.* (तद्.) 1. चार या पाँच सेर की पुरानी तौल, कहीं-कहीं यह दस सेर की भी होती है 2. पाँच सौ रुपए की रकम 3. रेखा, लकीर 4. मिस्सी लगाने या पान खाने से ओठों पर पड़ने वाली लकीर मुहा. धड़ी (करके) लूटना- सब कुछ लूट लेना।

धणी *पुं.* (तद्.) मालिक, स्वामी, अधिपति *स्त्री.* 1. धण (धन) 2. औरत, नारी 3. पत्नी।

धत *स्त्री.* (देश.) बुरी या खराब आदत, बुरी बात, कुटेव *अव्य.* (अनु.) दुतकारने का शब्द, हाथी का पीछे हटाने का शब्द।

धतकारना *स.क्रि.* (देश.) दुतकारना, धिक्कारना, दुरदुराना।

धता *वि.* (देश.) जो दूर हो गया हो या किया गया हो, हटा या हटाया हुआ मुहा. धता करना- हटाना, भगाना; धता बताना- चलता करना, टाल देना।

धतिगड़ *पुं.* (देश.) दे. धतींगड़, धतींगड़ा।

धतिया *वि.* (देश.) धतवाला, बुरी लत वाला।

धतींगड़ *पुं.* (देश.) 1. भीमकाय आदमी, बेडौल आदमी, मुस्टंड 2. जारज, दोगला, हिकना।

धतींगड़ा *पुं.* (देश.) दे. धतींगड़।

धती *पुं.* (देश.) 1. तुला राशि 2. शिव 3. तराजू से तौलने वाला, व्यापारी, बनिया।

धतूर *पुं.* (देश.) 1. तुरही की तरह फूँक कर बजाया जाने वाला एक प्रकार का बाजा, नरसिंहा 2. धतूरा।

धतूरा *पुं.* (तद्.) एक प्रसिद्ध विषैला पौधा या उसका फल, इसके फल तथा बीज जहरीले व मादक

होते हैं, इसके फल शिवजी को चढ़ाये जाते हैं मुहा. धतूरा खाए फिरना- उन्मत्त अथवा पागल बनकर घूमना।

धतूरिया *पुं.* (देश.) पथिकों को धतूरे के बीज खिलाकर बेहोश कर लूटने वाले ठगों का दल।

धत् *अव्य.* (देश.) दुतकारने का शब्द, तिरस्कारपूर्वक हटाने का शब्द, उपेक्षा सूचक शब्द, भाव, पशु-प्राणियों को चलाने का शब्द।

धत्ता *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार का छंद जिसके विषम चरणों में 18 और सम चरणों में 16 मात्राएँ होती हैं तथा अंत में तीन लघु होते हैं 2. थाली की बाढ़ का ढालुआँ अंश या भाग।

धत्तानंद *पुं.* (तत्.) एक छंद।

धतूर *पुं.* (देश.) दे. धतूरा।

धधक *स्त्री.* (देश.) 1. धधकने की क्रिया या भाव 2. लपट 3. आँच, ताप।

धधकना *अ.क्रि.* (देश.) ऊँची लपटों के साथ आग का जलना, धाँय-धाँय जलना, भड़कना।

धधकाना *स.क्रि.* (देश.) ऐसी क्रिया करना जिससे आग में लपटे उठने लगें, जलाना, लपटों के साथ जलाना।

धधाना *अ.क्रि.* (देश.) धधकना, जलना।

धनंजय *पुं.* (तत्.) 1. धन को जीतने अथवा प्राप्त करने वाला 2. विष्णु 3. अग्नि या आग 4. चीते का पेड़ 5. अर्जुन नामक पेड़ 6. शरीर में रहने वाली पाँच वायुओं में से एक जिसकी गणना उप-प्राणों में होती है तथा जिससे जँभाई आती है 7. एक गोत्र का नाम 8. सोलहवे द्वापर के व्यास का का नाम 9. एक नाग 10. पंच पांडवों में से अर्जुन का एक नाम 11. अर्जुन के धनुष का एक बाण।

धन *पुं.* (तत्.) 1. जीवन-निर्वाह या सुख का साधनभूत द्रव्य, भूमि आदि 2. दौलत, रुपया, पैसा 3. यथेष्ट मात्रा या संख्या में उक्त प्रकार की कोई चीज उदा. गो-धन, गजधन, रतनधन 4. अत्यंत प्रिय, जीवन सर्वस्व जैसे- प्राणधन, जीवनधन 5. गणित में योग का चिह्न (+) 6. जन्म कुंडली में में लग्न से दूसरा स्थान जिसे देख कर विचार किया जाता है कि अमुक व्यक्ति धनी होगा या निर्धन 7. लूट का माल 8. पुरस्कार 9. प्रतिद्वंदिता, होड़, मुकाबला 10. आवाज, शब्द, ध्वनि 11. धनिष्ठा नक्षत्र 12. खान से निकली बिना साफ की हुई कच्ची धातु 13. जो हिसाब-किताब में किसी के नाम से जमा हो credit 14. धान का संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दों के आरंभ में लगाया जाता है जैसे- धनकटी = धान-कटाई।

धनक *पुं.* (तत्.) 1. धन पाने की इच्छा 2. लालच, लोभ 3. राजा कृतवीर्य के पिता का नाम 4. धनुष 5. इंद्रधनुष 6. स्त्रियों की एक प्रकार की पतली ओढ़नी *पुं.* (तत्.) 1. धनुष 2. इंद्रधनुष।

धनकर *पुं.* (देश.) 1. वह कड़ी मिट्टी जिसमें धान बोया जाता है और जिसमें बिना अच्छी वर्षा के हल नहीं चल सकता 2. वह खेत जिसमें धान होता हो 3. धान की फसल।

धनकाम्य *वि.* (तत्.) दे. धनकाम।

धनकाम *पुं.* (तद्.) लोभी।

धन-कुबेर *पुं.* (देश.) 1. धन के देवता 2. कुबेर की तरह धनी, प्रचुर धनी।

धन केलि *पुं.* (तत्.) धन के देवता, कुबेर।

धनकोटा *पुं.* (देश.) हिमालय के कुछ भागों में होने वाला एक तरह का पौधा जो कागज बनाने के काम आता है।

धनखर *पुं.* (देश.) वह खेत जिसमें धान बोया जाता हो, धनहा खेत (स्थानीय बोली में)।

धनचिड़ी *स्त्री.* (तद्.) एक किस्म की चिड़िया।

धनतेरस *स्त्री.* (तद्.) कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी, इस दिन धन-प्राप्ति के लिए लक्ष्मी पूजन किया जाता है तथा हिंदू लोग अधिक धन पाने की आशा में नए बरतन खरीदते हैं।

धनदंड *पुं.* (तत्.) अर्थ-दंड, जुर्माना।

धन दिशा *स्त्री.* (तत्.) उत्तर दिशा।

धनद *वि.* (तत्.) धन देने वाला, दाता, उदार तथा दानी *पुं.* 1. कुबेर 2. अग्नि 3. चित्रक या चीता नामक वृक्ष 4. धनंजय नामक शरीरस्थ अग्नि तत्व।

धनदा *वि.* (तत्.) 1. धन देने वाली 2. आश्विन कृष्ण एकादशी का नाम।

धनदाक्षी *स्त्री.* (तत्.) लता, करंज।

धनदायी *पुं.* (तत.) अग्नि।

धनदेव *पुं.* (तत.) धन के स्वामी, कुबेर।

धनधान्य *पुं.* (तत्.) 1. धन एवं खाद्य पदार्थ से पूर्ण 2. धन और अन्न 3. वैभव, समृद्धि।

धनधाम *पुं.* (तत.) रुपया-पैसा तथा घर-बार।

धनधारी *पुं.* (तत्.) 1. कुबेर 2. बहुत धनी।

धननाथ *पुं.* (तत्.) कुबेर।

धनपक्ष *पुं.* (तत्.) 1. बही-खाते में जमा वाला पक्ष या हिस्सा 2. हिसाब-किताब का वह पक्ष जिसमें बाहर से आने वाली पूँजी, लाभ आदि का ब्यौरा होता है। credit side

धनपति *पुं.* (तत्.) 1. कुबेर 2. धनवान व्यक्ति 3. पुराण के अनुसार एक वायु का नाम जिसे देवताओं में धन का रक्षक माना जाता है *वि.* धनहीन।

धनपत्र *पुं.* (तत्.) 1. बही खाता 2. शासन या सरकार द्वारा प्रचलित किया गया वह मुद्रित कागज का टुकड़ा जो सिक्कों के सदृश उनके स्थान पर लेन-देन में काम आता है।

धन पात्र *पुं.* (तत्.) 1. धनी व्यक्ति, धनवान 2. धन रखने का बर्तन।

धनपाल *पुं.* (तत्.) 1. धन का रक्षक 2. कुबेर 3. खजांची।

धनपिशाच *पुं.* (तत्.) दे. अर्थपिशाच।

धनपिशाची *स्त्री.* (तत्.) धन संग्रह की प्रबल तृष्णा।

धनप्रयोग *पुं.* (तत्.) 1. व्यापार में धन लगाना 2. सूद या ब्याज पर रुपया देना।

धनमद *पुं.* (तत्.) धन का घमंड प्रयो. लाटरी निकलने के बाद वह धनमद में चूर हो गया।

धनमान *वि.* (तद्.) दे. धनवान।

धनमूल *पुं.* (तत्.) मूलधन, पूँजी।

धनराज *पुं.* (तत्.) धनी, धनवान।

धनराशि *स्त्री.* (तत्.) 1. धन का ढेर 2. लेन-देन के काम में देय या प्राप्य रकम।

धनवंत *वि.* (तद्.) धनवान।

धनवती *पुं.* (तत्.) धन रखने वाली *स्त्री.* धनिष्ठा नक्षत्र।

धनवा *पुं.* (तद्.) एक प्रकार की घास, धनुष।

धनवाद *पुं.* (तत्.) मुकदमा जिसमें धन के लिए दावा किया गया हो।

धनवान *वि.* (तत्.) जिसके पास बहुत धन हो, धनी।

धन-विधेयक *पुं* (तत्.) अर्थ से संबंधित वह विधेयक जो संसद या विधान सभा के सामने विचार के लिए रखा जाता है तथा जिसमें माँग की स्वीकृति के लिए नया कर लगाने का प्रस्ताव होता है।

धनशाली *वि.* (तत्.) जिसके पास धन हो, धनी।

धन-संपत्ति *स्त्री.* (तत्.) जमीन-जायदाद जैसी मूल्यवान वस्तुएँ जिनका क्रय-विक्रय हो सकता हो।

धनसार *पुं.* (तद्.) अनाज की कोठरी।

धनसुंघा *पुं.* (देश.) धन सूंघने वाला प्रयो. कुछ लोग धनसुंघा होते हैं तथा बिना देखे ही जान लेते हैं कि धन कहाँ है।

धनस्थान *पुं.* (तत्.) 1. कुंडली में लग्न से दूसरा स्थान जिसमें स्थित ग्रहों को देखकर किसी का धनवान या निर्धन होना माना जाता है 2. खजाना।

धनस्यक *पुं.* (तत्.) 1. धन की लालसा रखने वाला व्यक्ति 2. गोखरू वनस्पति *वि.* धन की लालसा रखने वाला।

धनस्वामी *पुं.* (तत्.) कुबेर।

धनहर *पुं.* (तत्.) 1. धन हरने वाला व्यक्ति, चोर, लुटेरा 2. उत्तराधिकारी 3. एक गंध द्रव्य *वि.* धन हरण करने वाला।

धनहार्य *वि.* (तत्.) जिसे धन देकर वश में किया जा सके।

धनहीन *वि.* (तत्.) जिसके पास धन न हो, निर्धन, गरीब उदा. वह व्यापार, कारोबार आदि में घाटा सहते-सहते धनहीन हो गया है।

धना *स्त्री.* (तद्.) 1. युवती, वधू (कविता में प्रयोग) 2. एक रागिनी।

धनाढ्य *वि.* (तत्.) बहुत धनी, धनवान, दौलतमंद। उदा. धनाढ्य ही हाथी पाल सकते हैं।

धनात्मक *वि.* (तत्.) 1. धन पक्ष संबंधी 2. धन वाले तत्व से युक्त।

धनादेश *पुं.* (तत्.) 1. किसी को धन देने की आज्ञा या आदेश 2. डाकखाने के माध्यम से अन्य व्यक्ति को भेजा जाने वाला धन 3. किसी व्यक्ति को उल्लिखित रकम दिए जाने का बैंक का लिखित आदेश। money order

धनाधिकार *पुं.* (तत्.) धन या संपत्ति का अधिकार उदा. हिंदू उत्तराधिकार नियमों के अनुसार पुत्र को पिता की आयु के बाद ही धनाधिकार प्राप्त होता है।

धनाधिप *पुं.* (तत्.) कुबेर।

धनाधीश *पुं.* (तत्.) धनपति, धनिक।

धनाध्यक्ष *पुं.* (तत्.) 1. कुबेर 2. खजांची उदा. वह लंबी अवधि तक उस संस्था का धनाध्यक्ष रहा।

धनाना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. गाय, भैंस आदि का गर्भवती होना 2. गाय, भैंस आदि का गर्भाधान कराना, गाय का बरदाना (बरद=साँड) 3. साँड से संयोग कराना।

धनापहार *पुं.* (तत्.) 1. अर्थदंड, जुरमाना 2. लूट।

धनार्चित *वि.* (तत्.) धन आदि की भेंट द्वारा सम्मानित या संतुष्ट किया हुआ।

धनार्थी *वि.* (तत्.) धन का इच्छुक प्रयो. बैंक के कमरे में बहुत से धनार्थी अपनी पारी की प्रतीक्षा में बैठे थे।

धनाशा *स्त्री.* (तत्.) धन पाने की आशा, अर्थ प्राप्ति की आशा प्रयो. धनाशा कवियों को रीतिकालीन राजाओं के पास खींच ले जाती थी।

धनाश्री *स्त्री.* (तत्.) एक रागिनी जिसका प्रयोग प्राय: वीर रस में होता है।

धनि *स्त्री.* (तद्.) 1. युवती, वधू, पत्नी 2. *वि.* धन्य उदा. धनि धनि भारत की छत्रानी।

धनिक *वि.* (तत्.) जिसके पास धन हो, धनी *पुं.* 1. धनवान व्यक्ति, अमीर 2. स्त्री का पति, स्वामी 3. वह जो लोगों को धन उधार देता हो, महाजन 4 धनिया।

धनिक *वि.* (तत्.) 1. तंत्र 2. ऐसी शासन व्यवस्था जिसमें धनिक वर्ग का प्राधान्य हो, ऐसी शासन व्यवस्था जिसमें सत्ता धनिकों के प्रतिनिधियों के हाथ में रहती है।

धनिका *स्त्री.* (तत्.) 1. धनी स्त्री 2. युवती 3. पत्नी, वधू 4. प्रियंगु वृक्ष।

धनिप *पुं.* (तत्.) 1. धनी 2. स्वामी।

धनिया *पुं.* (तद्.) एक कटीले तथा छोटे पत्तों वाला छोटा पौधा जिसके बीज मसाले में प्रयोग किए जाते हैं, वैद्यक में औषधि के रूप में भी इसका प्रयोग होता है *स्त्री.* 1. पत्नी, वधू 2. युवती।

धनियामाल *स्त्री.* (तद्.) गले में पहनने का एक प्राचीन परिपाटी का गहना।

धनिष्ठ *वि.* (तत्.) धनी, धनाढ्य।

धनिष्ठा *स्त्री.* (तत्.) सत्ताईस नक्षत्रों में से एक नक्षत्र।

धनी *वि.* (तत्.) धनवान्, दौलतमंद, मालदार, कुशल, सिद्धहस्त जैसे- कलम का धनी, तलवार का धनी मुहा. बात का धनी- बात का सच्चा, अपने वचन पर दृढ़ रहने वाला; उदा. वह बात का धनी है, जो कहता है उसे अवश्य पूरा करता है *पुं.* धनवान पुरुष, किसी वस्तु का स्वामी, पति *स्त्री.* पत्नी, वधू, युवती यौ. धनी-धोरी- मालिक, रक्षक, पूछने वाला प्रयो. जान पड़ता है कि उस बंगले का कोई धनी-धोरी ही नहीं है।

धनीका *स्त्री.* (तत्.) 1. युवती, तरुणी 2. धनी नारी।

धनी-मानी *वि.* (तत्.) जिसके पास पर्याप्त धन, मान व प्रतिष्ठा हो, धन तथा मान वाला प्रयो. वह अपने इलाके का धनी-मानी व्यक्ति है।

धनीयक *पुं.* (तत्.) धनिया (मसाले व औषधि में प्रयुक्त होने वाला बीज)।

धनु *पुं.* (तत्.) 1. धनुष, चाप 2. ज्योतिष की बारह राशियों में से नवीं राशि 3. एक लग्न 4. हठ योग में एक प्रकार का आसन 5. प्रियंगु वृक्ष 6. नदी का रेतीला किनारा 7. चार हाथ की एक माप।

धनुआ *पुं.* (तद्.) 1. धनुष के आकार का ताँत की डोरी वाला वह उपकरण जिससे धुनिए रुई धुनते हैं, धुनकी।

धनुई *स्त्री.* (तद्.) छोटा धनुष (प्राय: बच्चों के लिए होता है)।

धनुक *पुं.* (तद्.) 1. धनुष 2. इंद्रधनुष।

धनुर *पुं.* (तत्.) धनुष का समासगत रूप (समास में प्रयुक्त)।

धनुर्गुण *पुं.* (तत्.) धनुष की डोरी, प्रत्यंचा।

धनुर्ग्रह *पुं.* (तत्.) 1. धनुष चलाने वाला योद्धा, धनुर्धर, तीरदांज 2. धनुर्विद्या 3. धृतराष्ट्र के एक एक पुत्र का नाम।

धनुर्ग्राह *पुं.* (तत्.) धनुर्धर।

धनुर्ज्या *स्त्री.* (तत्.) धनुष की डोरी, प्रत्यंचा।

धनुर्द्रुम *पुं.* (तत्.) बाँस।

धनुर्धर *पुं.* (तत्.) धनुष धारण करने व चलाने वाला व्यक्ति, तीरंदाज 2. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम 3. विष्णु 4. धनु राशि।

धनुर्धारी *वि.* (तत्.) 1. धनुष धारण करने वाला *पुं.* धनुष रखने और चलाने वाला योद्धा।

धनुर्मार्ग *पुं.* (तत्.) धनुष की तरह अर्द्धवृत्ताकार।

धनुर्मास *पुं.* (तत्.) वह अवधि जब सूर्य धनु राशि में स्थित होता है।

धनुर्यज्ञ *पुं.* (तत्.) 1. प्राचीन भारत में एक प्रकार का उत्सव या यज्ञ जिसमें धनुष का पूजन तथा उसके चलाने की प्रतियोगिता होती थी 2. मिथिला में राजा जनक द्वारा अपनी पुत्री सीता के वर के चयन के लिए ऐसा उत्सव आयोजित किया गया था।

धनुर्लता *स्त्री.* (तत्.) सोमलता।

धनुर्विद्या *स्त्री.* (तत्.) धनुष चलाने की विद्या।

धनुर्वेद *पुं.* (तत्.) यजुर्वेद का उपवेद जिसमें विशेष रूप से धनुष चलाने की विद्या का निरूपण किया किया गया है।

धनुर्वेदी *पुं.* (तत्.) शिव, महादेव *वि.* धनुर्वेद जानने वाला।

धनुष *पुं.* (तत्.) 1. बाँस या लोहे के लचीले डंडे को झुका कर उसके दोनों छोरों के बीच डोरी या ताँत बाँध कर बनाया जाने वाला उपकरण जिस पर तान कर तीर को दूर फैंका जाता है, कमान 2. चार हाथ का पुराने काल का माप 3. हठयोग का एक आसन 4. चिरौंजी का पेड़, पयाल 5. रहस्य संप्रदाय में परमात्मा का ध्यान।

धनुष-टंकार *पुं.* (तत्.) 1. धनुष की प्रत्यंचा से उत्पन्न होने वाला शब्द 2. एक व्याधि जिसमें विषाक्तता के कारण शरीर अकड़ कर टेढ़ा हो जाता है, धनुर्वात। tetanus

धनुषाकार *वि.* (तत्.) आकार में धनुष जैसा, धनुष जैसे झुके आकार का, धनुष के समान आकार वाला।

धनुषाकृति *स्त्री.* (तत्.) धनुष का आकार या आकृति।

धनुष्कर *पुं.* (तत्.) 1. धनुष निर्माता 2. धनुर्धर।

धनुष्कोटि *पुं.* (तत्.) 1. धनुष का छोर 2. एक तीर्थ जो बदरिकाश्रम के मार्ग में स्थित है 3. रामेश्वरम् के दक्षिण-पूर्व में स्थित एक तीर्थ।

धनुष्पाणि *वि.* (तत्.) जिसके हाथ में धनुष हो।

धनुष्मान् *पुं.* (तत्.) 1. धनुर्धर 2. उत्तर दिशा का एक पर्वत।

धनुस *पुं.* (तद्.) दे. धनुष।

धनुस्तंभ *पुं.* (तद्.) वातजन्य एक रोग जिसमें शरीर धनुष के समान टेढ़ा हो जाता है।

धनुहा *पुं.* (तत्.) धनुष।

धनुहाई *स्त्री.* (तत्.) धनुष की लड़ाई, बाणयुद्ध।

धनुहिया *स्त्री.* (देश.) दे. धनुही।

धनुही *स्त्री.* (तद्.) बालकों के खेलने का छोटा धनुष।

धनू *स्त्री.* (तत्.) 1. धनुष 2. अन्न का भंडार।

धनेश *पुं.* (तत्.) 1. धन का स्वामी 2. कुबेर 3. विष्णु 4. जन्म कुंडली में लग्न का दूसरा स्थान।

धनेश्वर *पुं.* (तत्.) 1. धन का स्वामी 2. कुबेर 3. विष्णु।

धनेस *पुं.* (तद्.) 1. लंबी गरदन व चोंच वाली बगले के आकार की चिड़िया तु. लोक विश्वास है कि इस चिड़िया को घर या पेड़ पर बैठा देखने से उसके स्वामी को धन की प्राप्ति होती है 2. कुबेर, धनेश।

धनैषणा *स्त्री.* (तत्.) धन पाने की इच्छा उदा. मनुष्य की धनैषणा कभी समाप्त नहीं होती।

धनैषी *वि.* (तत्.) धन का इच्छुक, धन चाहने वाला।

धनोष्मा *स्त्री.* (तत्.) धन की गरमी या घमंड।

धन्द *पुं.* (देश.) धंधा, व्यवसाय।

धन्न *वि.* (तद्.) धन्य प्रयो. धन्न भाग हमारे जो आप पधारे।

धन्ना *पुं.* (देश.) धरना, किसी बात के लिए अकड़ कर बैठना।

धन्ना सेठ *पुं.* (तद्.) बहुत धनी आदमी (परिहास व व्यंग्य में) प्रयो. वह धन्ना सेठ बनता फिरता है मुहा. धन्ना सेठ का नाती-बहुत धनी कुल का (व्यंग्य में) प्रयो. तुम इतनी बड़ी रकम कहाँ से लाओगे, धन्ना सेठ के नाती हो क्या?

धन्नी *स्त्री.* (देश.) 1. पंजाब में पाई जाने वाली गायों-बैलों की एक जाति 2. घोड़े की एक जाति।

धन्य *वि.* (तत्.) 1. कृतार्थ प्रयो. आपके घर पधारने से हम धन्य हुए 2. श्लाघ्य, प्रशंसा के योग्य, पुण्यात्मा, सुकृति, भाग्यशाली 3. धन देने वाला, धनी, धनद *अव्य.* साधुवाद के लिए बोला जाने वाला एक शब्द *पुं.* 1. भाग्यशाली व्यक्ति 2. अश्वकर्ण वृक्ष 3. नास्तिक 4. विष्णु 5. धनिया।

धन्यता *स्त्री.* (तत्.) धन्य होने की स्थिति या भाव।

धन्यमन्य *वि.* (तत्.) अपने-आपको भाग्यशाली या धन्य मानने वाला।

धन्यवाद *पुं.* (तत्.) साधुवाद, शाबासी, प्रशंसा, वाहवाही *अव्य.* कृतज्ञता प्रकट करने वाला एक शब्द प्रयो. धन्यवाद, आपने मदद पहुँचाई।

धन्या *वि.* (तत्.) भाग्यशालिनी, प्रशंसनीय, पुण्यशीला, धन्य का स्त्री रूप *स्त्री.* 1. उपमाता 2. वन देवी 3. विमाता 4. मनु की कन्या जो ध्रुव की पत्नी बनी 5. धनिया 6. छोटा आँवला।

धन्याक *पुं.* (तत्.) धनिया।

धन्वंग *पुं.* (तत्.) 1. धामिन का पेड़, धनुर्वृक्ष 2. एक प्रकार की मछली 3. सर्पिली।

धन्वंतर *पुं.* (तत्.) चार हाथ की माप।

धन्वंतरि *पुं.* (तत्.) 1. देवताओं के वैद्य, जो पुराण पुराण के अनुसार समुद्र मंथन के समय में हाथ में अमृत-पात्र लिए प्रकट हुए थे 2. विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक 3. सूर्य।

धन्व *पुं.* (तत्.) 1. धनुष 2. मरुभूमि, मरुस्थल 3. तट।

धन्वज *वि.* (तत्.) मरुदेश में उत्पन्न।

धन्वन *पुं.* (तत्.) धामिन का पेड़।

धन्वा *पुं.* (तत्.) 1. धनुष कमान 2. मरुभूमि, रेगिस्तान 3. सूखी जगह 4. आकाश, अंतरिक्ष।

धन्वाकार *वि.* (तत्.) धनुष के आकार का, गोलाई लिए, झुका हुआ।

धन्विन *पुं.* (तत्.) सूअर।

धन्वी *वि.* (तत्.) 1. धनुष धारण करने वाला 2. चतुर, होशियार *पुं.* 1. पाँच पांडवों में से मँझले भाई अर्जुन का एक नाम 2. अर्जुन वृक्ष 3. बकुल, मौलसिरी 4. विष्णु 5. शिव 6. धनु राशि।

धप *स्त्री.* (अनु.) भारी चीज के गिरने से होने वाली आवाज प्रयो. वह कीचड़ में धप से गिर गया *पुं.* थप्पड़, तमाचा।

धपना *अ.क्रि.* (देश.) 1. तेजी से चलना, झपटना 2. सिर पर थप्पड़ मारना, मारना, पीटना।

धपाड़ *स्त्री.* (देश.) धपने की क्रिया या भाव जैसे- दौड़-धपाड़।

धप्पा *पुं.* (देश.) 1. हल्के आघात से लगाया जाने वाला थप्पड़, तमाचा प्रयो. मैंने उसे प्यार से एक धप्पा लगाते हुए कहा 2. घाटा, नुकसान।

धप्पाड़ *स्त्री.* (देश.) धपाड़, दौड़।

धब-धब *स्त्री.* (अनु.) 1. भारी और मुलायम वस्तु के गिरने या उस पर चोट करने से होने वाला शब्द 2. भारी-भरकम आदमी के चलने के समय जमीन पर पैर पड़ने से होने वाले शब्द।

धबला *पुं.* (देश.) 1. कमर के नीचे का ढीला पहनावा 2. स्त्रियों का घाघरा, लहँगा।

धब्बा *पुं.* (देश.) 1. किसी धरातल पर लगा भद्दा दाग, चिह्न 2. कलंक, ऐब, दोष मुहा. नाम में धब्बा लगना- कीर्ति को मिटाने वाला काम करना; धब्बा लगाना- कलंकित करना, बदनाम करना, दोषारोपण करना।

धम *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. कृष्ण 3. यमराज 4. ब्रह्मा *स्त्री.* (अनु.) भारी चीज के गिरने या आघात से होने वाला शब्द, धमाका जैसे- धम से गिरना।

धमक *स्त्री.* (अनु.) 1. हल्का कंपन, किसी भारी वस्तु के आघात या चलने या उसकी गति से उत्पन्न कंप प्रयो. ट्रेन के चलने से पटरियों के आस-पास धमक सी महसूस हुई *पुं.* 1. धौंकने वाला, लोहार 2. पैरों की आहट।

धमकना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. धम शब्द पैदा करते हुए गिरना 2. रुक-रुक कर पीड़ा होना प्रयो. बुखार में मेरा सिर धमक रहा है 3. वेगपूर्वक गमन करना मुहा. आ धमकना (या धमक पड़ना) एकाएक वेगपूर्वक आ पहुँचना प्रयो. वह बिना बताए मेरे यहाँ रात को दस बजे आ धमका 4. घूँसा, जुर्माना लगा देना, जड़ देना प्रयो. मैंने उसे तेजी से एक घूँसा धमक दिया प्रयो. अदालत ने उसे हजार रुपए का जुर्माना धमक दिया।

धमका *पुं.* (देश.) आघात, घूँसा (तद्.) उमस, गरमी।

धमकाना *स.क्रि.* (तद्.) डराना, धमकी देना, अहित की चेतावनी देना।

धमकी *स्त्री.* (देश.) अहित की चेतावनी देने की क्रिया, घुड़की प्रयो. पीटने की तुम्हारी धमकी से मैं डरने वाला नहीं हूँ।

धमक्का *पुं.* (देश.) धमाका।

धमधमाना *अ.क्रि.* (अनु.) 1. धम-धम शब्द कहना 2. कूद-फाँद या चल-फिरकर कंप और शब्द उत्पन्न करना उदा. घोड़े धमधमाते हुए आ पहुँचे।

धमधूसर *वि.* (देश.) स्थूल, मोटा, बेडौल आदमी।

धमन *पुं.* (तत्.) 1. हवा से फूँकने का कार्य 2. पोली नली जिसमें हवा भर कर फूँका जाता है, फुँकनी, धौंकनी *वि.* फूँकने वाला, भट्ठी चलाने वाला मनुष्य।

धमन-भट्टी *स्त्री.* (तद्.+तद्.) धातु आदि गलाने की भट् टी जिसमें हवा तेजी से पहुँचाई जाती है, ब्लास्ट फर्नेस।

धमना *स.क्रि.* (तद्.) धौंकना, नली में हवा भर कर तेजी से फूँकना।

धमनि *स्त्री.* (तत्.) 1. धमनी, नाड़ी, शरीर की वाहिकाएँ, नलिकाएँ जो रक्त को हृदय से कोशिकाओं तक ले जाती हैं 2. गरदन, गला, ग्रीवा 3. प्रह्लाद

के भाई ह्लाद की पत्नी का नाम 4. हल्दी 5. फुँकनी।

धमनिका *स्त्री.* (तत्.) 1. छोटी और पतली धमनी 2. तुरही।

धमनी *स्त्री.* (तत्.) दे. धमनि।

धमस *स्त्री.* (तद्.) थकान, श्रमजन्य अनुभूति।

धमसा *पुं.* (तद्.) धौंसा, नगाड़ा।

धमाका *पुं.* (तद्.) 1. भारी वस्तु के गिरने का शब्द 2. तेज आवाज उदा. बंदूक के धमाके से वातावरण गूँज उठा।

धमाचौकड़ी *स्त्री.* (देश.) उछल-कूद, कूद-फाँद, ऊधम, उपद्रव उदा. बच्चों, यहाँ धमाचौकड़ी मत मचाओ।

धमाधम *क्रि.वि.* (अनु.) धम-धम शब्द करते हुए प्रयो. बच्चे धमाधम नीचे कूद पड़े, उन पर धमाधम थप्पड़ पड़ने लगे।

धमार *स्त्री.* (तद्.अनु.) उपद्रव, उछल-कूद, उत्पात, धमाल *पुं.* फाग का एक भेद, फागुन के गीत, एक ताल।

धमारिया *वि.* (तद्.) उपद्रवी, उत्पाती, उछल-कूद मचाने वाला *पुं.* 1. होली के धमार गाने वाला 2. कलाबाज 3. मंत्र बल से दहकते अंगारों पर चलने वाला साधु।

धमारी *वि.* (तद्.) उत्पाती, उपद्रवी *स्त्री.* धमाचौकड़ी, होली की क्रीड़ा।

धमाल *स्त्री.* (देश.) दे. धमार।

धमाला *पुं.* (देश.) चूल्हे के ऊपर दीवार में बना वह छिद्र जिससे धुआँ बाहर निकलता है।

धमाली *स्त्री.* (देश.) जोगीड़े की तरह के एक प्रकार के अश्लील गीत।

धमासा *पुं.* (तद्.) जवासा।

धमि *स्त्री.* (तत्.) फूँकने की क्रिया।

धमिका *स्त्री.* (तत्.) लोहार की स्त्री, लोहारिन।

धमिल *पुं.* (तत्.) सिर के बालों का बँधा हुआ जूड़ा।

धमेख *पुं.* (तद्.) वाराणसी के निकट सारनाथ के पास एक स्तूप जिसे बुद्ध के धर्म-चक्र प्रवर्तन की स्मृति में बनाया गया था।

धमोड़ना *स.क्रि.* (तद्.) आघात करना, प्रहार करना।

धम्मल *पुं.* (तत्.) दे. धम्मिल्ल।

धम्मिल्ल *पुं.* (तत्.) 1. सिर के बालों को लपेट कर बनाया जाने वाला जूड़ा 2. मोतियों, फूल आदि से सजाया हुआ जूड़ा या केशकलाप।

धम्हा *पुं.* (तद्.)धमन भट्ठी,धातु गलानेकी भट्ठी।

धयना *अ.क्रि.* (तद्.) दौड़ना।

धरंता *वि.* (तद्.) धरने वाला, पकड़ने वाला।

धर *वि.* (तत्.) धारण या ग्रहण करने वाला (केवल समास में इस शब्द का प्रयोग होता है) उदा. चक्रधर, महीधर *पुं.* 1. पृथ्वी को अपने ऊपर धारण किए कच्छप 2. विष्णु 3. श्रीकृष्ण 4. पर्वत, पहाड़ 5. एक वसु 6. व्यभिचारी 7. कपास की रुई 8. तलवार *स्त्री.* 1. धरने/पकड़ने की क्रिया, धर-पकड़ 2. गिरफ्तारी प्रयो. क्रांतिकारी पुलिस की धर-पकड़ से बचने के लिए भूमिगत हो गए।

धरकना *अ.क्रि.* (अनु.) दे. धड़कना।

धरकार *पुं.* (देश.) एक जाति जो बाँस की टोकरियाँ आदि बनाती है, बँसोर।

धरण *पुं.* (तत्.) 1. रखने, थामने, ग्रहण करने या सँभालने की क्रिया या भाव 2. एक प्राचीन तौल 3. बाँध 4. पुल 5. सहारा 6. संसार 7. सूर्य 8. स्तन 9. धान 10. एक नागर का नाम 11. पहाड़ का किनारा।

धरणि/धरणी *स्त्री.* (तत्.) 1. पृथ्वी 2. नाड़ी, नस 3. सेमर का पेड़ 4. शहतीर

धरणि/धरणी कीलक *पुं.* (तत्.) पृथ्वी को कील की तरह दबाए रहने वाला, पहाड़, पर्वत टि. पुराणों के अनुसार पहाड़ पृथ्वी को दबाकर रखते हैं।

धरणि/धरणीकंद *पुं.* (तत्.) एक कंद का नाम।

धरणिज/धरणीज *पुं.* (तत्.) 1. धरती सुत, धरती पुत्र 2. मंगल ग्रह 3. नरकासुर।

धरणिजा/धरणीजा *स्त्री.* (तत्.) 1. धरती की बेटी, धरणिसुता, धरणीसुता, धरणिपुत्री 2. सीता।

धरणिधृत/धरणीधृत *पुं.* (तत्.) 1. पर्वत 2. विष्णु 3. शेषनाग।

धरणिपति/धरणीपति *पुं.* (तत्.) राजा, नृप, भूपति।

धरणिपूर, धरणीपूर *पुं.* (तत्.) समुद्र, सागर।

धरणिप्लव, धरणीप्लव *पुं.* (तत्.) सागर, समुद्र।

धरणिभृत, धरणीभृत *पुं.* (तत्.) 1. शेषनाग 2. विष्णु 3. पर्वत, पहाड़, राजा भूपति।

धरणिरुह/धरणीरुह *पुं.* (तत्.) वृक्ष, पेड़।

धरणीधर/धरणिधर *पुं.* (तत्.) धरती को धारण करने वाला 2. कच्छप 3. पर्वत 4. विष्णु 5. शिव 6. शेष नाग 7. राजा।

धरणी मंडल/धरणीमंडल *पुं.* (तत्.) भूमंडल।

धरणीय *वि.* (तत्.) 1. धारण करने योग्य 2. सहारा लेने के योग्य।

धरणीश्वर *पुं.* (तत्.) 1. राजा 2. विष्णु 3. शिव।

धरता *पुं.* (तद्.) 1. धारण करने वाला 2. ऋणी, कर्जदार, यौ. कर्ता-धरता, सब कुछ करने-धरने वाला।

धरती का फूल *पुं.* (तद्.) 1. कुकुरमुत्ता 2. हाल ही में अमीर हुआ आदमी 3. मेंढ़क।

धरती *स्त्री.* (तद्.) 1. पृथ्वी, जमीन, भूमंडल, संसार मुहा. धरती बहाना- खेत जोतना, हल जोतने के समान कड़ी मशक्कत करना।

धरतीपुत्र *पुं.* (तद्.+तत्) देश की रक्षा के लिए या गौरव में वृद्धि करने की खातिर साहस पूर्ण प्रशंसनीय कार्य करने वाला व्यक्ति।

धरधर *पुं.* (तद्.) दे. धराधर *स्त्री.* (अव्य.) दे. धड़धड़।

धरधरा *पुं.* (देश.) धकधकी, धड़कन।

धरधराना *अ.क्रि.* (तत्.) दे. धड़धड़ाना।

धरन *स्त्री.* (तत्.) 1. धरने की क्रिया या भाव, ढंग 2. अपनी बात पर दृढ़तापूर्वक अड़े रहने की अवस्था/क्रिया या भाव, जिद, टेक 3. गर्भाशय की ऊपरी नस जो उसे अपने स्थान पर रखती है मुहा. धरन धरना- अपनी बात पर अड़े रहना, जिद पकड़ना प्रयो. उसने तो मानों वहाँ न जाने की धरन धर ली थी; धरन डिगना- नाभि क्षेत्र की नसों का अपने स्थान से हट जाना; धरन खिसकना, टलना या सरकना- गर्भाशय की नस का अपनी जगह से हट जाना जिससे गर्भाशय इधर-उधर हो जाता है।

धरनहार *वि.* (तद्.) धारण करने वाला।

धरना *स.क्रि.* (तद्.) 1. पकड़ना, थामना, दृढ़तापूर्वक पकड़ना 2. ग्रहण करना 3. अधिकार में लेना मुहा. धर दबाना, धर दबोचना- पकड़ कर वश में कर लेना प्रयो. बिल्ली ने चूहे को धर दबाया/धर दबोचा 4. किसी स्थान पर किसी चीज को रखना उदा. वह संदूक में कपड़े धर रही थी मुहा. (किसी चीज या बात का) धरा रह जाना- समय पर काम न आना प्रयो. शेर के सामने आते ही शिकारी की सारी बहादुरी धरी की धरी रह गई 5. किसी के अधिकार में देना या किसी के पास रखना प्रयो. ये सिक्के तुम लॉकर में धर दो 6. निश्चित या स्थिर करना प्रयो. उत्सव के लिए पंडित जी से दिन धरने के लिए कहा गया 7. धारण करना उदा. बहुरूपिए की तरह रूप न धरो 8. रखैल बनाकर घर में रख लेना प्रयो. मोहन ने उस औरत को घर में धर लिया 9. गिरवी या रहन या बँधक रखना प्रयो. वह अंगूठी धर कर रुपए ले आया 10. ज्वलनशील आग का पकड़ना उदा. झोपड़ी ने मिनटों में आग धर ली *पुं.* प्रार्थना या माँग पूरी न होने तक किसी के यहाँ अड़कर बैठ जाने की क्रिया/स्थिति या भाव प्रयो. बैंक के कर्मचारी अपनी मांगों को लेकर धरने पर बैठ गए।

धरनि *स्त्री.* (तद्.) दे. धरणी।

धरनिधर *पुं.* (तद्.) 1. शेषनाग 2. पर्वत।

धरनिसुता *स्त्री.* (तद्.) दे. सीता, जानकी।

धरनी *स्त्री.* (तद्.) दे. धरणी।

धरनीतल *पुं.* (तद्.) पृथ्वी की सतह, समूची पृथ्वी।

धरनीधर *पुं.* (तद्.) दे. धरणीधर।

धरनैत *पुं.* (देश.) धरना देने वाला, किसी माँग के लिए अड़कर बैठ जाने वाला व्यक्ति।

धर-पकड़ *स्त्री.* (देश.) धरने एवं पकड़ने की क्रिया उदा. स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पुलिस द्वारा क्रांतिकारियों की खूब धर पकड़ की जाती थी।

धरम *पुं.* (तद्.) दे. धर्म।

धरम-सार *स्त्री.* (तद्.) 1. धर्मशाला 2. सदावर्त, खैरातखाना।

धरमावतार *पुं.* (तद्.) दे. धर्मावतार।

धरमी *वि.* (तद्.) 1. धर्म के अनुसार आचरण करने वाला 2. किसी धर्म का अनुयायी 3. धर्म-संबंधी दे. 'धर्मी'।

धरवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. धरने का काम कराना, पकड़ना, थमाना 2. रखवाना 3. गिरफ्तार या बंदी बनाना।

धरषना *स.क्रि.* (तद्.) 1. घर्षण करना 2. दबाना 3. दमन करना 4. मर्दन करना।

धरसना *अ.क्रि.* (तद्.) दब जाना, डर जाना, आक्रांत हो जाना, डरना, सहम जाना *स.क्रि.* दबाना, अपमानित करना।

धरसनी *स्त्री.* (तत्.) दे. धर्षणी।

धरहर *स्त्री.* (देश.) बीच-बचाव करके लड़ने-झगड़ने वालों को लड़ाई से विरत करना, बचाव, रक्षा 2. धीरज, धैर्य।

धरहरना *अ.क्रि.* (देश.) धड़धड़ाना, धड़-धड़ शब्द करना।

धरहरा *पुं.* (तद्.) 1. खंभे के समान ऐसी ऊँची वास्तु-संरचना जिसमें चढ़ने के लिए अंदर से सीढ़ियाँ बनी होती हैं 2. मीनार 3. धौरहर।

धरहरिया *पुं.* (देश.) 1. धर-पकड़ कर बीच-बचाव करा देने वाला, बीच-बचाव कराने वाला 2. रक्षक।

धरा *स्त्री.* (तत्.) 1. पृथ्वी, जमीन, धरती 2. जगत, जगत, संसार, दुनिया 3. गर्भाशय 4. चर्बी, मेद 5.नस, नाड़ी 6. एक वर्णवृत्त (देश.) तौल की बराबरी, किसी वस्तु की तौल के बराबर का बाट या बटखरा।

धराऊ *वि.* (देश.) जिसे संभाल कर रखा गया हो तथा कभी-कभार खास अवसरों पर निकाला जाए, बहुमूल्य जैसे- धराऊ कपड़ा, धराऊ जोड़ा।

धरा-कदंब *पुं.* (तत्.) एक किस्म का कदंब।

धरातल *पुं.* (तत्.) 1. पृथ्वी का ऊपरी तल 2. पृथ्वी 3. क्षेत्रफल प्रयो. धरातल पर साँप-बिच्छू रेंग रहे थे।

धरात्मज *पुं.* (तत्.) धरती का बेटा 1. मंगल ग्रह 2. नरकासुर।

धरात्मजा *स्त्री.* (तत्.) धरती की बेटी, सीता।

धरादेव *पुं.* (तत्.) ब्राह्मण।

धराधर *पुं.* (तत्.) 1. पृथ्वी को धारण करने वाला 2. शेष नाग 3. विष्णु 4. पर्वत, पहाड़ 5. राजा।

धराधार *पुं.* (तत्.) धरती का आधार अर्थात्, धारणकर्ता, शेष नाग।

धराधिप *पुं.* (तत्.) राजा।

धराधिपति *पुं.* (तत्.) राजा, भूपति।

धराधीश *पुं.* (तत्.) राजा।

धराना *स.क्रि.* (तत्.) 1. पकड़ाना, थमाना 2. धारण कराना।

धरापति *पुं.* (तत्.) धरती का स्वामी 1. राजा 2. विष्णु।

धरापुत्र *पुं.* (तत्.) 1. मंगल ग्रह 2. नरकासुर।

धरापृष्ठ *पुं.* (तत्.) धरती की सतह, धरती-तल, भूतल।

धराभुक् *पुं.* (तत्.) राजा।

धराभृत *पुं.* (तत्.) पर्वत, पहाड़।

धरामर *पुं.* (तत्.) ब्राह्मण।

धराव *पुं.* (देश.) 1. पकड़ने की क्रिया या स्थिति 2. पकड़ 3. पहुँच।

धराशायी *वि.* (तत्.) 1. धरती पर गिरा हुआ 2. युद्ध में निहत प्रयो. युद्ध में वीर धराशायी हुआ करते हैं 3. गिर, ढह या टूटकर जमीन के बराबर हो जाना प्रयो. जोरदार भूकंप के झटकों ने कई भवनों को धराशायी कर दिया था।

धरासुत *पुं.* (तत्.) 1. मंगल ग्रह 2. नरकासुर।

धरासुर *पुं.* (तत्.) ब्राह्मण।

धरास्त्र *पुं.* (तत्.) एक किस्म का प्राचीन अस्त्र जिसका प्रयोग विश्वामित्र ने वशिष्ठ पर किया था।

धरिंगा *पुं.* (देश.) एक किस्म का चावल।

धरित्री *स्त्री.* (तत्.) पृथ्वी, धरती।

धरिमा *स्त्री.* (तद्.) तराजू, रूप, आकार।

धरी *स्त्री.* (देश.) 1. चार सेर (कहीं-कहीं पाँच सेर) की एक तौल 2. रखेली, उपपत्नी 3. अवलंब, सहारा 4. कान में पहनने का स्त्रियों का एक गहना।

धरुण *पुं.* (तत्.) 1. जल, पानी 2. मत, राय 3. वस्तु को सुरक्षित रखने का स्थान 4. अग्नि 5. दूध पीने वाला बछड़ा 5. आधार, सहारा 6. कड़ी मिट्टी 7. हौज।

धरेचा *पुं.* (देश.) वैसा पति जिसे स्त्री बिना विवाह के ही ग्रहण कर ले, उपपति।

धरेजा *पुं.* (देश.) 1. स्त्री को रखेल बनाकर रखने की क्रिया 2. एक स्त्री के मर जाने पर दूसरी स्त्री स्त्री को बिना ब्याह किए पत्नी की तरह रखने की क्रिया या विधि।

धरेध *स्त्री.* (देश.) वह स्त्री जिसे बिना ब्याह के घर में रखा गया, रखेली स्त्री।

धरेल *स्त्री.* (तत्.) उपपत्नी, रखेली।

धरेला *पुं.* (तत्.) वह पति जिसे बिना ब्याह किए ही स्त्री ग्रहण कर ले।

धरेली *स्त्री.* (देश.) उपपत्नी, रखेली।

धरेवा *पुं.* (देश.) विवाह का एक प्रकार, करेवा।

धरेश *पुं.* (तत्.) 1. भूपति 2. राजा।

धरेस *पुं.* (तद्.) भूपति, राजा, धरापति।

धरैया *पुं.* (देश.) 1. धरने वाला, पकड़ने वाला व्यक्ति 2. धारण करने वाला व्यक्ति 3. रखेल या रखेली बनाने की प्रथा।

धरोहर *स्त्री.* (तद्.) 1. वह वस्तु या द्रव्य जो किसी किसी के पास इस विश्वास पर रखा गया हो कि स्वामी द्वारा माँगे जाने पर वापस कर दिया जायेगा, अमानत, थाती प्रयो. यह मूर्ति मैं तुम्हारे पास धरोहर रूप में रख रहा हूँ, वापस लौटकर मैं तुमसे ले लूँगा 2. वह वस्तु या गुण जो निधि के रूप में हमें पूर्वजों से मिली है प्रयो. अजंता की गुफाएँ राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर हैं।

धरौली *स्त्री.* (देश.) एक किस्म का छोटा पेड़ जो भारत में प्रायः सभी जगह और विशेष कर हिमालय की तराई में पाया जाता है और इसमें सफेद लाल या पीले फूल लगते हैं, इसके बीजों, छाल और जड़ों में औषधि के गुण होते हैं एवं इसकी लकड़ी पर नक्काशी का काम अच्छा होता है।

धरौवा *पुं.* (देश.) बिना विधिपूर्वक विवाह किए स्त्री या पुरुष को पत्नी या पति बना कर रखने की प्रथा।

धर्ता *पुं.* (तत्.) धारण करने वाला, अपने ऊपर किसी काम या बात का भार लेने वाला प्रयो. उस कार्यक्रम का सारा कर्ता-धर्ता रमेश ही है *वि.* ऋणी या कर्जदार।

धर्तूर *पुं.* (तत्.) धतूरा।

धर्त्र *पुं.* (तत्.) 1. घर, गृह 2. यज्ञ 3. पुण्य 4. सहारा, टेक 5. नैतिकता।

धर्मचिंता *पुं.* (तत्.) दे. धर्म चिंतन।

धर्मनिष्पति *स्त्री.* (तत्.) 1. कर्तव्यपालन तथा धर्मपालन 2. धार्मिक आचरण।

धर्म *पुं.* (तत्.) 1. पदार्थ का वह प्राकृतिक व मूल गुण, विशेषता अथवा वृत्ति जो उसके अंदर सदा विद्यमान रहती हो तथा जिससे उसे एक पहचान मिलती हो और जिससे उसे कभी विलगाया नहीं जा सकता प्रयो. सूरज का धर्म प्रकाश व गर्मी प्रदान करना है 2. भगवान की प्राप्ति या सद्गति सद्गति के लिए किसी महात्मा या पैगबर द्वारा

चलाया गया मत विशेष जैसे- ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म 3. काव्य. काव्य में अलंकार के संदर्भ में धर्म उस गुण या वृत्ति को कहते हैं जो उपमेय और उपमान दोनों में समान रूप से विद्यमान हो और जिसके कारण एक वस्तु की उपमा दूसरी से दी जाती है जैसे- रक्त चरण कमल सम कोमल कमल और कोमल तथा लाल चरण, यहाँ कोमलता तथा ललाई उपमेय और उपमान में विद्यमान समान शब्द धर्म है 4. लौकिक, सामाजिक कर्तव्य उदा. गुरु भक्ति विद्यार्थियों का का धर्म है, माता-पिता की सेवा पुत्र का धर्म है 5. सामाजिक क्षेत्र में व्यवहार, विधि आदि के आधार पर तय, नियत या निश्चित, वे सभी काम या बातें जिनका पालन समाज के अस्तित्व अथवा संचालन के लिए आवश्यक होता है तथा जो सार्वजनिक रूप से मान्य होता है उदा. सत्य, न्याय, अहिंसा, दया, सदाचार आदि का पालन मानव धर्म है 6. ऋषि, मुनि अथवा आचार्य द्वारा द्वारा निर्दिष्ट वह कृत्य जिससे पारलौकिक सुख मिले 7. मीमांसा के अनुसार वेद विहित यज्ञादि कर्मों का विधिपूर्वक अनुष्ठान ही धर्म है तथा इससे स्वर्ग की प्राप्ति होती है 8. वह कर्म जिसे वर्णाश्रम आदि की दृष्टि से करना आवश्यक हो (इसके पाँच भेद होते हैं (क) वर्ण धर्म (ख) आश्रम धर्म (ग) वर्णाश्रम धर्म (घ) गौण धर्म तथा (ञ) नैमित्तिक धर्म 9. मनु ने धर्म के दस गुणों की चर्चा की है- धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इंद्रिय-निग्रह, धी, विद्या, सत्य एवं अक्रोध 10. राजा अथवा सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट लोक-व्यवहार संबंधी नियम 11. सदाचार 12. पुण्य 13. सत्कर्म 14. सत्संग 15. न्यायशीलता और विवेक् बुद्धि 16. यम 17. निष्पक्षता 18. औचित्य 19. तरीका, ढंग 20. आचार 21. युधिष्ठिर 22. याग 23. अहिंसा 24. उपनिषद 25. न्याय 26. धनुष 27. सोमपायी 28. आत्मा 29. कुंडली में लग्न से नवाँ स्थान मुहा. धर्म में आना- अंतःकरण में उचित जान पड़ना प्रयो. जैसा तुम्हारे धर्म में आए करो; धर्म कमाना- धर्म करके उसका फल संचित करना प्रयो. गो-सेवा कर धर्म कमाओ; धर्म की धूम- धर्म का अत्यधिक प्रचार प्रयो. अखण्ड यज्ञ के दौरान चारों ओर यज्ञ की धूम मची हुई थी; धर्म खाना- धर्म की शपथ खाना प्रयो. धर्म की खाकर कहो कि तुमने रुपये नहीं चुराये हैं; धर्म की दुहाई देना- धर्म का हवाला देना, धर्म का स्मरण करना उदा. धर्म की दुहाई की आड़ में कृपया आप गलत काम न करें; धर्म बिगाड़ना, धर्म भ्रष्ट करना- कर्तव्य च्युत धर्म के विरूद्ध आचरण करना उदा. मुझ से जीव हत्या करवा कर तुमने मेरा धर्म बिगाड़ (धर्म भ्रष्ट कर) दिया; धर्म से कहना- धर्म को ध्यान में रखकर उचित और न्यायसंगत बात कहना; धर्म लगती कहना- धर्म का ध्यान रखकर ठीक-ठाक, उचित बात कहना प्रयो. मैं तो धर्म की लगती कहता हूँ, चाहे किसी को अच्छा लगे या बुरा; धर्म रखना- धर्मानुसार आचरण या व्यवहार करना उदा. विलायत में उसने अपना धर्म रखते हुए दिन व्यतीत किए।

धर्म-कथक *पुं.* (तत्.) धर्म, विधि, नियम या कानून का व्याख्याता।

धर्म-कर्म *पुं.* (तत्.) धर्म या विधान सम्मत काम उदा. धर्म-कर्म के मामले में वे जीवन में कभी पीछे नहीं हटे।

धर्मकाम *वि.* (तत्.) धर्म को ध्यान में रखकर उचित कार्य करने वाला प्रयो. धर्मकाम युधिष्ठिर को कौन नहीं जानता।

धर्मकाय *पुं.* (तत्.) 1. बौद्ध-दर्शन में बुद्ध का वह परमार्थ-भूत शरीर जो अनिर्वचनीय, अनंत, अपरिमेय तथा सर्वव्यापक माना गया है 2. एक जैन मुनि।

धर्मकार्य *पुं.* (तत्.) धर्म का काम, धार्मिक कृत्य।

धर्मकील *पुं.* (तत्.) 1. राज्य का शासन 2. शासन करने वाली सत्ता 3. पति।

धर्मकृच्छ्र *पुं.* (तत्.) धर्म की दृष्टि से किसी कार्य में उचित तथा अनुचित दोनों जान पड़ने से उत्पन्न द्वैत भाव, वह स्थिति जिसमें धर्मपालन करना आसान न हो।

धर्मकृत्य *पुं.* (तत्.) धार्मिक कांड या कर्मकांड प्रयो. वह उम्र भर धर्मकृत्य निभाता रहा।

धर्मकेतु *पुं.* (तत्.) 1. कश्यप वंशीय सुकेतु राजा के पुत्र का नाम 2. बुद्धदेव।

धर्मकोश, धर्मकोष *पुं.* (तत्.) विधान कोष, धर्म का कोष।

धर्मक्रिया *स्त्री.* (तत्.) धार्मिक कृत्य, धर्मकार्य।

धर्मक्षेत्र *पुं.* (तत्.) 1. कुरुक्षेत्र 2. भारतवर्ष की जो धर्म-कार्य करने के लिए उपयुक्त माना गया है, उसकी संज्ञा।

धर्मखाता *पुं.* (तत्.) दान, परोपकार आदि कामों में लगाने के लिए निर्धारित व्यय का मद।

धर्मगंडिका *स्त्री.* (तत्.) यज्ञ का वह खूँटा, जिसपर बलि चढ़ाए जाने वाले पशु का सिर रखा जाता है।

धर्मगुप्त *पुं.* (तत्.) विष्णु *वि.* धर्म का रक्षण और पालन करने वाला।

धर्मगुरु *पुं.* (तत्.) 1. किसी धर्म या संप्रदाय का प्रधान आचार्य या गुरु 2. धार्मिक उपदेश या गुरु-मंत्र प्रदान करने वाला गुरु।

धर्मग्रंथ *पुं.* (तत्.) किसी संप्रदाय या धर्म-विशेष का वह ग्रंथ जिसमें उस धर्म या संप्रदाय के आधारभूत दर्शन का निर्देशन हो प्रयो. कुरान शरीफ मुहम्मद साहब के अनुयायियों का धर्मग्रंथ है।

धर्मघट *पुं.* (तत्.) 1. सुगंधित जल से भरा घड़ा जिससे वैशाख-भर दान देने का माहात्म्य पुराणों में वर्णित है 2. बस्तियों में प्रत्येक घर में रखा जाने वाला वह घड़ा जिसमें दान-कार्य के लिए नित्य थोड़ा-थोड़ा अनाज डाल कर एकत्रित किया जाता है।

धर्मघड़ी *स्त्री.* (तत्.) सार्वजनिक अवलोकन के लिए परोपकार की भावना से लगाई गई घड़ी।

धर्मघ्न *वि.* (तत्.) 1. धर्मघातक, धर्महीन, अधार्मिक 2. अनैतिक।

धर्मचक्र *पुं.* (तत्.) 1. धर्मसंघ 2. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र 2. धर्म शिक्षा रूपी वह चक्र या पहिया जो गौतम बुद्ध ने सारनाथ में संसार को धर्म-शिक्षा देने के लिए चलाया था, बुद्ध की शिक्षा 4. बुद्ध देव 5. अशोक स्तंभ पर निर्मित चक्र जो राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे पर अंकित है।

धर्मचरण *पुं.* (तत्.) दे. धर्मचर्या।

धर्मचर्या *स्त्री.* (तत्.) किसी धर्म में प्रतिपादित सिद्धांतों के अनुसार किए जाने वाले समस्त व्यवहार व आचरण उदा. दीन-दुखियों की सेवा उनकी धर्मचर्या में शामिल था।

धर्मचारिणी *स्त्री.* (तत्.) 1. पतिव्रता 2. पत्नी 3. धर्माचरण करने वाली स्त्री *वि.* धर्मानुकूल आचरण करने वाली।

धर्मचिंतक *वि.* (तत्.) 1. धर्म पर विचार करने वाला, सोचने वाला 2. स्मृतिकार उदा. इस देश में बुद्ध, महावीर जैसे बहुत बड़े-बड़े धर्मचिंतक हुए हैं।

धर्मचिंतन *पुं.* (तत्.) धर्म संबंधी बातों का विचार उदा. उनकी पुस्तक से हमें उनके गहन धर्मचिंतन का परिचय मिलता है।

धर्मच्युत *वि.* (तत्.) धर्म से भ्रष्ट, पतित उदा. उनके धर्म-विरुद्ध आचरण से कुपित होकर धर्माचार्यों ने उन्हें धर्मच्युत घोषित कर दिया।

धर्मज *पुं.* (तत्.) 1. धर्मपत्नी से उत्पन्न औरस पुत्र 2. युधिष्ठिर 3. बुद्ध का एक नाम 4. नरनारायण *वि.* धर्म से उत्पन्न।

धर्मजन्मा *पुं.* (तत्.) युधिष्ठिर।

धर्मजन्य *वि.* (तत्.) धर्माचरण से जिसकी उत्पति हो, धर्म से उत्पन्न उदा. धर्मजन्य विश्वास व प्रथाएँ बहुत ही प्रबल होती हैं।

धर्मजिज्ञासा *स्त्री.* (तत्.) 1. धर्म के बारे में जानने की जिज्ञासा 2. धर्मानुकूल आचरण करने की जिज्ञासा।

धर्मजीवन *पुं.* (तत्.) धर्मकृत्य कराकर जीविकोपार्जन करने वाला ब्राह्मण *वि.* धर्मानुकूल आचरण करने वाला।

धर्मज्ञ *पुं.* (तत्.) बुद्ध *वि.* धर्म को जानने वाला।

धर्मण *पुं.* (तत्.) 1. धामिन वृक्ष 2. धामिन साँप 3. धामिन पक्षी।

धर्मणा *क्रि.वि.* (तत्.) दे. धर्मतः।

धर्मतंत्र *पुं.* (तत्.) राज्य की वह शासन व्यवस्था जो ईश्वर अथवा धर्म के नाम पर राज्य के पुरोहित वर्ग द्वारा संचालित होती हो।

धर्मतः *अव्य.* (तत्.) धर्म से, धर्म का ध्यान रखते हुए, धर्म को साक्षी करके, सच-सच या सत्य-सत्य प्रयो. धर्मतः उनका प्रस्ताव गलत है।

धर्मतात *पुं.* (तत्.) युधिष्ठिर।

धर्मत्याग *पुं.* (तत्.) 1. धर्माचरण न करना 2. धर्म को छोड़ देना।

धर्मत्राता *पुं.* (तत्.) धर्म की रक्षा करने वाला *वि.* धर्म का रक्षक।

धर्मद *वि.* (तत्.) अपने धर्म का फल दूसरों को देने वाला *पुं.* कार्तिकेय का एक अनुचर, सेवक।

धर्मदक्षिणा *स्त्री.* (तत्.) धार्मिक कृत्य कराने वाले को दिया जाने वाला द्रव्य या धन।

धर्मदा *वि.* (तत्.) धर्म प्रदान करने वाली, अपने धर्म का पुण्य दूसरे को देने वाली *स्त्री.* अपने धर्मकर्मों का फल अथवा पुण्य दूसरों को देने वाली नारी।

धर्मदान *पुं.* (तत्.) धर्म या परोपकार भाव से प्रेरित होकर किया जाने वाला सात्विक, निष्काम दान।

धर्मदार, धर्मदारा *स्त्री.* (तत्.) धर्मपत्नी, ब्याह कर कर लाई गई स्त्री।

धर्मदुधा *स्त्री.* (तत्.) केवल धार्मिक कृत्यों के लिए दुही जाने वाली गाय।

धर्मदेशक *पुं.* (तत्.) धर्मोपदेशक, धर्म संबंधी उपदेश देने वाला।

धर्मद्रवी *स्त्री.* (तत्.) गंगा नदी।

धर्मद्रोही *पुं.* (तत्.) दैत्य, राक्षस *वि.* धर्म न मानने वाला, अधर्मी।

धर्मधक्का *पुं.* (देश.) 1. धर्म कार्य के लिए उठाया जाने वाला कष्ट 2. धर्म के लिए उठाई जाने वाली हानि या कठिनाई 3. व्यर्थ का कष्ट 4. अच्छा काम करने पर भी मिलने वाली बुराई।

धर्मधातु *पुं.* (तत्.) बुद्धदेव।

धर्मधुर्य *वि.* (तत्.) जो धर्मपालन/न्याय का पालन करने में सबसे आगे हो।

धर्मध्वज, धर्मध्वजी *पुं.* (तत्.) 1. धर्म का आडंबर रचकर स्वार्थ साधने वाला मनुष्य, धार्मिकों-सा वेश बनाकर लोगों से अपनी पूजा करवाने वाला व्यक्ति, पाखंडी 2. जनक के वंशजों में मिथिला के एक ब्रह्मज्ञानी राजा जिनकी कथा महाभारत के शांतिपर्व में दी गई है।

धर्मनंदन *पुं.* (तत्.) धर्म का बेटा, युधिष्ठिर।

धर्मनाथ *पुं.* (तत्.) जैनों के पंद्रहवें तीर्थंकर जो रत्नपुरी नगरी में इक्ष्वाकु कुल में उत्पन्न हुए, इनके पिता का नाम भानुराज तथा माता का नाम सुव्रता देवी था।

धर्मनाभ *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. एक प्राचीन नदी का नाम।

धर्मनिरपेक्ष *वि.* (तत्.) किसी धार्मिक संप्रदाय के लिए पक्षपात या प्रभुत्व की भावना न रखने वाला, धर्म के मामले में निरपेक्ष या तटस्थ रहने वाला, सभी धर्मों का समान आदर प्रयो. भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है जहाँ सभी धर्मों का बराबर सम्मान किया जाता है *पुं.* धर्म के मामले में तटस्थ रहने वाला व्यक्ति या भाव।

धर्मनिवेश *पुं.* (तत्.) धर्म में भक्ति या निष्ठा।

धर्मनिष्ठ *वि.* (तत्.) धर्मपरायण, धर्म में जिसकी निष्ठा/आस्था हो।

धर्मनिष्ठा *स्त्री.* (तत्.) धर्म में आस्था, श्रद्धा, विश्वास प्रयो. उनकी धर्मनिष्ठा पर संदेह करना अनुचित होगा।

धर्मपति *पुं.* (तत्.) 1. धर्मात्मा 2. वरुण।

धर्मपत्तन *पुं.* (तत्.) 1. बृहत् संहिता के अनुसार कूर्म विभाग में दक्षिण का एक स्थान जो संभवतः आधुनिक जिला मालाबार के आसपास था 2. श्रावस्ती नगरी 3. काली या गोल मिर्च।

धर्मपत्नी *स्त्री.* (तत्.) धर्मशास्त्र में निर्दिष्ट रीति से से ब्याहता स्त्री, धर्मानुसार विवाहिता स्त्री।

धर्मपत्र *पुं.* (तत्.) गूलर, जिसके पत्र आदि यज्ञादि धर्मकार्यों में प्रयुक्त होते हैं।

धर्म-पट्ट *पुं.* (तत्.) राजा, शासन, अधिकारी या धर्माधिकारी की ओर से दिया गया व्यवस्था पत्र।

धर्म-पथ *पुं.* (तत्.) धर्म का मार्ग, नैतिक मार्ग उदा. असंख्य कठिनाइयों में भी धर्मपथ का त्याग नहीं करना चाहिए।

धर्मपरिषद् *स्त्री.* (तत्.) न्याय करने वाली सभा, धर्म-सभा।

धर्मपरायण *वि.* (तत्.) धर्म द्वारा निर्दिष्ट ढंग से काम करने वाला, धर्मानुयायी प्रयो. मेरे पिताजी बहुत ही धर्मपरायण व्यक्ति हैं।

धर्मपिता *पुं.* (तत्.) जन्मदाता पिता से भिन्न व्यक्ति जो किसी का पिता या संरक्षक बन गया हो।

धर्मपीठ *पुं.* (तत्.) 1. धर्म का प्रधान स्थान 2. वह स्थान जहाँ से धर्म संबंधी व्यवस्था प्राप्त होती हो 3. काशी का एक नाम।

धर्म-पीड़ा *स्त्री.* (तत्.) 1. धर्म या न्याय का उल्लंधन 2. अपराध।

धर्मपुत्र *पुं.* (तत्.) 1. युधिष्ठिर 2. नर-नारायण 3. जिसे धार्मिक रीति या विधान से धर्म को साक्षी रखकर पुत्र बनाया गया हो।

धर्मपुरी *स्त्री.* (तत्.) 1. यमपुरी जहाँ हिंदू विश्वास के अनुसार माना जाता है कि शरीर छूटने के बाद प्राणियों के किए हुए धर्म और अधर्म का विचार होता है 2. कचहरी, न्यायालय।

धर्मप्रतिरूपक *पुं.* (तत्.) मनु के अनुसार ऐसा दान, जो अपने सगे-संबंधियों, कुटुंब आदि के दीन-दुःखी रहते हुए भी केवल नाम या यश कमाने की इच्छा से दूसरों को दिया जाये (ऐसा दान निंदनीय माना गया है, उसे धर्म नहीं धर्म का प्रतिरूपक (नकल) माना गया है)।

धर्मप्रधान *वि.* (तत्.) जिसमें धर्म मुख्य हो या निर्दिष्ट हो प्रयो. काशी एक धर्मप्रधान नगरी है।

धर्मप्रभास *पुं.* (तत्.) महात्मा बुद्ध।

धर्मप्रवक्ता *पुं.* (तत्.) 1. धर्म का व्याख्याता 2. धर्म का अध्यापक प्रयो. निजी लाभ के लिए गली-गली में आज लोग धर्मप्रवक्ता बनकर उभर रहे हैं।

धर्मप्रवचन *पुं.* (तत्.) 1. धर्म संबंधी व्याख्यान प्रयो. पार्क में स्वामी जी का धर्म प्रवचन चल रहा था 2. बुद्धदेव 3. धर्म की व्यवस्था या कर्तव्यशास्त्र।

धर्मबल *पुं.* (तत्.) धर्म के आचरण का बल प्रयो. अपने धर्मबल से राजा हरीशचंद्र ने अपनी प्रजा का मन मोह लिया था।

धर्मबाह्य *वि.* (तत्.) धर्म से बाहर, धर्म के विरूद्ध।

धर्मबुद्धि *स्त्री.* (तत्.) धर्म-अधर्म का विवेक, धर्म की ओर प्रवृत्त बुद्धि *वि.* 1. धर्मानुकूल आचरण करने वाला 2. उचित-अनुचित का विचार करने वाला।

धर्मभगिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. वह स्त्री जो धर्म को साक्षी मान कर बहन बनाई गई हो 2. गुरु-कन्या।

धर्मभागिनी *स्त्री.* (तत्.) धर्मपत्नी।

धर्मभाणक *पुं.* (तत्.) कथावाचक।

धर्मभीरू *वि.* (तत्.) धर्म के भय से जो अधर्म या दूषित कार्य करने में डरता हो प्रयो. मोहनबाबू धर्मभीरु व्यक्ति हैं वे चोरी कर ही नही सकते।

धर्मभृत *पुं.* (तत्.) 1. धर्मपरायण व्यक्ति, धर्मनिष्ठ व्यक्ति 2. राजा।

धर्मभ्रष्ट *वि.* (तत्.) धर्म से गिरा हुआ, धर्मच्युत।

धर्मभ्राता *पुं.* (तत्.) 1. धर्म के नाते भाई 2. गुरुभाई 3. गुरु पुत्र।

धर्ममत *पुं.* (तत्) धर्म के रूप में मान्य मत या सम्प्रदाय।

धर्ममति *स्त्री.* (तत्.) दे. धर्मबुद्धि।

धर्ममूल *पुं.* (तत्.) धर्म का भूल या आधार; वेद।

धर्ममेघ *पुं.* (तत्.) योग में वह स्थिति जिसमें वैराग्य के अभ्यास से चित्त समस्त वृत्तियों से रहित हो जाता हो।

धर्मयज्ञ *पुं.* (तत्.) वह यज्ञ जिसमें किसी की बलि न दी जाए।

धर्मयुग *पुं.* (तत्.) सत्य युग।

धर्मयुद्ध *पुं.* (तत्.) 1. वह युद्ध जिसमें धर्म का पालन हो, न्यायपूर्ण युद्ध 2. धर्म की रक्षा के लिए किया जाने वाला युद्ध।

धर्मयूप *पुं.* (तत्.) विष्णु।

धर्मयोनि *पुं.* (तत्.) दे. धर्मयूप।

धर्मरक्षक *पुं.* (तत्.) दे. धर्मत्राता, धर्म की रक्षा करने वाला।

धर्मरत *वि.* (तत्.) धर्मानुयायी, धर्मपरायण।

धर्मराज *पुं.* (तत्.) 1. धर्म का पालन करने वाला, राजा 2. युधिष्ठिर 3. यमराज 4. जैनों के जिन देव 5. न्यायकर्ता, न्यायाधीश *वि.* धर्मशील।

धर्मरोधी *वि.* (तद्.) धर्मविरूद्ध, अन्याय।

धर्मलक्षण *पुं.* (तत्.) 1. धर्म के मूल चिह्न या लक्षण 2. वेद।

धर्मलिपि *स्त्री.* (तत्.) धर्म-प्रचार के लिए प्रयुक्त लिपि, जिस लिपि में कोई धर्म ग्रंथ लिखा गया हो।

धर्मलोप *पुं.* (तत्.) 1. धर्म की समाप्ति 2. अधर्म 3. अनाचार।

धर्मवत्सल *वि.* (तत्.) जिसे धर्म प्यारा हो प्रयो. राजा विक्रमादित्य धर्मवत्सल शासक थे।

धर्मवर्ती *वि.* (तद्.) धार्मिक, धर्माचरण करने वाला।

धर्मवाद *पुं.* (तत्.) धार्मिक विधि-विधान पर वाद-विवाद।

धर्मवान् *वि.* (तत्.) धर्मनिष्ठ, धर्मात्मा।

धर्मविद् *वि.* (तत्.) धर्मज्ञ, धर्मज्ञाता प्रयो. राजा ने अपनी सभा में कई धर्मविदों को आमंत्रित किया था।

धर्मविद्या *स्त्री.* (तत्.) धर्म संबंधी ज्ञान विधान, धर्म धर्म से संबंधित विद्या।

धर्मविधि *स्त्री.* (तत्.) धर्म संबंधी व्यवस्था, धर्म संबंधी विधि-विधान प्रयो. उनका विवाह हिंदू धर्मविधि के अनुसार हुआ।

धर्मविप्लव *पुं.* (तत्.) 1. धर्म का व्यतिक्रम 2. धार्मिक उथल-पुथल प्रयो. 11वीं शती भारतीय इतिहास का धर्मविप्लव काल है।

धर्मविवाह *पुं.* (तत्.) धार्मिक विधि-विधान से संपन्न विवाह।

धर्मवीर *पुं.* (तत्.) 1. धर्म के प्रति अडिग, धर्मपालन में सदा तत्पर, उत्साही व्यक्ति प्रयो. भक्त प्रह्लाद सच्चे धर्मवीर थे।

धर्मवृद्ध *वि.* (तत्.) अपने धर्माचरण द्वारा श्रेष्ठ मान्य व्यक्ति।

धर्मवैतंसिक *पुं.* (तत्.) वह जो अनैतिक तरीके से धन कमाकर अपने को धार्मिक दिखलाने के लिए बहुत दान-पुण्य करता हो।

धर्मव्यवस्था *स्त्री.* (तत्.) 1. धर्माचार्यों द्वारा किसी प्रश्न पर दिया गया निर्णय 2. निर्णय, फैसला।

धर्मव्याध *पुं.* (तत्.) महाभारत (वनपर्व) की कथा के अनुसार मिथिलावासी एक व्याध जिसने कौशिक नामक तपस्वी ब्राह्मण को धर्म का तत्व समझाया था।

धर्मव्रत *वि.* (तत्.) धर्मपरायण।

धर्मव्रता *स्त्री.* (तत्.) पातिव्रत्य की प्राप्ति के लिए घोर तप करने वाली धर्म नामक राजा की कन्या जिससे मारीचि ऋषि ने विवाह किया था।

धर्मशाला *स्त्री.* (तत्.) 1. यात्रियों के रुकने के लिए लिए धर्मार्थ बना भवन प्रयो. सेठ जी ने कई धर्मशालाएँ बनवाईं 2. वह स्थान जहाँ धर्मार्थ दीन-दुखियों को दान दिया जाता हो 3. न्यायालय।

धर्मशास्त्र *पुं.* (तत्.) धर्मग्रंथ जिसमें किसी धर्म विशेष के लोगों के लिए करणीय-अकरणीय, विधि-विधानों का निर्देश हो प्रयो. स्मृतियाँ हिंदुओं के धर्मशास्त्र हैं।

धर्मशास्त्री *पुं.* (तत्.) धर्मशास्त्र का विद्वान, धर्म शास्त्रानुसार व्यवस्था देने वाला।

धर्मशील *वि.* (तत्.) धर्मानुसार आचरण करने वाला, धार्मिक प्रयो. राजा भोज धर्मशील व्यक्ति थे।

धर्मसंकट *पुं.* (तत्.) किसी कार्य के उचित-अनुचित दोनों जान पड़ने से उत्पन्न दुविधा की स्थिति, उभय-संकट प्रयो. सचिन जैसे महान खिलाड़ी को टीम में न लिए जाने पर कंट्रोल बोर्ड धर्मसंकट में पड़ गया है।

धर्मसंगीति *स्त्री.* (तत्.)1. धर्म पर विचार-विमर्श के लिए बुलाई गई सभा 2. बौद्धों का धर्म सम्मेलन प्रयो. बौद्धों की प्रथम धर्म संगीति राजागृह में हुई थी 3. संगायन।

धर्मसंघ *पुं.* (तत्.) किसी धर्म के अनुयायियों का संघ, धर्म सभा।

धर्म-संहिता *स्त्री.* (तत्.) धर्म संबंधी विधि-विधानों का समुच्चय ग्रंथ जिसमें धार्मिक विषय प्रतिपादित किए गए हों उदा. भारत में मनु तथा याज्ञवल्क्य जैसे ऋषियों ने धर्म संहिताओं की रचना की थी।

धर्मसभा *स्त्री.* (तत्.) 1. न्यायालय, कचहरी 2. जहाँ धार्मिक विषयों पर चर्चा की जाये।

धर्म-पुस्तक *स्त्री.* (तत्.) दे. धर्मग्रंथ, धर्म संबंधी पुस्तकें।

धर्मभिक्षुक *पुं.* (तत्.) धर्मार्थ भिक्षा माँगने वाला (मनुस्मृति में नौ प्रकार के भिक्षुक गिनाए गए हैं।

धर्मविवेचन *पुं.* (तत्.) 1. धर्म संबंधी चिंतन 2. धर्म-अधर्म का विचार 3. अच्छे-बुरे का विचार 4. दोषी अथवा निदोर्ष होने का विचार।

धर्मचारी *पुं.* (तत्.) तपस्वी, संन्यासी *वि.* धर्मानुकूल आचरण करने वाला।

धर्मपरायणता *स्त्री.* (तत्.) धर्मपरायण होने की अवस्था या भाव।

धर्मपाल *पुं.* (तत्.) 1. वह व्यक्ति जो धर्म की रक्षा करता हो 2. दंड या सजा जिसके आधार पर धर्म का पालन कराया जाता है 3. राजा दशरथ के एक मंत्री *वि.* धर्म का पालन या रक्षा करने वाला।

धर्मसार *पुं.* (तत्.) 1. धर्मतत्व 2. पुण्यकर्म, उत्तम कर्म।

धर्मसारी *स्त्री.* (तत्.) धर्मशाला।

धर्मसुत *पुं.* (तत्.) युधिष्ठिर।

धर्मसू *पुं.* (तत्.) 1. धर्म प्रेरक 2. धूम्याट पक्षी।

धर्मसूत्र *पुं.* (तत्.) जैमिनी द्वारा लिखा गया धर्म-निर्णय संबंधी एक ग्रंथ।

धर्मसेतु *पुं.* (तत्.) 1. धर्म रक्षक 2. शिव।

धर्मसेवन *पुं.* (तत्.) धर्म का पालन या धर्माचरण।

धर्मस्थ *वि.* (तत्.) धर्म में स्थित *पुं.* धर्माध्यक्ष, न्यायाधीश।

धर्मस्व *पुं.* (तत्.) धार्मिक कार्य करने वाली संस्था *वि.* धर्म कार्यों के लिए समर्पित (धन आदि)।

धर्मस्वामी *पुं.* (तत्.) धर्मस्वामिन्, बुद्ध।

धर्मांतर *पुं.* (तत्.) भिन्न धर्म।

धर्मांतरण *पुं.* (तत्.) धर्म परिवर्तन अपना धर्म छोड़ भिन्न धर्म स्वीकार करना प्रयो. भिन्न धर्म की स्त्री से विवाह करने के लिए उसे अपना धर्मांतरण करना पड़ा।

धर्मांध *वि.* (तत्.) कट्टर धार्मिक, अपने धर्म को छोड़ अन्य धर्मों के लिए असहिष्णु प्रयो. वह इतना धर्मांध था कि अपने धर्म की जरा- सी आलोचना उसे आग-बबूला कर देती थी।

धर्मांशु *पुं.* (तत्.) सूर्य।

धर्मागम *पुं.* (तत्.) धर्मग्रंथ।

धर्माचरण *पुं.* (तत्.) 1. धर्म के अनुसार आचरण करना प्रयो. भौतिक प्रलोभन उन्हें कभी भी धर्माचरण से डिगा नही पाया 2. पुण्य कृत्य।

धर्माचार्य *पुं.* (तत्.) धर्म-शिक्षा देने वाला गुरु उदा. उस सभा में देश के भिन्न-भिन्न कोनों से धर्माचार्य पधारे।

धर्मातिक्रमण *पुं.* (तत्.) धर्म का उल्लंघन उदा. किसी भी धर्म प्रधान समाज में धर्मातिक्रमण सामाजिक तनाव पैदा करता है।

धर्मात्मज *पुं.* (तत्.) 1. धर्मपुत्र 2. धर्मराज युधिष्ठिर।

धर्मात्मा *वि.* (तत्.) धर्म करने वाला, धर्मनिष्ठ, धर्मशील प्रयो. अशोक धर्मात्मा सम्राट थे।

धर्मार्थ *पुं.* (तत्.) 1. धर्म के निमित्त, परोपकार, धर्म या पुण्य के उद्देश्य से किया गया कार्य प्रयो. वे अनाथालय को प्रतिमाह धर्मार्थ सौ रुपये भिजवाते हैं।

धर्मार्थी *वि.* (तत्.) धर्म एवं उसके फल की इच्छा रखने वाला, धर्म कार्य करने वाला।

धर्मादा *पुं.* (तद्.) धर्म-कार्य के लिए निकाला हुआ धन, धर्मस्व।

धर्माधर्म *पुं.* (तत्.) धर्म और अधर्म उदा. उस कुकृत्य को करते समय उसने धर्माधर्म का तनिक भी ख्याल नहीं रखा।

धर्माधर्मविद् *पुं.* (तत्.) धर्म एवं अधर्म का ज्ञाता, मीमांसक।

धर्माधिकरण *पुं.* (तत्.) 1. स्थान जहाँ राजा मुकदमों पर विचार करता है, न्यायालय।

धर्माधिकरणिक *पुं.* (तत्.) धर्म-अधर्म की व्यवस्था देने वाला, राजकर्मचारी, न्यायाधीश।

धर्माधिकरणी *पुं.* (तत्.) न्यायाधीश।

धर्माधिकार *पुं.* (तत्.) 1. धार्मिक कार्यों का निरीक्षण 2. न्याय-व्यवस्था 3. न्यायाधीश का पद।

धर्माधिकारी *पुं.* (तत्.) 1. धर्म-अधर्म की व्यवस्था देने वाला राजकर्मचारी 2. न्यायाधीश 3. पुराने जमाने में हिंदू राजाओं व धनवानों का वह अधिकारी जो धार्मिक कृत्यों को संपन्न करवाता था।

धर्माधिकृत *पुं.* (तत्.) दे. धर्माध्यक्ष।

धर्माधिष्ठान *पुं.* (तत्.) न्यायालय।

धर्माध्यक्ष *पुं.* (तत्.) 1. धर्माधिकारी 2. विष्णु 3. शिव।

धर्मानुप्राणित *वि.* (तत्.) धर्म से प्रभावित, धर्ममय उदा. यज्ञस्थल पर समूचा वातावरण धर्मानुप्राणित था।

धर्मानुष्ठान *पुं.* (तत्.) 1. धार्मिक कार्य, धर्माचरण, धर्म के अनुसार व्यवहार 2. सदाचरण 3. यज्ञ/दानादि संबंधी बड़ा धार्मिक कार्य प्रयो. वे पूरी निष्ठा के साथ धर्मानुष्ठान किया करते थे।

धर्मानुस्मृति *स्त्री.* (तत्.) धर्म-अनुचिंतन, धर्म का अनुशीलन।

धर्मापेत *वि.* (तत्.) जो धर्म के अनुकूल न हो, धर्मसंगत न हो, अधार्मिक *पुं.* 1 अधर्म 2. अन्याय 3. पाप।

धर्माभास *पुं.* (तत्.) धर्म का भ्रम या आभास, ऐसा धर्म जिसे धर्म तो समझा जाता है पर वह वस्तुतः श्रुति-स्मृतियों की शिक्षाओं के अनुरूप नहीं होता है।

धर्मारण्य *पुं.* (तत्.) 1. तपोवन 2. वराह पुराण के अनुसार वह सघन वन जहाँ चंद्रमा द्वारा गुरुपत्नी तारा के हरण के बाद व्याकुल होकर धर्म लज्जावश जा छिपा था 3. गया के निकट तीर्थ स्थान 4. बृहत्संहिता के अनुसार कूर्म विभाग के मध्य में स्थित एक प्रदेश।

धर्मावतार *पुं.* (तत्.) 1. बड़े धर्मात्मा जो साक्षात धर्म के अवतार या स्वरूप जान पड़ें 2. धर्म-अधर्म का निर्णय करने वाला न्यायाधीश 3. युधिष्ठिर।

धर्माश्रित *वि.* (तत्.) धर्म पर आधारित, धर्म-सम्मत प्रयो. उनका कृत्य पूर्णतः धर्माश्रित था।

धर्मासन *पुं.* (तत्.) आसन जिस पर बैठ कर धर्म-अधर्म का विचार किया जाए, न्यायाधीश का आसन।

धर्मास्तिकाय *पुं.* (तत्.) जैन शास्त्रों के अनुसार छह द्रव्यों में से एक जो अरूपी होता है और जीव तथा पुद्गल की गति का आधार माना गया है।

धर्मिणी *स्त्री.* (तत्.) 1. पत्नी 2. रेणुका *वि.* धर्म करने वाली टि. हिंदी में इसका प्रयोग समस्त पदों के साथ होता है।

धर्मिष्ठ *वि.* (तत्.) 1. अत्यंत धार्मिक 2. पुण्यात्मा 3. सदाचारी।

धर्मी *वि.* (तत्.) 1. धर्म का अनुसरण करने वाला, धर्म को करने या मानने वाला प्रयो. सनातन धर्मी, भिन्न धर्मी 2. धार्मिक, पुण्यात्मा 3. किसी विशिष्ट गुण-धर्म आदि से युक्त प्रयो. तापधर्मी, शीतधर्मी *पुं.* 1. जिसमें कोई धर्म या वृत्ति रहे 2 गुण या धर्म का आश्रय 3. धार्मिक व्यक्ति 4. विष्णु।

धर्मीपुत्र *पुं.* (तत्.) 1. अभिनेता 2. नट।

धर्मेंद्र *पुं.* (तत्.) 1. यमराज 2. युधिष्ठिर।

धर्मेयु *पुं.* (तत्.) महाभारत के अनुसार पुरुवंशी राजा शैद्राश्व का एक पुत्र।

धर्मेश *पुं.* (तत्.) यमराज।

धर्मेश्वर *पुं.* (तत्.) दे. धर्मेश, यमराज।

धर्मोत्तर *वि.* (तत्.) 1. धर्म के क्षेत्र में बढ़ा-चढ़ा 2. अति धार्मिक 3. परम न्यायी।

धर्मोन्माद *पुं.* (तत्.) 1. धार्मिक कट्टरता अथवा असहिष्णुता से उत्पन्न उन्माद उदा. 1947 में भारत-पाकिस्तान बँटवारे के समय देश के कई हिस्सों में धर्मोन्माद फैल गया था।

धर्मोपदेश *पुं.* (तत्.) धर्म संबंधी प्रवचन, उपदेश, शिक्षा प्रयो. रामकृष्ण परमहंस के धर्मोपदेश बहुत सरस हुआ करते थे।

धर्मोपदेशक *पुं.* (तत्.) धर्म-प्रवचन करने वाला, धर्म संबंधी उपदेश देने वाला, धर्म की शिक्षा देने वाला उदा. हमारे देश में कई महान धर्मोपदेशक हुए हैं।

धर्मोपाध्याय *पुं.* (तत्.) पुरोहित प्रयो. धर्मोपाध्यायों के बिना हिंदुओं के धार्मिक कृत्य संपन्न नहीं होते।

धर्म्य *वि.* (तत्.) 1. धर्म के अनुकूल, धर्मसंगत, धर्म संबंधी 2. जो धर्म से प्राप्त हो 3. पुण्यकर 4. न्यायपूर्ण।

धर्म्य-विवाह *पुं.* (तत्.) धर्म-विवाह, धार्मिक रीति-रिवाज के अनुसार संपन्न विवाह।

धर्ष *पुं.* (तत्.) 1. अविनीत व्यवहार, धृष्टता, गुस्ताखी, ढिठाई 2. असहनशीलता 3. अधीरता, बेसब्री 4. अनादर, अपमान 5. सती व्यवहरण 6. नामर्द, नपुंसक 7. हिंसा 8. अशक्तता, असमर्थता 9. रोक, प्रतिबंध।

धर्षक *वि.* (तत्.) 1. धृष्टता करने वाला, ढिठाई करने वाला 2. अपमान करने वाला 3. व्यभिचारी (पुं.) नट, अभिनेता।

धर्षकारिणी *वि.* (तत्.) व्यभिचारिणी।

धर्षकारी *वि.* (तद्.) 1. ढिढाई/धृष्टता करने वाला 2. अपमान करने वाला, अवज्ञा करने वाला 3. व्यभिचारी।

धर्षण *पुं.* (तत्.) 1. अनादर, अपमान, अवज्ञा 2. पराभव 3. असहनशीलता 4. सतीत्वहरण 5. रति 6. शिव 7. एक प्रकार का पुराना अस्त्र 8. दबाने या दबोचने का कार्य।

धर्षणि *स्त्री.* (तत्.) असती, कुलटा स्त्री।

धर्षणी *स्त्री.* (तत्.) दे. धर्षणि, कुलटा स्त्री।

धर्षणीय *वि.* (तत्.) धर्षण करने योग्य।

धर्षित *वि.* (तत्.) 1. पराभूत 2. अपमानित *पुं.* 1. मैथुन, रति 2. अभिमान 3. दमन किया गया।

धर्षिता *स्त्री.* (तत्.) 1. व्यभिचारिणी, कुलटा 2. वेश्या।

धर्षी *वि.* (तत्.) 1. आक्रमण करने वाला, धर दबाने वाला, दबोचने वाला 2. नीचा दिखाने वाला 3. घमंडी 4. असहिष्णु 5. संभोग करने वाला।

धलंड *पुं.* (तत्.) अंकोल का पेड़, ढेरा।

धव *पुं.* (तत्.) 1. एक वन्य वृक्ष जिसकी पत्ती, फूल, जड़ आदि दवा के तौर पर प्रयोग में आते है 2. पति, स्वामी 3. मर्द 4. धूर्त व्यक्ति 5. एक वसु का नाम।

धवई *स्त्री.* (तद्.) मुख्य रूप से उत्तर भारत में पाया जाने वाला एक वृक्ष जिसके फूल लाल होते

हैं, यह औषधीय वृक्ष है और इसे धाय भी कहते हैं।

धवनी *स्त्री.* (तत्.) 1. धौंकनी, भाथी 2. शालपर्णी, सरिवन।

धवर *पुं.* (तद्.) एक पक्षी जिसका गला लाल और सारा शरीर सफेद होता है *वि.* सफेद, उजला।

धवरा *वि.* (तद्.) धवल, सफेद, उजाला।

धवराहर *पुं.* (तद्.) धरहरा, धौरहर, धवल गृह।

धवरी *स्त्री.* (तद्.) 1. सफेद रंग की गाय 2. धवर पक्षी की मादा *वि.* सफेद रंग की।

धवलकौष्टल *स्त्री.* (तद्.) वैश्यों की एक जाति।

धवल *वि.* (तत्.) 1. उजला, सफेद 2. निर्मल, स्वच्छ 3. सुंदर *पुं.* 1. सफेद रंग 2. धव का वृक्ष 3. सफेद परेवा या धौरा नामक पक्षी 4. चिनिया कपूर 5. सफेद मिर्च 6. छप्पय छंद का 42वाँ भेद 7. एक राग 8. बड़ा बैल 9. महल, विश्राम करने का स्थान 10. अर्जुन वृक्ष 11. राजस्थानी मंगल-गीत।

धवलगिरि *पुं.* (तत्.) हिमालय की एक प्रसिद्ध चोटी, धौलागिरि उदा. बर्फ से ढँकी धवलगिरि हिमालय की बेहद सुंदर चोटियों में से एक है।

धवलगृह *पुं.* (तत्.) सफेद ऊँचा भवन।

धवलता *स्त्री.* (तत्.) सफेदी, उजलापन प्रयो. सभा में उपस्थित नेताओं के वस्त्रों की धवलता देखते ही बनती है।

धवलत्व *पुं.* (तत्.) सफेदी, उजलापन।

धवलना *स.क्रि.* (तद्.) उज्ज्वल करना, निखारना, चमकाना।

धवलपक्ष *पुं.* (तत्.) 1. शुक्ल पक्ष 2. हंस।

धवलमृत्तिका *स्त्री.* (तत्.) खड़िया मिट्टी, दुद्धी।

धवलश्री *स्त्री.* (तत्.) एक रागिनी जो संध्याकाल में में गाई जाती है।

धवलांग *वि.* (तत्.) 1. जिसके अंग सफेद हों 2. जन्म से ही जिसका सारा शरीर, बाल, भौंहे आदि सफेद हों 3. हंस।

धवला *वि.* (तत्.) सफेद उजली *स्त्री.* 1. सफेद गाय 2. गौर वर्ण वाली स्त्री *पुं.* (धवल) सफेद बैल *वि./स्त्री.* सफेद रंग की उजली।

धवलाई *स्त्री.* (तद्.) सफेदी, उजलापन।

धवलित *वि.* (तत्.) जो सफेद किया गया हो, सफेद बनाया हुआ प्रयो. बर्फ से धवलित हिमालय की चोटियाँ मन मोह रही थीं।

धवलिमा *स्त्री.* (तत्.) 1. सफेदी, श्वेतता प्रयो. हिमालय की ऊँची चोटियो पर बर्फ की धवलिमा बेहद आकर्षक लग रही थी।

धवली *स्त्री.* (तत्.) 1. सफेद गाय 2. एक रोग जिसमें बाल उम्र से पहले सफेद हो जाते हैं 3. सफेद गोल मिर्च।

धवलीकृत *वि.* (तत्.) जो सफेद किया गया हो या किया गया हो।

धवलीभूत *वि.* (तत्.) जो सफेद हुआ हो।

धवलोत्पल *पुं.* (तत्.) सफेद कमल, कुमुद।

धवा *पुं.* (तद्.) दे. धव।

धवाणक *पुं.* (तत्.) वायु, पवन।

धवाना *स.क्रि.* (तद्.) दौड़ाना, दौड़ने के लिए प्रवृत्त करना।

धवित्र *पुं.* (तत्.) हिरण की खाल का पंखा जिससे यज्ञ की आग सुलगाई जाती थी।

धस *पुं.* (देश.) 1. जल आदि में पैठना, गोता, डुबकी 2. भुरभुरी मिट्टी वाली जमीन 3. धँसना या धँसान।

धसक *स्त्री.* (देश.) 1. सूखी खाँसी 2. दहलने की अवस्था, दहशत, भय 3. डाह/ईर्ष्या।

धसकन *स्त्री.* (देश.) 1. दहलने, डरने की क्रिया या अवस्था, 2. दबना अथवा धँसना 3. जलन, ईर्ष्या 4. धसकने की क्रिया।

धसकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. नीचे को धँस जाना, दब जाना उदा. बरसात में सड़क धंसकने से यातायात अवरुद्ध हो गया 2. डाह करना, ईर्ष्या करना।

धसका *पुं.* (देश.) चौपायों के फेफड़ों का एक संक्रामक रोग।

धसना *अ.क्रि.* (देश.) 1. ध्वस्त होना, नष्ट होना 2. घुसना, प्रवेश करना 3. धँसना।

धसमसाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. धँसना, नीचे की ओर बैठना 2. धरती में समाना।

धसान *स्त्री.* (देश.) 1. धँसने की क्रिया 2. पूर्वी मालवा एवं बुंदेलखंड की एक नदी।

धसाना *स.क्रि.* (तत्.) धँसाना।

धसाव *पुं.* (देश.) दे. धँसाव/धँसान।

धहधहाना *अ.क्रि.* (देश.) धधकना प्रयो. उनके कलेजे में दु:ख की आग धहधहा रही थी।

धांधा *स्त्री.* (तद्.) इलाचयी।

धाँक *पुं.* (देश.) एक जंगली जाति।

धाँगड़ *पुं.* (देश.) 1. विंध्य तथा कैमूर की पहाड़ियों पर निवास करने वाली एक जंगली जाति 2. कुआँ व तालाब खोदने वाली एक जाति 3. धाँगज।

धाँगना *स.क्रि.* (देश.) रौंदना, कुचलना।

धाँगर *पुं.* (देश.) दे. धाँगड़।

धाँधना *स.क्रि.* (देश.) 1. बंद करना, भेड़ना 2. बहुत अधिक खा लेना, ठूँस-ठूँस कर खा लेना 3. नष्ट-भ्रष्ट करना 4. परेशान करना।

धाँधल *पुं.* (देश.) 1. उपद्रव, ऊधम, उत्पात 2. फरेब, धूर्तता, दगा, छल, धोखा 3. जल्दबाजी।

धाँधलपन *पुं.* (देश.) 1. शरारत, पाजीपन 2. धोखेबाजी, दगाबाजी।

धाँधली *स्त्री.* (अनु.) 1. मनमाना व्यवहार प्रयो. नियुक्तियों के मामले में निर्देशक ने नियम-कानून को ताक पर रखकर धाँधली करनी शुरू कर दी 2. गड़बड़ी, हेराफेरी 3. अनीति, अत्याचार 4. ज्यादती 5. धोखा 6. उत्पात, उपद्रव ऊधम 7. शीघ्रता, जल्दबाजी।

धाँय *स्त्री.* (अनु.) गोली चलने से होने वाला शब्द प्रयो. धाँय से गोली चली और पंछी तड़पता हुआ जमीन पर आ गिरा।

धाँय-धाँय *क्रि.वि.* (अनु.) 1. धाँय-धाँय की आवाज के साथ 2. तेज हवा में ऊँची-ऊँची लपटों से निकलने वाला शब्द प्रयो. झोपड़ी धाँय-धाँय करती आग की लपटों से घिरी हुई थी।

धाँस *स्त्री.* (देश.) सूखे तंबाकू, मिर्च-मसालों, प्याज आदि की तीक्ष्ण गंध जिससे खाँसी उठने लगती है प्रयो. सब्जी मंडी में मिर्च की धाँस वह बर्दाश्त नहीं कर सका और झटपट बाहर निकल आया।

धाँसना *अ.क्रि.* (देश.) पशुओं का खाँसना।

धाँसी *स्त्री.* (देश.) घोड़े की खाँसी, ढाँसी।

धा *पुं.* (तत्.) 1. धैवत स्वर का संकेत 2. तबले का एक बोल 3. ब्रह्मा 4. बृहस्पति *वि.* धारण करने वाला, धारक *प्रत्य.* प्रत्यय जो संख्यावाचक विशेषणों के पीछे प्रकार, खंड, बार के अर्थ में जोड़ा जाता है जैसे- शतधा, बहुधा, नवधा।

धाइ *स्त्री.* (देश.) धाय, दाई *पुं.* धव या धौया, धवई का पेड़।

धाई *स्त्री.* (देश.) दे. धाय।

धाउ *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार का नाच 2. धाव पेड़।

धाऊ *पुं.* (तद्.) 1. धव वृक्ष 2. आवश्यक कार्यों के लिए दौड़ाए जाने वाला व्यक्ति, हरकारा।

धाक *स्त्री.* (तत्.) रौब, दबदबा, प्रभाव, ख्याति, प्रसिद्धि शोहरत, आतंक मुहा. धाक जमना या बँधना- प्रभाव, रोब या दबदबा होना प्रयो. उस छोटे से शहर में उसके पैसों की धाक जमी हुई थी; धाक बाँधना या जमाना- प्रभाव, रोब या दबदबा बनाना उदा. उसकी बहुमुखी प्रतिभा ने विश्वविद्यालय विश्वविद्यालय में उसकी धाक बाँध दी थी *पुं.* 1. ढाक, पलाश 2. वृष 3. आहार 4. भात 5. अन्न, अनाज 6. स्तंभ, खंभा 7. आधार, 8. सहारा, अवलंब 9. ब्रह्मा।

धाकड़ *वि.* (तद्.) धाक वाला, दबदबा वाला प्रयो. उस गोष्ठी में एक से बढ़कर एक धाकड़ विद्वान पधारे थे।

धाकना *अ.क्रि.* (देश.) धाक जमाना।

धाकर *पुं.* (देश.) 1. कुलीन ब्राह्मण 2. आगरा के आसपास की राजपूतों की एक जाति 3. पंजाब में एक गेहूँ जिसे बहुत कम जल की आवश्यकता होती है 4. वर्णसंकर।

धागा *पुं.* (देश.) 1. सूत, तागा, डोरा 2. लाक्षणिक रूप में दो पक्षों को जोड़ने वाली वस्तु प्रयो. तमाम भिन्नताओं के बावजूद इस देश के लोग राष्ट्र-प्रेम के धागे से बँधे हुए है।

धाटी *स्त्री.* (तत्.) आक्रमण, हमला।

धाड़ *स्त्री.* (देश.) 1. चिल्ला कर रोने का शब्द प्रयो. अपने घर को जलता देख वह धाड़ें मारकर रोने लगी मुहा. धाड़ मारना- चिल्ला-चिल्ला कर विलाप करना 2. झुंड, जत्था उदा. धाड़ की धाड़-बंदर वहाँ आ गए 3. डाकुओं का धावा, आक्रमण या छापा 4. डाढ़, दाढ़ 5. दहाड़।

धाड़ना *अ.क्रि.* (तत्.) दहाड़ना।

धाड़स *पुं.* (देश.) ढाढ़स, तसल्ली, सांत्वना।

धाड़ी *स्त्री.* (देश.) डाकू तथा लुटेरों का दल या जत्था जत्था *पुं.* ढाढी, डाकू, लुटेरा।

धाणक *पुं.* (तत्.) 1. प्राचीन मुद्रा या परिमाण 2. एक जाति।

धात *स्त्री.* (तद्.) दे. धातु।

धातकी *स्त्री.* (तत्.) 1. धव का फूल 2. एक प्रकार का झाड़ जिसके फूल रंगाई के काम आते हैं।

धातविक *वि.* (तत्.) 1. धातु से निर्मित 2. धातु से संबंधित।

धातवीय *वि.* (तत्.) 1. धातु संबंधी प्रयो. उस पदार्थ के धातवीय गुणों का अध्ययन किया गया 2. धातु का बना हुआ।

धाता *पुं.* (तद्.) 1. ब्रह्मा 2. विष्णु 3. शिव, महादेव 4. भृगु ऋषि के एक पुत्र 5. वायु के 49 प्रकारों में से एक 6. साठ संवत्सरों में से एक 7. शेषनाग 8. सूर्य के 12 भेदों में से एक 9. ब्रह्मा के एक पुत्र 10. विधाता 11. टगण का आठवाँ भेद 12. सप्तर्षि 13. उपपति, जार 14. प्रबंधक, व्यवस्थापक *वि.* 1. धारण करने वाला 2. पालक 3. रक्षक।

धातापुष्पिका *स्त्री.* (तद्.) धातकी।

धातापुष्पी *स्त्री.* (तत्.) धातकी, धौ का वृक्ष या फूल।

धातु *स्त्री.* (तत्.) भौ. वह द्रव्य या पदार्थ जो मजबूती, आघातवर्धनीयता, अपारदर्शिता, अपेक्षाकृत उच्च घनत्व, द्युति, बिजली और ऊष्मा के प्रति सुचालकता, तन्यता तथा परावर्तकता आदि गुणों से युक्त हो वैद्यक 1. रस, रक्त, माँस, अस्थि, मज्जा एवं शुक्र शरीर निर्माण के ये सात पदार्थ 2. वात, पित्त, कफ 3. वीर्य मुहा. धातु गिरना या जाना- मूत्र के साथ वीर्य के निकलने का रोग 4. संस्कृत भाषा में क्रियाओं के मूल रूप जैसे- कृ, धृ, भू आदि 5. पंचमहाभूत यथा- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश 6. बुद्‌ध अथवा अन्य बौद्‌ध महापुरुषों की अस्थियाँ जिन्हें बौद्‌ध छोटे से सुंदर पात्र में सुरक्षित रखते हैं और इनकी पूजा करते हैं, सामान्यतः इन्हें स्तूपों में रखा गया है 7. परमात्मा, परब्रह्म 8. आत्मा 9. इंद्रिय 10. अंश, भाग या खंड।

धातुक *पुं.* (तत्.) कच्ची या अपरिष्कृत धातु, अयस्क। ore

धातुकर्म *पुं.* (तत्.) धातु संबंधी विज्ञान, अयस्क तथा अन्य गौण स्रोतों से धातु निष्कर्षण, परिष्करण एवं उसे उपयोग में लाने से संबंधित तकनीक व ज्ञान दे. धातुविज्ञान।

धातुकाल *पुं.* (तत्.) इतिहास का वह युग जब सामाजिक विकासक्रम में मनुष्य ने धातु का उपयोग करना सीखा जैसे- कांस्ययुग, लौहयुग इतिहास के अलग-अलग धातुकाल है।

धातुकाशीस *पुं.* (तत्.) कसीस, लोहे का एक यौगिक, हरा थोथा।

धातुकासीस *पुं.* (तद्.) कसीस।

धातुकुशल *वि.* (तत्.) धातु के कार्य में निपुण।

धातुक्षय *पुं.* (तत्.) 1. शरीर के तत्वों का क्षय 2. प्रमेह आदि रोग जिससे शरीर से धातु या वीर्य का क्षय होता है।

धातुगर्भ *पुं.* (तत्.) बुद्ध अथवा अन्य बौद्ध महात्माओं की अस्थि या दाँत रखने का पात्र, देहगोप।

धातुगोप *पुं.* (तत्.) दे. धातुगर्भ, देहगोप।

धातुचैतन्य *वि.* (तत्.) धातु को उत्पन्न अथवा जाग्रत करने वाला, वीर्य बढ़ाने वाला, वीर्यवर्धक।

धातुघ्न *वि.* (तत्.) धातु-नाशक, धातु नष्ट करने वाला।

धातुज *वि.* (तत्.) धातु से उत्पन्न *पुं.* खनिज तेल।

धातुद्रावक *पुं.* (तत्.) सोहागा *वि.* धातु को गलाने या पिघलाने वाला।

धातुनाशक *वि.* (तत्.) दे. धातुघ्न।

धातुप *पुं.* (तत्.) आयु. भोजन के उपरांत शरीर में तुरंत तैयार होने वाला रस जिससे शरीर की शेष धातुओं का पोषण होता है।

धातुपाक *पुं.* (तत्.) शुक्राणु से संबंधित रोग।

धातुपाठ *पुं.* (तत्.) पाणिनी व्याकरण के अनुसार विशिष्ट धातुओं (क्रियाओं) के मूल रूपों की सूची।

धातुपुष्ट *वि.* (तत्.) वीर्य को बढ़ाने या पुष्ट करने वाला।

धातुपुष्टि *स्त्री.* (तत्.) वीर्य (धातु) पोषण, वीर्य की पुष्टि।

धातुपुष्पिका *स्त्री.* (तत्.) धव का फूल।

धातुपुष्पी *स्त्री.* (तत्.) धव का फूल।

धातुप्रधान *पुं.* (तत्.) वीर्य।

धातुबैरी *पुं.* (तद्.) गंधक।

धातुभृत *वि.* (तत्.) जिससे धातु का पोषण हो *पुं.* पर्वत, पहाड़।

धातुमत्ता *स्त्री.* (तत्.) धातुमान होने का गुण या भाव, जिसमें धातु होने का गुण हो।

धातुमत्ती *स्त्री.* (तत्.) धातुमान होने का गुण या भाव।

धातुमय *वि.* (तत्.) धातु से परिपूर्ण।

धातुमर्म *पुं.* (तत्.) धातु परिष्करण और विलगन की कला या विज्ञान, कीमियागरी दे. धातुवाद।

धातुमल *पुं.* (तत्.) 1. शरीरस्थ धातुओं के विकारी अंश के रूप में कफ, नख, आँख या कान की मैल, केश जैसे बाहर निकलने वाले पदार्थ 2. धातुओं को गलाने पर उससे निकलने वाला फालतू पदार्थ। slag

धातुमाक्षिक *पुं.* (तत्.) सोनामक्खी, एक उपधातु।

धातुमान *वि.* (तत्.) जिसमें या जिसके पास धातुएँ हों।

धातुमारिणी *स्त्री.* (तत्.) सुहागा।

धातुमारी *पुं.* (तद्.) गंधक।

धातुयुग *पुं.* (तत्.) दे. धातुकाल।

धातुराग *पुं.* (तत्.) धातुओं से निकला हुआ रंग, जैसे गेरु, इंगुर आदि।

धातुराजक *पुं.* (तत्.) शुक्र या वीर्य जो शरीर की सभी धातुओं में श्रेष्ठ माना जाता है।

धातुरेचक *वि.* (तत्.) जिसके सेवन से धातु का रेचन हो, वीर्य को बहाने वाला।

धातुवर्धक *वि.* (तत्.) वीर्य को बढ़ाने वाला प्रयो. भारतीय बाजार में कई किस्म की धातुवर्धक गोलियाँ उपलब्ध हैं।

धातुवल्लभ *पुं.* (तत्.) सुहागा।

धातुवाद *पुं.* (तत्.) रसा. 1. कच्ची धातु को साफ कर उन्हें अलग करने की विद्या जो 64 कलाओं के अंतर्गत है 2. भिन्न-भिन्न रसायनों से सोना बनाने की विद्या, कीमियागरी, रसायनशास्त्र।

धातुवादी *पुं.* (तद्.) धातुवाद का ज्ञाता, कारंधमी, रसायनशास्त्री।

धातुविज्ञान *पुं.* (तत्.) धातु संबंधी अध्ययन उदा. धातुविज्ञान के अंतर्गत धातुओं के गुण, उनके परिष्कार, सम्मिश्रण आदि के बारे में पढ़ाया जाता है।

धातुबैरी *पुं.* (तद्.) दे. गंधक।

धातुशेखर *पुं.* (तत्.) 1. कसीस 2. सीसा।

धातुशोधन *पुं.* (तत्.) सीसा।

धातुसंज्ञ *पुं.* (तत्.) सीसा।

धातुसंभव *पुं.* (तत्.) सीसा।

धातुसाम्य *पुं.* (तत्.) 1. वात, पित्त, कफ की सम्यक् अवस्था 2. अच्छा स्वास्थ्य।

धातुस्तंभक *वि.* (तत्.) वीर्य को देर तक रोकने वाला या उसका स्तंभन करने वाला।

धातुहन *पुं.* (तत्.) गंधक।

धातुहा *पुं.* (तद्.) गंधक, धातु बैरी दे. धातुहन।

धातू *स्त्री.* (तद्.) दे. धातु।

धातूपल *पुं.* (तत्.) खड़िया मिट्टी, दुधिया या दुद्धी।

धातृका *स्त्री.* (तद्.) सेवा-शुश्रुषा करने वाली विशेषकर जच्चा-बच्चा की देखरेख में प्रवीण महिला।

धातृपुत्र *पुं.* (तत्.) ब्रह्मा के पुत्र सनत्कुमार।

धातृपुष्पिका *स्त्री.* (तत्.) धव के फूल।

धातृपुष्पी *स्त्री.* (तत्.) धव के फूल।

धात्र *पुं.* (तत्.) पात्र, बरतन, आधान।

धात्रिका *स्त्री.* (तत्.) छोटा आँवला, आमलकी।

धात्री *स्त्री.* (तत्.) 1. धाय, उपमाता 2. माता 3. पृथ्वी 4. गायत्री माता 5. गाय 6. गंगा 7. आँवला 8. आर्या छंद का एक भेद जिसमें 19 गुरु और 19 लघु मात्राएँ होती हैं 9. सेना।

धात्री कर्म *पुं.* (तत्.) धाय का काम।

धात्रीपत्र *पुं.* (तत्.) 1. तालीस या तालीश पत्र 2. आँवले की पत्ती।

धात्रीपुत्र *पुं.* (तत्.) 1. धाय का पुत्र 2. नट।

धात्रीफल *पुं.* (तत्.) आँवला।

धात्रीविद्या *स्त्री.* (तत्.) प्रसव सम्पंन कराने की विद्या।

धात्रेयिका *स्त्री.* (तत्.) 1. धात्री की बेटी 2. धात्री, धाय।

धात्रेयी *स्त्री.* (तत्.) दे. धात्रेयिका।

धात्वर्थ *पुं.* (तत्.) धातु (पद या शब्द) से निकलने वाला अर्थ।

धात्विक मूल्य *पुं.* (तत्.) (सिक्के आदि के) धातु का मूल्य प्रयो. आज प्रचलित पाँच रुपए के सिक्के का धात्विक मूल्य पाँच रुपए से कम है। intrinsic value

धात्वीय *वि.* (तत्.) 1. धातु से संबंधित उदा. प्रयोगशाला में धात्वीय गुणों के गहन परीक्षण के बाद पता चला कि उस पदार्थ में सोने की भी मात्रा विद्यमान थी 2. धातु से बना हुआ।

धाधिन *पुं.* (अनु.) ढोल आदि बजने पर निकलने वाला एक स्वर।

धान *पुं.* (तद्.) तृण जाति का एक पौधा जिससे प्राप्त बीजों को कूटने पर चावल प्राप्त होता है, चावल भारत समेत दुनिया के कई देशों में मुख्य खाद्यान्न के तौर पर प्रयुक्त होता है।

धानक *पुं.* (तत्.) 1. धनिया 2. एक परिमाण, रत्ती का चौथाई भाग (देश.) 1. धनुष चलाने वाला, तीरंदाज 2. धुनिया, रुई धुनने वाला 3. पूर्व में बसने वाली एक जाति।

धानकी *पुं.* (देश.) 1. धनुर्धर 2. कामदेव।

धानजई *स्त्री.* (देश.) धान की एक किस्म।

धानपान *पुं.* (देश.) विवाह से पहले की रस्म जिसमें कन्यापक्ष के घर धान तथा हल्दी भेजी जाती है ला.अर्थ दुबला-पतला।

धानमाली *पुं.* (तत्.) किसी दूसरे के चलाए हुए अस्त्र का प्रतिकार करने या उसे रोकने की क्रिया।

धाना *स्त्री.* (तत्.) 1. भुना हुआ जौ या चावल 2. अन्न का कण, खुद्दी 3. सत्तू 4. धनिया 5. अनाज 6. अंकुर *अ.क्रि.* (तद्.) 1. दौड़ना 2. वेगपूर्वक चलना 3. भागना।

धानाका *स्त्री.* (तत्.) दे. धाना।

धाना चूर्ण *पुं.* (तत्.) सत्तू।

धानाभर्जन *पुं.* (तत्.) अनाज भूनना।

धानी *वि.* (तद्.) धान की पत्ती के से हरे रंग का, हल्के रंग का प्रयो. उसने धानी साड़ी पहन रखी थी *पुं.* एक प्रकार का हल्का हरा रंग *स्त्री.* संपूर्ण

जाति की एक संकर रागिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. वह जो धारण करे जिस पर या जिसमें कोई वस्तु रखी जाये (स्टैंड) जैसे- शूकधानी 2. अधिष्ठान, स्थान उदा. राजधानी 3. पीलू का वृक्ष 4. धनियाँ (देश.) 1. धान्य स्त्री 2. भुना हुआ गेहूँ या जौ उदा. गुड़धानी।

धानुक *पुं.* (तद्.) 1. धनुर्धर, धनुर्धारी, धनुष चलाने वाला, कमनैत 2. एक सेवक जाति 3. धानुक जाति के लोग।

धानुर्दंडिक *पुं.* (तत्.) दे. धानुष्क।

धानुष्क *पुं.* (तत्.) तीरंदाज, धनुर्धर, कमनैत।

धानुष्का *स्त्री.* (तत्.) अपामार्ग, चिचड़ा।

धानुष्य *पुं.* (तत्.) बाँस जिससे धनुष बनाए जाते हैं।

धानेय, धानेयक *पुं.* (तत्.) धनिया।

धान्य *पुं.* (तत्.) 1. अनाज, अन्न प्रयो. गंगा-तट पर बसे होने के कारण उस गाँव में धन-धान्य की कमी न थी 2. धान, छिलका समेत चावल 3. धनिया 4. चार तिलों के बराबर एक परिमाण या तौल 5. नागर मोथे का एक प्रकार 6. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

धान्यक *पुं.* (तत्.) 1. धनियाँ 2. धान।

धान्यकल्क *पुं.* (तत्.) अन्न के दाने का छिलका।

धान्यकूट *पुं.* (तत्.) अन्न रखने का स्थान, बखार।

धान्यकोश *पुं.* (तत्.) बखार, कोठार।

धान्यकोष्टक *पुं.* (तत्.) दे. धान्यकोष्ठक।

धान्यकोष्ठक *पुं.* (तत्.) अनाज रखने का बड़ा बरतन या कमरा, कोठिला, गोला।

धान्यक्षेत्र *पुं.* (तत्.) धान का खेत, धान पैदा होने का इलाका।

धान्यचमस *पुं.* (तत्.) चूड़ा, चिड़वा, चिपिटक।

धान्यचारी *पुं.* (तत्.) पक्षी, चिड़िया।

धान्यजीवी *वि.* (तत्.) पक्षी, अनाज खाकर जीवन निर्वाह करने वाला।

धान्यतुषोद *पुं.* (तत्.) काँजी, माँड़, घोल।

धान्यत्वक् *पुं.* (तत्.) अनाज अथवा धान का छिलका।

धान्यधेनु *स्त्री.* (तत्.) अन्न की ढेरी जिसे हिंदू गौ मानकर दान करते हैं यह दान सुख, सौभाग्य एवं पुण्य प्राप्ति के लिए विषुव संक्रांति अथवा कार्तिक मास में किया जाता है।

धान्यपंचक *पुं.* (तत्.) 1. शालि, ब्रीहि, शूक, शिंबी तथा क्षुद्र ये पाँच प्रकार के धान 2. पाचक जल जो पाँचों प्रकार के धान, आम, बेल, नागरमोथा को एक साथ उबाल कर तैयार किया जाता है और जिसे अतिसार में पिलाया जाता है 3. एक पाचक औषध जिसे धनिया, सोंठ, बेलगिरी, नागर मोथा व त्रायमाण को मिलाकर बनाया जाता है, इसका व्यवहार उदरशूल, आमातिसार आदि रोगों में किया जाता है।

धान्यपति *पुं.* (तत्.) 1. चावल 2. जौ।

धान्यपानक *पुं.* (तत्.) धनिए का पन्ना, धनिए का पत्ता।

धान्यबीज *पुं.* (तत्.) 1. धनिए के बीज 2. धान का बीज।

धान्यभोग *पुं.* (तत्.) उपजाऊ भूमि या जागीर।

धान्यमाय *पुं.* (तत्.) 1. अनाज का व्यापारी 2. अन्न तौलने वाला।

धान्यमाष *पुं.* (तत्.) दो धान के बराबर एक प्राचीन परिमाण, अन्न मापने का एक प्राचीन परिमाण।

धान्यमुख *पुं.* (तत्.) चीरफाड़ का प्राचीन उपकरण (सुश्रुत)।

धान्यमूल *पुं.* (तत्.) काँजी, माँड़, घोल।

धान्ययूष *पुं.* (तत्.) काँजी।

धान्ययोनि *पुं.* (तत्.) काँजी।

धान्यराज *पुं.* (तत्.) जौ।

धान्यवनि *स्त्री.* (तत्.) अन्न का ढेर।

धान्यवर्ग *पुं.* (तत्.) दे. धान्य पंचक।

धान्यवर्धन *पुं.* (तत्.) अन्न उधार देने की वह रीति जिसमें मूल और ब्याज दोनों अन्न के रूप में सवाया या ड्योढ़ा लिया जाता है।

धान्यवाप *पुं.* (तत्.) अत्यंत उपजाऊ भूमि।

धान्यवीज *पुं.* (तत्.)धनिए के बीज दे. धान्यबीज।

धान्यवीर *पुं.* (तत्.) उरद, उड़द, माष।

धान्यशर्करा *स्त्री.* (तत्.) चीनी मिलाकर तैयार किया हुआ धनिए का पानी जिससे शरीर की गरमी (पित्त) शांत होती है।

धान्यशीर्षक *पुं.* (तत्.) अनाज के पौधे की मंजरी या बाल।

धान्यशुंठी *स्त्री.* (तत्.) एक पेय औषध जो ज्वरातिसार और कफ के इलाज के लिए दिया जाता है।

धान्यशूक *पुं.* (तत्.) टूँड, अनाज की बालियों में ऊपर का नुकीला भाग।

धान्यशैल *पुं.* (तत्.) अनाज की बहुत बड़ी ढेरी जिसे पुराणानुसार दान करने से स्वर्ग में भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

धान्यसंग्रह *पुं.* (तत्.) अनाज का भंडार।

धान्यसार *पुं.* (तत्.) तंडुल, चावल।

धान्या *स्त्री.* (तत्.) धनिया।

धान्याक *पुं.* (तत्.) धनिया।

धान्याकृत *पुं.* (तत्.) कृषक, खेतिहर।

धान्याचल *पुं.* (तत्.) दे. धान्यशैल।

धान्याभ्रक *पुं.* (तत्.) 1. धान की सहायता से शोधा और साफ किया हुआ अभ्रक (वैद्य) 2. उस उस प्रकार से अभ्रक को शोधने की क्रिया।

धान्याम्ल *पुं.* (तत्.) काँजी (एक किस्म का पेय)।

धान्याम्लक *पुं.* (तत्.) धान से बनी काँजी।

धान्यारि *पुं.* (तत्.) चूहा, धान का शत्रु।

धान्यार्थ *पुं.* (तत्.) अन्न या धान रूपी संपत्ति।

धान्याशय *पुं.* (तत्.) अन्नशाला, अन्न-भंडार।

धान्यास्थि *स्त्री.* (तत्.) भूसी, धान का छिलका।

धान्योत्तम *पुं.* (तत्.) उत्तम प्रकार का धान, शालि, बासमती चावल।

धान्वंतर्य *पुं.* (तत्.) धन्वंतरि देवता के निमित्त किया जाने वाला होम या अनुष्ठान।

धान्व *वि.* (तत्.) 1. धन्व देश संबंधी 2. धन्व देश का 3. मरुदेश संबंधी 4. धनुष संबंधी।

धान्वान *वि.* (तत्.) दे. धान्व।

धाप *पुं.* (देश.) 1. धापने की क्रिया या भाव 2. दूरी की नाप, एक कोस का आधा या एक मील 3. उतनी दूरी जितनी प्रायः एक साँस में दौड़कर पार की जा सके जैसे- पद-धाप भर-थोड़ी दूरी पर 4. लंबा-चौड़ा मैदान 5. खेत की नाप *पुं.* पानी की धार *स्त्री.* जी भरना, तृप्ति, संतोष।

धापना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. दौड़ना, तेज चलना, भागना 2. अघाना, तृप्त होना *स.क्रि.* संतुष्ट करना, तृप्त करना।

धाबरी *स्त्री.* (तत्.) कबूतरों का दरबा।

धाबा *पुं.* (देश.) 1. ढाबा, बासा 2. छत के ऊपर का कमरा, अटारी।

धाबाई *पुं.* (देश.) दूध-भाई, दो भिन्न बच्चे जो एक ही माता का दूध पीते हो।

धा-भाई *पुं.* (देश.) दूध-भाई, धाबाई।

धाम *पुं.* (तत्.) 1. वास स्थान, अधिष्ठान 2. गृह, घर 3. देवस्थान, पुण्य स्थान, तीर्थ स्थान, देवता का निवास स्थान प्रयो. बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री तथा यमुनोत्री हिमालय के चार पवित्र धामों में गिने जाते हैं 4. किरण, तेज, प्रभा 5. ज्योति 6. प्रभाव, प्रताप 7. ब्रह्मा 8. परलोक 9. स्वर्ग 10. विष्णु 11. आत्मा 12. देवताओं का एक वर्ग (महाभारत) 13. देह, शरीर 14. दशा, अवस्था 15. बागडोर, लगाम 16. जन्म 17. चारदीवारी 18. फौज, सेना 19. समूह (देश.) फालसे की जाति का मध्य व दक्षिण भारत में पाया जाने वाला एक छोटा पेड़।

धामक *पुं.* (तत्.) माशा, एक तौल।

धामक-धूमक *स्त्री.* (तत्.) (देश.) धूमधाम, ठाट-बाट।

धामकेशी *पुं.* (तत्.) सूर्य।

धामच्छद *पुं.* (तत्.) अग्नि।

धामन *पुं.* (देश.) 1. एक किस्म का पेड़ 2. एक प्रकार का बाँस *स्त्री.* दे. धामिन।

धामनिका *स्त्री.* (तत्.) दे. धमनी।

धामनिधि *पुं.* (तत्.) सूर्य।

धामनी *स्त्री.* (तत्.) दे. धमनी।

धाम भाक/भाज *पुं.* (तत्.) अपना भाग ग्रहण करने के लिए यज्ञस्थल पर शामिल होने वाले देवता।

धामश्री *स्त्री.* (तत्.) एक रागिनी।

धामस-धूमस *स्त्री.* (देश.) धूमधाम।

धामार्गव *पुं.* (तत्.) लाल चिचड़ा 2. घीया-तोरी।

धामित्र *पुं.* (तत्.) धौंकनी, आग जलाने का साधन।

धामिन *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का साँप जिसके बारे में यह माना जाता है कि वह बहुत तेज दौड़ता है 2. असम की पहाड़ियों, राजपूताने तथा दक्षिण भारत में पाया जाने वाला वृक्ष जिसकी लकड़ी से फर्नीचर तैयार होता है।

धामिया *पुं.* (तत्.) 1. एक पंथ का नाम 2. उस पंथ का व्यक्ति।

धायँ *स्त्री.* (अनु.) दे. धाँय।

धाय *स्त्री.* (तद्.) 1. बच्चे को दूध पिलाने तथा पालन-पोषण के लिए नियुक्त स्त्री प्रयो. अकबर का पालन-पोषण एक धाय ने किया था पर्या. धात्री, उपमाता, दाई, आया, धायी, अंकपाली 2. *पुं.* धवई का पेड़ 3. *वि.* (तत्.) दे. धायक।

धायक *वि.* (तत्.) 1. स्वत्व में रखने वाला, धारण करने वाला 2. धावक।

धाय भाई *पुं.* (देश.) धाय से उत्पन्न होने के कारण भाई जैसा, एक ही धाय द्वारा पोषित दो भिन्न बालक।

धाया *स्त्री.* (तद्.) 1. दे. धाय 2. (तत्.) वेद का अग्निमंत्र, अग्नि प्रज्वलित करने का वेद मंत्र।

धायी *स्त्री.* (तद्.) दे. धाय।

धाय्य *पुं.* (तत्.) पुरोहित।

धार *स्त्री.* (तत्.) 1. जल आदि जैसे तरल पदार्थ के के गिरने या बहने का तार उदा. पानी की धार, रक्त की धार मुहा. धार टूटना- प्रवाह खंडित होना; धार-बँधना- किसी तरल पदार्थ का धार बन कर प्रवाहित होना (किसी चीज पर); धार मारना- अत्यधिक घृणा या उपेक्षा जाहिर करना प्रयो. हम ऐसी नौकरी पर धार मारते है 2. पानी का सोता, चश्मा 3. जल डमरूमध्य 4. पशु के स्तन को दबाने पर उससे धारा रूप में निकलने वाला दूध मुहा. धार चढ़ाना- देवी-देवता पर दूध, जल आदि चढ़ाना 5. हथियार का तेज किनारा जिससे कोई वस्तु काटी जाती है उदा. तलवार की धार मुहा. धार बाँधना-मंत्र बल से हथियार के काटने की शक्ति को कुंठित कर देना 6. छोर, किनारा, सिरा 7. फौज, सेना 8. आक्रमण, छापा, डाका, धाड़ मुहा. धार पड़ना- आक्रमण होना 9. बहुत बड़ा दल या समूह प्रयो. देखते ही देखते वहाँ धार की धार बंदर आ गए 10. तरफ/ओर/दिशा 11. जहाजों के तख्तों की जोड़ या संधि, कस्तूरा 12. पहाड़ों की श्रृंखला या माला 13. लकीर, रेखा *पुं.* (तत्.) 1. जोर की वर्षा 2. वर्षा का जमा किया हुआ जल जिसे वैद्यक के अनुसार बहुत गुणकारी माना जाता है 3. ऋण, उधार 4. प्रदेश, प्रांत 5. विष्णु 6. ओला 7. सीमा 8. एक प्रकार का पत्थर *पुं.* 1. कच्चे कुएँ के मुँह पर मिट्टी अंदर गिरने से रोकने के लिए लगाया जाने वाला पेड़ का तना या लकड़ी का टुकड़ा 2. चोबदार या द्वारपाल *वि.* (तत्.) 1. धारण करने वाला 2. सहारा देने वाला 3. बहने वाला 4. गहरा, गंभीर (प्रत्य.) 1. एक प्रत्यय जो कुछ संस्कृत शब्दों के अंत में लगकर धारण करने वाले का अर्थ देता है

उदा. कर्णधार 2. एक प्रत्यय जो कुछ हिंदी धातुओं के अंत में लगकर धारक, कर्त्ता आदि का अर्थ देता है जैसे- लिखधार-लिखने वाला।

धारक *वि.* (तत्.) 1. धारण करने वाला 2. उधार लेने वाला 3. वहन करने वाला *पुं.* कलश, घड़ा, पात्र।

धारका *स्त्री.* (तत्.) योनि, भग।

धारण *पुं.* (तत्.) 1 किसी वस्तु का आधार बनना 2. वस्तु को ग्रहण करना, अंगीकार करना उदा. पदवी धारण करना 3. पकड़ना, उठाना, थामना उदा. शस्त्र धारण करना 4. पहनना उदा. वस्त्र धारण करना, आभूषण धारण करना 5. ऋण या उधार लेना 6. स्मरण रखना 7. संकल्प करना उदा. व्रत धारण करना 8. खाद्य रूप से सेवन करना, खाना 9. शिव 10. कश्यप के एक पुत्र का नाम 11. स्तन।

धारणक *पुं.* (तत्.) ऋणी, कर्जदार।

धारणशीलता *स्त्री.* (तत्.) धारण करने की शक्ति।

धारणा योग *पुं.* (तत्.) प्रगाढ़, समाधि।

धारणा *स्त्री.* (तत्.) 1. विचार, विश्वास, निश्चित मति उदा. उनके भ्रष्ट आचरण को देखते हुए उनके बारे में मेरी धारणा अच्छी नहीं है 2. धारण, ग्रहण, पालन आदि करने की क्रिया या भाव 3. वह शक्ति जिससे कोई बात मन में धारण की जाती या समझी जाती है, बुद्धि 4. मन या ध्यान में रखने की वृत्ति, स्मृति, याद 5. योग में आठ अंगों में से एक 6. पूरक, रेचक एवं कुंभक प्राणायामों द्वारा प्राण का निरोध 7. मर्यादा 8. ज्येष्ठ शुक्ला अष्टमी से एकादशी तक एक वृष्टिसूचक योग।

धारणावधि *स्त्री.* (तत्.) वह अवधि या समय जब तक कोई पद, संपत्ति आदि धारण की जाये अथवा उसका उपयोग किया जाए।

धारणावान् *वि.* (तत्.) मेधावी, मेधाशाली, जिसकी धारणा शक्ति बहुत प्रबल हो।

धारणा शक्ति *स्त्री.* (तत्.) बात अथवा तथ्य को मस्तिष्क में लंबे समय तक धारण करने की शक्ति।

धारणिक *पुं.* (तत्.) 1. ऋणी, कर्जदार 2. धन जमा करने की जगह 3. वह व्यक्ति जिसके पास कोई चीज अमानत या धरोहर के रूप में रखी जाए।

धारणी *स्त्री.* (तत्.) 1. धारण करने वाली, पृथ्वी 2. 2. नाड़िका, नाड़ी 3. पंक्ति, श्रेणी 4. सीधी लकीर 5. बौद्ध-तंत्र का एक व्यवहार।

धारणीय *वि.* (तत्.) धारण करने योग्य, जिसे धारण करना उचित हो *पुं.* 1. धरणीकंद 2. तंत्रिकों का एक प्रकार का मंत्र *स्त्री.* धारणीया।

धारदार *वि.* (तत्+फा..) धार वाला, पैना उदा. जान पड़ा कि किसी धारदार हथियार से उस पशु को घायल किया गया था।

धारन *पुं.* (तद्.) दे. धारण।

धारना *स.क्रि.* (तद्.) 1. धारण करना, अपने ऊपर लेना 2. ऋण लेना, उधार लेना *स.क्रि.* दे. ढारना।

धारयंत्र *पुं.* (तत्.) यंत्र जिससे जल, धारा के रूप में निकले जैसे- फुहारा, फव्वारा, पिचकारी।

धारयिता *वि.* (तत्.) 1. धारण करने वाला।

धारयित्री *स्त्री.* (तत्.) 1. धारण करने वाली 2. पृथ्वी।

धारांकुर *पुं.* (तत्.) 1. जल का कण 2. ओला 3. सरल का गोंद।

धारांग *पुं.* (तत्.) 1. एक प्राचीन तीर्थ का नाम 2. तलवार।

धारा *स्त्री.* (तत्.) द्रव या तरल पदार्थ की अटूट गति, अखंड, प्रवाह, धार, बहाव, गिराव उदा. नदी की धारा 2. वर्षण 3. हथियार की धार 4. पानी का झरना, सोता, चश्मा 5. बहुत अधिक वर्षा 6. साहित्य का प्रवाह या उपविभाग जैसे- छायावादी काव्यधारा, सूफी काव्यधारा 7. नियम या विधान का वह अंश या भाग जिसमें विषय से संबंधित सभी बातें स्पष्ट की जाती हैं, दफा (सेक्शन) उदा. भारतीय संविधान की धारा 356 8. यश, कीर्ति 9. राजा भोज के समय मालवा की राजधानी 10. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम 11. झुंड समूह 12. संतान

13. उन्नति 14. कीर्ति, यश 15. पहाड़ की चोटी 16. घोड़ की चाल।

धाराकदंब *पुं.* (तत्.) कदंब के पेड़ का एक प्रकार।

धारागृह *पुं.* (तत्.) 1. स्नानागार 2. फुव्वारे आदि से युक्त स्नान गृह।

धाराग्र *पुं.* (तत्.) वाण के आगे का चौड़ा सिरा।

धाराट *पुं.* (तत्.) 1. चातक 2. बादल 3. घोड़ा 4. मस्त हाथी।

धाराधर *पुं.* (तत्.) 1. धाराओं को धारण करने वाला अर्थात् बादल 2. तलवार।

धारानिपात *पुं.* (तत्.) 1. जलधारा का गिरना 2. भारी वर्षा होना।

धारानियंत्रक *पुं.* (तत्.) एक विद्युत उपकरण जो विद्युत पथ में धारा को बढ़ाता-घटाता है।

धाराप्रवाह *वि.* (तत्.) लगातार, अविराम गति से चलने वाला प्रयो. वह धाराप्रवाह संस्कृत बोलता है।

धारापात *पुं.* (तत्.) दे. धारानिपात।

धारापूप *पुं.* (तत्.) दूध में सने मैदे का बना पूवा।

धाराफल *पुं.* (तत्.) मदन वृक्ष, मैनफल वृक्ष।

धारामापी *पुं.* (तत्.) बिजली की धारा को मापने वाला यंत्र।

धारायिष्णु *वि.* (तत्.) धारण या ग्रहण करने में समर्थ।

धाराल *वि.* (तत्.) धारदार (हथियार) जिसकी धार तेज हो।

धाराली *स्त्री.* (तत्.) तलवार, खड्ग, कटार।

धारावनि *पुं.* (तत्.) हवा, वायु।

धारावर *पुं.* (तत्.) मेघ, बादल।

धारावर्ष *पुं.* (तत्.) अविराम वर्षा, घनघोर बारिश, धारावर्षण, मूसलाधार बारिश।

धारा वर्षण *पुं.* (तत्.) दे. धारावर्ष।

धारावाहिक *वि.* (तत्.) 1. लगातार जारी रहने वाला, जिसका क्रम धारा की तरह निरंतर चलता रहे 2. पत्र-पत्रिकाओं, टेलीविजन में क्रमिक रूप से प्रकाशित होने वाले, दिखाए जाने वाले लेख, कार्यक्रम, सीरियल उदा. हम लोग, क्योंकि सास भी कभी बहू थी आदि भारतीय टेलीविजन के प्रसिद्ध धारावाहिक हैं।

धारावाहिकता *स्त्री.* (तत्.) धारावाहिक होने की स्थिति, निरंतरता।

धारावाही *वि.* (तत्.) धारावाहिक।

धाराविष *पुं.* (तत्.) तलवार, खड्ग।

धारासंपात *पुं.* (तत्.) लगातार घनघोर वर्षा, जोरों की वर्षा, महावृष्टि।

धारासभा *स्त्री.* (तत्.) जनप्रतिनिधियों की सभा जो विधान आदि बनाती है, विधान सभा, विधायिका।

धारासार *पुं.* (तत्.) लगातार खूब वर्षा होना प्रयो. दो दिनों की धारासार वर्षा के बाद बाढ़ आ गई।

धारास्नुही *स्त्री.* (तत्.) तिधारा थूहर।

धाराहर *पुं.* (तद्.) धौरहर (मीनार)।

धारि *स्त्री.* (तद्.) 1. धार 2. समूह, झुंड 3. सेना 4. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक रगण और एक लघु होता है।

धारिणी *स्त्री.* (तत्.) 1. पृथ्वी 2. शाल्मली, सेमल का पेड़ 3. चौदह देवताओं की स्त्रियाँ (शची, वनस्पति, गार्गी, धूम्रोर्णा, रुचिराकृति, सिनीवाला, कुहू, राका, अनुमति, आयाति, प्रज्ञा, सेला, बेला इत्यादि) *वि.* धारण करने वाली स्त्री।

धारित *वि.* (तत्.) 1. धारण किया हुआ प्रयो. कृपया अमर्यादित व्यवहार न करें, धारित पद की गारिमा रखें 2. संभाला हुआ।

धारिता *स्त्री.* (तत्.) धारण करने का गुण या सामर्थ्य, धारण योग्यता, धारण-क्षमता। capacity

धारी *वि.* (तत्.) 1. धारण करने वाला उदा. देहधारी, शस्त्रधारी 2. पहनने वाला जैसे- कौपीनधारी 3. जिसमें पढ़ी-सुनी बातों को धारण करने की शक्ति हो 4. ऋण लेने वाला, कर्जदार 5. ग्रंथ के तात्पर्य को भली-भांति जानने वाला *पुं.* 1. एक

वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पहले तीन जगण तथा एक यगण होता है 3. पीलू का पेड़ *स्त्री.* (तद्.) रेखा, लकीर प्रयो. उस मॉडल के कपड़े पर सफेद धारियाँ थीं।

धारीदार *वि.* (तत्.) जिसमें धारियाँ हों उदा. उसे धारीदार कपड़े पसंद हैं।

धारोष्ण *वि.* (तत्.) थन से निकला ताजा गर्म दूध।

धार्तराष्ट्र *पुं.* (तत्.) 1. धृतराष्ट्र के वंश का 2. एक नाग का नाम 3. काले रंग की चोंच और पैरों वाला हंस *स्त्री.* धार्तराष्ट्री।

धार्तराष्ट्रपदी *स्त्री.* (तत्.) 1. हंसपदी लता 2. लाल लाल रंग का लज्जालु वृक्ष।

धार्म *वि.* (तत्.) धर्म संबंधी, धर्म विषयक।

धार्मपत *वि.* (तत्.) धर्मपति संबंधी।

धार्मिक *वि.* (तत्.) 1. धर्म संबंधी जैसे- धार्मिक क्रियाएँ, धार्मिक अनुष्ठान, धार्मिक पुस्तकें 2. धर्माचरण करने वाला, पुण्यात्मा, धर्मशील जैसे- धार्मिक व्यक्ति।

धार्मिकता *स्त्री.* (तत्.) धार्मिक होने का भाव, गुण या अवस्था प्रयो. समाज में धार्मिकता का बोलबाला था।

धार्मिक्य *पुं.* (तत्.) दे. धार्मिकता।

धार्मिण *पुं.* (तत्.) धार्मिक व्यक्तियों की सभा या मंडली।

धार्मिणेय *पुं.* (तत्.) धार्मिक स्त्री का बेटा।

धार्मिणेयी *स्त्री.* (तत्.) धार्मिक स्त्री की पुत्री।

धार्य *वि.* (तत्.) 1. धारण करने योग्य, धारणीय 2. जिसे धारणा-शक्ति ग्रहण कर सके 3. सह्य *पुं.* वस्त्र, कपड़ा, पोशाक।

धार्यत्व *पुं.* (तत्.) 1. धारण करने की क्रिया या भाव 2. कर्ज, देनदारी, जिसे चुकाना आवश्यक हो।

धार्ष्ट, धाष्ट्‌र्य *पुं.* (तत्.) धृष्टता।

धाव *पुं.* (तद्.) गोलरा, धावरा या बकली नामक पेड़ 2. लंबाई 3. *वि.* (तत्.) धोने वाला, साफ करने वाला।

धावक *वि.* (तत्.) दौड़ने वाला *पुं.* 1. कपड़े धोने वाला, धोबी 2. हरकारा 3. संस्कृत के एक प्राचीन कवि जो हर्ष के समय हुए थे।

धावन *पुं.* (तत्.) 1. दौड़ना 2. धोना, साफ करना 3. वह चीज जिससे कोई वस्तु धोई अथवा साफ की जाए 4. धोबी 5. दूत, हरकारा 6. हमला करना।

धावना *अ.क्रि.* (देश.) दौड़ना, वेग से चलना।

धावनि *स्त्री.* (तत्.) पिठवन, पृश्निपर्णीलता (देश.) 1. धावने यानी दौड़ने की क्रिया या भाव, तेजी से चलने या दौड़ने की क्रिया 2. आक्रमण, धावा।

धावनिका *स्त्री.* (तत्.) 1. कंटकारिका, कटेरी 2. पिठवन, पृश्निपर्णी 3. कँटीली मकोय।

धावनी *स्त्री.* (तत्.) 1. पिठवन, पृश्निपर्णी लता 2. कंटकारी 3. धव या धौ का फूल।

धावमान *वि.* (तत्.) 1. दौड़ने वाला 2. दौड़ता हुआ 3. चढ़ाई करने वाला।

धावर *वि.* (तद्.) धवल, सफेद।

धावरा *वि.* (तद्.) धौरा, धवल *पुं.* दे. धव।

धावरी *स्त्री.* (तद्.) धौरी, सफेद गाय *वि.* सफेद, उजले रंग की।

धावल्य *पुं.* (तत्.) धवलता, सफेदी प्रयो. बर्फ से ढँकी हिमालय की ऊँची चोटियों का धावल्य देखते ही बनता था।

धावा *पुं.* (तद्.) 1. चढ़ाई, हमला 2. किसी काम के लिए जल्दी-जल्दी जाना, दौड़कर जाना मुहा. धावा करना- चढ़ाई करना, आक्रमण करना; धावा बोलना- शत्रु पर आक्रमण करने का हुक्म देना; धावा मारना- तेजी से दूर जाकर आक्रमण करना।

धावित *वि.* (तत्.) 1. धोया हुआ, साफ किया हुआ, मार्जित 2. दौड़ा हुआ, दौड़ता हुआ।

धाह *स्त्री.* (देश.) 1. जोर-जोर से चिल्लाकर रोना, धाड़ 2. आग की गरमी 3. छाया मुहा. धाह

मारना- धाड़ मारना; धाह मेलना- चिल्लाना, जोर से आवाज करना।

धाहड़ना *अ.क्रि.* (देश.) पुकारना।

धाहना *स.क्रि.* (देश.) ढाहना, नष्ट करना, ध्वंस करना।

धाही *स्त्री.* (देश.) 1. धाय, दूध पिलाने वाली स्त्री 2. आग की गरमी 3. छाया।

धिंग *स्त्री.* (देश.) धींगाधींगी, शरारत, उपद्रव।

धिंगड़ *पुं.* (देश.) दे. धींगरा।

धिंगरा *पुं.* (देश.) दे. धींगरा।

धिंगा *पुं.* (देश.) 1. बदमाश, उपद्रवी 2. निर्लज्ज, बेशर्म।

धिंगाई *स्त्री.* (देश.) 1. उपद्रव, शरारत, ऊधम 2. कुटिलता 3. निर्लज्जता, बेशरमी।

धिंगाधिंगी *स्त्री.* (देश.) धींगा-धींगी, शरारत, उपद्रव।

धिंगाना *अ.क्रि.* (देश.) शरारत, धींगा-धींगी, उपद्रव।

धिंगी *स्त्री.* (देश.) हुड़दंगी औरत, ऊधम मचाने वाली स्त्री।

धि *पुं.* (तद्.) निधि, आगार, भंडार टि. केवल समास के अंत में प्रयुक्त होता है जैसे- उदधि, जलधि।

धिआ *स्त्री.* (तद्.) 1. पुत्री, बेटी 2. कन्या, बालिका, छोटी लड़की।

धिआन *पुं.* (तद्.) दे. ध्यान।

धिआना *स.क्रि.* (तद्.) दे. ध्याना।

धिकना *अ.क्रि.* (देश.) 1. गरम होना, तपना 2. तपकर लाल होना।

धिकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. तपाना, खूब गरम करना 2. तपाकर लाल करना।

धिक् *अव्य.* (तत्.) घृणा, भर्त्सना, तिरस्कार, अनादर, निंदा-सूचक शब्द।

धिक् क्रिया *स्त्री* (देश.) दे. धिक्कार।

धिक्कार *स्त्री.* (तत्.) भर्त्सना, घृणा, तिरस्कार सूचक शब्द प्रयो. धिक्कार है उन्हें जो अपने देश को धोखा देते हैं।

धिक्कारना *स.क्रि.* (तद्.) फटकारना, बहुत बुरा भला कहना, लानत-मलामत करना।

धिक्कृत *वि.* (तत्.) जो धिक्कारा गया हो *पुं.* तिरस्कार, लताड़।

धिक्पारुष्य *पुं.* (तत्.) धिक्कार, भर्त्सना, डाँट-फटकार।

धिग/धिक् *अव्य.* (तत्.) धिक्कार।

धिग्दंड *पुं.* (तत्.) धिक्कार या भर्त्सना का दंड प्रयो. न्यायधीशों ने उसे धिग्दंड देकर छोड़ दिया।

धिग्वण *पुं.* (देश.) एक संकर जाति, ब्राह्मण पिता एवं अयोगवी माता से उत्पन्न संतान।

धित्सु *वि.* (तत्.) धोखा देने या छल करने की इच्छा करने वाला।

धिमचा *पुं.* (देश.) एक किस्म की इमली।

धिय *स्त्री.* (देश.) 1. पुत्री, बेटी 2. कन्या, बालिका, लड़की।

धियांपति *पुं.* (देश.) बृहस्पति।

धिया *स्त्री.* (देश.) दे. धिय।

धियान *पुं.* (तद्.) ध्यान।

धियाना *अ.क्रि.* (तद्.) ध्याना, ध्यान करना।

धियानी *वि.* (तद्.) ध्यानी।

धिरकार *स्त्री.* (तद्.) दे. धिक्कार।

धिरयना *स.क्रि.* (देश.) 1. धिरवना 2. डाँटना।

धिरवना *स.क्रि.* (देश.) 1. धमकी देना, धमकाना 2. डाँटना।

धिराना *स.क्रि.* (देश.) 1. भयभीत करना 2. धमकाना *अ.क्रि.* 1. मंद पड़ना, धीमा होना, कम होना, घटना 2. धीरज रखना।

धिषण *पुं.* (तत्.) 1. बृहस्पति 2. ब्रह्मा 3. विष्णु 4. गुरु, शिक्षक 5. वास स्थान *वि.* बुद्धिमान, समझदार।

धिषणा *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रज्ञा, बुद्धि 2. स्तुति 3. वाक्शक्ति, वाणी 4. पृथ्वी 5. स्थान 6. प्याला।

धिषणाधिप *पुं.* (तत्.) बृहस्पति।

धिष्ठ्य *पुं.* (तत्.) दे. धिष्ण्य।

धिष्ण्य *पुं.* (तत्.) 1. हवन कुंड 2. स्थान 3. भवन 4. अग्नि 5. नक्षत्र 6. बल, शक्ति 7. शुक्राचार्य 8. शुक्र ग्रह 9. अल्का *वि.* 1. जिसकी प्रशंसा की जाए 2. जिसके बारे में गंभीर रूप से सोचा जाए 3. सावधान 4. उदार।

धींग *पुं.* (देश.) 1. हट्टा-कट्टा मनुष्य 2. बदमाश, उपद्रवी गुंडा *वि.* 1. मजबूत, जोरावर 2. कुमार्गी, दुराचारी।

धींगड़ *वि.* (देश.) 1. हट्टा-कट्टा 2. दुष्ट, पाजी, बदमाश 3. दोगला, वर्णसंकर।

धींगड़ा *पुं.* (देश.) 1. हट्टा-कट्टा मनुष्य 2. गुंडा 3. स्त्री का उपपति, जार *वि.* 1. शरारती, दृष्ट, पाजी 2. दोगला 3. ताकतवर।

धींग-धुकड़ी *स्त्री.* (देश.) 1. धींगा-मस्ती 2. पाजीपन 3. शरारत।

धींगरा *पुं.* (देश.) 1. हट्टा-कट्टा आदमी 2. गुंडा 3. स्त्री का उपपति, जार *वि.* 1. दुष्ट, पाजी, शरारती 2. दोगला 3. ताकतवर।

धींगरी *स्त्री.* (देश.) ताकतवर, उपद्रव करने वाली स्त्री।

धींगा *पुं.* (देश.) उपद्रवी, बदमाश, शरीर *वि.* दुष्ट, पाजी।

धींगा-धींगी *स्त्री.* (देश.) 1. हट्टे-कट्टे लोगों की उठा-पटक, लड़ाई-झगड़ा या उपद्रव 2. उपद्रव, शरारत, बदमाशी 3. बल-प्रयोग, जबरदस्ती।

धींगामस्ती *स्त्री.* (देश.) दे. धींगामुश्ती।

धींगामुश्ती *स्त्री.* (देश.) 1. बल-प्रयोग वाला उपद्रव 2. शरारत, बदमाशी, पाजीपन 3. हाथाबाँही, हाथापाई।

धींद्रिय *स्त्री.* (तत्.) दे. ज्ञानेंद्रिय।

धींवर *पुं.* (देश.) दे. धीवर।

धी *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रज्ञा, बुद्धि, समझ, अकल 2. ज्ञान 3. कल्पना 5. विचार 6. अभिप्राय 7. मन 8. मनोवृत्ति 9. भक्ति 10. यज्ञ 11. कर्म 12. न्याय-बुद्धि 13 जन्म-कुंडली में लग्न से पाँचवाँ स्थान (देश.) पुत्री, बेटी *वि.* धैर्यवान, सुस्थिर।

धीआ *स्त्री.* (देश.) बेटी, लड़की, कन्या।

धीगमधूँगा *स्त्री.* (देश.) दे. धींगा-धींगी।

धीजना *स.क्रि.* (देश.) 1. स्वीकार करना, अंगीकार करना 2. प्रतीति या विश्वास करना *अ.क्रि.* 1. धैर्य से युक्त होना 2. संतुष्ट होना 3. बहुत प्रसन्न होना 4. ठहरना।

धीत *वि.* (तत्.) 1. जो पिया गया हो 2. विचारित 3. जो संतुष्ट किया गया हो 4. जिसका आराधन किया गया हो।

धीति *स्त्री.* (तत्.) 1. पीना 2. प्यास 3. विचार 4. आराधन 5. तोषण, संतुष्ट करना।

धीदा *स्त्री.* (तत्.) 1. कन्या 2. पुत्री, बेटी 3. मनीषा *वि.* बुद्धि प्रदान करने वाली।

धीदाता *वि.* (तत्.) ज्ञान देने वाला, बुद्धि देने वाला।

धीन *पुं.* (देश.) लोहा।

धीपति *पुं.* (तत्.) बृहस्पति।

धीमा *वि.* (तद्.) 1. जिसकी गति में तेजी न हो, वेग-रहित, मंथर, मंद 2. तीव्रता, प्रचंडता या तेजी अथवा उग्रता से रहित *स्त्री.* धीमी जैसे- धीमी आँच 3. नीचा तथा साधारण से कम स्वर जैसे- धीमी आवाज, धीमा स्वर 4. जिसका जोर कम हो गया हो, शांत या उतरा हुआ प्रयो. जब उसका क्रोध कुछ धीमा हुआ तो उसने कहना शुरू किया 5. जो अप्रतिम निस्तेज हो गया हो उदा. वह अब पहले से बहुत धीमा पड़ा गया है।

धीमान् *पुं.* (तत्.) 1. प्रज्ञावान, बुद्धिमान 2. बृहस्पति *स्त्री.* धीमती।

धीमे *अव्य.* (देश.) धीरे-धीरे, हल्की गति से, आहिस्ता उदा. बीमार सोया हुआ है धीमे बोलो।

धीय *स्त्री.* (देश.) बेटी, पुत्री *पुं.* जामाता, दामाद।

धीया *स्त्री.* (देश.) पुत्री, बेटी, लड़की।

धीर *वि.* (तत्.) 1. जो धैर्य रखता हुआ जल्दी न विचलित हो 2. ठहरा हुआ 3. स्थिर चित्त 4. जल्दी न घबराने वाला 5. गंभीर 6. दृढ़ 7. सबल, बलवान 8. विनीत, नम्र 9. मनोहर 10. मंद, धीमा *पुं.* 1. समुद्र 2. विद्वान 3. केसर 4. ऋषभ नामक औषधि 5. मंत्र 6. राजा बलि 7. बुद्ध 8. वर्ण-वृत्त का एक प्रकार जिसके प्रत्येक चरण में तीन तगण और दो गुरु होते हैं *पुं.* धैर्य 1. धैर्य धीरज, मन की स्थिरता, ढाढ़स 2. संतोष, सब्र।

धीरक *पुं.* (तत्.) धीरज, धैर्य।

धीरचेता *पुं.* (देश.) स्थिर चित्त वाला, दृढ़मति।

धीरज *पुं.* (तत्.) दे. धैर्य।

धीरजता *स्त्री.* (तद्.) धैर्य, धीरज।

धीरजमान *पुं.* (तद्.) धैर्यवान।

धीरता *स्त्री.* (तत्.) 1. धीर होने का गुण/भाव/अवस्था 2. चित्त की स्थिरता, धैर्य 3. गंभीरता 4. विद्वत्ता, पांडित्य 5. चातुर्य 6. संतोष।

धीरत्व *पुं.* (तत्.) धीर होने का गुण, भाव अवस्था, धीरता।

धीरपत्री *स्त्री.* (तत्.) जमीकंद, धरणीकंद।

धीरप्रशांत *पुं.* (तत्.) दे. धीरशांत।

धीरमति *वि.* (तत्.) धीरज रखने वाला, धैर्यवान।

धीर ललित *पुं.* (तत्.) काव्य. साहित्य में वह नायक जो कोमल स्वभाव वाला, हँसमुख एवं कलाप्रेमी, सुखी तथा संपन्न हो जैसे- स्वप्न वासवदत्ता का नायक माधव धीर ललित है।

धीरशांत *पुं.* (तत्.) काव्य. साहित्य में वह नायक जो दयावान, वीर, सुशील, शांत, पुण्यवान हो उदा. मालतीमाधव का नायक माधव धीरशांत है।

धीरा *स्त्री.* (तत्.) काव्य. 1. साहित्य में वह नायिका जो नायक के शरीर पर दूसरी स्त्री के साथ रमण के चिह्न देखकर शांत भाव से व्यंग्यपूर्ण शब्दों से कोप प्रकट करे 2. व्यंग्य से कोप प्रकट करने वाली नायिका 3. गिलोय, गुडुच 4. काकोली 5. माल कँगनी *वि.* धीमा।

धीराधी *स्त्री.* (तत्.) शीशम का पेड़।

धीराधीरा *स्त्री.* (तत्.) काव्य. साहित्य में वह नायिका नायिका जो नायक के शरीर पर स्त्री रमण के चिह्न देख कुछ व्यंग्य और कुछ रुदन आदि के माध्यम से अपना कोप प्रकट करती है।

धीरावी *स्त्री.* (तत्.) शीशम का पेड़।

धीरे *क्रि.वि.* (तद्.) 1. आहिस्ता या मंद गति से उदा. वह धीरे चलता है 2. नीचे या हल्के स्वर में उदा. वह धीरे गा रहा था 3. चुपके से प्रयो. वह धीरे से दबे कदमों से कमरे में आया।

धीरे-धीरे *अव्य.* (तद्.) 1. मंद गति से, आहिस्ता 2. शनैः शनैः 3. नीचा या धीमा स्वर।

धीरोदात्त *पुं.* (तत्.) काव्य. साहित्य में वह नायक जो अपनी भावनाओं पर पूर्ण नियंत्रण रखने वाला, वीर, दृढ़, क्षमाशील, दयालु, निरभिमानी, विनम्र और गंभीर हो जैसे- रामचंद्र, युधिष्ठिर आदि।

धीरोद्धत *पुं.* (तत्.) प्रचंड, अहंकारी, सदा अपने गुणों का बखान करने वाला, चपल नायक उदा. भीमसेन।

धीरोष्णी *पुं.* (तत्.) एक विश्वदेव।

धीर्य *पुं.* (तत्.) कातर।

धीलटि *स्त्री.* (तत्.) पुत्री, कन्या।

धीलटी *स्त्री.* (तत्.) पुत्री, कन्या।

धीवर *पुं.* (तत्.) 1. महुआ, मल्लाह 2. सेवक 3. मत्स्य पुराण के अनुसार एक देश 4. देश का निवासी।

धीवरक *पुं.* (तत्.) मल्लाह।

धीवरी *स्त्री.* (तत्.) 1. मल्लाहिन, धीवर की स्त्री 2. 2. बड़ी मछली मारने का कँटिया 3. मछली की टोकरी।

धुंकार *स्त्री.* (तद्.) जोर का शब्द, गड़गड़ाहट, गरज।

धुंदुल *पुं.* (देश.) एक किस्म का मझोले कद का पेड़।

धुंध *स्त्री.* (देश.) 1. धूल, धूम्र अथवा वाष्प कण की वजह से वातावरण में होने वाला अंधेरा अथवा दृष्टिगोचरता में आई कमी प्रयो. जाड़े में कोहरे की वजह से सुबह धुंध हो जाती है 2. आँख की एक व्याधि जिसमें आँख की देखने की शक्ति कम हो जाती है और आकृतियाँ धुंधली दिखाई देती हैं *वि.* घना, अत्यधिक।

धुंधकार *पुं.* (देश.) 1. धुंकार, गड़गड़ाहट 2. अंधेरा, अंधकार, धुंधमार *पुं.* (तत्.) दे. धुंधुमार।

धुंधर *स्त्री.* (देश.) 1. धूल उड़ने के कारण छा जाने वाला अंधेरा 2. गर्द गुबार।

धुंधरित *वि.* (देश.) धूमिल, धुंधला बनाया गया।

धुंधारि *स्त्री.* (देश.) दे. धुंधर।

धुंधु *पुं.* (तत्.) मधु राक्षस के पुत्र का नाम, हरिवंश पुराण के अनुसार एक बार मरुभूमि में बालू के नीचे छिपकर वह तप कर रहा था, जब वह साँसें लेता तो उसके साथ धुआँ और अंगारे निकलते, भूकंप होता, बड़े-बड़े पर्वत हिलने लगते, महाराज वृहदश्व के पुत्र कुवलयाश्व ने उसका वध किया था, उसके बाद से कुवलयावश्व धुंधुमार कहलाने लगा।

धुंधुकार *पुं.* (देश.) 1. धुंधलापन 2. अंधकार, अंधेरा 3. धुंकार, नगाड़े का स्वर।

धुंधुमार *पुं.* (देश.) राजा वृहदश्व के पुत्र कुवलयाश्व का एक नाम जिसने धुंधु नामक राक्षस का वध किया था।

धुंधुरि *स्त्री.* (देश.) गर्द अथवा धुएँ के कारण छाने वाला अंधेरा।

धुँआँ *पुं.* (तद्.) दे. धुआँ।

धुँआँस *पुं.* (देश.) दे. धुवाँस।

धुँआँसा *पुं.* (देश.) अत्यधिक धुआँ लगने के कारण जमी कालिख *वि.* धुएँ की गंध या स्वाद से युक्त।

धुँआना *अ.क्रि.* (देश.) निरंतर धुएँ पर पकने के कारण किसी चीज का काला पड़ जाना या उसमें से धुएँ की गंध या स्वाद आना *स.क्रि* धुआँ देकर किसी चीज को धुएँ की गंध या स्वाद से युक्त करना।

धुँआयँध *वि.* (देश.) धुएँ की गंध वाला जैसे- धुँआयँध सब्जी, धुँआयँध डकार।

धुँआरा *वि.* (देश.) 1. जो धुएँ से मैला हुआ हो, धूमिल 2. धुंधला *पुं.* दीवार या छत में धुएँ की निकासी के लिए बना छेद, चिमनी।

धुँकार *स्त्री.* (देश.) दे. धुंकार।

धुँकारना *अ.क्रि.* (देश.) हुंकारना।

धुँगार *स्त्री.* (देश.) छौंक, बघार।

धुँगारना *स.किर्.* (देश.) 1. छौंकना, तड़का देना 2. अच्छी तरह पीटना।

धुँदला *वि.* (देश.) दे. धुँधला।

धुँधका *पुं.* (देश.) दीवार या छत में धुएँ की निकासी के लिए बनाया गया छिद्र, धौंधका, धुँकारा, धुआँकश।

धुँधमार *पुं.* (तद्.) दे. धुंधुमार।

धुँधमाल *पुं.* (तद्.) दे. धुंधुमार।

धुँधलका *वि.* (देश.) दे. धुँधला *पुं.* धुंधले प्रकाश की स्थिति, धुंधली दृष्टि की अस्पष्टता की स्थिति।

धुँधला *वि.* (देश.) 1. अस्पष्ट 2. न्यून दृष्टिगोचरता जैसे- धुंधली स्मृति 3. धुँध से भरा हुआ 4. धुएँ की तरह हल्का स्याह, अंधेरा।

धुँधलाई *स्त्री.* (देश.) दे. धुँधलापन।

धुँधलाना *अ.क्रि.* (देश.) धुँधला पड़ना या होना, अस्पष्ट हो जाना।

धुँधलापन *पुं.* (देश.) धुँधला या अस्पष्ट होने की अवस्था या भाव।

धुँधली *स्त्री.* (देश.) 1. धुंध 2. अस्पष्टता, अंधेरा 3. नजर की कमजोरी *वि.* अस्पष्ट, धूमित उदा.

बुढ़ापे की वजह से उसकी दृष्टि धुँधली हो चुकी थी।

धुँधाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. धुआँ देना 2. धुँधला होना/पड़ना *स.क्रि.* धुँधला करना।

धुँधार *वि.* (देश.) 1. धुआँधार 2. धुँधला।

धुँधि *स्त्री.* (देश.) दे. धुंध।

धुँधियाला *पुं.* (देश.) धुँधलापन, अंधेरा।

धुँधुआ *पुं.* (देश.) दे. धुँधका।

धुँधुआना *अ.क्रि.* (देश.) खूब धुएँ के साथ जलना।

धुँधुरी *स्त्री.* (देश.) दे. धुंधुरि।

धुँधुवाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. धुआँ देना 2. धुआँ देते हुए जलना।

धुँधेरी *स्त्री.* (देश.) 1. धूल, गर्द, गुबार के कारण होने वाला अंधेरा 2. धुंध।

धुँधेला *पुं.* (देश.) 1. पाजी, बदमाश 2. धोखेबाज, दगाबाज।

धुँवाँ *पुं.* (तद्.) दे. धुआँ।

धुँवाँकश *पुं.* (तद्.+फ़ा.) दे. धुआँकश।

धुँवाँदान *पुं.* (तद्.+फ़ा.) दे. धुआँदान।

धुँवाँधार *वि.* (तद्.+फ़ा.) दे. धुआँधार।

धुआँ *पुं.* (तद्.) 1. सुलगती अथवा जलती हुई लकड़ी, कोयले, पेट्रोल, डीजल आदि से उत्पन्न होने वाली काली या भूरी भापनुमा चीज प्रयो. पेट्रोल में आग लगने की वजह से धुआँ उठ रहा था 2. इससे मिलती-जुलती भापनुमा कोई चीज प्रयो. बेहद ठंडे मौसम में मुँह से धुआँ निकलता रहता है मुहा. धुएँ का धौरहर- अस्थाई चीज, क्षणभंगुर चीज; धुएँ के बादल उड़ाना- गप्पें हाँकना; धुआँ देना- धुआँ निकालना या छोड़ना; धुआँ पहुँचाना; धुआँ निकालना- मन की भड़ास निकालना, लंबी-चौड़ी बातें करना; धुआँ रमना-चारों ओर धुआँ छाना या भरना; धुएँ सा मुँह होना या मुँह धुआँ होना- लज्जा, ग्लानि के कारण चेहरे का रंग फीका या काला पड़ना, चेहरे की रंगत उड़ जाना; 7. धुएँ उड़ाना- धज्जियाँ उड़ाना।

धुआँकश *पुं.* (तद्.+फ़ा.) स्टीमर, अग्निबोट।

धुआँदान *पुं.* (तद.+फा.) घर के अंदर के धुएँ को बाहर निकालने के लिए बनाया गया निकास द्वार, द्वार, चिमनी।

धुआँधार *वि.* (तद्.+फा.) 1. जोरदार, भीषण, प्रचंड, घोर प्रयो. धुआँधार बारिश हो रही थी, संसद में उसने धुआँधार भाषण देकर विपक्ष को चुप करा दिया 2. धुएँ से भरा हुआ 3. धुएँ की तरह काले रंग वाला *क्रि.वि.* अत्यधिक और बहुत वेग से।

धुआँना *अ.क्रि.* (तद्.) निरंतर धुआँ लगने के कारण किसी चीज का रंग काला पड़ना तथा उसमें धुएँ की गंध व स्वाद का आना उदा. खीर का धुआँना।

धुआँयँध *वि.* (देश.) जिसमें धुएँ की गंध हो प्रयो. खाना न पचने की वजह से उसे धुआँयँध डकार आ रहे थे।

धुआँरना *पुं.* (देश.) धुएँ की वजह से छाने वाली कालिख *वि.* धुएँ से बसा हुआ, धुआँया हुआ।

धुआँरा *पुं.* (देश.) चिमनी, छत में धुआँ निकालने के लिए बना छिद्र या निकास।

धुआँस *स्त्री.* (देश.) दे. धुवाँस।

धुकड़-पुकड़ *पुं.* (अनु.) धकधकी, भय आदि की आशंका से मन की अस्थिरता।

धुकधुकी *स्त्री.* (देश.) 1. हृदय की धड़कन 2. डर, भय 3. गले में पहना जाने वाला एक प्रकार का गहना।

धुकना *अ.क्रि.* (देश.) नीचे की ओर ढलना, नत होना, झुकना, झपटना, टूट पड़ना।

धुकनी *स्त्री.* (देश.) धौंकनी 2. धूनी।

धुकान *स्त्री.* (देश.) 1. घोर शब्द 2. गड़गड़ाहट का शब्द 3. नगाड़े की आवाज 4. आक्रमण।

धुकाना *स.क्रि.* (देश.) 1. नवाना, झुकाना 2. गिराना 3. ढकेलना 4. पछाड़ना, पटकना 5. दहकाना, सुलगाना 6. धूनी देना, धुआँ देना।

धुकार *स्त्री.* (देश.) 1. नगाड़े का शब्द 2. गड़गड़ाहट 3. ध्वनि, आवाज।

धुकारी *स्त्री.* (देश.) दे. धुकार।

धुकुर-पुकुर *पुं.* (देश.) दे. धुकड़-पुकड़।

धुक्कना *अ.क्रि.* (देश.) दे. धुकना।

धुक्कारना *स.क्रि.* (देश.) धुकाना, गिराना, झुकाना।

धुज *पुं.* (तद्.) ध्वज।

धुजा *स्त्री.* (तद्.) दे. ध्वजा।

धुजाना *स.क्रि.* (तद्.) कंपित करना।

धुजिनी *स्त्री.* (तद्.) ध्वजिनी, फौज, सेना।

धुडंगा *वि.* (देश.) 1. नंगा आदमी 2. जिसके शरीर पर धूल लिपटी हो, वस्त्र न हो *स्त्री.* धुडंगी।

धुत *वि.* (देश.) 1. कंपित, हिलता हुआ 2. त्यक्त दे. दुत।

धुतकार *स्त्री.* (देश.) दे. दुतकार।

धुतकारना *स.क्रि.* (देश.) दे. दुतकारना।

धुताई *स्त्री.* (देश.) दे. धूर्तता।

धुतारा *वि.* (देश.) धूर्त *स्त्री.* धुतारी।

धुति *स्त्री.* (तत्.) हिलाना, काँपना।

धुतू *पुं.* (देश.) दे. धूतू।

धुत्त *वि.* (अनु.) नशे में बेसुध, निश्चेष्ट प्रयो. रमेश शराब पीने के बाद नशे में धुत्त होकर सो गया।

धुत्ता *पुं.* (तद्.) 1. धूर्तता 2. कपट, छल, दगाबाजी मुहा. (किसी को) धुत्ता देना या बताना- छल-कपट या धूर्तता से किसी को दूर हटाना *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की मछली।

धुधुकार *स्त्री.* (देश.) धू-धू की ध्वनि, घोर आवाज।

धुधुकारी *स्त्री.* (तत्.) दे. धुधुकार।

धुधुकी *स्त्री.* (तत्.) दे. धुधुकार।

धुन *स्त्री.* (तद्.) 1. लगन, किसी काम को करते रहने की प्रवृत्ति प्रयो. वह काम की धुन में इतना खोया रहा कि कब सुबह हुई पता ही न चला मुहा. धुन का पक्का होना- किसी काम को शुरू कर उसे पूरा करने की दृढ़ इच्छा रखने वाला; धुन धुन समाना, धुन सवार होना- मति निश्चित हो जाना, दृढ़ निश्चय कर लेना 2. मन की तरंग, मौज प्रयो. भरी महफिल में वह धुन में गाता चला गया 3. चिंता, फिक्र, सोच, विचार उदा. आजकल तुम किस धुन में रहते हो कि तुम्हें दोस्तों से बात करने की फुर्सत नहीं है 4. गाने का ढंग, गाने की तर्ज प्रयो. धुन तो अच्छी है पर इस गीत को दूसरी धुन में भी गाया जा सकता है 5. सभी शुद्ध स्वर वाली संपूर्ण जाति का एक राग *स.क्रि.* दे. धुनना।

धुनक *स्त्री.* (देश.) धुनने की क्रिया अथवा भाव।

धुनकना *स.क्रि.* (तत्.) दे. धुनना।

धुनकार *स्त्री.* (तद्.) ध्वनि, आवाज, स्वर।

धुनकी *स्त्री.* (तद्.) 1. रुई धुनने के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला धनुष के आकार का औजार, फटका 2. लड़कों के खेलने का छोटा धनुष या थोड़ी-बहुत रुई धुनने के काम में लाया जाने वाला छोटा धनुषाकार औजार।

धुनना *स.क्रि.* (तद्.) 1. रुई की धुनकी से रुई को इस प्रकार साफ करना कि उसके रेशे अलग हो जाएँ और उसके अंदर की गंदगी निकल जाए 2. खूब पीटना प्रयो. प्रतिरोध करने पर गुंडों ने उसे धुन डाला मुहा. धुन कर रख देना- बहुत अधिक पीट डालना मुहा. सिर धुनना- अत्यधिक दुःखी होना।

धुनवाई *स्त्री.* (देश.) 1. धुनवाने की क्रिया या भाव 2. धुनवाने की मजदूरी प्रयो. आजकल बाजार में रुई की धुनवाई 5 रुपए प्रति किलो है।

धुनवाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. धुनने का काम दूसरे से कराना 2. खूब पिटवाना, मार खिलवाना।

धुनही *स्त्री.* (तद्.) धनुष, धनुही।

धुनाई *स्त्री.* (देश.) 1. धुनने की क्रिया या भाव 2. धुनने की मजदूरी 3. खूब पिटाई प्रयो. गुंडों ने उसकी अच्छी धुनाई करते हुए सारे पैसे छीन

लिए 4. क्रिकेट में तेजी से खूब रन बनाना प्रयो. सचिन तेंदुलकर ने बॉलरों की खूब धुलाई की।

धुनि *स्त्री.* (तद्.) 1. ध्वनि 2. धूनी (तत्.) नदी *पुं.* एक असुर, सात मरुतों में से एक।

धुनिआ *पुं.* (देश.) दे. धुनियाँ।

धुनियाँ *पुं.* (देश.) रुई धुनने का काम करने वाला *स्त्री.* धुनकी।

धुनिया *पुं.* (देश.) दे. धुनियाँ।

धुनी *वि.* (देश.) धुन में लिप्त व्यक्ति *स्त्री.* (तद्.) ध्वनि (तत्.) नदी यौ. सूरधुनी।

धुनीनाथ *पुं.* (तत्.) धुनी (नदी) के स्वामी, सागर।

धुनेचा *पुं.* (देश.) सन प्रजाति का एक पौधा जिसे बंगाल में काली मिर्च की बेलों पर छाया के लिए लगाया जाता है।

धुनेहा *पुं.* (देश.) दे. धुनियाँ।

धुपधूप *वि.* (देश.) दगदगा, साफ, स्वच्छ, उज्ज्वल, चमकीला।

धुपना *अ.क्रि.* (देश.) 1. धूप आदि के धुएँ से सुगंधित किया जाना 2. धुलना 3. धोना (तद्.) 1. दौड़ना 2. हैरान होना उदा. दौड़ना-धुपना।

धुपाना *स.क्रि.* (देश.) 1. धूप दिखाना, सूखने के लिए धूप में रखना 2. धूप के धुएँ से सुवासित करना।

धुपेना *पुं.* (देश.) धूपदानी।

धुपेली *स्त्री.* (देश.) गरमी में पसीने की वजह से होने वाली फुंसी।

धुप्पल *स्त्री.* (देश.) झाँसा-पट्टी, धोखा, छल, धुप्पस प्रवंचना। bluff

धुप्पस *स्त्री.* (देश.) झाँसा-पट्टी, धोखे में डालने के लिए किया गया कार्य।

धुबला *पुं.* (देश.) घाघरा, लहँगा।

धुमई *वि.* (तद्.) धुएँ के रंग का *पुं.* उक्त रंग का बैल जो ताकतवर माना जाता है।

धुमरा *वि.* (देश.) धुआँरा, धूमर, धूमिल, धुएँ के रंग का।

धुमला *पुं.* (देश.) जिसे दिखाई न दे, अंधा *वि.* धूमिल, धुएँ के रंग का।

धुमलाई *स्त्री.* (देश.) 1. धूमिल होने का भाव 2. हल्का अंधकार होना।

धुमसी *स्त्री.* (तत्.) उरद का पिसान या बड़ा।

धुमारा *वि.* (तद्.) दे. धुमरा।

धुमिलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. धूमिल होना 2. धुंधला होना मंद पड़ना *स.क्रि.* धूमिल बनाना।

धुमिला *वि.* (देश.) धुएँ के रंग का, धुंधला।

धुमिलाना *अ.क्रि.* (देश.) धूमिल होना, धुंधला पड़ना *स.क्रि.* धूमिल करना, धुंधला करना।

धुमैला *वि.* (देश.) धुएँ के रंग का, धुँधला।

धुमैली *वि.* (देश.) धुंधली, अस्पष्ट प्रयो. इस शहर में बचपन में बिताए गए दिनों की बहुत धुमैली यादें हैं मेरे मन में।

धुरंधर *वि.* (तत्.) 1. श्रेष्ठ, प्रकांड, उत्तम गुणों से युक्त प्रयो. उस सम्मेलन में अपने-अपने क्षेत्र के धुरंधर प्रवक्ता आए थे 2. भार उठाने वाला, जिसके ऊपर किसी काम का भार हो *पुं.* 1. बैल, खच्चर, गधा आदि बोझ को ढोने वाले जानवर 2. धुर यानी जूए को धारण करने वाला पशु 3. धवका वृक्ष 4. नेता, अग्रणी 5. शिव।

धुर *पुं.* (तत्.) 1. धुरा, अक्ष 2. बैल आदि के कंधे पर रखा जाने वाला जूआ 3. बोझ, भार 4. जमीन की माप जो बिस्वे का बीसवाँ भाग होता है, बिस्वांसी 5. शीर्ष या ऊँचा स्थान *स्त्री.* 1. खूँटी 2. उंगली 3. चिनगारी 4. अंश, भाग 5. धन, संपत्ति 6. गंगा का एक नाम पृथ्वी *अव्य.* किसी चीज या स्थान की अंतिम सीमा या सिरे का द्योतक प्रयो. देश के धुर दक्षिण में अब रेलगाड़ी द्वारा बेहद तेजी से पहुँचा जा सकता है *वि.* (देश.) दृढ़, पक्का, अटल *पुं.* बीच, मध्य।

धुरई *स्त्री.* (देश.) कुएँ के खंभे आदि के बीच में आड़े लगाए गए वे दोनों बाँस या लकड़ियाँ जिनके नीचे वाले सिरों को मजबूती से आपस में बाँधा जाता है और दूसरे सिरों के बीच में खूटी जड़ी रहती है जिसमें गराड़ी पहनाई होती है।

धुरकट *पुं.* (देश.) आसामियों द्वारा जेठ में जमींदार जमींदार को दी जाने वाली पेशगी।

धुरकिल्ली *स्त्री.* (देश.) धुरी में लगाई जाने वाली कील।

धुरचुट *स्त्री.* (देश.) प्रचुरता, अधिकता।

धुरजटी *पुं.* (तद्.) दे. धूर्जटि।

धुरड्डी *स्त्री.* (देश.) दे. धुलेंडी।

धुरना *स.क्रि.* (तद्.) 1. पीटना, मारना 2. बजना।

धुरमुट *पुं.* (देश.) दुरमुस।

धुरवा *पुं.* (तद्.) बादल, मेघ।

धुरा *पुं.* (तत्.) 1. अक्ष, लकड़ी या धातु का डंडा जिसके सहारे चक्का घूमता है 2. भार, बोझ *स्त्री.* धुरी।

धुराना *पुं.* (देश.) (पुराना का अनु.) अंत का, उसके बाद का प्रयो. त्योहारों में पुराने-धुराने कपड़े नहीं पहने जाते।

धुरियाना *स.क्रि.* (देश.) किसी चीज को धूल से ढँकना *अ.क्रि.* किसी चीज का धूल से ढँका जाना।

धुरियामल्लार *पुं.* (देश.) मल्लार का एक प्रकार जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

धुरी *स्त्री.* (तत्.) दे. धुरा।

धुरीण *वि.* (तत्.) 1. मुख्य, प्रधान, अग्रगण्य 2. वह व्यक्ति जो किसी कार्य की धुरी हो 3. जो बोझ अथवा भार संभालने या ले चलने के योग्य हो *पुं.* 1. रथ आदि में जोते जाने वाले घोड़े 2. कार्य संभालने वाला व्यक्ति 3. सर्वप्रमुख व्यक्ति।

धुरीन *वि.* (तद्.) दे. धुरीण।

धुरीय *पुं.* (वि.) (तत्.) दे. धुरीण।

धुरीराष्ट्र *पुं.* (तत्.) द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी, इटली व जापान का गुट। axis countries

धुरीहीनता *स्त्री.* (तत्.) ढुलमुलपन की स्थिति।

धुरेंडी *स्त्री* (देश.) दे. धुलेंडी।

धुरेटना *स.क्रि.* (देश.) धूल लगाना, धूल से लपेटना।

धुरेटा *पुं.* (देश.) धूल।

धुर् *स्त्री.* (तत्.) 1. बैल या पशुओं के कंधे पर रखा जाने वाला जूआ 2. बोझ, भार 3. सबसे ऊपरी या शीर्ष स्थान 4. रथ आदि का अगला भाग।

धुर्य *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. बैल 3. हिमालय पर पाई जाने वाली लहसुन की तरह की औषधि *वि.* दे. धुरीण।

धुर्रा *पुं.* (देश.) 1. धूल कण 2. किसी चीज का अत्यंत छोटा भाग या कण मुहा. धुर्रे उड़ाना या धुर्रे उड़ा देना- पूरी तरह मटियामेट कर देना, धज्जी उड़ा देना।

धुलना *अ.क्रि.* (देश.) 1. पानी आदि की सहायता से धोया जाना, साफ किया जाना जैसे- सड़क का धुलना, वस्त्र का धुलना 2. कलंक, दोष, बुराई आदि का मिटना प्रयो. कहते हैं गंगा में नहाने से सारे पाप धुल जाते हैं 3. पानी पड़ने से कट कर बह जाना।

धुलवाई *स्त्री.* (तत्.) 1. धुलवाने का काम 2. धुलवाने की मजदूरी।

धुलवाना *स.क्रि.* (देश.) धोने का काम दूसरे से कराना।

धुलाई *स्त्री.* (तत्.) 1. धुलने की क्रिया 2. धोने की मजदूरी 3. मारने-पीटने की क्रिया।

धुलाना *स.क्रि.* (देश.) धुलवाना, धोने का काम दूसरे से कराना।

धुलियापीर *पुं.* (देश.+फा.) एक कल्पित पीर जिसका नाम बच्चे खेलों में लेते हैं।

धुलिया-मिटिया *वि.* (देश.) 1. जिस पर धूल अथवा मिट्टी पड़ी हो या डाली गई हो 2. झगड़े आदि को दबा देना, ढँक देना।

धुलेंडी *स्त्री.* (देश.) होलिका दहन के दूसरे दिन हिंदुओं द्वारा मनाया जाने वाला एक त्यौहार जिसमें लोग एक-दूसरे पर सवेरे-सवेरे, अबीर, गुलाल, धूल, कीचड़ आदि डालते हैं 2. उक्त त्योहार का दिन।

धुव *पुं.* (तद्.) क्रोध, कोप, गुस्सा दे. ध्रुव।

धुवका *स्त्री.* (तद्.) टेक, गीत का पहला पद।

धुवन *पुं.* (तत्.) आग, अग्नि *वि.* कँपाने वाला।

धुवाँ *पुं.* (तद्.) दे. धुआँ।

धुवाँकश *पुं.* (संकर.) दे. धुआँकश।

धुवाँदान *पुं.* (संकर.) दे. धुआँदान।

धुवाँधज *पुं.* (तद्.) अग्नि, आग।

धुवाँधार *वि.* (तद्.) दे. धुआँधार।

धुवाँरा *पुं.* (देश.) छतों में धुआँ निकलने के लिए बना छिद्र।

धुवाँस *स्त्री.* (देश.) उरद का आटा जिससे पापड़, कचौड़ी, पकवान आदि बनाते हैं।

धुवाना *स.क्रि* (देश.) धुलाना।

धुवित्र *पुं.* (तत्.) 1. मृगचर्म से बना पंख जिसका प्रयोग याज्ञिकों द्वारा अग्नि दहकाने के लिए किया जाता है 2. ताड़ का पंखा।

धुस्तुर *पुं.* (तत्.) धतूरा।

धुस्तूर *पुं.* (तत्.) धतूरा।

धुस्स *पुं.* (तद्.) 1. ढहे हुए मकान की मिट्टी, ईंट, पत्थर आदि का ढेर 2. टीला 3. नदी के किनारे का बाँध।

धुस्सा *पुं.* (देश.) ऊन की लोई, ऊन का भारी कंबल।

धूँआँ *पुं.* (तत्.) दे. धुआँ।

धूँका *पुं.* (देश.) धोखा।

धूँध *स्त्री.* (तद्.) दे. धुंध।

धूँधना *स.क्रि.* (देश.) धोखा देना।

धूँधर *स्त्री.* (तत्.) धुंध *वि.* धुँधला।

धूँधाना *अ.क्रि.* (देश.) धुआँ देना।

धूँधुर *स्त्री.* (देश.) धूँधर।

धूँसना *अ.क्रि* (तद्.) जोर का शब्द करना *स.क्रि.* 1. नष्ट करना 2. मारना-पिटना।

धूँसा *पुं.* (देश.) दे. धौंसा।

धू *वि.* (तद्.) अचल, स्थिर *पुं.* 1. ध्रुवतारा 2. भक्त ध्रुव।

धूआँ *पुं.* (तद्.) दे. धुआँ।

धूआँकश *पुं.* (तद्.+फा.) अग्निबोट दे. धुआँकरा।

धूआँदान *पुं.* (तद्.+फा.) चिमनी दे. धुआँदान।

धूआँधार *वि.* (तद्.) दे. धुआँधार।

धूई *स्त्री.* (तद्.) दे. धूनी।

धूक *पुं.* (तत्.) 1. वायु 2. अग्नि 3. काल 4. धूर्त मनुष्य (फा.) कलाबत्तू बटने की सलाई।

धूकना *अ.क्रि.* (देश.) किसी की ओर बढ़ना अथवा झुकना *स.क्रि.* 1. धुआँ लगाना या देना 2. धुआँ लगाकर केले आदि को पकाना।

धूजट *पुं.* (तद्.) धूर्जटि (शिव)।

धूजना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. हिलना 2. काँपना।

धूणक *पुं.* (तत्.) धूप का धुआँ या धूनी।

धूत *वि.* (देश.) धूर्त, दगाबाज *तत्.* 1. कंपित, थरथराता हुआ 2. व्यक्त 3. सुविचारित तद्. दौड़कर पहुँचा हुआ।

धूतकल्मष *वि.* (तत्.) निष्पाप, पापरहित।

धूतना *स.क्रि.* (देश.) धूर्तता करना, छलना, धोखा करना *वि.* वंचना करने वाली, छलने वाली।

धूतपाप *वि.* (तत्.) जो पाप से रहित हो गया हो, निष्पाप, पाप-रहित।

धूतपाया *स्त्री.* (तत्.) काशी की एक पुरानी छोटी नदी।

धूता *स्त्री.* (तद्.) पत्नी, स्त्री, भार्या (देश.) धूर्तता।

धूताई *स्त्री.* (देश.) छल, कपट, धूर्तता।

धूतार *वि.* (देश.) धूर्त।

धूति *स्त्री.* (तत्.) 1. हिलना, कंपन 2. हवा करना 3. हठयोग में शरीर शुद्धि की क्रिया।

धूती *स्त्री.* (देश.) एक चिड़िया।

धूतुक *पुं.* (देश.) दे. धूतू।

धूतू *पुं.* (देश.) 1. तुरही 2 नरसिंहा 3. कल-कारखाने की सीटी का शब्द।

धू-धू *पुं.* (अनु.) आग की लपटों से निकलने वाला शब्द प्रयो. खलिहान धू-धू कर जल रहे थे।

धून *वि.* (तत्.) 1. कंपित 2. गरमी अथवा प्यास से पीड़ित *पुं.* दून।

धूनक *पुं.* (तत्.) 1. कंपित करने वाला, हिलाने वाला 2. चालाक, धूर्त।

धूनन *पुं.* (तत्.) 1. हवा 2. कंपन 3. क्षोभ।

धूनना *स.क्रि.* (देश.) 1. रुई साफ करना, रुई धुनना 2. धूप, धूनी आदि जलाना।

धूना *पुं.* (देश.) एक वृक्ष या उसका गोंद जिसका प्रयोग धूनी देने अथवा वार्निश बनाने के काम में आता है।

धूनि *स्त्री.* (तत्.) हिलाने की क्रिया, कँपाना।

धूनी *स्त्री.* (देश.) 1. साधुओं द्वारा अपने शरीर को ठंड से बचाने अथवा उसे तपाने या कष्ट पहुँचाने के लिए अपने सामने जलाई जाने वाली आग 2. गुग्गुल, धूप, लोबान आदि गंध-द्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआँ मुहा. धूनी जगाना, धूनी रमाना- योगी बनना, विरक्त होना।

धूप *स्त्री.* (देश.) सूर्य का प्रकाश एवं ताप, घाम, आतप उदा. गर्मियों में धूप में बच्चों को नहीं निकलना चाहिए *पुं.* (तत्.) 1. गंध द्रव्य जिसे जलाने पर सुगंधित धुआँ निकलता है 2. सुगंधित धुआँ या धूम जो गुग्गुल, कर्पूर आदि को जलाने पर उत्पन्न होता है 3. चीड़ या धूप-सरल नामक वृक्ष जिससे गंधा-बिरोजा निकलता है मुहा. धूप खाना- धूप लगने के लिए बाहर आना; धूप खिलाना, धूप दिखाना- धूप लगने के लिए बाहर रखना; धूप निकलना- सूर्य का प्रकाश फैलना; धूप चढ़ना- सूर्य निकलने के बाद प्रकाश एवं ताप बढ़ना; धूप में बाल सफेद करना- बिना अनुभव या जानकारी प्राप्त किए बूढ़ा होना; प्रयो. तुम मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते, हमने यूँ ही धूप में बाल सफेद नहीं किए हैं; धूप लेना- धूप लेने के लिए बाहर आना।

धूपक *पुं.* (तत्.) धूप बेचने वाला, गंधी।

धूपघड़ी *स्त्री.* (देश.) धूप की परछाईं से समय बताने बताने वाला यंत्र।

धूप-छाँव *स्त्री.* (देश.) धूप और छाया मुहा. धूपछाँव धूपछाँव होना- कभी धूप कभी छाया की तरह लगातार बदलते रहना।

धूपछाँह *स्त्री.* (देश.) कपड़ा जो कभी एक रंग का दिखाई पड़ता है और कभी दूसरे रंग का।

धूपछाँही *वि.* (देश.) विविध, वह रूप जिसका कभी एक पक्ष या रंग झलकता है और कभी दूसरा।

धूपदान *पुं.* (तत्.+फा.) धूप जलाने के लिए नियत बरतन।

धूपदानी *स्त्री.* (तत्.+फा.) दे. धूपदान।

धूपन *पुं.* (तत्.) 1. गंधद्रव्य जलाकर धूप देने की क्रिया या भाव 2. गंधद्रव्य।

धूपना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. किसी काम को करने में दौड़ना, परेशान होना, केवल समस्त पद में इसका प्रयोग होता है जैसे- दौड़ना-धूपना 2. गंधद्रव्य जलाना, धूप देना *स.क्रि.* गंधद्रव्य जलाकर सुवासित या सुगंधित धुआँ पहुँचाना।

धूपपात्र *पुं.* (तत्.) धूप रखने का बरतन या पात्र।

धूपबत्ती *स्त्री.* (तत्.) गंध द्रव्यों के मिश्रण के लेप से तैयार सींक या बत्ती जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ फैलता है।

धूपवास *पुं.* (तत्.) स्नान के पश्चात् सुगंधित धुएँ से शरीर, बाल इत्यादि को सुवासित करना।

धूपवासित *पुं.* (तत्.) सुगंधित धुएँ से शरीर या बाल सुवासित किया हुआ।

धूपवृक्ष *पुं.* (तत्.) गुग्गुल या सलई का पेड़ जिसके गोंद से धूप बनाया जाता है, सरल वृक्ष।

धूपांग *पुं.* (तत्.) सरल वृक्ष।

धूपाचित *वि.* (तत्.) दे. धूपित।

धूपिक *पुं.* (तत्.) धूप आदि सुगंधद्रव्य बेचने वाला।

धूपित *वि.* (तत्.) 1. धूप दिखाया हुआ, धूप से सुवासित किया हुआ 2. दौड़ने-धूपने के कारण थका हुआ, श्रांत, शिथिल।

धूम *पुं.* (तत्.) 1. धुआँ 2. कुहरा 3. बादल 4. अपच में उठने वाली धुँआयँध डकार 5. रोगों के उपचार के लिए विशेष धुआँ 6. धूमकेतु, पुच्छलतारा 7. उल्कापात 8. ऋषि विशेष का नाम *स्त्री.* 1. ठाठ-बाट 2. उत्सव का शोर 3. रेल-पेल, हलचल, कोलाहल, प्रसिद्ध *अ.क्रि.* तेजी से मुहा. (किसी बात की) धूम मचना- हलचल होना।

धूमक *पुं.* (तत्.) 1. धुआँ 2. एक किस्म का साग।

धूमक-धूया *स्त्री.* (देश.) दे. धूमक-धैया।

धूमक धैया *स्त्री.* (देश.) हल्ला-गुल्ला व उछल-कूद, कूद, उत्पात।

धूमकेतन *पुं.* (तत्.) 1. अग्नि (धुआँ जिसकी पताका हो) 2. धूमकेतु

धूमकेतु *पुं.* (तत्.) 1. पुच्छल तारा 2. अग्नि 3. केतु ग्रह 4. शिव का एक नाम 5. रावण की सेना का एक यौद्धा मुहा. धूमकेतु बनकर आना- अशुभ बनकर आना।

धूमगंधिक *पुं.* (तत्.) रूसा घास, रोहिष तृण।

धूमग्रह *पुं.* (तत्.) राहु ग्रह।

धूमज *पुं.* (तत्.) 1. बादल 2. मोथा, मुस्तक।

धूमजांगज *पुं.* (तत्.) नौसादर।

धूमजात *पुं.* (तत्.) बादल।

धूमदर्शी *पुं.* (तत्.) धुँधला देखने वाला व्यक्ति।

धूमधड़क्का *पुं.* (देश.+अनु.) भारी आयोजन, ठाट-बाट उदा. उसकी शादी बहुत धूम-धड़क्के के साथ हुई, खूब आतिशबाजी की गई थी।

धूमधर *पुं.* (तत्.) अग्नि, आग।

धूमधाम *स्त्री.* (अनु.) 1. ठाट-बाट 2. समारोह 3. चहल-पहल प्रयो. स्वतंत्रता दिवस धूमधाम के साथ मनाया गया, झाँकियाँ निकलीं, परेड हुई।

धूमधामी *वि.* (देश.) 1. धूमधाम से काम करने वाली 2. आडंबरयुक्त 3. उपद्रवी।

धूमध्वज *पुं.* (तत्.) अग्नि, आग।

धूमप *वि.* (तत्.) होम का धुआँ पीकर रहने वाला तपस्वी।

धूमपथ *पुं.* (तत्.) 1. धुआँरा, धुआँ निकलने का रास्ता 2. पितृयान।

धूमपान *पुं.* (तत्.) 1. तंबाकू, चुरुट आदि के पीने अथवा सेवन का कार्य 2. कुछ रोगों को औषधियों को चिलम आदि में भर कर पीना।

धूमपोत *पुं.* (तत्.) अग्निबोट, भाप से चलने वाला जहाज।

धूमप्रभा *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार का नरक।

धूमप्राश *वि.* (तत्.) दे. धूमप।

धूममहिषी *स्त्री.* (तत्.) कुहरा, कुज्झटिका।

धूमयान *पुं.* (तत्.) 1. पुराणानुसार पापियों की आत्माओं के अध:लोक की ओर गमन का मार्ग 2. रेलगाड़ी।

धूमयोनि *पुं.* (तत्.) बादल।

धूमरज *पुं.* (तत्.) 1. घर में लगने वाली धुएँ की कालिख 2. घर से निकलने वाला धुआँ।

धूमरा *वि.* (तद्.) धूमिल, धुएँ के रंग का।

धूमरी *स्त्री.* (तद्.) 1. कोहरा 2. धूम 3. धूम्र।

धूमल *वि.* (तत्.) मटमैला, धुएँ के रंग का *पुं.* 1 बैंगनी रंग 2. एक वाद्य।

धूमलता *स्त्री.* (तत्.) धुएँ की टेढ़ी-मेढ़ी लकीर, कुंचित धूम-राशि।

धूमला *वि.* (तद्.) धूमिल, मलिन, धुँधला, धुएँ के रंग का।

धूमली *वि.* (तद्.) धूमिल, मलिन, धुँधली, धुएँ के रंग की *स.क्रि.* कंपित करना, हिलाना।

धूमवान *वि.* (तत्.) धुएँ से युक्त, जिससे धुआँ निकलता हो।

धूमसंहति *स्त्री.* (तत्.) धूमराशि।

धूमसार *पुं.* (तत्.) घर का धुआँ।

धूमांग *वि.* (तत्.) जिसका अंग धुएँ के रंग का हो *पुं.* शीशम का वृक्ष।

धूमाक्ष *वि.* (तत्.) धुएँ के रंग की आँखों वाला *स्त्री. स्त्री.* धूमाक्षी।

धूमाग्नि *पुं.* (तत्.) वह आग जिसमें सिर्फ धुआँ हो, लपट नहीं।

धूमाभ *वि.* (तत्.) धुएँ की आभा वाला, धुएँ के रंग का।

धूमायन *पुं.* (तत्.) 1. धुआँ देना, भाप देना 2. ताप, गरमी।

धूमायमान *वि.* (तत्.) 1. धुएँ से परिपूर्ण 2. जो धुएँ के रूप में हो।

धूमाली *स्त्री.* (तत्.) नभ में चारों ओर छाया धुआँ।

धूमावती *स्त्री.* (तत्.) 1. दस महाविद्याओं में एक 2. पार्वती का एक रूप।

धूमिका *स्त्री.* (तत्.) कोहरा या कुहरा।

धूमित *वि.* (तत्.) 1. जिसमें धुआँ लगा हो 2. जो धुएँ से धुँधला हो गया हो *पुं.* तंत्र के अनुसार सादे अक्षरों का मंत्र जो दूषित माना जाता है।

धूमिता *स्त्री.* (तत्.) सूर्य के उन्मुख होने की दिशा।

धूमिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. अजमीढ़ की पत्नी 2. अग्नि की एक जिह्वा।

धूमिल *वि.* (तत्.) 1. धुएँ के रंग का 2. धुँधला 3. धूमल 4. मलिन।

धूमिलता *स्त्री.* (तत्.) 1. धुँधलापन 2. धूमिल होने का भाव।

धूमी *वि.* (तत्.) धुएँ से भरा हुआ, जहाँ बहुत अधिक धुआँ हो *स्त्री.* 1. अजमीढ़ की एक पत्नी 2. अग्नि की एक जिह्वा *स्त्री.* धूमिनी।

धूमोत्थ *वि.* (तत्.) धुएँ से उत्पन्न *पुं.* नौसादर।

धूमोद्गार *पुं.* (तत्.) 1. अपच में आने वाली धुएँ की की सी डकार 2. धुआँ निकलना या उठना।

धूमोपहत *वि.* (तत्.) धुएँ के कारण जिसका गला घुट गया हो *पुं.* एक रोग।

धूमोर्णा *स्त्री.* (तत्.) 1. यम-पत्नी 2. मार्कंडेय की पत्नी।

धूम्या *स्त्री.* (तत्.) 1. धूमपुंज, धूमराशि, धुएँ का गहरा-घना बादल।

धूम्याट *पुं.* (तत्.) एक पक्षी, भृंग।

धूम्र *पुं.* (तत्.) 1. धुआँ 2. धुएँ का सा रंग 2. शिलारस नाम का गंधद्रव्य 4. शिव 5. एक असुर 6. कार्तिकेय का एक अनुचर 7. ज्योतिष में एक योग का नाम 8. पाप 9. दुष्टता 10 ऊँट 11. राम की सेना का एक भालू *वि.* 1. धुएँ के रंग का 2. धुँधला।

धूम्रक *पुं.* (तत्.) ऊँट।

धूम्रकांत *पुं.* (तत्.) एक रत्न या नग का नाम।

धूम्रकेतु *पुं.* (तत्.) भागवत के अनुसार राजा भरत के पुत्र का नाम।

धूम्रकेश *पुं.* (तत्.) पृथु के पुत्र का नाम।

धूम्रनेत्र *पुं.* (तत्.) दीवार या छत से धुआँ निकलने का मार्ग।

धूम्रपट *पुं.* (तत्.) युद्ध क्षेत्र में दुश्मन की नजरों से छिपने के लिए बनाई गई धुएँ की ओट। smoke screen

धूम्रपत्रा *स्त्री.* (तत्.) औषधीय पौधा, सुलभा, गृध्रपत्रा कृमिघ्नी।

धूम्रपान *पुं.* (तत्.) 1. सिगरेट, बीड़ी, चुरूट, गाँजा, हुक्का आदि पीना 2. सुश्रुत के अनुसार कुछ बीमारियों में औषधियों में धुएँ का सेवन।

धूम्रमूलिका *स्त्री.* (तत्.) शूली तृण।

धूम्रलोचन *पुं.* (तत्.) 1. कबूतर 2. शुंभ दानव का सेनापति *वि.* जिसकी धूम्रवर्ण की आँखे हों।

धूम्रलोहित *पुं.* (तत्.) शिव, शंकर *वि.* गहरा या गाढ़ा लाल रंग।

धूम्रवर्ण *वि.* (तत्.) धुएँ के रंग का, धूमिल पुं. धुएँ का रंग।

धूम्रवर्णक *पुं.* (तत्.) लोमड़ी, मांद में रहने वाला जानवर।

धूम्रवर्णा *स्त्री.* (तत्.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

धूम्रशूक *पुं.* (तत्.) ऊँट।

धूम्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. सूर्य की बारह कलाओं में से एक 2. दुर्गा 3. एक प्रकार की ककड़ी।

धूम्राक्ष *वि.* (तत्.) जिसकी आँखें धुएँ के रंग की हों *पुं.* रावण का एक सेनापति।

धूम्राक्षि *पुं.* (तत्.) भद्दे रंग का मोती।

धूम्राट *पुं.* (तत्.) शिकारी पक्षी, धूम्याट।

धूम्राभ *पुं.* (तत्.) 1. वायुमंडल 2. वायु।

धूम्रार्चि *स्त्री.* (तत्.) अग्नि की दस कलाओं में से एक।

धूम्राश्व *पुं.* (तत्.) इक्ष्वाकु वंश का एक राजा।

धूम्रिका *स्त्री.* (तत्.) शीशम का पेड़।

धूम्रीकरण *पुं.* (तत्.) कमरे आदि में कीटाणुनाशक धूम, वाष्प प्रसारित करना।

धूर *पुं.* (तद्.) जमीन की एक नाप, बिस्वे का बीसवाँ भाग *स्त्री.* 1. दे. धूल 2. एक प्रकार की घास (अव्य.) धुर (देश.) बादल।

धूरकट *पुं.* (तत्.) जेठ-असाढ़ में असामियों द्वारा दी दी जाने वाली लगान की पेशगी।

धूरजटी *पुं.* (तद्.) दे. धूर्जटि।

धूरडाँगर *पुं.* (देश.) सींग वाले पशु, ढोर।

धूरत *वि.* (तद्.) धूर्त।

धूरतताई *स्त्री.* (तद्.) धूर्तता।

धूरधान *पुं.* (तत्.) धूल राशि, धूल का ढेर।

धूरधानी *स्त्री.* (तत्.) 1. धूल का ढेर 2. ध्वंस, विनाश।

धूर-यात्रा *स्त्री.* (तत्.) धूलियात्रा।

धूरा *पुं.* (देश.) 1. धूल, गर्द 2. चूर्ण, चूरा, बुकनी 3. रोगी का शरीर ठंडा हो जाने पर गरम राख या सोंठ आदि के चूर्ण से अंग मलने की क्रिया।

धूरि *स्त्री.* (तद्.) दे. धूल।

धूरिक्षेत्र *पुं.* (तद्.) 1. धरती 2. संसार।

धूरियाबेला *पुं.* (देश.) एक प्रकार का बेला (फूल व पौधा)।

धूरियामलार *पुं.* (तद्.) मल्लार राग का एक भेद।

धूरीण *वि.* (तद्.) दे. धुरीण।

धूरे *अ.* (देश.) नजदीक, पास, निकट।

धूर्कर *पुं.* (तत्.) भारवाही, बोझा ढोने वाला।

धूर्जटि *पुं.* (तत्.) शिव, महादेव।

धूर्जटी *पुं.* (तद्.) दे. धूर्जटि।

धूर्त *वि.* (तत्.) 1. धोखेबाज, मक्कार, वंचक, छली, दगाबाज, ठगी करने वाला 2. लंपट 3. क्षतिग्रस्त *पुं.* 1. शठ नायक का एक प्रकार 2. जुआरी 3. दाँव-पेंच करने वाला आदमी 4. क्षति पहुँचाना 5. धतूरा 6. लौह किट्ट 7. खारी नमक।

धूर्तक *पुं.* (तत्.) 1. जुआरी 2. गीदड़ 3. कौरव्य कुल का नाग।

धूर्तकितन *पुं.* (तत्.) जुआरी।

धूर्तकृत *पुं.* (तत्.) धूतरा *वि.* बेईमान, मक्कार।

धूर्तचरित *पुं.* (तत्.) 1. धूर्तों का चरित 2. शठ नायक चरित्र-वर्णन करने वाला नाटक का एक प्रकार।

धूर्तजंतु *पुं.* (तत्.) मनुष्य।

धूर्तता *स्त्री.* (तत्.) धूर्त का गुण, वंचकता, दगाबाजी, ठगपना उदा. बहाने बनाकर वह लोगों से पैसे उधार लेता है, उसकी धूर्तताओं से सावधान रहो।

धूर्तमता *स्त्री.* (तत्.) धूर्तता।

धूर्तमानुषा *स्त्री.* (तत्.) रास्ना लता।

धूर्तरचना *स्त्री.* (तत्.) छल-कपट, धोखा।

धूर्धर *वि./पुं.* (तत्.) दे. धुरंधर।

धूर्य *पुं.* (तत्.) विष्णु।

धूर्वह *वि.* (तत्.) 1. भार वहन करने वाला 2. काम का बोझ संभालने वाला *पुं.* बोझ ढोने वाला पशु।

धूर्वी *स्त्री.* (तत्.) रथाग्र।

धूल *स्त्री.* (तद्.) 1. सूखी मिट्टी, रेत आदि के बेहद बारीक कण, रज, रेणु, गर्द 2. अति तुच्छ वस्तु मुहा. धूल उड़ना- ध्वंस के बाद रौनक का न रहना; धूल उड़ाना- त्रुटियों को उधेड़ कर तुच्छ ठहराना; धूल उड़ाते फिरना- मारा मारा फिरना, दीन अवस्था में इधर-उधर भटकना; धूल उड़ाई जाना- तिरस्कार या अवहेलना होना; धूल फाँकना- दुर्दशा या जीविका के अभाव में इधर-उधर मारा फिरना; धूल चाटना- दीनता प्रकट करना, गिड़गिड़ाना; धूल छानना- मारा-मारा फिरना, परेशान होना; धूल झड़ना- मार पड़ना, पिटना; धूल झाड़ना- किसी को पीटना, खुशामद करना; धूल झाड़कर चलता होना- आघात/अपमान सहकर भी आगे बढ़ जाना; धूल की रस्सी बटना- असंभव बात के लिए श्रम करना; धूल डालना- किसी बात को दबाना; धूल में मिलना- बरबाद, नष्ट हो जाना; धूल में मिलाना-नष्ट कर देना, मटियामेट कर देना; धूल में फूल खिलाना/उगाना- अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में अच्छा काम कर दिखाना; धूल हाथ आना- निःसार वस्तु हाथ लगना; पैर की धूल- अत्यंत तुच्छ वस्तु या व्यक्ति; सिर पर धूल डालना- सिर धुनना, पछताना; धूल समझना- अत्यंत तुच्छ समझना।

धूलक *पुं.* (तत्.) जहर, विष।

धूलकूप *पुं.* (तत्.) कड़ी धूप से बनने वाले हिमनद के गड्ढे जिसमें ऊपर पड़ी धूल समाकर नीचे बैठ जाती है। dust well

धूलधक्कड़ *पुं.* (तद्.) चारों ओर उड़ने वाली धूल।

धूलधान *पुं.* (तद्.+तत्.) दे. धूलधानी।

धूलधानी *स्त्री.* (तद्.+तत्.) 1. धूल का ढेर 2. चूर-चूर करके धूल की तरह बनाने की क्रिया या भाव 3. ध्वंस, सर्वनाश।

धूलयात्रा *स्त्री.* (तत्.) दे. धूलियात्रा।

धूलि *स्त्री.* (तत्.) धूल, गर्द, रज।

धूलिकदंब *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का कदंब।

धूलिका *स्त्री.* (तत्.) 1. फुहार, महीन जल-कणों का का झड़ी 2. कोहरा।

धूलिकुट्टिम *पुं.* (तत्.) 1. धूल युक्त जोता हुआ खेत 2. धुस्स, ढूह।

धूलिकेदार *पुं.* (तत्.) दे. धूलिकुट्टिम।

धूलि-गुच्छक *पुं.* (तत्.) होली में एक-दूसरे पर डाला जाने वाला अबीर-गुलाल।

धूलि-चित्र *पुं.* (तत्.) साँझी, रंग-चूर्ण की सहायता से फर्श या जमीन पर बनाई जाने वाली आकृतियाँ।

धूलि-धूसर *वि.* (तत्.) दे. धूलि-धूसरित।

धूलि-धूसरित *वि.* (तत्.) धूल के कारण जिसका रंग धूसर या मटमैला हो गया हो उदा. खदान में काम करने के कारण उसका शरीर धूलि-धूसरित हो गया था।

धूलिध्वज *पुं.* (तत्.) वायु, हवा।

धूलिपटल *पुं.* (तत्.) धूल या गर्द का बादल।

धूलि पुष्पिका *स्त्री.* (तत्.) दे. धूलिपुष्पी।

धूलि पुष्पी *स्त्री.* (तत्.) केतकी।

धूलियात्रा *स्त्री.* (तत्.) किसी धाम स्थित मंदिर में पैदल यात्रा कर पहुँचे श्रद्धालु द्वारा रास्ते में पैरों पर पड़ी धूल बिना धोए जाकर किया जाने वाला दर्शन।

धूलियापीर *पुं.* (तत्.) दे. धुलियापीर।

धूवाँ *पुं.* (तद्.) दे. धुआँ।

धूसना *स.क्रि.* (देश.) 1. मर्दित करना, कुचलना, दलना 2. ठूसना।

धूसर *वि.* (तत्.) 1. मटमैला या भूरे रंग का, धूल के रंग का 2. धूल में सना हुआ यौ. धूल धूसर धूल से सना हुआ *पुं.* 1. मटमैला या भूरा रंग 2. गधा 3. ऊँट 4. कबूतर 5. तेली 6. मटमैले या भूरे रंग की कोई वस्तु।

धूसरच्छदा *स्त्री.* (तत्.) बुहना या बोहना नाम का पौधा।

धूसरता *स्त्री.* (तत्.) मटमैलापन, मलिनता।

धूसरपत्रिका *स्त्री.* (तत्.) हस्ति शुंडी अथवा हाथीसूँड़ का पौधा।

धूसरा *वि.* (तत्.) (स्त्री. धूसरी) 1. मटमैला, खाकी, धूल के रंग का 2. धूल से सना हुआ या मैला *स्त्री.* पांडुफली।

धूसरित *वि.* (तत्.) 1. धूसर किया हुआ, धूल से मटमैला 2. धूल से भरा हुआ।

धूसरी *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की किन्नरी।

धूसला *वि.* (तद्.) दे. धूसरा।

धूस्तुर *पुं.* (तत्.) धतूरा।

धूस्तूर *पुं.* (तत्.) दे. धतूरा।

धूस्संझा *स्त्री.* (तद्.) गोधूलि का समय।

धूहा *पुं.* (तत्.) 1. ढूह 2. बाँस पर टाँगी जाने वाली काली हाँडी या पुतला जो चिड़ियों को डराने के लिए खड़ा किया जाता है।

धृक *अव्य.* (तद्.) दे. धिक्।

धृग *अव्य.* (तद्.) दे. धिक्।

धृत *वि.* (तत्.) 1. धारण किया हुआ, धरा हुआ या पकड़ा हुआ 2. स्थिर या निश्चित किया हुआ, स्थित 3. पतित 4. तौला हुआ 5. तैयार किया हुआ *पुं.* 1. धारण या ग्रहण करने की क्रिया, पकड़ना 2. पहनना 3. गिरना 4. स्थिति 5. लड़ने की एक पद्धति 6. तेरहवें मनु रौच्य के पुत्र का नाम 7. द्रुह्यवंशीय धर्म का एक पुत्र।

धृतकेतु *पुं.* (तत्.) वसुदेव के बहनोई का नाम।

धृतदंड *वि.* (तत्.) 1. दंड देने वाला 2. दंडित, जिसे दंड मिला हो।

धृतदीधिति *पुं.* (तत्.) अग्नि।

धृतदेवा *स्त्री.* (तत्.) देवक की कन्या का नाम।

धृतपट *वि.* (तत्.) जिसने वस्त्र धारण किया हो।

धृतमाली *पुं.* (तत्.) अस्त्रों को निष्फल करने का एक अस्त्र, अस्त्र-संहार।

धृतराष्ट्र *पुं.* (तत्.) 1. एक कौरव राजा जो विचित्रवीर्य के पुत्र और दुर्योधन के पिता थे 2. वह राष्ट्र जहाँ का शासक अच्छा हो 3. वह राजा जिसका राज्य और शासन दृढ़ हो 4. एक नाग का नाम 5. बौद्ध मान्यता के अनुसार एक गंधर्व राजा 6. जनमेजय के एक पुत्र 7. एक प्रकार का हंस।

धृतराष्ट्री *स्त्री.* (तत्.) 1. धृतराष्ट्र की स्त्री 2. कश्यप ऋषि की पाँच कन्याओं में से एक जो हंसों की आदि माता थी।

धृतलक्ष्य *वि.* (तत्.) जो अपना लक्ष्य प्राप्त करने में दृढ़ता से लगा हो।

धृतवर्मा *पुं.* (तत्.) त्रिगर्त का राजकुमार, जिसके साथ अर्जुन को अश्वमेध के घोड़े की रक्षा के लिए युद्ध करना पड़ा था *वि.* जिसने वर्म यानी कवच धारण किया हो।

धृत विक्रय *पुं.* (तत्.) तौलकर पदार्थ बेचने का ढंग या प्रकार।

धृतव्रत *वि.* (तत्.) जिसने कोई व्रत धारण किया हो *पुं.* पुरुवंशीय जयद्रथ के पुत्र विजय का पौत्र।

धृतमानस *वि.* (तत्.) दृढ़ निश्चय।

धृतात्मा *वि.* (तत्.) दृढ़ चित्त वाला, धीर *पुं.* विष्णु।

धृति *स्त्री.* (तत्.) 1. धारण करने की क्रिया या भाव, ग्रहण करना, पकड़ना 2. ठहराव, स्थैर्य 3. धैर्य, धीरता 4. तुष्टि 5. प्रीति 6. सोलह मातृकाओं में से एक 7. फलित ज्योतिष में एक योग 8. चंद्रमा की सोलह कलाओं में से एक 9. साहित्य-विवेचन में एक व्यभिचारी भाव 10. दक्ष की कन्या तथा धर्म की पत्नी का नाम 11. अश्वमेध की एक आहुति का नाम *पुं.* 1. राजा जयद्रथ का पौत्र 2. एक विश्वदेव का नाम 3. यदुवंशीय वभ्रु का पुत्र।

धृतिगृहीत *वि.* (तत्.) धृतिशील, धृतिमान।

धृतिमान *वि.* (तत्.) धैर्यवान, धीर, संतुष्ट *स्त्री.* धृतिमति।

धृतिहोम *पुं.* (तत्.) विवाह कार्य के दौरान किया जाने वाला होम।

धृत्वरि *स्त्री.* (तत्.) पृथ्वी।

धृत्वरी *स्त्री.* (तत्.) दे. धृत्वरि।

धृत्वा *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. ब्रह्मा 3. धर्म 4. आकाश 5. चतुर आदमी 6. समुद्र।

धृषित *वि.* (तत्.) बहादुर, वीर, निर्भीक, साहसी।

धृषु *वि.* (तत्.) बहादुर, वीर, निर्भीक, साहसी *पुं.* ढेर, राशि, समूह।

धृष्ट *वि.* (तत्.) 1. ढीठ, संकोच या लज्जा न करने वाला, लज्जारहित, जो अनुचित काम करने के बाद भी निःशंक बना रहे, झिड़कने पर भी लज्जित न हो 2. प्रगल्भ, गुस्ताख, उद्दंड *पुं.* 1. साहित्य के अनुसार, वह सातवें प्रकार का नायक जो ढिठाई के साथ नायिका के साथ लगा रहता है 2. सातवें मनु के एक पुत्र का नाम 3. अस्त्रों का एक प्रकार का प्रतिकार या संहार।

धृष्टकेतु *पुं.* (तत्.) 1. चेदि नरेश शिशुपाल का एक पुत्र, महाभारत में जिसका द्रोणाचार्य द्वारा वध किया गया था 2. नवें मनु रोहित के बेटे का नाम 3. जनकवंशीय सुध्वति के पुत्र।

धृष्टता *स्त्री.* (तत्.) ढिठाई, उद्दंडता, ओछा या बेहूदा आचरण।

धृष्टद्युम्न *पुं.* (तत्.) महाभारत में राजा द्रुपद का पुत्र जिन्होंने द्रोणाचार्य का वध किया था।

धृष्टधी *वि.* (तत्.) ढीठ, निर्लज्ज, बेहया।

धृष्टमानी *वि.* (तत्.) 1. अपने-आप को बहुत बड़ा समझने वाला 2. ढीठ, धृष्ट।

धृष्टवादी *वि.* (तत्.) अशिष्टतापूर्वक बात करने वाला।

धृष्टा *स्त्री.* (तत्.) बेहया स्त्री, धृष्ट का स्त्री।

धृष्टि *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का यज्ञ-पात्र 2. दशरथ के एक मंत्री का नाम 3. हिरण्याक्ष का एक पुत्र।

धृष्णक *वि.* (तत्.) दे. धृष्ट।

धृष्णता *स्त्री.* (तत्.) धृष्टता।

धृष्णत्व *पुं.* (तत्.) धृष्टता।

धृष्णि *स्त्री.* (तत्.) किरण, प्रकाश-रेखा।

धृष्णु *वि.* (तत्.) दे. धृष्ट *पुं.* 1. वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम 2. सावर्णि मनु का एक पुत्र 3. एक रुद्र का नाम।

धृष्णवोजा *पुं.* (तत्.) कार्तवीर्य के पुत्र का नाम।

धृष्य *वि.* (तत्.) 1. धर्षणीय, जिसका धर्षण हो सके 2. आक्रमण करने योग्य 3. जीतने योग्य।

धेड़ी कौवा *पुं.* (तद्.) डोमा कौआ, बड़ा काला कौआ।

धेन *पुं.* (तत्.) 1. समुद्र 2. नद।

धेना *स्त्री.* (तत्.) 1. नदी 2. वाणी 3. दुधारू गाय।

धेनिका *स्त्री.* (तत्.) धनिया।

धेनु *स्त्री.* (तत्.) 1. दुधारू गाय 2. हाल की ब्याही गाय 3. पृथ्वी 4. भेंट।

धेनुक *पुं.* (तत्.) 1. एक राक्षस जो हरिवंश पुराण के अनुसार बलदेव के हाथों मारा गया था 2. एक प्राचीन तीर्थ का नाम 3. रतिमंजरी के अनुसार सोलह प्रकार के रति बंधों में से एक।

धेनुकसूदन *पुं.* (तत्.) बलराम।

धेनुका *स्त्री.* (तत्.) 1. धेनु, गौ 2. हस्तिनी स्त्री 3. 3. पार्वती 4. मादा पशु 5. भेंट, उपहार 6. कटार।

धेनुदुग्ध *पुं.* (तत्.) 1. गाय का दूध 2. एक वनस्पति का नाम।

धेनुदुग्धकर *पुं.* (तत्.) गाजर, जिसे खाने से गौओं का दूध बढ़ता है।

धेनु-धूलि *स्त्री.* (तत्.) दे. गो-धूलि।

धेनुमक्षिका *स्त्री.* (तत्.) चौपायों को काटने वाले बड़े मच्छर।

धेनुमती *स्त्री.* (तत्.) गोमती नदी।

धेनुमुख *पुं.* (तत्.) गोमुख नामक बाजा, नरसिंहा।

धेनुष्टरी *पुं.* (तत्.) सवत्सा गाय जिसने दूध देना बंद कर दिया है।

धेनुष्या *स्त्री.* (तत्.) रेहन या बंधक रखी हुई गाय।

धेय *वि.* (तत्.) 1. धारण करने योग्य, धारणीय, धार्य 2. पोषण करने योग्य, पोष्य 3. पीने योग्य *पुं.* ग्रहण, पान, पोषण (प्रत्य.) एक प्रत्यय जो संज्ञा के अंत में लगाकर अधिकारी, पात्र का अर्थ देता है जैसे- नामधेय, भागधेय।

धेयना *अ.क्रि.* (तद्.) ध्यान करना।

धेर *पुं.* (देश.) एक जाति का नाम जो मरे जानवरों का माँस खाती है।

धेरा *वि.* (देश.) भेंगा।

धेरिया *स्त्री.* (देश.) लड़की, बेटी, पुत्री।

धेरी *स्त्री.* (देश.) पुत्री।

धेलचा *पुं.* (देश.) पुराना आधा पैसा, अधेला, धेला *वि.* अधेले के मूल्य का टि. अब यह प्रचलन में नहीं है।

धेला *पुं.* (देश.) अधेला।

धेली *स्त्री.* (देश.) पुराना आधा रुपया, अठन्नी।

धेवता *पुं.* (देश.) दोहता, नाती *स्त्री.* धेवती।

धै *अव्य.* (देश.) दुहाई जैसे- रामधै।

धैत *स्त्री.* (तत्.) धेनु।

धैताल *वि.* (देश.) धौताल।

धैनव *वि.* (तत्.) गाय से उत्पन्न *पुं.* बछड़ा।

धैना *पुं.* (देश.) 1. धंधा, आदत 2. टेव 3. रंगढंग 4. जिद, हठ।

धैनुक *पुं.* (तत्.) 1. गोसमूह 2. कामशास्त्र में एक आसन या रतिबंध।

धैर्य *पुं.* (तत्.) 1. धीरता, चित्त की स्थिरता प्रतिकूल परिस्थितियों में चित्त के विकृत न होने का भाव प्रयो. धैर्य मत छोड़ो तुम्हें अपने उद्‌देश्य में अवश्य सफलता मिलेगी 2. साहस 3. धृष्टता।

धैवत *पुं.* (तत्.) संगीत. सप्त स्वरों में छठा स्वर जो मदंती, रोहिणी और रम्या नाम की तीन श्रुतियों के योग से बनता है, इसका संकेत चिह्न 'ध' है।

धैवत्य *पुं.* (तत्.) चातुर्य, चतुराई, होशियारी।

धोंकना *अ.क्रि.* (देश.) काँपना, थरथराना।

धोंडाल *वि.* (देश.) कंकड़-पत्थर युक्त धरती।

धोंधका *पुं.* (देश.) दे. धोंधवा।

धोंधवा *पुं.* (तत्.) घर की छत या दीवार में धुआँ निकासी के लिए बना मार्ग।

धोंधा *पुं.* (देश.)1. मिट्‌टी का लोंदा 2. बेडौल पिंड।

धो *पुं.* (देश.) धुलने या धोए जाने का भाव प्रयो. दो धो के बाद कमरा साफ-सुथरा हो गया 2. धोने की आज्ञा प्रयो. तुम कपड़े धो।

धोई *स्त्री.* (देश.) 1. उड़द या मूंग की छिलका निकाली हुई दाल 2. अफीम के बरतन का धोवन *पुं.* राजगीर।

धोकड़ *वि.* (देश.) हृष्ट-पुष्ट, हट्‌टा-कट्‌टा, मोटा-ताजा, मुस्टंडा।

धोकड़ा *वि.* (देश.) दे. धोकड़ *पुं.* राजस्थान में पाया जाने वाला एक वृक्ष।

धोका *पुं.* (देश.) दे. धोखा।

धोख *पुं.* (देश.) दे. धोखा।

धोखा *पुं.* (देश.) 1. यथार्थ को छिपाकर दूसरों को भ्रम में डालने का व्यापार, वंचना 2. पहचानने, समझने आदि में होने वाली भूल, भ्रम, मिथ्या-प्रतीति 3. आश्वासन देकर उसे पूरा न करने की क्रिया, दगा, विश्वासघात 4. भ्रम उत्पन्न करने वाली कोई बात 5. अनजाने में या अज्ञान में होने वाली भूल 6. अनिष्ट की संभावना, खतरा, जोखिम, खटका, अंदेशा 7. भूल, चूक, त्रुटि,

कसर 8. चिड़ियों को डराने के लिए खेतों में खड़ा किया जाने वाला लकड़ी, पुआ आदि का बनाया गया पुतला 9. फलदार वृक्षों पर चिड़ियों को भगाने के लिए लकड़ी को रस्सी से बाँध कर तैयार की गई युक्ति, खटखटा 10. बेसन, मैदे आदि का पकवान जिसमें रुई वगैरह मिलाकर दूसरों को छकाने या बेवकूफ बनाने के लिए खिलाया जाता है मुहा. धोखा खाना- ठगा जाना; धोखा देना- किसी के साथ कपटपूर्ण व्यवहार करना; धोखे की टट्टी- वह टट्टी, आवरण या परदा जिसकी आड़ में शिकारी शिकार करते हैं, झूठ-मूठ फँसाकर भ्रम में डाले रखने वाली चीज या बात, धोखे में अथवा धोखे से-जानबूझ कर नहीं, भूल से; धोखा उठाना- झूठी बात का विश्वास करके या भ्रम में पड़कर हानि या कष्ट उठाना; धोखा पड़ना- कुछ का कुछ हो जाना, सोचे हुए का उल्टा होना; धोखा लगना- कमी या त्रुटि होना; धोखा लगाना या लाना- त्रुटि, कमी या कसर करना; धोखा दे जाना- असमय ही समाप्त हो जाना।

धोखेबाज *वि.* (देश.+फा.) धोखा या दगा देने वाला, वंचक।

धोखेबाजी *स्त्री.* (देश.+फा.) धोखा देने का कार्य, धूर्तता।

धोटा *पुं.* (देश.) ढोटा, बेटा *स्त्री.* धोटी।

धोड़ *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का साँप, डुंडुभ।

धोतर *पुं.* (तत्.) 1. कमर तथा उसके नीचे शरीर का हिस्सा ढँकने के लिए धारण किया जाने वाला मोटा वस्त्र *स्त्री.* पहनने की धोती (महाराष्ट्र)।

धोतरा *पुं.* (देश.) दे. धतूरा।

धोती *स्त्री.* (तद्.) नौ-दस हाथ लंबा तथा दो-ढाई हाथ चौड़ा वस्त्र जो कमर और उसके नीचे के अंगों को ढँकने के लिए पहना जाता है, स्त्रियाँ इसे ऊपर भी ओढ़ लेती है मुहा. धोती गीली करना- डरना, भयभीत होना; धोती ढीली होना- साहस छूट जाना।

धोना *स.क्रि.* (तद्.) 1. जल या किसी अन्य तरल पदार्थ से गंदगी अथवा अवांछित पदार्थ को हटाना या दूर करना 2. जल से स्वच्छ करना 3. खत्म करना, दूर करना, हटाना 4. साफ करना मुहा. हाथ धो बैठना- किसी चीज को गवाँ देना, वंचित हो जाना; हाथ धोकर पीछे पड़ना- लगातार पीड़ित करने या दिक् पहुँचाने के प्रयत्न में लग जाना, पूरी तरह से किसी काम में लग जाना; धो बहाना- नष्ट कर देना, समाप्त करना, खो देना।

धोप *स्त्री.* (देश.) तलवार, खड्ग।

धोपा *पुं.* (देश.) धोखा।

धोपेबाजी *स्त्री.* (तत्.) किसी को धोखा देने की क्रिया या भाव।

धोब *पुं.* (देश.) धुलाई, धोए जाने का काम।

धोबन *स्त्री.* (देश.) दे. धोबिन।

धोबिघाट *पुं.* (तत्.) धोबियों के कपड़ा धोने का घाट।

धोबिन *स्त्री.* (देश.) 1. धोबी जाति की स्त्री 2. धोबी की पत्नी 3. एक चिड़िया 4. बीर-बहूटी नामक कीड़ा 5. शीशम की जाति का एक वृक्ष जिसकी लकड़ी परतदार होती है और इमारत के काम में आती है।

धोबिया-पाट *पुं.* (देश.) धोबी पाट।

धोबी *पुं.* (देश.) 1. कपड़े धोने का व्यवसाय करने वाला 2. कपड़े धोने के व्यवसाय में संलग्न जाति, रजक 3. उक्त जाति का व्यक्ति मुहा. धोबी का कुत्ता- व्यर्थ का व्यक्ति, निकम्मा, इधर-उधर मारा-मारा फिरने वाला; धोबी का छैला-परायी चीज पर गर्व करने वाला, उधार पर जीने वाला।

धोबीघाट *पुं.* (तत्.) धोबियों द्वारा कपड़े धोने के लिए तयशुदा घाट।

धोबीघास *स्त्री.* (देश.) बड़ी दूब।

धोबीपछाड़ *पुं.* (देश.) कुश्ती का एक पेच, धोबीपाट।

धोबीपाट *पुं.* (देश.) कुश्ती का एक पेच, धोबी पछाड़।

धोम *पुं.* (देश.) धूम, धुआँ।

धोमय *वि.* (देश.) 1. धूमिल, धूसर 2. गंदा, मैला।

धोर *पुं.* (देश.) 1. किनारा, तट 2. सामीप्य, पास।

धोरण *पुं.* (तत्.) 1. सवारी, वाहन 2. घोड़े की सरपट चाल 3. दौड़।

धोरणि *स्त्री.* (तत्.) श्रेणी, परंपरा, शृंखला, अबाध गति।

धोरणी *स्त्री.* (तत्.) दे. धोरणि।

धोरा *वि.* (तद्.) धवल, सफेद, धौरी।

धोरित *पुं.* (तत्.) 1. गमन, चाल 2. घोड़े की दुलकी चाल 3. चोट पहुँचाना।

धोरी *वि.* (तद्.) 1. धुरा 2. प्रधान, मुख्य *पुं.* 1. धुरा उठाने वाला, धुरंधर, भार उठाने वाला 2. साज-संभार 3. गाड़ी में जोते जाने वाले बैल, धुरीण 4. प्रधान, मुखिया 5. श्रेष्ठ।

धोरे *अव्य.* (तद्.) पास, निकट, समीप।

धोला *पुं.* (तद्.) जवासा, धमासा।

धोलाना *स.क्रि.* (देश.) दे. धुलाना।

धोव *पुं.* (देश.) कपड़े की धुलाई।

धोवत *पुं.* (देश.) धोबी।

धोवती *स्त्री.* (देश.) धोती।

धोवन *स्त्री.* (देश.) 1. धोने की क्रिया अथवा भाव 2. कोई चीज धोने पर निकला हुआ गंदा या मैला पानी।

धोवना *स.क्रि.* (देश.) धोना।

धोवा *पुं.* (देश.) 1. धोवन 2. जल 3. अरक।

धोवाना *स.क्रि.* (देश.) 1. धुलाना *अ.क्रि.* धुलना।

धोसा *पुं.* (देश.) गुड़ की सूखी भेली।

धौं *अव्य.* (तत्.) विकल्प, संशय आदि को द्योतित कराने वाला अव्यय जो कि पता नहीं, क्या मालूम, न जाने, कि, या, भला, तो, अथवा आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है।

धौंक *स्त्री.* (तद्.) 1. धौंकने की क्रिया 2. आग दहकाने के लिए माथी या पंखा चलाकर छोड़ा गया वायु का झोंका 3. गरम हवा 3. आग की लपट।

धौंकना *स.क्रि.* (तद्.) 1. माथी या पंखा आदि चलाकर आग तेज करने के लिए उस पर हवा का झोंका पहुँचाना 2. भार डालना।

धौंकनी *स्त्री.* (देश.) 1. लोहार या सोनार द्वारा आग आग फूँकने के लिए बाँस या धातु की नली, फुँकनी, भाथी।

धौंकल *वि.* (देश.) उपद्रव।

धौंका *पुं.* (तद्.) लू, गरमी में चलने वाली गरम हवा का झोंका।

धौंकिया *पुं.* (तद्.) 1. भाथी चलाने वाला 2. आग फूँकने वाला 3. शहरों में टूटे-फूटे बरतनों की मरम्मत के लिए भाथी लेकर घूमने वाला कारीगर।

धौंकी *स्त्री.* (तद्.) दे. धौंकनी *पुं.* धौंकिया।

धौंज *स्त्री.* (देश.) 1. दौड़-धूप 2. परेशानी, घबराहट, उद्विग्नता।

धौंजन *स्त्री.* (देश.) धौंज।

धौंजना *स.क्रि.* (तत्.) पैरों से कुचलना, रौंदना *अ.क्रि.* दौड़-धूप करना।

धौंटा *पुं.* (देश.) बैल, घोड़े आदि की आँखों को ढँकने वाला आवरण, अँधियारी ढोंका।

धौंताल *वि.* (तद्.) 1. काम में धुन का पक्का 2. चालाक, चतुर 3. चंचल, चपल 4. शरारती, उपद्रवी 5. उजड्ड, गँवार 6. पटु, निपुण 7. हट्टा-कट्टा, मजबूत 8. साहसी।

धौंधो-पोंपों *स्त्री.* (अनु.) धोंधों-पोंपों की ध्वनि।

धौं-धौं *पुं.* (अनु.) दमामा अर्थात बहुत बड़े नगाड़े से निकलने वाली आवाज।

धौं-धौं-मार *स्त्री.* (अनु.+देश.) हड़बड़ी, उतावली, जल्दी, शीघ्रता।

धौंर *स्त्री.* (तद्.) सफेद ईख।

धौंस *स्त्री.* (देश.) 1. धमकी, घुड़की 2. झाँसा-पट्टी 3. धाक *स.क्रि.* 1. जमना, जमाना 2. बँधना, बाँधना प्रयो. मित्रों के बीच धौंस मत जमाओ, तुम्हारी यहाँ नहीं चलने वाली है।

धौंसना *स.क्रि.* (तद्.) 1. दबाना, दंड देना 2. धमकाना, घुड़की देना 3. डराना 4. पीटना।

धौंस पट्टी *स्त्री.* (देश.) झाँसा-पट्टी, भुलावा मुहा. धौंस पट्टी में आना- भुलावे अथवा बहकावे में कोई काम कर बैठना।

धौंसा *पुं.* (दे.) 1. बड़ा नगाड़ा मुहा. धौंसा देना या बजाना- चढ़ाई का डंका बजाना 2. सामर्थ्य, बूता, शक्ति।

धौंसिया *पुं.* (देश.) 1. धौंसा बजाने वाला 2. धौंस जमाने वाला 3. झाँसा-पट्टी देने वाला, धोखेबाजी करने वाला।

धौ *पुं.* (तद्.) धव वृक्ष (देश.) पति।

धौकनी *स्त्री.* (तत्.) दे. धौंकनी।

धौकरना *स.क्रि.* (तद्.) दे. धौंकना।

धौकरा *पुं.* (तत्.) धौरा, बाकली जाति का एक वृक्ष।

धौकांदव *पुं.* (तद्.) एक विशेष प्रकार के धान से निकला चावल।

धौत *वि.* (तत्.) 1. प्रक्षालित, धोया हुआ 2. सफेद, धवल *पुं.* चाँदी।

धौतकट *पुं.* (तत्.) थैला, सूत का थैला।

धौतकोषज *पुं.* (तत्.) धुला हुआ या साफ किया हुआ रेशम।

धौतकौशेय *पुं.* (तत्.) दे. धौत कोषज।

धौतखंडी *स्त्री.* (तत्.) मिश्री।

धौतय *पुं.* (तत्.) सेंधा नमक।

धौतशिला *स्त्री.* (तत्.) स्फटिक, बिल्लौर।

धौतात्मा *वि.* (तत्.) पापों के धुल जाने के कारण शुद्ध हुई आत्मा, पवित्रात्मा।

धौताल *वि.* (तद्.) शरारती, धौंताल।

धौति *स्त्री.* (तत्.) 1. धोकर साफ करने की क्रिया 2. योग की एक क्रिया जिसमें कपड़े की दो अंगुल चौड़ी तथा आठ-दस हाथ लंबी गीली पट्टी को निगलते हुए पेट में ले जाते हैं और उसके बाद उसे खींचकर धीरे-धीरे बाहर निकालते हैं इससे अंतड़ियों की गंदगी बाहर निकलती है 3. इस क्रिया में प्रयोग में लाई जाने वाली पट्टी।

धौती *स्त्री.* (तत्.) दे. धौति।

धौतेय *पुं.* (तत्.) सेंधा नमक दे. धौतय।

धौम्र *वि.* (तत्.) धुएँ के रंग *पुं.* धूम्रवर्ण, धुमैला।

धौम्य *पुं.* (तत्.) 1. पांडवों के पुरोहित ऋषि का नाम 2. उपमन्यु, आरुणि और वेद के गुरु आयोद ऋषि 3. व्याघ्रपद ऋषि के पुत्र का नाम 4. पश्चिम में तारा रूप में स्थित एक ऋषि का नाम।

धौर *पुं.* (तद्.) एक पक्षी, सफेद, परेवा, सफेद कबूतर *वि.* सफेद, धवल।

धौरहर *पुं.* (देश.) दे. धरहरा।

धौरा *पुं.* (तद्.) 1. धौ या धव का पेड़ 2. सफेद बेल 3.एक पक्षी *वि.* धवल, श्वेत, सफेद, उजला।

धौरादित्य *पुं.* (तत्.) शिव पुराण में उल्लिखित एक तीर्थ।

धौराहर *पुं.* (देश.) दे. धरहर।

धौरितक *पुं.* (तत्.) घोड़े की पाँच चालों में से एक, दुलकी चाल।

धौरिया *पुं.* (तद्.) बैल जिसे गाड़ी में जोता जाता हो, धुर्य।

धौरी *स्त्री.* (तद्.) 1. उजली गाय, कपिला 2. मादा धौरा पक्षी *वि.* श्वेत, सफेद, उजली।

धौरेय *वि.* (तद्.) 1. धुरा धारण करने योग्य 2. बोझ ढोने योग्य *पुं.* 1. गाड़ी या बोझ खींचने वाला बैल, घोड़ा आदि जानवर 2. मुखिया, नेता।

धौरेहरा *पुं.* (देश.) दे. धौरहर।

धौर्तक *पुं.* (तत्.) धूर्तता।

धौर्तिक *पुं.* (तत्.) धूर्तता।

धौर्त्य *पुं.* (तत्.) धूर्तता।

धौर्य *पुं.* (तत्.) घोड़े की एक चाल, घोड़े की दुलकी चाल।

धौल *स्त्री.* (अनु.) 1. पीठ या सिर पर हाथ से किया जाने वाला आघात, धप्पा 2. चपत 3. चपेट, हानि, आर्थिक आघात *पुं.* धव का पेड़ *वि.* धवल, बहुत बड़ा *स्त्री.* 1. एक प्रकार की ईख 2. ज्वार का हरा डंठल *पुं.* धरहरा *स.क्रि.* जड़ना, जमाना, मारना, देना, लगाना यौ. धौल धप्पड़, धौल धप्पा, धौल धक्का।

धौलधक्कड़ *पुं.* (देश.) मारपीट, उपद्रव, दंगा, ऊधम प्रयो. वह इतना शरीफ है कि धौलधक्कड़ वाली जगहों में जाने से डरता है।

धौलधक्का *पुं.* (देश.) आघात, चपेट।

धौलधप्पड़ *पुं.* (देश.) 1. धक्का-मुक्का 2. मारपीट 3. ऊधम, उपद्रव, दंगा।

धौलधप्पा *पुं.* (देश.) दे. धौलधप्पड़।

धौलधूत *वि.* (तद्.) धवल धूर्त, बहुत बड़ा धूर्त, पक्का धूर्त।

धौलहर *पुं.* (देश.) दे. धरहरा।

धौलांजर *पुं.* (तत्.) कांगड़ा जिले के एक पर्वत का नाम।

धौला *वि.* (तद्.) दे. धवल *पुं.* 1. धव या धौ का पेड़ 2. सफेद बैल।

धौलाई *स्त्री.* (तत्.) धवलता, सफेदी, उजलापन।

धौलाखैर *पुं.* (देश.) बबूल जाति का एक वृक्ष जिसकी छाल सफेद होती है।

धौलागिरि *पुं.* (देश.) दे. धवलगिरि।

धौलाधार *पुं.* (तत्.) दे. धरहरा।

धौली *स्त्री.* (तद्.) एक प्रकार का वृक्ष *पुं.* उड़ीसा में भुवनेश्वर के दक्षिण में स्थित एक पर्वत।

ध्मांक्ष *पुं.* (तत्.) 1. ध्वांक्ष, काक, कौआ, बगुला 2. भिक्षुक 3. बढ़ई।

ध्मांक्षजंघा *स्त्री.* (तत्.) काकजंघा।

ध्मांक्षजंबु *पुं.* (तत्.) काक जंबु, काकफल।

ध्मांक्षतुंडी *स्त्री.* (तत्.) काकनासा नामक लता।

ध्मांक्षदंती *स्त्री.* (तत्.) काकतुंडी काकनासा लता।

ध्मांक्षनखी *स्त्री.* (तत्.) काकतुंडी।

ध्मांक्षनाशिनी *स्त्री.* (तत्.) हाऊबेर, हपुषा।

ध्मांक्षनासा *स्त्री.* (तत्.) काकनासा।

ध्मांक्षपुष्ट *पुं.* (तत्.) कोकिल।

ध्मांक्षमाची *स्त्री.* (तत्.) काकमाची।

ध्मांक्षवल्ली *स्त्री.* (तत्.) काकनासा।

ध्मांक्षादनी *स्त्री.* (तत्.) काकतुंडी।

ध्मांक्षाराति *पुं.* (तत्.) उल्लू।

ध्मांक्षी *स्त्री.* (तत्.) मादा कौआ, कक्कोकिला, शीतलचीनी।

ध्मांक्षोली *स्त्री.* (तत्.) काकोली।

ध्माकार *पुं.* (तत्.) लोहार।

ध्मात *वि.* (तत्.) 1. फूँक कर बजाया हुआ 2. फुलाया हुआ 3. उत्तेजित किया हुआ, क्षुब्ध किया हुआ 4. उभारा हुआ।

ध्मान *पुं.* (तत्.) (फूँक कर) बजाने की क्रिया।

ध्मापन *पुं.* (तत्.) 1. फूँककर फुलाना 2. जलाकर राख करना।

ध्मापित *वि.* (तत्.) 1. फुलाया हुआ 2. जलाकर राख किया हुआ।

ध्या *स्त्री.* (तत्.) विचार, चिंतन।

ध्यात *वि.* (तत्.) ध्यान किया हुआ, विचारा हुआ, सोचा हुआ।

ध्यातव्य *वि.* (तत्.) दे. ध्येय।

ध्याता *वि.* (तत्.) 1. ध्यान करने वाला 2. विचार करने वाला।

ध्यात्व *पुं.* (तत्.) विचार, मनन।

ध्यान *पुं.* (तत्.) 1. किसी विषय पर मन में विचार को केंद्रित करना 2. चिंतन, सोच, विचार 3. बुद्धि, समझ 4. याद, स्मृति, ख्याल 5. पूजा, उपासना आदि के समय इष्ट के प्रति विचार व चेतना का केंद्रीकरण 6. योग के आठ अंगों में से सातवें अंग का नाम 7.

चिंतन या धारण करने की शक्ति मुहा. ध्यान आना- स्मरण आना; ध्यान से उतरना- याद न रह पाना; ध्यान पर चढ़ना- किसी बात का मन में कुछ समय के लिए अपना स्थान बना लेना; ध्यान जमना- चित्त एकाग्र होना; ध्यान छूटना- चित्त की एकाग्रता खत्म होना; ध्यान देना- चित्त को किसी बात की ओर प्रवृत्त करना; ध्यान धरना-एकाग्र भाव से इष्ट के बारे में सोचना; ध्यान में डूबना, ध्यान में मग्न होना- किसी के विचार में इस प्रकार लीन होना कि अन्य बातों का ख्याल न रहे; ध्यान बँटना- किसी विषय पर लगे चित्त की एकाग्रता में व्यवधान आना; ध्यान बँधना- किसी विषय पर निरंतर चित्त लगा रहना; (किसी में) ध्यान लगना- दे. ध्यान में डूबना; ध्यान लगाना- दे. ध्यान धरना; ध्यान में लाना-मन में, चिंतन में स्थान देना।

ध्यानगम्य *वि.* (तत्.) केवल ध्यान से प्राप्त होने वाला।

ध्यानतत्पर *वि.* (तत्.) ध्यान में लीन, ध्यानस्थ, ध्यान में लगा हुआ।

ध्यानना *स.क्रि.* (तद्.) ध्यान करना, निरंतर स्मरण करना।

ध्याननिष्ठ *वि.* (तत्.) ध्यान में लीन, विचारों में डूबा हुआ।

ध्यानपर *वि.* (तत्.) ध्याननिष्ठ।

ध्यानमग्न *वि.* (तत्.) ध्याननिष्ठ, ध्यान में लीन प्रयो. मैं अध्ययन में इतना ध्यानमग्न था कि कब वह बगल में आकर बैठ गया, पता ही नहीं चला।

ध्यानमुद्रा *स्त्री.* (तत्.) ध्यान करने के विहित आसन हाथ की उंगलियों का विशेष विन्यास।

ध्यानयोग *पुं.* (तत्.) वह योग जिसमें ध्यान की प्रधानता हो।

ध्यानरत *वि.* (तत्.) ध्यान में डूबा हुआ, ध्यानमग्न।

ध्यानरम्य *वि.* (तत्.) जिसका ध्यान करना अच्छा लगे।

ध्यानलीन *वि.* (तत्.) ध्यानरत, ध्यानमग्न।

ध्यानशील *वि.* (तत्.) ध्यानस्थ, ध्याननिष्ठ।

ध्यानसाध्य *वि.* (तत्.) ध्यान द्वारा सिद्ध या साधित होने वाला।

ध्यानस्थ *वि.* (तत्.) ध्यानलीन, ध्यानरत।

ध्याना *स.क्रि.* (तद्.) दे. ध्यानना।

ध्यानाभ्यास *पुं.* (तत्.) ध्यान का अभ्यास, समाधि।

ध्यानावचार *पुं.* (तत्.) बौद्ध शास्त्रों में वर्णित एक देवता।

ध्यानावस्थित *वि.* (तत्.) ध्यान में डूबा हुआ, ध्यानमग्न।

ध्यानिक *वि.* (तत्.) ध्यान से सिद्ध होने योग्य, ध्यानसाध्य।

ध्यानिबुद्ध *पुं.* (तत्.) एक प्रकार के बुद्ध।

ध्यानी *वि.* (तत्.) 1. ध्यान करने वाला 2. जो लगातार परमात्म चिंतन करता रहता हो।

ध्याम *वि.* (तत्.) 1. साँवला 2. गंदा, मैला *पुं.* 1. एक तरह का गंध, तृण 2. दमनक, दौना।

ध्यामक *स्त्री.* (तत्.) रोहिस घास।

ध्येय *वि.* (तत्.) 1. ध्यान के योग्य 2. जिसका ध्यान किया जाए *पुं.* 1. ध्यान का विषय 2. लक्ष्य।

ध्र *वि.* (तत्.) धारण करने वाला।

ध्रगध्रुगी *स्त्री.* (तत्.) धुकधुकी।

ध्रम *पुं.* (तत्.) धर्म।

ध्रम्म *पुं.* (तत्.) धर्म।

ध्रजि *स्त्री.* (तत्.) 1. वेगपूर्ण गति 2. प्रकृति 3. आँधी, तूफान।

ध्रिग *अव्य.* (तद्.) धिक।

ध्रुति *स्त्री.* (तत्.) 1. भाग्य 2. अधोगति, कदाचार।

ध्रुपद *पुं.* (तद्.) भारतीय शास्त्रीय गायन परंपरा में विशिष्ट शैली जिसमें शुद्धता पर बहुत बल दिया जाता है प्रयो. भारत में बहुत कम ध्रुपद गायक शेष बचे हैं।

ध्रुपदिया *पुं.* (देश.) ध्रुपद शैली में गाने वाले कलाकार।

ध्रुव *वि.* (तत्.) 1. सदा एक ही स्थान पर ज्यों का त्यों बना रहने वाला, स्थिर, अचल, निश्चित 2. दृढ़, पक्का, अटल *पुं.* 1. ध्रुवतारा तो हमेशा उत्तर दिशा में एक जगह पर स्थिर रहता है 2. राजा उत्तानपाद और सुनीति के पुत्र का नाम जिसने घोर तपस्या से विष्णु को प्रसन्न किया था 3. पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी सिरे 4. पर्वत 5. आकाश 6. खंभा 7. वट वृक्ष 8. शंकु, कील 9. आठ वस्तुओं में से एक 10. विष्णु 11. ध्रुपद, ध्रुवक 12. एक यज्ञ पात्र 13. शिव 14. ब्रह्मा 15. शरीर नामक पक्षी 16. भँवरी, रोमावर्त 17. फलित ज्योतिष का एक योग 18. नाक का अगला भाग 19. गाँठ 20. रगण का एक भेद 21. तालु का एक रोग 22. वैसा सोमरस जो देवता को अर्पित न किया गया हो 23. उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपदा तथा रोहिणी नक्षत्र 24. गीत का आरंभिक अंश।

ध्रुवक *पुं.* (तत्.) 1. किसी गीत का टेक यानी बार-बार दुहराया जाने वाला आरंभिक अंश 2. थून, खंभा, स्थाणु 3. ध्रुपद नामक गीत 4. ध्रुपद की टेक 5. नक्षत्र की दूरी।

ध्रुवका *स्त्री.* (तत्.) ध्रुपद।

ध्रुवकेतु *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का केतु तारा।

ध्रुवगति *स्त्री.* (तत्.) दृढ़ स्थिति।

ध्रुवचरण *पुं.* (तत्.) रूद्र ताल का एक भेद।

ध्रुवण *पुं.* (तत्.) 1. किसी वस्तु की ध्रुवता स्थिर करना, वस्तु की ध्रुवता का पता लगाना।

ध्रुवता *स्त्री.* (तत्.) 1. स्थिरता, अचलता 2. दृढ़ता 3. निश्चय।

ध्रुवतारक *पुं.* (तत्.) दे. ध्रुवतारा।

ध्रुवतारा *पुं.* (तत्.) उत्तर की ओर मेरु के ऊपर सदा एक ही जगह पर स्थिर रहने वाला तारा।

ध्रुवत्व *पुं.* (तत्.) ध्रुवता।

ध्रुवदर्शक *पुं.* (तत्.) 1. सप्तऋषि मंडल 2. कुतुबनुमा।

ध्रुवदर्शन *पुं.* (तत्.) हिंदू विवाह-संस्कार के अंतर्गत वर-वधू को मंत्रोच्चार के बीच ध्रुव तारे का कराया जाने वाला दर्शन जिसका वधू के पक्ष में प्रतीकात्मक अभिप्राय यह होता है कि वह ध्रुव की तरह अचल रूप से घर में सुख से निवास करे।

ध्रुवधार्य *वि.* (तत्.) अवश्य, निश्चित रूप से धारण करने योग्य।

ध्रुवधेनु *स्त्री.* (तत्.) दूध दुहते समय चुपचाप, शांत भाव से खड़ी रहने वाली गाय।

ध्रुवनंद *पुं.* (तत्.) नंद के एक भाई का नाम।

ध्रुवपद *पुं.* (तत्.) ध्रुपद, ध्रुवक।

ध्रुवमत्स्य *पुं.* (तत्.) ध्रुवदर्शक, कुतुबनुमा।

ध्रुवरत्ना *स्त्री.* (तत्.) कार्तिकेय की एक अनुचरी मातृका।

ध्रुवलोक *पुं.* (तत्.) पुराणानुसार सत्यलोक का एक प्रदेश जहाँ ध्रुव का निवास है।

ध्रुवसंधि *पुं.* (तत्.) सूर्यवंशी राजा सुसंधि के पुत्र का नाम (रामायण)।

ध्रुवा *स्त्री.* (तत्.) 1. एक यज्ञपात्र 2. मूर्वा, मरोड़फली 3. शालपर्णी, सरिवन 4. ध्रुपद गीत 5. सती एवं साहसी स्त्री 6. संगीत का एक ताल 7. धनुष की डोरी, प्रत्यंचा 8. दोहन काल में स्थिर रहने वाली गाय *वि.* दे. ध्रुव।

ध्रुवाक्ष *पुं.* (तत्.) ज्यो. ज्योतिष यंत्रों में ध्रुव की ओर अभिमुख अक्ष। polar axis

ध्रुवाक्षर *पुं.* (तत्.) विष्णु।

ध्रुवाधिकरण *पुं.* (तत्.) भूमिकर अधिकारी।

ध्रुवावर्त *पुं.* (तत्.) 1. घोड़े के शरीर पर बालों की भँवरी 2. ऐसी भौंरियों वाला घोड़ा।

ध्रुवि *वि.* (तत्.) ध्रुव, अटल, निश्चित।

ध्रुवीय *वि.* (तत्.) 1. ध्रुव संबंधी 2. ध्रुव प्रदेश का प्रयो. वह वैज्ञानिक ध्रुवीय मामलों का बहुत बड़ा जानकार है।

ध्रुवीयक *पुं.* (तत्.) ध्रुवीयण करने वाला यंत्र या तत्व।

ध्रुवीय ज्योति *स्त्री.* (तत्.) उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव ध्रुव प्रदेशों पर दिखाई पड़ने वाला लाल और हरे वर्ण का आलोक पुंज।

ध्रुवीयण *पुं.* (तत्.) दोनों ध्रुवों पर प्रकाश, चुंबकीय शक्ति आदि का केंद्रित होना।

ध्रौव्य *पुं.* (तत्.) दे. ध्रुवता।

ध्वंस *पुं.* (तत्.) 1. विनाश, नाश, क्षय 2. भवन आदि का ढह कर नष्ट होना 3. न्याय और वैशेषिक अभाव का एक प्रकार।

ध्वंसक *वि.* (तत्.) ध्वंस या विनाश करने वाला, विध्वंसक 2. ढहाने वाला।

ध्वंसन *पुं.* (तत्.) 1. नाश करने की क्रिया 2. ध्वस्त होने या किए जाने की क्रिया या भाव 3. तोड़फोड़।

ध्वंसावशेष *पुं.* (तत्.) 1. किसी चीज के विनष्ट हो जाने के बाद बचा हुआ अंश 2. खंडहर प्रयो. गोलकुंडा किले के ध्वंसावशेष तद्युगीन इतिहास की कथा कहते हैं।

ध्वंसित *वि.* (तत्.) नष्ट किया हुआ।

ध्वंसी *वि.* (तत्.) 1. नाश करने वाला 2. नष्ट होने वाला।

ध्वज *पुं.* (तत्.) 1. झंडा, ध्वजा, पताका 2. चिह्न, निशान 3. वह ऊँचा डंडा जिस पर सेना अथवा किसी समारोह आदि का चिह्न लगाया जाता है 4. योगियों का लंबा डंडा जिसपर उनका कोई चिह्न लगा होता है 5. व्यापारियों का निशान (ट्रेडमार्क) जो उनकी वस्तुओं पर अंकित रहता है 6. मद्य बनाने तथा बेचने वाला व्यक्ति, शौंडिक 7. पुरुषेंद्रिय 8. श्रेष्ठ व्यक्ति उदा. कुल ध्वज 9. दर्प, ढोंग।

ध्वजक *पुं.* (तत्.) सेना या नौसेना का झंडा।

ध्वजगृह *पुं.* (तत्.) झंडा रखने का कक्ष।

ध्वजग्रीव *पुं.* (तत्.) रामायण में वर्णित एक राक्षस का नाम।

ध्वजदंड *पुं.* (तत्.) वह डंडा जिसपर झंडा लगा हुआ होता है।

ध्वजद्रुम *पुं.* (तत्.) ताड़ का पेड़।

ध्वजपट *पुं.* (तत्.) झंडा।

ध्वजपात *पुं.* (तत्.) नपुंसकता, क्लीवता।

ध्वजपोत *पुं.* (तत्.) वह जहाज जिसपर नौसेनापति विराजमान होता है तथा जिसपर उसका ध्वज फहराता है।

ध्वजप्रहरण *पुं.* (तत्.) वायु।

ध्वजभंग *पुं.* (तत्.) क्लीवता, नपुंसकता।

ध्वजमूल *पुं.* (तत्.) चुंगीघर की सीमा।

ध्वजयष्टि *स्त्री.* (तत्.) ध्वजदंड।

ध्वजवान *वि.* (तत्.) 1. ध्वज वाला 2. चिह्न वाला, चिह्न युक्त *पुं.* 1. ध्वजवाहक 2. शौंडिक, कलवार *स्त्री.* ध्वजवती।

ध्वजांशुक *पुं.* (तत्.) दे. ध्वजपट।

ध्वजा *स्त्री.* (तद्.) 1. झंडा, पताका, निशान 2. एक एक प्रकार की कसरत छंद. ठगण का पहला भेद।

ध्वजादि *पुं.* (तत्.) फलित ज्योतिष की एक गणना जिसमें प्रश्न-फल बताए जाते हैं।

ध्वजारोपण *पुं.* (तत्.) ध्वजा गाड़ना या लगाना।

ध्वजारोहण *पुं.* (तत्.) झंडा फहराना, ध्वजोत्तोलन।

ध्वजाहृत *पुं.* (तत्.) 1. युद्ध में जीत के बाद प्राप्त दास 2. युद्ध में जीतने के बाद लाया गया धन।

ध्वजिक *पुं.* (तत्.) ढोंगी, पाखंडी।

ध्वजिनी *स्त्री.* (तत्.) सेना (वि.) ध्वज धारण करने वाली।

ध्वजी *वि.* (तद्.) 1. ध्वजा वाला, जिसके हाथों में ध्वज हो 2. चिह्नयुक्त, चिह्न वाला *पुं.* 1. ध्वजा धारण करने वाला 2. ब्राह्मण 3. पर्वत 4. घोड़ा 5. रथ 6. साँप 7. मोर 8. कलाल 9. संग्राम 10. सीपी।

ध्वजोत्तोलन *पुं.* (तत्.) 1. झंडा फहराना, ध्वजारोहण 2. विशेष अवसर पर समारोहपर्वूक झंडे का फहराया जाना।

ध्वजोत्थान *पुं.* (तत्.) 1. झंडा फहराना 2. इंद्रध्वज महोत्सव।

ध्वन *पुं.* (तत्.) 1. ध्वनि 2. गुंजार।

ध्वनन *पुं.* (तत्.) 1. ध्वनि करना 2. व्यंग्यार्थ बोध कराने की क्रिया या भाव 3. अस्पष्ट शब्द 4. भुनभुनाना।

ध्वनमोदी *पुं.* (तत्.) भौंरा।

ध्वनि *स्त्री.* (तत्.) 1. आवाज, नाद, शब्द 2. व्या. शब्द का स्फोट 3. बाजे आदि से उत्पन्न होने वाली आवाज जैसे- घड़ियाल की ध्वनि, घंटे की ध्वनि 4. उक्ति का गूढ़, व्यंग्यपूर्ण आशय, व्यंग्यार्थ।

ध्वनिक *वि.* (तत्.) ध्वनि संबंधी।

ध्वनिकार *पुं.* (तत्.) ध्वनि सिद्धांत के प्रणेता आनंदवर्धनाचार्य।

ध्वनिकाव्य *पुं.* (तत्.) व्यंग्यार्थ प्रधान काव्य।

ध्वनिकृत् *पुं.* (तत्.) ध्वन्यालोक रचयिता आनंदवर्धनाचार्य।

ध्वनिक्षेपक *वि.* (तत्.) ध्वनि को चारों ओर फैलाने वाला जैसे- ध्वनिक्षेपक यंत्र।

ध्वनिक्षेपण *पुं.* (तत्.) ध्वनि को चारों ओर फैलाने की क्रिया।

ध्वनिग्रह *पुं.* (तत्.) कान।

ध्वनिग्राम *पुं.* (तत्.) ध्वनि विज्ञान में मनुष्य के गले में निकलने वाली ध्वनि के विभिन्न रूप।

ध्वनित *वि.* (तत्.) 1. ध्वनि के रूप में स्फुट 2. व्यंजित 3.शब्दित *अ.क्रि.* होना/करना (जुड़ने पर)।

ध्वनितरंग *स्त्री.* (तत्.) ध्वनि की लहर।

ध्वनिनाला *स्त्री.* (तत्.) 1. वीणा 2. वेणु, वंशी।

ध्वनिनिक्षेपक *पुं.* (तत्.) ध्वनि को चारों दिशाओं में फैलाने वाला उदा. ध्वनिनिक्षेपक यंत्र।

ध्वनिवर्धक *पुं.* (तत्.) ध्वनि या आवाज की तीव्रता बढ़ाने वाला उदा. ध्वनिवर्धक यंत्र।

ध्वन्य *वि.* (तत्.) 1. ध्वनित होने योग्य 2. ध्वनित होने वाला 3. व्यंग्य।

ध्वन्यभिलेखक *वि.* (तत्.) ध्वनि यंत्र द्वारा ध्वनि लेखन या अंकन करने वाला। recorder

ध्वन्यमान *वि.* (तत्.) ध्वनित होने वाला।

ध्वन्यात्मक *वि.* (तत्.) 1. ध्वनिमय, ध्वनि से युक्त 2. जिसमें व्यंग्य प्रधान हो।

ध्वन्यार्थ *पुं.* (तत्.) वह अर्थ जिसका बोध वाच्यार्थ से न होकर व्यंजना वृत्ति द्वारा हो।

ध्वन्यालेख *पुं.* (तत्.) ध्वनि का अभिलेखन, रिकार्ड।

ध्वन्यालेखन *पुं.* (तत्.) ध्वनि के अभिलेखन की क्रिया, रिकार्ड।

ध्वस्त *वि.* (तत्.) 1. ढहा हुआ, टूटा-फूटा, खंडित, भग्न-नष्ट प्रयो. भूकंप से सारे मकान ध्वस्त हो गए 2. परास्त, पराजित।

ध्वस्ति *स्त्री.* (तत्.) ध्वंस, नाश।

ध्वांक्ष *पुं.* (तत्.) दे. ध्मांक्ष।

ध्वांत *पुं.* (तत्.) 1. अंधेरा, अंधकार 2. एक नरक, तमिस्र 3. एक मरुत।

ध्वांतचर *पुं.* (तत्.) निशाचर, राक्षस।

ध्वांतधाम *पुं.* (तत्.) नरक।

ध्वांतवित्त *पुं.* (तत्.) जुगनू, खद्योत।

ध्वांतशत्रु *पुं.* (तत्.) 1. सूरज 2. आग, अग्नि 3. चंद्रमा 4. उजला रंग 5. श्योनाक।

ध्वांतशात्र *पुं.* (तत्.) दे. ध्वांतशत्रु।

ध्वांताराति *पुं.* (तत्.) दे. ध्वांतशत्रु।

ध्वांतोन्मेष *पुं.* (तत्.) खद्योत, जुगनू।

ध्वान *पुं.* (तत्.) आवाज़, शब्द, नाद, गुंजन, भुनभुनाहट।

न

देवनागरी वर्णमाला का 20 वाँ वर्ण (त वर्ग का पाँचवा वर्ण) भाषा विज्ञान की दृष्टि से घोष, अल्पप्राण, अनुनासिक तथा वर्त्स्य व्यंजन, एक अव्यय के तौर पर इसका प्रयोग आज्ञा, विधि, हेतुहेतुमद्भाव आदि के प्रसंगों में तथा निषेधात्मक कथनों में नहीं के स्थान पर होता है।

नंग *वि.* (तद्.) 1. बेहया 2. नंगा 3. दुष्ट *पुं.* 1. नंगापन, नग्नता, गुप्त अंग 3. उपपति, *पुं.* (फा.) शर्म, लज्जा, हया।

नंगटा *वि.* (देश.) 1. नंगा 2. दुष्ट *पुं.* शिव।

नंगधड़ंग *वि.* (तद्.+तत्.) बिलकुल नंगा, सिर से पैर तक वस्त्ररहित प्रयो. बच्चे नंगधड़ंग पानी में खेल रहे थे।

नंगा *वि.* (तद्.) 1. जिसकी देह पर कोई वस्त्र न हो, विवस्त्र, वस्त्रहीन 2. बेशर्म, निर्लज्ज, बेहया 3. पाजी, लुच्चा 4. जिसके ऊपर कोई आवरण न हो जैसे- नंगी तलवार, नंगा सिर।

नंगाझोटी *पुं.* (देश.) दे. नंगाझोली।

नंगाझोली *स्त्री.* (देश.) छिपी वस्तु ढूँढने के उद्देश्य उद्देश्य से शरीर पर धारण किये गये वस्त्रों की भली-भाँति तलाशी प्रयो. मैं कोई चीज चुरा कर नहीं ले जा रहा, आप मेरी नंगाझोली ले सकते हैं।

नंगा-धड़ंगा *वि.* (तद्.) दे. नंगधडंग।

नंगा-नाच *पुं.* (तद्.) निर्लज्ज होकर किया जाने वाला सार्वजनिक रूप से अभद्र आचरण प्रयो. वहाँ पर भ्रष्टाचार का नंगा नाच चलता देख मैं दंग रह गया।

नंगाबुच्चा *वि.* (देश.) दे. नंगा बूचा।

नंगा बूचा *वि.* (देश.) परम निर्धन, जिसके पास कुछ भी न हो।

नंगियाना *स.क्रि.* (देश.) 1. किसी को विवस्त्र करना 2. सब कुछ छीन लेना 3. किसी की सच्चाई व्यक्त करना।

नंदंत *वि.* (तत्.) प्रसन्न करने वाला *पुं.* 1. पुत्र/बेटा 2. मित्र 3. राजा।

नंदंती *स्त्री.* (तत्.) बेटी, पुत्री।

नंद *पुं.* (तत्.) 1. गोकुल निवासी एक गोप जिनके यहाँ कृष्ण का पालन हुआ था 2. हर्ष 3. प्राचीन मगध के एक राजा जिनसे नंदवंश आरंभ हुआ 4. पुराण के अनुसार नौ निधियों में से एक *स्त्री.* *स्त्री.* (तद्.) पति की बहन, ननद।

नंदक *वि.* (तत्.) 1. आनंद या हर्ष प्रदान करने वाला, प्रसन्न करने वाला 2. संतोष प्रदान करने वाला *पुं.* (तत्.) 1. श्री कृष्ण का खड्ग 2. कार्तिकेय का एक अनुचर 3. मेढ़क।

नंदकि *स्त्री.* (तत्.) पिप्पली।

नंदकिशोर *पुं.* (तत्.) नंद के पुत्र, श्री कृष्ण।

नंदकी *पुं.* (तत्.) विष्णु।

नंद कुँवर *पुं.* (तद्.) दे. नंदकुमार।

नंदकुमार *पुं.* (तत्.) नंद-पुत्र कृष्ण।

नंदगाँव *पुं.* (तद्.) वृंदावन के एक गाँव का नाम जहाँ नंद गोप रहते थे और जहाँ कृष्ण का लालन-पालन हुआ था।

नंदगोपिता *स्त्री.* (तत्.) रास्ना या रायसन नामक औषधि।

नंदग्राम *पुं.* (तत्.) नंद गाँव।

नंदद *पुं.* (तत्.) आनंद देने वाला पुत्र *वि.* आनंद देने वाला, हर्षप्रद।

नंदनंद *पुं.* (तत्.) नंद के पुत्र श्री कृष्ण (नंद को आनंद देने वाला)।

नंदनंदन *पुं.* (तत्.) दे. नंदनंद।

नंदनंदिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. नंद की कन्या, दुर्गा 2. योगमाया।

नंदन *पुं.* (तत्.) 1. इंद्र के उपवन का नाम जो स्वर्ग में स्थित है, नंदन कानन 2. बेटा, लड़का

3. हर्ष, आनंद 4. 26 वां संवत्सर 4. कामाख्या का एक पर्वत 5. शिव 6. विष्णु 7. मेढ़क छंद. एक-समवर्मिक छंद जिसके प्रत्येक चरम में 18 वर्ण होते हैं *वि.* आनंद देने वाला।

नंदनकानन *पुं.* (तत्.) स्वर्ग स्थित इंद्र का अतिमनोरम उद्यान।

नंदनज *पुं.* (तत्.) 1. हरिचंदन 2. श्री कृष्ण।

नंदनद्रुम *पुं.* (तत्.) नंदन कानन के वृक्ष।

नंदन-प्रधान *पुं.* (तत्.) नंदनवन के स्वामी या प्रधान, इंद्र।

नंदन माला *पुं.* (तत्.) कृष्ण की प्रियमाला।

नंदनवन *पुं.* (तत्.) 1. इंद्र की वाटिका 2. कपास।

नंदना *अ.क्रि.* (तद्.) आनंदित होना, प्रसन्न होना *स्त्री.* पुत्री, बेटी।

नंदनी *स्त्री.* (तत्.) 1. पुत्री 2. लड़की 3. पार्वती 4. कामधेनु 5. गंगा 6. ननद।

नंदपाल *पुं.* (तत्.) वरुण।

नंदपुत्री *स्त्री.* (तत्.) दे. नंदनंदिनी।

नंद प्रयाग *पुं.* (तत्.) सात प्रयागों में से एक जो बदरिकाश्रम के निकट स्थित है।

नंदरानी *स्त्री.* (तद्.) नंद की पत्नी, यशोदा।

नंदरूख *पुं.* (तद्.) शहतूत का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ रेशम के कीड़ों को खिलाई जाती हैं।

नंदलाल *पुं.* (देश.) नंद के पुत्र, कृष्ण।

नंदवंश *पुं.* (तत्.)मगध का प्रसिद्ध एक ऐतिहासिक राजवंश जिसका विनाश चाणक्य की सहायता से चंद्रगुप्त ने किया था।

नंदा *वि./स्त्री.* (तत्.) आनंद देने वाली 1. स्त्री, दुर्गा 2. ननद 3. किसी पक्ष की प्रतिपदा, षष्ठी या एकादशी तिथि 4. ज्यो. एक प्रकार की संक्रांति 5. संगीत. मूर्च्छना का एक भेद 6. मिट्टी की नांद 7. संपत्ति 8. छंद-बरवै।

नंदातीर्थ *पुं.* (तत्.) हिमालय पर्वत श्रेणी के हेमकूट पर्वत पर स्थित एक तीर्थ का नाम।

नंदात्मज *पुं.* (तत्.) नंद के पुत्र, कृष्ण।

नंदात्मजा *स्त्री.* (तत्.) नंद की पुत्री, योगमाया।

नंदादेवी *पुं.* (तत्.) हिमालय की एक चोटी जिसकी ऊँचाई 25000 फुट से भी अधिक है।

नंदापुराण *पुं.* (तत्.) एक उपपुराण जिसमें नंदा नामक देवी का माहात्म्य वर्णित है।

नंदि *पुं.* (तत्.) 1. शिव का वाहन नंदिकेश्वर 2. आनंद 3. पूर्ण आनंदमय 4. नाटक में नांदीपाठ करने वाला व्यक्ति, द्यूत 5. विष्णु 6. शिव *स्त्री. स्त्री.* प्रसन्नता आनंद।

नंदिका *स्त्री.* (तत्.) 1. पशुओं को पानी पिलाने के लिए या जल संग्रह के लिए बनाई गई मिट्टी की नांद 2. नंदन वन 3. किसी पक्ष की प्रतिपदा षष्ठी और एकादशी तिथि 4. नंदनकानन 5. हंसमुख स्त्री। स्त्री।

नंदिकेश *पुं.* (तत्.) दे. नंदिकेश्वर।

नंदिकेश्वर *पुं.* (तत्.) 1. शिव का वाहन 2. एक उपपुराण 3. शिव 4. शिव के द्वारपाल।

नंदिग्राम *पुं.* (तत्.) अयोध्या के निकट का एक गाँव जहाँ राम के वन से लौटने तक भरत ने तपस्या की थी।

नंदिघोष *पुं.* (तत्.) 1. अर्जुन का रथ जिसे अग्निदेव ने उन्हें दिया था 2. मंगल ध्वनि 3. हर्षध्वनि 4. बंदीजन का घोष *वि.* जिसकी ध्वनि सुन कर हर्ष अथवा प्रसन्नता हो।

नंदित *वि.* (तत्.) आनंदित, प्रसन्न, सुखी (देश.) नाद करता या बजता हुआ या बजाता हुआ।

नंदितरु *पुं.* (तत्.) धव या धौ नामक वृक्ष।

नंदितूर्य *पुं.* (तत्.) फूँक कर बजाया जाने वाला एक प्राचीन बाजा जिसे आनंद के अवसरों पर बजाया जाता था।

नंदिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. बेटी, पुत्री 2. दुर्गा 3. तुलसी का पौधा 4. कामधेनु की पुत्री 5. पत्नी।

नंदि पटह *पुं.* (तत्.) उत्सवों आदि में बजने वाला नगाड़ा।

नंदि पुराण *पुं.* (तत्.) देवी पुराण का एक उप पुराण जो नंदि द्वारा वर्णित है।

नंदिमुख *पुं.* (तत्.) 1. शिव का एक नाम 2. एक विशेष पक्षी 3. एक प्रकार का चावल।

नंदिमुखी *स्त्री.* (तत्.) तंद्रा आयु. एक चिड़िया जिसकी चोंच का ऊपरी हिस्सा कठोर और गोलाई लिए हुए हो, इस पक्षी का मांस पित्तनाशक, मीठा, शुक्रवर्धक कहा गया हैं।

नंदिवर्धन *पुं.* (तत्.) 1. शिव 2. बेटा, पुत्र 3. वास्तुशास्त्रानुसार एक विशेष प्रकार का मंदिर 4. एक तरह का प्राचीन विमान बिंबसार का पुत्र *वि.* आनंद बढ़ाने वाला।

नंदिवृक्ष *पुं.* (तत्.) 1. मेसिंगी 2. तुन नामक वृक्ष।

नंदी *पुं.* (तत्.) 1. शिव का वाहन 2. शिव का एक प्रमुख गण 3. नाट्य. नाटक में नांदीपाठ करने वाला व्यक्ति 4. दाग कर छोड़ा गया साँड़ 5. विष्णु 6. बरगद का पेड़ 7. धव का पेड़ *वि.* आनंद युक्त, जो प्रसन्न हो।

नंदीऊ *पुं.* (देश.) नंदोई, ननद का पति।

नंदीगण *पुं.* (तत्.) शिव के द्वारपाल, बैल, साँड़।

नंदीघंटा *पुं.* (तत्.) बैलों के गले में बाँधा जाने वाला बिना डंडी का घंटा।

नंदीपति *पुं.* (तत्.) नंदी के स्वामी, शिव।

नंदीश *पुं.* (तत्.) 1. नंदीश्वर 2. शिव के पार्श्वचरों का स्वामी संगीत. ताल का एक भेद।

नंदोई *पुं.* (देश.) ननद का पति, पति का बहनोई।

नंद्यावर्त *पुं.* (तत्.) 1. वास्तु. ऐसा भवन जिसमे पश्चिम दिशा में द्वार नहीं बनाया गया हो 2. तगर नामक औषधीय वृक्ष।

नंबर *पुं.* (अ.) 1. संख्या, अंक, अदद 2. गणना 3. गज, 36 इंच की एक माप।

नंबरदार *पुं.* (अं.+फा.) अंग्रेजी शासन के दौरान गाँव का वह जमींदार जो अपनी पट्टी के दूसरे हिस्सेदारों से मालगुजारी वसूल करने में सहायक होता था।

नंबरदारी *स्त्री.* (अं.+फा.) नंबरदार होने की अवस्था, अवस्था, पद या भाव।

नंबरवार *क्रि.वि.* (अं.+तत्.) क्रमानुसार, सिलसिलेवार।

नंबरी *वि.* (देश.) 1. नंबर वाला 2. मानक, पेटेंट 3. लाक्ष. कुख्यात उदा. वह नंबरी चोर है।

नंबरीगज *पुं.* (देश.+फा.) नाप-तौल की अंग्रेजी गणना के अनुसार कपड़े मापने का गज जो 36 इंच लंबा होता है।

नंबरीचोर *पुं.* (देश.) कुख्यात चोर जिसका नाम पुलिस की फाइलों में विशेष रूप से रहता है।

नंबरीनोट *पुं.* (देश.+अं.) 1. सौ रुपये या अधिक मूल्य वाली करेंसी 2. सबसे अधिक मूल्य।

नंबूदरी *पुं.* (तत्.) मालाबार (केरल) के ब्राह्मणों की एक जाति, जो उस क्षेत्र में अत्यंत पवित्र मानी जाती है।

नंस *पुं.* (देश.) नाश *वि.* नष्ट।

नंसना *स.क्रि.* (तद्.) नाश करना *अ.क्रि.* नाश होना।

न (अव्य.) निषेधामक कथनों में 'नहीं', 'मत' के अर्थ में प्रयुक्त प्रयो. आप कुछ भी न कहें तब भी मैं समझ लूँगा 2. प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में सकारात्मक उत्तर की अपेक्षा में प्रयुक्त 'कि नही' अथवा 'या नहीं' की तरह प्रयो. कल तुम कॉलेज जा रहे हो ना 3. एक ही समान क्रिया की पुनरावृत्ति के बीच में आने पर 'उसी समय' 'तत्काल', 'तुरंत' के अर्थ में प्रयुक्त होता है 4. बल देने के लिए प्रयो. जब तुम बड़े होगे न, तब इस बात को समझ लोगे

नइया *स्त्री.* (देश.) नाव, नौका मुहा. नइया डूबना-अस्तित्व खतरे में पड़ना; नइयां उबारना-अस्तित्व को खतरे से बचाना।

नइहर *पुं.* (देश.) नैहर, मायका, विवाहिता स्त्रियों की माता का घर।

नई *वि.* (तद्.) 'नया' का स्त्री. रूप, नवीन।

नउ *वि.* (तद्.) 1. नया 2. नौ (आठ और एक) *पुं.* नौ की संख्या।

नउआ *पुं.* (देश.) नाऊ, नापित या हज्जाम (क्षुद्रता सूचक शब्द, शुद्ध शब्द नाई या नाऊ), *स्त्री.* नाइन।

नउका *स्त्री.* (तद्.) दे. नौका।

नउतीया *पुं.* (देश.) दे. न्योताहरी, नेवतहरी।

नउनियाँ *स्त्री.* (देश.) 'नाइन', नाउन, नाई जाति की की स्त्री।

नउनिया *स्त्री.* (देश.) दे. नउनियाँ।

नउवन *पुं.* (तत्.) नरसल का वन।

नएपंज *पुं.* (देश.) पाँच साल की उम्र का घोड़ा, जवान घोड़ा।

नककटा *वि.* (देश.) 1. जिसकी नाक कट गई हो 2. ला.अर्थ. जिसकी बहुत अप्रतिष्ठा या बदनामी हुई हो 3. निर्लज्ज, बेशर्म, बेहया।

नककटी *वि./स्त्री.* (देश.) 1. जिसकी नाक कट गई हो 2. ला.अर्थ. जिसकी अप्रतिष्ठा, बदनामी, या दुर्दशा हुई हो 3. निर्लज्ज, बेशर्म।

नकगर्भ *पुं.* (तत्.) 1. गुप्त प्रेमी 2. नायक द्वारा किया कार्य जो गुप्त रहे।

नकचढ़ा *वि.* (देश.) चिड़चिड़ा, बदमिजाज प्रयो. वह बहुत ही नकचढ़ा है, थोड़ी गलती होते ही चिल्लाने लगता है *स्त्री.* नकचढ़ी।

नकछिकनी *स्त्री.* (देश.) एक किस्म की घास जिसके घुंडीदार फूलों को सूंघने से छींक आने लगती है।

नकटा *पुं.* (देश.) 1. विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले गीतों का एक प्रकार 2. बत्तख की जाति का एक पक्षी जिसके नर की चोंच पर काला दाना या मांस खंड लगा होता है *वि.* 1. जिसकी नाक कटी हो 2. निर्लज्ज, बेहया, बेशर्म 3. अप्रतिष्ठित, दुर्दशाग्रस्त।

नकटी *वि.* (देश.) 1. जिसकी (स्त्री) नाक कटी हो 2. बेहया, बेशर्म (स्त्री) *स्त्री.* नाक का मैल।

नकड़ा *पुं.* (देश.) बैलों का एक रोग जिसमें उनके नाक में सूजन आ जाती है जिससे सांस लेने में कष्ट होता है।

नकतोड़ *पुं.* (देश.) कुश्ती का एक पेंच।

नकतोड़ा *पुं.* (देश.) गर्व से नाक-भौं चढ़ाकर नखरे से बात करने या व्यवहार करने वाला व्यक्ति मुहा. नकतोड़े उठाना- अनुचित अभिमान या नखरा बर्दास्त करना; नकतोड़े तोड़ना- अत्यधिक अनुचित नखरा करना।

नकतोरा *पुं.* (तत्.) दे. नकतोड़ा।

नकद *पुं.वि.* (तद्.) लेन-देन के लिए तैयार धनराशि, नगद।

नकदावा *पुं.* (देश.) चने या मटर की दाल के साथ पकाई हुई बड़ियाँ या कुम्हड़ौरी।

नकदी *पुं.* (तद्.) दे. नगदी, लेन-देन के लिए धनराशि।

नकधिसनी *स्त्री.* (देश.) 1. बहुत अधिक दीनता प्रदर्शित करने वाली स्त्री 2. नाक को जमीन पर रगड़ना।

नकना *स.क्रि.* (देश.) 1. उल्लंघन करना 2. त्यागना, छोड़ना 3. नाक में दम करना *अ.क्रि.* किसी परेशानीवश नाक में दम होना।

नकफूल *पुं.* (देश.) नाक में पहना जाने वाला फूल की आकृति का आभूषण, लौंग, कील।

नकब *स्त्री.* (अर.) सेंध।

नकबजन *पुं.* (अर.) सेंध लगाने वाला।

नकबजनी *स्त्री.* (अर.) किसी के घर में नकब या सेंध लगाने की क्रिया।

नकबेसर *स्त्री.* (देश.) नाक में पहनी जाने वाली छोटी नथ, बेसर।

नकमोती *पुं.* (देश.) नाक में आभूषण के तौर पर पहना जाने वाला मोती।

नकलनोर *पुं.* (देश.) एक छोटी चिड़िया जिसे सुंदरता के कारण घरों में पाला जाता है, मुनिया।

नकलेल *स्त्री.* (तत्.) 1. नाव खींचने के लिए आगे बँधी-रसी 2. नकेल।

नकलोल *वि.* (देश.) 1. ऐसा व्यक्ति जिसकी नाक जिधर चाहे घुमाई जा सके 2. मूर्ख, निर्बुद्धि 3. भद्दी या बेडोल नाक वाला।

नकवा *पुं.* (देश.) 1. नया अंकुर, कल्ला 2. तराजू, सूई इत्यादि का छिद्र 3. नाक।

नकशा *पुं.* (अर.) दे. नक्शा।

नकशानवीस *पुं.* (अर.) दे. नक्शा नवीस।

नकस *पुं.* (अर.) दे. नक्श।

नकसा *पुं.* (अर.) दे. नक्शा।

नकसीर *स्त्री.* (तद्.) नाक से खून बहने की बीमारी या रोग।

नकाना *अ.क्रि.* (देश.) नाक में दम होना, तंग आना *स.क्रि.* 1. नाक में दम करना 2. तंग करना, परेशान करना 3. लाँघने में प्रवृत्त करना।

नकाब *पुं.* (अर.) चेहरा छिपाने के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला कपड़ा प्रयो. आतंकवादियों ने नकाब डाल रखे थे इसलिए पहचाने नहीं जा सके मुहा. नकाब उलटना-असिलयत दिखलाना; बेनकाब करना- आवरण हटाकर सच्चाई दिखलाना।

नकाबपोश *पुं./वि.* (अर.) 1. जिसने चेहरे पर नकाब डाल रखा हो प्रयो. रात में दो-चार नकाबपोश आकर उसके घर से सारी मूल्यवान वस्तु उठा कर ले गये 2. जो अपने चेहरे को सदा छिपाए रहता हो।

नकार *पुं.* (तत्.) 'न' अक्षर या वर्ण 1. अस्वीकृति या निषेध की सूचना देने वाला या बोध कराने वाला शब्द 2. इनकार, अस्वीकृति।

नकारची *पुं.* (अर.) दे. नक्कारची।

नकारना *अ.क्रि.* (तद्.) अस्वीकृत करना, इनकार करना।

नकारा *वि.* (देश.) 1. निकम्मा 2. खराब, बुरा 3. निष्प्रयोजन, व्यर्थ, निष्कर्म *पुं.* (अर.) नगाड़ा।

नकारात्मक *वि.* (तत्.) जिसमें कोई बात इनकार या अस्वीकार की गई हो विलो. सकारात्मक।

नकारात्मकता *स्त्री.* (तत्.) अस्वीकृति, नकार।

नकाश *पुं.* (अर.) दे. नक्काश।

नकाशना *स.क्रि.* (देश.) नक्काशी करना।

नकाशी *पुं. स्त्री.* (अर.) दे. नक्काशी।

नकाशीदार *वि.* (अर.) दे. नक्काशीदार।

नकास *पुं.* (अर.) दे. नक्काश।

नकासी *पुं.स्त्री.* (अर.) दे. नक्काशी।

नकासीदार *वि.* (अर.) दे. नक्काशीदार।

नकिंचन *वि.* (तत्.) जिसके पास कुछ भी न हो। अत्यंत दरिद्र, अकिंचन।

नकियाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. अनुनासिकता के साथ बोलना 2. नाक में दम होना *स.क्रि.* नाक में दम करना, बहुत परेशान या तंग करना।

नकीब *पुं.* (अर.) 1. राजाओं आदि की सवारी के आगे उनके पूर्वजों के यश का गान करते हुए चलने वाला व्यक्ति 2. चारण, भाट 3. कड़खा (वीरों की प्रशंसा या योद्धाओं को उत्साहित करने के लिए गाया जाने वाला गीत) गाने वाला व्यक्ति, कड़खैल।

नकुच *पुं.* (तत्.) मदार का पौधा।

नकुट *पुं.* (तत्.) नाक।

नकुल *पुं.* (तत्.) 1. नेवला 2. पांडवों में से चौथे भाई का नाम *वि.* कुलरहित।

नकुलक *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार का प्राचीन आभूषण 2. रुपया रखने की थैली।

नकुल तैल *पुं.* (तत्.) आयु. वैद्यक में प्रयुक्त एक प्रकार का तेल जो नेवले के माँस में बहुत सी

औषधियों को मिला कर बनाया जाता है, यह तेल आमवात, कमरदर्द आदि में लाभदायक होता है।

नकुलांध *पुं.* (तत्.) आयु. सुश्रुत के अनुसार आँख का एक रोग *वि.* जिसे उक्त प्रकार का रोग होता है।

नकुलांधता *पुं.* (तत्.) आयु. नकुलांध रोग होने की अवस्था या भाव।

नकुला *स्त्री.* (तत्.) पार्वती।

नकुलाढ्या *स्त्री.वि.* (तत्.) ऐसी स्त्री जिसका कोई कुल न हो 2. आयु. गंधनाकुली या नकुल कंद नामक औषधि।

नकुली *स्त्री.* (तत्.) 1. नेवले की मादा, नेवली 2. केसर 3. जटामासी 4. शंखवनी।

नकुवा *पुं.* (देश.) 1. नाक 2. तराजू की डंडी का सूराख।

नकेल *स्त्री.* (देश.) ऊँट, भालू बैल आदि की नाक में में बँधी रस्सी जिसके सहारे उन्हें इच्छानुसार चलाया जाता है ला.अर्थ. किसी को अपने वश में करने का उपाय मुहा. नकेल हाथ में होना- किसी पर पूरा वश होना; नकेल कसना- नियंत्रण में करना।

नक्का *पुं.* (देश.) 1. सूई का छिद्र 2. ताश का एक्का 3. कौड़ी।

नक्कादूआ *पुं.* (देश.) कौड़ियों से खेला जाने वाला एक किस्म का जुआ, नक्कीमूठ।

नक्कार *पुं.* (तत्.) अवज्ञा, अपमान, तिरस्कार, अवहेलना।

नक्कारखाना *पुं.* (अर.) दुंदुभी, भेरी, नगाड़ा, धौंसा नक्कारा (नगाड़ा) या नौबत बजने का स्थान, नौबतखाना मुहा. नक्कारखाने में तूती की आवाज- शोर-गुल में धीमी आवाज का न सुनाई पड़ना, बड़े लोगों के समक्ष छोटे लोगों की बात का न सुना जाना।

नक्कारची वि./पुं. (अर.+तु.) 1. नक्कारा और नौबत बजाने वाला 2. शहनाई और नौबत बजाने वाली कौम।

नक्कारा *पुं.* (अर.) नगाड़ा, डुग-डुगी, धौंसा, डंका, नौबत, दुंदभी मुहा. नक्कारा बजाते फिरना- डुगडुगी पीटते फिरना, प्रचार करना; नक्कारे की चोट पर- खुल्लम खुल्ला।

नक्काल *पुं.* (अर.) 1. नकल करने वाला जैसे- बाजार में नकली उत्पाद को देख कर एक प्रसिद्ध कंपनी ने नक़्कालों से सावधान करते हुए अखबारों में विज्ञापन छपवाया है 2. दूसरों की नकल करने वाला, भाँड 3. बहुरूपिया, नकलची।

नक्काली *स्त्री.* (अर.) 1. नकल या नक्काल का कार्य 2. भाँड या बहुरूपिए की कला या विद्या।

नक्काश *पुं.* (अर.) 1. पत्थर, लकड़ी आदि पर नक़्क़ाशी करने वाला कारीगर 2. चित्रकार 3. रंगसाज।

नक्काशी *स्त्री.* (अर.) 1. धातु पत्थर, लकड़ी आदि पर खुरच कर बेल-बूटे बनाने का काम या विद्या 2. उक्त प्रकार से बनाए हुए बेल-बूटे आदि।

नक़्क़ाशीदार *वि.* (अर.+फा.) जिस पर बेलबूटे खुदे हों या चित्र बने हों, नक्काशी से युक्त।

नक्की *वि.स्त्री.* (देश.) 1. 'एक' का चिह्न 2. कौड़ी खेल का एक दाँव जो 'एक' के चिह्न से जीता जाए 3. नाक से किया जाने वाला वह उच्चारण जो अनुनासिक की तरह लगे *वि.* 1. ठीक, दुरूस्त 2. पक्का 3. चुकता, चुकाया हुआ उदा. हिसाब नक्की करना।

नक्कू *वि.* (देश.) 1. बड़ी नाक वाला 2. अपने-आप को दूसरों से अधिक प्रतिष्ठित या बढ़कर समझने वाला 3. बुरा समझा जाने वाला, बदनाम, जिसकी ओर सभी उँगलियाँ उठाएँ।

नक्तंचर *वि.* (तत्.) रात में विचरण करने वाला *पुं.* 1. राक्षस 2. चोर 3. उल्लू 4. बिल्ली।

नक्तंचरी *स्त्री.* (तत्.) राक्षसी।

नक्तंचर्या *स्त्री.* (तत्.) रात्रि में भ्रमण, रात का विचरण।

नक्तंचारी *पुं.* (तत्.) दे. नक्तचारी।

नक्तंजात *पुं.* (तत्.) वेदों में उल्लिखित एक प्राचीन औषधि।

नक्तंदिन *पुं./अव्य.* (तत्.) रात-दिन।

नक्तंदिव *पुं.* (अव्य.) दे. नक्तंदिन।

नक्त *पुं.* (तत्.) 1. संध्या का पूर्णकालिक समय 2. वह समय जब दिन का केवल एक मूहूर्त शेष रह गया हो 3. अगहन के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को किया जाने वाला व्रत 4. रात, रात्रि *वि.* जो शरमा गया हो, लज्जित।

नक्तक *पुं.* (तत्.) 1. जीर्ण-शीर्ण वस्त्र 2. मैला-कुचैला वस्त्र।

नक्तचर *वि.* (तत्.) रात में विचरण करने वाला *पुं.* 1. राक्षस 2. शिव 3. उल्लू 4. बिल्ली।

नक्तचर्या *स्त्री.* (तत्.) रात्रि में भ्रमण करना।

नक्तचारी *वि.* (तत्.) रात में विचरण करने वाला *पुं.* 1. उल्लू 2. चोर 3. राक्षस 4. बिल्ली।

नक्तभोजन *पुं.* (तत्.) रात का भोजन।

नक्तभोजी *वि.* (तत्.) 1. रात्रि में भोजन करने वाला 2. नक्त व्रत करने वाला।

नक्तमुखा *स्त्री.* (तत्.) रात।

नक्तव्रत *पुं.* (तत्.) अगहन (मार्गशीर्ष) के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को किया जाने वाला व्रत, रात को तारे देखकर विष्णु की पूजा करके भोजन किया जाता है।

नक्तांध *वि.* (तत्.) जिसे रात को न दिखाई दे, जिसे रतौंधी हो।

नक्तांधता *स्त्री.* (तत्.) रतौंधी, रात को न दिखाई पड़ने का रोग।

नक्तांध्य *पुं.* (तत्.) दे. नक्तांधता।

नक्ता *स्त्री.* (तत्.) 1. कलियारी नामक एक विषैला पौधा 2. हलदी 3. रात्रि।

नक्द *पुं.* (अर.) 1. धनराशि के लेन देन में प्रयुक्त रुपया-पैसा विलो. उधार 2. वह धन जो सिक्कों के रूप में हो *वि.* प्रस्तुत, अच्छा।

नक्दी *स्त्री.* (अर.) रोकड़ या नगदी।

नक्दी चिट्ठा *पुं.* (अर.+देश.) रोकड़ बही।

नक्र *पुं.* (तत्.) 1. नाक नामक जल जंतु 2. घड़ियाल, मगर 3. नासिका।

नक्रराज *पुं.* (तत्.) 1. घड़ियाल 2. मगर 3. नाक नामक एक बड़ा जलजंतु।

नक्ल *स्त्री.* (अर.) प्रतिरूप, अनुकृति, लेख आदि की की प्रतिलिपि, किसी के आचरण, हावभाव आदि का हूबहू प्रस्तुतीकरण।

नक्ल नवीस *पुं.* (अर.) लेखों की प्रतिलिपि करने वाला कर्मचारी।

नक्लनवीसी *स्त्री.* (अर.) नकल नवीस का कार्य या या पद।

नक्लबही *स्त्री.* (अर.) वह बही जिसमें हुंडी, लेनदेन लेनदेन के कागजों आदि की नकल या प्रतिलिपि सुरक्षित रखी जाती है।

नक्श *वि.* (अर.) 1. अंकित किया गया 2. चित्रित किया गया 3. लिखा हुआ 4. जिस पर नक्काशी का काम हुआ हो मुहा. नक्श होना- अंकित हो जाना; मन में नक्श कर लेना- मन में कोई बात अच्छी तरह बिठा लेना *पुं.* (तत्) 1. पत्थर, लकड़ी आदि पर खुरच कर बनाए गए बेल-बूटे, चिह्न आदि 2. चित्र या तस्वीर बनाना 3. मुहर, छाप या ठप्पे का निशान 4. आकृति का सौंदर्य उदा. वह एक तीखे नयन-नक्श वाली लड़की थी।

नक्श निगार *पुं.* (अर.) खुरच कर बनाया हुआ बेल-बूटा या नक्काशी।

नक्शदार *वि.* (अर.+फा.) जिस पर नक्श हो, बेलबूटेदार।

नक्श बंद *पुं.* (अर.) नक़्शा या चित्र बनाने वाला व्यक्ति।

नक्शबंदी *स्त्री.* (अर.) नक्शा या चित्र बनाने का काम।

नक्शा *पुं.* (अर.) 1. रेखाओं द्वारा किसी आकार आदि का निर्देश जैसे- मकान का नक्शा 2.

प्राकृतिक या अन्य विशेषताओं की जानकारी देने वाला पृथ्वी के किसी भाग अथवा खगोल का चित्र 3. आकृति, ढाँचा, बनावट, गढ़ना, चेहरा-मोहरा, शक्ल प्रयो. रंग साँवला है पर नक्श ठीक हैं मुहा. नक्शा बिगाड़ना- आकृति बिगाड़ना 4. चित्र, तस्वीर, प्रतिमूर्ति मुहा. (आँखों के सामने) नक्शा खिंच जाना- मन में तस्वीर उभर आना 5. चाल-ढाल प्रयो. आजकल उसके नक्शे बदले हुए हैं 6. दिखावा मुहा. नक्शे मारना- दिखावा करना।

नक्शानवीस *पुं.* (अर.) नक्शा बनाने वाला।

नक्शानवीसी *स्त्री.* (अर.) नक्शा बनाने का काम।

नक्शी *वि.* (अर.) जिस पर बेलबूटे बने हों।

नक्शेबाज *पुं.* (अर.फा.) कृत्रिम दिखावा करने वाला व्यक्ति।

नक्शेबाजी *स्त्री.* (अर.+फा.) दिखावा, कृत्रिमता।

नक्शोनिगार *पुं.* (फा.+अर.) दे. नक्शनिगार।

नक्षत्र *पुं.* (तत्.) 1. तारा 2. सूर्य की परिक्रमा करती हुई पृथ्वी के पथ में पड़ने वाले तारों के वे समूह जिन्हें विशेष नाम दिया गया है, समूचे पथ को 27 भागों में विभक्त किया गया है इस प्रकार नक्षत्रों की संख्या 27 मानी गई है 3. मोती 4. 27 मोतियों का हार।

नक्षत्रकल्प *पुं.* (तत्.) अथर्ववेद का एक कल्प जिसमें चंद्रमा की स्थिति का तथा कृत्तिका आदि नक्षत्रों की पूजा का वर्णन है।

नक्षत्रगण *पुं.* (तत्.) ज्यो. विशिष्ट नक्षत्रों के समूह जिनका अलग-अलग नाम तथा फल है, नक्षत्रों का समूह।

नक्षत्र चक्र *पुं.* (तत्.) खगोल. 1. आकाशस्थ-27 नक्षत्रों का वह समूह जिसमें से होकर चंद्रमा प्रतिमाह पृथ्वी की परिक्रमा पूरी करता है ज्यो. 1. राशि चक्र 2. तांत्रिकों का चक्र, तांत्रिकों के पूजन में नक्षत्र विचार करके कौन सा मंत्र दिया जाता है, यह तय किया जाता है।

नक्षत्रदर्श *पुं.* (तत्.) ज्यो. 1. नक्षत्र देखने वाला 2. ज्योतिषी।

नक्षत्रदान *पुं.* (तत्.) ज्यो. भिन्न-भिन्न नक्षत्रों में भिन्न-भिन्न पदार्थों के दान का विधान।

नक्षत्र दृष्टि *स्त्री.* (तत्.) तारा टूटना, उल्कापात।

नक्षत्रनाथ *पुं.* (तत्.) ज्यो. चंद्रमा।

नक्षत्रनेमि *पुं.* (तत्.) ज्यो. 1. ध्रुवतारा 2. चंद्रमा 3. विष्णु *स्त्री.* रेवती नामक नक्षत्र।

नक्षत्रप *पुं.* (तत्.) ज्यो. चंद्रमा।

नक्षत्रपति *पुं.* (तत्.) ज्यो. चंद्रमा।

नक्षत्रपथ *पुं.* (तत्.) ज्यो. नक्षत्रों के भ्रमण का मार्ग, आकाश।

नक्षत्रपाठक *पुं.* (तत्.) ज्योतिषी, नक्षत्र पढ़ने वाला।

नक्षत्रपुरुष *पुं.* (तत्.) ज्यो. 1. नक्षत्रों की उसकी समग्रता में पुरुष रूप में कल्पना 2. एक व्रत।

नक्षत्र माला *स्त्री.* (तत्.) 1. सत्ताईस मोतियों वाला हार 2. तारक समूह 3. हाथियों को पहनाया जाने वाला गले का हार।

नक्षत्रमालिनी *स्त्री.* (तत्.) फूलों की एक लता का नाम *वि.* नक्षत्रों की माला वाली।

नक्षत्रयाजक *पुं.* (तत्.) ग्रह-नक्षत्रों के दोष की शांति के लिए मंत्र-जाप, पूजन, हवन आदि करवाने वाला ब्राह्मण।

नक्षत्रयोग *पुं.* (तत्.) किसी विशिष्ट नक्षत्र में क्रूर ग्रहों का विशिष्ट योग।

नक्षत्रयोनि *पुं.* (तत्.) विवाह के लिए वर्जित नक्षत्र।

नक्षत्रराज *पुं.* (तत्.) नक्षत्रों का स्वामी, चंद्रमा।

नक्षत्रलोक *पुं.* (तत्.) 1. नक्षत्रों का लोक अर्थात् जिसमें तारों का समूह स्थित हो 2. आकाश।

नक्षत्रवर्त्म *पुं.* (तत्.) आकाश।

नक्षत्रविद्या *स्त्री.* (तत्.) 1. ज्योतिष विद्या 2. खगोल विज्ञान।

नक्षत्रवीथि *स्त्री.* (तत्.) ज्योतिष के अनुसार तीन-तीन नक्षत्रों के बीच का कल्पित-मार्ग।

नक्षत्र व्यूह *पुं.* (तत्.) ज्यो. फलित ज्योतिष का वह चक्र जिसमें विभिन्न पदार्थों, जातियों आदि के स्वामी नक्षत्र को दर्शाया जाता है।

नक्षत्रव्रत *पुं.* (तत्.) नक्षत्र विशेष के लिए किया जाने वाला व्रत।

नक्षत्रशूल *पुं.* (तत्.) ज्यो. विशिष्ट नक्षत्र की दिशा को ध्यान में रखकर किसी विशेष दिशा में यात्रा का निषेध।

नक्षत्रसंधि *स्त्री.* (तत्.) नक्षत्र के पूर्व पक्ष से उत्तर पक्ष में चंद्रमा आदि ग्रहों के प्रविष्ट होने की संधि या समय।

नक्षत्रसत्र *पुं.* (तत्.) नक्षत्रों के लिए किया जाने वाला विशेष यज्ञ।

नक्षत्रसाधन *पुं.* (तत्.) ज्यो. नक्षत्र विशेष पर ग्रह विशेष की स्थिति की गणना।

नक्षत्रसूचक *पुं.* (तत्.) वह ज्योतिषी जो बिना शास्त्र पढ़े ज्योतिष का कार्य कर रहा हो, अयोग्य अयोग्य ज्योतिषी।

नक्षत्रसूची *पुं.* (तत्.) दे. नक्षत्र सूचक।

नक्षत्रामृत *पुं.* (तत्.) ज्यो. फलित ज्योतिष के मुताबिक यात्रा आदि कार्यों के लिए उत्तम योग, यात्रा के उपयुक्त किसी विशिष्ट दिन में पड़ने का का शुभ योग।

नक्षत्रिय *वि.* (तत्.) 1. नक्षत्र-संबंधी 2. क्षत्रिय से भिन्न 3. सत्ताईस।

नक्षत्री *वि.* (तत्.) 1. अच्छे नक्षत्र में जन्म लेने वाला 2. भाग्यवान।

नक्षत्रेश *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. कपूर।

नक्षत्रेश्वर *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

नक्षत्रेष्टि *पुं.* (तत्.) नक्षत्रों के लिए किया जाने वाला यज्ञ।

नख *पुं.* (तत्.) 1. नाखून 2. घोंघे या सीप का नाखून के समान चंद्राकार मुखावरण 3. खंड 4. बीस की संख्या 5. एक गंध द्रव्य *स्त्री.* (फा.) 1. बटा हुआ महीन रेशमी धागा 2. पतंग की डोर।

नखकर्तनी *स्त्री.* (तत्.) नहरनी, नाखून काटने का औजार।

नखकुट्ट *पुं.* (तत्.) नाई, हज्जाम।

नखक्षत *पुं.* (तत्.) 1. नाखून की खरोंच से शरीर पर बना चिह्न 2. स्त्री-शरीर पर विशेष रूप से स्तन आदि में पुरुष के मर्दन के कारण नाखूनों से बना चिह्न।

नखखादी *पुं.* (तत्.) दाँतों से नाखून चबाने वाला।

नखचारी *पुं.* (तत्.) पंजे के बल चलने वाले प्राणी।

नखच्छत *पुं.* (तद्.) नखक्षत।

नखजाह *पुं.* (तत्.) नखमूल, नाखून का पिछला भाग।

नखत *पुं.* (तद्.) दे. नक्षत्र।

नखतपति *पुं.* (तद्.) दे. नक्षत्रपति।

नखतराज *पुं.* (तद्.) चंद्रमा।

नखत्र *पुं.* (तद्.) दे. नक्षत्र।

नखदारण *पुं.* (तत्.) 1. नहरनी 2. बाज, पक्षी।

नखना *अ.क्रि.* (देशज.) 1. उल्लंघन होना 2. लाँघा जाना 3. ढाँका जाना *स.क्रि.* 1. उल्लंघन करना, पार करना 2. लाँघना, नष्ट करना।

नखपद *पुं.* (तत्.) नाखून गड़ने से बना चिह्न।

नखपर्णी *स्त्री.* (तत्.) बिच्छू अथवा बिछुवा (वृश्चिक) घास।

नखपुंजफला *स्त्री.* (तत्.) सफेद सेम।

नखपुष्पी *स्त्री.* (तत्.) आयु. पृक्का नामक गंध द्रव्य।

नखमुच *पुं.* (तत्.) 1. चिरौंजी का पौधा 2. धनुष।

नखरंजनी *स्त्री.* (तत्.) 1. नाखून काटने का औजार, नहरनी 2. नाखून रंगने का रंग, ब्रश आदि।

नखर *पुं.* (तत्.) 1. नख, नाखून 2. नाखूनों जैसा तेज प्राचीन काल का एक शस्त्र 3. तेज नाखूनों वाला प्राणी।

नखरा *पुं.* (फा.) 1. प्रियतम को प्रसन्न करने के लिए की जाने वाली चपलता, चुलबुलापन 2.

अहंभाव दिखलाने के लिए किए जाने वाले अनावश्यक क्रिया कलाप जैसे- मैं अमुक वस्तु नहीं खाता, मुझे तो ऐसी ही आदत है इत्यादि बोलना या प्रदर्शन करना इत्यादि 3. नाज नखरा मुहा. नखरा उठाना- खुशामद करना; नखरा बखारना- अपना बड़पन जताना।

नखरायुध/नखयुध *पुं./वि.* (तत्.) नाखूनों को शस्त्र की तरह प्रयोग करने वाला, शेर, चीता, कुत्ता, बिल्ली, मुर्गा आदि प्राणी।

नखरेबाज *पुं.वि.* (फा.) नखरा करने वाला व्यक्ति, नखरीला।

नखरौट *स्त्री.* (देश.) नाखून की खरौट, शरीर पर नाखून चुभाने से पड़ा निशान, नाखूनों से किए गए घावों के निशान।

नखविष्किर *पुं.* (तत्.) शिकार को नाखूनों से फाडकर खाने वाला जानवर जैसे- शेर, बाज आदि टि. शास्त्रों में ऐसे जानवरों का माँस खाना निषिद्‌ध है।

नखवृक्ष *पुं.* (तत्.) नील का पेड़।

नखशिख *क्रि.वि.* (तत्.) पैर के नाखूनों से लेकर चोटी तक 1. आमूल चूल 2. पूर्णतया *पुं.* 1. नख से शिख तक, पैर के सिर तक के 14 अंग 2. वह काव्य जिसमें किसी देवता या नायक-नायिका के सभी अंगों का वर्णन हो *वि.* सभी अंगों से संबंधित जैसे- नखशिख वर्णन।

नखशूल *पुं.* (तत्.) नाखूनों में होने वाला दर्द, नाखून के आसपास या जड़ में घाव या पीड़ा होती है।

नखांक *पुं.* (तत्.) 1. व्याघ्रनखी, व्याघ्रनख 2. शरीर के किसी अंग पर नाखूनों से बना निशान।

नखानखि *स्त्री.* (तत्.) नाखूनों द्वारा की जाने वाली वाली लड़ाई वि./पुं. नाखूनों से नोच-नोचकर किया जाने वाला युद्‌ध, तु. केशाकेशि, दंडादंडि।

नखालु *पुं.* (तत्.) नील का पेड़।

नखाशी *पुं.* (तत्.) उल्लू *वि.* नाखूनों की सहायता से खाने वाला।

नखास *पुं.* (अर.) 1. पशुओं का बाजार, विशेषतः घोड़ों का बाजार 2. सामान्य बाजार।

नखियाना *क्रि.अ.* (देश.) नाखून चुभाना या नाखून से खरोचना।

नखोटना *स.क्रि.* (देश.) नाखून से खरोचना या नोचना।

नग *पुं.* (तत्.) 1. गमन न करने वाला, पर्वत, वृक्ष 2. सात की संख्या बताने वाला शब्द 3. सूर्य 4. सर्प (फा.) पत्थर या शीशे का रंगीन टुकड़ा जो शोभा के लिए आभूषणों में लगाया जाता हे।

नगज *वि.* (तत्.) पर्वतों से उत्पन्न या प्राप्त *पुं.* (तत्.) हाथी।

नगजा *स्त्री.* (तत्.) 1. पार्वती 2. कोई पर्वतीय स्त्री 3. पाषाणभेदी लता।

नगण *पुं.* (तत्.) छंदः शास्त्र में वर्णित आठ गणों में से एक जिसमें तीनों वर्ण लघु होते हैं जैसे- सरस, दहन, कुशल आदि।

नगण्य *वि.* (तत्.) जो गणना करने योग्य न हो, अत्यंत साधारण, क्षुद्र।

नगद *वि.* (अर.) 1. तत्काल उपलब्ध (धनराशि) 2. तैयार (रुपया) 3. खास।

नगद नारायण *पुं.* (अर.+तत्.) रुपया पैसा, धनराशि, द्रव्य।

नगधर *पुं.* (तत्.) पर्वत को धारण करने वाले, गिरिधर, श्रीकृष्ण।

नगनंदिनी *स्त्री.* (तत्.) हिमालय पर्वत की पुत्री, पार्वती।

नगनदी *स्त्री.* (तत्.) पर्वत से निकलने वाली या बहने वाली नदी, पहाड़ी नदी।

नगनी *स्त्री.* (तत्.) 1. कन्या जिसे रजोधर्म प्रारंभ न हुआ हो 2. कन्या, बालिका।

नगपति *पुं.* (तत्.) 1. पर्वतराज हिमालय 2. चंद्रमा जो वनस्पतियों, ओषधियों का स्वामी माना जाता है 3. सुमेरु पर्वत।

नगभिद् *पुं.* (तत्.) 1. पाषाणभेद लता 2. पत्थर तोड़ने का प्राचीन अस्त्र 3. इंद्र, जिन्होंने पर्वतों के पंख काटे थे।

नगमा *पुं.* (अर.) 1. मधुर स्वरलहरी 2. संगीतबद्ध रचना, गीत, गाना 3. राग।

नगमूर्धा *पुं.* (तत्.) पर्वत शिखर या चोटी।

नगर *पुं.* (तत्.) मनुष्यों की वह बस्ती जो गाँव या कसबे से बड़ी हो जहाँ विभिन्न समुदायों, विचारधाराओं और व्यवसायों के लोग रहते हों तथा जहाँ चिकित्सालय, न्यायालय बाजार या अन्य आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध होती हों, शासकीय दृष्टि से यह बस्ती सुनियोजित होती है पर्या. पुर, पट्टन, शहर।

नगरकाक *पुं.* (तत्.) बीच बुद्धिवाला, कुत्सित व्यक्ति।

नगरकीर्तन *पुं.* (तत्.) नगर की सडक़ों या गलियों में भ्रमण करते हुए किया जाने वाला कीर्तन।

नगरघात *पुं.* (तत्.) हाथी।

नगरनायिका/नगरवधू *स्त्री.* (तत्.) वेश्या।

नगरपाल *पुं.* (तत्.) सब प्रकार के उपद्रवों आदि से नगर की रक्षा करने वाला, राजकीय अधिकारी।

नगरपालिका *स्त्री.* (तत्.) नगरों में सभी प्रकार की व्यवस्था करने वाली सरकारी संस्था जिसके सदस्य आजकल जनता द्वारा चुने जाते है।

नगरप्रांत/प्रांतर *पुं.* (तत्.) नगर या उसके आस-पास की जमीन या क्षेत्र, शहरी भूमि।

नगरप्रदक्षिणा *स्त्री.* (तत्.) किसी मूर्ति के साथ नगर की परिक्रमा करना, नगर भ्रमण।

नगरमर्दी *पुं.* (तत्.) मस्त हाथी।

नगरमस्ता *पुं.* (तत्.) आयु. नागर मोथा नामक औषधीय पौधा।

नगरमार्ग *पुं.* (तत्.) शहर का बड़ा, चौड़ा मार्ग, रास्ता, राजमार्ग।

नगररक्षी *पुं.* (तत्.) शहर की रक्षा करने वाला, पहरेदार, सुरक्षा अधिकारी।

नगरवासी *पुं.* (तत्.) नगर में रहने वाला, पुरवासी, नागरिक।

नगरसेठ/श्रेणी *पुं.* (तत्.) नगर का सम्मानित धनी व्यक्ति, प्रमुख व्यापारी।

नगराध्यक्ष *पुं.* (तत्.) नगर का अधिकारी या रक्षक, नगर की रक्षा का पूरा भार उठाने वाला, राजा या शासक की ओर से नियुक्त।

नगरी *स्त्री.* (तत्.) छोटा नगर, शहर, पुरी *वि.* नगर नगर से संबंधित (व्यक्ति, वस्तु, घटना आदि)।

नगरीकाक *पुं.* (तत्.) सारस नामक पक्षी।

नगरीषक *पुं.* (तत्.) कौआ, काक।

नगरोपांत *पुं.* (तत्.) नगर का बाहरी भाग, उपनगर।

नगरौषधि *स्त्री.* (तत्.) केले का फल।

नगवाहन *पुं.* (तत्.) शिव का एक नाम।

नगाटन *पुं.* (तत्.) पहाड़ों पर घूमने फिरने वाला, वानर, सिंह आदि।

नगाड़ा *पुं.* (अर.) डुगडुगी या बाँस की तरह का एक बड़े आकार का चमड़ा मढ़ा हुआ प्रसिद्ध वाद्य यंत्र, नगाड़ा या डंका, धौंसा, इसे लकड़ी के दो दो डंडो से बजाते हैं जिन्हे 'चोब' कहते है।

नगाधिप *पुं.* (तत्.) 1. हिमालय पर्वत 2. सुमेरू पर्वत।

नगारा *पुं.* (अ.) दे. नगाड़ा।

नगारि *पुं.* (तत्.) इंद्र, पुराणकथा के अनुसार जिन्होंने पर्वतों के पंख काट दिए थे।

नगावास *पुं.* (तत्.) मोर पक्षी, मयूर, शिखी।

नगाश्रय *पुं.* (तत्.) हाथी कंद नामक औषधिद्रव्य *वि.* पर्वतीय, पर्वत पर रहने वाला।

नगिचाना *अ.क्रि.* (देश.) नजदीक या समीप आना (ग्रामीण या क्षेत्रीय प्रयोग)।

नगी *स्त्री.* (तत्.) 1. पर्वत की पुत्री पार्वती 2. पर्वतीय महिला *स्त्री.* (फा.) रत्न, मणि, नगीना।

नगीच *क्रि.वि.* (देश.) दे. नजदीक।

नगीनागर *पुं.* (फा.) नगीना जड़ने का काम करने वाला या कारीगर।

नगीनासाज *पुं.* (फा.) आभूषणों में नगीने जड़ने वाला कारीगर।

नगेंद्र *पुं.* (तत्.) 1. हिमालय 2. सुमेरु पर्वत।

नगेसर *पुं.* (तद्.) आयु. नागकेशर।

नगेसरि *पुं.* (तद्.) आयु. नागकेशर।

नगौक *पुं.* (तत्.) 1. पर्वत पर जिसका घर हो 2. पक्षी, चिडिया 3. सिंह, शेर।

नग्न *वि.* (तत्.) 1. जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, नंगा 2. जिसके ऊपर किसी प्रकार का आच्छादन न हो, आवरण हीन, अनावृत्त।

नग्नक्षपणक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का बौद्ध या जैन भिक्षु या संन्यासी जो वस्त्र धारण न करता हो, दिगंबर।

नग्नता *स्त्री.* (तत्.) 1. नग्न होने का भाव, नंगापन, वस्त्रहीन होने की स्थिति, दिगंबरत्व।

नग्नमुषित *वि.* (तत्.) जिसका सर्वस्त्र लुट गया हो।

नग्नाट *पुं.* (तत्.) 1. जो सदा नग्न या निर्वस्त्र रहता हो 2. दिगंबर संप्रदाय के जैन या बौद्ध भिक्षु।

नग्नोध *पुं.* (तत्.) बरगद का वृक्ष।

नचना *अ.क्रि.* (देश.) नृत्य करना, नाचना *वि.* (देश.) 1. नाचने वाला 2. एक स्थान पर न रहने वाला, अस्थिर।

नचनिया *पुं.* (देश.) नाचने वाला, नृत्य करने वाला।

नचनी *स्त्री.* (देश.) 1. नाचने वाली, जो नाचती हो 2. 'नचना' का स्त्री.।

नचवाई *स्त्री.* (देश.) 1. नृत्य 2. नाचने का ढंग या या पद्धति 2. नाचने का पारिश्रमिक।

नचवाना *प्रे.क्रि.* (देश.) किसी से नृत्य करवाना।

नचवैया *पुं.* (तत्.) 1. नाचने वाला, जो नाचता हो।

नचाना *अ.क्रि.* (देश.) 1. दूसरे को नाचने में प्रवृत्त करना, नृत्य कराना जैसे मदारी द्वारा नचाना 2. 2. किसी को बार-बार उठने बैठने या कोई काम करने के लिए विवश या तंग करना, परेशान करना मुहा. नाच नचाना- तरह-तरह के काम करने के लिए विवश करना, परेशान करना।

नचिर *वि.* (तत्.) 1. अल्पकाल या थोड़ी देर तक रहने वाला, क्षणिक, क्षणभंगुर।

नजदीक *अव्य.* (फा.) निकट, आसन्न, करीब, पास।

नजदीकी *स्त्री.* (फा.) नजदीक या निकट होने का भाव, समीपता, निकटता *वि.* (फा.) निकटस्थ, समीपवर्ती।

नजम/नज्म *स्त्री.* (अर.) कविता, पद्य, छंद।

नजर *स्त्री.* (अर.) 1. दृष्टि, निगाह, चितवन 2. कृपा दृष्टि, मेहरबानी 3. निगरानी, देखरेख 4. कुदृष्टि, बुरी नजर 5. भेंट, उपहार मुहा. नजर आंदाज करना- ध्यान न देना; नज़र आना- दिखाई देना/पड़ना, दृष्टिगोचर होना; नज़र करना- देखना, भेंट देना (अधीनता सूचित करने के लिए); नज़र पर चढ़ना- पसंद आना; नज़र फिसलना- नजर न जमना (चमक चा चकाचौध के कारण); नज़र फेंकना- अंत तक देखना, सरसरी नजर से देखना; नज़र में आना- दिखलाई पड़ना; नज़र में तौलना- देखकर गुण-दोष की परीक्षा करना; नज़र रखना- कृपा दृष्टि रखना, मेहरबानी करना; नजर उतारना- बुरी दृष्टि के प्रभाव को मंत्र, युक्ति आदि से हटाना; नजर खाना- बुरी दृष्टि से प्रभावित होना।

नज़र-अंदाज *क्रि.वि.* (अर.+फा.) दृष्टि का हटना, ध्यान न देना *वि.* उपेक्षित (अपने अंदाज (पद्धति) से देखने का भाव अथवा अच्छी तरह न देखने का भाव।

नज़र अंदाजी *पुं.* (अर.+फा.) जांच, परख, छानबीन *स्त्री.* (अर.+फा) 1. उपेक्षा, लापरवाही 2. नजरों से अंदाजा लगाना, जांचना, छानबीन करना, परखना।

नज़रबंद *वि.* (अर.+फा.) कड़ी देखरेख में रखने का भाव जिसमें संबंधित व्यक्ति या अपराधी कहीं अन्यत्र न जा सके *पुं.* नज़र बांधने का खेल, जादू या इंद्रजाल आदि से प्रभावित (व्यक्ति)।

नज़रबंदी *स्त्री.* (अर.+फा.) 1. दंडित व्यक्ति जिसे सुरक्षित नियत स्थान पर निगरानी में रखा जाए 2. नजर बंद होने की दशा 3. लोगों की दृष्टि में भ्रम उत्पन्न करने की क्रिया, जादूगरी, बाजीगरी, नज़रबंद होने की स्थिति या भाव।

नज़रबाग *पुं.* (अर.+फा.) महलों या बड़े मकानों के सामने या चारों ओर के अहाते के अंदर का बगीचा।

नज़राना *अ.क्रि.* (अर.+फा.) नजर लग जाना या बुरी नजर के प्रभाव में आ जाना *पुं.* 1. उपहार, भेट 2. भेंट में दी जाने वाली वस्तु।

नज़रिया *पुं.* (अर.) दृष्टिकोण।

नज़ला *पुं.* (अर.) आयु. एक रोग जिसमें सिर का विकार युक्त पानी नीचे की ओर बहने लगता है, सरदी, जुकाम की स्थिति में नाक से बहने वाला पानी, नाक बहने का रोग।

नज़ाकत *स्त्री* (फा.) 1. नाजुक होने का भाव, कोमलता, मृदुता, सौम्यता 2. बारीकी, सूक्ष्मता 3. स्वभाव की कोमलता, नाजुक मिजाजी।

नज़ात/निजात *स्त्री.* (अर.) 1. मोक्ष, मुक्ति 2. रिहाई, छुटकारा।

नज़ारा *पुं.* (अर.) 1. दृश्य 2. दृष्टि, नजर 3. दर्शन 4. स्त्री-पुरुष का दूसरे पुरुष स्त्री को प्रेम अथवा लालसा की नजर से देखना 5. सैर, दृश्य, तमाशा।

नजिकाना *अ.क्रि.* (देश) निकट आ जाना (ग्रामीण प्रयोग) *स.क्रि.* पास, निकट, नजदीक पहुँचना प्रयो. 'करण अवस्था जब नजिकाई, ईश सखा के मन यह आई'।

नजिस *वि.* (अर.) मैला, गंदा, अपवित्र, अशुद्ध प्रयो. 'यहाँ तो हमें कुत्तों से भी नजिस समझते हैं' -प्रेमचंद।

नजीब *पुं.* (अर.) अच्छे कुल वाला, खानदानी, कुलीन।

नजीर *स्त्री.* (अर.) उदाहरण, दृष्टांत। प्रायः न्यायालयों में पुराने निर्णयों की नजीर पेश की जाती है।

नजूम *पुं.* (अर.) ज्योतिष विद्या, नक्षत्र विद्या, खगोलशास्त्र। astronomy, astrology

नुजूम *पुं.* (अर.) नक्षत्र विद्या, ज्योतिष विद्या, खगोल खगोल शास्त्र।

नजूमी/नुजूमी *पुं.* (अर.) ज्योतिषी, खगोलज्ञ।

नज़्ज़रगाह *स्त्री.* (अर.) सैरगाह, घूमने फिरने का दर्शनीय स्थल, पयर्टन स्थल।

नज्जारगाह *स्त्री.* (अर.) सैरगाह, घूमने-फिरने का दर्शनीय स्थल, पर्यटन स्थल।

नज़्ज़ारा *पुं.* (अर.) दे. नजारा।

नज्ल/नुजूल *पुं.* (अर.) सरकारी जमीन।

नछत्री *वि.* (तद्.) शुभ नक्षत्र में जन्म लेने वाला, भाग्यवान।

नट *पुं.* (तत्.) 1. नाटक, चलचित्र आदि में अभिनय करने वाला, वह जो नाट्य करता हो, अभिनेता 2. एक संकर जाति जो गा-बजाकर या खेल दिखाकर अपना निर्वाह करती है 3. नर्तक 4. दृश्य काव्य का अभिनेता, नाट्य करने वाला, नाट्य कला में प्रवीण 5. प्राचीन काल की एक संकर जाति जिसका काम गाना-बजाना था; बाँस और रस्सी पर खेल दिखाने वाले 6. एक नाग का नाम जिसे गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म की दीक्षा दी थी 7. संपूर्ण जाति का सभी शुद्धस्वरों वाला एक राग 8. अशोक वृक्ष 9. श्योनाक वृक्ष 10. एक प्रकार का बेत।

नटई *स्त्री.* (देश.) 1. गला, गरदन का अगला भाग 2. गले की घंटी (स्वरयंत्र का बाहरी भाग)।

नटक *पुं.* (तत्.) नाट्य करने वाला अभिनेता।

नटखट *वि.* (देश.) 1. अस्थिर एवं चंचल स्वभाव वाला, निरंतर कुछ न कुछ करते रहने वाला चाहे हानि हो क्यों न हो जाए, उपद्रवी ऊधमी, शरीर 2. चालाक, धूर्त, पाजी।

नटखटी *स्त्री.* (देश.) नटखट होने का भाव, शरारत, शरारत, चालाकी।

नटचर्या *स्त्री.* (अर.) नट का कार्य, अभिनय।

नटता *स्त्री.* (तत्.) 1. नट होने का भाव 2. नट का काम 3. अभिनय कला।

नटन *पुं.* (तत्.) 1. नृत्य करना, नाचना 2. अभिनय करना।

नटना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. इंकार करना, मुकरना, कहकर बदल जाना उदा. 'कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत लजियात' -बिहारी 2. नाट्य करना, अभिनय करना 3. नष्ट होना *स.क्रि.* नष्ट करना, 'नटैलेक दोऊ हठी एक ऐसे' -केशव *पुं.* 1. बांस की बनी छल्ली जिससे रस छाना जाता है 2. मछली पकड़ने का वह बड़ा टोकरा जिसका पेंदा कटा होता है।

नटनागर *पुं.* (तत्.) कृष्ण।

नटनायक *पुं.* (तत्.) नटों में प्रधान, श्री कृष्ण, 'नटनायक नंदलाल को मन पकरि नचावै' -घनानंद।

नटनारायण *पुं.* (तत्.) संगीत.एक संपूर्ण जाति का राग जो हेमंत ऋतु में रात के समय गाया जाता है, इसे संकर जाति का राग भी मानते हैं, एक मान्यता के अनुसार यह षाडव जाति का वर्ष के तीसरे पहर में गाया जाने वाला एक राग है।

नटनी *स्त्री.* (तद्.) 1. नट की स्त्री 2. नट जाति की की स्त्री उदा. 'नटनी डोमिन ढाटिनि सहनायन पटकार' -जायसी।

नटपत्रिका *स्त्री.* (तत्.) बैंगन, भांटा।

नटट्टा *पुं.* (तत्.) नट की गेंद जो खेल के समय तेजी से हवा में उछालते हैं।

नटबर *वि.* (तद्.) बहुत चतुर या चालाक या धूर्त (व्यक्ति)।

नटबाज़ी *स्त्री.* (तत्.+फा.) नट का कार्य या उसकी कला।

नटमल *पुं.* (तत्.) एक राग।

नटमल्हार *पुं.* (तत्.) संपूर्ण जाति का शुद्ध स्वरों वाला संकर राग जो नट और मल्हार के योग से बनता है।

नटरंग *पुं.* (तत्.) 1. रंगमच।

नटराज *पुं.* (तत्.) 1. निपुण नट या प्रधान, श्रेष्ठ नट 2. श्री कृष्ण 3. भगवान शंकर 4. शिव की प्रसिद्ध नृत्यमुद्रा की मूर्ति का नाम।

नटवना *स.क्रि.* (तद्.) नाट्य करना, अभिनय करना, स्वांग करना।

नटवर *वि.* (तत्.) बहुत चालाक या धूर्त (व्यक्ति) *पुं.* 1. नटों का मुखिया, प्रमुख नट, अत्यंत प्रवीण नट 2. श्री कृष्ण 3. नाटक का सूत्रधार 4. उत्कृष्ट या श्रेष्ठ मनुष्य।

नटवा *पुं.* (देश.) छोटी कद-काठी का या कम उम्र वाला बैल।

नटसंज्ञक *पुं.* (तत्.) 1. हरताल, गोदंती 2. नट, अभिनेता।

नटसाल *स्त्री.* (तद्.) 1. कांटे का टूटकर शरीर में रह जाने वाला भाग 2. बाण की गाँसी जो शरीर के भीतर रह जाए 3. फाँस जो बहुत छोटी होने से नहीं निकाली जा सकती 4. कसक, पीड़ा, मानसिक व्यथा जो स्मरण से होती है उदा. 'उठे सदा नटसाल सी सौतिन के उरसालि' -बिहारी।

नटांतिका *स्त्री.* (तत्.) 1. लज्जा, संकोच जिसके कारण नाट्य नहीं हो पाता (नाटक में बाधक)।

नटाई *स्त्री.* (देश.) जुलाहों का वह औजार जिससे किनारे का ताना तानते हैं।

नटित *पुं.* (तत्.) 1. अभिनय, हाव भाव *वि.* ऊबा हुआ या थका हुआ।

नटी *स्त्री.* (तत्.) 1. अभिनेत्री 2. नट जाति की स्त्री स्त्री 3. नर्तकी 4. सूत्रधार की सहधर्मिणी।

नटेश *पुं.* (तत्.) दे. नटेश्वर उदा. 'देखा मनु ने नर्तित नटेश' -प्रसाद।

नटेश्वर *पुं.* (तत्.) 1. महादेव, शिव 2. श्रीकृष्ण।

नठना *स.क्रि.* (तद्.) नष्ट करना *अ.क्रि.* नष्ट होना उदा. 'नठै लोक दोऊ हठी एक जैसे' -केशव।

नड *पुं.* (तत्.) 1. पानी में उगने वाला एक पौधा जिसके तने से लिखने वाली कलम बनाई जाती थी, नरसल, नरकट 2. एक ऋषि, जिनके नाम से गोत्र प्रवर्तित है 3. चूड़ी बनाने का कार्य करने वाली एक जाति *पुं.* (तद्.) नाला।

नडक *पुं.* (तत्.) 1. कंधे की हड्डी 2. हड्डी के अंदर का नलीनुमा खोखला भाग या छिद्र।

नडनेरि *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का नृत्य।

नडभक्त *पुं.* (तत्.) नरसल की बहुतायत वाला क्षेत्र।

नड़मीन *पुं.* (तत्.) झींगा नामक मछली।

नडश *वि.* (तत्.) नरकट से भरा हुआ (तालाब या नदी)।

नडिनी *स्त्री.* (तत्.) वह नदी जिसमें नरकट, सरपत सरपत आदि घास अधिकता से हो।

नडी *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की आतिशबाजी।

नड़ीच *पु.* (तत्.) पटुआ नामक साग।

नड्वल *पुं.* (तत्.) 1. सरपत घास से बुनी हुई चटाई 2. ऐसा क्षेत्र जहाँ सरपत आदि जलीण घास प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो 3. एक वैदिक देवता।

नड्वला *स्त्री.* (तत्.) 1. (पुराण) वैराज मनु की स्त्री स्त्री का नाम 2. सरपत की राशि या ढेरी।

नढ़ना *स.क्रि.* (तद्.) 1. गूंथना-पिरोना 2. बांधना, कसना उदा. 'छोटउ जन बैकुंठ जात कोलयी परिकर नढ़न' -देव।

नत *वि.* (तत्.) 1. मुड़ा हुआ या झुका हुआ (वृक्ष, खंभा आदि) 2. विनय संपन्न, नम्र, नमनशील (मनुष्य) 3. हारा हुआ, पराजित *पुं.* मध्याह्न रेखा रेखा से ग्रह के दूरस्थ होने की माप या दूरी आयु. तगर नामक मूल-औषधि।

नतकुर *पुं.* (देश.) बेटी का बेटा, नाती, धेवता, बेटी की संतान।

नतगुल्ला *पुं.* (देश.) घोंघा।

नतघटिका *स्त्री.* (तत्.) एक घंटा या घड़ी का कोण।

नतद्रुम *पुं.* (तत्.) शाल वृक्ष का एक प्रकार जिसे लता शाल कहते है।

नतनाडी/नाडिका *स्त्री.* (तत्.) 1. खमध्य से किसी तारे की कालगत दूरी 2. मध्याह्न के बाद और अर्द्धरात्रि के बीच जन्म की घड़ी या काल।

नतनासिक *वि.* (तत्.) चपटी नाक वाला (प्राणी)।

नतभ्रु *वि.* (तत्.) तिरछी भौंहों वाली स्त्री।

नतमी *स्त्री.* (देश.) असम (आसाम) प्रदेश में बहुतायत से होने वाला वृक्ष जिसकी लकड़ी चिकनी, मजबूत और लाल होती है, जिससे मेज, कुर्सी, नाव जैसी चीजे बनती है।

नतर *वि.* (तत्.) निरंतर, नित्य, हमेशा।

नतरस *पुं.* (तत्.) काव्य. काव्य के नौ रस।

नतशिर *वि.* (तत्.) विनम्र, विनीत, जिसका सिर झुका हो, नमस्तक, पराजित।

नतांग *वि.* (तत्.) 1. जिसका शरीर झुका हो 2. झुका हुआ, नत1

नतांगी *स्त्री.* (तत्.) 1. स्त्री, महिला, औरत 2. लज्जायुक्त स्त्री, विनीता।

नतांश *पुं.* (तत्.) जिस वृत्त का केंद्र भूकेंद्र हो और जो विषुवत रेखा पर लंब हो, इससे ग्रहों की स्थिति के निश्चय में सहायता मिलती है।

नतामुल *पुं.* (देश.) पश्चिमी घाट पर्वत पर होने वाला वृक्ष जिसकी लकड़ी नर्म, रेशे मजबूत होते हैं जिससे फर्नीचर और रस्सी बनाते है, इसकी जहरीली पत्ती से जहरीले तीर बनाते है।

नति *स्त्री.* (तत्.) 1. झुकाव, उतार 2. विनम्रता 3. प्रणाम का भाव 4. ज्योतिष की एक गणना 5. टेढापन।

नतिनी *स्त्री.* (देश.) पुत्री की पुत्री, नातिन, दौहित्री।

नतीजा *पुं.* (फा.) 1. फल 2. परिणाम 3. सारांश, निष्पत्ति, भावार्थ 4. किसी कथा आदि से प्राप्त होने वाली शिक्षा।

नतीसी *स्त्री.* (फा.) लिखाई, लिखने की क्रिया या भाव।

नतु *क्रि.वि.* (तत्.) नहीं तो, अन्यथा, वरना उदा. 'कहि आपनो दू भेद। नतु चित उपजत -केशव।

नतैत *पुं.* (देश.) संबंधी, रिश्तेदार, नातेदार।

नत्थी *स्त्री.* (देश.) 1. कुछ कागजों, कपड़ों आदि को धागे, पिन आदि की सहायता से साथ मिलाने या चिपकाने का कार्य 2. इस प्रकार एकत्र किए गए कागजात, मिसल प्रयो. मेरा प्रार्थनापत्र नत्थी है।

नथ *स्त्री.* (देश.) नाक में पहना जाने वाला, वृत्ताकार आभूषण विशेष, सौभाग्य-सूचक आभूषण, बेसर (छोटी नथ)।

नथना *पुं.* (तद्.) नाक का आगे की ओर का दोनों ओर का फूला हुआ भाग मुहा. नथना फुलाना- क्रोध करना; नथना फूलना- क्रोध का लक्षण होना *अ.क्रि.* (देश.) 1. किसी के साथ नत्थी होना 2. छिदना, छेदा जाना।

नथनी *स्त्री.* (देश.) 1. नाक में पहनने की छोटी नथ 2. बुलाक, नाक के दोनों छिद्रों के बीच की झिल्ली में पहनी जाने वाली और लटकने वाली नथ 3. बैल या ऊँट के नाक में बँधी रस्सी।

नथुनी *पुं.* (देश) दे. नथनी।

नद *पुं.* (तत्.) 1. बड़ी और चौड़ी नदी 2. एक प्राचीन ऋषि *वि.* (तत्.) 1. नदी से उत्पन्न 2. नदी से संबद्ध।

नदथु *पुं.* (तत्.) 1. नाद, गर्जन 2. बैल का डकारना 3. रुदन।

नदन *पुं.* (तत्.) नाद करना, ध्वनि निकालना, शब्द करना।

नदनदीपति *पुं.* (तत्.) सागर, समुद्र।

नदना *अ.क्रि.*(तत्.) 1. पशुओं द्वारा शब्द करना रँभाना, भौंकना, मिमियाना आदि 2. वाद्य यंत्र आदि का बजना, आवाज गूँजना।

नदनु *पुं.* (तत्.) 1. मेघ, बादल 2. सिंह, शेर 3. शब्द, गर्जन 4. स्तुति की ध्वनि 5. युद्ध, संग्राम।

नदपति *पुं.* (तत्.) समुद्र (जहाँ सभी नद-नदियाँ जा मिलती हैं)।

नदम *स्त्री.* (देश.) दक्षिण में पैदा होने वाली एक प्रकार की कपास।

नदर *स्त्री.* (देश.) नदी अथवा नद के आस-पास का प्रदेश *वि.* जिसे किसी तरह का भय न हो, निडर।

नदराज *पुं.* (तत्.) दे. नदपति।

नदान *वि.* (फा.) 1. बे-समझ, नासमझ, बुद्धिहीन 2. छोटी उम्र का, संसार का व्यवहार न समझने वाला।

नदामत *स्त्री.* (अर.) 1. पश्चाताप 2. लज्जित होने का भाव, हया।

नदारद *वि.* (फा.) 1. गायब, अप्रस्तुत, मौजूद न होना, लुप्त, जो चला गया हो, जो चोरी हो गया हो, जो उपभोग कर लिया गया हो।

नदाल *वि.* (तत्.) भाग्यशाली।

नदि *स्त्री.* (तत्.) स्तुति।

नदिका *स्त्री.* (तत्.) छोटी नदी या नाला।

नदिया *पुं.* (तद्.) प्राचीन बंगाल प्रांत (वर्तमान में बांग्लादेश) में स्थित नवद्वीप नामक जिला जो न्यायशास्त्रकी विद्यापीठ के लिए प्रसिद्ध था। यह यह संभवतः पद्मा (ब्रह्मपुत्र) के आसपास जलबहुल क्षेत्र में स्थित रहा होगा *स्त्री.* (तद्.) नदी।

नदी *स्त्री.* (तत्.) किसी पर्वत या जलाशय से निकली हुई ऐसी जलधारा जो नाद करती हुई बहते-बहते समुद्र में या किसी बड़ी नदी में मिल जाती है तथा मार्ग के स्थानों को भी विभिन्न रूपों में उपकृत करती जाती है, नदियाँ प्रायः वर्षभर जल से भरी रहती हैं तथा पीने के लिए या सिंचाई के लिए जल उपलब्ध कराती रहती हैं, कोई-कोई नदी मार्ग में सूख भी जाती है या मिट्टी में विलुप्त हो जाती है पर्या. सरिता, दरिया मुहा. नदीनाव संयोग- बार-बार न होने वाला संयोग यानी इत्तिफाक से होना 2. किसी तरल पदार्थ का बड़ा प्रवाह।।

नदीकदंब *पुं.* (तत्.) नदियों का समूह।

नदीकांत *पुं.* (तत्.) 1. समुद्र 2. समुद्र फल 3. सिंधुवार वृक्ष 4. वरूण।

नदीकांता *पुं.* (तत्.) जामुन का पेड़।

नदीकूल प्रिय *पुं.* (तत्.) जलबेंत।

नदीकृकंठ *पुं.* (तत्.) नेपाली बौद्धों का तीर्थ जहाँ विशेष योग स्नान से ऐश्वर्यवृद्धि एवं शत्रुनाश होता है।

नदीगर्भ *पुं.* (तत्.) नदी के दोनों किनारों या तटों के बीच का गहरा स्थान जिसमें होकर नदी का पानी बहता है, नदी के मार्ग में बना हुआ गहरा गड्ढा।

नदीज *पुं.* (तत्.) 1. काला सुरमा 2. सेंधा नमक 3. अर्जुन वृक्ष 4. समुद्र फल 5. गंगापुत्र 6. कमल।

नदीजा *स्त्री.* (तत्.) अग्निमथ या अरणी का वृक्ष।

नदीतर *पुं.* (तत्.) नदी पार करना।

नदीदत्त *पुं.* (तत्.) बुद्ध देव का एक नाम।

नदी दुर्ग *पुं.* (तत्.) नदी के बीच या द्वीप में बना दुर्ग (निकृष्ट माना गया है)।

नदीदोह *पुं.* (तत्.) नदी पार करने के बदले दिया गया कर या महसूल।

नदी धर *पुं.* (तत्.) शिव, महादेव जिन्होंने गंगा मस्तक पर धारण की है।

नदीन *पुं.* (तत्.) 1. समुद्र 2. वरुण-समुद्र के देवता 3. वरुण या बभा नामक पलाश की तरह एक जंगली पेड़।

नदीनिष्पाव *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का धान जिसका चावल कड़वा होता है।

नदीपति *पुं.* (तत्.) समुद्र।

नदीपूर *पुं.* (तत्.) बाढ़ आने से डूबे किनारे वाली नदी।

नदीभव *पुं.* (तत्.) सेंधा नमक *वि.* नदी से उत्पन्न होने वाला।

नदीमातृक *वि.* (तत्.) ऐसा स्थान जहाँ वर्षा न के बराबर होती है और कृषि केवल नदी के जल पर ही आधारित है।

नदीमाषक *पुं.* (तत्.) मानकंद या मान कच्चू नामक कंद।

नदीमुख *पुं.* (तत्.) नदी का मुहाना, वह स्थान जहां नदी समुद्र में गिरती है।

नदीश *पुं.* (तत्.) समुद्र।

नदीष्ण *वि.* (तत्.) 1. नदी में स्नान करने वाला 2. नदी के संकट पूर्ण स्थलों, गहराइयों और धारा को जानने वाला 3. अनुभवी, दक्ष, कुशल, पारंगत।

नदीसर्ज *पुं.* (तत्.) अर्जुन का वृक्ष।

नदेया *पुं.* (तत्.) छोटी जामुन, भूमि जंबु।

नदोला *पुं.* (तत्.) मिट्टी की छोटी नांद।

नद्ध *वि.* (तत्.) 1. बँधा हुआ, बाँधा हुआ 2. नथा हुआ, नाथा हुआ 3. जुड़ा हुआ 4. गुँथा हुआ 5. संबद्ध *पुं.* ग्रंथि, गाँठ, बंधन।

नद्धि *स्त्री.* (तत्.) बांधने या गाँठ लगवाने की क्रिया क्रिया अथवा स्थिति।

नद्यत्सृष्ट *पुं.* (तत्.) नदी के हट जाने से निकल आने वाला स्थान, चट।

नद्यावर्तक *पुं.* (तत्.) फलित ज्योतिष में यात्रा का एक शुभ योग जिसमें शत्रुओं का सहज नाश होता है।

नधना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. बैल, घोड़े आदि को रस्सी से गाड़ी या हल से बांधना जिसे उन्हें खींचकर ले जाना हो, जोतना, नाधना 2. जुड़ना, संबद्ध होना 3. किसी कार्य का अनुष्ठित होना, ठान लेना मुहा. काम में नधना- काम में लगना।

नधाव *पुं.* (देश.) सिंचाई के लिए पानी ऊपर चढ़ाने में ऊपर उलीचने के लिए बने गड्ढो में से सब से निचला गड्ढा।

ननंद *स्त्री.* (तद्.) पति की बहन, ननद, ननदी, ननदिया।

ननकारना *अ.क्रि.* (देश.) नकारना या अस्वीकार करने की क्रिया, इंकार करना, नकारना।

ननकारी *स्त्री.* (तत्.) नकारने की क्रिया, नकार, इंकार, अस्वीकार, नामंजूरी।

ननकारू *पुं.* (देश.) नकारने का भाव।

ननदोई *पुं.* (तद्.) ननद का पति, पति का बहनोई।

ननसार/ननसाल *पुं.* (देश.) नाना का घर, ननिहाल।

ननिअउरा *पुं.* (तत्.) दे. ननसार

ननिहारी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की ईंट।

ननीतक *पुं.* (तत्.) 1. घी, घृत 2. मक्खन।

ननु *अव्य.* (तत्.) अव्यय- कुछ पूछने, संदेह प्रकट करने या वाक्य के प्रारंभ में व्यवहृत होने वाला शब्द।

ननुआ *वि.* (तद्.) सुंदर, सुलोचना।

ननुनच *क्रि.वि.* (तत्.) कभी हाँ और कभी न करना, आनाकानी।

ननोई *पुं.* (देश.) बिना जोते बोए वर्षा के जलाशयों में स्वयं पैदा होने वाला जंगली धान, वसही।

नन्हा *वि.* (तद्.) बहुत छोटा।

नन्हाई *स्त्री.* (देश.) 1. छोटापन, छोटाई 2. बदनामी, अप्रतिष्ठा, हेठी।

नन्हिया *पुं.* (देश.) 1. एक प्रकार का धान या उसका चावल।

नपकालिका *स्त्री.* (तत्.) 1. नवयौवना (स्त्री.) नौजवान औरत 2. हाल ही में रजस्वला हुई युवती।

नपता *पुं.* (देश.) एक पक्षी जिसके पंखों पर काली या लाल चित्तियाँ होती है।

नपना *अ.क्रि.* (तत्.) नप जाना, नापने का काम होना।

नपरका *पुं.* (देश.) एक तरह का पक्षी जिसकी गरदन और पेट लाल और पैर तथा चोंच पीले रंग की होती है।

नपाई *स्त्री.* (देश.) नापने की मजदूरी।

नपाक *वि.* (फा.) अपवित्र, अशुद्ध।

नपात *पुं.* (तत्.) देवयान-पथ।

नपुंसक *पुं.* (तत्.) 1. कामेच्छा से रहित पुरुष, इलाज या उपाय से जाग्रत 2. क्लीब, हिजड़ा, नामर्द 3. कायर, डरपोक 4. संस्कृत व्याकरण में एक लिंग।

नपुंसकता *स्त्री.* (तत्.) 1. नंपुसक होने का भाव, हिजड़ापन 2. एक रोग जिसमें मनुष्य का वीर्य नष्ट हो जाए और वह स्त्री संभोग के अयोग्य हो जाए, नामर्दी।

नपुंसक मंत्र *पुं.* (तत्.) जैनियों के अनुसार वह मंत्र जिसके अंत में 'नम' हो।

नपुंसक वेद *पुं.* (तत्.) जैन विश्वास के एक प्रकार का मोहनीय वर्ग जिसके उदय से स्त्री के साथ भी संभोग की इच्छा होती है और बालक या पुरुष के साथ भी यही इच्छा होती है।

नपुआ *पुं.* (हि.) नापने का पात्र, बर्तन जिसमें रखकर कोई वस्तु नापें, माप, मापदंड।

नप्ता *स्त्री.* (तत्.) लडकी या लडके की संतान, नाती नाती या पोता।

नप्तृका *स्त्री.* (तत्.) एक पक्षी।

नफ़र *पुं.* (अर.) 1. दास, सेवक, नौकर 2. व्यक्ति।

नफ़रत *स्त्री.* (अर.) दूर रहने की इच्छा, घृणा, घिन।

नफ़रना *स्त्री.* (अर.) 1. घिन, घृणा 2. किसी चीज से भागना।

नफ़री *स्त्री.* (फा.) 1. फटकार, लानत, धिक्कार 2. एक मजदूर की दिनभर की मजदूरी या कमाई 3. मजदूर का एक दिन का काम 4. मजदूरी का दिन।

नफ़स *पुं.* (अर.) श्वास, साँस।

नफ़सानफ़सी *स्त्री.* (अर.) 1. आपा धापी, झगडा जो अधिकार को ध्यान में रखकर हो, खींचतान 2. चरखाचरखी, बकबक, वैमनस्य, लड़ाई।

नफ़ा *पुं.* (अर.) प्राप्ति में मूल के अतिरिक्त राशि, लाभ, फायदा जैसे- नफा उठाना, नफा करना।

नफ़ाखोर *वि.* (अर.) जिसे सभी कामों में नफ़ा कमाने की लत लग गई हो; अनुचित मार्ग से नफ़ा कमाने वाला।

नफ़ासत *स्त्री.* (अर.) सुंदरता, उत्कृष्टता, शुद्धता, उमदापन, नफीस होने का भाव।

नफ़ीरी *स्त्री.* (फा.) एक वाद्य यंत्र जो बिगुल और शहनाई के बीच का होता है, जिसके बजाने में फेफड़ों पर जोर और उंगलियों की हरकत दोनों का इस्तेमाल होता है, तुरही, शहनाई।

नफ़ीस *वि.* (अर.) उमदा, उत्कृष्ट, विशुद्ध, भला, उत्तम।

नफ़्स *पुं.* (अर.) 1. अस्तित्व 2. सत्यता 3. कामेच्छा या कामवासना 4. खुलासा 5. लिंग, शिश्न 6. आज्ञा 7. जान 8. आत्मा 9. व्यक्ति 10 भोगेच्छा 11. स्वार्थ।

नफ़्सकुश *वि.* (अर.) कामनाओं का दमन करने वाला, इंद्रियनिग्रही।

नफ़्स कुशी *स्त्री.* (अर.) इंद्रियनिग्रह या दमन।

नबी *पुं.* (अर.) देवदूत, पैगंबर, रसूल

नब्ज़ *स्त्री.* (अर.) हृदय की धडकन जो कलाई पर उंगली रखने से महसूस की जाती है, नाड़ी मुहा. नब्ज छूटना/न रहना-प्राणांत हो जाना; नब्ज़ पहचानना- व्यक्ति के स्वाभाविक गुणदोष या हरकतें जानना; नब्ज देखना- रोग पहचानना।

नब्बाज जादा *पुं.* (अर.) नवाब का पुत्र 2. बेहद शौकीन आदमी।

नबास *वि.* (तत्.) 1. बड़े ठाट-बाट से रहने वाला 2. फिजूल खर्च या अपव्यय करने वाला।

नब्बे *वि.* (तद्.) सौ से दस कम (संख्या)।

नभ:श्वास *पुं.* (तत्.) वायु, हवा, पवन।

नभ:सद *पुं.* (तत्.) 1. देवता 2. आकाश में विचरने वाले पक्षी, ग्रह-नक्षत्र आदि।

नभ:सरित *स्त्री.* (तत्.) आकाश गंगा।

नभ:सुत *पुं.* (तत्.) पवन, हवा, वायु।

नभ:स्थल *पुं.* (तत्.) 1. शिव 2. आकाश।

नभ:स्थित *पुं.* (तत्.) एक नरक का नाम *वि.* आकाशस्थ, जो नभ में स्थित हो।

नभ:स्पृक *वि.* (तत्.) गगनचुबी, आकाश को छूने वाला।

नभ *पुं.* (तत्.) 1. पंचतत्वों में से एक आकाश, गगन, व्योम 2. शून्य स्थान, आकाश 3. शून्य, सिफर 4. सावन/श्रावण का मास 5. आश्रय, आधार 6. पास, निकट नजदीक 7. राजा नल का का पुत्र 8. श्री रामचंद्र के वंश का एक राजा (हरिश्चंद्र) 9. चाक्षुष मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक का नाम 10. शिव, महादेव 11. अभ्रक 12. जल 13. जन्मकुंडली में लग्न स्थान से दसवाँ स्थान 14. मेघ, बादल 15. वर्षा, बारिश 16. मृणाल या कमल की जड़ के सूत्र या सुतला 17. विष तंतु 18. वाष्प, कुहरा 19. जीवन की अवधि, आयु 20 घ्राण।

नभग *पुं.* (तत्.) 1. पक्षी 2. हवा 3. बादल 4. वैवस्वत मनु का एक पुत्र *वि.* 1. आकाशगामी, आकाश में विचरण करने वाला 2. भाग्यहीन, अभागा।

नभगनाथ *पुं.* (तत्.) गरुड़ प्रयो. 'नभग नाथ की प्रीति न थौरी -मानस।

नभगामी *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. पक्षी 3. देवता 4. सूर्य 5. ताप।

नभगेश *पुं.* (तत्.) गरुड़।

नभचर *पुं.* (तद्.) आकाश में चलने वाला पक्षी, वायुयान, आकाशीय पिंड।

नभधुज *पुं.* (तत्.) मेघ बादल।

नभध्वज *पुं.* (तत्.) मेघ, बादल।

नभनदी *स्त्री.* (तत्.) आकाश गंगा।

नभनीरप *पुं.* (तत्.) चातक, पपीहा।

नभलय *पुं.* (तत्.) 1. अंधेरा, अंधकार 2. राहु 3. एक ऋषि का नाम 4. मेघ, बादल 5. आकाश।

नभश्चक्षु *पुं.* (तत्.) सूर्य।

नभश्चमस *पुं.* (तत्.) 1. चंद्रमा 2. इंद्रजाल।

नभश्चर *पुं.* (तत्.) 1. पक्षी 2. बादल 3. हवा 4. देवता गंधर्व, ग्रह आदि *वि.* आकाश में चलने वाला।

नभसंगम *पुं.* (तत्.) चिड़िया, पक्षी।

नभस *पुं.* (तत्.) 1. दसवें मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक 2. आकाश 3. पावस 4. समुद्र *वि.* (तत्.) वाष्पमय, कुहरेवाला।

नभस्तल *पुं.* (तत्.) 1. आकाश का निचला भाग 2. वायु मंडल।

नभस्थल *पुं.* (तत्.) 1. आकाश 2. शिव।

नभस्थित *पुं.* (तत्.) एक नरक का नाम *वि.* जो आकाश में हो, आकाश में ठहरा हुआ।

नभस्वान *पुं.* (तत्.) वायु।

नभस्मणि *पुं.* (तत्.) सूर्य।

नभस्य *पुं.* (तत्.) 1. भादों का एक महीना 2. स्वरोचिष मनु के पुत्र का नाम *वि.* वाष्पमय, कुहरे वाला।

नभस्वान् *पुं.* (तत्.) वायु, पवन।

नभि *स्त्री.* (तत्.) पहिया, चक्र।

नभोग *पुं.* (तत्.) 1. आकाश में चलने वाले देवता, पक्षी, ग्रह आदि 2. जन्म कुंडली में लग्न से दसवाँ स्थान 3. दसवें मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक का नाम।

नभोगति *पुं.* (तत्.) वह जो आकाश में चलता है यथा- पक्षी देवता ग्रह आदि।

नभोद *पुं.* (तत्.) विश्वदेव का नाम।

नभोदुह *पुं.* (तत्.) मेघ, बादल।

नभोदेश *पुं.* (तत्.) आकाश।

नभोद्वीप *पुं.* (तत्.) बादल।

नभोध्वज *पुं.* (तत्.) बादल।

नभोनदी *स्त्री.* (तत्.) आकाश गंगा।

नभोमणि *पुं.* (तत्.) सूर्य।

नभोयोनि *पुं.* (तत्.) महादेव, शिव।

नभोरूप *वि.* (तत्.) नीले रंग का, नीलवर्णी।

नभोरेणु *पुं.* (तत्.) धुंध, कुहरा, कुहासा।

नभोलय *पुं.* (तत्.) धुआं *वि.* जो आकाश में लीन हो जाए।

नभोवट *पुं.* (तत्.) आकाश मंडल।

नभ्य *पुं.* (तत्.) 1. पहिए के बीच का भाग 2. धुरी, अक्ष 3. पहिए में डाली जाने वाली चिकनाई या तेल *वि.* (तत्.) 1. मेघमय 2. वाष्प युक्त, कुहरेवाला।

नभ्यसी *पुं.* (तत्.) भाद्रपद, भादो का महीना।

नभ्राज *पुं.* (तत्.) बादल, मेघ।

नमः *क्रि.वि.* (तत्.) प्रणाम, स्वागत, प्रणाम वाचक शब्द।

नम *पुं.* (तत्.) 1. नमस्कार 2. त्याग 3. अन्न 4. वज्र 5.स्रोत *वि.* (फा.) नमी लिए हुए, आर्द्र, गीला, जलीय अंश से युक्त।

नमक *पुं.* (फा.) भोज्य पदार्थों में स्वाद में खारापन लाने के लिए प्रयुक्त क्षारीय पदार्थ जो बहुतायत में समुद्र से प्राप्त होता है, नमक, नोन, लवण मुहा. नमक अदा करना- कृतज्ञता प्रकट करना, अवसर आने पर स्वामी की सेवा करना या बदला चुकाना; नमक खाना- किसी की कृपा पर जीवित रहना; नमक-मिर्च लगाना- बढ़-चढ़ कर बुराई करना; कटे/जले पर नमक छिडक़ना- दुखी व्यक्ति को और दुखी करना।

नमक ख्वार *वि.* (फा.) नमक खाने वाला।

नमकदान *पुं.* (फा.) पिसा नमक रखने का पात्र।

नमकसार *पुं.* (फा.) वह स्थान जहाँ से नमक निकलता हो।

नमकहराम *पुं.* (फा.) किसी का दिया खाकर उसी के प्रति द्रोह करने वाला, कृतघ्न, उपकार न मानने वाला।

नमकहरामी *स्त्री.* (फा.) कृतघ्नता।

नमकहलाल *वि* (फा.) 1. अपने स्वामी, अन्नदाता का कार्य धर्म पूर्वक करने वाला, मालिक की भलाई करने वाला मनुष्य 2.उपकार को स्वीकार करने वाला, कृतज्ञ।

नमकहलाली *स्त्री.* (फा.) नमक हलाल होने का भाव, स्वामी निष्ठा, स्वामिभक्ति, कृतज्ञा।

नमकीन *वि.* (फा.) 1. नमक जैसे स्वाद वाला 2. जिसमें नमक डाला गया हो 3. जिसमें लावण्य हो, सौंदर्य से युक्त *पुं.* ऐसे भोज्य पदार्थ जिनका स्वाद नमक वाला हो जैसे, समोसा, पकौड़ा।

नमगीरा *पुं.* (फा.) 1. ओस आदि से रक्षा के लिए पलंग के ऊपरी भाग में ताना गया कपड़ा 2. पाल या तिरपाल जो धूप या गर्मी से बचाव के लिए किसी स्थान के ऊपर ताना जाय।

नमत *पुं.* (तत्.) 1. प्रभु स्वामी 2. नट, अभिनेता 3. धुआं 4. मेघ *वि.* 1. नम्र, झुका हुआ 2. वक्र, टेढ़ा।

नमदा *पुं.* (फा.) वह ऊनी कंबल या कपड़ा जिसे ऊन जमाकर बनाया जाता है।

नमन *पुं.* (तत्.) 1. प्रणाम, नमस्कार 2. झुकाव 3. नमस्कार करना 4. झुकने की क्रिया *वि.* (तत्.) 1. झुकने वाला, झुका हुआ 2. पराजित होने वाला, पराभूत 3. झुकने वाला, नत करने वाला।

नमना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. झुकना 2. प्रणाम करना, नमस्कार करना।

नमनीय *वि.* (तत्.) 1. नमस्कार करने योग्य, आदरणीय, पूजनीय, जिसे नमस्कार किया जाए 2. जो झुक सके या जो झुकाया जा सके।

नमनीयता *स्त्री.* (तत्.) 1. लचक, लोच।

नमस *पुं.* (तत्.) 1. झुकना, नमन 2. प्रणाम, नमस्कार 3. त्याग, छोड़ देना 4. यज्ञ 5. अन्न 6. वज्र 7. स्रोत *वि.* प्रसन्न।

नमसित *वि.* (तत्.) पूजित, जिसे नमस्कार किया गया हो।

नमस्करण *पुं.* (तत्.) आदर या श्रद्धा के साथ नमस्कार करने की क्रिया या स्थिति।

नमस्कार *पुं.* (तत्.) 1. झुककर अभिवादन या प्रणाम करना 2. एक प्रकार का विष।

नमस्कारी *स्त्री.* (तत्.) 1. लज्जावती, लजालु 2. खदिरी या खदरिका नमक क्षुप।

नमस्कार्य *वि.* (तत्.) 1. पूज्य, नमस्कार करने योग्य, वंदनीय 2. जिसे नमस्कार किया जाय।

नमस्कृत *वि.* (तत्.) जिसे आदर सहित नमस्कार किया गया हो।

नमस्ते *अव्य.* (तत्.) मूलतः यह पूरा वाक्य है जिसका अर्थ है कि तुम्हे नमस्कार है, पर सामान्यतः नमस्कार के लिए इसका प्रयोग होता है।

नमस्य *पुं.* (तत्.) 1. पूज्य, नमस्कार करने योग्य, आदरणीय 2. नम्र, विनयशील।

नमस्या *स्त्री.* (तत्.) 1. पूजा, श्रद्धा 2. आदर, सम्मान।

नमस्यु *वि.* (तत्.) 1. पूजा या श्रद्धा करने वाला 2. आदर सम्मान करने वाला।

नमाज़ *स्त्री.* (फा.) मुस्लिम धर्म के अनुसार उपासना का एक प्रकार, सामान्य रूप से दिन में पाँच बार तथा विशेष अवसरों पर भी नमाज पढ़ने का नियम है मुहा. नमाज अदा करना- उपासना करना, नमाज़ कजा होना- उपासना खंडित होना या समय पर न कर पाना।

नमाज़गाह *पुं.* (फा.) मस्जिद का वह स्थान जहाँ नमाज पढ़ी जाती है।

नमाज़बंद *पुं.* (फा.) कुश्ती का एक प्रकार का पेंच।

नमाज़ी *पुं.* (फा.) 1. नमाज पढ़ने वाला 2. वह वस्त्र जिस पर खड़े होकर नजाम पढ़ी जाती है।

नमाजी *पुं.* (फा.) नमाज पढ़ने वाला मुसलमान *वि.* (फा.) वह जो नियमित रूप से नमाज़ पढ़ता हो।

नमाना *स.क्रि.* (तत्.) 1. झुकाना 2. दबा कर अधीन या पस्त करना, काबू में करना।

नमित *वि.* (तत्.) 1. झुकाया हुआ 2. टेढ़ा, वक्र 3. झुका हुआ।

नमिस *स्त्री.* (फा.) विशेष प्रकार से तैयार दूध का फेन जो जाड़े में खाया जाता है।

नमी *स्त्री.* (फा.) गीलापन, आर्द्रता, जलयुक्तता, नम होने का भाव।

नमुचि *पुं.* (तत्.) 1. एक ऋषि का नाम 2. दानव का पुत्र जो इंद्र सखा था 3. शुंभ निशुंभ दानवों का छोटा भाई 4. कामदेव।

नमुचिसूदन *पुं.* (तत्.) नमुचि दानव को मारने वाला इंद्र।

नमूद *स्त्री.* (फा.) 1. आविर्भाव 2. धूम धाम, तड़क-भड़क 3. उगना 4. अस्तित्व, हस्ती 5. ख्याति, शोहरत।

नमूदार *वि.* (फा.) जो उदित हुआ हो, प्रकट, दृष्टिगोचर।

नमूना *पुं.* (फा.) 1. आदर्श, उदाहरण, बानगी 2. प्रकार किस्म 3. पद्धति, तरीका 4. बानगी, छोटा अंश जिससे गुण और उपयोग का ज्ञान हो जैसे- चावल या कपड़े का नमूना 5. वह जिससे दूसरी वस्तुओं के स्वरूप, गुण का ज्ञान हो जैसे- नमूने का थान या टोपी 6. ढाँचा, ठाट, खाका।

नमेरू *पुं.* (तत्.) 1. रुद्राक्ष का पेड़ एक प्रकार का पुन्नाग।

नम्यता *स्त्री.* (तत्.) झुकने या टेढ़ा होने की क्रिया या गुण।

नम्र *वि.* (तत्.) 1. जिसमें नम्रता है, विनीत, नत 2. झुका हुआ 3. वक्र, टेढ़ा 4. पूजा करने वाला 5. श्रद्धालु।

नम्रक *पुं.* (तत्.) बेंत।

नम्रता *स्त्री.* (तत्.) नम्र होने का भाव, विनय, सरलता।

नम्रत्व *पुं.* (तत्.) नम्रता।

नय *पुं.* (तत्.) 1. नीति, नम्रता 2. एक प्रकार का जुआ 3. विष्णु 4. जैन दर्शन में प्रमाण सम्मत अर्थ को ग्रहण करने की वृत्ति 5. ले जाने की क्रिया या स्थिति 6. नेतृत्व या नायकत्व 7. व्यवहार 8. सिद्धांत, मत 9. दूरदर्शिता 10. पद्धति, ढंग, विधि 11. योजना, नैतिकता *वि.* नया, नवीन *स्त्री.* नदी।

नयक *पुं.* (तत्.) अच्छी व्यवस्था करने वाला व्यक्ति 2. कुशल या निपुण राजनीतिज्ञ।

नयकारी *पुं.* (तद्.) 1. नर्तकों के दल का नायक या मुखिया 2. नाचने वाला, नचनिया।

नयकोविद *वि.* (तत्.) 1 नीतिनिपुण 2. राजनीति में कुशल।

नयग *वि.* (तत्.) रीति के अनुसार चलने वाला या व्यवहार करने वाला।

नयचक्षुस् *वि.* (तत्.) राजनीति में दक्ष या प्रवीण।

नयन *पुं.* (तत्.) 1. चक्षु, नेत्र, आँख 2. ले जाना 3. नेतृत्व करना 4. गमन करना 5. बिताना, यापन, व्यतीत करना *वि.* (तत्.) 1. ले जाने वाला 2. मार्गदर्शन करने वाला, नायकत्व करने वाला 3. व्यवस्था करने वाला *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की मछली।

नयनगोचर *वि.* (तत्.) दृष्टिगोचर, दीखने वाला, दिखाई पड़ने वाला, जो आँखों के सामने या समक्ष हो।

नयनपट *पुं.* (तत्.) आँख की पलक, आँख को ढँकने वाला परदा।

नयनांचल *पुं.* (तत्.) 1. आँख कर कोना 2. तिरछी चितवन।

नयनांत *पुं.* (तत्.) आँख की कोर।

नयना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. नम्र होना 2. झुकना, लटकना 3. नमस्कार करना *पुं.* 1. आँख, नेत्र, चक्षु *स्त्री.* 2. आँख की पुतली।

नयनागर *वि.* (तत्.) नीतिज्ञ, नीति निपुण।

नयनाभिघात *पुं.* (तत्.) आंख का एक रोग।

नयनाभिराम *वि.* (तत्.) जो आँखों को सुंदर लगे, जिसे देखकर चित्त प्रसन्न हो जाए।

नयनाभोषी *पुं.* (तत्.) आँखों को दृष्टि शून्य करने वाला।

नयनिमा *स्त्री.* (तत्.) लोचन, नेत्रों का घर्म।

नयनी *वि.* (तत्.) 1. आँखों वाली 2. शब्दांत प्रयोग से शब्द यौगिक जैसे- मृगनयनी।

नयनू *पुं.* (तत्.) 1. माखन 2. मलमल का एक प्रकार जिस पर सूत की बूरियाँ बनी होती है।

नयनेता *वि.* (तत्.) राजनीति का ज्ञाता।

नयनोत्सव *पुं.* (तत्.) 1. दीपक 2. आंखों का आनंद 3. सुदर्शन वस्त्र।

नयनोपांत *पुं.* (तत्.) आंख की कोर, अपांग।

नयनौषध *पुं.* (तत्.) कसीस पुष्प, पीला कसीस।

नयपीठी *स्त्री.* (तत्.) शतरंज की बिसात।

नयर *पुं.* (तद्.) शहर, पुर, नगर।

नयशाली *वि.* (तत्.) विनययुक्त, विनम्र, नीतिज्ञ, सदाचार वाला, विनयशील।

नयशास्त्र *पुं.* (तत्.) 1. राजनीति शास्त्र 2. रांजनीति विषयक ग्रंथ 3. नीतिवषयक ग्रंथ।

नयशील *वि.* (तत्.) 1. नीतिज्ञ 2. विनीत।

नया *वि.* (तद्.) 1. कुछ समय पहले ही बना या पैदा किया हुआ या संगठित किया हुआ हो जैसे नया कपड़ा, नई किताब, नया दल इत्यादि 2. जो पहले से मौजूद हो पर जानकारी अब हुई हो प्रयो. वैज्ञानिकों ने एक नया तारा ढूँढ निकाला है 3. पहले वाले से इतर प्रयो. नए प्रधानाचार्य बहुत अच्छे है 4. पुराने स्थान को अलग नाम देना जैसे- नई दिल्ली 5. कोई कार्य पुनः प्रारंभ करना-नया कारोबार, नई नौकरी *स्त्री.* नई, बहुव. नए।

नयापन *पुं.* (देश.) नया होने का भाव, नवीनता, नूतत्व।

नयाबत *स्त्री.* (अर.) नायब का पद और कार्यालय।

नयाम *पुं.* (फा.) तलवार की म्यान या खोल।

नरंग *पुं.* (तद्.) नारंगी का पेड।

नरंद *पुं.* (तद्.) राजा।

नरंधि *पुं.* (तत्.) सांसारिक जीवन।

नरंधिप *पुं.* (तत्.) विष्णु।

नर *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. शिव, महादेव 3. नरदेव के अवतार अर्जुन 4. धर्मराज और प्रजापति दक्ष की कन्या सती से उत्पन्न एक पौराणिक ऋषि जो ईश्वर के अंशावतार और नारायण के भाई थे 5. एक देवयोनि 6. पुरुष, मर्द, आदमी 7. एक प्रकार का क्षुप जिसे रायकपूरा रोहिस, सेंधिया तथा गंधेल भी कहते हैं 8. खूंटी जो छाया आदि जानने के लिए गाड़ी जाती है 9. सेवक 10. गय राक्षस के पुत्र का नाम 11. सुधृति के पुत्र का नाम 12. भवन्मन्य के पुत्र का नाम 13 दोहे का एक भेद 14. छप्पय का एक भेद (10 गुरु, 13 लघु) 15. मनुष्य, आदमी 16 शतरंज का मोहरा 17. परम पुरुष, पुराना पुरुष 18. आदमी की लंबाई का परिमाण 19. घोड़ा 20 जीवात्मा *पुं.* (देश.) 1. नल, जिसमें से होकर पानी आता है 2. नरकट *वि.* (तत्.) पुरुष जाति का, मादा का उलटा।

नरई *स्त्री.* (देश.) 1. गेहूँ की बाल या डंठल 2. किसी घास का अंदर से पोला डंठल 3. जलाशयों के पास होने वाली एक तरह की घास।

नरकंत *पुं.* (तत्.) राजा, नृप।

नरक *पुं.* (तत्.) 1. दौज़ख, जहन्नुम जहाँ दुष्टात्माएँ अपने पाप का फल भोगने को रखी जाती है मुहा. नरक होना/भोगना- नरक में भेजा जाना 2. बहुत गंदा स्थान 3. पीड़ा या कष्टदायक स्थान 4. कलि के पौत्र का नाम जो कलि पुत्र भय व कलि पुत्री मृत्यु के गर्भ से उत्पन्न और बहन यातना के साथ विवाहित 5. विप्रचित्ति दानव के एक पुत्र का नाम 6. निकृत के पुत्र अनृत के एक पुत्र का नाम 7. दे. नरकासुर।

नरकगति *स्त्री.* (तत्.) वे कर्म जिसके करने से मनुष्य को नरक में जाना पड़े।

नरककुंड *पुं.* (तत्.) नरक का कुंड जिसमें पापी जीव को यंत्रणा देने के लिए डालते है।

नरकगामी *वि.* (तत्.) नरक में जाने वाला।

नरकचतुर्दशी *स्त्री.* (तत्.) कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी जिस दिन घर का सारा कूडा-कचरा निकाल कर फेंका जाता है विशे. विष्णु द्वारा कृष्ण के रूप में नरकासुर का वध किए जाने के कारण इसे नरकचतुर्दशी कहते हैं।

नरकट *पुं.* (तद्.) बेंत की जाति का एक जलीय पौधा जिसके तने से लिखने की कलम और छिलकों से चटाई आदि बनाई जाती है, हुक्के की नली, टोकरियाँ, बैठने के मोढे आदि भी इससे बनते हैं।

नरकदेवता *पुं.* (तत्.) नरक का देवता।

नरकपाल *पुं.* (तत्.) आदमी की खोपड़ी।

नरकभूमि *स्त्री.* (तत्.) यमलोक की भूमि या नगरी।

नरकल/नरकस *पुं.* (तद्.) दे. नरकट।

नरकस्था *स्त्री.* (तत्.) वैतरणी नदी।

नरकांतक *पुं.* (तत्.) विष्णु, कृष्ण।

नरकामय *पुं.* (तत्.) 1. नरक रूपी रोग 2. प्रेत।

नरकारि *पुं.* (तत्.) कृष्ण।

नरकावास *पुं.* (तत्.) 1. वह जो नरक में हो 2. नरक में वास।

नरकासुर *पुं.* (तत्.) एक राजा जिसका वध कृष्ण ने किया था, इसका राज्य प्राग्ज्योतिषपुर (वर्तमान असम का क्षेत्र) में था।

नरकेशरी *पुं.* (तत्.) भगवान विष्णु का नृसिंह अवतार *वि.* (तत्.) मनुष्यों में सिंह जैसा, वीर, साहसी।

नरकेसरी, नरकेहरी *पुं.* (तद्.) दे. नरकेशरी।

नरकौतुक *पुं.* (तत्.) मदारी का खेल।

नरखड़ा *पुं.* (देश.) गला।

नरगण *पुं.* (तत्.) फलित ज्योतिष के नक्षत्रों का एक गण जिसमें जन्मे मनुष्य सुशील और बुद्धिमान होते हैं।

नरगिस *पुं.* (फा.) 1. एक सफेद रंग का सुगंधित फूल जिसकी आकृति कटोरी जैसी होती है तथा जिसके बीच में काले रंग का गोल धब्बा होता है, इसी कारण इसकी उपमा आँखों के साथ की जाती है जैसे- नरगिसी आँखें 2. इस फूल वाला पौधा।

नरगिसी *पुं.* (फा.) 1. एक प्रकार का कपड़ा जिस पर नरगिस की तरह के फूल बने रहते हैं 2. एक प्रकार का तला हुआ अंडा *वि.* नरगिस के फूल जैसा।

नरचा *पुं.* (देश.) एक प्रकार का पाट या पटुआ।

नरजी *वि.* (देश.) तौल करने वाला।

नरतना *अ.क्रि.* (तद्.) नाचना।

नरतात *पुं.* (तत्.) राजा, नृपति।

नरत्राण *पुं.* (तत्.) 1. राजा, नरपाल 2. श्री कृष्ण।

नरत्व *पुं.* (तत्.) 1. मनुष्यत्व, मानवता 2. पुरुषत्व, पुरुष होने का भाव, पौरुष *स्त्री.* (तत्.) नर होने का भाव, नरता।

नरद *स्त्री.* (तत्.) शब्द, ध्वनि, नाद (फा.) 1. चौसर खेलने की गोटी 2. एक पौधा जिसके फूलों का अर्क खींचा जाता है और जिसकी पत्तियाँ मसाले के काम आती है।

नरदवाँ *पुं.* (फा.) 1. नल 2. पनाला।

नरदा *पुं.* (फा.) मैला पानी बहने की नाली।

नरदारा *पुं.* (तत्.) 1. जनाना, जनखा, हिजड़ा, नपुंसक 2. जो पुरुष होकर भी स्त्रियों जैसे काम करे, डरपोक, कायर।

नरदेव *पुं.* (तत्.) 1. राजा, नृपति 2. ब्राह्मण।

नरदेव कुमार *पुं.* (तत्.) श्रीमद्भागवत में वर्णित एक ऋषि।

नरद्विष *पुं.* (तत्.) राक्षस।

नरनाथ *पुं.* (तत्.) राजा, नृपति, नृपाल।

नरनारायण *पुं.* (तत्.) विष्णु के अवतार नर और नारायण नामक दो ऋषि, द्वापर में ये ही अर्जुन और कृष्ण के रुप में अवतरित हुए, कालिका पुराण के अनुसार नृसिंह के 'नर' शरीर से नर तथा सिंह रूपी शरीर से नारायण की उत्पत्ति हुई, उत्तराखंड राज्य में स्थित पर्वत विशेष।

नरनारि *स्त्री.* (तत्.) 1. नर, यानी अर्जुन की स्त्री, द्रौपदी, पांचाली। 2. पुरुष और स्त्री।

नरनारी *पुं.* (तत्.) पुरुष और स्त्रियाँ, जनता।

नरनाह *पुं.* (तद्.) राजा, नृप, नृपाल।

नरनाहर *पुं.* (तत्.) 1. नरकेशरी 2. नृसिंह भगवान।

नरनी *स्त्री.* (देश.) एक तरह का पौधा।

नरपति *पुं.* (तद्.) राजा, नृपति, नृपाल, भूप।

नरपद *पुं.* (तत्.) 1. नगर 2. देश।

नरपलचारी *वि.* (तत्.) नरमांस भक्षक, मनुष्य का मांस खाने वाला।

नरपशु *पुं.* (तत्.) मनुष्य होते हुए भी पशुओं की तरह व्यवहार करने वाला।

नरपालि *पुं.* (तत्.) छोटा शंख।

नरपिशाच *पुं.* (तत्.) जो मनुष्य होकर भी पिशाचों जैसा काम करे, बहुत ही नीच मनुष्य, वह मनुष्य जो अत्यंत क्रूर और निर्दय हो।

नरपुर *पुं.* (तत्.) भूलोक, मनुष्य लोक।

नरप्रिय *पुं.* (तत्.) नील का पेड़।

नरभक्षी *पुं.* (तत्.) मनुष्यों को खाने वाला राक्षस, दैत्य।

नरभूमि *स्त्री.* (तत्.) भारत वर्ष।

नरम *पुं.* (फा.) दे. नर्म *वि.* 1. कोमल, मृदु 2. लोचदार 3. शिथिल, ढीला 4. नज़ाकत।

नरमट *स्त्री.* (देश.) वह जमीन जहाँ की मिट्टी मुलायम हो।

नरमदा *पुं.* (तत्.) दे. नर्मदा।

नरमरोआँ *पुं.* (देश.+तद्.) बुनाई के लिए भेड़-बकरियों का लाल या सफेद रंग का रोआँ जो सदा बहुत मुलायम होता है।

नरम लोहा *पुं.* (देश.+तद्.) आग में लाल करके हवा में ठंडा किया हुआ लोहा जो मुलायम होता है।

नरमा *स्त्री.* (देश.) 1. एक प्रकार की कपास जिसे मनवा, देवकपास या राम कपास भी कहते है 2. सेमर की रुई 3. कान के नीचे का भाग 4. एक प्रकार की ईख।

नरमाई *पुं.* (देश.) दे. नरमी।

नरमाना *स.क्रि.* (देश.) 1. नरम करना, मुलायम करना 2. शांत करना, धीमा करना अ.क्रि. नरम/मुलायम/शांत होना।

नरमानिनी *स्त्री.* (तत्.) वह स्त्री जिसकी मूंछ या दाढ़ी हो।

नरमाला *स्त्री.* (तत्.) नरमुंडों की माला, मुंडमाल, मनुष्यों के कपाल, खोपड़ी की माला।

नरमालिनी *स्त्री.* (तत्.) 1. नरमुंडों की माला पहनने पहनने वाली 2. दाढ़ी-मूंछ वाली स्त्री, मर्दानी स्त्री।

नरमाबड़ी *स्त्री.* (देश.) बन कपास।

नरमी *स्त्री.* (फा.) 1. नरम होने का भाव, मुलायमियत, कोमलता, मृदुता विलो. कठोरता।

नरमेध *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का यज्ञ जिसमें प्राचीन काल में मानव मांस की आहुति दी जाती थी, चैत्र शुक्ल दशमी से प्रारंभ यह यज्ञ चालीस दिन में समाप्त होता था।

नरयंत्र *पुं.* (तत्.) सूर्य सिद्धांत के अनुसार एक प्रकार का शंकु यंत्र जिसका व्यवहार धूप का समय जानने के लिए होता था।

नरयान *पुं.* (तत्.) आदमी द्वारा खींची या ढोई जाने जाने वाली सवारी जैसे पालकी या डोली।

नरलोक *पुं.* (तत्.) मनुष्यो का लोक, मृत्युलोक, संसार।

नरवई *पुं.* (तद्.) नरपति, राजा।

नरवध *पुं.* (तत्.) मनुष्यों का वध, हत्या।

नरवरी *स्त्री.* (देश.) क्षत्रियों की एक जाति।

नरवा *पुं.* (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

नरवाई *स्त्री.* (देश.) घास-फूस।

नरवाह *पुं.* (तत्.) वह सवारी जिसे मनुष्य खींच या ढोकर ले चले जैसे- पालकी।

नरवाहन *पुं.* (तत्.) 1. मनुष्य द्वारा खींची या ढोई जाने वाली सवारी 2. कुबेर 3. किन्नर 4. वत्स नरेश उदयन का पुत्र।

नरविष्वण *पुं.* (तत्.) राक्षस।

नरवीर *पुं.* (तत्.) वीर मनुष्य, बहादुर आदमी, योद्धा।

नरव्याघ्र *पुं.* (तत्.) दे. नरकेशरी।

नर शक्र *पुं.* (तत्.) नरेंद्र, राजा, नृप।

नरशार्दूल *पुं.* (तत्.) दे. नरकेशरी।

नरशृंग *पुं.* (तत्.) मनुष्य के सींग होने जैसी असंभव बात।

नरसंसर्ग *पुं.* (तत्.) मनुष्य समाज।

नरसख *पुं.* (तत्.) नर के सखा नारायण।

नरसार *पुं.* (तत्.) नौसादर।

नरसिंग *पुं.* (देश.) एक प्रकार का विलायती फूल।

नरसिंघ/नरसिंह *पुं.* (तद्./तत्.) दे. नरकेशरी।

नरसिंह ज्वर *पुं.* (तत्.) वैद्यक के अनुसार चौथिया चौथिया चातुर्थिक का उलटा एक ज्वर, जो तीन दिन तक चढ़ा रहकर चौथे दिन उतर जाता है, और यही क्रम चलता रहता है।

नरसिंघा *पुं.* (देश.) तुरही की तरह टेढ़े आकार का और नल के आकार का तांबे का बड़ा बाजा जो फूँक कर बजाया जाता है, फूँकने की जगह पतली और आगे का भाग क्रमशः चौडा होता जाता है, यह रणक्षेत्र में प्रयोग में आता था, आजकल देहातों में विवाहोत्सव आदि में बजाते हैं।

नरसेज *पुं.* (देश.) पत्तों से रहित तिधारा नामक थूहर का पौधा।

नरसों *अव्य.* (देश.) परसों के बाद वाला या पहले वाला चौथा दिन, कल-परसों-नरसों, कहीं-कहीं अतरसों भी बोलते है।

नरस्कंध *पुं.* (तत्.) जन-समुदाय।

नरहड़ *पुं.* (तत्.) घुटने और पाँव के बीच की लंबी हड्डी।

नरहत्या *स्त्री.* (तत्.) मनुष्य वध, नरवध।

नरहर *स्त्री.* (देश.) पिंडली के ऊपर की पैर की हड्डी।

नरहरि *पुं.* (तत्.) 1. विष्णु 2. विष्णु का नृसिंह अवतार।

नरहरी *पुं.* (तत्.) नृसिंह अवतार, दशावतार में चतुर्थ अवतार (देश.) काव्य. एक छंद जिसके प्रत्येक पद में 14+5 के हिसाब से 19 मात्राएँ और अंत में एक नगण और एक गुरु होता है।

नरहा *पुं.* (देश.) एक प्रकार का जंगली वृक्ष *वि.* (देश.) नाले से संबंधित या नाले वाला।

नरहीरा *पुं.* (तद्.) आठ या छह पहल का तेज किनारों वाला हीरा, यह जिसके पास हो उसका वैभव बढ़ जाता है।

नरांग *पुं.* (तत्.) 1. पुरुष की इंद्रिय 2. मुँहासा।

नरांतक *पुं.* (तत्.) रावण का एक पुत्र जो युद्ध में अंगद के हाथों मारा गया।

नरा *पुं.* (देश.) नरकट की छोटी नली जिसके ऊपर सूत लपेटा रहता है।

नराच *पुं.* (देश.) 1. तीर, बाण, शर 2. पंच चागर या नागराज नामक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और अंत में एक गुरु होता है।

नराचिका *स्त्री.* (तत्.) वितान वृत्त का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में नगण, रगण, लघु और गुरु होता है।

नराज *वि.* (फा.) दे. नाराज।

नराजना *स.क्रि.* (देश.) नाराज करना, अप्रसन्न करना उदा. उठी हिलोर चातह नराजी, लहरि अकास लागि मुहँ साजी -जायसी *अ.क्रि.* नाराज होना, अप्रसन्न होना।

नराट *पुं.* (तद्) राजा, नृपाल, नरेंद्र।

नराधम *वि.* (तत्.) 1. मनुष्यों में अत्यंत निम्न कोटि का (मनुष्य) 2. दे. नरपिशाच।

नराधिप *पुं.* (तद्.) राजा, नरपति, नृपाल।

नराश *पुं.* (तत्.) मानवभक्षी, राक्षस।

नरिअरी/यरी *स्त्री.* (तद्.) नारियल की खोपड़ी का आधा भाग।

नरिबाहना *अ.क्रि.* (तद्.) निर्वाह करना, निभाना।

नरिया *पुं.* (हि.) एक प्रकार का मिट्टी का खपड़ा, जो मकान की छाजन पर रखने के काम आता है इसे थपुआ खपड़े की संधियों पर औंधाकार रख देते है जिससे उन संधियों में से पानी नीचे नहीं टपक पाता।

नरियाना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. चिल्लाना, शोर मचाना, हल्ला करना।

नरी *पुं.* (देश.) एक प्रकार का बगुल *स्त्री.* (तत्.) 1. नली, बाली, छुच्छी, पुपली 2. बाँस की वह नली या फुँकनी जिससे सुनार आग सुलगाते है 3. स्त्री, नारी *स्त्री.* (फा.) 1. बकरी, बकरे का रंगा हुआ चमड़ा 2. लाल रंग का चमडा 3. सिझाया हुआ मुलायम चमड़ा 4. नार, के भीतर की नली जिस पर तार लपेटा रहता है 5. एक प्रकार की नरई घास जो ताल या नदी के किनारे होती है।

नरुवा *पुं.* (तत्.) अनाज के पौधों की डंडी या डंठल जो अंदर से पोला होता है।

नरेंद्र *पुं.* (तत्.) 1. राजा, नृप, नरेश 2. विषवैद्य जो जो सांप बिच्छू आदि के काटने का इलाज करता है 3. श्योनाक वृक्ष छंद. एक छंद जिसमें 28 मात्राएँ होती है।

नरेतर *पुं.* (तत्.) 1. मनुष्य से भिन्न श्रेणी का प्राणी 2. जानवर, पशु।

नरेबी *पुं.* (देश.) आसाम में पाया जाने वाला एक प्रकार का पेड़ जिसकी छाल से खाकी रंग का शीघ्र सूख जाने वाला गोंद निकलता है, जो चमकीला होता है।

नरेली *स्त्री.* (तद्.) 1. नारियल की खोपड़ी से बना छोटा हुक्का 2. छोटा नारियल।

नरेश *पुं.* (तत्.) मनुष्यों का स्वामी यानी राजा, नृप।

नरेह *वि.* (तद्.) 1. निरीह 2. निष्कपट 'दोढ़ी सिरै दिवार नरेह निहारवी'।

नरो *स्त्री.* (देश.) परसों से पहले या बाद का एक दिन, अतरसों।

नरोत्तम *पुं.* (तत्.) 1. ईश्वर, भगवान, विष्णु 2. श्रेष्ठ मनुष्य।

नरोह *स्त्री.* (देश.) 1. पिंडली की हड्डी, नली 2. कोल्हू की वह नली जिसमें से रस गिरता है।

नर्क *पुं.* (तत्.) दे. नरक।

नर्क *पुं.* (तत्.) नक्र, नाक, नरक।

नर्कुटक *पुं.* (तत्.) नाक, नारियल, घ्राणेंद्रिय।

नर्गिस *पुं.* (फा.) दे. नरगिस।

नर्त *पुं.* (तत्.) 1. नाचने वाला, जो नाचता हो 2. नाच, नर्तन, नृत्य।

नर्तक *पुं.* (तत्.) 1. नाचने वाला, नृत्य करने वाला, नट 2. एक प्रकार का नरकट 3. चारण, भाट, बंदीजन 4. केलक, खड्ग की धार पर नाचने वाला 5. हाथी 6. महादेव का एक नाम 7. महुआ, मधूक 8. मडुआ 9. एक संकर जाति (धोबी पिता और वेश्या माँ से उत्पत्ति) 10. राजा 11. मोर, मयूर 12 अभिनेता *स्त्री.* नर्तकी।

नर्तकी *स्त्री.* (तत्.) 1. नाचने वाली, वेश्या, रंडी, 2. 2. नली नामक गंध द्रव्य 3. अभिनेत्री 4. हथिनी 5. मोरनी।

नर्तन *पुं.* (तत्.) 1. नृत्य, नाच 2. वह जो नृत्य करे यानी नाचने वाला।

नर्तनगृह *पुं.* (तत्.) दे. नर्तनशाला।

नर्तनप्रिय *वि.* (तत्.) 1. नृत्य का शौकीन, जिसे नाच अच्छा लगे *पुं.* 1. शिव 2. मोर।

नर्तनशाला *स्त्री.* (तत्.) नाचघर, केवल नाच के लिए बनाया गया स्थान।

नर्तनशील *वि.* (तत्.) नाचने के गुण वाला, नाचने वाला।

नर्तना *अ.क्रि.* (तत्.) नृत्य करना या नाचना।

नर्तित *वि.* (तत्.) 1. नचाया हुआ 2. नाचता हुआ, नृत्यशील 3. जो नाच चुका हो।

नर्तु *वि.* (तत्.) तलवार की धार पर नाचने वाला।

नर्तू *स्त्री.* (तत्.) 1. नर्तकी 2. अभिनेत्री।

नर्द *वि.* (तत्.) डँकरने या गरजने वाला।

नर्दकी *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की कपास, जिसे कटील, निभरी या बगई नाम से भी जाना जाता है।

नर्दन *स्त्री.* (तत्.) 1. नाद, गर्जन, भीषण ध्वनि 2. उच्च स्वर के गुण गान या कीर्तन।

नर्दा *पुं.* (देश.) मैला बहने की नाली *वि.* (तद्.) बरजने वाला।

नर्दित *पुं.* (तत्.) एक तरह का पासा या पासे का हाथ *वि.* (तत्.) गरजा हुआ।

नर्बदा *स्त्री.* (तद्.) दे. नर्मदा।

नर्म *पुं.* (तत्.) 1. परिहास, विनोद, हँसी, दिल्लगी 2. सखाओं का एक भेद, हँसी करने वाला सखा *वि.* (फा.) 1. जो कड़ा न हो यानी गुदगुदा, मुलायम, कोमल 2. सरल आसान, सहज 3. जो तेज न हो यानी धीमा, सुस्त 4. विनीत, विनम्र 5. खोटा।

नर्मकील *पुं.* (तत्.) पति।

नर्म-गर्म *पुं.* (तत्.) भला-बुरा या सस्ता-महँगा।

नर्मट *पुं.* (तत्.) 1. सूर्य 2. मिट्टी का पात्र, खप्पर।

नर्मठ *पुं.* (तत्.) दिल्लगी, परिहास, सकुशल, मसखरा, विनोदकर, आह्‌लादकारी भाँड, हसोड़, विदूषक 2. उपपति, स्त्री का दोस्त/यार 3. ठोढ़ी, चिबुक 4. स्तन का उग्र भाग 5. संभोग, मैथुन।

नर्मद *वि.* (तत्.) आनंद देने वाला, मनोरंजन करने वाला।

नर्मदा *स्त्री.* (तत्.) 1. मध्य प्रदेश की एक नदी जो जो अमरकंटक से निकल कर भड़ौच के पास खंभात की खाड़ी में गिरती है 2. पृक्का या असवर्ग नामक गंध द्रव्य 3. एक गंधर्व स्त्री जो सुंदरी, केतुमती और वसुदा की माता थी।

नर्म दिल *पुं.* (तत्.) कोमल दिल वाला।

नर्मदेश्वर *पुं.* (तत्.) नर्मदा नदी से निकलने वाले शिव लिंग जो अंडाकार स्फटिक या लाल काले पत्थर के होते हैं, इनके पूजन का बड़ा महत्व पुराणों में बताया गया है।

नर्मद्युति *वि.* (तत्.) 1. नाट्यशास्त्र की प्रतिकामुख संधि के 13 अंगों में से एक; ऐसा परिहास जो पहले किए परिहास के आनंद या दोष को छिपाने के लिए किया जाय 2. परिहास प्रियता, परिहास का आनंद।

नर्मसचिव *पुं.* (तत्.) 1. परिहास करने वाला राजा का सहायक, विदूषक 2. मनोरंजन, प्रियवादिता 3. किसी राजा, राज कुमार या सरदार के मनोरंजन हेतु सचिव का पद।

नर्मसुहृद् *पुं.* (तत्.) दे. नर्मसचिव।

नर्मस्फूर्ज *पुं.* (तत्.) साहित्यदर्पणानुसार कैशिकी वृत्ति के भेदों में से एक।

नर्मस्फोट *पुं.* (तत्.) साहित्य दर्पण के अनुसार कैशिकी के चार भेदो में से एक।

नर्मी *स्त्री.* (फा.) नरम होने का भाव दे. नरमी।

नर्री *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार की बारहमासी घास जो ऊसर जमीन में होती है 2. एक प्रकार का पहाड़ी बांस जो हिमालय में होता है।

नर्स *स्त्री.* (अं.) 1. रोगी की परिचर्या हेतु नियुक्त आया जिसने विधिवत् प्रशिक्षण प्राप्त किया हुआ हो 2. वह जो रोगियों, घायलों या वृद्धों की देखभाल या परिचर्या करे 2. रोगी परिचर्या में विधिवत प्रशिक्षित व्यक्ति 3. वह स्त्री जो दूसरों के बच्चों आदि का पालन करे, धात्री, धाय।

नल *पुं.* (तत्.) 1. नरकट 2.पद्म, कमल 3. निषध देश के चंद्रवंशी राजा दमयन्ती के पति 4. पानी, वाष्प आदि को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के धातु या लोहे का हुंडे के आकार का पोला लंबोतरा टुकड़ा 5. मिट्टी, ईंट आदि से गोल बनी वह नाला उसके द्वारा घरों का गंदा पानी आदि बहाया जाता है 6. राम की सेना का एक भट जिसने नील के सहयोग से समुद्र पर पत्थर का पुल बाँधा था 7. एक प्रकार के पितृदेव 8. गंध 9. विप्रचित्ति का चौथा पुत्र जो सिंहिका के गर्भ से जनमा था। 10. यदु के एक पुत्र का नाम 11. एक नद का नाम 12. प्राचीन काल में एक प्रकार का चमड़े का मढ़ा बाजा जो घोड़े की पीठ पर रखकर युद्धके समय बजाया जाता था 13. पेडू के अंदर की वह नली जिसमें से होकर पेशाब नीचे उतरता है।

नलक *पुं.* (तत्.) शरीर में स्थित गोलाकार हड्डी जो अंदर से खोखली होती है तथा जिसमें अस्थिमज्जा (बोनमैरो) होती है।

नलकिनी *पुं.* (तत्.) जंघा, रान, पैर-टांग, घुटना, जानु।

नलकी *स्त्री.* (तद्.) 1. छोटी नली, पतली नली, नलिका 2. लकड़ी या लोहे आदि का छोटा, लंबा

गोलाकार टुकड़ा जिसके चारों ओर धागा लपेटा जाता है।

नलकूप *पुं.* (तत्.) नल के आकार का कुआँ, भूजल प्राप्त करने के लिए मशीन द्वारा जमीन में छेद करके नल की सहायता से पानी खींचने का यंत्र। Tube well

नलकूबर *पुं.* (तत्.) 1. कुबेर के एक पुत्र का नाम जो स्त्री के साथ क्रीड़ा करने पर नारद के शाप से वृंदावन में यमलार्जुन बने और इन्हें कृष्ण स्पर्श से मुक्ति मिली 2. संगीत के 4 तालों के सात मुख्य भेदों में से एक जिसमें चार गुरू और चार लघु मात्राएँ होती हैं।

नलकोल *पुं.* (देश.) एक प्रकार का बैल।

नलदंबु *पुं.* (तत्.) नीम का पेड़।

नलद *पुं.* (तत्.) 1. पुष्प रस या मधु, मकरंद 2. उशीर, खस 3. जटामासी, बालछड़।

नलना *स.क्रि.* (देश.) रोपाई वाले खेत की निरर्थक घास को दूर करना या निकालना।

नलनीरुह *पुं.* (तत्.) 1. मृणाल, कमल की नाल 2. ब्रह्मा।

नलपुर *पुं.* (तत्.) बौद्ध ग्रंथों में उल्लिखित एक प्राचीन नगर।

नलबाँस *पुं.* (तद्.) हिमालय की तराई में होने वाला एक प्रकार का बाँस जिसे विधुली और देव बांस भी कहते है।

नलमीन *पुं.* (तत्.) झींगा मछली।

नलवा *पुं.* (तद्.) बैलों को घी पिलाने वाली बाँस की टोटी या चोंगा।

नलसेतु *पुं.* (तत्.) रामेश्वरम के निकट भारत और श्रीलंका को जोड़ने वाला सेतु जो राम-रावण-युद्ध के समय नल-नील द्वारा बनाया गया था टि. आज इसका अधिकांश भाग समुद्र के अंदर समा गया है।

नला *पुं.* (तद्.) 1. मूत्रनलिका, पेशाब की नली 2. हाथ या पैर की लंबी हड्डी।

नलाई *स्त्री.* (देश.) 1 नलाने या निराई का भाव 2. नलाने की क्रिया 3. नलाने की मजदूरी।

नलिका *स्त्री.* (तत्.) 1. दे. 'नलकी' 2. प्राचीन काल काल का नली के आकार का एक अस्त्र जिसकी सहायता से लोहे के छर्रे या बाण इत्यादि छोड़े जाते थे 3. एक वैद्यकीय उपकरण जिसकी सहायता से जलोदर के रोगी के पेट से पानी निकाला जाता है 4. तरकश 5. जुलाहों का कपड़ा बुनने का एक औजार 6. तरकश जिसमें तीर रखते है 7. करेमू का साग 8. पुदीना।

नलित *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का साग, जो वैद्यक के अनुसार, तिक्त, पित्त नाशक और गुणवर्धक है।

नलिन *पुं.* (तत्.) 1. पद्म, कमल 2. नीलिका, नील 3. जल, पानी 4. नीम 5. सारस पक्षी 6. करौंदा 7. कुमुद।

नलिनी *पुं.* (तत्.) कुबेर के उपवन का नाम, देवोद्यान *स्त्री.* (तत्.) 1. कमलिनी, कमल 2. वह वह जलाशय जिसमें कमल की प्रचुरता हो 3. कमलों का समूह 4. नली नामक गंध द्रव्य 5. नदी 6. नारियल, नारियल की शराब 7. गंगा की एक धारा, देवगंगा (पुराण) 8. नाक का बायाँ नथुना 10. कमल नाल 11. इंद्रपुरी।

नलिनीरुह *पुं.* (तत्.) 1. मृणाल, कमल की नाल 2. ब्रह्मा।

नलिनेशय *पुं.* (तत्.) विष्णु का एक नाम।

नलिया *पुं.* (देश.) बहेलिया।

नली *स्त्री.* (तत्.) 1. मैनसिल 2. नलिका नामक गंध द्रव्य *स्त्री.* (तद्.) 1. छोटा पतला नल, छोटा छोटा चोंगा 2. नल के आकार की भीतर की पोली हड्डी जिसके अंदर मज्जा भी होती है 3. घुटने के नीचे का भाग, पैर की पिंडली 4. बंदूक की नली जिसमें होकर गोली पहले गुजरती है 5. जुलाहों की नाल।

नलीमोज *पुं.* (फा.) वह कबूतर जिसके पंजे तक पर होते हैं।

नलुआ *पुं.* (देश.) पशुओं का एक रोग जिसमें सूजन हो जाती है 2. छोटा नल या चोंगा 3. बाँस की पोर, उसके दो गाठों के बीच का टुकड़ा।

नलोत्तम *पुं.* (तत्.) देवनल, बड़ा नरसल।

नल्ली *स्त्री.* (तत्.) 1. नली 2. एक प्रकार की घास जिसे 'पलवान' भी कहते है।

नल्व *पुं.* (तत्.) जमीन की एक तरह की पुरानी नाप या परिमाण जो सौ या 400 हाथ की होती है।

नल्व वर्त्मगा *स्त्री.* (तत्.) काकजंधा, काकाक्षी लता।

नवंबर *पुं.* (अं.) ईस्वी वर्ष का ग्यारहवाँ महीना।

नव *पुं.* (तत्.) 1. स्तव, स्तोत्र 2. लाल रंग की गदहपूरना 3. उशीन राजा के पुत्र का नाम 4. काक *वि.* 1. नया, नवीन, नूतन, अभिनव, जीर्ण का उल्टा 2. नौ-आठ और एक, दस से एक कम 3. ग्रह और रत्न का वाचक शब्द क्योंकि ये गिनती मे नौ होते हैं।

नव-उपनिवेशवाद *पुं.* (तत्.) राज. किसी दूसरे देश को आर्थिक, व्यावसायिक या प्रौद्योगिक दृष्टि से से इस प्रकार सहायता देना जिससे वह राजनीतिक दृष्टि से स्वतंत्र होने के बावजूद पराधीन बन जाए और इस प्रकार उस देश का शोषण करना तथा अपनी शक्ति बढ़ाना।

नव-उपविष *पुं.* (तत्.) आयु. नौ प्रकार के अल्प प्रभाव वाले विष-सेंहुड़ या नागफनी का दूध, मदार वृक्ष का दूध, कलिहारी या कलियारी का रस, कनेर के तने से निकलने वाला रस, गुंजा फल, जमालगोटा, कुचला, धतूरा और अफीम।

नवक *पुं.* (तत्.) एक ही तरह के नौ ग्रहों का समूह जैसे- धातुओं या ग्रहों का नवक, नौ का समूह।

नवका *पुं.* (तत्.) दे. नाव।

नवकार *पुं.* (तत्.) जैनियों का एक मंत्र।

नवकारिका *स्त्री.* (तत्.) नवोढ़ा स्त्री।

नवकार्षि गूगल *पुं.* (तत्.) वैद्यक का एक चूर्ण जिसमे गूगल, त्रिफला, पिपली बराबर मात्रा में होती है इसका व्यवहार शोथ, गुल्म, भगंदर और बवासीर के निवारण के लिए होता है।

नवकालिका *स्त्री.* (तत्.) 1. नवयौवना, नौजवान औरत 2. हाल ही में रजस्वला हुई युवती।

नवकुमारी *स्त्री.* (तत्.) नवरात्र में पूजनीय नौ कुमारियाँ जिनमें नौ देवियों की कल्पना की जाती है, इनके नाम है- कुमारिका, त्रिमूर्ति, कल्याणी, रोहिणी, काली, चंडिका, शांभवी, दुर्गा और सुभद्रा।

नवखंड *पुं.* (तत्.) 1. पुराणोक्त भूगोल वर्णन के अनुसार पृथ्वी के नौ भाग भरत, इलावर्त, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्य और कुश 2. भूमि के नौ विभाग।

नवगठित *वि.* (तत्.) जिनका गठन अभी कुछ दिन पूर्व हुआ हो जैसे- भारत के नवगठित राज्य- झारखंड, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और उत्तरांचल।

नवग्रह *पुं.* (तत्.) 1. ज्यो. पौराणिक मान्यता के अनुसार नौ ग्रह-सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु; इनमें राहु-केतु छाया ग्रह माने जाते हैं; यज्ञ, पूजन आदि में इनकी भी पूजा होती है तथा ज्योतिषी इनके अनुसार फलित बतलाते हैं टि. आधुनिक परिभाषा के अनुसार सूर्य तारा, चंद्र उपग्रह तथा राहुकेतु बिंदु मात्र है 2. सूर्य की परिक्रमा करने वाले नौ ग्रह- (सूर्य से दूरी के क्रम से) बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, वृहस्पति, शनि, यूरेनस, नेपच्यून और प्लूटो, (इनके अतिरिक्त एक और ग्रह की खोज वैज्ञानिकों ने की है, पर उसे अभी अंतर्राष्ट्रीय मान्यता नहीं दी गई है)।

नवनि *स्त्री.* (तद्.) झुकने की क्रिया या भाव 2. नम्रता, दीनता आदि।

नवजागरण *पुं.* (तत्.) नई जागृति, फिर से नया जीवन पाना, पुनरुत्थान।

नवजागरण काल/युग *पुं.* (तत्.) 1. यूरोप का नवजागण काल, ईसवीं. की चौंदहवी से सोलहवी शताब्दी का काल 2. भारत का नवजागरण काल, अठारहवी उन्नीसवी शताब्दी, इस काल में राजा राम मोहन राय, दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस आदि समाज सुधारक हुए।

नवजात *वि.* (तत्.) अभी-अभी उत्पन्न, तुरंत पैदा हुआ, जो कुछ समय पूर्व ही पैदा हुआ हो या अस्तित्व में आया हो।

नवजीवन *पुं.* (तत्.) 1. नया जीवन 2. नया जन्म (दुर्घटना, बीमारी आदि से बच जाना) 3. जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन जिससे जीवन की धारा बदल जाए।

नवज्वर *पुं.* (तत्.) ज्वर, चढ़ता बुखार जो अभी शुरू हुआ हो।

नवडार्विनवाद *पुं.* (तत्.) डार्विन के बाद के वैज्ञानिकों का विकास का सिद्धांत जिसके अनुसार विकास में प्राकृतिक वरण ही अधिक प्रभावी होता है न कि वंशानुगति।

नवंत *पुं.* (तत्.) 1. हाथी की चित्रकारी की गई झूल 2. कंबल 3. रेशमी कपड़ा 4. आवरण, परदा।

नवनत *पुं.* (तद्.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

नवता *पुं.* (तत्.) ढलुई जमीन, उतार *वि.* नवीन, नया, ताजा *स्त्री.* नवीनता, नयापन, ताजगी।

नवतारा *पुं.* (तत्.) खगो. ऐसा तारा जिसकी चमक अकस्मात् बहुत अधिक हो जाती है और धीरे धीरे क्रमशः पूर्वस्थिति में आ जाती है (वस्तुतः यह नया तारा नहीं होता है)।

नवति *वि.* (तत्.) अस्सी और दस या सौ से एक कम यानी 90 की संख्या, नब्बे।

नवदंड *पुं.* (तत्.) राजाओं के तीन प्रकार के छत्रों में से एक का नाम।

नवदल *पुं.* (तत्.) 1. कमल का केसर के पास वाला पत्ता 2. नया पत्ता 3. नया राजनीतिक दल 4. नौ पत्तों या पंखुड़ियों वाला।

नवदश *वि./स्त्री.* (तत्.) उन्नीस, जिसे अंकों में 19 लिखा जाता है।

नवदीधिति *पुं.* (तत्.) मंगल ग्रह।

नवदुर्गा *स्त्री.* (तत्.) नवरात्रि में पूजी जाने वाली नौ दुर्गाएँ, नवरात्रों में पूजी जाने वाली दुर्गा के नौ रूप शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंद माता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी तथा सिद्धिदात्री।

नवद्वार *पुं.* (तत्.) शरीर में स्थित नौ द्वार या छिद्र- दो नेत्र, दो कान, दो नाक, मुख, मल और मूत्र के द्वार।

नवद्वीप *पुं.* (तत्.) बंगाल का एक प्रसिद्ध नगर और न्याय शास्त्र के लिए प्रसिद्ध विद्यापीठ जो राजा लक्ष्मण सेन की राजधानी थी, यह नौ गांवों का समूह था।

नवधा *क्रि.वि.* (तत्.) नौ प्रकारों से जैसे- नवधा भक्ति- नौ प्रकारों से की जाने वाली भक्ति- श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन।

नवधा अंग *पुं.* (तत्.) शरीर के नौ अंग- आँख, कान, हाथ, पैर, और नाक।

नवधातु *स्त्री.* (तत्.) नौ धातुएँ।

नवधा भक्ति *स्त्री.* (तत्.) नौ प्रकार की भक्ति।

नवधा भूमि *स्त्री.* (तत्.) नौ प्रकार की भूमि।

नवना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. झुकना 2. नम्र होना।

नवनि *स्त्री.* (देश.) झुकने की क्रिया या भाव 2. नम्रता, दीनता आदि।

नवनिधि *स्त्री.* (तत्.) पुराणोक्त कुबेर की नौ निधियाँ- पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकंद, कुंद, नील और खर्व।

नवनी *स्त्री.* (तत्.) नवनीत, मक्खन।

नवनीत *पुं.* (तत्.) 1. मक्खन, ताजा मक्खन 2. श्री कृष्ण, नवीनता को ले जाया गया।

नवनीत गणप *पुं.* (तत्.) गणपति, गणेश का एक नाम।

नवनीत धेनु *पुं.* (तत्.) मक्खन के ढेर में दान के लिए कल्पित गौ जिसके हाथ से शिवसायुज्य प्राप्त होता है और विष्णु लोक की प्राप्ति होती है।

नवपत्रिका *स्त्री.* (तत्.) नवदुर्गा के पूजा में व्यवहृत व्यवहृत नौ वृक्षों के पत्ते।

नवपद *पुं.* (तत्.) जैनियों द्वारा उपासित एक मूर्ति।

मूर्ति।

नवपदी *स्त्री.* (तत्.) चौपाई, बंद।

नवपाषाणयुग *पुं.* (तत्.) (पुरा.) उत्तर पाषाणकाल के बाद का समय जिसका प्रारंभ ईसा से लगभग दस हजार वर्ष पूर्व से माना जाता है।

नवप्रवर्तन *पुं.* (तत्.) किसी समय में नई मान्यताओं या आदर्शों का प्रचलन या पुरानी परंपराओं का संशोधन या विकास।

नवप्रसूत *वि.* (तत्.) अभी-अभी जन्मा हुआ, नवजात।

नवप्रसूता *वि./स्त्री.* (तत्.) जिसने अभी-अभी किसी बच्चे को जन्म दिया हो वह स्त्री।

नवप्राशन *पुं.* (तत्.) नया अन्न या फल खाना।

नवम *वि.* (तत्.) नौवाँ *स्त्री.* नवमी, जो गिनती में नवें स्थान पर हो।

नवमल्लिका *स्त्री.* (तत्.) 1. चमेली 2. नेवारी फूल।

नवमांश *पुं.* (तत्.) नौवाँ भाग, 1/9, नवांश ज्यो. कुंडली का एक प्रकार, जिसमें ग्रहों की विशिष्ट स्थिति के अनुसार फलादेश किया जाता है।

नवमालिका *स्त्री.* (तत्.) 1. काव्य. एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में नगण, जगण, भगण और यगण होता है, इसे मालिनी भी कहते है 2. नयी माला 3. चमेली का एक प्रकार।

नवमी *वि.स्त्री.* (तत्.) 1. नौवी, भारतीय मासों के किसी पक्ष की नौवी तिथि 2. *स्त्री.* (तत्.) चांद्रमास की किसी भी पक्ष की नवीं तिथि, धार्मिक कृत्यों के लिए अष्टमी विद्धा, नवमी ग्राह्य होती है, विशिष्ट मास की विशिष्ट पक्ष की नवमी के विशिष्ट नाम जैसे- माघ, शुक्ल पक्ष नवमी 'महानंदा' या चैत्र शुक्ल नवमी यानी यम नवमी।

नवयज्ञ *पुं.* (तत्.) नए अन्न के निमित्त किया गया यज्ञ।

नवयुग *पुं.* (तत्.) नया युग, नया काल, आधुनिक काल।

नवयुवक *पुं./वि.* (तत्.) प्राय: 16 से 20 वर्ष की आयु का, तरुण, नौजवान।

नवयुवती *स्त्री./वि.* (तत्.) प्राय: 14 से 20 वर्ष की लड़की।

नवयुवा *पुं.* (तत्.) दे. नवयुवक।

नवयोनिन्यास *पुं.* (तत्.) तंत्र के अनुसार विशेष प्रकार का न्यास।

नवयौवन *पुं.* (तत्.) तरुणाई की शुरुआत, नई जवानी *स्त्री.* जिसके यौवन का प्रारंभ हो, नौजवान और नवयुवती।

नवरंग *वि.* (तत्.) 1. नई छटा वाला, नए सौंदर्य वाला, नवीन शोभा से युक्त 2. नारंगी का फल।

नवरंगी *वि.* (देश.) 1. नित्य आनंद करने वाला 2. रंगीला, हँसमुख, खुश मिजाज।

नवरत्न *पुं.* (तत्.) 1. ज्यो. नौ ग्रहों के नौ रत्न- सूर्य-माणिक या लाल, चंद्र-मोती, मंगल-मूँगा, बुध-पन्ना, गुरु-पुखराज, केतु-वैदूर्य या लहसुनिया पद्मराग, नीलम, गौमेद आदि 2. विक्रमादित्य

की सभा के नौ विद्वान- धन्वंतरि-क्षपणक, अमर अमर सिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि विशे. वस्तुतः ये सभी विद्वान अलग अलग काल में हुए हैं, पर विक्रमादित्य की सभा में इन नामों की गणना कर ली गई है 3. एक विशिष्ट आभूषण, नवरतन हार।

नवरस *पुं.* (तत्.) साहित्य में माने गए काव्य के नौ रस- शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, अद्‌भुत, वीभत्स और शांत।

नवरा *पुं.* (तद्.) दे. नेवला, नकुल *वि.* नया।

नवरात्र *पुं.* (तत्.) 1. नौ दिन तक होने वाला यज्ञ 2. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन, जिसमें नवदुर्गा व्रत, घटस्थापन, पूजन किया जाता है, नवें दिन विसर्जन होता है, प्रतिदिन एक दुर्गा के दर्शन भी किए जाते है 3. प्रमुख रूप से मनाए जाने वाले दो नवरात्र पर्व चैत्र और आश्विन मासों के शुक्ल पक्ष के प्रारंभिक नौ दिनों में होते हैं, चैत्र मास में वासंतिक नवरात्र और आश्विन मास में शारदीय नवरात्र होता है, इन दिनों देवी की विशेष पूजा होती है।

नवराष्ट्र *पुं.* (तत्.) सहदेव द्वारा दक्षिण दिग्विजय के के साथ जीता गया प्राचीन देश।

नवरिया *स्त्री.* (देश.) नाव।

नवल *पुं.* (तत्.) नवीन, नूतन, नव्य, नया 2. सुंदर 3. जवान 4. उज्ज्वल, शुद्‌ध, साफ, स्वच्छ 5. माल का किराया जो जहाजवालों को दिया जाता है।

नवल किशोर *पुं.* (तत्.) कृष्ण का एक नाम।

नवल किशोरी *स्त्री.* (तत्.) राधा।

नवल वधू *स्त्री.* (तत्.) केशव के सौंदर्य पर मुग्ध नायिका के चार भेदों में से एक।

नवला *वि.* (तत्.) नई, नवीन, चढ़ती वय की *स्त्री.* (तत्.) नवीन स्त्री, तरुणी।

नवलार *पुं.* (तत्.) जैनियों का एक मंत्र।

नवलेवा *पुं.* (तत्.) बढ़ी हुई नदी के उतरने से किनारे पर रह जाने वाली कीचड़, नदी के किनारे की दलदल।

नववधू *स्त्री.* (तत्.) 1. विवाह के लिए तैयार वधू 2. नवविवाहिता, नई बहू, जिसका अभी-अभी विवाह हुआ हो वह स्त्री या नायिका।

नववर्ष *पुं.* (तत्.) 1. नया वर्ष, नया साल 2. वर्ष का पहला दिन- भारतीय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, यूरोपीय पहली जनवरी।

नववल्लभ *पुं.*(तत्.) गंध द्रव्यों में परिगणित एक प्रकार का अगर।

नव वासुदेव *पुं.* (तत्.) रत्नसार के अनुसार जैनों के नव वासुदेव जो कुछ तीर्थंकरों के समय नरक गए थे।

नववास्तु *पुं.* (तत्.) एक वैदिक राजर्षि का नाम।

नवविंश *वि.* (तत्.) क्रम के अठ्ठाईस के बाद यानी उनतीसवां, तीस से एक कम।

नवविष *पुं.* (तत्.) नौ प्रकार का आयु. नौ प्रकार के विष जो औषधि का कार्य भी करते हैं- वत्सनाभ, हारिद्रक, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृंगक, कालकूट, हलाहल (हालाहल) और ब्रह् म पुत्र।

नवव्यूह *पुं.* (तत्.) विष्णु का एक नाम।

नवशक्ति *स्त्री.* (तत्.) पुराणों के अनुसार शक्ति की अधिष्ठात्री नौ देवियाँ प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्‌धा, नंदिनी, सुप्रभा, विजया और सर्वसिद्‌धिदा।

नवशब्द *पुं.* (तत्.) नया शब्द।

नवशब्दनिर्माण *पुं.* (तत्.) (नई खोंजों के परिणामस्वरूप उत्पन्न नई संकल्पनाओं की अभिव्यक्ति के लिए विद्यमान शब्दों के उपयुक्त उपयुक्त सिद्‌ध न होने की स्थिति में) नए शब्दों की रचना।

नवशायक *पुं.* (तत्.) ग्वाला, माली, जुलाहा, हलवाई, कुम्हार, लोहार और हजाम ये नौ संकर जातियाँ जो शुद्‌ध शूद्र जाति के अंतर्गत है।

नवशिक्षित *पुं.* (तत्.) 1. वह व्यक्ति जिसने अभी अभी कुछ सीखा हो, नौसिखिया; नवसाक्षर 2. वह व्यक्ति जिसने आधुनिक या नई विद्या सीखी सीखी हो।

नवशोभ *पुं.* (तत्.) नई शोभा वाला, युवक, जवान।

नवश्राद्ध *पुं.* (तत्.) प्रेत के लिए किया जाने वाला श्राद्ध जो मरने के दिन से एक-एक दिन के अंतर पर ग्याहरवें दिन तक किया जाता है।

नवसंगम *पुं.* (तत्.) प्रथम समागम, नया मिलाप, पति-पत्नी की पहली भेंट।

नवसत *पुं.* (तद्.) नव और सप्त यानी नौ और सात सोलह शृंगार *वि.* (देश.) षोड़ष, सोलह।

नवसर *पुं.* (तद्.) लड़ियों का हार जैसे- 'और हार एक नवसर' -सूर. *वि.* नववयस्क, नई उमर वाला।

नवससि *पुं.* (तद्.) द्वितीया का चंद्रमा, दूज का चाँद, नया चाँद।

नवहड़ *पुं.* (तद्.) मिट्टी का नया बरतन, नई हाँडी, नौहंड।

नवद्वार *पुं.* (तद्.) शरीर के नौ द्वार आँख, नाक, कान, मुँह आदि, शरीर से मृत्यु के समय प्राण निकलते हैं।

नवांग *पुं.* (तत्.) नौपदार्थ, सौंठ, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आँवला आदि।

नवांगा *स्त्री.* (तत्.) काकड़ासिंगी।

नवांश *पुं.* (तत्.) 1. एक राशि का नवां भाग जिसका व्यवहार फलित ज्योतिष में किसी नवजात शिशु के चिह्नादि का विचार करने के काम आता है 2. दे. नवामांश।

नवाँ *वि.* (तत्.) गिनती में नौ के स्थान पर, आठवें के बाद और दसवें के पहले।

नवाई *वि.* (देश.) नया, नवीन *स्त्री.* (देश.) विनीत होने का, नवने का भाव।

नवागंतुक *पुं.* (तत्.) नया आया हुआ व्यक्ति।

नवागत *वि.* (तत्.) नया आया हुआ, नया अतिथि।

नवागत सैन्य *पुं.* (तत्.) नई भरती की हुई फौज, रंगरूटों की सेना, जो दूसरो के साथ मिलकर युद्ध कर सकती है।

नवाचार *पुं.* (तत्.) नया रीतिरिवाज, नया चलन, आधुनिकता।

नवाज *वि.* (फा.) कृपा करने वाला, दया दिखाने वाला, कृपालु, मेहरबानी करने वाला, मेहरबान, यौगिक शब्दों के अंत में प्रयुक्त शब्द यथा, बंदानवाज, गरीब नवाज।

नवाज़ना *स.क्रि.* (फा.) कृपा करना, मेहरबानी करना, सम्मानित करना।

नवाज़िश *स्त्री.* (फा.) कृपा, मेहरबानी।

नवाड़ा *पुं.* (देश.) एक प्रकार की नाव, नवारा।

नवान *पुं.* (तद्.) दे. नवान्न।

नवाना *स.क्रि.* (तद्.) झुकाना, विनती करना जैसे- सिर नवाना।

नवान्न *पुं.* (तत्.) 1. नई फसल का अन्न 2. पका हुआ ताजा अन्न 3. प्राचीन काल में नया अन्न तैयार होने पर पितरों के उद्देश्य से किया गया श्राद्ध 3. ताजा पकाया हुआ अन्न।

नवाब *पुं.* (अर.) 1. मुसलमान बादशाहों के तत्कालीन प्रतिनिधि 2. अंग्रेजों के समय में मुसलमानों को दी जाने वाली एक उपाधि 3. भारत की स्वतंत्रता से पूर्व मुस्लिम रियासतों के प्रमुख *वि.* वह जो बड़ी शानोशौकत से रहता हो और विलासी प्रकृति का हो, शान शौकत और अमीरी ढंग से रहने वाला, खूब फिजूल खर्च करने वाला, अपव्ययी व्यक्ति।

नवाबजादा *पुं.* (अर.) 1. नवाब का पुत्र 2. बहुत शौकीन नीयत वाला ला.अर्थ. अपने को बड़े अमीर बाप का बेटा समझने वाला।

नवाबी *स्त्री.* (अर.) 1. नवाब की उपाधि या पद/ओहदा 2. नवाब का कार्य 3. नवाब के अधिकार या नवाब होने की स्थिति 4. बहुत अधिक अमीरी

या अमीरों का सा अपव्यय 5. एक प्रकार का कपड़ा जिसे अमीर लोग पहनते थे *वि.* नवाबों का, नवाबों जैसा।

नवारना *अ.क्रि.* (देश.) 1. चलना, टहलना 2. यात्रा या सफर करना।

नवारा *पुं.* (देश.) एक प्रकार की बड़ी नाव।

नवाव *पुं.* (अर.) 1. बादशाह का प्रतिनिधि जो किसी बड़े प्रदेश के शासन के लिए नियुक्त हो- मुगल सम्राटों के काल में उनके, प्रतिनिधियों के लिए प्रयुक्त शब्द जैसे- लखनऊ के नवाव, रामपुर के नवाव 2. एक उपाधि जो मुसलमानी राज्यों के मालिक अपने नाम के साथ लगाते हैं जैसे-रामपुर के नवाव 3. एक उपाधि जो भारतीय मुसलमान फकीरों को अंग्रेजी सभा की ओर से मिलती थी यह राजकीय उपाधि के समान होती थी।

नवासंज *पुं.* (तत्.) गायक।

नवासा *पुं.* (फा.) पुत्री का पुत्र, धेवता, नाती।

नवासी *स्त्री.* (फा.) पुत्री की पुत्री, धेवती, नातिन *वि.* (तद्.) नब्बे से एक कम, 89।

नवाह *पुं.* (तद्.) 1. नौ दिन में समाप्त होने वाला रामायण का पाठ 2. किसी सप्ताह, पक्ष, मास या वर्ष का नया दिन।

नवि *अव्य.* (देश.) न, नहीं तो, अन्यथा।

नवी *स्त्री.* (देश.) नोई, वह रस्सी जिससे गाय के पैर में बछड़े का गला बाँधकर दूध दुहते हैं।

नवीकरण *पुं.* (तत्.) 1. किसी पुरानी वस्तु को नया बना देना 2. पुस्त. नई तिथि डालकर पुनः वही पुस्तक देना 3. नई तिथि डालकर चालू रखना।

नवीन *वि.* (तत्.) 1. नया, ताजा जो अभी का या थोड़े समय का हो, प्राचीन का उलटा, हाल का 2. विचित्र, अपूर्व 3. अद्‌भुत, जो पहले न देखा हो 4. नवयुवक, तरुण, जवान।

नवीनतम *वि.* (तत्.) सबसे नया, आधुनिकतम।

नवीनता *स्त्री.* (तत्.) नूतनत्व, नूतनता, नवीन या नया होने का भाव।

नवीना *स्त्री.* (तत्.) नवयुवती, तरुणी।

नवीनीकरण *पुं.* (तत्.) दे. नवीकरण।

नवीस *पुं.* (फा.) लिखाई, लिखने की क्रिया या भाव, शब्दांत में प्रयुक्त शब्द जैसे- अरजी नवीस *प्रत्यय.* लिखने वाला जैसे- नकलनवीस।

नवीसी *प्रत्य.* (फा.) लिखने की क्रिया या भाव।

नवेद *स्त्री.* (तत्+फा.) 1. निमंत्रण, न्योता 2. वह चिट्ठी, जिसमें न्योता लिखकर भेजा जाए, निमंत्रण पत्र 3. शुभ सूचना, खुशखबरी।

नवेला *वि.* (तद्.) नूतन, नया, तरुण, जवान जैसे- नया-नवेला, नई-नवेली।

नवेली *स्त्री.* (तद्.) 1. नई उमर की तरुणी 2. नई स्त्री, युवती।

नवैयत *स्त्री.* (अर.) 1. प्रकार, भेद, किस्म 2. भूमि भूमि या संपत्ति रखने की अवधि और शर्तें।

नवोढ *वि.* (तत्.) 1. नवविवाहित, विवाहित 2. नवयुवक तु. प्रौढ़ *स्त्री.* नवोढ़ा।

नवोढ़ा *स्त्री.* (तत्.) 1. विवाहित स्त्री, वधू 2. नवयौवना, नवयौवना, युवती स्त्री 3. साहित्य में मुग्धा के अंतर्गत ज्ञात यौवना नायिका का एक भेद।

नवोत्पाद *पुं.* (तत्.) अर्थ. 1. विकासशील समाज की नई आवश्यकताओं के अनुरूप नई वस्तु का उत्पादन करना 2. नई खोजों के परिणामस्वरूप वस्तुओं की गुणवत्ता में सुधार करते हुए उसी वस्तु को पुनः नए रूप में प्रस्तुत करना 3. उपर्युक्त प्रकारों से प्रस्तुत उत्पाद।

नवोदक *पुं.* (तत्.) 1. वर्षा की पहली फुहार 2. कुआँ खोदते समय निकला हुआ पहला पानी।

नवोदित *पुं.* (तत्.) 1. नया, नवीन 2. जो आसन्न भूतकाल में (अभी अभी ही) प्रकाश में आया हो, जिसकी जानकारी लोगों को अभी-अभी हुई हो, सद्य प्रकाशित जैसे- नवोदित गायक।

नवोद्धृत *वि.* (तत्.) ताजा निकाला हुआ (मक्खन आदि)।

नवोद्भिद *पुं.* (तत्.) वन. अंकुरण के बाद पत्तियों वाला नया पौधा।

नवोन्मेष *पुं.* (तत्.) 1. दे. नवजागरण 2. पुनर्जागरण 3. नया प्रकाश।

नव्य *वि.* (तत्.) 1. नया, नवीन, नूतन, ताजा 2. स्तुति करने योग्य 3. नमन करने के योग्य *पुं.* गदहपूर्ना, एक पुनर्नवा,।

नव्य आभिजात्यवाद *पुं.* (तत्.) पा.काव्य. साहित्य लेखन, वास्तु निर्माण और ललित कलाओं शैलियों और परंपराओं का पालन करते हुए युगानुकूल, रचनाधर्मिता। neo-classicism

नव्य प्रयोग *पुं.* (तत्.) परंपरा से प्राप्त अर्थ से भिन्न अर्थों में युगानुकूल एवं सक्षम अभिव्यक्ति के लिए लेखन में नए प्रतीकों या बिंबों का प्रयोग। neo-logism

नव्वाब *पुं.* (तत्.) दे. नवाब।

नव्वाबी *पुं.* (तत्.) दे. नवाबी।

नव्वाव *पुं.* (अर.) 1. बादशाह का प्रतिनिधि राजकर्मचारी का नायक जो मुस्लिम राज काल में किसी बड़े प्रदेश या सूबे के शासन के लिए नियुक्त किया गया हो 2. किसी रियासत का मुसलमान शासक 3. मध्यम श्रेणी के वर्तमान मुसलमान की एक उपाधि।

नव्वाबी *स्त्री.* (अ.) 1. नवाब का पद 2. राज्य, शासन, हुकूमत 2. समृद्धि, संपन्ता 4. अपव्यय, फिजूल खर्ची।

नश *अ.क्रि.* (तत्.) 1. नाश, विनाश 2. हानि-नुकसान 3. लोप, विलोप।

नशन *पुं.* (तत्.) नष्ट हो जाने का भाव, अस्तित्व की समाप्ति बरबादी, विनाश।

नशना *अ.क्रि.* (तद्.) नष्ट हो जाना, अस्तित्व खो देना *स.क्रि.* नष्ट करना, समाप्त कर देना।

नशा *पुं.* (अर.) 1. भांग, अफीम, गांजा आदि मादक द्रव्यों के सेवन से उत्पन्न दशा जिसमें इद्रियाँ और बुद्धि काबू से बाहर हो जाती है 2. मादक द्रव्य, नशीली चीजें मुहा. नशा उतारना- नशे का न रहना, मादक द्रव्य के प्रभाव का नशा, घमंड चूर होना; नशा किरकिरा होना- किसी अप्रिय बात से नशे का मजा बीच में बिगड़ जाना; नशा चढ़ना- मादक द्रव्य का प्रभाव होना; नशा छाना- नशा या मस्ती चढ़ना; नशा जमना- अच्छी तरह नशा होना; नशा टूटना- नशा उतरना; नशा हिरन होना- किसी असंभावित घटना आदि के कारण नशे का बिल्कुल उतर जाना यौ. नशा पानी-भांग या अन्य मादक द्रव्य और उसकी सामग्री या सामान।

नशाक *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का कौआ।

नशाखोर *पुं.* (फा.) किसी मादक द्रव्य या नशे का निरंतर सेवन करने वाला, नशे बाज।

नशाना *स.क्रि.* (तद्.) नष्ट करना, बरबाद करना, बिगाड़ डालना।

नशावन *वि.* (तद्.) 1. नशा करना 2. नाश/नष्ट करने वाला।

नशीं *वि.* (फा.) बैठने वाला, यौगिक शब्द के अंत में प्रयुक्त जैसे- तख्तनशीं, गद्दीनशीं, परदानशीं।

नशीन/नशीं *पुं.* (फा.) बैठने वाला, आसीन जैसे- परदानशीन, तख्तनशीन, गद्दीनशीन।

नशीला *वि.* (फा.) 1. नशा उत्पन्न करने या लाने वाला मादक 2. जिस पर नशे का प्रभाव हो मुहा. नशीली आँखे- वे आँखे जिनमें मस्ती छाई हो, मदमत्त नेत्र 3. नशे से युक्त, नशीले पदार्थ से युक्त 4. मस्ती से युक्त या मस्ती उत्पन्न करने वाला।

नशेड़ी *वि.* (तत्.) नशेबाज, जिसे नशे की आदत पड़ चुकी हो, बिना नशा किए जिसे चैन न मिले।

नशेबाज *पुं.* (फा.) बराबर किसी नशे का सेवन करने वाला, जिसे नशे की आदत हो *वि.* जो स्वयं तो नशा करता ही हो, औरों को नशा खिलाने/पिलाने में जिसे आनंद मिलता हो।

नशेमन *पुं.* (फा.) 1. घोंसला, नीड़, आश्रय।

नशोहर *वि.* (तत्.) नाशक, नाश करने वाला।

नश् *पुं.* (तत्.) नाखून, नख।

नश्तर *पुं.* (फा.) चिकि. चीर-फाड़ करने वाला चाकू जैसा तेज उपकरण, बहुत तेज छोटा चाकू जिसका अगला भाग नुकीला और टेढ़ा हो और दोनों ओर धार हो, जो फोड़े आदि की चीर फाड़ करने या घास खोदने में प्रयुक्त होता है मुहा. नश्तर देना/लगाना- नश्तर से फोड़ा या घाव चीरना; नश्तर लगना- फोड़े का चीरा जाना।

नश्यत्प्रसूतिका *स्त्री.* (तत्.) वह स्त्री, जिसका बच्चा बच्चा मर गया हो, मृतवत्सा।

नश्वर *वि.* (तत्.) 1. नष्ट हो जाने वाला, नष्ट होने योग्य, नाशशील, नाशधर्मी 2. हानिकर 3. हानि या नाश करने वाला विलो. शाश्वत।

नश्वरता *स्त्री.* (तत्.) नश्वर होने का भाव।

नषत *पुं.* (तत्.) दे. नक्षत्र।

नषसिष *पुं.* (तत्.) दे. नख-सिख/नख-शिख।

नषाना *स.क्रि.* (तत्.) नचाना, चलाना, घुमाना प्रयो. 'ताके आगे फेरि फेरि टट्टुवा नषाइ'।

नष्ट *वि.* (तत्.) 1. जो अदृश्य हो, दिखाई न दे 2. जिसका नाश हो गया हो, बरबाद हो गया हो, दुर्दशा 3. अधम, नीच, दुराचारी 4. निष्फल, व्यर्थ, खराब, चौपट 5. धनहीन, दरिद्र 6. पलायित 7. जो उपयोग के लायक न रह गया हो या जो व्यर्थ हो गया हो यौ. शब्द के आदि में प्रयुक्त यथा-नष्ट वीर्य, नष्ट प्राय।

नष्टक्रिय *वि.* (तत्.) कृतघ्न, जो कृतज्ञ न हो।

नष्ट चंद्र *पुं.* (तत्.) भाद्रपद के दोनों/या केवल शुक्ल पक्ष की चतुर्थी का चाँद जिसका दर्शन पुराणानुसार निषिद्ध है क्योंकि उससे कलंक या अपवाद लगता है।

नष्टचित्त *वि.* (तत्.) उन्मत्त, पागल।

नष्टचेतन *पुं.* (तत्.) अचेत, बेहोश, मूर्च्छित, बेखबर।

नष्टचेष्ट *वि.* (तत्.) जिसकी चेष्टा या गति नष्ट हो गई हो।

नष्टचेष्टता *स्त्री.* (तत्.) 1. मूर्छा, बेहोशी, बेखबरी 2. प्रलय 3. मूर्च्छा नामक सात्विक भाव।

नष्टजातक *पुं.* (तत्.) ज्यो. फलित ज्योतिष की वह क्रिया या उपाय जिसके द्वारा जन्म समय तिथि के अज्ञात रहने पर भी मनुष्य की जन्म कुंडली आदि बनाते हैं।

नष्टजन्मा *पुं.* (तत्.) 1. जारज, वर्ण संकर, दोगल।

नष्ट बीज *वि.* (तत्.) वह फसल जो न उगी हो, फलरहित खेती, जिसका बीज भी नष्ट हो गया हो।

नष्टभ्रष्ट *वि.* (तत्.) बरबाद, चौपट, जो किसी प्रकार उपयोग में न आ सके।

नष्टशुक्र *वि.* (तत्.) जिसका वीर्य नष्ट हो गया हो।

नष्टसंज्ञ *वि.* (तत्.) जिसकी संज्ञा नष्ट हो गई हो यानी बेहोश, मूर्छित, अचेत।

नष्टस्मृति *वि.* (तत्.) जिसकी स्मरण शक्ति या याददाश्त कमजोर या नष्ट हो गई हो।

नष्टता *स्त्री.* (तत्.) 1. नष्ट होने का भाव 2. वाहियातपन, दुराचारिता।

नष्टदृष्टि *वि.* (तत्.) जिसकी दृष्टि मारी गई हो या नष्ट हो गई हो, अंधा।

नष्टधन *वि.* (तत्.) धन नष्ट होने से धनहीन।

नष्टप्रभ *वि.* (तत्.) तेजहीन , कांतिहीन।

नष्टप्राय *वि.* (तत्.) लगभग नष्ट, नष्ट जैसा।

नष्टबुद्धि *वि.* (तत्.) जिसकी बुद्धि कार्य न कर पा रही हो।

नष्टभ्रष्ट *वि.* (तत्.) जो बिलकुल टूट-फूट या बरबाद हो गया हो, चौपट।

नष्टयश *वि.* (तत्.) जिसका यश नष्ट हो गया हो, यश रहित।

नष्टराज्य *पुं.* (तत्.) प्राचीन काल के एक देश का नाम।

नष्टरूपा *स्त्री.* (तत्.) अनुष्टुप् छंद का एक भेद।

नष्टविष *वि.* (तत्.) वह जहरीला जानवर जिसका विष या जहर नष्ट हो गया हो।

नष्टशंक *वि.* (तत्.) 1. शंका रहित, भयरहित, निर्भय 2. निरापद।

नष्टस्मृति *वि.* (तत्.) जिसकी स्मृति नष्ट हो गई हो।

नष्टा *स्त्री.* (तत्.) 1. वेश्या, रंडी 2. व्यभिचारिणी, कुलटा।

नष्टाग्नि *पुं.* (तत्.) वह सात्विक ब्रह्मण या द्विज जिसके यहाँ की श्रौत विधि से स्थापित अग्नि प्रमाद या आलस्य के कारण लुप्त हो गई हो।

नष्टात्मा *वि.* (तत्.) दुष्ट, खल, अधम, नीच।

नष्टासिसूत्र *पुं.* (तत्.) 1. खोई चीज का ऐसा अंश अंश जिससे बाकी चुराई गई चीजों का सूत्र मिल सके 2. लूट का माल।

नष्टार्थ *वि.* (तत्.) जिसका धन नष्ट हो गया हो, दरिद्र, धनहीन।

नष्टाश्वदग्धरथ न्याय *पुं.* (तत्.) 1. प्रसिद्ध दृष्टांत जिसका तात्पर्य होता है कि दो व्यक्तियों द्वारा अपनी वस्तुओं का पारस्परिक सहयोग द्वारा द्वारा अपना उद्देश्य सिद्ध करना 2. विधि वाक्य वाक्य एवं अर्थ की तथा प्रधान वाक्य एवं अंगवाक्य की परस्पर आकांक्षा होने से एकवाक्यता प्राप्त कर प्रवृत्त होना।

नष्टि *स्त्री.* (तत्.) नाश, बरबादी, विनाश।

नष्टेंदु कला *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रतिपदा, परिवा 2. अमावस्या, कुहु।

नष्टेंद्रिय *वि.* (तत्.) संज्ञाहीन, संज्ञाशून्य।

नसंक *वि.* (तत्.) निःशंक, निर्भय, निडर, बेखौफ।

नस *स्त्री.* (तत्.) 1. पेशियों को बाँधने वाला दृढ़ तंतु, शरीर तंतु 2. एक वाहिनी नली 3. पतले रेशे या तंतु जो पत्तों के बीच-बीच में होते हैं, रुधिर वाहिनी नलिका 4. सूंघने की नस्य, नाक, नासिका मुहा. नस चढ़ना- खिंचाव, दबाव या झटके के कारण नस का अपने स्थान से इधर उधर हो जाना, बल खाना जिससे तनाव या पीड़ा होती है और कभी कभी सूजन भी; नसढीली होना- थकावट या शिथिलता आना, पस्त होना; नस (नस) फड़क उठना- बहुत प्रसन्नता या अत्यधिक आनंद होना, अतिशय उमंग होना; नस-नस में- सारे शरीर अथवा सर्वांग में; नस ढीली करना- हौसला पस्त करना, तोड़ देना; नसढीली पड़ना- लिंगेंद्रिय का शिथिल होना, पुंसत्व की कमी हो जाना यौ. घोड़ा नस- पैर की पीछे की पिंडली के नीचे की बड़ी नस जिसके कट जाने से अत्यधिक खून बहने से मनुष्य मर सकता है 2 लिंग, पुरुष की मूत्रेंद्रिय।

नसकटा *पुं.* (देश.) नपुँसक, हिजड़ा, नामर्द।

नसतरंग *पुं.* (देश.) शहनाई के आकार या ढंग का पीतल का एक प्रकार का बाजा जो गले के पास की घंटी के पास की नसों पर रखकर, गले में स्वर भरकर बजाया जाता है।

नसतालीक *पुं.* (अर.) 1. अरबी-फारसी लिपि लिखने का वह ढंग जिसमें अक्षर साफ और सुंदर ढंग से लिखते हैं 2. बाल बोध लिपि 3. अच्छे रंग- ढंग वाला व्यक्ति, शिष्ट, सभ्य आदमी।

नसना *अ.क्रि.* (देश.) 1. नटना, भागना, दौड़ना 2. नष्ट होना, नष्ट या बरबाद होना 3. बिगड़ जाना, खराब हो जाना, चौपट होना।

नसफाड़ *पुं.* (देश.) हाथियों का एक रोग जिसमें उनके पैर सूज जाते हैं।

नसबंदी *स्त्री.* (तद्.) किसी प्राणी की विशिष्ट नसों को निष्क्रिय करके प्रजनन के लिए अयोग्य बना देना।

नसर *स्त्री.* (अर.) गद्य-पद्य का उलटा, नजम का उलटा।

नसरी *स्त्री.* (देश.) 1. एक प्रकार की मधुमक्खी 2. मधुमक्खी के छत्ते का मोम।

नसल/नस्ल *स्त्री.* (अर) वंश, खानदान, कुल, जाति।

नसवार *स्त्री.* (देश.) तंबाकू के पत्तों का चूर्ण जिसके सूँघने मात्र से नशा होता है, नस्य, सुँघनी।

नसहा *पुं.* (तद्.) जिसमें नसें अधिक हो यानी नसों वाला।

नसा *स्त्री.* (तद्.) नाक, नासिका, नासा।

नसाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. नष्ट करना, नाश करना 2. बिगाड़ना, खराब करना।

नसावना/नसाना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. नाश को प्राप्त होना, नष्ट होना, चौपट होना 2. बिगड़ जाना, खराब हो जाना।

नसी *स्त्री.* (देश.) हल के फाल की नोंक।

नसीठ *पुं.* (देश.) बुरा शकुन, असगुन।

नसीनी *स्त्री.* (तत्.) सीढ़ी, जीना, नसैनी।

नसीपूजा *पुं.* (देश.) हल पूजा जो बोने के मौसम के बाद की जाती है।

नसीब *पुं.* (अर.) 1. भाग्य, किस्मत, मुकद्दर 2. हिस्सा, भाग, अंश मुहा. नसीब उलटना- भाग्य पलटना; नसीब आजमाना- भाग्य के भरोसे पर रहकर कोई कार्य करना; नसीब का सिकंदर- जो हर बार सफल होता हो; भाग्य के फेर- भाग्य का चक्र, कभी भाग्य अच्छा होना तो कभी खराब होना; नसीब खुलना/चमकना/जागना/सीधा होना- भाग्य अच्छा होना; नसीब पर पत्थर पड़ना/फूटना/ सो जाना- दुर्भाग्य होना।

नसीबजला *वि.* (अर.) जिसका भाग्य खराब हो या फूट गया हो, अभागा, भाग्यहीन।

नसीबदार (फा.) भाग्यवान, सौभाग्यशाली, अच्छे नसीब वाला।

नसीम *पुं.* (अर.) ठंडी, धीमी, स्वच्छ, बढ़िया हवा, शीतल मंद-सुगंधित समीर।

नसीमेबहर *पुं.* (अर.) समुद्र की हल्की और ठंडी हवा।

नसीमेसह *पुं.* (अर.) सबेरे की ठंडी, धीमी और स्वच्छ हवा।

नसीला *वि.* (देश.) 1. नसदार, नसोवाला, जिसमें नस हो 2. नशीला।

नसीहत *स्त्री.* (अर.) 1. शिक्षा, उपदेश, सीख 2. लाभप्रद अच्छी सम्मति, अच्छी राय *स.क्रि.* प्रयो. नसीहत देना, करना, पाना, मिलना, होना।

नसीहतगीर *पुं.* (अर.) उपदेशक, सीख देने वाला।

नसीहा *पुं.* (देश.) मुलायम मिट्टी के जोतने के लिए हलका हल।

नसूड़िया *वि.* (तद्.) मनहूस, जिसके देखने छूने या संबंध से दोष या हानि हो।

नसेनी *स्त्री.* (तद्.) सीढ़ी, जीना।

नस्त *पुं.* (तत्.) 1. नाक 2. सुंघनी।

नस्तक *पुं.* (तत्.) जानवरों की नाक में नाथ पहनाने के लिए किया गया छेद।

नस्त करण *पुं.* (तत्.) यंत्र जो नाक में दवा डालने के लिए व्यवहार में लाया जाता है।

नस्ता *वि.* (तत्.) पशुओं की नाक का छेद जिसमें रस्सी डाली जाती है।

नस्तित *पुं.* (तत्.) वह पशु जिसकी नाक में छेद करके रस्सी डाली जाए जैसे- बैल, ऊँट।

नस्य *पुं.* (तत्.) 1. नाक, सुंघनी 2. सूँघने की एक विशेष प्रकार की घी आदि से बनी औषध या विशिष्ट औषधों के योग से तैयार किया गया तैल, नसवार 3. बैलों की नाक की रस्सी या नाथ 4. नाक के बाल *वि.* (तत्.) 1. नासिका से संबंध रखने वाला, नाक का 2. नाक से बहने या निकलने वाला।

नस्या *स्त्री.* (तत्.) 1. नाक, नासिका 2. नासा-छिद्र, नाक का छेद 3. जानवरों की नाक में पहनाई जाने वाली रस्सी।

नस्याधार *पुं.* (तत्.) नासदानी, पात्र जिसमें सुंघनी रखी जाती है।

नस्योत *पुं.* (तत्.) 1. नाथा गया पशु 2. नाथ के जरिए चलाया जाने वाला बैल या पशु।

नह/नहँ *पुं.* (तत्.) नख, नाखून।

नहछू *पुं.* (तद्.) 1. तेल, हल्दी के बाद की विवाह की एक रस्म जिसमें हजामत बनाई जाती है नाखून काटे जाते हैं और मेंहदी, महावर आदि लगाते हैं 2. विवाह के पहले या द्वार पूजा के बाद की एक रस्म जिसमें कन्या के नाखून काटे जाते हैं और उसे स्नान कराया जाता है।

नहट्टा *पुं.* (देश.) नाखून से की हुई खरोंच, नखक्षत।

नहन *पुं.* ((देश.) पुरवट या मोद, खींचने की मोटी रस्सी, नार।

नहना *स.क्रि.* (देश.) काम में लगाना या तत्पर करना, जोतना।

नहर *स्त्री.* (देश.) 1. कृत्रिम नदी या जलमार्ग, खेतों खेतों की सिंचाई या यातायात के लिए तैयार किया गया मार्ग, कुल्या 2. जल बहाने के लिए बनाया गया रास्ता मुहा. नहर काटना/खोदना- नहर तैयार करना टि. बड़ी नहर साधारण नदी की तरह होती है उनमे बडी नावें चलती है, झीलों या बड़े जलाशयों का पानी मिलाने के लिए भी नहरें बनाई जाती है 3. कम चौड़ा पर गहरा जलमार्ग जैसे- स्वेज नहर, पनामा नहर।

नहरनी *स्त्री.* (तद्.) 1. हज्जामों का नाखून काटने का औजार, नहनी 2. इसी तरह की पोश्ते की ढोंढ़ी चीरने का आला या औजार।

नहरम *स्त्री.* (देश.) एक प्रकार की मछली जो भारत भारत वर्ष की सभी नदियों में मिलती है, यह पहाड़ी झरनो में अधिकता से होती है।

नहरिया *स्त्री.* (तद्.) छोटी नहर।

नहरी *वि.* (तद्.) नहर से संबंध रखने वाला *स्त्री.* (तद्.) 1. नहर के पानी से सींची गई जमीन 2. नहर।

नहरुआ *पुं.* (देश.) कमर के निचले भाग में होने वाला रोग जो पानी के साथ विशेष कीड़ो के शरीर में प्रवेश से होता है, और अंग भी बेकार हो सकते हैं।

नहला *पुं.* (तद्.) 1. ताश के खेल का एक पत्ता जिसमें नौ बूटियाँ बनी होती है। ताश की एक गड्डी में चार नहले होते हैं 2. राज-मजदूरों का एक उपकरण जो नक्काशी के काम आता है। मुहा. नहले पर दहला-विरोधी की चाल का उससे मजबूत उत्तर।

नहलाई *स्त्री.* (देश.) 1. नहलाने की क्रिया या भाव 2. नहलाने के बदले दिया जाने वाला धन या मजदूरी।

नहलाना *स.क्रि.* (तद्.) स्नान करवाना, गीला कर देना।

नहस *वि.* (अर.) 1. अशुभ, अमांगलिक, मनहूस यौ. नहसकदम-जिसका आना अशुभ हो, नहसरू-जिसका दर्शन अशुभ हो।

नहसुत *स.क्रि.* (तत्.) नख की रेखा खींचना, नाखून का निशान *पुं.* (तद्.) पलाश सदृश पेड़।

नांठना/नाठाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. नष्ट या खराब करना 2. ध्वस्त करना *अ.क्रि.* (तद्.) नष्ट होना।

नांत *वि.* (तत्.) जिसका अंत न हो, अनंत, असीम।

नांदिकर (नांदीकर) *पु.* (तत्.) 1. नाटक के प्रारंभ में नांदीपाठ करने वाला 2. नाटक के प्रांरभ में मंगलाचरण के रूप में भेरी आदि बजाने वाला व्यक्ति।

नांदी *स्त्री.* (तत्.) 1. अभ्युदय, समृद्धि 2. नांदी आशीर्वादात्मक श्लोक जिसका पाठ प्रारंभ में किया जाता है 3. मंगलाचरण।

नांदीक *पुं.* (तत्.) 1. तोरण स्तंभ 2. नांदीमुख श्राद्ध।

नांदीकर *पुं.* (तत्.) नाट्य. नांद पाठ करने वाला, नाटक के प्रारंभ में मंगल-भेरी बजाने वाला।

नांदीघोष *पु.* (तत्.) मंगलध्वनि, किसी शुभ कार्य से पहले भेरी शहनाई आदि की ध्वनि।

नांदीनाद *पु.* (तत्.) हर्षनाद, प्रसन्नता से चिल्लाने की ध्वनि।

नांदीपट *पु.* (तत्.) कुएँ का मुख ढकने के लिए लकड़ी आदि का ढक्कन, नांदी मुख।

नांदीपाठ *पु.* (तत्.) नाटक के प्रारंभ में सूत्रधार द्वारा किया जाने वाला मांगलिक पाठ या आशीर्वादात्मक स्तुति।

नांदीमुख *पु.* (तत्.) 1. कुएँ के ऊपर का ढक्कन 2. मांगलिक कार्यों से पूर्व पितरों की प्रसन्नता के लिए किया जाने वाला श्राद्ध 3. वह पितर जिनके लिए यह श्राद्ध किया जाता है।

नांदीमुखी *स्त्री.* (तत्.) 1. छंद. एक समवर्णिक छंद छंद जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण, दो तगण और दो गुरु (न न त त ग ग) के योग से 14 वर्ण होते हैं और 7-7 पर यति होती है 2. नांदी मुख श्राद्ध में हिस्सा प्राप्त करने वाली स्त्री।

नाँउ/नाँऊँ/नाँव *पु.* (तद्) नाम।

नाँखना/नाँखणा *स.क्रि.* (देश.) 1. गिराना, डालना 2. टपकाना, बहाना 3. पटकना, पछाड़ना 4. नष्ट करना 5.परित्याग करना, छोड़ना।

नाँघना *स.क्रि.* (देश.) लाँघना, उल्लंघन करना।

नाँद *स्त्री.* (तद्.) पशुओं को पानी, चारा आदि खिलाने के लिए चौड़े मुंह वाला मिट्टी आदि का बना पात्र।

नाँदना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. नाद या शब्द करना 2. शोर करना, चिल्लाना 3. बजना 4. गद-गद होना 5. छींकना 6. प्रसन्न होना 7. दीपक की लौ का भभकना।

नाँवँ *पुं.* (तत्.) अपने आप उगने वाला धान।

नाँवगर *पुं.* (तद्.) मल्लाह, माँझी, नाविक।

नाँवा *पुं.* (तद्.) 1. नाम 2. नकद रुपये और सिक्के 3. दाम, मूल्य 4. बही खाते में किसी के नाम लिखी रकम।

नाँह *पुं.* (तद्.) पति, स्वामी, मालिक।

ना *अव्य.* (तद्.) न अथवा नहीं के रूप में प्रयोग किए जाने वाला प्रत्यय प्रयो. ना, ऐसा मत करो 2. अस्वीकृति या असहमति का सूचक शब्द (अव्य.) आग्रह करने या बल देने के लिए प्रयुक्त शब्द प्रयो. जाओ ना देर मत करो *पुं.* 1. नाभि 2. नर 3. प्रत्यय रूप में धातुओं के साथ लगने वाला शब्द जैसे- पढ़ना, जाना, लिखना 4. फारसी

शब्दों के साथ विरोधी या निषेधात्मक अर्थ हेतु प्रयुक्त उपसर्ग जैसे- नाखुश, नासमझ।

नाअना *स.क्रि.* (देश.) 1. झुकाना, नवाना, नमन करना 2. उँड़ेलना।

नाइंसाफ़ *वि.* (फा.+अर.) अन्यायी।

नाइंसाफी *स्त्री.* (फा.+अर.) अन्याय।

नाइँ/नाई *क्रि.वि.* (देश.) 1. समान या उसके जैसा "राखहुँ ताहि प्राण की नाई" 2. लिए, वास्ते 3. *पुं.* नाम से।

नाइऊ *पु.* (देश.) नाई, हजामत बनाने वाला।

नाइट्रोजन *स्त्री.* (अं.) रसा. एक गैसीय तत्व जो वायुमंडल में बड़ी मात्रा में विद्यमान रहता है। nitrogen

नाइत्तिफाकी *स्त्री.* (फा.+अर.) फूट, रंजिश, एक दूसरे के विचारों का न मिलना।

नाइन *स्त्री.* (तद्.) नाई जाति की स्त्री, नाई की पत्नी।

नाइब/नायब *वि.* (अर.) 1. किसी प्रधान अधिकारी का सहायक जैसे नायब तहसीलदार 2. प्रतिनिधि के रूप में काम करने वाला।

नाइलोन *पुं.* (अं.) थर्मोप्लास्टिक पॉलिमाइड्स को पिघला कर उससे बनने वाला कृत्रिम धागा जिससे वस्त्र, ब्रुश, रस्सियाँ आदि तैयार की जाती हैं, यह धागा सूती धागे की तुलना में अधिक मजबूत और कड़ा होता है।

नाई *पुं.* (तद्.) नाई, हज्जाम *स्त्री.* (तद्.) 1. नाव नौका 2. एक लता जिसकी जड़ के कंद को सर्प जैसी गंध के कारण नेवले खाते हैं *क्रि.वि.* के समान, की तरह, लिए, वास्ते *पु.* नाम से, नाम पर।

नाउँ *पुं.* (देश.) दे. नाम।

नाउ *स्त्री.* (देश.) 1. नाव, नौका।

नाउत *पु.* (देश.) 1. ओझा, झाड़ फूँक करने वाला 2. सयाना, समझदार।

नाउन *स्त्री.* (देश.) नाइन, नाई की स्त्री।

नाकंद *पु.* (फा.) 1. नादान, मूर्ख 2. बछड़ा जिसके जन्म से दाँत शेष हों तथा ऐसे दूध के दाँत जो टूटे भी न हों।

नाक *पुं.* (तत्.) 1.स्वर्ग 2. अंतरिक्ष, आकाश 3. नक्र, घड़ियाल *प्रत्यय.* (फार.) 1. (प्रत्यय के रूप में) से भरा हुआ, जैसे- खतरनाक, दर्दनाक, शर्मनाक 2. (नाख या नाग) नासपाती की तरह का एक फल *स्त्री.* (तद्.) 1. शरीर का वह अंग जो साँस लेने और सूंघने के काम आता है, नासिका, घ्राणेंद्रिय 2. नाक से निकलने वाला मल या कफ 3. (लाक्ष.) मान, सम्मान, प्रतिष्ठा 4. श्रेष्ठ या प्रमुख व्यक्ति मुहा. नाक उड़ा देना- अपमानित करना; नाक ऊँची रखना- सम्मान रखना; नाक ऊँची रहना- सम्मान बना रहना; नाक कटना- अपमानित होना; नाक कटाना- बदनाम होना, मान-मर्यादा नष्ट होना; नाक का बाल- परम घनिष्ठ व्यक्ति जिसके परामर्श से सभी काम होते हैं; नाक के नीचे- किसी के बिल्कुल निकट; नाक घिसना- माफी माँगना, अनुनय विनय करना; नाक चढाना- घृणा और क्रोध करना; नाक पकड़कर- बलपूर्वक या अपनी इच्छानुसार काम कराना; नाक पर गुस्सा होना- छोटी-छोटी बातों पर शीघ्र क्रोध करना; नाक पर मक्खी न बैठने देना- किसी की बात सहन न करना; नाक बहना- जुकाम होना; नाक भौं सिकोड़ना- किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति घृणा प्रकट करना, क्रोध करना; नाक में दम आना- बहुत परेशान होना; नाक में नकेल डालना- पूर्ण नियंत्रण में रखना; नाक रखना- प्रतिष्ठा या सम्मान रखना; नाक रगड़ना- विनती या खुशामद करना; नाकों चने चबाना- बहुत परेशान करना।

नाक कटैया *स्त्री.* (देश.) 1. नाक कटने या काटे जाने की अवस्था या भाव 2. राम लीला में लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा की नाक काटने का प्रसंग।

नाकड़ा *पुं.* (देश.) नाक के पकने का एक रोग।

नाकदर *वि.* (फा.+अर.) 1. जिसकी कोई कदर या इज्जत न हो 2. जो किसी का सम्मान न करता हो, जो गुणग्राही न हो, ना कद्रदान।

नाकदरी *स्त्री.* (फा.) उचित आदर या सम्मान न देना या न करना।

नाक नटी *स्त्री.* (तत्.) स्वर्ग की अप्सरा, नाक वनिता।

नाकनाथ *पुं.* (तत्.) 1. स्वर्ग का पति, इंद्र, नाकपति।

नाकना *स.क्रि.* (देश.) 1. लांघना, उल्लंघन करना 2. बाधा पार करना 3. प्रतियोगिता में आगे निकल जाना 4. नाकाबंदी करना।

नाकपृष्ठ *पुं.* (तत्.) स्वर्ग, सुरलोक।

नाकबुद्धि *वि.* (देश.) 1. नाक से सूँघकर भले बुरे का विचार करना न कि बुद्धि से 2. क्षुद्र या तुच्छ बुद्धि वाला।

नाक़बूल *वि.* (फा.+अर.) अस्वीकृत, नामंजूर।

नाक-वनिता *स्त्री.* (तत्.) अप्सरा, स्वर्ग की स्त्री।

नाकवास *पुं.* (तत्.) स्वर्ग में वास या निवास।

नाकषेधक *पुं.* (तत्.) इंद्र, देवराज।

नाका *पुं.* (देश.) 1. रास्ते का छोर जहाँ से लोग किसी ओर जाते, बढ़ते या मुड़ते हैं 2. दुर्ग आदि का प्रवेश द्वार 3. सुई का छेद 4. जुलाहों का एक उपकरण (तत्) नक्र, मगर की तरह का एक जलचर प्राणी 5. थाना, चौकी।

नाकादार *वि.* (देश.) (देश.+फा.) 1. प्रवेश द्वार पर पर नियुक्त पहरेदार 2. प्रमुख स्थानों पर किसी शुल्क को वसूलने वाला अधिकारी, नाकेदार।

नाकाफी *वि.* (फा.+अर.) अपर्याप्त, जो काफी न हो।

नाकाबंदी *स्त्री.* (देश.) 1. पहरा बिठाना, नाके पर सिपाहियों को तैनात करना 2. रुकावट या अवरोध लगाना 3. उग्र या हिंसक भीड़ को रोकने के लिए अवरोध लगाना 4. आतंकियों, दुश्मनों, अपराधियों को पकड़ने के लिए उनके निकास या प्रवेश मार्गों को बंद करना 5. शत्रु के किसी तट, बंदरगाह को इस तरह घेरना कि कोई उससे होकर आ-जा न सके। blockade

नाकाबिल *वि.* (फा.+अर.) अयोग्य, जो काबिल न हो, अपात्र।

नाकाम *वि.* (फा.) नाकामयाब, अपने प्रयत्न में असफल।

नाकामयाब *वि.* (फा.) नाकाम, असफल, अनुत्तीर्ण।

नाकामुंशी *वि.* (हि.+अर.) नगर आदि के प्रवेश द्वार पर शुल्क वसूल करने वाला अधिकारी।

नाकारा *वि.* (फा.) 1. निकम्मा, जो व्यक्ति किसी काम का न हो 2. अनुपयोगी, व्यर्थ वस्तु।

नाकिस *वि.* (अर.) 1. दोष वाला, खराब 2. त्रुटिपूर्ण 3. निकम्मा।

नाकी *वि.* (तत्.) 1. स्वर्ग में रहने वाला 2. देवता।

नाकु *पुं.* (तत्) 1. बल्मीक, दीमकों की बांबी 2. टीला, भीटा 3. पर्वत 4. एक ऋषि का नाम।

नाकुल *वि.* (तत्) 1. नकुल या नेवला संबंधी 2. नेवले की तरह का *पुं.* 3. नकुल की संतान 4. यवतिक्ता 5. सेमल का मूसला 6. रास्ना

नाकुलक *वि.* (तत्) नेवले की पूजा करने वाला।

नाकुलि *वि.* (तत्) 1. नकुल का पुत्र 2. नकुल गोत्र का व्यक्ति।

नाकुली *वि.* (तत्) 1. नकुल संबंधी, नकुल का *स्त्री.* *स्त्री.* 2. सर्प विष को दूर करने वाला एक कंद 3. यवतिक्ता 4. रास्ना 5. चव्य, चाब 6. सफेद भटकटैया।

नाकू *पुं.* (तत्.) नक्र, घड़ियाल, मगर।

नाकेदार *वि.* (देश.) 1. जिसमें कोई चीज पहनाने या पिरोने के लिए नाका या छेद हो 2. नाके या चौकी पर नियुक्त पहरी 3. चौकी या मुख्य मार्ग पर कर वसूल करने के लिए नियुक्त अधिकारी।

नाकेबंदी *स्त्री.* (देश.) 1. कहीं आने-जाने का मार्ग बंद करने की व्यवस्था 2. रुकावट या अवरोध लगाना दे. नाकाबंदी।

नाकेश *पुं.* (तत्.) इंद्र, स्वर्ग का मालिक।

नाक्षत्र *वि.* (तत्.) 1. नक्षत्र संबंधी, नक्षत्रयुक्त 2. जिसका मान नक्षत्र के सापेक्ष निर्धारित हो जैसे- नाक्षत्र-मास, नाक्षत्र-दिन।

नाक्षत्र दिन *पुं.* (तत्.+तद्.) खगो. चंद्रमा के एक नक्षत्र में रहने का काल अर्थात नाक्षत्र मास का एक दिन जो 23 घंटे 56 मिनट के बराबर होता है।

नाक्षत्र मास *पुं.* (तत्.) खगो. चंद्रमा द्वारा पृथ्वी की परिक्रमा में लगने वाला समय, जिसमें चंद्रमा अपने सभी 27 नक्षत्रों में एक बार पूरा घूम लेता है, यह अवधि 27 दिन 7 घंटा 43 मिनट और 11.5 सेकंड की होती है।

नाक्षत्र वर्ष *पुं.* (तत्.) खगो. बारह नक्षत्र मासों का एक समूह, सूर्य की एक संपूर्ण परिक्रमा में पृथ्वी द्वारा लगा औसत समय।

नाक्षत्रिक *वि.* (तत्.) 1. नक्षत्र संबंधी, नाक्षत्र 2. नाक्षत्र अर्थात चंद्रमास 3. छंदशास्त्र में 27 मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

नाख *पुं.* (फा.) नासपाती की तरह का एक फल जो नासपाती से अधिक मुलायम होता है।

नाखना *स.क्रि.* (देश.) नष्ट करना, बिगाड़ना 2. गिराना, डालना, फेंकना 3. रखना 4. नाकना, लाँघना।

नाखुदा *वि.* (फा.) 1. नास्तिक, ईश्वर या खुदा को न मानने वाला *पु.* 2. नाविक, मल्लाह।

नाखुन *पुं.* (फा.) नख, नाखून।

नाखुना *पुं.* (फा.) 1. आँख का एक रोग जिसमें पटल पर खून की बिंदी या दाग पड़ जाता है 2. इसी तरह का घोड़ो की आँख में होने वाला रोग 3. एक प्रकार का अंगुस्ताना जिसे पहन कर चीराबंद लोग चीरा बनाते या बाँधते थे।

नाखुर *पुं.* (देश.) 1. नहछू एक प्रथा जिसमें विवाह से पहले वर के बाल नाखून आदि काटे जाते हैं और मेंहदी लगाई जाती है 2. द्वार पूजा के बाद कन्या के लिए भी यही रस्म की जाती है।

नाखुश *वि.* (फा.) 1. अप्रसन्न 2. क्रुद्ध 3. बिमार।

नाखुशगवार *वि.* (फा.) 1. अरुचिकर, अप्रिय, जो मन को अच्छा न लगे।

नाखुशगवारी स्त्री. (फा.) 1. अप्रसन्नता, नाराजगी 2. अरुचि

नाखुशी *स्त्री.* (फा.) 1. नाराजी, अप्रसन्नता

नाखून *पुं.* (फा.) 1. नख, हाथों और पैरों की उंगलियों के ऊपरी अग्रभाग में चर्म-मांस से भिन्न सफेद धारदार कड़ा हिस्सा जिसे बढ़ने पर काटा भी जा सकता है 2. चौपायों के पैरों का अगला भाग जो नख के समान कड़ा होता है।

नाखूनतराश *पुं.* (फा.) नाखून काटने का छोटा यंत्र, नहन्नी। Nail cutter

नाखूना *पुं.* (देश.) सफेद ताने वाला एक प्रकार का कपड़ा जिसके बाने में रंगीन धारियाँ होती हैं।

नाग *पुं.* (तत्.) 1. फन वाला बड़ा साँप, सर्प, करैत 2. प्राचीन काल की एक मानव जाति 3. बादल 4. हाथी 5. नागकेसर 6. नागरमोथा 7. राँगा 8. शीशा 9. अश्लेषा नक्षत्र का एक नाम (लाक्ष.) 10. क्रूर मनुष्य 11. एक सममात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 25 मात्रायें होती हैं, अंत में गुरु-लघु और 10. 8-7 पर यति होती है।

नागकंद *पुं.* (तत्.) हस्तिकंद

नागकन्या *स्त्री.* (तत्.) 1. प्राचीन नाग वंशी मानवों की कन्या 2. नागिन, सर्पिणी।

नागकर्ण *पुं.* (तत्.) 1. हाथी का कान 2. एरंड वृक्ष का पत्ता जो हाथी के कान जैसा लगता है।

नागकिंजल्क *पुं.* (तत्.) नागकेसर नामक एक सदाबहार वृक्ष और इसके सुगंधित फूल नाग चंपा।

नागकुमारिका *स्त्री.* (तत्.) 1. गुरुच, गिलोय 2. मजीठ 3. नागकन्या।

नागकेसर *पुं.* (तत्.) दे. नागकिंजल्क।

नागखंड *पुं.* (तत्.) पुराणों के अनुसार जंबू द्वीप के के अंतर्गत भारतवर्ष के नौ खंडों में से एक खंड।

नाग-गंधा *स्त्री.* (तत्.) नकुल कंद, गंधना कुली, रास्ना।

नागगति *स्त्री.* (तत्.) किसी ग्रह की अश्विनी, भरणी और कृतिका नक्षत्रों से होकर निकलते समय की अवस्था या गति।

नागगर्भ *पुं.* (तत्.) सिंदूर

नागचंपा *पुं.* (तत्.) नागकेसर का वृक्ष और उसका फूल।

नाग-चूड़ *पुं.* (तत्.) शिव, शंकर। जिसके सिर की चोटी नागों की हो।

नागच्छत्रा *स्त्री.* (तत्.) नागदंती नामक वृक्ष।

नागज *वि.* (तत्.) 1. नाग से उत्पन्न 2. सिंदूर 3. राँगा

नागजिह्वा *स्त्री.* (तत्.) 1. अनंतमूल (एक रक्तशोधक औषधीय पौधा), सारिवा।

नागजिह्विका *स्त्री.* (तत्.) मैनसिल नामक खनिज द्रव।

नागजीवन *पुं.* (तत्.) फूँका या बुझा राँगा।

नागझाग *पुं.* (सं.+देश) 1. अहिफेन, साँप की लार 2. अफीम।

नागदंत *पुं.* (तत्.) 1. हाथी दाँत 2. दीवार पर गड़ी खूँटी

नागदंतिका *स्त्री.* (तत्.) वृश्चिकाली नामक पौधा

नागदंती *स्त्री.* (तत्.) कुंभा नामक औषधि।

नागदमन *पुं.* (तत्.) नागदौना नामक पौधा जो सर्प विष की प्रसिद्ध औषधि है।

नागदला *पुं.* (तत्.) मजबूत लकड़ी वाला एक वृक्ष।

नागदुमा *वि.* (तत्.+फा.)नाग के फन जैसी जिसकी पूँछ हो।

नागदौन *पुं.* (तत्.+ देश) दे. नागदमन।

नागद्रु/नागद्रुभ *पुं.* (तत्.) 1. सेहुड़, थूहर 2. नागफनी

नागद्वीप *पुं.* (तत्.) भारतवर्ष के नौ खंडों में से एक एक खंड।

नागधर *वि.* (तत्.) नाग को धारण करने वाला, पन्नगभूषण अर्थात् शिव।

नागध्वनि *स्त्री.* (तत्.) मल्हार और केदार या सूहा अथवा कान्हड़े और सारंग के योग से बनी एक संकर रागिनी।

नागनक्षत्र *पुं.* (तत्.) अश्लेषा नक्षत्र का एक नाम।

नागनग *पुं.* (देश.) गजमुक्ता।

नागनामक *पुं.* (तत्.) राँगा, टीन।

नाग नामा (मन्) *पुं.* (तत्.) तुलसी।

नागपंचमी *स्त्री.* (तत्.) श्रावण शुक्ल पंचमी जिस दिन नागों की पूजा की जाती है।

नागपति *पुं.* (तत्.) 1. सर्पराज वासुकि, 2. हाथियों का राजा ऐरावत।

नागपत्रा *स्त्री.* (तत्.) नागदमनी, नागदौना।

नागपद *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का रतिबंध जो 16 रतिबंधों में से दूसरा माना जाता है।

नागपर्णी *स्त्री.* (तत्.) पान, तांबूल।

नागपाश *पुं.* (तत्.) 1. वरुण का अस्त्रभूत पाश 2. साँपों का फंदा, नागफाँस।

नागपुर *पुं.* (तत्.) 1. नागलोक, पाताल, 2. मध्य प्रदेश का एक शहर।

नागपुष्प *पुं.* (तत्.) 1. चंपा वृक्ष 2. पुन्नाग वृक्ष 3. नागकेसर

नागपुष्पिका *स्त्री.* (तत्.) 1. पीली जुही 2. नागदौन

नागपूत *पुं.* (देश.) कचनार की किस्म की एक लता।

नागफनी *स्त्री.* (देश.) 1. थूहर जाति का टहनी रहित कांटेदार पौधा जो साँप के फन की आकृति लिये होता है, इसकी गूदेदार मोटे दल एक के ऊपर एक निकलते जाते हैं, यह अधिकतर बाढ़ लगाने के लिए उगाया जाता है Cactus 2. नागफनी के आकार की एक कटार 3. नरसिंघे की तरह का एक नेपाली बाजा 4. कान में पहना जाने वाला एक गहना 5. नागा साधुओं द्वारा पहनी जाने वाली कौपीन या लंगोट।

नागफल *पुं.* (देश.) परवल, जिसे सब्जी के रूप में प्रयोग किया जाता है।

नागफाँस *पुं.* (देश.) दे. नागपाश।

नागफेन *पुं.* (तत्.) 1. अहिफेन, साँप की लार 2. अफीम।

नागबंध *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का बंधन, नाग की तरह कुंडली के रूप में बाँधने का एक तरीका।

नागबंधु *पुं.* (तत्.) पीपल का वृक्ष।

नागबल *वि.* (तत्.) हाथी के समान बल वाला, महाबली।

नागबला *स्त्री.* (तत्.) गंगरेन, एक औषधीय क्षुप, गुलसकरी।

नागबेल *स्त्री.* (देश.) 1. पानी की बेल, नागवल्लरी 2. एक सजावटी बेल जो सर्प की तरह लगती है।

नागभगिनी *स्त्री.* (तत्.) वासुकि नाग की बहन मनसा।

नागभार *पुं.* (तत्.) काला भंगरा

नागभिद् *पुं.* (तत्.) 1. एक तरह का बड़ा जहरीला और भारी साँप।

नागभूषण *वि.* (तत्.) नागों को आभूषण की तरह पहनने वाला, शिव, महादेव।

नागमंडलिक *पुं.* (तत्.) संपेरा, साँप पकड़ने वाला और साँप नचाने वाला।

नागमरोड़ *पुं.* (देश.) कुश्ती का एक पेंच या कुश्ती की एक चाल।

नागमल्ल *पुं.* (तत्.) ऐरावत हाथी।

नागमाता *स्त्री.* (तत्.) 1. नागों की माता अर्थात् कद्रू 2. सुरसा नाम की राक्षसी 3. मनसा देवी 4. नाग जिह्विका, मैनसिल नामक खनिज द्रव।

नागमुख *पुं.* (तत्.) गणेश, नाग या हाथी के समान मुँह वाला।

नागयष्टि *स्त्री.* (तत्.) तालाब के बीच में गड़ा हुआ हुआ लकड़ी या पत्थर का खंभा।

नाग रंग *पुं.* (तत्.) नारंगी, संतरा।

नागर *वि.* (तत्.) 1. नगर संबंधी, नगर का, शहरी 2. नगर/शहर में रहने वाला 3. नगरपालिका संबंधी 4. नागरिकों से संबंधित *पु.* 5. नागरिक 6. सभ्य, शिष्ट व्यक्ति 7. विवेकशील व्यक्ति, चतुर व्यक्ति 8. विवाहिता स्त्री का देवर 9. सोंठ 10. नागरमोथा 11. ब्राह्मणों की एक उपजाति 12. नागरी लिपि का अक्षर 13. दीवार का टेढ़ापन।

नागरक *पुं.* (तत्.) 1. नगर का प्रबंध का शासन करने वाला अधिकारी। 2. कारीगर, शिल्पकार 3. चोर 4. कामशास्त्र में एक प्रकार का आसन या रतिबंध 5. सोंठ।

नागरक्त *पुं.* (तत्.) 1. सर्प का रक्त 2. हाथी का रक्त 3. सिंदूर।

नागरता *स्त्री.* (तत्.) 1. नागर होने की अवस्था/गुण/भाव 2. नगर निवासिता 3. सभ्यता, शिष्टता 4. दक्षता, निपुणता 6. चतुरता, चालाकी 6. नागरिकता।

नागर-धन *पुं.* (तत्.) नागर मोथा (औषधीय पौधा)

नागरनट *पुं.* (तत्.) नटनागर, श्रीकृष्ण।

नागरबेल *स्त्री.* (तत्.+तद्) नाग-वल्ली, पान की लता या बेल।

नागरमणि *वि.* (तत्.) नागरों में श्रेष्ठ व्यक्ति।

नागरमुस्ता *स्त्री.* (तत्.) नागरमुस्तक, नागरमोथा।

नागरमोथा *पुं.* (तत्.+तद्) 1. एक प्रकार का क्षुप जिसकी पत्तियाँ मूँज की पत्तियों की तरह होती हैं और औषधीय गुणों की होती हैं टि. संस्कृत में बादल के जितने पर्याय हैं वे सब 'नागरमोथा' के भी पर्याय हैं जैसे- अभ्र, तोयद, बलाहक आदि।

नागराज *पुं.* (तत्.) 1. शेष नाग 2. बहुत बड़ा नाग 3. ऐरावत हाथी 4. नराच या पंचायर छंद का एक नाम।

नागराह्वन *पुं.* (तत्.) सोंठ, सूखा अदरक।

नागरि *वि. स्त्री.* (तत्.) 1. नागरी, नगर निवासी स्त्री 2. चतुर या होशियार स्त्री, दक्ष या कुशल स्त्री 3. पशु आदि की माता जैसे नाग नागरी = हथिनी 4. पत्थर की मोटाई नापने की एक नाप 5. पत्थर का बड़ा, मोटा और चौकोर टुकड़ा 6. देवनागरी लिपि।

नागरिक *वि.* (तत्.) 1. नगर में निवास करने वाला 2. नगर से संबंधित या नगर का 3. असैनिक वर्ग 4. चतुर, चालाक *पुं.* किसी राज्य या देश का व्यक्ति जिसके अधिकार और कर्तव्यों कर्तव्यों का निर्धारण उस राज्य या देश के कानूनों से होता है। citizen

नागरिकता *स्त्री.* (तत्.) 1. नागरिक होने की अवस्था, पद या भाव 2. नागरिक होने पर मिलने वाली सुविधायें एवं अधिकार।

नागरिकशास्त्र *पुं.* (तत्.) वह शास्त्र जिसमें नागरिकों के अधिकार, कर्तव्यों, संबंधों आदि का उल्लेख किया गया हो या उनका अध्ययन किया गया हो। civics

नागरिपु *पुं.* (तत्.) 1. हाथी का शत्रु अर्थात् सिंह, शेर 2. साँप का शत्रु अर्थात् नेवला

नागरिपुछाला *स्त्री.* (तत्+देश.) बाघंबर, शेर की खाल।

नागरी *स्त्री.* (तत्.) दे. नागरि।

नागरीट *पुं.* (तत्.) 1. कामुक और व्यसनी पुरुष 2. जार, उपपति 3. विवाह कराने वाला व्यक्ति।

नागरुक *पुं.* (तत्.) नारंगी का वृक्ष और उसका फल।

नागरेणु *पुं.* (तत्.) सिंदूर

नागरेयक *वि.* (तत्.) 1. नगर में उत्पन्न व्यक्ति 2. नागरिक संबंधी।

नागरोत्थ *पुं.* (तत्.) दे. नागर मोथा।

नागर्य *पुं.* (तत्.) 1. नागरता 2. नगरवासियों की सी चतुराई या चालाकी।

नागल *पुं.* (देश.) 1. हल 2. बैलों को जुए में जोतने वाली रस्सी।

नागलता *स्त्री.* (तत्.) नाग वल्लरी, पान की बेल।

नागलोक *पुं.* (तत्.) नागों का देश, पाताल लोक।

नागवंश *पुं.* (तत्.) 1. नागों का वंश 2. शक जाति की एक शाखा 3. एक प्राचीन नाग वंश जिसके अनेक राजाओं ने भारत में राज्य किया।

नागवंशी *वि.* (तत्.) 1. नागवंश में उत्पन्न 2. नागवंश का या नागवंश से संबंधित।

नागवल्लरी *स्त्री.* (तत्.) पान की बेल, नाग लता, नागबल्ली, नाग बेल।

नागवार *वि.* (फा.) 1. अप्रिय, अरुचिकर, अच्छा न लगने वाला 2. निस्वाद, बेमजा।

नागवारा *वि.* (फा.) दे. नागवार।

नागवारिक *पुं.* (तत्.) 1. राजसी हाथी 2. हाथियों का झुंड 3. महावत 4. गरुड़ 5. मोर।

नागवीथी *स्त्री.* (तत्.) चंद्रमा का वह परिपथ जिसमें वह अश्विनी भरणी और कृतिका नक्षत्रों से होकर संचरण करता है।

नागवृक्ष *पुं.* (तत्.) नागकेसर का वृक्ष।

नागशत *पुं.* (तत्.) इस नाम का एक प्राचीन पर्वत।

नागशुंडी *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की ककड़ी।

नागशुद्धि *स्त्री.* (तत्.) मकान की नींव खोदते समय इस इस बात का ध्यान रखना कि कहीं पहला आघात सर्प के मस्तक या पीठ पर न पड़े क्योंकि ज्योतिष के अनुसार भादों, कुआर और कार्तिक में सर्प (राहु) का मुख पूर्व दिशा में, अगहन, पौस और माघ में दक्षिण दिशा में, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख में पश्चिम दिशा में और ज्येष्ठ, आसाढ़, श्रावण में उत्तर दिशा में होता है, नाग के सिर में भवन निर्माण से स्वामी नाश, पृष्ठ की ओर निर्माण से पुत्र-स्त्री नाश, पुच्छ की की तरफ निर्माण से अर्धनाश और सर्प के वक्ष-स्थल में निर्माण करना शुभ और क्षेत्र कारक होता है।

नागसंभव *पुं.* (तत्.) 1. सिंदूर 2. एक प्रकार का मोती, नागसंभूत।

नागसंभूत *पुं.* (तत्.) दे. नाग संभव।

नागसाह्वय *पुं.* (तत्.) हस्तिनापुर का एक नाग।

नागसुगंधा *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार की रास्ना या सुगंधित पौधा।

नागस्तोकक *पुं.* (तत्.) वत्सनाभ नामक विष।

नागस्फोता *स्त्री.* (तत्.) 1. नागदंती 2. दंतीवृक्ष

नागहनु *पुं.* (तत्.) नख नामक गंध द्रव्य।

नागहानी *वि.* (फा.) अचानक आकर उपस्थित होने वाला जैसे नागहानी मौत।

नागहाँ *क्रि.वि.* (फा.) 1. अचानक, अकस्मात 2. कुसमय में।

नागांग *पुं.* (तत्.) हस्तिनापुर।

नागांगना *स्त्री.* (तत्.) 1. हथिनी 2. सर्पिणी, नागिन 3. नाग वंश की कन्या/स्त्री।

नागांचला *स्त्री.* (तत्.) नाग यष्टि, तालाब के बीचोबीच गड़ा हुआ लकड़ी या पत्थर का खंभा।

नागांजना *स्त्री.* (तत्.) 1. नागयष्टि 2. हथिनी।

नागांतक *वि.* (तत्.) नागों या हाथियों का अंत या नाश करने वाला 1. गरुड़ 2. मोर 3. हाथियों का शत्रु अर्थात् सिंह, नागाराति।

नागा *वि.* (तद्.) 1. नंगा 2. खाली, रीता *पु.* 3. शैव साधुओं का एक संप्रदाय जिसके साधु नंगे रहते हैं (तत्.) *पुं.* 1. असम देश की एक पर्वतमाला 2. एक अर्ध सभ्य जंगली जाति जो इस पर्वत माला में रहती है (तुर्की नागः) 1. जिस दिन व्यक्ति अपने काम पर उपस्थित न हुआ हो 2. छुट्टी का दिन 3. वह दिन जब कोई नित्य कार्य करना छूट जाए 4. असावधानी के कारण होने वाली चूक या व्यतिक्रम।

नागाख्य *पुं.* (तत्.) नागकेसर नामक सदाबहार वृक्ष और इसके सुगंधित फूल।

नागानंद *पुं.* (तत्.) हर्ष द्वारा रचित एक प्रसिद्ध नाटक।

नागानन *पुं.* (तत्.) 1. गजानन, गणेश 2. हाथी के जैसा मुँह वाला।

नागाभिभू *पुं.* (तत्.) महात्मा बुद्ध।

नागाराति *वि./पुं.* (तत्.) नागांतक, नाग या हाथियों का शत्रु 1. गरुड़ 2. मोर 3. सिंह।

नागारि *पुं.* (तत्.) दे. नागांतक।

नागार्जुन *पुं.* (तत्.) एक प्रसिद्ध बौद्ध चिंतक जो बौद्ध धर्म के प्रचारक थे, इन्होंने बौद्ध धर्म को दार्शनिक रूप दिया, इनका समय ईसा से लगभग 100 वर्ष पहले अथवा ईसवी पहली शती के आस-पास था 2. दरभंगा (बिहार) के एक प्रसिद्ध साहित्यकार (1911-1998 ई.)।

नागार्जुनी *स्त्री.* (तत्.) 1. दुद्धी नाम की एक घास जिसके तृण के दोनों ओर एक एक पत्ती होती है 2. थूहर जाति का छोटा पौधा जिसका दूध दमा या श्वास रोग में दिया जाता है 3. सारिता नाम की लता 3. जंगली नील 5. एक बड़ा पेड़ जो मध्य-प्रदेश, राजस्थान में पाया जाता है 6. दुधिया नाम की सफेद मिट्टी, खड़िया मिट्टी 7. एक प्रकार का धान।

नागालाबु *पुं.* (तत्.) गोल प्रजाति का कद्दू, लौकी।

नागाशन *पुं.* (तत्.) 1. सर्पों को खाने वाला 2. गरुड़ 3. मोर, मयूर।

नागाश्रय *पुं.* (तत्.) हस्तिकंद।

नागाह्व *पुं.* (तत्.) नागकेशर।

नागाह्वा *स्त्री.* (तत्.) लक्ष्मणा नामक कंद।

नागिन *स्त्री.* (तत्.) नाग/साँप की स्त्री/मादा, सर्पिणी प्रयो. नाग-नागिन का जोड़ा बड़ा आकर्षक लग रहा है।

नागी *पुं.* (तत्.) शिव, महादेव *स्त्री.* हथिनी

नागुला *पुं.* (तत्.) 1. नेवला 2. नाकुली नाम की वनस्पति

नागेंद्र *पु.* (तत्.) 1. नागों का राजा, नागराज 2. बड़ा या प्रमुख नाग या सर्प 3. नागराज वासुकि 4. नागों में श्रेष्ठ शेष नाग 5. उत्कृष्ट हाथी ऐरावत जो देवेंद्र का वाहन माना जाता है।

नागेश *पुं.* (तत्.) दे. नागेंद्र।

नागेश्वर *पुं.* (तत्.) दे. नागेंद्र।

नागेसर *पुं.* (तद्.) दे. नागेश्वर 2. वसंत में खिलने वाला एक फूल जिसमें पाँच पंखुड़ियाँ होती हैं।

नागेसरी *वि.* (तत्.) नागकेशर के समान रंग का *पुं.* नागकेशर का रंग।

नागोद *पुं.* (तत्.) 1. बख्तर या लोहे का तवा जिसे अस्त्राघात से बचाने के लिए छाती पर पहना जाता है 2. एक प्रकार का गर्भ रोग।

नागोदर *पुं.* (तत्.) दे. नागोद।

नागोदरिका *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार का दस्ताना जो जो युद्ध में हाथ में पहना जाता है।

नागोद्भेद *पुं.* (तत्.) मेरु पर्वत का एक स्थान जहाँ सरस्वती की गुप्त धारा ऊपर दिखाई पड़ती है।

नागौद *पुं.* (तद्.) मारवाड़ के अंतर्गत एक नगर जहाँ की गौएँ और बैल बहुत प्रसिद्ध हैं।

नागौर *पुं.* (तद्.) मारवाड के अंतर्गत एक नगर।

नागौरी *वि.* (देश.) 1. मारवाड़ के नागौर नगर से संबंधित 2. अच्छी नस्ल की गाय या बैल 3. नागौर का या नागौर की।

नाघत *स.क्रि.* (तद्.) लाँघता है *क्रि.वि.* लाँघते हुए या लाँघने पर।

नाघि *क्रि.वि.* (तद्.) लाँघकर उदा. नाघि सिंधु एहि पारहि आवा -तुलसी मानस।

नाच *पुं.* (तद्.) 1. नृत्य 2. प्रसन्नता में की जाने वाली भाव-भंगिमाओं की उछल-कूद 3. कौतुकपूर्ण किया या गति प्रयो. मुझे सब गीतों पर नाचना आता है 4. किसी के इशारे पर कार्य करना प्रयो-प्रजा राजा के संकेत पर नाचती रहती है मुहा. नाच करना/नाच दिखाना- नाचने के लिए तैयार होना; नाच नचाना- जैसा चाहना वैसा कार्य करवाना, परेशान करना; नाच न जाने आँगन टेढ़ा- स्वयं की कमी को ढकते हुए दूसरे में दोष निकालना; नाच दिखाना- तमाशा दिखाना, पाखंड मचाना, किसी के सामने उछल-कूद करना; नाच-नाचना- किसी की इच्छानुसार कार्य करना।

नाच-कूद *स्त्री.* (तद्.) 1. नाचने और कूदने की क्रिया या भाव, उछल-कूद, नाच तमाशा 2. ऐसी क्रिया या हाव-भाव जो दूसरों के लिए मनोरंजक या हास्यास्पद लगे 3. लाक्षणिक रूप में एक ऐसा प्रयास जो अंत में व्यर्थ सिद्ध हो।

नाच-गाना *पु.* (तद्.) नृत्य और गायन, नाचना और गाना दोनों क्रियाएँ एक साथ संपन्न करना।

नाचघर *पु.* (तद्.) दे. नृत्यशाला।

नाचन *स्त्री.* (देश.) एक छोटी चिड़िया जिसे 'चकदिल' के नाम से भी जाना जाता है, यह गौरैया के आकार की हल्के भूरे रंग की होती है, यह मक्खियों-मच्छरों को खाने वाली तथा कर्कश स्वर निकालती है।

नाचना *स.क्रि.* (तद्.) 1. ताल और लय के अनुसार हाव-भाव और अंग संचालन करना प्रयो. श्रेष्ठ नर्तकियों को रंगमंच पर नाचना ही पंसद होता है 2. हर्ष की अधिकता से झूमना या उछलना-

कूदना, प्रयो. भारत की पाकिस्तान पर धमाकेदार जीत से सैंकड़ों लोग नाचने लगे 3. किसी वस्तु का चक्राकार गति करना प्रयो. लट्टू नाच रहा है 4. जल्दी-जल्दी इधर-उधर आना जाना या हिलना-डुलना प्रयो. हवा चलने पर पेड़-पौधों का नाचना 5. दूसरे के आदेश या संकेतों का अनुसरण करना उदा. 'अब मैं नाच्यौ बहुत गोपाल' -सूरदास, सूरसागर 1/153) 6. लाक्षणिक रूप में अवांछित रूप में सामने या समीप आना या बने रहना उदा. 'अब तव कालू, सीस पर नाच्यो' -तुलसीदास, रामचरितमानस, 6/94/4 मुहा. आँखों के सामने नाचना- पूरी तरह याद आना; सिर पर नाचना- बहुत निकट आ जाना, पास आकर परेशान करना।

नाचमहल *पु.* (तद्.+अर.) नृत्यशाला, नाचघर।

नाचरंग *पु.* (तद्.+तत्.) 1. वह कार्यक्रम जिसमें नाच-गाना हो। 2. आमोद-प्रमोद।

नाचाकी *पु.* (फा.+तु.) 1. वैमनस्य, अनबन 2. शत्रुता, विरोधी।

नाचार *वि.* (फा.) 1. जिसका कोई चारा या प्रतिकार न हो सकता हो, 2. लाचार, विवश 3. तुच्छ, व्यर्थ, बेकार।

नाचिकेत *पु.* (तत्.) 1. अग्नि 2. ऋषि नचिकेता।

नाचीज़ *वि.* (फा.) 1. जिसकी गिनती न हो, तुच्छ, हीन, 2. निकम्मा या रद्दी टि. नम्र व्यवहार में वक्ता स्वयं को कई बार 'नाचीज' भी कहता है।

नाचीन *पु.* (तत्.) 1. एक प्राचीन देश 2. उक्त देश का निवासी

नाज *पु.* (तद्.) 1. अन्न, अनाज 2. भोजन की सामग्री, खाद्य पदार्थ।

नाज़ *पु.* (फा.) 1. हाव-भाव, नखरा 2. अभिमान, घमंड 3. गर्व, 4. लाड प्यार या सम्मान सहित पालन-पोषण मुहा. नाज़ उठाना- नखरे सहना; नाज़ों से पालना- बहुत ध्यान या लाड़-प्यार के साथ पालन-पोषण करना।

नाज़-अदा *स्त्री.* (फा.) दूसरों को आकर्षित करने के लिए मनुष्य द्वारा की जाने वाली अंगों की विविध मोहक चेष्टाएँ।

नाज़-नखरा *पु.* (फा.) किसी को आकृष्ट करने के लिए कुछ-कुछ मानपूर्वक की जाने वाली मोहक-चेष्टाएँ।

नाजनी *वि.* (फा.) सुंदर, *स्त्री.* सुंदर स्त्री।

नाज़नू *स्त्री.* (फा.) मरुआ नामक पौधा और फूल।

नाज़बरदार *वि.* (फा.) नाज़ नखरे सहन करने वाला, नाज़ उठाने वाला।

नाज़बरदारी *स्त्री.* (फा.) किसी के नाज़ नखरे या चोंचले सहन करना।

नाज-मंडी *स्त्री.* (तद्.) अनाज की मंडी, या बाजार।

नाज़रीन *पु.* (अर.) उपस्थित दर्शक-गण।

नाजाँ *वि.* (फा.) किसी प्रकार के गुण, विशेषता आदि का अभिमान या गर्व करने वाला।

नाजायज *वि.* (फा.) 1. जो जायज अर्थात उचित न हो 2. जो नियम, विधि आदि के विरुद्ध हो, अवैध।

नाज़िम *पुं.* (फा.) 1. मुसलमानी शासन में किसी प्रदेश या प्रांत का प्रबंध करने वाला अधिकारी 2. वर्तमान संदर्भ में कचहरी या न्यायालय के किसी विभाग के लिपिकों आदि का प्रधान अधिकारी 3. मंत्री या सचिव।

नाज़िर *वि.* (अर.) 1. देखने वाला, दर्शक 2. देखरेख करने वाला, निरीक्षक।

नाज़िरात *स्त्री.* (तद्.) 1. नाज़िर का पद, काम या भाव 2. नाज़िर का कार्यालय 3. वह दलाली जो नाजिर को नाचने गाने वाली वेश्याओं आदि से मिलती है।

नाज़िरीन *पुं.* (अर.) दे. नाज़रीन।

नाज़िल *वि.* (अर.) 1. जो ऊपर से (अर्थात ईश्वर की ओर से) नीचे आया या उतरा हो, अवतरित, 2. आया हुआ।

नाज़ी *पुं.* (जर.) 1. जर्मनी का एक प्रसिद्ध राजनीतिक दल जो अपने को राष्ट्रीय साम्यवादी कहता था, इसका प्रभाव द्वितीय विश्व युद्ध के

बाद हुआ था 2. उक्त दल का सदस्य *वि.* बहुत ही क्रूर।

नाज़ीवाद *पुं.* (तद्+तत्.) प्रबल या सबल सिद्धांत, ऐसा सिद्धांत जो राष्ट्र और संसार का शासन-सूत्र सूत्र बलपूर्वक अपने हाथों में लेकर चलता है, यह सिद्धांत व्यक्ति स्वातंत्र्य और जनतंत्र का परम विरोधी है।

नाजुक *वि.* (फा.) 1. कोमल, सुकुमार 2. पतला, बारीक, महीन 3. गूढ़ और सूक्ष्म भाव या विचार 4. इतना कोमल की सहज में ही टूट-फूट जाए 5. जिसमें अनिष्ट, अपकार, हानि की विशेष संभावना हो।

नाजुक-दिमाग *वि.* (फा.+अर.) 1. जिसका दिमाग या मस्तिष्क इतना कोमल हो कि अपनी इच्छा, रुचि आदि के विपरीत होने वाली छोटी-सी बात भी न सह सके 2. बात-बात पर क्रोधित या चिढ़ने वाला व्यक्ति।

नाजुक-बदन *वि.* (फा.) 1. सुकुमार शरीर वाला, कोमल अंग वाला, *पु.* 1. डोरिए के समान लगने वाला पुराने प्रकार का मलमल का कपड़ा, 2. गुल्लाला नामक फूल और पौधा।

नाजुक मिजाज *वि.* (फा+अर.) 1. बहुत ही कोमल और मृदु प्रकृति वाला 2. दे. नाजुक-दिमाग।

नाज़ेब *वि.* (फा.) 1. जो देखने में उचित या ठीक न लगे, अनुपयुक्त, 2. भद्दा, भोंडा 3. अश्लील।

नाज़ो *स्त्री.* (फा.) 1. चटक-मटक कपड़े पहन बन ठन कर नाज़ नखरे दिखाने वाली स्त्री 2. कोमल, प्यारी या लाड़ली स्त्री।

नाट *पुं.* (तत्.) 1. नृत्य, नाच 2. नकल, स्वाँग 3. कर्नाटक के पास का एक प्राचीन देश 4. 'नाट' प्रदेश का निवासी 5. संगीतशास्त्र के अनुसार एक एक प्रकार का राग जो किसी के मत में मेघराग का और किसी के मतानुसार दीपक राग का पुत्र है *पुं.* काँटे, कील आदि की वह नोक जो चुभने पर शरीर के अंदर टूटकर रह जाती है।

नाटक *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रमुख गद्य विधा जिसका जिसका संबंध रंगमंच से माना गया है, इसका लेखन रंगमंच पर प्रदर्शन हेतु किया जाता है, नटों या अभिनेताओं के द्वारा रंगमंच पर होने वाला ऐसा अभिनय जिसमें वे दूसरे पात्र का रूप धारण कर उनके आचरण, कार्य, चरित्र, हाव-भाव आदि का प्रदर्शन करते हैं 2. वह साहित्यिक रचना जिसमें किसी कक्ष या घटना का ऐसे ढंग से निरुपण हुआ हो कि रंगमंच पर सहज से उसका अभिनय हो सके 3. नाट्य या अभिनय करने वाला 4. कोई ऐसा आचरण, कार्य या व्यवहार जो दूसरों को दिखाने या धोखा देने के उद्देश्य से किया जाता है। drama

नाटकशाला *स्त्री.* (तत्.) दे. नाट्यशाला।

नाटकादेवदारू *पुं.* (तत्.) दक्षिण भारत में उगने वाला एक प्रकार का पेड़ जिसकी लकड़ी से विशेष प्रकार का तेल निकलता है, इसकी कलियों से साग बनता है और फल गरीब लोग सूखा पड़ने पर खाते हैं।

नाटकावतार *पुं.* (तत्.) किसी नाटक में अभिनय के अंतर्गत होने वाला दूसरे नाटक का अभिनय।

नाटकिया *पुं.* (तद्.) 1. नाटक में अभिनय करने वाला 2. बहुरूपिया।

नाटकी *स्त्री.* (तत्.) इंद्रसभा, *पुं.* नाटक करके जीविका उपार्जन करने वाला व्यक्ति, नाटकिया, *वि.* दे. नाटकीय।

नाटकीकरण *पुं.* (तत्.) किसी कथा या कहानी को नाट्य विधा में रूपांतरित करना मनो. एक मानसिक प्रक्रिया जिसके कारण स्वप्न में अवचेतन की अनेक इच्छाएँ या मूल तथ्य मूर्त रूप से अभिव्यक्त होता है।

नाटकीय *वि.* (तत्.) 1. नाटक संबंधी, नाटक का 2. बहुत ही आकस्मिक रूप से लेकिन कुशलता तथा चतुराई से किया जाने वाला।

नाटकोचित *वि.* (तत्.) 1. जो नाटक के अनुरूप हो या जो नाटक के योग्य हो 2. असाधारण और अप्रत्याशित नाटकीयता।

नाटना *अ.क्रि.* (तद्.) पीछे हटना या मुकरना।

नाटवसंत *पुं.* (तत्.) संगीत में एक प्रकार का संकर राग।

नाटा *वि.* (तद्.) 1. जिसका कद या डील साधारण से कम हो, छोटे कद वाला, कम ऊँचा या कम लंबा *पु.* कम ऊँचा या छोटे डील का बैल।

नाटाकरंज *पुं.* (तद्.+तत्) करंज नामक वनस्पति का एक प्रकार। इसका कांटेदार वृक्ष भी होता है तथा यह फल भी होता है।

नाटाभ्र *पुं.* (तत्.) तरबूज़।

नाटार *पुं.* (तत्.) अभिनेत्री का पुत्र।

नाटिका *स्त्री.* (तत्.) दृश्य काव्य का एक विशेष रूप जिसमें मूलतः कल्पित कथा का सहारा लिया जाता है, इसका नायक प्रायः उदात्त चरित्र वाला होता है तथा इसमें नृत्य-गीत आदि की बहुलता है।

नाटित (तत्.) वह नाटक जिसका अभिनय हो चुका हो, अभिनीत *पु.* अभिनय।

नाट्य *पुं.* (तत्.) 1. नट का कार्य-व्यापार 2. रंगमंच पर नाचने, गाने, बजाने और अभिनय करने का कार्य 3. गद्य की एक विशिष्ट विधा जिसमें अभिनय के द्वारा रंगमंच पर भावों और कथा का प्रदर्शन किया जाता है, इसका लेखन रंगमंच पर प्रदर्शन के लिए ही प्रायः किया जाता है 4. स्वाँग करने की क्रिया या भाव 5. नृत्यकला 6. अभिनेता की वेशभूषण टि. यह एक प्राचीन विधा है जिस पर सबसे पहले 'नाट्यशास्त्र' नामक रचना आचार्य भरतमुनि ने लिखी थी, किंतु यहाँ 'नाट्य' का अर्थ साहित्य से है तथा बाद में 'नाट्य' एक गद्य विधा के रूप में में विकसित होने लगी 4. ऐसा नक्षत्र जिसमें नाट्य या नाटक का आरंभ शुभ माना जाता है।

नाट्यकार *पुं.* (तत्.) 1. नाट्य नामक साहित्यिक विधा का लेखन करने वाला 2. नाटक में अभिनय या स्वांग करने वाला 3. नाटक करने वाला नट।

नाट्यधर्मिका *स्त्री.* (तत्.) अभिनय संबंधी निर्देश या संकेतों की जानकारी देने वाली पुस्तिका।

नाट्यप्रिय *पुं.* (तत्.) 1. महादेव, शिव 2. जिसे नाट्य विधा पसंद हो या नाट्य विधा का निरंतर मन से अध्ययन करने वाला।

नाट्यमंदिर *पुं.* (तत्.) नाट्य का प्रदर्शन करने वाला स्थान, नाट्यशाला।

नाट्यरासक *पुं.* (तत्.) काव्य. में वर्णित एक प्रकार का उपरूपक, दृश्य काव्य, इसमें प्रायः एक ही अंक होता है, इसका नायक प्रायः उदात्त और नायिका वासक-सज्जा होती है। इसमें गीत एवं नृत्य का प्रधान रूप से आश्रय लिया जाता है।

नाट्यशाला *स्त्री.* (तत्.) नाटक के प्रदर्शन हेतु निर्मित किया गया एक विशिष्ट आकार-प्रकार का का भवन जिसमें एक ओर अभिनेताओं द्वारा नाटक का मंचन किया जाता है तो दूसरी ओर दर्शकों के बैठने का स्थान बनाया जाता है, इसका निर्माण कई ढंग से किया जाता है, रंगशाला। theatre

नाट्यशास्त्र *पुं.* (तत्.) 1. वह शास्त्र या सिद्धांत जिसमें नाट्य विधा के स्वरूप तथा नाचने-गाने-अभिनय आदि की कलाओं का विवेचन विश्लेषण किया जाता है 2. आचार्य भरतमुनि द्वारा रचित एक ग्रंथ का नाम जिसमें साहित्य से संबंधित सिद्धांतों की जानकारी दी गई है।

नाट्यागार *पुं.* (तत्.) दे. नाट्यशाला।

नाट्याचार्य *पु.* (तत्.) 1. 'नाट्य' विधा का शिक्षक या विद्वान 2. 'नाट्यशास्त्र' की रचना करने वाला, आचार्य भरतमुनि।

नाट्यालंकार *पुं.* (तत्.) काव्य. अभिनय का सौंदर्य बढ़ाने वाली ऐसी विशेष बातें जिन्हें काव्यशास्त्रकारों ने उनके अलंकार रूप में माना है टि. साहित्यदर्पण में नाट्यालंकार 33 कहे गए हैं- आशीर्वाद, अक्रंद, कपट, अक्षमा, गर्व, उद्यम, आश्रय, उत्प्रासन, स्पृहा, क्षोभ, पश्चात्ताप, उपपत्ति, आशंसा, अध्यवसाय, विसर्प, उल्लेख, उत्तेजन, परिवाद, नीति,

अर्थ-विशेषण, प्रोत्साहन, सहाय्य, अभिमान, अनुवृत्ति, उत्कीर्तन, यांचा, परिहार, निवेदन, प्रवर्तन, आख्यान्, युक्ति, प्रहर्ष और शिक्षा।

नाट्योक्ति *स्त्री.* (तत्.) काव्य. 1. विशिष्ट पात्रों को को बताई जाने वाले कुछ विशेष उक्तियाँ या कथन 2. नाटकीय वाक्य-विन्यास 3. नाटक में प्रचलित कुछ विशेष सूचक शब्द 4. नाटक में पात्र का चरित्र और अभिप्राय प्रकट करने के लिए प्रयुक्त संवाद टि. इस प्रकार के संवादों के काव्यशास्त्र में पाँच भेद जाने गए हैं-प्रकाश, स्वगत, अपवारित, जनान्तिक, आकाशभाषिता, नाट्योक्ति द्वारा विशेष प्रकार का संबोधन दिया जाता है, यथा- 'आर्य', 'आर्यपुत्र', 'देव', 'पितामह' आदि।

नाट्योचित *वि.* (तत्.) 1. जो नाटक के लिए उपयुक्त या उचित हो 2. जिसका अभिनय हो सकता हो, अभिनय के योग्य।

नाट्योत्पत्ति *स्त्री.* (तत्.) नाटक की उत्पति, उद्‌भव या जन्म।

नाट्योपयोगी *वि.* (तत्.) जो नाटक में या नाटक के लिए उपयोगी अथवा लाभदायक हो।

नाठ *पुं.* (तद्.) 1. विनाश, ध्वंस 2. अभाव, कमी 3. ऐसी संपत्ति जिसका कोई मालिक या स्वामी न हो, लावारिस संपत्ति।

नाठना *स.क्रि.* (तद्.) 1. ध्वस्त करना या नष्ट करना *अ.क्रि.* नष्ट होना, ध्वस्त होना दे. 'नटना'।

नाठा *पुं.* (तद्.) वह जिसके आगे-पीछे कोई वारिस न रह गया हो, उत्तराधिकारी रहित व्यक्ति।

नाठि *अ.क्रि.* (तत्.) दे. नाठना।

नाठी *वि.* (तद्.) 1. नष्ट 2. क्रोध में गाली रूप में प्रयुक्त शब्द, मरी, सब कुछ नष्ट करने वाली।

नाड़ *स्त्री.* (तत्.) 1. ग्रीवा या गरदन, 2. दे. नार 3. दे. नाल *पुं.* छोटा नाला।

नाड़क *वि.* (तत्.) नली या नल के आकार का और लंबा *पुं.* एक प्रकार की बड़ी, लंबी मछली।

नाड़ा *पुं.* (तत्.) 1. सूत की वह मोटी डोरी जिससे पायजामा, पायजामी, घाघरा आदि बाँधा जाता है, कमरबंद मुहा. नाड़ा खोलना- किसी के साथ संभोग करने के लिए उद्यत होना 2. देव-पूजन आदि में प्रयुक्त होने वाला लाल या पीले रंग का का सूत, मौली मुहा. नाड़ा बाँधना- किसी को विशिष्ट कला या विद्या सिखाने के लिए अपना शिष्य बनाना 3. पेट की अंदर की वह नली जिससे मल आँतों की ओर आता है मुहा. नाड़ा उखड़ना- इस प्रकार की नली का अपने स्थान से खिसकना जिससे कि दस्त हो जाए; नाड़ा बैठाना- झटके आदि देते हुए इस नली को अपने स्थान पर लाना।

नाडिंधम *वि.* (तत्.) 1. किसी नली द्वारा हवा फूँकने वाला 2. नाड़ियों को हिलाने वाला 3. श्वास, प्रश्वास की क्रिया को तेज करने वाला *पु.* सुनार

नाडिंधय *वि.* (तत्.) नाड़ी के द्वारा पान करने वाला।

नाड़ि *स्त्री.* (तत्.) 1. नाड़ी 2 नली।

नाड़िक *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का साग जिसे पटुआ भी कहते हैं, 2. समय का दंड नामक मान 3. दे. नाड़ी।

नाड़िका *स्त्री.* (तत्.) 1. नाड़ी, धमनी 2. समय की एक प्राचीन इकाई टि. एक नाड़िका घंटी में 24 मिनट होते हैं।

नाड़िकेल *पुं.* (तत्.) नारियल।

नाड़िपत्र *पुं.* (तत्.) पटुआ नामक विशेष प्रकार का साग।

नाड़िया *पुं.* (तत्.) नाड़ी देखकर रोग का पता लगाने वाला, वैद्य।

नाड़ी *स्त्री.* (तत्.) 1. धमनी, शुद्‌ध रक्त वाहिनी 2. कलाई की वह नाड़ी जिसकी गति आदि देखकर वैद्य या चिकित्सक शारीरिक अवस्था विशेषकर ज्वर आदि का बोध प्राप्त करता है मुहा. नाड़ी चलना- कलाई की नाड़ी में गति होना जो कि जीवित होने का बोध देता है; नाड़ी छूटना- नाड़ी का स्पंदन बंद हो जाना जो कि मृत्यु का सूचक है; नाड़ी देखना- कलाई की नाड़ी की गति को

देखना जिसके आधार पर निदान किया जाता है; नाड़ी धरना- नाड़ी का निरीक्षण-परीक्षण करना; नाड़ी बोलना- नाड़ी में गति या स्पंदन होते रहना 3. बंदूक की नली 4. समय का एक मान जो 24 मिनट का होता है 5. छल-कपट 6. फोड़े आदि का मुँह 7. ज्योतिष विवाह के अवसर पर नाड़ी-नक्षत्र का विशेष रूप से बोधन किया जाता है, नाड़ी के तीन रूप है-आदूल, मध्य और अन्त्य।

नाड़ीक *पुं.* (तत्.) पटुआ नामक विशेष प्रकार का साग।

नाड़ी-कलापक *पुं.* (तत्.) एक विशेष प्रकार की घास।

नाड़ीका *स्त्री.* (तत्.) श्वास-नलिका।

नाड़ी-कूट *पुं.* (तत्.) ज्यो. नाड़ी-नक्षत्र का आकलन।

नाड़ी-केल *पुं.* (तत्.) नारियल।

नाड़ी-चरण *पुं.* (तत्.) पक्षी।

नाड़ी-जंघ *पुं.* (तत्.) 1. एक प्राचीन ऋषि 2. महाभारत के अनुसार एक चिरजीवी बगुला जो इंद्रद्युम्न नामक जलाशय में रहता है 3. महाभारत के अनुसार एक बगुला जो कश्यप का पुत्र, ब्रह्मा का अत्यंत प्रियपात्र था 4. कौआ।

नाड़ी-तरंग *पुं.* (तत्.) 1. काकोल 2. हिंडक

नाड़ी-तिक्त *पुं.* (तत्.) नेपाली नीम।

नाड़ी-देह *वि.* (तत्.) बहुत कमजोर या दुबला-पतला *पुं.* शिव के एक द्वारपाल का नाम।

नाड़ी-नक्षत्र *पुं.* (तत्.) ज्यो. विवाह के अवसर पर वर-वधू मिलापक में कल्पित चक्रों में स्थित नक्षत्र।

नाड़ी-मंडल *पुं.* (तत्.) विषुवत रेखा।

नाड़ी-यंत्र *पुं.* (तत्.) 1. आयु. एक प्राचीन उपकरण जिसकी सहायता से नाड़ी का परीक्षण कर उसकी चीड़-फाड़ की जाती है तथा उसमें घुसी चीजें निकालकर रोग या कष्ट का निदान किया जाता है।

नाड़ीवलय *पुं.* (तत्.) समय का बोध कराने वाला एक प्राचीन यंत्र।

नाड़ीव्रण *पुं.* (तत्.) एक ऐसा घाव जो नली के छेद के समान होता है तथा उसमें मवाद निकलता रहता है, नासूर। sinus

नाड़ी-शाक *पुं.* (तत्.) पटुआ नामक विशेष प्रकार का साग।

नाड़ी-हिंगु *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का वृक्ष जिसकी गोंद से हींग जैसी गंध आती है 2. उक्त उक्त वृक्ष का गोंद जो कि औषधि के भी काम आता है।

नाड़ूदाना *पुं.* (देश.) मैसूर राज्य का बैल जो कद में छोटा पर अधिक परिश्रमी होता है।

नाणाक/नाणक *पुं.* (तत्.) 1. सिक्का 2. निष्क नामक एक प्राचीन सिक्का 3. धातु।

नात *स्त्री.* (अर.) 1. मुहम्मद साहब की छंदबद्ध स्तुति 2. प्रशंसा, स्तुति। *पुं.* 1. नाता 2. नातेदार।

नातका *पुं.* (अर.) बोलने की शक्ति, वाक्शक्ति 2. वाणी मुहा- नातका बंद करना- वाद-विवाद में निरुत्तर या परास्त कर देना।

नातमाम *वि.* (फा.) 1. जो कार्य अभी पूरा न हुआ हो, अपूर्ण जिसका कुछ भाग अभी होना बाकी हो, अधूरा।

नातरि अव्य. (तद्.) अन्यथा, नहीं तो उदा. 'भली भई जु गुर मिल्या, नातर होति हानि।' -कबीर ग्रंथावली, साखी 1/19।

नातरु अव्य. (तद्.) दे. नातरि।

नातवाँ *वि.* (फा.) शारीरिक दृष्टि से दुर्बल या कमजोर।

नातवानी *स्त्री.* (फा.) शारीरिक दुर्बलता या कमजोरी।

नाता *पुं.* (तत्.) 1. परस्पर एक दूसरे का संबंध, रिश्ता 2. मानव-जीवन में होने वाली पारस्परिक लगाव का संबंध जो जन्म से रक्त-संबंध के कारण या विवाह-सूत्र में बंधन के कारण बनता है प्रयो. वह नाते में मेरा भाई लगता है 3. वैवाहिक संबंध प्रयो. वह आज उनकी लडकी से

नाता जोड़ने आया है 4. किसी प्रकार का लगाव या संबंध।

नाताकत *वि.* (फा.) शक्तिहीन, निर्बल, कमजोर

नाताक़ती *स्त्री.* (फा.) शक्तिहीनता, निर्बलता, कमजोरी।

नाता-गोता *पुं.* (फा.) वंश और गोत्र की समानता के कारण होने वाला एक आपस का संबंध।

नातिक़ा *पुं.* (अर.) 1. बोलने की शक्ति, वाक् शक्ति शक्ति 2. वाणी।

नातिन *स्त्री.* (तद्.) पुत्री की पुत्री, दौहित्री, धेवती।

नातिनी *स्त्री.* (तद्.) दे. नातिन।

नाती *पुं.* (तद्.) पुत्री का पुत्र, दौहित्र, धेवता।

नाते क्रि.*वि.* (तद्.) 1. संबंध से 2. हेतु, लिए, वास्ते प्रयो. तुम यहाँ किस नाते आते हो?

नातेदार *वि.* (तद्.) जिससे कोई नाता हो, रिश्तेदार, संबंधी

नातेदारी *स्त्री.* (तद्.) रिश्तेदारी, संबंध।

नात्र *पुं.* (तत्.) शिव, महादेव, शंभु।

नाथ *पुं.* (तत्.) 1. प्रभु, स्वामी, मालिक, भगवान उदा. 'नाथ नील नल कपि दोउ भाई -तुलसी, रामचरितमानस, सुंदरकांड 2. पति 3. शिव, महादेव, शंभु 4. गोरखपंथी साधुओं का संप्रदाय जो प्राय: अपने नाम के अंत में 'नाथ' शब्द का प्रयोग करता है, *स्त्री.* 1. बैल आदि के नाक में पहनाए जाने वाली रस्सी 2. नाक में पहनने का एक आभूषण या गहना, नथ उदा. 'परी नाथ कोई छुइअ ना पारा। मारग मानुस सोन उछारा' -जायसी, पद्मावत, 5/4।

नाथता *स्त्री.* (तत्.) नाथ होने की अवस्था या भाव, भाव, नाथत्व

नाथत्व *पुं.* (तत्.) दे. नाथता।

नाथद्वारा *पु.* (तत्.) वल्लभ संप्रदाय से संबंधित वैष्णवों का एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ श्रीनाथ जी की मूर्ति स्थापित है।

नाथना *स.क्रि.* (तद्.) 1. बैल और ऊँट की नाक को छेदकर उसे नाथना, नत्थी करना 2. रस्सी द्वारा उनके नाक को छेदकर पशुओं को नियंत्रित करना 3. एक सूत्र में बांधना 4. वश में करना।

नाथपंथ *पुं.* (तत्.) 1. गुरु गोरखनाथ तथा उनके शिष्यों द्वारा स्थापित एक संप्रदाय, ये मूलत: निर्गुण शिव के उपासक हैं, इनकी संख्या सामान्यत: नौ मानी जाती है इस पंथ की बारह शाखाएँ हैं-सत्यनाथी, धर्मनाथी, रामपंथ, नटेश्वरी, नटेश्वरी, कन्हण, कपिलानी, वैरागी, माननाथी, आईपंथ, पागलपंथ, धजपंथ और गंगानाथी।

नाथपंथी *पुं.* (तत्.) नाथपंथ में दीक्षित या मानने वाला।

नाथवान *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई स्वामी या रक्षक हो, सनाथ 2. सेवक 3. पराधीन, परतंत्र, जो स्वतंत्र न हो।

नाथहरि *पुं.* (तत्.) पशु, जानवर।

नाथोक्त *वि.* (तत्.) शिव, मालिक या ईश्वर द्वारा कथित।

नाद *पुं.* (तत्.) 1. शब्द, ध्वनि, आवाज 2. अव्यक्त अव्यक्त शब्द 3. वर्णों का एक अव्यक्त रूप 4. हठयोग के अनुसार अंतरात्मा में होती रहने वाली एक सूक्ष्म ध्वनि या शब्द जो एकाग्र मन से अभ्यास करने पर सुनाई देती है, मान्यतानुसार उसे सुनते रहने से चित्त अंत में नाद रूपी ब्रह्म में लीन हो जाता है 5. भाषा. वर्णों के उच्चारण में होने वाला एक विशेष प्रकार का प्रयत्न जिसमें जिसमें कंठ से वायु का स्वर निकालने के लिए न तो बहुत फैलाना पड़ता है और न ही सिकोड़ना 6. गाना, बजाना, संगीत।

नादन *स्त्री.* (तत्.) नाद करना या गरजना।

नादना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. ध्वनि या शब्द होना 2. बजना 3. गरजना, शोर मचाना या चिल्लाना 3. दीए की लौ का हवा बार-बार आने से हिलना 4. हँसी-खुशी में उधर-उधर हिलना या घूमना 5. लहराना।

नाद-मुद्रा *स्त्री.* (तत्.) तंत्र विद्या के अंतर्गत की जाने वाली एक विशेष प्रक्रिया जिसमें दाहिने हाथ का अंगूठा सीधा और खड़ा रखा जाता है और मुट्ठी बंधी रहती है।

नादली *स्त्री.* (अर.) एक विशेष प्रकार का पत्थर जो जो रोग या बाधा दूर करने के लिए गले या बाँह में पहना जाता है।

नादविद्या *स्त्री.* (तत्.) संगीतशास्त्र।

नादसौंदर्य *पुं.* (तत्.) ध्वनि या शब्दों की मधुरता काव्य. शब्द-भाव के उचित संयोजन एवं चयन से उत्पन्न माधुर्य।

नादात्मक *वि.* (तत्.) 1. नाद या ध्वनि संबंधी 2. नादमय, ध्वनिमय।

नादान *वि.* (फा.) 1. अवस्था में कम होने के कारण जो जल्द समझ न सके, नासमझ 2. जो अकुशल या अनाड़ी हो 3. मूर्ख, जड़ बुद्धि।

नादानिस्ता *क्रि.वि.* (फा.) 1. बिना जाने-समझे 2. अनजाने में।

नादानी *स्त्री.* (फा.) 1. अज्ञानता, मूर्खता 2. अनाड़ीपन, अकुशलता 3. मूर्खतापूर्ण कोई कार्य।

नादानुप्राणित *वि.* (तत्.) नाद, ध्वनि से युक्त या परिपूर्ण।

नादार *वि.* (फा.) जिसके पास कुछ न बचा हो, बहुत निर्धन, कंगाल *पुं.* बिना रंग या बिना मीर की बाजी।

नादारी *स्त्री.* (फा.) नादार होने की अवस्था या भाव, गरीबी, निर्धनता।

नादि *वि.* (तत्.) 1. गरजने वाला 2. शब्द या ध्वनि करने वाला।

नादित *वि.* (तत्.) 1. जो ध्वनि से परिपूर्ण किया गया हो 2. शब्द करता हुआ, बजता हुआ 3. गुंजायमान होता हुआ।

नादिम *वि.* (अर.) 1. लज्जित, शर्मिंदा 2. पश्चाताप करने वाला।

नादिया *पुं.* (तद्.) 1. नंदी, शिव का वाहन 2. वह विकृत या विलक्षण अंग वाला बैल या सांड जिसे जोगी अपने साथ लेकर भीख माँगने निकलते हैं।

नादिर *वि.* (फा.) 1. विचित्र, अनोखा, विलक्षण 2. श्रेष्ठ, उत्तम।

नादिरशाह *पुं.* (अर.) पारस (फारस) का रहने वाला एक नृशंस राजा जिसने मुहम्मद शाह के समयकाल में भारत पर आक्रमण किया था, यह अपनी क्रूरता के लिए प्रसिद्ध था, इसने एक छोटे विवाद या कारण होने पर क्रोधित हो दिल्ली के लाखों निवासियों की हत्या करवाई थी।

नादिरशाही *स्त्री.* (अर.) 1. नादिरशाह का ऐसा बर्बर एवं क्रूर व्यवहार जिसमें उसने दिल्ली के लाखों निवासियों की हत्या करवाई थी 2. मनमाने ढंग से या निर्दयतापूर्वक किया गया आचरण या व्यवहार।

नादिरी *वि.* (अर.) 1. नादिरशाह से संबंधित 2. अत्याचारपूर्ण और क्रूरतापूर्ण *स्त्री.* 1. एक प्रकार की कुरती जो मुगल बादशाहों के काल में पहनी जाती थी *पुं.* गंजीफे का ऐसा पत्ता जो खेल के समय निकालकर रखा जाता था मुहा. नादिरी चढ़ाना- बहुत बुरी तरह से मात देना।

नादिहंदी *स्त्री.* (फा.) नादिहंद होने की अवस्था या भाव, लिया हुआ पैसा वापिस करने में टाल-मटोल करना।

नादी *वि.* (तत्.) 1. नाद, ध्वनि या शब्द संबंधी *पुं.* 1. ध्वनि या शब्द करने वाला 2. बजाने वाला।

नादेय *वि.* (तत्.) 1. नदी से संबंधित 2. नदी में होने वाला *पुं.* 1. सेंधा नमक 2. सुरमा 3. कास नामक घास।

नादेयली *स्त्री.* (अर.) दे. नादली।

नादेयी *स्त्री.* (तत्.) 1. जलबेंत 2. भुइँ जामुन 3. नारंगी 4. वैजयंती 5. जपा 6. अग्निमंथ *वि.* 'नादेय' का *स्त्री.*

नान *स्त्री.* (फा.) 1. ख़मीरी रोटी, तंदूर में पकायी जाने वाली एक प्रकार की मोटी खमीरी रोटी।

नानक *पुं.* (देश.) 1. सिक्ख संप्रदाय के आदि गुरु *वि.* ननिहाल में जन्मा बालक।

नानकपंथी *पुं.* (देश.+तत्.) नानक-पंथ का अनुयायी *वि.* नानक-पंथ संबंधी।

नानकशाह *पुं.* (देश+फा.) गुरु नानक।

नानकशाही *वि.* (देश+फा.) 1. गुरु नानक से संबद्ध 2. नानक के मत को मानने वाला

नानकार *स्त्री.* (फा.) वह जमीन जो सेवक को पुरस्कार रूप में जीविका-निर्वाह के लिए दी जाती थी।

नानकीन *पुं.* (चीनी नानकिङ्.) एक प्रकार का मटमैला सूती कपड़ा जो पहले चीन में बनता था और अब अन्य देशों में भी बनने लगा है, यह 'मारकीन' के नाम से प्रसिद्ध है।

नानखताई *स्त्री.* (फा.) 1. एक प्रकार की मीठी खस्ता रोटी 2. सूजी या मैदा आदि का बना एक प्रकार का खस्ता-मीठा बिस्कुट।

नानबाई *पुं.* (फा.) रोटी बेचने का व्यवसाय करने वाला।

नानस *स्त्री.* (देश.) ननिया सास।

नाना *पुं.* (तद्.) 1. माता का पिता, मातामह 2. नन्हा बालक 3. छोटा भाई *वि.* (तत्.) बहुत प्रकार के, विविध उदा. जलचर थलचर नभचर नाना (मानस. 1/3/2) 2. बहुत लीलाएँ/क्रीड़ाएँ जैसे- प्रभु रंग नाना करत (सूरसागर. 10/3047)। *स.क्रि.* 1. नवाना, झुकाना 2. अंदर डालना, उँड़ेलना।

नानाकंद *पुं.* (तत्.) पिंडालू *वि.* जिसमें से बहुत जड़ें निकली हों।

नानाकार *वि.* (तत्.) विविध आकारों वाला।

नानात्मवादी *वि.* (तत्.) सांख्य दर्शन का अनुयायी जो यह मानता हो कि व्यक्ति की आत्मा विश्वात्मा से अलग अस्तित्व रखती है।

नानारूप *पुं.* (तत्.) अनेक प्रकार के रूप *वि.* 1. बहुरूपिया, जिसके अनेक रूप हों 2. जिसके बहुत प्रकार हों।

नानार्थ *वि.* (तत्.) 1. वह (शब्द) जिसके अनेक अर्थ हों 2. वह (वस्तु जो अनेक कार्यों में प्रयुक्त प्रयुक्त हो सके।)

नानावर्णता *स्त्री.* (तत्.) बहुरंगी होने का गुण या भाव।

नानाविध *वि.* (तत्.) अनेक प्रकार के।

नानिहाल *पुं.* (देश.) ननिहाल, नानी का घर।

नानी *स्त्री.* (देश.) माता की माता, मातामही मुहा. नानी मरना- उदास हो जाना; नानी याद आ जाना- बहुत घबरा जाना, बहुत परेशान होना।

ना-नुकर *अ.क्रि.* (देश.) इनकार करना, किसी कार्य के लिए मना करना।

नानुसारी *वि.* (तद.) अनुसरण न करने वाला।

नान्ह *वि.* (तद्.) 1. नन्हा, छोटा 2. नीच, अधम 3. बारीक, महीन।

नान्हक *पुं.* (देश.) नानक, सिख संप्रदाय के प्रवर्तक।

नान्हरिया *वि.* (देश.) छोटा, नन्हा।

नान्हा *वि.* (तद्.) नन्हा, छोटा उदा. नान्हाँ करि करि पीस -कबीर, साखी 13/20।

नाप *स्त्री.* (तद्.) 1. किसी मानदंड के अनुसार स्थिर की गई किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, गहराई, ऊँचाई, मात्रा आदि 2. परिमाण, माप।

नाप-जोख *स्त्री.* (तद्.) 1. नापने और तौलने की क्रिया 2. किसी चीज की लंबाई-चौड़ाई आदि नापने अथवा किसी चीज या बात का गुरुत्व, मान, शक्ति आदि आँकने की क्रिया या भाव जैसे- आजकल देहातों में खेतों की नाप-जोख हो रही है।

नापत *स्त्री.* (तद्.) नाप।

नाप-तौल *स्त्री.* (तद्.) 1. नापकर या तौलकर निर्धारित की गई मात्रा का परिमाण। 2. नापने और तौलने की क्रिया या भाव 3. माप।

नापना *स.क्रि.* (तद्.) किसी मानदंड के अनुसार किसी वस्तु के विस्तार, परिमाण, मात्रा आदि का निर्धारण करना।

नापमान *पुं.* (तत्.) मानदंड।

नापसंद *वि.* (फा.) जो पसंद न हो, अरुचिकर, अप्रिय।

नापाक *वि.* (फा.) 1. अपवित्र, अशुद्ध 2. गंदा या मैला।

नापाकी *स्त्री.* (फा.) 1. अपवित्रता, अशुद्धता।

नापायदार *वि.* (फा.) 1. अस्थिर, नाशवान, जो टिकाऊ न हो 2. जो मज़बूत न हो 3. अनिश्चित 4. जिस पर भरोसा न किया जा सके।

नापित *पुं.* (तत्.) नाई।

नापितशाला *स्त्री.* (तद्.) नाई की दुकान।

नापित्य *पुं.* (तत्.) 1. नापित होने की अवस्था या भाव 2. नाई का काम या पेशा 3. नाई का बेटा।

नापैद *वि.* (फा.) 1. जो कभी पैदा न हुआ हो, अनुत्पन्न 2. जो अब पैदा न होता हो।

नाफ़ *स्त्री.* (फा.) 1. (पेट की) नाभि 2. किसी वस्तु का मध्य भाग या केंद्रस्थान।

नाफ़रमाँ *वि.* (फा.) 1. आज्ञा न मानने वाला 2. उद्दंड, धृष्ट।

नाफ़रमानी *स्त्री.* (फा.) 1. अवज्ञा 2. उद्दंडता 3. बड़ों की आज्ञा न मानने की वृत्ति।

नाफ़हम *वि.* (फा.) 1. जो बात को न समझ सके। 2. मूर्खता 3. अज्ञान।

नाफ़ा *पुं.* (फा.) 1. कस्तूरी मृग की नाभि के भीतर की कस्तूरी की थैली 2. मृगनाभि।

नाबदान *पुं.* (फा.) घर के गंदे पानी आदि के बहने की नाली।

नाबालिग *वि.* (फा.+अर.) जो वयस्क या बालिग़ न हो, अवयस्क।

नाबालिगी *स्त्री.* (फा.+अर.) अवयस्कता।

नाबूद *वि.* (फा.) 1. नष्ट, विध्वस्त 2. लुप्त, गायब।

नाभक *पुं.* (तत्.) हरीतकी, हर्रे।

नाभस *वि.* (तत्.) 1. नभ संबंधी, आकाशीय 2. स्वर्गीय।

नाभा *पुं.* (देश.) नाभादास।

नाभाग *पुं.* (तत्.) 1. इक्ष्वाकु वंशीय राजा अज के पिता, दशरथ के पितामह 2. अंबरीष के पिता 3. वैवस्वत मनु के एक पुत्र 4. कारूष वंश के एक राजा।

नाभादास *पुं.* (देश.+तत्.) एक प्रसिद्ध-वैष्णव भक्त जिन्होंने 'भक्तमाल' की रचना की।

नाभारत *स्त्री.* (तद्.) घोड़े की नाभि के नीचे की भौंरी जो अशुभ मानी जाती है।

नाभारिष्ट *पुं.* (तत्.) वैवस्वत मनु के एक पुत्र।

नाभि *स्त्री.* (तत्.) 1. पेट के मध्य भाग का छोटा-सा गड्ढा जिससे गर्भावस्था में जरायु का नाल जुड़ा रहता है 2. पहिए के बीचों-बीच बेलन के आकार का वह छिद्र जिसमें धुरी पहनाई जाती है 3. जरायुज जंतुओं के पेट के मध्य भँवर की तरह का गड्ढा 4. धुन्नी 5. ढोंढी 5. कस्तूरी *पुं.* मुख्य राजा, नायक, क्षत्रिय।

नाभिकंटक *पुं.* (तत्.) उभरी हुई ढोंढी, नाभि का उभरा हुआ या मांसल अंश, नाभिगुलक।

नाभिक *पुं.* (तत्.) परमाणु का केंद्रीय, सघनतम तथा घनात्मक आवेशयुक्त भाग जिसमें प्रोटॉन और न्यूट्रान होते हैं। Nucleus

नाभिका *स्त्री.* (तत्.) 1. कटमी (अपराजिता) का पेड़ 2. नाभि जैसा खात 3. नाभि के आकार का छोटा गड्ढा।

नाभिगुलक *पुं.* (तत्.) नाभिकंटक, नाभि का उभरा हुआ या मांसल अंश।

नाभिगोलक *पुं.* (तत्.) उभरी हुई ढोंढ़ी, नाभिकंटक।

नाभिछेदन *पुं.* (तत्.) नवजात शिशु का नाल काटने की क्रिया।

नाभिज *पुं.* (तत्.) ब्रह्मा *वि.* नाभि से उत्पन्न।

नाभि-नाड़ी *स्त्री.* (तत्.) 1. नाभि की नाली 2. नाभि की नाड़ी जो गर्भकाल में माता की रसवहा नाड़ी से जुड़ी रहती है।

नाभि-पाक *पुं.* (तत्.) एक रोग जिसमें बच्चों की नाभि पक जाती है।

नाभिल *वि.* (तत्.) 1. नाभि से युक्त, नाभिवाला 2. 2. उभरी हुई नाभिवाला (प्राणी) 3. नाभि संबंधी, नाभि का।

नाभिवर्धन *पुं.* (तत्.) 1. नाल बढ़ाने अर्थात् काटने की क्रिया।

नाभिवर्ष *पुं.* (तत्.) जंबूद्वीप के नौ वर्षों में से एक। एक।

नाभि संबंध *पुं.* (तत्.) एक ही गोत्र से अथवा उदर से उत्पन्न होने का नाता।

नाभी *स्त्री.* (तत्.) दे. नाभि।

नाभीय *वि.* (तत्.) नाभि संबंधी, नाभि का।

नाभील *पुं.* (तत्.) 1. नाभि का गड्ढा 2. नाभि और जंघा के बीच का स्थान (स्त्रियों का) 3. कष्ट कष्ट 4. उभरी हुई नाभि।

नामंजूर *वि.* (फा.+अर.) 1. अस्वीकृत 2. निरस्त, रद्द, खारिज।

नामंजूरी *स्त्री.* (फा.+अर.) 1. अस्वीकृति 2. खारिज होना, निरस्त होना/करना।

नाम *पुं.* (तत्.) 1. वह शब्द जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु या समूह का बोध हो 2. वाचक शब्द, संज्ञा शब्द (फा.) 1. प्रसिद्धि, धाक 2. इज्जत 3. कुल 4. यादगार 5. लांछन।

नाम अध्ययन *पुं.* (तत्.) व्यक्तिनामों का ऐतिहासिक इत्यादि दृष्टियों से अध्ययन।

नाम आवर *वि.* (फा.) 1. प्रसिद्ध, मशहूर 2. यशस्वी।

नाम आवरी *स्त्री.* (फा.) यश, प्रसिद्धि।

नामक *वि.* (तत्.) नाम का, नाम वाला।

नामकरण *पुं.* (तत्.) 1. नाम रखने का संस्कार विशेष, जिसमें विधिवत् बच्चे का नाम रखा जाता है 2. किसी का नाम रखने या किसी को नाम देने की क्रिया या भाव जैसे- इस नाटक का नामकरण नायक के नाम पर किया गया है।

नामकर्म *पुं.* (तत्.) नामकरण संस्कार।

नामकीर्तन *पुं.* (तत्.) गाने-बजाने के साथ ईश्वर का नाम जपना।

नामकोश *पुं.* (तत्.) नाम वाचक संज्ञाओं का शब्दकोश। nomenclature

नामग्राम *पुं.* (तत्.) नाम और ठिकाना।

नामचढ़ाई *स्त्री.* (तत्.+तद्.) वह क्रिया जिसमें सरकारी कागज पत्रों आदि पर संपत्ति आदि के स्वामित्व पर से एक व्यक्ति का नाम हटाकर दूसरे का नाम चढ़ाया जाता है। mutation

नामचार *पुं.* (तत्.) नाममात्र उदा. नामचार के लिए उनके घर जाना ही पड़ेगा।

नामज़द *वि.* (फा.) 1. किसी काम या चुनाव के लिए मनोनीत, नामांकित, नाम निर्दिष्ट 2. प्रसिद् प्रसिद्ध 3. बालिका जिसकी सगाई हो चुकी हो।

नामज़दगी *स्त्री.* (फा.) 1. मनोनयन, नामज़द करना 2. नामांकित।

नामतः अव्य. (तत्.) नाम से, नाम के द्वारा।

नामदार *वि.* (फा.) 1. प्रसिद्ध, मशहूर 2. प्रतिष्ठित, इज़्ज़तदार, ख्यातिप्राप्त 3. यशस्वी।

नामदेव *पुं.* (तत्.) महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध कृष्ण उपासक, वैष्णव भक्त कवि।

नामद्वादशी *स्त्री.* (तत्.) अगहन सुदी तीज को होने होने वाला एक व्रत, जिसमें गौरी, काली आदि बारह देवियों की पूजा होती है।

नामधन *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का संकर राग जो मल्लार, शंकराभरण, बिलावल, सूदे और केदारे के योग से बना हो।

नामधरता *पुं.* (तत्.+तद्.) 1. नामकरण करने वाला।

नामधराई *स्त्री.* (तत्.+तद्.) 1. अपयश, बदनामी 2. (किसी व्यक्ति का) चिढ़ाने का नाम या अन्य अन्य नाम रखने की क्रिया या भाव।

नामधातु *स्त्री.* (तत्.) किसी संज्ञा शब्द से बनने वाली धातु।

नामधाम *पुं.* (तत्.) (व्यक्ति के) नाम तथा निवास-स्थान के बारे में कुछ जानकारी, नाम-ग्राम, नाम-पता।

नामधारक *वि.* (तत्.) जो नाम-मात्र का अधिकारी हो, जैसे- वह नामधारक निदेशक है, प्रभावी नहीं।

नामधारी *पुं.* (तत्.) 1. सिक्ख संप्रदाय की एक शाखा 2. सिक्ख संप्रदाय का अनुयायी सिक्ख *वि.* नाम धारण करने वाला।

नामधेय *पुं.*. (तत्.) नाम, संज्ञा *वि.* नामवाला, नामक जैसे अशोक नामधेय अर्थात् 'अशोक' नाम वाला।

नामनिक्षेप *पुं.* (तत्.) नाम-स्मरण (जैनधर्म)।

नामनिर्दिष्ट *वि.* (तत्.) नामांकित, नामित जैसे- नामनिर्दिष्ट अधिकारी।

नामनिर्देश *पुं.* (तत्.) नाम का उल्लेख, नाम लेकर कथन।

नामनिर्देशन *पुं.* (तत्.) नामांकन।

नामनिर्देशपत्र *पुं.* (तत्.) नामांकन पत्र।

नामनिर्देशिती *पुं.* (तत्.) मनोनीत व्यक्ति।

नामनिवेश *पुं.* (तत्.) खाते, रजिस्टर आदि में नाम चढ़ाया जाना enrolment नामांकन

नामनिशान *पुं.* (सं.+फा.) 1. नाम और निशान 2. ऐसा चिह्न जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु या बात के होने का प्रमाण मिले, सूचक चिह्न 3. अवशेष।

नामपंक्ति *स्त्री.* (तत्.) समाचार-पत्र में समाचार के पहले संवाददाता या समाचार एजेंसी के नाम का उल्लेख।

नामपट्ट *पुं.* (तत्.) लकड़ी अथवा लोहे आदि की बनी हुई वह तख्ती जिस पर व्यक्ति/संस्था/ दुकान आदि का नाम लिखा होता है और जिसे प्राय: घर, कार्यालय, दुकान आदि पर टाँग देते हैं। signboard

नामपत्र *पुं.* (तत्.) 1. निर्देश-पत्र, नाम की पर्ची। label

नामपत्रित *वि.* (तत्.) जिस पर नाम पत्र लगा हुआ या लगाया गया हो।

नामपदप्रक्रिया *स्त्री.* (तत्.) संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों में प्रत्यय लगाकर पद बनाने की प्रक्रिया।

नामपद्धति *स्त्री.* (तत्.) किसी वर्गीकरण पद्धति में प्राथमिक पदों के नामकरण की एक सुसंगत पद्धति।

नामबरदार *स्त्री.* (फा.) 1. प्रतिष्ठित 2. प्रसिद्ध, नामी।

नामबरदारी *स्त्री.* (फा.) 1. प्रतिष्ठित होना 2. प्रतिष्ठा 3. प्रसिद्धि।

नामबोला *पुं.* (तत्.+तद.) ऐसा व्यक्ति, जो ईश्वर या देवता के नाम का उच्चारण या जप करता हो।

नाममात्र *वि.* (तत्.) कहने भर के लिए, बहुत थोड़ा, अत्यल्प जैसे नाममात्र वर्षा होना।

नाममाला *स्त्री.* (तत्.) 1. नामों की माला/पंक्ति/ तालिका/सूची 2. नामवली, नाम-संग्रह।

नाममुद्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी के नाम की मुहर 2. जिस अँगूठी पर किसी का नाम अंकित हो।

नामयज्ञ *पुं.* (तत्.) ऐसा यज्ञ जो प्रसिद्धि पाने के लिए किया जाए, किसी धार्मिक उद्देश्य से नहीं।

नामरासी *वि.* (तद.) 1. एक ही नाम वाले या समान नामों वाले लोगों में से प्रत्येक 2. समान नाम वाला।

नामरूप *पुं.* (तत्.) 1. नाम और रूप (किसी व्यक्ति व्यक्ति या वस्तु का) 2. मन से युक्त दृश्यमान् शरीर 3. बौद्ध दर्शन में, गर्भ में स्थित एक महीने के भ्रूण की संज्ञा।

नामरूपात्मक *स्त्री.* (तत्.) 1. अनेक नामों और रूपों वाला जैसे- नामरूपात्मक जगत 2. नाम और रूप से संबंधित।

नामर्द *वि.* (फा.) 1. नपुंसक, हिजड़ा, क्लीव 2. कायर 3. डरपोक, बुज़दिल।

नामर्दी *स्त्री.* (फा.) 1. नपुंसकता 2. कायरता 3. स्त्रैणता 4. डरपोकपन 5. बुज़दिली।

नामलेवा *स्त्री.* (तत्.+तद्.) 1. नाम लेने वाला 2. उत्तराधिकारी 3. संतान 4. प्रशंसक, प्रशंसा करने वाला।

नामवर *वि.* (फा.) 1. प्रसिद्ध 2. यशस्वी 3. ख्यातिप्राप्त, मशहूर।

नामवरी *स्त्री.* (फा.) 1. प्रसिद्धि 2. यश 3. ख्याति, कीर्ति।

नामवाचक *पुं.* व्या. व्यक्तिवाचक संज्ञा *वि.* नाम बताने वाला।

नामशेष *वि.* (तत्.) 1. जो अस्तित्व में न रह गया हो, बल्कि जिसका केवल नाम ही लोग जानते हो 2. ध्वस्त 3. मृत।

नामसंग्रह *पुं.* (तत्.) 1. नामों की तालिका, नाममाला 2. शब्दकोश।

नामहँसाई *स्त्री.* (तत्.+तद.) 1. नाम लेकर उपहास होना 2. अपयश, बदनामी।

ना-महरम *वि.* (फा.+अर.) 1. अनजान, अपरिचित 2. पराया, गैर 3. (ऐसा व्यक्ति) जिससे परदा करना स्त्रियों के लिए उचित तथा विहित हो।

नामांक *पुं.* (तत्.) किसी सूची, तालिका में लिखे गए नामों पर अंकित की गई संस्था *वि.* नामांकित।

नामांकन *पुं.* (तत्.) 1. नाम अंकित करने की क्रिया या भाव 2. किसी व्यक्ति को किसी पद आदि के लिए प्रस्तावित किया जाना 3. उम्मीदवारी।

नामांकन-पत्र *पुं.* (तत्.) वह आवेदन-पत्र जो किसी चुनाव में अपनी उम्मीदवारी की स्वीकृति के लिए अधिकारी के पास जमा किया जाता है।

नामांकपत्र *पुं.* (तत्.) 1. ऐसा पत्र जिसके शीर्ष पर नाम-पता व क्रमांक आदि छपा होता है।

नामांकित *वि.* (तत्.) 1. जिस पर नाम लिखा हुआ या अंकित हुआ हो 2. जिसका किसी काम या पद के लिए नामांकन हुआ हो, नामजद 3. प्रसिद्ध। nominated

नामांतर *पुं.* (तत्.) 1. (किसी व्यक्ति का नाम के अतिरिक्त) दूसरा नाम 2. उपनाम 3. पर्याय।

नामांतरण *पुं.* (तत्.) 1. नाम बदलने की क्रिया या भाव 2. सरकारी पत्रों में संपत्ति आदि के स्वामित्व से एक व्यक्ति का नाम हटा कर दूसरे का नाम चढ़ाया जाना। mutation

नामांतरित *वि.* (तत्.) जिसका नामांतरण हुआ हो।

नामा *वि.* (तत्.) नाम वाला, नामधारी, नामक *पुं.* 1. किसी के नाम पड़ी हुई धन-राशि, प्राप्य धन 2. रेज़गारी जैसे- पाँच रुपए का नामा दे दीजिए 3. प्रसिद्ध भक्त नामदेव का संक्षिप्त रूप।

नामाकूल *वि.* (अर.) 1. अनुचित 2. अनुपयुक्त 3. अशिष्ट 4. अरूचिकर 5. अश्लील 6. अयोग्य।

नामानिगार *पुं.* (फा.) संवाददाता।

नामानुशासन *पुं.* (तत्.) शब्दकोश।

नामाभिधान *पुं.* (तत्.) शब्दकोश।

नामालूम *वि.* (फा.) जो मालूम न हो, अज्ञात।

नामावलिगत *वि.* (तत्.) 1. जो नामावली में लिखा जा चुका है या लिखा हुआ है 2. नामावली से संबंधित।

नामावली *स्त्री.* (तत्.) 1. ऐसी सूची जिसमें वस्तुओं या व्यक्तियों के नाम दिए गए हों, नामों नामों की सूची या तालिका 2. भक्तों के ओढ़ने-पहनने का वह कपड़ा जिस पर राम, कृष्ण आदि विभिन्न देवताओं के नाम छपे होते हैं।

नामि *पुं.* (तत्.) विष्णु।

नामिक *वि.* (तत्.) 1. नाम संबंधी, संज्ञा संबंधी 2. जो केवल नाम के लिए या संकेत रूप में हो और जिसका वास्तविक तथ्य से कोई विशेष संबंध न हो, नाम भर का। nominal

नामिका *स्त्री.* (तत्.) किसी विशेष कार्य के लिए नियुक्त या चुने गए नामों की सूची अथवा तालिका। panel

नामित *वि.* (तत्.) 1. झुकाया हुआ 2. मनोनीत, नामज़द।

नामिती *वि.* (तत्.) नामजद, मनोनीत। nominated

नामी *वि.* (फा.) 1. नामवाला 2. जिसका नाम या प्रसिद्धि हो, प्रसिद्ध 3. यशस्वी 4. प्रतिष्ठित।

नामी-गिरामी *वि.* (फा.) प्रसिद्ध और पूजनीय।

नामुआफिक *वि.* (फा.) 1. जो अनुकूल न हो, प्रतिकूल, विरुद्ध 2. जो किसी से सहमत न हो, असहमत।

नामुकम्मल *वि.* (अर.+फा.) जो पूरा न हो, अपूर्ण, अधूरा।

नामुकम्मिल *वि.* (अर.+फा.) दे. नामुकम्मल।

नामुनासिब *वि.* (फा.+अर.) 1. जो उचित न हो, अनुचित 2. अश्लील।

नामुमकिन *वि.* (फा.+अर.) जो मुमकिन न हो, असंभव।

नामुराद *वि.* (फा.) 1. असफल मनोरथ, नाकाम 2. अभागा, बदनसीब।

नामुवाफिक *वि.* (फा.+अर.) नामुआफिक, प्रतिकूल।

नामूद *स्त्री.* (फा.>नमूद) 1. आविर्भाव 2. धूम-धाम, तड़क-भड़क 3. ख्याति, प्रसिद्धि।

नामूसी *स्त्री.* (अर.) 1. बेइज्जती 2. बदनामी, निंदा।

नामे *पुं.* (तत्.) 1. लेखे की बायीं ओर की गई प्रविष्टि जो किसी व्यय आदि को दिखाती है, नाम खाता, उधार खाता। 2. बैंक के अपने खाते से निकाली गई राशि।

नामे अतिशेष *पु.* (तत्.) नामखाते और जमाराशियों का हिसाब करने पर शेष नामे राशि। debit balance

नामे संज्ञापन *पुं.* (तत्.) नामखाते की धनराशि के संबंध में बैंक आदि से प्राप्त सूचना। debit advice advice

नामेहरबान *वि.* (फा.) 1. जो मेहरबान अर्थात् अनुकूल या प्रसन्न न हो 2. बेरहम, दयाहीन 3. शत्रु, दुश्मन।

नामोनिशान *पुं.* (फा.) ऐसा चिह्न या लक्षण जिससे किसी चीज या बात के अस्तित्व का पता चलता हो या प्रमाण मिलता हो प्रयो. अब तो उस गाँव का नामोनिशान भी नहीं रह गया।

नामोल्लेख *पुं.* (तत्.) किसी प्रसंग या विषय में किसी के नाम का उल्लेख।

नामौजूँ *वि.* (फा.) 1. जो मौजूँ या उपयुक्त न हो, अनुपयुक्त 2. अनुचित।

नामौजूद *वि.* (फा.+अर.) अनुपस्थित।

नामौजूदगी *स्त्री.* (फा.+अर.) अनुपस्थिति, अविद्यमानता।

नाम्ना *वि.* (तत्.) नामवाला, नामक जैसे दुर्गा नाम्ना।

नाम्य *वि.* (तत्.) 1. झुकाने योग्य, लचीला 2. जिसे झुकाना हो।

नायँ *पुं.* (तद्.) नाम *क्रि.वि.* नहीं।

नाय *पुं.* (तद्.) 1. नय, नीति 2. उपाय 3. नेता, अगुआ *स्त्री.* नाव, नौका।

नायक *पुं.* (तत्.) 1. ले जाने या पहुँचाने वाला व्यक्ति, नेता 2. सेना की एक टुकड़ी का प्रधान अधिकारी 3. प्रधान, प्रमुख, स्वामी 4. काव्य. किसी साहित्यिक रचना का प्रधान पुरुष पात्र 5. एक प्रकार का वर्णवृत्त 6. एक प्रकार का राग।

नायका *स्त्री.* (तद्.) वह वृद्धा स्त्री, जो युवतियों को को अपने पास रखकर उनसे गाने-बजाने का पेशा और वेश्यावृत्ति कराती हो 2. कुटनी।

नायकी *वि.* (तत्.) नायक संबंधी, नायक का *स्त्री.* नायक होने की अवस्था, पद या भाव *पुं.* एक राग का नाम।

नायकीकान्हड़ा *पुं.* (तत्+देश.) संगी. एक प्रकार का कान्हड़ा (राग) जिसमें सभी कोमल स्वर लगते हैं।

नायकीमल्लार *पुं.* (तद्.) संगी. एक प्रकार का मल्लार (राग) जिसमें सभी शुद्ध स्वर लगते हैं।

नायकु *पुं.* (तद्.) नाचने वाला उस्ताद।

नायत *पुं.* (देश्.) वैद्य।

नायन *स्त्री.* (देश.) 1. नाई की पत्नी 2. नाई जाति की एक स्त्री।

नायब *वि.* (अर.) 1. जो किसी प्रधान अधिकारी का सहायक हो 2. स्थानापन्न 3. किसी का प्रतिनिधि बनकर काम करने वाला।

नायबी *स्त्री.* (अर.) नायब होने की अवस्था या भाव।

नायर्यंग *पुं.* (तत्.) नारंगी का पेड़।

नायाब *वि.* (फ़ा.) 1. दुर्लभ, अप्राप्य 2. दुष्प्राप्य, जो सहज में प्राप्त न हो 3. बहुत बढ़िया या श्रेष्ठ।

नायिका *स्त्री.* (तत्.) 1. स्वामिनी 2. पत्नी 3. साहित्य शास्त्र में किसी नाटक की प्रमुख स्त्री पात्र 4. किसी साहित्यिक विधा की प्रमुख स्त्री पात्र।

नायिकाधिप *पुं.* (तत्.) राजा।

नायोबियम (अं.) रसा. एक धात्विक तत्व।

नारंग *पुं.* (तत्.) 1. नारंगी का वृक्ष 2. नारंगी का फल 3. यमज प्राणी 4. गाजर 5. पिप्पली रस 6. विट

नारंगी *स्त्री.* (तत्.) 1. नींबू की जाति का एक वृक्ष 2. उक्त वृक्ष का मीठा, रसीला फल, संतरा *वि.* नारंगी के छिलके के रंग का, कुछ-कुछ पीलापन लिए हुए लाल रंग का।

नार *पुं.* (तद्.) 1. गौ का बछड़ा 2. जल, पानी 3. मनुष्यों का समूह 4. सोंठ 5. नाला-घाघरा आदि बाँधने की सूत की डोरी *स्त्री.* 1. गला, गरदन 2. 2. जुलाहों की ढरकी *वि.* 1. मनुष्य संबंधी 2. आध्यात्मिक।

नारक *पुं.* (तद्.) 1. नरक 2. नरक में पड़ा हुआ जीव *वि.* नरक संबंधी।

नारकिक *वि.* (तत्.) नारकी, नरक में पड़ा हुआ जीव।

नारकी *वि.* (तत्.) 1. नरक में पड़ा हुआ, नारकीय, नरक भोगी 2. जिसका नरक में जाना निश्चित हो अर्थात् दुराचारी या पापी *पुं.* नरक में रहने वाला।

नारकीट *पुं.* (तत्.) 1. एक प्रकार का कीड़ा, अश्मकीट 2. वह जो किसी को आशा में रखकर निराश करे, नीच।

नारकीय *वि.* (तत्.) 1. नरक संबंधी 2. नरक में रहने या होने वाला 3. अधम या पापी।

नारद *पुं.* (तत्.) 1. एक देवर्षि जो नारायण भक्त और ब्रह्मा के पुत्र कहे गए हैं 2. विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम 3. एक प्रजापति 4. चौबीस बुद्धों में से एक बुद्ध 5. कश्यप ऋषि की संतान 6. शाक द्वीप का एक पर्वत।

नारद-पुराण *पुं.* (तत्.) 1. अठारह महापुराणों में से एक पुराण, जिसमें सनकादि ने नारद को संबोधन करके अनेक कथाएँ कही हैं 2. एक उपपुराण।

नारदी *पुं.* (तत्.) 1. विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम 2. नारद संबंधी, नारद का जैसे- नारदी कथाएँ।

नारदीय *वि.* (तत्.) नारद संबंधी, नारद का जैसे- नारदीय पुराण।

नारन *पुं.* (तद्.) नर समूह।

नारना *स.क्रि.* (तद्.) 1. थाह लगाना, पता लगाना 2. भाँपना।

नारपशु *पुं.* (तत्.) 1. नृसिंह 2. वह मनुष्य जो पशुवत आचरण करे 2. नराधम, नीच 3. यज्ञादि में बलिदान योग्य या उपयुक्त मनुष्य।

नारफ़िक *पुं.* (अं.) इंग्लैंड के नारफॉक प्रदेश में होने वाले घोड़ों की एक जाति।

नारबेवार *पुं.* (देश.) नवजात बच्चे की नाल, खेड़ी आदि।

नारमन *पुं.* (अं.) 1. फ्रांस के नारमंडी प्रदेश का निवासी 2. नारमंडी प्रदेश के व्यक्तियों की जाति जाति 3. जहाज़ का वह खूँटा जिसमें रस्सा बाँधा जाता है *स्त्री.* फ्रांस के नारमंडी प्रदेश की बोली या भाषा।

नारसा *वि.* (फा.) 1. जो पहुँच न सके 2. जिसकी पहुँच न हो।

नारसाई *स्त्री.* (फा.) 1. पहुँच न होने की अवस्था या भाव 2. प्रवेश न पा सकना।

नारसिंह *पुं.* (तत्.) 1. नरसिंह रूपधारी विष्णु 2. एक उपपुराण जिसमें नृसिंह अवतार की कथा है 3. एक तांत्रिक ग्रंथ।

नारसिंह वपु *पुं.* (तत्.) 1. वह व्यक्ति जिसमें नर और सिंह दोनों के अवयव हों 2. विष्णु का अवतार नृसिंह।

नारसिंहीं *वि.* (तत्.) नरसिंह या विष्णु संबंधी।

नारांतक *पुं.* (तत्.) रावण का एक पुत्र।

नारा *पुं.* (तत्.) 1. जल 2. घाघरे, पाजामे आदि के नेफ़े में डाली हुई वह मोटी डोरी जो पहनते समय कमर में बाँधी जाती है, नाला *पुं.* (अर.) 1. चुनौती देने वाली या ललकारने वाली जोर की आवाज प्रयो. नेता जी का नारा था, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा" 2. किसी दल, समुदाय आदि की तीव्र अनुभूति और इच्छा का सूचक कोई पद या गढ़ा हुआ वाक्य जो लोगों को आकृष्ट करने के लिए उच्च स्वर से बोला और सबको सुनाया जाता है जैसे- भारत माता की जय।

नाराइन *पुं.* (तद्.) नारायण, विष्णु।

नाराच *पुं.* (तत्.) 1. लोहे का तीर 2. मेघों से आच्छादित दिन, दुर्दिन काव्य. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः दो नगण और चार रगण होते हैं।

नाराच घृत *पुं.* (तत्.) चीता नामक वृक्ष की जड़, त्रिफला, भटकटैया, वायविडंग आदि एक साथ मिलाकर तथा घी में पकाकर तैयार किया हुआ एक औषध जो मालिश, लेप आदि के काम में आता है।

नाराचिका *स्त्री.* (तत्.) सुनारों आदि का छोटा काँटा या तराजू।

नाराची *स्त्री.* (तत्.) सोना तौलने का छोटा काँटा।

नाराज़ *वि.* (फा.) 1. अप्रसन्न, रूष्ट 2. क्रुद्ध।

नाराज़गी *स्त्री.* (फा.) 1. अप्रसन्न या नाराज़ होने की अवस्था या भाव, अप्रसन्नता। 2. क्रोध।

नाराजी *स्त्री.* (फा.) नाराज़गी।

नारायण *पुं.* (तत्.) 1. परमात्मा, ईश्वर 2. विष्णु 3. एक उपनिषद् का नाम 4. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र 5. पूस का महीना, पौष मास।

नारायणक्षेत्र *पुं.* (तत्.) गंगा के प्रवाह से चार हाथ तक की भूमि।

नारायणतैल *पुं.* (तत्.) आयुर्वेद में एक प्रकार का तेल जो मालिश करने के काम आता है।

नारायणप्रिय *पुं.* (तत्.) 1. महादेव, शिव 2. पाँच पांडवों में से एक सहदेव 3. पीला चंदन।

नारायणबलि *स्त्री.* (तत्.) किसी दुर्घटनावश अथवा अथवा आत्महत्या आदि के कारण मृत व्यक्ति की आत्मा की शांति के लिए दाह-संस्कार से पहले प्रायश्चित के रूप में ब्रह्मा, विष्णु, शिव, यम और प्रेत के उद्देश्य से दी जाने वाली बलि।

नारायणी *स्त्री.* (तत्.) 1. दुर्गा 2. लक्ष्मी 3. गंगा 4. श्रीकृष्ण की वह प्रसिद्ध सेना जो उन्होंने महाभारत के युद्ध में दुर्योधन को उसकी सहायता के लिए दी थी 5. मुद्गल ऋषि की पत्नी पत्नी का नाम 6. शतावर 7. एक रागिनी का नाम।

नारायणीय *वि.* (तत्.) नारायण संबंधी, नारायण का।

नाराशंस *वि.* (तत्.) मनुष्यों की प्रशंसा या स्तुति संबंधी *पुं.* 1. वेद के वे मंत्र जिनमें मनुष्यों की प्रशंसा की गई है 2. पितर 3. पितरों के लिए यज्ञ आदि में छोड़ा जाने वाला सोमरस 4. एक प्रकार का पात्र जिससे यज्ञ में पितरों के लिए सोमरस छोड़ा जाता था।

नाराशंसी *स्त्री.* (तत्.) 1. मनुष्यों की प्रशंसा या स्तुति 2. वेदों के उन मंत्रों के समूह जिसमें अनेक राजाओं के दान आदि का प्रशंसात्मक वर्णन है।

नारि *स्त्री.* (तत्.) 1. नारी, स्त्री, युवती 2. समूह, झुंड 2. आगार, भंडार (तद्.) 1. बड़ी तोप, विशेष रूप से हाथी पर रखकर चलाई जाने वाली तोप 3. गरदन 4. धनुष को बाँधने की डोरी ।

नारिअर/नारियर *पुं.* (तद्.) नारियल, नारिकेल।

नारिक *वि.* (तत्.) 1. जल संबंधी, जल का 2. जल से युक्त, जलयुक्त।

नारिकेर *पुं.* (तद्.) 1. नारिकेल, नारियल का वृक्ष 2. नारियल का फल।

नारिकेरी *स्त्री.* (तद्.) नारिकेली।

नारिकेल *पुं.* (तत्.) 1. नारियल का वृक्ष 2. नारियल का फल।

नारिकेल-क्षीरी *स्त्री.* (तत्.) दूध में नारियल की गरी डालकर बनाई जाने वाली खीर।

नारिकेल-खंड *पुं.* (तत्.) वन. नारियल की गरी से बनाई जाने वाली एक प्रकार की ओषधि।

नारिकेली *स्त्री.* (तत्.) नारियल के पानी से बनाई जाने वाली एक प्रकार की मदिरा।

नारिदान *पुं.* (देश.) नाबदान, पनाला, मकान की मोरी।

नारिमाला *स्त्री.* (तद्.+तत्.) हल के पीछे लगी नली और उसके ऊपर का पात्र जिसमें बोए जाने वाले बीज डाले जाते हैं।

नारियरू *पुं.* (तद्.) नारियल।

नारियल *पुं.* (तद्.) समुद्र के किनारे और उसके आस-पास की भूमि में होने वाला खजूर की जाति का ऊँचा, बड़ा पेड़, जिसके भीतर सफेद, मीठी गरी होती है।

नारियल पूर्णिमा *स्त्री.* (तद्.) कोंकण में मनाया जाने वाला एक उत्सव जिसमें समुद्र में नारियल फेंकते हैं।

नारियली *स्त्री.* (तद्.) 1. नारियल की ताड़ी 2. नारियल से बनी वस्तु 3. नारियल की खोपड़ी 4. नारियल की खोपड़ी से बना हुक्का।

नारी *स्त्री.* (तत्.) स्त्री, युवती, औरत (देश.) 1. नाड़ी 2. हल का जुआ 3. बैल या भैंस के गले में बाँधने की रस्सी।

नारी-कवच *पुं.* (तत्.) एक सूर्यवंशी राजा जिसे स्त्रियों ने घेरकर परशुराम से वध किए जाने से बचा लिया था, क्षत्रियों का वंश-विस्तार इन्हीं से माना जाता है।

नारीकेल *पुं.* (तत्.) नारियल।

नारीच *पुं.* (तद्.) नालिता नाम का शाक।

नारीतरंगक *पुं.* (तत्.) 1. वह व्यक्ति जो नारी का का हृदय तरंगित करे 2. प्रेमी 3. व्यभिचारी व्यक्ति।

नारीतीर्थ *पुं.* (तत्.) एक तीर्थ जहाँ अर्जुन ने ब्राह्मण के शाप से ग्राह बनी हुई पाँच अप्सराओं का उद्धार किया था।

नारीत्व *पुं.* (तत्.) नारी होने का गुण या भाव, नारीभाव, स्त्रीत्व।

नारीमुख *पुं.* (तत्.) एक प्राचीन देश।

नारीष्टा *स्त्री.* (तत्.) चमेली, मल्लिका।

नारूंतुद *वि.* (तत्.) जिसके शरीर पर कोई आघात न लगता हो।

नारू *पुं.* (देश.) 1. जूँ 2. एक रोग जिसमें शरीर पर फुंसियाँ हो जाती है और फुंसियों में से लंबे-लंबे सफेद कीड़े निकलते हैं।

नारेबाज *वि.* (अर.) नारे लगाने वाला।

नारेबाजी *स्त्री.* (अर.) नारे लगाने का भाव या क्रिया, नारे लगाना।

नार्कोटिक *वि.* (अं.) नींद या बेहोशी लाने वाला जैसे- नार्कोटिक औषधियों के सेवन के आदी व्यक्तियों की दुर्दशा होती है।

नार्दल *पुं.* (देश.) पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा।

नार्पत्य *वि.* (तत्.) नृपति अर्थात् राजा से संबंध रखने वाला।

नार्मद *वि.* (तत्.) 1. नर्मदा संबंधी, नर्मदा नदी का 2. नर्मदा में से निकलने वाले एक प्रकार के शिवलिंग।

नार्मर *पुं.* (तत्.) ऋग्वेद में वर्णित एक असुर जिसका वध इंद्र ने किया था।

नार्मल *पुं.* (अं.) 1. सामान्य, साधारण जैसे- नार्मल तापमान 2. नियमानुसार, विहित जैसे- नार्मल प्रशिक्षण विद्यालय, वह विद्यालय जहाँ अध्यापन की शिक्षा दी जाए।

नाय्यतिक्त *पुं.* (तत्.) चिरायता।

नालंदा *पुं.* (तत्.) मगध में स्थित एक प्रसिद्ध, प्राचीन बौद्ध विश्वविद्यालय।

नालंब *वि.* (तद्.) निरवलंब, आश्रय रहित।

नालंबा *वि.* (तद्.) निरवलंब, आश्रयरहित उदा. पर हाय आज वह हुई निपट नालंबा-मैथिलीशरण गुप्त।

नालंबी *स्त्री.* (तत्.) शिव की वीणा।

नाल *स्त्री.* (तत्.) 1. कमल की लंबी डंडी, डाँडी 2. पौधों का डंठल 3. गेहूँ, जौ आदि की वह डंडी जिसमें बालें निकलती हैं 4. नल या नली 5. बंदूक के आगे निकला हुआ पोला लंबा अंश जिसमें से गोली निकलती है 6. नाड़ी, धमनी *पुं.* (अर.) 1. घोड़ा आदि के पैरों के तलवे में जड़ा जाने वाला लोहे का टुकड़ा 2. जूते के तले में जड़ा जाने वाला लोहे का टुकड़ा 3. जुआघर का कर, टैक्स।

नालक *पुं.* (देश.) 1. पीतल की एक किस्म 2. उक्त उक्त किस्म के पीतल का बना हुआ पात्र 3. एक एक प्रकार की बाँस।

नालकटाई *वि.* (देश.) 1. तुरंत जन्मे हुए बच्चे की नाभि पर लगे हुए नाल को काटने का काम 2. नाल काटने की मजदूरी।

नालकी *स्त्री.* (देश.) इधर उधर से खुली पालकी जिस पर एक मिहराबदार छाजन होती है, ब्याह में इस पर दूल्हा बैठकर जाता है।

नालकेर *पुं.* (तद्.) दे. नारियल।

नालबंद *पुं.* (अर.) जूते की एड़ी या घोड़े की टाप में नाल जड़ने वाला आदमी।

नालबंदी *स्त्री.* (अर.) नाल जड़ने का कर्म।

नालबाँस *पुं.* (तद्.) एक प्रकार का बाँस जो हिमालय के अंचल में जमुना के किनारे से लेकर पूर्वी बंगाल और आसाम तक होता है, यह सीधा, मजबूत और कड़ा होने के कारण बहुत अच्छा समझा जाता है।

नालवंश *पुं.* (तत्.) नल, नरसल, नरकट।

नालशतीरी *पुं.* (तत्.+फा.) लकड़ी की एक प्रकार की मेहराब जिसमें कई छोटी मेहराबें कटी होती हैं।

नालशाक *पुं.* (तत्.) कमल की नाल जिसकी तरकारी बना कर लोग खाते हैं।

नाला *पुं.* (तत्.) 1. पृथ्वी पर लकीर के रूप में दूर तक गया हुआ गड्ढा जिससे होकर बरसाती पानी किसी नदी आदि में जाता है, जल प्रणाली 2. उक्त मार्ग से बहता हुआ जल, जलप्रवाह 3. रंगीन गंडेदार सूत *पुं.* (तत्.) कमल का दंड *पुं.* (फा.) पुकार, आर्तनाद, जोर की आवाज।

नालायक *पुं.* (फा.) अयोग्य, निकम्मा, मूर्ख।

नालायकी *स्त्री.* (फा.) नालायक होने का भाव, अयोग्यता।

नालिक *पुं.* (तत्.) 1. कमल 2. भैंसा 3. एक अस्त्र का नाम जिसकी नली में कुछ भरकर चलाते थे 4. एक प्रकार की बाँसुरी *स्त्री.* 1. छोटी नाल, डंठल 2. नली 3. जुलाहों की नली जिसमें वे लपेटा हुआ सूत रखते हैं।

नालिकेर *पुं.* (तत्.) नारियल।

नालिकेरी *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार का शाक।

नालिकेलि *स्त्री.* (तत्.) नारियल।

नालिजंघ *पुं.* (तत्.) द्रोणकाक, डोम कौवा।

नालिता *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार का पटुआ जिसके कोमल पत्तों का साग बनता है।

नालिनी *स्त्री.* (तत्.) नाक के एक छेद अर्थात् नथने का तांत्रिक नाम।

नालिश *स्त्री.* (फा.) किसी के द्वारा पहुँचे हुए दुख या हानि का ऐसे मनुष्य के निकट निवेदन जो उसका प्रतिकार कर सकता हो, फरियाद, अभियोग।

नाली *स्त्री.* (देश.) 1. जल बहने का पतला मार्ग, जल-प्रवाह-पथ, मोरी 2. घोड़े की पीठ का गड्ढा 3. बैल आदि चौपायों को दवा पिलाने का चोंगा *स्त्री.* (तत्.) नाड़ी, धमनी 2. हाथियों की नाकछेदनी नाकछेदनी 3. करेमू का साग 4. घड़ी 5. कमल की नाल 6. घटिका, 24 मि. का काल।

नालीकिनी *स्त्री.* (तत्.) पद्म समूह, कमल की ढेरी 2. पद्मयुक्त सरोवर।

नालौट *पुं.* (देश.) बात कहकर मुकर जाने वाला, इनकार करने वाला।

नालौर *पुं.* (तद्.) दे. नालौट।

नाव *स्त्री.* (तद्.) लकड़ी, लोहे आदि की बनी हुई जल के ऊपर तैरने या चलने वाली सवारी, जलयान, नौका।

नावक *पुं.* (फा.) एक प्रकार का छोटा बाण, एक खास तरह का तीर 2. मधुमक्खी का डंक *पुं.* (तद्.) केवट, माझी, मल्लाह।

नावघाट *पुं.* (देश.) नावों के ठहरने का घाट, नदी, झील आदि के किनारे का वह स्थान जहाँ नावें ठहरती हो।

नावड़िया *पुं.* (देश.) मल्लाह।

नावना *पुं.* (तद्.) 1. झुकाना, नवाना 2. डालना, गिराना, घुसाना।

नावर *स्त्री.* (देश.) 1. नाव, नौका 2. नदी के बीच नौका-क्रीड़ा।

नावरा *पुं.* (देश.) दक्षिण में होने वाला एक पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत साफ, चिकनी और मजबूत होती है; मेज, कुरसी, आदि सजावट के सामान इसके बहुत अच्छे बनते हैं।

नावरि *स्त्री.* (तद्.) नाव की क्रीड़ा दे. नावर।

नावाँ *पुं.* (तद्.) वह रकम जो किसी के नाम लिखी हो।

नावाकिफ *पुं.* (फा.+अर.) अनजान, अनभिज्ञ।

नावाज *पुं.* (देश.) मल्लाह।

नावाजिब *पुं.* (फा.+अर.) अनुचित, जो वाजिब न हो।

नाविक *पुं.* (तत्.) मल्लाह, माझी, केवट, नाव पर यात्रा कराने वाला।

नावी *पुं.* (तत्.) दे. नाविक।

नावेल *पुं.* (अं.) उपन्यास।

नाव्य *पुं.* (तत्.) 1. नूतनता, नवीनता, नयापन 2. गहरा जल या नदी आदि जो नौका से पार करने योग्य हो।

नाव्या *पुं.* (तत्.) नदी जो नाव से पार की जाए।

नाश *पुं.* (तत्.) न रह जाना, लोप, बरबादी 2. गायब होना 3. संकट 4. पलायन 5. निधन।

नाशक *वि.* (तत्.) 1. नाश करने वाला, ध्वंस करने वाला, मारने वाला 2. दूर करने वाला।

नाशकारी *वि.* (तत्.) नाश करने वाला।

नाशन *पुं.* (तत्.) 1. मृत्यु, मरण 2. विस्मरण, भूलना 3. *वि.* नष्ट करना 4. हटाना।

नाशपाती *स्त्री.* (तु.) एक फल।

नाशवान *वि.* (तत्.) नाश को प्राप्त होने वाला, नश्वर, अनित्य।

नाशाइस्ता *वि.* (फा.) अनुचित, नामुनासिब, अशिष्ट, असभ्य।

नाशुक्री *स्त्री.* (फा.+अर.) अकृतज्ञता, एहसान फरामोशी।

नाश्ता *पुं.* (फा.) कलेवा, जलपान, प्रात:काल का अल्पाहार।

नाश्य *पुं.* (तत्.) नाश के योग्य, ध्वंसनीय, जिसे नष्ट किया जा सके।

नाष्टिक धन *पुं.* (तत्.) खोया हुआ धन।

नास *स्त्री.* (तत्.) 1. वह द्रव्य जो नाक में डाला जाए, वह औषध जो नाक से सूँघी जाए 2. सुँघनी, नाक *पुं.* नाश।

नासत्य *पुं.* (तत्.) अश्विनी कुमार।

नासत्या *स्त्री.* (तत्.) अश्विनी नक्षत्र।

नासदान *पुं.* (तत्.) सुँघनी की डिबिया।

नासपाल *पुं.* (फा.) 1. कच्चे अनार का छिलका जो रंग निकालने के काम में आता है 2. कच्चा अनार 3. एक प्रकार की आतिशबाजी।

नासपाली *वि.* (फा.) नासपाल के रंग का, कच्चे अनार के छिलके के रंग का।

नासमझ *पुं.* (देश.) जिसे समझ न हो, निर्बुद्धि।

नासमझी *वि.* (देश.) मूर्खता, बेवकूफी।

नासा *स्त्री.* (तत्.) 1. नाक, नासिका 2. नासारंध्र, 1. नाक का छेद 2. द्वार के ऊपर लगी हुई लकड़ी।

नासाग्र *पुं.* (तत्.) नाक का अगला भाग, नाक की नोक।

नासाछिद्र *पुं.* (तत्.) दे. नासा।

नासाज्वर *पुं.* (तत्.) वह ज्वर जो नाक के भीतर फोड़ा होने से होता है, इस ज्वर में सिर और रीढ़ की हड्डी में बड़ा दर्द होता है।

नासादारू *पुं.* (तत्.) भरेटा।

नासापरिस्राव *पुं.* (तत्.) दे. नासास्राव।

नासापाक *पुं.* (तत्.) नाक का एक रोग, नाक में बहुत सी फुंसियाँ निकलने के कारण नाक पक जाती है।

नासापुट *पुं.* (तत्.) नाक की वह झिल्ली जो छेदों के किनारे पर्दे का काम देता है, नथना।

नासायोनि *पुं.* (तत्.) वह नपुसंक जिसे घ्राण करने पर उद्दीपन होता है, सौगंधिक नपुंसक।

नासारंध्र *पुं.* (तत्.) नाक का छिद्र, नथुना।

नासारोग *पुं.* (तत्.) नाक में होने वाला रोग।

नासाविवर *पुं.* (तत्.) दे. नासारंध्र।

नासावेध *पुं.* (तत्.) नाक का वह छेद जिसमें नथ आदि पहनी जाती है, नाक में छेद करने की प्रथा।

नासाशोथ *पुं.* (तत्.) नाक में कफ सूख जाने का रोग।

नासासंवेदन *पुं.* (तत्.) चिटचिटा, चिचड़ी।

नासास्राव *पुं.* (तत्.) नाक का एक रोग जिसमें नाक से सफेद और पीला मवाद निकलता है।

नासिकंधम *वि.* (तत्.) बोलते समय जिसके नाक से भी ध्वनि निकलती हो।

नासिक *पुं.* (तत्.) महाराष्ट्र में एक तीर्थ जो उस स्थान के निकट है, जहाँ से गोदावरी निकलती है इसी के पास पँचवटी वन है जहाँ वनवास के समय रामचंद्र ने कुछ काल निवास किया था और लक्ष्मण ने शूर्पणखा के नाक-कान काटे थे *स्त्री.* (तत्.) नाक, नासिका।

नासिका *स्त्री.* (तत्.) 1. नाक, नासा 2. हाथी की सूँड़, नाक के आकार की वस्तु, भरेटा।

नासिक्य *पुं.* (तत्.) 1. नासिका से उत्पन्न 2. नासिका 3. अश्विनी कुमार 4. अनुनासिक स्वर 5. नासिक प्रदेश।

नासिर *पुं.* (अर.) 1. गद्य लेखक 2. मददगार, सहायक 3. विजयी।

नासी *पुं.* (तद्.) 1. नाश करने वाला, नाशक 2. नष्ट होने वाला, नश्वर।

नासीर *पुं.* (तत्.) सेनानायक के आगे चलने वाला दल जो जयनाद करता चलता था, आगे बढ़कर युद्ध करने वाला, अगुआ, सेनाग्र।

नासूर *पुं.* (अर.) घाव, फोड़े आदि के भीतर दूर तक गया हुआ छेद जिससे बराबर मवाद निकला करता है और जिसके कारण घाव जल्दी अच्छा नहीं होता।

नास्ति *पुं.* (तत्.) नहीं है, अविद्यमानता।

नास्तिक *पुं.* (तत्.) वह जो ईश्वर, परलोक आदि को न माने, ईश्वर का अस्तित्व अस्वीकार करने वाला।

नास्तिकता *स्त्री.* (तत्.) नास्तिक होने का भाव, ईश्वर आदि को न मानने की बुद्धि।

नास्तिक दर्शन *पुं.* (तत्.) नास्तिकों का दर्शन।

नास्तिक्य *पुं.* (तत्.) नास्तिकता, परलोक या ईश्वर आदि में अविश्वास।

नास्तिद *पुं.* (तत्.) आम का पेड़।

नास्तिवाद *पुं.* (तत्.) नास्तिकों का तर्क, विचार दर्शन।

नास्य *वि.* (तत्.) नासिका संबंधी, नाक का, नासिका से उत्पन्न *पुं.* बैल की नाक में लगी हुई रस्सी, नाथ।

नाह *पुं.* (तद्.) 1. नाथ, स्वामी, मालिक 2. स्त्री का पति, पहिए का छेद, नाभि *पुं.* (तत्.) 1. बंधन 2. हिरन फँसाने का फंदा 2. कोष्ठबद्धता, कब्ज।

नाहक *अव्य.* (अर.) वृथा, व्यर्थ, निष्प्रयोजन, अन्याय।

नाहनूँह *स्त्री.* (देश.) नहीं-नहीं शब्द, इनकार।

नाहमवार *वि.* (फा.) 1. जो हमवार या समतल न हो, ऊबड़-खाबड़ 2. असम।

नाहर *पुं.* (तद्.) 1. सिंह, शेर 2. बाघ।

नाहरसाँस *पुं.* (देश.) घोड़ों की एक बीमारी जिसमें उनका दम फूलता है।

नाहरी *स्त्री.* (तद्.) सिंहनी, शेरनी।

नाहरू *पुं.* (देश.) नारू, नाक का रोग, नहरूवा।

नाहीं *अव्य.* (तत्.) दे. नहीं।

नाहुष *पुं.* (तत्.) नहुष का पुत्र ययाति।

निंडिका *स्त्री.* (तत्.) मटर, कलाय।

निंत *पुं.* (अव्य.) दे. नित्य।

निंदक *पुं.* (तत्.) निंदा करने वाला, दूसरों के दोष या बुराई करने वाला।

निंदन *पुं.* (तत्.) निंदा करने का काम।

निंदनीय *वि.* (तत्.) 1. निंदा करने योग्य, बुरा कहने योग्य 2. बुरा।

निँदरना *स.क्रि.* (तत्.) निंदा करना, बदनाम करना।

निंदरा *स्त्री.* (तद्.) निद्रा, नींद।

निँदरिया *स्त्री.* (तद्.) नींद, निद्रा।

निंदा *स्त्री.* (तत्.) 1. दोष कथन, बुराई का वर्णन, अपवाद, जुगुप्सा 2. अपकीर्ति, बदनामी।

निंदाई *स्त्री.* (देश.) 1. खेत के पास की घास, तृण आदि को उखाड़ कर अलग करने का काम, निराई 2. निराने की मजदूरी।

निंदारा *वि.* (तद्.) 1. जिसे नींद आ रही हो, उनींदा 2. आलस्ययुक्त, अलसाया।

निंदासा *वि.* (देश.) 1. जिसे नींद आ रही हो 2. जिसकी आखों में नींद भरी हो।

निंदास्तुति *स्त्री.* (तत्.) 1. निंदा के बहाने स्तुति, व्याज स्तुति 2. दोष कथन और प्रशंसा।

निंदित *पुं.* (तत्.) जिसे बुरा कहा गया हो, जिसे लोग बुरा कहते हों।

निंदिया *स्त्री.* (देश.) नींद, निद्रा।

निंदु *स्त्री.* (तत्.) मरे हुए बच्चे को जन्म देने वाली माता, मृतवत्सा माँ।

निंद्य *पुं.* (तत्.) निंदा करने योग्य, निंदनीय 2. दूषित, बुरा।

निंद्या *स्त्री.* (तत्.) दे. निंद्य।

निंब *पुं.* (तत्.) नीम का पेड़।

निंबकौरी *स्त्री.* (तत्.+तद्) नीम का फल, निबौरी।

निंबतरु *पुं.* (तत्.) 1. नींब का पेड़ 2. मदार वृक्ष 3. महानिंब।

निंबबीज *पुं.* (तत्.) राजदनी वृक्ष, चिरौंजी का पेड़।

निँबरिया *स्त्री.* (तद्.) वह बारी या कुँज जहाँ सब पेड़ नीम के ही हों।

निंबादित्य *पुं.* (तत्.) 1. निंबार्काचार्य 2. निंबार्क संप्रदाय के आदि आचार्य।

निंबार्क *पुं.* (तत्.) 1. निंबादित्य 2. निंबादित्य का चलाया हुआ, वैष्णव संप्रदाय।

निः *उप.* (तत्.) एक उपसर्ग जो शब्द के पहले लगाया जाता है जैसे- निःशुल्क।

निःशंस्य *वि.* (तत्.) संदेहरहित, शंकारहित।

नि:संचार *वि.* (तत्.) जिसकी गति न हो, जो संचरण न करे।

नि:संज्ञ *वि.* (तत्.) संज्ञाशून्य, मूर्छित होना।

नि:संतान *वि.* (तत्.) जिसके संतान न हो, निपूता।

नि:संदेह *वि.* (तत्.) संदेह रहित, जिसमें कुछ संदेह न हो बिना किसी संदेह के।

नि:संधि *वि.* (तत्.) 1. संधि शून्य, जिसमें कहीं दरार न हो 2. दृढ़ 3. कसा हुआ।

नि:संपात *वि.* (तत्.) 1. गमनागमन शून्य 2. रात 3. जिसमें या जहाँ आना जाना न हो।

नि:सत्व *पुं.* (तत्.) जिसकी कुछ सत्ता न हो, जिसमें कुछ तत्व या सार न हो।

नि:सपत्न *पुं.* (तत्.) 1. शत्रुरहित, जिसका कोई शत्रु न हो 2. निष्कंटक 3. प्रतिरोधी रहित।

नि:सरण *पुं.* (तत्.) 1. निकलना 2. निकलने का रास्ता 3. कठिनाई से निकलने का रास्ता 4. निर्वाण 5. मरण।

नि:सार *वि.* (तत्.) जिसमें कुछ सार न हो 2. जिसमें कुछ असलियत न हो 3. जिसमें प्रयोजन या महत्व की कोई बात न हो *पुं.* सहोरे का पेड़, सोनापाठा।

नि:सारण *पुं.* (तत्.) 1. निकालना 2. निकास, निकलने का द्वार।

नि:सारा *स्त्री.* (तत्.) केले का वृक्ष, कदली।

नि:स्नेहा *स्त्री.* (तत्.) तीसी, अलसी।

नि:स्पंद *वि.* (तत्.) स्थिर, जो हिलता डुलता न हो, स्थिर।

नि:स्पृह *वि.* (तत्.) इच्छा रहित, जिसे प्राप्ति की इच्छा न हो, निर्लोभ।

नि:स्रव *पुं.* (तत्.) निकास, अवशेष, बचत।

नि:स्राव *पुं.* (तत्.) व्यय, खर्च करने का भाव, माँड़।

नि:स्व *पुं.* (तत्.) 1. जिसका अपना कुछ न हो, जिसके पास कुछ न हो 2. धनहीन, दरिद्र।

नि:स्वादु *वि.* (तत्.) स्वादरहित।

नि:स्वार्थ *वि.* (तत्.) 1. जो अपना अर्थ साधन करने वाला न हो, जो अपना मतलब निकालने वाला न हो 2. जो अपने अर्थ साधन के निमित्त न हो 3. जो अपना मतलब निकालने के लिए न हो, नि:स्वार्थ सेवा।

नि *उप.* (तत्.) एक उपसर्ग जिसके लगने से शब्दों में इन अर्थो की विशेषता होती है 1. संघ या समूह- निकर 2. अधोभाव- निपतित 3. अत्यन्त- नितांत 4. आदेश-निदेश 5. नित्य-निविशिष्ट 6. कौशल-निपुण आदि।

निअर *अव्य.* (तद्.) निकट, पास, समीप, समान, तुल्य।

निअराना *स.क्रि.* (देश.) निकट जाना, समीप पहुँचना। निकट आना, पास होना।

निऋृति *स्त्री.* (तत्.) 1. नैऋृत्य या दक्षिण पश्चिम कोण की अधिष्ठात्री देवी 2. अलक्ष्मी, लक्ष्मी की बड़ी बहन दरिद्रा 3. मृत्यु, नाश 4. पृथ्वी का तत्व 5. विपत्ति 6. मूल नामक नक्षत्र 7. राक्षस।

निकंटक *वि.* (तद्.) दे. निष्कंटक।

निकंदन *पुं.* (तत्.) नाश, संहार।

निकंद रोग *पुं.* (तत्.) एक योनि रोग दे. योनिकंद।

निकट *अव्य.* (तत्.) 1. पास का, जो दूर न हो 2. संबंध में जिससे विशेष अंतर न हो, पास, समीप, नजदीक।

निकटता *स्त्री.* (तत्.) समीपता, सामीप्य।

निकटवर्ती *वि.* (तत्.) पासवाला, समीपस्थ।

निकटस्थ *वि.* (तत्.) जो निकट हो, पास का, निकट संबंधी।

निकती *स्त्री.* (तत्.) छोटा तराजू, काँटा।

निकम्मा *वि.* (तत्.) जो कोई काम-धंधा न करे, जो किसी काम का न हो, जो किसी काम में न आ सके।

निकर *पुं.* (अं.) एक प्रकार का खुला छोटा पायजामा, जाँघिया *पुं.* (तत्.) 1. समूह, झुंड 2. राशि, ढेर 3. सार, न्यायदेय धन 5. निधि।

निकर्तन *पुं.* (तत्.) 1. काटना, विदारण करना, फाड़ना।

निकर्मा *पुं.* (तद्.) जो काम न करे, आलसी, अकर्मण्य।

निकर्षण *पुं.* (तत्.) नगर या नगर के समीप खेल का मैदान, क्रीड़ा भूमि 2. घर के आगे खुला चबूतरा या प्रवेश द्वार के पास का आँगन 3. पड़ोस 4. परती भूमि, बिना जोती भूमि।

निकलंक *वि.* (तत्.) दोषरहित, निर्दोष, बेदाग।

निकलंकी *पुं.* (तत्.) विष्णु का दसवाँ अवतार जो कलि के अंत में होगा, कल्कि अवतार *वि.* निष्कलंक।

निकल *स्त्री.* (अं.) एक धातु जो सुरमें, कोयले, गंधक, संखिया आदि के साथ मिली हुई खानों में मिलती है, साफ होने पर यह चाँदी की तरह चमकती है। nickel

निकलना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. बाहर होना, भीतर से बाहर आना, निर्गम होना 2. व्याप्त या ओतप्रोत वस्तु का अलग होना जैसे- बीज से तेल निकालना 3. पार होना, अतिक्रमण करना, एक ओर से दूसरी ओर चले जाना 4. उत्तीर्ण होना 5. गमन करना, जाना, गुजरना, बारात निकली या वह रोज इसी रास्ते से निकलता है 6. उदय होना, सूर्य का निकलना 7. प्रादुर्भूत होना, उत्पन्न होना 8. उपस्थित होना, दिखाई पड़ना, निश्चित होना, ठहराया जाना, रास्ता निकलना, दोष निकलना, परिणाम निकलना, उपाय निकलना 11. खुलना, स्पष्ट होना, प्रकट होना 12. मेल में से अलग होना, पृथक होना 13. छिड़ना, आरंभ होना जैसे- बात निकलना, चर्चा निकलना 14. प्राप्त होना 15. हल होना, किसी समस्या का ठीक उत्तर प्राप्त होना 16. दूर तक जाने वाली किसी वस्तु का आरंभ होना प्रयो. यह नदी कहां से निकली है 17. लकीर के रूप में दूर तक जाने वाली वस्तु का विधान होना जैसे- सड़क निकलना 18. प्रचलित होना, जारी होना जैसे- बाल निकलना, कानून निकलना 19. फँसा, बँधा या जुड़ा न रहना, छूटना, मुक्त होना प्रयो. "कमीज का बटन निकल गया है", बछड़ा खूँटा तुड़ा कर निकल गया 20. नई बात प्रकट होना, आविष्कृत होना जैसे- कोई नई युक्ति निकलना 21. शरीर के ऊपर उत्पन्न होना- चेचक निकलना 22. प्रमाणित होना-वह चोर निकला।

निकलवाना *अ.क्रि.* (तद्.) निकलवाना-निकालने का काम दूसरे से कराना, निकालना।

निकष *पुं.* (तत्.) 1. कसौटी 2. कसौटी पर चढ़ाने का काम 3. हथियारों पर सान चढ़ाने का पत्थर 4. कसौटी पर कसने से बनी रेखा 5. कोई वस्तु या कार्य जिससे किसी की परीक्षा हो, निकषण।

निकषा *स्त्री.* (तत्.) सुमाली की कन्या और विश्रवा की पत्नी एक राक्षसी जिसके गर्भ से रावण, कुंभकर्ण, शूर्पनखा और विभीषण उत्पन्न हुए थे।

निकषात्मज *पुं.* (तत्.) निशाचर, राक्षस।

निकषोपल *पुं.* (तत्.) कसौटी।

निकस *पुं.* (तद्.) दे. निकष।

निकसना *अ.क्रि.* (तद्.) दे. निकलना।

निकसनी *वि.* (तद्.) निकलने वाली।

निकाई *स्त्री.* (देश.) 1. भलाई 2. खूबसूरती, सौंदर्य 3. खेत में से घास-पात काटकर अलग करने की क्रिया, भाव या मजदूरी, निराई।

निकाज *वि.* (देश.) बेकाम, निकम्मा, व्यर्थ।

निकाना *स.क्रि.* (तत्.) नाखून गड़ाना/चुभाना दे. निराना।

निकाब *स्त्री.* (फा.) नकाब, पर्दा।

निकाम *वि.* (तद्.) 1. निकम्मा, बुरा, खराब, निष्प्रयोजन, व्यर्थ 2. इष्ट, अभिलषित, यथेष्ठ, पर्याप्त, काफी 3. इच्छुक 4. बहुत, अतिशय।

निकामन *पुं.* (तत्.) आकांक्षा, इच्छा, अभिलाषा।

निकाय *पुं.* (तत्.) समूह, झुंड, एक ही मेल की वस्तुओं का झुंड, राशि 2. निलय, घर 3. परमात्मा 4. शरीर 5. लक्ष्य 6. वायु, पवन।

निकाय्य *पुं.* (तत्.) आवास, निवास।

निकार *पुं.* (तत्.) 1. पराभव, हार 2. अपकार, अपमान, तिरस्कार 3. वध करना, मारण 4. विरोध 5 . निकालने का काम, निष्कासन 6. निकलने का द्वार, निकास।

निकारण *पुं.* (तत्.) मारण, वध।

निकाल *पुं.* (तत्.) 1. निकास 2. तोड़ 3. कुश्ती का एक पेंच।

निकाला *पुं.* (तत्.) निकालने का काम 2. किसी स्थान से निकाले जाने का दंड, बहिष्कार।

निकाश *पुं.* (तत्.) 1. जहाँ तक दृष्टि जाती हो वह स्थान, क्षितिज 2. प्रकाश 3. एकांत 4. सामीप्य, समीपता 5. सादृश्य।

निकाष *पुं.* (तत्.) खुरचना, रगड़ना, घिसना, मलना।

निकास *पुं.* (तत्.) 1. निकलने की क्रिया या भाव 2. निकालने की क्रिया या भाव 3. वह स्थान जिससे होकर कुछ निकले 4. द्वार 5. बाहर का खुला स्थान, मैदान 6. वंश का मूल 7. निर्वाह का ढंग 8. आय।

निकासपत्र *पुं.* (तत्.) वह कागज जिसमें जमाखर्च और बचत का हिसाब समझाया गया हो, रवन्ना।

निकासी *स्त्री.* (तत्.) 1. निकलने की क्रिया या भाव 2. किसी स्थान से बाहर जाने का काम, प्रस्थान 3. मालगुजारी आदि देने के बाद जो जमींदार को बचे, मुनाफा, प्राप्ति 4. आय, लाभ 5. बिक्री के लिए माल की रवानगी, लदाई 6. बिक्री, खपत 7. चुंगी।

निकाह *पुं.* (अर.) मुसलमानी पद्धति के द्वारा किया किया हुआ विवाह।

निकियाना *स.क्रि.* (देश.) नोच कर धज्जी-धज्जी अलग करना, चमड़े पर से पंख या बाल नोच कर अलग करना।

निकुंच *पुं.* (तत्.) चाबी, कुंजी, ताली।

निकुंचक *पुं.* (तत्.) एक परिमाण या तोल जो आधी अंजलि के बराबर और किसी के मत से आठ तोले के बराबर होती है, जलबेंत।

निकुंचन *पुं.* (तत्.) संकुचन, संकोच।

निकुंचित *वि.* (तत्.) संकुचित।

निकुंज *वि.* (तत्.) लतागृह, ऐसा स्थान जो घने वृक्षों, घनी लताओं आदि से घिरा हो, लताओं से आच्छादित मंडप।

निकुंजिकाम्रा *स्त्री.* (तत्.) दे. निकुंजिकाम्ला।

निकुंजिकाम्ला *स्त्री.* (तत्.) कुंज के वृक्ष का एक भेद, कुंचिका, कुंजिका।

निकुंभ *पुं.* (तत्.) 1. कुंभकर्ण का एक पुत्र, जिसे हनुमान ने मारा था यह रावण का मंत्री था 2. प्रहलाद के एक पुत्र का नाम 3. जमालगोटा 4. दंती वृक्ष 5. शिव का गण।

निकुंभाख्यबीज *पुं.* (तत्.) जमालगोटा।

निकुंभिला *स्त्री.* (तत्.) लंका के पश्चिम में एक गुफा 2. अर्चन पूजन का स्थान 2. उस गुफा की देवी जिसके सामने यज्ञ आदि पूजन करके मेघनाद युद्ध की यात्रा करता था।

निकुंभी *पुं.* (तत्.) 1. दंती वृक्ष 2. कुंभकर्ण की कन्या।

निकुट्टी *स्त्री.* (देश.) एक चिड़िया।

निकुलीनिका *स्त्री.* (तत्.) 1. वंशक्रमानुगत कला 2. वह कला जो जाति विशेष में ही प्राप्त हो।

निकूल *पुं.* (तत्.) वह देवता जिसके निमित्त नरमेध यज्ञ और अश्वमेध यज्ञ में छठे यूप में पशुहनन होता था।

निकृत प्रज्ञ *वि.* (तत्.) बदमाश, दुष्ट, बुरा सोचने वाला।

निकृत *वि.* (तत्.) मूल से छिन्न, जड़ से कटा हुआ, खंडित 2. विदारित।

निकृति *स्त्री.* (तत्.) तिरस्कार, भर्त्सना 2. अपकार 3. दैन्य 4. शठता 5. पराभव 6. पृथ्वी 7. वँचना।

निकृती *वि.* (तत्.) नीच, शठ, दुष्ट।

निकृष्ट *वि.* (तत्.) 1. बुरा, अधम, नीच 2. अशिष्ट, असभ्य, ग्राम्य 3. समीप *पुं.* सामीप्य, समीपता।

निकृष्टत्व *पुं.* (तत्.) बुराई, नीचता, मंदता।

निकेचाय *पुं.* (तत्.) बार-बार संचित करना या एकत्र करना।

निकेत *पुं.* (तत्.) 1. घर, मकान, स्थान 2.चिह्न।

निकेतक *पुं.* (तत्.) दे. निकेत।

निकेतन *पुं.* (तत्.) वासस्थान, घर, मकान।

निकोचक *पुं.* (तत्.) अंकोल वृक्ष, ढेरा।

निकोचन *पुं.* (तत्.) संकुचन।

निकोठक *पुं.* (तत्.) ढेरा, अंकोल।

निकोना *पुं.* (देश.) उखाड़ देना, निकियाना, नोचना, नोच फेंकना।

निकोसना *स.क्रि.* (तद्.) दाँत निकालना 2. दाँत पीसना/ कटकटाना।

निकौनी *स्त्री.* (देश.) निराई, निराने का काम 2. निराने की मजदूरी।

निक्का *वि.* (तद्.) छोटा, नन्हा।

निक्रीड़ *पुं.* (तत्.) 1. कौतुक, क्रीड़ा, तमाशा 2. सामभेद।

निक्वण *पुं.* (तत्.) 1. वीणा ध्वनि, बीन की झनकार 2. किन्नरों का शब्द।

निक्षण *पुं.* (तत्.) चुंबन।

निक्षा *स्त्री.* (तत्.) जूँ का अंडा, लीख।

निक्षिप्त *वि.* (तत्.) 1. फेंका हुआ 2. डाला हुआ 3. किसी के यहाँ उसके विश्वास पर छोड़ा हुआ 4. रखा हुआ, रक्षित।

निक्षुभा *स्त्री.* (तत्.) 1. ब्राह्मणी 2. सूर्य की एक पत्नी का नाम।

निक्षेप *पुं.* (तत्.) 1. फेंकने या डालने का भाव 2. चलाने की क्रिया या भाव 3. छोड़ने या रखने की क्रिया या भाव 5. पोंछने की क्रिया 6. धरोहर, थाती 6. अर्पण करना।

निक्षेपक *पुं.* (तत्.) 1. वह जो निक्षेप करता हो 2. थाती रखने वाला, धरोहर में रखा हुआ पदार्थ या वस्तु।

निक्षेपण *पुं.* (तत्.) 1. फेंकना, डालना 2. छोड़ना, चलाना 3. त्यागना 4. थाती रखना 5. देना।

निक्षेपित *पुं.* (तत्.) जिसका निक्षेप कराया गया हो, अमानत रखवाया हुआ।

निक्षेपी *वि.* (तत्.) फेंकने वाला, छोड़ने वाला 2. धरोहर रखने वाला।

निक्षेप्ता *पुं.* (तत्.) 1. निक्षेपक, फेंकने वाला, छोड़ने छोड़ने वाला 2. धरोहर रखने वाला।

निक्षेप्य *वि.* (तत्.) निक्षेप योग्य, फेंकने योग्य, छोड़ने योग्य।

निखंड *वि.* (तत्.) मध्य, न थोड़ा इधर न थोड़ा उधर।

निखट्टर *वि.* (तत्.) कड़े दिल का, कठोर चित्त का, निष्ठुर।

निखट्टू *वि.* (तत्.) 1. अपनी कुचाल के कारण कहीं न टिकने वाला, जिसका कहीं ठिकाना न हो, इधर-उधर फिरने वाला 2. जमकर कोई काम-धंधा न करने वाला, निकम्मा, आलसी।

निखनन *पुं.* (तत्.) 1. खनना, खोदना 2. खोदने पर निकली मिट्टी 3. गाड़ना।

निखरना *अ.क्रि.* (तत्.) 1. मैल छँट कर साफ होना, निर्मल और स्वच्छ होना, रंगत का खुलता होना।

निखरवाना *स.क्रि.* (देश.) साफ करवाना, धुलवाना।

निखरहर *वि.* (देश.) बिछौना रहित, बिना बिस्तर का।

निखरी *स्त्री.* (तत्.) पक्की, घी की पकी हुई रसोई, सखरी का उल्टा।

निखक्ख *अव्य.* (तत्.) बिलकुल, सब, और कुछ नही।

निखात *वि.* (तत्.) 1. खोदा हुआ 2. गाड़ा हुआ 3. खोद कर जमाया हुआ।

निखाद *पुं.* (तद्.) दे. निषाद।

निखार *पुं.* (देश.) निर्मलपन 1. सफाई 2. सजाव, शृंगर।

निखारना *स.क्रि.* (देश.) 1. स्वच्छ करना, माँजना, साफ करना 2. पवित्र करना, पापरहित करना।

निखारा *पुं.* (तत्.) शक्कर बनाने का कड़ाह जिसमें डालकर रस उबाला जाता है।

निखालिस *वि.* (तद्.) विशुद्ध जिसमें और किसी चीज का मैल न हो।

निखिल *वि.* (तत्.) संपूर्ण, सब, सारा।

निखेद *पुं.* (तद्.) दे. निषेध।

निखेध *पुं.* (तद्.) दे. निषेध।

निखेधना *स.क्रि.* (तद्.) निषेध करना, मना करना।

निखोट *वि.* (देश.) 1. जिसमें कोई खोटा या दोष न हो, निर्दोष 2. साफ, स्पष्ट, खुला हुआ, जिसमें कुछ लगाव-फँसाव न हो, बिना संकोच के, बेधड़क, खुल्लम खुल्ला, खुलकर, स्पष्ट रूप से।

निखोड़ना *पुं.* (देश.) दे. निखोरना।

निखोड़ा *वि.* (देश.) कठोर चित्त का, निर्दयी।

निखोरना *स.क्रि.* (देश.) नाखून से नोचना, उचाड़ना, नाखून से नोचकर अलग करना।

निगंठ *पुं.* (तत्.) जैन धर्मावलंबी साधु।

निगंद *पुं.* (तद्.) जड़ी-बूटी जो दवा के काम में आती है और रक्तशोधक समझी जाती है।

निगंदना *स.क्रि.* (देश.) रजाई, दुलाई आदि रुई भरे कपड़ों में तागा डालना, बखिया, सीवन।

निगंध *वि.* (तद्.) गंधहीन, निर्गंध, जिसमें कोई गंध न हो।

निगड़ *स्त्री.* (तद्.) हाथी के पैर बाँधने की जंजीर, बेड़ी।

निगड़ित *पुं.* (तद्.) जंजीर से बँधा हुआ, बेड़ी डाला हुआ।

निगण *पुं.* (तत्.) हवन आदि से उत्पन्न धुआँ।

निगद *पुं.* (तत्.) 1. भाषण, कथन 2. ऊँचे स्वर से किया हुआ जप 3. मंत्र जो ऊँचे स्वर से जपा जाए 4. बिना अर्थ जाने रटना।

निगदन *पुं.* (तत्.) 1. भाषण, कथन 2. याद की हुई या रटी हुई चीज को ऊँचे स्वर से पाठ करना।

निगदित *वि.* (तत्.) कथित, कहा हुआ।

निगम *पुं.* (तत्.) 1. मार्ग, पथ 2. वेद 3. वणिक पथ, हाट, बाजार 4. मेला 5. माल का आना-जाना, व्यापार 6. निकाय 7. कायस्थों का एक भेद 8. बड़े नगरों की प्रबंध सभा, नगर-निगम 9. नगर 10. न्याय शास्त्र 11. वेद-सम्मत ग्रंथ।

निगमन *पुं.* (तत्.) न्याय में अनुमान के पाँच अवयवों में से एक, हेतु, उदाहरण और उपनय के उपरांत प्रतिज्ञा को सिद्ध सूचित करने के लिए उसका फिर से कथन, नतीजा 2. जाना, भीतर जाना 3. वेद का उद्धरण।

निगमनिवासी *पुं.* (तत्.) विष्णु, नारायण।

निगमबोध *पुं.* (तत्.) दिल्ली के पास यमुना नदी के किनारे स्थित शवदाह स्थान।

निगमागम *पुं.* (तत्.) वेद और शास्त्र।

निगमी *पुं.* (तत्.) वेद का ज्ञाता।

निगरण *पुं.* (तत्.) 1. भक्षण, निगलना 2. गला 3. यज्ञाग्नि का धूम, होमधूम।

निगराँ *पुं.* (फा.) 1. निगरानी रखनेवाला 2. निरीक्षण 3. रक्षक।

निगराना *स.क्रि.* (तद्.) 1. निर्णय करना, निबटाना 2. छाँटकर अलग करना, पृथक करना 3. स्पष्ट करना, अलग होना 4. स्पष्ट होना।

निगरानी *पुं.* (फा.) देखरेख, निरीक्षण।

निगल, निगलन *पुं.* (तद्.) दे. निगरण।

निगलना *स.क्रि.* (तद्.) लील जाना, गले के नीचे उतार देना, घोंट जाना, गटक जाना 2. खा जाना 3. रुपया या धन पचा जाना, दूसरे का धन या कोई और वस्तु मार बैठना।

निगह *स्त्री.* (फा.) निगाह, दृष्टि, नजर।

निगहबान *पुं.* (फा.) निगाह रखने वाला, देखने वाला, रक्षक।

निगहबानी *स्त्री.* (फा.) रक्षा, देखरेख, रखवाली, चौकसी।

निगाद *पुं.* (तत्.) कथन, भाषण।

निगादी *पुं.* (तत्.) वक्ता।

निगार *पुं.* (तत्.) भक्षण *पुं.* (फा.) चित्र, बेलबूटा, नक्काशी 2. एक फारसी राग

निगारक *वि.* (तत्.) भक्षक, निगलने वाला।

निगाल *पुं.* (देश.) एक प्रकार का पहाड़ी बाँस जो हिमालय में पैदा होता है, इसे रिंगाल भी कहते हैं 2. घोड़े की गरदन, जंजीर, साँकल।

निगालक *पुं.* (तद्.) निगलने वाला, भक्षण करने वाला।

निगालवान *पुं.* (तत्.) अश्व, घोड़ा।

निगालिका *स्त्री.* (तत्.) काव्य. आठ अक्षरों की एक एक वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में जगण, रगण आदि लघु गुरु होते हैं इसे 'प्रामाणिका' और 'नागस्वरूपिणी' भी कहते है।

निगाली *स्त्री.* (तत्.) 1. निगाल, बाँस की बनी नली 2. हुक्के की नली जिसे मुँह में रखकर धुआँ खींचते है।

निगाह *स्त्री.* (फा.) 1. दृष्टि, नजर 2. देखने की क्रिया, चितवन 3. समय, विचार 4. ध्यान 5. देखरेख, परख, पहचान।

निगिभ *वि.* (तद्.) अत्यंत गोपनीय, जिसका बहुत लोभ हो, बहुत प्यारी।

निगीर्ण *वि.* (तत्.) 1. निगला हुआ 2. अंतर्भुक्त, समाविष्ट।

निगुंफ *पुं.* (तत्.) 1. समूह, गुच्छा 2. अत्यंत गुंफन या गुंथाई, घनी गुंथाई।

निगु *वि.* (तत्.) प्रसन्न करने वाला, मनोहारी *पुं.* 1. मन 2. मल 3. मूल, जड़ 4. चित्रण।

निगुनी *वि.* (देश.) जो गुणी न हो, गुण रहित।

निगुरा *वि.* (तद्.) जिसने गुरु न किया हो, अदीक्षित, जिसने गुरु से मंत्र न लिया हो।

निगूढ *वि.* (तत्.) अत्यंत गुप्त *पुं.* वन मुग्ध, मोठ।

निगूढार्थ *पुं.* (तत्.) जिसका अर्थ छिपा हो।

निगूना *पुं.* (तद्.) दे. निर्गुण।

निगूहन *पुं.* (तत्.) गोपन, छिपाव।

निगृहीत *वि.* (तत्.) 1. धरा हुआ, पकड़ा हुआ, घेरा हुआ 2. आक्रमित, आक्रांत, जिस पर आक्रमण किया गया हो 3. पीड़ित 4. दंडित 5. वशीभूत।

निगृहीति *स्त्री.* (तत्.) 1. बाधा, रोक 2. पराभव, वश में करना।

निगेटिव *पुं.* (अं.) वह प्लेट या फिल्म जिस पर फोटो लिया जाता है, और जिस पर प्रकाश और छाया की छाप उल्टी पड़ती है, अर्थात् जहाँ खुलता और सफेद होना चाहिए वहाँ काला और गहरा होता है और जहाँ काला और गहरा होना चाहिए वहाँ खुलता और सफेद होता है, कागज पर (पाजिटिव) सीधा छाप लेने से फिर पदार्थों का चित्र यथातथ्य उतर जाता है।

निगोड़ा *वि.* (देश.) 1. जिसके ऊपर कोई बड़ा न हो 2. जिसके आगे पीछे कोई न हो, जिसके पैर न हों, अभागा 3. दुष्ट, बुरा, नीच।

निगोड़िन *स्त्री.* (देश.) दे. निगोड़ा।

निगोरा *पुं.* (देश.) दे. निगोड़ा।

निग्रह *पुं.* (तत्.) 1. रोक, अवरोध 2. दमन 3. चिकित्सा, रोकने का उपाय 4. दंड 5. पीड़न 6. बंधन 7. सीमा 8. शिव 9. विष्णु 10. भर्त्सना।

निग्रहण *पुं.* (तत्.) रोकने का कार्य, थामने का कार्य 2. दंड देने का कार्य 3. बंधन 4. पराजय, पराभव 5. युद्ध, लड़ाई।

निग्रहना *स.क्रि.* (तद्.) 1. पकड़ना, थामना 2. रोकना 3. दंड देना।

निग्रह स्थान *पुं.* (तत्.) वाद विवाद या शास्त्रार्थ में में वह अवसर जहाँ दो शास्त्रार्थ करने वालो में से से कोई उलटी-पलटी या नासमझी की बात कहने लगे और उसे चुप करके शास्त्रार्थ बंद कर देना पड़े। यह पराजय का स्थान हो।

निग्रही *पुं.* (तत्.) 1. रोकने वाला, दबाने वाला 2. दंड देने वाला।

निग्राह *पुं.* (तत्.) 1. आक्रोश, शाप 2. दंड।

निग्राहक *वि.* (तत्.) वह मनुष्य जो अपराधियों को दंड दे।

निघंटिका *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार का कंद।

निघंटु *पुं.* (तत्.) वैदिक शब्दों का संग्रह, वैदिक कोश, शब्द संग्रह।

निघ *पुं.* (तत्.) 1. कंदुक, गेंद 2. पाप।

निघटना *अ.क्रि.* (देश.) मिटाना, नष्ट करना दे. घटना।

निघरघट *वि.* (तत्.) 1. जिसका कहीं ठिकाना न हो, जिसका कहीं घर घाट न हो 2. निर्लज्ज।

निघरघटपन *पुं.* (तत्.) निर्लज्जता।

निघरा *वि.* (तत्.) जिसके घर-बार न हो, निगोड़ा।

निघर्ष *पुं.* (तत्.) दे. निघर्षण।

निघर्षण *पुं.* (तत्.) घर्षण, घिसना, रगड़ना।

निघस *पुं.* (तत्.) भोजन, खाद्य, आहार।

निघा *स्त्री.* (फा.) दे. निगाह।

निघात *पुं.* (तत्.) 1. आघात, प्रहार 2. अनुदात्त स्वर।

निघाति *स्त्री.* (तत्.) लौहदंड, वह लोहे का खंड जिस पर हथौड़े आदि का आघात पड़े, निहाई।

निघाती *वि.* (तत्.) 1. मारने वाला, प्रहार करने वाला 2. वध करने वाला।

निघुष्ट *पुं.* (तत्.) 1. ध्वनि शब्द 2. हल्ला-गुल्ला, शोर।

निघृष्ट *पुं.* (तत्.) 1. घर्षित, रगड़ा हुआ, घर्षण युक्त 2. मर्दित, पराभूत।

निघृष्व *पुं.* (तत्.) 1. खुर 2. खुर का निशान 3. वायु, हवा 4. खच्चर 5. सूअर 6. मार्ग, सडक़, निम्न, छोटा, तुच्छ 2. घर्षित, रगड़ा हुआ।

निचंद्र *पुं.* (तत्.) एक दानव का नाम।

निचक्र *पुं.* (तत्.) हस्तिनापुर के एक राजा जो असीमकृष्ण के पुत्र थे, हस्तिनापुर को जब गंगा बहा ले गई तब इन्होंने कौशांबी में राजधानी बसाई।

निचमन *पुं.* (तत्.) थोड़ा-थोड़ा पीना।

निचय *पुं.* (तत्.) 1. समूह 2. निश्चय 3. संचय।

निचला *वि.* (देश.) नीचे का, नीचे वाला, नीचे वाला भाग, (तत्.) अचल, जो हिलता डोलता न हो, स्थिर।

निचाई *स्त्री.* (देश.) 1. नीचा होने का भाव, नीचापन 2. नीचे की ओर दूरी या विस्तार 3. नीच होने का भाव, नीचता, ओछापन।

निचान *स्त्री.* (तद्.) 1. नीचापन 2. ढाल, ढालुवाँपन।

निचिंत *वि.* (तद्.) चिंतारहित, बेफिक्र, सुचिंत।

निचि *पुं.* (तत्.) कानों के सहित गाय का सिर।

निचिकी *स्त्री.* (तत्.) अच्छी गाय।

निचित *पुं.* (तत्.) 1. संचित, इकट्ठा 2. पूरित, व्याप्त 3. तैयार, निर्मित 4. संकीर्ण 5. ढका हुआ 6. पुंजीभूत।

निचिता *पुं.* (तत्.) दे. निचिंता।

निचुड़ना *पुं.* (तत्.) 1. रस से भरी या गीली चीज का इस प्रकार दबाना कि रस या पानी टपक कर निकल जाए 2. दब कर पानी या रस छोड़ना

जैसे- "नींबू निचुड़ना' या धोती निचुड़ना 3. रस या सारहीन होना 4. शक्ति रहित होना 5. शरीर का रस या सार निकल जाने से दुबला होना।।

निचुल *पुं.* (तत्.) 1. बेंत, हिज्जल वृक्ष 2. ऊपर का वस्त्र, जिरह बखतर, कवच।

निचुलक *पुं.* (तत्.) दे. निचोल।

निचोड़ *पुं.* (तद्.) 1. वह वस्तु जो निचोड़ने से निकले, निचोड़ने से निकला हुआ जल, रस आदि 2. सार वस्तु, सार, सत 3. सारांश, मुख्य तात्पर्य, खुलासा।

निचोड़ना *स.क्रि.* (तद्.) 1. गीली या रसभरी वस्तु को दबाकर या ऐंठकर उसका पानी या रस निकालना, गारना 2. किसी वस्तु का सारभाग ले लेना 3. सब कुछ ले लेना, सर्वस्व हरण कर लेना, निर्धन कर देना।

निचोरनि *स्त्री.* (तद्.) निचोड़ने का कार्य।

निचोल *पुं.* (तत्.) 1. आच्छादन वस्त्र, ऊपर से शरीर ढकने का कपड़ा 2. ओहार आच्छादन, ओढ़नी, घूँघट का कपड़ा 3. उत्तरीय वस्त्र 4. घाघरा, लहँगा 5. वस्त्र।

निचोलक *पुं.* (तत्.) 1. चोल, कंचुक, अंगा 2. बखतर, सन्नाह।

निचोवना *पुं.* (तत्.) दे. निचोड़ना।

निचौहाँ *वि.* (देश.) नीचे की ओर किया हुआ, झुका हुआ, नमित, निचौंहे, नीचे की ओर।

निच्छवि *स्त्री.* (तत्.) एक प्रकार का व्रात्य क्षत्रिय, सवर्णा स्त्री से उत्पन्न व्रात्य क्षत्रिय की संतान।

निछक्का *पुं.* (तद्.) 1. वह समय या स्थान जिसमें कोई दूसरा न हो, एकांत, निर्जन 2. सिर्फ, निरा, मात्र।

निछत्र *वि.* (तद्.) 1. जिसके सिर के ऊपर छत्र न हो, छत्रहीन, बिना छत्र का 2. बिना राजचिह्न का 3. बिना राज्य का। (तत्.) क्षत्रियों से हीन, बिना क्षत्रिय का, क्षत्रियों से रहित।

निछद्म *पुं.* (तत्.) एकांत स्थान, निर्जन स्थान।

निछान *वि.* (तद्.) 1. खालिस, विशुद्ध, बिना मिलावट का 2. बिलकुल, निछला, एकमात्र *अव्य.* केवल, एकदम, बिल्कुल।

निछावर *स्त्री.* (तत्.) 1. एक उपचार या टोटका जिसमें किसी की रक्षा के लिए कुछ द्रव्य या कोई वस्तु उसके सारे अंगों के ऊपर से छुआ कर दान कर देते है 2. उत्सर्ग, वाराफेरा, उतारा, बखेर 3. नेग, इनाम।

निछावरि *स्त्री.* (तत्.) दे. निछावर।

निछोह *वि.* (तद्.) 1. जिसे छोह या प्रेम न हो 2. निर्दय, निष्ठुर।

निछोही *वि.* (तद्.) 1. जिसे प्रेम न हो 2. निर्दय, निष्ठुर।

निज *वि.* (तत्.) 1. अपना, स्वीय, स्वकीय, पराया नहीं 2. खास, मुख्य, प्रधान 3. ठीक, सही, निश्चय, ठीक-ठीक, सही-सही 2. खासकर, विशेषकर।

निजकाना *पुं.* (फा.) निकट पहुँचाना, समीप आना।

निजकारी *स्त्री.* (देश.) बँटाई की फसल, वह जमीन जिसके लगान में उससे उत्पन्न वस्तु ही ली जाए।

निजघास *पुं.* (तत्.) पार्वती के क्रोध से उत्पन्न गणों में से एक।

निजन *पुं.* (तद्.) एकांत, सन्नाटा, सुनसान, निर्जन।

निजा *पुं.* (अर.) झगड़ा, विवाद।

निजाई *वि.* (अर.) विवादग्रस्त, झगड़ातलब।

निजात *स्त्री.* (अर.) बंधन मुक्ति, छुटकारा, भारमुक्ति।

निजानंद *पुं.* (तत्.) स्वयं में आनंद की अनुभूति, आत्म-सुख, आत्म-साक्षात्कार का सुखी *वि.* आत्मानंद के स्वरूप वाला।

निजाम *पुं.* (अर.) 1. इंतजाम, प्रबंध, बंदोबस्त, पद्धति, सिलसिला, तरतीब 2. भारत की स्वतंत्रता से पहले हैदराबाद रियासत 3. राज्य के मुस्लिम शासक या नवाब की उपाधि।

निजामशाही *स्त्री.* (अर.) निजाम का शासन।

निजी *वि.* (तद्.) 1. स्वयं अपना, वैयक्तिक, व्यक्तिगत, विशेष वर्ग या लोगों से संबंधित विलो. सार्वजनिक 2. गैर-सरकारी जैसे- निजी क्षेत्र विलो. सार्वजनिक क्षेत्र। private

निजी उपभोक्ता *पुं.* (तद्+तत्.) अर्थ. ऐसा व्यक्ति, संस्था या निकाय जो एकमात्र रूप से, किसी वस्तु, सेवा या उत्पादन का उपयोग अथवा उपभोग करता हो।

निजी कंपनी *स्त्री.* (तद्.+अं.) अर्थ. ऐसी कंपनी जिसके शेयरधारियों की संख्या, उसके पूर्व या वर्तमान कर्मचारियों को छोडक़र 50 से अधिक न हो और जो अपने शेयरों, डिबेंचरों आदि के लिए जनता को आमंत्रित नहीं करती विलो. सार्वजनिक कंपनी। Private company

निजी क्षेत्रक *पुं.* (तद्+तत्.) वाणि./अर्थ. वह क्षेत्र जिसके कार्यकलापों व अर्थव्यवस्था में सरकार का दायित्व न हो और जिसे निजी उद्यमकर्ता चलाते हों। Private Sector

निजी थैली *स्त्री.* (तद्+देश.) राज./विधि भारत की स्वतंत्रता से पहले के भारतीय नरेशों/राजाओं आदि को, निजी खर्च के लिए, सरकार द्वारा देय देय निर्धारित राशि पर्या. शाही थैली, राजभत्ता, निजी कोश। privacy-purse

निजी प्रैक्टिस *स्त्री.* (तद्+अं.) प्रशा. 1. किसी संस्था के अधीन न होकर, स्वतंत्र रूप से अपना व्यवसाय जैसे- चिकित्सा, इंजीनियरी, आदि करना 2. सरकार की या किसी संस्था की सेवा में रहते हुए भी, अनुमति लेकर, अतिरिक्ति समय में अपना व्यवसाय करना।

निजी सचिव *पुं.* (तद्+तत्.) किसी व्यक्ति या अधिकारी के काम-काज, फाइलों, गोपनीय दस्तावेजों, पत्रों आदि की देखभाल रख-रखाव इत्यादि के दायित्व को निभाने के लिए नियुक्त व्यक्ति तु. वैयक्तिक सहायक।

निजै *अव्य.* (तद्.) अपना ही।

निझरना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. बहुत अधिक झड़ जाना, झड़ते-झड़ते खाली हो जाना 2. अत्यधिक झड़ जाने से कांतिहीन होना 3. समाप्त हो जाना 4. सार-भाग या सुखदायी वस्तुओं से रहित हो जाना, सार-हीन होना।

निझराना *अ.क्रि.* (तद्.) दे. निझरना।

निटोल *वि.* (देश.) जो अपने समूह/झुंड से बिछुड़ गया हो *पुं.* टोला, मुहल्ला।

निठल्ला *वि.* (देश.) जो कोई काम न करता हो, अकर्मण्य, बेकार, बेरोजगार, खाली, आलसी, आराम-तलब, व्यर्थ समय व्यतीत करने वाला पर्या. निठल्लू, निठाला।

निठुर *वि.* (तद्.) 1. निष्ठुर, निर्दय, दयाहीन, कठोर हृदय, कठिन, कड़ा, सख्त, नृशंसक, 2. न डिगने वाला, अचल।

निठोर *वि.* (देश.) जिसका रहने के लिए कोई अन्य ठौर या ठिकाना न हो, *पुं.* बुरा स्थान, भयावह या चिंताजनक स्थान, संकट की जगह, शोचनीय दशा, खतरनाक जगह, विषम स्थान पर्या. निठौर, कुठाँव, कुस्थान।

निठौर *पुं.* (तत्.) दे. निठोर।

निडर *वि.* (तत्.+देश.) किसी से न डरने वाला, भयहीन, साहसी प्रर्या. निर्भय, निर्भीक, हिम्मती।

निढाल *वि.* (तत्.+देश) अत्यधिक थका हुआ, थक कर चूर, शिथिल, श्रांत, पस्त, असफल होने के कारण उत्साहहीन।

नितंब *पुं.* (तत्.) पीठ की तरफ जाँघों और कमर के बीच उभरा हुआ मांसल भाग, जिसके सहारे मनुष्य बैठता है, कमर का पिछला अधोभाग, चूतड़ टि. नितंब शब्द का प्रयोग सामान्यतया नारी-अंगों के संदर्भ में होता है।

नितंबिनी *स्त्री.* (तत्.) विस्तृत और सुंदर नितंबों वाली स्त्री, सुंदर नारी, सुंदरी।

नित *अव्य.* (तत्.) दे. नित्य।

नितराम् *अव्य.* (तत्.) बहुत अधिक, अत्यंत, अतिशय रूप में, अत्यधिक, सदैव, हमेशा, सर्वदा, निरंतर,

समूचा, संपूर्ण, तमाम, पूर्णतः, एकदम, हर हालत में, निश्चयपूर्वक, अवश्य।

नितल *पुं.* (तत्.) 1. भूवि. समुद्र की तली, विशेषकर महासागर के गभीर भागों का अधस्तल, अथाह समुद्र 2. कुछ विद्वानों के मतानुसार (पृथ्वी के नीचे स्थित) सात पातालों अर्थात् सात अधोलोकों में से एक।

नितलस्थ *वि.* (तत्.) भूवि.,जीव. समुद्र की तली पर समग्र रूप से विभिन्न स्थानों में पाए जाने वाले (जीव-जंतु और वनस्पति) benethic

नितहि *पुं.* (तत्.) दे. नित्य पर्या. नित, नितही, नितहिं, नितही, नित, नित ही प्रति, नितहीं।

नितांत *अव्य.* (तत्.) 1. अत्यंत, बहुत अधिक, अत्यधिक 2. पूर्णतः, सर्वथा, एकदम, बिलकुल *वि.* नितराम पूर्ण रूप से क्रिया विशेषण है जबकि नितांत प्रविशेष के रूप में प्रयुक्त होता है।

नितै *अव्य.* (तद्.) नित्य ही दे. नित्य।

नित्य *अव्य.* (तत्.) 1. प्रतिदिन 2. सदा, हमेशा 3. नियमित रूप से *वि.* 1. जो पूर्ण समय तक या हमेशा बना रहे, अविनाशी, अक्षर, अनश्वर, शाश्वत 2. जिसकी उत्पत्ति और विनाश न होता हो विलो. अनित्य, नश्वर।

नित्य नैमित्तिक *वि.* (तत्.) (वह कर्म) जो नित्य किया जाने वाला हो (जैसे- स्नान, पूजा आदि प्रतिदिन करने योग्य कर्म) और किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया जाने वाला कर्म जैसे- पुत्रेष्टि यज्ञ, कतिपय श्राद्ध आदि जैसे- गृहस्थ को नित्य नैमित्तिक कर्मों का पालन करना चाहिए।

नित्य संधि *स्त्री.* (तत्.) जब सन्निकट दो पदों या पदांशों में संधि अनिवार्य हो और उन्हें नियमानुसार अलग-अलग न लिखने का विधान हो जैसे- उपसर्ग लगने पर बनने वाले शब्दों में या श्लोकों के एक चरण में आने वाले शब्दों में।

नित्य संबंध *पुं.* (तत्.) 1. दो वस्तुओं या बातों का स्थायी संबंध जैसे- पिता-पुत्र या सूर्य और प्रकाश का संबंध 2. व्या. दो शब्दों का वह पारस्परिक संबंध जिसमें एक ही वाक्य आगे-पीछे अवश्य आते हैं जैसे- जब....तब, 'जब' तुम गए 'तब' वह आया, 'यदि' तुम मुझे मारोगे 'तो' मैं तुम्हे मारूँगा, इत्यादि।

नित्य संबंधी *वि.* (तत्.) नित्य संबंध वाला।

नित्यकर्म *पुं.* (तत्.) 1. प्रतिदिन आवश्यक रूप से किए जाने वाले अथवा विहित कर्म, प्रतिदिन का काम 2. नित्य की क्रिया जैसे- शौच, स्नान, पूजा आदि पर्या. नित्यकृत्य, नित्यक्रिया, नित्यचर्या।

नित्यक्रम *पुं.* (तत्.) किसी काम को पूरा करने के लिए परंपरागत, पूर्व-निर्धारित अथवा नियमित विहित अवस्थाएँ। routine, daily-routine।

नित्यक्रिया *स्त्री.* (तत्.) दे. नित्यकर्म।

नित्यगति *वि.* (तत्.) जो सदा गतिशील रहता हो *पुं.* वायु, काल।

नित्यचर्या *स्त्री.* (तत्.) नित्यप्रति का काम, दैनिक कार्य, दिनचर्या दे. नित्य कर्म।

नित्यता *स्त्री.* (तत्.) नित्य रहने की अवस्था या भाव, निरंतरता, शाश्वतता।

नित्यताबोधक *पुं.* (तत्.) नित्यता का बोध कराने वाला।

नित्यनियम *पुं.* (तत्.) प्रतिदिन पालन किया जाने वाला नियम, कभी भंग न होने वाला नियम।

नित्यप्रति *अव्य.* (तत्.) प्रतिदिन, हर रोज।

नित्यप्रलय *पुं.* (तत्.) वेदांत-दर्शन 1. चार प्रकार के प्रलयों में से एक प्रलय विशेष जो नित्य होता है 2. सुषुप्ति की अवस्था जब किसी भी वस्तु का ज्ञान नहीं रहता।

नित्ययौवना *वि.* (तत्.) ऐसी (नारी) जो सदा युवती बनी रहे, चिरयौवना।

नित्यशः *अव्य.* (तत्.) 1. प्रतिदिन, हर रोज 2. सदा, सर्वदा, हमेशा।

नित्या *स्त्री.* (तत्.) 1. दुर्गा का एक नाम 2. महाशक्ति 3. पार्वती, मनसा देवी।

नित्यानंद *पुं.* (तत्.) प्रत्येक परिस्थिति में (मन में) सदा रहने वाला आनंद *वि.* ऐसा (व्यक्ति) जिसका मन सर्वदा प्रफुल्लित रहे।

नित्यानित्य *वि.* (तत्.) नित्य और अनित्य, स्थिर और भंगुर, नश्वर और स्थायी।

नित्यानित्यवस्तुविवेक *पुं.* (तत्.) यह बोध कि ब्रह् म ही सत्य है, नित्य है और जगत् अर्थात् ब्रह्म के अतिरिक्ति शेष सब कुछ मिथ्या है, अनित्य है या माया है।

निथरना *अ.क्रि.* (तत्.) पानी या किसी अन्य तरल पदार्थ में घुली-मिली भारी चीजों, मिट्टी, मैल आदि के तल में बैठ जाने से, उस तरल पदार्थ के ऊपरी अंश का स्वच्छ हो जाना।

निथार *पुं.* (तद्.) 1. निथरने या निथारने की क्रिया/भाव 2. निथरे हुए पानी या किसी अन्य तरल पदार्थ में तल पर बैठा मैल, मिट्टी या अन्य भारी चीज।

निथारना *स.क्रि.* (तद्.) पानी या किसी अन्य तरल पदार्थ को इस तरह स्थिर रखना ताकि उसमें मिली हुई भारी चीजें, मिट्टी, मैल आदि नीचे बैठ जाए *पुं.* किसी तरल पदार्थ में से भारी चीजें अलग करने के लिए कुछ समय तक उस पदार्थ को स्थिर रखकर उस तरल को उड़ेल कर स्वच्छ द्रव पदार्थ करने की क्रिया या भाव, निथार।

निथुरा *वि.* (तद्.) जिसे निथार लिया गया हो, निर्मल, स्वच्छ।

निदरना *स.क्रि.* (तद्.) 1. निरादर करना, अपमान करना, अनादर करना 2. तिरस्कार करना, उपेक्षा करना, नीचा दिखाना, तुच्छ सिद्ध करना।

निदर्श *पुं.* (तत्.) 1. निर्धारित रूप, नमूना, भावी निर्माण, उत्पादन आदि के लिए मानक या आदर्श रूप 2. किसी प्रपत्र का प्रारूप।

निदर्शक *वि.* (तत्.) 1. दिखलाने-बतलाने वाला 2. प्रदर्शक, निरूपक 3. निदर्शन करने वाला, प्रस्तुत करने वाला, निर्दिष्ट करने वाला किसी तथ्य/बात आदि की ओर संकेत करने वाला, सूचक।

निदर्शन *पुं.* (तत्.) 1. किसी प्रक्रिया, उत्पाद, मशीन आदि के प्रयोग या परिचालन को संभावित प्रयोक्ता अथवा खरीदार के सम्मुख प्रत्यक्ष करके दिखाना, उदाहरण, दृष्टांत 2. शिक्षा. छात्रों के समक्ष कोई प्रयोग या क्रिया प्रत्यक्ष करके समझाना 3. सांख्य. सांख्यिकीय या व्यावसायिक उद्देश्य से उदाहरणार्थ प्रस्तुत वह इकाई जो सभी इकाइयों के प्रतिनिधि के रूप में हो।

निदर्शना *स्त्री.* (तत्.) काव्य. अर्थालंकार का एक भेद जहाँ दो पदार्थों में भिन्नता होते हुए भी उपमा द्वारा उनमें सादृश्य या संबंध की कल्पना की जाए पुस्त. चित्र, उदाहरण। illustration

निदहन *पुं.* (तत्.) 1. जलना पर्या. निदहना 2. जलाना।

निदाध *पुं.* (तत्.) 1. ताप, गरमी, घाम, धूप 2. गरमी का मौसम, ग्रीष्म ऋतु।

निदान *पुं.* (तत्.) 1. मूल या वास्तविक कारण, आदि कारण 2. आयु. रोग का कारण जानने तथा रोग का निर्धारण करने की विधि और उससे संबंधित जानकारी जिसके आधार पर समुचित चिकित्सा की जा सके 3. जैन. विषयों की लालसा *अव्य.* 1. अंततः 2. परिणामतः।

निदानविद्या *स्त्री.* (तत्.) आयु. विभिन्न परीक्षणों द्वारा, शरीर पर लक्षणों के आधार पर, रोग की उत्पत्ति का कारण बताने वाली विद्या।

निदानशाला *स्त्री.* (तत्.) आयु. रोगों के निदान का केंद्र; चिकित्सालय अथवा उपचारशाला।

निदारुण *वि.* (तत्.) 1. निर्दय, निष्ठुर 2. असह्य, दुःसह्य, भयानक, भीषण 3. कठिन।

निंदिया *स्त्री.* (तद्.) नींद, ऊँघ।

निदिध्यास *पुं.* (तत्.) 1. निदिध्यासन, बार-बार ध्यान में लाना, पुनःपुनः स्मरण एवं चिंतन 2. योग. गंभीर चिंतन, श्रवण और मनन से प्राप्त ज्ञान का बार-बार चिंतन करना, आँख बंद कर मन ही मन पुनरावृत्ति करना।

निदिध्यासन *पुं.* (तत्.) दे. निदिध्यास।

निदेश *पुं.* (तत्.) 1. यह कहना, बताना, समझाना अथवा आदेश देना कि अमुक काम या बात इस या इस रूप में हो, आज्ञा, कथन, निर्दिष्ट बात 2. प्रशा. अधिकारपूर्वक दिया गया आदेश directive 3. पथ-प्रदर्शन के लिए दिए गए संकेत। direction

निदेशक *पुं.* (तत्.) 1. कोई काम कैसे, कहाँ, कब और किसके द्वारा किया जाएगा इस संबंध में अंतिम आदेश देने वाला व्यक्ति 2. प्रशा. किसी सरकारी कार्यालय, संस्थान, शिक्षण अथवा अन्य प्रकार की संस्था का शीर्षस्थ अधिकारी director 3. वाणि. किसी कंपनी के शेयर धारकों द्वारा कंपनी के नीति-निर्धारण तथा कार्य-निर्देशन के लिए एक निश्चित अवधि के लिए चुना गया या चुने गए व्यक्ति जो कंपनी के काम काज का प्रबंध करें *वि.* कहीं कहीं पर्याय के रूप में निर्देशक (जैसे फिल्मों में) और संचालक शब्दों का प्रयोग भी प्रचलन में है।

निदेशक मंडल *पुं.* (तत्.) वाणि. शेयर धारकों द्वारा द्वारा चुने गए व्यक्तियों का समुदाय जो कंपनी के प्रबंध का काम-काज देखते है, कंपनी के निदेशकों की समिति। board of directors

निदेशक सिद्धांत *पुं.* (तत्.) सरकार किसी उच्चस्तरीय सरकारी निकाय अथवा सक्षम प्राधिकरण द्वारा किसी कार्यक्रम या कार्य विशेष को पूरा करने के लिए अथवा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, निर्धारित सिद्धांत जिनको आदेशों की तरह मानकर, उनके अनुसार भावी कार्रवाई की जानी अपेक्षित होती है। directive principle

निदेशन *पुं.* (तत्.) 1. निदेशक का कार्य दे. निदेशक 2. निदेश।

निदेशानुसार *वि.* (तत्.) पहले से जारी निदेश, आज्ञा या आदेश के अनुसार दे. निदेश।

निदेशालय *पुं.* (तत्.) निदेशक का कार्यालय, निदेश अथवा निदेशन का केंद्र। directorate

निदेशित अर्थव्यवस्था *स्त्री.* (तत्.) ऐसी अर्थव्यवस्था जो किन्ही विशिष्ट उद्देश्यों से या विशिष्ट राजनीतिक कारणों से किसी एजेंसी या अभिकरण के मार्गदर्शन और पर्यवेक्षण में विशिष्ट दृष्टिकोण से निर्धारित नियमों और विनियमों के अनुसार चलाई जाए उदा. किसी राज्य द्वारा अपने किसी इलाके में सकारण अधिक पूंजी निवेश की अनुमति देना।

निदेशी *वि.* (तत्.) निदेश देने वाला।

निद्रा *स्त्री.* (तत्.) प्राणियों की, सामान्यतया रात्रि में, अवस्था विशेष, जिसमें स्नायुतंत्र अत्यंत धीमा या लगभग मंद हो जाता है, आँखें बंद हो जाती है, शरीर और इंद्रियाँ शिथिल और लगभग चेतनाशून्य हो जाती है, नींद।

निद्राकारी *वि.* (तत्.) आयु. 1. ऐसी वस्तु या दवा जिसके सेवन से नींद आ जाए, निद्रापक उदा. कांपोज 2. स्वापक।

निद्राचलन *पुं.* (तत्.) मनो. नींद में चलना या कभी-कभी ऐसे कार्य करना जो जाग्रतावस्था में किए जाते हैं, निद्राभ्रमण।

निद्राचिकित्सा *स्त्री.* (तत्.) आयु. नींद द्वारा किसी रोग को दूर करने की प्रक्रिया, नींद द्वारा स्वास्थ्य लाभ।

निद्रापक *पुं.* (तत्.) दे. निद्राकारी।

निद्राभंग *पुं.* (तत्.) नींद का टूटना, जाग जाने की अवस्था।

निद्राभ्रमण *पुं.* (तत्.) दे. निद्राचलन।

निद्रायमान *वि.* (तत्.) वह जो सो रहा हो, जो नींद में हो, निद्रिल, जिसे नींद आने वाली हो, निद्रायमाण।

निद्रारोग *पुं.* (तत्.) 1. आयु. जब आसपास की परिस्थितियाँ थोड़ी भी अनुकूल हों तब ही, और बार-बार, गहरी नींद में चले जाने का रोग 2. अतिनिद्रा रोग, अतिस्वाय।

निद्रालस *वि.* (तत्.) जो निद्रा के आक्रमण के कारण सुस्त हो, तंद्रालु।

निद्रालु *पुं.* (तत्.) 1. निद्राशील, जो नींद में हो *पुं.* 2. भगवान विष्णु का एक नाम।

निद्रालुता *वि.* (तत्.) नींद में होने का भाव।

निद्रालुता रोग *पुं.* (तत्.) उष्ण कटिबंधीय (बहुत गर्म और आर्द्र) क्षेत्रों में 'त्से त्से' नामक मक्खी के काटने से होने वाला रोग जिसमें शरीर में अत्यधिक सुस्ती या अकर्मण्यता आ जाती है।

निद्राविज्ञान *पुं.* (तत्.) आयु. नींद और उससे संबंधित विभिन्न पक्षों का वैज्ञानिक अध्ययन का शास्त्र। hiprology

निद्रित *वि.* (तत्.) सोया हुआ, सुप्त।

निद्वेष *वि.* (तत्.) द्वेष रहित, किसी की प्रगति से से अप्रसन्न न होने वाला।

निधड़क *क्रि.वि.* (देश.) 1. बिना हिचक के, बेखटक, निःशंक होकर 2. बेरोक, बिना रुके, बेरोक-टोक, बेधड़क, निधरक, निर्भयतापूर्वक।

निधन *पुं.* (तत्.) 1. मरण, मृत्यु, देहावसान, देहांत 2. समाप्ति, अवसान *वि.* (तद्.) निर्धन, गरीब।

निधन सूचना *स्त्री.* (तत्.) पत्र. दैनिक समाचार पत्र अथवा आवधिक पत्रिका द्वारा या व्यक्तिगत रूप से किसी व्यक्ति के देहावसान का समाचार।

निधरक *क्रि.वि.* (देश.) दे. निधड़क।

निधान *पुं.* (तत्.) 1. वह स्थान, पात्र, आश्रय, आकार, घर आगार या आधार जिसमें अथवा जिस पर कुछ रखा जाए या रखा हुआ हो, निहित हो 2. स्थापना, रखना स्थापित करने की या सुरक्षित रखने की क्रिया या भाव 3. कोष, खजाना, भंडार, निधि, संपत्ति।

निधानी *स्त्री.* (तत्.) पुस्त. लकड़ी, लोहे या अन्य किसी धातु आदि की, प्रायः बिना दरवाजे वाली, अलमारी जो पुस्तकें आदि रखने के काम आती हैं।

निधि *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी विशेष उद्देश्य के लिए बनाई गई, उपलब्ध अथवा निर्धारित धन राशि fund, 2. कोष, खजाना, भंडार 3. निधान।

निधिक *वि.* (तत्.) समग्र रूप से निश्चित, निर्धारित या अनुमानित धन-राशि से संबद्ध।

निधिक ऋण *पुं.* (तत्.) प्रतिभूतियाँ या बंधपत्र जारी करके लिया गया ऋण जो भविष्य में किसी निर्धारित अवधि के बाद चुकाया जाना हो।

निधि निर्माण *पुं.* (तत्.) किसी संगठन के निमित्त या किसी विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अपेक्षित धन-राशि जुटाने का कार्य।

निधि पति *पुं.* (तत्.) 1. वह व्यक्ति जिसकी देखरेख में कोई धन, राशि संपत्ति आदि हो, निधिपाल, निधिप, निधिनाथ 2. कुबेर (धन का स्वामी देवता)।

निधीयन *पुं.* (तत्.) निधि या अपेक्षित धनराशि की व्यवस्था।

निधीश *पुं.* (तत्.) कुबेर, निधीश्वर, निधि का ईश देवता।

निध्यात *वि.* (तत्.) सुविचारित, जिस पर पुनः पुनः अच्छी तरह मनन किया गया हो।

निध्यान *पुं.* (तत्.) 1. देखना, दर्शन 2. मन की आँख से देखना, मन ही मन में देखना।

निनाद *पुं.* (तत्.) 1. ध्वनि, आवाज, गुंजार, गुंजन, गूँज (स्त्रीलिंग) 2. गर्जन, जोर का शब्द, चिल्लाना पर्या. निनद।

निनादित *वि.* (तत्.) गूँजता हुआ, गुंजायमान, ध्वनि करता हुआ, ध्वन्य, निनदित, ध्वनित।

निनादी *वि.* (तत्.) जिससे जोर की ध्वनि, या गुंजार की ध्वनि आ रही हो, जो ऊँचे स्वर में आवाज कर रहा हो, या गरज रहा हो, चिल्ला रहा हो अथवा शोर कर रहा हो।

निनारा *वि.* (देश.) अपने वर्ग से अलग किया हुआ, निकाला हुआ 2. जो अलग, पृथक् या दूर हो 3. विलक्षण, चोखा, विशिष्ट, न्यारा, जुदा, भिन्न।

निनावाँ *वि.* (तद्.) 1. बिना नाम वाला, नामरहित, अनाम 2. जिसके नाम को अशुभ या अमांगलिक मानने के कारण उच्चरित न किया जाए उदा. साँप को निनावाँ मानकर कीड़ा कहना।

निनैतिकता *स्त्री.* (तत्.) सदाचारी निरपेक्षता।, अनैतिकता, नीतिनियम विरोधिता।

निन्यानवे *वि.* (तद्.) निन्यानबे, निन्नाबे जो गिनने में नब्बे (90) से नौ (9) अधिक हो, अंकों में 99 टि. मानक हिंदी में 'निन्यानवे' को ही शुद्ध माना गया है।

निपंक *पुं.* (तत्.) नदी, झील, तालाब या समुद्र के तल की गीली मिट्टी, कीच, कीचड़, कीचट, दलदल, तलछट, गाद, तरछट।

निपंग *वि.* (तद्.) 1. पंगु, लँगड़ा, अपाहिज, जो सामान्य रूप से चल न सके 2. जो ठीक से काम न कर सके, निकम्मा।

निपज *पुं.* (तद्.) पर्या. उपज।

निपजना *अ.क्रि.* (तद्.) उपजना, उत्पन्न होना, पैदा होना।

निपजाना *स.क्रि.* (तद्.) उत्पादन करना, बोना, पैदा करना।

निपट *अव्य.* (देश.) पूरी तरह, एकदम, नितांत, बिलकुल, सरासर, शत प्रतिशत, निरा, एकमात्र, अमिश्रित, केवल।

निपटना *अ.क्रि.* (देश.) 1. (कार्य) पूरा होना, समाप्त होना, खत्म होना, निःशेष होना, करने को बाकी न रह जाना 2. नित्यकर्म से, शौच आदि क्रियाओं से निवृत्त होना, फुरसत पाना 3. (विवाद/झगड़े/ मुकदमे आदि का) निर्णय होना या तय होना 4. (लड़ाई/झगड़े आदि का सामान्यतया धमका कर धौंस पट्टी आदि से एकपक्षीय समाधान करने के लिए लड़ाई करना 5. कर्ज, ऋण या देनदारी का चुकता होना।

निपटान *पुं.* (देश.) निपटाने की क्रिया/भाव। उदा. 1. कूड़े का निपटान हो गया 2. मुकदमे का निपटान हो गया। settlement

निपटाना *स.क्रि.* (देश.) 1. समाप्त करना, कार्य पूरा करना, खत्म करना 2. (नित्यकर्म आदि से) निवृत्त होना, फुरसत पा लेना 4. (विवाद/झगड़े आदि का) फैसला करना, निर्णय देना या करना 4. (झगड़े आदि के लिए) संघर्ष करना 5. (ऋण आदि को) चुकता कर देना पर्या. निबटाना।

निपटारा *पुं.* (देश.) 1. निपटाने या निपटने की स्थिति/क्रिया या भाव, फुरसत 2. विवाद झगड़े आदि में दोनों पक्षों को मान्य निर्णय अथवा विशेष स्थिति में थोपा गया फैसला, निर्णय, फैसला 4. ऋण, देनदारी, कर्ज आदि को चुकता करना 5. दुकानदारों द्वारा माल के समाप्त करने के लिए ऐसी कीमत पर माल बेचना जिससे लाभ भले न हो, किसी न किसी तरह उसकी मूल कीमत वसूल हो जाए।

निपतन *पुं.* (तत्.) ऊपर से नीचे आ जाना, उतरना, गिरना, पतन।

निपतित *वि.* (तत्.) नीचे आया हुआ, उतरा हुआ, गिरा हुआ।

निपत्र *वि.* (तत्.) (ऐसा वृक्ष या पौधा) जिसमें पत्ते न हों, पत्रहीन, बिना पत्तों वाला।

निपात *पुं.* (तत्.) गिरना, पतन संस्कृत की व्याकरणिक परंपरा के अनुसार चार शब्द वर्गों में एक जो 'अव्यय' का पर्याय है अर्थात जिसके शब्दरूप न बने, वह वाक्य के अर्थ को प्रभावित करता है, ये वर्ग हैं- नाम, आख्यात, निपात और उपसर्ग उदा. हिंदी भाषा के निपात हैं- ही, भी, तो, भर इत्यादि उदा. 'तक' (मुझ तक को नहीं बताया), न 2. गिरना, टूटना, ढह जाना, ढेर हो जाना, बैठ जाना, जल बिंदु के निपात से घड़ा भर जाता है, भवन का निपात अनेकों को कालकवलित कर गया 3. *वि.* (देश.) बिना पत्तों का (वृक्ष या पौधा)

निपातन *पुं.* (तत्.) 1. गिरने की क्रिया या भाव 2. नाश, वध करना, मार डालना 3. ध्वंस

निपातित *पुं.* (तत्.) गिराया हुआ, विनाशित, किसी के द्वारा हत या आहत।

निपाती *पुं.* (तत्.) गिरने वाला, फेंकने वाला, नाश करने वाला, मार गिराने वाला 2. *वि.* (देश.) बिना पत्तों का (वृक्ष या पौधा)।

निपिंड *पुं.* (तत्.) साँचे या ढाँचे से बनाई गई धातु की झिल्ली, सिल या पिंड जिससे धातु को लाने-ले जाने में सुविधा हो और बाद में उस धातु को

पुनः पिघला कर आवश्यकतानुसार, सिक्के आभूषण या कल-पुर्जे बनाए जा सके।

निपीड़ *पुं.* (तत्.) दे. निपीड़न।

निपीड़क *पुं.* (तत्.) 1. किसी प्रकार के दबाव, दाब, जोर या बल का प्रयोग करके कार्य सिद्ध करने वाला औजार या मशीन *वि.* 2. बहुत पीड़ा देने वाला, सताने वाला, निचोड़ने वाला।

निपीड़न *पुं.* (तत्.) 1. दबाव, दाब आदि की क्रिया 2. बहुत पीड़ा देने या सताने की क्रिया या भाव, निचोड़ने की क्रिया या भाव, (कोल्हू आदि में) पेरने की क्रिया या भाव 3. किसी वस्तु या पदार्थ आदि पर किसी अन्य व्यक्ति, वस्तु, पदार्थ, औजार आदि से, लक्ष्य विशेष के लिए, जोर डालना या बल प्रयोग करना, दाब, चाप।

निपीड़ना *पुं.* (तत्.) 1. बहुत पीड़ा देना, सताना 2. निचोड़ना, दबाना या मलना, (कोल्हू आदि में) पेरना।

निपीड़ित *वि.* (तद्.) 1. जिसका निपीड़न हुआ हो, पीड़ित 2. निचोड़ा हुआ, सताया हुआ (कोल्हू आदि से)जिसका रस/तेल निकाला गया हो, पेरा हुआ 3. जो कुचला या दबाया गया हो, आक्रांत।

निपुणाई *स्त्री.* (तद्.) दे. निपुणता।

निपुण *वि.* (तत्.) प्रवीण, दक्ष, कुशल, चतुर।

निपुणता *स्त्री.* (तद्.) निपुण होने की अवस्था, गुण या भाव, प्रवीणता, दक्षता, चतुराई।

निपुणत्व *पुं.* (तद्.) दे. निपुणता।

निपुत्र *वि.* (तद्.) बिना पुत्र वाला/वाली, पुत्रहीन, जिसका पुत्र न हो।

निपुनताई *स्त्री.* (तद्.) दे. निपुणता।

निपूत *वि.* (तद्.) दे. निपुत्र।

निपूता *वि.* (तद्.) दे. निपुत्र।

निपूती *स्त्री.* (तद्.) दे. निपुत्र।

निपेटा *वि.* (देश.) जो सदैव भूखा हो, भुक्खड़।

निपोरना *स.क्रि.* (देश.) खोलना।

निफरना *अ.क्रि.* (देश.) खुलना, स्पष्ट होना, घुसकर या छेदकर आरपार निकल जाना।

निफाक *पुं.* (अर.) परस्पर विरोध, वैमनस्य, शत्रुता, वैर।

निबंध *पुं.* (तत्.) बंधन काव्य. एक विधा जिसमें किसी निश्चित विषय पर केंद्रित विचारपूर्ण वर्णनात्मक/मनोरंजनात्मक/विवेचनात्मक संक्षिप्त गद्य रचना *वि.* विस्तृत निबंध को प्रबंध कहा जाता है।

निबंधक *पुं.* (तत्.) निबंधन करने वाला।

निबंधकार *पुं.* (तत्.) निबंध का रचयिता, निबंध-लेखक।

निबंधन *पुं.* (तत्.) 1. बाँधना, बंधन, बँधा हुआ ढंग या नियम 2. हेतु, कारण 3. विधि निर्धारक शर्त अथवा करणीय व्यवस्था।

निब *स्त्री.* (अं.) लोहे, पीतल आदि से बनी चोंच जैसा लिखने का साधन जिससे (स्याही वाली) पेन में, या होल्डर में लगाकर स्याही से लेखन कार्य किया जाता है।

निबटना *अव्य.* (देश.) दे. निपटना।

निबटाना *स.क्रि.* (देश.) दे. निपटाना।

निबटारा *पुं.* (देश.) दे. निपटारा।

निबद्ध *वि.* (तत्.) 1. बँधा, बाँधा हुआ, बंधन युक्ति 2. रोका हुआ, रुद्ध 3. जड़ा हुआ, जटित 4. व्यवस्थित रूप से हुआ, गुंफित 5. (किसी व्यक्ति/वस्तु आदि पर) अच्छी तरह ठहरा, जमा, लगा हुआ, लिखा हुआ, लिखित, रचित ताल और मात्रा से बद्ध (गान या गात) काव्य. (छंदों में) बंधा हुआ (काव्य) विधि. पंजीकृत। registered

निबरना *अव्य.* (तद्.) 1. छूटना, मुक्ति पाकर शांत का अनुभव करना, छुट्टी पाना 2. किसी विपत्ति से बच निकलना 3. काम का समाप्त या पूरा हो जाना 4. सुलझना।

निबल *वि.* (तद्.) दुर्बल, अशक्ति, कमजोर, बलहीन।

निबसना *अ.क्रि.* (तद्.) निवास करना, रहना *वि.* 1. निर्वस्त्र 2. जिसके पास बरतन न हो।

निबह *पुं.* (तद्.) समूह, झुंड।

निबहना *अव्य.* (तत्.) 1. जीवन-निर्वाह होना 2. परस्पर संबंध ठीक बना रहे इस हेतु तालमेल रहना 3. कमी न रह पाना जैसे- किसी तरह विवाह निबह गया।

निबारना *स.क्रि.* (तद्.) 1. निवारण करना 2. बढ़ने से रोकना 3. दूर करना, हटाना, 4. समाप्त करना।

निबाह *पुं.* (तद्.) 1. निर्वाह, गुजारा 2. धैर्यपूर्वक जिस किसी प्रकार किया जाने वाला निर्वाह 3. (प्रतिज्ञा, वचन आदि का) पालन, पूर्ति, निभाव।

निबाहना *क्रि.स.* (तद्.) 1. जीवन-निर्वाह करना 2. किसी तरह निर्वाह करना (प्रतिज्ञा, वचन आदि का) पालन करना, पूरा करना 3. निभाना।

निबिड *वि.* (तद्.) 1. घना, गहरा, घनघोर 2. कठिन, दृढ़, अभेद्य।

निबृत्त *वि.* (तद्.) निवृत्त 1. किसी कार्य को निपटाने के बाद की स्थिति 2. पूरा किया हुआ, जो पूरा हो चुका हो (कार्य) 3. जिसने कार्य पूरा कर लिया हो।

निबेड़ना *स.क्रि.* (तद्.) 1. बंधन से छुड़ाना 2. चुनना, छाँटना, हटाना दे. निपटाना।

निबेड़ा *पुं.* (तद्.) 1. निबेड़ने, निपटाने या सुलझाने की क्रिया या भाव 2. निपटारा, छुटकारा, मुक्ति, बचाव, रक्षा 3. निर्णय, फैसला।

निबेरा *पुं.* (तद्.) दे. निबेड़ा।

निबोधन *पुं.* (तत्.) 1. कोई काम या बात समझने/सीखने की अवस्था अथवा भाव, समझना, सीखना 2. समझाने/सिखाने की अवस्था अथवा भाव, समझाना, सिखाना।

निबौरी *स्त्री.* (तद्.) नीम का फल पर्या. निबौली

निभ *पुं.* (तत्.) 1. प्रकाश, नमक, दीप्ति, चाँदनी 2. प्रकट होने की क्रिया या भाव, प्रादुर्भाव 3. धूर्तता, चालाकी *वि.* 1. समान, सदृश 2. चमकदार तुल्य।

निभना *अ.क्रि* (तद्.) 1. संबंध, व्यवहार आदि का ठीक ठाक से चलते रहना 2. निर्वाह होना, स्थिति के अनुसार स्वयं को बनाते हुए रहना 3. कार्य का संपन्न होना, पूरा होना 4. नियम, वचन आदि का पालन होना।

निभरम *वि.* (तद्.) 1. (वह कार्य) जिसमें कोई भ्रम न हो, शंकारहित 2. (तत्) (वह व्यक्ति) जिसे कोई भय न हो।

निभाग *पुं.* (तत्.) किसी पक्षी के अंडे की भीतरी झिल्ली को पीतक से जोड़ने वाली तंतु।

निभागा *वि.* (तद्.) भाग्य जिसके अनुकूल न हो, भाग्यहीन, अभागा, हतभाग्य।

निभाना *स.क्रि.* (तद्.) दे. निबाहना।

निभाव *पुं.* (देश.) 1. निभना/निभाने की क्रिया या भाव, निर्वाह 2. अनुकूलन या समझौते की स्थिति।

निभृत *वि.* (तत्.) 1. रखा हुआ 2. छिपा हुआ, गुप्त 3. निश्चित 4. स्थिर, निश्चल 5. शांत, धीर 5. निर्जन, एकांत।

निमंत्रण *पुं.* (तत्.) किसी शुभ कार्य के लिए या किसी अवसर पर आने के लिए किसी से आदरपर्वूक कहना अथवा लिखित निवेदन करना, बुलावा, आह्वान, न्यौता, भोजन या अल्पाहार, चाय-पानी के लिए न्योता, आमंत्रण।

निमंत्रना *स.क्रि.* (तद्.) निमंत्रण देना, न्योतना, आदरपूर्वक बुलाना।

निमंत्रित *वि.* (तत्.) जिसे किसी काम के लिए निमंत्रण दिया गया हो, आहूत।

निमग्न *वि.* (तत्.) 1. डूबा हुआ, मग्न 2. तन्मय, लीन, तल्लीन 3. किसी कार्य, चिंतन, भाव आदि में निरंतर व्यस्त।

निमग्न पूँजी *स्त्री.* (तत्.+देश.) वाणि. व्यापार में वह पूंजी जो अधिकांशतः शुरू में लगाई जाती है और जिसको पुनः प्राप्त करना या उससे कुछ लाभ प्राप्त करना असंभव ही होता है।

निमज्जक *पुं.* (तत्.) 1. डुबकी/गोता लगाने वाला 2. डुबकी लगाकर स्नान करने वाला 2. गहरे पानी में गोता लगाकर डूबी वस्तुओं को ऊपर लाने का काम करने वाला, गोताखोर।

निमज्जन *पुं.* (तत्.) 1. डुबकी/गोता लगाकर किया जाने वाला स्नान, अवगाहन 2. किसी वस्तु का किसी तरल पदार्थ में डुबोने की क्रिया या भाव।

निमज्जित *वि.* (तत्.) 1. जो स्नान कर चुका हो, स्नात 2. डूबा हुआ 2. डुबाया हुआ।

निमज्जी पर्दा *पुं.* (तद्.) 1. (बिंब विधान) सज्जा पट्टी, रंग मंच का ऐसा पर्दा जो दाएँ-बाएँ इकट्ठा होने के स्थान पर ऊपर नीचे जाता हो।

निमि *पुं.* (तत्.) पलकों का गिरना, निमेष।

निमित्त *पुं.* (तत्.) 1. हेतु, कारण, उद्देश्य, लक्षण, चिह्न, शकुन 2. मिस, बहाना, वह बात या कार्य जिससे कोई अन्य बात या कार्य सिद्ध हो, उद्देश्य से, किसी के लिए, वास्ते।

निमित्त कारण *पुं.* (तत्.) दर्शन किसी कार्य को संपादित करने में तीन कारणों में से एक जिसकी सहायता या कर्तव्य से कार्य संपन्न होता है जैसे- घड़ा बनाने में मिट्टी उपादान कारण, कुंभकार निमित्त कारण और दंड चक्रादि साधारण कारण है।

निमित्तक *वि.* (तत्.) किसी हेतु से अथवा किसी के लिए होने वाला, जो निमित्तमात्र हो।

निमिलन *पुं.* (तत्.) 1. आँखें बंद करना, मूँदना, सिकोड़ना 2. मृत्यु, मरण।

निमिलित *वि.* (तत्.) 1. झपका या झपकाया हुआ (नेत्र), बंद किया हुआ 2. छिपाया हुआ 3. मरा हुआ, मृत।

निमिष *पुं.* (तत्.) 1. नेत्र/पलक झपकने की क्रिया/भाव, आँख बंद करने की क्रिया, आँखें मींचना, पलक झपकने में लगने वाला समय, निमेष, पल, क्षण, पलक 2. फूलों के मुँदने की क्रिया 3. विष्णु।

निमिषक्षेत्र *पुं.* (तत्.) 'नैमिषारण्य' को विष्णु क्षेत्र होने के कारण निमिषक्षेत्र कहा जाता है।

निमिषांतर *पुं.* (तत्.) 1. पलक झपकने में लगने वाला समय 2. बहुत कम समय।

निमीलिका *स्त्री.* (तत्.) 1. आँखों की झपकी 2. ब्याज, छल, चालाकी।

निमुँहा *वि.* (तत्.+देश.) 1. जिसका मुँह न हो, मुखहीन 2. जो लज्जा/भय आदि के कारण उचित अवसर पर भी न बोले 3. बिना कुछ प्रतिवाद किए कष्ट आदि सहन कर लेने वाला *स्त्री.* निमुँही।

निमुँही *वि.* (तत्.+देश) दे. निमुँहा।

निमेष *पुं.* (तत्.) 1. पलक गिरना या झपकना, पलक गिरने भर का समय, पल 2. बहुत कम समय, क्षण।

निमेषक *पुं.* (तत्.) 1. पलक 2. खद्योत, जुगनू।

निमेषण *पुं.* (तत्.) पलकों के गिरने या गिराने की क्रिया/भाव पलकों की झपक।

निमेष प्रतिवर्त *पुं.* (तत्.) तीक्ष्ण प्रकाश के कारण आँखों का तुरंत झपकने की स्वाभाविक प्रतिक्रिया, सहज प्रतिवर्ती क्रिया।

निमोनिया *पुं.* (अं.) अंग्रेजी के शब्द 'न्यूमोनिया' का हिंदी रूप आयु. जीवाणु डिप्लोकोकस (न्यूमोकोकस) न्यूमोनी के संक्रमण से होने वाला रोग जिससे फेफड़ों में सूजन आ जाती है। पुराने जमाने में यह घातक रोग था, पर पेनिसिलिन की खोज के बाद इसका उपचार संभव है।

निम्न *पुं.* (तत्.) 1. अधीनस्थ, मातहत 2. नीचे का *वि.* अवर, निचला, आधार, अधोवर्ती, घटिया, निकृष्ट, नीचा।

निम्न आय वर्ग *पुं.* (तत्.) साधारण रूप से, जीवन-यापन के निमित्त, वर्ष में जितनी आय अपेक्षित हो, उससे कम कमाने वाला वर्ग, अधिक रूप से पिछड़ा वर्ग।

निम्नग *वि.* (तत्.) नीचे की ओर जाने की प्रवृत्ति वाला, नीचे की ओर जाने वाला।

निम्नगा *स्त्री.* (तत्.) 1. नदी, दरिया 2. पहाड़ी सोता।

निम्न जन्म दर *पुं.* (तत्.) किसी देश में प्रतिवर्ष प्रति हजार जितने जीवित जन्म होते हैं उसे जन्मदर, और उस दर के घटते रहने को निम्न जन्मदर कहते हैं।

निम्नतापिकी *स्त्री.* (तत्.) 1. भौ. भौतिकी की वह शाखा जो अत्यंत निम्न तापक्रम का अध्ययन करती है 2. द्रव्यों के जमाव बिंदु का अध्ययन 3. जमाव बिंदु को और नीचे गिराने की प्रक्रिया 4. शरीर के विभिन्न द्रव्यों के जमाव बिंदुओं का अध्ययन।

निम्नलिखित *वि.* (तत्.) नीचे लिखा हुआ, निम्नांकित, नीचे अंकित।

निम्न स्वर *पुं.* (तत्.) मुख विवर में जिह्वा के निम्नतम स्तर पर रहते हुए उच्चरित होने वाला स्वर जैसे- हिंदी का 'आ'।

निम्नांकक *पुं.* (तत्.) 1. बीमा कराने की गरज से जहाज द्वारा ढोए जाने वाले सामान का आधार मूल्य लगाने वाला व्यक्ति 2. कंपनी के अंशों की जमानत देने वाला व्यक्ति।

निम्नांकन *स.क्रि.* (तत्.) नीचे लिखना/चित्रण करना, नीचे अंकन करना।

निम्नांकित *वि.* (तत्.) नीचे अंकित, निम्नलिखित, नीचे चित्रित, नीचे लिखा हुआ।

निम्नायु *वि.* (तत्.) किसी कार्य, रोजगार, संस्थान आदि में भर्ती अथवा प्रवेश के लिए निर्धारित निम्नतम आयु से कम आयु वाला।

निम्निष्ठ *वि.* (तत्.) सबसे नीचे स्थित गणि. किसी चर को दिया जा सकने वाला, अनुमानित अथवा निर्धार्य अल्पतम या निम्नतम मूल्य, मात्रा, परिमाण या संख्या आदि निम्नतम।

निम्नोन्नत *वि.* (तत्.) जो कहीं नीचा और कहीं ऊँचा हो, नीचा-ऊँचा, ऊँचा-नीचा, ऊबड़-खाबड़।

नियंतव्य *वि.* (तत्.) जिसे नियंत्रित/नियमित किया जाना अपेक्षित हो, नियंत्रित नियमित किए जाने के योग्य।

नियंता *पुं.* (तत्.) नियम बनाने वाला, नियंत्रण या व्यवस्था करने वाला, कार्य चलाने वाला, नियम के अनुसार काम करने अथवा कराने वाला शासक, प्रचालक।

नियंत्रक *पुं.* (तत्.) नियंत्रण रखने वाला, नियंता *स्त्री.* (तत्.) ऐसी कंपनी जो आंशिक रूप से या पूर्णतः अन्य कंपनी या कंपनियों पर नियंत्रण रखती हो अथवा उन पर उक्त कंपनी का स्वामित्व हो।

नियंत्रक प्राधिकारी *पुं.* (तत्.) नियंत्रण करने वाला अधिकारी, अधिकार-प्राप्त व्यक्ति या संस्था।

नियंत्रक व महालेखापरीक्षक *पुं.* (तत्.) प्रशा. राष्ट्र की संवैधानिक व्यवस्था के अधीन वह अधिकारी, जिसका काम संघ और राज्यों के लेखों की परीक्षा करना और यह जाँच करना है कि बजट में जिन कार्यों के लिए जितनी जितनी राशि स्वीकृत हुई उसका व्यय तदनुसार और नियमानुसार हुआ या नहीं।

नियंत्रण *पुं.* (तत्.) नियम में बाँधना, व्यवस्थित करना, अपने अधिकार में लेकर या अपने देखरेख में रखकर कारोबार, व्यापार अथवा मशीनें आदि चलाना 2. नियमित करना स्वच्छंद न रहने देना 3. कड़े बंधन लगाना वाणि. माँग की तुलना में किसी वस्तु की पूर्ति कम होने पर उसके न्यायोचित वितरण के लिए सरकार या उसकी किसी एजेंसी द्वारा लागू की गई वितरण व्यवस्था, वह स्थान या कक्ष जहाँ से सारे कार्यकलापों पर नजर रखी जा सके और उन पर नियंत्रण भी संभव हो।

नियंत्रित *वि.* (तत्.) जिस पर नियंत्रण हो, नियम से बँधा हुआ, कायदे कानून के अनुसार अधिकार में रखा हुआ, अधिकार में लाया हुआ।

नियंत्रित अर्थव्यवस्था *स्त्री.* (तत्.) वाणि. ऐसी अर्थव्यवस्था, जिसमें सभी विषय- जैसे योजना,

निर्माण, संचालन, निधिकरण, निवेश बजट-निर्माण, माँग और पूर्ति आदि एक ही व्यक्ति, निकाय या संस्था द्वारा नियंत्रित हों।

नियंत्रित कीमत *स्त्री.* (तत्.+अर.) वाणि. माँग की की तुलना में पूर्ति कम हो तो वस्तु के आयात द्वारा और माँग की तुलना में पूर्ति अधिक हो तो तो वस्तु के निर्यात द्वारा, अथवा करों में कमी या वृद्धि करके तथा इसी प्रकार के अन्य उपायों से नियंत्रित अथवा स्थिर की गई कीमत।

नियत *वि.* (तत्.) 1. नियम, प्रथा, बंधन आदि के द्वारा निश्चित किया हुआ, समझौते, इकरार आदि के द्वारा ठहराया हुआ, आज्ञा, आदेश या विधान आदि के द्वारा स्थिर या निर्धारित किया हुआ, नियोजित 2. नियुक्ति, तैनात गणि. अचर, जिसका मान न बदले, परिवर्तनहीन।

नियत आय *स्त्री.* (तत्.) स्थिर पेंशन; निवेश, किराए ब्याज आदि से होने वाली आमदनी जिसमें प्रायः नगण्य सा परिवर्तन होता है और बाजार में चाहे मंदी हो या तेजी, इस पर असर नहीं पड़ता।

नियत कटौती *स्त्री.* (तत्.+तद्) 1. ऋण की वसूली वसूली के लिए निश्चित किस्त, जो नियमित रूप से वेतन से काटी जाती है 2. बचत की दृष्टि से, नियमित रूप से वेतन से काटी जाने वाली रकम।

नियतकालिक पत्रिका *स्त्री.* (तत्.) किसी संस्था, समाचार पत्र समूह आदि द्वारा, निर्धारित अंतराल पर प्रकाशित किया जाने वाला कोई सामयिक पत्र, पत्रिका, संकलन आदि।

नियतता *स्त्री.* (तद्.) 1. नियत होने की स्थिति या या भाव, नियतत्व 2. नियमित होने की स्थिति अथवा भाव।

नियततापी *पुं.* (तत्.) जीव. वे जीव-जंतु जिनके शरीर का ताप नियत होता है परिवेश के अनुसार घटता-बढ़ता नहीं उदा. पक्षी, स्तनपोषी।

नियतत्व *पुं.* (तत्.) दे. नियतता।

नियतत्ववाद *पुं.* (तत्.) पाश्चात्य दर्शन का एक सिद्धांत जिसके अनुसार होने वाली घटना कुछ नियत नियमों द्वारा संचलित होती है, नियतिवाद।

नियत देयता *स्त्री.* (तत्.) वाणि. बंधक या डिबेंचर की तरह की देयता जो एक निश्चित अवधि तक (जैसे एक वर्ष तक) परिपक्व नहीं होती अर्थात् जिसे भुनाया नहीं जा सकता।

नियतन *पुं.* (तत्.) प्रशा. 1. सरकार या प्रतिष्ठान के किसी अंग विशेष अथवा कार्यकारी के लिए कार्य का निर्धारण 2. किसी कार्यालय अथवा संस्था को निर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए दी जाने वाली राशि का निर्धारण।

नियत मजदूरी *स्त्री.* (तत्.+फा) प्रशा. श्रमिक को घंटे, दिन, सप्ताह आदि के हिसाब से मिलने वाली पूर्व निर्धारित धन-राशि, दिहाड़ी।

नियतश्राव्य *पुं.* (तत्.) नाट्योक्ति का एक भेद, एक प्रकार का संवाद जिसको रंगमंच पर स्थित कुछ चुने हुए पात्रों को छोड़कर शेष लोग न सुन सके, वक्ता के नाट्य से सामान्य श्रोता जान जाते है कि संवाद किन किन पात्रों ने सुना है।

नियतांश *पुं.* (तत्.) किसी संस्था, निकाय, क्षेत्र आदि के समग्र में से किसी विशेष समूह, राज्य, प्रांत, वर्ग आदि के लिए या उनके हितों के निमित्त (प्रायः आनुपातिक रूप से) निर्धारित अथवा निश्चित हिस्सा, अधिकृत रूप से संख्या/राशि का निर्धारित अंश।

नियता *स्त्री.* (तत्.) गणित किसी शांकव में वह रेखा जिससे शांकव के किसी भी बिंदु की दूरी और उस बिंदु से शांकव की नाभि की दूरी का अनुपात स्थिर रहता है। directrix

नियतात्मा *वि.* (तत्.) जिसने स्वयं को संयत कर लिया हो, संयमी, जितेंद्रिय।

नियताप्ति *स्त्री.* (तत्.) नाटक की कथावस्तु की पाँच अवस्थाओं में से चौथी अवस्था, विघ्नों और बाधाओं के दूर हो जाने पर फल-प्राप्ति की निश्चयावस्था, वह स्थिति जब फलप्राप्ति निश्चित हो *वि.* फल प्राप्ति अंतिम अवस्था है।

नियति *स्त्री.* (तत्.) नियत होने की क्रिया या भाव, बंधन, ईश्वरीय या अदृश्य शक्ति के द्वारा पहले से नियत वह बात, जो अवश्य होकर रहे, होनी, भाग्य, अदृष्ट, दैव, नियतता।

नियतिवाद *पुं.* (तत्.) दे. नियतत्ववाद।

नियतिवादी *वि.* (तत्.) नियतिवाद को मानने वाला।

नियतेंद्रिय *वि.* (तत्.) संयमी, जितेंद्रिय, इंद्रियों को वश में कर लेने वाला, नियतात्मा।

नियम *पुं.* (तत्.) विधि. किसी संस्था, संगठन, विभाग आदि के कार्यों के सम्यक् संचालन के लिए स्वीकृत लिखित/अलिखित आवश्यक विधि निषेध जिनका पालन आवश्यक होता है कानून 2. सिद्धांत, आचार व्यवहार आदि के संबंध में निश्चित कार्य जिनका पालन किया जाता हो, अथवा जिनका निषेध किया गया हो 3. किसी कार्य को करने का ढंग 4. वह परिकल्पना जो प्रयोग के और उनसे प्राप्त परिणामों से सिद्ध हो जाए जैसे- गुरुत्वाकर्षण का नियम 5. शर्त। rule, law

नियमन *पुं.* (तत्.) 1. प्रशा. उचित प्रकार से काम चलाने के लिए नियम आदि बनाना, नियमों आदि के द्वारा नियंत्रण में रखना, दमन, निग्रह 2. जो अभी तक नियमानुसार न हो उसे नियमित किए जाने का कृत्य उदा. दिल्ली में 1604 बस्तियों का नियमन कर दिया गया।

नियमनवाद *पुं.* (तत्.) अर्थ. केंद्र के द्वारा या एक राज्य के द्वारा दूसरे राज्य के आर्थिक अथवा राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप, दखल अथवा मध्यस्थता की प्रवृत्ति।

नियम निष्ठा *स्त्री.* (तत्.) 1. नियमों के प्रति निष्ठा, नियमों के अनुसार काम करने की प्रवृत्ति 2. परंपराओं, प्रथाओं इत्यादि का पालन करने का स्वभाव।

नियमपरक *पुं.* (तत्.) नियमों के अनुसार होने वाला अथवा नियमों का पालन करने वाला।

नियमपालन *पुं.* (तत्.) नियमों के अनुसार काम करना।

नियम पुस्तिका *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी सभा, संस्था संस्था आदि के संचालन से संबंध रखने वाले सभी नियमों का संग्रह, सभी नियम या उनका संग्रह 2. किसी कार्यक्षेत्र या विभाग के कार्य-संचालन और कार्यकर्ताओं का पथ-प्रदर्शन करने वाले नियमों आदि की पुस्तिका, नियमावली, नियमित नियमों के अनुकूल, नियमों से जकड़ा हुआ, नियमों के अनुसार होने वाला या चलने वाला।

नियमवादी *वि.* (तत्.) जो नियमों, परंपराओं, रुढ़ियों रिवाजों और प्रथाओं आदि का पक्षधर हो, जो सादृश्यता, या सधर्मिता पर विश्वास करता हो, जो अनुरूपता, सुसंगत तत्वों को मिला कर चलता हो।

नियम-विनियम *पुं.* (तत्.) नियम और कानून द्वारा उनकी मान्यता कायदा-कानून संबंधी विवरण तथा व्याख्या।

नियम शिथिलन *पुं.* (तत्.) नियमों को दृढ़तापूर्वक लागू न करके, परिस्थिति विशेष को देखते हुए, उनमें ढीलापन ले जाना।

नियमानुकूलन *पुं.* (तत्.) 1. नियमों को संदर्भ के अनूकूल बनाने की क्रिया या भाव 2. नियमों को पक्ष विशेष के लिए उपयुक्त बनाने का कार्य।

नियमानुसार *वि.* (तत्.) परिपाटी या विधि के अनुसार ढाले गए नियम।

नियमावली *स्त्री.* (तत्.) 1. नियमों का समूह 2. किसी संस्था आदि के नियमों की विवरण-पुस्तिका 3. संस्था के संचालन से संबंध रखने वाले नियमों का संकलन 4. किसी कार्यक्षेत्र या विभाग आदि के कार्य-संचालन और कार्यकर्ताओं का पथ-प्रदर्शन करने वाले नियमों का संग्रह।

नियमित *वि.* (तत्.) 1. नियमों से बँधा हुआ, नियमबद्ध 2. नियम, कायदे कानून के अनुसार बना हुआ 3. नियमों, उपनियमों आदि के अनुरूप 4. यथासमय होने वाला।

नियमित क्रिया *स्त्री.* (तत्.) भाषा. वे क्रिया शब्द जिनकी रूपावली सामान्य नियमानुसार बनती है उदा. अंग्रेजी क्रियाएँ आदि जिनका भूतकाल

नियम से लगने से बनता है, अनियमित रूप वाली क्रिया है हिंदी में 'जा' से 'गया' यह रूप अनियमित या अपवाद है, परंतु 'खा' से 'खाया' नियमित क्रिया का उदाहरण माना जा सकता है।

नियमितता *स्त्री.* (तद्.) 1. नियमित अंतराल से होने का भाव 2. कानून के अनुसार, विनिर्धारित नियमों के अनुसार होने का भाव।

नियमित पदोन्नति *स्त्री.* (तत्.) प्रशा. निर्धारित/ नियमों के अनुसार, प्रत्येक प्रक्रिया का पालन करते हुए, व्यक्ति श्रेणी के पद पर स्थापित करना या ऐसा होना।

नियमित संज्ञा *स्त्री.* (तत्.) भाषा. वे संज्ञा शब्द जिनकी रूपावली सामान्य नियमानुसार बनती है उदा. हिंदी में 'कपड़ा', 'कमरा' आदि नियमित संज्ञाएँ हैं (नेता, पिता आदि अनियमित संज्ञा शब्द है)।

नियमित संवर्ग *पुं.* (तत्.) प्रशा. शिक्षा, अनुभव, पात्रता आदि की दृष्टि से सुयोग्य चुने हुए व्यक्तियों की विभिन्न श्रेणियों के पदों की शृंखला जिसमें ऊपर के पदों पर प्राय: निचले पदों से ही लोग जा पाते हैं।

नियमितीकरण *पुं.* (तत्.) प्रशा. 1. दैनिक मजदूरी पर काम करने वाले या अस्थायी कर्मचारियों को नियमित सेवा का अंग बनाना 2. किसी अनियमित खर्च या छुट्टी को बाद में मंजूरी देकर नियमानुकूल कर देना।

नियमी *पुं.* (तत्.) 1. नियमों का पालन करने वाला, नियमों के अनुसार चलने वाला 2. नियम से होने वाला 3. नियम का/से संबंधित।

नियमोल्लंघन *पुं.* (तत्.) नियमों का अतिक्रमण या उनके विरुद्ध कार्य करना, नियम तोड़ना।

नियर *अव्य.* (देश.) निकट, पास का, समीप, नजदीक।

नियामक *पुं.* (तत्.) 1. समा. किसी के व्यवहार को नियमों, विनियमों आदि के द्वारा नियंत्रित करने का प्रयत्न 2. नियम बनाने वाला या नियमों से बाँधकर रखने वाला, व्यवस्था या विधान करने वाला, नियमन करने वाला, नियंत्रक यां. इंजी. किसी मशीन या इंजन की गति को नियंत्रित करने की युक्ति विशेष गति नियंत्रक।

नियामक शब्द *पुं.* (तत्.) वह शब्द जो किसी श्रेणी विशेष के शब्दों के व्याकरणिक रूप विज्ञान को अनुशासित करता है।

नियामन *पुं.* (तत्.) नियम बनाने या नियमों से बाँध कर रखना, व्यवस्था या विधान करना।

नियुक्ति *वि.* (तत्.) प्रशा. जिसको किसी कार्य, स्थान या पद पर लगाया गया हो, मुकर्रर किया गया हो, तैनात किया गया हो, नियत या स्थिर किया गया हो *स्त्री.* (तत्.) नियुक्ति होने या करने की क्रिया या भाव, नियोजन तैनाती।

नियुक्ति पत्र *पुं.* (तत्.) प्रशा. किसी व्यक्ति को किसी नौकरी पद या स्थान पर लगाने का आधिकारिक पत्र या आदेश।

नियुक्ति प्रस्ताव *पुं.* (तत्.) प्रशा. किसी व्यक्ति को कोई नौकरी या पद देने संबंधी औपचारिक प्रस्ताव ताकि उम्मीदवार यदि चाहे तो प्रस्ताव को अस्वीकार भी कर सकता है।

नियुक्ति प्राधिकारी *पुं.* (तत्.) वह सक्षम संस्था या प्राधिकारी जो किसी व्यक्ति को किसी नौकरी, पद या स्थान पर नियुक्ति या तैनात कर सके।

नियुत *वि.* (तत्.) दस लाख की संख्या।

नियोक्ता *पुं.* (तत्.) प्रशा. 1. काम पर लगाने वाला, नौकरी पर रखने वाला 2. वह उच्च पदस्थ अधिकारी जिसके अनुमोदन से अथवा जिसके प्राधिकार से किसी को नियुक्ति मिले।

नियोक्ता अंशदान *पुं.* (तत्.) प्रशा. सेवानिवृत्ति के पश्चात् किसी कर्मचारी को सामान्यतया मासिक रूप से मिलने वाली पेंशन, जीवन निर्वाह के लिए नियत राशि की पेंशन में शासन अथवा नियोक्ता द्वारा जमा किया जाने वाला अंशदान अथवा हिस्सा।

नियोग *पुं.* (तत्.) 1. प्रशा. नियोजित करना अथवा किसी काम में लगाना, तैनाती करना 2. धर्म. प्राचीन आर्यों की एक प्रथा जिसमें निस्संतान स्त्री या ऐसी स्त्री जिसके पति को असाध्य रोग हो, कुछ विशेष परिस्थितियों में, पति के किसी गोत्रज से संतान उत्पन्न करा सकती थी।

नियोगी *वि.* (तत्.) प्रशा. वह व्यक्ति जिसका नियोग हुआ हो धर्म. वह व्यक्ति जिसे नियोग का अधिकार दिया गया हो, बंगाल में एक जातिनाम।

नियोजक *पुं.* (तत्.) प्रशा. किसी को पद पर लगाने या नियुक्ति करने वाला।

नियोजन *पुं.* (तत्.) अर्थ. (प्रशा.) 1. उपार्जन के उद्देश्य से किसी उद्योग, धंधे, व्यवसाय, संस्था आदि में काम पर लगाने या लगाने की क्रिया या भाव, पर्या. रोजगार 2. योजनाबद्ध तरीके से कोई काम संपन्न करने की क्रिया या भाव जैसे-परिवार नियोजन।

नियोजन साक्षात्कार *पुं.* (तत्.) प्रशा. नियोजन के लिए, रोजगार के लिए, संभावित उम्मीदवारों का साक्षात्कार।

नियोजन सेवाएँ *स्त्री.* (तद्.) लोगों को रोजगार देने देने के लिए प्रायः शासन द्वारा संचालित सेवाएँ।

नियोजनालय *पुं.* (तत्.) प्रशा. बेरोजगार लोगों को नौकरी उपलब्ध कराने में सहायता देने वाला कार्यालय, रोजगार दफ्तर, रोजगार कार्यालय।

नियोजनीय *वि.* (तत्.) प्रशा. जिसका नियोजन किया जाने वाला हो, जो नियुक्ति किए जाने योग्य हो, जिसे नियुक्त किया जा सके, जो उपयोगी हो, नियोज्य।

नियोजनीयता *स्त्री.* (तद्.) नियोजनीय होने का भाव।

नियोजित *वि.* (तत्.) नियुक्त किया हुआ, जिसे कार्य में लगा लिया गया हो।

नियोजित परिवार *पुं.* (तद्.) ऐसा परिवार जिसमें परिवार के सदस्यों, विशेषकर बच्चों की संख्या, उनका पालन-पोषण, शिक्षा आदि का प्रबंध, सुनियोजित ढंग से सोच समझकर किया जाए।

नियोज्य *वि.* (तत्.) दे. नियोजनीय।

निरंक *वि.* (तत्.) 1. (कागज आदि) जिस पर कोई अंक, चिह्न अक्षर, चित्र आदि न हो, खाली, रिक्ति 2. जिस पर कुछ लिखा न हो, कोरा, सादा।

निरंक चेक *पुं.* (तत्.) वाणि. ऐसा चेक जिस पर राशि का उल्लेख न हो।

निरंकार *वि.* (तद्.) 1. जिसका कोई आकार रूप न हो, आकार रहित, रूपरहित, अमूर्त, आकारहीन, निराकार 2. निरंकारी संप्रदाय का सदस्य।

निरंकुश *वि.* (तत्.) 1. काबू में न रहने वाला 2. नियमों को न मानने वाला, अनियंत्रित, स्वेच्छाचारी 3. तानाशाह।

निरंकुशता *स्त्री.* (तद्.) निरंकुश होने की अवस्था या भाव, स्वेच्छाचारिता, तानाशाही।

निरंकुश राजतंत्र *पुं.* (तत्.) राज. वह शासन-प्रणाली जिसमें राज्य की सब शक्तियाँ प्रधान (राजा आदि) के हाथों में केंद्रित होती हैं और उन पर संविधान संसद, न्यायालिका आदि का नहीं होता। anarchic state

निरंकुशवाद *पुं.* (तत्.) राज. निरंकुश शासन का सिद्धांत।

निरंकुश शासन *पुं.* (तत्.) राज. वह शासन व्यवस्था जिसमें राज्य की समस्त शक्तियाँ एक के पास केंद्रित होती है और समस्त राज्य व्यवहार केवल उन्हीं द्वारा नियंत्रित होता है। absolute monarchy

निरंगा *वि.* (तत्.) 1. बिना अंगों वाला, अनंगा, अंगहीन 2. जिसके भाग न हो, भागरहित *वि.* (देश.) 1. जो एक ही रंग का न हो, बहुरंगा 2. विशुद्ध, निरा, खालिस 3. जिसका कोई रंग न हो, वर्णहीन, पारदर्शी 4. बदरंग, फीका।

निरंजन *वि.* (तत्.) 1. जिसने अंजन/सुर्मा, काजल न लगाया हो 2. (नेत्र) जिसमें अंजन/सुर्मा/ काजल न लगा हो 3. दोष/कलंक से रहित, सादा, निर्दोष, दोषरहित, निष्कलंक, बेदाग 4. माया आदि दोषों से रहित या माया रहित उदा. निरंजन ब्रह्म, शिव, महादेव, अविनाशी।

निरंजना *स्त्री.* (तत्.) 1. (हिंदू देवी-देवताओं में) दुर्गा 2. पूर्णिमा।

निरंजनी *वि.* (तत्.) 1. निरंजन-संबंधी, निरंजन का 2. ईश्वर के निरंजन रूप के उपासक साधुओं से संबंधित (एक संप्रदाय) निर्गुण ब्रह्म का उपासक *स्त्री.* (तद्.) वह आधार या पात्र जिसमें आरती के लिए दीपक जलाया जाता है, आरती।

निरंतर *वि.* (तत्.) 1. जिसके बीच में कोई व्यवधान, कोई रोक-टोक, बाधा न हो 2. बिना अंतर या फासले का 3. देश-काल की दृष्टि से अविच्छिन्न, जिसका क्रम टूटा न हो, अखंड, नित्य 4. स्थायी, लगातार होने वाला 5. सदा बना रहने वाला, अक्षय, सदा आँखों के सामने बना रहने वाला *अव्य.* 1. लगातार 2. हर समय, सदैव 3. नित्य पर्या. सतत।

निरंतरता *स्त्री.* (देश.) निरंतर होने का गुण, अवस्था या भाव, निरंतर बने रहना, अविच्छिन्नता, अखंडता, सातत्य, नैरंतर्य।

निरंतरता बोधक *वि.* (देश.) भाषा. 1. हिंदी में क्रिया के वे रंजक रूप जो क्रिया व्यापार की लंबी अवधि या बारंबारता की सूचना देते है उदा. करते रहना, खाते जाना, देखते चलना 2. लगातार होने की सूचना देने वाला क्रिया का रंजक रूप जैसे- वह पढ़ रहा है।

निरंतर सेवा *स्त्री.* (तद्.) 1. किसी संस्था, संगठन, संगठन, निकाय आदि में लगातार अविच्छिन्न रूप से की गई सेवा टि. कई बार इस प्रकार की सेवा की कुल अवधि, व्यक्ति के पद, वेतनमान आदि को आधार बनाकर, सेवानिवृत्ति पर उसे पेंशन आदि के रूप में कतिपय लाभ मिलते हैं 2. किसी मशीन आदि के संबंध में विक्रेता द्वारा द्वारा मशीन में कभी भी खराबी होने पर उसे दूर दूर करने का आश्वासन।

निरंबर *वि.* (तत्.) निर्वस्त्र, दिगंबर, नग्न।

निरंबु *वि.* (तत्.) 1. जिसमें पानी न हो, जलहीन 2. जो बिना पानी पिए रहता हो या रह सकता है 3. ऐसा (अनुष्ठान) जिसमें पानी न पिया जाता हो, निर्जल।

निरंश *वि.* (तत्.) 1. समूचा, संपूर्ण 2. वह जो पैतृक संपत्ति में से कुछ भी भाग पाने का अधिकारी न हो 3. जिसे अपना अंश प्राप्त न हुआ हो, जो अपने भाग से वंचित रह गया हो।

निरक्ष *वि.* (तत्.) 1. बिना पासे का 2. जो पृथ्वी के मध्य भाग में हो *पुं.* पृथ्वी की विषुवत् रेखा, वह काल्पनिक रेखा जो पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव से समान दूरी पर पृथ्वी के मध्य में हो।

निरक्षर *वि.* (तत्.) 1. अशिक्षित, अनपढ़, जो बिल्कुल पढ़ा-लिखा न हो, अनपढ़ 2. गँवार, मूर्ख 3. जिसमें अक्षर का प्रयोग न हुआ हो।

निरक्षरता *स्त्री.* (तद्.) निरक्षर होने की अवस्था, भाव, अनपढ़पन।

निरखना *स.क्रि.* (तद्.) 1. निरीक्षण करना 2. ध्यान से देखना 3. चितवन, ताकना।

निरगुन *वि.* (तद्.) 1. जिसमें कोई गुण/अच्छाई न हो 2. जिसमें सत्, रज और तम नामक तीनों में से कोई गुण न हो, त्रिगुणरहित *पुं.* (तद्.) त्रिगुणरहित, परमात्मा, निर्गुण।

निरग्नि *वि.* (तद्.) वेदों में बताए गए होम, अग्निहोत्र को न करने वाला।

निरघ *वि.* (तत्.) जिसने कोई पाप न किया हो, निष्पाप, अनघ, निर्दोष, पापरहित, निष्कलुष, पवित्र।

निरत *वि.* (तद्.) 1. किसी कार्य में तल्लीन हुआ, तत्पर, नृत्यरत 2. प्रसन्न, विश्रांत।

निरति *स्त्री.* (तत्.) 1. विशेष आसक्ति या अनुराग, अनुराग, विशेष रति, (किसी कार्य में) लिप्तता या लीनता *पुं.* (तद्.) 2. नृत्य, नाच।

निरतिशय *वि.* (तत्.) परले दर्जे का, चरम, परम, सबसे बढ़कर, अद्वितीय, जिससे बड़ा या बढ़कर दूसरा न हो।

निरधारना *स.क्रि.* (तद्.) 1. निर्धारण करना 2. निश्चित करना 3. मन में समझना, सोचना 4. तय करना।

निरधिग्रहण *पुं.* (तत्.) अधिकार या अधिसूचना आदि के द्वारा किसी की संपत्ति, भूमि आदि को को कानूनी रूप से लेने की प्रक्रिया को, उसी के समांतर दूसरे कानून से रोक देना एवं पहले की स्थिति में बहाल कर देना।

निरधिष्ठान *वि.* (तत्.) 1. जो अधिष्ठित न हो 2. जिसका कोई आधार/आश्रय सहारा न हो, निरवलंब, निराश्रय, बेसहारा, आश्रयहीन।

निरनुकूल *वि.* (तत्.) जो अनुकूल न हो, प्रतिकूल या तटस्थ।

निरनुनासिक *वि.* (तत्.) जिसका उच्चारण नाक से न हो, जो अनुनासिक न हो, अननुनासिक; अननुनासिक से भिन्न भाषा. वे स्वर जिनके उच्चारण में केवल मुख विवर से वायु निकलती है (नासिका विवर से नहीं) जैसे आ, ई निरनुनासिक स्वर हैं।

निरनुनासिक्यरंजन *वि.* (तत्.) अनुनासिक स्वरों को निरनुनासिक करके बोलना/लिखना।

निरनुबंध *वि.* (तत्.) बिना अनुबंध वाला, जिसमें द्विपक्षीय या बहुपक्षीय किसी भी प्रकार का कोई कोई समझौता या करार न हुआ हो, बिना शर्तों वाला, अनुबंधरहित।

निरनुरोध *वि.* (तत्.) 1. बिना अनुरोध का, अनुरोधरहित 2. अमैत्रीपूर्ण 3. निष्ठुर, कृतघ्न 4. सद्भाव शून्य।

निरन्न *वि.* (तत्.) अन्नरहित, निराहार, बिना अन्न का, जिसमें अन्न का प्रयोग न हो।

निरन्ना *वि.* (तद्.) जिसने अन्न न खाया हो, निराहार।

निरन्वय *वि.* (तत्.) 1. संबंधरहित 2. संतान रहित, निस्संतान 3. नौकरों आदि से रहित 4. असंगत 5. दृष्टि से परे।

निरपराध *वि.* (तत्.) विधि. निर्दोष, बेकसूर, जिसने कोई दोष या अपराध न किया हो।

निरपराधी *वि.* (तत्.) दे. निरपराध।

निरपवाद *वि.* (तत्.) अपवाद रहित, जिसमें कोई अपवाद न हो, जिसमें कोई दोष न लगाया जा सके, अनिंद्य।

निरपाय *वि.* (तत्.) 1. दे. निरपवाद 2. जो नाशवान न हो 3. स्पष्ट, भ्रांति रहित, अभ्रांत 4. अव्यर्थ, अमोघ।

निरपेक्ष *वि.* (तत्.) 1. स्वतंत्र और स्पष्ट, किसी अन्य की अपेक्षा न रखने वाला, जो अपने ही ऊपर अवलंबित हो 2. केवल अपना भरोसा करने वाला 3. तृष्णा से मुक्ति, विरक्ति, जो किसी बात की परवाह न करके 4. उदासीन, तटस्थ, कामना रहित, स्वार्थ रहित, निःस्वार्थ 5. परिस्थिति विशेष से प्रभावित न होने वाला, उससे सापेक्षता न रखने वाला 6. भौति. जो सीमाओं अथवा प्रतिबंधों पर निर्भर न हो और जिसकी तुलना किसी अन्य से न की जा सके जैसे- बल का मात्रक न्यूटन, निरपेक्ष सत्ता।

निरपेक्षता *स्त्री.* (तद्.) 1. निरपेक्ष होने का गुण या या भाव, किसी वस्तु आदि की अपेक्षा का अभाव, कामना या स्वार्थ का अभाव।

निरपेक्षवाद *पुं.* (तत्.) यह सिद्धांत या मत कि सापेक्ष सत्य के अतिरिक्ति निरपेक्ष व शाश्वत सत्य का ज्ञान प्राप्त करना भी मनुष्य के लिए संभव है। absolutism

निरपेक्ष सौंदर्य *पुं.* (तत्.) समग्र दृष्टि से अतुल्य सौंदर्य।

निरपेक्ष स्वीकृति *स्त्री.* (तत्.) बिना शर्त, प्रतिबंध अथवा नियंत्रण के दी गई स्वीकृति।

निरपेक्षा *स्त्री.* (तत्.) दे. निरपेक्षता।

निरपेक्षित *वि.* (तत्.) 1. किसी वस्तु आदि की अपेक्षा से रहित/दूर जिससे कोई संपर्क/लगाव न रखा गया हो 3. जिसकी अपेक्षा न की जा रही हो, अनपेक्षित।

निरपेक्षी *वि.* (तत्.) अपेक्षा न रखने वाला।

निरबंसी *वि.* (तद्.) जिसके कोई संतान न हो, निर्वंश।

निरबहना *अ.क्रि.* (तद्.) 1. निर्वाह होना, काम चलना, निभना 2. समाप्त होना, बीत जाना पर्या. निरवहना।

निरभिमान *वि.* (तत्.) जिसे अभिमान, घमंड या अहंकार न हो, अहंकार रहित विलो. अभिमानी।

निरभिलाष *वि.* (तत्.) जिसे किसी की अभिलाषा या इच्छा न हो, इच्छा रहित, अनिच्छुक *क्रि.वि.* बिना इच्छा किए।

निरभ्र *वि.* (तत्.) बादलों से रहित, मेघरहित, मेघशून्य।

निरमल *वि.* (तद्.) दे. निर्मल।

निरमोह *वि.* (तद्.) जिसे मोह न हो, मोह रहित; किसी के प्रति प्रेम/ममता न रखने वाला पर्या. निर्मोह, निर्मोही, निरमोही।

निरयन *वि.* (तत्.) ज्यो. अयन से रहित, गणना की वह रीति जिसमें ग्रहों आदि की प्रत्यक्ष स्थिति के देशांतर मान में से अयनांश कम कर दिया जाता है, निरयण तु. सायन।

निरर्गल *वि.* (तत्.) बिना साँकल, कंडे या चटखनी (सिटकनी) का, अर्गला-रहित, जिसमें या जिसके मार्ग में कोई बाधा न हो, निर्बाध, बेरोक-टोक।

निरर्थ *वि.* (तत्.) दे. निरर्थक।

निरर्थक *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई अर्थ न हो, अर्थहीन, बिना मतलब का 2. निष्फल *अव्य.* बेकार में, बिना प्रयोजन के विधि. 1. बिना किसी परिणाम के, विफल 2. बिना किसी उपयोग या लाभ के 4. प्रयोजनहीन। useless

निरर्थक अक्षर *पुं.* (तत्.) भाषा. वह अक्षर जो किसी भाषा विशेष में निरर्थक हों *वि.* एक भाषा की विशिष्ट ध्वनियों किसी अन्य भाषा के लिए निरर्थक हो सकती हैं उदाहरणार्थ मराठी, तमिल या वैदिक संस्कृत की 'ळ' की ध्वनि हिंदी के लिए निरर्थक है। nonsense syllable

निरर्थक शब्द *पुं.* (तत्.) भाषा. भाषा सौंदर्य, स्पष्टीकरण, पाद पूरण इत्यादि के लिए प्रयुक्त ऐसे शब्द जिनका स्वतंत्र अर्थ न हो जैसे- चाय-वाय में वाय शब्द निरर्थक है।

निरर्थक शब्दावृत्ति *स्त्री.* (तत्.) मनो. मानसिक विकृति के कारण निरर्थक शब्दों की बार-बार आवृत्ति।

निरर्ह *वि.* (तत्.) अयोग्य, अपात्र, बिना मूल्य का, अनर्ह विधि. वह व्यक्ति जिसकी कार्य करने अथवा पद धारण करने की पात्रता निरस्त कर दी गई है। disqualified

निरर्हता *स्त्री.* (तद्.) विधि पात्रता से रहित हो जाने जाने की स्थिति।

निरलंकार *वि.* (तत्.) 1. बिना अलंकारों वाला (काव्य), आभूषण रहित 2. बिना सजावट का (घर) 3. सादा।

निरलस *वि.* (तद्.) जिसमें आलस्य, शिथिलता न हो, शिथिलता रहित, आलस्यहीन।

निरवकाश *वि.* (तत्.) 1. (वह स्थान) जिसमें खाली जगह न हो 2. (वह व्यक्ति) जो इतना व्यस्त हो कि जरा भी अवकाश या फुर्सत न हो।

निरवग्रह *वि.* (तत्.) 1. स्वतंत्र, खुदमुखत्यार 2. मनमौजी 3. जिद्दी 4. बेरोकटोक, बेकाबू।

निरवद्य *वि.* (तत्.) 1. जिसे कोई दोष न दे सके 2. दोष रहित, कलंक रहित, अनिंद्य, निर्मल 3. जो आपत्तिजनक न हो।

निरवधि *वि.* (तत्.) 1. जिसकी अवधि असीमित हो 2. निः सीम, अपार, असीम 3. अनंत विधि. बिना किसी अंतिम सीमा के। adinfinitum

निरवधि पट्टा *पुं.* (तत्.+तद्.) राज. किसी स्थावर संपत्ति या भूमि के उपभोग का ऐसा बिना अवधि का अधिकार-पत्र जो स्वामी की ओर से असामी या ठेकेदार को मिलता है।

निरवयव *वि.* (तत्.) 1. अंगों से रहित, जैसे अमीबा 2. जिसमें अलग अलग भाग या अंग न हों।

निरवरोध *वि.* (तत्.) प्रतिबंध रहित, बिना रुकावट का मनो. एक प्रकार की मानसिक अस्थिरता जिसमें बाहरी परिस्थितियों से हुए किसी अवरोधन या निषेध का (अस्थायी) विलोप हो जाता है। disinhibition

निरवलंब *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई सहारा न हो, निराश्रय, बेसहारा, अवलंबहीन, आधारहीन 2. जिसका कोई सहायक न हो।

निरवशेष *वि.* (तत्.) संपूर्ण, समग्र।

निरवसाद *वि.* (तत्.) अवसाद रहित दे. अवसाद।

निरवहना *अ.क्रि.* (तद्.) निरबहना, निभाना।

निरवार *पुं.* (तद्.) 1. बिस्तार, बचाव 2. निपटारा, सुलझाव।

निरवारना *स.क्रि.* (तद्.) 1. निवारण करना, हटाना 2. कष्ट दूर करना 3. सुलझाना, (विवाद/झगड़ा) निपटाना 4. निर्णय करना।

निरवाह *पुं.* (तद्.) 1. उत्तम रीति से वहन, निर्वाह 2. निभाने की क्रिया या भाव, निभाव 3. (कर्तव्य, आज्ञा, निर्देश आदि का) पालन 4. सामंजस्य, विपरीत परिस्थिति में भी अपने को ढालना या समयानुसार आचरण करना।

निरविच्छिन्न *वि.* (तत्.) 1. जिसका क्रम न टूटा हो, अविच्छिन्न 2. सिलसिलेवार 3. निर्मल, विशुद्ध।

निरशन *पुं.* (तत्.) भोजन न करना, उपवास, जिसने कुछ भी न खाया हो, भूखा, निराहार रहने की अवस्था या भाव।

निरशेष *वि.* (तत्.) 1. जिसका कुछ भी अंश शेष न रह गया हो 2. जो कार्य पूरी तरह समाप्त हो चुका हो 3. पूर्णतः नष्ट।

निरसंक *वि.* (तद्.) शंकारहित, निःशंकु, संदेहरहित।

निरस *वि.* (तद्.) नीरस, रस-रहित, स्वादहीन, फीका, रुखा-सूखा, शुष्क, विरक्त, वासना-हीन।

निरसन *पुं.* (तत्.) 1. दूर करना, हटाना; निराकरण, परिहार 2. निकालना, बाहर करना 3. राज. विधि. कानून, आदेश आदि को रद्द करना 4. नए नियम, अधिनियम आदि को लागू करते हुए वर्तमान नियम, अधिनियम आदि के लागू होने की समाप्ति 5. आयु. अनावश्यक/ अनुपयोगी आंतरिक अंगों को दूर करना।

निरसन परीक्षण *पुं.* (तत्.) योग्य या उपयुक्त व्यक्तियों, वस्तुओं आदि का चयन करने के लिए परीक्षण द्वारा अनुपयुक्त व्यक्तियों, वस्तुओं आदि को बाहर करने या निरसन की प्रक्रिया।

निरसन प्रतियोगिता *स्त्री.* (तत्.) खेल. वह प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा, खेल आदि जिसमें सबसे उपयुक्त अथवा योग्य व्यक्ति/दल के चयन के लिए, अयोग्य या अनुपयुक्त व्यक्ति, दल को क्रमशः बाहर कर देने की प्रक्रिया अपनाई जाती है। elimination tournament

निरसन युक्ति *स्त्री.* (तत्.) किसी अवांछित या विपरीत घटना को होने से रोकने के लिए पहले से ही अपनाई गई कोई युक्ति मनो. किसी अवांछित घटना के प्रभाव से शरीर पर बचाव के लिए मानसिक शक्तियों द्वारा तत्काल की गई समुचित संक्रियाएँ। undoing mechanism

निरसित *वि.* (तद्.) 1. जिसका निरसन किया गया या हुआ हो, दूर किया गया या हुआ, निवारित 2. रद्द 3. नष्ट 4. बाहर किया गया, छोड़ा गया पर्या. निरस्त, निरस्तीकृत।

निरस्त *वि.* (तत्.) दे. निरसित।

निरस्तीकृत *वि.* (तत्.) दे. निरसित।

निरस्त्र *वि.* (तत्.) जिसके पास कवच और हथियार न हो, अस्त्रहीन, जिसे अस्त्रहीन कर दिया गया हो।

निरस्त्रीकरण *पुं.* (तत्.) 1. किसी देश राज्य या सेना के अस्त्र-शस्त्र छीनकर उसे निरस्त्र करना 2. 2. राज. किसी देश का सैनिक बल कम करने की प्रक्रिया 3. राज. विश्व में शांति स्थापना के लिए शास्त्रों की संख्या कम करना तथा परमाणु-अस्त्रों पर प्रतिबंध लगाना। disarmament

निरस्त्रीकरण सम्मेलन *पुं.* (तत्.) राज. निरस्त्रीकरण पर चर्चा हेतु विभिन्न राष्ट्रों या उनके प्रतिनिधियों प्रतिनिधियों का सम्मेलन। disarmament summit

निरस्त्रीकृत *वि.* (तत्.) ऐसा देश, राज्य या सेना आदि जिसे अस्त्र-शस्त्रों से विहीन कर दिया गया हो।

निरस्थि *वि.* (तत्.) वह मांस जिसमें से हड्डी पूरी तरह निकाल दी गई हो, जिसके हड्डी न हो, अस्थि विहीन।

निरहंकार *वि.* (तत्.) 1. जिसमें अहंभाव न हो, अभिमान रहित, गर्व-शून्य 2. जिसमें धनसंपत्ति, शरीर आदि के प्रति अहं-भाव न हो, अहंभाव शून्य।

निरहंकारिता *स्त्री.* (तद्.) अभिमान-रहितता, अहंभाव के न होने का भाव। खालिस, बिना मिलावट का।

निरा *वि.* (तद्.) 1. 1. विशुद्ध 2. अधिक, बहुत, बिल्कुल 3. केवल, एकमात्र, निपट, एकदम।

निराई *स्त्री.* (देश.) खेत को निराने की क्रिया अथवा अथवा भाव, मजदूरी दे. निराना कृषि. खेत से घास-पात एवं अनचाहे पौधों को उखाड़-फेंकना। weeding

निराकरण *पुं.* (तत्.) 1. रद्द करने की प्रक्रिया, मिटाना, निरसन, निराकृति 2. किसी भी संदेह प्रश्न, आपत्ति, युक्ति आदि का तर्क पूर्वक खंडन 3. निवारण, परिहार 4. मना करना, छाँटना, अलग करना, हटाना, दूर करना 5. समस्या का हल निकालना विधि. 1. प्राधिकृत और औपचारिक रूप से समाप्ति 2. दोष आदि का हटाया जाना 3. वाद आदि को मानने से इनकार करना।

निराकांक्ष *वि.* (तत्.) जिसे किसी वस्तु की इच्छा न हो, इच्छा से मुक्ति, आकांक्षा रहित, इच्छा रहित व्या. (वाक्य या शब्द के अर्थ आदि को) पूरा करने के लिए जिसे किसी की अपेक्षा न हो।

निराकांक्षा *स्त्री.* (तत्.) आकांक्षा या कामना का अभाव।

निराकांक्षी *वि.* (तत्.) जिसमें आकांक्षा या कामना न हो दे. निराकांक्ष।

निराकार *वि.* (तत्.) जिसका कोई आकार या रूप न हो, आकारहीन, आकार रहित, रूप रहित, आकृति शून्य *पुं.* 1. ब्रह्म, परमात्मा, ईश्वर 2. आकाश।

निराकुल *वि.* (तत्.) 1. जो दुखी, परेशान या घबराया हुआ न हो, धीर, शांत, स्थिर, अनुद्विग्न 2. जो हतबुद्धि न हुआ हो 3. स्वच्छ, निर्मल।

निराकृत *वि.* (तत्.) 1. जिसका निराकरण किया गया हो 2. अस्वीकृत, रद्द किया हुआ, निरस्त 3. जिसका खंडन किया जा चुका हो 4. दूर किया हुआ, अलग किया हुआ।

निराकृति *वि.* (तत्.) 1. आकृति रहित, निराकार 2. जो वेद-पाठ का अध्ययन न करता हो 3. जो पंच महायज्ञ न करता हो *पुं.* निराकरण।

निराक्रंद *वि.* (तत्.) 1. जो शोर न करे 2. शांत, जो शिकायत न करे 3. वह स्थान जहाँ शांति हो, सुनसान।

निराग *वि.* (तत्.) 1. रागशून्य, रागहीन, रागरहित 2. उत्कंठारहित, जिसमें जोश न हो 3. विरक्ति।

निराघात *पुं.* (तत्.) भाषा. किसी शब्द के उच्चारण में किसी विशेष अक्षर या ध्वनि पर बलाघात न होने का भाव। atomic

निराचार *वि.* (तत्.) 1. आचार शून्य, आचारहीन 2. धर्मभ्रष्ट, जिसका आचार समाज विरुद्ध हो।

निराटा *वि.* (देश.) निराला, अनोखा, विलक्षण।

निराडंबर *वि.* (तत्.) आडंबरहीन, बिना दिखावे वाला, बिना तड़क भड़क का।

निरातंक *वि.* (तत्.) 1. जो आतंकित न हो, निर्भय, निडर, भय से मुक्ति 2. जो आतंक उत्पन्न न करे 3. जो पीड़ा रहित हो, स्वस्थ, नीरोग, सुखद।

निरातप *वि.* (तत्.) जिसमें धूप या गर्मी न हो, छायादार, जो तपता न हो।

निरात्म *वि.* (तत्.) आत्मा रहित।

निरादर *पुं.* (तत्.) अनादर, अपमान, आदर का अभाव, बेइज्जती।

निरादान *वि.* (तत्.) कुछ भी प्राप्त न करने वाला *पुं.* आदान का अभाव, न लेने का भाव।

निरादृत *वि.* (तत्.) अपमानित।

निराधार *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई आधार, नींव, बुनियाद या जड़ न हो, निर्मल 2. जो प्रमाणों से सिद्ध न हो सके, अमान्य 3. जिसकी सहायता करने वाला कोई न हो, बेसहारा, आधार रहित, निराश्रय, आधारहीन विधि. बिना किसी आधार, औचित्य या तर्क के। baseless, unfounded

निराधि *वि.* (तत्.) 1. निर्भय, चिंतामुक्त 2. मनोव्यथा से रहित, नीरोग, स्वस्थ।

निरानंद *वि.* (तत्.) जिसमें आनंद न हो।

निराना *स.क्रि.* (तद्.) क्यारी साफ करते समय फसल को हानि पहुँचाने वाले, अपने आप उगे खरपतवार (बेकार और अनावश्यक पौधों) आदि को निकाल फेंकना।

निरापद *वि.* (तत्.) 1. जिसमें कोई संकट या आपत्ति न हो, सुरक्षित, आपत्ति रहित, संकटमुक्त 2. जिससे हानि या अनर्थ का डर न हो, आपदा रहित।

निरापदता *स्त्री.* (तद्.) निरापद होने की स्थिति या भाव।

निरापद दीप *पुं.* (तत्.) भौ. एक प्रकार का सुरक्षित लैंप जो ज्वलनशील गैसों से संपर्क होने पर भी विस्फोट नहीं होने देता, इसका उपयोग खदानों में खनिक कर्मियों की सुरक्षा के लिए किया जाता है। David's' safety lamp

निरामय *वि.* (तद्.) 1. रोग रहित, नीरोग, भला-चंगा 2. दोष रहित, निष्कलंक, निर्दोष 3. निष्कपट, निर्मल, विशुद्ध 4. भरा हुआ, संपूर्ण *पु.* 1. जंगली बकरा 2. सूअर।

निरामिष *वि.* (तत्.) जिसमें मांस न मिला हो ऐसा भोजन, आमिष रहित।

निरामिष भोजी *वि.* (तत्.) शाकाहारी, जो मांस न खाता हो।

निरायास *वि.* (तत्.) बिना प्रयास या परिश्रम से होने वाला, सुकर, आसान, सरल, सहज।

निरायुध *क्रि.वि.* (तत्.) अस्त्रहीन, बिना अस्त्र के निरस्त्र, जिसके हाथ में शस्त्र न हो।

निरार्द्रीकरण *पुं.* (तत्.) 1. किसी वस्तु से गीलापन नमी या सीलन हटने या हटाने की क्रिया या भाव 2. भीगी वस्तु के सूखने या उसको सुखाने का काम, नमी या तरी कम करना, निर्जलीकरण आयु. वमन, रक्तस्राव, अत्यधिक समय तक भूखे-प्यासे रहने या अन्य किसी कारण से शरीर में द्रव (विशेष रूप से जल) तत्व की कमी हो जाने का भाव।

निरालंब *वि.* (तत्.) जिसको सहारा देने वाला कोई न हो, जिसका कोई आलंबन न हो, निराश्रय, आधारहीन।

निरालस *वि.* (तद्.) जिसे आलस्य न हो, फुर्तीला, चुस्त, जिसमें आलस्य का अभाव हो।

निरालस्य *पुं.* (तत्.) निरालस्य होने का भाव।

निराला *वि.* (तद्.) पुं. 1. विलक्षण, सबसे भिन्न, अनोखा, सब से अलग तरह का, अद्भुत, अनूठा, अपूर्व 2. ऐसा स्थान जहाँ कोई मनुष्य न हो, एकांत स्थान, निर्जन।

निरालोक *वि.* (तत्.) 1. प्रकाश रहित, अंधकार पूर्ण, अंधेरा 2. जो देख न सके, दृष्टिहीन, अंधा।

निरावरण *वि.* (तत्.) 1. आवरण रहित 2. आवरण हटाने की क्रिया या भाव।

निरावलंब *वि.* (तद्.) दे. निरवलंब।

निराविषक *पुं.* (तत्.) जो जीव-विष को या उसके प्रभाव को दूर कर दे, जहर मारने वाला (पदार्थ), रोग से शरीर के अंदर उत्पन्न होने वाले विष को यानि शारीरिक विष को या उसके प्रभाव को जो समाप्त कर दे, विषैलापन दूर करने वाला।

निराविषालुता *स्त्री.* (तद्.) जीव-विष की मात्रा या उसके प्रभाव को कम करने का गुण। non-toxicity

निराविषी *पुं.* (तद्.) जीव-विष विहीन, जीव-विष से रहित।

निराश *वि.* (तत्.) जिसे आशा न रह गई हो, हताश।

निराशा *वि.* (तत्.) जिसे आशा न रह गई हो, ना उम्मीद, आशा शून्य, आशारहित, आशा हीन, हताश *स्त्री.* (तत्.) आशाहीनता।

निराशावाद *पुं.* (तत्.) प्रत्येक बात में नकारात्मक पक्ष देखने का स्वभाव, संसार को निराश भरी नजरों से ही देखना, यही सोचना या मानना कि हर कार्य में अंततः परिणाम शुभ नहीं होगा और हम सुखी नहीं हो सकते दर्श. यह सिद्धांत कि यह संसार दुःखमय ही है, जन्म, जीवन और मरण ये सब दुःख ही हैं। passimism

निराशावादी *पुं.* (तत्.) 1. जो समस्त क्रिया कलापों में निराशा और हतोत्साही रहता हो 2. निराशावाद संबंधी, निराशावाद को मानने वाला।

निराशी *वि.* (तद्.) दे. निराश।

निराश्रय *वि.* (तद्.) 1. जिसे कहीं आश्रय न मिले, आश्रय रहित, अशरण, निरालंब, बेसहारा 2. असहाय।

निराश्रित *वि.* (तत्.) 1. अकिंचन 2. निस्सहाय, निराश्रय 2. दीन-हीन।

निराश्रितता *स्त्री.* (तद्.) 1. अकिंचनता, गरीबी 2. अभाव-ग्रस्तता 3. अभाव 4. घोर दरिद्रता।

निरास *वि.* (तद्.) दे. निराश।

निरास्वाद *वि.* (तत्.) स्वादरहित, फीका, बेमजा, जिसमें कुछ भी जायका न हो, सीठा।

निराहार *वि.* (तत्.) 1. जिसने भोजन न किया हो, भूखा, जिसे भोजन न मिले, भोजन से परहेज करने वाला 2. ऐसा अनुष्ठान जिसमें भोजन न किया जाता हो, बिना भोजन का उपवास।

निराहारता *स्त्री.* (तद्.) भोजन न करने की स्थिति या भाव।

निरिंद्रिय *वि.* (तत्.) 1. जिसकी इंद्रियाँ न हो, इंद्रिय रहित 2. विकलांग, अपंग, अशक्त 3. कमजोर, दुर्बल।

निरीक्षक *पुं.* (तत्.) 1. देखने वाला 2. निरीक्षण या देखरेख करने वाला अधिकारी 3. परीक्षा में विद्यार्थियों पर निगरानी रखने वाला अधिकारी।

निरीक्षण *पुं.* (तत्.) 1. देखना, दर्शन 2. यह देखना कि सब बातें ठीक हैं या नहीं 3. परीक्षा में 'विद्यार्थियों' पर रखी जाने वाली दृष्टि, निगरानी। inspection, invigilation

निरीक्षण टिप्पणी *स्त्री.* (तत्.) निरीक्षण के पश्चात् निरीक्षण के सारांश सहित दी गई टिप्पणी।

निरीक्षण प्रमाण पत्र *पुं.* (तत्.) यह प्रमाण पत्र कि निरीक्षण हो चुका है या किया जा चुका है।

निरीक्षणालय *पुं.* (तत्.) 1. निरीक्षक का कार्यालय 2. निरीक्षकों का निकाय।

निरीक्षित *वि.* (तत्.) 1. जिसका निरीक्षण हो चुका हो 2. ध्यान से देखा हुआ 3. जिसकी देखभाल की गई हो।

निरीक्ष्य *वि.* (तत्.) 1. जो देखा जा सके 2. जिसका निरीक्षण होना चाहिए 3. जिसका निरीक्षण होने वाला हो।

निरीश *वि.* (तत्.) 1. जो ईश्वर के अस्तित्व को न मानता हो, नास्तिक 2. जिसका कोई स्वामी न हो, स्वामी रहित 3. स्वयं के अतिरिक्ति किसी अन्य को अपना स्वामी न मानने वाला।

निरीश्वर *वि.* (तत्.) 1. जिस मत या सिद्धांत में ईश्वर न हो, ईश्वर रहित, अनीश्वर 2. ईश्वर के अस्तित्व को न मानने वाला, नास्तिक।

निरीश्वरता *स्त्री.* (तद्.) ईश्वर के न मानने का भाव, नास्तिकता।

निरीश्वरवाद *पुं.* (तत्.) वह सिद्धांत जिसमें ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार न किया जाता हो।

निरीह *वि.* (तत्.) 1. जिसे कोई अभिलाषा, इच्छा या वासना न हो, विरक्त, उदासीन, निरपेक्ष 2. सीधा-सादा और निर्दोष 3. जो क्रियाशील न हो 4. बेचारा 5. चुपचाप पड़ा रहने वाला।

निरुक्त *वि.* (तत्.) 1. निश्चित रूप से कहा या बताया गया, निर्वचन किया हुआ, व्याख्या किया हुआ 2. निश्चित 3. संस्कृत में छह वेदांगों में एक 4. निघंटु की यास्क मुनि विरचित व्याख्या। etymology

निरुक्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. इस बात का विवेचन कि कोई शब्द मूलतः किस भाषा का था और वर्तमान रूप से पहले उमसें क्या क्या बदलाव हुए, किसी पद या वाक्य का व्युत्पत्ति सहित संपूर्ण विवेचन, शब्द की व्युत्पत्ति सहित व्याख्या।

निरुक्तिकार *पुं.* (तत्.) निरुक्ति या परिभाषा देने वाला, निर्वचन करने वाला।

निरुच्छ्वास *वि.* (तत्.) 1. श्वास रहित, जो साँस अर्थात् श्वास न ले रहा हो 2. जहाँ साँस लेने में कठिनाई हो, तंग, सँकरा स्थान जहाँ दम घुटने लगे।

निरुत्तर *वि.* (तत्.) 1. जो उत्तर न दे सके 2. जिसका उत्तर न दिया गया हो 3. जिसका कोई उत्तर न हो, उत्तर रहित 4. चुप 5. जिससे श्रेष्ठ या बड़ा कोई और न हो, लाजवाब।

निरुत्सव *वि.* (तत्.) 1. बिना उत्सवों का (कार्यक्रम इत्यादि) 2. जहाँ उत्सव न होते हो।

निरुत्साह *वि.* (तत्.) 1. जिसमें उत्साह न हो, उत्साही हीन, स्फूर्ति रहित 2. जिसमें उत्साह समाप्त या कम हो गया हो *पुं.* 1. उत्साह का अभाव 2. आलस्य।

निरुत्साहन *पुं.* (तत्.) किसी का उत्साह कम या समाप्त कर देना।

निरुत्साहित *वि.* (तत्.) दे. निरुत्साह।

निरुत्सुक *वि.* (तत्.) जिसमें किसी बात की उत्सुकता न हो।

निरुत्सुकता *स्त्री.* (तद्.) उत्सुकता का न होना।

निरुद्देश्य *वि.* (तत्.) बिना उद्देश्य वाला *क्रि.वि.* बिना किसी उद्देश्य के, यों ही।

निरुद्ध *वि.* (तत्.) 1. जिसका निरोध किया गया हो, रुका हुआ, रोका हुआ, बंधन में पड़ा हुआ 2. *पुं.* योग में वर्णित पाँच मनोवृत्तियों में से एक।

निरुद्ध खाता *पुं.* (तत्.+देश.) वाणि. ऐसा खाता जो कुछ कारणों से ग्राहक द्वारा संचालित नहीं किया जा सकता हो।

निरुद्ध पूँजी *स्त्री.* (तत्.+तद्) वह रकम जिसका सार्थक उपयोग नही हो पा रहा है।

निरुद्ध स्फीति *स्त्री.* (तत्.+तत्.) वाणि. कीमतों की अस्वाभाविक या कृत्रिम रूप से हो रही बढ़त को रोकने की क्रिया। supressed inflation

निरुद्धावस्था *स्त्री.* (तत्.) योग. चित्त की पाँच अवस्थाओं में अंतिम अवस्था जब वह अपनी करणीभूत प्रकृति को प्राप्त होकर निश्चेष्ट हो जाता है *वि.* चित्त की अन्य चार अवस्थाएँ हैं- क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त एवं एकाग्र।

निरुद्यम *वि.* (तत्.) 1. जिसके हाथ में कोई उद्यम उद्यम या काम न हो, बेरोजगार, बेकार।

निरुद्योग *वि.* (तत्.) निकम्मा, जो प्रयत्नशील न हो।

निरुद्योगी *वि.* (तत्.) जो कोई कामकाज न करता हो।

निरुद्वेग *वि.* (तत्.) जिस के हृदय में उद्वेग न उठते हों, उद्वेग रहित, जिसमें उत्तेजना और क्षोभ न हों, शांत, निश्चिंत।

निरुपक्रम *वि.* (तत्.) उपक्रम से रहित।

निरुपद्रव *वि.* (तत्.) (वह स्थान) 1. जहाँ उपद्रव न हो, विपत्ति से रहित, सुरक्षित 2. (वह व्यक्ति) जो उपद्रव न करे।

निरुपभोग *पुं.* (तत्.) उपभोग का अभाव *वि.* जिसका उपभोग न किया गया हो, (वह व्यक्ति) जिसने वस्तु-विशेष का उपभोग न किया हो।

निरुपम *वि.* (तत्.) जिसकी उपमा न दी जा सके, अनुपम, अनुपमेय, सर्वश्रेष्ठ, बेजोड़।

निरुदक *वि.* (तत्.) 1. बिना जल वाला, निर्जल 2. सूखा भोजन।

निरुपद्रवी *वि.* (तद्.) जो उपद्रवी न हो, शांत स्वभाव वाला।

निरुपधि *वि.* (तत्.) 1. बिना आवरण का, निरुद्देश्य, निर्हेतुक 2. अकारण 3. निश्छल, निष्कपट, सरल 4. पवित्र, पावन।

निरुपमित *वि.* (तत्.) दे. निरुपम।

निरुपयोग *वि.* (तत्.) 1. अनुपयुक्ति, उपयोग न किया हुआ 2. जो उपयोग के योग्य न हो, व्यर्थ, अनुपयोगी।

निरुपयोगी *वि.* (तत्.) दे. निरुपयोग।

निरुपांत *पुं.* (तत्.) पत्र. प्रकाशन या मुद्रण में बिना हाशिया छोड़े छपी सामग्री, किनारे से ही या कोर से कोर तक छपा मुद्रण, जिल्द को अंदर के पृष्ठों के आकार के समान काटकर बाँधा हुआ।

निरुपाख्य *वि.* (तत्.) 1. अवास्तविक, बनावटी 2. जिसका अस्तित्व ही न हो, मिथ्या 3. जिसकी व्याख्या न हो, अनिर्वचनीय।

निरुपाधि*वि.* (तत्.) 1. जो सब प्रकार की बाधाओं या बंधनों से रहित हो, परम, चरम, पूर्ण, संपूर्ण 2. सांसारिक बंधनों या मायाजाल से रहित 3. जिसमें किसी प्रकार का विघ्न न हो 4. सुस्पष्ट, सुनिश्चित 5. अप्रतिबंध, बिना शर्त 6. ब्रह्म की एक संज्ञा।

निरुपाधिक *वि.* (तत्.) दे. निरुपाधि।

निरूढ़ *वि.* (तत्.) 1. परंपरागत, प्रचलित रूढ 2. प्रसिद्ध, विख्यात 3. जिसका अधिक व्यवहार होता हो।

निरूढ़ लक्षण *स्त्री.* (तत्.) लक्षणा विशेष जिसमें गृहीत अर्थ रुढ़ हो गया हो, वह लक्षणा जिसमें शब्द का नया माना हुआ अर्थ चल पड़ा हो।

निरूढ़ा *स्त्री.* (तत्.) दे. निरूढ़ लक्षण।

निरूढ़ि *स्त्री.* (तत्.) 1. ख्याति, प्रसिद्धि, हेलमेल, परिचय 2. दृढ़ीकरण।

निरूपक *वि.* (तत्.) निरूपण करने वाला दे. निरुपण।

निरूपक कला *स्त्री.* (तत्.) वह कला जिसका संबंध संबंध वास्तविकता और विशेष रूप से प्रकृति या जीवन के निरूपण से जुड़ा हो।

निरूपण *पुं.* (तत्.) 1. सोच-विचार कर किया जाने वाला निदर्शन 2. प्रस्तुतीकरण, वर्णन 3. आकलन, मूल्यांकन 4. निर्वचन, निर्धारण कथन 5. निर्णय।

निरूपित *वि.* (तत्.) 1. जिसका निरुपण किया गया हो 2. देखा हुआ, विचारा हुआ दे. निरुपण।

निरूप्य *वि.* (तत्.) जिसका निरुपण शेष हो, जो निरुपण के योग्य हो।

निरोग *वि.* (तत्.) स्वस्थ, तंदुरुस्त, रोग-रहित, नीरोग।

निरोध *पुं.* (तत्.) 1. रोकने की स्थिति, क्रिया या भाव 2. अवरोध, घेरा, रुकावट, रोक, अटकाव 3. निग्रह, नियंत्रण, नियमन, संयम 4. चित्त की वृत्तियों का रोकना 5. विधि. नजरबंदी, एक ही स्थान पर या अभिरक्षा में रोके रखना। detention

निरोध आदेश *पुं.* (तत्.) विधि. किसी व्यक्ति या समूह को कार्य विशेष से रोकने या निरुद्ध करने के लिए सक्षम अधिकारी का आदेश। detention order

निरोधक *वि.* (तत्.) 1. निरोध करने वाला 2. रोकने वाला, निवारक, रुकावट करने वाला, बाधक 3. बचाव करने वाला, दबाने वाला प्रशा. नजरबंद करने वाला।

निरोधक उपचार *पुं.* (तत्.) चिकि. वह विधि जिसमें किसी रोग से बचाव के उपाय पहले ही कर लिए जाते हैं, रोग से बचाव में रोग निरोधी उपचार जैसे- टीका, सहायक उपचार।

निरोधगृह *पुं.* (तत्.) 1. विशेष रूप से अपराधी या दोषी किशोरों में सुधार के लिए बनाया गया स्थान या घर जहाँ से उनका बाहर निकलना मना है 2. अभिरक्षा की जगह, किसी अवांछित व्यक्ति आदि को रोके रखने का स्थान ताकि उसके कारण कोई उपद्रव न हो।

निरोधन *पुं.* (तत्.) रोकना, बचाना या निवारण करना।

निरोधभूमि *स्त्री.* (तत्.) योग. चित्त की वह अवस्था जिसमें निरोध के संस्कार उदित हो जाते हैं और चित्त अपने कारण में निमग्न हो जाता है।

निरोधव्य *वि.* (तत्.) रोकने या बाधित करने योग्य, जिससे बचाव किया जाना अपेक्षित हो, निरोध्य।

निरोधाज्ञा *स्त्री.* (तत्.) किसी कार्य विशेष को करने से या होने से रोकने के लिए या उससे बचाव के लिए दिया गया आदेश।

निरोधादेश *पुं.* (तत्.) दे. निरोधाज्ञा।

निरोधी *वि.* (तद्.) निरोधक, प्रतिबंधात्मक, जिसके कारण रुकावट हो रही हो या बाधा पड़ रही हो।

निरोधोपचार *पुं.* (तत्.) दे. निरोधक उपचार।

निरोध्य *पुं.* (तत्.) दे. निरोधव्य।

निरोप *पुं.* (तत्.) आरोपण, निरोपण आयु. ऊतक या अंग के किसी भाग को समान रचना वाले दूसरे अंग या भाग में उसके दोष को सुधारने के लिए प्रत्यारोपित करना उदा. अस्थि निरोप। grafting

निरोपक *वि.* (तत्.) निरोप करने वाला।

निरोपण *पुं.* (तत्.) दे. निरोप।

निरोप्य *वि.* (तत्.) निरोप करने योग्य, जिसका निरोप होना चाहिए।

निर्ऋति, निऋति *स्त्री.* (तत्.) 1. गति अथवा समृद्धि आदि का अभाव 2. नाश, क्षरा, मृत्यु 3. दक्षिण-पश्चिम दिशा की अधिष्ठात्री देवी तु. नैऋत्य।

निकृमि *वि.* (तत्.) जीव. जीवाणु, सूक्ष्म जीव अथवा रोगाणु से रहित। sterile

निर्कृमित *वि.* (तत्.) रसा. रोगाणु रहित की गई (वस्तु)। sterilized

निकृमीकरण *पुं.* (तत्.) रसा. भौतिक अथवा रासायनिक विधि द्वारा किसी वस्तु को रोगाणु, विषाणु या जीवाणु आदि से रहित करना, जैसे-रिवर्स द्वारा पानी की शुद्धि। sterilization

निर्ख *पुं.* (फा.) 1. किसी सौदे के लिए प्रस्तावित की गई कीमत 2. वस्तु विशेष को बेचने की दर, भाव। quotation

निर्गंध *वि.* (तत्.) जिसमें गंध या बू न हो, गंध-विहीन, गंध से रहित।

निर्गंधीकरण *पुं.* (तत्.) दुर्गंध को दूर करने की क्रिया। deodrization

निर्गत *वि.* (तत्.) 1. बाहर निकला हुआ 2. उत्पादित वस्तु, उत्पाद product *पुं.* किसी प्रक्रिया के फलस्वरूप प्राप्त परिणाम, आंकड़े आदि। output

निर्गम *पुं.* (तत्.) 1. बाहर निकलने की क्रिया या बाहर निकलने का भाव 2. बाहर निकलने का मार्ग 3. किसी निश्चित समय पर एक बार में बिक्री के लिए जारी किए गए शेयर या अन्य मदें issue कंप्यू. संसाधित होने के पश्चात् उपभोक्ता को परदे पर उपलब्ध सूचना।

निर्गम कीमत *स्त्री.* (तत्.+अर.) बिक्री के लिए जारी किए जाने पर निश्चित की गई कीमत issue price प्रशा. सार्वजनिक वितरण प्रणाली में कीमत जिस पर उपभोक्ता को कोई वस्तु बेची जाए।

निर्गम डायरी *स्त्री.* (तत्.+अं.) जारी की जाने वाली वाली वस्तुओं के अभिलेख रखने के लिए प्रयुक्त डायरी।

निर्गमन *पुं.* (तत्.) 1. बाहर निकल आना 2. भूवि. भूमितल का समुद्र की अपेक्षा ऊपर उठ जाना 3. वन. किसी पादप के पृष्ठ (तने आदि) पर तीक्ष्ण वर्ध आदि का निकलना, उद्भूतांग।

निर्गम रजिस्टर *पुं.* (तत्.+अं.) जारी की जाने वाली वस्तुओं का अभिलेख रखने के लिए प्रयुक्त पंजिका।

निर्गमित *वि.* (तत्.) 1. जिसका बहिर्गमन हुआ है, जिसे बाहर निकाला गया है।

निर्गमित पूँजी *स्त्री.* (तत्+देश.) वाणि. कंपनी की अधिकृत पूँजी का वह भाग जिसे निवेशकों द्वारा खरीदे जाने के लिए प्रस्तुत किया गया हो।

निर्गर्व *वि.* (तत्.) गर्वशून्य, मद रहित, निरभिमान।

निर्गामी सदस्य *पुं.* (तत्.) कार्यालय आदि से पदमुक्त होने वाला सदस्य।

निर्गुंडी *स्त्री.* (तत्.) एक झाड़ीदार क्षुप जिसका औषधीय उपयोग प्रसिद्धहै।

निर्गुट देश *पुं.* (तद्.+तत्) द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् निर्मित दोनों महाशक्तियों से तटस्थता का संबंध रखने वाले देश, गुट निरपेक्ष देश टि. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, सोवियत संघ और अमरीका दो महाशक्तियाँ उभर कर आईं, आवश्यकता अथवा विवशता के आधार पर विभिन्न देश इन दो महाशक्तियों में से एक के साथ जुड़ गए; भारत के प्रधान मंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू, युगोस्लैविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो और मिश्र के राष्ट्रपति अब्दुल गमाल नासिर के नेतृत्व में कुछ देश ऐसे भी थे जिन्होंने किसी भी महाशक्ति से इस प्रकार का नाता नहीं जोड़ा, देशों के इस वर्ग को निर्गुट देश अथवा गुटनिरपेक्ष देश कहा गया।

निर्गुण *वि.* (तत्.) 1. गुणों से हीन, गुणहीन 2. सत्व, रज तथा तम इन तीनों गुणों से रहित।

निर्गुण ब्रह्म *पुं.* (तत्.) सत्व, रज तथा तम तीनों गुणों से रहित परमात्मा, नित्य शुद्धबुद्धमुक्त ब्रह्म।

निर्गुन *वि.* (तद्.) पूर्वी हिंदी लोकगीतों का एक विशेष प्रकार जिसमें निर्गुण ब्रह्म की उपासना करने वाले संतों का चिंतन अभिव्यक्त हुआ है।

निर्ग्रंथ *पुं.* (तत्.) धार्मिक ग्रंथ को अनुसरण न करने वाला।

निर्घात *पुं.* (तत्.) 1. वायु का आकस्मिक रूप से तेज होना, वातावर्त, बवंडर 2. बिजली की कड़कड़ाहट 3. विनाश 4. आघात।

निर्घिन *वि.* (तद्.) 1. जिसे घृणा न हो 2. जिसे बुरे काम से घृणा न हो 3. निम्न कोटि का, अधम 4. निंद्य 5. बेहया।

निर्घृण *वि.* (तत्.) दे. निर्घिन।

निर्घोष *पुं.* (तत्.) 1. तीव्र ध्वनि 2. भयंकर कोलाहल *वि.* शब्द रहित।

निर्घोषीकरण *पुं.* (तत्.) घोष वर्ण का अघोष उच्चारण।

निर्जन *वि.* (तत्.) 1. मनुष्यविहीन (स्थान) एकांत, सुनसान 2. उजड़ा हुआ (स्थान) जहाँ कोई निवास न करता हो, आबादी-रहित स्थान *पुं.* एकांत स्थान 2. मरुस्थल।

निर्जनता *स्त्री.* (तत्.) 1. सुनसानपन 2. मनुष्यों के विनाश अथवा निष्कासन से निवासियों की संख्या में कमी।

निर्जनीकरण *पुं.* (तत्.) समा. जनसंख्या को कम करना, विनाश अथवा निष्कासन द्वारा लोगों की संख्या को कम करना।

निर्जर *वि.* (तत्.) 1 कभी भी वृद्ध न होने वाला सदा युवा रहने वाला *पुं.* 1. देवता 2. अमृत।

निर्जर पंचमी *स्त्री.* (तत्.) आषाढ़ कृष्ण पंचमी से कार्तिक शुक्ल पंचमी तक निर्जल रहकर उपवास करने का एक जैन-व्रत।

निर्जरा *स्त्री.* (तत्.) 1. साधना द्वारा पूर्वकृत कर्मों का क्षय 2. एक प्रकार की जड़ी-बूटी, गुडुची, गिलोय, अमृता।

निर्जल *वि.* (तत्.) बिना जल के, जल रहित पदार्थ. जिसमें से पूरा जल निकाल दिया गया हो, जिसमें से जल की लेश मात्राएँ तक निकाल दी गई हों पर्या. निर्जलीय। anhydrous

निर्जला एकादशी *स्त्री.* (तत्.) ज्येष्ठ मास में शुक्लपक्ष की एकादशी (ग्यारहवी) तिथि का उपवास जिसमें जल पीना भी निषिद्धहै।

निर्जलीकरण *पुं.* (तत्.) रसा. किसी पदार्थ से उसका जलीय अंश निकाल कर उसे जल-रहित कर देना कृषि. भंडारण-क्षमता बढ़ाने के लिए खाद्य पदार्थों में से अनावश्यक जलीय अंश

निकालने की क्रिया आयु. अधिक वमन, दस्त अथवा पसीना आदि के कारण शरीर में जल का अभाव हो जाना। dehydration

निर्जित *वि.* (तत्.) 1. जिस पर पूरी तरह से विजय प्राप्त कर ली गई हो 2. पूर्ण रूप से वश में किया गया, पूर्णतया वशीकृत।

निर्जिह्व *वि.* (तत्.) 1. जीभ से रहित, न बोलने वाला, जिसके मुँह में जुबान ही न हो।

निर्जीव *वि.* (तत्.) 1. जीवन रहित, जड़ता से युक्त 2. मृत्यु को प्राप्त, मृत 3. साहि. रोचकता के अभाव वाला, नीरस 4. उत्साहहीन, दब्बू।

निर्जीवता *स्त्री.* (तत्.) जड़ता, निष्प्राणता साहि. अरोचकता, नीरसता समा. 1. उत्साह हीनता 2. दब्बूपन दे. निर्जीव।

निर्जीवाणुक *वि.* (तत्.) जीवाणुओं अथवा रोगाणुओं से रहित 2. समा. वंध्या, बाँझ 3. कृषि. अनुर्वर, बंजर (भूमि)1 sterile

निर्जीवाणुकरण *पुं.* (तत्.) आयु. रोगाणुओं को नष्ट करने का कार्य। sterilization

निर्झर *पुं.* (तत्.) 1. जल-प्रपात, झरना 2. स्वच्छ जल का झरना 3. पर्वतीय क्षेत्र का झरना।

निर्झरिणी *स्त्री.* (तत्.) झरने से निकलने वाली नदी।

निर्झरी *स्त्री.* (तत्.) पर्वत से निःसृत नदी दे. निर्झरिणी टि. वह पर्वत, जिससे झरने झरते हो।

निर्णय *पुं.* (तत्.) 1. अनेक विकल्पों के रहते किसी एक विकल्प का चयन, संकल्प 2. दो या अधिक पक्षों को सुनने के पश्चात् न्यायाधीश द्वारा सुनाया गया निश्चयात्मक आदेश, फैसला 3. विवाद के सभी पक्षों पर विचार करके अंतिम रूप से प्रस्तुत किया गया निष्कर्ष, अधिमत। judgement

निर्णयकर्ता *पुं.* (तत्.) परिवार, समाज, राष्ट्र तथा अन्य किसी भी समूह में निर्णय लेने के लिए अधिकृत व्यक्ति।

निर्णयज विधि *पुं.* (तत्.) विधि. 1. न्यायाधीश द्वारा बनाया गया ऐसा कानून जो प्रचलित कानून के विधान तथा 'इक्विटि' के नियमों से भिन्न हो 2. ब्रिटिश कानून से ग्रहण की गई कानूनी पद्धति 3. उच्चतर न्यायालयों द्वारा किए किए गए ऐसे निर्णय जो निम्न न्यायालयों में विधिवत् लागू हों *स्त्री.* निर्णयों द्वारा प्रतिपादित विधि।

निर्णयन *पुं.* (तत्.) विधि. निर्णय करने की प्रक्रिया।

निर्णयन प्रक्रिया *स्त्री.* (तत्.) विधि. निर्णय तक पहुँचने का विधि-विधान दे. निर्णयन।

निर्णयात्मक *वि.* (तत्.) 1. निर्णय से संबद्ध 2. वह विशेष परिस्थिति अथवा क्रिया जो निर्णय तक पहुँचने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो 3. निर्णय के रूप में होने वाला।

निर्णायक *वि.* (तत्.) 1. निर्णय में सर्वाधिक सहायक 2. अंतिम-अंततः जिसके आधार पर निर्णय लिया जाए दे. निर्णयात्मक।

निर्णायक भूमिका *स्त्री.* (तत्.) निर्णय तक पहुँचने वाली आधार भूमि, ऐसी स्थिति जिस से निर्णय करने में योगदान प्राप्त हो दे. निर्णायक।

निर्णायक मत *पुं.* (तत्.) विधि./राज. दोनों विरोधी पक्षों अथवा परस्पर मतभेद रखने वाले सभी पक्षों को समान मत प्राप्त होने पर पीठासीन अधिकारी द्वारा प्रयुक्त अपना मत जो निर्णायक भूमिका निभाए। casting vote

निर्णीत *वि.* (तत्.) जिसके विषय में पहले निर्णय लिया जा चुका हो, निर्धारित, जिसके लिए विवाद की अपेक्षा न हो।

निर्णीत ऋणी *पुं.* (तत्.) विधि. न्यायालय द्वारा जिसे कर्जदार घोषित किया गया हो, जिसे अभी ऋण चुकाना है।

निर्णीत लेनदार *पुं.* (तत्.+देश.) विधि. न्यायालय द्वारा घोषित कर्जदार अर्थात् निर्णीत ऋणी को दिए गए ऋण की राशि वापस लेने का अधिकारी।

निर्णेता *पुं.* (तत्.) प्रशा. 1. (क) विवादी पक्षों के बीच मध्यस्थता करने वाला व्यक्ति (ख) नियमों की प्रयुक्ति को लेकर उत्पन्न विवादों को सुलझाने वाला व्यक्ति judge 2. खेल. (क) खिलाडियों द्वारा खेल के नियमों के सही-सही पालन को सुनिश्चित करने तथा यथा समय नियमानुकूल निर्णय सुनाने के लिए नियुक्त निष्पक्ष विशेषज्ञ (ख) नियमोल्लंघन व खिलाड़ियों के प्रदर्शन का मूल्यांकन अथवा विजेता क्रम में उनके स्थान का निर्धारण करने वाला अधिकारी, निर्णायक, रेफरी। umpire

निर्दंत *वि.* (तत्.) जिसके दाँत न हो, बिना दाँत का, दंतविहीन।

निर्दंभ *वि.* (तत्.) पाखंड, आडंबर अथवा मिथ्या अभिमान से रहित विनम्र, अहंकार रहित।

निर्दग्ध *वि.* (तत्.) जो जला हुआ न हो, अदग्ध।

निर्दय *वि.* (तत्.) जिसके मन में दया भाव ही न हो, दयाविहीन, निष्ठुर, कठोर, क्रूर, अनुदार, बेरहम।

निर्दयता *स्त्री.* (तत्.) दयाहीनता, निष्ठुरता, कठोरता, क्रूरता, रहम न करने का भाव, बेरहमी।

निर्दयी *वि.* (तत्.) दे. निर्दय।

निर्दल *वि.* (तत्.) 1. दल रहित, पत्र विहीन, जिस पादप पर पत्ते न हो 2. राज. जो किसी दल, वर्ग अथवा पक्ष से जुड़ा हुआ न हो, निर्दलीय।

निर्दलन *पुं.* (तत्.) 1. दलन करने का कार्य, नाश करने की क्रिया, विनाश 2. भंग कर देना, भंजन।

निर्दलीय *वि.* (तत्.) बिना दल वाला, जिसका किसी दल विशेष से संबंध न हो, राज. जो किसी दल विशेष का सदस्य न हो, स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़ने वाला प्रत्याशी। independent candidate

निर्दलीय शासन *पुं.* (तत्.) राज. ऐसा शासन जिसमें कोई विशेष दल शासन नहीं करता हो, दल विशेष की प्रभुता से रहित सरकार।

निर्दलीय सदस्य *पुं.* (तत्.) राज. दल-विशेष से संबंध न रखने वाला सदस्य, स्वतंत्र सदस्य।

निर्दलीय सरकार *स्त्री.* (तत्.+फा.) दे. निर्दलीय शासन।

निर्दलीयता *स्त्री.* (तत्.) राज. किसी दल विशेष में सम्मिलित न होने की स्थिति।

निर्दहन *पुं.* (तत्.) 1. पूर्ण रूप से जलाने का कार्य, संपूर्ण रूप से आग में जलाना *वि.* आग में जलाने वाला।

निर्दिष्ट *वि.* (तत्.) 1. वह जिसका निर्देश किया जा चुका हो, उक्त, उल्लिखित, वर्णित 2. जिसके प्रति निर्देश किया गया हो, संकेतित, जिसको निर्देश दिशा गया हो 3. निश्चित किया हुआ, नियत किया गया, सौंपा गया, निर्धारित किया गया।

निर्दूषण *वि.* (तत्.) दोष से मुक्त, दोषहीन, निर्दोष।

निर्देश *पुं.* (तत्.) 1. ठीक तरह से कार्य करने की विधि समझाना 2. आज्ञा, आदेश, निदेश। 3. सही परिणाम प्राप्त करने के उपाय की विधि 4. पुस्तक के पृष्ठ आदि का संकेत, सन्दर्भ।

निर्देशक *पुं.* (तत्.) किसी प्रकार का निर्देश देने वाला व्यक्ति जैसे- चलचित्रों का निर्देशक, मार्गदर्शक-शोधछात्रों का मार्ग दर्शन करने वाला *वि.* 1. निर्देश करने वाला आज्ञा देने वाला 2. संकेत करने वाला, दर्शाने वाला।

निर्देशक सिद्धांत *पुं.* (तत्.) राज. मार्गदर्शन कराने वाले विशेष नियम, कार्य संपन्न कराने वाले निर्देश। guiding principles

निर्देश-ग्रंथ *पुं.* (तत्.) अभिव्यक्त की गई सामग्री में जिन ग्रंथों का उपयोग हुआ हो, संदर्भ पुस्तक।

निर्देश चिह्न *पुं.* (तत्.) पुस्त. संदर्भ की दृष्टि से पुस्तक आदि का संकेत देने के लिए प्रयोग में आने वाले विशिष्ट चिह्न (इत्यादि) भूवि. ज्वारभाटे के अध्ययन हेतु सर्वेक्षण करते समय स्थायी रूप से बनाए जाने वाले चिह्न सि. इंजी. किसी दीवार आदि में सर्वेक्षक द्वारा उत्कीर्ण अथवा अंकित निशान, जिसका उपयोग ऊँचाई नापने के संदर्भ में किया जाता है प्रशा.

निर्धारित किया गया मानक प्रस्थान बिंदु जैसे- विभागीय पदोन्नति के लिए निचले (फीडर) संवर्ग में कार्यनिष्पादन के न्यूनतम स्तर का निर्धारण अर्थात तल चिह्न। bench mark

निर्देशन *पुं.* (तत्.) 1. कार्य विशेष को सम्पन्न करने की प्रक्रिया 2. प्रशा. काम की दिशा बताना; आदेश देना, मार्ग-दर्शन करना 3. फिल्म नाटक या चलचित्र के निर्माण अथवा उसकी प्रस्तुतीकरण को प्रभावशाली बनाने का कार्य 4. प्रबं. उत्पाद विशेष के प्रयोग की विधि समझाना 5. पुस्तक में संदर्भ के पृष्ठ आदि का संकेत करना।

निर्देशन केंद्र *पुं.* (तत्.) वह स्थान जहाँ निर्देशन के प्रशिक्षण की व्यवस्था हो।

निर्देश निबंधन *पुं.* (तत्.) विधि. आयोग अथवा अधिकरण को, कार्य निष्पादन के लिए दी गई निर्देशात्मक नियमावली।

निर्देश न्यायालय *पुं.* (तत्.) विधि. सामान्य न्यायालयों का मार्ग दर्शन करने वाला न्यायालय।

निर्देशपत्र *पुं.* (तत्.) 1. नाम-पत्र, ऐसी पर्ची जिस पर नाम, स्वरूप, स्वामित्व गंतव्य-स्थान आदि अंकित हो 2. किसी व्यक्ति, समूह अथवा आंदोलन आदि का विवरण प्रस्तुत करने वाला कागज-पत्र।

निर्देश बिंदु *पुं.* (तत्.) गणि. निर्देश करने की व्यवस्था में एक स्थिर-बिंदु करने की व्यवस्था जिसकी सहायता से समतल पर स्थित किसी बिंदु की दूरी नापने का कार्य सम्पन्न हो, गोलीय वस्तुओं में अक्षीय बिंदु।

निर्देशांक *पुं.* (तत्.) गणित. किसी बिंदु की स्थिति का निर्धारण व निर्धारित करने वाला संख्या सूत्र। coordinate

निर्देशांक ज्यामिति *स्त्री.* (तत्.) बीजगणितीय विधियों से स्थिति का निर्धारण करने वाली ज्यामिति की शाखा। coordinate geometry

निर्देशाक्ष *पुं.* (तत्.) गणि. वह रेखा जिसके अनुदिश अथवा समांतर कोई निर्देशांक मापा जाता है। coordinate axis

निर्देशात्मक व्याकरण *पुं.* (तत्.) भाषा. परिनिष्ठित और मानक भाषा के नियमों पर आधारित व्याकरण उदा. मेरे को कलकत्ता जाना है के स्थान पर 'मुझे कलकत्ता जाना है', मानक रूप का व्याकरण।

निर्देशात्मक सर्वनाम *पुं.* (तत्.) भाषा. निकटस्थ अथवा दूरस्थ व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान का निश्चयात्मक ज्ञान कराने वाला सर्वनाम जैसे- यह, ये वह, वे, यही, वही आदि।

निर्देशालय *पुं.* (तत्.) शिक्षा. विभिन्न विषयों तथा विविध व्यवसायों के लिए परामर्श प्रदान करने वाला स्थान या केंद्र।

निर्देशिका *स्त्री.* (तत्.) 1. अकारादि क्रम से किसी नगर, जिला अथवा संस्था के निवासियों अथवा सदस्यों के नाम, आदि का विवरण देने वाली पुस्तक 2. छात्रोपयोगी ऐसी पुस्तक जिसमें विविध विषयों एवं व्यवसायों की जानकारी प्राप्त हो सके। guide

निर्देशित अध्ययन *पुं.* (तत्.) शिक्षा. निर्देशक/ मार्गदर्शक द्वारा निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण करते करते हुए किया जाने वाला अध्ययन। guided study

निर्देशित *वि.* (तत्.) जिसका निर्देशन किया जा चुका हो, निर्दिष्ट दे. निर्देश, निर्देशन।

निर्देशित अर्थव्यवस्था *स्त्री.* (तत्.) सरकार अथवा अन्य किसी कार्यपालक प्राधिकारी द्वारा निर्मित योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था टि. इसमें निधिकरण, निवेश एवं बजट निर्माण का कार्य भी सरकार के अधीन रहता है। command economy

निर्देशित कीमत *स्त्री.* (तत्.) अर्थ. कंपनी के व्यावसायिक उद्देश्यों, माँगों की तत्कालीन परिस्थितियों तथा प्रतियोगी कंपनियों की नीतियों आदि के आधार पर कंपनी द्वारा तय की की गई कीमत।

निर्देशी *पुं.* (तत्.) 1. क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में निर्देश देने अथवा निर्णय करने के लिए

सर्वसम्मति से नियुक्त व्यक्ति refree, umpire 2. समन्वयक, समन्वय करने वाला। coordinator

निर्देशीकरण *पुं.* (तत्.) पुस्त. अनुक्रमणिका (सूची) निर्माण करने का कार्य, पुस्तकालय आदि में पुस्तकों के नाम, विषय तथा लेखकादि के आधार पर अकारादि क्रम से निर्मित सूची, पुस्तक के अंत में वर्णित विषयों, विविध नामों आदि की वर्णानुक्रम से बनाई गई सूची। indexing

निर्देश्य *वि.* (तत्.) 1. तर्क. किसी प्रतिज्ञप्ति का पहला पारिभाषित शब्द, जिससे बाद में आने वाले शब्द संबद्ध हो 2. शब्द अथवा प्रतीक की ओर संकेत करने वाली घटना अथवा पदार्थ। referent

निर्देष्टा *पुं.* (तत्.) दे. निर्देशक।

निर्देहता *स्त्री.* (तत्.) देहहीनता, शरीर-विहीनता, देह देह न होने की अवस्था।

निर्दोष *वि.* (तत्.) विधि. जिसने कोई दोष या अपराध न किया हो, बेकसूर। guiltless

निर्दोषता *स्त्री.* (तत्.) निर्दोष होने की अवस्था, बेकसूरी।

निर्दोषिता *स्त्री.* (तत्.) विधि. 1. निरपराधता, निर्दोषता, व्यक्ति को जिस अपराध के लिए दोषी ठहराया गया उससे मुक्त होना 2. निष्कपटता, सरलता, ऋजुता।

निर्धन *वि.* (तत्.) जिसके पास धन न हो, धनहीन, गरीब।

निर्धनता *स्त्री.* (तत्.) धन रहित होने की अवस्था, धनहीनता, मुफलिसी।

निर्धनत्व *पुं.* (तत्.) धनहीनता दे. निर्धनता।

निर्धर्म *वि.* (तत्.) जो धार्मिक न हो, धर्म का पालन न करने वाला।

निर्धातु *वि.* (तत्.) 1. जिसके निर्माण में किसी भी प्रकार की धातु का प्रयोग न हुआ हो 2. धातुहीन, वीर्य रहित।

निर्धार *पुं.* (तत्.) 1. निर्धारण, निश्चय, तय करने का कार्य।

निर्धारक *पुं.* (तत्.) 1. निर्धारण करने वाला 2. अर्थ. कर निर्धारित करने वाला 3. संपत्ति का मूल्य आँकने वाला अधिकारी।

निर्धारण *पुं.* (तत्.) 1. दृढ़ धारणा बनाना 2. अर्थ., प्रशा. कर आदि की देय राशि का प्राधिकृत अधिकारी द्वारा आकलन assessment 3. 3. देय कर के रूप में राशि निर्धारित करना 4. नागरिक सुविधाओं के लिए कर का नियत किया जाना।

निर्धारण वर्ष *पुं.* (तत्.) प्रशा., अर्थ कर आकलन के लिए निश्चित की गई बारह मास की अवधि; (उदा.) भारत में वित्तवर्ष से अगला वर्ष आयकर के लिए निर्धारण वर्ष माना जाता है assessment year

निर्धारित *वि.* (तत्.) 1. जिसका कर अथवा मूल्य आदि निश्चित किया जा चुका हो assessed 2. जिसको लागू किया जा चुका हो, विहित prescribed 3. जिसकी श्रेणी अथवा जिस के स्तर को नियत कर दिया गया हो 4. जो आरक्षित अथवा सुरक्षित करा लिया गया हो booked 5. कृतसंकल्प अथवा कृतनिश्चय। determined

निर्धारित कीमत *स्त्री.* (तत्.+अर.) प्रशा. नियत मूल्य।

निर्धारित प्रपत्र *पुं.* (तत्.) प्रशा. संस्था आदि द्वारा द्वारा विहित अर्थात नियत prescribed form

निर्धारित मूल्य *पुं.* (तत्.) अर्थ., वाणि. वस्तु की लागत, उपयोगिता गुणवता आदि को ध्यान में रखकर प्राधिकृत अधिकारी द्वारा आकलित कीमत। assessed value

निर्धारिती *पुं.* (तत्.) अर्थ. वह व्यक्ति जिसकी आय अथवा संपत्ति आदि पर कर निर्धारण किया गया हो। assessee

निर्धार्य *विं.* (तत्.) अर्थ., वाणि 1. जिसका निर्धारण करना हो 2. निर्धारण किये जाने योग्य

3. जिस को निर्धारण की प्रक्रिया से गुजरना हो। assignable

निर्धार्यता *स्त्री.* (तत्.) अर्थ., वाणि. निर्धारण किए जाने की योग्यता, निर्धारण की अर्हता, निर्धारण की आवश्यकता।

निर्धूम *वि.* (तत्.) 1. धुएँ से रहित, बिना धुएँ क।

निर्धूम चूल्हा *पुं.* (तत्.+तद्) गृह. चूल्हे का एक सुधरा हुआ रूप, जिसका धुआँ घर में नहीं फैलता।

निर्नाथ *पुं.* (तत्.) नाथ रहित, नाथ के बिना, जिसका नाथ अर्थात् स्वामी न हो, नाथहीन।

निर्निमित्त *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई कारण न हो *अव्य.* किसी भी कारण के बिना, अकारण, बेवजह।

निर्निमेष *वि.* (तत्.) जो पलक न झपकाए। स्थिर दृष्टि वाला *अव्य.* बिना पलक झपके, एकटक।

निर्नैतिक *वि.* (तत्.)दर्श. सदाचार-निरपेक्ष abnormal, अनैतिक immoral नीति विरुद्ध। non-ethical

निर्नैतिकतावाद *पुं.* (तत्.) दर्श. एक ऐसा सिद्धांत जिसके अनुयायी नैतिक आदर्श, आत्म संयम पर विश्वास नहीं रखते।

निर्बंध *वि.* (तत्.) 1. बंधन से मुक्त 2. जिसका निषेध न किया हो *पुं.* निरोध, रोक, पाबंदी काव्य. वह काव्य जिसमें कोई क्रमबद्ध कथा न हो, परंपरागत कथा-तत्व रहित कृति।

निर्बंधन *पुं.* (तत्.) विधि. 1. संपत्ति आदि के उपभोग का सीमा निर्धारण, अधिकारों, विकल्पों, मात्राओं आदि को नियंत्रित करना।

निर्बचत *स्त्री.* (देश.) अर्थ. आय की अपेक्षा व्यय अधिक होने की स्थिति, बचत से पैसा निकालकर आवश्यकताओं को पूरा करने की स्थिति।

निर्बल *वि.* (तत्.) 1. बलरहित, बलहीन, शारीरिक दृष्टि से दुर्बल, कमजोर 2. यथेष्ट अधिकार या सत्ता से वंचित, शक्तिहीन 3. प्रभावहीन, ओज रहित।

निर्बलता *स्त्री.* (तत्.) बलहीन होने की अवस्था, दुर्बलता, शक्तिहीनता, प्रभावविहीनता।

निर्बाध प्रतियोगिता *स्त्री.* (तत्.) अर्थ. उत्पादन और वितरण में राजकीय हस्तक्षेप न होने की स्थिति, माँग तथा पूर्ति की बाजारी शक्तियों पर आधारित प्रतियोगिता। pre-competetion

निर्बाध प्रवेश *पुं.* (तत्.) 1. बाधा के बिना अंदर जाने की स्थिति पुस्त. 2. पुस्तकालय में से स्वयं जाकर पुस्तक चयन की स्थिति 3. ऐसी व्यवस्था जिसमें पाठक निधानी (शेल्फ) तक जाकर अपनी आवश्यकता एवं रुचि के अनुरूप पुस्तक देख या ले सके। open entry

निर्बाध *वि.* (तत्.) 1. बाधाओं से मुक्त, बंधन अथवा प्रतिबंध के बिना 2. बिना रोक-टोक के, स्वच्छंद free and easy 2. जिसमें कोई उपद्रव न हो, निरुपद्रव *अव्य.* 4. बिना किसी बाधा के, निरंतर, लगातार, अनवरत खेल. भारोत्तोलन प्रतियोगी द्वारा एक ही प्रयास में बिना झटका दिए भार को जमीन से कंधों तक की ऊँचाई पर ले जाने का कार्य

निर्बाधता *स्त्री.* (तत्.) 1. बाधा अथवा प्रतिबंध से मुक्त होने की स्थिति 2. स्वच्छंदता 3. उपद्रव रहित 4. निरंतरता 5. विधि. कार्य को दुष्कर बनाने वाले तत्वों के निराकरण की स्थिति।

निर्बाधन *पुं.* (तत्.) विधि. बाधा बनकर कार्य को दुष्कर बनाने वाले तत्वों का निराकरण।

निर्बाध बाजार *पुं.* (तत्.) अर्थ. बिना सरकारी माँग एवं पूर्ति के आधार पर कीमत निर्धारित करने वाला बाजार।

निर्बीज *वि.* (तत्.) वह जिसकी बीज-शक्ति अथवा उत्पादन शक्ति विनष्ट हो गई हो, वंश-वृद्धि की शक्ति से रहित 2. बीज रहित नारंगी, बीज रहित नींबू।

निर्बीज ध्यान *पुं.* (तत्.) योग. ऐसा ध्यान जिसमें अभ्यासकर्ता बीज-मंत्र के बिना ही ध्यान करता है।

निर्बीजन *पुं.* (तत्.) निर्बीज करना।

निर्बीज प्राणायाम *पुं.* (तत्.) योग. बीज अर्थात् मंत्र रहित किया जाने वाला प्राणायाम।

निर्बीज समाधि *स्त्री.* (तत्.) योग. 1. असंप्रज्ञात समाधि, ऋतंभरा प्रज्ञा जनित संस्कारों को भी रोक देने से सर्वविध संस्कारों का निरोध होने पर निर्बीज समाधि की प्राप्ति होती है 2. दो प्रकार की समाधियों में से एक जिसमें ध्याता, ध्येय तथा ध्यान की त्रिपुटी नहीं रहती अर्थात् वह समाधि जिसमें आलंबन का अभाव रहता है, इसे असंप्रज्ञात समाधि भी कहते हैं।

निर्बुद्धि *वि.* (तत्.) बुद्धिहीन, मूर्ख।

निर्भय *वि.* (तत्.) भय-मुक्त, जिसे भय न हो, निडर।

निर्भयता *स्त्री.* (तत्.) भयहीनता, निर्भीकता, निडरता।

निर्भर *वि.* (तत्.) 1. किसी अन्य पर अवलंवित, आश्रित, आधारित 2. भरा हुआ, पूर्ण 3. किसी के साथ लगा हुआ, युक्त।

निर्भरता *स्त्री.* (तत्.) निर्भर होने की अवस्था, परावलंबन, पराश्रयता 2. पूर्णता 3. युक्तता।

निर्भार *वि.* (तत्.) भार हीन, हल्का।

निर्भास *पुं.* (तत्.) भासित होना, प्रकट होना।

निर्भिन्न *वि.* (तत्.) 1. छिदा हुआ, छिन्न, फाड़ा हुआ, विदीर्ण।

निर्भीक *वि.* (तत्.) 1. भय-रहित, निर्भय, निडर 2. निर्भयता पूर्वक किया गया कार्य जैसे- निर्भीक भाषण।

निर्भीकता *स्त्री.* (तत्.) निर्भयता, निडरता।

निर्भीत *वि.* (तत्.) निर्भीक, निडर।

निर्भेद *पुं.* (तत्.) 1. छेदन, भेदन 2. विदारण, फाड़ना 3. रहस्य-प्रकटन, भेद खोलना *वि.* भेद-रहित।

निर्भ्रम *वि.* (तत्.) 1. भ्रम से रहित (व्यक्ति) 2. ऐसी बात जिसके विषय में कोई भय न हो, सुस्पष्ट, सुनिश्चित।

निर्भ्रांत *वि.* (तत्.) 1. जो भ्रम-युक्त न हो, अभ्रांत (व्यक्ति) 2. जिसमें भ्रम न हो, निर्भ्रम (पदार्थ अथवा स्थिति) 3. जो भ्रम उत्पन्न न करे, सुनिश्चित, स्पष्ट जैसे निर्भ्रांत भाषा।

निर्मत्सर *वि.* (तत्.) ऐसा व्यक्ति जिसके मन में मत्सर या ईर्ष्या न हो।

निर्मत्स्य *वि.* (तत्.) मछलियों से रहित (स्थान)।

निर्मद *वि.* (तत्.) 1. जो नशे में न हो 2. अभिमान रहित।

निर्मथन *पुं.* (तत्.) सम्यक् प्रकार से किया गया मंथन।

निर्मम *वि.* (तत्.) 1. ममत्व से रहित 2. हृदयहीन, निर्दय, निष्ठुर, कठोर, पाषाण-हृदय।

निर्ममता *स्त्री.* (तत्.) 1. ममताविहीनता 2. निष्ठुरता, कठोरता, निर्दयता, हृदय-हीनता।

निर्मर्याद *वि.* (तत्.) 1. मर्यादा का अतिक्रमण करने वाला (व्यक्ति), अशिष्ट, उद्दंड 2. असमी, सीमा-रहित।

निर्मल *वि.* (तत्.) 1. मलिनता से रहित, मालिन्य-विहीन, स्वच्छ, पारदर्शी जैसे- निर्मल सरोवर 2. निष्कलंक, निष्पाप जैसे- निर्मल चरित्र 3. दुर्भाव-रहित, निष्कपट जैसे- निर्मल हृदय 4. पूर्णत, शांत, व्यथा एवं चिंता से रहित जैसे निर्मल मन।

निर्मलक *पुं.* (तत्.) वस्तुओं को स्वच्छ करने के लिए प्रयुक्त होने वाला तरल अथवा भुरभुरा पदार्थ।

निर्मलता *स्त्री.* (तत्.) 1. स्वच्छता, शुद्धता 2. निष्कलंकता 3. निष्कपटता।

निर्मला *वि.* (तत्.) 1. दुर्गुण, कलंक, कपट, पापादि से रहित महिला 2. *पुं.* निर्मल पंथ नामक सिक्ख पंथ का अनुयायी।

निर्मलिन *वि.* (तत्.) मलिनता से रहित, निर्मल, उज्ज्वल, स्वच्छ, शुद्ध, पवित्र, परिष्कृत।

निर्मली *स्त्री.* (तत्.) वन. एक प्रकार का लंबा वृक्ष जिसके फल श्वेत वर्ण के और सुगंधित होते हैं,

इसकी लकड़ी भवन निर्माण तथा कृषि-कार्य में प्रयुक्त होने वाले उपकरण बनाने में काम आती है।

निर्मलीकरण *पुं.* (तत्.) 1. मार्जन, परिमार्जन, परिष्करण, सम्मार्जन 2. रसा. किसी द्रव (तरल पदार्थ) से ठोस द्रव्यों को निकालने का कार्य। clarification

निर्माक्षिक *वि.* (तत्.) 1. जहाँ मक्खियाँ न हो, मक्खियों से रहित 2. निर्जन, एकांत।

निर्माण *पुं.* (तत्.) प्रशा. 1. भवन बनाने का कार्य 2. बनाने/गढ़ने का कार्य, उत्पादन manufacture 3. समा. अस्तित्व में लाना, उत्पन्न करना, सृजन, सृष्टि जैसे- संस्था का निर्माण 4. प्रणयन, रचना जैसे- *ग्रंथ-निर्माण* 5. विधि. जालसाजी करना, जाली बनाना, संविरचन 6. नाट्य. प्रस्तुति prduction 7. भाषा. वाक्य संरचना। structure

निर्माण कार्य *पुं.* (तत्.) प्रशा. भवन, मार्ग आदि को बनाने का काम। construction

निर्माण विभाग/प्रभाग *पुं.* (तत्.) प्रशा. सरकारी, औद्योगिक उद्यम, परिवहन-प्रणाली अथवा विश्वविद्यालय की प्रमुख स्वायत्त अथवा अर्ध-स्वायत्त प्रशासनिक इकाई जो निर्माण-कार्य संपन्न करती है।

निर्माण शाला *स्त्री.* (तत्.) परि. एक ऐसा स्थान जहाँ विविध निर्माण सामग्री (कल-पुर्जे आदि) को एकत्र कर निर्माण कार्य संपन्न किया जाता है।

निर्माण सामग्री *स्त्री.* (तत्.) विविध प्रकार के निर्माण के कार्य में प्रयुक्त होने वाले उपकरण अथवा उपादानों के भंडार।

निर्माणात्मक *वि.* (तत्.) 1. निर्माण कार्यो से संबद्ध 2. रचनात्मक।

निर्माणी *स्त्री.* (तत्.) प्रशा. कारखाना, उद्योगशाला factory, mill

निर्माता *पुं.* (तत्.) प्रशा. निर्माण करने वाला, बनाने वाला, रचयिता उत्पादक, प्रस्तुतकर्ता producer *वि.* बनाने वाला, उत्पन्न करने वाला, सर्जक।

निर्मात्रिक *वि.* (तत्.) बिना मात्रा का जिसमें (स्वरों की) मात्राओं का प्रयोग न किया गया हो, यथा निर्मात्रिक शब्दों का वाक्य लिखो।

निर्माल्य *पुं.* (तत्.) देवता पर चढ़ाई हुई वस्तु, देवार्पित पदार्थ।

निर्मित *वि.* (तत्.) जिसका निर्माण किया गया हो, जो बनाया गया हो, रचित 2. जिसे उत्पन्न किया गया हो, उत्पादिता 3. जिसका सृजन किया गया हो, सृष्ट।

निर्मित शब्द *पुं.* (तत्.) भाषा. नई संकल्पनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए व्याकरण के नियमानुसार उद्भावित (बनाए गये) नवीन शब्द coined words

निर्मिति *स्त्री.* (तत्.) 1. निर्माण करने की क्रिया अथवा भाव, निर्माण 2. उत्पत्ति 3. रचना, बनावट 4. रचित वस्तु, कृति भाषा. 5. शब्द-निर्माण coinage 6. निर्मित (क्षेत्र)। build up

निर्मुक्त *वि.* (तत्.) प्रशा. 1. कारागार, बंधन आदि से मुक्त किया हुआ released 2. स्वच्छंद, मुक्त, स्वेच्छा से कार्य करने के लिए स्वतंत्र 3. सांसारिक मोह-ममता से मुक्त 4. अलग किया हुआ 5. केंचुली को छोड़ने के तुरंत बाद (सर्प)।

निर्मुक्ति *स्त्री.* (तत्.) प्रशा. 1. कारागार आदि से छूटना-रिहाई released 2. मुक्ति, छुटकारा, जैसे नशे आदि की आदत से मुक्ति 3. सांसारिक प्रपंच से मोक्ष विधि. बाधा, परिरोध, दासत्व आदि से छुटकारा, निर्मोचन।

निर्मूल *वि.* (तत्.) 1. जड़/मूल से रहित 2. पूर्णतया नाश को प्राप्त, विनष्ट 3. निराधार (बात), बेसिर पैर का, बेबुनियाद।

निर्मूलक *वि.* (तत्.) बिना मूल का, निराधार, बेबुनियाद।

निर्मूलन *पुं.* (तत्.) 1. जड़ से उखाड़ फैंकना, समूल नष्ट करना 2. पूर्ण रूप से नाश करना 3. निराधार सिद्ध करना 4. राज. पूर्ण रूप से उन्मूलन। extermination

निर्मृष्ट *वि.* (तत्.) 1. धोया हुआ, पोंछा हुआ 2. रगड़ कर साफ किया हुआ।

निर्मेघ *वि.* (तत्.) बादलों से रहित, मेघविहीन (गगन)।

निर्मेध *वि.* (तत्.) जिसमें मेधा (धारण शक्ति का अभाव हो) जड़बुद्धि, मूर्ख।

निर्मेरा *पुं.* (तत्.) वह वस्तु जिसका निर्माण किया जाना है गणित., ज्या. निर्देशानुसार निर्मित की जाने वाली ज्यामितीय आकृति। problem

निर्मोक *पुं.* (तत्.) 1. साँप की केंचुली 2. शरीर के ऊपर का चर्म, त्वचा 3. त्यागना, छोड़ना 4. आकाश 5. वायुमंडल।

निर्मोचन *पुं.* (तत्.) बंधन से मुक्त होना, छूटना अथवा छोड़ना रिहाई भाषा. स्वनों के उच्चारण की प्रक्रिया में वह अवस्था जब करण और उच्चारण स्थान में बने अवरोध के खुल जाने के उपरांत वायु बाहर निकल जाती है release विधि. 1. छोड़ना अथवा अधिकार का त्याग करना, यथा-ऋण निर्मोचन 2. संपत्ति का हस्तांतरण प्राणि. कुछ जीवों द्वारा समय-समय पर त्वचा की बाह्य परतों को उतार देने का कार्य जैसे-सर्प केंचुली का निर्मोचन करता है मनो. एक प्रकार की मनश्चिकित्सा जिसमें रोगी के शत्रुतापूर्ण एवं विध्वंसक आवेगों को उन्मुक्त अभिव्यक्ति के द्वारा शांत करने का प्रयत्न किया जाता है।

निर्मोल *वि.* (तत्.) वह पदार्थ जिसका मूल्य न आंका जा सके, अमूल्य, मूल्यातीत, अमोल, अनर्घ।

निर्मोह *पुं.* (तत्.) अपने शरीर, सांसारिक संबंधियों, धन-वैभव आदि के अभाव में आसक्ति *वि.* ममता से रहित, मोह से मुक्त व्यक्ति।

निर्मोही *वि.* (तत्.) मोह-ममता से रहित।

निर्यात *पुं.* (तत्.) अर्थ.वाणि. विदेश में विक्रय हेतु माल भेजना। export

निर्यात संवर्धन *पुं.* (तत्.) अर्थ.वाणि. निर्यातकों को विशेष सहयोग प्रदान कर निर्यात को प्रोत्साहित करने का कार्य। export promotion

निर्यातक *वि.* (तत्.) अर्थ. वाणि. निर्यात करने वाला। निर्यातक।

निर्यातकर्ता *वि.* (तत्.) अर्थ.वाणि. निर्यात करने वाला, विक्रय के लिए माल को विदेश भेजने वाला।

निर्यात-शुल्क *पुं.* (तत्.) अर्थ.वाणि. स्वदेश से विदेश माल भेजने पर सरकार द्वारा लगाए जाने जाने वाला कर।

निर्यास *पुं.* (तत्.) वन.आयु. 1. कतिपय वृक्षों से रिसने वाला तरल पदार्थ जो प्रायः गाढ़ा होने पर जम जाता है तथा गोंद, अफीम आदि का रूप धारण कर लेता है, इसका प्रयोग औषधि आदि के रूप में होता है 2. जड़ी-बूटियों को उबाल कर बनाया जाने वाला काढ़ा, क्वाथ।

निर्युक्तिक *वि.* (तत्.) युक्ति रहित, जो युक्तियुक्त, तर्क संगत अथवा बुद्धिसंगत न हो।

निर्योग्यता *स्त्री.* (तत्.) 1. प्रशा. कोई स्थायी शारीरिक न्यूनता जिसके कारण व्यक्ति सामान्य जीवन यापन करने अथवा सौंपे गए विशिष्ट कार्यों को करने एवं कराने में असमर्थ हो जैसे- एक हाथ वाला अपंग व्यक्ति सिलाई का कार्य नहीं कर सकता 2. विधि. कुछ विशिष्ट कार्यों को करने अथवा कुछ विधिक अधिकारों का उपयोग करने की क्षमता का अभाव। disability

निर्लज्ज *वि.* (तत्.) 1. लज्जा रहित, लज्जा विहीन, बेशर्म, बेहया 2. धृष्ट, अविनीत।

निर्लज्जता *स्त्री.* (तत्.) निर्लज्ज होने की स्थिति, लज्जाहीनता, बेशर्मी 2. धृष्टता, ढिठाई।

निर्लज्जा *स्त्री.* (तत्.) 1. लज्जाहीनता *वि.* निर्लज्ज निर्लज्ज (स्त्री.)।

निर्लाभ *वि.* (तत्.) (अर्थ.) लाभ-प्राप्ति से वंचित ऐसा व्यक्ति जिसे उसके कार्य का लाभ न मिले जैसे- निर्लाभ कृषक।

निर्लिप्त *वि.* (तत्.) 1. निरासक्त, किसी के प्रति आसक्ति (लगाव) से रहित 2. सांसारिक विषयों से विमुख, वह जिसे विषयों से प्राप्त होने वाला सुख आकृष्ट न कर सके।

निर्लेप *वि.* (तत्.) 1 निर्लिप्त 2. दोष-रहित 3. किसी भी प्रकार के लेप से रहित।

निर्लेपक *पुं.* (तत्.) रसा. ऐसा रासायनिक पदार्थ जो धातु आदि से उस पर लगे लेप को हटाने में समर्थ हो। stripping agent

निर्लोभ *वि.* (तत्.) लालच से रहित।

निर्वंश *वि.* (तत्.) 1. वह जिसके वंश में अन्य कोई जीवित न हो 2. जिसका वंश पुत्र के अभाव में आगे न बढ़ पाए।

निर्वचक *पुं.* (तत्.) 1. निर्वचन करने वाला, भाष्यकार 2. दुभाषिया 3. कंप्यू. प्रक्रिया सामग्री (सॉफ्टवेयर) जो संग्रहण किए बिना ही उच्चस्तरीय भाषा के आदेशों को यंत्र-भाषा में परिवर्तित कर देती है।

निर्वचन *पुं.* (तत्.) 1. साहि. किसी शब्द, वाक्य अथवा पाठ के अर्थ का प्रसंग विशेष के अनुसार निर्धारण 2. प्रशा. विधि. किसी नियम, विनियम, अधिनियम, प्रावधान अथवा उक्ति का अर्थ स्पष्ट करना या उसकी व्याख्या करना 3. *वि.* जो चुप हो, मौन 4. निरुत्तर।

निर्वचन खंड *पुं.* (तत्.) विधि. अधिनियम, नियम आदि की वे धाराएँ जिनमें उनके अंतर्गत विशिष्ट शब्दों की परिभाषाएँ दी गई हों।

निर्वचनीय *वि.* (तत्.) 1. शब्द आदि जिनका निर्वचन किया जाना हो 2. निर्वचन के योग्य अर्थात जिनका निर्वचन किया जाना संभव हो।

निर्वचित्र *पुं.* (तत्.) कंप्यू. एक प्रक्रिया सामग्री (सॉफ्टवेयर) जो विभिन्न वैज्ञानिक आदेशों को यंत्र-भाषा में परिवर्तित करने में समर्थ है।

निर्वनन *पुं.* (तत्.) वन का नष्ट हो जाना।

निर्वनीकरण *पुं.* (तत्.) जंगलों को काटना, वनों का उन्मूलन, वन नाशन। deforestation

निर्वर्ण *वि.* (तत्.) 1. समा. (वर्ण व्यवस्था में) वर्ण-हीन, वह जिसका कोई वर्ण नहीं जैसे- संन्यासी निर्वर्ण होता है 2. वर्ण (रंग) से रहित।

निर्वर्तक *वि.* (तत्.) कार्य को निष्पन्न करने वाला, काम पूरा करने वाला।

निर्वर्तन *पुं.* (तत्.) कार्य को पूरा करने की क्रिया अथवा भाव, निष्पादन।

निर्वल्कन *पुं.* (तत्.) छिलका अथवा छाल निकालने की क्रिया या भाव।

निर्वसन *पुं.* (तत्.) वस्त्रविहीन, नग्न जैसे- निर्वसन निर्वसन साधु।

निर्वसना *वि.* (तत्.) वस्त्रहीना, नग्ना, जैसे- निर्वसना निर्वसना मूर्ति।

निर्वसीयत *अव्य.* (तत्.+अर) विधि. बिना कोई इच्छा पत्र छोड़े, वसीयत किए बिना, इच्छापत्र (विल) लिखे बिना। intestate

निर्वसीयता *स्त्री.* (तत्.+अर) विधि. वसीयतनामा लिखे बिना व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर उसकी एवम् अचल संपत्ति के निपटारे के विषय में उत्पन्न परिस्थिति अथवा दशा। intestacy

निर्वसीयती *पुं.* (तत्.+अर) विधि. 1. वसीयत रहित, इच्छापत्र रहित 2. मृत व्यक्ति जिसने वसीयत न की हो। intesty

निर्वहण *पुं.* (तत्.) 1. समापन, पूर्णता 2. समाप्त करना अथवा पूरा करना 3. विनाश 4. निर्वाह, गुजारा 5. नाट्य. नाटक का अंत।

निर्वहण संधि *स्त्री.* (तत्.) नाट्य. नाटक की पाँच संधियों में से अंतिम जिसमें एक ही प्रमुख प्रयोजन में कार्य और फलागम के साथ ही अन्य अर्थों की भी समाप्ति हो जाती है।

निर्वहन *पुं.* (तत्.) प्रशा. 1. पूरा करना, कर्तव्य का पालन करना, निभाना, निबाहना 2. निर्वाह, निभाव, कर्तव्य-पालन। performance

निर्वाक् *वि.* (तत्.) मौन, चुप, अवाक्।

निर्वाचक *पुं.* (तत्.) (राज.) 1. वह जो निर्वाचन करे, अपना मत देकर चुनने वाला। elector, electoral

निर्वाचक गण *पुं.* (तत्.) विधि.राज. निर्वाचकों का वह समूह जिसका समूहन क्षेत्रीय आधार पर न होकर विशिष्ट वर्गीय आधार पर होता है। electorate

निर्वाचक नामावली *स्त्री.* (तत्.) विधि.राज. निर्वाचन में मतदान करने की पात्रता प्राप्त व्यक्तियों की नाम-सूची (जिसका प्रकाशन संबंधित चुनाव से पूर्व कर दिया जाना, अनिवार्य होता है। electoral roll, voter list

निर्वाचक मंडल *पुं.* (तत्.) राज.विधि. मतदान में भाग लेने की पात्रता प्राप्त मत दाताओं का पूरा समूह। electoral college

निर्वाचक सूची *स्त्री.* (तत्.) विधि.राज. वह सूची जिसमें किसी चुनाव क्षेत्र के मतदाताओं के नाम, आयु तथा पता आदि लिखे होते हैं, निर्वाचक नामावली, मतदाता-सूची। electoral roll

निर्वाचन *पुं.* (तत्.) विधि. मतदान द्वारा प्रतिनिधि का चयन, इस प्रकार के चयन की प्रक्रिया पर्या. चुनाव। election

निर्वाचन अधिकार *पुं.* (तत्.) विधि.राज. निर्वाचन में प्रत्याशी बनने, प्रत्याशी बने रहने या बैठ जाने, मतदान करने या न करने का अधिकार। electoral right

निर्वाचन अधिकारी *पुं.* (तत्.) विधि. निर्वाचन संपन्न कराने के लिए प्राधिकृत अधिकारी electoral officer

निर्वाचन आयुक्त *पुं.* (तत्.) विधि.राज. निर्वाचन कार्य के लिए गठित आयोग का सदस्य। election commissioner

निर्वाचन आयोग *पुं.* (तत्.) विधि. प्रतिनिधियों के चयन की व्यवस्था करने के लिए नियुक्त सांविधिक अभिकरण। election commission

निर्वाचन क्षेत्र *पुं.* (तत्.) 1. राज. प्रशासनिक क्षेत्र जहाँ के मतदाता अपना प्रतिनिधि चुनकर संसद, विधानमंडल, स्थानीय-स्वशासन आदि में भेजते हैं constituency 2. (क) क्षेत्रीय आधार पर निर्वाचकों का समूह जो अपने क्षेत्र के लिए प्रतिनिधि का चुनाव करें (ख) राज्य आदि क्षेत्रीय विभाजन जिसका प्रतिनिधि विधान सभा, संसद आदि में निर्वाचित सदस्य करे। electorate constituency

निर्वाचित *वि.* (तत्.) राज. 1. जिसका निर्वाचन हुआ हो 2. जो सर्वाधिक मत प्राप्त कर विजयी घोषित किया गया हो। elected

निर्वाच्य *वि.* (तत्.) न कहने योग्य (शब्द, या बात), अवस्था राज. (क) जिसके निर्वाचन की संभावना हो, चुने जाने योग्य (ख) जिसका चुनाव होने वाला हो।

निर्वाण *पुं.* (तत्.) 1. दीपक आदि का बुझना, निर्वापण 2. मृत्यु 3. मोक्ष, मुक्ति (बौद्ध) व्यक्ति के अस्तित्व का पूर्णतः अंत, शून्य-स्थिति की प्राप्ति।

निर्वात *वि.* (तत्.) 1. बिना हवा वाला स्थान, वायु रहित 2. भौ. (स्थान) जहाँ पर कोई भी द्रष्टा न हो, विशेषकर जहाँ से वायु को भी बाहर निकाल दिया गया हो vacuum

निर्वातक *पुं.* (तत्.) भौ. 1. ऐसा यंत्र विशेष जो किसी भी स्थान को वायु-रहित अथवा किसी द्रव्य से रहित कर देने में समर्थ हो।

निर्वाप *पुं.* (तत्.) 1. विनाश 2. अग्नि अथवा दीपक को बुझाना 3. दान 4. वपन।

निर्वापण *पुं.* (तत्.) 1. विनाश करना 2. अग्नि अथवा दीपक को बुझाना 3. बीज आदि का बोना।

निर्वापन *पुं.* (तत्.) विधि. 1. अधिकार आदि का पूर्णतः समापन extinguishment 2. बुझाना, मिटा देना, समाप्त करना, मात देने का भाव। extinction

निर्वापित *वि.* (तत्.) बुझा दी गई अग्नि अथवा बुझाया गया दीपक।

निर्वार *पुं.* (तत्.) निवारण।

निर्वार्य *वि.* (तत्.) जो निःशंक होकर पूरी निष्ठा से परिश्रम पूर्वक कर्म में प्रवृत्त हो, जिसका निवारण दुष्कर हो, जिसे रोका न जा सके।

निर्वास *वि.* (तत्.) जिसके निवास के लिए कोई स्थान न हो, वसस्थान रहित, बेघर।

निर्वासक *पुं.* (तत्.) निर्वासित करने वाला, स्थान विशेष से बाहर करने वाला।

निर्वासन *पुं.* (तत्.) 1. किसी को किसी स्थान अथवा घर आदि से बलपूर्वक निकाल देना, निष्कासन 2. समा. किसी व्यक्ति को समूह से निकाला जाना 3. राज. गैरकानूनी अथवा आपत्तिजनक गतिविधियों के कारण किसी व्यक्ति को गाँव, नगर, राज्य एवं देश से बलपूर्वक निकाल देना, देश निकाला। expullsion

निर्वासना *स.क्रि.* (तद्.) निर्वासित करने की क्रिया।

निर्वासना *वि.* (तत्.) वासना रहित, आसक्ति विहीन।

निर्वासित *वि.* (तत्.) जिसे किसी विशेष कारण से जबरदस्ती निकाल दिया गया हो, निकाला हुआ।

निर्वास्य *वि.* (तत्.) जिसे निर्वासित किया जाना है, जो निर्वासन के योग्य हो।

निर्वाह *पुं.* (तत्.) 1. उत्तम रीति से किया गया कार्य-वहन, निर्वहण 2. निभाव, निबाहना 3. आज्ञा, कर्तव्य, निर्देशादि का सम्यक रूप से पालन 4. समा.,प्रशा. संबंधों अथवा परंपरा आदि की मर्यादा की रक्षा के लिए विपरीत परिस्थितियों में सामंजस्य बिठाना accommodation 5. जीने के लिए पर्याप्त रोटी, कपड़ा, निवास, आदि की व्यवस्था, गुजर-बसर का प्रबंध। subsistence

निर्वाह अनुदान *पुं.* (तत्.) प्रशा. किसी सामान्य व्यक्ति के जीवन-यापन के लिए आवश्यक वस्तुओं तथा सेवाओं को प्राप्त कराने के लिए दिया जाने वाला धन। subsistence grant

निर्वाहक *वि.* (तत्.) निर्वाह (गुजर-बसर) करने वाला।

निर्वाह खर्च *पुं.* (तत्.+अर) अर्थ. किसी सामान्य औसत परिवार के सामान्य जीवन-निर्वाह के लिए अनिवार्य वस्तुओं तथा सेवाओं को उपलब्ध कराने की औसत लागत।

निर्वाहण *पुं.* (तत्.) 1. निर्वाह करना, निबाहना, निभाव 2. कुछ समय के लिए किसी कार्य-भार को ग्रहण करना।

निर्वाह भत्ता *पुं.* (तत्.+तद्) (प्रशा.) निलंबित कर्मचारियों को अपने परिवार के अनिवार्य खर्चों के लिए दिया जाने वाला भत्ता जो उनके सामान्य वेतन भत्तों का एक निर्धारित अंश होता है। subistence allowance

निर्वाह मजदूरी *स्त्री.* (तत्.+फा.) अर्थ., समा. जीवित रहने के लिए पर्याप्त मजदूरी। living wage

निर्वाहमात्र मजदूरी *स्त्री.* (तत्.+फा.) अर्थ. जीवित रहने मात्र के लिए पर्याप्त मजदूरी। subsistense wage

निर्वाह व्यय *पुं.* (तत्.) दे. निर्वाह खर्च तथा निर्वाहिकी।

निर्वाह सूचकांक *पुं.* (तत्.) अर्थ. एक विशिष्ट उपभोक्ता द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली वस्तुओं एवं सुविधाओं पर होने वाले व्यय में आए परिवर्तनों को एक आधार अवधि में उन्हीं वस्तुओं एवं सुविधाओं पर होने वाले खर्च के आधार पर प्रतिबिंबित करने वाला सूचकांक। cost of living index

निर्वाह स्तर *पुं.* (तत्.) अर्थ. सामान्य जीवन-यापन में अपेक्षित साधनों के आधार पर निर्धारित किया जाने वाला जीवन-स्तर, आर्थिक स्तर।

निर्वाहिका *स्त्री.* (तत्.) दे. निर्वाहिकी।

निर्वाहिकी *स्त्री.* (तत्.) जीवन-यापन/भरण-पोषण के के निमित्त आवश्यक खर्च 2. विधि. पुरुष अथवा स्त्री द्वारा निर्वाहिती का त्याग किए जाने जाने पर अदालत के आदेश पर त्यागने वाले पक्ष से परित्यक्त पक्ष को दिलवाई जाने वाली धनराशि, इस धनराशि की मात्रा तथा इसके भुगतान की अवधि त्यागने वाले व्यक्ति की आर्थिक स्थिति, स्तर, तथा अन्य परिस्थितियों पर निर्भर करती है पर्या. निर्वाह-धन, निर्वाह-व्यय दे. गुजारा भत्ता (हिंदू विवाह अधिनियम, धारा-25) 3. विधि. तलाक के पश्चात् अथवा अभियोग अवधि में पति की आय एवं संपत्ति से पत्नी को प्राप्त होने वाला खर्च।

निर्वाही कृषि *स्त्री.* (तत्.) कृषि. कृषि उद्यम जिससे जिससे कृषक परिवार के सामान्य भरण-पोषण

मात्र के लिए (न कि बाजार में बेचने के लिए) उपज मिल पाती हो। subsistence farming

निर्विकल्प *वि.* (तत्.) 1. विकल्प परिवर्तन से रहित 2. *पुं.* ज्ञाता-ज्ञेय आदि के भेद तथा विशेष्य एवं विशेषण के संबंध से रहित वह ज्ञान जिसमें केवल ब्रह्म एवं आत्मा की एक रूपता का अखंड बोध होता है। (न्याय, तर्क) एक प्रकार का प्रत्यक्ष ज्ञान जिसमें नाम, जाति आदि से रहित केवल, एक रस और एक रूप होने का ज्ञान निहित होता है।

निर्विकल्पक *वि.* (तत्.) दे. निर्विकल्प।

निर्विकल्पक समाधि *स्त्री.* (तत्.) 1. योग. समाधि समाधि जिसमें शब्द, अर्थ अथवा ज्ञाता, ज्ञान एवं ज्ञेय का भेद नहीं रहता, केवल अर्थ पर ही मन एकाग्र बना रहता है 2. वेदांत ऐसी समाधि जिसमें ज्ञाता तथा ज्ञान का भेद समाप्त हो जाता है केवल ब्रह्मतत्व का ही दर्शन होता है।

निर्विकार *वि.* (तत्.) 1. परिवर्तन रहित 2. मनोविकार अथवा विकार से रहित 3. स्वार्थ रहित 4. उदासीन 5. *पुं.* परब्रह्म।

निर्विघ्न *वि.* (तत्.) 1. विघ्न-बाधाओं से रहित 2. *क्रि.वि.* बिना किसी विघ्न अथवा बाधा के, अबाध रूप से।

निर्विचार *वि.* (तत्.) 1. विचार-शून्य 2. जो किसी भी बात पर विचार न करे, अविचारी, अविवेकी 3. *पुं.* योग. समाधि का एक प्रकार जिसमें सूक्ष्म तन्मात्राओं पर विचार करते-करते निर्विचार की स्थिति आ जाए और जिस पदार्थ का चिंतन कर रहे हैं, केवल वही ध्यान का विषय रह जाए।

निर्वितर्क *वि.* (तत्.) 1. योग. वितर्क रहित 2. *पुं.* योग.) संप्रज्ञात समाधि का एक प्रकार जिसे निर्विकल्प समाधि भी कहा जाता है। स्थूल पदार्थों में शब्द (नाम) अर्थ (रूप) और ज्ञान के विकल्पों से रहित केवल अर्थ मात्र से आभासित चित्तवृत्ति हो जाती है।

निर्विभाग *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई विभाग न हो 2. जिसे किसी भी विभाग का दायित्व न सौंपा गया हो, विभाग रहित।

निर्विभाग मंत्री *पुं.* (तत्.) राज. मंत्रिमंडल का वह मंत्री जिसे कोई विशेष विभाग न दिया गया हो, वह केवल समय-समय पर प्रधानमंत्री अथवा मुख्यमंत्री द्वारा सौंपे गए कार्यों को करता हो।

निर्विभेदन *पुं.* (तत्.) जीव. कोशिकाओं एवं ऊतकों का और अधिक पहले जैसी सामान्य स्थिति में प्रत्यावर्तन।

निर्विरोध *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई विरोध न हो 2. सर्वसम्मत 3. राज. किसी विरोधी पक्ष के विरोध के बिना ही, विरोध रहित *क्रि.वि.* 1. बिना किसी प्रकार के विरोध के 2. सर्वसम्मति से। unopposed

निर्विरोध निर्वाचन *पुं.* (तत्.) प्रशा.राज. किसी पद के लिए ऐसा चुनाव जिसमें एक ही प्रत्याशी खड़ा हुआ हो, अतः जो बिना मतदान के ही विजयी घोषित कर दिया गया हो पर्या. अविरोध निर्वाचन।

निर्विवाद *वि.* (तत्.) जिसके विषय में कोई भी विवाद नहीं हो सकता हो, सर्वमान्य, सर्वस्वीकृत।

निर्विवादित *वि.* (तत्.) दे. निर्विवाद।

निर्विवेक *वि.* (तत्.) 1. जिसमें अच्छे बुरे में अंतर कर पाने की सामर्थ्य न हो, विवेक रहित 2. मूर्ख।

निर्विवेकता *स्त्री.* (तत्.) 1. विवेकहीनता 2. मूर्खता।

निर्विशंक *वि.* (तत्.) 1. शंका (संदेह) रहित 2. निर्भय, निडर।

निर्विशेष *वि.* (तत्.) 1. जो भेद-भाव न करे 2. सदा एकरूप रहने वाला 3. जिसमें कोई अंतर (विशेष) न हो, पूर्ववत्, वैसा ही 4. *पुं.* परब्रह्म, परमात्मा।

निर्विशेषण *वि.* (तत्.) विशेषणों (विशेषताओं) से रहित, उपाधि रहित।

निर्विष *वि.* (तत्.) 1. विष रहित, जिसमें जहर न हो, विषहीन 2. रसा. वह पदार्थ जो नष्ट करने में समर्थ गैसीय विष से रहित हो 3. वह प्राणी विशेष जिससे विष निकाल दिया गया हो, यथा निर्विष सर्प आदि *पुं.* द्वेष, विद्वेष, उग्रता, कटुता कटुता आदि से रहित व्यक्ति।

निर्विषमीकरण *पुं.* (तत्.) भाषा. किन्हीं परिवेशों में स्वनिमों का व्यतिरेक अथवा वैषम्य समाप्त हो जाना, अर्थात् दोनों में से केवल एक का ही प्रयोग होना उदा. रूसी, जर्मन भाषाओं में क, ग व्यतिरेक सिद्‌ध स्वनिम हैं, लेकिन शब्दांत में यह व्यतिरेक काम नहीं करता, वहाँ केवल अघोष उच्चारण ही होता है (चाहे वर्ण कोई भी हो) पर्या. निर्वैषम्य।

निर्विषीकरण *पुं.* (तत्.) चिकि. विषैले पदार्थों को विषविहीन करने की प्रक्रिया 2. मनो. मनोरोगी के द्वेष, उग्रता, कटुता आदि को दूर करने की क्रिया।

निर्वीज *वि.* (तत्.) दे. निर्बीज।

निर्वीर *वि.* (तत्.) वीरों से रहित, वीरविहीन।

निर्वीर्य *वि.* (तत्.) 1. शक्ति-रहित, अशक्त 2. नपुंसक 3. उर्वरता-रहित (भूमि) अनुपजाऊ (धरती)।

निर्वृक्ष वन *पुं.* (तत्.) वृक्षविहीन वन, ऐसा वन जिसके सभी वृक्षों को काट दिया गया हो।

निर्वृक्षीकरण *पुं.* (तत्.) किसी स्थान विशेष से सभी वृक्षों को मूलसहित काट डालने की स्थिति या क्रिया।

निर्वृत्त *वि.* (तत्.) जो पूरा कर दिया गया हो अथवा पूरा हो गया हो। संपन्न, निष्पन्न।

निर्वृत्ति *स्त्री.* (तत्.) निष्पत्ति, समाप्ति।

निर्वेग *वि.* (तत्.) 1. वेग (गति, तीव्रता) से रहित 2. प्रबल, प्रवृत्ति, मनोवेग से रहित, शांत 3. उत्तेजना रहित।

निर्वेदन *वि.* (तत्.) संवेदना विहीन, दया रहित।

निर्वैयक्तिक *वि.* (तत्.) जो वैयक्तिक, (व्यक्तिक) व्यक्तिगत, निजी अथवा अपना न हो जैसे निर्वैयक्तिक संगठन निवैयक्तिक पत्रिका आदि।

निर्वैयक्तिकीकरण *पुं.* (तत्.) दे. निर्वैयक्तीकरण।

निर्वैयक्तीकरण *पुं.* (तत्.) (समा.) वैयक्तिक को निर्वैयक्तिक बनाना।

निर्वैर *वि.* (तत्.) वैर-विहीन, शत्रुता रहित।

निर्वैषम्य *पुं.* (तत्.) दे. निर्विषमीकरण।

निर्व्याज *वि.* (तत्.) 1. छल-कपट से रहित, निष्कपट, निश्छल।

निर्व्याधि *वि.* (तत्.) व्याधि रहित, रोगमुक्त, नीरोग।

निर्व्यापार *वि.* (तत्.) 1. काम-धंधे से रहित, व्यापार विहीन 2. गतिहीन, निष्क्रिय, निश्चेष्ट।

निर्व्रण *वि.* (तत्.) व्रण-रहित, जिसके कोई घाव न हो।

निर्हकित *वि.* (तत्.+अर.) विधि. जिसे अपने हक से वंचित कर दिया गया हो।

निर्हिहित करना *स.क्रि.* (तत्.+तद्) विधि. किसी में निहित संपत्ति आदि को उससे ले लेना।

निर्हेतु *वि.* (तत्.) 1. हेतु रहित, बिना किसी कारण के, अकारण 2. *पुं.* काव्य. एक अर्थ-दोष, बिना कारण के कोई बात कहना, बिना हेतु के किसी विविक्षित अर्थ का उपादान।

निर्हेतुक *वि.* (तत्.) दे. निर्हेतु।

निलंबक *विं.* (तत्.) 1. निलंबन करने वाला 2. किसी सेवा कार्य में लगे व्यक्ति को अस्थायी रूप से निलंबित करने वाला 3. किसी कार्य को कुछ समय के लिए स्थगित करने या कराने वाला 4. लटकाने वाला।

निलंबन *पुं.* (तत्.) 1. विधि. अवधि विशेष के लिए अस्थायी रूप से किन्हीं अधिकारों के प्रयोग से वंचित किया जाना, अस्थायी रोक, अस्थायी निषेध 2. प्रशा. कर्तव्यच्युति, कदाचार, भ्रष्टाचार आदि के आरोप की जाँच के लिए किसी कर्मचारी को अपने पद से अस्थायी रूप से हटा

देना, निर्दोष सिद्ध होने पर उसे पुनः बहाल कर दिया जाता है 3. रक्षा. किसी ठोस पदार्थ के कणों का किसी द्रव में या द्रव के कणों का गैस में लटकना विलो. बहाली *वि.* निलंबित suspension

निलंबन कर्ता *वि.* (तत्.) निलंबन-कर्ता 1. प्रशा. कर्तव्यहीनता, अनाचार आदि के कारण कर्मचारी को उसके पद या कार्य से अस्थायी रूप से निलंबित करने वाला अधिकारी, व्यक्ति 2. निलंबन करने वाला, निलंबक।

निलंबित *वि.* (तत्.) 1. जिसका निलंबन किया गया हो 2. जिसे लटकाया गया हो 3. मुअत्तिल, स्थगित।

निलंबित उधार *पुं.* (तत्.+तद्) वाणि. 1. भुगतान न होने की दशा में उधार खाताधारकों की वित्तीय सेवाओं पर रोक की स्थिति 2. पुराना बकाया न देने पर आगे उधार देने पर रोक suspended credit

निलंबित दंड *पुं.* (तत्.) समा. विधिविहित दंड को अन्यथा शर्तों के आधार पर रोक देना जैसे- चोरी आदि अपराध के कारण सजायाफ्ता अपराधी की सजा को एक वर्ष तक उसके अच्छे व्यवहार या आचरण की शर्त के आधार पर रोक दिया जाए suspension sentence

निलंबी हिमनद *पुं.* (तत्.) भूवि. सामान्यतः छोटे आकार का हिमनद जो इतने प्रवण ढाल पर स्थित होता है कि गुरुत्व के प्रभाव से इसमें से हिम टूट टूट कर गिरता रहता है hanging glacier

निलय *पुं.* (तत्.) 1. घर, मकान 2. छिपने का स्थान, जगह 3. पक्षी का घोंसला, माँद 4. जंतु. खून को सिकोड़कर फैलाकर समस्त शरीर की कोशिकाओं तक पहुँचाता है veintrical 5. सर्वथा विलीन होने की क्रिया या भाव।

निलयन *पुं.* (तत्.) 1. छिपने का भाव, छिपना 2. निवास करने का स्थान, घर।

निलहा *वि.* (देश.) 1. नीले रंग से युक्त 2. नीले रंग में पूरी तरह रंगा हुआ 3. नील की खेती करने वाला जैसे- निलहा किसान।

निलाज *वि.* (तत्.) 1. जो लज्जा रहित हो 2. जिसे अमर्यादित आचरण करने में हिचक न हो पर्या. बेशर्म, लज्जाविहीन, लाजरहित।

निलीन *वि.* (तत्.) 1. पूर्ण रूप से छिपा हुआ 2. जो अदृश्य हो गया हो 3. नष्ट।

निवर्तक *वि.* (तत्.) 1. निर्वतन करने वाला 2. कहीं जाकर वापस लौटने वाला।

निवर्तन *पुं.* (तत्.) 1. वापस लौटना 2. सेवा/नौकरी से निवृत्त होना retirement 3. प्रशा. बेकार पड़ी चीजों को ठिकाने लगाना 4. प्रशा. मल निकासी की व्यवस्था 5. वाणि. भंडार में मौजूद पुराने माल को (रियायती दामों पर) बेच डालना। disposal

निवर्तमान *वि.* (तत्.) 1. जो सेवा से निवृत्त होने वाला हो 2. जो अपना पद छोड़ रहा हो 3. जो अभी अभी पद से मुक्त हो चुका हो।

निवर्ती *वि.* (तत्.) दे. निवर्तमान 1. निवृत्त होने वाला 2. वह जो पीछे हट कर आया हो 3. भगोड़ा।

निवल *वि.* (देश.) वाणि. 1. जो सभी कटौतियों या छूटों के बाद बच जाए जैसे- एक किलो वाले घी के डिब्बे में घी का निवल भार 900 ग्राम है net 2. सकल लाभ हानि में से खर्चें, कर, ह्रास आदि के पश्चात् शेष (लाभ/हानि)।

निवल आय *पुं.* (देश.+तत्.) वाणि. संपूर्ण आय में से आवश्यक व्यय, छूट मूल्यह्रास तथा स्थानीय कर आदि निकालने के पश्चात् शेष आय, शुद्ध आय जैसे- निजी खाद्यान्न बाजार में दस हजार का बेंचा गया और उस पर कर व मजदूरी के रूप में एक हजार देने पड़े तो निवल आय नौ हजार की हुई। net income

निवल कीमत *स्त्री.* (देश.फा.) वाणि. किसी वस्तु की शुद्धकीमत जैसे किसी वस्तु की शुद्धकीमत पाँच सौ रुपये है किंतु वैट आदि कर लगाकर उसकी कीमत छह सौ है, शुद्धमूल्य। net price

निवल परिसंपत्तियाँ *स्त्री.* (देश.+तत्.) वाणि. सभी सरकारी देनदारियाँ हटा कर तथा नियमित

मूल्यह्रास की कटौती के पश्चात् शेष मूल्य की सम्पत्तियाँ (खेती, बाग, स्वर्ण, धातु आदि) शुद्ध परिसम्पत्तियाँ है जैसे- कृषि, बाग, स्वर्ण, धन आदि का योग वे निवल परिसंपत्तियाँ हैं जिनमें से किसी के ऋण या कर आदि के रूप में कुछ देय नहीं है या ऋण/कर आदि के भुगतान के बाद शेष बची हुई हैं। net assests

निवल राष्ट्रीय आय *पुं.* (देश.+तत्.) वाणि. सभी प्रकार के आय से संबंधित आवश्यक व्ययों के पश्चात् बची हुई शुद्धराष्ट्रीय आय। net national income

निवल लाभ *पुं.* (देश+तत्.) वाणि. किसी व्यापारिक प्रतिष्ठान या कंपनी की कुल आय में से उसके सभी आय से संबंधित व्ययों एवं मूल्यह्रास को घटा देने के बाद शेष राशि, शुद्ध लाभ। net profit

निवल वेतन *पुं.* (देश.+तत्.) कर्मचारी के कुल वेतन में से भविष्यनिधि, बीमा कर आदि की राशि काट करके दिया गया वेतन। net pay

निवल हानि *स्त्री.* (देश+तत्.) किसी कंपनी द्वारा किसी वस्तु की उसके शुद्धउत्पादन मूल्य में से किसी प्रकार की अतिरिक्त आय को कम करने के पश्चात् होने वाली हानि। net loss

निवसन *पुं.* (तत्.) 1. निवास करने की क्रिया या भाव 2. रहने का स्थान, घर, आवास 3. उपयोग किये जाने योग्य अधोवस्त्र।

निवह *पुं.* (तत्.) 1. किसी भी वस्तु या वर्ग का समूह, समुदाय 2. राशि या ढेर जैसे- भ्रमर निवह-भौंरों का समूह 3. आँधी के रूप में बहने वाली वायु जो मध्यम गतिवाली तथा मतवाला करने वाली हो 4. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

निवाज *पुं.* (फा.) 1. ईश्वर या बड़ों के द्वारा छोटों पर की जाने वाली कृपा, अनुग्रह टि. फारसी का शुद्धशब्द नवाजिश है जैसे- आप रंक पर निवाज करके उसे राजा बना देते हैं (फा.) प्रत्यय बजाने वाला या कृपा करने वाला, गरीब निवाज।

निवाजना *स.क्रि.* (देश.+फा.) 1. किसी पर कृपा करना 2. कृपा करके किसी की इच्छा पूर्ण करना, निहाल कर देना 3. अपनी शरण में लेना।

निवाड़/निवार *स्त्री.* (देश.) मोटे सूत की बनी लगभग चार अंगुल चौड़ी पट्टी जो चारपाई या पलंग बुनने के काम आती है टि. आजकल कृत्रिम धागों से भी निवाड़ बनती है।

निवाण/निवाँण *पुं.* (तद्.) वह नीची भूमि (जगह) जहाँ पानी या कीचड़ आदि हमेशा भरा रहता है, निमॉन, नीची जगह।

निवात *वि.* (तत्.) 1. जहाँ हवा न हो, शांत पर्या. निर्वात 2. (वह स्थान) जो पवन से पूरी तरह सुरक्षित हो जैसे- निवात प्रदेश *पुं.* पवन से सुरक्षित घर, आश्रय स्थल।

निवाप *पुं.* (तत्.) 1. वह अन्न जो बीज के काम आए, बीज 2. पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला किसी वस्तु का दान 3. दान।

निवार *पुं.* (तत्.) 1. किसी वस्तु को हटाने या रोकने की क्रिया 2. रोक, निवारण 3. बाधा।

निवारक *वि.* (तत्.) 1. अस्तित्व में आने से रोकने वाला 2. हटाने वाला या दूर करने वाला विधि. 1. रोकथाम करने वाला 2. प्रतिबंधक जैसे- मद्य मद्य निवारक कानून।

निवारक उपाय *पुं.* (तत्.) विधि. 1. किसी अवांछित घटना का निवारण करने के लिए पहले से किये गए उपाय, जो सरकार या शासनादेश से किये जाते हैं 2. किसी समस्या को दूर करने का उपाय, किसी बीमारी महामारी, विनाश आदि को रोकने के लिए पहले से अपनाए गए उपाय जैसे- प्रदूषण निवारक उपाय।

निवारक निरोध *पुं.* (तत्.) विधि. किसी विशेष परिस्थिति में अपराधी तत्व अपराध न कर पाएँ, इस दृष्टि से उनके स्वतंत्र विचरण पर प्रतिबंध लगाकर उन्हें अवधि विशेष के लिए बंदी बना लिया जाना। preventive detention

निवारण *पुं.* (तत्.) 1. हटाने या बढ़ने से रोकने की क्रिया या भाव 2. किसी कष्ट, बाधा, रोग अप्रिय व्यवहार आदि को रोकना प्रयो. मित्र! मेरे कष्ट का निवारण करो; वैद्य जी, इसके रोग का निवारण कीजिए 3. दूर करना, हटना 4. विधि. रोकथाम, निरोध।

निवारना स.*क्रि.* (देश.) 1. किसी समस्या का निवारण करना या दूर करना जैसे- वृद्धजनों का कष्ट निवारना 2. बढ़ने से रोकना 3. रक्षा करना 4. छोड़ना, त्यागना।

निवारी *स्त्री.* (तत्.) 1. वासंती नाम का पौधा 2. उक्त पौधे का फूल *वि.* (देश.) 1. निवाड़ से संबंधित (जिससे पलंग बुना जाता है) 2. निवाड़ से बना हुआ।

निवाला *पुं.* (तत्.) 1. भोजन का कौर, ग्रास 2. भोजन की वह मात्रा जो एक बार में मुख से चबाकर खाई जाती है।

निवास *पुं.* (तत्.) 1. किसी स्थान पर बसने या रहने की क्रिया या भाव 2. रहने का स्थान, घर, मकान 3. अस्थायी रूप से रहने या विश्राम करने की जगह जैसे- हमने कुछ समय तक वृंदावन में निवास किया।

निवास स्थान *पुं.* (तत्.) 1. व्यक्ति के मुख्य रूप से रहने का स्थान (घर) 2. पैतृक स्थान 3. रहने की जगह।

निवासिनी *वि./स्त्री.* (तत्.) 1. (किसी स्थान पर) निवास करने वाली 2. बसने वाली जैसे- प्रयाग-निवासिनी महादेवी वर्मा *पु.* निवासी वृंदावन-निवासिनी नारियाँ।

निवासी-अभिकर्ता *पुं.* (तत्.) प्रशा. किसी देश या प्रांत या कंपनी द्वारा नियुक्त अधिकार प्राप्त वह वह व्यक्ति जो उस देश या प्रांत या मुख्यालय से भिन्न दूसरे देश/प्रांत की राजधानी में या प्रमुख महानगर में रहता हुआ स्थानीय विशिष्ट लोगों के उस देश/प्रांत या कंपनी के मुख्यालय आदि में जाने पर उनके समुचित निवास संबंधी व्यवस्था को देखता सुनता है, वह राजनैतिक नहीं होता है जैसे- अमेरिका द्वारा भारत में नियुक्त 'निवासी अभिकर्ता, या अंडमान निकोबार प्रशासन द्वारा दिल्ली में नियुक्त निवासी-अभिकर्ता या विशिष्ट कंपनी द्वारा दिल्ली दिल्ली में नियुक्त निवासी-अभिकर्ता। resident agent

निवास्य *वि.* (तत्.) 1. निवास करने योग्य (स्थान), रहने योग्य 2. जहाँ निवास करना, अपेक्षित है, या उचित है।

निविड *वि.* (तत्.) 1. घना, अधिक घना जैसे- निविड वन 2. गहरा 3. अभेद्य जैसे- निविड अंधकार 4. मोटा, बड़ा पर्या. निबिंड।

निविडता *स्त्री.* (तत्.) 1. घना होने की स्थिति या भाव 2. सघनता, घनापन 3. मोटापन 4. अभेद्यता।

निविण्ण *वि.* (तत्.) 1. निर्वेद से युक्त, विरक्त 2. खिन्न, दुःखी, पूर्ण तथा ज्ञात।

निविदा *स्त्री.* (तत्.) प्रशा./वाणि. किसी निर्माण-कार्य के लिए अथवा किसी वस्तु की आपूर्ति या कोई सेवा प्रदान करने के लिए एक पक्ष द्वारा दूसरे पक्ष को लिखित रूप से उसकी प्रस्तावित कीमत भाव या लागत बताना जो एक नियत अवधि के लिए और निर्धारित शर्तों पर ही प्रभावी रहती है tender

निविदाकार *पुं.* (तत्.) प्रशा./वाणि. 1. वह व्यक्ति अथवा व्यावसायिक प्रतिष्ठान जिसने निविदा प्रस्तुत की हो 2. अर्थ. निविदा सूचना के आधार पर अपनी सेवाएँ प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति।

निविदादाता *पुं.* (तत्.) दे. निविदाकार।

निविदा पेटी *स्त्री.* (तत्.+तद्.) प्रशा. सरकारी कार्यालयों में बाहर रखी जाने वाली या स्थापित वह छोटी पेटी जिसमें विज्ञापन के अनुसार आमंत्रित निविदाएँ डाली जाती है। teder box

निविदा सूचना *स्त्री.* (तत्.) प्रशा. समाचार पत्रों आदि के माध्यम से निविदा माँगने के लिए दी गई सूचना tender notice

निविशेष *वि.* (तत्.) 1. जिसमें अलग से कोई विशेषता न हो, एकसमान, एक सा 2. सदृश 3.

अभिन्न *पुं.* भिन्नता के अभाव की स्थिति या भाव, एकरूपता, भिन्नमुक्ता।

निविष्ट *वि.* (तत्.) 1. जिसे पंजी/खाते आदि में प्रविष्ट किया गया हो 2. स्थित, ठहरा हुआ 3. लपेटा हुआ 4. क्रम से रखा हुआ, सुव्यवस्थित 4. बाँधा हुआ।

निवीत *पुं.* (तत्.) 1. गले में माला की तरह पहना हुआ, जनेऊ/यज्ञोपवीत 2. ओढ़ने का वस्त्र, ओढ़नी।

निवृत *वि.* (तत्.) घिरा हुआ, लपेटा हुआ *पुं.* दुपट्टा, उत्तरीय या ओढ़नी।

निवृति *स्त्री.* (तत्.) 1. घेरा 2. आवरण।

निवृत्त *वि.* (तत्.) 1. लौटा हुआ, वापस आया हुआ 2. सांसारिक विषयों से विरक्त 3. जो अपना काम पूरा कर चुका हो, कृतकार्य, सेवानिवृत्त।

निवृत्त राग *वि.* (तत्.) 1. जिसको सांसारिक विषयों से विरक्ति हो चुकी हो, रागरहित 2. जितेंद्रिय।

निवृत्तामा *वि.* (तत्.) 1. जो सांसारिक भोगों/विषयों के प्रति उदासीन हो 2. विरक्त दे. निवृत्तराग।

निवृत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. सांसारिक विषयों से विरक्ति 2. छुटकारा, कार्य से मुक्ति जैसे- सेवानिवृत्ति 3. वापसी 4. त्याग 5. संन्यास 6. परमानंद विलो. प्रवृत्ति।

निवृत्तिका *पुं.* (तत्.) 1. जो निवृत्ति से संबंधित हो 2. विषयों/भोगों से विरत कराने वाली शिक्षा, सूक्ति आदि जैसे- निवृत्तिका अनुभूति।

निवृत्ति पूर्व-प्रक्रिया *वि.* (तत्.) कर्मचारी की सेवा निवृत्ति से छह माह पूर्व वित्तीय विभाग/ प्रशासनिक विभाग द्वारा उसके समस्त सेवाकाल के लेखा-जोखा की तैयारी। action preparatory to retirement

निवृत्ति पेंशन *पुं.* (तत्.+अं.) कर्मचारी को उसकी सेवा निवृत्ति की तिथि के बाद विभाग द्वारा निश्चित की गई मासिक पेंशन जो उसके (कर्मचारी के) अंतिम वेतन व सेवाकाल के आधार पर प्रदान की जाती है)।

निवृत्ति मार्ग *पुं.* (तत्.) दर्श. संन्यास का मार्ग, परमात्मा की ओर उन्मुख होकर लौकिक कर्मों का परित्याग करने का रास्ता।

निवृत्ति हितलाभ *पुं.* (तत्.) प्रशा. सेवानिवृत्ति के अवसर पर कर्मचारी को उसके विभाग द्वारा दिये दिये जाने वाले सेवाकालीन लाभ जैसे- ग्रेच्युटी gratuity, भविष्यनिधि अर्जित अवकाश के बदले देय राशि, संराशीकरण आदि commutation

निवेदक *वि.* (तत्.) 1. निवेदन करने वाला 2. नम्रता पूर्वक अपनी बात को कहने या लिखने वाला 3. प्रार्थना करने वाला प्रार्थी 4. अर्पण करने वाला।

निवेदन *पुं.* (तत्.) 1. किसी के प्रति बोलकर या लिखकर विनम्रतापूर्वक प्रस्तुत की गई बात 2. विनय, प्रार्थना 3. समर्पण/भेंट 4. किसी को कुछ सौंपने की क्रिया या भाव उदा. मैं आपको एक पुष्पगुच्छ निवेदन करना चाहता हूँ।

निवेदनकर्ता *पुं.* (तत्.) प्रशा. किसी विषय या समस्या को प्रार्थना पत्र आदि के माध्यम से अधिकारी के प्रति विनम्रता पूर्वक प्रस्तुत करने वाला (व्यक्ति)।

निवेद्य *वि.* (तत्.) 1. विनम्रतापूर्वक निवेदन करने योग्य 2. निवेदनीय 3. प्रार्थनीय *पुं.* नैवैद्य, देवपूजन में भोग लगाने के लिए प्रस्तुत सामग्री।

निवेरा *पुं.* (देश.) 1. किसी समस्या को निबेड़ने, निपटाने की क्रिया या भाव 2. निपटारा, छुटकारा, मुक्ति 3. निर्णय 4. फैसला *वि.* 1. अनेक में से चुना हुआ, छाँटा हुआ वि. अद्भुत 2. नया-नवेला, सुंदर।

निवेश *पुं.* (तत्.) 1. वाणि. किसी व्यापार आदि में आय अर्जित करने की दृष्टि से पूँजी लगाने की क्रिया या भाव, किसी व्यक्ति, परिवार फर्म अथवा सरकार द्वारा उत्पादन 2. परिसंपत्तियों में में /के रूप में धन या पूँजी लगाने का कार्य

investment 3. प्रवेश 4 घर, मकान अथवा परिसर campus 5. शिविर-डेरा 6. धरोहर।

निवेशक *पुं.* (तत्.) निवेश करने वाला वाणि. आर्थिक लाभ या आय वृद्धि की दृष्टि से व्यवसायों/ उत्पादन में पूँजी लगाने वाला, विनियोग करने वाला investor

निवेशकर्ता *पुं.* (तत्.) दे. निवेशक।

निवेशगुच्छ *पुं.* (तत्.) प्रबंध. निवेशकर्ता द्वारा खरीदी गई विभिन्न प्रकार की प्रतिभूतियों का समुच्चय, विवेकशील निवेशकर्ता प्रायः अपना धन शेयरों, ऋण प्रपत्रों, सरकारी प्रतिभूतियों आदि में इस प्रकार बाँट कर लगाता है कि एक प्रकार के निवेश के जोखिम की भरपाई दूसरे प्रकार के जोखिम से की जा सके portfolio

निवेशन *पुं.* (तत्.) 1. निवेश करने की क्रिया या भाव 2. लाभ के लिए धन-पूँजी का किसी कार्य उत्पादन में निवेश करना 3. प्रविष्ट होना 4. पड़ाव 5. घर, तंबू 6. घोंसला।

निवेशिका *स्त्री.* (तत्.) वाणि. पूँजी का निवेश करने करने वाली भू.वि. 1. किसी तटीय कच्छ में एक छोटा ज्वारीय जल-क्षेत्र, सँकरी खाड़ी 2. छोटी नदी जो बड़ी नदी में जाकर मिलती है।

निवेशी *पुं.* (तत्.) विधि. किसी संस्था या संस्थान के परिसर, निवेश में रहने वाला वाणि. दे. निवेशक।

निवेष्टन *पुं.* (तत्.) 1. ढकने या लपेटने की क्रिया या भाव, आच्छादन 2. ढँकने या लपेटने वाली वस्तु, वेष्टन।

निवैयक्तिकता *स्त्री.* (तत्.) समा. 1. वैयक्तिक न होने की स्थिति अथवा भाव 2. वस्तुनिष्ठता।

निशंक *वि.* (तत्.) 1. जो शंका या भयरहित हो 2. निर्भय, निडर।

निश *स्त्री.* (तत्.) रात्रि, रात विलो. दिन।

निशब्द *वि.* (तत्.) 1. (वह स्थान) जो शब्द रहित हो अर्थात् ध्वनि रहित हो 2. मौन या चुप, अवाक।

निशमन *पुं.* (तत्.) 1. सुनने का भाव या क्रिया, श्रवण (सुनना) 2. दृश्य, चितवन 3. देखना, अवलोकन 4. जानकारी।

निशल्कन *पुं.* (तत्.) 1. छीलने की क्रिया या भाव 2. वृक्षों, फलों आदि का छिलका उतरने या उतारने की क्रिया।

निशांत *पुं.* (तत्.) 1. रात्रि का अंत 2. रात्रि का अंतिम प्रहर 3. प्रातःकाल।

निशांध *वि.* (तत्.) 1. जिसे रात में दिखाई न देता हो 2. रतौंधी का रोगी।

निशांधता *स्त्री.* (तत्.) रतौंधी, रात को न दिखने का रोग।

निशाँ *पुं.* (फा.) चिह्न, निशान प्रत्य. बैठाने वाला जैसे- खातिर निशा-दिल में बिठाने या जमाने वाला उदा. वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशाँ होगा- रामप्रसाद बिस्मिल।

निशा *स्त्री.* (तत्.) रात्रि, रात।

निशाकर *वि.* (तत्.) 1. निशा (रात) को करने वाला *पुं* 2. रात को अपनी किरणों से प्रकाशित करने वाला, चंद्रमा 3. कपूर।

निशाचर *वि.* (तत्.) रात में विचरण करने वाला *पुं.* 1. राक्षस 2. भूतप्रेत 3. चोर 4. उल्लू 5. गीदड़ 6. साँप 7. चकबा (चक्रवाक)।

निशाचरी *स्त्री.* (तत्) रात में इधर-उधर घूमने वाली वाली स्त्री, राक्षसी, वेश्या दे. निशाचर *वि.* रात में में विचरण करने वाली, राक्षसी।

निशात *वि.* (तत्.) 1. (सान पर चढ़ाकर) पैना किया हुआ, तीक्ष्ण, तेजधार वाला 2. चिकनाया हुआ 3. चमकीला।

निशात्यय *पुं.* (तत्.) 1. निशा (रात्रि) का पूरी तरह बीतना 2. रात की समाप्ति 3. प्रभात, सुबह।

निशाधीश *पुं.* (तत्.) रात्रि का स्वामी, चंद्रमा।

निशान *पुं.* (फा.) 1. ऐसा चिह्न जिससे किसी वस्तु की खोज या किसी घटित घटना की जानकारी में महत्वपूर्ण सहयोग मिले, सुराग 2. शरीर या

किसी पदार्थ पर प्राकृतिक चिह्न या दाग 3. लक्षण 4. पताका, ध्वजा 5. स्मृति चिह्न 6. पहचान, छाप, मुहर 7. पता मुहा. निशान देना- यादगार के लिए कोई वस्तु देना, पता-ठिकाना बताना।

निशानची *वि.* (फा.) 1. सही निशाना लगाने में अत्यंत कुशल, लक्ष्य को सही ढंग से वेधने वाला *पुं.* राज. राष्ट्रपति की सवारी निकालने के समय या किसी विशेष जुलूस या शोभायात्रा के अवसर पर झंडा लेकर आगे-आगे चलने वाला व्यक्ति।

निशाना *पुं.* (फा.) 1. वह स्थान या बिंदु जिस पर धनुष, बंदूक आदि अस्त्रों से लक्ष्य साधा जाए, लक्ष्य 2. वह व्यक्ति जिसे लक्ष्य बनाकर उस पर व्यंग्य बाण छोड़े जाएँ मुहा. निशाना बनना- किसी के आघात का लक्ष्य होना, मारा जाना; निशाना बाँधना/साधना- सही लक्ष्य पर निशाना मारने को तैयार होना; निशाना लगाना/ मारना- सही लक्ष्य पर आघात करना।

निशानाथ *पुं.* (तत्.) 1. रात्रि का स्वामी, चंद्रमा 2. कपूर पर्या. निशापति।

निशानी *स्त्री.* (तत्.) 1. हमेशा याद रहने योग्य कोई चिह्न, पहचान, वस्तु 2. स्मृति चिह्न, यादगार जैसे किसी के द्वारा सम्मानपूर्वक या स्नेहपूर्वक भेंट की गई वस्तु 3. पहचान का कोई चिह्न जैसे- उनके घर के सामने आम का पेड़ ही उनके घर की निशानी है।

निशानेबाज *पुं.* (फा.) अच्छा निशाना लगाने में सिद्ध/माहिर, अचूक लक्ष्यवेधी दे. निशानची खेल. सही निशाना लगाने में दक्ष खिलाड़ी।

निशानेबाजी *स्त्री.* (फा.) 1. निशाना लगाने की कला/क्रिया 2. निशाना लगाने का अभ्यास या निशाना लगाने में उत्तम कुशलता खेल. निर्धारित लक्ष्य को निशाना बनाकर राइफल, पिस्तौल आदि से उसे वेध देने की खेल प्रतियोगिता या इससे संबंधित कला, कौशल।

निशापति *पुं.* (तत्.) दे. निशानाथ।

निशाभीति *स्त्री.* (तत्.) एक मानसिक रोग जिसमें रोगी को रात से भय लगता है।

निशावसान *पुं.* (तत्.) 1. रात्रि के समाप्त होने का समय 2. भोर, प्रभात, प्रातःकाल, सुबह।

निशास्ता *पुं.* (फा.) 1. गेहूँ का सत्, गेहूँ का सार 2. (चावल आदि का) मांड़।

निशि *स्त्री.* (तत्.) रात, रात्रि (संस्कृत में सप्तमी एक वचन का रूप हिंदी में इसी रूप में प्रयुक्त) जैसे- निशिवासर-रात और दिन।

निशिकर *पुं.* (तत्.) चंद्रमा दे. निशाकर।

निशिचर *पुं.* (तत्.) राक्षस, चोर दे. निशाचर।

निशिचारी *पुं.* (तत्.) दे. निशाचर।

निशित *वि.* (तत्.) 1. किसी धारदार चाकू, तलवार आदि को सान पर चढ़ाकर तेज किया हुआ, पैना 2. तीक्ष्ण, तेज।

निशिदिन *पुं.* (तत्.) रात और दिन *क्रि.वि.* 1. रात दिन 2. सदा, हमेशा पर्या. निशिवासर।

निशिनाथ *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

निशिपति *पुं.* (तत्.) चंद्रमा दे. निशानाथ।

निशिपाल *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

निशिवासर *क्रि.वि.* (तत्.) 1. रात दिन 2. सदा दे. निशिदिन।

निशीथ *पुं.* (तत्.) 1. अर्धरात्रि, आधीरात 2. रात।

निशीथनाथ *पुं.* (तत्.) चंद्रमा।

निशीथिनी *स्त्री.* (तत्.) रात्रि।

निशुंभ *पुं.* (तत्.) 1. हत्या, वध 2. भग्नीकरण, तोड़ना 3. (धनुष) को झुकाने की क्रिया 4. एक दैत्य जिसका वध दुर्गा देवी ने किया था।

निशेश *पुं.* (तत्.) रात्रि का स्वामी चंद्रमा पर्या. निशानाथ, निशापति।

निशोथ *पुं.* (तत्.) आर्द्रभूमि में पुष्ट होने वाली एक प्रकार की लता, कंद जो औषधोपयोगी होता है टि. लता या पुष्प के रंग के अनुसार निशोथ के तीन भेद हैं 1. सफेद निशोथ 2. काला निशोथ 3. लाल निशोथ।

निश्चंद्र *वि.* (तत्.) 1. जो चंद्रमा से रहित हो जैसे- निश्चंद्र निशा (चंद्र के प्रकाश से रहित रात) 2. घने अंधकार से युक्त (निशा/रात्रि)।

निश्चक्षु *वि.* (तत्.) बिना नेत्रों का, नेत्रहीन, अंधा।

निश्चय *पुं.* (तत्.) 1. किसी प्रकार के संशय से रहित ज्ञान 2. संकल्प 3. निर्णय 4. दृढता, विश्वास, फैसला, निर्णय, निपटारा।

निश्चयन *पुं.* (तत्.) गणि., भौ. किसी कार्यविधि से संबंधित उपलब्ध विविध विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त कार्यविधि के चयन की मानसिक प्रक्रिया जैसे- गणित में किसी प्रमेय की सिद्धि हेतु तर्कसंगत विकल्प का चयन। decision-making

निश्चय वृत्ति *स्त्री.* (तत्.) संदेह रहित बुद्धि, ज्ञान ज्ञान की धारणा।

निश्चयवाचक सर्वनाम *पुं.* (तत्.) भाषा. सर्वनाम का वह प्रकार जिससे निकटवर्ती या दूरवर्ती व्यक्ति, वस्तु या स्थान का पक्का (निश्चयात्मक) बोध होता है जैसे- यह, वह, वे, यही, वही, इसी, इन्हीं आदि पर्या. निर्देशात्मक सर्वनाम, संकेतवाचक सर्वनाम दे. सर्वनाम तु. अनिश्चयवाचक सर्वनाम।

निश्चयवाद *पुं.* (तत्.) विज्ञा. 1. वह सिद्धांत जो घटनाओं की व्याख्या प्राकृतिक नियमों के अनुकूल करता है 2. वह सिद्धांत या मत/वाद जिसके अनुसार मानव रुचियों, समस्त घटनाओं एवं निर्णयों के पीछे निश्चित कारण होता है जिसका प्रतिफल भी निश्चित होता है।

निश्चयात्मक *वि.* (तत्.) 1. पूर्णरूप से निश्चित किया हुआ, पक्का 2. सुनिश्चित विलो. अनिश्चयात्मक।

निश्चयात्मकता *स्त्री* (तत्.) निश्चयात्मक होने की स्थिति या भाव।

निश्चयात्मक वृत्ति *स्त्री.* (तत्.) व्या. क्रिया की तथ्यात्मकता को बताने वाली वृत्ति (आज्ञा इत्यादि बताने वाली नहीं)।

निश्चयार्थक वाक्य *पुं.* (तत्.) भाषा. रचना की दृष्टि से वाक्य का एक प्रकार जिसमें किसी वस्तु स्थिति की सूचना होती है जैसे- वह मेरा भाई है, शेर मांसाहारी जानवर है पर्या. निर्देशक वाक्य तु. आज्ञार्थक वाक्य, प्रश्नवाचक वाक्य।

निश्चयार्थक वृत्ति *स्त्री.* (तत्.) व्या.,भाषा. क्रिया के निश्चित भाव/अर्थ को निर्देश करने वाली वृत्ति।

निश्चर *पुं.* (तत्.) गणि. वह गणितीय व्यंजक अथवा परिमाण जो निर्धारित अथवा निहित प्रतिबंधों के अधीन अपरिवर्तित रहता हो।

निश्चरता *स्त्री.* (तत्.) निश्चर होने का भाव या स्थिति दे. निश्चर।

निश्चल *वि.* (तत्.) 1. जो पूर्ण रूप से अचल हो जैसे- निश्चल पर्वत 2. स्थिरता से युक्त जैसे- निश्चल समाधि 3. जिसमें चंचलता का अभाव हो 4. जो बिल्कुल न हिले डुले छंद. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 15 वर्ण तथा छंद के प्रत्येक चरण में 23 मात्राएँ होती हैं।

निश्चलता *स्त्री.* (तत्.) 1. निश्चल होने की अवस्था या भाव 2. अचलता, स्थिरता 3. अपरिवर्तनशीलता दे. निश्चल।

निश्चला *स्त्री.* (तत्.) 1. सदा स्थिर रहने वाली, पृथ्वी 2. प्रकृति 3. शालपर्णी (सरिवन वृक्ष) *वि.* जो चल न हो जैसे- निश्चला गति, निश्चला प्रकृति (स्वभाव)।

निश्चायक *वि.* (तत्.) 1. निश्चय का ज्ञान कराने वाला 2. जिसके कारण किसी बात/तथ्य का संदेहरहित ज्ञान हो 3. निश्चित, ध्रुव जैसे निश्चायक तथ्यों की खोज 4. निर्णायक रूप से, अंतिम रूप से 5. दृढ़, कृतसंकल्प।

निश्चायक प्रमाण *पुं.* (तत्.) 1. वह प्रमाण जो किसी तथ्य की जानकारी के लिए निश्चायक हो 2. जो किसी घटना से संबंधित तथ्यों का पता लगाने में निश्चायक हो 3. वह प्रमाण जो किसी ऐतिहासिक तथ्यों, प्रतीकों, संस्कृति आदि की वास्तविकता जानने के लिए निश्चित रूप से उपयोगी हो 4. वह प्रमाण जो किसी वस्तु की गुणवत्ता, न्याय की पारदर्शिता व किसी वैज्ञानिक

आविष्कार की प्रामाणिकता के लिए पूर्णतया संदेह रहित हो।

निश्चायक सबूत *पुं.* (तत्.+अर.) विधि. ऐसा प्रमाण जिससे वास्तविक निर्णय तक पहुँचना संभव हो। conclusive proof

निश्चायक साक्ष्य *पुं.* विधि. ऐसी तथ्य पोषक सामग्री जो सही निर्णय तक पहुँचा सके। conclusive evidence

निश्चिंत *वि.* (तत्.) 1. जिसे कोई चिंता न हो, चिंता रहित 2. मस्त 3. विचार हीन जैसे- वह निश्चिंत घूमता है।

निश्चिंतता *स्त्री.* (तत्.) [निश्चिंत+ता प्रत्यय] 1. निश्चिंत होने की अवस्था या भाव 2. बेफ़िक्री 3. 3. विचारहीनता।

निश्चित *वि.* (तत्.) 1. जिस विषय में पूरी तरह व अंतिम रूप से निश्चय किया जा चुका हो 2. जिसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता हो 3. जो बिल्कुल ठीक हो।

निश्चितता *स्त्री.* (तत्.) [निश्चित+ता प्रत्यय]1. निश्चित का भाव या अवस्था टि. निश्चय शब्द भी इसी अर्थ को व्यक्त करता है। definiteness, certainty

निश्चित प्राय *वि.* (तत्.) 1. जिसका व्यावहारिक रूप से निश्चय किया जा चुका हो, पक्का, विश्वसनीय *क्रि.वि.* लगभग निश्चित जैसे- यहाँ उत्सव होना निश्चितप्राय है।

निश्चिति *स्त्री.* (तत्.) 1. निश्चय या निर्णय करने की क्रिया 2. पक्का करने की स्थिति 3. संकल्प।

निश्चेत *वि.* (तत्.) 1. जो चेतन अवस्था में न हो या सुध-बुध खो चुका हो 2. अचेत, बेहोश उदा. वह व्यक्ति घायल होकर निश्चेत पड़ा है।

निश्चेतक *पुं.* (तत्.) चिकि.वि शरीर को या शरीर के किसी अंग को संवेदनाशून्य या रोगी को बेहोश करने वाला कोई चिकित्सकीय पदार्थ *वि.* किसी भी जीव प्राणी को चेतना से रहित करने वाला, विचार शून्यक, चेतनाशून्यक chloroform

निश्चेतन *पुं.* (तत्.) [निस्+चेतन्]1. जो चेतना रहित हो, अचेत 2. मूर्च्छित, बेहोश 3. जड़।

निश्चेतनकारी *वि.* (तत्.) दे. निश्चेतक।

निश्चेय *वि.* (तत्.) धरोहर की तरह जिसे रखा जा सकता है, स्थापना के योग्य, रखने योग्य।

निश्चेष्ट *वि.* (तत्.) 1. जिसमें चेष्टा या गति न हो, चेष्टारहित 2. बेहोश, अचेत 3. अचल, स्थिर विलो. सचेष्ट।

निश्चेष्टता *स्त्री.* (तत्.) [निश्चेष्ट+ता]1. चेष्टा रहित होने की स्थिति या भाव, बेहोशी 2. अकर्मण्यता चिकि.वि. किसी रूग्ण या आहत व्यक्ति की चेतना शून्यता जिसका उपचार चिकित्सकों द्वारा होता है।

निश्छल *वि.* (तत्.) 1. जो छल-कपट के व्यवहार से रहित हो, निष्कपट 2. सरल प्रकृति वाला, सीधा साधा।

निश्छलता *स्त्री.* (तत्.) 1. निश्छल होने की अवस्था/भाव या गुण 2. छल कपट भाव की शून्यता।

निश्छल संवेग *पुं.* (तत्.) मनो. 1. व्यक्ति के मनोभाव या भाव जो छल-कपट से दूर हो, सरल एवं सह भाव 2. व्यक्ति के वे मनोवेग जो पाखंड रहित एवं उत्साह युक्त हो 3. व्यक्ति की वह मानसिक अनुभूति जो पूर्णतया सरलता व सच्चाई से युक्त हो।

निश्रम *पुं.* (तत्.) 1. किसी कार्य को करते हुए सतत उत्साह युक्त बने रहना 2. अध्यवसाय 3. उत्साह व परिश्रम पूर्वक किया जाने वाला कार्य।

निश्रयणी *स्त्री.* (तत्.) काठ की सीढ़ी या नसेनी जिसके आश्रय से ऊपर तक एक निश्चित बिंदु तक चढ़ा जाता है तथा ऊपर से नीचे उतरा जाता हो।

निश्रेणी *स्त्री.* (तत्.) दे. निश्रयणी।

निश्रेयस *पुं.* (तत्.) 1. दैहिक, दैविक, भौतिक सभी प्रकार के सांसारिक कष्टों से मुक्ति 2. कल्याण, शांति 3. मोक्ष।

निश्वसन *पुं.* (तत्.) 1. साँस बाहर छोड़ने की क्रिया या भाव, रेचक चिकि. किसी औषधि के

माध्यम से खींचकर कृत्रिम साँस लेने की क्रिया। inhalation

निश्वास *पुं.* (तत्.) 1. स्वाभाविक रूप से नाक या मुँह से बाहर निकलने वाला श्वास या साँस 2. शोक, पीड़ा की सूचक गहरी या ठंडी श्वास।

निश्शंक *वि.* (तत्.) 1. जो किसी प्रकार के भय व आशंका से रहित हो, शंका रहित 2. निर्भय, निडर 3. तनाव रहित *क्रि.वि.* बेधड़क।

निश्शक्त *वि.* (तत्.) 1. शक्ति या सामर्थ्य से हीन, असमर्थ, शक्तिहीन 2. किसी कार्य को करने के अयोग्य 3. आंगिक दोष के कारण जो असमर्थ हो।

निश्शक्तता *स्त्री.* (तत्.) 1. शक्ति या सामर्थ्य से रहित होने का भाव 2. किसी व्यक्ति को उसके कार्य से संबंधित अयोग्य बताने वाली बात 3. विकलांगता।

निश्शब्द *वि.* (तत्.) [निः+शब्द] 1. शब्द (आवाज) रहित (स्थान), सुनसान 2. जो शब्द या आवाज नहीं कर सकता हो जैसे- निःशब्द मयूरपक्षी 3. शांत वातावरण।

निश्शब्दता *स्त्री.* (तत्.) निःशब्द होने की क्रिया या भाव।

निश्शरण *वि.* (तत्.) 1. जो शरण रहित हो, शरणहीन 2. जिसका कोई आश्रय या आश्रयदाता न हो 3. अनाथ, दीन।

निश्शस्त्र *वि.* (तत्.) 1. जो किसी प्रकार के शस्त्र से रहित हो, शस्त्रहीन 2. जो बिना शस्त्र के युद्ध कर रहा हो विलो. सशस्त्र।

निश्शस्त्रीकरण/निरस्त्रीकरण *पुं.* (तत्.) 1. किसी को अस्त्र-शस्त्र से रहित करने का भाव 2. राज. राजनैतिक दृष्टि से अस्त्र-शस्त्रों के प्रयोग को सीमित करना 3. राज. युद्ध की संभावना होने पर किसी देश को सैनिक सहायता देना या अस्त्र-शस्त्र देना बंद करना 4. अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से विश्व शांति के लिए सैनिकों की संख्या घटाकर अस्त्रों, शस्त्रों को परिसीमित करना अर्थात किसी प्रकार के युद्ध की संभावना को कम करना।

निश्शस्त्रीकृत/निरस्त्रीकृत *वि.* (तत्.) 1. योद्धा आदि जिसके शस्त्र छीन लिये गए हों 2. राज. जिस देश का सैन्यबल तथा परमाणु अस्त्र-शस्त्र आदि सीमित कर दिये गए हों।

निश्शेषण *पुं.* (तत्.)1. किसी वस्तु या वस्तुओं को कम करना या कम हो जाना या घटना या घटाना 2. खाली करना या होना 3. समाप्ति 4. थकान विज्ञा. 1. रेचन 2. साँस बाहर निकालने की क्रिया- प्राणायाम 3. किसी औषधि द्वारा पेट साफ करने की क्रिया।

निश्शोध्य *वि.* (तत्.) [निस्+शोध्य] 1. जो पूरी तरह परिमार्जित हो, शुद्ध, स्वच्छ 2. जिसे स्वच्छ करने की आवश्यकता न हो, साफ-सुथरा।

निषंग *पुं.* (तत्.) 1. प्राचीन काल में बाण रखने का विशेष आसन या आवरण जिसे सैनिक या योद्धा पीठ के पीछे बाँधता था, तरकश 2. पर्या. तूणीर 3. तलवार 4. आलिंगन।

निषंगी *वि.* (तत्.) 1. तूणीर या तरकश रखने वाला 2. तलवार धारण करने वाला 3. आलिंगन करने वाला, अत्यंत आसक्ति वाला *पुं.* 1. धनुर्धर, तीरंदाज 2. धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

निषण *वि.* (तत्.) 1. किसी स्थान या आसन पर बैठा हुआ 2. जिसको सहारा मिला हुआ हो 3. उदास।

निषदन *पुं.* (तत्.) ललित कला 1. रंगमंचीय उचित व्यवस्था 2. नाटक में पात्रों तथा वाद्ययंत्रों वाद्ययंत्रों का उचित व्यवस्थापन 3. भूमि व्यवस्था 4. शोधन/ परिशोधन 5. निर्धारण 6. उपनिवेश, आवास 7. बैठना 8. आसन।

निषध *पुं.* (तत्.) संगी. 1. निषाद नामक संगीत का स्वर जो सप्त स्वरों में अंतिम माना जाता है 2. एक प्राचीन देश जहाँ का राजा नल था 3. जनमेजय का एक पुत्र 4. एक पर्वत जो हेमकूट से उत्तर दिशा में माना गया है *वि.* कठिन।

निषाद *पुं.* (तत्.) संगी. 1. सात स्वरों में सातवाँ और अंतिम स्वर 'नि' 2. नृवि. भारत की एक पुरातन अनार्यजाति मल्लाह, केवट आदि।

निषादित *वि.* (तत्.) [निषाद+इत]1. (किसी आसन/स्थान पर) बैठाया हुआ 2. पीड़ित 3. व्यवस्थित।

निषिक्त *वि.* (तत्.) [नि+सिच्+क्त]1. जिसके अंदर या गर्भ में कोई चीज रखी या पहुँचायी गई हो impregnatul fructified (जिसमें निषेचन हुआ हो) 2. जिस पर जल छिड़का गया हो जैसे- अभिषेक के अवसर पर 3. सींचा गया खेत आदि 5. अभिषिक्त 6. स्नान किया हुआ *पुं.* विर्य जनित गर्भ।

निषिक्तांड *पुं.* (तत्.) [निषिक्त+अंड]1. पौधों के नर नर युग्मक तथा नारी (मादा) के संयुग्मन से निर्मित बीजाणु जिससे भ्रूण उत्पन्न होता है 3. जीव. अंडगोल के निषेचन के उपरांत बनने वाली कोशिका, जो परिवर्तन के परिणामस्वरूप नव जीवन विकसित करती है। oospro

निषिद्ध *वि.* (तत्.) [नि+सिध्+क्त]1. जिसका निषेध किया गया हो 2. जिसका व्यवहार में उपयोग वर्जित किया गया हो 3. जिस पर रोक लगाई गई हो और जिसे न मानने पर दंड दिया जा सके 4. त्याज्य एवं अग्राहय।

निषिद्ध कर्म *पुं.* (तत्.) धर्म. 1. शास्त्र द्वारा वर्जित वर्जित किये गए कर्म, अविहित कर्म जैसे- असत्य वादन, कन्या उत्पीड़न, चौर्य कर्म आदि 2. योग. वे कर्म जिसका योग साधना के दौरान निषेध किया गया हो जैसे- हिंसा, असत्यभाषण आदि।

निषिद्ध क्षेत्र *पुं.* (तत्.) राज. वह क्षेत्र जहाँ पर सरकारी आदेश से किसी प्रकार की गतिविधि, क्रिया कलाप, प्रवेश आदि वर्जित हो।

निषिद्ध पुस्तक *पुं.* (तत्.) विधि. 1. सामाजिक, धार्मिक या राष्ट्रीय दृष्टि से पठन-पाठन के योग्य न होने के कारण जो पुस्तक सरकार द्वारा द्वारा प्रतिबंधित कर दी गई हो 2. खुले बाजार में सरकारी तौर पर या न्यायालय के आदेश से बिक्री के अयोग्य पुस्तक, प्रतिबंधित पुस्तक।

निषिद्धमाल *पुं.* (तत्.+अर) विधि. गैरकानूनी ढंग से देश में लाया गया या देश से बाहर ले जाया गया माल या वस्तु।

निषिद्धि *स्त्री.* (तत्.) 1. किसी कार्य को रोकने की स्थिति 2. रोक, मनाही 3. निषेध 3. दूर रखना, दूर हटाना 4. प्रतिरक्षा।

निषूदन *पुं.* (तत्.) 1. वध, हत्या *वि.* (समासांत होने पर) वध या नाश करने वाला जैसे- शत्रु निषूदन शत्रु का वध करने वाला।

निषेक *पुं.* (तत्.) 1. जल आदि का छिडक़ाव, तर करना 2. बूँद-बूँद टपकना, रिसना, झरना 3. सिंचाई 4. धोने के लिए पानी 5. मैला पानी 6. गर्भधारण कराना, गर्भाधान।

निषेचन *पुं.* (तत्.) जीव. 1. दो युग्मकों का घुल मिल कर एक संयुक्त कोशिका बनाना, जिससे नए जीवन का प्रारंभ हो 2. छिड़कना 3. सींचना 4. बीज डालना।

निषेचित *वि.* (तत्.) 1. जीव. जिसका निषेचन किया गया हो 2. जीव. गर्भधारण की स्थिति 3. सिंचित। fertilized

निषेच्य *वि.* (तत्.) जीव. 1. जो निषेचन के लिए पूर्णतया योग्य हो अथवा जिसका निषेचन किया जा सकता हो 2. प्रजनन शक्ति से युक्त, जननक्षमता। fertile

निषेच्यता *स्त्री.* (तत्.) [निषिच्य+ता प्रत्यय]1. निषेच्य होने की स्थिति या भाव 2. उर्वरता 3. गर्भधारण करने की क्षमता 4. प्रजनन क्षमता, उपजाऊपन। fertility

निषेध *पुं.* (तत्.) प्रशा.विधि. 1. किसी काम को करने से रोकने का अधिकृत आदेश 2. किसी मादक द्रव्य की बिक्री अथवा उपभोग पर लगाई गई पाबंदी दर्श. 1. किसी नियम का प्रतिवाद, खंडन 2. अभाव सां.नृ.वि. *वि.* वर्जित, वर्जित शब्द, वर्जित कर्म। prohibition

निषेधक *वि.* (तत्.) 1. निषेध या मना करने वाला 2. जिसके द्वारा किसी कार्य को करने का निषेध

निषेध या मनाही की जाए जैसे- निषेधक नियम prohibitary 3. प्रतिषेधक दर्श. खंडन करने वाला।

निषेधन *पुं.* (तत्.) 1. निषेध करने की क्रिया या भाव 2. रोक, मनाही।

निषेधन निर्देशन *पुं.* (तत्.) 1. किसी कार्य के निषेध/अस्वीकार करने की स्थिति में साधिकार दिये गए व्यापक निर्देश या मार्गदर्शन 2. किसी भी कार्य के रोकने के लिए तर्क संगत निर्देश देने की क्रिया या विधि। negative guidance

निषेध पक्ष *पुं.* (तत्.) (भाषा.) 1. किसी भी विषय का विवेचन करते समय प्रस्तुत किया जाने वाला उसका नकारात्मक दृष्टिकोण, पहलू, पक्ष 2. किसी तथ्य को स्वीकार न करने योग्य पक्ष 3. किसी भी भाव, व्यवहार, कथन, अभिप्राय का नकारात्मक पहलू या पक्ष जैसे- बिनु भय होय न प्रीति 4. किसी कार्य को रोकने/मना करने के लिए प्रस्तुत तर्कसंगत पक्ष विलो. सकारात्मक पक्ष।

निषेधपत्र *पुं.* (तत्.) 1. किसी के द्वारा किये जाने वाले या किये जाते हुए कार्य को तत्काल रोकने के लिए दिया गया लिखित आदेश जैसे- अवैध निर्माण पर दिया गया निषेधपत्र 2. प्रतिषेध लेख।

निषेधवाचक-समुच्चय बोधक *पुं.* (तत्.) भाषा. एक प्रकार का अव्यय जो दो शब्दों, दो पदबंधों, दो वाक्यों या दो उपवाक्यों को आपस में निषेधात्मक रूप से जोड़ता है जैसे- किंतु, परंतु, ना, आदि 1. वह खेलता है किंतु पढ़ता नहीं 2. वह ना विद्यालय जाता है ना ही घर का कार्य करता है।

निषेधवाद *पुं.* (तत्.) पाश्च.दर्श. 1. वह वाद या मत जिसके अनुसार सत्य की प्राप्ति असंभव है 2. सत्य की प्राप्ति में संशय करने का सिद्धांत/मत 3. दृश्य जगत को मिथ्या मानने वाला मतवाद।

निषेध विधि *स्त्री.* (तत्.) विधि. किसी विषय, वस्तु या नियम आदि का निषेध करने वाली आज्ञा, कथन, बात, कानून।

निषेधाज्ञा *स्त्री.* (तत्.) प्रशा. 1 शांति और व्यवस्था बनाये रखने के लिए निर्दिष्ट स्थान पर लोगों के भीड़ के रूप में एकत्र होने पर प्रशासन द्वारा लगाई गई पाबंदी का आदेश जिसमें कुछ विशेष परिस्थितियों में शस्त्र लेकर चलने पर भी पाबंदी लगा दी जाती है 2. किसी अन्य प्रकार का निषेध-आदेश पर्या. निषेधात्मक आदेश। prohibitary order

निषेधात्मक *वि.* (तत्.) [निषेध+आत्मक]1. वह कथन या विधान जो निषेध या रोकने के अर्थ मे हो 2. जो (कथन या बात) प्रतिवाद, अस्वीकृति या इनकार करने के रूप में हो।

निषेधात्मक अनुशास्ति *स्त्री.* (तत्.) सामाजिक व्यवस्था एवं अनुशासन बनाये रखने के लिए किये जाने वाले सर्वजनहितकारी निषेधात्मक उपाय जैसे- 1. धूम्रपान निषेध है, यहाँ मत थूको, वृक्षों का काटना मना है, यहाँ कूड़ा डालना मना है, कक्षा में जोर से मत बोलो, बाहर ठंड में मत घूमो, प्रवेश निषेध है, रिश्वत देना मना है 2. परमाणु विस्फोट करने पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा किये गए निषेधात्मक उपाय जैसे- आर्थिक आर्थिक सहायता पर प्रतिबंध आदि। prohibition sanction

निषेधात्मक आदेश *पुं.* (तत्.) दे. निषेधाज्ञा।

निषेधादेश *पुं.* (तत्.) दे. निषेधाज्ञा।

निषेधाधिकार *पुं.* (तत्.) 1. प्रशा. किसी प्रस्ताव, निर्णय अथवा कार्रवाई को रोक देने का अधिकार 2. राज. सरकार के किसी विभाग को किसी अन्य विभाग के फैसलों के क्रियान्वयन पर रोक लगा देने का विशेष अधिकार 3. विधि. अंतरराष्ट्रीय विधि सुरक्षा परिषद के पाँच स्थायी सदस्यों में से किसी एक सदस्य द्वारा परिषद् के के विचाराधीन प्रस्ताव को पारित होने से रोक देने का अधिकार। veto

निषेधित *वि.* (तत्.) 1. (वह कथन या बात) जिसका निषेध किया गया हो 2. रोका हुआ या रोका गया, निषिद्ध।

निषेवक *वि.* (तत्.) 1. निषेवण, अनुसरण, अभ्यास करने वाला 2. उपासक 3. सेवक 4. अनुरागी 5. प्रयोग में लाने वाला 6. उपयोग करने वाला।

निषेवण *पुं.* (तत्.) 1. जीवन वृत्ति के लिए किया जाने वाला कार्य, सेवा, नौकरी 2. उपासना 3. निवास 4. अनुराग 5. अभ्यास या प्रयोग 6. परिचय।

निष्कंटक *वि.* (तत्.) [निस्+कंप]1. जो कंटक (काँटो) से रहित हो जैसे- निष्कंटक वृक्ष, मार्ग आदि 2. (वह जीवन या कार्य या अधिकार) जो किसी प्रकार की बाधा, आपत्ति, झंझट या संकट, उपद्रव आदि से रहित हो, निर्विघ्न 3. शत्रुओं से शून्य 4. भयरहित *क्रि.वि.* बिना किसी प्रकार की रुकावट या बाधा के जैसे- वह निष्कंटक शासन कर रहा है।

निष्कंप *वि.* (तत्.) 1. जो कंपन रहित हो, स्थिर, दृढ़, जो बिल्कुल हिलता-डुलता न हो 2. गतिहीन, अचल जैसे- निष्कंप तरु, निष्कंप तनु।

निष्क *पुं.* (तत्.) 1. प्राचीन काल में प्रचलित एक सोने का सिक्का 2. उक्त सिक्के की बराबर की मात्रा, कर्ष या 16 मासा 3. सुवर्ण, सोना 4. सोने का बना हार 5. 108 या 150 सुवर्णों की एक प्राचीन तौल 6. दीनार 7. चांडाल टि. प्राचीन गणितज्ञ भास्कराचार्य ने अपने ग्रंथ लीलावती में निष्क परिमाण का विस्तृत उल्लेख किया है।

निष्कपट *वि.* (तत्.) छल, धोखा आदि से रहित, साफ-सुथरा (व्यवहार)।

निष्कपटता *स्त्री.* (तत्.) जिसके मन में किसी प्रकार का दुराव न हो, स्वच्छ, निष्कपट जीवन; व्यक्ति का वह आंतरिक भाव जो कपट से पूर्णतया रहित हो, कपटशून्यता, कपटहीनता, निश्छलता।

निष्कपट-व्यवहार *पुं.* (तत्.) शुद्धनिश्छल मन से किया हुआ कार्य।

निष्कपटी *वि.* (तत्.) वह व्यक्ति जिसका आचरण किसी प्रकार के कपट भाव से रहित तथा स्वच्छ हो जैसे- निष्कपटी व्यक्ति समाज के लिए आदर्श होते हैं।

निष्करुण *वि.* (तत्.) 1. जिसमें करुणा न हो, निर्दय, करुणाहीन 2. क्रूर।

निष्कर्म *वि.* (तत्.) 1. जो बिना किसी कर्म (वृत्ति, व्यवसाय आदि) के हो, निष्क्रिय, बेकार, बिना रोजगार के जैसे- इस समय वह निष्कर्म हुआ बैठा है 2. किसी कर्म के प्रति आसक्त न होने वाला, निष्काम भाव से कर्म करने वाला 3. सभी प्रकार के उत्तरदायित्वों से मुक्त जीवन जीने वाला, निष्कर्म जीवन।

निष्कर्मा *वि.* (तत्.) 1. कोई कामना लिए बिना किसी कर्म को करने वाला 2. जिसकी किसी कार्य के लिए उपयोगिता न हो जैसे- वह अब किसी काम का नही है, निष्कर्मा बना बैठा रहता है।

निष्कर्ष *पुं.* (तत्.) 1. ऐसा परिणाम जो उचित विचार-विमर्श के पश्चात् निकाला जाता है, खोजबीन के बाद किया हुआ सारभूत निश्चय 2. सार, सार-संग्रह, किसी विषय या पाठ का सारांश, निचोड़।

निष्कर्षक *वि.* (तत्.) 1. निष्कर्षण करने वाला, सारतत्व निकालने वाला 2. अर्क निकालने वाला, निचोड़ने वाला।

निष्कर्षण *पुं.* (तत्.) 1. (किसी वस्तु आदि को) खींच कर निकालना जैसे- कील का निष्कर्षण, काँटे का निष्कर्षण, दाँत का निष्कर्षण 2. दूर करना 3. निष्कर्ष निकालना 4. रसा.वि. मिश्रण में से वांछित वस्तु को अलग निकालने की क्रिया जैसे- खनिज में से शुद्धधातु का निष्कर्षण।

निष्कलंक *वि.* (तत्.) 1. जिसमें किसी प्रकार का कलंक या दोष न लगा हो, कलंकरहित, दोषरहित 2. कलंक या किसी प्रकार के लांछन से रहित, शुद्ध, निर्दोष विलो. कलंकित।

निष्कलंकी *वि.* (तत्.) कलंक रहित, निष्कलंक जैसे- उनका निष्कलंकी व्यक्तित्व सभी को प्रभावित करता था।

निष्कल *वि.* (तत्.) जो कलाओं से रहित हो, पूर्ण, जो आंशिक न हो जैसे- आज पूर्णमासी को निष्कल चंद्रोदय होगा।

निष्कलुष *वि.* (तत्.) 1. जो किसी भी प्रकार के कलुष अथवा दाग-धब्बे से रहित हो, निर्मल, पापरहित, दोषरहित, पवित्र उदा. स्वामी दयानंद का जीवन निष्कलुष बीता।

निष्कषाय *वि.* (तत्.) 1. मलरहित, स्वच्छ, दुर्भावनाओं रहित, शुद्ध हृदय, मीरा ने कृष्ण की निष्कषाय हृदय से भक्ति की।

निष्काम *वि.* (तत्.) 1. कामनाओं से रहित, इच्छारहित, निस्पृह 2. सभी प्रकार की सांसारिक वासनाओं से रहित 3. फल की आसक्ति के बिना किया जाने वाला कर्म जैसे- गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को निष्काम कर्म का उपदेश दिया।

निष्काम कर्म *पुं.* (तत्.) कामना रहित कर्म, कर्तव्य समझकर किया गया कर्म, फलप्राप्ति की इच्छा रहित कर्म विलो. काम्य कर्म।

निष्कामता *स्त्री.* (तत्.) निष्काम होने की क्रिया या या भाव जैसे- निष्कामता योगी का प्रथम गुण है।

निष्काम प्रेम *पुं.* (तत्.) वह प्रेम जो बिना किसी कामना के किया जाता है, जिसमें केवल प्रेम भावना की अभिव्यक्ति एवं आत्म समर्पण का भाव होता है जैसे- राधा का श्री कृष्ण के प्रति प्रेम निष्काम प्रेम था।

निष्काम-भक्ति *स्त्री.* (दर्श.) 1. फल की प्राप्ति की आशा या कामना रहित की गई भक्ति 2. ऐसी भक्ति जिसमें देना या समर्पण करना ही उद्देश्य हो, लेने की इच्छा या कामना न हो जैसे- मीरा की निष्काम भक्ति विलो. सकाम भक्ति।

निष्काम-भाव *पुं.* (तत्.) 1. हृदयगत वह भाव जो किसी प्रकार की फल प्राप्ति की कामना से मुक्त हो विलो. सकाम भाव।

निष्कामी *वि.* (तत्.) जीवन में किसी प्रकार की इच्छा या कामना न रखने वाला व्यक्ति।

निष्कारक *वि.* (तत्.) 1. किसी को समाज या जाति से निष्कासित करने वाला 2. बहिष्कार करने वाला, बहिष्कर्ता राज. किसी का निर्वासन या देश-निष्कासन करने वाला।

निष्कारण *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई कारण न हो, कारण रहित, जो बिना कारण के हो 2. अनावश्यक *क्रि.वि.* बिना कारण के, बेवजह।

निष्कासन *पुं.* (तत्.) 1. निकाल देना, बाहर कर देना 2. प्रशा. अवांछित अथवा आपत्तिजनक कृत्य के परिणाम स्वरूप किसी व्यक्ति या छात्र को समाज, क्लब, शिक्षण संस्था आदि से बाहर निकाल देने की क्रिया या भाव पर्या. बहिष्करण वाणि. 1. निकासी 2. रवन्ना 3. निकासी विक्रम 4. बहिष्कार, उत्क्षेपण 4. प्रशा. स्थानांतरण, बर्खास्तगी, परच्युति, निराकरण, पृथककरण, दूरीकरण।

निष्कासित *वि.* (तत्.) 1. जिसका निष्कासन हुआ हो, जो निकाल दिया गया हो 2. जिसे पद, नौकरी, वास स्थान आदि से निकाल दिया गया हो, बरखास्त 3. राज. प्रांतीय या राष्ट्रीय अपराध के दंड स्वरूप राज्य/राष्ट्र से बाहर निकाला हुआ।

निष्कासी *स्त्री.* (तत्.) 1. निकाले जाने की क्रिया 2. बाहर कर देने का कार्य 3. पद से हटाने की क्रिया।

निष्किंचन *वि.* (तत्.) जिसके पास कुछ भी (धन आदि) न हो, निर्धन, दरिद्र, अकिंचन, दीनहीन।

निष्कृत *वि.* (तत्.) 1. जिसे किसी कार्य के उत्तरदायित्व से मुक्ति मिली हो 2. जिसको क्षमा मिली हो।

निष्कृति *स्त्री.* (तत्.) 1. मुक्ति, छुटकारा उदा. इस इस चिंता से निष्कृति पाऊँ 2. किसी के द्वारा किये गए उपकार का बदला या उससे मुक्ति, उऋण होने की अवस्था।

निष्कृष्ट *वि.* (तत्.) 1. किसी वस्तु आदि से निचोड़कर निकाला हुआ *पुं.* सारतत्व या सारभूत।

निष्केंद्र *वि.* (तत्.) ज्या. ऐसी आकृति जिसके केंद्र की कोई भूमिका न हो, केंद्र निर्पेक्ष आकृति।

निष्कोण *पुं.* (तत्.) ज्या. वक्र आकृति जिसमें कोई भी कोण न हो।

निष्कोषण *पुं.* (तत्.) 1. छीलने का कार्य 2. धान, चना, मूँग आदि अन्न की भूसी निकालने का कार्य 3. किसी वस्तु या उसके किसी अंश या भाग को खींचकर, फाड़कर या कुरेदकर बाहर निकालने का मार्ग 4. किसी वस्तु को साफ करने के लिए खुरचने का काम।

निष्क्रम *पुं.* (तत्.) 1. किसी स्थान से बाहर निकलने की क्रिया या बाहर निकालना 2. बाहर जाने का कार्य 3. जाति से बाहर निकालने की अवस्था, जातिच्युत करने का कार्य पर्या. निष्क्रमण।

निष्क्रमण *पुं.* (तत्.) 1. आगे या बाहर जाने की क्रिया 2. संघटित रूप में सुरक्षा की दृष्टि से किसी समुदाय का अपने गृहनगर, राज्य, देश से बाहर जाने की स्थिति उदा. कश्मीर से हिंदुओं का निष्क्रमण 3. एक वैदिक संस्कारः चौथे मास में, नवजात का पहली बार खुली हवा में निकालना और सूर्य के दर्शन कराने का कार्य 4. प्रस्थान, निर्गमन 5. निकास, परित्याग, शून्यीकरण 6. मलत्याग।

निष्क्रमण वीजा *पुं.* (तत्.) 1. प्रस्थान प्रमाणपत्र 2. एक देश से दूसरे देश में जाने के लिए शासकीय नियमों के आधार पर बनाया जाने वाला एक प्रकार का प्रवेशपत्र।

निष्क्रय *पुं.* (तत्.) 1. किसी विपत्ति या समस्या से निजात पाना, उद्धार, छुटकारा 2. किसी कार्य के बदले दिया जाने वाला धन, मजदूरी, भाड़ा 3. पुरस्कार, इनाम 4. बंधन से छुड़ाने के हेतु दिया जाने वाला धन 5. किन्ही दो वस्तुओं की परस्पर अदला-बदली, विनिमय।

निष्क्रयण *पुं.* (तत्.) दे. निष्क्रय।

निष्क्रांत *वि.* (तत्.) 1. जो किसी स्थान से निकल गया हो, निकला हुआ 2. निकाला हुआ 3. स्वेच्छा से अपने ग्राम, नगर जनपद राज्य, या देश आदि को छोड़ने वाला।

निष्क्रांत संपत्ति *स्त्री.* प्रशा. सुरक्षा अथवा राजनीतिक कारणों से किसी क्षेत्र से अन्यत्र चले जाने वाले लोगों द्वारा वहाँ छोड़ी गई संपत्ति।

निष्क्रामित *वि.* (तत्.) 1. विषय परिस्थिति या अपराध आदि की दंडनीय व्यवस्था के अनुसार, ग्राम, नगर, जनपद, राज्य, देश आदि से निकाला हुआ 2. किसी सेवा, नौकरी आदि से निकाला हुआ दे. निष्क्रांत।

निष्क्रिय *वि.* (तत्.) 1. क्रिया या कर्म से विहीन, अकर्मण्य, निश्चेष्ट 2. प्रयत्न रहित, आलसी, निठल्ला 3. शास्त्रविहित कर्मों को न करने वाला विलो. सक्रिय।

निष्क्रिय अनुभव *पुं.* (तत्.) स्वयं किए बिना दूसरों को देख-सुनकर या पढ़कर किया गया अनुभव।

निष्क्रिय क्षमता *स्त्री.* (तत्.) संयंत्र की स्थापित क्षमता का वह भाग जिसका उपयोग उत्पादन स्तर में गिरावट के कारण हो नहीं पाता पर्या. अप्रयुक्त क्षमता।

निष्क्रिय खाता *पुं.* (तत्.) एक साल से अधिक समय तक किसी प्रकार के लेन-देन से रहित बचत खाता।

निष्क्रिय जमा *पुं.* अर्थ. बैंक के बचत खाते में जमा ऐसी धनराशि, जिसका खातेदार द्वारा कभी कभी उपयोग न किया गया हो।

निष्क्रियण *पुं.* (तत्.) 1. मनोवैज्ञानिक विधि से किसी की स्वाभाविक क्रिया या व्यवहार को रोक देने का कार्य 2. किसी के मन की शक्ति को अपने वश में करना 3. बम आदि को निष्क्रिय करना।

निष्क्रिय पूँजी *स्त्री.* (तत्.) 1. वह पूँजी जिसका किसी प्रकार से उपयोग न हो रहा हो 2. जो पूँजी व्यापार में न लगी हो।

निष्क्रिय प्रतिरोध *पुं.* राज. 1. किसी भी शासकीय व्यवस्था या नियम का लोकहित की दृष्टि से शांतिपूर्वक विरोध 2. सत्याग्रह, असहयोग।

निष्क्रिय संसाधन *पुं.* (तत्.) ऐसे उपलब्ध संसाधन, संपत्ति आदि जिनका उपयोग न हो सके।

निष्क्रिय साझेदार *पुं.* वाणि. व्यापार के प्रबंध और संचालन में सक्रिय भाग न लेने वाला साझेदार।

निष्क्रियित *वि.* (तत्.) रासायनिक क्रिया द्वारा धातु धातु की सतह को अल्पप्रभावी या कम करना।

निष्ठ *वि.* (तत्.) 1. ठहरा हुआ, स्थिर, स्थित 2. किसी कार्य, व्यवसाय आदि में पूरी तरह मन से लगा हुआ जैसे- कर्मनिष्ठ, व्यापारनिष्ठ, योगनिष्ठ 3. किसी के प्रति पूरी तरह से निष्ठा रखने वाला जैसे- ईश्वरनिष्ठ, भक्तिनिष्ठ।

निष्ठा *स्त्री.* (तत्.) 1. दृढ़तापूर्वक किसी में स्थित रहना 2. किसी बात का दृढ़ निश्चय 3. किसी के प्रति भक्ति, श्रद्धा या विश्वास की मनोवृत्ति जैसे- राजभक्ति, ईश्वर के प्रति निष्ठा, कर्तव्यनिष्ठा 4. स्वामिभक्ति, ईमानदारी, वफादारी 5. भक्ति, श्रद्धा।

निष्ठावान *वि.* (तत्.) किसी के प्रति निष्ठा रखने वाला, निष्ठायुक्त, श्रद्धावान।

निष्ठा शपथ *स्त्री.* विधि. संविधान के अनुसार उत्तरदायित्व पूर्ण पद ग्रहण करने के पूर्व ली जाने वाली शपथ।

निष्ठीन *पुं.* (तत्.) 1. थूकने का कार्य, थूक देने का का अर्थ 2. तिरस्कार में थूकने का कार्य।

निष्ठीवन *पुं.* (तत्.) 1. थूक (मुख के अंदर, लार, कफ या पान तंबाकू आदि के चर्वण या सेवन से उत्पन्न 2. मुँह से थूक निकालकर बाहर फेंकना 3. खखार।

निष्ठुकर *वि.* (तत्.) 1. दया, मोह, ममता से रहित, निर्दय, रूखा या कठोर 2. सख्त, कड़ा।

निष्ठुरता *स्त्री.* (तत्.) 1. निष्ठुर होने की अवस्था या भाव, दयाहीनता, कठोरता।

निष्ठुरत्व *पुं.* (तत्.) दे. निष्ठुरता।

निष्ण *वि.* (तत्.) 1. विषय विशेष की विशेषज्ञता वाला, विशेषज्ञ 2. प्रवीण, निपुण, दक्ष पर्या. निष्पात।

निष्पंक *वि.* (तत्.) 1. कीचड़ या दलदल से रहित भूमि. 2. कीचड़ से पूरी तरह मुक्त 3. स्वच्छ, साफ।

निष्पंद *वि.* (तत्.) 1. स्पंदन रहित, किसी भी प्रकार की हलचल रहित, जड़वत्, बेजान।

निष्पक्व *वि.* (तत्.) 1. काढ़ा बनाया हुआ, जल में भिगोया हुआ 2. भली प्रकार पकाया हुआ, निष्पक्व भोजन।

निष्पक्ष *वि.* (तत्.) 1. बिना किसी पक्षपात के 2. न्यायसंगत 3. पक्ष या दल से अलग, तटस्थ।

निष्पक्षता *स्त्री.* (तत्.) 1. निष्पक्ष होने की स्थिति या भाव 2. पक्षपाती न होने की स्थिति 3. किसी दल या पक्ष में न होने की अवस्था, तटस्थता।

निष्पक्षपात *पुं.* (तत्.) 1. पक्षपात न करने की स्थिति 2. पक्षपात रहित।

निष्पत्ति *स्त्री.* (तत्.) 1. शब्द वस्तु आदि की उत्पत्ति, जन्म 2. किसी कार्य की परिणति, पूर्णता 3. किसी के आदेश द्वारा किसी कार्य का किया जाना, कार्यान्वयन, निष्पादन 5. समाप्ति, निपटारा।

निष्पत्रण *पुं.* (तत्.) वृक्षों, लताओं आदि के पीले पड़े पत्ते झड़ने का मौसम बसंत की ऋतु, पतझड़ के पूर्व।

निष्पत्रता *स्त्री.* (तत्.) पेड़-पौधों की पत्रहीनता की अवस्था, पत्ते झड़ने की अवस्था।

निष्पन्न *वि.* (तत्.) 1. पूरा किया गया कार्य, सिद्ध 2. पूर्ण।

निष्पलक *वि.* (तत्.) 1. बिना पलक झपकाए, निर्निमेष, अपलक, एकटक।

निष्पात *वि.* (तत्.) 1. किसी विषय का उत्तम ज्ञान रखने वाला, विषय विशेषज्ञ, पारंगत 2. कुशल, चतुर, विज्ञ, दक्ष।

निष्पादक *पुं.* (तत्.) 1. किसी कार्य को पूरा करने की क्रिया 2. किसी के आदेशानुसार किसी कार्य को पूरा करने वाला व्यक्ति, कार्यान्वित करने वाला, तामील करने वाला व्यक्ति 3. वसीयत-कर्ता द्वारा अपनी वसीयत को कार्यान्वित करने के लिए नियुक्त व्यक्ति प्रशा. प्रबंधक, निर्वाहक, जो किसी संस्था, विभाग, व्यवस्था का प्रबंधन करता हो *वि.* (तत्.) 1. जिसका कार्यान्वयन शेष रहता हो 2. जिसकी तामील की जानी हो 3. निष्पादन करने के योग्य।

निष्पादन *पुं.* विधि./प्रशा. 1. दिए हुए निर्णय या आदेश की कार्यान्विति 2. निष्पन्न करने की क्रिया 3. कार्यान्वयन, तामील।

निष्पादन बजट *पुं.* प्रशा. कार्य के भौतिक लक्ष्य को ध्यान में रखकर बनाया गया बजट, काम की मात्रा और खर्च के बीच सामंजस्य स्थापित कराने वाला बजट।

निष्पादन मजदूरी *स्त्री.* (तत्.) कार्य के अनुरूप निश्चित की गई मजदूरी, कार्य के अनुरूप मजदूरी।

निष्पादन मानक *पुं.* राज.) लोक सेवक द्वारा, निश्चित कालावधि में, संपन्न किए जाने वाले कार्य की मानक मात्रा 2. निश्चित किए गए कार्य की आदर्श मात्रा या मान जैसे- एक वर्ष में पाँच गाँवों का विद्युतीकरण करना।

निष्पादन रिपोर्ट *स्त्री.* (तत्.) निर्धारित कार्य की निष्पन्नता के विषय में अधिकृत पदाधिकारी की रिपोर्ट 2. निष्पन्न कार्य का लेखा-जोखा।

निष्पादनीय *वि.* (तत्.) 1. जो कार्य निष्पन्न करने के योग्य हो, कार्यान्वयन के योग्य 2. जो कार्य अभी निष्पन्न किया जाना हो।

निष्पादित *वि.* (तत्.) 1. जिसका निष्पादन किया जा चुका हो, निष्पन्न जैसे- निष्पादित शब्दकोश 2. कोश-निष्पादन की प्रक्रिया से बना हुआ कोई शब्द जैसे- बंधु से बंधुत्व, देह से दैहिक।

निष्पाप *वि.* (तत्.) 1. वह व्यक्ति जिसने कोई पाप नहीं किया हो, पाप-रहित, बेगुनाह, मासूम 2. वह कर्म जिसके करने से पाप न लगता हो।

निष्पापता *स्त्री.* (तत्.) पाप रहित होने की अवस्था या भाव, पापहीनता, बेगुनाही, मासूमियत।

निष्पीडन *पुं.* (तत्.) 1. सरस वस्तु को निचोड़ने का कार्य, आर्द्र वस्तु अथवा वस्त्र को निचोड़ने की क्रिया या भाव।

निष्पीडित *वि.* (तत्.) 1. जिसको निचोड़ा जा चुका हो, निचोड़ा हुआ 2. भींचा हुआ।

निष्पुष्प *वि.* (तत्.) पुष्प रहित, पुष्पहीन, बिना फूल के।

निष्पेषण *पुं.* (तत्.) 1. पेरने की क्रिया या भाव, पेरने का कार्य जैसे- कोल्हू में गन्नों का निष्पेषण 2. पीसने का कार्य, जैसे चने का निष्पेषण 3. कूटने का कार्य, चूर्ण करने का कार्य जैसे- हल्दी का निष्पेषण।

निष्पेषित *वि.* (तत्.) 1. पेरा हुआ 2. पीसा हुआ 3. कूटा हुआ, चूर्ण किया हुआ।

निष्पौरुष *वि.* (तत्.) जो पौरुषहीन हो, पौरुष रहित, शक्तिहीन, नपुंसक, हिजड़ा।

निष्प्रताप *वि.* (तत्.) जो प्रताप रहित हो, प्रतापहीन, ओजहीन।

निष्प्रतिबंध *वि.* (तत्.) 1. प्रतिबंधों से मुक्त 2. उन्मुक्त (कार्यक्रम) 3. शिथिल नियमों वाला।

निष्प्रतिभ *वि.* (तत्.) 1. प्रखर योग्यता विहीन, जिसमें प्रतिभा न हो, प्रतिभारहित, प्रतिभाहीन, प्रतिभाशून्य।

निष्प्रभ *वि.* (तत्.) 1. जिसमें ओज न हो, प्रभाहीन, तेजहीन 2. कांतिरहित 3. ओजहीन, हतप्रभ।

निष्प्रभाव *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई प्रभाव न हो, प्रभाव रहित, प्रभावहीन, अप्रभावी 2. निरस्त, अमान्य 3. प्रभाव से तुरंत रद्द।

निष्प्रभावन *पुं.* प्रशा. 1. किसी कार्य, योजना या किसी राजकीय आदेश का निरस्तीकरण, रद्दीकरण, अभिशून्यन 2. निराकरण 3. विलोपन।

निष्प्रभावी *वि.* (तत्.) 1. जो किसी प्रकार के प्रभाव से रहित हो 2. बिना प्रभाव वाला, असर न डालने वाला।

निष्प्रभावी दर *स्त्री.* (तत्.) ब्याज की वह दर जो अब प्रभावी न रही हो।

निष्प्रभावी मुद्रा *स्त्री.* (तत्.) 1. अप्रभावित वह मुद्रा जिसके बाजार में आ जाने से अर्थव्यवस्था अप्रभावित रहती है 2. रोजगार आदि को प्रभावित न कर सकने वाली आगत मुद्रा।

निष्प्रयोजन *वि.* (तत्.) 1. प्रयोजन रहित, बिना प्रयोजन के प्रारंभ किया हुआ, निरुद्देश्य 2. निरर्थक, व्यर्थ, बेमतलब 3. *क्रि.वि.* बिना प्रयोजन के, बेमतलब का।

निष्प्रवाह जल *पुं.* (तत्.) 1. ठहरा हुआ जल, प्रवाह रहित जल 2. सागर का स्थिर जल, निश्चल जल।

निष्प्रवाह हिम *पुं.* (तत्.) स्थिर हिम पट्टिकाओं से निर्मित ऊबड़-खाबड़ स्थान, निष्प्रवाह हिम या डेड आइस।

निष्प्राण *वि.* (तत्.) 1. जिसमें प्राण न हों, निर्जीव, जड़ 2. ऊर्जा रहित लाक्ष. उत्साहहीन, ओजरहित जैसे- निष्प्राण उपन्यास, निष्प्राण नाटक।

निष्फल *वि.* (तत्.) 1. जिसका कोई फल या परिणाम न हो, निरर्थक, व्यर्थ 2. जिस कार्य को करने में सफलता न मिले, असफल, विफल 3. फल रहित पेड़-पौधे।

निष्फल खर्च *पुं.* (तत्.) ऐसा व्यय जिसका फल न मिले, व्यर्थ 1. किसी सड़क के निर्माण के बाद पुनः किसी उद्देश्य से तोड़ना, फिर बनाना।

निष्फेन *वि.* (तत्.) झाग रहित तरल पदार्थ (दूध, तेल आदि)।

निसंबाध *पुं.* (तत्.) विस्तीर्ण, फैला हुआ।

निसमिषी *पुं.* (तत्.) मांस न खाने वाला, शाकाहारी, निरामिष भोजी।

निहंग *वि.* (तद्.) (सं.) निःसंग 1. एकाकी, अकेला 2. अविवाहित 3. परिवार-रहित 4. लज्जाहीन *पुं.* 1. जिसे वैराग्य हो गया हो, वैरागी, साधु 2. सिखों के 'कूका' संप्रदाय का अनुयायी व्यक्ति 3. *वि.* (देश.) जो अत्यधिक लाड़ या दुलार से उद्दंड एवं स्वेच्छाचारी हो गया हो।

निहंता *वि.* (तत्.) 1. हत्या करने वाला, मारने वाला 2. विनाशक, नष्ट करने वाला।

निहत *वि.* (तत्.) 1. मृत, मृत्यु को प्राप्त 2. विनष्ट, जिसका नाश हो गया हो।

निहत्था *वि.* (तद्.) अस्त्र-शस्त्र से रहित हाथ वाला, वाला, आयुध-हीन, निरस्त्र 2. साधनविहीन 3. रिक्त-हस्त, जिसके हाथ खाली हों।

निहनना *स.क्रि.* (तत्.) मार डालना, वध करना।

निहाई *स्त्री.* (तद्.) लौहकारों (लुहारों) तथा स्वर्णकारों के उपयोग में आने वाला एक उपकरण जिस पर वे गर्म लोहे तथा सोने को रखकर, उस पर प्रहार कर उसे आवश्यकतानुरूप स्वरूप प्रदान करते हैं।

निहाना *स.क्रि.* (तद्.) 1. मारना 2. नष्ट करना 3. दबाना *पुं.* बढ़ई के काम आने वाला एक उपकरण जिसकी सहायता से वह लकड़ी में चौकोर छिद्र करता है, बेंटे से युक्त इस उपकरण में लोहे की मोटी, चौड़ी एवं लंबी पत्ती लगी रहती है, जो एक ओर से सपाट तथा दूसरी ओर से कुछ गोलाई लिए होती है। छोटे तथा पतले 'निहाना' को निहानी कहते हैं।

निहार *पुं.* (तद्.) ठंड के दिनों में हवा में मिले हुए अतिसूक्ष्म कणों से बना हुआ बादल जो जमीन की सतह तक फैल जाता है और जिसके दूसरी ओर कुछ दिखाई नहीं पड़ता, नीहार, कुहरा, कोहरा, धुंध टि. जब निहार अत्यंत गहरा होता है तो 'पाले' के रूप में फसल को नष्ट कर

डालता है *वि.* (फा.) दे. निहाल *स्त्री.* (देश.) निहारने की क्रिया, ध्यान पूर्वक देखना।

निहारना *स.क्रि.* (देश.) ध्यानपूर्वक देखना, एकटक देखना, बिना पलक झपके देखते रहना।

निहाल *वि.* (फा.) 1. प्रफुल्ल, प्रसन्न, संतुष्ट, तृप्त 2. जो धन आदि प्राप्त होने से समृद्ध हो गया हो 3. सफलमनोरथ, पूर्णकाम।

निहित *वि.* (तत्.) 1. (सुरक्षित) रखा हुआ, स्थापित, यथा-भूमि में निहित धन 2. अंदर छिपा हुआ, अंतर्हित, दबा हुआ, गुप्त, प्रच्छन्न 3. दिया हुआ अथवा सौंपा गया यथा- निहित अधिकार भाषा. विवक्षित, अंतर्निहित उपलक्षित ध्वनित (अर्थ)।

निहित मूल्य *पुं.* (तत्.) किसी मानव जाति की वे परंपरागत विशेषताएँ जो उस जाति की पहचान बन जाती है और जिनकी रक्षा के लिए वह जाति सदैव संघर्षरत रहती है।

निहित स्वार्थ *पुं.* (तत्.) राज. कार्य विशेष के प्रति अभिरुचि, छिपे हुए निजी लाभ का भाव।

निहितार्थ *पुं.* (तत्.) भाषा. 1. अभिप्रेत अथवा विवक्षित अर्थ 2. उपलक्षित अर्थ दे. निहित।

निहुरना *अ.क्रि.* (देश.) झुकना।

निहोर *पुं.* (देश.) अनुरोध, निवेदन, अभिवेदन, आवेदन।

निहोरना *स.क्रि..* (देश.) 1. निहोरे करना, अनुरोध करना, निवेदन करना, अनुनय- विनय करना, प्रार्थना करना 2. मनुहार करना, रूठे को मनाना 3. कृतज्ञता ज्ञापित करना।

निहोरा *पुं.* (देश.) 1. अभ्यर्थना, प्रार्थना, निवेदन 2. अनुकंपा, कृपा 3. अनुरोध, मनुहार, मनावन 4. अवलंब, सहारा 5. उपकार, आभार।

नींद *स्त्री.* (तद्.) कुछ समय तक रहने वाली प्राणियों की वह प्राकृतिक अवस्था जिसमें नेत्र बंद हो जाते हैं, मांस-पेशियाँ शिथिल पड़ जाती है उनकी चेतना क्रियाएँ रुक जाती हैं जिससे शरीर एवं मस्तिष्क को विश्राम मिलता है, सोने की अवस्था, निद्रा मुहा. नींद उचटना- किसी विघ्न के कारण नींद खुल जाना, सोते-सोते जाग जाना, विचारों के कारण नींद न आना; नींद उड़ना- नींद न आना, बहुत परेशान होना; नींद टूटना- अज्ञान दूर होना, बहुत समय से भूली बात का याद आना; नींद लेना- सो जाना; नींद हराम करना- सोने न देना, चैन से न रहने देना, बहुत परेशान करना; नींद हराम होना- नींद न आना, चिंता, भय आदि के कारण सो न पाना।

नींबू *पुं.* (तद्.) अम्लीय फलों वाला एक उष्ण कटिबंधीय औसत ऊँचाई वाला तथा कंटीला झाड़ीदार पौधा, उक्त वृक्ष का फल जो 'रसदार', स्वाद में खट्टा, आकार में गोल या लंबा हरा परंतु आगे की ओर छोटी सी नोक के साथ, पीले रंग और संतरे के समान बहुत से बीजों से युक्त होता है टि. आयुर्वेद में इसके औषधीय गुण भी बताए गए हैं।

नींव *स्त्री.* (तद्.) किसी संरचना अथवा भवन आदि के निर्माण में दीवारों के नीचे का वह भाग जो भूमि के अंदर ठोस आधार के रूप में बनाया जाता है लाक्ष. मूल आधार मुहा. नींव का पत्थर- मूल आधार, ठोस आधार, वह तत्व, बात अथवा व्यक्ति जो किसी महान् उपक्रम के सुदृढ आधार के रूप में हो; नींव जमाना-आरंभ करना; जड़ें मजबूत करना- आधार को दृढ बनाना; नींव पड़ना- प्रारंभ होना।

नीका *वि.* (देश.) 1. निर्मल, स्वच्छ 2. उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, अच्छा, भला 3. उचित, संगत।

नीकी *वि.* (देश.) अच्छी, सुंदर, मन को लुभाने वाली उदा. 'ससि ते निसि नीकी लगै..... - जसवंत सिंह।

नीके *वि.* (देश.) 1. नीका का बहुवचन, अच्छे।

नीकै *क्रि.वि.* (तत्.) अच्छी तरह, सम्यक् प्रकार से भलीभाँति।

नीग्रो *पुं.* (अं.) अफ्रीकी मूल की विशिष्ट मानव प्रजाति जो अपने काले रंग, घुँघराले घने बाल, मजबूत शरीर-यष्टि, मोटे होंठ, चौड़ा माथा,

इत्यादि के लिए प्रसिद्ध है, हब्शी *वि.* हब्शी जाति का।

नीच *वि.* (तत्.) 1. जो जाति/गुण/कर्म आदि में उत्कृष्ट न हो, निकृष्ट, अधम, तुच्छ 2. नैतिक दृष्टि से हीन, दुष्ट, खल *पुं.* 1. निकृष्ट मनुष्य, दुष्ट व्यक्ति ज्यो. किसी ग्रह का अपने उच्च स्थान से सप्तम स्थान, जहाँ वह अपेक्षाकृत कम शक्ति वाला होता है।

नीचगा *स्त्री.* (तत्.) नदी।

नीचगामिनी *वि.* (तत्.) 1. नीचे की ओर जाने वाली, नदी 2. तुच्छ अथवा अधम स्त्री।

नीचगामी *वि.* (तत्.) 1. नीचे की ओर जाने वाला 2. तुच्छ, अधम *पुं.* जल, पानी।

नीचता *स्त्री.* (तत्.) 1. नीच होने की अवस्था अथवा नीच होने का भाव, नीचपन 2. अधम आचरण, तुच्छ व्यवहार, तुच्छता 3. निकृष्टता, घटियापन 4. दुष्टता, धृष्टता।

नीचत्व *पुं.* (तत्.) दे. नीचता।

नीचा *वि.* (तद्.) 1. जो अन्य किसी स्तर की अपेक्षा निम्नस्तर पर स्थित हो 2. जो किसी की तुलना में कम ऊँचा हो 3. जिसका विस्तार नीचे की ओर हो 4. पद आदि की दृष्टि से जो औरों की तुलना में कम हो 5. झुका हुआ जैसे- नीचा सिर 6. स्वर आदि जो ऊँचा न हो, धीमा उदा. गायक का नीचा स्वर अधिक आनंद दे रहा है।

नीचाई *स्त्री.* (तत्.) नीचा होने की अवस्था, अथवा निम्नता का भाव।

नीचा दिखाना *पुं.* (तत्.) 1. अपमानित करना 2. पराजित करना 3. तुच्छ ठहराना 4. लज्जित करना।

नीचा देखना *पुं.* (तत्.) 1. अपमानित होना 2. पराजित होना 3. अभिमान दूर होना।

नीची *वि.* (तद्.) अपेक्षाकृत कम ऊँची जैसे- नीची दीवार, झुकी (आँखें) प्रयो. नीची दृष्टि से देखना- अपमान भरी अथवा तुच्छ दृष्टि से देखना।

नीचे *क्रि.वि.* (तद्.) 1. अपेक्षाकृत निम्न धरातल पर जैसे- उसका घर नीचे है 2. अधोभाग में जैसे- प्रायः कुर्ते के नीचे पाजामा पहना जाता है 3. किसी की अधीनता में, यथा-अधिकारी के नीचे कार्य करना कठिन होता है, नीचे गिरना- अपनी मान-मर्यादा के अनुरूप आचरण न करने के कारण पतन को प्राप्त होना, नीचे गिराना 1. प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाना 2. पराजित करना 3. पतन की ओर ले जाना, नीचे से ऊपर तक 4. सिर से पैर तक 5. एक सिरे से दूसरे सिरे तक 6. पूरी तरह, पूर्ण रूप से 7. समाज के सभी वर्गों के लोग 8. सभी स्थानों पर।

नीचे-ऊपर *वि.* (तद्.) 1. नीचे तथा ऊपर 2. क्रमशः एक के बाद एक 3. अस्त-व्यस्त, अव्यवस्थित।

नीठि *स्त्री.* (तद्.) 1. इच्छा या रुचि का न होना- अनिच्छा, अरुचि 2. कठिनता *क्रि.वि.* कठिनाई से, जैसे-तैसे, किसी तरह, ज्यों-त्यों करके।

नीड़ *पुं.* (तत्.) 1. बैठने अथवा रुकने का स्थान 2. विश्राम-स्थल 3. पक्षी का घोंसला।

नीड़न *पुं.* (तत्.) 1. (बीमा) बीमे के अनेक प्रकार के प्रस्तावों की एक साथ प्रस्तुति 2. आधायन वाक्य संरचना में पदबंध अथवा उपवाक्य को बीच में डालना जैसे- राम, दशरथ के पुत्र, रण में विजयी हुए।

नीड़बद्ध *पुं.* (तत्.) दे. नीडन, नीडिता।

नीड़ित *पुं.* (तत्.) दे. नीडन।

नीत *वि.* (तत्.) 1. ले जाया गया, पहुँचाया हुआ 2. ग्रहण किया हुआ, गृहीत।

नीति *स्त्री.* (तत्.) 1. समाज को स्वस्थ एवं संतुलित पथ पर अग्रसर करने के उद्देश्य से उसके सभी घटकों व्यक्ति, परिवार, जाति, वर्ग, राज्य आदि के लिए देश-काल और पात्र के अनुसार साधन स्वरूप विधि-निषेध मूलक नियमों का विधान 2. उद्देश्य पूर्ति के उपाय 3. राज्य-रक्षा के उपाय 4. बुद्धि-कौशल 5. ले जाने की क्रिया।

नीतिकथा *स्त्री.* (तत्.) वह कथा जिसका उद्देश्य सदाचार तथा कुशल व्यवहार की शिक्षा प्रदान करना हो जैसे- कछुए और खरगोश की कथा, पंचतंत्र की कथाएँ आदि।

नीतिकुशल *वि.* (तत्.) नीति का ज्ञान तथा उसका उचित रूप से प्रयोग करने में समर्थ दे. नीति।

नीतिकुशलता *स्त्री.* (तत्.) नीतिकुशल होने का भाव या गुण, नीति के प्रयोग में अथवा कार्यान्वयन में दक्षता।

नीतिगत *वि.* (तत्.) नीति से संबंध रखने वाला, नीति संबंधी उदा. नीतिगत प्रश्न।

नीतिज्ञ *पुं.* (तत्.) नीति जानने वाला, नीतिशास्त्र का ज्ञाता, नीति-निपुण।

नीतिदोष *पुं.* (तत्.) नीति संबंधी त्रुटियाँ, नीति-निर्माण-काल में की गई भूलें।

नीतिनाटक *पुं.* (तत्.) साम्य. नीति की शिक्षा देने के उद्देश्य से किए जाने वाले नाटक, नीतिनाट्य पा.काव्य. मध्ययुगीन यूरोप में प्रचलित अन्योक्ति परक- धार्मिक नाटक जिनमें पुण्यों तथा पापों को पात्रों के रूप में प्रस्तुत किया जाता था।

नीति निरपेक्ष *वि.* (तत्.) नीति. सदाचार निरपेक्ष, जो अच्छाई तथा बुराई से परे हो, नैतिकता के क्षेत्र से बाहर, नीतिबाह्य।

नीति निरपेक्षता *स्त्री.* (तत्.) नीति निरपेक्ष होने की स्थिति, अवस्था अथवा भाव।

नीति निरपेक्षतावाद *पुं.* (तत्.)1. नीति. स्वयं को अच्छाई अथवा बुराई से असंबद्ध मानने वालों का मत या सिद्धांत 2. काव्य. 1. काव्य तथा कला का मूल प्रयोजन नैतिकता का प्रचार नहीं है, 'कला, कला के लिए है, ऐसा मत।

नीति परायण *वि.* (तत्.) नीति के मार्ग पर चलने वाला, नीति के अनुसार आचरण करने के लिए प्रतिबद्ध।

नीतिपरायणता *स्त्री.* (तत्.) नीति परायण होने का भाव या गुण दे. नीतिपरायण।

नीतिवाक्य *पुं.* (तत्.) समा. नीति पर बल देने वाला अथवा नीति को प्रधानता देने वाला कथन।

नीतिवाद *पुं.* (तत्.) नीति को प्रधानता प्रदान करने वाला मत अथवा सिद्धांत।

नीतिवादी *वि.* (तत्.) नीतिशास्त्र का प्रबल अनुयायी, नीतिवाद का समर्थक, नीतिपरायण।

नीतिशास्त्र *पुं.*(तत्.) नीति. 1. नैतिक आदर्शों तथा उनके अनुरूप आचरण का अध्ययन करने वाला शास्त्र 2. देश, काल तथा पात्र के अनुसार व्यवहार के नियमों का सूक्ष्म विवेचन करने वाला शास्त्र।

नीति-संहिता *स्त्री.* (तत्.) नीति संबंधी अधिनियमों, विधियों आदि का क्रमबद्ध संग्रह।

नीति सूक्ति *स्त्री.* (तत्.) समा. नीति संबंधी सुंदर चमत्कार पूर्ण वाक्य, कथन।

नीप *पुं.* (तत्.) 1. कदंब-वृक्ष 2. अशोक-वृक्ष 3. पर्वत की तलहटी (नीचे की भूमि)।

नीपमाला *स्त्री.* (तत्.) कदंब पुष्पों की माला।

नीबू *पुं.* (तद्.) दे. नींबू।

नीम *वि.* (फा.) 1. आधा 2. थोड़ा जैसे- नीम गर्म पानी, नीम रजा-आधी स्वीकृति।

नीम *पुं.* (तद्.) वृंताकार पत्तियों वाला, अत्यंत कड़वे रस वाला तथा अत्यधिक औषधीय महत्व से युक्त एक विशाल वृक्ष जिसके पत्ते, फूल, पतली हरी शाखाएँ छाल आदि सभी उपयोग में आते हैं, इसके लगभग एक सेमी लंबे लंबगोलाकार (कैप्सूल जैसे) फल पककर पीले हो जाते हैं। इस वृक्ष को गुणों की खान कहा जाता है, भारत के गाँवों में इसकी टहनियों का प्रयोग (दातुन के रूप में) दाँत साफ करने के लिए भी होता है।

नीमाना *वि.* (देश.) भोला-भाला।

नीमावत *पुं.* (तद्.) निंबार्क संप्रदाय (सधुक्कड़ी बोली में वैष्णवों के निंबार्क संप्रदाय को ही नीमावत कहते हैं)।

नीयत *स्त्री.* (अर.) 1. संकल्प, मन में रहने वाला भाव, इरादा, उद्देश्य 2. आशय, भावना, मंशा

मुहा. नीयत डिगना/नीयत बिगड़ना/नीयत में खोट आना- बेईमान हो जाना, मन में लालच हो जाना।

नीर *पुं.* (तत्.) जल, पानी।

नीर-क्षीर *पुं.* (तत्.) दूध और पानी।

नीरक्षीर-विवेक *पुं.* (तत्.) 1. दूध और पानी के मिश्रण में से उन्हें पृथक् करने का गुण जैसे- हंस का नीर-क्षीर विवेक प्रसिद्धहै 2. सत्-असत्, न्याय-अन्याय, उपयोगी-अनुपयोगी, अच्छा बुरा आदि में अंतर कर पाने की शक्ति या सामर्थ्य।

नीरज *वि.* (तत्.) 1. जल से उत्पन्न होने वाला, पुं. 2. कमल 3. मोती।

नीरद *वि.* (तत्.) 1. जल देने वाला मेघ, बादल 2. दंत विहीन, जिसके दाँत न हों।

नीरधर *पुं.* (तत्.) जलधर, मेघ, बादल।

नीरधि *पुं.* (तत्.) जलधि, समुद्र।

नीरनिधि *पुं.* (तत्.) जलनिधि, समुद्र।

नीरपति *पुं.* (तत्.) जल का स्वामी, वरुण देवता।

नीररुह *पुं.* (तत्.) पद्म, कमल।

नीरव *वि.* (तत्.) 1. ध्वनि विहीन, नि:शब्द 2. मौन, चुप, शांत।

नीरस *वि.* (तत्.) 1. रसरहित जैसे- नीरस फल, नीरस काव्य 2. फीका, स्वादहीन जैसे- नीरस भोजन 3. आकर्षण अथवा रोचकता से रहित जैसे- नीरस कार्यक्रम 4. शुष्क, सूखा जैसे- नीरस तरुवर 5. सौंदर्य-बोध की वृत्ति के अभाव वाला, नीरस पाठक, नीरस आलोचक।

नीरसता *स्त्री.* (तत्.) शिक्षा. 1. एकरसता, विरसता, विरसता, ऊब, उकताहट 2. साहि. फीकापन, शुष्कता।

नीरा *पुं.* (तत्.) ताड़ वृक्ष के फलवाले कच्चे भाग को थोड़ा काट देने पर रिसने वाला रस, जिसे वृक्ष के साथ पात्र लगाकर एकत्र किया जाता है यह रस स्वादिष्ट तथा लाभप्रद साथ ही मादक भी होता है, इसका गुड़ भी बनाया जाता है *क्रि.वि.* (देश.) नियर, नियरे, समीप, पासा।

नीराजन *पुं.* (तत्.) 1. देवी, देवताओं की दीपकों से पूजा करने का ढंग, आरती 2. अस्त्र-शस्त्रों को साफ करके चमकाने का कार्य *वि.* नीराजन द्वादशी (कार्तिक शुक्ल द्वादशी) को भगवान विष्णु का तथा नीराजन नवमी (कार्तिक कृष्ण नवमी) को दुर्गा/पार्वती का दीपों से नीराजन किया जाता है।

नीराजना *स्त्री.* (तत्.) आरती दे. नीराजन।

नीराजनी *स्त्री.* (तत्.) 1. आरती करने का पात्र (दीपपात्र) 2. आरती।

नीरुज *वि.* (तत्.) रोग-रहित, नीरोग।

नीरूप *वि.* (तत्.) रूपरहित, आकृति विहीन।

नीरोग *वि.* (तत्.) रोग-रहित, स्वस्थ।

नीरोगिता *स्त्री.* (तत्.) रोग रहित होने की अवस्था। अवस्था।

नीरोगी *वि.* (तत्.) दे. नीरोग।

नील *पुं.* (तत्.) 1. नीला रंग 2. रसा. बैंगनी नीला रंग जो इंडिगोफेरा नामक पौधे से निकाला जाता है, अब उसका रासायनिक संश्लेषण भी हो रहा है, इंडिगो 3. इंडिगोफेरा नाम का पौधा जिससे नीला रंग निकाला जाता है 4. कलंक, लांछन 5. नीलम नामक रत्न, इंद्रनील मणि 6. शरीर पर चोट लगने से पड़ने वाला निशान 7. बरगद का पेड़, वट-वृक्ष 8. विष, जहर 9. 10 हजार अरब की संख्या 10. पुराणों में से एक, कुबेर की एक निधि 11. साहि. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में पाँच भगण और एक गुरु होता है *वि.* 2. नीले रंग का, नीला।

नीलकंठ *वि.* (तत्.) नीले कंठ वाला *पुं.* 1. एक चटक रंग वाला पक्षी जिसका कंठ हल्का नीला-भूरा, पंख फिरोजी तथा गहरे नीले और पैर बादामी वर्ण के होते हैं, आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की दशमी (दशहरा) को इसका दर्शन शुभ माना जाता है 2. शिव, महादेव, समुद्र मंथन से निकले विष का पान करने से उनका कंठ नीला

हो गया था 3. मयूर, मोर की गर्दन गहरे सुंदर नीले रंग की होती है 4. संस्कृत में खंजन पक्षी, गौरैया तथा भ्रमर को भी 'नीलकंठ' कहते हैं।

नीलकंठी *स्त्री.* (तत्.) 1. पर्वतीय स्थानों पर पाई जाने वाली मधुर स्वर वाली एक पर्वतीय चिड़िया 2. उद्यानों में लगाए जाने वाला एक सुंदर पौधा। पौधा।

नीलक *पुं.* (तत्.) 1. नीला थोथा, तूतिया 2. कृष्ण वर्ण का अश्व 3. भ्रमर, भौंरा 4. काला नमक।

नीलकांत *पुं.* (तत्.) 1. नीलम नामक रत्न, इंद्रनील-मणि 2. विष्णु 3. एक पर्वतीय पक्षी जिसके सिर तथा पैरों का वर्ण काला तथा पूँछ का रंग नीला होता है।

नीलगाय *स्त्री.* (देश.) हिरन की प्रजाति का एक जंगली पशु जिसके सींग नहीं होते और कद गाय जैसा होता है।

नीलग्रीव *पुं.* (तत्.) भगवान् शिव।

नीलच्छद *वि.* (तत्.) नील वर्ण के आवरण वाला।

नीलता *स्त्री.* (तत्.) नीलिया, नीलत्व, नीलापन।

नीलत्व *पुं.* (तत्.) नीलापन, नीलता।

नील पड़ना *अ.क्रि.* (देश.) चोट लगने अथवा मार पड़ने पर शरीर पर नीले निशान पड़ना।

नीलपद्म *पुं.* (तत्.) नील कमल, नीलोत्पल।

नीलम *पुं.* (फा.) भू.वि. कोरंडम की नीले वर्ण की एक किस्म जो एक बहुमूल्य रत्न है, भारतीय ज्योतिष के अनुसार यह शनि का रत्न है, नीलमणि स्त्री. 2. एक प्रकार की मध्ययुगीन तलवार।

नीलमणि *पुं.* (तत्.) नीले वर्ण का एक पारदर्शी रत्न, नीलम।

नीलमुद्रण *पुं.* (तत्.) मुद्रण 1. नीले वर्ण की पृष्ठभूमि पर श्वेत वर्ण की रेखाओं द्वारा किया जाने वाला फोटोग्राफी मुद्रण जिसका प्रयोग मुख्यत: वास्तुशिल्पीय तथा यांत्रिक चित्र के नये रेखाचित्र की प्रतिलिपि बनाने के लिए किया जाता है 2. किसी विशेष योजना के लिए बनाई जाने वाली विस्तृत रूपरेखा 3. अंतिम रूपरेखा।

नीललोहित *पुं.* (तत्.) 1. शिव *वि.* नीलापन लिए हुए रक्त वर्ण का।

नीलवर्ण *वि.* (तत्.) नीले रंग का, नीला।

नीलवर्णांधता *स्त्री.* (तत्.) 1. आयु. एक प्रकार का दृष्टिदोष जिसमें नीले वर्ण की तथा पीले वर्ण की पहचान नहीं हो पाती।

नीलवसन *वि.* (तत्.) जिसने नीले रंग के वस्त्र धारण किए हों *पुं.* 1. नीला वस्त्र 2. शनिदेवता या शनिग्रह 3. बलराम पर्या. नीलवासा (नीलवासम्)।

नीलांजन *पुं.* (तत्.) सुरमा, तुत्थ, तुथ्य, तूतिया, नीलाथोथा।

नीलांजना *स्त्री.* (तत्.) विद्युत।

नीलांजनी *स्त्री.* (तत्.) दे. नीलांजना।

नीलांबर *वि.* (तत्.) नीले वस्त्र धारण करने वाला, नीले वस्त्र वाला *पुं.* 1. नीला वस्त्र 2. शनि (ग्रह) (ग्रह) 3. बलराम।

नीलांबुज *पुं.* (तत्.) नीलकमत, नीलोत्पल।

नीला *वि.* (तद्.) आकाश अथवा नील के रंग का, आसमानी।

नीला थोथा *पुं.* (तत्.+तद्.) खनिज कैलकैंथाइट, जलयोजित कॉपर सल्फेट, इस दाहक, रक्त-रोधक और वमनकारी क्रिस्टलीय पदार्थ का उपयोग रंग-उद्योग, नीले और हरे वर्णकों के निर्माण तथा विद्युल्लेपन में होता है, तूतिया।

नीलाब्ज *पुं.* (तत्.) नीलकमल।

नीलाभ *पुं.* (तत्.) काला बादल, काली घटा *वि.* (तत्.) नीली आभा वाला, नीली चमक वाला।

नीलाम *पुं.* (पुर्त.) सार्वजनिक बिक्री की एक विशिष्ट विधि जिसमें खरीदने की इच्छा रखने वाले लोग दाम की घोषणा करते हैं तथा सर्वाधिक दाम घोषित करने वाले को वस्तु बेची जाती है ।

नीलामघर *पुं.* (पुर्त.+तद्.) वस्तुओं को नीलाम किए जाने का व्यावसायिक स्थान दे. नीलाम।

नीलामी *स्त्री.* (पुर्त.) वाणि. 1. नीलाम की प्रक्रिया 2. नीलाम द्वारा खरीदी या बेची जाने वाली वस्तु।

नीलामी कीमत *स्त्री.* (पुर्त.+फा.) वाणि. नीलाम की जा रही वस्तु का अधिकतम निर्धारित मूल्य जिसका निर्धारण हथौड़े आदि के शब्द के साथ खरीदने के इच्छुक व्यक्तियों द्वारा लगाई जाने वाली बोली के आधार पर किया जाता है।

नीलामी बिक्री *स्त्री.* (पुर्त.+तद्) वस्तु-विशेष को नीलाम करने के लिए आयोजित विक्रय-मेला जिसमें सर्वाधिक मूल्य की बोली लगाने वाले को वस्तु बेच दी जाती है।

नीलारुण *पुं.* (तत्.) उषाकाल, प्रभात।

नीलाश्म *पुं.* (तत्.) नीलम, नीलमणि।

नीलिका *स्त्री.* (तत्.) 1. नील का पौधा 2. चोट लगने या मार पड़ने से शरीर पर पड़ने वाले नीले निशान, नील।

नीलिम *वि.* (तत्.) नीलिमा युक्त, नीला।

नीलिमा *स्त्री.* (तत्.) नीलापन।

नीली *वि.* (तद्.) नीले रंग की (संस्कृत में 'नील का पौधा' और 'नील के रंग की मक्खी' भी 'नीली' कहे जाते हैं)।

नीलोत्पल *पुं.* (तत्.) नीला कमल, नीलकमल।

नीलोफर *पुं.* (फा.) नीला कमल, नीलकमल।

नीवार *पुं.* (तत्.) एक प्रकार का वन में पैदा होने वाला धान, यह बिना जोते-बोए अपने आप उपजता है, इसे पसाई अथवा तिन्नी के चावल भी कहा जाता है।

नीवि *स्त्री.* (तत्.) 1. स्त्रियों के कटि-भाग में लपेटी लपेटी गई धोती की गाँठ 2. लहँगे आदि में पड़ी डोरी, नाड़ा 3. मूलधन, पूँजी।

नीवी *स्त्री.* (तत्.) दे. नीवि।

नीहार *पुं.* (तत्.) 1. कुहरा, कोहरा 2. हिम, बर्फ 3. तुषार, पाला।

नीहार-जल *पुं.* (तत्.) ओस।

नीहारिका *स्त्री.* (तत्.) खगो. रात्रि में धुँधले धब्बे अथवा कुहरे या मेघ के समान आकाश में चमकने वाला हीलियम आदि गैसों से युक्त, खगोलीय द्रव्य का कोई परिदृश्य जो प्रायः किसी खगोलीय पिंड के चारों ओर होता है।

नीहारिकाम *वि.* (तत्.) 1. नीहारिका के समान चमक वाला 2. धूमिल, धुँधला, अस्पष्ट 3. मेघाच्छन्न।

नीहारिकावाद *पुं.* (तत्.) दे. नीहारिका सिद्धांत।

नीहारिका सिद्धांत *पुं.* (तत्.)खगो. एकमत जिसके अनुसार सौर परिवार एवं तारों की उत्पत्ति नीहारिकाओं से ही हुई है।

नुकसान *पुं.* (अर.) आर्थिक, शारीरिक अथवा अन्य किसी प्रकार की क्षति, चोट अथवा हानि।

नुकसान देह *वि.* (तत्.) हानिकारक, हानिकर, हानि पहुँचाने वाला, क्षतिकारक दे. नुकसान।

नुकसानी *स्त्री.* (अर.) विधि. हानि के निराकरण अथवा भरपाई के लिए देय अथवा दावाकृत राशि।

नुकाई *स्त्री.* (देश.) कृषि. 1. खुर्पी से निराने की क्रिया 2. निराने के लिए दी जाने वाली मजदूरी 3. मक्का के भुट्टे आदि के दाने निकालने की एक प्रक्रिया।

नुकीला *वि.* (देश.) 1. नोक वाला, नोकदार 2. तीक्ष्ण नोक वाला-जैसे नुकीला चाकू लाक्ष. विशेष रूप से सुसज्जित होने से अत्यंत आकर्षक जैसे-नुकीला कृष्ण।

नुक्कड़ *पुं.* (देश.) 1. नोक के समान निकला हुआ कोना या सिरा 2. सड़क, गली अथवा मकान का सिरा जहाँ मोड़ हो।

नुक्कड़-नाटक *पुं.* (देश.+तत्.) सामाजिक कल्याण को ध्यान में रखकर गली-मुहल्लों के कोनों (चौराहों आदि नुक्कड़ो) पर खेले जाने वाले छोटे एकांकी नाटक जो सामाजिक-समस्याओं पर

प्रकाश डालते हुए, उनके समाधान प्रस्तुत करते हैं, ऐसे नाटक मंच पर नहीं खेले जाते।

नुक्ता *पुं.* (अर.) 1. सूक्ष्मता, बारीकी 2. रहस्य, मर्म, भेद 3. दोष, बुराई 4. बिंदु, बिंदी 5. अक्षरों के नीचे या ऊपर लगाई जाने वाली बिंदी जैसे- क़, ख़, ग़, ज़, ड़, ढ़ तथा फ़ आदि।

नुक्ताची *पुं.* (अर.) 1. दूसरों के दोष निकालने की प्रवृत्ति वाला, परछिद्रान्वेषी 2. आलोचना करने वाला, आलोचक।

नुक़्ताचीनी *स्त्री.* (अर.+फा.) 1. दूसरों के दोष खोजने तथा उन्हें अन्य लोगों को बताने की प्रवृत्ति, परछिद्रान्वेषण 2. आलोचना, टीका-टिप्पणी।

नुक्ती *स्त्री.* (देश.) 1. धुली उड़द की दाल को पीस कर बनाई जाने वाली बहुत छोटी बूँदी, जिसका उपयोग लड्डू तथा रायता बनाने के लिए किया जाता है 2. उक्त बूँदियों को चीनी की चाशनी में डुबोकर तैयार किया गया मिष्ठान्न।

नुक्स *पुं.* (अर.) 1. कमी, न्यूनता 2. दोष, ऐब 3. भूल, त्रुटि।

नुक्सान *पुं.* (तत्.) दे. नुकसान।

नुक्सानी *पुं.* (तत्.) दे. नुकसानी।

नुचना *अ.क्रि.* (देश.) नोचा जाना।

नुचवाना *स.क्रि.* (देश.) किसी अन्य को नोचने की क्रिया में प्रवृत्त करना।

नुजूम *पुं.* (अर.) 1. तारे 2. भाग्य 3. सितारों का जीवन पर प्रभाव *वि.* नुज्म का बहुव.।

नुजूमी *वि.* (अर.) 1. खगोल शास्त्र से संबद्ध 2. ज्योतिष से संबंध रखने वाला *पुं.* ज्योतिषी।

नुनखरा *वि.* (तद्.+फा.) जिसमें कुछ नमकीन या कुछ खारा स्वाद हो।

नुमाइंदगी *स्त्री.* (फा.) प्रतिनिधि होने की अवस्था अथवा भाव, प्रतिनिधित्व।

नुमाइंदा *पुं.* (फा.) प्रतिनिधि।

नुमाइश *स्त्री.* (फा.) 1. प्रदर्शन, दिखावा 2. शृंगार, साज-सज्जा 3. प्रदर्शनी।

नुमाइशी *वि.* (फा.) 1. प्रदर्शनी से संबंधित 2. प्रदर्शन के योग्य, सुंदर 3. जो देखने में सुंदर हो पर वास्तव में कमजोर हो या उपयोगी न हो देखने मात्र का।

नुमायाँ *वि.* (फा.) 1. व्यक्त, प्रकट 2. स्पष्ट।

नुस्खा *पुं.* (अर.) 1. रोग के उपचार की विशिष्ट विधि 2. वह कागज जिस पर चिकित्सक ने रोगी के लिए औषधि तथा उसके प्रयोग की विधि लिखी हो लाक्ष. कुछ बनाने का फारमूला या उपाय।

नू *स्त्री.* (तद्.) 1. पुत्रवधू, बहू, स्नुषा, प्रत्यय. (देश.) 2. को, इसका प्रयोग ब्रजभाषा, राजस्थानी, पंजाबी आदि में (कर्मकारक की विभक्ति) के रूप में होता है जैसे- रामनाथ नू फल खिलाओ।

नूतन *वि.* (तत्.) 1. नवीन, नया, अभिनव, 2. ताजा 3. तत्क्षण का 4. अभी हाल का, आधुनिक 5. अनूठा, अनोखा, विलक्षण, अद्भुत।

नूतनजीवी महाकल्प *पुं.* (तत्.) भूवि. चार महाकल्पों में से सबसे बाद वाला महाकल्प जिसकी कालावधि छह करोड़ वर्ष पूर्व से लेकर आज तक की मानी जाती है, इसमें स्तनपोषी तथा पुष्पी पादप विकसित हुए तथा हिमालय और आल्पस पर्वत अस्तित्व में आए।

नूतनतम युग *पुं.* (तत्.) नृवि. वर्तमान कालीन पुरा.वि. हिमानी युग के अंत में उद्भूत तथा नियोसीन काल के अंतिम भाग का उत्तरार्द्ध भूवि. अर्वाचीन युग, अभिनव, नूतन काल। holocene

नूतनता *स्त्री.* (तत्.) 1. नूतन (नवीन) होने की अवस्था, गुण, अथवा भाव 2. नवीनता, नयापन।

नूतन विश्व *पुं.* (तत्.) इति.राज. पश्चिमी गोलार्ध, विशेष रूप से उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका का यूरोपीय (महाद्वीपी) भूखंड, समतल मानचित्र पर पर शून्य डिग्री देशांतर से दाहिनी ओर का क्षेत्र, नई दुनिया। western hemisphere

नून *पुं.* (तद्.) नमक, नोन।

नूपुर *पुं.* (तत्.) 1. पैरों में पहना जाने वाला एक आभूषण 2. घुँघरू।

नूर *पुं.* (अर.) 1. ज्योति, प्रकाश 2. शोभा, सुंदरता, सौंदर्य 3. चमक, दमक 4. (मुख की) कांति, (मुख की) आभा 5. प्रातःकाल मुहा. नूर बरसना- अत्यंत सुंदर होना, बरबस आकर्षित करने वाले सौंदर्य से युक्त होना, अत्यधिक शोभा प्रकट होना।

नूर-ए-जहाँ *वि.* (अर.+फा.) संसार की रोशनी, विश्व को आलोकित करने वाली ज्योति।

नूरजहाँ *वि.* (अर.+फा.) 1. विश्व को प्रकाश प्रदान करने वाली, विश्व-ज्योति *स्त्री.* मुगल सम्राट जहाँगीर की प्रमुख रानी जो बहुत बुद्धिमती थी तथा प्रायः जहाँगीर को शासन में सहायता करती थी 3. गुरुभक्त सिंह 'भक्त' की सरस काव्य-कृति जिसका आधार जहाँगीर की रानी 'नूरजहाँ', की जीवन-गाथा है।

नूरानी *वि.* (अर.) 1. प्रकाशयुक्त, उज्ज्वल 2. चमक-दमक वाला 3. तेजस्वी 4. लाक्ष. दिव्य।

नृ *पुं.* (तत्.) नर, मनुष्य।

नृकेंद्रिकवाद *पुं.* (तत्.) नृवि. 1. मानव को ब्रह्मांड का प्रमुख सत्य मानने वाला मत, सिद्धांत 2. मनुष्य को ब्रह्मांड का अंतिम साध्य मानने का मत 3. मानवीय अनुभवों एवं मूल्यों को केंद्र में रखकर विचार एवं व्याख्या करने वाला सिद्धांत। anthropocentrism

नृजाति *स्त्री.* (तत्.) मनुष्य-जाति, मानव-जाति।

नृजाति केंद्रिकता *स्त्री.* (तत्.) नृवि. 1. अन्य समुदायों एवं उनकी संस्कृति के प्रति अवमानना के भाव के साथ अपने समुदाय तथा उसकी संस्कृति में उत्कृष्टता की धारणा 2. अन्य समूहों एवं संस्कृतियों का अपने समूह के मानदंडों के आधार पर मूल्यांकन करने की प्रवृत्ति। ethnocentricism

नृजातिजैविकी *स्त्री.* (तत्.) नृवि. जीव-विज्ञान की एक शाखा जिसमें आदिम समाजों तथा उनके वातावरण के लिए उपयुक्त पेड़-पौधों तथा पशुओं से उनके संबंध का अध्ययन किया जाता है। ethnobiology

नृजातिवर्णन *पुं.* (तत्.) नृवि. मनुष्यों की विभिन्न जातियों का वैज्ञानिक वर्णन। ethnography

नृजातिविज्ञान *पुं.* (तत्.) नृवि. विभिन्न मानव जातियों की विशिष्टताओं एवं उनके पारस्परिक संबंधों का वैज्ञानिक वर्णन।

नृजातिविज्ञानी *पुं.* (तत्.) नृवि. नृजातिविज्ञान का विद्वान। ethnologist

नृजातीय *वि.* (तत्.) नृवि. ऐसे समुदाय से संबंधित (विषय आदि) जिनकी भाषा, धर्म, विश्वास, परंपरा आदि से मिलकर बनी सांस्कृतिक विशेषताएँ समान हों।

नृजातीयता *स्त्री.* (तत्.) नृवि. किसी बृहत् समाज के कई समूहों में से प्रत्येक समूह के पृथक् अस्तित्व को दर्शाने वाली सांस्कृतिक विशेषताओं से समन्वित एकता या अपनत्व की भावना।

नृजातीय समूह *पुं.* (तत्.) नृवि. समान सांस्कृतिक परंपराओं तथा एकता की भावना से प्रेरित समूह जो बड़े समाज का उपसमूह होता है, इस नृजातीय समूह की कुछ सांस्कृतिक विशेषताएँ (जैसे भाषा, धर्म, विशिष्ट रीति-रिवाज आदि) बृहत्तर समाज के अन्य समूहों से भिन्न होती हैं।।

नृतत्वशास्त्र *पुं.* (तत्.) नृ.वि. मानव जाति की उत्पत्ति एवं विकास आदि का विवेचन करने वाला शास्त्र, मानव विज्ञान। anthropology

नृतत्वीय *पुं.* (तत्.) नृवि. मानव अथवा पृथ्वी पर मानवीय अस्तित्व से संबद्ध।

नृत्त *पुं.* (तत्.) नाट्य. तांडव नृत्य, उच्च कोटि का सुसंस्कृत अभिनय।

नृत्य *पुं.* (तत्.) नाट्य. ताल, लय तथा रस के अनुसार अंग-संचालन, नाच।

नृत्यगीत *पुं.* (तत्.) नाट्य. 1. ऐसा नृत्य जिसमें नृत्य और गायन साथ-साथ होता है 2. नृत्य तथा गीत, नाच-गाना।

नृत्य-नाटक *पुं.* (तत्.) नाट्य. ऐसी प्रस्तुति जिसमें पात्र संगीत (वाद्य तथा गायन) के सहयोग तथा नृत्य के माध्यम से मूकाभिनय करते हैं, नृत्यरूपक।

नृत्य-नाटिका *स्त्री.* (तत्.) नाट्य. नृत्य के रूप में प्रस्तुत किया जाने वाला छोटा नाटक।

नृत्यनाट्य *पुं.* (तत्.) दे. नृत्यनाटक।

नृत्यनिर्देशक *पुं.* (तत्.) नाट्य. वह व्यक्ति जो नृत्य-प्रस्तुति के लिए अपेक्षित ताल, लय तथा रस के अनुरूप अंग संचालन के साथ वेशभूषा, रूपसज्जा, मंच-सज्जा तथा प्रकाश व्यवस्था आदि के लिए दिशा निर्देश करता है।

नृत्य-रचनाकार *पुं.* (तत्.) एक ऐसा व्यक्ति जो अंग संचालन द्वारा भावाभिव्यक्ति की कला तथा तथा विभिन्न नृत्यशैलियों को जानता है तथा नृत्य की शिक्षा प्रदान करता है। choreographer

नृत्यरूपक *पुं.* (तत्.) नाट्य. नृत्य, मूक अभिनय तथा संगीत से युक्त एक प्रकार का नाटक, नृत्य-नाटिका।

नृत्यशाला *स्त्री.* (तत्.) नाट्य. नृत्यगृह, नाचघर।

नृत्याचार्य *पुं.* (तत्.) नाट्य. 1. नृत्य कला में दक्ष 2. नृत्यकला के शिक्षक।

नृत्योन्माद *पुं.* (तत्.) मनो. एक मानसिक रोग जिसमें रोगी प्रायः ऐसी क्रियाएँ करता है मानो वह नृत्य कर रहा हो।

नृदेव *पुं.* (तत्.) 1. ब्राह्मण 2. राजा।

नृप *पुं.* (तत्.) मनुष्यों की रक्षा करने वाला, राजा, नृपति।

नृपता *स्त्री.* (तत्.) राजपद, राजत्व, नृपत्व।

नृपति *पुं.* (तत्.) नृप, राजा।

नृपत्व *पुं.* (तत्.) राजत्व, नृपता, राजा होने का भाव या स्थिति

नृपनय *पुं.* (तत्.) राजनीति।

नृपशु *पुं.* (तत्.) 1. पशुतुल्य आचरण करने वाला मनुष्य, नराधम 2. अत्यधिक मूर्ख व्यक्ति।

नृपसुत *पुं.* (तत्.) राजा का पुत्र, राजपुत्र, राजकुमार।

नृपसुता *स्त्री.* (तत्.) राजा की पुत्री, राजपुत्री, राजकुमारी।

नृपांश *पुं.* (तत्.) 1. राजा का भाग अथवा राजा का अंश 2. आय, उपज अथवा उत्पाद का वह अंश जो राजा को कर के रूप में प्राप्त होता हो, यह प्राचीन काल में प्रायः आय का छठा भाग होता था।

नृपाल *पुं.* (तत्.) मनुष्यों का पालन करने वाला, नृप, राजा।

नृपासन *पुं.* (तत्.) राजा का आसन, राजसिंहासन।

नृपोचित *वि.* (तत्.) राजाओं के अनुरूप, राजोचित।

नृमिति *स्त्री.* (तत्.) नृवि. मानवमिति, मानवशरीर के आकार-प्रकार एवं समानुपातों का माप। anthropometry

नृमेध *पुं.* (तत्.) 1. वैदिक-धर्म के अनुसार किए जाने वाले पंचमहायज्ञों में से एक जिसमें अतिथिपूजन आदि कृत्य किए जाते हैं, नृयज्ञ 2. कुछ लोगों के मत में ऐसा यज्ञ जिसमें मनुष्य की बलि दी जाती है, नरमेध टि. ऐसे प्रमाण नहीं मिलते 3. हत्याकांड जैसे- तानाशाहों के नृमेध।

नृयज्ञ *पुं.* (तत्.) दे. नृमेध।

नृलोक *पुं.* (तत्.) भूलोक, मनुष्यलोक, मर्त्यलोक।

नृवराह *पुं.* (तत्.) (विष्णु का) वराह अवतार।

नृवाहन *पुं.* (तत्.) कुबेर।

नृविज्ञान *पुं.* (तत्.) नृवि. 1. मानव की उत्पत्ति उद्गम, उसके भौतिक तथा सांस्कृतिक विकास, सामाजिक विशिष्टताओं, प्रथाओं तथा अनुभूतियों आदि का अध्ययन करने वाला विज्ञान 2. अन्य प्राणियों से मनुष्य की समानताओं एवं भिन्नताओं का अध्ययन 3. मनुष्य के स्वभाव तथा कृत्यों का अध्ययन करने वाला विज्ञान 4. मनुष्य के स्वभाव तथा तात्विकता का अध्ययन।

नृविज्ञानी *पुं.* (तत्.) नृवि. मानव-शास्त्र/मानवविज्ञान का विशेषज्ञ दे. नृविज्ञान।

नृशंस *वि.* (तत्.) क्रूर, निर्दय, अत्याचारी, प्राणियों को पीड़ित करने वाला।

नृशंसता *स्त्री.* (तत्.) नृंशस होने का भाव, पशुतापूर्ण कृत्य, निर्दयता के कार्य, विशेषकर युद्धरत

देशों के साथ अथवा दंगों आदि में नैतिक मान्यताओं एवं परंपराओं का उल्लंघन कर अत्याचार करना।

नृशृंग *पुं.* (तत्.) 1. मनुष्य के सींग 2. मनुष्य के सींग के समान कोई असंभव वस्तु।

नृसिंह *पुं.* (तत्.) 1. भगवान विष्णु का एक अवतार जिसका आधा शरीर मनुष्य का तथा आधा शरीर सिंह का था 2. सिंह के समान पराक्रमी मनुष्य।

नृसिंह चतुर्दशी *स्त्री.* (तत्.) वैशाख शुक्ल चतुर्दशी जो नृसिंह अवतार की तिथि मानी जाती है।

नृसिंहपुरी *स्त्री.* (तत्.) पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) में स्थित मुलतान नामक नगर, जहाँ नृसिंह अवतार हुआ था।

नृहरि *पुं.* (तत्.) दे. नृसिंह।

नेक *वि.* (फा.) 1. शुद्ध अथवा श्रेष्ठ 2. मांगलिक या शुभ, जैसे- नेक वक्त 3. शरीफ, जैसे- नेक परिवार 4. शिष्ट, सदाचारी, भला जैसे- नेक इंसान 5. हितकारी जैसे- नेक सलाह *वि./क्रि.वि.* (देश.) थोड़ा सा, जरा सा जैसे- नेक पानी पिला दो।

नेक अंजाम *पुं.* (फा.) अच्छा परिणाम/फल/ नतीजा/ अंत।

नेक खयाल *वि.* (फा.+अर.) शुद्ध अच्छे विचार या विचार वाला।

नेक खयाली *स्त्री.* (फा.+अर.) शुद्ध विचारों की प्रवृत्ति, सज्जनता, विचारों की शुद्धता, भलमनसाहत।

नेकचलन *वि.* (फा.) जिसका आचरण अच्छा हो।

नेकचलनी *स्त्री.* (फा.) अच्छे आचरण की प्रवृत्ति।

नेकदिल *वि.* (फा.) जिसका हृदय शुद्ध हो, जो स्वभाव से पवित्र हो, अंतःशुद्ध, पुण्यात्मा।

नेकदिली *स्त्री.* (फा.) हृदय की शुद्धता, पवित्रता, स्वच्छता।

नेकनाम *वि.* (फा.) जो बड़ा कीर्तिमान हो, उत्तम यश वाला, पुण्यश्लोक।

नेकनामी *स्त्री.* (फा.) कीर्ति, यश।

नेकनीयत *वि.* (फा.+अर.) धर्मात्मा, ईमानदार, धर्मनिष्ठ।

नेकनीयती *स्त्री.* (फा.अर.) अंतःशुद्धि, पाकदिली, ईमानदारी, अच्छी भावना।

नेकमिज़ाज *वि.* (फा.अर.) जिसका स्वभाव शुद्ध हो, सत्प्रकृति, पुण्यस्वभाव, सज्जन।

नेकमिजाजी *स्त्री.* (फा.+अर.) स्वभाव की सरलता, चित्त की शुद्धता, सज्जनता।

नेकर *पुं.* (अं.) कमर से घुटने तक का अंग्रेजी ढंग का ढीला जांघिया, निकर।

नेकराह *वि.* (फा.) अच्छी राह पर चलने वाला, सन्मार्गी, सदाचारी *स्त्री.* अच्छी राह, सन्मार्ग।

नेकलेस *पुं.* (अं.) गले का एक आभूषण, कंठहार, हार, कंठा।

नेकसूरत *वि.* (फा.+अर.) जिसकी शक्ल सुंदर हो, जिसकी आकृति से सज्जनता झलकती हो, शुभ-दर्शन।

नेकी *स्त्री.* (फा.) 1. नेक होने का भाव, नेकपन 2. शिष्टता, सज्जनता 3. भलाई 4. पुण्य विलो. बदी।

नेकी-बदी *स्त्री.* (फा.) 1. भलाई-बुराई 2. पुण्य-पाप। पाप।

नेकु *वि.* (तद्.) 1. थोड़ा-सा, जरा-सा 2. *क्रि.वि.* किंचित्, थोड़ा, कुछ, जरा।

नेग *पुं.* (देश.) 1. मांगलिक अवसरों पर संबंधियों तथा सेवकों को धन, वस्त्रादि प्रदान करने की प्रथा 2. शुभ अवसरों पर उक्त प्रथा के निर्वाह के लिए दिया जाने वाला धन अथवा अन्य पदार्थ 3. उक्त प्रथा के अनुसार सेवकों का धन आदि प्राप्त करने का अधिकार 4. शुभ-कार्य।

नेगचार *पुं.* (देश.+तत्) मांगलिक अवसरों पर की जाने वाली धन, वस्त्रादि देने-लेने की तथा अन्य पारंपरिक सामाजिक क्रियाएँ 2. नेग के रूप में धनादि देने की क्रिया।

नेगजोग *पुं.* (देश.) मांगलिक/शुभ अवसरों पर संबंधियों एवं सेवकों आदि को नेवा का धन तथा

अन्य वस्तुएँ देने की प्रथा 2. वे शुभ अवसर जिन पर नेग दिया जाता है।

नेगी *वि.पुं.* (देश.) 1. शुभ अवसरों पर नेग पाने का अधिकारी 2. लाक्ष. कर्तव्य-कर्म करने का अधिकारी 3. लाभान्वित होकर सदैव उसकी आशा रखने वाला।

नेज़ा *पुं.* (फा.) 1. बरछी, भाला 2. कलम बनाने का नरकट।

नेता *पुं.* (तत्.) 1. किसी राष्ट्र, संप्रदाय, वर्ग, जाति आदि के लोगों का पथ प्रदर्शक, नायक जिसके अनेक अनुयायी हों जैसे धार्मिक नेता, राजनीतिक नेता 2. किसी कार्यक्षेत्र में आगे रहकर कार्य करने वाला व्यक्ति, अग्रगामी काव्य. महाकाव्य नाटक आदि का नायक।

नेतागिरी *स्त्री.* (तत्.+फा.) नेता होने का भाव, कार्य, विशेष-व्यंग्य में किया गया इसका प्रयोग निकृष्ट अर्थ में होता है जैसे- दिनभर नेतागीरी करने के बाद अब घर की याद आ गई।

नेति *अव्य.* (तत्.) 1. केवल ऐसा नहीं 2. यही इसका अंत नहीं यथा- ब्रह् म के स्वरूप का पूर्णतः वर्णन संभव नहीं अतः प्रत्येक वर्णन के अंत में 'नेति' कह दिया जाता है।

नेती *स्त्री.* (तद्.) 1. मथानी चलाने की रस्सी 2. योग. हठयोग की एक क्रिया 3. मुख तथा नासिका के छिद्र से सूत की डोरी आदि को खींच कर कफ निकालने में सहायक एक शुद्धि क्रिया।

नेतृत्व *पुं.* (तत्.) 1. नेता का पद/कार्य 2. नेता के रूप में किसी राष्ट्र, संप्रदाय तथा दल आदि का मार्ग दर्शन एवं संचालन का कार्य 3. किसी समाज अथवा समूह में प्रभावशाली होने की स्थिति।

नेत्र *पुं.* (तत्.) आँख, अक्षि 1. (जंतु.) पाँच इद्रियों में से एक जिससे रूप का ज्ञान होता है 2. सामान्यतः करोटि के दोनों ओर गोलाकार खोखलों में स्थित तीन आवरणों से युक्त संरचना 3. मथानी की डोरी 4. बारीक रेशमी वस्त्र 5. नेता 6. काव्यादि में दो की संख्या।

नेत्रगोचर *वि.* (तत्.) जो नेत्रेंद्रिय से देखा जा सके, जो दिखाई दे सके, दृष्टिगोचर, दृष्टि के भीतर।

नेत्रगोलक *पुं.* (तत्.) (जंतु.) नेत्र कोटर में स्थित गेंद के आकार की संरचना जिसमें नेत्र-लेंस, दृष्टिपटल आदि स्थित होते हैं।

नेत्रच्छद *पुं.* (तत्.) पलक, वर्त्म।

नेत्रजल *पुं.* (तत्.) अश्रु, आँसू।

नेत्रदान *पुं.* (तत्.) जीवन काल में इस प्रकार की औपचारिक घोषणा करना कि मेरी मृत्यु के उपरांत मेरे नेत्र निकाल कर नेत्रहीनों के उपयोग हेतु दान दिए जाएँ।

नेत्रमल *पुं.* (तत्.) आँखों का मैल, आँखों से निकलने वाला कीचड़।

नेत्रमापी *पुं.* (तत्.) आयु. नेत्रों के श्वेत पटल (कार्नियाँ) पर प्रतिबिंबन की क्षमता तथा नेत्रों की अन्य क्षमताओं को मापने का एक विशेष यंत्र जिसका प्रयोग प्रमुखतया दृष्टिवैषम्य अर्थात् अबिंद्कता की विद्यमानता एवं अवस्था की जांच के लिए किया जाता है।

नेत्रवारि *पुं.* (तत्.) अश्रु, आँसू दे. नेत्रजल।

नेत्रविचलन *पुं.* (तत्.) नेत्रों का भेंगापन, तिरछी दृष्टि का दोष। squint

नेत्र-विज्ञान *पुं.* (तत्.) आयु. चिकित्सा विज्ञान की वह शाखा जिसमें नेत्र संबधी रचना-विज्ञान, कार्यों, रोगों, निदानों तथा चिकित्सा का विवेचन होता है। opthalmology

नेत्रविज्ञानी *पुं.* (तत्.) आयु. नेत्र-विज्ञान विशेषज्ञ।

नेत्रश्लेष्मला *स्त्री.* (तत्.) आयु./चिकि. आँख के गोलक को ढँकने वाली तथा पलकों के नीचे की तह बनाने वाली झिल्ली। नेत्रश्लेष्मला में शोथ हो जाने पर कष्टकारक नेत्र-रोग "नेत्रश्लेष्मला" कहा जाता है। conjunctivities

नेत्रस्तंभ *पुं.* (तत्.) आँखों की पलकों का झपकना, बंद हो जाना, आँखों का पथरा जाना।

नेत्रस्राव *पुं.* (तत्.) आँख से पानी बहना।

नेत्राभिष्यंद *पुं.* (तत्.) आयु. 1. नेत्रप्रदाह 2. नेत्र-शोथ। opthalmia

नेत्रिका *स्त्री.* (तत्.) पुरा. दूरबीन आदि का वह शीशे वाला भाग (लेंस) जो देखने वाले के नेत्र के निकट रहता है। eye piece

नेत्री *स्त्री.* (तत्.) स्त्री नेता दे. नेता।

नेत्रोत्सव *पुं.* (तत्.) 1. देखने से प्राप्त होने वाला आनंद 2. कोई सुंदर दृश्य 3. दर्शनीय वस्तु।

नेत्रोत्सेध *पुं.* (तत्.) आयु./चिकि. नेत्रगोलक का थोड़ा बाहर निकल आना या सूज जाना, यह रोग अथवा चोट से उत्पन्न हो जाता है, बहिर्नेत्रता।

नेत्रोद *पुं.* (तत्.) आयु. नेत्र के अंदर वाले कक्ष में रहने वाला द्रव, चक्षुजल।

नेत्र्य *वि.* (तत्.) 1. नेत्र का, नेत्र से संबद्ध 2. नेत्रों को सुख देने वाला *वि.* (आयुर्वेद के ग्रंथों में त्रिफला, रसौत आदि, नेत्र-औषधियों का समूह, नेत्र्यगण कहा जाता है।

नेनुआ *पुं.* (देश.) वन. एक लता अथवा उसका लंबा फल जिसे रामतोरई, घिया, लौकी, लंबा कद्दू या 'मीठी तुंबी' आदि नामों से जाना जाता है।

नेपथ्य *पुं.* (तत्.) नाट्य. नाटक के पर्दे के पीछे का स्थान, रंगमंच का वह भाग जो दर्शकों की दृष्टि से ओझल रहता है तथा जिसमें अभिनेता रूप-सज्जा आदि करते हैं।

नेपथ्य-कर्मी *पुं.* (तत्.) नाट्य. पर्दे के पीछे रहकर अभिनेताओं की रूप-सज्जा संवाद आदि कार्यों में सहायता करने वाले।

नेपथ्य विधान *पुं.* (तत्.) नाट्य. उस स्थान की व्यवस्था जहाँ अभिनेता अपनी सज्जा, परिधान आदि करते है।

नेपथ्य संगीत *पुं.* (तत्.) नाट्य. पर्दे के पीछे का संगीत, पार्श्व-संगीत। background music

नेपाल *पुं.* (तत्.) भारत के उत्तर में हिमालय के तल में स्थित एक स्वतंत्र देश।

नेपालिका *स्त्री.* (तत्.) 'मैनसिल' नामक एक धातु जो मिट्टी के समान पीली तथा कुछ-कुछ संतरी लाल वर्ण की भी होती है, हरताल, संखिया (रैलगार, आरसेनिक) टि. संस्कृत में 'नेपाल' का अर्थ तांबा भी होता है और मैनसिल तांबे से उत्पन्न होती है।

नेपाली *वि.* (तत्.) 1. नेपाल देश से संबंधित, नेपाल का 2. नेपाल देश का निवासी *स्त्री.* नेपाल नेपाल देश की भाषा।

नेफा *पुं.* (फा.) पायजामे, लहँगे, तकिए आदि में वस्त्र को मोड़कर सिलकर बनाया गया वह स्थान स्थान (भाग) जिसमें नाड़ा, डोरा या इजारबंद डाला जाता है।

नेम *पुं.* (तद्.) 1. नियम, कायदा अथवा प्रतिज्ञा 2. धार्मिक नियम 3. प्रथा, रीति 4. नियमित रूप से होता रहने वाला।

नेमत *स्त्री.* (अर.) 1. अच्छी लगने वाली वस्तुएँ 2. 2. धन, वैभव, स्वस्थ एवं सुंदर शरीर आदि ईश्वर की देन 3. ईश्वर की कृपा।

नेम-धरम *पुं.* (तद्.) 1. नियम एवं धर्म 2. संध्या, पूजा-पाठ आदि धार्मिक कृत्य।

नेमि *स्त्री.* (तत्.) 1. पहिए की परिधि 2. घेरा 3. कुएँ की जगत (ऊँचा चबूतरा) 4. किनारा, कोर *पुं.* 1. तिनिश वृक्ष, तिरिच्छ का पेड़ 2. वज्र।

नेमिक्रम *पुं.* (तत्.) 1. गतिमान चक्र की नेमि के किसी विशिष्ट बिंदु के समान ऊपर-नीचे जाने का क्रम 2. उन्नति-अवनति-अथवा उत्थान पतन का क्रम, चक्रनेमिक्रम।

नेमी *वि.* (तद्.) प्रशा. 1. प्रचलित, नियमित अथवा व्यवस्थित (कार्य-पद्धति, परिपाटी) 2. किसी विशेष स्थान पर अथवा कार्यालय आदि में नियमित रूप से संपन्न होने वाली (कार्य-परंपरा) 3. दिनचर्या 4. धार्मिक नियमों आदि का दृढ़ता से पालने करने वाला (व्यक्ति)।

नेमी जाँच *स्त्री.* (तद्.+देश) वाणि. हिसाब/लेखा आदि व्यवस्थित हैं या नहीं इसकी निर्दिष्ट अंतरालों के पश्चात् नियमित रूप से देखते रहने की प्रक्रिया। routine check

नेमी नोट *पुं.* (तद्.+अं.) प्रशा. नियमित रूप से यथा-निर्धारित प्रकार से यथापेक्षित संक्षिप्त टिप्पण/नोट।

नेमी परीक्षण *पुं.* (तद्.+तत्) प्रशा. परिवीक्षाधीन/परखाधीन नियुक्ति अथवा पदोन्नति के लिए नियमित रूप से ली जाने वाली परीक्षा।

नेरे *क्रि.वि.* (देश.) निकट, समीप, पास।

नेल पालिश *स्त्री.* (अं.) नाखूनों को आकर्षक बनाने बनाने के लिए रंगने का एक प्रकार का गाढ़ा रंग।

नेवता *पुं.* (देश.) न्योता, निमंत्रण।

नेवला *पुं.* (देश.) भारत के जंगलों में पाया जाने वाला बड़े चूहे जैसा दिखने वाला, नुकीली नाक एवं बालों से युक्त पूँछ वाला मटमैले रंग वाला कई बार बिलों में एवं मानव बस्ती के आसपास रहने वाला स्तनपायी प्राणी जो साँपों को मारकर खाने के लिए प्रसिद्धहै इसकी लंबाई प्राय: 30-40 से.मी होती है।

नेवाज *वि.* (फा.) दयालु जैसे- गरीब नेवाज।

नेवाजना *क्रि.स.* (देश.) दया करना, अनुग्रह करना।

नेवारी *स्त्री.* (तद्.) 1. वसंत ऋतु में खिलने वाला एक सुगंधित श्वेत पुष्प जो चमेली की जाति का होता है 2. उक्त फूल का पौधा, नवमालिका, निवाड़ी।

नेस्त *वि.* (फा.) ध्वस्त, नष्ट, नाश को प्राप्त।

नेस्तनाबूद *वि.* (फा.) जो पूरी तरह से नष्ट हो गया हो, पूर्ण-रूपेण ध्वस्त, जड़ से नष्ट, समूल नष्ट।

नेस्ती *स्त्री.* (फा.) 1. अस्तित्व-विहीनता 2. ध्वंस विनाश, बरबादी, तबाही 3. दरिद्रता, कंगाली 4. आलस्य।

नेह *पुं.* (तद्.) 1. स्नेह, प्रेम, अनुराग।

नेहिल *वि.* (तद्.) स्नेह पूर्ण, प्रेम पूर्ण।

नेही *वि.* (तद्.) स्नेही, प्रेमी, अनुरागी।

नै *वि.* (तद्.) 1. नमित 2. विनम्र *स्त्री.* नदी *स्त्री.* (फा.) 1. बाँस की नली 2. हुक्के की निगाली, नैचा 3. बाँसुरी प्रत्यय (देश.) कर्त्ता-कारक की विभक्ति (ने) उदा. दियौ सिर पाव नृपराव नै महर कौं -सूरसागर।

नैक *वि.* (तत्.) जो एक नहीं, एक से अधिक हो, अनेक, बहुत, जो अकेला न हो *वि.,क्रि.वि.* 1. तनिक, जरा उदा. नैक परेशानी आ गई, नैक हट जाओ दे. नेकु 2. अल्प, छोटा।

नैकचर *वि.* (तत्.) 1. अकेला न चलने वाला, झुंड में चलने वाला, समूहचर उदा. चींटी, मधुमक्खी, बड़े पशुओं में हाथी, हिरन आदि नैकचर प्राणी हैं विलो. एकचर।

नैकटिक *वि.* (तत्.) 1. निकट का, पड़ोस का, समीपी *पुं.* 1. भिक्षुक, संन्यासी।

नैकट्य *पुं.* (तत्.) सामीप्य, निकटता, समीपता।

नैकधा *क्रि.वि.* (तत्.) अनेक प्रकार/विधियों से, अनेक रूपों में, अनेक बार, बहुधा।

नैकु *वि.* (तद्.) दे. नैक।

नैगम *वि.* (तत्.) 1. निगम-संबंधी, निगम का 2. वेद-संबंधी, वेदों का *पुं.* 1. वेद की व्याख्या करने वाला 2. उपनिषद् 3. युक्ति, उपाय 4. नागरिक 5. व्यापारी।

नैगम पद्धति *स्त्री.* (तत्.) राज. एक ऐसी राजनीतिक प्रणाली जिसमें बैंकिंग, उद्योग तथा श्रम-संबंधी आर्थिक प्रकार्यों का प्रबंधन समेकित रूप से किया जाता है। corporative system

नैगमराज्य *पुं.* (तत्.) राज. एक ऐसा राज्य जिसमें बैंकिंग, उद्योग तथा श्रम-संबंधी आर्थिक प्रकार्यों का प्रबंधन समेकित रूप से किया जाता है।

नैगमिक *वि.* (तत्.) 1. निगम-संबंधी, निगम का 2. वेद-संबंधी, वेद का 3. वेद से प्राप्त, वेद से लिया हुआ, मिला।

नैघंटुक *पुं.* (तत्.) 1. वैदिक शब्द-संग्रह ग्रंथ 2. शब्द-संग्रह, निघंटु।

नैचा *पुं.* (फा.) हुक्के की नली जिससे तंबाकू का धुआँ खींचा जाता है।

नैतिक *वि.* (तत्.) 1. नीति संबंधी, नीति का, नीति विषयक 2. नीति अथवा नीति-शास्त्र के अनुसार होने वाला।

नैतिक आचरण *पुं.* (तत्.) दर्श. नैतिक मान्यताओं एवं नैतिक आदर्शों के अनुसार किया जाने वाला व्यवहार।

नैतिक आदर्श *पुं.* (तत्.) नीति. नैतिकता का वह उत्कृष्टतम रूप जिसे पूर्णतया प्राप्त करना असंभव प्राय है।

नैतिक औचित्य *पुं.* (तत्.) नीति. नैतिकता के आधार पर, उपयुक्तता।

नैतिक कर्तव्य *पुं.* (तत्.) समाज. ऐसा कर्तव्य जिसका पालन करना कानून की बाध्यता नहीं है परंतु नैतिकता के आधार पर उसका पालन किया जाना चाहिए।

नैतिक कारण *पुं.* (तत्.) समाज. किसी कार्य के संपादन में सहायक ऐसा कारण जिसका आधार नैतिकता हो।

नैतिकता *स्त्री.* (तत्.) 1. नैतिक आदर्श के अनुरूप आचरण होने का भाव, सदाचारिता 2. वर्ग विशेष, व्यवसाय विशेष का सदाचार।

नैतिक-दायित्व *पुं.* (तत्.) नीति. नैतिकता के आधार पर उत्तरदायी होने की भावना, नैतिक जिम्मेदारी।

नैतिक धर्मशास्त्र *पुं.* (तत्.) नीति. नैतिकता के आधार पर व्यक्ति एवं समाज के लिए विविध परिस्थितियों में धर्म के अनुसार आचरण हेतु मार्गदर्शन करने वाला शास्त्र। moral theology

नैतिक नियम *पुं.* (तत्.) नीति.राज. 1. नीतिशास्त्र विहित आचार-व्यवहार आदि के संबंध में निश्चित बातें जिनका पालन करना आवश्यक हो 2. शासन के सुचारू संचालन के लिए पूर्व-निर्धारित नीतियों पर आधारित आचरण-परंपरा जिसका पालन करना अनिवार्य हो।

नैतिक बल *पुं.* (तत्.) नीति. नैतिक आदर्शों के अनुरूप आचरण करते-करते प्राप्त होने वाला एक अद्भूत साहस अथवा अनुपम सामर्थ्य जिससे व्यक्ति किसी विषम स्थिति में भी अपने अभीष्ट, सन्मार्ग से विचलित नहीं होता।

नैतिक मानक *पुं.* (तत्.) समाज. समाज में नैतिकता के आधार पर निर्धारित आचारण जिसे अभीष्ट आदर्श अथवा मानदंड के रूप में स्वीकार किया गया हो।

नैतिक मापक्रम *पुं.* (तत्.) प्रशा.शि. नैतिकता के आधार पर श्रेणी निर्धारण अथवा वर्गीकरण।

नैतिक मापनी *स्त्री.* (तत्.) नीति. आचारशास्त्र के आधार पर निर्धारित आचरण का मापदंड, पैमाना।

नैत्यिक/नैत्यक *वि.* (तत्.) 1. नित्य किया जाने वाला (कार्य), नियमित रूप से करणीय, सदैव अनुष्ठेय 2. जिसे टालना संभव न हो, अनिवार्य।

नैत्र *वि.* (तत्.) आयु. 1. नेत्र संबंधी, आँख का 2. आँख के रोगों से संबंध रखने वाला, नेत्रीय।

नैदाघ *पुं.* (तत्.) ग्रीष्म ऋतु, गर्मी का मौसम *वि.* 1. निदाघ-संबंधी, ग्रीष्म-ऋतु का 2. ग्रीष्म ऋतु में होने वाला।

नैदानिक *वि.* (तत्.) 1. निदान का, निदान संबंधी 2. निदान-सूचक 3. रोगों का निदान करने वाला 4. रोगों के निदान कार्य में पटु *पुं.* आयु. निदान-शास्त्र का विशेषज्ञ भूवि. 1. किसी खनिज खनिज अथवा जीवाश्म की पहचान में सहायक 2. किसी शैलसमूह की उत्पत्ति की विभिन्न अवस्थाओं अथवा उसकी आयु का विश्लेषक एवं परिचालक। diagnostic

नैदानिक मनोविज्ञान *पुं.* (तत्.) मनो. मनोवैज्ञानिक चिकित्सा की वह शाखा जिसमें मनोविकारों के कारणों एवं समाधानों के संबंध में अनुसंधान किया जाता है और रोगी को यथोचित परामर्श दिया जाता है।

नैदानिक मूल्यांकन *पुं.* (तत्.) किसी विशिष्ट समाज की समस्याओं के मूल-कारणों का आकलन।

नैदानिक साक्षात्कार *पुं.* (तत्.) मनो. किसी मनोरोग के निदान के उद्देश्य से रोग-विशेष की कारणभूत परिस्थितियों को जानने के लिए किया जाने वाला साक्षात्कार।

नैदानिकी *स्त्री.* (तत्.) चिकि. रोग के लक्षणों के आधार पर रोग उत्पत्ति का कारण एवं रोग की स्थिति बताने वाला विज्ञान, निदान-विद्या।

नैन *पुं.* (तद्.) 1. नयन, नेत्र, आँख 2. रसोईघर, फैक्टरी इत्यादि आग्नेय स्थानों में धुआँ निकलने के लिए बनाया गया छिद्र (धमाला) 3. नवनीत (मक्खन) 4. अनीति, अन्याय, अत्याचार।

नैनसुख *पुं.* (तद्.) 1. अच्छी दृष्टि शक्ति से संपन्न 2. जिसे देखकर नेत्र सुख का अनुभव करें, दर्शन से नेत्रों को सुख प्रदान करने वाला 3. बीसवीं शताब्दी के लगभग अंत तक प्रचलन में रहा एक प्रकार का चिकना सूती वस्त्र।

नैना *पुं.* (तद्.) 1. नयन, नेत्र, आँख *अ.क्रि.* 1. नवना, झुकना *स.क्रि.* नवाना, झुकाना 2. प्रणाम करना।

नैनी *स्त्री.* (तद्.) 1. नेत्र वाली 2. (समास-युक्त शब्दों में) समान नेत्र वाली यथा- मृगनैनी-मृग के समान नेत्र वाली।

नैनो *पुं.* (अं.) (ग्रीक. नैनोस, बौना) टाटा कंपनी निर्मित एक कार का व्यापारिक नाम, उपसर्ग. एक लैटिन उपसर्ग जो एक के सौ करोड़वें भाग (एक अरबवें भाग) का सूचक है जैसे- नैनोग्राम-एक ग्राम का सौ करोड़वाँ भाग, नैनोमीटर-एक मीटर का सौ करोड़वाँ भाग, नैनो सेकंड-एक सेकंड का सौ करोड़वाँ भाग।

नैपातिक *वि.* (तत्.) भाषा. निपात संबंधी दे. निपात।

नैपालिका *वि.* (तत्.) 1. नेपाल देश से संबद्ध, नेपाल का 2. नेपाल देश में बनने वाला या होने वाला *पुं.* ताँबा।

नैपाली *वि.* (तद्.) 1. नेपाल देश का निवासी *स्त्री.* नेपाल देश की भाषा दे. नेपाली।

नैपुण्य *पुं.* (तत्.) निपुण होने की अवस्था, गुण अथवा भाव-निपुणता, निपुणत्व, दक्षत्व।

नैमित्त *वि.* (तत्.) 1. निमित्त संबंधी, निमित्त का 2. निमित्त से उत्पन्न।

नैमित्तिक *वि.* (तत्.) किसी विशेष निमित्त से किसी कारण विशेष के होने पर किया जाने वाला, जो किसी विशिष्ट प्रयोजन की सिद्धि के लिए किया जाए यथा- किसी रोग की शांति के लिए अथवा किसी अभीष्ट की प्राप्ति या अनिष्ट के निवारण के लिए नैमित्तिक-पूजा अनुष्ठान, वर्षा न होने पर वर्षोष्टि यज्ञ करना आदि 2. कभी-कभी होने वाला 3. आकस्मिक *पुं.* 1. कारण, निमित्त 2. कभी-कभी किसी विशेष अवसर पर किया जाने वाला शास्त्र वर्णित कर्म जैसे- विजयादशमी के दिन शस्त्र पूजन 3. ज्योतिषी।

नैमित्तिक छुट्टी *स्त्री.* (तत्.) आकस्मिक छुट्टी।

नैमित्तिक प्रलय *पुं.* (तत्.) दर्श. चार प्रकार के प्रलयों में से एक जिसमें हिरण्यगर्भ संपूर्ण त्रिलोकों को अपने में लय करके शयन करते हैं, कल्पांत में होने वाला प्रलय दे. प्रलय।

नैमिष *वि.* (तत्.) 1. निमिष मात्र अथवा क्षण मात्र तक रहने वाला, क्षणिक 2. पलक झपकने तक का समय, उ.प्र. में स्थित नैमिषारण्य नामक तीर्थ स्थान।

नैमिषीय *वि.* (तत्.) निमिष-संबंधी, निमिष, क्षण का।

नैमिषेय *वि.* (तत्.) नैमिषारण्य तीर्थ का (उत्सव, कार्यक्रम आदि)।

नैया, नैय्या *स्त्री.* (देश.) नौका, नाव।

नैयायिक *पुं.* (तत्.) 1. न्याय-दर्शन का विद्वान्, न्यायशास्त्र का ज्ञाता 2. न्याय-दर्शन के सिद्धांतों को स्वीकार करने वाला।

नैरंग *पुं.* (फा.) 1. अद्भुत वस्तु, बात 2. इंद्रजाल, जादू 3. छल, कपट।

नैरंतर्य *पुं.* (तत्.) लगातार होते रहना या बने रहना, निरंतरता।

नैरपेक्ष्य *पुं.* (तत्.) 1. अपेक्षा न रखने का भाव, निरपेक्षता 2. उदासीनता, तटस्थता।

नैरर्थ्य *पुं.* (तत्.) निरर्थक होने का भाव, व्यर्थता।

नैरात्म्य *पुं.* (तत्.) 1. आत्मा रहित होने की स्थिति, शवभाव, अनात्मता, निरात्मता 2. आत्मा तथा परमात्मा के अस्तित्व को अस्वीकार करना यथा- बौद्ध मतानुयायी नैरात्म का प्रतिपादन करते हैं।

नैरात्म्यवाद *पुं.* (तत्.) आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार न करने का मत, अनात्मवाद, बौद्ध या चार्वाक मत।

नैराश्य *पुं.* (तत्.) 1. निराश होने की अवस्था अथवा भाव 2. निराशा, हताशा 3. निराशा से उत्पन्न दुःख, विषाद, मायूसी, बेबसी।

नैराश्यगीत *पुं.* (तत्.) अमेरिका के नीग्रो जनजाति के लोगों के द्वारा रचे जाने वाले अथवा गाए जाने वाले, हताशा अथवा उदासी को अभिव्यक्त करने वाले तथा अनवरत स्वरमाधुर्य से संयुक्त एक प्रकार के गीत। blues

नैराश्यवाद *पुं.* (तत्.) दे. निराशावाद।

नैरूक्त *वि.* (तत्.) 1. शब्दों की निरुक्ति अर्थात् व्युत्पत्ति से संबद्ध 2. निरुक्त शास्त्र से संबंधित दे. निरुक्त *पुं.* 1. शब्दों की निरुक्ति व्युत्पत्ति का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति, वैयाकरण 2. शब्दों की निरुक्ति से संबंध रखने वाला ग्रंथ।

नैरूक्तिक *पुं.* (तत्.) दे. नैरुक्त।

नैरूज्य *पुं.* (तत्.) निरुज अर्थात् रोग-रहित रहने की स्थिति, स्वास्थ्य, आरोग्यता।

नैर्ऋति *वि.* (तत्.) निर्ऋति संबंधी, निऋति का दे. निर्ऋति 2. दक्षिण-पश्चिमी *पुं.* 1. दक्षिण-पश्चिम दिशा अथवा कोण का स्वामी 2. राक्षस, दैत्य 3. राहु 4. मूल नक्षत्र।

नैर्ऋती *स्त्री.* (तत्.) 1. दक्षिण-पश्चिम दिशा 2. दुर्गा का एक नाम।

नैर्ऋतेय *वि.* (तत्.) निर्ऋति संबंधी, निर्ऋति का *पु.* निर्ऋति देवता का उपासक।

नैर्गुण्य *पुं.* (तत्.) 1. सत् आदि तीनों गुणों का अभाव, निर्गुणता, निर्गुणतत्व 2. सद्गुणों का अभाव दे. निर्गुणता।

नैर्मल्य *पुं.* (तत्.) 1. निर्मलता 2. शुद्धता, स्वच्छता, सफाई 3. दोष-हीनता, निष्कलंकता दे. निर्मलता।

नैवेद्य *पुं.* (तत्.) 1. (भगवान को) निवेदित अथवा समर्पित की गई भोज्य वस्तु।

नैश *वि.* (तत्.) 1. रात्रि संबंधी, रात्रि का 2. रात्रि में होने वाला, निशाकालीन 3. अंधकार युक्त, तमोमय।

नैशिक *वि.* (तत्.) दे. नैश।

नैषध *वि.* (तत्.) 1. निषध देश का *पु.* राजा नल 2. श्रीहर्ष का ग्रंथ 'नैषधीय चरितम्'।

नैषधीय *वि.* (तत्.) 1. नैषध संबंधी, नैषध का, निषध देश के राजा से संबंधित, राजा नल का 2. महाकवि श्रीहर्ष द्वारा रचित 'नैषधीयम्' महाकाव्य।

नैष्कर्म्य *पुं.* (तत्.) 1. निष्क्रियता 2. आलस्य 3. आसक्ति तथा फल की इच्छा को छोडक़र कर्म करने की भावना, निष्कर्म भाव से युक्त होना, निष्काम होने का भाव।

नैष्किक *वि.* (तत्.) 1. निष्क संबंधी, निष्क का 2. निष्क देकर खरीदा हुआ अथवा निष्क से बना हुआ 3. प्राचीन भारत में टकसाल का प्रमुख *वि.* प्राचीन काल में (संभवतः पहली दूसरी शताब्दी में) प्रचलित एक सोने का सिक्का जो एक कर्ष या 16 माशा सुवर्ण का होता था जिसे निष्क कहा जाता था, मूल्यवान सुवर्ण-हार को भी 'निष्क' कहा जाता था।

नैष्ठुर्य *पुं.* (तत्.) निष्ठुरता, क्रूरता, कर्कशता, कठोरता।

नैष्पत्र्य *पुं.* (तत्.) 1. वृक्षों के पत्ते झड़ जाने के बाद की स्थिति निष्पत्रता, निष्पत्रण 2. पतझड़ का मौसम।

नैसर्गिक *वि.* (तत्.) 1. निसर्ग से संबंधित 2. स्वाभाविक प्राकृतिक, सहज 3. अंतर्जात, अंतर्हित।

नैसर्गिक अधिकार *पुं.* (तत्.) राज. नैसर्गिक रूप से अस्तित्व में आने वाले अधिकार natural rights दे. नैसर्गिक विधि।

नैसर्गिक न्याय *पुं.* (तत्.) मानव की सहज नैतिक भावना पर आधारित न्याय। natural justice

नैसर्गिक विधि *पुं.* (तत्.) वे सिद्धांत अथवा विधि-निकाय जिन्हें प्रकृति, उपयुक्त-तर्क अथवा धर्म तथा मानव समाज में प्रचलित नीति-परक नियमों/बंधनों पर आधारित माना जाता है।

नैहर *पुं.* (देश.) (विवाहिता स्त्री का) पितृ-गृह, पीहर, पीहर, मायका।

नोक *स्त्री.* (फा.) 1. किसी कठोर वस्तु का नुकीला सिरा जो दूसरी कोमल वस्तु में चुभ या घुस सकता है, कोना, अनी जैसे- काँटे या सुई की नोक 2. किसी वस्तु का वह सिरा जो अन्य अंशों की अपेक्षा पतला हो यथा-समुद्र में दूर तक गयी भूमि की नोक 3. दो रेखाओं के मिलने का बिंदु।

नोक-झोंक *स्त्री.* (फा.) परस्पर होने वाली कहासुनी या वाद-विवाद जिसमें कटुता तो नहीं होती पर आक्षेप तथा व्यंग्य बाण अधिक होते हैं, जैसे दूकानदार और ग्राहक के बीच नोक-झोंक।

नोकदार *वि.* (फा.) 1. नोक वाला, जिसमें नोक हो 2. सौंदर्य के साथ साथ ईर्ष्या के कारण मन में चुभने वाला 3. तड़क-भड़क वाला, ठाठ-बाट वाला।

नोच *स्त्री.* (देश.) 1. नोचने की क्रिया या भाव, च्यूँटी 2. लूट।

नोच-खसोट *स्त्री.* (देश.) 1. जबरदस्ती नोच या खसोट कर दूसरों की वस्तु छीन लेना, छीना-झपटी 2. परस्पर लड़ते समय दाँतों तथा नाखूनों आदि से दूसरे के बाल, मांस आदि नोचना।

नोचना *स.क्रि.* (देश.) 1. चिपकी हुई वस्तु को झटके से खींच कर अलग करना 2. नाखूनों या दाँतों से इस प्रकार फाड़ना कि कुछ अंश निकल आए, नकोटना लाक्ष. किसी को कष्ट देकर उससे धन आदि छीनना, च्यूँटी काटना।

नोचा-नोची *स्त्री.* (देश.) 1. परस्पर नोचना 2. नोच-खसोट।

नोट *पुं.* (अं.) 1. याद रखने के लिए लिखा गया संक्षिप्त विवरण 2. अनौपचारिक अथवा संक्षिप्त पत्र, पर्चा, रुक्का 3. टिप्पणी, जैसे- अध्यापक द्वारा विद्यार्थी के निबंध पर दिया गया नोट 4. 4. किसी ग्रंथ आदि पर व्याख्यात्मक अथवा आलोचनात्मक टिप्पणी 5. कागजी मुद्रा।

नोट बुक *स्त्री.* (अं.) 1. याद रखने योग्य कुछ बातों को समय-समय पर लिख लेने के उद्देश्य से रखी हुई छोटी कॉपी 2. अभ्यास-पुस्तिका, लिखने की कॉपी।

नोटरी *पुं.* (अं.) वह न्यायालयी अधिकारी जो प्रलेख अथवा दस्तावेज प्रमाणित करता है।

नोटिस *पुं.* (अं.) 1. सूचना, अधिसूचना 2. सूचना-पत्र 3. विज्ञापन, इश्तहार।

नोटिस-बोर्ड *पुं.* (अं.) प्रशा. सूचना पट्ट।

नोदक *पुं.* (तत्.) विमान को धकेलने, ठेलने वाला यंत्र। propeller

नोदन *पुं.* (तत्.) प्रेरित करना, प्रेरण 2. पशुओं आदि को चलाने/हाँकने का कार्य 3. (बैलों को हाँकने का) पैना।

नोदना *स्त्री.* (तत्.) प्रेरणा।

नोदयिता *वि.* (तत्.) 1. आगे चलने के लिए प्रेरणा देने वाला 2. पशुओं को हाँकने वाला।

नोदित *वि.* (तत्.) जो प्रेरित किया गया हो।

नोन *पुं.* (तद्.) 1. लवण, नमक 2. लावण्य, सौंदर्य।

नोना *वि.* (तद्./देश) 1. नमक के स्वाद से युक्त 2. नमकीन, खारा 3. सुंदर, सलोना 4. उत्तम, उत्कृष्ट, अच्छा *पुं.* 1. मिट्टी की पुरानी दीवार पर दिखने वाला सफेद रंग का नमकीन भाग 2. सील वाली दीवार का नमकीन भाग 3. नोनी मिट्टी।

नोनिया *पुं.* (देश.) नोनी मिट्टी से नमक निकालने का कार्य करने वाली एक उपजाति अथवा उसका सदस्य *स्त्री.* कुल्फा, अमलोनी अथवा लोनिया नामक साग या उसका पौधा।

नोनी *स्त्री.* (देश.) 1. लोनी खारी मिट्टी, नोना 2. कुल्फा, अमलोनी, लोनिया नामक शाक अथवा उसका पौधा 3. सुंदर, सुकुमार स्त्री 4. दही बिलोकर निकाला गया ताजा मक्खन।

नौ *वि.* (तद्.) 1.भारतीय गणित का सबसे बड़ा अंक, इसे एकाधिक करने पर संख्या दो अंकों वाली हो जाती है, नव जैसे- नौ रुपये आदि 2. नव, नया, नवीन, नूतन *पु.* (तद्.) नौ की सूचक संख्या-9 मुहा. नौ दो गयारह होना- शीघ्र चल देना, चंपत हो जाना, चुपचाप खिसक जाना; नौ दिन चले अढ़ाई कोस- बहुत समय लगाकर थोड़ा सा कार्य कर पाना *पुं.* (तत्.) 1. पोत, जहाज, यथा नौ-सेना 2. नौका, नाव *वि.* (फा.) (समासयुक्त पद का पूर्व पद होने पर) 1. नवीन, नया जैसे- नौजवान, नौनिहाल, नौसिखिया 2. अभी हाल का, तत्कालीन जैसे- नौ आबाद-अभी बसाया हुआ 3. हरा-भरा, ताजा।

नौ अधिकरण *पुं.* (तत्.) नौ-सेना विभाग।

नौ आरोहण *पुं.* (तत्.) समुद्री जहाज पर चढ़ना अथवा चढ़ाना, पोतारोहण।

नौकर *पुं.* (तुर्की.) 1. सेवक, चाकर, परिचारक जैसे- घर का नौकर 2. (कार्यालय आदि का) कर्मचारी।

नौकरशाह *पुं.* (तुर्की.+फा.) 1. स्वयं नौकर होते हुए भी स्वयं को अधीनस्थ नौकरों का स्वामी समझने वाला 2. सरकारी विभाग का वह अधिकारी जिसके हाथ में पूरी सत्ता हो 3. वह सरकारी अधिकारी जो स्व विवेक का उपयोग न करते हुए नियमों के आधार पर ही कार्य करे। bureaucrat

नौकरशाही *स्त्री.* (तुर्की.+फा.) नौकरशाह अधिकारियों द्वारा पूर्णतया संचालित प्रशासन, अधिकारी-तंत्र, अफसर-शाही, दफ्तर-शाही।

नौकरानी *स्त्री.* (तुर्की.) वेतन लेकर घर के काम करने वाली परिचारिका, सेविका।

नौकरी *स्त्री.* (तुर्की.) 1. सेवक के रूप में घर अथवा अथवा कार्यालय आदि में कार्य 2. वह कार्य अथवा पद जिसके लिए वेतन मिलता हो 3. परिचर्या, सेवा।

नौकरी-चाकरी *स्त्री.* (तुर्की.+फा.) नौकरी।

नौकरीपेशा *पुं.* (तुर्की.+फा.) नौकरी करके जीविका चलाने वाला व्यक्ति।

नौकरी बजाना *अ.क्रि.* (तुर्की.) 1. किसी की नौकरी करना 2. किसी के आदेशों का पालन करने को विवश होना 3. कर्तव्य का पालन करना।

नौकर्ण *पुं.* (तत्.) नाव की पतवार।

नौकर्म *पुं.* (तत्.) नाविक का कर्म, मल्लाह का कार्य, मल्लाही।

नौकर्षण *पुं.* (तत्.) 1. नौका की खिंचाई 2. नाव को खींचने का शुल्क।

नौका *स्त्री.* (तत्.) नाव, किश्ती।

नौकाकार *पुं.* (तत्.) 1. नौका का निर्माण करने वाला 2. नौका के आकार वाला।

नौकाभ *वि.* (तत्.) नौका के समान दिखने वाला, नौका के समान आकृति वाला।

नौकारूढ़ *वि.* (तत्.) नाव पर चढ़ा हुआ, नौका पर आरूढ़ (यात्री)।

नौकारोही *वि.* (तत्.) नाव पर सवार होने वाला (व्यक्ति)।

नौका विहार *पुं.* (तत्.) नाव में बैठकर की जाने वाली सैर।

नौका सेतु *पुं.* (तत्.) सा. नृवि. पोतघाट से नौका तक बनाया गया एक पुल जो एक सिरे पर तैरता रहता है तथा दूसरे सिरे पर खंभे के साथ कब्जों से कसा रहता है, ऐसा पुल पानी के किसी भी स्तर पर सामान चढ़ाने अथवा उतारने की सुविधा के लिए बनाया जाता है।

नौखंडा *वि.* (तत्.) नौ मंजिलों वाला भवन।

नौगम्यता *स्त्री.* (तत्.) 1. जल मार्ग की पर्याप्त गहनता तथा विस्तार जिससे उसमें जलपोतों का आवागमन संभव हो सके 2. जलयान, वायुयान, प्रक्षेपणास्त्र आदि के परिचालन, अथवा निर्दिष्ट मार्ग पर यात्रा करने की क्षमता। navigability

नौचालन *पुं.* (तत्.) जल-यात्रा।

नौज *अव्य.* (अर.) 1. ईश्वर रक्षा करें 2. ईश्वर न करे कि कभी ऐसा हो उदा. नौज किसी के साथ ऐसी दुर्घटना न हो।

नौजवान *पुं.* (फा.) नवयुवक, युवा, तरुण।

नौजवानी *स्त्री.* (फा.) नई जवानी, युवावस्था, तरुणाई।

नौजीवी *पुं.* (तत्.) नाविक, मल्लाह।

नौटंकी *स्त्री.* (तद्.) जन सामान्य के मनोरंजन के लिए खेला जाने वाला एक प्रकार का लोक-नाट्य, इन नाटकों में संगीत की प्रधानता होती है, संवाद पद्यात्मक तथा प्रश्नोत्तर के रूप में होते हैं, कथानक प्रायः प्रेम-प्रधान अथवा वीरता-प्रधान होते हैं।

नौटन *पुं.* (तत्.) परि. समुद्र में प्रयुक्त होने वाले भार-मापन की एक इकाई, समुद्र में एक टन=एक नौटन *वि.* एक नौ-टन का अर्थ=किसी ऐसी वस्तु का भार जो समुद्र में डाले जाने पर एक टन भार के बराबर पानी को हटाए। nautical ton

नौतरण *पुं.* (तत्.) नाव से की जाने वाली यात्रा।

नौतरणीय *वि.* (तत्.) नदी, समुद्र आदि जिसमें नाव, जहाज आदि की गति संभव हो।

नौतल *पुं.* (तत्.) चपटे पेंदे वाला जहाज या नाव (कील) जहाज का तल।

नौता *वि.* (तद्.) नव, नया, नवीन, नूतन, ताजा *स्त्री.* (देश.) नम्रता, नमन *पु.* न्योता, निमंत्रण।

नौधा *पुं.* (तत्.+देश) 1. पौधे से फूटा हुआ नया अंकुर 2. नया बगीचा अथवा नवीन उपवन *वि.* (तद्.) नौ प्रकार का *क्रि.वि.* नौ प्रकार से जैसे- नवधा भक्ति।

नौना *अ.क्रि.* (देश.) 1. नत होना, झुकना 2. नम्र होना *वि.* (देश.) लावण्ययुक्त, सुंदर, सौंदर्यमय।

नौनिहाल *पुं.* (फा.) 1. बालक, बच्चा 2. नवयुवक, युवा, नौजवान 3. नया पौधा।

नौनी *वि.* (देश.) लावण्यमयी, सुंदरी, सलोनी (युवती) *स्त्री.* लोनी मिट्टी।

नौपरिवहन *पुं.* (तत्.) परि. 1. नौ-संचालन, विमान-संचालन 2. नौ-यात्रा 3. मार्गनिर्देशन *स्त्री.* नौका अथवा जहाज से माल की ढुलाई। navigation/ shipping

नौबत *स्त्री.* (अर.) 1. दशा, हालत 2. वैभव अथवा मंगलसूचक शहनाई आदि जो अमीरों के अथवा देवमंदिरों के द्वार पर बजाए जाते हैं।

नौबतखाना *पुं.* (अर.+फा.) इति. महलों या मंदिरों का वह स्थान जहाँ शहनाई बजती है, नक्कारखाना। drum room

नौबेड़ा *पुं.* (तद्.) परि. समुद्री जहाजों अथवा नावों का समूह।

नौभार *पुं.* (तत्.) परि. 1. समुद्री जहाज के द्वारा ढोया जाने वाला माल 2. जहाज में लादा जाने वाला माल 3. पोत-भार cargo

नौमुरीद *पुं.* (अर.) नव शिष्य, नव-दीक्षित। neophyte

नौरतन *पुं.* (तद्.) 1. नवरत्न 2. जड़ावदार आभूषण 3. एक प्रकार की चटनी।

नौरता *पुं.* (तद्.) 1. नवरात्र 2. व्रज आदि क्षेत्रों में मनाया जाने वाला एक पारंपरिक पर्व जिसमें कुवाँरी कन्याएँ माँ पार्वती का पूजन करती हैं।

नौरोज *पुं.* (फा.) 1. वर्ष का पहला दिन 2. ईरानियों के फर्वरदीन मास अर्थात् वर्ष का प्रथम दिवस 3. उक्त दिवस पर मनाया जाने वाला विशेष उत्सव।

नौरोहण *पुं.* (तत्.) नौका अथवा जहाज पर सवार होना।

नौलखा *वि.* (देश.) जिसका मूल्य लगभग नौ लाख हो यथा- नौलखा (हार) 2. जड़ाऊ अथवा बहुमूल्य।

नौवहन *पुं.* (तत्.) परि. जलीय यातायात अथवा जलीय व्यापार।

नौवहन-जोखिम *पुं.* (तत्.+तद्.) 1. समुद्री जहाज के प्रेषण के समय जहाज, उस पर लदे माल तथा कर्मचारी आदि को होने वाली हानि से सुरक्षा।

नौशा *पुं.* (फा.) नौश, वर, दूल्हा।

नौशी *स्त्री.* (फा.) वधू, दुलहन।

नौष्ठिक *वि.* (तत्.) 1. अंतिम, आखिरी, उपसंहारक 2. निर्णीत, निश्चायक, निर्णायक (उत्तर आदि) 3. स्थिर, दृढ़, संलग्न 4. उच्चतम, पूर्ण 5. पूर्ण रूप से जानने वाला विज्ञा. 6. निरंतर त्यागमय शुद्ध एवं पवित्र जीवन व्यतीत करने की प्रतिज्ञा करने वाला 7. निष्ठा अथवा श्रद्धा से युक्त *पु.* वह छात्र जो आध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए निर्धारित काल के पश्चात् भी सदैव गुरु की सेवा में रहे, वह जिसने आजन्म ब्रह्मचारी, जितेंद्रिय रहने की प्रतिज्ञा कर ली है।

नौसंचालन *पुं.* (तत्.) नौका, जहाज आदि को चलाना।

नौसादर *पुं.* (फा.) एक प्रकार का तीक्ष्ण क्षारीय नमक, जो पाचन संबंधी रोगों में औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है।

नौसार *पुं.* (तद्.) वह स्थान जहाँ नमक बनाया जाता है, लवणशाला।

नौसिखिया *वि.* (देश.) जिसने अभी काम सीखना आरंभ किया हो, जिसने अभी अपने कार्य में दक्षता प्राप्त न की हो।

नौसेना *स्त्री.* (तत्.) जल-सेना, वह सेना जो नदी या समुद्र में जहाजों के माध्यम से राष्ट्र-सुरक्षा में सहायक होती है। navy

नौसेनाध्यक्ष *पुं.* (तत्.) नौ सेना का सबसे बड़ा अधिकारी जिसकी देखरेख में नौ सेना का क्रिया-कलाप संपन्न होता है।

नौसेनापति *पुं.* (तत्.) दे. नौसेनाध्यक्ष।

नौसैनिक *पुं.* (तत्.) नौसेना में रहकर युद्ध करने वाला सिपाही *वि.* नौ-सेना-संबंधी या नौ सेना का जैसे- नौसैनिक-आयोजन।

न्यग्रोध *पुं.* (तत्.) 1. दे. वट-वृक्ष, बरगद का पेड़ 2. लंबाई की एक विशिष्ट नाप, दोनों हाथों को फैलाने पर एक हाथ के सिरे से दूसरे हाथ के सिरे तक का विस्तार, व्याम, पुरसा जैसे- न्यग्रोध-परिणाम का मंडल *वि.* यह लंबाई व्यक्ति की लंबाई के बराबर होती है।

न्यस्त *वि.* (तत्.) 1. फेंका हुआ 2. रखा हुआ, धरा हुआ 3. बैठाया या जमाया हुआ, स्थापित 4. चुनकर रखा हुआ या सजाया हुआ 5. चलाया हुआ या फेंका हुआ (अस्त्र) 6. त्यागा हुआ, परित्यक्त 7. न्यास अथवा धरोहर के रूप में रखा हुआ 8. छिपा हुआ, दबा हुआ, निहित 9. किसी विशेष कार्य के लिए अलग निकालकर रखा गया।

न्यस्तशस्त्र *वि.* (तत्.) 1. जिसने हथियार रख दिए हो 2. जिसके पास सुरक्षा के लिए कोई हथियार न हो, अस्त्रहीन, निरस्त्र, निःशस्त्र 3. जिससे हानि की आशंका न हो।

न्यस्य *वि.* (तत्.) न्यास के योग्य 1. धरोहर के रूप में रखे जाने योग्य 2. चलाए जाने अथवा छोड़े जाने योग्य (अस्त्र-शस्त्र) 3. संभालकर रखने योग्य।

न्याना *वि.* (तद्.) 1. अबोध, नासमझ 2. कम अवस्था (आयु) वाला।

न्याय *पुं.* (तत्.) 1. पद्धति, रीति 2. उपयुक्तता, औचित्य प्रशा.,विधि नियम, विधि, कानून 3. नियमानुसार व्यवहार या उचित व्यवहार 5. विधि. विधिगत/कानूनी कार्यवाही 6. विधि. विधिकानून के अनुसार दंड यथा अपराधी को न्याय अवश्य मिलना चाहिए 7. समानता, सादृश्य 8. ईमानदारी जैसे- न्याय के अनुसार धन बाँटना चाहिए 9. संस्कृत प्रसिद्ध नीति-वाक्य 10. प्रसिद्ध लोकोक्ति जो दृष्टांत-वाक्य के रूप में प्रयुक्त होती है 11. भारतीय छह दर्शनों में से एक दर्शन न्याय-दर्शन 12. तर्कशास्त्र (लॉजिक) पाँच अवयवों (प्रतिज्ञान, हेतु, उदाहरण, उपनय तथा निगमन) से युक्त तर्क *वि.* 1. उचित, ठीक 2. तुल्य, समान।

न्यायकर्ता *वि.* (तत्.) विवाद आदि की स्थिति में उचित फैसला या निपटारा करने वाला।

न्यायज्ञ *पुं.* (तत्.) न्याय-शास्त्र का ज्ञाता।

न्यायतः *क्रि.वि.* (तत्.) न्याय के अनुसार, न्यायपूर्वक।

न्याय-दर्शन *पुं.* (तत्.) भारत के षड्-दर्शन के अंतर्गत एक अति प्राचीन एवं प्रख्यात दर्शन जिसमें प्रमाणों से वस्तु की परीक्षा करने की पद्धति है तथा पदार्थों का अत्यधिक गहन एवं तात्विक चिंतन विद्यमान है, प्रमाणशास्त्र *वि.* संस्कृत में व्याकरण को पदशास्त्र, मीमांसा को वाक्य शास्त्र तथा न्याय को प्रमाणशास्त्र माना गया है, तीनों शास्त्रों के विद्वान 'पदवाक्य प्रमाणज्ञ' कहे जाते थे।

न्यायनिर्णयन *पुं.* (तत्.) 1. न्यायिक निर्णय सुनाना 2. निष्पक्ष होकर विवाद को अथवा झगडे को शांत करना।

न्यायनिर्णायक *वि.* (तत्.) प्रशा.राज. 1. न्यायिक निर्णय करने वाला 2. निष्पक्ष होकर विवाद को शांत करने वाला।

न्यायपर *वि.* (तत्.) 1. न्यायसंगत आचरण करने वाला 2. न्याय-परायण 3. न्याय पूर्ण।

न्यायपरता *स्त्री.* (तत्.) 1. न्याय परायण होने की भावना, न्याय परायणता, न्यायशीलता 2. औचित्य 3. ईमानदारी।

न्यायपरायण *वि.* (तत्.) न्यायपूर्वक आचरण करने वाला, न्यायशील।

न्याय-पालिका *स्त्री.* (तत्.) लोकतांत्रिक शासन-प्रणाली में सरकार के तीन आधारभूत अंगों में से एक जो राज्य की न्याय-व्यवस्था संभालता है टि. राज्यव्यवस्था के तीन अंग हैं- कार्यपालिका, न्यायपालिका एवं विधायिका।

न्यायपीठ *पुं.* (तत्.) प्रशा.राज. 1. न्यायाधीश का पद 2. न्यायाधीश का आसन 3. न्यायालय।

न्यायप्रिय *वि.* (तत्.) 1. जिसे सदैव न्याय अथवा न्याय का पक्ष प्रिय लगता हो 2. सदा न्याय का समर्थन करने वाला (व्यक्ति)।

न्यायमूर्ति *पुं.* (तत्.) प्रशा.राज. 1. न्याय को समर्पित व्यक्ति 2. उच्च अथवा उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश की उपाधि।

न्यायमूलक *वि.* (तत्.) 1. न्याय अथवा तर्क पर आश्रित 2. विधि अथवा कानून के अनुसार होने वाला।

न्यायवाक्य *पुं.* (तत्.) तर्क. न्याय प्रक्रिया में प्रयुक्त होने वाला निगमनिक तर्क (अं.) syllogism ऐसी निगमनमूलक तार्किक वाक्य रचना जिसमें एक साध्य-आधारिका तथा एक पक्ष आधारिका के माध्यम से अपेक्षित निष्कर्ष प्राप्त किया जाता है जैसे- 'प्रत्येक गुण प्रशंसनीय होता है (साध्याधारिका वाक्य रचना), दया भी एक गुण है अतः दया प्रशंसनीय है (पक्ष आधारिका वाक्य रचना)।

न्यायविद्य *स्त्री.* (तत्.) न्यायशास्त्र।

न्यायवैद्यक *पुं.* (तत्.) न्यायालयिक विज्ञान, न्यायिक आयुर्विज्ञान, न्यायायुर्विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान की वह शाखा जिसका संबंध विधि से है, कानूनी समस्याओं के समाधान में इसका महत्वपूर्ण योगदान होता है। forensic science

न्यायशास्त्र *पुं.* (तत्.) 1. भारतीय दर्शनों में प्रसिद्ध 'न्यायदर्शन' को क्रमबद्ध रूप से सर्वागतया प्रस्तुत करने वाला ग्रंथ अथवा शास्त्र, न्यायदर्शन का शास्त्र 2. विधि (कानून) संबंधी विज्ञान अथवा दर्शन का पूर्णतया विवेचन करने वाला शास्त्र, विधि 3. विधि-संग्रह।

न्यायसंगत *वि.* (तत्.) 1. न्याय के अनुसार उचित, न्यायोचित, न्यायसम्मत 2. पक्षपात-विहीन।

न्यायसभा *स्त्री.* (तत्.) इति. वह सभा जहाँ प्राचीन काल में राजा स्वयं अपने सिंहासन पर बैठकर सभी प्रकार के विवादों एवं अभियोगों को सुन समझकर न्यायिक निर्णय देता था।

न्यायसम्मत *वि.* (तत्.) दे. न्यायसंगत।

न्याय-सूत्र *पुं.* (तत्.) दर्श. 1. न्याय दर्शन के आचार्य, महर्षि गौतम द्वारा विरचित न्याय-दर्शन दर्शन के सूत्र 2. न्याय के सूत्र, न्याय दर्शन के मूल सिद्धांत।

न्यायाधिकरण *पुं.* (तत्.) (न्याय+अधिकरण) किसी विशेष क्षेत्र, विषय अथवा विशेष प्रकार के विवादों के समुचित न्याय के उद्देश्य से सरकार द्वारा गठित विशेष न्यायालय।

न्यायाधिकार *पुं.* (तत्.) (न्याय+अधिकार) इति. न्याय करने या पाने का पूर्ण अधिकार।

न्यायाधिपति *पुं.* (तत्.) न्यायाधीश, न्यायालय का वह अधिकारी जो विवाद-ग्रस्त विषयों पर अपना निर्णय देता है।

न्यायाधीन *वि.* (तत्.) विधि. जिसका निर्णय न हुआ हो, न्यायालय में विचाराधीन, अनिर्णीत।

न्यायाधीश *पुं.* (तत्.) दे. न्यायाधिपति।

न्यायानुमत *वि.* (तत्.) 1. न्याय के अनुरूप, न्यायसम्मत, न्यायोचित 2. विधि अथवा कानून के अनुसार दे. न्यायसंगत।

न्यायाभास *पुं.* (तत्.) 1. मिथ्या न्याय, जो न्याय जैसा प्रतीत होता हो परंतु वास्तव में न्याय न हो दर्श. प्रमाणाभास पर आधारित वह अनुमान जो प्रत्यक्ष तथा शब्द-प्रमाण के विरूद्धहो।

न्यायायुर्विज्ञान *पुं.* (तत्.) दे. न्यायवैद्यक।

न्यायालय *पुं.* (तत्.) वह स्थान जहाँ बैठकर न्यायाधीश न्याय करता है, कचहरी, अदालत। court

न्यायालय अवमान *पुं.* (तत्.) विधि.,राज. न्यायालय के किसी निर्णय की अवहेलना अथवा उपेक्षा करके उसका अपमान अथवा उस निर्णय के विरूद्ध आलोचना या आचरण से होने वाला न्यायालय का अपमान।

न्यायालय डिक्री *स्त्री.* (तत्.+अं.) विधि.प्रशा. न्यायालय द्वारा जारी आज्ञप्ति, आदेश अथवा निर्णय।

न्यायालयिक *वि.* (तत्.) 1. न्यायालय-संबंधी, न्यायालय का 2. न्यायालय द्वारा प्रवर्तित या जारी किया हुआ।

न्यायिक *वि.* (तत्.) 1. न्याय-संबंधी 2. न्याय-विभाग का जैसे- न्यायिक निर्णय 3. न्यायसम्मत, न्यायपूर्ण, न्यायोचित 4. न्यायालय द्वारा प्रवर्तित अथवा जारी किया हुआ, अदालती। judicial

न्यायिक अधिकारी *पुं.* (तत्.) विधि.,प्रशा. न्याय करने का अधिकार रखने वाला, न्याय-विभाग का अधिकारी। judicial officer

न्यायिक अभिगृहीत वि.पुं. (तत्.) राज.,विधि. न्याय संबंधी प्रक्रिया में वह कथन जिसे बिना सिद्ध किए हुए ही स्वीकार कर लिया जाए, न्याय करते समय तर्क के आधार के रूप में प्रयुक्त स्वतः प्रामाणिक प्रतिज्ञप्ति। jural postulate

न्यायिक अलगाव *पुं.* (तत्.+देश.) विधि. न्यायालय के आदेश के अनुसार विवाह विच्छेद से पहले एक निश्चित अवधि के लिए पति-पत्नी का अलग-अलग रहना, इससे उनके साथ रहने पर प्रतिबंध लग जाता है परंतु इससे विवाह का अंत नहीं होता, न्यायिक पृथक्करण। judicial seperation

न्यायिक अवेक्षा *स्त्री.* (तत्.) विधि. 1. न्यायालय द्वारा जारी सूचना 2. न्यायालय द्वारा जारी किया गया सूचना-पत्र, विज्ञप्ति अथवा घोषणा-पत्र।

न्यायिक कल्प *वि.* (तत्.) विधि. एक ऐसा न्यायिक कार्य जिसे किसी प्रशासनिक अभिकरण अथवा किसी अन्य अधिकृत संस्था अथवा व्यक्ति द्वारा संपन्न किया जाए, अर्धन्यायिक quasi judicial

न्याचिक जाँच *स्त्री.* (तत्.+देश.) विधि. न्यायालय द्वारा की जाने वाली आवश्यक खोजबीन, जाँच, पड़ताल अथवा परीक्षण।

न्यायिकतः *क्रि.वि.* (तत्.) विधि. न्याय सम्मत प्रणाली से, न्याय के अनुसार निष्पक्ष होकर।

न्यायिक पृथक्करण *पुं.* (तत्.) विधि दे. न्यायिक अलगाव।

न्यायिक समीक्षा *स्त्री.* (तत्.) विधि. न्यायिक पुनर्विचार।

न्यायिकी *स्त्री.* (तत्.) दर्श. न्याय वाक्यों का वर्णन एवं विवेचन करने वाली तर्कशास्त्र की शाखा।

न्यायिकेतर *वि.* (तत्.) विधि. जो न्यायिक न हो।

न्यायी *वि.* (तत्.) 1. न्याय करने वाला, न्यायपरायण, न्यायशील, पक्षपात-रहित, ईमानदारी से कार्य करने वाला व्यक्ति।

न्यायेतर *वि.* (तत्.) जो न्यायबद्ध न हो, जो निगमनिक न हो। extra judicial

न्यायोचित *वि.* (तत्.) विधि. 1. न्याय के अनुसार उचित, न्याय-संगत, न्यायसम्मत, पक्षपात-विहीन।

न्यायौचित्य *पुं.* (तत्.) विधि. न्याय के अनुसार औचित्य, न्याय-संगतता, पक्षपातरहित। justification

न्याय्य *वि.* (तत्.) विधि. जिसे न्याय की दृष्टि से उचित ठहराया जा सके।

न्याय्य मानववध *पुं.* (तत्.) समाज. ऐसा नर-संहार अथवा ऐसी मानव हत्या जिसे न्याय के अनुसार उचित ठहराया जा सके। justifiable homicide

न्यारा *वि.* (देश.) 1. पृथक्, अलग जैसे- न्यारा घर 2. भिन्न, दूसरा, अन्य जैसे- भारतीयों का रहन-सहन सबसे न्यारा है 3. किसी विशिष्टता के कारण अन्य सबसे उत्कृष्ट, निराला, अनोखा जैसे- भारत सब देशों से न्यारा है।

न्यारे *क्रि.वि.* (देश.) 1. पृथक्, अलग प्रयो. वे अपने माता-पिता से न्यारे रहने लगे 2. दूर *वि.* 'न्यारा' का बहुव.।

न्यास *पुं.* (तत्.) प्रशा.,वाणि. 1. किसी विशेष वस्तु को कहीं जमा कर, बैठाकर रखना, स्थापना 2. उपयुक्त स्थान पर रखना 3. किसी वस्तु को कहीं रखने के कारण उस स्थान पर बन जाने वाला चिह्न 4. धरोहर, थाती, अमानत 5. अर्पण 6. किसी विशिष्ट कार्य के संपादन के लिए अलग धन आदि 7. विश्वस्त व्यक्तियों को सौंपी गई धन-संपत्ति जिसका सदुपयोग दाता की इच्छा के अनुसार हो सके 8. उक्त प्रकार की व्यवस्था एवं संपत्ति का उपयोग करने वालों की समिति (तंत्र) 1. पूजा में विशिष्ट देवता के विभिन्न अंगों का ध्यान करते हुए मंत्र-पाठ द्वारा उन पर पर विशेष वर्णों की स्थापना 2. साधक द्वारा

अपने समस्त अंगों में इष्ट देवता तथा मंत्र की स्थापना 3. किसी रोग भूत-प्रेत बाधा की शांति के लिए साधक विशेष द्वारा रोगी के प्रत्येक अंग पर हाथ से क्रमशः स्पर्श करते हुए मंत्र-पाठ करने की क्रिया संगी. 1. स्वरसप्तक का वह स्वर जिस पर कोई राग पूर्णता प्राप्त करता है, राग में वह स्वर जिस पर पुनःपुनः या अधिक समय रुका जाता है जैसे- यमन राग में गांधार को न्यास-स्वर माना जाता है।

न्यासधारिता *स्त्री.* (तत्.) 1. संरक्षण का कार्य 2. न्यासी का कार्य। trusteeship

न्यासधारी *वि.* (तत्.) इति.,वाणि. 1. न्यास/धरोहर रखने वाला 2. संस्था आदि के न्यास के प्रबंधकों में से एक, न्यासी।

न्यास निधि *स्त्री.* (तत्.) प्रशा.,वाणि. 1. धरोहर (अमानत) की धनराशि अथवा संपत्ति आदि 2. न्यास (ट्रस्ट) की धनराशि अथवा संपत्ति।

न्यासभंग *पुं.* (तत्.) वाणि.,विधि. 1. न्यासी द्वारा कर्तव्य का उल्लंघन, अथवा कर्तव्य की अवहेलना 2. कर्तव्य अथवा उत्तरदायित्व का निर्वाह न कर पाना 3. विश्वास कायम न रख पाना, विश्वास भंग। breach of trust

न्यास विलेख *पुं.* (तत्.) वाणि.,विधि.,प्रशा. 1. (संस्था आदि के) न्यास के धन-संपत्ति संबंधी अभिलेख/दस्तावेज 2. धरोहर की धनराशि तथा संपत्ति संबंधी अभिलेख।

न्यास सिद्धांत *पुं.* (तत्.) राज.,वाणि. किसी संस्था आदि के सम्यक् संचालन एवं संरक्षण के उद्देश्य, सरकारी नियंत्रण तथा विधि-नियमों को ध्यान में रखते हुए पर्याप्त विचार-विमर्श के पश्चात् बनाया गया सिद्धांत।

न्यासी *पुं.* (तत्.) प्रशा.,वाणि. वह व्यक्ति अथवा उस समिति का सदस्य जिसे न्यास की धन-संपत्ति के संरक्षण एवं उचित उपयोग का उत्तरदायित्व सौंपा गया है, न्यास के प्रबंधकों में से एक, न्यासधारी।

न्यासीकरण *पुं.* (तत्.) राज. 1. किसी संस्था के सम्यक् संचालन के लिए अथवा किसी निधि (धन संपत्ति) के सम्यक् संरक्षण एवं समुचित उपयोग के लिए न्यास की स्थापना करना। trusteefication

न्यासी परिषद् *स्त्री.* (तत्.) राज. संयुक्त राष्ट्र-संघ संघ के छह प्रधान अंगों में से एक प्रधान अंग। इसके सदस्य (न्यास प्रदेशों का शासन करने वाले) आस्ट्रेलिया, बेल्जियम, फ्रांस, इटली, ब्रिटेन, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका तथा सुरक्षा परिषद् के न्यास प्रदेशों का शासन न करने वाले स्थायी सदस्य देश अर्थात् चीन तथा सोवियत संघ तथा इतनी ही संख्या में महासभा द्वारा तीन वर्ष के लिए चुने जाने वाले देश थे, इस परिषद् को प्रशासक सत्ता द्वारा भेजे गए वार्षिक प्रतिवेदनों पर तथा न्यास-प्रदेशों के निवासियों के प्रार्थना-पत्रों पर विचार करने, न्यास प्रदेशों में निरीक्षण हेतु प्रतिनिधि मंडल भेजने, वहाँ के निवासियों की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और शिक्षा-संबंधी प्रगति के बारे में प्रश्नावली तैयार करने तथा न्यास के समझौतों के अनुसार अन्य आवश्यक कार्यवाही करने के कार्य सौंपे गऐ है। council of trustees

न्यूक्लिक अम्ल *पुं.* (अं.+तत्.) रसा.,प्राणि. डी.एन.ए (डिऑक्सीराइबोन्यूक्लिक अम्ल) एवं आर-एन-ए (राइबोन्यूक्लिक अम्ल) का सामूहिक नाम टि. कोशिका केंद्रकों एवं कोशिका द्रव्य में ये दोनों अम्ल पाए जाते हैं।

न्यूक्लियॉन *पुं.* (अं.) अणु.,भौति. परमाणु के नाभिक का आधारभूत कण, विशेषतः प्रोटॉन या न्यूट्रॉन।

न्यूक्लियॉनिकी *स्त्री.* (अं.+तत्.) अणु.,भौति. विज्ञान की इस शाख में नाभिकीय भौतिकी एवं उसके अनुप्रयोगों का अध्ययन किया जाता है।

न्यूक्लीय *वि.* (अं.+तत्.) 1. केंद्रीय 2. परमाणु की नाभि से संबद्ध, नाभिकीय 3. वनस्पति या प्राणी के कोशाणु के केंद्र से संबंधित, केंद्रक, केंद्रकीय।

न्यूट्रॉन *पुं.* (अं.) परमाणु के नाभिक में स्थित विद्युत् आवेग से रहित वह सूक्ष्म कण जिसका द्रव्यमान प्रोटॉन के तुल्य होता है।

न्यून *वि.* (तत्.) 1. (किसी की अपेक्षा) कम 2. थोड़ा, आवश्यकता से कम 3. लंबाई-चौड़ाई, भार, संख्या, परिमाण, गुणवत्ता आदि में कम 4. अधूरा।